Siri Guru Granth Sahib

In Devanagari (in Unicode font)

Arranged in Sentence by sentence format and alphabetized according to the Devanagari alphabet.

All arrangement, formatting, conversion to Unicode Devanagari font, alphabetization & database labeling etc by: Kulbir Singh Thind, MD

Any use of text for commercial or internet projects requires express written approval from: Kulbir S Thind, MD.

अंकसु ग्यानु रतनु है खेवटु बिरला संतु ॥२२४॥ (1376-13)
अंकु जलउ तनु जालीअउ मनु धनु जलि बलि जाइ ॥ (54-10)
अंग अंग सुखदाई पूरन ब्रहमाई थान थानंतर देसा ॥ (1237-4)
अंग संग उरझाइ बिसरते सुमफिआ ॥ (1362-19)
अंग संग भगवान परसन प्रभ नानक पतित उधार ॥८॥१॥२॥५॥१॥१॥२॥५७॥ (508-13)
अंग संगि लागे दूख भागे प्राण मन तन सभि हरे ॥ (459-10)
अंगदि अनंत मूरति निज धारी अगम ग्यानि रसि रस्यउ हीअउ ॥ (1405-8)
अंगदि किरपा धारि अमरु सतिगुरु थिरु कीअउ ॥ (1408-11)
अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ (917-5)
अंगीकारु करहु रखि लेवहु गुर पूरा काढि कढीजै ॥२॥ (1325-19)
अंगीकारु कीआ तिनि करतै दुख का डेरा ढाहिआ जीउ ॥१॥ (107-2)
अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै जग महि सोभ सुहाई हे ॥१३॥ (1072-7)
अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै दोखी सगले भए रवाल ॥ (826-19)
अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै बैरी सगले साधे ॥ (884-1)
अंगीकारु कीओ प्रभ अपुने भव निधि पारि उतारे ॥१॥ (631-6)
अंगीकारु कीओ प्रभि अपनै नानक दास सरणाइआ ॥२॥७॥११॥ (1268-17)
अंगीकारु कीओ प्रभि अपुनै काढि लीआ बिखु घेरै ॥ (1214-6)
अंगीकारु कीओ प्रभि अपुनै भगतन की राखी पाति ॥ (681-4)
अंगीकारु कीओ मेरे सुआमी भ्रमु भउ मेटि सुखाइओ ॥ (1270-3)
अंगीकारु कीओ मेरै करतै गुर पूरे की वडिआई ॥ (500-18)
अंचला गहाइओ जन अपुने कउ मनु बीधो प्रेम की खोरी ॥ (979-10)
अंचलि लाइ तराइआ भाई भउजलु दुखु संसारु ॥ (640-12)
अंचलि लाइ सभ सिसटि तराई ॥ (108-13)
अंचलु गहि कै साध का तरणा इहु संसारु ॥ (218-16)
अंचलु गहिआ साध का नानक भै सागरु पारि पराइ ॥८॥१॥३॥ (431-16)
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥१॥ (730-12)
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥२॥ (730-14)
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥३॥ (730-16)
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति तउ पाईऐ ॥४॥१॥८॥ (730-18)
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ बहुड़ि न भवजलि पाइआ ॥१॥ (332-16)
अंजन माहि निरंजनु जाता जिन कउ नदरि तुमारी जीउ ॥६॥ (1016-13)
अंजन माहि निरंजनु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (112-11)
अंजनु तैसा अंजीऐ जैसा पिर भावै ॥ (766-15)
अंजनु देइ सभै कोई टुकु चाहन माहि बिडानु ॥ (1103-8)
अंजनु नामु तिसै ते सूझै गुर सबदी सचु जानिआ ॥४॥ (766-18)
अंजनु सारि निरंजनु जाणै सरब निरंजनु राइआ ॥९॥ (1040-5)

अंड टूक जा चै भसमती ॥ (1292-9)
अंड बिनासी जेर बिनासी उतभुज सेत बिनाधा ॥ (1204-7)
अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता ॥ (596-15)
अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह ॥ (467-4)
अंडज जेरज सेतज उतभुज घटि घटि जोति समाणी ॥ (1109-10)
अंडज जेरज सेतज उतभुज बहु परकारी पालका ॥४॥ (1084-18)
अंडज जेरज सेतज उतभुज सभि वरन रूप जीअ जंत उपईआ ॥ (835-14)
अंडज जेरज सेतज उतभुजा प्रभ की इह किरति ॥ (816-6)
अंडज फोड़ि जोड़ि विछोड़ि ॥ (839-5)
अंत कारणि केते बिललाहि ॥ (5-8)
अंत कालि को बेली नाही ॥ (1023-10)
अंत कालि जमु जोहि न साकै हरि बोलहु रामु पिआरा हे ॥५॥ (1030-8)
अंत कालि जमु मारै ठेह ॥१॥ (1257-1)
अंत कालि तेरा बेली होवै सदा निबहै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ (601-12)
अंत कालि तेरै आवै काम ॥१॥ रहाउ ॥ (1189-15)
अंत कालि फिरि फिरि न रोइ ॥२॥ (1182-14)
अंत कालि भजि जाहिगे काहे जलहु करोधी ॥३॥ (809-15)
अंत कालि मूड़े चोट खाहि ॥७॥ (1189-19)
अंत की बार ऊठि सिधारै ॥१॥ (890-5)
अंत की बार को खरा न होसी सभ मिथिआ असनेही ॥१॥ (609-10)
अंत की बार गगरीआ फोरी ॥३॥ (337-1)
अंत की बार नही कछु तेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (325-12)
अंत की बार मूआ लपटाना ॥१॥ (1165-1)
अंत की बार लहैगी न आढै ॥१॥ रहाउ ॥ (484-3)
अंत की बेला लए छडाई ॥१॥ (895-15)
अंत न अंता सदा बेअंता कहु नानक ऊचो ऊचा ॥४॥१॥८७॥ (821-15)
अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥३॥१२॥१३९॥ (634-5)
अंतर अंतरि मनसा हरहि ॥ (1163-8)
अंतर आतमै जो मिलै मिलिआ कहीऐ सोइ ॥३॥ (791-16)
अंतर आतमै ब्रहमु न चीन्हिआ माइआ का मुहताजु भइआ ॥७॥ (435-3)
अंतर का अभिमानु जोरु तू किछु किछु किछु जानता इहु दूरि करहु आपन गहु रे ॥ (1119-1)
अंतर की गति गुरमुखि जाणै ॥ (414-17)
अंतर की गति जाणीऐ गुर मिलीऐ संक उतारि ॥ (21-1)
अंतर की गति तुधु पहि सारी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ (749-16)
अंतर की गति तुम ही जानी तुझ ही पाहि निबेरो ॥ (618-5)
अंतर की गति सतिगुरु जाणै ॥ (1042-11)
अंतर की दुबिधा अंतरि जरीऐ ॥ (1042-6)

अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ॥१॥ (661-11)
अंतर की बिधि तुम ही जानी तुम ही सजन सुहेले ॥ (206-19)
अंतर की मलु कब ही न जाए ॥१॥ (1348-1)
अंतर की मलु दिल ते धोवै ॥ (1084-10)
अंतर घर बंके थानु सुहाइआ ॥ (1064-15)
अंतर जोति प्रगासीआ नानक नामि समाइ ॥२॥ (309-17)
अंतरगति जिसु आपि जनाए ॥ (294-11)
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ (4-15)
अंतरगति बुझै हां ॥ (410-17)
अंतरगति हरि भेटिआ अब मेरा मनु कतहू न जाइ ॥४॥२॥ (1103-9)
अंतरजामी अगम पुरखु इक द्रिसटि दिखाए ॥ (966-5)
अंतरजामी अगमु रसना एकु भनु ॥ (956-11)
अंतरजामी आपि प्रभु सभ करे कराइआ ॥ (812-10)
अंतरजामी करणैहारा सोई खसमु हमारा ॥ (609-17)
अंतरजामी करता सोइ ॥ (1152-4)
अंतरजामी जानै ॥ (621-10)
अंतरजामी जीअन का दाता देखत त्रिपति अघाई ॥१९॥ (916-3)
अंतरजामी नानक के सुआमी सरबत पूरन ठाकुरु मेरा ॥२॥२॥५४॥ (683-16)
अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ (13-18)
अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ (205-17)
अंतरजामी पुरख सुआमी अनबोलत ही जानहु हाल ॥ (828-14)
अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥ (293-12)
अंतरजामी पुरखु बिधाता ॥ (869-9)
अंतरजामी पुरखु सुजाणु ॥ (1139-19)
अंतरजामी प्रभ कारण करण ॥३॥ (866-11)
अंतरजामी प्रभ दइआल ॥ (1183-3)
अंतरजामी प्रभ सुजानु ॥ (211-7)
अंतरजामी प्रभु सुजानु अलख निरंजन सोइ ॥ (300-7)
अंतरजामी रहिओ बिआपि ॥ (292-14)
अंतरजामी रामु रवांई मै डरु कैसे चहीऐ ॥१॥ (1350-17)
अंतरजामी रामु समारहु ॥ (343-5)
अंतरजामी सदा संगि करणैहारु पछानु ॥ (46-5)
अंतरजामी सभ बिधि जानै तिस ते कहा दुलारिओ ॥ (1000-19)
अंतरजामी सभ महि वरतै तां भउ कैसा भाई ॥ (1269-14)
अंतरजामी सभु किछु जानै उस ते कहा छपाइआ ॥३॥ (381-7)
अंतरजामी साचा सोइ ॥ (1147-4)
अंतरजामी सो प्रभु पूरा ॥ (563-3)

अंतरजामी सो प्रभु मेरा सरब रहिआ भरपूरे ॥ (780-5)
अंतरहु कुसुधु माइआ मोहि बेधे जिउ हसती छारु उडाए ॥ (1423-6)
अंतरहु दुखु भ्रमु कटीऐ सुखु परापति होइ ॥ (31-13)
अंतरि अगनि चिंता बहु जारे ॥ (903-13)
अंतरि अगनि जलै भड़कारे ॥ (1022-12)
अंतरि अगनि न गुर बिनु बूझै बाहरि पूअर तापै ॥ (1013-1)
अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥ (267-13)
अंतरि अगनि सबल अति बिखिआ हिव सीतलु सबदु गुर दीजै ॥ (1325-19)
अंतरि अगिआन दुखु भरमु है विचि पड़दा दूरि पईआसि ॥ (40-17)
अंतरि अगिआनु अंधेरु है सुधि न काई पाइ ॥ (647-14)
अंतरि अगिआनु दुखु भरमु है गुर गिआनि गवाई ॥ (1291-17)
अंतरि अगिआनु भई मति मधिम सतिगुर की परतीति नाही ॥ (652-12)
अंतरि अगिआनु सबदि बुझाए सतिगुर ते सुखु पाइआ ॥३॥ (1068-6)
अंतरि अगिआनु हउ बुधि है सचि सबदि मलु खोहु ॥ (441-10)
अंतरि अलखु न जाई लखिआ ॥ (130-10)
अंतरि अलखु न जाई लखिआ विचि पड़दा हउमै पाई ॥ (205-1)
अंतरि आइ वसै गुर सबदु वीचारै कोइ ॥ (1416-19)
अंतरि आउ न बैसहु कहीऐ जिउ सुंञै घरि काओ ॥ (581-18)
अंतरि उतभुजु अवरु न कोई ॥ (905-14)
अंतरि उरि धारे मिलीऐ पिआरे अनदिनु दुखु निवारे ॥ (245-7)
अंतरि एक पिर हां ॥ (409-11)
अंतरि एको बाहरि एको सभ महि एकु समाईऐ ॥ (528-14)
अंतरि कपटु चुकावहु मेरे गुरसिखहु निहकपट कमावहु हरि की हरि घाल निहाल निहाल निहाल ॥१॥ (978-2)
अंतरि कपटु फिरहि बेताला ॥ (1348-4)
अंतरि कपटु भगउती कहाए ॥ (88-15)
अंतरि कपटु मनमुख अगिआनी रसना झूठु बोलाइ ॥ (512-7)
अंतरि कपटु महा दुखु पाइ ॥ (1342-7)
अंतरि कमलु परगासिआ गुर गिआनी जागे राम ॥ (845-5)
अंतरि कमलु प्रगासिआ अम्रितु भरिआ अघाइ ॥ (22-1)
अंतरि कलप भवाईऐ जोनी ॥ (1348-8)
अंतरि क्रोधु अहंकारु है अनदिनु जलै सदा दुखु पाइ ॥ (1415-10)
अंतरि क्रोधु चंडालु सु हउमै ॥ (1043-10)
अंतरि क्रोधु जूऐ मति हारी ॥ (314-14)
अंतरि क्रोधु पड़हि नाट साला ॥ (832-6)
अंतरि खूहटा अम्रिति भरिआ सबदे काढि पीऐ पनिहारी ॥ (570-18)
अंतरि गरभ उरधि लिव लागी सो प्रभु सारे दाति करे ॥१॥ (1013-16)

अंतरि गावउ बाहरि गावउ गावउ जागि सवारी ॥ (401-12)
अंतरि गिआनु न आइओ जितु किछु सोझी पाइ ॥ (646-6)
अंतरि गिआनु न आइओ मिरतकु है संसारि ॥ (88-9)
अंतरि गिआनु महा रसु सारा ॥ (411-15)
अंतरि गुर गिआनु हरि रतनु है मुकति करावणहारा ॥ (593-12)
अंतरि गुरमुखि तू वसहि जिउ भावै तिउ निरजासि ॥१॥ (20-19)
अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर नाउ ॥ (517-15)
अंतरि गोविंद जिसु लागै प्रीति ॥ (491-2)
अंतरि चतुराई थाइ न पाई बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (775-16)
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥ (124-9)
अंतरि चिंता नीद न सोवै ॥ (646-3)
अंतरि चिंता नैणी सुखी मूलि न उतरै भुख ॥ (319-4)
अंतरि चोरु किउ सादु लहीजै ॥ (905-9)
अंतरि चोरु मुहै घरु मंदरु इनि साकति दूतु न जाता हे ॥७॥ (1031-13)
अंतरि जपु तपु संजमो गुर सबदी जापै ॥ (1092-11)
अंतरि जिस कै सचु वसै सचे सची सोइ ॥ (27-2)
अंतरि जूठा किउ सुचि होइ ॥ (1344-18)
अंतरि जोति निरंतरि बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई ॥ रहाउ ॥ (634-10)
अंतरि जोति परगटु पासारा ॥ (126-10)
अंतरि जोति परगासीआ नानक नामि समाइ ॥१॥ (1421-9)
अंतरि जोति प्रगटी मनु मानिआ हरि सहजि समाधि लगाइ ॥३॥ (1199-13)
अंतरि जोति प्रगासीआ एकसु सिउ लिव लाइ ॥ (46-2)
अंतरि जोति भई गुर साखी चीने राम करमा ॥ (1110-19)
अंतरि जोति भली जगजीवन ॥ (1031-8)
अंतरि जोति राम परगासा गुरमुखि बिरलै जानी ॥१॥ रहाउ ॥ (970-11)
अंतरि जोति सबदि सुखु वसिआ जोती जोति मिलाइआ ॥६॥ (1068-9)
अंतरि जोति सबदु धुनि जागै सतिगुरु झगरु निबेरै ॥३॥ (489-12)
अंतरि जोरु हउमै तनि माइआ कूड़ी आवै जाइ ॥ (1422-2)
अंतरि ततु गिआनि हउमै मारे ॥ (128-16)
अंतरि तामसु आपु न पछाणै ॥ (231-8)
अंतरि तिसना फिरै अहंकारी ॥ (230-14)
अंतरि तिसा भूख अति बहुती भउकत फिरै दर बारु ॥२॥ (1132-11)
अंतरि तीरथु गिआनु है सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥ (587-5)
अंतरि तेरै हरि वसै गुर सेवा सुखु पाइ ॥ रहाउ ॥ (33-16)
अंतरि तेरै हरि वसै गुरमुखि सदा हजूरि ॥ (1283-18)
अंतरि त्रिसना भुख है मूरख भुखिआ मुए गवार ॥ (647-11)
अंतरि त्रिसना मरि गई हरि गुण गावीता ॥ (955-16)

अंतरि थान ठहरावन कउ कीए ॥ (913-13)
अंतरि देउ न जानै अंधु ॥ (1160-7)
अंतरि देखि सबदि मनु मानिआ अवरु न रांगनहारा ॥ (1331-17)
अंतरि नव निधि नामु है खानि खरचनि न निखुटई हरि गुण सहजि रवंनि ॥३२॥ (756-15)
अंतरि नव निधि नामु है मेरी जिंदुड़ीए गुरु सतिगुरु अलखु लखाए राम ॥ (539-9)
अंतरि नामु कमलु परगासा ॥ (412-4)
अंतरि नामु निधानु गुरमुखि पाईऐ ॥ (369-7)
अंतरि नामु निधानु दिखाइआ ॥ (798-16)
अंतरि नामु निधानु है पूरै सतिगुरि दीआ दिखाई ॥१॥ रहाउ ॥ (425-12)
अंतरि नामु परापति हीरा ॥ (1042-2)
अंतरि नामु मुखि नामु है नामे सबदि वीचारा ॥३॥ (426-4)
अंतरि नामु रविआ निहकेवलु त्रिसना सबदि बुझाई हे ॥१०॥ (1044-10)
अंतरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ (1247-4)
अंतरि नामु वसै पति ऊतम होइ ॥ रहाउ ॥ (664-16)
अंतरि नामु वसै सुखु होई ॥२॥ (880-4)
अंतरि नामु सबदि पछाता ॥ (1048-2)
अंतरि नावणु साचु पछाणै ॥ (414-17)
अंतरि निधानु मन करहले भ्रमि भवहि बाहरि भालि ॥ (235-5)
अंतरि निहकेवलु हरि रविआ सभु आतम रामु मुरारी ॥६॥ (1233-16)
अंतरि पंच अगनि किउ धीरजु धीजै ॥ (905-8)
अंतरि परगासु घटि चानणा हरि लधा टोलै ॥ (955-8)
अंतरि परगासु मति ऊतम होवै हरि जपि गुणी गहीरु ॥ (516-11)
अंतरि परगासु महा रसु पीवै दरि सचै सबदु वजावणिआ ॥१॥ (113-13)
अंतरि परगासु हरि नामु धिआवै ॥ रहाउ ॥ (664-10)
अंतरि पिआरु भगती राता सहजि मते बणि आई हे ॥६॥ (1044-5)
अंतरि पिआस उठी प्रभ केरी सुणि गुर बचन मनि तीर लगईआ ॥ (835-19)
अंतरि पिआस चात्रिक जिउ जल की सफल दरसनु कदि पांउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1202-12)
अंतरि पिआस हरि नाम की गुरु तुसि मिलावै सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (40-14)
अंतरि पिरी पिआरु किउ पिर बिनु जीवीऐ राम ॥ (1113-16)
अंतरि पूजा थानु मुरारा ॥ (411-16)
अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥ (471-16)
अंतरि पूजा मन ते होइ ॥ (1173-3)
अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥ (289-15)
अंतरि प्रीतमु वसिआ धुरि करमु लिखिआ करतारि ॥ (551-11)
अंतरि प्रीति भगति साची होइ ॥ (1129-12)
अंतरि प्रेमु परापति दरसनु ॥ (1032-4)
अंतरि प्रेमु रतंना ॥ (764-11)

अंतरि प्रेमु लगा हरि सेती घरि सोहै हरि प्रभ नारी ॥ (576-8)
अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥ (294-8)
अंतरि बहि कै करम कमावै सो चहु कुंडी जाणीऐ ॥ (138-13)
अंतरि बाहरि अवरु न कोइ ॥ (411-19)
अंतरि बाहरि इकु इक रीतावीआ ॥ (964-8)
अंतरि बाहरि इकु नैण अलोवणा ॥ (523-6)
अंतरि बाहरि एकु तू आपे देहि बुझाई राम ॥ (571-18)
अंतरि बाहरि एकु दिखाइआ ॥४॥३॥५४॥ (385-1)
अंतरि बाहरि एकु न जाणै साचु कहे ते छोहै ॥ (1013-3)
अंतरि बाहरि एकु पछाणै इउ घरु महलु सिञापै ॥ (930-10)
अंतरि बाहरि एकु है बहु बिधि स्रिसटि उपाई ॥ (427-11)
अंतरि बाहरि एको जाणै ॥ (224-2)
अंतरि बाहरि एको जाणै ॥ (943-6)
अंतरि बाहरि एको जाणै ता हरि नामि लगै पिआरो ॥ (944-17)
अंतरि बाहरि एको जानिआ नानक अवरु न दूआ ॥४॥६॥७॥ (1127-9)
अंतरि बाहरि एको वेखै विचहु भरमु चुकाए ॥११॥ (909-5)
अंतरि बाहरि काज बिरूधी चीतु सु बारिक राखीअले ॥४॥१॥ (972-17)
अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥ (292-13)
अंतरि बाहरि तेरी बाणी ॥ (99-13)
अंतरि बाहरि थान थनंतरि जत कत पेखउ सोई ॥ (619-1)
अंतरि बाहरि निकटे सोइ ॥ (1139-14)
अंतरि बाहरि पुरखु निरंजनु आदि पुरखु आदेसो ॥ (1126-19)
अंतरि बाहरि भगती राते सचि नामि लिव लागी ॥ (570-14)
अंतरि बाहरि भालि सबदि निहालिआ ॥२॥ (752-17)
अंतरि बाहरि मुखि दे गिरासु खिनु खिनु पोचारि ॥ (168-2)
अंतरि बाहरि रवि रहिआ तिस नो जाणै दूरि ॥ (47-11)
अंतरि बाहरि संगि किआ को लुकि करै ॥ (958-3)
अंतरि बाहरि संगि सहाई गिआन जोगु ॥ (398-18)
अंतरि बाहरि संगि है नानक काइ दुराइ ॥१॥ (259-17)
अंतरि बाहरि सदा संगि करनैहारु पछाणु ॥ (298-8)
अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु ता सिउ नेहु न लावै ॥ (220-3)
अंतरि बाहरि सदा हदूरे परमेसरु प्रभु साथे ॥ (453-15)
अंतरि बाहरि सबदि सु जुगता ॥ (939-11)
अंतरि बाहरि सभु किछु जाणै आपे ही आपि पतीजा हे ॥६॥ (1074-3)
अंतरि बाहरि सरबति रविआ मनि उपजिआ बिसुआसो ॥ (80-1)
अंतरि बाहरि सो प्रभु जाणै ॥ (1042-14)
अंतरि बाहरि हउ फिरां भी हिरदै रखा समालि ॥२१॥ (1423-11)

अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको दूजा अवरु न कोई ॥ (445-10)
अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको मिलि हरि जन मंगल गाए ॥ (774-4)
अंतरि बाहरि हरि प्रभु साथे ॥ (107-13)
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥ (267-13)
अंतरि बिखिआ उतरी घेरे ॥ (372-17)
अंतरि बिखु बाहरि निभराती ता जमु करे खुआरी ॥६॥ (1013-9)
अंतरि बिखु मुखि अम्रितु सुणावै ॥ (194-3)
अंतरि बिबेकु सदा आपु वीचारे गुर सबदी गुण गावणिआ ॥३॥ (128-17)
अंतरि ब्रहमु न चीनई मनि मूरखु गावारु ॥ (86-8)
अंतरि ब्रहमु पछाणिआ गुर की वडिआई ॥७॥ (425-18)
अंतरि भगति हरि हरि उरि धारु ॥ (1261-15)
अंतरि भरमु गइआ भउ भागा ॥ (1061-4)
अंतरि भाहि तिसै तू रखु ॥ (878-7)
अंतरि मन तन बसि रहे ईत ऊत के मीत ॥ (253-4)
अंतरि ममता कूरि कूड़ु विहाझे कूड़ि लई बलि राम जीउ ॥ (773-9)
अंतरि ममता रोगु लगाना हउमै अहंकारु वधाइआ ॥ (445-13)
अंतरि महलु गुर सबदि पछाणै ॥ (364-3)
अंतरि महलु पिरु रावे कामणि गुरमती वीचारे ॥ (245-8)
अंतरि माइआ मोह गुबारा जिउ सुपनै सुधि न होई हे ॥११॥ (1045-12)
अंतरि मैलु अगिआनी अंधा किउ करि दुतरु तरीजै हे ॥१४॥ (1050-2)
अंतरि मैलु जे तीरथ नावै तिसु बैकुंठ न जानां ॥ (484-14)
अंतरि मैलु तीरथ भरमीजै ॥ (905-9)
अंतरि मैलु न उतरै ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वेसु ॥ (22-10)
अंतरि मैलु न उतरै हउमै बिनु गुर बाजी हारी ॥१॥ (495-9)
अंतरि मैलु लगी नही जाणै बाहरहु मलि मलि धोवै ॥ (139-13)
अंतरि मैलु लागी बहु दूजै भाए ॥ (116-8)
अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ ॥ (598-7)
अंतरि रंगि राती सहजे माती गइआ दुसमनु दूखु सबाइआ ॥ (584-11)
अंतरि रतन जवेहर माणक गुर किरपा ते लीजै ॥७॥ (1324-10)
अंतरि रतन पदारथ हित कौ दुरै न लाल पिआरी ॥ (1198-5)
अंतरि रतनु पदारथु मेरै परम ततु वीचारो ॥ (764-11)
अंतरि रतनु बीचारे ॥ (775-1)
अंतरि रतनु मिलै मिलाइआ ॥ (117-2)
अंतरि रवतौ राज रविंदा ॥२॥ (1331-12)
अंतरि राम राइ प्रगटे आइ ॥ (1141-4)
अंतरि रोगु महा अभिमाना दूजै भाइ खुआई ॥२॥ (732-8)
अंतरि रोगु महा दुखु भारी बिसटा माहि समाहा हे ॥१०॥ (1058-4)

अंतरि लहरि लोभानु परानी सो प्रभु चिति न आवै ॥ (77-15)
अंतरि लागि न तामसु मूले विचहु आपु गवाए ॥ (29-15)
अंतरि लागी जलि बुझी पाइआ गुरमुखि गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (20-19)
अंतरि लालचु भरमु है भरमै गावारी ॥ (1243-4)
अंतरि लोभ हलकु दुखु भारी बिनु बिबेक भरमाइ ॥१॥ (1132-15)
अंतरि लोभु करै नही बूझै ॥ (1049-9)
अंतरि लोभु झूठु अभिमानु ॥ (832-14)
अंतरि लोभु फिरहि हलकाए ॥ (372-15)
अंतरि लोभु भउकै जिसु कुता ॥ (1046-10)
अंतरि लोभु भरमु अनल वाउ ॥ (364-15)
अंतरि लोभु मनि मैलै मलु लाए ॥ (1062-10)
अंतरि लोभु मनु बिखिआ माहि ॥ (1169-9)
अंतरि लोभु महा गुबारा तिन कै निकटि न कोई जाहि ॥ (652-16)
अंतरि लोभु महा गुबारा तुह कूटै दुख खाइ ॥४॥ (1199-14)
अंतरि लोभु महा गुबारा फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥७॥ (130-8)
अंतरि लोभु विकारु है दूजै भाइ खुआइ ॥ (950-9)
अंतरि वसतु अनूप निरमोलक गुरि मिलिऐ हरि धनु पाइआ ॥१३॥ (1039-10)
अंतरि वसतु अनेक मनमुखि नही पाईऐ ॥ (369-8)
अंतरि वसतु दिसंतरि जाइ ॥ (1139-13)
अंतरि वसतु न जाणन्ही घटि ब्रहमु लुकाणा ॥४॥ (419-2)
अंतरि वसतु न जाणहि भेदु ॥ (355-14)
अंतरि वसतु मूड़ा बाहरु भाले ॥ (117-17)
अंतरि वसिआ अलख अभेवा गुरमुखि होइ लखाइ ॥ (1259-16)
अंतरि वसै चूकै मै मोर ॥ (1331-15)
अंतरि वसै न बाहरि जाइ ॥ (728-11)
अंतरि वसै न लागै जम पीर ॥ (159-16)
अंतरि वासु बहुतु मुसकाई भ्रमि भूला मिरगु सिंङ्हारे ॥ (982-9)
अंतरि सतिगुरु गुरू सभ पूजे सतिगुर का दरसु देखै सभ आइ ॥ (1423-8)
अंतरि सबदि मिली सहजे तपति बुझाई राम ॥ (440-1)
अंतरि सबदु अपारा हरि नामु पिआरा नामे नउ निधि पाई ॥ (569-12)
अंतरि सबदु नाही किउ दरि जाए ॥ (1051-19)
अंतरि सबदु निधानु है मिलि आपु गवाईऐ ॥७॥ (228-18)
अंतरि सबदु निरंतरि मुद्रा हउमै ममता दूरि करी ॥ (939-6)
अंतरि सबदु मसतकि वडभागे ॥ (1050-8)
अंतरि सबदु मिटिआ अगिआनु अंधेरा ॥ (798-7)
अंतरि सबदु रविआ गुरु पाइआ सगले दूख निवारे ॥ (1249-15)
अंतरि सबदु वसाइआ दुखु कटिआ चानणु कीआ करतारि ॥ (549-10)

अंतरि सबदु सदा सुखदाता गुरमुखि बूझै कोई हे ॥५॥ (1045-5)
अंतरि सबदु साचि लिव लाइ ॥१०॥ (931-4)
अंतरि सहसा बाहरि माइआ नैणी लागसि बाणी ॥ (877-1)
अंतरि सांति न आवई ना सचि लगै पिआरु ॥६॥ (66-10)
अंतरि सांति मनि सुखु होइ सच संजमि कार कमाइ ॥ (591-11)
अंतरि सांति सदा सुखु दरि सचै सोभा पाहि ॥ (591-4)
अंतरि सांति सदा सुखु पाइआ गुरमती नामु लीजै हे ॥१०॥ (1049-16)
अंतरि सांति सदा सुखु होवै हरि राखिआ उर धारि ॥३॥ (1132-13)
अंतरि सांति सहजि सुखु पाए ॥ (665-4)
अंतरि साचि नामि रसि राता ॥ (194-4)
अंतरि साचु बाहरि साचु वरताए ॥ (232-3)
अंतरि साचु भरमु चुकाए ॥ (1063-5)
अंतरि साचु रवहि रंगि राते सहजि समावै सोई हे ॥१२॥ (1045-14)
अंतरि साचु सभे सुख नाला ॥ (412-11)
अंतरि साचु सहज घरि आवहि ॥ (226-17)
अंतरि सीतल साति वसै जपि हिरदै सदा सुखु होइ ॥ (511-18)
अंतरि सुंनं बाहरि सुंनं त्रिभवण सुंन मसुंनं ॥ (943-15)
अंतरि सुखु तेरै मनि भाई ॥ (1068-4)
अंतरि सूखा बाहरि सूखा हरि जपि मलन भए दुसटारी ॥१॥ (916-14)
अंतरि हरि गुरू धिआइदा वडी वडिआई ॥ (307-1)
अंतरि हरि धनु समझ न होई ॥ (1048-18)
अंतरि हरि नामु बासना समाणी ॥ (317-10)
अंतरि हरि नामु सबदि सुहावा ॥ (1065-3)
अंतरि हरि नामु सरब धरणीधर साकत कउ दूरि भइआ अहंकारी ॥ (1198-18)
अंतरि हरि रंगु उपजिआ गाइआ हरि गुण नामु ॥१३॥ (1090-19)
अंतरि हरि रसु रवि रहिआ चूका मनि अभिमानु ॥ (26-7)
अंतरि होइ गिआन परगासु ॥ (278-3)
अंतरु देखि निरंतरि बूझै अनत न मनु डोलाइआ ॥१३॥ (1042-12)
अंतरु निरमलु अम्रित सरि नाए ॥ (363-15)
अंतरु निरमलु निरमल बाणी हरि गुण सहजे गावणिआ ॥६॥ (114-2)
अंतरु बिगसै अनदिनु लिव लागी ॥ (232-15)
अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥ (525-17)
अंतरु मैला बाहरु नित धोवै ॥ (1151-14)
अंतरु सचा मनु सचा सची सिफति सनाइ ॥ (565-5)
अंतरु सीतलु सांति होइ नामे सुखु होई ॥६॥ (424-17)
अंतरे हउमै ममता कामु क्रोधु चतुराई राम ॥ (775-15)
अंति काल प्रभ भए सहाई इत उत राखनहारे ॥ (382-7)

अंति कालि किछु साथि न चालै जो दीसै सभु तिसहि मइआ ॥ (906-18)
अंति कालि जो इसत्री सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ (526-7)
अंति कालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ (526-9)
अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ (526-5)
अंति कालि जो लड़िके सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ (526-8)
अंति कालि तिथै धुहै जिथै हथु न पाइ ॥ (1417-15)
अंति कालि नाराइणु सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ (526-10)
अंति कालि पछुतासी अंधुले जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥ (76-1)
अंति कालि मतु लागै भीड़ ॥ (954-3)
अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥१॥ (536-16)
अंति खलोआ आइ जि सतिगुर अगै घालिआ ॥ (1284-10)
अंति चलदिआ होइ बेली जमदूत कालु निखंजनो ॥ (923-6)
अंति न काहू संग सहाई ॥२॥ (692-10)
अंति न साहिबु सिमरिआ जाई ॥३॥ (750-15)
अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (656-8)
अंति बार संगि तेरै इहै एकु जातु है ॥१॥ (1352-9)
अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ ॥१॥ (632-1)
अंति सखाई चलणवारा ॥ (1042-19)
अंति सखाई पाइआ जन मुकति दुआरा ॥७॥ (422-15)
अंति होवै वैर विरोधु को सकै न छडाइआ ॥ (1250-1)
अंतु तेरा तूंहै जाणहि तूं सभ महि रहिआ समाए ॥ (542-2)
अंतु न करणै देणि न अंतु ॥ (5-7)
अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥ (5-7)
अंतु न जापै कीता आकारु ॥ (5-8)
अंतु न जापै पारावारु ॥ (5-8)
अंतु न पारा कीमति नही पाई ॥ (1067-7)
अंतु न पारावार ॥ (895-12)
अंतु न पारावारु न किन ही पाइआ ॥ (1289-9)
अंतु न पावत देव सबै मुनि इंद्र महा सिव जोग करी ॥ (1409-1)
अंतु न पावहि अलख अभेवा ॥ (1053-19)
अंतु न पावहि जलहि मीन ॥ (1182-3)
अंतु न पावहि वडे वडेरे ॥ (1033-7)
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥ (5-7)
अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥ (5-6)
अंतु नही किछु पारावारा ॥ (277-1)
अंतु नाही किछु पारावारा ॥ (562-9)
अंतु नाही किछु पारावारु ॥ (178-17)

अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ (923-15)
अंतो न पाइआ किनै तेरा आपणा आपु तू जाणहे ॥ (918-13)
अंदरहु अंना बाहरहु अंना कूड़ी कूड़ी गावै ॥ (960-5)
अंदरहु कपटु विकारु गइआ मनु सहजे जिता ॥ (512-2)
अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ (917-18)
अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥ (473-15)
अंदरहु त्रिसना अगनि बुझी हरि अम्रित सरि नाता ॥ (510-18)
अंदरहु त्रिसना भुख गई सचै नाइ पिआरि ॥ (647-12)
अंदरहु थोथा कूड़िआरु कूड़ी सभ खचा ॥ (1099-15)
अंदरहु दुरमति दूजी खोई सो जनु हरि लिव लागा ॥ (768-1)
अंदरहु बाहरहु अंधिआं सुधि न काई पाइ ॥ (647-4)
अंदरहु मुकतु लेपु कदे न लाए ॥ (412-7)
अंदरि कपटु उदरु भरण कै ताई पाठ पड़हि गावारी ॥ (1246-16)
अंदरि कपटु सदा दुखु है मनमुख धिआनु न लागै ॥ (851-17)
अंदरि कपटु सभु कपटो करि जाणै कपटे खपहि खपाही ॥ (652-13)
अंदरि कमाणा सरपर उघड़ै भावै कोई बहि धरती विचि कमाई ॥ (316-7)
अंदरि कोट छजे हटनाले ॥ (1033-10)
अंदरि तिसना अगि है मनमुख भुख न जाइ ॥ (1424-4)
अंदरि त्रिसना बहुतु छादन भोजन की आसा ॥ (140-6)
अंदरि धीरक होइ पूरा पाइसी ॥ (510-11)
अंदरि धोखा नीद न सोवै ॥ (85-7)
अंदरि नामु निधानु सदा गुण सारई ॥ (1425-7)
अंदरि परगासु गुरू ते पाए ॥ (1063-10)
अंदरि बहै तपा पाप कमाए ॥ (315-19)
अंदरि महल अनेक हहि जीउ करे वसेरा ॥ (425-14)
अंदरि महल रतनी भरे भंडारा ॥ (126-11)
अंदरि मैलु न उतरै हउमै फिरि फिरि आवै जावै ॥ (960-6)
अंदरि मोहु नित भरमि विआपिआ तिसटसि नाही देहा ॥ (960-14)
अंदरि रंगु सदा सचिआरा ॥ (1057-13)
अंदरि राजा तखतु है आपे करे निआउ ॥ (1092-17)
अंदरि लाल जवेहरी गुरमुखि हरि नामु पड़ु ॥ (952-6)
अंदरि वरतै ठाढि प्रभि चिति आइऐ ॥ (520-4)
अंदरि संसा दूखु विआपे सिरि धंधा नित मार ॥ (852-4)
अंदरि सचा नेहु लाइआ प्रीतम आपणै ॥ (758-14)
अंदरि सची भगति है सहजे ही पति होइ ॥ (1285-17)
अंदरि सहजु न आइओ सहजे ही लै खाइ ॥ (587-1)
अंदरि सहसा दुखु है आपै सिरि धंधै मार ॥ (508-17)

अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै ॥२॥ (690-7)
अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै जीउ ॥ (690-5)
अंदरि सुखु न होवई मनमुख जनमु खुआरु ॥ (1094-2)
अंदरि हीरा लालु बणाइआ ॥ (112-9)
अंदरि होइ सु निकलै नह छपै छपाइआ ॥ (1243-13)
अंदरु अम्रिति भरपूरु है चाखिआ सादु जापै ॥ (1092-12)
अंदरु खाली प्रेम बिनु ढहि ढेरी तनु छारु ॥१॥ (62-17)
अंदरु खोजे सबदु सालाहे बाहरि काहे जाहा हे ॥६॥ (1056-17)
अंदरु खोजै ततु लहै पाए मोख दुआरु ॥ (650-13)
अंदरु खोलै दिब दिसटि देखै मुकति भंडारा ॥२॥ (425-13)
अंदरु त्रिपति संतोखिआ फिरि भुख न लगै आइ ॥ (649-19)
अंदरु मुसकि झकोलिआ कीमति कही न जाइ ॥२॥ (1091-11)
अंदरु रचै सच रंगि जिउ मंजीठै लालु ॥ (1278-17)
अंदरु रचै हरि सच सिउ रसना हरि गुण गाइ ॥१॥ (29-3)
अंदरु लगा राम नामि अम्रित नदरि निहालु ॥१॥ (48-4)
अंदरु विधा सचि नाइ बाहरि भी सचु डिठोमि ॥ (966-9)
अंदरु साचा मनु तनु साचा भगति भरे भंडारी हे ॥१५॥ (1051-4)
अंदरु सीतलु सांति है हिरदै सदा सुखु होइ ॥ (851-10)
अंध कूप ग्रिह महि तिनि सिमरिओ जिसु मसतकि लेखु लिखा ॥ (1212-6)
अंध कूप ते उधरु करते सगल घट प्रतिपाला ॥ (546-19)
अंध कूप ते कंढै चाड़े ॥ (132-1)
अंध कूप ते करु गहि लीना ॥ (804-17)
अंध कूप ते काढनहारा ॥ (1005-7)
अंध कूप ते काढि लीए तुम्ह आपि भए किरपाला ॥ (748-10)
अंध कूप ते काढिअनु लड़ु आपि फड़ाए ॥ (966-7)
अंध कूप ते काढे आपि ॥ (198-16)
अंध कूप ते तिह कढहु जिह होवहु सुप्रसंन ॥ (255-13)
अंध कूप ते सेई काढे ॥ (1086-14)
अंध कूप बिखिआ ते काढिओ साच सबदि बणि आई ॥६॥ (915-15)
अंध कूप महा घोर ते बाह पकरि गुरि काढि लीए ॥२॥ (383-4)
अंध कूप महा भइआन नानक पारि उतार ॥३॥८॥३०॥ (1273-2)
अंध कूप महि गलत थे काढे दे हाथे ॥१॥ (813-4)
अंध कूप महि दीपकु बलिओ गुरि रिदै कीओ परगासा ॥ (1211-19)
अंध कूप महि पतित बिकराल ॥ (267-10)
अंध कूप महि पतित होत जगु संतहु करहु परम गति मोरी ॥ (1216-5)
अंध कूप महि परिओ परानी भरम गुबार मोह बंधि परे ॥ (823-13)
अंध कूप महि हाथ दे राखहु कछू सिआनप उकति न मोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (208-14)

अंध कूपि माइआ मनु गाडिआ किउ करि उतरउ पारि सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ (876-11)
अंध गुंग पिंगुल मति हीना प्रभ राखहु राखनहारा ॥ (530-11)
अंध बिउहार बंध मनु धावै ॥ (1143-12)
अंध बिला ते काढहु करते किआ नाही घरि तेरै ॥ (530-15)
अंध वरतावा भाउ दूजा ॥२२॥ (1412-5)
अंधकार कोटि सूर उजारं ॥ (1359-19)
अंधकार दीपक दीपाहि ॥ (179-2)
अंधकार दीपक परगासे ॥ (287-14)
अंधकार महि गुर मंत्रु उजारा ॥ (864-18)
अंधकार महि भइआ प्रगास ॥ (864-5)
अंधकार महि रतनु प्रगासिओ मलीन बुधि हछनई ॥१॥ (402-6)
अंधकार सिमरत प्रकासं गुण रमंत अघ खंडनह ॥ (1355-13)
अंधकार सुखि कबहि न सोई है ॥ (325-1)
अंधकारु मिटिओ तिह तन ते गुरि सबदि दीपकु परगासा ॥ (208-9)
अंधा अखरु वाउ दुआउ ॥३॥१॥ (151-7)
अंधा आगू जे थीऐ किउ पाधरु जाणै ॥ (767-2)
अंधा कचा कचु निकचु ॥१॥ रहाउ ॥ (25-13)
अंधा किस नो बुकि सुणावै ॥ (1286-13)
अंधा चानणि रखीऐ दीवे बलहि पचास ॥ (143-8)
अंधा जगतु अंधु वरतारा बाझु गुरू गुबारा ॥२॥ (600-8)
अंधा झखि झखि पइआ झेरि ॥ (1287-2)
अंधा झगड़ा अंधी सथै ॥१॥ (1241-2)
अंधा न बूझै कालु नेड़ै आइआ ॥६॥ (1154-12)
अंधा भरिआ भरि भरि धोवै अंतर की मलु कदे न लहै ॥ (1343-7)
अंधा भूलि पइआ जम जाले ॥ (139-14)
अंधा लोकु न जाणई मूरखु एआणा ॥१॥ (333-17)
अंधा लोगु न जानई रहिओ कबीरा कूकि ॥८४॥ (1368-18)
अंधा सचा अंधी सट ॥२॥ (151-5)
अंधा सोइ जि अंधु कमावै तिसु रिदै सि लोचन नाही ॥ (1289-19)
अंधिआरे दीपकु चहीऐ ॥ (655-19)
अंधिआरै दीपक आनि जलाए गुर गिआनि गुरू लिव लागे ॥ (172-2)
अंधीं कमी अंध सजाइ ॥ (362-8)
अंधी कमी अंध सजाइ ॥ (1241-2)
अंधी कमी अंधु मनु मनि अंधै तनु अंधु ॥ (1287-14)
अंधी दुनीआ साहिबु जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (349-18)
अंधी नामु न चेतई सभ बाधी जमकालि ॥ (32-1)
अंधी फूकि मुई देवानी ॥ (1286-10)

अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥ (469-1)
अंधु अगिआनी कदे न सीझै ॥२॥ (160-18)
अंधु न जाणै फिरि पछुताणी ॥ (467-19)
अंधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥ (731-4)
अंधुले किआ पाइआ जगि आइ ॥ (1126-6)
अंधुले की मति अंधली बोली आइ गइआ दुखु ताहा हे ॥११॥ (1033-1)
अंधुले टिक निरधन धनु पाइओ प्रभ नानक अनिक गुनी ॥२॥२॥१२७॥ (830-1)
अंधुले त्रिभवण सूझिआ गुर भेटि पुनीता ॥१॥ (809-17)
अंधुले सोझी बूझ न काई लोभु बुरा अहंकारा हे ॥४॥ (1029-4)
अंधुलै दहसिरि मूंडु कटाइआ रावणु मारि किआ वडा भइआ ॥१॥ (350-15)
अंधुलै नामु विसारिआ मनमुखि अंध गुबारु ॥ (19-3)
अंधुलै भारु उठाइआ डूगर वाट बहुतु ॥ (729-6)
अंधुलै माणकु गुरु पकड़िआ निताणिआ तू ताणु ॥ (992-8)
अंधे अकली बाहरे किआ तिन सिउ कहीऐ ॥ (229-3)
अंधे अकली बाहरे मूरख अंध गिआनु ॥ (789-16)
अंधे आपु न जाणनी फकड़ु पिटनि धंधु ॥ (959-5)
अंधे आपु न पछाणनी दूजै पचि जावहि ॥ (1089-14)
अंधे एक न लागई जिउ बांसु बजाईऐ फूक ॥१५८॥ (1372-19)
अंधे एहि न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि ॥ (954-16)
अंधे का नाउ पारखू एवै करे गुआउ ॥ (1288-3)
अंधे का नाउ पारखू कली काल विडाणै ॥३॥ (229-4)
अंधे कै राहि दसिऐ अंधा होइ सु जाइ ॥ (954-15)
अंधे खावहि बिसू के गटाक ॥ (1224-12)
अंधे गुंगे अंध अंधारु ॥ (556-9)
अंधे गुरू ते भरमु न जाई ॥ (232-1)
अंधे चानणु ता थीऐ जा सतिगुरु मिलै रजाइ ॥ (551-4)
अंधे चेति हरि हरि राइआ ॥ (403-6)
अंधे जीवना वीचारि देखि केते के दिना ॥१॥ रहाउ ॥ (660-12)
अंधे तूं बैठा कंधी पाहि ॥ (43-9)
अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि ॥१॥ (954-16)
अंधेरा चानणु आपे कीआ ॥ (1056-13)
अंधेरु अंधी वापरै सगल लीजै खोइ ॥१॥ (1327-10)
अंधै नामु विसारिआ ना तिसु एह न ओहु ॥१॥ रहाउ ॥ (15-4)
अंधौ बोलौ मुगधु गवारु ॥ (1330-19)
अंन ते रहता दुखु देही सहता ॥ (1348-9)
अंन पउण थिरु न कुई ॥ (144-3)
अंन बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलीऐ हरि दुआरा ॥४॥ (642-3)

अंना बोला किछु नदरि न आवै मनमुख पापि पचावणिआ ॥४॥ (111-10)
अंना बोला खुइ उझड़ि पाइ ॥ (314-15)
अंनु खाणा कपड़ु पैनणु दीआ रस अनि भोगाणी ॥ (167-17)
अंनु जमिआ खेती भाउ करि हरि नामु सम्हारे ॥ (1318-7)
अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु ॥ (473-5)
अंनु धंनु बहुतु उपजिआ प्रिथमी रजी तिपति अघाइ ॥ (321-17)
अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥ (467-16)
अंनु न खाहि देही दुखु दीजै ॥ (905-10)
अंनु पाणी मुचु उपाइ दुख दालदु भंनि तरु ॥ (1251-8)
अंनै बाहरि जो नर होवहि ॥ (873-4)
अंनै बिना न होइ सुकालु ॥ (873-5)
अंन्हे वसि माणकु पइआ घरि घरि वेचण जाइ ॥ (1249-10)
अंसा अउतारु उपाइओनु भाउ दूजा कीआ ॥ (516-14)
अउखद आए रासि विचि आपि खलोइआ ॥ (1363-14)
अउखध करि थाकी बहुतेरे ॥ (1189-4)
अउखध कोटि सिमरि गोबिंद ॥ (866-16)
अउखध मंत्र तंत सभि छारु ॥ (196-1)
अउखध मंत्र तंत्र पर दुख हर सरब रोग खंडण गुणकारी ॥ (1388-19)
अउखध मंत्र मूल मन एकै मनि बिस्वासु प्रभ धारिआ ॥ (675-1)
अउखध मंत्र मूलु मन एकै जे करि द्रिड़ु चितु कीजै रे ॥ (156-3)
अउखधु खाइओ हरि को नाउ ॥ (378-12)
अउखधु तेरो नामु दइआल ॥ (675-6)
अउखधु नामु अपारु अमोलकु पीजई ॥ (1363-12)
अउखधु नामु निरमल जलु अम्रितु पाईऐ गुरू दुआरी ॥४॥ (616-18)
अउखधु हरि का नामु है जितु रोगु न विआपै ॥ (814-7)
अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले ॥ (682-1)
अउखे होवहि चोटा खाहि ॥३॥ (1129-9)
अउगण कटि मुखु उजला हरि नामि तराए ॥ (966-6)
अउगण काटि पापा मति खाई ॥ (833-2)
अउगण छोडहु गुण करहु ऐसे ततु परावहु ॥७॥ (418-13)
अउगण फिरि लागू भए कूरि वजावै तूरु ॥ (19-14)
अउगण विकणि पलरी जिसु देहि सु सचे पाए ॥ (303-9)
अउगण वीसरिआ गुणी घरु कीआ राम ॥ (1111-4)
अउगण सभि मिटाइ कै परउपकारु करेइ ॥३॥ (218-18)
अउगणवंती कामणी दुखु लागै बिललाइ ॥३॥ (559-10)
अउगणिआरी अउगणिआरि ॥ (1047-7)
अउगणिआरी कंत न भावै ॥ (1047-8)

अउगणिआरे कउ गुणु नानकै सचु मिलै वडाई ॥८॥२०॥ (421-18)
अउगणी भरिआ सरीरु है किउ संतहु निरमलु होइ ॥ (311-6)
अउगणु को न चितारदा गल सेती लाइक ॥ (1101-19)
अउगणु जाणै त पुंन करे किउ किउ नेखासि बिकाई ॥२॥ (1344-3)
अउगुण सबदि जलाए दूजा भाउ गवाए सचे ही सचि राती ॥ (583-5)
अउगुणवंती गुणु को नही बहणि न मिलै हदूरि ॥ (37-3)
अउघट की घट लागी आइ ॥२१॥ (1166-8)
अउघट रुधे राह गलीआं रोकीआं ॥ (1288-17)
अउतरिआ अउतारु लै सो पुरखु सुजाणु ॥ (968-6)
अउध अनल तनु तिन को मंदरु चहु दिस ठाटु ठइओ ॥ (336-16)
अउध घटै दिनसु रैणारे ॥ (13-15)
अउध घटै दिनसु रैनारे ॥ (205-13)
अउध बिहावत अधिक मोहावत पाप कमावत बुडे ऐसे ॥१॥ (829-11)
अउधू मेरा मनु मतवारा ॥ (969-7)
अउधू सहजे ततु बीचारि ॥ (1328-10)
अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ॥ (486-12)
अउर उपाव सगल तिआगि छोडे सतिगुर सरणि पइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1213-13)
अउर किस ही के तू मति ही जाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (1196-17)
अउर दुनी सभ भरमि भुलानी मनु राम रसाइन माता ॥४॥३॥ (92-19)
अउर धरम ता कै सम नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥२॥ (632-11)
अउर मुए किआ रोईऐ जउ आपा थिरु न रहाइ ॥ (337-16)
अउर सगल जगु माइआ मोहिआ निरभै पदु नही पावै ॥३॥८॥ (220-12)
अउर सभ तिआगि सेवा करि अचुत जो सभ ते ऊच ठाकुरु भगवानै ॥ (1320-14)
अउरन पहि जाना चूका ॥३॥ (655-16)
अउरी करम न लेखै लाइ ॥१॥ (954-6)
अउरु कोई निंद करै हरि जन की प्रभु ता का कहिआ इकु तिलु नही मानै ॥१॥ रहाउ ॥ (1320-14)
अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा ॥४॥१॥ (858-18)
अउसरि हरि जसु गुण रमण जितु कोटि मजन इसनानु ॥ (49-2)
अउसरु अपना बूझै न इआना ॥ (738-16)
अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो ॥१॥ रहाउ ॥ (727-2)
अउहठ पटण महि भीखिआ करै ॥ (952-15)
अउहठि हसत मड़ी घरु छाइआ धरणि गगन कल धारी ॥१॥ (907-13)
अउहठि हसत महि भीखिआ जाची एक भाइ लिव लागी ॥१॥ रहाउ ॥ (1332-5)
अक सिउ प्रीति करे अक तिडा अक डाली बहि खाइ ॥ (1286-13)
अकथ कथउ नह कीमति पाई ॥ (412-9)
अकथ कथा अगोचर नही जापै ॥ (1019-13)
अकथ कथा अमरा पुरी जिसु देइ सु पावै ॥ (1398-9)

अकथ कथा अम्रित प्रभ बानी ॥ (806-11)
अकथ कथा कथी न जाइ तीनि लोक रहिआ समाइ सुतह सिध रूपु धरिओ साहन कै साहि जीउ ॥ (1403-1)
अकथ कथा कहीऐ गुर भाइ ॥ (796-9)
अकथ कथा गुर बचनी आदरु ॥३॥ (685-16)
अकथ कथा नह बूझीऐ सिमरहु हरि के चरन ॥ (300-8)
अकथ कथा बीचारीऐ मनसा मनहि समाइ ॥ (1291-3)
अकथ कथा ले रहउ निराला ॥ (943-1)
अकथ कथा ले सम करि रहै ॥ (945-4)
अकथ कथा वीचारीऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥ (62-14)
अकथ कथा साची प्रभ पूरन जोती जोति समाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (897-8)
अकथ कहाणी तिनी जाणी जिसु आपि प्रभु किरपा करे ॥ (545-7)
अकथ कहाणी पदु निरबाणी को विरला गुरमुखि बूझए ॥ (844-6)
अकथ कहाणी प्रेम की को प्रीतमु आखै आइ ॥ (759-6)
अकथ की कथा सुणेइ ॥ (1289-5)
अकथा हरि अकथ कथा किछु जाइ न जाणी राम ॥ (453-4)
अकथी कथउ चिहनु नही कोई पूरि रहिआ मनि भाइदा ॥८॥ (1033-18)
अकथु कथउ गुरमति वीचारु ॥ (353-10)
अकथु कथहु मनु मनहि समाई ॥ (1031-3)
अकथु कथावै सबदि मिलावै ॥ (686-7)
अकथु कथै देखै अपरंपरु फुनि गरभि न जोनी जाइआ ॥४॥ (1040-18)
अकथै का किआ कथीऐ भाई चालउ सदा रजाई ॥ (635-1)
अकथो कथीऐ सबदि सुहावै ॥ (128-5)
अकथौ कथउ किआ मै जोरु ॥ (1331-14)
अकरणं करोति अखाद्यि खाद्यं असाज्यं साजि समजया ॥ (1358-10)
अकल कला नह पाईऐ प्रभु अलख अलेखं ॥ (1098-19)
अकल कला सचु साचि टिकावै ॥ (414-19)
अकलपत मुद्रा गुर गिआनु बीचारीअले घटि घटि साचा सरब जीआ ॥ (940-11)
अकलि एह न आखीऐ अकलि गवाईऐ बादि ॥ (1245-4)
अकली पड़्हि कै बुझीऐ अकली कीचै दानु ॥ (1245-5)
अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाईऐ मानु ॥ (1245-5)
अकलु गाइ जम ते किआ डरीऐ ॥ (1040-16)
अकह कहा कहि का समझावा ॥७॥ (340-10)
अकहु परमल भए अंतरि वासना वसाई ॥५॥ (565-13)
अकाल पुरख अगाधि बोध ॥ (212-15)
अकाल मूरति अजूनी स्मभउ कलि अंधकार दीपाई ॥१८॥ (916-3)
अकाल मूरति अजूनी स्मभौ मन सिमरत ठंढा थीवां जीउ ॥२॥ (99-6)
अकाल मूरति जिसु कदे नाही खउ ॥ (1082-13)

अकाल मूरति रिदै धिआइदा दिनु रैनि जपंथा ॥ (1101-11)
अकाल मूरति वरु पाइआ अबिनासी ना कदे मरै न जाइआ ॥ (78-13)
अकाल मूरति है साध संतन की ठाहर नीकी धिआन कउ ॥१॥ (1208-7)
अकिरतघणा का करे उधारु ॥ (898-18)
अकिरतघणा नो पालदा प्रभ नानक सद बखसिंदु ॥४॥१३॥८३॥ (47-7)
अकिरतघणा हरि विसरिआ जोनी भरमेतु ॥४॥ (706-18)
अकिरतघणै कउ रखै न कोई नरक घोर महि पावणा ॥७॥ (1086-6)
अकुल निरंजन अपर पर्मपरु सगली जोति तुमारी ॥२॥ (597-7)
अकुल निरंजन एकै भाइ ॥३॥ (343-10)
अकुल निरंजन पुरखु अगमु अपारीऐ ॥ (518-1)
अकुल निरंजन सिउ मनु मानिआ बिसरी लाज लोकानी ॥३॥ (1197-7)
अकुल निरंजन सिउ मनु मानिआ मन ही ते मनु मूआ ॥ (1127-8)
अकुल निरंजन सिउ सचि साची गुरमति नामु अधारो ॥४॥ (1255-16)
अकुल पुरख इकु चलितु उपाइआ ॥ (1351-7)
अखंड कीरतनु तिनि भोजनु चूरा ॥ (236-13)
अखंड पूरन जा को प्रतापु ॥ (1183-16)
अखंड मंडल निरंकार महि अनहद बेनु बजावउगो ॥१॥ (973-1)
अखर करम किरति सुच धरमा ॥ (261-14)
अखर करि करि बेद बीचारे ॥ (261-12)
अखर नाद कथन वख्याना ॥ (261-13)
अखर नानक अखिओ आपि ॥ (150-16)
अखर पड़ि पड़ि भुलीऐ भेखी बहुतु अभिमानु ॥ (61-2)
अखर बिरख बाग भुइ चोखी सिंचित भाउ करेही ॥ (354-17)
अखर महि त्रिभवन प्रभि धारे ॥ (261-12)
अखर मुकति जुगति भै भरमा ॥ (261-13)
अखर लिखे सेई गावा अवर न जाणा बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (1171-7)
अखर सासत्र सिम्रिति पुराना ॥ (261-13)
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥ (4-8)
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ (4-8)
अखरी नामु अखरी सालाह ॥ (4-7)
अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥ (4-8)
अखली ऊंडी जलु भर नालि ॥ (1274-17)
अखीं परणै जे फिरां देखां सभु आकारु ॥ (1241-19)
अखी अंधु जीभ रसु नाही कंनी पवणु न वाजै ॥ (354-16)
अखी अंधु जीभ रसु नाही रहे पराकउ ताणा ॥ (76-5)
अखी अंधु न दीसई वणजारिआ मित्रा कंनी सुणै न वैण ॥ (76-4)
अखी काढि धरी चरणा तलि सभ धरती फिरि मत पाई ॥७॥ (757-14)

अखी कुदरति कंनी बाणी मुखि आखणु सचु नामु ॥ (1168-7)
अखी त मीटहि नाक पकड़हि ठगण कउ संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ (662-19)
अखी देखि न रजीआ गुण गाहक इक वंन ॥ (147-5)
अखी देखै जिहवा बोलै कंनी सुरति समाइ ॥ (138-9)
अखी प्रेम कसाईआ जिउ बिलक मसाई राम ॥ (845-8)
अखी प्रेमि कसाईआ हरि हरि नामु पिखंन्हि ॥ (1318-1)
अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा ॥ (139-2)
अखी मीटि चलिआ अंधिआरा घरु दरु दिसै न भाई ॥ (596-8)
अखी लोड़ी ना लहा हउ चड़ि लंघा कितु ॥५॥ (729-7)
अखी संतोखीआ एक लिव लाइ ॥ (560-5)
अखी सूतकु वेखणा पर त्रिअ पर धन रूपु ॥ (472-16)
अखुट भंडार भरे कदे तोटि न आवै सदा हरि सेवहु भाई ॥३॥ (1333-4)
अखुटु खजाना सतिगुरि दीआ तोटि नही रे मूके ॥२॥ (215-8)
अखुटु नाम धनु कदे निखुटै नाही किनै न कीमति होइ ॥ (600-4)
अखुटु नाम धनु हरि तोटि न होई ॥ (161-14)
अगणत ऊच अपार ठाकुर अगम जा को धामा ॥ (546-3)
अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइओ ॥ (537-11)
अगनत गुण ठाकुर प्रभ तेरे ॥ (802-1)
अगनत साहु अपनी दे रासि ॥ (268-9)
अगनि उपाइ ईधन महि बाधी सो प्रभु राखै भाई हे ॥१॥ (1071-11)
अगनि उपाई वादु भुख तिहाइआ ॥ (1282-11)
अगनि कुंट महि उरध लिव लागा हरि राखै उदर मंझारा ॥ (720-8)
अगनि कुट्मब सागर संसार ॥ (675-12)
अगनि त्रिसना जलै वारो वार ॥३॥ (1173-14)
अगनि दहै अरु गरभ बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (329-13)
अगनि न दहै पवनु नही मगनै तसकरु नेरि न आवै ॥ (336-6)
अगनि न निवरै त्रिसना न बुझाई ॥ (298-16)
अगनि निवारी सतिगुर देव ॥ (898-17)
अगनि पाणी जीउ जोति तुमारी सुंने कला रहाइदा ॥२॥ (1037-12)
अगनि पाणी बोलै भड़वाउ ॥ (153-5)
अगनि पाणी सागरु अति गहरा गुरु सतिगुरु पारि उतारा हे ॥२॥ (1029-1)
अगनि बि्मब जल भीतरि निपजे काहे कमि उपाए ॥१॥ (156-10)
अगनि बि्मब पवणै की बाणी तीनि नाम के दासा ॥ (1328-5)
अगनि बुझी सभ होई सांति ॥ (395-17)
अगनि भखै भड़हाड़ु अनदिनु भखसी ॥ (1290-18)
अगनि भी जूठी पानी जूठा जूठी बैसि पकाइआ ॥ (1195-8)
अगनि मरै जलु पाईऐ जिउ बारिक दूधै माइ ॥ (63-8)

अगनि मरै जलु लोड़ि लहु विणु गुर निधि जलु नाहि ॥ (1411-2)
अगनि माहि होमत परान ॥ (265-13)
अगनि रसु सोखै मरीऐ धोखै भी सो किरतु न हारे ॥ (1108-10)
अगनि सागर गुरि पारि उतारे ॥२॥ (191-2)
अगनि सागर ते उतरे पारे ॥ (865-16)
अगनि सागर ते काढिआ प्रभि जलनि बुझाई ॥ (814-2)
अगनि सागर बूडत संसारा ॥ (804-2)
अगनि सागर भए सीतल साध अंचल गहि रहे ॥ (458-14)
अगनि सागरु गुरि पारि उतारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (178-6)
अगनि सागरु जपि उतरहि पारि ॥२॥ (192-2)
अगनि सागरु महा विआपै माइआ ॥ (192-10)
अगनि सीत का लाहसि दूख ॥ (179-2)
अगनी गंढु पाए लोहारु ॥ (143-10)
अगम अगम असंख लोअ ॥ (4-7)
अगम अगम आगाधि बोध कीमति परै न पावउ ॥ (401-9)
अगम अगम ऊचह ते ऊच ॥ (1182-3)
अगम अगम ठाकुरु आगाधि ॥ (535-11)
अगम अगमा कवन महिमा मनु जीवै सुनि सोऊ ॥ (535-2)
अगम अगाधि ऊच आपार ॥ (724-1)
अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥ (271-3)
अगम अगाधि सुनहु जन कथा ॥ (1235-16)
अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥ (795-11)
अगम अगोचर अलख अभेवा ॥ (98-8)
अगम अगोचर किछु मिति नही जानी ॥ (104-1)
अगम अगोचर कीमति नही पाई ॥ (1054-6)
अगम अगोचर प्रभ अबिनासी पूरे गुर ते जाते ॥२॥ (207-1)
अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥ (287-9)
अगम अगोचर प्रभु गुरमुखि पाईऐ अपुने सतिगुर कै बलिहारी ॥१॥ (506-17)
अगम अगोचर बेअंत अंतु न पाईऐ ॥ (521-4)
अगम अगोचर बेअंत अथाहा तेरी कीमति कहणु न जाई जीउ ॥३॥ (98-16)
अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ (1055-2)
अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ (1061-2)
अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ (1067-2)
अगम अगोचर सद अबिनासी सरणि संतन की लहीऐ ॥३॥ (610-11)
अगम अगोचर सदा बेअंता ॥ (184-6)
अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइआ ॥ (918-12)
अगम अगोचरु अनाथु अजोनी गुरमति एको जानिआ ॥ (1233-5)

अगम अगोचरु अपर अपारा पारब्रहमु परधानो ॥ (437-8)
अगम अगोचरु अलख अपारा ॥ (1060-18)
अगम अगोचरु अलख अपारे ॥ (740-7)
अगम अगोचरु अलखु है गुरमुखि हरि जाणु ॥११॥ (789-7)
अगम अगोचरु कीमति नही पाइ ॥ (931-19)
अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ (1053-17)
अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ (1060-16)
अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ (1076-12)
अगम अगोचरु कीमति नही पाई गुरमुखि मंनि वसाइदा ॥१५॥ (1061-13)
अगम अगोचरु तू धणी अविगतु अपारा ॥ (1009-9)
अगम अगोचरु तू धणी सचा अलख अपारु ॥ (1286-16)
अगम अगोचरु दरसु तेरा सो पाए जिसु मसतकि भागु ॥ (406-4)
अगम अगोचरु न जाई हरि लखिआ गुरु पूरा मिलै लखावीऐ रे ॥ रहाउ ॥ (1118-3)
अगम अगोचरु नामु निरंजनु गुरमुखि मंनि वसाई ॥६॥ (1234-8)
अगम अगोचरु बिअंतु सुआमी ता का अंतु न पाईऐ ॥ (1338-19)
अगम अगोचरु बेअंत अतोला है नाही किछु आहाड़ा ॥१०॥ (1081-16)
अगम अगोचरु रहिआ अभ अंत ॥ (1162-11)
अगम अगोचरु रहै निरंतरि गुर किरपा ते लहीऐ ॥ (333-11)
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ॥ (838-19)
अगम अगोचरु लखिआ न जाइ ॥ (841-6)
अगम अगोचरु वेपरवाहा भगति वछलु अथाहा हे ॥६॥ (1055-16)
अगम अगोचरु सचु साहिबु मेरा ॥ (743-4)
अगम अगोचरु साहिबु मेरा ॥ (106-16)
अगम अगोचरु साहिबो जीआं का परणा ॥ (323-4)
अगम अगोचरु सुआमी अपुना गुर किरपा ते सचु धिआई जीउ ॥२॥ (101-7)
अगम अथाह बेअंत परै परटिआ ॥ (957-7)
अगम अमोला अपर अपार ॥१॥ रहाउ ॥ (1144-4)
अगम अलख कारण पुरख जो फुरमावहि सो कहउ ॥ (1395-14)
अगम गुन जानु निधानु हरि मनि धरहु ध्यानु अहिनिसि करहु बचन गुर रिदै धरि ॥ (1400-16)
अगम दइआल क्रिपा प्रभि धारी मुखि हरि हरि नामु हम कहे ॥ (1336-7)
अगम दइआल प्रभू ऊचा सरणि साधू जोगु ॥ (501-13)
अगम द्रुगम गड़ि रचिओ बास ॥ (1162-7)
अगम निगम उधरण जरा जमिहि आरोअह ॥ (1406-15)
अगम निगमु सतिगुरू दिखाइआ ॥ (1016-12)
अगम पदारथ लाल अमोला भइओ परापति गुर चरनारै ॥ (1302-15)
अगम रूप अबिनासी करता पतित पवित इक निमख जपाईऐ ॥ (822-14)
अगम रूप का मन महि थाना ॥ (186-15)

अगम रूपु गोबिंद का अनिक नाम अपार ॥ (986-12)
अगमु अगोचर गति गभीरु सतिगुरि परचायउ ॥ (1408-1)
अगमु अगोचरु अति वडा अतुलु न तुलिआ जाइ ॥ (555-11)
अगमु अगोचरु कीमति नही पाई आपे अगम अथाहा हे ॥१॥ (1053-8)
अगमु अगोचरु गुरू दिखाइआ ॥ (1075-5)
अगमु अगोचरु देखि दिखाए नानकु ता का दासो ॥५॥ (938-16)
अगमु अगोचरु नामु हरि ऊतमु हरि किरपा ते जपि लइआ ॥ (1264-14)
अगमु अगोचरु पारब्रहमु सतिगुरि दरसायउ ॥ (1407-5)
अगमु अगोचरु मिति नही पाई ॥ (130-5)
अगमु अगोचरु मिति नही पाईऐ सगल घटा आधारु ॥ (1221-4)
अगमु अगोचरु सभ ते ऊचा गुर कै सबदि लखावणिआ ॥१॥ (130-11)
अगमु अगोचरु साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ (1193-12)
अगमु अगोचरु साहिबो समरथु सचु दातारु ॥ (962-5)
अगमु अनंतु अनादि आदि जिसु कोइ न जाणै ॥ (1404-2)
अगरक उस के वडे ठगाऊ ॥ (392-10)
अगली किछु खबरि न पाई ॥ (885-14)
अगले मुए सि पाछै परे ॥ (178-11)
अगह अगह बेअंत सुआमी नह कीम कीम कीमाए ॥ (1139-7)
अगह अगाधि ऊच अबिनासी कीमति जात न कही ॥ (1225-8)
अगह अगाह किछु मिति नही पाईऐ सो बूझै जिसु किरपंगना ॥९॥ (1080-13)
अगह अतोला नामो ॥१॥ रहाउ ॥ (1006-3)
अगह गहणु भ्रमु भ्रांति दहणु सीतलु सुख दातउ ॥ (1407-12)
अगह गहै गहि गगन रहाई ॥९॥ (340-12)
अगहु गहिओ नही जाइ पूरि स्रब रहिओ समाए ॥ (1386-17)
अगहु देखै पिछहु देखै तुझ ते कहा छपावै ॥३॥ (156-12)
अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूरि ॥९॥ (1378-7)
अगाधि बोध समरथ सुआमी सरब का भउ भंजना ॥ (456-13)
अगाधि बोधि अकथु कथीऐ सहजि प्रभ गुण गावए ॥ (843-10)
अगाधि बोधि अपार करते मोहि नीचु कछू न जाना ॥ (547-11)
अगाधि बोधि किछु मिति नही जानउ ॥ (181-12)
अगाधि बोधि हरि अगम अपारे ॥ (202-8)
अगिआन अंधेरा मिटि गइआ गुर गिआनु दीपाइओ ॥२॥ (241-15)
अगिआन का भ्रमु कटीऐ गिआनु परापति होइ ॥ (947-9)
अगिआन बिनासन तम हरण ऊचे अगम अमाउ ॥ (137-11)
अगिआन भरमु बिनसै दुख डेरा ॥ (1299-1)
अगिआन मती अंधेरु है बिनु पिर देखे भुख न जाइ ॥ (38-5)
अगिआन मोह मगन महा प्रानी अंधिआरे महि दीप ॥१॥ रहाउ ॥ (701-13)

अगिआनमती सदा अंधिआरा गुरमुखि बूझि हरि गावणिआ ॥२॥ (128-4)
अगिआनि अंधेरै सूझसि नाही बहुड़ि बहुड़ि भरमाता ॥३॥ (610-5)
अगिआनि न सूझै महा गुबारा ॥३॥ (759-14)
अगिआनि लाइ सवालिआ गुर गिआनै लाइ जगावैगो ॥ (1308-16)
अगिआनी अंधा अंधु अंधारा ॥ (116-10)
अगिआनी अंधा बहु करम द्रिड़ाए ॥ (1055-19)
अगिआनी अंधा मगु न जाणै फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥५॥ (110-7)
अगिआनी अंधु न बूझई सिर ऊपरि जम खड़गु कलखा ॥ (1087-19)
अगिआनी अंधु बहु करम कमावै दूजै भाइ पिआरु ॥ (589-5)
अगिआनी अंधे दूजै लागे ॥ (1063-12)
अगिआनी जगतु अंधु है भाई सूते गए मुहाइ ॥२॥ (603-7)
अगिआनी मतिहीणु है गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ (934-4)
अगिआनी मनि रोसु करेइ ॥ (268-10)
अगिआनी मानुखु भइआ जो नाही सो लोरै ॥ (212-11)
अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥ (450-7)
अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ ॥ (78-11)
अगिआनु अंधेरा कटिआ जोति परगटिआई राम ॥ (845-7)
अगिआनु अंधेरा बिनसि बिनासिओ घरि वसतु लही मन जागे ॥३॥ (172-3)
अगिआनु अंधेरा मिटि गइआ गुर चानणु गिआनु चरागु ॥ (849-4)
अगिआनु अंधेरु महा पंथु बिखड़ा अहंकारि भारि लदि लीजै ॥७॥ (1326-18)
अगिआनु अधेरा संती काटिआ जीअ दानु गुर दैणी ॥ (530-3)
अगिआनु त्रिसना इसु तनहि जलाए ॥ (1067-19)
अगिआनु भरमु दुखु कटिआ गुर भए बसीठा ॥ (708-10)
अगिआनु मिटिआ गुर रतनि अपारा ॥ (1069-17)
अगी पाला कपड़ु होवै खाणा होवै वाउ ॥ (142-5)
अगी पाला कि करे सूरज केही राति ॥ (150-8)
अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ ॥ (14-12)
अगै ओहु अगमु है वाहेदड़ु जाणु ॥२॥ (148-10)
अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥ (464-10)
अगै किआ जाणा नाहि मै भूले तू समझाइ ॥ (1010-9)
अगै गइआ जाणीऐ विणु नावै वेकार ॥३॥ (16-10)
अगै गइआ मुहे मुहि पाहि सु ऐसा आगू जापै ॥२॥ (140-13)
अगै गई न मंनीआ मरउ विसूरि विसूरे ॥ (558-3)
अगै गए न मंनीअनि मारि कढहु वेपीर ॥४॥१॥ (595-9)
अगै गए सिंञापसनि चोटां खासी कउणु ॥४४॥ (1380-4)
अगै जमकालु लेखा लेवै जिउ तिल घाणी पीड़ाइदा ॥९॥ (1063-7)
अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥ (469-6)

अगै जाति न पुछीऐ करणी सबदु है सारु ॥ (1094-1)
अगै दरगह लेखै मंगिऐ मारि खुआरु कीचहि कूड़िआर ॥ (950-18)
अगै दोजकु तपिआ सुणीऐ हूल पवै काहाहा ॥ (1383-2)
अगै नाउ जाति न जाइसी मनमुखि दुखु खाता ॥ (514-17)
अगै पिछै सुखु नही मरि जमहि वारो वार ॥ (649-1)
अगै पुछ न होवई जे सणु नीसाणै जाइ ॥२॥ (730-7)
अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि ॥७४॥ (1381-16)
अगै लेखै मंगिऐ होर दसूणी पाइ ॥२॥ (1240-16)
अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥ (472-7)
अगै विणु नावै को बेली नाही बूझै गुर बीचारी जीउ ॥९॥ (1016-17)
अगै संगती कुड़मी वेमुखु रलणा न मिलै ता वहुटी भतीजीं फिरि आणि घरि पाइआ ॥ (306-9)
अगै सचा सचि नाइ निरभउ भै विणु सारु ॥ (1242-2)
अगै सभु आपे वरतदा हरि सचा निआई ॥ (851-7)
अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥१॥ (22-19)
अगो दे जे चेतीऐ तां काइतु मिलै सजाइ ॥ (417-8)
अगो दे सत भाउ न दिचै पिछो दे आखिआ कमि न आवै ॥ (305-13)
अगो दे सदिआ सतै दी भिखिआ लए नाही पिछो दे पछुताइ कै आणि तपै पुतु विचि बहालिआ ॥ (315-14)
अघ अंतक बदै न सल्य कवि गुर रामदास तेरी सरण ॥२॥६०॥ (1406-16)
अघ कोटि हरते नाम लई ॥ (1272-10)
अघड़ो घड़ावै सबदु पावै अपिउ हरि रसु पीतिआ ॥ (575-13)
अचरज एकु सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहनु न जाई ॥ (92-14)
अचरज कथा महा अनूप ॥ (868-13)
अचरज रूप संतन रचे नानक नामहि रंग ॥१॥ (319-9)
अचरज रूपु निरंजनो गुरि मेलाइआ माइ ॥१॥ (46-19)
अचरज रूपु वडी वडिआई ॥ (1086-16)
अचरज साद ता के बरने न जाही ॥२॥ (742-14)
अचरजु एकु सुनहु रे भाई गुरि ऐसी बूझ बुझाई ॥ (215-9)
अचरजु किछु कहणु न जाई ॥ (883-16)
अचरजु कीआ करनैहारै नानक सचु वडिआई ॥४॥४॥२८॥ (678-6)
अचरजु तेरी कुदरति तेरे कदम सलाह ॥ (1138-1)
अचरजु तेरी वडिआई ॥ (630-1)
अचरजु भइआ जीव ते सीउ ॥१३॥ (344-4)
अचरजु सुनिओ परापति भेटुले संत चरन चरन मनु लाईऐ ॥१॥ (822-15)
अचरु चरै तां भरमु चुकाए ॥ (412-17)
अचरु चरै ता निरमलु होइ ॥ (159-8)
अचरु चरै ता निरमलु होई ॥ (665-11)
अचरु चरै ता सिधि होई सिधी ते बुधि पाई ॥ (607-15)

अचरु चरै बिबेक बुधि पाए पुरखै पुरखु मिलाइ ॥४॥ (1276-6)
अचल अमर निरभै पदु पाइओ जगत जाहि हैरानो ॥ (830-17)
अचारवंति साई परधाने ॥ (97-18)
अचिंत कम करहि प्रभ तिन के जिन हरि का नामु पिआरा ॥ (638-2)
अचिंत चरी हथि हरि हरि टेका ॥७॥ (1157-12)
अचिंत ठाकुर भेटे गुणतास ॥१॥ (896-14)
अचिंत दानु देइ प्रभु मेरा विचि पाथर कीट पखाणी हे ॥६॥ (1070-14)
अचिंत नामु वसिआ मनि आई ॥ (798-9)
अचिंत प्रभू धुरि लिखिआ लेखु ॥ (1157-13)
अचिंत प्रभू हम कीआ दिलासा ॥ (1157-7)
अचिंत मिटिओ है सगलो भरमा ॥ (1157-10)
अचिंत मिलिओ प्रभु ठाकुरु एकु ॥ (1157-13)
अचिंत लालु ग्रिह भीतरि प्रगटिओ अगम जैसे परखावत ॥३॥ (1205-8)
अचिंत वसिओ मनि सुख बिस्रामा ॥ (1157-10)
अचिंत सोइ जागनु उठि बैसनु अचिंत हसत बैरागी ॥ (1217-11)
अचिंत हमारी पूरन आसा ॥ (1157-8)
अचिंत हमारे बिनसे बैर ॥ (1157-9)
अचिंत हमारे मिटे अंधेर ॥ (1157-9)
अचिंत हमारै अनहत वाजै ॥ (1157-11)
अचिंत हमारै कारज पूरे ॥ (1157-6)
अचिंत हमारै गोबिंदु गाजै ॥६॥ (1157-11)
अचिंत हमारै बैरी मीता ॥ (1157-7)
अचिंत हमारै भरे भंडार ॥२॥ (1157-6)
अचिंत हमारै भोजन भाउ ॥ (1157-5)
अचिंत हमारै मनु पतीआना ॥ (1157-11)
अचिंत हमारै लथे विसूरे ॥ (1157-6)
अचिंत हमारै लीचै नाउ ॥ (1157-5)
अचिंत हमारै सबदि उधार ॥ (1157-5)
अचिंत हम्हा कउ सगल सिधांतु ॥ (1157-8)
अचिंतु जालु कालु चक्रु पेल ॥१॥ (899-8)
अचिंतु हम कउ गुरि दीनो मंतु ॥४॥ (1157-8)
अचिंतु हरि नामु तिन कै मनि वसिआ सचै सबदि समाहि ॥ (592-9)
अचिंतो उपजिओ सगल बिबेका ॥ (1157-12)
अचिंतो ही इहु मनु वसि कीता ॥३॥ (1157-7)
अचिंतो ही प्रभु घटि घटि डीठा ॥५॥ (1157-9)
अचिंतो ही मनि कीरतनु मीठा ॥ (1157-9)
अचुत पारब्रहम परमेसुर अंतरजामी ॥ (1082-6)

अचुत पूजा जोग गोपाल ॥ (824-13)
अचेत इआने बारिक नानक हम तुम राखहु धारि करी ॥२॥९॥१८॥ (499-16)
अचेत पिंडी अगिआन अंधारु ॥ (842-18)
अचेत बिवसथा महि लपटानै ॥१॥ रहाउ ॥ (740-9)
अचेत मूड़ा न जाणंत घटंत सासा नित प्रते ॥ (1359-13)
अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी ॥२॥ (657-19)
अछल अछेद अपार प्रभ ऊचा जा का रूपु ॥ (677-18)
अछल अछेद अभेद दइआल ॥ (868-18)
अछल अछेद अभेद प्रभ ऐसे भगवान ॥१॥ (816-8)
अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै ॥ (25-16)
अज कै वसि गुरि कीनो केहरि कूकर तिनहि लगाई रे ॥१॥ रहाउ ॥ (381-17)
अजगर कपटु कहहु किउ खुल्है बिनु सतिगुर ततु न पाइआ ॥११॥ (1043-9)
अजगरि भारि लदे अति भारी मरि जनमे जनमु गवाइआ ॥१॥ (1255-2)
अजपा जापु जपै मुखि नाम ॥ (840-10)
अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाइ ॥ (1291-4)
अजब कम करते हरि केरे ॥ (118-18)
अजर गहु जारि लै अमर गहु मारि लै भ्राति तजि छोडि तउ अपिउ पीजै ॥ (991-18)
अजराईलि फड़े फड़ि कुठे ॥ (1019-19)
अजराईलु फरेसता कै घरि नाठी अजु ॥६८॥ (1381-10)
अजराईलु फरेसता तिल पीड़े घाणी ॥२७॥ (315-4)
अजराईलु फरेसता होसी आइ तई ॥ (953-14)
अजराईलु यारु बंदे जिसु तेरा आधारु ॥ (724-13)
अजरु जरै त नउ कुल बंधु ॥ (1289-6)
अजरु जरै नीझरु झरै अमर अनंद सरूप ॥ (1331-8)
अजरु जरै सु निझरु झरै ॥ (974-15)
अजहु न आइओ त्रिभवण धणी ॥१४॥ (1166-3)
अजहु बिकार न छोडई पापी मनु मंदा ॥१॥ (855-17)
अजहु सु नाउ समुंद्र महि किआ जानउ किआ होइ ॥३९॥ (1366-10)
अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥ (726-17)
अजहू जीउ न छोडई रंकाई नैनाह ॥११८॥ (1370-15)
अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरारि ॥ (633-5)
अजा भोगंत कंद मूलं बसंते समीपि केहरह ॥ (1357-13)
अजामल कउ अंत काल महि नाराइन सुधि आई ॥ (902-1)
अजामल गज गनिका पतित करम कीने ॥ (692-13)
अजामल प्रीति पुत्र प्रति कीनी करि नाराइण बोलारे ॥ (981-15)
अजामलु उधरिआ कहि एक बार ॥ (1192-3)
अजामलु गनिका जिह सिमरत मुकत भए जीअ जानो ॥१॥ रहाउ ॥ (830-15)

अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥ (632-7)
अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गए हरि कै पासि ॥ (1124-17)
अजु कलि करदिआ कालु बिआपै दूजै भाइ विकारो ॥२॥ (581-10)
अजु न सुती कंत सिउ अंगु मुड़े मुड़ि जाइ ॥ (1379-9)
अजु फरीदै कूजड़ा सै कोहां थीओमि ॥२०॥ (1378-19)
अजै गंग जलु अटलु सिख संगति सभ नावै ॥ (1409-12)
अजै चवरु सिरि ढुलै नामु अम्रितु मुखि लीअउ ॥ (1409-13)
अजै सु चोभ कउ बिलल बिलाते नरके घोर पचाही ॥४॥ (969-15)
अजै सु जागउ आस पिआसी ॥ (357-2)
अजै सु रबु न बाहुड़िओ देखु बंदे के भाग ॥९०॥ (1382-13)
अजै सु रोवै भीखिआ खाइ ॥ (953-19)
अजैमल कीओ बैकुंठहि थान ॥ (874-9)
अजोनीउ भल्यु अमलु सतिगुर संगि निवासु ॥ (1398-2)
अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ॥३॥ (710-17)
अटकिओ सुत बनिता संग माइआ देवनहारु दातारु बिसेरो ॥ (1302-19)
अटल अखंड प्राण सुखदाई इक निमख नही तुझु गाइओ ॥४॥ (1017-4)
अटल अखइओ देवा मोहन अलख अपारा ॥ (1006-1)
अटल अछलु गुरमती धारु ॥ (413-4)
अटल अछेद अभेद सुआमी सरणि ता की आउ ॥ (501-17)
अटल पदवी नाम सिमरण द्रिड़ु नानक हरि हरि सरण ॥४॥३॥२९॥ (502-5)
अटल पदारथु पाइआ ॥ (132-16)
अटल बचन साधू जना सभ महि प्रगटाइआ ॥ (812-7)
अटल बचनु नानक गुर तेरा सफल करु मसतकि धारिआ ॥२॥२१॥४९॥ (621-1)
अटल भइओ ध्रूअ जा कै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइआ ॥ (632-5)
अटल सुखु नानक पाइआ ॥४॥५॥५५॥ (622-15)
अटलु अडोलु अतोलु मुरारे ॥ (1034-19)
अटलु अथाहु अतोलु तू तेरा अंतु न पारावारिआ ॥ (968-10)
अठ दस बेद सुने कह डोरा ॥ (892-7)
अठवै क्रोधु होआ तन नासु ॥ (137-18)
अठसठि तीरथ का मुखि टिका तितु घटि मति विगासु ॥ (17-3)
अठसठि तीरथ गुर सबदि दिखाए तितु नातै मलु जाए ॥ (753-16)
अठसठि तीरथ गुरू दिखाए घट ही भीतरि न्हाउगो ॥३॥ (973-4)
अठसठि तीरथ जह साध पग धरहि ॥ (890-14)
अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥ (473-16)
अठसठि तीरथ तिसु संगि रहहि जिन हरि हिरदै रहिआ समाइ ॥४॥ (491-18)
अठसठि तीरथ देनि न ढोई ब्रहमण अंनु न खाही ॥ (149-17)
अठसठि तीरथ देवी थापे पुरबी लगै बाणी ॥ (150-3)

अठसठि तीरथ नामु प्रभ जिसु नानक मसतकि भाग ॥२॥ (518-18)
अठसठि तीरथ नामु प्रभ नानक जिसु मसतकि भाग ॥१॥ (990-15)
अठसठि तीरथ पुंन किरिआ महा निरमल चारा ॥ (784-6)
अठसठि तीरथ पुंन पूजा नामु साचा भाइआ ॥ (767-1)
अठसठि तीरथ बहु घणा भ्रमि थाके भेखा ॥ (1008-17)
अठसठि तीरथ भरमि विगूचहि किउ मलु धोपै पापै ॥३॥ (1013-2)
अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु परापति होइ ॥२॥ (597-13)
अठसठि तीरथ मजना सभि पुंन तिनि किता ॥ (322-18)
अठसठि तीरथ मजनु कीआ सतसंगति पग नाए धूरि ॥२॥ (1198-11)
अठसठि तीरथ मजनु कीनो साधू धूरी नाता ॥१॥ (532-9)
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥ (136-2)
अठसठि तीरथ हरि नामु है किलविख काटणहारा ॥२॥ (1009-2)
अठसठि मजनु करि इसनाना भ्रमि आए धर सारी ॥ (495-12)
अठसठि मजनु चरनह धूरी ॥१॥ रहाउ ॥ (224-5)
अठसठि मजनु मैलु कटेरै ॥ (1304-15)
अठसठि मजनु संत धूराइ ॥२॥ (377-4)
अठसठि मजनु हरि रसु रेद ॥ (353-11)
अठारह भार बनासपती मालणी छिनवै करोड़ी मेघ माला पाणीहारीआ ॥ (1292-10)
अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरनि निज घरि वसै निज थाइ ॥ (91-11)
अठिसठि तीरथ गुर की चरणी पूजै सदा विसेखु ॥ (147-13)
अठी पहरी अठ खंड नावा खंडु सरीरु ॥ (146-9)
अठी वेपरवाह रहनि इकतै रंगि ॥ (146-4)
अठे पहर इकतै लिवै मंनेनि हुकमु अपारु ॥ (959-19)
अठे पहर भउदा फिरै खावण संदड़ै सूलि ॥ (319-19)
अढु न लहंदड़ो मुलु नानक साथि न जुलई माइआ ॥२॥ (708-4)
अणजाणत नामु वखाणीऐ ॥३॥ (1168-13)
अणडीठा किछु कहणु न जाइ ॥ (1256-8)
अणमंगिआ दानु दीजै दाते तेरी भगति भरे भंडारा ॥ (437-6)
अणमंगिआ दानु देवणा कहु नानक सचु समालि जीउ ॥२४॥१॥ (73-6)
अणमंगिआ दानु देवसी वडा अगम अपारु ॥३४॥ (934-12)
अणमड़िआ मंदलु बाजै ॥ (657-10)
अणहोदा अजगरु भारु उठाए निंदकु अगनी माहि जलावै ॥१॥ (373-8)
अणहोदा आपु गणाइदे जमु मारि करे तिन खुआरु ॥ (589-6)
अणहोदा नाउ धराइओ पाधा अवरा का भारु तुधु लइआ ॥३॥ (434-17)
अणहोदा भारु निंदकि सिरि धरा ॥३॥ (1145-12)
अणहोदे आपु वंडाए ॥ (1384-17)
अति ऊचा ता का दरबारा ॥ (562-9)

अति ऊतम अति ऊतम होवहु सभ सिसटि चरन तल दीजै ॥२॥ (1324-15)
अति ऊतमु हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए जितु जपिऐ पाप गवाते राम ॥ (539-14)
अति करोध सिउ लूझदे अगै पिछै दुखु पावहि ॥ (1089-14)
अति कुचील मिलै जम डांडा ॥३॥ (741-7)
अति गरबै मोहि फाकी तूं ॥१॥ रहाउ ॥ (374-2)
अति डाहपणि दुखु घणो तीने थाव भरीडु ॥१॥ (1091-1)
अति त्रिसना उडणै की डंझ ॥ (1257-9)
अति त्रिसना कबहू नही ध्रापे ॥२॥ (759-13)
अति निरमलु गुर सबद वीचार ॥ (362-5)
अति निरमाइलु सीझसि देहा ॥ (931-3)
अति पिआरा पवै खूहि किहु संजमु करणा ॥ (953-11)
अति प्रिअ प्रीति साध रज राचहि ॥ (251-2)
अति प्रीतम मन मोहना घट सोहना प्रान अधारा राम ॥ (542-15)
अति मोलु अफारा सच वापारा सचि वापारि लगे वडभागी ॥ (570-14)
अति रचिओ करि लीनो अपुना उनि छोडि सरापर जाना ॥३॥ (671-3)
अति रसि रंगि चलूलै राती दूजा रंगु न कोई ॥ (1332-2)
अति रसु मीठा नामु पिआरा ॥ (1042-1)
अति लुबध लुभानउ बिखम माइ ॥ (1187-18)
अति संचै समझै नही मूड़्ह ॥ (1252-12)
अति सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहु ॥ (55-7)
अति सुंदर अपार अनूप ॥ (279-11)
अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि ङिआनी धनवंत ॥ (253-8)
अति सुंदर बहु चतुर सिआने बिदिआ रसना चार ॥२॥ (534-13)
अति सुंदर मनमोहन पिआरे सभहू मधि निरारे ॥१॥ रहाउ ॥ (534-3)
अति सुंदरि बिचखनि तूं ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१२॥ (374-8)
अति सुआलिउ सुंदरी सोभावंती नारि ॥ (90-2)
अति सूची तेरी पाकसाल ॥ (374-3)
अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥ (282-14)
अतीत भए मारे बैराई ॥ (840-9)
अतीतु सदाए माइआ का माता ॥ (738-12)
अतुल अथाह अडोल सुआमी नानक खसमु हमारा ॥४॥५॥ (884-6)
अतुल बडाई अचुत अबिनासी नानकु उचरै हरि की जइआ ॥२॥८॥१२४॥ (829-8)
अतुला तोलु राम नामु है गुरमति को पुजै न तोल तुलीजै ॥७॥ (1325-3)
अतुलु अतुलु अतुलु नह तुलीऐ भगति वछलु किरपाए ॥ (820-9)
अतुलु किउ तोलिआ जाइ ॥ (797-3)
अतुलु किउ तोलीऐ विणु तोले पाइआ न जाइ ॥ (1282-1)
अत्यंत आसा आथित्य भवनं ॥ (1354-3)

अथोन पुरसादमरा ॥ (693-17)
अदली होइ बैठा प्रभु आपि ॥३॥ (199-17)
अदलु करे गुर गिआन समाना ॥ (1040-1)
अदिसटु अगोचरु अपर्मपरु करता गुर कै सबदि हरि धिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (1260-6)
अदिसटु अगोचरु अलखु निरंजनु सो देखिआ गुरमुखि आखी ॥१२॥ (87-19)
अदिसटु अगोचरु गुर बचनि धिआइआ पवित्र परम पदु पाइआ ॥ (442-7)
अदिसटु अगोचरु पारब्रहमु मिलि साधू अकथु कथाइआ था ॥ (1002-5)
अदिसटु दिसै ता कहिआ जाइ ॥ (222-12)
अदिसटु सदा रहै निरालमु जोती जोति मिलाई ॥२५॥ (910-3)
अद्रिसट अगोचरु नामु अपारा ॥ (1041-19)
अद्रिसटु अगोचर नामु धिआए सतसंगति मिलि साधू पाथ ॥ (1296-7)
अद्रिसटु अगोचरु अपर्मपर सुआमी गुरि पूरै प्रगट करि दीने ॥१॥ (668-16)
अद्रिसटु अगोचरु पकड़िआ गुर सबदी हउ सतिगुर कै बलिहारीऐ ॥ (1114-9)
अद्रिसटो करता द्रिसटो करता ॥ (862-4)
अध विचि फिरै मनमुखु वेचारा गली किउ सुखु पावै ॥ (305-13)
अध सेरु मांगउ दाले ॥ (656-15)
अधकी त्रिसना विआपै कामु ॥ (226-8)
अधम चंडाली भई ब्रहमणी सूदी ते स्रेसटाई रे ॥ (381-15)
अधरं धरं धारणह निरधनं धन नाम नरहरह ॥ (1355-18)
अधिआतम करम करे ता साचा ॥ (223-9)
अधिआतम करम करे दिनु राती ॥ (1039-4)
अधिआतम करम जे करे नामु न कब ही पाइ ॥ (33-8)
अधिआतमी हरि गुण तासु मनि जपहि एकु मुरारि ॥ (38-19)
अधिक गरत संसार सागर करि दइआ चारहु धोर ॥ (1121-4)
अधिक तिआस भेख बहु करै ॥ (352-1)
अधिक बकउ तेरी लिव रहीआ ॥ (1330-15)
अधिक बिथारु करउ किसु कामि ॥ (153-12)
अधिक सुआद रोग अधिकाई बिनु गुर सहजु न पाइआ ॥२॥ (1255-5)
अधु गुल्हा चिड़ी का चुगणु गैणि चड़ी बिललाइ ॥ (1286-11)
अनंत रूप तेरे नाराइणा ॥४॥१॥ (1163-14)
अनंद करै नानक का सुआमी ॥४॥१३॥६४॥ (387-3)
अनंद बिनोद मंगल गुण गावहु गुर नानक भए दइआला ॥ (619-15)
अनंद मंगल हरि चलत तमासे ॥ (1077-6)
अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ (917-2)
अनंदु भइआ सुखु पाइआ मिलि गुर गोविंदा ॥ (1096-18)
अन कउ मती दे चलहि माइआ का वापारु ॥ (56-8)
अन कउ मेरीआ ॥ (537-5)

अन काए रातड़िआ वाट दुहेली राम ॥ (546-8)
अन को कीजै मितड़ा खाकु रलै मरि जाइ जीउ ॥ (751-10)
अन को दरु घरु कबहू न जानसि एको दरु सचिआरा ॥ (1126-9)
अन ते टूटीऐ रिख ते छूटीऐ ॥ (830-12)
अन नाही नाही रे ॥ (830-12)
अन भै विसरे नामि समाइआ ॥१॥ (154-7)
अन रस नही चाहै एकै हरि लाहै ॥१॥ (830-11)
अन रस महि भोलाइआ बिनु नामै दुख पाइ ॥ (430-2)
अन रस राती रसना फीकी बोले हरि रसु मूलि न ताहा हे ॥१२॥ (1058-7)
अन रस साद गए सभ नीकरि बिनु नावै किछु न सुखावैगो ॥१॥ (1308-8)
अन रस सादे लगि रही दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥३॥ (558-18)
अन रसि लागा तूं फिरहि बिरथा जनमु गवाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (430-4)
अन रसु चूकै हरि रसु मंनि वसाए ॥ (115-14)
अन रूति नाही नाही ॥ (1185-6)
अन सिउ तोरि फेरि हां ॥ (409-8)
अनजानत किछु इनहि कमानो जप तप कछू न साधा ॥ (215-18)
अनजानत जो सेवै तेती नह जाइ गनी ॥ (456-4)
अनजानत बिखिआ महि रचै ॥ (277-7)
अनत कउ चाहन जो गए से आए अनत गवाइ ॥२॥ (156-19)
अनत कला होइ ठाकुरु चड़िआ ॥ (1081-2)
अनत तरंग भगति हरि रंगा ॥ (354-1)
अनत तरंगी नामु जिन जपिआ मै गणत न करि सकिआ ॥ (995-18)
अनत न जाइ परम सचु पावै ॥ (342-9)
अनता धनु धरणी धरे अनत न चाहिआ जाइ ॥ (156-18)
अनता धनु धरि दबिआ फिरि बिखु भालण गइआ ॥ (776-10)
अनद करहि तेरे दासा ॥ (626-9)
अनद करहि नर नारी ॥ (627-19)
अनद करहु तजि सगल बिकार ॥ (899-19)
अनद करहु पित माता ॥ (627-9)
अनद केल माइआ रंगि रसै ॥ (267-18)
अनद बिनोद अकथ कथा रसु साचै सहजि समाइआ ॥१॥ (1220-9)
अनद बिनोद करे दिन राती सदा सदा हरि केला जीउ ॥२॥ (102-5)
अनद बिनोद करे सद केला ॥ (130-17)
अनद बिनोद करे हरि सिमरनु तिसु माइआ संगि न तालका ॥१०॥ (1085-7)
अनद बिनोद चोज तमासे तुधु भावै सो होणा जीउ ॥२॥ (100-4)
अनद बिनोद तितै घरि सोहहि जो धन कंति सिगारी जीउ ॥१॥ (97-16)
अनद बिनोद पेखि प्रभ दरसन मनि मंगल गुन गावत ॥१॥ रहाउ ॥ (1205-4)

अनद बिनोद भए नित सखीए मंगल सदा हमारै राम ॥ (782-14)
अनद बिनोद भरेपुरि धारिआ ॥ (376-17)
अनद बिनोद मंगल सुख ताहा ॥१॥ (742-9)
अनद बिनोद सिमरहु प्रभु साचा विछुड़ि कबहू न जाई ॥ (782-12)
अनद बिनोद हरि नामि सुख नानक अम्रित रसु हरि भुंचना ॥१६॥२॥९॥ (1081-2)
अनद बिनोदी खसमु हमारा ॥३॥ (384-14)
अनद भए गुर मिलत क्रिपाल ॥ (190-10)
अनद मंगल कलिआण निधाना ॥ (104-3)
अनद मंगल कलिआण सदा सुखु कारजु सगला रासि थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1340-7)
अनद मंगल गाउ हरि जसु पूरन प्रगटिओ नेहु ॥१॥ रहाउ ॥ (1226-6)
अनद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ ॥१॥ (678-2)
अनद मंगल गुर चरणी लागे पाए सूख घनेरे राम ॥ (925-18)
अनद मंगल सुख पाए ॥१॥ (621-19)
अनद मूलु धिआइओ पुरखोतमु अनदिनु अनद अनंदे ॥ (800-11)
अनद रूप कीरतनु बिस्राम ॥ (392-15)
अनद रूप प्रगटिओ सभ थानि ॥ (899-3)
अनद रूप प्रगटे संसारी ॥२॥ (887-1)
अनद रूप मंगल सद जा कै ॥ (284-2)
अनद रूपु रविओ सभ मधे जत कत पेखउ जाई ॥२॥ (673-9)
अनद रूपु सभु नैन अलोइआ ॥४॥१७॥६८॥ (387-19)
अनद सहज रस सूख घनेरे ॥ (1340-4)
अनद सूख कलिआण मंगल सिउ घरि आए करि इसनाना ॥ रहाउ ॥ (621-13)
अनद सूख बिस्राम नित हरि का कीरतनु गाइ ॥ (962-8)
अनद सूख मंगल बने पेखत गुन गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (818-7)
अनदिन आपि आप सिउ लड़ै ॥ (344-16)
अनदिन उपजी सहज धुना ॥१॥ (1184-10)
अनदिनु अनदु भइआ मनु बिगसिआ उदम भए मिलन की आस ॥१॥ (1295-5)
अनदिनु अनदु भइआ वडभागी सभ आस पुजी जन केरी ॥३॥ (170-17)
अनदिनु अनदु होवै मनि मेरै गुरमुखि मागउ तेरा नामु निवाजा ॥१॥ रहाउ ॥ (798-11)
अनदिनु अनदु होवै वडभागी लै गुरि पूरै हरि लाहा ॥ रहाउ ॥ (606-15)
अनदिनु आपे कार कराए आपे मेलि मिलावणिआ ॥७॥ (113-11)
अनदिनु आरजा छिजदी जाए ॥ (1061-3)
अनदिनु एको नामु वखाणै ॥ (1261-8)
अनदिनु करम करहि बहुतेरे सुपनै सुखु न होई ॥१॥ (732-6)
अनदिनु कीरतनु करहि दिन राति ॥ (1173-19)
अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥ (281-13)
अनदिनु कीरतनु गुण रवै पिआरे अम्रिति पूर भरे ॥ (641-11)

अनदिनु कीरतनु सदा करहि गुर कै सबदि अपारा ॥ (593-10)
अनदिनु कीरतनु हरि गुण गाम ॥१॥ (807-5)
अनदिनु कीरतनु हरि गुन गाए ॥२॥ (684-5)
अनदिनु गावै एको नाम ॥३॥ (798-14)
अनदिनु गुण गावहि नित साचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥१॥ (599-16)
अनदिनु गुण गावहि सद निरमल सहजे नामि समाते ॥५॥ (69-7)
अनदिनु गुण गावा प्रभ तेरे ॥ (130-4)
अनदिनु गुण गावै दिनु राती सहज सेती घरि जाहा हे ॥१४॥ (1055-6)
अनदिनु गुण गावै नित साचे कथे अकथ कहाणी ॥ (771-19)
अनदिनु गुण गावै नित साचे सचि समावै सोई ॥१॥ (1258-18)
अनदिनु गुण गावै रंगि राता गुण कहि गुणी समाइदा ॥११॥ (1065-13)
अनदिनु गुण गावै सुख सहजे बिखु भवजलु नामि तरेइ ॥ (948-12)
अनदिनु गुण रवहि दिनु राती रसना हरि रसु भाइआ ॥२॥ (1067-4)
अनदिनु गुर मिलि जागे ॥ (1006-5)
अनदिनु गुरु गुरु करत विहाई ॥ (1069-13)
अनदिनु गुरु गोपालु धिआई हम सतिगुर विटहु घुमाए ॥२॥ (1114-3)
अनदिनु चिंता चिंतवै चिंता बधा जाइ ॥ (1424-5)
अनदिनु जपउ गुरू गुर नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (864-15)
अनदिनु जपउ गुरू गुर नाम ॥ (202-10)
अनदिनु जपउ नाम गुणतासि ॥ (389-4)
अनदिनु जपत रहै दिनु राती सहजे नामु धिआइआ ॥ (690-16)
अनदिनु जपतु रहउ तेरी सरणाइ ॥ (226-13)
अनदिनु जपहि हरि सारंगपाणी ॥ (161-19)
अनदिनु जलत रहहि दिनु राती भरमि भेखि भरमाई हे ॥६॥ (1046-7)
अनदिनु जलत रहहि दिनु राती हउमै खपहि खपाहि ॥ (652-16)
अनदिनु जलत रहै दिनु राती गुर बिनु सांति न होई हे ॥३॥ (1045-2)
अनदिनु जलदी फिरै दिनु राती बिनु पिर बहु दुखु पावणिआ ॥२॥ (112-1)
अनदिनु जागत रहै दिनु राती अपने प्रिअ प्रीति पिआरी ॥२६॥ (911-15)
अनदिनु जागहि ना सवहि जागत रैणि विहाणी ॥ (515-16)
अनदिनु जागि रहे लिव लाई ॥ (904-4)
अनदिनु जागिआ हां ॥ (410-8)
अनदिनु जागै कदे न सोवै सहजे अम्रितु पिआउ ॥ (853-5)
अनदिनु जागै सचि लिव लाए ॥ (1343-3)
अनदिनु जागै सचि लिव लावै ॥ (223-17)
अनदिनु जापै प्रभ निरबानी ॥ (260-11)
अनदिनु दाझहि साति न पाइ ॥ (664-7)
अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जम जाले ॥ (30-3)

अनदिनु दुखीआ दूजै भाइ रचाए ॥ (88-17)
अनदिनु दूजै भाइ फिराही ॥ (127-15)
अनदिनु धंधा करत विहाइ ॥ (1262-4)
अनदिनु धंधै विआपिआ सुपनै भी सुखु नाहि ॥ (591-3)
अनदिनु धिआईऐ नामु ॥ (896-18)
अनदिनु नगरी हरि गुण गाइआ ॥२॥ (165-4)
अनदिनु नाचै सकति निवारै सिव घरि नीद न होई ॥ (506-7)
अनदिनु नानकु नामु धिआए जीअ प्रान का दाता ॥ (621-4)
अनदिनु नामि रतनि लिव लागे जुगि जुगि साचि समाने ॥३॥ (1332-8)
अनदिनु नामि रता दिनु राती माइआ मोहु चुकाहा हे ॥८॥ (1057-1)
अनदिनु नामि रते सचु पाइआ आपे मेलि मिलाई हे ॥८॥ (1047-11)
अनदिनु नामि रहे लिव लाए ॥ (1277-18)
अनदिनु नामु जपहु गुरसिखहु हरि करता सतिगुरु घरी वसाए ॥ (308-5)
अनदिनु नामु जपहु बनवारी ॥ (1070-16)
अनदिनु नामु जपी सुखु पाई नित जीवा आस हरि तेरी ॥२॥ (170-16)
अनदिनु नामु दानु ब्रतकारी ॥ (1331-13)
अनदिनु नामु धिआइ हरि गुण गाईऐ ॥२॥ (369-8)
अनदिनु नामु धिआइदे नानक सचि समाइ ॥१॥ (1249-4)
अनदिनु नामु धिआईऐ सहजे नामि समाइ ॥ (29-3)
अनदिनु नामु धिआए साचा इसु जग महि नामो लाहा हे ॥७॥ (1053-15)
अनदिनु नामु धिआवहि रंगे ॥ (252-17)
अनदिनु नामु रवै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु होई हे ॥८॥ (1045-8)
अनदिनु नामु वखाणीऐ लाहा हरि रसु पीजै राम ॥ (568-11)
अनदिनु नामु सदा सदा धिआवहि साची दरगह पावहि मानु ॥१॥ रहाउ ॥ (1259-18)
अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनंदु ॥ (1421-15)
अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनंदु ॥ (854-18)
अनदिनु नामु सलाहनि रंगि राते गुर किरपा ते पावणिआ ॥३॥ (126-19)
अनदिनु नामे रतिआ जोती जोति समाइ ॥ (35-16)
अनदिनु नामे रतिआ दुखु बिखिआ विचहु जाइ ॥ (35-12)
अनदिनु नामे रतिआ नानक नामि समाइ ॥४॥२५॥५८॥ (36-18)
अनदिनु नामे रतिआ सचे सची सोइ ॥ (35-4)
अनदिनु नालि पिआरे संगु ॥१॥ (352-18)
अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥ (292-19)
अनदिनु प्रभ के हरि गुण गाइ ॥३॥ (1338-7)
अनदिनु प्रिउ प्रिउ करे दिनु राती पिर बिनु पिआस न जाए ॥ (1113-17)
अनदिनु फिरदा सदा रहै भुख न कदे जाइ ॥ (1092-5)
अनदिनु बधे मारीअनि फिरि वेला ना लहंनि ॥१॥ (233-12)

अनदिनु बाणी नामे राता ॥६॥ (415-2)
अनदिनु बाणी सबदि सुणाए सचि राते रंगि रंगावणिआ ॥४॥ (114-11)
अनदिनु बाणी सबदे गांवै साचि रहै लिव लाइ ॥१॥ (1259-9)
अनदिनु भगति करहि गुर आगै गुर कै सबदि सवारे ॥१॥ (1199-3)
अनदिनु भगति करहि गुर आगै सा धन कंत पिआरी ॥ (770-16)
अनदिनु भगति करहि दिन राती दुबिधा सबदे खोई ॥ (1133-13)
अनदिनु भगति करहि दिनु राती घर ही महि बैरागी ॥ (768-15)
अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु सचु लाहा ॥ (600-10)
अनदिनु भगति करहि दिनु राती हउमै मोहु चुकाइआ ॥ (65-4)
अनदिनु भगति करहि रंगि राते नानक सचि समाए ॥ (585-9)
अनदिनु भगति करहु दिनु राती इसु जुग का लाहा भाई ॥ (1333-2)
अनदिनु भगति करहु लिव लाए ॥ (1055-7)
अनदिनु भगति करे दिनु राती गुरमुखि सेवा होई हे ॥६॥ (1045-6)
अनदिनु भगति करे दिनु राती सहजे ही सुखु पावणिआ ॥८॥ (127-18)
अनदिनु भगति करे सदा साचे की लिव लाइ ॥ (34-1)
अनदिनु भगति गुर सबदी होइ ॥ (161-13)
अनदिनु भगति बणी खिनु खिनु निमख विखा ॥ (1116-7)
अनदिनु भगति सचु नामु द्रिड़ाए ॥ (423-16)
अनदिनु भगति हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (230-19)
अनदिनु भगती रतिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥ (27-18)
अनदिनु भगती रतिआ हरि नामे सुखि समाइ ॥३॥ (162-15)
अनदिनु भगती रतिआ हरि पारि उतारी ॥ (509-15)
अनदिनु भोग भोगे सुखि सोवै सबदि रहै लिव लाए ॥ (774-16)
अनदिनु भोग भोगे हरि सिउ पिआरो ॥ (1058-9)
अनदिनु भोगे हउमै मारि ॥ (424-8)
अनदिनु भोरु भइआ साचि समानी राम ॥ (1111-1)
अनदिनु मजनु सचा गुण गिआनु ॥ (840-2)
अनदिनु मारीअहि दुखु सबाइआ ॥ (1063-2)
अनदिनु मूसा लाजु टुकाई ॥ (390-9)
अनदिनु मेलु भइआ मनु मानिआ घर मंदर सोहाए ॥ (764-7)
अनदिनु रंगि रता गुण गावै अंदरि महलि बुलावणिआ ॥७॥ (115-8)
अनदिनु रतड़ीए सहजि मिलीजै ॥ (1112-1)
अनदिनु रहसु भइआ आपु गवाइआ ॥ (1109-15)
अनदिनु रहसु भइआ मनु मानिआ जोती जोति मिलाइ ॥१॥ (1199-10)
अनदिनु रहहि अनंदि नानक सहजि समाईऐ ॥१०॥ (1422-9)
अनदिनु रहै लिव लाइ त सहजि समावए जीउ ॥ (690-8)
अनदिनु राता मनु बैरागी सुंन मंडलि घरु पाइआ ॥ (436-14)

अनदिनु राते गुण रवहि भाई निरभउ गुर लिव लागु ॥४॥ (639-6)
अनदिनु राते जो हरि भाए ॥ (111-14)
अनदिनु राते सहजे माते सहजे हउमै मारी ॥५॥ (911-3)
अनदिनु राम के गुण कहीऐ ॥ (1206-2)
अनदिनु राम नामु जपि हिरदै गुर सबदी हरि एको जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (362-7)
अनदिनु राम नामु जपि हिरदै सरब कला गुणकारी ॥१॥ (1198-16)
अनदिनु रावहि पिरु आपणा सचु रखहि उर धारि ॥४॥ (428-14)
अनदिनु रावहि पिरु आपणा सहजे सचि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (38-11)
अनदिनु रावे हरि प्रभु अपणा विचहु आपु गवाए ॥ (771-15)
अनदिनु रोगी बिसटा के कीड़े बिसटा महि दुखु पावणिआ ॥७॥ (125-8)
अनदिनु लाले चाकरी गोले सिरि मीरा ॥ (1010-19)
अनदिनु लाहा सचु नामु धनु भगति भरे भंडारा ॥३॥ (565-2)
अनदिनु लाहा हरि नामु लैनि अखुट भरे भंडार ॥ (68-19)
अनदिनु लोकु भगति करे गुर कै सबदि समाइ ॥ (1420-7)
अनदिनु सच सबदि सालाही होरु कोइ न कीमति पावणिआ ॥६॥ (120-5)
अनदिनु सची भगति करि सचा लए मिलाइ ॥३॥ (994-3)
अनदिनु सची भगति करि सचै चितु लाई ॥१॥ (425-2)
अनदिनु सचु सलाहणा धनु धनु वडभाग हमारा ॥१॥ (564-18)
अनदिनु सचु सलाहणा सचे के गुण गाउ ॥ (53-2)
अनदिनु सदा जलदीआ फिरहि सेजै रवै न भतारु ॥५॥ (430-8)
अनदिनु सदा फिरै बिललादी बिनु पिर नीद न पावणिआ ॥४॥ (110-18)
अनदिनु सदा फिरै भ्रमि भूला बिनु नावै दुखु पावणिआ ॥२॥ (111-8)
अनदिनु सदा रवै दिनु राती मजीठै रंगु बणावणिआ ॥४॥ (112-3)
अनदिनु सदा रहहि रंगि राते भै भाइ भगति चितु लाई हे ॥७॥ (1046-9)
अनदिनु सदा रहै भै अंदरि भै मारि भरमु चुकावणिआ ॥५॥ (114-1)
अनदिनु सदा रहै रंगि राता करि किरपा भगति कराइदा ॥६॥ (1060-1)
अनदिनु सदा रहै रंगि राता दरि सचै सोझी पावणिआ ॥४॥ (110-6)
अनदिनु सदा विसटा महि वासा बिनु सेवा जनमु गवावणिआ ॥६॥ (119-13)
अनदिनु सदा हरि भगती राते इसु जग महि लाहा पाइआ ॥४॥ (1067-6)
अनदिनु सहज समाधि हरि लागी हरि जपिआ गहिर ग्मभीरा ॥ (574-18)
अनदिनु सहजि रहै रंगि राता राम नामु रिद पूजा ॥ (775-11)
अनदिनु सहसा कदे न चूकै बिनु सबदै दुखु पाए ॥ (550-1)
अनदिनु साचि नामि लिव लागी ॥ (1054-9)
अनदिनु साचु नामु उचरै ॥ (1172-6)
अनदिनु सारि समालि हरि राखहि गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥७॥ (112-18)
अनदिनु साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ ॥ (660-5)
अनदिनु सिमरहु नामु तजि लाज लोकाणीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (399-4)

अनदिनु सिमरहु तासु कउ जो अंति सहाई होइ ॥ (253-5)
अनदिनु सुखि माणे नित रलीआ नानक धुरि संजोगो ॥१॥ (773-5)
अनदिनु सूख सहज समाधी ॥ (1050-18)
अनदिनु सूचे हरि गुण संगा ॥ (354-2)
अनदिनु सेवकु सेवा करे हरि सचे के गुण गाई ॥ (592-3)
अनदिनु सेवनि गुरु आपणा अनदिनु अनदि रहंन्हि ॥ (1419-12)
अनदिनु सेवहि सची बाणी सबदि सचै ओमाहा हे ॥८॥ (1055-18)
अनदिनु सेवहि सहज सिउ सचे माहि समाइ ॥३॥ (428-4)
अनदिनु सेवी गुण रवा मनु सचै रचनी ॥ (791-11)
अनदिनु हरि का नामु वखाणी ॥ (1057-3)
अनदिनु हरि के गुण रवै गुण परगटु किता ॥ (512-3)
अनदिनु हरि गुण गावै सोइ ॥ (1261-11)
अनदिनु हरि गुण दीन जनु मांगै गुर कै सबदि उधारे ॥१॥ रहाउ ॥ (1155-6)
अनदिनु हरि जीउ सचा सेवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥६॥ (116-12)
अनदिनु हरि रंगि हरि गुण गावै हरि रंगी हरि रंगा ॥ (575-11)
अनदिनु हरि रविआ रिद अंतरि सहजि समाधि लगाही ॥२॥ (1259-1)
अनदिनु हरि सालाहहि साचा निरमल नादु वजावणिआ ॥६॥ (115-19)
अनदिनु हरि सेविहु सची बाणी हरि जीउ सबदि मिलाइदा ॥१॥ (1064-19)
अनदिनु हरि हरि उचरै गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (1258-15)
अनदिनु हरि हरि धिआइओ हिरदै मति गुरमति दूख विसारी ॥ (1262-18)
अनदिनु हरि हरि नामु धिआवहु गुर सतिगुर की मति लैनी ॥३॥ (800-9)
अनदिनु हिरदै जपउ जगदीसा ॥ (232-9)
अनदिनो प्रभ धिआवउ ॥ (408-18)
अनदिनो सबदि रवहु अनहद सबद वजाए राम ॥ (770-15)
अनदु करहु प्रभ के गुन गावहु ॥ (386-12)
अनदु करहु मिलि सुंदर नारी ॥ (806-13)
अनदु करै सासि सासि सम्हारै ना पोहै अगनारि ॥२॥ (379-12)
अनदु गरीबी साधसंगि जितु प्रभ चिति आए ॥ (745-8)
अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥ (287-15)
अनदु भइआ नानक मनि साचा पूरन पूरे नाद ॥२॥४६॥६९॥ (1217-19)
अनदु भइआ निकसी सभ पीरा सगल बिनासे दरदा जीउ ॥२॥ (101-13)
अनदु भइआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी ॥४॥७॥१८॥ (614-2)
अनदु भइआ वडभागीहो ग्रिहि प्रगटे प्रभ आइ जीउ ॥ (927-5)
अनदु भइआ सभि मिटे विसूरे ॥१॥ रहाउ ॥ (378-13)
अनदु भइआ सुख सहजि समाणे सतिगुरि मेलि मिलाई ॥२॥ (608-7)
अनदु संतन कै भगति गोविंद ॥ (676-16)
अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ (922-17)

अनदो अनदु घणा मै सो प्रभु डीठा राम ॥ (452-10)
अनपावनी भगति नही उपजी भूखै दानु न दीना ॥१॥ रहाउ ॥ (1253-5)
अनबोलत मेरी बिरथा जानी अपना नामु जपाइआ ॥ (1218-17)
अनबोले कउ तुही पछानहि जो जीअन महि होता ॥ (823-4)
अनभउ अचरज रूपु प्रभ पेखिआ मेरा मनु छोडि न कतहू जाइआ था ॥१॥ (1002-3)
अनभउ उनमानि अकल लिव लागी पारसु भेटिआ सहज घरे ॥ (1397-2)
अनभउ किनै न देखिआ बैरागीअड़े ॥ (1104-14)
अनभउ नगरु तहा सद वसै ॥६॥ (237-14)
अनभउ नेजा नामु टेक जितु भगत अघाणे ॥ (1398-7)
अनभउ पदु पावै आपु गवाए ॥ (1041-18)
अनभउ बिसरि गए प्रभु जाचिआ हरि निरमाइलु संगी ॥१॥ (1232-17)
अनभउ सबदु ततु निजु सार ॥१॥ (343-6)
अनभउ हरि हरि हरि लिव लागी हरि उर धारिओ गुरि निमखफा ॥ (1336-17)
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल मांही ॥१॥ (657-17)
अनल वाउ भरमि भुलाई ॥ (1048-19)
अनहत धुनि वाजहि नित वाजे हरि अम्रित धार रसि लीड़ा ॥१॥ (698-3)
अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो ॥ (921-19)
अनहत बाणी थानु निराला ॥ (186-17)
अनहत बाणी निरमल सबदु वजाए गुर सबदी सचि समावणिआ ॥४॥ (115-4)
अनहत वाजे वजहि घर महि पिर संगि सेज विछाई ॥ (247-19)
अनहत सबदु सुहावा ॥ (778-18)
अनहत सुंनि रते से कैसे ॥ (943-17)
अनहत सुंनु कहा ते होई ॥ (943-17)
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (13-3)
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (663-6)
अनहति राते इहु मनु लाइआ ॥ (940-2)
अनहति लाला बेधिआ प्रभ हेति पिआरी ॥ (1011-6)
अनहद चोज भगत भव भंजन अनहद वाजे धुनीऐ राम ॥ (783-12)
अनहद झुणकारे ततु बीचारे संत गोसटि नित होवै ॥ (783-13)
अनहद धुनि वाजहि नित वाजे गाई सतिगुर बाणी ॥ (442-8)
अनहद धुनी दरि वजदे दरि सचै सोभा पाइ ॥३॥ (42-3)
अनहद धुनी मेरा मनु मोहिओ अचरज ता के स्वाद ॥१॥ रहाउ ॥ (1226-17)
अनहद धुनी सद वजदे उनमनि हरि लिव लाइ ॥ (91-12)
अनहद बजहि सदा भरपूर ॥१॥ (971-8)
अनहद बाजित्रा तिसु धुनि दरबारा राम ॥ (846-8)
अनहद बाजे अचरज बिसमाद ॥ (888-17)
अनहद बाणी गुरमुखि जाणी बिरलो को अरथावै ॥ (945-13)

अनहद बाणी गुरमुखि वखाणी जसु सुणि सुणि मनु तनु हरिआ ॥ (781-16)
अनहद बाणी नादु वजाइआ ॥३॥ (375-11)
अनहद बाणी पाईऐ तह हउमै होइ बिनासु ॥ (21-3)
अनहद बाणी पूंजी ॥ (893-19)
अनहद बाणी सबदु वजाए ॥७॥ (231-16)
अनहद बाणी सबदु सुणाइआ ॥ (1154-3)
अनहद रुण झुणकारु सदा धुनि निरभउ कै घरि वाइदा ॥९॥ (1033-19)
अनहद रुण झुणकारु सहज धुनि साची कार कमाई हे ॥१२॥ (1072-6)
अनहद वाजे धुनि वजदे गुर सबदि सुणीजै ॥ (954-13)
अनहद वाजे सबद अगाजे नित नित जिसहि वधाई ॥ (924-17)
अनहद सबद अचरज बिसमाद ॥ (1143-5)
अनहद सबद वजाए हरि जीउ घरि आए हरि गुण गावहु नारी ॥ (770-15)
अनहद सबद वजे दरबारे ॥३॥ (1137-9)
अनहद सबद होत झुनकार ॥ (1162-9)
अनहद सबदि सुहावणे पाईऐ गुर वीचारि ॥२॥ (21-2)
अनहद सबदु दसम दुआरि वजिओ तह अम्रित नामु चुआइआ था ॥२॥ (1002-6)
अनहद सबदु निराला वाजे ॥ (839-14)
अनहद सबदु वजाइ जोती जोति धरि ॥ (790-14)
अनहद सबदु वजै दिनु राती ॥ (904-7)
अनहद सुणि मानिआ सबदु वीचारी ॥ (415-16)
अनहदि राता एक लिव तार ॥ (1188-16)
अनहदु वाजै निज घरि वासा ॥ (161-18)
अनहदु वाजै भ्रमु भउ भाजै ॥ (1034-1)
अनहदु वाजै सहजि सुहेला ॥ (97-10)
अनहदो अनहदु वाजै रुण झुणकारे राम ॥ (436-13)
अनाजु मगउ सत सी का ॥१॥ (695-18)
अनाथ के नाथे स्रब कै साथे जपि जूऐ जनमु न हारीऐ ॥ (80-16)
अनाथ को नाथु सरणि समरथा सगल स्रिसटि को माई बापु ॥ (825-12)
अनाथ दीन आसवंत ॥ (1322-15)
अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥ (290-10)
अनाथ नाथ गोबिंदह बलहीण बल केसवह ॥ (1355-18)
अनाथ नाथ दइआल नानक साधसंगति मिलि उधार ॥२॥ (455-19)
अनाथ नाथ प्रभ हमारे ॥ (533-6)
अनाथ नाथ सनाथ संतन कोटि पाप बिनास ॥ (1306-9)
अनाथ नाथे नानक सरणं ॥५॥ (1354-8)
अनाथ निरगुनि कछु न जाना मेरा गुणु अउगणु न बीचारीऐ ॥ (545-18)
अनाथ नीच सरणाइ नानक करि मइआ अपुना कीना ॥३॥ (1278-11)

अनाथ रञाणि उदरु ले पोखहि माइआ गईआ हाटि ॥ (1224-13)
अनाथह नाथ करे बलि जाउ ॥ (224-1)
अनाथह नाथ क्रिपाल दीन सम्रिथ संत ओटाइओ ॥६॥ (241-18)
अनाथह नाथ दइआल सुख सागर सरब दोख भै हरणी ॥ (1219-10)
अनाथह नाथु दीन दुख भंजन पूरि रहिओ घट वासी ॥१॥ (1206-4)
अनाथा को नाथु सरब प्रतिपालकु भगति वछलु हरि नाउ ॥ (1202-13)
अनाथा नाथ भगत भै मेटन ॥ (760-3)
अनाथा नाथु दीन दुख भंजन आपि लीए लड़ि लाई ॥ (1269-15)
अनाथा नाथु दीन दुख भंजनु सो गुर पूरे ते पाइणा ॥३॥ (1078-1)
अनिक अकास अनिक पाताल ॥ (1236-3)
अनिक अड्मबर माइआ के बिरथे ता सिउ प्रीति घटावउ ॥ (529-9)
अनिक अनाहद आनंद झुनकार ॥ (1236-11)
अनिक अनिक भाति बहु पेखे प्रिअ रोम न समसरि लाए ॥१॥ (533-15)
अनिक अनिक भोग राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भइआ ॥ (92-9)
अनिक इंद्र ऊभे दरबार ॥३॥ (1236-1)
अनिक उपरीआ ॥१॥ (537-4)
अनिक उपाव करउ माइआ कउ बचिति धरउ मेरी मेरी करत सद ही विहावै ॥ (686-19)
अनिक उपाव करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई ॥३॥ (205-4)
अनिक उपाव चितवीअहि बहुतेरे सा होवै जि बात होवैनी ॥ (800-7)
अनिक उपाव जतन करि थाके बारं बार भरमाई ॥१॥ (1191-9)
अनिक उपाव न छूटनहारे ॥ (288-14)
अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥ (288-8)
अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ ॥३॥ (658-1)
अनिक करम करि थाकिआ भाई फिरि फिरि बंधन पाइ ॥ (608-18)
अनिक करम कीए बहुतेरे ॥ (1075-18)
अनिक कला खेलै हरि राइ ॥ (1236-10)
अनिक कला लखी नह जाइ ॥ (294-10)
अनिक काज अनिक धावरता उरझिओ आन जंजारी ॥१॥ रहाउ ॥ (1215-19)
अनिक कोठरी बहुतु भाति करीआ आपि होआ रखवारा ॥ (206-9)
अनिक गिआन अनिक धिआन अनिक जाप जाप ताप ॥ (1153-3)
अनिक गुनित धुनित ललित अनिक धार मुनी ॥१॥ (1153-3)
अनिक गुपत प्रगटे तह चीत ॥१०॥ (1236-10)
अनिक छिद्र बोहिथ के छुटकत थाम न जाही करे ॥ (714-8)
अनिक छिद्र मन महि ढके निरमल द्रिसटेह ॥१॥ (812-13)
अनिक जतन उआ कै सरंजाम ॥१॥ रहाउ ॥ (888-6)
अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥ (278-14)
अनिक जतन करि इहु तनु राखहु रहै अवसथा पूरे ॥२॥ (1124-2)

अनिक जतन करि करह दिखाए साची साखी चीन्ही ॥५॥ (1235-10)
अनिक जतन करि काइआ पाली ॥ (325-13)
अनिक जतन करि कालु संताए ॥ (685-19)
अनिक जतन करि त्रिसन ना ध्रापै ॥ (266-1)
अनिक जतन करि रहणु न पावै आचु काचु ढरि पांही ॥१॥ (1273-16)
अनिक जतन करि रहे हरि अंतु नाही पाइआ ॥ (984-4)
अनिक जतन करि राखीऐ फिरि फिरि लपटाई ॥२॥ (855-19)
अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ ॥१॥ (659-16)
अनिक जतन गवनु करउ ॥ (1119-9)
अनिक जतन नही होत छुटारा ॥ (178-18)
अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास ॥ (346-18)
अनिक जनम कीए बहु रंगा ॥१॥ (325-19)
अनिक जनम बहु जोनी भ्रमिआ बहुरि बहुरि दुखु पाइआ ॥ (207-9)
अनिक जनम बिछुरत दुखु पाइआ ॥ (750-17)
अनिक जनम बीतीअन भरमाई ॥ (745-3)
अनिक जनम भ्रमतौ ही आइओ मानस जनमु दुलभाही ॥ (1207-7)
अनिक जनम भ्रमि थिति नही पाई ॥ (686-18)
अनिक जनम भ्रमे जोनि माहि ॥ (1192-14)
अनिक जनम विछुड़े दुखु पाइआ मनमुखि करम करै अहंकारी ॥ (607-2)
अनिक जला जे धोवै देही ॥ (200-1)
अनिक जीअ जा के ग्रिह माहि ॥ (1236-9)
अनिक जुगति करि बहुतु बीचारउ ॥ (804-5)
अनिक जुगति नही पाइआ ॥ (210-17)
अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥ (282-1)
अनिक जुगति सासत्र करि भातउ ॥ (251-5)
अनिक जुगति होवत बखिआन ॥ (1236-4)
अनिक जुगादि दिनस अरु राति ॥ (1236-8)
अनिक जोनि जनमहि मरहि आतम रामु न चीन ॥ (254-12)
अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥ (264-9)
अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥ (277-19)
अनिक जोनि भ्रमते प्रभ बिसरत सासि सासि हरि गाई ॥१॥ (1217-4)
अनिक जोनि भ्रमि भ्रमि भ्रमि हारे ॥ (740-7)
अनिक जोनि भ्रमिओ भ्रम भीतरि सुखहि नाही परवेसा रे ॥१॥ (403-19)
अनिक जोनि संकट नरक भुंचत सासन दूख गरति गरिओ है ॥ (1388-17)
अनिक जोनी भ्रमत हारिओ भ्रमत बारं बार ॥१॥ (1223-12)
अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥ (278-13)
अनिक तीरथ मजनु इसनानु ॥ (184-13)

अनिक दास कीरति करहि तुहारी ॥ (1305-13)
अनिक दूख देवहि अवरा कउ ॥ (389-14)
अनिक देवी देवा बहु भांति ॥४॥ (1236-2)
अनिक दोख अरु बहुतु सजाई ॥ (1005-3)
अनिक धरम अनिक कुमेर ॥ (1236-5)
अनिक धुनित ललित संगीत ॥ (1236-10)
अनिक नाद अनिक बाज निमख निमख अनिक स्वाद अनिक दोख अनिक रोग मिटहि जस सुनी ॥ (1153-4)
अनिक पड़दे महि कमावै विकार ॥ (194-3)
अनिक परलउ अनिक उतपाति ॥ (1236-8)
अनिक पवन पावक अरु नीर ॥ (1236-1)
अनिक पातिक हरता त्रिभवण नाथु री तीरथि तीरथि भ्रमता लहै न पारु री ॥ (695-5)
अनिक पाप जाहि निरमल मना ॥ (1146-1)
अनिक पाप ता के पानीहार ॥ (888-5)
अनिक पाप मेरे परहरिआ बंधन काटे मुकत भए ॥ (383-4)
अनिक पारजात अनिक मुखि बेन ॥ (1236-3)
अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥ (264-3)
अनिक पुरख अंसा अवतार ॥ (1236-1)
अनिक पुरीआ अनिक तह खंड ॥ (1236-7)
अनिक पूजा मै बहु बिधि खोजी सा पूजा जि हरि भावासि ॥ (1304-7)
अनिक प्रकार कीआ तिनि दानु ॥ (888-8)
अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥ (265-11)
अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥ (292-2)
अनिक प्रकार फिरत बिललाते मिलत नही गोसाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (532-12)
अनिक प्रकार भोजन नित खाते मुख दंता घसि खीन खइआ ॥ (826-7)
अनिक प्रकार भोजन बहु कीए बहु बिंजन मिसटाए ॥ (1266-7)
अनिक प्रकारी बसत्र ओढाए ॥ (684-5)
अनिक प्रकारी मोहिआ बहु बिधि इहु संसारु ॥ (50-9)
अनिक प्राछत मिटहि खिन महि रिदै जपि भगवान ॥ (1017-15)
अनिक बंच बल छल करहु माइआ एक उपाव ॥ (257-5)
अनिक बंधन तोरे नही जाहि ॥ (196-12)
अनिक बंधन माइआ भरमतु भरमाइआ गुण निधि नही गाइआ ॥ (213-12)
अनिक बना अनिक फल मूल ॥ (1236-7)
अनिक बरख कीए जप तापा ॥ (98-4)
अनिक बरन अनिक कनिक सुमेर ॥ (1236-6)
अनिक बसत्र सुंदर पहिराइआ ॥ (190-17)
अनिक बसुधा अनिक कामधेन ॥ (1236-3)
अनिक बाता सभि करि रहे गुरु घरि लै आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (812-8)

अनिक बार करउ तिह बंदन मनहि चर्हावउ धूप ॥१॥ (701-14)
अनिक बार करि बंदन संतन ऊहां चरन गोबिंद जी के बसना ॥१॥ रहाउ ॥ (1298-14)
अनिक बार कोटि जन ऊपरि नानकु वंञै वारना ॥८॥५॥ (915-8)
अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥ (287-2)
अनिक बार जाईऐ कुरबानु ॥१॥ (391-8)
अनिक बार नानक बलिहारा ॥ (195-16)
अनिक बार नानक बलिहारी ॥८॥१८॥ (288-1)
अनिक बार बंदन करतार ॥ (866-7)
अनिक बार भ्रमहि बहु जोनी टेक न काहू धरते ॥१॥ रहाउ ॥ (1267-5)
अनिक बार संतह डंडउत ॥१॥ (889-5)
अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥ (264-8)
अनिक बिघन ते साधू राखै ॥ (283-8)
अनिक बिलास करत मन मोहन पूरन होत न कामा ॥ (215-15)
अनिक बिसथार एक ते भए ॥ (289-7)
अनिक बींग दास के परहरिआ ॥ (742-16)
अनिक ब्रहमे जा के बेद धुनि करहि ॥ (1235-19)
अनिक भगत अनिक जन तारे सिमरहि अनिक मुनी ॥ (830-1)
अनिक भगत जा के चरन पूजारी ॥ (1142-18)
अनिक भगत बंदन नित करहि ॥ (287-10)
अनिक भांति आनूप रंग रे तिन्ह सिउ रुचै न लागिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1203-18)
अनिक भांति करि दुआरु न पावउ ॥ (1298-15)
अनिक भांति करि सेवा करीऐ ॥ (391-7)
अनिक भांति की एकै जाली ता की गंठि नही छोराइ ॥१॥ (1302-11)
अनिक भांति होइ पसरिआ नानक एकंकारु ॥१॥ (296-11)
अनिक भाति करि मणीए साजे काचै तागि परोही ॥ (609-12)
अनिक भाति माइआ के हेत ॥ (268-12)
अनिक भेख अरु ङिआन धिआन मनहठि मिलिअउ न कोइ ॥ (251-4)
अनिक भोग बिखिआ के करै ॥ (279-1)
अनिक महेस बैसि धिआनु धरहि ॥ (1235-19)
अनिक माइआ जा की लखी न जाइ ॥ (1236-9)
अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥ (264-6)
अनिक माइआ है ता की चेरि ॥ (888-5)
अनिक मुखी जपीऐ गोपाल ॥५॥ (1236-4)
अनिक रंग करहि बहु भाती जिउ पिता पूतु लाडाइदा ॥१४॥ (1076-12)
अनिक रंग जा के गने न जाहि ॥ (1235-18)
अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥ (293-16)
अनिक रंग निरगुन इक रंगा ॥ (803-12)

अनिक रंग बहु तरंग सरब को धनी ॥१॥ रहाउ ॥ (1153-2)
अनिक रंग माइआ के चितवत कबहू न सिमरै सारिंगपानी ॥१॥ रहाउ ॥ (390-10)
अनिक रंग माइआ के पेखे किछु साथि न चालै भोरा ॥१॥ (499-7)
अनिक रतन सागर दधि खीर ॥ (1236-2)
अनिक रसा खाए जैसे ढोर ॥ (190-15)
अनिक राज भोग बडिआई ॥ (290-13)
अनिक राज भोग रस माणी नाउ जपी भरवासा तेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (884-2)
अनिक रूप खिन माहि कुदरति धारदा ॥ (519-1)
अनिक रूप देखि नह पतीआना ॥ (179-6)
अनिक रूप रंग ब्रहमंड ॥ (1236-7)
अनिक रूप रंग भोग रसै ॥ (890-18)
अनिक लाभ मनोरथ लाधे ॥ (202-6)
अनिक लीला राज रस रूपं छत्र चमर तखत आसनं ॥ (707-13)
अनिक सजांई गणत न आवै गरभै गरभि भ्रमाहि ॥१॥ (1225-16)
अनिक सरोते सुनहि निधान ॥ (1236-5)
अनिक साज सीगार बहु करता जिउ मिरतकु ओढाइआ ॥ रहाउ ॥ (712-12)
अनिक साधनं न सिध्यते नानक असथ्मभं असथ्मभं असथ्मभं सबद साध स्वजनह ॥१७॥ (1355-11)
अनिक सासत्र सिम्रिति पुरान ॥ (1236-4)
अनिक सासन ताड़ंति जमदूतह तव संगे अधमं नरह ॥ (1358-7)
अनिक सिआने पचि गए ना निरवारी जाइ ॥१९६॥ (1375-2)
अनिक सुगंधत तन महि लावउ ॥ (373-11)
अनिक सूख चकवी नही चाहत अनद पूरन पेखि देंह ॥ (702-3)
अनिक सूर ससीअर नखिआति ॥ (1236-2)
अनिक सेख नवतन नामु लेहि ॥ (1236-6)
अनिक सोच करहि दिन राती बिनु सतिगुर अंधिआरी ॥३॥ (495-12)
अनिक स्वांग काछे भेखधारी ॥ (1299-5)
अनित बिउहार अचार बिधि हीनत मम मद मात कोप जरीआ ॥ (1303-16)
अनित्य रचना निरमोह ते ॥२३॥ (1356-5)
अनित्य वितं अनित्य चितं अनित्य आसा बहु बिधि प्रकारं ॥ (1355-8)
अनित्य हेतं अहं बंधं भरम माइआ मलनं बिकारं ॥ (1355-8)
अनिन उपाव करि हां ॥ (409-10)
अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ ॥ (1196-2)
अनु धनु उपजै बहु घणा कीमति कहणु न जाइ ॥ (1281-7)
अनु धनु बहुता उपजै धरती सोभा पाइ ॥ (1420-6)
अनूप पदारथु नामु सुनहु सगल धिआइले मीता ॥ (208-8)
अनेक असंख नाम हरि तेरे न जाही जिहवा इतु गनणे ॥१॥ रहाउ ॥ (1135-15)
अनेक उपाव करी गुर कारणि गुर भावै सो थाइ पाई ॥२९॥ (758-9)

अनेक करम करहि अभिमानी हरि रामो नामु चोराइआ ॥ (443-12)
अनेक जतन करे इंद्री वसि न होई ॥ (1062-13)
अनेक जतन करै जे कोई ॥ (1342-9)
अनेक जतन भेख करे जोगी रोगु न जाइ गवाइआ ॥९॥ (909-3)
अनेक जनम के विछुड़े जन मेले जा सति सति सतिगुर सरणि पवईआ ॥४॥ (836-19)
अनेक जनम पाप करि भरमे हुणि तउ सरणागति आए ॥ (1114-6)
अनेक जनम विछुड़े मेरे प्रीतम करि किरपा गुरू मिलावैगो ॥ (1310-12)
अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ (920-2)
अनेक तीरथ जे जतन करै ता अंतर की हउमै कदे न जाइ ॥ (491-4)
अनेक पातिक हरणं नानक साध संगम न संसयह ॥६७॥४॥ (1360-3)
अप तन का जो करे बीचारु ॥ (1196-11)
अपजसं मिटंत सत पुत्रह ॥ (1360-19)
अपजसु मिटै होवै जगि कीरति दरगह बैसणु पाईऐ ॥ (500-8)
अपड़ि कोइ न सकई जे सउ लोचै कोई ॥ (1416-18)
अपड़ि कोइ न सकै तिस नो गुर सबदी मेलाइआ ॥१॥ (1067-3)
अपणा आपु आपि तोलसी आपे मिलै मिलाइ ॥ (1282-2)
अपणा आपु तूं आपि पछाणहि ॥ (108-17)
अपणा आपु न पछाणई हरि प्रभु जाता दूरि ॥ (854-16)
अपणा आपु न पछाणहि संतहु कूड़ि करहि वडिआई ॥१३॥ (910-12)
अपणा कारजु आपि सवारे आपे धारन धारे ॥ (452-15)
अपणा कीआ आपि जणाए ॥३॥ (894-8)
अपणा कीआ कमाणा ॥ (467-18)
अपणा कीता आपे पावै ॥१७॥ (1411-19)
अपणा खसमु जनि आपि धिआइआ ॥ (1137-16)
अपणा घरु न समालहि अंति विगूते ॥ (1049-2)
अपणा दासु आपि सम्हालिआ ॥२॥ (1184-8)
अपणा नामु देहि जपि जीवा पूरन होइ दास की घाल ॥१॥ (683-1)
अपणा पिरु राखै सदा उर धारि ॥ (363-10)
अपणा प्रभु सेवे सहजि सुभाइ ॥ (1173-15)
अपणा प्रभू धिआए ॥२॥ (623-5)
अपणा भाणा आपि कराए ॥ (1051-5)
अपणा भाणा आपि करेइ ॥४॥१॥ (1172-9)
अपणिआ भगता नो आपे तुठा अपणी किरपा करि कल धारी ॥१२॥ (911-7)
अपणी किरपा करि कै वससी वणु त्रिणु हरिआ होइ ॥ (1281-3)
अपणी किरपा धारी ॥ (622-18)
अपणी कुदरति आपे जाणै नदरी नदरि निहालणा ॥७॥ (1077-5)
अपणी क्रिपा करहि तूं लैहि मिलाई ॥ (130-5)

अपणी क्रिपा करहु गुर पूरे आपे लैहु मिलाई ॥ (1265-11)
अपणी क्रिपा करहु हरि पिआरे हरि हरि नामु सद सारिआ ॥ (1113-18)
अपणी गहण गति आपे जाणै ॥ (1056-14)
अपणी दइआ करे सो पाए ॥ (1143-15)
अपणी नदरि करे सो पाए ॥ (1044-17)
अपणी नदरि निहालि आपे लैहु लाइ ॥ (1425-10)
अपणी महिमा आपे जापि ॥ (1144-2)
अपणी सरणि राखु प्रभ दाते ॥ (742-2)
अपणे करतब आपे जाणहि आपे तुधु समालीऐ जीउ ॥३॥ (102-18)
अपणे जन प्रभि आपि रखे ॥ (1183-13)
अपणे जीअ जंत आपे राखे जमहि कीओ हटतारि ॥१॥ (620-9)
अपणे जीअ तै आपि सम्हाले आपि लीए लड़ि लाई ॥१५॥ (916-1)
अपणे दास कउ कंठि लगावै ॥ (1138-10)
अपणे दास कउ नदरि निहालि ॥ (1183-3)
अपणे दास की आपि पैज राखी नानक सद कुरबाणु ॥२॥१६॥४४॥ (619-19)
अपणे दास की सुणी बेनंती ॥ (627-14)
अपणे दास रखे किरपा धारि ॥ (868-12)
अपणे बालक आपि रखिअनु पारब्रहम गुरदेव ॥ (819-19)
अपणे सेवक कउ दरसनु दीजै ॥ (896-12)
अपणै हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥३३॥ (934-9)
अपणो करि राखहु गुर भावै ॥ (1189-12)
अपतु पसू मनमुखु बेताला ॥ (1029-7)
अपदा का मारिआ ग्रिह ते नसता ॥ (1348-6)
अपन कमाइऐ आपे बाधे ॥ (199-17)
अपन सरसु कीअउ न जगत कोई ॥ (1405-4)
अपना आपु तू कबहु न छोडसि पिसन प्रीति जिउ रे ॥३॥ (990-12)
अपना आपु तू कबहु न छोडसि सुआन पूछि जिउ रे ॥४॥ (990-13)
अपना आपु सगल मिटाइ ॥ (895-3)
अपना कहिआ आपि न कमावै ॥१॥ (887-18)
अपना काजु सवारहु आपे सुखदाते गोसांईं ॥ (1273-14)
अपना कीआ आपहि मानै ॥ (269-10)
अपना कीआ पावै सोई ॥३॥ (1161-9)
अपना खेलु आपि करनैहारु ॥ (280-19)
अपना खेलु आपि करि देखै ठाकुरि रचनु रचाइआ ॥१॥ (748-14)
अपना गुरू धिआए ॥ (627-15)
अपना घरु मूसत राखि न साकहि की पर घरु जोहन लागा ॥ (598-10)
अपना चितविआ हरि करै जो मेरे चिति न होइ ॥२१९॥ (1376-7)

अपना छोडि पराइऐ राता ॥ (1004-18)
अपना जनमु न जूऐ हारे ॥ (974-15)
अपना जनु आपहि आपि उधारिओ ॥ (979-2)
अपना पिरु राखिआ सदा उरि धारि ॥२॥ (158-19)
अपना प्रभु नदरि निहाले ॥१॥ (898-14)
अपना बिगारि बिरांना सांढै ॥ (875-15)
अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ ॥१॥ (783-19)
अपना भला सभ काहू मंगना ॥४॥ (178-16)
अपना भला सभु कोई बाछै सो करे जि मेरै चिति न चितैनी ॥२॥ (800-8)
अपना मीतु सुआमी गाईऐ ॥ (1214-2)
अपना सिमरनु दे प्रतिपालिआ ओहु सगल घटा का मालका ॥२॥ (1084-16)
अपनी उकति खलावै भोजन अपनी उकति खेलावै ॥ (680-14)
अपनी किरपा करे सोई जनु पाए ॥ (113-19)
अपनी कीमति आपे धरै ॥ (878-16)
अपनी कीमति आपे पाई ॥ (284-10)
अपनी कुदरति जाणै आपि ॥४॥३१॥८२॥ (390-19)
अपनी क्रिपा करहु भगवंता ॥ (255-1)
अपनी क्रिपा जिसु आपि करेइ ॥ (287-1)
अपनी खेती आपे राख ॥१॥ (387-16)
अपनी गति आपि जानै ॥ (894-5)
अपनी गति मिति जानहु आपे ॥ (266-11)
अपनी पति सेती घरि जावहु ॥१॥ रहाउ ॥ (1254-5)
अपनी परतीति आप ही खोवै ॥ (268-10)
अपनी बणत आपि बनाई ॥ (277-11)
अपनी बिरथा कहहु हरि अपुने सुआमी पहि जो तुम्हरे दूख ततकाल कटासा ॥ (860-7)
अपनी भगति आप ही द्रिड़ाई ॥ (331-8)
अपनी भगति देहि दइआला वडभागी नानक हरि पावहु ॥२॥४॥६॥ (1120-9)
अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥ (537-10)
अपनी वसतु तू आपि पछानु ॥१॥ (892-6)
अपनी सेवा आपि कराई गुरमति अंतरि जागी ॥१॥ (667-3)
अपने कउ किरपा करीअहु इकु नामु धिआई ॥३॥ (1005-12)
अपने करतब आपे जानै जिनि इहु रचनु रचाइआ ॥ (216-2)
अपने करतब जानै आपि ॥ (292-14)
अपने करम की गति मै किआ जानउ ॥ (870-6)
अपने काज कउ किउ अलकाईऐ ॥ (629-4)
अपने कीते नो आपि प्रतिपाले पइ पैरी तिसहि मनाई जीउ ॥२॥ (106-11)
अपने गुर ऊपरि कुरबानु ॥ (631-1)

अपने गुर कंउ तनु मनु दीजै तां मनु भीजै त्रिसना दूख निवारे ॥ (584-11)
अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥ (287-18)
अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥१॥ (658-3)
अपने जन संगि राते ॥ (1278-4)
अपने दास कउ कीजै दानु ॥ (898-6)
अपने दास कउ दे राखै हाथ ॥ (1151-3)
अपने दास कउ देइ वडाई ॥ (285-16)
अपने दास कउ राखनहार ॥१॥ रहाउ ॥ (869-10)
अपने दास का सदा रखवाला ॥ (623-9)
अपने दास का हलतु पलतु सवारै ॥ (866-16)
अपने दास को भइओ सहाई ॥ (625-10)
अपने पहि दूख अपने पहि सूखा अपुने ही पहि बिरथा ॥ (1215-12)
अपने पिआरे बिनु इकु खिनु रहि न सकंउ बिन मिले नींद न पाई ॥७॥ (1274-13)
अपने प्रभ सिउ होहु सावधानु ॥ (176-19)
अपने प्रीतम के हउ बिरहै जाली ॥ (794-12)
अपने प्रीतम कै रंगि रती ॥१॥ रहाउ ॥ (739-7)
अपने भगत कउ सदा प्रतिपालै ॥२॥ (1146-17)
अपने भगत करहि प्रतिपाला ॥ (630-1)
अपने भगत की गणत न गणई राखै बाल गुपाला ॥१॥ रहाउ ॥ (629-12)
अपने भगत पर करि दइआ ॥३॥३॥ (1196-7)
अपने भगत परि की प्रतिपाल ॥ (1166-4)
अपने भारहि ना डरै आगै अउघट घाट ॥८९॥ (1369-4)
अपने रंग रवै अकेला ॥२॥ (655-4)
अपने रहन कउ ठउरु न पावहि काए पर कै जाइले ॥१॥ रहाउ ॥ (862-8)
अपने लोभ कउ कीनो मीतु ॥ (195-13)
अपने संतह लेहु उबारी ॥१॥ रहाउ ॥ (659-13)
अपने सतिगुर की वडिआई ॥ (626-4)
अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ को काहू को नाही ॥१॥ रहाउ ॥ (634-1)
अपने सेवक कउ आपि सहाई ॥ (202-13)
अपने सेवक कउ कबहु न बिसारहु ॥ (829-1)
अपने सेवक कउ दे वडिआई ॥९॥ (1154-17)
अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥ (285-16)
अपने सेवक कउ भइआ दइआलु ॥१॥ (1184-18)
अपने सेवक कउ लए प्रभु लाइ ॥ (1270-13)
अपने सेवक कउ सदा प्रतिपारै ॥ (1149-10)
अपने सेवक की आपि पति राखै ॥ (285-17)
अपने सेवक की आपि पैज रखाई ॥४॥११२॥ (202-12)

अपने सेवक की आपे राखै प्रभ मेरे को वड परतापु ॥१॥ (825-7)
अपने सेवक की सरपर राखै ॥ (285-16)
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥१॥ रहाउ ॥ (536-15)
अपनै घरि आइआ थानि सुहाइआ कारज सबदि सवारे ॥ (764-9)
अपनै बीचारि असवारी कीजै ॥ (329-10)
अपनै रंगि करता केल ॥ (894-7)
अपनै रंगि सभु को रचै ॥ (1180-8)
अपर अपार अगम अगोचर कहणै कीम न पाई ॥४॥ (634-17)
अपर पर्मपर पुरख सिउ प्रेमु लाग्यौ बिनु भगवंत रसु नाही अउरै काम सिउ ॥ (1408-18)
अपरस करत पाकसार ॥ (1229-17)
अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ॥ (470-15)
अपराधी पापी उधरे मेरी जिंदुड़ीए जन नानक खिनु हरि राते राम ॥४॥३॥ (539-16)
अपराधी मतिहीनु निरगुनु अनाथु नीचु ॥ (458-1)
अपर्मपर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुरु मिलिआ सोई जीउ ॥५॥११॥ (599-5)
अपर्मपरु अगम अगोचरु गुरमुखि हरि आपि तुलाए अतुलु तोलि ॥१॥ रहाउ ॥ (1170-8)
अपर्मपरु आपे थापि उथापे तिसु भावै सो होवै ॥ (1112-9)
अपर्मपरो पारब्रहमु सुआमी हरि अलखु गुरू लखाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (985-1)
अपवित्र पवित्रु जिनि तू करिआ ॥ (913-15)
अपार अगम गोबिंद ठाकुर सगल पूरक प्रभ धनी ॥ (455-17)
अपिउ पीअउ अकथु कथि रहीऐ ॥ (227-14)
अपिउ पीऐ सो भरमु गवाए ॥ (112-6)
अपिउ पीओ आतम सुखु धारी ॥ (945-6)
अपिउ पीओ गतु थीओ भरमा कहु नानक अजरु जरा ॥२॥२॥६॥ (701-8)
अपिउ पीवै जो नानका भ्रमु भ्रमि समावै ॥ (725-9)
अपु तेजु बाइ प्रिथमी आकासा ॥ (327-8)
अपु तेजु वाइ प्रिथमी आकासा ॥ (1031-11)
अपुना कारजु आपि सवारिआ ॥१॥ (376-17)
अपुना कीआ जानहि आपि ॥ (1236-13)
अपुना दासु हरि आपि उबारिआ नानक नाम अधारा ॥२॥६॥३४॥ (618-4)
अपुना नामु आपे दीआ ॥ (623-12)
अपुना होइओ गुरु मिहरवाना ॥ (621-13)
अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥ (268-10)
अपुनी इतनी कछू न सारी ॥ (1215-18)
अपुनी कीमति आपे पाए ॥ (287-18)
अपुनी गति मिति आपे जानै ॥ (178-15)
अपुनी बिधि आपि जनावहु ॥ (617-10)
अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥ (281-17)

अपुने गुर पूरे बलिहारै ॥ (1218-9)
अपुने गुर मिलि रहीऐ अम्रितु गहीऐ दुबिधा मारि निवारे ॥ (244-14)
अपुने चलित आपि करणैहार ॥ (279-8)
अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥ (276-17)
अपुने जन का परदा ढाकै ॥ (285-15)
अपुने जीअ जंत प्रतिपारे ॥ (105-3)
अपुने ठाकुर की हउ चेरी ॥ (1197-4)
अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥ (275-2)
अपुने दास कउ कंठि लाइ राखै जिउ बारिक पित माता ॥२॥२२॥५०॥ (621-4)
अपुने दास कउ भगति दानु देवै पूरन पुरखु बिधाता ॥२॥ (611-8)
अपुने दास कउ राखनहारु ॥१॥ रहाउ ॥ (199-12)
अपुने दास कउ लेहु निवाजि ॥१॥ रहाउ ॥ (987-5)
अपुने दास की पैज राखी ॥४॥६॥५६॥ (623-2)
अपुने दास राखै कंठि लाइ ॥ (199-13)
अपुने पहि मानु अपुने पहि ताना अपने ही पहि अरथा ॥१॥ (1215-13)
अपुने पिर हरि देखि विगासी तउ धन साचु सीगारो ॥ (1255-15)
अपुने प्रभ कउ किउ न समारसि रे ॥ (1000-14)
अपुने प्रीतम सिउ लागि रहै ॥१॥ रहाउ ॥ (407-19)
अपुने रामहि भजु रे मन आलसीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (873-9)
अपुने संत तुधु खरे पिआरे तू संतन के प्राना जीउ ॥३॥ (100-10)
अपुने सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥ (663-13)
अपुने सतिगुर कउ सदा बलि जाई ॥ (362-17)
अपुने सतिगुर कै बलिहारै ॥ (609-16)
अपुने सतिगुर पहि बिनउ कहिआ ॥ (533-2)
अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै ॥ (403-14)
अपुने सेवक की आपे राखै पूरन भई बडाई ॥१॥ (621-2)
अपुने सेवक संगि तुम प्रभ राते ओति पोति भगतन संगि जोरी ॥ (208-16)
अपुने हरि पहि बिनती कहीऐ ॥ (531-12)
अपुने हरि प्रभ की हउ गोली ॥ (168-18)
अपुनै ठाकुरि जो पहिराइआ ॥ (102-2)
अपुनै ठाकुरि नदरि निहालिआ ॥४॥ (1348-19)
अपुनै सुआइ रिदै लै धारिआ ॥ (195-15)
अपुसट बात ते भई सीधरी दूत दुसट सजनई ॥ (402-6)
अप्यउ हरि नामु अखै निधि चहु जुगि गुर सेवा करि फलु लहीअं ॥ (1401-14)
अफरिउ कालु कूड़ु सिरि मारै ॥५॥ (227-7)
अफरिओ जग महि वरतदा पापी सिउ लूझै ॥ (1090-7)
अफरिओ जमु मारिआ न जाई ॥ (1054-16)

अफरिओ वेपरवाहु सदा तू ना तिसु तिलु न तमाई हे ॥१४॥ (1021-7)
अब अपने प्रीतम सिउ बनि आई ॥ (1268-10)
अब इह प्रीति महा प्रबल भई आन बिखै जरी ॥ रहाउ ॥ (1120-19)
अब उरझिओ अलि कमलेह बासन माहि मगन इकु खिनु भी नाहि टरै ॥ (454-16)
अब ओट धारी प्रभ मुरारी सरब सुख हरि नाइओ ॥ (458-5)
अब कलू आइओ रे ॥ (1185-6)
अब कहा करहुगे ऐसी ॥१॥ रहाउ ॥ (658-4)
अब कहु राम कवन गति मोरी ॥ (326-8)
अब कहु राम भरोसा तोरा ॥ (328-1)
अब किआ कथीऐ गिआनु बीचारा ॥ (655-13)
अब किआ रंगु लाइओ मोहु रचाइओ नागे आवण जावणिआ ॥ (455-6)
अब किआ सोचउ सोच बिसारी ॥ (1209-6)
अब की बार बखसि बंदे कउ बहुरि न भउजलि फेरा ॥३॥७॥ (1104-11)
अब की सरूपि सुजानि सुलखनी सहजे उदरि धरी ॥१॥ (483-17)
अब के छुटके ठउर न ठाइओ ॥३॥ (337-8)
अब कै कहिऐ नामु न मिलई तू सहु जीअड़े भारी जीउ ॥४॥ (993-7)
अब कैसे मरउ मरनि मनु मानिआ ॥ (327-14)
अब गुरु पाइओ है सहज सुखदाइक दरसनु पेखत मनु लपटानी ॥ (1119-5)
अब चरन गहे ॥१॥ रहाउ ॥ (830-10)
अब जगु जानि जउ मना रहै ॥ (342-19)
अब जन ऊपरि को न पुकारै ॥ (1217-13)
अब जाने गुरमुखि हरि नाली ॥२॥ (796-9)
अब जीअ जानि ऐसी बनि आई ॥ (1164-3)
अब ढूढन कतहु न जाई ॥ (621-8)
अब ढूढन काहे कउ जाहि ॥२॥ (178-7)
अब तउ जरे मरे सिधि पाईऐ लीनो हाथि संधउरा ॥१॥ रहाउ ॥ (338-12)
अब तउ जाइ चढे सिंघासनि मिले है सारिंगपानी ॥ (969-17)
अब तउ बिमल भए घट ही महि कहि कबीर मनु मानिआ ॥२॥५॥ (1104-4)
अब तब अवरु न मागउ हरि पहि नामु निरंजन दीजै पिआरि ॥ (504-6)
अब तब एको एकु पुकारउ आदि जुगादि सखाई ॥६॥ (504-15)
अब तब जब कब तुही तुही ॥ (969-12)
अब तुमरी परतीति न होई ॥४॥२॥३५॥ (484-10)
अब तू सीझु भावै नही सीझै ॥ (913-16)
अब न भजसि भजसि कब भाई ॥ (1159-10)
अब नानक सरणागति आए हरि राखहु लाज हरि भाइआ ॥४॥११॥२५॥६३॥ (172-12)
अब नाहि अवर सरि कामु बारंतरि पूरी पड़ी ॥३॥१२॥ (1408-9)
अब पूछे किआ कहा ॥ (1203-11)

अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥३॥१॥ (1293-7)
अब बे गल कहनु न जाई ॥१॥ (655-2)
अब भउ भानि भरोसउ आवा ॥ (342-1)
अब मति बिनसी दुसट बिगानी ॥ (183-11)
अब मन एकस सिउ मोहु कीना ॥ (670-19)
अब मन जागत रहु रे भाई ॥ (339-11)
अब मनि बसिआ करनैहारा ॥ (202-14)
अब मनु उलटि सनातनु हूआ ॥ (327-1)
अब मनु छूटि गइआ साधू संगि मिले ॥ (705-2)
अब मसलति मोहि मिली हदूरि ॥१॥ (384-12)
अब मेरो ठाकुर सिउ मनु लीना ॥ (1210-17)
अब मेरो पंचा ते संगु तूटा ॥ (1210-13)
अब मै कउनु उपाउ करउ ॥ (685-6)
अब मै कहा करउ री माई ॥ (1008-8)
अब मै पूरा पाइआ ॥४॥३॥४६॥ (746-15)
अब मै सहजि समानी ॥ (830-8)
अब मै सुखु पाइओ गुर आग्यि ॥ (701-2)
अब मो कउ भए राजा राम सहाई ॥ (331-3)
अब मोरै मनि भइआ अनंद ॥ (392-11)
अब मोरो ठाकुर सिउ मनु मानां ॥ (1210-2)
अब मोरो नाचनो रहो ॥ (1203-6)
अब मोरो सहसा दूखु गइआ ॥ (1213-13)
अब मोहि आइ परिओ सरनाइ ॥ (500-6)
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥ (345-13)
अब मोहि जलत राम जलु पाइआ ॥ (323-13)
अब मोहि जानी रे मेरी गई बलाइ ॥ (887-12)
अब मोहि जीवन पदवी पाई ॥ (1000-8)
अब मोहि धनु पाइओ हरि नामा ॥ (1211-6)
अब मोहि नाचनो न आवै ॥ (483-1)
अब मोहि नीद सुहावै ॥ (830-8)
अब मोहि मिलिओ है जीआवनहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (325-16)
अब मोहि राम जसो मनि गाइओ ॥ (671-11)
अब मोहि राम भरोसउ पाए ॥ (1204-17)
अब मोहि रामु अपुना करि जानिआ ॥ (327-10)
अब मोहि लबधिओ है हरि टेका ॥ (1209-14)
अब मोहि सरब उपाव बिरकाते ॥ (1209-10)
अब मोहि सरब कुसल करि मानिआ ॥ (326-18)

अब रहे जमहि मेल ॥२॥१॥१३०॥ (1229-13)
अब राखहु दास भाट की लाज ॥ (1400-9)
अब साधू संगि परीआ ॥ (746-7)
अब हम चली ठाकुर पहि हारि ॥ (527-15)
अब हम तुम एक भए हहि एकै देखत मनु पतीआही ॥१॥ (339-7)
अब हरि राखनहारु चितारिआ ॥ (674-18)
अब ही कब ही किछू न जाना तेरा एको नामु पछाना ॥१॥ (876-4)
अबरन बरन घाम नही छाम ॥ (1162-15)
अबरन बरन सिउ मन ही प्रीति ॥ (1162-9)
अबल बलु तोड़िआ अचल चलु थपिआ अघड़ु घड़िआ तहा अपिउ पीआ ॥१॥ (1106-2)
अबहि न माता सु कबहु न माता ॥ (855-16)
अबिगत अगोचरु अपरपरु मनि गुर सबदु वसाइअउ ॥ (1397-16)
अबिगत समझु इआना ॥ (338-8)
अबिचल नगरी नानक देव ॥८॥१॥ (430-19)
अबिचल नगरु गोबिंद गुरू का नामु जपत सुखु पाइआ राम ॥ (783-1)
अबिचल नीव धराई सतिगुरि कबहू डोलत नाही ॥ (1226-12)
अबिचल नीव धरी गुर नानक नित नित चड़ै सवाई ॥२॥१५॥२४॥ (500-18)
अबिनासी अचलु अजोनी स्मभउ पुरखोतमु अपार परे ॥ (1405-5)
अबिनासी अबिगत अगोचर सभु किछु तुझ ही है लगा ॥७॥ (1082-14)
अबिनासी अबिगत आपे आपि उतपति ॥ (1385-5)
अबिनासी अबिगत सुआमी पूरन पुरख बिधाते ॥ (1117-18)
अबिनासी अबिगतु धिआयउ ॥ (1396-12)
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ॥२॥५॥१०॥ (714-3)
अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सभ मलु खोई ॥ (617-16)
अबिनासी नाही किछु खंड ॥ (282-1)
अबिनासी पाइआ नामु धिआइआ सगल मनोरथ पाए ॥ (780-15)
अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥ (13-12)
अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥ (171-10)
अबिनासी प्रभि खेलु रचाइआ गुरमुखि सोझी होई ॥ (946-18)
अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥ (282-11)
अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥ (283-17)
अबिनासी वरु सुणिआ मनि उपजिआ चाइआ राम ॥ (845-14)
अबिनासी सुख आपन आसन ॥ (291-5)
अबे तबे की चाकरी किउ दरगह पावै ॥ (420-8)
अबे तबे कूड़े है पाजा ॥ (225-13)
अभखु भखहि भखु तजि छोडहि अंधु गुरू जिन केरा ॥ (1290-3)
अभग सभा संगि है साधा ॥ (393-10)

अभर भरे पायउ अपारु रिद अंतरि धारिओ ॥ (1397-4)
अभरत सिंचि भए सुभर सर गुरमति साचु निहाला ॥ (1232-19)
अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ (472-1)
अभागे तै लाज नाही ॥ (892-18)
अभिआगत एह न आखीअहि जिन कै मन महि भरमु ॥ (1413-2)
अभिआगत एहि न आखीअनि जि पर घरि भोजनु करेनि ॥ (949-5)
अभिआगत एहि न आखीअनि जिन के चित महि भरमु ॥ (949-3)
अभिआगत सेई नानका जि आतम गउणु करेनि ॥ (949-6)
अभिमानी की जड़ सरपर जाए ॥७॥ (869-18)
अभिमानु खोइ खोइ खोइ खोई हउ मो कउ सतिगुर मंत्रु द्रिड़ाए ॥३॥ (820-8)
अभूलु न भूलै लिखिओ न चलावै मता न करै पचासा ॥ (1211-18)
अभै दानु नामु हरि पाइओ सिरु डारिओ नानक संत चरना ॥२॥९॥ (1299-19)
अभै दानु पावउ पुरख दाते मिलि संगति हरि गुण गाए ॥१॥ (820-6)
अभै निरंजन परम पदु ता का भीखकु होइ ॥ (1413-3)
अभै निरंजनु परम पदु ता का भूखा होइ ॥ (949-4)
अभै पद पूरि ताप तह नासे कहि कबीर बीचारी ॥ (1123-17)
अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोरि ॥२॥५॥९॥ (702-1)
अम अबे थावहु मिठड़ा ॥ (73-8)
अमर अजाची हरि मिले तिन कै हउ बलि जाउ ॥ (933-18)
अमर अडोलु अमोलु अपारा गुरि पूरै सचु पाईऐ ॥ (765-7)
अमर जानि संची इह काइआ इह मिथिआ काची गगरी ॥ (856-13)
अमर पदारथ ते किरतारथ सहज धिआनि लिव लाईऐ ॥१॥ (1127-4)
अमर पदारथु नानका मनि मानिऐ सुखु होइ ॥१॥ (137-16)
अमर पिंड भए साधू संगि जनम मरण दोऊ मिटि गईआ ॥१॥ (835-7)
अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥ (293-13)
अमर भए सद सद ही जीवहि ॥ (276-16)
अमरदास भले कउ दीआ ॥ (1401-13)
अमरदासि अमरतु छत्रु गुर रामहि दीअउ ॥ (1408-11)
अमरा पदु पाइआ आपु गवाइआ विरला गिआन वीचारी ॥ (688-18)
अमरा पुर बासा करहु हरि गइआ बहोरै बित ॥१६३॥ (1373-5)
अमरीकि प्रहलादि सरणि गोबिंद गति पाई ॥ (1394-16)
अमरु अजोनी असथिरु जापै साचा महलु चिराणा ॥ (1112-14)
अमरु अजोनी जाति न जाला ॥ (838-19)
अमरु अडोलु अपारु अमोलकु हरि असथिर थानि सुहाइआ ॥२॥ (1039-16)
अमरु अनाथ सरब सिरि मोरा काल बिकाल भरम भै खंजनु ॥३॥ (1273-19)
अमरु थीआ फिरि न मूआ कलि कलेसा दुख हरे ॥ (545-8)
अमरु भइआ अबिनासी थीवै ॥ (1074-12)

अमरु वेपरवाहु है तिसु नालि सिआणप न चलई न हुजति करणी जाइ ॥ (1251-1)
अमरु होइ सद आकुल रहै ॥४॥३॥ (1351-10)
अमरु होवै जो नाम रसु पावै ॥ (101-1)
अमल जि कीतिआ दुनी विचि से दरगह ओगाहा ॥९८॥ (1383-3)
अमल न मल न छाह नही धूप ॥११॥ (344-1)
अमलन सिउ अमली लपटाइओ भूमन भूमि पिआरी ॥ (613-7)
अमली अमलु न अ्मबड़ै मछी नीरु न होइ ॥ (557-4)
अमली जीवै अमलु खाइ ॥ (1180-8)
अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥ (24-1)
अमलु गलोला कूड़ का दिता देवणहारि ॥ (15-17)
अमलु सिरानो लेखा देना ॥ (792-13)
अमाली हउ खरी सुचजी तै सह एकि न भावा ॥ (558-2)
अमावस आतम सुखी भए संतोखु दीआ गुरदेव ॥ (299-19)
अमावस महि आस निवारहु ॥ (343-5)
अमावसिआ चंदु गुपतु गैणारि ॥ (840-15)
अमिअ द्रिसटि सुभ करै हरै अघ पाप सकल मल ॥ (1392-12)
अमिअ सरोवरो पीउ हरि हरि नामा राम ॥ (546-1)
अमिउ अमिउ हरि रसु है मीठा मिलि संत जना मुखि पावै ॥१॥ रहाउ ॥ (881-9)
अमिउ रसना बदनि बर दाति अलख अपार गुर सूर सबदि हउमै निवार्यउ ॥ (1408-4)
अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥ (5-16)
अमुल गुण अमुल वापार ॥ (5-16)
अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ (5-17)
अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥ (5-16)
अमुलीक लाल एहि रतन ॥ (295-10)
अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥ (5-18)
अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥ (5-17)
अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ (5-17)
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ (5-17)
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥ (5-18)
अमोघ दरसन आजूनी स्मभउ ॥ (1082-13)
अमोघ दरसन बेअंत अपारा ॥ (98-11)
अमोघ दरसु सफल जा की सेव ॥ (392-17)
अमोल दासु करि लीनो अपना ॥१॥ (331-5)
अमोल रतन अमोला रासि ॥ (372-3)
अमोल रतनु साचु दिखलाइआ ॥ (181-5)
अमोल रतनु हरि दीनो नामु ॥ (1157-3)
अम्रित कथा कहै सदा दिनु राती अवरा आखि सुनावणिआ ॥२॥ (118-15)

अम्रित कथा संतसंगि सुनूआ ॥ (255-8)
अम्रित कथा सुणि करन अधारी ॥२॥ (740-17)
अम्रित का रसु आइआ मनि वसिआ नाउ ॥१८॥ (1092-19)
अम्रित का रसु विरली पाइआ सतिगुर मेलि मिलाए ॥ (1126-8)
अम्रित का वापारी होवै किआ मदि छूछै भाउ धरे ॥२॥ (360-8)
अम्रित काइआ रहै सुखाली बाजी इहु संसारो ॥ (154-17)
अम्रित की सार सोई जाणै जि अम्रित का वापारी जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (993-3)
अम्रित केल करे नित कामणि अवरि लुटेनि सु पंच जना ॥२॥ (155-13)
अम्रित खंडु दूधि मधु संचसि तू बन चातुर रे ॥ (990-11)
अम्रित गुण उचरै प्रभ बाणी ॥ (184-16)
अम्रित गुण संत बोलते सुणि मनहि पीलावउ ॥ (813-15)
अम्रित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे ॥ (783-17)
अम्रित द्रिसटि निमख प्रभ जीवा सरब रंग रस माना ॥ (779-14)
अम्रित द्रिसटि पेखै होइ संत ॥ (287-7)
अम्रित द्रिसटि संचि जीवाए ॥१॥ (191-9)
अम्रित धार गगनि दस दुआरि ॥ (153-9)
अम्रित नाम दानु नानक कउ गुण गीता नित वखाणीआ ॥८॥२॥८॥१२॥२०॥ (1020-8)
अम्रित नाम महा रस पीने ॥२॥ (201-8)
अम्रित नामि अंतरु मनु मोहै ॥ (119-11)
अम्रित नामि मनु रहिआ अघाइ ॥२॥ (1347-11)
अम्रित नामि सदा जन सोहहि गुरमति हरि रसु पावणिआ ॥२॥ (126-17)
अम्रित नामु अउखधु मुखि दीनो जाइ पइआ गुर पैरै ॥१॥ (1214-7)
अम्रित नामु अराधीऐ निरमलु मनै होवै परगासो ॥ (802-14)
अम्रित नामु आपे देइ ॥ (1172-8)
अम्रित नामु क्रिपा करि दीजै गुरि गिआन रतनु दीपाइआ ॥६॥ (1039-1)
अम्रित नामु गुरू वड दाणा नामु जपहु सुख सारा हे ॥१०॥ (1029-11)
अम्रित नामु चलै जपि नाला ॥ (744-17)
अम्रित नामु जपउ जपु रसना ॥ (331-5)
अम्रित नामु जपहि मिलि साधू ॥ (258-3)
अम्रित नामु जपि गुरमुखि मीत ॥३॥ (179-4)
अम्रित नामु जलु संचिआ गुर भए सहाई ॥२॥ (814-2)
अम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥ (1429-12)
अम्रित नामु तहा जीअ रसिआ ॥ (256-3)
अम्रित नामु तहा महि फलिआ ॥१॥ (385-6)
अम्रित नामु तुमारा सुआमी ॥ (1074-16)
अम्रित नामु तोसा नही पाइओ ॥३॥ (715-6)
अम्रित नामु त्मबोलु मुखि खाइआ ॥ (737-11)

अम्रित नामु नाराइण नानक पीवतं संत न त्रिप्यते ॥२६॥ (1356-8)
अम्रित नामु निधानु कंठि उरि धारिआ ॥ (854-5)
अम्रित नामु निधानु दासा घरि घणा ॥ (518-14)
अम्रित नामु निरमोलकु हरि जसु तिनि पाइओ जिसु किरपैन ॥ (674-8)
अम्रित नामु निरमोलकु हीरा गुरि दीनो मंतानी ॥ (671-18)
अम्रित नामु परमेसरु तेरा जो सिमरै सो जीवै ॥ (616-12)
अम्रित नामु पीआ मनु त्रिपतिआ आघाए रसन चखा ॥ (1212-8)
अम्रित नामु पीवहु मेरे भाई ॥ (191-5)
अम्रित नामु प्रिअ प्रीति मनोहर इहै अघावन पांन कउ ॥ (1208-7)
अम्रित नामु बिरलै ही चीने ॥ (1086-11)
अम्रित नामु भुंचु मन माही ॥ (742-14)
अम्रित नामु भोजनु हरि देइ ॥ (1335-1)
अम्रित नामु मंनि वसाए ॥ (118-12)
अम्रित नामु मनहि आधारो ॥ (1215-1)
अम्रित नामु महा रसु मीठा गुर सबदी चखि जापै ॥ रहाउ ॥ (605-10)
अम्रित नामु महा रसु मीठा गुरमती अम्रितु पीआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (124-7)
अम्रित नामु महा रसु लीना ॥३॥ (804-18)
अम्रित नामु रसन नित जापै ॥ (760-4)
अम्रित नामु रसन रसु रसना गुर सबदी रसु पीजै ॥ (1111-15)
अम्रित नामु रसना नित जपै ॥३॥ (893-15)
अम्रित नामु रिद महि दीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1184-19)
अम्रित नामु रिद माहि धिआई ॥१॥ (807-9)
अम्रित नामु रिद माहि समाइ ॥ (263-3)
अम्रित नामु रिदे महि दीनो जनम जनम की मैलु गई ॥१॥ रहाउ ॥ (823-18)
अम्रित नामु रिदै हरि जापै ॥१॥ (184-4)
अम्रित नामु वसिआ सुखदाता ॥ (415-1)
अम्रित नामु सतिगुरि दीआ ॥ (352-18)
अम्रित नामु सद भुंचीऐ गुरमुखि कार कमाइ ॥ (87-14)
अम्रित नामु सद मीठा लागा गुर सबदी सादु आइआ ॥ (559-12)
अम्रित नामु सदा निरमलीआ ॥ (100-19)
अम्रित नामु सदा सुखदाता ॥ (1016-18)
अम्रित नामु सदा सुखदाता अंते होइ सखाई ॥ (1287-7)
अम्रित नामु सदा सुखदाता गुरमती मंनि वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (109-10)
अम्रित नामु सदा सुखु नाला ॥६॥ (222-18)
अम्रित नामु साधसंगि लैन ॥ (295-13)
अम्रित नामु सीतलु मनि गहै ॥ (1142-17)
अम्रित नामु सुआमी तेरा जो पीवै तिस ही त्रिपतास ॥ (1208-1)

अम्रित नामु सुनीजै तेरा किरपा करहि त पीवा ॥ (1117-12)
अम्रित नामु हरि हरि जपह मिलि पापा मुंचह ॥१॥ (399-8)
अम्रित परवाह छुटकंत सद द्वारि जिसु ग्यान गुर बिमल सर संत सिख नाईऐ ॥ (1401-3)
अम्रित प्रवाह सरि अतुल भंडार भरि परै ही ते परै अपर अपार परि ॥ (1385-8)
अम्रित फल तिन जन कउ लागे जो बोलहि अम्रित बाता हे ॥४॥ (1051-10)
अम्रित फलु जिनी चाखिआ सचि रहे अघाई ॥ (421-17)
अम्रित फलु नामु जिनि गुर ते पाइआ ॥ (385-9)
अम्रित फलु पाइआ नामु गोबिंद ॥२॥ (1176-9)
अम्रित फलु हरि एकु है आपे देइ खवाइ ॥३॥ (66-6)
अम्रित बचन मन महि सिंचउ बंदउ बार बार ॥३॥ (745-15)
अम्रित बचन रिदै उरि धारी तउ किरपा ते संगु पाई ॥२॥ (749-15)
अम्रित बचन सतिगुर की बाणी जो बोलै सो मुखि अम्रितु पावै ॥२॥ (494-9)
अम्रित बचन साध की बाणी ॥ (744-13)
अम्रित बचन हरि के गुन गाउ ॥ (293-2)
अम्रित बनु संसारु सहाई आपि भए ॥ (458-13)
अम्रित बाणी अमिउ रसु अम्रितु हरि का नाउ ॥ (963-1)
अम्रित बाणी उचरा हरि जसु मिठा लागै तेरा भाणा राम ॥ (543-10)
अम्रित बाणी गुर की मीठी ॥ (113-13)
अम्रित बाणी गुरमुखि बोलै ॥१॥ (183-4)
अम्रित बाणी घट ते उचरउ आतम कउ समझावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (693-5)
अम्रित बाणी ततु वखाणी गिआन धिआन विचि आई ॥ (1243-16)
अम्रित बाणी ततु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ (1424-2)
अम्रित बाणी भगत जना की मेरी जिंदुड़ीए मनि सुणीऐ हरि लिव लाए राम ॥ (538-3)
अम्रित बाणी मंनि वसाए अम्रितु नामु धिआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (118-14)
अम्रित बाणी सतिगुर पूरे की जिसु किरपालु होवै तिसु रिदै वसेहा ॥ (961-1)
अम्रित बाणी सदा सलाहे अम्रिति अम्रितु पावणिआ ॥१॥ (118-13)
अम्रित बाणी सबदि पछाणी दुख काटै हउ मारा ॥१॥ (1153-8)
अम्रित बाणी सिउ चितु लाए अम्रित सबदि वजावणिआ ॥५॥ (118-19)
अम्रित बाणी सुणत निहाल ॥ (1340-18)
अम्रित बाणी हरि हरि तेरी ॥ (103-7)
अम्रित बानी रसना चाखे ॥३॥ (395-19)
अम्रित बूंद सुहानी हीअरै गुरि मोही मनु हरि रसि लीना ॥१॥ रहाउ ॥ (1254-10)
अम्रित बूंद हरि नामु बिसु की बिखै निवारणु ॥ (1397-17)
अम्रित भोजनु करे आहारी ॥१॥ रहाउ ॥ (181-2)
अम्रित रंगि रता लिव लाए ॥ (118-16)
अम्रित रसि गगनंतरि भीजै ॥ (974-10)
अम्रित रसि राता केवल बैरागी गुरमति भाइ सुभाइआ ॥८॥ (1039-4)

अम्रित रसु कीरतनु हरि गाईऐ अहिनिसि पूरन नाद ॥१॥ रहाउ ॥ (1219-12)
अम्रित रसु खावहि खान पान ॥ (195-3)
अम्रित रसु जिनि पाइआ थिरु ता का सोहागु ॥५॥४॥ (970-5)
अम्रित रसु पाए त्रिसना भउ जाए ॥ (1041-18)
अम्रित रसु पीवहु प्रभ पिआरी ॥१॥ रहाउ ॥ (194-17)
अम्रित रसु सचु अम्रितु बोली गुरि पूरै अम्रितु लीचै जीउ ॥३॥ (96-3)
अम्रित रसु सतिगुरू चुआइआ ॥ (1069-11)
अम्रित रसु हरि कीरतनो को विरला पीवै ॥ (400-2)
अम्रित रसु हरि गुर ते पीआ ॥ (99-14)
अम्रित रसु हरि पाइआ बिखिआ रस फीके राम ॥ (848-18)
अम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥ (2-5)
अम्रित संगि नाहि रुच आवत बिखै ठगउरी प्रीति ॥२॥ (673-3)
अम्रित सबदि नामु वखाणै ॥ (361-8)
अम्रित सबदु अम्रित हरि बाणी ॥ (119-3)
अम्रित सबदु पीवै जनु कोइ ॥ (394-1)
अम्रित सरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै कऊआ हंसु होहै ॥ (493-2)
अम्रित ससीअ धेन लछिमी कलपतर सिखरि सुनागर नदी चे नाथं ॥ (695-6)
अम्रित हरि का नाउ सदा धिआइआ ॥ (517-1)
अम्रिता प्रिअ बचन तुहारे ॥ (534-3)
अम्रिता रसु पीउ रसना नानक हरि रंगि रात ॥४॥४॥१५॥ (1301-1)
अम्रिति भरे तेरे भंडारा ॥ (119-10)
अम्रिति मनु तनु बाणी रता अम्रितु सहजि सुणावणिआ ॥५॥ (119-12)
अम्रितु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ ॥२॥ (644-6)
अम्रितु कउरा बिखिआ मीठी ॥ (892-19)
अम्रितु खाणा अम्रितु पैनणा नानक नामु वडाई होइ ॥१॥ (511-19)
अम्रितु खाणा पैन्हणा नानक नाइ वडिआई होइ ॥१॥ (851-10)
अम्रितु गिआनु महा रसु भोगु ॥ (414-9)
अम्रितु गुर परसादी पाए ॥ (118-16)
अम्रितु चाखि परम रसि राते ठाकुर सरणि तुमारी ॥१॥ (596-18)
अम्रितु चाखि हरि नामि निवासा ॥ (1189-10)
अम्रितु चुगहि गुर सबदि निवासा ॥ (1068-17)
अम्रितु छोडि काहे बिखु खाइ ॥१॥ (728-11)
अम्रितु छोडि बिखिआ लोभाणे सेवा करहि विडाणी ॥ (31-1)
अम्रितु छोडि बिखु लगे बिखु खटणा बिखु रासि ॥ (586-12)
अम्रितु छोडि महा बिखु पीवै माइआ का देवाना ॥ (1013-6)
अम्रितु जिन्हा चखाइओनु रसु आइआ सहजि सुभाइ ॥ (428-9)
अम्रितु डारि लादि बिखु खाइ ॥२॥ (1165-3)

अम्रितु तजि बिखु संग्रहै करतै आपि खुआइआ ॥ (644-3)
अम्रितु तेरी बाणीआ ॥ (72-10)
अम्रितु नामु जानै करि कउरा ॥ (180-4)
अम्रितु नामु तुमारा पिआरे साधसंगि रसु पाइआ ॥ (380-13)
अम्रितु नामु तुम्हारा ठाकुर एहु महा रसु जनहि पीओ ॥ (382-14)
अम्रितु नामु तेरा सोई गावै ॥ (100-9)
अम्रितु नामु दीओ मुखि देव ॥ (887-5)
अम्रितु नामु निधानु दिता तुसि हरि ॥ (1363-4)
अम्रितु नामु निधानु भोजनु खाइआ ॥ (652-19)
अम्रितु नामु निधानु सचु गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ (961-12)
अम्रितु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ॥ (318-16)
अम्रितु नामु निरंजन पाइआ गिआन काइआ रस भोगं ॥१॥ रहाउ ॥ (360-1)
अम्रितु नामु पदारथु संगे तिलु मरमु न लहे ॥३॥ (406-16)
अम्रितु नामु पीआ दिन राती दुबिधा मारि निवारे ॥ (245-8)
अम्रितु नामु पीओ मनु त्रिपतिआ अनभै ठहराइओ ॥२॥ (209-10)
अम्रितु नामु रसना नित गावै ॥ (232-8)
अम्रितु नामु रिदै लै संचा ॥३॥ (189-3)
अम्रितु नामु सतिगुरि दीआ ॥ (993-9)
अम्रितु नामु सदा मनि मीठा सबदे पावै कोई ॥३॥ (604-1)
अम्रितु नीरु गिआनि मन मजनु अठसठि तीरथ संगि गहे ॥ (1328-18)
अम्रितु पी अमरा पदु होए गुर कै सबदि रसु ताहा हे ॥७॥ (1056-19)
अम्रितु पी सदा त्रिपतासे करि किरपा त्रिसना बुझावणिआ ॥१॥ (119-5)
अम्रितु पीआ सतिगुरि दीआ ॥ (1034-3)
अम्रितु पीआ साचे माता ॥ (945-5)
अम्रितु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनंता ॥ (496-7)
अम्रितु पीवहु साध पिआरे ॥ (899-18)
अम्रितु पीवै अमरु सो होइ ॥ (287-12)
अम्रितु पीवै जिस नो आपि पीआए ॥ (119-14)
अम्रितु पीवै निरमल धार ॥३॥ (158-14)
अम्रितु पीवै सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (351-3)
अम्रितु प्रिअ का नामु मै अंधुले टोहनी ॥ (847-5)
अम्रितु बोलै सदा मुखि वैणी ॥ (118-14)
अम्रितु भोजनु नामु हरि रजि रजि जन खाहु ॥ (556-12)
अम्रितु मीठा सबदु वीचारि ॥ (424-8)
अम्रितु मूलु सिखरि लिव तारै ॥ (840-11)
अम्रितु रसना पीउ पिआरी ॥ (180-14)
अम्रितु रसना बोलै दिनु राती मनि तनि अम्रितु पीआवणिआ ॥३॥ (118-16)

अम्रितु रसु पीआ गुर सबदी हम नाम विटहु कुरबान ॥१॥ (1335-7)
अम्रितु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ॥ (600-7)
अम्रितु लै लै नीमु सिंचाई ॥ (481-6)
अम्रितु वरखै अनहद बाणी ॥ (105-15)
अम्रितु वरसै मनु संतोखीऐ सचि रहै लिव लाइ ॥ (1276-18)
अम्रितु वरसै सहजि सुभाए ॥ (119-5)
अम्रितु वेखै परखै सदा नैणी ॥ (118-15)
अम्रितु संगि बसतु है तेरै बिखिआ सिउ उरझाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1017-2)
अम्रितु संत चुगहि नही दूरे ॥ (685-12)
अम्रितु सचा नाउ भोजनु चाखिआ ॥ (594-9)
अम्रितु सचा वरसदा गुरमुखा मुखि पाइ ॥ (428-10)
अम्रितु सदा वरसदा बूझनि बूझणहार ॥ (1281-17)
अम्रितु साचा नाउ ओथै जापीऐ ॥ (519-7)
अम्रितु साचा नामु है कहणा कछू न जाइ ॥ (33-3)
अम्रितु सिंचहु भरहु किआरे तउ माली के होवहु ॥२॥ (1171-2)
अम्रितु हरि का नाउ आपि वरताइसी ॥ (730-3)
अम्रितु हरि का नाउ देवै दीखिआ ॥ (729-15)
अम्रितु हरि का नामु तिन्ही जनी जपि लइआ ॥६॥ (762-2)
अम्रितु हरि का नामु मेरै मनि भाइआ ॥ (566-3)
अम्रितु हरि का नामु साधसंगि रावीऐ जीउ ॥ (691-2)
अम्रितु हरि का नामु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ (1283-3)
अम्रितु हरि का नामु है वरसै किरपा धारि ॥ (1281-18)
अम्रितु हरि को नामु लैत मनि सभ सुख पाए ॥ (1386-10)
अम्रितु हरि पीवते सदा थिरु थीवते बिखै बनु फीका जानिआ ॥ (81-1)
अम्रितु हरि रसु हरि आपि पीआइआ ॥ (366-14)
अम्रितु हरि हरि नामु है गुरि पूरै हरि रसु चाखु ॥२॥ (997-12)
अम्रितु हरि हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए अम्रितु गुरमति पाए राम ॥ (538-11)
अयो अंङै सभु जगु आइआ काखै घंङै कालु भइआ ॥ (434-14)
अरचा बंदन हरि समत निवासी बाहुड़ि जोनि न नंगना ॥५॥ (1080-7)
अरझि उरझि कै पचि मूआ चारउ बेदहु माहि ॥२३७॥ (1377-7)
अरड़ावै बिललावै निंदकु ॥ (373-7)
अरथ आन सभि वारिआ प्रिअ निमख सोहागउ ॥२॥ (808-11)
अरथ धरम काम मोख का दाता ॥ (805-19)
अरथु दरबु सभु जो किछु दीसै संगि न कछहू जाई ॥ (1237-1)
अरदासि करीं गुर पूरे आगै रखि लेवहु देहु वडाई राम ॥ (571-15)
अरदासि करी पूरे गुर पासि ॥ (395-13)
अरदासि करी प्रभ अपने आगै सुणि सुणि जीवा तेरी बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (749-14)

अरदासि नानक सुनि सुआमी रखि लेहु घर के चेरे ॥१॥ (547-7)
अरदासि सुणी दातारि प्रभि ढाढी कउ महलि बुलावै ॥ (1097-12)
अरदासि सुणी दातारि प्रभि होए किरपाल ॥ (818-16)
अरदासि सुणी दातारि होई सिसटि ठरु ॥ (1251-8)
अरदासि सुणी भगत अपुने की सभ जीअ भइआ किरपाला ॥ रहाउ ॥ (627-13)
अरध उरध करे निरंजन वासु ॥ (952-17)
अरध उरध की संधि किउ जानै ॥ (228-8)
अरध उरध दोऊ तह नाही राति दिनसु तह नाही ॥ (333-9)
अरध उरध बिचि सम पहिचाणि ॥ (344-5)
अरध उरध मुखि लागो कासु ॥ (1162-13)
अरध सरीरी नारि न छोडै ता ते हिंदू ही रहीऐ ॥३॥ (477-18)
अरध सरीरु कटाईऐ सिरि करवतु धराइ ॥ (62-7)
अरधह छाडि उरध जउ आवा ॥ (341-14)
अरधहि उरधह मंझि बसेरा ॥ (341-14)
अरधि कउ अरधिआ सरधि कउ सरधिआ सलल कउ सललि समानि आइआ ॥ (1106-4)
अरपि मनु तनु प्रभू आगै आपु सगल मिटाईऐ ॥ (704-15)
अरपि साध कउ अपना जीउ ॥ (283-7)
अरपिआ त सीसु सुथानि गुर पहि संगि प्रभू दिखाइआ ॥ (247-14)
अरपी सभु सीगारु एहु जीउ सभु दिवा ॥ (1361-15)
अरपै नारि सीगार समेति ॥ (875-13)
अरबद नरबद धुंधूकारा ॥ (1035-9)
अरी बाई गोबिद नामु मति बीसरै ॥ रहाउ ॥ (526-6)
अरु जउ तहा प्रेम लिव लावै ॥ (342-9)
अरु जे तहा कुसम रसु पावा ॥ (340-9)
अलंकार मिलि थैली होई है ता ते कनिक वखानी ॥३॥ (672-1)
अलउती का जैसे भइआ बरेडा जिनि पीआ तिनि जानिआ ॥२॥ (333-5)
अलख अपार अगम अगोचर ना तिसु कालु न करमा ॥ (597-4)
अलख अपार अपारु साचा आपु मारि मिलाईऐ ॥ (843-15)
अलख अभेउ हरि रहिआ समाए ॥ (127-10)
अलख अभेव पुरख परताप ॥ (282-2)
अलख अभेवीऐ हां ॥ (410-1)
अलख निरंजनु एको वरतै एका जोति मुरारी ॥ (507-2)
अलख रूप जीअ लख्या न जाई ॥ (1401-10)
अलखु न जाचहि रिदै सम्हालि ॥१॥ रहाउ ॥ (1275-14)
अलखु न लखीऐ अगमु अजोनी तूं नाथां नाथणहारा ॥ (1255-8)
अलखु लखाइआ गुर ते पाइआ नानक इहु हरि का चोल्हा ॥३॥५॥१४५॥ (407-6)
अलखु वरतै अगम अपारा ॥ (113-2)

अलगउ जोइ मधूकड़उ सारंगपाणि सबाइ ॥ (1090-11)
अलप सुख अवित चंचल ऊच नीच समावणह ॥ (1358-4)
अलप सुख छाडि परम सुख पावा ॥ (342-15)
अलह अगम खुदाई बंदे ॥ (1083-13)
अलह अलख अपार ॥ (896-19)
अलह अवलि दीन को साहिबु जोरु नही फुरमावै ॥१॥ (480-4)
अलह भावै सो भला तां लभी दरबारु ॥१०९॥ (1383-17)
अलह राम के पिंडु परान ॥४॥ (1136-12)
अलह राम जीवउ तेरे नाई ॥ (1349-12)
अलह लहंता भेद छै कछु कछु पाइओ भेद ॥ (340-5)
अलह लहउ तउ किआ कहउ कहउ त को उपकार ॥ (340-4)
अलह सेती रतिआ एहु सचावां साजु ॥१०८॥ (1383-16)
अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुड़ु दीना मीठा ॥ (1350-4)
अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा ॥ (1349-11)
अलहु गैबु सगल घट भीतरि हिरदै लेहु बिचारी ॥ (483-7)
अलहु न विसरै दिल जीअ परान ॥४॥१०॥ (1138-3)
अलाह पाकं पाक है सक करउ जे दूसर होइ ॥ (727-11)
अलाहु अलखु अगमु कादरु करणहारु करीमु ॥ (64-9)
अलि कमल भिंनु न भेतु ॥ (838-9)
अलि मकरंद चरन कमल सिउ मनु फेरि फेरि रीझै ॥१॥ रहाउ ॥ (1321-14)
अलिपत गुफा महि रहहि निरारे ॥ (904-5)
अलिपत बंधन रहत करता कीआ अपना पावने ॥ (547-9)
अलिपतु रहउ जैसे जल महि कउला ॥१॥ रहाउ ॥ (384-16)
अलीअल गुंजात अलीअल गुंजात हे मकरंद रस बासन मात हे प्रीति कमल बंधावत आप ॥ (462-7)
अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ॥ (467-18)
अवखध सभे कीतिअनु निंदक का दारू नाहि ॥ (315-10)
अवगण काटि कीए प्रभि अपुने राखि लीए मेरै गुर गोपालि ॥१॥ रहाउ ॥ (1338-17)
अवगण गुणी बखसाइआ हरि सिउ लिव लाई ॥ (428-1)
अवगण छोडउ गुण कमाइ ॥ (1188-5)
अवगण छोडि गुण माहि समाए ॥ (1051-13)
अवगण तिआगि भई बैरागनि असथिरु वरु सोहागु हरी ॥ (1254-12)
अवगण तिआगि समाईऐ गुरमति पूरा सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (56-14)
अवगण परहरि करणी सारी दरि सचै सचिआरो ॥ (437-14)
अवगण बखसणहारा कामणि कंतु पिआरा घटि घटि रहिआ समाई ॥ (245-13)
अवगण बाधि चली दुखु आगै सुखु तिसु साचु समाले ॥ (1108-11)
अवगण मारि गुणी घरु छाइआ पूरै पुरखि बिधातै ॥ (765-3)
अवगण मारी मरै न सीझै गुणि मारी ता मरसी ॥ (1109-4)

अवगण मेटि चले गुण संगम नाले राम ॥ (437-14)
अवगण मेटै गुणि निसतारै ॥ (942-10)
अवगण विकणि पल्हरनि गुण की साझ करंन्हि ॥२५॥ (756-8)
अवगणवंती पिरु न जाणई मुठी रोवै कंत विसारि ॥ (583-8)
अवगणि बधा मारीऐ छूटै गुरमति नाइ ॥७॥ (61-19)
अवगणि मुठी जे फिरहि बधिक थाइ न पाहि जीउ ॥ (751-5)
अवगणि मुठी महलु न पाए अवगण गुणि बखसावणिआ ॥६॥ (109-16)
अवगणि मुठे चोटा खाही ॥३॥ (361-4)
अवगणि सुभर गुण नही बिनु गुण किउ घरि जाउ ॥ (1010-6)
अवगति बाणि छोडि म्रित मंडलि तउ पाछै पछुताणा ॥४॥ (93-12)
अवगन मोहि अनेक कत महलि बुलाईऐ राम ॥ (543-3)
अवगनिआरे पाथर भारे हरि तारे संगि जनखे ॥३॥ (976-5)
अवगनीआरे पाथर भारे सतसंगति मिलि तरे तरास ॥३॥ (1295-7)
अवगुण काटि गुण रिदै समाइ ॥ (663-15)
अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ ॥ (598-6)
अवगुण वंञनि गुण रवहि मनि सुखु वसै आइ ॥२॥ (956-16)
अवगुणिआरी कंति विसारी छूटी विधण रैणी ॥ (689-14)
अवगुणी भरपूर है गुण भी वसहि नालि ॥ (936-9)
अवगुनीआरे मानसै भलो न कहिहै कोइ ॥७२॥ (1368-6)
अवतरि आइ कहा तुम कीना ॥ (792-7)
अवतार न जानहि अंतु ॥ (894-4)
अवर आसा सभ लाहि ॥ (895-6)
अवर उपदेसै आपि न करै ॥ (269-8)
अवर उपदेसै आपि न बूझै ॥ (372-17)
अवर उपाव सगल मै देखे जो चितवीऐ तितु बिगरसि काजु ॥१॥ रहाउ ॥ (1138-17)
अवर ओट मै कोइ न सूझै इक हरि की ओट मै आस ॥ (1304-9)
अवर ओट मै सगली देखी इक तेरी ओट रहाईऐ ॥३॥ (624-19)
अवर करतूति सगली जमु डानै ॥ (266-2)
अवर करम नही छूटीऐ राखहु हरि नाथ ॥१॥ (815-7)
अवर काहू पहि बहुड़ि न जावहि ॥१॥ (395-8)
अवर छूटी सभ आस ॥ (896-13)
अवर जतनि नही पाईऐ ॥ (211-2)
अवर जोनि तेरी पनिहारी ॥ (374-5)
अवर टहला झूठीआ नित करै जमु सिरि मार ॥१॥ रहाउ ॥ (986-8)
अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥ (283-1)
अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥ (283-5)
अवर तिआगि हरि भगती लाइआ ॥ (864-4)

अवर दिन काहू काज न लाए ॥ (999-10)
अवर न पाईऐ गुर की साम ॥ (1162-15)
अवर न बूझि करत बीचारु ॥ (285-1)
अवर न सूझसि बीजी कारा ॥ (1069-5)
अवर न सूझै दूजी ठाहर हारि परिओ तउ दुआरी ॥ (713-17)
अवर बिसारी बिसारी ॥ (401-13)
अवर मरत माइआ मनु तोले तउ भग मुखि जनमु विगोइआ ॥३॥ (93-10)
अवर मूए किआ सोगु करीजै ॥ (325-15)
अवर वसतु तुझ पाहि अमान ॥२॥ (374-15)
अवर सगल मिथिआ ए जानउ भजनु रामु को सही ॥१॥ (631-15)
अवर सभ छाडि बचन रचना ॥१॥ रहाउ ॥ (1106-16)
अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥१॥ रहाउ ॥ (658-14)
अवर सभ मिथिआ लोभ लबी ॥ (497-11)
अवर सिआणप छाडि देहि नानक उधरसि नाइ ॥२॥ (962-8)
अवर सिआणप सगली पाजु ॥ (1327-5)
अवर सिआणपा बिरथीआ पिआरे राखन कउ तुम एक ॥१॥ रहाउ ॥ (802-8)
अवर सिआनप सगली छाडु ॥ (286-11)
अवरन हसत आप हहि कांने ॥ (332-8)
अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥१॥ (793-14)
अवरि उपाव सभि तिआगिआ दारू नामु लइआ ॥ (817-9)
अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥ (288-3)
अवरि करम लोकह पतीआर ॥४॥१२॥२५॥ (1142-14)
अवरि करम सभि लोकाचार ॥ (804-13)
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ (12-6)
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ (378-2)
अवरि जतन करि रहे बहुतेरे तिन तिलु नही कीमति जानी ॥ रहाउ ॥ (671-17)
अवरि जतन कहहु कउन काज ॥ (178-1)
अवरि दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेहु ॥१॥ (140-11)
अवरि निराफल कामा ॥१॥ रहाउ ॥ (728-5)
अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥ (155-10)
अवरि सभि भूले भ्रमत न जानिआ ॥ (1205-15)
अवरि साद चखि सगले देखे मन हरि रसु सभ ते मीठा जीउ ॥१॥ (100-19)
अवरी कउ साचु न देइ ॥ (349-16)
अवरी नो समझावणि जाइ ॥ (140-1)
अवरु उपाउ न कोई सूझै नानक तरीऐ गुर बचनी ॥४॥३॥२१॥ (1186-6)
अवरु कछू मेरै संगि न चालै मिलै क्रिपा गुण गाम ॥१॥ रहाउ ॥ (713-6)
अवरु कि बहुता पड़हि उठावहि भारु ॥१॥ रहाउ ॥ (1261-6)

अवरु जि करन करावनो तिन महि भउ है जाम का ॥१॥ रहाउ ॥ (211-2)
अवरु दूजा किउ सेवीऐ जमै तै मरि जाइ ॥ (509-5)
अवरु न अउखधु तंत न मंता ॥ (416-6)
अवरु न करणै वाला दूआ ॥१॥ (154-2)
अवरु न कहीऐ दूजा कोई ॥ (1079-14)
अवरु न कोइ हरि अम्रितु सोइ जिनि पीआ सो बिधि जाणै ॥ (446-15)
अवरु न कोऊ दूजा सूझै साचे अलख अभेवा ॥१॥ (383-7)
अवरु न कोऊ मारनवारा ॥ (391-2)
अवरु न कोऊ सूझै प्रभ बिनु कहु को किसु पहि जासी ॥ (1214-10)
अवरु न जाणसि सबदु पछाणसि अंतरि जाणि पछाता ॥१॥ (1126-17)
अवरु न जाणा दूआ तीआ ॥ (1034-3)
अवरु न जाणा दूजा कोई ॥ (1034-2)
अवरु न जानसि कोऊ मरमा गुर किरपा ते लही ॥१॥ रहाउ ॥ (499-1)
अवरु न जानहि बिनु निरंकारी ॥२॥ (181-10)
अवरु न दीसै एको सोई ॥ (1035-13)
अवरु न दीसै किसु पूज चड़ाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1345-4)
अवरु न दीसै किसु सालाही तिसहि सरीकु न कोई ॥ (597-3)
अवरु न दूजा करणै जोगु ॥ (176-15)
अवरु न दूजा ठाउ ॥ (1341-7)
अवरु न दूजा सिरजणहारा ॥३॥ (839-6)
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥ (272-10)
अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (525-12)
अवरु न सूझसि बीजी कारा ॥ (1343-5)
अवरु न सूझै गुर कउ वारिआ ॥ (796-4)
अवरु ना सुझै मूं हां ॥ (410-13)
अवरु नाही करि देखणहारो ॥ (1342-11)
अवरु सभु किछु मिथिआ रसना राम राम वखानु ॥१॥ (1006-9)
अवरो न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे ॥ (923-2)
अवलि अउलि दीनु करि मिठा मसकल माना मालु मुसावै ॥ (141-11)
अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥ (1349-19)
अवलि सिफति दूजी साबूरी ॥ (1084-4)
अवलोकन पुनह पुनह करउ जन का दरसारु ॥ (745-15)
अवलोक्या ब्रहमु भरमु सभु छुटक्या दिब्य द्रिस्टि कारण करणं ॥ (1402-4)
अविगत अगनत अथाह ठाकुर सगल मंझे बाहरा ॥ (456-4)
अविगत की गति गुरमुखि जाती ॥ (904-8)
अविगत नाथ निरंजनि राते निरभउ सिउ लिव लाई ॥४॥ (504-12)
अविगत नाथु अगोचर सुआमी ॥ (1157-1)

अविगत नाथु न लखिआ जाइ ॥६॥ (411-18)
अविगत सिउ मानिआ मानो ॥ (1006-4)
अविगतो निरमाइलु उपजे निरगुण ते सरगुणु थीआ ॥ (940-14)
अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ ॥ (843-19)
अविनासी अविगतु अगोचरु सदा सलामति खसमु हमारा ॥१॥ रहाउ ॥ (376-6)
अविनासी अविगतु सो प्रभु सदा नवतनु निरमला ॥ (457-3)
अविलोकउ राम को मुखारबिंद ॥ (1304-2)
असंख अमर करि जाहि जोर ॥ (4-4)
असंख अवगण खते फेरे नितप्रति सद भूलीऐ ॥ (704-10)
असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥ (4-7)
असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥ (4-4)
असंख कोटि अन पूजा करी ॥ (1163-13)
असंख खते खिन बखसनहारा ॥ (260-11)
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥ (3-19)
असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥ (4-4)
असंख चोर हरामखोर ॥ (4-3)
असंख जप असंख भाउ ॥ (3-18)
असंख जोग मनि रहहि उदास ॥ (3-19)
असंख नाव असंख थाव ॥ (4-7)
असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥ (4-5)
असंख पापी पापु करि जाहि ॥ (4-4)
असंख पूजा असंख तप ताउ ॥ (3-19)
असंख बैरागी कहहि बैराग सो बैरागी जि खसमै भावै ॥ (634-11)
असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥ (4-1)
असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥ (4-5)
असंख मूरख अंध घोर ॥ (4-3)
असंख मोनि लिव लाइ तार ॥ (4-2)
असंख सती असंख दातार ॥ (4-1)
असंख सूर मुह भख सार ॥ (4-1)
असंतु अनाड़ी कदे न बूझै ॥ (160-17)
अस जरि पर जरि जरि जब रहै ॥ (340-18)
असगा अस उसगा ॥ (693-18)
असट दसा खटु तीनि उपाए ॥ (839-8)
असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी ॥१॥ (858-4)
असट दसी चहु भेदु न पाइआ ॥ (355-8)
असट धातु पातिसाह की घड़ीऐ सबदि विगासि ॥ (61-14)
असट पुत्र दीपक के जाना ॥१॥ (1430-12)

असट पुत्र भैरव के गावहि गाइन पात्र ॥१॥ (1430-3)
असट पुत्र मै कहे सवारी ॥ (1430-10)
असट पुत्र स्रीराग के गुंड कुमभ हमीर ॥१॥ (1430-15)
असट मालकउसक संगि लाए ॥१॥ (1430-6)
असट साज साजि पुराण सोधहि करहि बेद अभिआसु ॥ (663-2)
असट सिधि नव निधि एह ॥ (1184-4)
असटपदी ॥ (262-9)
असटपदी ॥ (264-1)
असटपदी ॥ (265-9)
असटपदी ॥ (266-17)
असटपदी ॥ (268-6)
असटपदी ॥ (269-14)
असटपदी ॥ (271-5)
असटपदी ॥ (272-11)
असटपदी ॥ (274-3)
असटपदी ॥ (275-11)
असटपदी ॥ (276-19)
असटपदी ॥ (278-6)
असटपदी ॥ (279-14)
असटपदी ॥ (281-3)
असटपदी ॥ (282-10)
असटपदी ॥ (283-17)
असटपदी ॥ (285-6)
असटपदी ॥ (286-13)
असटपदी ॥ (288-3)
असटपदी ॥ (289-10)
असटपदी ॥ (290-17)
असटपदी ॥ (292-7)
असटपदी ॥ (293-15)
असटपदी ॥ (295-3)
असटम थीति गोविंद जनमा सी ॥१॥ (1136-2)
असटमी असट धातु की काइआ ॥ (343-16)
असटमी असट सिधि नव निधि ॥ (298-10)
असटमी असट सिधि बुधि साधै ॥ (839-17)
असति एक दिगरि कुई ॥ (143-19)
असति एक दिगरि कुई ॥ (144-2)
असति एकु दिगर कुई ॥ (144-4)

असति चरम बिसटा के मूंदे दुरगंध ही के बेढे ॥१॥ रहाउ ॥ (1124-1)
असतु उदोतु भइआ उठि चले जिउ जिउ अउध विहाणीआ ॥१॥ (1019-18)
असथानु हरि निहकेवलं सति मती नाम तपं ॥४॥ (505-16)
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥१॥ (988-17)
असथावर जंगम कीट पतंगा ॥ (325-19)
असथितं सोग हरखं भै खीणं त निरभवह ॥ (1357-19)
असथित भए बसे सुख थाना बहुरि न कतहू धाइओ ॥३॥ (1299-11)
असथिति भए बिनसी सभ चिंद ॥ (1150-19)
असथिरं नानक साध जन ॥९॥ (1354-15)
असथिर भए बसे सुख आसन ॥ (202-3)
असथिर भए लागि हरि चरणी गोविंद के गुण गाए ॥१॥ (618-9)
असथिर भए साच रंगि राते जनम मरन बाहुरि नही पीठे ॥१॥ (717-10)
असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि ॥ (678-5)
असथिरु कंधु जपै निरंकारी ॥३॥ (879-17)
असथिरु करता तू धणी तिस ही की मै ओट ॥ (936-5)
असथिरु करता देखीऐ होरु केती आवै जाइ ॥ (54-18)
असथिरु करे निहचलु इहु मनूआ बहुरि न कतहू धावै ॥१॥ (674-10)
असथिरु चीतु मरनि मनु मानिआ ॥ (932-6)
असथिरु चीतु समाधि सगोनी ॥ (932-9)
असथिरु चीतु साचि रंगु माणहु ॥१२॥ (840-3)
असथिरु जो मानिओ देह सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥ (1353-1)
असथिरु थानु सदा निरमाइलु आपे आपु उपाइदा ॥१॥ (1033-9)
असथिरु थीआ अम्रितु पीआ रहिआ आवण जाणी ॥ (576-16)
असथिरु भगत हरि चरण धिआइआ ॥२॥ (388-18)
असथिरु भगति साध की सरन ॥ (268-18)
असथिरु रहै न कतहूं जाई ॥४॥ (481-10)
असथिरु से भए हां ॥ (410-10)
असपति गजपति नरह नरिंद ॥ (727-19)
असमान जिमी दरखत आब पैदाइसि खुदाइ ॥१॥ (723-14)
असमान िम्याने लहंग दरीआ गुसल करदन बूद ॥ (727-10)
असमानु धरती चलसी मुकामु ओही एकु ॥७॥ (64-11)
असा जोरु नाही जे किछु करि हम साकह जिउ भावै तिवै बखसि ॥१॥ रहाउ ॥ (736-4)
असाध रोगु उपजिआ संत दूखनि देह बिनासी महा खइआ ॥३॥ (900-12)
असाध रोगु उपजिओ तन भीतरि टरत न काहू टारिओ ॥ (1001-2)
असी खते बहुतु कमावदे अंतु न पारावारु ॥ (1416-6)
असी बोलविगाड़ विगाड़ह बोल ॥ (25-3)
असु दान गज दान सिहजा नारी भूमि दान ऐसो दानु नित नितहि कीजै ॥ (973-14)

असु पवन हसति असवारी ॥ (179-15)
असु हसती रथ असवारी ॥ (288-17)
असुनि आउ पिरा सा धन झूरि मुई ॥ (1108-19)
असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥ (134-19)
असुमेध जगने ॥ (873-9)
असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥१॥ (973-10)
असुर गए ते भागि पाप तिन्ह भीतरि क्मपहि ॥ (1409-17)
असुर नदी का बंधै मूलु ॥ (974-15)
असुर संघारै सुखि वसै जो तिसु भावै सु होइ ॥३॥ (30-18)
असुर सघारण रामु हमारा ॥ (1028-18)
असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥८॥ (135-4)
अस्चरज रूपं रहंत जनमं ॥ (1359-6)
अहं अहं अहै अवर मूड़ मूड़ मूड़ बवरई ॥ (1308-3)
अहं तिआगि तिआगे ॥ (1185-4)
अहं तोरो मुखु जोरो ॥ (1306-13)
अहं मत अन रत कुमित हित प्रीतम पेखत भ्रमत लाख गरीआ ॥१॥ (1303-15)
अहंकार निवारणु है भव खंडनु ॥ (1083-2)
अहंकारि डूबै न पावै मानु ॥ (666-5)
अहंकारि मुए से विगती गए मरि जनमहि फिरि आवहि ॥९॥ (1089-15)
अहंकारी दैतु मारि पचाइआ ॥ (1154-16)
अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइआ ॥ (451-13)
अहंकारीआ नो दुख भुख है हथु तडहि घरि घरि मंगाइ ॥ (303-5)
अहंकारु करहि अहंकारीआ विआपिआ मन की मति ॥ (42-11)
अहंकारु तिसना रोगु लगा बिरथा जनमु गवावहे ॥ (441-8)
अहंकारु हउमै तजै माइआ सहजि नामि समावए ॥ (690-3)
अहमेव मूठो बेचारा ॥ (1005-3)
अहमेव सिउ मसलति छोडी ॥ (1347-15)
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ (8-8)
अहि करु करे सु अहि करु पाए इक घड़ी मुहतु न लगै ॥ (1098-6)
अहि करु करे सु अहि करु पाए कोई न पकड़ीऐ किसै थाइ ॥३॥ (406-8)
अहिनिसि अंतरि रहै धिआनि ॥ (953-2)
अहिनिसि अंतरि रहै लिव लाइ ॥ (1256-11)
अहिनिसि अंधुले दीपकु देइ ॥ (354-10)
अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा ॥१॥ रहाउ ॥ (220-9)
अहिनिसि अखंड सुरही जाइ ॥ (344-10)
अहिनिसि एक नाम जो जागे ॥ (330-13)
अहिनिसि कसमल धोवहि नाहि ॥५॥ (344-15)

अहिनिसि कहरै ॥ (467-17)
अहिनिसि कामि विआपिआ वणजारिआ मित्रा अंधुले नामु न चिति ॥ (75-16)
अहिनिसि गुर के चरन सरेवहु हरि दाता भुगता सोई ॥ रहाउ ॥ (598-19)
अहिनिसि जपी सदा सालाही साच सबदि लिव लाई ॥ (775-10)
अहिनिसि जागहि कबहि न सूता ॥ (840-8)
अहिनिसि जागै नीद न सोवै ॥ (993-2)
अहिनिसि जीआ देखि समाले तिस ही की सरकारा ॥१॥ (1331-17)
अहिनिसि जीआ देखि सम्हालै सुखु दुखु पुरबि कमाई ॥ (1330-13)
अहिनिसि जोति निरंतरि पेखै ॥ (1041-16)
अहिनिसि दीवा बलै अथकु ॥१॥ (878-7)
अहिनिसि नवतन निरमला मैला कबहूं न होइ ॥ (790-9)
अहिनिसि नामि निरंजन रसिआ ॥ (1042-13)
अहिनिसि नामि रते से सूचे मरि जनमे से काचे ॥३॥ (597-2)
अहिनिसि नामि संतोखीआ सेवा सचु साई ॥ (421-13)
अहिनिसि नामु जपहु रे प्राणी मैले हछे होही ॥३॥ (1254-7)
अहिनिसि नामु तिसै का लीजै हरि ऊतमु पुरखु परधानु जीउ ॥ (438-12)
अहिनिसि नामु सलाहीऐ सतिगुर सरणाई ॥६॥ (419-13)
अहिनिसि निंदा करहि अनेका ॥ (1030-13)
अहिनिसि निंदा ताति पराई हिरदै नामु न सरब दइआ ॥ (906-12)
अहिनिसि निरमल जोति सबाई घटि दीपकु गुरमुखि जाता हे ॥१५॥ (1032-4)
अहिनिसि निरमलु थानि सुथानु ॥ (414-7)
अहिनिसि निरमलु हरि लिव लाई ॥१॥ (416-2)
अहिनिसि पालहि राखि लेहि आतम सुखु धारा ॥१॥ (228-12)
अहिनिसि प्रीति सबदि साचै हरि सरि वासा पावणिआ ॥५॥ (129-1)
अहिनिसि फूल बिछावै माली ॥ (225-10)
अहिनिसि बनी प्रेम लिव लागी सबदु अनाहद गहिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (360-7)
अहिनिसि बाजे अनहद तूर ॥ (344-3)
अहिनिसि भगति करे दिनु राती लाज छोडि हरि के गुण गावै ॥१॥ रहाउ ॥ (879-7)
अहिनिसि भगति करे दिनु राती हउमै मारि निचंदु ॥ (29-13)
अहिनिसि भगति करे लिव लाइ ॥ (352-10)
अहिनिसि भगति रते वीचारी ठाकुर सिउ बणि आई हे ॥११॥ (1024-4)
अहिनिसि भोगै चोज बिनोदी उठि चलतै मता न कीना हे ॥६॥ (1028-3)
अहिनिसि मगनु रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥ (219-8)
अहिनिसि रंगि राती जीउ गुर सबदु वीचारे ॥ (244-12)
अहिनिसि रहै एक लिव लागी साचे देखि पतीणा ॥१॥ रहाउ ॥ (907-7)
अहिनिसि रहै निरालमो कार धुर की करणी ॥ (421-9)
अहिनिसि राम रहहु रंगि राते एहु जपु तपु संजमु सारा हे ॥३॥ (1030-5)

अहिनिसि रामु रिदै से पूरे ॥ (154-10)
अहिनिसि रावे भगति जोगु ॥ (1170-5)
अहिनिसि लाहा हरि नामु परापति गुरु दाता देवणहारु ॥ (1256-2)
अहिनिसि सुंनि समाधि समावै ॥१॥ रहाउ ॥ (877-16)
अहिनिसि हरि जसु गुर परसादि ॥ (415-17)
अहिनिसि हिरदै जे वसै नानक नदरी पारु ॥४॥१॥३१॥ (358-6)
अहिनिसि हिरदै रवि रहै निरभउ नामु निरंकार ॥ (32-18)
अहिरख वादु न कीजै रे मन ॥ (479-18)
अहेरा पाइओ घर कै गांइ ॥२॥ (1136-15)
अहो जस्य रखेण गोपालह नानक रोम न छेद्यते ॥६॥ (1354-9)
अह्मबुधि कउ बिनसना इह धुर की ढाल ॥ (807-16)
अह्मबुधि करम कमावने ॥ (211-3)
अह्मबुधि का छोडिआ संगु ॥ (1147-9)
अह्मबुधि का भइआ बिनास ॥ (891-11)
अह्मबुधि तिनि सगल तिआगी ॥२॥ (187-11)
अह्मबुधि दुरमति है मैली बिनु गुर भवजलि फेरा ॥३॥ (1139-1)
अह्मबुधि परबाद नीत लोभ रसना सादि ॥ (810-3)
अह्मबुधि बंधन परे नानक नाम छुटार ॥१॥ (255-3)
अह्मबुधि बहु सघन माइआ महा दीरघ रोगु ॥ (502-6)
अह्मबुधि मन पूरि थिधाई ॥ (200-1)
अह्मबुधि माइआ मद माते ॥ (252-9)
अह्मबुधि मोह मन बासन दे करि गडहा गाडी ॥१॥ रहाउ ॥ (671-6)
अह्मबुधि सुचि करम करि इह बंधन बंधानी ॥७॥ (242-5)
अ्मबड़ि कोइ न सकई हउ किस नो पुछणि जाउ ॥५॥ (53-16)
अ्मबरि कूंजा कुरलीआ बग बहिठे आइ जीउ ॥ (762-11)
अ्मबरीक कउ दीओ अभै पदु राजु भभीखन अधिक करिओ ॥ (1105-11)
अ्मबरीकु जयदेव त्रिलोचनु नामा अवरु कबीरु भणं ॥ (1405-11)
अ्मबरु धरति विछोड़ि चंदोआ ताणिआ ॥ (1279-5)
अ्मबरु धरति विछोड़िअनु विचि सचा असराउ ॥ (949-7)
अ्मभै का करि डंडा धरिआ ॥ (886-11)
अ्मभै कै संगि नीका वंनु ॥ (873-3)
अ्मभै सेती अ्मभु रलिआ बहुड़ि न निकसिआ जाइ ॥ (947-4)
आंगनि मेरै सोभा चंद ॥ (372-10)
आंच न लागै अगनि सागर ते सरनि सुआमी की अहीऐ ॥१॥ (531-13)
आंट सेती नाकु पकड़हि सूझते तिनि लोअ ॥ (662-19)
आंधी पाछे जो जलु बरखै तिहि तेरा जनु भीनां ॥ (331-19)
आइ गइआ की न आइओ किउ आवै जाता ॥ (766-12)

आइ गइआ पछुतावणा जिउ सुंञै घरि काउ ॥३॥ (58-4)
आइ चले भए आस निरासा ॥ (933-4)
आइ न जाइ डोलै कत नाही ॥ (891-2)
आइ न जाइ बसे निज आसनि ऊंध कमल बिगसोरो ॥ (1306-15)
आइ न जाइ बसै इह ठाहर जह आसनु निरंकारो ॥१॥ (1215-3)
आइ न जाई थिरु सदा गुर सबदी सचु जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (70-8)
आइ न जाई प्रभु किरपाला ॥ (1038-13)
आइ न जाई रहिआ समाई ॥ (1138-13)
आइ न जावै न कत ही डोलै थिरु नानक राजइआ ॥२॥२४॥४७॥ (1213-16)
आइ न जावै ना दुखु पावै ना दुख दरदु सरीरे ॥ (1197-14)
आइ न जावै निहचलु धनी ॥ (862-18)
आइ न जावै मेरा प्रभु अबिनासी ॥३॥ (562-17)
आइ न सका तुझ कनि पिआरे भेजि न सका कोइ ॥ (558-5)
आइ पइआ तेरी सरणाई ॥ (104-19)
आइ पइआ हरि तेरै दुआरै ॥ (98-17)
आइ पइओ नानक गुर चरनी तउ उतरी सगल दुराछै ॥२॥२॥२८॥ (534-2)
आइ परे धरम राइ के बीचहि धूमा धाम ॥१४२॥ (1372-2)
आइ बनिओ पूरबला भागु ॥ (892-12)
आइ बसहि साधू कै संगे ॥ (252-17)
आइ बसहु घर देस महि इह भले संजोग ॥ (807-14)
आइ मिलहु संत सजणा नामु जपह मन मित जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (760-12)
आइ मिलु गुरसिख आइ मिलु तू मेरे गुरू के पिआरे ॥ रहाउ ॥ (725-11)
आइ मिले प्रभ सुख धनी ॥३॥ (1184-9)
आइ लगे नी दिह थोड़ड़े जिउ पका खेतु लुणीऐ ॥ (316-10)
आइ विगूता जगु जम पंथु ॥ (931-11)
आइआ उठी खेलु फिरै उवतिआ ॥ (1289-11)
आइआ ओहु परवाणु है जि कुल का करे उधारु ॥ (1094-1)
आइआ कालु दुखदाई होए जो बीजे सो खवलावैगो ॥६॥ (1311-4)
आइआ गइआ मुइआ नाउ ॥ (138-1)
आइआ तिन का सफलु भइआ है इक मनि जिनी धिआइआ ॥ (579-8)
आइआ प्रभ दरबारा ॥ (621-8)
आइआ मरणु धुराहु हउमै रोईऐ ॥ (369-1)
आइआ लगनु गणाइ हिरदै धन ओमाहीआ बलि राम जीउ ॥ (773-12)
आइआ लिखि लै जावणा पिआरे हुकमी हुकमु पछाणु ॥ (636-8)
आइआ सफल ताहू को गनीऐ ॥ (252-16)
आइआ सो परवाणु है भाई जि गुर सेवा चितु लाइ ॥ (603-3)
आइआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइआ ॥ (923-4)

आइआ हुकमु पारब्रहम का छोडि चलिआ एक दिहाड़े ॥२॥ (380-1)
आइऐ चिति निहालु साहिब बेसुमार ॥ (522-18)
आइओ चोरु तुरंतह ले गइओ मेरी राखत मुगधु फिरै ॥२॥ (479-12)
आइओ दुख हरण सरण करुणापति गहिओ चरण आसरा ॥१॥ (701-7)
आइओ बंदा दुनी विचि वति आसूणी बंन्हि ॥ (1383-6)
आइओ लाभु लाभन कै ताई मोहनि ठागउरी सिउ उलझि पहा ॥ (1203-13)
आइओ सरणि दीन दुख भंजन चितवउ तुम्हरी ओरि ॥ (701-18)
आइओ साम नानक ओट हरि की लीजै भुजा पसारे ॥४॥२॥ (999-8)
आइओ सुनन पड़न कउ बाणी ॥ (1219-15)
आइड़ै आपि करे जिनि छोडी जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥ (434-11)
आई आगिआ पिरहु बुलाइआ ॥ (1073-6)
आई तलब गोपाल राइ की माइआ मंदर छोडि चलिओ ॥५॥२॥१५॥ (479-16)
आई न मेटण को समरथु ॥ (931-11)
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥ (6-17)
आई पूता इहु जगु सारा ॥ (840-1)
आई मसटि जड़वत की निआई जिउ तसकरु दरि सांन्हिहा ॥३॥ (1203-15)
आई रैनि भइआ सुपनंतरु बिखु सुपनै भी दुख सारे ॥५॥ (981-8)
आउ कलंदर केसवा ॥ (1167-14)
आउ जी तू आउ हमारै हरि जसु स्रवन सुनावना ॥१॥ रहाउ ॥ (1018-14)
आउ न जाउ कही अपने सह नाली राम ॥ (843-9)
आउ बैठु आदरु सभ थाई ऊन न कतहूं बाता ॥ (631-8)
आउ बैठु आदरु सुभ देऊ ॥ (252-6)
आउ सखी गुण कामण करीहा जीउ ॥ (173-6)
आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥ (457-9)
आउ सखी हरि मेलि मिलाहा ॥ (698-19)
आउ सखी हरि मेलु करेहा ॥ (95-2)
आउ सजण तू मुखि लगु मेरा तनु मनु ठंढा होइ ॥१॥ (1100-12)
आउ सभागी नीदड़ीए मतु सहु देखा सोइ ॥ (558-6)
आउ साजन संत मीत पिआरे ॥ (104-15)
आउ हमारै राम पिआरे जीउ ॥ (217-3)
आए अनिक जनम भ्रमि सरणी ॥ (702-9)
आए कठिन दूत जम लेना ॥ (792-14)
आए खरे कठिन जमकंकरि पकड़ि लइआ ॥ (546-14)
आए प्रभ पहि अंचरि लागि ॥ (1347-17)
आए प्रभ सरनागती किरपा निधि दइआल ॥ (261-11)
आए से परवाणु हहि जिन गुरु मिलिआ सुभाइ ॥ (52-6)
आए से परवाणु है सभ कुल का करहि उधारु ॥७॥ (66-12)

आए से परवाणु होए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥६॥ (117-16)
आकासि गगनु पातालि गगनु है चहु दिसि गगनु रहाइले ॥ (870-8)
आकासी पातालि तूं त्रिभवणि रहिआ समाइ ॥ (62-2)
आखण ता कउ जाईऐ जे भूलड़ा होई ॥ (766-3)
आखण वाला किआ बेचारा ॥ (349-5)
आखण वाला किआ वेचारा ॥ (9-14)
आखण वाले जेतड़े सभि आखि रहे लिव लाइ ॥१॥ (53-9)
आखणा सुनणा नामु अधारु ॥ (1344-11)
आखणि अउखा आखीऐ पिआरे किउ सुणीऐ सचु नाउ ॥ (636-14)
आखणि अउखा नानका आखि न जापै आखि ॥२॥ (1240-1)
आखणि अउखा साचा नाउ ॥ (349-7)
आखणि अउखा साचा नाउ ॥ (9-15)
आखणि अउखा सुनणि अउखा आखि न जापी आखि ॥ (1239-18)
आखणि आखहि केतड़े गुर बिनु बूझ न होइ ॥ (61-13)
आखणि आखै बकै सभु कोइ ॥ (362-3)
आखणि जाईऐ जे भूला होई ॥ (114-4)
आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥ (7-9)
आखणि तोटि न भगति भंडारी भरिपुरि रहिआ सोई ॥ (688-5)
आखणु आखि न रजिआ सुनणि न रजे कंन ॥ (147-5)
आखणु वेखणु बोलणा सबदे रहिआ समाइ ॥ (35-9)
आखणु वेखणु बोलणु चलणु जीवणु मरणा धातु ॥ (145-5)
आखणु वेखणु सभु साहिब ते होइ ॥४॥२॥१४॥ (1176-10)
आखणु सुनणा तेरी बाणी ॥ (1125-6)
आखणु सुनणा पउण की बाणी इहु मनु रता माइआ ॥ (24-5)
आखहि ईसर आखहि सिध ॥ (6-1)
आखहि केते कीते बुध ॥ (6-1)
आखहि गोपी तै गोविंद ॥ (6-1)
आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि जगतु उपाइआ ॥ (918-14)
आखहि थकहि आखि आखि करि सिफतीं वीचार ॥ (1241-18)
आखहि दानव आखहि देव ॥ (6-1)
आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ (5-19)
आखहि बरमे आखहि इंद ॥ (5-19)
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥ (2-3)
आखहि वेद पाठ पुराण ॥ (5-19)
आखहि सि भि केई केइ ॥ (5-15)
आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ (6-2)
आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ (349-6)

आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ (9-15)
आखा बिरथा जीअ की गुरु सजणु देहि मिलाइ जीउ ॥ (763-2)
आखा बिरथा जीअ की हरि सजणु मेलहु राइ ॥ (958-8)
आखार मंडली धरणि सबाई ऊपरि गगनु चंदोआ ॥ (884-15)
आखि आखि मनु वावणा जिउ जिउ जापै वाइ ॥ (53-8)
आखि आखि रहे लिव लाइ ॥ (5-18)
आखि आखि रहे सभि लिव लाइ ॥ (841-5)
आखि थके कीमति नही पाई ॥ (349-8)
आखि थके कीमति नही पाई ॥ (9-17)
आखिर बिअफतम कस न दारद चूं सवद तकबीर ॥२॥ (721-6)
आखीं सेखा बंदगी चलणु अजु कि कलि ॥९७॥ (1383-1)
आखु गुणा कलि आईऐ ॥ (903-1)
आखूं आखां सदा सदा कहणि न आवै तोटि ॥ (1241-12)
आखेड़ बिरति राजन की लीला ॥ (179-16)
आखेर बिरति बाहरि आइओ धाइ ॥ (1136-14)
आगम निगमु कहै जनु नानकु सभु देखै लोकु सबाइआ ॥२॥६॥११॥ (714-6)
आगम निरगम जोतिक जानहि बहु बहु बिआकरना ॥ (476-19)
आगाहा कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा ॥ (1096-12)
आगि लगउ तिह धउलहर जिह नाही हरि को नाउ ॥१५॥ (1365-6)
आगि लगाइ मंदर मै सोवहि ॥५॥ (332-7)
आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥ (294-14)
आगिआ तुमरी मीठी लागउ कीओ तुहारो भावउ ॥ (713-1)
आगिआ दूख सूख सभि कीने ॥ (1086-10)
आगिआ नही लीनी भरमि भुलाइआ ॥१॥ (227-2)
आगिआ महि तेरी प्रभ आगिआ हुकमन सिरि हुकमा ॥७॥ (507-19)
आगिआ महि भूख सोई करि सूखा सोग हरख नही जानिओ ॥ (1000-4)
आगिआ मानि जानि सुखु पाइआ सुनि सुनि नामु तुहारो जीओ ॥ (978-14)
आगिआ सति सहु हां ॥ (410-3)
आगिआकारी कीनी माइआ ॥ (294-13)
आगिआकारी धारी सभ स्रिसटि ॥ (281-19)
आगिआकारी बपुरा जीउ ॥ (277-13)
आगिआकारी सगल जगतु ॥ (373-14)
आगिआकारी सदा सुखु भुंचै जत कत पेखउ हरि गुनी ॥२॥ (883-11)
आगिआकारी सदा सोहागणि आपि मेली करतारि ॥ (785-9)
आगिआकारी सुघड़ सरूप ॥ (371-3)
आगिआकारी हरि हरि राइ ॥१॥ रहाउ ॥ (186-12)
आगे कउ किछु तुलहा बांधहु किआ भरवासा धन का ॥ (1253-17)

आगे बैठा पीठि फिराइ ॥१॥ (1159-4)
आगै अंतु न पाइओ ता का कंसु छेदि किआ वडा भइआ ॥३॥ (350-18)
आगै आपि इहु थानु वसि जा कै ॥ (200-16)
आगै कुसल पाछै खेम सूखा सिमरत नामु सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ (1222-19)
आगै गइआ न बाजी हारी ॥१॥ (476-7)
आगै घाम पिछै रुति जाडा देखि चलत मनु डोले ॥ (1109-1)
आगै चलणु अउरु है भाई ऊंहा कामि न आइआ ॥१॥ (216-5)
आगै जम दलु बिखमु घना ॥१॥ रहाउ ॥ (155-12)
आगै जम सिउ होइ न मेल ॥ (891-11)
आगै जाति रूपु न जाइ ॥ (363-11)
आगै ठाकुरि तिलु नही मानी ॥ (255-4)
आगै तिलु नही मानीऐ ॥२॥ (211-3)
आगै दयु पाछै नाराइण ॥ (1137-7)
आगै दरगह पावउ ठाउ ॥ (893-13)
आगै दरगह पावउ थाउ ॥ (893-4)
आगै दरगह पावै मानु ॥ (866-4)
आगै दरगहि कामि न आवै छोडि चलै अभिमानी ॥१॥ (379-18)
आगै दरगहि मंनीअहि मिलै निथावे थाउ ॥१॥ (52-19)
आगै देखउ डउ जलै पाछै हरिओ अंगूरु ॥ (20-4)
आगै द्रिसटि आवत सभ परगट ईहा मोहिओ भरम अंधेरो ॥१॥ (1302-18)
आगै नरकु ईहा भोग बिलास ॥१॥ (871-14)
आगै पाछै अंती वारे ॥१॥ (533-6)
आगै पाछै एको सोई ॥ (391-5)
आगै पाछै कुसलु भइआ ॥ (829-5)
आगै पाछै गणत न आवै किआ जाती किआ हुणि हूए ॥ (1238-14)
आगै पाछै मंदी सोइ ॥३॥ (199-13)
आगै पाछै रोवहि पूत ॥ (951-17)
आगै पाछै सुखु नही गाडे लादे छारु ॥ (1010-8)
आगै पाछै हुकमि समाइ ॥२॥ (151-10)
आगै पूछ न होवई जिसु बेली गुरु करतारु ॥ (62-19)
आगै बिमल नदी अगनि बिखु झेला ॥ (1026-3)
आगै मिली निथावे थाउ ॥ (891-5)
आगै मिलै निथावे थाउ ॥२॥ (1143-19)
आगै मोहु न चूकै माइआ ॥ (1063-7)
आगै राखिओ साल गिरामु ॥ (887-19)
आगै सरपर जाणा जिउ मिहमाणा काहे गारबु कीजै ॥ (579-4)
आगै सह भावा कि न भावा ॥२॥ (357-1)

आगै सुखु गुरि दीआ ॥ (626-3)
आगै सुखु पाछै सुख सहजा घरि आनंदु हमारै ॥ रहाउ ॥ (609-16)
आगै सुखु मेरे मीता ॥ (629-18)
आगै ही ते सभु किछु हूआ अवरु कि जाणै गिआना ॥ (383-1)
आगै हुकमु न चलै मूले सिरि सिरि किआ विहाणा ॥ (579-5)
आचरज सुआमी अंतरजामी मिले गुण निधि पिआरिआ ॥ (1278-12)
आचरजु डीठा अमिउ वूठा गुर प्रसादी जाणिआ ॥ (460-15)
आचार करहि सोभा महि लोग ॥ (374-4)
आचार बिउहार जाति हरि गुनीआ ॥ (715-9)
आचार बिउहार बिआपत इह जाति ॥ (182-6)
आचार सहित बिप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासान दासा ॥३॥२॥ (1293-13)
आचारा वीचारु सरीरि ॥ (686-13)
आचारि तू वीचारि आपे हरि नामु संजम जप तपो ॥ (1113-2)
आचारी नही जीतिआ जाइ ॥ (355-7)
आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखउ चीति ॥ (631-13)
आजु कालि मरि जाईऐ प्राणी हरि जपु जपि रिदै धिआई हे ॥५॥ (1025-18)
आजु काल्हि तजि जाहुगे जिउ कांचुरी भुयंग ॥४०॥ (1366-11)
आजु काल्हि भुइ लेटणा ऊपरि जामै घासु ॥३८॥ (1366-9)
आजु नामे बीठलु देखिआ मूरख को समझाऊ रे ॥ रहाउ ॥ (874-17)
आजु मिलावा सेख फरीद टाकिम कूंजड़ीआ मनहु मचिंदड़ीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (488-12)
आजु मेरै मनि प्रगटु भइआ है पेखीअले धरमराओ ॥ (92-11)
आजु मै बैसिओ हरि हाट ॥ (1269-6)
आजु हमारै ग्रिहि बसंत ॥ (1180-3)
आजु हमारै बने फाग ॥ (1180-3)
आजु हमारै मंगलचार ॥ (1180-2)
आजु हमारै महा अनंद ॥ (1180-2)
आजूनी स्मभउ ॥ (1201-16)
आजोनी स्मभविअउ जगतु गुर बचनि तरायउ ॥ (1397-15)
आजोनी स्मभविअउ सुजसु कल्य कवीअणि बखाणिअउ ॥ (1407-9)
आठ जाम चउसठि घरी तुअ निरखत रहै जीउ ॥ (1377-5)
आठ पहर अपना खसमु धिआवउ ॥३॥ (485-15)
आठ पहर अपना प्रभु सिमरनु वडभागी हरि पांई ॥१॥ रहाउ ॥ (1207-16)
आठ पहर अपना प्रभु सिमरहु एको नामु धिआए राम ॥ (926-6)
आठ पहर अपुनी लिव लाइ ॥ (1339-8)
आठ पहर अराधिओ हरि हरि मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ रहाउ ॥ (627-3)
आठ पहर आराधहु सुआमी पूरन घाल हमारी ॥१॥ (619-10)
आठ पहर आराधीऐ पूरन सतिगुर गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (218-4)

आठ पहर उदक इसनानी ॥ (393-6)
आठ पहर कर जोड़ि धिआवउ ॥ (393-5)
आठ पहर कर जोड़ि धिआवा ॥ (1077-16)
आठ पहर कर जोड़ि रहु तउ भेटै हरि राइ री ॥३॥ (400-12)
आठ पहर कर जोड़ि सो प्रभु धिआईऐ ॥ (704-13)
आठ पहर कीरतनु गुण गाउ ॥ (1149-5)
आठ पहर गाईऐ गोबिंदु ॥ (866-8)
आठ पहर गावत भगवंतु ॥ (1150-1)
आठ पहर गुण गाइ साधू संगीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (398-9)
आठ पहर गुण गाइआ जीउ ॥३॥ (217-14)
आठ पहर गुण गाई ॥ (626-1)
आठ पहर गुण सारदे रते रंगि अपार ॥ (46-9)
आठ पहर गुन गाइ गुबिंद ॥ (1339-9)
आठ पहर गुन गाईअहि तजीअहि अवरि जंजाल ॥ (298-9)
आठ पहर गुन गावत प्रभ के काम क्रोध इसु तन ते जात ॥१॥ (820-19)
आठ पहर गुन गावहि रंगि ॥ (1236-11)
आठ पहर गोबिंद गुन गावै जनु नानकु सद बलि जावै ॥२॥६४॥८७॥ (1221-8)
आठ पहर गोविंद गुण गाईऐ बिसरु न कोई सासा जीउ ॥१॥ (108-4)
आठ पहर चितवै नही पहुचै बुरा चितवत चितवत मरीऐ ॥१॥ (823-8)
आठ पहर जन कै संगि बसिओ मन ते नाहि बिसारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (979-2)
आठ पहर जनु एकु धिआए ॥ (869-15)
आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥ (265-4)
आठ पहर जितु तुधु धिआई निरमल होवै देहा ॥१॥ (747-10)
आठ पहर जिनि खसमु धिआइआ ॥ (1077-15)
आठ पहर जिसु विसरहि नाही ॥ (386-10)
आठ पहर जिहवे आराधि ॥ (180-16)
आठ पहर तुधु जापे पवना ॥ (130-14)
आठ पहर तेरा नामु जनु जापे ॥ (826-5)
आठ पहर तेरे गुण गाइआ ॥ (106-8)
आठ पहर तेरे गुण गावा ॥२॥ (740-13)
आठ पहर दरसनु संतन का सुखु नानक इहु पाइओ ॥२॥४३॥६६॥ (1217-8)
आठ पहर धिआईऐ गोपालु ॥ (200-5)
आठ पहर नानक गुर जापि ॥४॥१६॥६७॥ (387-15)
आठ पहर नानक जसु गावै मांगन कउ हरि दान ॥२॥२॥२१॥ (1302-5)
आठ पहर नाम रंगि राता ॥१॥ (869-9)
आठ पहर निकटि करि जानै ॥ (392-13)
आठ पहर पारब्रहम रंगि राता ॥ (287-3)

आठ पहर पारब्रहमु धिआई सदा सदा गुन गाइआ ॥ (1339-1)
आठ पहर पारब्रहमु धिआईऐ ॥ (744-4)
आठ पहर पूजहु गुर पैर ॥१॥ (183-10)
आठ पहर प्रभ कउ आराधी नानक सद कुरबानु ॥२॥१८॥ (675-9)
आठ पहर प्रभ का जपु जापि ॥ (901-7)
आठ पहर प्रभ का नाउ लेइ ॥३॥ (865-18)
आठ पहर प्रभ के गुण गावह पूरन सबदि बीचारि ॥ (1226-1)
आठ पहर प्रभ जानहु नेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (807-6)
आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥ (293-3)
आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥ (286-8)
आठ पहर प्रभ सिमरहु प्राणी ॥३॥ (191-14)
आठ पहर प्रभु अपना धिआईऐ गुर प्रसादि भउ तरीऐ ॥ (750-7)
आठ पहर प्रभु धिआइ तूं गुण गोइंद नित गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (44-13)
आठ पहर मन ता कउ जापि ॥ (896-5)
आठ पहर मनि हरि जपै सफलु जनमु परवाणु ॥ (298-7)
आठ पहर मनु हरि कउ जापै ॥२॥ (200-17)
आठ पहर महा स्रमु पाइआ जैसे बिरख जंती जोत ॥१॥ (1121-14)
आठ पहर मेरे मन गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1148-14)
आठ पहर रसना गुन गावै जसु पूरि अघावहि समरथ कान ॥ (716-11)
आठ पहर राम नामु वापारो ॥ (107-5)
आठ पहर संगी बटवारे ॥ (196-10)
आठ पहर सालाहि सिरजनहार तूं ॥ (397-13)
आठ पहर सिमरउ भगवंत ॥ (1338-9)
आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥ (269-17)
आठ पहर सिमरहु प्रभ नामु ॥ (184-13)
आठ पहर सिमरहु प्रभु अपना मनि तनि सदा धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (500-10)
आठ पहर हरि का जसु रवणा बिखै ठगउरी लाथी ॥ (628-10)
आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥ (287-12)
आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ (866-3)
आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ (892-15)
आठ पहर हरि के गुण गाए ॥३॥ (563-6)
आठ पहर हरि के गुण गावै सिमरै दीन दैआला ॥ (503-2)
आठ पहर हरि के गुन गावै भगति प्रेम रसि माता ॥ (498-1)
आठ पहर हरि धिआइ कै मन इछ पुजाई ॥ (709-9)
आठ पहर हरि धिआइ हरि जसु नित सुन ॥१७॥ (709-18)
आठ पहर हरि धिआईऐ राम ॥ (578-11)
आठ पहर हरि नामु सिमरहु चलै तेरै साथे ॥ (461-6)

आठ पहर हरि रखु मन माही ॥ (1085-19)
आठ पहर हरि सिमरहु प्राणी ॥२॥ (1340-9)
आठ पहर हरि हरि कउ धिआई ॥ (1085-14)
आठ पहर हरि हरि गुण गाउ ॥ (185-8)
आठ पहर हरि हरि जपु जापि ॥ (1149-9)
आठ पहर हरि हरि जसु गाईऐ ॥१॥ (741-17)
आडाणे आकास करि खिन महि ढाहि उसारणहार ॥ (1280-18)
आढ आढ कउ फिरत ढूंढते मन सगल त्रिसन बुझि गई ॥ (402-9)
आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ॥१॥ रहाउ ॥ (487-16)
आढु दामु किछु पइआ न बोलक जागातीआ मोहण मुंदणि पई ॥ (1116-18)
आतमं स्री बास्वदेवस्य जे कोई जानसि भेव ॥ (1353-14)
आतम गड़ु बिखमु तिना ही जीता ॥ (99-18)
आतम घाती है जगत कसाई ॥ (118-6)
आतम चीनहु रिदै मुरारी ॥ (1041-8)
आतम चीनि तहा तू तारण सचु तारे तारणहारा ॥३॥ (1255-7)
आतम चीनि परम रंग मानी ॥१॥ रहाउ ॥ (187-10)
आतम जउ निरमाइलु कीजै आप बराबरि कंचनु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥३॥ (973-14)
आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का सतिगुरु पूरा ॥१॥ (679-17)
आतम जोति भई परफूलित पुरखु निरंजनु देखिआ हजूरि ॥१॥ (1198-9)
आतम देउ देउ है आतमु रसि लागै पूज करीजै ॥१॥ (1325-6)
आतम देउ पूजीऐ बिनु सतिगुर बूझ न पाइ ॥ (88-4)
आतम पसारा करणहारा प्रभ बिना नही जाणीऐ ॥ (846-18)
आतम ब्रहमु चीनि सुखु पाइआ सतसंगति पुरख तुमारी ॥३॥ (607-6)
आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥ (276-9)
आतम महि रामु राम महि आतमु चीनसि गुर बीचारा ॥ (1153-8)
आतम रख्या गोपाल सुआमी धन चरण रख्या जगदीस्वरह ॥ (1358-17)
आतम रतं संसार गहं ते नर नानक निहफलह ॥६५॥ (1360-1)
आतम रत संग्रहण कहण अम्रित कल ढालण ॥ (1391-17)
आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥ (276-16)
आतम रसु जिह जानिआ हरि रंग सहजे माणु ॥ (252-15)
आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥ (272-18)
आतम राम परगासु गुर ते होवै ॥ (123-11)
आतम राम पाए सुखु थीआ ॥ (1039-2)
आतम रामु तिसु नदरी आइआ ॥ (275-1)
आतम रामु पछाणिआ सहजे नामि समानु ॥ (39-2)
आतम रामु प्रगासिआ सहजे सुखि रहंनि ॥३॥ (755-4)
आतम रामु रविआ सभ अंतरि कत आवै कत जाई संतहु ॥५॥ (916-10)

आतम रामु रामु है आतम हरि पाईऐ सबदि वीचारा हे ॥७॥ (1030-10)
आतम रामु लेहु परवाणि ॥ (343-15)
आतम रामु संसारा ॥ (764-14)
आतम रामु सभ एकै है पसरे सभ चरन तले सिरु दीजै ॥६॥ (1325-12)
आतम रामु सरब महि पेखु ॥ (892-5)
आतमा अडोलु न डोलई गुर कै भाइ सुभाइ ॥ (87-7)
आतमा देउ पूजीऐ गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (87-6)
आतमा द्रवै रहै लिव लाइ ॥ (661-10)
आतमा परातमा एको करै ॥ (661-11)
आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥ (469-15)
आतमा रामु न पूजनी दूजै किउ सुखु होइ ॥ (1415-1)
आतमु चीनि परम पदु पाइआ सेवा सुरति समाई हे ॥१५॥ (1070-5)
आतमु चीनि परातमु चीनहु गुर संगति इहु निसतारा हे ॥८॥ (1030-12)
आतमु चीनि रहै लिव लाइआ ॥ (354-3)
आतमु चीनै सु ततु बीचारे ॥८॥ (224-10)
आतमु चीन्हि परम सुखु पाइआ ॥४॥१५॥ (375-3)
आतमु चीन्हि भए निरंकारी ॥७॥ (415-16)
आतमु जिता गुरमती आगंजत पागा ॥ (965-1)
आतमु जीता गुरमती गुण गाए गोबिंद ॥ (299-18)
आतमु न चीन्है भरमै विचि सूता ॥१॥ (362-13)
आतमे नो आतमे दी प्रतीति होइ ता घर ही परचा पाइ ॥ (87-6)
आतस दुनीआ खुनक नामु खुदाइआ ॥२॥ (1291-9)
आतुरु नाम बिनु संसार ॥ (1223-17)
आथि देखि निवै जिसु दोइ ॥ (931-12)
आथि सैल नीच घरि होइ ॥ (931-11)
आथि होइ ता मुगधु सिआना ॥ (931-12)
आदरु दिता पारब्रहमि गुरु सेविआ सत भाइ जीउ ॥४॥ (760-17)
आदि अंत की कीमति जानै ॥३॥ (741-11)
आदि अंति जो राखनहारु ॥ (267-5)
आदि अंति दइआल पूरन तिसु बिना नही कोइ ॥ (675-16)
आदि अंति प्रभ अगम अगाही ॥ (1005-8)
आदि अंति प्रभु सदा सहाई धंनु हमारा मीतु ॥ रहाउ ॥ (682-2)
आदि अंति बेअंत खोजहि सुनी उधरन संतसंग बिधे ॥ (456-16)
आदि अंति मधि नानक कउ सो प्रभु होआ बेली ॥४॥१६॥२७॥ (616-15)
आदि अंति मधि प्रभु रविआ जलि थलि महीअलि सोई ॥ (784-16)
आदि अंति मधि प्रभु सोई ॥ (1085-1)
आदि अंति मधि प्रभु सोई दूजा लवै न लाई जीउ ॥३॥ (107-15)

आदि अंति मधि होइ रहिआ थीर ॥ (344-7)
आदि अंते मधि आसा कूकरी बिकराल ॥ (502-8)
आदि अंते मधि तूहै प्रभ बिना नाही कोइ ॥ (988-6)
आदि अंते मधि पूरन ऊच अगम अगाह ॥५॥ (1017-13)
आदि अंते मधि पूरन सरबत्र घटि घटि आही ॥ (548-3)
आदि अंते मधि सोई गुर प्रसादी जानिआ ॥ (458-17)
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥ (6-17)
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥ (7-1)
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥ (7-4)
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥ (7-6)
आदि अपारु अपर्मपरु हीरा ॥ (354-3)
आदि कउ कवनु बीचारु कथीअले सुंन कहा घर वासो ॥ (940-4)
आदि कउ बिसमादु बीचारु कथीअले सुंन निरंतरि वासु लीआ ॥ (940-11)
आदि गुरए नमह ॥ (262-9)
आदि जुगादि अनादि कला धारी त्रिहु लोअह ॥ (1406-15)
आदि जुगादि अनाहदि अनदिनु घटि घटि सबदु रजाई हे ॥७॥ (1020-18)
आदि जुगादि जा का भरवासा ॥३॥ (187-15)
आदि जुगादि जा का वड परतापु ॥ (801-17)
आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु ता का अंतु न जानिआ ॥ (1351-3)
आदि जुगादि दइआपति दाता ॥ (1060-14)
आदि जुगादि दइआपति दाता तुधु विणु मुकति न पाई ॥४॥६॥ (991-5)
आदि जुगादि दइआलु तू ठाकुर तेरी सरणा ॥१॥ (419-7)
आदि जुगादि निरंजना जन हरि सरणाई ॥२॥ (420-15)
आदि जुगादि प्रगटि परतापु ॥ (199-12)
आदि जुगादि प्रभ की वडिआई जन की पैज सवारै ॥१॥ (1217-14)
आदि जुगादि प्रभु रखदा आइआ हरि सिमरत नानक नही डरण ॥२॥३०॥११६॥ (827-13)
आदि जुगादि भगत गुण गाइणु ॥३॥ (1151-5)
आदि जुगादि भगत जन सेवक ता की बिखै अधारा ॥ (532-6)
आदि जुगादि भगतन का राखा उसतति करि करि जीवा ॥ (778-3)
आदि जुगादि भगतन का राखा सो प्रभु भइआ दइआला ॥ (783-9)
आदि जुगादि वेसु हरि एको मति गुरमति हरि प्रभु भजिआ ॥ (1315-19)
आदि जुगादि सहजि मनु धीरि ॥ (686-13)
आदि जुगादि सेवक की राखै नानक को प्रभु जान ॥२॥४०॥६३॥ (1216-17)
आदि जुगादी अपर अपारे ॥ (1023-11)
आदि जुगादी आपि रखण वालिआ ॥ (523-9)
आदि जुगादी रखदा सचु नामु करतारु ॥ (137-3)
आदि जुगादी रहिआ समाइ ॥१॥ (868-14)

आदि जुगादी सगल भगत ता को सुखु बिस्रामु ॥१॥ (1364-11)
आदि जुगादी सेवक सुआमी भगता नामु अधारे ॥ (79-14)
आदि जुगादी हुणि होवत नानक एकै सोइ ॥१॥ (254-6)
आदि जुगादी है भी होगु ॥ (840-1)
आदि जुगादी है भी होसी अवरु झूठा सभु मानो ॥ (437-8)
आदि जुगादी है भी होसी सभ जीआ का सुखदाई संतहु ॥६॥ (916-11)
आदि जुगादी है भी होसी सहसा भरमु चुकाइआ ॥१४॥ (1039-12)
आदि निरंजन खसम हमारे ॥ (1023-12)
आदि निरंजनु करै अनंद ॥५॥ (1162-13)
आदि निरंजनु निरमलु सोई ॥ (1034-2)
आदि निरंजनु प्रभु निरंकारा ॥ (1075-13)
आदि पुरख अपरमपर देव ॥ (1181-17)
आदि पुरख अपरमपर देव ॥२॥ (187-15)
आदि पुरख कउ अलहु कहीऐ सेखां आई वारी ॥ (1191-2)
आदि पुरख करतार करण कारण सभ आपे ॥ (1385-4)
आदि पुरख कारण करतार ॥ (290-11)
आदि पुरख गुर दरस न देखहि ॥ (416-8)
आदि पुरख ते होइ अनादि ॥ (873-2)
आदि पुरख तेरा अंतु न पाइआ करि करि देखहि वेस ॥१॥ रहाउ ॥ (417-3)
आदि पुरख प्रभु पाइआ ॥२॥१॥६५॥ (625-18)
आदि पुरख महि रहै समाइ ॥२॥ (343-8)
आदि पुरखि इकु चलतु दिखाइआ जह देखा तह सोई ॥ (437-12)
आदि पुरखि जिसु कीआ दानु ॥ (1182-16)
आदि पुरखि निंदकु भोलाइआ ॥ (1145-13)
आदि पुरखि परतखि लिख्यउ अछरु मसतकि धुरि ॥ (1408-13)
आदि पुरखु अपरमपरा गुरमुखि हरि पाए ॥३॥ (422-11)
आदि पुरखु अपरमपरु आपे ॥ (129-18)
आदि पुरखु अपरमपरु पिआरा सतिगुरि अलखु लखाइआ ॥ (436-14)
आदि पुरखु अपरमपरु सो प्रभु हरि नामु रिदै लै पारि पइआ ॥८॥ (906-18)
आदि पुरखु आपे स्रिसटि साजे ॥ (842-4)
आदि पुरखु निरंजन देउ ॥ (943-16)
आदि पुरखु निरंजन देउ ॥६॥५॥ (1129-2)
आदि पूरन मधि पूरन अंति पूरन परमेसुरह ॥ (705-19)
आदि मधि अंति निरंकारं ॥ (250-8)
आदि मधि अंति प्रभु तूहै सगल पसारा तुम तना ॥१४॥ (1079-17)
आदि मधि अंति प्रभु रविआ त्रिसन बुझी भरमंगना ॥११॥ (1080-15)
आदि मधि अंति प्रभु सोई ॥ (760-7)

आदि मधि अंति प्रभु सोई अवरु न कोइ दिखालीऐ जीउ ॥२॥ (102-16)
आदि मधि अंति प्रभु सोई कहु नानक साचु बीचारो ॥२॥३१॥५४॥ (1215-4)
आदि मधि अंति प्रभु सोई सुंदर गुर गोपाला ॥ (454-10)
आदि मधि अंति प्रभु सोई हाथि तिसै कै नेबेड़ा ॥१५॥ (1082-3)
आदि मधि अंति है सोऊ ॥१॥ (1001-4)
आदि मधि अरु अंति परमेसरि रखिआ ॥ (523-13)
आदि मधि जो अंति निबाहै ॥ (240-10)
आदि मधि प्रभु अंति सुआमी अपना थाटु बनाइओ आपि ॥ (825-6)
आदि ले भगत जितु लगि तरे सो गुरि नामु द्रिड़ाइअउ ॥ (1397-13)
आदि सचु जुगादि सचु ॥ (1-4)
आदि सचु जुगादि सचु ॥ (285-5)
आदित करै भगति आर्मभ ॥ (344-9)
आदित वारि आदि पुरखु है सोई ॥ (841-2)
आदेसु तिसै आदेसु ॥ (6-17)
आदेसु तिसै आदेसु ॥ (7-1)
आदेसु तिसै आदेसु ॥ (7-3)
आदेसु तिसै आदेसु ॥ (7-5)
आदेसु बाबा आदेसु ॥ (417-3)
आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥१॥ (536-13)
आधि बिआधि उपाधि रस कबहु न तूटै ताप ॥ (297-6)
आधि बिआधि उपाधि सभ नासी बिनसे तीनै ताप ॥१॥ रहाउ ॥ (1223-14)
आधेरै राहु न कोई ॥ (145-11)
आनंद अनदिनु वजहि वाजे अहं मति मन की तिआगी ॥ (846-6)
आनंद अनदिनु वजहि वाजे दिनसु रैणि उमाहा ॥ (846-8)
आनंद अनदिनु सदा साचा सरब गुण जगदीसरै ॥ (546-2)
आनंद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए ॥ (923-10)
आनंद करि संत हरि जपि ॥ (895-10)
आनंद गुणी गहीरा ॥ (893-19)
आनंद मगन रसि राम रंगि नानक सरनागै ॥२॥४॥६८॥ (818-2)
आनंद मूलु अनाथ अधारी ॥ (685-18)
आनंद रूपी पेखि कै हउ महलु पावउगी ॥१॥ (1230-15)
आनंद रूपु अनूपु सरूपा गुरि पूरै देखाइआ ॥२॥ (1041-16)
आनंद हरख सहज साचे महा मंगल गुण गाइआ ॥ (925-12)
आनंद हरि जस महा मंगल सरब दूख विसारिआ ॥ (456-19)
आनंद हरि रूप दिखाइआ ॥२॥ (896-16)
आनंदा वजहि नित वाजे पारब्रहमु मनि वूठा राम ॥ (781-15)
आनंदि माते अनदिनु जाई ॥२॥ (328-17)

आनंदु अनदिनु हरखु साचा दूख किलविख परहरे ॥ (687-18)
आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ ॥ (917-16)
आनंदु नित मंगलु गुर दरसनु सफलु संसारि ॥ (1401-17)
आन अचार बिउहार है जेते बिनु हरि सिमरन फोक ॥ (682-17)
आन अवर सिञाणि न करी ॥ रहाउ ॥ (715-7)
आन आपना करत बीचारा तउ लउ बीचु बिखाई ॥१॥ (609-4)
आन उपाउ न कोऊ सूझै हरि दासा सरणी परि रहा ॥ (1203-16)
आन उपाव जेते किछु कहीअहि तेते सीखे पावत ॥ (1205-7)
आन उपाव तिआगि जन सगले चरन कमल रिद धारै ॥१॥ (1218-10)
आन उपाव न जीवत मीना बिनु जल मरना तेंह ॥१॥ (702-3)
आन उपाव सगर कीए नहि दूख साकहि लाहि ॥ (1272-3)
आन काम बिकार माइआ सगल दीसहि छार ॥१॥ रहाउ ॥ (1223-11)
आन जंजार ब्रिथा स्रमु घालत बिनु हरि फोकट गिआन ॥ (1221-14)
आन जला सिउ काजु न कछूऐ हरि बूंद चात्रिक कउ दीजै ॥१॥ (1321-14)
आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥ (290-4)
आन तिआगि भए इक आसर सरणि सरणि करि आए ॥ (679-15)
आन देव बदलावनि दैहउ ॥१॥ रहाउ ॥ (874-14)
आन देव सिउ नाही काम ॥१॥ रहाउ ॥ (1162-19)
आन न जाना वेसा ॥१॥ रहाउ ॥ (912-16)
आन न दीसै कोई ॥ (886-18)
आन न बीआ तेरी समसरि ॥ (371-17)
आन न रस कस लवै न लाई ॥ (180-18)
आन न समसरि कोऊ लागै ढूढि रहे हम मूचा ॥१॥ रहाउ ॥ (534-16)
आन न सुनीऐ कतहूं जाईऐ ॥ (180-15)
आन नाही समसरि उजीआरो निरमरि कोटि पराछत जाहि नाम लीए हरि हरि ॥ (1385-10)
आन बसतु सिउ काजु न कछूऐ सुंदर बदन अलोक ॥१॥ (1253-13)
आन बापार बनज जो करीअहि तेते दूख सहामा ॥ (1211-8)
आन बिउहार बिसरे प्रभ सिमरत पाइओ लाभु सही ॥१॥ (1220-12)
आन बिभूत मिथिआ करि मानहु साचा इहै सुआउ ॥१॥ (1219-6)
आन मनउ तउ पर घर जाउ ॥ (153-13)
आन मारग जेता किछु धाईऐ तेतो ही दुखु हावा ॥१॥ रहाउ ॥ (1212-2)
आन रंग फीके सभ माइआ ॥३॥ (194-8)
आन रसा खिन महि लहि जाता ॥ (377-10)
आन रसा जेते तै चाखे ॥ (180-13)
आन रसा दीसहि सभि छारु ॥ (198-15)
आन रसा महि विआपै चिंद ॥१॥ (377-11)
आन रसा सभि होछे रे ॥१॥ रहाउ ॥ (377-11)

आन रूती आन बोईऐ फलु न फूलै ताहि ॥१॥ (1002-10)
आन संजम किछु न सूझै इह जतन काटि कलि काल ॥ रहाउ ॥ (675-16)
आन सगल बिधि कांमि न आवै हरि हरि नामु धिआइआ ॥१॥ (676-2)
आन साद बिसारि होछे अमरु जुगु जुगु जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1007-5)
आन सुआद बिसारि सगले भलो नाम सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1220-14)
आन सुआद सभि फीकिआ करि निरनउ डीठा ॥ (708-9)
आन सुखा नही आवहि चीति ॥३॥ (196-9)
आनद मूल परम पदु पावै ॥ (343-10)
आनद मूलु जगजीवन दाता सभ जन कउ अनदु करहु हरि धिआवै ॥ (494-11)
आनद मूलु नाथु सिरि नाथा सतिगुरु मेलि मिलाई ॥५॥ (505-6)
आनद मूलु रामु सभु देखिआ गुर सबदी गोविदु गजिआ ॥ (1315-18)
आनद मूलु सदा पुरखोतमु घटु बिनसै गगनु न जाइले ॥१॥ (870-8)
आनद रंग बिनोद हमारै ॥ (1302-13)
आनद रूप अनूप अगोचर गुर मिलिऐ भरमु जाइआ ॥३॥ (1042-18)
आनद रूप धिआवहु ॥ (830-7)
आनद रूप विटहु कुरबाणी ॥३॥ (1342-18)
आनद रूपी मेरो रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1351-4)
आनद रूपु सभु नदरी आइआ ॥ (801-14)
आनद सूख भेटत हरि नानक जनमु क्रितारथु सफलु सवेरा ॥२॥४॥१२१॥ (204-16)
आनदा गुन गाइ मंगल कसमला मिटि जाहि परेरै ॥१॥ (1301-3)
आनदा सुख सहज मूरति तिसु आन नाही भांति ॥१॥ (1300-18)
आनि आनि समधा बहु कीनी पलु बैसंतर भसम करीजै ॥ (1324-6)
आनीले कागदु काटीले गूडी आकास मधे भरमीअले ॥ (972-13)
आनीले कुमभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ ॥ (485-7)
आनीले कुमभु भराईले ऊदक राज कुआरि पुरंदरीए ॥ (972-14)
आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ ॥ (485-10)
आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ ॥ (485-9)
आप आप का मरमु न जानां ॥ (1161-11)
आप कमाणै विछुड़ी दोसु न काहू देण ॥ (136-17)
आप कमाने कउ ले बांधे फिरि पाछै पछुतानी ॥१॥ (403-11)
आप डुबे चहु बेद महि चेले दीए बहाइ ॥१०४॥ (1370-1)
आप पर का कछु न जाणै सदा सहजि सुभाइ ॥७॥ (1018-6)
आप पर का कछु न जानै काम क्रोधहि जारि ॥१॥ (1225-2)
आप सेती आपु खाइआ ता मनु निरमलु होआ जोती जोति समई ॥२॥ (490-5)
आप ही अछलु न जाई छलना ॥२॥ (803-16)
आप ही करता बीठुलु देउ ॥२॥ (1351-9)
आप ही गुपत आपि परगटना ॥ (803-16)

आप ही घटि घटि आपि अलिपना ॥३॥ (803-17)
आप ही धारन धारे कुदरति है देखारे बरनु चिहनु नाही मुख न मसारे ॥ (1386-1)
आप ही पूजारी आप ही देवा ॥३॥ (803-13)
आप ही मंदरु आपहि सेवा ॥ (803-13)
आप ही मसटि आप ही बुलना ॥ (803-16)
आपण लीआ किछू न पाईऐ करि किरपा कल धारी जीउ ॥५॥ (1016-12)
आपण लीआ जे मिलै ता सभु को भागठु होइ ॥ (156-19)
आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥ (134-4)
आपण वारी सभसै आवै पकी खेती लुणीऐ ॥ (1110-15)
आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥२०॥ (474-3)
आपण हथी आपणै दे कूचा आपे लाइ ॥ (148-5)
आपण हथी जोलि कै कै गलि लगै धाइ ॥ (1377-18)
आपणा आपु आपि उपाए अलखु न लखणा जाई ॥६॥ (912-4)
आपणा आपु उपाइओनु तदहु होरु न कोई ॥ (509-2)
आपणा आपु न पछाणै मूड़ा अवरा आखि दुखाए ॥ (549-18)
आपणा आपु पछाणहि आपे गुरमती आपि बुझाइदा ॥४॥ (1060-19)
आपणा आपु पछाणिआ गुरमती सचि समाइआ ॥ (1290-12)
आपणा आपु पछाणिआ नामु निधानु पाइआ ॥ (1088-9)
आपणा आपु विचहु गवाए ॥ (1016-14)
आपणा कारजु आपि सवारे होरनि कारजु न होई ॥ (351-16)
आपणा कीता आपि आपि वरंनिआ ॥ (965-19)
आपणा कीता किछू न होवै जिउ हरि भावै तिउ रखीऐ ॥१॥ (736-3)
आपणा चोजु करि वेखै आपे आपे सभना जीआ का है जाणी ॥१२॥ (553-11)
आपणा धरमु गवावहि बूझहि नाही अनदिनु दुखि विहाणी ॥ (31-2)
आपणा नाउ आपि जपाई ॥ (108-13)
आपणा नाउ मंनि वसाए ॥ (127-6)
आपणा नामु देहि प्रभ प्रीतम सुणि बेनंती खालका ॥११॥ (1085-8)
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥ (554-14)
आपणा पिआरु आपे लाए ॥ (1016-6)
आपणा पिरु न पछाणही किआ मुहु देसहि जाइ ॥ (37-18)
आपणा भउ तिन पाइओनु जिन गुर का सबदु बीचारि ॥ (35-13)
आपणा भाणा आपे जाणै गुर किरपा ते लहीऐ ॥ (1257-14)
आपणा भाणा तुम करहु ता फिरि सह खुसी न आवए ॥ (440-10)
आपणा मनु दीआ हरि वरु लीआ जिउ भावै तिउ रावए ॥ (436-10)
आपणा मनु परबोधहु बूझहु सोई ॥ (230-3)
आपणा लाइआ पिरमु न लगई जे लोचै सभु कोइ ॥ (1378-11)
आपणा सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ता पिरु मिलिआ हदूरे ॥ (439-17)

आपणिआ जीआ की कीती सार ॥ (1271-4)
आपणिआ दासा नो क्रिपा करि पिआरे राखहु पैज हमारी ॥ रहाउ ॥ (600-14)
आपणिआ भगता की रख करे हरि सुआमी निंदका दुसटा के मुह काले कराए ॥ (308-3)
आपणिआ संता नो आपि सहाई प्रभि भरम भुलावा लाहिआ जीउ ॥३॥ (107-4)
आपणिआ सेवका की आपि पैज रखै आपणिआ भगता की पैरी पावै ॥ (555-8)
आपणी आपि करे परतीति आपे सेव घालीअनु ॥ (90-19)
आपणी कला आपे प्रभु जाणै ॥ (665-13)
आपणी कला आपे ही जाणै ॥ (159-9)
आपणी किरपा करे गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाई ॥ (511-15)
आपणी कीमति आपि आपे ही जातीआ ॥ (965-18)
आपणी कीमति आपे पाए ॥१॥ (361-13)
आपणी कुदरति आपे जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (743-2)
आपणी कुदरति आपे जाणै आपे करणु करेइ ॥ (53-14)
आपणी क्रिपा करे हरि मेरा नानक लए बहोड़ि ॥२॥ (314-7)
आपणी खेती रखि लै कूंज पड़ैगी खेति ॥१॥ रहाउ ॥ (34-16)
आपणी गति मिति आपे जाणै हरि आपे पूर भंडारा ॥३॥ (883-18)
आपणी नदरि करे पति राखै हरि नामो दे वडिआई ॥ रहाउ ॥ (602-10)
आपणी नदरि करे परमेसरु बंधन काटि छडाए ॥ (748-11)
आपणी पैज आपे राखै भगतां देइ वडिआई ॥ (1133-16)
आपणी भगति प्रभि आपि कराई आपे सेवा लाए ॥३॥ (748-12)
आपणी मिति आपि जाणदा आपे ही गउहरु ॥१८॥ (555-19)
आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥ (921-1)
आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥ (722-14)
आपणे गुर की मंनि लै रजाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (560-9)
आपणे घर अंदरि रसु भुंचु तू लाहा लै परथाए राम ॥ (568-14)
आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥ (1193-9)
आपणे पिर कै रंगि रती मुईए सोभावंती नारे ॥ (567-16)
आपणे प्रीतम मिलि रहा अंतरि रखा उरि धारि ॥ (90-15)
आपणे भाणे विचि सदा रखु सुआमी हरि नामो देहि वडिआई ॥ (1333-8)
आपणे सतगुर विटहु सदा बलिहारी ॥१॥ रहाउ ॥ (560-5)
आपणे सेवक की पैज रखीआ दुइ कर मसतकि धारि जीउ ॥१६॥ (72-15)
आपणै अहंकारि जगतु जलिआ मत तूं आपणा आपु गवावहे ॥ (441-11)
आपणै घरि तू सुखि वसहि पोहि न सकै जमकालु जीउ ॥ (569-5)
आपणै भाणै कहु किनि सुखु पाइआ अंधा अंधु कमाई ॥ (1287-9)
आपणै भाणै किनै न पाइओ जन वेखहु मनि पतीआइ ॥ (1313-18)
आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खावै ॥ (601-18)
आपणै भाणै बहुता बोलहि बोलिआ थाइ न पाइ ॥ (1283-11)

आपणै भाणै सदा रंगि राता भाणै मंनि वसाइदा ॥१०॥ (1059-5)
आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ॥ (32-10)
आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ॥ (65-8)
आपणै रोहि आपे ही दझै ॥ (1418-12)
आपणै हथि वडिआईआ दे नामे लाए ॥ (425-1)
आपन आप आप ही अचरजा ॥ (291-8)
आपन आपि आपि प्रभु ठाकुरु प्रभु आपे स्रिसटि सवारे ॥ (982-14)
आपन आपु आपहि उपाइओ ॥ (250-9)
आपन ऊच नीच घरि भोजनु हठे करम करि उदरु भरहि ॥ (970-7)
आपन करम आपे ही बंध ॥ (888-11)
आपन कीआ कछू न होइ ॥ (282-12)
आपन कीआ कछू न होवै किआ को करै परानी ॥ (1124-3)
आपन कीआ करहि आपि आगै पाछै आपि ॥ (261-10)
आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥१॥ (290-16)
आपन खेलु आप ही कीनो ॥ (253-14)
आपन खेलु आपि करि देखै ॥ (292-2)
आपन खेलु आपि वरतीजा ॥ (291-1)
आपन चलित आपि करनैहार ॥ (291-4)
आपन चलितु आप ही करै ॥ (281-19)
आपन जसु आप ही सुना ॥ (294-13)
आपन तनु नही जा को गरबा ॥ (187-5)
आपन देउ देहुरा आपन आप लगावै पूजा ॥ (1252-15)
आपन नगरु आप ते बाधिआ ॥ (329-6)
आपन नही का कउ लपटाइओ ॥ (187-6)
आपन नामु सतिगुर ते पाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (187-6)
आपन बचनु आप ही करना ॥ (803-15)
आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा ॥ (658-6)
आपन बिभउ आप ही जरना ॥१॥ रहाउ ॥ (803-15)
आपन बीजि आपे ही खाहि ॥ (280-10)
आपन मोह घटे घटि दीने ॥ (251-14)
आपन रंगि सहज परगासी ॥१॥ (1349-8)
आपन रामु न चीनो खिनूआ ॥ (715-4)
आपन लाहि गुमानु ॥ (896-1)
आपन संगि आपि प्रभ राते ॥ (266-12)
आपन सुआइ करहि बहु बाता तिना का विसाहु किआ कीजै ॥६॥ (1326-5)
आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥ (292-9)
आपनड़ा प्रभु नदरि करि देखै नानक जोति जोती रलीऐ ॥३॥ (561-18)

आपनड़ा प्रभु सहजि पछाता जा मनु साचै लाइआ ॥ (766-10)
आपनड़ा मनु आगै धरिआ सरबसु ठाकुरि दीने राम ॥ (782-11)
आपनड़ा मनु वेचीऐ सिरु दीजै नाले ॥ (420-9)
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥६॥ (1378-4)
आपनड़े प्रभ भाणिआ दरगह पैधा जाइ जीउ ॥ (760-16)
आपनड़े प्रभ भाणिआ नित केल करंते ॥३॥ (399-11)
आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिन्हा दे चुमि ॥७॥ (1378-5)
आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥ (722-6)
आपनड़ै प्रभि आपि सीगारी सोभावंती नारे राम ॥ (782-14)
आपनड़ै मनि चिति कहनि चंगेरिआ ॥ (143-4)
आपना गुरु सेवि सद ही रमहु गुण गोबिंद ॥ (501-14)
आपना तजि अभिमानु ॥ (895-9)
आपना प्रभु आइआ चीति ॥ (826-10)
आपनै भाणै लए समाए ॥ (292-8)
आपस कउ आपहि आदेसु ॥ (291-16)
आपस कउ आपि दीनो मानु ॥ (282-8)
आपस कउ आपु मिलाइआ ॥ (1278-12)
आपस कउ करमवंतु कहावै ॥ (278-8)
आपस कउ करि कछु न जनावै ॥ (286-18)
आपस कउ जो जाणै नीचा ॥ (266-7)
आपस कउ जो भला कहावै ॥ (278-15)
आपस कउ दीरघु करि जानै अउरन कउ लग मात ॥ (1105-16)
आपस कउ बहु भला करि जाणहि मनमुखि मति न काई ॥ (601-14)
आपस कउ मुनिवर करि थापहु का कउ कहहु कसाई ॥२॥ (1103-2)
आपस ते ऊपरि सभ जाणहु तउ दरगह सुखु पावहु ॥१॥ (883-3)
आपहि आप आपि करत निबेरा ॥ (269-10)
आपहि एक आपहि अनेक ॥ (279-5)
आपहि एकु आपि बिसथारु ॥ (292-8)
आपहि कउतक करै अनद चोज ॥ (292-4)
आपहि कीआ कराइआ आपहि करनै जोगु ॥ (250-7)
आपहि गावै आपहि नाचै आपि बजावै तूरा ॥ (1252-16)
आपहि जोग आप ही जुगता ॥ (803-13)
आपहि पाप पुंन बिसथारा ॥ (251-17)
आपहि बाप आप ही माइओ ॥ (250-9)
आपहि मारि आपि जीवालै ॥ (1146-17)
आपहि मेलि लए ॥ (829-15)
आपहि रतन जवाहर मानिक आपै है पासारी ॥ (1123-10)

आपहि रस भोगन निरजोग ॥ (292-4)
आपहि सुंन आपहि सुख आसन ॥ (250-8)
आपहि सुनत आप ही जासन ॥ (250-9)
आपहि सूखम आपहि असथूल ॥८॥ (1236-8)
आपहि सूखम आपहि असथूला ॥ (250-10)
आपहु कछू न किनहू लइआ ॥ (271-2)
आपहु कछू न होइ प्रभ नदरि निहालीऐ ॥ (518-15)
आपहु कछू न होवत भाई ॥ (805-11)
आपहु कोई मिलै न भूलै ॥ (391-18)
आपहु जे को भला कहाए ॥ (83-14)
आपहु तुधु खुआइआ ॥ (72-3)
आपहु दूजै लगि खसमु विसारिआ ॥ (86-17)
आपहु होआ ना किछु होसी ॥ (1047-1)
आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै ॥१॥ (483-5)
आपा पदु निरबाणु न चीन्हिआ इन बिधि अभिउ न चूके ॥२॥ (475-17)
आपा मधे आपु परगासिआ पाइआ अम्रितु नामु ॥१॥ (1329-5)
आपि अकारु आपि निरंकारु ॥ (863-12)
आपि अखाड़ा पाइदा पिआरा करि वेखै आपि चोजाहा ॥ (606-17)
आपि अगोचरु धंधै लोई ॥ (931-15)
आपि अगोचरु पुरखु निराला ॥ (839-10)
आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥ (294-3)
आपि अतीतु अजोनी स्मभउ नानक गुरमति सो पाइआ ॥१२॥ (1042-10)
आपि अतीतु अलिपतु है निरजोगु हरि जोगी ॥ (514-2)
आपि अपर्मपरु आपि वीचारी ॥ (1060-3)
आपि अभुलु न कबहू भुला ॥ (1022-3)
आपि अभुलु न भुलई पिआरा अवरु न दूजा जापै ॥२॥ (605-11)
आपि अभुलु न भुलै कब ही सभु सचु तपावसु सचु थिआ ॥ (553-17)
आपि अभुलु सचा सचु सोइ ॥ (1175-1)
आपि अलिपतु सदा रहै होरि धंधै सभि धावहि ॥ (950-11)
आपि अलेखु कुदरति करि देखै हुकमि चलाए सोई जीउ ॥१॥ (598-18)
आपि अलेखु कुदरति है देखा ॥ (1042-10)
आपि अलेपा निरगुनु रहता ॥३॥ (387-3)
आपि इकंती आपि पसारा ॥ (108-12)
आपि इकाती होइ रहै आपे वड परवारु ॥ (556-18)
आपि उधरे कुल सगल निसतारे ॥ (161-16)
आपि उधरे सभि कुल उधारणहारु ॥२॥ (1129-8)
आपि उपदेसै समझै आपि ॥ (279-6)

आपि उपाइ आपे घट थापि ॥ (931-14)
आपि उपाइ खपाइदा सचे दीन दइआला ॥ (785-12)
आपि उपाइ खपाए सोई ॥ (1062-12)
आपि उपाइ रचिओनु पसारा आपे घटि घटि सारणा ॥२॥ (1076-18)
आपि उपाइ सभ कीमति पाई ॥ (841-14)
आपि उपाइआ जगतु सबाइआ ॥ (1022-19)
आपि उपाए आपि खपाए ॥ (1020-12)
आपि उपाए आपि प्रतिपाले जीअ जंत सभि साजे ॥ (578-16)
आपि उपाए आपि समाए हुकमी हुकमु पछाणा ॥ (688-11)
आपि उपाए आपे देइ ॥ (349-14)
आपि उपाए उपावणहारा अपणा कीआ पालणा ॥९॥ (1077-8)
आपि उपाए उपावणहारु ॥ (842-18)
आपि उपाए करि वेखै वेका ॥ (841-13)
आपि उपाए करे आपि आपे नदरि करेइ ॥ (1090-5)
आपि उपाए तै आपे वेखै ॥ (129-4)
आपि उपाए थापि उथापि ॥ (413-14)
आपि उपाए दानु समाहे ॥ (1025-5)
आपि उपाए धंधै लाए ॥ (112-7)
आपि उपाए नानका आपे रखै वेक ॥ (1238-1)
आपि उपाए मेदनी आपे करदा सार ॥ (1288-9)
आपि उपावणहार आपे ही मारदा ॥ (518-19)
आपि उपावन आपि सधरना ॥ (803-14)
आपि उपावहि आपि खपावहि तुधु लेपु नही इकु तिलु रंगा ॥१५॥ (1083-4)
आपि उलाम्हे चिति धरेइ ॥ (349-14)
आपि कथै आपि सुननैहारु ॥ (292-7)
आपि कमाउ अवरा उपदेस ॥ (185-7)
आपि करता आपि भुगता आपि कारणु कीआ ॥ (846-18)
आपि करता आपि भुगता आपि सगल बीचारीआ ॥ (691-10)
आपि करता करे सोई आपि देइ त पाईऐ ॥ (690-4)
आपि करता करे सोई प्रभु आपि अंति निरंतरे ॥ (767-9)
आपि करहि आपि करणैहारे ॥ (1185-2)
आपि करहु प्रभ दानु आपे आपि लेहु ॥ (710-12)
आपि कराए आपि करेइ ॥ (349-13)
आपि कराए करता सोई ॥ (124-3)
आपि कराए करे आपि आपे हरि रखा ॥३॥ (1088-1)
आपि कराए करे आपि जीउ आपे सबदि सवारे ॥ (246-7)
आपि कराए करे आपि भाई जिनि हरिआ कीआ सभु कोइ ॥ (1177-10)

आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ (1282-17)
आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ (475-4)
आपि कराए साखती पिआरा आपि मारे मरि जाहु ॥ (604-15)
आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥ (475-3)
आपि करावन दोसु न लैना ॥१॥ (803-15)
आपि करे आपे हरे वेखै वडिआई ॥ (421-6)
आपि करे किछु करणु न जाइ ॥ (1175-14)
आपि करे किसु आखीऐ अवरु न कोइ करेइ ॥४५॥ (936-13)
आपि करे किसु आखीऐ आपे बखसणहारु ॥ (755-18)
आपि करे किसु आखीऐ वेखै वडिआई ॥७॥ (421-1)
आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई ॥४॥४॥ (570-12)
आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई राम ॥ (570-9)
आपि करे किसु आखीऐ होरु करे न कोई ॥ (766-3)
आपि करे किसु आखीऐ होरु करे न कोई ॥४॥१॥४॥ (766-5)
आपि करे किसु आखै कोई ॥ (114-4)
आपि करे ता हुकमि पछाणै ॥ (118-10)
आपि करे तै आपि कराए ॥ (1062-5)
आपि करे तै आपि कराए ॥ (111-3)
आपि करे तै आपि कराए ॥ (424-4)
आपि करे सचु अलख अपारु ॥ (356-10)
आपि करै आपन बीचारै ॥ (277-4)
आपि करै किसु आखीऐ दूजा को नाही ॥१६॥ (1092-2)
आपि कीनो आपन बिसथारु ॥ (279-7)
आपि कुचजी दोसु न देऊ जाणा नाही रखे ॥१॥ (1171-6)
आपि क्रिपा करि राखहु हरि जीउ पोहि न सकै जमकालु ॥२॥ (1334-1)
आपि क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी सतिगुरि बखसिआ हरि नामु ॥१॥ (406-4)
आपि क्रिपालु क्रिपा करि देवै नानक गुर सरणाए ॥२॥ (443-6)
आपि क्रिपालु क्रिपा प्रभु धारे हरि आपे गुरमुखि मिलै मिलाइआ ॥ (494-4)
आपि खड़ोवहि आपि करि आपीणै आपाहु ॥ (788-16)
आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥ (270-19)
आपि गुपता आपि मुकता आपि आपु वखाना ॥ (578-4)
आपि चितारे अपणा कीआ ॥ (1076-18)
आपि छडाए छुटीऐ आपे बखसणहारु ॥ (1282-19)
आपि छडाए छुटीऐ आपे बखसणहारु ॥२॥ (62-19)
आपि छडाए छुटीऐ सतिगुर चरण समालि ॥४॥ (235-1)
आपि छडाए छूटीऐ वडा आपि धणी ॥ (934-8)
आपि छुटे नह छूटीऐ नानक बचनि बिणासु ॥१॥ (1289-15)

आपि जगाए सेई जागे गुर कै सबदि वीचारी ॥२९॥ (911-17)
आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥ (290-4)
आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥ (289-1)
आपि जपाए जपै सो नाउ ॥ (270-19)
आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥ (282-2)
आपि जपै अवरह नामु जपावै वड समरथ तारन तरन ॥१॥ (1206-9)
आपि जाणावै मारगि पावै आपे मनूआ लेवए ॥ (766-16)
आपि डुबे कुट्मब सिउ सगले कुल डोबंनि ॥५॥ (755-6)
आपि डुबे सगले कुल डोबे कूड़ु बोलि बिखु खावणिआ ॥६॥ (124-1)
आपि डुबै किउ पितरा तारै ॥ (904-15)
आपि तरहि संगति कुल तारहि तिन सफल जनमु जगि आइआ ॥११॥ (1039-8)
आपि तरहि संगी तराहि सभ कुट्मबु तरावै ॥ (1318-14)
आपि तरहि सगले कुल तारहि जो तेरी सरणाई ॥२॥ (1155-7)
आपि तरहि सगले कुल तारे ॥ (117-16)
आपि तरिआ कुट्मब सभि तारे सभा स्रिसटि छडावै ॥१॥ (960-13)
आपि तरिआ कुट्मब सिउ गुण गुबिंद प्रभ रवन ॥ (300-3)
आपि तरिआ कुल उधरे धंनु जणेदी माइआ ॥ (852-11)
आपि तरिआ कुल जगतु तराइआ धंनु जणेदी माइआ ॥ (513-6)
आपि तरे सगले कुल तारे जिनी राम नामि लिव लाई ॥२॥ (1131-19)
आपि तरै कुल उधरणहारु ॥३॥ (362-10)
आपि तरै कुल सगले तारे गुरमुखि जनमु सवारणिआ ॥३॥ (125-3)
आपि तरै जनु पितरा तारे ॥ (1026-13)
आपि तरै तारे भी सोइ ॥ (944-7)
आपि तरै पितरी निसतारे ॥३॥ (223-18)
आपि तरै लोकह निसतार ॥ (295-10)
आपि तरै संगति कुल तारै ॥ (353-3)
आपि तरै संगति सभ उधरै बिनसे सगल जंजाला ॥३॥ (503-2)
आपि तरै सगले कुल उधारा ॥३॥ (160-19)
आपि तरै सगले कुल तारे ॥१॥ (877-15)
आपि तरै सगले कुल तारे तिसु दरगह ठाक न पावणिआ ॥७॥ (130-19)
आपि तरै सगले कुल तारे हरि दरगह पति सिउ जाइदा ॥६॥ (1076-1)
आपि तरै सगले कुल तारै ॥३॥ (662-14)
आपि तरै सगले कुल तारै ॥४॥ (230-12)
आपि तरै सगले कुल तारै हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥१॥ (128-13)
आपि तरै सभु कुट्मबु तराईऐ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥२॥ (1348-12)
आपि तुलाए तोलसी पूरे पूरा तोलु ॥७॥ (59-4)
आपि तुलै आपे वणजार ॥ (152-14)

आपि दइआ करि देवसी गुरमुखि अम्रितु चोइ ॥ (41-16)
आपि दइआ करि मेलसी गुर सतिगुर पीछै पाइ ॥ (41-7)
आपि दइआ करि रखदा पिआरा आपे सुघड़ु सुजाणु ॥१॥ (606-6)
आपि दइआलि दइआ प्रभि धारी ॥ (1040-9)
आपि दइआलि दइआ प्रभि धारी ॥ (95-17)
आपि दइआलु दइआ दानु देवै विचि पाथर कीरे कारे ॥३॥ (982-8)
आपि दइआलु दूरि नही दाता मिलिआ सहजि रजाई हे ॥११॥ (1025-5)
आपि दइआलु होइ भउ खंडनु आपि करै सभु दानु ॥ (554-3)
आपि दिखावै आपे देखै ॥ (686-9)
आपि दिखावै वाटड़ीं सची भगति द्रिड़ाए ॥४॥ (420-17)
आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै ॥ (274-9)
आपि न डरउ न अवर डरावउ ॥३॥१७॥ (327-2)
आपि न देहि चुरू भरि पानी ॥ (332-5)
आपि न देहु त लेवउ मंगे ॥ रहाउ ॥ (656-14)
आपि न बउरा राम कीओ बउरा ॥ (855-14)
आपि न बुझा लोक बुझाई ऐसा आगू होवां ॥ (140-12)
आपि न बूझै लोक बुझाए पांडे खरा सिआणा ॥ (1290-7)
आपि न बूझै लोक बुझावै ॥ (832-17)
आपि नचाए सो भगतु कहीऐ आपणा पिआरु आपि लाए ॥ (506-6)
आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥ (1395-6)
आपि नाथु नथीं सभ जा की बखसे मुकति कराइदा ॥१४॥ (1037-7)
आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥ (6-19)
आपि नाथु सभ नथीअनु सभ हुकमि चलाई ॥ (1251-14)
आपि निताणिआ ताणु है पिआरा आपि निमाणिआ माणु ॥ (606-6)
आपि निरंकार आकारु है आपे आपे करै सु थीआ ॥७॥ (551-9)
आपि निरंजनु अलख अपारी ॥ (1024-11)
आपि निरंजनु अलखु है आपे मेलाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (162-19)
आपि निरबाणी आपे भोगा ॥ (97-13)
आपि निरबाणी आपे भोगी ॥२॥ (1150-16)
आपि निरालमु अपर अपारी ॥ (1037-10)
आपि निरालमु गुर गम गिआना ॥ (1021-9)
आपि निरालमु धंधै बाधी करि हुकमु छडावणहारो ॥ (581-10)
आपि निरालमु होर धंधै लोई ॥ (1061-14)
आपि निहचलु अचलु है होरि आवहि जावहि ॥ (950-12)
आपि पकावै आपि भांडे देइ परोसै आपे ही बहि खावै ॥ (550-19)
आपि पछाणै सबदु वीचारा ॥ (1040-2)
आपि पतीजै गुर की बैणी ॥ (1020-18)

आपि परविरति आपि निरविरती आपे अकथु कथीजै ॥ (551-15)
आपि पवितु पावन सभि कीने ॥ (1150-5)
आपि पारसु परम धिआनी साचु साचे भावए ॥ (687-18)
आपि बसंतु जगतु सभु वाड़ी ॥ (1177-3)
आपि बिछोरै आपे मेल ॥ (894-7)
आपि बिनाहे आपि करे रासि ॥ (179-11)
आपि बिबेकु आपि सभु बेता आपे गुरमुखि भंजनु ॥ (552-12)
आपि बीजि आपे ही खांहि ॥ (1192-19)
आपि बीजि आपे ही खाइ ॥२॥ (25-14)
आपि बीजि आपे ही खावणा कहणा किछू न जाइ ॥७॥ (755-8)
आपि बीजि आपे ही खावै ॥ (662-7)
आपि बीजि आपे ही खावै ॥ (898-5)
आपि बीजि आपे ही खाहि ॥ (1145-12)
आपि बुझाए आपे जापे ॥ (797-8)
आपि बुझाए सोई बूझै ॥ (150-14)
आपि बुझाए सोई बूझै ॥ (841-7)
आपि बेअंतु अंतु नही पाईऐ पूरि रहिआ सभ ठाई संतहु ॥७॥ (916-12)
आपि भला करतूति अति नीकी ॥ (294-16)
आपि भवाली दितीअनु अंतरि लोभु विकारा ॥५॥ (425-7)
आपि भिड़ै मारे आपि आपि कारजु रचिआ ॥ (1280-4)
आपि भुला कि प्रभि आपि भुलाइआ ॥ (161-5)
आपि भुलाइ आपे मति देवै ॥३॥ (224-15)
आपि भुलाइ तूहै समझावहि ॥ (1021-19)
आपि भुलाइआ भुलावणहारै राचि रहिआ बिरथा बिउहार ॥१॥ रहाउ ॥ (1143-10)
आपि भुलाए किसु कहउ जाइ ॥ (1188-5)
आपि भुलाए ठउर न ठाउ ॥ (152-9)
आपि भुलाए नानका पचि पचि जोनी पाहि ॥२॥ (315-11)
आपि भुलाए भुलीऐ आपे मेलि मिलाइ ॥ (1413-9)
आपि भुलावै आपि मारगि पाए ॥ (424-4)
आपि भूला जा खसमि भुलाइआ ॥ (1048-12)
आपि मरै अवरा नह मारी ॥३॥ (356-16)
आपि मरै अवरा नह मारै ॥३॥ (1128-6)
आपि मरै मारे भी आपि ॥ (413-13)
आपि महा जनु आपे पंचा आपि सेवक कै काम ॥ (1216-15)
आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥ (294-18)
आपि मिलाइअनु से मिले गुर सबदि वीचारि ॥ (430-11)
आपि मिलाए आपि मिलै आपे देइ पिआरो ॥ (584-13)

आपि मिलावै सचु ता मनि भावई ॥ (420-7)
आपि मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ (1044-6)
आपि मिलिआ जगजीवनु दाता नानक अंकि समाई हे ॥१६॥१॥ (1070-6)
आपि मुकतु अवरा मुकतु करावै ॥ (664-6)
आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥ (295-2)
आपि मुकतु मो कउ प्रभु मेले ऐसो कहा लहा ॥१॥ रहाउ ॥ (1003-2)
आपि मुकतु संगी तरे कुल कुट्मब उधारे ॥ (814-18)
आपि मुसै मति होछीऐ किउ राहु पछाणै ॥ (767-2)
आपि मूआ मनु मन ते जानिआ ॥ (153-11)
आपि रखै आपि देवसी आपे प्रतिपारै ॥ (812-19)
आपि लहाए करे जिसु किरपा जिस नो गुरमुखि करे हरे ॥ (552-4)
आपि लीए लड़ि लाइ किरपा धारीआ जीउ ॥ (691-8)
आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से ॥ (488-9)
आपि वजाए वजावणहारा ॥ (1061-19)
आपि वडाई दितीअनु गुरमुखि देइ बुझाइ ॥३॥ (36-16)
आपि विछोड़ेनु से विछुड़े दूजै भाइ खुआइ ॥ (645-16)
आपि सचा सभु सचु है गुर सबदि बुझाई ॥ (1011-13)
आपि सति कीआ सभु सति ॥ (284-19)
आपि सति कीआ सभु सति ॥ (294-9)
आपि सति सति सभ धारी ॥ (285-7)
आपि समुंदु आपि है सागरु आपे ही विचि रतन धरे ॥ (552-4)
आपि सराफु कसवटी लाए ॥ (797-5)
आपि सरूपु सिआणा आपे कीमति कहणु न जाई ॥१०॥ (912-6)
आपि सहाई होआ ॥ (628-5)
आपि साचु धारी सभ साचु ॥ (294-16)
आपि साजे थापि वेखै तिसै भाणा भाइआ ॥ (767-1)
आपि सिरंदा सचा सोई ॥ (1062-12)
आपि सु गिआनी आपि धिआनी आपि सतवंता अति गाड़ा ॥११॥ (1081-17)
आपि सुजाणु न भुलई सचा वड किरसाणु ॥ (19-1)
आपि सुणी तै आपि वखाणी ॥ (1075-9)
आपि सुणै तै आपे वेखै ॥ (110-15)
आपि होआ सदा मुकतु सभु कुलु निसतारिआ ॥ (86-15)
आपीन्है आपु साजि आपु पछाणिआ ॥ (1279-5)
आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥ (463-4)
आपीन्है आपु साजिओनु आपे ही थम्हि खलोआ ॥ (968-14)
आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥ (464-9)
आपु आप ते जानिआ तेज तेजु समाना ॥ (857-13)

आपु खोजि खोजि मिले कबीरा ॥४॥७॥ (1159-3)
आपु गइआ ता आपहि भए ॥ (202-2)
आपु गइआ दुखु कटिआ हरि वरु पाइआ नारि ॥४७॥ (937-1)
आपु गइआ भ्रमु भउ गइआ जनम मरन दुख जाहि ॥ (1093-2)
आपु गइआ सुखु पाइआ मिलि सललै सलल समाइ ॥२॥ (22-13)
आपु गइआ सोझी पई गुर सबदी मेला ॥१॥ रहाउ ॥ (421-12)
आपु गए अउरन हू खोवहि ॥ (332-7)
आपु गए अउरन हू घालहि ॥३॥ (332-6)
आपु गवाइ तेरै रंगि राते अनदिनु नामु धिआइदा ॥२॥ (1034-11)
आपु गवाइ सतिगुरू नो मिलै सहजे रहै समाइ ॥ (1246-10)
आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥ (474-10)
आपु गवाइआ ता पिरु पाइआ गुर कै सबदि समाइआ ॥ (567-17)
आपु गवाइआ मरि रहे फिरि मरणु न थीआ ॥६॥ (420-11)
आपु गवाइआ सेव कमाइआ गुन रसि रसि गावे ॥१॥ (407-10)
आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥ (722-13)
आपु गवाए ता हरि पाए हरि सिउ सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (118-2)
आपु गवाए हरि वरु पाए ता हरि रसु मंनि वसाइआ ॥ (439-14)
आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ (919-19)
आपु छोडहि तां सहु मिलै सचा एहु वीचारु ॥ (1420-18)
आपु छोडि चरणी लगा चला तिन कै भाइ ॥ (30-16)
आपु छोडि जीवत मरै गुर कै सबदि वीचार ॥ (34-10)
आपु छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति मिलाइ ॥३॥ (638-13)
आपु छोडि नाम लिव लागी ममता सबदि जलाई ॥३॥ (909-9)
आपु छोडि पए सरणाई जिस का सा तिसु घालणा ॥१४॥ (1077-14)
आपु छोडि बेनती करहु ॥ (295-5)
आपु छोडि सदा सुखु होई ॥ (666-5)
आपु छोडि सभ होइ रेणा जिसु देइ प्रभु निरंकारु ॥३॥ (51-10)
आपु छोडि सरणाइ पवै मंनि लए रजाइ ॥ (1251-2)
आपु छोडि सेवा करनि जीवत मुए रहंनि ॥२॥ (233-13)
आपु छोडि सेवा करी पिरु सचड़ा मिलै सहजि सुभाए ॥ (583-1)
आपु छोडि होहि दासत भाइ ॥ (1173-6)
आपु जनाइ अवर कउ जानै तब होइ भिसत सरीकी ॥४॥ (480-8)
आपु तजहु गोबिंद भजहु भाउ भगति परवेस ॥ (296-19)
आपु तजहु गोबिंद भजहु सरनि परहु हरि राइ ॥ (298-6)
आपु तिआगि परीऐ नित सरनी गुर ते पाईऐ एहु निधानु ॥ (824-4)
आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥ (135-3)
आपु तिआगि मिटै आवण जाणा ॥ (183-18)

आपु तिआगि संत चरन लागि मनु पवितु जाहि पाप ॥१॥ (1341-13)
आपु तिआगि सरणी पवां मुखि बोली मिठड़े वैण ॥ (136-15)
आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥ (288-13)
आपु तिआगि होईऐ सभ रेणा जीवतिआ इउ मरीऐ ॥२॥ (750-8)
आपु न चीनसि भ्रमि भ्रमि रोवै ॥६॥ (686-1)
आपु न चीनहि तामसी काहे भए उदासा ॥५॥ (419-3)
आपु न चीनै बाजी हारी ॥६॥ (230-14)
आपु निवारि बीचारे सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (222-3)
आपु निवारि हरि हरि भजउ नानक प्रभ भरपूरि ॥१॥ (927-11)
आपु पछाड़हि धरती नालि ॥ (465-8)
आपु पछाणहि ता सचु जाणहि साचे सोझी होई ॥ (769-17)
आपु पछाणहि प्रीतमु मिलै वुठा छहबर लाइ ॥ (1420-3)
आपु पछाणहि सबदि मरहि मनहु तजि विकार ॥ (430-5)
आपु पछाणि मिलै प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (364-16)
आपु पछाणि रहै लिव लागा ॥ (1189-10)
आपु पछाणि हरि पावै सोइ ॥ (423-14)
आपु पछाणै घरि वसै हउमै त्रिसना जाइ ॥ (57-17)
आपु पछाणै जा सतिगुरु पावै ॥ (840-17)
आपु पछाणै बूझै सोइ ॥ (25-4)
आपु पछाणै मनु निरमलु होइ ॥ (161-10)
आपु पछाणै सो सभि गुण जाणै ॥ (1056-19)
आपु पछाणै सोई जनु निरमलु बाणी सबदु सुणाइदा ॥१०॥ (1065-11)
आपु पछाणै हरि मिलै बहुड़ि न मरणा होइ ॥ (1410-15)
आपु पछानै आपै आप ॥ (327-1)
आपु पछानै त एकै जानै ॥४॥ (855-16)
आपु बीचारि मारि मनु देखिआ तुम सा मीतु न अवरु कोई ॥ (355-19)
आपु बीचारे सु गिआनी होई ॥१॥ रहाउ ॥ (152-4)
आपु मारि अपर्मपरि राता गुर की कार कमावै ॥१॥ रहाउ ॥ (1126-18)
आपु मारि गुरमुखि हरि पाए नानक सहजि समाइ लइआ ॥१२॥७॥ (907-4)
आपु मारि सहजे नामि समाणिआ ॥ (1174-13)
आपु मारे ता त्रिभवणु सूझै ॥ (120-14)
आपु मारे ता पाए नाउ ॥२॥ (153-6)
आपु मिटाइ मिलीजै ॥ (896-18)
आपु मेटि निरालमु होवै अंतरि साचु जोगी कहीऐ सोई ॥२३॥ (940-14)
आपु मेटि पए सरणाई इह मति साधू कही ॥ (529-16)
आपु वंञाए ता सभ किछु पाए ॥ (115-10)
आपु वीचारि न रोवै कोई ॥ (1027-6)

आपु वीचारे गिआनी सोई ॥ (1040-12)
आपु वीचारै सु परखे हीरा ॥ (413-16)
आपु सवारहि मै मिलहि मै मिलिआ सुखु होइ ॥ (1382-17)
आपुन आपु आप ही उपायउ ॥ (1405-4)
आपुना दासरा आपे मुलि लीउ ॥६॥ (240-1)
आपुनी भगति निबाहि ॥ (407-7)
आपुनो भावनु करि मंत्रि न दूसरो धरि ओपति परलौ एकै निमख तु घरि ॥ (1385-9)
आपे अंडज जेरज सेतज उतभुज आपे खंड आपे सभ लोइ ॥ (604-18)
आपे अठसठि तीरथ करता आपि करे इसनानु ॥ (554-2)
आपे अतुलु तुलाइदा पिआरा जन नानक सद कुरबाणु ॥४॥५॥ (606-12)
आपे अम्रितु आपि है पिआरा आपे ही रसु आपै ॥ (605-14)
आपे अलखु न लखीऐ पिआरा आपि लखावै सोइ ॥३॥ (605-5)
आपे अविगतु आप संगि रचना ॥ (803-17)
आपे आइ मिलिआ सभना का दाता ॥ (1045-7)
आपे आइ मिलिआ सुखदाता ॥ (1046-2)
आपे आइ वसिआ घट अंतरि तूटी जम की फासी हे ॥२॥ (1048-5)
आपे आखणु आपे जाणु ॥१॥ (951-18)
आपे आखै आपे समझै तिसु किआ उतरु दीजै ॥ (938-14)
आपे आपि आप भरपूरि ॥ (294-11)
आपे आपि आप ही आपे सभु आपन खेलु दिखाधा ॥ (1204-9)
आपे आपि आपि निरंकारु ॥ (1001-5)
आपे आपि आपि प्रभु थीआ ॥ (1076-18)
आपे आपि आपि प्रभु सोइ ॥ (279-4)
आपे आपि आपि मिलि रहिआ सहजे सहजि समावणिआ ॥५॥ (115-5)
आपे आपि आपि सालाहे ॥ (1057-8)
आपे आपि उपाइ विगसै आपे कीमति पाइदा ॥६॥ (1035-16)
आपे आपि उपाइअनु आपि कीमति पाई ॥ (786-9)
आपे आपि उपाइदा पिआरा सिरि आपे धंधड़ै लाहु ॥ (604-15)
आपे आपि कराए करता आपे बखसि भंडारी ॥८॥ (911-4)
आपे आपि दइआलु है पिआरा जन नानक बखसि मिलाहु ॥४॥१॥ (604-17)
आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥७॥ (276-14)
आपे आपि निरंजन पूजा ॥ (1081-17)
आपे आपि निरंजना जिनि आपु उपाइआ ॥ (1237-17)
आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ (2-7)
आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ (863-12)
आपे आपि निरंजनु सोई ॥ (1016-10)
आपे आपि निरंजनु सोई ॥ (119-15)

आपे आपि पारब्रहमु है पारब्रहमु वसिआ मनि आइ ॥ (849-12)
आपे आपि मिलाए करता पुनरपि जनमु न होई ॥१८॥ (433-11)
आपे आपि मिलै ता बूझै ॥ (1044-14)
आपे आपि वरतदा आपि ताड़ी लाईअनु ॥ (956-17)
आपे आपि वरतदा आपे प्रतिपाला ॥१॥ (785-13)
आपे आपि वरतदा पिआरा आपे आपि अपाहु ॥ (604-11)
आपे आपि वरतै सुआमी कारजु रासि कीआ गुरदेव ॥१॥ रहाउ ॥ (825-6)
आपे आपि वसै मनि आए ॥ (1175-10)
आपे आपि सगल महि आपि ॥ (282-1)
आपे आपि सरब प्रतिपाल ॥ (887-16)
आपे आपि सलाहदा पिआरा जन नानक हरि रसि ध्रापै ॥४॥३॥ (605-15)
आपे आपु उपाइ उपंना ॥ (1051-6)
आपे आपु उपाइ निराला ॥ (1036-10)
आपे आपु उपाइ पतीना ॥ (1020-13)
आपे उझड़ि पाइदा पिआरा आपि विखाले राहु ॥ (604-14)
आपे ऊचा ऊचो होई ॥ (126-1)
आपे कंडा आपि तराजी प्रभि आपे तोलि तोलाइआ ॥ (605-15)
आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥ (731-3)
आपे कपट खुलावणहारा ॥ (1056-16)
आपे करणी करणहारु ॥ (1190-12)
आपे करणी कार आपि आपे करे रजाइ ॥ (1087-16)
आपे करता अगम अथाहा ॥ (1261-18)
आपे करता अवरु न कोइ ॥२॥ (376-18)
आपे करता आपि कराए सरब निरंतरि सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (748-15)
आपे करता आपे देउ ॥१॥ (343-5)
आपे करता आपे देउ ॥८॥ (930-18)
आपे करता आपे भुगता ॥ (1035-5)
आपे करता आपे भुगता ॥ (1047-18)
आपे करता आपे भुगता ॥ (125-15)
आपे करता आपे भुगता आपे देइ दिवाए ॥ (554-11)
आपे करता आपे भुगता देदा रिजकु सबाई ॥२॥ (912-1)
आपे करता करि करि वेखै ॥ (1047-3)
आपे करता करि करि वेखै जिउ भावै तिउ लाई हे ॥१३॥ (1046-16)
आपे करता करि करि वेखै देदा सास गिराहा हे ॥४॥ (1055-14)
आपे करता करि करि वेखै साचा वेपरवाहा हे ॥१॥ (1032-9)
आपे करता करे कराए ॥ (1053-6)
आपे करता करे कराए ॥ (1172-7)

आपे करता करे कराए ॥ (125-14)
आपे करता करे कराए आपे मारगि पाए ॥ (1132-19)
आपे करता करे सु होइ ॥२॥ (413-8)
आपे करता करे सु होई ॥ (1085-1)
आपे करता करे सु होई ॥४॥ (414-10)
आपे करता करे सु होवै ॥३॥ (411-14)
आपे करता करै सु होई ॥ (841-2)
आपे करता कारणु कराए ॥ (123-15)
आपे करता जिस नो देवै तिसु वसै मनि आई ॥ (1333-4)
आपे करता जुगि जुगि सोइ ॥ (664-13)
आपे करता दे वडिआई ॥ (130-9)
आपे करता देवै सोइ ॥ (1129-9)
आपे करता पुरखु बिधाता ॥ (1025-12)
आपे करता सचा सोई ॥ (1069-2)
आपे करता सभना का सोई ॥ (1063-6)
आपे करता सभि रस भोग ॥ (1174-2)
आपे करता सभु जिसु करणा ॥ (1052-7)
आपे करता स्रिसटि सिरजि जिनि गोई ॥ (232-6)
आपे करता है अबिनासी ॥ (1026-9)
आपे करतै कार कराई ॥ (1049-3)
आपे करतै भगति कराई ॥ (831-15)
आपे करन करावन जोगु ॥ (275-7)
आपे करहि करावहि सु होइगा ॥ (1048-15)
आपे करि करि वेखदा आपे सभु सचा ॥ (1094-3)
आपे करि करि वेखै ताणु ॥ (795-15)
आपे करि पासारु आपे रंग रटिआ ॥ (957-6)
आपे करि वेखै मारगि लाए भाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ (601-8)
आपे करि वेखै वडिआई ॥ (1036-13)
आपे करि वेखै सिरि सिरि लेखै आपे सुरति बुझाई ॥ (688-9)
आपे करे आपे बखसिंदु ॥ (352-3)
आपे करे कराए आपे ॥ (1059-10)
आपे करे कराए आपे ॥ (125-17)
आपे करे कराए आपे आपे दे वडिआई हे ॥२॥ (1021-12)
आपे करे कराए आपे इकना सुतिआ देइ जगाइ ॥ (69-10)
आपे करे कराए आपे हुकमे रहिआ समाई हे ॥१॥ (1043-18)
आपे करे कराए आपे होरु करणा किछू न जाई हे ॥१०॥ (1047-14)
आपे करे कराए करता ॥ (1063-15)

आपे करे कराए करता अवरु न दूजा तुझै सरे ॥९॥ (552-6)
आपे करे कराए करता आपे भरमि भुलाइदा ॥१३॥ (1061-11)
आपे करे कराए करता आपे मंनि वसाइदा ॥५॥ (1059-19)
आपे करे कराए करता किस नो आखि सुणाईऐ ॥ (418-5)
आपे करे कराए करता गुरमति आपि मिलावणिआ ॥३॥ (123-4)
आपे करे कराए करता जिउ भावै तिवै चलाइदा ॥१२॥ (1061-9)
आपे करे कराए करता जिनि एह रचना रचीऐ ॥ (1344-8)
आपे करे कराए थापे ॥ (131-14)
आपे करे कराए प्रभु आपे आपे नदरि करेइ ॥ (1259-15)
आपे करे निआउ जो तिसु भाइआ ॥६॥ (422-5)
आपे करे हरि आपि कराए ॥ (842-14)
आपे करै कथै सुणै सोइ ॥ (930-19)
आपे करै करावै सोइ ॥४॥ (1344-17)
आपे कवला कंतु आपि ॥ (1190-10)
आपे कसि कसवटी लाए आपे कीमति पाइआ ॥१२॥ (1040-9)
आपे काजी आपे मुला ॥ (1022-3)
आपे कार कराइसी अवरु न करणा जाइ ॥३॥ (32-17)
आपे कारणु करता करे स्रिसटि देखै आपि उपाइ ॥ (37-9)
आपे कारणु कीआ अपर्मपरि सभु तेरो कीआ कमाइदा ॥१०॥ (1038-3)
आपे कारणु जिनि कीआ करि किरपा पगु धारि ॥ (937-16)
आपे कासट आपि हरि पिआरा विचि कासट अगनि रखाइआ ॥ (606-1)
आपे किस ही कसि बखसे आपे दे लै भाई हे ॥८॥ (1021-1)
आपे किस ही बखसि लए आपे कार कमाइ ॥ (1087-17)
आपे कीतो खेलु तमासा ॥ (1033-12)
आपे कीतो रचनु आपे ही रतिआ ॥ (966-10)
आपे कीतोनु गुर वीचारु ॥८॥ (842-19)
आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥ (605-5)
आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे तुलु परवाणु ॥ (606-12)
आपे कुदरति करि करि देखै सुंनहु सुंनु उपाइदा ॥१॥ (1037-11)
आपे कुदरति करे वीचारा ॥ (1073-18)
आपे कुदरति करे साजि ॥ (1170-6)
आपे कुदरति साजि कै आपे करे बीचारु ॥ (143-13)
आपे कुदरति साजीअनु करि महल सराई ॥ (947-11)
आपे क्रिपा करे नामु देवै नानक नामि समाई हे ॥८॥ (1069-14)
आपे क्रिपा करे सुखदाता आपे मेलि मिलाइआ ॥१४॥ (1068-19)
आपे क्रिपा करे सुखदाता गुर कै सबदे सोहा हे ॥९॥ (1057-2)
आपे खसमि निवाजिआ ॥ (72-15)

आपे खाणी आपे बाणी आपे खंड वरभंड करे ॥ (552-3)
आपे खेल करे सभ करता ऐसा बूझै कोई ॥३॥ (1330-1)
आपे खेल करे सभि करता आपे देइ बुझाई हे ॥५॥ (1044-4)
आपे खेल करे सभि करता सुणि साचा मंनि वसाइदा ॥१॥ (1066-2)
आपे खेल करै सभि करता ऐसा बूझै कोई ॥३॥ (993-15)
आपे खेल खिलावै दिनु राती आपे सुणि सुणि भीजा हे ॥३॥ (1073-18)
आपे खेल खेलाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥२॥ (605-3)
आपे खेलु रचाइओनु सभु जगतु सबाइआ ॥ (1237-18)
आपे गऊ आपे रखवाला ॥ (1021-4)
आपे गऊ चरावै बाना ॥ (1083-4)
आपे गहिर ग्मभीरु है पिआरा तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ (605-6)
आपे गावै आपि सुणावै इसु मन अंधे कउ मारगि पाए ॥२॥ (506-6)
आपे गिआनि धिआनि गुरु सूरा ॥ (1020-14)
आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु ॥ (54-13)
आपे गुण आपे गुणकारी ॥ (285-7)
आपे गुण गावाइदा पिआरा आपे सबदि समाहा ॥ (606-14)
आपे गुणदाता अवगुण काटे हिरदै नामु वसाए ॥ (246-10)
आपे गुणदाता गुण गावै आपे आखि सुणावणिआ ॥५॥ (125-17)
आपे गुणदाता बीचारी ॥ (1045-18)
आपे गुणदाता सबदि मिलाए सबदै का रसु ताहा हे ॥१२॥ (1057-6)
आपे गुपतु आपे पासारु ॥ (889-3)
आपे गुपतु आपे है परगटु अपणा आपु पसारणा ॥४॥ (1077-2)
आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु वंञावणिआ ॥१॥ (124-6)
आपे गुपतु वरतदा आपे ही जाहरि ॥ (555-17)
आपे गुपतु वरतै सभ अंतरि गुर कै सबदि पछाता हे ॥१॥ (1052-8)
आपे गुरमुखि आपे देवै ॥ (1044-7)
आपे गुरमुखि आपे देवै आपे अम्रितु पीआइआ ॥४॥ (930-9)
आपे गुरमुखि आपे देवै आपे करि करि वेखै ॥ (1235-1)
आपे गुरमुखि करि बीचारु ॥४॥ (1190-12)
आपे गुरमुखि दे वडिआई नानक नामि समाए ॥४॥९॥१९॥ (1133-1)
आपे गुरमुखि देइ बुझाई ॥ (1049-3)
आपे गुरमुखि नामु वसाए ॥ (424-4)
आपे गुरु चेला है आपे आपे गुणी निधाना ॥ (797-12)
आपे गुरु चेला है आपे आपे दसे घाटु ॥ (517-12)
आपे गुरु चेला है आपे आपे हरि प्रभु चोज विडानी ॥ (669-17)
आपे गुरु दाता करमि बिधाता ॥ (126-17)
आपे गोपी आपे काना ॥ (1083-4)

आपे गोपी कानु है पिआरा बनि आपे गऊ चराहा ॥ (606-16)
आपे घटि घटि जाणै भेदु ॥ (1150-13)
आपे घटि घटि रहिआ बिआपि ॥ (890-16)
आपे घटि घटि रहिओ बिआपि ॥ (1236-13)
आपे चतुरु सरूपु है आपे जाणु सुजाणु ॥४२॥ (936-2)
आपे चाटसाल आपि है पाधा आपे चाटड़े पड़ण कउ आणे ॥ (552-18)
आपे चोज करे रंग महली होर माइआ मोह पसारा हे ॥४॥ (1026-18)
आपे छिंझ पवाइ मलाखाड़ा रचिआ ॥ (1280-3)
आपे जंत उपाइ आपि प्रतिपालिओनु ॥ (653-14)
आपे जंत उपाइअनु आपे आधारु ॥ (556-17)
आपे जंती जंतु है पिआरा जन नानक वजहि वजाइआ ॥४॥४॥ (606-4)
आपे जगजीवनु सुखदाता आपे बखसि मिलाए ॥ (32-7)
आपे जगतु उपाइ कै कुदरति करे वीचार ॥ (1280-19)
आपे जगतु उपाइ कै गुण अउगण करे बीचारु ॥ (1284-3)
आपे जगतु उपाइओनु करि पूरा थाटु ॥ (517-10)
आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपि खेलै बहु रंगी जीउ ॥ (174-12)
आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि दानु देवै सभ मंगी जीउ ॥ (174-13)
आपे जल थलि सभतु है पिआरा प्रभु आपे करे सु होइ ॥ (605-2)
आपे जलि थलि वरतदा मेरे गोविदा रवि रहिआ नही दूरी जीउ ॥ (174-15)
आपे जलु अपर्मपरु करता आपे मेलि मिलावै ॥ (1191-19)
आपे जलु आप ही तरंगा ॥२॥ (803-12)
आपे जलु आपे थलु थम्हनु आपे कीआ घटि घटि बासा ॥ (1403-16)
आपे जलु आपे दे छिंगा आपे चुली भरावै ॥ (551-1)
आपे जलु थलु सागरु सरवरु ॥ (1020-17)
आपे जाञी आपे माञी आपि सुआमी आपि देवा ॥ (452-15)
आपे जाणहि दूरि आपे ही जाहरा ॥ (966-11)
आपे जाणै अंतरजामी ॥ (1026-19)
आपे जाणै आपि पछाणै सभु तिस का चोजु सबाइआ ॥११॥ (1040-7)
आपे जाणै आपे देइ ॥ (5-14)
आपे जाणै एको सोइ ॥२॥ (797-6)
आपे जाणै करे आपि आपे आणै रासि ॥ (1093-9)
आपे जाणै करे आपि जिनि वाड़ी है लाई ॥१॥ (725-1)
आपे जाणै सरब वीचार ॥ (150-15)
आपे जानै अपनी मिति गति ॥ (284-19)
आपे जानै अपने जी की ॥ (294-16)
आपे जानै साध बडाई ॥ (271-13)
आपे जाल मणकड़ा आपे अंदरि लालु ॥२॥ (23-12)

आपे जालु वताइदा पिआरा सभु जगु मछुली हरि आपै ॥ (605-11)
आपे जिना बुझाए गुरमुखि तिन अंदरहु दूजा भरमु गइआ ॥१३॥ (553-18)
आपे जिसु रखै हां ॥ (410-16)
आपे जोगी आपे भोगी ॥ (1021-4)
आपे जोगी आपे भोगी आपे संनिआसी फिरै बिबाणी ॥ (553-10)
आपे जोगी जुगति जुगाहा ॥ (699-8)
आपे जोगी पुरखु है पिआरा आपे ही तपु तापै ॥ (605-12)
आपे जोड़ि विछोड़िऐ आपे कुदरति देइ दिखाइ ॥ (1281-10)
आपे जोड़ि विछोड़े आपे ॥ (1045-3)
आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई ॥२॥ (360-15)
आपे जोड़ि विछोड़े करता आपे मारि जीवाइदा ॥१५॥ (1034-7)
आपे जोड़ि विछोड़े सोई ॥ (414-9)
आपे जोति सरूपी बाला ॥ (1021-15)
आपे ठाकुरु आपे सेवकु आपि बनावै भाती ॥ (668-6)
आपे ठाकुरु आपे सेवकु सभु आपे आपि गोविंदे ॥ (800-16)
आपे ठाकुरु सेवकु आपे आपे ही पाप खंडनु ॥ (552-11)
आपे तंतु परम तंतु सभु आपे आपे ठाकुरु दासु भइआ ॥ (553-16)
आपे तखति बहै सचु निआई सभ चूकी कूक पुकारिआ जीउ ॥३॥ (97-13)
आपे तखतु रचाइओनु आकास पताला ॥ (785-12)
आपे ताड़ी लाइदा पिआरा आपे गुणी निधानु ॥३॥ (606-11)
आपे ताड़ी लाईअनु सभ महि परवेसा ॥ (955-1)
आपे ताणु दीबाणु है पिआरा आपे कारै लाइआ ॥ (606-3)
आपे तीरथु तुलहड़ा पिआरा आपि तरै प्रभु आपै ॥ (605-10)
आपे तोले तोलि तोलाए गुर सबदी मेलि तोलाइआ ॥९॥ (1067-13)
आपे तोले पूरा होइ ॥ (797-5)
आपे त्रिपता आपे मुकता ॥ (1035-6)
आपे थमै सचा सोई ॥१॥ (744-18)
आपे थापि उथापि निवाजी ॥ (1059-13)
आपे थापि उथापि सबदि निवाजिआ ॥५॥ (753-1)
आपे थापि उथापे आपे ॥ (1034-7)
आपे थापि उथापे आपे ॥ (1045-3)
आपे थापि उथापे आपे ॥ (125-18)
आपे थापि उथापे वेखै गुरमुखि आपि बुझाइदा ॥१४॥ (1061-12)
आपे थापि उथापे साजे ॥ (1084-14)
आपे थापि उथापै आपे एते वेस करावै ॥ (1238-4)
आपे थापे थापि उथापे ॥ (129-18)
आपे थापे थापि उथापे ॥ (367-9)

आपे दइआ करहु प्रभ दाते नानक अंकि समावै ॥४॥१॥ (1114-10)
आपे दइआ करे प्रभु दाता सतिगुरु पुरखु मिलाए ॥ (773-11)
आपे दइआ करे सुखदाता गुण महि गुणी समाइआ ॥५॥ (1067-7)
आपे दइआ करे सुखदाता जपीऐ सारिंगपाणी ॥३॥ (1259-3)
आपे दस अठ वरन उपाइअनु आपि ब्रहमु आपि राजु लइआ ॥ (553-16)
आपे दाता आपि प्रतिपालि ॥ (200-18)
आपे दाता करमु है साचा साचा सबदु सुणाए ॥३॥ (753-13)
आपे दाता सुखै दा आपे देइ सजाइ ॥ (1091-18)
आपे दाति करी गुरि दातै पाइआ अलख अभेवा ॥२॥ (1125-12)
आपे दाति करे दातारु ॥ (1129-5)
आपे दाति करे दातारु ॥ (160-9)
आपे दानां बीनिआ आपे परधानां ॥ (556-6)
आपे दाना आपे बीना ॥ (1020-13)
आपे दाना आपे बीना आपे सेव कराए ॥ (246-9)
आपे दाना आपे बीना पूरै भागि समाए ॥५८॥ (944-12)
आपे दाना सचु पराखै ॥ (1032-13)
आपे दानु करे किसु आखीऐ आपे देइ बुझाई ॥ (425-18)
आपे दिनसु आपे ही रैणी ॥ (1020-18)
आपे दीप लोअ दीपाहा ॥ (699-10)
आपे दुख सुख भोगि भोगावै गुरमुखि सो अनरागा ॥२॥ (598-13)
आपे दुखु सुखु पाए अंतरि आपे भरमि भुलाई ॥११॥ (912-6)
आपे दुरमति मनहि करेइ ॥ (349-15)
आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा ॥ (472-5)
आपे दे वडिआईआ कहु नानक सचा सोइ ॥२॥ (1090-6)
आपे दे वडिआईआ दे तोटि न होई ॥३॥ (420-8)
आपे देइ त पाईऐ होरु करणा किछू न जाइ ॥ (33-4)
आपे देइ न पछोतावै ॥ (112-16)
आपे देइ न पछोतावै ॥ (128-6)
आपे देइ पिआरु मंनि वसाईऐ ॥ (147-17)
आपे देइ पिआरो सहजि वापारो गुरमुखि जनमु सवारे ॥ (584-14)
आपे देइ सु पाईऐ गुरि बूझ बुझाई ॥३॥ (425-5)
आपे देखि दिखावै आपे ॥ (1034-7)
आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥ (731-3)
आपे देवै ढिल न पाई ॥२॥ (363-3)
आपे देवै देवणहारा ॥ (1058-10)
आपे देवै देवणहारा ॥ (1066-16)
आपे देवै देवणहारु ॥ (841-11)

आपे देवै सदि बुलाए ॥ (127-6)
आपे देवै सबदि बुलाए ॥ (117-18)
आपे देवै सहजि सुभाइ ॥ (361-11)
आपे देवै सहजि सुभाइ ॥२६॥ (933-6)
आपे देवै सिरजनहारु ॥३॥ (1335-4)
आपे देहि बुझाई अवर न भाई गुरमुखि हरि रसु चाखिआ ॥ (571-19)
आपे दैत लाइ दिते संत जना कउ आपे राखा सोई ॥ (1133-10)
आपे धनखु आपे सरबाणा ॥ (1021-1)
आपे धरती आपि जलु पिआरा आपे करे कराइआ ॥ (605-18)
आपे धरती आपे है राहकु आपि जमाइ पीसावै ॥ (550-19)
आपे धरती धउलु अकासं ॥ (1021-11)
आपे धरती साजीअनु आपे आकासु ॥ (302-13)
आपे धरती साजीअनु पिआरै पिछै टंकु चड़ाइआ ॥१॥ (605-16)
आपे धरि देखहि कची पकी सारी ॥ (113-10)
आपे नदरि करे जा सोइ ॥ (878-9)
आपे नदरि करे भाउ लाए गुर सबदी बीचारि ॥ (65-5)
आपे नदरि करे मनि वसिआ मेरै प्रभि इउ फुरमाई हे ॥१२॥ (1046-15)
आपे नदरि करे सो पाए आपे मेलि मिलाई हे ॥२॥ (1043-19)
आपे नदरी तोले तोलो ॥ (1052-9)
आपे नरु आपे फुनि नारी आपे सारि आप ही पासा ॥ (1403-17)
आपे नाउ जपाइदा पिआरा आपे ही जपु जापै ॥ (605-14)
आपे निआउ करे सभु साचा साचे साचि मिलाइदा ॥१॥ (1059-14)
आपे निरभउ ताड़ी लाहा ॥ (699-9)
आपे निरमलु एकु तूं होर बंधी धंधै पाइ ॥ (54-19)
आपे निरमलु पूज कराए गुर सबदी थाइ पाई ॥९॥ (910-10)
आपे निरमलु मिहरवानु मधुसूदनु जिस दा हुकमु न मेटिआ जाई हे ॥१४॥ (1047-18)
आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ (1173-18)
आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ (876-13)
आपे नेड़ै आपे दूरि ॥२॥ (362-2)
आपे नेड़ै दूरि आपे ही आपे मंझि मिआनो ॥ (25-10)
आपे नेड़ै नाही दूरे ॥ (1025-14)
आपे पउणु पाणी बैसंतरु आपे मेलि मिलाई हे ॥३॥ (1020-14)
आपे पटी कलम आपि आपि लिखणहारा होआ ॥ (968-14)
आपे पटी कलम आपि उपरि लेखु भि तूं ॥ (1291-14)
आपे पतणु पातणी पिआरा आपे पारि लंघाहु ॥३॥ (604-16)
आपे पति राखी सेवक की आपि कीओ बंधान ॥ (1216-16)
आपे परखे आपि चलाए ॥ (797-5)

आपे परखे परखणहारा ॥ (1040-8)
आपे परखे परखणहारै बहुरि सूलाकु न होई ॥ (1153-10)
आपे परखे पारखू पवै खजानै रासि ॥४॥ (61-15)
आपे परखे पूरा तोलो ॥ (1020-19)
आपे पारब्रहमु स्रिसटि जिनि साजी सिरि सिरि धंधै लाए ॥ (1131-12)
आपे पारसु आपि धातु है आपि कीतोनु कंचनु ॥ (552-11)
आपे पारि उतारणहारा ॥ (943-12)
आपे पावकु आपे पवना ॥ (329-15)
आपे पासा आपे सारी ॥ (1020-16)
आपे पिंडु सवारिओनु विचि नव निधि नामु ॥ (1090-17)
आपे पिड़ बाधी जगु खेलै आपे कीमति पाई हे ॥५॥ (1020-16)
आपे पिता माता है आपे आपे बालक करे सिआणे ॥ (552-18)
आपे पीसै आपे घसै आपे ही लाइ लएइ ॥ (947-15)
आपे पुंनु सभु आपि कराए आपि अलिपतु वरतीजै ॥ (551-16)
आपे पुरखु आपे ही नारी ॥ (1020-15)
आपे पूरा करे सु होइ ॥ (843-2)
आपे पूरा साहु आपे ही खटिआ ॥ (957-6)
आपे पेडु बिसथारी साख ॥ (387-16)
आपे प्रभि मेलि लई गलि लाइ ॥ (1247-3)
आपे प्रभू दइआलु है आपे देइ बुझाइ ॥ (37-10)
आपे प्रीति प्रेम परमेसुरु करमी मिलै वडाई ॥२॥ (1330-12)
आपे फरकु करे वेखि विगसै सभि रस देही माहा हे ॥१॥ (1056-11)
आपे फरकु कीतोनु घट अंतरि आपे बणत बणावणिआ ॥१॥ (125-11)
आपे बखस कराइदा पिआरा आपे सचु नीसाणु ॥ (606-9)
आपे बखसि करे जीअ सारा ॥ (106-11)
आपे बखसि मिलाइअनु पूरे गुर करतारि ॥८॥ (68-16)
आपे बखसि मिलाए सद कुरबाणिआ ॥ (1291-12)
आपे बखसि मिलाए सोइ ॥ (362-3)
आपे बखसि लए तिसु भावै हउमै गरबु निवारा हे ॥१५॥ (1027-13)
आपे बखसि लए प्रभु साचा आपे बखसि मिलावणिआ ॥७॥ (111-3)
आपे बखसि लए सुखु पाए पूरै सबदि मिलाई हे ॥४॥ (1047-6)
आपे बखसि लैहि नामु दीजै ॥ (1048-17)
आपे बखसि लैहि सुखु पाए सद ही नामि निवासी हे ॥१०॥ (1048-15)
आपे बखसिहि दे वडिआई ॥ (111-13)
आपे बखसे गुर सेवा लाए ॥ (1053-15)
आपे बखसे दइआ करि गुर सतिगुर बचनी ॥ (791-11)
आपे बखसे दे वडिआई ॥ (1262-7)

आपे बखसे दे वडिआई ॥ (842-10)
आपे बखसे दे वडिआई आपे मेलि मिलाइदा ॥८॥ (1063-6)
आपे बखसे दे वडिआई गुरमति इहु मनु भीजै हे ॥२॥ (1049-6)
आपे बखसे दे वीचारु ॥१॥ (666-2)
आपे बखसे देइ पिआरु ॥ (1278-1)
आपे बखसे मेलि मिलाए ॥ (116-13)
आपे बखसे मेलि मिलाए नानक सरणि तुमारी ॥२५॥९॥ (908-8)
आपे बखसे मेलि लए आपतु गवावै ॥ (1247-17)
आपे बखसे मेलि लए करमि परापति होइ ॥३॥ (1276-17)
आपे बखसे मेलि लए सो प्रभु सदा समालि ॥११॥ (755-12)
आपे बखसे लए मिलाइ ॥२॥ (666-4)
आपे बखसे सचु द्रिड़ाए मनु तनु साचै राता हे ॥११॥ (1053-1)
आपे बखसे सतिगुरु मेलै ॥ (415-9)
आपे बखसे सबदि मिलाए तिस दा सबदु अथाहा हे ॥१५॥ (1058-11)
आपे बखसे सबदि मिलाए परमल वासु मनि ताहा हे ॥११॥ (1057-5)
आपे बखसे सबदि वीचारा ॥ (1052-8)
आपे बछरू गऊ खीरु ॥ (1190-11)
आपे बनजु आपि बिउहारा ॥१॥ (803-11)
आपे बहु बिधि रंगुला सखीए मेरा लालु ॥ (23-13)
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ (4-13)
आपे बीना आपे दाना ॥ (283-18)
आपे बुधि बीचारि बिबेकै ॥ (236-1)
आपे भउजलु आपि है बोहिथा आपे खेवटु आपि तरे ॥ (552-5)
आपे भगता आपि सुआमी आपन संगि रता ॥ (498-10)
आपे भगति भंडार है पिआरा आपे देवै दाणु ॥ (606-10)
आपे भगती भाउ तूं आपे मिलहि मिलाइ ॥ (62-2)
आपे भगती लाइओनु गुर सबदि नीसाणे ॥ (1088-5)
आपे भरमि भुलाइदा किछु कहणु न जाई ॥१७॥ (955-9)
आपे भवरा फूल बेलि ॥ (1190-9)
आपे भवरु फुलु फलु तरवरु ॥ (1020-16)
आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥ (475-5)
आपे भांति बणाए बहु रंगी सिसटि उपाइ प्रभि खेलु कीआ ॥ (1334-12)
आपे भाणे आपि मिलाए ॥ (1050-19)
आपे भाणै देइ मिलाई ॥ (1046-15)
आपे भार अठारह बणसपति आपे ही फल लाए ॥ (554-10)
आपे भावै लए मिलाइ ॥ (1175-15)
आपे भेजे आपे सदे रचना रचि रचि वेखै ॥ (1242-15)

आपे मंदरु थम्हु सरीरु ॥३॥ (1190-11)
आपे मछु कछु करणीकरु तेरा रूपु न लखणा जाई हे ॥६॥ (1020-17)
आपे मछुली आपे जाला ॥ (1021-3)
आपे मथि मथि ततु कढाए जपि नामु रतनु ओमाहा राम ॥२॥ (699-10)
आपे मनि वसिआ प्रभु करता सहजे रहिआ समाई ॥३॥ (69-5)
आपे माइआ आपे छाइआ ॥ (125-16)
आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ॥ (23-12)
आपे मारगि पावणहारा आपे करम कमाए ॥ (581-15)
आपे मारि जीवाइदा पिआरा साह लैदे सभि लवाइआ ॥३॥ (606-2)
आपे मारि जीवाले अवरु न कोई ॥ (1069-2)
आपे मारि जीवाले आपे तिस नो तिलु न तमाई ॥७॥ (912-4)
आपे मारे आपि जीवाए ॥ (125-19)
आपे मारे आपे छोडै आपे बखसे करे दइआ ॥ (553-17)
आपे मारे आपे छोडै आपे लेवै देइ ॥ (350-5)
आपे माली आपि सभु सिंचै आपे ही मुहि पाए ॥ (554-11)
आपे मिलाए गहि कंठि लाए तिसु बिना नही जाइ जीउ ॥ (927-6)
आपे मिलिआ मिलि रहिआ आपे मिलिआ आइ ॥१॥ (555-13)
आपे मिहर दइआपति दाता ना किसै को बैराई हे ॥११॥ (1022-4)
आपे मिहरवान अगम अथाहे ॥ (1067-2)
आपे मिहरवानु सुखदाता जिउ भावै तिवै चलाई हे ॥१३॥ (1047-17)
आपे मीरा बखसि लए वडी वडिआई ॥२॥ (1011-13)
आपे मुकति त्रिपति वरदाता भगति भाइ मनि भाई हे ॥१५॥ (1021-8)
आपे मुकति दानु मुकतीसरु ममता मोहु चुकाइदा ॥१४॥ (1035-6)
आपे मेलि मिलाइअनु आपे देइ बुझाई ॥१८॥ (955-16)
आपे मेलि मिलाइदा आपे देइ वडिआई ॥१९॥ (956-7)
आपे मेलि मिलाइदा नानक सबदि समाइ ॥८॥७॥२४॥ (69-11)
आपे मेलि मिलाइदा फिरि वेछोड़ा न होइ ॥ (37-17)
आपे मेलि मिलाए आपे सबदे सहजि समाइदा ॥१५॥ (1066-19)
आपे मेलि मिलाए करता लागै साचि पिआरो ॥६॥ (938-18)
आपे मेलि मिलावही साचै महलि हदूरि ॥२॥ (20-5)
आपे मेलि मिलावै सोई ॥ (157-16)
आपे मेलि मिलीऐ जीउ आपे बखसणहारा ॥ (245-13)
आपे मेलि लए अकथु कथीऐ सचु सबदु सचु बाणी ॥ (1233-18)
आपे मेलि लए किरपाल ॥ (282-4)
आपे मेलि लए गुणदाता हउमै त्रिसना मारी ॥१५॥ (908-3)
आपे मेलि लए ता बखसे सची भगति सवारे ॥७॥ (754-2)
आपे मेलि लए प्रभि साचै साचु रखिआ उर धारी ॥ (600-2)

आपे मेलि लए सुखदाता आपि मिलिआ घरि आए ॥ (245-1)
आपे मेलि लैहु प्रभ साचे पूरै करमि तूं पावणिआ ॥६॥ (112-17)
आपे मेलि वडाई कीनी कुसल खेम सभ भइआ ॥१॥ (618-19)
आपे मेलि विछुंनिआ सचि वडिआई देइ ॥४॥ (60-6)
आपे मेले आपि मिलाए ॥ (1016-6)
आपे मेले करणी सारी ॥ (1060-3)
आपे मेले दे वडिआई ॥ (1044-1)
आपे मेले दे वडिआई सचे सिउ चितु लाइदा ॥९॥ (1060-4)
आपे मेले भरमु चुकाइआ ॥६॥ (1190-8)
आपे मेले भरमु चुकाए ॥ (223-13)
आपे मेले मेलि मिलाए ॥ (1045-5)
आपे मेले मेलि मिलाए ॥ (125-19)
आपे मेले मेलि मिलाए ॥ (361-12)
आपे मेले सो हरि मिलै होरु कहणा किछू न जाए ॥ (571-6)
आपे मेलै आपे करि वेखै बिनु सतिगुर बूझ न पाई हे ॥९॥ (1047-12)
आपे मेलै गुर सबदि वीचारा ॥ (1052-19)
आपे मेलै सबदि पछाणै ॥ (129-16)
आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ॥ (54-16)
आपे मोनी वरतदा आपे कथै गिआनां ॥ (556-6)
आपे मोहु सभु जगतु उपाइआ ॥ (125-16)
आपे रंगणि रंगिओनु सबदे लइओनु मिलाइ ॥ (37-5)
आपे रंगे रंगु चड़ाए ॥ (117-4)
आपे रंगे सहजि सुभाए ॥ (114-5)
आपे रचनु रचाइ आपे ही घालिओनु ॥ (653-13)
आपे रचनु रचाइ आपे ही पालिआ ॥ (523-11)
आपे रचिआ सभ कै साथि ॥ (279-7)
आपे रतनु अनूपु अमोलो ॥ (1020-19)
आपे रतनु परखि तूं आपे मोलु अपारु ॥ (54-14)
आपे रतनु विसाहे लेवै आपे कीमति पाइदा ॥४॥ (1036-14)
आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ॥ (23-10)
आपे रसीआ आपे रावे जिउ तिस दी वडिआई ॥ (765-7)
आपे रसीआ परम संजोगी ॥ (1021-5)
आपे रहिआ समाइ सो विसमादु भइआ ॥६॥ (753-2)
आपे राजनु आपे लोगा ॥ (97-12)
आपे राजनु पंचा कारी ॥ (1022-2)
आपे रावे सबदि थापि ॥२॥ (1190-11)
आपे रूप करे बहु भांतीं नानकु बपुड़ा एव कहै ॥४॥५॥ (350-7)

आपे रूप दिखालदा आपे लाइ धिआनां ॥ (556-6)
आपे लइअनु छडाइ बंधन सगल कापि ॥ (521-15)
आपे लाइ लए जगजीवनु दाता ॥ (1049-6)
आपे लाइ लए सो लागै ॥ (1045-4)
आपे लाइ लए सो लागै गुरमुखि सचु कमावणिआ ॥२॥ (110-15)
आपे लाइओ अपना पिआरु ॥ (240-2)
आपे लिव धातु है आपे ॥ (797-7)
आपे लेख अलेखै आपे तुम सिउ नाही किछु झाड़ा ॥३॥ (1081-7)
आपे लेखणि आपि लिखारी आपे लेखु लिखाहा ॥१॥ (606-14)
आपे लेखा मंगसी आपि कराए कार ॥ (1282-18)
आपे लेवै आपे देवै तिहु लोई जगत पित दाता हे ॥३॥ (1031-8)
आपे लेवै वसतु समाले ॥ (1033-10)
आपे वड दाणा वड साहा ॥ (699-12)
आपे वड पातिसाहु आपि वजीरटिआ ॥ (957-8)
आपे वडा आपि है पिआरा आपे ही परधाणु ॥ (606-11)
आपे वणजु वापारीआ पिआरा आपे सचु वेसाहु ॥१॥ (604-12)
आपे वणि तिणि सभतु है पिआरा आपे गुरमुखि जापै ॥१॥ (605-9)
आपे वणु त्रिणु त्रिभवण सारु ॥ (1150-15)
आपे वथु राखै आपे देइ ॥ (126-13)
आपे वरखै अम्रित धारा ॥ (1036-17)
आपे वरतै अवरु न कोई ॥ (841-2)
आपे वीचारी गुणकारी आपे मारगि लाई हे ॥२॥ (1020-12)
आपे वेक करे सभि साचा आपे भंनि घड़ाइदा ॥२॥ (1061-17)
आपे वेखि विगसदा दूजा को नाही ॥ (947-17)
आपे वेखि विगसदा पिआरा करि चोज वेखै प्रभु आपै ॥ (605-8)
आपे वेखै आपे बूझै आपे हुकमु पछाणै ॥ (580-5)
आपे वेखै आपे बूझै आपै आपु समाइदा ॥९॥ (1065-10)
आपे वेखै आपे विगसै आपे नदरि करेइ ॥२॥ (350-6)
आपे वेखै थापि उथापे ॥ (1059-11)
आपे वेखै वेखणहारु ॥ (1129-13)
आपे वेखै सुणे आपि गुर सबदि धिआई ॥१॥ (947-12)
आपे वेखै सुणे आपि सभसै दे आधारु ॥ (1282-19)
आपे वेखै सुणे आपे ही कुदरति करे जहानो ॥ (25-10)
आपे वेखै हुकमि चलाए ॥ (1051-4)
आपे वेद पुराण सभि सासत आपि कथै आपि भीजै ॥ (551-14)
आपे वेबाणी निरंकारी निरभउ ताड़ी लाई हे ॥१२॥ (1021-5)
आपे वैदु आपि नाराइणु ॥ (962-12)

आपे संगति मीत मेलि ॥१॥ (1190-10)
आपे संगति सदि बहालै आपे विदा करावै ॥ (551-1)
आपे संजमि वरतै स्वामी आपि जपाइहि नामु ॥ (554-2)
आपे संजमु आपे जुगता ॥ (1047-18)
आपे सकता आपे सुरता सकती जगतु परोवहि ॥ (1242-14)
आपे सकती सबलु कहाइआ ॥ (1081-19)
आपे सगले दूत बिदारे ठाकुर अंतरजाम ॥१॥ (1216-16)
आपे सचा बखसि लए करि किरपा करै रजाइ ॥ (1420-7)
आपे सचा बखसि लए फिरि होइ न फेरा राम ॥ (571-8)
आपे सचा सची नाई ॥ (1053-16)
आपे सचा सचु वरताए ॥ (1053-9)
आपे सचा सबदि मिलाए ॥ (1067-1)
आपे सचा है सुखदाता ॥ (1065-18)
आपे सचु कीआ कर जोड़ि ॥ (839-4)
आपे सचु धारिओ सभु साचा सचे सचि वरतीजा हे ॥४॥ (1074-1)
आपे सचु भावै तिसु सचु ॥ (25-13)
आपे सति सति सति साचा ॥ (1077-1)
आपे सतिगुरु आपि सबदु जीउ जुगु जुगु भगत पिआरे ॥ (246-8)
आपे सतिगुरु आपि हरि आपे मेलि मिलाइ ॥ (41-7)
आपे सतिगुरु आपि है चेला उपदेसु करै प्रभु आपै ॥३॥ (605-13)
आपे सतिगुरु आपे प्रतिपाल ॥ (807-4)
आपे सतिगुरु आपे सेवकु आपे स्रिसटि उपाई हे ॥१॥ (1025-13)
आपे सतिगुरु मेलि मिलाए ॥ (1173-8)
आपे सतिगुरु मेलि सुखु देवै आपणां सेवकु आपि हरि भावै ॥ (555-8)
आपे सतिगुरु मेले पूरा ॥ (1060-4)
आपे सतिगुरु सबदु बीचारे ॥ (224-19)
आपे सतिगुरु सबदु है आपे ॥ (797-8)
आपे सतिगुरु समुंदु मथाहा ॥ (699-10)
आपे सदे ढिल न होइ ॥ (1344-16)
आपे सबदु आपे नीसानु ॥ (795-15)
आपे सबदु गुर मंनि वसाए ॥ (125-14)
आपे सबदु सचु साखी आपे जिन्ह जोती जोति मिलाई ॥ (1260-14)
आपे सबदु सदा गुरु दाता हरि नामु जपि स्मबाहा हे ॥१४॥ (1056-7)
आपे सभ घट अंदरे आपे ही बाहरि ॥ (555-16)
आपे सभना मंझि आपे बाहरा ॥ (966-11)
आपे सभि घट भोगवै सुआमी आपे ही सभु अंजनु ॥ (552-12)
आपे समझै आपे सूझै ॥ (933-6)

आपे सरणि पवाइदा मेरे गोविंदा हरि भगत जना राखु लाजै जीउ ॥ (174-19)
आपे सरब रहिआ भरपूरि ॥ (876-13)
आपे ससि सूरा पूरो पूरा ॥ (1020-14)
आपे सागरु आपे बोहिथा आपे ही खेवाटु ॥ (517-11)
आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु ॥ (54-17)
आपे सागरु बोहिथा पिआरा गुरु खेवटु आपि चलाहु ॥ (604-16)
आपे साचा एको सोई ॥ (1050-4)
आपे साचा लए मिलाइ ॥२॥ (1335-3)
आपे साचे गुण परगासं ॥ (1021-11)
आपे साजे अवरु न कोई ॥ (1060-17)
आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ ॥ (722-5)
आपे साजे करता सोइ ॥ (666-6)
आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥ (475-7)
आपे साजे सभ कारै लाए सो सचु रहिआ समाई ॥ (1260-15)
आपे साजे स्रिसटि उपाए ॥ (1053-12)
आपे साजे स्रिसटि उपाए सिरि सिरि धंधै लाई ॥४॥ (912-2)
आपे सावल सुंदरा पिआरा आपे वंसु वजाहा ॥ (606-16)
आपे सासतु आपे बेदु ॥ (1150-13)
आपे साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे हहि ता चे ॥ (169-15)
आपे साहिबु आपि वजीर ॥ (159-16)
आपे साहिबु आपे है राखा आपे रहिआ समाए ॥ (554-12)
आपे साहु आपे वणजारा ॥ (1040-8)
आपे साहु आपे वणजारा आपे वणजु कराइआ ॥ (605-16)
आपे साहु आपे वणजारा आपे ही हरि हाटु ॥ (517-11)
आपे साहु आपे वणजारा साचे एहो भाइदा ॥१२॥ (1036-4)
आपे सिंङी नादु है पिआरा धुनि आपि वजाए आपै ॥ (605-12)
आपे सिध साधिकु वीचारी ॥ (1022-2)
आपे सिरजे दे वडिआई ॥ (1046-14)
आपे सिरि सिरि धंधै लाइआ ॥ (841-7)
आपे सिरि सिरि धंधै लाए ॥ (1020-12)
आपे सिरि सिरि धंधै लाए ॥ (1061-12)
आपे सिव वरताईअनु अंतरि आपे सीतलु ठारु गड़ा ॥१३॥ (1082-1)
आपे सिव संकर महेसा आपे गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ (553-9)
आपे सिव सकती संजोगी ॥ (1150-15)
आपे सुखु दुखु देवै करता आपे बखस करीजै ॥८॥ (551-16)
आपे सुघड़ु सरूपु सिआणा ॥ (1021-1)
आपे सुणि सभ वेखदा पिआरा मुखि बोले आपि मुहाहु ॥ (604-13)

आपे सुतिआ देइ जगाई ॥२॥ (160-12)
आपे सुरगु मछु पइआला ॥ (1021-15)
आपे सुरता आपे करता कहु नानक बीचारो ॥ (940-9)
आपे सुरता आपे जानु ॥ (795-15)
आपे सुरता सचु वीचारसि आपे बूझै पदु निरबाणी ॥५॥ (1345-16)
आपे सुरि नर गण गंधरबा आपे खट दरसन की बाणी ॥ (553-9)
आपे सूखमु भालीऐ आपे पासारु ॥ (556-17)
आपे सूतु आपे बहु मणीआ करि सकती जगतु परोइ ॥ (604-19)
आपे सूरा अमरु चलाइआ ॥ (1082-1)
आपे सूरु किरणि बिसथारु ॥ (387-17)
आपे सेव कराइदा पिआरा आपि दिवावै माणु ॥ (606-10)
आपे सेव बणाईअनु गुरमुखि आपे अम्रितु पीआ ॥ (551-8)
आपे सेवा लाइअनु आपे बखस करेइ ॥ (653-18)
आपे सेवा लाइदा पिआरा आपे भगति उमाहा ॥ (606-13)
आपे सोभा सद ही पाए ॥ (798-5)
आपे स्रिसटि उपाइदा पिआरा करि सूरजु चंदु चानाणु ॥ (606-5)
आपे स्रिसटि उपाईअनु आपि करे बीचारु ॥ (1248-16)
आपे स्रिसटि उपाईअनु आपे फुनि गोई ॥ (787-19)
आपे स्रिसटि सभ साजीअनु आपि मति दीनी ॥ (949-16)
आपे स्रिसटि सभ साजीअनु आपे नदरि करेइ ॥ (994-4)
आपे स्रिसटि सभ साजीअनु आपे वरतीजै ॥ (1089-1)
आपे स्रिसटि साजीअनु आपि गुपतु रखेसा ॥ (955-2)
आपे स्रिसटि हुकमि सभ साजी ॥ (1059-13)
आपे हरि अपर्मपरु करता हरि आपे बोलि बुलाइ ॥ (368-16)
आपे हरि इक रंगु है आपे बहु रंगी ॥ (726-13)
आपे हरि जगजीवनु दाता आपे बखसि मिलाए ॥ (64-18)
आपे हसै आपि ही चितवै आपे चंदु सूरु परगासा ॥ (1403-16)
आपे ही आपि आपि वरतै आपे नामि ओमाहा राम ॥१॥ (699-9)
आपे ही आपि निरमला पिआरा आपे निरमल सोइ ॥ (605-4)
आपे ही आपि मनि वसिआ माइआ मोहु चुकाइ ॥ (36-16)
आपे ही आपि मोहिओहु जसु नानक आपि सुणिओहि ॥१॥ (81-4)
आपे ही आपि वरतदा पिआरा भै अगनि न सकै जलाइआ ॥ (606-2)
आपे ही उपदेसदा गुरमुखि पतीआईअनु ॥ (956-17)
आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ ॥ (474-1)
आपे ही गुण वरतदा पिआरा आपे ही परवाणु ॥ (606-8)
आपे ही चड़ि लंघदा पिआरा करि चोज वेखै पातिसाहु ॥ (604-17)
आपे ही प्रभु देहि मति हरि नामु धिआईऐ ॥ (163-1)

आपे ही प्रभु राखता भगतन की आनि ॥ (817-13)
आपे ही बलु आपि है पिआरा बलु भंनै मूरख मुगधाहा ॥३॥ (606-18)
आपे ही बहि पूजे करता आपि परपंचु करीजै ॥ (551-15)
आपे ही भउ पाइदा पिआरा बंनि बकरी सीहु हढाइआ ॥२॥ (605-19)
आपे ही राजनु आपे ही राइआ कह कह ठाकुरु कह कह चेरा ॥१॥ (827-17)
आपे ही वड परवारु आपि इकातीआ ॥ (965-18)
आपे ही सचु करे पसारा ॥ (1073-18)
आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे थापि उथापै ॥ (605-8)
आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे वेपरवाहु ॥२॥ (604-14)
आपे ही सूतधारु है पिआरा सूतु खिंचे ढहि ढेरी होइ ॥१॥ (605-1)
आपे हीरा निरमला आपे रंगु मजीठ ॥ (54-15)
आपे हीरा रतनु अमोलो ॥ (1052-9)
आपे हीरा रतनु आपे जिस नो देइ बुझाइ ॥ (920-11)
आपे हुकमि वरतदा पिआरा आपे ही फुरमाणु ॥२॥ (606-9)
आपे हुकमि वरतदा पिआरा जलु माटी बंधि रखाइआ ॥ (605-19)
आपे हुकमु करे सभु वेखै ॥ (1047-10)
आपे हुकमु चलाइदा जगु धंधै लाइआ ॥ (789-11)
आपे होइओ इकु आपे बहु भतिआ ॥ (966-10)
आपे होवहि गुपतु आपे परगटीऐ ॥ (966-11)
आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ॥१॥ (23-11)
आपै आपु खाइ ता निरमलु होवै धावतु वरजि रहाए ॥ (945-9)
आपै आपु खाइ हउ मेटै अनदिनु हरि रस गीत गवईआ ॥ (833-7)
आपै आपु पछाणिआ सादु मीठा भाई ॥ (426-1)
आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै कोइ ॥ (64-15)
आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै सोई ॥ (32-5)
आपै आपु मिलै चूकै अभिमानै ॥ (833-1)
आपै जपहु आपना जाप ॥५॥ (343-12)
आपै थै सभु रखिओनु किछु कहणु न जाई ॥ (425-5)
आपै दह दिस आप चलावै निहचलु है बिआपारी ॥३॥ (1123-11)
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥ (360-12)
आपै नालि गोसटि आपि उपदेसै आपे सुघड़ु सरूपु सिआणी ॥ (553-10)
आपै नो आपु खाइ मनु निरमलु होवै गुर सबदी वीचारु ॥ (86-10)
आपै नो आपु मिलि रहिआ हउमै दुबिधा मारि ॥ (1093-5)
आपो आपै पूजा होइ ॥ (951-14)
आब खाकु जिनि बंधि रहाई धंनु सिरजणहारो ॥१॥ (24-8)
आबादानु सदा मसहूर ॥ (345-14)
आर नही जिह तोपउ ॥ (659-8)

आरजा गई विहाइ धंधै धाइआ ॥ (707-16)
आरजा न छीजै सबदु पछाणु ॥ (125-1)
आरती कीरतनु सदा अनंद ॥ (393-10)
आराधउ तुझहि सुआमी अपने ॥ (1298-10)
आराधना अराधनु नीका हरि हरि नामु अराधना ॥२॥ (1018-10)
आराधि एकंकारु साचा नित देइ चड़ै सवाइआ ॥ (688-2)
आराधि स्रीधर सफल मूरति करण कारण जोगु ॥ (502-14)
आराधिहु सचा सोइ सभु किछु जिसु पासि ॥ (521-7)
आरूड़ते अस्व रथ नागह बुझंते प्रभ मारगह ॥ (1356-12)
आरोग्यं महा रोग्यं बिसिम्रिते करुणा मयह ॥२५॥ (1356-7)
आल जंजाल बिकार ते रहते ॥ (295-14)
आल जाल नही कछू जंजारा अह्मबुधि नही भोरा ॥ (821-13)
आल जाल बिकार तजि सभि हरि गुना निति गाउ ॥ (988-1)
आल जाल भ्रम मोह तजावै प्रभ सेती रंगु लाई ॥ (499-10)
आल जाल माइआ जंजाल ॥ (292-1)
आलसु छीजि गइआ सभु तन ते प्रीतम सिउ मनु लागा ॥ रहाउ ॥ (682-6)
आला ते निवारणा जम कारणा ॥३॥४॥ (694-2)
आलावंती इहु भ्रमु जो है मुझ ऊपरि सभ कोपिला ॥ (1292-15)
आवंत जावंत थकंत जीआ दुख सुख बहु भोगणह ॥ (1358-12)
आव घटै नरु ना बुझै निति मूसा लाजु टुकाइ ॥ (41-17)
आवउ वंञउ डुमणी किती मित्र करेउ ॥ (1014-15)
आवगि आगिआ पारब्रहम की उठि जासी मुहत चसाहा ॥३॥ (402-4)
आवटणु आपे खवै दुध कउ खपणि न देइ ॥ (60-6)
आवण जाण रखे करि करम ॥२॥ (183-12)
आवण जाण रहे गुरि राखे ॥२॥ (685-15)
आवण जाण रहे चूका भोला राम ॥ (1111-7)
आवण जाण रहे जनमु न तहा मरि ॥ (524-6)
आवण जाण रहे थिति पाई जनम मरण के मिटे बिसूरे ॥१॥ (825-19)
आवण जाण रहे मिले साधा ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥३॥ (687-12)
आवण जाण रहे वडभागी नानक पूरन आसा जीउ ॥४॥३१॥३८॥ (105-17)
आवण जाण रहे सुख सारे ॥१॥ (191-1)
आवण जाण रहे सुखु पाइआ ॥ (1156-9)
आवण जाण रहे सुखु पाइआ घरि अनहद सुरति समाणी ॥ (772-7)
आवण जाण रहे हरि धिआइ ॥ (1148-15)
आवण जाणा कदे न चूकै माइआ मोह पिआरा ॥ (570-5)
आवण जाणा किउ रहै किउ मेला होई ॥ (422-8)
आवण जाणा चुकै जनमि न जाहि मरि ॥ (1093-11)

आवण जाणा ठाकिआ सुखि सहजि सवीजै ॥७॥ (1089-2)
आवण जाणा तिस का कटीऐ सदा सदा सुखु होहा ॥२॥ (961-2)
आवण जाणा ना थीऐ निज घरि वासा होइ ॥ (993-18)
आवण जाणा ना थीऐ साची मति होई ॥३॥ (766-15)
आवण जाणा बहुड़ि न होवै गुरमुखि सहजि धिआइआ ॥ (1259-4)
आवण जाणा भ्रमु भउ भागा हरि हरि हरि गुण गाइआ ॥ (445-1)
आवण जाणा रहि गइआ आपि होआ मिहरवानु ॥ (46-7)
आवण जाणा वीसरै गुर सबदी वीचारु ॥ (787-4)
आवण जाणा सबदि निवारे ॥ (1068-8)
आवण जाणा सबदु पछाणु ॥ (1059-8)
आवण जाणा हुकमु सभु निहचलु तुधु थेहु ॥ (710-12)
आवण जाणु न चुकई भाई झूठी दुनी मणी ॥ (608-16)
आवण जाणु नही मनु निहचलु पूरे गुर की ओट गही ॥ (1254-14)
आवण जाणु भइआ दुखु बिखिआ देह मनमुख सुंञी सुंञु ॥ (1179-12)
आवण जाणु भरमु भउ नाठा जनम जनम के किलविख दहे ॥१॥ (824-18)
आवण जाणु रहिओ ॥ (1002-16)
आवण जाणु रहै थिरु नामि समाणे ॥२॥ (364-3)
आवण जाणै परज विगोई ॥ (1068-9)
आवण जावण दुख हरे हरि भगति कीआ परवेसु जीउ ॥ (929-14)
आवणि जाणि विगुचीऐ दुबिधा विआपै रोगु ॥ (934-3)
आवणु जाणा करतै लिखि पाइआ ॥ (1154-17)
आवणु जाणा जमणु मरणा मनमुखि पति गवाई ॥ (31-4)
आवणु जाणा ठाकि रहाए सचै नामि समावणिआ ॥७॥ (109-17)
आवणु जाणा ठाकि रहावै ॥६॥ (1344-19)
आवणु जाणा तुम ही कीआ ॥ (563-17)
आवणु जाणा मेटि समाणिआ ॥८॥ (905-2)
आवणु जाणा मेटीऐ हरि के गुण गावै ॥ (1318-14)
आवणु जाणा रखै न कोई ॥ (1057-15)
आवणु जाणा रहि गए मनि वुठा निरंकारु जीउ ॥ (761-1)
आवणु जाणा सभु चलतु तुमारा ॥ (1077-7)
आवणु जाणु न चुकई मरि जनमै होइ खुआरु ॥३॥ (19-3)
आवणु जाणु न सुझई अंधा अंधु कमाइ ॥ (947-7)
आवणु जाणु न सुझई भीड़ी गली फही ॥ (953-15)
आवणु जाणु नही जम धारा ॥ (1033-4)
आवणु जाणु बिभूति लाइ जोगी ता तीनि भवण जिणि लइआ ॥१॥ (908-11)
आवणु जावणु ठाकि रहाए गुरमुखि ततु वीचारो ॥ (437-15)
आवणु जावणु तउ रहै पाईऐ गुरु पूरा ॥ (422-10)

आवणु जावणु दुखु घणा कदे न चूकै चिंद ॥ (1088-2)
आवणु जावणु मिरतु न होता ॥ (237-15)
आवणु त जाणा तिनहि कीआ जिनि मेदनि सिरजीआ ॥ (542-1)
आवणु वंञणु डाखड़ो छोडी कंति विसारि ॥४॥ (56-6)
आवणे जावणे खरे डरावणे तोटि न आवै फेरीआ ॥ (767-6)
आवत इकेला जात इकेला ॥ (1004-19)
आवत कउ जाता कहै जाते कउ आइआ ॥ (229-6)
आवत कउ हरख जात कउ रोवहि इहु दुखु सुखु नाले लागा ॥ (598-13)
आवत कछू न दीसई नह दीसै जात ॥ (857-8)
आवत किनै न पेखिओ कवनै जाणै री बाई ॥१॥ (525-6)
आवत की नाही मनि तनि वसहि मुखे ॥ (1109-9)
आवत जात जोनी दुख खीना ॥१॥ रहाउ ॥ (190-16)
आवत जात दोऊ पख पूरन पाईऐ सुख बिस्राम ॥१॥ (1220-19)
आवत जात न दीसही ना पर पंखी ताहि ॥ (550-17)
आवत जात न लागै बारा ॥ (1189-3)
आवत जात नरक अवतार ॥ (299-11)
आवत जात नाक सर होई ॥१॥ रहाउ ॥ (871-9)
आवत जात पड़ै सिरि छारो ॥ (1027-9)
आवत जात बार खिनु लागै हउ तब लगु समारउ नामु ॥१॥ (368-7)
आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ दुखि लागै पछुताई ॥ (1265-3)
आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ बिनु गुर मुकति न होई हे ॥९॥ (1045-10)
आवत जात रहे स्रम नासे सिमरत साधू संगि ॥ (1300-10)
आवत जात लाज नही लागै बिनु गुर बूडै बारो बार ॥१॥ रहाउ ॥ (1344-12)
आवत जावत जनमै मरै ॥ (269-8)
आवत जावत हुकमि अपारि ॥ (885-16)
आवत दीसै जात न जानी ॥४॥१॥११॥६२॥ (337-9)
आवत पहीआ खूधे जाहि ॥ (872-1)
आवत संग न जात संगाती ॥ (1158-1)
आवत सो जनु नामहि राता ॥ (252-18)
आवत हरख न जावत दूखा नह बिआपै मन रोगनी ॥ (883-8)
आवत हुकमि बिनास हुकमि आगिआ भिंन न कोइ ॥ (251-11)
आवतु करता जातु भी करता ॥ (862-6)
आवतु किनै न राखिआ जावतु किउ राखिआ जाइ ॥ (1329-10)
आवध कटिओ न जात प्रेम रस चरन कमल संगि ॥ (1389-3)
आवध हीणं जथा सूरा नानक धरम हीणं तथा बैस्नवह ॥५६॥ (1359-5)
आवधह गुण गोबिंद रमणं ओट गुर सबद कर चरमणह ॥ (1356-12)
आवन आए स्रिसटि महि बिनु बूझे पसु ढोर ॥ (251-8)

आवन जाना तिह मिटै नानक जिह मनि सोइ ॥१॥ (251-12)
आवन जाना हुकमु तिसै का हुकमै बुझि समावहिगे ॥१॥ रहाउ ॥ (1103-16)
आवन जातु इकु खेलु बनाइआ ॥ (294-13)
आवनि अठतरै जानि सतानवै होरु भी उठसी मरद का चेला ॥ (723-4)
आवनि वंञनि ना रहनि पूर भरे पहीआह ॥२॥ (1015-7)
आवनु जानु न होवी तेरा ॥ (286-12)
आवनु जावनु द्रिसटि अनद्रिसटि ॥ (281-19)
आवनु जावनु माइआ धंध ॥१॥ (888-11)
आवहि इसु रासी के वापारीए जिन्हा नामु पिआरा ॥ (429-15)
आवहि जांहि मरहि मरि जाई ॥४॥ (1343-14)
आवहि जावहि ठउर न पावहि दुख महि दुखि समाई ॥ (638-4)
आवहि जावहि नामु नही बूझहि इकना गुरमुखि सबदु पछाता हे ॥१३॥ (1052-2)
आवहि जावहि मरहि अभागे ॥ (842-5)
आवहि जाहि अनेक मरि मरि जनमते ॥ (762-1)
आवहि जाहि भ्रमि मरहि अभागे ॥ (1069-9)
आवहि जाहि मरहि मरि जाही ॥ (1029-2)
आवहि जूठे जाहि भी जूठे जूठे मरहि अभागे ॥१॥ (1195-6)
आवहि नंगे जाहि नंगे विचे करहि विथार ॥ (1238-3)
आवहि न जाहि न कबहू मरते पारब्रहम संगारी रे ॥३॥ (855-10)
आवहि सचे जावहि सचे फिरि जूनी मूलि न पाहि ॥ (565-4)
आवहु दइआ करे जीउ प्रीतम अति पिआरे ॥ (245-9)
आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥ (17-16)
आवहु भैणे तुसी मिलहु पिआरीआ ॥ (96-6)
आवहु मिलहु सहेलीहो मेरे लाल जीउ हरि हरि नामु अराधे राम ॥ (542-3)
आवहु मिलहु सहेलीहो मै पिरु देहु मिलाइ ॥ (38-5)
आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहां ॥ (579-13)
आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहा ॥१॥ (579-15)
आवहु मिलहु सहेलीहो सिमरहु सिरजणहारो ॥ (581-3)
आवहु मीत इकत्र होइ रस कस सभि भुंचह ॥ (399-7)
आवहु मीत पिआरे ॥ (764-8)
आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥ (918-4)
आवहु संत प्रान सुखदाते सिमरह प्रभु अबिनासी ॥ (1206-3)
आवहु संत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि कथा करहु ॥ (799-18)
आवहु संत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि नामु वखान ॥ (1335-9)
आवहु संत मिलाह हरि कथा कहाणीआ ॥ (399-3)
आवहु संत मै गलि मेलाईऐ ॥ (95-14)
आवहु संतहु मिलि नामु जपाहा ॥ (173-3)

आवहु सजणा हउ देखा दरसनु तेरा राम ॥ (764-18)
आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥ (920-4)
आवहो संत जनहु गुण गावह गोविंद केरे राम ॥ (775-9)
आवा गउणु कीआ करतारि ॥ (842-2)
आवा गउणु तुधु आपि रचाइआ ॥ (1342-16)
आवा गउणु निवारि सचि राते साच सबदु मनि भाइआ ॥ (1234-6)
आवा गउणु निवारिआ जोती जोति मिलाइ ॥ (1009-15)
आवा गउणु निवारिआ है साचा सोई ॥३॥ (729-11)
आवा गउणु निवारिओ करि नदरि नीसाणु ॥ (968-5)
आवा गउणु बजारीआ बाजारु जिनी रचाइआ ॥ (1290-13)
आवा गउणु मिटै गुर सबदी आपे परखै बखसि लइआ ॥ (940-19)
आवा गउणु रचाइ उपाई मेदनी ॥ (1283-8)
आवा गउणु है संसारा ॥ (1051-8)
आवा गवणु सिरजिआ तू थिरु करणैहारो ॥ (580-11)
आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥ (288-13)
आवा गवनु होतु है फुनि फुनि इहु परसंगु न तूटै ॥२॥ (971-3)
आवै अंतु न भजिआ जाई ॥ (1159-10)
आवै जाइ जमै मरै गुर सबदि छुटाही ॥ (1092-1)
आवै जाइ दूजै लोभाइ ॥ (664-15)
आवै जाइ भवाईऐ जोनी रहणु न कितही थाइ भइआ ॥३॥ (1007-18)
आवै जाइ भवाईऐ पइऐ किरति कमाइ ॥ (59-15)
आवै जाइ भवाईऐ बहु जोनी नचा ॥ (1099-14)
आवै जाइ भवाईऐ मनमुखु अगिआनु ॥ (786-18)
आवै जाइ मरि दूजा होइ ॥२॥ (223-4)
आवै जाइ सदा जमि जोहा ॥ (235-15)
आवै जावै ठउर न काई ॥५॥ (230-4)
आवै न जाइ ना दुखु पाए ॥ (842-12)
आवै न जाइ मरै न जीवै तासु खोजु बैरागी ॥१॥ (333-3)
आवै न जावै चूकै आसा ॥ (224-3)
आवै न जावै संगे समावै पूरन जा का कामु हे ॥४॥ (1008-3)
आवै नाही कछू रीति ॥ (1182-2)
आवै राम सरणि वडभागी ॥ (1220-7)
आवै लहरि समुंद सागर की खिन महि भिंन भिंन ढहि पईआ ॥७॥ (835-4)
आवै साहिबु चिति तेरिआ भगता डिठिआ ॥ (520-9)
आवैगी नीद कहा लगु सोवउ ॥१॥ (1293-17)
आस अंदेसा दूरि करि इउ मलु जाइ समाइ ॥४॥ (57-12)
आस अंदेसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए ॥२॥ (468-2)

आस अनित गुरमुखि मिटै नानक नाम अरोग ॥१॥ (254-1)
आस अनित तिआगहु तरंग ॥ (295-5)
आस अपार दिनस गणि राखे ग्रसत जात बलु जरणी ॥१॥ (1219-9)
आस ओट प्रभ तोरी ॥१॥ (213-18)
आस करे सभु लोकु बहु जीवणु जाणिआ ॥ (1248-18)
आस न अवर काहू की कीजै सुखदाता प्रभु धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (1214-2)
आस निरास रहै बैरागी निज घरि ताड़ी लाई ॥ (634-14)
आस निरास रहै संनिआसी एकसु सिउ लिव लाए ॥ (1013-11)
आस निरासा हिकु तू हउ बलि बलि बलि गईआस ॥२॥ (1100-13)
आस निरासी तउ संनिआसी ॥ (356-15)
आस पास घन तुरसी का बिरवा माझ बना रसि गाऊं रे ॥ (338-3)
आस पिआस धोह मोह भरम ही ते होरै ॥१॥ रहाउ ॥ (408-16)
आस पिआस रमण हरि कीरतन एहु पदारथु भागवंतु लहै ॥१॥ (683-15)
आस पिआस सफल मूरति उमगि हीउ तरसना ॥१॥ (1305-1)
आस पिआसी चितवउ दिनु रैनी है कोई संतु मिलावै नेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (204-13)
आस पिआसी पिर कउ लोड़ी ॥१॥ (737-10)
आस पिआसी पिर कै ताई जिउ चात्रिकु बूंदेरे ॥ (1117-12)
आस पिआसी मै फिरउ कब पेखउ गोपाल ॥ (928-13)
आस पिआसी सेज सु कंति विछाईऐ ॥ (1361-15)
आस पिआसी सेजै आवा ॥ (356-19)
आस पूरन दुख बिनासन गही ओट नानक हरि चरन ॥२॥१॥४०॥ (1306-5)
आस भरोसा खसम का नानक के जीअरे ॥४॥९॥१११॥ (398-16)
आस मनोरथु पूरनु होवै भेटत गुर दरसाइआ जीउ ॥२॥ (104-1)
आसकु आसा बाहरा मू मनि वडी आस ॥ (1100-13)
आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥१॥ (474-5)
आसण सिध सिखहि बहुतेरे मनि मागहि रिधि सिधि चेटक चेटकईआ ॥ (835-13)
आसणि बैसणि थिरु नाराइणु ऐसी गुरमति पाए ॥ (938-12)
आसणि बैसणि थिरु नाराइणु तितु मनु राता वीचारे ॥ (436-15)
आसणु तिआगि काहे सचु पावहि ॥ (903-7)
आसणु लोइ लोइ भंडार ॥ (7-4)
आसति नासति एको नाउ ॥ (953-4)
आसनु जा का सदा बैकुंठ ॥ (393-9)
आसनु पवन दूरि करि बवरे ॥ (857-1)
आसा ॥ (476-1)
आसा ॥ (476-12)
आसा ॥ (476-18)
आसा ॥ (476-6)

आसा ॥ (477-14)
आसा ॥ (477-19)
आसा ॥ (477-3)
आसा ॥ (477-9)
आसा ॥ (478-10)
आसा ॥ (478-14)
आसा ॥ (478-17)
आसा ॥ (479-10)
आसा ॥ (479-17)
आसा ॥ (480-10)
आसा ॥ (480-4)
आसा ॥ (481-11)
आसा ॥ (481-2)
आसा ॥ (481-7)
आसा ॥ (482-1)
आसा ॥ (482-10)
आसा ॥ (482-15)
आसा ॥ (482-19)
आसा ॥ (482-5)
आसा ॥ (483-16)
आसा ॥ (483-19)
आसा ॥ (483-4)
आसा ॥ (484-10)
आसा ॥ (484-14)
आसा ॥ (484-3)
आसा ॥ (484-6)
आसा ॥ (485-12)
आसा ॥ (485-16)
आसा ॥ (485-6)
आसा ॥ (486-1)
आसा ॥ (486-10)
आसा ॥ (486-14)
आसा ॥ (486-18)
आसा ॥ (487-2)
आसा ॥ (488-12)
आसा ॥ तिपदा ॥ इकतुका ॥ (483-8)
आसा अंदरि जमिआ आसा रस कस खाइ ॥ (61-18)

आसा अंदरि सभु को कोइ निरासा होइ ॥ (956-8)
आसा अंदेसा बंधि पराना ॥ (759-15)
आसा आवै मनसा जाइ ॥ (1330-10)
आसा आस करे सभु कोई ॥ (423-18)
आसा आस करै नही बूझै गुर कै सबदि निरास सुखु लहीआ ॥३॥ (835-11)
आसा इकतुके ४ ॥ (480-16)
आसा इती आस कि आस पुराईऐ ॥ (1362-1)
आसा करता जगु मुआ आसा मरै न जाइ ॥ (517-8)
आसा काफी महला १ घरु ८ असटपदीआ ॥ (418-7)
आसा घरु १० महला ५ ॥ (401-19)
आसा घरु ११ महला ५ (403-18)
आसा घरु ३ महला १ ॥ (358-1)
आसा घरु ३ महला ५ (379-16)
आसा घरु ४ महला १ (358-11)
आसा घरु ५ महला १ (358-18)
आसा घरु ६ महला १ ॥ (359-7)
आसा घरु ७ महला ५ ॥ (394-2)
आसा घरु ८ काफी महला ३ (365-3)
आसा घरु ८ काफी महला ५ (396-12)
आसा घरु ९ महला ५ (401-5)
आसा छंत महला ४ घरु २ ॥ (444-10)
आसा छंत महला ५ घरु ४ (453-17)
आसा पिआसी रैनि दिनीअरु रहि न सकीऐ इकु तिलै ॥ (543-1)
आसा बंधि चलाईऐ मुहे मुहि चोटा खाइ ॥ (61-19)
आसा बंधी मूरख देह ॥ (178-13)
आसा बंधे दानु कराए ॥ (1024-2)
आसा बाणी भगत धंने जी की (487-9)
आसा बाणी स्री नामदेउ जी की (485-1)
आसा बाणी स्री रविदास जीउ की (486-5)
आसा भरम बिकार मोह इन महि लोभाना ॥ (815-8)
आसा भीतरि रहै निरासा तउ नानक एकु मिलै ॥४॥ (877-7)
आसा मनसा एहु सरीरु है अंतरि जोति जगाए ॥ (559-5)
आसा मनसा कूड़ु कमावहि रोगु बुरा बुरिआरा हे ॥७॥ (1029-8)
आसा मनसा जगि मोहणी जिनि मोहिआ संसारु ॥ (851-3)
आसा मनसा जलाइ तू होइ रहु मिहमाणु ॥ (646-15)
आसा मनसा दोऊ बिनासत त्रिहु गुण आस निरास भई ॥ (356-2)
आसा मनसा पूरन होवै पावहि सगल निधान गुर सिउ ॥१॥ रहाउ ॥ (895-4)

आसा मनसा बंधनी भाई करम धरम बंधकारी ॥ (635-8)
आसा मनसा बंधि चलाइआ ॥ (1031-1)
आसा मनसा बांधो बारु ॥ (1187-14)
आसा मनसा मरि जाइसी जिनि कीती सो लै जाइ ॥ (517-9)
आसा मनसा मारे निरासु होइ गुर सबदी वीचारु ॥२॥ (851-5)
आसा मनसा मोहणी गुरि ठाकी सचु बोलु ॥ (59-3)
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥ (633-17)
आसा मनसा सगल पूरी प्रिअ अंकि अंकु मिलाई ॥ (704-6)
आसा मनसा सबदि जलाए ॥ (413-19)
आसा मनसा सभ तेरी मेरे सुआमी जैसी तू आस करावहि तैसी को आस कराई ॥ (859-12)
आसा मनसा हउमै सहसा नरु लोभी कूड़ु कमाइदा ॥१६॥ (1038-11)
आसा महला १ ॥ (12-2)
आसा महला १ ॥ (349-12)
आसा महला १ ॥ (349-16)
आसा महला १ ॥ (349-6)
आसा महला १ ॥ (350-14)
आसा महला १ ॥ (350-3)
आसा महला १ ॥ (350-8)
आसा महला १ ॥ (351-1)
आसा महला १ ॥ (351-12)
आसा महला १ ॥ (351-18)
आसा महला १ ॥ (351-6)
आसा महला १ ॥ (352-11)
आसा महला १ ॥ (352-17)
आसा महला १ ॥ (352-5)
आसा महला १ ॥ (353-12)
आसा महला १ ॥ (353-18)
आसा महला १ ॥ (353-5)
आसा महला १ ॥ (355-1)
आसा महला १ ॥ (355-16)
आसा महला १ ॥ (355-9)
आसा महला १ ॥ (356-17)
आसा महला १ ॥ (356-9)
आसा महला १ ॥ (357-15)
आसा महला १ ॥ (357-4)
आसा महला १ ॥ (357-9)
आसा महला १ ॥ (358-6)

आसा महला १ ॥ (359-12)
आसा महला १ ॥ (359-18)
आसा महला १ ॥ (360-11)
आसा महला १ ॥ (360-5)
आसा महला १ ॥ (412-13)
आसा महला १ ॥ (412-2)
आसा महला १ ॥ (413-5)
आसा महला १ ॥ (414-14)
आसा महला १ ॥ (414-5)
आसा महला १ ॥ (415-6)
आसा महला १ ॥ (416-1)
आसा महला १ ॥ (417-13)
आसा महला १ ॥ (418-16)
आसा महला १ ॥ (419-15)
आसा महला १ ॥ (419-6)
आसा महला १ ॥ (420-13)
आसा महला १ ॥ (420-5)
आसा महला १ ॥ (421-10)
आसा महला १ ॥ (421-19)
आसा महला १ ॥ (421-2)
आसा महला १ ॥ (422-8)
आसा महला १ ॥ (436-13)
आसा महला १ ॥ (437-7)
आसा महला १ ॥ (462-18)
आसा महला १ ॥ (9-15)
आसा महला १ ॥ (9-9)
आसा महला १ इकतुकी ॥ (416-13)
आसा महला १ चउपदे□ ॥ (356-14)
आसा महला १ छंत घरु ३ ॥ (438-18)
आसा महला १ तितुका ॥ (354-5)
आसा महला १ दुपदे ॥ (357-12)
आसा महला १ पंचपदे□ ॥ (356-4)
आसा महला १ पंचपदे□ ॥ (354-13)
आसा महला ३ ॥ (361-12)
आसा महला ३ ॥ (361-18)
आसा महला ३ ॥ (361-5)

आसा महला ३ ॥ (362-12)
आसा महला ३ ॥ (362-19)
आसा महला ३ ॥ (362-5)
आसा महला ३ ॥ (363-12)
आसा महला ३ ॥ (363-18)
आसा महला ३ ॥ (363-6)
आसा महला ३ ॥ (364-14)
आसा महला ३ ॥ (423-18)
आसा महला ३ ॥ (423-8)
आसा महला ३ ॥ (425-11)
आसा महला ३ ॥ (425-2)
आसा महला ३ ॥ (426-1)
आसा महला ३ ॥ (426-19)
आसा महला ३ ॥ (426-9)
आसा महला ३ ॥ (427-19)
आसा महला ३ ॥ (427-9)
आसा महला ३ ॥ (428-19)
आसा महला ३ ॥ (428-9)
आसा महला ३ ॥ (429-11)
आसा महला ३ ॥ (430-2)
आसा महला ३ असटपदीआ घरु २ (422-17)
आसा महला ३ छंत घरु १ ॥ (439-12)
आसा महला ३ छंत घरु ३ ॥ (440-8)
आसा महला ३ पंचपदे□ ॥ (364-6)
आसा महला ४ ॥ (11-14)
आसा महला ४ ॥ (348-1)
आसा महला ४ ॥ (366-10)
आसा महला ४ ॥ (366-15)
आसा महला ४ ॥ (367-1)
आसा महला ४ ॥ (367-10)
आसा महला ४ ॥ (367-14)
आसा महला ४ ॥ (367-6)
आसा महला ४ ॥ (368-12)
आसा महला ४ ॥ (368-6)
आसा महला ४ ॥ (369-5)
आसा महला ४ ॥ (442-19)

आसा महला ४ ॥ (445-7)
आसा महला ४ ॥ (446-5)
आसा महला ४ ॥ (447-3)
आसा महला ४ ॥ (449-16)
आसा महला ४ ॥ (449-8)
आसा महला ४ ॥ (450-15)
आसा महला ४ ॥ (450-6)
आसा महला ४ ॥ (451-5)
आसा महला ४ घरु २ (365-9)
आसा महला ४ छंत ॥ (448-1)
आसा महला ४ छंत घरु ४ ॥ (448-17)
आसा महला ४ छंत घरु ५ (451-15)
आसा महला ५ ॥ (12-6)
आसा महला ५ ॥ (370-11)
आसा महला ५ ॥ (370-18)
आसा महला ५ ॥ (371-12)
आसा महला ५ ॥ (371-19)
आसा महला ५ ॥ (371-5)
आसा महला ५ ॥ (372-13)
आसा महला ५ ॥ (372-19)
आसा महला ५ ॥ (372-6)
आसा महला ५ ॥ (373-10)
आसा महला ५ ॥ (373-7)
आसा महला ५ ॥ (374-14)
आसा महला ५ ॥ (375-12)
आसा महला ५ ॥ (375-17)
आसा महला ५ ॥ (375-4)
आसा महला ५ ॥ (375-8)
आसा महला ५ ॥ (376-1)
आसा महला ५ ॥ (376-13)
आसा महला ५ ॥ (376-16)
आसा महला ५ ॥ (376-5)
आसा महला ५ ॥ (376-9)
आसा महला ५ ॥ (377-1)
आसा महला ५ ॥ (377-14)
आसा महला ५ ॥ (377-5)
आसा महला ५ ॥ (378-12)

आसा महला ५ ॥ (378-14)
आसा महला ५ ॥ (378-16)
आसा महला ५ ॥ (378-19)
आसा महला ५ ॥ (378-5)
आसा महला ५ ॥ (378-8)
आसा महला ५ ॥ (379-3)
आसा महला ५ ॥ (379-9)
आसा महला ५ ॥ (380-17)
आसा महला ५ ॥ (381-15)
आसा महला ५ ॥ (381-3)
आसा महला ५ ॥ (381-9)
आसा महला ५ ॥ (382-14)
आसा महला ५ ॥ (382-2)
आसा महला ५ ॥ (382-8)
आसा महला ५ ॥ (383-1)
आसा महला ५ ॥ (383-12)
आसा महला ५ ॥ (383-19)
आसा महला ५ ॥ (383-7)
आसा महला ५ ॥ (384-11)
आसा महला ५ ॥ (384-15)
आसा महला ५ ॥ (385-1)
आसा महला ५ ॥ (385-10)
आसा महला ५ ॥ (385-13)
आसा महला ५ ॥ (385-18)
आसा महला ५ ॥ (385-5)
आसा महला ५ ॥ (386-11)
आसा महला ५ ॥ (386-15)
आसा महला ५ ॥ (386-19)
आसा महला ५ ॥ (386-3)
आसा महला ५ ॥ (386-7)
आसा महला ५ ॥ (387-12)
आसा महला ५ ॥ (387-16)
आसा महला ५ ॥ (387-19)
आसा महला ५ ॥ (387-4)
आसा महला ५ ॥ (387-8)
आसा महला ५ ॥ (388-12)
आसा महला ५ ॥ (388-16)

आसा महला ५ ॥ (388-4)
आसा महला ५ ॥ (388-8)
आसा महला ५ ॥ (389-1)
आसा महला ५ ॥ (389-12)
आसा महला ५ ॥ (389-16)
आसा महला ५ ॥ (389-5)
आसा महला ५ ॥ (389-8)
आसा महला ५ ॥ (390-1)
आसा महला ५ ॥ (390-19)
आसा महला ५ ॥ (390-5)
आसा महला ५ ॥ (390-9)
आसा महला ५ ॥ (391-13)
आसा महला ५ ॥ (391-19)
आसा महला ५ ॥ (391-6)
आसा महला ५ ॥ (392-12)
आसा महला ५ ॥ (392-19)
आसा महला ५ ॥ (392-6)
आसा महला ५ ॥ (393-6)
आसा महला ५ ॥ (394-13)
आसा महला ५ ॥ (394-19)
आसा महला ५ ॥ (394-4)
आसा महला ५ ॥ (394-7)
आसा महला ५ ॥ (395-14)
आसा महला ५ ॥ (395-4)
आसा महला ५ ॥ (395-7)
आसा महला ५ ॥ (396-17)
आसा महला ५ ॥ (396-2)
आसा महला ५ ॥ (396-8)
आसा महला ५ ॥ (397-12)
आसा महला ५ ॥ (397-17)
आसा महला ५ ॥ (397-3)
आसा महला ५ ॥ (397-8)
आसा महला ५ ॥ (398-12)
आसा महला ५ ॥ (398-16)
आसा महला ५ ॥ (398-2)
आसा महला ५ ॥ (398-7)
आसा महला ५ ॥ (399-12)

आसा महला ५ ॥ (399-17)
आसा महला ५ ॥ (399-2)
आसा महला ५ ॥ (399-7)
आसा महला ५ ॥ (400-14)
आसा महला ५ ॥ (400-18)
आसा महला ५ ॥ (400-3)
आसा महला ५ ॥ (400-8)
आसा महला ५ ॥ (401-12)
आसा महला ५ ॥ (402-11)
आसा महला ५ ॥ (402-17)
आसा महला ५ ॥ (402-6)
आसा महला ५ ॥ (403-14)
आसा महला ५ ॥ (403-5)
आसा महला ५ ॥ (404-13)
आसा महला ५ ॥ (404-15)
आसा महला ५ ॥ (404-17)
आसा महला ५ ॥ (404-9)
आसा महला ५ ॥ (405-12)
आसा महला ५ ॥ (405-17)
आसा महला ५ ॥ (405-7)
आसा महला ५ ॥ (406-15)
आसा महला ५ ॥ (406-4)
आसा महला ५ ॥ (407-10)
आसा महला ५ ॥ (407-12)
आसा महला ५ ॥ (407-15)
आसा महला ५ ॥ (407-2)
आसा महला ५ ॥ (407-5)
आसा महला ५ ॥ (407-7)
आसा महला ५ ॥ (408-11)
आसा महला ५ ॥ (408-16)
आसा महला ५ ॥ (408-19)
आसा महला ५ ॥ (408-2)
आसा महला ५ ॥ (409-3)
आसा महला ५ ॥ (453-4)
आसा महला ५ ॥ (455-12)
आसा महला ५ ॥ (456-7)
आसा महला ५ ॥ (457-15)

आसा महला ५ ॥ (457-2)
आसा महला ५ ॥ (458-10)
आसा महला ५ ॥ (459-17)
आसा महला ५ ॥ (460-11)
आसा महला ५ ॥ (461-4)
आसा महला ५ असटपदीआ घरु २ (430-13)
आसा महला ५ इकतुके २ ॥ (374-9)
आसा महला ५ इकतुके चउपदे ॥ (374-18)
आसा महला ५ घरु १४ (407-18)
आसा महला ५ घरु १५ पड़ताल (408-5)
आसा महला ५ छंत घरु ६ (454-13)
आसा महला ५ छंत घरु ७ (459-4)
आसा महला ५ छंत घरु ८ (461-17)
आसा महला ५ तिपदे ॥ (406-17)
आसा महला ५ तिपदे २ ॥ (377-9)
आसा महला ५ दुतुके ९ ॥ (390-13)
आसा महला ५ दुपदा १ ॥ (393-17)
आसा महला ५ दुपदे ॥ (378-1)
आसा महला ५ दुपदे ॥ (403-10)
आसा महला ५ दुपदे ॥ (404-5)
आसा महला ५ पंचपदा□ ॥ (393-12)
आसा महला ५ पंचपदे□ ॥ (373-19)
आसा महला ५ बिरहड़े घरु ४ छंता की जति (431-11)
आसा माणु ताणु धनु एक ॥ (197-1)
आसा माहि निरालमु जोनी अकुल निरंजनु गाइआ ॥१४॥ (1040-11)
आसा माहि निरासु बुझाइआ ॥ (154-16)
आसा माहि निरासु रहीजै ॥ (1043-7)
आसा माहि निरासु वलाए ॥ (877-18)
आसा विचि अति दुखु घणा मनमुखि चितु लाइआ ॥ (1249-6)
आसा विचि सुते कई लोई ॥ (423-19)
आसा सभे लाहि कै इका आस कमाउ ॥ (43-16)
आसा सेख फरीद जीउ की बाणी (488-7)
आसा स्री कबीर जीउ ॥ (475-13)
आसा स्री कबीर जीउ के चउपदे इकतुके ॥ (478-6)
आसा स्री कबीर जीउ के तिपदे ८ दुतुके ७ इकतुका १ (481-15)
आसा स्री कबीर जीउ के दुपदे (483-12)

आसा स्री कबीर जीउ के पंचपदे ९ दुतुके ५ (479-4)
आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिंना पासि ॥ (134-6)
आसाड़ु भला सूरजु गगनि तपै ॥ (1108-9)
आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५॥ (134-10)
आसावंती आस गुसाई पूरीऐ ॥ (708-19)
आसावरी महला ४ ॥ (369-15)
आसावरी महला ५ ॥ (409-12)
आसावरी महला ५ ॥ (409-17)
आसावरी महला ५ ॥ (410-13)
आसावरी महला ५ ॥ (410-2)
आसावरी महला ५ ॥ (410-7)
आसावरी महला ५ इकतुका ॥ (410-19)
आसावरी महला ५ घरु ३ (431-1)
आसि पासि पंच जोगीआ बैठे बीचि नकट दे रानी ॥१॥ (476-13)
आसि पासि बिखूआ के कुंटा बीचि अम्रितु है भाई रे ॥१॥ रहाउ ॥ (385-7)
आसीसा देवहो भगति करेवहो मिलिआ का किआ मेलो ॥ (582-2)
आस्मभउ उदविअउ पुरखु पूरन बिधातउ ॥ (1407-12)
आहर सभि करदा फिरै आहरु इकु न होइ ॥ (965-5)
आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोरु ॥ (870-15)
आहे मन अवरु न भावै चरनावै चरनावै उलझिओ अलि मकरंद कमल जिउ ॥ (830-10)
इंदु वरसै करि दइआ लोकां मनि उपजै चाउ ॥ (1285-19)
इंदु वरसै दइआ करि गूड़्ही छहबर लाइ ॥ (1420-5)
इंदु वरसै धरति सुहावी घटि घटि जोति समाणी ॥ (1275-7)
इंद्र इंद्रासणि बैठे जम का भउ पावहि ॥ (1049-16)
इंद्र कोटि जा के सेवा करहि ॥४॥ (1163-4)
इंद्र तपे मुनि तेरी सेवा ॥ (1034-12)
इंद्र पुरी महि सरपर मरणा ॥ (237-8)
इंद्र मुनिंद्र खोजते गोरख धरणि गगन आवत फुनि धावत ॥ (1388-11)
इंद्र लोक सिव लोकहि जैबो ॥ (692-8)
इंद्री की जूठि उतरसि नाही ब्रहम अगनि के लूठे ॥२॥ (1195-7)
इंद्री कै जतनि नामु उचरै ॥ (872-19)
इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥ (274-6)
इंद्री दसे दसे फुनि धावत त्रै गुणीआ खिनु न टिकावैगो ॥ (1310-7)
इंद्री धातु सबल कहीअत है इंद्री किस ते होई ॥ (993-15)
इंद्री पंच पंचे वसि आणै खिमा संतोखु गुरमति पावै ॥ (1334-16)
इंद्री बसि करि सुणहु हरि नामु ॥ (299-3)
इंद्री वसि सच संजमि जुगता ॥ (122-4)

इंद्री विआपि रही अधिकाई कामु क्रोधु नित संतावै ॥१॥ (565-8)
इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥२॥ (658-11)
इंद्रै नो फुरमाइआ वुठा छहबर लाइ ॥ (1281-7)
इआ जुग जितु जितु आपहि लाइओ ॥ (251-17)
इआ डेरा कउ स्रमु करि घालै ॥ (256-6)
इआ तत लेहु सरीर बिचारी ॥२॥ (331-2)
इआ देही परमल महकंदा ॥ (325-16)
इआ धन जोबन अरु सुत दारा पेखन कउ जु दइओ ॥ (336-15)
इआ मंदर महि कौन बसाई ॥ (871-3)
इआ माइआ महि जनमहि मरना ॥ (252-10)
इआ मुंडीआ सिरि चढिबो काल ॥१॥ (871-8)
इआ मूरति कै हउ बलिहारै ॥१॥ (870-15)
इआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिआ ते तोरि ॥१॥ (701-18)
इआ संसारु सगल है सुपना ॥ (258-14)
इआ सुख ते भिख्या भली जउ हरि सिमरत दिन जाहि ॥११२॥ (1370-9)
इआणा पापी ओहु आपि पचाइआ ॥२॥ (1137-16)
इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै ॥ (722-8)
इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥ (722-6)
इआनप ते सभ भई सिआनप प्रभु मेरा दाना बीना ॥ (823-15)
इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥ (268-1)
इउ कहै नानकु आपु छडि सुख पावहि मन निमाणा होइ रहु ॥७॥ (441-12)
इउ कहै नानकु किआ जंत विचारे जा तुधु भरमि भुलाए ॥९॥ (441-19)
इउ कहै नानकु जह मन तूं धावदा तह हरि तेरै सदा नाले ॥३॥ (440-17)
इउ कहै नानकु धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥८॥ (441-16)
इउ कहै नानकु मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जावहे ॥६॥ (441-9)
इउ कहै नानकु मन तूं जोति सरूपु है अपणा मूलु पछाणु ॥५॥ (441-6)
इउ कहै नानकु सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥१०॥२॥७॥५॥२॥७॥ (442-4)
इउ कहै नानकु सतिगुरि मिलिऐ धावतु थम्हिआ निज घरि वसिआ आए ॥४॥ (441-2)
इउ किंकुरी आनूप वाजै ॥ (886-9)
इउ किउ कंत पिआरी होवा ॥ (356-18)
इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥३॥५॥ (487-5)
इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ सभु राजु स्रिसटि का लेइ ॥ (648-1)
इउ जपिआ नाथु दिनु रैनाई ॥ (886-16)
इउ जपिओ भाई पुरखु बिधाते ॥ (403-4)
इउ पति पाटी सिफती सीपै नानक जीवत जीवै ॥ (955-18)
इउ पाईऐ हरि राम सहाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥ (176-4)
इउ पावहि हरि दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ ॥ (763-5)

इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥ (288-13)
इउ सरपनि कै वसि जीअड़ा अंतरि हउमै दोइ ॥ (63-7)
इक अरदासि भाट कीरति की गुर रामदास राखहु सरणाई ॥४॥५८॥ (1406-10)
इक अवघट घाटी राम की तिह चड़ि रहिओ कबीर ॥१६५॥ (1373-7)
इक आपीन्है पतली सह केरे बोला ॥ (794-18)
इक आपे गुरमुखि कीतिअनु बूझनि वीचारा ॥ (425-8)
इक ओट कीजै जीउ दीजै आस इक धरणीधरै ॥ (927-1)
इक कामणि हितकारी माइआ मोहि पिआरी मनमुख सोइ रहे अभागे ॥ (569-17)
इक खिनहि थापि उथापदा घड़ि भंनि करनैहारु ॥ (988-3)
इक घड़ी दिनसु मो कउ बहुतु दिहारे ॥ (374-18)
इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥ (96-19)
इक चिति इक मनि धिआइ सुआमी लाइ प्रीति पिआरो ॥ (845-18)
इक जागंदे ना लहंनि इकना सुतिआ देइ उठालि ॥१॥ (83-9)
इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥ (695-18)
इक थै गुपतु परगटु है आपे गुरमुखि भ्रमु भउ जाई हे ॥१५॥ (1048-1)
इक थै पड़ि बुझै सभु आपे इक थै आपे करे इआणे ॥ (552-19)
इक दखिणा हउ तै पहि मागउ देहि आपणा नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (1329-6)
इक दझहि इक दबीअहि इकना कुते खाहि ॥ (648-12)
इक दासी धारी सबल पसारी जीअ जंत लै मोहनिआ ॥ (924-12)
इक दिन सोवनु होइगो लांबे गोड पसारि ॥१२८॥ (1371-7)
इक दुइ मंदरि इक दुइ बाट ॥ (871-11)
इक दू इकि चड़ंदीआ कउणु जाणै मेरा नाउ जीउ ॥ (762-6)
इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥ (7-6)
इक नानक की अरदासि जे तुधु भावसी ॥ (752-6)
इक निमख जा कै रिदै वसिआ मिटे तिसहि विसूरिआ ॥ (456-13)
इक निमख न विसरहु परमानंदा ॥३॥ (805-3)
इक निमख मिलावहु मोहि प्रानपती री ॥३॥ (739-8)
इक निमख रहनु न जाइ ॥ (838-8)
इक पैरि चलै माइआ मोहु वधाए ॥ (880-6)
इक बसतु अगोचर लहीऐ ॥ (656-1)
इक बहि सुनहि सुनावहि कानां ॥ (1043-9)
इक बात अनूप सुनहु नर भाई ॥ (991-14)
इक बिनउ करउ जीउ सुणि कंत पिआरे ॥ (247-10)
इक बिनउ बेनती करउ गुर आगै मै साधू चरन पखारे ॥२॥ (980-12)
इक भगति नाराइन होइ संगि ॥ (1187-2)
इक भाइ इक मनि नामु वसिआ सतिगुरू हम मेलीआ ॥ (843-13)
इक मनि एकु धिआईऐ मन की लाहि भरांति ॥ (47-4)

इक मनि पुरखु धिआइ बरदाता ॥ (1389-11)
इक मनि पुरखु निरंजनु धिआवउ ॥ (1396-11)
इक रंगि रचै रहै लिव लाइ ॥ (935-9)
इक रती गुण न समाणिआ वणजारिआ मित्रा अवगण खड़सनि बंनि ॥ (76-7)
इक रती बिलम न देवनी वणजारिआ मित्रा ओनी तकड़े पाए हाथ ॥ (78-3)
इक राम सनेही बाहरा ऊजरु मेरै भांइ ॥१४॥ (1365-5)
इक लोकी होरु छमिछरी ब्राहमणु वटि पिंडु खाइ ॥ (358-10)
इक सबदी बहु रूपि अवधूता ॥ (71-9)
इक साहा तुधु धिआइदा ॥ (73-14)
इक हिंदवाणी अवर तुरकाणी भटिआणी ठकुराणी ॥ (418-3)
इक ही कउ घासु इक ही कउ राजा इन महि कहीऐ किआ कूड़ा ॥५॥ (1081-10)
इकतु टोलि न अ्मबड़ा हउ सद कुरबाणै तेरै जाउ जीउ ॥ (762-8)
इकतु ठउर ओह कही न समावै ॥ (892-2)
इकतु तागै रलि मिलै गलि मोतीअन का हारु ॥ (58-18)
इकतु नामि सदा रहिआ समाइ ॥१०॥२॥ (843-3)
इकतु पतरि भरि उरकट कुरकट इकतु पतरि भरि पानी ॥ (476-12)
इकतु रूपि फिरहि परछंना कोइ न किस ही जेहा ॥२॥ (596-15)
इकतु सूति परोइ जोति संजारीऐ ॥ (518-2)
इकतु सेजै हरि प्रभो राम राजिआ गुरु दसे हरि मेलेई ॥ (777-3)
इकना अंदरि महलि बुलाए जा आपि तेरै मनि सचे भाणे ॥ (552-19)
इकना आपि बुझाइओनु गुरमुखि हरि गिआनु ॥ (786-18)
इकना गुरमुखि हउमै मारी ॥ (1016-15)
इकना घर महि दे वडिआई इकि भरमि भवहि अभिमाना ॥४॥३॥ (797-14)
इकना छतीह अम्रित पाहि ॥ (144-13)
इकना दरसन की परतीति न आईआ सबदि न करहि वीचारु ॥ (587-13)
इकना नाद न बेद न गीअ रसु रस कस न जाणंति ॥ (1246-2)
इकना नादु न बेदु न गीअ रसु रसु कसु न जाणंति ॥ (1411-14)
इकना नावहु आपि भुलाए इकना गुरमुखि देइ बुझाई ॥१४॥ (912-8)
इकना नो तुधु एवै भावदा माइआ नालि पिआरु ॥ (1286-17)
इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥ (469-8)
इकना नो तू मेलि लैहि गुर सबदि बीचारा ॥ (786-2)
इकना नो नाउ बखसिओनु असथिरु हरि सती ॥ (948-6)
इकना नो सभ सोझी आई इकि फिरदे वेपरवाहा ॥ (1383-3)
इकना नो हरि लाभु देइ जो गुरमुखि थीवे ॥ (83-17)
इकना पारि लंघावहि आपे सतिगुरु जिन का सचु बेड़ा ॥८॥ (1081-14)
इकना प्रभु दूरि वसै इकना मनि आधारो राम ॥ (772-12)
इकना बखसहि मेलि लैहि गुरमती तुधै लाइआ ॥ (139-7)

इकना बखसि लए धुरि लेखै ॥ (1047-11)
इकना भगती लाइ इकि आपि खुआइदा ॥ (644-13)
इकना भोग भोगाइदा मेरे गोविंदा इकि नगन फिरहि नंग नंगी जीउ ॥ (174-12)
इकना मन आधारो सिरजणहारो वडभागी गुरु पाइआ ॥ (772-13)
इकना मनमुखि सबदु न भावै बंधनि बंधि भवाइआ ॥ (69-5)
इकना मरणु न चिति आस घणेरिआ ॥ (143-3)
इकना मारगि पाइ इकि उझड़ि पाइदा ॥ (644-13)
इकना मेलि सतिगुरु महलि बुलाए इकि भरमि भूले फिरदिआ ॥ (542-2)
इकना वखत खुआईअहि इकन्हा पूजा जाइ ॥ (417-10)
इकना वडी आरजा इकि मरि होहि जहीर ॥ (1289-2)
इकना सचु बुझाइओनु तिना अतुट भंडार देवाइआ ॥ (85-13)
इकना सतिगुरु मेलि तूं बुझावहि इकि मनमुखि करहि सि रोवै ॥३॥ (736-7)
इकना सतिगुरु मेलि सुखु देवहि इकि मनमुखि धंधु पिटाई ॥२॥ (735-11)
इकना सिधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहंति ॥ (1411-15)
इकना सुधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहंति ॥ (1246-3)
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥ (1-9)
इकनि किनै चालीऐ दरवेसावी रीति ॥११८॥ (1384-7)
इकनी गुरमुखि बुझिआ हरि आतम रामु ॥ (1090-18)
इकनी बधे भार इकना ताखती ॥१०॥ (142-17)
इकनी सुणि कै मंनिआ हरि ऊतम कामु ॥ (1090-18)
इकनै भांडे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ ॥ (62-12)
इकन्हा अंदरि खोटु नित खोटु कमावहि ओहु जेहा बीजे तेहा फलु खाए ॥ (302-19)
इकन्हा एहो लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख ॥ (417-12)
इकन्हा गलीं जंजीर बंदि रबाणीऐ ॥ (1287-19)
इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥ (475-3)
इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी ॥ (418-4)
इकन्हा बखसिहि मेलि लैहि इकि दरगह मारि कढे कूड़िआर ॥३॥ (427-13)
इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥ (463-14)
इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥ (463-13)
इकन्हा होई साखती इकन्हा होई सार ॥ (1244-5)
इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े ॥ (475-6)
इकन्ही लदिआ इकि लदि चले इकन्ही बधे भार ॥ (1244-5)
इकस का मनि आसरा इको प्राण अधारु ॥ (45-7)
इकस की मनि टेक है जिनि जीउ पिंडु दिता ॥ (45-9)
इकस सिउ मनु मानिआ ता होआ निहचलु चीतु ॥ (44-3)
इकसु ते होइओ अनंता नानक एकसु माहि समाए जीउ ॥९॥२॥३६॥ (131-14)
इकसु दुहु चहु किआ गणी सभ इकतु सादि मुठी ॥ (218-1)

इकसु न पुजहि बोल जे पूरे पूरा करि मिलै ॥ (1239-15)
इकसु बाझहु दूजा को नही किसु अगै करहि पुकारा ॥ (141-8)
इकसु बिनु नाही दूजा कोइ ॥ (192-6)
इकसु विणु होरु दूजा नाही बाबा नानक इह मति सारी जीउ ॥४॥३९॥४६॥ (108-3)
इकसु सतिगुर बाहरा ध्रिगु जीवणु संसारि ॥ (957-10)
इकसु सिउ करि पिरहड़ी दूजी नाही जाइ ॥ (961-10)
इकसु सिउ लिव लागी सद ही हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥४॥ (122-12)
इकसु सेती रतिआ न होवी सोग संतापु ॥३॥ (45-11)
इकसु हरि के नाम बाझहु आन काज सिआणी ॥ (546-13)
इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥ (133-17)
इकसु हरि के नाम विणु ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु ॥ (949-13)
इकसु हरि जीउ बाहरी सभ फिरै निकामी ॥ (1099-7)
इकसै दी सामगरी इकसै दी है रीति ॥ (44-2)
इकहु जि लाखु लखहु अलखु है इकु इकु करि वरनिअउ ॥ (1394-13)
इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि ॥ (646-8)
इकि अंनु न खाहि मूरख तिना किआ कीजई ॥ (1285-14)
इकि अगनि जलावहि अंगु आपु विगोवही ॥ (1285-1)
इकि अगनि जलावहि देह खपावहि ॥ (1025-9)
इकि अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु उरि धारी ॥४॥ (911-2)
इकि अपणै सुआइ आइ बहहि गुर आगै जिउ बगुल समाधि लगाईऐ ॥३॥ (881-18)
इकि अहिनिसि नामि रते निरंकारी ॥ (1046-12)
इकि आखि आखहि सबदु भाखहि अरध उरध दिनु राति ॥ (1239-18)
इकि आपणी सिफती लाइअनु दे सतिगुर मती ॥ (948-6)
इकि आपणै भाणै कढि लइअनु आपे लइओनु मिलाइ ॥ (36-15)
इकि आपे आपि खुआइअनु दूजै छडिअनु लाइ ॥ (36-17)
इकि आपे उझड़ि पाइअनु इकि भगती लाइअनु ॥ (956-18)
इकि आपे काढि लए प्रभि आपे गुर सेवा प्रभि लाए ॥ (1130-7)
इकि आपे बखसि मिलाइअनु अनदिनु नामे लाइ ॥ (429-7)
इकि आपे बखसि मिलाइअनु दुबिधा तजि विकार ॥ (594-12)
इकि आपे भरमि भुलाइअनु तिन निहफल कामु ॥ (1090-17)
इकि आपे ही आपि लाइअनु गुर ते सुखु पाइआ ॥ (789-11)
इकि आवहि इकि जावहि आई ॥ (353-5)
इकि आवहि इकि जावही पूरि भरे अहंकारि ॥ (20-2)
इकि आवहि इकि जाहि उठि बिनु नावै मरि जाती ॥ (138-6)
इकि आवहि इकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार ॥ (16-9)
इकि आवहि जावहि घरि वासु न पावहि ॥ (1029-3)
इकि उदासी इकि घर बारी ॥ (1076-19)

इकि उपजहि इकि बिनसि जांहि हुकमे आवै जाइ ॥ (1414-12)
इकि उपाए मंगते इकना वडे दरवार ॥ (16-9)
इकि उपाए वड दरवारी ॥ (1076-19)
इकि कंद मूलु चुणि खाहि वण खंडि वासा ॥ (140-5)
इकि कढे इकि लहरि विआपे ॥ (1020-7)
इकि कहि जाणनि कहिआ बुझनि ते नर सुघड़ सरूप ॥ (1411-14)
इकि कहि जाणहि कहिआ बुझहि ते नर सुघड़ सरूप ॥ (1246-2)
इकि कितु आए जनमु गवाए ॥ (1065-6)
इकि कुचल कुचील विखली पते नावहु आपि खुआए ॥ (427-14)
इकि कूड़ि कुसति लाइअनु मनमुख विगूती ॥ (951-11)
इकि कूड़ि लागे कूड़े फल पाए ॥ (124-1)
इकि खड़े करहि तेरी चाकरी विणु नावै होरु न भाइआ ॥ (139-7)
इकि खड़े रसातलि करि मनमुख गावारा ॥ (1081-13)
इकि खावहि बखस तोटि न आवै इकना फका पाइआ जीउ ॥ (173-13)
इकि खोटे इकि खरे आपे परखणहारु ॥ (143-14)
इकि गावत रहे मनि सादु न पाइ ॥ (158-16)
इकि गावहि इकि भगति करेहि ॥ (158-18)
इकि गावहि राग परीआ रागि न भीजई ॥ (1285-13)
इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे ॥ (419-4)
इकि गुण विहाझहि अउगण विकणहि गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (427-7)
इकि गुर परसादी उबरे तिसु जन कउ करहि सभि नमसकार ॥ (1248-3)
इकि गुरमुखि आपि मिलाइआ बखसे भगति भंडार ॥ (1258-14)
इकि गुरमुखि सदा सचै रंगि राते ॥ (113-5)
इकि ग्रिह कुट्मब महि सदा उदासी ॥ (1046-8)
इकि घरि आवहि आपणै इकि मिलि मिलि पुछहि सुख ॥ (417-11)
इकि चाले इकि चालसहि सभि अपनी वार ॥३॥ (808-7)
इकि जंत भरमि भुले तिनि सहि आपि भुलाए ॥ (441-17)
इकि जटा बिकट बिकराल कुलु घरु खोवही ॥ (1284-19)
इकि जन साचै आपे लाए ॥ (1053-9)
इकि जप तप करि करि तीरथ नावहि ॥ (1024-5)
इकि जागंदे ना लहन्हि इकन्हा सुतिआ देइ उठालि ॥११३॥ (1384-2)
इकि जैनी उझड़ पाइ धुरहु खुआइआ ॥ (1285-7)
इकि तते इकि बोलनि मिठे ॥ (1019-18)
इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीरथ वासा ॥ (419-2)
इकि तीरथि नाता ॥५॥ (71-10)
इकि तीरथि नावहि अंनु न खावहि ॥ (1025-8)
इकि तुझ ही कीए राजे इकना भिख भवाईआ ॥ (566-12)

इकि दरि घरि साचै देखि हदूरि ॥६॥ (839-11)
इकि दरि सेवहि दरदु वञाए ॥ (1028-15)
इकि दाते इक मंगते सभना सिरि सोई ॥ (1283-16)
इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ (11-1)
इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ (348-4)
इकि दाते इकि मंगते कीते आपे भगति कराई ॥८॥ (912-5)
इकि दाते इकि मंगते नामु तेरा परवाणु ॥ (790-4)
इकि दूजै भाइ खुआइअनु हउमै विचि विआपे ॥ (789-18)
इकि दे खाहि निखुटै नाही इकि सदा फिरहि फकीर ॥ (1289-2)
इकि धरनि गगन महि ठउर न पावहि ॥ (353-6)
इकि धुरि पवित पावन हहि तुधु नामे लाए ॥ (427-13)
इकि धुरि बखसि लए गुरि पूरै सची बणत बणाई ॥ (1345-10)
इकि नगन फिरहि दिनु राति नींद न सोवही ॥ (1285-1)
इकि नचि नचि पूरहि ताल भगति न कीजई ॥ (1285-13)
इकि नागे भूखे भवहि भवाए ॥ (1025-7)
इकि निरंकारी नाम आधारि ॥ (144-14)
इकि निरधन सदा भउकदे इकना भरे तुजारा ॥ (141-8)
इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥ (475-6)
इकि पंचा मारि सबदि है लागे ॥ (1045-13)
इकि पउण सुमारी पउण सुमारि ॥ (144-14)
इकि पठाए देस दिसंतरि ॥ (1081-10)
इकि पड़हि सुणहि गावहि परभातिहि करहि इस्नानु ॥ (1402-6)
इकि पाखंडी नामि न राचहि इकि हरि हरि चरणी रे ॥ (990-13)
इकि पाणी विचि उसटीअहि इकि भी फिरि हसणि पाहि ॥ (648-13)
इकि पाधे पंडित मिसर कहावहि ॥ (904-19)
इकि पाला ककरु भंनि सीतलु जलु हेंवही ॥ (1284-18)
इकि पिरु रावहि आपणा हउ कै दरि पूछउ जाइ ॥ (38-8)
इकि पिरु हदूरि न जाणन्ही दूजै भरमि भुलाइ ॥ (428-2)
इकि फिरहि उदासी तिन्ह कामि विआपै ॥ (370-6)
इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ ॥ (919-6)
इकि बन महि बैसहि डूगरि असथानु ॥ (905-18)
इकि बांधे इकि ढीलिआ इकि सुखीए हरि प्रीति ॥ (1087-3)
इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि ॥ (419-3)
इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (219-5)
इकि बैसाइ रखे ग्रिह अंतरि ॥ (1081-9)
इकि भगती सार न जाणनी मनमुख भरमि भुलाइ ॥ (994-13)
इकि भगवा वेसु करि फिरहि जोगी संनिआसा ॥ (140-6)

इकि भगवा वेसु करि भरमदे विणु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ (1290-11)
इकि भरमि भुलाए इकि भगती राते तेरा खेलु अपारा ॥ (635-3)
इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥ (918-2)
इकि भरमि भूले साकता बिनु गुर अंध अंधार ॥ (986-11)
इकि भरमे इकि भगती लाए ॥ (894-7)
इकि भसम चड़्हावहि अंगि मैलु न धोवही ॥ (1284-19)
इकि भसम लगाइ फिरहि भेखधारी ॥ (1046-6)
इकि भूखे इकि त्रिपति अघाए सभसै तेरा पारणा ॥३॥ (1077-1)
इकि भूले नावहु थेहहु थावहु गुर सबदी सचु खेलो ॥ (582-3)
इकि भेख करहि फिरहि अभिमानी तिन जूऐ बाजी हारी ॥३॥ (911-1)
इकि भ्रमि भूखे मोह पिआसे ॥ (839-10)
इकि भ्रमि भूले फिरहि अहंकारी ॥ (1016-15)
इकि मन ही गिआता ॥६॥ (71-11)
इकि मनमुख करि हाराइअनु इकना मेलि गुरू तिना जीता ॥ (1317-10)
इकि मनूआ मारि मनै सिउ लूझहि ॥ (1046-13)
इकि माइआ मोहि गरबि विआपे ॥ (1060-12)
इकि माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ (1047-13)
इकि मासहारी इकि त्रिणु खाहि ॥ (144-13)
इकि मिटीआ महि मिटीआ खाहि ॥ (144-14)
इकि मूड़ मुगध न चेतहि मूले जो आइआ तिसु जाणा ॥ (566-16)
इकि मूरख अंधे मुगध गवार ॥ (1275-6)
इकि मूलि लगे ओनी सुखु पाइआ ॥ (1051-10)
इकि मूलु न बुझन्हि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे ॥ (468-3)
इकि रंगि राते इकि मरि धूरि ॥ (839-11)
इकि रंगि राते जो तुधु आपि लिव लाए ॥ (111-11)
इकि रतन पदारथ वणजदे इकि कचै दे वापारा ॥ (141-6)
इकि रसु चाखि सबदि त्रिपतासे ॥ (839-10)
इकि रहे सूकि कठूले ॥ (1185-5)
इकि राजे खान मलूक कहहि कहावहि कोई ॥ (1283-16)
इकि राजे तखति बहहि नित सुखीए इकना भिख मंगाइआ जीउ ॥ (173-14)
इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाड़ि ॥३७॥ (1379-16)
इकि रोवहि पिरहि विछुंनीआ अंधी न जाणै पिरु है नाले ॥४॥२॥ (584-1)
इकि रोवहि पिरहि विछुंनीआ अंधी ना जाणै पिरु नाले ॥ (583-17)
इकि लूकि न देवहि दरसा ॥ (71-11)
इकि वण खंडि बैसहि जाइ सदु न देवही ॥ (1284-18)
इकि वलु छलु करि कै खावदे मुहहु कूड़ु कुसतु तिनी ढाहिआ ॥ (85-12)
इकि विचहु ही तुधु रखिआ जो सतसंगि मिलाईआ ॥ (1096-11)

इकि संगि हरि कै करहि रलीआ हउ पुकारी दरि खली ॥ (436-8)
इकि संचहि गिरही तिन्ह होइ न आपै ॥ (370-7)
इकि सचु वणंजहि गुर सबदि पिआरे ॥ (117-15)
इकि सजण चले इकि चलि गए रहदे भी फुनि जाहि ॥ (586-3)
इकि सतिगुर की सेवा करहि चाकरी हरि नामे लगै पिआरु ॥ (552-16)
इकि सतिगुर कै भै नाम अधार ॥ (1275-6)
इकि सती कहावहि तिन्ह बहुतु कलपावै ॥ (370-8)
इकि सदा इकतै रंगि रहहि तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥ (587-17)
इकि सबदु वीचारि सदा जन जागे ॥ (1047-13)
इकि साचै सबदि रहे लिव लाइ ॥ (1174-6)
इकि साह सदावहि संचि धनु दूजै पति खोई ॥ (1283-16)
इकि सिध साधिक बहुतु वीचारी ॥ (1046-12)
इकि सेवक इकि भरमि भुलाए ॥ (842-13)
इकि सेवक गुर पासि इकि गुरि कारै लाईआ ॥ (648-4)
इकि सोगी इकि रोगि विआपे ॥ (1025-6)
इकि हठु करि मरहि न कीमति पाए ॥ (1025-7)
इकि हरि राते रहहि समाई ॥ (353-5)
इकि हुकमु मंनि न जाणनी भाई दूजै भाइ फिराइ ॥ (1419-9)
इकि होए असवार इकना साखती ॥ (142-17)
इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥ (466-3)
इकु अधु नाइ रसीअड़ा का विरली जाइ वुठी ॥३॥ (218-2)
इकु उतम पंथु सुनिओ गुर संगति तिह मिलंत जम त्रास मिटाई ॥ (1406-9)
इकु करमु धरमु न होइ संजमु जामि न एकु पछाणी ॥ (566-18)
इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥ (133-12)
इकु खिनु रहि न सकउ बिनु प्रीतम दरसन देखन कउ धारी मनि आस ॥ रहाउ ॥ (716-17)
इकु खिनु लेहि न हरि को नाम ॥२॥ (326-14)
इकु खिनु हरि प्रभि किरपा धारी गुन गाए रसक रसीक ॥ (1335-19)
इकु खिनु हिरदै सांति न आवै जोगी बहुड़ि बहुड़ि उठि धावै जीउ ॥३॥ (98-5)
इकु छिजहि बिआ लताड़ीअहि ॥ (1378-15)
इकु जाचिकु मंगै दानु दुआरै ॥ (1076-4)
इकु तिलु ता का महलु न पावै ॥१॥ (562-9)
इकु तिलु नही विसरै प्रान आधारा जपि जपि नानक जीवते ॥३॥ (81-3)
इकु तिलु पिआरा विसरै दुखु लागै सुखु जाइ ॥ (59-12)
इकु तिलु पिआरा विसरै भगति किनेही होइ ॥ (35-5)
इकु तिलु पिआरा वीसरै रोगु वडा मन माहि ॥ (21-14)
इकु तिलु प्रभू न वीसरै जिनि सभु किछु दीना राम ॥ (848-13)
इकु तिलु भूले बहुरि पछुतानिआ ॥१०॥ (225-3)

इकु थिरु सचा सालाहणा जिन मनि सचा भाइआ ॥२५॥ (1290-13)
इकु दमु साचा वीसरै सा वेला बिरथा जाइ ॥ (506-14)
इकु दाता सभि मंगते फिरि देखहि आकारु ॥ (1242-9)
इकु दाता सभु जगतु भिखारीआ हरि जाचहि सभ मंग मंगना ॥ (1313-11)
इकु दातारु सगल है जाचिक देहि दानु स्रिसटीजा हे ॥९॥ (1074-6)
इकु दानु मंगै नानकु वेचारा हरि दासनि दासु कराई ॥२४॥ (758-6)
इकु दुखु राम राइ काटहु मेरा ॥ (329-13)
इकु दुखु रोगु लगै तनि धाइ ॥ (1256-14)
इकु दुखु सकतवार जमदूत ॥ (1256-13)
इकु देखिआ इकु मंनिआ इको सुणिआ स्रवण सरोति ॥ (309-19)
इकु न रुना मेरे तन का बिरहा जिनि हउ पिरहु विछोड़ी ॥ (558-4)
इकु नाउ तेरा मै फबो ॥ (656-17)
इकु नामु बोवहु बोवहु ॥ (1185-6)
इकु निरंजनु रवि रहिआ भाउ दुया कुठा ॥ (321-7)
इकु पछाणू जीअ का इको रखणहारु ॥ (45-6)
इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा ॥ (601-1)
इकु पलु दिनसु मो कउ कबहु न बिहावै ॥ (374-19)
इकु पलु बिसरत नही सुख सागरु नामु नवै निधि पाई ॥ (1268-11)
इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥ (1384-17)
इकु बिंनि दुगण जु तउ रहै जा सुमंत्रि मानवहि लहि ॥ (1395-1)
इकु भाउ लथी नातिआ दुइ भा चड़ीअसु होर ॥ (789-9)
इकु मनु इकु वरतदा जितु लगै सो थाइ पाइ ॥ (303-3)
इकु मागउ दानु गोबिद संत रेना ॥ (1083-8)
इकु रामु न छोडउ गुरहि गारि ॥ (1194-10)
इकु लखु पूत सवा लखु नाती ॥ (481-8)
इकु लखु लहन्हि बहिठीआ लखु लहन्हि खड़ीआ ॥ (417-5)
इकु विसारि दूजै लोभाइआ ॥ (111-8)
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥ (7-2)
इकु सचा सभ सेवदी धुरि भागि मिलावा होइ ॥ (994-12)
इकु सजणु सभि सजणा इकु वैरी सभि वादि ॥ (957-4)
इकु सुखु मानिआ सहजि मिलाइआ ॥ (221-2)
इकु हरि निरमलु जा का अंतु न पारु ॥१॥ रहाउ ॥ (1158-4)
इको आपि फिरै परछंना ॥ (111-5)
इको कंतु सबाईआ जिती दरि खड़ीआह ॥ (790-10)
इको दाता मंगीऐ सभु किछु पलै पाइ ॥ (961-11)
इको दिसै सजणो इको भाई मीतु ॥ (44-2)
इको भाई मितु इकु इको मात पिता ॥ (45-8)

इको सतिगुरु जागता होरु जगु सूता मोहि पिआसि ॥ (592-19)
इको सिरजणहारु नानक बिआ न पसीऐ ॥१॥ (521-11)
इको हुकमु वरतदा एका सिरि कारा ॥ (425-7)
इछ पुंनी जन केरीआ ले सतिगुर धूरा ॥२॥ (168-13)
इछ पुंनी मनि आस गए विसूरिआ ॥ (524-5)
इछ पुंनी मनि सांति तपति बुझाइआ राम ॥ (543-6)
इछ पुंनी मेरी मनु तनु हरिआ जीउ ॥ (217-8)
इछ पुनी पूरे गुर मिले ॥ (191-11)
इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥ (136-5)
इछ पुनी सरधा सभ पूरी ॥ (289-18)
इछ पूरे मन कंत सुआमी ॥ (371-3)
इछसि जमादि पराभयं जसु स्वसति सुक्रित क्रितं ॥ (526-15)
इछा पूरकु रखै निदान ॥१॥ (376-2)
इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जा कै वसि है कामधेना ॥ (669-19)
इछा मन की पूरीऐ जपीऐ सुख सागरु ॥ (1318-8)
इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई ॥ (974-6)
इड़ा पिंगुला अउरु सुखमना पउनै बंधि रहाउगो ॥ (973-2)
इड़ा पिंगुला सुखमन बंदे ए अवगन कत जाही ॥१॥ (334-11)
इत उत कतहि न डोलई जिस राखै सिरजनहार ॥२०६॥ (1375-12)
इत उत किस कउ जाणि समावै ॥ (943-4)
इत उत की ओहु सोझी जानै ॥ (281-11)
इत उत जाहि काल के चापे ॥ (415-7)
इत उत डोलि डोलि स्रमु पाइओ तनु धनु होत बिरानो ॥ (1269-10)
इत उत दह दिसि रविओ मेर तिनहि समानि ॥१॥ (1322-5)
इत उत देखउ ओट तुमारी ॥३॥ (563-2)
इत उत देखउ सहजे रावउ ॥ (1189-1)
इत उत नानक तिसु बिसरहु नाही ॥६॥ (251-11)
इत उत मनमुख बाधे काल ॥३॥ (154-9)
इत उत माइआ देखि पसारी मोह माइआ कै मगनु भइआ ॥५॥ (906-14)
इत उत राखहु दीन दइआला ॥ (228-13)
इतनकु खटीआ गठीआ मटीआ संगि न कछु लै जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1124-9)
इतनी न बूझै कबहू चलना बिकल भइओ संगि माइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (531-5)
इतने कउ तुम्ह किआ गरबे ॥१॥ रहाउ ॥ (374-15)
इतने जनम भूलि परे से जा पाइआ ता भूले नाही ॥ (162-9)
इती मंझि न समावई जे गलि पहिरा हारु ॥३॥ (1095-5)
इतु कमाणै सदा दुखु पावै जमै मरै फिरि आवै जाइ ॥ (512-9)
इतु करि भगति करहि जो जन तिन भउ सगल चुकाईऐ ॥ (693-8)

इतु किंगुरी धिआनु न लागै जोगी ना सचु पलै पाइ ॥ (908-15)
इतु किंगुरी सांति न आवै जोगी अभिमानु न विचहु जाइ ॥४॥ (908-16)
इतु तनि लागै बाणीआ ॥ (25-19)
इतु धनि पाइऐ भुख लथी सुखु वसिआ मनि आइ ॥ (1092-4)
इतु मदि पीतै नानका बहुते खटीअहि बिकार ॥ (553-6)
इतु मनि मउलिऐ भइआ अनंदु ॥ (1176-8)
इतु मारगि चले भाईअड़े गुरु कहै सु कार कमाइ जीउ ॥ (763-4)
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥ (1412-3)
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥१॥ (350-9)
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥२॥ (350-11)
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥३॥ (350-13)
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पैर ॥४॥६॥ (350-14)
इतु रंगि साचे माहि समाए ॥ (1066-10)
इतु संगति नाही मरणा ॥ (92-4)
इतु संजमि प्रभु किन ही न पाइआ ॥ (1348-2)
इतु साथि निबहै सालाहे सचे हरि सचा मंनि वसाइदा ॥१५॥ (1064-16)
इन कउ छोडि ऊपरि जन बसे ॥३॥ (865-12)
इन ते कहहु कवन छुटकार ॥ (288-17)
इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥ (288-16)
इन ते कहु कवनै सुखु पाइआ ॥३॥ (692-10)
इन ते काढि लेहु मेरे सुआमी हारि परे तुम्ह सारन ॥ (820-16)
इन दूतन खलु बधु करि मारिओ ॥ (710-18)
इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ ॥ (710-16)
इन बिधि इहु मनु हरिआ होइ ॥ (1177-1)
इन बिधि कउणु कउणु नही तारिआ ॥ (227-19)
इन बिधि कुसलु तेरै मेरे मीता ॥६॥ (231-15)
इन बिधि डूबी माकुरी भाई ऊंडी सिर कै भारी ॥२॥ (635-11)
इन बिधि नागे जोगु नाहि ॥१॥ (1189-14)
इन बिधि प्राणी दुतरु तरै ॥२॥ (1172-6)
इन बिधि बरतु स्मपूरन भइआ ॥ (299-4)
इन बिधि मनु समझाईऐ पुरखा बाहुड़ि चोट न खाईऐ ॥ (939-5)
इन बिधि रमहु गोपाल गोबिंदु ॥ (866-2)
इन बिधि राम रमत मनु मानिआ ॥ (221-1)
इन बिधि संतहु उतरहु पारि ॥४॥२॥८॥ (1165-6)
इन बिधि सागरु तरीऐ ॥ (877-8)
इन बिधि हरि मिलीऐ वर कामनि धन सोहागु पिआरी ॥ (1198-1)
इन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥१॥ (220-10)

इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥४१॥ (1428-13)
इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥५॥ (1426-14)
इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥२३॥ (1427-14)
इन लोगन सिउ हम भए बैराई ॥ (1347-17)
इन संगि लागि रतन जनमु गवाइआ ॥३॥ (741-3)
इन सनबंधी रसातलि जाइ ॥ (1347-15)
इनि दुबिधा घर बहुते गाले ॥ (1029-14)
इनि बिधि कुसल होत मेरे भाई ॥ (176-4)
इनि मनि डीठी सभ आवण जाणी ॥ (120-1)
इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥ रहाउ ॥ (595-12)
इनि माइआ त्रै गुण बसि कीने ॥ (251-13)
इनि सतगुरु सेवि सबद रसु पाया नामु निरंजन उरि धरिआ ॥ (1396-14)
इनि हिंदू मेरा मलिआ मानु ॥९॥ (1165-19)
इनी बाती सहु पाईऐ नाही भई कामणि इआणी ॥२॥ (722-10)
इन्ह कै किछु हाथि नही कहा करहि इहि बपुड़े इन्ह का वाहिआ कछु न वसाई ॥ (859-8)
इन्ह बिधि नगरु वुठा मेरे भाई ॥ (430-14)
इन्ह बिधि पासा ढालहु बीर ॥ (1185-11)
इन्ह मुंडीअन भजि सरनि कबीर ॥४॥३॥६॥ (871-13)
इन्ह मुंडीअन मेरा घरु धुंधरावा ॥ (484-1)
इन्ह मुंडीअन मेरी जाति गवाई ॥२॥३॥३३॥ (484-2)
इन्ह मै कछु नाहि तेरो काल अवध आई ॥१॥ (692-13)
इन्ह सिउ प्रीति करी घनेरी ॥ (392-6)
इन्हि माइआ जगदीस गुसाई तुम्हरे चरन बिसारे ॥ (857-3)
इब के राहे जमनि नाही पछुताणे सिरि भारो ॥ (581-13)
इलति का नाउ चउधरी कूड़ी पूरे थाउ ॥ (1288-4)
इव कहै नानकु सो बैरागी अनदिनु हरि लिव लावए ॥२॥ (440-14)
इव छूटै फिरि फास न पाइ ॥३९॥ (935-9)
इस का बलु नाही इसु हाथ ॥ (277-12)
इस का रंगु दिन थोड़िआ छोछा इस दा मुलु ॥ (85-9)
इस की सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ ॥ (510-9)
इस कै हाथि कहा बीचारु ॥ (279-4)
इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥ (277-6)
इस घर महि है सु तू ढूंढि खाहि ॥ (1196-16)
इस ते ऊपरि नही बीचारु ॥ (292-18)
इस ते होइ सु नाही बुरा ॥ (294-15)
इस देही कउ सिमरहि देव ॥ (1159-7)
इस नो विआपै सोग संतापु ॥ (1343-15)

इस पतीआ का इहै परवानु ॥ (1166-9)
इस बेड़े कउ पारि लघावै ॥२॥ (337-4)
इस भरवासे जो रहे बूडे काली धार ॥१३६॥ (1371-15)
इस मन का कोई जानै भेउ ॥ (330-11)
इस माइआ कउ द्रिड़ु करि राखहु बांधे आप बचंनी ॥१॥ (857-5)
इस माटी की पुतरी जोरी ॥१॥ (336-18)
इस माटी महि पवनु समाइआ ॥ (336-19)
इस ही भीतरि सुनीअत साहु ॥ (181-1)
इस ही मधे बसतु अपार ॥ (181-1)
इस ही महि जिस की पति राखै तिसु साधू चउरु ढालीऐ ॥६॥ (1019-14)
इसक मुहबति नानका लेखा करते पासि ॥१॥ (1090-10)
इसट मीत आप बापु न माई ॥२॥ (187-7)
इसट मीत जाणु सभ छलै ॥ (889-11)
इसट मीत बंधप सुत भाई संगि बनिता रचि हसिआ ॥ (497-12)
इसटु मीतु नामु नानक को हरि नामु मेरै भंडारै ॥२॥२॥७॥ (713-12)
इसतरी पुरख कामि विआपे जीउ राम नाम की बिधि नही जाणी ॥ (246-1)
इसतरी पुरख होइ कै किआ ओइ करम कमाही ॥ (162-8)
इसतरी पुरखै खटिऐ भाउ ॥ (951-13)
इसतरी पुरखै बहु प्रीति मिलि मोहु वधाइआ ॥ (1249-18)
इसत्री तजि करि कामि विआपिआ चितु लाइआ पर नारी ॥ (1013-8)
इसत्री पुरख निपजहि मासहु पातिसाह सुलतानां ॥ (1290-5)
इसत्री पुरखै अति नेहु बहि मंदु पकाइआ ॥ (1250-7)
इसत्री पुरखै जां निसि मेला ओथै मंधु कमाही ॥ (1290-1)
इसत्री रूप चेरी की निआई सोभ नही बिनु भरतारे ॥१॥ (1268-1)
इसनान दान तापन सुचि किरिआ चरण कमल हिरदै प्रभ धारी ॥ (1389-2)
इसनानु करहि सदा दिनु राती हउमै मैलु चुकावणिआ ॥४॥ (128-18)
इसनानु करै परु मैलु न जाई ॥ (129-2)
इसनानु कीओ अठसठि सुरसरी ॥३॥ (1134-8)
इसनानु दानु करहि नही बूझहि ॥ (1046-13)
इसनानु दानु जेता करहि दूजै भाइ खुआरु ॥ (34-12)
इसनानु दानु सुगिआनु मजनु आपि अछलिओ किउ छलै ॥ (766-7)
इसहि तिआगि सतसंगति करै ॥ (892-4)
इसहि तुरावहु घालहु साटि ॥ (870-16)
इसहि मारि राज जोगु कमावै ॥१॥ रहाउ ॥ (237-19)
इसु आगै को न टिकै वेकारी ॥ (628-13)
इसु ऊपरि ले राखिओ गुमान ॥३॥ (374-16)
इसु एके का जाणै भेउ ॥ (930-18)

इसु करते कउ किउ गहि राखउ अफरिओ तुलिओ न जाई ॥ (930-11)
इसु कलिजुग महि करम धरमु न कोई ॥ (161-1)
इसु काइआ अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाजारा ॥ (754-11)
इसु काइआ अंदरि नामु नउ निधि पाईऐ गुर कै सबदि वीचारा ॥४॥ (754-12)
इसु काइआ अंदरि बहुतु पसारा ॥ (112-12)
इसु काइआ अंदरि वसतु असंखा ॥ (110-4)
इसु काइआ की कीमति किनै न पाई ॥ (1066-13)
इसु गड़ महि हरि राम राइ है किछु सादु न पावै धीठा ॥ (171-12)
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥१॥ रहाउ ॥ (1128-1)
इसु गुफा महि अखुट भंडारा ॥ (124-5)
इसु गुफा महि इकु थानु सुहाइआ ॥ (126-18)
इसु ग्रिह महि कोई जागतु रहै ॥ (182-10)
इसु जग महि करणी सारी ॥ (599-12)
इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ (644-16)
इसु जग महि पुरखु एकु है होर सगली नारि सबाई ॥ (591-19)
इसु जग महि मोहु है पासारा ॥ (1067-8)
इसु जग महि विरले जाणीअहि नानक सचु लहंनि ॥३४॥१॥३॥ (756-17)
इसु जग महि संती धनु खटिआ जिना सतिगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ (1092-2)
इसु जग महि सबदु करणी है सारु ॥ (1342-10)
इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥ (417-17)
इसु जुग का धरमु पड़हु तुम भाई ॥ (230-8)
इसु जुग महि को विरला ब्रहम गिआनी जि हउमै मेटि समाए ॥ (512-6)
इसु जुग महि गुरमुख निरमले सचि नामि रहहि लिव लाइ ॥ (430-4)
इसु जुग महि नामु निधानु है नामो नालि चलै ॥ (1091-11)
इसु जुग महि निरभउ हरि नामु है पाईऐ गुर वीचारि ॥ (365-6)
इसु जुग महि भगती हरि धनु खटिआ होरु सभु जगतु भरमि भुलाइआ ॥ (852-9)
इसु जुग महि राम नामि निसतारा ॥ (160-18)
इसु जुग महि वडिआई पाई ॥ (798-14)
इसु जुग महि विरले ब्राहमण ब्रहमु बिंदहि चितु लाइ ॥ (850-2)
इसु जुग महि सोभा नाम की बिनु नावै सोभ न होइ ॥ (429-5)
इसु तन धन का कहहु गरबु कैसा ॥ (1273-16)
इसु तन धन की कवन बडाई ॥ (326-12)
इसु तन धन को किआ गरबईआ ॥ (330-2)
इसु तन मन मधे मदन चोर ॥ (1194-14)
इसु तन महि मनु को गुरमुखि देखै ॥ (124-2)
इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥ (600-6)
इसु देही कउ बहु साधना करै ॥ (265-17)

इसु देही के अधिक काम ॥ (1194-2)
इसु देही विचि सभ वथु पाई ॥ (1064-17)
इसु धन कउ तसकरु जोहि न सकई ना ओचका लै जाइ ॥ (511-3)
इसु धन कारणि सिव सनकादिक खोजत भए उदासी ॥ (336-8)
इसु धन की देखहु वडिआई ॥ (991-14)
इसु धन ते सभु जगु वरसाणा ॥३॥ (375-15)
इसु धन बिनु कहहु किनै परम गति पाई ॥४॥ (991-15)
इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥ (374-5)
इसु नाचन के मन रखवाल ॥२॥ (872-17)
इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा ॥२॥ (1075-15)
इसु पद जो अरथाइ लेइ सो गुरू हमारा ॥ (229-8)
इसु पद वीचारे सो जनु पूरा तिसु मिलीऐ भरमु चुकाइदा ॥३॥ (1037-13)
इसु परचाइ परचि रहु एसु ॥४॥९॥ (325-7)
इसु परपंच महि साचे नाम की वडिआई मतु को धरहु गुमाना ॥१॥ (797-15)
इसु परीती तुटदी विलमु न होवई इतु दोसती चलनि विकार ॥ (587-15)
इसु पानी ते जिनि तू घरिआ ॥ (913-7)
इसु बंदे सिरि जुलमु होत है जमु नही हटै गुसाई ॥४॥९॥ (478-5)
इसु बिखु महि अम्रितु परापति होवै हरि जीउ मेरे भाइआ ॥११॥ (1067-15)
इसु भगती का कोई जाणै भेउ ॥ (1173-7)
इसु भगती नो सुरि नर मुनि जन लोचदे विणु सतिगुर पाई न जाइ ॥ (425-4)
इसु भेखै थावहु गिरहो भला जिथहु को वरसाइ ॥ (587-2)
इसु मटुकी महि सबदु संजोई ॥२॥ (478-8)
इसु मन आगे पूरै ताल ॥ (872-17)
इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥ (1128-17)
इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥ (330-8)
इसु मन कउ नही आवन जाना ॥ (330-10)
इसु मन कउ बसंत की लगै न सोइ ॥ (1176-15)
इसु मन कउ ममता किथहु लागी ॥१॥ (1261-5)
इसु मन कउ रवि रहे कबीरा ॥९॥१॥३६॥ (330-12)
इसु मन कउ रूपु न रेखिआ काई ॥ (330-10)
इसु मन कउ होरु संजमु को नाही विणु सतिगुर की सरणाइ ॥ (558-12)
इसु मन की बिधि मन हू जाणै बूझै सबदि वीचारि ॥ (1260-3)
इसु मन ते सभ पिंड पराणा ॥ (1128-19)
इसु मन मंदर महि मनूआ धावै ॥ (1060-1)
इसु मन माइआ कउ नेहु घनेरा ॥ (1038-10)
इसु मन माइआ मोहि बिनासु ॥ (1344-13)
इसु मरते कउ जे कोऊ रोवै ॥ (871-5)

इसु मारी बिनु गिआनु न होई ॥ (238-7)
इसु मारी बिनु जनमु न मिटै ॥ (238-6)
इसु मारी बिनु जम ते नही छुटै ॥६॥ (238-7)
इसु मारी बिनु जूठि न धोई ॥ (238-7)
इसु मारी बिनु थाइ न परै ॥ (238-6)
इसु मारी बिनु सभु किछु जउला ॥७॥ (238-8)
इसु मारी बिनु सभु किछु मैला ॥ (238-8)
इसु मीठी ते इहु मनु होरै ॥१॥ रहाउ ॥ (212-11)
इसु लहदे बिलम न होवई रंड बैठी दूजै भाइ ॥ (786-7)
इसु संगि राचै सु कछू न लहै ॥ (892-3)
इसु सुख ते सिव ब्रहम डराना ॥ (330-7)
इसु हरि धन का कोई सरीकु नाही किसै का खतु नाही किसै कै सीव बंनै रोलु नाही जे को हरि धन की बखीली करे तिस का मुहु हरि चहु कुंडा विचि काला कराइआ ॥ (853-9)
इसु हरि धन का साहु हरि आपि है संतहु जिस नो देइ सु हरि धनु लदि चलाई ॥ (734-9)
इसु हरि धनै का तोटा कदे न आवई जन नानक कउ गुरि सोझी पाई ॥६॥३॥१०॥ (734-10)
इस्नानु करहि परभाति सुध मनि गुर पूजा बिधि सहित करं ॥ (1402-6)
इह अउसर ते चूकिआ बहु जोनि भ्रमादि ॥३॥ (810-6)
इह अम्रित की बाड़ी है रे तिनि हरि पूरै करीआ ॥१॥ (970-10)
इह अरदासि हमारी सुआमी विसरु नाही सुखदाते ॥३॥ (747-7)
इह आमरि हम गुरि कीए दरबारी ॥१॥ रहाउ दूजा ॥४॥४॥ (371-12)
इह आस परमित्री भाउ दूजा है खिन महि झूठु बिनसि सभ जाई ॥ (859-11)
इह आसर पूरन भए काम ॥२॥ (196-4)
इह कारजि तेरे जाहि बिकार ॥ (185-5)
इह गुर की पउड़ी जाणै जनु कोई ॥ (1038-6)
इह चाल निराली गुरमुखी गुर दीखिआ सुणि मनु भिंने ॥२५॥ (314-10)
इह चिंता उपजी घट महि जब गुर चरनन अनुरागिओ ॥ (1008-14)
इह जग महि राम नामु सो तउ नही सुनिओ कानि ॥ (1352-11)
इह जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ॥१॥ (558-10)
इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥ (633-6)
इह जु दुनीआ सिहरु मेला दसतगीरी नाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (727-9)
इह टोघनै न छूटसहि फिरि करि समुंदु सम्हालि ॥४९॥ (1367-1)
इह ठगवारी बहुतु घर गाले ॥ (1347-12)
इह तउ बसतु गुपाल की जब भावै लेइ खसि ॥७९॥ (1368-13)
इह नीसाणी साध की जिसु भेटत तरीऐ ॥ (320-15)
इह नीसानी सुनहु तुम भाई जिउ कालर भीति गिरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (823-7)
इह पधति ते मत चूकहि रे मन भेदु बिभेदु न जान बीअउ ॥ (1409-5)
इह परतीति गोविंद की जपि हरि सुखु पाइआ ॥ (812-8)

इह पूंजी साबतु धनु मालु ॥१॥ रहाउ दूजा ॥२०॥८९॥ (182-15)
इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥ (296-2)
इह बखसीस खसम ते पावा ॥ (1077-16)
इह बसती ता बसत सरीरा ॥ (481-1)
इह बाणी जो जीअहु जाणै तिसु अंतरि रवै हरि नामा ॥१॥ रहाउ ॥ (797-17)
इह बाणी महा पुरख की निज घरि वासा होइ ॥४०॥ (935-13)
इह बिखिआ दिन चारि छिअ छाडि चलिओ सभु कोइ ॥ (253-5)
इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥ (634-4)
इह बिधि कोइ न तरिओ मीत ॥३॥ (888-3)
इह बिधि खोजी बहु परकारा बिनु संतन नही पाए ॥ (999-12)
इह बिधि तिसहि परापते जा कै मसतकि भागना ॥७॥ (1018-13)
इह बिधि देखि मनु लगा सेव ॥७॥ (1192-12)
इह बिधि नह पतीआनो ठाकुर जोग जुगति करि जैन ॥२॥ (674-7)
इह बिधि नानक हरि नैण अलोइ ॥२॥१॥१८॥ (715-15)
इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥ (488-1)
इह बिधि है मनु जोगनी ॥ (883-10)
इह बुधि पाई मै साधू कंनहु लेखु लिखिओ धुरि माथै ॥ (715-14)
इह बेनंती सुणि प्रभ मेरे ॥ (742-2)
इह भीतर ते इन कउ डारहु आपन निकटि बुलावहु ॥१॥ (617-9)
इह मति गुर प्रसादि मनि धारउ ॥ (104-7)
इह मति तेरी थिरु रहै तां भरमु विचहु जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (491-15)
इह मनि लीण भए सुखदेउ ॥८॥ (330-11)
इह माइआ की सोभा चारि दिहाड़े जादी बिलमु न होइ ॥५॥ (429-6)
इह माइआ जगि मोहणी भाई करम सभे वेकारी ॥१॥ (635-9)
इह रस छाडे उह रसु आवा ॥ (342-7)
इह रस राती बहुरि न छोडे ॥ (180-18)
इह रस राती होइ त्रिपतारी ॥१॥ रहाउ ॥ (180-14)
इह लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥ (292-19)
इह लोकि परलोकि संगि सहाई जत कत मोहि रखवाले ॥१॥ (679-6)
इह लोके सुखु पाइआ ॥ (898-8)
इह वेला फिरि हथि न आवै अनदिनु सदा पछुताए ॥ (1259-11)
इह संत निरमल रीति ॥ (837-12)
इह संसार ते तब ही छूटउ जउ माइआ नह लपटावउ ॥ (693-7)
इह स्रपनी ता की कीती होई ॥ (481-1)
इही अचार इही बिउहारा आगिआ मानि भगति होइ तुम्हारी ॥ (377-18)
इही तेरा अउसरु इह तेरी बार ॥ (1159-12)
इही हमारै सफल काज ॥ (987-5)

इही हवाल होहिगे तेरे ॥२॥३५॥ (330-3)
इहु अंनु असाडा फिटै ॥ (472-3)
इहु अजरु नानक सुखु सहीऐ जीउ ॥४॥२॥१६७॥ (217-9)
इहु अपर्मपरु होता आइआ ॥ (868-16)
इहु अरु ओहु जब मिलै तब मिलत न जानै कोइ ॥३८॥ (342-11)
इहु असथानु गुरू ते पाईऐ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥७॥५८॥ (385-18)
इहु आवा गवणु रचाइओ करि चोज देखंता ॥ (1095-15)
इहु कलिआणु नानक करि जाता ॥४॥१४॥८३॥ (180-12)
इहु कापड़ु तनि न सुखावई करि न सकउ हउ वेसा ॥ (564-10)
इहु कारणु करता करे जोती जोति समाइ ॥४॥३॥५॥ (491-1)
इहु किछु पतीआ मुझै दिखाइ ॥२३॥ (1166-9)
इहु किथै घरु अउताकु महलु न पाईऐ ॥४॥ (752-11)
इहु कुट्मबु सभु जीअ के बंधन भाई भरमि भुला सैंसारा ॥ (602-1)
इहु जगतु जीवतु मरै जा इस नो सोझी होइ ॥ (554-17)
इहु जगतु भरमि भुलाइआ ॥ (72-2)
इहु जगतु ममता मुआ जीवण की बिधि नाहि ॥ (508-15)
इहु जगतु मिटी का पुतला जोगी इसु महि रोगु वडा त्रिसना माइआ ॥ (909-2)
इहु जगतु मोहि दूजै विआपिआ गुरमती सचु धिआइ ॥२९॥ (756-12)
इहु जगु अंधा सभु अंधु कमावै बिनु गुर मगु न पाए ॥ (603-15)
इहु जगु आपि उपाइओनु करि चोज विडानु ॥ (786-17)
इहु जगु जनमिआ दूजै भाइ ॥ (161-4)
इहु जगु जरता देखि कै भइओ कबीरु उदासु ॥३६॥ (1366-7)
इहु जगु जलता नदरी आइआ गुर कै सबदि सुभाइ ॥ (643-2)
इहु जगु तागो सूत को भाई दह दिस बाधो माइ ॥ (635-17)
इहु जगु तेरा तू गोसाई ॥ (417-14)
इहु जगु तेरा सभ तुझहि धिआए ॥ (1146-19)
इहु जगु धूए का पहार ॥ (1186-18)
इहु जगु भरमि भुलाइआ भाई कहणा किछू न जाइ ॥६॥ (635-18)
इहु जगु भरमि भुलाइआ मोह ठगउली पाइ ॥ (233-17)
इहु जगु भूला तैं आपि भुलाइआ ॥ (111-7)
इहु जगु माइआ मोहि विआपिआ दूजै भरमि भुलाइ ॥४॥ (430-7)
इहु जगु मोह हेत बिआपितं दुखु अधिक जनम मरणं ॥ (505-17)
इहु जगु वरनु रूपु सभु तेरा जितु लावहि से करम कमईआ ॥ (834-11)
इहु जगु वाड़ी मेरा प्रभु माली ॥ (118-7)
इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ (463-13)
इहु जगु सागरु दुतरु किउ तरीऐ बिनु हरि गुर पारि न पाई ॥१॥ (355-16)
इहु जगु हरिआ सतिगुर भाए ॥२॥ (1177-2)

इहु जगु है स्मपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥ (1186-8)
इहु जगो दुतरु मनमुखु पारि न पाई राम ॥ (775-15)
इहु जनक राजु गुर रामदास तुझ ही बणि आवै ॥१३॥ (1398-10)
इहु जनमु पदारथु पाइ कै हरि नामु न चेतै लिव लाइ ॥ (28-1)
इहु जलु मेरा जीउ है जल बिनु रहणु न जाइ ॥ (1283-13)
इहु जलु सभ तै वरसदा वरसै भाइ सुभाइ ॥ (1282-13)
इहु जीअरा निरमोलको कउडी लगि मीका ॥३॥ (856-1)
इहु जीउ आइ कहा गइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (870-9)
इहु जीउ राम नाम लिव लागै ॥ (1162-8)
इहु जीउ वताई बलि बलि जाई जीउ ॥ (216-17)
इहु जीउ विडाणी चाकरी लाइआ ॥ (161-5)
इहु जीउ सदा मुकतु है सहजे रहिआ समाइ ॥२॥ (510-1)
इहु तउ रचनु रचिआ करतारि ॥ (885-15)
इहु ततु बीचारै सु गुरू हमारा ॥१४॥ (939-13)
इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ॥ (794-5)
इहु तनु जिन सिउ गाडिआ मनु लीअड़ा दीता ॥ (765-16)
इहु तनु तुम्हरा सभु ग्रिहु धनु तुम्हरा हींउ कीओ कुरबानां ॥१॥ (1213-11)
इहु तनु धरती बीजु करमा करो सलिल आपाउ सारिंगपाणी ॥ (23-15)
इहु तनु धरती सबदु बीजि अपारा ॥ (1048-16)
इहु तनु मनु तेरा सभि गुण तेरे ॥ (1117-10)
इहु तनु मनु दितड़ा वारो वारा राम ॥ (576-15)
इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाए ॥ (721-16)
इहु तनु रुलै रुलाइआ कामि न आइआ जिनि खसमु न जाता हदूरे ॥ (583-19)
इहु तनु लहरी गडु थिआ सचे तेरी आस ॥१२५॥ (1384-14)
इहु तनु वेची बै करी जे को लए विकाइ ॥ (730-8)
इहु तनु वेची संत पहि पिआरे प्रीतमु देइ मिलाइ ॥३॥ (431-13)
इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥ (1380-12)
इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥ (949-18)
इहु तनु हाटु सराफ को भाई वखरु नामु अपारु ॥ (636-1)
इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥३॥ (659-6)
इहु तनु होसी खाक निमाणी गोर घरे ॥१॥ (488-12)
इहु तेलु दीवा इउ जलै ॥ (25-18)
इहु दानु मानु नानकु पाए सीसु साधह धरि चरनी ॥४॥२॥५॥ (456-6)
इहु धनु अखुटु न निखुटै न जाइ ॥ (663-13)
इहु धनु करते का खेलु है कदे आवै कदे जाइ ॥ (1282-16)
इहु धनु मेरे हरि को नाउ ॥ (1157-16)
इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥ (288-5)

इहु धनु सरब रहिआ भरपूरि ॥ (991-11)
इहु धनु सारु होरु बिखिआ छारु ॥४॥ (1331-1)
इहु धनु स्मपै माइआ झूठी अंति छोडि चलिआ पछुताई ॥ (77-1)
इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥ (296-3)
इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥ (267-1)
इहु नीघरु घरु कही न पाए ॥ (1347-16)
इहु परपंचु कीआ प्रभ सुआमी सभु जगजीवनु जुगणे ॥ (977-3)
इहु परपंचु पारब्रहम की लीला बिचरत आन न होई ॥२॥ (485-4)
इहु परसादु गुरू ते जाणै ॥ (1289-7)
इहु पिरम पिआला खसम का जै भावै तै देइ ॥२॥ (947-15)
इहु पुंनु पदारथु तेरा ॥ (625-13)
इहु पूरन बिमल बीचारा ॥ (623-13)
इहु पूरन हरि धनु पाइआ ॥ (628-15)
इहु फुरमाइआ खसम का होआ वरतै इहु संसारा ॥२॥ (993-14)
इहु बाबींहा पसू है इस नो बूझणु नाहि ॥ (1283-2)
इहु ब्रहम बिचारु सु जानै ॥ (623-7)
इहु भवजलु जगतु न जाई तरणा गुरमुखि तरु हरि तारी ॥१॥ रहाउ ॥ (1260-17)
इहु भवजलु जगतु सबदि गुर तरीऐ ॥ (1042-6)
इहु भोजनु अलभु है संतहु लभै गुर वीचारि ॥ (645-13)
इहु मनु अंधा बोला है किसु आखि सुणाए ॥ (364-15)
इहु मनु आरसी कोई गुरमुखि वेखै ॥ (115-3)
इहु मनु ईटी हाथि करहु फुनि नेत्रउ नीद न आवै ॥ (728-5)
इहु मनु करमा इहु मनु धरमा ॥ (415-10)
इहु मनु कासी सभि तीरथ सिम्रिति सतिगुर दीआ बुझाइ ॥ (491-17)
इहु मनु केतड़िआ जुग भरमिआ थिरु रहै न आवै जाइ ॥ (513-18)
इहु मनु खेलै हुकम का बाधा इक खिन महि दह दिस फिरि आवै ॥ (1260-2)
इहु मनु गिरही कि इहु मनु उदासी ॥ (1261-4)
इहु मनु चंचलु वसि न आवै ॥ (127-12)
इहु मनु चलतउ सच घरि बैसै नानक नामु अधारो ॥ (938-18)
इहु मनु छूटा गुरि लीआ छडाइ ॥ (1176-18)
इहु मनु छूटै जां सतिगुरु भेटै ॥ (1176-17)
इहु मनु जलिआ दूजै दोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1176-16)
इहु मनु जागै इसु मन की दुबिधा मरै ॥४॥ (1129-1)
इहु मनु जोगी भोगी तपु तापै ॥ (415-12)
इहु मनु डोलत तउ ठहरावै ॥ (1344-18)
इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ (612-1)
इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ (614-4)

इहु मनु तै कूं डेवसा मै मारगु देहु बताइ जीउ ॥ (763-3)
इहु मनु दीजै ता कउ वारि ॥ (1142-15)
इहु मनु देइ कीए संत मीता क्रिपाल भए बडभागीं ॥ (1267-12)
इहु मनु देही सोधि तूं गुर सबदि वीचारि ॥ (427-17)
इहु मनु धंधै बांधा करम कमाइ ॥ (1176-16)
इहु मनु धावतु ता रहै जा आपे नदरि करेइ ॥१॥ (30-7)
इहु मनु नाचै सतिगुर आगै अनहद सबद धुनि तूर वजईआ ॥ (834-19)
इहु मनु निरभउ गुरमुखि नामि ॥ (415-14)
इहु मनु निरमलु जि हरि गुण गावै ॥ (1067-15)
इहु मनु निरमलु दरि घरि सोई ॥ (415-17)
इहु मनु निरमलु हउमै मारी ॥ (1049-7)
इहु मनु निहचलु हिरदै वसीअले गुरमुखि मूलु पछाणि रहै ॥ (945-11)
इहु मनु पंच तत को जीउ ॥ (342-5)
इहु मनु पंच ततु ते जनमा ॥ (415-10)
इहु मनु पुंनु पापु उचरै ॥ (832-1)
इहु मनु बडा कि जा सउ मनु मानिआ ॥ (331-15)
इहु मनु भीजै सबदि पतीजै ॥ (1031-13)
इहु मनु भीना जिउ जल मीना लागा रंगु मुरारा ॥ (1117-8)
इहु मनु भूला जांदा फेरे ॥ (118-19)
इहु मनु मउलिआ गाइ गुण गोबिंद ॥१॥ रहाउ ॥ (1173-5)
इहु मनु मउलिआ सतिगुरू संगि ॥१॥ (1176-7)
इहु मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥ (665-8)
इहु मनु माइआ मोहिआ वेखणु सुनणु न होइ ॥ (83-5)
इहु मनु मुगधु कहहु किउ रहसी ॥ (415-9)
इहु मनु मैगलु कहा बसीअले कहा बसै इहु पवना ॥ (945-7)
इहु मनु मैला इकु न धिआए ॥ (116-7)
इहु मनु रतनु जवाहर माणकु तिस का मोलु अफारा ॥ (754-13)
इहु मनु राजा लोभीआ लुभतउ लोभाई ॥ (419-9)
इहु मनु राजा सूर संग्रामि ॥ (415-14)
इहु मनु लालच करदा फिरै लालचि लागा जाइ ॥ (994-8)
इहु मनु ले जउ उनमनि रहै ॥ (342-5)
इहु मनु लोभी लोभि लुभाना ॥ (1172-12)
इहु मनु वसि न आवई थके करम कमाइ ॥ (644-19)
इहु मनु संतन कै बलिहारी ॥ (889-5)
इहु मनु सकती इहु मनु सीउ ॥ (342-4)
इहु मनु सबदि न भेदिओ किउ होवै घर वासु ॥ (1416-12)
इहु मनु साचा सचि रता सचे रहिआ समाइ ॥२॥ (35-8)

इहु मनु साचि संतोखिआ नदरि करे तिसु माहि ॥ (19-19)
इहु मनु साचै मोहिआ जिहवा सचि सादि ॥ (1010-17)
इहु मनु सुंदरि आपणा हरि नामि मजीठै रंगि री ॥ (400-9)
इहु मनु हरि कै नामि उधारना ॥१॥ रहाउ ॥ (915-4)
इहु मनु होआ साध धूरि ॥ (1184-12)
इहु मनु होआ साध रवाल ॥ (899-12)
इहु मनूआ अति सबल है छडे न कितै उपाइ ॥ (33-13)
इहु मनूआ किउ करि वसि आवै ॥ (426-11)
इहु मनूआ खिनु ऊभ पइआली भरमदा इकतु घरि आणै राम ॥ (443-14)
इहु मनूआ खिनु ऊभि पइआली जब लगि सबद न जाने ॥३॥ (1345-13)
इहु मनूआ खिनु खिनु ऊभि पइआलि ॥ (1344-15)
इहु मनूआ खिनु न टिकै बहु रंगी दह दह दिसि चलि चलि हाढे ॥ (170-19)
इहु मनूआ दह दिसि धावदा दूजै भाइ खुआइआ ॥ (599-19)
इहु मनूआ द्रिड़ु करि रखीऐ गुरमुखि लाईऐ चितु ॥ (314-3)
इहु मनूआ सदा सुखि वसै सहजे करे वापारा ॥ (593-11)
इहु माइआ मोह कुट्मबु है भाइ दूजै फास ॥ (166-12)
इहु माणकु जीउ निरमोलु है इउ कउडी बदलै जाइ ॥३॥ (22-15)
इहु माणस जनमु दुल्मभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥ (450-9)
इहु मानस जनमु दुल्मभु सा मनमुख संतापे ॥ (789-18)
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥५१॥ (1429-4)
इहु मिरतकु मड़ा सरीरु है सभु जगु जितु राम नामु नही वसिआ ॥ (1191-11)
इहु मुंडीआ सगलो द्रबु खोई ॥ (871-9)
इहु मोहु माइआ तेरै संगि न चालै झूठी प्रीति लगाई ॥ (78-1)
इहु मोहु माइआ पसरिआ अंति साथि न कोई जाइ ॥८॥ (234-12)
इहु मोहु माइआ सभु पसरिआ नालि चलै न अंती वार ॥ (1416-4)
इहु रंगु कदे न उतरै साचि समाए ॥३॥ (798-7)
इहु राज जोग गुर रामदास तुम्ह हू रसु जाणे ॥१२॥ (1398-8)
इहु लहुड़ा गुरू उबारिआ ॥ (627-9)
इहु वखरु वापारी सो द्रिड़ै भाई गुर सबदि करे वीचारु ॥ (636-2)
इहु वलेवा साकत संसार ॥२॥ (180-4)
इहु वापारु विरला वापारै ॥ (283-6)
इहु वेछोड़ा सहिआ न जाइ ॥ (1262-11)
इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥ (13-16)
इहु संसारु बिकारु सहसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥ (205-15)
इहु संसारु बिखु वत अति भउजलु गुर सबदी हरि पारि लंघाई ॥१॥ रहाउ ॥ (353-7)
इहु संसारु सगल बिकारु ॥ (1327-11)
इहु संसारु सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै ॥ (1231-16)

इहु संसारु सभु आवण जाणा मन मूरख चेति अजाणा ॥ (607-17)
इहु सउदा गुरमुखि किनै विरलै पाइआ ॥ (372-6)
इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥ (922-16)
इहु सरीरु करम की धरती गुरमुखि मथि मथि ततु कढईआ ॥ (834-15)
इहु सरीरु कूड़ि कुसति भरिआ गल ताई पाप कमाए ॥ (245-4)
इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै आई ॥१॥ (584-19)
इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै आए ॥ (584-16)
इहु सरीरु माइआ का पुतला विचि हउमै दुसटी पाई ॥ (31-4)
इहु सरीरु सभु धरमु है जिसु अंदरि सचे की विचि जोति ॥ (309-17)
इहु सागरु सोई तरै जो हरि गुण गाए ॥ (813-19)
इहु साचु वडाई गुरमति लिव जाती ॥ (1039-12)
इहु सिमरनु सतिगुर ते पाईऐ ॥६॥ (971-15)
इहु सिरु दीजै आपु गवाए ॥ (424-3)
इहु सुखु जानीऐ हां ॥ (410-16)
इहु सुखु नानक अनदिनु चीन्हा ॥४॥११॥६२॥ (386-14)
इहु सुपना सोवत नही जानै ॥ (740-9)
इहु हरि धनु जीऐ सेती रवि रहिआ जीऐ नाले जाइ ॥ (511-4)
इहु हरि रंगु गूड़ा धन पिर होइ ॥ (664-10)
इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥ (287-11)
इहु हरि रसु वणि तिणि सभतु है भागहीण नही खाइ ॥ (41-13)
इहु हरि रसु सेई जाणदे जिउ गूंगै मिठिआई खाई ॥ (311-1)
इहै ओट पाई मिलि संतह गोपाल एक की सरणी ॥१॥ रहाउ ॥ (1219-8)
इहै ततु जाणिओ सरब गति अलखु बिडाणी ॥ (1392-2)
ईंधन ते बैसंतरु भागै ॥ (900-1)
ईघै निरगुन ऊघै सरगुन केल करत बिचि सुआमी मेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (827-16)
ईठ मीत कोऊ सखा नाहि ॥ (1192-19)
ईत उत दह दिस अलोकन मनि मिलन की प्रभ पिआस जीउ ॥ (928-17)
ईत ऊत कत छोडि न जाइ ॥ (377-13)
ईत ऊत कहा लोभावहि एक सिउ मनु लाइ ॥१॥ (1300-15)
ईत ऊत की ओट सवारी ॥१॥ (743-5)
ईत ऊत की सोझी परै ॥ (1159-14)
ईत ऊत जत कत तत तुम ही मिलै नानक संत सेवा ॥२॥८॥३९॥ (680-16)
ईत ऊत जन सदा सुहेले ॥ (792-18)
ईत ऊत जीअ नालि संगी सरब रविआ सोइ ॥२॥ (501-11)
ईत ऊत न डोलि कतहू नामु हिरदै धारि ॥ (1227-5)
ईत ऊत नह डोलीऐ हरि सेवा जागनि राम ॥ (848-10)
ईत ऊत नही बीछुड़ै सो संगी गनीऐ ॥ (677-16)

ईत ऊत प्रभ कारज सार ॥३॥ (1183-9)
ईत ऊत प्रभ तुम समरथा सभु किछु तुमरै हाथे ॥ (209-5)
ईत ऊत प्रभु सदा सहाई जीअ संगि तेरे काम कउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1208-6)
ईत ऊत राम पूरनु निरखत रिद खोरि ॥ (1307-15)
ईतहि ऊतहि घटि घटि घटि घटि तूंही तूंही मोहिना ॥१॥ (407-3)
ईधणु कीतोमू घणा भोरी दितीमु भाहि ॥ (706-19)
ईधनु अधिक सकेलीऐ भाई पावकु रंचक पाइ ॥ (637-10)
ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥ (485-11)
ईवड़ी आदि पुरखु है दाता आपे सचा सोई ॥ (432-11)
ईस महेसुरु सेव तिन्ही अंतु न पाइआ ॥ (1279-18)
ईसरु ब्रहमा देवी देवा ॥ (1034-11)
ईसरु ब्रहमा सेवदे अंतु तिन्ही न लहीआ ॥ (516-15)
ईहां ऊहां चरण पूजारे ॥ (1340-15)
ईहां ऊहां तू दीबाणु ॥३॥ (1147-5)
ईहां ऊहा हरि तुम ही तुम ही इहु गुर ते मंत्रु द्रिड़ीओ ॥१॥ (978-15)
ईहां दुखु आगै नरकु भुंचै बहु जोनी भरमावै ॥१॥ (1224-17)
ईहा ऊहां उन संगि कामु ॥१॥ (376-13)
ईहा ऊहा एकै ओही ॥ (913-16)
ईहा ऊहा कामि न प्रानी ॥१॥ (394-19)
ईहा ऊहा जो कामि तेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (236-4)
ईहा ऊहा तुम रखे ॥ (211-7)
ईहा ऊहा तुहारो धोरा ॥ रहाउ ॥ (613-18)
ईहा ऊहा तेरो ऊजल मुखा ॥२॥ (889-13)
ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥४॥ (270-9)
ईहा ऊहा पावहि मानु ॥३॥ (192-3)
ईहा ऊहा सदा सुहेली ॥ (180-17)
ईहा ऊहा सरब थोक की जिसहि हमारी चिंद ॥१॥ रहाउ ॥ (672-16)
ईहा ऊहा सरब सुखदाता सगल घटा प्रतिपारे ॥१॥ रहाउ ॥ (210-2)
ईहा कामि क्रोधि मोहि विआपिआ आगै मुसि मुसि रोए ॥१॥ (381-4)
ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥ (13-15)
ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥ (205-14)
ईहा बसना राति मूड़े ॥ (889-18)
ईहा सुखु आगै गति पाई ॥४॥२२॥७३॥ (388-19)
ईहा सुखु आगै मुख ऊजल जन का संगु वडभागी पाईऐ ॥२॥ (610-10)
ईहा सुखु आगै मुख ऊजल मिटि गए आवण जाणे ॥ (614-16)
ईहा सुखु आनंदु घना आगै जीअ कै संगि काम ॥१॥ रहाउ ॥ (211-16)
ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥ (289-4)

ईहा सुखु नही दरगह ढोई जम पुरि जाइ पचावै ॥१॥ (380-17)
ईहा हरि जसु तेरा भणीऐ ॥ (1081-7)
उआ अउसर कै हउ बलि जाई ॥ (1207-16)
उआ कउ कहीऐ सहज मतवारा ॥ (328-16)
उआ का अंतु न काहू पाइआ ॥ (252-14)
उआ का अंतु न जानै कोऊ ॥ (251-18)
उआ का मरमु ओही परु जानै ओहु तउ सदा अबिनासी ॥४॥१॥५२॥ (334-15)
उआ का सरूपु देखि मोही गुआरनि मो कउ छोडि न आउ न जाहू रे ॥१॥ (338-3)
उआ की ड़ाड़ि मिटत बिनसाही ॥ (260-3)
उआ की महिमा कथनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (392-14)
उआ कै कुसल न कतहू हूए ॥ (256-2)
उआ डेरा का संजमो गुर कै सबदि पछानु ॥ (256-5)
उआ डेरा की सो मिति जानै ॥ (256-6)
उआ ते ऊतमु गनउ चंडाला ॥ (253-11)
उआ महली पावहि तू बासा ॥ (252-7)
उआ रस का कछु अंतु न पार ॥११॥ (1236-12)
उआ रस जो बिधे हां ॥ (410-7)
उआ रस महि उआहू सुखु पाइआ ॥ (259-4)
उआ रस महि सांति त्रिपति होइ बिखै जलनि बुझावउ ॥२॥ (813-16)
उआहि जपे बिनु उबर न होऊ ॥ (259-7)
उआहू जतन साध संगारा ॥ (259-7)
उआहू सिउ मनु रातो ॥१॥ (214-2)
उकति जोति लै सुरति परीखिआ ॥ (913-8)
उकति सिआणप सगली तिआगु ॥ (177-1)
उकति सिआनप इस ते कछु नाहि ॥ (196-13)
उकति सिआनप कछु नही नाही कछु घाल ॥ (811-2)
उकति सिआनप किछू न जाना ॥ (387-19)
उकति सिआनप सगल तिआगि नानक लए समाइ ॥१॥ (260-13)
उगवणहु तै आथवणहु चहु चकी कीअनु लोआ ॥ (968-16)
उगवै दिनसु आलु जालु सम्हालै बिखु माइआ के बिसथारे ॥ (981-7)
उगवै सूरु असुर संघारै ॥ (930-18)
उगवै सूरु गुरमुखि हरि बोलहि सभ रैनि सम्हालहि हरि गाल ॥ (1335-13)
उगवै सूरु न जापै चंदु ॥ (791-3)
उग्रसैण कउ राजु अभै भगतह जन दीओ ॥ (1390-9)
उघरि गइआ जैसा खोटा ढबूआ नदरि सराफा आइआ ॥ (381-7)
उघरि गईआं खिनहि भीतरि जमहि ग्रासे झोट ॥१॥ (1224-10)
उचरंति नानक हरि हरि रसना सरब पाप बिमुचते ॥१॥ (706-19)

उचरत गुन गोपाल जसु दूर ते जमु भागै ॥१॥ (817-19)
उचरत राम भै पारि उतारै ॥ (865-6)
उचरहु राम नामु लख बारी ॥ (194-17)
उछलिआ कामु काल मति लागी तउ आनि सकति गलि बांधिआ ॥२॥ (93-7)
उजड़ु थेहु वसाइओ हउ तुध विटहु कुरबाणु जीउ ॥६॥ (73-15)
उजल मोती सोहणे रतना नालि जुड़ंनि ॥ (788-19)
उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु ॥ (729-2)
उझड़ पंथि भ्रमै गावारी खिनु खिनु धके खाइआ ॥ (773-10)
उझड़ मारगु सभु तुम ही कीना चलै नाही को वेपाड़ा ॥४॥ (1081-9)
उझड़ि जादे मारगि पाए ॥ (1032-1)
उझड़ि भुले राह गुरि वेखालिआ ॥ (149-6)
उठंदिआ बहंदिआ सवंदिआ सुखु सोइ ॥ (321-3)
उठदिआ बहदिआ सुतिआ सदा सदा हरि नामु धिआईऐ जन नानक गुरमुखि हरि लहीऐ ॥२१॥१॥ सुधु (594-18)
उठहि तान कलोल गाइन तार मिलावही ॥१॥ (1430-7)
उठि इसनानु करहु परभाते सोए हरि आराधे ॥ (1185-13)
उठि चलणा खसमै भाणा ॥१॥ रहाउ ॥ (989-12)
उठि चलता ठाकि रखहु घरि अपुनै दुखु काटे काटणहारा हे ॥१६॥ (1031-3)
उठि चलिआ पछुताइआ परिआ वसि जंदार ॥१॥ (43-9)
उठि वंञु वटाऊड़िआ तै किआ चिरु लाइआ ॥ (459-18)
उठी झालू कंतड़े हउ पसी तउ दीदारु ॥ (1094-10)
उठु फरीदा उजू साजि सुबह निवाज गुजारि ॥ (1381-13)
उडरि हंसु चलिआ फुरमाइआ भसमै भसम समाणी ॥ (1111-12)
उडरिआ वेचारा बगुला मतु होवै मंञु लखावै ॥ (960-9)
उडहि त बेगुल बेगुले ताकहि चोग घणी ॥ (934-7)
उडहि न मूले न आवहि न जाही निज घरि वासा पाइआ ॥१३॥ (1068-18)
उडहु न कागा कारे ॥ (338-1)
उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥ (465-7)
उडि न जाही सिध न होहि ॥ (465-14)
उडिआ हंसु दसाए राह ॥ (137-19)
उडीनी उडीनी उडीनी ॥ (830-4)
उडै न हंसा पड़ै न कंधु ॥ (939-15)
उतंगी पैओहरी गहिरी गमभीरी ॥ (1410-4)
उत ताकै उत ते उत पेखै आवै लोभी फेरि ॥ रहाउ ॥ (680-5)
उतपति परलउ अवरु न कोई ॥१॥ (905-15)
उतपति परलउ आपि निराला ॥ (1033-14)
उतपति परलउ सबदे होवै ॥ (117-8)

उतभुज खेलु करि जगत विआइ ॥ (865-11)
उतभुज चलत आपि करि चीनै आपे ततु पछाणै ॥१॥ (878-19)
उतभुजु चलतु कीआ सिरि करतै बिसमादु सबदि देखाइदा ॥७॥ (1037-18)
उतम पदवी पाईऐ सचे रहै समाइ ॥ (552-8)
उतम मधिम जातीं जिनसी भरमि भवै संसारु ॥ (1243-15)
उतम संत भले संजोगी इसु जुग महि पवित पुनीत ॥ (673-4)
उतम सलोक साध के बचन ॥ (295-9)
उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥ (466-9)
उतरि अवघटि सरवरि न्हावै ॥ (411-10)
उतरि गइओ मेरे मन का संसा जब ते दरसनु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1218-16)
उतरि गई सभ मन की चिंदा ॥ (1147-7)
उतरि गए सभ सोग संतापे ॥ (105-6)
उतरि जाइ तेरे मन की पिआस ॥ (179-3)
उतरि दखिणहि पुबि अरु पस्चमि जै जै कारु जपंथि नरा ॥ (1392-19)
उतरि दखिणि पुबि देसि पस्चमि जसु भाखह ॥ (1393-11)
उतरिआ दुखु मंद ॥१॥ (1304-3)
उतरी मैलु नाम कै रंगि ॥२॥ (1339-12)
उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥ (9-16)
उदक माहि जैसे बगु धिआनु माडै ॥१॥ (485-16)
उदक समुंद सलल की साखिआ नदी तरंग समावहिगे ॥ (1103-15)
उदधि गुरु गहिर ग्मभीर बेअंतु हरि नाम नग हीर मणि मिलत लिव लाईऐ ॥ (1401-1)
उदम करहि अनेक हरि नामु न गावही ॥ (705-8)
उदम मति प्रभ अंतरजामी जिउ प्रेरे तिउ करना ॥ (798-19)
उदमु अगमु अगोचरो चरन कमल नमसकार ॥ (927-16)
उदमु करउ करावहु ठाकुर पेखत साधू संगि ॥ (405-17)
उदमु करउ दरसनु पेखन कौ करमि परापति होइ ॥१॥ (1223-5)
उदमु करत आनदु भइआ सिमरत सुख सारु ॥ (815-17)
उदमु करत मनु निरमलु होआ ॥ (99-11)
उदमु करत सीतल मन भए ॥ (201-16)
उदमु करत होवै मनु निरमलु नाचै आपु निवारे ॥ (381-9)
उदमु करहु वडभागीहो सिमरहु हरि हरि राइ ॥ (456-7)
उदमु करि लागे बहु भाती बिचरहि अनिक सासत्र बहु खटूआ ॥ (1389-6)
उदमु करि हरि जापणा वडभागी धनु खाटि ॥ (48-10)
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अम्रित सरि नावै ॥ (305-17)
उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥ (522-15)
उदमु करै सुआन की निआई चारे कुंटा घोखा ॥२॥ (672-5)
उदमु कीआ कराइआ आर्मभु रचाइआ ॥ (399-12)

उदमु सकति सिआणप तुम्हरी देहि त नामु वखाणी ॥ (1219-17)
उदमु सोई कराइ प्रभ मिलि साधू गुण गाउ ॥ (137-10)
उदर संजोगी धरती माता ॥ (1021-2)
उदरु नै साणु न भरीऐ कबहू त्रिसना अगनि पचाए ॥१॥ (1131-10)
उदरै कारणि आपणे बहले भेख करेनि ॥ (949-5)
उदरै माहि आइ कीआ निवासु ॥ (396-2)
उदारउ चित दारिद हरन पिखंतिह कलमल त्रसन ॥ (1392-6)
उदासी उदासि राता ॥३॥ (71-8)
उदिआन बसनं संसारं सनबंधी स्वान सिआल खरह ॥ (1359-8)
उदै असत की मन बुधि नासी तउ सदा सहजि लिव लीणा ॥३॥ (475-18)
उदोसाहै किआ नीसानी तोटि न आवै अंनी ॥ (1412-12)
उदोसीअ घरे ही वुठी कुड़िईं रंनी धमी ॥ (1412-12)
उदौतु भइओ पूरन भावी को भेटे संत सहाई ॥१॥ (1268-12)
उधउ अक्रूरु तिलोचनु नामा कलि कबीर किलविख हरिआ ॥ (1393-6)
उधरहि आपि तरै संसारु ॥ (185-7)
उधरु देह अंध कूप ते लावहु अपुनी चरणी ॥१॥ रहाउ ॥ (702-9)
उधरु देह दुलभ साधू संगि हरि हरि नामु जपेरै ॥ (530-14)
उधरु नानक प्रभ अंतरजामी ॥४॥२७॥३३॥ (744-1)
उधरु सुआमी प्रभ किरपा धारे ॥ (744-9)
उधरे भ्रम मोह सागर ॥ (1119-11)
उधरे संत परे हरि सरनी पचि बिनसे महा अहंकारी ॥३॥ (916-16)
उधरे हरि संत दास काटि दीनी जम की फास पतित पावन नामु जा को सिमरि नानक ओहे ॥२॥१०॥१३९॥३॥१३॥१५५॥ (1231-6)
उधरे हरि सिमरि रतनागर ॥१॥ (1301-6)
उधौ अक्रूरु बिदरु गुण गावै सरबातमु जिनि जाणिओ ॥ (1389-19)
उन कउ खसमि कीनी ठाकहारे ॥ (865-7)
उन कवनु खलावै कवनु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥ (495-6)
उन की गैलि तोहि जिनि लागै ॥१॥ (484-4)
उन की सरणि परै सो तरिआ संतसंगि पूरन आसा ॥२॥ (207-16)
उन की सेवा सोई लागै ॥ (282-4)
उन की सोभा उनहू बनी ॥ (292-4)
उन कै संगि तू करती केल ॥ (390-13)
उन कै संगि मोहि प्रभु चिति आवै संत प्रसादि मोहि जागी ॥ (1267-11)
उन कै संगि हम तुम संगि मेल ॥ (390-14)
उन जनम जनम की मैलु उतरै निरमल नामु द्रिड़ाइ ॥ (40-10)
उन ते दुगुण दिड़ी उन माए ॥१॥ (178-12)
उन ते राखै बापु न माई ॥ (182-12)

उन ते राखै मीतु न भाई ॥ (182-12)
उन संगु सो पाए जिसु मसतकि कराम ॥३॥ (676-18)
उन संतन कै मेरा मनु कुरबाने ॥ (100-11)
उन सतिगुर आगै सीसु न बेचिआ ओइ आवहि जाहि अभागे ॥४॥ (172-4)
उन सम्हारि मेरा मनु सधारे ॥२॥ (533-7)
उन साधा का दरसनु पावउ ॥ (393-5)
उनमत कामि महा बिखु भूलै पापु पुंनु न पछानिआ ॥ (93-9)
उनमत मान हिरिओ मन माही गुर का सबदु न धारिओ रे ॥२॥ (335-15)
उनमद चढा मदन रसु चाखिआ त्रिभवन भइआ उजिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ (969-8)
उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट ॥६॥ (346-16)
उनमनि मनूआ सुंनि समाना दुबिधा दुरमति भागी ॥ (333-1)
उनवि घन छाए बरसु सुभाए मनि तनि प्रेमु सुखावै ॥ (1107-14)
उनवै घनु घन घनिहरु गरजै मनि बिगसै मोर मुरले ॥३॥ (975-13)
उनि चानणि ओहु सोखिआ चूका जम सिउ मेलु ॥१॥ (358-7)
उनि भी भिसति घनेरी पाई ॥२॥ (1161-7)
उनि मोहे बहुते ब्रहमंड ॥ (892-3)
उनि सभु जगु खाइआ हम गुरि राखे मेरे भाई ॥ रहाउ ॥ (394-15)
उन्ह की रेणु बसै जीअ नालि ॥ (391-9)
उन्ह कै बसि आइओ भगति बछलु जिनि राखी आन संतानी ॥ (1210-12)
उन्ह कै संगि तुम सभु कोऊ लोरै ॥ (390-14)
उन्ह कै संगि तुम साकु जगतु ॥ (390-17)
उन्ह कै संगि तू ग्रिह महि माहरि ॥ (390-15)
उन्ह कै संगि तू रखी पपोलि ॥ (390-16)
उन्ह कै संगि तू होई है जाहरि ॥ (390-16)
उन्ह कै संगि तेरा मानु महतु ॥ (390-17)
उन्ह कै संगि तेरी सभ बिधि थाटी ॥ (390-17)
उन्ह कै संगि देखउ प्रभु नैन ॥३॥ (391-11)
उन्हा भि आवहि ओई साद ॥ (471-18)
उपजत बिनसत रोवत रहिबो ॥१॥ रहाउ ॥ (325-1)
उपजता बिकार दुंदर नउपरी झुनंतकार सुंदर अनिग भाउ करत फिरत बिनु गोपाल धोहे ॥ रहाउ ॥ (1231-4)
उपजहि बिनसहि बंधन बंधे ॥ (1041-3)
उपजिआ ततु गिआनु साहुरै पेईऐ इकु हरि बलि राम जीउ ॥ (778-10)
उपजिओ गिआनु हूआ परगास ॥ (875-9)
उपजिओ चाउ मिलन प्रभ प्रीतम रहनु न जाइ खिनी ॥१॥ (829-19)
उपजी तरक दिग्मबरु होआ मनु दह दिस चलि चलि गवनु करईआ ॥ (835-11)
उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥ (290-6)

उपजै गिआनु दुरमति छीजै ॥ (974-9)
उपजै चाउ साध कै संगि ॥ (289-14)
उपजै निपजै निपजि समाई ॥ (325-12)
उपजै पचै हरि बूझै नाही ॥ (127-15)
उपजै सहजु गिआन मति जागै ॥ (92-4)
उपज्मपि उपाइ न पाईऐ कतहू गुरि पूरै हरि प्रभु लाभा ॥१॥ रहाउ ॥ (1337-3)
उपज्मपि दरसनु कीजै ता का ॥१॥ (228-4)
उपदेसं सम मित्र सत्रह भगवंत भगति भावनी ॥ (1357-11)
उपदेस गुरू मम पुनहि न गरभं बिखु तजि अम्रितु पीआइआ ॥८॥१॥ (503-14)
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥ (305-18)
उपदेसु करत नानक जन तुम कउ जउ सुनहु तउ जाइ संताप ॥२॥१॥७॥ (1200-13)
उपदेसु करे करि लोक द्रिड़ावै ॥ (887-18)
उपदेसु करे गुरु सतिगुरु पूरा गुरु सतिगुरु परउपकारीआ जीउ ॥४॥७॥ (96-12)
उपदेसु करै आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै ॥ (380-2)
उपदेसु गुरू सुणि मंनिआ धुरि मसतकि पूरा भागु ॥ (849-2)
उपदेसु जि दिता सतिगुरू सो सुणिआ सिखी कंने ॥ (314-9)
उपदेसु सुणहु तुम गुरसिखहु सचा इहै सुआउ ॥ (963-2)
उपदेसु सुणि साध संतन का सभ चूकी काणि जमाणी ॥ (608-8)
उपमा जात न कही मेरे प्रभ की उपमा जात न कही ॥ (837-9)
उपमा सुनहु राजन की संतहु कहत जेत पाहूचा ॥ (1235-6)
उपरहु पाणी वारीऐ झले झिमकनि पासि ॥२॥ (417-5)
उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥ (472-2)
उपाइ कितै न पाईऐ हरि करम बिधाता ॥ (510-17)
उपाइ कितै न लभई गुरु हिरदै हरि देखाइ ॥४॥ (234-8)
उपाइ कितै न लभनी करि भेख थके भेखवानी ॥ (514-10)
उपाइ न किती पाइआ जाए ॥ (127-10)
उपाव छोडि गहु तिस की ओट ॥ (177-2)
उपाव सगल करि हारिओ नह नह हुटहि बिकराल ॥१॥ (1119-9)
उपाव सिआणप सगल छडि गुर की चरणी लागु ॥ (45-3)
उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥ (269-11)
उबट चलंते इहु मदु पाइआ जैसे खोंद खुमारी ॥४॥३॥ (1123-17)
उबरत राजा राम की सरणी ॥ (215-11)
उबरे जपि जपि हरि गुनी ॥२॥ (210-14)
उबरे सतिगुर की सरणाई ॥ (619-4)
उबरे सतिगुर चरनी लागि ॥ (1339-10)
उबरै राखनहारु धिआइ ॥ (293-8)
उमकि तरसि चालै ॥ (1272-2)

उमकिओ हीउ मिलन प्रभ ताई ॥ (737-16)
उमरावहु आगै झेरा ॥ (621-7)
उर धारि बीचारि मुरारि रमो रमु मनमोहन नामु जपीने ॥ (668-16)
उर धारि हरि हरि पुरखु पूरनु पारब्रहमु निरंजनो ॥ (925-2)
उर न भीजै पगु ना खिसै हरि दरसन की आसा ॥१॥ (337-19)
उरझि परिओ जालु जगु सुपना ॥१॥ रहाउ ॥ (742-18)
उरझि परिओ मन मीठ मोहारा ॥ (1347-8)
उरझि परे जो छोडि छडाना ॥ (251-10)
उरझि रहिओ इंद्री रस प्रेरिओ बिखै ठगउरी खावत हे ॥१॥ (821-18)
उरझि रहिओ बिखिअन संगि बउरा नामु रतनु बिसराना ॥२॥ (633-13)
उरझि रहिओ बिखिआ कै संगा ॥ (759-12)
उरझि रहिओ रे बावर गावर जिउ किरखै हरिआइओ पसूआ ॥१॥ रहाउ ॥ (206-12)
उरझि रहिओ सभ संगि अनूप रूपावती ॥ (1361-13)
उरझि रहिओ सभ संगि अनूप रूपावती ॥ (261-15)
उरझि रही रंग रस माणी ॥ (1072-13)
उरझिओ कनक कामनी के रस नह कीरति प्रभ गाई ॥१॥ रहाउ ॥ (718-6)
उरझी ताणी किछु न बसाइ ॥१॥ (1330-10)
उरध तपु अंतरि करे वणजारिआ मित्रा खसम सेती अरदासि ॥ (74-16)
उरध पंक लै सूधा करै ॥४॥ (344-14)
उरध मुखु कुचील बिकलु नरकि घोरि गुबारि ॥ (706-7)
उरध मूल जिसु साख तलाहा चारि बेद जितु लागे ॥ (503-7)
उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु ॥ (346-1)
उरवारि पारि मेरा सहु वसै हउ मिलउगी बाह पसारि ॥३॥ (157-6)
उरवारि पारि सभ एको दानी ॥४॥२॥१०॥६१॥ (337-5)
उरि धारै जो अंतरि नामु ॥ (274-2)
उरि लागहु सुआमी प्रभ मेरे पूरब प्रीति गोबिंद बीचारहु ॥१॥ रहाउ ॥ (829-1)
उलट भई घरु घर महि आणिआ ॥ (352-10)
उलट भई जीवत मरि जागिआ ॥ (221-3)
उलटत पवन चक्र खटु भेदे सुरति सुंन अनरागी ॥ (333-3)
उलटा रहै अभंग अछेद ॥९॥ (343-17)
उलटि कमलु अम्रिति भरिआ इहु मनु कतहु न जाइ ॥ (1291-4)
उलटि जाति कुल दोऊ बिसारी ॥ (1158-19)
उलटि भई सुख सहजि समाधि ॥ (327-1)
उलटि भेद मनु बेधिओ पाइओ अभंग अछेद ॥४॥ (340-6)
उलटिओ कमलु ब्रहमु बीचारि ॥ (153-9)
उलटी गंगा जमुन मिलावउ ॥ (327-7)
उलटी नदी कहां घरु तरवरु सरपनि डसै दूजा मन मांही ॥५॥ (1274-3)

उलटी रे मन उलटी रे ॥ (535-16)
उलटी ले सकति सहारं ॥ (972-2)
उलटी सकति सिवै घरि आई मनि वसिआ हरि अम्रित नाउ ॥ (786-5)
उलाहनो मै काहू न दीओ ॥ (978-14)
उस का कहिआ कोइ न सुणई कही न बैसणु पावै ॥ (1224-17)
उस ते कहहु कवन फल पावै ॥ (1160-9)
उस ते चउगुन करै निहालु ॥ (268-11)
उस ते बाहरि कछू न होगु ॥ (177-18)
उस ते भिंन कहहु किछु होइ ॥ (279-8)
उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥ (275-10)
उसतति करहि केते मुनि प्रीति ॥ (221-19)
उसतति करहि तुमरी जन माधौ गुन गावहि हरि राइआ ॥ (1319-7)
उसतति करहि परहरि दुखु दालदु जिन नाही चिंत पराई हे ॥३॥ (1025-15)
उसतति करहि प्रभ तेरीआ मिलि साधू साध जना गुर सतिगुरू भगवान ॥१॥ (1298-1)
उसतति करहि सेवक मुनि केते तेरा अंतु न कतहू पाईऐ ॥ (528-15)
उसतति करहु सदा प्रभ अपने जिनि पूरी कल राखी ॥ (622-2)
उसतति कवन करीजै करते पेखि रहे बिसमा ॥१॥ रहाउ ॥ (507-12)
उसतति कहनु न जाइ तुमारी कउणु कहै तू कद का ॥ (1117-18)
उसतति कहनु न जाइ मुखहु तुहारीआ ॥ (1361-13)
उसतति कहनु न जाइ मुखहु तुहारीआ ॥ (261-15)
उसतति निंदा ए सम जा कै लोभु मोहु फुनि तैसा ॥२॥ (220-6)
उसतति निंदा करे किआ कोई ॥ (1128-14)
उसतति निंदा करै नरु कोई ॥ (1164-4)
उसतति निंदा किस की कीजै ॥ (1041-10)
उसतति निंदा गुरि सम जाणाई इसु जुग महि लाहा हरि जपि लै जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (362-14)
उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥ (219-3)
उसतति निंदा दोऊ परहरि हरि कीरति उरि आनो ॥ (1186-9)
उसतति निंदा दोऊ बिबरजित तजहु मानु अभिमाना ॥ (1123-2)
उसतति निंदा नानक जी मै हभ वञाई छोड़िआ हभु किझु तिआगी ॥ (963-17)
उसतति निंदा सबदु वीचारु ॥ (1331-2)
उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥ (1427-5)
उसतति बरनि न सकीऐ सद सद कुरबाना ॥१९॥ (556-7)
उसतति मन महि करि निरंकार ॥ (281-6)
उसन सीत समसरि सभ ता कै ॥ (251-7)
उसारि मड़ोली राखै दुआरा भीतरि बैठी सा धना ॥ (155-12)
उसु असथान का नही बिनासु ॥ (278-3)
उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥ (278-2)

उसु ऊपरि है मारगु मेरा ॥ (794-15)
उसु खेत कारणि राखा कड़ै ॥ (179-10)
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥ (274-14)
उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥ (287-12)
उसु रखवारा अउरो होवै ॥ (871-14)
उसु साचे दीबान महि पला न पकरै कोइ ॥२०१॥ (1375-7)
उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगु न हेरि ॥८८॥ (1369-3)
उह तउ भूतु भूतु करि भागी ॥३॥ (794-7)
उह रसु पीआ इह रसु नही भावा ॥३५॥ (342-8)
उहु साकतु बपुरा मरि गइआ कोइ न लैहै नाउ ॥१४३॥ (1372-3)
ऊंदर दूंदर पासि धरीजै ॥ (905-13)
ऊंध कवलु जिसु होइ प्रगासा तिनि सरब निरंजनु डीठा जीउ ॥२॥ (108-16)
ऊंधउ कवलु मनमुख मति होछी मनि अंधै सिरि धंधा ॥ (1126-13)
ऊंधउ खपरु पंच भू टोपी ॥ (939-8)
ऊंधै भांडै कछु न समावै सीधै अम्रितु परै निहार ॥५॥ (504-3)
ऊंधै भांडै टिकै न कोइ ॥ (158-14)
ऊंधो कवलु सगल संसारै ॥ (225-17)
ऊंनवि ऊंनवि आइआ अवरि करेंदा वंन ॥ (1280-7)
ऊंनवि ऊंनवि आइआ वरसै नीरु निपंगु ॥ (1280-9)
ऊंनवि ऊंनवि आइआ वरसै लाइ झड़ी ॥ (1280-14)
ऊगविआ असरूपु दिखावै ॥ (930-17)
ऊचं त नीचं नान्हा सु मूचं ॥ (1354-19)
ऊच अथाह अगम अपारा ॥ (1072-4)
ऊच अथाह बेअंत सुआमी सिमरि सिमरि हउ जीवां जीउ ॥१॥ (99-5)
ऊच अपार अगनत हरि सभि जीअ जिसु हाथि ॥ (819-1)
ऊच अपार अगोचर थाना ओहु महलु गुरू देखाई जीउ ॥३॥ (101-9)
ऊच अपार बेअंत सुआमी कउणु जाणै गुण तेरे ॥ (802-16)
ऊच असथानु तब सहजे पाइओ ॥३॥ (189-18)
ऊच ऊन सभ एक समानां मनि लागा सहजि धिआना हे ॥६॥ (1075-7)
ऊच ते ऊच ता का दरबारा ॥ (740-10)
ऊच ते ऊच नामदेउ समदरसी रविदास ठाकुर बणि आई ॥१॥ (1207-17)
ऊच ते ऊच निरमल निरबानु ॥ (1236-12)
ऊच नीच करे प्रतिपाला ॥ (99-7)
ऊच नीच तिस के असथान ॥ (284-7)
ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥२॥ (858-6)
ऊच नीच बिकार सुक्रित संलगन सभ सुख छत्र ॥ (1018-3)
ऊच नीच महि जोति समाणी घटि घटि माधउ जीआ ॥१॥ (617-2)

ऊच नीच सभ इक समानि कीट हसती बणिआ ॥ (319-16)
ऊच नीच सभ पेखि समानो मुखि बकनो मनि मान ॥१॥ रहाउ ॥ (1302-2)
ऊच नीच सूख दूख ॥ (675-12)
ऊच भवन कनकामनी सिखरि धजा फहराइ ॥ (1372-10)
ऊच महल सुआमी प्रभ मेरे ॥ (805-9)
ऊच मूच अपार गोबिंदह ॥ (1359-7)
ऊच मूच अपार सुआमी अगम दरबारा ॥ (1003-14)
ऊच मूच बेअंतु ठाकुरु सरब ऊपरि तुही एक ॥१॥ रहाउ ॥ (1341-15)
ऊच मूचौ बहु अपार ॥ (987-4)
ऊच समाना ठाकुर तेरो अवर न काहू तानी ॥ (711-12)
ऊचउ थानु सुहावणा ऊपरि महलु मुरारि ॥ (18-13)
ऊचउ देखि सबदि बीचारै ॥ (930-19)
ऊचउ परबतु गाखड़ो ना पउड़ी तितु तासु ॥ (63-11)
ऊचन ऊचा बीचु न खीचा हउ तेरा तूं मोरा ॥२॥ (821-13)
ऊचा अगम अगाधि बोध किछु अंतु न पारावारु ॥ (137-1)
ऊचा अगम अपार प्रभु कथनु न जाइ अकथु ॥ (704-8)
ऊचा अगमु अथाहु अपारा ॥ (1077-3)
ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥ (55-5)
ऊचा कूके तनहि पछाड़े ॥ (121-19)
ऊचा चड़ै सु पवै पइआला ॥ (374-11)
ऊचा ते फुनि नीचु करतु है नीच करै सुलतानु ॥ (1329-18)
ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै आपि करे ॥३॥ (877-6)
ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै जाणो ॥ (580-2)
ऊची पदवी ऊचो ऊचा निरमल सबदु कमाइआ ॥४॥ (1041-19)
ऊची बाणी ऊचा होइ ॥ (361-15)
ऊची हूं ऊचा थानु अगम अपारीआ ॥ (520-11)
ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ (5-10)
ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ॥ (469-2)
ऊचे चड़ि कै देखिआ तां घरि घरि एहा अगि ॥८१॥ (1382-4)
ऊचे ते ऊच अपार ॥३॥ (895-1)
ऊचे ते ऊचा जा का थान ॥ (1144-16)
ऊचे ते ऊचा दरबारा ॥ (1079-15)
ऊचे ते ऊचा प्रभ थानु ॥ (1349-3)
ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥ (268-3)
ऊचे ते ऊचा वडा सभ संगि बरनेह ॥ (812-16)
ऊचे ते नीचा करै नीच खिन महि थापै ॥ (813-10)
ऊचे मंदर महल अरु रानी ॥ (392-4)

ऊचे मंदर साल रसोई ॥ (794-4)
ऊचे मंदर सुंदर छाइआ ॥ (175-19)
ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥ (659-6)
ऊचै थलि फूले कमल अनूप ॥ (898-17)
ऊचै सुरि सूहउ पुनि कीनी ॥ (1430-17)
ऊजल मोती चूगहि हंस ॥ (352-6)
ऊजलु साचु सु सबदु होइ ॥ (903-15)
ऊझड़ि भरमै राहि न पाई ॥ (412-2)
ऊठउ बैसउ रहि भि न साकउ दरसनु खोजि खोजावउ ॥ (401-8)
ऊठत बैठत जपउ नामु इहु करमु कमावउ ॥ (813-18)
ऊठत बैठत ठेगा परिहै तब कत मूड लुकईहै ॥१॥ (524-9)
ऊठत बैठत सतिगुरु सेवह जितु सेविऐ सांति पाई ॥ (572-6)
ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥ (270-8)
ऊठत बैठत सासि गिरासि ॥ (971-16)
ऊठत बैठत सूतकु लागै सूतकु परै रसोई ॥२॥ (331-12)
ऊठत बैठत सोवत जागत इहु मनु तुझहि चितारै ॥ (820-11)
ऊठत बैठत सोवत जागत जीअ प्रान धन माल ॥२॥ (980-2)
ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरि धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (379-18)
ऊठत बैठत सोवत जागत सासि सासि सासि हरि जपने ॥१॥ रहाउ ॥ (1298-10)
ऊठत बैठत सोवत जागत हरि धिआईऐ सगल अवरदा जीउ ॥१॥ (101-12)
ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ ॥ (386-7)
ऊठत बैठत सोवत नाम ॥ (286-5)
ऊठत बैठत सोवते हरि हरि हरि चेत ॥१॥ रहाउ ॥ (810-9)
ऊठत बैठत हरि गुण गावै दूखु दरदु भ्रमु भागा ॥ (614-18)
ऊठत बैठत हरि गुन गावहि गुरि किंचत किरपा धारी ॥ (1198-19)
ऊठत बैठत हरि जापु ॥ (895-16)
ऊठत बैठत हरि भजहु साधू संगि परीति ॥ (297-2)
ऊठत बैठत हरि हरि गाईऐ ॥ (109-5)
ऊठत बैठत हरि हरि धिआईऐ अनदिनु सुक्रितु करीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (621-19)
ऊठत सुखीआ बैठत सुखीआ ॥ (1136-6)
ऊठत सोवत हरि संगि पहरूआ ॥ (196-19)
ऊठि सिधाइओ छूटरि माटी देखु नानक मिथन मोहासा हे ॥१०॥ (1073-7)
ऊठि सिधारे करि मुनि जन सेवा ॥१॥ (740-1)
ऊठि सिधारे छत्रपति संतन कै खिआल ॥ रहाउ ॥ (807-16)
ऊडां ऊडि चड़ां असमानि ॥ (1257-7)
ऊडां बैसा एक लिव तार ॥ (1275-2)
ऊडि जाइगो धूमु बादरो इकु भाजहु रामु सनेही ॥ रहाउ ॥ (609-11)

ऊडि न साकै पंख पसारी ॥४॥ (1275-16)
ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ (10-12)
ऊड़ै उपमा ता की कीजै जा का अंतु न पाइआ ॥ (432-12)
ऊडै ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ (495-5)
ऊणा कही न होइ घटे घटि सारिआ ॥ (523-10)
ऊणा नाही किछु जन ता कै ॥ (1150-18)
ऊणी आस मिथिआ सभि बोला ॥ (1004-19)
ऊणी नाही झूणी नाही नाही किसै विहूणी ॥ (959-12)
ऊणे भरे भरे भरि ऊणे एहि चलत सुआमी के कारणा ॥५॥ (1077-3)
ऊतम कथा सुणीजै स्रवणी मइआ करहु भगवान ॥ (1220-18)
ऊतम करणी सबद बीचार ॥३॥ (158-1)
ऊतम गति मिति हरि गुन सरीर ॥ (1169-17)
ऊतम जगंनाथ जगदीसुर हम पापी सरनि रखे ॥ (976-2)
ऊतम जन संत भले हरि पिआरे ॥ (1038-18)
ऊतम जनमु सुथानि है वासा ॥ (127-7)
ऊतम जाती ऊतमु सोइ ॥ (363-5)
ऊतम पदवी पावै सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1174-11)
ऊतम पदवी हरि नामि समाई ॥२॥ (364-10)
ऊतम बाणी गाउ गोपाला ॥ (1085-2)
ऊतम बाणी सबदु सुणाए ॥ (664-19)
ऊतम ब्रहमु पछाणै कोइ ॥ (665-19)
ऊतम मति मेरै रिदै तूं आउ ॥ (377-2)
ऊतम रतन जवाहर अपार ॥ (363-18)
ऊतम संगति ऊतमु होवै ॥ (414-3)
ऊतम संगति गति मिति ऊतम जगु भउजलु पारि तराइआ ॥८॥ (1042-5)
ऊतम सतिगुर पुरख निराले ॥ (1038-9)
ऊतम सबदि सवारणहारा ॥ (930-18)
ऊतम से दरि ऊतम कहीअहि नीच करम बहि रोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (15-11)
ऊतमु आखि न ऊचा होइ ॥ (1330-18)
ऊतमु ऊचा सबद कामु ॥ (1176-6)
ऊतमु ऊचौ पारब्रहमु गुण अंतु न जाणहि सेख ॥ (298-1)
ऊतमु दीअरा निरमल बाती ॥ (695-11)
ऊतमु होवा प्रभु मिलै इक मनि एकै भाइ ॥ (936-15)
ऊनवि घनहरु गरजै बरसै कोकिल मोर बैरागै ॥ (1197-11)
ऊनवि बरसै नीझर धारा ॥ (930-17)
ऊने काज न होवत पूरे ॥ (899-9)
ऊपर कउ मांगउ खींधा ॥ (656-16)

ऊपरि आदि अंति तिहु लोइ ॥ (930-19)
ऊपरि आदि सरब तिहु लोई सचु नानक अम्रित रसु पाइआ ॥१५॥४॥२१॥ (1042-14)
ऊपरि एकंकारु निरालमु सुंन समाधि लगाइआ ॥३॥ (1039-17)
ऊपरि कूपु गगन पनिहारी अम्रितु पीवणहारा ॥ (1331-19)
ऊपरि गगनु गगन परि गोरखु ता का अगमु गुरू पुनि वासी ॥ (992-18)
ऊपरि चरन तलै आकासु ॥ (900-1)
ऊपरि दरि असमानि पइआलि ॥ (1256-9)
ऊपरि परै परै अपरमपरु जिनि आपे आपु उपाइआ ॥२॥ (1040-15)
ऊपरि बनै अकासु तलै धर सोहती ॥ (1362-8)
ऊपरि भुजा करि मै गुर पहि पुकारिआ तिनि हउ लीआ उबारी ॥१॥ रहाउ ॥ (793-8)
ऊपरि हाटु हाट परि आला आले भीतरि थाती ॥४॥ (974-11)
ऊभ पइआल सरब महि पूरन रसि मंगल गुण गाए ॥१॥ रहाउ ॥ (1139-4)
ऊभे करनि पुकारा मुगध गवारा मनमुखि जनमु गवाइआ ॥ (570-7)
ऊभे सेवहि अलख अपारै ॥ (1022-7)
ऊरध मुख महा गुबारे ॥ (1007-16)
ऊरम धूरम जोति उजाला ॥ (930-16)
ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (345-13)
ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२॥ (345-15)
ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होइ ॥२॥ (1195-14)
ऊहां सूरज नाही चंद ॥ (1162-13)
ऊहा कामि न आवै इह बिधि ओहु लोगन ही पतीआवै ॥२॥ (216-7)
ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥ (291-16)
ऊहा जपीऐ केवल नाम ॥ (1182-9)
ऊहा संत करहि हरि रंगा ॥२॥ (739-14)
ऊहा सम ठाकुरु सम चेरा ॥ (621-10)
ऊहा सिमरहि केवल नामु ॥ (888-19)
ऊहा हुकमु तुमारा सुणीऐ ॥ (1081-7)
ऊही ते हरिओ ऊहा ले धरिओ जैसे बासा मास देत झाटुली ॥ (1216-7)
ए अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन महि नाहि ॥१॥ (340-3)
ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु ॥१२७॥ (1384-16)
ए दुइ अखर ना खिसहि सो गहि रहिओ कबीरु ॥१७१॥ (1373-13)
ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥९१॥ (1382-14)
ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ (922-4)
ए पंडीआ मो कउ ढेढ कहत तेरी पैज पिछंउडी होइला ॥२॥ (1292-17)
ए बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥१॥ (524-14)
ए भूपति सभ दिवस चारि के झूठे करत दिवाजा ॥१॥ रहाउ ॥ (856-9)
ए भैरउ की पाचउ नारी ॥ (1430-2)

ए भ्रमि भूले मरहु न कोई ॥ (1343-13)
ए मन आलसु किआ करहि गुरमुखि नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (28-15)
ए मन इहु धनु नामु है जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ (555-14)
ए मन ऐसा सतिगुरु खोजि लहु जितु सेविऐ जनम मरण दुखु जाइ ॥ (591-10)
ए मन गुर की सिख सुणि पाइहि गुणी निधानु ॥ (851-11)
ए मन गुर की सिख सुणि हरि पावहि गुणी निधानु ॥ (511-19)
ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ॥ (918-6)
ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि तेहे करम कमाइ ॥ (755-8)
ए मन तेरा को नही करि वेखु सबदि वीचारु ॥ (429-3)
ए मन नामु निधानु तू पाइ ॥ (560-8)
ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥ (918-9)
ए मन भगती रतिआ सचु बाणी निज थाउ ॥ (39-13)
ए मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हदूरि ॥ (429-1)
ए मन मिरत सुभ चिंतं गुर सबदि हरि रमणं ॥ (505-13)
ए मन मूलहु भुलिआ जासहि पति गवाइ ॥ (756-11)
ए मन मेरिआ आवा गउणु संसारु है अंति सचि निबेड़ा राम ॥ (571-7)
ए मन मेरिआ गुण गावहि सहजि समावही राम ॥ (1113-4)
ए मन मेरिआ छडि अवगण गुणी समाणिआ राम ॥ (1112-16)
ए मन मेरिआ ता छुटसी जा भरमु चुकाइसी राम ॥ (1113-7)
ए मन मेरिआ तू किआ लै आइआ किआ लै जाइसी राम ॥ (1113-6)
ए मन मेरिआ तू छोडि आल जंजाला राम ॥ (1112-19)
ए मन मेरिआ तू थिरु रहु चोट न खावही राम ॥ (1113-3)
ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ (917-4)
ए मन मेरिआ तू समझु अचेत इआणिआ राम ॥ (1112-16)
ए मन मेरिआ बिनु पउड़ीआ मंदरि किउ चड़ै राम ॥ (1113-10)
ए मन मेरिआ बिनु बेड़ी पारि न अ्मबड़ै राम ॥ (1113-11)
ए मन मेरिआ हरि सेवहु पुरखु निराला राम ॥ (1112-19)
ए मन मेरे बावले हरि रसु चखि सादु पाइ ॥ (430-3)
ए मन मेरे भरमु न कीजै ॥ (161-15)
ए मन मेरे सदा रंगि राते सदा हरि के गुण गाउ ॥ (565-11)
ए मन रूड़्हे रंगुले तूं सचा रंगु चड़ाइ ॥ (427-1)
ए मन हरि जी धिआइ तू इक मनि इक चिति भाइ ॥ (653-15)
ए मन हरि जीउ चेति तू मनहु तजि विकार ॥ (994-1)
ए मन हरिआ सहज सुभाइ ॥ (1173-17)
ए मना अति लोभीआ नित लोभे राता ॥ (514-16)
ए माणस जाणहि दूरि तू वरतहि जाहरा ॥ (1096-1)
ए मुंडीआ बूडत की टेक ॥ (871-12)

ए रसना तू अन रसि राचि रही तेरी पिआस न जाइ ॥ (921-11)
ए ल्मपट नाच अधरमं ॥३॥ (1351-16)
ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइ कै किआ तुधु करम कमाइआ ॥ (922-1)
ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥ (921-14)
ए साजन कछु कहहु उपाइआ ॥ (251-14)
ए सूते अपणै अहंकारी ॥१॥ (1128-4)
ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥ (922-8)
एऊ जीअ बहुतु ग्रभ वासे ॥ (251-13)
एकंकार नाम उर धारं ॥ (1361-6)
एकंकारु अवरु नही दूजा नानक एकु समाई ॥५॥ (930-11)
एकंकारु एकु पासारा एकै अपर अपारा ॥ (821-14)
एकंकारु निरंजनु निरभउ सभ जलि थलि रहिआ समाई ॥२०॥ (916-4)
एकंकारु वसै मनि भावै हउमै गरबु गवाइदा ॥११॥ (1034-3)
एकंकारु सतिगुर ते पाईऐ हउ बलि बलि गुर दरसाइणा ॥८॥ (1078-7)
एक अखरु हरि मनि बसत नानक होत निहाल ॥१॥ (261-11)
एक अनेक बिआपक पूरक जत देखउ तत सोई ॥ (485-1)
एक अनेक होइ रहिओ सगल महि अब कैसे भरमावहु ॥१॥ (1104-2)
एक आस ठाकुर प्रभ तोरी ॥७॥ (759-17)
एक आस मोहि तेरी सुआमी अउर दुतीआ आस बिराथे ॥१॥ (1212-19)
एक आस राखहु मन माहि ॥ (288-5)
एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१॥ (281-2)
एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥ (281-14)
एक ओट एको आधारु ॥ (289-12)
एक ओट पकरी ठाकुर की गुर मिलि मति बुधि पाईऐ ॥ (1214-4)
एक कवावै ते सभि होआ ॥१॥ (1003-18)
एक की करि आस भीतरि ॥ (895-11)
एक कोसरो सिधि करत लालु तब चतुर पातरो आइओ ॥ रहाउ ॥ (624-8)
एक क्रिसनं सरब देवा देव देवा त आतमा ॥ (469-15)
एक क्रिस्नं त सरब देवा देव देवा त आतमह ॥ (1353-13)
एक ग्रिह महि दुइ न खटांई ॥ (1347-17)
एक घड़ी महि थापि उथापि ॥ (364-10)
एक घड़ी महि थापि उथापे जरु वंडि देवै भांई ॥१॥ रहाउ ॥ (417-14)
एक घरी फुनि रहनु न होई ॥१॥ (794-5)
एक जीअ कै जीआ खाही ॥ (1275-14)
एक जीह गुण कवन बखानै ॥ (1083-5)
एक जीह गुण कवन वखानै अगम अगम अगमई ॥ (402-10)
एक जु बात अनूप बनी है पवन पिआला साजिआ ॥ (92-17)

एक जोति एका मिली क्मिबा होइ महोइ ॥ (335-8)
एक जोति एको मनि वसिआ सभ ब्रहम द्रिसटि इकु कीजै ॥ (1325-12)
एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ ॥३॥ (788-12)
एक टेक अधारु एको एक का मनि जोरु ॥ (405-5)
एक टेक एको आधारा ॥ (212-10)
एक टेक एको आधारु ॥ (1139-19)
एक टेक गोविंद की तिआगी अन आस ॥ (812-17)
एक तुई एक तुई ॥२॥ (144-1)
एक तुई एक तुई ॥३॥ (144-2)
एक तुई एक तुई ॥६॥ (144-5)
एक तुई एकु तुई ॥५॥ (144-4)
एक तूही एक तुही ॥१॥ (143-19)
एक तूही तूही तूही ॥२॥१॥३७॥ (1305-14)
एक तूही दीन दइआल ॥ (1119-11)
एक दिवस मन भई उमंग ॥ (1195-12)
एक द्रिसटि एको करि देखिआ भीखिआ भाइ सबदि त्रिपतासै ॥१॥ रहाउ ॥ (879-14)
एक द्रिसटि करि देखदा मन भावनी ते सिधि होइ ॥ (300-16)
एक द्रिसटि करि समसरि जाणै जोगी कहीऐ सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (730-13)
एक द्रिसटि तारे गुर पूरा ॥ (413-16)
एक द्रिसटि सभ सम करि जाणै नदरी आवै सभु ब्रहमु पसरईआ ॥७॥ (833-16)
एक द्रिस्टि हरि एको जाता हरि आतम रामु पछाणी ॥ (573-1)
एक न पूजसि नामै हरी ॥३॥ (1163-13)
एक न भरीआ गुण करि धोवा ॥ (356-18)
एक नगरी पंच चोर बसीअले बरजत चोरी धावै ॥ (503-6)
एक नदरि करि वेखै सभ ऊपरि जेहा भाउ तेहा फलु पाईऐ ॥ (602-6)
एक नाम कलिप तर तारे ॥१॥ (330-14)
एक नाम को थीओ पूजारी मो कउ अचरजु गुरहि दिखाइओ ॥१॥ (209-8)
एक नाम बिनु कह लउ सिधीआ ॥ (259-6)
एक नाम ले मनहि परोऊ ॥ (253-3)
एक नामि जुग चारि उधारे सबदे नाम विसाहा हे ॥११॥ (1055-2)
एक निमख ओपाइ समावै देखि चरित मन मोहं ॥१॥ रहाउ ॥ (1211-14)
एक निमख गोबिंद भजनु करि तउ सदा सदा जीवानद ॥३॥ (1204-15)
एक निमख जे बिसरै सुआमी जानउ कोटि दिनस लख बरीआ ॥ (1209-5)
एक निमख जो सिमरन महि जीआ ॥ (239-2)
एक निमख प्रिअ दरसु दिखावै तिसु संतन कै बलि जांई ॥२॥ (1207-3)
एक निमख मन माहि अराधिओ गजपति पारि उतारे ॥२॥ (999-6)
एक निमख महि मेरा सभु दुखु काटिआ नानक सुखि रैनि बिहाई ॥२॥२॥६॥ (1267-16)

एक निमख हरि के गुन गाए ॥ (290-13)
एक निरंकार ले रिदै नमसकारउ ॥३॥ (1136-11)
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥१॥ (1349-19)
एक पलक सुख साध समागम कोटि बैकुंठह पांए ॥१॥ रहाउ ॥ (1208-17)
एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥ (268-6)
एक बसतु दीजै करि मइआ ॥ (290-8)
एक बसतु बिनु पंच दुहेले ओह बसतु अगोचर ठाई ॥२॥ (205-2)
एक बात सुनि ताकी ओटा साधसंगि मिटि जाही ॥२॥ (206-2)
एक बिना झूठे मुकति न होइ ॥ (222-14)
एक बिना दूजा नही जाणी ॥४॥६॥ (1137-6)
एक बिना दूजा नही जानै ॥ (741-10)
एक बिना दूजा नही होरु ॥ (1151-5)
एक बूंद गुरि अम्रितु दीनो ता अटलु अमरु न मुआ ॥ (612-16)
एक बूंद जल कारने चात्रिकु दुखु पावै ॥ (858-15)
एक बूंद भरि तनु मनु देवउ जो मदु देइ कलाली रे ॥१॥ रहाउ ॥ (969-2)
एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥ (1428-15)
एक भाइ देखउ सभ नारी ॥ (327-18)
एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥ (268-6)
एक मसीति दसै दरवाज ॥१॥ रहाउ ॥ (1158-9)
एक महलि तूं आपे आपे एक महलि गरीबानो ॥१॥ (206-6)
एक महलि तूं पंडितु बकता एक महलि खलु होता ॥ (206-7)
एक महलि तूं सभु किछु ग्राहजु एक महलि कछू न लेता ॥२॥ (206-7)
एक महलि तूं होहि अफारो एक महलि निमानो ॥ (206-6)
एक महि सरब सरब महि एका एह सतिगुरि देखि दिखाई ॥५॥ (907-9)
एक रूप जा के रंग अनेक ॥ (295-8)
एक रूप सगलो पासारा ॥ (803-11)
एक रैण के पाहुन तुम आए बहु जुग आस बधाए ॥ (212-18)
एक वसतु कउ पहुचि न साकै धन रहती भूख पिआसा हे ॥३॥ (1072-16)
एक वसतु जे पावै कोइ ॥ (1145-7)
एक वसतु बूझहि ता होवहि पाक ॥ (374-17)
एक संची तजि बाप महतारी ॥ (1004-8)
एक सबद इक भिखिआ मागै ॥ (223-11)
एक सबदि राचै सचि समाइ ॥७॥ (1275-10)
एक समै मो कउ गहि बांधै तउ फुनि मो पै जबाबु न होइ ॥१॥ (1253-1)
एक सरन गोबिंद चरन संसार सगल ताप हरन ॥ (1230-10)
एक साचे नाम बाझहु सगल दीसै छारु ॥१॥ (405-2)
एक सुमति रति जानि मानि प्रभ दूसर मनहि न आनाना ॥ (339-16)

एक सुहागनि जगत पिआरी ॥ (871-15)
एक ही एक अनेक होइ बिसथरिओ आन रे आन भरपूरि सोऊ ॥ रहाउ ॥ (1293-8)
एकतु राचै परहरि दोइ ॥ (1188-11)
एकम एकंकारु निराला ॥ (838-19)
एकम एकंकारु प्रभु करउ बंदना धिआइ ॥ (296-12)
एकम एकै आपु उपाइआ ॥ (113-7)
एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे ॥ (988-18)
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥ (988-17)
एकस के गुन गाउ अनंत ॥ (289-6)
एकस ते दूजा नाही कोइ ॥ (842-1)
एकस बिनु किछु होरु न जाणै अवरि उपाव तिआगी ॥१॥ रहाउ ॥ (1220-7)
एकस बिनु को अवरु न जाणहि ॥ (1053-12)
एकस बिनु नाही को दूजा ॥ (805-10)
एकस बिनु नाही को दूजा आन न बीओ लवै लाइ ॥ (1208-11)
एकस बिनु मै अवरु न जानां सतिगुरि बूझ बुझाई ॥६॥ (1233-5)
एकस बिनु सभ धंधु है सभ मिथिआ मोहु माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (44-6)
एकस महि सभु जगतो वरतै विरला एकु पछाणै ॥ (1234-8)
एकस हरि के नाम बिनु बाधे जम पुरि जांहि ॥३४॥ (1366-6)
एकसु आगै बेनती रविआ स्रब थाइ ॥२॥ (815-4)
एकसु की सिरि कार एक जिनि ब्रहमा बिसनु रुद्रु उपाइआ ॥ (1130-10)
एकसु चरणी जे चितु लावहि लबि लोभि की धावसिता ॥३॥ (156-1)
एकसु ते लाख लाख ते एका तेरी गति मिति कहि न सकाउ ॥ (1202-15)
एकसु ते सभ ओपति होई ॥७॥ (223-7)
एकसु ते सभि रूप हहि रंगा ॥ (160-10)
एकसु ते सभु दूजा हूआ ॥ (842-8)
एकसु बिनु मै अवरु न जाणा सतिगुरि दीआ बुझाई ॥१॥ (1260-5)
एकसु बिनु हउ आन न जानउ दुतीआ भाउ सभ लूह ॥१॥ रहाउ ॥ (1227-1)
एकसु बिनु हउ होरु न जाणा सहजे होइ सु होई हे ॥१४॥ (1045-16)
एकसु महि प्रभु एकु समाणा अपणै रंगि सद राता हे ॥७॥ (1051-14)
एकसु सिउ जा का मनु राता ॥ (189-8)
एकसु सिउ मनु रहिआ समाए मनि मंनिऐ मनहि मिलावणिआ ॥७॥ (122-16)
एकहि आपि अनेकहि भाति ॥ (238-18)
एकहि आपि अवर नह होऊ ॥ (252-13)
एकहि आपि करावनहारा ॥ (251-16)
एकहि आपि नही कछु भरमु ॥ (287-4)
एकहि आवन फिरि जोनि न आइआ ॥ (252-18)
एकहि आसा दरस पिआसा आन न भावे ॥२॥ (407-11)

एकहि एक जपहु जपु सोई ॥ (258-8)
एकहि एक बखाननो नानक एक अनेक ॥१॥ (250-12)
एकहि ते सगला बिसथारा ॥ (251-18)
एकहि प्राण पिंड ते पिआरी ॥ (1004-8)
एकहि सुपनै दामु न छडहै ॥ (1004-7)
एकहि सूति परोवनहारा ॥ (250-12)
एका ओट गहु हां ॥ (410-2)
एका ओट तजउ बिखु कामी ॥ (1080-4)
एका खोजै एक प्रीति ॥ (1180-18)
एका जीह कीचै लख बीस ॥ (1296-17)
एका जोति जोति है सरीरा ॥ (125-10)
एका टेक अगम मनि तनि प्रभु धारई ॥ (1425-8)
एका टेक मेरै मनि चीत ॥ (187-17)
एका टेक रखहु मन माहि ॥ (293-7)
एका देसी एकु दिखावै एको रहिआ बिआपै ॥ (885-1)
एका निरभउ बात सुनी ॥ (998-18)
एका बखस फिरि बहुरि न बुलावै ॥३॥ (1337-18)
एका बेदन दूजै बिआपी नामु रसाइणु वीसरिआ ॥ (940-19)
एका भगति एको है भाउ ॥ (1188-19)
एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥ (7-2)
एका माटी एका जोति ॥ (188-10)
एका मूरति साचा नाउ ॥ (1188-17)
एका लिव एको मनि भाउ ॥ (184-1)
एका लिव पूरन परमेसुर भउ नही नानक ता कै ॥२॥७३॥९६॥ (1223-3)
एका संगति इकतु ग्रिहि बसते मिलि बात न करते भाई ॥ (205-2)
एका सरणि गही मन मेरै तुधु बिनु दूजा नाही ठाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (893-12)
एका सुरति एका ही सेवा एको गुर ते जापै ॥१॥ (885-2)
एका सुरति जेते है जीअ ॥ (24-19)
एका सेज विछी धन कंता ॥ (737-18)
एकादसी इकु रिदै वसावै ॥ (840-4)
एकादसी एक दिस धावै ॥ (344-2)
एकादसी निकटि पेखहु हरि रामु ॥ (299-3)
एकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीरथ जाईं ॥१॥ (718-14)
एकि चले हम देखह सुआमी भाहि बलंती आई ॥३॥ (876-8)
एकि नचावहि एकि भवावहि इकि आइ जाइ होइ धूरा ॥ (884-19)
एकी कारणि पापी भइआ ॥ (954-3)
एकी साहिब बाहरा दूजा अवरु न जाणै कोइ ॥२॥ (991-8)

एकु अखरु जो गुरमुखि जापै तिस की निरमल सोई ॥३॥ (747-19)
एकु अचरजु एको है सोई ॥ (160-11)
एकु अचरजु जन देखहु भाई ॥ (663-16)
एकु अचारु रंगु इकु रूपु ॥ (930-13)
एकु अच्मभउ सुनहु तुम्ह भाई ॥ (481-11)
एकु अधारु नानक जन कीआ बहुरि न जोनि भ्रमाद ॥२॥९४॥११७॥ (1226-19)
एकु अधारु नामु धनु मोरा अनदु नानक इहु लहीऐ ॥२॥२६॥ (533-12)
एकु अनेकहि मिलि गइआ एक समाना एक ॥१९१॥ (1374-15)
एकु अराधहु साचा सोइ ॥ (901-5)
एकु अराधि पराछत गए ॥ (289-7)
एकु आधारु नामु नाराइन रसना रामु रवीजै ॥२॥१॥१४॥६५॥ (338-2)
एकु कबीरा ना मुसै जिनि कीनी बारह बाट ॥२०॥ (1365-11)
एकु कबीरा ना मूआ जिह नाही रोवनहारु ॥६९॥ (1368-3)
एकु कुसलु मो कउ सतिगुरू बताइआ ॥ (176-2)
एकु कोटु पंच सिकदारा पंचे मागहि हाला ॥ (793-6)
एकु गिरहु दस दुआर है जा के अहिनिसि तसकर पंच चोर लगईआ ॥ (833-9)
एकु गुसाई अलहु मेरा ॥ (1136-9)
एकु चीजु मुझै देहि अवर जहर चीज न भाइआ ॥ (1291-7)
एकु जानहि एकु मानहि राम कै रंगि मातिआ ॥ (543-18)
एकु जि साजनु मै कीआ सरब कला समरथु ॥ (322-11)
एकु जु साधू मोहि मिलिओ तिन्हि लीआ अंचलि लाइ ॥७८॥ (1368-12)
एकु तुई एकु तुई ॥४॥ (144-3)
एकु तुई एकु तुई ॥७॥ (144-6)
एकु तूं ता सभु किछु है मै तुधु बिनु दूजा नाही ॥१॥ (382-9)
एकु तू होरि वेस बहुतेरे ॥ (356-17)
एकु दातारु सगल है जाचिक दूसर कै पहि जावउ ॥१॥ (401-6)
एकु दिखावै साचि टिकावै ॥८॥६॥ (1190-9)
एकु द्रिड़ाए दुरमति खोई ॥ (1085-11)
एकु धिआइनि सदा सुखु पाइनि निहचलु राजु तिनाहा हे ॥३॥ (1057-15)
एकु धिआईऐ साध कै संगि ॥ (900-17)
एकु धिआवहु मूड़्ह मना ॥ (1169-6)
एकु न चेतहि दूजै लोभाहि ॥ (842-17)
एकु नामु अम्रितु ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा ॥४॥३॥ (990-7)
एकु नामु आधारु भउजलु तरबीऐ ॥१॥ (398-12)
एकु नामु तारे संसारु ॥ (1175-6)
एकु नामु दीओ मन मंता बिनसि न कतहू जाति ॥१॥ (681-3)
एकु नामु मन माहि समानी ॥ (296-7)

एकु नामु वसिआ घट अंतरि पूरे की वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (912-1)
एकु नामु संतन आधारु ॥ (392-13)
एकु निधानु देहि तू अपणा अहिनिसि नामु वखाणी ॥३॥ (1257-18)
एकु निरंकारु जा कै नाम अधार ॥ (863-18)
एकु निरंजनु गुरमुखि जाता ॥ (223-6)
एकु निरंजनु जा की रासि ॥ (677-2)
एकु निरालमु अकथ कहाणी ॥ (1188-14)
एकु निवाहू राम नाम दीना का प्रभु नाथ ॥५॥ (431-7)
एकु निहारहि आगिआकार ॥ (181-9)
एकु पछाणै हउमै मारि ॥ (1277-13)
एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥ (611-19)
एकु पुरखु इकु नदरी आवै सभ एका नदरि निहारे ॥२॥ (982-7)
एकु पुरबु मै तेरा देखिआ तू सभना माहि रवंता ॥३॥ (596-16)
एकु बगीचा पेड घन करिआ ॥ (385-5)
एकु बिसथीरनु एकु स्मपूरनु एकै प्रान अधारा ॥३॥ (821-14)
एकु बुरा भला सचु एकै ॥ (905-1)
एकु बोलु भी खवतो नाही साधसंगति सीतलई ॥३॥ (402-9)
एकु भगतु मेरे हिरदे बसै ॥ (1163-19)
एकु मंदरु पंच चोर हहि नित करहि बुरिआईआ ॥ (1096-8)
एकु मरै पंचे मिलि रोवहि ॥ (413-5)
एकु मुकंदु करै उपकारु ॥ (875-8)
एकु रतनु मो कउ गुरि दीना मेरा मनु तनु सीतलु थिआ ॥३॥ (612-15)
एकु रहिआ ता एकु दिखाइआ ॥२॥ (886-6)
एकु विसारे ता पिड़ हारे अंधुलै नामु विसारा हे ॥६॥ (1027-2)
एकु सबदु जितु कथा वीचारी ॥ (943-2)
एकु सबदु तूं चीनहि नाही फिरि फिरि जूनी आवहिगा ॥४॥ (434-18)
एकु सबदु दूजा होरु नासति कंद मूलि मनु लावसिता ॥१॥ रहाउ ॥ (155-17)
एकु सबदु बीचारीऐ जा तू ता किआ होरि ॥१॥ रहाउ ॥ (17-18)
एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥१॥ (795-9)
एकु सबदु राम नाम निरोधरु गुरु देवै पति मती ॥११॥ (931-6)
एकु सरेवै ता गति मिति पावै आवणु जाणु रहाई ॥६॥ (930-13)
एकु साहिबु दुइ राह वाद वधंदिआ जीउ ॥ (688-13)
एकु साहिबु सिरि छतु दूजा नाहि कोइ ॥१॥ (398-3)
एकु सिमरि एको मन आहि ॥ (289-6)
एकु सिमरि नाम आधारु ॥ (288-3)
एकु सिमरि मन माही ॥१॥ रहाउ ॥ (407-13)
एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि ॥ (24-13)

एकु सुधाखरु जा कै हिरदै वसिआ तिनि बेदहि ततु पछानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1205-16)
एकु हमारा अंतरजामी ॥ (1347-9)
एके कउ नाही भउ कोइ ॥ (796-3)
एके कउ सचु एका जाणै हउमै दूजा दूरि कीआ ॥ (940-16)
एकै एकै एक तूही ॥ (884-8)
एकै एकै तू राइआ ॥ (884-8)
एकै कनिक अनिक भाति साजी बहु परकार रचाइओ ॥ (205-11)
एकै जालि फहाए पंखी ॥ (180-5)
एकै ठाहर दुहा बसेरा ॥ (476-11)
एकै तूही एकै अन नाही तुम भति ॥ (1385-6)
एकै परगटु एकै गुपता एकै धुंधूकारो ॥ (1215-3)
एकै पाथर कीजै भाउ ॥ (525-5)
एकै रंगि तत के बेते सतिगुर ते बुधि पाई ॥१॥ (701-10)
एकै रे गुरमुखि जान ॥१॥ रहाउ ॥ (535-6)
एकै रे हरि एकै जान ॥ (535-6)
एकै सूति परोए मणीए ॥ (886-7)
एकै स्रमु करि गाडी गडहै ॥ (1004-7)
एकै हरि प्रीति लाइ मिलि साधसंगि सोहा ॥१॥ (1230-13)
एको अमरु एका पतिसाही जुगु जुगु सिरि कार बणाई हे ॥१॥ (1046-1)
एको अम्रित बिरखु है फलु अम्रितु होई ॥६॥ (421-16)
एको अलहु पारब्रहम ॥५॥३४॥४५॥ (897-6)
एको आपि तूहै वड राजा ॥ (1074-2)
एको आपि वरतदा पिआरे घटि घटि रहिआ समाइ ॥७॥ (432-6)
एको एकी नैन निहारउ ॥ (386-19)
एको एकु आपि इकु एकै एकै है सगला पासारे ॥ (379-6)
एको एकु एकु पछानै ॥ (281-11)
एको एकु एकु हरि आपि ॥ (289-7)
एको एकु कहै सभु कोई हउमै गरबु विआपै ॥ (930-9)
एको एकु जपी मन माही ॥ (1077-10)
एको एकु निरंजन पूजा ॥ (887-9)
एको एकु बखानीऐ बिरला जाणै स्वादु ॥ (299-2)
एको एकु रविआ सभ अंतरि सभना जीआ का आधारी हे ॥१३॥ (1051-1)
एको एकु रविआ सभ ठाई ॥ (1080-15)
एको एकु रहिआ भरपूरि ॥ (1177-16)
एको एकु वरतै सभु सोई ॥ (1044-18)
एको एकु वरतै हरि लोइ ॥ (1177-16)
एको एकु वसै मनि सुआमी दूजा अवरु न कोई ॥ (1259-5)

एको एकु सभु आखि वखाणै ॥ (1176-9)
एको एकु सु अपर पर्मपरु परखि खजानै पाइदा ॥१२॥ (1034-4)
एको करता अवरु न कोइ ॥ (1174-8)
एको करता आपे आप ॥ (1271-6)
एको करता जिनि जगु कीआ ॥ (1188-13)
एको कहीऐ नानका दूजा काहे कू ॥२॥ (1291-15)
एको गिआनु धिआनु धुनि बाणी ॥ (1188-14)
एको चेतहि ता सुखु पावहि फिरि दूखु न मूले होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (558-16)
एको चेति गवार काजि तेरै आवई ॥ (1363-11)
एको चेतै फिरि जोनि न आवै ॥ (1174-3)
एको चेतै मनूआ न डोलै धावतु वरजि रहावै ॥ (634-12)
एको जपि एको सालाहि ॥ (289-5)
एको जपीऐ मनै माहि इकस की सरणाइ ॥ (961-10)
एको जाणै अवरु न कोइ ॥ (1343-3)
एको जाता सबदु वीचारै ॥ (943-7)
एको तखतु एको पातिसाहु ॥ (1188-16)
एको दानु सरब सुख गुण निधि आन मंगन निहकिंचना ॥१४॥ (1080-19)
एको धरमु द्रिड़ै सचु कोई ॥ (1188-15)
एको नामु अम्रितु है मीठा जगि निरमल सचु सोई ॥ (1259-6)
एको नामु एकु नाराइणु त्रिभवण एका जोती ॥२॥ (992-15)
एको नामु चेति मेरे भाई ॥ (424-12)
एको नामु चेते विचहु भरमु चुकाए ॥ (161-6)
एको नामु धिआइ तूं सुखु पावहि मेरे भाई ॥ (425-3)
एको नामु धिआइ मन मेरे ॥ (896-14)
एको नामु निधानु पंडित सुणि सिखु सचु सोई ॥ (492-1)
एको नामु मंनि वसाई ॥ (1054-1)
एको नामु मन महि परवेसा ॥१॥ (744-14)
एको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥५॥ (72-2)
एको निहचल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ ॥ (511-3)
एको पड़ै एको नाउ बूझै दूजा अवरु न जाणै ॥४॥ (67-15)
एको पवणु माटी सभ एका सभ एका जोति सबाईआ ॥ (96-9)
एको पवनु कहा कउनु रोति ॥२॥ (188-11)
एको पुरखु एकु प्रभु जाता दूजा अवरु न कोई ॥३॥ (1259-14)
एको प्रिउ सखीआ सभ प्रिअ की जो भावै पिर सा भली ॥ (527-10)
एको बनजु एको बिउहारी ॥ (181-9)
एको बूझै सूझै पति होइ ॥ (930-14)
एको भवरु भवै तिहु लोइ ॥ (930-14)

एको मंत्रु द्रिड़ाए अउखधु सचु नामु रिद गाइणा ॥२॥ (1077-19)
एको मनि एको सभ ठाइ ॥ (178-9)
एको रवि रहिआ अवरु न बीआ राम ॥ (1111-5)
एको रवि रहिआ घट अंतरि मिलि सतसंगति हरि गुण गावणिआ ॥६॥ (129-14)
एको रवि रहिआ घट अंतरि मुखि बोलहु गुर अम्रित बैना ॥१॥ रहाउ ॥ (366-12)
एको रवि रहिआ निरबानी ॥७॥ (904-8)
एको रवि रहिआ सभ अंतरि तिसु बिनु अवरु न कोई हे ॥१॥ (1044-19)
एको रवि रहिआ सभ ठाई ॥ (1345-4)
एको रवि रहिआ सभ थाई एकु वसिआ मन माही ॥१३॥ (433-5)
एको रूपु एको बहु रंगी सभु एकतु बचनि चलावैगो ॥४॥ (1310-9)
एको लेवै एको देवै अवरु न दूजा मै सुणिआ ॥११॥ (433-3)
एको वरतै अवरु न कोइ ॥ (842-14)
एको वरतै अवरु न बीआ ॥ (1056-13)
एको वरतै अवरु न बीआ ॥ (842-8)
एको वेखहु अवरु न भालि ॥ (355-5)
एको वेखा अवरु न बीआ ॥ (113-17)
एको वेखा दूजा नाही ॥ (1050-9)
एको वेखै अउरु न कोइ ॥ (1173-4)
एको सचा सचु तू केवलु आपि मुरारी ॥ रहाउ ॥ (599-17)
एको सचा सभ महि वरतै विरला को वीचारे ॥ (754-2)
एको सचु वरतै सभ अंतरि सभना करे प्रतिपाला ॥ (559-17)
एको सबदु एको प्रभु वरतै सभ एकसु ते उतपति चलै ॥ (1334-18)
एको सबदु वीचारीऐ अवर तिआगै आस ॥ (18-17)
एको सबदु सचा नीसाणु ॥ (1188-14)
एको सरवरु कमल अनूप ॥ (352-5)
एको साहिबु एकु वजीरु ॥५॥ (413-1)
एको सिमरहु भाइरहु तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (1092-8)
एको सिमरि न दूजा भाउ ॥ (199-4)
एको सेवनि एकु अराधहि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥६॥ (69-8)
एको सेवहु अवरु न कोइ ॥ (1174-11)
एको सेवी अवरु न दूजा ॥ (1048-11)
एको सेवी अवरु न दूजा ॥२॥ (1136-10)
एको सेवी सदा थिरु साचा ॥ (1049-4)
एको हरि रविआ स्रब थाइ ॥ (1177-14)
एको हाटु साहु सभना सिरि वणजारे इक भाती ॥३॥ (992-16)
एको हुकमु वरतै सभ लोई ॥ (223-7)
एको है दातारु सचा आपि धणी ॥१०॥ (755-11)

एको है भाई एको है ॥१॥ रहाउ ॥ (350-5)
एत छडाई मोहि ते इतनी द्रिड़तारी ॥ (810-15)
एतड़िआ विचहु सो जनु समधा जिनि गुरमुखि नामु धिआइआ ॥ (513-11)
एता गबु अकासि न मावत बिसटा अस्त क्रिमि उदरु भरिओ है ॥ (1388-15)
एता ताणु होवै मन अंदरि करी भि आखि कराई ॥ (147-3)
एती न जानउ केतीक मुदति चलते खबरि न पाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (999-16)
एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥१॥ (360-12)
एतु कमाणै सदा दुखु दुख ही महि रहणा ॥ (953-11)
एतु गंढि वरतै संसारु ॥ (143-12)
एतु जनमि हरि न चेतिओ भाई किआ मुहु देसी जाइ ॥ (639-9)
एतु दुआरै धोइ हछा होइसी ॥ (730-2)
एतु मोहि डूबा संसारु ॥ (356-7)
एतु मोहि फिरि जूनी पाहि ॥ (356-7)
एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥ (7-7)
एते अउरत मरदा साजे ए सभ रूप तुम्हारे ॥ (1349-16)
एते कीते होरि करेहि ॥ (6-3)
एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई ॥ (795-7)
एते गुण एतीआ चंगिआईआ देइ न पछोतावै ॥३॥ (1328-7)
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥२॥ (463-1)
एते जीअ जां चै वरतणी ॥ (1292-11)
एते जीअ जां चै हहि घरी ॥ (1292-13)
एते रस छोडि होवै संनिआसी नानकु कहै विचारा ॥२॥ (1290-9)
एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥२॥ (15-13)
एते वेस करेदीए मुंधे सहु रातो अवराहा ॥ (557-15)
एतै जलि वरसदै तिख मरहि भाग तिना के नाहि ॥ (1282-8)
एथहु छुड़किआ ठउर न पाइ ॥ (362-16)
एथै जाणै सु जाइ सिञाणै ॥ (952-3)
एथै धंधा कूड़ा चारि दिहा आगै सरपर जाणा ॥ (579-3)
एना अखरा महि जो गुरमुखि बूझै तिसु सिरि लेखु न होई ॥२॥ (432-11)
एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥ (469-7)
एना जंता नो होर सेवा नही सतिगुरु सिरि करतार ॥६॥ (1281-2)
एना ठगन्हि ठग से जि गुर की पैरी पाहि ॥ (1288-15)
एना नो भउ अगला पूरी बणत बणती ॥ (948-7)
एनि माइआ मोहणी मोहीआ नित फिरहि भरमाईआ ॥ (1096-9)
एनी अखी नदरि न आवई जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥ (1279-2)
एनी जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥२॥ (1290-16)
एनी ठगीं जगु ठगिआ किनै न रखी लज ॥ (1288-15)

एनी फुली रउ करे अवर कि चुणीअहि डाल ॥१॥ (791-9)
एनी लोइणी देखदिआ केती चलि गई ॥ (1382-16)
एनै चिति कठोरि सेव गवाईऐ ॥ (146-6)
एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती सहु पाईऐ ॥३॥ (722-13)
एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥ (463-14)
एवड भाग होहि जिसु प्राणी ॥ (1182-6)
एवडु ऊचा होवै कोइ ॥ (5-10)
एवडु धनु होरु को नही भाई जेवडु सचा नाउ ॥ (1419-6)
एवडु वधा मावा नाही सभसै नथि चलाई ॥ (147-3)
एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥ (917-15)
एस नो किआ आखीऐ किआ करे विचारी ॥४॥ (334-1)
एस नो कूड़ु बोलि कि खवालीऐ जि चलदिआ नालि न जाइ ॥ (510-19)
एसु कथा का देइ बीचारु ॥ (942-19)
एसु कला जो जाणै भेउ ॥ (974-10)
एसु सबद कउ जो अरथावै तिसु गुर तिलु न तमाई ॥ (940-8)
एह काइआ पवितु है सरीरु ॥ (1065-12)
एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥ (474-3)
एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥ (475-1)
एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥ (474-19)
एह कूड़ै की मलु किउ उतरै कोई कढहु इहु वीचारु ॥ (950-18)
एह गल होवै हरि दरगह सचे की जन नानक अगमु वीचारिआ ॥२॥ (312-16)
एह जम की सिरकार है एन्हा उपरि जम का डंडु करारा ॥ (513-13)
एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ (919-14)
एह त्रिगुण माइआ जिनि जगतु भुलाइआ जनम मरण का सहसा ॥ (1257-16)
एह देह सु बांकी जितु हरि जापी हरि हरि नामि सुहावीआ ॥ (575-7)
एह भूपति राणे रंग दिन चारि सुहावणा ॥ (645-3)
एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ (921-4)
एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ ॥ (918-7)
एह मुकता एह जुगता राखहु संत संगाहि ॥२॥ (407-8)
एह मुदावणी किउ विचहु कढीऐ सदा रखीऐ उरि धारि ॥ (645-14)
एह मुदावणी सतिगुरू पाई गुरसिखा लधी भालि ॥ (645-14)
एह वडिआई गुर ते पाई सतिगुर कउ सद बलि जाई हे ॥९॥ (1069-16)
एह वडिआई सतिगुर निरवैर विचि जितु मिलिऐ तिसना भुख उतरै हरि सांति तड़ आवै ॥ (855-3)
एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥ (1429-13)
एह विडाणी चाकरी पिरा जीउ धन छोडि परदेसि सिधाए ॥ (246-17)
एह वेला न लहसहि मूड़े फिरि तूं जम कै वसि पइआ ॥१२॥ (435-9)
एह वेला फिरि हाथि न आवै पगि खिसिऐ पछुताइदा ॥६॥ (1065-7)

एह वैरी मित्र सभि कीतिआ नह मंगहि मंदा ॥ (1096-17)
एह संसा मो कउ अनदिनु बिआपै मो कउ को न कहै समझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (334-12)
एह सभि धड़े माइआ मोह पसारी ॥ (366-5)
एह सुमति गुरू ते पाई ॥ (99-8)
एहड़ तेहड़ छडि तू गुर का सबदु पछाणु ॥ (646-14)
एहा ओट आधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (1005-17)
एहा काइआ रोगि भरी बिनु सबदै दुखु हउमै रोगु न जाइ ॥ (588-15)
एहा पाई मू दातड़ी नित हिरदै रखा समालि ॥३॥ (761-10)
एहा भगति एहो तप ताउ ॥ (350-9)
एहा भगति चूकै अभिमानु ॥ (424-2)
एहा भगति जनु जीवत मरै ॥ (364-19)
एहा भगति सचे सिउ लिव लागै बिनु सेवा भगति न होई ॥ (506-12)
एहा भगति सार ततु ॥ (895-8)
एहा मति सबदु है सारु ॥ (1343-18)
एहा वेदन सोई जाणै अवरु कि जाणै कारी जीउ ॥१॥ (1016-5)
एहा संधिआ परवाणु है जितु हरि प्रभु मेरा चिति आवै ॥ (553-12)
एहा सकति सिवै घरि आवै जीवदिआ मरि रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (1257-15)
एहा सेवा चाकरी नामु वसै मनि आइ ॥ (34-14)
एहि जीअ जंत फूलहि हरि चितु लाइ ॥१॥ (1176-19)
एहि जीअ तेरे तू करता राम ॥ (578-8)
एहि थिती वार दूजा दोइ ॥ (843-2)
एहि भि दाति तेरी दातार ॥ (5-13)
एहि भूपति राजे न आखीअहि दूजै भाइ दुखु होई ॥ (1088-15)
एहि रतन जवेहर लाल कीम न पावही ॥ (1095-8)
एहि रस भोगण पातिसाहीआ ॥ (132-14)
एहि वैद जीअ का दुखु लाइण ॥ (962-12)
एहि सजण मिले न विछुड़हि जि आपि मेले करतारि ॥ (587-13)
एही करम धरम जप एही राम नाम निरमल है रीति ॥ रहाउ ॥ (716-6)
एहु अंतु न जाणै कोइ ॥ (5-9)
एहु अखरु तिनि आखिआ जिनि जगतु सभु उपाइआ ॥१॥ (306-12)
एहु अखुटु कदे न निखुटई खाइ खरचिउ पलै ॥ (1091-12)
एहु अहेरा कीनो दानु ॥ (1136-16)
एहु आकारु तेरा है धारा ॥ (1128-10)
एहु कुट्मबु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥ (918-10)
एहु खरचु अखुटु है गुरमुखि निबहै नालि ॥२८॥ (756-11)
एहु जगु जलता देखि कै भजि पए सतिगुर सरणा ॥ (70-1)
एहु जगु जलता देखि कै भजि पए हरि सरणाई राम ॥ (571-14)

एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥ (471-2)
एहु जमु किआ करे विचारा ॥ (1054-17)
एहु जीउ बहुते जनम भरमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ (465-2)
एहु जोगु न होवै जोगी जि कुट्मबु छोडि परभवणु करहि ॥ (909-1)
एहु जोबनु सासु है देह पुराणी ॥ (1025-18)
एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥ (919-5)
एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥ (921-10)
एहु निदोसां मारीऐ हम दोसां दा किआ हालु ॥३९॥ (1379-18)
एहु निधाना साधू पाहि ॥ (888-15)
एहु निधानु जपै वडभागी जीउ ॥ (217-13)
एहु निरतिकारी जनमि न आवै ॥३॥ (885-6)
एहु परपंचु खेलु कीआ सभु करतै हरि करतै सभ कल धारी ॥ (507-7)
एहु पिरमु पिआला खसम का जै भावै तै देइ ॥१३॥ (1378-12)
एहु ब्रहम बीचारु होवै दरि साचै अगो दे जनु नानकु आखि सुणावै ॥२॥ (653-7)
एहु भउजलु जगतु संसारु है गुरु बोहिथु नामि तराइ ॥ (1424-7)
एहु मनु अवगणि बाधिआ सहु देह सरीरै ॥ (1012-3)
एहु मनु दीजै संक न कीजै गुरमुखि तजि बहु माणा ॥ (777-11)
एहु मनु भै भाइ रंगाए ॥ (1066-9)
एहु मनु माइआ मोहिआ अउधू निकसै सबदि वीचारी ॥२४॥ (908-8)
एहु मनु मारिआ ना मरै जे लोचै सभु कोइ ॥ (1089-19)
एहु मनूआ सुंन समाधि लगावै जोती जोति मिलाई ॥१६॥ (910-14)
एहु मनो मूरखु लोभीआ लोभे लगा लोभानु ॥ (21-7)
एहु माइआ रंगु कसुमभ खिन महि लहि जावणा ॥ (645-4)
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥ (3-15)
एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥ (922-6)
एहु संसारु तिसै की कोठी जो पैसै सो गरबि जरै ॥६॥ (1016-1)
एहु सबदु सारु जिस नो लाए ॥ (1016-11)
एहु सभु किछु आवण जाणु है जेता है आकारु ॥ (516-17)
एहु समुंदु अथाहु महा बिखु भरिआ ॥ (1041-1)
एहु सरीरु सभ मूलु है माइआ ॥ (1065-13)
एहु सरीरु सरवरु है संतहु इसनानु करे लिव लाई ॥१३॥ (909-14)
एहु सरीरु है त्रै गुण धातु ॥ (1343-14)
एहु सलोकु आदि अंति पड़णा ॥ (262-7)
एहु सहसा मूले नाही भाउ लाए जनु कोइ ॥ (30-19)
एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥ (922-14)
एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥ (919-5)
एहु हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेखु ॥३५॥ (1379-14)

एहु हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ (921-12)
एहु हुकमु करि स्रिसटि उपाई ॥ (1261-6)
एहो रंगु एहो रस भोगा हरि चरणी मनु लागा राम ॥ (781-9)
एहो वरु एहा वडिआई इहु धनु होइ वडभागा राम ॥ (781-8)
ऐ जी कालु सदा सिर ऊपरि ठाढे जनमि जनमि वैराई ॥ (504-11)
ऐ जी किआ मागउ किछु रहै न दीसै इसु जग महि आइआ जाई ॥ (504-17)
ऐ जी खोटे ठउर नाही घरि बाहरि निंदक गति नही काई ॥ (505-3)
ऐ जी गुर की दाति न मेटै कोई मेरै ठाकुरि आपि दिवाई ॥ (505-4)
ऐ जी जनमि मरै आवै फुनि जावै बिनु गुर गति नही काई ॥ (504-7)
ऐ जी जपु तपु संजमु सचु अधार ॥ (503-16)
ऐ जी तूं आपे सभ किछु जाणदा बदति त्रिलोचनु रामईआ ॥५॥२॥ (92-13)
ऐ जी ना हम उतम नीच न मधिम हरि सरणागति हरि के लोग ॥ (504-18)
ऐ जी बहुते भेख करहि भिखिआ कउ केते उदरु भरन कै ताई ॥ (504-9)
ऐ जी भागि परे गुर सरणि तुम्हारी मै अवर न दूजी भाई ॥ (504-14)
ऐ जी राखहु पैज नाम अपुने की तुझ ही सिउ बनि आई ॥ (504-15)
ऐ जी सदा दइआलु दइआ करि रविआ गुरमति भ्रमनि चुकाई ॥ (505-7)
ऐ जी सरणि परे प्रभु बखसि मिलावै बिलम न अधूआ राई ॥ (505-5)
ऐ जीउ नामु दिड़हु नामे लिव लावहु सतिगुर टेक टिकाई ॥ (504-13)
ऐथै अगै हरि नामु सखाई ॥१॥ (230-9)
ऐथै आइआ सभु को जासी कूड़ि करहु अहंकारो ॥ (579-11)
ऐथै ओथै आगै पाछै एहु मेरा आधारु ॥२॥ (358-9)
ऐथै ओथै एहु अधारु ॥ (1335-4)
ऐथै ओथै तूंहै रखवाला ॥ (132-2)
ऐथै ओथै निबही नालि ॥ (355-4)
ऐथै ओथै निबही नालि ॥२॥ (878-9)
ऐथै ओथै मंनीअनि हरि नामि लगे वापारि ॥ (1415-18)
ऐथै ओथै मुकति है जिन राम पछाणे ॥ (1088-6)
ऐथै ओथै रखवाला ॥ (628-3)
ऐथै ओथै राखा प्रभु सोई ॥ (1031-19)
ऐथै ओथै सदा सुखु आगै ॥७॥ (415-3)
ऐथै ओथै सदा सुखु होइ ॥४॥ (1261-10)
ऐथै ओथै सुखु घणा जपि हरि हरि उतरे पारि ॥३॥ (1346-19)
ऐथै कमाणा सु अगै आइआ अंतकालि किआ कीजै हे ॥५॥ (1049-10)
ऐथै कमावै सो फलु पावै मनमुखि है पति खोई ॥ (584-18)
ऐथै गोइलड़ा दिन चारे ॥ (1023-1)
ऐथै घरि घरि जापदे आगै जुगि जुगि परगटु होइ ॥१॥ (426-19)
ऐथै तूंहै आगै आपे ॥ (107-17)

ऐथै दुख घणेरिआ अगै ठउर न ठाउ ॥१०६॥ (1383-14)
ऐथै दुखो दुखु कमावणा मुइआ नरकि निवासु ॥ (586-13)
ऐथै धंधु पिटाईऐ सचु लिखतु परवानु ॥ (21-13)
ऐथै नावहु भुलिआ फिरि हथु किथाऊ न पाइ ॥ (994-2)
ऐथै बूझै सु आपु पछाणै हरि प्रभु है तिसु केरा ॥३॥ (602-4)
ऐथै मिलनि वडिआईआ दरगह मोख दुआरु ॥ (586-9)
ऐथै मिलहि वडाईआ दरगहि पावहि थाउ ॥३॥ (48-1)
ऐथै रहहु सुहेलिआ अगै नालि चलै ॥ (320-1)
ऐथै सदा सुखु दरि सोभा होई ॥१॥ (161-15)
ऐथै साचे सु आगै साचे ॥ (116-15)
ऐथै साचे से दरि साचे नदरी नदरि सवारी हे ॥८॥ (1050-14)
ऐथै सुखदाता मनि वसै अंति होइ सखाई ॥ (1087-13)
ऐथै सुखु न आगै होइ ॥ (842-19)
ऐथै सुखु मुखु उजला इको नामु धिआइ जीउ ॥ (760-16)
ऐथै सुखु वडिआईआ दरगह मोख दुआर ॥ (516-12)
ऐब तनि चिकड़ो इहु मनु मीडको कमल की सार नही मूलि पाई ॥ (24-3)
ऐसा अधमु अजाति नामदेउ तउ सरनागति आईअले ॥२॥२॥ (988-15)
ऐसा अम्रितु अंतरि डीठा ॥ (1331-15)
ऐसा इकु तेरा खेलु बनिआ है सभ महि एकु समाना ॥१॥ (797-9)
ऐसा कमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥ (918-11)
ऐसा करहु बीचारु गिआनी ॥ (385-6)
ऐसा कीरतनु करि मन मेरे ॥ (236-4)
ऐसा को वडभागी आइआ ॥ (1077-14)
ऐसा कोइ जि दुबिधा मारि गवावै ॥ (237-19)
ऐसा कोई दासु होइ ताहि मिलै भगवानु ॥१४६॥ (1372-6)
ऐसा कोई भेटै संतु जितु हरि हरे हरि धिआईऐ ॥१॥ (1005-16)
ऐसा गरबु बुरा संसारै ॥ (224-13)
ऐसा गिआनु कथै बनवारी ॥ (327-5)
ऐसा गिआनु जपहु मन मेरे ॥ (728-11)
ऐसा गिआनु जपहु मेरे मीता ॥१॥ रहाउ ॥ (331-11)
ऐसा गिआनु पदारथु नामु ॥ (831-10)
ऐसा गिआनु बिचारु मना ॥ (1161-1)
ऐसा गिआनु बीचारै कोई ॥ (879-1)
ऐसा गिआनु सुनहु अभ मोरे ॥ (411-11)
ऐसा गुरमति रमतु सरीरा ॥ (353-19)
ऐसा गुरु पाईऐ वडभागी ॥ (1339-7)
ऐसा गुरु वडभागी पाइआ ॥१॥ (803-19)

ऐसा गुरु वडभागी पाईऐ जितु मिलिऐ प्रभु जापै राम ॥ (780-6)
ऐसा जगु देखिआ जूआरी ॥ (222-11)
ऐसा जापु जपउ जपमाली ॥ (1342-14)
ऐसा जोगी जुगति बीचारै ॥ (223-9)
ऐसा जोगी नउ निधि पावै ॥ (477-10)
ऐसा जोगी वडभागी भेटै माइआ के बंधन काटै ॥ (208-6)
ऐसा जोगु कमावहु जोगी ॥ (970-15)
ऐसा तेरा दासु है जिउ धरनी महि खेह ॥१४७॥ (1372-7)
ऐसा तैं जगु भरमि लाइआ ॥ (92-1)
ऐसा दाता सतिगुरु कहीऐ ॥१॥ (183-17)
ऐसा दारू खाहि गवार ॥ (1257-1)
ऐसा दारू लगै न बीर ॥१॥ रहाउ ॥ (1256-15)
ऐसा दारू लोड़ि लहु जितु वंञै रोगा घाणि ॥ (1279-15)
ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥ (878-7)
ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥३॥ (878-10)
ऐसा दीवा बाले कोइ ॥ (878-12)
ऐसा देखि बिमोहित होए ॥ (370-6)
ऐसा धनु दीआ सुखदातै निखुटि न कब ही जाई ॥ (608-7)
ऐसा नाइकु रामु हमारा ॥ (333-13)
ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥ (264-10)
ऐसा नामु निरंजन देउ ॥ (796-1)
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ (3-11)
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ (3-6)
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ (3-7)
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ (3-9)
ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥ (264-7)
ऐसा नामु रतनु निधि मेरै ॥ (1330-4)
ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुंनि पदारथु पाइआ ॥ (659-16)
ऐसा निधानु देहु मो कउ हरि जन चलै हमारै साथे ॥३॥ (209-5)
ऐसा पूरा गुरदेउ सहाई ॥ (900-14)
ऐसा प्रभु छोडि करहि अन सेवा कवन बिखिआ रस माता ॥१॥ (1138-16)
ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥ (270-15)
ऐसा प्रभु मिलिआ सुखदाता विछुड़ि न कत ही जासा हे ॥१४॥ (1073-12)
ऐसा बणजु करहु ग्रिह भीतरि जितु उतरै भूख पिआसा हे ॥४॥ (1072-17)
ऐसा बलु छलु तिन कउ दीआ हुकमी ठाकि रहाइआ ॥६॥ (1345-17)
ऐसा बाजी सैसारु न चेतै हरि नामा ॥ (723-10)
ऐसा बूझहु भरमि न भूलहु कोइ ॥४॥३॥ (1128-12)

ऐसा ब्राहमणु कही न सीझै ॥३॥ (372-18)
ऐसा भगउती उतमु होइ ॥ (88-14)
ऐसा भगतु वरन महि होइ ॥ (721-14)
ऐसा मीतु करहु सभु कोइ ॥ (195-14)
ऐसा मेरा ठाकुरु गहिर गमभीरु ॥ (905-15)
ऐसा मेरा रामु रहिआ भरपूरि ॥ (165-8)
ऐसा रसु अम्रितु मनि चाखिआ त्रिपति रहे आघाई ॥ (883-19)
ऐसा राम भगतु जनु होई ॥ (225-16)
ऐसा रामु दीन दुनी सहाई ॥ (200-15)
ऐसा लाला मेरे लाल को सुणि खसम हमारे ॥ (1010-18)
ऐसा वरतु रहीजै पाडे होर बहुतु सिख किआ दीजै ॥२॥ (1245-14)
ऐसा संतु साधु जिन पाइआ ते वड पुरख वडानी ॥ (667-10)
ऐसा सतगुरु लोड़ि लहु जिदू पाईऐ सचु सोइ ॥ (30-17)
ऐसा सतिगुरु जे मिलै ता सहजे लए मिलाइ ॥३॥ (57-10)
ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिस नो सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥ (921-6)
ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥ (509-17)
ऐसा सतिगुरु लोड़ि लहु जिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ (1089-10)
ऐसा सतिगुरु सेवीऐ मना जितु सेविऐ गोविद प्रीति ऊपजै अवर विसरि सभ जाइ ॥ (490-3)
ऐसा सतिगुरु सोई पाए जिसु धुरि मसतकि हरि लिखि पाइआ ॥ (513-6)
ऐसा सम्रथु हरि जीउ आपि ॥ (900-2)
ऐसा साचा तूं एको जाणु ॥ (412-14)
ऐसा साहु सराफी करै ॥ (413-17)
ऐसा सिमरनु करि मन माहि ॥ (971-8)
ऐसा सीगारु बणाइ तू मैला कदे न होवई अहिनिसि लागै भाउ ॥ (785-15)
ऐसा सीगारु मेरे प्रभ भावै हरि लागै पिआरा प्रिम का ॥ (650-18)
ऐसा हमरा सखा सहाई ॥ (356-12)
ऐसा हरि धनु संचीऐ भाई ॥ (375-13)
ऐसा हरि नामु मनि चिति निति धिआवहु जन नानक जो अंती अउसरि लए छडाइआ ॥४॥७॥१३॥५१॥ (168-9)
ऐसा हरि रसु रमहु सभु कोइ ॥ (196-11)
ऐसा हरि सेती मनु राता ॥ (1164-17)
ऐसा हरि सेवीऐ नित धिआईऐ जो खिन महि किलविख सभि करे बिनासा ॥ (860-3)
ऐसा हिंदू वेखहु कोइ ॥ (951-16)
ऐसी इसत्री इक रामि उपाई ॥ (394-14)
ऐसी कउन बिधे दरसन परसना ॥१॥ रहाउ ॥ (1305-1)
ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥ (469-18)
ऐसी किंगुरी वजाइ जोगी ॥ (908-12)

ऐसी किरपा करहु प्रभ नानक दास दसाइ ॥१॥ (254-18)
ऐसी किरपा मोहि करहु ॥ (828-4)
ऐसी क्रिपा करहु प्रभ मेरे ॥ (806-8)
ऐसी गुरमति पाईअले ॥ (377-6)
ऐसी जानि पाई ॥ (1005-10)
ऐसी जानी संत जनी ॥ (888-12)
ऐसी जुगति जोग कउ पाले ॥ (877-15)
ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥६॥ (275-3)
ऐसी ठगउरी पाइ भुलावै मनि सभ कै लागै मीठी ॥२॥ (673-15)
ऐसी तेरे दरसन की सोभ अति अपार प्रिअ अमोघ तैसे ही संगि संत बने ॥ (1271-18)
ऐसी दरगह मिलै सजाइ ॥ (953-19)
ऐसी दरगह साचा सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (878-14)
ऐसी दाति तेरी प्रभ मेरे कारज सगल सवारे ॥३॥ (383-5)
ऐसी दीखिआ जन सिउ मंगा ॥ (828-8)
ऐसी द्रिड़ता ता कै होइ ॥ (236-15)
ऐसी नामे प्रीति नराइण ॥१॥ (1164-13)
ऐसी नामे प्रीति मुरारी ॥२॥ (1164-15)
ऐसी निरति नरक निवारै नानक गुरमुखि जागै ॥४॥४॥४३॥ (381-14)
ऐसी पेखी नेत्र महि पूरे गुर परसादि ॥ (810-4)
ऐसी प्रीति करहु मन मेरे ॥ (807-6)
ऐसी प्रीति गोविंद सिउ लागी ॥ (198-10)
ऐसी बुधि समाचरी घट माहि तिआगी ॥२॥ (857-12)
ऐसी बेदन उपजि खरी भई वा का अउखधु नाही ॥२॥ (659-14)
ऐसी भगति गोविंद की कीटि हसती जीता ॥ (809-18)
ऐसी भवरा बासु ले ॥ (1190-10)
ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुधु धिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (673-8)
ऐसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥१॥ (555-4)
ऐसी मांगु गोबिद ते ॥ (1298-18)
ऐसी रवत रवहु मन मेरे हरि चरणी चितु लाई ॥ (1232-9)
ऐसी रहत रहउ हरि पासा ॥ (327-8)
ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥ (1106-12)
ऐसी संचि जु बिनसत नाही ॥ (253-6)
ऐसी सुंदरि मन कउ मोहै ॥ (392-8)
ऐसी सेव दरगह सुखु पावउ ॥३॥ (1158-18)
ऐसी सेवकु सेवा करै ॥ (661-13)
ऐसी सोभा जनै की जेवडु हरि परतापै ॥ (1097-6)
ऐसी होइ परी ॥ (1230-17)

ऐसे कनिक कामनी बाधिओ मोह ॥१॥ (1252-10)
ऐसे काहे भूलि परे ॥ (823-11)
ऐसे गड़ महि ऐठि हठीलो फूलि फूलि किआ पावत हे ॥२॥ (821-19)
ऐसे गिआन प्रगटिआ पुरखोतम कहु कबीर रंगि राता ॥ (92-18)
ऐसे गिआनी बूझहु कोइ ॥ (1277-14)
ऐसे गुनह अछादिओ प्रानी ॥२॥ (376-11)
ऐसे गुर कउ बलि बलि जाईऐ आपि मुकतु मोहि तारै ॥१॥ रहाउ ॥ (1301-17)
ऐसे घर हम बहुतु बसाए ॥ (325-19)
ऐसे जन विरले जग अंदरि परखि खजानै पाइआ ॥ (1345-18)
ऐसे जन विरले संसारे ॥ (1039-7)
ऐसे झूठि मुठे संसारा ॥ (1330-16)
ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ॥३॥१॥ (1124-17)
ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥ (267-4)
ऐसे नामे प्रीति मुरारी ॥४॥ (874-4)
ऐसे पितर तुमारे कहीअहि आपन कहिआ न लेही ॥२॥ (332-13)
ऐसे प्राछत संतसंगि बिनास ॥ (914-17)
ऐसे प्रेम भगति वीचारी ॥ (414-6)
ऐसे ब्राहमण डूबे भाई ॥ (372-15)
ऐसे भगत मिलहि जन नानक तिन जमु किआ करै ॥४॥४॥ (877-13)
ऐसे भरमि भुले संसारा ॥ (676-9)
ऐसे मरने जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥२९॥ (1366-1)
ऐसे मरहु जि बहुरि न मरना ॥२॥ (327-6)
ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ ॥१॥ (346-6)
ऐसे राखनहार दइआल ॥ (914-12)
ऐसे राम नामा बिनु बापुरो नामा ॥१॥ रहाउ ॥ (874-2)
ऐसे रामा ऐसे हेरउ ॥ (873-13)
ऐसे रे मन पाइ कै आपु गवाइ कै करि साधन सिउ संगु ॥ (1271-17)
ऐसे लालनु पाइओ री सखी ॥१॥ रहाउ ॥ (409-9)
ऐसे लोगन सिउ किआ कहीऐ ॥ (332-4)
ऐसे संत न मो कउ भावहि ॥ (476-2)
ऐसे संत भेटहि वडभागी नानक तिन कै सद कुरबान ॥२॥३९॥५२॥ (1151-10)
ऐसे संत मिलहि मेरे भाई हम जन के धोवह पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (368-14)
ऐसे हरि के लोग अतीता ॥५॥ (1189-9)
ऐसे ही ठगदेउ बखानै ॥२॥ (485-18)
ऐसै रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥ (722-15)
ऐसो अचरजु देखिओ कबीर ॥ (326-4)
ऐसो अमरु मिलिओ भगतन कउ राचि रहे रंगि गिआनी ॥१॥ (711-13)

ऐसो इहु संसारु पेखना रहनु न कोऊ पईहै रे ॥ (855-7)
ऐसो गिआनु बिरलो ई पाए ॥ (803-11)
ऐसो गुनु मेरो प्रभ जी कीन ॥ (716-2)
ऐसो जगु मोहि गुरि दिखाइओ तउ एक कीरति गाइआ ॥ (408-10)
ऐसो जनु बिरलो है सेवकु जो तत जोग कउ बेतै ॥१॥ रहाउ ॥ (1302-6)
ऐसो जानि भए मनि आनद आन न बीओ करता ॥ (823-5)
ऐसो तिआगी विरला कोइ ॥ (1147-8)
ऐसो दानु देहु जी संतहु जात जीउ बलिहारि ॥ (1307-3)
ऐसो दासु मिलै सुखु होई ॥ (224-5)
ऐसो धणी गुविंदु हमारा ॥ (1156-11)
ऐसो परचउ पाइओ ॥ (205-7)
ऐसो प्रभु मन माहि धिआइ ॥ (863-10)
ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अंतर सभ ठांई हो ॥ (657-8)
ऐसो भाउ बिदर को देखिओ ओहु गरीबु मोहि भावै ॥१॥ रहाउ ॥ (1105-1)
ऐसो मिलिओ मनोहरु प्रीतमु सुख पाए मुख मंगा ॥१॥ (1210-7)
ऐसो राजु न कितै काजि जितु नह त्रिपताए ॥२॥ (745-9)
ऐसो राम राइ अंतरजामी ॥ (1318-17)
ऐसो रे हरि रसु मीठा ॥ (886-19)
ऐसो समरथु वरनि न साकउ ता की उपमा जात न कहिओ री ॥२॥ (384-3)
ऐसो सहाई हरि को नाम ॥ (986-19)
ऐसो हरि रसु बरनि न साकउ गुरि पूरै मेरी उलटि धरी ॥१॥ (823-1)
ऐसो हरि संगे मन मोह ॥ (1272-13)
ऐसो हीरा निरमल नाम ॥ (1142-16)
ऐसो है रे खसमु हमारा ॥ (212-8)
ओं नमो भगवंत गुसाई ॥ (897-1)
ओअं गुरमुखि कीओ अकारा ॥ (250-12)
ओअं प्रिअ प्रीति चीति पहिलरीआ ॥ (1213-6)
ओअं साध सतिगुर नमसकारं ॥ (250-8)
ओअंकार आदि मै जाना ॥ (340-7)
ओअंकार लखै जउ कोई ॥ (340-8)
ओअंकारि उतपाती ॥ (1003-17)
ओअंकारि एक धुनि एकै एकै रागु अलापै ॥ (885-1)
ओअंकारि एको रवि रहिआ सभु एकस माहि समावैगो ॥ (1310-8)
ओअंकारि गुरमुखि तरे ॥ (930-1)
ओअंकारि बेद निरमए ॥ (929-18)
ओअंकारि ब्रहमा उतपति ॥ (929-18)
ओअंकारि सबदि उधरे ॥ (930-1)

ओअंकारि सभ स्रिसटि उपाई ॥ (1061-16)
ओअंकारि सैल जुग भए ॥ (929-18)
ओअंकारु कीआ जिनि चिति ॥ (929-18)
ओइ अंदरहु बाहरहु निरमले सचे सचि समाइ ॥ (28-12)
ओइ अगै कुसटी गुर के फिटके जि ओसु मिलै तिसु कुसटु उठाही ॥ (309-1)
ओइ अगै पिछै बहि मुहु छपाइनि न रलनी खोटेआरे ॥ (312-9)
ओइ अपणा बीजिआ आपि खाहि ॥ (1183-15)
ओइ अम्रित भरे भरपूर हहि ओना तिलु न तमाइ ॥८॥ (755-9)
ओइ अम्रितु पीवहि सदा सदा सचै नामि पिआरि ॥१॥ (28-7)
ओइ आपणै सुआइ आइ बहि गला करहि ओना मारे जमु जंदारु ॥ (950-17)
ओइ आपि छुटे परवार सिउ तिन पिछै सभु जगतु छुटीवे ॥३॥ (83-17)
ओइ आपि छुटे परवार सिउ सभु जगतु छडाइआ ॥८॥ (725-18)
ओइ आपि डुबे पर निंदका सगले कुल डोबेनि ॥ (951-9)
ओइ आपि तरे सभ कुट्मब सिउ तिन पिछै सभु जगतु छडाहि ॥ (310-4)
ओइ आपि तरे स्रिसटि सभ तारी सभु कुलु भी पारि पइआ ॥३॥ (1264-18)
ओइ आपि दुखी सुखु कबहू न पावहि जनमि मरहि मरि जाहि ॥ (652-17)
ओइ आवहि जाहि भवाईअहि बहु जोनी दुरगंध भाखु ॥३॥ (997-13)
ओइ किरपा करि कै मेलिअनु नानक हरि पासा ॥२६॥ (1247-13)
ओइ खसमै कै ग्रिहि उन दूख सहाम ॥ (179-8)
ओइ जनमि न मरहि न आवहि जाहि ॥ (943-18)
ओइ जपि जपि पिआरा जीवदे हरि नामु समाले ॥७॥ (725-17)
ओइ जम दरि बधे मारीअहि हरि दरगह मिलै सजाइ ॥३॥ (996-7)
ओइ जागत रहहि न सूते दीसहि ॥ (1025-16)
ओइ जि आखहि सु तूंहै जाणहि तिना भि तेरी सार ॥ (466-4)
ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥ (470-12)
ओइ जीवंदे विछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि ॥१॥ (1102-3)
ओइ जु दीसहि अ्मबरि तारे ॥ (329-3)
ओइ जु बीच हम तुम कछु होते तिन की बात बिलानी ॥ (671-19)
ओइ जु सेवहि सबदु सारु गाखड़ी बिखम कार ते नर भव उतारि कीए निरभार ॥ (1391-7)
ओइ जेहा चितवहि नित तेहा पाइनि ओइ तेहो जेहे दयि वजाए ॥ (303-2)
ओइ जेहै वणजि हरि लाइआ फलु तेहा तिन पाइआ ॥३॥ (165-16)
ओइ थाउ कुथाउ न जाणनी उन अंतरि लोभु विकारु ॥ (950-16)
ओइ दरगह पैधे सतिगुरू छडाए ॥ (1028-15)
ओइ दाते दुख काटनहार ॥ (285-3)
ओइ दिन पहर मूरत पल कैसे ओइ पल घरी किहारी ॥ (1120-4)
ओइ धरमि रलाए ना रलन्हि ओना अंदरि कूड़ु सुआउ ॥ (511-13)
ओइ निरंजनु कैसे पाहि ॥३॥ (1169-9)

ओइ परदेसीआ हां ॥ (410-19)
ओइ परम पुरख देवाधि देव ॥ (1194-12)
ओइ पापी सदा फिरहि अपराधी मुखहु अपरस कहावहि ॥ (476-4)
ओइ पुरख प्राणी धंनि जन हहि उपदेसु करहि परउपकारिआ ॥ (311-16)
ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि मंदभागी मूड़ अकरमा ॥३॥ (799-10)
ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि मरि जमहि आवै जाइ ॥ (996-7)
ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि विचि विसटा करि विकराल ॥ (40-8)
ओइ बाहुड़ि जोनि न आवनी फिरि होहि न बिनासा ॥ (1247-12)
ओइ बिखादी दोखीआ ते गुर ते हूटे ॥ (400-15)
ओइ बैसहि तखति सु सबदु वीचारे ॥ (1026-12)
ओइ बोले किसै न भावनी मुह काले सतिगुर ते चुके ॥८॥ (304-6)
ओइ भाणै चलनि आपणै नित झूठो झूठु बोलेनि ॥ (951-8)
ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि ॥११॥ (1365-2)
ओइ भी जानउ कितै न लेखै ॥ (373-14)
ओइ भी लागे काढु सवेरा ॥२॥ (794-6)
ओइ भुलाए किसै दे न भुलन्ही सचु जाणनि सोई ॥७॥ (425-9)
ओइ मंगदे फिरहि सभ जगत महि कोई मुहि थुक न तिन कउ पाहि ॥ (852-18)
ओइ मनमुख मूड़ अगिआनी कहीअहि तिन मसतकि भागु मंदेरा ॥३॥ (711-8)
ओइ माणस जूनि न आखीअनि पसू ढोर गावार ॥ (1418-14)
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥१॥ (654-5)
ओइ लोचनि ओना गुणा नो ओइ अहंकारि सड़ंदे ॥ (316-19)
ओइ लोचनि ओना गुणै नो ओइ अहंकारि सड़ंदे ॥ (306-17)
ओइ वलु छलु करि झति कढदे फिरि जाइ बहहि कूड़िआरा पासि ॥ (314-18)
ओइ विचारे किआ करहि जा भाग धुरि मंदे ॥ (306-17)
ओइ वेचारे किआ करहि जां भाग धुरि मंदे ॥ (316-19)
ओइ वेपरवाह न बोलनी हउ मलि मलि धोवा तिन पाइ ॥१॥ (41-10)
ओइ सतिगुर आगै ना निवहि ओना अंतरि क्रोधु बलाइ ॥३॥ (41-14)
ओइ सदा अनंदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि ॥ (1418-7)
ओइ सदा सदा जन जीवते जो हरि चरणी चितु लाहि ॥ (508-16)
ओइ साजन ओइ मीत पिआरे ॥ (739-17)
ओइ सुख का सिउ बरनि सुनावत ॥ (1205-4)
ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥ (282-8)
ओइ सेवनि सम्रिथु आपणा बिनसै सभु मंदा ॥ (319-6)
ओइ हमारे साजना हम उन की रेन ॥ (813-4)
ओइ हरि के संत न आखीअहि बानारसि के ठग ॥१॥ (476-2)
ओइ हलति पलति जन भए सुहेले हरि राखि लीए रखनहारि ॥ (1115-13)
ओइ हाजरु मिठा बोलदे बाहरि विसु कढहि मुखि घोले ॥ (306-4)

ओछी भगति कैसे उतरसि पारी ॥४॥ (326-11)
ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥ (524-16)
ओछे तप करि बाहुरि ऐबो ॥१॥ (692-8)
ओट गही अब साध संगारे ॥२॥ (740-7)
ओट गही गोपाल दइआल क्रिपा निधे ॥ (456-15)
ओट गही जगत पित सरणाइआ ॥ (1083-6)
ओट गही संतह दरि आइआ ॥ (283-9)
ओट गही सुआमी समरथह नानक दास सदा बलिहारी ॥९॥ (1389-3)
ओट गही हरि चरण निवासे भए पवित्र सरीरा ॥ (1107-11)
ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥ (135-15)
ओट तेरी जगजीवना मेरे ठाकुर अगम अगाधि ॥२॥ (218-6)
ओट लैहु नाराइणै दीन दुनीआ झलै ॥ (320-2)
ओट सताणी प्रभ जीउ मेरै ॥ (1214-5)
ओटि गही निरभउ पदु पाईऐ ॥ (395-12)
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥ (5-3)
ओड़कु आइआ तिन साहिआ वणजारिआ मित्रा जरु जरवाणा कंनि ॥ (76-7)
ओड़ु न कथनै सिफति सजाई ॥ (1033-6)
ओढै बसत्र काजर महि परिआ बहुरि बहुरि फिरि झारै ॥२॥ (1205-12)
ओति पोति आपन संगि राचु ॥ (294-16)
ओति पोति जगु रहिआ परोई ॥ (841-2)
ओति पोति जन हरि रसि राते ॥ (265-3)
ओति पोति जनु हरि सिउ राता ॥२॥ (198-12)
ओति पोति नानक संगि बसेरा ॥४॥५॥११॥ (739-12)
ओति पोति नानक संगि रविआ जिउ माता बाल गोपाला ॥४॥७॥ (672-13)
ओति पोति निरंकार घटि घटि मउलीए ॥ (518-9)
ओति पोति भगतन संगानि ॥ (892-9)
ओति पोति भगतन संगि राचा ॥ (1077-1)
ओति पोति मिलि जोति नानक कछू दुखु न डंडली ॥२॥२॥५॥ (1322-10)
ओति पोति मिलिओ भगतन कउ जन सिउ परदा लाहिओ ॥३॥ (1299-8)
ओति पोति रविआ रूप रंग ॥ (287-19)
ओति पोति सेवक संगि राता ॥ (101-16)
ओतु मती सालाहणा सचु नामु गुणतासु ॥१॥ (17-4)
ओतै साथि मनुखु है फाथा माइआ जालि ॥ (43-4)
ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ ॥६॥ (124-14)
ओथै अम्रितु वंडीऐ करमी होइ पसाउ ॥ (146-11)
ओथै अम्रितु वंडीऐ सुखीआ हरि करणे ॥ (320-6)
ओथै खोटे सटीअहि खरे कीचहि साबासि ॥ (146-13)

ओथै तेरी रख अगनी उदर माहि ॥ (962-1)
ओथै दिहु ऐथै सभ राति ॥२॥ (1257-3)
ओथै पापु पुंनु बीचारीऐ कूड़ै घटै रासि ॥ (146-13)
ओथै वेद पुरान न सासता आपे हरि नरहरि ॥ (555-18)
ओथै सचु वरतदा कूड़िआरा चित उदासि ॥ (314-17)
ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥ (463-16)
ओथै सतिगुरु बेली होवै कढि लए अंती वार ॥ (1281-2)
ओथै सोगु विजोगु न विआपै सहजे सहजि समाइआ ॥१०॥ (1068-14)
ओथै हटु न चलई ना को किरस करेइ ॥ (955-10)
ओथै हथु न अपड़ै कूक न सुणीऐ पुकार ॥ (1281-1)
ओनम अखर सुणहु बीचारु ॥ (930-1)
ओनम अखरु त्रिभवण सारु ॥१॥ (930-1)
ओना अंतरि गिआनु न धिआनु है हरि सउ प्रीति न पिआरु ॥ (1418-14)
ओना अंदरि नामु निधानु है नामो परगटु होइ ॥ (17-7)
ओना अंदरि सचु मुख उजले सचु बोलनि सचे तेरा ताणु ॥ (307-11)
ओना आपणी अंदरि सुधि नही गुर बचनि न करहि विसासु ॥ (1415-3)
ओना इको नामु अधारु इका उन भतिआ ॥ (958-14)
ओना कउ धुरि भगति खजाना बखसिआ मेटि न सकै कोइ ॥ (589-2)
ओना की रीस करे सु विगुचै जिन हरि प्रभु है रखवारा ॥५॥ (638-3)
ओना के मुख सद उजले ओना नो सभु जगतु करे नमसकारु ॥१॥ (91-10)
ओना खसमै कै दरि मुख उजले सचै सबदि सुहाइआ ॥१६॥ (145-17)
ओना दा आखिआ को ना सुणै नित हउले हउलि मराही ॥ (308-18)
ओना दा भखु सु ओथै नाही जाइ कूड़ु लहनि भेडारे ॥ (312-10)
ओना दी आपि पति रखसी मेरा पिआरा सरणागति पए गुर दुआरे ॥ (1249-17)
ओना दी सोभा जुगि जुगि होई कोइ न मेटणहारा ॥ (638-8)
ओना परख न आवई अढु न पलै पाइ ॥ (1249-10)
ओना पासि दुआसि न भिटीऐ जिन अंतरि क्रोधु चंडाल ॥३॥ (40-9)
ओना पिंडु न पतलि किरिआ न दीवा मुए किथाऊ पाही ॥ (149-17)
ओना पिआरा रबु ओनाहा जोगई ॥ (958-14)
ओना पिछै जगु भुंचै भोगई ॥ (958-14)
ओना मैलु पतंगु न लगई जि चलनि सतिगुर भाइ ॥ (1418-10)
ओना रिजकु न पइओ ओथै ओन्हा होरो खाणा ॥ (956-13)
ओना वाहु वाहु न भावई दुखे दुखि विहाइ ॥ (515-3)
ओना विचि आपि वरतदा करणा किछू न जाइ ॥३॥ (994-14)
ओना सचु न भावई दुख ही माहि पचंनि ॥१८॥ (756-1)
ओना सोगु विजोगु न विआपई हरि भाणा भाइआ ॥ (1249-7)
ओना हलति पलति मुख उजले ओइ हरि दरगह सची पैनाए ॥ (302-19)

ओनि छडे लालच दुनी के अंतरि लिव लाई ॥ (1100-3)
ओनि वैरी मित्र सम कीतिआ सभ नालि सुभाई ॥ (1100-4)
ओनि सतिगुरु सेवि परम पदु पाइआ उधरिआ सगल बिस्वान ॥४॥ (1203-3)
ओनि हरि नामा धनु संचिआ सभ तिखा बुझाई ॥ (1100-2)
ओनि हलतु पलतु सभु गवाइआ लाहा मूलु सभु खोइआ ॥ (309-12)
ओनी चलणु सदा निहालिआ हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥ (42-1)
ओनी छडिआ माइआ सुआवड़ा धनु संचिआ नामु अपारु ॥ (959-19)
ओन्हा अंदरि होरु मुखि होरु है बिखु माइआ नो झखि मरदे कड़ीऐ ॥९॥ (304-18)
ओन्ही तुपक ताणि चलाई ओन्ही हसति चिड़ाई ॥ (418-2)
ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥ (467-1)
ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ॥ (467-1)
ओपति करता परलउ करता ॥ (862-5)
ओपति खपति न आवण जाणी ॥ (1035-11)
ओपति खपति सुखा दुख दीए ॥ (1037-19)
ओपति परलउ खिन महि करता ॥ (387-2)
ओपति परलउ निमख मझार ॥ (862-17)
ओपति परलउ प्रभ ते होवै इह बीचारी हरि जनी ॥२॥ (1186-5)
ओपावा सिरि ओपाउ है नाउ परापति होइ ॥ (851-9)
ओरा गरि पानी भइआ जाइ मिलिओ ढलि कूलि ॥१७७॥ (1374-1)
ओरै कछू न किनहू कीआ ॥ (261-1)
ओरै कहहु किनै कछु करा ॥ (294-15)
ओस दै आखिऐ कोई न लगै नित ओजाड़ी पूकारे खला ॥ (308-11)
ओस नो किहु पोहि न सकी जिस नउ आपणी लिव लावए ॥ (920-19)
ओस नो सुखु न उपजै भावै सउ गेड़ा आवउ जाउ ॥ (591-9)
ओसु अंतरि नामु निधानु है नामो परवरिआ ॥ (87-4)
ओसु अंदरि कूड़ु कूड़ो करि बुझै अणहोदे झगड़े दयि ओस दै गलि पाइआ ॥ (303-17)
ओसु अगै पिछै ढोई नाही जिसु अंदरि निंदा मुहि अ्मबु पइआ ॥ (307-7)
ओसु अनंदु त हम सद केला ॥२॥ (391-3)
ओसु अरलु बरलु मुहहु निकलै नित झगू सुटदा मुआ ॥ (653-5)
ओसु तिलु न तमाइ वेपरवाहा ॥ (1062-16)
ओसु पिछै वजै फकड़ी मुहु काला आगै भइआ ॥ (653-4)
ओसु बिना कोऊ मुखु नही जोरै ॥१॥ (390-14)
ओसु बिना तूं छुटकी रोलि ॥२॥ (390-16)
ओसु बिना तूं होई है माटी ॥३॥ (390-18)
ओसु सदा सदा घरि अनंदु है हरि सखा सहाई ॥ (1100-3)
ओसु सीलु न संजमु सदा झूठु बोलै मनमुखि करम खुआरु ॥ (786-12)
ओह आलु पतालु मुहहु बोलदे जिउ पीतै मदि मतवाले ॥१९॥ (311-11)

ओह कुचजी कुलखणी परहरि छोडी भतारि ॥ (516-10)
ओह जि दिसै खूहड़ी कउन लाजु वहारी ॥ (333-18)
ओह जोहै बहु परकार सुंदरि मोहनी ॥ (847-5)
ओह नित सुनै हरि नाम जसु उह पाप बिसाहन जाइ ॥५२॥ (1367-5)
ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥ (268-13)
ओह बिनसै ओइ भसमै ढेरी ॥१॥ (179-7)
ओह बेरा नह बूझीऐ जउ आइ परै जम फंधु ॥ (254-3)
ओह बेला कउ हउ बलि जाउ ॥ (191-16)
ओह बेला कछु चीति न आवै ॥ (178-12)
ओह मांग सवारै बिखै कउ ओह सिमरै हरि नामु ॥१६०॥ (1373-2)
ओह रलाई किसै दी ना रलै जिसु रावे सिरजनहारु ॥ (786-14)
ओह राखै चीतु पीछै बिचि बचरे नित हिरदै सारि समाली ॥ (168-5)
ओह वेला हथि न आवई अंति गइआ पछुताइ ॥ (28-2)
ओह वेला हथि न आवई फिरि सतिगुर लगहि पाइ ॥ (314-12)
ओह वेला हथि न आवै फिरि पछुतावणा ॥६॥ (645-5)
ओह सफल सदा सुखदाई ॥ (628-18)
ओहा पैरि लोहारी ॥ (1004-2)
ओहा प्रेम पिरी ॥१॥ रहाउ ॥ (406-18)
ओहि अंदरहु बाहरहु निरमले सचै नाइ समाइआ ॥३॥ (139-9)
ओहि घरि घरि फिरहि कुसुध मनि जिउ धरकट नारी ॥ (651-15)
ओहि जा आपि डुबे तुम कहा तरणहारु ॥२॥ (556-10)
ओही ओही किआ करहु है होसी सोई ॥ (418-9)
ओही पीओ ओही खीओ गुरहि दीओ दानु कीओ ॥ (214-2)
ओही भाठी ओही पोचा उही पिआरो उही रूचा ॥ (214-2)
ओहु अउहाणी कदे नाहि ना आवै ना जाइ ॥ (509-4)
ओहु अगमु अगोचरु एकंकारु ॥५॥ (1188-17)
ओहु अगमु अगोचरु सबदि सुधि होवै ॥ (120-5)
ओहु अथाह इहु थिरु न रहावा ॥ (341-11)
ओहु अपर्मपरु करणै जोगु ॥११॥ (840-2)
ओहु अबिनासी अगम अपार ॥ (394-9)
ओहु अबिनासी अलख अभेवा ॥२॥ (227-4)
ओहु अबिनासी पुरखु है सभ महि रहिआ समाइ ॥१३॥ (759-9)
ओहु अबिनासी बिनसत नाही ॥ (736-15)
ओहु अबिनासी राइआ ॥ (206-5)
ओहु अलखु न लखीऐ कहहु काइ ॥ (1169-19)
ओहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु ॥३॥ (397-2)
ओहु आदि जुगादी राम सनेही ॥ (1027-19)

ओहु आपि छुटा कुट्मब सिउ दे हरि हरि नामु सभ स्रिसटि छडाए ॥ (140-4)
ओहु आपि तरिआ कुट्मब सिउ सभु जगतु तराई ॥ (1100-2)
ओहु आपे तखति बहै सचिआरा ॥ (1026-10)
ओहु आवै जाइ भवाईऐ सुपनै सुखु न कोइ ॥ (316-15)
ओहु किउ मनहु विसारीऐ हरि रखीऐ हिरदै धारि ॥३॥ (233-14)
ओहु खिन महि रुलता खाकू नालि ॥३॥ (868-11)
ओहु गल फरोसी करे बहुतेरी ओस दा बोलिआ किसै न भाइआ ॥ (303-17)
ओहु गुर कै सबदि सदा रंग माणै ॥ (1074-8)
ओहु गुरमुखि जापै तां पति होई ॥६॥ (227-8)
ओहु गुरमुखि पावै अलख अपार ॥४॥ (1188-16)
ओहु घटि घटि रावै सरब प्रेउ ॥ (1170-2)
ओहु घरि घरि हंढै जिउ रंन दोहागणि ओसु नालि मुहु जोड़े ओसु भी लछणु लाइआ ॥ (303-18)
ओहु जनमि न मरै रे साकत ढोर ॥२॥ (1136-3)
ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ (5-14)
ओहु जीअ की मेरी सभ बेदन जाणै नित सुणावै हरि कीआ बाता ॥ (564-7)
ओहु जु भरमु भुलावा कहीअत तिन महि उरझिओ सगल संसारा ॥ (611-2)
ओहु जेव साइर देइ लहरी बिजुल जिवै चमकए ॥ (439-1)
ओहु जोगी पुरखु ओह सुंदरि नारी ॥ (1028-3)
ओहु ढाढी तुधु धिआइ कलाणे दिनु रैणार ॥ (962-18)
ओहु ढोवै ढोर हाथि चमु चमरे हरि उधरिओ परिओ सरना ॥३॥ (799-4)
ओहु तपा कैसे परम गति लहै ॥ (948-17)
ओहु तेली संदा बलदु करि नित भलके उठि प्रभि जोइआ ॥ (309-12)
ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥ (294-19)
ओहु धनु भाग सुधा जिनि प्रभु लधा हम तिसु पहि आपु वेचाइआ ॥ (777-18)
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ (4-13)
ओहु न बाला बूढा भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (378-15)
ओहु न मूआ जो देखणहारु ॥२॥ (152-5)
ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ॥ (152-7)
ओहु न सुणई कत ही तुम्ह लोक सुणावहु ॥४॥ (418-11)
ओहु नव निधि पावै गुरमति हरि धिआवै नित हरि गुण आखि वखाणै ॥ (438-11)
ओहु निरगुणीआरे पालदा भाई देइ निथावे थाउ ॥ (640-8)
ओहु निरमलु है नाही अंधिआरा ॥ (1026-10)
ओहु नेहु नवेला ॥ (407-19)
ओहु पाहणु लै उस कउ डुबता ॥२॥ (739-4)
ओहु पिआरा जीअ का जो खोल्है भिता ॥ (965-13)
ओहु पूरि रहिआ सरब ठाई नानका उरि धारिआ ॥३॥ (844-7)
ओहु बिखई ओसु राम को रंगु ॥१॥ रहाउ ॥ (198-3)

ओहु बिधाता मनि मुखि सोइ ॥ (931-1)
ओहु बिधाता मनु तनु देइ ॥ (931-1)
ओहु बेअंतु अंतु किनि लहीऐ ॥ (1188-13)
ओहु बैरागी मरै न जाइ ॥ (390-18)
ओहु भारो ठाकुरु जिसु काणि न छंदा ॥ (1073-4)
ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥१॥ (471-5)
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥ (7-3)
ओहु वेपरवाहु अतोलवा गुरमति कीमति सारु ॥२॥ (20-14)
ओहु सबदि समाए आपु गवाए त्रिभवण सोझी सूझए ॥ (844-6)
ओहु सभ ते ऊचा सभ ते सूचा जा कै हिरदै वसिआ भगवानु ॥ (861-9)
ओहु सभना की रेणु बिरही चारणो ॥ (963-16)
ओहु सभु किछु जाणै जो वरतंता ॥२॥ (176-7)
ओहु सरूपु संतन कहहि विरले जोगीसुर ॥ (816-11)
ओहु सहजि सुहेला ॥१॥ रहाउ ॥ (407-5)
ओहु सुखु तिलु समानि नही पावउ ॥ (373-12)
ओहु सुहेला सद सुखी सभु भ्रमु भउ भागा ॥१॥ (399-18)
ओहु हमारै माथै काइमु अउरु हमरै निकटि न आवै ॥३॥ (476-16)
ओहु हरि मारगि आपि चलदा होरना नो हरि मारगि पाए ॥ (140-2)
ओहो सुखु ओहा वडिआई जो प्रभ जी मनि भाणी ॥ (383-10)
कंगन बसत्र गहने बने सुहावे ॥ (737-12)
कंचन काइआ कसीऐ वंनी चड़ै चड़ाउ ॥ (146-11)
कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥ (449-8)
कंचन काइआ गुरमुखि बूझै जिसु अंतरि नामु निवासी हे ॥४॥ (1048-7)
कंचन काइआ जोति अनूपु ॥ (414-1)
कंचन काइआ जोती जोति समाई ॥६॥ (833-2)
कंचन काइआ निरमल हंसु ॥ (1256-18)
कंचन काइआ निरमली जो सचि नामि सचि लागी ॥ (590-16)
कंचन काइआ सुइने की ढाला ॥ (567-9)
कंचन के कोट दतु करी बहु हैवर गैवर दानु ॥ (62-9)
कंचन कोटु बहु माणकि भरिआ जागे गिआन तति लिव लईआ ॥ (833-10)
कंचन देही सबदु भतारो ॥ (1058-9)
कंचन नारी महि जीउ लुभतु है मोहु मीठा माइआ ॥ (167-12)
कंचन वंने पासे कलवति चीरिआ ॥४॥ (488-15)
कंचन सिउ पाईऐ नही तोलि ॥ (327-10)
कंचना बहु दत करा ॥ (1229-14)
कंचनु तनु होइ परसि पारस कउ जोति सरूपी ध्यानु धरं ॥ (1402-7)
कंटकु कालु एकु है होरु कंटकु न सूझै ॥ (1090-6)

कंठ गहन तब करन पुकारा ॥ (792-9)
कंठ रमणीय राम राम माला हसत ऊच प्रेम धारणी ॥ (1356-17)
कंठि लगाइ अपुने जन राखे अपुनी प्रीति पिआरा ॥३॥ (609-19)
कंठि लगाइ लीए जन अपुने राम नाम उरि धारिआ ॥ (782-15)
कंठि लगाइ लीए तिसु ठाकुर सरणी ॥ (460-8)
कंठि लाइ अपुनो दासु राखिओ ताती वाउ न लाइओ ॥१॥ (1270-3)
कंठि लाइ अवगुण सभि मेटे दइआल पुरख बखसंद ॥ रहाउ ॥ (681-18)
कंठि लाइ कै रखिओनु लगै न तती वाउ जीउ ॥१८॥ (72-18)
कंठि लाइ जन रखिआ नानक बलि जासु ॥१५॥ (321-16)
कंठि लाइ दास रखिअनु नानक हरि सते ॥२०॥ (524-1)
कंठि लाइ प्रभ राखै ॥ (630-3)
कंठि लाइ राखे जन अपने उधरि लीए लाइ अपनै पाल ॥१॥ (826-19)
कंठि लाइ राखै अपने कउ तिस नो लगै न ताती बाल ॥१॥ (824-15)
कंठे बैठी गुर सबदि पछानै ॥१॥ (1275-13)
कंठे माला जिहवा रामु ॥ (479-2)
कंडा पाइ न गडई मूले जिसु सतिगुरु राखणहारा हे ॥११॥ (1029-12)
कंत पकरि हम कीनी रानी ॥३॥ (394-11)
कंता तू सउ सेजड़ी मैडा हभो दुखु उलाहि ॥२॥ (1094-16)
कंता नालि महेलीआ सेती अगि जलाहि ॥ (787-10)
कंति विसारी अवगणि मुती ॥ (110-18)
कंतु मिलिओ मेरो सभु दुखु जोहिओ ॥ (372-10)
कंतु लीआ सोहागणी मै ते वधवी एह ॥ (725-3)
कंद मूलु अहारो खाईऐ अउधू बोलै गिआने ॥ (938-19)
कंद्रप कोटि जा कै लवै न धरहि ॥ (1163-8)
कंधि कुहाड़ा सिरि घड़ा वणि कै सरु लोहारु ॥ (1380-2)
कंधी उतै रुखड़ा किचरकु बंनै धीरु ॥ (1382-18)
कंधी दिसि न आवई धाही पवै कहाह ॥ (1287-18)
कंधी दिसि न आवई ना उरवारु न पारु ॥ (1009-11)
कंधी वहण न ढाहि तउ भी लेखा देवणा ॥ (1382-7)
कंन पड़ाइ किआ खाजै भुगति ॥ (953-4)
कंनी बुजे दे रहां किती वगै पउणु ॥८८॥ (1382-11)
कंनी सुणि सुणि सबदि सलाही अम्रितु रिदै वसाई ॥ (596-10)
कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥ (472-17)
कंनु कोई कढि न हंघई नानक वुठा घुघि गिराउ जीउ ॥५॥ (73-14)
कंसु केसु चांडूरु न कोई ॥ (225-3)
कई कोटि अंध अगिआनी ॥ (275-15)
कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥ (276-12)

कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥ (275-15)
कई कोटि आचार बिउहारी ॥ (275-11)
कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥ (275-13)
कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥ (275-13)
कई कोटि किरपन कठोर ॥ (275-15)
कई कोटि कीए चिर जीवे ॥ (276-3)
कई कोटि कीए धनवंत ॥ (276-7)
कई कोटि कीए रतन समुद ॥ (276-3)
कई कोटि कीने बहु भाति ॥ (276-13)
कई कोटि खाणी अरु खंड ॥ (276-11)
कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥ (276-4)
कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥ (276-7)
कई कोटि जख्य किंनर पिसाच ॥ (276-4)
कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥ (276-6)
कई कोटि तत के बेते ॥ (276-15)
कई कोटि तपीसुर होते ॥ (275-13)
कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥ (276-10)
कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥ (276-1)
कई कोटि देस भू मंडल ॥ (275-19)
कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥ (276-6)
कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥ (275-14)
कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥ (276-3)
कई कोटि नाम गुन गावहि ॥ (276-16)
कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥ (276-15)
कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥ (275-18)
कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥ (275-15)
कई कोटि पर दूखना करहि ॥ (275-16)
कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥ (275-16)
कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥ (275-19)
कई कोटि पाताल के वासी ॥ (276-5)
कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥ (275-18)
कई कोटि पारब्रहम के दास ॥ (276-14)
कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥ (276-9)
कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥ (275-12)
कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥ (276-6)
कई कोटि बेद के स्रोते ॥ (275-12)
कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत ॥ (276-2)

कई कोटि बैठत ही खाहि ॥ (276-7)
कई कोटि भए अभिमानी ॥ (275-14)
कई कोटि भए तीरथ वासी ॥ (275-12)
कई कोटि भए बैरागी ॥ (276-8)
कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच ॥ (276-4)
कई कोटि माइआ महि चिंत ॥ (276-7)
कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥ (275-16)
कई कोटि मागहि सतसंगु ॥ (276-10)
कई कोटि राजस तामस सातक ॥ (276-2)
कई कोटि राजे रस भोगी ॥ (275-18)
कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥ (275-19)
कई कोटि सिध जती जोगी ॥ (275-18)
कई कोटि होए अवतार ॥ (276-12)
कई कोटि होए पूजारी ॥ (275-11)
कई कोटिक जग फला सुणि गावनहारे राम ॥ (546-4)
कई जंत बिनाहि उपारा ॥३॥ (740-10)
कई जनम गज मीन कुरंगा ॥ (176-11)
कई जनम गरभ हिरि खरिआ ॥ (176-13)
कई जनम पंखी सरप होइओ ॥ (176-11)
कई जनम भए कीट पतंगा ॥ (176-10)
कई जनम साख करि उपाइआ ॥ (176-13)
कई जनम सैल गिरि करिआ ॥ (176-12)
कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ ॥१॥ (176-11)
कई जुगति कीनो बिसथार ॥ (276-12)
कई बार पसरिओ पासार ॥ (276-13)
कई बैकुंठ नाही लवै लागे ॥ (1078-7)
कउड़ा किसै न लगई सभना ही भाना ॥ (556-7)
कउड़ा कोइ न मागै मीठा सभ मागै ॥ (566-8)
कउडा डारत हिरै जुआरी ॥३॥ (873-15)
कउड़ा बोलि न जानै पूरन भगवानै अउगणु को न चितारे ॥ (784-12)
कउड़ा होइ पतिसटिआ पिआरे तिस ते उपजिआ सोगु ॥ (641-2)
कउडी कउडी कउ खाकु सिरि छानै ॥ (899-11)
कउडी कउडी जोरत कपटे अनिक जुगति करि धाइओ ॥ (501-1)
कउडी का लख हूआ मूलु ॥ (898-14)
कउडी बदले रतनु तिआगहि ॥१॥ रहाउ ॥ (195-2)
कउडी बदलै जनमु गवाइआ चीनसि नाही आपै ॥ (753-7)
कउडी बदलै जनमु गवाता ॥ (1004-18)

कउडी बदलै तिआगै रतनु ॥ (892-17)
कउण कउण अपराधी बखसिअनु पिआरे साचै सबदि वीचारि ॥ (638-11)
कउण करम कउण निहकरमा कउणु सु कहै कहाए जीउ ॥२॥ (131-4)
कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥ (730-18)
कउणु उपदेसु जितु दुखु सुखु सम सहता ॥ (131-7)
कउणु करै ता का बीचारु ॥ (237-16)
कउणु कहै किणि बूझीऐ रमईआ आकुलु री बाई ॥१॥ रहाउ ॥ (525-7)
कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥१॥ (730-19)
कउणु जाणै चलत तेरे अंधिआरे महि दीप ॥१॥ (724-11)
कउणु जाणै पीर पराई ॥ (795-10)
कउणु डरै डरु किस का होइ ॥४॥ (842-11)
कउणु न मूआ कउणु न मरसी ॥ (1022-9)
कउणु मरै कउणु रोवै ओही ॥ (413-6)
कउणु मासु कउणु सागु कहावै किसु महि पाप समाणे ॥ (1289-16)
कउणु मूआ कउणु मारसी कउणु आवै कउणु जाइ ॥ (1091-8)
कउणु रहसी नानका किस की सुरति समाइ ॥१॥ (1091-8)
कउणु सु अखरु जितु धावतु रहता ॥ (131-6)
कउणु सु अखरु जितु रहै हिआउ ॥ (953-4)
कउणु सु गिआनी कउणु सु बकता ॥ (131-3)
कउणु सु गिरही कउणु उदासी कउणु सु कीमति पाए जीउ ॥१॥ (131-3)
कउणु सु चाल जितु पारब्रहमु धिआए किनि बिधि कीरतनु गाए जीउ ॥४॥ (131-7)
कउणु सु मुकता कउणु सु जुगता ॥ (131-2)
कउणु सु सनमुखु कउणु वेमुखीआ ॥ (131-5)
कउणु सु सुखीआ कउणु सु दुखीआ ॥ (131-5)
कउणु हारे किनि उवटीऐ ॥२॥ (967-5)
कउतक करै रंग आपार ॥ (279-8)
कउतक कोड तमासिआ चिति न आवसु नाउ ॥ (707-18)
कउतकु कालु इहु हुकमि पठाइआ ॥ (1081-14)
कउन उपमा तेरी कही जाइ ॥ (1181-11)
कउन उपमा देउ कवन बडाई ॥ (1236-19)
कउन कउन उधरे गुन गाइ ॥ (896-6)
कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही ॥ (718-13)
कउन को पुरखु कउन की नारी ॥ (331-2)
कउन बसतु आई तेरै संग ॥ (283-2)
कउन वडा माइआ वडिआई ॥ (188-13)
कउनु करम बिदिआ कहु कैसी धरमु कउनु फुनि करई ॥ (632-9)
कउनु करम मेरा करि करि मरै ॥१॥ (1159-15)

कउनु कहै तुम ते कछु नाही तुम समरथ अथाहिओ ॥ (1303-4)
कउनु को पूतु पिता को का को ॥ (330-19)
कउनु जानै चलित तेरे किछु अंतु नाही पार ॥१॥ रहाउ ॥ (988-2)
कउनु नामु गुर जा कै सिमरै भव सागर कउ तरई ॥१॥ (632-10)
कउनु नामु जगु जा कै सिमरै पावै पदु निरबाना ॥१॥ (902-5)
कउनु बिधि ता की कहा करउ ॥ (1322-11)
कउनु मरै को देइ संतापो ॥१॥ (331-1)
कउनु मूआ रे कउनु मूआ ॥ (885-13)
कउनु सु जतनु उपाउ किनेहा सेवा कउन बीचारी ॥ (1120-5)
कउनु सु दूजा तिसु समझाए ॥ (1043-8)
कउरापनु तऊ न जाई ॥२॥ (656-4)
कउला बपुरी संती छली ॥३॥ (392-17)
कउलु तू है कवीआ तू है आपे वेखि विगसु ॥४॥२५॥ (23-14)
कऊआ कहा कपूर चराए ॥ (481-4)
कऊआ काग कउ अम्रित रसु पाईऐ त्रिपतै विसटा खाइ मुखि गोहै ॥३॥ (493-2)
ककरु चुगनि थलि वसनि रब न छोडनि पासु ॥१०१॥ (1383-9)
कका कारन करता सोऊ ॥ (253-13)
कका किरणि कमल महि पावा ॥ (340-9)
ककै कामि क्रोधि भरमिओहु मूड़े ममता लागे तुधु हरि विसरिआ ॥ (435-4)
ककै केस पुंडर जब हूए विणु साबूणै उजलिआ ॥ (432-14)
कच पकाई ओथै पाइ ॥ (7-14)
कचहु कंचनु भइअउ सबदु गुर स्रवणहि सुणिओ ॥ (1399-9)
कचा रंगु कसु्मभ का थोड़ड़िआ दिन चारि जीउ ॥ (751-2)
कची कंध कचा विचि राजु ॥ (25-14)
कची मति फीका मुखि बोलै दुरमति नामु न पाई हे ॥५॥ (1047-8)
कछु बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ॥१॥ रहाउ ॥ (1187-3)
कछु संगि न चालै समझ लेह ॥२॥ (1187-1)
कछू न जानौ कछू दिखाए ॥ (1307-7)
कछू न थोरा हरि भगतन कउ ॥ (390-2)
कछू न होई है पूरन अरथा ॥ (1182-7)
कछू सिआनप उकति न मोरी ॥ (759-17)
कछूआ कहै अंगार भि लोरउ लूकी सबदु सुनाइआ ॥४॥६॥ (477-8)
कछेली पटमंजरी टोडी कही अलापि ॥ (1430-11)
कजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइ बहिठु ॥१४॥ (1378-13)
कटि कुटि करि खु्मबि चड़ाइआ ॥ (955-17)
कटी न कटै तूटि नह जाई ॥ (329-7)
कटीअहि तै नित जालीअहि ओना सबदु न नाउ ॥४॥ (66-7)

कटीऐ जम फासी सिमरि अबिनासी सगल मंगल सुगिआना ॥ (781-3)
कटीऐ तेरा अहं रोगु ॥ (211-17)
कटे पाप असंख नावै इक कणी ॥११॥ (1283-9)
कठन करोध घट ही के भीतरि जिह सुधि सभ बिसराई ॥ (219-12)
कड़छीआ फिरंन्हि सुआउ न जाणन्हि सुञीआ ॥ (521-5)
कड़ि बंधनि बाधिओ सीस मार ॥२॥ (1188-2)
कड़ीआलु मुखे गुरि अंकसु पाइआ राम ॥ (576-6)
कड़ीआलु मुखे गुरि गिआनु द्रिड़ाइआ राम ॥ (575-12)
कढि कसीदा पहिरहि चोली तां तुम्ह जाणहु नारी ॥ (1171-7)
कढि कागलु दसे राहु ॥ (471-11)
कढि लेहु भउजल बिखम ते जनु नानकु सद बलिहार ॥२॥२॥७॥ (988-4)
कण बिना जैसे थोथर तुखा ॥ (192-16)
कणु नाही तुह गाहण लागे धाइ धाइ दुख पांही ॥२॥ (1207-9)
कतंच चपल मोहनी रूपं पेखंते तिआगं करोति ॥ (1353-18)
कतंच भ्रात मीत हित बंधव कतंच मोह कुट्मब्यते ॥ (1353-17)
कतंच माता कतंच पिता कतंच बनिता बिनोद सुतह ॥ (1353-17)
कत कउ डहकावहु लोगा मोहन दीन किरपाई ॥१॥ (1005-10)
कत की माई बापु कत केरा किदू थावहु हम आए ॥ (156-9)
कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥ (1195-11)
कत झखि झखि अउरन समझावा ॥ (341-1)
कत नही ठउर मूलु कत लावउ ॥ (327-16)
कत पाईऐ पूरन परमेसर ॥१॥ रहाउ ॥ (759-13)
कतकि किरतु पइआ जो प्रभ भाइआ ॥ (1109-2)
कतहि गइओ उहु कत ते आइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (736-12)
कतहूं न धावउ सरणि पावउ करुणा मै प्रभ करि मइआ ॥ (457-18)
कतहू न जाए घरहि बसाए ॥ (1307-8)
कतिक कूंजां चेति डउ सावणि बिजुलीआं ॥ (488-17)
कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥९॥ (135-8)
कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥ (135-5)
कथउ न कथनी हुकमु पछाना ॥ (221-10)
कथड़ीआ संताह ते सुखाऊ पंधीआ ॥ (1101-15)
कथत सुनत मुनि जना मिलि संत मंडली ॥१॥ रहाउ ॥ (1322-8)
कथता बकता सुनता सोई ॥ (152-4)
कथन कहण कउ सोझी नाही जो पेखै तिसु बणि आवै ॥२॥ (883-17)
कथन कहन ते मुकता गुरमुखि कोई विरला ॥३॥ (51-15)
कथन सुनावन गीत नीके गावन मन महि धरते गार ॥१॥ (534-12)
कथना कथी न आवै तोटि ॥ (2-1)

कथनी कथउ न आवै ओरु ॥ (222-19)
कथनी कथीऐ ब्रहम गिआन ॥१५॥ (344-7)
कथनी करे तै माइआ नालि लूझै ॥ (160-18)
कथनी कहहि कहहि से मूए ॥ (354-4)
कथनी कहि भरमु न जाई ॥ (655-4)
कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ॥६॥ (56-9)
कथनी बदनी करता फिरै हुकमु न बूझै सचु ॥ (950-15)
कथनी बदनी करता फिरै हुकमै मूलि न बुझई अंधा कचु निकचु ॥२॥ (509-8)
कथनी बदनी कहनु कहावनु ॥ (478-12)
कथनी बदनी जे करे मनमुखि बूझ न होइ ॥ (492-4)
कथनी बदनी न पाईऐ हउमै विचहु जाइ ॥ (32-19)
कथनी बदनी नानक जलि जाइ ॥४॥५॥ (1328-17)
कथनी बदनी पड़ि पड़ि भारु ॥ (412-14)
कथनी बदनी रहै निभरांति ॥ (1256-10)
कथनी सा तुधु भावसी नानक नाम अधार ॥१॥ (927-17)
कथनु न जाइ अकथु सुआमी सदकै जाइ नानकु वारिआ ॥५॥१॥३॥ (81-13)
कथनै कहणि न छुटीऐ ना पड़ि पुसतक भार ॥ (59-4)
कथा कहाणी बेदीं आणी पापु पुंनु बीचारु ॥ (1243-15)
कथा कीरतनु आनंद मंगल धुनि पूरि रही दिनसु अरु राति ॥१॥ रहाउ ॥ (820-18)
कथा कीरतनु राग नाद धुनि इहु बनिओ सुआउ ॥ (818-8)
कथा कीरतनु हरि अति घना सुख सहज बिस्रामु ॥३॥ (816-1)
कथा पुरातन इउ सुणी भगतन की बानी ॥ (815-4)
कथा सुणत मलु सगली खोवै ॥ (104-6)
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥ (2-1)
कथि कथि बादु करे दुखु होई ॥ (831-11)
कथि कहणै ते रहै न कोई ॥ (831-11)
कथीऐ संतसंगि प्रभ गिआनु ॥ (1300-9)
कद ही चिति न आइओ जिनि जीउ पिंडु दीआ ॥३॥ (43-12)
कद ही सुरति न लधीआ माइआ मोहड़िआ ॥१॥ (217-19)
कदली पुहप धूप परगास ॥ (1162-11)
कदांच नह सिमरंति नानक ते जंत बिसटा क्रिमह ॥१॥ (707-4)
कदि पावउ साधसंगु हरि हरि सदा आनंदु गिआन अंजनि मेरा मनु इसनानै ॥४॥ (687-4)
कदे न बिआपै त्रिसना भूख ॥ (897-17)
कदे न रांड सदा सोहागणि अंतरि सहज समाधी ॥ (583-2)
कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥ (159-9)
कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥ (665-13)
कदे न विछुड़ै सभ कै साथि ॥ (177-2)

कदे न विसारी अनदिनु सम्हारी जा नामु लई ता जीवा ॥ (690-6)
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥१॥ (93-16)
कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥ (265-14)
कनिक कनिक पहिरे बहु कंगना कापरु भांति बनावैगो ॥ (1308-12)
कनिक कामनी महा सुंदरी पेखि पेखि सचु मानि ॥१॥ रहाउ ॥ (1124-7)
कनिक कामनी सिउ हेतु वधाइहि की नामु विसारहि भरमि गइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (906-9)
कनिक कामनी हेतु गवारा ॥ (416-3)
कनिक कामिनी जुग बिउहार ॥ (343-13)
कनिक कामिनी सेज सोहनी छोडि खिनै महि जावत हे ॥ (821-17)
कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा ॥ (642-2)
कनिक भूखन कीने बहु रंगा ॥ (736-13)
कनिक मंदर पाट सेज सखी मोहि नाहि इन सिउ तात ॥१॥ (1306-11)
कनिक माणिक गज मोतीअन लालन नह नाह नही ॥१॥ (406-18)
कपट खुलाने भ्रम नाठे दूरे ॥ (890-16)
कपटि कीतै हरि पुरखु न भीजै नित वेखै सुणै सुभाइ ॥ (512-8)
कपड़ भोग डरावणे जिचरु पिरी न डेखु ॥२॥ (1094-9)
कपड़ भोग विकार ए हभे ही छार ॥ (1098-3)
कपड़ भोग सुगंध तनि मरदन मालणा ॥ (398-10)
कपड़ि भोगि लपटाइआ सुइना रुपा खाकु ॥ (42-9)
कपड़ु भोजनु सचु रहदा लिवै धार ॥ (962-19)
कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥ (470-19)
कपल गाइ नामै दुहि आनी ॥१॥ (1163-17)
कब को नाचै पाव पसारै कब को हाथ पसारै ॥ (368-9)
कब को भालै घुंघरू ताला कब को बजावै रबाबु ॥ (368-7)
कब कोऊ मेलै पंच सत गाइण कब को राग धुनि उठावै ॥ (368-8)
कब कोऊ लोगन कउ पतीआवै लोकि पतीणै ना पति होइ ॥ (368-11)
कब घरि आवै री ॥१॥ (830-5)
कब घरि आवै री ॥१॥ रहाउ ॥ (830-4)
कब चंदनि कब अकि डालि कब उची परीति ॥ (148-1)
कब देखउ प्रभु आपना आतम कै रंगि ॥ (816-9)
कब रैनि बिहावै चकवी सुखु पावै सूरज किरणि प्रगासिआ ॥ (1122-10)
कब ही न घाटसि पूरा तोलो ॥ (1036-18)
कब ही राजा कब मंगनहारु ॥ (1192-18)
कबहि न घालै सीधा पाउ ॥ (1151-15)
कबही चलि न आइआ पंजे वखत मसीति ॥७०॥ (1381-12)
कबहु न तूटसि रहिआ समाइ ॥ (1164-16)
कबहु न सूचा काला काउ ॥ (839-12)

कबहु न होवहु द्रिसटि अगोचर जीअ कै संगि बसे ॥१॥ रहाउ ॥ (826-2)
कबहू भेखारी नीच का साजा ॥ (277-16)
कबहूं न पारि उतारि चराइहु कैसे खसम हमारे ॥२॥ (482-13)
कबहूं सरब की होत रवाल ॥ (277-16)
कबहूं साहिबु देखिआ भैण ॥१॥ (1257-7)
कबहू अपकीरति महि आवै ॥ (277-17)
कबहू ऊच नीच महि बसै ॥ (277-13)
कबहू ऊभ अकास पइआल ॥ (277-14)
कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥ (277-19)
कबहू कूरनु चने बिनावै ॥१॥ (1164-5)
कबहू खाट सुपेदी सुवावै ॥ (1164-7)
कबहू खीरि खाड घीउ न भावै ॥ (1164-5)
कबहू घर घर टूक मगावै ॥ (1164-5)
कबहू जीअड़ा ऊभि चड़तु है कबहू जाइ पइआले ॥ (876-6)
कबहू तट तीरथ इसनान ॥ (277-18)
कबहू तुरे तुरंग नचावै ॥ (1164-7)
कबहू न बिआपै हउमै रोगु ॥१॥ (893-5)
कबहू न बिसरहु मन मेरे ते आठ पहर गुन गाइण ॥१॥ रहाउ ॥ (979-13)
कबहू न बिसरै हीए मोरे ते नानक दास इही दानु मंगा ॥२॥१५॥१०१॥ (824-12)
कबहू न विसरै नानक नामु ॥५॥९॥७८॥ (178-18)
कबहू न समझै अगिआनु गवारा ॥ (738-17)
कबहू न होवै भंगु नानक हरि गुण गाईऐ ॥११॥ (1422-10)
कबहू निंद चिंद बिउहार ॥ (277-14)
कबहू निरति करै बहु भाति ॥ (277-15)
कबहू पाइ पनहीओ न पावै ॥२॥ (1164-7)
कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥ (277-14)
कबहू भला भला कहावै ॥ (277-17)
कबहू भूमि पैआरु न पावै ॥३॥ (1164-7)
कबहू महा क्रोध बिकराल ॥ (277-15)
कबहू मैलु भरे अभिमानी कब साधू संगि धोईऐ ॥१॥ (528-18)
कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥ (277-18)
कबहू राजा छत्रपति कबहू भेखारी ॥२॥ (326-2)
कबहू साधसंगति इहु पावै ॥ (278-2)
कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥ (277-19)
कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥ (277-15)
कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥ (277-13)
कबहू हरि सिउ चीतु न लाइओ ॥ (500-19)

कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥ (277-18)
कबहू होइ बहै बड राजा ॥ (277-16)
कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥२॥ (1389-14)
कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥३॥ (1389-17)
कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥४॥ (1389-19)
कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥५॥ (1390-3)
कबि कल सुजसु नानक गुर घटि घटि सहजि समाइओ ॥१०॥ (1390-19)
कबि कल सुजसु नानक गुर नित नवतनु जगि छाइओ ॥८॥ (1390-13)
कबि जन जोगी जटाधारि ॥ (1194-16)
कबित पड़े पड़ि कबिता मूए कपड़ केदारै जाई ॥ (654-6)
कबीर अलह की करि बंदगी जिह सिमरत दुखु जाइ ॥ (1374-10)
कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै परि है रेतु ॥ (1369-13)
कबीर अ्मबर घनहरु छाइआ बरखि भरे सर ताल ॥ (1371-2)
कबीर आई मुझहि पहि अनिक करे करि भेस ॥ (1364-17)
कबीर आखी केरे माटुके पलु पलु गई बिहाइ ॥ (1376-15)
कबीर आसा करीऐ राम की अवरै आस निरास ॥ (1369-10)
कबीर इह चेतावनी मत सहसा रहि जाइ ॥ (1366-15)
कबीर इहु तनु जाइगा कवनै मारगि लाइ ॥ (1365-18)
कबीर इहु तनु जाइगा सकहु त लेहु बहोरि ॥ (1365-17)
कबीर ऊजल पहिरहि कापरे पान सुपारी खाहि ॥ (1366-5)
कबीर एक घड़ी आधी घरी आधी हूं ते आध ॥ (1377-2)
कबीर एक मरंते दुइ मूए दोइ मरंतह चारि ॥ (1369-6)
कबीर ऐसा एकु आधु जो जीवत मिरतकु होइ ॥ (1364-15)
कबीर ऐसा को नही इहु तनु देवै फूकि ॥ (1368-18)
कबीर ऐसा को नही मंदरु देइ जराइ ॥ (1368-17)
कबीर ऐसा कोई न जनमिओ अपनै घरि लावै आगि ॥ (1366-13)
कबीर ऐसा जंतु इकु देखिआ जैसी धोई लाख ॥ (1371-17)
कबीर ऐसा बीजु बोइ बारह मास फलंत ॥ (1376-17)
कबीर ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥ (1367-11)
कबीर ऐसी होइ परी मन को भावतु कीनु ॥ (1368-4)
कबीर कंचन के कुंडल बने ऊपरि लाल जड़ाउ ॥ (1364-14)
कबीर कउडी कउडी जोरि कै जोरे लाख करोरि ॥ (1372-4)
कबीर करमु करीम का उहु करै जानै सोइ ॥४॥१॥ (727-12)
कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥ (1366-4)
कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥ (948-8)
कबीर का मरमु राम पहिचानां ॥४॥६॥ (1158-18)
कबीर का सबदु रागु मारू बाणी नामदेउ जी की (1105-7)

कबीर का सुआमी रहिआ समाइ ॥४॥३॥११॥ (1160-5)
कबीर काइआ कजली बनु भइआ मनु कुंचरु मय मंतु ॥ (1376-12)
कबीर काइआ काची कारवी केवल काची धातु ॥ (1376-10)
कबीर कागद की ओबरी मसु के करम कपाट ॥ (1371-15)
कबीर काम परे हरि सिमरीऐ ऐसा सिमरहु नित ॥ (1373-5)
कबीर कारनु बपुरा किआ करै जउ रामु न करै सहाइ ॥ (1369-12)
कबीर कारनु सो भइओ जो कीनो करतारि ॥ (1371-11)
कबीर कालि करंता अबहि करु अब करता सुइ ताल ॥ (1371-16)
कबीर कीचड़ि आटा गिरि परिआ किछू न आइओ हाथ ॥ (1376-3)
कबीर कूकरु भउकना करंग पिछै उठि धाइ ॥ (1375-15)
कबीर कूकरु राम को मुतीआ मेरो नाउ ॥ (1368-8)
कबीर के (792-6)
कबीर केसो केसो कूकीऐ न सोईऐ असार ॥ (1376-11)
कबीर को ठाकुरु अनद बिनोदी जाति न काहू की मानी ॥२॥९॥ (1105-3)
कबीर को सुआमी ऐसो ठाकुरु जा कै माई न बापो रे ॥२॥१९॥७०॥ (339-1)
कबीर को सुआमी गरीब निवाज ॥४॥४०॥ (331-9)
कबीर को सुआमी सभ समान ॥३॥१॥ (1193-17)
कबीर कोठी काठ की दह दिसि लागी आगि ॥ (1373-14)
कबीर कोठे मंडप हेतु करि काहे मरहु सवारि ॥ (1376-6)
कबीर खिंथा जलि कोइला भई खापरु फूट मफूट ॥ (1366-19)
कबीर खूबु खाना खीचरी जा महि अम्रितु लोनु ॥ (1374-12)
कबीर खेह हूई तउ किआ भइआ जउ उडि लागै अंग ॥ (1372-8)
कबीर गंग जमुन के अंतरे सहज सुंन के घाट ॥ (1372-12)
कबीर गंगा तीर जु घरु करहि पीवहि निरमल नीरु ॥ (1367-6)
कबीर गरबु न कीजीऐ ऊचा देखि अवासु ॥ (1366-9)
कबीर गरबु न कीजीऐ चाम लपेटे हाड ॥ (1366-8)
कबीर गरबु न कीजीऐ देही देखि सुरंग ॥ (1366-11)
कबीर गरबु न कीजीऐ रंकु न हसीऐ कोइ ॥ (1366-10)
कबीर गहगचि परिओ कुट्मब कै कांठै रहि गइओ रामु ॥ (1372-1)
कबीर गागरि जल भरी आजु काल्हि जैहै फूटि ॥ (1368-6)
कबीर गुरु लागा तब जानीऐ मिटै मोहु तन ताप ॥ (1374-13)
कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान ॥ (1374-17)
कबीर घाणी पीड़ते सतिगुर लीए छडाइ ॥ (1375-13)
कबीर चंदन का बिरवा भला बेड़्हिओ ढाक पलास ॥ (1365-1)
कबीर चकई जउ निसि बीछुरै आइ मिलै परभाति ॥ (1371-3)
कबीर चतुराई अति घनी हरि जपि हिरदै माहि ॥ (1370-5)
कबीर चरन कमल की मउज को कहि कैसे उनमान ॥ (1370-18)

कबीर चावल कारणे तुख कउ मुहली लाइ ॥ (965-17)
कबीर चावल कारने तुख कउ मुहली लाइ ॥ (1375-18)
कबीर चुगै चितारै भी चुगै चुगि चुगि चितारे ॥ (1371-1)
कबीर चोट सुहेली सेल की लागत लेइ उसास ॥ (1374-6)
कबीर जउ ग्रिहु करहि त धरमु करु नाही त करु बैरागु ॥ (1377-13)
कबीर जउ तुहि साध पिरम की पाके सेती खेलु ॥ (1377-10)
कबीर जउ तुहि साध पिरम की सीसु काटि करि गोइ ॥ (1377-9)
कबीर जग महि चेतिओ जानि कै जग महि रहिओ समाइ ॥ (1369-9)
कबीर जगु काजल की कोठरी अंध परे तिस माहि ॥ (1365-16)
कबीर जगु बाधिओ जिह जेवरी तिह मत बंधहु कबीर ॥ (1370-13)
कबीर जपनी काठ की किआ दिखलावहि लोइ ॥ (1368-8)
कबीर जम का ठेंगा बुरा है ओहु नही सहिआ जाइ ॥ (1368-11)
कबीर जह जह हउ फिरिओ कउतक ठाओ ठाइ ॥ (1365-4)
कबीर जा कउ खोजते पाइओ सोई ठउरु ॥ (1369-2)
कबीर जा की दिल साबति नही ता कउ कहां खुदाइ ॥१८५॥ (1374-9)
कबीर जा घर साध न सेवीअहि हरि की सेवा नाहि ॥ (1374-16)
कबीर जा दिन हउ मूआ पाछै भइआ अनंदु ॥ (1364-15)
कबीर जाति जुलाहा किआ करै हिरदै बसे गुपाल ॥ (1368-16)
कबीर जिनहु किछू जानिआ नही तिन सुख नीद बिहाइ ॥ (1374-4)
कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मनि आनंदु ॥ (1365-12)
कबीर जिह दरि आवत जातिअहु हटकै नाही कोइ ॥ (1367-18)
कबीर जिह मारगि पंडित गए पाछै परी बहीर ॥ (1373-7)
कबीर जी ॥ (1251-16)
कबीर जी गउड़ी ॥ (324-12)
कबीर जी घरु १ (1193-14)
कबीर जी घरु १ (870-1)
कबीर जीअ जु मारहि जोरु करि कहते हहि जु हलालु ॥ (1375-5)
कबीर जीउ (968-19)
कबीर जीउ की (855-6)
कबीर जीउ घरु १ (1157-15)
कबीर जीउ नामदेउ जीउ रविदास जीउ ॥ (475-13)
कबीर जेते पाप कीए राखे तलै दुराइ ॥ (1370-1)
कबीर जैसी उपजी पेड ते जउ तैसी निबहै ओड़ि ॥ (1372-13)
कबीर जो मै चितवउ ना करै किआ मेरे चितवे होइ ॥ (1376-7)
कबीर जो हम जंतु बजावते टूटि गईं सभ तार ॥ (1369-18)
कबीर जोरी कीए जुलमु है कहता नाउ हलालु ॥ (1374-11)
कबीर जोरु कीआ सो जुलमु है लेइ जबाबु खुदाइ ॥ (1375-6)

कबीर झंखु न झंखीऐ तुमरो कहिओ न होइ ॥ (1366-3)
कबीर टालै टोलै दिनु गइआ बिआजु बढंतउ जाइ ॥ (1375-14)
कबीर ठाकुरु पूजहि मोलि ले मनहठि तीरथ जाहि ॥ (1371-13)
कबीर डगमग किआ करहि कहा डुलावहि जीउ ॥ (1364-13)
कबीर डूबहिगो रे बापुरे बहु लोगन की कानि ॥ (1373-9)
कबीर डूबा था पै उबरिओ गुन की लहरि झबकि ॥ (1367-19)
कबीर तरवर रूपी रामु है फल रूपी बैरागु ॥ (1376-16)
कबीर ता सिउ प्रीति करि जा को ठाकुरु रामु ॥ (1365-14)
कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं ॥ (1375-10)
कबीर थूनी पाई थिति भई सतिगुर बंधी धीर ॥ (1373-3)
कबीर थोरै जलि माछुली झीवरि मेलिओ जालु ॥ (1367-1)
कबीर दाता तरवरु दया फलु उपकारी जीवंत ॥ (1376-18)
कबीर दावै दाझनु होतु है निरदावै रहै निसंक ॥ (1373-11)
कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी ॥३॥५॥ (1350-14)
कबीर दीनु गवाइआ दुनी सिउ दुनी न चाली साथि ॥ (1365-3)
कबीर दुनीआ के दोखे मूआ चालत कुल की कानि ॥ (1373-8)
कबीर देखि कै किह कहउ कहे न को पतीआइ ॥ (1370-19)
कबीर देखि देखि जगु ढूंढिआ कहूं न पाइआ ठउरु ॥ (1369-7)
कबीर धरती अरु आकास महि दुइ तूं बरी अबध ॥ (1375-8)
कबीर धरती साध की तसकर बैसहि गाहि ॥ (1375-16)
कबीर धरती साध की तसकर बैसहि गाहि ॥ (965-15)
कबीर नउबति आपनी दिन दस लेहु बजाइ ॥ (1368-14)
कबीर ना मोहि छानि न छापरी ना मोहि घरु नही गाउ ॥ (1367-12)
कबीर ना हम कीआ न करहिगे ना करि सकै सरीरु ॥ (1367-14)
कबीर निगुसांएं बहि गए थांघी नाही कोइ ॥ (1367-3)
कबीर निरगुण नाम न रोसु ॥ (325-7)
कबीर निरमल बूंद अकास की परि गई भूमि बिकार ॥ (1374-19)
कबीर निरमल बूंद अकास की लीनी भूमि मिलाइ ॥ (1375-1)
कबीर नैन निहारउ तुझ कउ स्रवन सुनउ तुअ नाउ ॥ (1370-15)
कबीर न्रिप नारी किउ निंदीऐ किउ हरि चेरी कउ मानु ॥ (1373-2)
कबीर परदेसी कै घाघरै चहु दिसि लागी आगि ॥ (1366-18)
कबीर परभाते तारे खिसहि तिउ इहु खिसै सरीरु ॥ (1373-13)
कबीर पाटन ते ऊजरु भला राम भगत जिह ठाइ ॥ (1372-11)
कबीर पानी हूआ त किआ भइआ सीरा ताता होइ ॥ (1372-9)
कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ ॥ (1368-2)
कबीर पारस चंदनै तिन्ह है एक सुगंध ॥ (1368-10)
कबीर पालि समुहा सरवरु भरा पी न सकै कोई नीरु ॥ (1373-12)

कबीर पाहनु परमेसुरु कीआ पूजै सभु संसारु ॥ (1371-14)
कबीर प्रीति इक सिउ कीए आन दुबिधा जाइ ॥ (1365-15)
कबीर फल लागे फलनि पाकनि लागे आंब ॥ (1371-12)
कबीर बन की दाधी लाकरी ठाढी करै पुकार ॥ (1369-5)
कबीर बांसु बडाई बूडिआ इउ मत डूबहु कोइ ॥ (1365-2)
कबीर बामनु गुरू है जगत का भगतन का गुरु नाहि ॥ (1377-7)
कबीर बिकारह चितवते झूठे करते आस ॥ (1375-11)
कबीर बिरहु भुयंगमु मनि बसै मंतु न मानै कोइ ॥ (1368-9)
कबीर बेड़ा जरजरा फूटे छेंक हजार ॥ (1366-6)
कबीर बैदु कहै हउ ही भला दारू मेरै वसि ॥ (1368-12)
कबीर बैदु मूआ रोगी मूआ मूआ सभु संसारु ॥ (1368-3)
कबीर बैसनउ की कूकरि भली साकत की बुरी माइ ॥ (1367-4)
कबीर बैसनो हूआ त किआ भइआ माला मेलीं चारि ॥ (1372-5)
कबीर भली भई जो भउ परिआ दिसा गईं सभ भूलि ॥ (1373-19)
कबीर भली मधूकरी नाना बिधि को नाजु ॥ (1373-10)
कबीर भांग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खांहि ॥ (1377-2)
कबीर भार पराई सिरि चरै चलिओ चाहै बाट ॥ (1369-4)
कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै ॥ (1376-4)
कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥ (1367-7)
कबीर मनु पंखी भइओ उडि उडि दह दिस जाइ ॥ (1369-1)
कबीर मनु मूंडिआ नही केस मुंडाए कांइ ॥ (1369-16)
कबीर मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रहम गिआनु ॥ (1373-17)
कबीर मरता मरता जगु मूआ मरि भी न जानिआ कोइ ॥ (1365-19)
कबीर महिदी करि कै घालिआ आपु पीसाइ पीसाइ ॥ (947-13)
कबीर महिदी करि घालिआ आपु पीसाइ पीसाइ ॥ (1367-17)
कबीर माइ मूंडउ तिह गुरू की जा ते भरमु न जाइ ॥ (1369-19)
कबीर माइआ चोरटी मुसि मुसि लावै हाटि ॥ (1365-10)
कबीर माइआ डोलनी पवनु झकोलनहारु ॥ (1365-8)
कबीर माइआ डोलनी पवनु वहै हिव धार ॥ (1365-9)
कबीर माइआ तजी त किआ भइआ जउ मानु तजिआ नही जाइ ॥ (1372-16)
कबीर माटी के हम पूतरे मानसु राखिओ नाउ ॥ (1367-16)
कबीर मानस जनमु दुल्मभु है होइ न बारै बार ॥ (1366-1)
कबीर मारी मरउ कुसंग की केले निकटि जु बेरि ॥ (1369-3)
कबीर मारे बहुतु पुकारिआ पीर पुकारै अउर ॥ (1374-5)
कबीर मुकति दुआरा संकुड़ा राई दसवै भाइ ॥ (509-16)
कबीर मुकति दुआरा संकुरा राई दसएं भाइ ॥ (1367-10)
कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ ॥ (1374-7)

कबीर मुहि मरने का चाउ है मरउ त हरि कै दुआर ॥ (1367-13)
कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा ॥ (1375-9)
कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु ॥ (1364-12)
कबीर मेरी बुधि कउ जमु न करै तिसकार ॥ (1371-18)
कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपरि रामु ॥ (1364-11)
कबीर मै जानिओ पड़िबो भलो पड़िबे सिउ भल जोगु ॥ (1366-16)
कबीर रमईआ कंठि मिलु चूकहि सरब जंजाल ॥८२॥ (1368-16)
कबीर रस को गांडो चूसीऐ गुन कउ मरीऐ रोइ ॥ (1368-5)
कबीर राती होवहि कारीआ कारे ऊभे जंत ॥ (1364-19)
कबीर राम कहन महि भेदु है ता महि एकु बिचारु ॥ (1374-14)
कबीर राम नामु जानिओ नही पालिओ कटकु कुट्मबु ॥ (1376-14)
कबीर राम रतनु मुखु कोथरी पारख आगै खोलि ॥ (1376-13)
कबीर रामु न चेतिओ फिरिआ लालच माहि ॥ (1376-9)
कबीर रामु न छोडीऐ तनु धनु जाइ त जाउ ॥ (1369-17)
कबीर रामु न धिआइओ मोटी लागी खोरि ॥ (1368-4)
कबीर रामै राम कहु कहिबे माहि बिबेक ॥ (1374-15)
कबीर रैनाइर बिछोरिआ रहु रे संख मझूरि ॥ (1371-4)
कबीर रोड़ा हूआ त किआ भइआ पंथी कउ दुखु देइ ॥ (1372-7)
कबीर रोड़ा होइ रहु बाट का तजि मन का अभिमानु ॥ (1372-6)
कबीर लागी प्रीति सुजान सिउ बरजै लोगु अजानु ॥ (1376-5)
कबीर लूटना है त लूटि लै राम नाम है लूटि ॥ (1366-12)
कबीर लेखा देना सुहेला जउ दिल सूची होइ ॥ (1375-7)
कबीर लोगु कि निंदै बपुड़ा जिह मनि नाही गिआनु ॥ (1366-17)
कबीर संगति करीऐ साध की अंति करै निरबाहु ॥ (1369-8)
कबीर संगति साध की दिन दिन दूना हेतु ॥ (1369-15)
कबीर संत की गैल न छोडीऐ मारगि लागा जाउ ॥ (1371-8)
कबीर संत मूए किआ रोईऐ जो अपुने ग्रिहि जाइ ॥ (1365-6)
कबीर संतन की झुंगीआ भली भठि कुसती गाउ ॥ (1365-5)
कबीर संतु न छाडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत ॥ (1373-16)
कबीर संसा दूरि करु कागद देह बिहाइ ॥ (1373-15)
कबीर सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु ॥ (1374-18)
कबीर सती पुकारै चिह चड़ी सुनु हो बीर मसान ॥ (1368-19)
कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ ॥ (1364-16)
कबीर सभु जगु हउ फिरिओ मांदलु कंध चढाइ ॥ (1370-9)
कबीर समुंदु न छोडीऐ जउ अति खारो होइ ॥ (1367-2)
कबीर साकत ते सूकर भला राखै आछा गाउ ॥ (1372-2)
कबीर साकत संगु न कीजीऐ दूरहि जाईऐ भागि ॥ (1371-9)

कबीर साकतु ऐसा है जैसी लसन की खानि ॥ (1365-7)
कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक ॥ (1372-18)
कबीर साचा सतिगुरु मै मिलिआ सबदु जु बाहिआ एकु ॥ (1372-17)
कबीर सात समुंदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ ॥ (1368-15)
कबीर साधू कउ मिलने जाईऐ साथि न लीजै कोइ ॥ (1370-12)
कबीर साधू की संगति रहउ जउ की भूसी खाउ ॥ (1369-14)
कबीर साधू संगु परापती लिखिआ होइ लिलाट ॥ (1376-19)
कबीर सारी सिरजनहार की जानै नाही कोइ ॥ (1373-18)
कबीर सिख साखा बहुते कीए केसो कीओ न मीतु ॥ (1369-11)
कबीर सुपनै हू बरड़ाइ कै जिह मुखि निकसै रामु ॥ (1367-15)
कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतिगुर के परसादि ॥ (1370-17)
कबीर सूखु न एंह जुगि करहि जु बहुतै मीत ॥ (1365-11)
कबीर सूता किआ करहि उठि कि न जपहि मुरारि ॥ (1371-6)
कबीर सूता किआ करहि जागु रोइ भै दुख ॥ (1371-5)
कबीर सूता किआ करहि बैठा रहु अरु जागु ॥ (1371-7)
कबीर सूरज चांद कै उदै भई सभ देह ॥ (1374-2)
कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु रामु ॥ (1373-6)
कबीर सोई कुल भली जा कुल हरि को दासु ॥ (1370-7)
कबीर सोई मारीऐ जिह मूऐ सुखु होइ ॥ (1364-18)
कबीर सोई मुखु धंनि है जा मुखि कहीऐ रामु ॥ (1370-6)
कबीर हंसु उडिओ तनु गाडिओ सोझाई सैनाह ॥ (1370-15)
कबीर हज काबे हउ जाइ था आगै मिलिआ खुदाइ ॥ (1375-2)
कबीर हज काबै होइ होइ गइआ केती बार कबीर ॥ (1375-4)
कबीर हरदी पीअरी चूंनां ऊजल भाइ ॥ (1367-8)
कबीर हरदी पीरतनु हरै चून चिहनु न रहाइ ॥ (1367-9)
कबीर हरना दूबला इहु हरीआरा तालु ॥ (1367-5)
कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै अहोई राखै नारि ॥ (1370-4)
कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै पालिओ बहुतु कुट्मबु ॥ (1370-2)
कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै राति जगावन जाइ ॥ (1370-3)
कबीर हरि का सिमरनु जो करै सो सुखीआ संसारि ॥ (1375-12)
कबीर हरि हीरा जन जउहरी ले कै मांडै हाट ॥ (1373-4)
कबीर हाड जरे जिउ लाकरी केस जरे जिउ घासु ॥ (1366-7)
कबीर हीरा बनजिआ मान सरोवर तीर ॥१६१॥ (1373-3)
कबीर है गइ बाहन सघन घन लाख धजा फहराहि ॥ (1370-8)
कबीर है गै बाहन सघन घन छत्रपती की नारि ॥ (1372-19)
कबीरा एकु अच्मभउ देखिओ हीरा हाट बिकाइ ॥ (1372-14)
कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु ॥ (1372-15)

कबीरा तुही कबीरु तू तेरो नाउ कबीरु ॥ (1366-2)
कबीरा धूरि सकेलि कै पुरीआ बांधी देह ॥ (1374-1)
कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भि न जानै कोइ ॥ (555-3)
कबीरा रामु न चेतिओ जरा पहूंचिओ आइ ॥ (1371-10)
कबीरा हमरा को नही हम किस हू के नाहि ॥ (1376-2)
कबीरा हमरा को नही हम किस हू के नाहि ॥ (965-10)
कबीरि दीई संसार कउ लीनी जिसु मसतकि भागु ॥ (970-4)
कबीरि धिआइओ एक रंग ॥ (1192-12)
कबीरु ॥ मारू ॥ (1106-6)
कबीरु कसतूरी भइआ भवर भए सभ दास ॥ (1371-19)
कबीरु पूंगरा राम अलह का सभ गुर पीर हमारे ॥५॥ (1349-17)
कबीरै पकरी टेक राम की तुरक रहे पचिहारी ॥४॥८॥ (477-19)
कबीरै सो धनु पाइआ ॥ (655-17)
कमरबंदु संतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ॥२॥ (16-15)
कमरि कटारा बंकुड़ा बंके का असवारु ॥ (956-4)
कमल नैन अंजन सिआम चंद्र बदन चित चार ॥ (1364-7)
कमल प्रगासु भइआ गुरु पाइआ हरि जपिओ भ्रमु भउ भागा ॥१॥ रहाउ ॥ (985-7)
कमल बिगास हरे सर सुभर आतम रामु सखाई हे ॥६॥ (1022-17)
कमल हेति बिनसिओ है भवरा उनि मारगु निकसि न पाइओ ॥१॥ (670-18)
कमलकुसम च्मपक के नामा ॥ (1430-12)
कमला भ्रम भीति कमला भ्रम भीति हे तीखण मद बिपरीति हे अवध अकारथ जात ॥ (461-18)
कमलाकंत करहि कंतूहल अनद बिनोदी निहसंगा ॥६॥ (1082-12)
कमलापति कवला नही जानां ॥३॥ (691-18)
कमलु प्रगासि सदा रंगि राता अनहद सबदु वजाइआ ॥ (602-14)
कमलु बिगासि मनु हरि प्रभ लागै ॥ (153-16)
कमलु बिगासि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥६॥ (126-11)
कमलु विगसै सचु मनि गुर कै सबदि निहालु ॥ (1278-17)
कमादै अरु कागदै कुंने कोइलिआह ॥ (1380-9)
कमावा तिन की कार सरीरु पवितु होइ ॥ (518-14)
कर ऊजल तिलकु कपाला ॥ (1351-16)
कर करहि सेवा सीसु चरणी मनि आस दरस निमाणीआ ॥ (247-8)
कर करि करता कंगन पहिरै इन बिधि चितु धरेई ॥२॥ (359-10)
कर करि टहल रसना गुण गावउ ॥ (189-19)
कर करि ताल पखावजु नैनहु माथै वजहि रबाबा ॥ (884-12)
कर कासा दरसन की भूख ॥ (721-11)
कर क्मपहि सिरु डोल नैण न डीठिआ ॥ (705-11)
कर क्मपि चरण सरीरु क्मपै नैण अंधुले तनु भसम से ॥ (1110-12)

कर चरन मसतकु मेलि लीने सदा अनदिनु जागा ॥ (926-16)
कर जोड़ि गुर पहि करि बिनंती मिलहु साचि पिआरीआ ॥ (843-7)
कर जोड़ि गुर पहि करि बिनंती राहु पाधरु गुरु दसै ॥६॥ (767-4)
कर जोड़ि नानक दानु मागै अपणिआ संता देहि हरि दरसु ॥४॥५॥१४०॥ (406-9)
कर जोड़ि नानक दानु मागै जनम मरण निवारि लेहु ॥१॥ (457-19)
कर जोड़ि नानकु करे अरदासि ॥ (392-18)
कर जोड़ि नानकु दानु मांगै देहु अपना नाउ ॥२॥१॥६॥ (988-1)
कर जोड़ि नानकु दानु मांगै साधसंगि उधार ॥२॥७६॥९९॥ (1223-13)
कर जोड़ि नानकु सरणि आइओ प्रिअ नाथ नरहर करहु गात ॥१॥ (462-2)
कर जोड़ि नानकु साचु मागै नदरि करि तुधु भाणिआ ॥२॥ (844-4)
कर जोड़ि प्रभ पहि करि बिनंती मिलै हरि जसु लाहा ॥ (845-19)
कर जोड़ि सा धन करै बिनती रैणि दिनु रसि भिंनीआ ॥ (242-18)
कर जोड़िहु संत इकत्र होइ मेरे लाल जीउ अबिनासी पुरखु पूजेहा राम ॥ (542-7)
कर जोड़े सेवा करे अरदासि ॥ (370-10)
कर जोरि नानक दानु मागै हरि रखउ कंठि परोत ॥२॥५॥१३॥ (1121-15)
कर जोरि नानकु सरनि आइओ गोपाल पुरख अपार ॥४॥१॥१२९॥ (1229-7)
कर धरे चक्र बैकुंठ ते आए गज हसती के प्रान उधारीअले ॥ (988-14)
कर पलव साखा बीचारे ॥ (974-14)
कर बिनु वाजा पग बिनु ताला ॥ (412-10)
कर महि अम्रितु आणि निसारिओ ॥ (389-10)
कर संगि साधू चरन पखारै संत धूरि तनि लावै ॥ (381-12)
कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥ (281-8)
कर हरिहट माल टिंड परोवहु तिसु भीतरि मनु जोवहु ॥ (1171-2)
करउ अढाई धरती मांगी बावन रूपि बहानै ॥ (1344-4)
करउ अरदासि अपने सतिगुर पासि ॥ (192-15)
करउ अरदासि गाव किछु बाकी ॥ (792-16)
करउ जतन जे होइ मिहरवाना ॥ (562-12)
करउ नमसकार भगत जन धूरि मुखि लावउ ॥३॥ (813-17)
करउ निहोरा बहुतु बेनती सेवउ दिनु रैनाई ॥ (1207-3)
करउ बंदना अनिक वार सरनि परउ हरि राइ ॥ (296-17)
करउ बराबरि जो प्रिअ संगि रातीं इह हउमै की ढीठाई ॥१॥ (1267-15)
करउ बिनंती मानु तिआगउ ॥ (99-16)
करउ बिनउ गुर अपने प्रीतम हरि वरु आणि मिलावै ॥ (1254-9)
करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ (13-14)
करउ बेनंती सुनहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ (205-14)
करउ बेनती अति घनी इहु जीउ होमागउ ॥ (808-11)
करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥ (269-10)

करउ बेनती संतन पासे ॥ (759-17)
करउ बेनती सतिगुर अपुनी ॥ (388-5)
करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख देहु उपदेसो रे ॥३॥ (612-9)
करउ बेनती साधसंगति हरि भगति वछल सुणि आइओ ॥ (712-10)
करउ मनोरथ मनै माहि अपने प्रभ ते पावउ ॥ (813-14)
करउ सेवा गुर लागउ चरन गोविंद जी का मारगु देहु जी बताई ॥१॥ रहाउ ॥ (686-18)
करउ सेवा सत पुरख पिआरे जत सुनीऐ तत मनि रहसाउ ॥ (1119-18)
करजु उतारिआ सतिगुरू करि आहरु आप ॥१॥ (816-13)
करण करावणहार प्रभु दाता पारब्रहम प्रभु सुआमी ॥ (615-11)
करण करावनहार दइआल ॥ (184-5)
करण करावनहार सुआमी ॥ (178-2)
करण करावनहार सुआमी आपन हाथि संजोगी ॥१॥ (610-2)
करण करीम न जातो करता तिल पीड़े जिउ घाणीआ ॥३॥ (1020-2)
करण कारण एकु ओही जिनि कीआ आकारु ॥ (51-2)
करण कारण पूरन समरथु ॥१॥ (1150-14)
करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥ (276-18)
करण कारण प्रभु सोई ॥ रहाउ ॥ (626-12)
करण कारण सभना का एको अवरु न दूजा कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (666-10)
करण कारण सभसै सिरि तोही ॥१॥ रहाउ ॥ (413-7)
करण कारण समरथ अपारा अवरु नाही रे कोई ॥१॥ (380-11)
करण कारण समरथ अपारा त्रिबिधि मेटि समाई ॥ (1111-6)
करण कारण समरथ आपाहे ॥ (1071-12)
करण कारण समरथ प्रभ तेरी सरणाई ॥ (813-12)
करण कारण समरथ प्रभ देहि अपना नाउ ॥ (815-10)
करण कारण समरथ प्रभ हरि अगम अपार ॥४॥१९॥४९॥ (813-7)
करण कारण समरथ प्रभु जो करे सु होई ॥ (706-2)
करण कारण समरथ सुआमी जा ते ब्रिथा न कोई ॥३॥ (611-10)
करण कारण समरथ सुआमी पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ (619-14)
करण कारण समरथ सुआमी हरि एकसु ते मेरी गाते ॥१॥ रहाउ ॥ (1209-10)
करण कारण समरथ सो प्रभु जीअ दाता आपि ॥ (405-14)
करण कारण समरथ स्रीधर आपि कारजु सारए ॥ (436-8)
करण कारण समरथह दानु देत प्रभु पूरनह ॥ (1357-17)
करण कारण समरथु अपारा ॥ (1035-7)
करण कारण समरथु अपारु ॥१॥ रहाउ ॥ (744-19)
करण कारण समरथु गुरु मेरा ॥ (1149-13)
करण कारण समरथु सदा सोई सरब जीअ मनि ध्याइयउ ॥ (1405-6)
करण कारण समरथु सुआमी नानक तिसु सरणाई ॥४॥ (915-13)

करण कारण समरथु सो भाई सचै सची सोइ ॥ (620-12)
करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥ (1353-10)
करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥ (148-17)
करण कारण समरथु है घटि घटि सभ बोलै ॥ (1102-15)
करण कारण समरथु है तिसु बिनु नही होरु ॥ (818-5)
करण कारण सम्रथ स्रीधर सरणि ता की गही ॥ (501-6)
करण कारणु चिति न आवै दे करि राखै हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ (1007-11)
करण पलाव करे नही पावै इत उत ढूढत थाकि परे ॥ (1014-1)
करण पलाव करे बहुतेरे नरकि सुरगि अवतारा हे ॥१२॥ (1029-14)
करण पलाव करे बिललावै जिउ कुंडी मीनु पराता हे ॥१०॥ (1031-17)
करण पलाव करै बिललातउ बिनु गुर नामु न जापै ॥ (1275-4)
करण पलाह करहि सिव देव ॥ (867-10)
करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै ॥ (722-9)
करण पलाह मिटहि बिललाटा ॥ (1004-15)
करणहार कउ किछु अचरजु नाहि ॥३॥ (899-5)
करणहार की सेव न साधी ॥१॥ (741-1)
करणहार प्रभु हिरदै वूठा ॥ (898-16)
करणहार मेरे प्रभ एक ॥ (894-12)
करणहारि खिन भीतरि करिआ ॥ (103-11)
करणहारु जो करि रहिआ साई वडिआई ॥ (813-1)
करणहारु नानक मनि बसिआ ॥४॥५०॥११९॥ (189-18)
करणहारु सद वसै हदूरा ॥ (188-18)
करणा कथना कार सभ नानक आपि अकथु ॥ (1289-4)
करणा सा सोई करि रहिआ देहि नाउ बलिहारी ॥१॥ रहाउ ॥ (1209-7)
करणी उपरि होइ तपावसु जे को कहै कहाए ॥२॥ (1238-6)
करणी उपरि होवगि सार ॥ (1169-4)
करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥ (141-5)
करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥ (990-2)
करणी काबा सचु पीरु कलमा करम निवाज ॥ (140-19)
करणी कामण जे थीऐ जे मनु धागा होइ ॥ (557-10)
करणी कामणि करि मन लए ॥२॥ (152-1)
करणी कार कमावै सबदि समावै अंतरि एको जाणिआ ॥ (770-5)
करणी कार धुरहु फुरमाई ॥ (363-2)
करणी कार धुरहु फुरमाई आपि मुआ मनु मारी ॥ (689-2)
करणी कीरति करम समानै ॥३॥ (223-11)
करणी कीरति गुरमति सारु ॥ (1343-18)
करणी कीरति नामु वसाई ॥ (363-3)

करणी कीरति होई ॥ (599-12)
करणी कुंगू जे रलै घट अंतरि पूजा होइ ॥१॥ (489-4)
करणी कुता दरि फुरमानु ॥ (350-3)
करणी ते करि चकहु ढालि ॥ (878-8)
करणी बाझहु घटे घटि ॥३॥ (25-4)
करणी बाझहु तरै न कोइ ॥ (952-4)
करणी बाझहु भिसति न पाइ ॥ (952-1)
करणी लाहणि सतु गुड़ु सचु सरा करि सारु ॥ (553-3)
करणै वाला विसरिआ दूजै भाइ पिआरु ॥ (39-12)
करणैहारा बूझहु रे ॥ (1003-18)
करणैहारु अलिपतु आपि ॥ (1193-2)
करणैहारु न जीअ महि आवै ॥२॥ (1143-12)
करणैहारु न बुझै बिगाना ॥३॥ (178-15)
करणैहारु पछाणै सोइ ॥ (282-6)
करणैहारु पछानिआ ॥ (212-3)
करणैहारु रिदे महि धारु ॥३॥ (196-1)
करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फंध ॥ (1428-8)
करत करत अनिक बहु भाती नीकी इह ठहराई ॥ (499-12)
करत करत इव ही दुखु पाइआ ॥ (1143-12)
करत करत इव ही बिरधानो हारिओ उकते तनु खीनसूआ ॥ (206-15)
करत करत चरच चरच चरचरी ॥ (1308-1)
करत केल बिखै मेल चंद्र सूर मोहे ॥ (1231-3)
करत फिरे बन भेख मोहन रहत निरार ॥१॥ रहाउ ॥ (534-12)
करत बिकार दोऊ कर झारत ॥ (743-18)
करत बीचारु हिरदै हरि रविआ हिरदै देखि बीचारिआ ॥१॥ (353-13)
करत बुराई मानुख ते छपाई साखी भूत पवान ॥१॥ रहाउ ॥ (1202-18)
करत रहे क्रतग्य करुणा मै अंतरजामी ि्गयान ॥ (1302-4)
करतन महि तूं करता कहीअहि आचारन महि आचारी ॥ (507-15)
करतब करनि भलेरिआ मदि माइआ सुते ॥ (321-1)
करतब सभि सवारे ॥ (627-7)
करता आपि अभुलु है न भुलै किसै दा भुलाइआ ॥ (145-14)
करता करणा करता जाना ॥७॥ (221-10)
करता करे करावै सोइ ॥३॥ (796-3)
करता करे सु निहचउ होवै ॥ (1062-1)
करता करे सु होगु कूड़ु निखुटसी ॥२६॥ (1290-19)
करता करे सु होगु न चलै चलाइआ ॥४॥ (139-19)
करता चिति न आवई फिरि फिरि लगहि दुख जीउ ॥ (751-8)

करता चिति न आवई मनमुख अंध गवार ॥१॥ (42-7)
करता तूं सभना का सोई ॥ (360-13)
करता तू मेरा जजमानु ॥ (1329-6)
करता तू मै माणु निमाणे ॥ (596-19)
करता मंनि वसाइआ ॥ (132-15)
करता राखै कीता कउनु ॥ (888-6)
करता सभु को तेरै जोरि ॥ (17-18)
करता सो सालाहीऐ जिनि कीता आकारु ॥ (1239-2)
करता होइ जनावै ॥१॥ रहाउ ॥ (215-18)
करता होइ सु अनभै रहै ॥२॥ (1167-10)
करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥ (267-17)
करतार कुदरति करण खालक नानक तेरी टेक ॥२॥५॥ (724-17)
करतार पुरि करता वसै संतन कै पासि ॥१॥ रहाउ ॥ (816-18)
करतूति पसू की मानस जाति ॥ (267-11)
करतूति सति सति जा की बाणी ॥ (284-15)
करते की मिति करता जाणै कै जाणै गुरु सूरा ॥३॥ (930-6)
करते की मिति न जानै कीआ ॥ (285-1)
करते कुदरती मुसताकु ॥ (724-10)
करते कै करणै नाही सुमारु ॥ (3-13)
करते पाप अनेक माइआ रंग रटिआ ॥ (705-5)
करते हथि वडिआईआ पूरबि लिखिआ पाइ ॥३॥ (52-7)
करते हथि वडिआईआ बूझहु गुर बीचारि ॥ (937-16)
करतै अपणा रूपु दिखाइआ ॥१३॥१॥२॥ (1155-4)
करतै आपि वसाइआ सरब सुख पाइआ पुत भाई सिख बिगासे ॥ (783-3)
करतै कारणु जिनि कीआ सो जाणै सोई ॥ (787-19)
करतै कीआ तपावसो दुसट मुए होइ मूरे ॥७॥ (133-3)
करतै पुरखि तालु दिवाइआ ॥ (625-11)
करदा अनद बिनोद किछू न जाणीऐ ॥ (957-15)
करदा पाप अमितिआ नित विसो चखै ॥ (315-7)
करन करावन अंतरजामी ॥ (387-3)
करन करावन आपि ॥ (896-9)
करन करावन आपे आपि ॥ (279-3)
करन करावन उपाइ समावन सगल छत्रपति बीठा ॥१॥ रहाउ ॥ (1235-4)
करन करावन करता सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (189-9)
करन करावन करनै जोगु ॥ (276-19)
करन करावन करनैहारु ॥ (279-3)
करन करावन करनैहारु ॥ (291-11)

करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥ (285-9)
करन करावन तुही एक ॥ (211-6)
करन करावन नानक के प्रभ संतन संगि उधारी ॥२॥३६॥५९॥ (1216-2)
करन करावन पूरन सचु सोइ ॥ रहाउ ॥ (202-14)
करन करावन सगल बिधि सो सतिगुरू हमारा ॥१॥ रहाउ ॥ (399-19)
करन करावन सभ किछु तुम ही तुम समरथ नाही अन होरी ॥ (208-14)
करन करावन सभु किछु एकै ॥ (236-1)
करन करावन सभु तूहै तूहै है नाही किछु असाड़ा ॥१॥ (1081-5)
करन करावन समरथो भाई सरब कला भरपूरि ॥४॥ (640-3)
करन करावन सरनि परिआ ॥ (393-18)
करन करावन सरब को नाथ ॥ (277-12)
करन करावन सोई ॥ (886-17)
करन करावन हरि अंतरजामी जन अपुने की राखै ॥ (630-9)
करन करावन हाजरा हजूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (987-11)
करन करावनहार प्रभ सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (388-1)
करन करावनहार समरथा किआ नानक जंत बिचारा ॥२॥११॥ (530-12)
करन करावनहार सुआमी ॥ (1079-9)
करन करावनहार सुआमी ॥ (1148-17)
करन करावनहार सुआमी ॥ (266-11)
करन करावनहार सुआमी ता ते बिरथा कोइ न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1146-3)
करन करावनहार सुआमी नानक ओट गही ॥१॥ रहाउ ॥ (529-15)
करन करावनहारु प्रभु जानै ॥ (294-8)
करन कारन समरथ दइआर ॥ (866-18)
करन कारन समरथ हमारे सुखदाई मेरे हरि हरि राइ ॥ (373-5)
करन कारन समरथु सुआमी नानकु तिसु कुरबानु हे ॥५॥२॥३२॥ (1008-4)
करन कारन सो प्रभु समरथु ॥ (288-4)
करन केल गुण अमोल नानक बलिहारं ॥२॥१॥५९॥ (901-11)
करन न सुनही नादु करन मुंदि घालिआ ॥ (1362-17)
करन न सुनही हरि जसु बिंद ॥ (298-15)
करन न सुनै काहू की निंदा ॥ (274-5)
करननि पूरि रहिओ जसु प्रीतम कलमल दोख सगल मल हरसन ॥ (1303-11)
करनहारु इक निमख न जापिआ ॥२॥ (805-15)
करनहारु नानक इकु जानिआ ॥३॥ (292-16)
करनहारु रखवाला होआ जा का अंतु न पारावार ॥ (683-6)
करनहु मधु बासुरी बाजै जिहवा धुनि आगाजा ॥ (884-13)
करना आपि करावन आपे कहु नानक आपि आपाइओ ॥२॥३०॥५३॥ (1214-19)
करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥ (793-19)

करनि भगति दिनु राति न रहनी वारीआ ॥ (148-11)
करनि हरि जसु नेत्र दरसनु रसनि हरि गुन गाउ ॥ (988-7)
करनी सुणि सुणि जीविआ भाई निहचलु पाइआ थाउ ॥ (640-6)
करनी सुणि सुणि मनु तनु हरिआ मेरे साहिब सगल उधारणा ॥६॥ (1077-4)
करनी सुनीऐ जसु गोपाल ॥ (298-19)
करनैहारु न बूझई आपु गनै बिगाना ॥१॥ (813-9)
करनैहारु न भूलनहारा ॥ (253-13)
करपूर पुहप सुगंधा परस मानुख्य देहं मलीणं ॥ (1360-6)
करम अकरम बीचारीऐ संका सुनि बेद पुरान ॥ (346-13)
करम करत जीअ कउ जंजार ॥३॥ (385-16)
करम करत बधे अहमेव ॥ (324-14)
करम करत होवै निहकरम ॥ (274-7)
करम करतूति अम्रित फलु लागा हरि नाम रतनु मनि पाइआ ॥७॥ (1039-2)
करम करतूति कै ऊपरि करम ॥ (1182-15)
करम करतूति बेलि बिसथारी राम नामु फलु हूआ ॥ (351-2)
करम करहि गुर सबदु न पछाणहि मरि जनमहि वारो वारा ॥२॥ (602-2)
करम करि अरुण पिंगुला री ॥२॥ (695-5)
करम करि कछउटी मफीटसि री ॥५॥ (695-8)
करम करि कपालु मफीटसि री ॥३॥ (695-6)
करम करि कलंकु मफीटसि री ॥१॥ (695-3)
करम करि खारु मफीटसि री ॥४॥ (695-7)
करम करि तुअ दरस परस पारस सर बल्य भट जसु गाइयउ ॥ (1405-14)
करम करीम जु करि रहे मेटि न साकै कोइ ॥३२॥ (1366-4)
करम करै त बंधा नह करै त निंदा ॥ (1019-11)
करम कांड अहंकारु न काजै कुसल सेती घरि जाहि पंडित ॥१॥ रहाउ ॥ (891-12)
करम कांड बहु करहि अचार ॥ (162-4)
करम खंड की बाणी जोरु ॥ (8-3)
करम धरती सरीरु कलिजुग विचि जेहा को बीजे तेहा को खाए ॥ (308-13)
करम धरती सरीरु जुग अंतरि जो बोवै सो खाति ॥ (78-5)
करम धरम अनेक किरिआ सभ ऊपरि नामु अचारु ॥२॥ (405-9)
करम धरम अरपउ सभ होमा ॥ (391-10)
करम धरम इहु ततु गिआनु ॥ (866-10)
करम धरम करते बहु संजम अह्मबुधि मनु जारिओ रे ॥१॥ (335-12)
करम धरम करि मुकति मंगाही ॥ (1024-3)
करम धरम की सार न जाणै सुरति मुकति किउ पाईऐ ॥ (437-9)
करम धरम की सूल न सहहु ॥७॥ (343-14)
करम धरम जुगता निमख न हेतु करता गरबि गरबि पड़ै कही न लेखै ॥ (687-7)

करम धरम जुगति बहु करता करणैहारु न जानै ॥ (380-2)
करम धरम ततु गिआनु संता संगु होइ ॥ (521-9)
करम धरम ततु नाम अराधू ॥ (260-3)
करम धरम तुम्ह चउपड़ि साजहु सतु करहु तुम्ह सारी ॥ (1185-12)
करम धरम नही माइआ माखी ॥ (1035-18)
करम धरम नेम ब्रत पूजा ॥ (199-5)
करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै ॥ (747-15)
करम धरम प्रभि मेरै कीए ॥ (1345-6)
करम धरम बहु संख असंख ॥ (413-12)
करम धरम संजम सुच नेमा चंचल संगि सगल बिधि हारी ॥ (1388-8)
करम धरम संजमु सत भाउ ॥ (353-4)
करम धरम सगला ई खोवै ॥ (676-11)
करम धरम सचु साचा नाउ ॥ (353-1)
करम धरम सभि बंधना पाप पुंन सनबंधु ॥ (551-3)
करम धरम सभि हउमै फैलु ॥ (890-7)
करम धरम सुच संजम करहि अंतरि लोभु विकारु ॥ (552-2)
करम धरम सुचि संजमु करहि अंतरि लोभु विकार ॥ (1423-16)
करम पेडु साखा हरी धरमु फुलु फलु गिआनु ॥ (1168-6)
करम बध तुम जीउ कहत हौ करमहि किनि जीउ दीनु रे ॥२॥ (870-10)
करम भाग संतन संगाने कासट लोह उधारिओ रे ॥३॥ (335-16)
करम भावनी संग लीन ॥ (1195-2)
करम भूमि महि बोअहु नामु ॥ (176-17)
करम भूमि हरि नामु बोइ अउसरु दुलभाइआ ॥२॥ (812-9)
करम वधहि कै लोअ खपि मरीजई ॥ (1285-14)
करम सुकरम कराए आपे आपे भगति द्रिड़ामं ॥ (634-18)
करम सुकरम कराए आपे इसु जंतै वसि किछु नाहि ॥ (77-9)
करम सुकरम कराए आपे कीमति कउण अभेवए ॥ (766-17)
करमवंती सालाहिआ नानक करि गुरु पीरु ॥ (146-10)
करमहीण धन करै बिनंती कदि नानक आवै वारी ॥ (959-15)
करमहीणि मनमुखि दुखु पावै ॥३॥ (737-7)
करमहीणु सचु भीखिआ मांगै नानक मिलै वडाई ॥४॥११॥ (1330-14)
करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ ॥३॥ (157-1)
करमि परापति जिसु नामु देह ॥ (1184-4)
करमि परापति तिसु होवै जिस नो होइ दइआलु ॥१॥ (49-14)
करमि पवै नीसानु न चलै चलाइआ ॥ (150-11)
करमि पूरै पूरा गुरू पूरा जा का बोलु ॥ (146-5)
करमि मिलै आखणु तेरा नाउ ॥ (662-3)

करमि मिलै जम का भउ मूचा ॥३॥ (153-18)
करमि मिलै ता पाईऐ आपि न लइआ जाइ ॥ (61-6)
करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥२॥ (16-8)
करमि मिलै ता पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ॥ (28-19)
करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥ (465-1)
करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥३॥ (349-4)
करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥३॥ (9-13)
करमि मिलै पावै सचु नाउ ॥ (906-4)
करमि मिलै सचु पाईऐ गुरमुखि सदा निरोधु ॥३॥ (19-11)
करमि मिलै सचु पाईऐ धुरि बखस न मेटै कोइ ॥६॥ (62-13)
करमि मिलै सो पाईऐ किरतु पइआ सिरि देह ॥३॥ (60-5)
करमि लिखंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ (1193-7)
करमी आपो आपणी आपे पछुताणी ॥ (315-4)
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ (146-16)
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ (8-12)
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ (2-5)
करमी करमी होइ वीचारु ॥ (7-13)
करमी सतिगुरु पाइआ जिनि हउ लीआ छडाइ ॥२०९॥ (1375-16)
करमी सतिगुरु पाईऐ अनदिनु लगै धिआनु ॥ (313-1)
करमी सतिगुरु भेटीऐ ता सचि नामि लिव लागै ॥ (851-18)
करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥ (919-10)
करमु खुला गुरु पाइआ हरि मिलिआ सुआमी ॥ (1099-10)
करमु जिस कउ धुरहु लिखिआ सोई कार कमाइ ॥२॥ (1002-12)
करमु धरमु किछु उपजि न आइओ नह उपजी निरमल करणी ॥ (530-4)
करमु धरमु तेरे नाम की जाति ॥१॥ रहाउ ॥ (154-2)
करमु धरमु मेरा कछु न बीचारिओ ॥ (1184-19)
करमु धरमु सचु हाथि तुमारै ॥ (1034-5)
करमु न जाणा धरमु न जाणा लोभी माइआधारी ॥ (624-14)
करमु होवै गुरु किरपा करै ॥ (1129-1)
करमु होवै गुरु भगति द्रिड़ाए ॥ (1061-9)
करमु होवै तां सेवा करै ॥ (1172-6)
करमु होवै ता परम पदु पाईऐ कथे अकथ कहाणी ॥३॥ (423-2)
करमु होवै ता सतिगुरु पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ॥ (1276-2)
करमु होवै ता सतिगुरु पाए ॥ (1067-9)
करमु होवै ता सतिगुरु सेवे सहजे ही सुखु पाइदा ॥१०॥ (1061-7)
करमु होवै भेटे गुरु पूरा ॥ (1068-6)
करमु होवै सतसंगि मिलाए ॥ (158-11)

करमु होवै सतिगुरु मिलै बूझै बीचारा ॥ (418-14)
करमु होवै सतिगुरु मिलै बैरागीअड़े ॥ (1104-18)
करमु होवै सतिगुरू मिलाए ॥ (109-19)
करमु होवै सोई जनु पाए गुरमुखि बूझै कोई ॥ (491-6)
कररो ध्रमराइआ ॥२॥ (746-13)
करवटु दे मो कउ काहे कउ मारे ॥१॥ रहाउ ॥ (484-7)
करवतु भला न करवट तेरी ॥ (484-7)
करसनि तखति सलामु लिखिआ पावसी ॥११॥ (143-5)
करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥ (918-4)
करहले मन परदेसीआ किउ मिलीऐ हरि माइ ॥ (234-4)
करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥ (8-5)
करहि अरदासि बहुतु बेनंती निमख निमख साम्हारहि ॥ (1211-3)
करहि करावहि मूकरि पावहि पेखत सुनत सदा संगि हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (823-11)
करहि जि गुर फुरमाइआ सिल जोगु अलूणी चटीऐ ॥ (966-19)
करहि बिकार विथार घनेरे सुरति सबद बिनु भरमि पइआ ॥ (906-15)
करहि बिभूति लगावहि भसमै ॥ (1043-10)
करहि बुराई ठगाई दिनु रैनि निहफल करम कमाही ॥ (1207-8)
करहि बेनती राखु ठाकुर ते हम तेरी सरनइआ ॥२॥ (612-14)
करहि भगति अरु रंग अपारा ॥ (1074-7)
करहि भगति आतम कै चाइ ॥ (286-7)
करहि सु होईऐ हां ॥ (410-13)
करहि सोम पाकु हिरहि पर दरबा अंतरि झूठ गुमान ॥ (1203-1)
करहु अनुग्रहु पतित उधारन राखु सुआमी आप भरोसे ॥१॥ रहाउ ॥ (829-9)
करहु अनुग्रहु पारब्रहम हरि किरपा धारि मुरारि ॥१॥ (431-3)
करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे गनहु न मोहि कमाइओ ॥ (501-3)
करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे मन ते कबहु न डारउ ॥१॥ रहाउ ॥ (532-1)
करहु क्रिपा करुणापते तेरे हरि गुण गाउ ॥ (745-19)
करहु क्रिपा गोपाल गोबिदे अपना नामु जपावहु ॥ रहाउ ॥ (1120-7)
करहु क्रिपा गोपाल बीठुले बिसरि न कब ही जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1223-7)
करहु क्रिपा जगजीवन दाते मेरा मनु हरि सेती राचे ॥ (169-10)
करहु क्रिपा प्रभ करनैहारे ॥ (258-8)
करहु क्रिपा प्रीतम मनमोहन फोरि भरम की रेखा ॥१॥ रहाउ ॥ (1221-9)
करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥२॥ (346-7)
करहु क्रिपा मुरारि माधउ सुणि नानक जीवै गाथ ॥२॥७॥३०॥ (1007-12)
करहु क्रिपा मोहि प्रभू मिलावहु निमख दरसु पेखागिओ ॥३॥ (1204-2)
करहु क्रिपा संतहु मोहि अपुनी प्रभ मंगल गुण गाई ॥१॥ (1207-14)
करहु क्रिपा सरब के दाते एक रूप लिव लावहु ॥ (216-12)

करहु गति दइआल संतहु मोरी ॥ (1217-2)
करहु तपावसु प्रभ सरबागि ॥७॥ (1347-18)
करहु दइआ तेरा नामु वखाणा ॥ (566-11)
करहु बिबेकु संत जन भाई खोजि हिरदै देखि ढंढोली ॥ (168-19)
करि अउगण पछोतावणा ॥१४॥ (471-1)
करि अनरथ दरबु संचिआ सो कारजि केतु ॥ (706-17)
करि अनुग्रह राखि लीने एक नाम अधार ॥ (1228-12)
करि अनुग्रहु आपि राखिओ नह उपजतउ बेकारु ॥ (1121-10)
करि अनुग्रहु आपि राखे भए पूरन काम ॥२॥ (502-3)
करि अनुग्रहु पतित पावन बहु जोनि भ्रमते हारी ॥ (547-9)
करि अनुग्रहु प्रभू मेरे नानक नाम सुआउ ॥२॥१॥३१॥ (502-17)
करि अनुग्रहु राखि लीने मोह ममता सभ तजे ॥ (460-18)
करि अनुग्रहु राखि लीनो भइओ साधू संगु ॥ (1017-8)
करि अपराध सरणि हम आइआ ॥ (904-17)
करि अपुना लीनो नदरि निहालि ॥५॥ (240-13)
करि अपुनी दासी मिटी उदासी हरि मंदरि थिति पाई ॥ (782-11)
करि अबदाली भेसवा ॥ रहाउ ॥ (1167-14)
करि अहंकारु होइ वरतहि अंध ॥ (889-17)
करि आचार बहु स्मपउ संचै जो किछु करै सु नरकि परै ॥४॥ (1334-17)
करि आचारु सचु सुखु होई ॥ (931-15)
करि आभरण सवारी सेजा कामनि थाटु बनाइआ ॥ (712-14)
करि आसणु डिठो चाउ ॥१॥ (463-5)
करि आसा आइओ प्रभ मागनि ॥ (804-4)
करि इसनानु ग्रिहि आए ॥ (621-18)
करि इसनानु तनि चक्र बणाए ॥ (1348-1)
करि इसनानु पूजा तिलकु लाल ॥ (374-3)
करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा ॥ (611-11)
करि उपदेसु झिड़के बहु भाती बहुड़ि पिता गलि लावै ॥ (624-17)
करि एकु धिआवहि तां फलु पावहि जितु सेविऐ भउ भागै ॥ (580-2)
करि करता उतरसि पारं ॥ (972-5)
करि करता तू एको जाणु ॥७॥ (903-5)
करि करतै करणी करि पाई ॥ (932-3)
करि करि अनरथ बिहाझी स्मपै सुइना रूपा दामा ॥ (497-13)
करि करि अनरथ विहाझी माइआ ॥ (391-19)
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ (4-13)
करि करि करता आपे वेखै जितु भावै तितु लाए ॥ (1257-13)
करि करि करता देखै सोइ ॥३॥ (222-14)

करि करि किरिआचार वधाए मनि पाखंड करमु कपट लोभईआ ॥ (837-3)
करि करि थाकी मीत घनेरे ॥ (1021-17)
करि करि थाके वडे वडेरे ॥ (889-14)
करि करि देखै अपनी वडिआई ॥ (277-2)
करि करि देखै आपि दइआला ॥ (1033-19)
करि करि देखै कीता अपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥ (347-14)
करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥ (9-7)
करि करि देखै खेलु अपारा ॥ (1077-7)
करि करि देखै हुकमु सबाइआ ॥ (1036-8)
करि करि पाप दरबु कीआ वरतण कै ताई ॥ (809-14)
करि करि वेखहि कीता अपणा ॥ (1077-5)
करि करि वेखै अपणी वडिआई ॥ (1043-18)
करि करि वेखै अपणे जचना ॥ (1019-17)
करि करि वेखै करता सोई ॥ (840-16)
करि करि वेखै करे कराए सरब जीआ नो रिजकु दीआ ॥१॥ (1334-12)
करि करि वेखै कीता अपणा करणी कार कराइदा ॥१५॥ (1035-7)
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥ (6-14)
करि करि वेखै नदरि निहाल ॥ (8-6)
करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ (7-5)
करि करि वेखै हुकमु चलाए तिसु निसतारे जा कउ नदरि करे ॥१७॥ (433-9)
करि करि वेस खपहि जलि जावहि ॥ (839-14)
करि करि हारिओ अनिक बहु भाती छोडहि कतहूं नाही ॥ (206-1)
करि करि हेतु वधाइदे पर दरबु चुराइआ ॥ (1245-15)
करि किरपा अंतरजामी ॥ (623-13)
करि किरपा अंतरि उर धारै ॥ (274-17)
करि किरपा अपना दरसु दीजै जसु गावउ निसि अरु भोर ॥ (500-1)
करि किरपा अपना नामु दीजै नानक साध रवाला ॥४॥११॥५८॥ (750-10)
करि किरपा अपनी भगती लाइ ॥ (737-3)
करि किरपा अपनी सेवा लाइ ॥ (1148-18)
करि किरपा अपनी सेवा लाए ॥ (1148-2)
करि किरपा अपनी सेवा लाए सगला दुरतु मिटाइआ ॥१॥ (1338-16)
करि किरपा अपने जन राखे ॥ (202-15)
करि किरपा अपने प्रभि कीने नाम अपुने की कीनी दाति ॥ (820-19)
करि किरपा अपनै घरि आइआ ॥ (1016-13)
करि किरपा अपनै घरि आइआ ता मिलि सखीआ काजु रचाइआ ॥ (351-13)
करि किरपा अपुना दासु कीनो काटे माइआ फाधिओ ॥ (530-18)
करि किरपा अपुना दासु कीनो बंधन तोरि निरारे ॥ (531-18)

करि किरपा अपुना नामु दीना ॥१॥ रहाउ ॥ (804-16)
करि किरपा अपुने करि राखे मात पिता जिउ पाला ॥१॥ रहाउ ॥ (623-10)
करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥ (1237-6)
करि किरपा अपुने प्रभि कीए ॥ (1339-9)
करि किरपा अपुनै घरि आवै ॥ (930-17)
करि किरपा अपुनै नाइ लाए सरब सूख प्रभ तुमरी रजाइ ॥ रहाउ ॥ (395-1)
करि किरपा अपुनो करि लीना मनि वसिआ अबिनासी ॥२॥ (616-1)
करि किरपा अपुनो नामु दीजै नानक सद बलिहारे ॥४॥१॥१३८॥ (210-6)
करि किरपा अरदासि सुणीजै ॥ (896-11)
करि किरपा आपि दीने ॥१॥ (626-14)
करि किरपा उधरु हरि नागर ॥१॥ (760-2)
करि किरपा करहु प्रभ दाति ॥ (1144-10)
करि किरपा करि लीनो अपुना जलते सीतल होणी ॥१॥ (530-4)
करि किरपा काटे जम जाल ॥३॥ (190-10)
करि किरपा किरपाल आपे बखसि लै ॥ (961-6)
करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥ (917-17)
करि किरपा किलविख सभि काटे नामु निरमलु मनि दीआ ॥ (1268-5)
करि किरपा कीने घर गोले ॥ (1072-6)
करि किरपा गुर चरण निवासि ॥ (1271-13)
करि किरपा गुर दरसु दिखावहु हउमै सबदि जलाई ॥७॥ (504-16)
करि किरपा गुर दीनो नाउ ॥ (395-15)
करि किरपा गुर पारब्रहम पूरे अनदिनु नामु वखाणा राम ॥ (543-9)
करि किरपा गुरदेव दइआला गुण गावा नित सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ (750-6)
करि किरपा गुरमुखि लगै पिआरु ॥ (1261-15)
करि किरपा गुरि कीनी दाति ॥२॥ (395-17)
करि किरपा गुरि दीआ बताइ ॥२॥ (865-4)
करि किरपा गुरि दीनो दानु ॥ (1149-12)
करि किरपा गुरि रोगु गवाइआ ॥३॥ (1172-14)
करि किरपा गुरु मेलि पिआरे ॥७॥ (686-14)
करि किरपा गोबिंद प्रभ प्रीतम दीना नाथ सुनहु अरदासि ॥ (204-11)
करि किरपा घरि आइआ आपे मिलिआ आइ ॥ (32-14)
करि किरपा घरि आइआ गुर कै हेति अपारि ॥ (428-17)
करि किरपा घरु महलु दिखाइआ ॥ (153-19)
करि किरपा चरन संगि मेली ॥ (379-1)
करि किरपा जउ सतिगुरु मिलिओ ॥ (235-18)
करि किरपा जन लीए छडाइ ॥ (865-12)
करि किरपा जन सेवा लाए ॥ (866-9)

करि किरपा जब मेले साहि ॥ (181-6)
करि किरपा जा कउ मति देइ ॥ (865-17)
करि किरपा जा कउ मिले धनि धनि ते ईसुर ॥३॥ (816-11)
करि किरपा जा कउ मेलै सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1144-17)
करि किरपा जाचिक जन तेरे इकु मागउ दानु पिआरे ॥ (982-17)
करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥ (919-3)
करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥ (283-12)
करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥ (278-9)
करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥ (277-8)
करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥ (284-14)
करि किरपा जिसु आपि दिवाइआ ॥ (894-2)
करि किरपा जिसु आपि दिवाए ॥१॥ रहाउ ॥ (189-12)
करि किरपा जिसु आपि दिवावै ॥ (179-4)
करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥ (263-18)
करि किरपा जिसु आपे दीजै ॥ (895-2)
करि किरपा जिसु देइ सुआमी बिरले काहू जाना ॥३॥३॥२१॥ (676-5)
करि किरपा जिसु देवै नाउ ॥ (914-10)
करि किरपा जिसु भगती लावहु जनमु पदारथु सो जिना ॥८॥ (1079-9)
करि किरपा जिसु राखनहारा ॥ (1148-10)
करि किरपा जिसु राखहु संगे ते ते पारि पराते ॥२॥ (209-4)
करि किरपा जिसु राखै आपि ॥ (1147-11)
करि किरपा जिसु होइ सुप्रसंन ॥ (1150-18)
करि किरपा जिह आपि दिवाए ॥ (254-12)
करि किरपा जो अपुना कीनो ता की ऊतम बाणी ॥ (1220-9)
करि किरपा टहल हरि लाइओ तउ जमि छोडी मोरी लागि ॥१॥ (701-3)
करि किरपा डुबदा पथरु लीजै ॥ (103-6)
करि किरपा तिसु संगि मिलावै ॥१॥ रहाउ ॥ (183-17)
करि किरपा तुम ही प्रतिपाला ॥ (744-16)
करि किरपा तेरे गुण गावा ॥ (563-10)
करि किरपा तेरे चरन धिआवउ नानक मनि तनि दरस पिआस ॥२॥५॥१९॥ (1208-3)
करि किरपा दइआल प्रभ इह निधि सिधि पावउ ॥ (812-2)
करि किरपा दास नदरि निहाले ॥ (132-1)
करि किरपा दीओ मोहि नामा बंधन ते छुटकाए ॥ (671-5)
करि किरपा दीजै गुरदेव ॥४॥१५॥१७॥ (867-12)
करि किरपा दीजै प्रभ दानु ॥ (193-4)
करि किरपा दीनो हरि नामा पूरबि संजोगि मिलाई ॥१॥ रहाउ ॥ (898-9)
करि किरपा देवहु हरि नामु ॥ (289-10)

करि किरपा धूरि देहु संतन की सुखु नानकु इहु बाछै ॥४॥९॥१३०॥ (207-13)
करि किरपा नदरि निहालिआ ॥ (1184-8)
करि किरपा नदरि निहालिआ भाई कीतोनु अंगु अपारु ॥ (640-12)
करि किरपा नानक आपि लए लाई ॥३॥ (268-15)
करि किरपा नानक उधारे ॥४॥४॥१७॥ (1185-2)
करि किरपा नानक गुण गाहि ॥४॥८३॥१५२॥ (196-13)
करि किरपा नानक जिसु देइ ॥८॥१०॥ (240-9)
करि किरपा नानक मेलि गुर पहि सिरु वेचिआ मोलीआ ॥१॥ (311-5)
करि किरपा नानक सुखु पाए ॥४॥२५॥३८॥ (1147-1)
करि किरपा नानकु गुण गावै राखहु सरम असाड़ी जीउ ॥४॥३०॥३७॥ (105-11)
करि किरपा नाम रसु दीआ ॥ (622-8)
करि किरपा नामु देवसी फिरि लेखु न लिखिआ ॥ (787-14)
करि किरपा नामु मंनि वसाए ॥ (424-3)
करि किरपा नामु हरि दीओ सहजि सुभाइ सवारिओ ॥१॥ (979-4)
करि किरपा पारब्रहम दइआल ॥ (893-9)
करि किरपा पारब्रहम सुआमी ॥ (1339-7)
करि किरपा पारब्रहम सुआमी इह बंधन छुटकारी ॥ (681-8)
करि किरपा पारब्रहम सुआमी जपी तुमारा नाउ ॥ रहाउ ॥ (502-19)
करि किरपा पारि उतारिआ ॥१३॥ (470-11)
करि किरपा पुरख गुणतासि ॥ (1147-18)
करि किरपा पूरन परमेसर निहचलु सचु सबदु नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (1323-2)
करि किरपा पूरन प्रभ दाते निरमल जसु नानक दास कहे ॥२॥१७॥१०३॥ (825-1)
करि किरपा पूरन सुखदाते ॥ (1270-14)
करि किरपा प्रगटे गोपाल ॥ (1184-12)
करि किरपा प्रतिपालण लागा करीं तेरा कराइआ ॥ रहाउ ॥ (626-18)
करि किरपा प्रभ अंतरजामी ॥ (184-8)
करि किरपा प्रभ अंतरजामी साधसंगि हरि पाईऐ ॥ (383-12)
करि किरपा प्रभ अपनी दाति ॥ (192-19)
करि किरपा प्रभ आइ मिलु मेरी जिंदुड़ीए गुरमति नामु परगासे राम ॥ (538-8)
करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥ (295-13)
करि किरपा प्रभ आपणी जन धूड़ी संगि समाउ ॥ (137-9)
करि किरपा प्रभ आपणी जपीऐ अम्रित नामु ॥ (46-11)
करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥ (134-9)
करि किरपा प्रभ आपणी सचे सिरजणहार ॥ (1251-11)
करि किरपा प्रभ गति करि मेरी ॥ (898-7)
करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ (194-19)
करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ (250-10)

करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ (563-4)
करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ (741-19)
करि किरपा प्रभ दीन दइआला गुण गावउ रंगि राता ॥ रहाउ ॥ (615-19)
करि किरपा प्रभ देहु नाउ ॥७॥ (1193-3)
करि किरपा प्रभ नदरि अवलोकन अपुनै चरणि लगाई ॥ (384-5)
करि किरपा प्रभ पारब्रहम गुण तेरा जसु गाउ ॥ (405-16)
करि किरपा प्रभ बंधन छोट ॥ (194-11)
करि किरपा प्रभ बिनउ सुनीजै ॥ (193-7)
करि किरपा प्रभ मेरिआ करउ दिनु रैनि सेव ॥ (1322-19)
करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक तेरी आस ॥३॥ (297-7)
करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक बलि जाउ ॥५॥ (707-3)
करि किरपा प्रभ राखि लेहु होरु नाही करण करेण ॥ (136-17)
करि किरपा प्रभ रिदै बसेरो ॥ (1303-9)
करि किरपा प्रभ लावहु पाई ॥४॥ (750-16)
करि किरपा प्रभ लेहि निसतारि ॥२॥ (1183-1)
करि किरपा प्रभ संगि मिलाइआ ॥ (105-16)
करि किरपा प्रभि अपना करिआ ॥१॥ (742-17)
करि किरपा प्रभि आपणी अपने दास रखि लीए ॥ (815-2)
करि किरपा प्रभि आपणी सचु साजि सवारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (399-14)
करि किरपा प्रभि आपणी हरि आपि परखे ॥ (318-13)
करि किरपा प्रभि आपि मिलाइआ ॥ (184-18)
करि किरपा प्रभि आपि मिलाए ॥ (1270-13)
करि किरपा प्रभि कीनी दइआ ॥ (892-14)
करि किरपा प्रभि कीनो अपना ॥ (197-6)
करि किरपा प्रभि कीनो दानु ॥ (1183-10)
करि किरपा प्रभि पारि उतारी ॥ (1029-1)
करि किरपा प्रभि मेलिआ दीआ अपणा नामु ॥ (46-7)
करि किरपा प्रभि मेले ॥१॥ (623-15)
करि किरपा प्रभि राखे ॥ (622-14)
करि किरपा प्रभि लए निवारे ॥१॥ (196-10)
करि किरपा प्रभि लीए मिलाए ॥ (1137-10)
करि किरपा प्रभि सगल रजाइआ ॥ (104-11)
करि किरपा प्रभि साधसंगि मेली ॥ (794-14)
करि किरपा प्रभु घर महि आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (805-6)
करि किरपा प्रभु भगती लावहु सचु नानक अम्रितु पीए जीउ ॥४॥२८॥३५॥ (105-1)
करि किरपा प्रभु भेटिआ मरणु न आवणु जाउ ॥१॥ (48-17)
करि किरपा प्रीतम प्रभ अपुने नामु जपउ हरि रंगि ॥१॥ (677-9)

करि किरपा भगतन संगि राते ॥ (100-2)
करि किरपा भगति रसु दीजै मनु खचित प्रेम रस खोरी ॥ (1222-14)
करि किरपा भगतीं प्रगटाइआ ॥ (108-9)
करि किरपा भेटे गुर सोई ॥ (196-2)
करि किरपा भेटे मोहि कंत ॥१॥ रहाउ ॥ (1143-4)
करि किरपा मिलु प्रीतम पिआरे ॥ (203-16)
करि किरपा मिले परमानंदा ॥ (1312-11)
करि किरपा मेरा चितु लाइआ ॥ (223-5)
करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥ (107-16)
करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥ (866-5)
करि किरपा मेरे प्रीतम सुआमी नेत्र देखहि दरसु तेरा राम ॥ (780-17)
करि किरपा मेलहु गुरु पूरा सतसंगति संगि सिंधु भउ तरी ॥१॥ रहाउ ॥ (1134-6)
करि किरपा मेलहु सतसंगति तूटि गई माइआ जम जाली ॥१॥ रहाउ ॥ (1134-10)
करि किरपा मेलाइअनु हरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ (30-13)
करि किरपा मेले प्रभि अपुनै विछुड़ि कतहि न जाई ॥ (453-9)
करि किरपा मोहि टहलै लाए ॥ (1078-13)
करि किरपा मोहि ठाकुर देवा ॥ (1338-8)
करि किरपा मोहि देहु दानु ॥ (1183-4)
करि किरपा मोहि देहु नामु ॥४॥५॥ (1181-12)
करि किरपा मोहि नामु देहु नानक दर सरीता ॥४॥७॥३७॥ (810-2)
करि किरपा मोहि मारगि पावहु ॥ (801-7)
करि किरपा मोहि सतिगुरि दीना तापु संतापु मेरा बैरु गीओ ॥३॥ (382-18)
करि किरपा मोहि साधसंगु दीजै ॥४॥ (739-1)
करि किरपा मोहि साधु मिलाइआ ॥ (98-6)
करि किरपा मोहि सारिंगपाणि ॥ (182-13)
करि किरपा रखि लेवहु मेरे ठाकुर हम पाथर हीन अकरमा ॥१॥ (799-6)
करि किरपा राखहु जन केरी ॥ (869-18)
करि किरपा राखहु रखवाले ॥ (224-8)
करि किरपा राखहु सरणाई मो कउ देहु हरे हरि जपनी ॥१॥ रहाउ ॥ (388-5)
करि किरपा राखिओ गुरि सरना ॥ (887-13)
करि किरपा राखिओ दासु अपना सदा सदा साचा बखसिंद ॥१॥ रहाउ ॥ (899-2)
करि किरपा राखे दास अपने जीअ जंत वसि जा कै ॥ (1223-2)
करि किरपा राखे सतसंगे नानक सरणि आहे ॥४॥२॥१४२॥ (406-17)
करि किरपा राखै आपि लाज ॥२॥ (178-1)
करि किरपा लड़ि लेहु लाइ ॥ (1193-4)
करि किरपा लागउ तेरी सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (193-17)
करि किरपा लीजै लड़ि लाइ ॥ (1152-12)

करि किरपा लीने करि अपुने उपजी दरस पिआस ॥ (1228-1)
करि किरपा लीने कीट दास ॥ (875-9)
करि किरपा लीने लड़ि लाए ॥ (744-12)
करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पाइआ जीउ ॥ (690-14)
करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पावए जीउ ॥५॥१॥ (690-17)
करि किरपा लोच पूरि हमारी ॥१॥ रहाउ ॥ (164-16)
करि किरपा वसहु मेरै हिरदै होइ सहाई आपि ॥१॥ रहाउ ॥ (405-18)
करि किरपा संत टहलै लाए ॥ (1146-6)
करि किरपा संत मिले मोहि तिन ते धीरजु पाइआ ॥ (206-2)
करि किरपा संतन सचु कहिआ ॥ (179-17)
करि किरपा सतसंगि मिलाए ॥ (251-14)
करि किरपा सतसंगि मिलावहु तुम देवहु अपनो नाउ ॥ रहाउ ॥ (1119-18)
करि किरपा सतिगुरु मेलिओनु मुखि गुरमुखि नामु धिआइसी ॥ (310-12)
करि किरपा सतिगुरू मिलावहु मिलि सतिगुर नामु धिआवैगो ॥१॥ (1309-1)
करि किरपा सतिगुरू मिलाहा ॥ (699-16)
करि किरपा सरब प्रतिपालक प्रभ कउ सदा सलाही ॥१॥ रहाउ ॥ (499-18)
करि किरपा साधू जन भेटे नित रातौ हरि नाम रंगि ॥१॥ रहाउ ॥ (1184-11)
करि किरपा साधू संगि भेटे पूरन पुरख सुजान ॥१॥ रहाउ ॥ (702-6)
करि किरपा साधू संगि मिलिओ सतिगुरि दीनो दानु ॥१॥ रहाउ ॥ (979-17)
करि किरपा सुख अनद करेइ ॥ (866-13)
करि किरपा सुणि बेनती हरि हरि जन नानक नामु धिआइआ राम ॥४॥२॥ (539-4)
करि किरपा हरि चरन धिआई ॥१॥ (802-1)
करि किरपा हरि जसु दीत ॥१॥ (980-6)
करि किरपा हरि जसु दीने ॥२॥ (623-17)
करि किरपा हरि नामु दिवाइओ ॥१॥ (720-17)
करि किरपा हरि परगटी आइआ ॥ (375-12)
करि किरपा हरि भगति द्रिड़ाए अनदिनु हरि गुण गाए ॥१॥ (1171-16)
करि किरपा हरि मेलिआ मेरा सतिगुरु पूरा ॥ (168-13)
करि किरपा हरि हरि नामु दीनो बिनसि गए सभ सोग संताप ॥१॥ रहाउ ॥ (821-3)
करि किरपा हसत प्रभि दीने जगत उधार नव खंड प्रताप ॥ (825-10)
करि कीरतनु मन सीतल भए ॥ (178-6)
करि कीरति गोविंद गुणीऐ सगल प्राछत दुख हरे ॥ (454-18)
करि कीरति जसु अगम अथाहा ॥ (699-1)
करि क्रिपा गोबिंद दीआ गुर गिआनु बुधि बिबेक ॥१॥ (501-5)
करि क्रिपा प्रभ संत राखे चरन कमल अधार ॥ (1229-7)
करि गवनु बसुधा तीरथह मजनु मिलन कउ निरंजना ॥ (455-15)
करि चानणु साहिब तउ मिलै ॥१॥ रहाउ ॥ (25-19)

करि चोरी मै जा किछु लीआ ता मनि भला भाइआ ॥ (155-4)
करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥ (13-10)
करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥ (171-8)
करि दइआ दाते पुरख बिधाते संत सेव कमाइण ॥ (1312-6)
करि दइआ दानु दइआल साचा हरि नाम संगति पावओ ॥ (1113-12)
करि दइआ पतित उधारि ॥ (838-5)
करि दइआ मइआ गोपाल गोबिंद कोइ नाही तुझ बिना ॥ (543-10)
करि दइआ मइआ दइआल साचे सबदि मिलि गुण गावओ ॥ (436-2)
करि दइआ मइआ दइआल सुआमी होहु दीन क्रिपारा ॥ (248-3)
करि दइआ मिलावहु तिसहि मोहि ॥१॥ (1181-8)
करि दइआ लेहु लड़ि लाइ ॥ (838-1)
करि दास दासी तजि उदासी कर जोड़ि दिनु रैणि जागीऐ ॥ (457-10)
करि नमसकार पूरे गुरदेव ॥ (869-9)
करि पंजीरु खवाइओ चोर ॥ (1136-3)
करि पट्मबु गली मनु लावसि संसा मूलि न जावसिता ॥ (155-19)
करि परपंच उदर निज पोखिओ पसु की निआई सोइओ ॥१॥ (633-12)
करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै ॥१॥ (536-10)
करि पाप जोनी भै भीत होई देइ सासन जाम जीउ ॥ (928-7)
करि पूजा होमि इहु मनूआ अकाल मूरति गुरदेवा ॥३॥ (614-11)
करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥ (274-11)
करि प्रगासु प्रचंड प्रगटिओ अंधकार बिनास ॥ (1018-4)
करि प्रसादु इकु खेलु दिखाइआ ॥ (1128-11)
करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥ (295-15)
करि प्रीति मनु तनु लाइ हरि सिउ अवर सगल विसारि ॥१॥ रहाउ ॥ (1007-1)
करि प्रेमु रावह तिसै भावह इक निमख पलक न तिआगीऐ ॥ (846-11)
करि फकरु दाइम लाइ चसमे जह तहा मउजूदु ॥३॥ (727-11)
करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥ (472-12)
करि बंदन प्रभ पारब्रहम बाछउ साधह धूरि ॥ (927-11)
करि बंदना लख बार ॥ (837-17)
करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥ (794-2)
करि बंदे तू बंदगी जिचरु घट महि साहु ॥३॥ (724-8)
करि बालक रूप उपाइदा पिआरा चंडूरु कंसु केसु माराहा ॥ (606-18)
करि बिचारु बिकार परहरि तरन तारन सोइ ॥ (482-18)
करि बीचारु आचारु पराता ॥ (415-5)
करि बीचारु मनि देखहु नानक बिनु नावै मुकति न होई ॥७२॥ (946-15)
करि बेनती जन धूरि बाछाहा ॥ (742-10)
करि बैरागु तूं छोडि पाखंडु सो सहु सभु किछु जाणए ॥ (440-12)

करि बैरागु फिरउ तनि नगरी मन की किंगुरी बजाई ॥२॥ (970-17)
करि भगति नानक पूरन भागु ॥२॥४॥१५५॥ (409-2)
करि भेख न पाईऐ हरि ब्रहम जोगु हरि पाईऐ सतसंगती उपदेसि गुरू गुर संत जना खोलि खोलि कपाट ॥१॥ (1297-10)
करि मइआ दइआ दइआल पूरन हरि प्रेम नानक मगन होत ॥२॥ (462-6)
करि मजनु हरि सरे सभि किलबिख नासु मना ॥ (545-1)
करि मजनो सपत सरे मन निरमल मेरे राम ॥ (437-1)
करि मन खुसी उसारिआ दूजै हेति पिआरि ॥ (62-17)
करि मन मेरे सति बिउहार ॥ (281-6)
करि मिंनति करि जोदड़ी मै प्रभु मिलणै का चाउ ॥१॥ (41-2)
करि मित्राई साध सिउ निहचलु पावहि ठाउ ॥४॥ (431-6)
करि संगति तू साध की अठसठि तीरथ नाउ ॥ (47-19)
करि संगति नित साध की गुर चरणी चितु लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (47-17)
करि संजोगु बनाई काछि ॥ (890-4)
करि सदा मजनु गोबिंद सजनु दुख अंधेरा नासे ॥ (545-1)
करि सांई सिउ पिरहड़ी रंगु नवेला होइ ॥१२॥ (1378-10)
करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ (917-10)
करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥ (631-11)
करि साधू अंजुली पुंनु वडा हे ॥ (171-7)
करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥ (13-9)
करि सिदकु करणी खरचु बाधहु लागि रहु नामे ॥१॥ रहाउ ॥ (64-5)
करि सीगारु बहै पखिआरी ॥ (871-16)
करि सेज सुखाली सोवै ॥ (989-14)
करि सेव सेवक दिनसु रैणी तिसु भावै सो होइ जीउ ॥ (926-12)
करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी ॥ (451-1)
करि सेवहु पूरा सतिगुरू मेरे लाल जीउ जम का मारगु साधे राम ॥ (542-4)
करि सेवहु पूरा सतिगुरू वणजारिआ मित्रा सभ चली रैणि विहादी ॥ (77-3)
करि सेवा तिसु पारब्रहम गुर ते मति लेह ॥३॥ (812-16)
करि सेवा तूं साध की हो काटीऐ जम जालु ॥१॥ (214-7)
करि सेवा पारब्रहम गुर भुख रहै न काई ॥ (318-17)
करि सेवा भजु हरि हरि गुरमति ॥ (176-14)
करि सेवा संता अम्रितु मुखि पाहा जीउ ॥ (173-3)
करि सेवा सत पुरखु मनाइआ ॥ (371-1)
करि सेवा सतिगुर अपुने की गुर ते पाईऐ पालै ॥३॥ (213-7)
करि सेवा सुख सागरै सिरि साहा पातिसाहु ॥२॥ (46-14)
करि सेवा सेवक प्रभ अपुने जिनि मन की इछ पुजाई ॥ (616-2)
करि सेवा सेवक साजि ॥ (895-3)

करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ ॥ (473-2)
करि है रामु होइ है सोइ ॥४॥ (1165-16)
करी क्रिपा दइआल बीठुलै सतिगुर मुझहि बताइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (205-7)
करी क्रिपा पारब्रहमि सुआमी नानक लीओ समाइओ ॥२॥१५॥ (531-7)
करी क्रिपा सतजुगि जिनि ध्रू परि ॥ (1401-9)
करी दइआ सतिगुरि गुणतासा ॥२॥ (191-10)
करी नदरि सुआमी सुखह गामी हलतु पलतु सवारिआ ॥ (782-5)
करी पाकसाल सोच पवित्रा हुणि लावहु भोगु हरि राए ॥२॥ (1266-7)
करीमां रहीमां अलाह तू गनीं ॥ (727-13)
करु गहि काढि लीए प्रभि अपुनै अमिओ धारि द्रिसटंगना ॥१०॥ (1080-14)
करु गहि काढि लीओ जनु अपुना बिखु सागर संसारा ॥१॥ (717-14)
करु गहि भुजा गही कटि जम की फासी राम ॥ (846-14)
करु गहि लीए नानक जन अपने अंध घोर सागर नही मरसन ॥२॥१०॥२९॥ (1303-14)
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥ (135-16)
करु गहि लीनी साजनहि जनम जनम के मीत ॥ (928-9)
करु गहि लीने अंध कूप ते विरले केई सालका ॥५॥ (1084-19)
करु गहि लीने अपुने दास ॥ (1149-16)
करु गहि लीने अपुने दास ॥ (1349-5)
करु गहि लीने आपणे सचु हुकमि रजाई ॥ (399-14)
करु गहि लीने नानक दास अपने राम नाम उरि हारे ॥४॥१॥ (1122-18)
करु गहि लीने नानक प्रभ पिआरे संसारु सागरु नही पोहिआ ॥४॥ (81-8)
करु गहि लीने सरबसु दीने आपहि आपु मिलाइआ ॥ (628-11)
करु गहि लीने सरबसु दीने दीपक भइओ उजारो ॥ (1225-13)
करु गहि लीने हरि जसो दीने जोनि ना धावै नह मरी ॥ (81-12)
करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥ (267-14)
करु गहि लेहु क्रिपाल क्रिपा निधि नानक काटि भरम भरी ॥३॥ (1387-14)
करु गहि लेहु दइआल सागर संसारिआ ॥१६॥ (709-14)
करु गहि लेहु दास अपुने कउ नानक अपुनो कीजै ॥२॥१३॥१७॥ (1269-19)
करु गहि लेहु दास नानक कउ प्रभ जीउ होइ सहात ॥२॥५॥७॥ (1120-12)
करु गहि लेहु नानक के सुआमी जीउ पिंडु सभु तुमरी रासि ॥२॥३॥१२०॥ (204-12)
करु गहि लेहु प्रीतम प्रभ राइआ ॥७॥ (750-18)
करु गहे प्रभ आपि काढहु राखि लेहु गोबिंद राइ ॥१॥ (1306-8)
करु धरि मसतकि थापिआ नामु दीनो दानि ॥ (817-12)
करु मसतकि गुरि पूरै धरिओ मनु जीतो जगु सारी ॥१॥ (215-7)
करु मसतकि धरि कटी जेवरी नानक दास दसानिओ ॥२॥३९॥६२॥ (1216-13)
करु मसतकि धारि बालिकु रखि लीनो ॥ (821-7)
करु मसतकि धारि राखिओ करि अपुना किआ जानै इहु लोकु अजाना ॥१॥ रहाउ ॥ (372-8)

करु मसतकि धारि साजि निवाजे मुए दुसट जो खइआ ॥१॥ (533-3)
करु मसतकि धारिओ मेरै माथै साधसंगि गुण गाए ॥ (1226-10)
करु माइआ अगनि नित मेलते गुरि राखे दीन दइआला ॥३॥ (985-17)
करु रे गिआनी ब्रहम बीचारु ॥ (972-6)
करुण क्रिपाल गोपाल दीन बंधु नानक उधरु सरनि परीआ ॥२॥११॥३०॥ (1303-17)
करुणा मै किरपाल क्रिपा निधि जीवन पद नानक हरि दरसन ॥२॥२॥११८॥ (828-3)
करुणा मै पूरन परमेसुर नानक तिसु सरनहीऐ ॥२॥१७॥ (531-15)
करुणा मै समरथु सुआमी घट घट प्राण अधारी ॥ (249-3)
करे कराए आपि प्रभु सभु किछु तिस ही हाथि ॥ (48-1)
करे कराए जाणै आपि ॥ (1125-6)
करे कराए सभ किछु जाणै नानक साइर इव कहिआ ॥३५॥१॥ (434-11)
करे दइआ प्रभु आपणी इक निमख न मनहु विसारु ॥ रहाउ ॥ (48-5)
करे प्रतिपाल बारिक की निआई जन कउ लाड लडाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (498-13)
करे वखिआणु जाणै जे कोई ॥ (351-2)
करे सु चंगा मानि दुयी गणत लाहि ॥ (1425-9)
करै अनंदु अनंदी मेरा ॥ (1073-16)
करै अनुग्रहु सुआमी मेरा साध चरन चितु लाईऐ ॥ (532-14)
करै गजिंदु सुंड की चोट ॥ (1165-18)
करै गुमानु चुभहि तिसु सूला को काढन कउ नाही ॥ (969-15)
करै दुहकरम दिखावै होरु ॥ (194-1)
करै निंद कवनै नही गुनै ॥२॥ (875-14)
करै निंद बहु जोनी हांढै ॥३॥ (875-15)
करै निंद सभ बिरथा जावै ॥१॥ (875-11)
करै बिकार जीअरे कै ताई ॥ (899-10)
करोड़ि हसत तेरी टहल कमावहि चरण चलहि प्रभ मारगि राम ॥ (781-5)
कहैं न झुरै ना मनु रोवनहारा ॥ (376-6)
कल महि राम नामु सारु ॥ (662-18)
कल मै एकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥ (632-11)
कल मै मुकति नाम ते पावत गुरु यह भेदु बतावै ॥ (831-6)
कलउ मसाजनी जाइसी लिखिआ भी नाले जाइ ॥ (84-8)
कलजुग दुरत दूरि करबे कउ दरसनु गुरू सगल सुख सागरु ॥४॥ (1404-13)
कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥ (1075-19)
कलजुग महि बहु करम कमाहि ॥ (1129-17)
कलजुग महि राम नामु उर धारु ॥ (1129-14)
कलजुग महि राम नामु है सारु ॥ (1129-18)
कलजुगि गुरु पूरा तिन पाइआ जिन धुरि मसतकि लिखे लिलाट ॥ (986-5)
कलजुगि जहाजु अरजुनु गुरू सगल स्रिस्टि लगि बितरहु ॥२॥ (1408-16)

कलजुगि धरम कला इक रहाए ॥ (880-6)
कलजुगि नामु प्रधानु पदारथु भगत जना उधरे ॥ (995-6)
कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥१॥ (470-3)
कलजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥४॥४॥११॥ (446-4)
कलप तिआगी बादि है सचा वेपरवाहु ॥१॥ (18-5)
कलम कागद सिआनप लेखी ॥ (179-13)
कलम जलउ सणु मसवाणीऐ कागदु भी जलि जाउ ॥ (84-13)
कलमल दगध होहि खिन अंतरि कोटि दान इसनान ॥१॥ रहाउ ॥ (1221-13)
कलमल दुख जारे प्रभू चितारे मन की दुरमति नासी ॥ (781-4)
कलमल दोख सगल परहरिआ ॥१॥ (395-4)
कलमलि होई मेदनी अरदासि करे लिव लाइ ॥ (1281-6)
कलर केरी कंध जिउ अहिनिसि किरि ढहि पाइ ॥ (18-18)
कलर केरी छपड़ी आइ उलथे हंझ ॥ (1381-6)
कलर केरी छपड़ी कऊआ मलि मलि नाइ ॥ (1411-4)
कलर खेती तरवर कंठे बागा पहिरहि कजलु झरै ॥ (1016-1)
कलरि खेती बीजीऐ किउ लाहा पावै ॥ (419-10)
कलरु खेतु लै कूड़ु जमाइआ सभ कूड़ै के खलवारे ॥ (981-9)
कलहि बुरी संसारि वादे खपीऐ ॥ (142-7)
कला उपाइ धरी जिनि धरणा ॥ (1071-11)
कला धरै हिरै सुई ॥ (144-6)
कला धारि जिनि सगली मोही ॥ (287-18)
कलि कलवाली कामु मदु मनूआ पीवणहारु ॥ (553-2)
कलि कलवाली माइआ मदु मीठा मनु मतवाला पीवतु रहै ॥ (350-7)
कलि कलवाली सरा निबेड़ी काजी क्रिसना होआ ॥ (903-2)
कलि कलेस किछु बिघनु न होई ॥ (1339-11)
कलि कलेस गुर सबदि निवारे ॥ (191-1)
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ (262-10)
कलि कलेस न कछु बिआपै संतसंगि बिउहारु ॥ रहाउ ॥ (1121-9)
कलि कलेस भै भ्रम दुख लाथा ॥ (240-2)
कलि कलेस मिटंत सिमरणि काटि जमदूत फास ॥१॥ रहाउ ॥ (502-15)
कलि कलेस मिटहि भ्रम नासहि मनि चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ (249-13)
कलि कलेस मिटाए सतिगुरु हरि दरगह देवै मानां हे ॥४॥ (1075-4)
कलि कलेस मिटे खिन भीतरि नानक सहजि समाइआ ॥४॥५॥६॥ (497-1)
कलि कलेस मिटे दास नानक बहुरि न जोनी माट ॥२॥१०॥१४॥ (1269-8)
कलि कलेस मिटे दुख सगले काटी जम की फासा ॥ (615-10)
कलि कलेस मिटे सभि तन ते राम नाम लिव जागे ॥२॥ (1206-5)
कलि कलेस मिटे हरि नाइ ॥ (865-13)

कलि कलेस लोभ मोह बिनसि जाइ अहं ताप ॥१॥ रहाउ ॥ (1341-13)
कलि कलेस लोभ मोह महा भउजलु तारे ॥ रहाउ ॥ (679-2)
कलि कलेस सभ दूरि पइआणे ॥ (105-12)
कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥ (145-10)
कलि कालख अंधिआरीआ ॥ (210-13)
कलि कीरति परगटु चानणु संसारि ॥ (145-12)
कलि कीरति सबदु पछानु ॥ (424-1)
कलि घोर समुद्र मै बूडत थे कबहू मिटि है नही रे पछुतायउ ॥ (1409-7)
कलि जागे नामा जैदेव ॥२॥ (1194-1)
कलि ताती ठांढा हरि नाउ ॥ (288-10)
कलि परवाणु कतेब कुराणु ॥ (903-4)
कलि भगवत बंद चिरांमं ॥ (1351-13)
कलि महि आइआ सो जनु जाणु ॥ (1328-16)
कलि महि एहो पुंनु गुण गोविंद गाहि ॥ (962-3)
कलि महि गुरमुखि उतरसि पारि ॥७॥ (229-17)
कलि महि जमु जंदारु है हुकमे कार कमाइ ॥ (588-13)
कलि महि प्रेत जिन्ही रामु न पछाता सतजुगि परम हंस बीचारी ॥ (1131-16)
कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥ (470-7)
कलि महि राम नामि वडिआई ॥ (1131-17)
कलि महि राम नामि वडिआई ॥ (1175-19)
कलि माहि रूपु करता पुरखु सो जाणै जिनि किछु कीअउ ॥ (1395-17)
कलि विचि धू अंधारु सा चड़िआ रै भाणु ॥ (968-4)
कलि समुद्र भए रूप प्रगटि हरि नाम उधारनु ॥ (1409-9)
कलि होई कुते मुही खाजु होआ मुरदारु ॥ (1242-18)
कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥ (274-18)
कलिआन महला ४ ॥ (1319-16)
कलिआन महला ४ ॥ (1320-13)
कलिआन महला ४ ॥ (1320-7)
कलिआन महला ४ ॥ (1321-1)
कलिआन महला ४ ॥ (1324-1)
कलिआन महला ४ ॥ (1325-16)
कलिआन महला ४ ॥ (1325-5)
कलिआन महला ४ असटपदीआ ॥ (1323-8)
कलिआन महला ५ ॥ (1321-16)
कलिआन महला ५ ॥ (1322-1)
कलिआन महला ५ ॥ (1322-13)
कलिआन महला ५ ॥ (1322-17)

कलिआन महला ५ ॥ (1322-7)
कलिआन महला ५ घरु २ (1322-4)
कलिआनु भोपाली महला ४ (1321-7)
कलिआनु महला ४ ॥ (1319-10)
कलिआनु महला ४ ॥ (1324-12)
कलिआनु महला ४ ॥ (1326-8)
कलिआनु महला ५ ॥ (1322-10)
कलिआनु महला ५ ॥ (1323-1)
कलिआनु महला ५ ॥ (1323-5)
कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई किव छूटह हम छुटकाकी ॥ (668-8)
कलिजुग महि इक नामि उधारु ॥ (1138-6)
कलिजुग महि घोर अंधारु है मनमुख राहु न कोइ ॥ (1285-18)
कलिजुग महि धड़े पंच चोर झगड़ाए ॥ (366-7)
कलिजुग महि नामु निधानु भगती खटिआ हरि उतम पदु पाइआ ॥ (513-4)
कलिजुग महि पाइआ जिनि नाउ ॥४॥२॥ (1298-13)
कलिजुग महि मिलि आए संजोग ॥ (185-15)
कलिजुग महि हरि जीउ एकु होर रुति न काई ॥ (1130-1)
कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगदु अमरु कहाइओ ॥ (1390-9)
कलिजुगि बीजु बीजे बिनु नावै सभु लाहा मूलु गवाइआ ॥ (446-3)
कलिजुगि राम नामु बोहिथा गुरमुखि पारि लघाई ॥ (443-2)
कलिजुगु उधारिआ गुरदेव ॥ (406-5)
कलिजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥ (446-1)
कलिप तरु रोग बिदारु संसार ताप निवारु आतमा त्रिबिधि तेरै एक लिव तार ॥ (1391-11)
कलिमल डारन मनहि सधारन इह आसर मोहि तरना ॥१॥ रहाउ ॥ (531-9)
कलिमल मैलु नाही ते निरमल ओइ रहहि भगति लिव लाई हे ॥४॥ (1025-17)
कलिमलह दहता सुधु करता दिनसु रैणि अराधो ॥ (248-17)
कली अंदरि नानका जिंनां दा अउतारु ॥ (556-8)
कली का जनमु चंडाल कै घरि होई ॥ (161-1)
कली काल के मिटे कलेसा ॥ (744-14)
कली काल महा बिखिआ महि लजा राखी राम ॥१॥ रहाउ ॥ (682-8)
कली काल महि इक कल राखी ॥ (1024-7)
कली काल महि रविआ रामु ॥ (1334-13)
कली काल विचि गुरमुखि पाए ॥१॥ रहाउ ॥ (666-3)
कल्य जोड़ि कर सुजसु वखाणिओ ॥ (1407-2)
कल्य सहारु तासु गुण ज्मपै ॥ (1396-13)
कवण कथा ले रहहु निराले ॥ (942-19)
कवण मूलु कवण मति वेला ॥ (942-18)

कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥ (4-17)
कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ॥ (1384-14)
कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥ (4-16)
कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु ॥१२६॥ (1384-15)
कवन अरथ मिरतक सीगार ॥२॥ (188-7)
कवन उपमा कउन बडाई किआ गुन कहउ रीझाए ॥ (1205-2)
कवन उपमा कहउ एक मुख निरगुण के दातेरै ॥ (1214-8)
कवन उपमा देउ कवन वडाई नानक खिनु खिनु वारे ॥४॥१॥१४१॥ (406-14)
कवन उपमा देउ कवन सेवा सरेउ एक मुख रसना रसहु जुग जोरि कर ॥ (1398-19)
कवन करम ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ ॥२॥ (346-12)
कवन कवन कवन गुन कहीऐ अंतु नही कछु पारै ॥ (1301-18)
कवन कवन की गति मिति कहीऐ हरि कीए पतित पवंना ॥ (799-3)
कवन कवन जाचहि प्रभ दाते ता के अंत न परहि सुमार ॥ (503-15)
कवन कहां हउ गुन प्रिअ तेरै ॥ (1304-17)
कवन कहा गुन कंत पिआरे ॥ (737-10)
कवन काज माइआ वडिआई ॥ (740-8)
कवन काज सिरजे जग भीतरि जनमि कवन फलु पाइआ ॥ (970-19)
कवन काजि जगु उपजै बिनसै कहहु मोहि समझाइआ ॥१॥ (475-14)
कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ (204-2)
कवन गुनु जो तुझु लै गावउ ॥ (187-1)
कवन गुफा जितु रहै अवाहनु ॥ (943-4)
कवन चिहन सुनि ऊपरि छोहिओ मुख ते सुनि करि गारा ॥१॥ (999-15)
कवन जुगति मेलावउ निरगुण बिखई जीउ ॥१॥ (397-8)
कवन जोग कवन गिआन धिआना कवन गुनी रीझावै ॥ (978-9)
कवन जोग काइआ ले साधउ ॥१॥ (186-19)
कवन तपु जितु तपीआ होइ ॥ (187-2)
कवन तुमे किआ नाउ तुमारा कउनु मारगु कउनु सुआओ ॥ (938-8)
कवन थान धीरिओ है नामा कवन बसतु अहंकारा ॥ (999-14)
कवन धिआनु मनु मनहि समावै ॥४५॥ (943-5)
कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि ॥ (294-11)
कवन पराध बतावउ अपुने मिथिआ मोह मगनारे ॥ (999-7)
कवन बनी री तेरी लाली ॥ (384-8)
कवन बसेरो दास दासन को थापिउ थापनहारै ॥ (1214-15)
कवन बुधि गुरमुखि पति रहै ॥ (943-10)
कवन बुधि जितु असथिरु रहीऐ कितु भोजनि त्रिपतासै ॥ (945-2)
कवन बोल पारब्रहम रीझावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (187-1)
कवन मुखि कालु जोहत नित रहै ॥ (943-9)

कवन मुखि चंदु हिवै घरु छाइआ ॥ (943-9)
कवन मुखि सूरजु तपै तपाइआ ॥ (943-9)
कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥ (266-18)
कवन मूल ते किआ प्रगटाइआ ॥ (1146-16)
कवन मूल ते मानुखु करिआ इहु परतापु तुहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (1220-4)
कवन मूलु प्रानी का कहीऐ कवन रूपु द्रिसटानिओ ॥ (1216-12)
कवन रंगि तूं भई गुलाली ॥१॥ रहाउ ॥ (384-8)
कवन रूप द्रिसटिओ बिनसाइओ ॥ (736-12)
कवन रूपु तेरा आराधउ ॥ (186-19)
कवन वडाई कहि सकउ बेअंत गुनीता ॥ (810-1)
कवन संजोग मिलउ प्रभ अपने ॥ (806-7)
कवन सु जुगति जितु करि भीजै ॥ (181-3)
कवन सु दाना कवनु सु होछा कवन सु सुरता कवनु जड़ा ॥६॥ (1081-11)
कवन सु पूजा तेरी करउ ॥ (187-1)
कवन सु बिधि जितु भवजल तरउ ॥२॥ (187-2)
कवन सु बिधि जितु भीतरि बुलावै ॥ (181-4)
कवन सु बिधि जितु राम गुण गाइ ॥ (180-2)
कवन सु मति जितु तरै इह माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (180-2)
कवन सु मति जितु प्रीतमु पावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (806-8)
कवन सु मति जितु हरि हरि जपना ॥१॥ (804-4)
कवन सु मुकती कवन सु नरका ॥ (1081-11)
कवनु असथानु जो कबहु न टरै ॥ (237-7)
कवनु कवनु नही पतरिआ तुम्हरी परतीति ॥ (815-11)
कवनु जानै प्रभ तुम्हरी सेवा ॥ (805-8)
कवनु जोगु कउनु ग्यानु ध्यानु कवन बिधि उस्तति करीऐ ॥ (1386-15)
कवनु जोधु जो कालु संघारै ॥ (943-10)
कवनु नरकु किआ सुरगु बिचारा संतन दोऊ रादे ॥ (969-16)
कवनु बापारी जा का ऊहा विसाहु ॥१॥ (181-1)
कवनु सबदु जितु दुरमति हरै ॥१॥ रहाउ ॥ (237-7)
कवनु सु अंतरि बाहरि जुगता ॥ (939-10)
कवनु सु आवै कवनु सु जाइ ॥ (939-10)
कवनु सु गुपता कवनु सु मुकता ॥ (939-10)
कवनु सु घरु जो निरभउ कहीऐ ॥ (325-5)
कवनु सु जनु जो सउदा जोरै ॥२॥ (181-3)
कवनु सु त्रिभवणि रहिआ समाइ ॥१२॥ (939-11)
कवनु सु दाता ले संचारे ॥३॥ (181-5)
कवनु सु नामु हउमै मलु खोइ ॥३॥ (187-2)

कवनु सु मुनि जो मनु मारै ॥ (329-1)
कवनु सैसारी कवनु सु भगता ॥ (1081-11)
कवल नैन मधुर बैन कोटि सैन संग सोभ कहत मा जसोद जिसहि दही भातु खाहि जीउ ॥ (1402-12)
कवल प्रगास भए साधसंगे दुरमति बुधि तिआगी ॥२॥ (503-1)
कवल प्रगास सदा आनंद ॥ (298-11)
कवला चरन सरन है जा के ॥ (330-17)
कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥१॥ (1396-15)
कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥२॥ (1396-18)
कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥३॥ (1397-1)
कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥४॥ (1397-4)
कवि कीरत जो संत चरन मुड़ि लागहि तिन्ह काम क्रोध जम को नही त्रासु ॥ (1406-1)
कवि जन कल्य सबुधी कीरति जन अमरदास बिस्तरीया ॥ (1392-18)
कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ॥ (14-3)
कसतूरी कै भोलड़ै गंदे डुमि पईआसु ॥२॥ (89-4)
कसनि बहतरि लागी ताहि ॥१॥ (1194-19)
कसि कसवटी लाईऐ परखे हितु चितु लाइ ॥ (57-11)
कसि कसवटी सहै सु ताउ ॥ (932-2)
कहंउ कहा यिआ मन बउरे कउ इन सिउ नेहु लगाइओ ॥ (633-8)
कहंत बेदा गुणंत गुनीआ सुणंत बाला बहु बिधि प्रकारा ॥ (1355-4)
कह उपजै कह जाइ समावै ॥ (152-15)
कह करै मुलां कह करै सेख ॥३॥ (1158-10)
कह पिंगुल परबत पर भवन ॥ (267-16)
कह पेखारउ हउ करि चतुराई बिसमन बिसमे कहन कहाति ॥१॥ (535-9)
कह फूलहि आनंद बिखै सोग कब हसनो कब रोईऐ ॥ (528-17)
कह बिसीअर कउ दूधु पीआए ॥२॥ (481-4)
कह बैसहु कह रहीऐ बाले कह आवहु कह जाहो ॥ (938-9)
कहउ कहा अपनी अधमाई ॥ (718-6)
कहउ कहा बार बार समझत नह किउ गवार ॥ (1352-8)
कहणा किछू न जावई जिसु भावै तिसु देइ ॥ (30-5)
कहणा सुनणा अकथ घरि जाइ ॥ (1328-17)
कहणा है किछु कहणु न जाइ ॥ (151-14)
कहणि कथनि वारा नही आवै ॥ (352-13)
कहणु कहै सभु कोइ केवडु आखीऐ ॥ (688-3)
कहणु न जाई अंतु न पारा ॥ (1079-16)
कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥२॥ (349-3)
कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥२॥ (9-12)
कहणै कथनि न पाइआ जाइ ॥ (362-3)

कहणै कथनि न भीजै गोबिंदु हरि भावै पैज रखाईऐ ॥ (624-19)
कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥१॥ (349-1)
कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥१॥ (9-10)
कहणै हाथ न लभई सचि टिकै पति पाइ ॥ (61-16)
कहत कबीर अकुलु नही चेतिआ बिखिआ सिउ लपटाना ॥४॥१॥४५॥ (332-15)
कहत कबीर अवर नही कामा ॥ (692-11)
कहत कबीर उआ को सहजु न जाई ॥५॥७॥२०॥ (481-6)
कहत कबीर चेति रे अंधा ॥ (326-16)
कहत कबीर छोडि बिखिआ रस इतु संगति निहचउ मरणा ॥ (92-2)
कहत कबीर जु इस पद बूझै ॥ (481-14)
कहत कबीर पंच को झगरा झगरत जनमु गवाइआ ॥ (482-9)
कहत कबीर पंच जो चूरे ॥ (478-13)
कहत कबीर बहू तब जीतै ॥ (484-6)
कहत कबीर भले असवारा ॥ (329-11)
कहत कबीर भीर जन राखहु हरि सेवा करउ तुम्हारी ॥५॥८॥ (971-6)
कहत कबीर राम गुन गावउ ॥ (479-2)
कहत कबीर राम नाम बिनु मूंड धुने पछुतईहै ॥४॥१॥ (524-13)
कहत कबीर सुनहु मन मेरे ॥ (330-3)
कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ (524-17)
कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥ (692-4)
कहत कबीर सुनहु रे लोई ॥ (481-10)
कहत कबीर सुनहु रे संतहु अनु धनु कछूऐ लै न गइओ ॥ (479-15)
कहत कबीर सुनहु रे संतहु कीटी परबतु खाइआ ॥ (477-7)
कहत कबीर सुनहु रे संतहु भै सागर कै ताई ॥ (478-4)
कहत कबीर हउ कहउ पुकारि ॥ (1160-10)
कहत कबीरा जो हरि धिआवै जीवत बंधन तोरे ॥५॥५॥१८॥ (480-15)
कहत कबीरु जीति कै हारि ॥ (1159-13)
कहत कबीरु राम भजु बउरे जनमु अकारथ जात ॥४॥१॥ (1252-2)
कहत कबीरु सगल पाप खंडनु संतह लै उधरिओ ॥४॥४॥ (856-8)
कहत कबीरु सुनहु रे संतहु अब ऐसी बनि आई ॥ (333-15)
कहत कबीरु सुनहु रे संतहु मिलिहै सारिगपानी रे ॥४॥१॥ (855-12)
कहत नानक ऐसी मति आवै ॥ (357-11)
कहत नानक जनु जागै सोइ ॥ (1128-8)
कहत नानकु कवन बिधि करे किआ कोइ ॥ (1261-10)
कहत नानकु गुर परसादी बूझहु कोई ऐसा करे वीचारा ॥ (1257-19)
कहत नानकु गुर सचे की पउड़ी रहसी अलखु निवासी ॥७॥३॥११॥ (1016-2)
कहत नानकु जो जाणै भेउ ॥ (1129-2)

कहत नानकु तू साचा साहिबु कउणु जाणै तेरे कामां ॥ (797-13)
कहत नानकु मारि जीवाले सोइ ॥ (1128-12)
कहत नानकु सचे सिउ प्रीति लाए चूकै मनि अभिमाना ॥ (798-1)
कहत नानकु हउमै कहै न कोइ ॥ (1176-10)
कहत नामदेउ इहु बीचारु ॥ (1165-6)
कहत नामदेउ ता ची आणि ॥ (1252-14)
कहत नामदेउ तूं मेरो ठाकुरु जनु ऊरा तू पूरा ॥२॥२॥ (1252-17)
कहत नामदेउ बाहरि किआ भरमहु इह संजम हरि पाईऐ ॥४॥२॥ (693-9)
कहत नामदेउ सुनहु तिलोचन बालकु पालन पउढीअले ॥ (972-17)
कहत नामदेउ हरि की रचना देखहु रिदै बीचारी ॥ (485-5)
कहत पवित्र सुणत पुनीत ॥ (183-14)
कहत मुकत सुनत मुकत रहत जनम रहते ॥ (1230-6)
कहत मुकत सुनते निसतारे जो जो सरनि पइओ ॥ (979-8)
कहत सुणत सभे सुख पावहि मानत पाहि निधाना ॥४॥४॥ (798-1)
कहत सुनत कछु जोगु न होऊ ॥ (251-6)
कहत सुनत किछु सांति न उपजत बिनु बिसास किआ सेखां ॥ (1221-10)
कहतउ पड़तउ सुणतउ एक ॥ (686-1)
कहता बकता आपि अगोचरु आपे अलखु लखाइदा ॥१३॥ (1036-5)
कहता बकता सुणता सोई आपे बणत बणाई हे ॥९॥ (1021-2)
कहतिअह कहती सुणी रहत को खुसी न आयउ ॥ (1396-1)
कहतु कबीर नवै घर मूसे दसवैं ततु समाई ॥३॥२२॥७३॥ (339-13)
कहतु कबीर सुनहु मेरी माई ॥ (484-2)
कहतु कबीर सुनहु रे प्रानी परे काल ग्रस कूआ ॥ (654-14)
कहतु कबीरु कारगह तोरी ॥ (484-13)
कहतु कबीरु किलबिख गए खीणा ॥ (1349-10)
कहतु कबीरु कोई नही तेरा ॥ (656-9)
कहतु कबीरु रामु की न सिमरहु जनमु अकारथु जाइ ॥२॥६॥ (1124-12)
कहतु कबीरु सुनहु नर नरवै परहु एक की सरना ॥ (1349-17)
कहतु कबीरु सुनहु रे लोई ॥ (484-9)
कहतु कबीरु सुनहु रे लोई भरमि न भूलहु कोई ॥ (692-7)
कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु धरमु दइआ करि बाड़ी ॥३॥७॥ (970-18)
कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु निबही खेप हमारी ॥४॥२॥ (1123-12)
कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु साधसंगति तरि जांहिगा ॥३॥१॥ (1106-10)
कहतु नानक इहु जीउ करम बंधु होई ॥ (1128-3)
कहतु नानकु भै भाव का करे सीगारु ॥ (357-8)
कहतु नानकु संसार के निहफल कामा ॥ (1170-16)
कहते पवित्र सुणते सभि धंनु लिखतीं कुलु तारिआ जीउ ॥ (81-10)

कहते मुकतु सबदि निसतारै ॥ (944-2)
कहतो महली निकटि न आवै ॥२॥ (738-12)
कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी ॥ (920-8)
कहदे कहहि कहे कहि जावहि तुम सरि अवरु न कोई ॥ (728-8)
कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥ (919-9)
कहन कहावन इहु कीरति करला ॥ (51-15)
कहन कहावन कउ कई केतै ॥ (1302-6)
कहन कहावन नह पतीअई है ॥ (325-9)
कहन कहावन सगल जंजार ॥ (1299-6)
कहनि धिआइनि सुणनि नित से भगत सुहावै ॥ (1193-12)
कहनि भवनि नाही पाइओ पाइओ अनिक उकति चतुराई ॥१॥ (1307-11)
कहनु न जाइ प्रभ की वडिआई ॥ (202-16)
कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥ (293-17)
कहनु न जाई खेलु तुहारा ॥ (746-10)
कहनु न जाई नानक बिसमादु ॥४॥९॥२०॥ (889-3)
कहहि त धरणि इकोडी करउ ॥ (1166-5)
कहहि त मुई गऊ देउ जीआइ ॥ (1166-5)
कहहि त ले करि ऊपरि धरउ ॥१७॥ (1166-5)
कहहि सुणहि जो मानहि नाउ ॥ (354-10)
कहहु गुसाई मिलीऐ केह ॥ (185-11)
कहां तुम्हारा जगदीस गुसाई ॥ (1154-15)
कहां ते आइआ कहां एहु जाणु ॥ (1289-6)
कहां सु घर दर मंडप महला कहा सु बंक सराई ॥ (417-15)
कहां सु सेज सुखाली कामणि जिसु वेखि नीद न पाई ॥ (417-16)
कहा उडीसे मजनु कीआ किआ मसीति सिरु नांएं ॥ (1349-15)
कहा करउ जाती कह करउ पाती ॥ (485-13)
कहा करहि रे खाटि खाटुली ॥ (1216-6)
कहा करै कोई बेचारा प्रभ मेरे का बड परतापु ॥१॥ (824-1)
कहा करै बपुरा जमु डरपै गुरमुखि रिदै मुरारी ॥१॥ (1332-10)
कहा कहउ मै अपुनी करनी जिह बिधि जनमु गवाइओ ॥ (1232-3)
कहा गुपतु प्रगटु प्रभि बणत बणाई ॥ (160-12)
कहा चलहु मन रहहु घरे ॥ (414-15)
कहा ते आवै कहा इहु जावै कहा इहु रहै समाई ॥ (940-7)
कहा नर अपनो जनमु गवावै ॥ (1231-15)
कहा नर गरबसि थोरी बात ॥ (1251-17)
कहा बसै सु सबदु अउधू ता कउ चूकै मन का भवना ॥ (945-8)
कहा बिसनपद गावै गुंग ॥ (267-15)

कहा बिसासा इस भांडे का इतनकु लागै ठनका ॥१॥ (1253-18)
कहा बिसासा देह का बिलम न करिहो मीत ॥ (254-2)
कहा बुझारति बूझै डोरा ॥ (267-15)
कहा भइआ दैति करी बखीली सभ करि करि झरि परिआ ॥३॥ (1319-14)
कहा भइआ नर देवा धोखे किआ जलि बोरिओ गिआता ॥१॥ (338-7)
कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥ (486-18)
कहा भइओ जउ मूडु मुडाइओ भगवउ कीनो भेसु ॥१॥ रहाउ ॥ (633-11)
कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए राम सरनि नही आवै ॥ (830-19)
कहा भइओ दरि बांधे हाथी ॥२॥ (1158-2)
कहा भइओ दरि बांधे हाथी खिन महि भई पराई ॥३॥ (693-2)
कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग ॥ (1187-2)
कहा मन बिखिआ सिउ लपटाही ॥ (1231-11)
कहा साकत पहि हरि गुन गाए ॥१॥ (481-3)
कहा सु आरसीआ मुह बंके ऐथै दिसहि नाही ॥१॥ (417-14)
कहा सु खेल तबेला घोड़े कहा भेरी सहनाई ॥ (417-13)
कहा सु तेगबंद गाडेरड़ि कहा सु लाल कवाई ॥ (417-13)
कहा सु पान त्मबोली हरमा होईआ छाई माई ॥२॥ (417-16)
कहा सु भाई मीत है देखु नैन पसारि ॥ (808-7)
कहा सुआन कउ सिम्रिति सुनाए ॥ (481-2)
कहा होत अब कै पछुताए छूटत नाहिन भागिओ ॥१॥ (1008-13)
कहि कबीर अंत की बेर आइ लागो कालु निदानि ॥२॥५॥ (1124-8)
कहि कबीर अब जानिआ ॥ (656-1)
कहि कबीर अब जानिआ गुरि गिआनु दीआ समझाइ ॥ (1103-9)
कहि कबीर अब जानिआ संतन रिदै मझारि ॥ (337-13)
कहि कबीर आगे ते न सम्हारा ॥३॥१॥ (792-9)
कहि कबीर इक नीव उसारी ॥ (337-1)
कहि कबीर इक राम नाम बिनु इआ जगु माइआ अंधा ॥२॥१॥१६॥६७॥ (338-9)
कहि कबीर इह कथा सिरानी ॥४॥२॥ (792-13)
कहि कबीर इह बिनती सुनीअहु मत घालहु जम की खबरी ॥२॥६॥ (856-15)
कहि कबीर उरवार न पार ॥ (343-4)
कहि कबीर किछु गुनु बीचारि ॥ (1158-3)
कहि कबीर केसौ जगि जोगी ॥२॥८॥ (857-2)
कहि कबीर को लखै न पार ॥ (1194-13)
कहि कबीर गुर भेटि महा सुख भ्रमत रहे मनु मानानां ॥४॥२३॥७४॥ (339-19)
कहि कबीर गुर मिलत महा रसु प्रेम भगति निसतारिओ रे ॥४॥१॥५॥५६॥ (335-17)
कहि कबीर गुरि भली बुझाई कीटी होइ कै खाइ ॥२३८॥ (1377-8)
कहि कबीर गुलामु घर का जीआइ भावै मारि ॥२॥१८॥६९॥ (338-16)

कहि कबीर चिति चेतिआ राम सिमरि बैराग ॥३॥२॥१३॥६४॥ (337-18)
कहि कबीर चेतै नही मूरखु मुगधु गवारु ॥ (1105-19)
कहि कबीर जगजीवनु ऐसा दुतीअ नाही कोइ ॥३॥५॥२७॥ (482-18)
कहि कबीर जा का नही अंतु ॥ (971-17)
कहि कबीर जानैगा सोई ॥४५॥ (343-3)
कहि कबीर जिसु उदरु तिसु माइआ ॥ (1160-18)
कहि कबीर जीवन पद कारनि हरि की भगति करीजै ॥ (338-2)
कहि कबीर ठग सिउ मनु मानिआ ॥ (331-2)
कहि कबीर तब निरमल अंग ॥८॥१॥ (345-1)
कहि कबीर ता का अंतु न पारु ॥३॥२॥१०॥ (1159-18)
कहि कबीर तुम सम्रथ दाते चारि पदारथ देत न बार ॥२॥७॥ (856-18)
कहि कबीर ते अंति बिगूते आइआ कालु निदाना ॥२॥९॥ (857-6)
कहि कबीर ते अंते मुकते जिन्ह हिरदै राम रसाइनु ॥२॥६॥ (1104-7)
कहि कबीर ते जन परवान ॥ (1158-7)
कहि कबीर तेई नर सूचे साची परी बिचारा ॥४॥१॥७॥ (1195-9)
कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा ॥४॥४॥३७॥ (484-18)
कहि कबीर निरधनु है सोई ॥ (1159-6)
कहि कबीर फिरि जनमि न आवै ॥३॥८॥३०॥ (483-11)
कहि कबीर बीचारी ॥ (656-5)
कहि कबीर बुधि हरि लई मेरी बुधि बदली सिधि पाई ॥२॥२१॥७२॥ (339-9)
कहि कबीर भजि राम नाम ॥३॥२॥ (1194-2)
कहि कबीर भजु सारिंगपानी ॥ (323-16)
कहि कबीर भिसति ते चूका दोजक सिउ मनु मानिआ ॥४॥४॥ (1350-10)
कहि कबीर भै सागर तरन कउ मै सतिगुर ओट लइओ ॥४॥१॥८॥५९॥ (336-17)
कहि कबीर भोग भले कीन ॥ (1196-18)
कहि कबीर मन सरसी काज ॥ (1195-3)
कहि कबीर मनि भइआ प्रगासा उदै भानु जब चीना ॥२॥४३॥ (332-1)
कहि कबीर मनु मानिआ ॥ (656-17)
कहि कबीर मिलु अंत की बेला ॥४॥२॥ (324-1)
कहि कबीर मेरा मनु मानिआ राम प्रीति कीओ लै देव ॥२॥१२॥ (857-17)
कहि कबीर मेरी संका नासी सरब निरंजनु डीठा ॥४॥३॥ (1350-4)
कहि कबीर मै पूरा पाइआ भए राम परसादा ॥३॥६॥२८॥ (483-3)
कहि कबीर मोहि बिआहि चले है पुरख एक भगवाना ॥३॥२॥२४॥ (482-5)
कहि कबीर रंगि राता ॥ (655-6)
कहि कबीर राजा राम न छोडउ सगल ऊच ते ऊचा ॥२॥२॥१७॥६८॥ (338-13)
कहि कबीर राम नाम पछाना ॥२॥३७॥ (330-14)
कहि कबीर राम नामु न छोडउ सहजे होइ सु होइ रे ॥३॥३॥ (870-12)

कहि कबीर रामु रिदै बिचारै सूतकु तिनै न होई ॥३॥४१॥ (331-13)
कहि कबीर रामै रंगि राता ॥५॥२॥ (855-16)
कहि कबीर रामै रमि छूटहु नाहि त बूडे भाई ॥४॥१॥ (1103-4)
कहि कबीर संसा भ्रमु चूको ध्रू प्रहिलाद निवाजा ॥२॥५॥ (856-11)
कहि कबीर सगले मद छूछे इहै महा रसु साचो रे ॥४॥१॥ (969-6)
कहि कबीर सुनि सारिगपान ॥ (1163-8)
कहि कबीर सेवा करहु मन मंझि मुरारि ॥३॥१०॥ (857-9)
कहि कबीर सो प्रानी तरै ॥८॥१॥ (1162-17)
कहि कबीर सो भरमै नाही ॥ (691-18)
कहि कबीर हउ ता का सेवकु जिनि इहु बिरवा देखिआ ॥३॥६॥ (970-14)
कहि कबीर हउ ता को दासु ॥४॥१॥ (1157-19)
कहि कबीर हउ भइआ उदासु ॥ (331-16)
कहि कबीर हउ भइआ दिवाना ॥ (1158-11)
कहि कबीर हमरा गोबिंदु ॥ (871-1)
कहि कबीर हीरा अस देखिओ जग मह रहा समाई ॥ (483-15)
कहि कमीर अब कहीऐ काहि ॥ (1161-13)
कहि कमीर कुल जाति पांति तजि चीटी होइ चुनि खाई ॥२॥३॥१२॥ (972-11)
कहि कहि कथना माइआ लूझै ॥ (150-15)
कहि कहि कथनु कहै सभु कोई ॥ (160-13)
कहि कहि कहणा आखि सुणाए ॥ (364-11)
कहि कहि कहणु आपु जाणाए ॥ (1277-17)
कहि कहि कहणु कहाइनि आपु ॥१॥ (1239-17)
कहि कहि कहणु कहै सभु कोइ ॥ (1277-15)
कहि कहि रोवहि बालु रंगीला ॥ (1027-3)
कहि क्मबीर कोऊ संग न साथ ॥ (1162-4)
कहि नानक अब नाहि अनत गति बिनु हरि की सरनाई ॥२॥१॥३१॥ (718-8)
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥४९॥ (1429-2)
कहि नानक सभ अउगन मो महि राखि लेहु सरनाइओ ॥२॥४॥३॥१३॥१३९॥४॥१५९॥ (1232-3)
कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवह रामु अभै पद दाता ॥५॥३॥९॥ (1165-12)
कहि नामदेउ हम हरि की सेवा ॥४॥१॥ (525-5)
कहि नामा किउ पाईऐ बिनु भगतहु भगवंतु ॥२४१॥ (1377-12)
कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥ (858-6)
कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥२॥१॥ (694-9)
कहि रविदास उदास दास मति जनम मरन भै भागी ॥३॥२॥१५॥ (1106-19)
कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥३॥३॥ (658-12)
कहि रविदास कवन गति मोरी ॥५॥१॥ (525-15)
कहि रविदास कहा कैसे कीजै ॥ (710-19)

कहि रविदास खलास चमारा ॥ (345-16)
कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥३॥४॥ (487-1)
कहि रविदास जो जपै नामु ॥ (1196-14)
कहि रविदास निदानि दिवाने ॥ (794-3)
कहि रविदास परम बैराग ॥ (1167-13)
कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥३॥४॥ (658-17)
कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥ (487-7)
कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ कहीऐ ॥ (658-7)
कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ॥ (794-7)
कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥ (793-18)
कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई ॥४॥१॥ (658-2)
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥२॥१॥ (1106-14)
कहिआ करणा दिता लैणा ॥ (98-13)
कहिआ न मानहि सिरि खाकु छानहि जिन संगि मनु तनु जालिआ ॥ (705-12)
कहिआ सबदु न मानई हउमै छडै न कोइ ॥ (948-10)
कहिआ सुणहि न खाइआ मानहि तिन्हा ही सेती वासा ॥ (1171-14)
कहिऐ कथिऐ न पाईऐ अनदिनु रहै सदा गुण गाइ ॥ (551-12)
कहिओ कबीर बिचारि कै संत सुनहु मन माहि ॥१८०॥ (1374-4)
कहिओ न जाई एहु अचम्भउ सो जानै जिनि चाखिआ ॥ (215-10)
कहिओ न बूझै अंधु न सूझै भोंडी कार कमाई ॥ (1330-11)
कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवानु ॥१२१॥ (1370-18)
कही न उपजै उपजी जाणै भाव अभाव बिहूणा ॥ (475-17)
कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥ (658-12)
कहीऐ काइ पिआरे तुझु बिना ॥ (809-8)
कहु कबीर अखर दुइ भाखि ॥ (329-17)
कहु कबीर अनभउ इकु देखिआ राम नामि लिव लागी ॥४॥२॥४६॥ (333-2)
कहु कबीर अब जानिआ गोबिद मनु माना ॥३॥११॥ (857-13)
कहु कबीर अब बाहरि परी ॥ (871-19)
कहु कबीर इउ रामहि ज्मपउ मेटि जनम मरना ॥४॥५॥ (477-3)
कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥ (325-18)
कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥ (328-2)
कहु कबीर इक बेनती बैरागीअड़े ॥ (1104-19)
कहु कबीर इह कहीऐ काहि ॥ (325-11)
कहु कबीर इहु कीआ वखाना ॥ (1136-12)
कहु कबीर इहु राम की अंसु ॥ (871-7)
कहु कबीर ऐसा गुण भ्रमु भागा तउ मनु सुंनि समानां ॥४॥१॥ (475-19)
कहु कबीर कंचनु भइआ भ्रमु गइआ समुद्रै पारि ॥४॥३॥ (1103-14)

कहु कबीर खोजउ असमान ॥ (330-1)
कहु कबीर गुर किरपा छूटे ॥५॥५॥८॥ (872-7)
कहु कबीर गुरि सोझी पाई ॥४॥१॥१४॥ (326-7)
कहु कबीर गूंगै गुड़ु खाइआ पूछे ते किआ कहीऐ ॥४॥७॥५१॥ (334-8)
कहु कबीर चंचल मति तिआगी ॥ (327-12)
कहु कबीर छूछा घटु बोलै ॥ (870-4)
कहु कबीर छूटनु नही मन बउरा रे छूटनु हरि की सेव ॥४॥१॥६॥५७॥ (336-5)
कहु कबीर जन जानिआ ॥ (656-12)
कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी ॥४॥३॥ (655-1)
कहु कबीर जनि एको बूझिआ ॥ (476-12)
कहु कबीर जब लहुरी आई बडी का सुहागु टरिओ ॥ (483-18)
कहु कबीर जा कै मसतकि भागु ॥ (327-18)
कहु कबीर जानैगा सोइ ॥ (329-5)
कहु कबीर जिनि दीआ पलीता तिनि तैसी झल देखी ॥३॥३॥४७॥ (333-6)
कहु कबीर जिसु सतिगुरु भेटै पुनरपि जनमि न आवै ॥४॥२॥ (476-6)
कहु कबीर जिह रामु न चेतिओ बूडे बहुतु सिआने ॥४॥४॥ (1124-5)
कहु कबीर जे किरपा धारै देइ सचा नीसाना ॥४॥७॥ (477-13)
कहु कबीर जैसे सुंदर सरूप ॥ (328-12)
कहु कबीर जो जानै भेउ ॥ (329-2)
कहु कबीर जो नामि समाने सुंन रहिआ लिव सोई ॥४॥४॥ (1104-1)
कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥ (324-19)
कहु कबीर तब ही नरु जागै ॥ (870-7)
कहु कबीर ता कउ पुनरपि जनमु नही खेलि गइओ बैरागी ॥४॥२॥५३॥ (335-1)
कहु कबीर ते जन कबहु न हारहि ढालि जु जानहि पासा ॥४॥४॥ (793-6)
कहु कबीर तेई नर भूले ॥ (792-19)
कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ ॥३॥२७॥ (328-18)
कहु कबीर नदरि करे जे मींरा ॥ (478-9)
कहु कबीर पति हरि परवानु ॥ (324-4)
कहु कबीर परगटु भई खेड ॥ (326-6)
कहु कबीर प्रभ किरपा कीजै ॥ (326-3)
कहु कबीर बलि जाउ गुर अपुने सतसंगति मिलि रहीऐ ॥३॥४॥४८॥ (333-11)
कहु कबीर बहु काइ करीजै ॥ (324-11)
कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥ (324-15)
कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥ (337-5)
कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥ (337-9)
कहु कबीर मनि भइआ अनंदा ॥ (327-15)
कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी ॥ (856-2)

कहु कबीर मै राम कहि छूटिआ ॥३॥३०॥ (329-8)
कहु कबीर मै सो गुरु पाइआ जा का नाउ बिबेको ॥४॥५॥ (793-11)
कहु कबीर लिव लागि रही है जहा बसे दिन राती ॥ (334-14)
कहु कबीर संतन की बैरनि तीनि लोक की पिआरी ॥४॥४॥ (476-17)
कहु कबीर संसा नही अंति परम गति पाइ ॥४॥१॥४॥५५॥ (335-11)
कहु कबीर समझाई ॥३॥३॥ (1194-6)
कहु कबीर साधू को प्रीतमु तिसु मूरति बलिहारी ॥४॥२॥ (1252-7)
कहु कबीर सुखि सहजि समावउ ॥ (327-2)
कहु कबीर सुनहु नर भाई ॥ (324-7)
कहु कबीर सुनहु रे गुनीआ ॥ (325-14)
कहु कबीर हम ऐसे जानिआ ॥ (873-6)
कहु कबीर हम ऐसे लखन ॥ (872-19)
कहु कबीर हम राम राखे क्रिपा करि हरि राइ ॥५॥१॥१४॥ (479-9)
कहु कबीर हरि चरण दिखावहु ॥ (329-14)
कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥१॥ (1391-5)
कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥२॥ (1391-8)
कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥३॥ (1391-12)
कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥४॥ (1391-15)
कहु गुर गज सिव सभु को जानै ॥ (326-11)
कहु जन का नाही घर ता के ॥३॥ (330-17)
कहु डडीआ बाधै धन खड़ी ॥ (333-17)
कहु नानक अगम अगम है ठाकुर भगत टेक हरि नाइओ ॥४॥१५॥१३६॥ (209-12)
कहु नानक अजरु जिनि जरिआ तिस ही कउ बनि आवत ॥४॥९॥ (1205-9)
कहु नानक अटल इहु धरमु ॥४॥८०॥१४९॥ (196-2)
कहु नानक अपर्मपर मानु ॥८॥६॥ (223-14)
कहु नानक अपर्मपर सुआमी कीमति अपुने काजी ॥५॥५॥१२६॥ (206-11)
कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥५३॥ (1429-6)
कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥२२॥ (1427-13)
कहु नानक आपु मिटाइआ ॥ (628-15)
कहु नानक इक राम नाम बिनु अवर सगल बिधि ऊरी ॥२॥६२॥८५॥ (1221-1)
कहु नानक इस ते किछु नाही ॥ (177-16)
कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंतु ॥५६॥ (1429-9)
कहु नानक इह बिधि की स्मपै कोऊ गुरमुखि पावै ॥३॥३॥ (1186-17)
कहु नानक इह बिधि को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो ॥२॥३॥ (685-5)
कहु नानक इह बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै ॥२॥२॥ (831-2)
कहु नानक इह बिधि भई तऊ न हरि रसि लीन ॥४७॥ (1428-18)
कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥५५॥ (1429-8)

कहु नानक इहु ततु बीचारा ॥ (188-15)
कहु नानक इहु ततु बीचारी ॥ (740-18)
कहु नानक एक बिनु दूजा अवरु न करणै जोगु ॥२॥३॥८॥ (713-15)
कहु नानक एकु धिआइआ ॥ (210-15)
कहु नानक एकै भारोसउ बंधन काटनहारु गुरु मेरो ॥२॥६॥२५॥ (1303-1)
कहु नानक एको सालाही ॥९॥५॥ (223-8)
कहु नानक कउन उह करमा ॥ (388-15)
कहु नानक करणहारु है आपे सतिगुरि भरमु चुकाइआ ॥४॥५॥१६३॥ (216-3)
कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥ (469-12)
कहु नानक कहा भै भाई ॥ (202-12)
कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥ (288-12)
कहु नानक कारज सगले पूरे गुर चरणी मनु लाई ॥४॥२॥५॥ (780-16)
कहु नानक काहू परवाहा जउ सुख सागरु मै पाइआ ॥२॥१८॥४१॥ (1212-12)
कहु नानक किआ जंत विचारा ॥४॥६३॥१३२॥ (192-12)
कहु नानक किनि बिधि गति होई ॥१॥ (145-12)
कहु नानक किरपा करी ठाकुर मिलि साधू रस भूंचा ॥२॥१॥३२॥ (534-18)
कहु नानक किरपा करे जिस नो एह वथु देइ ॥ (517-16)
कहु नानक किरपा भई प्रभ भए सहाई ॥२॥१५॥७९॥ (819-18)
कहु नानक किरपा भई भगतु ङिआनी सोइ ॥१॥ (251-4)
कहु नानक किरपा भई साधसंगति निधि मोरै ॥२॥१२॥१५०॥ (212-13)
कहु नानक कीरति हरि साची ॥ (1157-4)
कहु नानक कुमभु जलै महि डारिओ अ्मभै अ्मभ मिलो ॥४॥३॥ (1203-10)
कहु नानक गुण गाईअहि नीत ॥ (376-1)
कहु नानक गुन ता के गाइ ॥३॥५॥ (1187-5)
कहु नानक गुर इहै बुझाइओ प्रीति प्रभू सद केला ॥४॥२॥ (671-4)
कहु नानक गुर कउ कुरबान ॥३॥८॥१०२॥ (396-11)
कहु नानक गुर कउ कुरबानु ॥ (374-17)
कहु नानक गुर कै वेसाहि ॥४॥१६॥८५॥ (181-6)
कहु नानक गुर बिनु नही तरीऐ इहु पूरन ततु बीचारा ॥४॥९॥ (611-5)
कहु नानक गुर बिनु नाही सूझै हरि साजनु सभ कै निकटि खड़ा ॥१॥ (924-9)
कहु नानक गुर भए दइआरा हरि रंगु न कबहू लहता ॥२॥८॥९४॥ (823-5)
कहु नानक गुर भए है दइआल ॥४॥७२॥१४१॥ (194-8)
कहु नानक गुर भए है सहाई ॥४॥१५॥८४॥ (180-18)
कहु नानक गुर मंत्रु चितारि ॥ (186-7)
कहु नानक गुर सबदि सवारी सफलिउ जनमु सबाइआ ॥१॥ (439-15)
कहु नानक गुरि अमिउ पीआइआ रसकि रसकि बिगसाना रे ॥४॥५॥४४॥ (382-1)
कहु नानक गुरि कीआ निबेरा ॥८॥१॥ (1347-19)

कहु नानक गुरि कीनी मइआ ॥ (1298-9)
कहु नानक गुरि कीनो दानु ॥४॥३९॥९०॥ (393-12)
कहु नानक गुरि खोए भरम ॥ (897-6)
कहु नानक गुरि खोले कपाट ॥ (188-12)
कहु नानक गुरि चलतु दिखाइआ मन मधे हरि हरि रावना ॥८॥२॥५॥ (1018-19)
कहु नानक गुरि जगतु तराइआ ॥८॥७॥ (239-8)
कहु नानक गुरि नामु द्रिड़्हाइआ हरि हरि नामु हरि सती ॥ (574-7)
कहु नानक गुरि पड़दा ढाकिआ ॥४॥८॥ (1340-6)
कहु नानक गुरि बंधन काटे बिछुरत आनि मिलाइआ ॥२॥५१॥७४॥ (1218-19)
कहु नानक गुरि बूझ बुझाई ॥ (1345-9)
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ ॥ (152-7)
कहु नानक गुरि भरमु काटिआ सगल ब्रहम बीचारु ॥४॥२५॥९५॥ (51-11)
कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ (885-17)
कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥४॥ (738-2)
कहु नानक गुरि भ्रमु भउ खोइआ ॥ (387-18)
कहु नानक गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥ (188-8)
कहु नानक गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥३॥२॥ (1136-8)
कहु नानक गुरि रोगु मिटाइआ ॥४॥७॥२०॥ (1141-2)
कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥ (190-11)
कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥ (388-11)
कहु नानक गुरु पूरा भेटिआ परवाणु गिरसत उदास ॥४॥४॥५॥ (496-14)
कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ आवन जान रहे ॥२॥१॥१२६॥ (829-17)
कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ मिटिओ सगल अंदेसा ॥२॥१४॥४२॥ (619-12)
कहु नानक गुरु पूरा मिलिआ तां उतरी मन की चिंता ॥४॥ (1003-7)
कहु नानक घरि प्रभ मेरे कै नित नित मंगलु सुनीऐ ॥४॥१॥ (924-19)
कहु नानक छंत अनंत ठाकुर के हरि सिउ कीजै नेहा मन ऐसा नेहु करेहु ॥२॥ (455-3)
कहु नानक छंत गोविंद हरि के मन हरि सिउ नेहु करेहु ऐसी मन प्रीति हरे ॥१॥ (454-18)
कहु नानक छंत दइआल पुरख के मन हरि लाइ परीति कब दिनीअरु देखीऐ ॥३॥ (455-7)
कहु नानक छंत दइआल मोहन के मन हरि चरण गहीजै ऐसी मन प्रीति कीजै ॥४॥१॥४॥ (455-11)
कहु नानक जउ तिआगि दई ॥ (891-18)
कहु नानक जउ पिता पतीने ॥ (1141-14)
कहु नानक जउ पिरहि सीगारी ॥ (372-13)
कहु नानक जउ साधसंगु पाइआ ॥ (913-6)
कहु नानक जउ साधसंगु पाइओ तउ फिरि जनमि न आवउ ॥४॥१॥१२१॥ (401-11)
कहु नानक जन कउ बलि जाईऐ जो सभना करे उधारु ॥२॥२३॥ (532-18)
कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥ (286-6)
कहु नानक जनु हरि हरि हरि है कत आवै कत रमतै ॥२॥३॥२२॥ (1302-8)

कहु नानक जपहि जन नाम ॥ (806-4)
कहु नानक जपि जीवे गिआनी ॥२॥२॥२०॥ (806-11)
कहु नानक जां वलि सुआमी ता सरसे भाई मीता ॥४॥१॥ (453-3)
कहु नानक जा कउ भए दइआला ॥ (190-18)
कहु नानक जा कउ होहु क्रिपाल ॥ (183-15)
कहु नानक जा का पूरा करम ॥ (189-3)
कहु नानक जा के निरमल भाग ॥ (807-7)
कहु नानक जा के पूरन करम ॥ (378-18)
कहु नानक जा के पूरन करमा ॥ (1150-5)
कहु नानक जा के पूरन भाग ॥ (198-2)
कहु नानक जा के पूरे भाग ॥ (201-1)
कहु नानक जा के पूरे भाग ॥ (864-13)
कहु नानक जा के वडभागा तिनि जनमु पदारथु जीता ॥२॥४२॥६५॥ (1217-5)
कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥७॥ (289-5)
कहु नानक जा सतिगुरु पाइआ ॥ (392-12)
कहु नानक जिन सतिगुरु भेटिआ से सभ ते भए निकाणे ॥४॥४॥५१॥ (748-7)
कहु नानक जिन हरि प्रभु डिठा तिन कै सद कुरबाणे ॥२॥ (577-16)
कहु नानक जिनि जगतु ठगाना सु माइआ हरि जन ठागी ॥२॥४४॥६७॥ (1217-12)
कहु नानक जिनि जम ते काढे तिसु गुर कै कुरबाणी ॥४॥४॥ (671-15)
कहु नानक जिनि ठाकुरु पाइआ ॥ (715-10)
कहु नानक जिनि तजे बिकार ॥४॥९६॥१६५॥ (199-6)
कहु नानक जिनि धूरि संत पाई ॥ (182-7)
कहु नानक जिनि प्रिउ परमेसरु करि जानिआ ॥ (185-18)
कहु नानक जिनि मनहु पछानिआ तिन कउ सगली सोझ पई ॥२॥४॥९०॥ (822-10)
कहु नानक जिनि हुकमु पछाता ॥ (885-11)
कहु नानक जिसु आपि दइआरु ॥४॥१३॥२६॥ (1143-2)
कहु नानक जिसु किरपा करै ॥ (237-16)
कहु नानक जिसु किरपा धारै ॥ (201-5)
कहु नानक जिसु पूरा भागु ॥ (189-14)
कहु नानक जिसु भए क्रिपाल ॥ (180-6)
कहु नानक जिसु भए दइआला ता कउ मन ते बिसरि न जाई ॥४॥८॥ (610-18)
कहु नानक जिसु मसतकि लिखिआ तिसु गुर मिलि रोग बिदारी ॥५॥१७॥२८॥ (616-19)
कहु नानक जिसु मसतकि लेखु लिखाइ ॥ (186-3)
कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥ (393-16)
कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥८॥२॥ (236-13)
कहु नानक जिसु सतिगुरु भेटिआ सो जनु निहचलु थीआ ॥३॥९॥१४९॥ (407-17)
कहु नानक जीअड़ा बलिहारी जीउ पिंडु तउ दिता ॥३॥ (1117-16)

कहु नानक जीअड़ा बलिहारी देहु दरसु प्रभ मेरे ॥२॥ (1117-13)
कहु नानक जे होवी भागु ॥ (372-18)
कहु नानक जो गुरि बखसि मिलाइआ ॥ (187-8)
कहु नानक जो जन प्रभ भाए ॥ (1143-8)
कहु नानक जो जनु प्रभ भाइआ ॥ (805-11)
कहु नानक जो प्रभ कउ भाणा तिस ही कउ प्रभु पिआरा ॥२॥ (924-13)
कहु नानक जो प्रभ सरणाई ॥ (388-19)
कहु नानक जो राचै नाइ ॥ (388-7)
कहु नानक जो लाइआ नाम ॥ (389-7)
कहु नानक जो हरि गुन गावै ॥४॥५९॥१२८॥ (191-15)
कहु नानक ठाकुर भारोसै कहू न मानिओ मनि छीना ॥२॥११॥९७॥ (823-17)
कहु नानक ढहि पइआ दुआरै रखि लेवहु मुगध अजाणा ॥४॥२॥२०॥ (1186-2)
कहु नानक तउ छूटे जंजाल ॥४॥३॥ (1298-17)
कहु नानक ततै ततु मिलाइआ ॥८॥१॥४॥ (1156-10)
कहु नानक तब ही मन छुटीऐ जउ सगले अउगन मेटि धरहा ॥४॥४॥ (1203-16)
कहु नानक ता का थिरु सोहागु ॥२॥४३॥९४॥ (394-6)
कहु नानक ता की चरणी लागु ॥४॥५७॥१२६॥ (191-8)
कहु नानक ता की निरमल सोइ ॥३॥ (278-16)
कहु नानक ता की पूरी पई ॥४॥२७॥४०॥ (1147-12)
कहु नानक ता की सरणाई जा का कीआ सगल जहानु ॥२॥१३॥९९॥ (824-6)
कहु नानक ता की सरणाई देत सगल अपिआउ ॥२॥५३॥७६॥ (1219-7)
कहु नानक ता के पूर करमा जा का गुर चरनी मनु लागा ॥४॥१०॥२१॥ (614-18)
कहु नानक ता कै बलि जाउ ॥ (1298-13)
कहु नानक ता कै सगल निधाना ॥४॥३४॥१०३॥ (186-14)
कहु नानक तिन कउ बलि जाई ॥ (201-15)
कहु नानक तिन खंनीऐ वंञा जिन घटि मेरा हरि प्रभु वूठा ॥३॥ (578-1)
कहु नानक तिन संगि दुखु नसै ॥४॥९॥१४७॥ (212-4)
कहु नानक तिनि जनि निरदलिआ साधसंगति कै झली रे ॥२॥३॥१३२॥ (404-12)
कहु नानक तिनि पाइआ तनु मनु सीतलागउ ॥४॥२॥३२॥ (808-13)
कहु नानक तिनि पूरा पाइआ ॥४॥४॥ (1299-2)
कहु नानक तिनि भवजलु तरीअले प्रभ किरपा संत संगार ॥४॥१॥३१॥ (534-14)
कहु नानक तिन्ह जन बलिहारी जो अलिप रहे मन मांही ॥४॥२॥१६॥ (1207-11)
कहु नानक तिसु कीरतनु एक ॥४॥८॥ (885-7)
कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥ (191-3)
कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥ (869-19)
कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिनि सभ का कीआ उधारु ॥२॥६॥१५॥ (499-6)
कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिह प्रसादि सुखि सोईऐ ॥२॥२॥ (528-19)

कहु नानक तिसु घोलि घुमाई जिनि प्रभु स्रवणी सुणिआ ॥१॥ (577-11)
कहु नानक तिसु जन नही भंगु ॥४॥४०॥५३॥ (1151-17)
कहु नानक तिसु जन बलिहारी ॥ (741-12)
कहु नानक तिसु जन बलिहारी तेरा दानु सभनी है लीता ॥२॥ (577-1)
कहु नानक तिसु प्रभ बलिहारी जिनि जन का कीनो पूरन वाकु ॥२॥१८॥१०४॥ (825-5)
कहु नानक तिसु भइओ परापति जा कै लेखु मथामा ॥४॥११॥ (1206-1)
कहु नानक तिसु भइओ परापति जिसु पुरब लिखे का लहना ॥८॥ (642-7)
कहु नानक तिसु सभु किछु नीका जो प्रभ की सरनागना ॥८॥१॥४॥ (1018-13)
कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥६॥ (1426-15)
कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥२॥१॥ (726-17)
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥१२॥ (1427-3)
कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥३॥ (75-7)
कहु नानक तीजै पहरै प्राणी से जाइ मिले हरि नालि ॥३॥ (77-2)
कहु नानक तुझ ते मनु मानिआ कीमति कहनु न जाई ॥१०॥३॥ (1274-15)
कहु नानक तुमरी सरणाई ॥ (1147-18)
कहु नानक ते भवन पवित्रा जा महि संत तुम्हारे ॥२॥३२॥५५॥ (1215-7)
कहु नानक तेरै कुरबाणु ॥ (391-18)
कहु नानक त्रै गुण भ्रमु छूटा जउ प्रभ भए सहाई ॥४॥७॥ (1000-18)
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥५०॥ (1429-3)
कहु नानक थिरु तखति निवासी सचु तिसै दीबाणो ॥३॥ (924-16)
कहु नानक दइआल सुआमी संतु भगतु जनु सोई ॥२॥५॥३६॥ (680-6)
कहु नानक दर का बीचार ॥५॥६॥१९॥ (1140-15)
कहु नानक दरसु पेखि सुखु पाइआ सभ पूरन होई आसा ॥२॥१५॥३८॥ (1212-1)
कहु नानक दिनु रैनि धिआवउ मारि काढी सगल उपाधे ॥४॥ (403-3)
कहु नानक दूजै पहरै प्राणी तिसु कालु न कबहूं खाइ ॥२॥ (76-17)
कहु नानक दूजै पहरै प्राणी भरि जोबनु लहरी देइ ॥२॥ (77-13)
कहु नानक देवै काहू ॥४॥२॥ (990-1)
कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन ॥७॥ (1426-16)
कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥४॥ (1426-13)
कहु नानक नाम रसु पाईऐ साधू चरन गहउ ॥२॥३॥६॥ (1322-13)
कहु नानक नामु निरंजनु अगमु अगोचरु हुकमे रहिआ समाई ॥४॥२॥ (569-4)
कहु नानक नाही तिन कामी ॥४॥२८॥७९॥ (390-5)
कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिओ तोहि पुकारि ॥२॥८॥ (633-5)
कहु नानक नित इवै धिआईं ॥ (386-6)
कहु नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उर धरिआ ॥२॥२४॥ (533-5)
कहु नानक निसचौ िध्यावै ॥ (1353-9)
कहु नानक निहचउ धिआवै ॥ (470-18)

कहु नानक निहचल घरु बाधिओ गुरि कीओ बंधानी ॥४॥५॥ (672-2)
कहु नानक परम पदु पाइआ ॥४॥४८॥११७॥ (189-11)
कहु नानक पाईऐ वडभागीं मन तन होइ बिगासा ॥२॥४॥२३॥ (1208-19)
कहु नानक पावहि विरले केइ ॥४॥७॥ (1170-12)
कहु नानक पाहन प्रभ तारहु साधसंगति सुख मानो ॥२॥११॥१५॥ (1269-12)
कहु नानक पिरु मेरै संगे ता मै नव निधि पाई ॥३॥ (452-19)
कहु नानक प्रभ करी मइआ ॥४॥१५॥६६॥ (387-11)
कहु नानक प्रभ किरपा कीजै मनु सदा चलै तेरै मारगि ॥३॥ (781-8)
कहु नानक प्रभ किरपा कीजै हरि गुण सुणीअहि अविनासी ॥२॥ (781-4)
कहु नानक प्रभ के सभि जचना ॥४॥२॥७॥ (803-18)
कहु नानक प्रभ तुमरे बिसरत जगत जीवनु कैसे पावै ॥२॥४॥३२॥ (617-15)
कहु नानक प्रभ दीन दइआला ॥ (376-12)
कहु नानक प्रभ पुरख दइआला कीमति कहणु न जाई ॥३॥१॥९॥ (498-2)
कहु नानक प्रभ बखस करीजै ॥ (738-19)
कहु नानक प्रभ बिनउ सुनीजै ॥ (738-13)
कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ ॥२॥४॥९॥९॥१३॥५८॥४॥९३॥ (685-9)
कहु नानक प्रभ भए क्रिपाला मगन भए हीअरै दरसारै ॥२॥५॥२४॥ (1302-16)
कहु नानक प्रभ भए प्रसीना ॥४॥७॥१२॥ (804-18)
कहु नानक प्रभ मिले मनोहर मनु सीतल बिगसारे ॥२॥३॥२९॥ (534-5)
कहु नानक प्रभ मिले रसाल ॥४॥४॥१५॥ (887-10)
कहु नानक प्रभ लोचा पूरि ॥ (724-4)
कहु नानक प्रभ होत दइआरा गुरु भेटै काढै बाह फरे ॥२॥१०॥९६॥ (823-13)
कहु नानक प्रभि अपदा काटी ॥४॥७४॥१४३॥ (194-16)
कहु नानक प्रभि इहै जनाई ॥ (864-7)
कहु नानक प्रभि किरपा करी ॥ (1148-6)
कहु नानक प्रभि किरपा कीन्ही चरण कमल मनु लागा ॥४॥३॥६॥ (781-11)
कहु नानक प्रभि किरपा धारी मन तन भए बिगासा ॥४॥१२॥२३॥ (615-10)
कहु नानक प्रभि बणत बणाइआ ॥५॥५॥ (1137-3)
कहु नानक प्रभु मेरा ऊचा ॥४॥१॥ (562-14)
कहु नानक प्रभु सिमरहु एक ॥ (395-3)
कहु नानक प्राणी गुरमुखि छूटै साचे ते पति पावै ॥५॥२॥ (76-10)
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै गुरमुखि सबदु पछाणु ॥४॥ (76-6)
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥४॥ (78-2)
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥४॥१॥ (75-11)
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै सफलिओ रैणि भगता दी ॥४॥१॥३॥ (77-6)
कहु नानक प्राणी तीजै पहरै प्रभु चेतहु लिव लाइ ॥३॥ (76-3)
कहु नानक प्राणी तीजै पहरै बिखु संचे अंधु अगिआनु ॥३॥ (77-17)

कहु नानक प्राणी दूजै पहरै विसरि गइआ धिआनु ॥२॥ (75-4)
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥१॥ (75-14)
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै धरि पाइता उदरै माहि ॥१॥ (77-10)
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हरि जपीऐ किरपा धारि ॥१॥ (76-14)
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हुकमि पइआ गरभासि ॥१॥ (74-18)
कहु नानक प्रिअ रवी सुहागनि अति नीकी मेरी बनी खटोली ॥२॥३॥८९॥ (822-6)
कहु नानक बंधन काटन कउ मै सतिगुरु पुरखु धिआवत हे ॥४॥२॥८८॥ (822-2)
कहु नानक बंधन छुटे सतिगुर की सरना ॥४॥६॥३६॥ (809-16)
कहु नानक बाह लुडाईऐ ॥४॥३३॥ (26-2)
कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥३०॥ (1428-2)
कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥२६॥ (1427-17)
कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥२८॥ (1427-19)
कहु नानक बेअंत गुसाई ॥ (1082-3)
कहु नानक बेअंतु बेअंतु धिआइआ ॥ (1362-3)
कहु नानक भगत पए सरणाई देहु दरसु मनि रंगु लगा ॥२०॥ (1083-11)
कहु नानक भगत सोहहि दरवारे मनमुख सदा भवाति ॥५॥१॥४॥ (78-6)
कहु नानक भगतन का संगी भगत सोहहि दरबारा ॥४॥१॥ (999-2)
कहु नानक भगति प्रभ सारु ॥ (865-13)
कहु नानक भजु तिह एक रंगि ॥३॥४॥ (1187-2)
कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै ॥२॥१॥ (536-11)
कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते होत उधार ॥२॥२॥ (536-14)
कहु नानक भजु हरि मना अउध जातु है बीति ॥३॥ (1426-12)
कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥२॥ (1426-11)
कहु नानक भरमु गुरि खोइआ ता हरि महली महलु पाइआ था ॥४॥३॥१२॥ (1002-9)
कहु नानक भरमु गुरि खोइओ जोती जोति समही ॥२॥६०॥८३॥ (1220-13)
कहु नानक भरमु गुरि खोई है इव ततै ततु मिलाइओ ॥४॥२॥१२३॥ (205-12)
कहु नानक भला मेरा करम ॥ (191-19)
कहु नानक भव सागरु तरिआ हरि निधि पाई सहजोऊ ॥२॥२॥३३॥ (535-4)
कहु नानक भव सागरु तरिओ भए पुनीत सरीरा ॥४॥५॥१२७॥ (403-10)
कहु नानक भै सागरु तरिआ पूरन काज हमारे ॥३॥ (782-16)
कहु नानक भ्रम कटे किवाड़ा बहुड़ि न होईऐ जउला जीउ ॥४॥१९॥२६॥ (102-8)
कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥४०॥ (1428-12)
कहु नानक मनि अनदु भइआ है काटी जम की फासी ॥२॥२८॥५१॥ (1214-12)
कहु नानक मनि भइआ परगासा पाइआ पदु निरबाणी ॥४॥४॥१२५॥ (206-4)
कहु नानक मनि भई परतीति ॥ (194-12)
कहु नानक मिलि संतसंगति ते मगन भए लिव लाई ॥२॥२५॥४८॥ (1214-1)
कहु नानक मेरा गुरु समराथा ॥८॥९॥ (240-3)

कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा ॥४॥४५॥११४॥ (188-19)
कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा गुर प्रसादि प्रभ भए निहाल ॥२॥२७॥११३॥ (827-2)
कहु नानक मेरी आसा पूरी सतिगुर की सरणाई ॥४॥४॥ (883-19)
कहु नानक मेरी परम गति होई ॥४॥१॥ (736-16)
कहु नानक मेरी सुणी अरदासि ॥ (183-2)
कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ पारब्रहमु गुरु पाइआ ॥४॥४॥ (1339-2)
कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ साधसंगि तजि लबहूं ॥२॥४॥ (529-7)
कहु नानक मेरो बनिओ सुहागो पति सोभा भले अचारे ॥२॥३॥७॥ (1268-2)
कहु नानक मै अतुल सुखु पाइआ जनम मरण भै लाथे ॥२॥२०॥४३॥ (1213-1)
कहु नानक मै इही भरोसै गही आनि सरनाई ॥२॥१॥ (1008-8)
कहु नानक मै पूरा पाइआ करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥४॥१॥ (1237-8)
कहु नानक मै वरु घरि पाइआ मेरे लाथे जी सगल विसूरे ॥४॥१॥ (577-7)
कहु नानक मै सरब सुखु पाइआ इह सूखि बिहानी राते ॥२॥३॥२६॥ (1209-13)
कहु नानक मै सहज घरु पाइआ हरि भगति भंडार खजीना ॥२॥१०॥३३॥ (1211-1)
कहु नानक मै सो गुरु पाइआ ॥ (188-4)
कहु नानक मै सो प्रभु पाइआ करण कारण समरथोहं ॥२॥१४॥३७॥ (1211-16)
कहु नानक मोरचा गुरि लाहिओ तह गरभ जोनि कह आवै ॥४॥१॥ (978-12)
कहु नानक मोरी पूरन आसा ॥ (394-12)
कहु नानक यह सोच रही मनि हरि जसु कबहू न गाई ॥२॥२॥ (1008-11)
कहु नानक रंगि चलूल भए है हरि रंगु न लहै मजीठा ॥२॥१९॥४२॥ (1212-16)
कहु नानक रवहि रंगि राते प्रेम महा रसि भीने ॥२॥ (782-13)
कहु नानक रसि मंगल गाए सबदु अनाहदु बाजिओ ॥४॥५॥ (1204-4)
कहु नानक लाभु लाहा लै चालहु सुख सेती घरि जावहु ॥२॥५०॥७३॥ (1218-15)
कहु नानक लोग अलोगी री सखी ॥२॥१॥१५७॥ (409-11)
कहु नानक वडभागी पाईऐ ॥४॥ (179-18)
कहु नानक वडभागी पाईऐ ॥४॥६॥ (1339-15)
कहु नानक वरु मिलिआ सुखदाता छोडि न जाई दूरे ॥४॥३॥ (1267-3)
कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥१९॥ (1427-10)
कहु नानक संत रेन मागउ मेरो मनु पावै बिस्राम ॥२॥१॥६॥ (713-8)
कहु नानक संत हरि राखे निंदक दीए रुड़ाई ॥४॥२॥४१॥ (381-3)
कहु नानक संतन का राखा पारब्रहमु निरंकारै ॥४॥१०॥ (1205-15)
कहु नानक संतन बलिहारै जो प्रभ के सद संगी ॥२॥३॥ (1322-3)
कहु नानक संतन रसु आई है जिउ चाखि गूंगा मुसकारै ॥२॥१॥२०॥ (1302-1)
कहु नानक सच भए बिगासा गुरि निधानु रिदै लै राखिआ ॥४॥३॥१६१॥ (215-10)
कहु नानक सचु धिआईऐ ॥ (472-3)
कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि अबिचल नीव रखाई ॥३॥ (783-11)
कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि एहु थानु सुहाइआ ॥१॥ (783-4)

कहु नानक सदा रंगु माणे ग्रिह प्रिअ थीते सद थाए ॥२॥१॥२७॥ (533-16)
कहु नानक सदा हदूरि है ॥४॥१॥१३९॥ (210-12)
कहु नानक सफल ओह काइआ ॥५॥ (374-7)
कहु नानक सफलु सो आइआ ॥४॥४॥९॥ (804-7)
कहु नानक सबदि मिलाइआ ॥४॥१०॥ (879-11)
कहु नानक सभ की होइ रेना हरि हरि दरसि समावै ॥२॥४८॥७१॥ (1218-8)
कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥४॥१०॥४९॥ (383-12)
कहु नानक सभ दुख मिटे प्रभ भेटे परमानंद ॥८॥१॥२॥ (431-10)
कहु नानक सभु पड़दा तूटा ॥ (887-4)
कहु नानक समझु रे इआने आजु कालि खुल्है तेरी गांठुली ॥२॥३८॥६१॥ (1216-9)
कहु नानक सरणि दइआल गुर लेहु मुगध उधारे ॥४॥४॥३४॥ (809-6)
कहु नानक सरब थोक पूरन पूरा सतिगुरु पाइआ ॥४॥१५॥७९॥ (628-11)
कहु नानक सहु घर महि बैठा सोहे बंक दुआरे ॥२॥ (452-16)
कहु नानक सा कथनी सारु ॥ (198-17)
कहु नानक साध ते भागी होइ चेरी चरन गही ॥२॥५॥१४॥ (499-2)
कहु नानक सुख सहज अनंदा ॥ (1206-16)
कहु नानक सुख सहजु मै पाइआ गुरि लाही सगल तिखा ॥२॥१७॥४०॥ (1212-8)
कहु नानक सुखि माणे रलीआं गुर पूरे कंउ नमसकारा ॥१॥ (576-17)
कहु नानक सुखि सहजि निवासु ॥४॥२॥४॥ (863-8)
कहु नानक सुखु पाइआ त्रिपति रहे आघाइ ॥४॥४॥१३॥ (1002-14)
कहु नानक सुणि भरथरि जोगी खीवा अम्रित धारै ॥४॥४॥३८॥ (360-10)
कहु नानक सुणि भरथरि जोगी पारब्रहम लिव एकं ॥४॥३॥३७॥ (360-4)
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥१६॥ (1427-7)
कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥९॥ (1426-18)
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥२७॥ (1427-18)
कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥२१॥ (1427-12)
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१४॥ (1427-5)
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१५॥ (1427-6)
कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥३९॥ (1428-11)
कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥१०॥ (1427-1)
कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥१८॥ (1427-9)
कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥१७॥ (1427-8)
कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ॥८॥ (1426-17)
कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥१३॥ (1427-4)
कहु नानक सुभ द्रिसटि निहाल ॥४॥ (384-10)
कहु नानक से सहज सुखु पावहि जिन कउ नदरि तुमारी ॥१०॥१॥६॥ (506-15)
कहु नानक सेई जन ऊतम जो भावहि सुआमी तुम मना ॥१६॥१॥८॥ (1080-1)

कहु नानक सेई जन पूरे ॥ (195-8)
कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥ (286-9)
कहु नानक सो जनु परवानु ॥ (189-7)
कहु नानक सो धंनु वडभागी ॥४॥७॥७६॥ (178-4)
कहु नानक सो बहुरि न नाचै जिसु गुरु भेटै पूरा ॥४॥७॥ (884-19)
कहु नानक सो ब्रहम बीचारी ॥८॥५॥ (238-9)
कहु नानक सोई नरु गरूआ जो प्रभ के गुन गावै ॥३॥३॥ (831-6)
कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै ॥ (220-12)
कहु नानक सोभा संगि जावहु पारब्रहम कै दुआरे ॥२॥५७॥८०॥ (1220-2)
कहु नानक हउ तिसु बलि जाउ ॥४॥२८॥९७॥ (185-9)
कहु नानक हउ निरभउ होई सो प्रभु मेरा ओल्हा ॥४॥१॥४॥ (780-2)
कहु नानक हउमै भीति गुरि खोई तउ दइआरु बीठलो पाइओ ॥४॥ (624-12)
कहु नानक हम इहै हवाला राखु संतन कै पाछै ॥४॥६॥१७॥ (613-15)
कहु नानक हम तुम गुरि खोई है अ्मभै अ्मभु मिलोगनी ॥४॥३॥ (883-14)
कहु नानक हम नीच करमा ॥ (12-9)
कहु नानक हम नीच करमा ॥ (378-4)
कहु नानक हम लूण हरामी ॥ (195-4)
कहु नानक हरि आपि मिलाए मिलि सतिगुर पुरख सुखु होई ॥ (572-16)
कहु नानक हरि धिआए ॥ (1229-13)
कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी ॥३॥१०॥ (633-15)
कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जम फंध ॥३१॥ (1428-3)
कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मानु ॥३५॥ (1428-7)
कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥३२॥ (1428-4)
कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥१॥ (1426-10)
कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥३३॥ (1428-5)
कहु नानक हरि मिलि भए एकै महा अनंद सुख पाए ॥४॥३॥ (999-14)
कहु नानक हरि संगि मनु मानिआ सभ चूकी काणि लोकानी ॥२॥८॥३१॥ (1210-12)
कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ रंगि रते बिसमादे ॥४॥८॥१९॥ (614-7)
कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ सो प्रभु नैणी डीठा ॥१॥ (452-13)
कहु नानक हरि हरि आराधहु कवन उपमा देउ कवन बडाई ॥२॥ (1237-2)
कहु नानक हरि हरि गुण गाइ ॥४॥३॥७२॥ (176-16)
कहु नानक हरि हरि पदु चीन ॥ (240-15)
कहु पंडित सूचा कवनु ठाउ ॥ (1195-6)
कहु बेणी गुरमुखि धिआवै ॥ (1351-18)
कहु बेनंती अपुने सतिगुर पाहि ॥ (182-17)
कहु भीखन दुइ नैन संतोखे जह देखां तह सोई ॥२॥२॥ (659-18)
कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥ (277-6)

कहु मीता हउ कै पहि जाई ॥३॥ (371-9)
कहु रविदास अब त्रिसना चूकी ॥ (875-10)
कहु रविदास परउ तेरी साभा ॥ (345-11)
कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥४॥२॥११॥७॥२॥४९॥ जोड़ु ॥ (875-16)
कहु रविदास भइओ जब लेखो ॥ (1293-18)
कहु रविदास सभै नही समझसि भूलि परे जैसे बउरे ॥ (974-3)
कहु रे पंडित अ्मबरु का सिउ लागा ॥ (329-4)
कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥ (324-16)
कहु रे पंडीआ कउन पवीता ॥ (331-11)
कहु रे मुलां बांग निवाज ॥ (1158-9)
कहु सुरजन कितु जुगती धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (822-16)
कहूं न भीजै संजम सुआमी बोलहि मीठे बैन ॥१॥ (674-5)
कहे न जानी अउगण मेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (156-11)
कहै कबीर निरंजन धिआवउ ॥ (327-9)
कहै कबीरा भिसत छोडि करि दोजक सिउ मनु माना ॥५॥४॥१७॥ (480-9)
कहै कबीरा सारं ॥४॥१॥१०॥ (972-5)
कहै कबीरु एकै करि करना ॥ (872-13)
कहै कबीरु निरंजन अलेखु ॥२॥२॥११॥ (972-7)
कहै कबीरु पूरन जग सोई ॥ (330-18)
कहै कबीरु मदन के माते हिरदै देखु बीचारी ॥ (336-10)
कहै कबीरु सुनहु रे संतहु इहु मनु उडन पंखेरू बन का ॥२॥१॥९॥ (1253-19)
कहै कबीरु सुनहु रे संतहु खेत ही करहु निबेरा ॥ (1104-11)
कहै कबीरु सुनहु रे संतहु मेरी मेरी झूठी ॥ (480-3)
कहै खुदाइ न मानै कोइ ॥३॥ (350-2)
कहै धंना पूरन ताहू को मत रे जीअ डरांही ॥३॥३॥ (488-6)
कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥१॥ (917-4)
कहै नानकु अम्रित नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाए ॥३७॥ (922-10)
कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥२६॥ (920-14)
कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ ॥२८॥ (921-1)
कहै नानकु एहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब द्रिसटि होई ॥३६॥ (922-7)
कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ ॥७॥ (917-18)
कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥३५॥ (922-4)
कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥२९॥ (921-5)
कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इहु सहसा इव जाइ ॥१८॥ (919-12)
कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥१४॥ (919-1)
कहै नानकु छपै किउ छपिआ एकी एकी वंडि दीआ ॥४॥७॥ (350-19)
कहै नानकु जिन मंनु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥२०॥ (919-17)

कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥१९॥ (919-15)
कहै नानकु जिस नो आपि तुठा तिनि अम्रितु गुर ते पाइआ ॥१३॥ (918-17)
कहै नानकु जिसु करे किरपा सो हरि भगती चितु लावए ॥१॥ (440-11)
कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए ॥८॥ (918-3)
कहै नानकु जीवाले जीआ जह भावै तह राखु तुही ॥५॥१९॥ (354-19)
कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥ (917-13)
कहै नानकु तू सदा अगमु है तेरा अंतु न पाइआ ॥१२॥ (918-14)
कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥३४॥ (922-1)
कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥ (917-6)
कहै नानकु मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ ॥१०॥ (918-9)
कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले ॥११॥ (918-12)
कहै नानकु मुकति होवहि जोगी साचे रहहि समाइ ॥१२॥१॥१०॥ (909-6)
कहै नानकु रामु भजि लै जातु अउसरु बीत ॥२॥१॥ (631-13)
कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥६॥ (917-16)
कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥२२॥ (920-4)
कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥३९॥ (922-16)
कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥ (917-8)
कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥१५॥ (919-4)
कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥२४॥ (920-9)
कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥२३॥ (920-6)
कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥२५॥ (920-12)
कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥१६॥ (919-7)
कहै नानकु सभु को करे कराइआ ॥ (1155-3)
कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी ॥९॥ (918-6)
कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ (917-11)
कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥२१॥ (920-1)
कहै नानकु सुणि मन मेरे तू सदा सचु समालि ॥१॥ (569-7)
कहै नानकु से पवितु जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइआ ॥१७॥ (919-9)
कहै नानकु सो ततु पाए जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी ॥२७॥ (920-17)
कहै नानकु स्रिसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइआ ॥३३॥ (921-16)
कहै नानकु हरि का भाणा होआ कहणा कछू न जाई ॥४॥२॥४॥ (490-14)
कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥३८॥ (922-13)
कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥३१॥ (921-10)
कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइ ॥३२॥ (921-13)
कहै प्रभु अवरु अवरु किछु कीजै सभु बादि सीगारु फोकट फोकटईआ ॥ (836-10)
कहै फरीदु सहेलीहो सहु अलाएसी ॥ (794-19)
कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥२॥२॥ (694-13)

कहै रविदासु नामु तेरो आरती सति नामु है हरि भोग तुहारे ॥४॥३॥ (694-19)
कहै सुंदरु सुणहु संतहु सभु जगतु पैरी पाइ जीउ ॥६॥१॥ (924-4)
कां की मात पिता सुत बनिता को काहू को भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1231-8)
कां को तनु धनु स्मपति कां की का सिउ नेहु लगाही ॥ (1231-12)
कांइ रे बकबादु लाइओ ॥ (718-11)
कांइआ कंचनु तां थीऐ जा सतिगुरु लए मिलाए ॥२॥ (585-3)
कांइआ कड़ासणु मनु जागोटी ॥ (939-9)
कांइआ नगरि इकु बालकु वसिआ खिनु पलु थिरु न रहाई ॥ (1191-9)
कांइआ मांजसि कउन गुनां ॥ (656-3)
कांइआ साधै उरध तपु करै विचहु हउमै न जाइ ॥ (33-7)
कांइआ हंस थीआ वेछोड़ा जां दिन पुंने मेरी माए ॥ (579-1)
कांएं आन आन रुचीऐ ॥ (1229-12)
कांखी एकै दरस तुहारो ॥ (262-12)
कांयां लाहणि आपु मदु अम्रित तिस की धार ॥ (553-7)
कांसी क्रिसनु चरावत गाऊ मिलि हरि जन सोभा पाई ॥२॥ (1263-8)
का कउ दुराउ का सिउ बलबंचा जह जह पेखउ तह तह नेरा ॥ (827-18)
का की माई का को बाप ॥ (188-9)
का की मात पिता कहु का को कवन पुरख की जोई ॥ (478-2)
का को जरै काहि होइ हानि ॥ (329-16)
का को ठाकुरु का को सेवकु को काहू कै जासी ॥३॥ (334-14)
का को मात पिता सुत धीआ ॥ (253-6)
काइ कमंडलु कापड़ीआ रे अठसठि काइ फिराही ॥ (526-4)
काइ जपहु रे काइ तपहु रे काइ बिलोवहु पाणी ॥ (526-3)
काइ पटोला पाड़ती क्मबलड़ी पहिरेइ ॥ (1383-11)
काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ॥१॥ (695-13)
काइआं अगनि करे निभरांति ॥ (1256-7)
काइआ अंदरि अम्रित सरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे ॥४॥ (1046-5)
काइआ अंदरि आपि वसि रहिआ आपे रस भोगी ॥ (514-2)
काइआ अंदरि आपे वसै अलखु न लखिआ जाई ॥ (754-9)
काइआ अंदरि गड़ु कोटु है सभि दिसंतर देसा ॥ (955-1)
काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला ॥ (754-8)
काइआ अंदरि तोलि तुलावै आपे तोलणहारा ॥ (754-13)
काइआ अंदरि पापु पुंनु दुइ भाई ॥ (126-7)
काइआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभ ओपति जितु संसारा ॥ (754-16)
काइआ अंदरि भउ भाउ वसै गुर परसादी पाई ॥६॥ (754-15)
काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा ॥ (754-11)
काइआ अंदरि वणजु करे वापारा नामु निधानु सचु पावणिआ ॥६॥ (115-7)

काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला ॥ (754-7)
काइआ अंदरि हउमै मेरा ॥ (126-6)
काइआ अम्रिति रही भरपूरे पाईऐ सबदि वीचारी ॥१९॥ (911-11)
काइआ आरणु मनु विचि लोहा पंच अगनि तितु लागि रही ॥ (990-5)
काइआ कंचन कोटु अपारा ॥ (1059-15)
काइआ कंचनु तां थीऐ जां सतिगुरु लए मिलाए ॥ (584-19)
काइआ कंचनु सबदु वीचारा ॥ (1064-18)
काइआ कंचनु सबदे राती साचै नाइ पिआरी ॥१८॥ (911-10)
काइआ कची कचा चीरु हंढाए ॥ (111-19)
काइआ कपड़ु टुकु टुकु होसी हिदुसतानु समालसी बोला ॥ (723-3)
काइआ कमली हंसु इआणा मेरी मेरी करत बिहाणीता ॥ (156-2)
काइआ कमलु है कुमलाणा ॥ (1051-15)
काइआ कलालनि लाहनि मेलउ गुर का सबदु गुड़ु कीनु रे ॥ (968-19)
काइआ कागदु जे थीऐ पिआरे मनु मसवाणी धारि ॥ (636-16)
काइआ कागदु मनु परवाणा ॥ (662-10)
काइआ कापरु चीर बहु फारे हरि रंगु न लहै सभागा ॥३॥ (985-11)
काइआ कामणि अति सुआल्हिउ पिरु वसै जिसु नाले ॥ (754-5)
काइआ कामणि जे करी भोगे भोगणहारु ॥ (21-18)
काइआ कामणि सदा सुहेली गुरमुखि नामु सम्हाला ॥२॥ (754-9)
काइआ किरदार अउरत यकीना ॥ (1084-8)
काइआ की अगनि ब्रहमु परजारै ॥ (1160-2)
काइआ की अगनि ब्रहमु परजाले ॥ (952-19)
काइआ कुट्मबु मोहु न बूझै ॥ (1045-8)
काइआ कुसुध हउमै मलु लाई ॥ (1045-10)
काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥ (565-19)
काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥१॥ (566-2)
काइआ कूमल फुल गुण नानक गुपसि माल ॥ (791-9)
काइआ कोटु अति अपारा ॥ (1064-14)
काइआ कोटु अपारु है अंदरि हटनाले ॥ (309-8)
काइआ कोटु अपारु है मिलणा संजोगी ॥ (514-2)
काइआ कोटु गड़ै महि राजा ॥ (1037-7)
काइआ कोटु पके हटनाले ॥ (1065-17)
काइआ कोटु रचाइआ हरि सचै आपे ॥ (789-17)
काइआ कोटु है आकारा ॥ (1059-14)
काइआ गड़ महल महली प्रभु साचा सचु साचा तखतु रचाइआ ॥१२॥ (1039-9)
काइआ गड़ु सोहिआ मेरै प्रभि मोहिआ किउ सासि गिरासि विसारीऐ ॥ (1114-8)
काइआ छीजै भई सिबालु ॥२४॥ (933-1)

काइआ डूबै केसवा ॥१॥ (1196-2)
काइआ नगर महि करम हरि बोवहु हरि जामै हरिआ खेतु ॥ (368-4)
काइआ नगर महि राम रसु ऊतमु किउ पाईऐ उपदेसु जन करहु ॥ (800-1)
काइआ नगरि नगरि हरि बसिओ मति गुरमति हरि हरि सहे ॥ (1336-9)
काइआ नगरि बसत हरि सुआमी हरि निरभउ निरवैरु निरंकारा ॥ (720-4)
काइआ नगरि वसिओ घरि मंदरि जपि सोभा गुरमुखि करपफा ॥ (1336-16)
काइआ नगरी इहु मनु राजा पंच वसहि वीचारी ॥९॥ (907-18)
काइआ नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाई ॥३॥ (908-15)
काइआ नगरी सबदे खोजे नामु नवं निधि पाई ॥२२॥ (910-1)
काइआ नगरु ढहै ढहि ढेरी ॥ (1052-4)
काइआ नगरु ढहै ढहि ढेरी बिनु सबदै पति जाई हे ॥३॥ (1021-13)
काइआ नगरु नगर गड़ अंदरि ॥ (1033-9)
काइआ नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरि रसु कीजै ॥ (1323-12)
काइआ पात्रु प्रभु करणैहारा ॥ (1081-1)
काइआ बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥ (695-14)
काइआ बिगूती बहु बिधि भाती ॥ (329-13)
काइआ बिरखु पंखी विचि वासा ॥ (1068-17)
काइआ ब्रहमा मनु है धोती ॥ (355-2)
काइआ भीतरि अवरो पड़िआ ममा अखरु वीसरिआ ॥२८॥ (434-3)
काइआ मंदर मनसा थ्मभ ॥ (344-10)
काइआ महलु मंदरु घरु हरि का तिसु महि राखी जोति अपार ॥ (1256-3)
काइआ मिटी अंधु है पउणै पुछहु जाइ ॥ (511-1)
काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ ॥ (722-3)
काइआ रति बहु रूप रचाही ॥ (324-9)
काइआ रोगु न छिद्रु किछु ना किछु काड़ा सोगु ॥ (71-1)
काइआ लाहणि आपु मदु मजलस त्रिसना धातु ॥ (553-5)
काइआ विचि तोटा काइआ विचि लाहा ॥ (1066-14)
काइआ विचि वसतु कीमति नही पाई ॥ (1066-17)
काइआ सरीरै विचि सभु किछु पाइआ ॥ (117-12)
काइआ सेज गुर सबदि सुखाली गिआन तति करि भोगो ॥ (773-4)
काइआ सोच न पाईऐ बिनु हरि भगति पिआर ॥ (59-4)
काइआ सोधहि सबदु वीचारहि ॥ (1068-18)
काइआ सोधि तरै भव सागरु आतम ततु वीचारी ॥१३॥ (908-1)
काइआ हंस किआ प्रीति है जि पइआ ही छडि जाइ ॥ (510-19)
काइआ हंस धुरि मेलु करतै लिखि पाइआ ॥ (954-7)
काइआ हंस प्रीति बहु धारी ॥ (1028-2)
काइआ हंसि संजोगु मेलि मिलाइआ ॥ (139-16)

काइआ हंसु निरमलु दरि सचै जाणु ॥ (1065-15)
काइआ हरि मंदरु हरि आपि सवारे ॥ (1059-17)
काइआ हांडी काठ की ना ओह चर्हैं बहोरि ॥७०॥ (1368-4)
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥ (345-14)
काई आस न पुंनीआ नित पर मलु हिरते ॥ (317-6)
काई बात न रहीआ ऊरी ॥ (623-8)
काएं रे मन बिखिआ बन जाइ ॥ (1252-9)
काग उडावत भुजा पिरानी ॥ (792-12)
काग बतन बिसटा महि वास ॥२॥ (239-4)
कागउ होइ न ऊजला लोहे नाव न पारु ॥ (1089-16)
कागद कोटु इहु जगु है बपुरो रंगनि चिहन चतुराई ॥ (1274-1)
कागदि कलम न लिखणहारु ॥ (3-5)
कागदु लूणु रहै घ्रित संगे पाणी कमलु रहै ॥ (877-13)
कागर नाव लंघहि कत सागरु ब्रिथा कथत हम तरते ॥२॥ (1267-7)
कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु ॥ (1382-13)
कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ॥ (1382-14)
काच कोटं रचंति तोयं लेपनं रकत चरमणह ॥ (1354-4)
काच कोठरी माहि तूं बसता संगि सगल बिखै की बिआधे ॥१॥ रहाउ ॥ (402-19)
काच गगरीआ अ्मभ मझरीआ ॥ (392-1)
काच बादरै लालु खोई है फिरि इहु अउसरु कदि लहा ॥२॥ (1203-14)
काच बिहाझन कंचन छाडन बैरी संगि हेतु साजन तिआगि खरे ॥ (823-11)
काचा धनु फुनि आवै जाए ॥ रहाउ ॥ (665-16)
काचा धनु संचहि मूरख गावार ॥ (665-14)
काची गागरि देह दुहेली उपजै बिनसै दुखु पाई ॥ (355-16)
काची गागरि नीरु परतु है इआ तन की इहै बडाई ॥१॥ (654-10)
काची गागरि सरपर फूटै ॥ (254-13)
काची ढहगि दिवाल काहे गचु लावहु ॥१॥ रहाउ ॥ (1171-1)
काची देह मानुख अभिमानी ॥२॥ (741-2)
काची देह मोह फुनि बांधी सठ कठोर कुचील कुगिआनी ॥ (1387-4)
काची देहा विणसणी कूड़ु कमावै धंधु जीउ ॥ (760-13)
काची पाकी बाढि परानी ॥१॥ (375-17)
काची पिंडी सबदु न चीनै उदरु भरै जैसे ढोरै ॥१॥ (1012-16)
काची मटुकी बिनसि बिनासा ॥ (374-11)
काची सउदी तोटा आवै ॥ (1032-19)
काची सरसउं पेलि कै ना खलि भई न तेलु ॥२४०॥ (1377-11)
काचे गुर ते मुकति न हूआ ॥ (932-11)
काचे भाडे साजि निवाजे अंतरि जोति समाई ॥ (882-18)

काचै करवै रहै न पानी ॥ (792-11)
काज तुमारे देइ निबाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (182-17)
काज हमारे पूरे सतगुर ॥ (887-6)
काजर कोठ महि भई न कारी निरमल बरनु बनिओ री ॥ (384-4)
काजल फूल त्मबोल रसु ले धन कीआ सीगारु ॥ (788-10)
काजलु हारु तमोल रसु बिनु पसे हभि रस छारु ॥३॥ (1094-10)
काजि तुहारै नाही होरु ॥१॥ रहाउ ॥ (238-12)
काजी तै कवन कतेब बखानी ॥ (477-15)
काजी बकिबो हसती तोरु ॥१॥ रहाउ ॥ (870-15)
काजी बोलिआ बनि नही आवै ॥१॥ रहाउ ॥ (480-5)
काजी मुलां करहि सलामु ॥ (1165-19)
काजी मुलां बिनती फुरमाइ ॥ (1166-8)
काजी मुलां होवहि सेख ॥ (1169-2)
काजी साहिबु एकु तोही महि तेरा सोचि बिचारि न देखै ॥ (483-5)
काजी सेख भेख फकीरा ॥ (227-9)
काजी सेख मसाइका सभे उठि जासी ॥ (1100-10)
काजी सो जु काइआ बीचारै ॥ (1160-1)
काजी सो जो उलटी करै ॥ (662-13)
काजी होइ कै बहै निआइ ॥ (951-14)
काजीआ बामणा की गल थकी अगदु पड़ै सैतानु वे लालो ॥ (722-18)
काजु उआ को ले सवारिओ तिलु न दीनो दोसु ॥१॥ (1017-17)
काटनहार जगत गुर गोबिद चरन कमल ता के करहु निवास ॥१॥ (204-10)
काटि जेवरी कीओ दासरो संतन टहलाइओ ॥ (209-8)
काटि जेवरी जन लीए छडाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1338-4)
काटि सकति सिव सहजु प्रगासिओ एकै एक समानाना ॥ (339-19)
काटि सिलक कीनो अपुनो दासरो तउ नानक कहा निहोरो ॥२॥७॥३५॥ (618-7)
काटि सिलक जउ अपुना कीनो नानक सूख घनेरै ॥२॥२७॥५०॥ (1214-8)
काटि सिलक जिसु मारगि पाए सो विचि संगति वासा पाइदा ॥१२॥ (1076-9)
काटि सिलक दुख माइआ करि लीने अप दसे ॥ (710-8)
काटि सिलक प्रभि सेवा लाइआ ॥ (101-18)
काटिआ रोगु महा सुखु पाइआ हरि अम्रितु मुखि नामु दीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (383-3)
काटी जम फासी प्रभि अबिनासी हरि हरि नामु धिआए ॥ (783-6)
काटी बंधि हरि सेवा लाए ॥ (892-11)
काटी बेरी पगह ते गुरि कीनी बंदि खलासु ॥१॥ (1002-15)
काटी सिलक भ्रम मोह की अपने प्रभ भाइआ ॥३॥ (814-3)
काटे अगिआन तिमर निरमलीआ बुधि बिगास बिबेका ॥ (1209-15)
काटे अगिआन भरम मोह माइआ लीओ कंठि लगाइ ॥२॥४॥२३॥ (1302-12)

काटे कसट पूरे गुरदेव ॥ (191-9)
काटे बंधन ठाकुरि जा के ॥ (1004-10)
काटे रोग भए मन निरमल हरि हरि अउखधु खाइओ ॥२॥ (1299-11)
काटे सु पाप तिन्ह नरहु के गुरु रामदासु जिन्ह पाइयउ ॥ (1409-18)
काटै पेडु डाल परि ठाढौ खाइ खाइ मुसकारै ॥ (1205-13)
काठ की पुतरी कहा करै बपुरी खिलावनहारो जानै ॥ (206-8)
काठहु स्रीखंड सतिगुरि कीअउ दुख दरिद्र तिन के गइअ ॥ (1399-12)
काड़ा अंदेसा किउ कीजै जा नाही अधरमि मारदा ॥ (90-13)
काढि कुठारु खसमि सिरु काटिआ खिन महि होइ गइआ है खाकु ॥ (825-3)
काढि कुठारु पित बात हंता अउखधु हरि को नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (714-11)
काढि खड़गु कालु भै कोपिओ मोहि बताउ जु तुहि राखै ॥ (1165-10)
काढि खड़गु कोपिओ रिसाइ ॥ (1194-11)
काढि खड़गु गुर गिआनु करारा बिखु छेदि छेदि रसु पीजै ॥३॥ (1324-6)
काढि देइ सिआल बपुरे कउ ता की ओट टिकावसि रे ॥२॥ (1000-15)
काढि लीए प्रभ आन बिखै ते साधसंगि मनु लावहु ॥ (1120-7)
काढि लीए महा भवजल ते अपनी नदरि निहालि ॥१॥ रहाउ ॥ (382-4)
काढि लीन सागर संसार ॥ (331-6)
काढि लेहु नानक अपुने कउ संसार पावक के कूप ॥२॥४॥८॥ (701-15)
काढि लेहु संसार सागर महि नानक प्रभ सरणाई ॥४॥१५॥२६॥ (616-9)
काणि कढन ते छूटि परी ॥२॥ (384-13)
काथूरी को गाहकु आइओ लादिओ कालर बिरख जिवहा ॥१॥ (1203-13)
कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥ (662-12)
कान कुंडलीआ बसत्र ओढलीआ ॥ (385-2)
कान फराइ हिराए टूका ॥ (1348-7)
कानड़ा असटपदीआ महला ४ घरु १ (1308-6)
कानड़ा छंत महला ५ (1312-1)
कानड़ा मः ५ घरु ९ ॥ (1306-16)
कानड़ा महला ४ ॥ (1294-10)
कानड़ा महला ४ ॥ (1295-16)
कानड़ा महला ४ ॥ (1295-3)
कानड़ा महला ४ ॥ (1295-9)
कानड़ा महला ४ ॥ (1296-16)
कानड़ा महला ४ ॥ (1296-4)
कानड़ा महला ४ ॥ (1297-13)
कानड़ा महला ४ ॥ (1297-18)
कानड़ा महला ४ ॥ (1297-3)
कानड़ा महला ४ ॥ (1297-7)

कानड़ा महला ४ ॥ (1308-17)
कानड़ा महला ४ ॥ (1309-11)
कानड़ा महला ४ ॥ (1310-15)
कानड़ा महला ४ ॥ (1310-3)
कानड़ा महला ४ ॥ (1311-7)
कानड़ा महला ४ पड़ताल घरु ५ ॥ (1296-11)
कानड़ा महला ५ ॥ (1298-10)
कानड़ा महला ५ ॥ (1298-13)
कानड़ा महला ५ ॥ (1298-18)
कानड़ा महला ५ ॥ (1299-10)
कानड़ा महला ५ ॥ (1299-13)
कानड़ा महला ५ ॥ (1299-16)
कानड़ा महला ५ ॥ (1299-3)
कानड़ा महला ५ ॥ (1299-6)
कानड़ा महला ५ ॥ (1300-1)
कानड़ा महला ५ ॥ (1300-12)
कानड़ा महला ५ ॥ (1300-14)
कानड़ा महला ५ ॥ (1300-17)
कानड़ा महला ५ ॥ (1300-5)
कानड़ा महला ५ ॥ (1301-13)
कानड़ा महला ५ ॥ (1301-2)
कानड़ा महला ५ ॥ (1301-5)
कानड़ा महला ५ ॥ (1301-9)
कानड़ा महला ५ ॥ (1302-13)
कानड़ा महला ५ ॥ (1302-17)
कानड़ा महला ५ ॥ (1302-2)
कानड़ा महला ५ ॥ (1302-6)
कानड़ा महला ५ ॥ (1302-9)
कानड़ा महला ५ ॥ (1303-1)
कानड़ा महला ५ ॥ (1303-10)
कानड़ा महला ५ ॥ (1303-14)
कानड़ा महला ५ ॥ (1303-18)
कानड़ा महला ५ ॥ (1303-5)
कानड़ा महला ५ ॥ (1303-8)
कानड़ा महला ५ ॥ (1304-2)
कानड़ा महला ५ ॥ (1305-1)
कानड़ा महला ५ ॥ (1305-19)

कानड़ा महला ५ ॥ (1305-4)
कानड़ा महला ५ ॥ (1306-10)
कानड़ा महला ५ ॥ (1306-13)
कानड़ा महला ५ ॥ (1306-6)
कानड़ा महला ५ ॥ (1307-10)
कानड़ा महला ५ ॥ (1307-13)
कानड़ा महला ५ ॥ (1307-16)
कानड़ा महला ५ ॥ (1308-1)
कानड़ा महला ५ घरु १० (1307-2)
कानड़ा महला ५ घरु ११ (1307-6)
कानड़ा महला ५ घरु २ (1298-5)
कानड़ा महला ५ घरु ३ (1300-8)
कानड़ा महला ५ घरु ४ (1301-16)
कानड़ा महला ५ घरु ५ (1304-5)
कानड़ा महला ५ घरु ६ (1304-12)
कानड़ा महला ५ घरु ७ (1305-9)
कानड़ा महला ५ घरु ८ (1305-15)
कानड़ा महला ५ घरु ९ (1306-3)
कानड़े की वार महला ४ मूसे की वार की धुनी (1312-15)
कानी कालु सुणै बिखु बैणी ॥ (227-10)
कानी कुंडल गलि मोतीअन की माला ॥ (225-8)
कापड़ जिवै पछोड़ीऐ घड़ी मुहत घड़ीआलु ॥ (1088-2)
कापड़ पहिरि करे चतुराई ॥ (230-15)
कापड़ फारि बनाई खिंथा झोली माइआधारी ॥ (1012-18)
कापड़ भोग रस अनिक भुंचाए ॥ (1337-16)
कापड़ी कउते जागूता ॥ (71-10)
कापड़ु काठु रंगाइआ रांगि ॥ (1243-9)
कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति ॥२॥ (496-6)
कापड़ु पहिरसि अधिकु सीगारु ॥ (1187-13)
कापर पहिरहि भोगहि भोग ॥ (374-4)
कापरु तनि सुहावै जा पिर भावै गुरमती चितु लाईऐ ॥ (244-10)
कापरु पहिरि करहि सींगारा ॥ (1165-4)
काम करी सभ तिआगि कै हउ सरणि परउगी ॥ (1230-16)
काम करोध महा बिखिआ रस इन ते भए निरारे ॥ (1269-4)
काम करोधु नगर महि सबला नित उठि उठि जूझु करीजै ॥ (1325-18)
काम करोधु सबल संसारा ॥ (1060-9)
काम क्रोध अगनी महि भूंजा ॥ (1345-2)

काम क्रोध अति त्रिसन जरंगा ॥ (1305-7)
काम क्रोध अरु लोभ मोह इह इंद्री रसि लपटाधे ॥ (403-1)
काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाइ अहमेव ॥ (269-13)
काम क्रोध अरु लोभ मोह वसि करै सभै बल ॥ (1392-12)
काम क्रोध अहंकार बिनासु ॥१॥ (223-2)
काम क्रोध अहंकारु बिनसै लगै एकै प्रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (1341-8)
काम क्रोध करि अंध माइआ के बंध अनिक दोखा तनि छादि पूरे ॥ (683-10)
काम क्रोध का उतरिआ रंगु ॥ (1147-9)
काम क्रोध का चोलड़ा सभ गलि आए पाइ ॥ (1414-11)
काम क्रोध की कची चोली ॥ (1022-11)
काम क्रोध गुर सबदि नासि ॥ (1184-1)
काम क्रोध त्रिसना अति जरै ॥ (1252-13)
काम क्रोध त्रिसना अहंकारा तन ते होए सगल खई ॥१॥ (822-8)
काम क्रोध त्रिसना के लीने गति नही एकै जानी ॥ (1123-18)
काम क्रोध त्रिसना गई ॥ (1184-13)
काम क्रोध निंदा परहरीआ काढे साधू कै संगि मारि ॥ (1225-19)
काम क्रोध फूटै बिखु माटु ॥ (153-1)
काम क्रोध बिखिआ लोभि लुभते कासट लोह तरे संगि साथ ॥१॥ (1296-5)
काम क्रोध बिखु काढीले मारि ॥३॥ (971-11)
काम क्रोध बिखु भूख पिआसा ॥ (224-4)
काम क्रोध बुरिआईआं संगि साधू तुटु ॥ (315-12)
काम क्रोध मद मतसर त्रिसना बिनसि जाहि हरि नामु उचारी ॥ (1389-1)
काम क्रोध मद मान मोह बिनसे अनरागै ॥ (818-1)
काम क्रोध मद लोभ मोह दुसट बासना निवारि ॥ (523-1)
काम क्रोध मदि बिआपिआ फिरि फिरि जोनी पाइ ॥२॥ (50-7)
काम क्रोध माइआ के लीने इआ बिधि जगतु बिगूता ॥ (338-12)
काम क्रोध माइआ बिखु ममता इह बिआधि ते हाटे ॥१॥ (496-15)
काम क्रोध माइआ मद मतसर इन पंचहु मिलि लूटे ॥१॥ रहाउ ॥ (974-1)
काम क्रोध माइआ मद मतसर ए खेलत सभि जूऐ हारे ॥ (379-3)
काम क्रोध माइआ मद मतसर ए स्मपै मो माही ॥ (971-4)
काम क्रोध मिटहि उनमाद ॥ (867-4)
काम क्रोध मिटे तिसु लोभा ॥ (1338-3)
काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई ॥ (219-5)
काम क्रोध लपटिओ असनेह ॥ (178-13)
काम क्रोध लोभ झूठ निंदा इन ते आपि छडावहु ॥ (617-9)
काम क्रोध लोभ मद खोए ॥ (194-18)
काम क्रोध लोभ मद निंदा साधसंगि मिटिआ अभिमान ॥ (1151-9)

काम क्रोध लोभ मद मतसर इह अरपि सगल दानु कीना ॥ (1210-18)
काम क्रोध लोभ मद मतसर साधू कै संगि खाप ॥ (1223-16)
काम क्रोध लोभ मद माता ॥ (1004-17)
काम क्रोध लोभ मान इह बिआधि छोरै ॥१॥ (408-17)
काम क्रोध लोभ मोह अपतु पंच दूत बिखंडिओ ॥ (1396-4)
काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना ता महि सुखु नही पाईऐ ॥ (614-10)
काम क्रोध लोभ मोह तजारी ॥ (740-18)
काम क्रोध लोभ मोह मूठे सदा आवा गवण ॥ (502-9)
काम क्रोध लोभ मोहि बिआपिआ ॥ (1149-4)
काम क्रोध लोभ रतु निंदा सतु संतोखु बिदारन ॥१॥ (820-16)
काम क्रोध लोभु मोहु तजो ॥ (241-11)
काम क्रोध वसि करै पवणु उडंत न धावै ॥ (1395-16)
काम क्रोध संगि कबहु न बहहु ॥ (343-11)
काम क्रोध सिउ ठाटु न बनिआ ॥ (1347-13)
काम क्रोध हरन मद मोह दहन मुरारि मन मकरंद ॥ (508-6)
काम क्रोधि अहंकारि फिरहि देवानिआ ॥ (708-1)
काम क्रोधि अहंकारि मूठा खोइ गिआनु पछुतापिआ ॥ (546-16)
काम क्रोधि मनु हिरि लइआ मनमुख अंधा लोइ ॥ (1414-5)
काम क्रोधि मोह कूपि परिआ ॥ (715-6)
काम क्रोधि लोभि मोहि बाधा ॥ (741-7)
काम क्रोधु त्रिसना उचरै ॥ (1245-13)
काम क्रोधु बिकरालु दूत सभि हारिआ ॥ (854-5)
काम चोलना भइआ है पुराना गइआ भरमु सभु छूटी ॥२॥ (483-2)
काम माइआ कुंचर कउ बिआपै ॥ (1160-12)
काम रोगि मैगलु बसि लीना ॥ (1140-16)
काम सुआइ गज बसि परे मन बउरा रे अंकसु सहिओ सीस ॥१॥ (335-19)
काम हेति कुंचरु लै फांकिओ ओहु पर वसि भइओ बिचारा ॥ (671-1)
कामणि इछ पुंनी अंतरि भिंनी मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ (582-18)
कामणि कामि न आवई खोटी अवगणिआरि ॥ (56-5)
कामणि गुणवंती हरि पाए ॥ (123-4)
कामणि गुणु नाही बिरथा जनमु गवाए राम ॥ (439-16)
कामणि तउ सीगारु करि जा पहिलां कंतु मनाइ ॥ (788-7)
कामणि देखि कामि लोभाइआ ॥ (1342-13)
कामणि निरमल हउमै मलु खोई गुरमति सचि समाई ॥ (770-13)
कामणि पिर मनु मानिआ तउ बणिआ सीगारु ॥ (788-8)
कामणि पिरहु भुली जीउ माइआ मोहि पिआरे ॥ (244-15)
कामणि पिरु पाइआ जीउ गुर कै भाइ पिआरे ॥ (245-6)

कामणि पिरु राखिआ कंठि लाइ सबदे पिरु रावै सेज सुहावणिआ ॥७॥ (127-5)
कामणि बिनउ करे जीउ सचि सबदि सीगारे ॥ (245-10)
कामणि मनि सोहिलड़ा साजन मिले पिआरे राम ॥ (772-1)
कामणि रंगि राती सहजे माती गुर कै सबदि वीचारे ॥ (244-7)
कामणि रंगु ता चड़ै जा पिर कै अंकि समाइ ॥३१॥ (756-14)
कामणि लोड़ै सुइना रुपा मित्र लुड़ेनि सु खाधाता ॥ (155-14)
कामणि वडभागी अंतरि लिव लागी हरि का प्रेमु सुभाइआ ॥ (568-6)
कामणि हरि रसि बेधी जीउ हरि कै सहजि सुभाए ॥ (245-3)
कामणिआरी कामण पाए बहु रंगी गलि तागा ॥ (582-6)
कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥ (265-5)
कामधेनु सोही दरबारे ॥ (1078-5)
कामनि चाहै सुंदरि भोगु ॥ (1187-12)
कामनि प्रीति जा पिरु घरि आवै ॥ (164-12)
कामवंत कामी बहु नारी पर ग्रिह जोह न चूकै ॥ (672-6)
कामारथी सुआरथी वा की पैज सवारी ॥१॥ (858-14)
कामि करोधि जलै सभु कोई ॥ (1062-13)
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥ (136-1)
कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥ (13-8)
कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥ (171-6)
कामि करोधि मोहि वसि कीआ किरपन लोभि पिआरु ॥ (70-12)
कामि क्रोधि अहंकारि माते विआपिआ संसारु ॥ (51-9)
कामि क्रोधि अहंकारि विआपे कूड़ कुट्मब सिउ प्रीति करे ॥४॥ (1014-2)
कामि क्रोधि अहंकारि विगुती हउमै लगी ताते ॥ (1111-12)
कामि क्रोधि अहंकारि विगूते ॥ (388-16)
कामि क्रोधि डूबे अभिमानी हउमै विचि जलि जाई ॥ (1265-6)
कामि क्रोधि भरे हम अपराधी ॥ (1048-13)
कामि क्रोधि मदि सद ही झूरे ॥ (899-10)
कामि क्रोधि मनु दूजै लाइआ सुपनै सुखु न ताहा हे ॥१३॥ (1058-8)
कामि क्रोधि मनु वसि कीआ ॥ (1192-17)
कामि क्रोधि लोभि बिआपिओ जनम ही की खानि ॥ (1304-1)
कामि क्रोधि लोभि मनु लीना ॥ (1143-13)
कामि क्रोधि लोभि मोहि बिआपिओ नेत्र रखे फिराइ ॥ (1001-17)
कामि क्रोधि लोभि मोहि मनु लीना ॥ (804-1)
कामि क्रोधि लोभि मोहि मनु लीनो निरगुण के दातारे ॥ (210-6)
कामि दामि चितु पर वसि सेई ॥ (226-2)
कामि न आवहि से जंजाल ॥ (676-8)
कामि न आवै सु कार कमावै ॥ (898-5)

कामि न आवै सो फिरि फिरि मंगी ॥३॥ (376-11)
कामि बिरूधउ रहै न ठाइ ॥ (222-4)
कामि विआपे कुसुध नर से जोरा पुछि चला ॥ (304-13)
कामी क्रोधी चातुरी बाजीगर बेकाम ॥ (1105-18)
कामी पुरख कामनी पिआरी ॥ (1164-15)
कामु करी जे ठाकुर भावा ॥ (212-8)
कामु करोधु कपटु बिखिआ तजि सचु नामु उरि धारे ॥ (437-2)
कामु किवारी दुखु सुखु दरवानी पापु पुंनु दरवाजा ॥ (1161-15)
कामु क्रोधु अंतरि धनु हिरै ॥ (352-2)
कामु क्रोधु अगनी सिउ मेलु ॥ (1257-4)
कामु क्रोधु अहंकारु गाखरो संजमि कउन छुटिओ री ॥ (384-1)
कामु क्रोधु अहंकारु तजाए तिसु जन कउ उपदेसु निरमालका ॥१४॥ (1085-12)
कामु क्रोधु अहंकारु तजीअले लोभु मोहु तिस माइआ ॥ (503-12)
कामु क्रोधु अहंकारु निवारे ॥ (1022-13)
कामु क्रोधु अहंकारु निवारै गुर कै सबदि सु समझ परी ॥ (939-7)
कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिटै सगल उपाधि ॥२॥ (501-16)
कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिलै सतिगुर देव ॥ (405-10)
कामु क्रोधु इसु तन ते जाइ ॥ (869-3)
कामु क्रोधु इसु तन ते मारि ॥ (866-1)
कामु क्रोधु काइआ कउ गालै ॥ (932-2)
कामु क्रोधु किलबिख गुरि काटे पूरन होई आसा जीउ ॥३॥ (108-7)
कामु क्रोधु गुर सबदी लूटा ॥ (879-18)
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥ (633-18)
कामु क्रोधु जीअ महि चोट ॥ (152-11)
कामु क्रोधु झूठु तजि निंदा हरि सिमरनि बंधन तूटे ॥ (1206-5)
कामु क्रोधु तनि वसहि चंडाल ॥ (24-16)
कामु क्रोधु दुइ करहु बसोले गोडहु धरती भाई ॥ (1171-3)
कामु क्रोधु दुइ कीए जलेता छूटि गई संसारी ॥२॥ (969-9)
कामु क्रोधु दुइ भए जगाती मन तरंग बटवारा ॥ (333-14)
कामु क्रोधु न लोभु बिआपै जो जन प्रभ सिउ रातिआ ॥ (543-17)
कामु क्रोधु निंदा परहरीऐ हरि रसना नानक गावणा ॥५॥ (1086-3)
कामु क्रोधु परहरु पर निंदा ॥ (1041-14)
कामु क्रोधु पसरिआ संसारे आइ जाइ दुखु पावणिआ ॥२॥ (129-9)
कामु क्रोधु बिखु अगनि निवारे ॥ (943-8)
कामु क्रोधु बिखु बजरु भारु ॥ (1187-8)
कामु क्रोधु मनि मोहु सरीरा ॥ (414-16)
कामु क्रोधु माइआ महि चीतु ॥ (153-3)

कामु क्रोधु माइआ लै जारी त्रिसना गागरि फूटी ॥ (483-2)
कामु क्रोधु लै गरदनि मारे हउमै लोभु चुकाइआ ॥६॥ (1040-2)
कामु क्रोधु लोभु अंतरि सबला नित धंधा करत विहाए ॥ (550-1)
कामु क्रोधु लोभु खंड खंड कीन्हे बिनसिओ मूड़ अभिमानु ॥१॥ (979-18)
कामु क्रोधु लोभु छोडीऐ दीजै अगनि जलाइ ॥ (519-3)
कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिदारना ॥३॥ (915-5)
कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिसारिओ ॥ (529-13)
कामु क्रोधु लोभु तजि गए पिआरे सतिगुर चरनी पाइ ॥५॥ (431-14)
कामु क्रोधु लोभु तिआगु ॥ (408-19)
कामु क्रोधु लोभु बिनसिआ तजिआ सभु अभिमानु ॥२॥ (46-6)
कामु क्रोधु लोभु मन ते तिआगि ॥ (1271-13)
कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु बिखै रस इन संगति ते तू रहु रे ॥ (1118-12)
कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु वधाए ॥ (366-7)
कामु क्रोधु लोभु मोहु जण जण सिउ छाडु धोहु हउमै का फंधु काटु साधसंगि रति जीउ ॥ (1403-9)
कामु क्रोधु लोभु मोहु जीतहु ऐसी खेल हरि पिआरी ॥२॥ (1185-12)
कामु क्रोधु लोभु मोहु न पोहै ॥ (868-7)
कामु क्रोधु लोभु मोहु नित झगरते झगराइआ ॥ (984-5)
कामु क्रोधु लोभु मोहु निवारे निवरे सगल बैराई ॥ (1000-9)
कामु क्रोधु लोभु मोहु बिबरजित हरि पदु चीन्है सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (1123-3)
कामु क्रोधु लोभु मोहु मिटावै छुटकै दुरमति अपुनी धारी ॥ (377-14)
कामु क्रोधु लोभु मोहु संगि साधा भखे ॥ (318-12)
कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥१॥ रहाउ ॥ (219-1)
कामु चितै कामणि हितकारी ॥ (225-19)
कामु न करही आपणा फिरहि अवता लोइ ॥ (320-13)
कामु न बिसरिओ क्रोधु न बिसरिओ लोभु न छूटिओ देवा ॥ (1253-6)
कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥ (468-19)
कामोदी अउ गूजरी संगि दीपक के थापि ॥१॥ (1430-11)
कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती ॥ (695-13)
कार कमाई खसम रजाइ ॥ (411-17)
कार कमाई जो मेरे प्रभ भाई ॥ (1050-13)
कार कमावहि सच की लाहा मिलै रजाइ ॥ (59-2)
कार कमावहि सिरि धणी लाहा पलै पाइ ॥ (936-10)
कार कमावा जे तुधु भावा जा तूं देहि दइआला जीउ ॥२॥ (106-6)
कार कूड़ावी छडि समलु सचु धणी ॥१॥ (1099-4)
कारज आए पूरे रासे ॥१॥ (1271-2)
कारज आपि सवारिअनु सो प्रभ सदा सभालि ॥ (957-17)
कारज सगल सवारे सतिगुर जपि जपि साधू भए निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ (826-18)

कारज सगले साधे ॥ (629-1)
कारज सगले सिधि भए भेटिआ गुरु पूरा ॥४॥१०॥११२॥ (399-2)
कारज सभि सवारि लै नित पूजहु गुर के पाव जीउ ॥४॥ (132-12)
कारज सभि सवारिआ ॥ (627-5)
कारज सभि सवारीअहि गुर की चरणी लागु ॥ (47-18)
कारज सवारे सगले तन के ॥१॥ (900-15)
कारज सिधि न होवनी अंति गइआ पछुताए ॥ (851-2)
कारजि कामि बाट घाट जपीजै ॥ (386-9)
कारजु आइआ सगला रासि ॥ (1152-13)
कारजु तेरा होवै पूरा हरि हरि हरि गुण गाइ मन मेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (896-14)
कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ॥ (91-6)
कारजु सगल अर्मभिओ घर का ठाकुर का भारोसा ॥१॥ (1266-17)
कारजु सतिगुरि आपि सवारिआ ॥ (806-19)
कारजु सवरै मन प्रभु धिआईजै ॥६॥ (913-16)
कारजु साढे तीनि हथ घनी त पउने चारि ॥२१८॥ (1376-6)
कारजु सीधो रिदै सम्हालि ॥४॥ (831-14)
कारण करण करीम ॥ (885-8)
कारण करण करीम कुदरति तेरीऐ ॥१६॥ (964-15)
कारण करण समरथ सिरीधर राखि लेहु नानक के सुआमी ॥१॥ (1387-7)
कारण नामु अंतरगति जाणै ॥ (1330-17)
कारणु करता करदा आइआ ॥१॥ (1154-4)
कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥२॥ (1353-11)
कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥२॥ (148-17)
कारणु करतै जो कीआ सोई है करणा ॥ (1102-6)
कारन करन करावनो सभ बिधि एकै हाथ ॥ (257-8)
कारन करन करीम ॥ (896-19)
कारन करन तूं हां ॥ (410-13)
कारन करना धारन धरना एकै एकै सोहिना ॥२॥ (407-3)
कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥ (694-8)
कारी कढी किआ थीऐ जां चारे बैठीआ नालि ॥ (91-4)
कार्हा तुझै न बिआपई नानक मिटै उपाधि ॥१॥ (255-6)
कालंका कुंतल अउ रामा ॥ (1430-11)
काल कलपना कदे न खाइ ॥ (343-8)
काल कलम हुकमु हाथि कहहु कउनु मेटि सकै ईसु बम्यु ग्यानु ध्यानु धरत हीऐ चाहि जीउ ॥ (1402-14)
काल का ठीगा किउ जलाईअले किउ निरभउ घरि जाईऐ ॥ (940-5)
काल कै फांसि सकत सरु सांधिआ ॥२॥ (390-11)
काल ग्रसत सभ लोग सिआने उठि पंडित पै चले निरासा ॥१॥ (654-16)

काल जाल अरु महा जंजाला छुटके जमहि डरा ॥ (701-6)
काल जाल की सुधि नही लहै ॥ (1252-10)
काल पुरख का मरदै मानु ॥ (1159-19)
काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥३॥ (486-9)
काल फास जब गर महि मेली तिह सुधि सभ बिसराई ॥ (1008-9)
काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ ॥१॥ (727-4)
काल फास न मुगधु चेतै कनिक कामिनि लागि ॥२॥ (482-17)
काल बिकाल कीए इक ग्रासा ॥ (1038-17)
काल बिकाल सबदि भए नासु ॥७॥ (832-11)
कालबूत की हसतनी मन बउरा रे चलतु रचिओ जगदीस ॥ (335-19)
कालर पोट उठावै मूंडहि अम्रितु मन ते डारै ॥ (1205-12)
कालरि बीजसि दुरमति ऐसी निगुरे की नीसाणी ॥ (1275-8)
कालरु लादसि सरु लाघणउ लाभु न पूंजी साथि ॥१॥ (1090-14)
काला गंढु नदीआ मीह झोल ॥ (143-11)
कालि दैति संघारे जम पुरि गए ॥२॥ (1178-1)
काली कोइल तू कित गुन काली ॥ (794-12)
काली हू फुनि धउले आए ॥ (1027-5)
कालु अकालु खसम का कीन्हा इहु परपंचु बधावनु ॥ (1104-7)
कालु अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै ॥१॥ (692-1)
कालु कंटकु जमु तिसु न बिदारै ॥३॥ (742-7)
कालु कंटकु मारि समाणे हरि मनि भाणे नामु निधानु सचु पाइआ ॥ (769-3)
कालु कंटकु मारे सचु पेलै ॥२॥ (415-10)
कालु कंटकु लोभु मोहु नासै जीअ जा कै प्रभु बसै ॥ (249-8)
कालु गवाइआ करतै आपि ॥ (1271-5)
कालु चलाए बंनि कोइ न रखसी ॥ (1290-17)
कालु जालु जमु जोहि न साकै भाइ भगति भै तरणा ॥ (76-9)
कालु जालु जमु जोहि न साकै सच का पंथा थाटिओ ॥ (714-5)
कालु जालु जमु जोहि न साकै साचे सिउ लिव लाई हे ॥४॥ (1020-15)
कालु जालु जमु जोहि न साकै साचै सबदि लिव लाए ॥ (569-6)
कालु जालु जिहवा अरु नैणी ॥ (227-10)
कालु जालु ब्रहम अगनी जारे ॥ (223-18)
कालु तउ पहूचिओ आनि कहा जैहै भाजि रे ॥१॥ रहाउ ॥ (1352-15)
कालु न आवै मूड़े चीति ॥ (267-19)
कालु न चांपै हरि गुण गाइ ॥ (933-5)
कालु न चापै दुखु न संतापै ॥ (111-17)
कालु न छोडै बिनु गुर की सेवा ॥ (227-4)
कालु न छोडै बिनु सतिगुर की धीरा ॥७॥ (227-9)

कालु न जोहि सकै गुण गाइ ॥ (227-11)
कालु न जोहै दुखु न संतापे ॥ (124-18)
कालु नाही जोगु नाही नाही सत का ढबु ॥ (662-18)
कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै मुखु पसारे मीत ॥१॥ (631-12)
कालु बिकालु कहे कहि बपुरे जीवत मूआ मनु मारी ॥११॥ (907-19)
कालु बिकालु भए देवाने ॥ (1021-8)
कालु बिकालु भए देवाने मनु राखिआ गुरि ठाए ॥ (764-15)
कालु बिकालु सदा सिरि तेरै बिनु नावै गलि फंधा ॥२॥ (1126-14)
कालु बिधुंसि मनसा मनि मारी गुर प्रसादि प्रभु पाइआ ॥३॥ (1332-2)
कालु बुरा खै कालु सिरि दुनीआईऐ ॥ (147-16)
कालु मारि गुर सबदि निवारे ॥ (1047-14)
कालु मारि मनसा मनहि समाणी अंतरि निरमलु नाउ ॥ (853-4)
कालूबि अकल मन गोर न मानी ॥ (1291-6)
कालै कवलु निरंजनु जाणै ॥ (1040-7)
कासट महि जिउ है बैसंतरु मथि संजमि काढि कढीजै ॥ (1323-10)
कासी कांती पुरी दुआरा ॥ (1022-1)
कासी ते धुनि ऊपजै धुनि कासी जाई ॥ (857-11)
कासी फूटी पंडिता धुनि कहां समाई ॥१॥ (857-11)
कासी मगहर सम बीचारी ॥ (326-10)
काहू उदिआन भ्रमत पछुतापै ॥ (253-14)
काहू काज न आवत बिखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (199-8)
काहू काजि नाही गावार ॥ (238-12)
काहू गरी गोदरी नाही काहू खान परारा ॥१॥ (479-17)
काहू जाप काहू ताप काहू पूजा होम नेम ॥ (213-16)
काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥ (274-19)
काहू जोग काहू भोग काहू गिआन काहू धिआन ॥ (213-15)
काहू तीर काहू नीर काहू बेद बीचार ॥ (213-17)
काहू दीन्हे पाट पट्मबर काहू पलघ निवारा ॥ (479-17)
काहू पंथु दिखारै आपै ॥ (253-14)
काहू पवन धार जात बिहाए ॥ (914-5)
काहू पहि राजु काहू पहि सुरगा कोटि मधे मुकति कहउ ॥ (1322-12)
काहू फल की इछा नही बाछै ॥ (274-8)
काहू बिहावै अमली हूआ ॥ (914-4)
काहू बिहावै खेलत जूआ ॥ (914-3)
काहू बिहावै जीआइह हिरते ॥ (914-7)
काहू बिहावै जोग तप पूजा ॥ (914-5)
काहू बिहावै दिनु रैनि चालत ॥ (914-6)

काहू बिहावै नट नाटिक निरते ॥ (914-7)
काहू बिहावै पर दरब चोराए ॥ (914-4)
काहू बिहावै बाल पड़ावत ॥ (914-6)
काहू बिहावै बेद अरु बादि ॥ (914-2)
काहू बिहावै मता मसूरति ॥ (914-8)
काहू बिहावै माइ बाप पूत ॥ (914-1)
काहू बिहावै रंग रस रूप ॥ (913-19)
काहू बिहावै रसना सादि ॥ (914-2)
काहू बिहावै राज महि डरते ॥ (914-8)
काहू बिहावै राज मिलख वापारा ॥ (914-1)
काहू बिहावै लपटि संगि नारी ॥ (914-3)
काहू बिहावै सेवा जरूरति ॥ (914-9)
काहू बिहावै सो पिड़ु मालत ॥ (914-6)
काहू बिहावै सोधत जीवत ॥ (914-9)
काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥ (287-9)
काहू महि मोती मुकताहल काहू बिआधि लगाई ॥२॥ (479-19)
काहू रोग सोग भरमीजा ॥ (914-5)
काहू संगि न चालही माइआ जंजाल ॥ (807-15)
काहू हो गउनु करि हो ॥२॥ (213-16)
काहू हो डंड धरि हो ॥१॥ (213-16)
काहे एक बिना चितु लाईऐ ॥ (379-18)
काहे कउ कीजै धिआनु जपंना ॥ (485-17)
काहे कउ तुझु इहु मनु लाइआ ॥ (939-19)
काहे कउ मूरख भखलाइआ ॥ (188-10)
काहे कलरा सिंचहु जनमु गवावहु ॥ (1171-1)
काहे की कुसलात हाथि दीपु कूए परै ॥२१६॥ (1376-4)
काहे कीजतु है मनि भावनु ॥ (1104-6)
काहे गरबसि मूड़े माइआ ॥ (23-16)
काहे छीपहु छाइलै राम न लावहु चीतु ॥२१२॥ (1375-19)
काहे जनमु गवावहु वैरि वादि ॥२॥ (1176-5)
काहे जीअ करहि चतुराई ॥ (25-1)
काहे न खंडसि अवगनु मेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (478-15)
काहे न बालमीकहि देख ॥ (1124-15)
काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ॥ (1200-11)
काहे बोलहि जोगी कपटु घना ॥१॥ रहाउ ॥ (156-2)
काहे भईआ फिरतौ फूलिआ फूलिआ ॥ (654-11)
काहे भीखिआ मंगणि जाइ ॥७॥ (953-6)

काहे भ्रमत हउ तुम भ्रमहु न भाई रविआ रे रविआ स्रब थान ॥१॥ (535-6)
काहे भ्रमि भ्रमहि बिगाने ॥ (896-2)
काहे मन तू डोलता हरि मनसा पूरणहारु ॥ (959-17)
काहे मालु दरबु देखि गरबि जाहि ॥ (1189-17)
काहे मेरे बाम्हन हरि न कहहि ॥ (970-6)
काहे रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइ झूठी देही ॥१॥ रहाउ ॥ (692-19)
काहे रे बन खोजन जाई ॥ (684-14)
काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ (10-9)
काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ (495-2)
काहे रे मन मोहि मगनेरै ॥ (1304-13)
काहे सोच करहि रे प्राणी ॥ (286-2)
किंकरी बिकार ॥ (1229-10)
किंकुरी अनूप वाजै ॥ (886-5)
किंचत प्रीति न उपजै जन कउ जन कहा करहि बेचारे ॥१॥ रहाउ ॥ (857-3)
किंते नामा अंतु न जाणिआ तुम सरि नाही अवरु हरे ॥ (877-6)
कि इहु मनु अवरनु सदा अविनासी ॥ (1261-4)
कि इहु मनु चंचलु कि इहु मनु बैरागी ॥ (1261-4)
कि करम कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥ (922-2)
किआ अपराधु संत है कीन्हा ॥ (870-17)
किआ आराधे जिहवा इक तू अबिनासी अपरपरा ॥ (1096-3)
किआ इह जंत विचारे कहीअहि जो तुधु आखि वखाणै ॥ (448-3)
किआ उजू पाकु कीआ मुहु धोइआ किआ मसीति सिरु लाइआ ॥ (1350-8)
किआ उठि उठि देखहु बपुड़ें इसु मेघै हथि किछु नाहि ॥ (1280-15)
किआ उपमा तेरी आखी जाइ ॥ (350-15)
किआ ए भूपति बपुरे कहीअहि कहु ए किस नो मारहि ॥ (1211-4)
किआ ओहु खटे किआ ओहु खावै जिसु अंदरि सहसा दुखु पइआ ॥ (307-6)
किआ ओहु सुणै किआ आखि सुणावै ॥ (314-15)
किआ कड़ीऐ जां भरपूरि समाही ॥२॥ (1140-5)
किआ कड़ीऐ जां रहिआ समाए ॥१॥ (1140-3)
किआ कथीऐ किछु कथनु न जाई ॥ (822-12)
किआ कपड़ु किआ सेज सुखाली कीजहि भोग बिलास ॥ (142-13)
किआ करि आखि वखाणीऐ माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1256-8)
किआ करे एह बपुड़ी जां भोलाए सोइ ॥२॥ (956-9)
किआ कहउ सुणउ सुआमी तूं वड पुरखु सुजाणा ॥१॥ रहाउ ॥ (51-13)
किआ कहीऐ किछु कही न जाइ ॥ (1125-4)
किआ कहीऐ किसु आखि सुणाईऐ जि कहणा सु प्रभ जी पासि ॥ (382-11)
किआ कहीऐ गुण कथहि घनेरे ॥ (1033-7)

किआ कहीऐ सरबे रहिआ समाइ ॥ (1328-15)
किआ कासी किआ ऊखरु मगहरु रामु रिदै जउ होई ॥२॥३॥ (692-8)
किआ किछु करै कि करणैहारा किआ इसु हाथि बिचारे ॥ (216-11)
किआ को कहै किआ आखि वखानै ॥ (178-16)
किआ को कार करे वेचारा आपे बखसि मिलाइदा ॥८॥ (1060-3)
किआ कोई तेरी सेवा करे किआ को करे अभिमाना ॥ (797-11)
किआ खाधै किआ पैधै होइ ॥ (142-12)
किआ खेती किआ लेवा देई परपंच झूठु गुमाना ॥ (857-5)
किआ गभरू किआ बिरधि है मनमुख त्रिसना भुख न जाइ ॥ (649-18)
किआ गालाइओ भूछ पर वेलि न जोहे कंत तू ॥ (1095-12)
किआ गुण तेरे आखि वखाणा कीमति कहणु न जाई ॥ (619-8)
किआ गुण तेरे आखि वखाणा प्रभ अंतरजामी जानु ॥ (979-18)
किआ गुण तेरे आखि वखाणी कीमति कहणु न जाई ॥ (625-6)
किआ गुण तेरे आखि समाली ॥ (132-3)
किआ गुण तेरे कहि सकउ प्रभ अंतरजामी राम ॥ (848-15)
किआ गुण तेरे विथरा हउ किआ किआ घिना तेरा नाउ जीउ ॥ (762-8)
किआ गुण तेरे सारि सम्हारी ॥ (826-3)
किआ गुण तेरे सारि सम्हाली मोहि निरगुन के दातारे ॥ (738-4)
किआ चेरी हाथ बिचारी ॥ (655-10)
किआ जंगलु ढूढी जाइ मै घरि बनु हरीआवला ॥ (420-5)
किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥ (324-12)
किआ जपु किआ तपु संजमो किआ बरतु किआ इसनानु ॥ (337-11)
किआ जपु जापउ बिनु जगदीसै ॥ (839-2)
किआ जाणा किआ आगै होइ ॥ (154-1)
किआ जाणा किव मरहगे कैसा मरणा होइ ॥ (555-4)
किआ जाणा तिसु साह सिउ केव रहसी रंगु ॥ (1280-7)
किआ जानउ किछु हरि कीआ भइओ कबीरु कबीरु ॥६२॥ (1367-15)
किआ जानउ सह कउन पिआरी ॥२॥ (327-18)
किआ जानां किआ करै करावै ॥ (1331-11)
किआ जाना किआ होइगा री माई ॥ (357-1)
किआ जाना किउ भानी कंत ॥ (394-11)
किआ डरीऐ डरु डरहि समाना ॥ (154-8)
किआ तकहि बिआ पास करि हीअड़े हिकु अधारु ॥ (1098-4)
किआ तूं रता गिरसत सिउ सभ फुला की बागाति ॥२॥ (50-13)
किआ तू जोगी गरबहि परिआ ॥१॥ (886-12)
किआ तू रता देखि कै पुत्र कलत्र सीगार ॥ (42-6)
किआ तू सोइआ जागु इआना ॥ (794-1)

किआ तू सोचहि किआ तू चितवहि किआ तूं करहि उपाए ॥ (1266-5)
किआ तू सोचहि माणस बाणि ॥ (1139-18)
किआ तै खटिआ कहा गवाइआ ॥ (792-14)
किआ थोड़ड़ी बात गुमानु ॥१॥ रहाउ ॥ (50-12)
किआ दीनु करे अरदासि ॥ (1304-9)
किआ देखा सूझ बूझ न पावै ॥ (352-14)
किआ देनि मुहु जाए अवगुणि पछुताए दुखो दुखु कमाए ॥ (585-5)
किआ देवउ जा सभु किछु तेरा ॥ (887-2)
किआ द्रिड़ां किआ संग्रहि तिआगी मै ता बूझ न पाई ॥ (1234-15)
किआ नागे किआ बाधे चाम ॥ (324-5)
किआ पड़ीऐ किआ गुनीऐ ॥ (655-17)
किआ पहिरउ किआ ओढि दिखावउ ॥ (225-7)
किआ बगु बपुड़ा छपड़ी नाइ ॥ (685-13)
किआ बसु जउ बिखु दे महतारी ॥३॥२२॥ (328-3)
किआ बेद पुरानां सुनीऐ ॥ (655-18)
किआ भरमु किआ माइआ कहीऐ जो तिसु भावै सोई भला ॥२०॥ (433-13)
किआ भवीऐ किआ ढूढीऐ गुर सबदि दिखाइआ ॥ (419-16)
किआ भवीऐ सचि सूचा होइ ॥ (938-8)
किआ मांगउ किछु थिरु नाही ॥ (692-9)
किआ मागउ किआ कहि सुणी मै दरसन भूख पिआसि जीउ ॥ (762-19)
किआ मागउ किछु थिरु न रहाई ॥ (481-7)
किआ मानुख कहहु किआ जोरु ॥ (178-2)
किआ मुहताजी किआ संसारु ॥२॥ (349-14)
किआ मुहु देसा गुण नही नालि ॥ (661-9)
किआ मुहु लै कीचै अरदासि ॥ (351-9)
किआ मुहु लै बोलह गुण बिहून नामु जपिआ न तेरा ॥ (167-16)
किआ मुहु लै बोलह ना हम गुण न सेवा साधी ॥ (1048-13)
किआ मेवा किआ घिउ गुड़ु मिठा किआ मैदा किआ मासु ॥ (142-12)
किआ लसकर किआ नेब खवासी आवै महली वासु ॥ (142-14)
किआ लीजै किआ तजीऐ बउरे जो दीसै सो छारु ॥ (1200-4)
किआ ले आइआ किआ पलै पाइ ॥ (931-17)
किआ ले आवसि किआ ले जावसि राम जपहु गुणकारी ॥१॥ रहाउ ॥ (1126-12)
किआ लै आइआ ले जाइ किआ फासहि जम जाला ॥ (228-17)
किआ लै आवहि किआ ले जाहि ॥ (839-3)
किआ वेचारा जंतु जा आपि भुलाइआ ॥८॥ (707-16)
किआ सवणा किआ जागणा गुरमुखि ते परवाणु ॥ (312-19)
किआ सालाही अगम अपारै ॥ (1022-6)

किआ सालाही सचे पातिसाह जां तू सुघड़ु सुजाणु ॥ (968-7)
किआ सुख तेरे समला कवन बिधी बीचार ॥ (203-8)
किआ सुणेदो कूड़ु वंञनि पवण झुलारिआ ॥ (577-8)
किआ सुलतानु सलाम विहूणा अंधी कोठी तेरा नामु नाही ॥१॥ (354-14)
किआ सेव कमावउ किआ कहि रीझावउ बिधि कितु पावउ दरसारे ॥ (738-7)
किआ सोचहि बारं बारा ॥१॥ रहाउ ॥ (655-19)
किआ सोवहि नामु विसारि गाफल गहिलिआ ॥ (398-7)
किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि करेइ ॥ (91-5)
किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि धरे ॥ (1384-13)
किआ हउ आखा आखि वखाणी ॥ (355-14)
किआ हउ आखा किरम जंतु ॥ (1172-4)
किआ हउ आखा जां कछू नाहि ॥ (1189-16)
किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाई ॥ (795-6)
किआ हम कथह किछु कथि नही जाणह प्रभ भावै तिवै बोलान ॥ (1203-4)
किआ हम किरम किआ करम कमावहि मूरख मुगध रखे प्रभ तास ॥ (1295-7)
किआ हम किरम नान्ह निक कीरे तुम्ह वड पुरख वडागी ॥ (667-5)
किआ हम जंत करह चतुराई जां सभु किछु तुझै मझारि ॥१॥ (379-9)
किआ हम जीअ जंत बेचारे बरनि न साकह एक रोमाई ॥ (822-11)
किआ होवै किस ही की झख मारी जा सचे सिउ बणि आई ॥ (850-17)
किआ होवै किसै ही दै कीतै जां धुरि किरतु ओस दा एहो जेहा पइआ ॥ (653-5)
किउ अबिनासी सहजि समावै ॥१॥ (152-16)
किउ अम्रितु पीवीऐ हरि बिनु जीवीऐ तिसु बिनु रहनु न जाए ॥ (1113-17)
किउ आवण जाणा वीसरै झूठु बुरा खै कालु ॥ (935-5)
किउ कंडै तोलै सुनिआरु ॥ (1239-16)
किउ कथीऐ किउ आखीऐ जापै सचो सचु ॥ (1289-4)
किउ करि इहु मनु मारीऐ किउ करि मिरतकु होइ ॥ (948-9)
किउ करि कंत मिलावा होई ॥१॥ (750-13)
किउ करि करउ बेनंती हउ आखि न जाणा ॥ (567-6)
किउ करि कहीऐ देहु वीचारि ॥ (1256-9)
किउ करि खोइआ किउ करि लाधा ॥ (939-13)
किउ करि निरमलु किउ करि अंधिआरा ॥ (939-13)
किउ करि पूरै वटि तोलि तुलाईऐ ॥ (146-7)
किउ करि बाधा सरपनि खाधा ॥ (939-12)
किउ करि बूझै पावै पारु ॥ (944-5)
किउ करि भवजलु लंघसि पारा ॥ (1029-8)
किउ करि वेखा किउ सालाही ॥ (119-2)
किउ करि साचि मिलउ मेरी माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (661-5)

किउ करि साथु लंघावहु पारे ॥१७॥ (939-17)
किउ खूलै गल जेवड़ीआ जीउ बिनु गुर अति पिआरे ॥ (243-7)
किउ गुर बिनु त्रिकुटी छुटसी सहजि मिलिऐ सुखु होइ ॥ (18-15)
किउ गोबिंदु मनहु विसारीऐ जिसु सिमरत दुख जाहि ॥२॥ (218-11)
किउ घड़ी बिसारी हउ बलिहारी हउ जीवा गुण गाए ॥ (1107-10)
किउ छूटउ कैसे तरउ भवजल निधि भारी ॥ (855-18)
किउ जागै गुर बिनु सूता ॥ (467-18)
किउ जीउ रखीजै हरि वसतु लोड़ीजै जिस की वसतु सो लै जाइ जीउ ॥ (447-9)
किउ जीवनु प्रीतम बिनु माई ॥ (1207-12)
किउ ततु न बूझै चोटा खाइ ॥ (944-4)
किउ ततै अविगतै पावै गुरमुखि लगै पिआरो ॥ (940-9)
किउ तरीऐ दुतरु संसारी ॥ (998-4)
किउ तरीऐ बिखिआ संसारु ॥ (801-8)
किउ दरगह पति पाईऐ जा हरि न वसै मन माहि ॥ (21-15)
किउ दुखु चूकै बिनु गुर मेरे ॥ (1189-5)
किउ दुतरु तरीऐ जम डरि मरीऐ जम का पंथु दुहेला ॥ (1112-17)
किउ धीरैगी नाह बिना प्रभ वेपरवाहे ॥ (243-1)
किउ न अराधहु मिलि करि साधहु घरी मुहतक बेला आई ॥ (1237-1)
किउ न मरीजै जीअड़ा न दीजै जा सहु भइआ विडाणा ॥१॥३॥ (558-7)
किउ न मरीजै रोइ जा लगु चिति न आवही ॥१॥ (792-1)
किउ न मिलहि काटहि मन पीर ॥ (931-16)
किउ न हरि को नामु लेहि मूरख निलाज रे ॥१॥ (1353-1)
किउ पइआलि जाइ किउ छलीऐ जे बलि रूपु पछानै ॥३॥ (1344-4)
किउ पाइन्हि डोहागणी दुखी रैणि विहाइ ॥२॥ (428-3)
किउ पाई गुरु जितु लगि पिआरा देखसा ॥ (452-7)
किउ पाईऐ किउ देखीऐ मेरा हरि प्रभु सुघड़ु सुजाणी ॥ (1317-4)
किउ पाईऐ हरि राम सहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (175-18)
किउ पिआरा प्रीतमु मिलै मेरी माई ॥ (94-11)
किउ पेखा प्रीतमु कवण सुकरणी जीउ ॥ (216-16)
किउ बाधिओ किउ मुकती पावै ॥ (152-15)
किउ बिसरै इहु लालु पिआरो सरब गुणा सुखदाइओ ॥ (624-9)
किउ बिसरै प्रभु मनै ते जिस के गुण एह ॥ (812-13)
किउ भ्रमीऐ भ्रमु किस का होई ॥ (176-5)
किउ मनहु बेसारीऐ निमख नही टारीऐ गुणवंत प्रान हमारे ॥ (80-15)
किउ मरै मंदा किउ जीवै जुगति ॥ (953-3)
किउ मारगु पाए बिनु सतिगुर भाए मनमुखि आपु गणाए ॥ (247-3)
किउ मिलीऐ प्रभ अबिनासी तोहि ॥ (801-7)

किउ मिलीऐ प्रभ वेपरवाहा ॥ (1076-9)
किउ मूलु पछाणै आतमु जाणै किउ ससि घरि सूरु समावै ॥ (945-9)
किउ मेटै गो छाछि तुहारी ॥१॥ (655-8)
किउ रलीआ मानै बाझु भतारा ॥३॥ (792-12)
किउ रहीऐ उठि चलणा बुझु सबद बीचारा ॥ (1012-4)
किउ रहीऐ चलणा परथाए ॥ (1022-18)
किउ रहीऐ थिरु जगि को कढहु उपाइआ ॥ (1250-8)
किउ राहि जावै महलु पावै अंध की मति अंधली ॥ (767-3)
किउ लागी निवरै परतापु ॥ (903-9)
किउ लीजै गढु बंका भाई ॥ (1161-14)
किउ सासि गिरासि विसारीऐ बहदिआ उठदिआ नित ॥ (314-4)
किउ सिमरी सिवरिआ नही जाइ ॥ (661-4)
किउ सुखु पावै दूऐ तीऐ ॥ (1023-5)
किउ सुखु पावै भरमि भुलानिआ ॥ (225-3)
किउ सुखु पावैगी बिनु उर धारे ॥ (242-11)
किउ हरि प्रभ वेखा मेरै मनि तनि चाउ जीउ ॥ (175-5)
किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥१८॥ (1378-17)
किछहू काजु न कीओ जानि ॥ (894-9)
किछु किछु न चाही ॥२॥ (407-1)
किछु किसी कै हथि नाही मेरे सुआमी ऐसी मेरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ (860-1)
किछु खाजै किछु धरि जाईऐ ॥ (989-13)
किछु जोगु परापति गनिआ ॥ रहाउ ॥ (656-10)
किछु न चलै धुरि खसमि लिखि पाइआ ॥ (1051-2)
किछु नाही ता कै कमी ॥२॥ (212-3)
किछु पुंन दान अनेक करणी नाम तुलि न समसरे ॥ (566-9)
किछु भी खरचु तुम्हारा सारउ ॥ (792-16)
किछु रूपु नही किछु जाति नाही किछु ढंगु न मेरा ॥ (167-15)
किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥२१॥ (474-8)
किछु वखरु होइ सु वरनीऐ तिसु रूपु न रिखा ॥ (1316-6)
किछु संगि न चालै लाख करोरै ॥ (1304-16)
किछु हाथि किसै दै किछु नाही सभि चलहि चलाए ॥ (450-11)
किछू न जानउ कैसा करम ॥१॥ (894-10)
किछू न जाना मति मेरी थोरी ॥ (388-3)
किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ॥ (1378-1)
किड़ी पवंदी मुहाइओनु भाई बिखिआ नो लोभाइ ॥७॥ (639-9)
कित कउ साहिब आवहि रोहि ॥ (25-2)
कित ही कमि न छिजीऐ जा हिरदै सचा सोइ ॥ (43-18)

कित ही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए ॥१॥ रहाउ ॥ (745-7)
कितहि असथानि तू टिकनु न पावहि इह बिधि देखी आखी ॥ (1227-16)
कितीं इतु दरीआइ वंञन्हि वहदिआ ॥१॥ (398-8)
किती चखउ साडड़े किती वेस करेउ ॥ (1015-1)
किती बैहन्हि बैहणे मुचु वजाइनि वज ॥ (518-7)
किती लख करोड़ि पिरीए रोम न पुजनि तेरिआ ॥ (761-11)
किती लहा सहम जा बखसे ता धका नही ॥२॥ (789-5)
कितीआ कुढंग गुझा थीऐ न हितु ॥ (518-12)
कितु कारणि सिरि छाई पाई ॥ (951-17)
कितु कितु बिधि जगु उपजै पुरखा कितु कितु दुखि बिनसि जाई ॥ (946-2)
कितु बिधि आसा मनसा खाई ॥ (940-1)
कितु बिधि किउ पाईऐ प्रभु अपुना मो कउ करहु उपदेसु हरि दान ॥२॥ (1335-9)
कितु बिधि जोति निरंतरि पाई ॥ (940-1)
कितु बिधि पुरखा जनमु वटाइआ ॥ (939-19)
कितु बिधीऐ कितु संजमि पाईऐ ॥ (822-16)
कितु मुखि गुरु सालाहीऐ करण कारण समरथु ॥ (49-18)
कितै देसि न आइआ सुणीऐ तीरथ पासि न बैठा ॥ (902-16)
कितै प्रकारि न तूटउ प्रीति ॥ (684-10)
किथहु आइआ कह गइआ किहु न सीओ किहु सी ॥ (1287-5)
किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥ (1193-11)
किन बिधि कुसलु होत मेरे भाई ॥ (175-18)
किन बिधि पावउ प्रानपती ॥१॥ रहाउ ॥ (1171-11)
किन बिधि मिलै गुसाई मेरे राम राइ ॥ (204-18)
किन बिधि सागरु तरीऐ ॥ (877-4)
किन बिधि हीअरो धीरै निमानो ॥ (737-17)
किन ही न कीए काज माइआ पूरे ॥ (889-14)
किन ही राज जोबनु धन मिलखा किन ही बाप महतारी ॥ (1215-14)
किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥ (262-12)
किनहि बिबेकी काटी तूं ॥१॥ रहाउ ॥ (476-14)
किनही कहिआ बाह बहु भाई ॥ (913-1)
किनही कहिआ मै कुलहि वडिआई ॥ (912-19)
किनही कहिआ हउ तीरथ वासी ॥ (912-18)
किनही कीआ परविरति पसारा ॥ (912-15)
किनही कीआ पूजा बिसथारा ॥ (912-15)
किनही ग्रिहु तजि वण खंडि पाइआ ॥ (912-16)
किनही घूघर निरति कराई ॥ (913-2)
किनही तंत मंत बहु खेवा ॥ (913-4)

किनही तिलकु गोपी चंदन लाइआ ॥ (913-2)
किनही निवल भुइअंगम साधे ॥ (912-15)
किनही बनजिआ कांसी तांबा किनही लउग सुपारी ॥ (1123-7)
किनही भवनु सभ धरती करिआ ॥ (912-19)
किनही भेख बहु थाट बनाए ॥ (913-4)
किनही मोनि अउधूतु सदाइआ ॥ (912-17)
किनही सिध बहु चेटक लाए ॥ (913-3)
किनहूं प्रीति लाई दूजा भाउ रिद धारि किनहूं प्रीति लाई मोह अपमान ॥ (369-14)
किनहू लाख पांच की जोरी ॥ (337-1)
किनहू वरत नेम माला पाई ॥ (913-2)
किनि ओइ चीते चीतनहारे ॥१॥ (329-3)
किनि कहीऐ किउ देखीऐ भाई करता एकु अकथु ॥ (639-14)
किनि बिधि आवणु जावणु तूटा ॥ (131-4)
किनि बिधि बाधा किनि बिधि छूटा ॥ (131-4)
किनि बिधि मिलीऐ किनि बिधि बिछुरै इह बिधि कउणु प्रगटाए जीउ ॥३॥ (131-6)
किनै बूझनहारै खाए ॥१॥ रहाउ ॥ (477-5)
किरत कमाणे दुख सहु पराणी अनिक जोनि भ्रमाइआ ॥ (546-12)
किरत कमावन सरब फल रवीऐ हरि निरति ॥३॥ (816-6)
किरत कमावन सुभ असुभ कीने तिनि प्रभि आपि ॥ (251-15)
किरत करम न मिटै नानक हरि नाम धनु नही खटिआ ॥१॥ (705-7)
किरत की बांधी सभ फिरै देखहु बीचारी ॥ (334-1)
किरत के बाधे पाप कमावहि ॥ (1029-3)
किरत रेख करि करमिआ ॥ (1193-2)
किरत संजोगी दैति राजु चलाइआ ॥ (1154-11)
किरत संजोगी पाइआ भालि ॥ (1338-1)
किरत संजोगी भए इकत्रा करते भोग बिलासा हे ॥१॥ (1072-13)
किरतनि जुरीआ बहु बिधि फिरीआ पर कउ हिरीआ ॥ (746-6)
किरतम नाम कथे तेरे जिहबा ॥ (1083-10)
किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥ (133-6)
किरति संजोगि सती उठि होई ॥१॥ रहाउ ॥ (185-16)
किरतु ओन्हा का मिटसि नाहि ॥ (1183-14)
किरतु न कोई मेटणहारा ॥ (1052-14)
किरतु न मिटई हुकमु न बूझै पसूआ माहि समाना ॥५॥ (1013-7)
किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥ (280-13)
किरतु पइआ अध ऊरधी बिनु गिआन बीचारा ॥ (228-14)
किरतु पइआ करतै करि पाइआ मेटि न सकै कोई ॥ (763-17)
किरतु पइआ दोसु का कउ दीजै ॥५॥ (905-10)

किरतु पइआ नह मेटै कोइ ॥ (154-1)
किरतु पइआ निंदक बपुरे का किआ ओहु करै बिचारा ॥ (380-19)
किरतु पइआ परवाणा लिखिआ बाहुड़ि हुकमु न होई ॥ (359-14)
किरपंत हरीअं मति ततु गिआनं ॥ (1355-2)
किरपन कउ अति धन पिआरु ॥ (1180-11)
किरपन तन मन किलविख भरे ॥ (714-7)
किरपा करहि गावा प्रभु सोइ ॥ (232-14)
किरपा करहु दीन के दाते मेरा गुणु अवगणु न बीचारहु कोई ॥ (882-16)
किरपा करि कै आपणी आपे लए समाइ जीउ ॥२१॥ (73-3)
किरपा करि कै आपणी गुर सबदि मिलाइआ ॥ (1088-10)
किरपा करि कै आपणी दितोनु भगति भंडारु ॥१॥ (36-11)
किरपा करि कै नामु द्रिड़ाई ॥ (326-15)
किरपा करि कै मेलिअनु पाइआ मोख दुआरु ॥२॥ (758-16)
किरपा करि कै सुनहु प्रभ सभ जग महि वरसै मेहु ॥ (652-6)
किरपा करि सतिगुरू मिलाए ॥ (161-6)
किरपा करे गुरु पाईऐ हरि नामो देइ द्रिड़ाइ ॥ (33-15)
किरपा करे जिसु आपणी तिसु करमि परापति होइ ॥ (90-7)
किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगु ॥ (71-3)
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥ (466-18)
किरपा करे जे आपणी ता नानक सबदि समाही ॥१॥ (652-14)
किरपा करे ता सतिगुरु भेटै नदरी मेलि मिलावणिआ ॥२॥ (127-10)
किरपा करे सबदि मिलावा होइ ॥ (665-7)
किरपा करे सबदि मिलावा होई ॥ (158-8)
किरपा कीजै सा मति दीजै आठ पहर तुधु धिआई ॥ (779-11)
किरपा गोबिंद भई मिलिओ नामु अधारु ॥ (1307-4)
किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई ॥३॥ (420-16)
किरपा ते हरि पाईऐ सचि सबदि वीचारि ॥३॥ (34-9)
किरपा ते हरि मनि वसै भेटै गुरु सूरा ॥ (511-7)
किरपा धारि रखे करि अपुने मिलि साधू गोबिंदु धिआवणा ॥१४॥ (1086-15)
किरपा धारि रहीम ॥१॥ रहाउ ॥ (885-9)
किरपा धारीआ हां ॥ (410-15)
किरपा निधि किरपाल धिआवउ ॥ (183-8)
किरपा निधि प्रभ दीन दइआला ॥ (826-4)
किरपा निधि प्रभ मइआ धारि ॥ (212-15)
किरपा पाए सहजाए दरसाए अब रातिआ गोविंद सिउ ॥ (408-12)
किरपाला मेरे किरपाला दान दातारा मेरे किरपाला ॥ (924-11)
किरपालु सदा दइआलु दाता जीआ अंदरि तूं जीऐ ॥ (843-19)

किरसाणी किरसाणु करे लोचै जीउ लाइ ॥ (166-7)
किरसाणी जमी भाउ करि हरि बोहल बखस जमाइआ ॥ (304-9)
किरसानी जिउ राखै रखवाला ॥ (914-14)
किरिआ करम कमाइआ पग दुइ खिसकाइआ दुइ पग टिकै टिकाइ जीउ ॥ (445-17)
किरिआचार करहि खटु करमा इतु राते संसारी ॥ (495-9)
किलबिख करत करत पछुतावहि कबहु न साकहि छांटि ॥१॥ (1224-13)
किलबिख काटि सदा जन निरमल दरि सचै नामि सुहावणिआ ॥६॥ (111-2)
किलबिख काटे निमख अराधिआ गुरमुखि पारि उतारा ॥१॥ (611-6)
किलबिख काटे निरमलु थीआ ॥ (101-13)
किलबिख काटै भजु गुर के चरना ॥१॥ रहाउ ॥ (804-12)
किलबिख काटै होइ निरमला जनम जनम मलु जाइ ॥ (300-11)
किलबिख खीन भए सांति आई हरि उर धारिओ वडभागा ॥१॥ (985-9)
किलबिख दहन भए खिन अंतरि तूटि गए माइआ के फास ॥२॥ (1295-6)
किलबिख दहन होहि खिन अंतरि मेरे ठाकुर किरपा कीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (1325-16)
किलबिख दूख निवारणहारा ॥ (1049-14)
किलबिख दोख गए सभ नीकरि जिउ पानी मैलु हरे ॥१॥ (975-5)
किलबिख पाप नाम हरि काटे जिव खेत क्रिसानि लुने ॥१॥ (976-15)
किलबिख बिनसे गाइ गुना ॥ (1184-10)
किलबिख बिनासे दुख दरद दूरि ॥ (387-5)
किलबिख मेटे सबदि संतोखु ॥ (1340-12)
किलविख अवगण काटणहारा ॥ (112-14)
किलविख उतरहि सुधु होइ साधू सरणाई ॥३॥ (814-9)
किलविख काटण भै हरण सुख सागर हरि राइ ॥ (927-12)
किलविख काटि होआ मनु निरमलु मिटि गए आवण जाणा जीउ ॥३॥ (103-4)
किलविख काटे काटणहारा ॥ (1062-9)
किलविख काटे साधसंगि ॥ (1182-18)
किलविख काटै क्रोधु निवारे ॥ (117-1)
किलविख गए मन निरमल होई है गुरि काढे माइआ द्रोहं ॥ (1211-15)
किलविख दुख काटे हरि नामु प्रगासु ॥९॥ (415-5)
किलविख दुख सगले मेरे लाथे ॥२॥ (898-10)
किलविख पाप सभ कटीअहि फिरि दुखु बिघनु न होई ॥७॥ (424-18)
किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ (1313-15)
किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ (1419-3)
किलविख मैलु पाप धोवाहा ॥ (699-18)
किलविख मैलु भरे परे हमरै विचि हमरी मैलु साधू की धूरि गवाई ॥१॥ (1263-6)
किलविख सभि दोख बिनासनु हरि नामु जपीऐ गुर मंतन कै ॥ (925-14)
किलविख सभि बिनासु होनि सिमरत गोविंदु ॥ (321-10)

किलविख सभे उतरनि नीत नीत गुण गाउ ॥ (522-9)
किलविख हरणा नाम पुनहचरणा नामु जम की त्रास हरा ॥ (925-6)
किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥ (4-19)
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥ (1-6)
किस कउ कहहि सुणावहि किस कउ किसु समझावहि समझि रहे ॥ (353-18)
किस कउ दोसु देहि तू प्राणी सहु अपणा कीआ करारा हे ॥१४॥ (1030-19)
किस नो कहीऐ जा आपि कराए ॥ (1047-17)
किस नो कहीऐ दाता इकु सोइ ॥ (665-6)
किस नो कहीऐ दाता इकु सोई ॥ (158-8)
किस नो कहीऐ नानका किस नो करता देइ ॥ (1241-10)
किस नो कहीऐ नानका जा घरि वरतै सभु कोइ ॥२॥ (1093-10)
किस नो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥२॥ (475-8)
किस ही कोई कोइ मंञु निमाणी इकु तू ॥ (791-19)
किस ही चिति न पावही बिसरिआ सभ साक ॥ (42-10)
किस ही जोरु अहंकार बोलण का ॥ (1071-3)
किस ही जोरु दीबान माइआ का ॥ (1071-4)
किस ही धड़ा कीआ कुड़म सके नालि जवाई ॥ (366-1)
किस ही धड़ा कीआ मित्र सुत नालि भाई ॥ (366-1)
किस ही धड़ा कीआ सिकदार चउधरी नालि आपणै सुआई ॥ (366-2)
किस ही नालि न चलिआ खपि खपि मुए असार ॥३॥ (63-14)
किस ही नालि न चले नानक झड़ि झड़ि पए गवारा ॥ (155-6)
किस ही बुतै जबाबु न होई ॥ (1082-4)
किस ही मंदा आखि न चलै सचि खरा सचिआरा हे ॥१४॥ (1027-11)
किस ही मानु किसै अपमानु ॥ (354-6)
किस ही वाधि घाटि किस ही पहि सगले लरि लरि मूआ ॥३॥ (673-16)
किसनु सदा अवतारी रूधा कितु लगि तरै संसारा ॥ (559-15)
किसु आगै कीचै अरदासि ॥२॥ (1125-5)
किसु आगै प्रभ तुधु सालाही ॥ (686-14)
किसु उपदेसि रहा लिव लाइ ॥५॥ (221-7)
किसु उपरि ओहु टिक टिकै किस नो जोरु करेइ ॥ (1241-10)
किसु कहु देखि करउ अन पूजा ॥७॥ (224-9)
किसु कारणि इहु भेखु निवासी ॥ (939-17)
किसु कारणि ग्रिहु तजिओ उदासी ॥ (939-16)
किसु जाचउ नाही को थाउ ॥ (153-13)
किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख ॥१॥ रहाउ ॥ (1124-15)
किसु तूं पुरखु जोरू कउण कहीऐ सरब निरंतरि रवि रहिआ ॥२॥ (350-17)
किसु दोसु न दीजै किरतु भवाई ॥४॥ (745-4)

किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ (468-7)
किसु नेड़ै किसु आखां दूरे ॥ (1042-17)
किसु नेड़ै किसु आखा दूरि ॥ (411-19)
किसु नेड़ै किसु आखा दूरि ॥४॥ (839-8)
किसु पहि खोल्हउ गंठड़ी दूखी भरि आइआ ॥ (767-5)
किसु पहि देखि कहउ तू कैसा सभि जाचक तू दातारा ॥ (1255-9)
किसु पूछउ किसु लागउ पाइ ॥ (221-7)
किसु पूज चड़ावउ देउ धूप ॥ (1168-11)
किसु पूज चड़ावउ लगउ पाइ ॥१॥ (1168-10)
किसु भरवासै बिचरहि भवन ॥ (898-1)
किसु वखर के तुम वणजारे ॥ (939-17)
किसु वेखा नाही को दूजा ॥ (831-19)
किसु वेखाली चंगा होइ ॥१॥ (354-7)
किसु सेवउ किसु देवउ चीतु ॥ (221-6)
किसु सेवी तै किसु सालाही ॥ (1048-5)
किसु सेवी दूजा नही होरु ॥४॥ (1331-15)
किसु हउ जाची किस आराधी जा सभु को कीता होसी ॥ (608-4)
किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई ॥३॥ (525-4)
किसु हउ सेवी किआ जपु करी सतगुर पूछउ जाइ ॥ (34-13)
किसु हउ सेवी किसु आराधी जो दिसटै सो गाछै ॥ (533-18)
किसै थोड़ा किसै अगला खाली कोई नाहि ॥ (1238-2)
किसै थोड़ी किसै है घणेरी ॥ (119-9)
किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥ (269-11)
किसै न पूछे बखसे आपि ॥४॥ (412-19)
किसै न बदै आपि अहंकारी ॥ (278-12)
किसै पड़ावहि पड़ि गुणि बूझे सतिगुर सबदि संतोखि रहे ॥१॥ (353-18)
की न सुणेही गोरीए आपण कंनी सोइ ॥ (23-8)
की विसरहि दुखु बहुता लागै ॥ (354-15)
कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाहगुरू तेरी सभ रचना ॥३॥१३॥४२॥ (1404-2)
कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाहिगुरू तेरी सभ रचना ॥ (1403-18)
कीआ गरबु न आवै रासि ॥ (154-3)
कीआ तउ परवाणु है जा सहु धरे पिआरु ॥ (788-9)
कीआ दिनसु सभ राती ॥ (1003-17)
कीआ न जाणै अकिरतघण विचि जोनी फिरते ॥ (317-7)
कीए उपाव मुकति के कारनि दह दिसि कउ उठि धाइआ ॥ (703-4)
कीए राति दिनंतु चोज विडाणिआ ॥ (1279-7)
कीओ सिंगारु मिलन के ताई ॥ (483-9)

कीओ सीगारु मिलण कै ताई प्रभु लीओ सुहागनि थूक मुखि पईआ ॥७॥ (836-10)
कीचड़ि डूबै मैलु न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (685-13)
कीचड़ि हाथु न बूडई एका नदरि निहालि ॥ (1411-1)
कीचहि रस भोग खुसीआ मन केरी ॥ (832-3)
कीट हसत पूरन सभ संगा ॥१॥ रहाउ ॥ (1305-4)
कीट हसति पाखाण जंत सरब मै प्रतिपाल तू ॥१॥ रहाउ ॥ (1231-1)
कीट हसति महि पूर समाने ॥ (252-14)
कीट हसति सगल पूरान ॥ (863-11)
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ (2-15)
कीड़ा थापि देइ पातिसाही लसकर करे सुआह ॥ (144-11)
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥ (5-6)
कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥ (473-12)
कीता करणा कहिआ कथना भरिआ भरि भरि धोवां ॥ (140-12)
कीता करणा सरब रजाइ ॥२॥ (463-12)
कीता करणा सरब रजाई किछु कीचै जे करि सकीऐ ॥ (736-3)
कीता करतिआ बिरथा गइआ इकु तिलु थाइ न पाई ॥ (1414-15)
कीता कहा करे मनि मानु ॥ (25-12)
कीता किआ सालाहीऐ करि देखै सोई ॥ (1012-7)
कीता किआ सालाहीऐ करि वेखै सोई ॥ (767-11)
कीता किआ सालाहीऐ करे सोइ सालाहि ॥ (1239-1)
कीता किआ सालाहीऐ जिसु जादे बिलम न होई ॥ (1088-15)
कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥ (135-7)
कीता जिसो होवै पापां मलो धोवै सो सिमरहु परधानु हे ॥२॥ (1008-2)
कीता पसाउ एको कवाउ ॥ (3-16)
कीता पाइनि आपणा दुख सेती जुते ॥ (321-2)
कीता लोड़नि सोई कराइनि दरि फेरु न कोई पाइदा ॥१०॥ (1076-6)
कीता लोड़हि सो करहि तुझ बिनु कछु नाहि ॥ (811-4)
कीता लोड़हि सो करहि नानक सद बलिहार ॥२॥ (1251-12)
कीता लोड़हि सो प्रभ होइ ॥ (736-16)
कीता लोड़ीऐ कमु सु हरि पहि आखीऐ ॥ (91-6)
कीता वेखै साहिबु आपणा कुदरति करे बीचारो ॥ (580-4)
कीता होआ करे किआ होइ ॥ (1169-9)
कीता होवै करे कराइआ तिसु किआ कहीऐ भाई ॥ (359-13)
कीता होवै तिसु किआ कहीऐ ॥ (1075-15)
कीता होवै सरीकी करै अनहोदा नाउ धराइआ ॥ (1154-13)
कीतीअनु आपणी रख गरीब निवाजि थापि ॥ (521-14)
कीते कउ मेरै समानै करणहारु त्रिणु जानै ॥ (613-18)

कीते का नाही किहु चारा ॥ (1042-16)
कीते कारणि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु ॥१॥ (55-8)
कीते कै कहिऐ किआ होइ ॥१॥ (25-12)
कीते कै कहिऐ किआ होई ॥५॥ (1154-10)
कीनी दइआ गोपाल गुसाई ॥ (107-1)
कीनी रखिआ भगत प्रहिलादै हरनाखस नखहि बिदारे ॥ (999-6)
कीने करम अनेक गवार बिकार घन ॥ (1363-9)
कीने राम नाम इक आख्यर ॥ (262-11)
कीनो री सगल सींगार ॥ (1271-16)
कीन्हे पाप के बहु कोट ॥ (1224-9)
कीम न सका पाइ सुख मिती हू बाहरे ॥ (709-7)
कीमति कउण करे तुधु भावां देखि दिखावै ढोलो ॥ (1108-5)
कीमति कउण रहै लिव लाइ ॥५॥ (223-13)
कीमति कउणु करे तेरी करते प्रभ अंतु न पारावारी ॥७॥ (916-18)
कीमति कउणु करे प्रभ तेरी तू आपे सहजि समाइआ ॥८॥ (1067-11)
कीमति कउणु करै प्रभ तेरी तू सरब जीआ दइआला ॥ (608-10)
कीमति कउणु कहै बीचारु ॥ (677-6)
कीमति कवणु करे वेचारा ॥ (1053-4)
कीमति कहणु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (890-19)
कीमति कहणु न जाईऐ अंतु न पारावारु ॥ (962-5)
कीमति कहणु न जाईऐ परमेसुरु बेअंतु ॥ (137-6)
कीमति कहणु न जाईऐ सचु साह अडोलै ॥ (1102-13)
कीमति कहणु न जाईऐ सागरु गुणी अथाहु ॥ (46-13)
कीमति कही न जाई ठाकुर तेरा महलु अपारा ॥ (1117-9)
कीमति कही न जाईऐ किआ कहि मुखि बोला ॥३॥ (808-18)
कीमति कही न जाईऐ ठाकुर परतापै ॥२॥ (813-11)
कीमति कागद कही न जाई ॥ (1082-3)
कीमति किछु कहणु न जाई साचे सचु अलख अभेवा ॥१॥ रहाउ ॥ (896-9)
कीमति किनै न पाईआ कहणि न वडा होइ ॥ (15-7)
कीमति किनै न पाईआ कितै न लइआ जाइ ॥ (555-12)
कीमति किनै न पाईआ बेअंतु प्रभू हरि सोइ ॥ (1313-9)
कीमति किनै न पाईआ सभि सुणि सुणि आखहि सोइ ॥२॥ (53-11)
कीमति किनै न पाईऐ रिद माणक मोलि अमोलि ॥१॥ (22-4)
कीमति किसै न पाइ तेरी थटीऐ ॥ (966-12)
कीमति कोइ न जाणई को नाही तोलणहारु ॥ (137-3)
कीमति कोइ न जाणै दूजा ॥ (1081-17)
कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ (348-19)

कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ (9-9)
कीमति पाइ रहिआ भरपूरि ॥ (839-7)
कीमति पाई पावणहारै ॥ (1036-15)
कीमति सो पावै आपि जाणावै आपि अभुलु न भुलए ॥ (767-12)
कीरतनं साधसंगेण नानक नह द्रिसटंति जमदूतनह ॥३४॥ (1357-1)
कीरतन नामु सिमरत रहउ जब लगु घटि सासु ॥१॥ रहाउ ॥ (818-10)
कीरतन पुराण नित पुंन होवहि गुर बचनि नानकि हरि भगति लही ॥ (1117-5)
कीरतनु निरमोलक हीरा ॥ (893-19)
कीरति करन सरन मनमोहन जोहन पाप बिदारन कउ ॥ (1387-8)
कीरति करम कार निज संदा ॥ (1331-12)
कीरति करहि सगल जन तेरी तू अबिनासी पुरखु मुरारे ॥ (670-16)
कीरति करहि सुआमी तेरै दुआरे ॥ (567-3)
कीरति प्रभ की गाउ मेरी रसनां ॥ (1298-14)
कीरति रवि किरणि प्रगटि संसारह साख तरोवर मवलसरा ॥ (1392-19)
कीरति साथि चलंथो भणंति नानक साध संगेण ॥३॥ (1360-8)
कीरति सूरति मुकति इक नाई ॥ (221-18)
कीरति हमरी घरि घरि होई ॥ (1141-13)
कीरी जीतो सगला भवनु ॥ (888-7)
कीरी ते हसती करै टूटा ले गाढै ॥२॥ (816-5)
कुंगू की कांइआ रतना की ललिता अगरि वासु तनि सासु ॥ (17-3)
कुंगू चंनणु फुल चड़ाए ॥ (1241-1)
कुंचरु पोट लै लै नमसकारै ॥ (870-18)
कुंजी कुलफु प्रान करि राखे करते बार न लाई ॥१॥ (339-10)
कुंजी जिन कउ दितीआ तिन्हा मिले भंडार ॥ (1239-10)
कुंट चारि दह दिसि भ्रमे करम किरति की रेख ॥ (253-12)
कुंडलनी सुरझी सतसंगति परमानंद गुरू मुखि मचा ॥ (1402-10)
कुंने हेठि जलाईऐ बालण संदै थाइ ॥७२॥ (1381-14)
कुआर कंनिआ जैसे करत सीगारा ॥ (792-12)
कुआर कंनिआ जैसे संगि सहेरी प्रिअ बचन उपहास कहो ॥ (1203-7)
कुचल कठोर कामि गरधभ तुम नही सुनिओ धरम राइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1001-15)
कुचलु कठोरु कामी मुकतु कीजै ॥४॥ (738-13)
कुचिल कठोर कपट कामी ॥ (1301-13)
कुचिल कुरूपि कुनारि कुलखनी पिर का सहजु न जानिआ ॥ (1197-13)
कुचिल रहहि दिन राति सबदु न भाइआ ॥ (1285-8)
कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी ॥ (727-17)
कुटि कुटि मनु कसवटी लावै ॥ (872-15)
कुट्मब जतन करणं माइआ अनेक उदमह ॥ (706-14)

कुट्मबु देखि बिगसहि कमला जिउ पर घरि जोहहि कपट नरा ॥१॥ (92-6)
कुट्मबु हमारा निज घरि वासी ॥१॥ (1141-10)
कुते चंदनु लाईऐ भी सो कुती धातु ॥ (143-7)
कुदम करे पसु पंखीआ दिसै नाही कालु ॥ (43-3)
कुदम करै गाडर जिउ छेल ॥ (899-8)
कुदरति अहि वेखालीअनु जिणि ऐवड पिड ठिणकिओनु ॥ (967-14)
कुदरति करनैहार अपारा ॥ (1042-15)
कुदरति करमु न कहणा जाई ॥ (107-8)
कुदरति करि कै वसिआ सोइ ॥ (83-18)
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ (3-17)
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ (4-10)
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ (4-2)
कुदरति कादर करण करीमा ॥ (1084-12)
कुदरति कीम न जाणीऐ वडा वेपरवाहु ॥ (724-8)
कुदरति कीम न पाइ अलख ब्रहमटिआ ॥ (957-7)
कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु ॥ (464-6)
कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान ॥ (464-7)
कुदरति तखतु रचाइआ सचि निबेड़णहारो ॥२॥ (580-11)
कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥ (464-5)
कुदरति देखि रहे मनु मानिआ ॥ (1043-14)
कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥ (464-7)
कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु ॥ (464-8)
कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ॥ (464-5)
कुदरति बीचारे धारण धारे जिनि कीआ सो जाणै ॥ (580-5)
कुदरति वरतै रूप अरु रंगा ॥१॥ (376-5)
कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु ॥ (464-6)
कुदरति है कीमति नही पाइ ॥ (84-1)
कुदि कुदि चरै रसातलि पाइ ॥२॥ (326-5)
कुफर गोअ कुफराणै पइआ दझसी ॥ (142-8)
कुबिजा उधरी अंगुसट धार ॥ (1192-6)
कुबुधि चवावै सो कितु ठाइ ॥ (944-3)
कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ॥ (91-3)
कुबुधि मिटै गुर सबदु बीचारि ॥ (944-5)
कुमित्रा सेई कांढीअहि इक विख न चलहि साथि ॥२॥ (318-15)
कुमी जल माहि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाही ॥ (488-4)
कुम्हारै एक जु माटी गूंधी बहु बिधि बानी लाई ॥ (479-18)
कुरंक नादै नेहु ॥ (838-13)

कुरबाणी वंञा वारणै बले बलि किता ॥ (965-14)
कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥ (918-8)
कुरबाणु जांई तेरे परताप ॥३॥ (1270-17)
कुरबाणु जाई उसु वेला सुहावी जितु तुमरै दुआरै आइआ ॥ (749-11)
कुरबाणु जाई गुर पूरे अपने ॥ (1340-17)
कुराणु कतेब दिल माहि कमाही ॥ (1083-17)
कुरान कतेब ते पाकु ॥३॥ (897-3)
कुरीए कुरीए वैदिआ तलि गाड़ा महरेरु ॥ (1095-17)
कुरुता बीजु बीजे नही जमै सभु लाहा मूलु गवाइदा ॥५॥ (1075-18)
कुल जन मधे मिल्यिो सारग पान रे ॥ (695-3)
कुल रूप धूप गिआनहीनी तुझ बिना मोहि कवन मात ॥ (462-2)
कुल समूह उधरे खिन भीतरि जनम जनम की मलु लाही ॥ (824-8)
कुल समूह करत उधारु ॥ (838-15)
कुल स्मबूह समुधरे पायउ नाम निवासु ॥ (1393-19)
कुलह समूह सगल उधारं ॥ (1361-7)
कुलहां देंदे बावले लैंदे वडे निलज ॥ (1286-5)
कुलि सोढी गुर रामदास तनु धरम धुजा अरजुनु हरि भगता ॥६॥ (1407-16)
कुलु उधारहि आपणा धंनु जणेदी माइ ॥ (28-10)
कुलु उधारहि आपणा मोख पदवी आपे पाहि ॥ (592-9)
कुलु उधारे आपणा धंनु जणेदी माइआ ॥ (138-19)
कुलु उधारे आपणा सो जनु होवै परवाणु ॥ (643-4)
कुवलीआ पीड़ु आपि मराइदा पिआरा करि बालक रूपि पचाहा ॥२॥ (606-17)
कुसंगति बहहि सदा दुखु पावहि दुखो दुखु कमाइआ ॥११॥ (1068-15)
कुसम बास बहु रंगु घणो सभ मिथिआ बलबंचु ॥ (297-14)
कुसम रंग संग रसि रचिआ बिखिआ एक उपाइओ ॥ (531-6)
कुसल खेम प्रभि आपि बसाए ॥१॥ रहाउ ॥ (197-15)
कुसल खेम सभ थीआ ॥३॥ (622-8)
कुसलु कुसलु करते जगु बिनसै कुसलु भी कैसे होई ॥१॥ रहाउ ॥ (332-12)
कुसलु न ग्रिहि मेरी सभ माइआ ॥ (175-19)
कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ ॥ (14-12)
कुहकत कपट खपट खल गरजत मरजत मीचु अनिक बरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1303-15)
कुहकनि कोकिला तरल जुआणी ॥ (567-12)
कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥ (473-5)
कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥ (471-7)
कुमभ कमलु जलि भरिआ ॥ (656-11)
कुमभ बिना जलु ना टीकावै ॥ (872-8)
कुमभार के घर हांडी आछै राजा के घर सांडी गो ॥ (718-16)

कुमभे बधा जलु रहै जल बिनु कुमभु न होइ ॥ (469-16)
कूअटा एकु पंच पनिहारी ॥ (325-17)
कूक पुकार को न सुणे ओहु अउखा होइ होइ रोइआ ॥ (309-11)
कूक पुकार न होवई जोती जोति मिलाइ ॥ (1420-4)
कूक पुकार न होवई नदरी नदरि निहाल ॥ (1283-19)
कूक पूकार न चुकई ना संसा विचहु जाइ ॥ (647-7)
कूकर कूड़ु कमाईऐ गुर निंदा पचै पचानु ॥ (21-11)
कूकर सूकर कहीअहि कूड़िआरा ॥ (1029-17)
कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुलि खलह ॥३३॥ (1356-18)
कूच बिचारे फूए फाल ॥ (871-8)
कूचु करहि आवहि बिखु लादे सबदि सचै गुरु मेरा ॥ (688-5)
कूजा बांग निवाज मुसला नील रूप बनवारी ॥ (1191-3)
कूजा मेवा मै सभ किछु चाखिआ इकु अम्रितु नामु तुमारा ॥४॥ (155-6)
कूटनु किसै कहहु संसार ॥ (872-15)
कूटनु सोइ जु मन कउ कूटै ॥ (872-14)
कूड़ कपट पाजु लहि जासी मनमुख फीका अलाउ ॥३॥ (637-18)
कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥ (468-9)
कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥ (919-16)
कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥ (136-11)
कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ॥२॥ (953-15)
कूड़ निखुटे नानका सचु करे सु होई ॥१२॥ (1283-17)
कूड़हु करे विणासु धरमे तगीऐ ॥ (518-10)
कूड़ा कपड़ु कछीऐ कूड़ा पैनणु माणु ॥१॥ (790-3)
कूड़ा गंढु न चलई चिकड़ि पथर बंधु ॥ (959-5)
कूड़ा रंगु कसुमभ का बिनसि जाइ दुखु रोइ ॥ (27-19)
कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥ (468-14)
कूड़ा लालचु छोडीऐ तउ साचु पछाणै ॥ (419-9)
कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ॥४६॥ (1380-6)
कूड़ि कपटि अहंकारि रीझाना ॥ (892-19)
कूड़ि कपटि किनै न पाइओ जो बीजै खावै सोइ ॥३॥ (40-1)
कूड़ि कपटि बंचि निमुनीआदा बिनसि गइआ ततकाले ॥ (381-8)
कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥३॥ (474-14)
कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥ (468-7)
कूड़ि मुठी चालै बहु राही ॥ (1029-11)
कूड़ि मुठी ठगी ठगवाड़ी ॥ (1024-17)
कूड़ि लबि जां थाइ न पासी अगै लहै न ठाओ ॥ (581-18)
कूड़ि विगुती ता पिरि मुती सा धन महलु न पाई ॥ (244-3)

कूड़िआर कूड़िआरी जाइ रले सचिआर सिख बैठे सतिगुर पासि ॥२६॥ (314-19)
कूड़िआर पिछाहा सटीअनि कूड़ु हिरदै कपटु महा दुखु पावै ॥ (302-16)
कूड़िआरा के मुह फिटकीअहि सचु भगति वडिआई ॥ (851-7)
कूड़िआरी रजै कूड़ि जिउ विसटा कागु खावई ॥ (646-12)
कूड़ी आवै कूड़ी जावै माइआ की नित जोहा ॥ (960-15)
कूड़ी करनि वडाईआ कूड़े सिउ लगा नेहु ॥ (311-14)
कूड़ी कूड़ी मुखहु वखाणै ॥३॥ (1151-16)
कूड़ी डेखि भुलो अढु लहै न मुलो गोविद नामु मजीठा ॥ (777-7)
कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥ (471-18)
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥ (145-10)
कूड़ु कपटु कमावदड़े जनमहि संसारा ॥ (461-10)
कूड़ु कपटु कमावदे कूड़ु परगटी आइआ ॥ (1243-12)
कूड़ु कपटु कमावदे कूड़ो आलाइआ ॥ (1238-16)
कूड़ु कपटु कमावै महा दुखु पावै विणु सतिगुर मगु न पाइआ ॥ (773-10)
कूड़ु कमावनि दुखु लागै भारा ॥ (116-1)
कूड़ु कमावहि आदमी बांधहि घर बारा ॥१॥ (418-8)
कूड़ु कमावै आवै जावै ॥ (352-13)
कूड़ु कमावै कूड़ु उचरै कूड़ि लगिआ कूड़ु होइ ॥ (316-15)
कूड़ु कमावै कूड़ु संग्रहै कूड़ु करे आहारु ॥ (552-1)
कूड़ु कमावै कूड़ु संघरै कूड़ि करै आहारु ॥ (1423-15)
कूड़ु कलरु तनु भसमै ढेरी ॥ (1031-15)
कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥ (468-6)
कूड़ु कुसतु ओहु पाप कमावै ॥ (314-15)
कूड़ु कुसतु कमावदे पर निंदा सदा करेनि ॥ (951-8)
कूड़ु कुसतु तिना मैलु न लागै ॥ (128-7)
कूड़ु कुसतु त्रिसना अगनि बुझाए ॥ (665-4)
कूड़ु छुरा मुठा मुरदारु ॥ (24-13)
कूड़ु छोडि साचे कउ धावहु ॥ (1028-10)
कूड़ु ठगी गुझी ना रहै कूड़ु मुलमा पलेटि धरेहु ॥ (311-14)
कूड़ु ठगी गुझी ना रहै मुलमा पाजु लहि जाइ ॥ (303-6)
कूड़ु न जापै किछु तेरी धारीऐ ॥ (518-2)
कूड़ु निवारे गुरमति सारे जूऐ जनमु न हारे ॥ (244-16)
कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ (471-18)
कूड़ु बोलि बिखु खाइआ मनमुखि चलिआ रोइ ॥ (948-3)
कूड़ु बोलि बिखु खावणी बहु वधहि विकारा राम ॥ (570-3)
कूड़ु बोलि बोलि नित भउकदे बिखु खाधे दूजै भाइ ॥ (1415-11)
कूड़ु बोलि बोलि भउकणा चूका धरमु बीचारु ॥ (1242-19)

कूड़ु बोलि मुरदारु खाइ ॥ (139-19)
कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥ (468-5)
कूड़ु मारे कालु उछाहाड़ा ॥ (1025-19)
कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ॥ (468-7)
कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥ (468-6)
कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥ (468-5)
कूड़ु लिखहि तै कूड़ु कमावहि जलि जावहि कूड़ि चितु लावणिआ ॥६॥ (123-8)
कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हणहारु ॥ (468-5)
कूड़े आवै कूड़े जावै ॥ (1024-16)
कूड़े मूरख की हाठीसा ॥१॥ रहाउ ॥ (738-11)
कूड़े राती कूड़ु कमावै ॥ (1024-17)
कूड़े लुभाइआ धोहु माइआ करहि पाप अमितिआ ॥ (459-19)
कूड़ै की पालि विचहु निकलै ता सदा सुखु होइ ॥३॥ (490-6)
कूड़ै की पालि विचहु निकलै सचु वसै मनि आइ ॥ (591-11)
कूड़ै मोहि लपटि लपटाना ॥ (740-3)
कूड़ै लालचि ना लपटाई ॥ (1262-5)
कूड़ै लालचि लगि महलु खुआईऐ ॥ (147-9)
कूड़ै लालचि लगिआ ना उरवारु न पारु ॥ (512-19)
कूड़ै लालचि लगिआ फिरि जूनी पाइआ ॥ (1243-13)
कूड़ै लालचि लपटै लपटाइ ॥ (840-7)
कूड़ो कूड़ु करे वापारा कूड़ु बोलि दुखु पाइदा ॥१२॥ (1062-10)
कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥ (346-5)
केई लाहा लै चले इकि चले मूलु गवाइ ॥ (1238-11)
केतक सिध भए लिव लागे ॥१॥ रहाउ ॥ (330-13)
केतड़िआ जुग धुंधूकारै ॥ (1023-12)
केतड़िआ जुग वापरे इकतु पइआ पासि ॥६७॥ (1381-9)
केतड़िआ दिन गुपतु कहाइआ ॥ (1081-18)
केतड़िआ दिन धुंधूकारा आपे करता परगटड़ा ॥१२॥ (1081-19)
केतड़िआ दिन सुंनि समाइआ ॥ (1081-18)
केता आखणु आखीऐ आखणि तोटि न होइ ॥ (18-6)
केता आखणु आखीऐ ता के अंत न जाणा ॥ (421-11)
केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ (3-16)
केतिआ के बाप केतिआ के बेटे केते गुर चेले हूए ॥ (1238-13)
केतिआ गणत नही वीचारु ॥ (5-12)
केतिआ दूख भूख सद मार ॥ (5-13)
केती केती मांगनि मागै भावनीआ सो पाईऐ ॥१॥ (1321-17)
केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥ (3-16)

केती नारि वरु एकु समालि ॥ (932-11)
केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ॥ (464-17)
केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ (7-16)
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥ (7-18)
केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति ॥ (18-1)
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥ (7-18)
केते आखहि आखणि पाहि ॥ (6-2)
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥ (7-16)
केते कहहि वखाण कहि कहि जावणा ॥ (148-2)
केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥ (6-2)
केते खपि तुटहि वेकार ॥ (5-12)
केते गनउ असंख अवगण मेरिआ ॥ (704-9)
केते गुर चेले फुनि हूआ ॥ (932-11)
केते जुग वरते गुबारै ॥ (1026-14)
केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिनु राति ॥ (18-1)
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ (347-4)
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ (8-15)
केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति ॥३॥ (18-2)
केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥ (7-17)
केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥ (464-17)
केते नाग कुली महि आए केते पंख उडाए ॥२॥ (156-11)
केते पंडित जोतकी बेदा करहि बीचारु ॥ (56-9)
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥ (7-15)
केते बंधन जीअ के गुरमुखि मोख दुआर ॥ (62-11)
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥ (7-15)
केते मंगहि जोध अपार ॥ (5-12)
केते मंगहि मंगते केते मंगि मंगि जाहि ॥१॥ (1286-8)
केते मात पिता सुत धीआ ॥ (932-10)
केते मूरख खाही खाहि ॥ (5-13)
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥ (6-5)
केते रुख बिरख हम चीने केते पसू उपाए ॥ (156-11)
केते लै लै मुकरु पाहि ॥ (5-12)
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥ (7-17)
केदारा छंत महला ५ (1122-4)
केदारा महला ४ घरु १ (1118-1)
केदारा महला ४ घरु १ (1118-10)
केदारा महला ५ ॥ (1119-17)

केदारा महला ५ ॥ (1120-10)
केदारा महला ५ ॥ (1120-13)
केदारा महला ५ ॥ (1120-3)
केदारा महला ५ ॥ (1120-6)
केदारा महला ५ ॥ (1121-12)
केदारा महला ५ ॥ (1121-16)
केदारा महला ५ ॥ (1121-19)
केदारा महला ५ ॥ (1121-3)
केदारा महला ५ ॥ (1121-6)
केदारा महला ५ ॥ (1121-9)
केदारा महला ५ घरु २ (1119-3)
केदारा महला ५ घरु ३ (1119-7)
केदारा महला ५ घरु ४ (1119-13)
केदारा महला ५ घरु ५ (1120-18)
केदारा रागा विचि जाणीऐ भाई सबदे करे पिआरु ॥ (1087-6)
केल करहि संत हरि लोग ॥ (888-17)
केल करेदे हंझ नो अचिंते बाज पए ॥ (1383-4)
केवडु दाता आखीऐ दे कै रहिआ सुमारि ॥ (53-18)
केवडु वडा डीठा होइ ॥ (9-9)
केवडु वडा डीठा होई ॥ (348-19)
केवल नामु गाईऐ जा कै नीत ॥१॥ रहाउ ॥ (863-16)
केवल नामु जपहु रे प्रानी तब ही निहचै तरना ॥६॥२॥ (1349-18)
केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरनां ॥३॥२॥ (692-4)
केवल नामु दीओ गुरि मंतु ॥ (183-10)
केवल नामु भगति रसु दीना ॥७॥ (760-7)
केवल नामु रिद माहि समाइआ ॥४॥४२॥१११॥ (188-8)
केवल नामु रिदे महि दीजै ॥४॥२६॥७७॥ (389-16)
केवल ब्रहम पूरन तह बासनु ॥ (894-1)
केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥ (274-8)
केवल राम नाम मनोरमं ॥ (526-14)
केवल राम नामु मनि वसिआ नामे ही मुकति पाई ॥ (637-16)
केवल राम भगति निज भागी ॥३॥१॥१९॥ (327-12)
केवल राम रहहु लिव लाइ ॥३॥६॥१४॥ (1161-4)
केस जले जैसे घास का पूला ॥२॥ (870-7)
केस संगि दास पग झारउ इहै मनोरथ मोर ॥१॥ (500-2)
केसरि कुसम मिरगमै हरणा सरब सरीरी चड़्हणा ॥ (721-12)
केसव कलेस नास अघ खंडन नानक जीवत दरस दिसे ॥२॥९॥१२५॥ (829-12)

केसव चलत करहि निराले कीता लोड़हि सो होइगा ॥८॥ (1082-15)
केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ ॥२॥ (693-19)
केसा का करि चवरु ढुलावा चरण धूड़ि मुखि लाई ॥१॥ रहाउ ॥ (749-2)
केसा का करि बीजना संत चउरु ढुलावउ ॥ (745-13)
केसी कंस मथनु जिनि कीआ ॥ (874-11)
केसो गोपाल पंडित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ ॥ (923-16)
कै जानै आपन धनी कै दासु दीवानी होइ ॥१७६॥ (1373-19)
कै दोखड़ै सड़िओहि काली होईआ देहुरी नानक मै तनि भंगु ॥ (1412-14)
कै पहि करउ अरदासि बेनती जउ सुनतो है रघुराइओ ॥१॥ (205-8)
कै बंधै कै डानि लेइ कै नरपति मरि जाइआ ॥ (166-17)
कै विचि धरती कै आकासी उरधि रहा सिरि भारि ॥ (139-10)
कै संगति करि साध की कै हरि के गुन गाइ ॥२८॥ (1365-18)
कैसी आरती होइ ॥ (13-3)
कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती ॥ (663-6)
कैसे कहउ मोहि जीअ बेदनाई ॥ (1206-19)
कैसे जीवनु होइ हमारा ॥ (329-19)
कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥३॥ (525-13)
कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (92-1)
कैसे मन तरहिगा रे संसारु सागरु बिखै को बना ॥ (486-2)
कैसे होई है राजा राम निवासा ॥१॥ रहाउ ॥ (330-6)
कैहा कंचनु तुटै सारु ॥ (143-10)
को आणि मिलावै अजु मै पिरु मेलि मिलावए ॥ (1421-19)
को उपदेसै को द्रिड़ै तिस का होइ उधारु ॥ (300-11)
को ऐसा भगतु सदाए ॥१२८॥ (1384-17)
को कहतो सभ बाहरि बाहरि को कहतो सभ महीअउ ॥ (700-10)
को को न बिगूतो मै को आहि ॥१॥ (1194-15)
को खटु करम सहित सिउ मंडित ॥ (913-5)
को गिरही करमा की संधि ॥ (1169-3)
को जारे को गडि ले माटी ॥२॥ (329-14)
को बनजारो राम को मेरा टांडा लादिआ जाइ रे ॥१॥ रहाउ ॥ (345-18)
को मूआ का कै घरि गावनु ॥ (389-5)
को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥५॥ (465-17)
को रोवै को हसि हसि पावनु ॥१॥ रहाउ ॥ (389-6)
को है लरिका बेचई लरिकी बेचै कोइ ॥ (1366-14)
कोइ न आखै घटि हउमै जाईऐ ॥ (146-7)
कोइ न काटै अवगुण मेरे ॥ (1021-18)
कोइ न किस ही जेहा उपाइआ ॥ (1056-11)

कोइ न किस ही वसि सभना इक धर ॥ (957-14)
कोइ न किस ही संगि काहे गरबीऐ ॥ (398-12)
कोइ न जाणै कीम केवडु मटिआ ॥ (957-8)
कोइ न जाणै तुमरी गति मिति आपहि एक पसारा ॥ (1220-5)
कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥१॥ रहाउ ॥ (9-10)
कोइ न जाणै तेरा चीरा ॥ (1034-5)
कोइ न जाणै तेरा परवारा ॥ (1060-18)
कोइ न जानै कोइ न मानै से परगटु हरि दुआरे ॥३॥ (406-13)
कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥ (268-3)
कोइ न पहुचनहारा दूजा अपुने साहिब का भरवासा ॥१॥ (609-15)
कोइ न मेटै तेरै लेखै ॥ (842-7)
कोइ न मेटै धुरि फुरमाइआ ॥ (1044-16)
कोइ न मेटै प्रभ का कीआ दूसर नाही अलोईऐ ॥ (528-18)
कोइ न मेटै साचे लेखै ॥ (1021-12)
कोइ न रहिहै राजा राना ॥१॥ (1157-19)
कोइ न लगै बिघनु आपु गवाइऐ ॥ (520-5)
कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनु जलिआ संन्ही चिंत भई ॥३॥ (990-6)
कोई अंनु तजि भइआ उदासी ॥ (912-18)
कोई आइ मिलैगो गाहकी लेगो महगे मोलि ॥२२५॥ (1376-14)
कोई आखै आदमी नानकु वेचारा ॥१॥ (991-7)
कोई आखै भूतना को कहै बेताला ॥ (991-6)
कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा ॥३॥ (572-13)
कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा राम ॥ (572-10)
कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा हउ तिसु पहि आपु वेचाई ॥१॥ (757-10)
कोई आणि मिलावै मेरे प्राण जीवाइआ ॥ (94-7)
कोई आणि सदेसा देइ प्रभ केरा रिद अंतरि मनि तनि मीठ लगईआ ॥ (836-4)
कोई आनि आनि मेरा प्रभू मिलावै हउ तिसु विटहु बलि बलि घुमि गईआ ॥ (836-19)
कोई आनि सुनावै हरि की हरि गाल ॥ (977-18)
कोई आवै संतो हरि का जनु संतो मेरा प्रीतम जनु संतो मोहि मारगु दिखलावै ॥ (1201-11)
कोई ऐसा गुरमुखि जे मिलै हउ ता के धोवा पाउ ॥४॥ (758-18)
कोई ऐसा संतु सहज सुखदाता मोहि मारगु देइ बताई ॥१॥ रहाउ ॥ (204-18)
कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु जो मेले प्रीतमु मोहि ॥ (957-12)
कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु मै प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ (758-19)
कोई ऐसो रे भगतु जु माइआ ते रहतु इकु अम्रित नामु मेरै रिदै सिंचा ॥३॥ (687-3)
कोई ऐसो रे भेटै संतु मेरी लाहै सगल चिंत ठाकुर सिउ मेरा रंगु लावै ॥२॥ (687-1)
कोई ऐसो रे सुखह दाई प्रभ की कथा सुनाई तिसु भेटे गति होइ हमारी ॥७॥ (687-9)
कोई ओढै नील कोई सुपेद ॥३॥ (885-10)

कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥ (451-3)
कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरू आणि निवाइआ ॥ (924-3)
कोई करै आचार सुकरणी ॥ (913-5)
कोई करै उपाव अनेक बहुतेरे बिनु किरपा नामु न पावै ॥ (172-17)
कोई करै पूजा कोई सिरु निवाइ ॥२॥ (885-9)
कोई कहतउ अनंनि भगउती ॥ (912-17)
कोई कहै तुरकु कोई कहै हिंदू ॥ (885-10)
कोई कहै मै धनहि पसारा ॥ (913-1)
कोई काहू को नही सभ देखी ठोकि बजाइ ॥११३॥ (1370-10)
कोई कोई साजणु आइ कहै ॥ (92-7)
कोई गला करे घनेरीआ जि घरि वथु होवै साई खाइ ॥ (303-4)
कोई गावै को सुणै को उचरि सुनावै ॥ (1318-13)
कोई गावै को सुणै कोई करै बीचारु ॥ (300-10)
कोई गावै को सुणै हरि नामा चितु लाइ ॥ (335-11)
कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥ (450-12)
कोई गुरमुखि बूझै सबदि निराला ॥ (1031-10)
कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मै दसे प्रभु गुणतासु ॥ (40-4)
कोई गुरमुखि होवै सु करै वीचारु हरि धिआवै मनि लिव लाइ ॥ (76-17)
कोई चतुरु कहावै पंडित ॥ (913-5)
कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि ॥ (701-16)
कोई जाइ मिलै तिन निंदका मुह फिके थुक थुक मुहि पाही ॥ (308-16)
कोई जाइ मिलै हुणि ओना नो तिसु मारे जमु जंदारे ॥ (307-14)
कोई जाणहु मास काती कै किछु हाथि है सभ वसगति है हरि केरी ॥ (168-6)
कोई जाणि न भूलै भाई ॥ (1344-2)
कोई जाणै कैसा नाउ ॥२॥ (1256-10)
कोई जानै कवनु ईहा जगि मीतु ॥ (700-2)
कोई जि मूरखु लोभीआ मूलि न सुणी कहिआ ॥२॥ (218-1)
कोई न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥१॥ रहाउ ॥ (349-1)
कोई नामु जपै जपमाली लागै तिसै धिआना ॥ (876-4)
कोई नावै तीरथि कोई हज जाइ ॥ (885-9)
कोई निंदकु वडिआई देखि न सकै सो करतै आपि पचाइआ ॥ (305-8)
कोई निंदकु होवै सतिगुरू का फिरि सरणि गुर आवै ॥ (855-1)
कोई निंदा करे पूरे सतिगुरू की तिस नो फिटु फिटु कहै सभु संसारु ॥ (302-10)
कोई पड़ता सहसाकिरता कोई पड़ै पुराना ॥ (876-4)
कोई पड़ै बेद कोई कतेब ॥ (885-10)
कोई पाईऐ रे पुरखु बिधाता पारब्रहम कै रंगि राता मेरे मन की दुरमति मलु खोए ॥५॥ (687-6)
कोई पुतु सिखु सेवा करे सतिगुरू की तिसु कारज सभि सवारे ॥ (307-17)

कोई बाछै भिसतु कोई सुरगिंदू ॥४॥ (885-11)
कोई बूझहु गिआनी करहु निबेरा ॥ (1038-10)
कोई बूझै बूझणहारा अंतरि बिबेकु करि ॥ (646-19)
कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि ॥ (718-11)
कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥ (885-8)
कोई भला कहउ भावै बुरा कहउ हम तनु दीओ है ढारि ॥१॥ (528-1)
कोई भीखकु भीखिआ खाइ ॥ (354-6)
कोई मारगु पंथु बतावै प्रभ का कहु तिन कउ किआ दिनथे ॥ (1320-4)
कोई मुगलु न होआ अंधा किनै न परचा लाइआ ॥४॥ (418-1)
कोई मेलै मेरा प्रीतमु पिआरा हम तिस की गुल गोलीऐ ॥१॥ (527-13)
कोई रखि न सकई दूजा को न दिखाइ ॥ (43-6)
कोई राजा रहिआ समाइ ॥ (354-6)
कोई राम नाम गुन गावनो ॥ (801-4)
कोई वाहे को लुणै को पाए खलिहानि ॥ (854-2)
कोई विछुड़ि जाइ सतिगुरू पासहु तिसु काला मुहु जमि मारिआ ॥ (311-19)
कोई विरला आपन कीत ॥ (980-6)
कोई सजणु संतु मिलै वडभागी मै हरि प्रभु पिआरा दसै जीउ ॥१॥ (94-10)
कोई सहजि जाणै हरि पछाणै सतिगुरू जिनि चेतिआ ॥ (439-9)
कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥१॥ (885-8)
कोई है रे संतु सहज सुख अंतरि जा कउ जपु तपु देउ दलाली रे ॥ (969-1)
कोई होआ क्रम रतु कोई तीरथ नाइआ ॥ (684-8)
कोऊ ऊन न कोऊ पूरा ॥ (252-10)
कोऊ जागै हरि जनु ॥१॥ (380-7)
कोऊ तिआगै विरला ॥२॥ (380-8)
कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥ (292-1)
कोऊ बिखम गार तोरै ॥ (408-16)
कोऊ माई भूलिओ मनु समझावै ॥ (219-18)
कोऊ लागै साधू ॥३॥ (380-8)
कोऊ सुघरु न कोऊ मूरा ॥ (252-11)
कोऊ हरि समानि नही राजा ॥ (856-9)
कोऊ है मेरो साजनु मीतु ॥ (980-5)
कोए न बेली होइ तेरा सदा पछोतावहे ॥ (546-9)
कोकिल अ्मब परीति चवै सुहावीआ मन हरि रंगु कीजीऐ ॥ (455-4)
कोकिल अ्मबि सुहावी बोलै किउ दुखु अंकि सहीजै ॥ (1108-2)
कोकिल होवा अ्मबि बसा सहजि सबद बीचारु ॥ (157-4)
कोट कोटंतर के पाप जलि जाहि ॥ (1175-16)
कोट कोटंतर के पाप सभि खोवै हरि भवजलु पारि उतारा ॥१॥ रहाउ ॥ (720-3)

कोट कोटंतर तेरे पाप परहरी ॥२॥ (1134-7)
कोट कोटंतर पापा केरे एक घड़ी महि खोवै ॥ (438-3)
कोट गही के पाप निवारे ॥ (1051-16)
कोट न ओट न कोस न छोटा करत बिकार दोऊ कर झारहु ॥ (1388-3)
कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥२४॥ (1427-15)
कोटि अखारे चलित बिसमाद ॥ (1156-15)
कोटि अघा गए नास हरि इकु धिआइआ ॥ (710-2)
कोटि अघा मिटहि हरि नाम ॥१॥ (1144-16)
कोटि अघा सभि नास होहि सिमरत हरि नाउ ॥ (707-1)
कोटि अनंद जह हरि गुन गाही ॥१॥ (197-15)
कोटि अनंद राज सुखु भुगवै हरि सिमरत बिनसै सभ दुखु ॥१॥ रहाउ ॥ (717-16)
कोटि अपराध खंडन के दाते तुझ बिनु कउनु उधारे ॥१॥ रहाउ ॥ (714-18)
कोटि अप्राध इक खिन महि धोवै ॥ (1337-18)
कोटि अप्राध भरे भी तेरे चेरे राम ॥ (547-5)
कोटि अप्राध मिटहि खिन भीतरि ता का दुखु न रहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (979-6)
कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥ (296-5)
कोटि अप्राधी संतसंगि उधरै जमु ता कै नेड़ि न आवै ॥ (748-4)
कोटि आवध तिसु बेधत नाहि ॥२॥ (742-6)
कोटि इंद्र अनेक देवा जपत सुआमी जै जै कार ॥ (455-18)
कोटि इंद्र ठाढे है दुआर ॥ (1156-14)
कोटि उपारजना तेरै अंगि ॥ (1156-13)
कोटि उपाव चितवत है प्राणी ॥ (1139-16)
कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥ (266-1)
कोटि उसतति जा की करत ब्रहमंस ॥ (1156-18)
कोटि कमेर भरहि भंडार ॥ (1163-3)
कोटि करन दीजहि प्रभ प्रीतम हरि गुण सुणीअहि अबिनासी राम ॥ (781-1)
कोटि करम करतो नरकि जावै ॥५॥ (240-7)
कोटि करम करि देह न सोधा ॥ (1298-15)
कोटि करम करै हउ धारे ॥ (278-13)
कोटि करम जाप तप करै ॥ (238-6)
कोटि करम बंधन का मूलु ॥ (1149-3)
कोटि कलंक खिन महि मिटि जाहि ॥३॥ (184-14)
कोटि कलप के दूख बिनासन साचु द्रिड़ाइ निबेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (1232-16)
कोटि कला खेलै गोपाल ॥५॥ (1163-5)
कोटि कलेस मिटहि हरि नाइ ॥ (677-3)
कोटि कलेसा ऊपजहि नानक बिसरै नाउ ॥१॥ (522-9)
कोटि कोटंतर के पाप बिनासन हरि साचा मनि भाइआ ॥ (1234-1)

कोटि कोटि अघ काटनहारा ॥ (392-16)
कोटि कोटि के दोख सभ जन के हरि दूरि कीए इक पलफा ॥३॥ (1336-18)
कोटि कोटि कोटि लख धावै ॥ (562-9)
कोटि कोटि तेतीस धिआइओ हरि जपतिआ अंतु न पाइआ ॥ (995-16)
कोटि कोटि तेतीस धिआवहि ता का अंतु न पावहि पारे ॥ (882-10)
कोटि कोटि दोख बहु कीने सभ परहरि पासि धरे ॥१॥ रहाउ ॥ (975-4)
कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ॥ (14-10)
कोटि खते खिन बखसनहार ॥ (1148-9)
कोटि गिआनी कथहि गिआनु ॥ (1156-19)
कोटि गुणा तेरे गणे न जाहि ॥६॥ (1156-18)
कोटि ग्रहण पुंन फल मूचे ॥१॥ रहाउ ॥ (197-3)
कोटि चंद्रमे करहि चराक ॥ (1162-19)
कोटि छत्रपति करत नमसकार ॥ (1156-13)
कोटि जउ तीरथ करै तनु जउ हिवाले गारै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥२॥ (973-13)
कोटि जग जा कै दरबार ॥ (1163-5)
कोटि जतन उपाव मिथिआ कछु न आवै कामि ॥ (501-11)
कोटि जतन संतोखु न पाइआ ॥ (804-10)
कोटि जतना करि रहे गुर बिनु तरिओ न कोइ ॥२॥ (51-4)
कोटि जनम की त्रिसना निवरी राम रसाइणि आतम ध्राप ॥१॥ (821-4)
कोटि जनम की मलु लहि जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (195-6)
कोटि जनम के काटे फाहे ॥ (893-15)
कोटि जनम के किलबिख नासहि सिमरत पावन तन मन सुख ॥ (717-17)
कोटि जनम के किलबिख नासे हरि चरणी चितु लाए ॥२॥ (622-1)
कोटि जनम के किलविख खोइ ॥२॥ (199-1)
कोटि जनम के गए कलेस ॥ (1339-5)
कोटि जनम के दूख गवाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (720-16)
कोटि जनम के पाप लहे ॥३॥ (387-10)
कोटि जनम के बिनसे पाप ॥ (897-7)
कोटि जनम के रहे भवारे ॥ (387-4)
कोटि जनम के लहहि पातिक गोबिंद लोचा पूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (502-7)
कोटि जनम जोनि भ्रमिओ हारि परिओ दुआरि ॥१॥ (1307-4)
कोटि जनम दूख करि पाइओ ॥ (1301-8)
कोटि जनम भरमहि बहु जूना ॥१॥ रहाउ ॥ (195-10)
कोटि जनम भ्रमंत जोनी ते नाम सिमरत तारे ॥ (1278-8)
कोटि जनम भ्रमतौ बहु भांती थिति नही कतहू पाई ॥ (1224-2)
कोटि जनम भ्रमि आइआ पिआरे अनिक जोनि दुखु पाइ ॥ (640-18)
कोटि जनम भ्रमि भ्रमि भ्रमि आइओ ॥ (885-19)

कोटि जना करि सेव लगाइआ जीउ ॥ (216-15)
कोटि जना जा के पूजहि पैरा ॥ (98-10)
कोटि जाप ताप बिस्राम ॥ (890-17)
कोटि जाप ताप सुख पाए आइ मिले पूरन बडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ (1301-9)
कोटि जीअ जा की सिहजाइ ॥ (1156-13)
कोटि जीअ देवै आधार ॥४॥ (1156-16)
कोटि जोध उआ की बात न पुछीऐ तां दरगह भी मानिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1216-11)
कोटि जोरे लाख क्रोरे मनु न होरे ॥ (213-11)
कोटि तपीसर तप ही करते ॥ (1156-19)
कोटि तीरथ इसनानु करीजा ॥ (1349-2)
कोटि तीरथ जा के चरन मझार ॥ (1156-16)
कोटि तीरथ मजन इसनाना इसु कलि महि मैलु भरीजै ॥ (747-17)
कोटि तेतीस जाचहि प्रभ नाइक देदे तोटि नाही भंडार ॥ (504-2)
कोटि तेतीस सेवका सिध साधिक दरि खरिआ ॥ (42-19)
कोटि तेतीसा खोजहि ता कउ गुर मिलि हिरदै गावणिआ ॥२॥ (130-13)
कोटि तेतीसा देवते सणु इंद्रै जासी ॥ (1100-15)
कोटि दान इसनानं अनिक सोधन पवित्रतह ॥ (706-18)
कोटि दास जा कै दरबारे ॥ (739-11)
कोटि दिनस लाख सदा थिरु थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (239-3)
कोटि देवी जा कउ सेवहि लखिमी अनिक भाति ॥ (455-19)
कोटि धिआनी धरत धिआनु ॥ (1156-19)
कोटि नाम जा की कीमति नाहि ॥३॥ (1156-14)
कोटि पतित उधारे खिन महि करते बार न लागै रे ॥ (209-15)
कोटि पतित जा कै संगि उधार ॥ (863-18)
कोटि पतित होहि पुनीत ॥ (980-7)
कोटि परलउ ओपति निमख माहि ॥ (1156-18)
कोटि पराध अछादिओ इहु मनु कहणा कछू न जाई ॥ (609-8)
कोटि पराध खिन महि खउ भई है गुर मिलि हरि हरि कहिआ ॥१॥ (1213-15)
कोटि पराध महा अक्रितघन बहुरि बहुरि प्रभ सहीऐ ॥ (531-14)
कोटि पराध मिटहि जन सेवा हरि कीरतनु रसि गाईऐ ॥ (610-9)
कोटि पराध मिटे खिन भीतरि जां गुरमुखि नामु समारे ॥१॥ (670-12)
कोटि पराध मिटे तेरी सेवा दरसनि दूखु उतारिओ ॥ (529-12)
कोटि पराध मिटे हरि सेवा ॥१॥ (683-19)
कोटि पराध हमारे खंडहु अनिक बिधी समझावहु ॥ (674-3)
कोटि पराधी खिन महि तारै ॥१॥ (1298-7)
कोटि पवित्र जपत नाम चार ॥ (1156-16)
कोटि पुंन सुणि हरि की बाणी ॥ (238-14)

कोटि पूजा जा कै है धिआन ॥ (238-13)
कोटि पूजारी करते पूजा ॥ (1156-17)
कोटि पूरीअत है जा कै नाद ॥ (1156-15)
कोटि प्रगास न दिसै अंधेरा ॥ (892-7)
कोटि फला गुर ते बिधि जाणी ॥३॥ (238-14)
कोटि बार जाई बलिहार ॥१॥ (1152-7)
कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥ (522-3)
कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥ (524-3)
कोटि बिघन नही आवहि नेरि ॥ (888-4)
कोटि बिघन बिनसहि हरि सेवा निहचलु गोविद धाम ॥ (702-14)
कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा ॥१॥ (611-12)
कोटि बिघन सगले उठि नाठे दूखु न नेड़ै आइआ ॥ (784-2)
कोटि बिघन हिरे खिन माहि ॥ (195-17)
कोटि बिसथारनु अवरु न दूजा ॥५॥ (1156-17)
कोटि बिसन अवतार संकर जटाधार ॥ (455-16)
कोटि बिसन कीने अवतार ॥ (1156-10)
कोटि बैकुंठ जा की द्रिसटी माहि ॥ (1156-14)
कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी सरब जीआ का दाता रे ॥ (612-5)
कोटि ब्रहमंड जा के ध्रमसाल ॥ (1156-11)
कोटि ब्रहमे जगु साजण लाए ॥१॥ (1156-11)
कोटि भगत उधारु करी ॥ (986-17)
कोटि भगत बसत हरि संगि ॥२॥ (1156-13)
कोटि भव खंडे निमख खिआल ॥ (894-16)
कोटि मजन कीनो इसनान ॥ (202-4)
कोटि मजन जा कै सुणि नाम ॥ (238-13)
कोटि मधि एहु कीरतनु गावै ॥ (885-6)
कोटि मधे किनै गुरमुखि लहिओ ॥३॥ (241-10)
कोटि मधे किनै पछाणिआ हरि नामा सचु सोई ॥ (769-1)
कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥ (279-10)
कोटि मधे किसहि बुझाई ॥ (1262-6)
कोटि मधे किसहि बुझाए ॥ (1055-14)
कोटि मधे किसहि बुझाए तिनि राम नामि लिव लाई ॥३॥ (1260-8)
कोटि मधे को जनु आपारु ॥७॥ (905-1)
कोटि मधे को विरला दासु ॥ (1340-16)
कोटि मधे को विरला सेवकु होरि सगले बिउहारी ॥१॥ रहाउ ॥ (495-10)
कोटि मधे कोई विरला लेइ ॥ (1335-2)
कोटि मधे कोई संतु दिखाइआ ॥ (1348-11)

कोटि मधे कोऊ बिरला सेवकु पूरन भगतु चिरानो ॥१॥ रहाउ ॥ (1269-10)
कोटि मधे जनु पाईऐ भाई विरला कोई कोइ ॥ (609-2)
कोटि मनोरथ आवहि हाथ ॥ (1137-10)
कोटि महादेव अरु कबिलास ॥ (1162-18)
कोटि महिमा जा की निरमल हंस ॥ (1156-17)
कोटि महेस उपाइ समाए ॥ (1156-11)
कोटि माइआ जा कै सेवकाइ ॥ (1156-12)
कोटि मुनीसर मोनि महि रहते ॥७॥ (1157-1)
कोटि राज नाम धनु मेरै अम्रित द्रिसटि धारहु प्रभ मान ॥१॥ (716-11)
कोटि लाख राज सुख पाए इक निमख पेखि द्रिसटानां ॥ (1213-12)
कोटि लाख सरब को राजा जिसु हिरदै नामु तुमारा ॥ (1003-9)
कोटि सकति सिव आगिआकार ॥ (1156-15)
कोटि सांति अनंद पूरन जलत छाती बुझै ॥ रहाउ ॥ (1122-1)
कोटि सूख आनंद राज पाए मुख ते निमख बुलाई ॥३॥ (673-10)
कोटि सूर जा कै परगास ॥ (1162-17)
कोटिक पाप पुंन बहु हिरहि ॥ (1163-3)
कोटिक लखिमी करै सीगार ॥ (1163-3)
कोटी हू पीर वरजि रहाए जा मीरु सुणिआ धाइआ ॥ (417-18)
कोठरे महि कोठरी परम कोठी बीचारि ॥ (970-3)
कोठे मंडप माड़ीआ पासहु चितवीआहा ॥ (729-3)
कोठे मंडप माड़ीआ लगि पए गावारी ॥ (788-6)
कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥ (472-11)
कोने बैठे खाईऐ परगट होइ निदानि ॥१७॥ (1365-8)
कोमल बंधन बाधीआ नानक करमहि लेख ॥१॥ (928-3)
कोमल बाणी सभ कउ संतोखै ॥ (299-8)
कोरी को काहू मरमु न जानां ॥ (484-10)
कोरै रंगु कदे न चड़ै जे लोचै सभु कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (732-7)
कोलू चरखा चकी चकु ॥ (465-11)
कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥ (464-14)
क्रिआ कुंटि निराहार ॥ (1229-17)
क्रिआ विसेख पूजा करेइ ॥ (1169-9)
क्रिपा कटाख्य अवलोकनु कीनो दास का दूखु बिदारिओ ॥१॥ (681-17)
क्रिपा करंत गोबिंद गोपालह सगल्यं रोग खंडणह ॥ (1359-11)
क्रिपा करहि ता सतिगुरु मेलहि हरि हरि नामु धिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (757-11)
क्रिपा करहि ता हरि गुण गावह हरि रसु अंतरि पाई ॥ (607-13)
क्रिपा करहु गुरु मेलहु हरि जीउ पावउ मोख दुआरु ॥७॥ (1276-10)
क्रिपा करहु जिसु पुरख बिधाते सो सदा सदा तुधु धिआवै ॥१॥ (978-8)

क्रिपा करहु प्रभ करणैहारे तेरी बखस निराली ॥२॥ (748-16)
क्रिपा करहु मधसूदन माधउ मै खिनु खिनु साधू चरण पखईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (835-8)
क्रिपा करी जन अपुने ऊपर नामदेउ हरि गुन गाए ॥४॥१॥ (693-3)
क्रिपा करे जिसु आपणी धुरि पूरा करमु करेइ ॥ (959-6)
क्रिपा करे जिसु प्रानपति दाता सोई संतु गुण गावै ॥ (628-9)
क्रिपा करे जे आपणी ता हरि रखा उर धारि ॥१॥ (589-13)
क्रिपा करे ता मेलि मिलाए ॥ (1054-11)
क्रिपा करे प्रभ करम बिधाता ॥२॥ (159-14)
क्रिपा करे सतिगुरू मिलाए ॥ (1175-9)
क्रिपा क्रिपा करि गुरू मिलाए हम पाहन सबदि गुर तारे ॥१॥ रहाउ ॥ (981-2)
क्रिपा क्रिपा करि जगत पित सुआमी हम दासनि दास कीजै पनिहारी ॥१॥ रहाउ ॥ (1135-8)
क्रिपा क्रिपा करि ठाकुर मेरे हरि हरि हरि उर धारि ॥ (1261-1)
क्रिपा क्रिपा करि दीन प्रभ सरनी मो कउ हरि जन मेलि पिआरे ॥ (980-19)
क्रिपा क्रिपा करि दीन हम सारिंग इक बूंद नामु मुखि दीजै ॥४॥ (1323-14)
क्रिपा क्रिपा करि भगति द्रिड़ाए जन पीछै जगु निसतारे ॥७॥ (982-13)
क्रिपा क्रिपा करि साधु मिलावहु जगु थमन कउ थमु दीजै ॥१॥ (1324-14)
क्रिपा क्रिपा किरपा करि पिआरे गुर सबदी हरि रसु पीजै ॥२॥ (1323-11)
क्रिपा क्रिपा क्रिपा करि हरि जीउ करि किरपा नामि लगावैगो ॥ (1309-1)
क्रिपा क्रिपा धारि जगजीवन रखि लेवहु सरनि परे ॥ (975-8)
क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नाइ वासा ॥४॥३॥ (13-7)
क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नामि वासा ॥४॥१॥७॥९॥ (663-10)
क्रिपा निधान की सरनी पए ॥३॥ (202-2)
क्रिपा निधान गुण नाइक ठाकुर सुख समूह सभ नाथे ॥ (1212-18)
क्रिपा निधान दइआल बखसंद ॥ (283-19)
क्रिपा निधान दइआल मोहि दीजै करि संतन का चेरा ॥ रहाउ ॥ (533-9)
क्रिपा निधान दीन दइआला ॥ (1080-8)
क्रिपा निधान नानक कउ करहु दाति ॥ (740-4)
क्रिपा निधान नानक दइआल ॥ (1236-13)
क्रिपा निधान निरंजन देउ ॥३॥ (863-19)
क्रिपा निधान प्रीतम प्रभ मेरे ॥ (898-15)
क्रिपा निधान रंग रूप रस नामु नानक लै लाहिओ ॥२॥७॥२६॥ (1303-4)
क्रिपा निधान सूख के सागर जसु सभ महि जा को छाइओ ॥ (1217-7)
क्रिपा निधि गोबिंद पूरन जीअ दानु सभ देहु ॥१॥ (1226-8)
क्रिपा निधि छोडि आन कउ पूजहि आतम घाती हरते ॥१॥ (1267-4)
क्रिपा निधि बसहु रिदै हरि नीत ॥ (712-18)
क्रिपा सिंधु करुणा प्रभ धारहु हरि प्रेम भगति को नेंह ॥१॥ रहाउ ॥ (702-2)
क्रिपा सिंधु सेवि सचु पाईऐ दोवै सुहेले लोक ॥१॥ (682-17)

क्रिपाल दइआ मइआ धारि ॥ (1305-18)
क्रिपाल दइआल गुपाल नानक हरि रसना गुन गाइ ॥२॥२॥४१॥ (1306-10)
क्रिपाल दइआल गोपाल गोबिद जो जपै तिसु सीधि ॥ (1006-17)
क्रिपाल दइआल रसाल गुण निधि करि दइआ सेवा लाईऐ ॥ (456-10)
क्रिसनु बलभद्रु गुर पग लगि धिआवै ॥ (165-6)
क्रिस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना ॥१॥ (693-17)
क्रूर दिसटि रता निसि बादं ॥१॥ रहाउ ॥ (1351-13)
क्रोध कटोरी मोहि भरी पीलावा अहंकारु ॥ (553-2)
क्रोधु खंडि परचंडि लोभु अपमान सिउ झाड़्यउ ॥ (1406-11)
क्रोधु निवारि जले हउ ममता प्रेमु सदा नउ रंगी ॥ (1232-17)
क्रोधु प्रधानु महा बड दुंदर तह मनु मावासी राजा ॥२॥ (1161-16)
क्रोधु बिनासै सगल विकारी ॥ (225-19)
खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी ॥२॥ (658-5)
खंड दीप सभ भीतरि रविआ पूरि रहिओ सभ लोऊ ॥१॥ रहाउ ॥ (535-1)
खंड दीप सभि लोआ ॥ (1003-18)
खंड पताल असंख मै गणत न होई ॥ (1283-14)
खंड पताल दीप सभि लोआ ॥ (1076-1)
खंड पताल सपत नही सागर नदी न नीरु वहाइदा ॥२॥ (1035-11)
खंड ब्रहमंड उधारणहारा ॥ (1072-4)
खंड ब्रहमंड का एको ठाणा गुरि परदा खोलि दिखाइओ ॥ (205-10)
खंड ब्रहमंड त्रै गुण नाचे जिन लागी हरि लिव तुमारी ॥ (506-10)
खंड ब्रहमंड पाताल अरंभे गुपतहु परगटी आइदा ॥१५॥ (1036-8)
खंड ब्रहमंड पाताल दीप रविआ सभ लोई ॥ (706-3)
खंड ब्रहमंड बेअंत उधारणहारिआ ॥ (963-10)
खंड ब्रहमंड महि सिंङी मेरा बटूआ सभु जगु भसमाधारी ॥ (334-18)
खंड ब्रहमंड रहिआ लिव लाए ॥१८॥ (840-15)
खंडणं कलि कलेसह प्रभ सिमरि नानक नह दूरणह ॥१॥ (706-9)
खंडल मंडल मंडल मंडा ॥ (1162-10)
खंडि वरभंडि हरि सोभा होई इहु दानु न रलै रलाइआ ॥ (79-2)
खंडित निद्रा अलप अहारं नानक ततु बीचारो ॥८॥ (939-4)
खंडी ब्रहमंडी पाताली पुरीई त्रिभवण ताड़ी लाई हे ॥१०॥ (1023-3)
खंडे धार गली अति भीड़ी ॥ (1028-7)
खंनली धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु ॥ (651-2)
खंना सगल रेनु छारी ॥ (628-13)
खंनिअहु तिखी बहुतु पिईणी ॥ (794-15)
खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥ (918-19)
खंनीऐ वंञा दरसन तेरे ॥ (1117-11)

खउखट अउ भउरानद गाए ॥ (1430-6)
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥ (345-13)
खखड़ीआ सुहावीआ लगड़ीआ अक कंठि ॥ (319-13)
खखा इहै खोड़ि मन आवा ॥ (340-10)
खखा खरा सराहउ ताहू ॥ (260-10)
खखा खिरत खपत गए केते ॥ (342-18)
खखा खूना कछु नही तिसु सम्रथ कै पाहि ॥ (253-16)
खखा खोजि परै जउ कोई ॥ (342-13)
खखै खुंदकारु साह आलमु करि खरीदि जिनि खरचु दीआ ॥ (432-15)
खग तन मीन तन म्रिग तन बराह तन साधू संगि उधारे ॥१॥ रहाउ ॥ (1269-3)
खट करम किरिआ करि बहु बहु बिसथार सिध साधिक जोगीआ करि जट जटा जट जाट ॥ (1297-9)
खट तुरसी मुखि बोलणा मारण नाद कीए ॥ (16-12)
खट दरसन संसे परे अरु चउरासीह सिध ॥२०२॥ (1375-8)
खट नेम करि कोठड़ी बांधी बसतु अनूपु बीच पाई ॥ (339-10)
खट लख्यण पूरनं पुरखह नानक नाम साध स्वजनह ॥४०॥ (1357-12)
खट सासत्र ऊचौ कहहि अंतु न पारावार ॥ (297-18)
खट सासत्र सिम्रिति वखिआन ॥ (265-10)
खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥ (1124-14)
खटु करम जुगति धिआनु धरउ ॥ (1119-9)
खटु करम नामु निरंजनु सोई ॥ (1343-9)
खटु करम सहित रहता ॥३॥ (873-11)
खटु करमा अरु आसणु धोती ॥ (888-2)
खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइ ॥ (70-15)
खटु दरसन कै भेखि किसै सचि समावणा ॥ (148-3)
खटु दरसन जोगी संनिआसी बिनु गुर भरमि भुलाए ॥ (67-16)
खटु दरसन भ्रमते फिरहि नह मिलीऐ भेखं ॥ (1099-1)
खटु दरसनु वरतै वरतारा ॥ (360-19)
खटु भी एका बात वखानहि ॥ (886-4)
खटु मटु देही मनु बैरागी ॥ (903-18)
खटु सासत बिचरत मुखि गिआना ॥ (98-3)
खटु सासत्र उचरत रसनागर तीरथ गवन न थोरी ॥ (1216-4)
खटु सासत्र मूरखै सुनाइआ ॥ (1137-1)
खड़ा पुकारे पातणी बेड़ा कपर वाति ॥८५॥ (1382-8)
खड़ि दरगह पैनाईऐ मुखि हरि नाम निवासु ॥३॥ (21-4)
खड़ु पकी कुड़ि भजै बिनसै आइ चलै किआ माणु ॥ (76-6)
खतिअहु जमे खते करनि त खतिआ विचि पाहि ॥ (149-2)
खत्री करम करे सूरतणु पावै ॥ (164-2)

खत्री ब्राहमण पिठि दे छोडे हरि नामदेउ लीआ मुखि लाइ ॥३॥ (733-10)
खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥ (747-19)
खत्री ब्राहमण सूद वैस सभ एकै नामि तरानथ ॥ (1001-12)
खत्री ब्राहमणु सूदु कि वैसु ॥ (878-11)
खत्री ब्राहमणु सूदु बैसु उधरै सिमरि चंडाल ॥ (300-13)
खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु को जापै हरि मंत्रु जपैनी ॥ (800-5)
खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥ (469-14)
खत्री सो जु करमा का सूरु ॥ (1411-17)
खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥ (663-1)
खबरि करतु है पात पत डाली ॥२॥ (385-8)
खबरि न करहि दीन के बउरे ता ते जनमु अलेखै ॥१॥ रहाउ ॥ (483-6)
खबरि भई संसारि आए त्रै लोआ ॥ (1116-11)
खर का पैखरु तउ छुटै जउ ऊपरि लादा ॥१॥ रहाउ ॥ (815-13)
खर बाहनु उहु छारु उडावै ॥१॥ (874-13)
खरचु खजाना नाम धनु इआ भगतन की रासि ॥ (253-17)
खरचु खरा धनु धिआनु तू आपे वसहि सरीरि ॥ (937-7)
खरचु बंनु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु ॥ (595-14)
खरचे दिति खसम दी आप खहदी खैरि दबटीऐ ॥ (967-2)
खरा खरा आखै सभु कोइ ॥ (932-5)
खरा खरा आखै सभु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (662-11)
खरा दिलासा गुरि दीआ आइ मिले भगवंत ॥ (261-9)
खरा निमाना होत परानी ॥ (260-10)
खरा रतनु जुग चारे होइ ॥ (932-5)
खरा सिआणा बहुता भारु ॥ (24-17)
खरी कुआलिओ कुरूपि कुलखणी सुपनै पिरु नही पावणिआ ॥६॥ (127-4)
खरी क्रिपा ठाकुर भई अनद सूख बिस्राम ॥ (261-8)
खरी सिआणी कंत न भाणी ॥ (750-16)
खरे खजानै पाईअहि खोटे सटीअहि बाहर वारि ॥ (143-14)
खरे खरोए बैठत ऊठत मारगि पंथि धिआवैगो ॥ (1309-17)
खरे परखि खजानै पाइहि खोटे भरमि भुलावणिआ ॥६॥ (119-1)
खरे परखि खजानै पाईअनि खोटिआ नाही थाउ ॥ (1092-18)
खल मुगध मूड़ कटाख्य स्रीधर भए गुण मति धीर ॥६॥ (508-10)
खल मूरख ते पंडितु करिबो पंडित ते मुगधारी ॥३॥ (1252-6)
खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखा सूतु धोती कीन्ही ॥ (358-17)
खसट राग उनि गाए संगि रागनी तीस ॥ (1430-19)
खसटम मेघ राग वै गावहि ॥ (1430-15)
खसटमि खट सासत्र कहहि सिम्रिति कथहि अनेक ॥ (297-19)

खसटी खटु दरसन प्रभ साजे ॥ (839-13)
खसम की नदरि दिलहि पसिंदे जिनी करि एकु धिआइआ ॥३॥ (24-5)
खसम पछाणै सो दिनु परवाणु ॥२॥ (350-1)
खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥ (74-17)
खसमहि जाणि खिमा करि रहै ॥ (340-10)
खसमहु घुथीआ फिरहि निमाणीआ ॥ (72-4)
खसमहु पूरा पाइ मनहु रहसिआ ॥ (148-19)
खसमि दुहागनि तजि अउहेरी ॥ (872-13)
खसमि मिटी फिरि भानी ॥ (1286-10)
खसमि मिलिऐ सुखु पाइआ कीमति कहणु न जाई ॥१॥ (1011-10)
खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥ (470-10)
खसमु तूहै सभना के राइआ ॥२॥ (1141-18)
खसमु धिआई इक मनि इक भाइ ॥ (1183-12)
खसमु पछाणहि आपणा तनु मनु आगै देइ ॥ (38-7)
खसमु पछाणै आपणा खूलै बंधु न पाइ ॥ (937-6)
खसमु पछानि तरस करि जीअ महि मारि मणी करि फीकी ॥ (480-7)
खसमु बिसारि आन कमि लागहि ॥ (195-2)
खसमु बिसारि माटी संगि रूले ॥४॥३॥ (792-19)
खसमु मरै तउ नारि न रोवै ॥ (871-14)
खसमु वडा दातारु है जो इछे सो फल पाइ ॥ (1283-11)
खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ (10-1)
खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ (349-11)
खसमु विसारि कीए रस भोग ॥ (1256-15)
खसमु विसारि खुआरी कीनी ध्रिगु जीवणु नही रहणा ॥१॥ (1254-4)
खसमु विसारि दुनी चितु लाइआ ॥ (1007-17)
खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ ॥ (474-17)
खसमै का महलु कदे न पावै ॥ (363-7)
खसमै कै दरबारि ढाढी वसिआ ॥ (148-18)
खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे ॥ (360-16)
खसमै भावै ओहा चंगी जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ (1286-11)
खसमै भावै ओहो चंगा जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ (1286-14)
खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥ (471-14)
खसमै मूलि न भावै ॥ (1286-13)
खांदिआ खांदिआ मुहु घठा पैनंदिआ सभु अंगु ॥ (523-3)
खाइ खरचि देवहि बहुतेरा हरि देदे तोटि न आवैगो ॥७॥ (1311-5)
खाइ खरचि मनु रहिआ अघाइ ॥२॥ (375-15)
खाइ खाइ करे बदफैली जाणु विसू की वाड़ी जीउ ॥२॥ (105-9)

खाइआ मैलु वधाइआ पैधै घर की हाणि ॥ (1331-3)
खाई कोटु न परल पगारा ॥ (1161-12)
खाक नूर करदं आलम दुनीआइ ॥ (723-13)
खाकु लोड़ेदा तंनि खे जो रते दीदार ॥२॥ (1098-4)
खाकु संतन की देहु पिआरे ॥ (98-17)
खाकू खाकु रलै सभु फैलु ॥ (832-4)
खाजै पैझै रली करीजै ॥ (1027-10)
खाट मांगउ चउपाई ॥ (656-15)
खाटण कउ हरि हरि रोजगारु ॥ (676-14)
खाटि खजाना गुण निधि हरे नानक नामु धिआइ ॥६॥ (298-3)
खाटि लाभु गोबिंद हरि रसु पारब्रहम इक रंग ॥१॥ (405-12)
खाण जीवण की बहुती आस ॥ (354-9)
खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु स्मबाहि ॥ (472-19)
खाणा पीणा सम करि सहणा भाणै ता कै हुकमु पइआ ॥३१॥ (434-6)
खाणा पीणा हसणा बादि ॥ (351-7)
खाणा पीणा हसणा सउणा विसरि गइआ है मरणा ॥ (1254-4)
खाणा सबदु चंगिआईआ जितु खाधै सदा त्रिपति होइ ॥ (1092-9)
खाणी चारे बाणी भेदा ॥ (839-8)
खाणी न बाणी पउण न पाणी ॥ (1035-11)
खाणी बाणी गगन पताली जंता जोति तुमारी ॥ (1013-14)
खाणी बाणी तुझहि समाणी ॥ (1021-6)
खाणी बाणी तेरीआ देहि जीआ आधारो ॥ (580-10)
खाणी बाणी सरब निवासी सभना कै मनि भावणिआ ॥३॥ (130-15)
खात खरचत किछु निखुटत नाही अगनत भरे भंडारे ॥ (1220-2)
खात खरचत किछु निखुटत नाही राम रतनु धनु खाटिओ ॥१॥ (714-5)
खात खरचत निबहत रहै गुर सबदु अखूट ॥ (816-14)
खात खरचत बिलछत देवन कउ ॥१॥ रहाउ ॥ (390-2)
खात खरचत बिलछत रहे टूटि न जाहि भंडार ॥ (253-15)
खात खरचत बिलछत सुखु पाइआ करते की दाति सवाई राम ॥ (784-1)
खात खरचत सुखि अनदि विहावै ॥३॥ (743-7)
खात खरचि कछु तोटि न आवै अंतु नही हरि पारावारु ॥१॥ रहाउ ॥ (893-18)
खात पीअंत मूए नही जानिआ ॥ (932-6)
खात पीत अनेक बिंजन जैसे भार बाहक खोत ॥ (1121-13)
खात पीत खेलत हसत बिसथार ॥ (188-7)
खात पीत खेलत हसत भरमे जनम अनेक ॥ (261-6)
खात पीत बरतै अनद उलासि ॥ (268-9)
खात पीवत सवंत सुखीआ नामु सिमरत खीन ॥ (1225-5)

खात पीवत हसत सोवत अउध बिती असार ॥ (1229-3)
खादा पैनदा मूकरि पाइ ॥ (195-9)
खाधा होइ सुआह भी खाणे सिउ दोसती ॥ (146-1)
खाधै खरचिऐ तोटि न आवई सदा सदा ओहु देइ ॥ (555-15)
खान पान आन नही खुधिआ ता कै चिति न बसा ॥ रहाउ ॥ (672-10)
खान पान मीठ रस भोजन अंत की बार होत कत खारी ॥ (1388-9)
खान पान सीगार बिरथे हरि कंत बिनु किउ जीजीऐ ॥ (543-1)
खान पान सोधे सुख भुंचत संकट काटि बिपति हरी ॥ (1387-12)
खान मलूक कहाइदे को रहणु न पाई ॥ (1246-12)
खानु मलूकु कहावउ राजा ॥ (225-13)
खार समुद्रु ढंढोलीऐ इकु मणीआ पावै ॥ (1012-10)
खालक कउ आदेसु ढाढी गावणा ॥ (148-4)
खालक थावहु भुला मुठा ॥ (1020-5)
खालकु यादि दिलै महि मउला ॥ (1084-2)
खालकु रवि रहिआ सरब ठाई ॥१॥ रहाउ ॥ (897-1)
खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब ठांई ॥१॥ रहाउ ॥ (1350-1)
खाली चले धणी सिउ टिबे जिउ मीहाहु ॥१०५॥ (1383-13)
खावना जितु भूख न लागै संतोखि सदा त्रिपतीवना ॥२॥ (1019-2)
खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥ (186-2)
खावहु खरचहु तोटि न आवै हलत पलत कै संगे ॥ (496-2)
खावहु भुंचहु सभि गुरमुखि छुटई ॥ (1363-4)
खावै दूख भूख साचे की साचे ही त्रिपतासि रहै ॥ (945-12)
खावै भोगै सुणि सुणि देखै पहिरि दिखावै काल घरे ॥ (1014-3)
खिंचिआ सूतु त आई थाइ ॥३॥ (886-8)
खिंचोताणि करहि बेताले ॥ (1031-14)
खिंचोताणि विगुचीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ॥ (756-6)
खिंचोताणि विगुचीऐ बुरा भला दुइ नालि जीउ ॥ (751-12)
खिंथा इहु तनु सीअउ अपना नामु करउ आधारु रे ॥१॥ (970-15)
खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥ (6-16)
खिंथा गिआन धिआन करि सूई सबदु तागा मथि घालै ॥ (477-10)
खिंथा जलि कोइला भई तागे आंच न लाग ॥४७॥ (1366-18)
खिंथा झोली बहु भेख करे दुरमति अहंकारी ॥ (1243-3)
खिंथा झोली भरिपुरि रहिआ नानक तारै एकु हरी ॥ (939-7)
खिजमति करी जनु बंदा तेरा ॥३॥ (990-18)
खिड़की ऊपरि दसवा दुआरु ॥ (1159-18)
खिन खोवै पाप कोटान ॥ (1337-11)
खिन भंगुना कै मानि माते असुर जाणहि नाही ॥१॥ रहाउ ॥ (408-7)

खिन महि अवरु खिनै महि अवरा अचरज चलत तुमारे ॥ (613-19)
खिन महि उपजै खिनि खपै खिनु आवै खिनु जाइ ॥ (58-19)
खिन महि ऊणे सुभर भरिआ ॥ (1142-18)
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥ (135-6)
खिन महि करे निहालु ऊणे सुभर भरि ॥ (519-13)
खिन महि छोडि जाइ बिखिआ रसु तउ लागै पछुताप ॥१॥ (1200-12)
खिन महि झूठु सभु बिनसि जाइ जिउ टिकै न बिरख की छाउ ॥ (786-4)
खिन महि ढाहे फेरि उसारे ॥ (1034-19)
खिन महि थापि उथापदा तिसु बिनु नही कोई ॥ (706-3)
खिन महि थापि उथापनहार ॥ (1144-19)
खिन महि थापि उथापनहारा ॥ (1074-7)
खिन महि थापि उथापनहारा ॥ (108-12)
खिन महि थापि उथापनहारा ॥ (276-19)
खिन महि थापि उथापनहारा ॥ (896-11)
खिन महि थापि उथापनहारा आपन हाथि मतात ॥१॥ (496-10)
खिन महि थापि उथापनहारा कीमति जाइ न करी ॥ (499-13)
खिन महि थापि उथापनहारा तिस ते तुझहि डरावउ रे ॥१॥ रहाउ ॥ (404-6)
खिन महि थापि उथापनहारा सोई तेरा सहाई हे ॥२॥ (1071-12)
खिन महि थापि उथापनहारे कुदरति कीम न पही ॥२॥७॥ (529-17)
खिन महि थापि उथापे कुदरति सभि करते के कारना ॥२॥ (915-5)
खिन महि थापि निवाजे ठाकुर नीच कीट ते करहि राजंगा ॥१॥ (824-11)
खिन महि दूरि कीए दइआला ॥२॥ (742-18)
खिन महि निथावे कउ दीनो थानु ॥ (1142-19)
खिन महि निमाणे कउ दीनो मानु ॥३॥ (1142-19)
खिन महि नीच कीट कउ राज ॥ (277-9)
खिन महि प्रगट होहि संसार ॥३॥ (194-4)
खिन महि बिनसि जाइ अहंकारी ॥४॥१॥९॥६०॥ (337-2)
खिन महि बिनसि जाइ परतापै डंडु धरम राइ का लागा ॥२॥ (985-10)
खिन महि बिनसिओ महा परेतु ॥ (1149-9)
खिन महि बिनसै करत न लागै बारा ॥२॥ (1128-10)
खिन महि बिनसै सभु झूठु मेरे मन धिआइ रामा ॥ रहाउ ॥ (723-10)
खिन महि भैआन रूपु निकसिआ थम्ह उपाड़ि ॥ (1133-8)
खिन महि मारि पछाड़सी भाइ दूजै ठागे ॥ (1090-12)
खिन महि मूए जा सबदु पछानिआ ॥ (932-6)
खिन महि राखि लीओ जनु अपुना गुर पूरै बेड़ी काटी ॥१॥ (630-15)
खिन महि राम नामि किलविख काटे भए पवितु सरीरा ॥ (245-18)
खिन महि वेस करहि नटूआ जिउ मोह पाप महि गलतु गइआ ॥ (906-14)

खिन महि साजि सवारणहारा ॥१॥ (212-8)
खिन महि साजि सवारि बिनाहै भगति वछल गुणतासा ॥१॥ (1211-18)
खिन महि सूके कीने हरिआ ॥ (1142-19)
खिन महि हसै खिन महि रोवै ॥ (1058-1)
खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥ (278-11)
खिन माहि थापि उथापदा आचरज तेरे रूप ॥ (724-11)
खिन माहि सगला दूखु मिटिआ मनहु चिंदिआ पाइआ ॥ (247-15)
खिनहूं किरपा साधू संग नानक हरि रंगु लाइओ ॥२॥५॥१५६॥ (409-5)
खिनहूं जोग ताप बहु पूजा खिनहूं भरमाइओ ॥ (409-5)
खिनहूं भै निरभै खिनहूं खिनहूं उठि धाइओ ॥ (409-4)
खिनहूं रस भोगन खिनहूं खिनहू तजि जाइओ ॥१॥ (409-4)
खिनु आवै खिनु जावै दुरगंध मड़ै चितु लाइआ राम ॥ (442-10)
खिनु किंचित क्रिपा करी जगदीसरि तब हरि हरि हरि जसु धिआइओ ॥ (719-9)
खिनु खिनु नरु नाराइनु गावहि मुखि बोलहि नर नरहरे ॥ (975-6)
खिनु खिनु नामु देइ वडिआई सतिगुर उपदेसि समावैगो ॥४॥ (1309-5)
खिनु खिनु नामु समालीऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥ (29-18)
खिनु खिनु भगति करह दिनु राती गुरमति भगति ओमाहा राम ॥१॥ (699-4)
खिनु खिनु राम नामु गावाहा ॥ (699-2)
खिनु ग्रिह महि बसन न देवही जिन सिउ सोई हेतु ॥ (706-16)
खिनु तिलु रहि न सकै पलु जल बिनु मरनु जीवनु तिसु तांई ॥४॥ (1273-10)
खिनु नाहि टरीऐ प्रीति हरीऐ सीगार हभि रस अरपीऐ ॥ (454-16)
खिनु पलु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मरां माइ ॥ (1248-12)
खिनु पलु घड़ी नही प्रभु जानिआ जिनि इहु जगतु उपाइआ ॥१॥ (1126-11)
खिनु पलु चसा नामु नही सिमरिओ दीना नाथ प्रानपति सारी ॥ (1388-9)
खिनु पलु नामु रिदै वसै भाई नानक मिलणु सुभाइ ॥१०॥४॥ (637-10)
खिनु पलु नीद न सोवई जाणै दूरि हजूरि ॥ (60-7)
खिनु पलु बाजी देखीऐ उझरत नही बारा ॥४॥ (422-12)
खिनु पलु बिसरु नही मेरे करते इहु नानकु मांगै दानु ॥२॥९०॥११३॥ (1226-5)
खिनु पलु रहि न सकउ बिनु नावै गुरमुखि हरि हरि पाठ पड़ईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (833-8)
खिनु पलु रहि न सकउ बिनु सेवा मै गुरमति नामु सम्हारे ॥१॥ रहाउ ॥ (980-10)
खिनु पलु रहि न सकै जीउ बिनु हरि पिआरे ॥ (243-15)
खिनु पलु हरि नामु मनि वसै सभ अठसठि तीरथ नाइ ॥ (87-8)
खिनु पलु हरि प्रभु रिदै न वसिओ रिनि बाधे बहु बिधि बाल ॥२॥ (1335-16)
खिनु पूरबि खिनु पछमि छाए जिउ चकु कुम्हिआरि भवाइआ ॥ (442-11)
खिनु रम गुर गम हरि दम नह जम हरि कंठि नानक उरि हारी रे ॥२॥५॥१३४॥ (404-16)
खिनु रहनु न पावउ बिनु पग पागे ॥ (738-1)
खिमा गरीबी अनद सहज जपत रहहि गुणतास ॥ (253-17)

खिमा गहहु सतिगुर सरणाई ॥ (1030-11)
खिमा गही ब्रतु सील संतोखं ॥ (223-15)
खिमा गही मनु सतगुरि दीआ ॥ (932-5)
खिमा गही सचु संचिओ खाइओ अम्रितु नाम ॥ (261-8)
खिमा धीरजु करि गऊ लवेरी सहजे बछरा खीरु पीऐ ॥ (1329-9)
खिमा विहूणे खपि गए खूहणि लख असंख ॥ (937-5)
खिमा सीगार करे प्रभ खुसीआ मनि दीपक गुर गिआनु बलईआ ॥ (836-7)
खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै रावै लाल पिआरी ॥१॥ (359-8)
खिरत खपत अजहूं नह चेते ॥ (342-19)
खिलखाना बिरादर हमू जंजाला ॥ (1084-3)
खिसरि गइओ भूम परि डारिओ ॥२॥ (389-11)
खिसै जोबनु बधै जरूआ दिन निहारे संगि मीचु ॥ (458-3)
खीन खराबु होवै नित कंधु ॥ (354-9)
खीन भए सभि तसकरा गुरमुखि जनु जागै ॥१॥ रहाउ ॥ (399-9)
खीर अधारि बारिकु जब होता बिनु खीरै रहनु न जाई ॥ (1266-10)
खीर संगि बारिकु है लीना प्रभ संत ऐसे हितकारी ॥२॥ (613-7)
खीर समानि सागु मै पाइआ गुन गावत रैनि बिहानी ॥ (1105-3)
खीरु पीऐ खेलाईऐ वणजारिआ मित्रा मात पिता सुत हेतु ॥ (75-12)
खीलै बिगसै तेतो सोग ॥ (1187-13)
खुंढा अंदरि रखि कै देनि सु मल सजाइ ॥ (143-1)
खुदाइ एकु बुझि देवहु बांगां बुरगू बरखुरदार खरा ॥१०॥ (1084-6)
खुदि खसम खलक जहान अलह मिहरवान खुदाइ ॥ (724-12)
खुदि खुदाइ वड बेसुमार ॥१॥ (896-19)
खुदी मिटी चूका भोलावा गुरि मन ही महि प्रगटाइआ जीउ ॥३॥ (104-2)
खुदी मिटी तब सुख भए मन तन भए अरोग ॥ (260-9)
खुधिआ त्रिसना निंदा बुरी कामु क्रोधु विकरालु ॥ (1279-2)
खुधिआ दुसट जलै दुखु आगै ॥ (879-12)
खुधिआवंतु न जाणई लाज कुलाज कुबोलु ॥ (317-4)
खुभड़ी कुथाइ मिठी गलणि कुमंत्रीआ ॥ (1425-15)
खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥ (360-12)
खुलिआ करमु क्रिपा भई ठाकुर कीरतनु हरि हरि गाई ॥ (1000-7)
खुले भ्रम भीति मिले गोपाला हीरै बेधे हीर ॥ (979-1)
खुल्हड़े कपाट नानक सतिगुर भेटते ॥१॥ (80-13)
खुल्हिओ करमु भइओ परगासा घटि घटि हरि हरि डीठा ॥१॥ रहाउ ॥ (1212-14)
खुल्हे हट होआ वापारु ॥ (789-14)
खुसरै किउ न परम गति पाई ॥३॥ (324-7)
खुसि खुसि लैदा वसतु पराई ॥ (1020-2)

खुसी खुआर भए रस भोगण फोकट करम विकार करे ॥ (1014-9)
खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुंगू पाइ वे लालो ॥१॥ (723-1)
खूबु खूबु खूबु खूबु खूबु तेरो नामु ॥ (1137-19)
खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥ (727-17)
खूली गंठि उठो लिखिआ आइआ राम ॥ (1110-14)
खूले कपट धपट बुझि त्रिसना जीवउ पेखि दरसारी ॥१॥ (1120-4)
खूल्हे बंधन मुकति गुरि कीनी सभ तूहै तुही दिखा ॥१॥ (1212-7)
खेचर भूचर तुलसी माला गुर परसादी पाइआ ॥ (973-8)
खेति मिआला उचीआ घरु उचा निरणउ ॥ (517-3)
खेति मेरै जमिआ निखुटि न कबहू जाइ ॥३॥ (1002-13)
खेति सरीरि जो बीजीऐ सो अंति खलोआ आइ ॥ (1417-19)
खेती जमी अगली मनूआ रजा सहजि सुभाइ ॥ (35-7)
खेती जिन की उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ ॥ (1245-3)
खेती वणजु नावै की ओट ॥ (152-11)
खेती वणजु सभु हुकमु है हुकमे मंनि वडिआई राम ॥ (569-1)
खेतु खसम का राखा उठि जाए ॥ (179-10)
खेतु जु मांडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ ॥१॥ (1105-5)
खेतु पछाणै बीजै दानु ॥ (1411-18)
खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥ (463-3)
खेद मिटे साधू मिलत सतिगुर बचन समाइ ॥ (261-7)
खेदु करहि अरु बहुतु संतावहि आइओ सरनि तुहारे ॥१॥ (205-19)
खेदु न दूखु न डानु तिह जा कउ नदरि करी ॥ (253-19)
खेदु न पाइओ नह फुनि रोज ॥ (899-4)
खेदु भइओ बेगारी निआई घर कै कामि न आइआ ॥३॥ (712-16)
खेप निबाही बहुतु लाभ घरि आए पतिवंत ॥ (261-9)
खेम कुसल भइआ इसनाना ॥ (624-2)
खेम कुसल सहज आनंद ॥ (295-6)
खेम भइआ कुसल घरि आए ॥ (201-18)
खेम सांति रिधि नव निधि ॥ (295-19)
खेमे छत्र सराइचे दिसनि रथ पीड़े ॥ (989-5)
खेलत खेलत आइओ अनिक जोनि दुख पाइ ॥ (261-7)
खेलत खेलत हाल करि जो किछु होइ त होइ ॥२३९॥ (1377-10)
खेलहि बिगसहि अनद सिउ जा कउ होत क्रिपाल ॥ (253-18)
खेलि खिलाइ लाड लाडावै सदा सदा अनदाई ॥ (1213-18)
खेलि गए से पंखणूं जो चुगदे सर तलि ॥ (60-11)
खेलु गूड़्हउ कीअउ हरि राइ संतोखि समाचरि्यओ बिमल बुधि सतिगुरि समाणउ ॥ (1407-8)
खेलु तमासा धुंधूकारे ॥ (1023-2)

खेलु देखि मनि अनदु भइआ सहु वीआहण आइआ ॥१॥ (351-13)
खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥७॥ (292-2)
खेलै बिगसै अंतरजामी ॥ (277-5)
खेहू खेह रलाईऐ छोडि चलै घर बारु ॥५॥ (63-17)
खेहू खेह रलाईऐ ता जीउ केहा होइ ॥ (17-8)
खेहू खेह रलै तनु छीजै ॥ (1029-13)
खोइ खहड़ा भरमु मन का सतिगुर सरणी जाइ ॥ (1002-11)
खोइओ मूलु लाभु कह पावसि दुरमति गिआन विहूणे ॥ (1126-15)
खोए पाप भए सभि पावन जन नानक सुखि घरि आइआ ॥४॥३॥५३॥ (622-4)
खोजंती दरसनु फिरत कब मिलीऐ गुणतास जीउ ॥ (928-16)
खोज असंखा अनिक तपंथा बिनु गुर नही पहूचा ॥ (534-18)
खोज बूझि जउ करै बीचारा ॥ (342-14)
खोजउ ता के चरण कहहु कत पाईऐ ॥ (1362-16)
खोजत खोजत अम्रितु पीआ ॥ (932-4)
खोजत खोजत इहै बीचारिओ सरब सुखा हरि नामा ॥ (1206-1)
खोजत खोजत खोजि बीचारिओ ततु नानक इहु जाना रे ॥ (404-3)
खोजत खोजत खोजि बीचारिओ राम नामु ततु सारा ॥ (611-6)
खोजत खोजत खोजि बीचारिओ हरि संत जना पहि आहा ॥ (530-7)
खोजत खोजत खोजिआ नामै बिनु कूरु ॥ (811-6)
खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ॥ (838-19)
खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण ॥ (714-2)
खोजत खोजत दरसन चाहे ॥ (98-2)
खोजत खोजत दुआरे आइआ ॥ (886-9)
खोजत खोजत निज घरु पाइआ ॥ (181-5)
खोजत खोजत पाइआ डरु करि मिलै मिलाइ ॥ (57-17)
खोजत खोजत प्रभ मिले हरि करुणा धारे ॥ (1122-15)
खोजत खोजत बहु परकारे सरब अरथ बीचारे ॥ (714-19)
खोजत खोजत भइआ साधसंगु तिन्ह सरणाई पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (747-11)
खोजत खोजत भइओ बैरागी फिरि आइओ देह गिरामा ॥ (1211-7)
खोजत खोजत भइओ बैरागी साधू संगि लहिओ ॥ (979-7)
खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥३॥ (204-3)
खोजत खोजत मारगु पाइओ साधू सेव करीजै ॥ (1269-18)
खोजत खोजत मै पाहुन मिलिओ भगति करउ निवि पाए ॥२॥ (1266-19)
खोजत खोजत मै फिरा खोजउ बन थान ॥ (816-8)
खोजत खोजत रतनु पाइओ बिसरी सभ चिंद ॥१॥ रहाउ ॥ (1304-2)
खोजत खोजत लालु इकु पाइआ हरि कीमति कहणु न जाई संतहु ॥२॥ (916-8)
खोजत खोजत सहजु उपजिआ फिरि जनमि न मरणा ॥ (1102-8)

खोजत खोजत सुनी इह सोइ ॥ (373-17)
खोजत चरिओ देखउ प्रिअ जाई ॥ (737-16)
खोजत तन महि ठउर न पावउ ॥१॥ (327-17)
खोजत फिरउ बिदेसि पीउ कत पाईऐ ॥ (1362-9)
खोजत फिरे असंख अंतु न पारीआ ॥ (240-18)
खोजत संत फिरहि प्रभ प्राण अधारे राम ॥ (545-13)
खोजत हारे देव ॥ (894-6)
खोजती दरसार ॥१॥ रहाउ ॥ (1230-15)
खोजहि कोटि असंख बहुतु अनंत के ॥ (762-3)
खोजहि जन मुनी हां ॥ (409-18)
खोजहु संतहु हरि ब्रहम गिआनी ॥ (893-5)
खोजि लहउ हरि संत जना संगु सम्रिथ पुरख मिलाए ॥ (249-15)
खोजि लहिओ नानक सुख थानां हरि नामा बिस्राम कउ ॥२॥१॥२०॥ (1208-8)
खोजी उपजै बादी बिनसै हउ बलि बलि गुर करतारा ॥ (1255-6)
खोजी खोजि लधा हरि संतन पाहा राम ॥ (845-17)
खोजी लधमु खोजु छडीआ उजाड़ि ॥ (521-6)
खोटा कामि न आवै वेखु ॥१॥ (662-11)
खोटु न कीचई प्रभु परखणहारा ॥ (461-10)
खोटे कउ खरा कहै खरे सार न जाणै ॥ (229-4)
खोटे का मुलु एकु दुगाणा ॥ (662-6)
खोटे खरे तुधु आपि उपाए ॥ (119-1)
खोटे खरे परखीअनि तितु सचै दरवारा राम ॥३॥ (570-9)
खोटे खरे परखीअनि साहिब कै दीबाणि ॥१॥ (789-8)
खोटे खरे सभि परखीअनि तितु सचे कै दरबारा राम ॥ (570-6)
खोटे खोटु कमावणा आइ गइआ पति खोइ ॥३॥ (23-3)
खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ ॥ (23-3)
खोटे ठउर न पाइनी खरे खजानै पाइ ॥ (57-11)
खोटे ठवर न पाइनी रले जूठानै ॥४॥ (421-15)
खोटे दरगह सुटीअनि ऊभे करनि पुकारा राम ॥ (570-7)
खोटे नदरि न आवनी ले अगनि जलाईऐ ॥५॥ (421-15)
खोटे पोतै ना पवहि तिन हरि गुर दरसु न होइ ॥ (23-2)
खोटे सची दरगह सुटीअहि किसु आगै करहि पुकार ॥ (143-15)
खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥ (23-1)
खोटो पूठो रालीऐ बिनु नावै पति जाइ ॥ (1330-7)
खोड़ सीगार करै अति पिआरी ॥ (225-9)
खोड़े छाडि न दह दिस धावा ॥ (340-10)
खोलि कपाट महलि कि न जाही ॥ (341-3)

खोलि किवार दिखाले दरसनु पुनरपि जनमि न आईऐ ॥१॥ (383-13)
खोलि किवारा महलि बुलाइआ ॥ (887-3)
खोल्हि कपट गुरि मेलीआ नानक हरि संगि मीत ॥१॥ (703-12)
खोल्हि भीति मिले परमानंदा ॥४॥१४॥ (1206-17)
खोल्हिओ कपाटु ता मनु ठहराई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥५॥ (738-3)
खोवहु भरमु राखु मेरे प्रीतम अंतरजामी सुघड़ सुजान ॥ (716-10)
ख्मभ विकांदड़े जे लहां घिंना सावी तोलि ॥ (1426-6)
ख्यत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥ (1353-12)
गंग गुसाइनि गहिर ग्मभीर ॥ (1162-2)
गंग जमुन जउ उलटी बहै ॥ (1166-2)
गंग जमुन तह बेणी संगम सात समुंद समावा ॥ (1109-13)
गंग बनारसि सिफति तुमारी नावै आतम राउ ॥ (358-9)
गंगा का उदकु करंते की आगि ॥ (1168-16)
गंगा की लहरि मेरी टुटी जंजीर ॥ (1162-4)
गंगा कै संगि सलिता बिगरी ॥ (1158-12)
गंगा गइआ गोदावरी संसार के कामा ॥ (1195-19)
गंगा जउ गोदावरि जाईऐ कुमभि जउ केदार न्हाईऐ गोमती सहस गऊ दानु कीजै ॥ (973-12)
गंगा जमुना केल केदारा ॥ (1022-1)
गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहि उदमु धूरि साधू की ताई ॥ (1263-5)
गंगा जलु गुर गोबिंद नाम ॥ (1137-11)
गंगा सागरु बेणी संगमु अठसठि अंकि समाई हे ॥९॥ (1022-1)
गंढु परीती मिठे बोल ॥ (143-11)
गंढेदिआं छिअ माह तुड़ंदिआ हिकु खिनो ॥७॥ (488-18)
गंधण वैण सुणहि उरझावहि नामु लैत अलकाइआ ॥ (402-14)
गंधण वैणि रता हितकारी सबदै सुरति न आई ॥ (596-6)
गंधारी सीहुती उचारी ॥ (1430-5)
गंध्रब कोटि करहि जैकार ॥ (1163-6)
गइआ करोधु ममता तनि नाठी पाखंडु भरमु गवाइआ ॥ (773-7)
गइआ कलेसु भइआ सुखु साचा हरि हरि नामु समाली जीउ ॥१॥ (105-18)
गइआ न आवै आइ न जाइ ॥ (932-8)
गइआ पिंडु भरता ॥ (873-10)
गइआ भरमु रहिआ परमानंदा ॥३॥२०॥ (327-16)
गइआ सु जोबनु धन पछुताणी ॥२॥ (990-18)
गइआ सु जोबनु धन पछुतानी ॥३॥ (357-2)
गई गिलानि साध कै संगि ॥ (892-13)
गई ठगउरी ठगु पहिचानिआ ॥३॥३९॥ (331-3)
गई बहोड़ु बंदी छोड़ु निरंकारु दुखदारी ॥ (624-14)

गई बिआधि उपाधि सभ नासी अंगीकारु कीओ करतारि ॥ (826-11)
गई बिआधि उबरे जन मीत ॥३॥ (200-8)
गई बुनावन माहो ॥ (335-3)
गउड़ी ॥ (331-14)
गउड़ी ॥ (332-15)
गउड़ी ॥ (333-7)
गउड़ी ॥ (334-15)
गउड़ी ॥ (335-11)
गउड़ी ॥ (335-18)
गउड़ी ॥ (335-2)
गउड़ी ॥ (335-7)
गउड़ी ॥ (336-11)
गउड़ी ॥ (336-5)
गउड़ी ॥ (337-14)
गउड़ी ॥ (337-2)
गउड़ी ॥ (339-1)
गउड़ी ॥ (339-14)
गउड़ी ॥ (339-9)
गउड़ी १२ ॥ (338-10)
गउड़ी १३ ॥ (338-14)
गउड़ी ९ ॥ (337-6)
गउड़ी कबीर जी ॥ (323-16)
गउड़ी कबीर जी ॥ (324-1)
गउड़ी कबीर जी ॥ (324-15)
गउड़ी कबीर जी ॥ (324-19)
गउड़ी कबीर जी ॥ (324-4)
गउड़ी कबीर जी ॥ (324-8)
गउड़ी कबीर जी ॥ (325-11)
गउड़ी कबीर जी ॥ (325-15)
गउड़ी कबीर जी ॥ (325-19)
गउड़ी कबीर जी ॥ (325-4)
गउड़ी कबीर जी ॥ (325-7)
गउड़ी कबीर जी ॥ (326-12)
गउड़ी कबीर जी ॥ (327-13)
गउड़ी कबीर जी ॥ (327-16)
गउड़ी कबीर जी ॥ (327-19)
गउड़ी कबीर जी ॥ (327-3)

गउड़ी कबीर जी ॥ (328-12)
गउड़ी कबीर जी ॥ (328-15)
गउड़ी कबीर जी ॥ (328-19)
गउड़ी कबीर जी ॥ (328-3)
गउड़ी कबीर जी ॥ (328-6)
गउड़ी कबीर जी ॥ (328-9)
गउड़ी कबीर जी ॥ (329-12)
गउड़ी कबीर जी ॥ (329-15)
गउड़ी कबीर जी ॥ (329-3)
गउड़ी कबीर जी ॥ (329-6)
गउड़ी कबीर जी ॥ (329-9)
गउड़ी कबीर जी ॥ (330-1)
गउड़ी कबीर जी की नालि रलाइ लिखिआ महला ५ ॥ (326-3)
गउड़ी कबीर जी तिपदे चारतुके□ ॥ (326-17)
गउड़ी कबीर जी तिपदे□ ॥ (327-9)
गउड़ी कबीर जी दुपदे□ ॥ (329-18)
गउड़ी कबीर जी पंचपदे□ ॥ (326-7)
गउड़ी की वार महला ४ ॥ (300-15)
गउड़ी की वार महला ५ राइ कमालदी मोजदी की वार की धुनि उपरि गावणी (318-2)
गउड़ी गुआरेरी ॥ (330-12)
गउड़ी गुआरेरी के पदे पैतीस ॥ (330-4)
गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ (221-11)
गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ (222-1)
गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ (222-10)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (158-16)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (158-3)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (158-9)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (159-10)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (159-17)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (159-4)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (160-10)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (160-15)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (160-4)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (161-14)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (161-7)

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (162-1)
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ (164-15)
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ (164-4)
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ (164-9)
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ (165-1)
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ (165-7)
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ (166-6)
गउड़ी गुआरेरी महला ४ चउथा चउपदे (163-17)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (176-10)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (176-17)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (176-5)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (177-10)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (177-17)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (177-4)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (178-10)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (178-18)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (178-4)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (179-12)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (179-19)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (179-6)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (180-13)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (180-19)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (180-6)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (181-13)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (181-19)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (182-15)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (182-8)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (183-15)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (183-3)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (183-9)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (184-15)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (184-3)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (184-9)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (185-14)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (185-19)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (185-3)
गउड़ी गुआरेरी स्री कबीर जीउ के चउपदे १४ ॥ (323-12)

गउड़ी चेती (332-1)
गउड़ी चेती महला १ ॥ (154-17)
गउड़ी चेती महला १ ॥ (155-10)
गउड़ी चेती महला १ ॥ (155-16)
गउड़ी चेती महला १ ॥ (156-3)
गउड़ी चेती महला १ ॥ (156-9)
गउड़ी छंत महला १ ॥ (243-1)
गउड़ी पूरबी ॥ (337-9)
गउड़ी पूरबी १२ ॥ (338-6)
गउड़ी पूरबी दीपकी महला १ (157-8)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (169-10)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (169-17)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (169-4)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (170-13)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (170-19)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (170-4)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (171-12)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (171-18)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (171-6)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (172-13)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (172-6)
गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ (213-3)
गउड़ी पूरबी रविदास जीउ (346-3)
गउड़ी पूरबी□ महला ५ ॥ (212-16)
गउड़ी बावन अखरी महला ५ ॥ (250-1)
गउड़ी बैरागणि (346-9)
गउड़ी बैरागणि तिपदे□ ॥ (333-2)
गउड़ी बैरागणि महला १ (228-11)
गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ (156-16)
गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ (157-2)
गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ (162-11)
गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ (162-17)
गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ (163-7)
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (165-12)
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (165-18)
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (166-13)

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (167-12)
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (167-2)
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (168-1)
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (168-10)
गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ ॥ (345-17)
गउड़ी बैरागणि रहोए के छंत के घरि मः ५ (203-12)
गउड़ी भी सोरठि भी ॥ (330-15)
गउड़ी मः ३ ॥ (230-8)
गउड़ी मः ५ ॥ (186-19)
गउड़ी मः ५ ॥ (202-9)
गउड़ी महला १ ॥ (151-13)
गउड़ी महला १ ॥ (151-7)
गउड़ी महला १ ॥ (152-15)
गउड़ी महला १ ॥ (152-2)
गउड़ी महला १ ॥ (153-14)
गउड़ी महला १ ॥ (153-3)
गउड़ी महला १ ॥ (153-9)
गउड़ी महला १ ॥ (154-1)
गउड़ी महला १ ॥ (154-10)
गउड़ी महला १ ॥ (154-7)
गउड़ी महला १ ॥ (223-15)
गउड़ी महला १ ॥ (223-2)
गउड़ी महला १ ॥ (223-9)
गउड़ी महला १ ॥ (224-11)
गउड़ी महला १ ॥ (224-4)
गउड़ी महला १ ॥ (225-15)
गउड़ी महला १ ॥ (225-6)
गउड़ी महला १ ॥ (226-14)
गउड़ी महला १ ॥ (226-5)
गउड़ी महला १ ॥ (227-1)
गउड़ी महला १ ॥ (227-12)
गउड़ी महला १ ॥ (228-3)
गउड़ी महला १ ॥ (229-1)
गउड़ी महला १ दखणी ॥ (152-8)
गउड़ी महला ३ ॥ (229-18)
गउड़ी महला ३ ॥ (230-17)
गउड़ी महला ३ ॥ (231-17)

गउड़ी महला ३ ॥ (231-8)
गउड़ी महला ३ ॥ (232-19)
गउड़ी महला ३ ॥ (232-7)
गउड़ी महला ३ ॥ (244-8)
गउड़ी महला ३ ॥ (245-16)
गउड़ी महला ३ ॥ (245-2)
गउड़ी महला ३ ॥ (246-11)
गउड़ी महला ३ गुआरेरी ॥ (161-2)
गउड़ी महला ४ ॥ (234-15)
गउड़ी महला ५ (241-7)
गउड़ी महला ५ ॥ (186-11)
गउड़ी महला ५ ॥ (186-15)
गउड़ी महला ५ ॥ (186-4)
गउड़ी महला ५ ॥ (186-7)
गउड़ी महला ५ ॥ (187-13)
गउड़ी महला ५ ॥ (187-16)
गउड़ी महला ५ ॥ (187-5)
गउड़ी महला ५ ॥ (187-9)
गउड़ी महला ५ ॥ (188-1)
गउड़ी महला ५ ॥ (188-13)
गउड़ी महला ५ ॥ (188-16)
गउड़ी महला ५ ॥ (188-19)
गउड़ी महला ५ ॥ (188-5)
गउड़ी महला ५ ॥ (188-9)
गउड़ी महला ५ ॥ (189-11)
गउड़ी महला ५ ॥ (189-15)
गउड़ी महला ५ ॥ (189-19)
गउड़ी महला ५ ॥ (189-4)
गउड़ी महला ५ ॥ (189-7)
गउड़ी महला ५ ॥ (190-12)
गउड़ी महला ५ ॥ (190-15)
गउड़ी महला ५ ॥ (190-19)
गउड़ी महला ५ ॥ (190-4)
गउड़ी महला ५ ॥ (190-8)
गउड़ी महला ५ ॥ (191-12)
गउड़ी महला ५ ॥ (191-16)
गउड़ी महला ५ ॥ (191-4)

गउड़ी महला ५ ॥ (191-8)
गउड़ी महला ५ ॥ (192-1)
गउड़ी महला ५ ॥ (192-12)
गउड़ी महला ५ ॥ (192-16)
गउड़ी महला ५ ॥ (192-4)
गउड़ी महला ५ ॥ (192-8)
गउड़ी महला ५ ॥ (193-1)
गउड़ी महला ५ ॥ (193-12)
गउड़ी महला ५ ॥ (193-16)
गउड़ी महला ५ ॥ (193-4)
गउड़ी महला ५ ॥ (193-8)
गउड़ी महला ५ ॥ (194-1)
गउड़ी महला ५ ॥ (194-13)
गउड़ी महला ५ ॥ (194-16)
गउड़ी महला ५ ॥ (194-5)
गउड़ी महला ५ ॥ (194-9)
गउड़ी महला ५ ॥ (195-1)
गउड़ी महला ५ ॥ (195-13)
गउड़ी महला ५ ॥ (195-17)
गउड़ी महला ५ ॥ (195-5)
गउड़ी महला ५ ॥ (195-9)
गउड़ी महला ५ ॥ (196-10)
गउड़ी महला ५ ॥ (196-14)
गउड़ी महला ५ ॥ (196-18)
गउड़ी महला ५ ॥ (196-2)
गउड़ी महला ५ ॥ (196-6)
गउड़ी महला ५ ॥ (197-10)
गउड़ी महला ५ ॥ (197-14)
गउड़ी महला ५ ॥ (197-18)
गउड़ी महला ५ ॥ (197-3)
गउड़ी महला ५ ॥ (197-6)
गउड़ी महला ५ ॥ (198-10)
गउड़ी महला ५ ॥ (198-14)
गउड़ी महला ५ ॥ (198-18)
गउड़ी महला ५ ॥ (198-3)
गउड़ी महला ५ ॥ (198-6)
गउड़ी महला ५ ॥ (199-10)

गउड़ी महला ५ ॥ (199-14)
गउड़ी महला ५ ॥ (199-18)
गउड़ी महला ५ ॥ (199-3)
गउड़ी महला ५ ॥ (199-7)
गउड़ी महला ५ ॥ (200-10)
गउड़ी महला ५ ॥ (200-12)
गउड़ी महला ५ ॥ (200-15)
गउड़ी महला ५ ॥ (200-19)
गउड़ी महला ५ ॥ (200-3)
गउड़ी महला ५ ॥ (200-6)
गउड़ी महला ५ ॥ (201-10)
गउड़ी महला ५ ॥ (201-16)
गउड़ी महला ५ ॥ (201-2)
गउड़ी महला ५ ॥ (201-6)
गउड़ी महला ५ ॥ (202-13)
गउड़ी महला ५ ॥ (202-4)
गउड़ी महला ५ ॥ (203-1)
गउड़ी महला ५ ॥ (204-12)
गउड़ी महला ५ ॥ (204-5)
गउड़ी महला ५ ॥ (204-9)
गउड़ी महला ५ ॥ (205-18)
गउड़ी महला ५ ॥ (205-7)
गउड़ी महला ५ ॥ (206-18)
गउड़ी महला ५ ॥ (206-5)
गउड़ी महला ५ ॥ (207-14)
गउड़ी महला ५ ॥ (207-8)
गउड़ी महला ५ ॥ (208-1)
गउड़ी महला ५ ॥ (208-8)
गउड़ी महला ५ ॥ (209-1)
गउड़ी महला ५ ॥ (209-7)
गउड़ी महला ५ ॥ (210-12)
गउड़ी महला ५ ॥ (210-16)
गउड़ी महला ५ ॥ (211-1)
गउड़ी महला ५ ॥ (211-12)
गउड़ी महला ५ ॥ (211-16)
गउड़ी महला ५ ॥ (211-5)
गउड़ी महला ५ ॥ (211-8)

गउड़ी महला ५ ॥ (212-11)
गउड़ी महला ५ ॥ (212-14)
गउड़ी महला ५ ॥ (212-4)
गउड़ी महला ५ ॥ (213-15)
गउड़ी महला ५ ॥ (213-17)
गउड़ी महला ५ ॥ (214-1)
गउड़ी महला ५ ॥ (236-14)
गउड़ी महला ५ ॥ (236-2)
गउड़ी महला ५ ॥ (237-17)
गउड़ी महला ५ ॥ (237-6)
गउड़ी महला ५ ॥ (238-10)
गउड़ी महला ५ ॥ (239-1)
गउड़ी महला ५ ॥ (239-15)
गउड़ी महला ५ ॥ (239-8)
गउड़ी महला ५ ॥ (240-3)
गउड़ी महला ५ ॥ (240-9)
गउड़ी महला ५ ॥ (242-1)
गउड़ी महला ५ ॥ (249-9)
गउड़ी महला ५ गुआरेरी ॥ (181-6)
गउड़ी महला ५ मांझ ॥ (218-4)
गउड़ी महला ५ माझ ॥ (217-3)
गउड़ी महला ९ ॥ (219-11)
गउड़ी महला ९ ॥ (219-15)
गउड़ी महला ९ ॥ (219-18)
गउड़ी महला ९ ॥ (219-4)
गउड़ी महला ९ ॥ (219-8)
गउड़ी महला ९ ॥ (220-13)
गउड़ी महला ९ ॥ (220-4)
गउड़ी महला ९ ॥ (220-8)
गउड़ी माझ महला ४ ॥ (173-16)
गउड़ी माझ महला ४ ॥ (173-6)
गउड़ी माझ महला ४ ॥ (174-9)
गउड़ी माझ महला ४ ॥ (175-2)
गउड़ी माझ महला ४ ॥ (175-9)
गउड़ी माझ महला ५ ॥ (217-10)
गउड़ी माझ महला ५ ॥ (218-14)
गउड़ी माझ महला ५ ॥ (218-9)

गउड़ी माला ५ ॥ (216-10)
गउड़ी माला महला ५ ॥ (214-18)
गउड़ी माला महला ५ ॥ (215-11)
गउड़ी माला महला ५ ॥ (215-17)
गउड़ी माला महला ५ ॥ (216-4)
गउड़ी मा□ला महला ५ ॥ (215-5)
गउड़ी रागि सुलखणी जे खसमै चिति करेइ ॥ (311-12)
गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥ (262-8)
गउड़ी□ ॥ (333-12)
गउड़ी□ ॥ (334-3)
गउड़ी□ महला ५ ॥ (205-13)
गउड़ी□ महला ५ ॥ (212-1)
गउड़ी□ महला ५ ॥ (248-1)
गउड़ी□ पंचपदा ॥ (333-16)
गउड़ी□ महला ५ ॥ (206-11)
गउड़ी□ महला ५ ॥ (212-7)
गउड़ी□ महला ५ ॥ (248-14)
गउड़ी□ महला ५ ॥ (207-4)
गउड़ी□ ॥ (338-16)
गउड़ी□ महला ५ ॥ (208-13)
गउड़ी□ महला ५ ॥ (209-13)
गउड़ी□ ॥ (336-17)
गउणु करे चहु कुंट का घड़ी न बैसणु सोइ ॥ (70-11)
गउनु गगनु जब तबहि न होतउ त्रिभवण जोति आपे निरंकारु ॥ (945-19)
गउरा अउ कानरा कल्याना ॥ (1430-12)
गऊ कउ चारे सारदूलु ॥ (898-13)
गऊ चरि सिंघ पाछै पावै ॥२॥ (198-5)
गऊ दुहाई बछरा मेलि ॥१९॥ (1166-6)
गऊ बाछ कउ संचै खीरु ॥ (1252-11)
गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥ (471-15)
गऊ भैस मगउ लावेरी ॥ (695-18)
गऊतम सती सिला निसतरी ॥३॥ (874-11)

गए कलेस रोग सभि नासे प्रभि अपुनै किरपा धारी ॥ (619-9)
गए सिगीत पुकारी धाह ॥ (137-19)
गगनंतरि वासिआ गुण परगासिआ गुण महि गिआन धिआनं ॥ (635-5)
गगन ग्मभीरु गगनंतरि वासु ॥ (932-7)
गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ ॥ (1105-4)
गगन नगरि इक बूंद न बरखै नादु कहा जु समाना ॥ (480-10)
गगन मंडल महि रोपै थमु ॥ (953-2)
गगन मंडल महि लसकरु करै ॥ (1160-3)
गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ (13-1)
गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ (663-5)
गगनि निवासि समाधि लगावै ॥ (411-12)
गगनि रसाल चुऐ मेरी भाठी ॥ (328-16)
गगनु अगमु अनाथु अजोनी ॥ (932-8)
गगनु रहाइआ हुकमे चरणा ॥ (1071-11)
गगा गुर के बचन पछाना ॥ (340-11)
गगा गोबिद गुण रवहु सासि सासि जपि नीत ॥ (254-2)
गगै गोइ गाइ जिनि छोडी गली गोबिदु गरबि भइआ ॥ (432-16)
गगै गोबिदु चिति करि मूड़े गली किनै न पाइआ ॥ (435-12)
गचु जि लगा गिड़वड़ी सखीए धउलहरी ॥ (1410-4)
गछेण नैण भारेण नानक बिना साधू न सिध्यते ॥२॥ (1360-7)
गज की त्रास मिटी छिनहू महि जब ही रामु बखानो ॥ (830-16)
गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥१॥ (219-16)
गज नव गज दस गज इकीस पुरीआ एक तनाई ॥ (335-3)
गज साढे तै तै धोतीआ तिहरे पाइनि तग ॥ (476-1)
गज हसती दीनो चमकारि ॥५॥ (1165-16)
गजइंद्र धिआइओ हरि कीओ मोख ॥ (1192-5)
गजी न मिनीऐ तोलि न तुलीऐ पाचनु सेर अढाई ॥ (335-4)
गड़ काइआ अंदरि बहु हट बाजारा ॥ (1053-2)
गड़ मंदर महला कहा जिउ बाजी दीबाणु ॥ (936-1)
गड़ महि हाट पटण वापारा ॥ (1036-13)
गड़बड़ करै कउडी रंगु लाइ ॥ (1143-11)
गड़ि दोही पातिसाह की कदे न आवै हारि ॥ (936-11)
गड्डु लीता घटु लुटिआ दीवड़े गइआ बुझाइ ॥४८॥ (1380-8)
गड़्ह मंदर गच गीरीआ किछु साथि न जाई ॥ (1246-12)
गड़्हि काइआ सीगार बहु भांति बणाई ॥ (1247-1)
गण गंधरब देव मानुख्यं पसु पंखी बिमोहनह ॥ (1358-2)
गण गंधरब नामे सभि उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥ (1259-7)

गण गंधरब सिध अरु साधिक ॥ (535-10)
गणत गणावणि आईआ सूहा वेसु विकारु ॥ (54-1)
गणत गणावै अखरी अगणतु साचा सोइ ॥ (934-4)
गणत गणीऐ सहसा जीऐ ॥ (1023-5)
गणत गणीऐ सहसा दुखु जीऐ ॥ (904-16)
गणत गणै सो जलै संसारा ॥ (1062-6)
गणत तिना दी को किआ करे जो आपि बखसे करतारि ॥१२॥ (143-17)
गणत न आवै किउ गणी खपि खपि मुए बिसंख ॥ (937-6)
गणत न गणीं हुकमु पछाणा बोली भाइ सुभाई ॥ (1344-6)
गणत मिटाई चूकी धाई कदे न विआपै मन चिंदा ॥ (452-18)
गणत सरीरि पीर है हरि बिनु गुर सबदी हरि पांई ॥ (1232-8)
गणती गणउ न गणि सकउ ऊठि सिधारे केत ॥ (255-11)
गणती गणी न छूटै कतहू काची देह इआणी ॥ (748-16)
गणती गणी न जाइ तेरै दरि पड़े ॥ (518-8)
गणतै प्रभू न पाईऐ दूजै भरमीता ॥ (510-2)
गणतै सेव न होवई कीता थाइ न पाइ ॥ (1246-8)
गणि गणि जोतकु कांडी कीनी ॥ (904-12)
गति अवगति की चिंत नाही सतिगुरू फुरमाई ॥३॥ (1328-12)
गति अविगत की सार न जाणै बूझै सबदु कमाई हे ॥१३॥ (1025-8)
गति अविगति कछु नदरि न आइआ ॥ (51-16)
गति नानक जपि एक हरि नाम ॥१॥ (282-12)
गति पाईऐ गुर पूरे टेक ॥४॥३॥९७॥ (395-3)
गति पावहि मति होइ प्रगास महली पावहि ठाउ ॥ (257-1)
गति पावहि सुख सहज अनंदा काटे जम के फाहा ॥१॥ रहाउ ॥ (530-6)
गति मिति पाई आतमु चीनी ॥४॥ (227-16)
गति मुकति कदे न होवई हउमै करम कमाहि ॥ (1258-5)
गति संगि मीता संतसंगति करि नदरि मेलि मिलाइआ ॥३॥ (688-3)
गति होवै नानक तिसु लगि पाई ॥४॥१०॥६१॥ (386-11)
गति होवै संतह लगि पाईं ॥४॥९॥६०॥ (386-6)
गतु भरम मोह बिकार बिनसे जोनि आवण सभ रहे ॥ (458-14)
गदही होइ कै अउतरै भारु सहै मन चारि ॥१०८॥ (1370-5)
गदहु चंदनि खउलीऐ भी साहू सिउ पाणु ॥ (790-2)
गनंत स्वासा भैयान धरमं ॥ (1354-3)
गनणु न जाई कीम न पाइ ॥ (896-6)
गनि मिनि देखहु मनै माहि सरपर चलनो लोग ॥ (254-1)
गनि मिनि देखहु सगल बीचारि ॥ (893-6)
गनिका उधरी हरि कहै तोत ॥ (1192-5)

गनीव तेरी सिफति सचे पातिसाह ॥२॥ (1138-2)
गयउ दुखु दूरि बरखन को सु गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ ॥६॥१०॥ (1400-5)
गरत घोर अंध ते काढहु प्रभ नानक नदरि निहारि ॥२॥८॥१९॥ (1301-15)
गरधप वांगू लाहे पेटि ॥१॥ (201-3)
गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥ (267-10)
गरबंति नारी मदोन मतं ॥ (1359-16)
गरब गतं सुख आतम धिआना ॥ (221-9)
गरब निवारण सरब सधारण किछु कीमति कही न जाई हे ॥४॥ (1071-15)
गरबवती का नाही ठाउ ॥ (1196-9)
गरबि अटीआ त्रिसना जलहि दुखु पावहि दूजै भाइ ॥ (38-2)
गरबि गइआ बिनु सतिगुर हेति ॥५॥ (224-17)
गरबि गरबि उआहू महि परीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (392-2)
गरबि गहिलड़ो मूड़ड़ो हीओ रे ॥ (715-15)
गरबि गहेली महलु न पावै ॥ (737-6)
गरबि मुसै घरु चोरु किसु रूआईऐ ॥५॥ (752-12)
गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥ (1428-13)
गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥ (265-16)
गरबु न कीजै नानका मतु सिरि आवै भारु ॥३॥ (956-4)
गरबु न कीजै रेण होवीजै ता गति जीअरे तेरी ॥ (779-11)
गरबु निवारि गगन पुरु पाए ॥१॥ (153-15)
गरबु निवारि मिलै प्रभु सारथि ॥ (904-14)
गरबु बडो मूलु इतनो ॥ (212-4)
गरबु मोहु तजि होवउ रेन ॥ (391-10)
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ (1084-15)
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ (266-18)
गरभ उदर बिललाट करता तहां होवत दीन ॥१॥ (1225-5)
गरभ कुंट महि उरध तप करते ॥ (251-9)
गरभ कुंट महि जिनहि धारिओ नही बिखै बन महि होर ॥ (1121-5)
गरभ कुंड नरक ते राखै भवजलु पारि उतारे ॥ (210-4)
गरभ कुंडल महि उरध धिआनी ॥ (1026-19)
गरभ घोर महि राखनहारु ॥ (863-9)
गरभ छोडि म्रित मंडल आइआ तउ नरहरि मनहु बिसारिआ ॥१॥ (93-4)
गरभ जोनि कलि काल जाल दुख बिनासनु हरि रखे ॥१॥ रहाउ ॥ (1322-14)
गरभ जोनि छोडि जउ निकसिओ तउ लागो अन ठांही ॥१॥ (1207-8)
गरभ जोनि महि उरध तपु करता ॥ (337-7)
गरभ जोनि विसटा का वासु ॥ (362-17)
गरभ जोनी वासु पाइदे गरभे गलि जाणे ॥ (163-4)

गरभ जोनी विचि कदे न निकलै बिसटा माहि समाइ ॥१॥ (1130-17)
गरभ महि राखिआ जिनि करि जतनु ॥ (177-11)
गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥ (324-16)
गरल नासु तनि नठयो अमिउ अंतरगति पीओ ॥ (1392-5)
गरह निवारे सतिगुरू दे अपणा नाउ ॥१॥ (400-19)
गरी छुहारे खांदीआ माणन्हि सेजड़ीआ ॥ (417-6)
गरीब दास की प्रभु सरणाइ ॥२॥ (868-9)
गरीब निवाजि करे प्रभु मीरे ॥ (1071-15)
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥१॥ रहाउ ॥ (1106-12)
गरीब निवाजु दिनु रैणि धिआइ ॥३॥ (1138-2)
गरीबा अनाथा तेरा माणा ॥ (98-13)
गरीबा उपरि जि खिंजै दाड़ी ॥ (199-11)
गरीबी गदा हमारी ॥ (628-12)
गरुड़ चड़्हे आए गोपाल ॥१६॥ (1166-4)
गरुड़ चड़्हे गोबिंद आइला ॥१५॥ (1166-4)
गरुड़ मुखि नही सरप त्रास ॥ (987-3)
गरुड़ा खाणा दुध सिउ गाडि ॥१॥ (1168-16)
गरुड़ु सबदु मुखि पाइआ हउमै बिखु हरि मारी ॥१॥ (1260-16)
गल महि पाहणु लै लटकावै ॥१॥ (739-2)
गलां करे घणेरीआ तां अंन्हे पवणा खाती टोवै ॥३२॥ (1412-18)
गला उपरि तपावसु न होई विसु खाधी ततकाल मरि जाए ॥ (308-13)
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥ (474-9)
गला बांधि दुहि लेइ अहीरु ॥२॥ (1252-11)
गला वाले हैनि घणेरे छडि न सकै कोई ॥ (1286-15)
गलि चमड़ी जउ छोडै नाही ॥ (392-7)
गलि जेवड़ी आपे पाइदा पिआरा जिउ प्रभु खिंचै तिउ जाहा ॥ (607-1)
गलि जेवड़ी हउमै के फासा ॥२॥ (176-1)
गलि जेवरी धंधै लपटाइ ॥ (226-1)
गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥ (267-13)
गलि फाही बउरा बउराना ॥७॥ (414-13)
गलि फाही सिरि मारे धंधा ॥ (1330-10)
गलि माला तिलक लिलाटं ॥ (1353-8)
गलि माला तिलकु लिलाटं ॥ (470-17)
गलि मिलि चाले एकै भाई ॥३॥ (887-15)
गलि संगलु सिरि मारे ऊभौ ना दीसै घर बारो ॥ (581-12)
गलीं असी चंगीआ आचारी बुरीआह ॥ (85-1)
गली गरबहि मुखि गोवहि गिआन ॥ (374-3)

गली गला सिरजणहार ॥ (351-7)
गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथि निबग ॥ (476-1)
गली जोगु न होई ॥ (730-12)
गली भिसति न जाईऐ छुटै सचु कमाइ ॥ (141-2)
गली सैल उठावत चाहै ओइ ऊहा ही है धरे ॥ (714-9)
गली हउ सोहागणि भैणे कंतु न कबहूं मै मिलिआ ॥२३॥ (433-16)
गले हमारे जेवरी जह खिंचै तह जाउ ॥७४॥ (1368-8)
गल्हा पिटनि सिरु खोहेनि ॥ (1410-12)
गवनु करैगो सगलो लोगा ॥४॥ (237-12)
गवनु कीआ धरती भरमाता ॥ (98-5)
गवरी गावहि आसावरी ॥ (1430-14)
गहडड़ड़ा त्रिणि छाइआ गाफल जलिओहु भाहि ॥ (1096-5)
गहडिओ मूड़ नरि हां ॥ (409-9)
गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ॥ (465-5)
गहबर बन घोर गहबर बन घोर हे ग्रिह मूसत मन चोर हे दिनकरो अनदिनु खात ॥ (461-19)
गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मंडप छाए ॥ (692-18)
गहरी बिभूत लाइ बैठा ताड़ी ॥ (886-13)
गहि ओट चितवी नाथ ॥ (838-6)
गहि कंठि लाइआ गुरि मिलाइआ जसु बिमल संत वखाणिआ ॥ (458-11)
गहि कंठि लाईऐ नह लजाईऐ चरन रज मनु पागीऐ ॥ (846-12)
गहि कंठि लाए गुरि मिलाए गोविंद जपत अघाइण ॥ (460-19)
गहि कंठि लाए सहजि सुभाए आदि अंकुरु आइआ ॥ (547-3)
गहि चरन साधू संग ॥ (837-19)
गहि भुजा प्रभ जी लेहु ॥ (838-3)
गहि भुजा लीने दइआ कीने आपने करि मानिआ ॥ (705-3)
गहि भुजा लीने दइआ कीन्हे प्रभ एक अगम अपारो ॥ (545-5)
गहि भुजा लीने नाम दीने करु धारि मसतकि राखिआ ॥ (461-1)
गहि भुजा लीनो दासु अपनो जोति जोती रली ॥ (1121-18)
गहि भुजा लीन्ही दासि कीन्ही अंकुरि उदोतु जणाइआ ॥ (846-14)
गहि भुजा लीन्ही प्रेम भीनी मिलनु प्रीतम सच मगा ॥ (544-7)
गहि भुजा लेवहु नामु देवहु तउ प्रसादी मानीऐ ॥ (1278-10)
गहि भुजा लेवहु नामु देवहु द्रिसटि धारत मिटत पाप ॥ (462-10)
गहिर गभीर अथाहु हाथ न लभई ॥ (1288-18)
गहिर गभीरु अथाहु तू गुण गिआन अमोलै ॥ (1102-16)
गहिर ग्मभीर अथाह सुआमी अतुलु न जाई किआ मिना ॥१३॥ (1079-16)
गहिर ग्मभीर अपार गुणतासु ॥ (889-9)
गहिर ग्मभीर अम्रित नामु तेरा ॥ (101-9)

गहिर गमभीर बिअंत गुसाई अंतु नही किछु पारावारे ॥ (379-7)
गहिर गमभीर बेअंत गोविंदे ॥ (99-5)
गहिर गमभीर सागर रतनागर अवर नही अन पूजा ॥ (1233-3)
गहिर गमभीरु अथाह अति बड सुभरु सदा सभ बिधि रतनागरु ॥ (1404-11)
गहिर गमभीरु अथाहु अपारु अगणतु तूं ॥ (966-12)
गहिर गमभीरु गहीरु सुजाना ॥ (283-19)
गहिला रूहु न जाणई सिरु भी मिटी खाइ ॥२६॥ (1379-5)
गहिला लोकु न जाणदा हंसु न कोध्रा खाइ ॥६५॥ (1381-7)
गही ओट साधाइआ ॥ (746-14)
गहु करि पकरी न आई हाथि ॥ (891-17)
गहु पारब्रहम सरन हिरदै कमल चरन अवर आस कछु पटलु न कीजै ॥ (678-12)
गांठि न बाधउ बेचि न खाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1157-16)
गाइओ री गाइओ प्रभ नानक गुनी गहेरो ॥२॥४॥४३॥ (1306-16)
गाइओ री मै गुण निधि मंगल गाइओ ॥ (1206-13)
गाई पुता निरधना पंथी चाकरु होइ ॥२॥ (1279-10)
गाईऐ गुण गोपाल क्रिपा निधि ॥ (1298-6)
गाईऐ राति दिनंतु गावण जोगिआ ॥ (957-16)
गाउ गाउ री दुलहनी मंगलचारा ॥ (482-2)
गाउ मंगलो नित हरि जनहु पुंनी इछ सबाई राम ॥ (780-13)
गाछहु पुत्री राज कुआरि ॥ (1187-15)
गाठी भिनि भिनि भिनि भिनि तणीए ॥ (886-7)
गाडर ले कामधेनु करि पूजी ॥ (198-5)
गाथा गावंति नानक भब्यं परा पूरबणह ॥१८॥ (1361-5)
गाथा गुमफ गोपाल कथं मथं मान मरदनह ॥ (1360-11)
गाथा गूड़ अपारं समझणं बिरला जनह ॥ (1360-15)
गाफल गिआन विहूणिआ गुर बिनु गिआनु न भालि जीउ ॥ (751-12)
गाफल संगि न तसूआ जाई ॥२॥ (899-10)
गाफलु होइ कै जनमु गवाइओ चोरु मुसै घरु जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (339-11)
गारबि लागा जाहि मुगध मन अंति गइआ पछुतावहे ॥ (441-7)
गारुड़ गुर गिआनु धिआनु गुर बचनी बिखिआ गुरमति जारी ॥ (1274-3)
गाली हरि नीहु न होइ ॥ रहाउ ॥ (715-13)
गाल्ही अल पलालीआ कमि न आवहि मित ॥१॥ (320-18)
गाल्ही बिआ विकार नानक धणी विहूणीआ ॥१॥ (321-8)
गावउ गुण कीरतनु नित सुआमी करि किरपा नानक दीजै दानु ॥२॥२९॥११५॥ (827-9)
गावउ गुन परम गुरू सुख सागर दुरत निवारण सबद सरे ॥ (1389-12)
गावणि गावहि जिन नाम पिआरु ॥ (158-17)
गावणु सुनणु सभु तेरा भाणा ॥ (1270-15)

गावत गावत परम गति पाई ॥ (892-16)
गावत गावत हरि गुन गाए गुन गावत गुरि निसतारे ॥२॥ (981-4)
गावत रहै जे सतिगुर भावै ॥ (158-18)
गावत सुणत सभे ही मुकते सो धिआईऐ जिनि हम कीए जीउ ॥१॥ (104-16)
गावत सुनत कमावत निहाल ॥२॥ (376-15)
गावत सुनत जपत उधारै बरन अबरना सभहूं ॥१॥ रहाउ ॥ (529-5)
गावत सुनत दोऊ भए मुकते जिना गुरमुखि खिनु हरि पीक ॥१॥ (1336-1)
गावत सुनत सुनावत सरधा हरि रसु पी वडभागे ॥ (1206-4)
गावते उधरहि सुणते उधरहि बिनसहि पाप घनेरे ॥ (802-16)
गावन भावन संतन तोरै चरन उवा कै पाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (536-4)
गावनहारी गावै गीत ॥ (1299-4)
गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥ (465-9)
गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥ (6-8)
गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ (8-18)
गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ (8-17)
गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ (9-4)
गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥ (8-17)
गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ (9-1)
गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥ (9-3)
गावनि तुधनो पंडित पड़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ (9-1)
गावनि तुधनो पंडित पड़े रखीसुर जुगु जुगु बेदा नाले ॥ (347-8)
गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ (8-16)
गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥ (347-9)
गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥ (9-2)
गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ (9-2)
गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥ (8-19)
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ (6-9)
गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ (6-10)
गावनि सीता राजे राम ॥ (465-9)
गावनि सुरि नर सुघड़ सुजाणा ॥ (566-14)
गावन्हि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ (347-7)
गावन्हि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ (347-6)
गावन्हि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ (347-11)
गावन्हि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ (347-5)
गावन्हि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ (347-8)
गावन्हि तुधनो जोध महाबल सूरा गावन्हि तुधनो खाणी चारे ॥ (347-10)
गावन्हि तुधनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरम दुआरे ॥ (347-5)

गावन्हि तुधनो रतन उपाए तेरे जेते अठसठि तीरथ नाले ॥ (347-10)
गावन्हि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावन्हि तुधनो साध बीचारे ॥ (347-7)
गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ (6-7)
गावहि इंद्रादि भगत प्रहिलादिक आतम रसु जिनि जाणिओ ॥ (1389-13)
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥ (6-7)
गावहि कपिलादि आदि जोगेसुर अपर्मपर अवतार वरो ॥ (1389-17)
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥ (6-11)
गावहि गीत न चीनहि आपु ॥ (903-9)
गावहि गीते चीति अनीते ॥ (414-14)
गावहि गुण बरन चारि खट दरसन ब्रहमादिक सिमरंथि गुना ॥ (1390-1)
गावहि ग्मभीर धीर मति सागर जोगी जंगम धिआनु धरे ॥ (1389-13)
गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ (6-6)
गावहि जनकादि जुगति जोगेसुर हरि रस पूरन सरब कला ॥ (1389-15)
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥ (6-10)
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ (6-6)
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥ (6-9)
गावहि राग भाति बहु बोलहि इहु मनूआ खेलै खेल ॥ (368-2)
गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥ (464-18)
गावहि सनकादि साध सिधादिक मुनि जन गावहि अछल छला ॥ (1389-15)
गावहि सरस बसंत कमोदा ॥ (1430-10)
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥ (6-8)
गावहु गावहु कामणी बिबेक बीचारु ॥ (351-14)
गावहु गावहु रंगि रातिहो भाई हरि सेती रंगु लाइ ॥ रहाउ ॥ (639-2)
गावहु गीतु न बिरहड़ा नानक ब्रहम बीचारो ॥८॥३॥ (581-4)
गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥ (922-15)
गावहु राम के गुण गीत ॥ (901-2)
गावहु सुणहु पड़हु नित भाई गुर पूरै तू राखिआ ॥ रहाउ ॥ (611-13)
गावि लेहि तू गावनहारे ॥ (395-8)
गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥१॥ (669-15)
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥ (2-8)
गावे का फलु होई ॥ (599-8)
गावै को गुण वडिआईआ चार ॥ (1-11)
गावै को जापै दिसै दूरि ॥ (1-12)
गावै को जीअ लै फिरि देह ॥ (1-12)
गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥ (1-10)
गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥ (1-11)
गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥ (1-11)

गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ (2-1)
गावै को साजि करे तनु खेह ॥ (1-12)
गावै गावणहारु सबदि सुहावणो ॥ (688-1)
गावै गुण धोमु अटल मंडलवै भगति भाइ रसु जाणिओ ॥ (1389-16)
गावै गुण महादेउ बैरागी जिनि धिआन निरंतरि जाणिओ ॥ (1390-2)
गावै गुण सेसु सहस जिहबा रस आदि अंति लिव लागि धुना ॥ (1390-2)
गावै जमदगनि परसरामेसुर कर कुठारु रघु तेजु हरिओ ॥ (1389-18)
गाहक गुनी अपार सु ततु पछानीऐ ॥ (1362-14)
गाहे न नेकी कार करदम मम ईं चिनी अहवाल ॥३॥ (721-7)
गिआन अंजन नाम बिंजन भए सगल सीगारा ॥ (542-17)
गिआन अंजनु अगिआन बिनासु ॥१॥ (1235-17)
गिआन अंजनु गुर सबदि पछानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (221-1)
गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥ (293-14)
गिआन अंजनु जा की नेत्री पड़िआ ता कउ सरब प्रगासा ॥ (610-5)
गिआन अंजनु जा की नेत्री होइ ॥६॥२॥ (1128-8)
गिआन अंजनु जिह पाइआ ते लोइन परवानु ॥३॥ (1103-8)
गिआन अंजनु पाए गुर सबदी नदरी नदरि मिलाइदा ॥४॥ (1065-4)
गिआन अंजनु भै भंजना देखु निरंजन भाइ ॥ (57-9)
गिआन अंजनु मो कउ गुरि दीना ॥ (858-1)
गिआन अंजनु सतिगुर ते होइ ॥ (1130-1)
गिआन अपारु सीगारु है सोभावंती नारि ॥ (426-13)
गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥५॥ (469-17)
गिआन की मुद्रा कवन अउधू सिध की कवन कमाई ॥ (944-19)
गिआन की मुद्रा कवन कथीअले घटि घटि कवन निवासो ॥ (940-5)
गिआन खंड का आखहु करमु ॥ (7-15)
गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥ (7-19)
गिआन खड़ग पंच दूत संघारे गुरमति जागै सोइ ॥ (1414-6)
गिआन खड़गु करि किरपा दीना दूत मारे करि धाई हे ॥९॥ (1072-2)
गिआन खड़गु लै मन सिउ लूझै मनसा मनहि समाई हे ॥३॥ (1022-13)
गिआन धिआन नानक वडिआई संत तेरे सिउ गाल गलोही ॥२॥८॥१२९॥ (207-7)
गिआन धिआन पूरन परमेसुर प्रभु सभना गला जोगा जीउ ॥२॥ (108-11)
गिआन धिआन पूरन परमेसुर हरि हरि कथा नित सुणीऐ राम ॥ (783-12)
गिआन धिआन मान दान मन रसिक रसन नामु जपत तह पाप खंडली ॥१॥ (1322-8)
गिआन धिआन सगले सभि जप तप जिसु हरि हिरदै अलख अभेवा ॥ (356-3)
गिआन पदारथु खोइआ ठगिआ मुठा जाइ ॥१॥ (60-16)
गिआन पदारथु पाईऐ त्रिभवण सोझी होइ ॥ (60-10)
गिआन पदारथु मति गुर ते पाइऐ ॥ (520-5)

गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए ॥ (487-13)
गिआन मंगी हरि कथा चंगी हरि नामु गति मिति जाणीआ ॥ (576-1)
गिआन मती कमल परगासु ॥ (1277-16)
गिआन महा रसु नेत्री अंजनु त्रिभवण रूपु दिखाइआ ॥ (764-10)
गिआन महारसु भोगवै बाहुड़ि भूख न होइ ॥ (21-6)
गिआन रतनि मनु माजीऐ बहुड़ि न मैला होइ ॥ (992-10)
गिआन रतनि सभ सोझी होइ ॥ (364-1)
गिआन रतनु अंतरि तिसु जागै ॥ (737-1)
गिआन रतनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरा जाइ ॥१॥ (368-13)
गिआन रतनु मनि परगटु भइआ ॥ (1069-15)
गिआन रतनु मनि वसै आइ ॥ (354-12)
गिआन रतनु सदा घटि चानणु अगिआन अंधेरु गवाइदा ॥१२॥ (1063-11)
गिआन राउ जब सेजै आवै त नानक भोगु करेई ॥४॥१॥३५॥ (359-12)
गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥ (466-15)
गिआन विहूणा किछू न सूझै ॥ (1044-14)
गिआन विहूणा गावै गीत ॥ (1245-17)
गिआन विहूणी पिर मुतीआ पिरमु न पाइआ जाइ ॥ (38-4)
गिआन विहूणी भवै सबाई ॥ (1034-17)
गिआन हीणं अगिआन पूजा ॥ (1412-4)
गिआनवंत कउ ततु बीचार ॥ (343-2)
गिआनि महा रसि नाईऐ भाई मनु तनु निरमलु होइ ॥५॥ (637-5)
गिआनि रतनि घटि चानणु होआ नानक नाम पिआरो ॥ (584-15)
गिआनि रतनि साचै सहजि समाए ॥४॥ (364-12)
गिआनी अंजनु सच का डेखै डेखणहारु ॥ (1015-3)
गिआनी की होइ वरती दासि ॥ (370-10)
गिआनी गिआनु कमावहि ॥ (71-7)
गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न नासी ॥२॥ (974-2)
गिआनी गुर बिनु भगति न होई ॥ (732-7)
गिआनी जागहि सवहि सुभाइ ॥ (646-3)
गिआनी जीवै सदा सदा सुरती ही पति होइ ॥ (1412-16)
गिआनी धिआनी आखि सुणाए ॥ (1045-1)
गिआनी धिआनी गुर गुर हाई ॥ (349-3)
गिआनी धिआनी गुर गुरहाई ॥ (9-12)
गिआनी धिआनी चतुर पेखि रहनु नही इह ठाइ ॥ (254-4)
गिआनी धिआनी पूछहु कोई ॥ (1063-13)
गिआनी धिआनी बहु उपदेसी इहु जगु सगलो धंधा ॥ (338-9)
गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥ (469-1)

गिआनी बूझहि सहजि सुभाए ॥५॥ (232-4)
गिआनी हरि बोलहु दिनु राति ॥ (1264-8)
गिआनी होइ सु चेतंनु होइ अगिआनी अंधु कमाइ ॥ (556-1)
गिआनी होवै सु गुरमुखि बूझै साची सिफति सलाहा हे ॥४॥ (1056-15)
गिआनीआ अंदरि गुर सबदु है नित हरि लिव सदा विगासु ॥ (1415-4)
गिआनीआ का इहु महतु है मन माहि समाना ॥ (1089-6)
गिआनीआ का धनु नामु है सद ही रहै समाइ ॥ (1282-16)
गिआनीआ का धनु नामु है सहजि करहि वापारु ॥ (68-18)
गिआनीआ नो सभु सचु है सचु सोझी होई ॥ (425-9)
गिआनु कमाईऐ पूछि जनां ॥ (1180-15)
गिआनु गिआनु कथै सभु कोई ॥ (831-11)
गिआनु गुड़ु सालाह मंडे भउ मासु आहारु ॥ (553-6)
गिआनु जनेऊ धिआनु कुसपाती ॥ (355-2)
गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पांडे ॥ (1290-2)
गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पांडे ॥ (1290-4)
गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा सार न जाणा तेरी ॥ (750-3)
गिआनु धिआनु किछु करमु न जाना नाहिन निरमल करणी ॥ (702-10)
गिआनु धिआनु गुण अंकि समाणे प्रभ भाणे ता भाइआ ॥ (1109-7)
गिआनु धिआनु गुण संजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥ (75-17)
गिआनु धिआनु गुर सबदु है मीठा ॥ (162-3)
गिआनु धिआनु जुगति सचु जागै ॥४॥ (223-12)
गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइ ॥ (59-8)
गिआनु धिआनु नरहरि निरबाणी ॥ (1342-17)
गिआनु धिआनु ले समसरि रहै ॥ (930-15)
गिआनु धिआनु सचु गहिर ग्मभीरा ॥ (1034-4)
गिआनु धिआनु सभ दाति कथीअले सेत बरन सभि दूता ॥ (503-13)
गिआनु धिआनु सभु कोई रवै ॥ (728-12)
गिआनु धिआनु सभु गुर ते होई ॥ (831-12)
गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥ (465-1)
गिआनु प्रचंडु बलिआ घटि चानणु घर मंदर सोहाइआ ॥ (775-2)
गिआनु भइआ तह करमह नासु ॥३॥ (1167-12)
गिआनु रासि नामु धनु सउपिओनु इसु सउदे लाइक ॥ (1102-1)
गिआनु सलाहे वडा करि सचो सचा नाउ ॥ (1243-19)
गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥ (296-1)
गिआनै कारन करम अभिआसु ॥ (1167-11)
गिआरह मास पास कै राखे एकै माहि निधाना ॥३॥ (1349-15)
गिरंत गिरि पतित पातालं जलंत देदीप्य बैस्वांतरह ॥ (1355-10)

गिरत कूप महि खाहि मिठाई ॥१॥ (390-9)
गिरसत महि चिंत उदास अहंकार ॥ (385-16)
गिरसती गिरसति धरमाता ॥४॥ (71-9)
गिरह कुट्मब महि सहजि समाधी ॥ (1246-7)
गिरही महि सदा हरि जन उदासी गिआन तत बीचारी ॥ (599-18)
गिरि तर जल जुआला भै राखिओ राजा रामि माइआ फेरी ॥३॥ (1165-10)
गिरि तर थल जल भवन भरपुरि घटि घटि लालन छावनी नीकी ॥ (1272-6)
गिरि तर धरणि गगन अरु तारे ॥ (237-9)
गिरि बसुधा जल पवन जाइगो इकि साध बचन अटलाधा ॥१॥ (1204-6)
गिरिओ जाइ रसातलि परिओ छिटी छिटी सिर भारै ॥३॥ (1205-14)
गिर्मबारी वड साहबी सभु नानक सुपनु थीआ ॥४॥२॥७२॥ (42-19)
गिली गिली रोडड़ी भउदी भवि भवि आइ ॥ (1097-8)
गीत चरित प्रभ के गुन गावा ॥२॥ (212-9)
गीत नाद कवित कवे सुणि राम नामि दुखु भागै ॥ (1109-7)
गीत नाद कीरतनु गावंता जीउ ॥ (216-18)
गीत नाद मुखि राग अलापे मनि नही हरि हरि गावा ॥३॥ (1003-5)
गीत नाद हरख चतुराई ॥ (1331-9)
गीत राग घन ताल सि कूरे ॥ (832-5)
गीत साद चाखे सुणे बाद साद तनि रोगु ॥ (1010-15)
गुझड़ा लधमु लालु मथै ही परगटु थिआ ॥ (1096-14)
गुझा कमाणा प्रगटु होआ ईत उतहि खुआरी ॥ (460-7)
गुझी छंनी नाही बात ॥ (396-7)
गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ ॥ (360-5)
गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि महूआ भउ भाठी मन धारा ॥ (969-6)
गुड़ु मिठा माइआ पसरिआ मनमुखु लगि माखी पचै पचाइ ॥१॥ (41-18)
गुण अंतरि नाही किउ सुखु पावै मनमुख आवण जाणा ॥ (76-5)
गुण अउगण पछाणै हरि नामु वखाणै भै भगति मीठी लागी ॥ (768-15)
गुण अनिक रसना किआ बखानै अगनत सदा अकथ ॥३॥ (502-4)
गुण अपार प्रभ परमानंदा ॥३॥ (740-14)
गुण अमोल जिसु रिदै न वसिआ ते नर त्रिसन त्रिखाई ॥१॥ (612-18)
गुण अमोलक पाए न जाहि ॥ (361-9)
गुण अवगण का एको दाता गुरमुखि विरली जाता हे ॥१०॥ (1052-18)
गुण अवगुण समानि हहि जि आपि कीते करतारि ॥ (1092-16)
गुण आखि वीचारी मेरी माइ ॥ (1176-4)
गुण कउ धावै अवगण धोवै ॥ (414-4)
गुण का गाहकु जे मिलै तउ गुणु लाख विकाइ ॥ (1086-19)
गुण का गाहकु नानका विरला कोई होइ ॥ (1092-15)

गुण का दाता सचा सोई ॥ (1055-8)
गुण कामण करि कंतु रीझाइआ ॥ (737-12)
गुण कामण कामणि करै तउ पिआरे कउ पावै ॥६॥ (725-6)
गुण की थेकै विचि समाइ ॥ (956-3)
गुण की मारी हउ मुई सबदि रती मनि चोट ॥४३॥ (936-5)
गुण की साझ सुखु ऊपजै सची भगति करेनि ॥ (756-8)
गुण की साझि तिन सिउ करी सभि अवगण सबदि जलाए ॥ (303-8)
गुण गभीर गुन नाइका गुण कहीअहि केत ॥ (810-11)
गुण गाइ गोबिंद अनद उपजे साधसंगति संगि बनी ॥ (784-5)
गुण गाइ गोविद सदा नीके कलिआण मै परगट भए ॥ (547-14)
गुण गाइ जीवह हरि अमिउ पीवह जनम मरणा भागए ॥ (1312-5)
गुण गाइ प्रभू धिआइ साचा सगल इछा पाईआ ॥ (782-4)
गुण गाइ मंगलु प्रेमि रहसी मुंध मनि ओमाहओ ॥ (242-17)
गुण गाइ राम रसाइ रसीअहि गुर गिआन अंजनु सारहे ॥ (1113-4)
गुण गाइ विगसै सदा अनदिनु जा आपि साचे भावए ॥ (690-3)
गुण गाइ हरि हरि दूख नासे रहसु उपजै मनि घणा ॥ (778-19)
गुण गाउ मना अचुत अबिनासी सभ ते ऊच दइआला ॥ (249-6)
गुण गाए बेअंत रसना हरि जसे ॥१९॥ (710-8)
गुण गावउ तेरे साधसंगि नानक सुख साल ॥४॥११॥४१॥ (811-3)
गुण गावत अचुत अबिनासी ॥ (744-11)
गुण गावत अचुत अबिनासी अनदिनु हरि रंगि जागा ॥३॥ (616-14)
गुण गावत अचुत अबिनासी मन तन आतम ध्राप ॥१॥ (1223-15)
गुण गावत आराधि नामु हरि आए अपुनै थाने ॥२॥ (615-14)
गुण गावत गावत भए निहाला हरि सिमरत त्रिपति अघाई संतहु ॥४॥ (916-10)
गुण गावत धिआवत सुख सागर जूए जनमु न हारे ॥३॥ (210-5)
गुण गावत निहचलु बिस्राम ॥ (1148-4)
गुण गावत मनु हरिआ होवै ॥ (104-6)
गुण गावत होवत परगासु ॥ (901-3)
गुण गावह गुण बोलह बाणी हरि गुण जपि ओमाहा राम ॥२॥ (699-16)
गुण गावहि अनहद धुनि बाणी तह नानक दासु चितारणा ॥८॥ (1077-6)
गुण गावहि गुण उचरहि गुण महि सवै समाइ ॥ (1423-13)
गुण गावहि नव नाथ धंनि गुरु साचि समाइओ ॥ (1390-17)
गुण गावहि पायालि भगत नागादि भुयंगम ॥ (1390-13)
गुण गावहि पूरन अबिनासी कहि सुणि तोटि न आवणिआ ॥४॥ (132-2)
गुण गावहि पूरन परमेसुर कारजु आइआ रासे ॥ (783-3)
गुण गावहि बेअंत अंतु इकु तिलु नही पासी ॥ (1386-7)
गुण गावहि सनकादि आदि जनकादि जुगह लगि ॥ (1390-5)

गुण गावहु नित नित भगवंत ॥३॥ (1271-5)
गुण गावहु पूरन अबिनासी काम क्रोध बिखु जारे ॥ (615-6)
गुण गावहु संत जीउ मेरे हरि प्रभ केरे जीउ ॥ (175-3)
गुण गावा गुण बोली बाणी ॥ (367-2)
गुण गावा गुण विथरा गुण बोली मेरी माइ ॥ (40-12)
गुण गावा दिनु राति नानक चाउ एहु ॥८॥२॥५॥१६॥ (762-4)
गुण गावा दिनु रैणि एतै कमि लाइ ॥ (961-7)
गुण गावा नित नित सद हरि के मनु जीवै नामु सुणि तेरा ॥ (562-3)
गुण गावा पिआरे नित गुरमुखि भ्रम भउ गइआ ॥७॥ (645-11)
गुण गावै अनदिनु निति जागी ॥ (109-3)
गुण गावै अबिनासीऐ जोनि गरभि न दधा ॥ (320-11)
गुण गावै गुण उचरै गुण माहि समाइआ ॥ (954-8)
गुण गावै नानक दासु सतिगुरु मति देइ ॥८॥३॥५॥ (753-3)
गुण गावै नानकु अंतरजामी ॥४॥६२॥१३१॥ (192-8)
गुण गावै नानकु नित तेरे ॥४॥१८॥३१॥ (1144-14)
गुण गावै नानकु साधसंगि ॥३॥ (1150-17)
गुण गावै नित नित नित नवे ॥ (1340-14)
गुण गावै पिआरे नित गुण गाइ गुणी समझावणी ॥ (647-18)
गुण गावै बलि राउ सपत पातालि बसंतौ ॥ (1390-17)
गुण गावै मुनि ब्यासु जिनि बेद ब्याकरण बीचारिअ ॥ (1390-14)
गुण गावै रविदासु भगतु जैदेव त्रिलोचन ॥ (1390-10)
गुण गावै सुख सहजि निवासु ॥ (932-7)
गुण गिआनु पदारथु हरि हरि किरतारथु सोभा गुरमुखि होई ॥ (445-9)
गुण गुणहि समाणे मसतकि नाम नीसाणो ॥ (1112-10)
गुण गूड़ गुपत अपार करते निगम अंतु न पावहे ॥ (459-12)
गुण गोपाल उचरु रसना सदा गाईऐ अनदिनो ॥ (784-9)
गुण गोपाल गाईअहि दिनु राती ॥२॥ (194-11)
गुण गोपाल गावहु नित सखीहो सगल मनोरथ पाए राम ॥ (782-17)
गुण गोपाल दिनु रैनि धिआइआ ॥ (1150-4)
गुण गोपाल प्रभ के नित गाहा ॥ (742-8)
गुण गोबिंद गुपाल प्रभ सरनि परउ हरि राइ ॥ (296-12)
गुण गोबिंद न जाणीअहि माइ ॥ (1256-8)
गुण गोबिंद न जाणीऐ नानक सभु बिसमादु ॥११॥ (299-2)
गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥ (296-3)
गुण गोबिंद नित रसन गाइ ॥ (1183-16)
गुण गोविंद अचरज परताप ॥२॥ (198-16)
गुण गोविंद गाउ नित नित प्राण प्रीतम सुआमीआ ॥ (778-8)

गुण गोविंद गावहि नित नीत ॥ (183-14)
गुण गोविंद गावहु सभि हरि जन राग रतन रसना आलाप ॥ (821-3)
गुण गोविंद नित गावणे निरमल साचै नाइ ॥१॥ (46-3)
गुण गोविंद नित गावीअहि अवगुण कटणहार ॥ (48-5)
गुण गोविंद रउं सचु वापारु ॥ (869-6)
गुण गोविंद रवीअहि दिनु राती साधसंगि करि मन की प्रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (898-2)
गुण छोडि अउगण कमावदे दरगह होहि खुआरु ॥ (1284-4)
गुण छोडि बिखु लदिआ अवगुण का वणजारो ॥३॥ (580-13)
गुण जंञ लाड़े नालि सोहै परखि मोहणीऐ लइआ ॥ (765-14)
गुण ते गुण मिलि पाईऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥ (1087-1)
गुण ते नामु परापति होइ ॥२॥ (361-9)
गुण नानकु बोलै भली बाणि ॥ (1190-2)
गुण निधान अपार ठाकुर मनि लोड़ीदा पाइआ ॥ (705-16)
गुण निधान अम्रितु हरि नामा हरि धिआइ धिआइ सुखु पाइआ जीउ ॥१॥ (103-18)
गुण निधान किछु कीम न पाई ॥ (1073-13)
गुण निधान गुण तिन ही गाए जा कउ किरपा धारी ॥ (712-2)
गुण निधान गोबिंद गुर कीआ जा का होइ ॥ (300-6)
गुण निधान गोविंद अनूप ॥ (724-2)
गुण निधान तेरा अंतु न पाइआ ॥ (1342-15)
गुण निधान दइआल पुरख प्रभ सरब सूख दइआला ॥ (674-13)
गुण निधान नानक प्रभु मिलिआ सगल चुकी मुहताईऐ ॥२॥२६॥४९॥ (1214-4)
गुण निधान नानकु जसु गावै सतिगुरि भरमु चुकाइओ ॥ (617-4)
गुण निधान प्रभु तिन ही पाइआ ॥४॥१०॥१५॥ (805-12)
गुण निधान बेअंत अपार ॥ (1147-17)
गुण निधान भगतन कउ बरतनि बिरला पावै कोई ॥१॥ (617-16)
गुण निधान मन तन महि रविआ ॥ (1071-18)
गुण निधान मनमोहन लालन सुखदाई सरबांगै ॥ (1210-1)
गुण निधान मेरा प्रभु करता उसतति कउनु करीजै राम ॥ (784-7)
गुण निधान साहिब मनि मेला ॥ (383-6)
गुण निधान सिमरंति नानक सगल जाचंत जाचिकह ॥४३॥ (1357-17)
गुण निधान सुख सागर सुआमी जलि थलि महीअलि सोई ॥ (782-2)
गुण निधान सुखदाते सुआमी सभ ते ऊच बडाई ॥ रहाउ ॥ (610-15)
गुण निधान हरि नामा ॥ (621-16)
गुण निधानु नवतनु सदा पूरन जा की दाति ॥ (47-4)
गुण निधानु नानक मनि वसिआ बाहुड़ि दूख न थीआ ॥२॥४॥८॥ (1268-6)
गुण निधानु मनि पाइआ एको सचा सोइ ॥ (589-3)
गुण निधानु रिद भीतरि वसिआ ता दूखु भरम भउ भागा ॥ (671-12)

गुण निधानु हरि पाइआ सहजि करे वीचारु ॥ (650-13)
गुण निधि गाइआ सभ दूख मिटाइआ हउमै बिनसी गाठे ॥ (453-19)
गुण पूजा गिआन धिआन नानक सगल घाल ॥ (187-3)
गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥ (287-7)
गुण बेअंत किछु कहणु न जाई कोइ न सकै पहूचा ॥ (578-15)
गुण बेअंत प्रभ गहिर ग्मभीरे ॥ (805-9)
गुण बेअंत सुआमी तेरे कोइ न जानई ॥ (925-7)
गुण मंडे करि सीलु घिउ सरमु मासु आहारु ॥ (553-4)
गुण महि एको निरमलु साचा गुर कै सबदि पछाता हे ॥६॥ (1051-13)
गुण महि गिआनु परापति होइ ॥ (931-19)
गुण महि गुणी समाए जिसु आपि बुझाए लाहा भगति सैसारे ॥ (570-1)
गुण रंगि राते धंनि ते जन जिनी इक मनि धिआइआ ॥ (927-14)
गुण रमंत दूख नासहि रिद भइअंत सांति ॥३॥ (1301-1)
गुण रमण स्रवण अपार महिमा फिरि न होत बिओगु ॥१॥ (502-14)
गुण रवहि गुण संग्रहहि जोती जोति मिलाइ ॥ (850-2)
गुण राम गाए मनि सुभाए हरि गुरमती मनि धिआइआ ॥ (576-11)
गुण रासि बंन्हि पलै आनी ॥ (372-1)
गुण विहूण माइआ मलु धारी ॥ (367-4)
गुण वीचारी गुण संग्रहा अवगुण कढा धोइ ॥ (37-16)
गुण वीचारे गिआनी सोइ ॥ (931-18)
गुण संगि रहंसी खरी सरसी जा रावी रंगि रातै ॥ (765-3)
गुण संग्रहि अउगण सबदि जलाए ॥ (222-7)
गुण संग्रहि अवगण विकणहि आपै आपु पछाणै ॥ (568-12)
गुण संग्रहि प्रभु रिदै निवासी भगति रती हरखाई ॥५॥ (1273-11)
गुण संग्रहु विचहु अउगुण जाहि ॥ (361-7)
गुण संजमि जावै चोट न खावै ना तिसु जमणु मरणा ॥ (76-8)
गुण समूह फल सगल मनोरथ पूरन होई आस हमारी ॥ (1388-19)
गुण साझी तिन संगि बसे आठ पहर प्रभ जापि जीउ ॥ (761-3)
गुण साझी तिन सिउ करी हरि नामु धिआई ॥ (647-9)
गुण सार न जाणी भरमि भुलाणी जोबनु बादि गवाइआ ॥ (763-10)
गुण हारु तै पाइआ रंगु लालु बणाइआ तिसु हभो किछु सुहंदा ॥ (704-2)
गुणकारी गुण संघरै अवरा उपदेसेनि ॥ (755-10)
गुणदाता वरतै सभ अंतरि सिरि सिरि लिखदा साहा हे ॥७॥ (1055-17)
गुणदाता विरला संसारि ॥ (931-19)
गुणदाता हरि राइ है हम अवगणिआरे ॥ (163-12)
गुणवंत नाह दइआलु बाला सरब गुण भरपूरए ॥ (247-12)
गुणवंता हरि हरि दइआलु करि किरपा बखसि अवगण सभि मेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (167-14)

गुणवंती गुण रवै मै पिरु निहचलु भावए ॥ (1109-6)
गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ॥ (17-10)
गुणवंती गुण सारे नीत ॥ (932-1)
गुणवंती नित गुण रवै हिरदै नामु वसाइ ॥ (559-10)
गुणवंती सचु पाइआ त्रिसना तजि विकार ॥ (36-19)
गुणवंती सदा पिरु रावै सतिगुरि मेलि मिलाई हे ॥७॥ (1047-10)
गुणवंती सहु राविआ निरगुणि कूके काइ ॥ (557-8)
गुणवंती सालाहिआ सचे सची सोइ ॥ (68-15)
गुणवंती सालाहिआ सदा थिरु निहचलु हरि पूरा ॥७॥ (511-7)
गुणवंतीआ गुण सारहि अपणे कंत समालहि ना कदे लगै विजोगो ॥ (582-15)
गुणह सुख सागरा ब्रहम रतनागरा भगति वछलु नानक गाइओ ॥२॥१॥५३॥ (683-12)
गुणहि हारु परोइ किस कउ रोईऐ ॥ (687-17)
गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लए रलाइ ॥ रहाउ ॥ (638-11)
गुणा अचुत सदा पूरन नह दोख बिआपहि कली ॥ रहाउ ॥ (1121-16)
गुणा का गाहकु होवै सो गुण जाणै ॥ (361-8)
गुणा का निधानु एकु है आपे देइ ता को पाए ॥ (559-3)
गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥ (765-18)
गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥३॥ (766-2)
गुणा की रासि संग्रहै अवगण कढै विडारि ॥ (1087-8)
गुणा गवाई गंठड़ी अवगण चली बंनि ॥४॥२४॥ (23-10)
गुणी अचारि नही रंगि राती अवगुण बहि बहि रोसी ॥ (689-5)
गुणी गिआनी बहि मता पकाइआ फेरे ततु दिवाए ॥ (773-14)
गुणी गिआनी सुरति बहु कीनी इकु तिलु नही कीमति पाइआ ॥१॥ (1319-5)
गुणी गुणी मिलि लाहा पावसि गुरमुखि नामि वडाई ॥ (1127-2)
गुणीआ गुण ले प्रभ मिले किउ तिन मिलउ पिआरि ॥ (936-8)
गुणु अवगुणु मेरा किछु न बीचारिआ बखसि लीआ खिन माही ॥ (577-6)
गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥ (349-10)
गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥ (9-19)
गुन कहु हरि लहु करि सेवा सतिगुर इव हरि हरि नामु धिआई ॥ (669-1)
गुन कहे नानक हरि हरे हरि हरे ॥२॥१८॥ (1185-7)
गुन कीरति निधि मोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (213-18)
गुन गाइ सुनि लिखि देइ ॥ (838-15)
गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ॥१॥ रहाउ ॥ (1180-3)
गुन गावत अचुत अबिनासी काम क्रोध बिनसे मद ढीठे ॥ (717-10)
गुन गावत अतुल सुखु पाइआ ठाकुर अगम अपारे ॥१॥ (718-2)
गुन गावत गोविंद के सभ इछ पुजामी राम ॥ (848-16)
गुन गावत छीपा दुसटारिओ प्रभि राखी पैज जनगे ॥२॥ (976-10)

गुन गावत तूटै जम जालु ॥१॥ (807-4)
गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥ (289-2)
गुन गावत धिआवत प्रभु अपना कारज सगले सांठे ॥१॥ (625-3)
गुन गावत मनि होइ अनंद ॥ (1338-9)
गुन गावत मनि होइ बिगासा ॥ (1396-11)
गुन गावत सुख चैन ॥१॥ रहाउ ॥ (1272-17)
गुन गावह ठाकुर अबिनासी कलमल सगले झारउ ॥ (532-3)
गुन गावह प्रभ अगम ठाकुर के गुन गाइ रहे हैरान ॥ (1335-12)
गुन गावहि प्रभ दरस पिआरि ॥१॥ (1338-3)
गुन गावहु नित राम के इह अवखद जोग ॥१॥ (807-14)
गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥ (293-1)
गुन गाहक मेरे प्रान अधारा ॥१॥ (1347-9)
गुन गुपाल न जपहि रसना फिरि कदहु से दिह आवहे ॥ (546-9)
गुन गोपाल उचारु दिनु रैनि भए कलमल हान ॥ रहाउ ॥ (1121-6)
गुन गोपाल उचारु रसना टेव एह परी ॥१॥ (1121-1)
गुन गोपाल गाउ नीत ॥ (1272-14)
गुन गोबिंद अम्रित रसु पीउ ॥ (295-7)
गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥ (1426-10)
गुन गोबिंद नित गाईऐ ॥ (624-4)
गुन गोबिद कीरतनु जनु गावै ॥ (285-4)
गुन गोविंद गुरमुखि न जपिआ तपत थम्ह गलि लातिआ ॥ (546-15)
गुन गोविद सद गाईअहि पारब्रहम कै रंगे राम ॥ (848-11)
गुन ते प्रीति बढी अन भांती जनम मरन फिरि तानिआ ॥१॥ (487-11)
गुन नाद धुनि अनंद बेद ॥ (1322-7)
गुन निधान निति गावै नानकु सहसा दुखु मिटाइ ॥२॥३१॥ (378-11)
गुन निधान बेअंत अपार ॥ (292-13)
गुन निधानु प्रगटिओ इह चोलै ॥१॥ (1307-8)
गुन बेअंत बेअंत भनु नानक कहनु न जाई परै पराति ॥२॥२॥३५॥ (535-11)
गुन राम नाम बिसथीरन कीए हरि सगल भवन जसु दीजै ॥४॥ (1324-18)
गुन लाल गावउ गुर देखे ॥ (1230-12)
गुनह उस के सगल आफू तेरे जन देखहि दीदारु ॥३॥ (724-13)
गुनहगार लूण हरामी ॥ (739-4)
गुनहां बखसणहारु सबदु कमावही ॥८॥ (420-3)
गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ॥६१॥ (1381-4)
गुनु अवगनु मेरो कछु न बीचारो ॥ (372-7)
गुनु अवगुनु प्रभि कछु न बीचारिओ करि किरपा अपुना करि लइआ ॥ (829-7)
गुपत प्रगट जा कउ अराधहि पउण पाणी दिनसु राति ॥ (456-1)

गुपत प्रगट सिमरहि प्रभ मेरे सगल भवन का प्रभ धना ॥५॥ (1079-6)
गुपत प्रगट हरि घटि घटि देखहु वरतै ताकु सबाइआ ॥२॥ (1042-17)
गुपता नामु वरतै विचि कलजुगि घटि घटि हरि भरपूरि रहिआ ॥ (1334-14)
गुपता हीरा प्रगट भइओ जब गुर गम दीआ दिखाई ॥२॥१॥३१॥ (483-15)
गुपती खावहि वटिका सारी ॥३॥ (873-5)
गुपती बाणी परगटु होइ ॥ (944-1)
गुपतु करता संगि सो प्रभु डहकावए मनुखाइ ॥ (1001-14)
गुपतु परगटु तूं सभनी थाई ॥ (124-16)
गुपतु परगटु वरतै सभ थाई जोती जोति मिलावणिआ ॥२॥ (120-12)
गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥ (14-7)
गुपतु प्रगटु सभ जाणीऐ जे मनु राखै ठाइ ॥ (57-10)
गुपते बूझहु जुग चतुआरे ॥ (1026-16)
गुमानु करहि मूड़ गुमानीआ विसु खाधी मरीऐ ॥ (316-9)
गुर अंगद दी दोही फिरी सचु करतै बंधि बहाली ॥ (967-7)
गुर अंगद दीअउ निधानु अकथ कथा गिआनु पंच भूत बसि कीने जमत न त्रास ॥ (1399-4)
गुर अपने आगै अरदासि ॥ (1147-18)
गुर अपुने ऊपरि बलि जाईऐ ॥ (741-16)
गुर अपुने कउ नित नित जापि ॥२॥ (1184-16)
गुर अपुने बलिहारी ॥ (626-10)
गुर अमरदास कारण करण जिव तू रखहि तिव रहउ ॥४॥१८॥ (1395-15)
गुर अमरदास की अकथ कथा है इक जीह कछु कही न जाई ॥ (1406-7)
गुर अमरदास कीरतु कहै त्राहि त्राहि तुअ पा सरण ॥१॥१५॥ (1395-5)
गुर अमरदास जालपु भणै तू इकु लोड़हि इकु मंनिअउ ॥३॥१२॥ (1394-14)
गुर अमरदास तारण तरण जनम जनम पा सरणि तुअ ॥२॥१६॥ (1395-8)
गुर अमरदास सचु सल्य भणि तै दलु जितउ इव जुधु करि ॥१॥२१॥ (1396-5)
गुर अमरदासि थिरु थपिअउ परगामी तारण तरण ॥ (1406-16)
गुर अमरु गुरू स्री सति कलिजुगि राखी पति अघन देखत गतु चरन कवल जास ॥ (1399-5)
गुर अम्रित भिंनी देहुरी अम्रितु बुरके राम राजे ॥ (449-14)
गुर अरजुन कल्युचरै तै जनकह कलसु दीपाइअउ ॥९॥ (1408-6)
गुर अरजुन कल्युचरै तै राज जोग रसु जाणिअउ ॥७॥ (1407-19)
गुर अरजुन कल्युचरै तै सहजि जोगु निजु पाइयउ ॥८॥ (1408-3)
गुर अरजुन गुण सहजि बिचारं ॥ (1407-1)
गुर अरजुन सिरि छत्रु आपि परमेसरि दीअउ ॥ (1409-14)
गुर आगै करउ बिनंती जे गुर भावै जिउ मिलै तिवै मिलाईऐ ॥ (245-1)
गुर आगै करि जोदड़ी जन नानक हरि मेलाइ ॥१०॥१॥ (234-15)
गुर उपदेस साचु सुखु जा कउ किआ तिसु उपमा कहीऐ ॥ (1332-12)
गुर उपदेसि काल सिउ जुरै ॥ (1159-19)

गुर उपदेसि जपीऐ मनि साचा ॥ (1077-11)
गुर उपदेसि जवाहर माणक सेवे सिखु सो खोजि लहै ॥१॥ (1328-18)
गुर उपदेसि तुटहि सभि बंधन इहु भरमु मोहु परजालणा ॥१२॥ (1077-11)
गुर उपदेसि दइआ संतोखु ॥ (1152-11)
गुर उपदेसि प्रहिलादु हरि उचरै ॥ (1133-3)
गुर उपदेसि राम रंगि राचा ॥ (1077-11)
गुर उपदेसि सभि दुख परहरी ॥१॥ (1134-5)
गुर उपदेसि साध की संगति बिनसिओ सगल संतापु ॥ (1217-18)
गुर उपदेसि साध की संगति भगतु भगतु ता को नामु परिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1105-9)
गुर उपदेसि हरि नामु धिआइओ सभि किलबिख दुख लाथे ॥१॥ रहाउ ॥ (1320-1)
गुर उपदेसि हरि हिरदै वसिओ सासि गिरासि अपणा खसमु धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (1270-7)
गुर उपदेसु मनै महि लेहु ॥ (178-3)
गुर उपदेसु मोहि कानी सुनिआ ॥ (1347-13)
गुर उपदेसु सुनिओ नहि काननि पर दारा लपटाइओ ॥ (1232-1)
गुर ऊपरि सदा कुरबानु ॥२॥ (864-11)
गुर कउ कुरबानु जाउ हां ॥ (410-12)
गुर कउ जाणि न जाणई किआ तिसु चजु अचारु ॥ (19-2)
गुर करणी बिनु भरमु न भागै ॥१॥ रहाउ ॥ (1190-4)
गुर कहिआ मानु निज निधानु सचु जानु मंत्रु इहै निसि बासुर होइ कल्यानु लहहि परम गति जीउ ॥ (1403-8)
गुर का उपदेसु सुनीजै ॥ (895-19)
गुर का कहिआ अंकि समावै ॥ (933-6)
गुर का कहिआ जे करे सुखी हू सुखु सारु ॥ (1248-9)
गुर का कहिआ मनि वसै हउमै त्रिसना मारि ॥१॥ रहाउ ॥ (22-12)
गुर का दरसनु अगम अपारा ॥१॥ (360-19)
गुर का दरसनु देखि देखि जीवा ॥ (239-16)
गुर का दरसनु देखि निहाल ॥ (864-11)
गुर का दरसनु देखि निहाल ॥ (897-10)
गुर का दरसनु संचहु हरि धनु ॥१॥ (377-2)
गुर का नामु जपिओ दिनु राती गुर के चरन मनि धारिआ ॥ (1218-2)
गुर का बचनु अटल अछेद ॥ (177-6)
गुर का बचनु अनाथ को नाथ ॥ (177-8)
गुर का बचनु कतहु न जाइ ॥ (177-7)
गुर का बचनु जपि मंतु ॥ (895-7)
गुर का बचनु जीअ कै संगि ॥ (177-5)
गुर का बचनु जीअ कै साथ ॥ (177-8)
गुर का बचनु तिनि बाधिओ पाला ॥ (1348-11)

गुर का बचनु परगटु संसारि ॥ (177-9)
गुर का बचनु बसै जीअ नाले ॥ (679-7)
गुर का बचनु सदा अबिनासी ॥ (177-4)
गुर का सबदु अंतरि वसै ता हरि विसरि न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (31-3)
गुर का सबदु अति मीठा लाइआ ॥ (798-16)
गुर का सबदु अम्रित रसु खाइण ॥ (962-13)
गुर का सबदु अम्रित रसु चाखु ॥ (178-1)
गुर का सबदु अम्रित रसु पीउ ॥ (891-7)
गुर का सबदु अम्रित है बाणी ॥ (1057-3)
गुर का सबदु अम्रितु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ (35-8)
गुर का सबदु अम्रितु है सभ त्रिसना भुख गवाए ॥ (850-10)
गुर का सबदु करणी है सारु ॥७॥ (1345-1)
गुर का सबदु करि दीपको इह सत की सेज बिछाइ री ॥ (400-11)
गुर का सबदु कहु हां ॥ (410-2)
गुर का सबदु काटै कोटि करम ॥३॥१॥ (1195-15)
गुर का सबदु को विरला बूझै ॥ (120-14)
गुर का सबदु गुर थै टिकै होर थै परगटु न होइ ॥ (1249-9)
गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥ (282-4)
गुर का सबदु जापि मन सुखा ॥ (889-13)
गुर का सबदु तेरै संगि सहाई ॥ (190-14)
गुर का सबदु दारू हरि नाउ ॥ (1189-7)
गुर का सबदु न चीनिओ फिरि फिरि जोनी पाइ ॥२॥ (162-14)
गुर का सबदु न चीन्हही ततु सारु निरंतर ॥३॥ (419-1)
गुर का सबदु न मेटै कोइ ॥ (864-19)
गुर का सबदु भइओ साखी ॥ (622-19)
गुर का सबदु मंनि वसाए ॥ (113-19)
गुर का सबदु मनि वसिआ हउमै विचहु खोइ ॥ (61-5)
गुर का सबदु मनि वसै मनु तनु निरमलु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (32-14)
गुर का सबदु मने सो सूरा ॥ (1023-15)
गुर का सबदु मनै महि मुंद्रा खिंथा खिमा हढावउ ॥ (359-18)
गुर का सबदु महा रसु मीठा ॥ (1331-15)
गुर का सबदु महा रसु मीठा बिनु चाखे सादु न जापै ॥ (753-6)
गुर का सबदु महा रसु मीठा हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1262-3)
गुर का सबदु मेरै अंतरि धिआनु ॥ (1154-4)
गुर का सबदु रखवारे ॥ (626-7)
गुर का सबदु रखै उर धारे ॥ (117-1)
गुर का सबदु रतंनु है करि चानणु आपि दिखाइआ ॥ (1290-12)

गुर का सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाउ ॥ (920-10)
गुर का सबदु राखु मन माहि ॥ (192-1)
गुर का सबदु रिद अंतरि धारै ॥ (236-14)
गुर का सबदु रिदे महि चीना ॥ (804-15)
गुर का सबदु लगो मनि मीठा ॥ (187-11)
गुर का सबदु वसिआ घट अंतरि से जन सबदि सुहाए ॥ (770-16)
गुर का सबदु वसै मनि जा कै ॥ (1079-11)
गुर का सबदु विसारिआ दूजै भाइ रचंनि ॥ (755-5)
गुर का सबदु वीचारि जोगी ॥ (879-16)
गुर का सबदु सचु नीसाणु ॥ (355-12)
गुर का सबदु सति करि मानु ॥२॥ (897-17)
गुर का सबदु सदा सद अटला ॥ (1340-1)
गुर का सबदु सभि रोग गवाए जिस नो हरि जीउ लाए ॥ (1130-19)
गुर का सबदु समालि तू मूड़े गति मति सबदे पाए ॥ (550-4)
गुर का सबदु सहजि वीचारु ॥ (364-18)
गुर का सबदु हरि भगति द्रिड़ाए ॥ (364-5)
गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥ (286-15)
गुर का सिखु वडभागी हे ॥ (286-16)
गुर का सेवकु दह दिसि जापै ॥३॥ (864-12)
गुर का सेवकु नरकि न जाए ॥ (1075-2)
गुर का सेवकु पारब्रहमु धिआए ॥ (1075-2)
गुर का सेवकु साधसंगु पाए गुरु करदा नित जीअ दाना हे ॥३॥ (1075-3)
गुर किंचत किरपा कीनी ॥ (655-6)
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥ (633-19)
गुर किरपा ते अम्रित मेरी बाणी ॥२॥ (239-10)
गुर किरपा ते इह मति आवै ॥ (375-7)
गुर किरपा ते एहु रोगु जाइ ॥ (1278-2)
गुर किरपा ते किनै विरलै चखि डीठा ॥२॥ (162-4)
गुर किरपा ते को लखे ॥३॥ (211-7)
गुर किरपा ते गुन गाइ अपार ॥ (1235-17)
गुर किरपा ते घट अंतरि वसिआ सबदे सचु सालाहा हे ॥१५॥ (1057-9)
गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥ (469-8)
गुर किरपा ते दलु साधिआ ॥२॥ (210-18)
गुर किरपा ते नाउ मनि वसै सदा रहै उरि धारि ॥ (1417-5)
गुर किरपा ते नाम सिउ बनि आई ॥ (1144-7)
गुर किरपा ते नामु पछानिआ ॥१९॥ (932-7)
गुर किरपा ते नामु वखाणु ॥३॥ (189-6)

गुर किरपा ते नामु वसिआ घट अंतरि नामो नामु धिआइदा ॥१२॥ (1064-12)
गुर किरपा ते नित चवा ॥ (1183-11)
गुर किरपा ते निरमलु होआ जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥ (599-15)
गुर किरपा ते नीचु निवाजिआ ॥३॥ (887-3)
गुर किरपा ते परम पदु पाइआ ॥३॥ (1128-11)
गुर किरपा ते पाईअनि जे देवै देवणहारु ॥ (646-9)
गुर किरपा ते पाईऐ पिआरा अम्रितु अगम अथाह ॥ रहाउ ॥ (604-12)
गुर किरपा ते प्रभू धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (563-12)
गुर किरपा ते बूझीऐ सभु ब्रहमु समाइआ ॥९॥२॥१८॥ (229-10)
गुर किरपा ते मनि वसै करम परापति होइ ॥९॥ (1413-13)
गुर किरपा ते मनि वसै ता सदा सुखु होई ॥१॥ रहाउ ॥ (365-5)
गुर किरपा ते मनु तनु निरमलु निरमल नामु धिआवणिआ ॥७॥ (110-10)
गुर किरपा ते मनु तनु भीजै ॥ (1064-6)
गुर किरपा ते मिलै मिलाइ ॥२॥ (233-3)
गुर किरपा ते मिलै वडिआई हउमै रोगु न ताहा हे ॥९॥ (1058-3)
गुर किरपा ते मुगध मनु मानिआ ॥३॥ (864-6)
गुर किरपा ते मै सगले साधे ॥३॥ (392-11)
गुर किरपा ते मोहि असनाहा ॥२॥ (187-18)
गुर किरपा ते सचि समाइ ॥ (158-13)
गुर किरपा ते सहज सुभाइ ॥ (1173-10)
गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अम्रित बाणी ॥ (920-16)
गुर किरपा ते हरि धनु पाईऐ अनदिनु लागै सहजि धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (1277-10)
गुर किरपा ते हरि निरभउ धिआइआ बिखु भउजलु सबदि तरावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (114-7)
गुर किरपा ते हरि मंनि वसाई ॥१॥ (663-14)
गुर किरपा ते हरि मनि वसै होरतु बिधि लइआ न जाई ॥१॥ (734-1)
गुर किरपा ते हरि रसु पाए ॥ (361-17)
गुर किरपा ते हिरदै वासै भउजलु पारि परला ॥१॥ रहाउ ॥ (891-6)
गुर किरपा ते हुकमु पछाणै ॥ (1027-13)
गुर किरपाल भए तब पाइआ हरि चरणी चितु लाइ ॥२॥ (1199-11)
गुर किरपाल भए तब पाइआ हिरदै अलखु लखारी ॥२॥ (1198-17)
गुर किरपाल हरि भए सहाई ॥३॥ (196-5)
गुर की आगिआ मन महि सहै ॥ (286-17)
गुर की करणी काहे धावहु ॥ (933-8)
गुर की करणी भउ कटीऐ नानक पावहि पारु ॥१॥ (1248-9)
गुर की कार कमाइ महलु पछाणीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (420-6)
गुर की कार कमाइ लाहा घरि आणिआ ॥ (752-5)
गुर की कार कमावणी भाई आपु छोडि चितु लाइ ॥ (639-3)

गुर की कार करे धन बालड़ीए हरि वरु देइ मिलाए राम ॥ (770-7)
गुर की कीरति जपीऐ हरि नाउ ॥ (897-15)
गुर की चरणी लगि रहु विचहु आपु गवाइ ॥ (61-7)
गुर की चाल गुरू ते जापै ॥ (1045-14)
गुर की टहल गुरू की सेवा गुर की आगिआ भाणी ॥ (671-15)
गुर की टेक रहहु दिनु राति ॥ (864-9)
गुर की दइआ ते मेरा वड परतापु ॥३॥ (239-11)
गुर की दाति न मेटै कोई ॥ (1030-16)
गुर की दाति सदा मन अंतरि बाणी सबदि वजाई हे ॥१४॥ (1044-15)
गुर की दाति सबद सुखु अंतरि सदा निबहै तेरै नालि ॥१॥ रहाउ ॥ (1259-10)
गुर की दीखिआ से सचि राते ॥ (944-3)
गुर की धूड़ि करउ इसनानु ॥ (1270-9)
गुर की धूरि करउ नित मजनु किलविख मैलु उतारिआ ॥१॥ (1218-3)
गुर की पउड़ी ऊचो ऊचा ॥ (153-18)
गुर की पउड़ी ऊतम ऊची दरि सचै हरि गुण गाइदा ॥७॥ (1059-2)
गुर की पउड़ी जाइ चड़ै करमि परापति होई ॥ (1416-19)
गुर की पउड़ी साच की साचा सुखु होई ॥ (766-6)
गुर की पैरी पाइ काज सवारिअनु ॥ (517-17)
गुर की बचनी हाटि बिकाना जितु लाइआ तितु लागा ॥१॥ (991-1)
गुर की बाणी अनदिनु गावै सहजे भगति करावणिआ ॥२॥ (110-4)
गुर की बाणी गुर ते जाती जि सबदि रते रंगु लाइ ॥ (1346-11)
गुर की बाणी जिसु मनि वसै ॥ (1340-1)
गुर की बाणी नामि वजाए ॥ (362-10)
गुर की बाणी निरमली हरि रसु पीआइआ ॥ (1088-10)
गुर की बाणी विटहु वारिआ भाई गुर सबद विटहु बलि जाई ॥ (1177-6)
गुर की बाणी सबदि पछाती साचि रहे लिव लाए ॥७॥ (1155-13)
गुर की बाणी सबदि सुणाए ॥१॥ (1277-10)
गुर की बाणी सभ माहि समाणी ॥ (1075-9)
गुर की बाणी सहज बैरागु ॥४॥७॥ (560-7)
गुर की बाणी सिउ रंगु लाइ ॥ (387-13)
गुर की बाणी सिउ लाइ पिआरु ॥ (1335-3)
गुर की भगति करहि किआ प्राणी ॥ (1032-2)
गुर की भगति सदा गुण गाउ ॥ (897-16)
गुर की मति जीइ आई कारि ॥१॥ (221-1)
गुर की मति तूं लेहि इआने ॥ (288-18)
गुर की महिमा अगम है किआ कथे कथनहारु ॥३॥ (52-16)
गुर की महिमा कथनु न जाइ ॥ (1271-11)

गुर की महिमा कथनु न जाइ ॥ (864-12)
गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सत सरु ॥ (397-1)
गुर की महिमा बेद न जाणहि ॥ (1078-9)
गुर की मूरति मन महि धिआनु ॥ (864-2)
गुर की रेणु नित मजनु करउ ॥ (239-17)
गुर की वडिआई नित चड़ै सवाई अपड़ि को न सकोई ॥ (309-6)
गुर की सरणि पए भै नासे साची दरगह माने ॥ (615-13)
गुर की सरणि पवै सुखु थीऐ ॥ (904-16)
गुर की सरणि रहउ कर जोरि ॥ (864-17)
गुर की साखी अम्रित बाणी पीवत ही परवाणु भइआ ॥ (360-9)
गुर की साखी अम्रित भाखी ॥ (1058-15)
गुर की साखी राखै चीति ॥ (974-14)
गुर की साखी सहजे चाखी त्रिसना अगनि बुझाए ॥ (753-18)
गुर की सिख को विरला लेवै ॥ (509-13)
गुर की सुरति निकटि करि जानु ॥ (897-16)
गुर की सेव न जाणै कोई ॥ (1078-8)
गुर की सेवा कदे न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥३॥ (1130-15)
गुर की सेवा करहु दिनु राति ॥ (741-15)
गुर की सेवा करि पिरा जीउ हरि नामु धिआए ॥ (246-11)
गुर की सेवा खरी सुखाली जिस नो आपि कराए ॥ (246-13)
गुर की सेवा गुर भगति है विरला पाए कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (66-16)
गुर की सेवा चाकरी भै रचि कार कमाइ ॥ (549-11)
गुर की सेवा चाकरी मनु निरमलु सुखु होइ ॥ (61-5)
गुर की सेवा दूखु न लागी ॥ (864-19)
गुर की सेवा पाए मानु ॥ (864-10)
गुर की सेवा मीठी लागी ॥ (1050-17)
गुर की सेवा मुकति पराइणि अनदिनु कीरतनु कीना हे ॥११॥ (1028-9)
गुर की सेवा विसरी किउ मनु रहै हजूरि ॥ (854-16)
गुर की सेवा सदा सुखु पाए ॥ (362-9)
गुर की सेवा सबदु वीचारु ॥ (223-14)
गुर की सेवा सेवको नानक खसमै बंदा ॥४॥१७॥११९॥ (400-18)
गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए ॥ (421-1)
गुर की सेवा सो करे पिआरे जिस नो होइ दइआला ॥ (802-9)
गुर की सेवा सो जनु पाए ॥ (1270-10)
गुर की हरि टेक टिकाइ ॥ (895-6)
गुर के गुण अनदिनु नित गाउ ॥ (1270-8)
गुर के चरण ऊपरि बलि जाई ॥ (628-4)

गुर के चरण ऊपरि मेरे माथे ॥ (187-9)
गुर के चरण कमल मन धिआइ ॥ (741-13)
गुर के चरण धिआइ तू तूटहि माइआ बंध ॥२॥ (1093-14)
गुर के चरण धोइ धोइ पीवा ॥१॥ (239-17)
गुर के चरण मन माहि वसाइ ॥ (1335-2)
गुर के चरण रिदै उरि धारि ॥ (192-2)
गुर के चरण वसे मन माही ॥ (107-1)
गुर के चरण विटहु बलि जाउ ॥ (1270-8)
गुर के चरण सरेवणे तीरथ हरि का नाउ ॥ (52-19)
गुर के चरण हिरदै वसाइ ॥ (190-13)
गुर के चरन कमल नमसकारि ॥ (866-1)
गुर के चरन कमल मनि वसे ॥ (897-7)
गुर के चरन कवल रिद धारे ॥ (624-2)
गुर के चरन केस संगि झारे ॥१॥ (387-12)
गुर के चरन जीअ का निसतारा ॥ (684-8)
गुर के चरन नमसकारि ॥ (895-11)
गुर के चरन बसे मन मेरै ॥ (1221-5)
गुर के चरन बसे रिद भीतरि सुभ लखण प्रभि कीने ॥ (618-11)
गुर के चरन मन महि धिआइ ॥ (51-3)
गुर के चरन रिदै उरि धारे ॥ (865-15)
गुर के चरन रिदै परवेसा ॥ (531-16)
गुर के चरन रिदै लै धारउ ॥ (864-2)
गुर के चरन लगे मनि मीठे ॥ (801-17)
गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ॥ (919-19)
गुर के चरन हिरदै वसाइ मूड़े पिछले गुनह सभ बखसि लइआ ॥१५॥ (435-13)
गुर के चरन हिरदै वसाए ॥ (1270-13)
गुर के चरन हिरदै वसाए ॥ (395-17)
गुर के चाकर ठाकुर भाणे ॥ (1190-7)
गुर के पग सिमरउ दिनु राती मनि हरि हरि हरि बसिआ ॥ (1319-11)
गुर के बचन करन सुनि धिआवै भव सागरु पारि परै ॥१॥ रहाउ ॥ (1263-13)
गुर के बचन सति जीअ धारहु ॥ (1401-10)
गुर के बचन सति सति करि माने मेरे ठाकुर बहुतु पिआरे ॥६॥ (982-1)
गुर के भाणे विचि अम्रितु है सहजे पावै कोइ ॥ (31-14)
गुर के भै की सार न जाणहि ॥ (1054-15)
गुर के सेवक कउ दुखु न बिआपै ॥ (864-12)
गुर के सेवक की पूरन घाल ॥ (864-11)
गुर के सेवक सतिगुर पिआरे ॥ (1026-11)

गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै ॥ (286-17)
गुर कै चरणि चितु लागा ॥ (898-10)
गुर कै तकीऐ नामि अधारे ॥ (118-4)
गुर कै तकीऐ साचै ताणि ॥ (1275-1)
गुर कै दरसनि मुकति गति होइ ॥ (361-1)
गुर कै दरसनि मोख दुआरु ॥ (361-3)
गुर कै दरसनि सदा सुखु होइ ॥२॥ (361-2)
गुर कै बचनि कटी जम फासी ॥ (177-5)
गुर कै बचनि कटे भ्रम भेद ॥ (177-7)
गुर कै बचनि कीनो राजु जोगु ॥ (239-12)
गुर कै बचनि जपिओ नाउ नानक प्रगट भइओ संसारै ॥२॥४५॥६८॥ (1217-16)
गुर कै बचनि जागिआ मेरा करमु ॥ (239-14)
गुर कै बचनि धिआइओ मोहि नाउ ॥ (239-9)
गुर कै बचनि न आवै हारि ॥ (177-9)
गुर कै बचनि नरकि न पवै ॥ (177-8)
गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥ (285-3)
गुर कै बचनि पाइआ नाउ निधि ॥६॥ (239-13)
गुर कै बचनि पेखिओ सभु ब्रहमु ॥४॥ (239-12)
गुर कै बचनि भगति थाइ पाइ ॥ (365-1)
गुर कै बचनि मिटावहु आपु ॥ (177-3)
गुर कै बचनि मिटिआ मेरा आपु ॥ (239-11)
गुर कै बचनि मिटिआ मेरा भरमु ॥ (239-12)
गुर कै बचनि मेरे कारज सिधि ॥ (239-13)
गुर कै बचनि मोहि परम गति पाई ॥ (239-8)
गुर कै बचनि रचै राम कै रंगि ॥१॥ (177-5)
गुर कै बचनि रसना अम्रितु रवै ॥३॥ (177-9)
गुर कै बचनि रिदै धिआनु धारी ॥ (740-15)
गुर कै बचनि सुणि रसन वखाणी ॥ (239-10)
गुर कै बचनि हरि के गुण गाइ ॥२॥ (177-7)
गुर कै बाणि बजर कल छेदी प्रगटिआ पदु परगासा ॥ (332-18)
गुर कै भाइ चलो साचि संगूती राम ॥ (843-12)
गुर कै भाणै करम कमावै ॥ (905-3)
गुर कै भाणै चलै ता आपु जाइ ॥ (665-4)
गुर कै भाणै चलै दिनु राती नामु चेति सुखु पाइदा ॥१३॥ (1062-11)
गुर कै भाणै जे चलहि ता अनदिनु राचहि हरि नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (66-3)
गुर कै भाणै जे चलै बहुड़ि न आवणु होइ ॥ (1248-10)
गुर कै भाणै जो चलै तां जीवण पदवी पाहि ॥ (508-15)

गुर कै भाणै जो चलै दुखु न पावै कोइ ॥३॥ (31-13)
गुर कै भाणै जो चलै सभि दुख निवारणहारि ॥ (89-9)
गुर कै भाणै नाचहि ता सुखु पावहि अंते जम भउ भागै ॥ रहाउ ॥ (506-5)
गुर कै भै ऊजल हउमै मलु जाए ॥ (121-17)
गुर कै भै केते निसतरे भै विचि निरभउ पाइ ॥ (551-17)
गुर कै भै भाइ जो रते सिफती सचि समाउ ॥३॥ (427-3)
गुर कै भै साचै साचि समाइ ॥ (363-13)
गुर कै संगि तरिआ सभु लोगु ॥५॥ (239-13)
गुर कै संगि रहै दिनु राती रामु रसनि रंगि राता ॥ (1126-17)
गुर कै संगि सगल निसतारा ॥३॥ (864-18)
गुर कै संगि सबदि घरु जाणै ॥ (1027-11)
गुर कै सबदि अंतरि ब्रहमु पछाणु ॥२॥ (364-17)
गुर कै सबदि अंतरि सहजि रीधे ॥ (231-10)
गुर कै सबदि अम्रितु पीआइआ ॥ (1056-18)
गुर कै सबदि अराधीऐ नामि रंगि बैरागु ॥ (1425-4)
गुर कै सबदि आपु पछाणु ॥ (664-18)
गुर कै सबदि इहु गुफा वीचारे ॥ (127-1)
गुर कै सबदि इहु मनु मउलिआ हरि गुणदाता नामु वखाणै ॥१॥ रहाउ ॥ (1175-17)
गुर कै सबदि एक लिव लागी तेरै नामि रते त्रिपतासी ॥१॥ रहाउ ॥ (1012-17)
गुर कै सबदि एहु मनु राता दुबिधा सहजि समाणी ॥ (1350-19)
गुर कै सबदि कमलु परगासा ॥७॥ (224-3)
गुर कै सबदि कमलु परगासिआ हउमै दुरमति खोई ॥ (1334-7)
गुर कै सबदि कमलु बिगसिआ ता सउपिआ भगति भंडारु ॥ (950-3)
गुर कै सबदि जग माहि समाणी ॥ (1174-5)
गुर कै सबदि जीवतु मरै गुरमुखि भवजलु तरणा ॥२॥ (69-4)
गुर कै सबदि जीवतु मरै हरि नामु वसै मनि आइ ॥१॥ (33-8)
गुर कै सबदि जो मरि जीवै सो पाए मोख दुआरु ॥ (941-19)
गुर कै सबदि तथा चितु लाए ॥ (993-4)
गुर कै सबदि तरे मुनि केते इंद्रादिक ब्रहमादि तरे ॥ (1125-9)
गुर कै सबदि तिखा निवारी सहजे सूखि समावणिआ ॥३॥ (113-17)
गुर कै सबदि तिन मेलि मिलाउ ॥ (1065-1)
गुर कै सबदि दरु घरु सूझै ॥ (841-8)
गुर कै सबदि धिआइ तू सचि लगी पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (994-1)
गुर कै सबदि नजीकि पछाणहु ॥ (1069-1)
गुर कै सबदि नाम आधार ॥ (1275-2)
गुर कै सबदि नाम नीसाणु ॥३॥ (1129-16)
गुर कै सबदि नामि नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (1175-5)

गुर कै सबदि नामि नीसाणै ॥ (109-12)
गुर कै सबदि नामि सवारे ॥ (122-19)
गुर कै सबदि पंच संघारै ॥ (230-12)
गुर कै सबदि पछाणीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥ (37-12)
गुर कै सबदि पछाणीऐ दुखु हउमै विचहु गवाइ ॥ (35-2)
गुर कै सबदि पछाना तोहि ॥ (1187-16)
गुर कै सबदि परखि परखाइआ ॥ (112-9)
गुर कै सबदि परजालीऐ ता इह विचहु जाइ ॥ (853-14)
गुर कै सबदि परजालीऐ ता एह विचहु जाइ ॥ (513-16)
गुर कै सबदि पवित्रु सरीरा ॥ (1065-7)
गुर कै सबदि पावै सभि पारि ॥ (839-16)
गुर कै सबदि बनावहु इहु मनु ॥ (377-2)
गुर कै सबदि भगति निसतारणु ॥ (1056-3)
गुर कै सबदि भरम भउ भागै ॥ (1070-19)
गुर कै सबदि भरम भउ भागै ॥ (686-3)
गुर कै सबदि भरे भंडारा ॥ (664-2)
गुर कै सबदि भाउ दूजा जाए ॥ (126-14)
गुर कै सबदि भेदिआ इन बिधि वसिआ मनि आइ ॥ (555-12)
गुर कै सबदि भ्रमु कटीऐ अचिंतु वसै मनि आइ ॥१॥ (756-19)
गुर कै सबदि मंत्रु मनु मान ॥ (864-2)
गुर कै सबदि मन कउ समझावहि ॥ (1028-13)
गुर कै सबदि मनु जीतिआ गति मुकति घरै महि पाइ ॥ (26-15)
गुर कै सबदि मनु तनु भिजै आपि वसै मनि आइ ॥ (551-13)
गुर कै सबदि मनु तनु रपै हरि सिउ रहै समाइ ॥३०॥ (756-13)
गुर कै सबदि मनु भेदीऐ सदा वसै हरि नालि ॥ (548-12)
गुर कै सबदि मनै मनु मिलाए ॥ (121-18)
गुर कै सबदि मरहि पंच धातू ॥ (1078-5)
गुर कै सबदि मरहि फिरि जीवहि तिन कउ मुकति दुआरि ॥ (1132-12)
गुर कै सबदि मरै मनु मारे सुंदरि जोगाधारी जीउ ॥३॥ (993-6)
गुर कै सबदि मरै मनु मारे हउमै जाइ समाइआ ॥५॥ (1068-8)
गुर कै सबदि महलु घरु दीसै ॥१॥ रहाउ ॥ (839-2)
गुर कै सबदि मिलिआ मै प्रीतमु हउ सतिगुर विटहु वारिआ ॥१॥ (1113-19)
गुर कै सबदि मिलिआ सचु पाइआ सचे सचि समाइदा ॥१२॥ (1060-8)
गुर कै सबदि मेरा हरि प्रभु धिआईऐ सहजे सचि समावणिआ ॥१॥ (113-2)
गुर कै सबदि रचै मन भाइ ॥ (903-9)
गुर कै सबदि रता बैरागी निज घरि ताड़ी लाई ॥६॥ (1232-13)
गुर कै सबदि रते रंगु लाए ॥ (1055-14)

गुर कै सबदि रपै रंगु लाइ ॥ (941-11)
गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥३॥ (1173-2)
गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥७॥ (1278-1)
गुर कै सबदि रहिआ भरपूरे ॥ (120-17)
गुर कै सबदि राता सहजे माता सहजे रहिआ समाए ॥६॥ (753-19)
गुर कै सबदि रिदै दिखाइआ ॥ (120-2)
गुर कै सबदि वणजनि वापारी नदरी आपि मिलाइदा ॥४॥ (1059-17)
गुर कै सबदि वसै मनि आए ॥ (1065-10)
गुर कै सबदि विचहु मैलु गवाइ ॥ (560-9)
गुर कै सबदि वीचारि अनदिनु हरि जपु जापणा ॥ (516-8)
गुर कै सबदि वीचारीऐ गुण महि रहै समाइ ॥ (1282-1)
गुर कै सबदि वेखै सद हजूरि ॥ (1173-18)
गुर कै सबदि संतोखीआ नानक बिगसा नाइ ॥२॥ (1087-9)
गुर कै सबदि सच नामि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1176-12)
गुर कै सबदि सचि चितु लाए ॥ (1064-7)
गुर कै सबदि सचि लिव लाइ ॥२॥ (230-10)
गुर कै सबदि सचै बैरागि ॥ (360-19)
गुर कै सबदि सद जीवन मुकत भए हरि कै नामि लिव लाए राम ॥ (771-3)
गुर कै सबदि सद रहै समाए ॥ (120-16)
गुर कै सबदि सदा जनु सोहै ॥ (1049-11)
गुर कै सबदि सदा दरि सोहै हउमै मारि पछाता हे ॥१३॥ (1053-3)
गुर कै सबदि सदा सचु जाता मिलि सचे सुखु पावणिआ ॥४॥ (128-7)
गुर कै सबदि सदा सालाही ॥ (1056-6)
गुर कै सबदि सदा सालाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥८॥ (1065-9)
गुर कै सबदि सदा हरि धिआए एहा भगति हरि भावणिआ ॥७॥ (122-5)
गुर कै सबदि समाईऐ परमारथु जाणै ॥२॥ (419-9)
गुर कै सबदि सलाहणा घटि घटि डीठु अडीठु ॥२॥ (54-16)
गुर कै सबदि सलाहीऐ अंतरि प्रेम पिआरु ॥ (1286-18)
गुर कै सबदि सलाहीऐ हरि नामि समावै ॥ (791-18)
गुर कै सबदि सहजे सुखि समावै ॥ (114-13)
गुर कै सबदि साचु उर धारै ॥१॥ रहाउ ॥ (1174-17)
गुर कै सबदि सुखु सांति सरीर ॥ (361-4)
गुर कै सबदि हउमै बिखु मारे ॥ (1133-9)
गुर कै सबदि हउमै बिखु मारै ता निज घरि होवै वासो ॥ (940-6)
गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै ॥ (1174-19)
गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै ॥ (842-9)
गुर कै सबदि हरि नदरि निहाले ॥ (1065-4)

गुर कै सबदि हरि नामि चितु लाए ॥ (1056-2)
गुर कै सबदि हरि नामि पिआरा ॥ (1057-13)
गुर कै सबदि हरि नामु वखाणै ॥ (1057-1)
गुर कै सबदि हरि मंनि वसाए ॥ (1064-12)
गुर कै सबदि हरि रंगु चड़ाए ॥ (114-5)
गुर कै सबदि हरि रहिआ समाइ ॥२॥ (841-6)
गुर कै सबदि हुकमु पछाणु ॥८॥ (223-8)
गुर कै सबदे आपु गवाए ॥ (1067-6)
गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥ (1065-11)
गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥ (224-2)
गुर कै सबदे जे मरै फिरि मरै न दूजी वार ॥ (1009-4)
गुर कै सबदे तोलि तोलाए अंतरि सबदि पछाता हे ॥१४॥ (1053-4)
गुर कै सबदे दरि नीसाणै ॥ (1330-17)
गुर कै सबदे नेड़ि न आई ॥ (1054-16)
गुर कै सबदे मोख दुआरा ॥ (1052-14)
गुर कै सबदे सचि समावहि ॥ (1067-3)
गुर कै सबदे सहजि सुभाए ॥ (1068-14)
गुर कै सबदे हउमै खोवै ॥ (1062-1)
गुर कै सिखि सतिगुरू धिआइआ ॥ (869-16)
गुर कै हेति साचै प्रेम पिआरि ॥१॥ रहाउ ॥ (1173-11)
गुर को सबदु मेरै हीअरै बासै हरि नामा मन संगि धरहु ॥ (828-5)
गुर क्रिपाल जब भए त अवगुण सभि छपे ॥ (710-7)
गुर क्रिपाल नानक हरि मेलिओ तउ मेरी सूखि सेजरीआ ॥२॥२२॥४५॥ (1213-8)
गुर क्रिपालि क्रिपा किंचत गुरि कीनी हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (170-14)
गुर खिनु खिनु प्रीति लगावहु मेरै हीअरै मेरे प्रीतम नामु पराना ॥ (697-4)
गुर गम गिआन बतावै भेद ॥ (343-17)
गुर गम प्रमाणि अजरु जरिओ सरि संतोख समाइयउ ॥ (1408-3)
गुर गमि चीनै बिरला कोइ ॥ (974-7)
गुर गमि प्रमाणु तै पाइओ सतु संतोखु ग्राहजि लयौ ॥ (1392-3)
गुर गमि भेदु सु हरि का पावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (344-9)
गुर गिआन अंजन प्रभ निरंजन जलि थलि महीअलि पूरिआ ॥ (456-12)
गुर गिआन अंजनि काटिओ भ्रमु सगला अवरु न दीसै एक बिना ॥१२॥ (1079-15)
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥ (124-9)
गुर गिआन अंजनु सतिगुरू पाइआ अगिआन अंधेर बिनासे ॥ (573-14)
गुर गिआन इंद्री द्रिड़ता ॥ (873-11)
गुर गिआन कीरतन गोबिंद रमणं काटीऐ जम जाल ॥२॥ (502-8)
गुर गिआन दीपक उजिआरीआ ॥१॥ (210-13)

गुर गिआनु अपारा सिरजणहारा जिनि सिरजी तिनि गोई ॥ (688-7)
गुर गिआनु खड़गु हथि धारिआ जमु मारिअड़ा जमकालि ॥७॥ (235-4)
गुर गिआनु गुरू हरि मंगीआ राम ॥ (575-19)
गुर गिआनु पदारथु नामु है हरि नामो देइ द्रिड़ाइ ॥ (759-5)
गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ अगिआनु अंधेरा जाइ ॥२॥ (29-6)
गुर गिआनु मनि द्रिड़ाए रहसाए नही आए सहजाए मनि निधानु पाए ॥ (408-13)
गुर गिआनु साचा थानु तीरथु दस पुरब सदा दसाहरा ॥ (687-14)
गुर गुरु एको वेस अनेक ॥१॥ (357-16)
गुर गोपाल आनंदा ॥ (624-5)
गुर गोपाल मेरै मनि भाए ॥ (1172-11)
गुर गोबिंद के बिनु मिले पलटि भई सभ खेह ॥१७९॥ (1374-3)
गुर गोबिंद गोपाल गुर गुर पूरन नाराइणह ॥ (710-4)
गुर गोबिंदु पारब्रहमु पूरा ॥ (202-10)
गुर गोरख की तै बूझ न पाई ॥ (886-14)
गुर गोविंदु गोविंदु गुरू है नानक भेदु न भाई ॥४॥१॥८॥ (442-18)
गुर चरण लागि हम बिनवता पूछत कह जीउ पाइआ ॥ (475-14)
गुर चरण लागी सहजि जागी सगल इछा पुंनीआ ॥ (846-5)
गुर चरण लागे भरम भागे काज सगल सवारिआ ॥ (778-17)
गुर चरण लागे सदा जागे मनि वजीआ वाधाईआ ॥ (782-5)
गुर चरण सरेवत दुखु गइआ ॥ (1183-17)
गुर चरणी इक सरधा उपजी मै हरि गुण कहते त्रिपति न भईआ ॥४॥ (834-6)
गुर चरणी जा का मनु लागै ॥ (864-10)
गुर चरणी जिन मनु लगा से वडभागी माइ ॥ (49-16)
गुर चरणी ता का मनु लाग ॥४॥६॥८॥ (864-13)
गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे आपु मिटाइआ आपै ॥ (453-8)
गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे मनि चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ (780-8)
गुर चरणी सदा चितु लाइआ ॥ (110-10)
गुर चरणी सेवकु लागा ॥ (879-11)
गुर चरन बोहिथ मिलिओ भागी उतरिओ संसार ॥१॥ (1227-6)
गुर चरन मसतकु डारि पही ॥ (1272-10)
गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥ (921-19)
गुर चरन लागे दिन सभागे सरब गुण जगदीसरै ॥ (926-12)
गुर चरन लागे महा भागे सदा अनदिनु जागिआ ॥ (691-13)
गुर चरन सरेवहि गुरसिख तोर ॥ (1170-9)
गुर चरनी जा का मनु लागा ॥ (897-19)
गुर चरनी मनु लागा ॥ (599-10)
गुर चरनी लागि तरिओ भव सागरु जपि नानक हरि हरि नामा ॥४॥२६॥९०॥ (630-14)

गुर चेले अपना मनु मानिआ ॥ (904-9)
गुर चेले की संधि मिलाए ॥ (877-19)
गुर चेले है मनु मानिआ ॥ (657-14)
गुर जपु जापि जपत फलु पाइआ गिआन दीपकु संत संगना ॥१२॥ (1080-16)
गुर जाने जिन मंता ॥ (1006-2)
गुर जी के दरसन कउ बलि जाउ ॥ (193-16)
गुर जीउ संगि तुहारै जानिओ ॥ (1216-10)
गुर जेवडु अवरु न दिसई आठ पहर तिसु जापि ॥ (53-4)
गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई ॥४॥१॥ (572-17)
गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई राम ॥ (572-14)
गुर जेवडु दाता को नही जिनि दिता आतम दानु ॥२॥ (52-6)
गुर जैसा नाही को देव ॥ (1142-4)
गुर तारि तारणहारिआ ॥ (878-2)
गुर तुठे ते पाईऐ सचु साहिबु सोई ॥१॥ (396-18)
गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके ॥ (449-15)
गुर तुठै हरि प्रभु मेलिआ सभ किलविख कटि विकार ॥ (1416-8)
गुर ते उपजै सबदु वीचारा ॥ (768-3)
गुर ते कीमति पाईऐ सचि सबदि सोझी पाइ ॥७॥ (427-17)
गुर ते गिआनु ऊपजै महा ततु बीचारा ॥ (424-13)
गुर ते गिआनु नाम रतनु पाइआ ॥ (1044-3)
गुर ते गिआनु पाइआ अति खड़गु करारा ॥ (1087-4)
गुर ते गिआनु पाए जनु कोइ ॥ (158-3)
गुर ते घरु दरु पाइआ भगती भरे भंडारा ॥२॥ (424-13)
गुर ते जानिआ हां ॥ (410-1)
गुर ते दरु घरु जाणीऐ सो जाइ सिञाणै ॥ (419-5)
गुर ते दीसै सो तिस ही माहि ॥ (840-16)
गुर ते नामु पाईऐ वडी वडिआई ॥१॥ (424-12)
गुर ते निरमलु जाणीऐ निरमल देह सरीरु ॥ (57-6)
गुर ते पवित पावन सुचि होइ ॥ (158-6)
गुर ते पाए मुकति दुआरु ॥१॥ (158-4)
गुर ते बाहरि किछु नही गुरु कीता लोड़े सु होइ ॥२॥ (52-14)
गुर ते बूझै ता दरु सूझै ॥ (1044-13)
गुर ते बूझै त्रिभवणु सूझै ॥ (1021-14)
गुर ते बूझै सीझै सोइ ॥ (158-4)
गुर ते भूले आवहु जावहु ॥ (1030-17)
गुर ते मनु मारिआ सबदु वीचारिआ ते विरले संसारा ॥ (1125-14)
गुर ते महलु पछाणा ॥ (1006-5)

गुर ते महलु परापते जिसु लिखिआ होवै मथि ॥१॥ (44-5)
गुर ते मारगु पाईऐ चूकै मोहु गुबारु ॥ (33-11)
गुर ते मुहु फेरे जे कोई गुर का कहिआ न चिति धरै ॥ (1334-17)
गुर ते मुहु फेरे तिन्ह जोनि भवाईऐ ॥ (832-8)
गुर ते वाट महलु घरु पाए ॥३॥ (413-19)
गुर ते सबदि मिलावा होइ ॥२॥ (158-6)
गुर ते समझ पड़ी किआ डरणा ॥ (1022-16)
गुर ते समझि रहै मिहमाणु ॥ (1188-19)
गुर ते सहजु साचु बीचारु ॥ (158-4)
गुर ते सांति ऊपजै जिनि त्रिसना अगनि बुझाई ॥ (424-11)
गुर ते सांति वसै मनि आए ॥ (158-5)
गुर ते साची सेवा होइ ॥ (158-2)
गुर ते साति भगति करे दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (117-9)
गुर ते साति सहज सुखु बाणी ॥ (664-11)
गुर ते सुझै निरंजन देव ॥१॥ रहाउ ॥ (862-16)
गुर दइआल भए सुखदाई अंधुलै माणिकु देखा ॥१॥ रहाउ ॥ (1209-14)
गुर दइआल समरथ गुर गुर नानक पतित उधारणह ॥१॥ (710-5)
गुर दरसनि उधरै संसारा ॥ (361-1)
गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥ (282-18)
गुर दरसु पाइआ अगिआनु गवाइआ अंतरि जोति प्रगासी ॥ (1116-4)
गुर दीखिआ घरि देवण जाहि ॥ (951-13)
गुर दीखिआ जिह मनि बसै नानक मसतकि भागु ॥१॥ (260-5)
गुर दीखिआ ले जपु तपु कमाहि ॥ (356-8)
गुर दीपकु गिआनु सदा मनि बलीआ जीउ ॥ (173-7)
गुर दुआरै नाउ पाईऐ बिनु सतिगुर पलै न पाइ ॥ (1015-17)
गुर दुआरै हरि कीरतनु सुणीऐ ॥ (1075-3)
गुर देखे सरधा मन पूरी जिउ चात्रिक प्रिउ प्रिउ बूंद मुखि पईआ ॥१॥ (836-14)
गुर देवहु सबदु सुभाइ मै मूड़ निसतारीऐ राम ॥ (1114-4)
गुर नानक अंगद अमर लागि उतम पदु पायउ ॥ (1407-3)
गुर नानक कउ प्रभू दिखाइआ जलि थलि त्रिभवणि रुखी ॥२॥२॥३०॥ (617-8)
गुर नानक जपि जपि सद जीवा ॥४॥४३॥५६॥ (1152-19)
गुर नानक जब भए दइआरा सरब सुखा निधि पांही ॥२॥९२॥११५॥ (1226-12)
गुर नानक देव गोविंद रूप ॥८॥१॥ (1192-13)
गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥ (296-2)
गुर नानक बाह पकरि हम राखा ॥४॥२॥९६॥ (394-18)
गुर नानक सरणागति तोरी ॥४॥२६॥ (377-9)
गुर नानक हरि नामु द्रिड़ाइआ भंनण घड़ण समरथु ॥ (317-3)

गुर नालि तुलि न लगई खोजि डिठा ब्रहमंडु ॥ (50-2)
गुर निवि निवि लागउ पाइ देहु दिखारीआ ॥३॥ (241-1)
गुर पउड़ी सभ दू ऊचा होइ ॥ (363-5)
गुर परचै गुर परचै धिआइआ मै हिरदै रामु रवाइआ राम ॥ (443-4)
गुर परचै तिसु कालु न खाइ ॥ (840-8)
गुर परचै परवाणु राज महि जोगु कमायउ ॥ (1408-2)
गुर परचै मनु साचि समाइ ॥ (943-12)
गुर परमेसुर सगल निवास ॥ (900-18)
गुर परसादि अकथु नानकि वखाणिआ ॥४॥५॥१०७॥ (397-16)
गुर परसादि अकलि भई अवरै नातरु था बेगाना ॥१॥ रहाउ ॥ (333-4)
गुर परसादि अगिआनु बिनासै अनदिनु जागै वेखै सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (364-1)
गुर परसादि अम्रित रसु चीन्हिआ ओइ पावहि मोख दुआरे ॥२॥ (1199-4)
गुर परसादि ऐसी बुधि समानी ॥ (337-4)
गुर परसादि करे बीचारु ॥ (25-5)
गुर परसादि कहै जनु नानकु हरि सचे के गुण गाए ॥५॥ (550-14)
गुर परसादि कहै जनु भीखनु पावउ मोख दुआरा ॥३॥१॥ (659-15)
गुर परसादि किनै वखिआनी ॥ (279-10)
गुर परसादि किनै विरलै चितु लाइआ ॥ (113-16)
गुर परसादि किनै विरलै जाणी ॥ (103-1)
गुर परसादि किनै विरलै हरि धनु खाटीऐ ॥५॥ (519-8)
गुर परसादि घर ही परगासिआ सहजे सहजि समाई ॥७॥ (1273-13)
गुर परसादि घर ही पिरु पाइआ तउ नानक तपति बुझाई ॥८॥१॥ (1273-14)
गुर परसादि जपहु नित भाई तारि लए सागर संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ (1143-17)
गुर परसादि जाणै मिहमानु ॥ (350-3)
गुर परसादि तिसु सदा धिआई ॥ (104-13)
गुर परसादि न होइ संतापु ॥२॥ (801-17)
गुर परसादि नानक गुण गाहि ॥२॥ (724-2)
गुर परसादि नामि मनु लागा ॥ (184-15)
गुर परसादि नामु हरि जपिआ मेरे मन का भ्रमु भउ गइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1264-15)
गुर परसादि निरंजनु पाइआ साचै सबदि वीचारी ॥४॥ (1234-5)
गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥४॥ (525-14)
गुर परसादि पदारथु पाइआ सतिगुर कउ इहु मनु दीजै ॥२॥ (1325-8)
गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ (114-2)
गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ (1150-3)
गुर परसादि परम पदु पाइआ नानकु कहै विचारा ॥४॥३॥४॥ (1126-10)
गुर परसादि परम पदु पाइआ वडी वडिआई होई ॥ (1258-17)
गुर परसादि परम पदु पाइआ सभ इछ पुजावणहारु ॥१॥ रहाउ ॥ (1132-4)

गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (10-10)
गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (495-3)
गुर परसादि परम पदु पाई ॥१॥ (839-1)
गुर परसादि परम पदु पाए ॥ (1016-7)
गुर परसादि परम पदु पाए ॥६॥ (223-13)
गुर परसादि बसंतु बना ॥ (1182-19)
गुर परसादि भइओ मनु निरमलु सरब सुखा सुख पाइअउ ॥१॥ रहाउ ॥ (496-16)
गुर परसादि भए जन मुकते हरि हरि नामु अराधिआ ॥३॥ (383-17)
गुर परसादि भरम का नासु ॥ (294-5)
गुर परसादि मिटिआ अंधिआरा घटि चानणु आपु पछानणिआ ॥७॥ (129-3)
गुर परसादि मिटिओ अगिआना प्रगट भए सभ ठाई ॥३॥ (610-17)
गुर परसादि मुकति गति पाए ॥ (112-6)
गुर परसादि मेरै मनि वसिआ जो मागउ सो पावउ रे ॥ (404-5)
गुर परसादि मोहि मिलिआ थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (239-10)
गुर परसादि रतनु हरि लाभै मिटै अगिआनु होइ उजीआरा ॥१॥ रहाउ ॥ (353-14)
गुर परसादि रविआ घट अंतरि तितु घटि मति अगाहा हे ॥१॥ (1055-10)
गुर परसादि रहिआ भरपूरि ॥ (363-16)
गुर परसादि रहै लिव लाइ ॥ (932-8)
गुर परसादि रहै लिव लाइ ॥१॥ (352-12)
गुर परसादि राखि ले जन कउ हरि रसु नानक झोलि पीआ ॥५॥७॥८॥ (1127-16)
गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ (349-15)
गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ (797-4)
गुर परसादि वसै मनि आइ ॥३॥ (362-4)
गुर परसादि वसै मनि आइ ॥३॥ (663-17)
गुर परसादि वसै मनि आई ॥ रहाउ ॥ (665-9)
गुर परसादि वसै मनि आई ॥१॥ रहाउ ॥ (1129-15)
गुर परसादि सदा मनि वसिआ सभि काज सवारणहारा ॥ (638-2)
गुर परसादि सदा मनु राता ॥ (1072-9)
गुर परसादि सहज घरु पाइआ मिटिआ अंधेरा चंदु चड़िआ ॥१॥ रहाउ ॥ (393-19)
गुर परसादि हरि वसै मनि आई ॥१॥ रहाउ ॥ (159-6)
गुर परसादी अंदरु भीजै ॥ (114-14)
गुर परसादी अकथउ कथीऐ कहउ कहावै सोई ॥ (1233-6)
गुर परसादी अनदिनु जागै ॥ (128-8)
गुर परसादी अम्रितु नही पीआ त्रिसना भूख न जाई ॥ (1265-2)
गुर परसादी अम्रितु पीआ ॥ (113-17)
गुर परसादी आपु गवाई ॥ (506-4)
गुर परसादी आपु गवाईऐ ॥ (841-11)

गुर परसादी आपु गवाईऐ नानक नामि पति पाई ॥ (570-12)
गुर परसादी आपु पछाणै ॥ (88-13)
गुर परसादी आपु पछाणै कमलु बिगसै बुधि ताहा हे ॥३॥ (1056-14)
गुर परसादी आपो चीन्है जीवतिआ इव मरीऐ ॥४१॥ (935-18)
गुर परसादी इकु नदरी आइआ हउ सतिगुर विटहु वताइआ जीउ ॥३॥ (96-10)
गुर परसादी उतरहि पारि ॥४॥ (971-12)
गुर परसादी उतरे पारि ॥ (1340-2)
गुर परसादी उबरे जिन भाणा भाइआ ॥ (1237-19)
गुर परसादी उबरे जिन हरि रसु चखा ॥ (1087-19)
गुर परसादी उबरे सचा नामु समालि ॥१॥ रहाउ ॥ (1009-12)
गुर परसादी उबरे हरि की सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1011-11)
गुर परसादी उलटी होवै गिआन रतनु सबदु ताहा हे ॥२॥ (1056-12)
गुर परसादी एक लिव लागी दुबिधा तदे बिनासी ॥ (993-16)
गुर परसादी एको जाणहि तां दूजा भाउ न होई ॥ (441-5)
गुर परसादी एको जाणा ॥ (120-7)
गुर परसादी एको जाणै ॥ (662-13)
गुर परसादी एको जाणै एक घड़ी महि पारि पइआ ॥११॥ (435-8)
गुर परसादी एको जाणै चूकै मनहु अंदेसा ॥२॥ (1257-17)
गुर परसादी एको बूझै एकसु माहि समाए ॥४॥४॥ (732-10)
गुर परसादी ऐसी मति आवै ॥ (357-7)
गुर परसादी करम कमाउ ॥ (415-1)
गुर परसादी करहु किरपा लेहु जमहु उबारे ॥ (567-5)
गुर परसादी काइआ खोजे पाए जगजीवनु दाता हे ॥८॥ (1051-15)
गुर परसादी किसै दे वडिआई नामो नामु धिआइदा ॥५॥ (1062-2)
गुर परसादी किसै बुझाए ॥ (1062-5)
गुर परसादी किसै मिलाई ॥ (123-2)
गुर परसादी कीमति पाई ॥ (1044-1)
गुर परसादी को नदरि निहाले ॥ (112-4)
गुर परसादी को नामु धिआए तिसु हउमै विचहु जाइ ॥ (511-10)
गुर परसादी को विरला छूटै तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥३॥ (736-1)
गुर परसादी को विरला बूझै चउथै पदि लिव लावणिआ ॥१॥ (129-6)
गुर परसादी को विरला बूझै सो जनु मुकतु सदा होइ ॥२॥ (1283-6)
गुर परसादी को सचु कमावै ॥ (948-17)
गुर परसादी गुण पाईअन्हि जिस नो नदरि करेइ ॥१॥ (1092-15)
गुर परसादी घटि चानणा आन्हेरु गवाइआ ॥ (1245-1)
गुर परसादी घर ही महि पाई ॥ (126-3)
गुर परसादी चीन्हिआ हरि राखिआ उरि धारि ॥७॥ (1346-10)

गुर परसादी छुटीऐ बिखु भवजलु सबदि गुर तरणा ॥१॥ रहाउ ॥ (33-9)
गुर परसादी छूटीऐ किरपा आपि करेइ ॥ (934-8)
गुर परसादी जम का भउ भागै ॥ (1045-4)
गुर परसादी जाणीऐ तउ अनभउ पावै ॥८॥ (725-8)
गुर परसादी जानिआ ॥ (657-4)
गुर परसादी जिनि बुझिआ तिनि पाइआ मोख दुआरु ॥ (90-10)
गुर परसादी जिनी अंतरि पाइआ सो अंतरि बाहरि सुहेला जीउ ॥१॥ (102-4)
गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥ (919-1)
गुर परसादी जिन्ही रामु पछाता निरगुण रामु तिन्ही बूझि लहिआ ॥१७॥ (435-15)
गुर परसादी जीवत मरै ॥ (1172-6)
गुर परसादी जीवत मरै मरि जीवै सबदु कमाइ ॥ (1276-5)
गुर परसादी जीवतु मरै ॥ (662-14)
गुर परसादी जीवतु मरै उलटी होवै मति बदलाहु ॥ (651-2)
गुर परसादी जीवतु मरै ता मन ही ते मनु मानै ॥ (647-2)
गुर परसादी जीवतु मरै हुकमै बूझै सोइ ॥ (555-6)
गुर परसादी जैदेउ नामां ॥ (330-9)
गुर परसादी ठाकीऐ गिआन मती घरि आवै ॥१॥ रहाउ ॥ (426-11)
गुर परसादी तिसु सम्हला ता तनि दूखु न होइ ॥३१॥ (934-2)
गुर परसादी त्रिकुटी छूटै चउथै पदि लिव लाई ॥१७॥ (909-17)
गुर परसादी दुबिधा जाए ॥ (1164-16)
गुर परसादी दुबिधा मरै मनूआ असथिरु संधिआ करे वीचारु ॥ (553-13)
गुर परसादी दुरमति खोई ॥ (357-11)
गुर परसादी दे वडिआई अपणा सबदु वरताए ॥४॥५॥७॥ (491-12)
गुर परसादी देवणहारु ॥ (363-18)
गुर परसादी द्रिसटि निहारउ दूसर नाही कोइ ॥ (1223-6)
गुर परसादी नदरि निहारा ॥ (106-1)
गुर परसादी नाम पिआरु ॥ (1175-7)
गुर परसादी नामु धिआए ॥३॥ (737-2)
गुर परसादी नामु मनि वसिआ अनदिनु नामु धिआइआ ॥ (852-10)
गुर परसादी परगटु होई ॥ (1049-13)
गुर परसादी परगटु होई ॥ (1054-5)
गुर परसादी परगटु होई ॥ (1055-11)
गुर परसादी परगटु होई ॥ (1062-7)
गुर परसादी परम पदु पाए ॥ (123-19)
गुर परसादी पाइ जिथहु हउमै जाईऐ ॥ (951-3)
गुर परसादी पाइआ ॥ (73-2)
गुर परसादी पाइआ जाइ ॥ (661-11)

गुर परसादी पाइआ जाई ॥ (1066-19)
गुर परसादी पाईऐ अंतरि कपट खुलाही ॥१॥ (425-11)
गुर परसादी पाईऐ करमि परापति होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (42-8)
गुर परसादी पाईऐ करमि परापति होइ ॥८॥२॥१९॥ (65-19)
गुर परसादी पाईऐ निहचलु धनु धीरा ॥ (511-6)
गुर परसादी पाईऐ विरला बूझै कोइ ॥ (1281-4)
गुर परसादी पारि उतरै ॥ (1161-3)
गुर परसादी पिरम कसाई ॥ (1128-15)
गुर परसादी पूरा पाइआ चूका मन अभिमानु ॥३॥ (1132-19)
गुर परसादी बुझि सचि समाइआ ॥१॥ (369-6)
गुर परसादी बुझि सचि समाईऐ ॥२०॥ (147-17)
गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ (922-7)
गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी आइआ ॥ (921-16)
गुर परसादी बुझीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ (36-9)
गुर परसादी बुझीऐ सबदे कार कमाइ ॥ (1258-8)
गुर परसादी बूझहु भाई ॥ (1261-7)
गुर परसादी बूझि ले तउ होइ निबेरा ॥ (229-1)
गुर परसादी बूझै कोई ॥ (1048-18)
गुर परसादी बूझै कोई ॥ (1061-14)
गुर परसादी ब्रहमि समाउ ॥१॥ (355-2)
गुर परसादी ब्रहमु पछाता नानक गुणी गहीरा ॥२॥ (773-8)
गुर परसादी भउ पइआ वडभागि वसिआ मनि आइ ॥ (645-1)
गुर परसादी भवजलु तरै ॥ (365-1)
गुर परसादी भ्रमु भउ भागै एक नामि लिव लाई ॥२॥ (1260-7)
गुर परसादी मंनि वसाइआ ॥ (129-10)
गुर परसादी मंनि वसाइआ ॥४॥८॥ (560-11)
गुर परसादी मंनि वसाई ॥ (1048-5)
गुर परसादी मंनि वसाई ॥ (1053-18)
गुर परसादी मंनि वसाई ॥ (110-6)
गुर परसादी मंनि वसाई ॥ (119-19)
गुर परसादी मनि वसै तितु घटि परगटु होइ ॥५॥ (757-5)
गुर परसादी मनि वसै नामे रहै समाइ ॥ (36-3)
गुर परसादी मनि वसै मलु हउमै जाइ समाइ ॥ (39-10)
गुर परसादी मनि वसै हउमै दूरि करेइ ॥ (30-6)
गुर परसादी मनि वसै हरि बूझै सोई ॥१॥ (365-5)
गुर परसादी मनु जिणै हरि सेती लिव लाइ ॥ (87-15)
गुर परसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥ (918-3)

गुर परसादी महलु घरु पाए ॥ (112-3)
गुर परसादी मारहु डरै ॥ (871-17)
गुर परसादी मिलि रहै सचु नामु करतारु ॥३॥ (33-12)
गुर परसादी मिलि सोझी पाई ॥ (124-16)
गुर परसादी मिलै सोई जनु लेखै ॥ (123-10)
गुर परसादी मिलै हरि सोई ॥ (230-6)
गुर परसादी मुकतु होइ साचे निज ताड़ी ॥६॥ (1011-6)
गुर परसादी मुखु ऊजला जपि नामु दानु इसनानु ॥ (46-5)
गुर परसादी मेरा सहु मिलै वारि वारि हउ जाउ जीउ ॥१॥ (157-3)
गुर परसादी मैलु उतारु ॥१॥ रहाउ ॥ (230-9)
गुर परसादी रंगे राता ॥ (945-5)
गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ ॥१॥ (491-2)
गुर परसादी विदिआ वीचारै पड़ि पड़ि पावै मानु ॥ (1329-5)
गुर परसादी विरलै पाई ॥ (1068-2)
गुर परसादी वेखु तू हरि मंदरु तेरै नालि ॥ (1346-3)
गुर परसादी वेखै नाले ॥ (129-12)
गुर परसादी सचा हरि पाए ॥ (124-12)
गुर परसादी सचि चितु लाए ॥ (112-13)
गुर परसादी सचि समाई ॥१॥ (85-8)
गुर परसादी सचु नदरी आवै सचे ही सुखु पावणिआ ॥६॥ (120-17)
गुर परसादी सचु सचो सचु लहिआ ॥ (961-9)
गुर परसादी सद सम्हाल ॥ (1173-2)
गुर परसादी सदा सुखु पाए ॥ (841-17)
गुर परसादी सबदि सलाही ॥ (119-2)
गुर परसादी सहजि लिव लाए ॥ (119-14)
गुर परसादी सहजि समाही ॥ (1069-6)
गुर परसादी सहजु को पाए ॥ (119-7)
गुर परसादी सहजे माते ॥ (1066-7)
गुर परसादी सहसा जाए ॥ (1062-11)
गुर परसादी सागरु तरिआ ॥ (197-12)
गुर परसादी साचा पिरु मिलै अंतरि सदा समाले ॥ (583-18)
गुर परसादी साचि समाइ ॥२॥ (1174-19)
गुर परसादी सालाहीऐ हरि भगती रापै ॥ (953-17)
गुर परसादी सिव घरि जमै विचहु सकति गवाइ ॥ (1276-6)
गुर परसादी सुखु ऊपजै जा गुर का सबदु कमाइ ॥ (593-8)
गुर परसादी से नर उबरे जि हरि सरणागति भजि पइआ ॥२५॥ (433-18)
गुर परसादी सेव कराए ॥१॥ (364-1)

गुर परसादी सेव करी सचु गहिर ग्मभीरै ॥१॥ (38-17)
गुर परसादी सेवीऐ सचु सबदि नीसाणु ॥ (789-6)
गुर परसादी सो हरि हरि पाई जीउ ॥ (217-12)
गुर परसादी सोई जनु पाए जिन कउ क्रिपा तुमारी ॥८॥ (506-14)
गुर परसादी हंउमै जाइ ॥ (666-4)
गुर परसादी हउमै खोवै ॥ (128-17)
गुर परसादी हउमै छुटै जीवन मुकतु सो होइ ॥ (948-10)
गुर परसादी हउमै जाए ॥ (114-16)
गुर परसादी हउमै बूझै तौ गुरमति नामि समावैगो ॥६॥ (1309-19)
गुर परसादी हरि गुण गाईऐ ॥ (107-10)
गुर परसादी हरि धनु पाइओ अंते चलदिआ नालि चलिओ ॥४॥ (479-15)
गुर परसादी हरि धिआईऐ अंतरि रखीऐ उर धारि ॥ (948-1)
गुर परसादी हरि नामु धिआइओ हम सतिगुर चरन पखे ॥१॥ रहाउ ॥ (976-1)
गुर परसादी हरि नामु सम्हालि ॥ (1129-4)
गुर परसादी हरि पाईऐ मतु को भरमि भुलाहि ॥ (936-18)
गुर परसादी हरि प्रभ जाचे ऐसी नाम बडाई ॥१॥ रहाउ ॥ (504-9)
गुर परसादी हरि मंनि वसाए ॥ (123-16)
गुर परसादी हरि मंनि वसिआ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ (922-3)
गुर परसादी हरि मनि वसै जम डंडु न लागै कोइ ॥ (948-5)
गुर परसादी हरि मिलै मिलाइआ ॥ (1066-12)
गुर परसादी हरि रंगु माणु ॥३॥ (1339-18)
गुर परसादी हरि रसि ध्रापै ॥ (1418-4)
गुर परसादी हरि रसु आवै जपि हरि हरि पारि लंघाई जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (998-9)
गुर परसादी हरि रसु पाइआ नामु पदारथु नउ निधि पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (352-19)
गुर परसादी हरि रसु पावहि पीवत रहहि सदा सुखु होई ॥१॥ रहाउ ॥ (491-9)
गुर परसादी हरि रसु पीजै ॥८॥४॥ (413-16)
गुर परसादी हुकमु पछाणै ॥ (1054-3)
गुर पहि मुकति दानु दे भाणै ॥ (1026-5)
गुर पहि सिफति भंडारु करमी पाईऐ ॥ (519-18)
गुर पारब्रहम एकै ही जाने ॥२॥ (887-14)
गुर पारब्रहम परमेसुर अपर्मपर अलख अभेव ॥१६॥ (522-14)
गुर पारस हम लोह मिलि कंचनु होइआ राम ॥ (1114-7)
गुर पीर मिलि खुदि खसमु पछाना ॥५॥३॥ (1136-12)
गुर पीरां की चाकरी महां करड़ी सुख सारु ॥ (1422-16)
गुर पुछि लिखउगी जीउ सबदि सनेहा ॥ (242-13)
गुर पुरखु मनावै आपणा गुरमती हरि हरि बोले ॥ (642-14)
गुर पुरखै पुरखु मिलाइ प्रभ मिलि सुरती सुरति समाणी ॥ (997-4)

गुर पूछहु तुम्ह करहु बीचारु ॥ (1173-5)
गुर पूछि जागे नामि लागे तिना रैणि सुहेलीआ ॥ (1110-11)
गुर पूछि तुम करहु बीचारु ॥ (1189-15)
गुर पूछि सेवा करहि सचु निरमलु मंनि वसाहि ॥५॥ (428-6)
गुर पूछे मनु पतीआगा ॥२॥ (657-13)
गुर पूरे एह गल सारी ॥१॥ (628-13)
गुर पूरे का निरमल मंता ॥२॥ (193-10)
गुर पूरे की अकथ कहानी ॥ (1338-14)
गुर पूरे की अचरज वडिआई नानक सद बलिहारे ॥२॥९॥३७॥ (618-14)
गुर पूरे की करउ नित सेवा गुरु अपना नमसकारिआ ॥ (1218-4)
गुर पूरे की चरणी लागु ॥ (891-5)
गुर पूरे की चाकरी थिरु कंधु सबाइआ ॥ (1250-8)
गुर पूरे की चाकरी बिरथा जाइ न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (46-4)
गुर पूरे की टेक टिकाई ॥१॥ (190-8)
गुर पूरे की टेक नानक सम्हालिआ ॥१९॥ (523-12)
गुर पूरे की दाति नित देवै चड़ै सवाईआ ॥ (1250-17)
गुर पूरे की निरमल रीति ॥ (893-14)
गुर पूरे की पउ सरणाई ॥ (1077-19)
गुर पूरे की बाणी ॥ (629-2)
गुर पूरे की बाणी जपि अनदु करहु नित प्राणी ॥१॥ (616-10)
गुर पूरे की बेअंत वडाई ॥२॥ (864-5)
गुर पूरे की वडिआई ॥ (629-15)
गुर पूरे की वडी वडिआई हरि वडा सेवि अतुलु सुखु पाइआ ॥ (305-7)
गुर पूरे की सदा सरणाई साचै साहिबि रखिआ कंठि लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1183-12)
गुर पूरे की सरणी आए कलिआण रूप जपि हरि हरि मंतु ॥१॥ रहाउ ॥ (1184-15)
गुर पूरे की सरणी उबरे कारज सगल सवारे ॥१॥ (620-5)
गुर पूरे की सरणी परे ॥३॥ (1185-1)
गुर पूरे की सरनी परे ॥१॥ रहाउ ॥ (181-8)
गुर पूरे की सेवा पाइआ ऐथै ओथै निबहै नालि ॥१॥ रहाउ ॥ (1271-3)
गुर पूरे के चरण गहे ॥ (387-10)
गुर पूरे के चरण मनि वुठे ॥ (106-15)
गुर पूरे कै सबदि अपारा ॥ (259-12)
गुर पूरे जब भए दइआल ॥ (743-9)
गुर पूरे डरु सगल चुकाइआ ॥१॥ (1152-14)
गुर पूरे ते इह मति पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (184-5)
गुर पूरे ते एह निहचउ पाईऐ ॥ (299-9)
गुर पूरे ते गति मिति पाई ॥ (353-6)

गुर पूरे ते जाणी ॥२॥२॥६६॥ (626-3)
गुर पूरे ते निहचल मति पाई ॥ (1148-10)
गुर पूरे ते पाइआ अम्रितु अगम अथाहु ॥१॥ रहाउ ॥ (758-15)
गुर पूरे ते पाइआ जाई ॥ (1176-1)
गुर पूरे ते पाइआ नानक सुख बिस्रामु ॥१५॥ (300-3)
गुर पूरे ते पाई ॥ रहाउ ॥ (626-2)
गुर पूरे ते पाईऐ अपणी नदरि निहालि ॥ (49-14)
गुर पूरे ते पाईऐ नामे वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (427-11)
गुर पूरे ते पाईऐ हिरदै देइ दिखाई ॥ (1242-17)
गुर पूरे ते पावै ॥ (629-7)
गुर पूरे ते पूरा पाए ॥ (363-14)
गुर पूरे ते सोझी पवै फिरि मरै न वारो वार ॥१॥ (1132-3)
गुर पूरे दीओ उपदेसा जपि भउजलु पारि उतारा ॥ रहाउ ॥ (625-4)
गुर पूरे पूरी मति है अहिनिसि नामु धिआइ ॥ (756-3)
गुर पूरे बिनु बिधि न बनाई ॥ (259-15)
गुर पूरे मिलि झगरु चुकाइआ ॥ (395-6)
गुर पूरे राखिआ दे हाथ ॥ (396-8)
गुर पूरे वाहु वाहु सुख लहा चितारि मन ॥ (519-18)
गुर पूरे विणु मुकति न होई सचु नामु जपि लाहा हे ॥२॥ (1032-10)
गुर पूरे साबासि चलणु जाणिआ ॥ (369-2)
गुर पूरे साबासि है काटै मन पीरा ॥२॥ (1011-1)
गुर पूरे सुप्रसंन भए सदा सूख कलिआन ॥१॥ रहाउ ॥ (1322-18)
गुर पूरै उपदेसिआ जीवन गति भाते राम राजे ॥ (454-3)
गुर पूरै सचु समाइआ ॥ (879-8)
गुर प्रसादि अंतरि लिव लागै ॥३॥ (92-4)
गुर प्रसादि अपुना प्रभु जापै ॥१॥ रहाउ ॥ (869-2)
गुर प्रसादि अम्रित रसु पाइआ रसु गावै रसु वीचारे ॥७॥ (982-3)
गुर प्रसादि अम्रितु बिखु खाटी ॥ (177-16)
गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥ (281-12)
गुर प्रसादि ऊरध कमल बिगास ॥ (864-5)
गुर प्रसादि ओइ आनंद पावै ॥ (393-1)
गुर प्रसादि काहू जाते ॥१॥ रहाउ ॥ (529-19)
गुर प्रसादि किनै विरलै जाते ॥२॥ (742-3)
गुर प्रसादि किनै विरलै जाना ॥१॥ (186-15)
गुर प्रसादि को इहु महलु पावै ॥ (889-1)
गुर प्रसादि को पावै अम्रित नामा ॥४॥८॥ (1170-17)
गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥ (290-2)

गुर प्रसादि को विरला जागे ॥३॥ (375-19)
गुर प्रसादि को विरला पावै जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि भाउ ॥१॥ (669-10)
गुर प्रसादि को सबदि पछाणै ॥१॥ (562-19)
गुर प्रसादि गावै गुण नानक सहज समाधि समाहिओ ॥४॥६॥ (1299-9)
गुर प्रसादि घटि घटि पछानु ॥२॥ (1183-8)
गुर प्रसादि जन कबीर रामु करि सनेही ॥४॥५॥ (692-16)
गुर प्रसादि जन नानक देखिआ मै हरि बिनु अवरु न कोई ॥ (573-11)
गुर प्रसादि जन नानक पाइआ हरि लाधा देह टोलीऐ ॥२॥३॥ (527-14)
गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥ (278-12)
गुर प्रसादि जिनि पाइआ नामु ॥ (1145-7)
गुर प्रसादि जिह बूझिआ आसा ते भइआ निरासु ॥ (1103-13)
गुर प्रसादि जीवतु मरै ता फिरि मरणु न होइ ॥२॥ (554-18)
गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥ (281-17)
गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥८॥१९॥ (289-8)
गुर प्रसादि नानक इहु जानु ॥७॥ (294-18)
गुर प्रसादि नानक को तरिआ ॥४॥१॥१६॥ (715-7)
गुर प्रसादि नानक जगु जीतिओ बहुरि न आवहि जांहि ॥२॥८८॥१११॥ (1225-17)
गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥ (270-12)
गुर प्रसादि नानक नामु धिआइआ ॥४॥२४॥३०॥ (743-8)
गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥८॥१६॥ (285-5)
गुर प्रसादि नानक मति पाई ॥२॥१॥७॥ (720-17)
गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥ (270-15)
गुर प्रसादि नानक मनि वसिआ दूखि न कबहू झूरउ बुझि प्रभ कउ ॥४॥२॥३॥ (700-15)
गुर प्रसादि नानक लिव लाई ॥४॥२०॥३१॥ (892-16)
गुर प्रसादि नानक संतोखे नामु प्रभू जपि जपि उधरन ॥४॥१३॥ (1206-13)
गुर प्रसादि नानक सचि समाइआ ॥२१॥१॥२॥ सुधु (524-7)
गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥६॥ (277-17)
गुर प्रसादि नानक समद्रिसटा ॥२॥१॥ (862-6)
गुर प्रसादि नानक सुख बासन ॥४॥११०॥ (202-3)
गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥२॥ (294-2)
गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥ (278-19)
गुर प्रसादि नानकु बखानै हरि भजनु ततु गिआनु ॥२॥१॥२४॥ (1006-11)
गुर प्रसादि नामु जपि लइआ ॥ (290-9)
गुर प्रसादि पाईअहि धंनि ते जन बडभागे ॥ (1397-18)
गुर प्रसादि पाईऐ परमारथु सतसंगति सेती मनु खचना ॥ (1404-1)
गुर प्रसादि पावै अम्रित धारा ॥३॥ (478-9)
गुर प्रसादि प्रभु पाईऐ गुर बिनु मुकति न होइ ॥ (1401-12)

गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥ (274-5)
गुर प्रसादि भउ पारि पराई ॥२॥३३॥ (378-16)
गुर प्रसादि मनु असथिरु होवै अनदिनु हरि रसि रहिआ अघाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1333-1)
गुर प्रसादि मेरा मनु भीजै एहा सेव बनी जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (490-10)
गुर प्रसादि मै खोटी डीठी ॥२॥ (392-9)
गुर प्रसादि मै डगरो पाइआ ॥ (871-6)
गुर प्रसादि मै सभु किछु सूझिआ ॥४॥३॥ (476-12)
गुर प्रसादि लागे नाम सुआदि ॥ (1176-5)
गुर प्रसादि विरले मनि वूठा ॥२॥ (896-4)
गुर प्रसादि विरलै ही गविआ ॥ (259-18)
गुर प्रसादि सहजि तरे कबीरा ॥५॥६॥१९॥ (481-2)
गुर प्रसादि सिमरत रहै जाहू मसतकि भाग ॥ (254-5)
गुर प्रसादि सुखु दुखु सम जाणै घटि घटि रामु हिआलीऐ ॥४॥ (1019-12)
गुर प्रसादि हरि अम्रितु पीजै ॥२॥ (386-9)
गुर प्रसादि हरि गुण सद गावउ ॥ (1396-11)
गुर प्रसादी प्रभु अराधे जमकंकरु किछु न कही ॥२॥ (1017-10)
गुर प्रसादी प्रभु धिआइआ गई संका तूटि ॥ (501-19)
गुर प्रसादी बुझीऐ सा धन सुती निचिंद ॥ (1415-15)
गुर प्रसादी बूझीऐ एक हरि कै रंगि ॥१॥ रहाउ ॥ (405-3)
गुर प्रीति पिआरे चरन कमल रिद अंतरि धारे ॥१॥ रहाउ ॥ (1272-8)
गुर बचनाति कमात क्रिपा ते बहुरि न कतहू धाइओ ॥ (1214-17)
गुर बचनि कारज सरब पूरन ईत ऊत न हली ॥ (1121-17)
गुर बचनि धिआइआ जिना अगमु हरि ते ठाकुर सेवक रलि एकिआ ॥ (1316-16)
गुर बचनि मारगि जो पंथि चाले तिन जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥ (1116-15)
गुर बचनी अविगति समाईऐ ततु निरंजनु सहजि लहै ॥ (940-12)
गुर बचनी जिना जपिआ मेरा हरि हरि तिन के हउमै रोग गए ॥१॥ रहाउ ॥ (735-16)
गुर बचनी फलु पाइआ सह के अम्रित बोला ॥४॥ (729-12)
गुर बचनी बाहरि घरि एको नानकु भइआ उदासी ॥५॥११॥ (992-19)
गुर बचनी मनु वेचिआ सबदि मनु धीरा ॥ (1010-19)
गुर बचनी मनु सहज धिआने ॥ (796-5)
गुर बचनी मनु सीतलु होइ ॥ (1262-15)
गुर बचनी सचि नामि पतीणा ॥१॥ (903-19)
गुर बचनी सचु कार कमावै गति मति तब ही पाई ॥ (1260-8)
गुर बचनी सचु सबदि पछाता ॥ (154-6)
गुर बचनी समसरि सुख दूख ॥ (897-17)
गुर बचनी सुखु ऊपजै भाई सभि फल सतिगुर पासि ॥३॥ (639-19)
गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥ (286-15)

गुर बचनी हरि प्रभु जाणिआ सभ हरि प्रभु ते उतपति ॥१॥ रहाउ ॥ (82-15)
गुर बिनु अलखु न लखीऐ भाई जगु बूडै पति खोइ ॥ (637-6)
गुर बिनु अवरु नाही मै थाउ ॥ (864-15)
गुर बिनु आपु न चीनीऐ कहे सुणे किआ होइ ॥ (58-11)
गुर बिनु उरझि मरहि बेकारा ॥ (1026-6)
गुर बिनु एता भवि थकी गुरि पिरु मेलिमु दितमु मिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1015-6)
गुर बिनु किउ तरीऐ सुखु होइ ॥ (20-3)
गुर बिनु किनि समझाईऐ मनु राजा सुलतानु ॥४॥ (61-3)
गुर बिनु किनै न पाइओ केती कहै कहाए ॥ (420-17)
गुर बिनु को न दिखावई अंधी आवै जाइ ॥ (60-16)
गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि ॥१॥ रहाउ ॥ (864-3)
गुर बिनु गिआनु धरम बिनु धिआनु ॥ (1412-5)
गुर बिनु गिआनु न पाईऐ बिखिआ दूजा सादु ॥ (61-17)
गुर बिनु गिआनु न होवई ना सुखु वसै मनि आइ ॥ (650-4)
गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥ (1399-16)
गुर बिनु दाता अवरु न कोइ ॥३॥ (363-17)
गुर बिनु दाता को नही कीमति कहणु न जाइ ॥४॥ (1010-10)
गुर बिनु दाता कोई नाही बखसे नदरि करेइ ॥ (1258-9)
गुर बिनु दूजा नाही थाउ ॥ (387-14)
गुर बिनु पूरा कोइ न पावै ॥५॥ (414-11)
गुर बिनु भरमि जपहि जपु दूजा ॥ (416-8)
गुर बिनु भरमि विगूचीऐ भाई घटि घटि देउ अलखु ॥५॥ (635-16)
गुर बिनु भूलो आवै जाए ॥ (412-8)
गुर बिनु मोख मुकति किउ पाईऐ ॥ (1041-5)
गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ (638-15)
गुर बिनु सुरति न सिधि गुरू बिनु मुकति न पावै ॥ (1399-17)
गुर बिनु सोझी किनै न होई ॥ (1035-3)
गुर बिनु सोझी बूझ न होइ ॥ (355-14)
गुर बिनु हुकमु न बूझीऐ पिआरे साचे साचा ताणु ॥३॥ (636-8)
गुर बिहून महा दुखु पाइआ जम पकरे बिललाई ॥२॥ (1265-7)
गुर बोहिथु पाइआ किरपा ते नानक धुरि संजोगा जीउ ॥४॥४१॥४८॥ (108-14)
गुर भंडारै पाईऐ निरमल नाम पिआरु ॥ (59-10)
गुर भावै सुणि बेनती जन नानक की अरदासि ॥४॥२॥४॥ (996-17)
गुर भेटत नानक सुखु पाइआ ॥२॥८॥२७॥ (1303-7)
गुर भेटत भ्रमु भउ खोइआ ॥३॥ (210-15)
गुर भेटत मनि ओमाहा ॥२॥ (621-15)
गुर भेटत मनि भइआ अनंद ॥ (1148-3)

गुर भेटत हउ गई बलाए ॥ (101-15)
गुर भेटे पारसु भए जोती जोति मिलाए ॥७॥ (421-9)
गुर भेटे सहजु पाइआ आपणी किरपा करे रजाइ ॥१॥ (68-5)
गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी ध्रिगंत जनम भ्रसटणह ॥ (1356-18)
गुर मंत्रड़ा चितारि नानक दुखु न थीवई ॥२॥ (521-12)
गुर मन की आस पूराई जीउ ॥४॥ (217-1)
गुर मनारि प्रिअ दइआर सिउ रंगु कीआ ॥ (1271-16)
गुर महली घरि आपणै सो भरपुरि लीणा ॥ (767-8)
गुर महली घरि आपणै सो भरिपुरि लीणा ॥८॥ (767-10)
गुर महली सो महलि बुलावै ॥ (1189-8)
गुर महि आपु रखिआ करतारे ॥ (1024-9)
गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ ॥ (1279-13)
गुर मिलि अपुना खसमु धिआवउ ॥१॥ रहाउ ॥ (177-12)
गुर मिलि आए तुमरै दुआर ॥ (1338-1)
गुर मिलि ऐसे प्रभू धिआइआ ॥ (1212-9)
गुर मिलि खोले बजर कपाट ॥४॥ (153-2)
गुर मिलि गुर मेलि मेरा पिआरा हम सतिगुर करह भगती राम ॥ (574-5)
गुर मिलि चजु अचारु सिखु तुधु कदे न लगै दुखु ॥३॥ (50-19)
गुर मिलि जीता हरि हरि कीता तूटी भीता भरम गड़ा ॥ (453-1)
गुर मिलि ता के खुल्हे कपाट ॥ (1159-12)
गुर मिलि तिआगिओ दूजा भाउ ॥ (1147-19)
गुर मिलि दोऊ एक सम धरै ॥ (344-14)
गुर मिलि नानक कमल प्रगास ॥४॥१३॥ (1184-5)
गुर मिलि नानक ठाकुरु जाता ॥ (739-5)
गुर मिलि नानक नामु धिआइआ साचि नामि निसतारा ॥४॥१॥३८॥ (380-4)
गुर मिलि नानक पारब्रहमु पछाणा ॥४॥२७॥९७॥ (52-1)
गुर मिलि नानक बूझिआ सदा एकसु गाउ ॥४॥४॥ (724-14)
गुर मिलि नानकि खसमु धिआइआ ॥२॥ (1184-2)
गुर मिलि नानकि हरि हरि कहिआ ॥३॥ (1184-3)
गुर मिलि प्रभू चितारिआ ॥ (627-5)
गुर मिलि भउ गोविंद का भै डरु दूरि करणा ॥ (1102-8)
गुर मिलि भउजलु लंघीऐ दरगह पति परवाणु ॥ (22-16)
गुर मिलि भरमु गवाइआ हे ॥१॥ (715-14)
गुर मिलि लधा जी रामु पिआरा राम ॥ (576-15)
गुर मिलि सागरु तरिआ ॥ (779-2)
गुर मिलि हुकमु पछाणिआ तब ही ते सुखीआ ॥३॥ (400-17)
गुर मिलिआ हरि निसतारे ॥३॥ (879-10)

गुर मिलिऐ नामु पाईऐ चूकै मोह पिआस ॥ (26-11)
गुर मिलिऐ नामु मनि रविआ भाई साची प्रीति पिआरि ॥ (603-2)
गुर मिलिऐ भउ मनि वसै भाई भै मरणा सचु लेखु ॥ (635-18)
गुर मिलिऐ सांति ऊपजै अनदिनु नामु लएइ ॥१॥ (1258-10)
गुर मिलिऐ सुखु पाइआ भाई चूका मनहु गुमानु ॥४॥ (637-3)
गुर मिले सीतल जलु पाइआ सभि दूख निवारणहारु ॥ (1419-17)
गुर मिले हरि पाए ॥ (1185-7)
गुर मूरति सिउ लाइ धिआनु ॥ (192-3)
गुर रसना अम्रितु बोलदी हरि नामि सुहावी ॥ (726-9)
गुर रसु गीत बाद नही भावै सुणीऐ गहिर ग्मभीरु गवाइआ ॥ (930-7)
गुर रामदास कल्युचरै तुअ सहज सरोवरि बासु ॥१०॥ (1398-3)
गुर रामदास कल्युचरै तैं अटल अमर पदु पाइओ ॥५॥ (1397-7)
गुर रामदास कल्युचरै तै अभै अमर पदु पाइअउ ॥६॥ (1397-10)
गुर रामदास कल्युचरै तै जगत उधारणु पाइअउ ॥८॥ (1397-16)
गुर रामदास कल्युचरै तै सबद नीसानु बजाइअउ ॥९॥ (1397-19)
गुर रामदास कल्युचरै तै हरि प्रेम पदारथु पाइअउ ॥७॥ (1397-13)
गुर रामदास घरि कीअउ प्रगासा ॥ (1407-1)
गुर रामदास तनु सरब मै सहजि चंदोआ ताणिअउ ॥ (1407-19)
गुर रामदास दरसनु परसि कहि मथुरा अम्रित बयण ॥ (1408-12)
गुर रामदास सचु सल्य भणि तू अटलु राजि अभगु दलि ॥१॥ (1406-13)
गुर रूप मुरारे त्रिभवण धारे ता का अंतु न पाइआ ॥ (1112-8)
गुर वाकि सतिगुर जो भाइ चले तिन हरि हरि आपि मिलाइआ ॥ (1114-13)
गुर वाकु निरमलु सदा चानणु नित साचु तीरथु मजना ॥१॥ (687-16)
गुर विटड़िअहु हउ घोली मेरे पिआरे जिनि हरि मेलाईआ ॥ (452-5)
गुर विटहु नानकु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि हरि हरि नामु चितेरे राम ॥२॥ (540-4)
गुर विणु सहजु न आवई लोभु मैलु न विचहु जाइ ॥ (87-7)
गुर वीचारी अगनि निवारी ॥ (945-6)
गुर वेखण कउ सभु कोई लोचै नव खंड जगति नमसकारिआ ॥ (311-17)
गुर संत सभा दुखु मिटै रोगु ॥ (1170-5)
गुर सतिगुर अगै को जीउ लाइ घालै तिसु अगै गुरसिखु कार कमावै ॥ (317-15)
गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥ (305-16)
गुर सतिगुर कै मनि पारब्रहमु है पारब्रहमु छडाई ॥ (310-16)
गुर सतिगुर चरनी लागि ॥ (1304-6)
गुर सतिगुर ताणु दीबाणु हरि तिनि सभ आणि निवाई ॥ (310-16)
गुर सतिगुर पासहु हरि गोसटि पूछां करि सांझी हरि गुण गावां ॥ (562-2)
गुर सतिगुर पिछै तरि गइआ जिउ लोहा काठ संगोइआ ॥ (309-15)
गुर सतिगुर विचि नावै की वडी वडिआई हरि करतै आपि वधाई ॥ (850-15)

गुर सतिगुर सुआमी भेदु न जाणहु जितु मिलि हरि भगति सुखांदी ॥ (77-5)
गुर सतिगुर सेवा हरि लाइ हम काम ॥१॥ रहाउ ॥ (166-8)
गुर सतिगुरि नामु दिड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले ॥ (1424-17)
गुर सतिगुरि नामु द्रिड़ाइओ हरि हरि हम मुए जीवे हरि जपिभा ॥ (1337-1)
गुर सबदि दिखालिआ सचु समालिआ अहिनिसि देखि बीचारिआ ॥ (1110-18)
गुर सबदि मिलहि से विछुड़हि नाही सहजे सचि समावणिआ ॥२॥ (123-2)
गुर सबदि मेला तां सुहेला बाजंत अनहद बीणा ॥ (767-10)
गुर सबदि रते सदा बैरागी हरि दरगह साची पावहि मानु ॥२॥ (1260-1)
गुर सबदि रवै रवि रहिआ सो प्रभु मेरा सुआमी राम ॥ (775-12)
गुर सबदि विगासी सहु रावासी फलु पाइआ गुणकारी ॥ (689-18)
गुर सबदि वीचारी नाह पिआरी निवि निवि भगति करेई ॥ (689-11)
गुर सबदि समाचरिओ नामु टेक संगादि बोहै ॥ (1398-2)
गुर सबदि समावए अवरु न जाणै कोइ जीउ ॥ (923-2)
गुर सबदि समावै बूझै हरि सोई ॥३॥ (160-13)
गुर सबदि सलाहे साचु सोइ ॥२॥ (1169-15)
गुर सबदि सीगारी सचि सवारी सदा रावे रंगि राती ॥ (439-14)
गुर सबदी असथिरु घरि बहै ॥१॥ (1262-9)
गुर सबदी आराधीऐ जपीऐ निरमल मंतु ॥ (137-6)
गुर सबदी एकु पछाणिआ एको सचा सोइ ॥ (1285-16)
गुर सबदी कमलु बिगासिआ इव हरि रसु पीजै ॥ (1089-2)
गुर सबदी खोलाईअन्हि हरि नामु जपानी ॥ (514-11)
गुर सबदी घरि कारजु सारि ॥ (933-10)
गुर सबदी चूकै अभिमानु ॥१॥ (1259-18)
गुर सबदी चेतै गुणी गहीरु ॥ (1065-12)
गुर सबदी जपीऐ सचु लाहा ॥ (1261-18)
गुर सबदी जलु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥ (1283-13)
गुर सबदी तरीऐ बहुड़ि न मरीऐ चूकै आवण जाणा ॥ (782-8)
गुर सबदी दरु जाणीऐ अंदरि महलु असराउ ॥ (1092-17)
गुर सबदी दरु जोईऐ मुकते भंडारा ॥ (1009-10)
गुर सबदी पाईऐ हरि प्रीतम राउ जीउ ॥ (175-6)
गुर सबदी बिखु तिआस निवारि ॥७॥ (1187-15)
गुर सबदी मथि अम्रितु पीउ ॥ (226-12)
गुर सबदी मनि नामि निवासु ॥ (158-15)
गुर सबदी मनु निरमला हउमै छडि विकारी ॥ (509-15)
गुर सबदी मनु निरमलु होआ चूका मनि अभिमानु ॥ (1334-4)
गुर सबदी मनु बेधिआ प्रभु मिलिआ आपि हदूरि ॥२॥ (37-4)
गुर सबदी मनु मोहिआ कहणा कछू न जाइ ॥ (36-13)

गुर सबदी मनु रंगिआ रसना प्रेम पिआरि ॥ (36-19)
गुर सबदी मिलीऐ मेरी माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1177-15)
गुर सबदी मेलावा होइ ॥ (1174-8)
गुर सबदी मैलु उतरै ता सचु बणिआ सीगारु ॥१७॥ (755-18)
गुर सबदी राता सचि समाइ ॥५॥ (1188-6)
गुर सबदी विचहु हउमै खोइ ॥ (1173-12)
गुर सबदी वेखि विगसिआ अंतरि सांति आई ॥ (1251-13)
गुर सबदी सची लिव लाए ॥ (115-11)
गुर सबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ॥ (36-10)
गुर सबदी सचु पाइआ सचा गहिर ग्मभीरु ॥ (789-1)
गुर सबदी सभु ब्रहमु पछानिआ ॥ (1043-15)
गुर सबदी सहसा दूखु चुकाए ॥ (128-12)
गुर सबदी सहु पाइआ सचु नानक की अरदासि जीउ ॥२॥ (762-19)
गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥ (55-16)
गुर सबदी सालाहीऐ रंगे सहजि सुभाइ ॥ (32-15)
गुर सबदी सालाहीऐ हउमै विचहु खोइ ॥ (37-15)
गुर सबदी सीगारीआ अपणे सहि लईआ मिलाइ ॥६॥ (430-9)
गुर सबदी सीगारीआ तनु मनु पिर कै पासि ॥ (54-3)
गुर सबदी सीगारु बणावै ॥ (363-9)
गुर सबदी हरि अंतरि पछाणहु ॥ (116-14)
गुर सबदी हरि चेति सुभाइ ॥ (1175-16)
गुर सबदी हरि नामु धिआए ॥ (1042-18)
गुर सबदी हरि पाईऐ बिनु सबदै भरमि भुलाइ ॥१॥ (36-4)
गुर सबदी हरि पाईऐ हरि पारि लघाइ ॥ (86-13)
गुर सबदी हरि भजु सुरति समाइणु ॥१॥ (1134-1)
गुर सबदी हरि भेदीऐ हरि जपि हरि बूझै ॥ (1090-7)
गुर सबदी हरि मनि वसै माइआ की भुख जाइ ॥ (1413-15)
गुर सबदी हरि मनि वसै हरि सहजे जाता ॥ (510-17)
गुर सबदु कमाइआ अउखधु हरि पाइआ हरि कीरति हरि सांति पाइ जीउ ॥ (446-2)
गुर सबदु कमावहि जनमि न आवहि तिना हरि प्रभु बेलीआ ॥ (1110-12)
गुर सबदु धिआइ महलु पाइ ॥ (1229-10)
गुर सबदु न मानै फाही फाथी सा धन महलु न पाए ॥ (689-15)
गुर सबदु निहचलु सदा सचि समाहि ॥ (842-16)
गुर सबदु पाइआ हरि नामु धिआइआ वडभागी हरि रंग हरि बणे ॥ (576-4)
गुर सबदु बीचारहि आपु जाइ ॥ (1190-1)
गुर सबदु बीचारे सहज भाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1187-19)
गुर सबदु मारणु मन माहि समाहि ॥ (160-5)

गुर सबदु वीचारहि रहहि निरारे ॥ (1039-7)
गुर सबदु वीचारा राम नामु पिआरा जिसु किरपा करे सु पाए ॥ (768-3)
गुर सबदु वीचारि अवरु नही दूजा ॥१॥ (1345-4)
गुर सबदु वीचारे हउमै मारे इन बिधि मिलहु पिआरे ॥ (244-13)
गुर सबदु सुणाए मति अगाहि ॥ (1188-9)
गुर सबदु सेवे सचि समावै विचहु हउमै मारे ॥ (244-17)
गुर सबदे कीना रिदै निवासु ॥३॥ (1341-1)
गुर सबदे मनु मानिआ अपतीजु पतीणा ॥ (1407-7)
गुर सबदे राता सहजे माता नामु मनि वसाए ॥ (771-5)
गुर सबदे राती सहजे माती अनदिनु रहै समाए ॥ (244-4)
गुर सबदै मेला ता पिरु रावी लाहा नामु संसारे ॥ (244-11)
गुर सभा एव न पाईऐ ना नेड़ै ना दूरि ॥ (84-3)
गुर सभा एव न पाईऐ ना नेड़ै ना दूरि ॥ (84-4)
गुर सभा एव न पाईऐ ना नेड़ै ना दूरि ॥ (84-7)
गुर समरथ सदा दइआल ॥ (1341-1)
गुर समानि तीरथु नही कोइ ॥ (1328-19)
गुर सरणाई उबरे भाई राम नामि लिव लाइ ॥ (603-9)
गुर सरणाई उबरै नानक लए छडाइ ॥२६॥ (1424-6)
गुर सरणाई छुटीऐ मनमुख खोटी रासि ॥ (61-14)
गुर सरणाई जोहि न साकै दूतु न सकै संताई ॥ (504-12)
गुर सरणाई भजि पए बखसे बखसणहार ॥३॥ (430-6)
गुर सरणाई सगल निधान ॥ (1271-7)
गुर सरणाई सुखु लहहि अनदिनु नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (29-4)
गुर सरणि न आईऐ ब्रहमु न पाईऐ ॥ (904-18)
गुर सरधा पूरि अम्रितु मुखि पाई जीउ ॥ (175-15)
गुर साखी अंतरि जागी ॥ (599-9)
गुर साखी का उजीआरा ॥ (599-10)
गुर साखी जोति जगाइ दीवा बालिआ ॥ (1284-11)
गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ (13-6)
गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ (663-9)
गुर साखी मिटिआ अंधिआरा ॥ (126-10)
गुर साखी मिटिआ अंधिआरा बजर कपाट खुलावणिआ ॥६॥ (110-9)
गुर साचे ते साचु कमावहि साचै दूख निवारी हे ॥१४॥ (1051-3)
गुर साधू अम्रित गिआन सरि नाइणु ॥ (1134-3)
गुर साधू संगति मिलै हीरे रतन लभंन्हि ॥ (1416-10)
गुर सिउ नेत धिआनि हां ॥ (409-12)
गुर सिखा इको पिआरु गुर मिता पुता भाईआ ॥ (648-5)

गुर सुप्रसंन भए वड भागि ॥१॥ (866-8)
गुर सुप्रसंन होए भउ गए ॥ (1149-6)
गुर सुप्रसंने मिलु नाह विछुंने धन देदी साचु सनेहा ॥ (455-2)
गुर सेव तरे तजि मेर तोर ॥ (1170-9)
गुर सेव न भाई सि चोर चोर ॥२॥ (1170-10)
गुर सेवक कउ बिघनु न भगती हरि पूर द्रिड़्हाइआ गिआनां हे ॥५॥ (1075-5)
गुर सेवा आपि हरि भावै ॥ (165-5)
गुर सेवा करउ फिरि कालु न खाइ ॥ (231-9)
गुर सेवा जम ते छुटकारि ॥ (864-18)
गुर सेवा जुग चारे होई ॥ (161-14)
गुर सेवा तपां सिरि तपु सारु ॥ (423-13)
गुर सेवा ते अम्रित फलु पाइआ हउमै त्रिसन बुझाई ॥ (1155-4)
गुर सेवा ते आपु पछाता ॥ (415-1)
गुर सेवा ते करणी सार ॥ (1066-3)
गुर सेवा ते जनु निरमलु होइ ॥ (664-16)
गुर सेवा ते जाणिआ सचु परगटीएसा ॥ (955-2)
गुर सेवा ते जुग चारे जाते ॥ (111-9)
गुर सेवा ते त्रिभवण सोझी होइ ॥ (423-14)
गुर सेवा ते नाउ पाइआ वुठा अंदरि आइ ॥७॥ (427-7)
गुर सेवा ते नामे लागा ॥ (236-2)
गुर सेवा ते पाईऐ गुरमुखि निसतारा ॥४॥ (725-14)
गुर सेवा ते भए मन निरमल हरि हरि हरि हरि नामु सुना ॥१॥ रहाउ ॥ (387-9)
गुर सेवा ते भगति कमाई ॥ (1159-7)
गुर सेवा ते मनु निरमलु होवै अगिआनु अंधेरा जाइ ॥ (593-18)
गुर सेवा ते मनु पतीआइ ॥ (161-8)
गुर सेवा ते लहै पदारथु ॥ (832-9)
गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ ॥ (110-8)
गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ अंतरि सबदु रविआ गुणकारी ॥१४॥ (908-2)
गुर सेवा ते सबदि पछाता ॥ (1045-19)
गुर सेवा ते सभ कुल उधारे ॥ (423-15)
गुर सेवा ते सभु किछु पाए ॥ (1057-2)
गुर सेवा ते सुखु ऊपजै फिरि दुखु न लगै आइ ॥ (651-17)
गुर सेवा ते सुखु ऊपजै सचै सबदि बुझाए ॥४॥ (427-14)
गुर सेवा ते सुखु पाईऐ होर थै सुखु न भालि ॥ (548-12)
गुर सेवा ते हरि नामु धनु पावै ॥ (664-9)
गुर सेवा ते हरि नामु पाइआ बिनु सतिगुर कोइ न पावणिआ ॥१॥ (116-4)
गुर सेवा ते हरि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ (850-13)

गुर सेवा ते हरि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ (90-17)
गुर सेवा ते हरि मनि वसिआ हरि रसु सहजि पीआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (128-3)
गुर सेवा नाउ पाईऐ सचे रहै समाइ ॥३॥ (33-19)
गुर सेवा प्रभु पाइआ सचु मुकति दुआरा ॥४॥ (228-16)
गुर सेवा बिनु घोर अंधारु बिनु गुर मगु न पाए ॥ (244-7)
गुर सेवा बिनु भगति न होई ॥ (1342-9)
गुर सेवा बिनु भगति न होवी किउ करि चीनसि आपै ॥ (1013-1)
गुर सेवा भउजलु तरीऐ कहउ पुकारीआ ॥८॥१२॥ (241-6)
गुर सेवा महलु पाईऐ जगु दुतरु तरीऐ ॥२॥ (400-1)
गुर सेवा सदा सुखु है जिस नो हुकमु मनाए ॥७॥ (1012-1)
गुर सेवा सुखु पाईऐ हरि वरु सहजि सीगारु ॥ (58-14)
गुर सेवा हरि हम भाईआ हरि होआ हरि किरपालु ॥ (1314-19)
गुर सेविऐ हरि महलु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए झख मारनु सभि निंदक घंडा राम ॥ (541-4)
गुर सेवी गुर लागउ पाइ ॥ (221-7)
गुर सेवे जेवडु होरु लाहा नाही ॥ (1062-2)
गुर हरि बिनु को न ब्रिथा दुखु काटै ॥ (497-3)
गुर हरि भेटे पुरबि कमाइआ ॥५॥ (904-17)
गुर हरि मिलिआ भगति द्रिड़ाई ॥४॥ (356-13)
गुर हिव सीतलु अगनि बुझावै ॥ (411-14)
गुर होए मेरे माई बाप ॥१॥ (1143-3)
गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥ (922-12)
गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा ॥ (250-5)
गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा ॥ (262-5)
गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥ (250-4)
गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥ (262-4)
गुरदेव तीरथु अम्रित सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरमपरा ॥ (250-3)
गुरदेव तीरथु अम्रित सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरमपरा ॥ (262-3)
गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा ॥ (250-2)
गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा ॥ (262-2)
गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥ (250-1)
गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥ (262-1)
गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा ॥ (250-5)
गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा ॥ (262-5)
गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥ (250-2)
गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥ (262-2)
गुरदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥१॥ (250-6)
गुरदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥१॥ (262-6)

गुरदेव सांति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परस परा ॥ (250-3)
गुरदेव सांति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परस परा ॥ (262-3)
गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ॥१॥ (67-10)
गुरबाणी गावह भाई ॥ (628-18)
गुरबाणी चहु कुंडी सुणीऐ साचै नामि समाइदा ॥३॥ (1065-3)
गुरबाणी ते हरि मंनि वसाए ॥ (664-13)
गुरबाणी निरबाणु सबदि पछाणिआ ॥७॥ (752-5)
गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ निरमोलकु रतनु अपारा ॥ (442-16)
गुरबाणी वरती जग अंतरि इसु बाणी ते हरि नामु पाइदा ॥३॥ (1066-4)
गुरबाणी सखी अनंदु गावै ॥ (396-5)
गुरबाणी सद उचरै हरि मंनि वसाइआ ॥ (1238-7)
गुरबाणी सद मीठी लागी पाप विकार गवाइआ ॥ (773-3)
गुरबाणी सिउ प्रीति सु परसनु ॥ (1032-4)
गुरबाणी सुणि मैलु गवाए ॥ (665-3)
गुरबाणी सुनत मेरा मनु द्रविआ मनु भीना निज घरि आवैगो ॥ (1308-10)
गुरबाणी हरि अलखु लखाइआ ॥१॥ (366-11)
गुरमति अगनि निवारि समाई ॥ (1041-9)
गुरमति अलखु लखाईऐ ऊतम मति तराहि ॥ (1093-3)
गुरमति आखी देखहु ऊचा ॥ (1041-13)
गुरमति आपु मिटाइआ हरि हरि लिव लागे राम ॥ (845-4)
गुरमति ऊचो ऊची पउड़ी गिआनि रतनि हउमै मारी हे ॥४॥ (1050-10)
गुरमति ऊतम संगि साथि ॥ (1170-7)
गुरमति क्रिसनि गोवरधन धारे ॥ (1041-6)
गुरमति खोज परे तब पकरे धनु साबतु रासि उबरिआ ॥२॥ (1178-6)
गुरमति खोजहि सबदि बीचारा ॥ (1175-13)
गुरमति खोजि लहहु घरु अपना बहुड़ि न गरभ मझारा हे ॥४॥ (1030-7)
गुरमति गुरमति गुरमति धिआवहि हरि गलि मिलि मेलि मिलावैगो ॥५॥ (1311-14)
गुरमति चाल निहचल नही डोलै ॥ (227-15)
गुरमति छूटसि प्रभ सरणाई ॥३॥ (1345-6)
गुरमति छोडहि उझड़ि जाई ॥ (1025-10)
गुरमति जागे दुरमति परहारी ॥ (904-4)
गुरमति जानिआ रिदै मुरारी ॥ (225-14)
गुरमति जिनी पछाणिआ से देखहि सदा हदूरि ॥ (27-16)
गुरमति तूं सालाहणा होरु कीमति कहणु न जाइ ॥५॥ (61-16)
गुरमति देइ भरोसै तेरै ॥३॥ (154-5)
गुरमति देहि लगउ पगि तेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (1330-4)
गुरमति धरमु धीरजु हरि नाइ ॥ (225-5)

गुरमति नगरी खोजि खोजाई ॥ (732-13)
गुरमति नही लीनी दुरमति पति खोई ॥ (879-13)
गुरमति नामु अम्रित जलु पाइआ अगनि बुझी गुर सबदि बुझईआ ॥४॥ (834-18)
गुरमति नामु दमोदरु पाइआ हरि हरि नामु उरि धारे ॥ (980-14)
गुरमति नामु धिआईऐ हरि हरि मनि जपीऐ हरि जपमाला ॥ (985-15)
गुरमति नामु न वीसरै सहजे पति पाईऐ ॥ (228-18)
गुरमति नामु परापति होइ ॥ (1175-19)
गुरमति नामु मीठा मनि भाइआ जन नानक नामि मनु भीजै जीउ ॥४॥४॥ (95-11)
गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥ (10-3)
गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥ (492-10)
गुरमति निहचल मनि मनु मनं सहज बीचारं ॥ (505-18)
गुरमति निहचलु हरि मनि वसिआ अम्रित साची बानी ॥३॥ (1233-13)
गुरमति पंच दूत वसि आवहि मनि तनि हरि ओमाहा राम ॥२॥ (699-5)
गुरमति पंच सखे गुर भाई ॥ (1041-9)
गुरमति पति साबासि तिसु तिस कै संगि मिलाउ ॥ (58-2)
गुरमति पाइआ नामु तुमारा ॥ (1043-3)
गुरमति पाइआ सहजि मिलाइआ अपणे प्रीतम राती ॥ (771-15)
गुरमति पाई वडी वडिआई सचै सबदि रसु पीजै ॥ (568-13)
गुरमति पाए परमानंदु ॥३॥ (154-15)
गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥ (1188-15)
गुरमति प्रगटे राम नाम हीर ॥ (1169-17)
गुरमति बाजै सबदु अनाहदु गुरमति मनूआ गावै ॥ (172-13)
गुरमति बूझै करि वीचारा ॥ (1053-2)
गुरमति बोलहु हरि जसु सूचा ॥ (1041-12)
गुरमति भगति पावै जनु कोई ॥१॥ (879-13)
गुरमति मति अचलु है चलाइ न सकै कोइ ॥ (548-19)
गुरमति मनि अम्रितु वुठड़ा मेरी जिंदुड़ीए मुखि अम्रित बैण अलाए राम ॥ (538-2)
गुरमति मनि परगासु सचा पाईऐ ॥४॥१३॥६५॥ (369-9)
गुरमति मनि रहसी सीझसि देही राम ॥ (844-8)
गुरमति मनु ठहराईऐ मेरी जिंदुड़ीए अनत न काहू डोले राम ॥ (538-1)
गुरमति मनु समझाइआ लागा तिसै पिआरु ॥ (61-8)
गुरमति मनूआ असथिरु राखहु इन बिधि अम्रितु पीओईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (332-17)
गुरमति मानिआ एक लिव लागी ॥ (1343-1)
गुरमति मानिआ करणी सारु ॥ (833-4)
गुरमति मानिआ मोख दुआरु ॥ (833-4)
गुरमति मिलीऐ बीस इकीस ॥२५॥ (933-3)
गुरमति मेले भगति द्रिड़ाए ॥७॥ (839-13)

गुरमति रसि रसि हरि गुन गावै ॥ (326-15)
गुरमति रसु राखहु उर धारि ॥ (733-3)
गुरमति राम नाम गहु मीता ॥ (874-16)
गुरमति राम नामु जसु गावा अंति बेली दरगह लए छडाई ॥१॥ रहाउ ॥ (493-12)
गुरमति राम नामु धनु पाइआ सुणि कहतिआ पाप निवारे ॥ (980-17)
गुरमति राम नामु परगासहु सदा रहहु सरणाई ॥ रहाउ ॥ (607-16)
गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठि गए ॥२॥२॥ (718-15)
गुरमति रामु जपै जनु पूरा ॥ (228-5)
गुरमति रामै नामि बसाई ॥ (481-9)
गुरमति लेवहु हरि लिव तरीऐ ॥ (1040-16)
गुरमति लेहु तरहु भव दुतरु मुकति भए सुखु पाइआ ॥९॥ (1041-5)
गुरमति लेहु तरहु सचु तारी ॥ (1041-7)
गुरमति लेहु परम पदु पाईऐ नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥१०॥ (1041-7)
गुरमति विचहु दुरमति खोवै ॥ (1016-9)
गुरमति विरला बूझै कोइ ॥ (161-13)
गुरमति सचु पाईऐ सहजि समाईऐ तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ (775-13)
गुरमति सत सरि हरि जलि नाइआ ॥ (362-11)
गुरमति सतसंगति न विछुड़हि अनदिनु नामु सम्हालि ॥२॥ (1258-13)
गुरमति सद ही अंतरु सीतलु हउमै मारि निवारी हे ॥७॥ (1050-13)
गुरमति सहजे नामु धिआए ॥ (767-19)
गुरमति साइरि पाहण तारे ॥ (1041-6)
गुरमति साचा मनि वसै नामु भलो पति साखु ॥ (62-1)
गुरमति साचि सहजि हरि बोलै ॥ (227-15)
गुरमति साची सबदु है सारु ॥ (1275-18)
गुरमति साची साचा वीचारु ॥ (666-2)
गुरमति साची हुजति दूरि ॥ (352-11)
गुरमति सारु होर नाम बिहूनी ॥२०॥ (932-9)
गुरमति सालाही सचु सोई ॥३॥ (666-6)
गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ॥ (685-8)
गुरमति हरि गाइआ हरि हारु उरि पाइआ हरि नामा कंठि धारे ॥ (446-12)
गुरमति हरि गुण बोलहु जोगी इहु मनूआ हरि रंगि भेन ॥१॥ (368-1)
गुरमति हरि रसु पाईऐ होरि तिआगहु निहफल कामा ॥१॥ रहाउ ॥ (799-7)
गुरमति हरि रसु मीठा लागा तिन बिसरे सभि बिख रसहु ॥३॥ (800-3)
गुरमति हरि रसु हरि फलु पाइआ हरि हरि नामु उर धारि जीउ ॥ (438-8)
गुरमति हरि लिव उबरे अलिपतु रहे सरणाइ ॥ (41-19)
गुरमति हरि हरि मीठा लागा गुरु मीठे बचन कढावैगो ॥ (1308-9)
गुरमति होइ त पाईऐ सचि मिलै सुखु होइ ॥६॥ (60-9)

गुरमति होइ त हुकमु पछाणै ॥१॥ (904-11)
गुरमति होइ वीचारीऐ सुपना इहु जगु लोइ ॥७॥ (63-8)
गुरमती आपु गवाइ नामु धिआईऐ ॥ (144-16)
गुरमती आपु गवाइ सचु पछाणिआ ॥ (144-7)
गुरमती आपु पछाणिआ राम नाम परगासु ॥ (86-1)
गुरमती आपै आपु पछाणै ता निज घरि वासा पावै ॥२॥ (565-10)
गुरमती इकि भए उदासा ॥ (412-4)
गुरमती कालु न आवै नेड़ै जा होवै दासनि दासा ॥ (140-8)
गुरमती खाधा रजि तिनि सुखु पाइआ ॥ (150-18)
गुरमती गिआनु रतनु मनि वसै सभु देखिआ ब्रहमु सुभाइ ॥ (1417-3)
गुरमती घटि चानणा आनेरु बिनासणि ॥ (949-1)
गुरमती घटि चानणा नामु अंति सखाई ॥२॥ (426-3)
गुरमती घटि चानणा सबदि मिलै हरि नाउ ॥२॥ (30-9)
गुरमती घटि चानणा हरि नामु पावै सोइ ॥३॥ (492-5)
गुरमती घटि चानणु होआ प्रभु रवि रहिआ सभ थाई राम ॥ (770-11)
गुरमती घटि परगटु होइ ॥ (663-18)
गुरमती जगजीवनु मनि वसै सभि कुल उधारणहार ॥४॥ (1009-5)
गुरमती जमु जोहि न सकै सचै नाइ समाइआ ॥ (1424-13)
गुरमती जमु जोहि न साकै साचै नामि समाइआ ॥ (87-1)
गुरमती जागे तिन्ही घरु रखिआ दूता का किछु न वसाइ ॥८॥ (1282-4)
गुरमती दधि मथीऐ अम्रितु पाईऐ नामु निधाना ॥ (1009-3)
गुरमती देवै आपि गुरमुखि हरि जपिआ ॥९॥ (646-6)
गुरमती नाउ पाईऐ नानक गुण गावै ॥७॥ (1240-11)
गुरमती नाउ पाईऐ मनमुख मोहि विणासु ॥ (86-3)
गुरमती नाउ मनि वसै सहजे सहजि समाउ ॥ (1416-2)
गुरमती नामु धनु खटिआ भगती भरे भंडारा ॥ (140-16)
गुरमती नामु धिआईऐ सुखि रजा जा तुधु भाइआ ॥ (138-19)
गुरमती नामु निरमलो निरमल नामु धिआइ ॥ (1424-2)
गुरमती नामु मंनि वसाए ॥ (1053-15)
गुरमती नामु रिदै वसाए ॥ (222-15)
गुरमती नामु सलाहीऐ दूजा अवरु न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (38-18)
गुरमती परगासु होआ जी अनदिनु हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (110-2)
गुरमती परगासु होइ सचि रहै लिव लाइ ॥ (55-15)
गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी सचु सारु ॥ (638-16)
गुरमती भउ मनि पवै तां हरि रसि लगै पिआरि ॥ (1414-3)
गुरमती मनि अनदु भइआ तितु तनि मैलु न राती राम ॥ (771-14)
गुरमती मनि सचो भावै ॥ (128-5)

गुरमती मनु इकतु घरि आइआ सचै रंगि रंगावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (111-7)
गुरमती मनु निज घरि वसिआ सचै सबदि बैरागो राम ॥ (568-18)
गुरमती मनु निरमला रसना हरि रसु पीजै राम ॥ (570-17)
गुरमती मनु निरमलु होआ अम्रितु ततु वखानै ॥ (1334-8)
गुरमती मनु निरमलु होआ हरि राखिआ उरि धारे राम ॥ (772-2)
गुरमती मुख सोहणे हरि राखिआ उरि धारि ॥ (1346-19)
गुरमती ले राम रसाइणु ॥२॥ (1134-3)
गुरमती सचु सलाहणा जिस दा अंतु न पारावारु ॥ (37-14)
गुरमती सद मनि वसिआ सचि रहे लिव लाइ ॥१॥ (37-10)
गुरमती सदा सचु सालाही साचे ही साचि पतीजै हे ॥१॥ (1049-5)
गुरमती सबदि सूर है कामु क्रोधु जिन्ही मारिआ ॥ (1280-12)
गुरमती सभि रस भोगदा वडा आखाड़ा ॥ (1097-19)
गुरमती सहजु ऊपजै सचे रहै समाइ ॥३॥ (1009-15)
गुरमती सांति वसै सरीर ॥ (842-11)
गुरमती सालाहि सचु हरि पाइआ गुणतासु ॥ (27-13)
गुरमती सालाहीऐ बिखिआ माहि उदासा ॥१॥ रहाउ ॥ (426-2)
गुरमती सुखु पाईऐ सचु नामु उर धारि ॥३॥ (39-12)
गुरमती सो जनु तरै जो दासनि दास ॥ (166-12)
गुरमती हरि नामि समाए ॥३॥ (160-2)
गुरमती हरि नामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम ॥ (570-13)
गुरमती हरि पाइआ माइआ मोह परजालि ॥ (1418-17)
गुरमती हरि पाईऐ जोती जोति मिलाइ ॥ (36-18)
गुरमती हरि मंनि वसाइआ ॥ (122-12)
गुरमती हरि रसु चाखिआ से पुंन पराणी ॥ (515-16)
गुरमती हरि सदा पाइआ रसना हरि रसु समाइ ॥३॥ (66-19)
गुरमती हरि हरि बोले ॥ (1424-16)
गुरमती हुकमु बूझीऐ हुकमे मेलि मिलाई राम ॥ (569-2)
गुरमुख सउ करि दोसती सतिगुर सउ लाइ चितु ॥ (1421-5)
गुरमुख सिउ मनमुखु अड़ै डुबै हकि निआइ ॥ (148-6)
गुरमुखां करां उपरि हरि चेतिआ से पाइनि मोख दुआरु ॥ (1418-3)
गुरमुखां नदरी आवदा माइआ सुटि पाइआ ॥ (1246-5)
गुरमुखा के मुख उजले गुर सबदी बीचारि ॥ (30-1)
गुरमुखा के मुख उजले हरि दरगह सोभा पाइ ॥ (1415-8)
गुरमुखा दरि मुख उजले से आइ मिले हरि पासि ॥ (82-17)
गुरमुखा नो पंथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ ॥ (42-2)
गुरमुखा नो परतीति है हरि जीउ मनमुख भरमि भुलाइआ ॥१॥ (637-14)
गुरमुखा नो फलु पाइदा सचि नामि समाई ॥ (301-3)

गुरमुखा मनि परगासु है से विरले केई केइ ॥ (82-9)
गुरमुखा मनि परतीति है गुरि पूरै नामि समाणी ॥१॥ (997-1)
गुरमुखा हरि धनु खटिआ गुर कै सबदि वीचारि ॥ (1414-8)
गुरमुखि अंतरि जाणिआ गुरि मेली तरीआसु ॥१॥ (63-11)
गुरमुखि अंतरि मनि वसै सदा सदा सुखु होइ ॥२॥ (852-16)
गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ॥१॥ रहाउ ॥ (60-1)
गुरमुखि अंतरि सखाई प्रभु होइ ॥२॥ (560-2)
गुरमुखि अंतरि सहजु है मनु चड़िआ दसवै आकासि ॥ (1414-10)
गुरमुखि अंतरि सांति है मनि तनि नामि समाइ ॥ (1317-7)
गुरमुखि अंतरि सांति है मनि तनि नामि समाइ ॥ (653-1)
गुरमुखि अंतरि हरि नामु वसाए ॥ (160-8)
गुरमुखि अकथु कथै बीचारि ॥ (941-8)
गुरमुखि अखरु जितु धावतु रहता ॥ (131-12)
गुरमुखि अगम अगोचरु धिआइआ हउ बलि बलि सतिगुर सति पुरखईआ ॥ (834-12)
गुरमुखि अनदिनु उसतति होवै ॥ (646-2)
गुरमुखि अनदिनु रहै रंगि राता हरि का नामु मनि भाइआ ॥ (512-15)
गुरमुखि अनदिनु सबदे राता ॥ (125-6)
गुरमुखि अपना खसमु पछाणु ॥२॥ (867-3)
गुरमुखि अम्रित बाणी बोलहि सभ आतम रामु पछाणी ॥ (69-8)
गुरमुखि अम्रितु नामु है जितु खाधै सभ भुख जाइ ॥ (1250-2)
गुरमुखि अम्रितु पीवणा नानक सबदु वीचारि ॥१॥ (646-2)
गुरमुखि अम्रितु पीवणा वाहु वाहु करहि लिव लाइ ॥ (515-4)
गुरमुखि अलखु लखाए तिसु भावै ॥ (942-3)
गुरमुखि अलिपत रहे लिव लाई ॥५॥ (230-13)
गुरमुखि अलिपतु रहै संसारे ॥ (118-4)
गुरमुखि अलिपतु लेपु कदे न लागै सदा रहै सरणाई ॥ (1344-7)
गुरमुखि असट सिधी सभि बुधी ॥ (941-12)
गुरमुखि अहंकारु जलाए दोई ॥ (230-2)
गुरमुखि आखी गुरमुखि जाती सुरतीं करमि धिआई ॥ (1243-17)
गुरमुखि आखै गुरमुखि बूझै गुरमुखि एको जाणै ॥२९॥ (434-4)
गुरमुखि आपणा मनु मारिआ सबदि कसवटी लाइ ॥ (87-12)
गुरमुखि आपि वडाई देवै सोइ ॥३॥ (560-2)
गुरमुखि आपु गवाइआ नित हरि हरि जापै राम ॥ (844-15)
गुरमुखि आपु पछाणिआ तिन्ही इक मनि धिआइआ ॥ (429-2)
गुरमुखि आपु पछाणिआ हरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ (162-14)
गुरमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ ॥९॥ (60-13)
गुरमुखि आपु पछाणीऐ बुरा न दीसै कोइ ॥ (1244-11)

गुरमुखि आपु पछाणै संतहु राम नामि लिव लाई ॥८॥ (910-9)
गुरमुखि आपु वीचारीऐ लगै सचि पिआरु ॥ (1283-1)
गुरमुखि आपे करे कराए ॥ (125-9)
गुरमुखि आपे दे वडिआई ॥ (1066-17)
गुरमुखि आपे दे वडिआई ॥५॥ (831-16)
गुरमुखि आपे दे वडिआई आपे सेव कराए ॥२॥ (64-19)
गुरमुखि आपे देइ वडाई आपे सेव कराए ॥२॥ (32-8)
गुरमुखि आपे बखसिओनु हरि नामि समाणे ॥ (1088-4)
गुरमुखि आवणु जावणु तूटा ॥ (131-9)
गुरमुखि आवै जाइ निसंगु ॥ (932-13)
गुरमुखि इहु मनु भगती जागे ॥ (415-16)
गुरमुखि इहु मनु रंगीऐ दूजा रंगु जाई राम ॥ (571-5)
गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥ (159-8)
गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥ (665-12)
गुरमुखि उदासी सो करे जि सचि रहै लिव लाइ ॥ (588-8)
गुरमुखि उपजै साचि समावै ॥ (1055-4)
गुरमुखि उपदेसु दुखु सुखु सम सहता ॥ (131-12)
गुरमुखि उबरे मनमुख पति खोई ॥१॥ (176-6)
गुरमुखि उबरे हरि सरणाई ॥ (664-16)
गुरमुखि एक द्रिसटि करि देखहु घटि घटि जोति समोई जीउ ॥२॥ (599-2)
गुरमुखि एकसु सिउ लिव लाए ॥ (1066-6)
गुरमुखि एकु विरला को लहै ॥ (930-15)
गुरमुखि एको एकु पछाता गुरमुखि होइ लखावैगो ॥ (1310-9)
गुरमुखि एको जाणीऐ जा सतिगुरु देइ बुझाइ ॥ (994-18)
गुरमुखि एको बुझिआ एकसु माहि समाइ ॥७॥ (757-7)
गुरमुखि एहु मनु जीवतु मरै सचि रहै लिव लाइ ॥ (650-15)
गुरमुखि एहु रंगु पाईऐ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥२॥ (36-14)
गुरमुखि ओअंकारि सचि समाइआ ॥१६॥ (1285-10)
गुरमुखि कथा सुणी मनि भाई धनु धनु वड भाग हमारे ॥१॥ रहाउ ॥ (882-9)
गुरमुखि कदे न आवै हारि ॥ (942-11)
गुरमुखि कमलु प्रगासीऐ भाई रिदै होवै परगासु ॥ (640-4)
गुरमुखि कमलु विगसिआ सभु आतम ब्रहमु पछानु ॥ (1313-15)
गुरमुखि कमलु विगसिआ सभु आतम ब्रहमु पछानु ॥ (1419-4)
गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ (159-6)
गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ (665-10)
गुरमुखि करणी कार कराए ॥ (942-5)
गुरमुखि करणी सचे सेवहि साचे जाइ समावणिआ ॥५॥ (113-8)

गुरमुखि करणी सबदु वीचारु ॥ (841-9)
गुरमुखि करणी हरि कीरति सारु ॥ (115-7)
गुरमुखि करम कमावै बिगसै हरि बैरागु अनंदु ॥ (29-13)
गुरमुखि करम गुरमुखि निहकरमा गुरमुखि करे सु सुभाए जीउ ॥६॥ (131-10)
गुरमुखि करम धरम सचि होई ॥ (230-2)
गुरमुखि कामणि बणिआ सीगारु ॥ (1277-13)
गुरमुखि कार कमावणी सचु घटि परगटु होइ ॥ (27-2)
गुरमुखि कार करहु लिव लाइ ॥ (1174-4)
गुरमुखि कार करे प्रभ भावै गुरमुखि पूरा पाइदा ॥१॥ (1058-13)
गुरमुखि कार सचु कमावहि सचे सचि समावणिआ ॥७॥ (117-6)
गुरमुखि किनै विरलै डीठा ॥१॥ रहाउ ॥ (886-19)
गुरमुखि कीतो थाटु सिरजि संसारिआ ॥ (1094-11)
गुरमुखि कीमति जाणै कोइ ॥ (361-14)
गुरमुखि कूड़ु न भावई सचि रते सच भाइ ॥ (22-7)
गुरमुखि केती सबदि उधारी संतहु ॥१॥ रहाउ ॥ (907-13)
गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥ (145-13)
गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥३॥ (356-7)
गुरमुखि कोई गारड़ू तिनि मलि दलि लाई पाइ ॥ (510-9)
गुरमुखि कोई विरला बूझै जिस नो नदरि करेइ ॥ (1258-9)
गुरमुखि कोई सचु कमावै ॥ (1344-19)
गुरमुखि कोटि असंख उधारे ॥ (1024-9)
गुरमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावै एक कणी ॥२॥ (608-16)
गुरमुखि कोटि तेतीस उधारे ॥४०॥ (942-14)
गुरमुखि क्रिपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होइ ॥ (64-15)
गुरमुखि क्रिपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होई ॥ (32-4)
गुरमुखि खेती हरि अंतरि बीजीऐ हरि लीजै सरीरि जमाए राम ॥ (568-14)
गुरमुखि खोजत भए उदासी ॥ (939-18)
गुरमुखि खोजि लहहि जन पूरे इउ समदरसी चीना हे ॥१३॥ (1028-12)
गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे ॥१॥ (415-7)
गुरमुखि खोजे वेपरवाहा ॥ (1066-15)
गुरमुखि खोटे खरे पछाणु ॥ (942-14)
गुरमुखि गारड़ु जे सुणे मंने नाउ संतोसु ॥४॥ (1009-17)
गुरमुखि गावहि सचु गुणतासु ॥ (232-10)
गुरमुखि गावै आपु गवावै दरि साचै सोभा पाई ॥१८॥ (910-15)
गुरमुखि गावै गुरमुखि नाचै हरि सेती चितु लावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (124-19)
गुरमुखि गावै गुरमुखि बूझै गुरमुखि सबदु बीचारे ॥ (753-9)
गुरमुखि गावै गुरमुखि बोलै ॥ (932-13)

गुरमुखि गावै सदा गुण साचे मिलि प्रीतम सुखु पाइदा ॥३॥ (1059-16)
गुरमुखि गिआन भेटि गुण गाही ॥७॥ (226-19)
गुरमुखि गिआनि रते जुग अंतरि चूकै मोह गुबारा ॥३॥ (559-16)
गुरमुखि गिआनी गुरमुखि बकता ॥ (131-8)
गुरमुखि गिआनु एको है जाता अनदिनु नामु रवीजै हे ॥१३॥ (1050-1)
गुरमुखि गिआनु डोरी प्रभि पकड़ी जिन खिंचै तिन जाईऐ ॥ (935-16)
गुरमुखि गिआनु ततु बीचारा जोती जोति मिलाए ॥३॥ (1131-14)
गुरमुखि गिआनु तिसु सभु किछु सूझै अगिआनी अंधु कमाई हे ॥२॥ (1047-4)
गुरमुखि गिआनु धिआनु आपारु ॥ (1058-13)
गुरमुखि गिआनु धिआनु मनि मानु ॥ (414-5)
गुरमुखि गिआनु धुरि करमि लिखिआसु ॥७॥ (222-8)
गुरमुखि गिआनु नामि मुकति होई ॥ (117-5)
गुरमुखि गिआनु बिबेक बुधि होइ ॥ (317-9)
गुरमुखि गिआनु सदा सालाहे जुगि जुगि एको जाता हे ॥१०॥ (1051-18)
गुरमुखि गुण गावै सदा निरमलु सबदे भगति करावणिआ ॥६॥ (125-7)
गुरमुखि गुण गावै सोभा पाई ॥ (125-5)
गुरमुखि गुण वेहाझीअहि मलु हउमै कढै धोइ ॥ (311-7)
गुरमुखि घाले गुरमुखि खटे गुरमुखि नामु जपाए ॥ (753-13)
गुरमुखि चलतु रचाइओनु गुण परगटी आइआ ॥ (1238-7)
गुरमुखि चानणु जाणीऐ मनमुखि मुगधु गुबारु ॥ (20-8)
गुरमुखि चाल जितु पारब्रहमु धिआए गुरमुखि कीरतनु गाए जीउ ॥८॥ (131-13)
गुरमुखि चितु न लाइओ अंति दुखु पहुता आइ ॥ (647-3)
गुरमुखि चीन्है हरि प्रभु आपै ॥४॥ (415-12)
गुरमुखि चूकै आवण जाणु ॥ (942-14)
गुरमुखि चोरु न लागि हरि नामि जगाईऐ ॥ (752-12)
गुरमुखि छूटसि हरि गुण गाइ ॥५॥ (226-1)
गुरमुखि छूटै नामु सम्हालि ॥३॥ (1344-15)
गुरमुखि जगु जीता जमकालु मारि बिदारि ॥ (946-11)
गुरमुखि जनकि हरि नामि लिव लाई ॥ (591-6)
गुरमुखि जनमु सकारथा निरमलु मलु खोई ॥ (1247-8)
गुरमुखि जनमु सकारथा सचै सबदि लगंनि ॥ (755-4)
गुरमुखि जनमु सफलु है जिस नो आपे लए मिलाइ ॥ (850-5)
गुरमुखि जप तप संजमी हरि कै नामि पिआरु ॥ (29-8)
गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ अरोगत भए सरीरा ॥ (574-17)
गुरमुखि जपिओ हरि का नाउ ॥ (1148-1)
गुरमुखि जपीऐ अंतरि पिआरि ॥ (941-9)
गुरमुखि जपीऐ उतरै चिंद ॥ (891-3)

गुरमुखि जपीऐ लाइ धिआना ॥ (1075-19)
गुरमुखि जम डंडु न लगई हउमै विचहु जाइ ॥ (1251-2)
गुरमुखि जमकालु नेड़ि न आवै ॥ (231-3)
गुरमुखि जलु पावै सुख सहजे हरिआ भाइ सुभाई ॥२॥ (607-12)
गुरमुखि जा कै मनि तनि बासै ॥२॥ (677-4)
गुरमुखि जाइ मिलै निज महली अनहद सबदु बजावैगो ॥५॥ (1310-10)
गुरमुखि जाइ लहहु घरु अपना घसि चंदनु हरि जसु घसीऐ ॥२॥ (170-8)
गुरमुखि जागि रहे अउधूता ॥ (904-6)
गुरमुखि जागि रहे चूकी अभिमानी राम ॥ (1111-1)
गुरमुखि जागि रहे दिन राती ॥ (1024-15)
गुरमुखि जागे गुण गिआन बीचारि ॥ (160-16)
गुरमुखि जागे से उबरे भाई भवजलु पारि उतारि ॥ (603-8)
गुरमुखि जागै नीद न सोवै ॥ (944-2)
गुरमुखि जागै सोई सारु ॥ (1194-2)
गुरमुखि जाणि सिञाणीऐ गुरि मेली गुण चारु ॥२॥ (58-15)
गुरमुखि जाता करमि बिधाता ॥ (1054-19)
गुरमुखि जाता तुधु सालाही ॥ (1023-10)
गुरमुखि जाता दूजा को नाही ॥ (122-16)
गुरमुखि जाता सबदि पछाता साचै प्रेमि समाए ॥ (583-9)
गुरमुखि जाति पति नामे वडिआई ॥ (230-7)
गुरमुखि जाति पति सचु सोइ ॥ (560-1)
गुरमुखि जाति पति सभु आपे ॥ (117-7)
गुरमुखि जापै सबदि लिव लाइ ॥ (313-18)
गुरमुखि जिंदू जपि नामु करमा ॥ (172-19)
गुरमुखि जिता मनमुखि हारिआ ॥१७॥ (310-11)
गुरमुखि जिना परापति होइ ॥१॥ (1129-7)
गुरमुखि जिना सबदु मनि वसै दरगह मोख दुआरु ॥ (1250-10)
गुरमुखि जिनी अराधिआ तिनी तरिआ भउजलु संसारु ॥ (90-11)
गुरमुखि जिनी जाणिआ तिन कीचै साबासि ॥ (20-9)
गुरमुखि जिनी धिआइआ हरि हरि जगि ते पूरे परवाना ॥३॥ (797-19)
गुरमुखि जिनी नामु न पाइआ ॥ (1016-16)
गुरमुखि जिनी राविआ मुईए पिरु रवि रहिआ भरपूरे राम ॥ (567-19)
गुरमुखि जिन्ही बुझिआ हरि अम्रितु रखिआ उरि धारि ॥ (1281-17)
गुरमुखि जिस नो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए ॥ (920-14)
गुरमुखि जिस नो आपि करे सो होइ ॥ (560-2)
गुरमुखि जिसु हरि मनि वसै तिसु मेले गुरु संजोगु ॥२॥ (21-18)
गुरमुखि जिह घटि रहे समाई ॥ (257-16)

गुरमुखि जीअ प्रान उपजहि गुरमुखि सिव घरि जाईऐ ॥ (1329-3)
गुरमुखि जीवै मरै परवाणु ॥ (125-1)
गुरमुखि जुग चारे है जाता ॥ (125-6)
गुरमुखि जुगि जुगि आखि वखाणी ॥ (424-5)
गुरमुखि जो हरि सेवदे जन नानकु ता का दासु ॥२१॥ (1415-5)
गुरमुखि जोग सबदि आतमु चीनै हिरदै एकु मुरारी ॥१७॥ (908-4)
गुरमुखि जोगी जुगति पछाणै ॥ (946-7)
गुरमुखि जोगु कमावै अउधू जतु सतु सबदि वीचारी ॥२०॥ (908-5)
गुरमुखि जोति निरंतरि पाई ॥ (940-3)
गुरमुखि जोति भली सिव नीकी आनि पानी सकति भरीजै ॥ (1324-16)
गुरमुखि जोती जोति मिलाई ॥ (362-18)
गुरमुखि जोरु करे किआ तिस नो आपे खपि दुखु पावणिआ ॥३॥ (118-5)
गुरमुखि झगड़ु चुकाइओनु इको रवि रहिआ ॥ (790-6)
गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ॥ (449-8)
गुरमुखि ततु गिआनो ॥ (1006-4)
गुरमुखि ततु है बीचारा ॥ (119-10)
गुरमुखि ता कउ लगै न पीर ॥ (361-4)
गुरमुखि तारे पारि उतारे ॥ (941-14)
गुरमुखि तुरीआ गुणु उरि धारु ॥४॥ (1262-14)
गुरमुखि तेरा भाणा भावै ॥ (1063-18)
गुरमुखि तोलि तोलाइसी सचु तराजी तोलु ॥ (59-3)
गुरमुखि तोलि तोलावै तोलै ॥ (932-13)
गुरमुखि त्रिभवणि सोझी होई ॥ (415-12)
गुरमुखि त्रिसना भुख गवाए ॥ (1016-11)
गुरमुखि त्रै गुणीआं बिसथारु ॥ (1270-6)
गुरमुखि थापे थापि उथापे ॥ (117-6)
गुरमुखि थिरु चीनै संगि देउ ॥ (1170-3)
गुरमुखि दरगह जाणीऐ पिआरे चलै कारज सारि ॥४॥ (636-10)
गुरमुखि दरगह न आवै हारि ॥ (946-11)
गुरमुखि दरगह पावै माणु ॥ (942-14)
गुरमुखि दरगह मंनीअहि हरि आपि लए गलि लाइ ॥२॥ (42-2)
गुरमुखि दरगह सिफति समाइ ॥ (942-15)
गुरमुखि दरि साचै सचिआर हहि साचे माहि समाहि ॥५॥ (565-4)
गुरमुखि दीसै ब्रहम पसारु ॥ (1270-6)
गुरमुखि दीसै सहजि सुभाइ ॥ (222-13)
गुरमुखि दुखु कदे न लगै सरीरि ॥ (125-3)
गुरमुखि देखै साचु समाले बिनु साचे जगु काचा ॥२॥ (930-4)

गुरमुखि देवहि पकी सारी ॥ (1045-18)
गुरमुखि देवै मंनि वसाई ॥ (1053-16)
गुरमुखि देवै सबदु पछाणै ॥ (1060-13)
गुरमुखि धनु खटी हरि मेरा साहु ॥३॥ (375-7)
गुरमुखि धरती गुरमुखि पाणी ॥ (117-10)
गुरमुखि धरती साचै साजी ॥ (941-10)
गुरमुखि धिआन सहज धुनि उपजै सचि नामि चितु लाइआ ॥ (512-14)
गुरमुखि धिआवहि सि अम्रितु पावहि सेई सूचे होही ॥ (1254-7)
गुरमुखि नदरि निहालि मन मेरे अंतरि हरि नामु सखाई ॥ (569-9)
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥ (2-8)
गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ (1058-13)
गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ (1270-6)
गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ (932-14)
गुरमुखि नादु बेदु है गुरमुखि गुर परचै नामु धिआवैगो ॥ (1311-15)
गुरमुखि नानक आराधिआ सभि आखहु धंनु धंनु धंनु गुरु सोई ॥२९॥१॥ सुधु (654-2)
गुरमुखि नानक एको जाणै ॥६९॥ (946-7)
गुरमुखि नानक तिसै अराधे मन की आस पुजाए जीउ ॥४॥२३॥३०॥ (103-11)
गुरमुखि नानक दे वडिआई ॥ (164-3)
गुरमुखि नानक नामु पछाणिआ ॥३॥ (1237-17)
गुरमुखि नानक परवारै साधारु ॥४॥६॥ (560-3)
गुरमुखि नानक पावै पारु ॥१४॥ (1422-13)
गुरमुखि नानक सचि समाईऐ गुरमुखि निज पदु पाईऐ ॥४॥६॥ (1329-4)
गुरमुखि नानक हरि जसु सुनां ॥२॥९॥२८॥ (1303-10)
गुरमुखि नामि मिलै वडिआई ॥ (1046-3)
गुरमुखि नामि मिलै साबासि ॥ (796-11)
गुरमुखि नामि रते सुखु पाइआ सहजे साचि समाई हे ॥३॥ (1047-5)
गुरमुखि नामि रते सुखु होई ॥३॥ (230-2)
गुरमुखि नामि रते से उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥ (1259-13)
गुरमुखि नामि लगे से उधरे सभि किलबिख पाप टरे ॥२॥ (995-7)
गुरमुखि नामि लगे से सोहिआ ॥२॥ (394-16)
गुरमुखि नामि सबदि सालाहे ॥ (1055-2)
गुरमुखि नामि समाइ समावै नानक नामु धिआई हे ॥१२॥ (1070-1)
गुरमुखि नामु अम्रित जलु पाईऐ जिन कउ क्रिपा तुमारी ॥ रहाउ ॥ (506-18)
गुरमुखि नामु जपहु दिनु राती अंत कालि नह लागै पीर ॥१॥ रहाउ ॥ (1185-11)
गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥ (264-4)
गुरमुखि नामु जपहु हरि लाहा ॥ (699-11)
गुरमुखि नामु जपीऐ तितु तरीऐ गति नानक विरली जाती जीउ ॥४॥६॥१३॥ (98-12)

गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि घटि घटि नानक माझा ॥४॥३॥५०॥ (748-1)
गुरमुखि नामु जपै मनु रूड़ा ॥३॥ (415-11)
गुरमुखि नामु दानु इसनानु ॥ (942-4)
गुरमुखि नामु देवहि तू आपे सहसा गणत न ताहा हे ॥१५॥ (1056-8)
गुरमुखि नामु धिआइ असथिरु होईऐ ॥१॥ (369-1)
गुरमुखि नामु धिआइ तुझै समाइआ ॥ (1282-10)
गुरमुखि नामु धिआईऐ नानक लिव लाई ॥६॥ (1240-3)
गुरमुखि नामु धिआईऐ बूझै वीचारा ॥ (424-14)
गुरमुखि नामु धिआईऐ मथि ततु कढोलै ॥ (955-8)
गुरमुखि नामु धिआईऐ मन मंदरु भीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (419-8)
गुरमुखि नामु धिआईऐ मनमुखि बूझ न पाइ ॥ (66-14)
गुरमुखि नामु निधानु लै दरगह लए छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (162-13)
गुरमुखि नामु निमख रिदै वसै ॥१॥ (890-18)
गुरमुखि नामु निरंजन पाए ॥ (942-16)
गुरमुखि नामु निरंजनु पाईऐ अफरिओ भारु अफारु टरै ॥१॥ रहाउ ॥ (1013-17)
गुरमुखि नामु पछाणीऐ नानक सचि समाइ ॥३॥२९॥६२॥ (38-15)
गुरमुखि नामु पछाणै कोइ ॥ (158-2)
गुरमुखि नामु पदारथु पाए ॥ (1064-2)
गुरमुखि नामु पदारथु पाए ॥६॥ (222-7)
गुरमुखि नामु पदारथु लहीऐ ॥ (1075-15)
गुरमुखि नामु पदारथु लेइ ॥ (1069-14)
गुरमुखि नामु परापति होइ ॥ (1174-13)
गुरमुखि नामु परापति होवै ॥ (1069-19)
गुरमुखि नामु पिआरे ॥ (775-1)
गुरमुखि नामु प्रगटी है सोइ ॥ (1069-18)
गुरमुखि नामु मिलै मनु भीजै सहजि समाधि लगावणिआ ॥३॥ (130-3)
गुरमुखि नामु मिलै वडिआई ॥ (125-5)
गुरमुखि नामु मिलै हरि बाणी ॥३॥ (423-12)
गुरमुखि नामु लइआ जोती जोति रले ॥ (705-2)
गुरमुखि नामु वखाणै कोई ॥५॥ (880-8)
गुरमुखि नामु वडिआई देइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1129-7)
गुरमुखि नामु वसै मनि आइ ॥२॥ (230-1)
गुरमुखि नामु वसै मनि आइ ॥३॥ (1129-13)
गुरमुखि नामु सदा लै लाहा ॥ (698-17)
गुरमुखि नामु सदा सदा वखानै ॥५॥ (833-1)
गुरमुखि नामु समालि तूं वणजारिआ मित्रा तेरा दरगह बेली होइ ॥ (77-18)
गुरमुखि नामु समालि पराणी अंते होइ सखाई ॥ (77-19)

गुरमुखि नामु सलाहीऐ हउमै निवरी भाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (20-12)
गुरमुखि नामु सालाहि जनमु सवारिआ ॥ (86-15)
गुरमुखि नामु सीतल जलु पाइआ हरि हरि नामु पीआ रसु झीक ॥१॥ रहाउ ॥ (1336-2)
गुरमुखि नामु सुनहु मेरी भैना ॥ (366-12)
गुरमुखि नामु सुहागु है मसतकि मणी लिखिआसु ॥ (1416-13)
गुरमुखि नामे लगै पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (1129-11)
गुरमुखि निज घरि वासा होइ ॥ (946-7)
गुरमुखि निबहै सपरवारि ॥ (941-8)
गुरमुखि निरति हरि लागै भाउ ॥ (364-16)
गुरमुखि निरमल रहहि पिआरे ॥ (353-8)
गुरमुखि निरमल हरि गुण गावै ॥ (941-5)
गुरमुखि निरमल हरि राखिआ उर धारि ॥ (852-3)
गुरमुखि निरमलु नामु वखाणै ॥८॥ (415-4)
गुरमुखि निरमलु मैलु न लागै ॥ (353-11)
गुरमुखि निरमलु मैलु न लावै ॥ (1059-12)
गुरमुखि निवारै सबदि वीचारे ॥ (1049-16)
गुरमुखि पड़हि हरि नामु सलाहहि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (127-9)
गुरमुखि पति सिउ लेखा निबड़ै बखसे सिफति भंडार ॥ (1281-1)
गुरमुखि परखै रतनु सुभाइ ॥ (942-2)
गुरमुखि परगटु होआ हरि राइ ॥ (878-16)
गुरमुखि परचै अंतर बिधि जानी ॥ (941-7)
गुरमुखि परचै कंचन काइआ निरभउ जोती जोति मिलईआ ॥१॥ (833-7)
गुरमुखि परचै तरीऐ तारी ॥ (941-6)
गुरमुखि परचै बेद बीचारी ॥ (941-6)
गुरमुखि परचै सु सबदि गिआनी ॥ (941-7)
गुरमुखि परतीति भई मनु मानिआ अनदिनु सेवा करत समाइ ॥ (1423-8)
गुरमुखि परविरति नरविरति पछाणै ॥ (941-13)
गुरमुखि पवणु बैसंतरु खेलै विडाणी ॥ (117-11)
गुरमुखि पवित्रु परम पदु पावै ॥ (941-5)
गुरमुखि पसरिआ सभु पासारा ॥ (1054-19)
गुरमुखि पाइआ नामु हउ गुर कउ वारिआ ॥ (791-1)
गुरमुखि पाई किनै विरलै जंता ॥१॥ (370-19)
गुरमुखि पाईऐ अलख अपारु ॥ (941-7)
गुरमुखि पाईऐ नानका खाधै जाहि बिकार ॥१॥ (553-4)
गुरमुखि पाईऐ नाम प्रसादु ॥३॥ (1174-1)
गुरमुखि पाईऐ सबदि अचारि ॥ (941-9)
गुरमुखि पाए नामु अपारा ॥ (126-12)

गुरमुखि पाए मोख दुआरु ॥ (1059-2)
गुरमुखि पाए मोख दुआरु ॥ (115-8)
गुरमुखि पावउ परम पदु सूखा ॥१॥ रहाउ ॥ (232-9)
गुरमुखि पावसि रसि रसि मानु ॥१॥ रहाउ ॥ (831-10)
गुरमुखि पावहि दरगहि मानु ॥३॥ (905-19)
गुरमुखि पावै घटि घटि भेद ॥ (942-6)
गुरमुखि पावै दरगह मानु ॥ (942-5)
गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुंने राम राजे ॥ (449-12)
गुरमुखि पीवै सहजि समाइ ॥१॥ (733-2)
गुरमुखि पूंजी नामु विसाहा ॥ (699-13)
गुरमुखि पूरा जे करे पाईऐ साचु अतोलु ॥१॥ रहाउ ॥ (17-11)
गुरमुखि पूरा तिसु साबासि ॥ (936-19)
गुरमुखि प्रगटु भइआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाइदा ॥१५॥ (1076-13)
गुरमुखि प्रगटु होआ मेरा हरि प्रभु अनदिनु हरि गुण गाइ ॥२॥ (1132-5)
गुरमुखि प्रगासु भइआ साति आई दुरमति बुधि निवारी ॥ (607-6)
गुरमुखि प्रभु रावे दिनु राती आपणा साची सोभा होई ॥ (770-6)
गुरमुखि प्रभु सेवहि सद साचा अनदिनु सहजि पिआरि ॥ (551-9)
गुरमुखि प्रहिलादि जपि हरि गति पाई ॥ (591-6)
गुरमुखि प्राणी अपराधी सीधे ॥ (231-10)
गुरमुखि प्राणी जमु नेड़ि न आवै जिन हरि राखिआ उरि धारा ॥२॥ (1130-14)
गुरमुखि प्राणी नामु हरि धिआइ ॥ (162-2)
गुरमुखि प्राणी नामे राते नामे गति पति पाई ॥१॥ (504-8)
गुरमुखि प्राणी भरमु गवाइ ॥ (231-19)
गुरमुखि प्राणी मुकतु है हरि हरि नामु समालि ॥२॥ (234-18)
गुरमुखि प्रीति जिस नो आपे लाए ॥ (798-2)
गुरमुखि प्रीति सदा है साची ॥ (1069-10)
गुरमुखि फलु पावहु हरि नामु धिआवहु जनम जनम के दूख निवारे ॥ (767-16)
गुरमुखि बखसि जमाईअनु मनमुखी मूलु गवाइआ ॥ (304-7)
गुरमुखि बसिसटि हरि उपदेसु सुणाई ॥ (591-6)
गुरमुखि बांधिओ सेतु बिधातै ॥ (942-12)
गुरमुखि बाणी अघड़ु घड़ावै ॥ (941-4)
गुरमुखि बाणी नादु वजावै ॥ (1058-14)
गुरमुखि बाणी नामु है नामु रिदै वसाई ॥ (1239-5)
गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइ ॥ (39-5)
गुरमुखि बाणी मीठी लागी ॥ (232-15)
गुरमुखि बिगसै सहजि सुभाइ ॥२॥ (1173-19)
गुरमुखि बीजे सचु जमै सचु नामु वापारु ॥ (428-13)

गुरमुखि बुढे कदे नाही जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु ॥ (1418-6)
गुरमुखि बुधि पाईऐ आपु गवाईऐ सबदे रहिआ समाई ॥ (448-14)
गुरमुखि बुधि प्रगटी प्रभ जासु ॥ (232-17)
गुरमुखि बूझहि रोगु गवावहि गुर सबदी वीचारा ॥१॥ (1130-12)
गुरमुखि बूझहु सबदि पछाणहु ॥ (1041-12)
गुरमुखि बूझै अकथु कहावै ॥ (109-18)
गुरमुखि बूझै आपु पछाणै सचे सचि समाए ॥३॥ (938-12)
गुरमुखि बूझै एक लिव लाए ॥ (222-18)
गुरमुखि बूझै एक समाइ ॥१॥ (1188-11)
गुरमुखि बूझै को बीचारि ॥१॥ (880-2)
गुरमुखि बूझै को वीचारा ॥ (1043-19)
गुरमुखि बूझै जाणीऐ हउमै गरबु निवारि ॥७॥ (1015-3)
गुरमुखि बूझै ततु बीचारा ॥ (109-17)
गुरमुखि बूझै सचि समाइआ ॥ (1045-17)
गुरमुखि बूझै सबदि पतीजै ॥ (1041-10)
गुरमुखि बूझै सोझी होइ ॥९॥ (842-1)
गुरमुखि बूझै सोझी होई ॥ (880-4)
गुरमुखि बेअंतु धिआईऐ अंतु न पारावारु ॥४६॥ (936-17)
गुरमुखि बोलहि सो थाइ पाए मनमुखि किछु थाइ न पाई ॥२६॥ (758-7)
गुरमुखि बोलै ततु बिरोलै चीनै अलख अपारो ॥ (944-16)
गुरमुखि ब्रहमु हरीआवला साचै सहजि सुभाइ ॥ (66-5)
गुरमुखि भउ भंजनु परधानु ॥ (942-5)
गुरमुखि भउजलु उतरहु पारा ॥१॥ रहाउ ॥ (229-19)
गुरमुखि भए निरास परम सुखु पाइआ ॥ (1249-7)
गुरमुखि भगत सोहहि दरबारे ॥ (1055-5)
गुरमुखि भगति अंतरि प्रीति पिआरु ॥ (364-18)
गुरमुखि भगति करहि प्रभ भावहि अनदिनु नामु वखाणे ॥ (601-10)
गुरमुखि भगति करहु सद प्राणी ॥ (880-13)
गुरमुखि भगति घटि चानणु होइ ॥ (364-16)
गुरमुखि भगति जा आपि कराए ॥ (122-1)
गुरमुखि भगति जितु सहज धुनि उपजै बिनु भगती मैलु न जाए ॥ (245-5)
गुरमुखि भगति जुग चारे होई ॥ (122-5)
गुरमुखि भगति जुगति सचु सोइ ॥ (364-19)
गुरमुखि भगति परापति होई ॥ (154-15)
गुरमुखि भगति परापति होवै जीवतिआ इउ मरीऐ ॥ (245-18)
गुरमुखि भगति भाउ धुनि होई ॥ (415-17)
गुरमुखि भगति विरले मनु मानिआ ॥१॥ (226-14)

गुरमुखि भगति सलाह है अंतरि सबदु अपारा ॥३॥ (424-14)
गुरमुखि भगति सहज घरु पाईऐ ॥ (686-5)
गुरमुखि भगति सहजि बीचारी ॥ (685-18)
गुरमुखि भगति सांति सुखु होई ॥ (1049-18)
गुरमुखि भगति हरि नामि समाए ॥३॥ (160-8)
गुरमुखि भवजलु तरीऐ सच सुधी ॥ (941-12)
गुरमुखि भेदु विरला को लहै ॥१॥ रहाउ ॥ (1139-10)
गुरमुखि भ्रम भै मोह मिटाइआ ॥ (258-15)
गुरमुखि मजनु चजु अचारु ॥ (932-14)
गुरमुखि मधुसूदनु निसतारे ॥ (98-9)
गुरमुखि मन मेरे नामु समालि ॥ (560-1)
गुरमुखि मनहु न वीसरै हरि जीउ करता पुरखु मुरारी राम ॥ (544-1)
गुरमुखि मनि वीचारिआ जो तिसु भावै सु होइ ॥ (586-2)
गुरमुखि मनु असथाने सोई ॥ (415-11)
गुरमुखि मनु जीता हउमै मारि ॥ (946-10)
गुरमुखि मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥४॥ (125-4)
गुरमुखि मनु निरमलु सत सरि नावै ॥ (1058-16)
गुरमुखि मनु बेधिआ असथिरु होइ ॥ (232-13)
गुरमुखि मनु भीजै विरला बूझै कोइ ॥ (946-6)
गुरमुखि मनु समझाईऐ आतम रामु बीचारि ॥२॥ (18-14)
गुरमुखि मनूआ इकतु घरि आवै मिलउ गोपाल नीसानु बजईआ ॥५॥ (833-14)
गुरमुखि मनूआ उलटि परावै ॥ (1058-14)
गुरमुखि मरणु जीवणु प्रभ नालि ॥ (932-11)
गुरमुखि मरहि सु हहि परवाणु ॥ (1059-8)
गुरमुखि मरै न कालु न खाए गुरमुखि सचि समावणिआ ॥२॥ (125-2)
गुरमुखि मरै न जनमै गुरमुखि गुरमुखि सबदि समाहा हे ॥१०॥ (1055-1)
गुरमुखि मलार रागु जो करहि तिन मनु तनु सीतलु होइ ॥ (1285-16)
गुरमुखि महली महलु पछानु ॥ (414-6)
गुरमुखि महलु पाइनि गुण गावनि निज घरि होइ बसेरा ॥ (602-4)
गुरमुखि मिलि रहीऐ घरि वाजहि सबद घनेरे राम ॥ (775-9)
गुरमुखि मिलिआ रंगु माना ॥१॥ (886-18)
गुरमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि तनि मीठा लाइआ बलि राम जीउ ॥ (774-10)
गुरमुखि मिलीऐ मनमुखि विछुरै गुरमुखि बिधि प्रगटाए जीउ ॥७॥ (131-11)
गुरमुखि मिलु सोहागणी रंगु होइ घणेरा राम ॥ (844-17)
गुरमुखि मिले सि सजणा हरि प्रभ पाइआ रंगु ॥ (1318-4)
गुरमुखि मिले से न विछुड़हि पावहि सचु सोइ ॥२॥ (994-13)
गुरमुखि मिलै ता चूकै फेरा ॥ (122-11)

गुरमुखि मिलै मिलाए आपे ॥ (124-18)
गुरमुखि मुए जीवदे परवाणु हहि मनमुख जनमि मराहि ॥ (643-4)
गुरमुखि मुकता गुरमुखि जुगता ॥ (131-8)
गुरमुखि मुकतो बंधु न पाइ ॥ (152-18)
गुरमुखि मेलि मिलाए सो जाणै ॥ (946-11)
गुरमुखि मेले आपि नानक चिरी विछुंनिआ ॥१२॥ (1422-11)
गुरमुखि मेले आपु गवाए ॥ (232-18)
गुरमुखि मेलै मेलि मिलाए ॥२॥ (798-6)
गुरमुखि मैलु न लागै आइ ॥ (230-1)
गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिंना ॥ (448-18)
गुरमुखि रंगि चलूलिआ रंगि हरि रंगि राती ॥ (138-7)
गुरमुखि रंगि चलूलै राती हरि प्रेम भीनी चोलीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (527-11)
गुरमुखि रंगु चलूला पावै हरि हरि हरि नव रंगड़ीआ ॥ (575-7)
गुरमुखि रंगु चलूला होई ॥२॥ (732-19)
गुरमुखि रंगु भइआ अति गूड़ा हरि रंगि भीनी मेरी चोली ॥१॥ (168-17)
गुरमुखि रतनु को विरला लेवै ॥ (233-10)
गुरमुखि रतनु लहै लिव लाइ ॥ (942-2)
गुरमुखि रवहि सोहागणी सो प्रभु सेज भतारु ॥३॥ (21-19)
गुरमुखि रसना हरि रसन रसाई ॥१॥ रहाउ ॥ (159-12)
गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे ॥ (415-15)
गुरमुखि राते सबदि रंगाए ॥ (798-6)
गुरमुखि राम जपहु रसु रसना इन बिधि तरु तू तारी ॥२॥ (1126-2)
गुरमुखि राम नाम गुण गावहि जा कउ हरि प्रभु नदरि करे ॥ (1014-10)
गुरमुखि राम नाम गुन गाए तू अपरमपरु सरब पाल ॥१॥ रहाउ ॥ (1169-14)
गुरमुखि राम नाम दारू गुण गाइआ ॥ (1172-14)
गुरमुखि राम नाम रंगि राता ॥ (942-7)
गुरमुखि राम नामि चितु लाइआ ॥२॥ (1129-19)
गुरमुखि राम नामि त्रिपतासे खोजत पावहु सहजि हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (414-15)
गुरमुखि राम नामि मनु भीजै हरि सेती लिव लाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1260-12)
गुरमुखि राम नामि लिव लाई ॥ (1262-5)
गुरमुखि राम नामु जपि हिरदै सहज सेती घरि जाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (1127-5)
गुरमुखि रामु करे निसतारा ॥ (997-18)
गुरमुखि रामु मेरै मनि भाइआ ॥ (416-5)
गुरमुखि रिधि सिधि सचु संजमु सोई ॥ (117-5)
गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै ॥ (941-5)
गुरमुखि लंघे से पारि पए सचे सिउ लिव लाइ ॥ (1009-14)
गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥ (942-15)

गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥ (942-4)
गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ (11-16)
गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ (365-13)
गुरमुखि लालो लालु है जिउ रंगि मजीठ सचड़ाउ ॥ (786-4)
गुरमुखि लाहा लै गए मनमुख चले मूलु गवाइ जीउ ॥१९॥ (74-11)
गुरमुखि लिव साची सहजि समाई ॥ (1047-12)
गुरमुखि लेवै वसतु समाले ॥ (1065-18)
गुरमुखि लेहु मिलाइ जनु पावै नामु हरि ॥ (790-14)
गुरमुखि लोभु निवारीऐ हरि सिउ बणि आई ॥३॥ (419-10)
गुरमुखि वडभागी वडभागे जिन हरि हरि नामु अधारे ॥ (493-6)
गुरमुखि वणजहि केई केइ ॥ (126-13)
गुरमुखि वणजि सदा सुखु पाए सहजे सहजि मिलाइदा ॥१२॥ (1066-15)
गुरमुखि वणजु करहि परु आपु पछाणहि ॥ (1053-11)
गुरमुखि वणजु करे प्रभ भावै ॥ (1032-19)
गुरमुखि वणजे सदा वापारी लाहा नामु सद पावणिआ ॥७॥ (126-12)
गुरमुखि वरतै सभु आपे सचा गुरमुखि उपाइ समावणिआ ॥१॥ (117-8)
गुरमुखि वसतु पछाणीऐ अपना घरु भाले ॥५॥ (420-10)
गुरमुखि वसतु परापति होवै चुणि लै माणक मोती ॥ (930-3)
गुरमुखि वसतु वेसाहीऐ सचु वखरु सचु रासि ॥ (18-9)
गुरमुखि विचहु आपु गवाइ ॥ (362-4)
गुरमुखि विचहु आपु गवाए ॥ (125-2)
गुरमुखि विचहु हउमै जाइ ॥ (230-1)
गुरमुखि विरला कोई जनु पाए ॥ (119-5)
गुरमुखि विरला कोई बूझै सबदे रहिआ समाई ॥ (1332-18)
गुरमुखि विरला चीनै कोई ॥ (1024-1)
गुरमुखि विरला चीन्है कोई ॥ (1344-14)
गुरमुखि विरला बूझै कोइ ॥ (878-9)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ (1044-18)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ (1055-8)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ (1060-5)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ (127-19)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ (831-9)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ (880-9)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥१॥ (841-3)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥५॥ (224-8)
गुरमुखि विरली एको जाणिआ ॥ (905-2)
गुरमुखि विरले किसै बुझाए ॥ (993-3)

गुरमुखि विरले सोझी पई तिना अंदरि ब्रहमु दिखाइआ ॥ (644-4)
गुरमुखि विरलै किन ही चीना ॥ (1050-12)
गुरमुखि विरलै किनै चखि डीठी ॥ (113-13)
गुरमुखि विरलै किनै थानु पाइआ ॥ (1064-16)
गुरमुखि विरलै किनै पछाणी ॥ (1044-11)
गुरमुखि वीआहणि आइआ ॥ (775-4)
गुरमुखि वीचारे विरला कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (160-11)
गुरमुखि वेखणु बोलणा नामु जपत सुखु पाइआ ॥ (852-1)
गुरमुखि वेखा ता इहु मनु भिंना ॥ (111-5)
गुरमुखि वेखि हदूरि अंतरि भी तू है ॥७॥ (753-2)
गुरमुखि वैर विरोध गवावै ॥ (942-7)
गुरमुखि संगति सभै बिचारहु वाहु वाहु का बडा तमासा ॥२॥१२॥ (1403-17)
गुरमुखि संगी क्रिसन मुरारे ॥ (98-9)
गुरमुखि संधि मिलै मनु मानै ॥७॥ (228-8)
गुरमुखि संसा मूलि न होवई चिंता विचहु जाइ ॥ (853-2)
गुरमुखि सउदा जो करे हरि वसतु समाले ॥ (309-8)
गुरमुखि सखी सहेली मेरी मो कउ देवहु दानु हरि प्रान जीवाइआ ॥ (493-17)
गुरमुखि सखी सहेलीआ से आपि हरि भाईआ ॥ (726-2)
गुरमुखि सखीआ सिख गुरू मेलाईआ ॥ (648-3)
गुरमुखि सगली गणत मिटावै ॥ (942-7)
गुरमुखि सचा मनि वसै सचु सउदा कीता ॥ (955-15)
गुरमुखि सचि रते बैरागी निज घरि वासा पाइदा ॥२॥ (1058-15)
गुरमुखि सचि समाइ सु दरगह जाणीऐ ॥२१॥ (1288-2)
गुरमुखि सची आसकी जितु प्रीतमु सचा पाईऐ ॥ (1422-8)
गुरमुखि सची ऊतम बाणी ॥ (1058-19)
गुरमुखि सचु कमावै करणी ॥ (1058-18)
गुरमुखि सचु बाणी परगटु होइ ॥ (946-6)
गुरमुखि सचु बैणी गुरमुखि सचु नैणी ॥ (1058-18)
गुरमुखि सचु भोजनु पवितु सरीरा ॥ (1174-18)
गुरमुखि सचु वसै घट अंतरि सहजे सचि समाई हे ॥१॥ (1069-5)
गुरमुखि सचु संजमु करणी सारु ॥ (1059-2)
गुरमुखि सचु संजमु ततु गिआनु ॥ (559-19)
गुरमुखि सचै भावदे दरि सचै सचिआर ॥ (549-9)
गुरमुखि सचै सबदि रते आपि मेले करतारि ॥२॥ (37-13)
गुरमुखि सचो सचु कमावै ॥ (1059-12)
गुरमुखि सचो सचु लिखहि वीचारु ॥ (123-8)
गुरमुखि सचो सचु वखाणी ॥ (1058-19)

गुरमुखि सजणु गुणकारीआ मिलि सजण हरि गुण गाइ ॥ (40-12)
गुरमुखि सद सेवहि सचो सचा गुरमुखि सबदु सुणाइदा ॥६॥ (1058-19)
गुरमुखि सदा अराधि हरि मेरी जिंदुड़ीए मन चिंदिअड़ा फलु पावै राम ॥ (538-7)
गुरमुखि सदा दरि सोहणे गुर का सबदु कमाहि ॥ (591-4)
गुरमुखि सदा धिआईऐ अंदरि हरि प्रीती ॥ (951-11)
गुरमुखि सदा धिआईऐ एकु नामु करतारु ॥ (29-9)
गुरमुखि सदा मुख ऊजले हरि वसिआ मनि आइ ॥ (66-15)
गुरमुखि सदा रहहि रंगि राते अनदिनु लैदे लाहा हे ॥१३॥ (1055-5)
गुरमुखि सदा रहै रंगि राती मिलि सचे सोभा पावणिआ ॥६॥ (130-7)
गुरमुखि सदा सलाहीऐ करता करे सु होई ॥७॥ (788-2)
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचा वेपरवाहु ॥१॥ रहाउ ॥ (755-3)
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचु कीमति कीजै ॥ (1089-1)
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सभि तिस दे जचा ॥ (1094-5)
गुरमुखि सदा सोहागणी पिरु राखिआ उर धारि ॥ (31-11)
गुरमुखि सदा सोहागणी भै भगति सीगारि ॥ (428-14)
गुरमुखि सदा हरि रंगु है हरि का नाउ मनि भाइआ ॥ (851-19)
गुरमुखि सनमुखु मनमुखि वेमुखीआ ॥ (131-11)
गुरमुखि सबदि रंगावले अहिनिसि हरि रसु भोगु ॥३॥ (63-2)
गुरमुखि सबदि वखाणै कोइ ॥२॥ (361-15)
गुरमुखि सबदि सिञापदे तितु साचै दरबारि ॥ (1415-18)
गुरमुखि सबदु अम्रितु है सारु ॥ (932-14)
गुरमुखि सबदु कमाईऐ हरि वसै मनि आइ ॥ (67-12)
गुरमुखि सबदु पछाणीऐ हरि अम्रित नामि समाइ ॥ (29-5)
गुरमुखि सबदु वसै मनि साचा सद सेवे सुखदाता हे ॥११॥ (1051-19)
गुरमुखि सबदु सचु करणी सारु ॥ (560-3)
गुरमुखि सबदु सम्हालीऐ सचे के गुण गाउ ॥ (1286-1)
गुरमुखि सबदे रतिआ सीतलु होए आपु गवाइ ॥ (649-19)
गुरमुखि सबदे सचि लिव लागै करि नदरी मेलि मिलाए ॥ (944-11)
गुरमुखि सभ पवितु है धनु स्मपै माइआ ॥ (1246-4)
गुरमुखि सभु वापारु भला जे सहजे कीजै राम ॥ (568-10)
गुरमुखि समझहु सदा सुखु होई ॥४॥ (230-3)
गुरमुखि समझै रोगु न होई ॥ (1038-6)
गुरमुखि सर अपसर बिधि जाणै ॥ (941-13)
गुरमुखि सहज धुनि ऊपजै दुखु हउमै विचहु जाइ ॥ (1346-17)
गुरमुखि सहजि रवै गुण गावै हरि रसु चोग चुगाइदा ॥७॥ (1033-16)
गुरमुखि सहजि समाणीआ हरि हरि मनि भाइआ ॥१॥ (162-18)
गुरमुखि सहजे अम्रितु पीवै त्रिसना अगनि बुझाहा हे ॥५॥ (1056-16)

गुरमुखि सांति ऊतम करामं ॥ (831-18)
गुरमुखि सांति सदा सुखु पाए ॥ (1055-3)
गुरमुखि साइरि पाहण तारे ॥ (942-13)
गुरमुखि साचा नामु मुरारी ॥१॥ रहाउ ॥ (414-7)
गुरमुखि साचा लगै पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (1129-18)
गुरमुखि साचा सदा धिआवहु गति मुकति तिसै ते पाहा हे ॥४॥ (1057-16)
गुरमुखि साचा सबदि पछाता ॥ (1051-1)
गुरमुखि साचा सबदि सलाहै मनि साचा तिसु रोगु गइआ ॥ (1153-18)
गुरमुखि साचि नामि पति ऊतम होइ ॥ (942-17)
गुरमुखि साचि भगति निसतारे ॥८॥ (225-1)
गुरमुखि साचि रहिआ लिव लाए ॥ (232-4)
गुरमुखि साची कार कमाइ ॥ (942-3)
गुरमुखि साचु तहा गुदराणु ॥५॥२१॥ (355-15)
गुरमुखि साचु मिलै ता वेखा ॥ (110-5)
गुरमुखि साचु मिलै सुखु पावा ॥ (1023-4)
गुरमुखि साचु रखिआ उर धारि ॥ (946-10)
गुरमुखि साचु सबदु बीचारै कोइ ॥ (946-6)
गुरमुखि साचे का भउ पावै ॥ (941-4)
गुरमुखि साचे के गुण गाए ॥ (942-16)
गुरमुखि साचे मनु पतीआइ ॥ (942-3)
गुरमुखि साचे लगै धिआनु ॥१॥ (559-19)
गुरमुखि साचे साचै दरबारि ॥१॥ रहाउ ॥ (355-11)
गुरमुखि साचै कीआ अकारा ॥ (1054-18)
गुरमुखि साचै रहै समाए ॥ (942-17)
गुरमुखि साध सेई प्रभ भाए करि किरपा आपि मिलावै ॥१॥ (881-8)
गुरमुखि साधू सरणि तुमारी ॥ (1028-19)
गुरमुखि सालाहनि से सादु पाइनि मीठा अम्रितु सारु ॥ (1333-14)
गुरमुखि सालाहे सुखदाते मनि मेले कीमति पाइदा ॥१३॥ (1066-16)
गुरमुखि सासत्र सिम्रिति बेद ॥ (942-6)
गुरमुखि सिख सोई जनु पाए जिस नो नदरि करे करतारु ॥३॥ (1256-3)
गुरमुखि सुखीआ मनमुखि दुखीआ ॥ (131-10)
गुरमुखि सुणणा साचा नाउ ॥ (350-13)
गुरमुखि सुरति सबदु नीसानु ॥१॥ (414-6)
गुरमुखि सूखु ऊपजै दुखु कदे न होई ॥ (424-15)
गुरमुखि सेई सोहदे जिन किरपा करे करतारु ॥७॥ (65-18)
गुरमुखि सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥ (592-17)
गुरमुखि सेव लगे से उधरे वडभागी सेव करंदे ॥ (800-15)

गुरमुखि सेवक भाइ हरि धनु मिलै तिथहु करमहीण लै न सकहि होर थै देस दिसंतरि हरि धनु नाहि ॥८॥ (853-1)
गुरमुखि सेवक रहे समाइ ॥५॥ (686-11)
गुरमुखि सेवा अम्रित रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (161-15)
गुरमुखि सेवा घाल जिनि घाली ॥ (1134-11)
गुरमुखि सेवा थाइ पवै उनमनि ततु कमाहु ॥ (788-17)
गुरमुखि सेवा प्रान अधारा ॥ (229-18)
गुरमुखि सेवा महली थाउ पाए ॥ (160-7)
गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भाई मै सतिगुर अलखु लखारे ॥४॥ (983-2)
गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भावै सचु सुणि लेखै पाइदा ॥१५॥ (1059-11)
गुरमुखि सेवा हरि घाल थाइ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (161-9)
गुरमुखि सेवि सलाहि सचा उर धारिआ ॥ (790-19)
गुरमुखि सेविआ सबदि वीचारा ॥ (1049-14)
गुरमुखि सोइ जि हरि जीउ भाइआ ॥ (1073-10)
गुरमुखि सोभा साच दुआरा ॥१॥ (229-19)
गुरमुखि हउमै अगनि निवारी ॥४४॥ (943-2)
गुरमुखि हउमै चूकै पीर ॥ (125-4)
गुरमुखि हउमै मारीऐ मनु निरमलु होई ॥४॥ (424-15)
गुरमुखि हउमै विचहु खोवै तउ नानक सहजि समावै ॥६४॥ (945-10)
गुरमुखि हउमै सबदि जलाए ॥ (942-16)
गुरमुखि हछे निरमले गुर कै सबदि सुभाइ ॥ (1418-10)
गुरमुखि हरि कीरति फलु पाईऐ जिन कउ हरि लिखि पाहि ॥ (651-4)
गुरमुखि हरि गुण आखि वखाणी ॥१॥ (367-2)
गुरमुखि हरि गुण गाइ रंगि रंगेतड़ा ॥४॥ (752-2)
गुरमुखि हरि गुण गाइ सहजि सुखु सारई ॥ (1425-8)
गुरमुखि हरि गुण गाए ॥ (774-15)
गुरमुखि हरि जीउ एको जाता ॥ (1048-2)
गुरमुखि हरि जीउ सदा धिआवहु जब लगु जीअ परान ॥ (1334-4)
गुरमुखि हरि दरि सोभा पाए ॥ (125-2)
गुरमुखि हरि नामु आखि वखाणी ॥ (1070-2)
गुरमुखि हरि पड़ीऐ गुरमुखि हरि सुणीऐ हरि जपत सुणत दुखु जाइ जीउ ॥ (444-15)
गुरमुखि हरि प्रभु मनि वसै तां सदा सदा सुखु होइ ॥ (1281-14)
गुरमुखि हरि फलु पावहु ॥ (767-16)
गुरमुखि हरि भगति हरि आपि लहाई ॥१३॥ (591-7)
गुरमुखि हरि रसु अंतरि डीठा ॥ (1030-5)
गुरमुखि हरि रसु चाखै कोइ ॥ (664-3)
गुरमुखि हरि रावे सुख सागरु ॥१॥ (560-19)

गुरमुखि हरि लिव गुरमुखि जाती ॥ (1031-4)
गुरमुखि हरि लिव लावै ॥१॥ रहाउ ॥ (172-14)
गुरमुखि हरि वेखहि गुरमुखि हरि बोलहि गुरमुखि हरि सहजि रंगु लाइआ ॥ (512-15)
गुरमुखि हरि सालाहिआ जिंना तिन सलाहि हरि जाता ॥ (1333-12)
गुरमुखि हरि हरि नामि समाए ॥१॥ (732-17)
गुरमुखि हरि हरि नामु जपंनि ॥ (756-19)
गुरमुखि हरि हरि मीठा लागै हरि हरि नामि समाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (903-19)
गुरमुखि हरि हरि वेलि वधाई ॥ (367-10)
गुरमुखि हरि हरि हरि लिव लागे ॥ (1178-1)
गुरमुखि हसै गुरमुखि रोवै ॥ (1422-12)
गुरमुखि हिरदै जा कै हरि हरि सोई भगतु इकाती जीउ ॥३॥ (98-10)
गुरमुखि हिरदै जिनि रामु पछाता ॥ (159-13)
गुरमुखि हिरदै नामु वसाए ॥ (1055-3)
गुरमुखि हिरदै वुठा आपि आए ॥ (125-9)
गुरमुखि हिरदै सबदु न भेदिओ हरि नामि न लागा भाउ ॥ (637-18)
गुरमुखि हिरदै सांति है नाउ उगवि आइआ ॥ (1244-14)
गुरमुखि हुकमु मंने सह केरा हुकमे ही सुखु पाए ॥ (1423-2)
गुरमुखि होइ काइआ गड़ु लीजै ॥४॥ (905-9)
गुरमुखि होइ त छूटीऐ मनमुखि पति खोई ॥१॥ रहाउ ॥ (420-15)
गुरमुखि होइ त सचि समाए ॥३॥ (412-17)
गुरमुखि होइ तिसु सभ किछु सुझै ॥ (1418-13)
गुरमुखि होइ निहालीऐ इउ कीमति पाई ॥४॥ (421-6)
गुरमुखि होइ बहुरि नही मरना ॥४॥६॥९॥ (872-14)
गुरमुखि होइ सु अलिपतो वरतै ओस दा पासु छडि गुर पासि बहि जाइआ ॥ (303-19)
गुरमुखि होइ सु अहिनिसि निरमलु मनमुखि रैणि अंधारि ॥२॥ (489-11)
गुरमुखि होइ सु करे वीचारु ओसु अलिपतो रहणा ॥ (953-11)
गुरमुखि होइ सु भउ करे आपणा आपु पछाणै ॥ (647-2)
गुरमुखि होइ सु राचै नाइ ॥३॥ (1330-19)
गुरमुखि होइ सु हुकमु पछाणै मानै हुकमु समाइदा ॥९॥ (1037-1)
गुरमुखि होवहि ता तंती वाजै इन बिधि त्रिसना खंडी ॥५॥ (908-17)
गुरमुखि होवहि ता हरि रसु पीवहि जुगा जुगंतरि खाहि पइआ ॥१४॥ (435-11)
गुरमुखि होवहि से बंधन तोड़हि मुकती कै घरि पाइदा ॥८॥ (1062-5)
गुरमुखि होवै चउथा पदु चीनै राम नामि सुखु होई ॥३॥ (604-7)
गुरमुखि होवै त आखी सूझै ॥ (1045-8)
गुरमुखि होवै त गुण रवै भाई मिलि प्रीतम साचि समाउ ॥६॥ (639-8)
गुरमुखि होवै त नामु द्रिड़ाए ॥३॥ (880-6)
गुरमुखि होवै ता एको जाणै हउमै दुखु न संतापै ॥१॥ (753-7)

गुरमुखि होवै बूझै सोइ ॥७॥ (413-3)
गुरमुखि होवै मनु खोजि सुणाए ॥ (1059-3)
गुरमुखि होवै राम नामु वखाणै आपि तरै कुल तारे ॥ (246-3)
गुरमुखि होवै सु अपणा घरु राखै पंच दूत सबदि पचावणिआ ॥२॥ (113-5)
गुरमुखि होवै सु अम्रितु पीवै सहजे साचि समाई ॥६॥ (638-5)
गुरमुखि होवै सु अलिपतो वरतै मनमुख का किआ वेसाहा हे ॥५॥ (1054-14)
गुरमुखि होवै सु इकसु सिउ लिव लाए ॥ (115-6)
गुरमुखि होवै सु एको जाणै एको सेवि सुखु पावणिआ ॥६॥ (113-10)
गुरमुखि होवै सु करे वीचारु ॥ (1422-13)
गुरमुखि होवै सु करै बीचारु ॥ (841-15)
गुरमुखि होवै सु काइआ खोजै होर सभ भरमि भुलाई ॥ (754-14)
गुरमुखि होवै सु काइआ सोधै आपहि आपु मिलाइदा ॥११॥ (1066-14)
गुरमुखि होवै सु गणत चुकाए सचे सचि समाइदा ॥९॥ (1062-6)
गुरमुखि होवै सु गिआनु ततु बीचारै हउमै सबदि जलाए ॥ (946-3)
गुरमुखि होवै सु ततु बिलोवै रसना हरि रसु ताहा हे ॥११॥ (1058-6)
गुरमुखि होवै सु नामु धिआई ॥ (158-7)
गुरमुखि होवै सु नामु धिआवै सदा हरि नामु समालि ॥ (600-9)
गुरमुखि होवै सु पलटिआ हरि राती साजि सीगारि ॥ (785-8)
गुरमुखि होवै सु पारि पवै जिना अंदरि सचा सोइ ॥ (552-9)
गुरमुखि होवै सु पूजा जाणै भाणा मनि वसाई ॥११॥ (910-11)
गुरमुखि होवै सु भाणा मंने सहजे हरि रसु पीजै ॥ (1246-19)
गुरमुखि होवै सु मगु पछाणै हरि रसि रसन रसाई ॥ (602-15)
गुरमुखि होवै सु सचु कमावै साची करणी सारी हे ॥६॥ (1050-12)
गुरमुखि होवै सु सदा सलाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥१४॥ (1062-12)
गुरमुखि होवै सु साचु वखाणै मनमुखि पचै अवाई हे ॥६॥ (1023-17)
गुरमुखि होवै सु सुखु कमाए ॥ (1059-7)
गुरमुखि होवै सु सोझी पाए ॥ (1059-1)
गुरमुखि होवै सु हउमै मारे सचो सचु धिआवणिआ ॥३॥ (126-7)
गुरमुखि होवै सो ततु पाए ॥ (1016-14)
गुरमुखि होवै सो धनु पाए तिन्हा अंतरि सबदु वीचारा ॥४॥ (429-15)
गुरमुखि होवै सो धनु पाए सद ही नामि निवासी हे ॥१३॥ (1048-19)
गुरमुखि होवै सो नाइ राचै साचै रहिआ समाई हे ॥४॥ (1044-3)
गुरमुखि होवै सो नामु बूझै काटे दुरमति फाहा हे ॥१२॥ (1055-4)
गुरमुखि होवै सो पति पाए इकतु नामि निवासी हे ॥१२॥ (1048-18)
गुरमुखि होवै सो मुकतु कहीऐ मनमुख बंध विचारे ॥२॥ (796-18)
गुरमुखि होवै सो सचु बूझै सबदि सचै सुखु ताहा हे ॥९॥ (1054-19)
गुरमुखि होवै सो सालाहे ॥ (122-17)

गुरमुखि होवै सो सुखु पाए जिनि गुरमुखि नामु पछाता हे ॥६॥ (1052-13)
गुरमुखि होवै सोई पाए आपे बखसि मिलावणिआ ॥२॥ (112-12)
गुरमुखि होवै सोई बूझै गुण कहि गुणी समावणिआ ॥१॥ (110-13)
गुरमुखि होवै सोई बूझै जोग जुगति सो पाए ॥१०॥ (909-4)
गुरमुखि होवै सोई बूझै सचि सवारणहारा ॥ (571-6)
गुरमुखीआ मुह सोहणे गुर कै हेति पिआरि ॥ (66-11)
गुरमुखीआ सोहागणी तिन दइआ पई मनि आइ ॥ (41-12)
गुरमुखीआ हरि मेलु मिलावणहारीआ ॥ (645-19)
गुरमुखे इकि मेलि मिलाइआ तिन के दूख गवाइआ राम ॥ (771-6)
गुरमुखे गुरमुखि नदरी रामु पिआरा राम ॥ (443-1)
गुरमुखे मनु निरमलु होआ निरमल हरि गुण गाए राम ॥ (770-18)
गुरमुखे सचु करणी सारी बिनसे भ्रम भै झूठा राम ॥ (781-16)
गुरसिख पिआरे दिनसु राति ॥ (1170-12)
गुरसिख प्रीति गुर मिलि आघाइ ॥१॥ (164-15)
गुरसिख प्रीति गुरु मिलै गलाटे ॥ (164-14)
गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लाइ ॥३॥ (164-18)
गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लागै ॥२॥ (164-17)
गुरसिख मीत चलहु गुर चाली ॥ (667-15)
गुरसिख मेलि मेरी सरधा पूरी अनदिनु राम गुण गाए ॥ (573-4)
गुरसिख राखे गुर गोपालि ॥ (382-3)
गुरसिख हरि बोलहु मेरे भाई ॥ (165-2)
गुरसिख हरि बोलहु हरि गावहु ले गुरमति हरि जपणे ॥ (1135-15)
गुरसिखां अंदरि सतिगुरू वरतै जो सिखां नो लोचै सो गुर खुसी आवै ॥ (317-12)
गुरसिखां की हरि धूड़ि देहि हम पापी भी गति पांहि ॥ (1424-8)
गुरसिखां कै मनि पिआरी भाणी ॥ (96-11)
गुरसिखां मनि हरि प्रीति है गुरु पूजण आवहि ॥ (590-12)
गुरसिखा अंदरि सतिगुरु वरतै चुणि कढे लधोवारे ॥ (312-9)
गुरसिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ॥ (450-18)
गुरसिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी ॥ (451-1)
गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥ (967-10)
गुरसिखा के मुख उजले हरि दरगह भावहि ॥ (590-13)
गुरसिखा के मुह उजले करे हरि पिआरा गुर का जैकारु संसारि सभतु कराए ॥ (308-6)
गुरसिखा कै मनि भावदी गुर सतिगुर की वडिआई ॥ (310-15)
गुरसिखा नो साबासि है हरि तुठा मेलि मिलाइ ॥२७॥ (1424-10)
गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ॥ (451-3)
गुरसिखा मनि हरि प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे ॥ (450-19)
गुरसिखा लहदा भालि कै ॥ (73-19)

गुरसिखा वडिआई भावै गुर पूरे की मनमुखा ओह वेला हथि न आइआ ॥२॥ (304-2)
गुरसिखीं सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥ (450-18)
गुरसिखी अम्रितु बीजिआ तिन अम्रित फलु हरि पाए ॥ (302-18)
गुरसिखी भाणा मंनिआ गुरु पूरा पारि लंघाइ ॥ (1424-8)
गुरसिखी हरि अम्रितु बीजिआ हरि अम्रित नामु फलु अम्रितु पाइआ ॥ (304-8)
गुरहि दिखाइओ लोइना ॥१॥ रहाउ ॥ (407-2)
गुरा इक देहि बुझाई ॥ (2-10)
गुरा इक देहि बुझाई ॥ (2-12)
गुरि अंकसु सबदु दारू सिरि धारिओ घरि मंदरि आणि वसाईऐ ॥१॥ (1179-6)
गुरि अंतरि सबदु वसाइआ ॥ (73-18)
गुरि अपणी किरपा धारि अपणे करि लिते ॥ (653-9)
गुरि अमरदासि करतारु कीअउ वसि वाहु वाहु करि ध्याइयउ ॥ (1405-9)
गुरि अम्रित नामु पीआलिआ जनम मरन का पथु ॥ (49-19)
गुरि अम्रित सरि नवलाइआ सभि लाथे किलविख पंङ ॥३॥ (732-3)
गुरि अम्रितु हरि मुखि चोइआ मेरी जिंदुड़ीए फिरि मरदा बहुड़ि जीवाइआ राम ॥ (539-12)
गुरि अलखु लखाइआ अवरु न दूजा भाले ॥ (1112-4)
गुरि अलखु लखाइआ जा तिसु भाइआ जा प्रभि किरपा धारी ॥ (1112-4)
गुरि आणी घर महि ता सरब सुख पाइआ ॥२॥ (371-2)
गुरि आसा मनसा पूरीआ मेरी जिंदुड़ीए हरि मिलिआ भुख सभ जाए राम ॥ (539-9)
गुरि उपदेसिआ ततु गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (1142-11)
गुरि उपदेसु कहिओ इहु सारु ॥ (1142-13)
गुरि कटी मिहडी जेवड़ी ॥ (74-13)
गुरि कहिआ अवरु नही दूजा ॥ (224-9)
गुरि कहिआ इह झूठी धोही ॥ (1347-10)
गुरि कहिआ इहु मूरखु होडी ॥ (1347-16)
गुरि कहिआ एह रसहि बिखागनि ॥ (1347-14)
गुरि कहिआ जो होइ सभु प्रभ ते ॥ (1140-6)
गुरि कहिआ सभु एको एको अवरु न कोई होइगा जीउ ॥३॥ (99-13)
गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥ (832-16)
गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥ (933-8)
गुरि कहिआ सु चिति धरि हां ॥ (409-8)
गुरि काटी अगिआनता तब छुटके फंधा ॥२॥ (400-16)
गुरि काढिओ भुजा पसारि मोह कूपारीआ ॥ (241-3)
गुरि किरपा करि आपु दिता दिखाइ ॥ (115-5)
गुरि किरपा कीन्ही चूका अभिमानु ॥ (1176-5)
गुरि किरपालि क्रिपा प्रभि धारी बिनसे सरब अंदेसा ॥ (213-8)
गुरि कीनी क्रिपा हरि नामु दीअउ जिसु देखि चरंन अघंन हर्यउ ॥ (1400-6)

गुरि कीनो मुकति दुआरा ॥ (621-16)
गुरि क्रिपालि बेअंति अवगुण सभि हते ॥ (653-9)
गुरि क्रिपालि मोहि कीनी छोटि ॥ (1347-12)
गुरि क्रिपालि सउदा इहु जोरिओ हथि चरिओ लालु अगामा ॥१॥ (1211-7)
गुरि खोलिआ पड़दा देखि भई निहालु ॥४॥ (801-12)
गुरि गिआनु द्रिड़ाइओ दीप बलिओ ॥७॥ (241-12)
गुरि गोविंदि क्रिपा करी राखिआ मेरा भाई ॥ (819-10)
गुरि चरन लाइ निसतारे ॥ (623-9)
गुरि चाकर लै लाइआ ॥१॥ (210-17)
गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥ (966-17)
गुरि डीठै गुर का सिखु बिगसै जिउ बारिकु देखि महतारी ॥३॥ (1263-3)
गुरि तीजी पीड़ी वीचारिआ किआ हथि एना वेचारे ॥ (307-16)
गुरि तुठै नामु द्रिड़ाइआ हम कीए सबदि निहालु ॥ (1315-1)
गुरि तुठै पाईऐ हरि महलि ठाउ ॥ (1170-10)
गुरि तुठै मनु परबोधिआ हरि पीआ रसु गटके ॥१॥ रहाउ ॥ (731-8)
गुरि तुठै सजणु मेलिआ जन नानक सुखि सवंनि ॥१॥ (302-2)
गुरि तुठै सभ किछु पाइआ जन नानक सद बलिहार ॥४॥२॥१७०॥ (218-8)
गुरि तुठै हरि उपदेसिआ हरि भेटिआ राउ निसंङु ॥१॥ रहाउ ॥ (732-1)
गुरि तुठै हरि चेताइआ हरि नामा हरि उर धारि ॥ (1314-6)
गुरि तुठै हरि प्रभु पाइआ रंगि रलीआ माणा राम ॥ (844-13)
गुरि तुठै हरि रंगु चाड़िआ फिरि बहुड़ि न होवी भंङु ॥१॥ (731-19)
गुरि तूटी लै जोरी ॥२॥ (213-19)
गुरि दइआलि पूरी मेरी आस ॥ (1182-18)
गुरि दिखलाइआ मुकति दुआरु ॥ (1348-16)
गुरि दिखलाई मोरी ॥ (656-10)
गुरि दीआ सचु अम्रितु पीवउ ॥ (1189-11)
गुरि दीनी बसतु कबीर कउ लेवहु बसतु सम्हारि ॥४॥ (970-3)
गुरि दीबाणि कवाइ पैनाईओ ॥ (73-12)
गुरि दुखु काटिआ दीनो दानु ॥ (806-10)
गुरि दुबिधा जा की है मारी ॥ (238-9)
गुरि द्रिसटाइआ सभनी ठांई ॥ (1075-6)
गुरि धारि क्रिपा हरि जलि नावाए सभ किलबिख पाप गथई ॥२॥ (1320-10)
गुरि धारि क्रिपा हरि नामु द्रिड़ाइओ जन नानक नामु लइआ ॥४॥२॥ (995-19)
गुरि नउ निधि नामु विखालिआ हरि दाति करी दइआलि ॥५॥ (235-2)
गुरि नानक प्रभ पाहि पठाइओ मिलहु सखा गलि लागै ॥२॥५॥२८॥ (1210-1)
गुरि नानकि अंगदु वर्यउ गुरि अंगदि अमर निधानु ॥ (1407-10)
गुरि नानकि मेरी पैज सवारी ॥२॥३॥२१॥ (806-13)

गुरि नामु दीआ कुसलु थीआ सरब इछा पुंनीआ ॥ (925-11)
गुरि नामु द्रिड़ाइआ जपु जपेउ ॥२॥ (1170-3)
गुरि पकड़ाए प्रभ के पैरा ॥ (1085-13)
गुरि पकराए हरि के चरना ॥ (887-14)
गुरि पारसि मिलिऐ कंचनु होए निरमल जोति अपार ॥२॥ (427-2)
गुरि पिआरै हरि सेविआ गुरु धंनु गुरु धंनो ॥ (725-19)
गुरि पूरै अपनी कल धारी सभ घट उपजी दइआ ॥ (618-18)
गुरि पूरै अपुने करि राखे ॥ (1340-4)
गुरि पूरै इहु दीनो मंतु ॥ (896-8)
गुरि पूरै उपदेसिआ नरकु नाहि साधसंगि ॥१॥ (257-17)
गुरि पूरै उपदेसिआ नानक जपीऐ नीत ॥१॥ (253-4)
गुरि पूरै उपदेसिआ सुखु खसम रजाई ॥३॥ (813-2)
गुरि पूरै करि दीनो विसाहु ॥३॥ (189-10)
गुरि पूरै किरपा करि दीनी विरलै किन ही जाती ॥ रहाउ ॥ (628-17)
गुरि पूरै किरपा करी काटिआ दुखु रोगु ॥ (814-6)
गुरि पूरै किरपा धारी ॥ (621-18)
गुरि पूरै कीती पूरी ॥ (624-1)
गुरि पूरै कीने दाना ॥१॥ (625-16)
गुरि पूरै चरनी लाइआ ॥ (623-14)
गुरि पूरै जब किरपा करी ॥ (190-14)
गुरि पूरै जाणाइआ भाई तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ रहाउ ॥ (608-14)
गुरि पूरै जुग चारे जाता ॥ (1016-18)
गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥ (290-3)
गुरि पूरै ता के काटे जाल ॥४॥१३॥८२॥ (180-6)
गुरि पूरै तुसि दीआ ॥ (629-13)
गुरि पूरै दानु दीआ हरि निहचलु नित बखसे चड़ै सवाइआ ॥ (305-8)
गुरि पूरै दीआ उपदेसा तुम ही संगि पराता ॥ रहाउ ॥ (614-9)
गुरि पूरै दीओ रंगु लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1141-5)
गुरि पूरै दीओ हरि नामा जीअ कउ एहा वसतु फबी ॥१॥ रहाउ ॥ (497-11)
गुरि पूरै देखालिआ नानक हरि लिव लागि ॥२॥ (1317-3)
गुरि पूरै देखालिआ विणु नावै सभ बादि ॥ (957-4)
गुरि पूरै द्रिड़िओ हरि नामु ॥ (1145-15)
गुरि पूरै नानक हरि पाइआ ॥४॥३॥५५॥ (366-15)
गुरि पूरै नामु द्रिड़ाइआ हरि धीरक हरि साबासि ॥१॥ रहाउ ॥ (996-12)
गुरि पूरै नामु द्रिड़ाइआ हरि मिलिआ हरि प्रभ नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (82-4)
गुरि पूरै परगटु मारगु दिखाइआ ॥३॥ (377-8)
गुरि पूरै पिता संगि मेले ॥१॥ रहाउ ॥ (1141-11)

गुरि पूरै पूरा भइआ जपि नानक सचा सोइ ॥४॥९॥७९॥ (45-12)
गुरि पूरै पूरी कीती ॥ (630-3)
गुरि पूरै पूरी कीनी ॥ (628-16)
गुरि पूरै पूरी मति है पूरै सबदि बीचारा ॥ (1009-1)
गुरि पूरै पूरी सभ राखी पारब्रहमि प्रभि कीनी मइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (829-5)
गुरि पूरै पूरी सभ राखी होए सरब दइआल ॥१॥ रहाउ ॥ (621-3)
गुरि पूरै प्रभ सिउ लै मेले ॥ (1340-5)
गुरि पूरै प्रभु पाइआ हरि हरि लिव लाई राम ॥ (845-6)
गुरि पूरै मिहरवानि भरमु भउ मारिआ ॥ (854-4)
गुरि पूरै मेटिआ अंधिआरा ॥ (184-2)
गुरि पूरै मेरी पैज रखाई ॥१॥ (239-9)
गुरि पूरै मेरी राखि लई ॥ (823-18)
गुरि पूरै मेलाइआ जत देखा तत सोइ ॥ (957-12)
गुरि पूरै मेलाइआ जनम मरण दुखु जाइ ॥ (958-9)
गुरि पूरै मेलाइआ प्रभु देवणहारु ॥ (1251-6)
गुरि पूरै मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सजणु हरि प्रभु पासे राम ॥ (538-10)
गुरि पूरै मेले गुणतास ॥ (863-8)
गुरि पूरै राखे दे हाथ ॥ (184-14)
गुरि पूरै लै तारे ॥१॥ (629-12)
गुरि पूरै लै तूटा गंढा ॥ (1074-11)
गुरि पूरै वजी वाधाई नानक जिता बिखाड़ा जीउ ॥४॥२४॥३१॥ (103-17)
गुरि पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ ॥४॥ (644-9)
गुरि पूरै वेखालिआ नानक हरि लिव लागु ॥१॥ (845-3)
गुरि पूरै वेखालिआ प्रभु आतम रामु पछानु ॥४॥ (757-4)
गुरि पूरै संजमु करि दीआ ॥ (259-16)
गुरि पूरै संतोखिआ भाई अहिनिसि लागा भाउ ॥ (640-5)
गुरि पूरै सचु कहिआ ॥ (621-13)
गुरि पूरै सभ चिंत मिटाई ॥३॥ (901-7)
गुरि पूरै सभु पूरा कीआ ॥ (1184-19)
गुरि पूरै सभु भरमु चुकाइआ ॥ (178-10)
गुरि पूरै हउमै भीति तोरी जन नानक मिले बनवारी ॥४॥१॥ (1263-4)
गुरि पूरै हउमै मलु धोई ॥ (736-16)
गुरि पूरै हरि उपदेसिआ गुर विटड़िअहु हंउ सद वारी ॥२॥ (586-7)
गुरि पूरै हरि धनु परगासिआ हरि किरपा ते वसै मनि आइ ॥ रहाउ ॥ (663-14)
गुरि पूरै हरि नाम सिधि पाई को विरला गुरमति चलै जीउ ॥१॥ (94-4)
गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ जिनि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ (1424-11)
गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ तिनि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ (86-18)

गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ हरि निहचलु हरि धनु पलै जीउ ॥२॥ (94-6)
गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ (386-2)
गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥३॥ (1147-11)
गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ बिनु नावै जीवनु बिरथा ॥ रहाउ ॥ (696-4)
गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ हरि भगता अतुटु भंडारु ॥१॥ (28-14)
गुरि पूरै हरि नालि दिखालिआ हउ सतिगुर विटहु सद वारिआ जीउ ॥२॥ (96-8)
गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मंगा ॥ (449-4)
गुरि पूरै हरि पाइआ हलति पलति पति राखु ॥१॥ रहाउ ॥ (997-10)
गुरि पूरै हरि प्रभु सेविआ मनि वजी वाधाई ॥१८॥ (311-2)
गुरि पूरै हरि मेलिआ हरि रसि आघाई राम ॥ (845-9)
गुरि पूरै हरि रसु मुखि पाइआ ॥ (95-16)
गुरि पूरै है राखी ॥ (622-16)
गुरि बंधन तिन के सगले काटे जन नानक सहजि समाई जीउ ॥४॥१६॥२३॥ (101-10)
गुरि बखसिआ नामु निधानु सभो दुखु लथा ॥ (1101-12)
गुरि बाबै फिटके से फिटे गुरि अंगदि कीते कूड़िआरे ॥ (307-15)
गुरि बाह पकरि प्रभ सेवा लाए सद दइआलु हरि ढोला ॥१॥ रहाउ ॥ (1211-10)
गुरि भउजलु पारि लंघाइआ जिता पावाड़ा ॥ (1097-18)
गुरि भेटिऐ न होइ जोनि अउतारु ॥ (1270-10)
गुरि मंत्रु अवखधु नामु दीना जन नानक संकट जोनि न पाइ ॥५॥२॥ (1002-1)
गुरि मंत्रु सबदु सचु दीता राम ॥ (576-18)
गुरि मनु मारिओ करि संजोगु ॥ (1170-5)
गुरि मिलिऐ इकु प्रगटु होइ ॥२॥ (1177-15)
गुरि मिलिऐ खसमु पछाणीऐ कहु नानक मोख दुआरु ॥८॥२॥ (1010-3)
गुरि मिलिऐ त्रिसना अगनि बुझाए ॥ (158-5)
गुरि मिलिऐ नह जोहै माई ॥ (1075-8)
गुरि मिलिऐ मनु रहसीऐ जिउ वुठै धरणि सीगारु ॥ (1278-16)
गुरि मिलिऐ मिलि अंकि समाइआ ॥ (153-18)
गुरि मिलिऐ वेसु पलटिआ सा धन सचु सीगारो ॥ (581-2)
गुरि मिलिऐ सभ त्रिसन बुझाई ॥ (1075-7)
गुरि मिलिऐ सभ मति बुधि होइ ॥ (157-19)
गुरि मिलिऐ सुखु पाईऐ अगनि मरै गुण माहि ॥१॥ (21-15)
गुरि मिलिऐ हम कउ सरीर सुधि भई ॥ (233-8)
गुरि मिलिऐ हरि मनि वसै सुभाइ ॥ (157-18)
गुरि मिलिऐ हरि मेला होई ॥ (157-16)
गुरि मेली बहु किरपा धारी हरि कै सबदि सुभाए राम ॥ (772-9)
गुरि मो कउ उपदेसिआ नानक सेवि एक हरी ॥२॥८॥१३७॥ (1230-19)
गुरि मो कउ हरि नामु द्रिड़ाइओ ॥१॥ (715-8)

गुरि रंगे से भए निहाल ॥ (194-8)
गुरि राखे वडभागी तारे ॥ (1172-15)
गुरि राखे से उबरे भाई हरि रसु अम्रितु पीआइ ॥ (1177-8)
गुरि राखे से उबरे मनमुखा देइ सजाइ ॥ (588-13)
गुरि राखे से उबरे सचा सबदु वीचारि ॥७॥ (1010-2)
गुरि राखे से उबरे सबदि रते मन माहि जीउ ॥२॥ (751-5)
गुरि राखे से उबरे साचे सिउ लिव लाइ ॥४॥ (54-19)
गुरि राखे से उबरे हरि सिउ केल करंनि ॥३३॥ (756-16)
गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि ॥ (55-11)
गुरि राखे से उबरे होरि मुठी धंधै ठगि ॥२॥ (19-10)
गुरि राखे से उबरे होरु मरि जमै आवै जाए ॥ (584-17)
गुरि राखे से निरमले सबदि निवारी भाहि ॥७॥ (64-1)
गुरि रामदास अरजुनु वर्यउ पारसु परसु प्रमाणु ॥४॥ (1407-10)
गुरि वणु तिणु हरिआ कीतिआ नानक किआ मनुख ॥२॥ (958-2)
गुरि संगि दिखाइओ राम राइ ॥१॥ (1170-1)
गुरि सचु कहिआ अम्रितु लहिआ मनि तनि साचु सुखाइआ ॥ (930-8)
गुरि सचै बधा थेहु रखवाले गुरि दिते ॥ (653-8)
गुरि सतिगुर कहिआ जी साचा अगम बीचारो ॥ (784-18)
गुरि सतिगुरि दातै पंथु बताइआ हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥ (170-17)
गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ जन नानक सफलु जनमा ॥४॥२॥ (799-11)
गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ तिनि हंउमै दुबिधा भंनी ॥ (590-19)
गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले ॥ (642-16)
गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ मेरी जिंदुड़ीए बिखु भउजलु तारणहारो राम ॥ (539-18)
गुरि सतिगुरि भरमु चुकाइआ ॥ (879-11)
गुरि सबदु दीआ दानु कीआ नानका वीचारीआ ॥२॥ (843-11)
गुरि सबदु द्रिड़ाइआ परम पदु पाइआ दुतीअ गए सुख होऊ ॥ (535-3)
गुरि सुभ द्रिसटि सभ ऊपरि करी ॥ (236-12)
गुरि सेविऐ साति पाईऐ जपि सास गिरासा ॥ (1090-2)
गुरि हरि प्रभु अगमु द्रिड़ाइआ मनु तनु रंगि भीना राम ॥ (844-19)
गुरि हरि मारगु दसिआ गुर पुंनु वड पुंनो ॥९॥ (725-19)
गुरि हरि हरि नामु मोहि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥ (371-10)
गुरु अंकसु जिनि नामु द्रिड़ाइआ भाई मनि वसिआ चूका भेखु ॥७॥ (636-1)
गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥२॥ (159-7)
गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥२॥ (665-11)
गुरु अंकसु सचु सबदु नीसानै ॥ (221-12)
गुरु अगोचरु निरमला गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ (52-13)
गुरु अपुना रिदै धिआइआ ॥१॥ (626-4)

गुरु अमरदासु जिन्ह सेविअउ तिन्ह दुखु दरिद्रु परहरि परै ॥३॥१७॥ (1395-11)
गुरु अमरदासु निज भगतु है देखि दरसु पावउ मुकति ॥४॥१३॥ (1394-17)
गुरु अमरदासु परसीऐ अभउ लभै गउ चुकिहि ॥ (1394-19)
गुरु अमरदासु परसीऐ धिआनु लहीऐ पउ मुकिहि ॥ (1394-19)
गुरु अमरदासु परसीऐ पुहमि पातिक बिनासहि ॥ (1394-18)
गुरु अमरदासु परसीऐ सिध साधिक आसासहि ॥ (1394-18)
गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास अनभउ ठहरायउ ॥२॥ (1407-6)
गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास अपर्मपरु बीणा ॥३॥ (1407-8)
गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास भगत उतरि आयउ ॥१॥ (1407-4)
गुरु अरजुनु पुरखु प्रमाणु पारथउ चालै नही ॥ (1408-7)
गुरु आदि पुरखु हरि पाइआ ॥२॥ (879-9)
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ (2-9)
गुरु करता गुरु करणहारु गुरमुखि सची सोइ ॥ (52-13)
गुरु करता गुरु करणै जोगु ॥ (864-6)
गुरु करता गुरु सद बखसंदु ॥ (1080-16)
गुरु करु सचु बीचारु गुरू करु रे मन मेरे ॥ (1399-17)
गुरु करु सबद सपुंन अघन कटहि सभ तेरे ॥ (1399-18)
गुरु किरपालु होइ दुखु जाइ ॥२॥ (387-14)
गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति ॥ (1237-11)
गुरु गउहरु दरीआउ पलक डुबंत्यह तारै ॥ (1395-10)
गुरु गिआनु अरु धिआनु तत सिउ ततु मिलावै ॥ (1395-15)
गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥१॥ (12-17)
गुरु गुरु करत मनु लोरो ॥ (1306-13)
गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ ॥ (1341-2)
गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ गुर चरणी चितु लाई हे ॥२॥ (1069-6)
गुरु गुरु करत सरणि जे आवै प्रभु आइ मिलै खिनु ढील न पईआ ॥५॥ (837-2)
गुरु गुरु जपी गुरू गुरु धिआई ॥ (396-9)
गुरु गोपालु गुरु गोविंदा ॥ (1074-19)
गुरु गोपालु पुरखु भगवानु ॥ (864-16)
गुरु गोबिंद गुरू गोपाल ॥ (869-10)
गुरु गोबिंदु जीअ कै काम ॥ (1137-4)
गुरु गोविंदु मेरे मन धिआइ ॥ (1149-1)
गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई जिस ते जापै तथु ॥१॥ (639-14)
गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई मनि तनि हिरदै धार ॥ (608-12)
गुरु चउथी पीड़ी टिकिआ तिनि निंदक दुसट सभि तारे ॥ (307-16)
गुरु जगत फिरणसीह अंगरउ राजु जोगु लहणा करै ॥५॥ (1391-18)
गुरु जहाजु खेवटु गुरू गुर बिनु तरिआ न कोइ ॥ (1401-11)

गुरु जिन्ह कउ सुप्रसंनु नामु हरि रिदै निवासै ॥ (1398-3)
गुरु जिन्ह कउ सुप्रसंनु मानु अभिमानु निवारै ॥ (1398-4)
गुरु जु न चेतहि आपनो अध माझि लीजहिगे लूटि ॥७३॥ (1368-7)
गुरु जोगी पुरखु मिलिआ रंगु माणी जीउ ॥ (173-1)
गुरु डिठा तां मनु साधारिआ ॥७॥ (968-13)
गुरु तीरथु गुरु पारजातु गुरु मनसा पूरणहारु ॥ (52-14)
गुरु तुठा जीउ राम राजिआ जन नानक हरि मेलेई ॥४॥२॥६॥५॥७॥६॥१८॥ (777-4)
गुरु तुठा बखसे भगति भाउ ॥ (1170-10)
गुरु तुठा सिख देवै मेरे भाई ॥२॥ (367-12)
गुरु थीआ साखी ता डिठमु आखी पिर जेहा अवरु न दीसै ॥ (455-10)
गुरु दइआलु सदा बखसिंदा ॥ (1074-19)
गुरु दयि मिलायउ भिखिआ जिव तू रखहि तिव रहउ ॥२॥२०॥ (1396-2)
गुरु दरीआउ सदा जलु निरमलु मिलिआ दुरमति मैलु हरै ॥ (1329-1)
गुरु दाता गुरु देवै नाउ ॥३॥ (387-14)
गुरु दाता गुरु हिवै घरु गुरु दीपकु तिह लोइ ॥ (137-15)
गुरु दाता जुग चारे होई ॥७॥ (230-6)
गुरु दाता दइआल बखसिंदु ॥ (897-18)
गुरु दाता दातारु है हउ मागउ दानु गुर पासि ॥ (996-16)
गुरु दाता मेले ता मति होवै निगुरे मति न काई ॥ (635-2)
गुरु दाता समरथु गुरु गुरु सभ महि रहिआ समाइ ॥ (49-17)
गुरु दाता हरि नामु देइ उधरै सभु संसारु ॥ (52-15)
गुरु देवा गुरु अलख अभेवा त्रिभवण सोझी गुर की सेवा ॥ (1125-11)
गुरु नयणि बयणि गुरु गुरु करहु गुरू सति कवि नल्य कहि ॥ (1399-18)
गुरु नव निधि दरीआउ जनम हम कालख धोवै ॥ (1392-13)
गुरु नानक जा कउ भइआ दइआला ॥ (396-1)
गुरु नानकु अंगदु अमरु भगत हरि संगि समाणे ॥ (1398-7)
गुरु नानकु उपदेसु कहतु है जो सुनै सो पारि परानथ ॥४॥१॥१०॥ (1001-13)
गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे ॥४॥२॥१३॥ (612-10)
गुरु नानकु तुठा कीनी दाति ॥४॥७॥१०१॥ (396-8)
गुरु नानकु तुठा भाइरहु हरि वसदा नेड़ा ॥१०॥ (1098-1)
गुरु नानकु तुठा मिलिआ बनवारी ॥४॥२॥ (1178-2)
गुरु नानकु तुठा मिलिआ हरि राइ ॥ (375-11)
गुरु नानकु तुठा मेरे पिआरे मेले हरे ॥१॥ (451-17)
गुरु नानकु तुठा मेलै हरि भाई ॥४॥१॥५॥ (732-16)
गुरु नानकु देखि विगसी मेरे पिआरे जिउ मात सुते ॥४॥ (452-4)
गुरु नानकु नानकु हरि सोइ ॥४॥७॥९॥ (864-19)
गुरु नानकु निकटि बसै बनवारी ॥ (1401-12)

गुरु नानकु पाइआ मेरे पिआरे धुरि मसतकि लेखु सा ॥६॥१४॥२१॥ (452-8)
गुरु नानकु बोलै दरगह परवानु ॥२॥६॥८६॥ (821-8)
गुरु नानकु मिलिआ पारब्रहमु तेरिआ चरणा कउ बलिहारा ॥४॥१॥४७॥ (747-2)
गुरु नानकु सचु नीव साजि सतिगुर संगि लीणा ॥ (1407-7)
गुरु नामु द्रिड़ाए रंग सिउ हउ सतिगुर कै बलि जाउ ॥ (40-15)
गुरु नाराइणु दयु गुरु गुरु सचा सिरजणहारु ॥ (218-8)
गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरि नाउ ॥ (17-13)
गुरु परमेसरु एकु है सभ महि रहिआ समाइ ॥ (53-5)
गुरु परमेसरु एको जाणु ॥ (864-9)
गुरु परमेसरु करणैहारु ॥ (741-12)
गुरु परमेसरु गुरु गोबिंदु ॥ (1080-16)
गुरु परमेसरु गुरु गोविंदु ॥ (897-18)
गुरु परमेसरु नानक भेटिओ साचै सबदि निबेरा ॥३॥६॥ (878-5)
गुरु परमेसरु पारब्रहमु गुरु डुबदा लए तराइ ॥२॥ (49-17)
गुरु परमेसरु भेटि निहाल ॥ (899-17)
गुरु परमेसरु साचै नाइ ॥ (1271-11)
गुरु परमेसरु सेविआ भै भंजनु दुख लथु ॥३॥ (49-19)
गुरु परमेसरु है भी होगु ॥ (864-7)
गुरु परमेसुरु पूजीऐ मनि तनि लाइ पिआरु ॥ (52-9)
गुरु परसादु करे नामु देवै नामे नामि समावणिआ ॥२॥ (130-2)
गुरु पाइआ वे संत जनो मनि आस पूरी हरि चउदिआ ॥ (776-18)
गुरु पारब्रहमु अगोचरु सोई ॥ (1078-8)
गुरु पारब्रहमु निकटि करि जाणु ॥३॥ (193-19)
गुरु पारब्रहमु परमेसरु आपि ॥ (387-15)
गुरु पारब्रहमु परमेसरु सोइ ॥ (1271-10)
गुरु पारब्रहमु सदा नमसकारउ ॥१॥ (864-3)
गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥ (1245-18)
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥ (141-1)
गुरु पुछि देखिआ नाही दरु होरु ॥ (223-1)
गुरु पुरखु पूरा भेटिआ हरि सजणु लधड़ा नालि ॥८॥ (235-5)
गुरु पूरा आराधि नित इकसु की लिव लागु ॥१॥ रहाउ ॥ (45-8)
गुरु पूरा आराधि बिखम दलु फोड़ीऐ ॥ (522-8)
गुरु पूरा आराधिआ बिनसी मेरी पीर ॥ (814-16)
गुरु पूरा आराधिआ सगला दुखु गइआ ॥ (817-10)
गुरु पूरा आराधिआ होए किरपाल ॥ (819-3)
गुरु पूरा आराधे ॥ (629-1)
गुरु पूरा खिनु खिनु नमसकारी ॥ (1085-17)

गुरु पूरा जिन सिमरिआ सेई भए निहाल ॥ (1425-12)
गुरु पूरा जिसु देइ बुझाइ ॥१॥ (194-5)
गुरु पूरा जिसु भेटिआ ता कै सुखि परवेसु ॥ (814-11)
गुरु पूरा जिसु भेटीऐ मरि जनमि न रोवै ॥ (322-14)
गुरु पूरा नमसकारे ॥ (625-9)
गुरु पूरा नानकि सेविआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि पैरी आणि सभि घते राम ॥३॥ (541-1)
गुरु पूरा पाइआ नामु धिआइआ जूऐ जनमु न हारे ॥ (453-12)
गुरु पूरा पाइआ वडभागी हरि मंत्रु दीआ मनु ठाढे ॥१॥ (171-1)
गुरु पूरा पाइआ सभु दुखु मिटाइआ जीउ ॥ (217-14)
गुरु पूरा पाइओ मेरे भाई ॥ (395-16)
गुरु पूरा पाईऐ वड भागि ॥ (1271-12)
गुरु पूरा पाईऐ वडभागी ॥ (864-19)
गुरु पूरा पाईऐ वडभागी दरसन कउ जाईऐ कुरबाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (1340-11)
गुरु पूरा पाईऐ वडभागी निरमल पूरन रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (1339-16)
गुरु पूरा पायउ बड भागी लिव लागी मेदनि भरु सहता ॥ (1407-15)
गुरु पूरा पूरा परसाद ॥२॥ (1143-5)
गुरु पूरा पूरी जा की बाणी अनिक गुणा जा के जाहि न गणे ॥१॥ रहाउ ॥ (805-18)
गुरु पूरा पूरी ता की कला ॥ (1339-19)
गुरु पूरा भेटिआ लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (190-9)
गुरु पूरा भेटिओ बड भागी अंतरजामी सुघड़ु सुजानु ॥ (825-14)
गुरु पूरा भेटिओ बडभागी जा को अंतु न पारावारा ॥ (717-13)
गुरु पूरा भेटिओ वडभागी जन नानक कतहि न धावहु ॥२॥३॥३१॥ (617-11)
गुरु पूरा भेटिओ वडभागी मनहि भइआ परगासा ॥ (609-15)
गुरु पूरा भेटै वडभागी आठ पहर प्रभु जापै ॥ (79-13)
गुरु पूरा मेरा गुरु पूरा ॥ (901-4)
गुरु पूरा मेलावै मेरा प्रीतमु हउ वारि वारि आपणे गुरू कउ जासा ॥१॥ रहाउ ॥ (561-1)
गुरु पूरा रिदै धिआए ॥३॥ (624-5)
गुरु पूरा वडभागी पाईऐ ॥ (804-11)
गुरु पूरा सतिगुरु भेटीऐ हरि आइ वसै मनि चिति ॥ (82-12)
गुरु पूरा सालाहीऐ सहजि मिलै प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (67-11)
गुरु पूरा हरि उपदेसु देइ सभ भुख लहि जाईऐ ॥ (850-8)
गुरु पूरा हरि जापीऐ नित कीचै भोगु ॥ (817-5)
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥५॥ (982-11)
गुरु बोहिथु गुरु बेड़ी तुलहा मन हरि जपि पारि लंघाइआ ॥१॥ (1040-14)
गुरु बोहिथु तारे भव पारि ॥ (864-17)
गुरु बोहिथु तारे रतनागरु ॥२॥ (377-7)
गुरु बोहिथु भवजल तारणहारु ॥ (1270-9)

गुरु बोहिथु वडभागी मिलिआ ॥ (913-18)
गुरु बोहिथु सबदि भै तरणा ॥३॥ (413-9)
गुरु भरमु चुकाए अकथु कहाए सच महि साचु समाणा ॥ (688-11)
गुरु भरमु चुकाए इउ मिलीऐ माए ता सा धन सुखु पाए ॥ (244-6)
गुरु भागि पूरै पाइआ गलि मिलिआ पिआरा आइ ॥१॥ (234-4)
गुरु भेटत अलखु लखाइआ ॥३॥ (874-3)
गुरु भेटिआ पारब्रहमु हरि पड़ि बुझि समधा ॥ (320-12)
गुरु भेटिआ है मुकति दाता ॥ (801-2)
गुरु भेटे हरि नामु चेतावै बिनु नावै होर झूठु परीति ॥१॥ रहाउ ॥ (832-15)
गुरु मंत्रु द्रिड़ाए हरि रसकि रसाए हरि अम्रितु हरि मुखि चोइ जीउ ॥ (447-16)
गुरु मानै मन ते मनु धीरा ॥१॥ (413-17)
गुरु मानै मानै सभु कोइ ॥ (1262-14)
गुरु मिल्यिउ सोइ भिखा कहै सहज रंगि दरसनु दीअउ ॥१॥१९॥ (1395-18)
गुरु मुखहु अलाए ता सोभा पाए तिसु जम कै पंथि न पाइणा ॥११॥ (1078-11)
गुरु मेरा खसमु सतिगुर सरणाई ॥ (1270-12)
गुरु मेरा गिआनु गुरु रिदै धिआनु ॥ (864-16)
गुरु मेरा देउ अलख अभेउ ॥ (864-14)
गुरु मेरा पारब्रहम परमेसुरु ता का हिरदै धरि मन धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (827-6)
गुरु मेरा पारब्रहमु गुरु भगवंतु ॥ (864-14)
गुरु मेरी जीवनि गुरु आधारु ॥ (1270-11)
गुरु मेरी पूजा गुरु गोबिंदु ॥ (864-14)
गुरु मेरी वरतणि गुरु परवारु ॥ (1270-11)
गुरु मेरे प्राण सतिगुरु मेरी रासि ॥१॥ रहाउ ॥ (239-16)
गुरु मेरै संगि सदा है नाले ॥ (394-3)
गुरु मेलि मिलावै करे दाति ॥ (1170-11)
गुरु मेले बिरथा कहउ माइ ॥ (1188-5)
गुरु मेले संत हरि सुघड़ु सुजाणु जीउ ॥ (175-12)
गुरु लागो चेले की पाई ॥१॥ (481-11)
गुरु संत जनो पिआरा मै मिलिआ मेरी त्रिसना बुझि गईआसे ॥ (776-5)
गुरु संतु पाइआ प्रभु धिआइआ सगल इछा पुंनीआ ॥ (779-5)
गुरु सजणु पिआरा मै मिलिआ हरि मारगु पंथु दसाहा ॥ (776-7)
गुरु सजणु मेरा मेलि हरे जितु मिलि हरि नामु धिआवा ॥ (562-2)
गुरु सतिगुरु गुरु गोविदु पुछि सिम्रिति कीता सही ॥ (1117-3)
गुरु सतिगुरु पारब्रहमु करि पूजहु नित सेवहु दिनसु सभ रैनी ॥१॥ (800-5)
गुरु सतिगुरु बोलहु सभि गुरु आखि गुरू जीवाईआ ॥१४॥ (648-5)
गुरु सतिगुरु बोहलु हरि नाम का वडभागी सिख गुण सांझ करावहि ॥ (590-13)
गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥ (449-17)

गुरु सबदु दिड़ावै रंग सिउ बिनु किरपा लइआ न जाइ ॥ (65-15)
गुरु समझावै सोझी होई ॥ (224-8)
गुरु समरथु अपारु गुरु वडभागी दरसनु होइ ॥ (52-12)
गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊचा अगम अपारु ॥ (52-15)
गुरु सरवरु मान सरोवरु है वडभागी पुरख लहंन्हि ॥ (757-1)
गुरु सरवरु हम हंस पिआरे ॥ (1027-16)
गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ॥ (17-14)
गुरु साइरु सतिगुरु सचु सोइ ॥ (363-19)
गुरु सागरु अम्रित सरु जो इछे सो फलु पाए ॥ (1011-19)
गुरु सागरु पूरा भंडार ॥ (363-17)
गुरु सागरु रतनी नही तोट ॥ (933-7)
गुरु सागरु रतनी भरपूरे ॥ (685-12)
गुरु सागरु सति सेवीऐ दे तोटि न आवै ॥६॥ (1012-11)
गुरु सागरो रतनागरु तितु रतन घणेरे राम ॥ (436-19)
गुरु सालाही आपणा निवि निवि लागा पाइ ॥ (756-4)
गुरु सालाही आपणा बहु बिधि रंगि सुभाइ ॥ (313-11)
गुरु सालाही सद अपणा भाई गुर चरणी चितु लाई ॥१॥ (1177-6)
गुरु सालाही सदा सुखदाता प्रभु नाराइणु सोई ॥ (1258-16)
गुरु सासत सिम्रिति खटु करमा गुरु पवित्रु असथाना हे ॥१॥ (1074-19)
गुरु सिमरत जम संगि न फासहि ॥ (1075-1)
गुरु सिमरत मनु निरमलु होवै गुरु काटे अपमाना हे ॥२॥ (1075-1)
गुरु सिमरत सभि किलविख नासहि ॥ (1075-1)
गुरु सुंदरु मोहनु पाइ करे हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ ॥ (776-11)
गुरु सुखदाता अवरु न भालि ॥ (412-16)
गुरु सुखदाता गुरु करतारु ॥ (187-12)
गुरु सेवउ करि नमसकार ॥ (1180-2)
गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाइआ राम ॥ (772-15)
गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाए ॥४॥६॥७॥५॥७॥१२॥ (772-18)
गुरु सेवहु अरु नामु धिआवहु तिआगहु मनहु गुमानी ॥४॥६॥१६४॥ (216-9)
गुरु सेवहु सदा आपणा नामु पदारथु लेहो ॥ (440-9)
गुरु सेवि मना हरि जन संगु कीजै ॥ (905-5)
गुरु सेवीजै अम्रितु पीजै जिसु लावहि सहजि धिआनो ॥ (777-14)
गुरु सेवे सो ठाकुर जानै ॥ (416-13)
गुरु सेवे सो बूझै भाई गुर बिनु मगु न पाई ॥ (635-14)
गुरु हरि रंगि रतड़ा सदा निरबाणी जीउ ॥ (173-2)
गुरू गुरु गुरु करहु गुरू हरि पाईऐ ॥ (1401-1)
गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपि सति करि ॥ (1400-16)

गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु प्रानीअहु ॥ (1400-12)
गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मंन रे ॥ (1401-5)
गुरू गुरू गुरु करि मन मोर ॥ (864-8)
गुरू गुरू गुरु करु मन मेरे ॥ (1399-19)
गुरू गुरू जपि मीत हमारे ॥ (190-12)
गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ ॥ (58-3)
गुरू जिना का अंधुला सिख भी अंधे करम करेनि ॥ (951-7)
गुरू दुआरै आखि सुणाए ॥७॥ (930-16)
गुरू दुआरै देवसी तिखा निवारै सोइ ॥३०॥ (933-17)
गुरू दुआरै सोई बूझै जिस नो आपि बुझाए ॥४॥ (1234-16)
गुरू दुआरै हमरा वीआहु जि होआ जां सहु मिलिआ तां जानिआ ॥ (351-15)
गुरू दुआरै होइ कै साहिबु समालेहु ॥ (554-7)
गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी ॥ (730-2)
गुरू धिआइ हरि चरन मनि चीन्हे ॥ (744-10)
गुरू पासहु फिरि चेला खाइ ॥ (349-19)
गुरू बिना मै नाही होर ॥ (864-8)
गुरू बिना मै नाही होरु ॥२॥ (864-17)
गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ ॥ (1400-3)
गुरू विटहु हउ वारिआ जिसु मिलि सचु सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ (401-1)
गुरू सदाए अगिआनी अंधा किसु ओहु मारगि पाए ॥३॥ (491-11)
गुरू समरथु गहि करीआ ध्रुव बुधि सुमति सम्हारन कउ ॥ (1404-5)
गुरू समुंदु नदी सभि सिखी नातै जितु वडिआई ॥ (150-6)
गुरू सिखु सिखु गुरू है एको गुर उपदेसु चलाए ॥ (444-8)
गुसांई गरिस्ट रूपेण सिमरणं सरबत्र जीवणह ॥ (1359-2)
गुसाईं परतापु तुहारो डीठा ॥ (1235-4)
गुसाई तेरा कहा नामु कैसे जाती ॥ (992-13)
गुहज कथा इह गुर ते जाणी ॥ (739-15)
गुहज गल जीअ की कीचै सतिगुरू पासि ता सरब सुखु पाईऐ ॥ (850-8)
गुहज पावको बहुतु प्रजारै मो कउ सतिगुरि दीओ है बताइ ॥१॥ रहाउ ॥ (500-6)
गुहज रतन विचि लुकि रहे कोई गुरमुखि सेवकु कढै खोति ॥ (309-18)
गूंगा बकत गावै बहु छंद ॥ (914-16)
गूंगै महा अम्रित रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥३॥ (657-8)
गूजरी ॥ (526-5)
गूजरी असटपदीआ महला १ घरु १ (503-5)
गूजरी की वार महला ३ सिकंदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी (508-14)
गूजरी घरु १ ॥ (525-6)
गूजरी घरु ३ ॥ (524-14)

गूजरी जाति गवारि जा सहु पाए आपणा ॥ (516-8)
गूजरी महला १ ॥ (489-8)
गूजरी महला १ ॥ (503-15)
गूजरी महला १ ॥ (504-18)
गूजरी महला १ ॥ (504-7)
गूजरी महला १ घरु ४ (505-11)
गूजरी महला ३ ॥ (490-15)
गूजरी महला ३ ॥ (490-8)
गूजरी महला ३ ॥ (491-1)
गूजरी महला ३ ॥ (491-7)
गूजरी महला ३ घरु १ (506-3)
गूजरी महला ३ तीजा ॥ (492-1)
गूजरी महला ३ पंचपदे ॥ (491-13)
गूजरी महला ४ ॥ (492-15)
गूजरी महला ४ ॥ (493-10)
गूजरी महला ४ ॥ (493-17)
गूजरी महला ४ ॥ (493-4)
गूजरी महला ४ ॥ (494-6)
गूजरी महला ४ घरु २ (506-16)
गूजरी महला ४ घरु ३ ॥ (494-15)
गूजरी महला ५ ॥ (495-14)
गूजरी महला ५ ॥ (496-15)
गूजरी महला ५ ॥ (496-3)
गूजरी महला ५ ॥ (496-9)
गूजरी महला ५ ॥ (497-2)
गूजरी महला ५ ॥ (498-11)
गूजरी महला ५ ॥ (498-15)
गूजरी महला ५ ॥ (498-18)
गूजरी महला ५ ॥ (498-8)
गूजरी महला ५ ॥ (499-10)
गूजरी महला ५ ॥ (499-13)
गूजरी महला ५ ॥ (499-17)
गूजरी महला ५ ॥ (499-3)
गूजरी महला ५ ॥ (499-6)
गूजरी महला ५ ॥ (500-1)
गूजरी महला ५ ॥ (500-12)
गूजरी महला ५ ॥ (500-16)

गूजरी महला ५ ॥ (500-19)
गूजरी महला ५ ॥ (500-5)
गूजरी महला ५ ॥ (500-8)
गूजरी महला ५ ॥ (501-14)
गूजरी महला ५ ॥ (501-19)
गूजरी महला ५ ॥ (501-4)
गूजरी महला ५ ॥ (502-17)
गूजरी महला ५ ॥ (502-6)
गूजरी महला ५ घरु २ (507-10)
गूजरी महला ५ घरु ४ (508-3)
गूजरी महला ५ घरु ४ चउपदे (501-8)
गूजरी महला ५ घरु ४ दुपदे (502-13)
गूजरी महला ५ चउपदे घरु १ (495-1)
गूजरी महला ५ चउपदे घरु २ (495-8)
गूजरी महला ५ तिपदे घरु २ (497-17)
गूजरी महला ५ दुपदे घरु २ (498-4)
गूजरी महला ५ पंचपदा घरु २ (497-9)
गूजरी स्री जैदेव जीउ का पदा घरु ४ (526-12)
गूजरी स्री त्रिलोचन जीउ के पदे घरु १ (525-16)
गूजरी स्री नामदेव जी के पदे घरु १ (525-1)
गूजरी स्री रविदास जी के पदे घरु ३ (525-10)
गूझी भाहि जलै संसारा भगत न बिआपै माइआ ॥४॥ (673-17)
गैंडा मारि होम जग कीए देवतिआ की बाणे ॥ (1289-17)
गैबान हैवान हराम कुसतनी मुरदार बखोराइ ॥ (723-15)
गैवर हैवर कंचन सुत नारी ॥ (222-5)
गोंड ॥ (870-5)
गोंड ॥ (870-8)
गोंड ॥ (871-14)
गोंड ॥ (871-2)
गोंड ॥ (871-8)
गोंड ॥ (872-1)
गोंड ॥ (872-14)
गोंड ॥ (872-8)
गोंड ॥ (873-1)
गोंड ॥ (873-13)
गोंड ॥ (873-16)
गोंड ॥ (874-1)

गोंड ॥ (874-13)
गोंड ॥ (875-10)
गोंड महला ४ ॥ (860-14)
गोंड महला ४ ॥ (860-3)
गोंड महला ४ ॥ (861-11)
गोंड महला ४ ॥ (861-18)
गोंड महला ४ ॥ (861-3)
गोंड महला ५ ॥ (862-7)
गोंड महला ५ ॥ (863-14)
गोंड महला ५ ॥ (863-3)
गोंड महला ५ ॥ (863-8)
गोंड महला ५ ॥ (864-1)
गोंड महला ५ ॥ (864-14)
गोंड महला ५ ॥ (864-8)
गोंड महला ५ ॥ (865-1)
गोंड महला ५ ॥ (865-13)
गोंड महला ५ ॥ (865-19)
गोंड महला ५ ॥ (865-7)
गोंड महला ५ ॥ (866-13)
गोंड महला ५ ॥ (866-19)
गोंड महला ५ ॥ (866-7)
गोंड महला ५ ॥ (867-13)
गोंड महला ५ ॥ (867-19)
गोंड महला ५ ॥ (867-6)
गोंड महला ५ ॥ (868-12)
गोंड महला ५ ॥ (868-6)
गोंड महला ५ ॥ (869-1)
गोंडकरी अरु देवगंधारी ॥ (1430-4)
गोइलि आइआ गोइली किआ तिसु ड्मफु पसारु ॥ (50-10)
गोतम नारि अहलिआ तारी पावन केतक तारीअले ॥ (988-15)
गोतम नारि उमापति स्वामी ॥ (710-17)
गोतमु तपा अहिलिआ इसत्री तिसु देखि इंद्रु लुभाइआ ॥ (1344-1)
गोपाल को जसु गाउ प्राणी ॥ (897-8)
गोपाल गुण नित गाउ नानक भए प्रभ किरपाल ॥८॥३॥ (1018-8)
गोपाल गुण निधि सदा संगे सरब गुण जगदीसरै ॥ (1278-5)
गोपाल गोबिंद अंतु नाही बेअंत गुण ता के किआ गनी ॥ (704-18)
गोपाल तेरा आरता ॥ (695-16)

गोपाल दइआल गोबिंद लालन मिलहु कंत निमाणीआ ॥ (542-16)
गोपाल दइआल गोबिद दमोदर निरमल कथा गिआन ॥ (1119-16)
गोपाल दरस भेटं सफल नानक सो महूरतह ॥१॥ (709-6)
गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥ (295-8)
गोपी कानु न गऊ गोआला ॥ (1035-17)
गोपी नाथु सगल है साथे ॥ (1082-11)
गोपी नै गोआलीआ ॥ (73-3)
गोबरु जूठा चउका जूठा जूठी दीनी कारा ॥ (1195-9)
गोबिंद किरपा धारी ॥ (628-7)
गोबिंद की टहल सफल इह कांइआ ॥ (201-19)
गोबिंद गुण गावण लागे ॥ (778-16)
गोबिंद गुपत होइ रहिओ निआरो मातंग मति अहंकार ॥३॥ (1229-6)
गोबिंद गोबिंद करि हां ॥ (409-8)
गोबिंद गोबिंद गोबिंद गोपाल क्रिपा ॥३॥ (1354-4)
गोबिंद गोबिंद गोबिंद मई ॥ (822-7)
गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥ (487-16)
गोबिंद गोबिंदेति जपि नर सकल सिधि पदं ॥ (526-18)
गोबिंद चरनन कउ बलिहारी ॥ (1198-14)
गोबिंद जपत सभि कारज सारे ॥६॥ (1349-3)
गोबिंद जपत सभि मिटे अंधेर ॥ (1183-5)
गोबिंद जसु गाईऐ हरि नीत ॥ (296-16)
गोबिंद जीउ बिखु हउमै ममता मुंञु ॥ (1179-14)
गोबिंद जीउ मेरे मन तन नाम हरि बीधे ॥ (1178-18)
गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि करि क्रिपछे ॥ (1178-11)
गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि हरि धिआईऐ ॥ (1179-7)
गोबिंद जीवन प्रान धन रूप ॥ (701-13)
गोबिंद ठाकुर मिलन दुराईं ॥ (1307-10)
गोबिंद तिआगि आन लागहि अम्रितो डारि भूमि पागहि ॥ (1303-18)
गोबिंद दइआल क्रिपाल सुख सागर नानक हरि सरणाइओ ॥२॥१६॥२५॥ (501-3)
गोबिंद दामोदर माधवे ॥६२॥ (1359-16)
गोबिंद नानक आसरो ॥४॥४॥७॥ (1322-17)
गोबिंद नामं नह सिमरंति अगिआनी जानंति असथिरं ॥ (1354-5)
गोबिंद नाम जपंति मिलि साध संगह नानक से प्राणी सुख बासनह ॥२८॥ (1356-10)
गोबिंद पूरन आस ॥ (838-8)
गोबिंद प्रीति सिउ इकु सहजु उपजिआ वेखु जैसी भगति बनी ॥ (490-4)
गोबिंद बिसरे कवन दुख गनीअहि सुखु नानक हरि पद चीन्ह ॥२॥८५॥१०८॥ (1225-6)
गोबिंद भगत कउ करहि सलामु ॥ (865-10)

गोबिंद भगत का महलु न पाइआ ॥ (865-8)
गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥ (296-4)
गोबिंद भजन साध संगेण असथिरं नानक भगवंत भजनासनं ॥१२॥ (1355-1)
गोबिंद भजहु मेरे सदा मीत ॥ (1192-15)
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ (12-6)
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ (378-1)
गोबिंद लोक नही जनमि मरहि ॥३॥ (211-11)
गोबिंद वालु गोबिंद पुरी सम जल्यन तीरि बिपास बनायउ ॥ (1400-5)
गोबिंद सतसंगति मेलाइ ॥ (164-5)
गोबिंद हम ऐसे अपराधी ॥ (971-1)
गोबिंदा गुण गाउ दइआला ॥ (744-15)
गोबिंदा मेरे गोबिंदा प्राण अधारा मेरे गोबिंदा ॥ (924-10)
गोबिंदु गुणी निधानु गुरमुखि जाणीऐ ॥ (399-2)
गोबिंदु दमोदर सिमरउ दिन रैनि नानक सद कुरबान ॥२॥१७॥४८॥ (682-11)
गोबिंदु न भजै अह्मबुधि माता जनमु जूऐ जिउ हारै ॥१॥ रहाउ ॥ (1205-10)
गोबिंदु बसै निता नित चीत ॥२॥ (331-6)
गोबिद की ऐसी कार कमाइ ॥ (1199-8)
गोबिद गुण गोबिद सद गावहि गुण गोबिद अंतु न पाइआ ॥ (1319-6)
गोबिद जीउ तू मेरे प्रान अधार ॥ (1226-10)
गोबिद दामोदर दइआल माधवे पारब्रहम निरंकारा ॥ (614-12)
गोबिद प्रीति लगी अति पिआरी ॥ (607-4)
गोबिद प्रीति लगी अति मीठी अवर विसरि सभ जाइ ॥ (1199-10)
गोबिद भजन के निरभै वापारी हरि रासि नानक राम नामा ॥२॥१२॥३५॥ (1211-8)
गोबिद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम ॥ (269-5)
गोबिद भेटे गुर गोसाई ॥ रहाउ ॥ (621-8)
गोबिदु क्रिपा करे थाइ पाए जो हरि प्रभ मनि भाइआ ॥ (995-18)
गोबिदु गाइआ साध संगाइआ भई पूरन आसा ॥ (578-12)
गोबिदु गाईऐ नित धिआईऐ परवाणु सोई आइआ ॥ (1312-9)
गोबिदु गाजै सबदु बाजै ॥ (1351-4)
गोबिदु गावहि सहजि सुभाए ॥ (121-16)
गोबिदु गोबिदु कहै दिन राती गोबिद गुण सबदि सुणावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (121-15)
गोबिदु बसै हमारै चीति ॥४॥१॥७॥ (1164-18)
गोबिदु भजना रंगि ॥ (838-14)
गोबिदु सिमरि होआ कलिआणु ॥ (826-14)
गोरख पूतु लोहारीपा बोलै जोग जुगति बिधि साई ॥७॥ (939-1)
गोरखु सो जिनि गोइ उठाली करते बार न लागै ॥१॥ रहाउ ॥ (877-10)
गोरां से निमाणीआ बहसनि रूहां मलि ॥ (1383-1)

गोरी सेती तुटै भतारु ॥ (143-10)
गोविंद गाजे अनहद वाजे अचरज सोभ बणाई ॥ (452-18)
गोविंद गुण गाईऐ जीउ लाइ सतिगुरू नालि धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (734-13)
गोविंद गुण गावहु मेरे भाई ॥ (193-13)
गोविंद गुण निधि स्रीरंग सुआमी आदि कउ आदेसु जीउ ॥ (929-15)
गोविंद गुपाल दइआल सम्रिथ बोलि साधू हरि जै जए ॥ (458-15)
गोविंद गोविंद गोविंद गुण गावा मिलि गुर साधसंगति जनु सोहै ॥१॥ रहाउ ॥ (492-17)
गोविंद तुझ बिनु अवरु न ठाउ ॥ (502-18)
गोविंद प्रीति सनकादिक उधारे ॥ (1129-10)
गोविंद भगतु असथिरु है थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (375-18)
गोविंद भजन की मति है होरा ॥ (381-5)
गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥ (266-3)
गोविंदु अलख अपारु अपर्मपरु आपु आपणा जाणै ॥ (448-2)
गोविंदु ऊजलु ऊजल हंसा ॥ (121-14)
गोविंदु गोविंदु प्रीतमु मनि प्रीतमु मिलि सतसंगति सबदि मनु मोहै ॥ (492-15)
गोविंदु गोविदु गोविदु हरि गोविदु गुणी निधानु ॥ (1312-18)
गोविद गाजे सदा बिराजे अगम अगोचरु ऊचा ॥ (578-15)
गोविद भजन बिनु अवर संगि राते ते सभि माइआ मूठु परानी ॥१॥ रहाउ ॥ (890-6)
गोविद भजु सभि सुआरथ पूरे नानक कबहु न हारि ॥२॥४॥२७॥ (1007-3)
गोविदु गुणी निधानु है अंतु न पाइआ जाइ ॥ (32-19)
गोविदु गोविदु गुरमति धिआईऐ तां दरगह पाईऐ मानु ॥ (1312-18)
गोविदु गोविदु गोविदु जपि मुखु ऊजला परधानु ॥ (1313-1)
गोविदु पाईऐ गुणी निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ (233-2)
गोसटि गिआनु नामु सुणि उधरे जिनि जिनि दरसनु पाइआ ॥ (615-15)
गोसटि भई साध कै संगमि काम क्रोधु लोभु मारिआ ॥ (674-19)
गोसाई मिहंडा इठड़ा ॥ (73-8)
गोसाई सेवी सचड़ा ॥ (73-17)
गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥ (472-14)
ग्मभीरं ऊचै सरबगि अपारा ॥ (1354-7)
ग्मभीर धीर नाम हीर ऊच मूच अपारं ॥ (901-11)
ग्यानं सम दुख सुखं जुगति निरमल निरवैरणह ॥ (1357-9)
ग्रसतन महि तूं बडो ग्रिहसती जोगन महि जोगी ॥३॥ (507-14)
ग्राम ग्राम नगर सभ फिरिआ रिद अंतरि हरि जन भारे ॥ (983-4)
ग्रिसति कुट्मबि पलेटिआ कदे हरखु कदे सोगु ॥ (70-11)
ग्रिह अंध कूपाइआ ॥ (746-14)
ग्रिह अपुने की खबरि न जाती ॥ (182-11)
ग्रिह कुट्मब महि सदा उदासु ॥२॥ (232-11)

ग्रिह धरमु गवाए सतिगुरु न भेटै दुरमति घूमन घेरै ॥ (1012-15)
ग्रिह बनहि तीरै बरत पूजा बाट घाटै जोहनी ॥ (847-7)
ग्रिह बनिता कछु संगि न लीआ ॥ (253-6)
ग्रिह बालू नीरि बहावने ॥३॥ (211-4)
ग्रिह मंदर रथ असु दीए रचि भले संजोग ॥ (706-12)
ग्रिह मंदर स्मपै जो दीसै जिउ तरवर की छाए ॥१॥ (212-18)
ग्रिह रचना अपारं मनि बिलास सुआदं रसह ॥ (707-4)
ग्रिह राज महि नरकु उदास करोधा ॥ (1019-9)
ग्रिह सरीर महि हरि हरि नामु गुर परसादी अपणा हरि प्रभु लहहि ॥८॥ (909-2)
ग्रिह सोइन चंदन सुगंध लाइ मोती हीरे ॥ (707-6)
ग्रिहसत महि सोई निरबानु ॥ (281-13)
ग्रिहि अंध कूप पतित प्राणी नरक घोर गुबार ॥ (1223-11)
ग्रिहि ता के बसंतु गनी ॥ (1180-14)
ग्रिहि बसनि न देई वखि वखि भरमावै ॥१॥ (371-6)
ग्रिहि बाहरि ठाकुरु भगतन का रवि रहिआ स्रब ठाई ॥१॥ रहाउ ॥ (679-11)
ग्रिहि मड़ी मसाणी बन महि बसते ऊठि तिना कै लागी पलीआ ॥४॥ (1004-10)
ग्रिहि लाल आए पुरबि कमाए ता की उपमा किआ गणा ॥ (927-5)
ग्रिहि लाल आए मनि धिआए सेज सुंदरि सोहीआ ॥ (929-9)
ग्रिहि लालु आवै महलु पावै मिलि संगि मंगलु गाईऐ ॥ (543-5)
ग्रिहि साकत छतीह प्रकार ते बिखू समान ॥२॥ (811-16)
ग्रिहि सेज सुहावी आगनि चैना तोरो री तोरो पंच दूतन सिउ संगु तोरो ॥१॥ (1306-14)
ग्रिहि सोभा जा कै रे नाहि ॥ (872-1)
ग्रिही अंतरि साचि लिव लागी ॥ (230-16)
ग्रिहु ऐसा है सुंदर लाल ॥ (373-15)
ग्रिहु तजि बन खंड जाईऐ चुनि खाईऐ कंदा ॥ (855-17)
ग्रिहु तेरा तू ठाकुरु मेरा गुरि हउ खोई प्रभु दीना ॥ (1210-19)
ग्रिहु धनु सभु पवित्रु होइ हरि के गुण गावउ ॥ (318-6)
ग्रिहु बनु समसरि सहजि सुभाइ ॥ (351-18)
ग्रिहु मंदर महला जो दीसहि ना कोई संगारि ॥ (379-14)
ग्रिहु वसि आइआ मंगलु गाइआ पंच दुसट ओइ भागि गइआ ॥ (452-12)
ग्रिहु वसि गुरि कीना हउ घर की नारि ॥ (737-9)
ग्रिहु सरीरु गुरमती खोजे नामु पदारथु पाए ॥८॥ (1013-13)
ग्रीखम रुति अति गाखड़ी जेठ अखाड़ै घाम जीउ ॥ (928-4)
घंटा जा का सुनीऐ चहु कुंट ॥ (393-8)
घघा घटि घटि निमसै सोई ॥ (340-12)
घघा घालहु मनहि एह बिनु हरि दूसर नाहि ॥ (254-7)
घघै घरि घरि फिरहि तूं मूड़े ददै दानु न तुधु लइआ ॥९॥ (435-6)

घघै घाल सेवकु जे घालै सबदि गुरू कै लागि रहै ॥ (432-17)
घटंत कनिक मानिक माइआ स्वरूपं ॥ (1354-14)
घटंत बसुधा गिरि तर सिखंडं ॥ (1354-14)
घटंत रूपं घटंत दीपं घटंत रवि ससीअर नख्यत्र गगनं ॥ (1354-13)
घटंत ललना सुत भ्रात हीतं ॥ (1354-14)
घट अंतरि अम्रितु रखिओनु गुरमुखि किसै पिआई ॥९॥ (951-4)
घट अंतरि पारब्रहमु परमेसरु ता का अंतु न पाइआ ॥ (448-6)
घट अंतरे साची बाणी साचो आपि पछाणे राम ॥ (769-16)
घट अवघट डूगर घणा इकु निरगुणु बैलु हमार ॥ (345-17)
घट घट अंतरि आपे सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (387-17)
घट घट अंतरि जिस की जोति समानी ॥ (832-18)
घट घट अंतरि तुमहि बसारे ॥ (740-5)
घट घट अंतरि तुमहि समाणे ॥२॥ (1144-12)
घट घट अंतरि तूंहै वुठा ॥ (97-7)
घट घट अंतरि पारब्रहमु नमसकारिआ ॥ (108-2)
घट घट अंतरि पारब्रहमु पछानै ॥२॥ (741-11)
घट घट अंतरि ब्रहम समाहू ॥ (259-18)
घट घट अंतरि ब्रहमु लुकाइआ घटि घटि जोति सबाई ॥ (597-7)
घट घट अंतरि मेरा सुआमी वूठा ॥ (563-14)
घट घट अंतरि रवि रहिआ सदा सहाई संगि ॥१॥ रहाउ ॥ (48-18)
घट घट अंतरि रविआ सोई ॥२॥ (387-2)
घट घट अंतरि वरतै नेरा ॥ (106-16)
घट घट अंतरि सगल प्रगास ॥ (1152-9)
घट घट अंतरि सद ही जागै ॥३॥ (868-17)
घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी ॥४॥१॥ (485-6)
घट घट अंतरि सरब निरंतरि रंगि रविओ रंगि राता ॥३॥ (496-19)
घट घट अंतरि सरब निरंतरि रवि रहिआ सचु वेसो ॥२॥ (1126-19)
घट घट अंतरि सरब समाही ॥ (866-15)
घट घट अंतरि साहिबु नेरा ॥ (535-14)
घट घट घटि सभ घट आधारु ॥३॥ (863-13)
घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥ (1427-3)
घट घट वासी आपि विरलै किनै लहिआ ॥ (458-16)
घट घट वासी सरब निवासी नेरै ही ते नेरा ॥ (784-14)
घट परचा की बात निरोधहु ॥ (342-12)
घट परचै जउ उपजै भाउ ॥ (342-12)
घट फूटे कोऊ बात न पूछै काढहु काढहु होई ॥२॥ (478-3)
घट फूटे घटि कबहि न होई ॥ (340-13)

घट फूटे ते ओही प्रगासु ॥ (736-14)
घट भीतरि तू देखु बिचारि ॥ (1159-13)
घट महि खेलै अघट अपार ॥ (343-8)
घट महि ब्रहमु तिसु सबदि न पछाणहि ॥ (1058-5)
घट महि सिंधु कीओ परगासु ॥१॥ (900-2)
घट ही भीतरि बसत निरंजनु ता को मरमु न जाना ॥२॥ (632-19)
घट ही भीतरि बसै निरंजनु ता को मरमु न पाइआ ॥२॥ (703-5)
घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥२॥ (731-2)
घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ॥२॥ (632-2)
घटि अवघटि जत कतहि सहाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (863-10)
घटि अवघटि रविआ सभ ठाई हरि पूरन ब्रहमु दिखाईऐ ॥१॥ (528-14)
घटि घटि अंतरि एको हरि सोइ ॥ (1177-15)
घटि घटि अंतरि ब्रहमु लुकाइआ ॥१॥ (1351-7)
घटि घटि अंतरि रवि रहिआ जपिअहु जन कोई ॥ (1318-3)
घटि घटि अंतरि रविआ सोइ ॥ (1348-17)
घटि घटि अंतरि सगल अधारु ॥ (677-6)
घटि घटि अपणा सुआमी जाणु ॥३॥ (198-2)
घटि घटि आतम रामु है प्रभि खेलु कीओ रंगि रीति ॥ (1316-19)
घटि घटि आपे हुकमि वसै हुकमे करे बीचारु ॥ (37-14)
घटि घटि एकु वखाणीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥ (1330-6)
घटि घटि एकु वरतदा जलि थलि महीअलि पूरे ॥४॥ (133-2)
घटि घटि कथा राजन की चालै घरि घरि तुझहि उमाहा ॥ (1235-8)
घटि घटि गुपता गुरमुखि मुकता ॥ (939-11)
घटि घटि गुपतु उपाए वेखै परगटु गुरमुखि संत जना ॥ (1171-19)
घटि घटि घटि घटि रहिआ समाइ ॥२॥ (1181-10)
घटि घटि जिस का है प्रगासु ॥ (1182-13)
घटि घटि जोति निरंतरी बूझै गुरमति सारु ॥४॥ (20-8)
घटि घटि नदरी आइआ ॥४॥२॥१४०॥ (210-15)
घटि घटि नाथु महा बलवंडा ॥ (839-19)
घटि घटि पउणु वहै इक रंगी मिलि पवणै सभ वजाइदा ॥४॥ (1061-19)
घटि घटि पारब्रहमु तिनि जनि डीठा ॥ (131-18)
घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥ (277-11)
घटि घटि पूरन है अलिपाता ॥ (1236-16)
घटि घटि पूरनु करि बिसथीरनु जल तरंग जिउ रचनु कीआ ॥ (1236-16)
घटि घटि पूरनु सिर सिरहि निबेरा ॥ (1073-16)
घटि घटि पूरि रहिआ प्रभु एको गुरमुखि परगटु हरि हरि नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (1334-13)
घटि घटि पूरि रहिओ सभ ठाई ॥ (1073-13)

घटि घटि पूरि रहे सुख सागर भै भंजन मेरे प्रान ॥ (1302-3)
घटि घटि बसंत बासुदेवह पारब्रहम परमेसुरह ॥ (1356-1)
घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥ (293-19)
घटि घटि बिआपि रहिओ बिखु नालि ॥ (831-13)
घटि घटि बैसि निरंतरि रहीऐ चालहि सतिगुर भाए ॥ (938-10)
घटि घटि ब्रहमु चीनै जनु कोइ ॥ (904-15)
घटि घटि ब्रहमु पसारिआ भाई पेखै सुणै हजूरि ॥ (640-1)
घटि घटि भोगे भोगणहारा रहै अतीतु सबाइआ ॥१४॥ (1041-12)
घटि घटि मउलिआ आतम प्रगासु ॥१॥ (1193-15)
घटि घटि मनसा दुबिधा लागी ॥ (415-13)
घटि घटि मालकु दिला का सचा परवदगारु ॥२॥ (724-7)
घटि घटि रमईआ तिन ही डीठा ॥४॥८॥१९॥ (888-16)
घटि घटि रमईआ मनि वसै किउ पाईऐ कितु भति ॥ (82-12)
घटि घटि रमईआ रमत राम राइ गुर सबदि गुरू लिव लागे ॥ (172-1)
घटि घटि रमईआ रमत राम राइ सभ वरतै सभ महि ईक ॥ (1336-5)
घटि घटि रमईआ रामु पिआरा ॥ (1028-18)
घटि घटि रमईआ सभ महि चीना ॥१॥ (866-2)
घटि घटि रवि रहिआ अलख अपारे राम ॥ (843-15)
घटि घटि रवि रहिआ गुणतास ॥ (900-18)
घटि घटि रवि रहिआ प्रभु जापै ॥ (1189-12)
घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ (1040-10)
घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ (597-17)
घटि घटि रवि रहिआ सभ थाई पूरन पुरखु बिधाता ॥ (453-11)
घटि घटि रविआ अछल सुआमी ॥ (1080-11)
घटि घटि रूपु अनूपु दइआला ॥ (1031-7)
घटि घटि वरतै उदर मझारे ॥ (1026-17)
घटि घटि वसहि जाणहि थोरा ॥ (562-12)
घटि घटि वसहि सभन कै नेरे ॥ (1086-8)
घटि घटि वसि रहिआ जगजीवनु दाता ॥ (1048-1)
घटि घटि वाजै किंगुरी अनदिनु सबदि सुभाइ ॥ (62-14)
घटि घटि सबदु सुभाखे ॥१॥ (628-4)
घटि घटि साचु रहिआ भरपूरे ॥ (943-19)
घटि घटि सुंन का जाणै भेउ ॥ (943-16)
घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥ (279-11)
घटि घटि सुर नर सहज समाधि ॥ (416-9)
घटि घटि सो प्रभु आदि जुगादि ॥८॥ (415-18)
घटि घटि स्मपटु है रे जा का ॥ (393-10)

घटि घटि हरि गोबिंदु गाजे राम ॥ (578-14)
घटि घटि हरि प्रभु एको सुआमी गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ (772-13)
घटि घटे वासी सरब निवासी असथिरु जा का थानु हे ॥३॥ (1008-2)
घटि घटे सभना विचि एको एको राम भतारो राम ॥ (772-12)
घटि घटे सभना विचि एको एको राम भतारो राम ॥३॥ (772-14)
घटि दीपकु रहिआ समाई ॥२॥ (656-1)
घटि वधि को करै बीचारा ॥४॥ (1128-3)
घटि वसहि चरणारबिंद रसना जपै गुपाल ॥ (554-1)
घटु दुख नीदड़ीए परसउ सदा पगा ॥ (544-6)
घटु बिनसै दुखु अगलो जमु पकड़ै पछुताइ ॥५॥ (59-13)
घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥ (466-6)
घड़ि भांडे जिनि आवी साजी चाड़ण वाहै तई कीआ ॥७॥ (432-17)
घड़ि भाडे जिनि अम्रितु पाइआ ॥ (686-9)
घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलणु अजु कि कलि ॥ (60-11)
घड़ी चसे का लेखा लीजै बुरा भला सहु जीआ ॥ (1110-15)
घड़ी न मुहतु चसा तिसु बिनु ना सरै ॥ (958-3)
घड़ी मुहत का पाहुणा काज सवारणहारु ॥ (43-8)
घड़ी मुहत का लेखा लेवै रतीअहु मासा तोल कढावणिआ ॥५॥ (127-2)
घड़ी मुहति कि चलणा दिल समझु तूं भि पहूचु ॥४॥ (64-8)
घड़ी मुहतु नह वीसरै नानक रवीऐ नित ॥२॥ (522-5)
घड़ी मूरत पल साचे आए सहजि मिले ॥ (1109-18)
घड़ी मूरत सिमरत पल वंञहि जीवणु सफलु तिथाई जीउ ॥१॥ (107-12)
घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कंन्ह गोपाल ॥ (465-5)
घड़ीए घड़ीए मारीऐ पहरी लहै सजाइ ॥ (1379-19)
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ (8-9)
घण उनवि वुठे जल थल पूरिआ मकरंद जीउ ॥ (928-10)
घणो घणो घणो सद लोड़ै बिनु लहणे कैठै पाइओ रे ॥ (715-16)
घति गलावां चालिआ तिनि दूति अमल ते ॥ (317-6)
घनघोर प्रीति मोर ॥ (1272-13)
घनहर घोर दसौ दिसि बरसै बिनु जल पिआस न जाई ॥३॥ (1273-8)
घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै ॥ (1396-6)
घनिहर बरसि सगल जगु छाइआ ॥ (1268-14)
घनु गरजत गोबिंद रूप ॥ (1272-17)
घबु दबु जब जारीऐ बिछुरत प्रेम बिहाल ॥ (1364-4)
घर का काजु न जाणी रूड़ा ॥ (744-6)
घर का होआ बंधानु बहुड़ि न धावीआ ॥ (964-7)
घर की गीहनि चंगी ॥ (695-19)

घर की नाइकि घर वासु न देवै ॥ (371-6)
घर की नारि उरहि तन लागी ॥ (794-6)
घर की नारि तिआगै अंधा ॥ (1164-18)
घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी ॥ (634-3)
घर की बिलाई अवर सिखाई मूसा देखि डराई रे ॥ (381-16)
घर के जिठेरे की चूकी काणि ॥ (370-12)
घर के देव पितर की छोडी गुर को सबदु लइओ ॥ (856-7)
घर गच कीते बागे बाग ॥ (1243-9)
घर घुमणवाणी भाई ॥ (989-14)
घर छडणे रहै न कोई ॥ (989-12)
घर छोडिऐ जाइ जुलाहो ॥१॥ रहाउ ॥ (335-4)
घर छोडें बाहरि जिनि जाइ ॥ (344-13)
घर जलते की खबरि न पाए ॥ (1046-5)
घर दर फिरि थाकी बहुतेरे ॥ (932-10)
घर भीतरि घरु गुरू दिखाइआ सहजि रते मन भाई ॥ (634-9)
घर मंदर खुसी नाम की नदरि तेरी परवारु ॥ (16-19)
घर मंदर खुसीआ तही जह तू आवहि चिति ॥ (319-10)
घर मंदर घोड़े खुसी मनु अन रसि लाइआ ॥ (167-13)
घर मंदर महल सवारीअहि किछु साथि न जाई ॥ (648-9)
घर मंदर हटनाले सोहे जिसु विचि नामु निवासी राम ॥ (783-5)
घर महि अम्रितु तसकरु लेई ॥ (221-13)
घर महि घरु जो देखि दिखावै ॥ (1189-8)
घर महि घरु देखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु ॥ (1291-1)
घर महि ठाकुरु नदरि न आवै ॥ (739-2)
घर महि धरती धउलु पाताला ॥ (126-5)
घर महि नव निधि भरे भंडारा राम नामि रंगु लागा ॥ (781-17)
घर महि निज घरु पाइआ सतिगुरु देइ वडाई ॥ (572-1)
घर महि पंच वरतदे पंचे वीचारी ॥ (425-9)
घर महि वसतु अगम अपारा ॥ (1175-13)
घर महि वसतु बाहरि उठि जाता ॥१॥ (376-9)
घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा ॥ (385-18)
घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा प्रभ अपुने भए दइआला ॥ (619-4)
घर ही अंदरि सचु महलु पाए ॥९॥ (843-1)
घर ही अंदरि साचा सोई ॥ (1060-5)
घर ही परचा पाइआ जोती जोति मिलाइ ॥ (587-7)
घर ही महि अम्रितु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ ॥ (644-2)
घर ही महि प्रीतमु सदा है बाला ॥ (126-5)

घर ही महि सभि कोट निधान ॥ (798-13)
घर ही माहि दूजै भाइ अनेरा ॥ (126-9)
घर ही मुंधि विदेसि पिरु नित झूरे सम्हाले ॥ (594-6)
घर ही विचि महलु पाइआ गुर सबदी वीचारि ॥२॥ (30-2)
घर ही सउदा पाईऐ अंतरि सभ वथु होइ ॥ (29-18)
घर ही सो पिरु पाइआ गुर कै हेति अपारु ॥५॥ (61-4)
घर ही सो पिरु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥१॥ (428-1)
घरि आइअड़े साजना ता धन खरी सरसी राम ॥ (765-2)
घरि आइआ पूरै गुरि आणिआ ॥४॥१२॥१७॥ (806-1)
घरि आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अढु न मोलो ॥ (1108-4)
घरि आए गोविंदु लै नालि ॥१॥ (197-11)
घरि आए वजी वाधाई ॥ (789-15)
घरि आपनड़ै खड़ी तका मै मनि चाउ घनेरा राम ॥ (764-18)
घरि आवहु चिरी विछुंनिआ मिलु सबदि गुरू प्रभ नाहा ॥ (776-7)
घरि इको बाहरि इको थान थनंतरि आपि ॥ (45-10)
घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥ (12-15)
घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥ (157-13)
घरि घरि कंतु महेलीआ रूड़ै हेति पिआरे ॥ (581-1)
घरि घरि कंतु रवै सोहागणि हउ किउ कंति विसारी ॥ (1107-13)
घरि घरि खाइआ पिंडु बधाइआ खिंथा मुंदा माइआ ॥ (526-2)
घरि घरि नामु निरंजना सो ठाकुरु मेरा ॥१॥ (229-2)
घरि घरि निरति होवै दिनु राती घटि घटि वाजै तूरा ॥ (884-18)
घरि घरि पड़ि पड़ि पंडित थके सिध समाधि लगाइ ॥ (644-18)
घरि घरि भगति गुरमुखि होई ॥ (880-1)
घरि घरि मंगल गावहु नीके घटि घटि तिसहि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (700-16)
घरि घरि मांगै त्रिपतावन ते चूका ॥ (1348-7)
घरि घरि मागत लाज न लागै ॥१॥ रहाउ ॥ (903-8)
घरि घरि मागहि भीखिआ जाइ ॥ (954-4)
घरि घरि मागै जगु परबोधै मनि अंधै पति हारी ॥ (1012-19)
घरि घरि मीआ सभनां जीआं बोली अवर तुमारी ॥६॥ (1191-4)
घरि घरि मुसरी मंगलु गावहि कछूआ संखु बजावै ॥२॥ (477-6)
घरि घरि लसकरु पावकु तेरा धरमु करे सिकदारी ॥ (1190-18)
घरि जासनि वाट वटाइआ ॥ (74-11)
घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ (917-7)
घरि दरि साचा नाही रोलु ॥२॥ (905-17)
घरि नाराइणु सभा नालि ॥ (1240-19)
घरि नाहु निहचलु अनदु सखीए चरन कमल प्रफुलिआ ॥ (927-19)

घरि बाहरि एको करि जाणु ॥ (1343-17)
घरि बाहरि तेरा भरवासा तू जन कै है संगि ॥ (677-9)
घरि बाहरि तेरै सद संगि ॥१॥ रहाउ ॥ (177-19)
घरि बाहरि नाले परमेसरु रवि रहिआ पूरन सभ ठाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1151-2)
घरि बाहरि प्रभु सभनी थाई ॥ (1340-9)
घरि बाहरि सुख सहज सबाए ॥१॥ रहाउ ॥ (184-17)
घरि बैठिआ हरि पाए सदा चितु लाए सहजे सति सुभाए ॥ (246-12)
घरि बैठे गुरू धिआइहु ॥ (621-12)
घरि मंगल वाजहि नित वाजे अपुनै खसमि निवाजे ॥२॥ (678-4)
घरि महलि सचि समाईऐ जमकालु न सकै खाइ ॥२॥ (67-12)
घरि रतन लाल बहु माणक लादे मनु भ्रमिआ लहि न सकाईऐ ॥ (1179-8)
घरि रहु रे मन मुगध इआने ॥ (1030-2)
घरि लालु आइआ पिआरा सभ तिखा बुझाई ॥ (247-17)
घरि वथु छोडहि बाहरि धावहि ॥ (1058-6)
घरि वरु पाइआ आपणा हउमै दूरि करेइ ॥ (38-7)
घरि वरु सहजु न जाणै छोहरि बिनु पिर नीद न पाई हे ॥१॥ (1022-11)
घरि वासु न देवै दुतर माई ॥३॥ (745-3)
घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ (917-12)
घरि सही सलामति आए ॥ (629-11)
घरि सुखि वसिआ बाहरि सुखु पाइआ ॥ (1136-8)
घरि सेज सुहावी जा पिरि रावी गुरमुखि मसतकि भागो ॥ (1109-19)
घरि होदा पुरखु न पछाणिआ अभिमानि मुठे अहंकारि ॥ (34-3)
घरि होदै धनि जगु भुखा मुआ बिनु सतिगुर सोझी न होइ ॥ (1249-12)
घरि होदै रतनि पदारथि भूखे भागहीण हरि दूरे ॥ (574-3)
घरी घरी का लेखा मागै काइथु चेतू नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1104-9)
घरी न मुहतु न चसा बिल्मबहु कालु नितहि नित हेरै ॥१॥ (530-14)
घरी मुहत रंग माणहि फिरि बहुरि बहुरि पछुतावहि ॥१॥ (403-6)
घरु २ ॥ (1166-13)
घरु २ ॥ (655-2)
घरु ४ सोरठि ॥ (657-5)
घरु जाइ पावहि रंग महली गुरु मेले हरि मेलाइ ॥५॥ (234-9)
घरु दरु छोडे आपणा पर घरि झूठा जाई ॥ (425-17)
घरु दरु थापि थिरु थानि सुहावै ॥ (840-17)
घरु दरु पावै महलु नामु पिआरिआ ॥ (791-1)
घरु दरु मंदरु जाणै सोई ॥ (1039-8)
घरु दरु महलु सतिगुरू दिखाइआ रंग सिउ रलीआ माणै ॥ (1132-1)
घरु दरु राखहि जे रसु चाखहि जो गुरमुखि सेवकु लागा ॥१॥ (598-11)

घरु दरु सभो सचु है जिसु विचि सचा नाउ ॥ (949-7)
घरु बंधहु सच धरम का गडि थमु अहलै ॥ (320-1)
घरु बालू का घूमन घेरि ॥ (1187-8)
घरु मेरा इह नाइकि हमारी ॥ (371-11)
घरु लसकरु सभु तेरा ॥ (622-5)
घरु सगला मै सुखी बसाइआ ॥४॥३६॥८७॥ (392-12)
घरै अंदरि को घरु पाए ॥ (1068-13)
घरै अंदरि सभु वथु है बाहरि किछु नाही ॥ (425-11)
घले आणे आपि जिसु नाही दूजा मतै कोइ ॥ (729-17)
घले आवहि नानका सदे उठी जाहि ॥१॥ (1239-9)
घसि कुंकम चंदनु गारिआ ॥ (655-14)
घसि चंदन चोआ बहु सुगंध ॥ (1195-12)
घाटि न किन ही कहाइआ ॥ (71-11)
घाटी चढत बैलु इकु थाका चलो गोनि छिटकाई ॥३॥५॥४९॥ (333-16)
घाड़त तिस की अपर अपार ॥ (956-2)
घाल न भानै अंतर बिधि जानै ता की करि मन सेवा ॥ (614-11)
घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आइ अचिंता ॥ (672-12)
घाल सिआणप उकति न मेरी पूरै गुरू कमाई ॥१२॥ (915-18)
घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ (1245-19)
घालि घालि अनिक पछुतावहि ॥ (254-8)
घाहु खानि तिना मासु खवाले एहि चलाए राह ॥ (144-10)
घिअ पट भांडा कहै न कोइ ॥ (721-13)
घुंघरू वाजै जे मनु लागै ॥ (356-15)
घुंडी बिनु किआ गंठि चड़्हाईऐ ॥ (872-11)
घुटि घुटि जीआ खावणे बगे ना कहीअन्हि ॥३॥ (729-5)
घूंघट काढे की इहै बडाई ॥ (484-4)
घूंघटु काढि गई तेरी आगै ॥ (484-4)
घूंघटु तेरो तउ परि साचै ॥ (484-5)
घूंघर खड़कु तिआगि विसूरे ॥ (885-5)
घूंघर बाधि भए रामदासा रोटीअन के ओपावा ॥ (1003-5)
घूघर बाधि बजावहि ताला ॥ (1348-4)
घूमन घेर अगाह गाखरी गुर सबदी पारि उतरीऐ रे ॥२॥ (404-3)
घूमन घेर परे बिखु बिखिआ सतिगुर काढि लीए दे हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ (1296-4)
घूमन घेरि महा अति बिखड़ी गुरमुखि नानक पारि उतारी ॥१॥ रहाउ ॥ (916-14)
घूलहि तउ मन जउ आवहि सरना ॥ (254-8)
घोखे मुनि जन सिम्रिति पुरानां बेद पुकारहि घोख ॥ (682-16)
घोखे सासत्र बेद सभ आन न कथतउ कोइ ॥ (254-6)

घोड़ा कीतो सहज दा जतु कीओ पलाणु ॥ (968-3)
घोड़ी तेजणि देह रामि उपाईआ राम ॥ (575-15)
घोड़े पाखर सुइने साखति बूझणु तेरी वाट ॥ (16-17)
घोर दुख्यं अनिक हत्यं जनम दारिद्रं महा बिख्यादं ॥ (1355-12)
घोर बिना कैसे असवार ॥ (872-12)
घोर महल सदा रंगि राता ॥ (741-6)
घोरै चरि भैस चरावन जाई ॥ (481-14)
घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ॥१॥ (964-5)
घोलि घुमाई लालना गुरि मनु दीना ॥ (1117-8)
घोलि महा रसु अम्रितु तिह पीआ ॥ (254-9)
घोली गेरू रंगु चड़ाइआ वसत्र भेख भेखारी ॥ (1012-18)
घ्रित कारन दधि मथै सइआन ॥ (1167-12)
ङंङा खटु सासत्र होइ ङिआता ॥ (253-9)
ङंङा ङिआनु नही मुख बातउ ॥ (251-5)
ङंङा ङ्रासै कालु तिह जो साकत प्रभि कीन ॥ (254-11)
ङंङा निग्रहि सनेहु करि निरवारो संदेह ॥ (340-14)
ङंङै ङिआनु बूझै जे कोई पड़िआ पंडितु सोई ॥ (432-13)
ङणती ङणी नही कोऊ छूटै ॥ (254-13)
ङणि घाले सभ दिवस सास नह बढन घटन तिलु सार ॥ (254-10)
ङिआन धिआन ताहू कउ आए ॥ (254-12)
ङिआन धिआन तीरथ इसनानी ॥ (253-10)
ङिआनी ततु गुरमुखि बीचारी ॥ (251-7)
ङिआनी रहत आगिआ द्रिड़ु जा कै ॥ (251-6)
ङिआनी सोइ जा कै द्रिड़ सोऊ ॥ (251-6)
ङिआनु गवाइआ दूजा भाइआ गरबि गले बिखु खाइआ ॥ (930-7)
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥ (2-14)
चंगा मंदा किछु सूझै नाही इहु तनु एवै खोवै ॥ (579-11)
चंगिआईं आलकु करे बुरिआईं होइ सेरु ॥ (518-11)
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचे धरमु हदूरि ॥ (146-15)
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ (8-11)
चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ॥ (474-4)
चंगै मंदै आपि लाइअनु सो करनि जि आपि कराए करतारु ॥२॥ (950-7)
चंचल चपल बुधि का खेलु ॥ (152-3)
चंचल त्रिसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (219-12)
चंचल मति तिआगि भउ भंजनु पाइआ एक सबदि लिव लागी ॥ (1232-18)
चंचल मति तिआगै पंच संघारै ॥३॥ (226-16)
चंचल मति बारिक बपुरे की सरप अगनि कर मेलै ॥ (1266-13)

चंचल मनु दह दिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो ॥ (685-5)
चंचलि संगि न चालती सखीए अंति तजि जावत माइआ ॥ (803-2)
चंचलु चीतु न पावै पारा ॥ (1189-2)
चंचलु चीतु न रहई ठाइ ॥ (932-15)
चंचलु सुपनै ही उरझाइओ ॥ (531-5)
चंद अनेरा कि करे पउण पाणी किआ जाति ॥ (150-8)
चंद कुमुदनी दूरहु निवससि अनभउ कारनि रे ॥२॥ (990-10)
चंद देखि बिगसहि कउलार ॥ (1180-9)
चंद सत भेदिआ नाद सत पूरिआ सूर सत खोड़सा दतु कीआ ॥ (1106-2)
चंद सूरज की पाए गंढि ॥ (952-17)
चंदन अगर कपूर लेपन तिसु संगे नही प्रीति ॥ (1018-2)
चंदन का फलु चंदन वासु ॥ (1256-16)
चंदन कै निकटे बसै बांसु सुगंधु न होइ ॥१२॥ (1365-3)
चंदन कै संगि तरवरु बिगरिओ ॥ (1158-13)
चंदन गंध सुगंध है बहु बासना बहकारि ॥ (1260-19)
चंदन चंदु न सरद रुति मूलि न मिटई घांम ॥ (709-16)
चंदन चीर सुगंध रसा हउमै बिखु तिआगनि राम ॥ (848-9)
चंदन चोआ रस भोग करत अनेकै बिखिआ बिकार देखु सगल है फीके एकै गोबिद को नामु नीको कहत है साध जन ॥ (678-16)
चंदन बासु भए मन बासन तिआगि घटिओ अभिमानाना ॥२॥ (339-17)
चंदन भगता जोति इनेही सरबे परमलु करणा ॥२॥ (721-13)
चंदन लेप होत देह कउ सुखु गरधभ भसम संगीति ॥ (673-3)
चंदन लेपु उतारै धोइ ॥ (267-10)
चंदन वासु भुइअंगम वेड़ी किव मिलीऐ चंदनु लीजै ॥ (1324-5)
चंदनु चीति वसाइआ मंदरु दसवा दुआरु ॥ (54-7)
चंदनु मोलि अणाइआ कुंगू मांग संधूरु ॥ (19-4)
चंदीं हजार आलम एकल खानां ॥ (727-18)
चंदु न होता सूरु न होता पानी पवनु मिलाइआ ॥ (973-7)
चंदु सूरजु जा के तपत रसोई ॥ (481-9)
चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥ (14-10)
चंदु सूरजु दुइ घर ही भीतरि ऐसा गिआनु न पाइआ ॥२॥ (1171-12)
चंदु सूरजु दुइ चानणे पूरी बणत बणाई ॥ (947-12)
चंदु सूरजु दुइ जरे चरागा चहु कुंट भीतरि राखे ॥ (884-16)
चंदु सूरजु दुइ जोति सरूपु ॥ (972-6)
चंदु सूरजु दुइ दीपक राखे ससि घरि सूरु समाइदा ॥६॥ (1033-15)
चंदु सूरजु दुइ फिरदे रखीअहि निहचलु होवै थाउ ॥ (142-2)
चंदु सूरजु दुइ सम करि राखउ ब्रहम जोति मिलि जाउगो ॥२॥ (973-3)

चंदु सूरजु दुइ साथ चलाई ॥२॥ (484-12)
चंदो दीपाइआ दानि हरि कै दुखु अंधेरा उठि गइआ ॥ (765-13)
चंद्रबि्मब मंगलन सुहाए ॥ (1430-9)
चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥ (471-4)
चउका दे कै सुचा होइ ॥ (951-16)
चउकी चउगिरद हमारे ॥ (626-7)
चउके उपरि किसै न जाणा ॥ (472-2)
चउके विणु हिंदवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ ॥ (417-10)
चउगिरद हमारै राम कार दुखु लगै न भाई ॥१॥ (819-16)
चउणे सुइना पाईऐ चुणि चुणि खावै घासु ॥ (143-8)
चउथहि चंचल मन कउ गहहु ॥ (343-11)
चउथा पहरु भइआ दउतु बिहागै राम ॥ (1110-10)
चउथि उपाए चारे बेदा ॥ (839-8)
चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥ (141-4)
चउथी पउड़ी गुरमुखि ऊची सचो सचु कमावणिआ ॥४॥ (113-7)
चउथी पदवी गुरमुखि वरतहि तिन निज घरि वासा पाइआ ॥ (1130-8)
चउथे पद कउ जे मनु पतीआए ॥७॥ (686-2)
चउथे पद कउ जो नरु चीन्है तिन्ह ही परम पदु पाइआ ॥२॥ (1123-4)
चउथे पद महि जन की जिंदु ॥४॥१॥४॥ (871-1)
चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइ ॥६॥ (68-14)
चउथे सुंनै जो नरु जाणै ता कउ पापु न पुंनं ॥ (943-15)
चउथै आई ऊंघ अखी मीटि पवारि गइआ ॥ (146-2)
चउथै पदि वासा होइआ सचै रहै समाइ ॥३॥ (1258-7)
चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ ॥ (146-10)
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥ (77-18)
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिरधि भइआ तनु खीणु ॥ (76-3)
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइआ खेतु ॥ (75-8)
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि चलण वेला आदी ॥ (77-3)
चउथै पिआरि उपंनी खेड ॥ (137-17)
चउदस अमावस रचि रचि मांगहि कर दीपकु लै कूपि परहि ॥२॥ (970-8)
चउदसि चउथे थावहि लहि पावै ॥ (840-13)
चउदसि चउदह लोक मझारि ॥ (344-6)
चउदसि भवन पाताल समाए ॥ (840-14)
चउदह भवण तेरे हटनाले ॥ (1062-18)
चउदह रतन निकालिअनु करि आवा गउणु चिलकिओनु ॥ (967-13)
चउदह रतन निकालिअनु कीतोनु चानाणु ॥ (968-2)
चउदहि चारि कुंट प्रभ आप ॥ (299-15)

चउधरी राउ सदाईऐ जलि बलीऐ अभिमान ॥ (63-18)
चउधरी राजे नही किसै मुकामु ॥ (227-6)
चउबोले महला ५ (1363-17)
चउमुख दीवा जोति दुआर ॥ (974-16)
चउर ढूल जां चै है पवणु ॥ (1292-8)
चउरासी लख फिरै दिवानां ॥ (1161-7)
चउरासीह नरक साकतु भोगाईऐ ॥ (1028-6)
चउरासीह सिध बुध तेतीस कोटि मुनि जन सभि चाहहि हरि जीउ तेरो नाउ ॥ (669-10)
चउरु ढुलै पवणै लै फेरी ॥ (1033-15)
चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मान सरोवर हंसुला ॥ (693-13)
चकवी नैन नींद नहि चाहै बिनु पिर नींद न पाई ॥ (1273-5)
चकवी प्रीति सूरजु मुखि लागै ॥ (164-17)
चकवी सूर सनेहु चितवै आस घणी कदि दिनीअरु देखीऐ ॥ (455-4)
चक्र करम तिलक खाटंगा ॥ (1305-6)
चक्र बणाइ करै पाखंड ॥ (1151-11)
चखि अनद पूरन साद ॥ (837-13)
चखि छोडी सहसा नही कोइ ॥ (796-3)
चचा चरन कमल गुर लागा ॥ (254-15)
चचा रचित चित्र है भारी ॥ (340-14)
चचै चारि वेद जिनि साजे चारे खाणी चारि जुगा ॥ (432-19)
चज अचार किछु बिधि नही जानी ॥ (372-7)
चड़ि कै घोड़ड़ै कुंदे पकड़हि खूंडी दी खेडारी ॥ (322-17)
चड़ि चेतु बसंतु मेरे पिआरे भलीअ रुते ॥ (452-3)
चड़ि देहड़ि घोड़ी बिखमु लघाए मिलु गुरमुखि परमानंदा ॥ (575-17)
चड़ि नाव संत उधारि ॥ (837-11)
चड़ि बोहिथै चालसउ सागरु लहरी देइ ॥ (1087-10)
चड़ि लंघा जी बिखमु भुइअंगा राम ॥ (575-9)
चड़ि सुमेरि ढूढि जब आवा ॥ (341-8)
चड़ै सवाइआ नित नित रंगा घटै नाही तोलीजा हे ॥१५॥ (1074-14)
चतुर दस हाट दीवे दुइ साखी ॥ (1039-10)
चतुर दिसा कीनो बलु अपना सिर ऊपरि करु धारिओ ॥ (681-16)
चतुर बेद उचरत दिनु राति ॥ (535-11)
चतुर बेद पूरन हरि नाइ ॥ (888-3)
चतुर बेद मुख बचनी उचरै आगै महलु न पाईऐ ॥ (216-7)
चतुर सिआणा सुघड़ु सोइ जिनि तजिआ अभिमानु ॥ (297-8)
चतुरथि चारे बेद सुणि सोधिओ ततु बीचारु ॥ (297-9)
चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ रहाउ ॥ (324-13)

चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ ॥ (918-7)
चतुराई नह चीनिआ जाइ ॥ (221-12)
चतुराई मोहि नाहि रीझावउ कहि मुखहु ॥ (847-8)
चतुराई सिआणपा कितै कामि न आईऐ ॥ (396-15)
चतुरु सरूपु सिआणा सोई जो मनि तेरै भावीजा हे ॥११॥ (1074-9)
चबण चलण रतंन से सुणीअर बहि गए ॥ (1381-19)
चबे तता लोह सारु विचि संघै पलते ॥ (317-5)
चमकार बीजुल तही ॥ (657-3)
चमतकार प्रगासु दह दिस एकु तह द्रिसटाइआ ॥ (457-1)
चमर पोस का मंदरु तेरा इह बिधि बने गुपाला ॥१॥ (1167-15)
चमरटा गांठि न जनई ॥ (659-8)
चरण अधारु तेरा प्रभ सुआमी ओति पोति प्रभु साथि ॥ (503-3)
चरण कमल अराधि हिरदै एक सिउ लिव लाउ ॥३॥ (501-17)
चरण कमल आतम आधार ॥ (181-9)
चरण कमल उर अंतरि धारहु ॥ (1004-14)
चरण कमल करि बोहिथु करते सहसा दूखु न बिआपै ॥ (79-13)
चरण कमल का आसरा दीनो प्रभि आपि ॥ (817-15)
चरण कमल का आसरा दूजा नाही ठाउ ॥ (46-14)
चरण कमल की दीनी ओट ॥३॥ (194-11)
चरण कमल गुरि धनु दीआ मिलिआ निथावे थाउ ॥ (48-16)
चरण कमल जन का आधारो ॥ (107-5)
चरण कमल जाई बलिहारा ॥ (743-10)
चरण कमल ठाकुर उरि धारि ॥ (190-3)
चरण कमल तेरे धोइ धोइ पीवा ॥१॥ (740-12)
चरण कमल तेरे धोइ धोइ पीवा मेरे सतिगुर दीन दइआला ॥३॥ (749-10)
चरण कमल धिआनु हिरदै प्रभ बिसरु नाही इकु खिनो ॥ (459-7)
चरण कमल नानक रंगि राते हरि दासह पैज रखाईऐ ॥२॥१३॥२२॥ (500-11)
चरण कमल नानकु आराधै तिसु बिनु आन न केंह ॥२॥६॥१०॥ (702-5)
चरण कमल प्रभ रिदै निवासु ॥ (196-19)
चरण कमल बसाइ हिरदै जीअ को आधारु ॥३॥ (405-15)
चरण कमल मन प्राण अधारी ॥१॥ रहाउ ॥ (740-17)
चरण कमल मन महि परवेस ॥१॥ (194-17)
चरण कमल रिद अंतरि धारे ॥ (375-10)
चरण कमल रिद माहि समाए तह भरमु अंधेरा नाही ॥१॥ (499-17)
चरण कमल वसहि मेरै चीता ॥३॥ (742-3)
चरण कमल संगि नेहु किनै विरलै लाइआ ॥ (399-5)
चरण कमल संगि प्रीति कलमल पाप टरे ॥ (459-1)

चरण कमल सरणं रमणं गोपाल कीरतनह ॥ (1358-16)
चरण कमल सरणाइ नराइण ॥ (760-2)
चरण कमल सरणाई आइआ ॥ (1084-16)
चरण कमल सिउ लागी प्रीति ॥ (741-18)
चरण कमल सिउ लागो मानु ॥ (376-15)
चरण कमल हिरदे महि जापु ॥ (197-13)
चरण कर देखत सुणि थके दिह मुके नेड़ै आए ॥ (550-2)
चरण गहे सरणि सुखदाते गुर कै बचनि जपे हरि जाप ॥ (821-5)
चरण चरण चरण गुर सेवे अघड़ु घड़िओ रसु पाइआ था ॥३॥ (1002-7)
चरण ठाकुर के रिदै समाणे ॥ (105-12)
चरण त पर सकयथ चरण गुर अमर पवलि रय ॥ (1394-4)
चरण तलै उगाहि बैसिओ स्रमु न रहिओ सरीरि ॥ (1018-1)
चरण धिआन सरब सुख भोग ॥६॥ (240-14)
चरण धूड़ि तेरी सेवकु मागै तेरे दरसन कउ बलिहारा ॥१॥ (749-7)
चरण धूड़ि तेरे जन की होवा तेरे दरसन कउ बलि जाई ॥ (749-14)
चरण न छाडउ सरीर कल जाई ॥२॥ (345-11)
चरण पखारि करउ गुर सेवा आतम सुधु बिखु तिआस निवारी ॥ (377-17)
चरण पखारि करउ गुर सेवा बारि जाउ लख बरीआ ॥ (207-3)
चरण पखारि करी नित सेवा जीउ ॥ (217-7)
चरण पुनीत चलहि हरि मारगि ॥३॥ (191-18)
चरण बंदना अमोल दासरो देंउ साधसंगति अरदागिओ ॥ (1204-2)
चरण बिराजित सभ ऊपरे मिटिआ सगल कलेसु जीउ ॥ (929-13)
चरण भजे पारब्रहम के सभि जप तप तिन ही कीति ॥३॥ (48-13)
चरण रहे कर क्मपण लागे साकत रामु न रिदै हरे ॥७॥ (1014-6)
चरण रेणु गुर की मुखि लागी ॥ (187-11)
चरण सरण दइआल केसव तारि जग भव सिंध ॥१॥ रहाउ ॥ (508-5)
चरण सरण दइआल तेरी तूं निमाणे माणु ॥ (405-11)
चरण सरण नानक गति पाई ॥५॥३४॥४०॥ (745-5)
चरण सरण भजु संगि साधू भव सागर उतरहि पारि ॥१॥ (1006-19)
चरण सरण सनाथ इहु मनु रंगि राते लाल ॥ (1018-7)
चरणह सरनी दासह दासी मनि मउलै तनु हरीआ ॥ (779-15)
चरणारबिंद भजनं रिदयं नाम धारणह ॥ (1356-19)
चरणारबिंद मन बिध्यं ॥ (1361-4)
चरणी चलउ मारगि ठाकुर कै रसना हरि गुण गाए ॥२॥ (1205-1)
चरणी चलै पजूता आगै विणु सेवा फल लागे ॥२॥ (354-16)
चरणी लागै ता महलु पावै ॥ (231-5)
चरन कमल अधारु जन का रासि पूंजी एक ॥ (675-18)

चरन कमल अनूप सुआमी जपत साधू होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1228-7)
चरन कमल अराधि भगवंता ॥ (189-17)
चरन कमल असथिति रिद अंतरि पूजा प्रान को आधारु ॥१॥ (1222-9)
चरन कमल आधारु जन का आसरा ॥ (925-4)
चरन कमल आनूप हरि संत मंत ॥ (380-8)
चरन कमल आराधत मन महि जम की त्रास बिदारे ॥२॥ (210-4)
चरन कमल उर धारे चीत ॥ (932-16)
चरन कमल का आसरा प्रभ पुरख गुणतासु ॥ (818-10)
चरन कमल की आस पिआरे ॥ (389-13)
चरन कमल की ओट उधरे सगल जन ॥ (709-17)
चरन कमल की मउज महि रहउ अंति अरु आदि ॥१२०॥ (1370-17)
चरन कमल गुर के जपत हरि जपि हउ जीवा ॥ (815-18)
चरन कमल गुर के मनि वूठे ॥ (1340-8)
चरन कमल गुर रिदै बसाइआ ॥१॥ (202-9)
चरन कमल गुरदेव पिआरे ॥ (394-5)
चरन कमल गुरमुखि आराधहु दुसमन दूखु न आवै नेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (1150-14)
चरन कमल गुरि आस्रमु दीआ ॥३॥ (804-2)
चरन कमल गोबिंद रंगु लागा ॥ (343-6)
चरन कमल चितु बेधिआ रामहि नामि समाउ ॥१०२॥ (1369-17)
चरन कमल चितु रहिओ समाइ ॥ रहाउ ॥ (1162-3)
चरन कमल जन का आधारु ॥ (869-5)
चरन कमल जपि बोहिथि चरीऐ ॥ (1080-7)
चरन कमल जपि सागरु तरिआ भवजल उतरे पारा ॥ (784-17)
चरन कमल जा का मनु रागिओ अमिअ सरोवर पागा ॥१॥ (682-5)
चरन कमल जा का मनु रापै ॥ (684-1)
चरन कमल जा के अनूप ॥ (293-11)
चरन कमल जा कै रिदै बसहि सो जनु किउ डोलै देव ॥ (857-14)
चरन कमल धिआन भीतरि घटि घटहि सुआमी सुझै ॥ (1122-2)
चरन कमल नमसकार गुन गोबिद बीचारे ॥ (679-3)
चरन कमल नह भजंत त्रिण समानि ध्रिगु जनमनह ॥ (1359-17)
चरन कमल नानक नित धिआइ ॥४॥४२॥५५॥ (1152-12)
चरन कमल नानक मनु बेधिओ चरनह संगि समाहि ॥२॥७२॥९५॥ (1222-18)
चरन कमल नानक सरणाई ॥४॥३९॥५०॥ (898-19)
चरन कमल नानक सरणाई राम नाम जपि निरमल मंत ॥२॥१९॥१०५॥ (825-8)
चरन कमल निमख रिदै धारे ॥ (1349-2)
चरन कमल पागे ॥ (1185-4)
चरन कमल प्रभ के नित धिआवउ ॥ (806-7)

चरन कमल प्रभ राखे चीति ॥ (1001-3)
चरन कमल प्रभ हिरदै धिआए ॥ (806-9)
चरन कमल प्रीति मनु बेधिआ करि सरबसु अंतरि राखी ॥१॥ (1227-13)
चरन कमल प्रेम भगती बीधे ॥१॥ रहाउ ॥ (198-14)
चरन कमल बसाइ हिरदै एक सिउ लिव लाउ ॥ (1220-15)
चरन कमल बसिआ रिद भीतरि सासि गिरासि उचारिओ ॥ (534-9)
चरन कमल बसे मेरे मन के ॥ (900-15)
चरन कमल बसे रिद अंतरि अम्रित हरि रसु चाखे ॥३॥ (616-2)
चरन कमल बिरहं खोजंत बैरागी दह दिसह ॥ (707-8)
चरन कमल बोहिथ भए लगि सागरु तरिओ तेह ॥ (431-8)
चरन कमल भगतां मनि वुठे ॥ (109-4)
चरन कमल मन माहि निवासु ॥१॥ (1340-13)
चरन कमल मनि तनि बसे दरसनु देखि निहाल ॥ (298-3)
चरन कमल मनि तनि बसे प्रभ अगम अपार ॥२॥ (817-1)
चरन कमल मनु बेधिआ जिउ रंगु मजीठा ॥ (708-10)
चरन कमल मनु बेधिओ बूझनु सुरति संजोग ॥२॥ (1363-19)
चरन कमल महि होइ निवासु ॥१॥ (901-3)
चरन कमल मेरे प्रान अधार ॥१॥ (535-14)
चरन कमल मेरे हीअरे बसैं ॥१॥ रहाउ ॥ (1195-18)
चरन कमल रचंति संतह नानक आन न रुचते ॥१॥ (708-12)
चरन कमल राखहु मन माहि ॥ (288-19)
चरन कमल रिद महि उरि धारहु ॥ (288-4)
चरन कमल रिदै धारि ॥ (1304-3)
चरन कमल संगि प्रीति मनि लागी सुरि जन मिले पिआरे ॥ (715-1)
चरन कमल संगि लागी डोरी ॥ (979-9)
चरन कमल संगि लागी प्रीति ॥ (802-5)
चरन कमल सरणाइ नानक सद सदा बलिहारि ॥२॥८४॥१०७॥ (1225-3)
चरन कमल सरणाइ नानकु आइआ ॥ (705-14)
चरन कमल सरणागती अनद मंगल गुण गाम ॥ (926-9)
चरन कमल सरन नानक सुखु संत भावनी ॥२॥२॥६०॥ (901-14)
चरन कमल सरनि टेक ॥ (1341-15)
चरन कमल सरनि सुख सागर नानकु सद कुरबानु ॥२॥७॥८॥ (979-19)
चरन कमल सिउ जा का मनु लीना से जन त्रिपति अघाई ॥ (612-17)
चरन कमल सिउ डोरी राची भेटिओ पुरखु अपारो ॥१॥ (1225-12)
चरन कमल सिउ प्रीति रीति संतन मनि आवए जीउ ॥ (80-9)
चरन कमल सिउ भाउ न कीनो नह सत पुरखु मनाइओ ॥ (712-7)
चरन कमल सिउ रंगु लगा अचरज गुरदेव ॥ (814-13)

चरन कमल सिउ लगो धिआनु ॥ (1183-9)
चरन कमल सिउ लाईऐ चीता ॥१॥ (805-1)
चरन कमल सिउ लागउ नेहु ॥ (684-12)
चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ (196-8)
चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ (331-6)
चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ (893-14)
चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥ (289-12)
चरन कमल सिउ लागो धिआना साचै दरसि समाई संतहु ॥३॥ (916-9)
चरन कमल सिउ लागो पिआरु ॥ (1339-12)
चरन कमल सिउ लागो हेतु ॥ (1149-9)
चरन कमल सेवी रिद अंतरि गुर पूरे कै आधारि ॥३॥ (379-13)
चरन कमल हरि जन की थाती कोटि सूख बिस्राम ॥ (682-10)
चरन कमल हरि सरन ॥ (896-15)
चरन कमल हिरदै उर धारी ॥ (193-18)
चरन कमल हिरदै उरि धारे ॥ (563-9)
चरन कमल हिरदै उरि धारे सदा सदा हरि जसु सुना ॥१॥ रहाउ ॥ (1182-19)
चरन कमल हिरदै गहु नानक सुख समूह बिसराम ॥२॥९॥१३॥ (702-16)
चरन कमल हिरदै धरि धिआनु ॥ (897-13)
चरन कमल हिरदै नित धारी ॥ (1085-17)
चरन कमल हिरदै वसहि संकट सभि खोवै ॥ (322-14)
चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥ (287-10)
चरन कवल रिद अंतरि धारे ॥ (191-2)
चरन कवल हिरदै गहि नानक भै सागर संत पारि उतरीआ ॥२॥२॥११५॥ (203-3)
चरन गहउ बकउ सुभ रसना दीजहि प्रान अकोरि ॥१॥ रहाउ ॥ (701-16)
चरन गहे जगजीवन प्रभ के हउमै मारि निबेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (1197-4)
चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥ (281-8)
चरन चलन कउ सिरु कीनो मेरा ॥ (913-14)
चरन ठाकुर कै मारगि धावउ ॥१॥ (190-1)
चरन तुम्हारे हिरदै वासहि संतन का संगु पावउ ॥ (682-13)
चरन पखारउ करि सेवा जे ठाकुर भावै ॥ (809-10)
चरन पखारि करउ गुर सेवा मनहि चरावउ भोग ॥ (713-13)
चरन पखारि कहां गुणतास ॥ (676-19)
चरन पिआसी दरस बैरागनि पेखउ थान सबाए ॥ (249-15)
चरन पुनीत पवित्र चालहि प्रभ पथा ॥ (709-5)
चरन प्रभू के बोहिथु पाए भव सागरु पारि पराही ॥ (824-9)
चरन बधिक जन तेऊ मुकति भए ॥ (345-4)
चरन बसाइआ संत संगाइआ अगिआन अंधेरु गवाइआ ॥ (1237-6)

चरन भए संत बोहिथा तरे सागरु जेत ॥ (810-8)
चरन रहे कर ढरकि परे है मुखहु न निकसै बाता ॥३॥ (480-13)
चरन रेन बांछै नित नानकु पुनह पुनह बलिहारिआ ॥२॥१६॥ (675-1)
चरन लुभाए आन तजाए ॥ (1307-9)
चरन संतन के माथे मेरे ऊपरि नैनहु धूरि बांछाई ॥ (1207-14)
चरन संतन के मेरे रिदे मझारि ॥४॥४॥ (987-10)
चरन संतन कै माथा मेरो ॥१॥ (1303-9)
चरन संतह माथ मोर ॥ (987-6)
चरन सति सति परसनहार ॥ (285-6)
चरन सरन गोपाल तेरी ॥ (1301-5)
चरन सरन दइआल ठाकुर आन नाही जाइ ॥ (1306-6)
चरन सरन नानक दास हरि हरि संती इह बिधि जाती ॥२॥१॥२५॥ (677-11)
चरन सरन नानक प्रभ तेरी करि किरपा संतसंगि मिलात ॥२॥४॥८४॥ (821-1)
चरन सरन नामा बलि तिहारी ॥२॥५॥ (694-4)
चरन सरनि पूरन परमेसुर अंतरजामी साखिओ ॥ (677-14)
चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥ (283-7)
चरन सीसु कर क्मपन लागे नैनी नीरु असार बहै ॥ (479-13)
चरन सेव संत साध के सगल मनोरथ पूरे ॥३॥ (133-1)
चरनन सरनन संतन बंदन ॥ (407-1)
चरनह गोबिंद मारगु सुहावा ॥ (1212-2)
चरनह दासी करि लई नानक प्रभ हित चीत ॥२॥ (928-9)
चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ॥१॥ (1124-14)
चरनारबिंद बसाइ हिरदै बहुरि जनम न मार ॥१॥ (1228-11)
चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सचा बीचारो ॥ (938-13)
चल चित जोगी आसणु तेरा ॥ (886-14)
चल चित बित अनित प्रिअ बिनु कवन बिधी न धीजीऐ ॥ (542-19)
चल चित वित भ्रमा भ्रमं जगु मोह मगन हितं ॥ (505-15)
चलण सार न जाणनी काज सवारणहार ॥१॥ (787-15)
चलण सार न जाणनी कामु करोधु विसु वधाइआ ॥ (145-16)
चलणु अजु कि कल्हि धुरहु फुरमाइआ ॥२॥ (369-3)
चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥ (1124-1)
चलत बैसत सोवत जागत गुर मंत्रु रिदै चितारि ॥ (1006-19)
चलतउ मनु राखै अम्रितु चाखै ॥ (352-16)
चलता तुमारे देखि मोही उदास धन किउ धीरए ॥ (247-11)
चलती बार तेरो कछू नाहि ॥४॥ (1189-17)
चलती बार न कछु मिलिओ लई लंगोटी तोरि ॥१४४॥ (1372-4)
चलतौ चलै चलै दह दह दिसि गुरु राखै हरि लिव लावैगो ॥ (1310-16)

चलतौ ठाकि रखहु घरि अपनै गुर मिलिऐ इह मति होई जीउ ॥ (599-2)
चलदिआ घरु दरु नदरि न आवै जम दरि बाधा दुखु पाइदा ॥१३॥ (1063-12)
चलदिआ नालि न चलई खिन जाइ बिलामी ॥ (1099-9)
चलदिआ नालि न चलई सभु झूठु दरबु लखा ॥ (1087-18)
चलदिआ नालि न चलै सिरि पाप लै जावणा ॥ (645-4)
चलदिआ नालि न चलै सो किउ संजीऐ ॥ (708-4)
चलदिआ नालि हरि चलसी हरि अंते लए छडाइ ॥ (82-5)
चलहु सिताब दीबानि बुलाइआ ॥१॥ (792-14)
चला चला जे करी जाणा चलणहारु ॥ (63-12)
चला त भिजै क्मबली रहां त तुटै नेहु ॥२४॥ (1379-4)
चलि चलि गईआं पंखीआं जिन्ही वसाए तल ॥ (1381-8)
चलिआ पति सिउ जनमु सवारि वाजा वाइसी ॥ (730-4)
चलित तुमारे प्रगट पिआरे देखि नानक भए निहाला जीउ ॥४॥२६॥३३॥ (104-9)
चलु चलु सखी हम प्रभु परबोधह गुण कामण करि हरि प्रभु लहीआ ॥ (836-5)
चलु दरहालु दीवानि बुलाइआ ॥ (792-15)
चलु रे बैकुंठ तुझहि ले तारउ ॥ (329-10)
चलु सखीए प्रभु रावण जाहा ॥ (742-9)
चले चलणहार वाट वटाइआ ॥ (419-15)
चले चलणहार विचारा लेइ मनो ॥ (488-17)
चले जुआरी दुइ हथ झारि ॥४॥२॥ (1158-3)
चले नामु विसारि तावणि ततिआ ॥ (1289-10)
चलै जनमु सवारि वखरु सचु लै ॥ (751-17)
चलै सदा रजाइ अंकि समावई ॥२॥ (420-7)
चलो बनजारा हाथ झारि ॥२॥ (1195-2)
चवरासीह लख जोनि उपाई रिजकु दीआ सभ हू कउ तद का ॥ (1403-14)
चवरासीह सिध बुध जितु राते अ्मबरीक भवजलु तरिआ ॥ (1393-6)
चहु जुग पसरी साची सोइ ॥ (1174-6)
चहु जुग महि अम्रितु साची बाणी ॥ (665-17)
चहु जुगा का हुणि निबेड़ा नर मनुखा नो एकु निधाना ॥ (797-17)
चहु जुगि निरमलु हछा लोइ ॥ (1069-18)
चहु जुगि मैले मलु भरे जिन मुखि नामु न होइ ॥ (57-15)
चहु जुगि सोभा निरमल जनु सोइ ॥ (1262-15)
चहु जुगी कलि काली कांढी इक उतम पदवी इसु जुग माहि ॥ (651-3)
चहु दिस पसरिओ है जम जेवरा ॥१॥ रहाउ ॥ (654-6)
चहु दिस फूलि रही बिखिआ बिखु गुर मंत्रु मूखि गरुड़ारी ॥ (1209-7)
चहु दिसि जपीऐ नाउ सूखि सवारीआ ॥ (241-2)
चहु दिसि हुकमु वरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पतालं ॥ (1275-10)

चहु पीड़ी आदि जुगादि बखीली किनै न पाइओ हरि सेवक भाइ निसतारा ॥४॥२॥९॥ (733-18)
चहु महि एकै मटु है कीआ ॥ (886-8)
चहु महि पेखिओ खट महि पेखिओ दस असटी सिम्रिताए ॥ (1139-6)
चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥ (274-15)
चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥ (274-16)
चहु वरना विचि जागै कोइ ॥ (1128-7)
चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥ (1288-7)
चाकरी विडाणी खरी दुखाली आपु वेचि धरमु गवाए ॥ (246-19)
चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कितु ॥ (729-7)
चाकरु कहीऐ खसम का सउहे उतर देइ ॥ (936-12)
चाकरु त तेरा सोइ होवै जोइ सहजि समावए ॥ (567-2)
चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥ (474-16)
चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥ (474-9)
चाकी का चीथरा कहां लै जाहि ॥२॥ (1196-17)
चाकी चाटहि चूनु खाहि ॥ (1196-17)
चाखत बेगि सगल बिख हरै ॥ (344-11)
चाखत होइ रहहि बिसमादु ॥१॥ (180-14)
चाखि अघाणे सारिगपाणे जिन कै भाग मथाना ॥ (924-15)
चाखिअड़ा चाखिअड़ा मै हरि रसु मीठा राम ॥ (452-11)
चाड़सि पवनु सिंघासनु भीजै ॥ (905-7)
चात्रिक चित पिआस चात्रिक चित पिआस हे घन बूंद बचित्रि मनि आस हे अल पीवत बिनसत ताप ॥
(462-8)
चात्रिक चित सुचित सु साजनु चाहीऐ ॥ (1362-12)
चात्रिक चितवत बरसत मेंह ॥ (702-2)
चात्रिक जिउ तरसत रहै तिन को कउनु हवालु ॥१२४॥ (1371-2)
चात्रिक तू न जाणही किआ तुधु विचि तिखा है कितु पीतै तिख जाइ ॥ (1284-15)
चात्रिक मीन जल ही ते सुखु पावहि सारिंग सबदि सुहाई ॥१॥ (1274-8)
चात्रिक मोर बोलत दिनु राती सुनि घनिहर की घोर ॥२॥ (1265-15)
चात्रिकु चाहत मेहु ॥ (838-14)
चात्रिकु जल बिनु प्रिउ प्रिउ टेरै बिलप करै बिललाई ॥ (1273-8)
चात्रिकु जाचै बूंद जिउ नानक हरि पिआरा ॥३॥ (454-8)
चात्रिकु जाचै बूंद जिउ हरि प्रान अधारा राम राजे ॥ (454-5)
चादना चादनु आंगनि प्रभ जीउ अंतरि चादना ॥१॥ (1018-10)
चानणु होवै छोडै हउमै मेरा ॥ (126-9)
चार अचार रहे उरझाइ ॥२॥ (325-6)
चार बिचार बिनसिओ सभ दूआ ॥ (254-16)
चारि आसरम चारि बरंना मुकति भए सेवतोऊ ॥१॥ (535-3)

चारि कुंट चउदह भवन सगल बिआपत राम ॥ (299-14)
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥ (133-6)
चारि कुंट दह दिसि जल निधि ऊन थाउ न केहु ॥ (1226-7)
चारि कुंट दह दिसि भ्रमि आइओ ॥ (254-16)
चारि कुंट दह दिसि भ्रमिओ तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (296-13)
चारि कुंट दह दिसे समाहि ॥ (294-2)
चारि चरन कहहि बहु आगर ॥ (324-10)
चारि दिन अपनी नउबति चले बजाइ ॥ (1124-9)
चारि दिवस के पाहुने बड बड रूंधहि ठाउ ॥६४॥ (1367-17)
चारि नदी अगनी असराला ॥ (1031-10)
चारि नदीआ अगनी तनि चारे ॥ (1172-15)
चारि पदारथ अनद मंगल निधि सूख सहज सिधि लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (531-12)
चारि पदारथ असट दसा सिधि ॥ (1086-1)
चारि पदारथ असट दसा सिधि नव निधि कर तल ता के ॥१॥ (658-13)
चारि पदारथ असट दसा सिधि सभ ऊपरि साध भले ॥ (1227-10)
चारि पदारथ असट महा सिधि कामधेनु पारजात हरि हरि रुखु ॥ (717-18)
चारि पदारथ असट महा सिधि नव निधि कर तल ता कै ॥१॥ (1106-15)
चारि पदारथ असट सिधि भजु नानक हरि नामु ॥४॥ (297-8)
चारि पदारथ कमल प्रगास ॥ (296-1)
चारि पदारथ कहै सभु कोई ॥ (154-13)
चारि पदारथ चारे पाए गुरमति नानक हरि भजहु ॥४॥४॥ (800-4)
चारि पदारथ जे को मागै ॥ (266-4)
चारि पदारथ नव निधि पावहि बहुरि न त्रिसना भुखी ॥१॥ (617-6)
चारि पदारथ लै जगि आइआ ॥ (1027-1)
चारि पदारथ लै जगि जनमिआ सिव सकती घरि वासु धरे ॥ (1013-19)
चारि पदारथ हरि की सेवा ॥ (108-6)
चारि पहर चहु जुगह समाने ॥ (375-1)
चारि पाव दुइ सिंग गुंग मुख तब कैसे गुन गईहै ॥ (524-8)
चारि पुकारहि ना तू मानहि ॥ (886-4)
चारि बरन चउहा के मरदन खटु दरसन कर तली रे ॥ (404-9)
चारि बरन चारि आस्रम है कोई मिलै गुरू गुर नानक सो आपि तरै कुल सगल तराधो ॥२॥५॥११॥ (1297-17)
चारि बिनासी खटहि बिनासी इकि साध बचन निहचलाधा ॥२॥ (1204-7)
चारि बेद अरु सिम्रिति पुरानां ॥ (691-17)
चारि बेद चारे खाणी ॥ (1003-17)
चारि बेद जिहव भने ॥ (1229-15)
चारि मरंतह छह मूए चारि पुरख दुइ नारि ॥९१॥ (1369-6)

चारि मुकति चारै सिधि मिलि कै दूलह प्रभ की सरनि परिओ ॥ (1105-8)
चारे अगनि निवारि मरु गुरमुखि हरि जलु पाइ ॥ (22-1)
चारे किलविख उनि अघ कीए होआ असुर संघारु ॥ (70-13)
चारे कुंट सलामु करहिगे घरि घरि सिफति तुम्हारी ॥७॥ (1191-5)
चारे कुंडां भवि थके अंदरि तिख तते ॥ (1093-7)
चारे कुंडां सुझीओसु मन महि सबदु परवाणु ॥ (968-5)
चारे कुंडा जे भवहि बिनु भागा धनु नाहि जीउ ॥ (751-4)
चारे कुंडा जे भवहि बेद पड़हि जुग चारि ॥ (1421-3)
चारे कुंडा झोकि वरसदा बूंद पवै सहजि सुभाइ ॥ (1420-1)
चारे कुंडा ढूंढीआं रहणु किथाऊ नाहि ॥१०२॥ (1383-10)
चारे कुंडा ढूढीआ को नीम्ही मैडा ॥ (418-16)
चारे कुंडा देखि अंदरु भालिआ ॥ (149-5)
चारे कुंडा भवि थके मनमुख बूझ न पाइ ॥ (37-6)
चारे कुंडा भालि कै आइ पइआ सरणाइ ॥ (43-7)
चारे कुंडा भालीआ सह बिनु अवरु न जाइ ॥२॥ (49-10)
चारे कुंडा सोधीआ भाई विणु सतिगुर नाही जाइ ॥ (608-18)
चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥ (968-13)
चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥८॥१॥ (968-17)
चारे जुग मै सोधिआ विणु संगति अहंकारु न भगै ॥ (1098-7)
चारे दीवे चहु हथि दीए एका एका वारी ॥१॥ (1190-17)
चारे बेद कथहि आकारु ॥ (154-11)
चारे बेद ब्रहमे नो फुरमाइआ ॥ (1066-3)
चारे बेद मुखागर पाठि ॥ (1169-1)
चारे वरन आखै सभु कोई ॥ (1128-1)
चारे वेद ब्रहमे कउ दीए पड़ि पड़ि करे वीचारी ॥ (423-5)
चारे वेद होए सचिआर ॥ (470-8)
चालत बैसत सोवत हरि जसु मनि तनि चरन खटानी ॥२॥ (404-18)
चालहि गुरमुखि हुकमि रजाई ॥ (227-12)
चालहि सतिगुर भाइ भवहि न भीखिआ ॥२॥ (729-16)
चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥ (918-18)
चालीसी पुरु होइ पचासी पगु खिसै सठी के बोढेपा आवै ॥ (138-2)
चाले थे हरि मिलन कउ बीचै अटकिओ चीतु ॥९६॥ (1369-11)
चाहहि तुझहि दइआर मनि तनि रुच अपार ॥ (455-17)
चिंजू बोड़न्हि ना पीवहि उडण संदी डंझ ॥६४॥ (1381-6)
चिंत अंदेसा गणत तजि जनि हुकमु पछाता ॥ (813-2)
चिंत अचिंता सगली गई ॥ (1157-13)
चिंत अचिंता सोच असोचा सोगु लोभु मोहु थाका ॥ (671-14)

चिंत गई लगि सतिगुर पाए ॥३॥ (1141-19)
चिंत बिसारी एक द्रिसटेता ॥ (254-17)
चिंत भवनि मनु परिओ हमारा ॥ (478-16)
चिंत लथी भेटे गोबिंद ॥१॥ (1180-2)
चिंतत ही दीसै सभु कोइ ॥ (932-16)
चिंता छडि अचिंतु रहु नानक लगि पाई ॥२१॥ (517-8)
चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥ (293-9)
चिंता जालि तनु जालिआ बैरागीअड़े ॥ (1104-17)
चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥ (1429-4)
चिंता धावत रहि गए तां मनि भइआ अनंदु ॥ (1415-15)
चिंता भि आपि कराइसी अचिंतु भि आपे देइ ॥ (1376-8)
चिंता मूलि न होवई अचिंतु वसै मनि आइ ॥ (587-5)
चिंता मूलि न होवई हरि नामि रजा आघाइ ॥ (588-8)
चिंता रोगु गई हउ पीड़ा आपि करे प्रतिपाला जीउ ॥२॥ (99-1)
चिंतामणि करुणा मए ॥१॥ रहाउ ॥ (212-14)
चिकड़ि लाइऐ किआ थीऐ जां तुटै पथर बंधु ॥ (1287-15)
चिटे जिन के कपड़े मैले चित कठोर जीउ ॥ (751-6)
चिड़ी चुहकी पहु फुटी वगनि बहुतु तरंग ॥ (319-9)
चित गुपत करमहि जान ॥ (838-4)
चित चेतसि की नही बावरिआ ॥ (990-3)
चित चेति अचेत जानि सतसंगति भरम अंधेर मोहिओ कत धंउ ॥ (1387-9)
चित महि ठाकुरु सचि वसै भाई जे गुर गिआनु समोइ ॥२॥ (637-1)
चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥ (694-10)
चित हरणं त्रै लोक गम्यं जप तप सील बिदारणह ॥ (1358-4)
चितवंति चरन कमलं सासि सासि अराधनह ॥ (708-16)
चितवउ चरनारबिंद सासन निसि भोर ॥१॥ रहाउ ॥ (1307-14)
चितवउ चित नाथ चितवउ चित नाथ हे रखि लेवहु सरणि अनाथ हे मिलु चाउ चाईले प्रान ॥ (462-11)
चितवउ चितवि सरब सुख पावउ आगै भावउ कि न भावउ ॥ (401-6)
चितवउ मनि आसा करउ जन का संगु मागउ ॥ (745-16)
चितवउ वा अउसर मन माहि ॥ (1222-15)
चितवत पाप न आलकु आवै ॥ (1143-9)
चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥३८॥ (1428-10)
चितवता गोपाल दरसन कलमला कढु धोइ ॥ (1228-8)
चितवनि चितवउ प्रिअ प्रीति बैरागी कदि पावउ हरि दरसाई ॥ (1207-1)
चितहि उलास आस मिलबे की चरन कमल रस पीवन ॥१॥ रहाउ ॥ (1268-18)
चितहि चितु समाइ त होवै रंगु घना ॥ (1362-14)
चितहि न बिसरहि काहू बेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (739-10)

चिति आवै ओसु पारब्रहमु तनु मनु सीतलु होइ ॥३॥ (70-12)
चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निमख सिमरत तरिआ ॥४॥ (70-14)
चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निहचलु होवै राजु ॥२॥ (70-10)
चिति आवै ओसु पारब्रहमु लगै न तती वाउ ॥१॥ (70-7)
चिति चितवउ अरदासि कहउ परु कहि भि न सकउ ॥ (1395-12)
चिति चितवउ चरणारबिंद ऊध कवल बिगसांत ॥ (254-14)
चिति चितवउ हरि रसन अराधउ निरखउ तुमरी ओर ॥१॥ रहाउ ॥ (500-3)
चिति चितवहु नाराइण एक ॥ (295-8)
चिति जि चितविआ सो मै पाइआ ॥ (705-1)
चिति न आइओ पारब्रहमु जमकंकर वसि परिआ ॥८॥ (71-3)
चिति न आइओ पारब्रहमु ता खड़ि रसातलि दीत ॥७॥ (71-1)
चिति न आइओ पारब्रहमु ता सरप की जूनि गइआ ॥६॥ (70-18)
चिति वसै राचै हरि नाइ ॥ (932-17)
चिति सचै वितो सचा साचा रसु चाखिआ ॥ (1011-4)
चितु चलै वितु जावणो साकत डोलि डोलाइ ॥ (63-2)
चितु चात्रिक बूंद ओर ॥ (1272-13)
चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥ (920-9)
चितु थिरु राखै सो मुकति होवै जो इछी सोई फलु पाई ॥१॥ (506-4)
चितु लागा सेई जन निसतरे तउ परसादी सुखु पाइआ ॥१५॥ (433-7)
चितु हरि सिउ राता हुकमि अपारा ॥ (221-5)
चिते दिसहि धउलहर बगे बंक दुआर ॥ (62-16)
चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥ (472-4)
चित्र गुपत का कागदु फारिआ जमदूता कछू न चली ॥ (79-17)
चित्र गुपतु जब लेखा मागहि तब कउणु पड़दा तेरा ढाकै ॥३॥ (616-8)
चित्र गुपतु सभ लिखते लेखा ॥ (393-15)
चित्र बचित्र इहै अवझेरा ॥ (340-15)
चित्र साल सुंदर बाग मंदर संगि न कछहू जाइआ ॥१॥ (497-10)
चिरंकाल इह देह संजरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (176-12)
चिरंकाल न जीवै दोऊ कुल लजै ॥१॥ (1195-17)
चिरंकाल पाई द्रुलभ देह ॥ (890-1)
चिरगट फारि चटारा लै गइओ तरी तागरी छूटी ॥५॥३॥१६॥ (480-3)
चिरी विछुंना मेलि प्रभ मै मनि तनि वडड़ी आस ॥ (996-16)
चिरी विछुंना हरि प्रभु पाइआ गलि मिलिआ सहजि सुभाए राम ॥ (538-4)
चिरी विछुंने भी मिलनि जो सतिगुरु सेवंनि ॥ (756-15)
चिरी विछुंने मेलि मिलाई ॥ (361-12)
चिरी विछुंने मेलिअनु सतगुर पंनै पाइ ॥ (32-16)
चिरु चिरु चिरु चिरु भइआ मनि बहुतु पिआस लागी ॥ (408-14)

चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि ॥ (396-2)
चिरु जीवनु चेतनु नित नीत ॥ (932-16)
चिरु होआ देखे सारिंगपाणी ॥ (96-17)
चिलिमिलि बिसीआर दुनीआ फानी ॥ (1291-6)
चिहनु वरनु नही छाइआ माइआ नानक सबदु पछाणै ॥५९॥ (944-15)
चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥ (472-12)
चीति आइओ मनि पुरखु बिधाता संतन की सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1000-8)
चीति आवहि तब ही पति पूरी बिसरत रलीऐ खाकु ॥१॥ रहाउ ॥ (1003-11)
चीति आवै तां कबहि न झूरी ॥१॥ (1141-4)
चीति आवै तां चूकी काणे ॥३॥ (1141-7)
चीति आवै तां पूरे काजा ॥ (1141-5)
चीति आवै तां महा अनंद ॥ (1141-3)
चीति आवै तां रंगि गुलाल ॥ (1141-6)
चीति आवै तां सद धनवंता ॥ (1141-6)
चीति आवै तां सद निभरंता ॥ (1141-7)
चीति आवै तां सदा दइआला लोगन किआ वेचारे ॥ (383-8)
चीति आवै तां सदा निहाल ॥२॥ (1141-6)
चीति आवै तां सभि दुख भंज ॥ (1141-3)
चीति आवै तां सभि रंग माणे ॥ (1141-7)
चीति आवै तां सरधा पूरी ॥ (1141-4)
चीति आवै तां सरब को राजा ॥ (1141-5)
चीति आवै तां सहज घरु पाइआ ॥ (1141-8)
चीति आवै तां सुंनि समाइआ ॥ (1141-8)
चीति आवै सद कीरतनु करता ॥ (1141-8)
चीति चितवउ मिटु अंधारे जिउ आस चकवी दिनु चरै ॥ (847-13)
चीति न आइओ करता संगा ॥ (392-3)
चीति न आवसि दूजी बाता सिर ऊपरि रखवारा ॥ (884-3)
चीनत चीतु निरंजन लाइआ ॥ (328-18)
चीनहु आपु जपहु जगदीसरु हरि जगंनाथु मनि भाइआ ॥१३॥ (1041-11)
चीनै आपु पछाणै सोई जोती जोति मिलाई हे ॥७॥ (1024-19)
चीनै गिआनु धिआनु धनु साचौ एक सबदि लिव लावै ॥ (1332-13)
चीन्है ततु गगन दस दुआर ॥ (355-5)
चीरी आई ढिल न काऊ ॥ (952-3)
चीरी जा की ना फिरै साहिबु सो परवाणु ॥ (1239-7)
चीरी जिस की चलणा मीर मलक सलार ॥ (1239-7)
चुका निहोरा सखी सहेरी ॥ (384-12)
चुख चुख ले गए बांढे बाटि ॥३॥ (1136-16)

चुगल निंदक भुखे रुलि मुए एना हथु न किथाऊ पाइ ॥ (1417-18)
चुपै चंगा नानका विणु नावै मुहि गंधु ॥१॥ (1288-14)
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥ (1-5)
चूका गउणु मिटिआ अंधिआरु ॥ (1348-15)
चूका पड़दा तां नदरी आइआ ॥ (1141-18)
चूका भारा करम का होए निहकरमा ॥ (1002-18)
चूकि गई फिरि आवन जानी ॥३॥ (337-5)
चूकी पिआसा पूरन आसा गुरमुखि मिलु निरगुनीऐ ॥ (924-18)
चूकीअले मोह मइआसा ॥ (972-3)
चूगहि चोग अनंद सिउ जुगता ॥ (1347-8)
चूड़ा भंनु पलंघ सिउ मुंधे सणु बाही सणु बाहा ॥ (557-15)
चूहा खड न मावई तिकलि बंन्है छज ॥ (1286-6)
चेतत चेतत निकसिओ नीरु ॥ (328-8)
चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥ (726-15)
चेतसि नाही दुनीआ फन खाने ॥३॥२॥ (794-4)
चेतहि एकु तही सुखु होइ ॥ (932-16)
चेतहु बासुदेउ बनवाली ॥ (503-7)
चेता ई तां चेति साहिबु सचा सो धणी ॥ (318-10)
चेति अचेत मूड़ मन मेरे अंति नही कछु तेरा ॥ (75-3)
चेति अचेत मूड़ मन मेरे बाजे अनहद बाजा ॥ (856-11)
चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥ (133-11)
चेति मन महि तजि सिआणप छोडि सगले भेख ॥ (1007-9)
चेति मन महि हरि हरि निधाना एह निरमल रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (1006-17)
चेति मना पारब्रहमु परमेसरु सरब कला जिनि धारी ॥ (249-3)
चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२॥ (133-15)
चेति रामु नाही जम पुरि जाहिगा जनु बिचरै अनराधा ॥१॥ रहाउ ॥ (93-5)
चेति सुचेत चित होइ रहु तउ लै परगासु उजारा ॥२॥ (339-12)
चेतु बसंतु भला भवर सुहावड़े ॥ (1107-15)
चेरी की सेवा करहि ठाकुरु नही दीसै ॥ (229-7)
चेरी तू रामु न करसि भतारा ॥ (655-8)
चेरी तै सुमति कहां ते पाई ॥ (655-11)
चेरी सकति जीति ले भवणु ॥ (1292-9)
चोआ चंदन अगर कपूरि ॥ (226-7)
चोआ चंदन देह फूलिआ ॥ (210-11)
चोआ चंदन मरदन अंगा ॥ (326-12)
चोआ चंदन सुगंध बिसथार ॥ (374-4)
चोआ चंदनु अंकि चड़ावउ ॥ (225-6)

चोआ चंदनु बहु घणा पाना नालि कपूरु ॥ (19-4)
चोआ चंदनु मरदन अंगा ॥ (325-14)
चोआ चंदनु लाईऐ कापड़ु रूपु सीगारु ॥ (63-17)
चोआ चंदनु सेज सुंदरि नारी ॥ (179-15)
चोजी मेरे गोविंदा चोजी मेरे पिआरिआ हरि प्रभु मेरा चोजी जीउ ॥ (174-9)
चोट सहारै सबद की तासु गुरू मै दास ॥१८३॥ (1374-7)
चोटै सेती जो मरै लगी सा परवाणु ॥ (1411-10)
चोर की निआई जम पुरि बाधा ॥६॥ (240-8)
चोर की हामा भरे न कोइ ॥ (662-5)
चोर जार जूआर ते बुरा ॥ (1145-12)
चोर जार जूआर पीड़े घाणीऐ ॥ (1288-2)
चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥ (466-2)
चोरा जारा रंडीआ कुटणीआ दीबाणु ॥ (790-1)
चोरी मिरगु अंगूरी खाइ ॥ (932-15)
चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥१॥ (662-5)
चोरु सलाहे चीतु न भीजै ॥ (662-4)
चोरु सुआलिउ चोरु सिआणा ॥ (662-6)
चोरै वांगू पकड़ीऐ बिनु नावै चोटा खाई ॥६॥ (425-17)
छंत ॥ (248-15)
छंत ॥ (455-13)
छंत ॥ (457-16)
छंत ॥ (459-6)
छंत ॥ (703-13)
छंत ॥ (845-3)
छंत ॥ (848-1)
छंत बिलावलु महला ४ मंगल (844-12)
छंतु ॥ (454-15)
छंतु ॥ (456-8)
छंतु ॥ (577-13)
छंतु ॥ (577-17)
छंतु ॥ (577-9)
छंतु ॥ (578-2)
छंतु ॥ (704-13)
छंतु ॥ (704-17)
छंतु ॥ (704-9)
छंतु ॥ (705-2)
छंतु ॥ (80-14)

छंतु ॥ (80-19)
छंतु ॥ (80-9)
छंतु ॥ (81-10)
छंतु ॥ (81-5)
छंतु ॥ (926-10)
छंतु ॥ (926-14)
छंतु ॥ (926-19)
छंतु ॥ (927-13)
छंतु ॥ (927-18)
छंतु ॥ (927-4)
छंतु ॥ (928-10)
छंतु ॥ (928-15)
छंतु ॥ (928-4)
छंतु ॥ (929-13)
छंतु ॥ (929-2)
छंतु ॥ (929-7)
छकि कि न रहहु छाडि कि न आसा ॥ (340-16)
छछा इहै छत्रपति पासा ॥ (340-16)
छछा छारु होत तेरे संता ॥ (254-19)
छछा छोहरे दास तुमारे ॥ (254-19)
छछै छाइआ वरती सभ अंतरि तेरा कीआ भरमु होआ ॥ (433-1)
छछै छीजहि अहिनिसि मूड़े किउ छूटहि जमि पाकड़िआ ॥२॥ (434-16)
छठि खटु चक्र छहूं दिस धाइ ॥ (343-13)
छडाइ लीओ महा बली ते अपने चरन पराति ॥ (681-2)
छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥ (134-17)
छडिओ हभु आपु लगड़ो चरणा पासि ॥ (709-11)
छतड़े बाजार सोहनि विचि वपारीए ॥ (965-10)
छतीह अम्रित जिनि भोजन दीए ॥ (913-12)
छतीह अम्रित परकार करहि बहु मैलु वधाई ॥ (1246-13)
छतीह अम्रित भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ ॥१॥ (16-13)
छतीह अम्रित भोजनु खाणा ॥ (100-5)
छतीह जुग गुबारु सा आपे गणत कीनी ॥ (949-16)
छत्र न पत्र न चउर न चावर बहती जात रिदै न बिचारहु ॥ (1388-1)
छत्रधार बादिसाहीआ विचि सहसे परीआ ॥१॥ (42-15)
छत्रु सिंघासनु पिरथमी गुर अरजुन कउ दे आइअउ ॥२॥२१॥९॥११॥१०॥१०॥२२॥६०॥१४३॥ (1409-18)
छनिछरवारि सउण सासत बीचारु ॥ (841-16)

छपड़ि ढूढै किआ होवै चिकड़ि डुबै हथु ॥५३॥ (1380-15)
छपन कोटि का पेहनु तेरा सोलह सहस इजारा ॥ (1167-15)
छपन कोटि जा के खेल खासी ॥१॥ (1161-5)
छपन कोटि जा कै प्रतिहार ॥ (1163-4)
छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥ (267-12)
छलं छिद्रं कोटि बिघनं अपराधं किलबिख मलं ॥ (1357-14)
छल नागनि सिउ मेरी टूटनि होई ॥ (1347-10)
छल बपुरी इह कउला डरपै अति डरपै धरम राइआ ॥३॥ (999-1)
छाइआ छूछी जगतु भुलाना ॥ (932-19)
छाइआ प्रभि छत्रपति कीन्ही सगली तपति बिनासी राम ॥ (781-18)
छाइआ रूपी साधु है जिनि तजिआ बादु बिबादु ॥२२८॥ (1376-17)
छाडि कतेब रामु भजु बउरे जुलम करत है भारी ॥ (477-18)
छाडि कुचरचा आन न जानहि ॥ (332-6)
छाडि चले हम कछू न लीआ ॥३॥ (1159-2)
छाडि छाडि सगली गई मूड़ तहा लपटाहि ॥ (254-4)
छाडि मन हरि बिमुखन को संगु ॥ (1253-10)
छाडि विडाणी ताति मूड़े ॥ (889-18)
छाडि सगल सिआणपा साध सरणी आउ ॥ (501-9)
छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ (190-8)
छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ (255-1)
छाडि सिआनप बहु चतुराई गुर का जपि मंतु निरमल ॥१॥ रहाउ ॥ (895-10)
छाडि सिआनप संजम नानक लागो गुर की चरणी ॥२॥९॥ (530-5)
छाडि सिआनप सगली मना ॥ (289-4)
छाणी खाकु बिभूत चड़ाई माइआ का मगु जोहै ॥ (1013-3)
छाती सीतल मनु तनु ठंढा ॥ (1080-13)
छाती सीतल मनु सुखी छंत गोबिद गुन गाइ ॥ (254-18)
छादन भोजन की आस न करई अचिंतु मिलै सो पाए ॥ (1013-10)
छादनु भोजनु न लैही सत भिखिआ मनहठि जनमु गवाइआ ॥ (513-11)
छादनु भोजनु मागतु भागै ॥ (879-12)
छापरु बांधि सवारै त्रिण को दुआरै पावकु जारै ॥१॥ (1205-11)
छारु की पुतरी परम गति पाई ॥ (255-2)
छाव घणी फूली बनराइ ॥ (1173-18)
छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ (12-16)
छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ (357-16)
छिअ जती माइआ के बंदा ॥ (1160-15)
छिअ दरसन की सोझी पाइ ॥४॥५॥ (878-1)
छिअ वरतारे वरतहि पूत ॥ (953-5)

छिजंत महा सुंदरी कांइआ काल कंनिआ ग्रासते ॥ (1359-13)
छिजै काइआ होइ परालु ॥ (1287-1)
छिजै न जाइ किछु भउ न बिआपे हरि धनु निरमलु गाठे ॥३॥ (382-6)
छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥ (537-9)
छिनु छिनु अउध घटै निसि बासुर ब्रिथा जातु है देह ॥१॥ रहाउ ॥ (902-8)
छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥१॥ रहाउ ॥ (726-15)
छिनु छिनु करि गइओ कालु तैसे जातु आजु है ॥२॥१॥ (1352-6)
छिनु छिनु तनु छीजै जरा जनावै ॥ (656-8)
छिवै कामु न पुछै जाति ॥ (137-18)
छीके पर तेरी बहुतु डीठि ॥ (1196-18)
छीजत डोरि दिनसु अरु रैनी जीअ को काजु न कीनो कछूआ ॥२॥ (206-15)
छीजै जोबनु जरूआ सिरि कालु ॥ (932-19)
छीजै देह खुलै इक गंढि ॥ (932-17)
छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला ॥ (486-3)
छीपे के जनमि काहे कउ आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1164-10)
छुटकी हउमै सोरो ॥ (1306-15)
छुटत परवाह अमिअ अमरा पद अम्रित सरोवर सद भरिआ ॥ (1396-16)
छुटहि संघार निमख किरपा ते कोटि ब्रहमंड उधारहि ॥१॥ रहाउ ॥ (1211-2)
छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥ (463-2)
छुटै ता कै बोलि साहिब नदरि जिसु ॥३॥ (729-17)
छुरी काढि लेवै हथि दाना ॥२॥ (201-4)
छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥ (471-17)
छूटत नही कोटि लख बाही ॥ (264-8)
छूटन को सहसा परिआ मन बउरा रे नाचिओ घर घर बारि ॥२॥ (336-2)
छूटन बिधि सुनी हां ॥ (409-17)
छूटनु हरि की सरणि लेखु नानक लेखिआ ॥४॥८॥११०॥ (398-11)
छूटरि ते गुरि कीई सोहागनि हरि पाइओ सुघड़ सुजानी ॥ (1210-11)
छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥ (266-2)
छूटसि प्राणी गुरमुखि दासा ॥१॥ रहाउ ॥ (412-3)
छूटि जाइ संसार ते राखै गोपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (815-8)
छूटे कूंडे भीगै पुरीआ चलिओ जुलाहो रीसाई ॥३॥ (335-5)
छूटै गुरमुखि दारू गुण गाइ ॥३॥ (832-5)
छूटै गुरमुखि साचु कमाइ ॥१४॥ (840-7)
छूटै गुरमुखि हरि गुर गिआनु ॥७॥ (416-11)
छूटै भरमु मिलै गोबिंद ॥ (344-1)
छूटै राम नामि दुखु सारा ॥ (1176-2)
छूटै संसा मिटि जाहि दुख ॥ (343-15)

छेआ नित देखहु जगि हंढि ॥ (932-18)
छेदि अह्मबुधि करुणा मै चिंत मेटि पुरख अनंत ॥३॥ (508-7)
छेरीं भरमै मुकति न होइ ॥ (839-12)
छैल लंघंदे पारि गोरी मनु धीरिआ ॥ (488-15)
छोछी नली तंतु नही निकसै नतर रही उरझाई ॥ (335-6)
छोडहि अंनु करहि पाखंड ॥ (873-4)
छोडहि नाही बाप न माऊ ॥ (392-10)
छोडहु कपटु होइ निरवैरा सो प्रभु संगि निहारे ॥ (1220-1)
छोडहु काम क्रोधु बुरिआई ॥ (1026-2)
छोडहु प्राणी कूड़ कबाड़ा ॥ (1025-19)
छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ ॥१॥ (598-4)
छोडि आन बिउहार मिथिआ भजु सदा भगवंत ॥१॥ रहाउ ॥ (501-4)
छोडि आपतु बादु अहंकारा मानु सोई जो होगु ॥१॥ (713-14)
छोडि उपाव एक टेक राखु ॥ (193-11)
छोडि कतेब करै सैतानी ॥ (1161-8)
छोडि कपटु नित हरि भजु बवरे ॥१॥ रहाउ ॥ (857-1)
छोडि खिआल दुनीआ के धंधे ॥ (1083-14)
छोडि गए बहु लोग भोग ॥१॥ (210-10)
छोडि चलिआ ता फिरि पछुताना ॥३॥ (740-4)
छोडि चलै त्रिसना नही बुझै ॥२॥ (188-14)
छोडि चिंत अचिंत होए बहुड़ि दूखु न पाइआ ॥ (547-15)
छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै ॥ (973-11)
छोडि छोडि रे बिखिआ के रसूआ ॥ (206-12)
छोडि जाइ खिन भीतरि ता कउ उआ कउ फिरि फिरि धावसि रे ॥१॥ (1000-13)
छोडि जाइ ताहू का जतनु ॥ (892-17)
छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥ (267-9)
छोडि जाहि जो सगल कउ फिरि फिरि लपटाउ ॥१॥ (745-18)
छोडि जाहि झूठे सभि धंधे ॥१॥ रहाउ ॥ (738-19)
छोडि जाहि तिन ही सिउ संगी साजन सिउ बैराना ॥३॥ (403-9)
छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ॥२॥ (715-5)
छोडि जाहि से करहि पराल ॥ (676-8)
छोडि न जाई सद ही संगे अनदिनु गुर मिलि गाए ॥१॥ रहाउ ॥ (533-14)
छोडि न जाई सरपर तारै ॥१॥ रहाउ ॥ (186-5)
छोडि पसारु ईहा रहु बपुरी कहु कबीर समझाई ॥४॥३॥५४॥ (335-6)
छोडि प्रपंचु प्रभ सिउ रचहु तजि कूड़े नेह ॥२॥ (812-15)
छोडि बहै तउ छूटै नाही ॥ (1019-14)
छोडि माइआ के धंध सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ (885-3)

छोडि मानु तजि गुमानु मिलि साधूआ कै संगि ॥ (1272-15)
छोडि मानु हरि चरन गहीजै ॥३॥ (186-6)
छोडि रामु की न भजहि खुदाइ ॥६॥ (1165-17)
छोडि वडाई अपणे खसम समावै ॥१॥ रहाउ ॥२६॥ (357-4)
छोडि सगल सिआणपा मिलि साध तिआगि गुमानु ॥ (1006-9)
छोडि सगल सिआणपा साचि सबदि लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (51-3)
छोडि सिआणप बहु चतुराई ॥ (891-9)
छोडि सिआणप सगल मनु तनु अरपि धरि ॥ (519-11)
छोडि सिआनप चातुरी दुरमति बुधि तिआगो राम ॥ (848-2)
छोडि सिआनप बहु चतुराई दुइ कर जोड़ि साध मगि चलु ॥ (717-6)
छोडि सिआनप बहु चतुराई साधू सरणी जाइ पाइ ॥ (1208-10)
छोडिआ जाइ न मूका ॥ (655-16)
छोडिहु निंदा ताति पराई ॥ (1026-1)
छोडीले पाखंडा ॥ (471-16)
जंगम जोध जती संनिआसी गुरि पूरै वीचारी ॥ (992-7)
जंजीर बांधि करि खरे कबीर ॥१॥ (1162-2)
जंत अपने कउ दीजहि हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ (867-8)
जंत उपाइ कालु सिरि जंता वसगति जुगति सबाई ॥ (597-8)
जंत उपाइ धंधै सभ लाए करमु होआ तिन नामु लइआ ॥३०॥ (434-5)
जंत उपाइ विचि पाइअनु करता अलगु अपारु ॥४९॥ (937-8)
जंत भेख तू सफलिओ दाता सिरि सिरि देवणहारो ॥ (764-12)
जंतु बिचारा किआ करै चले बजावनहार ॥१०३॥ (1369-18)
जउ अब की बार न जीवै गाइ ॥ (1166-11)
जउ कहहु मुखहु सेवक इह बैसीऐ सुख नानक अंतु न जानां ॥२॥२३॥४६॥ (1213-12)
जउ काढिओ तउ नदरि निहाल ॥ (899-6)
जउ किरपा गोबिंद भई ॥ (402-7)
जउ क्रिपालु गुरु पूरा भेटिआ तउ आनद सहजे ॥१॥ (214-14)
जउ गुरदेउ अठदस बिउहार ॥ (1167-5)
जउ गुरदेउ अठारह भार ॥ (1167-5)
जउ गुरदेउ ऊच पद बूझै ॥ (1166-18)
जउ गुरदेउ कंधु नही हिरै ॥ (1167-1)
जउ गुरदेउ त अकथ कहानी ॥ (1166-17)
जउ गुरदेउ त अठसठि नाइआ ॥ (1167-2)
जउ गुरदेउ त अम्रित देह ॥ (1166-17)
जउ गुरदेउ त अम्रित बानी ॥ (1166-16)
जउ गुरदेउ त उतरै पारि ॥ (1166-13)
जउ गुरदेउ त छापरि छाई ॥ (1167-2)

जउ गुरदेउ त जनमि न मरै ॥८॥ (1167-5)
जउ गुरदेउ त जम ते छूटै ॥ (1167-4)
जउ गुरदेउ त जीवत मरै ॥१॥ (1166-14)
जउ गुरदेउ त दुआदस सेवा ॥ (1167-3)
जउ गुरदेउ त नामु द्रिड़ावै ॥ (1166-15)
जउ गुरदेउ त बैकुंठ तरै ॥ (1166-14)
जउ गुरदेउ त भउजल तरै ॥ (1167-4)
जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि ॥ (1166-13)
जउ गुरदेउ त संसा टूटै ॥ (1167-4)
जउ गुरदेउ त सीसु अकासि ॥ (1166-18)
जउ गुरदेउ तनि चक्र लगाइआ ॥ (1167-3)
जउ गुरदेउ देहुरा फिरै ॥ (1167-1)
जउ गुरदेउ न दह दिस धावै ॥ (1166-15)
जउ गुरदेउ न मरिबो झूरि ॥२॥ (1166-16)
जउ गुरदेउ नामु जपि लेहि ॥३॥ (1166-17)
जउ गुरदेउ पंच ते दूरि ॥ (1166-16)
जउ गुरदेउ पर निंदा तिआगी ॥ (1166-19)
जउ गुरदेउ बुरा भला एक ॥ (1167-1)
जउ गुरदेउ भवन त्रै सूझै ॥ (1166-18)
जउ गुरदेउ लिलाटहि लेख ॥५॥ (1167-1)
जउ गुरदेउ सदा बैरागी ॥ (1166-19)
जउ गुरदेउ सदा साबासि ॥४॥ (1166-19)
जउ गुरदेउ सभै बिखु मेवा ॥७॥ (1167-3)
जउ गुरदेउ सिहज निकसाई ॥६॥ (1167-2)
जउ गुरमुखि राम नाम लिव लाई ॥ (259-11)
जउ ग्रिहि लालु रंगीओ आइआ तउ मै सभि सुख पाए ॥३॥ (1266-8)
जउ घट भीतरि है मलनां ॥१॥ रहाउ ॥ (656-4)
जउ छूटउ तउ जाइ पइआल ॥ (899-5)
जउ जमु आइ केस गहि पटकै ता दिन किछु न बसाहिगा ॥ (1106-8)
जउ जाचउ तउ केवल राम ॥ (1162-19)
जउ जानिआ तउ मनु मानिआ ॥२॥१०॥ (656-12)
जउ जानै मै कथनी करता ॥ (255-5)
जउ जानै हउ भगतु गिआनी ॥ (255-4)
जउ डर डरै त फिरि डरु लागै ॥ (341-6)
जउ त सभ सुख इत उत तुम बंछवहु गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु प्रानीअहु ॥१॥१३॥ (1400-15)
जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ (1412-2)
जउ ततु बिचारै कोई ॥१॥ (657-11)

जउ तनु कासी तजहि कबीरा रमईऐ कहा निहोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (692-6)
जउ तनु चीरहि अंगु न मोरउ ॥ (484-8)
जउ तुम अपने जन सौ कामु ॥१॥ रहाउ ॥ (331-14)
जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥ (658-17)
जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥१॥ (658-18)
जउ तुम तीरथ तउ हम जाती ॥२॥ (658-19)
जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥ (658-19)
जउ तुम्ह मो कउ दूरि करत हउ तउ तुम मुकति बतावहु ॥ (1104-1)
जउ त्रिभवण तन माहि समावा ॥ (341-10)
जउ दिनु रैनि तऊ लउ बजिओ मूरत घरी पलो ॥ (1203-9)
जउ दिल महि कपटु निवाज गुजारहु किआ हज काबै जाइआ ॥३॥ (1350-9)
जउ देखउ तउ सगल मोहि मोहीअउ तउ सरनि परिओ गुर भागि ॥ (701-3)
जउ देखै छिद्रु तउ निंदकु उमाहै भलो देखि दुख भरीऐ ॥ (823-7)
जउ निरधनु सरधन कै जाइ ॥ (1159-4)
जउ पै रसना रामु न कहिबो ॥ (325-1)
जउ पै राम राम रति नाही ॥ (324-9)
जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥ (93-16)
जउ प्रभ जीउ दइआल होइ तउ भगती लागउ ॥ (808-10)
जउ प्रिअ बचन कहे धन साचे ॥ (1073-5)
जउ भइओ क्रिपालु ता साधसंगु पाइआ जन नानक ब्रहमु धिआइओ ॥८॥१॥ (1017-7)
जउ भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु तउ गुर मिलि सभ सुख लाधे ॥ (403-2)
जउ मागहि तउ मागहि बीआ ॥ (258-18)
जउ मिलीऐ तउ वधै वधेरी ॥ (392-7)
जउ मिलै त घाल अघाई ॥ (655-12)
जउ मै अपुना सतिगुरु धिआइआ ॥ (390-5)
जउ मै अपुना साहिबु चीति ॥ (390-7)
जउ मै ओट गही प्रभ तेरी ॥ (390-7)
जउ मै कीओ सगल सीगारा ॥ (373-11)
जउ मै रूप कीए बहुतेरे अब फुनि रूपु न होई ॥ (482-19)
जउ रे खुदाइ मोहि तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई ॥२॥ (477-17)
जउ लउ पोट उठाई चलिअउ तउ लउ डान भरे ॥ (214-17)
जउ लउ भाउ अभाउ इहु मानै तउ लउ मिलणु दूराई ॥ (609-4)
जउ लउ मेरो मेरो करतो तउ लउ बिखु घेरे ॥ (214-16)
जउ लउ रिदै नही परगासा तउ लउ अंध अंधारा ॥१॥ (1205-17)
जउ लउ हउ किछु सोचउ चितवउ तउ लउ दुखनु भरे ॥ (214-14)
जउ लगु जीउ पराण सचु धिआईऐ ॥ (422-1)
जउ लगु प्रान तऊ लगु संगे ॥ (872-4)

जउ संचै तउ भउ मन माही ॥ (1019-14)
जउ सभ घटि प्रभू निवास ॥ (1304-9)
जउ सभ महि एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै ॥१॥ (1350-5)
जउ सरधनु निरधन कै जाइ ॥ (1159-5)
जउ सहज न मिलिओ सोई ॥१॥ (655-18)
जउ साधसंग पाए ॥ (1229-13)
जउ साधू करु मसतकि धरिओ तब हम मुकत भए ॥२॥ (214-15)
जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥ (1427-17)
जउ सुप्रसंन भए गुर पूरे तब मेरी आस पुनी ॥१॥ रहाउ ॥ (829-18)
जउ सुप्रसंन भए प्रभ ठाकुर सभु आनद रूपु दिखाइओ ॥३॥ (209-11)
जउ सुप्रसंन होइओ प्रभु मेरा ॥ (388-12)
जउ सुरिजनु ग्रिह भीतरि आइओ तब मुखु काजि लजो ॥१॥ (1203-7)
जउ हउ बउरा तउ राम तोरा ॥ (1158-16)
जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥ (658-3)
जउ हरि बुधि रिधि सिधि चाहत गुरू गुरू गुरु करु मन मेरे ॥५॥९॥ (1400-3)
जउ होइ क्रिपाल त सतिगुरु मेलै सभि सुख हरि के नाए ॥ (213-2)
जउ होइ क्रिपालु दीन दुख भंजन जम ते होवै धरम राइ ॥१॥ (1208-11)
जउ होइ दैआलु सतिगुरु अपुना ता इह मति बुधि पाईऐ ॥१॥ (213-5)
जगंनाथ जगजीवन माधो ॥ (897-2)
जगंनाथ जगदीस गुसाई करि किरपा साधु मिलावै ॥ (1178-8)
जगंनाथ जगदीसर करते अपर्मपर पुरखु अतोलु ॥ (1317-15)
जगंनाथ जगदीसुर करते सभ वसगति है हरि केरी ॥ (170-18)
जगंनाथ सभि जंत्र उपाए नकि खीनी सभ नथहारे ॥ (981-11)
जगंनाथ सिउ गोसटि करै ॥७॥ (974-16)
जगंनाथि किरपा प्रभि धारी मति गुरमति नाम बने ॥१॥ रहाउ ॥ (976-13)
जगंनाथु गोपालु मुखि भणी ॥ (1082-18)
जग अउरु न याहि महा तम मै अवतारु उजागरु आनि कीअउ ॥ (1409-3)
जग इसनान ताप थान खंडे किआ इहु जंतु विचारा ॥१॥ (673-13)
जग झूठे कउ साचु जानि कै ता सिउ रुच उपजाई ॥ (718-7)
जग महि आइआ सो परवाणु ॥ (198-1)
जग महि आइआ सो परवाणु ॥ (867-3)
जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ ॥१॥ (517-17)
जग महि कोई रहणु न पाए निहचलु एकु नाराइणा ॥१॥ (1077-18)
जग महि बकते दूधाधारी ॥ (873-5)
जग महि राम नामु हरि निरमला होरु मैला सभु आकारु ॥ (1091-16)
जग महि लाहा एकु नामु पाईऐ गुर वीचारि ॥६॥ (55-3)
जग महि लाहा हरि नामु है भाई हिरदै रखिआ उर धारि ॥३॥ (603-8)

जग महि वरतै आपि हरि सेती प्रीति करि ॥१५॥ (790-15)
जग महि विरले केई केइ ॥३॥ (867-11)
जग महि स्रेसटु ऊतम कामु ॥ (998-10)
जग मोहनी हम तिआगि गवाई ॥ (392-8)
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥ (1427-16)
जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥ (1429-2)
जग सिउ झूठ प्रीति मनु बेधिआ जन सिउ वादु रचाई ॥ (596-5)
जग सिउ तूटी झूठ परीति ॥१॥ (1187-7)
जगजीवन अपरंपर सुआमी जगदीसुर पुरख बिधाते ॥ (169-4)
जगजीवन अबिनासी ठाकुर घट घट वासी है संगा ॥२॥ (1082-7)
जगजीवन जुगति न मिलै काइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1168-10)
जगजीवन दाता जन सेवक तेरे तिन के तै दूख निवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (796-16)
जगजीवन नामु तुमारा ॥ (625-4)
जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥ (134-6)
जगजीवन पुरखु साधसंगि पाइआ ॥ (743-8)
जगजीवन प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (655-8)
जगजीवन सिउ आपि चितु लाए ॥ (1173-8)
जगजीवन सिउ जीउ समानां ॥२॥१॥ (858-2)
जगजीवनु जगंनाथु जल थल महि रहिआ पूरि बहु बिधि बरनं ॥ (1402-8)
जगजीवनु जगजीवनु दाता गुर मेलि समाणी राम ॥ (572-18)
जगजीवनु दाता अंति सखाई ॥ (1154-15)
जगजीवनु दाता करमि बिधाता आपे बखसे सोई ॥ (570-11)
जगजीवनु दाता पाइआ ॥ (622-12)
जगजीवनु दाता पाइआ ॥६॥ (466-10)
जगजीवनु दाता पुरखु बिधाता सहजि मिले बनवारी ॥ (1112-5)
जगजीवनु दाता हरि मनि राता सहजि मिलै मेलाइआ ॥ (437-17)
जगजीवनु धिआइ मनि हरि सिमरी ॥ (1134-7)
जगजीवनु साचा एको दाता ॥ (1045-19)
जगजीवनु सेवि जुग चारे जाता ॥ (159-13)
जगजीवनु हरि धिआइ तरणे ॥ (1135-14)
जगत उधारण सेई आए जो जन दरस पिआसा ॥ (207-16)
जगत उधारणु नव निधानु भगतह भव तारणु ॥ (1397-17)
जगत उधारणु नामु सतिगुर तुठै पाइअउ ॥ (1408-9)
जगत उधारन नाम प्रिअ तेरै ॥ (1304-13)
जगत उधारन साध प्रभ तिन्ह लागहु पाल ॥ (811-1)
जगत पास ते लेते दानु ॥ (865-9)
जगत पिता मेरै मनि भाइआ ॥३॥ (476-11)

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥ (536-15)
जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है ॥१॥ रहाउ ॥ (1352-4)
जगतु अगिआनी अंधु है दूजै भाइ करम कमाइ ॥ (593-7)
जगतु उधारन संत तुमारे दरसनु पेखत रहे अघाइ ॥२॥ (373-3)
जगतु उपाइ खेलु रचाइआ ॥ (1031-9)
जगतु उपाइ तुधु धंधै लाइआ भूंडी कार कमाई ॥ (1155-10)
जगतु जलंदा डिठु मै हउमै दूजै भाइ ॥ (651-10)
जगतु जलंदा देखि कै भजि पए सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ (424-12)
जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥ (853-11)
जगतु पसू अहं कालु कसाई ॥ (932-3)
जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥ (1428-12)
जगतु मुसै अम्रितु लुटीऐ मनमुख बूझ न पाइ ॥ (1282-3)
जगदीस ईस गोपाल माधो गुण गोविंद वीचारीऐ ॥ (925-3)
जगदीस सेवउ मै अवरु न काजा ॥ (798-10)
जगदीसुर चरन सरन जो आए ते जन भव निधि पारि परे ॥ (1321-10)
जगदीसुर हरि जीउ असुर संघारे ॥ (1082-7)
जगन करै बहु भार अफारी ॥ (224-14)
जगन होम पुंन तप पूजा देह दुखी नित दूख सहै ॥ (1127-10)
जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते हरि पाइआ ॥१॥ (923-4)
जगि गिआनी विरला आचारी ॥ (413-1)
जगि चतुरु सिआणा भरमि भुलाणा नाउ पंडित पड़हि गावारी ॥ (1015-19)
जगि जनम मरणु भगा इह आई हीऐ परतीति ॥ (1402-2)
जगि जीवनु ऐसा सुपने जैसा जीवनु सुपन समानं ॥ (482-15)
जगि दाता सोइ भगति वछलु तिहु लोइ जीउ ॥ (923-2)
जगि पंडितु विरला वीचारी ॥ (413-2)
जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥ (447-7)
जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥२॥ (447-10)
जगि सुक्रितु कीरति नामु है मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरति हरि मनि धारे राम ॥ (539-5)
जगि हउमै मैलु दुखु पाइआ मलु लागी दूजै भाइ ॥ (39-6)
जगु उपजै बिनसै पति खोइ ॥ (413-3)
जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥ (447-15)
जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥४॥६॥१३॥ (447-19)
जगु ऐसा मोहि गुरहि दिखाइओ तउ सरणि परिओ तजि गरबसूआ ॥ (206-16)
जगु कऊआ नामु नही चीति ॥ (1187-7)
जगु कऊआ मुखि चुंच गिआनु ॥ (832-14)
जगु करड़ा मनमुखु गावारु ॥ (943-6)
जगु खोटौ सचु निरमलौ गुर सबदीं वीचारि ॥ (1331-7)

जगु जितउ सतिगुर प्रमाणि मनि एकु धिआयउ ॥ (1397-10)
जगु जीतउ गुर दुआरि खेलहि समत सारि रथु उनमनि लिव राखि निरंकारि ॥ (1391-4)
जगु जीतो हो हो गुर किरपाधि ॥१॥ रहाउ ॥ (1304-6)
जगु तिस की छाइआ जिसु बापु न माइआ ॥ (1038-14)
जगु त्रिअ जितु कामणि हितकारी ॥ (412-5)
जगु दुखीआ सुखीआ जनु कोइ ॥ (413-2)
जगु परबोधहि मड़ी बधावहि ॥ (903-6)
जगु बंदी मुकते हउ मारी ॥ (413-1)
जगु बिनसत हम देखिआ लोभे अहंकारा ॥ (228-15)
जगु मैला मैलो होइ जाइ ॥ (664-14)
जगु मोहि बाधा बहुती आसा ॥ (412-4)
जगु रोगी कह देखि दिखाउ ॥ (1189-7)
जगु रोगी भोगी गुण रोइ ॥ (413-3)
जगु सुपना बाजी बनी खिन महि खेलु खेलाइ ॥ (18-8)
जगु सूता मरि आवै जाइ ॥ (904-7)
जजा जउ तन जीवत जरावै ॥ (340-17)
जजा जानै हउ कछु हूआ ॥ (255-3)
जजि काजि परथाइ सुहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (370-19)
जजि काजि वीआहि सुहावै ओथै मासु समाणा ॥ (1290-5)
जजै जानु मंगत जनु जाचै लख चउरासीह भीख भविआ ॥ (433-2)
जजै जोति हिरि लई तेरी मूड़े अंति गइआ पछुतावहिगा ॥ (434-18)
जटा धारि धारि जोगी मूए तेरी गति इनहि न पाई ॥२॥ (654-7)
जटा बिकट बिकराल सरूपी रूपु न रेखिआ काई हे ॥५॥ (1021-16)
जटा भसम लेपन कीआ कहा गुफा महि बासु ॥ (1103-7)
जटा मुकटु तनि भसम लगाई बसत्र छोडि तनि नगनु भइआ ॥ (1127-15)
जटाधारि किआ कमावै जोगु ॥ (1169-5)
जड़ि नाम रतनु गोविंद पाइआ हरि मिले हरि गुण सुख घणे ॥ (576-4)
जड़ि हरि हरि नामु रतंना राम ॥ (576-3)
जणी लखावहु असंत पापी सणि ॥३॥ (486-13)
जत कत तुम्ह भरपूर हहु मेरे दीन दइआली ॥३॥ (811-7)
जत कत देखउ आपि दइआल ॥ (887-10)
जत कत देखउ तत तत तुम ही मोहि इहु बिसुआसु होइ आइओ ॥ (205-8)
जत कत देखउ तत रहिआ समाइ ॥ (193-15)
जत कत देखउ तुम प्रतिपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (914-13)
जत कत देखउ तेरा वासा ॥ (1157-2)
जत कत देखउ तेरी सरणा ॥ (1023-9)
जत कत देखीऐ तत तत तोही ॥ (913-17)

जत कत पूरि रहिओ परमेसरु कत आवै कत जाई ॥२॥ (615-8)
जत कत पेखउ एकै ओही ॥ (387-16)
जत कत पेखउ तत तत साथै ॥ (535-13)
जत कत पेखउ तत तत सोइ ॥ (1150-16)
जत कत पेखउ तुमरी सरना ॥१॥ (1303-6)
जत कत पेखउ तेरी सरणा ॥ (1149-14)
जत कत पेखउ प्रभ सुख सागर ॥ (1080-12)
जत कत पेखउ साधू सरणा ॥ (563-13)
जत कत पेखउ हरि संगि सहाई ॥१॥ (742-5)
जत कतह ततह द्रिसटं स्वरग मरत पयाल लोकह ॥ (1357-4)
जत कता तत पेखीऐ हरि पुरख पति परधान ॥ (1322-6)
जत जत जाईऐ तत द्रिसटाए ॥१॥ रहाउ ॥ (803-11)
जत जत देखउ तत तत तुम ही अवरु न दुतीआ गाइआ ॥३॥ (1040-17)
जत जत देखउ बहुरि न पेखउ संगि माइआ लपटाना ॥१॥ रहाउ ॥ (338-8)
जत देखउ तत दुख की रासी ॥ (710-17)
जत पेखउ तत अंतरजामी ॥३॥ (331-8)
जतन करउ इहु मनु नही धीरै कोऊ है रे संतु मिलाई ॥१॥ (1207-1)
जतन करउ उरझाइ परेवै ॥१॥ रहाउ ॥ (371-7)
जतन करै तउ भी सुर भंग ॥ (267-16)
जतन करै बिंदु किवै न रहाई ॥ (906-1)
जतन करै मानुख डहकावै ओहु अंतरजामी जानै ॥ (680-3)
जतन जतन अनिक उपाव रे तउ मिलिओ जउ किरपाई ॥ (1307-12)
जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥ (1428-11)
जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥ (1428-5)
जतन भांतन तपन भ्रमन अनिक कथन कथते नही थाह पाई ठाउ ॥ (1306-1)
जतन माइआ के कामि न आए ॥ (1312-2)
जति जात जात जात सदा सदा सदा सदा काल हई ॥१॥ (1308-3)
जति पति सचु सचा सचु सोई हउमै मारि मिलाइदा ॥९॥ (1061-6)
जति मेरी पति मेरी धनु हरि नामु ॥ (742-5)
जती सती कह राखहि पाउ ॥१॥ (349-18)
जती सती केते बनवासी अंतु न कोई पाइदा ॥३॥ (1034-12)
जती सती प्रभु निरमला मेरे हरि भगवंता ॥ (1095-14)
जती सती संतोखी आपे आपे कार कमाई हे ॥१॥ (1021-11)
जती सती संतोखी धिआइआ मुखि इंद्रादिक रविआ ॥ (995-12)
जती सती संनिआसीआ सभि कालै वासी ॥ (1100-17)
जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥ (469-3)
जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ (8-8)

जतु संजम तीरथ ओना जुगा का धरमु है कलि महि कीरति हरि नामा ॥२॥ (797-18)
जतु सतु चावल दइआ कणक करि प्रापति पाती धानु ॥ (1329-8)
जतु सतु तपु पवितु सरीरा हरि हरि मंनि वसाए ॥ (31-6)
जतु सतु तीरथु मजनु नामि ॥ (153-12)
जतु सतु संजमु कथहि गिआना ॥ (1043-12)
जतु सतु संजमु करम कमावै बिनु गुर गति नही पाई ॥ (571-16)
जतु सतु संजमु जि सचु कमावै ॥ (1067-14)
जतु सतु संजमु नामु है विणु नावै निरमलु न होइ ॥ (33-5)
जतु सतु संजमु रिदै समाए ॥ (686-2)
जतु सतु संजमु सचु कमावै गुरि पूरै नामु धिआवणिआ ॥३॥ (129-10)
जतु सतु संजमु सचु सुचीतु ॥ (903-17)
जतु सतु संजमु सरणि मुरारी ॥ (1037-9)
जतु सतु संजमु साचु द्रिड़ाइआ साच सबदि रसि लीणा ॥१॥ (907-5)
जतु सतु संजमु सीलु न राखिआ प्रेत पिंजर महि कासटु भइआ ॥ (906-10)
जत्र जाउ तत बीठलु भैला ॥ (485-8)
जथ कथ रमणं सरणं सरबत्र जीअणह ॥ (1361-3)
जदहु आपे थाटु कीआ बहि करतै तदहु पुछि न सेवकु बीआ ॥ (551-6)
जदहु सीआ वीआहीआ लाड़े सोहनि पासि ॥ (417-4)
जन अपने कै हरि मनि बसै ॥३॥ (1146-5)
जन आवन का इहै सुआउ ॥ (295-1)
जन उबरे निंदक नरकि पाइआ ॥६॥ (869-16)
जन ऊपरि किरपा प्रभि धारी मिलि सतिगुर पारि परा ॥१॥ रहाउ ॥ (799-13)
जन ऊपरि प्रभ भए दइआल ॥ (183-19)
जन कउ आपि अनुग्रहु कीआ हरि अंगीकारु करे ॥ (995-9)
जन कउ क्रिपा करहु जगजीवन जन नानक पैज सवारी ॥४॥१॥ (667-1)
जन कउ क्रिपा करहु मधसूदन हरि देवहु नामु जपाइआ ॥ (1319-9)
जन कउ जनु मिलि सोभा पावै गुण महि गुण परगासा ॥ (1191-17)
जन कउ दूखि पचै दुखु होई ॥९॥ (225-2)
जन कउ नामु वडाई सोभ ॥ (680-8)
जन कउ पहुचि न सकसि कोइ ॥३॥ (1183-15)
जन कउ प्रभ अपने का ताणु ॥ (677-10)
जन कउ प्रभु होइओ दइआलु ॥ (289-16)
जन कउ प्रीति लगी गुर सेती जिउ चकवी देखि सूरीजै ॥ (1326-3)
जन कउ राम नामु आधारा हरि नामु जपत हरि नामे सोहै ॥२॥ (492-18)
जन कबीर कउ निंदा सारु ॥ (339-6)
जन का आपि सहाई होआ निंदक भागे हारि ॥ (674-15)
जन का दरसु बांछै दिन राती होइ पुनीत धरम राइ जाम ॥१॥ (1151-9)

जन का नामु अधारु है प्रभ सरणी पाहि ॥ (812-18)
जन का रखवाला आपि सोइ ॥ (1183-15)
जन का राखा आपि सुआमी बेमुख कउ आइ पहूची मीच ॥१॥ रहाउ ॥ (1224-16)
जन का राखा सोई ॥३॥ (896-11)
जन का संगु पाईऐ वडभागी नानक संतन कै कुरबान ॥२॥४१॥६४॥ (1217-1)
जन का सफल दरसु डीठा ॥ (898-11)
जन का सेवकु सो वडभागी ॥ (285-4)
जन की उपमा तुझहि वडईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (166-1)
जन की उसतति है राम नामा दह दिसि सोभा पाई ॥ (1191-16)
जन की कीनी आपि सहाइ ॥ (202-1)
जन की कीनी पारब्रहमि सार ॥ (683-4)
जन की टहल स्मभाखनु जन सिउ ऊठनु बैठनु जन कै संगा ॥ (828-9)
जन की टेक एक गोपाल ॥ (184-1)
जन की टेक हरि नामु टिकईआ ॥ (834-14)
जन की टेक हरि नामु हरि बिनु नावै ठवर न ठाउ ॥ (1416-1)
जन की धूरि कीओ मजनु नानक जनम जनम के हरे कलंगा ॥२॥४॥१२०॥ (828-11)
जन की धूरि देहु किरपा निधि नानक कै सुखु एही ॥२॥४॥३५॥ (680-2)
जन की धूरि मन मीठ खटानी ॥ (199-19)
जन की निंदा करै न कोइ ॥ (869-14)
जन की पैज रखी करतारे ॥१॥ (201-7)
जन की पैज रखै राम नामा प्रहिलाद उधारि तराए ॥ (443-16)
जन की पैज सवारी आप ॥ (500-16)
जन की भूख तेरा नामु अहारु ॥ (743-15)
जन की महिमा कथी न जाइ ॥ (193-7)
जन की महिमा केतक बरनउ जो प्रभ अपने भाणे ॥ (748-6)
जन की महिमा बरनि न साकउ ओइ ऊतम हरि हरि केन ॥३॥ (1295-1)
जन की सेवा ऊतम कामा ॥२॥ (164-7)
जन के चरन वसहि मेरै हीअरै संगि पुनीता देही ॥ (680-2)
जन के तुम्ह हरि राखे सुआमी तुम्ह जुगि जुगि जन रखिआ ॥ (1319-14)
जन के पूरन होए काम ॥ (682-8)
जन के पूरि मनोरथ हरि प्रभ हरि नामु देवहु हरि लंञु ॥ (1179-18)
जन के सास सास है जेते हरि बिरहि प्रभू हरि बीधे ॥ (1179-1)
जन कै रिद अंतरि प्रभु सुआमी जन हरि हरि नामु भजथई ॥ (1320-10)
जन कै संगि एक लिव लागी ॥ (285-4)
जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥ (295-1)
जन कै संगि निहालु पापा मैलु धोइ ॥ (519-6)
जन को प्रभु संगे असनेहु ॥ (1307-17)

जन गरीब को जोरु न पहुचै कहा करउ रघुराइआ ॥१॥ (1161-15)
जन चर रज मुखि माथै लागी आसा पूरन अनंत तरंगा ॥१॥ (828-10)
जन चरन कमल सिउ लागो मना ॥३॥ (198-13)
जन चाखि अघाणे हरि हरि अम्रितु मीठा राम ॥ (577-18)
जन जपिओ नामु निरंजनु नरहरि उपदेसि गुरू हरि प्रीधे ॥ (1179-2)
जन जीवना सतसंगि ॥ (838-14)
जन तेरा जसु गावहि हरि हरि प्रभ हरि जपिओ जगंनथई ॥ (1320-12)
जन त्राहि त्राहि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए गुर नानक हरि रखवाले राम ॥३॥ (539-1)
जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥ (284-6)
जन देहु मती उपदेसु विचहु भरमु जाइ ॥ (1425-10)
जन नानक अंगु कीआ प्रभि करतै जा कै कोटि ऐसी दासाइ ॥२॥१२॥२१॥ (500-7)
जन नानक अंति वार नामु गहणा ॥४॥१८॥ (375-16)
जन नानक अनदिनु नामु जपहु हरि संतहु इहु छूटण का साचा भरवासा ॥४॥२॥ (860-13)
जन नानक अनदिनु नामु धिआइआ हरि सिमरत किलविख पाप गइआ ॥२॥ (307-9)
जन नानक अपड़ि न साकै कोइ ॥४॥४॥१७॥ (1140-1)
जन नानक अम्रितु पीआ गुरमती धनु धंनु धनु धंनु धंनु गुरू साबीस ॥२॥२॥८॥ (1297-2)
जन नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देहि दिखालि ॥१॥ (1318-11)
जन नानक आपि मिलाए सोई हरि मिलसी अवर सभ तिआगि ओहा हरि भानी ॥२॥५॥११॥ (669-17)
जन नानक आपे आपि सभु वरतै करि क्रिपा आपि निसतारे ॥८॥४॥ (982-15)
जन नानक आपे आपि सभु वरतै जिउ राखै तिवै रहंदे ॥४॥६॥ (800-16)
जन नानक आवै न जावै कोइ ॥४॥३॥१६॥ (1139-14)
जन नानक इकना गुरु मेलि सुखु देवै इकि आपे वखि कढै ठगवाले ॥१॥ (305-4)
जन नानक इकु अधारु हरि प्रभ इकस ते गति पति ॥२॥ (1315-17)
जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥२॥१॥ (219-4)
जन नानक उतम पदु पाइआ सतिगुर की लिव लाइ ॥४॥२॥६६॥ (40-11)
जन नानक उरि हरि अम्रितु धारे ॥४॥२॥ (1172-16)
जन नानक एकु धिआइआ ॥ (625-13)
जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ॥४॥१३॥२०॥ (451-14)
जन नानक ओड़ि तुहारी परिओ आइओ सरणागिओ ॥ (215-4)
जन नानक कंउ हरि नामु हरि गुरि दीआ हरि हलति पलति सदा करे निसतारा ॥१५॥ (592-7)
जन नानक कंतु रंगीला पाइआ फिरि दूखु न लागै आए ॥४॥१॥ (1266-10)
जन नानक कउ इहु दानु देहु प्रभ पावउ संत रेन उरि धारी ॥ (401-16)
जन नानक कउ किरपा भई हरि की किरपा भई जगदीसुर किरपा भई ॥ (1201-14)
जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी जपि हरि भवजलु तरना ॥२॥६॥१२॥ (670-3)
जन नानक कउ गुरि किरपा धारी प्रभि हाथ देइ निसतारे ॥४॥६॥ (738-9)
जन नानक कउ गुरि किरपा धारी सभु अकुल निरंजनु डीठा ॥४॥१॥१२॥ (612-5)
जन नानक कउ गुरि किरपा धारी हरि नामु दीओ खिन दान ॥४॥१॥ (1335-12)

जन नानक कउ गुरि हाथु सिरि धरिओ हरि राम नामि रवि रहे ॥४॥४॥ (1336-13)
जन नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सुखि सहजे अनद बिहावा ॥२॥१६॥३९॥ (1212-4)
जन नानक कउ दइआ प्रभ धारहु लदि वाखरु हरि हरि लेन ॥४॥२॥ (1295-2)
जन नानक कउ दइआ प्रभ धारहु हम सेवह तुम जन पगे ॥४॥४॥ (976-12)
जन नानक कउ प्रभ किरपा करीऐ ॥ (804-14)
जन नानक कउ प्रभ किरपा कीजै करि दासनि दास दसाकी ॥४॥६॥ (668-13)
जन नानक कउ प्रभि किरपा धारी बिखु डुबदा काढि लइआ ॥४॥६॥ (1265-1)
जन नानक कउ मति हरि प्रभि दीनी हरि देखि निकटि हदूरि निहाल निहाल निहाल निहाल ॥२॥३॥९॥ (978-4)
जन नानक कउ सभ सोझी पाई हरि दर कीआ बाता आखि सुणाए ॥१॥ (308-14)
जन नानक कउ हरि किरपा धारी गुर बचन धिआइओ घरी मीक ॥४॥३॥ (1336-6)
जन नानक कउ हरि किरपा धारी मति गुरमति नामु द्रिड़ावै ॥४॥१२॥२६॥६४॥ (172-17)
जन नानक कउ हरि क्रिपा करि दीजै सद बसहि रिदै मोहि हरि चरानै ॥४॥५॥ (1320-19)
जन नानक कउ हरि क्रिपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥१॥ (451-7)
जन नानक कउ हरि दइआल होहु सुआमी हरि संतन की धूरि करि हरे ॥२॥१॥२॥ (1119-1)
जन नानक कउ हरि दरसु दिखाइआ ॥ (375-3)
जन नानक कउ हरि दानु इकु दीजै नित बसहि रिदै हरी मोहि चरना ॥४॥३॥ (861-2)
जन नानक कउ हरि बखसि लै मेरे सुआमी सरणागति पइआ अजाणु ॥४॥४॥१५॥२४॥ (736-8)
जन नानक कउ हरि बखसि लैहु हरि तुठै मेलि मिलाह ॥ (1314-17)
जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा ॥२॥ (450-1)
जन नानक कउ हरि भेटे सुआमी दुखु हउमै रोगु गवाइओ ॥२॥२॥ (719-10)
जन नानक कउ हरि मेलि जन तिन वेखि वेखि हम जीवाहि ॥१॥ (310-5)
जन नानक करमी पाईअनि हरि नामा भगति भंडार ॥४॥२॥१६॥३६॥ (162-16)
जन नानक करे कराइआ सभु को जिउ भावै तिव हरि गुणतासु ॥२॥ (949-15)
जन नानक कहिआ ततु बीचारि ॥४॥४१॥५४॥ (1152-5)
जन नानक का अंगु कीआ मेरै राम राइ दुसमन दूख गए सभि भगे ॥२॥६॥१३॥ (1202-9)
जन नानक का खसमु वडा है सभना दा धणीऐ ॥३०॥ (316-10)
जन नानक का हरि धड़ा धरमु सभ स्रिसटि जिणि आवै ॥५॥२॥५४॥ (366-10)
जन नानक किरपा धारि प्रभ सतिगुर सुखि वसंनि ॥१॥ (301-16)
जन नानक किस नो आखि सुणाईऐ जा करदे सभि कराइआ ॥२॥ (513-12)
जन नानक की आस तू जाणहि हरि दरसनु देखि हरि दरसनि त्रिपताई ॥४॥१॥ (860-2)
जन नानक की पति राखु मेरे सुआमी हरि आइ परिओ है सरणि तुमारी ॥२॥३॥९॥ (669-8)
जन नानक की परमेसरि सुणी अरदासि ॥ (1137-18)
जन नानक की लज पाति गुरू है सिरु बेचिओ सतिगुर आगे ॥५॥१०॥२४॥६२॥ (172-5)
जन नानक की सरधा पूरहु ठाकुर भगत तेरे नमसकारे ॥२॥९॥४०॥ (681-1)
जन नानक की हरि आस पुजावहु हरि दरसनि सांति सरीर ॥४॥६॥ छका १॥ (862-2)
जन नानक की हरि पूरन आसा ॥४॥२॥७१॥ (176-10)

जन नानक कीता नामु धर होरु छोडिआ धंधा ॥४॥१॥१०३॥ (396-16)
जन नानक के गुरसिख पुतहहु हरि जपिअहु हरि निसतारिआ ॥२॥ (312-2)
जन नानक के दइआल प्रभ सुआमी तुम दुसट तारे हरणखे ॥४॥३॥ (976-6)
जन नानक के प्रभ अंतरजामी हरि लावहु मनूआ पेल ॥४॥९॥६१॥ (368-5)
जन नानक के प्रभ आइ मिलु हम गावह हरि गुण छंत ॥१॥ (1315-10)
जन नानक के प्रभ करते सुआमी जिउ भावै तिवै बुलैनी ॥४॥५॥ (800-10)
जन नानक के प्रभ तू धणी जिउ भावै तिवै चलाइ ॥२॥ (303-7)
जन नानक के प्रभ पुरख बिधाते मेरे ठाकुर अगह अतोला ॥२॥१३॥३६॥ (1211-12)
जन नानक के प्रभ राखे सुआमी हम पाथर रखु बुडथई ॥४॥४॥ (1320-12)
जन नानक के प्रभ सुंदर सुआमी मोहि तुम सरि अवरु न लागे ॥२॥१॥ (527-6)
जन नानक के सखा हरि भाई मात पिता बंधप हरि साक ॥४॥४॥ (1295-15)
जन नानक कै मनि अनदु होत है हरि दरसनु निमख दिखाई ॥२॥३९॥१३॥१५॥६७॥ (370-1)
जन नानक कै वलि होआ मेरा सुआमी हरि सजण पुरखु सुजानु ॥ (854-1)
जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुखि होइ पछाना ॥२॥२॥ (685-2)
जन नानक कोटन मै कोऊ भजनु राम को पावै ॥२॥३॥ (219-11)
जन नानक गुर के लाले गोले लगि संगति करूआ मीठा ॥४॥९॥२३॥६१॥ (171-17)
जन नानक गुर मिलि उबरे मेरी जिंदुड़ीए हरि जपि हरि नामि समाणे राम ॥१॥ (540-13)
जन नानक गुरमुख नेड़ि न आवा ॥४॥१॥ (370-11)
जन नानक गुरमुखि उबरे गुर सबदी हउमै छुटीआ ॥१॥ (776-16)
जन नानक गुरमुखि उबरे जपि हरि हरि परमानादु ॥१॥ (301-6)
जन नानक गुरमुखि जगतु तरिओ ॥८॥१॥१३॥ (241-13)
जन नानक गुरमुखि जो नरु खेलै सो जिणि बाजी घरि आइआ ॥४॥१॥१९॥ (1185-15)
जन नानक गुरमुखि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हाजरु नदरी आईऐ राम ॥१॥ (541-8)
जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥१॥५३॥ (365-18)
जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥ (12-2)
जन नानक गुरु तिन पाइआ जिना आपि तुठा गुणतासि ॥६॥ (82-18)
जन नानक गुरु पाइआ हरि तूठे हम कीए पतित पवीछे ॥४॥२॥४॥ (1178-16)
जन नानक गुरु पूरा पाइआ सगली तिखा बुझंतीआ ॥१॥ (703-15)
जन नानक छूटै गुर परगास ॥४॥१४॥३४॥ (162-5)
जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई ॥२॥२॥ (219-7)
जन नानक जिन कउ क्रिपा भई तिन सेविआ सिरजणहारु ॥२॥ (313-5)
जन नानक जिस दे एहि चलत हहि सो जीवउ देवणहारु ॥२॥ (951-1)
जन नानक जिस दै मसतकि भागु धुरि लिखिआ सो सिखु गुरू पहि आवै ॥ (960-12)
जन नानक जोगी होआ असथिरु ॥४॥ (886-16)
जन नानक तारहु नदरि निहाली ॥४॥३॥ (1134-13)
जन नानक तिन कउ वारिआ जिन जपिआ सिरजणहारु ॥१॥ (302-12)
जन नानक तिन कै बलि बलि जाईऐ जिह घटि परगटीआए ॥४॥२॥१५॥ (1139-8)

जन नानक तिसु बलिहारणै जो आपि जपै अवरा नामु जपाए ॥२॥ (140-5)
जन नानक ते मुख उजले जिन हरि सुणिआ मनि भाइ ॥१॥ (1316-11)
जन नानक ते मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥१॥ (1314-7)
जन नानक दरसनु देहु मुरारि ॥४॥१॥ (1338-2)
जन नानक दास दास को करीअहु मेरा मूंडु साध पगा हेठि रुलसी रे ॥२॥४॥३७॥ (536-1)
जन नानक दासनि दासु कहीअत है मोहि करहु क्रिपा ठाकुर अपुनी ॥४॥२८॥११४॥ (827-5)
जन नानक दासु कहीअतु है तुम्हरा हउ बलि बलि सद बलि जास ॥२॥१॥३३॥ (1304-10)
जन नानक दीन सरनि आइओ प्रभ सभु लेखा रखहु उठाई ॥४॥३॥ (609-9)
जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए ॥२॥ (774-5)
जन नानक धंनि सुहागणि साई जिसु संगि भतारु वसंदा ॥३॥ (704-3)
जन नानक नामि विगसिआ हरि हरि लिव लाई राम ॥३॥ (845-9)
जन नानक नामु अधारु टेक है बिनु नावै अवरु न कोइ जीउ ॥ (447-18)
जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥४॥ (13-13)
जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥८॥२२॥६०॥ (171-11)
जन नानक नामु अधारु है हरि नामि समाई राम ॥२॥ (845-7)
जन नानक नामु अराधि तू तिसु अपड़ि को न सकाही ॥ (309-3)
जन नानक नामु अराधिआ आपि तरिआ सभु जगतु तराइआ ॥१॥ (304-11)
जन नानक नामु अराधिआ गुर कै हेति पिआरि ॥३९॥ (1417-14)
जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥१॥ (450-8)
जन नानक नामु गुरू ते पाइआ धुरि मसतकि भागु लिखेरा ॥४॥१॥ (711-9)
जन नानक नामु जपहु भव खंडनु सुखि सहजे रैणि विहाणी हे ॥८॥ (1070-16)
जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ॥१॥ (450-17)
जन नानक नामु धिआइ तू जपि हरि हरि नामि सुखु होइआ ॥१॥ (309-15)
जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख कटे तासु ॥२॥ (302-14)
जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख काटु ॥२२॥१॥ सुधु (517-12)
जन नानक नामु धिआइ तू हरि हलति पलति छोडाइसी ॥१॥ (310-14)
जन नानक नामु धिआइआ ॥ (624-6)
जन नानक नामु धिआइआ ॥ (626-13)
जन नानक नामु धिआइआ ॥ (627-18)
जन नानक नामु धिआइआ गुर बचनि जपिओ मनि चीति ॥१॥ (1317-1)
जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि धनवंता ॥२०॥ (650-10)
जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि सुखु पाई ॥१५॥ (648-10)
जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए जमकंकरु नेड़ि न आवै राम ॥२॥ (540-17)
जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए धुरि मसतकि हरि लिखि छडा राम ॥४॥५॥ (541-4)
जन नानक नामु धिआइआ रंगि रतड़ा हरि रंगि रति ॥५॥ (82-14)
जन नानक नामु धिआइआ हरि अंति सखाई होइ ॥१॥ (81-18)
जन नानक नामु धिआइआ हरि रखणहारा ॥३॥ (451-12)

जन नानक नामु धिआवै ॥४॥१९॥८३॥ (629-7)
जन नानक नामु परिओ गुर चेला गुर राखहु लाज जन के ॥४॥१॥ (731-12)
जन नानक नामु मिलै सुखु पावै हम नाम विटहु सद घुमघा ॥४॥२॥ (731-18)
जन नानक नामु सलाहि तू जनम मरण दुखु जाइ ॥१॥ (313-11)
जन नानक नामु सलाहि तू नामे बलिहारी राम ॥४॥२॥४॥ (845-12)
जन नानक नामु सलाहि तू बिनु नावै पचि पचि मुइआ ॥३॥ (776-11)
जन नानक नामु सलाहि तू लुडि लुडि दरगहि वंञु ॥१॥ (1318-5)
जन नानक नामु सलाहि तू सचु सचे सेवा तेरी होति ॥१६॥ (310-1)
जन नानक नामु सलाहिआ बहुड़ि न मनि तनि भंगु ॥२॥ (854-19)
जन नानक नामु सलाहिआ बहुड़ि न मनि तनि भंगु ॥३॥ (1421-16)
जन नानक निरबाण पदु पाइआ मिलि साधू हरि गुण गाईऐ ॥४॥४॥६॥ (1179-11)
जन नानक निरबाण पदु पाइआ हरि उतमु हरि पदु चंगा ॥२॥ (575-11)
जन नानक पाइआ अगम रूपु अनत न काहू जाइ ॥१॥ (958-9)
जन नानक पाइआ है गुरमति हरि देहु दरसु मनि चाउ ॥४॥१॥ (1202-17)
जन नानक पिआस चरन कमलन्ह की पेखि दरसु सुआमी सुख सारो ॥२॥७॥१२३॥ (829-4)
जन नानक पिर धन मिलि सुखु पाइआ ॥४॥४॥ (737-15)
जन नानक पूरिअड़ी मनि आसा जीउ ॥४॥५॥३१॥६९॥ (175-8)
जन नानक प्रभ किरपा धारी मै सतिगुर ओट गहेही ॥४॥४॥ (609-14)
जन नानक प्रभ की सरणाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥३॥ (782-2)
जन नानक प्रभ देहु मती छडि आसा नित सुखि सउदिआ ॥२॥ (776-18)
जन नानक प्रभ भए दइआला सरब कला बणि आई ॥१॥ (781-15)
जन नानक प्रभि किरपा धारी तउ मन महि हरि रसु घूटा ॥२॥९॥३२॥ (1210-16)
जन नानक प्रभु सदा धिआइ ॥४॥२॥ (737-3)
जन नानक प्रिउ प्रीतमु थीआ ॥२॥१॥२३॥ (1272-1)
जन नानक प्रीति त्रिपति गुरु साचा ॥४॥४॥४२॥ (164-19)
जन नानक प्रीति लगी पग साध गुर मिलि साधू पाखाणु हरिओ मनु मूड़ा ॥४॥६॥ (698-8)
जन नानक प्रीति साध पग चाटे ॥४॥३॥४१॥ (164-14)
जन नानक प्रेमि रतंना ॥४॥१॥२७॥६५॥ (173-6)
जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥४॥१॥ (495-7)
जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥४॥५॥ (10-14)
जन नानक बलिहारी गुर आपणे विटहु जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥१॥ (513-7)
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥२॥१॥ (684-16)
जन नानक भए निहालु प्रभ की पाखिआ ॥२०॥ (594-10)
जन नानक भगवंत भजन बिनु बिरथा जनमु गवाइओ ॥२॥१॥ (703-1)
जन नानक भगवंत भजन बिनु सुखु सुपनै भी नाही ॥२॥२॥ (1231-14)
जन नानक मनि अनदु भइआ है मेरी जिंदुड़ीए अनहत सबद वजाए राम ॥२॥ (538-4)
जन नानक मनि तनि अनदु भइआ है गुरि मंत्रु दीओ हरि भंञु ॥४॥५॥७॥१२॥१८॥७॥३७॥ (1179-18)

जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई ॥२॥६॥ (632-16)
जन नानक रसु अम्रितु पीआ सभ लाथी भूख तिखाट ॥४॥६॥ छका १ ॥ (986-6)
जन नानक लधा रतनु अमोलु अपारीआ ॥ (241-5)
जन नानक संगति साध हरि मेलहु हम साध जना पग राली ॥४॥४॥ (667-19)
जन नानक सचु अराधिआ गुरमुखि सुखु पाई ॥५॥ (851-8)
जन नानक सचे सचि समाहरि ॥१॥ (965-5)
जन नानक सतिगुर जो मिले मेरी जिंदुड़ीए तिन के सभ दुख गवाइआ राम ॥३॥ (539-13)
जन नानक सतिगुरु तिना मिलाइओनु जिन सद ही वरतै नालि ॥१॥ (957-10)
जन नानक सतिगुरु भेटिआ हरि नामि तराए ॥३॥ (450-12)
जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥२॥ (449-3)
जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥२॥ (449-11)
जन नानक सतिगुरु मेले आपे हरि आपे झगरु चुकावै ॥२॥३॥ (720-2)
जन नानक सद कुरबाना ॥२॥९॥७३॥ (627-8)
जन नानक सद बलिहारा ॥४॥१॥१७॥ (1004-4)
जन नानक सद बलिहारा जीउ ॥४॥३॥१६८॥ (217-16)
जन नानक सद बलिहारै बलि बलि जावणा ॥२५॥ (652-12)
जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ॥२॥१॥ (1186-10)
जन नानक सरणागति आए हरि राखहु पैज जन केरी ॥४॥६॥२०॥५८॥ (170-18)
जन नानक सरणागती करि किरपा नामि समाणी ॥४॥३॥५॥ (997-7)
जन नानक सरणि तुमारी हरि जीउ राखहु लाज मुरारि ॥२॥४॥ (528-2)
जन नानक सरनि दुआरे ॥२॥४॥२६॥ (1272-11)
जन नानक सरब सुख पाए मोरो हरि चरनी चितु लागि ॥२॥१॥५॥ (701-4)
जन नानक सहजि समाई जीउ ॥५॥१॥१६६॥ (217-3)
जन नानक साचु सुभाखिआ ॥२॥६॥७०॥ (626-16)
जन नानक साहु हरि सेविआ फिरि लेखा मूलि न लेई ॥४॥१॥७॥४५॥ (165-17)
जन नानक सुखे सुखि विहाइ ॥४॥३॥ (371-4)
जन नानक से जन उबरे जो सतिगुर सरणि परे ॥२॥ (959-7)
जन नानक सो प्रभु सेविआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥२॥ (957-13)
जन नानक सो हरि नालि है तेरै हरि सदा धिआइ तू तुधु लए छडईऐ ॥४॥५॥ (861-17)
जन नानक सोऊ जनु मुकता राम भजन चितु लावै ॥२॥३॥ (1231-18)
जन नानक हउमै मारि समाइआ ॥४॥ (176-3)
जन नानक हरि अगम प्रभ हरि मेलि लैहु लड़ि लाइ ॥२॥ (1316-5)
जन नानक हरि अमल हरि लाए हरि मेलहु अनद भले ॥४॥२॥ (975-15)
जन नानक हरि आराधिआ गुर चरणी चितु लाइ ॥८॥२॥४॥९॥ (757-8)
जन नानक हरि आराधिआ तिनि पैरी आणि सभ पाई ॥१॥ (307-3)
जन नानक हरि किरपा धारी उर धरिओ नामु हरे ॥४॥१॥ (995-10)
जन नानक हरि किरपा धारी देह घोड़ी चड़ि हरि पाइआ ॥४॥२॥६॥ (576-12)

जन नानक हरि किरपा धारी पाखाणु डुबत हरि राखा ॥४॥२॥ (696-14)
जन नानक हरि किरपा धारी मनि हरि हरि मीठा लाइ जीउ ॥ (447-1)
जन नानक हरि किरपा धारी हरि रामै नामि समानी ॥४॥५॥ (1200-2)
जन नानक हरि की लागा कारा ॥४॥११॥१४९॥ (212-10)
जन नानक हरि की सरनाइ ॥ (1186-12)
जन नानक हरि गुण आखि समाइआ ॥५॥१॥ (801-14)
जन नानक हरि गुरु गुर मिलाउ ॥४॥५॥ (1169-18)
जन नानक हरि जपि हाजरा हजूरि ॥४॥४॥ (1134-17)
जन नानक हरि नाम धनु रासि ॥४॥४॥ (796-12)
जन नानक हरि पुंनु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुंन केरी ॥३॥ (451-2)
जन नानक हरि प्रभ भाणीआ राम राजिआ मिलिआ सहजि सुभाई ॥३॥ (777-2)
जन नानक हरि प्रभि पूरे कीए खिनु मासा तोलु न घटीऐ ॥५॥५॥१९॥५७॥ (170-12)
जन नानक हरि प्रभु पाइआ पूरै वडभागे राम ॥१॥ (845-5)
जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई ॥२॥४॥ (219-14)
जन नानक हरि मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए घरि वाजे सबद घणेरे राम ॥२॥ (538-17)
जन नानक हरि रंगु माणिआ अमाली गुर सतिगुर कै लगि पैरे ॥५॥१॥९॥ (564-15)
जन नानक हरि रसि त्रिपतिआ फिरि भूख न लागै ॥४॥४॥१०॥४८॥ (167-2)
जन नानक हरि रसु पाई जीउ ॥४॥६॥२०॥१८॥३२॥७०॥ (175-15)
जन नानक हरि वरु पाइआ मंगलु मिलि संत जना वाधाई ॥४॥१॥५॥ (575-18)
जन नानक हरि वरु सहज जोगु ॥४॥६॥ (1170-6)
जन नानक हरि सरणागती हरि मेले गुर साबासि ॥२॥ (301-12)
जन नानक हरि हरि चाउ मनि गुरु तुठा मेले माइ ॥१॥ (1315-16)
जन नानक हरि हरि हरि जपि प्रगटे मति गुरमति नामि समाने ॥४॥४॥१८॥५६॥ (170-3)
जन नानक हरि हरि हरि धिआइ ॥४॥१॥ (1180-6)
जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु इउ हरि प्रभु मेरा भीने ॥२॥१॥७॥ (668-19)
जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु ता जै जै करे सभु कोइ ॥४॥१०॥६२॥ (368-11)
जन नानकि अतुटु धनु पाइआ हरि नामा हरि धनु मालु ॥२॥ (1315-2)
जन नानकि कमलु परगासिआ मनि हरि हरि वुठड़ा हे ॥४॥ (82-10)
जन नानकि गुरु पूरा पाइआ मनि हिरदै नामु लखाइ जीउ ॥ (446-4)
जन नानकि ब्रहमु पछाणिआ हरि कीरति करम कमाउ ॥२॥ (82-3)
जन नानकि हरि नाम धनु लदिआ सदा वेपरवाहु ॥७॥ (852-9)
जन नानकि हरि प्रभु बुझिआ गुर सतिगुर कै परसादि ॥२॥ (957-5)
जन नानकु तिन के चरन पखारै जो हरि चरनी जनु लागा ॥४॥४॥ (985-12)
जन नानकु तिस के चरन पखालै जो हरि जनु नीचु जाति सेवकाणु ॥४॥४॥ (861-10)
जन नानकु तिसु बलिहारणै जो सतिगुर लागे पाइ ॥२३॥ (1415-13)
जन नानकु त्रिपतै गाइ गुण हरि दरसनु देहु सुभाइ ॥३॥ (1250-16)
जन नानकु दासु दास दासन को प्रभ करहु क्रिपा राखहु जन साथ ॥४॥६॥ (1296-9)

जन नानकु देखि विगसिआ हरि की वडिआई ॥२॥ (316-8)
जन नानकु नाउ लए तां जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ॥२८॥ (1424-14)
जन नानकु नामु लए ता जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ॥२॥ (87-2)
जन नानकु बोले ब्रहम बीचारु ॥ (370-16)
जन नानकु मंगै धूड़ि तिन जिन सतिगुरु पाइआ ॥४॥४॥१८॥३८॥ (163-16)
जन नानकु मंगै धूड़ि तिन हउ सद कुरबाणै जाउ ॥२७॥ (1416-3)
जन नानकु सदा कुरबाणु तिन जो चालहि सतिगुर भाइ ॥२२॥ (1415-8)
जन नानकु सरणि पइआ हरि दुआरै हरि भावै लाज रखाइदा ॥१६॥१॥५॥ (1076-14)
जन नानकु सिमरै अंतरजामी ॥२॥३॥५७॥ (684-9)
जन नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गुल गोले ॥३०॥ (1424-18)
जन नानकु हरि कै अंकि समावै ॥४॥१६॥ (375-7)
जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ॥४॥१२॥१९॥ (451-4)
जन नानकु हाटि विहाझिआ हरि गुलम गुलामी ॥४॥६॥१२॥५०॥ (167-19)
जन नानको सरणागती देहु गुरमती भजु राम राम राम ॥२॥३॥९॥ (1297-7)
जन नामै ततु पछानिआ ॥३॥३॥ (657-14)
जन निरवैर निंदक अहंकारी ॥ (869-15)
जन पग रेणु वडभागी पावै ॥३॥ (164-8)
जन पारब्रहम जा की निरमल महिमा जन के चरन तीरथ कोटि गंगा ॥ (828-10)
जन पिसर पदर बिरादरां कस नेस दसतंगीर ॥ (721-6)
जन बोलहि अम्रित बाणी ॥ (626-2)
जन भगतन को कहो न मानो कीओ अपनो पईहै ॥२॥ (524-11)
जन भल मानहि निंदक वेकारी ॥ (869-16)
जन रविदास राम रंगि राता ॥ (487-4)
जन लावहु चितु हरि नाम सिउ अंति होइ सखाई ॥ (648-10)
जन संगि राते दिनसु राते इक निमख मनहु न वीसरै ॥ (1278-4)
जनक जनक बैठे सिंघासनि नउ मुनी धूरि लै लावैगो ॥ (1309-10)
जनक राजु बरताइआ सतजुगु आलीणा ॥ (1407-6)
जनकु सोइ जिनि जाणिआ उनमनि रथु धरिआ ॥ (1398-8)
जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥ (10-11)
जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥ (495-4)
जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीआ दस दुआरा ॥ (488-3)
जननी चीति न राखसि तेते ॥१॥ (478-14)
जननी जानत सुतु बडा होतु है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटतु है ॥ (91-19)
जनमं त मरणं हरखं त सोगं भोगं त रोगं ॥ (1354-19)
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥ (135-19)
जनम जनम का उतरै भारु ॥३॥ (895-18)
जनम जनम का टूटा गांढा ॥ (1348-18)

जनम जनम का टूटा गाढै ॥ (290-2)
जनम जनम का टूटा गाढै ॥२॥ (741-14)
जनम जनम का बिछुड़िआ होवै तिन्ह हरि सिउ आणि मिलावै ॥२॥ (748-5)
जनम जनम का रोगु गवाइआ ॥ (108-1)
जनम जनम का विछुड़िआ मिलिआ ॥ (102-6)
जनम जनम का विछुड़िआ हरि मेलहु सजणु सैण ॥ (136-16)
जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ ॥ (1186-15)
जनम जनम का सोइआ जागा ॥ (184-16)
जनम जनम का सोइआ जागा ॥१॥ (1148-1)
जनम जनम का सोइआ जागु ॥ (892-13)
जनम जनम का सोइआ जागु ॥१॥ (891-5)
जनम जनम का सोइआ जागै ॥ (1080-10)
जनम जनम का सोइआ जागै ॥३॥ (1144-1)
जनम जनम का सोइआ जागै ॥३॥ (869-5)
जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु ॥ (651-1)
जनम जनम की दुरमति मलु जाइ ॥१॥ (897-14)
जनम जनम की मलु उतरै गुर धूड़ी नापै ॥ (1097-4)
जनम जनम की मलु उतरै मन चिंदिआ पावै ॥ (1318-13)
जनम जनम की मलु धोवै पराई आपणा कीता पावै ॥ (380-17)
जनम जनम की मैलु उतारै बंधन काटि हरि संगि मिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1149-2)
जनम जनम की मैलु मिटाए ॥१॥ (1138-7)
जनम जनम की मैलु मिटावउ ॥ (1080-3)
जनम जनम की हउमै मलु निकसी हरि अम्रिति हरि जलि नीधे ॥३॥ (1179-3)
जनम जनम की हउमै मलु लागी मिलि संगति मलु लहि जावैगो ॥ (1309-2)
जनम जनम की हउमै मलु हरउ ॥२॥ (239-17)
जनम जनम के काटे कागर ॥१॥ (487-3)
जनम जनम के किलबिख गए ॥३॥ (202-11)
जनम जनम के किलबिख गए ॥३॥ (865-5)
जनम जनम के किलबिख जावहि ॥ (104-16)
जनम जनम के किलबिख जाहि ॥ (289-1)
जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुरि नामु दीओ रिनु लाथा ॥१॥ (696-3)
जनम जनम के किलबिख दुख काटे आपे मेलि मिलाई ॥ रहाउ ॥ (602-1)
जनम जनम के किलबिख नासहि आगै दरगह होइ खलास ॥१॥ (1208-2)
जनम जनम के किलबिख नासहि कोटि मजन इसनाना ॥ (531-16)
जनम जनम के किलबिख लाथे ॥३॥ (202-15)
जनम जनम के किलबिख हरै ॥१॥ (1300-13)
जनम जनम के किलविख उतरहि हरि संत धूड़ी नित नापै राम ॥ (780-7)

जनम जनम के किलविख काटै मजनु हरि जन धूरि ॥ (406-2)
जनम जनम के किलविख गए ॥ (178-7)
जनम जनम के किलविख जाहि ॥१॥ (1143-16)
जनम जनम के किलविख जाही ॥३॥ (741-19)
जनम जनम के किलविख दुख उतरे हरि हरि नामि समाइआ ॥ (445-1)
जनम जनम के किलविख दुख काटहि दुबिधा रती न राई ॥३॥ (1155-8)
जनम जनम के किलविख दुख भागे गुरि गिआन अंजनु नेत्र दीत ॥ (673-5)
जनम जनम के किलविख नसे ॥१॥ (197-4)
जनम जनम के किलविख भउ भंजन गुरमुखि एको डीठा ॥१॥ रहाउ ॥ (1234-1)
जनम जनम के किलविख मलु भरिआ मिलि संगति करि प्रभ हनछे ॥१॥ रहाउ ॥ (1178-12)
जनम जनम के किलविख लाहां ॥२॥ (742-10)
जनम जनम के किलविख सभि हिरिआ ॥२॥ (197-12)
जनम जनम के टूटे गांढे ॥ (1086-14)
जनम जनम के टूटे गाढे ॥३॥ (191-3)
जनम जनम के टूटे गाढे ॥३॥ (744-8)
जनम जनम के तेरे पाप कटे अंति परम पदु पावहे ॥ (440-16)
जनम जनम के दूख निवारे ॥ (1137-9)
जनम जनम के दूख निवारै सूका मनु साधारै ॥ (618-2)
जनम जनम के पाप करम के काटनहारा लीजै रे ॥१॥ (156-4)
जनम जनम के पाप खोइ कै फुनि बैकुंठि सिधावै ॥१॥ (901-18)
जनम जनम के पाप हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (865-15)
जनम जनम के बिखई तुम तारे सुमति संगि तुमारै पाई ॥ (1217-3)
जनम जनम के बिछुरे मेले ॥१॥ रहाउ ॥ (191-13)
जनम जनम के भूल चूक हम अब आए प्रभ सरनगे ॥ (976-8)
जनम जनम के भै मोह निवारे ॥ (742-15)
जनम जनम के महा पराछत दरसनु भेटि मिटाहिओ ॥ (1303-3)
जनम जनम के मिटे बिताल ॥५॥ (1349-1)
जनम जनम के लागे बिखु मोरचा लगि संगति साध सवारी ॥ (666-17)
जनम जनम के विछुड़े जन मेले नानक सहजि सुभाए ॥३॥ (773-12)
जनम जनम चूके भै भारे दुरतु बिनासिओ भरमु बीओ ॥१॥ (382-15)
जनम जनम बिखाद बिनसे राखि लीने आपि ॥ (1341-10)
जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु ॥ (1428-4)
जनम दोख परे मेरे पाछै अब पकरे निहचलु साधू पाइ ॥ (373-4)
जनम पदारथु जीतीऐ जपि हरि बैरागरु ॥ (1318-9)
जनम भवंते नरकि पड़ंते तिन्ह के कुल उधारे ॥२॥ (406-13)
जनम मरण अनेक बीते प्रिअ संग बिनु कछु नह गते ॥ (462-1)
जनम मरण का दुखु गइआ फिरि पवै न फीरु ॥ (789-2)

जनम मरण का दुखु घणो नित सहसा दोई ॥१॥ (422-8)
जनम मरण का दूखु निवारै ॥२॥ (388-6)
जनम मरण का भउ गइआ भाउ भगति गोपाल ॥ (45-16)
जनम मरण का सहसा चूका बाहुड़ि कतहु न धाई ॥७॥ (915-15)
जनम मरण की कटीऐ फासी साची दरगह का नीसानु ॥१॥ (824-4)
जनम मरण की चूकी काणि ॥ (899-16)
जनम मरण की जोनि न भविआ ॥ (1071-18)
जनम मरण की त्रास मिटाइ ॥३॥ (190-3)
जनम मरण की मलु कटीऐ गुर दरसनु देखि निहाल ॥२॥ (45-16)
जनम मरण की मिटवी डंझा ॥ (1080-14)
जनम मरण की मिटी जम त्रास ॥ (1148-4)
जनम मरण को चूको सहसा साधसंगति दरसारी ॥३॥ (207-2)
जनम मरण तिह मूले नाही ॥३॥ (203-16)
जनम मरण ते रहत नाराइण ॥१॥ रहाउ ॥ (1136-3)
जनम मरण ते होवत छोट ॥१॥ रहाउ ॥ (198-8)
जनम मरण दुख काटिआ सुख का थानु पाइआ ॥ (814-3)
जनम मरण दुख काल सिमरत मिटि जावई ॥ (399-6)
जनम मरण दुख खिन महि बिनसे हरि पाइआ प्रभु अबिनासी ॥ (1116-5)
जनम मरण दुख मेटि मिलाए ॥२॥ (866-10)
जनम मरण दुख मेटिआ जपि नामु मुरारे ॥ (422-15)
जनम मरण दुखु कटीऐ पिआरे जब भेटै हरि राइ ॥१॥ (431-17)
जनम मरण दुखु कटीऐ सचे रहै समाइ ॥ (849-14)
जनम मरण दुखु काटीऐ पिआरे चूकै जम की काणे ॥ (802-14)
जनम मरण दुखु काटीऐ लागै सहजि धिआनु ॥१॥ (46-11)
जनम मरण दुखु नेड़ि न आवै मनि सो प्रभु अपर अपारा हे ॥१२॥ (1030-17)
जनम मरण दुहहू ते छूटहि भवजलु जगतु तराइण ॥१॥ (714-2)
जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥ (749-3)
जनम मरण दूख ते राखै ॥ (1271-10)
जनम मरण दोऊ दुख भागे ॥३॥ (1178-1)
जनम मरण दोवै दुख मेटे सहजे ही सुखि सोवै ॥ (444-12)
जनम मरण दोवै दुख मेटे हरि रामै नामि समाइआ ॥ (447-13)
जनम मरण निवारि धरणीधर पति राखु परमानंद ॥२॥ (508-6)
जनम मरण निवारि हरि जपि सिमरि सुआमी सोइ ॥२॥ (675-17)
जनम मरण निहचलु भए गुरमुखि नामु धिआइ ॥ (1416-10)
जनम मरण फिरि सोगु न होइ ॥१॥ (1145-3)
जनम मरण बहु जोनि भ्रमण कीने करम अनेक ॥ (297-16)
जनम मरण बिकार छूटे फिरि न लागै दागु जीउ ॥ (927-2)

जनम मरण भउ कटिओनु फिरि जोनि न पाए ॥ (966-6)
जनम मरण भउ कटीऐ जन का सबदु जपि ॥ (520-10)
जनम मरण भव भंजनु गाईऐ पुनरपि जनमु न होई जीउ ॥४॥ (599-4)
जनम मरण भै कटीअहि निहचल सचु थाउ ॥ (707-2)
जनम मरण भै काटे मोहा बिनसे सोग संतापे जीउ ॥३॥ (104-13)
जनम मरण भै लाथे ॥४॥२॥५२॥ (621-17)
जनम मरण मलु उतरै सचे के गुण गाइ ॥१॥ (1099-18)
जनम मरण मोहु दुखु साधू संगि नसै ॥१॥ रहाउ ॥ (761-17)
जनम मरण रहंत स्रोता सुख समूह अमोघ दरसनह ॥ (1355-14)
जनम मरण रोग सभि निवारे ॥ (106-19)
जनम मरण सभ मिटी उपाधि ॥ (865-16)
जनम मरण सभि दूख निवारे जपि हरि हरि भउ नही काल का ॥३॥ (1084-17)
जनम मरण हउमै दुखु पाइआ ॥ (1038-4)
जनम मरणु उस ही कउ है रे ओहा आवै जाई ॥३॥ (999-18)
जनम मरणु न होइ तिस कउ कटै जम के फासे ॥ (545-2)
जनम मरणु निवारीऐ दुखु न जम पुरि होइ ॥ (405-4)
जनम मरन कउ इहु जगु बपुड़ो इनि दूजै भगति विसारी जीउ ॥ (598-1)
जनम मरन कटि परम गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (331-4)
जनम मरन का दुखु गइआ जन नानक सबदु बीचारि ॥४९॥ (1419-2)
जनम मरन का भउ गइआ जीवन पदवी पाइ ॥ (556-4)
जनम मरन का भ्रमु गइआ गोबिद लिव लागी ॥ (857-10)
जनम मरन काटे गुर बचनी बहुड़ि न संकट दुआरा ॥ (717-15)
जनम मरन की त्रास मिटाई ॥ (864-4)
जनम मरन की मलु उतरै जन नानक हरि गुन गाइ ॥४०॥ (1417-17)
जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥ (287-15)
जनम मरन गुरि राखे मीत ॥ (1339-5)
जनम मरन चूके सभि भारे ॥ (379-4)
जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥ (296-7)
जनम मरन दुख फाहा काटिआ ॥ (1340-5)
जनम मरन दुख फेड़ करम सुख जीअ जनम ते छूटै ॥१॥ रहाउ ॥ (475-15)
जनम मरन दुखु कटिआ हरि भेटिआ पुरखु सुजाणु ॥ (318-3)
जनम मरन दुखु कटीऐ हउमै ममता जाइ ॥ (552-7)
जनम मरन दुखु काटीऐ नानक छूटसि नाइ ॥४॥१०॥ (1330-9)
जनम मरन दुखु परहरै सबदि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (34-5)
जनम मरन दुहु ते रहिओ ॥६॥ (241-12)
जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥ (289-17)
जनम मरन नह होइ बिनासा ॥ (252-7)

जनम मरन बिकार अंकुर हरि काटि छाडे खोइ ॥१॥ (1228-8)
जनम मरन मन मोहु बढाइओ ॥ (250-14)
जनम मरन संकट ते छूटै जगदीस भजन सुख धिआन ॥१॥ (1221-14)
जनम मरन सगला दुखु नासै ॥ (677-4)
जनमत कस न मुओ अपराधी ॥१॥ रहाउ ॥ (328-10)
जनमत की न मूओ आभागा ॥ (1045-9)
जनमत मोहिओ मोहनी माइआ ॥ (251-9)
जनमत ही दुखु लागै मरणा आइ कै ॥ (752-18)
जनमहि मरि भगे हां ॥ (411-2)
जनमि जनमि किछु लीजी लीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (351-8)
जनमि न कदे मरु हां ॥ (410-10)
जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥ (1136-5)
जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥ (370-17)
जनमि मरणि नही धंधा धैरु ॥ (931-14)
जनमि मरहि जूऐ बाजी हारी ॥ (366-6)
जनमि मरहु फुनि पाप कमावहु ॥ (1030-18)
जनमि मरै त्रै गुण हितकारु ॥ (154-11)
जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ (1071-1)
जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ (284-7)
जनमि मरै फिरि जोनी आवै दरगहि मिलै सजाई ॥३॥ (607-13)
जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥ (278-8)
जनमि मरै भरमाईऐ जे लख करम कमाहि ॥ (1411-2)
जनमि मरै भरमाईऐ हरि नामु न लेवै ॥ (420-19)
जनमि मरै सो काचो काचा ॥ (288-12)
जनमि मूए नही जीवण आसा ॥ (933-4)
जनमि मूए बिनु भगति सरोति ॥४॥ (413-10)
जनमु कालु कर जोड़ि हुकमु जो होइ सु मंनै ॥ (1406-12)
जनमु जरा मिरतु जिसु वासि ॥ (197-9)
जनमु जीति गुरमति दुखु भागा ॥६॥ (1189-10)
जनमु जीति मरणि मनु मानिआ ॥ (153-11)
जनमु जीति लाहा नामु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (162-3)
जनमु त इहु सकयथु जितु नामु हरि रिदै निवासै ॥ (1393-11)
जनमु पदारथु खोइ गवारा ॥ रहाउ ॥ (676-9)
जनमु पदारथु गहिर ग्मभीरै ॥ (101-6)
जनमु पदारथु गुरमुखि जीतिआ बहुरि न जूऐ हारि ॥१॥ (1226-1)
जनमु पदारथु जिणि चलिआ नानक आइआ सो परवाणु थिआ ॥४॥१॥३१॥ (1007-19)
जनमु पदारथु जीति अमोले ॥३॥ (792-18)

जनमु पदारथु जीति हरि सरणी ॥१॥ रहाउ ॥ (743-18)
जनमु पदारथु जीतिआ कदे न आवै हारि ॥ (1312-17)
जनमु पदारथु जीतु पराणी ॥ (1086-3)
जनमु पदारथु जूऐ हारिआ सबदै सुरति न पाई ॥५॥ (1155-11)
जनमु पदारथु तारिआ नानक साधू संगि ॥२॥ (523-9)
जनमु पदारथु दुबिधा खोइआ कउडी बदलै जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1261-14)
जनमु पदारथु दुबिधा खोवै ॥ (686-1)
जनमु पदारथु नानक जिता ॥२॥ (964-18)
जनमु पदारथु पाइ नामु धिआइआ ॥ (369-6)
जनमु पदारथु पुंनि फलु पाइआ कउडी बदलै जाईऐ ॥३॥ (1179-10)
जनमु पदारथु भइओ पुनीता इछा सगल पुजाई ॥१॥ (1221-7)
जनमु पदारथु मनमुखि हारिआ बिनु गुर अंधु न सूझिआ ॥३॥ (1126-3)
जनमु पदारथु सफलु है जे सचा सबदु कथि ॥ (44-5)
जनमु पदारथु सफलु होइ मन महि लाइहु भाउ ॥ (963-3)
जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ ॥ (685-7)
जनमु बिहानो अहंकारि अरु वादि ॥ (898-3)
जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥१॥ रहाउ ॥ (12-8)
जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥१॥ रहाउ ॥ (378-3)
जनमु मरणु परवाणु हरि गुण गाइ कै ॥४॥ (752-19)
जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥ (919-17)
जनमु सफलु हरि चरणी लागे दूजा भाउ चुकाइआ ॥३॥ (1067-5)
जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइ ॥७॥ (638-18)
जनमु सिरानो पंथु न सवारा ॥ (794-3)
जनमे कउ वाजहि वाधाए ॥ (1032-15)
जनमे का फलु किआ गणी जां हरि भगति न भाउ ॥ (1411-7)
जनमे सूतकु मूए फुनि सूतकु सूतक परज बिगोई ॥१॥ (331-10)
जनमेजै गुर सबदु न जानिआ ॥ (225-2)
जनमै का फलु पाइआ ॥ (132-15)
जनि नानकि नामु धिआइआ गुरमुखि परगास ॥४॥३॥९॥४७॥ (166-13)
जनु कहै नानकु मिलि साधसंगति हरि हरि नामु पूजेहा ॥३॥ (542-10)
जनु कहै नानकु मुकतु होआ हरि हरि नामु अराधे ॥२॥ (542-6)
जनु कहै नानकु लाव पहिली आरंभु काजु रचाइआ ॥१॥ (774-1)
जनु कहै नानकु सतिगुरि मिलाइआ हरि पाइअड़ा घरि आए ॥४॥१॥ (542-14)
जनु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि भगति गोविंद चंगीआ ॥१॥ (576-2)
जनु धंना लेवै मंगी ॥२॥४॥ (695-19)
जनु नानक वडिआई आखै हरि करते की जिस नो तिलु न तमाए ॥१५॥ (554-12)
जनु नानकु अनदिनु हरि गुण गावै मिलि सतिगुर गुर वेचोली ॥४॥१॥१५॥५३॥ (169-3)

जनु नानकु कहै विचारा गुरमुखि हरि सति हरि ॥११॥ (646-19)
जनु नानकु गावै देखि हदूरि ॥४॥३॥ (737-8)
जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥५॥१॥ (11-13)
जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥५॥२॥ (348-16)
जनु नानकु गुण गावै बेचारा हरि भावै हरि थाइ पावै जीउ ॥५॥१॥७॥ (998-6)
जनु नानकु गुण बोलै करते के भगता नो सदा रखदा आइआ ॥२॥ (305-9)
जनु नानकु गुरु तिन्ही पाइआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥१॥ (449-18)
जनु नानकु जीवै देखि हरि इक निमख घड़ी मुखि लागु ॥१॥ (849-5)
जनु नानकु जीवै नामु लै हरि देवहु सहजि सुभाइ ॥५॥२॥३५॥ (26-19)
जनु नानकु तारिओ तारण हरी ॥४॥२॥ (1134-8)
जनु नानकु तिन कउ अनदिनु परसे जे क्रिपा करे हरि राइ ॥४॥१॥८॥ (733-12)
जनु नानकु तिन कउ वारिआ सदा सदा कुरबाणी ॥१०॥ (726-1)
जनु नानकु तिसु पगि लावनो ॥२॥१॥७॥४॥६॥७॥१७॥ (801-5)
जनु नानकु तिसु बलिहारणै जो मेरे हरि प्रभ भावै ॥१५॥१॥ सुधु ॥ (1318-15)
जनु नानकु दासन दासु है जो सतिगुर लागे पाइ ॥२॥ (1313-19)
जनु नानकु दासु हरि कांढिआ हरि पैज रखाए ॥४॥१०॥१७॥ (450-5)
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥२॥ (306-2)
जनु नानकु नामु धिआए गुरमुखि गुण गाइदा ॥५॥ (644-14)
जनु नानकु नामु लए तां जीवै जिउ चात्रिकु जलि पीऐ त्रिपतासी ॥२॥५॥१२॥ (1202-5)
जनु नानकु नामु लए तां जीवै हरि जपीऐ हरि किरपा ते ॥४॥२॥१६॥५४॥ (169-9)
जनु नानकु प्रभ की सरनाइ ॥४॥५॥ (1339-8)
जनु नानकु बोले गुण बाणी गुरबाणी हरि नामि समाइआ ॥४॥५॥ (494-5)
जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी ॥४॥२॥ (774-12)
जनु नानकु बोले तीजी लावै हरि उपजै मनि बैरागु जीउ ॥३॥ (774-8)
जनु नानकु बोलै अम्रित बाणी ॥ (96-11)
जनु नानकु बोलै सचु नामु सचु सचा सदा नवे ॥२१॥ (312-18)
जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ (1385-11)
जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ (1385-7)
जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ (1386-1)
जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ (1386-5)
जनु नानकु मंगै दानु इकु देहु दरसु मनि पिआरु ॥२॥ (960-1)
जनु नानकु मंगै दानु प्रभ हरि नामु अधारे ॥२॥ (1318-7)
जनु नानकु मंगै धूड़ि तिन जो गुर के सिख मेरे भाई ॥२॥ (310-18)
जनु नानकु मागै धूड़ि तिन जो गुरसिख मित पिआरे ॥१॥ (307-19)
जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धंना ॥१॥ (449-1)
जनु नानकु मेलि तेरा दास दसाइणु ॥४॥१॥ (1134-4)
जनु नानकु रेण साध पग मागै हरि होइ दइआलु दिवाइबा ॥४॥४॥ (697-14)

जनु नानकु रेणु मंगै पग साधू मनि चूका सोगु विजोगु जीउ ॥ (445-6)
जनु नानकु लगा सेव हरि उधरिआ सगल संसारु ॥२॥ (958-12)
जनु नानकु सरणागती जिउ भावै तिवै छडाइ ॥८॥१॥९॥ (234-2)
जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥४॥८॥१५॥ (449-7)
जनु नानकु सरनि दुआरि हरि लाज रखावहिगे ॥४॥६॥ छका १ ॥ (1321-6)
जनु नानकु सहजि मिलाइआ हरि रसि हरि ध्रापै राम ॥२॥ (844-16)
जनु नानकु सालाहि न रजै तुधु करते तू हरि सुखदाता वडनु ॥१०॥ (552-13)
जनु नानकु हरि करतै आपि बहि टिकिआ आपे पैज रखै प्रभु सोई ॥३॥ (309-7)
जनु नानकु हरि का दासु है करि किरपा हरि लाज रखाहि ॥१॥ (592-10)
जनु नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गोल गोले ॥२॥ (642-17)
जनु नानकु हरि का दासु है राखु पैज मुरारि ॥४॥१॥३१॥ (808-8)
जनु नानकु हरि का दासु है हरि की वडिआई ॥४॥२॥८॥४६॥ (166-6)
जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥३॥ (450-3)
जनु नानकु हरि का दासु है हरि दासन की हरि पैज रखाए ॥२॥ (308-7)
जनु नानकु हरि का दासु है हरि पैज रखहु भगवान ॥१॥ (652-8)
जनु नानकु हरि देखि सुखु पावै सभ तन की भूख टरै ॥४॥३॥ (1263-17)
जनु नानकु हरि हरि मिले भए गलतान हाल निहाल निहाल ॥२॥१॥७॥ (977-12)
जनु नानकु हरि हरि हरि हरि बांछै हरि देवहु करि क्रिपणे ॥४॥६॥ (977-6)
जनु नामा सहज समानिआ ॥४॥१॥ (657-4)
जनु राता हरि नाम की सेवा ॥ (265-1)
जनु लागा हरि एकै नाइ ॥ (292-17)
जप तप का बंधु बेड़ुला जितु लंघहि वहेला ॥ (729-8)
जप तप तीरथ संजम करे मेरे प्रभ भाइआ ॥ (1244-14)
जप तप बरत कीने पेखन कउ चरणा राम ॥ (545-17)
जप तप संजम इस ते किछु नाही ॥ (1005-8)
जप तप संजम करम कमाणे इहि ओरै मूसे ॥१॥ रहाउ ॥ (216-4)
जप तप संजम करम धरम हरि कीरतनु जनि गाइओ ॥ (498-13)
जप तप संजम करम न जाना नामु जपी प्रभ तेरा ॥ (878-5)
जप तप संजम करम सुख साधन तुलि न कछूऐ लाहि ॥ (1222-17)
जप तप संजम गिआन तत बेता जिसु मनि वसै गोपाला ॥ (615-9)
जप तप संजम तुम्ह खंडे जम के दुख डांड ॥ (815-13)
जप तप संजम देउ जती री ॥ (739-8)
जप तप संजम ना ब्रत पूजा ॥ (1035-15)
जप तप संजम पाठ पुराणु ॥ (223-14)
जप तप संजम पुंन सभि होमउ तिसु अरपउ सभि सुख जांई ॥ (1207-2)
जप तप संजम पूरन घालै ॥ (1312-8)
जप तप संजम पूरी वडिआई ॥ (196-4)

जप तप संजम सुचि है सोई आपे करे कराई ॥१३॥ (915-19)
जप तप संजम हरख सुख मान महत अरु गरब ॥ (1364-2)
जप तप संजमु गुरमुखि भोगी ॥१॥ रहाउ ॥ (970-16)
जप ताप संजम किरिआ पूजा अनिक सोधन बंदना ॥ (455-14)
जप ताप संजम हरि हरि निरंजन गोबिंद धनु संगि चालै ॥ (1312-10)
जप हीन तप हीन कुल हीन क्रम हीन नामे के सुआमी तेऊ तरे ॥२॥१॥ (345-6)
जपत जपत भए दीन दइआला ॥१॥ (388-4)
जपसि निरंजनु रचसि मना ॥ (156-1)
जपहि त साचा एकु मुरारे ॥ (567-4)
जपहु त एको नामा ॥ (728-5)
जपि अनदि रहउ गुर चरणा ॥ (622-6)
जपि अम्रित नामु संतसंगि मेला ॥ (107-12)
जपि एक प्रभू अनेक रविआ सरब मंडलि छाइआ ॥ (782-18)
जपि एकु अलख अपार पूरन तिसु बिना नही कोई ॥ (779-4)
जपि एकु अलखु प्रभु निरंजनु मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ (453-5)
जपि गुरमुखि नामु जीउ भाग वडेरे जीउ ॥ (175-4)
जपि गोबिंद संगी सभि तारे ॥ (760-5)
जपि गोबिंदु गोपाल लालु ॥ (885-18)
जपि गोबिंदु पड़दे सभि काजे ॥३॥ (897-18)
जपि गोविंदु गोविंदु धिआईऐ सभ कउ दानु देइ प्रभु ओहै ॥१॥ (492-16)
जपि गोविद भरमु भउ फाटा ॥ (1004-15)
जपि जगंनाथ जगदीस गुसईआ ॥ (834-1)
जपि जगदीसु जपउ मन माहा ॥ (699-7)
जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥ (283-12)
जपि जपि अनदु करहि तेरे दासा ॥ (1147-6)
जपि जपि अम्रित नामु अघाए ॥ (865-14)
जपि जपि करहि अनंदु जन अचरज आनूपु ॥३॥ (677-19)
जपि जपि जीवहि तेरा नांउ ॥ (1270-16)
जपि जपि जीवहि भगत गुणतास ॥ (1152-10)
जपि जपि जीवहि संत जन पापा मलु धोवै ॥ (322-13)
जपि जपि जीवा तेरा नाउ ॥ (893-12)
जपि जपि जीवा नामु होवै अनदु घणा ॥ (399-4)
जपि जपि जीवा सतिगुर नाउ ॥१॥ (193-17)
जपि जपि जीवा सारिगपाने ॥१॥ (393-18)
जपि जपि जीवे परमानंदा ॥२॥ (194-18)
जपि जपि जीवे परमानंदा ॥३॥ (194-15)
जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥ (284-11)

जपि जपि जीवै परमानंदा ॥ (624-6)
जपि जपि तुधु निरंकार भरमु भउ खोवणा ॥ (523-5)
जपि जपि नामु गुरमति सालाही मारिआ कालु जमकंकर भुइअंगा ॥१॥ रहाउ ॥ (367-11)
जपि जपि नामु गोबिंद का पूरन बीचारु ॥१॥ (815-17)
जपि जपि नामु जीवा तेरी बाणी नानक दास बलिहारे ॥२॥१८॥ छके ३ ॥ (531-18)
जपि जपि नामु तुम्हारो प्रीतम तन ते रोग खए ॥१॥ (829-16)
जपि जपि नामु पूजे प्रभ पैर ॥ (899-3)
जपि जपि नामु मनि भइआ अनंदा ॥ (367-2)
जपि जपि हरि का नामु कदे न झूरीऐ ॥ (398-6)
जपि जपि होए सगल साध जन एकु नामु धिआइ बहुतु उधारे ॥३॥ (379-7)
जपि जिहवा हरि एक मंगो ॥१॥ रहाउ ॥ (241-8)
जपि जीवहि से वडभागा ॥२॥ (623-11)
जपि जीवा प्रभ चरण तुमारे ॥१॥ रहाउ ॥ (563-1)
जपि जीवै नानकु गुणतास ॥८॥३॥२॥७॥१२॥ (1349-5)
जपि जीवै नानकु तेरो नामु ॥४॥१०॥ (1183-4)
जपि जीवै नानकु राम नाम ॥१॥ (1183-18)
जपि तरीऐ नानक नाम हरि रंगि ॥८॥ (298-12)
जपि नाथु दिनु रैनाई ॥ (886-12)
जपि नानक दरगहि परवानु ॥२॥ (288-9)
जपि नानक नामु निधान सुख पूरा गुरु पाइआ ॥४॥३३॥६३॥ (817-3)
जपि नानक नामु सचु साखी ॥ (623-1)
जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥ (286-2)
जपि नानक प्रभ एको सोई ॥४॥१०॥१६॥ (740-11)
जपि नानक सुआमी सद हजूरि ॥४॥११॥ (1183-10)
जपि पारब्रहमु नानक निसतरीऐ ॥४॥१०॥१२॥ (865-19)
जपि पूरन होई आसा ॥२॥४॥६८॥ (626-10)
जपि पूरन होए कामा ॥१॥ रहाउ ॥ (218-10)
जपि पूरन होए कामा ॥३॥ (621-16)
जपि मन गोबिंद एकै अवरु नही को लेखै संत लागु मनहि छाडु दुबिधा की कुरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (746-3)
जपि मन गोबिद माधो ॥ (1297-13)
जपि मन गोविंदु हरि गोविंदु गुणी निधानु सभ स्रिसटि का प्रभो मेरे मन हरि बोलि हरि पुरखु अबिनासी ॥१॥ रहाउ ॥ (1202-1)
जपि मन जगंनाथ जगदीसरो जगजीवनो मनमोहन सिउ प्रीति लागी मै हरि हरि हरि टेक सभ दिनसु सभ राति ॥१॥ रहाउ ॥ (1200-16)
जपि मन नरहरे नरहर सुआमी हरि सगल देव देवा स्री राम राम नामा हरि प्रीतमु मोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (1201-1)
जपि मन नामु एकु अपारु ॥ (51-8)

जपि मन नामु हरि सरणी ॥ (505-13)
जपि मन नामु हरी होहि सरब सुखी ॥ (669-2)
जपि मन निरभउ ॥ (1201-15)
जपि मन परमेसुरु परधानु ॥ (1337-11)
जपि मन माधो मधुसूदनो हरि स्रीरंगो परमेसरो सति परमेसरो प्रभु अंतरजामी ॥ (1201-9)
जपि मन मेरे गोविंद की बाणी ॥ (192-5)
जपि मन मेरे तू एको नामु ॥ (558-11)
जपि मन मेरे राम राम रंगि ॥ (177-19)
जपि मन राम नाम जगंनाथ ॥ (1296-4)
जपि मन राम नाम परगास ॥ (1295-3)
जपि मन राम नामु अरधांभा ॥ (1337-3)
जपि मन राम नामु निसतारा ॥ (720-2)
जपि मन राम नामु पड़्हु सारु ॥ (1200-3)
जपि मन राम नामु रवि रहे ॥ (1336-8)
जपि मन राम नामु रसना ॥ (799-1)
जपि मन राम नामु सुखदाता ॥ (984-10)
जपि मन राम नामु सुखु पावैगो ॥ (1308-7)
जपि मन रामै नामु हरि जसु ऊतम काम ॥ (669-11)
जपि मन सति नामु सदा सति नामु ॥ (670-1)
जपि मन सिरी रामु ॥ (1202-6)
जपि मन हरि निरंजनु निरंकारा ॥ (720-7)
जपि मन हरि हरि नाम रसि ध्रापै ॥ (605-9)
जपि मन हरि हरि नामु गोबिंदे ॥ (800-12)
जपि मन हरि हरि नामु तरावैगो ॥ (1308-17)
जपि मन हरि हरि नामु नित धिआइ ॥ (720-11)
जपि मन हरि हरि नामु निधान ॥ (1337-9)
जपि मन हरि हरि नामु सलाह ॥ (604-12)
जपि मन हरि हरि हरि निसतरै ॥ (1263-13)
जपि मना तूं राम नराइणु गोविंदा हरि माधो ॥ (248-15)
जपि मुकंद मसतकि नीसानं ॥ (875-7)
जपि मुकंद सेवा ताहू की ॥४॥१॥ (875-10)
जपि राम नामु नानक निसतरीऐ होरु दुतीआ बिरथी साखी ॥२॥९८॥१२१॥ (1227-14)
जपि राम रामा दुख निवारे मिलै हरि जन संत ॥४॥ (502-10)
जपि हरि चरण मिटी खुधि तासु ॥१॥ रहाउ ॥ (195-18)
जपि हरि हरि कथा वडभागीआ हरि उतम पदु निरबाणी ॥ (996-18)
जपि हरि हरि किलविख नासे ॥१॥ (623-3)
जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ ॥३॥ (574-19)

जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ राम ॥ (574-16)
जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु लथिअड़े जगि तापा राम ॥ (574-13)
जपि हरि हरि नामु अचरजु परताप ॥ (743-11)
जपि हरि हरि नामु कमल परगासे हरि नामु नवं निधि पाई ॥ (572-8)
जपि हरि हरि सबदि जपीस ॥ (1296-17)
जपिओ नामु सुक जनक गुर बचनी हरि हरि सरणि परे ॥ (995-4)
जपीऐ अम्रित नामु बिघनु न लगै कोइ ॥ (521-9)
जपीऐ नामु अंन कै सादि ॥१॥ रहाउ ॥ (873-3)
जपीऐ नामु जपीऐ अंनु ॥ (873-3)
जपीऐ नामु जितु पारि उतारे ॥३॥ (804-14)
जपीऐ सहज धुनी हां ॥ (409-17)
जपु ॥ (1-3)
जपु कल सुजसु नानक गुर सहजु जोगु जिनि माणिओ ॥९॥ (1390-16)
जपु जापउ गुरमुखि हरि नाउ ॥७॥ (906-5)
जपु तप संजम वरत करे पूजा मनमुख रोगु न जाई ॥ (732-8)
जपु तपु करि करि संजम थाकी हठि निग्रहि नही पाईऐ ॥ (436-18)
जपु तपु संजमु कमावै करमु ॥ (1411-16)
जपु तपु संजमु करम न साधा ॥ (388-2)
जपु तपु संजमु छोडि सुक्रित मति राम नामु न अराधिआ ॥ (93-7)
जपु तपु संजमु दइआ धरमु जिसु देहि सु पाए ॥ (966-4)
जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ (12-8)
जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ (378-3)
जपु तपु संजमु नामु पिआरा ॥ (1062-8)
जपु तपु संजमु नामु सम्हालिआ ॥ (1348-19)
जपु तपु संजमु नालि तुधु होरु मुचु गरूरु ॥ (967-17)
जपु तपु संजमु भाणा सतिगुरू का करमी पलै पाइ ॥ (88-4)
जपु तपु संजमु भीखिआ करै ॥ (952-13)
जपु तपु संजमु मनै माहि बिनु नावै ध्रिगु जीवासु ॥ (86-3)
जपु तपु संजमु सभु गुर ते होवै हिरदै नामु वसाई ॥ (602-16)
जपु तपु संजमु सभु हिरि लइआ मुठी दूजै भाइ ॥ (648-19)
जपु तपु संजमु साधीऐ तीरथि कीचै वासु ॥ (56-12)
जपु तपु संजमु हउमै मारि ॥ (1343-4)
जपु तपु संजमु होरु कोई नाही ॥ (1060-8)
जपु तपु संजमु होहि जब राखे कमलु बिगसै मधु आस्रमाई ॥२॥ (23-18)
जपु तपु सतु संतोखु पिखि दरसनु गुर सिखह ॥ (1395-9)
जपु तपु सभु इहु सबदु है सारु ॥५॥२॥४॥ (661-16)
जपु तपु सभु किछु मंनिऐ अवरि कारा सभि बादि ॥ (954-6)

जप्यउ जिन्ह अरजुन देव गुरू फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ ॥६॥ (1409-8)
जब अंतरि प्रीति हरि सिउ बनि आई ॥ (494-17)
जब अंती अउसरु आइ बनिओ है उन्ह पेखत ही कालि ग्रसिआ ॥२॥ (497-12)
जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥ (290-17)
जब अजराईलु बसतनी तब चि कारे बिदाइ ॥३॥ (723-16)
जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥ (291-12)
जब अपुनी जोति खिंचहि तू सुआमी तब कोई करउ दिखा वखिआना ॥२॥ (797-12)
जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥ (291-6)
जब आणै वलवंच करि झूठु तब जाणै जगु जितीआ ॥१॥ (723-10)
जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥ (290-19)
जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥ (291-13)
जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥ (291-3)
जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ॥२०४॥ (1375-10)
जब आसा अंदेसा तब ही किउ करि एकु कहै ॥ (877-7)
जब इनि अपुनी अपनी धारी ॥ (235-13)
जब इनि अपुनो बाधिओ मोहा ॥ (235-14)
जब इनि एको एकी बूझिआ ॥ (235-16)
जब इनि करणैहारु पछाता ॥ (235-14)
जब इनि किछु करि माने भेदा ॥ (235-16)
जब इस का बरनु चिहनु न जापत ॥ (290-18)
जब इस ते इहु होइओ जउला ॥ (235-18)
जब इस ते सभ बिनसे भरमा ॥ (235-15)
जब इह जानै मै किछु करता ॥ (278-17)
जब इहु धावै माइआ अरथी ॥ (235-17)
जब इहु न सो तब किनहि उपाइआ ॥ (1146-16)
जब इहु मन महि करत गुमाना ॥ (235-10)
जब इहु हूआ सगल की रीना ॥ (235-10)
जब उस कउ कोई देवै मानु ॥ (892-1)
जब उस कउ कोई मनि परहरै ॥ (892-1)
जब एक निरंजन निरंकार प्रभ सभु किछु आपहि करता ॥३॥ (216-2)
जब एकहि हरि अगम अपार ॥ (291-2)
जब कछु न सीओ तब किआ करता कवन करम करि आइआ ॥ (748-14)
जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥ (487-6)
जब किस कउ इहु जानसि मंदा ॥ (235-12)
जब की उपजी तब की तैसी रंगुल भई मनि भाई ॥५॥ (1232-12)
जब की माला लई निपूते तब ते सुखु न भइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (856-5)
जब की राम रंगीलै राती राम जपत मन धीरे ॥२॥ (1197-6)

जब कुमभकु भरिपुरि लीणा ॥ (972-4)
जब गलि फास पड़ी अति भारी ॥ (1275-16)
जब गुण गाइ तब ही मनु त्रिपतै सांति वसै मनि आइ ॥ (1199-11)
जब गुरु देखै सुभ दिसटि नामु करता मुखि मेवा ॥ (1395-14)
जब गुरु मिलिआ तब मनु वसि आइआ ॥ (165-3)
जब घर मंदरि आगि लगानी कढि कूपु कढै पनिहारे ॥४॥ (981-18)
जब चितवउ तब तुहारे ॥ (533-7)
जब चूकै पंच धातु की रचना ऐसे भरमु चुकावहिगे ॥ (1103-17)
जब जमु आइ केस ते पकरै तह हरि को नामु छडावन ॥१॥ रहाउ ॥ (1104-6)
जब जमु आइ संघारै प्रानी तब तुमरो कउनु हवाल ॥१॥ (1222-6)
जब जमु आइ संघारै मूड़े तब तनु बिनसि जाइ बेहाल ॥१॥ रहाउ ॥ (805-14)
जब जरीऐ तब होइ भसम तनु रहै किरम दल खाई ॥ (654-10)
जब जानिआ तउ मनु मानिआ ॥ (656-2)
जब तुम सुनि ले बेद पुरानां ॥ (484-11)
जब ते छुटे आप हां ॥ (410-15)
जब ते जानि पाई एह बाता तब कुसल खेम सभ थीओ ॥ (978-15)
जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस ओइ आए ॥ (671-10)
जब ते भेटे साध दइआरा तब ते दुरमति दूरि भई ॥१॥ रहाउ ॥ (822-7)
जब ते सरनि तुमारी आए तब ते दोख गए ॥१॥ रहाउ ॥ (829-15)
जब ते साधसंगति मोहि पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1299-13)
जब ते साधू संगति पाए ॥ (101-15)
जब ते साधू संगु भइआ तउ छोडि गए निगहार ॥ (1002-17)
जब ते सुणिआ हरि जसु कानी ॥१॥ रहाउ ॥ (183-11)
जब ते सुध भए है बारहि तब ते थान थिरो ॥२॥ (1203-8)
जब ते सुधु नाही मनु अपना ॥१॥ रहाउ ॥ (485-17)
जब ते होई लांमी धाई चलहि नाही इक पैरे ॥४॥ (497-15)
जब दस मास उरध मुख रहता सो दिनु कैसे भूलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (654-11)
जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥ (281-17)
जब देखउ प्रभु अपुना सुआमी तउ अवरहि चीति न पावउ रे ॥ (404-7)
जब देखां पिरु पिआरा हरि गुण रसि रवा राम ॥ (1113-19)
जब देखा तब गावा ॥ (656-19)
जब देखिओ बेड़ा जरजरा तब उतरि परिओ हउ फरकि ॥६७॥ (1368-1)
जब धारी आपन सुंन समाधि ॥ (290-18)
जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥ (278-17)
जब न होइ राम नाम अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (329-19)
जब नख सिख इहु मनु चीन्हा ॥ (972-1)
जब नही चीनसि आतम राम ॥१॥ रहाउ ॥ (324-6)

जब नाची तब घूघटु कैसा मटुकी फोड़ि निरारी ॥ (1112-2)
जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे ॥ (291-7)
जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥ (291-3)
जब पकड़ी तब ही पछुतानी ॥३॥ (1275-15)
जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥ (291-5)
जब प्रिअ आइ बसे ग्रिहि आसनि तब हम मंगलु गाइआ ॥ (1267-1)
जब बुधि होती तब बलु कैसा अब बुधि बलु न खटाई ॥ (339-8)
जब भगति करहि संत मंडली तिन्ह मिलि हरि गावउ ॥ (813-17)
जब भुखौ तब भोजनु मांगै अघाए सूख सघारै ॥ (1214-14)
जब मुखि प्रीतमु साजनु लागा ॥ (394-12)
जब मेरी मेरी मिटि जाइ ॥ (1160-19)
जब राम नाम चितु लागा ॥१॥ रहाउ ॥ (655-3)
जब लउ नही भाग लिलार उदै तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ ॥ (1409-6)
जब लगि सासु होइ मन अंतरि साधू धूरि पिवीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (1326-9)
जब लगु कालि ग्रसी नही काइआ ॥ (1159-9)
जब लगु गुर का सबदु न कमाही ॥ (1060-8)
जब लगु घट महि दूजी आन ॥ (344-18)
जब लगु जरा रोगु नही आइआ ॥ (1159-8)
जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥ (278-16)
जब लगु जीउ पिंडु है साबतु तब लगि किछु न समारे ॥ (981-17)
जब लगु जीवहि कली काल महि जन नानक नामु सम्हारि ॥४॥३७॥ (379-14)
जब लगु जुगति न जानीऐ भाउ भगति भगवान ॥२॥ (337-12)
जब लगु जोति काइआ महि बरतै आपा पसू न बूझै ॥ (692-3)
जब लगु जोबनि सासु है तब लगु इहु तनु देह ॥ (20-11)
जब लगु जोबनि सासु है तब लगु नामु धिआइ ॥ (82-4)
जब लगु तागा बाहउ बेही ॥ (524-15)
जब लगु तुटै नाही मन भरमा तब लगु मुकतु न कोई ॥ (680-5)
जब लगु तेलु दीवे मुखि बाती तब सूझै सभु कोई ॥ (477-19)
जब लगु दरसु न परसै प्रीतम तब लगु भूख पिआसी ॥ (1197-10)
जब लगु दरसु न होइ किउ अम्रितु पीवीऐ राम ॥ (1113-16)
जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥ (661-1)
जब लगु बिकल भई नही बानी ॥ (1159-9)
जब लगु मन बैकुंठ की आस ॥ (1161-12)
जब लगु मनि बैकुंठ की आस ॥ (325-10)
जब लगु मेरी मेरी करै ॥ (1160-19)
जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥ (278-18)
जब लगु रसु तब लगु नही नेहु ॥१॥ रहाउ ॥ (328-4)

जब लगु रिदै न आवहि यादि ॥१॥ (351-8)
जब लगु सबद भेदु नही आइआ तब लगु कालु संताए ॥३॥ (1126-9)
जब लगु सबदि न भेदीऐ किउ सोहै गुरदुआरि ॥ (19-6)
जब लगु सासु सासु मन अंतरि ततु बेगल सरनि परीजै ॥ (1325-14)
जब लगु साहिबु मनि वसै तब लगु बिघनु न होइ ॥ (992-11)
जब लगु सिंघु रहै बन माहि ॥ (1161-2)
जब लगु हुकमु न बूझता तब ही लउ दुखीआ ॥ (400-16)
जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ ॥१॥ रहाउ ॥ (432-10)
जब सतसंग भए साधू जन हिरदै मिलिआ सांति मुरारी ॥ रहाउ ॥ (607-4)
जब साच अंदरि होइ साचा तामि साचा पाईऐ ॥ (565-19)
जब सुप्रसंन भए प्रभ मेरे गुरमुखि परचा लाइ ॥ (1199-14)
जब हम एको एकु करि जानिआ ॥ (324-1)
जब हम राम गरभ होइ आए ॥१॥ रहाउ ॥ (326-1)
जब हम सरणि प्रभू की आई राखु प्रभू भावै मारि ॥१॥ रहाउ ॥ (527-15)
जब हम हरि सेती मनु मानिआ करि दीनो जगतु सभु गोल अमोली ॥१॥ रहाउ ॥ (168-18)
जब हम होते तब तुम नाही अब तुम हहु हम नाही ॥ (339-7)
जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥ (657-17)
जब हिरदै रविआ चरण निवासु ॥७॥ (232-17)
जब हिरदै राम नाम गुणतासु ॥ (232-17)
जब ही निरधन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे ॥१॥ (633-7)
जब ही पाईअहि पारखू तब हीरन की साट ॥१६२॥ (1373-4)
जब ही सरनि गही किरपा निधि गज गराह ते छूटा ॥ (632-6)
जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी ॥ (633-1)
जब ही सिआरु सिंघ कउ खाइ ॥ (1161-3)
जब ही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेत करि भागी ॥२॥ (634-4)
जब ही होइ तबहि मनु माना ॥ (342-16)
जब हूए क्रिपाल मिले गुरदेउ ॥ (871-18)
जब होवत प्रभ केवल धनी ॥ (291-1)
जबलीधर नट अउ जलधारा ॥ (1430-18)
जम कंकरु नेड़ि न आवई रसना हरि गुण गाउ ॥१॥ (218-5)
जम का गलि जेवड़ा नित कालु संतावै ॥४॥ (231-3)
जम का जेवड़ा कदे न काटै अंते बहु दुखु पाइआ ॥४॥ (1068-7)
जम का डंडु न कबहू मूकै ॥ (1030-14)
जम का डंडु मूंड महि लागै ॥३॥२॥ (870-7)
जम का डंडु मूंड महि लागै खिन महि करै निबेरा ॥३॥ (480-1)
जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवहि जाइ ॥ (1249-3)
जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवै जाइ ॥ (85-16)

जम का मारगु द्रिसटि न आइआ ॥२॥ (197-5)
जम की कटीऐ तेरी फास ॥ (895-19)
जम की जेवड़ी तू आगै बंध ॥१॥ (889-17)
जम की त्रास नास होइ खिन महि सुख अनद सेती घरि जाईऐ ॥१॥ (500-9)
जम की त्रास मिटी सुखु पाइआ निकसी हउमै पीर ॥१॥ रहाउ ॥ (978-17)
जम की त्रास मिटै जिसु सिमरत नानक नामु धिआई ॥२॥२॥३३॥ (679-12)
जम की फासी कबहू न तूटै दूजै भाइ भरमाइदा ॥११॥ (1060-7)
जम के फाहे काटहि हरि जपि अकुल निरंजनु पाइआ ॥११॥ (1041-8)
जम के फाहे सतिगुरि तोड़े गुरमुखि ततु बीचारा हे ॥९॥ (1029-10)
जम कै पंथि न पाईअहि फिरि नाही मरणे ॥ (320-6)
जम को डंडु परिओ सिर ऊपरि तब सोवत तै जागिओ ॥ (1008-13)
जम को त्रास भइओ उर अंतरि सरनि गही किरपा निधि तेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (703-2)
जम को त्रासु मिटै नानक तिह अपुनो जनमु सवारै ॥३॥२॥ (902-7)
जम जंदारु न आवै नेड़े ॥४॥ (684-2)
जम जंदारु न मारै फेटै ॥ (1036-16)
जम जंदारु न लगई इउ भउजलु तरै तरासि ॥२॥ (22-6)
जम डंडा गलि संगलु पड़िआ भागि गए से पंच जना ॥३॥ (155-14)
जम डंडु सहहि सदा दुखु पाए ॥४॥ (231-13)
जम ते उलटि भए है राम ॥ (326-17)
जम ते राखै दे करि हाथ ॥३॥ (1149-11)
जम दरि बधा चोटा खाए ॥ (109-13)
जम दरि बधे मारीअहि कूक न सुणै पूकार ॥ (69-19)
जम दरि बधे मारीअहि नानक हरि भाइआ ॥२१॥ (1245-17)
जम दरि बधे मारीअहि फिरि विसटा माहि पचाहि ॥१॥ (648-7)
जम दरि बधे मारीअहि बहुती मिलै सजाइ ॥१॥ (648-19)
जम दरि बधे मारीअहि भरमहि भरमाइआ ॥ (1238-17)
जम दरि बाधउ मरै बिकारु ॥ (904-18)
जम दरि बाधा चोटा खाइ ॥ (841-17)
जम दरि बाधा ठउर न पावै अपुना कीआ कमाई ॥३॥ (596-9)
जम दरि बाधे आवण जाणे ॥ (839-3)
जम दरि बाधे कोइ न राखै ॥ (944-4)
जम दरि बाधे मारीअहि छूटसि साचै नाइ ॥२॥ (1331-6)
जम दरि बाधे मिलहि सजाई ॥ (1031-16)
जम दुआर जब पूछसि बवरे तब किआ कहसि मुकंदा ॥१॥ रहाउ ॥ (482-12)
जम दुआरि जा पकड़ि चलाइआ ता चलदा पछुताणा ॥४॥ (660-15)
जम दुआरि न होहु खड़ीआ सिख सुणहु महेलीहो ॥ (567-10)
जम पंथु बिखड़ा अगनि सागरु निमख सिमरत साधीऐ ॥ (248-17)

जम पुरि घोर अंधारु महा गुबारु ना तिथै भैण न भाई ॥ (584-18)
जम पुरि फासहिगा जम जाली ॥ (993-8)
जम पुरि बधे मारीअनि को सुणै न पूकारा ॥ (513-14)
जम पुरि बधे मारीअहि को न सुणे अरदासि ॥ (586-14)
जम पुरि बधे मारीअहि बहुती मिलै सजाइ ॥३॥ (994-19)
जम पुरि बधे मारीअहि वेला न लाहंनि ॥२॥ (755-4)
जम पुरि बांधि खरे कालंक ॥२॥ (1348-4)
जम पुरि बाधा चोटा खावै ॥२॥ (194-3)
जम पुरि बाधे मारीअहि बिरथा जनमु गवाई ॥६॥ (426-7)
जम पुरि बाधो लहै सजाई ॥ (906-2)
जम पुरि वजहि खड़ग करारे ॥ (993-7)
जम मगि दुखु पावै चोटा खावै अंति गइआ पछुताइआ ॥ (775-17)
जम मगि न जावहु ना दुखु पावहु जम का डरु भउ भागै ॥ (1110-6)
जम मगि बाधा खाहि चोटा सबद बिनु बेतालिआ ॥ (439-4)
जम मारग कै संगी पांथ ॥१॥ (1137-11)
जम मारग पंथु न सुझई उझड़ु अंध गुबारोवा ॥ (581-11)
जम मारगि नही जाणा सबदि समाणा जुगि जुगि साचै वेसे ॥ (582-3)
जम राजे के हेरू आए माइआ कै संगलि बंधि लइआ ॥५॥ (432-14)
जम वसि कीआ अंधु दुहेला ॥ (1031-18)
जमकंकर कालु सेवक पग ता के ॥ (1042-5)
जमकंकर नसि गए विचारे ॥१॥ (389-13)
जमकंकर मारि बिदारिअनु हरि दरगह लए छडाइ ॥ (1424-10)
जमकंकरु जोहि न सकई नानक प्रभू दइआल ॥८॥ (298-10)
जमकंकरु नेड़ि न आइआ ॥ (623-19)
जमकंकरु नेड़ि न आवई गुरसिख पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (818-4)
जमकंकरु नेड़ि न आवई फिरि बहुड़ि न मरीऐ ॥ (320-15)
जमकाल की फिरि आवै न फेटै ॥३॥ (1176-17)
जमकाल ते भए निकाणे ॥३॥ (677-5)
जमकालि गरठे करहि पुकारा ॥ (125-8)
जमकालि बाधा त्रिसना दाधा बिनु गुर कवणु छडाए ॥४॥ (753-15)
जमकालु घड़ी मुहतु निहाले अनदिनु आरजा छीजै हे ॥४॥ (1049-8)
जमकालु जोहि न सकई घटि चानणु बलिआ ॥ (1245-9)
जमकालु तिन कउ लगै नाही जो इक मनि धिआवहे ॥ (248-8)
जमकालु तिसु कदे न छोडै अंति गइआ पछुताई हे ॥८॥ (1046-10)
जमकालु तिसु नेड़ि न आवै ॥ (361-5)
जमकालु तिसु नेड़ि न आवै जो हरि हरि नामु धिआवणिआ ॥६॥ (111-13)
जमकालु तिसु नेड़ि न आवै महलि सचै सुखु पाइदा ॥१०॥ (1063-8)

जमकालु न सूझै माइआ जगु लूझै लबि लोभि चितु लाए ॥ (583-16)
जमकालु निहाले सास आव घटै बेतालिआ ॥ (1248-19)
जमकालु नेड़ि न आवई आपि बखसे करतारि ॥ (1415-19)
जमकालु मारे नित पति गवाई ॥ (1261-13)
जमकालु मिलै दे भेट सेवकु नित होई ॥ (1248-7)
जमकालु सदा है सिर ऊपरि दूजै भाइ पति खोई ॥२॥ (1131-7)
जमकालु सिरहु न उतरै अंतरि कपट विणासु ॥७॥ (1277-5)
जमकालु सिरहु न उतरै त्रिबिधि मनसा ॥ (140-7)
जमकालै की खबरि न पाई अंति गइआ पछुताइदा ॥१५॥ (1060-12)
जमकालै वसि जगु बांधिआ तिस दा फरू न कोइ ॥ (588-14)
जमण मरण का मूलु कटीऐ तां सुखु होवी मित ॥६६॥ (1421-6)
जमण मरणा आखीऐ तिनि करतै कीआ ॥ (420-10)
जमण मरणा हुकमो वरतै गुरमुखि आपु पछाणै ॥ (754-3)
जमण मरणु न चूकै फेरा ॥ (126-6)
जमण मरणु न सुझई किरतु न मेटिआ जाइ ॥५॥ (1009-18)
जमण मरणु विसारिआ मनमुख मुगधु गवारु ॥ (1010-1)
जमणु मरणा आइ गइआ बधिकु जीउ बिकारो ॥ (580-12)
जमणु मरणा कटिआ जोती जोति मिलाइ ॥१॥ (849-13)
जमणु मरणा ठाकि रहाए ॥ (222-19)
जमणु मरणा मिटि गइआ कालै का किछु न बसाइ ॥ (651-17)
जमणु मरणा मोहु उपाइआ ॥ (1154-17)
जमणु मरणा हुकमु पछाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (412-15)
जमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ॥ (472-18)
जमणु मरणा है संसारु ॥ (364-3)
जमणु मरणु कालु नही छोडै विणु नावै संतापी ॥ (1110-9)
जमणु मरणु तिन्हा का चूका जो हरि लागे पावै ॥ (438-7)
जमणु मरणु तिसै ते होई ॥ (1057-16)
जमणु मरणु न चुकई रंगु लगा दूजै भाइ ॥ (1414-12)
जमणु मरणु न चुकई हउमै करम कमाइ ॥ (1424-5)
जमणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥ (516-3)
जमणु मरणु न चूकई फिरि फिरि आवै जाइ ॥५॥ (68-12)
जमणु मरणु न तिन्ह कउ जो हरि लड़ि लागे ॥ (322-4)
जमणु मरणु वडा वेछोड़ा बिनसै जगु सबाए ॥ (581-19)
जमणु मरणु सिर ऊपरि ऊभउ गरभ जोनि दुखु पाए ॥२॥ (604-6)
जमदूत महा भइआन ॥ (838-4)
जमदूती है हेरिआ दुख ही महि पचा ॥ (1099-16)
जमदूतु तिसु निकटि न आवै ॥ (1079-18)

जमदूतु न आवै नेरै ॥ (630-2)
जमपुरि बधा दुख सहाही ॥ (111-10)
जमराजै नित नित मनमुख हेरिआ ॥ (143-4)
जमहि जीअ जाणै जे थाउ ॥ (1256-7)
जमि जमि मरै मरै फिरि जमै ॥ (1020-4)
जमि पकड़िआ तब ही पछुताना ॥६॥ (230-5)
जमिआ पूतु भगतु गोविंद का ॥ (396-3)
जमु चूहा किरस नित कुरकदा हरि करतै मारि कढाइआ ॥ (304-9)
जमु जंदारु जोहि नही साकै सरपनि डसि न सकै हरि का रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (905-6)
जमु जंदारु न लागै मोहि ॥ (904-3)
जमु जागाति न लगई जे चलै सतिगुर भाइ ॥ (1411-3)
जमु जागाति नाही करु लागै जिसु अगनि बुझी ठरु सीना हे ॥५॥ (1028-2)
जमु जागाती दूजै भाइ करु लाए ॥ (127-2)
जमु जागाती नेड़ि न आवै ना को तसकरु चोरु लगईआ ॥४॥ (833-12)
जमु न छोडै बहु करम कमावहि ॥ (1049-17)
जमु मंजारु कहा करै मोर ॥२॥ (323-18)
जमु लजाइ करि भागा ॥१॥ (626-8)
जमु सिरि मारे करे खुआरा ॥ (1026-6)
जमूआ ता कै निकटि न जाए ॥५॥ (869-15)
जमूआ न जोहै हरि की सरणाई ॥ (231-13)
जमै कालै ते छूटै सोइ ॥५॥ (1128-8)
जमै मरै न आवै जाइ ॥ (1174-19)
जरम करम मछ कछ हुअ बराह जमुना कै कूलि खेलु खेलिओ जिनि गिंद जीउ ॥ (1403-6)
जरा जमु तिसु जोहि न साकै साचे सिउ बणि आई हे ॥८॥ (1044-7)
जरा जीवन जोबनु गइआ किछु कीआ न नीका ॥ (856-1)
जरा जोहि न सकई सचि रहै लिव लाइ ॥ (1009-19)
जरा मरण गतु गरबु निवारे ॥ (223-18)
जरा मरण दुखु फेरि न होइ ॥६॥ (343-13)
जरा मरनु छूटै भ्रमु भागै ॥१॥ रहाउ ॥ (1162-8)
जरा मरा कछु दूखु न बिआपै आगै दरगह पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ (824-3)
जरा मरा तापु सभु नाठा गुण गोबिंद नित गावहु ॥३॥ (611-15)
जरा मरा तापु सिरति सापु सभु हरि कै वसि है कोई लागि न सकै बिनु हरि का लाइआ ॥ (168-8)
जरा मरा नह विआपई फिरि दूखु न पाइआ ॥ (808-16)
जरा हाक दी सभ मति थाकी एक न थाकसि माइआ ॥१॥ (793-1)
जरासंधि कालजमुन संघारे ॥ (224-19)
जरु आई जोबनि हारिआ ॥१७॥ (472-13)
जरु जरवाणा कंन्हि चड़िआ नचसी ॥ (1290-18)

जल की भीति पवन का थ्मभा रकत बुंद का गारा ॥ (659-3)
जल की मछुली तरवरि बिआई ॥ (481-12)
जल की माछुली चरै खजूरि ॥१॥ (718-11)
जल की सार न जाणही तां तूं कूकण पाहि ॥ (1282-7)
जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि ॥ (484-15)
जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिंन न होई ॥ (485-3)
जल तरंगु जिउ जलहि समाइआ ॥ (102-7)
जल ते ऊठहि अनिक तरंगा ॥ (736-13)
जल ते ओपति भई है कासट कासट अंगि तरावैगो ॥ (1309-15)
जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा ॥१॥ (1252-16)
जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइ ॥ (19-18)
जल ते थल करि थल ते कूआ कूप ते मेरु करावै ॥ (1252-5)
जल थल चहु दिसि वरसदा खाली को थाउ नाहि ॥ (1282-7)
जल थल नीरि भरे बरस रुते रंगु माणी ॥ (1108-16)
जल थल नीरि भरे सर सुभर बिरथा कोइ न जाए जीउ ॥२॥ (103-9)
जल थल नीरि भरे सीतल पवण झुलारदे ॥ (1102-5)
जल थल बन परबत पाताल ॥ (299-17)
जल थल महीअल सभि त्रिपताणे साधू चरन पखाली जीउ ॥३॥ (106-2)
जल थल माहे आपहि आप ॥ (343-12)
जल थल राखन है रघुनाथ ॥३॥१०॥१८॥ (1162-5)
जल दुध निआई रीति अब दुध आच नही मन ऐसी प्रीति हरे ॥ (454-15)
जल पुराइनि रस कमल परीख ॥ (152-12)
जल बाझु मछुली तड़फड़ावै संगि माइआ रुठीआ ॥ (928-6)
जल बिनु पिआस न ऊतरै छुटकि जांहि मेरे प्रान ॥ (1284-1)
जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ (133-7)
जल बिहून मीन कत जीवन दूध बिना रहनु कत बारो ॥ (829-3)
जल भीतरि कुमभ समानिआ ॥ (657-13)
जल महि अगनि उठी अधिकाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (323-17)
जल महि उपजै जल ते दूरि ॥ (411-18)
जल महि केता राखीऐ अभ अंतरि सूका ॥७॥ (419-14)
जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥ (955-10)
जल महि जीअ उपाइ कै बिनु जल मरणु तिनेहि ॥१॥ (59-19)
जल महि जोति रहिआ भरपूरि ॥ (411-18)
जल महि मीन माइआ के बेधे ॥ (1160-11)
जल महि रहउ जलहि बिनु खीनु ॥१॥ (323-18)
जल मीन प्रभ जीउ एक तूहै भिंन आन न जानीऐ ॥ (1278-9)
जल विचहु ब्मिबु उठालिओ जल माहि समाईआ ॥६॥ (1096-11)

जल संगि राती माछुली नानक हरि माते ॥२॥ (454-5)
जल ही ते सभ ऊपजै बिनु जल पिआस न जाइ ॥ (1420-1)
जलउ इह जिहवा दूजै भाइ ॥ (158-11)
जलणि बुझी सीतल भए मनि तनि उपजी सांति ॥ (928-19)
जलत अगनि महि जन आपि उधारे करि अपुने दे राखे हाथ ॥१॥ (828-17)
जलत अगनी मिलत नीर ॥ (987-1)
जलत अनिक तरंग माइआ गुर गिआन हरि रिद मंत ॥ (508-7)
जलत अ्मभ थ्मभि मनु धावत भरम बंधन भउ भागा ॥३॥ (336-10)
जलत नाही अगनि सागर सूखु मनि तनि देह ॥१॥ रहाउ ॥ (1006-13)
जलत रहै मिटवै कब नाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (1165-2)
जलता फिरै रहै नित ताता ॥ (1086-5)
जलतो जलतो कबहू न बूझत सगल ब्रिथे बिनु नामा ॥३॥ (215-15)
जलन थलन बसुध गगन एक एकंकारं ॥१॥ रहाउ ॥ (901-10)
जलनि बुझी दरसु पाइआ बिनसे माइआ ध्रोह जीउ ॥ (929-3)
जलनि बुझी मनि होई सांति ॥३॥ (389-19)
जलनि बुझी सीतल भए राखे प्रभि आप ॥ (819-4)
जलनि बुझी सीतलु होइ मनूआ सतिगुर का दरसनु पाए जीउ ॥१॥ (103-7)
जलनि बुझै हरि हरि गुन गावत ॥१॥ रहाउ ॥ (805-1)
जलने बुझाई सांति आई मिले चिरी विछुंनिआ ॥ (925-12)
जला ब्मिबु असरालु तिनै वरताइआ ॥ (1282-10)
जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ॥१॥ रहाउ ॥ (794-5)
जलि जलि खपै बहुतु विकारा ॥ (1044-8)
जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥ (466-6)
जलि जाउ एहु बडपना माइआ लपटाए ॥१॥ (745-8)
जलि जाउ जीवनु नाम बिना ॥ (1332-11)
जलि तरती बूडी जल माही ॥२॥ (1275-15)
जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥ (466-3)
जलि थलि डूंगरि देखां तीर ॥ (1257-8)
जलि थलि पूरन अंतरजामी ॥ (1080-11)
जलि थलि पूरि रहिआ गोसाई ॥ (1075-6)
जलि थलि पूरि रहिआ बनवारी घटि घटि नदरि निहाले ॥ (79-11)
जलि थलि पूरि रहिआ मिहरवाना ॥ (105-4)
जलि थलि पूरि रहे प्रभ सुआमी ॥ (331-8)
जलि थलि पेखि पेखि मनु बिगसिओ पूरि रहिओ स्रब मही ॥१॥ (1225-9)
जलि थलि महीअलि एकु रविआ नह दूजा द्रिसटाइआ ॥ (545-11)
जलि थलि महीअलि एकु समाणा ॥१॥ रहाउ ॥ (194-2)
जलि थलि महीअलि एको सोई गुरमुखि हुकमु पछाणए ॥ (440-13)

जलि थलि महीअलि गुपतो वरतै गुर सबदी देखि निहारी जीउ ॥ रहाउ ॥ (597-18)
जलि थलि महीअलि दह दिसि वरसाइआ ॥ (106-9)
जलि थलि महीअलि पूरन बिधाता ॥४॥३॥९॥ (739-5)
जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी घटि घटि रहिआ समाइआ ॥ (778-12)
जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी जत देखा तत सोई ॥ (780-19)
जलि थलि महीअलि पूरन हरि मीत ॥ (196-18)
जलि थलि महीअलि पूरनो अपरंपरु सोई ॥ (1318-2)
जलि थलि महीअलि पूरि पूरन कीट हसति समानिआ ॥ (458-17)
जलि थलि महीअलि पूरि पूरन तिसु बिना नही जाए ॥ (782-19)
जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ इक निमख मनहु न वीसरै ॥ (926-11)
जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ सरब दाता प्रभु धनी ॥ (704-18)
जलि थलि महीअलि पूरि रहिओ सरब नाथ अपार ॥ (1227-6)
जलि थलि महीअलि पूरिआ घटि घटि हरि भणिआ ॥ (319-15)
जलि थलि महीअलि पूरिआ प्रभु आपणी नदरि निहालि ॥२॥ (48-12)
जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥ (133-13)
जलि थलि महीअलि पूरिआ सुआमी सिरजनहारु ॥ (296-11)
जलि थलि महीअलि पेखै भरपूरि ॥ (1340-16)
जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा आपे सरब समाणा ॥ रहाउ ॥ (596-13)
जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी ॥२॥ (795-12)
जलि थलि महीअलि रवि रहिआ ॥ (1184-3)
जलि थलि महीअलि रवि रहिआ दूजा कोई नाहि ॥ (961-13)
जलि थलि महीअलि रवि रहिआ साचड़ा सिरजणहारो ॥ (579-7)
जलि थलि महीअलि रवि रहिआ सोइ ॥३॥ (728-13)
जलि थलि महीअलि रविआ सुआमी ऊच अगम अपारा ॥ (461-12)
जलि थलि महीअलि रविआ सोइ ॥ (1149-18)
जलि थलि महीअलि रविआ स्रब ठाई अगम रूप गिरधारे ॥३॥ (670-15)
जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरि ॥ (736-18)
जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरे ॥ (563-5)
जलि थलि महीअलि सरब निवासी नानक रमईआ डीठा ॥४॥३॥ (671-9)
जलि थलि महीअलि सुआमी सोई ॥ (1079-14)
जलि थलि महीअलि सोइ ॥७॥ (837-17)
जलि थलि सभ महि नामो डीठा ॥२॥ (863-6)
जलि थले राम नामु ॥ (801-1)
जलि धोवै बहु देह अनीति ॥ (265-18)
जलि नही डूबै तसकरु नही लेवै भाहि न साकै जाले ॥१॥ रहाउ ॥ (679-7)
जलि निवरी गुरि बूझ बुझाई ॥ (221-14)
जलि मलि काइआ माजीऐ भाई भी मैला तनु होइ ॥ (637-4)

जलि मलि जानी नावालिआ कपड़ि पटि अ्मबारे ॥ (580-17)
जलि हसती मलि नावालीऐ सिरि भी फिरि पावै छारु ॥ (1314-10)
जलि है सूतकु थलि है सूतकु सूतक ओपति होई ॥ (331-10)
जलीआ सभि सिआणपा उठी चलिआ रोइ ॥ (17-8)
जलु आकासी सुंनि समावै ॥ (411-10)
जलु ढोवउ इह सीस करि कर पग पखलावउ ॥ (813-13)
जलु तरंग अगनी पवनै फुनि त्रै मिलि जगतु उपाइआ ॥ (1345-16)
जलु थलु धरणि गगनु तह नाही आपे आपु कीआ करतार ॥२॥ (503-18)
जलु नही पवनु पावकु फुनि नाही सतिगुर तहा समाही ॥२॥ (333-10)
जलु पीवत जिउ तिखा मिटंत ॥ (914-13)
जलु बिलोवै जलु मथै ततु लोड़ै अंधु अगिआना ॥ (1009-2)
जलु मथीऐ जलु देखीऐ भाई इहु जगु एहा वथु ॥ (635-16)
जलु मेटिआ ऊभा करिआ ॥ (656-11)
जलु हेवत भूख अरु नंगा ॥ (1305-5)
जलै न पाईऐ राम सनेही ॥ (185-15)
जस अदेखि तस राखि बिचारा ॥ (341-12)
जस ओहु है तस लखै न कोई ॥२॥ (340-4)
जस कागद पर मिटै न मंसु ॥४॥२॥५॥ (871-7)
जस जंती महि जीउ समाना ॥ (325-3)
जस देखीऐ तरवर की छाइआ ॥ (325-2)
जसरथ राइ नंदु राजा मेरा राम चंदु प्रणवै नामा ततु रसु अम्रितु पीजै ॥४॥४॥ (973-16)
जसु करते संत सदा निहाल ॥ (863-13)
जसु गावत पाप लहान ॥ (1297-19)
जसु गावत भगति रसु उपजिओ माइआ की जाली तोरी ॥१॥ (979-11)
जसु गावहु वडभागीहो करि किरपा भगवंत जीउ ॥ (927-13)
जसु जाचउ देवै पति साखु ॥ (933-2)
जह अंती अउसरु आइ बनतु है तह राखै नामु साथई ॥३॥ (1320-11)
जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥ (291-15)
जह अनंदु दुखु दूरि पइआना ॥ (1349-9)
जह अनभउ तह भै नही जह भउ तह हरि नाहि ॥ (1374-3)
जह अनहत सूर उज्यारा ॥ (657-3)
जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥ (292-3)
जह अबोल तह मनु न रहावा ॥ (340-4)
जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥ (291-17)
जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥ (291-14)
जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥ (291-19)
जह आपु गइआ भउ भागा ॥ (879-10)

जह आवटे बहुत घन साथ ॥ (393-15)
जह आसा तह बिनसि बिनासा ॥ (840-18)
जह उपजै बिनसै तही जैसे पुरिवन पात ॥२॥ (857-8)
जह उहु जाइ तही सुखु पावै माइआ तासु न झोलै देव ॥ (857-16)
जह एकहि एक एक भगवंता ॥ (291-17)
जह कछु अहा तहा किछु नाही पंच ततु तह नाही ॥ (334-10)
जह करणी तह पूरी मति ॥ (25-3)
जह कह तह भरपूरु सबदु दीपकि दीपायउ ॥ (1395-7)
जह कह राखि लैहि गलि लाइ ॥ (371-18)
जह का बिछुरा तह थिरु लहै ॥४४॥ (342-19)
जह की उपजी तह रची पीवत मरदन लाग ॥ (337-17)
जह कीरतनु तेरा साधू गावहि तह मेरा मनु लागै ॥४॥६॥ (610-6)
जह कीरतनु हरीआ ॥ (537-6)
जह खेलै स्री नाराइना ॥३॥ (988-12)
जह गिआन प्रगासु अगिआनु मिटंतु ॥ (791-3)
जह गुन गाइ आनंद मंगल रूप तहां सदा सुख स्मपद ॥१॥ (1204-12)
जह गोबिंद भगतु सो धंनि देसु ॥ (1183-7)
जह चिति आवहि सो थानु सुहावा ॥ (563-15)
जह जपीऐ प्रभ केवल नामु ॥३॥ (197-17)
जह जह अउसरु आइ बनिओ है तहा तहा हरि धिआइओ ॥१॥ (498-12)
जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै ॥१॥ (403-14)
जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥ (659-2)
जह जह देखउ तह तह रामा ॥ (873-15)
जह जह देखउ तह तह साचा ॥ (224-7)
जह जह देखउ तह तह सुआमी कोइ न पहुचनहार ॥ (683-5)
जह जह देखा तह एको सोई इह गुरमति बुधि पाई ॥ (1260-9)
जह जह देखा तह जोति तुमारी तेरा रूपु किनेहा ॥ (596-14)
जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी फूटि मरा ॥१॥ (25-6)
जह जह देखा तह तह सुआमी ॥ (96-7)
जह जह देखा तह तह सोई ॥ (1343-16)
जह जह देखा तह नरहरी ॥१॥ (876-10)
जह जह देखा तह रहिआ समाई ॥१॥ रहाउ ॥ (822-12)
जह जह देखा तह हरि प्रभु सोइ ॥ (1134-15)
जह जह पेखउ तह नाराइण सगल घटा महि तागा ॥ (682-6)
जह जह पेखउ तह हजूरि दूरि कतहु न जाई ॥ (677-15)
जह जह भाणा तह तह राखे ॥ (276-8)
जह जह मन तूं धावदा तह तह हरि तेरै नाले ॥ (440-14)

जह जह रखहि आपि तह जाइ खड़ोवणा ॥ (523-4)
जह जह संत अराधहि तह तह प्रगटाइआ ॥ (456-18)
जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी ॥ (197-17)
जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी हरि अपनी पैज रखै जन दासा ॥१॥ रहाउ ॥ (860-6)
जह जाईऐ तहा सुहेले ॥ (623-15)
जह जानो तह रहनु न पावै ॥ (1005-2)
जह जानो सो चीति न आवै अह्मबुधि भए आंधे ॥१॥ (402-18)
जह जोति सरूपी जोति संगि समावै ॥ (291-10)
जह झिलि मिलि कारु दिसंता ॥ (657-1)
जह ते उठिओ तह ही आइओ सभ ही एकै एका ॥ (1209-16)
जह ते उपजिओ तही समाइओ इह बिधि जानी तबहूं ॥ (529-5)
जह ते उपजिओ तही समानो साई बसतु अही ॥ (1220-13)
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥ (135-16)
जह ते उपजी तही समानी इह बिधि बिसरी तब ही ॥ (334-5)
जह दरगहि प्रभु लेखा मागै तह छुटै नामु धिआइथई ॥१॥ (1320-9)
जह दुरगंध तहा तू बैसहि महा बिखिआ मद चाखी ॥१॥ रहाउ ॥ (1227-15)
जह दूखु सुणीऐ जम पंथु भणीऐ तह साधसंगि न डरपीऐ ॥ (454-17)
जह देखउ तह एकंकारु ॥५॥ (227-17)
जह देखउ तह एको एका ॥ (840-6)
जह देखउ तह नालि गुरि देखालिआ ॥ (752-17)
जह देखउ तह महा चंडाल ॥ (1347-13)
जह देखउ तह रवि रहे रखु राखनहारा ॥ (228-13)
जह देखउ तह रहिआ समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1193-16)
जह देखउ तह संगि एको रवि रहिआ ॥ (458-16)
जह देखउ तह सारिगपाणि ॥२॥ (1189-16)
जह देखां तह एका बेदन आपे बखसै सबदि धुरे ॥१॥ रहाउ ॥ (1153-9)
जह देखा तह अंतरजामी ॥ (1085-5)
जह देखा तह अवरु न कोइ ॥१॥ (686-5)
जह देखा तह एकु तूं सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ (55-6)
जह देखा तह एकु तू अंतु न पारावारु ॥ (934-11)
जह देखा तह एकु है गुरमुखि परगटु होइ ॥८॥ (1413-12)
जह देखा तह एको सोई ॥ (1051-14)
जह देखा तह एको सोई ॥३॥ (357-11)
जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबंधु ॥ (551-3)
जह देखा तह दीन दइआला ॥ (1038-13)
जह देखा तह पिरु है भाई ॥ (738-3)
जह देखा तह रवि रहे किनि कीमति होई ॥३॥ (421-6)

जह देखा तह रवि रहे सिव सकती का मेलु ॥ (21-4)
जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ (661-7)
जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ (944-8)
जह देखा तह रहिआ समाइ ॥३॥ (877-1)
जह देखा तह रहिआ समाई ॥ (798-15)
जह देखा तह रहिआ समाई ॥८॥ (1154-15)
जह देखा तह सचु पसरिआ अवरु न दूजा कोई ॥ (769-14)
जह देखा तह सोइ अवरु न जाणीऐ ॥ (420-6)
जह देखा तू सभनी थाई ॥ (1052-1)
जह देखा सचु सभनी थाई ॥ (119-18)
जह नही आपु तहा होइ गावउ ॥२॥ (1159-1)
जह नामु समाधिओ हरखु सोगु सम करि सहारे ॥ (1393-14)
जह निरंजन निरंकार निरबान ॥ (291-9)
जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥ (291-8)
जह पउड़े स्री कमला कंत ॥४॥ (1162-12)
जह पसरै पासारु संत परतापि ॥ (292-3)
जह पेखउ तहा तुम बसना ॥ (181-16)
जह पेखा तह रहिआ समाइ ॥२॥ (240-11)
जह पेखा तह सोई ॥ (622-14)
जह प्रभ सिमरे तही मनु मानिआ ॥१॥ (224-12)
जह बरभंडु पिंडु तह नाही रचनहारु तह नाही ॥ (334-12)
जह बैसउ तह नाले बैसै ॥ (371-8)
जह बैसालहि तह बैसा सुआमी जह भेजहि तह जावा ॥ (993-12)
जह बैसावहि बैसह भाई जह भेजहि तह जाउ ॥ (1419-6)
जह भंडारी हू गुण निकलहि ते कीअहि परवाणु ॥ (1239-11)
जह भंडारु गोबिंद का खुलिआ जिह प्रापति तिह लइआ ॥ (612-15)
जह भउ नाही तहा आसनु बाधिओ सिंगी अनहत बानी ॥ (208-5)
जह भीतरि घट भीतरि बसिआ बाहरि काहे नाही ॥ (876-12)
जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥ (264-13)
जह महा भइआन दूख जम सुनीऐ तह मेरे प्रभ तूहै सहाई ॥ (822-13)
जह महा भइआन दूत जम दलै ॥ (264-2)
जह मात पिता सुत भाई न पहुचै तहा तहा तू रखा ॥१॥ रहाउ ॥ (1212-6)
जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥ (264-1)
जह मुसकल होवै अति भारी ॥ (264-2)
जह राखै सोई मुकति थानु ॥ (890-14)
जह राखै सोई सुख थाना ॥ (1077-12)
जह लालच जागाती घाट ॥ (393-14)

जह सतिगुरु तह सतसंगति बणाई ॥ (160-6)
जह सतिगुरु तहा हउमै सबदि जलाई ॥२॥ (160-7)
जह सतिगुरु सहजे हरि गुण गाई ॥ (160-7)
जह सरब कला आपहि परबीन ॥ (291-12)
जह सरूप केवल जगदीस ॥ (291-10)
जह साध संत इकत्र होवहि तहा तुझहि धिआवहे ॥ (248-2)
जह साध संतन होवहि इकत्र ॥ (676-17)
जह साधू गोबिद भजनु कीरतनु नानक नीत ॥ (256-13)
जह सेवक गोपाल गुसाई ॥ (1349-1)
जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी वडभागी हरि जपना ॥ (670-2)
जहां कीरतनु साधसंगति रसु तह सघन बास फलांनद ॥२॥ (1204-14)
जहां नामु मिलै तह जाउ ॥ (414-19)
जहां बीसरै ठाकुरु पिआरो तहां दूख सभ आपद ॥ (1204-12)
जहां बैसि हउ भोजनु खाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1195-6)
जहां सबदु वसै तहां दुखु जाए ॥ (364-12)
जहां सिमरनु भइओ है ठाकुर तहां नगर सुख आनंद ॥१॥ रहाउ ॥ (1204-11)
जहा कहां प्रभु तूं वरतंता ॥२॥ (1136-7)
जहा कहा तुझु राखै सभ ठाई सो ऐसा प्रभु सेवि सदा तू अपना ॥१॥ रहाउ ॥ (860-16)
जहा जहा इह देही धारी रहनु न पाइओ कबहूं ॥१॥ (529-6)
जहा जहा धूअ नारदु टेके नैकु टिकावहु मोहि ॥ (873-19)
जहा जाईऐ तह जल पखान ॥ (1195-13)
जहा जाउ तह वेखा सोइ ॥ (363-17)
जहा जाणा सो थानु विसारिओ इक निमख नही मनु लाइओ ॥५॥ (1017-5)
जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै ॥ (264-14)
जहा दाणे तहां खाणे नानका सचु हे ॥२॥ (653-12)
जहा देखा तहा सुआमी पारब्रहमु सभ ठाए ॥ (542-13)
जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥ (264-12)
जहा पठावहु जांउ तती री ॥२॥ (739-7)
जहा पठावहु तह तह जाईं ॥ (386-3)
जहा बसहि पीत्मबर पीर ॥१॥ (478-18)
जहा बोल तह अछर आवा ॥ (340-3)
जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि ॥१५५॥ (1372-15)
जहा सा किछु तहा लागिओ तिलु न संका मान ॥६॥ (1018-5)
जहा स्रवन हरि कथा न सुनीऐ तह महा भइआन उदिआनद ॥ (1204-13)
जां आपे नदरि करे हरि प्रभु साचा तां इहु मनु गुरमुखि ततकाल वसि आवै ॥३॥ (1260-2)
जां आपे वरतै एको सोई ॥२॥ (1128-14)
जां एको वेखै तां एको जाणै ॥ (1261-10)

जां करता वलि ता सभु को वलि सभि दरसनु देखि करहि साबासि ॥ (305-6)
जां कुआरी ता चाउ वीवाही तां मामले ॥ (1381-5)
जां कै घरि ईसरु बावला जगत गुरू तत सारखा गिआनु भाखीले ॥ (1292-5)
जां गति कउ जोगीसुर बाछत सो गति छिन महि पाई ॥२॥ (902-1)
जां चै घरि कुलालु ब्रहमा चतुर मुखु डांवड़ा जिनि बिस्व संसारु राचीले ॥ (1292-4)
जां चै घरि कूरमा पालु सहस्र फनी बासकु सेज वालूआ ॥ (1292-9)
जां चै घरि गण गंधरब रिखी बपुड़े ढाढीआ गावंत आछै ॥ (1292-7)
जां चै घरि दिग दिसै सराइचा बैकुंठ भवन चित्रसाला सपत लोक सामानि पूरीअले ॥ (1292-2)
जां चै घरि निकट वरती अरजनु ध्रू प्रहलादु अ्मबरीकु नारदु नेजै सिध बुध गण गंधरब बानवै हेला ॥ (1292-12)
जां चै घरि लछिमी कुआरी चंदु सूरजु दीवड़े कउतकु कालु बपुड़ा कोटवालु सु करा सिरी ॥ (1292-3)
जां जतु जोगी तां काइआ भोगी ॥२॥ (356-16)
जां तिसु भावै तां करे भोगु ॥ (1128-13)
जां तिसु भावै ता लागै भाउ ॥ (92-3)
जां तुधु भावै ता दुरमति जाइ ॥ (354-12)
जां तूं देहि जपी तेरा नाउ ॥ (354-12)
जां तूं देहि जपी नाउ तेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (357-10)
जां न सिआ किआ चाकरी जां जमे किआ कार ॥ (1242-8)
जां पंच रासी तां तीरथ वासी ॥१॥ (356-14)
जां पकड़ि चलाइआ कालि तां खरा डरावणा ॥ (645-5)
जां पति लेखै ना पवै तां जीअ किथै फिरि पाहि ॥२॥ (358-3)
जां पति लेखै ना पवै तां सभि निराफल काम ॥१॥ (358-2)
जां पति लेखै ना पवै तां सभे कुपरवाण ॥३॥ (358-5)
जां पिरु अंदरि तां धन बाहरि ॥ (965-3)
जां पिरु बाहरि तां धन माहरि ॥ (965-4)
जां बूझै तां सूझै सोई ॥ (1242-13)
जां भउ पाए आपणा बैरागु उपजै मनि आइ ॥ (490-17)
जां मूं इकु त लख तउ जिती पिनणे दरि कितड़े ॥ (1425-5)
जां सदे तां ढिल न पाइ ॥ (1327-9)
जां सहु देखनि आपणा नानक थीवनि भी हरे ॥८॥ (1422-7)
जां सुखु ता सहु राविओ दुखि भी सम्हालिओइ ॥ (792-1)
जां सुधोसु तां लहणा टिकिओनु ॥४॥ (967-16)
जां हउ तेरा तां सभु किछु मेरा हउ नाही तू होवहि ॥ (1242-14)
जांदे बिलम न होवई विणु नावै बिसमादु ॥१॥ (50-4)
जांमणु मरणा दीसै सिरि ऊभौ खुधिआ निद्रा कालं ॥ (1275-11)
जा आए ता तिनहि पठाए चाले तिनै बुलाइ लइआ ॥ (907-1)
जा आपि क्रिपालु होवै हरि सुआमी ता आपणां नाउ हरि आपि जपावै ॥ (555-7)

जा आपे देवै सोई ॥१॥ (599-8)
जा आपे नदरि करे प्रभु सचा ता होवै दासनि दासु ॥ (949-13)
जा आपे मिलिआ सोई ॥४॥१॥१२॥ (599-12)
जा आपे होइ दइआलु तां भगत संगु पाईऐ ॥९॥ (520-12)
जा इहु हिरदा देह न होती तउ मनु कैठै रहता ॥ (945-14)
जा उठी चलसी कंतड़ा ता कोइ न पुछै तेरी बात ॥२॥ (50-18)
जा उहु निरमलु तां हम जचना ॥३॥ (391-5)
जा कउ अपनी किरपा धारै ॥ (190-4)
जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥ (277-10)
जा कउ अलखु लखाए आपे अकथ कथा बुधि ताहा हे ॥६॥ (1032-15)
जा कउ आइओ एकु रसा ॥ (672-9)
जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ (13-17)
जा कउ आए सोई विहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ (205-16)
जा कउ आपि करहि फुरमानु ॥३॥ (200-17)
जा कउ करमि लिखिआ धुरि आए ॥३॥ (1270-10)
जा कउ किरपा करहु प्रभ ता कउ लावहु सेव ॥३॥ (814-14)
जा कउ कोइ न राखै प्राणी तिसु तू देहि असराउ ॥१॥ (1202-13)
जा कउ क्रिपा करहु प्रभ मेरे सो हरि का जसु गावै ॥ (1221-8)
जा कउ क्रिपा करी जगदीसुरि तिनि साधसंगि मनु जिता ॥ (1117-15)
जा कउ क्रिपा करी प्रभि मेरै मिलि साधसंगति नाउ लीआ ॥३॥ (611-4)
जा कउ खोजहि असंख मुनी अनेक तपे ॥ (455-13)
जा कउ खोजहि सरब उपाए ॥ (101-8)
जा कउ खोजहि सुरि नर देव ॥ (1181-9)
जा कउ गुरमुखि आपि बुझाई ॥ (655-5)
जा कउ गुरमुखि रिदै बुधि ॥ (212-2)
जा कउ गुरि दीनो इहु अम्रितु तिस ही कउ बनि आवै ॥१॥ (672-9)
जा कउ गुरि हरि दीए सूखा ॥ (887-16)
जा कउ गुरु हरि मंत्रु दे ॥ (211-14)
जा कउ चिंता बहुतु बहुतु देही विआपै रोगु ॥ (70-10)
जा कउ चीति आवै गुरु अपना ॥ (1298-7)
जा कउ जोगी खोजत हारे पाइओ नाहि तिह पारा ॥ (703-8)
जा कउ टेक तुम्हारी सुआमी ता कउ नाही चिंता ॥ (380-14)
जा कउ ठाकुरि दीआ मानु ॥३॥ (888-9)
जा कउ तुम किरपाल भए सेवक से परवाना ॥३॥ (400-2)
जा कउ तुम दीनी प्रभ धीर ॥ (188-3)
जा कउ तुम भए समरथ अंगा ॥ (188-1)
जा कउ तू राखहि रखनहार ॥ (1169-16)

जा कउ दइआ करहु मेरे सुआमी ॥ (390-4)
जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि तिनि गुरहि कमानो मंता ॥३॥ (672-12)
जा कउ दइआ तुमारी होई से साह भले भगवंता ॥३॥ (380-15)
जा कउ दइआ मइआ प्रभ सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (236-15)
जा कउ दइआ मइआ बिधाता ॥ (252-18)
जा कउ दीनो हरि रसु अपना ॥ (252-14)
जा कउ देखत दरिद्रु जावै नामु सो निधानु पावै गुरमुखि ग्यानि दुरमति मैलु धोवै जीउ ॥ (1398-13)
जा कउ द्रिसटि पूरन भगवानै ॥ (256-7)
जा कउ द्रिसटि मइआ हरि राइ ॥ (374-6)
जा कउ नदरि करहि तूं अपणी साई सचि समाणी ॥४॥ (423-3)
जा कउ नाम बडाई ॥१॥ (1006-3)
जा कउ नामु न दीआ मेरै सतिगुरि से मरि जनमहि गावारा ॥१॥ (1003-10)
जा कउ प्रगट भए गोपाल ॥ (1143-6)
जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥ (292-9)
जा कउ बखसे मेले सोइ ॥ (1261-10)
जा कउ बिनसत बार न काई ॥१॥ (740-8)
जा कउ बिसरै राम नाम ताहू कउ पीर ॥ (212-1)
जा कउ भइओ क्रिपालु बीठुला तिनि हरि हरि अजर जरन ॥३॥ (1206-11)
जा कउ भई तुमारी धीर ॥ (978-17)
जा कउ भए क्रिपाल क्रिपा निधि ॥ (238-8)
जा कउ भए क्रिपाल गुसाई ॥ (194-14)
जा कउ भए क्रिपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ (454-14)
जा कउ भए क्रिपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ (521-16)
जा कउ भए गोविंद सहाई ॥ (701-9)
जा कउ भेटिओ ठाकुरु अपना ॥ (1143-7)
जा कउ भेटिओ हरि हरि राइ ॥ (393-4)
जा कउ मइआ भई करतार ॥१॥ (888-5)
जा कउ महलु हजूरि दूजे निवै किसु ॥ (729-16)
जा कउ मिलिओ नामु निधाना ॥ (385-13)
जा कउ मिहर मिहर मिहरवाना ॥ (1084-11)
जा कउ मुनि ध्यानु धरै फिरत सगल जुग कबहु क कोऊ पावै आतम प्रगास कउ ॥ (1404-13)
जा कउ मुसकलु अति बणै ढोई कोइ न देइ ॥ (70-6)
जा कउ मेलि लए प्रभु नानकु से जन दरगह माने ॥२॥१०५॥१२८॥ (1228-18)
जा कउ रसु हरि रसु है आइओ ॥ (186-9)
जा कउ राखहु आपि गुसाई ॥ (258-4)
जा कउ राखि लेइ मेरा सुआमी ता कउ सुमति देइ पै कानै ॥ (1320-16)
जा कउ राखै अपणी सरणाई ॥ (1128-9)

जा कउ राखै राखणहारु ॥ (868-6)
जा कउ राखै हरि राखणहारा ॥ (1070-8)
जा कउ राम नाम लिव लागी ॥ (178-3)
जा कउ राम भतारु ता कै अनदु घणा ॥ (457-5)
जा कउ रिदै प्रगासु भइओ हरि उआ की कही न जाइ कहावत ॥२॥ (1205-6)
जा कउ रे किरपा करै जीवत सोई मरै साधसंगि माइआ तरै ॥ (213-13)
जा कउ लिपत न होइ पुंन अरु पाप ॥६॥ (1162-15)
जा कउ सचु बुझावहि अपणा सहजे नामि समाणी ॥८॥१॥२३॥ (423-8)
जा कउ सतिगुरि दीओ नामु ॥३॥ (1143-7)
जा कउ सतिगुरु अपना राखै ॥ (1298-8)
जा कउ सतिगुरु मइआ करेही ॥२॥ (1299-1)
जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हू गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1008-5)
जा कउ सुआमी कीनो दानु ॥१॥ (1298-11)
जा कउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरा ॥ (679-17)
जा कउ होंहि क्रिपाल सु जनु प्रभ तुमहि मिलासी ॥ (1386-7)
जा कउ होत दइआलु किरपा निधि सो गोबिंद गुन गावै ॥ (1186-16)
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥ (4-19)
जा का अंगु दइआल प्रभ ता के सभ दास ॥ (808-1)
जा का अंतु न जानसि कोइ ॥ (863-12)
जा का असथलु तोलु अमितो ॥ (1360-18)
जा का कहिआ दरगह चलै ॥ (186-10)
जा का कारजु सोई परु जाणै जे गुर कै सबदि समाही ॥३॥ (162-10)
जा का कीआ सगल जहानु ॥ (465-10)
जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ (1152-15)
जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ (182-16)
जा का चवरु सभ ऊपरि झूलै ॥ (393-9)
जा का ठाकुरु तुही प्रभ ता के वडभागा ॥ (399-17)
जा का ठाकुरु तुही सारिंगधर मोहि कबीरा नाऊ रे ॥२॥२॥१५॥६६॥ (338-6)
जा का तसू नही संगि चालै ॥ (256-6)
जा का दानु निखूटै नाही ॥ (395-10)
जा का द्रिसटि कछू न आवै ॥ (277-9)
जा का धनी अगम गुसाई ॥ (390-3)
जा का नामु सिमरत भउ जाइ ॥ (914-12)
जा का बासा गोर महि सो किउ सोवै सुख ॥१२७॥ (1371-6)
जा का भरवासा सभ घट माहि ॥ (1144-17)
जा का मनु होइ सगल की रीना ॥ (266-8)
जा का मीतु साजनु है समीआ ॥ (186-8)

जा का सबदु सुनत सुख सारे ॥ (739-18)
जा का सभु किछु ता का होइ ॥ (186-10)
जा का सिमरनु बिरथा न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (900-14)
जा का हरि सुआमी प्रभु बेली ॥ (378-19)
जा का हुकमु न मेटै कोइ ॥ (1144-19)
जा कारणि इह दुलभ देह ॥ (1181-4)
जा कारणि जगु ढूढिअउ नेरउ पाइअउ ताहि ॥१६॥ (341-2)
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥१८४॥ (1374-8)
जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहू सहीऐ ॥४॥२॥ (658-8)
जा की ओट गही सुखु पाइआ राखे किरपा धारी ॥१॥ रहाउ ॥ (889-6)
जा की कोइ न मेटै दाति ॥१॥ (864-9)
जा की गति मिति कही न जाइ ॥ (1181-9)
जा की गति मिति कही न जाइ ॥ (862-17)
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ॥ (1106-13)
जा की जोति जीअ परगास ॥ (184-12)
जा की टहल जमदूत बिदारे ॥२॥ (739-18)
जा की टहल न बिरथी जाइ ॥ (184-7)
जा की टहल पावै दरगह मानु ॥ (267-7)
जा की त्रिभवण सोझी होई ॥ (1039-6)
जा की दिसटि नाद लिव लागै ॥१॥ रहाउ ॥ (92-15)
जा की द्रिसटि अचल ठाण बिमल बुधि सुथान पहिरि सील सनाहु सकति बिदारि ॥ (1391-14)
जा की द्रिसटि अम्रित धार कालुख खनि उतार तिमर अग्यान जाहि दरस दुआर ॥ (1391-6)
जा की द्रिसटि दुख डेरा ढहै ॥ (1142-17)
जा की द्रिसटि सदा सुखु होइ ॥२॥ (192-6)
जा की द्रिसटि होइ सदा निहाल ॥ (238-19)
जा की धीरक इसु मनहि सधारे ॥ (739-18)
जा की धूरि करे पुनीता ॥ (1078-3)
जा की धूरि काटै जम जालु ॥ (900-15)
जा की नदरि सदा सुखु होइ ॥ रहाउ ॥ (595-5)
जा की प्रीति अपुने प्रभ नालि ॥३॥ (199-5)
जा की प्रीति गोबिंद सिउ लागी ॥ (186-8)
जा की प्रीति सदा सुखु होइ ॥ (187-16)
जा की बखस न मेटै कोइ ॥ (184-12)
जा की बखस न मेटै कोई ॥ (395-11)
जा की भगति करहि जन पूरे मुनि जन सेवहि गुर वीचारि ॥१॥ रहाउ ॥ (489-10)
जा की भगति हेतु मुखि नामु ॥ (416-10)
जा की महा बिखड़ी कार ॥ (837-16)

जा की राम नाम लिव लागी ॥ (1217-9)
जा की राम नामि लिव लागी ॥१॥ (193-5)
जा की रेनु बांछै संसार ॥२॥ (863-18)
जा की लीला की मिति नाहि ॥ (284-5)
जा की वासु बनासपति सउरै तासु चरण लिव रहीऐ ॥३॥ (1329-2)
जा की सरणि पइआं सुखु पाईऐ बाहुड़ि दूखु न होई ॥१॥ रहाउ ॥ (617-17)
जा की सरणि पइआ गति पाईऐ ॥ (106-12)
जा की सरनि सदा सुखु होइ ॥१॥ (901-5)
जा की सेव न बिरथी जाइ ॥ (1152-10)
जा की सेव न बिरथी जाई ॥ रहाउ ॥ (619-4)
जा की सेव सिव सिध साधिक सुर असुर गण तरहि तेतीस गुर बचन सुणि कंन रे ॥ (1401-5)
जा की सेवा दस असट सिधाई ॥ (390-3)
जा की सेवा नव निधि पावै ॥ (267-5)
जा की सेवा निफल न होवत खिन महि करे उधार ॥१॥ (500-13)
जा की सेवा पाईऐ मानु ॥ (1152-9)
जा की सेवा सरब निधानु ॥ (184-6)
जा की सेवा सरब सुख पावहि ॥ (395-8)
जा की सेवा सिध साध मुनि जन सुरि नर जाचहि सबद सारु एक लिव लाई है ॥ (1398-15)
जा की सोइ सुणी मनु जीवै ॥ (1078-11)
जा की सोभा घटि घटि बनी ॥२॥ (182-18)
जा कीमति पाइ त कही न जाइ ॥ (84-1)
जा के करतब लखे न जाहि ॥ (1144-17)
जा के कीने है जीव ॥ (896-17)
जा के कुट्मब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजहु बंनारसी आस पासा ॥ (1293-12)
जा के चाकर कउ नही डान ॥ (238-17)
जा के चाकर कउ नही बान ॥ (238-17)
जा के जीअ जंत धनु मालु ॥ (151-12)
जा के देखत दुआरे काम क्रोध ही निवारे जी हउ बलि बलि जाउ सतिगुर साचे नाम पर ॥३॥ (1399-2)
जा के निगम दूध के ठाटा ॥ (655-7)
जा के बंधन काटे राइ ॥ (887-7)
जा के बिछुरत होत मिरतका ग्रिह महि रहनु न पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1207-13)
जा के भगत आनंद मै ॥ (1181-10)
जा के भगत कउ नाही खै ॥ (1181-10)
जा के भगत कउ नाही भै ॥ (1181-11)
जा के भगत कउ सदा जै ॥३॥ (1181-11)
जा के मसतकि लिखिओ करमा ॥ (1165-5)
जा के रुख बिरख आराउ ॥ (25-13)

जा के संग ते बीछुरा ता ही के संगि लागु ॥१२९॥ (1371-8)
जा के हिरदै अवरु न होई ॥५॥३८॥ (330-19)
जा के हिरदै नामु न होई ॥४॥८॥ (1159-6)
जा कै अंतरि दरदु न पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (793-15)
जा कै अंतरि प्रगटिओ आप ॥ (887-8)
जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥ (267-13)
जा कै अंतरि बसै हरि नामु ॥ (1152-16)
जा कै अंतरि वसै प्रभु आपि ॥ (865-18)
जा कै अंतरि हरि हरि सुआदु ॥ (889-3)
जा कै अचिंतु वसै मनि आइ ॥ (186-13)
जा कै आस नाही निरास नाही चिति सुरति समझाई ॥ (1328-12)
जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा ॥ (1293-11)
जा कै उपदेसि भरमु भउ नसै ॥ (863-17)
जा कै ऊणा कछहू नाहि ॥१॥ (187-13)
जा कै ऊन नाही काहू बात ॥ (238-18)
जा कै करमि परापति होइ ॥ (184-3)
जा कै करमु नाही धरमु नाही नाही सुचि माला ॥ (1328-10)
जा कै कामि उतरै सभ भूख ॥ (238-16)
जा कै कामि तेरा वड गमरु ॥ (238-16)
जा कै कामि न जोहहि दूत ॥ (238-16)
जा कै कामि होवहि तूं अमरु ॥५॥ (238-16)
जा कै कीए स्रमु करै ते बैर बिरोधी ॥ (809-14)
जा कै कीन्है होत बिकार ॥ (1193-1)
जा कै कीरतनु हरि धुनी ॥१॥ रहाउ ॥ (1180-15)
जा कै कीरति निरमल सार ॥ (863-17)
जा कै केवल नामु अधारी ॥१॥ रहाउ ॥ (207-14)
जा कै ग्रिह महि सगल निधान ॥ (1152-8)
जा कै ग्रिहि नव निधि हरि भाई ॥ (108-10)
जा कै ग्रिहि सभु किछु है पूरनु सो भेटिआ निरभै धनी ॥१॥ रहाउ ॥ (389-17)
जा कै ग्रिहि हरि नाहु सु सद ही रावए ॥ (457-3)
जा कै घरि सगले समाहि ॥ (987-13)
जा कै घरि सभु किछु है भाई नउ निधि भरे भंडार ॥ (639-16)
जा कै घरि सरब निधान ॥ (895-12)
जा कै जीअ जैसी बुधि होई ॥ (343-2)
जा कै दफतरि पुछै न लेखा ॥ (238-17)
जा कै दरसि पाप कोटि उतारे ॥ (739-16)
जा कै दुखु सुखु सम करि जापै ॥ (186-11)

जा कै नामि सुनिऐ जमु छोडै ता की सरणि न पावसि रे ॥ (1000-15)
जा कै नामु बसै मन माही ॥३॥ (891-2)
जा कै निकटि न आवै कोई ॥ (386-17)
जा कै पाइ जगतु सभु लागै सो किउ पंडितु हरि न कहै ॥१॥ (970-6)
जा कै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥ (722-12)
जा कै बरतु नाही नेमु नाही नाही बकबाई ॥ (1328-11)
जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा ॥२॥ (1293-11)
जा कै बिनसिओ मन ते भरमा ॥ (186-13)
जा कै भागवतु लेखीऐ अवरु नही पेखीऐ तास की जाति आछोप छीपा ॥ (1293-9)
जा कै मंत्रि हरि हरि मनि वसै ॥ (863-17)
जा कै मनि गुर की परतीति ॥ (283-13)
जा कै मनि तनि नामु बसाही ॥ (257-18)
जा कै मनि पूरनु निरंकारु ॥ (1338-7)
जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥ (287-12)
जा कै मनि बसिआ निरंकारु ॥ (292-18)
जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥ (268-8)
जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥ (295-11)
जा कै मनि वसिआ प्रभु एकु ॥ (1145-18)
जा कै मनि वसिआ हरि नामा ॥४॥२१॥७२॥ (388-16)
जा कै मनि वूठा प्रभु अपना ॥ (1079-10)
जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥ (296-5)
जा कै मसतकि धुरि लिखि पाइआ ॥ (1086-9)
जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ ॥ (457-12)
जा कै मसतकि राखै हाथु ॥ (900-16)
जा कै मसतकि लिखिआ भागु ॥ (394-6)
जा कै मसतकि लिखिआ लेखु ॥ (842-5)
जा कै माथै एहु निधानु ॥ (185-8)
जा कै राम को बलु होइ ॥ (1223-4)
जा कै रामु बसै मन माही ॥ (899-14)
जा कै रासि सरब सुख सुआमी आन न मानत भेखा ॥ (1221-11)
जा कै रिदै बसिओ हरि नाम ॥ (197-8)
जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥ (288-10)
जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥ (285-10)
जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥१॥ (324-12)
जा कै रिदै वसहि भगवान ॥२॥ (195-19)
जा कै रिदै वसै भगवानु ॥३॥ (195-8)
जा कै रिदै वसै भगवानु ॥४॥४७॥११६॥ (189-7)

जा कै रिदै वसै भै भंजनु तिसु जानै सगल जहानु ॥ (1226-5)
जा कै रिदै वसै हरि नाम ॥२॥ (891-1)
जा कै रिदै होत भाउ बीआ ॥ (255-8)
जा कै रूपु नाही जाति नाही नाही मुखु मासा ॥ (1328-9)
जा कै वसि खान सुलतान ॥ (182-16)
जा कै वसि है सगल जहान ॥ (182-16)
जा कै वसि है सगल संसारु ॥ (1001-5)
जा कै संगि इहु मनु निरमलु ॥ (863-15)
जा कै संगि किलबिख होहि नास ॥ (863-15)
जा कै संगि तरै संसार ॥ (285-3)
जा कै संगि पारब्रहमु धिआईऐ उपदेसु हमारी गति करन ॥१॥ रहाउ ॥ (1206-8)
जा कै संगि रिदै परगास ॥१॥ (863-15)
जा कै संगि सदा प्रभु बसै ॥२॥ (802-3)
जा कै संगि हरि हरि सिमरनु ॥ (863-15)
जा कै सहजि मनि भइआ अनंदु ॥ (237-1)
जा कै सहजु भइआ सो जाणै ॥ (237-5)
जा कै सिमरणि जम ते छुटीऐ हलति पलति सुखु पाईऐ ॥ (382-4)
जा कै सिमरणि जम नही डरूआ ॥१॥ रहाउ ॥ (196-19)
जा कै सिमरणि नही संताप ॥१॥ (1183-12)
जा कै सिमरणि मुख उजलारे ॥३॥ (739-19)
जा कै सिमरणि सभु कछु पाईऐ बिरथी घाल न जाई ॥ (617-12)
जा कै सिमरणि सुख भए ॥१॥ (212-14)
जा कै सिमरणि होइ अनंदा बिनसै जनम मरण भै दुखी ॥ (617-5)
जा कै सिमरनि अपदा टरै ॥ (986-15)
जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥१॥ (282-9)
जा कै सिमरनि कछु भउ न बिआपै ॥ (740-14)
जा कै सिमरनि कलमल जाहि ॥ (1338-9)
जा कै सिमरनि कवला दासि ॥ (986-16)
जा कै सिमरनि कुलह उधर ॥१॥ (986-14)
जा कै सिमरनि छूटहि बंध ॥ (986-14)
जा कै सिमरनि तरे निदान ॥३॥ (986-17)
जा कै सिमरनि दुखु न होइ ॥ (1181-7)
जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना ॥१॥ रहाउ ॥ (901-17)
जा कै सिमरनि नही संताप ॥२॥ (986-16)
जा कै सिमरनि निधि निधान ॥ (986-17)
जा कै सिमरनि पैज सवारी ॥८॥१॥२९॥ (869-19)
जा कै सिमरनि भउ दुख हरै ॥ (986-15)

जा कै सिमरनि मिटहि धंध ॥ (986-14)
जा कै सिमरनि मुचत पाप ॥ (986-15)
जा कै सिमरनि मूरख चतुर ॥ (986-14)
जा कै सिमरनि रिद बिगास ॥ (986-16)
जा कै सिमरनि सरब निधाना मानु महतु पति पूरी ॥ (672-16)
जा कै सिमरनि सूख निवासु ॥ (386-11)
जा कै सूति परोइआ संसारु ॥ (1150-15)
जा कै सूति परोए जंता तिसु प्रभ का जसु गावहु ॥ (1218-13)
जा कै हरि धनु सो सच साहु ॥ (189-10)
जा कै हरि धनु सोई सुहेला ॥ (179-18)
जा कै हरि वसिआ मन माही ॥ (193-5)
जा कै हरि सा ठाकुरु भाई ॥ (328-1)
जा कै हरि हरि कीरतनु नीता ॥१॥ रहाउ ॥ (385-15)
जा कै हिरदै एको होइ ॥ (283-14)
जा कै हिरदै ठाकुरु होइ ॥ (188-3)
जा कै हिरदै दीओ गुरि नामा ॥ (186-14)
जा कै हिरदै बसिआ मेरा हरि हरि तिसु जन कउ करहु नमसकारा ॥ (720-9)
जा कै हिरदै वसहि मुरारी ॥४॥१५॥२१॥ (741-12)
जा कै हिरदै वसिआ तू करते ता की तैं आस पुजाई ॥ (610-13)
जा कै हिरदै वसिआ हरि सोई ॥ (154-14)
जा कै हिरदै हरि वसै सो पूरा परधानु ॥२॥ (45-3)
जा कै हीऐ दीओ प्रभ नाम ॥ (251-3)
जा कै हीऐ प्रगटु प्रभु होआ अनदिनु कीरतनु रसन रमोरी ॥३॥ (208-18)
जा कै ह्रिदै बसहि गुर पैरा ॥३॥ (1299-1)
जा कै ह्रिदै वसिआ प्रभु सोइ ॥ (1338-6)
जा को ठाकुरु ऊचा होई ॥ (330-16)
जा को नामु लैत तू सुखी ॥ (617-6)
जा को प्रेम सुआउ है चरन चितव मन माहि ॥ (1364-5)
जा को भागु तिनि लीओ री सुहागु हरि हरि हरे हरे गुन गावै गुरमति हउ बलि बले हउ बलि बले जन नानक हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥२॥१॥७॥ (1296-15)
जा को मंत्रु उतारै सहसा ऊणे कउ सुभर भरन ॥ (1206-10)
जा को रे करमु भला तिनि ओट गही संत पला तिन नाही रे जमु संतावै साधू की संगना ॥ (678-18)
जा को लहणो महराज री गाठड़ीओ जन नानक गरभासि न पउड़िओ रे ॥२॥२॥१९॥ (715-18)
जा कौ जोगी जती सिध साधिक अनेक तप जटा जूट भेख कीए फिरत उदास कउ ॥ (1404-15)
जा क्रिपा करे ता सेवीऐ सेवि सचि समाइआ ॥४॥ (1011-16)
जा गुरु कहै उठहु मेरे भाई बहि जाहि घुसरि बगुलारे ॥ (312-8)
जा छुटे ता खाकु तू सुंञी कंतु न जाणही ॥ (1097-14)

जा जमि पकड़ि चलाइआ वणजारिआ मित्रा किसै न मिलिआ भेतु ॥ (75-8)
जा जमु आइ झोट पकरै तबहि काहे रोइआ ॥२॥ (481-19)
जा जमु धाइ केस गहि मारै सुरति नही मुखि काल गइआ ॥३॥ (906-12)
जा जलि थलि महीअलि रविआ सोई ॥ (176-5)
जा जापै किछु किथाऊ नाही ॥ (1070-9)
जा जीउ विचहु कढीऐ भसू भरिआ जाइ ॥ (1240-16)
जा डिठा पूरा सतिगुरू तां अंदरहु मनु साधारिआ ॥ (310-10)
जा तउ भीतरि महलि बुलावहि पूछउ बात निरंती ॥१॥ रहाउ ॥ (992-14)
जा तिन्हि सवालिआ तां सवि रहिआ जगाए तां सुधि होइ ॥ (554-17)
जा तिसु भाणा गुण परगट होए सतिगुर आपि सवारे ॥ (441-15)
जा तिसु भाणा ता जगतु उपाइआ ॥ (1036-6)
जा तिसु भाणा ता जमिआ परवारि भला भाइआ ॥ (921-3)
जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥ (473-2)
जा तिसु भाणा सहजि समाए ॥ (1024-12)
जा तिसु भावा तद ही गावा ॥ (599-8)
जा तिसु भावै ता आपि मिलाए ॥ (128-11)
जा तिसु भावै ता गुरू मिलाए ॥ (1064-2)
जा तिसु भावै ता मंनि वसाए ॥ (1059-5)
जा तिसु भावै ता स्रिसटि उपाए ॥ (292-8)
जा तिसु भावै ता हुकमु मनावै ॥ (337-4)
जा तिसु भावै बखसे सोई ॥२॥ (357-10)
जा तिसु भावै सतिगुरु भेटै एको नामु बखानी ॥३॥ (1124-4)
जा तिसु भावै सतिगुरू मिलाए ॥ (1059-4)
जा तुधु भाणा ता सची कारै लाए ॥ (1051-12)
जा तुधु भावहि ता करहि बिभूता सिंङी नादु वजावहि ॥ (145-1)
जा तुधु भावै जाहि दिसंतरि सुणि गला घरि आवहि ॥ (145-3)
जा तुधु भावै ता गुरमुखि बूझै होर मनमुखि फिरै इआणी ॥५॥ (423-4)
जा तुधु भावै ता नाइ रचावहि तूं आपे नाउ जपावणिआ ॥३॥ (122-11)
जा तुधु भावै ता पड़हि कतेबा मुला सेख कहावहि ॥ (145-1)
जा तुधु भावै ता हरि गुण गाउ ॥ (376-3)
जा तुधु भावै ता होवहि राजे रस कस बहुतु कमावहि ॥ (145-2)
जा तुधु भावै तेग वगावहि सिर मुंडी कटि जावहि ॥ (145-2)
जा तुधु भावै नाइ रचावहि तुधु भाणे तूं भावहि ॥ (145-3)
जा तूं करणहारु करतारु ॥ (349-14)
जा तूं ता किआ होरि मै सचु सुणाईऐ ॥ (146-5)
जा तूं तुसहि मिहरवान अचिंतु वसहि मन माहि ॥ (518-4)
जा तूं तुसहि मिहरवान ता गुर का मंत्रु कमाहि ॥ (518-5)

जा तूं तुसहि मिहरवान ता नानक सचि समाहि ॥१॥ (518-6)
जा तूं तुसहि मिहरवान नउ निधि घर महि पाहि ॥ (518-5)
जा तूं देहि तेरा नाउ जपना ॥१॥ रहाउ ॥ (744-7)
जा तूं वडा सभि वडिआंईआ चंगै चंगा होई ॥ (145-4)
जा तूं सचा ता सभु को सचा कूड़ा कोइ न कोई ॥ (145-5)
जा तूं साहिबु ता भउ केहा हउ तुधु बिनु किसु सालाही ॥ (382-8)
जा तू अंदरि ता सुखे तूं निमाणी माणीआ ॥२॥ (761-9)
जा तू ता मै माणु कीआ है तुधु बिनु केहा मेरा माणो ॥ (557-14)
जा तू ता मै सभु को तू साहिबु मेरी रासि जीउ ॥ (762-14)
जा तू देहि सदा सुखु पाए ॥ (1051-3)
जा तू मेरै वलि है ता किआ मुहछंदा ॥ (1096-15)
जा तू मेलहि ता तुझै समावा ॥ (933-3)
जा तू मेलहि ता मिलि रहां जां तेरी होइ रजाइ ॥३॥ (1330-7)
जा तू राखहि राखि लैहि साबतु होवै रासि ॥१॥ (1330-3)
जा ते आवा गवनु बिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (346-12)
जा ते कुसल न काहू थीआ ॥ (258-19)
जा ते घाल न बिरथी जाईऐ ॥ (500-10)
जा ते तरउ बिखम इह माइआ ॥ (251-14)
जा ते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु भीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (902-4)
जा ते नाही को सुखी ता कै पाछै जाउ ॥ (745-18)
जा ते पाईऐ पदु निरबानी ॥ (385-6)
जा ते पाईऐ परम निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ (337-11)
जा ते फिरि न आवहु सैसारि ॥१॥ रहाउ ॥ (1328-10)
जा ते बिरथा कोइ न होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (195-14)
जा ते बिरथा कोऊ नाही ॥ (1085-19)
जा ते बिरथा जात न कोऊ ॥ (1004-12)
जा ते भगति राम की पावै जम को त्रासु हरै ॥१॥ रहाउ ॥ (632-9)
जा ते भ्रम की लीक मिटाई ॥ (655-11)
जा ते वीछुड़िआ तिनि आपि मिलाइआ राम ॥ (547-13)
जा ते सहजे सहजि समावा ॥१॥ रहाउ ॥ (993-13)
जा ते साधू सरणि गही ॥ (1220-10)
जा दिन भेटे साध मोहि उआ दिन बलिहारी ॥ (810-14)
जा दिनि बिसरै प्रान सुखदाता सो दिनु जात अजाए ॥१॥ रहाउ ॥ (212-17)
जा दुखु लागै ता तुझै समाली ॥१॥ रहाउ ॥ (25-7)
जा देखा प्रभु आपणा प्रभि देखिऐ दुखु जाइ ॥ (39-16)
जा धन कंति न रावीआ ता बिरथा जोबनु जाइ ॥७॥ (54-11)
जा नाउ चेतै ता गति पाए जा सतिगुरु मेलि मिलाए ॥६॥ (67-19)

जा पका ता कटिआ रही सु पलरि वाड़ि ॥ (142-18)
जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु ॥२॥ (17-6)
जा परखीऐ खोटा होइ जाइ ॥२॥ (662-7)
जा पहि जाउ आपु छुटकावनि ते बाधे बहु फंधा ॥१॥ रहाउ ॥ (334-5)
जा पिरु जाणै आपणा तनु मनु अगै धरेइ ॥ (31-16)
जा प्रभ की हउ चेरुली सो सभ ते ऊचा ॥ (400-3)
जा प्रभ भए दइआल न बिआपै माइआ ॥ (710-2)
जा प्रभ भावै ता किरपा धारै ॥ (1076-4)
जा फिरि देखा ता मेरा अलहु बेली ॥३॥ (794-14)
जा बहहि गुरमुखि हरि नामु बोलहि जा खड़े गुरमुखि हरि हरि कहिआ ॥ (1114-17)
जा भजै ता ठीकरु होवै घाड़त घड़ी न जाइ ॥ (138-11)
जा मनि नाही सचा सोइ ॥ (142-12)
जा मनि वसिओ हरि को नामु ॥१॥ (202-5)
जा महि जोति करे परगास ॥ (1162-7)
जा महि सभि निधान सो हरि जपि मन मेरे गुरमुखि खोजि लहहु हरि रतना ॥ (860-17)
जा मिलिआ पूरा सतिगुरू अमाली ता आसा मनसा सभ पूरे ॥ (564-14)
जा मिलिआ पूरा सतिगुरू ता हाजरु नदरी आईआ ॥ (313-15)
जा मूं आवहि चिति तू ता हभे सुख लहाउ ॥ (1098-2)
जा मू पसी हठ मै पिरी महिजै नालि ॥ (1095-10)
जा मै भजनु राम को नाही ॥ (831-2)
जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥ (473-12)
जा लाहा देइ ता सुखु मने तोटै मरि जाई ॥ (166-19)
जा सतिगुर का मनु मंनिआ ता पाप कसमल भंने ॥ (314-8)
जा सतिगुरु सराफु नदरि करि देखै सुआवगीर सभि उघड़ि आए ॥ (303-1)
जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥ (282-14)
जा सहि बात न पुछीआ अमाली ता बिरथा जोबनु सभु जाए ॥ (564-12)
जा साथी उठी चलिआ ता धन खाकू रालि ॥१॥ (50-16)
जा सिउ रचि रहे हां ॥ (410-19)
जा सिउ राचि माचि तुम्ह लागे ओह मोहनी मोहावत हे ॥१॥ रहाउ ॥ (821-16)
जा सिकदारै पवै जंजीरी ता चाकर हथहु मरणा ॥४॥ (902-19)
जा हंस सभा वीचारु करि देखनि ता बगा नालि जोड़ु कदे न आवै ॥ (960-8)
जा हउ नाही ता किआ आखा किहु नाही किआ होवा ॥ (140-11)
जा हरि प्रभ भावै ता गुरमुखि मेले जिन्ह वचन गुरू सतिगुर मनि भाइआ ॥ (494-1)
जा हरि प्रभि किरपा धारी ॥ (879-5)
जा हरि बखसे ता गुर मिलै असथिरु रहै समाइ ॥ (513-19)
जा हिरदै वसिआ सचु सोइ ॥ (232-13)
जा होआ हुकमु किरसाण दा ता लुणि मिणिआ खेतारु ॥२॥ (43-11)

जा होइ क्रिपालु ता गुरू मिलावै ॥३॥ (801-11)
जा होइ क्रिपालु ता प्रभू मिलाए ॥२॥ (794-13)
जा होवै खसमु दइआलु ता महलु घरु पाइसी ॥ (510-12)
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥ (1288-7)
जाइ पहूचहि खसम कउ जउ बीचि न खाही कांब ॥१३४॥ (1371-13)
जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि विहाइ ॥३०॥ (1379-9)
जाइ पुछहु सिम्रिति सासत बिआस सुक नारद बचन सभ स्रिसटि करेनि ॥ (951-6)
जाइ पुछहु सोहागणी तुसा किउ करि मिलिआ प्रभु आइ ॥ (41-9)
जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणीं ॥ (17-19)
जाइ पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईऐ ॥ (722-11)
जाइ पुछा जन हरि की बाता ॥ (96-1)
जाइ पुछा तिन सजणा प्रभु कितु बिधि मिलै मिलाइ ॥१॥ (39-16)
जाइ बसहु वडभागणी सखीए संता संगि समाईऐ ॥ (803-4)
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥२५॥ (1379-4)
जाइ सुते जीराण महि थीए अतीमा गड ॥४५॥ (1380-5)
जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥ (726-18)
जागत भगत सिमरत हरि राते ॥१॥ रहाउ ॥ (388-17)
जागत रहे तिनी प्रभु पाइआ सबदे हउमै मारी ॥ (599-17)
जागत सूता भरमि विगूता ॥ (1019-10)
जागत सोवत बहु प्रकार ॥ (1194-1)
जागतु जागि रहा तुधु भावा ॥ (933-2)
जागतु जागि रहै गुर सेवा बिनु हरि मै को नाही ॥ (1273-15)
जागतु जागि रहै लिव लाइ ॥ (840-8)
जागतु बिगसै मूठो अंधा ॥ (1330-9)
जागतु रहै न अलीआ भाखै ॥ (974-13)
जागतु रहै न मूसै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1128-5)
जागतु रहै सु कबहु न सोवै ॥ (974-12)
जागतु सोइआ जनमु गवाइआ ॥ (792-18)
जागन ते सुपना भला बसीऐ प्रभ संगि ॥१॥ रहाउ ॥ (816-9)
जागना जागनु नीका हरि कीरतन महि जागना ॥५॥ (1018-12)
जागसि जीवण जागणहारा ॥ (1330-11)
जागहि संत जना मेरे राम पिआरे ॥ (459-6)
जागहु जागहु सूतिहो चलिआ वणजारा ॥१॥ रहाउ ॥ (418-8)
जागाती मिले दे भेट गुर पिछै लंघाइ दीआ ॥ (1116-14)
जागातीआ उपाव सिआणप करि वीचारु डिठा भंनि बोलका सभि उठि गइआ ॥ (1117-1)
जागु रे मन जागनहारे ॥ (387-12)
जागु सलोनड़ीए बोलै गुरबाणी राम ॥ (844-5)

जागु सोइ सिमरन रस भोग ॥ (971-16)
जागै सुकदेउ अरु अकूरु ॥ (1193-19)
जाग्या मनु कवलु सहजि परकास्या अभै निरंजनु घरहि लहा ॥ (1396-19)
जाचंति नानक क्रिपाल प्रसादं नह बिसरंति नह बिसरंति नाराइणह ॥२१॥ (1356-1)
जाचउ संत रवाल ॥१॥ रहाउ ॥ (838-2)
जाचक जन दाता पाइआ ॥ (655-15)
जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥ (289-10)
जाचकु जाचै तुमहि अराधै ॥ (1080-18)
जाचकु मंगै दानु देहि पिआरिआ ॥ (320-3)
जाचड़ी सा सारु जो जाचंदी हेकड़ो ॥ (321-8)
जाचहि जती सती सुखवासी ॥ (1074-6)
जाचहि सिध साधिक बनवासी ॥ (1074-6)
जाचिकु जाचै नामु तेरा सुआमी घट घट अंतरि सोई रे ॥ (209-18)
जाचिकु जाचै साध रवाला ॥ (107-16)
जाचिकु नामु जाचै जाचै ॥ (1321-16)
जाचिकु मंगै नित नामु साहिबु करे कबूलु ॥ (323-7)
जाचिकु सेव करे दरि हरि कै हरि दरगह जसु गाइआ ॥६॥ (1043-3)
जाञी नाउ नरह निहकेवलु रवि रहिआ तिहु लोई ॥ (763-17)
जाणहि बिरथा सभा मन की होरु किसु पहि आखि सुणाईऐ ॥ (382-10)
जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे ॥१॥ रहाउ ॥ (349-13)
जाणा पाणी ना लहां जै सेती मेरा संगु ॥ (1412-15)
जाणा लख भवे पिरी डिखंदो ता जीवसा ॥२॥ (1097-1)
जाणिआ आनंदु सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ ॥ (917-17)
जाणु न पाईऐ प्रभ दरबारा ॥४॥ (759-15)
जाणु मिठाई इख बेई पीड़े ना हुटै ॥२॥ (1098-18)
जाणु वसंदो मंझि पछाणू को हेकड़ो ॥ (1099-12)
जाणै नाही जीत अरु हार ॥ (180-3)
जाणै नाही मरणु विचारा ॥२॥ (676-10)
जाणै बिरथा जीअ की कदे न मोड़ै रंगु ॥ (958-17)
जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥ (968-7)
जाणो प्रभु जाणो सुआमी सुघड़ु सुजाणो ॥ (924-14)
जाणो सति होवंतो मरणो द्रिसटेण मिथिआ ॥ (1360-8)
जात अकारथ जनमु पदारथ काच बादरै जीत ॥३॥ (673-5)
जात नजाति देखि मत भरमहु सुक जनक पगीं लगि धिआवैगो ॥ (1309-8)
जाति अजाति अजोनी स्मभउ ना तिसु भाउ न भरमा ॥१॥ (597-5)
जाति अजाति कोई प्रभ धिआवै सभि पूरे मानस तिनछे ॥ (1178-14)
जाति अजाति जपै जनु कोइ ॥ (1150-11)

जाति अजाति नामु जिन धिआइआ तिन परम पदारथु पाइआ ॥ (574-18)
जाति असंख अंत नही मेरे ॥ (932-10)
जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥ (1127-19)
जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥ (1127-19)
जाति कुलीनु सेवकु जे होइ ॥ (1256-11)
जाति जनम कुल खोईऐ हउ गावउ हरि हरी ॥१॥ (1230-18)
जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥ (1330-8)
जाति जनमु नही दीसै आखी ॥ (1035-18)
जाति जुलाहा मति का धीरु ॥ (328-15)
जाति न पति न आदरो उदिआन भ्रमिंना ॥ (707-11)
जाति पति सभ तेरै नाइ ॥३॥ (1189-17)
जाति बरन कुल सहसा चूका गुरमति सबदि बीचारी ॥१॥ (1198-2)
जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥ (469-11)
जाति रहे पति के आचारा ॥ (221-5)
जाति वरन तुरक अरु हिंदू ॥ (237-12)
जाति वरन ते भए अतीता ममता लोभु चुकाइआ ॥७॥ (1345-18)
जाति सनाती होरि हिदवाणीआ एहि भी लेखै लाइ वे लालो ॥ (722-19)
जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥ (486-17)
जाती दै किआ हथि सचु परखीऐ ॥ (142-15)
जातो जाइ कहा ते आवै ॥ (152-15)
जान प्रबीन ठाकुर प्रभ मेरे तिसु आगै किआ कहता ॥१॥ रहाउ ॥ (823-3)
जान प्रबीन सुआमी प्रभ मेरे सरणि तुमारी अही ॥ (529-17)
जानउ नही भावै कवन बाता ॥ (71-6)
जानणहारु रहिआ प्रभु जानि ॥ (892-8)
जानणहारे कउ बलि जाउ ॥ (885-17)
जानत दूरि तुमहि प्रभ नेरि ॥ (680-4)
जानते दइआर ॥१॥ रहाउ ॥ (1230-17)
जाननहार प्रभू परबीन ॥ (269-8)
जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥ (658-10)
जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥ (727-4)
जानि बूझि अपना कीओ नानक भगतन का अंकुरु राखिओ ॥२॥२॥२६॥ (677-15)
जानी घति चलाइआ लिखिआ आइआ रुंने वीर सबाए ॥ (579-1)
जानी जानी रे राजा राम की कहानी ॥ (970-11)
जानी न जाई ता की गाति ॥१॥ रहाउ ॥ (535-9)
जानी विछुंनड़े मेरा मरणु भइआ ध्रिगु जीवणु संसारे ॥ (580-18)
जानी संत की मित्राई ॥ (898-9)
जानीअड़ा हरि जानीअड़ा नैण अलोइअड़ा हरि जानीअड़ा ॥ (924-7)

जानु जानु सभि कहहि तहा ही ॥१॥ रहाउ ॥ (325-9)
जानु सति करि होइगी माटी ॥१॥ (374-14)
जानै कउनु तेरो भेउ अलख अपार देउ अकल कला है प्रभ सरब को धानं ॥ (1386-4)
जाप ताप अनेक करणी सफल सिमरत नाम ॥ (502-2)
जाप ताप कछु उकति न मोरी ॥ (377-9)
जाप ताप कोटि लख पूजा हरि सिमरण तुलि न लाइण ॥ (979-15)
जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥ (265-9)
जाप ताप देवउ सभ नेमा ॥ (391-10)
जाप ताप नेम सुचि संजम नाही इन बिधे छुटकार ॥ (1301-14)
जाप ताप भगति सा पूरी जो प्रभ कै मनि भाई ॥ (673-11)
जाप ताप भ्रमन बसुधा करि उरध ताप लै गैन ॥ (674-7)
जाप ताप सील नही धरम ॥ (894-10)
जाप न ताप न करम कीति ॥ (1182-1)
जापै आपि प्रभू तिहु लोइ ॥ (933-1)
जापै जिउ सिंघासणि लोइ ॥ (878-11)
जामि गुरू होइ वलि गिआन अरु धिआन अनन परि ॥ (1399-14)
जामि गुरू होइ वलि धनहि किआ गारवु दिजइ ॥ (1399-13)
जामि गुरू होइ वलि लख बाहे किआ किजइ ॥ (1399-13)
जामि गुरू होइ वलि सबदु साखी सु सचह घरि ॥ (1399-14)
जामि न उचरसि स्री गोबिंद ॥१॥ (1163-11)
जामि न भीजै साच नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1169-1)
जारउ ऐसी प्रीति कुट्मब सनबंधी माइआ मोह पसारी ॥ (1198-4)
जारउ तिसै जु रामु न चेतै ॥ (872-9)
जारै खसमु त राखै कवना ॥१॥ (329-16)
जालउ ऐसी रीति जितु मै पिआरा वीसरै ॥ (590-2)
जालण गोरां नालि उलामे जीअ सहे ॥८॥२॥ (488-19)
जालपा पदारथ इतड़े गुर अमरदासि डिठै मिलहि ॥५॥१४॥ (1395-2)
जालि न साकहि तीने ताप ॥३॥ (743-12)
जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु ॥ (16-5)
जाली रैनि जालु दिनु हूआ जेती घड़ी फाही तेती ॥ (990-4)
जालु पसारि चोग बिसथारी पंखी जिउ फाहावत हे ॥ (822-1)
जासन बासन सहज केल करुणा मै एक अनंत अनूपै ठाउ ॥१॥ (536-5)
जासु जपत इह अगनि न पोहत ॥ (236-9)
जासु जपत इह त्रिसना बुझै ॥ (236-6)
जासु जपत इह निरमल सोइ ॥ (236-11)
जासु जपत इह हउमै भागै ॥२॥ (236-5)
जासु जपत इहु कालु न जोहत ॥ (236-10)

जासु जपत कई बैकुंठ वासु ॥ (236-9)
जासु जपत कमलु सीधा होइ ॥७॥ (236-12)
जासु जपत कोटि मिटहि अपराध ॥ (236-7)
जासु जपत तेरा निरमल माथा ॥ (236-10)
जासु जपत पूरन सभि काम ॥१॥ रहाउ ॥ (1142-17)
जासु जपत फिरि दूखु न लागै ॥ (236-5)
जासु जपत भउ अपदा जाइ ॥ (236-4)
जासु जपत भै अपदा टरी ॥४॥१॥५॥ (874-12)
जासु जपत मनु सीतलु होवै ॥ (236-7)
जासु जपत मलु सगली खोवै ॥४॥ (236-8)
जासु जपत मुसकलु कछू न बनै ॥ (236-11)
जासु जपत रतनु हरि मिलै ॥ (236-8)
जासु जपत रिदै अम्रितु संचा ॥ (236-6)
जासु जपत वसि आवहि पंचा ॥ (236-5)
जासु जपत सगला दुखु लाथा ॥६॥ (236-10)
जासु जपत सुख सहजि निवासु ॥५॥ (236-9)
जासु जपत सुणि अनहत धुनै ॥ (236-11)
जासु जपत हरि दरगह सिझै ॥३॥ (236-6)
जासु जपत हरि होवहि साध ॥ (236-7)
जासु जपत होवत उधार ॥१॥ रहाउ ॥ (986-13)
जासु मिलि होवै उधारु ॥ (987-16)
जासु रसन हरि हरि जसु भनीऐ ॥ (252-17)
जासु सुनी मनि होइ अनंदा दूख रोग मन सगले लथा ॥१॥ रहाउ ॥ (386-8)
जाहरनवी तपै भागीरथि आणी केदारु थापिओ महसाई ॥ (1263-8)
जाहि कलेस मिटे भै भरमा निरमल गुण प्रभ गाइ ॥१॥ (502-18)
जाहि न दरगह हारि ॥ (895-15)
जाहि बैकुंठि नही संसारि ॥ (971-7)
जाहि सवारै साझ बिआल ॥ (154-9)
जाहू काहू अपुनो ही चिति आवै ॥ (1215-11)
जिंदु निमाणी कढीऐ हडा कू कड़काइ ॥ (1377-16)
जिंदु वहुटी मरणु वरु लै जासी परणाइ ॥ (1377-17)
जिंना सतगुरु रसि मिलै से पूरे पुरख सुजाण ॥ (22-16)
जिंनी सचु विसारिआ से दुखीए चले रोइ ॥४॥ (69-18)
जिन्हा कउ धुरि लिखिआ तिनी पाइआ आइ ॥ (1092-4)
जिन्हा नैण नींद्रावले तिंन्हा मिलणु कुआउ ॥८०॥ (1382-3)
जिन्ही चाखिआ प्रेम रसु से त्रिपति रहे आघाइ ॥ (135-2)
जि ओसु मिलै तिसु पारि उतारी ॥ (317-10)

जि करावै सु नामु वखानी ॥ (1004-4)
जि करावै सो करणा ॥ (627-1)
जि गल करते भावै सा नित नित चड़ै सवाई सभ झखि झखि मरै लोकाई ॥४॥ (850-18)
जि गुरमुखि करे साई भगति होवै ॥ (1422-13)
जि ठगी आवै ठगी उठि जाइ तिसु नेड़ै गुरसिखु मूलि न आवै ॥ (317-15)
जि तुध नो सालाहे सु सभु किछु पावै जिस नो किरपा निरंजन केरी ॥ (555-1)
जि नामि लागै सो मुकति होवै गुर बिनु नामु न पावै कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (880-3)
जि पुरखु नदरि न आवई तिस का किआ करि कहिआ जाइ ॥ (937-18)
जि पुरखु सुणै सु होइ निहालु ॥ (317-11)
जि प्रभु सालाहे आपणा सो सोभा पाए ॥ (791-6)
जि बिनु सतिगुर सेवे आपु गणाइदे तिन अंदरि कूड़ु फिटु फिटु मुह फिके ॥ (304-5)
जि मति गही जैदेवि जि मति नामै समाणी ॥ (1394-15)
जि मति त्रिलोचन चिति भगत क्मबीरहि जाणी ॥ (1394-15)
जि वसतु मंगीऐ साई पाईऐ जे नामि चितु लाईऐ ॥ (850-7)
जि विणु सतिगुर के मनु मंने कमु कराए सो जंतु महा दुखु पावै ॥२॥ (317-16)
जि सतिगुर नो मिलि मंने सु हलति पलति सिझै जि वेमुखु होवै सु फिरै भरिसट थानु ॥ (853-18)
जि सतिगुर भावै सु मंनि लैनि सेई करम करेनि ॥ (951-5)
जि सतिगुरु सेवनि से उबरे हरि सेती लिव लाइ ॥१॥ (65-11)
जि सतिगुरु सेवे आपणा तिस नो पूजे सभु कोइ ॥ (511-17)
जि सतिगुरु सेवे सो परवाणु ॥ (1065-15)
जि साहिब कै घरि वथु होवै सु नफरै हथि आवै अणहोदी किथहु पाए ॥ (306-13)
जि हलति पलति हरि होइ सखाई ॥१॥ रहाउ ॥ (734-2)
जि होंदै गुरू बहि टिकिआ तिसु जन की वडिआई वडी होई ॥ (309-4)
जिउं जल तंतु पसारिओ बधकि ग्रसि मीना वसगति खरिआ ॥२॥ (1294-7)
जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥ (282-17)
जिउ अंधिआरै दीपकु परगासा ॥ (100-15)
जिउ अंधुले पेखत होइ अनंद ॥ (914-16)
जिउ अंधुलै हथि टोहणी हरि नामु हमारै ॥ (422-13)
जिउ अंधेरै दीपकु बालीऐ तिउ गुर गिआनि अगिआनु तजाइ ॥२॥ (39-10)
जिउ अगनि मरै जलि पाइऐ तिउ त्रिसना दासनि दासि ॥ (22-6)
जिउ अधिकउ तिउ सुखु घणो मनि तनि सांति सरीर ॥ (60-2)
जिउ अपुनो सुआमी सुखु मानै ता महि सोभा पावउ ॥१॥ (529-9)
जिउ अ्मबरीकि अमरा पद पाए सतिगुर मुख बचन धिआवैगो ॥२॥ (1311-10)
जिउ आइआ तिउ जावहि बउरे जिउ जनमे तिउ मरणु भइआ ॥ (906-7)
जिउ आकासै घड़ूअलो म्रिग त्रिसना भरिआ ॥ (525-9)
जिउ आकासै पंखीअलो खोजु निरखिओ न जाई ॥ (525-8)
जिउ आपि चलाए तिउ चलीऐ पिआरे जिउ हरि प्रभ मेरे भाइआ ॥ (606-4)

जिउ आपि चलाए तिवै कोई चालै जिउ हरि भावै भगवाना ॥३॥ (797-13)
जिउ आपि चलावहि तिउ चलदे किछु वसि न जंता ॥४॥ (1095-16)
जिउ आरणि लोहा पाइ भंनि घड़ाईऐ ॥ (752-7)
जिउ उदिआन कुसम परफुलित किनहि न घ्राउ लइओ ॥ (336-14)
जिउ उबली मजीठै रंगु गहगहा तिउ सचे नो जीउ देइ ॥ (311-13)
जिउ उलझाइओ बाध बुधि का मरतिआ नही बिसरानी ॥४॥ (242-3)
जिउ ओडा कूपु गुहज खिन काढै तिउ सतिगुरि वसतु लहाईऐ ॥२॥ (1179-9)
जिउ कंचन सोहागा ढालै ॥ (932-2)
जिउ कंचनु बैसंतरि ताइओ मलु काटी कटित उतारी ॥२॥ (666-17)
जिउ कनिको कोठारी चड़िओ कबरो होत फिरो ॥ (1203-8)
जिउ कपि के कर मुसटि चनन की लुबधि न तिआगु दइओ ॥ (336-12)
जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइआ ॥ (644-3)
जिउ काजर भरि मंदरु राखिओ जो पैसै कालूखी रे ॥ (535-17)
जिउ कापुरखु पुचारै नारी ॥१॥ (198-4)
जिउ कामी कामि लुभावै ॥ (629-5)
जिउ कासट संगि लोहा बहु तरता तिउ पापी संगि तरे साध साध संगती गुर सतिगुरू गुर साधो ॥ (1297-16)
जिउ कासी उपदेसु होइ मानस मरती बार ॥३॥ (335-10)
जिउ किरत संजोगि चलिओ नर निंदकु पगु नागनि छुहि जलिआ ॥२॥ (1319-13)
जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥ (269-6)
जिउ कुंचरु तदूऐ पकरि चलाइओ करि ऊपरु कढि निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (982-5)
जिउ कुंचरु नाइ खाकु सिरि छाणै ॥३॥ (367-13)
जिउ कुरंक नाद करन समाने ॥ (914-19)
जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥१॥ (693-10)
जिउ कूकरु जूठन महि पाइ ॥१॥ (240-4)
जिउ कूकरु हरकाइआ धावै दह दिस जाइ ॥ (50-6)
जिउ कोकिल कउ अ्मबु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥२॥ (693-12)
जिउ खेलावहि तिउ खेलणहारे ॥ (1081-8)
जिउ गाई कउ गोइली राखहि करि सारा ॥ (228-12)
जिउ गुर उपदेसि तरे प्रहिलादा गुरु सेवक पैज रखावैगो ॥१॥ (1311-9)
जिउ गूंगा मन महि बिसमादु ॥ (801-13)
जिउ गूंगे साकर मनु मानिआ ॥१॥ (327-4)
जिउ गोडहु तिउ तुम्ह सुख पावहु किरतु न मेटिआ जाई ॥३॥ (1171-3)
जिउ ग्रसत बिखई धंधु ॥ (838-12)
जिउ चंदन निकटि वसै हिरडु बपुड़ा तिउ सतसंगति मिलि पतित परवाणु ॥३॥ (861-8)
जिउ चंदन संगि बसै निमु बिरखा गुन चंदन के बसखे ॥२॥ (976-3)
जिउ चकवी सूरज आस ॥ (838-9)

जिउ चकवी सूरज की आस ॥ (914-18)
जिउ चलाए तिउ चालह भाई होर किआ को करे चतुराई ॥६॥ (635-2)
जिउ चात्रिक जल प्रेम पिआसा ॥ (226-4)
जिउ चात्रिक बूंद की पिआस ॥ (914-19)
जिउ चात्रिकु जल बिनु बिललावै बिनु जल पिआस न जाई ॥ (607-11)
जिउ चोरु हिरत निसंग ॥ (838-12)
जिउ छुटड़ि घरि घरि फिरै दुहचारणि बदनाउ ॥ (645-8)
जिउ छुहि पारस मनूर भए कंचन तिउ पतित जन मिलि संगती सुध होवत गुरमती सुध हाधो ॥१॥ (1297-15)
जिउ जन चंद्रहांसु दुखिआ ध्रिसटबुधी अपुना घरु लूकी जारे ॥६॥ (982-12)
जिउ जननी गरभु पालती सुत की करि आसा ॥ (165-18)
जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि ॥ (168-1)
जिउ जल अंतरि कमलु बिगासी आपे बिगसि धिआइदा ॥६॥ (1036-16)
जिउ जल अ्मभ ऊपरि कमल निरारे ॥२॥ (353-9)
जिउ जल ऊपरि फेनु बुदबुदा तैसा इहु संसारा ॥ (1257-19)
जिउ जल कमल प्रीति अति भारी बिनु जल देखे सुकलीधे ॥२॥ (1179-2)
जिउ जल कुंचरु तदूऐ बांधिओ हरि चेतिओ मोख मुखने ॥३॥ (976-17)
जिउ जल छोडि बाहरि भइओ मीना ॥ (326-7)
जिउ जल तरंग उठहि बहु भाती फिरि सललै सलल समाइदा ॥८॥ (1076-3)
जिउ जल तरंग जलु जलहि समावहि नानक आपे आपि रमईआ ॥८॥३॥६॥ (835-5)
जिउ जल तरंग फेनु जल होई है सेवक ठाकुर भए एका ॥१॥ (1209-15)
जिउ जल दुध भिंन भिंन काढै चुणि हंसुला तिउ देही ते चुणि काढै साधू हउमै ताति ॥२॥ (1264-10)
जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥ (280-11)
जिउ जल महि कमलु अलिपतु है ऐसी बणत बणाइ ॥ (1281-11)
जिउ जल महि कमलु अलिपतो वरतै तिउ विचे गिरह उदासु ॥ (949-14)
जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥ (278-4)
जिउ जल माझै माछलो मारगु पेखणो न जाई ॥२॥ (525-8)
जिउ जल मीन जलं जल प्रीति है खिनु जल बिनु फूटि मरीजै ॥५॥ (1324-19)
जिउ जलि थोड़ै मछुली करण पलाव करेइ ॥ (56-3)
जिउ जलु जल महि पैसि न निकसै तिउ ढुरि मिलिओ जुलाहो ॥१॥ (692-5)
जिउ जाणहु तिउ राखहु ठाकुर सभु किछु तुम ही पासी ॥१॥ (1214-11)
जिउ जानहि तिउ तारि सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ (1301-13)
जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥३॥१॥ (793-18)
जिउ जानहु तिउ रखहु गुसाई पेखि जीवां परतापु ॥१॥ रहाउ ॥ (1217-17)
जिउ जानहु तिउ राखहु सुआमी जन नानकु दासु तुमनभा ॥४॥६॥ छका १ ॥ (1337-7)
जिउ जानहु तिउ राखु हरि प्रभ तेरिआ ॥ (704-9)
जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु ॥ (71-4)

जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे ॥१॥ (990-2)
जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥ (13-11)
जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥ (171-9)
जिउ जिउ जपै तिवै सुखु पावै सतिगुरु सेवि समावैगो ॥१॥ रहाउ ॥ (1308-7)
जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै तिउ होवणा ॥ (523-4)
जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै ॥ (1164-11)
जिउ जिउ निंदक निंद करहि तिउ तिउ नित नित चड़ै सवाई ॥ (307-3)
जिउ जिउ निवहि साकत नर सेती छेड़ि छेड़ि कढै बिखु खारे ॥५॥ (983-15)
जिउ जिउ भगति कबीर की तिउ तिउ राम निवास ॥१४१॥ (1372-1)
जिउ जिउ राखहि तिउ तिउ रहणा तेरा दीआ खाहि ॥३॥ (406-2)
जिउ जिउ राम कहहि जन ऊचे नर निंदक डंसु लगाइ ॥३॥ (881-4)
जिउ जिउ साहबु मनि वसै गुरमुखि अम्रितु पेउ ॥ (20-6)
जिउ जिउ हुकमु तिवै तिउ करना ॥ (252-10)
जिउ जूआर बिसनु न जाइ ॥ (838-13)
जिउ जोगी जत बाहरा तपु नाही सतु संतोखु ॥ (597-14)
जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार ॥ (472-9)
जिउ डरना खेत माहि डराइआ ॥२॥ (190-17)
जिउ तनु कोलू पीड़ीऐ रतु न भोरी डेहि ॥ (644-9)
जिउ तनु बिधवा पर कउ देई ॥ (226-2)
जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥३॥ (693-13)
जिउ तरुनि भरत परान ॥ (838-10)
जिउ तागा जगु एवै जाणहु ॥ (840-3)
जिउ तिस दी वडिआई आपि कराई वरीआमु न फुसी कोई ॥ (570-10)
जिउ तिसु भाणा तिवै चलाए ॥ (1026-16)
जिउ तिसु भावै तिवै करे तिसु बिनु अवरु न कोई ॥१॥ (509-3)
जिउ तिसु भावै तिवै चलावै करणा किछू न जाई ॥ (1132-13)
जिउ तुधु भावहि तिउ तू राखहि गुरमुखि नामु धिआहा हे ॥१५॥ (1054-6)
जिउ तुधु भावहि रहहि रजाई ॥ (1033-6)
जिउ तुधु भावै तिउ राखु रजाइ ॥ (686-14)
जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि ॥ (1024-5)
जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि तू आपे मारगि पाइदा ॥२॥ (1060-16)
जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि सभु तेरो कीआ कमाता हे ॥२॥ (1031-7)
जिउ तुम राखहु तिव ही रहना ॥ (181-15)
जिउ तुम्ह राखहु तिउ रहा अवरु नही चारा ॥ (809-9)
जिउ तूं राखहि तिउ रहा तेरा दिता पैना खाउ ॥ (137-10)
जिउ तूं राखहि तिउ रहा मुखि नामु हमारे ॥१॥ रहाउ ॥ (421-4)
जिउ तूं राखहि तिउ रहा हरि नाम अधारा ॥ (422-14)

जिउ तूं राखहि तिव ही रहणा दुखु सुखु देवहि करहि सोई ॥३॥ (356-1)
जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥ (919-2)
जिउ तू चलावहि तिउ चला मुखि अम्रित नाउ ॥ (1012-6)
जिउ तू राखहि तिउ रहा जो देहि सु खाउ ॥ (1012-5)
जिउ तू राखहि तिउ रहा प्रभ अगम अपारे ॥३॥ (815-10)
जिउ तू राखहि तिव ही रहणा तुम्हरा पैन्है खाइ ॥१॥ (1223-8)
जिउ तू राखहि तिवै रहाउ ॥ (1189-7)
जिउ दीप पतन पतंग ॥ (838-12)
जिउ दूध जलहि संजोगु ॥ (838-11)
जिउ धरणी कउ इंद्रु बालहा कुसम बासु जैसे भवरला ॥ (693-11)
जिउ धरती चरण तले ते ऊपरि आवै तिउ नानक साध जना जगतु आणि सभु पैरी पाए ॥४॥१॥१२॥ (735-7)
जिउ धरती सोभ करे जलु बरसै तिउ सिखु गुर मिलि बिगसाई ॥१६॥ (758-1)
जिउ नचाए तिउ तिउ नचनि सिरि सिरि किरत विहाणीआ ॥७॥ (1020-7)
जिउ नटूआ तंतु वजाए तंती तिउ वाजहि जंत जना ॥१॥ (798-19)
जिउ नरपति सुपनै भेखारी ॥३॥ (176-2)
जिउ नलनी सूअटा गहिओ मन बउरा रे माया इहु बिउहारु ॥ (336-3)
जिउ नानक आपि नचाइदा तिव ही को नचा ॥२२॥१॥ सुधु ॥ (1094-5)
जिउ निगुरा बहु बाता जाणै ओहु हरि दरगह है भ्रसटी ॥१॥ (528-9)
जिउ निरधनु धनु देखि सुखु पावै ॥ (100-14)
जिउ पंखी इकत्र होइ फिरि बिछुरै थिरु संगति हरि हरि धिआइले ॥२॥ (862-10)
जिउ पंखी कपोति आपु बन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए तिउ मनमुख सभि वसि काले राम ॥ (538-18)
जिउ पकरि द्रोपती दुसटां आनी हरि हरि लाज निवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (982-16)
जिउ पका रोगी विललाइ ॥१॥ (661-18)
जिउ पसरी सूरज किरणि जोति ॥ (1177-14)
जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥ (282-17)
जिउ पाणी कागदु बिनसि जात है तिउ मनमुख गरभि गलाढे ॥३॥ (171-4)
जिउ पावक संगि सीत को नास ॥ (914-17)
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥ (280-12)
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै बिनु हरि कहा अघाई ॥ रहाउ ॥ (672-4)
जिउ पुरखै घरि भगती नारि है अति लोचै भगती भाइ ॥ (1413-16)
जिउ प्रगासिआ माटी कुमभेउ ॥ (1351-8)
जिउ प्रतिबि्मबु बि्मब कउ मिली है उदक कुमभु बिगराना ॥ (475-18)
जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥ (278-1)
जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥ (277-17)
जिउ प्रहिलादु हरणाखसि ग्रसिओ हरि राखिओ हरि सरना ॥२॥ (799-2)
जिउ प्राणी जल बिनु है मरता तिउ सिखु गुर बिनु मरि जाई ॥१५॥ (757-19)

जिउ फुरमावहि तिउ चला सचु लाल पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (1010-18)
जिउ बछुरा देखि गऊ सुखु मानै तिउ नानक हरि गलि लावीऐ रे ॥४॥१॥ (1118-9)
जिउ बन फल पाके भुइ गिरहि बहुरि न लागहि डार ॥३०॥ (1366-1)
जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥ (272-13)
जिउ बाजीगरु भरमै भूलै झूठि मुठी अहंकारो ॥ (581-15)
जिउ बारिक माता समारे ॥ (105-3)
जिउ बारिकु पी खीरु अघावै ॥ (100-14)
जिउ बारिकु रसकि परिओ थनि माता थनि काढे बिलल बिलीधे ॥१॥ (1178-17)
जिउ बालकु पिता ऊपरि करे बहु माणु ॥ (396-7)
जिउ बालू घर ठउर न ठाई ॥७॥ (1348-10)
जिउ बिखई हेरै पर नारी ॥ (873-15)
जिउ बिगारी कै सिरि दीजहि दाम ॥ (179-8)
जिउ बिनु अमलै अमली मरि जाई है तिउ हरि बिनु हम मरि जाती ॥ रहाउ ॥ (668-3)
जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥८॥२१॥ (292-6)
जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥ (280-12)
जिउ बेसुआ के घरि पूतु जमतु है तिसु नामु परिओ है ध्रकटी ॥१॥ रहाउ ॥ (528-8)
जिउ बेसुआ पूत बापु को कहीऐ तिउ फोकट कार विकारा हे ॥५॥ (1029-5)
जिउ बेस्वा के परै अखारा ॥ (1165-4)
जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥ (1380-13)
जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥ (950-1)
जिउ बैसंतरु कासट मझारि बिनु संजम नही कारज सारि ॥ (535-7)
जिउ बोलाए तिउ बोलीऐ जा आपि बुलाए सोइ ॥ (39-4)
जिउ बोलावहि तिउ बोलह सुआमी कुदरति कवन हमारी ॥ (508-1)
जिउ बोहिथु भै सागर माहि ॥ (179-1)
जिउ भए दादुर पानी माही ॥१॥ (324-9)
जिउ भावी तिउ नामु जपाइ ॥ (154-4)
जिउ भावै तिउ करहि निबेरा ॥ (1140-7)
जिउ भावै तिउ करि प्रतिपाला ॥४॥२२॥ (376-12)
जिउ भावै तिउ मोहि प्रतिपाल ॥ (828-12)
जिउ भावै तिउ रखसी आपे करे रजाइ ॥८॥१॥ (565-7)
जिउ भावै तिउ रखहु अरदासि ॥२॥ (1345-5)
जिउ भावै तिउ रखहु गुसाई ॥४॥२८॥४१॥ (1147-19)
जिउ भावै तिउ रखु तूं मै तुझ बिनु कवनु भतारु ॥३॥ (61-1)
जिउ भावै तिउ रखु तूं सचिआ नानक मनि आस तेरी वड वडे ॥३३॥१॥ सुधु ॥ (317-19)
जिउ भावै तिउ रखु तू गुर सबदि बुझाही ॥ (947-17)
जिउ भावै तिउ रखु तू जन नानक नामु बखसि ॥१॥ (314-5)
जिउ भावै तिउ रखु तू मेरे पिआरे सचु नानक के पातिसाह ॥४॥७॥१३॥ (670-9)

जिउ भावै तिउ रखु तू सभ करे तेरा कराइआ ॥ (139-6)
जिउ भावै तिउ राखहि रहणा गुरमुखि एको जाता हे ॥५॥ (1051-12)
जिउ भावै तिउ राखहि राखु ॥ (933-2)
जिउ भावै तिउ राखहु मेरे सुआमी एह तेरी वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (1333-18)
जिउ भावै तिउ राखहु रहणा तुम सिउ किआ मुकराई हे ॥१॥ (1020-11)
जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरणि तुम्हारी ॥२॥५॥ (528-6)
जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरनि दुआरे ॥४॥१॥ (670-17)
जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी मारगु गुरहि पठाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (746-12)
जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ ॥४॥९॥ (598-9)
जिउ भावै तिउ राखि ले ॥ (1181-6)
जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे ॥ (450-4)
जिउ भावै तिउ राखु तूं नानकु तेरा दासु ॥२॥ (86-4)
जिउ भावै तिउ राखु तूं मै हरि नामु अधारु ॥१॥ (62-4)
जिउ भावै तिउ राखु तूं हरि नामु मिलै आचारु ॥१॥ रहाउ ॥ (54-15)
जिउ भावै तिउ राखु तू मै अवरु न दूजा कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (20-4)
जिउ भावै तिउ राखु दइआला ॥ (416-5)
जिउ भावै तिउ राखु मेरे साहिब मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (735-3)
जिउ भावै तिउ राखु राखणहारिआ ॥ (398-3)
जिउ भावै तिउ राखै सोइ ॥१॥ (1172-10)
जिउ भावै तिउ लैहि मिलाई ॥ (104-19)
जिउ मंदर कउ थामै थमनु ॥ (282-16)
जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु ॥१॥ रहाउ ॥ (55-8)
जिउ मछुली फाथी जम जालि ॥ (935-8)
जिउ मछुली बिनु नीरै बिनसै तिउ नामै बिनु मरि जाई ॥१॥ (607-9)
जिउ मछुली बिनु पाणीऐ किउ जीवणु पावै ॥ (708-14)
जिउ मछुली विणु पाणीऐ रहै न कितै उपाइ ॥ (759-2)
जिउ मधु माखी तिउ सठोरि रसु जोरि जोरि धनु कीआ ॥ (654-12)
जिउ मधु माखी संचै अपार ॥ (1252-11)
जिउ मनमुखि दूजै पति खोई ॥ (1344-11)
जिउ मनु देखहि पर मनु तैसा ॥ (1342-5)
जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥ (282-18)
जिउ महा खुधिआरथ भोगु ॥ (838-11)
जिउ माजीठै कपड़े रंगे भी पाहेहि ॥ (644-11)
जिउ मात पूतहि हेतु ॥ (838-11)
जिउ माता बालि लपटावै ॥ (629-6)
जिउ मिरतक मिथिआ सीगारु ॥२॥ (240-5)
जिउ मिलि बछरे गऊ प्रीति लगावै ॥ (164-11)

जिउ मिलै पिआरा आपना ते बोल करागउ ॥१॥ (808-9)
जिउ मीन कुंडलीआ कंठि पाइ ॥१॥ (1187-18)
जिउ मीन जल सिउ हेतु ॥ (838-9)
जिउ मीना जल माहि उलासा ॥ (226-4)
जिउ मीना जल सिउ उरझानो राम नाम संगि लीवनि ॥ (1222-3)
जिउ मीना बिनु पाणीऐ तिउ साकतु मरै पिआस ॥ (597-11)
जिउ मीना हेरै पसूआरा ॥ (873-14)
जिउ मीहि वुठै गलीआ नालिआ टोभिआ का जलु जाइ पवै विचि सुरसरी सुरसरी मिलत पवित्रु पावनु होइ जावै ॥ (855-2)
जिउ मैगलु इंद्री रसि प्रेरिओ तू लागि परिओ कुट्मबाइले ॥ (862-9)
जिउ मैगलु मसतु दीजै तलि कुंडे गुर अंकसु सबदु द्रिड़ावैगो ॥१॥ रहाउ ॥ (1310-15)
जिउ मोहिओ उनि मोहनी बाला उस ते घटै नाही रुच चसूआ ॥३॥ (206-16)
जिउ म्रिग नाभि बसै बासु बसना भ्रमि भ्रमिओ झार गहे ॥३॥ (1336-11)
जिउ रस भोग कीए तेता दुखु लागै नामु विसारि भवजलि पइआ ॥१॥ (906-8)
जिउ राखहि किरपा धारि तिवै सुखु पाईऐ ॥१॥ (752-15)
जिउ राखा खेत ऊपरि पराए ॥ (179-10)
जिउ राखै महतारी बारिक कउ तैसे ही प्रभ पाल ॥१॥ रहाउ ॥ (680-15)
जिउ राजे राजु कमावदे दुख सुख भिड़ीआ ॥ (516-15)
जिउ राती जलि माछुली तिउ राम रसि माते राम राजे ॥ (454-2)
जिउ रामु राखै तिउ रहीऐ रे भाई ॥ (1164-6)
जिउ लाहा तोटा तिवै वाट चलदी आई ॥ (418-15)
जिउ लोभीऐ धनु दानु ॥ (838-10)
जिउ लोहा तरिओ संगि कासट लगि सबदि गुरू हरि पावैगो ॥२॥ (1309-3)
जिउ लोहा पारसि भेटीऐ मिलि संगति सुवरनु होइ जाइ ॥ (303-7)
जिउ वाड़ी ओजाड़ि उजाड़ी ॥ (1024-18)
जिउ वेखाले तिउ वेखां बीर ॥३॥ (1257-9)
जिउ सतसंगति तरिओ जुलाहो संत जना मनि भावैगो ॥४॥ (1309-17)
जिउ सललै सलल उठहि बहु लहरी मिलि सललै सलल समणे ॥२॥ (977-3)
जिउ साबुनि कापर ऊजल होत ॥ (914-18)
जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥ (280-9)
जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥ (474-8)
जिउ साहिबु राखै तिउ रहै इसु लोभी का जीउ टल पलै ॥१॥ (25-16)
जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥ (1427-14)
जिउ सुपनै निसि भुलीऐ जब लगि निद्रा होइ ॥ (63-7)
जिउ सुपनै होइ बैसत राजा ॥ (179-9)
जिउ सूरजु किरणि रविआ सरब ठाई सभ घटि घटि रामु रवीजै ॥ (1326-2)
जिउ स्मपै तिउ बिपति है बिध ने रचिआ सो होइ ॥३॥ (337-13)

जिचरु अंदरि सासु तिचरु सेवा कीचै जाइ मिलीऐ राम मुरारी ॥२५॥ (911-15)
जिचरु आगिआ तिचरु भोगहि भोग ॥१॥ (185-15)
जिचरु इहु मनु लहरी विचि है हउमै बहुतु अहंकारु ॥ (1247-14)
जिचरु तेरी जोति तिचरु जोती विचि तूं बोलहि विणु जोती कोई किछु करिहु दिखा सिआणीऐ ॥ (138-15)
जिचरु दूजा भरमु सा अमाली तिचरु मै जाणिआ प्रभु दूरे ॥ (564-13)
जिचरु पैननि खावन्हे तिचरु रखनि गंढु ॥ (959-3)
जिचरु राखै तिचरु तुम संगि रहणा जा सदे त ऊठि सिधासा हे ॥८॥ (1073-4)
जिचरु वसिआ कंतु घरि जीउ जीउ सभि कहाति ॥ (50-17)
जिचरु वसी पिता कै साथि ॥ (371-1)
जिचरु विचि दमु है तिचरु न चेतई कि करेगु अगै जाइ ॥ (556-1)
जिचरु सबदि न भीजै हरि कै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (229-12)
जिणि घरि आए सोभा सेती पूरन होई आसा ॥३॥ (630-12)
जिणि जिणि लैन्हि रलाइ एहो एना लोड़ीऐ ॥ (522-6)
जित हम लाए तित ही लागे तैसे करम कमावहिगे ॥ (1103-18)
जितड़े फल मनि बाछीअहि तितड़े सतिगुर पासि ॥ (52-16)
जितते बिस्व संसारह नानक वस्यं करोति पंच तसकरह ॥२९॥ (1356-13)
जितनी भूख अन रस साद है तितनी भूख फिरि लागै ॥ (167-1)
जितनी स्रिसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै धूरि साधू की ताई ॥ (1263-10)
जितने करज करज के मंगीए करि सेवक पगि लगि वारे ॥७॥ (981-10)
जितने जीअ जंत प्रभि कीने तितने सिरि कार लिखावै ॥ (1263-18)
जितने तीरथ देवी थापे सभि तितने लोचहि धूरि साधू की ताई ॥ (1263-9)
जितने धनवंत कुलवंत मिलखवंत दीसहि मन मेरे सभि बिनसि जाहि जिउ रंगु कसुमभ कचाणु ॥ (861-6)
जितने नरक से मनमुखि भोगै गुरमुखि लेपु न मासा हे ॥१२॥ (1073-9)
जितने पातिसाह साह राजे खान उमराव सिकदार हहि तितने सभि हरि के कीए ॥ (851-12)
जितने भगत हरि सेवका मुखि अठसठि तीरथ तिन तिलकु कढाइ ॥ (733-11)
जितने रस अन रस हम देखे सभ तितने फीक फीकाने ॥ (169-19)
जितने साह पातिसाह उमराव सिकदार चउधरी सभि मिथिआ झूठु भाउ दूजा जाणु ॥ (861-3)
जिता जनमु अपारु आपु पछानिआ ॥ (522-13)
जितु कमि हरि वीसरै दूजै लगै जाइ ॥१॥ (490-2)
जितु करमि सुखु ऊपजै भाई सु आतम ततु बीचारी ॥ रहाउ ॥ (635-10)
जितु कारजि सतु संतोखु दइआ धरमु है गुरमुखि बूझै कोई ॥३॥ (351-16)
जितु कारै कमि हम हरि लाए ॥ (494-18)
जितु किंगुरी अनहदु वाजै हरि सिउ रहै लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (908-12)
जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ (474-7)
जितु को लाइआ तित ही लगाना ॥ (914-10)
जितु को लाइआ तित ही लागा ॥ (239-1)
जितु को लाइआ तित ही लागा किसु दोसु दिचै जा हरि एवै भावै ॥ (960-10)

जितु को लाइआ तित ही लागा तैसे करम कमावै ॥ (476-5)
जितु को लाइआ तित ही लागा तैसो ही वरतारा ॥ (613-3)
जितु को लाइओ तित ही लागा तैसे करम कमाइओ ॥७॥ (1017-6)
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥ (16-14)
जितु खाधै तेरे जाहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥ (1257-2)
जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ जीआं जुगति समाइ ॥ (1282-15)
जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ नानक साहिब दाति ॥२॥ (321-13)
जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥ (645-13)
जितु खाधै सुखु ऊपजै फिरि दूखु न लागै आइ ॥२॥ (1281-8)
जितु गरबु जाइ सु कवणु आहारु ॥ (943-3)
जितु ग्रिहि गुन गावते हरि के गुन गावते राम गुन गावते तितु ग्रिहि वाजे पंच सबद वड भाग मथोरा ॥ (1201-3)
जितु ग्रिहि मंदरि हरि होतु जासु तितु घरि आनदो आनंदु भजु राम राम राम ॥ (1297-4)
जितु ग्रिहि वसै सो ग्रिहु सोभावंता ॥ (370-18)
जितु घटि नामु न ऊपजै फूटि मरै जनु सोइ ॥१॥ (335-8)
जितु घटि वसै पारब्रहमु सोई सुहावा थाउ ॥ (218-5)
जितु घटि सचु न पाइ सु भंनि घड़ाईऐ ॥ (146-7)
जितु घरि नामु हरि सदा धिआईऐ सोहिलड़ा जुग चारे ॥ (440-6)
जितु घरि पिरि सोहागु बणाइआ ॥ (97-15)
जितु घरि वसहि तूहै बिधि जाणहि बीजउ महलु न जापै ॥ (1275-3)
जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ (133-8)
जितु चड़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥ (16-18)
जितु जम कै पंथि न जाईऐ ॥ (132-8)
जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥ (275-7)
जितु जितु भाणा तितु तितु लाए ॥ (103-15)
जितु जितु लाइआ तितु तितु को लागै ॥३॥ (743-4)
जितु जितु लाइहि आपि तितु तितु लगीऐ ॥२॥ (518-10)
जितु जितु लाए तितु तितु लागे किआ को करै परानी ॥ (403-13)
जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ (1019-16)
जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ (178-16)
जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ (252-11)
जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ (275-17)
जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि नानक जंत अनाथ ॥३३॥ (257-8)
जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि सिआनप सभ जाली ॥ (811-7)
जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥ (271-2)
जितु डिठै तनु परफुड़ै चड़ै चवगणि वंनु ॥३०॥ (1412-15)
जितु तनि नामु न ऊपजै भाई से तन होए छार ॥ (608-13)

जितु तनि नामु न ऊपजै से तन होहि खुआर ॥४॥२॥ (1328-2)
जितु तनि नामु न भावई तितु तनि हउमै वादु ॥ (61-17)
जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार ॥ (464-19)
जितु तुधु लाए तेहा फलु पाइआ तू हुकमि चलावणहारा ॥ (635-3)
जितु तुम लावहु तित ही लागा पूरन खसम हमारे ॥१॥ (216-11)
जितु तूं लावहि तितु तितु लगना ॥ (744-6)
जितु तू लाइहि सचिआ तितु को लगै नानक गुण गाई ॥२८॥१॥ सुधु (1291-19)
जितु तू लावहि तितु हम लागह किआ एहि जंत विचारे ॥१॥ (750-5)
जितु दरि तुम्ह है ब्राहमण जाणा ॥ (372-14)
जितु दरि लेखा मंगीऐ सो दरु सेविहु न कोइ ॥ (1089-10)
जितु दरि वसहि कवनु दरु कहीऐ दरा भीतरि दरु कवनु लहै ॥ (877-2)
जितु दारू रोग उठिअहि तनि सुखु वसै आइ ॥ (1279-16)
जितु दिनि उन्ह का सुआउ होइ न आवै तितु दिनि नेड़ै को न ढुकासा ॥ (860-10)
जितु दिनि किछु न होवई तितु दिनि बोलनि गंधु ॥ (959-4)
जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥ (134-16)
जितु दिनि विसरै पारब्रहमु फिटु भलेरी रुति ॥१॥ (318-14)
जितु दिनि विसरै पारब्रहमु भाई तितु दिनि मरीऐ झूरि ॥ (640-2)
जितु दिहाड़ै धन वरी साहे लए लिखाइ ॥ (1377-16)
जितु दीवै सभ सोझी पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (878-7)
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥ (853-11)
जितु दोही सजण मिलनि लहु मुंधे वीचारु ॥ (1410-7)
जितु पारब्रहमु चिति आइआ ॥ (625-19)
जितु पिंजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदू खाहि ॥९२॥ (1382-15)
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥ (554-15)
जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥ (554-14)
जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥ (16-16)
जितु प्रभि लाइआ तितु तितु लगै ॥१॥ रहाउ ॥ (1180-9)
जितु प्रभु पावहु गणत न काई ॥ (1028-17)
जितु बोलिऐ पति पाईऐ सो बोलिआ परवाणु ॥ (15-13)
जितु भावै तितु कारै लाए ॥ (123-15)
जितु भावै तितु राहि चलाए ॥ (1047-17)
जितु भावै तितु लाइदा गुरमुखि हरि सचा ॥ (1094-4)
जितु भावै तितु लाइसी जिउ तिस दी वडिआई राम ॥ (570-10)
जितु भेटे पारब्रहम निरजोग ॥१॥ (191-16)
जितु भेटे साधू के चरन ॥४॥६०॥१२९॥ (191-19)
जितु मउलिऐ सभ मउलीऐ तिसहि न मउलिहु कोइ ॥१॥ (791-14)
जितु मारगि तुम प्रेरहु सुआमी तितु मारगि हम जाते ॥१॥ (169-4)

जितु मारगि हरि पाईऐ मन सेई करम कमाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1346-17)
जितु मिरग पड़त है चोरी ॥ (656-10)
जितु मिलि हरि नामु धिआइआ हरि धणी ॥ (165-2)
जितु मिलि हरि पाधर बाट ॥ (1297-8)
जितु मिलिऐ तिख उतरै तनु मनु सीतलु होइ ॥ (1421-10)
जितु मिलिऐ नामु वखाणीऐ ॥ (72-11)
जितु मिलिऐ परम गति पाईऐ ॥ (71-19)
जितु मुखि तू सालाहीअहि तितु मुखि कैसी भूख ॥३॥ (1328-1)
जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥ (473-6)
जितु मुखि भागु लिखिआ धुरि साचै हरि तितु मुखि नामु जपाती ॥१३॥ (88-8)
जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥ (473-10)
जितु मेरा मनु जपै हरि नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (191-17)
जितु रविऐ सुख सहज भोगु ॥१॥ रहाउ ॥ (1184-7)
जितु रसना उचरै हरि हरी ॥२॥ (191-17)
जितु रसना हरि नामु उचारे ॥१॥ (743-14)
जितु लगि तरणा होरु नही थाउ ॥ (662-3)
जितु लाई तितु लागी ॥३॥ (655-11)
जितु लाईअनि तितै लगदीआ नह खिंजोताड़ा ॥ (1098-1)
जितु लागो मनु बासना अंति साई प्रगटानी ॥६॥ (242-4)
जितु लावहि तितु लागह सुआमी ॥ (890-10)
जितु वुठै अनु धनु बहुतु ऊपजै जां सहु करे रजाइ ॥ (1282-15)
जितु वेला विसरहि ता लागै हावा ॥१॥ (563-16)
जितु सचा मेरे मनि भाइआ ॥ (115-13)
जितु सिमरनि दरगह मुखु ऊजल सदा सदा सुखु पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (629-5)
जितु सु हाथ न लभई तूं ओहु ठरूरु ॥ (967-18)
जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ (922-9)
जितु सुतै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥४॥७॥ (17-2)
जितु सेविऐ दरगह पति परवाना ॥१॥ (159-18)
जितु सेविऐ दरगह सुखु पाईऐ नामु तिसै का लीजै ॥ (579-4)
जितु सेविऐ सदा सुखु होइ ॥ (1174-12)
जितु सेविऐ सदा सुखु होई ॥ (120-19)
जितु सेविऐ सुखु पाईऐ तेरी दरगह चलै माणु ॥१॥ रहाउ ॥ (15-19)
जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥ (474-6)
जितु सेविऐ सुखु होइ घना मन सोई गाईऐ ॥१॥ (809-7)
जितु हउ लाई तितु हउ लगी तू सुणि सचु संदेसा ॥ (959-14)
जितु हउमै गरबु निवारी ॥१॥ रहाउ ॥ (616-16)
जितु हरि प्रभु जापै सा धंनु साबासै धुरि पाइआ किरतु जुड़ंदा ॥ (575-16)

जितु हरि प्रभु जापै सा धनु धंनु तुखाईआ राम ॥ (575-15)
जितु हरिआ सभु जीअ जंतु ॥ (1172-4)
जिथहु वंञै जाइ तिथाऊ मउजूदु सोइ ॥१॥ (322-16)
जिथै अउघटु आइ बनतु है प्राणी ॥ (1076-7)
जिथै अगनि भखै भड़हारे ॥ (1007-16)
जिथै अवघट गलीआ भीड़ीआ तिथै हरि हरि मुकति कराइ ॥१॥ (996-3)
जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥ (72-1)
जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु झूठा कूड़ु बोले किसै न भावै ॥ (653-6)
जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु सुरखरू उस कै मुहि डिठै सभ पापी तरिआ ॥ (87-3)
जिथै किथै दीसहि नाले ॥ (801-19)
जिथै किथै सिरजणहारु ॥ (952-3)
जिथै को वेखै तिथै मेरा सतिगुरू हरि बखसिओसु सभु जहानु ॥ (853-17)
जिथै कोइ कथंनि नाउ सुणंदो मा पिरी ॥ (1101-8)
जिथै जाइ तुधु वरतणा तिस की चिंता नाहि ॥ (43-5)
जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ झोलि अम्रितु पीजै ॥ (766-2)
जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ सुरति सबदु लिखाईऐ ॥ (566-1)
जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥ (450-17)
जिथै जाईऐ जगत महि तिथै हरि साई ॥ (851-6)
जिथै जाए भगतु सु थानु सुहावणा ॥ (1363-5)
जिथै जीआं होसी सार ॥ (1288-8)
जिथै डिठा मिरतको इल बहिठी आइ ॥२॥ (322-7)
जिथै थोड़ा धनु वेखै तिथै तपा भिटै नाही धनि बहुतै डिठै तपै धरमु हारिआ ॥ (315-16)
जिथै नामु जपीऐ प्रभ पिआरे ॥ (105-7)
जिथै नामु न जपीऐ मेरे गोइदा सेई नगर उजाड़ी जीउ ॥१॥ (105-7)
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥४॥३॥ (15-9)
जिथै पुतु कलत्रु कोई बेली नाही तिथै हरि हरि नामि छडाइआ ॥ (573-18)
जिथै पुत्रु कलत्रु न बेली कोई तिथै हरि आपि छडाइदा ॥११॥ (1076-8)
जिथै बहि समझाईऐ तिथै कोइ न चलिओ नालि ॥ (15-5)
जिथै बैसनि साध जन सो थानु सुहंदा ॥ (319-6)
जिथै बोलणि हारीऐ तिथै चंगी चुप ॥२॥ (149-5)
जिथै मिलहि वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ ॥ (16-7)
जिथै रखहि बैकुंठु तिथाई तूं सभना के प्रतिपाला जीउ ॥३॥ (106-7)
जिथै रखै सा भली जाए ॥ (108-15)
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि ॥१॥ रहाउ ॥ (729-3)
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै छुटै सचु कमाए ॥ (112-2)
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै देह जाति न जाइ ॥ (1346-9)
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (16-7)

जिथै लेखा मंगीऐ हरि आपे लए छडाइ ॥२॥ (234-6)
जिथै वथु होवै तिथहु कोइ न पावै मनमुख भरमि भुलावणिआ ॥७॥ (117-17)
जिथै वसै मेरा पातिसाहु सो केवडु है थाउ ॥ (53-15)
जिथै साइरु लंघणा अगनि पाणी असगाह ॥ (1287-17)
जिथै सु वसतु न जापई आपे वरतउ जाणि ॥ (954-18)
जिथै हरि आराधीऐ तिथै हरि मितु सहाई ॥ (733-19)
जिधरि रब रजाइ वहणु तिदाऊ गंउ करे ॥८४॥ (1382-7)
जिन अंतरि सबदु आपु पछाणहि गति मिति तिन ही पाई ॥१५॥ (910-13)
जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ॥ (450-15)
जिन अंतरे राम नामु वसै तिन चिंता सभ गवाइआ राम ॥ (443-17)
जिन अंदरि कपटु विकारु झूठु ओइ आपे सचै वखि कढे जजमाले ॥ (304-19)
जिन अंदरि नामु निधानु है तिन का भउ सभु गवाइसी ॥ (310-13)
जिन अंदरि निंदा दुसटु है नक वढे नक वढाइआ ॥ (1244-8)
जिन अंदरि प्रीति नही हरि केरी से किचरकु वेराईअनि मनमुख बेताले ॥ (305-2)
जिन अंदरि प्रीति पिरम की जिउ बोलनि तिवै सोहंनि ॥ (301-17)
जिन आपे मेलि विछोड़हि नाही ॥ (1056-5)
जिन इक मनि तुठा तिन हरि मंनि वसाए ॥ (160-2)
जिन इक मनि तुठा से सतिगुर सेवा लाए ॥ (160-1)
जिन इक मनि हरि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए तिन संत जना जैकारो राम ॥ (539-19)
जिन इकु जाता से जन परवाणु ॥ (1175-8)
जिन ऊपरि गुरमुखि मनु मानिआ तिन के काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (1199-2)
जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते ध्रिगु ध्रिगु नर जीवाईऐ ॥ (1179-9)
जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते हरि दरगह काढे मारी ॥ (1135-10)
जिन कंउ क्रिपा करी मेरै ठाकुरि तिन का लेखा न गणिआ ॥ (577-11)
जिन कंउ सतिगुरु भेटिआ से हरि कीरति सदा कमाहि ॥ (592-8)
जिन कंउ हरि प्रभि किरपा धारी ते सतिगुर सेवा लाइआ ॥ (573-15)
जिन कउ अंदरि गिआनु नही भै की नाही बिंद ॥ (1093-17)
जिन कउ आदि मिली वडिआई ॥ (1070-5)
जिन कउ आपि दइआलु होइ तिन उपजै मनि गिआनु ॥ (45-13)
जिन कउ आपि देइ वडिआई जगतु भी आपे आणि तिन कउ पैरी पाए ॥ (308-1)
जिन कउ आपि लिखतु धुरि पाई ॥ (130-9)
जिन कउ करतै धुरि लिखि पाई ॥ (1069-12)
जिन कउ करमि लिखी तिसु रिदै समाणी राम ॥ (545-7)
जिन कउ किरपा धारीअनु तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ (1414-13)
जिन कउ क्रिपा करत है गोबिदु ते सतसंगि मिलात ॥३॥ (1252-1)
जिन कउ क्रिपा करी जगजीवनि हरि उरि धारिओ मन माझा ॥ (698-1)
जिन कउ क्रिपा करी सुखदाते ॥ (1083-9)

जिन कउ क्रिपा कीनी मेरै सुआमी तिन अनदिनु हरि गुण गाए ॥ (768-2)
जिन कउ क्रिपालु होआ प्रभु मेरा से लागे गुर की बाणी ॥३॥ (608-9)
जिन कउ गुरु सतिगुरु नही भेटिआ ते साकत मूड़ दिवाने ॥ (170-2)
जिन कउ ठाकुरि किरपा धारी बाह पकरि नानक कढि लईआ ॥८॥६॥२॥१॥६॥९॥ (837-6)
जिन कउ तखति मिलै वडिआई गुरमुखि से परधान कीए ॥ (1172-1)
जिन कउ तुम दइआ करि मेलहु ते हरि हरि सेव लगाने ॥ (170-3)
जिन कउ तुम हरि राखहु सुआमी सभ तिन के पाप क्रिखे ॥ (976-5)
जिन कउ तुम्ह हरि मेलहु सुआमी ते न्हाए संतोख गुर सरा ॥ (799-16)
जिन कउ तुम्हरे वड कटाख है ते गुरमुखि हरि सिमरणे ॥१॥ (977-2)
जिन कउ तू हरि मेलहि सुआमी सभु तिन का लेखा छुटकि गइआ ॥ (1115-4)
जिन कउ दइआलु होआ मेरा सुआमी तिना साध जना पग चकटी ॥ (528-10)
जिन कउ धुरि लिखिआ तिन गुरु मिलिआ तिन जनम मरण भउ भागा ॥ (767-19)
जिन कउ धुरि हरि लिखिआ सुआमी तिन हरि हरि नामु अराधिआ ॥ (1115-8)
जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥ (8-9)
जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥ (920-5)
जिन कउ नदरि करहि तू अपणी गुरमुखि अलखु लखाहा हे ॥१०॥ (1053-19)
जिन कउ नदरि करे प्रभु अपनी गुरमुखि सबदु सलाहा हे ॥५॥ (1032-13)
जिन कउ नदरि भई गुरि मेले प्रभ भाणा सचु सोई ॥२॥ (1153-10)
जिन कउ नदरि होवै गुर केरी हरि जीउ आपि मिलाइदा ॥१४॥ (1065-17)
जिन कउ पिआस तुमारी प्रीतम तिन कउ अंतरु नाही ॥ (1268-19)
जिन कउ पिआस होइ प्रभ केरी तिन्ह अवरु न भावै बिनु हरि को दुईआ ॥३॥ (836-18)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन का सखा गोविंदु ॥ (47-5)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन मनि वसिआ आइ ॥ (1313-17)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन रंगु लगा निरंकार ॥ (959-18)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सचु कमाइआ ॥ (1093-16)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतगुरु मिलिआ आइ ॥४॥ (27-10)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ (1415-7)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सदा सदा आराधा ॥१९॥ (1101-6)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिना सतगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ (592-12)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन्हा भेटिआ गुर गोविंदु ॥ (1415-16)
जिन कउ पूरबि लिखिआ सतगुरु भेटिआ तिन आइ ॥२॥ (35-17)
जिन कउ पूरबि लिखिआ सतिगुरु मिलिआ तिन आइ ॥ (1249-4)
जिन कउ पूरबि लिखिआ से आइ मिले गुर पासि ॥ (82-16)
जिन कउ पूरबि लिखिआ सेई नामु धिआइ ॥ (53-5)
जिन कउ पोतै पुंनु पइआ तिना गुर सबदी सुखु होइ ॥२॥ (316-17)
जिन कउ पोतै पुंनु है तिन्ह वाति सिपीती ॥ (951-12)
जिन कउ प्रभु मेरा बिसरत नाही ॥४॥१०९॥ (201-16)

जिन कउ प्रीति नाही हरि सेती ते साकत मूड़ नर काचे ॥ (169-13)
जिन कउ प्रीति रिदै हरि नाही तिन कूरे गाढन गाढे ॥ (171-3)
जिन कउ प्रेम पिआरु तउ आपे लाइआ करमु करि ॥ (1422-11)
जिन कउ बिधातै धुरहु लिखिआ तिन्हा रैणि दिनु लिव लाईऐ ॥ (542-5)
जिन कउ बिसरै मेरो रामु पिआरा से मूए मरि जांहीं ॥१॥ (1268-19)
जिन कउ भांडै भाउ तिना सवारसी ॥ (729-14)
जिन कउ मन की परतीति नाही नानक से किआ कथहि गिआनै ॥१॥ (647-3)
जिन कउ मसतकि लिखिआ तिन पाइआ हरि नामु ॥१॥ (45-14)
जिन कउ लगी पिआस अम्रितु सेइ खाहि ॥ (962-2)
जिन कउ लिखतु लिखिआ धुरि पाई ॥ (164-8)
जिन कउ लिखतु लिखे धुरि मसतकि ते गुर संतोख सरि नाते ॥ (169-7)
जिन कउ लिखिआ एहु निधानु ॥ (1257-5)
जिन कउ लिखिआ हरि एहु निधानु ॥ (1143-18)
जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि नामु ॥ (1259-18)
जिन कउ सतिगुरि थापिआ तिन मेटि न सकै कोइ ॥ (17-6)
जिन कउ सतिगुरु भेटिआ तिना विटहु बलि जाउ ॥ (1347-3)
जिन कउ साधू संगु नाम हरि रंगु तिनी ब्रहमु बीचारिआ जीउ ॥ (81-10)
जिन कउ होआ क्रिपालु हरि से सतिगुर पैरी पाही ॥ (89-1)
जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥ (276-11)
जिन का पखु करहि तू सुआमी तिन की ऊपरि गल तुधु आणी हे ॥१४॥ (1071-5)
जिन का हरि सेती मनु मानिआ तिन कारज हरि आपि सवारि ॥ (1135-2)
जिन कारणि गुरू विसारिआ से न उपकरे अंती वार ॥ (594-14)
जिन की भगति मेरे प्रभ भाई ॥ (494-19)
जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ॥३॥ (469-6)
जिन की लेखै पति पवै से पूरे भाई ॥ (1012-9)
जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिसि फिरहि जलंत ॥२॥ (791-10)
जिन के चित कठोर हहि से बहहि न सतिगुर पासि ॥ (314-17)
जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि ॥ (722-4)
जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥१॥ रहाउ ॥ (1200-11)
जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई ॥ (678-6)
जिन के बंधन काटे सतिगुर तिन साधसंगति लिव लाई ॥ (205-4)
जिन के वडे भाग वड ऊचे तिन हरि जपिओ जपानी ॥ (667-13)
जिन कै अंतरि वसिआ मेरा हरि हरि तिन के सभि रोग गवाए ॥ (735-15)
जिन कै नामु न मनि वसै से बाधे दूख सहाहि ॥२॥ (1010-7)
जिन कै पलै धनु वसै तिन का नाउ फकीर ॥ (1287-12)
जिन कै पोतै पुंनु है गुरु पुरखु मिलाइआ ॥ (1238-8)
जिन कै पोतै पुंनु है से गुरमुखि सिख गुरू पहि जाते ॥१६॥ (648-18)

जिन कै प्रीति नाही हरि हिरदै ते कपटी नर नित कपटु कमांति ॥ (1264-11)
जिन कै भीतरि है अंतरा ॥ (1163-15)
जिन कै मनि वसिआ सचु सोई ॥ (228-2)
जिन कै मनि सचु वसिआ सची कार कमाइ ॥ (428-3)
जिन कै मनि साचा बिस्वासु ॥ (677-13)
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥ (8-4)
जिन कै सुआमी रहत हदूरि ॥ (954-2)
जिन कै हरि नामु वसिआ सद हिरदै हरि नामो तिन कंउ रखणहारा ॥ (592-4)
जिन कै हिरदै एकंकारु ॥ (905-3)
जिन कै हिरदै एको भाइआ ॥ (1190-7)
जिन कै हिरदै तू सुआमी ते सुख फल पावहि ते तरे भव सिंधु ते भगत हरि जान ॥ (1298-2)
जिन कै हिरदै नाहि हरि सुआमी ते बिगड़ रूप बेरकटी ॥ (528-8)
जिन कै हिरदै मैलु कपटु है बाहरु धोवाइआ ॥ (1243-12)
जिन कै हिरदै हरि वसै हउमै रोगु गवाइ ॥ (850-1)
जिन कै हिरदै हरि हरि सोई ॥ (228-6)
जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥ (134-8)
जिन खिनु पलु नामु न वीसरै ते जन विरले संसारि ॥१॥ रहाउ ॥ (21-16)
जिन गुण तिन सद मनि वसै अउगुणवंतिआ दूरि ॥ (27-17)
जिन गुणु पलै नानका माणक वणजहि सेइ ॥ (954-11)
जिन गुर का भाणा मंनिआ तिन घुमि घुमि जाए ॥२॥ (725-12)
जिन गुर की कीती चाकरी तिन सद बलिहारी ॥३॥ (725-13)
जिन गुर कै सबदि सलाहिआ हरि सिउ रहे समाइ ॥ (647-5)
जिन गुर परसादी मनु जीतिआ जगु तिनहि जिताना ॥८॥ (1089-7)
जिन गुर बचन सुखाने हीअरै तिन आगै आणि परीठा ॥२॥ (171-15)
जिन गुरमुखि खोजि ढंढोलिआ तिन अंदरहु ही सचु लाधिआ ॥ (313-6)
जिन गुरमुखि नामु धिआइआ आए ते परवाणु ॥ (648-2)
जिन गुरमुखि पिआरा सेविआ तिन कउ घुमि जाइआ ॥ (725-17)
जिन गुरमुखि सुणि हरि मंनिआ जन नानक तिन जैकारु ॥२॥ (1314-11)
जिन गुरमुखि हरि आराधिआ तिन संत जना जैकारु ॥ (302-10)
जिन गुरमुखि हरि आराधिआ से साह वड दाणे ॥ (726-11)
जिन गुरमुखि हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाइ ॥ (28-3)
जिन गुरु गोपिआ आपणा से लैदे ढहा फिराही ॥ (308-17)
जिन चाखिआ से जन त्रिपताने ॥ (289-13)
जिन चाखिआ से त्रिपतासिआ उह रसु जाणै जिंदु ॥ (48-19)
जिन चाखिआ से निरभउ भए से हरि रसि ध्रापै ॥ (1092-13)
जिन चाखिआ सेई सादु जाणनि जिउ गुंगे मिठिआई ॥ (635-1)
जिन जपिआ इक मनि इक चिति तिन लथा हउमै भारु ॥ (302-9)

जिन जपिआ हरि ते मुकत प्राणी तिन के ऊजल मुख हरि दुआरि ॥ (1115-12)
जिन जपिआ हरि मनि चीति हरि जपि जपि मुकतु घणी ॥ (1115-11)
जिन जानिआ सेई तरे से सूरे से बीर ॥ (929-12)
जिन जीवंदिआ पति नही मुइआ मंदी सोइ ॥ (1242-19)
जिन डिठिआ मनु रहसीऐ किउ पाईऐ तिन्ह संगु जीउ ॥ (760-10)
जिन तूं जाता जो तुधु मनि भाने ॥ (100-11)
जिन तूं सेविआ भाउ करि सेई पुरख सुजान ॥ (52-5)
जिन तू जपिओ तेई जन नीके हरि जपतिअहु कउ सुखु पावैगो ॥ (1309-14)
जिन तू धिआइआ से गनी ॥ (1182-4)
जिन तू पाइआ से धनी ॥ (1182-4)
जिन तू रखहि तिन नेड़ि न आवै तिन भउ सागरु तरणा ॥२॥ (1286-15)
जिन तू विसरहि पारब्रहम सुआमी से तन होए धूड़ि ॥ (641-4)
जिन दरसनु सतिगुर सत पुरख न पाइआ ते भागहीण जमि मारे ॥ (493-7)
जिन दरसु सतिगुर गुरू कीआ तिन आपि हरि मेलाइआ ॥ (1116-8)
जिन दीआ तिस कै कुरबानै गुर पूरे नमसकारो ॥१॥ रहाउ ॥ (1215-1)
जिन देखे सभ उतरहि कलमल ॥ (108-19)
जिन धिआइआ हिरदै दिनसु राति ते मिले नही हरि रोलु ॥ (1317-16)
जिन धुरि मसतकि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ (1316-12)
जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी तिन का भउ सभु गवासी ॥ (11-5)
जिन निरभउ जिन्ह हरि निरभउ धिआइआ जीउ तिन का भउ सभु गवासी ॥ (348-8)
जिन निरभउ नामु धिआइआ तिन कउ भउ कोई नाहि ॥ (310-2)
जिन परसिआ गुरु सतिगुरू पूरा तिन के किलविख नास गवाइआ ॥ (1116-11)
जिन पाइआ तिन पूछहु भाई सुखु सतिगुर सेव कमाई हे ॥१०॥ (1026-5)
जिन पिरीआ सउ नेहु से सजण मै नालि ॥ (1423-11)
जिन पीआ ते त्रिपत भए हउ तिन बलिहारै जाउ ॥२॥ (557-6)
जिन पीआ सेई त्रिपतासे सचे सचि अघावणिआ ॥४॥ (130-16)
जिन पूरा सतिगुरु सेविआ से असथिरु हरि दुआरि ॥ (808-7)
जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥ (282-2)
जिन बाणी सिउ चितु लाइआ से जन निरमल परवाणु ॥ (429-9)
जिन भेटत होवत सुखी जीअ दानु देन ॥१॥ रहाउ ॥ (813-5)
जिन भेटै पूरा सतिगुरू पिआरे से लागे साचै नाइ ॥ (640-19)
जिन मनि तनि सचा भावदा से सची दरगह गवे ॥ (312-18)
जिन मनि प्रीति लगी हरि केरी तिन धुरि भाग पुराना ॥ (697-5)
जिन मनि वसिआ पारब्रहमु से पूरे परधान ॥ (45-18)
जिन मनि वसिआ से जन सोहहि तिन सिरि चूका काहा हे ॥८॥ (1053-17)
जिन मनि वसिआ से जन सोहे हिरदै नामु वसाए ॥३॥ (1132-1)
जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥ (450-6)

जिन माणस जनमि न पाइआ तिन्ह भागु मंदेरा राम ॥ (844-18)
जिन मिलिआ आतम परगासु ॥१॥ (200-4)
जिन मिलिआ दुख जाहि हमारे ॥१॥ रहाउ ॥ (164-11)
जिन मेरा साहिबु वीसरै वडड़ी वेदन तिनाह ॥१॥ (595-4)
जिन रखण कउ हरि आपि होइ होर केती झखि झखि जाइसी ॥ (310-13)
जिन वडिआई तेरे नाम की ते रते मन माहि ॥ (1238-18)
जिन विसरहि नाही काहू बेरा ॥ (1085-10)
जिन संतन जानिआ तू ठाकुर ते आए परवान ॥ (1217-1)
जिन सचु जाता से सचि समाणे ॥ (111-15)
जिन सचु पलै सचु वखाणहि सचु कसवटी लावणिआ ॥१॥ (112-10)
जिन सतिगुर का भाणा मंनिआ तिन चड़ी चवगणि वंने ॥ (314-9)
जिन सतिगुर संगति संगु न पाइआ से भागहीण पापी जमि खाइआ ॥३॥ (494-3)
जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥ (73-4)
जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ तिन्ह सुखु वसिआ मनि आइ ॥ (510-6)
जिन सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए ॥२॥ (573-5)
जिन सतिगुरु पिआरा देखिआ तिन कउ हउ वारी ॥ (725-13)
जिन सतिगुरु पुरखु जिनि हरि प्रभु पाइआ मो कउ करि उपदेसु हरि मीठ लगावै ॥ (494-6)
जिन सतिगुरु मिलिआ से वडभागी पूरै करमि मिलावणिआ ॥३॥ (110-17)
जिन सबदि गुरू सुणि मंनिआ तिन मनि धिआइआ हरि सोइ ॥ (27-18)
जिन सरधा राम नामि लगी तिन्ह दूजै चितु न लाइआ राम ॥ (444-2)
जिन साधू चरण साध पग सेवे तिन सफलिओ जनमु सनाथा ॥ (696-6)
जिन सालाहनि से मरहि खपि जावै सभु अपवादु ॥ (301-5)
जिन सासि गिरासि धिआइआ मेरा हरि हरि से साची दरगह हरि जन बणे ॥३॥ (1135-17)
जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥ (417-2)
जिन सुणि सिखा गुरु मंनिआ तिना भुख सभ जावी ॥१८॥ (726-9)
जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी ते हरि हरि रूपि समासी ॥ (11-6)
जिन हरि अरथि सरीरु लगाइआ गुर साधू बहु सरधा लाइ मुखि धूड़ा ॥ (698-6)
जिन हरि का नामु न गुरमुखि जाता से जग महि काहे आइआ ॥ (1130-14)
जिन हरि का नामु न चेतिओ बादहि जनमें आइ ॥९४॥ (1369-9)
जिन हरि गाइआ जिन हरि जपिआ तिन संगति हरि मेलहु करि मइआ ॥ (1264-16)
जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ (10-7)
जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ (492-13)
जिन हरि जपिआ तिन पीछै छूटी घणी ॥१॥ (165-2)
जिन हरि जपिआ तिन फलु पाइआ सभि तूटे माइआ फंदे ॥३॥ (800-15)
जिन हरि जपिआ से हरि होए हरि मिलिआ केल केलाली ॥३॥ (667-18)
जिन हरि धिआइआ तिन हरि पाइआ मेरा सुआमी तिन के चरण मलहु हरि दसना ॥२॥ (860-17)
जिन हरि धिआइआ धुरि भाग लिखि पाइआ तिन सफलु जनमु परवाणु जीउ ॥ (445-2)

जिन हरि नामा हरि चेतिआ हिरदै उरि धारे ॥ (726-5)
जिन हरि नामु सुणिआ मनु भीना तिन हम स्रेवह नित चरणे ॥१॥ (1135-14)
जिन हरि मनि वसिआ से दरि साचे दरि साचै सचिआरा ॥ (638-7)
जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ॥ (451-11)
जिन हरि हरि नामु न चेतिओ तिन जूऐ जनमु सभु हारि ॥ (1314-6)
जिन हरि हरि नामु न चेतिओ मेरी जिंदुड़ीए ते मनमुख मूड़ इआणे राम ॥ (540-11)
जिन हरि हरि नामु न चेतिओ से भागहीण मरि जाइ ॥ (996-6)
जिन हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ (10-6)
जिन हरि हिरदै नामु न बसिओ तिन मात कीजै हरि बांझा ॥ (697-15)
जिन हरि हिरदै नामु न वसिओ तिन सभि कारज फीक ॥ (1336-4)
जिन हरि हिरदै प्रीति लगानी तिना मसतकि ऊजल टीक ॥ (1336-3)
जिन हरि हिरदै सेविआ तिन हरि आपि मिलाए ॥ (303-8)
जिन होहि दइआलु तिन सतिगुरु मेलहि मुखि गुरमुखि हरि समझावणी ॥ (1314-2)
जिनसि थापि जीआं कउ भेजै जिनसि थापि लै जावै ॥ (1238-4)
जिनहि उपाए तिस कउ पीर ॥१॥ (1137-4)
जिनहि उपाहा तिनहि बिनाहा ॥ (392-5)
जिनहि निवाजि साजि हम कीए तिसहि बिसारि अवर लगरी ॥१॥ (856-14)
जिनहि निवाजे तिन ही साजे आपे कीने संत जइआ ॥ (900-13)
जिनहु बात निस्चल ध्रूअ जानी तेई जीव काल ते बचा ॥ (1402-9)
जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै ॥ (450-13)
जिना अंदरि उमरथल सेई जाणनि सूलीआ ॥ (311-2)
जिना अंदरि कूड़ु वरतै सचु न भावई ॥ (646-11)
जिना अंदरि दूजा भाउ है तिन्हा गुरमुखि प्रीति न होइ ॥ (316-14)
जिना अंदरि नामु निधानु हरि तिन के काज दयि आदे रासि ॥ (305-4)
जिना अंदरि नामु निधानु है गुरबाणी वीचारि ॥ (1422-14)
जिना अंदरि सचे का भउ नाही नामि न करहि पिआरु ॥ (587-16)
जिना आपे गुरमुखि दे वडिआई से जन सची दरगहि जाणे ॥११॥ (553-1)
जिना इक मनि इक चिति धिआइआ सतिगुर सउ चितु लाइ ॥ (1423-12)
जिना की मै आसड़ी तिना महिजी आस ॥१॥ (1097-7)
जिना खाधी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख ॥२८॥ (1379-7)
जिना गुरबाणी मनि भाईआ अम्रिति छकि छके ॥ (449-14)
जिना गुरमुखि अंदरि नेहु तै प्रीतम सचै लाइआ ॥ (1422-7)
जिना गुरमुखि अम्रितु चाखिआ से जन त्रिपताता ॥१५॥ (514-18)
जिना गुरमुखि धिआइआ तिन पूछउ जाइ ॥ (161-7)
जिना गुरसिखा कउ हरि संतुसटु है तिनी सतिगुर की गल मंनी ॥ (591-1)
जिना गुरु गोपिआ आपणा ते नर बुरिआरी ॥ (651-14)
जिना गुरु नही भेटिआ भै की नाही बिंद ॥ (1088-1)

जिना गुरु पिआरा मनि चिति तिना भाउ गुरू देवाईआ ॥ (648-4)
जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥४॥११॥१८॥ (450-14)
जिना नानक सचु पछाणिआ से सचि रलेतु ॥५॥ (84-12)
जिना पछाता सचु चुमा पैर मूं ॥३॥ (488-10)
जिना परापति तिन पीआ हउमै विचहु खोइ ॥ (31-14)
जिना परापति साधू धूरे ॥४॥७७॥१४६॥ (195-8)
जिना पिछै हउ गई से मै पिछै भी रविआसु ॥ (1097-7)
जिना पिरी पिआरु किउ जीवनि पिर बाहरे ॥ (1422-6)
जिना पिरी पिआरु बिनु दरसन किउ त्रिपतीऐ ॥ (1422-5)
जिना पोतै पुंनु तिन हउमै मारी ॥ (160-3)
जिना पोतै पुंनु से गिआन बीचारी ॥ (160-3)
जिना प्रीति न लगीआ भाई से नित नित मरदे झूरि ॥८॥ (640-11)
जिना बात को बहुतु अंदेसरो ते मिटे सभि गइआ ॥ (612-11)
जिना भउ तिन्ह नाहि भउ मुचु भउ निभविआह ॥ (788-2)
जिना भाग मथाहड़ै तिन उसताद पनाहि ॥१॥ (1096-5)
जिना भाग मथाहि से नानक हरि रंगु माणदो ॥१॥ (81-9)
जिना भाणे का रसु आइआ ॥ (72-7)
जिना मनि चिति इकु अराधिआ तिना इकस बिनु दूजा को नाही ॥ (649-4)
जिना मसतकि लीखिआ ते मिले संगार ॥ (986-9)
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥ (136-3)
जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥ (23-1)
जिना लगी प्रीति प्रभ नाम सहज सुख सारु ॥ (962-7)
जिना सतिगुर का आखिआ सुखावै नाही तिना मुह भलेरे फिरहि दयि गाले ॥ (305-1)
जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरे परधान ॥ (45-13)
जिना सतिगुरु इक मनि सेविआ तिन जन लागउ पाइ ॥ (1413-14)
जिना सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए राम ॥ (573-2)
जिना सतिगुरु जीवदिआ मुइआ न विसरै सेई पुरख सुजाण ॥ (643-3)
जिना सतिगुरु पुरखु न भेटिओ से भागहीण वसि काल ॥ (40-8)
जिना सतिगुरु पुरखु न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥ (1418-13)
जिना सतिगुरु भेटिआ तिन नेड़ि न भिटै माइ ॥६॥ (233-18)
जिना सतिगुरु मंनिआ जन नानक वड भाग लहंनि ॥१॥ (1316-2)
जिना सतिगुरु मेरा पिआरा अराधिआ तिन जन देखा नैणी ॥ (652-3)
जिना सासि गिरासि न विसरै से पूरे पुरख परधान ॥ (313-1)
जिना सासि गिरासि न विसरै से हरि जन पूरे सही जाणि ॥ (651-7)
जिना सासि गिरासि न विसरै हरि नामां मनि मंतु ॥ (319-18)
जिना हरि आपि क्रिपा करे से गुरि समझाइआ ॥ (643-17)
जिना हरि का सादु आइआ हउ तिन बलिहारै जासु ॥ (26-12)

जिना हरि सेती पिरहड़ी तिना जीअ प्रभ नाले ॥ (725-16)
जिना हरि हरि नामु धिआइआ जन नानक तिन्ह जैकारु ॥२९॥ (1416-9)
जिना हरि हरि प्रभु सेविआ जन नानकु सद कुरबाणु ॥३७॥ (1417-10)
जिना हुकमु मनाइओनु ते पूरे संसारि ॥ (512-11)
जिनि अकथु कहाइआ अपिओ पीआइआ ॥ (154-7)
जिनि अचरज सोभ बणाई ॥१॥ रहाउ ॥ (629-9)
जिनि अनिक एक बहु रंग कीए है होसी एह ॥ (812-15)
जिनि अपणा पिरु नही जाता करम बिधाता कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ (583-9)
जिनि अपने नाम की पैज रखाई ॥२॥८॥२६॥ (807-9)
जिनि आकास कुलह सिरि कीनी कउसै सपत पयाला ॥ (1167-14)
जिनि आखी सोई करे जिनि कीती तिनै थटीऐ ॥ (967-5)
जिनि आतम ततु न चीन्हिआ ॥ (1351-17)
जिनि आपीनै आपु साजिआ सचड़ा अलख अपारो ॥ (580-7)
जिनि आपे आपि उपाइ पछाता ॥ (1025-13)
जिनि आसा कीती तिस नो जानु ॥२॥ (424-2)
जिनि इह चाखी सोई जाणै गूंगे की मिठिआई ॥ (607-19)
जिनि इहु जमूआ सिरजिआ सु जपिआ परविदगार ॥१४०॥ (1371-19)
जिनि इहु रचनु रचाइआ तिस ही माहि समाहि ॥२॥ (965-11)
जिनि इहु रचनु रचाइआ तिस ही माहि समाहि ॥२१४॥ (1376-2)
जिनि उदमु कीआ ताल केरा तिस की उपमा किआ गनी ॥ (784-5)
जिनि उपाई मेदनी नानक सो प्रभु जापि ॥२॥ (710-1)
जिनि उपाई मेदनी सोई करदा सार ॥ (724-7)
जिनि उपाई मेदनी सोई सार करेइ ॥ (1092-8)
जिनि उपाई रंगि रवाई बैठा वेखै वखि इकेला ॥ (723-2)
जिनि उपाए जीअ तिनि हरि राखिआ ॥ (594-8)
जिनि उपाए तिसै न चेतहि बिनु चेते किउ सुखु पाए ॥ (1423-6)
जिनि उपाए सो बिधि जाणै ॥ (1060-13)
जिनि एह प्रीति लाई सो जानै कै जानै जिसु मनि धरै ॥ (1263-17)
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥ (4-9)
जिनि एहु चाखिआ राम रसाइणु तिन की संगति खोजु भइआ ॥ (907-2)
जिनि एहु जगतु उपाइआ त्रिभवणु करि आकारु ॥ (20-7)
जिनि एहु मेघु पठाइआ तिसु राखहु मन मांहि ॥ (1280-16)
जिनि एहु रचनु रचाइआ कोऊ तिस सिउ रंगु लावै ॥१॥ रहाउ ॥ (816-4)
जिनि एहु लेखा लिखिआ सो होआ परवाणु ॥ (516-17)
जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ ॥७॥ (1364-17)
जिनि ऐसा नामु विसारिआ मेरा हरि हरि तिस कै कुलि लागी गारी ॥ (1263-1)
जिनि कन कीते अखी नाकु ॥ (661-19)

जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ॥ (467-5)
जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥ (467-9)
जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥ (470-10)
जिनि करि कारणु धारिआ सभसै देइ आधारु जीउ ॥ (751-13)
जिनि करि कारणु धारिआ सोई सार करेइ ॥ (37-12)
जिनि करि साजी तिनहि सभ गोई ॥ (227-8)
जिनि कहिआ तिनि कहनु वखानिआ ॥ (221-17)
जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ (151-10)
जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ (878-16)
जिनि किछु कीआ सोई जाणै ता का रूपु अपारो ॥ (580-5)
जिनि किछु कीआ सोई जाणै सबदु वीचारि भउ सागरु तरै ॥१॥ रहाउ ॥ (1342-3)
जिनि किछु कीआ सोई जानै जिनि इह सभ बिधि साजी ॥ (206-10)
जिनि किनै पाइआ साधसंगती पूरै भागि बैरागि ॥ (29-16)
जिनि कीआ तिनि देखिआ आपि वडाई देइ ॥६॥ (1010-13)
जिनि कीआ तिनि देखिआ आपे जाणै सोइ ॥ (1093-9)
जिनि कीआ तिनि देखिआ किआ कहीऐ रे भाई ॥ (724-19)
जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़ै लाइआ ॥ (765-12)
जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़ै लाइआ ॥१॥ (765-15)
जिनि कीआ तिनि लीआ राखि ॥ (1340-13)
जिनि कीआ तिसु चीति न आणै ॥ (1151-15)
जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥१॥ (266-17)
जिनि कीआ तिसु सिमरि परानी जीउ प्रान जिनि धारा ॥ (530-10)
जिनि कीआ सो गुर ते जानिआ ॥ (864-6)
जिनि कीआ सो मनि वसै मै अवरु न कोई ॥ (1012-7)
जिनि कीआ सोई प्रभु जाणै हरि का महलु अपारा ॥ (883-1)
जिनि कीए करि वेखणहारा ॥ (839-5)
जिनि कीए खंड मंडल ब्रहमंडा सो प्रभु लखनु न जाई ॥६॥ (907-10)
जिनि कीए तिसहि न चेतहि बपुड़े हरि गुरमुखि सोझी पाई ॥२॥ (735-18)
जिनि कीए तिसहि न जाणनी चितवहि अनिक उपाइ ॥ (297-5)
जिनि कीए रंग अनिक परकार ॥ (862-17)
जिनि कीता तिसहि न जाणई फिरि फिरि आवै जाइ ॥३॥ (50-8)
जिनि कीता तिसहि न जाणई मनमुख पसु नापाक ॥२॥ (47-11)
जिनि कीता तिसै न जाणी अंधा ता दुखु सहै पराणीआ ॥५॥ (1020-4)
जिनि कीता बेसुरत ते सुरता ॥ (177-13)
जिनि कीता माटी ते रतनु ॥ (177-11)
जिनि कीता मूड़ ते बकता ॥ (177-13)
जिनि कीती तिनि कीमति पाई ॥ (932-4)

जिनि कीती तिसै न जाणई नानक फिटु अलूणी देह ॥१॥ (553-19)
जिनि कीती सो मंनणा को सालु जिवाहे साली ॥ (967-5)
जिनि कीते जा तिसै पछाणहि माइआ मोहु चुकाइदा ॥१४॥ (1060-11)
जिनि कीते सोई बिधि जाणै ॥ (118-9)
जिनि कीनी सभ पूरन आसा ॥ (177-15)
जिनि कीने वसि अपुनै त्रै गुण भवण चतुर संसारा ॥ (673-12)
जिनि गड़ कोट कीए कंचन के छोडि गइआ सो रावनु ॥१॥ (1104-5)
जिनि गिआन रतनु हिरि लीन मोर ॥ (1194-14)
जिनि गिआनु कीआ तिसु हरि तू जाणु ॥ (1174-14)
जिनि गिआनु रतनु हिरि लीन्ह ॥१॥ रहाउ ॥ (482-17)
जिनि गुणवंती मेरा प्रीतमु पाइआ ॥ (561-2)
जिनि गुरमुखि नामु न बूझिआ मरि जनमै आवै जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (19-15)
जिनि गुरि कहिआ मारगु सीधा ॥ (1338-11)
जिनि गुरि मो कउ दीना जीउ ॥ (240-1)
जिनि गुरु गोपिआ आपणा तिसु ठउर न ठाउ ॥ (314-11)
जिनि गुरु सेविआ आपणा जमदूत न लागै डंडु ॥ (50-1)
जिनि गुरु सेविआ तिसु दुखु न संतापै ॥ (1142-8)
जिनि गुरु सेविआ तिसु भउ न बिआपै ॥ (1142-7)
जिनि गुरू न देखिअउ नहु कीअउ ते अकयथ संसार महि ॥४॥८॥ (1399-19)
जिनि चाखिआ तिनि दरसनु डीठा ॥ (1032-5)
जिनि चाखिआ तिसु आइआ सादु ॥ (801-13)
जिनि चाखिआ पूरा पदु होइ ॥ (1331-16)
जिनि जगजीवनु उपदेसिआ तिसु गुर कउ हउ सदा घुमाइआ ॥ (588-17)
जिनि जगतु उपाइ हरि रंगु कीआ तिसै विटहु कुरबाणु ॥ (1420-17)
जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ तिसै विटहु कुरबाणु जीउ ॥ (438-9)
जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ हउ तिसै विटहु कुरबानु जीउ ॥३॥ (438-12)
जिनि जगु थापि वताइआ जालो सो साहिबु परवाणो ॥१॥ (581-7)
जिनि जगु सिरजि समाइआ सो साहिबु कुदरति जाणोवा ॥ (581-4)
जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥ (286-10)
जिनि जनि गुरमुखि बुझिआ सु चहु कुंडी जापै ॥ (1097-3)
जिनि जनि गुरमुखि सेविआ तिनि सभि सुख पाई ॥ (1100-1)
जिनि जनि गुरमुखि सेविआ तिसु घरि दीबाणु अभगै ॥ (1098-8)
जिनि जनि धिआइआ खसमु तिनि सुखु पाइआ ॥ (523-15)
जिनि जनि मानिआ प्रभ का भाणा ॥२॥ (198-1)
जिनि जनि सुणी मनी है जिनि जनि तिसु जन कै हउ कुरबानंती ॥१॥ (977-15)
जिनि जपिआ तिन ही सुखु पाइआ हरि कै नामि न लगै जम तीरु ॥१॥ रहाउ ॥ (905-16)
जिनि जपिआ तिस कउ बलिहार ॥ (724-3)

जिनि जपिआ ते पारि परान ॥१॥ रहाउ ॥ (1337-9)
जिनि जपिआ नानक ते भए निहाल ॥१२॥१॥२॥२॥३॥७॥ (1236-14)
जिनि जपु जपिओ सतिगुर मति वा के ॥ (1042-4)
जिनि जम का पंथु मिटाइआ ॥ (623-11)
जिनि जमु कीता सो सेवीऐ गुरमुखि दुखु न होइ ॥ (588-14)
जिनि जल थल त्रिभवण घटु घटु थापिआ सो प्रभु गुरमुखि जानिआ ॥ (1111-6)
जिनि जाता तिस की इह रहत ॥ (294-7)
जिनि जाता सो तिस ही जेहा ॥ (931-3)
जिनि जानिओ प्रभु आपना नानक तिसहि रवाल ॥१७॥ (300-13)
जिनि जिनि करी अवगिआ जन की ते तैं दीए रुड़्हाई ॥६॥ (1235-11)
जिनि जिनि कीनी मेरे गुर की आसा ॥ (239-14)
जिनि जिनि जपी तेई सभि निसत्रे तिन पाइआ निहचल थानां हे ॥८॥ (1075-9)
जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥ (136-9)
जिनि जिनि साधसंगु पाइआ ॥ (622-8)
जिनि जिनि सेविआ अंत बार ॥ (1192-8)
जिनि जिहवा दिती बोले तातु ॥ (661-19)
जिनि जिहवा हरि रसु न चखिओ सा जिहवा जलि जाउ ॥ (558-18)
जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अ्मबरावै ॥ (794-1)
जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु कबहूं न चेतै जो देंदा रिजकु स्मबाहि ॥ (85-16)
जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु चेतहि नाहि ॥ (1190-1)
जिनि जुआला जगु जारिआ सु जन के उदक समानि ॥१७५॥ (1373-18)
जिनि ठगि ठगिआ सगल जगु खावा ॥ (341-5)
जिनि तनु मनु दीआ सुरति समोई ॥ (1027-15)
जिनि तनु मनु साजि सीगारिआ तिसु सेती लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (62-5)
जिनि तनु साजि दीए नालि ख्मभ ॥ (1257-8)
जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ ॥ (678-2)
जिनि तुम सिरजे सिरजि सवारे तिसु धिआवहु दिनु रैनेही ॥ (609-13)
जिनि तूं कीआ तिस कउ जानु ॥ (866-4)
जिनि तूं जाता सो गिरसत उदासी परवाणु ॥ (385-12)
जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥ (266-18)
जिनि तूं साजि सवारिआ हरि सिमरि होइ उधारु ॥१॥ (51-7)
जिनि तू जाता करम बिधाता ॥ (1061-5)
जिनि तू बंधि करि छोडिआ फुनि सुख महि पाइआ ॥ (816-3)
जिनि तू सेविआ तिनि सुखु पाइआ होरु तिस दी रीस करे किआ कोई ॥ (549-14)
जिनि तू सेविआ सुखी से ॥ (1182-4)
जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥ (270-8)
जिनि त्रिभवणु डसीअले गुर प्रसादि डीठी ॥१॥ रहाउ ॥ (480-17)

जिनि थापी बिधि जाणै सोई किआ को कहै वखाणो ॥ (581-7)
जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ (10-1)
जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ (349-11)
जिनि दीआ तिसै न चेतै मूलि ॥ (899-11)
जिनि दीआ तुधु नीरु निरमोला ॥ (913-11)
जिनि दीआ तुधु पवनु अमोला ॥ (913-11)
जिनि दीआ तुधु पावकु बलना ॥ (913-11)
जिनि दीआ निथावे कउ थानु ॥ (177-14)
जिनि दीआ निमाने कउ मानु ॥ (177-14)
जिनि दीआ सो चिति न आवै मोहि अंधु लपटाणा ॥३॥ (882-19)
जिनि दीए तिसहि न जानहि सुआन ॥३॥ (195-4)
जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥ (288-17)
जिनि दीए तुधु बनिता अरु मीता ॥ (913-10)
जिनि दीए तुधु बाप महतारी ॥ (913-9)
जिनि दीए भ्रात पुत हारी ॥ (913-10)
जिनि दीए सु चिति न आवई पसू हउ करि जाणी ॥३॥ (167-18)
जिनि दीनी सोभा वडिआई ॥ (177-11)
जिनि धन पिर का सादु न जानिआ सा बिलख बदन कुमलानी ॥ (1255-10)
जिनि धर चक्र धरे वीचारे ॥ (1032-8)
जिनि धर साजी गगनु अकासु ॥ (412-18)
जिनि धारे बहु धरणि अगास ॥ (184-11)
जिनि धारे ब्रहमंड खंड हरि ता को नामु जपीजै रे ॥१॥ रहाउ ॥ (209-14)
जिनि नाउ पाइआ सो धनवंता जीउ ॥ (217-1)
जिनि नामु दीआ तिसु सेवसा तिसु बलिहारै जाउ ॥ (934-1)
जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ॥ (793-16)
जिनि पंच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे ॥१॥ रहाउ ॥ (404-11)
जिनि पाइआ गुरि देखि दिखाइआ ॥ (154-16)
जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥ (133-12)
जिनि पाइआ सोई बिधि जाणै ॥ (1026-5)
जिनि पिरु राविआ सा भली सुहागणि ॥ (561-7)
जिनि पिरु संगे जाणिआ पिरु रावे सदा हदूरि ॥१॥ (38-10)
जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ॥२॥ (858-10)
जिनि पीती तिसु मोख दुआर ॥५॥ (1275-7)
जिनि पूरन पैज रखाई ॥ (631-2)
जिनि पूरन पैज सवारी ॥ (626-10)
जिनि पूरी बणत बणाई ॥२॥२०॥८४॥ (629-10)
जिनि पूरी बणत बणाई ॥३॥ (625-12)

जिनि पैदाइसि तू कीआ सोई देइ आधारु ॥१॥ (724-6)
जिनि प्रभि कीना सो प्रभु नही जापिआ ॥३॥ (1149-4)
जिनि प्रभि जीउ पिंडु था दीआ तिस की भाउ भगति नही साधी ॥१॥ रहाउ ॥ (971-1)
जिनि प्रभु धिआइआ तिनि सुखु पाइआ वडभागी दरसनु पाईऐ ॥ (777-17)
जिनि प्रभु धिआइआ सु सोभावंता जीउ ॥ (217-2)
जिनि प्रिउ जाता करम बिधाता बोले अम्रित बाणी ॥ (582-14)
जिनि प्रीति लाई सो जाणता हमरै मनि चिति हरि बहुतु पिआरा ॥ (167-3)
जिनि बंधन काटे सगले मेरे ॥ (99-3)
जिनि बासकु नेत्रै घतिआ करि नेही ताणु ॥ (968-2)
जिनि बिलोइआ तिनि खाइआ अवर बिलोवनहार ॥१९॥ (1365-10)
जिनि बूझिआ तिनि सहजि पछानिआ ॥ (221-17)
जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥ (285-2)
जिनि बैरी है इहु जगु लूटिआ ते बैरी लै बाधे ॥१॥ (884-2)
जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ ॥१॥ (480-17)
जिनि ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए ॥ (1051-7)
जिनि भगत भवजल तारे सिमरहु सोई नामु परधानु ॥ (1392-17)
जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥ (72-13)
जिनि मन विचि वथु पाई सोई जाणै ॥ (1065-11)
जिनि मनु राखिआ अगनी पाइ ॥ (662-1)
जिनि ममता अगनि त्रिसना बुझाई ॥ (423-11)
जिनि माइआ दीनी तिनि लाई त्रिसना ॥ (179-11)
जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥१॥ (462-19)
जिनि मिलि मारे पंच सूरबीर ऐसो कउनु बली रे ॥ (404-10)
जिनि मीठा लाइआ सोई जाणै तिसु विटहु बलि जाई ॥ (1333-15)
जिनि मोहे ब्रहमंड खंड ताहू महि पाउ ॥ (745-17)
जिनि रंगि कंतु न राविआ सा पछो रे ताणी ॥ (725-2)
जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥ (138-10)
जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै मन भीतरि धरि गिआनु ॥ (75-3)
जिनि रचि रचिआ तिसु सबदि पछाणै नानकु ता का दासो ॥२१॥ (940-7)
जिनि रचि रचिआ पुरखि बिधातै नाले हउमै पाई ॥ (999-18)
जिनि रामु जानिआ तिनहि पछानिआ ॥ (327-4)
जिनि लाई प्रीति सोई फिरि खाइआ ॥ (370-4)
जिनि विचहु अहकरणु चुकाइआ ॥ (72-9)
जिनि विछोड़ी सो मेलसी गुर कै हेति अपारि ॥३७॥ (935-3)
जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥ (1195-15)
जिनि सगले रोग मिटाए ॥२॥२४॥८८॥ (630-5)
जिनि सचु जाता सो सहजि समावै ॥ (113-8)

जिनि सचु सेविआ तिनि रसु पाइआ ॥ (1174-8)
जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥४॥ (465-4)
जिनि सतिगुरु जाता तिनि एकु पछाता ॥ (1070-4)
जिनि सतिगुरु सेवि पदारथु पायउ निसि बासुर हरि चरन निवासु ॥ (1406-3)
जिनि सबदु कमाइ परम पदु पाइओ सेवा करत न छोडिओ पासु ॥ (1405-19)
जिनि सभ थापी थापि उथापि ॥ (412-18)
जिनि सभु किछु दीआ तिसु चितवत नाहि ॥ (395-2)
जिनि समुंदु विरोलिआ करि मेरु मधाणु ॥ (968-2)
जिनि साचु पछानिआ तिनि स्रपनी खाई ॥२॥ (480-18)
जिनि साजी सो कीमति पावै ॥ (839-7)
जिनि साजे वीचारे आपे ॥ (1037-14)
जिनि सिरजी तिन ही फुनि गोई ॥ (1020-11)
जिनि सिरजी तिनि आपे गोई ॥ (119-15)
जिनि सिरि साजी तिनि फुनि गोई ॥ (355-9)
जिनि सिरिआ तिनि धंधै लाइआ ॥ (1022-19)
जिनि सिसटि साजी सोई जाणै ॥ (129-16)
जिनि सिसटि साजी सोई हरि जाणै ता का रूपु अपारो ॥ (736-2)
जिनि सीगारी तिसहि पिआरी मेलु भइआ रंगु माणै ॥ (1109-19)
जिनि सीता आदी डउरू वाइ ॥ (954-1)
जिनि सुखि बैठाली तिसु भउ बहुतु दिखाइआ ॥ (370-5)
जिनि सुणि मंनिअड़ी अकथ कहाणी राम ॥ (844-5)
जिनि सेवक भगत सभे निसतारे ॥ (998-14)
जिनि सेविआ तिन ही सुखु पाइआ सो जनमु न जूऐ हारी जीउ ॥२॥ (107-19)
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥ (2-7)
जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ तिसु जन की सभ भुख गवाईऐ ॥ (590-4)
जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ (515-12)
जिनि सेविआ तिनि सुखु पाइआ हरि नामि समाइआ ॥१॥ (849-10)
जिनि सेविआ निरभउ सुखदाता ॥ (1139-17)
जिनि सेविआ प्रभु आपणा सोई राज नरिंदु ॥२॥ (49-1)
जिनि सेविआ सो पारगिरामी कारज सगले थीए जीउ ॥३॥ (104-18)
जिनि सेविआ सो पारि परिओ ॥ (241-13)
जिनि स्रिसटि साजी सो करि वेखै तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ (571-12)
जिनि हरि का नामु न चेतिओ कहा भुलाने अउर ॥९२॥ (1369-7)
जिनि हरि का नामु मंनि वसाइआ ॥ (115-1)
जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ ॥ (922-2)
जिनि हरि धिआइआ तिस नो सरब कलिआण होए नित संत जना की संगति जाइ बहीऐ मुहु जोड़ीऐ ॥ (550-6)

जिनि हरि धिआइआ सभु किछु तिस का तिस की भूख गवाई ॥ (608-6)
जिनि हरि पाइआ से वडभागी ॥१॥ (203-14)
जिनि हरि पाइओ तिनहि छपाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (718-11)
जिनि हरि भाणा मंनिआ तिसु सोगु न संतापै ॥ (1097-5)
जिनि हरि रसु चाखिआ सबदि सुभाखिआ हरि सरि रही भरपूरे ॥ (568-2)
जिनि हरि रसु चाखिआ सो हरि जनु लोगु ॥ (664-5)
जिनि हरि रसु पाइआ सो त्रिपति अघाना ॥ (101-2)
जिनि हरि सादु पाइआ सो नाहि डुलाना ॥ (101-3)
जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ (1070-17)
जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ (11-19)
जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ (365-16)
जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ बिनु सेवा पछोताणी हे ॥१५॥ (1071-7)
जिनि हरि हरि नामु न चेतिओ सु अउगुणि आवै जाइ ॥ (22-14)
जिनि हुकमु पछाता हरी केरा सोई सरब सुख पावए ॥ (440-13)
जिनी अंदरु भालिआ गुर सबदि सुहावै ॥ (1091-4)
जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ॥ (421-16)
जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥ (582-19)
जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥३॥ (583-3)
जिनी आपु गवाइआ तिनी पिरु पाइआ रंग सिउ रलीआ माणै ॥ (568-5)
जिनी आपु पछाणिआ घर महि महलु सुथाइ ॥ (56-19)
जिनी इक मनि इकु अराधिआ तिन का कंधु न कबहू छिजै ॥ (312-5)
जिनी इक मनि इकु अराधिआ तिन सद बलिहारै जाउ ॥ (958-7)
जिनी इक मनि नामु धिआइआ गुरमती वीचारि ॥ (28-6)
जिनी इकु पछाणिआ दूजा भाउ चुकाइ ॥ (38-14)
जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥ (450-8)
जिनी गुर कै बचनि आराधिआ तिन विसरि गए सभि दुखा ॥ (588-11)
जिनी गुरमुखि चाखिआ सहजे रहे समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (26-6)
जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥ (451-8)
जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ विचहु आपु गवाइ ॥ (28-11)
जिनी गुरमुखि नामु न चेतिओ से बहणि न मिलनी पासि ॥ (643-9)
जिनी गुरमुखि नामु सलाहिआ तिना सभ को कहै साबासि ॥ (42-4)
जिनी गुरमुखि हरि नाम धनु न खटिओ से देवालीए जुग माहि ॥ (852-17)
जिनी गुरू मनाइआ रजि रजि सेई खाहि ॥३॥ (1096-7)
जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥ (787-15)
जिनी चलणु सही जाणिआ सतिगुरु सेवहि नामु समाले ॥ (584-3)
जिनी चाखिआ तिना सादु आइआ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥१३॥ (912-7)
जिनी चाखिआ तिनी सादु पाइआ बिनु चाखे भरमि भुलाइ ॥ (33-2)

जिनी जाणु सुजाणिआ जगि ते पूरे परवाणु ॥२॥ (1329-19)
जिनी जाता खसमु किउ लभै तिना खाकु ॥ (959-7)
जिनी ठगी जगु ठगिआ से तुधु मारि निवाड़ा ॥ (1097-18)
जिनी डिठा मेरा सतिगुरु भाउ करि तिन के सभि पाप गवाई ॥ (310-17)
जिनी तुधनो धंनु कहिआ तिन जमु नेड़ि न आइआ ॥ (248-12)
जिनी तू इक मनि सचु धिआइआ तिन का सभु दुखु गवाइआ ॥ (301-8)
जिनी तेरा नामु धिआइआ तिन कउ सदि मिले ॥१॥ (989-5)
जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ ॥३॥ (574-4)
जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ राम ॥ (574-1)
जिनी न पाइओ प्रेम रसु कंत न पाइओ साउ ॥ (790-16)
जिनी नाउ पाइआ से वडभागी गुर कै सबदि मिलाइदा ॥१३॥ (1064-13)
जिनी नामु धिआइआ इक मनि इक चिति से असथिरु जगि रहिआ ॥११॥ (87-5)
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ (146-16)
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ (8-12)
जिनी नामु पछाणिआ तिन विटहु बलि जाउ ॥ (30-15)
जिनी नामु विसारिआ अवगण मुठी रोइ ॥७॥ (57-16)
जिनी नामु विसारिआ कूड़ै लालचि लगि ॥ (1413-7)
जिनी नामु विसारिआ तिना ठउर न ठाउ ॥ (1011-8)
जिनी नामु विसारिआ दूजी कारै लगि ॥ (19-9)
जिनी नामु विसारिआ बहु करम कमावहि होरि ॥ (1247-9)
जिनी नामु विसारिआ से कितु आए संसारि ॥ (1010-8)
जिनी नामु विसारिआ से मुए मरि जाहि ॥ (429-6)
जिनी नामु विसारिआ से होत देखे खेह ॥ (1006-12)
जिनी पुरखी उरि धारिआ सचा अलख अपारु ॥ (1284-6)
जिनी पुरखी सतगुरु न सेविओ से दुखीए जुग चारि ॥ (34-3)
जिनी पुरखी हरि नामि चितु लाइआ तिन कै हंउ लागउ पाए ॥ (585-2)
जिनी पूरा सतिगुरु सेविआ से दरगह सदा सुहेले ॥ (78-5)
जिनी मेरा पिआरा राविआ तिन पीछै लागि फिराउ ॥ (41-1)
जिनी मेरा प्रभु धिआइआ नानक तिन कुरबान ॥४॥१०॥८०॥ (45-19)
जिनी मैडा लालु रीझाइआ हउ तिसु आगै मनु डेंहीआ ॥ (703-18)
जिनी रामो राम नामु विसारिआ से मनमुख मूड़ अभागी राम ॥ (443-10)
जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥ (135-11)
जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥ (133-14)
जिनी सखीं कंतु पछाणिआ हउ तिन कै लागउ पाइ ॥ (37-19)
जिनी सखी लालु राविआ पिआरा तिन आगै हम आदेसा ॥३॥ (564-10)
जिनी सखी सहु राविआ तिन पूछउगी जाए ॥ (725-4)
जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥ (134-13)

जिनी सचड़ा सचु धिआइआ हंउ तिन कै लागउ पाए ॥४॥४॥ (585-10)
जिनी सचड़ा सचु सलाहिआ हंउ तिन लागउ पाए ॥ (585-7)
जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु ॥ (55-12)
जिनी सचु अराधिआ नानक मनि तनि फब ॥१४॥ (1425-18)
जिनी सचु जाता से सचे होए अनदिनु सचु धिआइनि ॥ (769-11)
जिनी सचु पछाणिआ सचि रते भरपूरि ॥ (37-4)
जिनी सचु पछाणिआ सचु राजे सेई ॥ (1088-14)
जिनी सचु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि ॥ (55-2)
जिनी सचु वणंजिआ गुर पूरे साबासि ॥ (18-10)
जिनी सचु वणंजिआ से सचे प्रभ नालि ॥७॥ (1015-12)
जिनी सचु वणंजिआ हरि जीउ से पूरे साहा राम ॥ (543-16)
जिनी सतिगुर सिउ चितु लाइआ सो खाली कोई नाहि ॥ (950-10)
जिनी सतिगुरु न सेविओ से आइ गए पछुताहि ॥ (586-4)
जिनी सतिगुरु पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई ॥ (451-8)
जिनी सतिगुरु मंनिआं हउ तिन के लागउ पाइ ॥ (1422-4)
जिनी सतिगुरु सेविआ तिन अगै मिलिआ थाउ ॥१॥ (43-16)
जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी नाउ पाइआ बूझहु करि बीचारु ॥ (86-9)
जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी पाइआ नामु निधानु ॥ (26-7)
जिनी सुणि कै मंनिआ तिना निज घरि वासु ॥ (27-12)
जिनी सुणि मंनिआ हरि नाउ तिना हउ वारीआ ॥ (645-18)
जिनी सेविआ तिनी सुखु पाइआ गुरमती वीचारु ॥ (1286-17)
जिनी हउमै मारि पछाणिआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ (69-14)
जिनी हरि प्रभु डिठा तिन कुरबाणे राम ॥ (577-13)
जिनी हरि हरि नामु धिआइआ तिनी पाइअड़े सरब सुखा ॥ (588-10)
जिनी हरि हरि नामु न चेतिओ से अंति गए पछुताइ ॥ (82-6)
जिनी हुकमु पछाणिआ से मेले हउमै सबदि जलाइ ॥ (1258-2)
जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥ (438-5)
जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥२॥ (438-8)
जिन्ह कउ आपि लए प्रभु मेलि ॥ (353-7)
जिन्ह कउ गुरु सुप्रसंनु दुरतु दूरंतरि नासै ॥ (1398-4)
जिन्ह कउ गुरु सुप्रसंनु सबदि लगि भवजलु तारै ॥ (1398-5)
जिन्ह कउ नामु लिखिआ धुरि लेखु ॥ (364-7)
जिन्ह कउ पूरबि लिखिआ रसु संत जना सिउ तिसु ॥२॥ (854-12)
जिन्ह कउ भए दइआल तिन्ह साधू संगु भइआ ॥ (762-1)
जिन्ह कउ हरि प्रभु लए मिलाइ ॥ (364-8)
जिन्ह का अंगु करै मेरा सुआमी तिन्ह की नानक हरि पैज सवारी ॥२॥४॥११॥ (1201-19)
जिन्ह की चीरी दरगह पाटी तिन्हा मरणा भाई ॥५॥ (418-3)

जिन्ह के बंके घरी न आइआ तिन्ह किउ रैणि विहाणी ॥६॥ (418-4)
जिन्ह के भाग बडे है भाई तिन्ह साधू संगि मुख जुरे ॥ (1208-15)
जिन्ह कै पोतै पुंनु तिन्हा गुरू मिलाए ॥ (364-11)
जिन्ह कै पोतै पुंनु है तिन्ही दरसनु पाइआ ॥१९॥ (1245-2)
जिन्ह कै मसतकि लीखिआ हरि मिलिआ हरि बनमाला ॥१॥ (985-15)
जिन्ह कै हिरदै तू वसहि ते नर गुणी गहीर ॥१॥ (1287-12)
जिन्ह कै हीअरै बसिओ मेरा सतिगुरु ते संत भले भल भांति ॥ (1264-7)
जिन्ह तूं मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि मनि भाए ॥ (450-11)
जिन्ह दरु सूझै से कदे न विगाड़हि सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ (1234-18)
जिन्ह दिसि आइआ होहि रलीआ जीअ सेती गहि रहहि ॥ (765-17)
जिन्ह धुरि लिखिआ लेखु तिन्ही नामु कमाइआ ॥ (369-6)
जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥२॥ (450-19)
जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि ॥ (473-16)
जिन्ह पीआ से मसत भए है तूटे बंधन फाहे ॥ (351-3)
जिन्ह मनि वसिआ सेई जन निसतरे घटि घटि सबदि समाणी ॥ (770-19)
जिन्ह मनि वुठा आपि पूरे भगत से ॥२॥ (397-19)
जिन्ह मनि वुठा आपि से सदा सुखालिआ ॥ (523-11)
जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ ॥१॥ (488-8)
जिन्ह वडभागीआ वडभागु है हरि हरि उर धारी राम ॥ (845-11)
जिन्ह सिउ धड़े करहि से जाहि ॥ (366-3)
जिन्ह सेविआ जिन्ह सेविआ मेरा हरि जीउ ते हरि हरि रूपि समासी ॥ (348-9)
जिन्ह हरि नामु धिआइआ तिन्ह चूके सरब जंजाला ॥ (985-16)
जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥ (445-3)
जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥४॥३॥१०॥ (445-6)
जिन्ह हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ (492-12)
जिन्हा अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन्ह हरि रखणहारा राम राजे ॥ (451-10)
जिन्हा अंतरि लोभ विकारु है दूजै भाइ खुआइ ॥ (516-3)
जिन्हा अंदरि सचा नेहु किउ जीवन्हि पिरी विहूणिआ ॥ (1422-10)
जिन्हा गुरमुखि नामु अराधिआ तिना दुख भुख लहि जाइ ॥ (1250-16)
जिन्हा चीरी चलणा हथि तिन्हा किछु नाहि ॥ (1239-8)
जिन्हा दिसंदड़िआ दुरमति वंञै मित्र असाडड़े सेई ॥ (520-8)
जिन्हा न विसरै नामु से किनेहिआ ॥ (397-17)
जिन्हा नाउ सुहागणी तिन्हा झाक न होर ॥११४॥ (1384-4)
जिन्हा नानकु सतिगुरु भेटिआ तिन्हा मिलिआ हरि सोई ॥२॥ (451-9)
जिन्हा नेहु दूजाणे लगा झूरि मरहु से वाढीआ ॥१॥ (761-7)
जिन्हा पिर का सुआदु न आइओ जो धुरि लिखिआ सो कमाहि ॥२॥ (428-12)
जिन्हा पिरु राविआ आपणा तिन्हा विटहु बलि जाउ ॥ (428-15)

जिन्हा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु द्रिड़ावै राम राजे ॥ (451-5)
जिन्हा मुहबति इक सिउ ते माणस परधान ॥२॥ (1102-12)
जिन्हा वेलि न तूमबड़ी माइआ ठगे ठगि ॥ (1413-8)
जिन्हा सतिगुर सिउ चितु लाइआ सु खाली कोई नाहि ॥ (516-4)
जिन्हि कीए तिसहि न जाणनी मनमुखि गुबारी ॥ (788-6)
जिन्हि कीते तिसै न जाणन्ही बिनु नावै सभि चोर ॥६॥ (427-6)
जिन्हि कीते तिसै न सेवन्ही देदा रिजकु समाइ ॥ (1249-3)
जिन्ही अम्रितु भरमि लुटाइआ बिखु सिउ रचहि रचंन्हि ॥ (854-8)
जिन्ही इक मनि इकु अराधिआ मेरी जिंदुड़ीए तिना नाही किसै दी किछु चडा राम ॥ (541-3)
जिन्ही एको सेविआ पूरी मति भाई ॥ (420-15)
जिन्ही गुरू न सेविओ मनमुखा पइआ मोआ ॥ (968-16)
जिन्ही घरु जाता आपणा से सुखीए भाई ॥ (425-17)
जिन्ही तूं सेविआ भाउ करि से तुधु पारि उतारिआ ॥ (968-11)
जिन्ही नामु विसारिआ किआ जपु जापहि होरि ॥ (1247-5)
जिन्ही नामु विसारिआ कूड़े कहण कहंन्हि ॥ (854-6)
जिन्ही नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई ॥ (420-13)
जिन्ही पछाता खसमु से दरगाह मल ॥ (964-15)
जिन्ही पछाता हुकमु तिन्ह कदे न रोवणा ॥ (523-6)
जिन्ही वेसी सहु मिलै सेई वेस करेउ ॥१०३॥ (1383-11)
जिन्ही सखी सहु राविआ से अ्मबी छावड़ीएहि जीउ ॥ (762-7)
जिन्ही सतिगुरु पिआरा सेविआ तिन्हा सुखु सद होई ॥ (451-9)
जिन्ही सतिगुरु सेविआ ताणु निताणे तिसु ॥ (854-10)
जिन्ही सतिगुरु सेविआ पिआरे तिन्ह के साथ तरे ॥ (636-3)
जिन्ही सो सालाहिआ पिआरे हउ तिन्ह बलिहारै जाउ ॥ (636-14)
जिमी नाही मै किसी की बोई ऐसा देनु दुखाला ॥१॥ (793-7)
जिमी पुछै असमान फरीदा खेवट किंनि गए ॥ (488-18)
जिमी वसंदी पाणीऐ ईधणु रखै भाहि ॥ (521-1)
जिव अंगदु अंगि संगि नानक गुर तिव गुर अमरदास कै गुरु रामदासु ॥१॥ (1406-2)
जिव आइआ तिव जाइसी कीआ लिखि लै जाइ ॥ (1331-6)
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ (8-7)
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥ (7-2)
जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥ (919-2)
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥ (4-9)
जिस कउ चाहहि सुरि नर देव ॥ (1182-15)
जिस कउ तुम हरि राखिआ भावै ॥ (1134-16)
जिस कउ तूं प्रभ भइआ सहाई ॥ (132-5)
जिस कउ नदरि करे गुरु पूरा ॥ (1043-1)

जिस कउ पूरबि लिखिआ तिनि सतिगुर चरन गहे ॥२॥ (44-8)
जिस कउ बिसरै प्रानपति दाता सोई गनहु अभागा ॥ (682-4)
जिस कउ मेले सुरति समाए ॥ (1042-18)
जिस कउ राखै सिरजनहारु ॥ (867-17)
जिस कउ रिदै विगासु है भाउ दूजा नाही ॥ (168-15)
जिस कउ सतिगुरु मेलि मिलाए तिसु चूका जम भै भारा हे ॥६॥ (1030-9)
जिस कउ सबदु बसावै अंतरि चूकै तिसहि पिआसा ॥ (793-4)
जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥ (281-15)
जिस कउ होत क्रिपाल सुआमी ॥ (1005-5)
जिस का अंगु करे मेरा पिआरा ॥ (101-14)
जिस का अनु धनु सहजि न जाना ॥ (414-12)
जिस का इहु खेलु सोई करि वेखै जन नानक नामु समारे ॥१॥ (312-12)
जिस का इहु तनु धनु सो फिरि लेवै अंतरि सहसा दूखु पइआ ॥७॥ (906-17)
जिस का कारजु तिन ही कीआ माणसु किआ वेचारा राम ॥ (784-4)
जिस का कीआ तिन ही लीआ होआ तिसै का भाणा ॥ (579-14)
जिस का कोइ कोई कोइ कोइ ॥ (151-12)
जिस का ग्रिहु तिनि दीआ ताला कुंजी गुर सउपाई ॥ (205-3)
जिस का जासु सुनत भव तरीऐ ता सिउ रंगु न लावसि रे ॥ (1000-16)
जिस का जीउ तिसु आगै धरै ॥ (661-14)
जिस का तनु मनु धनु सभु तिस का सोई सुघड़ु सुजानी ॥ (671-16)
जिस का तू तिस का सभु कोइ ॥ (896-2)
जिस का दीआ पैनै खाइ ॥ (195-1)
जिस का नाहि कोइ हां ॥ (410-17)
जिस का पिता तू है मेरे सुआमी तिसु बारिक भूख कैसी ॥ (1266-14)
जिस का बोहिथु तिसु आराधे खोटे संगि खरे ॥१॥ (714-9)
जिस का भरमु गइआ तिनि साचु पछाना ॥६॥ (330-10)
जिस का राजु तिसै का सुपना ॥ (179-11)
जिस का सभु किछु तिस का होइ ॥ (388-8)
जिस का सा तिन ही मेलि लीआ जोती जोति समाइआ ॥ (780-12)
जिस का सा तिन ही रखि लीआ पूरन प्रभ की भाती ॥ (681-11)
जिस का सा तिन ही रखि लीआ सगल जुगति बणि आई ॥ (498-2)
जिस का सा तिनि किरपा धारी ॥ (287-16)
जिस का सा तिनि लीआ मिलाइ ॥ (289-18)
जिस का सा तिस ते फलु पाइआ ॥ (105-16)
जिस का सा सो तिन ही लीआ भूला रोवणहारा हे ॥७॥ (1027-3)
जिस का सा सोई प्रतिपालकु हति तिआगी हउमै हंतना ॥७॥ (1080-10)
जिस का सासु न काढत आपि ॥ (285-19)

जिस की अटक तिस ते छुटी तउ कहा करै कोटवार ॥२॥ (1002-17)
जिस की आसा तिस ही सउपि कै एहु रहिआ निरबाणु ॥ (1329-15)
जिस की ओट तिसै की आसा ॥ (1144-19)
जिस की तिस की करि मानु ॥ (896-1)
जिस की पूजै अउध तिसै कउणु राखई ॥ (1363-10)
जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥ (268-11)
जिस की बाणी तिसु माहि समाणी ॥ (160-5)
जिस की मानि लेइ सुखदाता ॥१॥ रहाउ दूजा ॥३६॥१०५॥ (187-4)
जिस की मीरा राखै आणि ॥२॥ (376-7)
जिस की रचना सो बिधि जाणै गुरमुखि गिआनु वीचारा ॥२॥ (1331-19)
जिस की वथु सोई प्रभु जाणै जिस नो देइ सु पाए ॥ (607-18)
जिस की वसतु तिसु चेतहु प्राणी करि हिरदै गुरमुखि बीचारि ॥ (76-13)
जिस की वसतु प्रभु लए सुआमी जन उबरे सबदु कमाइ जीउ ॥ (447-10)
जिस की वसतु सोई लै जाइगा रोसु किसै सिउ कीजै ॥ (1246-18)
जिस की सेवा सभु किछु लहै ॥१॥ (1182-12)
जिस की स्रिसटि सु करणैहारु ॥ (285-1)
जिस के चलत न जाही लखणे नानक तिसहि धिआए ॥४॥२॥ (778-14)
जिस के चाकर तिस की सेवा ॥ (1024-13)
जिस के जीअ तिन ही रखि लीने मेरे प्रभ कउ किरपा आई ॥१॥ रहाउ ॥ (1269-13)
जिस के जीअ तिनि कीए सुखाले भगत जना कउ साचा ताणु ॥ (826-15)
जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥ (474-2)
जिस के जीअ पराण है मनि वसिऐ सुखु होइ ॥२॥ (18-7)
जिस के धारे धरणि अकासु ॥ (1182-13)
जिस के राखे होए हरि आपि ॥ (1143-14)
जिस के सिर ऊपरि तूं सुआमी सो दुखु कैसा पावै ॥ (749-18)
जिस के से तिन ही प्रतिपारे ॥ (105-19)
जिस के से तिनि रखे हटाइ ॥ (865-12)
जिस के से फिरि तिन ही सम्हाले बिनसे सोग संताप ॥ (714-15)
जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥ (269-9)
जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥ (278-6)
जिस कै अंतरि साचु वसावै ॥ (223-10)
जिस कै करमि लिखिआ धुरि करतै नानक जन के पूरन काम ॥२॥२०॥५१॥ (683-3)
जिस कै घरि दीबानु हरि होवै तिस की मुठी विचि जगतु सभु आइआ ॥ (591-13)
जिस कै डरि भै भागीऐ अम्रितु ता को नाउ ॥ (1010-4)
जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥ (281-3)
जिस कै मनि पारब्रहम का निवासु ॥ (274-19)
जिस कै मसतकि करमु होइ सो सेवा लागा ॥ (964-18)

जिस कै मसतकि गुर हाथु तिसु हिरदै हरि गुण टिकहि ॥ (1115-19)
जिस कै मसतकि हाथु गुरु धरै ॥ (899-16)
जिस कै सुआमी वलि निरभउ सो भई ॥ (961-4)
जिस कै हिरदै मंत्रु दे हरी ॥ (236-12)
जिस कै हुकमि इंदु वरसदा तिस कै सद बलिहारै जांउ ॥ (1285-19)
जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई ॥२॥ (525-3)
जिस ते उपजिअड़ा तिनि लीआ समाई राम ॥ (545-10)
जिस ते उपजिआ तिसहि पछानु ॥ (825-13)
जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाइआ कीमति कहणु न जाए ॥ (778-13)
जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥ (285-11)
जिस ते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥२॥ (1193-11)
जिस ते उपजे तिस ही जैसे ॥ (943-18)
जिस ते उपजे तिसहि न चेतहि ध्रिगु जीवणु ध्रिगु खाई ॥१॥ (1265-4)
जिस ते उपजे तिसु महि परवेस ॥ (898-12)
जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥ (282-7)
जिस ते उपजै तिस ते बिनसै अंते नामु सखाई ॥४॥ (909-9)
जिस ते उपजै तिस ते बिनसै घटि घटि सचु भरपूरि ॥ (20-5)
जिस ते खाली कोई नाही ऐसा प्रभू हमारा ॥ (778-6)
जिस ते तुम हरि जाने सुआमी सो सतिगुरु मेलि मेरा प्राने ॥१॥ (169-17)
जिस ते पाईऐ हरि पुरखु सुजानु ॥५॥१४॥ (374-18)
जिस ते बिरथा कोइ नाहि ॥ (987-13)
जिस ते लागे तिनहि निवारे प्रभ जीउ अपणी किरपा धारी ॥२॥ (916-15)
जिस ते सुख पावहि मन मेरे सो सदा धिआइ नित कर जुरना ॥ (861-1)
जिस ते सुता नानका जागाए सोई ॥ (418-11)
जिस ते सुता सो जागाए गुरमति सोझी पावणिआ ॥६॥ (112-6)
जिस ते सोझी मनि पई मिलिआ पुरखु सुजाणु ॥ (43-14)
जिस ते होआ तिसहि समाणा चूकि गइआ पासारा ॥४॥१॥ (1258-1)
जिस ते होआ सोई करि मानिआ नानक गिरही उदासी सो परवाणु ॥४॥८॥ (1329-15)
जिस ते होआ सोई परु जाणै जां उस ही माहि समाइ ॥१॥ (1329-11)
जिस दा करता मित्रु सभि काज सवारिआ ॥ (960-3)
जिस दा कीता सभु किछु होवै तिस नो परवाह नाही किसै केरी ॥ (554-19)
जिस दा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइ ॥ (921-7)
जिस दा जीउ पराणु है अंतरि जोति अपारा ॥ (140-17)
जिस दा दिता खाणा पैनणा सो मनि न वसिओ गुणतासु ॥ (1416-12)
जिस दा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि ॥ (474-18)
जिस दा दिता सभु किछु लैणा ॥ (100-5)
जिस दा पिंडु पराण है तिस की सिरि कार ॥ (233-14)

जिस दा साहिबु डाढा होइ ॥ (842-10)
जिस दा हटु सोई वथु जाणै गुरमुखि देइ न पछोताइदा ॥१४॥ (1066-18)
जिस दी तुधु भावै तिस दी तू मंनि लैहि सो जनु साबासि ॥ (549-8)
जिस दी पैज रखै हरि सुआमी सो सचा हरि जानु ॥१४॥ (554-4)
जिस दी सेवा कीती फिरि लेखा मंगीऐ सा सेवा अउखी होई ॥ (306-14)
जिस दै अंदरि सचु है सो सचा नामु मुखि सचु अलाए ॥ (140-2)
जिस दै चिति वसिआ मेरा सुआमी तिस नो किउ अंदेसा किसै गलै दा लोड़ीऐ ॥ (550-5)
जिस दै वसि सभु किछु सो सभ दू वडा सो मेरे मन सदा धिअईऐ ॥ (861-16)
जिस दै होवै वलि सु कदे न हारदा ॥ (519-2)
जिस नउ आपि दइआलु होइ सो गुरमुखि नामि समाइ ॥२॥ (27-6)
जिस नो अपणी नदरि करेइ ॥१॥ (1335-2)
जिस नो आइआ प्रेम रसु तिसै ही जरणे ॥ (320-6)
जिस नो आपि खुआए करता खुसि लए चंगिआई ॥३॥ (417-18)
जिस नो आपि चलाए सोइ ॥ (1169-10)
जिस नो आपि दइआलु तिसु मनि वुठिआ ॥ (521-9)
जिस नो आपि देइ वडिआई हरि कै नामि समावणिआ ॥३॥ (111-9)
जिस नो आपि बुझाए बूझै कोई ॥ (1063-6)
जिस नो आपि मिलाए सो बूझै भगति भाइ भउ जाई हे ॥१०॥ (1046-12)
जिस नो आपि मिलावै सोइ ॥४॥४॥ (1128-16)
जिस नो आपि लए लड़ि लाइ ॥ (677-4)
जिस नो आपे रंगे सु रपसी सतसंगति मिलाइ ॥ (427-5)
जिस नो इको रंगु भगतु सो जानणो ॥ (963-16)
जिस नो कथा सुणाइहि आपणी सि गुरदुआरै सुखु पावहे ॥ (919-3)
जिस नो करता विसरै तिसहि विछोड़ा सोगु जीउ ॥३॥ (760-15)
जिस नो करमि परापति होवै सो जनु निरमलु थीवै ॥२॥ (616-12)
जिस नो करमु करे करतारु ॥ (1151-16)
जिस नो करमु करे प्रभु अपना ॥ (1147-17)
जिस नो करमु होवै धुरि पूरा तिनि गुरमुखि हरि नामु धिआइआ ॥१॥ (512-17)
जिस नो करे रहम तिसु न विसारदा ॥ (518-19)
जिस नो किरपा करे गुरु मेले सो हरि हरि नामु समालि ॥ (77-1)
जिस नो किरपा करे तिसु परगटु होइ ॥१४॥ (931-13)
जिस नो किरपालु होवै हरि आपे तिस नो हुकमु मनावै ॥६॥ (551-2)
जिस नो कीतो करमु आपि पिआरे तिसु पूरा गुरू मिलाइआ ॥ (640-16)
जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ (11-16)
जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ (365-12)
जिस नो क्रिपा करहि बडभागै ॥ (282-5)
जिस नो क्रिपा करहि मेरे पिआरे सोई तुझै पछाणै ॥१॥ (1185-16)

जिस नो क्रिपा करे तिसु गुरु मिलै गुरमुखि निसतारा ॥१२॥ (513-15)
जिस नो क्रिपा करे तिसु गुरु मिलै सो हरि गुण गावै ॥ (1091-5)
जिस नो क्रिपा करे तिसु सतसंगि मिलाए ॥ (366-8)
जिस नो क्रिपा करे प्रभु अपनी सो जनु तिसहि धिआई हे ॥११॥ (1072-5)
जिस नो क्रिपा करे मेरा सुआमी तिसु गुर की सिख सुणाइ ॥ (512-10)
जिस नो क्रिपा करे मेरा सुआमी सो हरि के गुण गावै जीउ ॥१॥ (997-18)
जिस नो क्रिपा करे सो धिआवै ॥ (998-8)
जिस नो क्रिपा करे सो हरि रसु पावै ॥१॥ (232-8)
जिस नो क्रिपा करे हरि गुरमुखि गुणि चउथै मुकति कराइदा ॥११॥ (1038-4)
जिस नो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥ (281-1)
जिस नो गुरमुखि आपि बुझाए सो सद ही दरगहि पाए मानु ॥ (554-4)
जिस नो तुधु भावै तिस नो तूं मेलहि जन नानक सो थाइ पाए ॥४॥२॥१३॥ (735-14)
जिस नो तुमहि दिखाइओ दरसनु साधसंगति कै पाछै ॥ (207-12)
जिस नो तूं असथिरु करि मानहि ते पाहुन दो दाहा ॥ (401-19)
जिस नो तूं आपि मिलाइदा सो सतिगुरु सेवे मनु गड गडे ॥ (317-18)
जिस नो तूं आपे मेलहि सु गुरमुखि रहै समाई ॥ (442-3)
जिस नो तूं पतीआइदा सो सणु तुझै अनित ॥ (42-11)
जिस नो तू किरपालु सचा सो थिअई ॥ (961-4)
जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ (11-18)
जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ (365-15)
जिस नो तू देहि तिसु सभु किछु मिलै कोई होरु सरीकु नाही तुधु पासि ॥ (549-7)
जिस नो तू प्रभ वलि तिसु किआ मुहछंदगी ॥ (961-16)
जिस नो तू रखवाला जिता तिनै भैणु ॥ (961-14)
जिस नो तू रखवाला मारे तिसु कउणु ॥ (961-14)
जिस नो तू संतुसटु कलमल तिसु खई ॥ (961-4)
जिस नो तेरा अंगु तिसु मुखु उजला ॥ (961-15)
जिस नो तेरा अंगु सु निरमली हूं निरमला ॥ (961-15)
जिस नो तेरी खुसी तिनि नउ निधि भुंचीऐ ॥ (961-16)
जिस नो तेरी टेक सो सदा सद जीवई बलि राम जीउ ॥ (778-5)
जिस नो तेरी दइआ सलाहे सोइ तुधु ॥ (966-1)
जिस नो तेरी नदरि न लेखा पुछीऐ ॥ (961-15)
जिस नो तेरी नदरि हउमै तिसु गई ॥ (961-3)
जिस नो तेरी मइआ न पोहै अगनई ॥ (961-5)
जिस नो तेरी मिहर सु तेरी बंदिगी ॥८॥ (961-17)
जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै ॥ (306-1)
जिस नो दाति करहि सो पाए जन नानक अवरु न कोई ॥५॥९॥ (608-2)
जिस नो देइ किरपा ते सुखु पाए ॥ (930-15)

जिस नो देइ सोई जनु पावै होर किआ को करे चतुराई ॥ (754-15)
जिस नो देवै तिसु मिलै गुरमती नामु बुझाई ॥ (426-8)
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥ (136-2)
जिस नो नदरि करहि तूं अपणी सो गुरमुखि करे वीचारु जीउ ॥ (448-3)
जिस नो नदरि करे तिसु गुरू मिलाए ॥ (111-1)
जिस नो नदरि करे तिसु देवै ॥ (145-13)
जिस नो नदरि करे तिसु मेले मेलि मिलै मेलाई हे ॥१३॥ (1022-6)
जिस नो नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि हरि सदा समाले ॥ (562-5)
जिस नो नदरि करे सा सोहागणि होइ ॥४॥१०॥ (351-18)
जिस नो नदरि करे सो गुण निधि पाए ॥ (1052-18)
जिस नो नदरि करे सो धिआए ॥ (563-5)
जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ (1052-6)
जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ (114-15)
जिस नो नदरि करे सोई जनु पाए गुर का सबदु सम्हाले ॥ (797-1)
जिस नो नदरि करे सोई जनु बूझै होरु कहणा कथनु न जाई ॥ (1234-10)
जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ॥ (1047-3)
जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ॥ (110-15)
जिस नो नदरि करे सोई बिधि जाणै ॥२॥ (1330-18)
जिस नो नदरि होवै धुरि तेरी ॥ (1052-10)
जिस नो नाम दानु करे सो पाए गुर सबदी मेलाइदा ॥२॥ (1062-18)
जिस नो नामु देइ मेरा सुआमी तिसु लेखा सभु छडावीऐ रे ॥२॥ (1118-6)
जिस नो नामु देइ सो पाए ॥ (1064-11)
जिस नो परतीति होवै तिस का गाविआ थाइ पवै सो पावै दरगह मानु ॥ (734-15)
जिस नो प्रापति लिखिआ होइ ॥२॥ (1243-12)
जिस नो प्रेमु मंनि वसाए ॥ (1016-5)
जिस नो बखसि लैहि मेरे पिआरे सो जसु तेरा गावै ॥१॥ रहाउ ॥ (629-16)
जिस नो बखसे तिसु देइ आपि लए मिलाईऐ ॥ (951-4)
जिस नो बखसे तिसु मिलै महली पाए थाउ ॥४॥ (565-3)
जिस नो बखसे दे वडिआई ॥ (159-5)
जिस नो बखसे साचा सोइ ॥ (364-13)
जिस नो बखसे साचा सोइ ॥३॥ (661-8)
जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥ (5-15)
जिस नो बखसे हरि दे वडिआई ॥ (665-9)
जिस नो बिसरै पुरखु बिधाता ॥ (1086-5)
जिस नो बुझाए सोई बूझै ॥ (1067-16)
जिस नो भए गोबिंद दइआला ॥ (1348-11)
जिस नो भगति कराए सो करे गुर सबद वीचारि ॥ (429-18)

जिस नो मंने आपि सोई मानीऐ ॥ (398-1)
जिस नो मेले सु निरमलु होइ ॥ (797-6)
जिस नो मेले सो मिलै हउ तिसु बलिहारै जाउ ॥ (39-13)
जिस नो रखै सो रहै सम्रिथु पुरखु अपारु ॥ (50-9)
जिस नो राखै सो सचु भाखै गुर का सबदु बीचारा ॥ (924-12)
जिस नो लगा रंगु से रंगि रतिआ ॥ (958-13)
जिस नो लाइ लए सो लागै ॥ (737-1)
जिस नो लाइ लए सो सेवकु जिसु वडभाग मथाइणा ॥९॥ (1078-9)
जिस नो लाइ लैहि सो लागै भगतु तुहारा सोई ॥३॥ (749-16)
जिस नो लाइ सचि तिसहि उधारदा ॥ (519-2)
जिस नो लाए तिसु लगै लगी ता परवाणु ॥ (1411-10)
जिस नो लाए लगै तिसु आइ ॥ (797-7)
जिस नो लाए सचि तिसु सचु सम्हालणो ॥ (963-15)
जिस नो लाए सोई बूझै भउ भरमु सरीरहु जाई हे ॥७॥ (1044-6)
जिस नो वाइ सुणाईऐ सो केवडु कितु थाइ ॥ (53-9)
जिस नो विसरै नाउ सु जोनी हांढीऐ ॥ (964-2)
जिस नो विसरै नाउ सु निरधनु कांढीऐ ॥ (964-2)
जिस नो विसरै मेरा राम सनेही तिसु लाख बेदन जणु आई ॥ रहाउ ॥ (612-19)
जिस नो सचा देइ सु पाए ॥ (1063-4)
जिस नो सचु देइ सोई सचु पाए सचे सचि मिलाइदा ॥८॥ (1064-7)
जिस नो सतिगुर नालि हरि सरधा लाए तिसु हरि धन की वंड हथि आवै जिस नो करतै धुरि लिखि पाइआ ॥ (853-8)
जिस नो सतिगुरु मेले सु गुण रवै गुण आखि वखाणी ॥ (302-8)
जिस नो साचा सिफती लाए ॥ (993-3)
जिस नो साहिबु वडा करे सोई वड जाणी ॥ (302-6)
जिस नो हरि जीउ करे किरपा सदा हरि के गुण गाए ॥ (247-4)
जिस नो हरि भगति सचु बखसीअनु सो सचा साहु ॥ (852-6)
जिस नो हरि सुप्रसंनु होइ सो हरि गुणा रवै सो भगतु सो परवानु ॥ (734-11)
जिस नो होआ नाथु क्रिपाला ॥ (886-15)
जिस नो होइ क्रिपालु तिस का दूखु जाइ ॥ (521-19)
जिस नो होइ दइआलु हरि नामु सेइ लेहि ॥ (521-4)
जिस नो होहि क्रिपालु सु नामु धिआईऐ ॥११॥ (521-4)
जिस ही की सिरकार है तिस ही का सभु कोइ ॥ (27-1)
जिसहि उधारे नानका सो सिमरे सिरजणहारु ॥१५॥ (1426-1)
जिसहि क्रिपालु होइ मेरा सुआमी पूरन ता को कामु ॥१॥ (1226-4)
जिसहि क्रिपालु होइ हां ॥ (411-2)
जिसहि जगाइ पीआए हरि रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥ (205-15)

जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥ (13-17)
जिसहि जणावहि तिनि तू जाता ॥३॥ (894-14)
जिसहि जनावहु तिनहि तुम जाते ॥२॥ (563-1)
जिसहि जनावहु सो जानै नानक ॥३९॥ (258-12)
जिसहि जराए आपि सोई अजरु जरै ॥ (958-5)
जिसहि दिखाला वाटड़ी तिसहि भुलावै कउणु ॥ (952-12)
जिसहि दिखाले महलु तिसु न मिलै धाकु ॥ (959-9)
जिसहि देखि हउ जीवा माइ ॥ (1181-7)
जिसहि धार्यिउ धरति अरु विउमु अरु पवणु ते नीर सर अवर अनल अनादि कीअउ ॥ (1399-7)
जिसहि धिआइआ पारब्रहमु सो कलि महि तागा ॥ (965-1)
जिसहि निवाजे किरपा धारि ॥ (1340-14)
जिसहि निवाजे गुरमुखि साजे ॥ (1082-2)
जिसहि निवाजे सो जनु सूरा ॥१॥ रहाउ ॥ (194-14)
जिसहि परापति तिस ही देहि ॥२॥ (377-13)
जिसहि परापति तिस ही लहना ॥ (393-11)
जिसहि परापति तिसु गुरु देइ ॥ (185-2)
जिसहि परापति तिसु लै भुंचा ॥१॥ रहाउ ॥ (186-16)
जिसहि परापति साधसंगु ॥ (1181-14)
जिसहि परापति सो हरि गुण गाहै ॥२॥ (203-15)
जिसहि परापति हरि चरण निधान ॥ (199-2)
जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥ (284-17)
जिसहि बुझाए तिसु नामु लैना ॥१॥ रहाउ ॥२॥८॥ (739-1)
जिसहि बुझाए नानका तिह गुरमुखि निरमल बुधि ॥९॥ (252-4)
जिसहि बुझाए सोई बूझै ओहु बालक वागी पालीऐ ॥५॥ (1019-13)
जिसहि बुझाए सोई बूझै जिस नो आपे लए मिलाइ ॥ (1259-8)
जिसहि बुझाए सोई बूझै बिनु बूझे किउ रहीऐ ॥ (334-6)
जिसहि भुलाई पंध सिरि तिसहि दिखावै कउणु ॥१॥ (952-12)
जिसहि भुलाए आपि मरि मरि जमहि नित ॥२॥ (523-18)
जिसहि सहाई गोबिदु मेरा ॥ (199-15)
जिसहि सहाई होइ भगवान ॥ (888-6)
जिसहि साजि निवाजिआ तिसहि सिउ रुच नाहि ॥ (1002-10)
जिसहि सीगारे नानका तिसु सुखहि बसेरा ॥४॥१५॥११७॥ (400-7)
जिसु अंतरि प्रीति राम रसु नाही दुबिधा करम बिकारी ॥३॥ (1198-4)
जिसु अंतरि प्रीति लगै सो मुकता ॥ (122-4)
जिसु अंतरि लोभु कि करम कमावै भाई कूड़ु बोलि बिखु खाई ॥४॥ (635-14)
जिसु अंतरि साचु सु सबदि समाणा ॥ (1030-9)
जिसु अंतरु हिरदा सुधु है तिसु जन कउ सभि नमसकारी ॥ (589-15)

जिसु अंतरु हिरदा सुधु है मेरी जिंदुड़ीए तिनि जनि सभि डर सुटि घते राम ॥ (540-19)
जिसु अंदरि चुगली चुगलो वजै कीता करतिआ ओस दा सभु गइआ ॥ (308-11)
जिसु अंदरि ताति पराई होवै तिस दा कदे न होवी भला ॥ (308-10)
जिसु अंदरि नाम प्रगासु है ओहु सदा सदा थिरु होइ ॥३॥ (27-19)
जिसु अंदरि नामु निधानु है तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥ (589-16)
जिसु अंदरि प्रीति नही सतिगुर की सु कूड़ी आवै कूड़ी जावै ॥ (305-14)
जिसु अंदरि बुधि बिबेकु है हरि नामु मुरारी ॥ (589-17)
जिसु अंदरि रंगु सोई गुण गावै ॥ (114-13)
जिसु अराधे जमु किछु न कहै ॥ (1182-12)
जिसु आइआ हथि निधानु सु रहिआ भालणो ॥ (963-15)
जिसु आपि क्रिपा करे मेरा राम राम राम राइ सो जनु राम नाम लिव लागे ॥१॥ (1202-8)
जिसु आपि बुझाए आपि सु हरि मारगि पाईऐ ॥ (644-8)
जिसु आपि बुझाए सो बुझसी आपे नाइ लाईअनु ॥ (956-18)
जिसु आपि बुझाए सो बुझसी जिसु सतिगुरु थापे ॥ (789-19)
जिसु आपि बुझाए सो बुझसी निरमल जनु सोई ॥१॥ (706-4)
जिसु आपि भुलाए सु किथै हथु पाए ॥ (110-16)
जिसु आपि भुलाए सोई भूलै सो बूझै जिसहि बुझाइदा ॥३॥ (1075-16)
जिसु आपि विखाले सु वेखै कोई ॥ (126-1)
जिसु आपि सुझाए तिसु सभु किछु सूझै ॥ (150-14)
जिसु आपे किरपा करे मेरा सुआमी तिसु जन कउ हरि लिव लावीऐ रे ॥ (1118-4)
जिसु आसणि हम बैठे केते बैसि गइआ ॥५॥ (488-16)
जिसु उपरि हरि का मनु मानिआ ॥ (998-11)
जिसु ऊपरि नदरि करे करतारु ॥ (1139-19)
जिसु ऊपरि प्रभु किरपा करै ॥ (1146-14)
जिसु ऊपरि होवत दइआलु ॥ (807-3)
जिसु करणा सो करि करि वेखै ॥ (1021-12)
जिसु करमु खुलिआ तिसु लहिआ पड़दा जिनि गुर पहि मंनिआ सुभाइ ॥ (1001-19)
जिसु करमु होवै तिसु सतिगुरु मिलै सो हरि हरि नामु धिआए ॥ (851-2)
जिसु करमु होवै सो सतिगुरु पाए अनदिनु लागै सहज धिआना ॥१॥ रहाउ ॥ (797-10)
जिसु करि किरपा सतिगुरु मिलै दइआल ॥४॥ (187-3)
जिसु कारणि तनु धारिआ सो प्रभु डिठा नालि ॥ (48-12)
जिसु कारणि हंउ ढूंढि ढूढेदी सो सजणु हरि घरि पाइआ ॥ (572-19)
जिसु कारणि हउ सीगारु सीगारी सो पिरु रता मेरा अवरा ॥ (561-14)
जिसु किछु करणा सु हमरा मीत ॥१॥ रहाउ ॥ (187-17)
जिसु क्रिपा करहि तिसु मेलि लैहि सो नामु धिआई ॥ (1291-18)
जिसु क्रिपा करहि बसहि तिसु नेरा ॥२॥ (743-15)
जिसु क्रिपा करे तिसु पूरन साज ॥ (331-9)

जिसु क्रिपा करे प्रभु आपणी तिसु सतिगुर के चरण धोइआ ॥ (309-14)
जिसु क्रिपालु तिसु साधसंगि घूलै ॥ (391-18)
जिसु खसमु न आवी चिति रोगी से गणे ॥ (964-3)
जिसु खसमु न आवी चिति सु खरो अहंकारीआ ॥ (964-3)
जिसु खसमु न आवै चिति तिसु जमु डंडु दे ॥ (964-2)
जिसु गुर ते अकल गति जाणी ॥४॥ (239-19)
जिसु गुर ते हरि पाइआ सो गुरु हम कीनी ॥२॥ (163-12)
जिसु गुर परसादी नामु अधारु ॥ (905-1)
जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥ (282-15)
जिसु गुर भेटे नानक निरमल सोई सुधु ॥२०॥ (966-1)
जिसु गुर मिलि कमलु प्रगासिआ सो अनदिनु जागा ॥ (964-19)
जिसु गुरु पूरा भेटसी सो चलै रजाए ॥२॥ (396-15)
जिसु गुरु भेटै नानका तिसु मनि वसिआ सोइ ॥२॥ (321-5)
जिसु गुरु मिलै तिसु गरबु निवारै ॥१॥ रहाउ ॥ (224-13)
जिसु गुरु मिलै तिसु पारि उतारै ॥ (942-10)
जिसु गुरु मिलै सोई बिधि जाणै ॥ (904-11)
जिसु गुरु साचा भेटीऐ भाई पूरा तिसु करमाउ ॥७॥ (640-9)
जिसु ग्रिहि थोरी सु फिरै भ्रमंता ॥ (1019-8)
जिसु ग्रिहि बहुतु तिसै ग्रिहि चिंता ॥ (1019-8)
जिसु घटि वसिआ नाउ तिसु बंधन काटीऐ ॥ (519-7)
जिसु घरि वसिआ कंतु सा वडभागणे ॥ (1361-18)
जिसु घरि विरती सोई जाणै जगत गुर नानक पूछि करहु बीचारा ॥ (733-17)
जिसु चिति आए बिनसहि दुखा ॥ (896-5)
जिसु चीति आवहि तिसु भउ केहा अवरु कहा किछु कीजा हे ॥१२॥ (1074-10)
जिसु चीति आवहि सो वेपरवाहा ॥ (1074-9)
जिसु चीति आवहि सो साचा साहा ॥ (1074-10)
जिसु चीति आवै तिसु सदा सुखु होवै निकटि न आवै ता कै जामु ॥१॥ रहाउ ॥ (1146-15)
जिसु छूटै त्रिकुटी तिसु निज घरि वासा ॥२॥ (374-11)
जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥ (268-8)
जिसु जन ऊपरि तेरी किरपा तिस कउ बिपु न कोऊ भाखै ॥२॥ (383-9)
जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥ (266-6)
जिसु जन तेरी भुख है तिसु दुखु न विआपै ॥ (1097-3)
जिसु जन नाम सुखु हां ॥ (410-5)
जिसु जन होआ साधसंगु तिसु भेटै हरि राइआ ॥१॥ (812-7)
जिसु जन होए आपि क्रिपाल ॥ (177-10)
जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए सो अम्रितु गुर पाही जीउ ॥ (598-4)
जिसु जीउ अंतरु मैला होइ ॥ (1169-11)

जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥ (268-7)
जिसु तूं तुठा सो तुधु धिआए ॥ (130-19)
जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ ॥ (467-10)
जिसु तूं देहि तिसु सभु किछु मिलै इकना दूरि है पासि ॥ (86-5)
जिसु तूं देहि तिसै किआ चारा ॥ (349-5)
जिसु तूं देहि सु त्रिपति अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ ॥२॥ (97-6)
जिसु तूं देहि सोई जनु पाए होर निहफल सभ चतुराई ॥२२॥ (758-5)
जिसु तूं बखसहि नामु जपाइ ॥ (416-4)
जिसु तूं मेलहि सो तुधु मिलै तूं आपे बखसि लैहि लेखा छडे ॥ (317-18)
जिसु तूं मेलहि सो मिलै जाइ सचा पिड़ु मलि ॥८॥ (60-12)
जिसु तूं मेलहि सो मिलै पिआरे तिस कै लागउ पाइ ॥४॥ (431-18)
जिसु तूं रखहि हथ दे तिसु मारि न सकै कोइ ॥ (43-18)
जिसु तूं राखहि किरपा धारि ॥ (352-9)
जिसु तू आवहि चिति तिनि कुल उधारिआ ॥६॥ (960-4)
जिसु तू आवहि चिति तिस नो सदा सुख ॥ (960-1)
जिसु तू आवहि चिति तिसु कि काड़िआ ॥ (960-2)
जिसु तू आवहि चिति तिसु जम नाहि दुख ॥ (960-2)
जिसु तू आवहि चिति बहुता तिसु धनु ॥ (960-3)
जिसु तू आवहि चिति सो परवाणु जनु ॥ (960-3)
जिसु तू आवहि चिति सो वड परवारिआ ॥ (960-4)
जिसु तू देवहि सोई पाए नानक ततु बीचारी जीउ ॥१०॥१॥ (1016-18)
जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ॥ (9-14)
जिसु तू देहि तिसै किआ चारा नानक सरणि तुमारी जीउ ॥६॥१॥१२॥ (993-10)
जिसु तू देहि तिसै निसतारै ॥१॥ रहाउ ॥ (991-12)
जिसु तू देहि सोई जनु पाए नानक नामि वडाई हे ॥१६॥४॥ (1048-2)
जिसु तू भावै तिसु तू मेलि लैहि किआ जंत विचारे ॥ (589-7)
जिसु तू मेलहि पिआरिआ सो तुधु मिलै गुरमुखि वीचारे ॥ (589-8)
जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलै सोई सचिआरा ॥२॥ (786-2)
जिसु तू मेलहि सो मिलै धुरि हुकमु अपारा ॥१॥ रहाउ ॥ (1012-5)
जिसु तू राखहि तिसु कउनु मारै ॥ (1139-15)
जिसु तू राखहि तिसु दूखु न थीआ ॥३॥ (563-17)
जिसु तू वुठा चिति तिसु कदे न हारणो ॥ (963-14)
जिसु तू वुठा चिति तिसु दरदु निवारणो ॥ (963-14)
जिसु दइआ करे मेरा पारब्रहमु मेरी जिंदुड़ीए तिसु मनि नामु वसाए राम ॥ (541-12)
जिसु दइआलु होइ भगवानै ॥ (623-7)
जिसु दर कारणि फिरा उदासी सो दरु कोई आइ कहै ॥१॥ (877-3)
जिसु देवै तिसु पलै पाइ ॥ (841-6)

जिसु देवै पुरखु बिधाता ॥ (623-19)
जिसु देहि दरसु सोई तुधु जाणै ॥ (1074-8)
जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि ॥ (288-6)
जिसु धन का तुम गरबु करत हउ सो धनु किसहि न आप ॥ (1200-12)
जिसु धन कारणि चुगली करहि सो धनु चुगली हथि न आवै ओइ भावै तिथै जाहि ॥ (852-19)
जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥ (271-18)
जिसु धीरजु धुरि धवलु धुजा सेति बैकुंठ बीणा ॥ (1393-16)
जिसु धुरि भागु होवै मुखि मसतकि तिनि जनि लै हिरदै राखी ॥ (87-17)
जिसु नदरि करे सो उबरै हरि सेती लिव लाइ ॥४॥ (28-3)
जिसु नदरि करे सो परम गति पाए ॥४॥ (232-3)
जिसु नदरि करे सोई सचि लागै रसना रामु रवीजै ॥ (570-18)
जिसु नर की दुबिधा न जाइ धरम राइ तिसु देइ सजाइ ॥३॥ (491-5)
जिसु नर रामु रिदै हरि रासि ॥ (154-9)
जिसु नही बुझावै सो कितु बिधि बुझै ॥२॥ (892-8)
जिसु नामु देइ सोई जनु पाए ॥ (232-18)
जिसु नामु रिदै तिनि कोटि धन पाए ॥ (1155-17)
जिसु नामु रिदै तिनि नउ निधि पाई ॥ (1156-2)
जिसु नामु रिदै तिसु कोट कई सैना ॥ (1155-19)
जिसु नामु रिदै तिसु तखति निवासनु ॥ (1156-5)
जिसु नामु रिदै तिसु निहचल आसनु ॥ (1156-4)
जिसु नामु रिदै तिसु पूरे काजा ॥ (1155-17)
जिसु नामु रिदै तिसु प्रगटि पहारा ॥ (1156-7)
जिसु नामु रिदै तिसु मिटिआ अंधारा ॥ (1156-7)
जिसु नामु रिदै तिसु वड परवारा ॥ (1156-4)
जिसु नामु रिदै तिसु सद ही लाहा ॥ (1156-3)
जिसु नामु रिदै तिसु सभ ही जुगता ॥ (1156-2)
जिसु नामु रिदै तिसु सहज सुखैना ॥ (1155-19)
जिसु नामु रिदै सो जीवन मुकता ॥ (1156-1)
जिसु नामु रिदै सो पुरखु परवाणु ॥ (1156-8)
जिसु नामु रिदै सो पुरखु बिधाता ॥ (1156-6)
जिसु नामु रिदै सो वेपरवाहा ॥ (1156-3)
जिसु नामु रिदै सो सभ ते ऊचा ॥ (1156-6)
जिसु नामु रिदै सो सभ महि जाता ॥ (1156-6)
जिसु नामु रिदै सो साचा साहु ॥ (1156-5)
जिसु नामु रिदै सो सीतलु हूआ ॥ (1156-1)
जिसु नामु रिदै सोई वड राजा ॥ (1155-17)
जिसु नामै कउ तरसहि बहु देवा ॥ (1078-1)

जिसु नालि जोरु न चलई खले कीचै अरदासि ॥ (994-14)
जिसु नालि संगति करि सरीकी जाइ किआ रूआवणा ॥ (566-6)
जिसु नाही कोइ सरीकु किसु लेखै हउ गनी ॥ रहाउ ॥ (723-7)
जिसु निंदहि सोई बिधि जाणै ॥ (1330-17)
जिसु नीच कउ कोई न जानै ॥ (386-15)
जिसु पति रखै आपि सो भवजलु तरै ॥ (958-4)
जिसु पति रखै सचा साहिबु नानक मेटि न सकै कोई ॥२॥ (520-3)
जिसु परतीति न आवई भाई सो जीअड़ा जलि जाउ ॥६॥ (640-7)
जिसु परसादि नवै निधि पाई ॥ (177-13)
जिसु परसादि वैरी सभ मीत ॥५॥ (239-19)
जिसु परापति सो लहै गुर चरणी लागै आइ ॥१०॥ (759-6)
जिसु परापति सो लहै गुर सबदी मिलिआ ॥ (1245-8)
जिसु परापति होइ सिमरै तिसु दहत नह संसारु ॥१॥ (1121-11)
जिसु पापी कउ मिलै न ढोई ॥ (1141-16)
जिसु पासि बहिठिआ सोहीऐ सभनां दा वेसाहु ॥२२॥ (1426-8)
जिसु पासि लुकाइदड़ो सो वेखी साथै ॥ (461-4)
जिसु पाहण कउ ठाकुरु कहता ॥ (739-3)
जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ ॥१॥ (479-5)
जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ ॥ (83-15)
जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ ॥ (649-8)
जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै भतारु ॥ (786-12)
जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो हरि गुण गाईऐ ॥३॥ (850-9)
जिसु पूरे गुर ते सोझी होई ॥ (1039-9)
जिसु पेखत किलविख हिरहि मनि तनि होवै सांति ॥ (47-3)
जिसु प्रभु अपणा विसरै सो मरि जमै लख वार जीउ ॥६॥ (761-2)
जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥ (281-16)
जिसु प्रभु देवै सो नामु पाई ॥३॥ (805-11)
जिसु प्रभु मिलिआ आपणा सो पुरखु सभागा ॥ (965-2)
जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥ (293-9)
जिसु प्रसादि माइआ सिलक काटी ॥ (177-15)
जिसु प्रसादि मोहै नही माइआ ॥ (1338-13)
जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥ (295-1)
जिसु प्रसादि हरि नामु धिआई ॥ (1339-6)
जिसु प्रसादि हरि हरि जपु जपने ॥१॥ रहाउ ॥ (1340-17)
जिसु प्रीति लागी नाम सेती मनु तनु अम्रित भीजै ॥ (784-9)
जिसु बखसे तिसु तारे सोई ॥ (1030-16)
जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥ (1022-4)

जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥ (110-11)
जिसु बखसे तिसु दे वडिआई मेलि न पछोताइदा ॥१३॥ (1035-5)
जिसु बखसे सो पाइसी गुर सबदी वीचारु ॥१३॥ (1284-7)
जिसु बिखिआ कउ तुम्ह अपुनी करि जानहु सा छाडि जाहु सिरि भारु ॥१॥ (1200-5)
जिसु बिसरत तनु भसम होइ कहते सभि प्रेतु ॥ (706-16)
जिसु बिसरिऐ जमु जोहणि लागै ॥ (1030-3)
जिसु बीती जाणै प्रभ सोइ ॥ (413-8)
जिसु बुझाइहि अगनि आपि सो नामु धिआए ॥ (966-4)
जिसु बुझाइहि सो बुझसी सचिआ किआ जंत विचारी ॥८॥ (788-7)
जिसु बुझाए आपि नेड़ा तिसु हे ॥७॥ (762-3)
जिसु बुझाए आपि बुझाइ देइ सोई जनु दिखा ॥ (1316-7)
जिसु बुझाए सो बुझसी सचै सबदि पतीनी ॥ (949-17)
जिसु बोलत मुखु पवितु होइ ॥ (1182-11)
जिसु भइआ क्रिपालु तिसु सतसंगि मिलाइआ ॥ (239-7)
जिसु भाणा भावै सो तुझहि समाए ॥ (1064-1)
जिसु भावै तिस ही निसतारण ॥ (1005-7)
जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥ (292-5)
जिसु भावै तिसु आपे देइ ॥ (1069-14)
जिसु भावै तिसु आपे मेले जिनि गुरमुखि एको जाता हे ॥२॥ (1051-8)
जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥ (292-5)
जिसु भावै तिसु बखसि लैहि सचि सबदि समाई ॥४॥ (948-15)
जिसु भावै तिसु मेलि लैहि पिआरे सेई सदा खरे ॥७॥ (641-12)
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥ (292-15)
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥ (294-10)
जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥ (269-12)
जिसु भुलाए आपि तिसु कल नही जाणीआ ॥ (322-2)
जिसु भेटत गति भई हमारी ॥४॥५६॥१२५॥ (191-4)
जिसु भेटत मिटै अभिमानु ॥ (897-14)
जिसु भेटत लागै प्रभ रंगु ॥१॥ (393-1)
जिसु भेटीऐ सफल मूरति करै सदा कीरति गुर परसादि कोऊ नेत्रहु पेखै ॥६॥ (687-7)
जिसु भेटे तूटहि माइआ बंध बिसरि न कबहूं जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (499-11)
जिसु भेटे पूरा सतिगुरू मेरी जिंदुड़ीए सो हरि धनु निधि पाए राम ॥ (541-13)
जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥ (293-5)
जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥ (295-16)
जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥ (293-12)
जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥ (296-6)
जिसु मनि वसिआ तरिआ सोइ ॥ (854-3)

जिसु मनि वसिआ हरि का नामु ॥ (395-7)
जिसु मनि वसिआ हरि भगवंता ॥ (1071-16)
जिसु मनि वसै तरै जनु सोइ ॥ (184-3)
जिसु मनि वसै नराइणो सो कहीऐ भगवंतु ॥ (137-6)
जिसु मनि वसै पारब्रहमु निकटि न आवै पीर ॥ (1102-12)
जिसु मनि वुठा आपि तिसु न विसारीऐ ॥२॥ (398-5)
जिसु मनु मानै अभिमानु न ता कउ हिंसा लोभु विसारे ॥ (1198-2)
जिसु मसतकि करमु लिखिआ लिलाट ॥ (1139-13)
जिसु मसतकि गुरि धरिआ हाथु ॥ (1340-15)
जिसु मसतकि भागु तिनि सतिगुरु पाइआ ॥ (373-18)
जिसु मसतकि भागु सु लागा सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (1142-4)
जिसु मसतकि है लेखा ॥ (1185-7)
जिसु महि नामु निरंजन अंसु ॥ (1256-18)
जिसु मानुख पहि करउ बेनती सो अपनै दुखि भरिआ ॥ (497-2)
जिसु मिलते राम लिव लागी ॥३॥ (1339-7)
जिसु मिलि जपीऐ नाउ तिसु जीउ अरपीऐ ॥ (522-17)
जिसु मिलिआ गुरु आइ तिनि प्रभु जाणिआ ॥ (958-15)
जिसु मिलिआ पूरा गुरू सु सरपर तारणो ॥ (963-15)
जिसु मिलिऐ मनि होइ अनंदु सो सतिगुरु कहीऐ ॥ (168-11)
जिसु मिलिऐ मनु जीवै भाई जीउ ॥ (217-11)
जिसु मिलिऐ हरि विसरै पिआरे सो मुहि कालै उठि जाइ ॥ (641-6)
जिसु मेलहि सतिगुरु आपि तिस के सभि कुल तरा ॥ (1096-3)
जिसु मेले नानक सो मुकता होई ॥४॥२९॥९८॥ (185-14)
जिसु मेले सो भगता ॥७॥ (71-12)
जिसु रखै किरपा धारि रिजकु समाहीऐ ॥ (957-14)
जिसु रसु आइआ सोई जानै ॥ (1338-5)
जिसु राखै आपि रामु दइआरा ॥ (176-6)
जिसु राखै तिसु कोइ न मारै ॥ (292-11)
जिसु राम नामु नाही मति गुरमति सो जम पुरि बंधि चलाइआ ॥८॥ (1041-4)
जिसु रूप न रेख वडाम ॥ (1297-3)
जिसु रूपु न रेखिआ कुलु नही जाती ॥ (1086-4)
जिसु लड़ि लगिऐ जीवीऐ भवजलु पईऐ पारि ॥ (218-12)
जिसु लड़ि लाइ लए सो लागै ॥ (1144-1)
जिसु लाइ लए सो चरणी लागै ॥ (108-16)
जिसु लाइ लए सो निरमलु होई ॥ (118-11)
जिसु लागी पीर पिरम की सो जाणै जरीआ ॥ (449-2)
जिसु लिखिआ नानक दास तिसु नाउ अम्रितु सतिगुरि दिता ॥१९॥ (965-15)

जिसु वखर कउ चाहता सो पाइओ नामहि रंगि ॥२॥ (431-4)
जिसु वखर कउ तुम आए हहु सो पाइओ सतिगुर पासा हे ॥६॥ (1073-1)
जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥ (283-3)
जिसु वड भागु होवै वड मसतकि तिनि गुरमति कढि कढि लीआ ॥२॥ (880-14)
जिसु विचि रविआ सबदु अपारा ॥ (1059-16)
जिसु विसरिऐ इक निमख न सरै ॥७॥ (913-17)
जिसु वेखाले सो वेखै जिसु वसिआ मन माहि ॥१॥ (947-5)
जिसु वेखाले सोई वेखै नानक गुरमुखि पाइ ॥४॥२३॥५६॥ (36-2)
जिसु संगि लागे प्राण तिसै कउ आहीऐ ॥ (1362-12)
जिसु सचि लाए सोई लागै ॥ (666-6)
जिसु सचु संजमु वरतु सचु कबि जन कल वखाणु ॥ (1392-11)
जिसु सतगुरु पुरखु न भेटिओ सु भउजलि पचै पचाइ ॥ (22-15)
जिसु सतिगुरु भेटे सु कंचनु होवै जो धुरि लिखिआ सु मिटै न मिटईआ ॥३॥ (834-4)
जिसु सतिगुरु मिलै तिसु भउ पवै सा कुलवंती नारि ॥ (516-9)
जिसु सतिगुरु मेले सो मिलै सचै सबदि समाइ ॥३॥ (37-6)
जिसु सरब सुखा फल लोड़ीअहि सो सचु कमावउ ॥ (322-8)
जिसु साधू संगति तिसु सभ सुकरणी जीउ ॥ (217-2)
जिसु साहिब भावै तिसु बखसि लए सो साहिब मनि भाणी ॥ (302-7)
जिसु सिउ राता तैसो होवै सचे सचि समाइआ ॥५॥ (65-5)
जिसु सिकदारी तिसहि खुआरी चाकर केहे डरणा ॥ (902-19)
जिसु सिमरत अवगुण सभि ढकीऐ ॥ (1004-14)
जिसु सिमरत जमु किछू न कहै ॥ (182-19)
जिसु सिमरत डूबत पाहन तरे ॥३॥ (183-1)
जिसु सिमरत दुख डेरा ढहै ॥ (182-19)
जिसु सिमरत दुख बीसरहि पिआरे सो किउ तजणा जाइ ॥२॥ (431-12)
जिसु सिमरत दुखु कोई न लागै भउजलु पारि उतारा ॥ (778-2)
जिसु सिमरत दुखु जाइ सहज सुखु पाईऐ ॥ (398-16)
जिसु सिमरत दुखु मिटै हमारा ॥ (698-11)
जिसु सिमरत दुरमति मलु नासी ॥ (1406-19)
जिसु सिमरत दूखु सभु जाइ ॥ (192-5)
जिसु सिमरत निरमल है सोइ ॥ (1182-11)
जिसु सिमरत पतित पुनीत होइ ॥ (1182-14)
जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासा ता की गति मिति कहनु न जावै ॥१॥ रहाउ ॥ (393-1)
जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासु ॥ (1148-13)
जिसु सिमरत मनि होत अनंदा उतरै मनहु जंगीला ॥ (498-17)
जिसु सिमरत वरु निहचलु पाईऐ ॥ (109-5)
जिसु सिमरत संकट छुटहि अनद मंगल बिस्राम ॥ (320-9)

जिसु सिमरत सगला दुखु जाइ ॥ (1148-7)
जिसु सिमरत सभि किलविख नासहि पितरी होइ उधारो ॥ (496-3)
जिसु सिमरत सुखु पाईऐ बिनसै बिओगु ॥ (817-6)
जिसु सिमरत सुखु पाईऐ सभ तिखा बुझाई ॥ (318-16)
जिसु सिमरत सुखु होइ घणा दुखु दरदु न मूले होइ ॥ (44-14)
जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि ॥२॥ (518-1)
जिसु सिमरत होत सूके हरे ॥ (182-19)
जिसु सिरि दरगह का नीसाणु ॥४॥५॥७॥ (662-15)
जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥ (288-7)
जिसु सुणिऐ मनि होइ रहसु अति रिदै मान दुख जोहं ॥ (1211-14)
जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥ (288-7)
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥ (7-10)
जिसु हथि सिधि देवै जे सोई जिस नो देइ तिसु आइ मिलै ॥ (952-10)
जिसु हरि आपि क्रिपा करे सो वेचे सिरु गुर आगै ॥ (167-1)
जिसु हरि भावै तिसु गुरु मिलै सो हरि नामु धिआइ ॥ (86-12)
जिसु हरि राखै तिसु कउणु मारै जिसु करता आपि छडाई जीउ ॥४॥ (998-13)
जिसु हरि सेवा लाए सोई जनु लागै ॥ (1070-18)
जिसु हरि होइ क्रिपालु सो नामु धिआवई ॥ (646-12)
जिसु होआ आपि क्रिपालु सु नह भरमाइआ ॥ (523-17)
जिसु होइ क्रिपालु दइआलु सुआमी सो प्रभ अंकि समावए ॥ (542-9)
जिसु होइ क्रिपालु सोई बिधि बूझै ता की निरमल रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (700-2)
जिसु होइ दइआलु तिसु आपि मिलावै ॥ (183-18)
जिसु होवहि आपि दइआलु तिसु लावहि सतिगुर चरण ॥ (1095-2)
जिसु होवहि आपि दइआलु तिसु सतिगुर सेवा लावही ॥ (1095-8)
जिसु होवै आपि दइआलु सा सतिगुरू गुरू बुलावणी ॥१३॥ (647-18)
जिसु होवै पूरबि लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ ॥ (303-6)
जिसु होवै भागु मथाणै ॥३॥ (1004-2)
जिसै परापति होइ तिसै ही पावणे ॥ (1363-13)
जिह अनुग्रहु ठाकुरि कीओ आपि ॥ (1192-11)
जिह अम्रित बचन बाणी साधू जन जपहि करि बिचिति चाओ ॥ (1401-17)
जिह आसर इआ भवजलु तरना ॥ (253-2)
जिह करणी होवहि सरमिंदा इहा कमानी रीति ॥ (673-1)
जिह काटी सिलक दयाल प्रभि सेइ जन लगे भगते ॥ (1386-17)
जिह काल कै मुखि जगतु सभु ग्रसिआ गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम बाचे ॥१॥ रहाउ ॥ (169-12)
जिह कुल दासु न ऊपजै सो कुल ढाकु पलासु ॥१११॥ (1370-8)
जिह कुल साधु बैसनौ होइ ॥ (858-7)
जिह कुलि पूतु न गिआन बीचारी ॥ (328-10)

जिह क्रिपालु होयउ गोबिंदु सरब सुख तिनहू पाए ॥ (1386-14)
जिह गड़ु गड़िओ सु गड़ महि पावा ॥२०॥ (341-8)
जिह गुर मानि प्रभू लिव लाई तिह महा अनंद रसु करिआ ॥ (613-2)
जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ॥४॥५॥ (1164-8)
जिह ग्रिह रमईआ कवलापती ॥२॥ (988-11)
जिह घट रामु रहिआ भरपूरि ॥ (328-14)
जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥ (1428-14)
जिह घटै मूलु नित बढै बिआजु ॥ रहाउ ॥ (1195-1)
जिह घर महि तुधु रहना बसना सो घरु चीति न आइओ ॥३॥ (1017-4)
जिह घर महि बैसनु नही पावत सो थानु मिलिओ बासानी ॥१॥ (1210-11)
जिह घरि कथा होत हरि संतन इक निमख न कीन्हो मै फेरा ॥ (971-3)
जिह घरु बनु समसरि कीआ ते पूरे संसार ॥१॥ (1103-6)
जिह जन ओट गही प्रभ तेरी से सुखीए प्रभ सरणे ॥ (613-1)
जिह जानिओ प्रभु आपुना नानक ते भगवंत ॥१॥ (259-1)
जिह जिह डाली पगु धरउ सोई मुरि मुरि जाइ ॥९७॥ (1369-13)
जिह ठाकुर कउ सुनत अगाधि बोधि सो रिदै गुरि दइआ ॥ रहाउ ॥ (612-13)
जिह ठाकुरु सुप्रसंनु भयो सतसंगति तिह पिआरु ॥ (1386-11)
जिह तू जाचहि सो त्रिभवन भोगी ॥ (857-2)
जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥११॥ (1427-2)
जिह धंधे महि ओइ लपटाए ॥ (178-11)
जिह धिरि देखा तिह धिरि मउजूदु ॥१॥ (84-2)
जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ ता कउ भइओ सहाई ॥ (1008-7)
जिह नर बिसरिआ पुरखु बिधाता ते दुखीआ महि गनणे ॥२॥ (613-1)
जिह नर राम भगति नहि साधी ॥ (328-10)
जिह पउड़्हे प्रभ बाल गोबिंद ॥१॥ (1162-7)
जिह पउड़्हे प्रभ स्री गोपाल ॥२॥ (1162-10)
जिह पावक सुरि नर है जारे ॥ (323-14)
जिह पिखत अति होइ रहसु मनि सोई संत सहारु गुरू रामदासु ॥२॥ (1406-5)
जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥ (264-11)
जिह पैडै लूटी पनिहारी ॥ (393-12)
जिह प्रभू बिसारि गुर ते बेमुखाई ते नरक घोर महि परिआ ॥३॥ (613-2)
जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥ (270-7)
जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥ (270-6)
जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥ (270-3)
जिह प्रसादि इहु भउजलु तरिआ जन नानक प्रिअ संगि मिरीआ ॥४॥७॥१२८॥ (207-3)
जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान ॥ (270-9)
जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना ॥ (269-16)

जिह प्रसादि छतीह अम्रित खाहि ॥ (269-14)
जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥ (270-5)
जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥ (269-19)
जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥ (270-18)
जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥ (270-16)
जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥ (270-10)
जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥ (270-3)
जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥ (270-16)
जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥ (270-11)
जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥ (270-11)
जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥ (270-12)
जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥ (270-17)
जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥ (270-4)
जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥ (270-1)
जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥ (267-1)
जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥ (270-14)
जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥ (270-5)
जिह प्रसादि पाट पट्मबर हढावहि ॥ (269-18)
जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥ (267-2)
जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥ (270-13)
जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥ (269-16)
जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥ (270-7)
जिह प्रसादि बोलहि अम्रित रसना ॥ (270-13)
जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥ (267-3)
जिह प्रसादि मिलीऐ प्रभ नानक बलि बलि ता कै हउ जाई ॥२॥३॥१७॥ (1207-15)
जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥ (269-17)
जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥ (270-18)
जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥ (270-15)
जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥ (270-13)
जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥ (269-19)
जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥ (269-15)
जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥ (270-12)
जिह प्रसादि स्मपूरन फलहि ॥ (270-14)
जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥ (270-14)
जिह बाझु न जीआ जाई ॥ (655-12)
जिह बिधि कतहू न छूटीऐ साकत तेऊ कमाहि ॥ (252-1)
जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ॥ (727-5)

जिह बिधि मन को संसा चूकै भउ निधि पारि परउ ॥१॥ रहाउ ॥ (685-7)
जिह भोजनु कीनो ते त्रिपतारै ॥२॥ (1299-5)
जिह मंदरि दीपकु परगासिआ अंधकारु तह नासा ॥ (1123-6)
जिह मरनै सभु जगतु तरासिआ ॥ (327-13)
जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥ (264-11)
जिह मारगि इहु जात इकेला ॥ (264-6)
जिह मिलिऐ देह सुदेही ॥१॥ रहाउ ॥ (657-12)
जिह मुख बेदु गाइत्री निकसै सो किउ ब्रहमनु बिसरु करै ॥ (970-5)
जिह मुखि पांचउ अम्रित खाए ॥ (329-12)
जिह रस अन रस बीसरि जाही ॥१॥ रहाउ ॥ (658-10)
जिह रस बिसरि गए रस अउर ॥१॥ रहाउ ॥ (337-16)
जिह सतिगुर लगि प्रभु पाईऐ सो सतिगुरु सिमरहु नरहु ॥५॥५४॥ (1405-18)
जिह सतिगुर सिमरंत नयन के तिमर मिटहि खिनु ॥ (1405-15)
जिह सतिगुर सिमरंथि जीअ की तपति मिटावै ॥ (1405-16)
जिह सतिगुर सिमरंथि रिदै हरि नामु दिनो दिनु ॥ (1405-16)
जिह सतिगुर सिमरंथि रिधि सिधि नव निधि पावै ॥ (1405-17)
जिह सिखह संग्रहिओ ततु हरि चरण मिलायउ ॥ (1395-7)
जिह सिमरत गति पाईऐ तिह भजु रे तै मीत ॥ (1427-1)
जिह सिमरत गनका सी उधरी ता को जसु उर धारो ॥१॥ रहाउ ॥ (632-4)
जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥५७॥१॥ (1429-10)
जिह सिमरनि करहि तू केल ॥ (971-10)
जिह सिमरनि तुझु पोहै न माइ ॥ (971-14)
जिह सिमरनि तेरी गति होइ ॥ (971-11)
जिह सिमरनि तेरी जाइ बलाइ ॥ (971-14)
जिह सिमरनि नाही तुझु भार ॥ (971-17)
जिह सिमरनि नाही तुहि कानि ॥ (971-13)
जिह सिमरनि नाही ननकारु ॥ (971-9)
जिह सिमरनि होइ मुकति दुआरु ॥ (971-7)
जिह सिरि रचि रचि बाधत पाग ॥ (330-2)
जिहबा एक उसतति अनेक ॥ (287-8)
जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥ (1427-12)
जिहबा जूठी बोलत जूठा करन नेत्र सभि जूठे ॥ (1195-7)
जिहबा नेत्र सोत्र सचि राते जलि बूझी तुझहि बुझाई ॥ (634-14)
जिहबा सुआदी लीलित लोह ॥ (1252-10)
जिहवा इंद्री एकु सुआउ ॥ (153-5)
जिहवा इंद्री सादि लोभाना ॥ (903-14)
जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥ (136-8)

जिहवा एक कवन गुन कहीऐ ॥ (674-2)
जिहवा एक होइ लख कोटी लख कोटी कोटि धिआवैगो ॥१॥ रहाउ ॥ (1309-12)
जिहवा किआ गुण आखि वखाणह तुम वड अगम वड पुरखा ॥ (696-14)
जिहवा जलउ जलावणी नामु न जपै रसाइ ॥ (59-13)
जिहवा डंडी इहु घटु छाबा तोलउ नामु अजाची ॥ (992-15)
जिहवा बकत पाई गति मति ॥ (891-16)
जिहवा बचनु सुधु नही निकसै तब रे धरम की आस करै ॥३॥ (479-13)
जिहवा रंगि नही हरि राती जब बोलै तब फीके ॥ (1126-7)
जिहवा रती सबदि सचै अम्रितु पीवै रसि गुण गाइ ॥ (36-14)
जिहवा रसु नही कहिआ बूझै ॥ (414-3)
जिहवा रोगि मीनु ग्रसिआनो ॥ (1140-18)
जिहवा सची मनु सचा सचा सरीर अकारु ॥ (83-3)
जिहवा सची सचि रती तनु मनु सचा होइ ॥ (565-1)
जिहवा सादु न फीकी रस बिनु बिनु प्रभ कालु संतापै ॥१॥ रहाउ ॥ (1197-10)
जिहवा सालाहि न रजई हरि प्रीतम चितु लाइ ॥ (313-12)
जिहवा सुआद लोभ मदि मातो उपजे अनिक बिकारा ॥ (616-6)
जिहवा सूची साचा बोलु ॥ (905-17)
जिहवा सूची हरि रस सारा ॥२॥ (224-6)
जिहवा हरि रसि रही अघाइ ॥ (733-2)
जिहवे अम्रित गुण हरि गाउ ॥ (1219-4)
जिहि जिहि हरि को नामु सम्हारि ॥ (1186-12)
जिहि परलोक जाइ अपकीरति सोई अबिदिआ साधी ॥२॥ (1253-7)
जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥ (1427-10)
जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥४२॥ (1428-14)
जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥ (1427-8)
जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु ॥ (1427-9)
जीअ उधारन सभ कुल तारन हरि हरि नामु धिआइ ॥२॥ (676-4)
जीअ उपाइ जुगति वसि कीनी आपे गुरमुखि अंजनु ॥ (1273-19)
जीअ उपाइ जुगति हथि कीनी काली नथि किआ वडा भइआ ॥ (350-16)
जीअ उपाइ रिजकु दे आपे सिरि सिरि हुकमु चलाइआ ॥१॥ (1042-16)
जीअ करनि जैकारु निंदक मुए पचि ॥ (1363-6)
जीअ का बंधनु करमु बिआपै ॥ (1351-9)
जीअ की अरदासि गुरू पहि पाई ॥ रहाउ ॥ (396-9)
जीअ की एकै ही पहि मानी ॥ (671-17)
जीअ की कै पहि बात कहा ॥ (1003-2)
जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥ (292-12)
जीअ की जोति न जानै कोई ॥ (1351-8)

जीअ की बिरथा सो सुणे हरि सम्रिथ पुरखु अपारु ॥ (136-19)
जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि ॥ (519-11)
जीअ की लोचा पूरीऐ मिलै सुआमी कंतु ॥ (137-7)
जीअ की सार न जाणनी मनमुख अगिआनी अंधु ॥ (959-4)
जीअ के दाते प्रीतम प्रभ मेरे ॥ (562-15)
जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ॥ (32-7)
जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ॥ (64-18)
जीअ जंत ओपाइ समाइआ ॥ (1081-15)
जीअ जंत कउ रिजकु स्मबाहे ॥ (1071-12)
जीअ जंत की करहु प्रतिपाला ॥३॥ (826-4)
जीअ जंत की करे प्रतिपाल ॥ (1173-2)
जीअ जंत की तुही टेक ॥१॥ (211-6)
जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥ (292-6)
जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ ॥ (486-8)
जीअ जंत जा के सभि कीने प्रभु ऊचा अगम अपारा ॥ (630-17)
जीअ जंत जिनहि प्रतिपाले ॥ (664-8)
जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ (1060-16)
जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ (184-8)
जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ (841-13)
जीअ जंत तेरे आधारि ॥ (1183-1)
जीअ जंत तेरे धारे ॥ (626-19)
जीअ जंत दइआल पुरखु सभ ऊपरि जा का हथु ॥ (300-6)
जीअ जंत देवै आहार ॥ (1148-9)
जीअ जंत प्रतिपालदा जो करे सु होई ॥ (1318-2)
जीअ जंत प्रतिपालदा भाई नित नित करदा सार ॥ (639-17)
जीअ जंत प्रभि सगल उधारे दरसनु देखणहारे ॥ (618-13)
जीअ जंत माइआ मोहि पाजे ॥ (842-4)
जीअ जंत मिहरवानु तिस नो सदा जापि ॥ (521-13)
जीअ जंत सगल संतोखे आपना प्रभु धिआइ ॥ (1226-14)
जीअ जंत सगल सुखु पाइआ ॥ (378-13)
जीअ जंत सगले तै मोहे बिनु संता किनै न लाखी ॥ (1227-17)
जीअ जंत सगले प्रतिपलीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1004-6)
जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥ (103-10)
जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥ (563-6)
जीअ जंत सगले प्रतिपाल ॥ (184-5)
जीअ जंत सगले प्रतिपाल ॥ (889-9)
जीअ जंत सगले बखसिंद ॥१॥ (866-14)

जीअ जंत सभ तेरे कीते घटि घटि तुही धिआईऐ ॥ (748-17)
जीअ जंत सभ सारी कीते पासा ढालणि आपि लगा ॥२६॥ (434-1)
जीअ जंत सभ सिसटि उपाई गुरमुखि सोभा पावैगो ॥ (1310-11)
जीअ जंत सभि खसम के कउणु कीमति पावै ॥ (1193-11)
जीअ जंत सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणए ॥ (918-13)
जीअ जंत सभि जिनि कीए आठ पहर तिसु जापि ॥ (45-10)
जीअ जंत सभि ता की सेवा ॥ (1084-18)
जीअ जंत सभि ता कै हाथि ॥ (376-19)
जीअ जंत सभि तिस के थापे ॥ (1007-19)
जीअ जंत सभि तिस दे सभना का सोई ॥ (425-6)
जीअ जंत सभि तुझु धिआवहि पुरखपति परमेसरा ॥ (925-8)
जीअ जंत सभि तुधु उपाए ॥ (103-15)
जीअ जंत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ ॥ (918-16)
जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥ (11-18)
जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥ (365-14)
जीअ जंत सभि तेरिआ तू रहिआ समाई ॥ (517-7)
जीअ जंत सभि तेरिआ तू सभना रासि ॥ (549-6)
जीअ जंत सभि तेरी सरणा ॥ (1052-7)
जीअ जंत सभि तेरै हाथि ॥ (1144-2)
जीअ जंत सभि पाछै करिआ प्रथमे रिजकु समाहा ॥४॥ (1235-8)
जीअ जंत सभि पेखीअहि प्रभ सगल तुमारी धारना ॥१॥ (915-4)
जीअ जंत सभि भए दइआला प्रभि अपने करि दीने ॥ (626-5)
जीअ जंत सभि भए पवित्रा सतिगुर की सचु साखी ॥३॥ (622-3)
जीअ जंत सभि मासहु होए जीइ लइआ वासेरा ॥ (1290-3)
जीअ जंत सभि वसि करि दीने सेवक सभि दरबारे ॥ (631-6)
जीअ जंत सभि वसि तेरै सगल तेरी सारिआ ॥ (691-10)
जीअ जंत सभि सरणि तुमारी ॥ (113-10)
जीअ जंत सभि सरणि तुमारी करि किरपा आपि पछाता हे ॥३॥ (1052-10)
जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे ॥ (795-13)
जीअ जंत सभि सुखि बसे सभ कै मनि लोच ॥ (815-19)
जीअ जंत सभि सुखी वसाइआ ॥ (105-18)
जीअ जंत सभि सुखी वसाए प्रभि आपे करि प्रतिपाला ॥ (783-10)
जीअ जंत सभि हाथि तिसै कै सो प्रभु अंतरजामी ॥ रहाउ ॥ (627-6)
जीअ जंत सभु जगु है जेता मनु डोलत डोल करीजै ॥ (1324-14)
जीअ जंत सभे ही नाचे नाचहि खाणी चारी ॥५॥ (506-10)
जीअ जंत सरबत नाउ तेरा धिआवणा ॥ (652-11)
जीअ जंत सुप्रसंन भए देखि प्रभ परताप ॥ (816-13)

जीअ जंत सोई है जपणा ॥ (1077-5)
जीअ जंत होए मिहरवाना दया धारी हरि नाथ ॥ (714-16)
जीअ जंत्र करे प्रतिपाल ॥ (987-13)
जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ ॥ (292-10)
जीअ जंत्र सभि तिस के कीए सोई संत सहाई ॥ (621-2)
जीअ जंत्र सभि तेरे थापे ॥ (107-17)
जीअ जहानु प्रान धनु तेरा ॥ (675-13)
जीअ जाति रंगा के नाव ॥ (3-15)
जीअ जुगति जा कै है हाथ ॥ (184-9)
जीअ जुगति वसि प्रभू कै जो कहै सु करना ॥ (818-3)
जीअ जुगति वसि मेरे सुआमी सरब सिधि तुम कारण करण ॥ (827-12)
जीअ जुगति सुजाणु सुआमी सदा राखणहारु ॥३॥ (1017-11)
जीअ तेरे कै आवै काम ॥१॥ रहाउ ॥ (193-10)
जीअ दइआ मइआ सरबत्र रमणं परम हंसह रीति ॥७॥ (508-12)
जीअ दानु काली कउ दीआ ॥ (874-12)
जीअ दानु गुरि पूरै दीआ राम नामि चितु लाए ॥ (443-6)
जीअ दानु गुरि पूरै दीआ हरि अम्रित नामु समारे ॥१॥ (882-8)
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥२॥ (749-3)
जीअ दानु देइ त्रिपतासे सचै नामि समाही ॥ (1259-1)
जीअ पिंड के प्रान अधारे ॥ (395-8)
जीअ प्राण अधारु तेरा नानक का प्रभु ताणु ॥४॥२॥१३७॥ (405-11)
जीअ प्राण तनु धनु रखे करि किरपा राखी जिंदु ॥ (46-16)
जीअ प्राण तुम्ह पिंड दीन्ह ॥ (1181-1)
जीअ प्राण नानक गुरु आधारु ॥४॥३८॥१०७॥ (187-12)
जीअ प्राण नित सुख प्रतिपाल ॥ (1151-3)
जीअ प्राण प्रभ मनहि अधारा ॥ (103-18)
जीअ प्राण महि रवि रहे ॥ (1181-19)
जीअ प्राण सरब के दाते गुण कहे न जाहि अपारा ॥ (1220-4)
जीअ प्राण सुखदाता नेरा ॥ (1149-13)
जीअ प्राण सुखदातिआ निमख निमख बलिहारि जी ॥१॥ (203-7)
जीअ प्रान कीए जिनि साजि ॥ (862-15)
जीअ प्रान को इहै सुआउ ॥ (866-3)
जीअ प्रान घट घट आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ (391-14)
जीअ प्रान धनु हरि को नामु ॥ (376-13)
जीअ प्रान भगतन आधार ॥२॥ (1152-9)
जीअ प्रान मन धन ते पिआरा ॥ (684-11)
जीअ प्रान मनु तनु सभु अरपउ नीरउ पेखि प्रभ कउ नीरउ ॥१॥ (700-13)

जीअ प्रान मान दाता ॥ (1303-18)
जीअ प्रान मान सुखदाता अंतरजामी मन को भावन ॥ रहाउ ॥ (717-2)
जीअ प्रान मान सुखदाता तूं करहि सोई सुखु पावणिआ ॥१॥ (131-16)
जीअ प्रान मुकति को दाता एकस सिउ लिव लाउ ॥ (1219-6)
जीअ प्रान मेरा धनो साहिब की मनीआ ॥ (400-4)
जीअ प्रान सूख इसु मन कउ बरतनि एह हमारै ॥१॥ रहाउ ॥ (713-9)
जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई ॥ (1103-2)
जीअ संगि प्रभु अपुना धरता ॥२॥ (384-17)
जीअ सगल कउ देइ दानु ॥ रहाउ ॥ (724-5)
जीअ सगल दइआल भए हरि हरि नामु चीन्ह ॥१॥ रहाउ ॥ (818-14)
जीअ हींअ प्रान को दाता जा कै संगि सुहाई ॥ (1207-13)
जीअउ हमारा जीउ देनहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (391-2)
जीअड़ा अगनि बराबरि तपै भीतरि वगै काती ॥ (156-15)
जीअन का दाता एकु है बीआ नही होरु ॥ (818-17)
जीअन का दाता पूरन सभ ठाइ ॥ (677-3)
जीअन को दाता पुरखु बिधाता नानक घटि घटि आही ॥३॥८॥१४८॥ (407-14)
जीअन को दाता मेरा प्रभु ॥ (894-17)
जीअन प्रतिपालि समाहै ॥ (1005-15)
जीअन सभन दाता अगम ग्यान बिख्याता अहिनिसि ध्यान धावै पलक न सोवै जीउ ॥ (1398-12)
जीअरा हरि के गुना गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (337-7)
जीअरे ओल्हा नाम का ॥ (211-1)
जीअरे जाहिगा मै जानां ॥ (338-7)
जीअरे राम जपत मनु मानु ॥ (20-19)
जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥ (919-15)
जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥ (919-13)
जीआं कुहत न संगै पराणी ॥३॥ (201-5)
जीआ अंदरि जीउ सबदु है जितु सह मेलावा होइ ॥ (1250-4)
जीआ अंदरि जीउ सभु किछु जाणला ॥ (965-7)
जीआ अंदरि जुगति समाई रहिओ निरालमु राइआ ॥१॥ (1038-13)
जीआ का आहारु जीअ खाणा एहु करेइ ॥ (955-11)
जीआ मारि जीवाले सोई अवरु न कोई रखै ॥ (150-1)
जीइ इछिअड़ा फलु पाइआ ॥ (72-19)
जीइ समाली ता सभु दुखु लथा ॥ (99-1)
जीउ एकु अरु सगल सरीरा ॥ (330-12)
जीउ छूटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥१॥ (726-19)
जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥ (660-4)
जीउ तपतु है बारो बार ॥ (661-17)

जीउ पाइ तनु साजिआ रखिआ बणत बणाइ ॥ (138-9)
जीउ पाइ पिंडु जिनि साजिआ दिता पैनणु खाणु ॥ (619-19)
जीउ पाइ मासु मुहि मिलिआ हडु चमु तनु मासु ॥ (1289-12)
जीउ पिंडु ग्रिहु थानु तिस का तनु जोबनु धनु मालु जीउ ॥ (926-16)
जीउ पिंडु जिनि साजिआ करि किरपा दितीनु जिंदु ॥ (137-5)
जीउ पिंडु जिनि साजिआ भाई दे करि अपणी वथु ॥ (639-13)
जीउ पिंडु जिनि सुख दीए ताहि न जानत तत ॥ (261-3)
जीउ पिंडु जोबनु राखै प्रान ॥ (396-10)
जीउ पिंडु तनु धनु सभु प्रभ का साकत कहते मेरा ॥ (1138-19)
जीउ पिंडु तनु धनु साधन का इहु मनु संत रेनाई ॥ (1207-18)
जीउ पिंडु दे साजि सवारिआ ॥ (1004-13)
जीउ पिंडु दे साजि सवारे ॥ (1085-18)
जीउ पिंडु दे साजिआ ॥ (72-15)
जीउ पिंडु धनु अरपिआ सेई पतिवंते ॥ (399-10)
जीउ पिंडु धनु तिस की रासि ॥ (1152-6)
जीउ पिंडु धनु तिस दा हउ सदा सदा कुरबानु ॥३॥ (49-3)
जीउ पिंडु धनु रासि प्रभ तेरी तूं समरथु सुआमी मेरा ॥ (826-12)
जीउ पिंडु धनु रासि मेरी प्रभ एक कारन करना ॥१॥ रहाउ ॥ (987-18)
जीउ पिंडु प्राण सभि तिस के घटि घटि रहिआ समाई ॥ (1260-5)
जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥ (277-11)
जीउ पिंडु सभ रासि तिसै की मारि आपे जीवाले ॥६॥१॥१३॥ (155-9)
जीउ पिंडु सभु किछु है तिस का आखणु बिखमु बीचारी ॥१४॥ (911-8)
जीउ पिंडु सभु गुर ते उपजै गुरमुखि कारज सवारे ॥ (753-10)
जीउ पिंडु सभु तिस का जो तिसु भावै सु होइ ॥ (45-12)
जीउ पिंडु सभु तिस का दीआ सरब गुणा भरपूरे ॥ (780-4)
जीउ पिंडु सभु तिस का सभसै देइ अधारु ॥ (91-8)
जीउ पिंडु सभु तिस का सभु किछु तिस कै पासि ॥ (1420-10)
जीउ पिंडु सभु तिस का सिफति करे अरदासि ॥ (86-2)
जीउ पिंडु सभु तिस की रासि ॥ (867-18)
जीउ पिंडु सभु तिस दा तिसै दा आधारु ॥ (36-8)
जीउ पिंडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥ (465-15)
जीउ पिंडु सभु तिस दा प्रतिपालि करे हरि राइ ॥ (1417-18)
जीउ पिंडु सभु तिस दा सभु किछु है तेरा ॥१॥ (396-13)
जीउ पिंडु सभु तिस दा साहु तिनै विचि पाइआ ॥ (1011-15)
जीउ पिंडु सभु तुमरा माला ॥१॥ (744-16)
जीउ पिंडु सभु तुम्हरा दाते नानक सद कुरबाणे ॥४॥११॥५०॥ (383-18)
जीउ पिंडु सभु तेरा दीता ॥ (1081-5)

जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥ (268-2)
जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥२॥ (154-4)
जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥३॥ (25-10)
जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥३॥ (354-11)
जीउ पिंडु सभु रासि तुमारी तेरा जोरु गोपाला जीउ ॥१॥ (106-4)
जीउ पिंडु सभु हरि का देसु ॥ (371-16)
जीउ पिंडु सभु हरि का मालु ॥ (374-13)
जीउ पिंडु सभु है तिसु केरा ॥ (1058-11)
जीउ पिंडु साजि जिनि रचिआ बलु अपुनो करि मानै ॥१॥ (616-4)
जीउ पीउ बूझउ नही घट महि जीउ कि पीउ ॥२३६॥ (1377-6)
जीउ प्राण जिनि मनु तनु धारिआ ॥ (195-11)
जीउ प्राण जिनि रचिओ सरीर ॥ (1137-3)
जीउ प्राण तनु धनु जिनि साजिआ ॥ (1086-6)
जीउ प्राण तनु मनु प्रभू बिनसे सभि झूठा ॥११॥ (708-11)
जीउ प्राण धनु आगै धरिआ ॥ (1078-12)
जीउ प्राण धनु गुरू है नानक कै संगे ॥४॥२॥१०४॥ (397-3)
जीउ प्राण मनु तनु हरे साचा एहु सुआउ ॥ (47-19)
जीउ प्रान अधारु तेरा तू निथावे थाउ ॥ (1220-16)
जीउ प्रान तनु धनु दीआ दीने रस भोग ॥ (706-11)
जीउ प्रान धनु आगै धरीऐ ॥ (391-7)
जीउ प्रान धनु तुम्हरै पासि ॥ (1146-19)
जीउ प्रान सभु तेरो धन ॥१॥ रहाउ ॥ (1181-8)
जीउ मनु तनु प्राण प्रभ के तू आपन आपु निवारि ॥ (1007-2)
जीउ मनु तनु प्रान प्रभ के दीए सभि रस भोग ॥ (405-7)
जीउ महिंजा तउ मोहिआ कदि पसी जानी तोहि ॥१॥ (1094-15)
जीउ वंञै चउ खंनीऐ सचे संदड़ै नेहि ॥ (644-10)
जीउ समपउ आपणा तनु मनु आगै देउ ॥ (936-5)
जीउ हमारा खंनीऐ हरि मन तन संदड़ी वथु ॥१॥ (322-11)
जीत हार की सोझी करी ॥ (235-19)
जीतहि जम लोकु पतित जे प्राणी हरि जन सिव गुर ग्यानि रते ॥ (1401-19)
जीति आवहु वसहु घरि अपने ॥ (1072-3)
जीति जनमु इहु रतनु अमोलकु साधसंगति जपि इक खिना ॥१॥ रहाउ ॥ (210-9)
जीति जीति जीते सभि थाना सगल भवन लपटही ॥ (499-2)
जीति लए ओइ महा बिखादी सहज सुहेली बाणी ॥ (206-3)
जीते पंच बैराईआ नानक सफल मारू इहु रागु ॥३॥ (1425-4)
जीतो बूडै हारो तिरै ॥ (1161-3)
जीभ रसाइणि चूनड़ी रती लाल लवाइ ॥ (1091-10)

जीभ रसाइणि साचै राती ॥ (1023-7)
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥ (139-2)
जील बिना कैसे बजै रबाब ॥ (1140-9)
जीवंदिआ हरि चेतिआ मरंदिआ हरि रंगि ॥ (523-8)
जीवउ नामु सुनी ॥ (829-18)
जीवणं हरि नाम ध्यावणह ॥ (1361-2)
जीवण मरणा जाइ कै एथै खाजै कालि ॥ (15-5)
जीवण मरणु को समसरि वेखै ॥ (798-12)
जीवण संगमु तिसु धणी हरि नानक संतां मितु ॥२॥ (708-13)
जीवणि मरणि सुखु होइ जिन्हा गुरु पाइआ ॥ (369-4)
जीवणि मरणि हरि नामि सुहेले मनि हरि हरि हिरदै सोई ॥ (447-5)
जीवणु मरणा सभु तुधै ताई ॥ (110-11)
जीवत कउ मूआ कहै मूए नही रोता ॥४॥ (229-5)
जीवत छाडि जाहि देवाने ॥ (199-7)
जीवत जीवत जीवत रहहु ॥ (1138-4)
जीवत जो मरै हां ॥ (410-3)
जीवत दीसै तिसु सरपर मरणा ॥ (374-9)
जीवत पावहु मोख दुआर ॥ (343-6)
जीवत पितर न मानै कोऊ मूएं सिराध कराही ॥ (332-10)
जीवत पेखे जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ (740-2)
जीवत मरणा तारे तरणा ॥ (413-8)
जीवत मरणा सभु को कहै जीवन मुकति किउ होइ ॥ (948-11)
जीवत मरत निहचलु पावहि थाउ ॥२॥ (743-7)
जीवत मरत रहै परवाणु ॥ (1289-7)
जीवत मरहि दरगह परवानु ॥३॥ (176-15)
जीवत मरहि हरि नामि समाहि ॥१॥ (1175-17)
जीवत मरहु भवजलु जगु तरणा ॥ (1040-14)
जीवत मरहु मरहु फुनि जीवहु पुनरपि जनमु न होई ॥ (1103-19)
जीवत मरीऐ भउजलु तरीऐ जे थीवै करमि लिखिआसा ॥ (777-14)
जीवत मरै बुझै प्रभु सोइ ॥ (741-9)
जीवत मरै मरि मरणु सवारै ॥ (1174-17)
जीवत मरै मरै फुनि जीवै ऐसे सुंनि समाइआ ॥ (332-16)
जीवत मुए मुए से जीवे ॥ (374-10)
जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥ (875-6)
जीवत मुकत गुरमती लागे ॥ (1262-1)
जीवत मुकत सदा निरबान ॥ (1167-12)
जीवत रहहु हरि हरि भजहु नानक नाम परीति ॥१॥ (255-10)

जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥ (727-1)
जीवत साहिबु सेविओ अपना चलते राखिओ चीति ॥१॥ रहाउ ॥ (1000-2)
जीवत सुंनि समानिआ गुर साखी जागी ॥१॥ रहाउ ॥ (857-11)
जीवत से परवाणु होए हरि कीरतनि जागे ॥ (322-4)
जीवत से रहे हां ॥ (411-2)
जीवतिआ अथवा मुइआ किछु कामि न आवै ॥ (816-4)
जीवतिआ इउ मरीऐ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥३॥ (877-8)
जीवतिआ नह मरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (877-4)
जीवतिआ मरीऐ भउजलु तरीऐ गुरमुखि नामि समावै ॥ (775-19)
जीवतु मरै गुर सबदु बीचारै हउमै मैलु चुकावणिआ ॥६॥ (129-2)
जीवतु मरै ता मुकति पाए सचै नाइ समाइआ ॥१४॥ (1067-19)
जीवतु मरै ता सबदु बीचारै ता सचु पावै कोई ॥७॥ (506-12)
जीवतु मरै ता सभु किछु सूझै अंतरि जाणै सरब दइआ ॥ (940-17)
जीवतु मरै मरै फुनि जीवै तां मोखंतरु पाए ॥ (550-3)
जीवतु मरै महा रसु आगै ॥२॥ (153-17)
जीवतु मरै सभि कुल उधरै ॥१॥ (1170-13)
जीवतु मरै सु जाणीऐ पिर सचड़ै हेति पिआरे ॥६॥ (580-19)
जीवतु मरै हरि नामु वखाणै ॥ (88-14)
जीवतु मरै हरि सिउ चितु लाए ॥ (116-9)
जीवतु राम के गुण गाइ ॥ (1223-7)
जीवते कउ जीवता मिलै मूए कउ मूआ ॥ (788-4)
जीवदिआ न चेतिओ मुआ रलंदड़ो खाक ॥ (523-7)
जीवदिआ नित जापीऐ नानक साचा नाउ ॥१॥ (519-3)
जीवदिआ नो मिलै सु जीवदे हरि जगजीवन उर धारि ॥ (1418-16)
जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपरि होइ ॥१७॥ (1378-16)
जीवदिआ मरु मारि न पछोताईऐ ॥ (147-15)
जीवदिआ लाहा मिलै गुर कार कमावै ॥ (421-7)
जीवन गति सुआमी अंतरजामी आपि लीए लड़ि लाए ॥ (454-3)
जीवन तलब निवारि ॥ (902-16)
जीवन तलब निवारि सुआमी ॥ (876-11)
जीवन देवा पारब्रहम सेवा इहु उपदेसु मो कउ गुरि दीना जीउ ॥१॥ (678-10)
जीवन पदवी हरि का नाउ ॥ (744-4)
जीवन पदवी हरि के दास ॥ (200-4)
जीवन पदु निरबाणु इको सिमरीऐ ॥ (321-19)
जीवन पुरखु मिलिआ हरि राइआ ॥ (189-10)
जीवन प्रान अधार मेरी रासि ॥ (240-12)
जीवन प्रान हरि धनु सुखु तुम ही हउमै पटलु क्रिपा करि जारहु ॥१॥ (829-3)

जीवन मरणु जनमु परवानु ॥ (195-7)
जीवन मरनु दोऊ मिटवाइआ ॥ (871-6)
जीवन मिरतु न दुखु सुखु बिआपै सुंन समाधि दोऊ तह नाही ॥१॥ (333-8)
जीवन मुकत जगदीस जपि मन धारि रिद परतीति ॥ (508-11)
जीवन मुकति गति अंतरि पाई ॥४॥ (904-4)
जीवन मुकति गुर सबदु कमाए ॥ (1058-3)
जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥ (294-19)
जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ॥ (449-2)
जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥ (275-4)
जीवन मुकति हरि नामु धिआइआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ (1259-13)
जीवन मुकति हरि पावै सोइ ॥ (161-10)
जीवन मुकतु गुरमुखि को होई ॥ (232-11)
जीवन मुकतु जा सबदु सुणाए ॥ (1343-4)
जीवन मुकतु मनि नामु वसाए ॥ (412-17)
जीवन मुकतु सो आखीऐ जिसु विचहु हउमै जाइ ॥६॥ (1009-19)
जीवन रूप अनूप दइआला ॥ (760-4)
जीवन रूप गोपाल जसु संत जना की रासि ॥ (218-13)
जीवन रूप बिसारि जीवहि तिह कत जीवन होत ॥ रहाउ ॥ (1121-13)
जीवन रूप हरि चरण ॥ (894-19)
जीवन रूपु सिमरणु प्रभ तेरा ॥ (743-15)
जीवन लोरहि भरम मोह नानक तेऊ गवार ॥१॥ (254-11)
जीवन सुखु सभु साधसंगि प्रभ मनसा पूरु ॥२॥ (811-6)
जीवना सफल जीवन सुनि हरि जपि जपि सद जीवना ॥१॥ रहाउ ॥ (1019-1)
जीवना हरि जीवना ॥ (684-4)
जीवनु तउ गनीऐ हरि पेखा ॥ (1221-9)
जीवनु हरि जपि साधसंगि ॥१॥ रहाउ ॥ (684-5)
जीवनै की आस करहि जमु निहारै सासा ॥ (481-19)
जीवनो मै जीवनु पाइआ गुरमुखि भाए राम ॥ (442-6)
जीवां तेरी दाति किरपा करहु मूं ॥१॥ रहाउ ॥ (397-14)
जीवा तेरै नाइ मनि आनंदु है जीउ ॥ (688-7)
जीवि जीवि मुए मुए जीवे ॥ (1238-13)
जीवै दाता देवणहारु ॥ (158-2)
जीवै दाता मरै न कोइ ॥ (144-15)
जीह त पर सकयथ जीह गुर अमरु भणिजै ॥ (1394-5)
जीह भणि जो उतम सलोक उधरणं नैन नंदनी ॥३२॥ (1356-17)
जुग चारे गुर सबदि पछाता ॥ (1055-1)
जुग चारे धन जे भवै बिनु सतिगुर सोहागु न होई राम ॥ (769-19)

जुग चारे नामि वडिआई होई ॥ (880-2)
जुग चारे नामु उतमु सबदु बीचारि ॥ (229-16)
जुग चारे सभ भवि थकी किनि कीमति होई ॥ (788-1)
जुग चारे साचा एको वरतै बिनु गुर किनै न पाइआ ॥ (771-19)
जुग छतीह कीओ गुबारा ॥ (1061-15)
जुग छतीह गुबारु करि वरतिआ सुंनाहरि ॥ (555-17)
जुग छतीह गुबारु तिस ही भाइआ ॥ (1282-10)
जुग छतीह तिनै वरताए ॥ (1026-15)
जुग महि राम नामु निसतारा ॥ (768-3)
जुग महि राम नामु निसतारा ॥३॥ (768-5)
जुग माहि नामु दुल्मभु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ (490-15)
जुगतन महि तेरी प्रभ जुगता इसनानन महि इसनानी ॥६॥ (507-18)
जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे ॥ (487-12)
जुगति धोती सुरति चउका तिलकु करणी होइ ॥ (1245-11)
जुगति न जाना गुनु नही कोई महा दुतरु माइ आछै ॥ (534-1)
जुगह जुगंतर की बिधि जाणै ॥ (1027-13)
जुगह जुगंतरि इहु ततु सारु ॥ (1143-19)
जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥ (567-3)
जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥५॥ (567-5)
जुगह जुगंतरि मुकति पराइण सो मुकति भइआ पति पाइदा ॥१३॥ (1038-7)
जुगह जुगंतरि साहिबु सचु सोई ॥ (905-14)
जुगह जुगह के राजे कीए गावहि करि अवतारी ॥ (423-6)
जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥ (2-2)
जुगादि गुरए नमह ॥ (262-9)
जुगि जुगि आपो आपणा धरमु है सोधि देखहु बेद पुराना ॥ (797-19)
जुगि जुगि एको सचा सोई बूझै गुर बीचारे ॥ (245-11)
जुगि जुगि गुरमुखि एको जाता विणु नावै मुकति न पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1131-17)
जुगि जुगि थापि सदा निरवैरु ॥ (931-13)
जुगि जुगि दाता अवरु न कोइ ॥ (933-1)
जुगि जुगि दाता प्रभु रामु हमारा ॥१॥ रहाउ ॥ (228-4)
जुगि जुगि पीड़ी चलै सतिगुर की जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ ॥ (79-5)
जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउ मीठा मनहि पिआरा ॥२॥ (602-12)
जुगि जुगि भगता की रखदा आइआ ॥ (1133-11)
जुगि जुगि विरली गुरमुखि जाता ॥ (1023-6)
जुगि जुगि संत भले प्रभ तेरे ॥ (1025-15)
जुगि जुगि साचा एको दाता ॥ (1046-17)
जुगु जुगु एका एकी वरतै कोई बूझै गुर वीचारा हे ॥३॥ (1026-17)

जुगु जुगु जीवउ मेरी अब की धरी ॥१॥ रहाउ ॥ (483-18)
जुगु जुगु जीवहु अमर फल खाहु ॥१०॥ (343-18)
जुगु जुगु जोगी खाणी भोगी पड़िआ पंडितु आपि थीआ ॥९॥ (432-19)
जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥ (470-1)
जुगु जुगु भगत पिआरे हरि आपि सवारे आपे भगती लाए ॥ (246-9)
जुगु जुगु भगती आखि वखाणी ॥ (161-19)
जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम ॥ (439-9)
जुगु जुगु साचा है भी होसी ॥ (1022-9)
जुगु जुगु हरि हरि एको वरतै तिसु आगै हम आदेसु ॥१॥ रहाउ ॥ (368-2)
जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कान्हु उपाइ जीउ ॥ (445-15)
जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कान्हु उपाइ जीउ ॥३॥ (445-19)
जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह क्रिसनु जादमु भइआ ॥ (470-6)
जुड़ि जुड़ि विछुड़े विछुड़ि जुड़े ॥ (1238-12)
जूआरी जूए माहि चीतु ॥ (1180-7)
जूऐ खेलणु काची सारी ॥४॥ (222-6)
जूऐ खेलणु जगि कि इहु मनु हारिआ ॥३॥ (369-4)
जूऐ जनमु तिनी हारिआ कितु आए संसारि ॥ (1284-5)
जूऐ जनमु न कबहू हारि ॥ (866-12)
जूऐ जनमु न हारहु अपणा भाजि पड़हु तुम हरि सरणा ॥१४॥ (433-6)
जूऐ जनमु सभ बाजी हारी ॥ (130-8)
जूठन जूठि पई सिर ऊपरि खिनु मनूआ तिलु न डुलावैगो ॥७॥ (1309-9)
जूठि न अंनी जूठि न नाई ॥ (1240-4)
जूठि न चंद सूरज की भेदी ॥ (1240-4)
जूठि न धरती जूठि न पाणी ॥ (1240-5)
जूठि न पउणै माहि समाणी ॥ (1240-5)
जूठि न मीहु वर्हिऐ सभ थाई ॥ (1240-5)
जूठि न रागीं जूठि न वेदीं ॥ (1240-4)
जूठि लहै जीउ माजीऐ मोख पइआणा होइ ॥२॥ (489-6)
जूठी करछी परोसन लागा जूठे ही बैठि खाइआ ॥३॥ (1195-8)
जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु ॥ (472-9)
जेंह कारजि रहै ओल्हा सोइ कामु न करिआ ॥३॥ (408-9)
जे अगै तीरथु होइ ता मलु लहै छपड़ि नातै सगवी मलु लाए ॥ (140-3)
जे अति क्रोप करे करि धाइआ ॥ (478-15)
जे अपनी बिरथा कहहु अवरा पहि ता आगै अपनी बिरथा बहु बहुतु कढासा ॥ (860-6)
जे आतम कउ सुखु सुखु नित लोड़हु तां सतिगुर सरनि पवीजै ॥५॥ (1326-15)
जे आपि परख न आवई तां पारखीआ थावहु लइओ परखाइ ॥ (1249-11)
जे आसा अंदेसा तजि रहै गुरमुखि भिखिआ नाउ ॥ (550-16)

जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥५॥ (474-16)
जे इक विख अगाहा भरे तां दस विखां पिछाहा जाइ ॥ (1246-9)
जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥ (468-17)
जे उस का बुरा कहै कोई पापी तिसु जमकंकरु खाई जीउ ॥३॥ (998-12)
जे एह मूरति साची है तउ गड़्हणहारे खाउ ॥३॥ (479-7)
जे ओइ दिसहि नरकि जांदे तां उन्ह का दानु न लैणा ॥ (1290-6)
जे ओसु नालि चितु लाए तां वथु लहै नउ निधि पलै पाइ ॥ (1249-11)
जे ओहु अठसठि तीरथ न्हावै ॥ (875-11)
जे ओहु अनिक प्रसाद करावै ॥ (875-14)
जे ओहु कूप तटा देवावै ॥ (875-11)
जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति ॥ (875-13)
जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥ (875-11)
जे ओहु देउ त ओहु भी देवा ॥ (525-5)
जे करि दूजा देखदे जन नानक कढि दिचंन्हि ॥२॥ (1318-1)
जे करि साहिबु मनहु न वीसरै ता सहिला मरणा होइ ॥ (555-5)
जे करि सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतकु होइ ॥ (472-13)
जे करु गहहि पिआरड़े तुधु न छोडा मूलि ॥ (322-12)
जे किछु आस अवर करहि परमित्री मत तूं जाणहि तेरै कितै कमि आई ॥ (859-10)
जे किसै किहु दिसि आवै ता कोई किहु मंगि लए अकै कोई किहु देवाए एहु हरि धनु जोरि कीतै किसै नालि न जाइ वंडाइआ ॥ (853-7)
जे किसै देइ वखाणै नानकु आगै पूछ न लेइ ॥४॥३॥ (349-16)
जे किहु होइ त किहु दिसै जापै रूपु न जाति ॥ (1239-19)
जे कीचनि लख उपाव तां कही न घुलीऐ ॥ (964-1)
जे को अपने ठाकुर भावै ॥ (885-6)
जे को अपुनी सोभा लोरै ॥ (266-5)
जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥ (6-4)
जे को आपुना दूखु मिटावै ॥ (266-4)
जे को एक करै चंगिआई मनि चिति बहुतु बफावै ॥ (1328-6)
जे को ऐसा संजमी होइ ॥ (1169-8)
जे को ओस दी रीस करे सो मूड़ अजाणी ॥ (302-7)
जे को कथै त अंत न अंत ॥ (8-6)
जे को करे उस दी रीस सिरि छाई पाईआ ॥ (1250-18)
जे को करे कीतै किआ होइ ॥ (661-8)
जे को कहै करै वीचारु ॥ (3-12)
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ (3-5)
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ (8-1)
जे को खाइकु आखणि पाइ ॥ (5-14)

जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥ (1429-13)
जे को गुर ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥ (920-1)
जे को जनम मरण ते डरै ॥ (266-5)
जे को जीउ कहै ओना कउ जम की तलब न होई ॥४॥३॥ (1328-8)
जे को डूबै फिरि होवै सार ॥ (662-3)
जे को दरगह बहुता बोलै नाउ पवै बाजारी ॥ (359-16)
जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे ॥ (360-15)
जे को नाउ लए बदनावी कलि के लखण एई ॥३॥ (902-18)
जे को पावै तिल का मानु ॥ (4-14)
जे को पुछै ता पड़ि सुणाए ॥ (951-15)
जे को बचनु कमावै संतन का सो गुर परसादी तरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (747-16)
जे को बहुतु करे अहंकारु ॥ (868-10)
जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ (3-14)
जे को बूझै एहु बीचारु ॥४॥९॥ (351-12)
जे को बोलै सचु कूड़ा जलि जावई ॥ (646-11)
जे को भला लोड़ै भल अपना गुर आगै ढहि ढहि पावैगो ॥ (1310-2)
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥ (3-6)
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥ (3-8)
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥ (3-9)
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥ (3-11)
जे को मूं उपदेसु करतु है ता वणि त्रिणि रतड़ा नाराइणा ॥ (92-12)
जे को मूरखु आपहु जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥ (556-14)
जे को लाए भाउ पिआरा ॥ (361-2)
जे को वडा कहाइ वडाई खावै ॥ (1025-4)
जे को सतु करे सो छीजै तप घरि तपु न होई ॥ (902-18)
जे को सरु संधै जन ऊपरि फिरि उलटो तिसै लगावैगो ॥४॥ (1311-13)
जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥ (919-18)
जे को होइ बहै दातारु ॥ (282-15)
जे को होवै दुबला नंग भुख की पीर ॥ (70-9)
जे कोई उस का संगी होवै नाले लए सिधावै ॥ (373-8)
जे कोई निंद करे हरि जन की अपुना गुनु न गवावै ॥१॥ रहाउ ॥ (719-11)
जे कोऊ अपुनी ओट समारै ॥ (679-14)
जे क्रिपा करे मेरा हरि प्रभु करता तां सतिगुरु पारब्रहमु नदरी आवै ॥ (305-14)
जे गुण होनि त कटीअनि से भाई से वीर ॥ (595-9)
जे गुण होवनि ता पिरु रवै नानक अवगुण मुंध ॥१॥ (1088-7)
जे गुण होवन्हि साजना मिलि साझ करीजै ॥ (765-18)
जे गुण होवहि गंठड़ीऐ मेलेगा सोई ॥२॥ (729-10)

जे गुणवंती थी रहै ता भी सहु रावण जाइ ॥१॥ (557-9)
जे गुर की सरणी फिरि ओहु आवै ता पिछले अउगण बखसि लइआ ॥ (307-9)
जे गुरु झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई ॥२५॥ (758-7)
जे घटु जाइ त भाउ न जासी हरि के चरन निवासा ॥२॥ (793-3)
जे घरि आवै कंतु त सभु किछु पाईऐ ॥ (1361-17)
जे घरि घरि हंढै मंगदा धिगु जीवणु धिगु वेसु ॥ (550-15)
जे घरि होदै मंगणि जाईऐ फिरि ओलामा मिलै तही ॥८॥१॥ (903-5)
जे घरु बूझै आपणा तां नीद न होई ॥५॥ (418-11)
जे घरु राखहि बुरा न चाखहि होवहि कंत पिआरी ॥२॥ (1171-8)
जे चलदा लै चलिआ किछु स्मपै नाले ॥ (418-12)
जे चलहि गुण नालि नाही दुखु संतापणा ॥५॥ (752-3)
जे चुपै जे मंगिऐ दाति करे दातारु ॥ (1242-9)
जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥ (465-16)
जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥ (470-17)
जे जाणहि पिरु आपणा ता तनि दुख सहाहि ॥ (787-11)
जे जाणा बगु बपुड़ा जनमि न भेड़ी अंगु ॥१२३॥ (1384-12)
जे जाणा बगु बपुड़ा त जनमि न देदी अंगु ॥२॥ (585-15)
जे जाणा मरि जाईऐ घुमि न आईऐ ॥ (488-13)
जे जाणा लड़ु छिजणा पीडी पाईं गंढि ॥ (1378-3)
जे जाणा सहु नंढड़ा तां थोड़ा माणु करी ॥४॥ (1378-2)
जे जानत आपन आप बचै ॥ (277-7)
जे जीवै पति लथी जाइ ॥ (142-10)
जे जुग केते जाहि सुआमी तिन फल तोटि न आवै ॥ (438-14)
जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥ (2-13)
जे डेखै हिक वार ता सुख कीमा हू बाहरे ॥३॥ (1098-12)
जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कही दा ॥१३०॥ (1384-19)
जे तखति बैसालहि तउ दास तुम्हारे घासु बढावहि केतक बोला ॥ (1211-12)
जे तिन मिला त कीरति आखा ता मनु सेव करे ॥३॥ (877-12)
जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ (2-15)
जे तिसु भावै ऊजली सत सरि नावण जाउ ॥३॥ (17-14)
जे तिसु भावै दे वडिआई जे भावै देइ सजाइ ॥४॥ (417-8)
जे तिसु भावै नानका कागहु हंसु करे ॥१२४॥ (1384-13)
जे तुधु भावै साहिबा तू मै हउ तैडा ॥१॥ (418-17)
जे तुधु वलि रहै ता कोई किहु आखउ तुधु विसरिऐ मरि जाई ॥१०॥ (757-16)
जे तूं तारू पाणि ताहू पुछु तिड़ंन्ह कल ॥ (1410-9)
जे तूं पड़िआ पंडितु बीना दुइ अखर दुइ नावा ॥ (1171-8)
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥४२॥ (1380-2)

जे तू किसै न देही मेरे साहिबा किआ को कढै गहणा ॥ (660-13)
जे तू तुठा क्रिपा निधान ना दूजा वेखालि ॥ (761-9)
जे तू देहि त हरि रसु गाई मनु त्रिपतै हरि लिव लागा ॥४॥ (598-16)
जे तू मित्रु असाडड़ा हिक भोरी ना वेछोड़ि ॥ (1094-14)
जे तू मीर महीपति साहिबु कुदरति कउण हमारी ॥ (1191-4)
जे तू वतहि अंङणे हभ धरति सुहावी होइ ॥ (1095-3)
जे तू साहिब आवहि रोहि ॥ (25-2)
जे तै रबु विसारिआ त रबि न विसरिओहि ॥१०७॥ (1383-15)
जे दरि मांगतु कूक करे महली खसमु सुणे ॥ (349-12)
जे दूजे पासहु मंगीऐ ता लाज मराईऐ ॥ (590-4)
जे देहि वडिआई ता तेरी वडिआई इत उत तुझहि धिआउ ॥ (382-12)
जे देहै दुखु लाईऐ पाप गरह दुइ राहु ॥ (142-3)
जे धन कंति न भावई त सभि अड्मबर कूड़ु ॥४॥ (19-5)
जे धन खसमै चलै रजाई ॥ (85-7)
जे धरती सभ कंचनु करि दीजै बिनु नावै अवरु न भाइआ राम ॥ (444-3)
जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ करता करै सु होई ॥१॥ रहाउ ॥ (488-2)
जे पासि बहालहि ता तुझहि अराधी जे मारि कढहि भी धिआई ॥८॥ (757-15)
जे पिर भावै नानका करम मणी सभु सचु ॥१॥ (642-13)
जे पूरबि होवै लिखिआ ता अम्रितु सहजि पीएउ ॥३॥ (758-17)
जे प्रभ भावै ता महलि बुलावै ॥ (839-14)
जे फिरि मिठा पेड़ै पाइ ॥ (1243-11)
जे बदी करे ता तसू न छीजै ॥ (662-4)
जे बहुता समझाईऐ भोला भी सो अंधो अंधा ॥१॥ रहाउ ॥ (358-3)
जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई ॥२॥ (24-9)
जे बहुतेरा लोचीऐ बाती मेलु न होई ॥७॥ (725-7)
जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ॥ (950-8)
जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमै न पाइआ जाइ ॥ (516-2)
जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥ (450-16)
जे बाहुड़ि दुनीआ आईऐ ॥२॥ (989-13)
जे भावै पारब्रहम निथावे मिलै थाउ ॥ (964-14)
जे भुख देहि त इत ही राजा दुख विचि सूख मनाई ॥३॥ (757-12)
जे भुली जे चुकी साईं भी तहिंजी काढीआ ॥ (761-7)
जे मन जाणहि सूलीआ काहे मिठा खाहि ॥३॥ (595-8)
जे मनि चिति आस रखहि हरि ऊपरि ता मन चिंदे अनेक अनेक फल पाई ॥ (859-4)
जे मनु मिरतकु होइ वणाह्मबै ॥५॥ (1104-17)
जे मनु सतिगुर दे मिलै किनि कीमति पाई ॥७॥ (420-12)
जे मनु हरि सिउ बैरागीऐ भाई दरि घरि साचु अभूलु ॥३॥ (637-2)

जे मिरतक कउ चंदनु चड़ावै ॥ (1160-9)
जे मिरतक कउ बिसटा माहि रुलाई ॥ (1160-9)
जे मेलण नो बहुतेरा लोचीऐ न देई मिलण करतारे ॥ (307-13)
जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥ (472-7)
जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥ (140-9)
जे राचै सच रंगि गूड़ै रंगि अपार कै ॥ (1088-18)
जे राजि बहाले ता हरि गुलामु घासी कउ हरि नामु कढाई ॥ (166-5)
जे लख इसतरीआ भोग करहि नव खंड राजु कमाहि ॥ (26-16)
जे लख करम कमाईअहि किछु पवै न बंधा ॥ (396-16)
जे लख करम कमावही बिनु गुर अंधिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ (229-2)
जे लोकु सलाहे ता तेरी उपमा जे निंदै त छोडि न जाई ॥९॥ (757-16)
जे लोचै सभु कोइ वणाह्मबै ॥६॥ (1104-18)
जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ ॥ (465-16)
जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीऐ पिर कूरि ॥ (17-10)
जे लोड़हि वरु कामणी सतिगुरु सेवहि तेहि ॥ (935-11)
जे लोड़हि वरु बालड़ीए ता गुर चरणी चितु लाए राम ॥ (771-10)
जे लोड़हि सदा सुखु भाई ॥ (1182-8)
जे वड भाग होवहि ता जपीऐ हरि भउजलु पारि उतारे ॥३॥ (882-12)
जे वड भाग होवहि मुखि मसतकि हरि राम जना भेटाइ ॥ (881-2)
जे वड भाग होवहि वड ऊचे ॥ (367-13)
जे वड भाग होवहि वड मेरे जन मिलदिआ ढिल न लाईऐ ॥ (881-13)
जे वड भाग होवहि वडभागी ता हरि हरि नामु धिआवै ॥ (880-12)
जे वड भागु होइ अति नीका तां गुरमति नामु द्रिड़ीजै ॥ (1326-16)
जे वडिआईआ आपे खाइ ॥ (662-8)
जे वेला वखतु वीचारीऐ ता कितु वेला भगति होइ ॥ (35-4)
जे सउ अम्रितु नीरीऐ भी बिखु फलु लागै धाइ ॥४॥ (65-15)
जे सउ कूड़ीआ कूड़ु कबाड़ु ॥ (662-8)
जे सउ खेल खेलाईऐ बालकु रहि न सकै बिनु खीरे ॥ (564-4)
जे सउ घाले थाइ न पाए ॥३॥ (364-11)
जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥ (463-1)
जे सउ धावहि प्राणीआ पावहि धुरि लहणा ॥ (1102-7)
जे सउ धोवहि ता मैलु न जाई ॥ (1045-11)
जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥ (282-12)
जे सउ लोचि लोचि खावाइआ ॥ (1136-17)
जे सउ लोचै रंगु न होवै कोइ ॥३॥ (733-1)
जे सउ वर्हिआ जीवण खाणु ॥ (349-19)
जे सउ वर्हिआ जीवणा भी तनु होसी खेह ॥४१॥ (1380-1)

जे सउ वर्हिआ मिठा खाजै भी फिरि कउड़ा खाइ ॥ (1243-6)
जे सउ वेर कमाईऐ कूड़ै कूड़ा जोरु ॥१॥ रहाउ ॥ (17-5)
जे सउ साइर मेलीअहि तिलु न पुजावहि रोइ ॥ (53-11)
जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥१॥ रहाउ ॥ (360-13)
जे सचु देइ त पाए कोई ॥ (1062-7)
जे सबदु बुझै ता सचु निहाला ॥ (412-11)
जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ (349-9)
जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ (9-18)
जे सभि साकत करहि बखीली इक रती तिलु न घटाई ॥५॥ (1191-16)
जे सांई लोड़हि सभु ॥ (1378-14)
जे साकतु नरु खावाईऐ लोचीऐ बिखु कढै मुखि उगलारे ॥ (312-10)
जे साथि रखीऐ दीजै रलाइ ॥ (662-7)
जे सुइने नो ओहु हथु पाए ता खेहू सेती रलि गइआ ॥ (307-8)
जे सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई ॥२॥ (757-11)
जे सो धणी मिलंनि नानक सुख स्मबूह सचु ॥१॥ (520-19)
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥ (2-9)
जे हउमै विचहु जाइ त केही गणत गणी ॥ (1283-9)
जे हरि छोडउ तउ कुलि लागै गालि ॥३॥ (1154-7)
जे हरि तिआगि अवर की आस कीजै ता हरि निहफल सभ घाल गवासा ॥ (860-4)
जे हरि सुप्रसंनु होवै मेरा सुआमी हरि सिमरत मलु लहि जावै जीउ ॥३॥ (998-3)
जे हरि हरि कीचै बहुतु लोचीऐ किरतु न मेटिआ जाइ ॥ (65-13)
जे होइ भूला जाइ कहीऐ आपि करता किउ भुलै ॥ (766-4)
जे होवी पूरबि लिखिआ ता गुर का बचनु कमाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (43-10)
जे होवै नदरि सराफ की बहुड़ि न पाई ताउ ॥ (146-12)
जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्हा दी पाईऐ ॥ (468-15)
जे होवै भागु ता दरसनु पाईऐ ॥ (1348-12)
जेजीआ डंनु को लए न जगाति ॥ (430-17)
जेत कीन उपारजना प्रभु दानु देइ दातार ॥१॥ (988-3)
जेता आखणु साही सबदी भाखिआ भाइ सुभाई ॥ (1242-7)
जेता ऊडहि दुख घणे नित दाझहि तै बिललाहि ॥ (66-4)
जेता करन करावन तेता सभि बंधन जंजाल ॥१॥ रहाउ ॥ (1222-5)
जेता कीता तेता नाउ ॥ (4-9)
जेता जीउ पिंडु सभु तेरा तूं अंतरजामी पुरखु भगवानु ॥ (734-17)
जेता देहि तेता हउ खाउ ॥ (25-9)
जेता पेखनु तेता धिआनु ॥२॥ (236-17)
जेता बोलणु तेता गिआनै ॥ (236-16)
जेता मोहु परीति सुआद ॥ (662-1)

जेता मोहु हउमै करि भूले मेरी मेरी करते छीनि खरे ॥ (1014-4)
जेता सबदु सुरति धुनि तेती जेता रूपु काइआ तेरी ॥ (350-4)
जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे ॥ (156-14)
जेता सुनणा तेता नामु ॥ (236-16)
जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥ (272-7)
जेती प्रभू जनाई रसना तेत भनी ॥ (456-4)
जेती समग्री देखहु रे नर तेती ही छडि जानी ॥ (614-8)
जेती सिआनप करम हउ कीए तेते बंध परे ॥ (214-15)
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥ (2-11)
जेती स्रिसटि करी जगदीसरि ते सभि ऊच हम नीच बिखिआस ॥ (1295-8)
जेती है तेती किहु नाही ॥ (226-19)
जेती है तेती तुझ ही ते तुम्ह सरि अवरु न कोई ॥२॥ (1273-18)
जेती है तेती तुधु अंदरि ॥ (1034-8)
जेती है तेती तुधु जाचै करमि मिलै सो पाइदा ॥१३॥ (1034-5)
जेती है तेती तुधु जाचै तू सरब जीआं दइआला ॥ (1274-5)
जेते खंड ब्रहमंड उधारे तिंन्ह खे ॥ (397-19)
जेते घट अम्रितु सभ ही महि भावै तिसहि पीआई ॥२॥ (1123-15)
जेते जतन करत ते डूबे भव सागरु नही तारिओ रे ॥ (335-12)
जेते जीअ जंत जलि थलि महीअलि जत्र कत्र तू सरब जीआ ॥ (1127-16)
जेते जीअ जंत प्रभि कीए सभि कालै मुखि ग्रसिआ ॥ (1319-15)
जेते जीअ जीवहि लै साहा जीवाले ता कि असाह ॥ (144-12)
जेते जीअ तेते डहकाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1160-13)
जेते जीअ तेते वणजारे ॥ (789-14)
जेते जीअ तेते वाटाऊ ॥ (952-3)
जेते जीअ तेते सभि तेरे ॥ (193-2)
जेते जीअ तेते सभि तेरे विणु सेवा फलु किसै नाही ॥ (354-18)
जेते जीअ फिरहि अउधूती आपे भिखिआ पावै ॥ (1238-5)
जेते जीअ लिखी सिरि कार ॥ (1169-3)
जेते थान थनंतरा तेते भवि आइआ ॥ (42-17)
जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ ॥ (472-14)
जेते पुनहचरन से कीन्हे मनि तनि प्रभ के चरण गहे ॥ (824-18)
जेते माइआ रंग तेत पछाविआ ॥ (398-15)
जेते माइआ रंग रस बिनसि जाहि खिन माहि ॥ (431-5)
जेते रस सरीर के तेते लगहि दुख ॥२॥ (1287-14)
जेते रे तीरथ नाए अहम्बुधि मैलु लाए घर को ठाकुरु इकु तिलु न मानै ॥ (687-3)
जेते सास ग्रास मनु लेता तेते ही गुन गाईऐ ॥ (213-4)
जेते सास सास हम लेते तेते ही गुण गाइआ ॥ (1212-10)

जेन कला धारिओ आकासं बैसंतरं कासट बेसटं ॥ (1358-19)
जेन कला मात गरभ प्रतिपालं नह छेदंत जठर रोगणह ॥ (1359-1)
जेन कला ससि सूर नख्यत्र जोत्यिं सासं सरीर धारणं ॥ (1358-19)
जेन केन परकारे हरि हरि जसु सुनहु स्रवन ॥ (458-7)
जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥ (5-10)
जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ (349-10)
जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ (9-19)
जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ (6-3)
जेवडु साहिबु तेवड दाती दे दे करे रजाई ॥ (147-4)
जेवेहे करम कमावदा तेवेहे फलते ॥ (317-5)
जेह रसन चाखिओ तेह जन त्रिपति अघाए ॥ (1386-10)
जेह हीऐ अह्मबुधि बिकारा ॥ (260-4)
जेहा अंदरि पाए तेहा वरतै आपे बाहरि पावणिआ ॥७॥ (118-10)
जेहा आइआ तेहा जासी करि अवगण पछोतावणिआ ॥२॥ (114-8)
जेहा कराए तेहा करी सीगारु ॥१॥ (1128-13)
जेहा कीतोनु तेहा होआ जेहे करम कमाइ ॥३॥ (33-5)
जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥ (469-18)
जेहा चीरी लिखिआ तेहा हुकमु कमाहि ॥ (1239-9)
जेहा जाणै तेहो वरतै जे सउ आखै कोइ ॥ (954-17)
जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥ (474-12)
जेहा डिठा मै तेहो कहिआ ॥ (97-14)
जेहा तूं हुकमु करहि तेहे को करम कमावै जेहा तुधु धुरि लिखि पाइआ ॥२॥ (736-6)
जेहा धुरि लिखि पाइओनु से करम कमिता ॥५॥ (787-7)
जेहा निंदक अपणै जीइ कमावदे तेहो फलु पाई ॥ (316-7)
जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥ (134-18)
जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥ (134-7)
जेहा मनोरथु करि आराधे सो संतन ते पावै ॥३॥ (748-6)
जेहा राधे तेहा लुणै बिनु गुण जनमु विणासु ॥१॥ (56-13)
जेहा लिखिआ तेहा पाइआ जेहा पुरबि कमाइआ ॥ (579-2)
जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥१॥ (466-16)
जेहा सतगुरु करि जाणिआ तेहो जेहा सुखु होइ ॥ (30-18)
जेहा सतिगुर नो जाणै तेहो होवै ता सचि नामि लिव लागै ॥ (590-10)
जेहा सेवै तेहो होवै जे चलै तिसै रजाइ ॥ (549-11)
जेही तूं नदरि करहि तेहा को होवै बिनु नदरी नाही को भेखु ॥३॥ (735-12)
जेही तूं मति देहि तेही को पावै ॥ (351-10)
जेही धातु तेहा तिन नाउ ॥ (25-14)
जेही मति देहि सो होवै तू आपे सबदि बुझाइदा ॥६॥ (1061-2)

जेही मनसा करि लागै तेहा फलु पाए ॥ (116-6)
जेही रुति काइआ सुखु तेहा तेहो जेही देही ॥ (1254-8)
जेही वासना पाए तेही वरतै वासू वासु जणावणिआ ॥५॥ (118-7)
जेही सुरति तेहा तिन राहु ॥ (25-1)
जेही सुरति तेहै राहि जाइ ॥३॥ (662-8)
जेही सेव कराईऐ करणी भी साई ॥ (421-1)
जेहे करम कमाइ तेहा होइसी ॥ (730-3)
जेहे करम कमावदे तेवेहो भणीऐ ॥ (316-10)
जेहे करम कराए करता दूजी कार न भाले ॥ (581-9)
जै कारणि तटि तीरथ जाही ॥ (152-5)
जै कारणि बेद ब्रहमै उचरे संकरि छोडी माइआ ॥ (1328-3)
जै कारणि सिध भए उदासी देवी मरमु न पाइआ ॥१॥ (1328-3)
जै घरि करते कीरति होइ ॥ (357-16)
जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ (12-11)
जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ (157-9)
जै जगदीस की गति नही जाणी ॥३॥ (744-1)
जै जगदीस तेरा जसु जाचउ मै हरि बिनु रहनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1232-6)
जै जगदीस परम गति सरणा ॥ (413-8)
जै जगदीस प्रभू रखवारे राखै परखै सोई ॥ (1273-18)
जै जै कार भए जग भीतरि होआ पारब्रहमु रखवाला ॥२॥१५॥४३॥ (619-16)
जै जै कारु करहि तुधु भावहि गुर कै सबदि अमुलए ॥ (767-12)
जै जै कारु करे सभु कोई ॥ (629-15)
जै जै कारु करै सभ उसतति संगति साध पिआरी ॥ (615-14)
जै जै कारु करै सभु लोगु ॥२॥ (869-11)
जै जै कारु कीनो सभ जग महि दइआ जीअन महि पाइओ ॥ (1270-2)
जै जै कारु गुसाई ॥ (625-12)
जै जै कारु जगत महि सफल जा की सेव ॥१॥ (819-1)
जै जै कारु जगति प्रगटीना ॥२॥ (804-17)
जै जै कारु जगत्र महि लोचहि सभि जीआ ॥ (808-1)
जै जै कारु जगु गावै ॥ (623-5)
जै जै कारु जपउ जगदीस ॥ (933-3)
जै जै कारु जपहु जगदीसै ॥ (1072-8)
जै जै कारु जासु जग अंदरि मंदरि भागु जुगति सिव रहता ॥ (1407-14)
जै जै कारु भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे ॥ (783-17)
जै जै कारु सगल भू मंडल मुख ऊजल दरबार ॥३॥ (678-5)
जै जै कारु सभै करहि सचु थानु सुहाइआ ॥ (817-3)
जै जै कारु होआ जग अंतरि पारब्रहमु मेरो तारण तरण ॥१॥ रहाउ ॥ (827-10)

जै जै कारु होतु जग भीतरि सबदु गुरू रसु चाखै ॥१॥ (630-9)
जै जै जइअ्मपहि सगल जा कउ करुणापति गति किनि लखहु ॥ (847-10)
जै जै धरमु करे दूत भए पलाइण ॥ (460-17)
जै जै पहि कहउ ब्रिथा हउ अपुनी तेऊ तेऊ गहे रहे अटकाइ ॥ (1302-10)
जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥ (295-11)
जै डिठे मनु धीरीऐ किलविख वंञन्हि दूरे ॥ (761-13)
जै तनि बाणी विसरि जाइ ॥ (661-18)
जै बखसे तै पूरा काजु ॥१॥ रहाउ ॥ (1327-5)
जै भावै पिआरा तै रावेसी ॥८॥१॥ (750-19)
जै सिउ राता तैसो होवै ॥ (411-14)
जैकारु कीओ धरमीआ का पापी कउ डंडु दीओइ ॥१६॥ (89-17)
जैजावंती महला ९ ॥ (1352-11)
जैजावंती महला ९ ॥ (1352-14)
जैजावंती महला ९ ॥ (1352-7)
जैतसरी छंत मः ५ ॥ (705-5)
जैतसरी बाणी भगता की (710-14)
जैतसरी मः ४ ॥ (697-1)
जैतसरी मः ४ ॥ (698-16)
जैतसरी मः ४ ॥ (699-3)
जैतसरी मः ५ ॥ (700-12)
जैतसरी महला ४ ॥ (696-9)
जैतसरी महला ४ ॥ (697-15)
जैतसरी महला ४ ॥ (697-8)
जैतसरी महला ४ ॥ (698-2)
जैतसरी महला ४ ॥ (699-14)
जैतसरी महला ४ ॥ (699-8)
जैतसरी महला ४ घरु १ चउपदे (696-1)
जैतसरी महला ४ घरु २ (698-10)
जैतसरी महला ५ ॥ (700-15)
जैतसरी महला ५ ॥ (701-12)
जैतसरी महला ५ ॥ (701-16)
जैतसरी महला ५ ॥ (701-5)
जैतसरी महला ५ ॥ (701-9)
जैतसरी महला ५ ॥ (702-13)
जैतसरी महला ५ ॥ (702-2)
जैतसरी महला ५ ॥ (702-5)
जैतसरी महला ५ ॥ (702-9)

जैतसरी महला ५ घरु २ छंत (704-7)
जैतसरी महला ५ घरु ३ (700-1)
जैतसरी महला ५ घरु ३ दुपदे (700-8)
जैतसरी महला ५ घरु ४ दुपदे (701-1)
जैतसरी महला ५ छंत घरु १ (703-11)
जैतसरी महला ५ वार सलोका नालि (705-18)
जैतसरी महला ९ (702-17)
जैतसरी महला ९ ॥ (703-2)
जैतसरी महला ९ ॥ (703-7)
जैदेउ नामा बिप सुदामा तिन कउ क्रिपा भई है अपार ॥ (856-18)
जैदेव आइउ तस सफुटं भव भूत सरब गतं ॥५॥१॥ (526-19)
जैदेव तिआगिओ अहमेव ॥ (1192-10)
जैन मारग संजम अति साधन ॥ (265-14)
जैसा करमु तैसी लिव लावै ॥ (1342-6)
जैसा करे तैसा को थीआ ॥ (280-19)
जैसा करे सु तैसा पाए ॥ (869-17)
जैसा करे सु तैसा पावै ॥ (662-7)
जैसा करै कहावै तैसा ऐसी बनी जरूरति ॥ (1245-6)
जैसा कीचै तैसो पाईऐ ॥ (1028-6)
जैसा घरि बाहरि सो तैसा ॥ (221-15)
जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥ (284-7)
जैसा तूं करहि तैसा को होइ ॥ (351-10)
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥३॥१॥ (858-7)
जैसा बालकु भाइ सुभाई लख अपराध कमावै ॥ (624-16)
जैसा बितु तैसा होइ वरतै अपुना बलु नही हारै ॥१॥ रहाउ ॥ (679-14)
जैसा बीजहि तैसा खासा ॥३॥ (176-9)
जैसा बीजे सो लुणै जेहा पुरबि किनै बोइआ ॥ (309-14)
जैसा बीजै तैसा खावै ॥ (366-9)
जैसा बीजै सो लुणे जो खटे सो खाइ ॥ (730-7)
जैसा बीजै सो लुणै करम इहु खेतु ॥ (706-17)
जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥ (280-16)
जैसा भेखु करावै बाजीगरु ओहु तैसो ही साजु आनै ॥३॥ (206-8)
जैसा मगहरु तैसी कासी हम एकै करि जानी ॥ (969-14)
जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥१॥ रहाउ ॥ (657-18)
जैसा रंगु कसुमभ का तैसा इहु संसारु ॥ (346-2)
जैसा रंगु कसुमभ का मन बउरा रे तिउ पसरिओ पासारु ॥३॥ (336-3)
जैसा रंगु देहि सो होवै किआ नानक जंत विचारे ॥८॥३॥ (982-4)

जैसा लिखतु लिखिआ धुरि करतै हम तैसी किरति कमाई ॥२॥ (882-18)
जैसा लिखिआ तैसा पड़िआ मेटि न सकै कोई ॥२॥ (359-15)
जैसा वरतै तैसो कहीऐ सभ तेरी वडिआई ॥३॥ (350-6)
जैसा संगु बिसीअर सिउ है रे तैसो ही इहु पर ग्रिहु ॥२॥ (403-7)
जैसा सतिगुरु सुणीदा तैसो ही मै डीठु ॥ (957-2)
जैसा सा तैसा दिखलाइआ ॥ (887-3)
जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ ॥ (281-16)
जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥ (282-7)
जैसा सुपना रैनि का तैसा संसार ॥ (808-6)
जैसा सेवै तैसो होइ ॥४॥ (223-19)
जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥ (921-2)
जैसी आगिआ कीनी ठाकुरि तिस ते मुखु नही मोरिओ ॥ (1000-3)
जैसी आगिआ तैसा करमु ॥ (294-1)
जैसी आसा तैसी मनसा पूरि रहिआ भरपूरे ॥ (763-14)
जैसी करी प्रभ मो सिउ मो सिउ ऐसी हउ कैसे करउ ॥ (1305-11)
जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पासि ॥ (74-18)
जैसी गगनि फिरंती ऊडती कपरे बागे वाली ॥ (168-4)
जैसी चात्रिक पिआस खिनु खिनु बूंद चवै बरसु सुहावे मेहु ॥ (455-1)
जैसी तरुणि भतार उरझी पिरहि सिवै इहु मनु लाल दीजै ॥ (455-8)
जैसी दासे धीर मीर ॥ (1181-13)
जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ ॥ (279-4)
जैसी धरती ऊपरिमेघुला बरसतु है किआ धरती मधे पाणी नाही ॥ (162-6)
जैसी नदरि करि देखै सचा तैसा ही को होइ ॥ (66-13)
जैसी नदरि करे तैसा होइ ॥ (661-9)
जैसी पर पुरखा रत नारी ॥ (1164-14)
जैसी पिआस होइ मन अंतरि तैसो जलु देवहि परकार ॥६॥ (504-4)
जैसी प्रीति बारिक अरु माता ॥ (1164-17)
जैसी भूख तैसी का पूरकु सगल घटा का सुआमी ॥ (613-9)
जैसी भूख होइ अभ अंतरि तूं समरथु सचु देवणहार ॥१॥ (503-16)
जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥ (1164-13)
जैसी मछुली नीर इकु खिनु भी ना धीरे मन ऐसा नेहु करेहु ॥ (454-19)
जैसी मति देइ तैसा परगास ॥ (275-9)
जैसी मति देवहु हरि सुआमी हम तैसे बुलग बुलागी ॥२॥ (667-5)
जैसी मनसा तैसी दसा ॥ (1342-6)
जैसी मूड़ कुटम्मब पराइण ॥ (1164-13)
जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥ (722-16)
जैसी राखी लाज भगत प्रहिलाद की हरनाखस फारे कर आज ॥ (1400-9)

जैसे अपने धनहि प्रानी मरनु मांडै ॥ (1195-19)
जैसे अलि कमला बिनु रहि न सकै तैसे मोहि हरि बिनु रहनु न जाई ॥१॥ (369-18)
जैसे अ्मभ कुंड करि राखिओ परत सिंधु गलि जाहा ॥ (402-3)
जैसे कनिक कला चितु मांडीअले ॥१॥ रहाउ ॥ (972-14)
जैसे कागद के भार मूसा टूकि गवावत कामि नही गावारी ॥ रहाउ ॥ (681-7)
जैसे काती तीस बतीस है विचि राखै रसना मास रतु केरी ॥ (168-6)
जैसे किरखहि बरस मेघ ॥ (987-2)
जैसे किरसाणु बोवै किरसानी ॥ (375-17)
जैसे कुरंक नही पाइओ भेदु ॥ (1196-11)
जैसे कुमभ उदक पूरि आनिओ तब ओहु भिंन द्रिसटो ॥ (1203-10)
जैसे गाइ का बाछा छूटला ॥ (874-2)
जैसे गूंगे की मिठिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (659-17)
जैसे गोइलि गोइली तैसे संसारा ॥ (418-7)
जैसे जननि जठर महि प्रानी ओहु रहता नाम अधारि ॥ (379-11)
जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥ (1427-16)
जैसे जल महि कमल अलेप ॥ (272-11)
जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥ (938-15)
जैसे तरवर की तुछ छाइआ खिन महि बिनसि जाइ देह भीति ॥१॥ (1295-18)
जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (659-4)
जैसे तरवरि पंखि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (973-7)
जैसे तापते निरमल घामा ॥ (874-4)
जैसे तुम तैसे प्रभ तुम ही गुन जानहु प्रभ अपुने ॥२॥ (976-16)
जैसे दरपन माहि बदन परवानी ॥१॥ रहाउ ॥ (1318-17)
जैसे दह दिस पवनु झुलाइआ ॥३॥ (1137-1)
जैसे धर ऊपरि आकासु ॥ (272-16)
जैसे धरती मधे पाणी परगासिआ बिनु पगा वरसत फिराही ॥१॥ (162-6)
जैसे धरती साधै बहु बिधि बिनु बीजै नही जांमै ॥ (1205-18)
जैसे पनकत थ्रूटिटि हांकती ॥ (1196-5)
जैसे पवनु झुलाइआ ॥१॥ (746-13)
जैसे पवनु बंध करि राखिओ बूझ न आवत जावत ॥ (1205-6)
जैसे पसु तैसे ओइ नरा ॥२॥ (1163-15)
जैसे पसु हर्हिआउ तैसा संसारु सभ ॥ (397-11)
जैसे पालन सरनि सेंघ ॥२॥ (987-2)
जैसे पाहनु जल महि राखिओ भेदै नाहि तिह पानी ॥ (831-5)
जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ ॥३॥२॥ (858-11)
जैसे बचरहि कूंज मन माइआ ममता रे ॥१२३॥ (1371-1)
जैसे बसतर देह ओढाने दिन दोइ चारि भोराहा ॥ (402-2)

जैसे बाजे बिनु नही लीजै फेरी ॥ (872-13)
जैसे बारिक मुखहि खीर ॥१॥ (987-1)
जैसे बिखै हेत पर नारी ॥ (874-4)
जैसे भादउ खूमबराजु तू तिस ते खरी उतावली ॥१॥ रहाउ ॥ (1196-10)
जैसे भूखे भोजन मात ॥ (987-2)
जैसे मंदर महि बलहर ना ठाहरै ॥ (872-8)
जैसे महलि राखै तैसै रहना किआ इहु करै बिचारा ॥४॥ (206-10)
जैसे माइआ मोहि प्राणी गलतु रहै ॥ (1170-15)
जैसे मात पिता बिनु बालु न होई ॥ (872-11)
जैसे मीठै सादि लोभाए झूठ धंधि दुरगाधे ॥२॥ (403-1)
जैसे मीनु पानी महि रहै ॥ (1252-9)
जैसे मीनु रसन सादि बिनसिओ ओहु मूठौ मूड़ लोभाइले ॥ (862-11)
जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥२॥ (484-16)
जैसे मैलु न लागै जला ॥ (272-15)
जैसे रण महि सखा भ्रात ॥ (987-1)
जैसे रसना सादि लुभानी तिउ हरि जन हरि गुण गावहि ॥३॥ (613-8)
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥ (272-13)
जैसे राम नाम रवि रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (870-3)
जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहि परभाति ॥ (50-12)
जैसे सकति सूरु बहु जलता गुर ससि देखे लहि जाइ सभ तपना ॥१॥ (860-15)
जैसे सच महि रहउ रजाई ॥१॥ रहाउ ॥ (795-5)
जैसे स्मिबलु देखि सूआ बिगसाना ॥ (1165-1)
जैसे सीगारु करै देह मानुख नाम बिना नकटे नक कीक ॥३॥ (1336-5)
जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥४४॥ (1428-16)
जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥ (272-12)
जैसे हंसु सरवर बिनु रहि न सकै तैसे हरि जनु किउ रहै हरि सेवा बिनु ॥१॥ (369-13)
जैसे हरहट की माला टिंड लगत है इक सखनी होर फेर भरीअत है ॥ (1329-12)
जैसे हलहर बिना जिमी नही बोईऐ ॥ (872-10)
जैसो आंडो हिरदे माहि ॥ (987-3)
जैसो गुरि उपदेसिआ मै तैसो कहिआ पुकारि ॥ (214-10)
जैसो दानो चकी दराहि ॥३॥ (987-3)
जैसो सा तैसो द्रिसटारी ॥३॥ (1299-5)
जैहहि आटा लोन जिउ सोन समानि सरीरु ॥११७॥ (1370-14)
जो अंतरि सो बाहरि देखहु अवरु न दूजा कोई जीउ ॥ (599-1)
जो अनदिनु हिरदै नामु धिआवहि सभु जनमु तिना का सफलु भइआ ॥ (1264-18)
जो अनरूपिओ ठाकुरि मेरै होइ रही उह बात ॥१॥ रहाउ ॥ (496-11)
जो अनिंदु निंदु करि छोडिओ सोई फिरि फिरि खात ॥३॥ (496-13)

जो असमानि न मावनी तिन नकि नथा पाइ ॥ (595-7)
जो आंजै सो दीसै कालि ॥ (831-14)
जो आइआ सो चलसी अमरु सु गुरु करतारु ॥ (63-13)
जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥ (474-2)
जो आइआ सो सभु को जासी ॥ (1047-2)
जो आइआ सो सभु को जासी उबरे गुर वीचारे ॥ (246-2)
जो आवत सरणि ठाकुर प्रभु तुमरी तिसु राखहु किरपा धारि ॥ (528-2)
जो आवहि से जाहि फुनि आइ गए पछुताहि ॥ (936-3)
जो इछनि सो पाइदे हरि नामु धिआवै ॥ (1091-5)
जो इछहि सो फलु पाइसी गुर सबदी लगै धिआनु ॥ (1313-14)
जो इछहि सोई फलु पावहि गुरबाणी सुखु पाए ॥४॥२॥१२॥ (1130-16)
जो इछहि सोई फलु पावहि फिरि दूखु न लागै आइ ॥१॥ रहाउ ॥ (720-11)
जो इछहि सोई फलु पावहि बिरथी आस न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (628-8)
जो इछहु सोई फलु पावहु ॥ (1028-10)
जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि दूखु न विआपै कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (882-17)
जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि भूख न लागै आइ ॥२॥ (368-15)
जो इछहु सोई फलु पावहु हरि बोलहु गुरमति बैनी ॥१॥ रहाउ ॥ (800-6)
जो इछी सो फलु पाइदा गुरि अंदरि वाड़ा ॥ (1098-1)
जो इछे सोई फलु पाए जिउ रंगु मजीठै राता हे ॥९॥ (1051-16)
जो इछै सो फलु पाइसी पुतु धनु लखमी खड़ि मेले हरि निसतारे ॥ (307-17)
जो इछै सो फलु पाइसी सभि घरै विचि जचनी ॥१८॥ (791-13)
जो इछै सोई फलु पाए ॥ (1148-15)
जो इछै सोई फलु पाए ॥ (661-15)
जो इछै सोई फलु पावै ॥ (272-3)
जो इतु लाहै लाइअनु भगती देइ भंडार ॥३॥ (428-13)
जो इव बूझै सु सहजि समाणा ॥३॥ (1349-10)
जो इसु मारे तिस कउ भउ नाहि ॥ (238-1)
जो इसु मारे तिस का आइआ गनी ॥ (238-3)
जो इसु मारे तिस का दुखु जाई ॥१॥ (237-18)
जो इसु मारे तिस की त्रिसना बुझै ॥ (238-1)
जो इसु मारे तिस की निरमल जुगता ॥ (238-5)
जो इसु मारे तिसहि वडिआई ॥ (237-18)
जो इसु मारे तिसु होवै गती ॥३॥ (238-3)
जो इसु मारे सु अनदिनु जागा ॥४॥ (238-4)
जो इसु मारे सु जीवन मुकता ॥ (238-4)
जो इसु मारे सु दरगह सिझै ॥२॥ (238-2)
जो इसु मारे सु नामि समाहि ॥ (238-1)

जो इसु मारे सु निहचलु धनी ॥ (238-3)
जो इसु मारे सु सहज धिआनी ॥५॥ (238-5)
जो इसु मारे सो धनवंता ॥ (238-2)
जो इसु मारे सो पतिवंता ॥ (238-2)
जो इसु मारे सो वडभागा ॥ (238-4)
जो इसु मारे सोई जती ॥ (238-2)
जो इसु मारे सोई पूरा ॥ (237-18)
जो इसु मारे सोई सुगिआनी ॥ (238-5)
जो इसु मारे सोई सूरा ॥ (237-17)
जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ॥ (885-17)
जो इहु मंत्रु कमावै नानक सो भउजलु पारि उतारी ॥३॥२८॥ (377-19)
जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥ (1429-4)
जो उपजै सो अलख अभेवहु ॥३॥ (356-12)
जो उपजै सो आवै जाइ ॥ (352-4)
जो उपजै सो कालि संघारिआ ॥ (227-3)
जो उपजै सो बिनसि है दुखु करि रोवै बलाइ ॥२॥ (337-17)
जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै ॥१॥ (1231-16)
जो उपदेसु सुणे गुर केरा सो जनु पावै हरि सुख घणे ॥२॥ (1135-16)
जो उपाइओ तिसु तेरी आस ॥ (894-14)
जो उबरे से बंधि लकु खरे ॥ (178-11)
जो उसारे सो ढाहसी तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (934-1)
जो उसु पूजे सो फलु पाए दीखिआ देवै साचु बुझाए ॥२॥ (491-10)
जो एक छाडि अन कतहि न जाहू ॥ (251-2)
जो ओसु इछे सो फलु पाए तां नानक कहीऐ मूरति ॥२॥ (1245-7)
जो कछु करी सु तेरै हदूरि ॥ (25-8)
जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥ (283-2)
जो कछु कीनो सोऊ अनेता ॥ (253-11)
जो कमावनु सोई भोग ॥ (888-11)
जो करि पाइआ सोई होगु ॥ (284-1)
जो करै सो दुखीआ होइ ॥ (869-14)
जो कहीऐ सो प्रभ ते होई ॥ (905-14)
जो काहू को चेरो होवत ठाकुर ही पहि जावै ॥१॥ रहाउ ॥ (1215-12)
जो किछु अहै सभ तेरी रजाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1125-5)
जो किछु आइआ सभु किछु जासी दुखु लागा भाइ दूजै ॥ (583-16)
जो किछु कमावै सु थाइ न पाई ॥ (230-4)
जो किछु करणा सु आपे करणा मसलति काहू दीन्ही ॥ (1235-9)
जो किछु करणा सु करि रहिआ अवरु न करणा जाइ ॥ (32-16)

जो किछु करणा सु तेरै पासि ॥ (1125-5)
जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥ (350-6)
जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥३॥ (912-2)
जो किछु करणा सो करि रहिआ कीते किआ चतुराई ॥१॥ (359-13)
जो किछु करणा सो करि रहिआ बखसणहारै बखसि लइआ ॥१०॥ (907-2)
जो किछु करतु है सोई कोई है रे तैसे जाइ समाही ॥१॥ रहाउ ॥ (162-7)
जो किछु करतै कारणु कीनो मनि बुरो न लागिओ ॥ (215-3)
जो किछु करहि सोई अब सारु ॥ (1159-11)
जो किछु करहि सोई परु होइबा अवरु न करणा जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1329-12)
जो किछु करहि सोई सोई जाणै रहै न कछूऐ छानी ॥ रहाउ ॥ (616-5)
जो किछु करी सु तेरा ताणु ॥ (371-16)
जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ (1034-13)
जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ (1075-10)
जो किछु करे सु आपि आपण भाणिआ ॥ (398-5)
जो किछु करे सु आपे आपि ॥ (364-10)
जो किछु करे सु आपे आपे ॥ (1025-6)
जो किछु करे सु आपे आपै ॥ (107-3)
जो किछु करे सु आपे सुआमी हरि आपे कार कमावै ॥ (719-12)
जो किछु करे सु सति करि मानहु गुरमुखि नामि रहहु लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1199-9)
जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥ (722-11)
जो किछु करे सोई परु होग ॥ (1174-2)
जो किछु करे सोई भल होसी हरि धिआवहु अनदिनु नामु मुरारि ॥३॥ (1135-4)
जो किछु करै भला करि मानउ सहज जोग निधि पावउ ॥१॥ (359-18)
जो किछु करै सगल बिपरीति ॥२॥ (195-10)
जो किछु करै सु आपहि करै ॥२॥ (863-11)
जो किछु करै सु निहचउ होई ॥ (1062-17)
जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥ (282-6)
जो किछु करै सु मनि मेरै मीठा ॥ (887-11)
जो किछु करै सोई प्रभ मानहि ओइ राम नाम रंगि राते ॥ (748-2)
जो किछु करै सोई भल जन कै अति निरमल दास की जुगता ॥१॥ रहाउ ॥ (388-9)
जो किछु करै सोई भल मानउ ता मनु सहजि समाणा ॥ (782-8)
जो किछु करै सोई भल मानै ॥ (741-11)
जो किछु करै सोई सुखु जाना ॥ (890-11)
जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥ (294-14)
जो किछु कहै सु भला करि मानै नानक नामु वखाणै ॥४॥६॥१६॥ (1132-2)
जो किछु कीआ सु आपै आपै ॥३॥ (1351-9)
जो किछु कीआ सो मन कीआ मूंडा मूंडु अजांइ ॥१०१॥ (1369-16)

जो किछु कीआ सो हरि कीआ हरि की वडिआई ॥ (166-3)
जो किछु कीओ सोई भल मानै ऐसी भगति कमानी ॥ (496-17)
जो किछु कीनो सु अपनै रंगि ॥ (279-5)
जो किछु कीनो सु प्रभू रजाइ ॥ (1275-9)
जो किछु कीन्हसि प्रभु रजाइ ॥ (1187-12)
जो किछु ठाकुर का सो सेवक का सेवकु ठाकुर ही संगि जाहरु जीउ ॥३॥ (102-1)
जो किछु पाइआ सु एका वार ॥ (7-5)
जो किछु बोलीऐ सभु खतो खता ॥ (351-9)
जो किछु वरतै तुधै सलाहीं सभ तेरी वडिआई ॥५॥ (1344-7)
जो किछु वरतै सभ तेरा भाणा ॥ (193-3)
जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥१॥ (151-8)
जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1328-15)
जो किछु हरि करावै सु ओइ करहि सभि हरि के अरथीए ॥ (851-13)
जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई ॥ (795-5)
जो किछु होआ सु तुझ ते होगु ॥ (176-15)
जो किछु होआ सु तेरा भाणा ॥ (1349-10)
जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछू न जाइ ॥ (1281-15)
जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछू न जाइ ॥ (853-3)
जो किछु होवै सहजि सुभाइ ॥ (1262-6)
जो कीचै सो हरि जाणदा मेरे मन हरि चेतु ॥ (84-11)
जो कीजै सो बंधनु पैरे ॥ (1075-18)
जो कीनो सो तुमहि कराइओ सरणि सहाई संतह तना ॥१३॥ (1080-18)
जो कीन्ही करतारि साई भली गल ॥ (964-14)
जो खिन महि ऊने सुभर भराहू ॥ (260-10)
जो खोजै सो बहुरि न होई ॥ (342-13)
जो गरबै सो पचसी पिआरे जपि नानक भगति समाहा ॥४॥६॥ (607-1)
जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी तिन काटे पाप कटोना ॥ (1315-4)
जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी हउ तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥ रहाउ ॥ (669-11)
जो गुण अलख अगम तिनह गुण अंतु न जाणउ ॥ (1395-4)
जो गुण संग्रहै तिन्ह बलिहारै जाउ ॥ (361-10)
जो गुण साझी गुर सिउ करे नित नित सुखु पाई ॥३॥ (166-19)
जो गुर कउ जनु पूजे सेवे सो जनु मेरे हरि प्रभ भावै ॥ (1264-1)
जो गुर की जनु सेवा करे सो घर कै कमि हरि लाइआ ॥१॥ (166-14)
जो गुर की पैरी पाहि तिनी हरि रसु भोगिआ ॥२॥ (957-16)
जो गुर दीसै सिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ ॥३॥ (763-8)
जो गुर मेलि उधारिआ पिआरे तिन धुरे पइआ संजोगु ॥३॥ (641-3)
जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिन का रहिआ मूलु ॥४॥ (641-5)

जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिना पूरी पाइ ॥५॥ (641-7)
जो गुर सबदी बीचारी ॥१॥ (879-6)
जो गुरमुखि चखै सादु सा त्रिपतावणी ॥ (647-17)
जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिन दरसनु दीजै ॥ (726-3)
जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिनी चड़ी चवगणि वंनी ॥१२॥ (591-1)
जो गुरमुखि पिआरा सेवदे तिन हरि फलु पावै ॥६॥ (725-16)
जो गुरमुखि साद चखहि राम नामा सभ अन रस साद बिसारे ॥५॥ (980-16)
जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन चूकी जम की जगत काणि ॥२२॥ (651-8)
जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन हउ कुरबाणा ॥ (84-6)
जो गुरसिख गुरु सेवदे से पुंन पराणी ॥ (726-1)
जो गुरि दीआ सु मन कै कामि ॥ (177-6)
जो गुरु कहै सोई परु कीजै तिसना अगनि बुझाईऐ ॥ (243-16)
जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली ॥१॥ रहाउ ॥ (667-16)
जो गुरु कहै सोई भल मीठा मन की मति तिआगि ॥१॥ रहाउ ॥ (1339-10)
जो गुरु गोपे आपणा सु भला नाही पंचहु ओनि लाहा मूलु सभु गवाइआ ॥ (304-1)
जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥३॥ (488-14)
जो गुरू गुरू अहिनिसि जपै दासु भटु बेनति कहै ॥ (1399-15)
जो गुरू नामु रिद महि धरै सो जनम मरण दुह थे रहै ॥३॥७॥ (1399-15)
जो घरु छडि गवावणा सो लगा मन माहि ॥ (43-5)
जो चाखै सो निरमलु होइ ॥ (664-4)
जो चाहउ सोई सोई पावउ आसा मनसा पूरउ जपि प्रभ कउ ॥३॥ (700-14)
जो चाहत सो गुरू मिलाइओ ॥ (624-13)
जो चाहत सोई जब पाइआ ॥ (202-2)
जो चाहत सोई मनि पाइओ ॥ (720-16)
जो चाहत सोई हरि कीओ मन बांछत फल पाए ॥१॥ (1204-19)
जो चाहहि सोई मिलै नानक हरि गुन गाइ ॥१॥ (296-15)
जो चितु राखहि एक सिउ ते सुखु पावहि नीत ॥२१॥ (1365-12)
जो चितु लाइ पूजे गुर मूरति सो मन इछे फल पावै ॥ (303-12)
जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥ (267-8)
जो जन गाइ धिआइ जसु ठाकुर तासु प्रभू है थानानां ॥ (339-17)
जो जन जानि भजहि अबिगत कउ तिन का कछू न नासा ॥ (793-5)
जो जन जानि भजहि पुरखोतमु ता ची अबिगतु बाणी ॥ (1351-1)
जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥१॥ रहाउ ॥ (695-16)
जो जन दीन भए गुर आगै तिन के दूख निवारे ॥ (1199-2)
जो जन धिआवहि हरि हरि नामा ॥ (164-6)
जो जन परमिति परमनु जाना ॥ (325-8)
जो जन पारब्रहमि अपने कीने तिन का बाहुरि कछु न बीचारे ॥ (718-3)

जो जन पीरि निवाजिआ तिंन्हा अंच न लाग ॥८२॥ (1382-5)
जो जन प्रभि अपुने करे नानक ते धनि धंनि ॥१॥ (255-19)
जो जन मरि जीवे तिन्ह अम्रितु पीवे मनि लागा गुरमति भाउ जीउ ॥ (447-4)
जो जन राते राम सिउ पिआरे अनत न काहू जाइ ॥६॥ (431-15)
जो जन राम भगति हरि पिआरि ॥ (228-5)
जो जन लूझहि मनै सिउ से सूरे परधाना ॥ (1089-5)
जो जन लेहि खसम का नाउ ॥ (328-13)
जो जन सेवहि सद सदा मेरा हरि हरे तिन का सभु दूखु भरमु भउ जासी ॥ (1202-4)
जो जन हरि प्रभ हरि हरि सरणा तिन दरगह हरि हरि दे वडिआई ॥ (493-16)
जो जनमे से रोगि विआपे ॥ (352-14)
जो जनमै तिसु सरपर मरणा किरतु पइआ सिरि साहा हे ॥७॥ (1032-16)
जो जनमै सो जानहु मूआ ॥ (375-17)
जो जनु करै कीरतनु गोपाल ॥ (867-2)
जो जनु तेरा जपे नाउ ॥ (1184-16)
जो जनु नाम निरंजन राता ॥ (943-16)
जो जनु निरदावै रहै सो गनै इंद्र सो रंक ॥१६९॥ (1373-11)
जो जनु भगतु दासु निजु प्रभ का सुणि जीवां तिसु सोइ ॥ (1223-4)
जो जनु भजनु करे प्रभ तेरा तिसै अंदेसा नाही ॥ (630-11)
जो जनु भाउ भगति कछु जानै ता कउ अचरजु काहो ॥ (692-5)
जो जनु भेटै साधसंगि सो हरि रंगु माणी ॥ (319-2)
जो जनु राता प्रभ कै रंगि ॥ (1338-4)
जो जनु राम नामि लिव जागै ॥ (416-12)
जो जनु सुणै सरधा भगति सेती करि किरपा हरि निसतारे ॥१॥ (493-4)
जो जनु सेवे तिसु पूरन काज ॥ (736-17)
जो जनु हरि का सेवको हरि तिस की कामी ॥१४॥ (1099-10)
जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन सेवे चरन नित कउला ॥ (1315-12)
जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन हउ कुरबैणी ॥ (652-3)
जो जपाए सोई नामु ॥२॥ (890-14)
जो जपै तिस की गति होइ ॥ (895-13)
जो जागंन्हि लहंनि से साई कंनो दाति ॥११२॥ (1384-2)
जो जागे से उबरे सूते गए मुहाइ ॥ (34-18)
जो जानसि ब्रहमं करमं ॥ (1353-8)
जो जानहि तूं अपुने काजै सो संगि न चालै तेरै तसूआ ॥ (206-13)
जो जानहि हरि प्रभ धनी ॥ (212-2)
जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥ (294-18)
जो जानै मै जोबनवंतु ॥ (278-7)
जो जापै तिस की गति होइ ॥३॥ (1150-11)

जो जीअ तुझ ते बीछुरे पिआरे जनमि मरहि बिखु खाइ ॥३॥ (431-18)
जो जीअ हरि ते विछुड़े से सुखि न वसनि भैण ॥ (136-16)
जो जीआ की वेदन जाणै ॥ (1070-11)
जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥ (474-11)
जो जीऐ की सार न जाणै ॥ (1070-12)
जो जीवन मरना जानै ॥ (655-16)
जो जैसी संगति मिलै सो तैसो फलु खाइ ॥८६॥ (1369-1)
जो जो ओना करम सुकरम होइ पसरिआ ॥ (1363-15)
जो जो कथै सुनै हरि कीरतनु ता की दुरमति नासु ॥ (1300-11)
जो जो करते अहमेउ झड़ि धरती पड़ते ॥३२॥ (317-8)
जो जो करम कीए लालच सिउ ते फिरि गरहि परिओ ॥१॥ (336-12)
जो जो करम कीए हउ हउमै ते ते भए अजाए ॥१॥ (999-9)
जो जो करम कीओ लालच लगि तिह तिह आपु बंधाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (702-18)
जो जो करै अवगिआ जन की होइ गइआ तत छार ॥१॥ (683-5)
जो जो करै सोई मानि लेहु ॥ (896-3)
जो जो करै सोऊ फुनि होऊ ॥ (251-18)
जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ॥१॥ रहाउ ॥ (403-15)
जो जो कहै सु मुकता होइ ॥ (271-4)
जो जो कहै सुणै सो मुकता हम तिस कै सद कुरबानी ॥१॥ (667-9)
जो जो कहै सोई भल मानउ नाहि न का बोल करत ॥ (529-2)
जो जो कीनो आपनो तिसु अभै दानु दीता ॥२॥ (809-19)
जो जो कीनो सो तुम्ह जानिओ पेखिओ ठउर नाही कछु ढीठ मुकरन ॥ (828-2)
जो जो कीनो हम तिस के दास ॥ (887-14)
जो जो गरबु करे सो जाइ ॥ (868-9)
जो जो चितवहि साध जन सो लेता मानि ॥१॥ रहाउ ॥ (817-13)
जो जो चितवै दासु हरि माई ॥ (202-18)
जो जो जपै तिस की गति होइ ॥ (274-17)
जो जो जपै तिस की गति होवै हरि हरि नामु नित रसन बखानी ॥१॥ रहाउ ॥ (744-13)
जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥ (290-11)
जो जो जपै सोई गति पावै जिउ ध्रू प्रहिलादु समावैगो ॥१॥ रहाउ ॥ (1308-18)
जो जो जपै सोई वडभागी बहुड़ि न जोनी पावणा ॥६॥ (1086-4)
जो जो जूनी आइओ तिह तिह उरझाइओ माणस जनमु संजोगि पाइआ ॥ (686-17)
जो जो तरिओ पुरातनु नवतनु भगति भाइ हरि देवा ॥ (1219-3)
जो जो तेरे भगत दुखाए ओहु ततकाल तुम मारा ॥१॥ (681-14)
जो जो दिता खसमि सोई सुखु पाइआ ॥ (523-17)
जो जो दीनो सु नानक लीनो ॥१७॥ (253-15)
जो जो दीसै वडा वडेरा सो सो खाकू रलसी ॥ (608-4)

जो जो दीसै सो सो रोगी ॥ (1140-17)
जो जो नामु जपै अपराधी सभि तिन के दोख परहरे ॥ (995-8)
जो जो निंद करे संतन की तिउ संतन सुखु माना ॥३॥ (381-2)
जो जो निंद करै इन ग्रिहन की तिसु आगै ही मारै करतार ॥१॥ (807-11)
जो जो पीवै सो त्रिपतावै ॥ (101-1)
जो जो पेखै सु ब्रहम गिआनु ॥ (1152-17)
जो जो भगतु होइ सो पूजहु भरमन भरमु चुकावैगो ॥६॥ (1309-8)
जो जो भजनु करै साधू संगि ता के दूख बिदारे ॥१॥ (1269-4)
जो जो मिलै साधू जन संगति धनु धंना जटु सैणु मिलिआ हरि दईआ ॥७॥ (835-16)
जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥ (292-15)
जो जो वंञैं डीहड़ा सो उमर हथ पवंनि ॥८९॥ (1382-12)
जो जो संगि मिले साधू कै ते ते पतित पुनीता ॥ (1217-4)
जो जो संति सरापिआ से फिरहि भवंदे ॥ (306-19)
जो जो संति सरापिआ से फिरहि भवंदे ॥ (317-2)
जो जो सरणि पइआ हरि राइ ॥ (868-10)
जो जो सरणि परिओ करुणानिधि ते ते भवहि तराए ॥१॥ रहाउ ॥ (1204-17)
जो जो सरणि परिओ गुर नानक अभै दानु सुख पाए ॥४॥१॥८१॥ (820-10)
जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीआ ॥ रहाउ ॥ (610-9)
जो जो सुणै कहै सो मुकता राम जपत सोहाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (881-1)
जो जो सुनै पेखै लाइ सरधा ता का जनम मरन दुखु भागै ॥ (381-13)
जो जो सुनै राम जसु निरमल ता का जनम मरण दुखु नासा ॥ (1208-18)
जो जो हुकमु भइओ साहिब का सो माथै ले मानिओ ॥३॥ (1000-5)
जो जो होइ सोई सुखु मानै ॥ (294-7)
जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ॥ (267-6)
जो डुबंदो आपि सो तराए किन्ह खे ॥ (1101-7)
जो तउ कीने आपणे तिना कूं मिलिओहि ॥ (81-4)
जो तउ बचनु दीओ मेरे सतिगुर तउ मै साज सीगरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1213-6)
जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (11-15)
जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (365-12)
जो तजि छोडन तिसु सिउ मनु रचना ॥१॥ (185-11)
जो तन रते रब सिउ तिन तनि रतु न होइ ॥५१॥ (1380-11)
जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (726-18)
जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर ग्रिह नारी ॥ (220-9)
जो तिनि करि पाइआ सु आगै आइआ असी कि हुकमु करेहा ॥ (579-15)
जो तिनि कीआ सो सचु थीआ ॥ (352-18)
जो तिनि कीआ सोई होआ किरतु न मेटिआ जाई रे ॥३॥ (156-7)
जो तिसु भाणा सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥३॥ (18-9)

जो तिसु भाणा सो सति करि मानिआ काटी जम की फासी ॥४॥ (993-16)
जो तिसु भाणा सोई हूआ ॥ (154-1)
जो तिसु भावहि से भले होरि कि कहण वखाण ॥३॥ (15-14)
जो तिसु भावै तिसै खवाए ॥३॥ (1172-8)
जो तिसु भावै नानका कागहु हंसु करेइ ॥२॥ (91-6)
जो तिसु भावै नानका साई गल चंगी ॥२२॥२॥ (726-13)
जो तिसु भावै नानका साई भली कार ॥ (1239-7)
जो तिसु भावै नानका साई वडिआई ॥१०॥१३॥ (418-16)
जो तिसु भावै नानका हुकमु सोई परवानो ॥४॥३१॥ (25-11)
जो तिसु भावै सति करि मानै भाणा मंनि वसाई ॥४॥ (480-2)
जो तिसु भावै सम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥ (579-6)
जो तिसु भावै सम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥३॥ (579-9)
जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥ (13-6)
जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥ (663-9)
जो तिसु भावै सु करे कराइआ ॥ (313-19)
जो तिसु भावै सो करे हरि करे सु होगी ॥ (514-3)
जो तिसु भावै सो थीआ ॥ (900-7)
जो तिसु भावै सो थीऐ इन बिधि कंत मिली ॥२॥ (785-18)
जो तिसु भावै सो थीऐ कहणा किछू न जाइ ॥१॥ (554-7)
जो तिसु भावै सो थीऐ तू दीपकु तू धूपु ॥७॥ (1010-14)
जो तिसु भावै सो थीऐ नानक किआ मानुख ॥७॥११॥ (417-12)
जो तिसु भावै सो थीऐ रंन कि रुंनै होइ ॥२॥ (595-6)
जो तिसु भावै सो थीऐ सभ चलै रजाई ॥३॥ (786-11)
जो तिसु भावै सो थीऐ हुकमु करे गावारु ॥ (1282-18)
जो तिसु भावै सो निहचउ होवै ॥ (1034-14)
जो तिसु भावै सो परवाण ॥३॥ (1257-4)
जो तिसु भावै सो परवाणु ॥ (743-2)
जो तिसु भावै सो परवाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (864-9)
जो तिसु भावै सो फुनि होइ ॥ (412-1)
जो तिसु भावै सो भल होस ॥२॥ (1339-6)
जो तिसु भावै सोई करसी ॥ (1047-1)
जो तिसु भावै सोई करसी किरतु न मेटिआ जाई ॥५॥ (504-14)
जो तिसु भावै सोई करसी जो सचे मनि भाइदा ॥९॥ (1059-4)
जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥ (347-15)
जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥ (9-7)
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥ (6-15)
जो तिसु भावै सोई करावै ॥ (277-6)

जो तिसु भावै सोई करेइ ॥ (277-6)
जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥ (277-13)
जो तिसु भावै सोई होइ ॥ (278-1)
जो तिसु भावै सोई होगु ॥ (276-19)
जो तिसु सेवे सो अबिनासी ना तिसु कालु संताई हे ॥१४॥ (1024-8)
जो तुधु करणा सो करि पाइआ ॥ (1063-17)
जो तुधु भाणा जंतु सु दरगह सिझई ॥ (961-3)
जो तुधु भाणा जंतु सो तुधु बुझई ॥ (961-2)
जो तुधु भाणा से करम कमाए ॥ (1081-6)
जो तुधु भाणे से नामि लागे गिआन मती पछाता हे ॥५॥ (1052-12)
जो तुधु भावहि से भले खोटा खरा न कोइ ॥३॥ (61-14)
जो तुधु भावहि सेई नाचहि जिन गुरमुखि सबदि लिव लाए ॥ (506-11)
जो तुधु भावै सभु सचु है सचे रहै समाइ ॥५॥६॥८॥ (491-19)
जो तुधु भावै साई भली कार ॥ (3-18)
जो तुधु भावै साई भली कार ॥ (4-10)
जो तुधु भावै साई भली कार ॥ (4-2)
जो तुधु भावै साई भली कार ॥ (4-6)
जो तुधु भावै सो निरमल करमा ॥ (180-10)
जो तुधु भावै सो परवाणु ॥ (676-12)
जो तुधु भावै सो परवाणु मनि तनि तूहै अधारी ॥१॥ रहाउ ॥ (747-5)
जो तुधु भावै सो परवाना सूखु सहजु मनि सोई ॥ (380-11)
जो तुधु भावै सो भला तेरै भाणै कारज रासि ॥७॥ (431-9)
जो तुधु भावै सो भला नानक दास सरणा ॥२०॥ (323-6)
जो तुधु भावै सो भला पिआरे तेरी अमरु रजाइ ॥७॥ (432-1)
जो तुधु भावै सो भला सचु तेरा भाणा ॥ (318-7)
जो तुधु भावै सो सचु धरमा ॥ (180-10)
जो तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई ॥३॥ (795-7)
जो तुधु भावै सोई करणा ॥१॥ रहाउ ॥ (192-9)
जो तुधु भावै सोई करसहि सचे सिउ मनु राता हे ॥२॥ (1052-9)
जो तुधु भावै सोई करसी अवरु न करणा जाई ॥४॥ (1155-9)
जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥४॥२॥ (795-14)
जो तुधु सचु धिआइदे सचु सेवनि सचे तेरा माणु ॥ (307-11)
जो तुधु सचु धिआइदे से विरले थोड़े ॥ (306-2)
जो तुधु सचु सलाहदे तिन जम कंकरु नेड़ि न आवै ॥ (302-15)
जो तुधु सेवहि तिन भउ दुखु नाहि ॥ (724-1)
जो तुधु सेवहि से तुध ही जेहे निरभउ बाल सखाई हे ॥४॥ (1021-14)
जो तुधु सेवहि सो तूहै होवहि तुधु सेवक पैज रखाई ॥२०॥ (758-4)

जो तुम करहु सोई भल हमरै पेखि नानक सुख चरनारै ॥२॥२॥८२॥ (820-13)
जो तुम कहहु सोई मोहि करना ॥ (181-16)
जो तुम देहु सोई सुखु पाई ॥१॥ (386-4)
जो तुम धिआवहि जगदीस ते जन भउ बिखमु तरा ॥ (1114-11)
जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ (269-9)
जो तुमरा जसु कहते गुरमति तिन मुख भाग सभागे ॥१॥ रहाउ ॥ (527-4)
जो तुमरा जसु गावहि करते से जन कबहु न मरते झूरि ॥१॥ (716-14)
जो तुमरे गुन गावहि सुआमी हउ बलि बलि बलि तिनगे ॥ (976-10)
जो तुमरे प्रभ होते सुआमी हरि तिन के जापहु जाप ॥ (1200-13)
जो तुम्ह करहु सोई भल मानउ मन ते छूटै सगल गुमानु ॥ (824-5)
जो तुम्ह करहु सोई भल मानै भावनु दुबिधा दूरि टरहु ॥ (828-7)
जो तुम्ह करहु सोई भला मनि लेता मुकता ॥ (809-10)
जो तूं करहि सोई परवाणु ॥ (376-3)
जो तूं करावहि सो करी पिआरे अवरु किछु करणु न जाइ ॥४॥ (432-4)
जो तूं कहहि सु कार कमावा ॥ (370-10)
जो तूं देहि सोई सुखु सहणा ॥ (106-7)
जो तू करहि करावहि सुआमी सा मसलति परवाणु ॥ रहाउ ॥ (677-10)
जो तू करहि सु होवै करते अवरु न करणा जाई ॥ (1333-10)
जो तू करहि सोई प्रभ होई ॥ (998-5)
जो तू करहि सोई फुनि होइ ॥ (1139-18)
जो तू देहि तही इहु त्रिपतै आन न कतहू धावउ ॥२॥ (713-1)
जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥१॥ (795-4)
जो तेरी सदा सरणाई तिन मनि दुखु न होई ॥१॥ (1133-11)
जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन की करहि प्रतिपाल ॥ (1333-19)
जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन तू राखन जोगु ॥ (1333-17)
जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिना दूख भूख किछु नाहि ॥ (1334-2)
जो तेरी सरणागती तिन लैहि छडाई ॥ (792-4)
जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥ (858-5)
जो तेरै रंगि रते से जोनि न जोवणा ॥ (523-5)
जो तेरै रंगि राते सुआमी तिन्ह का जनम मरण दुखु नासा ॥ (750-1)
जो दमु चिति न आवई सो दमु बिरथा जाइ ॥३॥ (730-8)
जो दरि रहे सु उबरे नानक अजबु डिठु ॥१॥ (142-19)
जो दास तेरे की निंदा करे तिसु मारि पचाई ॥ (517-7)
जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥ (793-18)
जो दिलि मिलिआ सु मिलि रहिआ मिलिआ कहीऐ रे सोई ॥ (725-6)
जो दिलु सोधै सोई हाजी ॥ (1084-1)
जो दिह लधे गाणवे गए विलाड़ि विलाड़ि ॥५६॥ (1380-18)

जो दीनो सो एकहि बार ॥ (258-18)
जो दीसै गुरसिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ ॥ (763-1)
जो दीसै तुझ माहि समाना ॥ (1021-9)
जो दीसै माइआ मोह कुट्मबु सभु मत तिस की आस लगि जनमु गवाई ॥ (859-7)
जो दीसै सभ आवण जाणी ॥ (1021-6)
जो दीसै सो आपे आपि ॥ (931-14)
जो दीसै सो आस निरासा ॥ (224-3)
जो दीसै सो उपजै बिनसै ॥ (352-6)
जो दीसै सो एको तूहै ॥ (1076-17)
जो दीसै सो कालहि खरना ॥२॥ (740-3)
जो दीसै सो चलसी कूड़ा मोहु न वेखु ॥ (61-12)
जो दीसै सो चालनहारु ॥ (268-13)
जो दीसै सो चालसी किस कउ मीतु करेउ ॥ (936-4)
जो दीसै सो तेरा रूपु ॥ (724-2)
जो दीसै सो विणसणा मन की मति तिआगु ॥१॥ रहाउ ॥ (50-5)
जो दीसै सो विणसणा सभ बिनसि बिनासी ॥ (1100-18)
जो दीसै सो संगि न गइओ ॥ (241-9)
जो दीसै सो सगल तूंहै पसरिआ पासारु ॥ (51-11)
जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥ (219-6)
जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाही ॥१॥ (1231-13)
जो दीसै सो होइ बिनासा ॥ (1167-8)
जो दूजै भाइ साकत कामना अरथि दुरगंध सरेवदे सो निहफल सभु अगिआनु ॥२॥ (734-14)
जो देइ सहणा मनहि कहणा आखि नाही वावणा ॥ (566-7)
जो देखि दिखावै तिस कउ बलि जाई ॥ (839-1)
जो देना सो दे रहिओ भावै तह तह जाहि ॥ (253-16)
जो देवै तिस कउ जैकारु ॥ (1331-2)
जो देवै तिस कउ बलि जाईऐ ॥ (841-11)
जो देवै तिसै न जाणई दिते कउ लपटाइ ॥ (947-7)
जो देवै तिसै न जाणै मूड़ा दिते नो लपटाए ॥ (76-16)
जो देवै सो खावणा कहु नानक साचा हे ॥४॥१॥ (489-8)
जो धरमु कमावै तिसु धरम नाउ होवै पापि कमाणै पापी जाणीऐ ॥ (138-13)
जो धिआवहि हरि अपरमपरु हरि हरि हरि धिआइ हरे ते होना ॥ (1315-3)
जो धुरि मिलिआ सु विछुड़ि न जाई ॥ (1262-7)
जो धुरि मिले न विछुड़हि कबहू जि आपि मेले करतारे ॥ (1249-15)
जो धुरि मेले से मिलि रहे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥ (645-15)
जो धुरि रखिअनु मेलि मिलाइ ॥ (665-12)
जो धुरि राखिअनु मेलि मिलाइ ॥ (159-9)

जो धुरि राते से हुणि राते ॥ (1066-7)
जो धुरि लिखिआ लेखु प्रभ मेटणा न जाइ ॥ (315-6)
जो धुरि लिखिआ लेखु से करम कमाइसी ॥ (510-11)
जो धुरि लिखिआ लेखु सोई सभ कमाइ ॥ (1425-10)
जो धुरि लिखिआ सु कमावणा करणा कछू न जाइ ॥ (1417-3)
जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइआ ॥ (1044-15)
जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइआ ॥४॥ (481-5)
जो धुरि लिखिआ सु करम कमाए ॥ (1057-7)
जो धुरि लिखिआ सु कोइ न मेटै भाई करता करे सु होई ॥ (601-8)
जो धुरि लिखिआ सु मेटणा न जाइ ॥ (1275-9)
जो धुरि लिखिआ सो आइ पहुता जन सिउ वादु रचाइआ ॥७॥ (1154-14)
जो धुरि लिखिआ सोइ कमावै कोइ न मेटणहारा ॥ (571-3)
जो धुरि लिखिआ सोई पाइआ मिलि हरि सबदि सवारी ॥१७॥ (911-10)
जो न ढहंदो मूलि सो घरु रासि करि ॥ (397-15)
जो न भजंते नाराइणा ॥ (1163-14)
जो न सुनहि जसु परमानंदा ॥ (188-7)
जो नर पीरि निवाजिआ तिन्हा अंच न लाग ॥१॥ (966-2)
जो नर बिछुरे राम सिउ ना दिन मिले न राति ॥१२५॥ (1371-3)
जो नर भरमि भरमि उदिआने ते साकत मूड़ मुहे ॥ (1336-11)
जो नरु उस की सरणी परै तिसु क्मबहि पापै ॥ (1097-4)
जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥ (633-15)
जो नामु सुनावै सो मेरा मीतु सखाई ॥२॥ (367-8)
जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जी का ॥१॥ रहाउ ॥ (623-4)
जो निंदा करे सतिगुर पूरे की तिसु करता मार दिवावै ॥ (303-13)
जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सु अउखा जग महि होइआ ॥ (309-10)
जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सो साचै मारि पचाइआ ॥ (306-11)
जो निंदा दुसट करहि भगता की हरनाखस जिउ पचि जावैगो ॥५॥ (1309-6)
जो निंदै तिस का पतनु होइ ॥ (867-16)
जो निरमलु सेवे सु निरमलु होवै ॥ (121-7)
जो पराइओ सोई अपना ॥ (185-11)
जो पराई सु अपनी मनूआ ॥१॥ (715-5)
जो पहुचै सो चलणहारु ॥ (789-14)
जो पाथर कउ कहते देव ॥ (1160-5)
जो पाथर की पांई पाइ ॥ (1160-6)
जो पावहि भांडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥ (449-19)
जो पावै सो आणि दिखावै ॥ (1072-15)
जो पिर भावै सा सोहागणि साई पिर कउ मिलै सिआणी ॥१॥ रहाउ ॥ (561-5)

जो पिरि मेलि लई अंगि लाए ॥ (97-19)
जो पिरु करै सु धन ततु मानै ॥ (1072-14)
जो पेखा सो सभु किछु सुआमी ॥ (1080-17)
जो प्रभ की हरि कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी ॥१॥ (204-7)
जो प्रभ कीआ सु तुम ही जानहु हम नह जाणी हरि गहणे ॥ (977-4)
जो प्रभ कीए भगति ते बाहज तिन ते सदा डराने रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (332-4)
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ॥२॥ (1299-14)
जो प्रभ भावै जनमि न आवै ॥ (407-19)
जो प्रभ भावै सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥ (26-19)
जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥ (285-18)
जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥ (134-4)
जो प्रभि दिती दाति सा पूरन वडिआई ॥२॥ (399-15)
जो प्रभि रखे आपि तिन कोइ न मारई ॥ (1425-7)
जो प्रभु करै सोई भल मानहु सुखि दुखि ओही धिआईऐ रे ॥१॥ (209-15)
जो प्रभु कहै सोई परु कीजै नानक अंकि समाइआ ॥३॥ (775-4)
जो प्रभु खोजहि सेई पावहि होरि फूटि मूए अहंकारी ॥२०॥ (911-12)
जो प्रभु देइ तिसु चेतै नाही अंति गइआ पछुतावए ॥ (690-13)
जो प्राणी गोविंदु धिआवै ॥ (197-18)
जो प्रानी काहू न आवत काम ॥ (386-17)
जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥ (1427-19)
जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥ (1427-13)
जो प्रिअ माने तिन की रीसा ॥ (738-11)
जो बचनु गुर सति सति करि मानै तिसु आगै काढि धरीजै ॥४॥ (1326-14)
जो बाहरि सो भीतरि जानिआ ॥ (342-1)
जो बिनु परतीती कपटी कूड़ी कूड़ी अखी मीटदे उन का उतरि जाइगा झूठु गुमानु ॥३॥ (734-16)
जो बिनु सचे होरतु चितु लाइदे से कूड़िआर कूड़ा तिन माणा ॥ (305-11)
जो बिनु सतिगुर सेवे खादे पैनदे से मुए मरि जमे कोड़्हे ॥ (306-4)
जो बिनु हरि आस अवर काहू की कीजै सा निहफल आस सभ बिरथी जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (859-6)
जो बिबरजत तिस सिउ नेह ॥१॥ रहाउ ॥ (185-12)
जो बीजै सो उगवै खांदा जाणै जीउ ॥ (1243-19)
जो बीजै सोई फलु पाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥४॥ (113-19)
जो बीधे से ऊबरे भाई सबदु सचा नीसानु ॥९॥ (637-9)
जो बेमुख गोबिंद ते पिआरे तिन कुलि लागै गालि ॥ (641-9)
जो बैठे से फाथिआ उबरे भाग मथाइ ॥२॥ (1097-8)
जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥ (267-18)
जो बैराई सेई मीत ॥१॥ (676-8)
जो बोलत है म्रिग मीन पंखेरू सु बिनु हरि जापत है नही होर ॥३॥ (1265-16)

जो बोलहि हरि हरि नाउ तिन जमु छडि गइआ ॥ (645-10)
जो बोले पूरा सतिगुरू सो परमेसरि सुणिआ ॥ (854-13)
जो बोलै सो आपै होइ ॥ (1162-17)
जो ब्रहमंडि खंडि सो जाणहु ॥ (1041-11)
जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥ (695-15)
जो भलाई सो बुरा जानै ॥ (180-3)
जो भागै तिसु जोनी फिरणा ॥ (1019-15)
जो भाणे से मेलिआ विछोड़े भी आपि ॥ (928-3)
जो भावै पारब्रहम सोई सचु निआउ ॥ (964-13)
जो भावै सो कार करावै ॥ (277-5)
जो भावै सो भुंचि तू गुरमुखि नदरि निहालि ॥ (569-9)
जो मंगहि सो लेवहि ॥ (626-15)
जो मंगीऐ सोई पाईऐ निधारा आधारु ॥२॥ (47-3)
जो मंदा चितवै पूरे सतिगुरू का सो आपि उपावणहारै मारिआ ॥ (312-15)
जो मनि चिति इकु अराधदे तिन की बरकति खाहि असंख करोड़े ॥ (306-3)
जो मनि चिति तुधु धिआइदे मेरे सचिआ बलि बलि हउ तिन जाती ॥१॥ (138-8)
जो मनि चिति न चेते सनि सो गाली रब कीआं ॥९९॥ (1383-5)
जो मनि तनि मुखि हरि बोलै सा हरि भावणी ॥ (647-17)
जो मनि राते हरि रंगु लाइ ॥ (361-19)
जो मनु मारहि आपणा से पुरख बैरागी राम ॥ (569-15)
जो मरि जमहि काचनि काचे ॥ (1055-16)
जो मरि जमे सु कचु निकचु ॥१॥ (463-9)
जो मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा ॥ (619-11)
जो मागहि ठाकुर अपुने ते सोई सोई देवै ॥ (681-18)
जो मागहि सोई सोई पावहि सेवि हरि के चरण रसाइण ॥ (714-1)
जो मागै सो भूखा रहै ॥ (892-3)
जो मानुखु मानुख की सेवा ओहु तिस की लई लई फुनि जाईऐ ॥ (822-17)
जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे ॥ (306-18)
जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे ॥ (317-1)
जो मिलिआ हरि दीबाण सिउ सो सभनी दीबाणी मिलिआ ॥ (87-3)
जो मेरा प्रीतमु दसे तिस कै हउ वारीआ ॥ (96-6)
जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना ॥२१॥ (433-14)
जो मै बेदन सा किसु आखा माई ॥ (990-17)
जो मोहि दूजै चितु लाइदे तिना विआपि रही लपटाइ ॥ (513-16)
जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से अंति गए पछुताणे राम ॥ (540-12)
जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से मनमुख मूड़ बिताले राम ॥ (538-19)
जो मोहि माइआ चितु लाइदे से छोडि चले दुखु रोइ ॥ (81-17)

जो रंगि राते करम बिधाते ॥ (111-9)
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥ (140-10)
जो रते दीदार सेई सचु हाकु ॥ (959-7)
जो रते रंगि गोविद कै हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ (958-8)
जो रते सहि आपणै तिन भावै सभु कोइ ॥१॥ (557-4)
जो राते माते संगि बपुरी माइआ मोह संताप ॥१॥ (1306-17)
जो राते रंग एक कै नानक गूड़ा रंगु ॥१॥ (252-5)
जो रोवै सोई पति खोवै ॥३॥ (871-6)
जो लउडा प्रभि कीआ अजाति ॥ (376-7)
जो लपटानो तिसु दूख संताप ॥ (1145-4)
जो लेवै सो देवै नाही खटे दम सहमी ॥२९॥ (1412-13)
जो लोड़ीदा सोई पाइआ ॥ (97-11)
जो लोड़ीदे राम सेवक सेई कांढिआ ॥ (578-1)
जो वरताए साई जुगति ॥ (275-6)
जो वरताए सोई भल मानै बुझि हुकमै दुरमति जालीऐ ॥७॥ (1019-16)
जो वरताए सोई भला ॥ (890-13)
जो संत बेद कहत पंथु गाखरो मोह मगन अहं ताप ॥ रहाउ ॥ (1306-17)
जो संसारै के कुट्मब मित्र भाई दीसहि मन मेरे ते सभि अपनै सुआइ मिलासा ॥ (860-9)
जो सगल तिआगि एकहि लपटाही ॥ (256-1)
जो सचि रते तिन सचो भावै ॥ (128-6)
जो सचि राते तिन बहुड़ि न फेरा ॥ (798-8)
जो सचि राते तिन सची लिव लागी ॥ (120-3)
जो सचि लागे तिन साची सोइ ॥ (1049-10)
जो सचि लागे से अनदिनु जागे दरि सचै सोभा पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (110-14)
जो सचै लाए से सचि लगे नित सची कार करंनि ॥ (70-4)
जो सजण भुइ भारु थे से किउ आवहि अजु ॥६९॥ (1381-11)
जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बलि जाउ ॥ (31-7)
जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ ॥ (645-8)
जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥ (10-6)
जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥ (492-13)
जो सतिगुरि फिटके से सभ जगति फिटके नित भ्मभल भूसे खाही ॥ (308-16)
जो सतिगुरि मारे तिन जाइ मिलहि रहदी खुहदी सभ पति गवाही ॥ (308-19)
जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई तिन कै हउ लागउ पाइ ॥ (638-17)
जो सबदि राते महा बैरागी सो सचु सबदे लाहा हे ॥४॥ (1054-12)
जो समरथु सरब गुण नाइकु तिस कउ कबहु न गावसि रे ॥ (1000-13)
जो सरणि आवै गुण निधान पावै सो बहुड़ि जनमि न मरता ॥ (578-10)
जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ॥ (544-17)

जो सरणि परै तिस की पति राखै जाइ पूछहु वेद पुराणी हे ॥९॥ (1070-18)
जो सरनी आवै सरब सुख पावै तिलु नही भंनै घालिआ ॥ (1122-6)
जो सह कंठि न लगीआ जलनु सि बाहड़ीआहा ॥ (558-1)
जो सह रते आपणे तितु तनि लोभु रतु न होइ ॥ (1380-12)
जो सहि रते आपणै तिन तनि लोभ रतु न होइ ॥ (949-19)
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥ (305-19)
जो साहिब तेरै मनि भावै ॥ (100-9)
जो सिख गुर कार कमावहि हउ गुलमु तिना का गोलीआ ॥ (311-4)
जो सिमरंदे सांईऐ ॥ (132-9)
जो सिमरै तिस का निसतारा ॥१॥ रहाउ ॥ (1004-16)
जो सिमरै तिस की गति होवै उधरहि सगले कोटा ॥१॥ रहाउ ॥ (628-14)
जो सिमरै तिस की गति होवै पीवत बहुड़ि न जोनि भ्रमाम ॥१॥ रहाउ ॥ (1137-11)
जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु कपि उतारि ॥७१॥ (1381-13)
जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु दीजै डारि ॥ (89-2)
जो सिरु साई ना निवै सो सिरु कीजै कांइ ॥ (1381-14)
जो सुखु दरसनु पेखते पिआरे मुख ते कहणु न जाइ ॥५॥ (431-19)
जो सुखु प्रभ गोबिंद की सेवा सो सुखु राजि न लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (336-7)
जो सुणे कमावै सु उतरै पारि ॥ (370-17)
जो सुनणा सो प्रभ की बानी ॥ (1080-17)
जो सूरा तिस ही होइ मरणा ॥ (1019-15)
जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥२॥ (11-3)
जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन्ह कुरबाणा ॥२॥ (348-6)
जो सेवहि सति मुरारि से भवजल तरि गइआ ॥ (645-9)
जो सैतानि वंञाइआ से कित फेरहि चित ॥१५॥ (1378-14)
जो स्मपति अपनी करि मानी छिन महि भई पराई ॥ (1008-10)
जो हम कउ हरि नामु चितारे ॥१॥ रहाउ ॥ (739-17)
जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३॥२॥ (345-16)
जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥ (167-10)
जो हमरै मन चिति है सुआमी सा बिधि तुम हरि जानहु मेरी ॥ (170-15)
जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥ (135-3)
जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झखि झखि आवै जावै ॥१७॥ (555-10)
जो हरि की हरि कथा सुणावै ॥ (164-7)
जो हरि कीता आपणा ॥ (132-13)
जो हरि छोडि दूजै भाइ लागै ओहु जमै तै मरि जाइ ॥३॥ (1334-2)
जो हरि जन भावै सो करे दरि फेरु न पावै कोइ ॥ (42-13)
जो हरि दसे मितु तिसु हउ बलि जाई ॥ (647-8)
जो हरि दासन की उसतति है सा हरि की वडिआई ॥ (652-7)

जो हरि नामु धिआइदे तिन तोटि न आइआ ॥ (1246-5)
जो हरि नामु धिआइदे तिन दरसनु पिखा ॥ (650-2)
जो हरि नामु धिआइदे ते जन परवाना ॥ (725-15)
जो हरि नामु धिआइदे मेरी जिंदुड़ीए तिना पंचे वसगति आए राम ॥ (539-8)
जो हरि नामु धिआइदे से हरि हरि नामि रते मन माही ॥ (649-3)
जो हरि नामु धिआवहि तिन डरु सटि घतिआ ॥ (646-5)
जो हरि प्रभ का मै देइ सनेहा तिसु मनु तनु अपणा देवा ॥ (561-18)
जो हरि प्रभ भाणा सो थीआ धुरि लिखिआ न मेटै कोइ ॥३॥ (41-6)
जो हरि प्रभ भावै सो थीऐ जो हरि प्रभु करे सु होइ ॥ (1313-9)
जो हरि प्रभ भावै सो थीऐ सभि करनि तेरा कराइआ ॥ (548-17)
जो हरि प्रभ भावै सोई होवै अवरु न करणा जाई ॥ (573-10)
जो हरि भावहि भगत तिना हरि भावहिगे ॥ (1321-4)
जो हरि मति देइ सा ऊपजै होर मति न काई राम ॥ (571-18)
जो हरि महलु पावै गुर बचनी तिसु जेवडु अवरु नाही किसै दा ताणु ॥१॥ रहाउ ॥ (861-5)
जो हरि राते से जन परवाणु ॥ (353-2)
जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥ (134-3)
जो हरि सुआमी तुम देहु सोई हम पावहगे ॥ (1321-3)
जो हरि सेवहि तिन बलि जाउ ॥ (665-1)
जो हरि सेवहि संत भगत तिन के सभि पाप निवारी ॥ (666-15)
जो हरि सेवहि से सदा सोहहि सोभा सुरति सुहावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (122-9)
जो हरि हरि जसु सुने हां ॥ (410-5)
जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ (451-6)
जो हरि हरे सु होहि न आना ॥ (330-14)
जो हलाहल सो पीवै बउरा ॥ (180-4)
जो हुकमु न बूझै खसम का सोई नरु कचा ॥ (1094-4)
जो होआ होवत सो जानै ॥ (286-7)
जो होवनु सो दूरि परानै ॥ (267-9)
जोइ खसमु है जाइआ ॥ (1194-3)
जोइ दूत मोहि बहुतु संतावत ते भइआनक भइआ ॥ (612-13)
जोई जोई कीनो सोई सोई देखिओ ॥३॥१॥३॥ (1293-18)
जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ ॥ (1293-17)
जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥ (265-10)
जोग गिआन धिआन सेखनागै सगल जपहि तरंगी ॥ (1322-2)
जोग गिआन सिध सुख जाने ॥ (202-7)
जोग जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥१॥ (831-1)
जोग जुगति इव पावसिता ॥ (155-17)
जोग जुगति की इहै पांइ ॥५॥ (1189-18)

जोग जुगति की कीमति पावै ॥ (840-14)
जोग जुगति की कीमति पावै ॥२॥ (223-10)
जोग जुगति गिआन भुगति सुरति सबद तत बेते जपु तपु अखंडली ॥ (1322-9)
जोग जुगति जगजीवनु सोई ॥ (931-15)
जोग जुगति सचि रहै समाइ ॥ (941-19)
जोग जुगति सुनि आइओ गुर ते ॥ (208-1)
जोग दान अनेक किरिआ लगि चरण कमलह साधीऐ ॥ (925-15)
जोग धिआन भेख गिआन फिरत फिरत धरत धरत धरचरी ॥१॥ रहाउ ॥ (1308-2)
जोग धिआनि गुर गिआनि बिना प्रभ अवरु न जाणै ॥ (1390-12)
जोग बिनोद स्वाद आनंदा ॥ (1331-11)
जोग भेख संनिआसै पेखिओ जति जंगम कापड़ाए ॥ (1139-5)
जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं त ब्राहमणह ॥ (1353-11)
जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥ (469-13)
जोग सिध आसण चउरासीह ए भी करि करि रहिआ ॥ (642-4)
जोगी अंदरि जोगीआ ॥ (71-15)
जोगी कउ कैसा डरु होइ ॥ (223-16)
जोगी कहत मुकता ॥ (71-7)
जोगी कहहि जोगु भल मीठा अवरु न दूजा भाई ॥ (334-3)
जोगी कापड़ीआ सिरखूथे बिनु सबदै गलि फासी ॥१॥ (1332-4)
जोगी कै घरि जुगति दसाई ॥ (952-2)
जोगी गिरही जटा बिभूत ॥ (951-16)
जोगी गोरखु गोरखु करिआ ॥ (163-18)
जोगी गोरखु गोरखु करै ॥ (1160-4)
जोगी ग्रिही पंडित भेखधारी ॥ (1128-4)
जोगी जंगम अरु संनिआस ॥ (1186-11)
जोगी जंगम भगवे भेख ॥ (1169-3)
जोगी जंगम भेखु न कोई ना को नाथु कहाइदा ॥५॥ (1035-15)
जोगी जंगम संनिआसी भुले ओन्हा अहंकारु बहु गरबु वधाइआ ॥ (513-10)
जोगी जंगम संनिआसी भुले विणु गुर ततु न पाइआ ॥ (852-14)
जोगी जंगम स्रिसटि सभ तुमरी जो देहु मती तितु चेल ॥ (368-5)
जोगी जतन करत सभि हारे गुनी रहे गुन गाई ॥ (219-14)
जोगी जती जुगति महि रहते करि करि भगवे भेख भए ॥१॥ (358-13)
जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥१॥ रहाउ ॥ (537-8)
जोगी जती तपी ब्रहमचारी ॥ (326-1)
जोगी जती तपी संनिआसी बहु तीरथ भ्रमना ॥ (476-18)
जोगी जती पंडित बीचारी ॥ (1004-9)
जोगी जती बैसनो रामदास ॥ (867-9)

जोगी जती सिध हरि आहै ॥ (203-15)
जोगी जुगति गवाई हंढै पाखंडि जोगु न पाई ॥१०॥ (909-13)
जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥ (662-12)
जोगी जुगति नामु निरमाइलु ता कै मैलु न राती ॥ (992-12)
जोगी जुगति वीचारे सोइ ॥७॥ (903-16)
जोगी जुगति सहज घरि वासै ॥ (879-13)
जोगी त आसणु करि बहै मुला बहै मुकामि ॥ (64-5)
जोगी दिग्मबर संनिआसी खटु दरसन करि गए गोसटि ढोआ ॥ (1116-12)
जोगी बपुड़ा खेलिओ आसनि रही बिभूति ॥४८॥ (1366-19)
जोगी बैसि रहहु दुबिधा दुखु भागै ॥ (903-8)
जोगी भोगी कापड़ी किआ भवहि दिसंतर ॥ (419-1)
जोगी माते जोग धिआन ॥ (1193-18)
जोगी सबदु अनाहदु वावै ॥ (1040-4)
जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु ॥ (465-19)
जोगी हरि देहु मती उपदेसु ॥ (368-2)
जोगी होवा जगि भवा घरि घरि भीखिआ लेउ ॥ (1089-7)
जोगी होवै जोगवै भोगी होवै खाइ ॥ (730-5)
जोगीआ मतवारो रे ॥१॥ रहाउ ॥ (886-5)
जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार ॥ (346-8)
जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ ॥ (730-11)
जोगु न देसि दिसंतरि भविऐ जोगु न तीरथि नाईऐ ॥ (730-14)
जोगु न पाइआ जुगति गवाई ॥ (951-17)
जोगु न बाहरि मड़ी मसाणी जोगु न ताड़ी लाईऐ ॥ (730-13)
जोगु न भगवी कपड़ी जोगु न मैले वेसि ॥ (1421-2)
जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिंङी वाईऐ ॥ (730-11)
जोगु बनिआ तेरा कीरतनु गाई ॥१॥ (385-10)
जोगेन किं जगेन किं दानेन किं तपसा ॥४॥ (526-18)
जोगै का मारगु बिखमु है जोगी जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ (909-5)
जोड़णहारा संतु नानक पाधरु पधरो ॥२॥ (321-9)
जोड़नहारो सदा अतीता इह कहीऐ किसु माही ॥२॥ (334-13)
जोड़ि विछोड़े नानक थापि ॥ (390-19)
जोड़ी जुड़ै न तोड़ी तूटै जब लगु होइ बिनासी ॥ (334-13)
जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ (966-18)
जोति की जाति जाति की जोती ॥ (325-4)
जोति जीअ असंख देइ अधारु ॥५॥ (1190-13)
जोति दाति जेती सभ तेरी तू करता सभ ठाई हे ॥४॥ (1022-15)
जोति दी वटी घट महि जोइ ॥ (344-17)

जोति निरंतरि जाणीऐ नानक सहजि सुभाइ ॥८॥३॥ (55-6)
जोति प्रगास भई माटी संगि दुलभ देह बखानिओ ॥१॥ (1216-12)
जोति बिना जगदीस की जगतु उलंघे जाइ ॥११४॥ (1370-11)
जोति भई जोती माहि समाना ॥ (221-9)
जोति मंत्रि मनि असथिरु करै ॥ (1162-17)
जोति मिली संगि जोति रहिआ घालदा ॥ (524-5)
जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ॥ (1408-10)
जोति लाइ जगदीस जगाइआ बूझै बूझनहारा ॥२॥ (1350-13)
जोति सबाइड़ीए त्रिभवण सारे राम ॥ (843-15)
जोति समाइ समानी जा कै अछली प्रभु पहिचानिआ ॥ (487-14)
जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु ॥ (967-15)
जोति समाणी जोति विचि हरि नामि समइआ ॥१४॥ (790-7)
जोति सरूप अनाहत लागी कहु हलालु किआ कीआ ॥२॥ (1350-7)
जोति सरूप अनाहदु वाजिआ ॥ (370-15)
जोति सरूप जा की सभ वथु ॥ (1150-13)
जोति सरूप सदा सुखदाता सचे सोभा पाइदा ॥३॥ (1036-13)
जोति सरूपी तत अनूप ॥ (344-1)
जोति सरूपी सभु जगु मउलो ॥ (1083-3)
जोती अंतरि धरिआ पसारु ॥१॥ रहाउ ॥ (972-6)
जोती अंतरि ब्रहमु अनूपु ॥१॥ (972-6)
जोती अंदरि जोति समाणी आपु पछाता आपै ॥ (1111-8)
जोती जाती गणत न आवै ॥ (839-7)
जोती जोति मिलाइ काइआ गड़ु सोहिआ राम ॥ (1114-8)
जोती जोति मिलाइ जोति रलि जावहगे ॥३॥ (1321-5)
जोती जोति मिलाई सचि समाई सचि नाइ परगासा ॥ (769-11)
जोती जोति मिलाईऐ सुरती सुरति संजोगु ॥ (21-17)
जोती जोति मिलाए सोइ ॥२॥ (1175-6)
जोती जोति मिलावणहारा ॥५॥ (411-16)
जोती जोति मिलि जोति समाणी हरि क्रिपा करि धरणीधरा ॥ (1114-13)
जोती जोति मिली प्रभु पाइआ मिलि सतिगुर मनूआ मान जीउ ॥ (446-8)
जोती जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ ॥३॥ (124-10)
जोती जोति मिली सुखु पाइआ जन नानक इकु पसारिआ जीउ ॥४॥३॥१०॥ (97-14)
जोती जोति रली स्मपूरनु थीआ राम ॥ (846-17)
जोती जोति समाणी भीतरि ता छोडे माइआ के लाहे ॥२॥ (351-4)
जोती जोति समानी ॥ (657-2)
जोती महि जोति रलि जाइआ ॥ (885-12)
जोती विचि मिलि जोति समाणी सुणि मन सचि समावणिआ ॥१॥ (111-17)

जोती हूं सभु चानणा सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ (509-10)
जोती हू प्रभु जापदा बिनु सतगुर बूझ न पाइ ॥ (35-17)
जोधै वीरै पूरबाणी की धुनी ॥ (947-2)
जोनि छाडि जउ जग महि आइओ ॥ (337-6)
जोनी सभि भवाईअनि बिसटा माहि समाइ ॥२॥ (994-2)
जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीति न जाइ ॥ (1379-12)
जोबन जारि जुगति सो पावै ॥ (340-17)
जोबन बीति जरा रोगि ग्रसिओ जमदूतन डंनु मिरतु मरिओ है ॥ (1388-17)
जोबन रूप माइआ मद माता बिचरत बिकल बडौ अभिमानी ॥ (1387-5)
जोबनवंत अचार कुलीना मन महि होइ गुमानी ॥३॥ (242-2)
जोबनु खोइ पाछै पछुतानी ॥१॥ रहाउ ॥ (794-11)
जोबनु गइआ बितीति जरु मलि बैठीआ ॥ (705-11)
जोबनु घटै जरूआ जिणै वणजारिआ मित्रा आव घटै दिनु जाइ ॥ (75-19)
जोबनु जांदा नदरि न आवई जरु पहुचै मरि जाई ॥ (1414-17)
जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना ॥१॥ (685-1)
जोर जुलम फूलहि घनो काची देह बिकार ॥ (255-2)
जोरा दा आखिआ पुरख कमावदे से अपवित अमेध खला ॥ (304-13)
जोरा पुरख सभि आपि उपाइअनु हरि खेल सभि खिला ॥ (304-14)
जोरि तुमारै सुखि वसा सचु सबदु नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (217-18)
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ (7-9)
जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥ (7-10)
जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥ (7-9)
जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥ (7-9)
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥ (7-10)
जोरु सकति नानक किछु नाही प्रभ राखहु सरणि परे ॥२॥७॥१२॥ (714-10)
जोलाहे घरु अपना चीन्हां घट ही रामु पछानां ॥३॥ (484-13)
जोवहि कूप सिंचन कउ बसुधा उठि बैल गए चरि बेल ॥२॥ (368-3)
जौ करि पाचनु बेगि न पावै झगरु करै घरहाई ॥२॥ (335-4)
जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥ (324-17)
जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥१॥ (525-2)
जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥ (525-2)
जौबन बहिक्रम कनिक कुंडलह ॥ (1354-18)
ज्मपउ गुण बिमल सुजन जन केरे अमिअ नामु जा कउ फुरिआ ॥ (1396-13)
झख मारउ सगल संसारु ॥३॥ (867-17)
झख मारउ साकतु वेचारा ॥२॥ (806-3)
झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥ (968-6)
झखड़ु झागी मीहु वरसै भी गुरु देखण जाई ॥१३॥ (757-18)

झखि झखि जाहि झखहि तिन्ह पासि ॥१॥ (1243-8)
झखि झखि झखणा झगड़ा झाख ॥ (1243-8)
झखि बोलणु किआ जग सिउ वादु ॥ (933-3)
झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करहि वीचारु ॥ (316-12)
झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करै वीचारु ॥ (549-2)
झगड़ु चुकावै हरि गुण गावै ॥ (1344-17)
झगरा एकु निबेरहु राम ॥ (331-14)
झगरु कीए झगरउ ही पावा ॥१५॥ (341-1)
झझा उरझि सुरझि नही जाना ॥ (340-18)
झझा झूरनु मिटै तुमारो ॥ (255-7)
झझै कदे न झूरहि मूड़े सतिगुर का उपदेसु सुणि तूं विखा ॥ (435-10)
झझै झूरि मरहु किआ प्राणी जो किछु देणा सु दे रहिआ ॥ (433-3)
झड़ झखड़ ओहाड़ लहरी वहनि लखेसरी ॥ (1410-9)
झड़ि झड़ि पवदे कचे बिरही जिन्हा कारि न आई ॥१॥ (1425-2)
झरहि कसमल पाप तेरे मनूआ ॥ (255-8)
झरहि काम क्रोध द्रुसटाई ॥ (255-9)
झालाघे उठि नामु जपि निसि बासुर आराधि ॥ (255-6)
झिमि झिमि अम्रितु वरसदा ॥ (74-5)
झिमि झिमि अम्रितु वरसदा तिसना भुख सभ जाइ ॥ (1420-4)
झिमि झिमि वरसै अम्रित धारा ॥ (102-5)
झिमि झिमे झिमि झिमि वरसै अम्रित धारा राम ॥ (442-19)
झिलमिलि झिलकै चंदु न तारा ॥ (1033-17)
झुंडी पाइ बहनि निति मरणै दड़ि दीबाणि न जाही ॥ (149-18)
झुरि झुरि झखि माटी रलि जाइ ॥ (933-5)
झुरि झुरि पचै जैसे त्रिअ रंड ॥१॥ (1151-12)
झुलै सु छतु निरंजनी मलि तखतु बैठा गुर हटीऐ ॥ (966-19)
झूठ धोह सिउ रचिओ मीठा ॥ (676-10)
झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥ (267-19)
झूठ विकार महा दुखु देह ॥ (352-4)
झूठ विकारि जागै हित चीतु ॥ (153-4)
झूठ समग्री पेखि सचु करि जानिआ ॥ (707-19)
झूठा इहु संसारु किनि समझाईऐ ॥ (147-15)
झूठा किस कउ आखीऐ साहा दूजा नाही कोइ ॥१॥ (670-6)
झूठा जगु डहकै घना दिन दुइ बरतन की आस ॥ (1103-12)
झूठा झ्मफु झूठु पासारी ॥ (288-17)
झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई ॥१॥ (219-6)
झूठा परपंचु जोरि चलाइआ ॥२॥ (336-19)

झूठा मंगणु जे कोई मागै ॥ (109-1)
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥ (554-15)
झूठा माइआ का सभु सोरु ॥ (178-2)
झूठा रुदनु होआ दोआलै खिन महि भइआ पराइआ ॥ (75-10)
झूठा लाहि गुमानु मनु तनु अरपि धरि ॥१॥ (397-13)
झूठि न पतीऐ परचै साचै ॥ (872-16)
झूठि न पावसि पाखंडि कीनै ॥ (906-6)
झूठि विगुती ता पिर मुती कुकह काह सि फुले ॥ (1108-19)
झूठि विछुंनी रोवै धाही ॥ (109-16)
झूठी जग हित की चतुराई ॥ (1041-2)
झूठी झूठि लगी जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ (244-16)
झूठी दुनीआ लगि न आपु वञाईऐ ॥२॥ (488-14)
झूठी दुरमति की चतुराई ॥ (1345-11)
झूठी मन की मति है करणी बादि बिबादु ॥ (1343-11)
झूठी माइआ आपु बंधाइआ जिउ नलनी भ्रमि सूआ ॥४॥२॥ (654-15)
झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (486-3)
झूठी माइआ सभु जगु बाधिआ मै राम रमत सुखु पाइआ ॥३॥३॥२५॥ (482-10)
झूठु अलावै कामि न आवै ना पिरु देखै नैणी ॥ (689-14)
झूठु झूठु झूठु झूठु आन सभ सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (1166-15)
झूठु झूठु झूठु झूठु दुनी गुमानु ॥१॥ रहाउ ॥ (1137-19)
झूठु धड़े करि पछोताहि ॥ (366-4)
झूठु न बोलि पाडे सचु कहीऐ ॥ (904-11)
झूठु बात सा सचु करि जाती ॥ (185-12)
झूठु समग्री मनि वसी पारब्रहमु न जाना ॥२॥ (815-9)
झूठे आवहि ठवर न पावहि दूजै आवा गउणु भइआ ॥ (940-18)
झूठे कउ नाही पति नाउ ॥ (839-11)
झूठे कहा बिलोवसि पानी ॥१॥ (656-3)
झूठे चउके नानका सचा एको सोइ ॥१॥ (1090-5)
झूठे लालचि जनमु गवाइआ ॥१॥ (175-19)
झूठे विचि अहंकरणु है खसम न पावै सादु ॥ (1343-12)
झूठे वैण चवे कामि न आवए जीउ ॥ (689-13)
झूठे की रे झूठु परीति छुटकी रे मन छुटकी रे साकत संगि न छुटकी रे ॥१॥ रहाउ ॥ (535-16)
झूठै धंधै रचिओ मूड़ा ॥१॥ (744-6)
झूठै बनजि उठि ही गई हाटिओ ॥२॥ (1293-18)
झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥ (1428-13)
झूठै मोहि भरमि भुलाई ॥१॥ (357-9)
झूठै मोहि लपटाइआ हउ हउ करत बिहंधु ॥ (959-6)

झूठै रंगि खुआरु कहां लगु खेवीऐ ॥ (1363-7)
झूठै लालचि जनमु गवाइआ ॥ (1342-2)
झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१॥ (726-16)
झूठो खेलु खेलै बहु नटूआ ॥ (903-13)
झूठो झूठु वखाणि सु महलु खुआईऐ ॥ (146-19)
झूठो माइआ को मद मानु ॥ (1215-15)
झूरत झूरत साकत मूआ ॥ (255-8)
झूरि मरै देखै परमादु ॥ (933-4)
झोलना ॥ (1400-12)
झोलि महा रसु हरि अम्रितु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (198-18)
ञंञा ञाणहु द्रिड़ु सही बिनसि जात एह हेत ॥ (255-11)
ञंञा निकटि जु घट रहिओ दूरि कहा तजि जाइ ॥ (341-2)
ञंञै नदरि करे जा देखा दूजा कोई नाही ॥ (433-4)
ञतन करहु तुम अनिक बिधि रहनु न पावहु मीत ॥ (255-9)
ञा कै हाथि समरथ ते कारन करनै जोग ॥ (255-13)
ञाणत सोई संतु सुइ भ्रम ते कीचित भिंन ॥ (255-12)
ञाणहु इआ बिधि सही चित झूठउ माइआ रंगु ॥ (255-12)
ञिआनो बोलै आपे बूझै ॥ (933-6)
ञो पेखउ सो बिनसतउ का सिउ करीऐ संगु ॥ (255-11)
टटा बिकट घाट घट माही ॥ (341-3)
टटै टंचु करहु किआ प्राणी घड़ी कि मुहति कि उठि चलणा ॥ (433-5)
टलहि जाम के दूत तिह जु साधू संगि समाहि ॥ (255-18)
टहल करउ तेरे दास की पग झारउ बाल ॥ (810-18)
टहल करहु तउ एक की जा ते ब्रिथा न कोइ ॥ (255-15)
टहल महल ता कउ मिलै जा कउ साध क्रिपाल ॥ (255-16)
टहल संतन की संगु साधू का हरि नामां जपि परम गते ॥१॥ रहाउ ॥ (1298-18)
टारी न टरै आवै न जाइ ॥ (1162-16)
टिकनु न पावै बिनु सतसंगति किसु आगै जाइ रूआईऐ ॥१॥ (532-13)
टुकु दमु करारी जउ करहु हाजिर हजूरि खुदाइ ॥१॥ (727-8)
टूटि परीति गई बुर बोलि ॥ (933-9)
टूटी गाढनहार गोपाल ॥ (282-10)
टूटी तंतु न बजै रबाबु ॥ (478-12)
टूटी निंदक की अध बीच ॥ (1224-16)
टूटी लाजु भरै मति हारी ॥३॥ (325-18)
टूटे अन भरानि हां ॥ (409-14)
टूटे बंधन जनम मरन साध सेव सुखु पाइ ॥ (255-14)
टूटे बंधन जासु के होआ साधू संगु ॥ (252-5)

टूटे बंधन बहु बिकार सफल पूरन ता के काम ॥ (300-1)
टूटे माइआ के बंधन फाहे हरि राम नाम लिव लागे ॥ (527-5)
टूटै गंठि पड़ै वीचारि ॥ (933-10)
टूटै नेहु कि बोलहि सही ॥ (933-9)
टूटै बाह दुहू दिस गही ॥ (933-9)
टेढी पाग टेढे चले लागे बीरे खान ॥ (1124-5)
टोडी बाणी भगतां की (718-10)
टोडी मः ५ ॥ (713-12)
टोडी मः ५ ॥ (714-7)
टोडी मः ५ ॥ (716-16)
टोडी महला ५ ॥ (711-15)
टोडी महला ५ ॥ (712-12)
टोडी महला ५ ॥ (712-18)
टोडी महला ५ ॥ (713-16)
टोडी महला ५ ॥ (713-19)
टोडी महला ५ ॥ (713-9)
टोडी महला ५ ॥ (714-11)
टोडी महला ५ ॥ (714-14)
टोडी महला ५ ॥ (714-17)
टोडी महला ५ ॥ (714-4)
टोडी महला ५ ॥ (715-15)
टोडी महला ५ ॥ (715-7)
टोडी महला ५ ॥ (716-13)
टोडी महला ५ ॥ (716-5)
टोडी महला ५ ॥ (716-9)
टोडी महला ५ ॥ (717-1)
टोडी महला ५ ॥ (717-12)
टोडी महला ५ ॥ (717-16)
टोडी महला ५ ॥ (717-5)
टोडी महला ५ ॥ (717-9)
टोडी महला ५ ॥ (718-1)
टोडी महला ५ घरु १ दुपदे (711-11)
टोडी महला ५ घरु २ चउपदे (712-4)
टोडी महला ५ घरु २ दुपदे (713-5)
टोडी महला ५ घरु ३ चउपदे (715-3)
टोडी महला ५ घरु ४ दुपदे (715-12)
टोडी महला ५ घरु ५ दुपदे (716-1)

टोडी महला ९ (718-5)
टोहे टाहे बहु भवन बिनु नावै सुखु नाहि ॥ (255-17)
ठंढी ताती मिटी खाई ॥ (378-15)
ठग दिसटि बगा लिव लागा ॥ (1351-12)
ठगणहार अणठगदा ठागै ॥ (900-5)
ठगा नीहु मत्रोड़ि जाणु गंध्रबा नगरी ॥ (1098-18)
ठगि मुठी कूड़िआर बंन्हि चलाईऐ ॥७॥ (420-2)
ठगै सेती ठगु रलि आइआ साथु भि इको जेहा ॥ (960-16)
ठठा इहै दूरि ठग नीरा ॥ (341-4)
ठठा मनूआ ठाहहि नाही ॥ (256-1)
ठठै ठाढि वरती तिन अंतरि हरि चरणी जिन्ह का चितु लागा ॥ (433-6)
ठहकि ठहकि माइआ संगि मूए ॥ (256-2)
ठहकि मुई अवगुणि पछुताइ ॥ (933-11)
ठांढि परी संतह संगि बसिआ ॥ (256-2)
ठाक न सचै बोहिथै जे गुरु धीरक देइ ॥ (1087-10)
ठाक न होती तिनहु दरि जिह होवहु सुप्रसंन ॥ (255-19)
ठाकहु मनूआ राखहु ठाइ ॥ (933-11)
ठाकि रहे मनु साचै धारिआ ॥ (796-4)
ठाकुर अपुने जो जनु भाइआ ॥ (256-3)
ठाकुर आइओ आहि ॥१॥ रहाउ ॥ (407-8)
ठाकुर ऐसो नामु तुम्हारो ॥ (498-6)
ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥ (285-13)
ठाकुर का दासु गुरमुखि होई ॥ (355-9)
ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥ (285-12)
ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥ (285-12)
ठाकुर के सेवक की निरमल रीति ॥ (285-13)
ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥ (285-13)
ठाकुर के सेवक हरि रंग माणहि ॥ (102-1)
ठाकुर चरण सुहावे ॥ (407-10)
ठाकुर जा सिमरा तूं ताही ॥ (499-18)
ठाकुर जीउ तुहारो परना ॥ (1299-16)
ठाकुर तुझ बिनु आहि न मोरा ॥ (499-8)
ठाकुर तुझ बिनु बीआ न होर ॥ (500-2)
ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ ॥ (1218-16)
ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेलु परिओ है तो सिउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1252-15)
ठाकुर नामु कीओ उनि वरतनि ॥ (181-7)
ठाकुर प्रभ तेरी टेक ॥ (896-13)

ठाकुर प्रीतम प्रभ मेरे ॥ (894-11)
ठाकुर बिनती करन जनु आइओ ॥ (1217-6)
ठाकुर भाणी सा गुणवंती तिन ही सभ रंग माणा ॥ (779-18)
ठाकुर भेटे गुर बचनांति ॥२॥ (1298-12)
ठाकुर महि ठकुराई तेरी कोमन सिरि कोमा ॥१॥ (507-11)
ठाकुर महि दासु दास महि सोइ ॥ (686-5)
ठाकुर सिउ जा की बनि आई ॥ (390-1)
ठाकुर हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥ (935-12)
ठाकुर होए आपि दइआल ॥ (499-4)
ठाकुर होए आपि दइआल ॥ (532-16)
ठाकुरि अपुनै कीनी दाति ॥ (389-19)
ठाकुरि माने से परधाने हरि सेती रंगि राते ॥ (577-14)
ठाकुरु एकु सबाई नारि ॥ (933-12)
ठाकुरु गाईऐ आतम रंगि ॥ (680-1)
ठाकुरु छोडि दासी कउ सिमरहि मनमुख अंध अगिआना ॥ (1138-18)
ठाकुरु मेरा सुघड़ु सुजाना ॥ (886-18)
ठाकुरु लेखा मगनहारु ॥ (1196-12)
ठाकुरु सरबे समाणा ॥ (51-13)
ठाकुरु हमरा सद बोलंता ॥ (1160-7)
ठाके बोहिथ दरगह मार ॥ (153-8)
ठाढा ब्रहमा निगम बीचारै अलखु न लखिआ जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1350-12)
ठाढि पाई करतारे ॥ (622-16)
ठोकि वजाइ सभ डिठीआ तुसि आपे लइअनु छडाइ जीउ ॥१२॥ (74-3)
डंड कमंडल सिखा सूतु धोती तीरथि गवनु अति भ्रमनु करै ॥ (1127-13)
डंडउति बंदन अनिक बार सरब कला समरथ ॥ (256-4)
डंडा मुंद्रा खिंथा आधारी ॥ (856-19)
डकै फूकै खेह उडावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ (1286-10)
डखणा ॥ (80-13)
डखणा ॥ (80-18)
डखणा ॥ (80-7)
डखणा ॥ (81-4)
डखणा ॥ (81-9)
डखणे मः ५ ॥ (1094-14)
डखणे मः ५ ॥ (1095-10)
डखणे मः ५ ॥ (1095-16)
डखणे मः ५ ॥ (1095-3)
डखणे मः ५ ॥ (1096-12)

डखणे मः ५ ॥ (1096-19)
डखणे मः ५ ॥ (1096-5)
डखणे मः ५ ॥ (1097-14)
डखणे मः ५ ॥ (1097-7)
डखणे मः ५ ॥ (1098-16)
डखणे मः ५ ॥ (1098-2)
डखणे मः ५ ॥ (1098-9)
डखणे मः ५ ॥ (1099-11)
डखणे मः ५ ॥ (1099-17)
डखणे मः ५ ॥ (1099-4)
डखणे मः ५ ॥ (1100-12)
डखणे मः ५ ॥ (1100-5)
डगमग छाडि रे मन बउरा ॥ (338-11)
डगरी चाल नेत्र फुनि अंधुले सबद सुरति नही भाई ॥ (1126-14)
डडा डर उपजे डरु जाई ॥ (341-5)
डडा डेरा इहु नही जह डेरा तह जानु ॥ (256-5)
डडै ड्हफु करहु किआ प्राणी जो किछु होआ सु सभु चलणा ॥ (433-8)
डर चूके बिनसे अंधिआरे ॥ (1077-13)
डर डरि मरै न बूडै कोइ ॥ (840-12)
डर महि घरु घर महि डरु जाणै ॥ (840-12)
डरपत डरपत जनम बहुतु जाही ॥१॥ रहाउ ॥ (197-8)
डरपि मुई घरि आपणै डीठी कंति सुजाणि ॥ (933-14)
डरपै धरति अकासु नख्यत्रा सिर ऊपरि अमरु करारा ॥ (998-17)
डरि घरु घरि डरु डरि डरु जाइ ॥ (151-7)
डरि डरि डरणा मन का सोरु ॥१॥ रहाउ ॥ (151-9)
डरि डरि पचे मनमुख वेचारे ॥१॥ रहाउ ॥ (677-1)
डरि डरि मरते जब जानीऐ दूरि ॥ (186-4)
डरीऐ जे डरु होवै होरु ॥ (151-9)
डरीऐ तां जे किछु आप दू कीचै सभु करता आपणी कला वधाए ॥ (308-2)
डरु चूका देखिआ भरपूरि ॥१॥ (186-4)
डरु राखिआ गुरि आपणै निरभउ नामु वखाणि ॥ (933-15)
डाकी को चिति कछू न लागै चरन कमल सरनाइ ॥१॥ (378-10)
डानु दैत निंदक कउ जाम ॥१॥ (1145-9)
डानु सगल गैर वजहि भरिआ दीवान लेखै न परिआ ॥ (408-9)
डाल छोडि ततु मूलु पराता मनि साचा ओमाहा हे ॥१३॥ (1033-4)
डाला सिउ पेडा गटकावहि ॥१॥ रहाउ ॥ (476-2)
डाली लागै तिनी जनमु गवाइआ ॥ (1051-10)

डाली लागै निहफलु जाइ ॥ (362-7)
डाहपणि तनि सुखु नही बिनु डर बिणठी डार ॥ (933-14)
डिगि न डोलै कतहू न धावै ॥ (889-1)
डिगै न डोलै द्रिड़ु करि रहिओ पूरन होइ त्रिपतानी ॥२॥ (671-19)
डिठड़ो हभ ठाइ ऊण न काई जाइ ॥ (318-19)
डिठा सभु संसारु सुखु न नाम बिनु ॥ (322-1)
डिठा हभ मझाहि खाली कोइ न जाणीऐ ॥ (1097-9)
डिठी हभ ढंढोलि हिकसु बाझु न कोइ ॥ (1100-12)
डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥ (1362-10)
डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥ (594-11)
डीगन डोला तऊ लउ जउ मन के भरमा ॥ (400-14)
डीहर निआई मोहि फाकिओ रे ॥ रहाउ ॥ (715-16)
डुखे कोड़ि न डुख नानक पिरी पिखंदो सुभ दिसटि ॥१॥ (1100-19)
डुबदे पाथर मेलि लैहु तुम आपे साचु नामु अबिनासी हे ॥९॥ (1048-14)
डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥१२२॥ (1384-11)
डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥३॥ (585-16)
डूंगरि जला थला भूमि बना फल कंदरा ॥ (1101-16)
डूंगरु देखि डरावणो पेईअड़ै डरीआसु ॥ (63-10)
डूगरि वासु तिखा घणी जब देखा नही दूरि ॥ (933-15)
डूगरु ऊचउ गड़ु पातालि ॥ (1274-17)
डूबत पाहन प्रभ मेरे लीजै ॥५॥१४॥२०॥ (741-8)
डूबि मुए बिनु पाणी गति नही जाणी हउमै धातु संसारे ॥ (246-2)
डूबे नाम बिनु घन साथ ॥ (1007-11)
डेखण कू मुसताकु मुखु किजेहा तउ धणी ॥ (1096-19)
डेरा निहचलु सचु साधसंग पाइआ ॥ (256-7)
डोरी पूरी मापहि नाही बहु बिसटाला लेही ॥२॥ (793-9)
डोरी लपटि रही चरनह संगि भ्रम भै सगले खाद ॥ (1226-19)
डोलत डोलत हे सखी फाटे चीर सीगार ॥ (933-13)
डोलन ते चूका ठहराइआ ॥ (890-11)
डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ ॥१॥ (256-4)
डोलि डोलि महा दुखु पाइआ बिना साधू संग ॥ (405-12)
डोलु बधा कसि जेवरी आकासि पताला ॥६॥ (228-18)
डोलै नाही तुमरा चीतु ॥ (179-3)
डोलै वाउ न वडा होइ ॥ (878-10)
ढंढोलत ढूढत हउ फिरी ढहि ढहि पवनि करारि ॥ (933-17)
ढंढोलिमु ढूढिमु डिठु मै नानक जगु धूए का धवलहरु ॥३॥ (138-4)
ढठीआ कमि न आवन्ही विचहु सखणीआहा ॥२॥ (729-4)

ढढा ढिग ढूढहि कत आना ॥ (341-7)
ढढा ढूढत कह फिरहु ढूढनु इआ मन माहि ॥ (256-9)
ढढै ढाहि उसारै आपे जिउ तिसु भावै तिवै करे ॥ (433-9)
ढहत ढहत अब ढहि परे साध जना सरनाइ ॥ (256-12)
ढहदी जाइ करारि वहणि वहंदे मै डिठिआ ॥ (1097-2)
ढाकन ढाकि गोबिद गुर मेरे मोहि अपराधी सरन चरन ॥१॥ रहाउ ॥ (828-1)
ढाकनहारे प्रभू हमारे जीअ प्रान सुखदाते ॥ (1117-17)
ढाठी भीति भरम की भेटत गुरु सूरा राम राजे ॥ (454-9)
ढाढी कथे अकथु सबदि सवारिआ ॥ (149-1)
ढाढी करे पसाउ सबदु वजाइआ ॥ (150-19)
ढाढी करे पुकार प्रभू सुणाइसी ॥ (510-11)
ढाढी का महलु अगला हरि कै नाइ पिआरि ॥ (516-6)
ढाढी की सेवा चाकरी हरि जपि हरि निसतारि ॥१८॥ (516-7)
ढाढी गुण गावै नित जनमु सवारिआ ॥ (790-19)
ढाढी तिस नो आखीऐ जि खसमै धरे पिआरु ॥ (516-5)
ढाढी दरि प्रभ मंगणा दरु कदे न छोड़े ॥ (323-9)
ढाढी दरु घरु पाइसी सचु रखै उर धारि ॥ (516-6)
ढाढी सचै महलि खसमि बुलाइआ ॥ (150-17)
ढाहन लागे धरम राइ किनहि न घालिओ बंध ॥ (256-8)
ढाहि उसारे धरे धिआनु ॥ (354-7)
ढाहि उसारे साजि जाणै सभ सोइ ॥ (729-18)
ढाहि उसारे हुकमि समावै ॥ (414-10)
ढाहि मड़ोली लूटिआ देहुरा सा धन पकड़ी एक जना ॥ (155-13)
ढाहे ढाहि उसारे आपे हुकमि सवारणहारो ॥ (579-8)
ढील न परी जा गुरि फुरमाए ॥३॥ (191-11)
ढुलके चवर संख घन गाजे ॥ (974-18)
ढूंढ वञाई थीआ थिता ॥ (964-18)
ढूंढत डोलहि अंध गति अरु चीनत नाही संत ॥ (1377-11)
ढूढत खोजत गुरि मेले बीरा ॥३॥ (1189-7)
ढूढत ही ढहि गए पराना ॥ (341-7)
ढूढेदीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर ॥ (1384-3)
ढेरी जामै जमि मरै गरभ जोनि दुख पाइ ॥ (256-11)
ढेरी ढाहहु साधसंगि अह्मबुधि बिकराल ॥ (256-10)
ढोई तिस ही नो मिलै जिनि पूरा गुरू लभा ॥ (44-10)
णा को जाणै आपणो एकहि टेक अधार ॥ (256-16)
णा को मेरा किसु गही णा को होआ न होगु ॥ (934-2)
णा हउ णा तूं णह छुटहि निकटि न जाईअहु दूत ॥१॥ (256-13)

णाणा रण ते सीझीऐ आतम जीतै कोइ ॥ (256-14)
णाणा रणि रूतउ नर नेही करै ॥ (341-8)
णाणै रवतु रहै घट अंतरि हरि गुण गावै सोई ॥ (433-10)
णाम विहूणे आदमी कलर कंध गिरंति ॥ (934-3)
तंत कउ परम तंतु मिलिआ नानका बुधि पाई ॥४॥४॥ (1328-13)
तंत मंत्र सभ अउखध जानहि अंति तऊ मरना ॥२॥ (477-1)
तंतु मंतु नह जोहई तितु चाखु न लागै ॥१॥ रहाउ ॥ (818-1)
तंतु मंतु पाखंडु न कोई ना को वंसु वजाइदा ॥७॥ (1035-17)
तंतु मंतु पाखंडु न जाणा रामु रिदै मनु मानिआ ॥ (766-17)
तंतु मंतु भजीऐ भगवंत ॥ (866-17)
तंतु सूतु किछु निकसै नाही साकत संगु न कीजै ॥६॥ (1324-9)
तंतै कउ परम तंतु मिलाइआ नानक सरणि तुमारी ॥५॥६॥ (597-10)
तंनि जड़ांई आपणै लहां सु सजणु टोलि ॥२१॥ (1426-7)
त धरिओ मसतकि हथु सहजि अमिउ वुठउ छजि सुरि नर गण मुनि बोहिय अगाजि ॥ (1391-3)
त नामदेव का पतीआ जाइ ॥२६॥ (1166-11)
तउ अनहद बेणु सहज महि बाइ ॥१॥ (344-11)
तउ अरधहि उरध मिलिआ सुख पावा ॥२५॥ (341-14)
तउ अलह लहै लहि चरन समावै ॥३६॥ (342-9)
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥२॥ (324-18)
तउ इसु घर की कीमति परी ॥७॥ (235-19)
तउ कउड़तणु चूकसि माइ ॥ (1243-11)
तउ कड़ीऐ जे अनिआइ को मरता ॥ (1140-4)
तउ कड़ीऐ जे किछु जाणै नाही ॥ (1140-5)
तउ कड़ीऐ जे किछु होइ धिङाणै ॥ (1140-5)
तउ कड़ीऐ जे दूजा करता ॥ (1140-4)
तउ कड़ीऐ जे दूजा भाए ॥ (1140-3)
तउ कड़ीऐ जे भूलि रंञाणै ॥ (1140-6)
तउ कड़ीऐ जे विसरै नरहरि ॥ (1140-2)
तउ कड़ीऐ जे होवै बाहरि ॥ (1140-2)
तउ कत अनत सादि लोभाई ॥१॥ रहाउ ॥ (733-3)
तउ कामणि पिआरे नव निधि पाई ॥६॥ (750-17)
तउ कामणि सेजै रवै भतारु ॥४॥ (357-4)
तउ कारणि साहिबा रंगि रते ॥ (358-13)
तउ किछु पाईऐ जउ होईऐ रेना ॥ (739-1)
तउ किरपा ते मारगु पाईऐ ॥ (180-7)
तउ किरपा ते सुखु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (884-8)
तउ किरपा ते हउमै तुटै ॥१॥ (180-8)

तउ कीजै जउ आपन जीजै ॥१॥ (325-15)
तउ कुदरति कीमति नही पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (151-14)
तउ गुण पछाणहि ता प्रभु जाणहि गुणह वसि अवगण नसै ॥ (436-5)
तउ गुन ईस बरनि नही साकउ तुम मंदर हम निक कीरे ॥ (983-6)
तउ चूकी सगल कानि ॥१॥ (409-15)
तउ छूटै जा खसमु छडाए ॥ (839-13)
तउ जग जनम संकट नही आइआ ॥२॥ (487-4)
तउ जगजीवनु वसै मनि आइ ॥२॥ (1173-6)
तउ जठर अगनि महि रहता ॥२॥ (337-8)
तउ जन धीरजु पावा ॥१॥ (656-19)
तउ जमु कहा करे मो सिउ आगै ॥१॥ रहाउ ॥ (356-15)
तउ जानी जा सबदि पछानी ॥ (904-8)
तउ जेवडु दातारु न कोई जाचकु सदा जाचोवै ॥१॥ (964-11)
तउ जोनी संकट बहुरि न आवै ॥ (344-2)
तउ ततहि तत मिलिआ सचु पावा ॥२२॥ (341-10)
तउ तीनि लोक की बातै कहै ॥३३॥ (342-5)
तउ दइआल को दरसनु कीजै ॥२४॥ (341-13)
तउ दरसन की करउ समाइ ॥ (721-11)
तउ दूजी द्रिसटि न पैसै कबै ॥६॥ (344-17)
तउ देवाना जाणीऐ जा एका कार कमाइ ॥ (991-9)
तउ देवाना जाणीऐ जा भै देवाना होइ ॥ (991-8)
तउ देवाना जाणीऐ जा साहिब धरे पिआरु ॥ (991-10)
तउ न पुजहि हरि कीरति नामा ॥ (873-9)
तउ नानक आतम राम कउ लहै ॥६२॥ (945-5)
तउ नानक कंतै मनि भावै ॥ (357-4)
तउ नानक मोखंतरु पाए ॥२॥ (470-9)
तउ नानक सरब जीआ मिहरमति होइ त मुसलमाणु कहावै ॥१॥ (141-12)
तउ नामा हरि करता रहै ॥१३॥ (1166-2)
तउ निकसै सरनि पै री सखी ॥१॥ (409-10)
तउ निसतरै जउ किरपा होइ ॥३॥ (898-6)
तउ परम गुरू नानक गुन गावउ ॥१॥ (1389-12)
तउ परवाह केही किआ कीजै ॥ (351-8)
तउ परसादि रंग रस माणे ॥ (1144-11)
तउ प्रसादि प्रभ सुखी वलाईं ॥२॥ (386-5)
तउ भउ मिटिओ मेरे मीत ॥२॥ (390-7)
तउ भवजल के तूटसि बंध ॥५॥४॥ (1169-12)
तउ भवजल तरत न लावै बारा ॥४०॥ (342-14)

तउ भाणा तां त्रिपति अघाए राम ॥ (577-2)
तउ भावनि तउ जेहीआ मू जेहीआ कितीआह ॥ (1015-3)
तउ भी मेरा मनु न पतीआरा ॥ (373-11)
तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥ (265-15)
तउ मनु मतवारो पीवनहार ॥२॥ (344-12)
तउ मनु मानै जा ते हउमै जई है ॥२॥ (325-9)
तउ मिलीऐ गुर क्रिपानि मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (409-13)
तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥ (268-7)
तउ मै आइआ सरनी आइआ ॥ (746-11)
तउ मै लालनु पाइओ री ॥२॥ (830-7)
तउ मै हरि हरि करीआ ॥ (537-4)
तउ लउ महलि न लाभै जान ॥ (345-1)
तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥ (291-13)
तउ सजण की मै कीम न पउदी हउ तुधु बिनु अढु न लहदी ॥१॥ (963-12)
तउ सरणाई उबरहि करते आपे मेलि मिलाइआ ॥१॥ (1068-4)
तउ सरणाई पूरन नाथ ॥ (867-8)
तउ सरणागति नदरि निहाला ॥१॥ रहाउ ॥ (228-13)
तउ सरणागति माधवे पूरन दइआल ॥ (815-7)
तउ सरणागति रहउ पइआ ॥३॥ (1170-16)
तउ सह चरणी मैडा हीअड़ा सीतमु हरि नानक तुलहा बेड़ी ॥१॥ (520-7)
तउ सह सेती लगड़ी डोरी नानक अनद सेती बनु गाही ॥१॥ (520-13)
तउ सुख सहजरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (537-4)
तउ सुखु पावै निज घरि बसै ॥२॥ (1147-16)
तउ होइ निखिअउ अखै पदु लहै ॥८॥ (340-11)
तऊ पारब्रहम का अंतु न लहै ॥६॥ (1163-6)
तकहि नारि पराईआ लुकि अंदरि ठाणी ॥ (315-3)
तखत निवासी पंच समाइ ॥ (411-17)
तखति निवासु सचु मनि भाणै ॥१७॥ (840-13)
तखति बहै अदली प्रभु आपे भरमु भेदु भउ जाई हे ॥१०॥ (1022-3)
तखति बहै तखतै की लाइक ॥ (1039-11)
तखति बैठा अरजन गुरू सतिगुर का खिवै चंदोआ ॥ (968-15)
तखति राजा सो बहै जि तखतै लाइक होई ॥ (1088-14)
तखति सलामु होवै दिनु राती ॥ (1039-12)
तखतु सभा मंडन दोलीचे ॥ (179-16)
तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ॥ (471-6)
तगु न इंद्री तगु न नारी ॥ (471-9)
तगु न जिहवा तगु न अखी ॥ (471-10)

तगु न पैरी तगु न हथी ॥ (471-10)
तजहि बिकार बिनसै अभिमानु ॥ (900-17)
तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥ (281-2)
तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥ (281-3)
तजि अभिमान भए निरवैर ॥ (183-10)
तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥ (219-17)
तजि अभिमानु अरु चिंत बिरानी साधह सरन पए ॥ (829-15)
तजि अभिमानु काम क्रोधु निंदा बासुदेव रंगु लावै ॥१॥ (1218-7)
तजि अभिमानु छुटै तेरी बाकी ॥ (259-10)
तजि अभिमानु जनम मरणु निवारहु ॥ (191-6)
तजि अभिमानु जानु प्रभु संगि ॥ (866-3)
तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥ (283-4)
तजि अभिमानु सरणि संतन गहु मुकति होहि छिन माही ॥ (1231-14)
तजि अभिमानु सरणी परउ हरि गुण निधि पाई ॥२॥ (745-14)
तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥ (793-14)
तजि आन कतहि न जाहि ॥१॥ (837-10)
तजि आन सरणि गही ॥१॥ रहाउ ॥ (837-9)
तजि आपु बिनसी तापु रेण साधू थीउ ॥ (1007-3)
तजि आपु मिटै संतापु आपु नह जाणाईऐ ॥ (457-9)
तजि आपु सरणी परे चरनी सरब गुण जगदीसरै ॥ (929-15)
तजि कामु कामिनी मोहु तजै ता अंजन माहि निरंजनु पावै ॥ (141-14)
तजि कामु क्रोधु अनिंद निंदा प्रभ सरणाई आइआ ॥ (461-11)
तजि कूड़ु कपटु सुभाउ दूजा चाकरी लोकाणीआ ॥ (844-3)
तजि कूड़ु कुट्मबु हउमै बिखु त्रिसना चलणु रिदै सम्हालि ॥१॥ रहाउ ॥ (1258-18)
तजि गए पाप बिकार ॥ (837-12)
तजि गोपाल आन जो करणी सोई सोई बिनसत खाम ॥ (702-15)
तजि गोपाल आन रंगि राचत मिथिआ पहिरत खात ॥ रहाउ ॥ (1120-10)
तजि गोपाल जि आन लागे से बहु प्रकारी रोत ॥ (1121-14)
तजि चित्रै चितु राखि चितेरा ॥१२॥ (340-16)
तजि चित्रै चेतहु चितकारी ॥ (340-15)
तजि बावे दाहने बिकारा हरि पदु द्रिड़ु करि रहीऐ ॥ (334-7)
तजि भरम करम बिधि निखेध राम नामु लेही ॥ (692-15)
तजि माइआ मोहु लोभु अरु लालचु काम क्रोध की ब्रिथा गई ॥ (1402-3)
तजि मान मोह बिकार साधू लगि तरउ तिन कै पाए ॥ (1312-3)
तजि मान मोह विकार मिथिआ जपि राम राम राम ॥ (409-1)
तजि मान मोहु विकारु दूजा एक सिउ लिव लाईऐ ॥ (704-14)
तजि मानु अभिमानु प्रीति सुत दारा तजि पिआस आस राम लिव लावै ॥ (141-14)

तजि मानु मोहु बिकारु दूजा सेवि एकु निरंजनो ॥ (847-3)
तजि मानु मोहु बिकारु मन का कलमला दुख जारे ॥ (459-7)
तजि मानु मोहु विकार सगले प्रभू कै मनि भाईऐ ॥ (578-13)
तजि मानु मोहु विकारु दूजा जोती जोति समाणी ॥ (453-6)
तजि मानु सखी तजि मानु सखी मतु आपणे प्रीतम भावह ॥ (847-2)
तजि मोहु भरमु सगल अभिमानु ॥२॥१॥३८॥ (1305-18)
तजि लाज अहंकारु सभु तजीऐ मिलि साधू संगि रहीजै ॥ (1326-11)
तजि सकल दुहक्रित दुरमती भजु चक्रधर सरणं ॥३॥ (526-17)
तजि सभि भरम भजिओ पारब्रहमु ॥ (196-1)
तजि साद सहज सुखु होई ॥ (989-12)
तजि सारंगधर भ्रमि तू भूला मोहि लपटिओ दासी संगि सानथ ॥१॥ रहाउ ॥ (1001-9)
तजि हउ लोभा एको जाता ॥ (904-9)
तजि हउमै गुर गिआन भजो ॥ (241-8)
तजिऐ अंनि न मिलै गुपालु ॥ (873-6)
तजिओ मन ते अभिमानो ॥२॥ (1006-4)
तजिओ री सगल बिकार ॥ (1271-16)
तजी ले बनारस मति भई थोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (326-8)
तजी सिआणप बल बुधि बिकार ॥ (177-18)
तजी सिआनप चिंत विसारी अहं छोडिओ है तिआग्यि ॥१॥ रहाउ ॥ (701-2)
तजै गिरसतु भइआ बन वासी इकु खिनु मनूआ टिकै न टिकईआ ॥ (835-9)
तट तीरथ देव देवालिआ केदारु मथुरा कासी ॥ (1100-15)
तट तीरथ भवे सभ धरना ॥ (394-17)
तट तीरथ सभ धरती भ्रमिओ दुबिधा छुटकै नाही ॥२॥ (641-19)
तट तीरथ हम नव खंड देखे हट पटण बाजारा ॥ (156-13)
तटन खटन जटन होमन नाही डंडधार सुआउ ॥१॥ (1306-1)
तटि तीरथि दिसंतरि भवै अहंकारी होरु वधेरै हउमै मलु लावणिआ ॥३॥ (116-8)
तटि तीरथि न छोडै जोग संनिआस ॥ (371-8)
तटि तीरथि नही मनु पतीआइ ॥ (325-5)
तड़ सुणिआ सभतु जगत विचि भाई वेमुखु सणै नफरै पउली पउदी फावा होइ कै उठि घरि आइआ ॥ (306-8)
तड़फि मूआ जिउ जल बिनु मीना ॥३॥ (1143-13)
तत समदरसी संतहु कोई कोटि मंधाही ॥२॥ (51-14)
ततह कुट्मब मोह मिथ्या सिमरंति नानक राम राम नामह ॥३०॥ (1356-14)
तता अतर तरिओ नह जाई ॥ (341-9)
तता ता सिउ प्रीति करि गुण निधि गोबिद राइ ॥ (256-19)
तती तोइ न पलवै जे जलि टुबी देइ ॥ (1381-4)
तती वाउ न ता कउ लागै ॥ (1085-6)

तती वाउ न लगई जिन मनि वुठा आइ जीउ ॥२॥ (132-10)
तती वाउ न लगई सतिगुरि रखे आपि ॥३॥ (218-7)
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥ (285-10)
ततु गिआनु लाइ धिआनु द्रिसटि समेटिआ ॥ (520-17)
ततु गिआनु वीचारिआ हरि जपि हरि गते ॥१९॥ (1093-8)
ततु गिआनु हरि अम्रित नाम ॥ (1146-6)
ततु चुगहि मिलि एकसे तिन कउ फास न रंच ॥ (934-6)
ततु तेलु नामु कीआ बाती दीपकु देह उज्यारा ॥ (1350-13)
ततु न चीनहि बंनहि पंड पराला ॥२॥ (231-1)
ततु न चीनै मनमुखु जलि जाइ ॥ (944-6)
ततु निरंजनु जोति सबाई सोहं भेदु न कोई जीउ ॥ (599-5)
ततु पछाणै सो पंडितु होई ॥ (128-13)
ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ ॥ (1409-8)
ततु बीचारि किआ अवरि बीचारा ॥३॥ (327-8)
ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥ (288-12)
ततु बीचारु डंडा करि राखिओ जुगति नामु मनि भानी ॥४॥ (208-6)
ततु लहहि अंतरगति जाणहि सतसंगति साचु वडाई हे ॥१५॥ (1026-12)
ततु वीचारहु संत जनहु ता ते बिघनु न लागै ॥ (399-8)
ततु वीचारहु हरि लिव लावहु ॥ (1030-8)
ततु सारु परम पदु पाइआ छोडि न कतहू जाता ॥३॥ (884-5)
ततै तामसि जलिओहु मूड़े थथै थान भरिसटु होआ ॥ (435-5)
ततै तारू भवजलु होआ ता का अंतु न पाइआ ॥ (433-11)
ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥ (920-15)
ततो ततु मिलै मनु मानै ॥ (943-13)
तत्र गते संसारह नानक सोग हरखं बिआपते ॥४१॥ (1357-13)
तथ लगणं प्रेम नानक ॥ (1361-4)
तद ही साचि मिलावा होइ ॥१॥ (1173-11)
तदहु आकासु न पातालु है ना त्रै लोई ॥ (509-2)
तदहु आपे आपि निरंकारु है ना ओपति होई ॥ (509-3)
तदहु किआ को लेवै किआ को देवै जां अवरु न दूजा कीआ ॥ (551-7)
तन छूटे मनु कहा समाई ॥४॥ (330-9)
तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥१॥ (1231-9)
तन ते छुटकी अपनी धारी ॥ (887-11)
तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि ॥ (536-12)
तन त्रिभवण महि रहिओ समाई ॥ (341-10)
तन मन गलत भए ठाकुर सिउ आपन लीए मिलाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1299-3)
तन मन गलत भए तिह संगे मोहनी मोहि रही मोरी माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1302-9)

तन मन रमत रहै महि खेतै ॥१॥ रहाउ ॥ (872-9)
तन मन सीतल भए अब मुकते संसारी ॥ (810-17)
तन महि कामु क्रोधु हउ ममता कठिन पीर अति भारी ॥ (1126-1)
तन महि त्रिसना अगि सबदि बुझाईऐ ॥१९॥ (147-9)
तन महि मनूआ मन महि साचा ॥ (686-8)
तन महि मैलु नाही मनु राता ॥ (154-5)
तन महि साचो गुरमुखि भाउ ॥ (222-16)
तन महि होती कोटि उपाधि ॥ (326-19)
तनना बुनना सभु तजिओ है कबीर ॥ (524-14)
तनि चंदनु मसतकि पाती ॥ (1351-12)
तनि प्रेमु हरि चाबकु लाइआ राम ॥ (575-12)
तनि प्रेमु हरि हरि लाइ चाबकु मनु जिणै गुरमुखि जीतिआ ॥ (575-13)
तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ (472-3)
तनि बिरहु जगावै मेरे पिआरे नीद न पवै किवै ॥ (452-2)
तनि मनि सांति होइ अधिकाई रोगु काटै सूखि सवीजै ॥३॥ (1326-1)
तनि मनि सूचै साचु सु चीति ॥ (222-1)
तनि सुगंध ढूढै प्रदेसु ॥ (1196-11)
तनि सोहै मनु मोहिआ रती रंगि निहालि ॥ (56-4)
तनु करि तुलहा लंघहि जेतु ॥ (878-6)
तनु करि मटुकी मन माहि बिलोई ॥ (478-8)
तनु जलि बलि माटी भइआ मनु माइआ मोहि मनूरु ॥ (19-14)
तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलंन्हि ॥ (1384-8)
तनु धनु आपन थापिओ हरि जपु न निमख जापिओ अरथु द्रबु देखु कछु संगि नाही चलना ॥१॥ (678-17)
तनु धनु कलतु मिथिआ बिसथार ॥ (888-12)
तनु धनु कलतु सभु देखु अभिमाना ॥ (832-2)
तनु धनु जिह तो कउ दीओ तां सिउ नेहु न कीन ॥ (1426-16)
तनु धनु जोबनु चलत गइआ ॥ (826-6)
तनु धनु तेरा तूं प्रभु मेरा हमरै वसि किछु नाहि ॥ (406-1)
तनु धनु थापि कीओ सभु अपना कोमल बंधन बांधिआ ॥ (383-16)
तनु धनु देखत गरबि गइआ ॥ (906-8)
तनु धनु प्रभ का प्रभ की जिंदु ॥१॥ रहाउ ॥ (866-2)
तनु धनु प्रभ का प्रभ की जिंदु ॥१॥ रहाउ ॥ (866-8)
तनु धनु बिनसै सहसै सहसा फिरि पछुतावै मुखि धूरि परे ॥६॥ (1014-4)
तनु धनु सभु रसु गोबिंद तोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (336-19)
तनु धनु सरबसु आपणा प्रभि जन कउ दीन्हा ॥४॥२८॥५८॥ (815-16)
तनु धनु स्मपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ॥ (1426-17)
तनु धनु होसी छारु जाणै कोइ जनु ॥ (322-1)

तनु धरती हरि बीजीऐ विचि संगति हरि प्रभ राखु ॥ (997-11)
तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥ (1384-9)
तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥ (1411-19)
तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥१॥ रहाउ ॥ (1186-18)
तनु बिनसै धनु का को कहीऐ ॥ (416-1)
तनु बैसंतरि होमीऐ इक रती तोलि कटाइ ॥ (62-6)
तनु भसम ढेरी जमहि हेरी कालि बपुड़ै जितिआ ॥ (459-19)
तनु मनु अपनो जीअरा फिरि फिरि हउ वारी ॥१॥ रहाउ ॥ (810-14)
तनु मनु अरपउ पूज चरावउ ॥ (525-14)
तनु मनु अरपि करउ जन सेवा रसना हरि गुन गावउ ॥१॥ (533-10)
तनु मनु अरपि धरी सभु आगै जग महि नामु सुहावणा ॥१॥ (1085-17)
तनु मनु अरपि सरबसु सभु अरपिओ अनद सहज धुनि झोक ॥१॥ रहाउ ॥ (1253-12)
तनु मनु अरपि सीगार बणाए हरि प्रभ साचे भाइआ ॥ (775-3)
तनु मनु अरपी तुधु आगै राखउ सदा रहां सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1333-7)
तनु मनु अरपे सतिगुर सरणाई ॥ (362-19)
तनु मनु अरपै है इहु जिस का ॥ (832-11)
तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥४॥ (757-12)
तनु मनु खोजि घरै महि पाइआ ॥ (1129-19)
तनु मनु खोजे ता नाउ पाए ॥ (110-3)
तनु मनु गुर पहि वेचिआ मनु दीआ सिरु नालि ॥ (20-16)
तनु मनु जीउ पिंडु दे साजिआ ॥ (887-2)
तनु मनु दिता भवजलु जिता चूकी कांणि जमाणी ॥ (576-15)
तनु मनु दीजै सजणा ऐसा हसणु सारु ॥ (1410-7)
तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥ (793-14)
तनु मनु धनु अपना करि थापिआ ॥ (805-14)
तनु मनु धनु अरपउ तिसै प्रभू मिलावै मोहि ॥ (256-18)
तनु मनु धनु अरपउ सभु अपना ॥ (804-3)
तनु मनु धनु अरपी तिन कउ निवि निवि लागउ पाइ ॥ (587-18)
तनु मनु धनु अरपी सभो सगल वारीऐ इह जिंदु ॥ (47-6)
तनु मनु धनु ग्रिहु सउपि सरीरु ॥ (328-5)
तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥ (918-5)
तनु मनु धनु हरि आगै राखिआ ॥ (1343-5)
तनु मनु निरमलु निरमल बाणी नामो मंनि वसाए ॥ (944-14)
तनु मनु निरमलु निरमल बाणी सचे सचि समाइआ ॥३॥ (602-14)
तनु मनु निरमलु निरमल बाणी साचै रहै समाए ॥ (946-4)
तनु मनु पिर आगै सबदि सभागै घरि अम्रित फलु पावए ॥ (436-11)
तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥ (135-10)

तनु मनु रता भोगि कोई हारै को जिणै ॥ (1244-18)
तनु मनु रता रंग सिउ हउमै त्रिसना मारि ॥ (788-14)
तनु मनु राता सहजि सुभाए ॥ (122-2)
तनु मनु राम पिआरे जोगु ॥१॥ रहाउ ॥ (1164-2)
तनु मनु वारी वारि घुमाई अपने गुर विटहु बलिहारी ॥२७॥ (911-16)
तनु मनु सउपउ क्रिसन परीति ॥५॥ (413-12)
तनु मनु सउपी आगै धरी विचहु आपु गवाइ ॥२२॥ (756-5)
तनु मनु सउपे कंत कउ तउ नानक भोगु करेइ ॥१॥ (788-10)
तनु मनु सउपे जीअ सउ भाई लए हुकमि फिराउ ॥ (1419-5)
तनु मनु सभु किछु हरि तिसु केरा दुरमति कहणु न जाए ॥ (753-17)
तनु मनु सभु सीतलु भइआ पाइआ सुखु बीर ॥१॥ रहाउ ॥ (814-17)
तनु मनु समधा जे करी अनदिनु अगनि जलाइ ॥ (62-6)
तनु मनु साचे साहिब जोगु ॥१॥ रहाउ ॥ (1128-14)
तनु मनु सीतलु अगनि निवारी ॥ (887-1)
तनु मनु सीतलु क्रोधु निवारे हउमै मारि समाइआ ॥१५॥ (1068-1)
तनु मनु सीतलु जपि नामु तेरा ॥ (386-1)
तनु मनु सीतलु मुख उजले पिर कै भाइ पिआरि ॥ (428-16)
तनु मनु सीतलु रंगि रंगीआ ॥ (943-8)
तनु मनु सीतलु साचु परीख ॥ (152-12)
तनु मनु सीतलु होइ हमारो नानक प्रभ जीउ नदरि निहाल ॥२॥५॥१२१॥ (828-15)
तनु मनु सीतलु होइआ रसना हरि सादु आइआ ॥ (644-4)
तनु मनु सीतलु होइआ सांति वसी मनि आइ ॥ (1316-13)
तनु मनु हरि का धनु सभु हरि का हरि के गुण हउ किआ गनी ॥ (883-13)
तनु मनु हरि पहि आगै जिंदु ॥३॥ (352-3)
तनु मनु हरिआ होइआ सिमरत अगम अपार ॥ (1251-11)
तनु मनु होइ निहालु जा गुरु देखा साम्हणे ॥१॥ (758-14)
तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥ (513-17)
तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥ (853-14)
तनु मेरा स्मपै सभ मेरी बाग मिलख सभ जाए ॥ (212-19)
तनु रैनी मनु पुन रपि करि हउ पाचउ तत बराती ॥ (482-2)
तनु संतन का धनु संतन का मनु संतन का कीआ ॥ (610-7)
तनु सचा रसना सचि राती सचु सुणि आखि वखानणिआ ॥२॥ (119-19)
तनु सीतलु मनु सीतलु थीआ सतगुर सबदि समाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (215-6)
तनु सूचा सो आखीऐ जिसु महि साचा नाउ ॥ (19-16)
तनु हटड़ी इहु मनु वणजारा ॥ (942-11)
तनु हैमंचलि गालीऐ भी मन ते रोगु न जाइ ॥ (62-8)
तप महि तपीसरु ग्रिहसत महि भोगी ॥ (284-3)

तपत कड़ाहा बुझि गइआ गुरि सीतल नामु दीओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1002-16)
तपति न कतहि बुझै बिनु सुआमी सरणा राम ॥ (545-17)
तपति बुझानी अम्रित बानी त्रिपते जिउ बारिक खीर ॥ (978-18)
तपति बुझी गुर सबदी माइ ॥ (373-1)
तपति बुझी पूरन सभ आसा ॥ (1143-5)
तपति बुझी सीतल आघाने सुनि अनहद बिसम भए बिसमाद ॥ (1217-19)
तपति माहि ठाढि वरताई ॥ (287-14)
तपसी करि कै देही साधी मनूआ दह दिस धाना ॥ (1003-3)
तपसी तपहि राता ॥२॥ (71-8)
तपसी माते तप कै भेव ॥१॥ (1193-18)
तपा न होवै अंद्रहु लोभी नित माइआ नो फिरै जजमालिआ ॥ (315-14)
तपि तपि खपै बहुतु बेकार ॥ (661-17)
तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥ (794-10)
तपी तपीसुर मुनि महि पेखिओ नट नाटिक निरताए ॥२॥ (1139-5)
तपीआ होवै तपु करे तीरथि मलि मलि नाइ ॥१॥ (730-6)
तपु करते तपसी भूलाए ॥ (370-8)
तपु कागदु तेरा नामु नीसानु ॥ (1257-5)
तपु तापन तापहि जग पुंन आर्मभहि अति किरिआ करम कमाइ जीउ ॥ (445-16)
तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे ॥ (70-15)
तपे तपीसर डोलै चीत ॥१॥ रहाउ ॥ (872-2)
तपे रखीसर माइआ महि सूता ॥ (1160-15)
तपै हिआउ जीअड़ा बिललाइ ॥ (661-4)
तब अंतरि मजनु कीन्हा ॥१॥ (972-1)
तब अरोग जब तुम संगि बसतौ छुटकत होइ रवारै ॥१॥ (1214-14)
तब आपस ऊपरि रखै गुमानु ॥ (892-1)
तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥ (278-16)
तब इस कउ है मुसकलु भारी ॥ (235-13)
तब इस नो नाही किछु ताता ॥३॥ (235-14)
तब इह त्रीअ ओहु कंतु कहावा ॥४१॥ (342-15)
तब इह मति जउ सभ महि पेखै कुटिल गांठि जब खोलै देव ॥ (857-15)
तब इह मानस देही पाई ॥ (1159-7)
तब इहु कहा कमावन परिआ जब इहु कछू न होता ॥ (216-1)
तब इहु बावरु फिरत बिगाना ॥ (235-10)
तब एको एकंकारा ॥१॥ (736-11)
तब ओह चरणी आइ पई ॥१॥ (891-18)
तब ओह सेवकि सेवा करै ॥२॥ (892-2)
तब ओही उहु एहु न होई ॥४२॥ (342-17)

तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥ (291-7)
तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥ (291-4)
तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ॥ (291-12)
तब काड़ा छोडि अचिंत हम सोते ॥३॥ (1140-6)
तब काहू का कवनु निहोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (328-1)
तब कुलु किस का लाजसी जब ले धरहि मसानि ॥१६६॥ (1373-8)
तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ॥ (291-6)
तब छूटे जब साधू पाइआ ॥५॥५॥१३॥ (1160-18)
तब जम की त्रास कहहु किसु होइ ॥ (291-6)
तब जाइ जोति उजारउ लहै ॥१४॥ (340-18)
तब जानहुगे जब उघरैगो पाज ॥३॥ (324-3)
तब जानिआ जब जीवत मूआ ॥ (327-2)
तब जो किछु करे सु मेरे हरि प्रभ भाई ॥३॥ (494-18)
तब ढूंढन कहा को जाइआ ॥ (202-3)
तब ते इस नो सभु किछु सूझिआ ॥५॥ (235-17)
तब ते दूख डंड अरु खेदा ॥ (235-16)
तब ते धावतु मनु त्रिपताइआ ॥१॥ (189-15)
तब ते मिटे ताप हां ॥ (410-15)
तब तेरी ओक कोई पानीओ न पावै ॥२॥ (656-8)
तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥ (291-2)
तब नरु सुता जागिआ सिरि डंडु लगा बहु भारु ॥ (1418-2)
तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी ॥३॥७॥ (633-2)
तब प्रभ काजु सवारहि आइ ॥१॥ (1161-1)
तब प्रभ नानक मीठे लागे ॥४॥१२॥६३॥ (386-18)
तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥ (291-2)
तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥ (290-18)
तब भेटे गुर साध दइआल ॥ (863-19)
तब मेरै मनि महा सुखु पाइआ ॥१॥ (390-6)
तब मोह कहा किसु होवत भरम ॥ (290-19)
तब रस मंगल गुन गावहु ॥ (830-7)
तब लगु काजु एकु नही सरै ॥ (1160-19)
तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥ (278-17)
तब लगु धरम राइ देइ सजाइ ॥ (278-18)
तब लगु नाही चरन निवास ॥२॥ (1161-12)
तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥ (278-18)
तब लगु प्रानी तिसै सरेवहु जब लगु घट महि सासा ॥ (793-3)
तब लगु बनु फूलै ही नाहि ॥ (1161-2)

तब लगु बिसरै रामु सनेही ॥२॥ (524-16)
तब लगु महलु न पाईऐ जब लगु साचु न चीति ॥ (58-5)
तब लगु होइ नही चरन निवासु ॥३॥ (325-10)
तब ले निरखहि निरख मिलावा ॥२६॥ (341-16)
तब लोगह काहे दुखु मानिआ ॥१॥ (324-1)
तब सगले इसु मेलहि फंदा ॥ (235-12)
तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥ (291-3)
तब हम इतनकु पसरिओ तानां ॥१॥ (484-11)
तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥ (290-19)
तब हूआ सगल करम का नासु ॥७॥ (344-18)
तब होए मन सुध परानी ॥ (898-11)
तबलबाज बीचार सबदि सुणाइआ ॥ (142-16)
तम अंध कूप ते उधारै नामु मंनि वसाईऐ ॥ (249-1)
तम अगिआन मोहत घूप ॥ (838-2)
तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥१॥ (1429-14)
तर तारि अपवित्र करि मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं ॥ (1293-5)
तरकस तीर कमाण सांग तेगबंद गुण धातु ॥ (16-17)
तरकु न चा ॥ (693-19)
तरण तारण प्रभ तेरो नाउ ॥ (893-12)
तरण तारण हरि निधि दूखु न सकै बिआपि ॥१॥ (675-15)
तरण सरण सुआमी रमण सील परमेसुरह ॥ (1357-16)
तरण सागर बोहिथ चरण तुमारे तुम जानहु अपुनी भाते ॥ (209-3)
तरणु दुहेला भइआ खिन महि खसमु चिति न आइओ ॥ (460-5)
तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥ (1426-12)
तरनापो बिखिअन सिउ खोइओ बालपनु अगिआना ॥ (902-9)
तरफ जिणै सत भाउ दे जन नानक सबदु वीचारे ॥४॥ (787-18)
तरला जुआणी आपि भाणी इछ मन की पूरीए ॥ (567-12)
तरवर पंखी बहु निसि बासु ॥ (152-18)
तरवर फूले बन हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (1190-10)
तरवर बिरख बिहंग भुइअंगम घरि पिरु धन सोहागै ॥२॥ (1197-12)
तरवर विछुंने नह पात जुड़ते जम मगि गउनु इकेली ॥ (546-10)
तरवरु एकु अनंत डार साखा पुहप पत्र रस भरीआ ॥ (970-10)
तरवरु काइआ पंखि मनु तरवरि पंखी पंच ॥ (934-6)
तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ (1429-15)
तरहि नारदादि सनकादि हरि गुरमुखहि तरहि इक नाम लगि तजहु रस अंन रे ॥ (1401-7)
तरिओ संसारु कठिन भै सागरु हरि नानक चरन धिआई ॥२॥६॥१०॥ (1268-13)
तरिओ सागरु पावक को जउ संत भेटे वड भागि ॥ (701-4)

तरी न जाई दुतर माइआ ॥२॥ (898-4)
तरीकति तरक खोजि टोलावहु ॥ (1083-16)
तरु तारी मनि नामु सुचीतु ॥१॥ (153-4)
तरु भउजलु अकथ कथा सुनि हरि की ॥१॥ (164-5)
तरुण तेजु पर त्रिअ मुखु जोहहि सरु अपसरु न पछाणिआ ॥ (93-8)
तरे कुट्मब संगि लोग कुल सबाइआ ॥१८॥ (710-4)
तल का ब्रहमु ले गगनि चरावै ॥१॥ रहाउ ॥ (477-10)
तलबा पउसनि आकीआ बाकी जिना रही ॥ (953-14)
तलै कुंचरीआ सिरि कनिक छतरीआ ॥ (385-3)
तलै रे बैसा ऊपरि सूला ॥ (481-13)
तव गुन कहा जगत गुरा जउ करमु न नासै ॥ (858-14)
तव गुन ब्रहम ब्रहम तू जानहि जन नानक सरनि परीजै ॥ (1325-3)
तव प्रसादि सिमरते नामं नानक क्रिपाल हरि हरि गुरं ॥२२॥ (1356-3)
तव भै बिमुंचित साध संगम ओट नानक नाराइणह ॥४६॥ (1358-5)
तसकर पंच निवारहु ठाकुर सगलो भरमा होमि जरहु ॥१॥ (828-6)
तसकर पंच सबदि संघारे ॥ (1022-13)
तसकर पंच सबदि संघारे ॥ (904-5)
तसकर मारि वसी पंचाइणि अदलु करे वीचारे ॥ (765-4)
तसकर सबदि निवारिआ नगरु वुठा साबासि ॥ (1330-3)
तसकर हेरू आइ लुकाने गुर कै सबदि पकड़ि बंधि पईआ ॥३॥ (833-11)
तसकरु चोरु न लागै ता कउ धुनि उपजै सबदि जगाइआ ॥१॥ (1039-14)
तसकरु सोइ जि ताति न करै ॥ (872-18)
तसबी यादि करहु दस मरदनु सुंनति सीलु बंधानि बरा ॥७॥ (1084-2)
तसबी सा तिसु भावसी नानक रखै लाज ॥१॥ (140-19)
तह अनद बिनोद सदा अनहद झुणकारो राम ॥ (545-3)
तह अनहत धुनी बाजहि नित बाजे नीझर धार चुआवैगो ॥३॥ (1308-11)
तह अनहत सुंन वजावहि तूरे ॥ (943-19)
तह अनहद सबद अगाजा ॥ (621-11)
तह अनहद सबद बजंता ॥ (657-2)
तह अनहद सबद वजहि धुनि बाणी सहजे सहजि समाई हे ॥६॥ (1069-12)
तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंतु न जाई पाइआ ॥ (922-13)
तह अनेक वाजे सदा अनदु है सचे रहिआ समाए ॥ (441-2)
तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥ (291-9)
तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥ (291-14)
तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥ (291-17)
तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥ (291-18)
तह कर दल करनि महाबली तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥४॥ (92-12)

तह किसहि भूख कवनु त्रिपतावै ॥ (291-11)
तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥ (264-2)
तह गीत नाद अखारे संगा ॥ (739-14)
तह चंदु न सूरजु पउणु न पाणी ॥ (974-9)
तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥ (291-10)
तह जनम न मरणा आवण जाणा बहुड़ि न पाईऐ जोनीऐ ॥ (783-14)
तह जनम न मरणु न आवण जाणा निहचलु सरणी पाईऐ ॥ (803-5)
तह जनम न मरणु न आवण जाणा संसा दूखु मिटाइआ ॥ (79-17)
तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥ (291-5)
तह जोति प्रगासु अनंद रसु अगिआनु गविता ॥ (512-3)
तह तीरथ वरत तप सारे ॥ (879-10)
तह तुम्ह मिलि कै करहु बिचारु ॥ (1159-14)
तह दीपक जलै छंछारा ॥ (657-4)
तह दूख न भूख न रोगु बिआपै चरन कमल लिव लाईऐ ॥ (803-5)
तह नानक हरि हरि अम्रितु बरखै ॥४॥ (264-14)
तह पावस सिंधु धूप नही छहीआ तह उतपति परलउ नाही ॥ (333-8)
तह बाजे अनहद बीणा ॥३॥ (972-4)
तह बाजे नानक अनहद तूरे ॥३६॥ (258-1)
तह बाजे सबद अनाहद बाणी ॥ (974-8)
तह बिखड़े थान अनिक खिड़कीआ ॥ (886-8)
तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥ (291-9)
तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥ (291-13)
तह बैकुंठु जह नामु उचरहि ॥ (890-15)
तह भइआ प्रगासु मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैणि किराखी ॥ (87-18)
तह भउ भरमा सोगु न चिंता ॥ (237-15)
तह मरणु न जीवणु सोगु न हरखा ॥ (739-15)
तह मात न बंधु न मीत न जाइआ ॥ (1005-4)
तह रोग सोग न दूखु बिआपै जनम मरणु न ताहा ॥ (846-8)
तह सदा अनंद अनहत आखारे ॥ (237-15)
तह सहज अखारे अनेक अनंता ॥ (186-17)
तह साच निआइ निबेरा ॥ (621-9)
तह सुंनि सहजि समाधि लागी एकु एकु वखाणीऐ ॥ (578-4)
तह हरख न सोग न जनम न मरत ॥३॥ (894-2)
तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥ (264-13)
तह हरि जसु गावहि नाद कवित ॥ (676-17)
तह हरि नामु संगि होत सुहेला ॥ (264-7)
तह ही मनु जह ही तै राखिआ ऐसी गुरमति पाई ॥७॥ (1232-14)

तहां निरंजनु रमईआ होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (974-7)
तहा आनद करीआ ॥ (746-5)
तहा कबीरै मटु कीआ खोजत मुनि जन बाट ॥१५२॥ (1372-12)
तहा बिगूता जह कोइ न राखै ओहु किसु पहि करे पुकारा ॥२॥ (380-19)
तहा बैकुंठु जह कीरतनु तेरा तूं आपे सरधा लाइहि ॥२॥ (749-9)
तहा संगति साध गुण रसै ॥ (237-14)
तहा सखाई जह कोइ न होवै ॥ (1337-17)
तही निरंजनु रहिआ समाई ॥ (221-18)
तही निरंजनु साचो नाउ ॥ (839-18)
तां कामणि कंतै मनि भावै ॥३॥ (357-8)
तां को सचे सचि समावै ॥४॥२८॥ (357-12)
तां तनि उठि खलोए रोग ॥ (1256-15)
तां ते जापि मना हरि जापि ॥ (1306-16)
तां दूखु भरमु कहु कैसे नेरा ॥१॥ (388-13)
तां पूरन होई मनसा मेरी ॥३॥ (390-8)
तां प्रभ साचे लगै पिआरु ॥ (1173-6)
तां मिरतक का किआ घटि जाई ॥३॥ (1160-10)
तां वापारी जाणीअहु लाहा लै जावहु ॥८॥ (418-14)
तां साई दै दरि वाड़ीअहि ॥१६॥ (1378-15)
तां सिउ प्रीति करि हां ॥ (410-1)
तां सुखु पावहु मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (1176-8)
ता अनदिनु सेवा करे सतिगुरू की कबहि न छोडै पासु ॥ (949-14)
ता अपिउ पीवै सबदु गुर केरा सभु काड़ा अंदेसा भरमु चुकावै ॥ (305-15)
ता आखि न सकहि केई केइ ॥ (6-3)
ता इसु मन की सोझी पावै ॥ (159-6)
ता इसु मन की सोझी पावै ॥ (665-10)
ता इहु अचरजु नैनहु डीठा ॥१॥ (887-12)
ता कउ अंधा जानत दूरे ॥ (267-6)
ता कउ कछु नाही कालंगा ॥१॥ (188-2)
ता कउ कछु नाही संसारी ॥१॥ रहाउ ॥ (188-2)
ता कउ करहु सगल नमसकारु ॥ (1338-7)
ता कउ कहहु परवाह काहू की जिह गोपाल सहाए ॥१॥ (1266-5)
ता कउ कहा बिआपै माइ ॥ (182-7)
ता कउ काड़ा कहा बिआपै ॥१॥ (186-12)
ता कउ कालु नाही जमु जोहै बूझहि अंतरि सबदु बीचार ॥७॥ (504-5)
ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥ (268-7)
ता कउ कोइ न पहुचनहारा जा कै अंगि गुसाई ॥ (679-12)

ता कउ कोइ न साकसि मारा ॥ (1070-8)
ता कउ कोई अपरि न साकै जा की भगति मेरा प्रभु मानै ॥२॥ (1320-16)
ता कउ चिंता कतहूं नाहि ॥२॥ (186-13)
ता कउ दुखु सुपनै भी नाही ॥१॥ रहाउ ॥ (193-6)
ता कउ दूखु नही तिलु सुपना ॥२॥ (1298-8)
ता कउ देई जीउ कुरबाना ॥३॥ (562-13)
ता कउ धोखा कहा बिआपै जा कउ ओट तुहारी ॥ रहाउ ॥ (711-15)
ता कउ नाही दूख संताप ॥ (887-8)
ता कउ बहुरि न लागहि दूखा ॥ (887-16)
ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की प्रभ आगै अरदासि ॥१॥ (714-12)
ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जो सतिगुरि अपुनै राखे ॥ (616-1)
ता कउ बिघनु न लागई चालै हुकमि रजाई ॥३॥ (421-14)
ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥ (288-10)
ता कउ भिंन न कहना जाई ॥ (285-11)
ता कउ भेटिआ परमानंदु ॥५॥ (237-1)
ता कउ माइआ अगनि न पोहै ॥३॥ (190-7)
ता कउ राखत दे करि हाथ ॥ (286-1)
ता कउ सगल सिधे हां ॥ (410-8)
ता कउ समझावण जाईऐ जे को भूला होई ॥ (1329-19)
ता कउ सहसा नाही कोइ ॥२॥ (188-3)
ता कउ हाथि न आवै केह ॥ (268-14)
ता कत आवै कत जाई ॥२॥ (621-9)
ता करता भरपूरि समाही ॥ (1070-10)
ता का अंतु न कोऊ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (871-3)
ता का अंतु न जाणै कोई ॥ (1036-9)
ता का अंतु न जानै कोइ ॥ (276-14)
ता का अंतु न पाईऐ ऊचा अगम अपारु जीउ ॥ (761-1)
ता का अंतु न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए पूरन पुरखु बिधाता राम ॥ (541-15)
ता का अंतु न पारावारु ॥ (889-2)
ता का कहणा कहहु न कोइ ॥ (1256-12)
ता का कहिआ दरि परवाणु ॥ (1328-14)
ता का कीआ मानै सोइ ॥ (878-8)
ता का दरसु पाईऐ वडभागी ॥ (193-5)
ता का धूपु सदा परफुलै ॥२॥ (393-9)
ता का रंगु न उतरै जाइ ॥२॥ (194-7)
ता का रोगु सगल मिटि जाइ ॥३॥ (893-8)
ता का लेखा न गनै जगदीस ॥ (277-10)

ता का संगु बाछहि सुरदेव ॥ (392-17)
ता का सगल मिटै अंधिआरा ॥३॥ (1148-11)
ता का हुकमु न बूझै बपुड़ा नरकि सुरगि अवतारी ॥६॥ (423-5)
ता कारणि बिआपै बहु सोगु ॥ (342-17)
ता किछु दरगह पावै मानु ॥४॥४॥ (350-3)
ता की आस कलिआण सुख जा ते सभु कछु होइ ॥ (296-13)
ता की आस न पूजै काइ ॥३॥ (192-19)
ता की आसा पूरन होइ ॥३॥ (889-15)
ता की उपमा कही न जाइ ॥ (290-9)
ता की किछु कहनु न जाई ॥ (1006-2)
ता की कीमति करै न कोइ ॥ (944-8)
ता की कीमति कहणु न जाई ॥ (1005-4)
ता की कीमति कहणु न जाई ॥ (621-14)
ता की कीमति कहणु न जाई ॥ रहाउ ॥ (614-15)
ता की कीमति कहणु न जाई कुदरति कवन हम्हारी ॥१॥ (702-7)
ता की कीमति कहणु न जाई जत कत ओही समावणा ॥११॥ (1086-11)
ता की कीमति कहि न सकै को तिउ बोले जिउ बोलाइदा ॥९॥ (1038-1)
ता की कीमति कही न जाइ ॥१॥ (1270-14)
ता की कीमति कही न जाई ॥१॥ (629-15)
ता की कीमति किनै न पाई ॥ (287-10)
ता की कीमति ना पवै जे लोचै कोई ॥ (767-11)
ता की कीमति ना पवै जे लोचै सभु कोइ ॥ (60-9)
ता की कीमति ना पवै बिनु गुर की सेवै ॥६॥ (420-19)
ता की गति कही न जाई अमिति वडिआई मेरा गोविंदु अलख अपार जीउ ॥ (448-1)
ता की गति मिति अवरु न जाणै गुर बिनु समझ न होई ॥२॥ (879-2)
ता की गति मिति कछू न पाइ ॥ (868-19)
ता की गति मिति कथनु न जाइ ॥३॥ (393-4)
ता की गति मिति कही न जाइ ॥ (294-17)
ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥ (285-17)
ता की गही मन ओट ॥ (894-18)
ता की चाकरी करहु बिसेखा ॥६॥ (238-18)
ता की त्रिसना कबहूं न जाई ॥२॥ (199-9)
ता की त्रिसना लाथीआ ॥२॥ (211-18)
ता की धुनि मोहे गोपाला ॥२॥ (186-17)
ता की पूरन आस जिन्ह साधसंगु पाइआ ॥ (457-12)
ता की पूरन होई घाल ॥ (199-5)
ता की बिरथा होवै सेव ॥ (1160-6)

ता की महिमा गनी न आवै ॥ (262-12)
ता की मिति न जानै कोइ ॥ (837-17)
ता की रजाइ लेखिआ पाइ अब किआ कीजै पांडे ॥ (653-11)
ता की रेनु बिरला को पाए ॥४॥१४॥२७॥ (1143-8)
ता की संगति नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै ॥४॥२॥९॥ (731-4)
ता की सरणि जिन बिसरत नाही ॥ (203-15)
ता की सरणि सरब सुख पाए होए सरब कलिआणा ॥ (780-5)
ता की सरनि आसर प्रभ नानक जा का अंतु न पारावार ॥२॥३॥३६॥ (535-15)
ता की सरनि परिओ नानक दासु जा ते ऊपरि को नाही ॥२॥१२॥९८॥ (824-2)
ता की सेव करीजै लाहा लीजै हरि दरगह पाईऐ माणु जीउ ॥ (438-10)
ता की सेव न बिरथी जासी ॥ (626-9)
ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि करे ॥३॥ (660-7)
ता की होहु बिलोवनहारी ॥ (655-7)
ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥ (8-1)
ता के अंत न पाए जाहि ॥ (5-9)
ता के चरण जपै जनु नानकु बोले अम्रित बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (422-19)
ता के निकटि न आवै जाम ॥४॥१३॥१८॥ (806-5)
ता के पग की पानही मेरे तन को चामु ॥६३॥ (1367-16)
ता के रूप न कथने जाहि ॥ (8-4)
ता के रूप न जाही लखणे किआ करि आखि वीचारी ॥२॥ (423-1)
ता के लखण जाणीअहि खिमा धनु संग्रहेइ ॥३॥ (1171-13)
ता के सेवक कउ सदा अनंदे ॥१॥ रहाउ ॥ (875-6)
ता के हिरदै रहिआ समाई ॥३॥ (655-5)
ता कै आतमै होइ परगासु ॥१॥ (236-15)
ता कै कछू नाही डरु जमा ॥३॥ (186-14)
ता कै कर तल नव निधि सिधि ॥१॥ (212-2)
ता कै घरि पारब्रहमु समाइआ ॥७॥ (237-4)
ता कै चरणि परउ ता जीवा जन कै संगि निहाला ॥ (207-17)
ता कै जाति न पाती नाम लीन ॥ (1188-3)
ता कै दरसनि सदा निहाल ॥ (1143-6)
ता कै निकटि न आवत कालु ॥ (293-13)
ता कै निकटि न आवै पीर ॥३॥ (188-4)
ता कै निकटि न आवै माई ॥५॥१९॥८८॥ (182-8)
ता कै निकटि बसै नरहरी ॥१॥ (1163-14)
ता कै पाछै कोइ न खाइ ॥३॥ (1256-17)
ता कै मनि वसिआ प्रभु एकु ॥१॥ रहाउ ॥ (842-6)
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥ (1245-19)

ता कै संगि अबिनासी वसिआ ॥६॥ (237-3)
ता कै संगि किलविख दुख जाहि ॥२॥ (193-6)
ता कै सद बलिहारै जाउ ॥ (152-9)
ता कै सद बलिहारै जाउ ॥ (353-1)
ता कै हिरदै आई सांति ॥ (1298-11)
ता कै हिरदै बसिओ नामु ॥ (1298-11)
ता कै हिरदै होइ प्रगासु ॥ (865-18)
ता को अंतु न जाई लखणा आवत जात रहै गुबारि ॥१॥ (489-9)
ता को जाणै दुबिधा जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (797-5)
ता को दूखु हरिओ करुणा मै अपनी पैज बढाई ॥१॥ (1008-6)
ता को पावै मोख दुआरु ॥ (661-16)
ता गति भई हमारी ॥१॥ (622-11)
ता गावे का फलु पावा ॥ (599-8)
ता घट माहि घाट जउ पावा ॥ (340-13)
ता चंचल मति तिआगी ॥ (599-10)
ता चे हंसा सगले जनां ॥ (693-16)
ता छूटहि माइआ के पटल ॥ (891-7)
ता जगि आइआ जाणीऐ साचै लिव लाए ॥ (421-9)
ता जपिआ नामु रमाणा ॥ (628-7)
ता जम का मारगु भागा ॥ (599-11)
ता डर महि डरु रहिआ समाई ॥ (341-6)
ता तूं दरगह पावहि मानु ॥ (176-19)
ता तूं सुखि सोउ होइ अचिंता ॥ (176-7)
ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु खुदाई ॥ (24-9)
ता ते अंगदु अंग संगि भयो साइरु तिनि सबद सुरति की नीव रखाई ॥ (1406-6)
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ॥ (1408-10)
ता ते अंगदु लहणा प्रगटि तासु चरणह लिव रहिअउ ॥ (1395-3)
ता ते इसु संगि नही बैराई ॥२॥ (235-13)
ता ते करण पलाह करे ॥ (1227-8)
ता ते करतै असथिरु कीन्हे ॥१॥ रहाउ ॥ (744-11)
ता ते काटी जम की फासी ॥२॥ (744-11)
ता ते गउहरु ग्यान प्रगटु उजीआरउ दुख दरिद्र अंध्यार को नासु ॥ (1405-19)
ता ते गतु होए त्रै गुनीआ ॥२॥ (1206-15)
ता ते छुटिओ बिखु संसारु ॥३॥ (197-5)
ता ते जन कउ अनदु भइआ है रिद सुध मिले खोटे पछुतानै ॥३॥ (1320-18)
ता ते दुख मेरे सगले लाथे ॥१॥ (187-9)
ता ते नाही मनु त्रिपतान ॥१॥ (179-14)

ता ते बहुरि न बिआपै माइआ ॥४॥५३॥१२२॥ (190-11)
ता ते बिखिआ महि रहै उदासु ॥ (661-12)
ता ते बिखै भई मति पावसि काइआ कमलु कुमलाणा ॥ (93-12)
ता ते बिनसी दुरमति दूरी ॥१॥ (377-6)
ता ते बिलमु पलु ढिल न कीजै जाइ साधू चरनि लगीजै ॥३॥ (1326-12)
ता ते ब्रिथा न बिआपै काई ॥१॥ रहाउ ॥ (202-18)
ता ते भली मधूकरी संतसंगि गुन गाइ ॥१५०॥ (1372-10)
ता ते मोहि धारी ओट गोपाल ॥ (676-3)
ता ते रमईआ घटि घटि चीना ॥१॥ (235-11)
ता ते संगति सघन भाइ भउ मानहि तुम मलीआगर प्रगट सुबासु ॥ (1406-3)
ता ते सच महि रहिआ समाई ॥ रहाउ ॥ (599-9)
ता ते सिधि भए सगल कांम ॥२॥ (202-11)
ता ते सेवीअले रामना ॥ (476-19)
ता तेरा होइ निरमल जीउ ॥२॥ (891-7)
ता दरगह पावहि मानु ॥३॥ (895-7)
ता दरगह पैधा जाइसी ॥१५॥ (471-14)
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ (26-1)
ता दरि साचै सोभा पावै ॥५॥ (1342-9)
ता धनु संचहु देखि कै बूझहु बीचारे ॥६॥ (418-12)
ता नानक जोगी महलु घरु पाइआ ॥४॥ (886-9)
ता नानकु आखै गुरु को कहै ॥ (953-5)
ता पति रहै राखै जा सोइ ॥२॥ (661-7)
ता प्रभु पाए गुर सबदु वखाणै ॥१॥ (231-9)
ता फल फंक लखै जउ कोई ॥ (341-18)
ता फल फंक सभै तन फारै ॥२८॥ (341-18)
ता फिरि पिआरा रावीऐ जब आवैगी वारी ॥३॥ (725-3)
ता भी चीति न राखसि माइआ ॥२॥ (478-15)
ता भी जोगी भेदु न लहिआ ॥१॥ (886-4)
ता मनु खीवा जाणीऐ जा महली पाए थाउ ॥२॥ (16-1)
ता महि अकुल महा निधि राइआ ॥ (343-16)
ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥२॥ (487-1)
ता महि मनि संतोखु न पाइआ ॥२॥ (179-15)
ता महि वासहि भगत पिआरे ॥१॥ (739-13)
ता मिटिआ सगल अंध्यारा ॥२॥ (599-10)
ता मिलीऐ जा लए मिलाइ ॥ (932-1)
ता मिलीऐ जा लए मिलाई ॥ (1076-13)
ता मिलीऐ जा लए मिलाई ॥३॥ (804-6)

ता मिलीऐ जा लैहि मिलाइ ॥ (176-16)
ता मिलीऐ प्रभ मेले दूजै भाइ खुई ॥ (1108-19)
ता मिलीऐ हरि मेले जीउ हरि बिनु कवणु मिलाए ॥ (244-5)
ता मुखु होवै उजला लख दाती इक दाति ॥ (16-2)
ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥१॥ (186-1)
ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥ (566-2)
ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥२॥ (566-5)
ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥ (6-4)
ता सगली मिटी पूकारा ॥ (621-9)
ता सगले दूख मिटाइआ ॥२॥५॥६९॥ (626-13)
ता सहजै कै घरि आइआ ॥३॥ (599-11)
ता सहसा सगल मिटाइआ ॥१॥ (626-1)
ता सिउ टूटी किउ बनै जा के जीअ परान ॥२१७॥ (1376-5)
ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥ (267-6)
ता सुख बिसरे परमानंदा ॥२॥ (325-17)
ता सुणि सदि बहाले पासि ॥१॥ (878-13)
ता सोहागणि जा कंतै भावै ॥२॥ (750-14)
ता सोहागणि जाणीऐ गुर सबदु बीचारे ॥३॥ (333-19)
ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो ॥१॥ (722-8)
ता हउ सुखि सुखाली सुती जा गुर मिलि सजणु मै लधा ॥२॥ (963-19)
ता हउमै विचहु मारी ॥ (879-6)
ता होआ पाकु पवितु ॥ (473-6)
ताकी सरणि सति पुरख की सतिगुरु पुरखु धिआवउ ॥३॥ (401-10)
ताकी है ओट साध राखहु दे करि हाथ करि किरपा मेलहु हरि राइआ ॥१॥ (686-17)
तागा करि कै लाई थिगली ॥ (886-11)
तागा तंतु साजु सभु थाका राम नाम बसि होई ॥१॥ (483-1)
तागा तूटा गगनु बिनसि गइआ तेरा बोलतु कहा समाई ॥ (334-11)
ताज कुलह सिरि छत्रु बनावउ ॥ (225-12)
ताजी तुरकी सुइना रुपा कपड़ केरे भारा ॥ (155-5)
ताजी रथ तुखार हाथी पाखरे ॥ (141-17)
ताड़ी लाई अपर अपारै ॥ (1026-14)
ताड़ी लाई सिरजणहारै ॥ (1023-13)
ताड़ी लागी त्रिपलु पलटीऐ छूटै होइ पसारी ॥२॥ (334-18)
ताण होदे होइ निताणा ॥ (1384-17)
ताणु तनु खीन भइआ बिनु मिलत पिआरे राम ॥ (545-14)
ताणु दीबाणु परवार धनु प्रभ तेरा नाउ ॥१॥ (815-2)
ताणु माणु दीबाणु साचा नानक की प्रभ टेक ॥४॥२॥२०॥ (676-1)

ताता कछू न होई है जउ ताप निवारै आप ॥ (257-3)
ताती वाउ न लगई पारब्रहम सरणाई ॥ (819-16)
ताना बाना कछू न सूझै हरि हरि रसि लपटिओ ॥१॥ (856-4)
ताप गए पाई प्रभि सांति ॥ (191-12)
ताप पाप ते राखे आप ॥ (825-9)
ताप पाप बिनसे खिन भीतरि भए क्रिपाल गुसाई ॥ (1338-17)
ताप पाप बिनसे मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (200-6)
ताप पाप संताप बिनासे ॥ (806-12)
ताप पाप सभि मिटे रोग सीतल मनु भइआ ॥१॥ (817-9)
ताप रोग गए गुर बचनी मन इछे फल पाइआ ॥१॥ (619-13)
ताप संताप मिटे नानक बाहुड़ि कालु न खाइ ॥२॥११॥ (1300-7)
ताप संताप सगले गए बिनसे ते रोग ॥ (807-12)
तापा बिनासन दूख नासन मिलु प्रेमु मनि तनि अति घना ॥ (462-9)
तापु उतारिआ सतिगुरि पूरै अपणी किरपा धारि ॥ रहाउ ॥ (620-6)
तापु गइआ प्रभि आपि मिटाइआ जन की लाज रखाई ॥ (620-18)
तापु गइआ बचनि गुर पूरे ॥ (378-12)
तापु गवाइआ गुरि पूरे ॥ (626-13)
तापु छोडि गइआ परवारे ॥ (622-16)
तापु लाहिआ गुर सिरजनहारि ॥ (821-6)
तामसि लगा सदा फिरै अहिनिसि जलतु बिहाइ ॥ (554-6)
तामि परीति वसै घरि आइ ॥ (349-19)
तार घोर बाजिंत्र तह साचि तखति सुलतानु ॥ (1291-2)
तारण तरण खिन मात्र जा कउ द्रिस्टि धारै सबदु रिद बीचारै कामु क्रोधु खोवै जीउ ॥ (1398-11)
तारण तरण सम्रथु कलिजुगि सुनत समाधि सबद जिसु केरे ॥ (1400-1)
तारण तरण हरि सरण ॥ (894-19)
तारन तरनु तबै लगु कहीऐ जब लगु ततु न जानिआ ॥ (1104-4)
तारा चड़िआ लमा किउ नदरि निहालिआ राम ॥ (1110-17)
तारि लै बाप बीठुला ॥१॥ रहाउ ॥ (1196-2)
तारिआ जहानु लहिआ अभिमानु जिनी दरसनु पाइआ ॥ (248-11)
तारीले गनिका बिनु रूप कुबिजा बिआधि अजामलु तारीअले ॥ (345-4)
तारीले भवजलु तारू बिखड़ा बोहिथ साधू संगा ॥ (208-10)
तारेदड़ो भी तारि नानक पिर सिउ रतिआ ॥१॥ (1101-7)
तार्यउ संसारु माया मद मोहित अम्रित नामु दीअउ समरथु ॥ (1405-1)
ताल मदीरे घट के घाट ॥ (349-17)
तासु चरन ले रिदै बसावउ ॥ (1389-11)
तासु तासु धरम राइ जपतु है पए सचे की सरना ॥५॥१॥ (993-17)
तासु पटंतर ना पुजै हरि जन की पनिहारि ॥१५९॥ (1373-1)

ताहि कहा परवाह काहू की जा कै बसीसि धरिओ गुरि हथु ॥७॥४९॥ (1405-3)
ताहि छाडि कत आपु बधावा ॥१३॥ (340-17)
ताहि रोगु सुपनै नही आवै ॥ (259-15)
ताहू खरे सुजाण वंञा एन्ही कपरी ॥३॥ (1410-9)
ताहू बुरा निकटि नही आवै ॥ (258-11)
ताहू संग ताहू निरलेपा ॥ (259-3)
ताहू संगि न धनु चलै ग्रिह जोबन नह राज ॥ (257-2)
तिंना पासि न बैसीऐ ओना घरु न गिराउ ॥ (66-7)
तिंना भरमु न भेदु है हरि रसन रसाई ॥७॥ (421-17)
तिंना भुख न का रही जिस दा प्रभु है सोइ ॥ (323-6)
तिंनै मारे नानका जि करण कारण समरथु ॥२॥ (315-2)
ति नर दुख नह भुख ति नर निधन नहु कहीअहि ॥ (1394-8)
ति नर दुलीचै बहहि ति नर उथपि बिथपहि ॥ (1394-10)
ति नर सेव नहु करहि ति नर सय सहस समपहि ॥ (1394-9)
ति नर सोकु नहु हूऐ ति नर से अंतु न लहीअहि ॥ (1394-9)
तिअकत जलं नह जीव मीनं नह तिआगि चात्रिक मेघ मंडलह ॥ (708-11)
तिआगंत कपट रूप माइआ नानक आनंद रूप साध संगमह ॥१॥ (707-8)
तिआगना तिआगनु नीका कामु क्रोधु लोभु तिआगना ॥३॥ (1018-11)
तिआगहु मन के सगल काम ॥१॥ रहाउ ॥ (1182-13)
तिआगहु सगल उपाव तिस की ओट गहु ॥ (521-8)
तिआगि गोपाल अवर जो करणा ते बिखिआ के खूह ॥ (1227-2)
तिआगि गोबिदु जीअन को दाता माइआ संगि लपटाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (1225-15)
तिआगि चलती महा चंचलि दोख करि करि जोरी ॥ (547-12)
तिआगि चलना सगल स्मपत कालु सिर परि जानु ॥ (1121-7)
तिआगि चलिओ है मूड़ नंग ॥२॥ (210-10)
तिआगि माइआ धोह ॥ (1272-13)
तिआगि मानु झूठु अभिमानु ॥ (176-14)
तिआगि सगल सिआणपा आठ पहर प्रभु जापि ॥२॥ (405-14)
तिआगि सगल सिआनपा भजु पारब्रहम निरंकारु ॥ (405-2)
तिआगि सिआणप चातुरी तूं जाणु गुपालहि संगि री ॥१॥ रहाउ ॥ (400-10)
तिआगि सुआमी आन कउ चितवत मूड़ मुगध खल खर ते ॥ (1267-6)
तिआगिओ मै गुर मिलि तिआगिओ ॥ (214-19)
तिआगिओ सगला मानु महता दास रेण सरणाए ॥ (999-13)
तिआगी सरनि पावा ॥ (71-12)
तिआगीऐ गुमानु मानु पेखता दइआल लाल हां हां मन चरन रेन ॥१॥ रहाउ ॥ (1305-16)
तिआगें मन की मतड़ी विसारें दूजा भाउ जीउ ॥ (763-5)
तिउ गिआनी नामु कमावै ॥३॥ (629-6)

तिउ गुर का सबदु मनहि असथमनु ॥ (282-16)
तिउ घटि घटि रमईआ ओति पोति ॥१॥ (1177-14)
तिउ जीवहि साकत नामु बिसारी ॥१॥ (239-2)
तिउ जोती संगि जोति मिलाइआ ॥ (102-7)
तिउ जोती संगि जोति समाना ॥ (278-4)
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥ (345-15)
तिउ नामै बिनु देहुरी जमु मारै अंतरि दोखु ॥३॥ (597-14)
तिउ बाणी भगत सलाहदे हरि नामै चितु लाइ ॥ (1413-17)
तिउ संत जना की नर निंदा करहि हरि राखै पैज जन केरी ॥३॥ (168-7)
तिउ संत जना हरि प्रीति है देखि दरसु अघावै ॥१२॥ (708-16)
तिउ सतिगुर सिख प्रीति हरि हरि की गुरु सिख रखै जीअ नाली ॥२॥ (168-5)
तिउ सतिगुरु गुरसिख राखता हरि प्रीति पिआरि ॥१॥ (168-2)
तिउ साकत ते को न बरासाइआ ॥४॥ (1137-2)
तिउ साकतु जोनी पाइ भवै भवाईऐ ॥१॥ (752-7)
तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥ (282-18)
तिउ हरि जन जीवहि जपि गोबिंद ॥२॥ (1180-10)
तिउ हरि जन प्रीति हरि राखदा दे आपि हथासा ॥१॥ (165-19)
तिउ हरि जन राखै कंठि लाइ ॥३॥ (914-15)
तिउ हरि जन हरि हरि नाम पिआरु ॥२॥ (914-14)
तिउ हरि जनि हरि धनु संचिआ हरि खरचु लै जाइ ॥३॥ (166-11)
तिउ हरि जनु जीवै नामु चितारी ॥१॥ (198-11)
तिउ हरि जनु जीवै हरि धिआइ ॥१॥ (1180-8)
तिउ हरि जनु हरि गुण गावै ॥१॥ (629-4)
तिउ हरि जनु हरि हरि जपु करे हरि अंति छडाइ ॥१॥ (166-7)
तिउ हरि जनु हरि हरि बोलता हरि बोलि सुखु पावै ॥२॥ (166-10)
तिउ हरि दास हरि जसु भावै ॥२॥ (629-6)
तिउ हरि नाम हरि जन मनहि सुखाने ॥६॥ (914-19)
तिउ हरि बिनु मरीऐ रे मना जो बिरथा जावै सासु ॥१॥ (597-11)
तिउ हरि बिनु संतु न जीवई बिनु हरि नामै मरि जाइ ॥७॥ (759-2)
तिख बूझि गई गई मिलि साध जना ॥ (1305-10)
तिखा तिहाइआ किउ लहै जा सर भीतरि पालि ॥३॥ (557-7)
तिखा निवारी सबदु मंनि अम्रितु पीआ भरपूरि ॥ (933-16)
तिखा भूख बहु तपति विआपिआ ॥ (804-9)
तिचरु कंतु बहु फिरै उदासि ॥ (371-1)
तिचरु जाणै भला करि जिचरु लेवै देइ ॥२॥ (594-8)
तिचरु थाह न पावई जिचरु साहिब सिउ मन भंगै ॥ (1098-8)
तिचरु मूलि न थुड़ींदो जिचरु आपि क्रिपालु ॥ (1426-5)

तिचरु वसहि सुहेलड़ी जिचरु साथी नालि ॥ (50-16)
तित ही लागा जितु को लाइआ ॥ (1137-2)
तितु अगम तितु अगम पुरे कहु कितु बिधि जाईऐ राम ॥ (436-16)
तितु कारणि कनि मुंद्रा पाई ॥ (952-2)
तितु कुलि गुर अमरदासु आसा निवासु तासु गुण कवण वखाणउ ॥ (1395-3)
तितु ग्रिहि सोहिलड़े कोड अनंदा ॥ (544-15)
तितु घट अंतरि चानणा करि भगति मिलीजै ॥ (954-14)
तितु घट अनहत बाजे तूरा ॥२॥ (228-5)
तितु घटि दीवा निहचलु होइ ॥ (878-9)
तितु घटि नामै नामि निवासु ॥५॥ (1277-16)
तितु घरि गावहु सोहिला सिवरहु सिरजणहारो ॥१॥ (157-9)
तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥ (12-11)
तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥ (288-11)
तितु घरि जाउ जि बहुरि न आवउ ॥४॥१८॥ (327-9)
तितु घरि बिलावलु गुर सबदि सुहाए ॥ (798-3)
तितु घरि मनमुखु करे निवासु ॥३॥ (362-17)
तितु घरि सखीए मंगलु गाइआ ॥ (97-16)
तितु घिइ होम जग सद पूजा पइऐ कारजु सोहै ॥ (150-6)
तितु जाइ बहहु सतसंगती जिथै हरि का हरि नामु बिलोईऐ ॥ (587-8)
तितु तनि मैलु न राती हरि प्रभि राती मेरा प्रभु मेलि मिलाए ॥ (771-14)
तितु तनि मैलु न लगई सच घरि जिसु ओताकु ॥ (55-1)
तितु दरि जाइ उतारीआ गुरु दिसै सावधानु ॥ (1087-11)
तितु दरि तूंही है पछुताणा ॥१॥ (372-14)
तितु नामि गुरू ग्मभीर गरूअ मति सत करि संगति उधरीआ ॥ (1393-9)
तितु नामि रसिकु नानकु लहणा थपिओ जेन स्रब सिधी ॥ (1392-18)
तितु नामि लागि तेतीस धिआवहि जती तपीसुर मनि वसिआ ॥ (1393-7)
तितु फल रतन लगहि मुखि भाखित हिरदै रिदै निहालु ॥ (147-12)
तितु बलि रोगु न बिआपै कोई ॥१॥ (196-3)
तितु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥ (349-7)
तितु राता मेरा मनु धीरा ॥२॥ (904-2)
तितु लागे कंचूआ फल मोती ॥१॥ (325-4)
तितु सत सरि मनूआ गुरमुखि नावै फिरि बाहुड़ि जोनि न पाइदा ॥४॥ (1037-14)
तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ (12-2)
तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ (357-12)
तितु साखा मूलु पतु नही डाली सिरि सभना परधाना ॥ (436-18)
तिथै अम्रित भोजनु सहज धुनि उपजै जितु सबदि जगतु थम्हि रहाइआ ॥ (441-1)
तिथै अवरु न कोई जीउ इकेला ॥ (1026-4)

तिथै ऊंघ न भुख है हरि अम्रित नामु सुख वासु ॥ (1414-10)
तिथै कालु न अपड़ै जिथै गुर का सबदु अपारु ॥७॥ (55-17)
तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइ ॥६॥ (55-16)
तिथै खंड मंडल वरभंड ॥ (8-6)
तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥ (8-2)
तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥ (8-2)
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥ (8-1)
तिथै जोध महाबल सूर ॥ (8-3)
तिथै तू समरथु जिथै कोइ नाहि ॥ (962-1)
तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥ (7-19)
तिथै निबड़ै साचु निआउ ॥ (1188-18)
तिथै पवणु न पावको ना जलु ना आकारु ॥ (1009-13)
तिथै भगत वसहि के लोअ ॥ (8-5)
तिथै माइआ मोहु चुकाइआ ॥ (73-2)
तिथै लोअ लोअ आकार ॥ (8-6)
तिथै सचा सचि नाइ भवजल तारणहारु ॥२॥ (1009-14)
तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥ (8-4)
तिथै सोगु विजोगु न विआपई असथिरु जगि थीआ ॥१९॥ (516-16)
तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥ (7-13)
तिथै हरि धिआईऐ सारिंगपाणी ॥ (1076-7)
तिथै हरि वसै जिस दा अंतु न पारावारा ॥ (1064-19)
तिथै होरु न कोई होरु ॥ (8-3)
तिन अंतरि सबदु वसाइआ ॥ (72-6)
तिन अंतरे मोहु विआपै खिनु खिनु माइआ लागी राम ॥ (443-11)
तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥ (92-7)
तिन ऊपरि जाईऐ कुरबाणु ॥ (200-14)
तिन ऐथै ओथै मुख उजले हरि दरगह पैधे जाही ॥१४॥ (89-1)
तिन कउ कालु न साकै पेलि ॥ (353-8)
तिन कउ किआ उपदेसीऐ जिन गुरु नानक देउ ॥१॥ (150-13)
तिन कउ किआ कोई देइ खवालै ओइ आपि बीजि आपे ही खांति ॥३॥ (1264-11)
तिन कउ जनमु मरणु अति भारी विचि विसटा मरि मरि पाचे ॥२॥ (169-13)
तिन कउ तखति मिली वडिआई ॥ (1023-2)
तिन कउ दइआ सुपनै भी नाही ॥२॥ (324-10)
तिन कउ देखि कबीर लजाने ॥६॥१॥४४॥ (332-8)
तिन कउ देखि भए किरपाला तिन भव सागरु तरिआ ॥७॥ (1235-12)
तिन कउ बिआपै चिंता रोग ॥१॥ (188-13)
तिन कउ महलु हदूरि है जो सचि रहे लिव लाइ ॥३॥ (35-10)

तिन कउ मिलिआ मेरा सतिगुरू जिन कउ धुरि मसतकि लेखिआ ॥ (1316-15)
तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥ (276-10)
तिन कउ मिलिबो सारिंगपानी ॥१॥ (873-2)
तिन कउ सभि निवहि अनदिनु पूज कराही ॥ (231-6)
तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥ (10-13)
तिन का काड़ा अंदेसा सभु लाहिओनु जिनी सतिगुरु पुरखु धिआइआ ॥ (304-10)
तिन का किआ सालाहणा अवर सुआलिउ काइ ॥ (15-16)
तिन का खाधा पैधा माइआ सभु पवितु है जो नामि हरि राते ॥ (648-14)
तिन का गुणु अवगणु न बीचारिओ कोइ ॥ (1192-11)
तिन का जनम मरण दुखु लाथा ते हरि दरगह मिले सुभाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (362-1)
तिन का जनमु सफलिओ सभु कीआ करतै जिन गुर बचनी सचु भाखिआ ॥ (1115-1)
तिन का जनमु सफलु है जो चलहि सतगुर भाइ ॥ (28-10)
तिन का दरसु देखि मनु बिगसै खिनु खिनु तिन कउ हउ बलिहारी ॥१॥ (1135-7)
तिन का दरसु देखि सुखु पाइआ दुखु हउमै रोगु गइआ ॥२॥ (1264-17)
तिन का दरसु परसि सुखु होई ॥४॥ (228-6)
तिन का मै न करउ दरसना ॥१॥ रहाउ ॥ (1163-15)
तिन की गणत न करिअहु को भाई जो गुर बचनी हरि मेलि लइआ ॥ (1115-5)
तिन की गति अवगति तूंहै जाणहि जिनि इह रचन रचाई ॥ (441-18)
तिन की गहण गति कही न जाई सचै आपि सवारे ॥ (796-19)
तिन की दुख भुख हउमै वडा रोगु गइआ निरदोख भए लिव लाइ ॥ (1423-13)
तिन की धूड़ि अघुलीऐ संगति मेलि मिलाउ ॥ (933-19)
तिन की धूड़ि पाए मनु मेरा जा दइआ करे भगवंता ॥ (1003-7)
तिन की धूड़ि मांगै मनु मेरा ॥ (1085-10)
तिन की धूड़ि हम बाछदे करमी पलै पाइ ॥ (958-7)
तिन की धूरि नानकु दासु बाछै जिन हरि नामु रिदै परोई ॥२॥५॥३३॥ (618-1)
तिन की धूरि मंगह प्रभ सुआमी हम हरि लोच लुचानी ॥२॥ (667-11)
तिन की धूरि लाई मुखि मसतकि सतसंगति बहि गुण गाइदा ॥२॥ (1065-2)
तिन की पंक पाईऐ वडभागी जन नानकु चरनि पराता ॥४॥२॥ (984-16)
तिन की पंक मिलै तां जीवा करि किरपा आपि दिवावैगो ॥१॥ (1310-5)
तिन की पंक होवै जे नानकु तउ मूड़ा किछु पाई रे ॥४॥४॥१६॥ (156-8)
तिन की पग पंकज हम धूरि ॥२॥ (328-14)
तिन की बखीली कोई किआ करे जिन का अंगु करे मेरा हरि करतारा ॥१॥ (733-13)
तिन की भुख कदे न उतरै नित भुखा भुख कूकाही ॥ (308-18)
तिन की रेणु मिलै तां मसतकि लाई जिन सतिगुरु पूरा धिआइआ ॥ (1131-2)
तिन की संगति अहिनिसि लाहा गुर संगति एह वडाई हे ॥२॥ (1025-14)
तिन की संगति गुरमुखि होई ॥ (228-3)
तिन की संगति देहि प्रभ जाचउ मै मूड़ मुगध निसतरे ॥३॥ (975-7)

तिन की संगति देहि प्रभ मै जाचिक की अरदासि ॥ (42-4)
तिन की संगति परम निधानु ॥२॥ (353-2)
तिन की संगति मिलि रहां सचे सचि समाउ ॥६॥ (1347-3)
तिन की संगति मिलि रहा दरगह पाई मानु ॥ (313-2)
तिन की सरणि परिआ मनु मेरा ॥ (102-13)
तिन की सार करे नित साहिबु सदा चिंत मन माही ॥२॥ (876-12)
तिन की सेवा ते हरि पाईऐ सिरि निंदक कै पवै छारा ॥३॥ (733-17)
तिन की सेवा धरम राइ करै धंनु सवारणहारु ॥२॥ (39-1)
तिन की सेवा लाइ हरि सुआमी तिन सिमरत गति होइ हमारी ॥२॥ (1135-9)
तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥ (135-9)
तिन की सोभा किआ गणी जिनी हरि हरि लधा ॥ (320-11)
तिन की सोभा निरमली परगटु भई जहान ॥ (45-19)
तिन कूड़ तिआगे हरि लिव लाई ॥ (165-5)
तिन के करम धरम कारज सभि पवितु हहि जो बोलहि हरि हरि राम नामु हरि साते ॥ (648-17)
तिन के करमहीन धुरि पाए देखि दीपकु मोहि पचाने ॥३॥ (170-2)
तिन के कोटि सभि पाप खिनु परहरि हरि दूरि करे ॥ (1114-19)
तिन के घर मंदर महल सराई सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सेवक सिख अभिआगत जाइ वरसाते ॥ (648-15)
तिन के तुरे जीन खुरगीर सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सिख साध संत चड़ि जाते ॥ (648-16)
तिन के दिते नानका तेहो जेहा धरमु ॥१॥ (1413-2)
तिन के दुख कोटिक दूरि गए मथुरा जिन्ह अम्रित नामु पीअउ ॥ (1409-4)
तिन के दूख गवाइआ जा हरि मनि भाइआ सदा गावहि रंगि राते ॥ (771-7)
तिन के नाम अनेक अनंत ॥ (7-12)
तिन के पाप इक निमख सभि लाथे जिन गुर बचनी हरि जापिआ ॥ (1115-9)
तिन के पाप दोख सभि बिनसे जिन मनि चिति इकु अराधिआ ॥ (1114-19)
तिन के पाप दोख सभि बिनसे जो गुरमति राम रसु खाते ॥२॥ (169-7)
तिन के भाग खीन धुरि पाए जिन सतिगुर दरसु न पाइबा ॥ (697-12)
तिन के मुख दरि उजले जिन हरि हिरदै सचा भावै ॥ (302-16)
तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥ (1422-14)
तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥ (28-6)
तिन कै रमईआ नेड़ि नाहि ॥२॥ (1169-8)
तिन कै संगि नानक निसतरीऐ जिन रसि रसि हरि गुन गाई ॥२॥३॥७॥ (701-11)
तिन कै संगि निहालु स्रवणी जसु सुणा ॥ (518-14)
तिन कै संगि परम पदु पाई सदा संगी हरि नालका ॥१३॥ (1085-10)
तिन कै संगि मलु उतरै मेरी जिंदुड़ीए रंगि राते नदरि नीसाणे राम ॥ (541-10)
तिन कै संगि सदा सुखु पाइआ हरि रस नानक त्रिपति अघाना जीउ ॥४॥१३॥२०॥ (100-12)
तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥१॥ (328-13)

तिन कै हम सद लागह पाइ ॥१॥ (361-19)
तिन कौ अवतारु भयउ कलि भिंतरि जसु जगत्र परि छाइयउ ॥ (1405-11)
तिन खंनीऐ वंञां जिन मेरा हरि प्रभु डीठा राम ॥ (577-17)
तिन घट घट अंतरि ब्रहमु पछाना ॥ (1032-7)
तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद ॥ (471-17)
तिन घरु राखिअड़ा जो अनदिनु जागै राम ॥ (1110-11)
तिन घोलि घुमाई जिन प्रभु स्रवणी सुणिआ राम ॥ (577-9)
तिन चरण तिन चरण सरेवह हम लागह तिन कै पाए राम ॥ (573-2)
तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि अंगीकारु कीआ करतारि ॥२॥ (1135-3)
तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि प्रभु अंगु करि बैठा पासि ॥ (305-5)
तिन जन की धूरि बाछै नित नानकु परमेसरु देवनहारा ॥२॥२०॥ (532-7)
तिन जन की सेवा थाइ पई जिन्ह कउ किरपाल होवतु बनवारी ॥१॥ (1201-18)
तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि ॥ (516-4)
तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि ॥ (950-10)
तिन जम डंडु न लगई जो हरि लिव जागे ॥ (1090-13)
तिन जमकालु न विआपई जिन सचु अम्रितु पीवे ॥ (83-17)
तिन जमणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥ (950-9)
तिन जमु नेड़ि न आवई गुरसिख गुर पिआरे ॥१४॥ (726-5)
तिन जमु नेड़ि न आवै गुर सबदु कमावै कबहु न आवहि हारि जीउ ॥ (438-6)
तिन जरु वैरी नानका जि बुढे थीइ मरंनि ॥२॥ (788-19)
तिन जाति न पति न करमु जनमु गवाइआ ॥ (1285-8)
तिन तूं विसरहि जि तुधु आपि भुलाए ॥ (159-19)
तिन तूं विसरहि जि दूजै भाए ॥ (160-1)
तिन तू धिआइआ मेरा रामु जिन कै धुरि लेखु माथु ॥ (1115-8)
तिन ते नाहि परम पदु दूरे ॥४॥२॥११॥ (478-13)
तिन दासनि दास करहु हम रामा ॥ (164-6)
तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥ (135-11)
तिन देखे मेरा मनु बिगसै जिउ सुतु मिलि मात गलि लावीऐ रे ॥३॥ (1118-7)
तिन धंनु जणेदी माउ आए सफलु से ॥२॥ (488-10)
तिन निंदक नाही किछु सादु ॥१॥ रहाउ ॥ (1145-10)
तिन निहफलु तिन निहफलु जनमु सभु ब्रिथा गवाइआ राम ॥ (574-2)
तिन पग संत न सेवे कबहू ते मनमुख भूमभर भरभा ॥३॥ (1337-6)
तिन फल तोटि न आवै जा तिसु भावै जे जुग केते जाहि जीउ ॥ (438-14)
तिन बहदिआ उठदिआ कदे न विसरै जि आपि बखसे करतारि ॥ (1422-14)
तिन भउ निवारि अनभै पदु दीना सबद मात्र ते उधर धरे ॥ (1396-17)
तिन भी अंतु न पाइआ ता का किआ करि आखि वीचारी ॥७॥ (423-6)
तिन भी तन महि मनु नही पेखा ॥३॥ (330-8)

तिन मति ऊतम तिन पति ऊतम जिन हिरदै वसिआ बनवारी ॥ (1135-9)
तिन मति तिन पति तिन धनु पलै जिन हिरदै रहिआ समाइ ॥ (15-15)
तिन महि पंच ततु घरि वासा ॥ (1031-12)
तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥ (8-3)
तिन मिलिआ मनु संतोखीऐ त्रिसना भुख सभ जाइ ॥ (587-18)
तिन मिलिआ मलु सभ जाए सचै सरि नाए सचै सहजि सुभाए ॥ (585-8)
तिन मिलिआ मुखु उजला जपि नामु मुरारि ॥१॥ (994-11)
तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ ॥ (16-8)
तिन मुखि नामु न ऊपजै दूजै विआपे चोर जीउ ॥ (751-6)
तिन मुखि नाही नामु न तीरथि न्हाइआ ॥ (1285-7)
तिन विचहु भरमु चुकाइआ ॥ (72-7)
तिन विटहु नानकु वारिआ जो जपदे हरि निरबाणी ॥१०॥ (1317-5)
तिन विटहु नानकु वारिआ सदा सदा कुरबाना ॥५॥ (725-15)
तिन संतन की बाछउ धूरि ॥ (282-19)
तिन सदा सुखु है तिलु न तमाइ ॥२॥ (1172-19)
तिन सफलु जनमु जिन नामु अधारु ॥४॥ (233-5)
तिन साचे नाम की सदा भुख लागी गावनि सबदि वीचारी ॥१३॥ (911-7)
तिन साधू चरण न सेवे कबहू तिन सभु जनमु अकाथा ॥२॥ (696-5)
तिन साधू चरण लै रिदै पराते ॥ (1083-9)
तिन सिउ राचि माचि हितु लाइओ जो कामि नही गावारी ॥१॥ (1216-1)
तिन सिधि न बुधि भई मति मधिम लोभ लहरि दुखु पाई ॥ (1265-6)
तिन सुंञी देह फिरहि बिनु नावै ओइ खपि खपि मुए करांझा ॥१॥ (697-15)
तिन सुखु पाइआ जो तुधु भाए ॥ (1063-9)
तिन सेवा हम लाइ हरे हम लाइ हरे जन नानक के हरि तू तू तू तू तू भगवान ॥२॥६॥१२॥ (1298-3)
तिन हम चरण सरेवह खिनु खिनु जिन हरि मीठ लगाना ॥३॥ (697-5)
तिन हरि संगति मेलि प्रभ सुआमी जन नानक दास दसानी ॥४॥३॥ (667-13)
तिन हरि हिरदै बासु बसानी छूटि गई मुसकी मुसकाक ॥३॥ (1295-14)
तिन हिरदै साचु सचा मुखि नाउ ॥ (665-2)
तिन ही कीआ जपु तपु धिआनु ॥ (888-8)
तिन ही कीआ विजोगु जिनि उपाइआ ॥ (139-16)
तिन ही जैसी थी रहां जपि जपि रिदै मुरारि ॥ (936-8)
तिन ही जैसी थी रहा सतसंगति मेलि मिलाइ ॥१॥ (37-19)
तिन ही पाइआ तिनहि धिआइआ सगल तिसै का माणो ॥ (924-15)
तिन ही पाए निरंजन देव ॥ (1159-11)
तिन ही माहि अटकि जो उरझे इंद्री प्रेरि लइओ ॥३॥ (336-16)
तिन ही सुणिआ दुखु सुखु मेरा तउ बिधि नीकी खटानी ॥१॥ (671-17)
तिन होवत आतम परगास ॥ (276-15)

तिनहि गुसाई जापणा ॥ (132-13)
तिना अनंदु सदा सुखु है जिना सचु नामु आधारु ॥ (36-10)
तिना गुरसिखा कंउ हउ वारिआ जो बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवहि ॥११॥ (590-14)
तिना तिसना जलत जलत नही बूझहि डंडु धरम राइ का दीजै ॥६॥ (1325-1)
तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥ (146-11)
तिना देखि मनि चाउ उठंदा हउ कदि पाई गुणतासा ॥ (703-18)
तिना देखि मेरा मनु धीरा ॥३॥ (212-9)
तिना नदरी इको आइआ सभु आतम रामु पछानु ॥४४॥ (1418-8)
तिना निज घरि वासा पाइआ सचै महलि रहंनि ॥ (70-5)
तिना परापति दरसनु नानक जो प्रभ अपणे भाणे ॥३॥ (802-15)
तिना पिछै छुटीऐ जिन अंदरि नामु निधानु ॥ (52-5)
तिना पिछै छुटीऐ पिआरे जो साची सरणाइ ॥२॥ (641-1)
तिना पिछै रिधि सिधि फिरै ओना तिलु न तमाइ ॥४॥ (26-18)
तिना भगत जना कउ सद नमसकारु कीजै जो अनदिनु हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (123-14)
तिनि कउड़ै तनि रोगु जमाइआ ॥ (1243-10)
तिनि करतै आपु लुकाइआ ॥ (72-14)
तिनि करतै इकु खेलु रचाइआ ॥ (117-12)
तिनि करतै इकु चलतु उपाइआ ॥ (1154-3)
तिनि करतै लेखु लिखाइआ ॥ (989-10)
तिनि जनमु सवारिआ आपणा जिनि गुरु अखी देखं ॥१३॥ (1099-3)
तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥ (293-18)
तिनि नामु पाइआ जिसु भइओ क्रिपाल ॥ (1156-9)
तिनि पाए सभे थोक जिसु आपि दिवाइऐ ॥ (520-6)
तिनि प्रभि आपि भुलाइआ ना तिसु जाति न पति ॥३॥ (42-12)
तिनि प्रभि मारे नानका होइ होइ मुए हरामु ॥१॥ (315-10)
तिनि प्रभि साचै आपि भुलाइआ बिखै ठगउरी पीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1224-2)
तिनि प्रभि साचै इकि सचि लाए ॥ (664-19)
तिनि बिनु बाणै धनखु चढाईऐ इहु जगु बेधिआ भाई ॥ (332-19)
तिनि भउ दूरि कीआ एकु पराता ॥ (1139-17)
तिनि भी अंतु न पाइआ तोहि ॥ (1237-16)
तिनि मारिआ जि रखै न कोइ ॥ (199-13)
तिनि लहणा थापि जोति जगि धारी ॥ (1401-12)
तिनि सगला रोगु बिदारू ॥ (622-18)
तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ (628-2)
तिनि सगली बात सवारी ॥२॥ (622-18)
तिनि सगली लाज राखी ॥३॥ (623-1)
तिनि सभे थोक सवारे ॥ (629-13)

तिनि सरब सुखा फल पाइआ ॥२॥१२॥७६॥ (627-18)
तिनि सहि आपि भुलाए कुमारगि पाए तिन का किछु न वसाई ॥ (441-18)
तिनि सुखु पाइआ जो प्रभ भाणा ॥२॥ (192-10)
तिनि सुखु पाइआ प्रभ कै संगि ॥ (1338-5)
तिनि स्री रामदासु सोढी थिरु थप्यउ ॥ (1401-13)
तिनि हरि धनु पाइआ जिसु पुरब लिखे का लहणा ॥ (375-16)
तिनि हरी चंदि प्रिथमी पति राजै कागदि कीम न पाई ॥ (1344-3)
तिनी गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ (1071-6)
तिनी दूजा भाउ चुकाइआ ॥ (73-4)
तिन्ह कउ नाही जम की त्रासा ॥२॥ (412-5)
तिन्ह की गहण गति कही न जाइ ॥ (364-9)
तिन्ह की त्रिसना भूख सभ उतरी जो गुरमति राम रसु खांति ॥१॥ रहाउ ॥ (1264-8)
तिन्ह की धूरि बांछै नित नानकु प्रभु मेरा किरपा करे ॥२॥३॥२२॥ (1208-15)
तिन्ह की निंदा कोई किआ करे जिन्ह हरि नामु पिआरा ॥ (451-11)
तिन्ह की सोभा सभनी थाई जिन्ह प्रभ के चरण पराते ॥१॥ (748-3)
तिन्ह गलि सिलका पाईआ तुटन्हि मोतसरीआ ॥३॥ (417-6)
तिन्ह जन के सभि पाप गए सभि दोख गए सभि रोग गए कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु गए तिन्ह जन के हरि मारि कढे पंच चोरा ॥१॥ (1201-4)
तिन्ह जमु नेड़ि न आवई गुरि राखे हरि रखवाला ॥२॥ (985-16)
तिन्ह जरा न मरणा नरकि न परणा जो हरि नामु धिआवै ॥ (438-15)
तिन्ह तरिओ समुद्रु रुद्रु खिन इक महि जलहर ब्मिब जुगति जगु रचा ॥ (1402-9)
तिन्ह देखे मेरा मनु बिगसै हउ तिन कै सद बलि जांत ॥१॥ (1264-7)
तिन्ह नाहि नरक निवासु ॥ (837-14)
तिन्ह नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि ॥ (473-17)
तिन्ह बसंतु जो हरि गुण गाइ ॥ (1176-15)
तिन्ह भउ संसा किआ करे जिन सतिगुरु सिरि करतारु ॥ (549-4)
तिन्ह भी अंतु न पाइओ तेरा लाइ थके बिभूता ॥३॥ (747-13)
तिन्ह मंगा जि तुझै धिआइदे ॥९॥ (468-4)
तिन्ह विटहु हउ वारिआ भाई तिन कउ सद बलिहारै जाउ ॥५१॥ (1419-11)
तिन्ह संगि संगु न कीचई नानक जिना आपणा सुआउ ॥२॥ (520-14)
तिन्ह सिउ प्रीति न तुटई कबहु न होवै भंगु जीउ ॥१॥ (760-11)
तिन्ह सोगु विजोगु कदे नही जो हरि कै अंकि समाइ ॥७॥ (1281-12)
तिन्ह हम चरण सरेवह खिनु खिनु पग धोवह जिन हरि मीठ लगान जीउ ॥ (446-10)
तिन्हा ठाक न पाईऐ पिआरे अम्रित रसन हरे ॥ (636-4)
तिन्हा परापति एहु निधाना जिन्ह कै करमि लिखाहा ॥१॥ (530-7)
तिन्हा पिआरा रामु जो प्रभ भाणिआ ॥ (397-16)
तिन्हा पिआरिआ भाईआं अगै दिता बंन्हि ॥ (1383-7)

तिन्हा मिलिआ गुरु आइ जिन कउ लीखिआ ॥ (729-15)
तिन्हा सवारे नानका जिन्ह कउ नदरि करे ॥१॥ (475-7)
तिन्हि करि जग अठारह घाए किरतु न चलै चलाइआ ॥४॥ (1344-6)
तिन्ही अंतरि हरि आराधिआ जिन कउ धुरि लिखिआ लिखतु लिलारा ॥ (733-13)
तिन्ही पीता रंग सिउ जिन्ह कउ लिखिआ आदि ॥१॥ (1238-19)
तिपति नाही माइआ मोह पसारी ॥५॥ (416-17)
तिपति रहे आघाइ मिटी भभाखिआ ॥ (594-9)
तिमर अगिआनु गवाइआ गुर गिआनु अंजनु गुरि पाइआ राम ॥ (573-13)
तिरसकार नह भवंति नह भवंति मान भंगनह ॥ (1356-9)
तिलंग घरु २ महला ५ ॥ (723-18)
तिलंग बाणी भगता की कबीर जी (727-7)
तिलंग मः १ ॥ (722-6)
तिलंग महला १ ॥ (722-16)
तिलंग महला १ घरु २ (721-10)
तिलंग महला १ घरु २ (724-19)
तिलंग महला १ घरु ३ (721-16)
तिलंग महला ४ ॥ (723-9)
तिलंग महला ४ ॥ (725-10)
तिलंग महला ४ घरु २ (723-6)
तिलंग महला ५ ॥ (724-15)
तिलंग महला ५ घरु १ (723-13)
तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ (724-10)
तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ (724-4)
तिलंग महला ९ ॥ (726-18)
तिलंग महला ९ ॥ (727-2)
तिलंग महला ९ काफी (726-14)
तिलक हीणं जथा बिप्रा अमर हीणं जथा राजनह ॥ (1359-5)
तिलकु कढहि इसनानु करि अंतरि कालेखं ॥ (1099-2)
तिलकु चरावै पाई पाइ ॥ (888-1)
तिलकु लिलाटि जाणै प्रभु एकु ॥ (355-7)
तिलु तिलु पलु पलु अउध फुनि घाटै बूझि न सकै गवारु ॥ (1200-5)
तिलु नही बधहि घटहि न घटाए ॥ (1086-13)
तिलु नही बूझहि अलख अभेव ॥ (867-10)
तिस कउ खंड ब्रहमंड नमसकारु करहि जिस कै मसतकि हथु धरिआ गुरि पूरै सो पूरा होई ॥ (309-5)
तिस कउ चिंता सुपनै नाहि ॥३॥ (388-11)
तिस कउ तलकी किसै दी नाही हरि दीबानि सभि आणि पैरी पाइआ ॥ (591-13)
तिस कउ पोहि न सकै जमकालु ॥ (867-3)

तिस कउ मरते घड़ी न लागै ॥ (109-1)
तिस कउ मिलिआ जिसु मसतकि भागा ॥ (236-2)
तिस कउ मिलिआ हरि निधानु ॥ (1182-16)
तिस कउ वाहु वाहु जि मेलि मिलावै ॥६॥ (226-11)
तिस कउ वाहु वाहु जि वाट दिखावै ॥ (226-10)
तिस कउ वाहु वाहु जि सबदु सुणावै ॥ (226-11)
तिस कउ सदा मन जापि ॥ (896-10)
तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥ (269-15)
तिस कउ हउ बलि बलि बाल ॥ (977-18)
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ (286-19)
तिस का अंगु करे निरंकारु ॥१॥ रहाउ ॥ (868-7)
तिस का अंदरु चितु न भिजई मुखि फीका आलाउ ॥ (511-12)
तिस का अमरु न मेटै कोइ ॥ (1152-15)
तिस का कहु किआ जतनु जिस ते वंजीऐ ॥ (708-5)
तिस का किआ सालाहीऐ भाई दरसन कउ बलि जाइ ॥ (1419-8)
तिस का कीआ त्रिभवण सारु ॥ (1188-17)
तिस का कीआ सभु परवानु ॥ (294-17)
तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥ (286-8)
तिस का चाकरु होहि फिरि डानु न लागै ॥ (1182-6)
तिस का दरसनु देखि जगतु निहालु होइ ॥ (519-6)
तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥ (281-5)
तिस का नामु सति रामदासु ॥ (275-1)
तिस का प्रभू सोइ हां ॥ (410-17)
तिस का भरवासा किउ कीजै मन मेरे जो अंती अउसरि रखि न सकासा ॥ (860-11)
तिस का भाउ लए रिद अंतरि चहु जुग ताड़ी लावै ॥३॥ (477-12)
तिस का भाणा लागै मीठा ॥ (896-4)
तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥१॥ (949-4)
तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥२॥ (1413-3)
तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥ (284-2)
तिस का राखा एको सोइ ॥ (1140-1)
तिस का सभु किछु जिस का हरि राइआ ॥४॥३७॥१०६॥ (187-8)
तिस का सरीकु को नही ना को कंटकु वैराई ॥ (592-2)
तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥ (281-4)
तिस किआ गुणा का अंतु न पाइआ हउ गावा सबदि वीचारी ॥९॥ (911-5)
तिस की आस न बिरथी जाइ ॥ (292-17)
तिस की ओट गही सुखु पाइआ मनि तनि मैलु न काई हे ॥१३॥ (1023-7)
तिस की कटीऐ जम की फासा ॥ (281-14)

तिस की कटीऐ जम की फासा ॥७॥ (239-14)
तिस की करि पोतदारी फिरि दूखु न लागै ॥१॥ (1182-6)
तिस की कीमति कही न जाइ ॥ (841-5)
तिस की कीमति किनै न होई ॥ (160-13)
तिस की कीमति ना पवै कहणा किछू न जाइ ॥ (1258-6)
तिस की कीमति ना पवै कहणा किछू न जाइ ॥ (1282-2)
तिस की कीमति ना पवै भाई ऊचा अगम अपार ॥ (639-16)
तिस की गई बलाइ मिटे अंदेसिआ ॥ (519-5)
तिस की गति मिति कही न जाइ ॥ (1182-16)
तिस की घाल अजांई जाइ ॥१॥ (1160-6)
तिस की जानहु त्रिसना बुझै ॥ (281-12)
तिस की जोति त्रिभवण सारे ॥ (1037-15)
तिस की टेक मनै महि राखु ॥ (177-19)
तिस की त्रिसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ॥ (451-6)
तिस की धर प्रभ का मनि जोरु ॥ (1151-5)
तिस की धूड़ि मनु उधरै प्रभु होइ सुप्रसंना ॥७॥ (707-12)
तिस की भूख दूख सभि उतरै जो हरि गुण हरि उचरै ॥१॥ (1263-13)
तिस की महिमा कउन बखानउ ॥ (286-8)
तिस की महिमा किआ वरनीऐ जिस कै हिरदै वसिआ हरि पुरखु भगवानु ॥१॥ (734-12)
तिस की मुहताजी लोकु कढदा होरतु हटि न वथु न वेसाहु ॥ (852-7)
तिस की संगति जे मिलै पिआरे रसु लै ततु विलोइ ॥२॥ (636-7)
तिस की सरणि नाही भउ सोगु ॥ (177-17)
तिस की सरणी ऊबरै भाई जिनि रचिआ सभु कोइ ॥ (620-11)
तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥ (286-10)
तिस की सरनी परु मना जिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ (44-14)
तिस की सीख तरै संसारु ॥ (269-9)
तिस की सेवा करि नीत ॥ (896-10)
तिस की सोइ सुणी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै ॥२॥७॥१२९॥ (403-16)
तिस के आगे तंतु न मंतु ॥८॥९॥ (971-17)
तिस के करतब बिरथे जाति ॥ (286-1)
तिस के चरन पखालीअहि नानक हउ बलिहारै जाउ ॥१॥ (550-16)
तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ (663-9)
तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥ (286-11)
तिस कै नेड़ै कोइ न जावै ॥३॥ (1134-16)
तिस कै पालै कछू न पड़ै ॥३॥ (179-10)
तिस कै पेडि लगे फल फूला ॥३॥ (481-13)
तिस कै भाणै कोइ न भूला जिनि सगलो ब्रहमु पछाता ॥ रहाउ ॥ (610-3)

तिस कै संगि खिन महि उधरहि ॥२॥ (238-13)
तिस कै संगि तरै संसार ॥ (724-4)
तिस कै संगि तरै संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ (1150-2)
तिस कै संगि मिलउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ (391-8)
तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥१॥ (286-13)
तिस कै हिरदै रविआ सोइ ॥ (236-3)
तिस चुकै सहजु ऊपजै चुकै कूक पुकार ॥ (1419-17)
तिस ते उपजे देव मोह पिआसा ॥ (230-17)
तिस ते ऊपरि नाही कोइ ॥ (842-11)
तिस ते दूजा नाही कोइ ॥ (797-4)
तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥ (293-7)
तिस ते नेड़ै नाही को दूरि ॥ (1175-15)
तिस ते परै नाही किछु कोइ ॥ (283-18)
तिस ते बाहरि नाही कोइ ॥१॥ (182-16)
तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥ (282-11)
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥ (3-14)
तिस ते भिंन नही को ठाउ ॥ (294-2)
तिस ते मुकति परम गति होई ॥१॥ रहाउ ॥ (879-1)
तिस ते होए लख दरीआउ ॥ (3-17)
तिस दा अंतु न जापई गुर सबदि बुझाई ॥ (786-9)
तिस दा अंतु न पाईऐ पारावारा ॥ (1055-10)
तिस दा कुठा होवै सेखु ॥ (956-3)
तिस दा दीआ सभनी लीआ करमी करमी हुकमु पइआ ॥२२॥ (433-15)
तिस दा हुकमु मेटि न सकै कोई ॥ (118-17)
तिस दी कीमति किकू होइ ॥१॥ (797-4)
तिस दी तू भगति थाइ पाइहि जो तुधु मनि भाइआ ॥ (548-16)
तिस दी बूझै जि गुर सबदु कमाए ॥ (1068-1)
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ (13-5)
तिस दै दितै नानका तेहो जेहा धरमु ॥ (949-3)
तिस दै सबदि निसतरै संसारा ॥ (1055-13)
तिस नो अपड़ि न सकै कोई आपे मेलि मिलाइदा ॥१॥ (1062-17)
तिस नो किहु कहीऐ जे दूजा होवै सभि तुधै माहि समाए ॥ (1131-13)
तिस नो जोहहि दूत धरमराइ ॥१॥ (195-9)
तिस नो पोहे कवणु जिसु वलि निरंकार ॥ (522-18)
तिस नो प्राणी सदा धिआवहु जिनि गुरमुखि बणत बणाई ॥१८॥ (912-11)
तिस नो मंनि वसाइ जिनि उपाइआ ॥ (523-15)
तिस नो मंनि वसाइसी जा कउ नदरि करेइ ॥ (1280-17)

तिस नो मारि न साकै कोइ ॥ (842-10)
तिस नो रूपु अति अगला जिसु हरि नालि पिआरु ॥ (950-4)
तिस नो सदा दइआलु जिनि गुर ते मति लई ॥७॥ (961-5)
तिस नो सुखु सुपनै नही दुखे दुखि विहाइ ॥ (644-18)
तिस महि ओपति खपति सु बाजी ॥ (941-10)
तिस महि राम रतनु लै चीनी ॥ (1030-10)
तिस सउ नेहु न कीचई जि दिसै चलणहारु ॥ (1410-7)
तिस सिउ प्रीति छाडि अन राता काहू सिरै न लावणा ॥८॥ (1086-7)
तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ (267-5)
तिस ही की ओट सदीव ॥ (896-16)
तिस ही की करि आस मन जिस का सभसु वेसाहु ॥ (44-12)
तिस ही को ग्रिहु सोई प्रभु नानक सो ठाकुरु तिस ही को धीन ॥२॥१॥२०॥ (716-5)
तिस ही गुनु तिन ही प्रभु जाता ॥ (187-4)
तिस ही चजु सीगारु सभु साई रूपि अपारि री ॥ (400-12)
तिस ही पुरख न विआपै माइआ ॥ (1086-9)
तिस ही मिलिआ सचु मंत्रु गुर मनि धरै ॥३॥ (958-5)
तिस ही सुखु तिस ही ठकुराई तिसहि न आवै जमु नेड़ा ॥१४॥ (1082-2)
तिसन बुझी आस पुंनी मन संतोखि ध्रापि ॥ (521-15)
तिसना अंदरि अगनि है नह तिपतै भुखा तिहाइआ ॥ (138-17)
तिसना अगनि जलै संसारा ॥ (120-13)
तिसना अगनि बुझी खिन अंतरि गुरि मिलिऐ सभ भुख गवाई ॥१॥ रहाउ ॥ (732-14)
तिसना अगनि सभ बुझि गई जन नानक हरि उरि धारि ॥२८॥ (1416-6)
तिसना छानि परी धर ऊपरि दुरमति भांडा फूटा ॥१॥ (331-19)
तिसना तीर रहे घट भीतरि इउ गढु लीओ न जाई ॥३॥ (1161-17)
तिसना बुझै तिपति होइ हरि कै नाइ पिआरि ॥ (1417-6)
तिसना भुख न उतरै अनदिनु जलत फिरंनि ॥४॥ (755-5)
तिसहि अराधि मना बिनासै सगल रोगु ॥२॥ (398-19)
तिसहि अराधि मेरा मनु धीरा ॥ रहाउ ॥ (202-10)
तिसहि अराधि सदा सुखु होइ ॥१॥ (896-2)
तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥ (270-17)
तिसहि तिआगि अवर लपटावहि मरि जनमहि मुगध गवारा ॥१॥ (530-11)
तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥ (267-4)
तिसहि तिआगि आन कउ जाचहि मुख दंत रसन सगल घसि जावत ॥ (1388-13)
तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥ (269-18)
तिसहि तिआगि मानुखु जे सेवहु तउ लाज लोनु होइ जाईऐ ॥१॥ (1214-3)
तिसहि तिआगि सुख सहजे सोऊ ॥ (253-1)
तिसहि धिआइ जो एक अलखै ॥ (270-9)

तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥ (269-16)
तिसहि धिआवहु मन मेरे सरब को आधारु ॥१॥ (51-2)
तिसहि धिआवहु सचि समावहु ओसु विटहु कुरबाणु कीआ ॥३३॥ (434-9)
तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥ (280-18)
तिसहि न बूझै जिनि एह सिरी ॥३॥ (890-2)
तिसहि परापति इहु निधानु ॥ (1180-12)
तिसहि परापति जिसु धुरि लिखिआ सोई पूरनु भाई ॥ (630-7)
तिसहि परापति जिसु प्रभु देइ ॥ (1148-13)
तिसहि परापति जिसु मसतकि भागु ॥ (191-7)
तिसहि परापति नानका जिस नो लिखिआ आइ ॥१॥ (321-12)
तिसहि परापति नामु तेरा करि क्रिपा जिसु दीउ ॥१॥ (1007-4)
तिसहि परापति रतनु होइ जिसु मसतकि होवै भागु ॥३॥ (45-4)
तिसहि परापति लालु जो गुर सबदी रसै ॥ (963-10)
तिसहि परापति हरि हरि नामा जिसु मसतकि भागीठा जीउ ॥३॥ (101-3)
तिसहि परापति होइ निधाना ॥ (1084-19)
तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥ (267-7)
तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन ॥१॥ (283-17)
तिसहि बूझु जिनि तू कीआ प्रभु करण कारण एक ॥१॥ रहाउ ॥ (1007-8)
तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥ (278-15)
तिसहि सरीकु न दीसै कोई आपे अपर अपारा हे ॥२॥ (1026-16)
तिसहि सरीकु नाही रे कोई ॥ (1082-4)
तिसहि सरेवहु ता सुखु पावहु सतिगुरि मेलि मिलाई ॥५॥ (912-3)
तिसहि सरेवहु प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (852-16)
तिसु अगै पिछै ढोई नाही गुरसिखी मनि वीचारिआ ॥ (312-1)
तिसु अपराधी गति नही काई ॥ (1031-17)
तिसु अराधि जिनि जीउ दीआ ॥ (1182-5)
तिसु आगै अरदासि करि जो मेले करतारु ॥ (49-10)
तिसु आगै अरदासि जिनि उपाइआ ॥ (516-19)
तिसु आगै जन करि बेनंती जो सरब सुखा का दाणी हे ॥४॥ (1070-11)
तिसु आगै जीउ देवउ अपुना हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥३॥ (1199-5)
तिसु आगै नही किसै का चारा ॥ (1058-10)
तिसु आगै मै जोदड़ी मेरा प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ (996-5)
तिसु आगै रहरासि हमारी साचा अपर अपारो ॥ (938-6)
तिसु उदासी का पड़ै न कंधु ॥ (952-18)
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ (5-10)
तिसु ऊपर ते कालु परहरै ॥१॥ (1146-14)
तिसु ऊपरि मन करि तूं आसा ॥ (187-15)

तिसु कउ जगतु निविआ सभु पैरी पइआ जसु वरतिआ लोई ॥ (309-5)
तिसु कउ जमु नही आवै नेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (199-15)
तिसु कउणु मिटावै जि प्रभि पहिराइआ ॥ (1073-10)
तिसु कदे न आवै तोटि जो हरि गुण गावही ॥३॥ (1095-9)
तिसु काजी कउ जरा न मरना ॥२॥ (1160-2)
तिसु कारणि कमु न धंधा नाही धंधै गिरही जोगी ॥५॥ (503-11)
तिसु किआ दीजै जि सबदु सुणाए ॥ (424-2)
तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ ॥ (286-4)
तिसु कीमति कहणु न जाई ॥१॥ (627-16)
तिसु कुरबाणी जिनि तूं सुणिआ ॥ (102-9)
तिसु गुर ऊपरि सदा हउ वारिआ ॥३॥ (1338-13)
तिसु गुर कंउ सभि नमसकारु करहु जिनि हरि की हरि गाल गलोईऐ ॥४॥ (587-10)
तिसु गुर कउ छादन भोजन पाट पट्मबर बहु बिधि सति करि मुखि संचहु तिसु पुंन की फिरि तोटि न आवै ॥४॥ (1264-4)
तिसु गुर कउ झूलावउ पाखा ॥ (239-18)
तिसु गुर कउ सद करी नमसकार ॥ (1152-18)
तिसु गुर कउ सद जाउ बलिहार ॥ (1152-18)
तिसु गुर कउ सद बलिहारणै जिनि हरि सेवा बणत बणाई ॥ (588-1)
तिसु गुर कउ साबासि है जिनि हरि सोझी पाई ॥ (588-2)
तिसु गुर कउ सिमरउ सासि सासि ॥ (239-15)
तिसु गुर कउ हउ खंनीऐ जिनि मधुसूदनु हरि नामु सुणाइआ ॥ (588-18)
तिसु गुर कउ हउ वारणै जिनि हउमै बिखु सभु रोगु गवाइआ ॥ (588-19)
तिसु गुर कउ हउ वारिआ जिनि हरि की हरि कथा सुणाई ॥ (587-19)
तिसु गुर कउ हउ सद बलि जाई ॥ (1339-6)
तिसु गुर कउ हउ सद बलिहारी ॥१॥ (887-5)
तिसु गुर की हम चरनी पाहि ॥१॥ (1338-9)
तिसु गुर कै ग्रिहि ढोवउ पाणी ॥ (239-18)
तिसु गुर कै ग्रिहि पीसउ नीत ॥ (239-19)
तिसु गुर कै जाईऐ बलिहारी सदा सदा हउ वारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1218-2)
तिसु गुर कै सदा बलि जाईऐ ॥ (1338-11)
तिसु गुर सेवि सदा दिनु राती दुख भंजन संगि सखाता हे ॥१३॥ (1032-1)
तिसु गुरसिख कंउ हंउ सदा नमसकारी जो गुर कै भाणै गुरसिखु चलिआ ॥१८॥ (593-16)
तिसु घड़ीऐ सबदु सची टकसाली ॥२॥ (1134-11)
तिसु घरि सहजा सोई सुहेला ॥ (130-16)
तिसु चरण पखाली जो तेरै मारगि चालै ॥ (102-10)
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ (283-13)
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ (296-6)

तिसु जन कउ कहु का की कमीआ ॥१॥ (186-8)
तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥ (293-10)
तिसु जन कउ मनु तनु सभु देवउ जिनि हरि हरि नामु सुनाइओ ॥ (719-8)
तिसु जन कउ हरि मीठ लगाना जिसु हरि हरि क्रिपा करै ॥ (1263-12)
तिसु जन करमि परापति होइ ॥१॥ (741-9)
तिसु जन कहा बिआपै माइआ ॥२॥ (388-10)
तिसु जन की तू सेवा लागु ॥ (286-11)
तिसु जन की वडिआई हरि आपि वधाई ओहु घटै न किसै की घटाई इकु तिलु तिलु तिलना ॥३॥ (860-19)
तिसु जन की सभ पूरन घाल ॥४॥२३॥९२॥ (183-15)
तिसु जन की है साची बाणी ॥ (1174-5)
तिसु जन के पग नित पूजीअहि मेरी जिंदुड़ीए जो मारगि धरम चलेसहि राम ॥ (540-6)
तिसु जन के सभि काज सवारि ॥ (1140-1)
तिसु जन के हउ मलि मलि धोवा पाओ ॥१॥ (1201-12)
तिसु जन के हम हाटि बिहाझे जिसु हरि हरि क्रिपा करै ॥ (1263-14)
तिसु जन कै पारब्रहम का निवासु ॥३॥ (1152-17)
तिसु जन कै बलिहारणै जिनि भजिआ प्रभु निरबाणु ॥ (318-3)
तिसु जन कै संगि तरै सभु कोई सो परवार सधारणा ॥१५॥ (1077-15)
तिसु जन दूखु निकटि नही आवै ॥२॥ (190-6)
तिसु जन लागा पारब्रहम रंगु ॥ (1181-15)
तिसु जन लेपु न बिआपै कोइ ॥१॥ (388-8)
तिसु जन सांति सदा मति निहचल जिस का अभिमानु गवाए ॥ (491-7)
तिसु जन होइ न दूखु संतापु ॥ (1146-14)
तिसु जन होए सगल निधान ॥ (891-15)
तिसु जमु नेड़ि न आवई जो हरि प्रभि भावै ॥२॥ (401-2)
तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ॥४॥१॥ (1196-14)
तिसु जेवडु अवरु न सूझई किसु आगै कहीऐ जाए ॥ (585-6)
तिसु जोगी की नगरी सभु को वसै भेखी जोगु न होइ ॥ (556-16)
तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥ (467-6)
तिसु ठाकुर कउ रखि लेहु चीता ॥२॥ (913-10)
तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥ (269-15)
तिसु ठाकुर कउ सदा नमसकारु ॥१॥ (863-9)
तिसु ठाकुर की रहु मन सरना ॥३॥ (913-12)
तिसु ठाकुर के चिति रखु चरना ॥४॥ (913-13)
तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥ (292-12)
तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥ (277-10)
तिसु तती वाउ न लगै काई ॥ (132-5)
तिसु तू सेवि जिनि तू कीआ ॥ (1182-5)

तिसु दसि पिआरे सिरु धरी उतारे इक भोरी दरसनु दीजै ॥ (703-14)
तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥ (275-3)
तिसु देनहारु जानै गावारु ॥ (282-15)
तिसु देवा मनु आपणा निवि निवि लागा पाइ ॥११॥ (759-7)
तिसु नही जमकंकरु करे खुआरु ॥२॥ (1196-11)
तिसु नही दूजा को पहुचनहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (176-6)
तिसु नानक लए छडाइ जिसु किरपा करि हिरदै वसै ॥२॥२॥ (723-12)
तिसु नारी कउ दुखु न जमानै ॥३॥ (185-17)
तिसु नालि किआ चलै पहनामी ॥४॥ (832-18)
तिसु नालि गुण गावा जे तिसु भावा किउ मिलै होइ पराइआ ॥ (766-11)
तिसु निकटि न कदे दुखु हां ॥ (410-5)
तिसु निवि निवि लागउ पाई जीउ ॥२॥ (216-17)
तिसु परापति नानका जिसु लिखिआ धुरि संजोगु ॥४॥१॥२७॥ (501-13)
तिसु पहि किआ चतुराई ॥ (621-11)
तिसु पाखंडी जरा न मरणा ॥ (953-1)
तिसु पिता पहि हउ किउ करि जाई ॥ (476-10)
तिसु प्रभ कउ आठ पहर धिआई ॥१॥ (177-12)
तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥ (270-16)
तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥ (270-10)
तिसु प्रभ तिआगि अवर कत राचहु जो सभ महि रहिआ समाई ॥१॥ (617-13)
तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥ (294-9)
तिसु बणिआ हभु सीगारु साई सोहागणे ॥ (1361-18)
तिसु बलिहारी जिनि रसना भणिआ ॥ (102-9)
तिसु बसंतु जिसु गुरु दइआलु ॥ (1180-13)
तिसु बसंतु जिसु प्रभु क्रिपालु ॥ (1180-13)
तिसु बाझहु सचे मै होरु न कोई ॥ (118-10)
तिसु बाझु वखरु कोइ न सूझै नामु लेवहु खिनु खिनो ॥ (243-11)
तिसु बाप कउ किउ मनहु विसारी ॥ (476-7)
तिसु बाहुड़ि गरभि न पावही जिसु देवहि गुर मंता ॥ (1095-15)
तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ (896-11)
तिसु बिनु अवरु न कोई दाता हरि तिसहि सरेवहु प्राणी हे ॥१॥ (1070-8)
तिसु बिनु अवरु न कोई राजा करि तपावसु बणत बणाई ॥१६॥ (912-9)
तिसु बिनु अवरु न कोई सदा सचु सोई गुरमुखि एको जाणिआ ॥ (770-1)
तिसु बिनु अवरु नही मै कोइ ॥ (1172-10)
तिसु बिनु अवरु सेवी किउ माइ ॥२॥ (1174-12)
तिसु बिनु किउ सरै हां ॥ (410-12)
तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु नावै मरि जाउ ॥ (58-2)

तिसु बिनु घड़ी न जीवदी दुखी रैणि विहाइ ॥ (35-18)
तिसु बिनु घड़ी न जीवीऐ भाई सरब कला भरपूरि ॥ (640-10)
तिसु बिनु घड़ी नही जगि जीवा ऐसी पिआस तिसाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1273-6)
तिसु बिनु तुही दुहेरी री ॥१॥ रहाउ ॥ (390-15)
तिसु बिनु दाता अवरु न कोई ॥ (1062-17)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ (666-6)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ (915-2)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ (1050-4)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ (232-7)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ (744-18)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥१॥ (355-10)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोऊ ॥ (1001-4)
तिसु बिनु दूजा अवरु न दीसै एका जगति सबाई हे ॥१४॥ (1072-8)
तिसु बिनु दूजा कोई नाही ॥ (1080-15)
तिसु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ (1150-16)
तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥ (283-11)
तिसु बिनु दूसरु को नही एकै सिरजनहारु ॥१३३॥ (1371-12)
तिसु बिनु नाहि कोइ हां ॥ (410-11)
तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥ (282-12)
तिसु बिनु निमख नही रहि सकीऐ बिसरि न कबहू जाई ॥ (1213-19)
तिसु बिनु बीजो नाही कोइ ॥ (1348-17)
तिसु बिनु मेरा को नही जिस का जीउ परानु ॥ (59-17)
तिसु बिनु राजा अवरु न कोई ॥ (936-18)
तिसु बिनु होरु न दूजा ठाकुरु सभ तिसै कीआ जाई जीउ ॥३॥ (106-13)
तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥ (274-7)
तिसु भई खलासी होई सगल सिधि ॥ (238-9)
तिसु भउ नाही जिसु नामु अधारा ॥१॥ (192-9)
तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥ (274-11)
तिसु भाणा तां थल सिरि सरिआ ॥ (1141-19)
तिसु भाणा तां सभि फल पाए ॥ (1141-19)
तिसु भाणा सूके कासट हरिआ ॥ (1141-18)
तिसु भावै ता एकंकारु ॥ (294-10)
तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥ (294-9)
तिसु भावै ता मेलि लए भाई हिरदै नाम निवासु ॥ (640-4)
तिसु भेटे जिसु धुरि संजोग ॥२॥ (387-6)
तिसु भेटे दारिद्रु न चम्पै ॥ (1396-13)
तिसु भेटे साधू के चरन ॥४॥४६॥११५॥ (189-3)

तिसु महि धार चुऐ अति निरमल रस महि रसन चुआइआ ॥२॥ (92-16)
तिसु महि मनूआ रहिआ लिव लाइ ॥ (839-18)
तिसु मिलिआ जिसु पुरब कमाई ॥ (108-11)
तिसु मिलीऐ सतिगुर प्रीतमै जिनि हंउमै विचहु मारी ॥ (586-6)
तिसु मिलीऐ सतिगुर सजणै जिसु अंतरि हरि गुणकारी ॥ (586-5)
तिसु मुला कउ सदा सलामु ॥१॥ (1159-19)
तिसु मोहन लाल पिआरे हउ फिरउ खोजंतीआ ॥ (703-13)
तिसु रसु आइआ जिनि भेदु लहिआ ॥ (97-14)
तिसु रूपु न रेख अदिसटु अगोचरु गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ (448-6)
तिसु रूपु न रेख अद्रिसटु कहु जन किउ धिआईऐ ॥ (644-7)
तिसु रूपु न रेख अनाहदु वाजै सबदु निरंजनि कीआ ॥१॥ (351-2)
तिसु रूपु न रेखिआ घटि घटि देखिआ गुरमुखि अलखु लखावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (130-1)
तिसु रूपु न रेखिआ वरनु न कोई गुरमती आपि बुझावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (120-11)
तिसु लउडे कउ किस की ताति ॥३॥ (376-8)
तिसु लगि मुकतु भए घणेरे ॥ (101-4)
तिसु विचि उपजै अम्रितु सार ॥ (351-11)
तिसु विचि गिआन रतनु इकु पाइआ ॥ (129-9)
तिसु विचि जंत उपाइ कै देखै थापि उथापि ॥ (475-8)
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥ (7-12)
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥ (7-12)
तिसु विचि नउ निधि नामु एकु भालहि गुणी गहीरु ॥ (146-9)
तिसु विचि नामु निरंजन अंसा ॥ (1034-15)
तिसु विचि नामु है अति अपारा ॥ (1053-3)
तिसु विचि बहि प्रभु करे वीचारा ॥ (1064-14)
तिसु विचि भूख बहुतु नै सानु ॥ (151-11)
तिसु विचि वरतै हुकमु करारा ॥ (1061-1)
तिसु विचि वसै सचु गुणी गहीरा ॥ (1065-8)
तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा ॥ (124-5)
तिसु विचि सउदा एकु नामु गुरमुखि लैनि सवारि ॥९॥ (1346-12)
तिसु विचि हरि जीउ वसै मुरारे ॥ (1059-17)
तिसु विणु सभु अपवित्रु है जेता पैनणु खाणु ॥ (16-4)
तिसु विसरिऐ चंगा किउ होइ ॥१॥ (661-5)
तिसु संगि रहिओ इआना राचि ॥ (890-5)
तिसु सतिगुर कउ वड पुंनु है जिनि अवगण कटि गुणी समझाइआ ॥ (588-19)
तिसु सतिगुर की सभ पगी पवहु जिनि मोह अंधेरु चुकाइआ ॥ (586-18)
तिसु सद बसंतु जिसु रिदै नामु ॥१॥ (1180-14)
तिसु सदा अनंदु होवै दिनु राती पूरै भागि परापति होइ ॥ रहाउ ॥ (664-3)

तिसु सदा हरखु नाही कदे सोगु ॥ (664-5)
तिसु सरणाई छुटीऐ कीता लोड़े सु होइ ॥३॥ (45-18)
तिसु सरणाई छूटीऐ लेखा मंगै न कोइ ॥ (1089-11)
तिसु सरणाई ढहि पए पिआरे जि अंतरजामी जाणु ॥ (641-13)
तिसु सरणाई सदा सुखु पारब्रहमु करतारु ॥१॥ (45-7)
तिसु सरणाई सदा सुखु होइ ॥ (1144-16)
तिसु सह की मै सार न जाणी ॥१॥ (357-5)
तिसु सालाही जिसु हरि धनु रासि ॥ (1155-18)
तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि ॥ (517-19)
तिसु साहिब कै हउ कुरबाणै ॥ (1070-11)
तिसु सिउ आलसु किउ बनै माइ ॥१॥ (195-1)
तिसु सिउ किउ मन रूसीऐ जिसहि हमारी चिंद ॥२॥ (1097-15)
तिसु सिउ किउ मन रूसीऐ जिसहि हमारी चिंद ॥२॥ (1250-12)
तिसु सिउ किछु न कहीऐ अजाणै ॥ (1070-12)
तिसु सिउ कैसा बोलणा जि आपे जाणै जाणु ॥ (1239-6)
तिसु सिउ न लाईऐ हीतु जा को किछु नाही बीतु अंत की बार ओहु संगि न चालै ॥ (678-11)
तिसु सिउ नेहु न कीजई जो दीसै चलणहारु ॥ (21-19)
तिसु सिउ प्रीति न करै गवारु ॥३॥ (893-2)
तिसु सिउ बेमुखु जिनि जीउ पिंडु दीना ॥ (195-9)
तिसु सिउ लाइन्हि रंगु जिस दी सभ धारीआ ॥ (520-11)
तिसु सिउ लूक जो सद ही संगी ॥ (376-11)
तिसु सेवक के कारज रासि ॥ (286-19)
तिसु सेवक कै नानक कुरबाणी सो गहिर गभीरा गउहरु जीउ ॥४॥१८॥२५॥ (102-2)
तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै ॥ (403-16)
तिसु सेवत मनि आलसु करै ॥ (913-17)
तिसु सेवी जो रखै निदाना ॥१॥ (1136-9)
तिसु सेवी दिनु राति नामु अमोलु है ॥७॥ (422-6)
तिसै अगै नानका खलिइ कीचै अरदासि ॥१॥ (1093-9)
तिसै परापति भाइरहु जिसु देइ बिधाता ॥ (319-11)
तिसै परापति भाईहो जिसु देवै प्रभु आपि ॥ (45-5)
तिसै मिलै संत खाकु मसतकि जिसै भागु ॥५॥ (959-10)
तिसै सरेवहु ता सुखु पावहु सरब निरंतरि रवि रहिआ ॥१६॥ (433-8)
तिसै सरेवहु प्राणीहो जिस दै नाउ पलै ॥ (320-1)
तिसै सरेविहु प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (1281-13)
तिह जन जाचहु जगत्र पर जानीअतु बासुर रयनि बासु जा को हितु नाम सिउ ॥ (1408-16)
तिह जोगी कउ जुगति न जानउ ॥ (685-3)
तिह नर जनमु अकारथु खोइआ यह राखहु मन माही ॥१॥ रहाउ ॥ (831-3)

तिह निंदहि जिह गंगा आनी ॥२॥ (332-5)
तिह पाछै सिंधवी अलापी ॥ (1430-14)
तिह बड भाग बसिओ मनि जा कै करम प्रधान मथानाना ॥३॥ (339-18)
तिह मिलि तेऊ ऊतम भए लोह काठ निरगंध ॥७७॥ (1368-11)
तिह मुख देखत लूकट लाए ॥१॥ (329-12)
तिह रावन घर खबरि न पाई ॥१॥ (481-7)
तिह रावन घर दीआ न बाती ॥२॥ (481-8)
तिह सिल ऊपरि खिड़की अउर ॥ (1159-17)
तिहटड़े बाजार सउदा करनि वणजारिआ ॥ (1426-2)
तिहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥४३॥ (1428-15)
तिही गुणी त्रिभवणु विआपिआ भाई गुरमुखि बूझ बुझाइ ॥ (603-4)
तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥ (920-16)
तिहु गुण का नाही परवेसु ॥ (291-16)
तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥ (291-19)
तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥ (284-7)
तिहु जुग केरा रहिआ तपावसु जे गुण देहि त पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (903-1)
तिहु लोका महि सबदु रविआ है आपु गइआ मनु मानिआ ॥२॥ (351-15)
तीखण बाण चलाइ नामु प्रभ ध्याईऐ ॥ (1363-2)
तीजा पहरु भइआ नीद विआपी राम ॥ (1110-8)
तीजै झाख झखाइआ चउथै भोरु भइआ ॥ (43-12)
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥ (75-4)
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिखु संचै अंधु अगिआनु ॥ (77-14)
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लगा आलि जंजालि ॥ (76-18)
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा सरि हंस उलथड़े आइ ॥ (75-19)
तीजै भया भाभी बेब ॥ (137-17)
तीजै मुही गिराह भुख तिखा दुइ भउकीआ ॥ (146-1)
तीजै हलेमी चउथै खैरी ॥ (1084-5)
तीन भवन निहकेवल गिआनु ॥ (414-8)
तीनि अवसथा कहहि वखिआनु ॥ (154-11)
तीनि आवरत की चूकी घेर ॥ (899-1)
तीनि गुणा इक सकति उपाइआ ॥ (868-17)
तीनि गुणा कै संगि रचि रसे ॥ (865-11)
तीनि गुणा तेरे जुग ही अंतरि चारे तेरीआ खाणी ॥ (423-1)
तीनि गुणा महि बिआपिआ पूरन होत न काम ॥ (299-10)
तीनि चरण इक दुबिधा सूकी ॥ (1023-17)
तीनि छंदे खेलु आछै ॥१॥ रहाउ ॥ (718-15)
तीनि जगाती करत रारि ॥ (1195-2)

तीनि तिलोक समाधि पलोवै ॥ (974-12)
तीनि देव अरु कोड़ि तेतीसा तिन की हैरति कछु न रही ॥१॥ (498-19)
तीनि देव एक संगि लाइ ॥ (344-15)
तीनि देव प्रतखि तोरहि करहि किस की सेउ ॥२॥ (479-6)
तीनि नदी तह त्रिकुटी माहि ॥ (344-15)
तीनि बार पतीआ भरि लीना ॥ (870-18)
तीनि बिआपहि जगत कउ तुरीआ पावै कोइ ॥ (297-3)
तीनि भउने लपटाइ रही काच करमि न जात सही उनमत अंध धंध रचित जैसे महा सागर होहे ॥१॥ (1231-5)
तीनि भवण महि एको जाणै ॥ (840-10)
तीनि भवण महि गुर गोपाला ॥ (930-16)
तीनि भवन की लखमी जोरी बूझत नाही लहरे ॥ (215-14)
तीनि भवन जुग चारे जाता ॥ (931-3)
तीनि भवन भरपूरि रहिओ सोई ॥ (1405-3)
तीनि भवन महि अपनी खोवहि ॥२॥ (873-4)
तीनि भवन महि एका माइआ ॥ (424-6)
तीनि भवन महि एको जोगी कहहु कवनु है राजा ॥३॥ (92-18)
तीनि लोक जा कै हहि भार ॥ (328-2)
तीनि संङिआ करि देही कीनी जल कूकर भसमेही ॥ (609-11)
तीनि समाए एक क्रितारथ ॥५॥ (1345-7)
तीनि समावै चउथै वासा ॥ (839-9)
तीनि सेर का दिहाड़ी मिहमानु ॥ (374-15)
तीने ओजाड़े का बंधु ॥२॥ (662-13)
तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि ॥ (714-12)
तीने लोअ विआपत है अधिक रही लपटाइ ॥ (67-2)
तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार ॥१॥ (346-11)
तीरथ उदमु सतिगुरू कीआ सभ लोक उधरण अरथा ॥ (1116-9)
तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥ (831-3)
तीरथ देखि न जल महि पैसउ जीअ जंत न सतावउगो ॥ (973-3)
तीरथ देव देहुरा पोथी ॥ (237-11)
तीरथ धरम वीचार नावण पुरबाणिआ ॥ (1279-7)
तीरथ नाइ न उतरसि मैलु ॥ (890-7)
तीरथ नाता किआ करे मन महि मैलु गुमानु ॥ (61-2)
तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥ (1428-18)
तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसातलि जांहि ॥२३३॥ (1377-3)
तीरथ बरत नेम सुचि संजम रवि ससि गहनै देउ रे ॥ (969-4)
तीरथ बरत नेम सुचि संजम सदा रहै निहकामा ॥ (1123-5)

तीरथ भवै दिसंतर लोइ ॥ (1169-11)
तीरथ मजनु गुर वीचारा ॥ (411-16)
तीरथ वरत नेम करहि उदिआना ॥ (1043-11)
तीरथ वरत लख संजमा पाईऐ साधू धूरि ॥ (48-7)
तीरथ वरत सुचि संजमु नाही करमु धरमु नही पूजा ॥ (75-17)
तीरथ सिम्रिति पुंन दान किछु लाहा मिलै दिहाड़ी ॥ (1191-6)
तीरथि अठसठि मजनु नाई ॥ (1263-7)
तीरथि जाउ त हउ हउ करते ॥ (385-14)
तीरथि तेजु निवारि न न्हाते हरि का नामु न भाइआ ॥ (1255-3)
तीरथि नाइ अरु धरनी भ्रमता आगै ठउर न पावै ॥ (216-6)
तीरथि नाइ कहहि सभि उतरे ॥ (1348-3)
तीरथि नाइ कहा सुचि सैलु ॥ (1149-2)
तीरथि नाईऐ सुखु फलु पाईऐ मैलु न लागै काई ॥ (939-1)
तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥ (687-14)
तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥ (465-19)
तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥ (2-11)
तीरथि भरमसि बिआधि न जावै ॥ (906-1)
तीरथि भरमै रोगु न छूटसि पड़िआ बादु बिबादु भइआ ॥ (1153-16)
तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥ (4-14)
तीरथु पूरा सतिगुरू जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआए ॥ (140-3)
तीरथु बडा कि हरि का दासु ॥३॥४२॥ (331-17)
तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥ (687-14)
तीरथु हमरा हरि को नामु ॥ (1142-10)
तीस इकु अरु पंजि सिधु पैतीस न खीणउ ॥ (1394-13)
तीस बरस कछु देव न पूजा फिरि पछुताना बिरधि भइओ ॥१॥ (479-10)
तीह करि रखे पंज करि साथी नाउ सैतानु मतु कटि जाई ॥ (24-6)
तुअ चरन आसरो ईस ॥ (1228-16)
तुअ सतिगुर सं हेतु नामि लागि जगु उधर्यउ ॥२॥ (1408-8)
तुखारी छंत महला १ बारह माहा (1107-1)
तुखारी छंत महला ४ (1113-15)
तुखारी छंत महला ५ (1117-7)
तुखारी महला १ ॥ (1110-1)
तुखारी महला १ ॥ (1110-17)
तुखारी महला १ ॥ (1111-10)
तुखारी महला १ ॥ (1112-16)
तुखारी महला १ ॥ (1112-3)
तुखारी महला ४ ॥ (1114-11)

तुखारी महला ४ ॥ (1115-7)
तुखारी महला ४ ॥ (1116-3)
तुछ मात सुणि सुणि वखाणहि ॥ (1078-10)
तुझ ते उपजहि तुझ माहि समावहि ॥ (1035-8)
तुझ ते बाहरि कछू न होइ ॥ (123-3)
तुझ ते बाहरि कछू न होवै तूं आपे कारै लावणिआ ॥६॥ (125-18)
तुझ ते बाहरि किछु न होवै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥३॥ (119-9)
तुझ ते बाहरि किछु नही भव काटनहारे ॥ (809-5)
तुझ ते बाहरि किछू न होआ ता भी नाही किछु काड़ा ॥२॥ (1081-6)
तुझ ते बाहरि किछू न होइ ॥ (1125-4)
तुझ ते बाहरि किछू न होवै बखसे सबदि सुहावणिआ ॥५॥ (127-14)
तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥१॥ (1134-14)
तुझ ते वडा नाही कोइ ॥ (354-7)
तुझ पहि नउ निधि तू करणै जोगु ॥ (903-16)
तुझ बिना प्रभ किछू न जानू ॥ (1322-16)
तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (398-4)
तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे ठाकुर हरि जपीऐ वडे करमा ॥२॥ (799-8)
तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे पिआरे तुझ बिनु अवरु न कोइ हरे ॥ (355-17)
तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥३॥ (795-13)
तुझ बिनु अवरु नही को मेरा ॥१॥ (1144-10)
तुझ बिनु अवरु नाही मै दूजा तूं मेरे मन माही ॥ (378-5)
तुझ बिनु कवनु करे प्रतिपाला ॥१॥ रहाउ ॥ (736-18)
तुझ बिनु कवनु रीझावै तोही ॥ (207-5)
तुझ बिनु कवनु हमारा ॥ (206-18)
तुझ बिनु को नाही प्रभ राखनहारा राम ॥ (546-17)
तुझ बिनु कोइ न देखउ मीतु ॥ (221-6)
तुझ बिनु घरी न जीवना ध्रिगु रहणा संसारि ॥ (203-6)
तुझ बिनु ठाकुर कवनु हमारा ॥१॥ रहाउ ॥ (743-10)
तुझ बिनु ठाकुर किसै न भावउ ॥ (1189-1)
तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई भूलह चूकह प्रभ तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (894-11)
तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु अखाड़ा जीउ ॥२॥ (103-14)
तुझ बिनु दूजा कोइ नाहि ॥ (1181-5)
तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ (11-17)
तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ (365-14)
तुझ बिनु दूजा नही ठाउ ॥ (1193-3)
तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥ (351-10)
तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥ (736-17)

तुझ बिनु दूजा नाही थाउ ॥२॥ (1270-16)
तुझ बिनु नाही कोइ बिनउ मोहि सारिआ ॥ (709-14)
तुझ बिनु निमखु न जाई रहणा ॥१॥ (181-14)
तुझ बिनु पारब्रहम नही कोइ ॥ (192-13)
तुझ बिनु सुरति करै को मेरी दरसनु दीजै खोल्हि किवार ॥१॥ रहाउ ॥ (856-16)
तुझ राखनहारो मोहि बताइ ॥ (1194-11)
तुझ ही कीआ जमण मरणा ॥ (1022-15)
तुझ ही पेखि पेखि मनु साधारा ॥१॥ (739-10)
तुझ ही मन राते अहिनिसि परभाते हरि रसना जपि मन रे ॥२॥ (597-1)
तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥ (486-18)
तुझहि न जोहै को मीत जन तूं गुर का दास ॥ (818-16)
तुझहि पेखि बिगसै कउलारु ॥२॥ (389-3)
तुझहि सुझंता कछू नाहि ॥ (1196-9)
तुझु ऊपरि मेरा है माणा तूहै मेरा ताणा राम ॥ (779-16)
तुझु तुरतु छडाऊ मेरो कहिओ मानि ॥२॥ (1194-9)
तुझु बिनु अवरु न कोई बीआ ॥ (1079-17)
तुझु सेवी तुझ ते पति होइ ॥ (232-14)
तुझै न लागै ताता झोला ॥१॥ रहाउ ॥ (179-1)
तुझै बिना हउ कित ही न लेखै वचनु देहि छोडि न जासा हे ॥७॥ (1073-3)
तुटड़ीआ सा प्रीति जो लाई बिअंन सिउ ॥ (706-15)
तुठा सचा पातिसाहु तापु गइआ संसारा ॥१॥ (746-17)
तुठा साहिबु जो देवै सोई सुखु पाईऐ ॥३॥ (396-16)
तुधनो छोडि जाईऐ प्रभ कैं धरि ॥ (371-16)
तुधनो निवणु मंनणु तेरा नाउ ॥ (878-12)
तुधनो सेवहि तुझु किआ देवहि मांगहि लेवहि रहहि नही ॥ (1254-5)
तुधहु बाहरि किछु नही नानकु गुण बोलै ॥२३॥१॥२॥ (1102-17)
तुधहु भुले सि जमि जमि मरदे तिन कदे न चुकनि हावे ॥१॥ (961-18)
तुधु अंतरि हउ सुखि वसा तूं अंतरि साबासि जीउ ॥ (762-15)
तुधु अगै तुधै सालाही मै अंधे नाउ सुजाखा ॥ (1242-6)
तुधु अपड़ि कोइ न सकै तू अबिनासी जग उधरण ॥ (1094-19)
तुधु अपड़ि कोइ न सकै सभ झखि झखि पवै झड़ि ॥२॥ (849-18)
तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥ (383-11)
तुधु आपणै भाणै सभ स्रिसटि उपाई जिस नो भाणा देहि तिसु भाइदा ॥४॥ (1064-2)
तुधु आपि कथी तै आपि वखाणी ॥ (99-13)
तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥१॥ (11-16)
तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥१॥ (365-13)
तुधु आपे आपि उपाइआ सभु जगु तुधु आपे वसि करि लइआ ॥ (1264-19)

तुधु आपे आपु उपाइआ ॥ (73-1)
तुधु आपे आपु रखिआ सतिगुर विचि गुरु आपे तुधु सवारिआ ॥ (311-18)
तुधु आपे कथी अकथ कहाणी ॥ (1056-7)
तुधु आपे कारणु आपे करणा ॥ (564-1)
तुधु आपे खेलु रचाइ तुधु आपि सवारिआ ॥ (642-18)
तुधु आपे गोइ उठालीआ ॥ (73-3)
तुधु आपे जगतु उपाइ कै आपि खेलु रचाइआ ॥ (643-15)
तुधु आपे जगतु उपाइ कै तुधु आपे धंधै लाइआ ॥ (138-16)
तुधु आपे जगतु उपाइ कै तुधु आपे वसगति कीता ॥ (1317-10)
तुधु आपे ताड़ी लाईऐ आपे गुण गाइआ ॥ (849-8)
तुधु आपे धरती साजीऐ चंदु सूरजु दुइ दीवे ॥ (83-16)
तुधु आपे परखे लोक सबाए ॥ (119-1)
तुधु आपे भावै तिवै चलावहि सभ तेरै सबदि समाइ जीउ ॥ (448-13)
तुधु आपे भावै तिवै चलावै ॥३॥ (351-11)
तुधु आपे भावै सो करहि तुधु ओतै कमि ओइ लाइआ ॥ (85-13)
तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥ (11-12)
तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥ (348-15)
तुधु आपे सिरजी आपे गोई ॥ (112-19)
तुधु आपे सिसटि सिरजीआ आपे फुनि गोई ॥ (654-1)
तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ (11-13)
तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ (348-16)
तुधु आवण जाणा कीआ तुधु लेपु न लगै त्रिण ॥ (1095-1)
तुधु आवत मेरा मनु तनु हरिआ हरि जसु तुम संगि गावना ॥१॥ (1018-15)
तुधु गुण मै सभि अवगणा इक नानक की अरदासि जीउ ॥ (762-13)
तुधु चिति आए महा अनंदा जिसु विसरहि सो मरि जाए ॥ (749-12)
तुधु जग महि खेलु रचाइआ विचि हउमै पाईआ ॥ (1096-8)
तुधु जपी तुधै सालाही गति मति तुझ ते होई ॥१॥ रहाउ ॥ (1333-13)
तुधु जेवड मै नाहि को किसु आखि सुणाई ॥२॥ (947-18)
तुधु जेवडु अवरु न भालिआ ॥ (74-7)
तुधु जेवडु तूहै पारब्रहम नानक सरणाई ॥३॥ (318-18)
तुधु जेवडु दाता अवरु न सुआमी लवै न कोई लावणिआ ॥६॥ (130-18)
तुधु जेवडु दाता को नही तू बखसणहारु ॥ (1011-18)
तुधु जेवडु दाता तूहै निरंजना तूहै सचु मेरै मनि भाइआ ॥ (301-10)
तुधु जेवडु दाता नाहि किसु आखि सुणाईऐ ॥ (951-2)
तुधु जेवडु दातारु मै कोई नदरि न आवई तुधु सभसै नो दानु दिता खंडी वरभंडी पाताली पुरई सभ लोई ॥३॥ (549-15)
तुधु जेवडु मै अवरु न सूझै ना को होआ न होगु ॥१॥ (1333-18)

तुधु जेवडु मै होरु को दिसि न आवई तूहैं सुघड़ु मेरै मनि भाणा ॥ (305-10)
तुधु जेवडु मै होरु न कोई ॥ (112-19)
तुधु जेवडु होइ सु आखीऐ तुधु जेहा तूहै पड़ीऐ ॥ (301-14)
तुधु जेवडु होरु न सुझई मेरे मित्र गोसाईआ ॥१२॥ (1098-16)
तुधु जेवडु होरु सरीकु होवै ता आखीऐ तुधु जेवडु तूहै होई ॥ (549-13)
तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ ॥ (967-3)
तुधु थापे चारे जुग तू करता सगल धरण ॥ (1095-1)
तुधु दुखु सुखु नालि उपाइआ लेखु करतै लिखिआ ॥ (787-12)
तुधु धिआइन्हि बेद कतेबा सणु खड़े ॥ (518-7)
तुधु बचनि गुर कै वसि कीआ आदि पुरखु बनवारीआ ॥ (248-6)
तुधु बाझहु थाउ को नाही जिसु पासहु मंगीऐ मनि वेखहु को निरजासि ॥ (86-6)
तुधु बाझु इकु तिलु रहि न साका कहणि सुनणि न धीजए ॥ (436-5)
तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥ (660-7)
तुधु बाझु समरथ कोइ नाही क्रिपा करि बनवारीआ ॥ (917-15)
तुधु बिनु अवरु न करनहारु पिआरे अंतरजामी एक ॥ रहाउ ॥ (640-17)
तुधु बिनु अवरु न कोई करते मै धर ओट तुमारी जीउ ॥१॥ (107-18)
तुधु बिनु अवरु न कोई जाचा गुर परसादी तूं पावणिआ ॥४॥ (130-4)
तुधु बिनु कितु बिधि तरीऐ जीउ ॥१॥ (217-4)
तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ (12-1)
तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ (365-17)
तुधु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ (130-2)
तुधु बिनु दूजा को नही तू रहिआ समाई ॥ (1291-16)
तुधु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ (723-18)
तुधु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ (893-11)
तुधु बिनु दूजा मै को नाही ॥ (686-14)
तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ (151-8)
तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ (661-7)
तुधु बिनु दूजे किसु सालाही ॥ (1077-10)
तुधु भाणे तू भावहि करते आपे रसन रसाइदा ॥१॥ (1034-10)
तुधु भावनि सोहागणी अपणी किरपा लैहि सवारि ॥१॥ रहाउ ॥ (54-2)
तुधु भावै अधी परवाणु ॥ (662-9)
तुधु भावै ता आणहि रासि ॥ (737-2)
तुधु भावै ता गावा बाणी ॥ (180-9)
तुधु भावै ता नामु जपावहि सुखु तेरा दिता लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (749-8)
तुधु भावै ता बखसि लैहि खोटे संगि खरे ॥ (261-5)
तुधु भावै ता वावहि गावहि तुधु भावै जलि नावहि ॥ (144-19)
तुधु भावै ता सचु वखाणी ॥ (180-9)

तुधु भावै ता सतिगुर मइआ ॥ (180-9)
तुधु भावै तिवै रजाइ भरमु भउ भंजना ॥३॥ (752-18)
तुधु भावै तू मनि वसहि नदरी करमि विसेखु ॥५॥ (1010-12)
तुधु भावै तेरी बंदगी तू गुणी गहीरा ॥२१॥ (726-12)
तुधु भावै संतोखीआं चूकै आल जंजालु ॥ (1279-3)
तुधु रूपु न रेखिआ जाति तू वरना बाहरा ॥ (1096-1)
तुधु विणु नाही कोई मेरा ॥ (1085-12)
तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ (349-4)
तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ (9-13)
तुधु संसारु उपाइआ ॥ (71-17)
तुधु सचे सुबहानु सदा कलाणिआ ॥ (150-10)
तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बंदा ॥ (1096-16)
तुधु सरि अवरु न कोइ कि आखि वखाणिआ ॥ (1279-8)
तुधु सालाहनि तिन धनु पलै नानक का धनु सोई ॥ (1328-7)
तुधु सालाहि न रजा कबहूं सचे नावै की भुख लावणिआ ॥२॥ (113-16)
तुधु सालाही प्रीतम मेरे ॥ (130-4)
तुधु सिरजिआ सभु संसारु तू नाइकु सगल भउण ॥ (1094-18)
तुधु सिरजी मेदनी दुखु सुखु देवणहारो ॥ (580-9)
तुधु सिरि लिखिआ सो पड़ु पंडित अवरा नो न सिखालि बिखिआ ॥ (434-19)
तुधुनो सभ धिआइदी सभ लगै तेरी पाई ॥ (301-2)
तुधुनो सभ धिआइदी से थाइ पए जो साहिब लोड़े ॥ (306-3)
तुधुनो सेवहि जो तुधु भावहि ॥ (1067-3)
तुधुनो सेवहि से तुझहि समावहि तू आपे मेलि मिलाइदा ॥१॥ (1060-15)
तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥३॥ (386-14)
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥ (324-18)
तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला ॥ (613-13)
तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥ (710-15)
तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ (12-12)
तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ (157-10)
तुम ग्मभीर धीर उपकारी हम किआ बपुरे जंतरीआ ॥ (1213-8)
तुम घरि आवहु मेरे मीत ॥ (678-3)
तुम घरि लाख कोटि अस्व हसती हम घरि एकु मुरारी ॥४॥१॥७॥५८॥ (336-11)
तुम घरि लालनु तुम घरि भागु ॥२॥ (384-9)
तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥ (486-14)
तुम जल निधि हरि मान सरोवर जो सेवै सभ फलणे ॥ (977-5)
तुम जैसे हरि पुरख जाने मति गुरमति मुखि वड वड भाग वडोना ॥ (1315-4)
तुम तउ राखनहार दइआल ॥ (680-11)

तुम ते उपजिओ भगती भाउ ॥ (906-5)
तुम ते भिंन नही किछु होइ ॥ (292-8)
तुम ते सेव तुम ते जप तापा तुम ते ततु पछानिओ ॥ (1216-13)
तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥ (268-3)
तुम दइआल सरणि प्रतिपालक मो कउ दीजै दानु हरि हम जाचे ॥ (169-14)
तुम दइआल सरब दुख भंजन इक बिनउ सुनहु दे काने ॥ (169-17)
तुम दातार वडे प्रभ सम्रथ मागन कउ दानु आए ॥३॥ (999-13)
तुम दाते ठाकुर प्रतिपालक नाइक खसम हमारे ॥ (673-19)
तुम दाते तुम पुरख बिधाते ॥ (99-17)
तुम दाते तुम पुरख बिधाते तुधु जेवडु अवरु न सूरा जीउ ॥३॥ (99-19)
तुम दाते प्रभ देनहार ॥ (1181-14)
तुम दाते हम सदा भिखारी ॥ (1161-9)
तुम देवहु तिलु संक न मानहु हम भुंचह सदा निहाला ॥२॥ (884-9)
तुम धन धनी उदार तिआगी स्रवनन्ह सुनीअतु सुजसु तुम्हार ॥ (856-17)
तुम निधान अटल सुलितान जीअ जंत सभि जाचै ॥ (613-15)
तुम परवार तुमहि आधारा तुमहि जीअ प्रानदाता ॥१॥ (1215-9)
तुम पवित्र पावन पुरख प्रभ सुआमी हम किउ करि मिलह जूठारी ॥ (528-4)
तुम पूरन पूरि रहे स्मपूरन हम भी संगि अघाए ॥ (884-11)
तुम बड दाते जीअ जीअन के तुम जानहु हम बिरथे ॥२॥ (1320-3)
तुम बड दाते दे रहे ॥ (1181-18)
तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥ (486-16)
तुम मनि वसे तउ दूखु न लागै ॥ (192-14)
तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ (268-2)
तुम मिलहु प्रभ सभागे ॥ (1185-4)
तुम मिहरवान दास हम दीना ॥ (562-18)
तुम रवहु गोबिंदै रवण जोगु ॥ (1184-7)
तुम रोवहुगे ओस नो तुम्ह कउ कउणु रोई ॥३॥ (418-10)
तुम लावहु तउ लागह सेव ॥ (180-8)
तुम वड अगम अगाधि बोधि प्रभ मति देवहु हरि प्रभ लहे ॥ (1336-12)
तुम वड पुरख दीन दुख भंजन हरि दीओ नामु मुखे ॥१॥ (976-2)
तुम वड पुरख वड अगम अगोचर तुम आपे आपि अपाकी ॥ (668-12)
तुम वडे वडे वड ऊचे हउ इतनीक लहुरीआ राम ॥ (779-13)
तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिंडु दे प्राना ॥ (613-12)
तुम समरथ अगनत अपारे ॥ (260-8)
तुम समरथ अपार अति ऊचे सुखदाते प्रभ प्रान अधोरी ॥ (208-19)
तुम समरथ कारन करना तूटी तुम ही जोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (1217-2)
तुम समरथ पुरख वडे प्रभ सुआमी मो कउ कीजै दानु हरि निमघा ॥ (731-17)

तुम समरथ सदा सुखदाते ॥ (99-17)
तुम समसरि अवरु को नाही ॥६॥ (416-10)
तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी ॥४॥३॥ (856-2)
तुम सरणागति प्रतिपालक सुआमी हम राखहु वड पापगे ॥१॥ (976-8)
तुम सरणागति रहउ सुभाउ ॥ (906-4)
तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ॥५॥६॥ (659-7)
तुम सरि अवरु न कोइ आइआ जाइसी जीउ ॥ (688-10)
तुम साचे हम तुम ही राचे सबदि भेदि फुनि साचे ॥ (597-2)
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥३॥ (659-1)
तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥१॥ रहाउ ॥ (658-19)
तुम सुआमी अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥ (1114-14)
तुम सुआमी अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥२॥ (1114-18)
तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहु अपुने बाला ॥३॥ (613-14)
तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥४॥ (659-2)
तुम हरि दाते समरथ सुआमी इकु मागउ तुझ पासहु हरि दानै ॥ (1320-18)
तुम हरि सरवर अति अगाह हम लहि न सकहि अंतु माती ॥ (668-4)
तुम हरि सेती राते संतहु ॥ (209-1)
तुम ही कारन करन ॥ (896-15)
तुम ही दीए अनिक प्रकारा तुम ही दीए मान ॥ (1216-19)
तुम ही नाइक तुम्हहि छत्रपति तुम पूरि रहे भगवाना ॥ (1210-4)
तुम ही पेखि पेखि मनु बिगसारे ॥१॥ रहाउ ॥ (740-6)
तुम ही सुंदर तुमहि सिआने तुम ही सुघर सुजाना ॥ (1210-3)
तुम ही सुंदरि तुमहि सुहागु ॥ (384-8)
तुम होहु सुजाखे लेहु पछाणि ॥१०॥५॥ (1190-2)
तुमरा दीआ पैन्हउ खाईं ॥ (386-5)
तुमरा मरमु तुमा ही जानिआ तुम पूरन पुरख बिधाते ॥ (209-2)
तुमरी आस पिआसा तुमरी तुम ही संगि मनु लीना जीउ ॥१॥ (100-13)
तुमरी उपमा तुम ही प्रभ जानहु हम कहि न सकहि हरि गुने ॥ (976-15)
तुमरी ओट तुमारी आसा ॥ (378-6)
तुमरी क्रिपा ते जपीऐ नाउ ॥ (192-12)
तुमरी क्रिपा ते तुधु पछाणा ॥ (103-14)
तुमरी क्रिपा ते तुम सरणाइआ ॥ (1078-15)
तुमरी क्रिपा ते दरगह थाउ ॥१॥ (192-13)
तुमरी क्रिपा ते भ्रमु भउ भागै ॥२॥ (192-14)
तुमरी क्रिपा ते मानुख देह पाई है देहु दरसु हरि राइआ ॥१॥ (207-10)
तुमरी क्रिपा ते लागी प्रीति ॥ (915-1)
तुमरी क्रिपा ते सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (192-13)

तुमरी क्रिपा ते सभ फल पाए रसकि राम नाम धिआए ॥१॥ (1226-11)
तुमरी क्रिपा ते सभु को अपना मन महि इहै बीचारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (529-12)
तुमरी क्रिपा ते सूख घनेरे ॥२॥ (193-3)
तुमरी क्रिपा ते होइ प्रगासा सरब मइआ प्रतिपाला जीउ ॥३॥ (104-8)
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे ॥ (268-2)
तुमरी गति मिति तुम ही जानहु जीउ पिंडु सभु तुमरो माल ॥१॥ (828-14)
तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥ (268-4)
तुमरी गति मिति तुम ही जानी से सेवक जिन भाग मथोरी ॥१॥ (208-15)
तुमरी जी अकथ कथा तू तू तू ही जानहि हउ हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥१॥ (1296-14)
तुमरी टेक भरोसा ठाकुर सरनि तुम्हारी आहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1303-2)
तुमरी थाह पाई नही पावै जन नानक के प्रभ वडने ॥४॥५॥ (976-18)
तुमरी दइआ मइआ सुखु पावउ होहु क्रिपाल त भउजलु तरना ॥ (1299-18)
तुमरी बिधि तुम ही जानहु तुम जल हम मीना ॥२॥ (1005-18)
तुमरी भगति प्रभ तुमहि जनाई ॥ (1338-4)
तुमरी मइआ ते कमल बिगासु ॥३॥ (1144-13)
तुमरी महिमा बरनि न साकउ तूं ठाकुर ऊच भगवाना ॥१॥ (735-2)
तुमरी संगति हरि को को न उधरिओ प्रभ कीए पतित पवगे ॥ (976-9)
तुमरी सरणि तुमारी आसा तुम ही सजन सुहेले ॥ (674-4)
तुमरी सेवा कउन कउन न तारे ॥१॥ रहाउ ॥ (386-16)
तुमरे करतब तुम ही जाणहु तुमरी ओट गोपाला जीउ ॥१॥ (104-5)
तुमरे गुण किआ कहा मेरे सतिगुरा जब गुरु बोलह तब बिसमु होइ जाइ ॥ (167-8)
तुमरे गुन अगम अगोचर एक जीह किआ कथै बिचारी राम राम राम राम लाल ॥ (1296-13)
तुमरे गुन तुम ही प्रभ जानहु हम परे हारि तुम सरनभा ॥ (1337-6)
तुमरे गुन प्रभ कहि न सकहि हम तुम वड वड पुरख वडगे ॥ (976-12)
तुमरे जन तुम ही ते जाने प्रभ जानिओ जन ते मुखफा ॥ (1336-19)
तुमरे जन तुम्ह ही प्रभ कीए हरि राखि लेहु आपन अपनाक ॥ (1295-14)
तुमरे जन रामु जपहि ते ऊतम तिन कउ हउ घुमि घुमे घुमि घुमि जीस ॥१॥ (1296-18)
तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत ॥ रहाउ ॥ (678-3)
तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥ (659-2)
तुमरै भाणै भरमि मोहि मोहिआ जागतु नाही सूता ॥२॥ (207-11)
तुमरो दूधु बिदर को पान्हो अम्रितु करि मै मानिआ ॥१॥ (1105-2)
तुमरो बलु तुम संगि सुहेले जो जो कहहु सोई सोई करना ॥१॥ (1299-17)
तुमरो होइ सु तुझहि समावै ॥७॥ (1189-12)
तुमहि खजीना तुमहि जरीना तुम ही माणिक लाला ॥ (1215-10)
तुमहि छडाइ लीओ जनु अपना ॥ (742-17)
तुमहि छडावहु छुटकहि बंध ॥ (890-3)
तुमहि छोडि जानउ नही दूजी ॥२॥ (1157-17)

तुमहि पछानू साकु तुमहि संगि राखनहार तुमै जगदीस ॥ रहाउ ॥ (1228-16)
तुमहि पठाए ता जग महि आए ॥ (1081-6)
तुमहि पारजात गुर ते पाए तउ नानक भए निहाला ॥२॥३३॥५६॥ (1215-11)
तुमहि पिता तुम ही फुनि माता तुमहि मीत हित भ्राता ॥ (1215-9)
तुमहि सु कंत नारि हम सोई ॥३॥ (484-9)
तुमी तुमा विसु अकु धतूरा निमु फलु ॥ (147-18)
तुम्ह करहु दइआ मेरे साई ॥ (673-8)
तुम्ह गउहर अति गहिर गमभीरा तुम पिर हम बहुरीआ राम ॥ (779-12)
तुम्ह चे पारसु हम चे लोहा संगे कंचनु भैइला ॥ (1351-6)
तुम्ह जल निधि हम मीने तुमरे तेरा अंतु न कतहू पाइआ ॥३॥ (1319-8)
तुम्ह जु कहत हउ नंद को नंदनु नंद सु नंदनु का को रे ॥ (338-18)
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥ (93-17)
तुम्ह तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर धिआना ॥३॥४॥२६॥ (482-14)
तुम्ह तउ बेद पड़हु गाइत्री गोबिंदु रिदै हमारे ॥१॥ (482-11)
तुम्ह दइआल किरपाल क्रिपा निधि पतित पावन गोसाई ॥ (673-10)
तुम्ह दइआल सुआमी सभ अवगन हमा ॥१॥ रहाउ ॥ (809-8)
तुम्ह देवहु सभु किछु दइआ धारि हम अकिरतघनारे ॥ (809-4)
तुम्ह पेखत सोभा मेरै आगनि ॥१॥ रहाउ ॥ (804-5)
तुम्ह मिलते मेरा मनु जीओ तुम्ह मिलहु दइआल ॥ (810-19)
तुम्ह वड पुरख बड अगम अगोचर हम ढूढि रहे पाई नही हाथ ॥ (1296-6)
तुम्ह वड पुरख वड अगम गुसाई हम कीरे किरम तुमनछे ॥ (1178-10)
तुम्ह समरथ अकथ अगोचर रविआ एकु मुरारी ॥६॥ (916-18)
तुम्ह समरथा कारन करन ॥ (828-1)
तुम्ह साचु धिआवहु मुगध मना ॥ (1176-8)
तुम्ह सुखदाते पुरख सुभाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥७॥ (738-14)
तुम्ह हरि साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे रासि देन ॥ (1295-1)
तुम्ह ही जानहु अपनी पूजा ॥२॥ (805-10)
तुम्हरा जनु जाति अविजाता हरि जपिओ पतित पवीछे ॥ (1178-12)
तुम्हरी आस भरोसा तुम्हरा तुमरा नामु रिदै लै धरना ॥ (1299-17)
तुम्हरी उसतति करउ दिन राति ॥१॥ रहाउ ॥ (1144-10)
तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥ (266-12)
तुम्हरी क्रिपा ते गुन गावै नानक धिआइ धिआइ प्रभ कउ नमसकारे ॥४॥३६॥ (379-8)
तुम्हरी क्रिपा ते छूटीऐ बिनसै अहमेव ॥ (811-5)
तुम्हरी क्रिपा ते जपीऐ नाउ ॥ (1144-12)
तुम्हरी क्रिपा ते तूं चिति आवहि आठ पहर तेरै रंगि राते ॥१॥ रहाउ ॥ (1270-14)
तुम्हरी क्रिपा ते त्रिपति अघाईं ॥१॥ रहाउ ॥ (386-4)
तुम्हरी क्रिपा ते पारब्रहम दोखन को नासु ॥१॥ (818-10)

तुम्हरी क्रिपा ते भइओ साधसंगु एहु काजु तुम्ह आपि कीओ ॥ (382-16)
तुम्हरी क्रिपा ते मोहु मानु छूटै बिनसि जाइ भरमाई ॥ (673-9)
तुम्हरी गति मिति कहि न सकह प्रभ हम किउ करि मिलह अभागी ॥३॥ (667-6)
तुम्हरी टेक पूरे मेरे सतिगुर मन सरनि तुम्हारै परी ॥ (499-15)
तुम्हरी दइआ ते होइ दरद बिनासु ॥ (1144-13)
तुम्हरी सरणि परे पति राखहु साचु मिलै गोपाला ॥७॥ (1274-5)
तुम्हरी सेवा करि न सकह प्रभ हम किउ करि मुगध तरा ॥१॥ (799-12)
तुम्हरी सेवा तुम्हारे अंगा ॥१॥ रहाउ ॥ (828-9)
तुम्हरै लवै न कोऊ लाईं ॥३॥ (386-6)
तुम्हरै संगि लगे से उधरे जिउ संगि कासट लोह तरा ॥२॥ (799-14)
तुम्हरो धिआनु तुम्हारो रंगा ॥ (828-8)
तुरक तरीकति जानीऐ हिंदू बेद पुरान ॥ (340-6)
तुरक मंत्रु कनि रिदै समाहि ॥ (951-15)
तुरदे कउ तुरदा मिलै उडते कउ उडता ॥ (788-3)
तुरी नारि की छोडी बाता ॥ (871-10)
तुरीआ गुणु मिलि साध पछाने ॥२॥ (370-14)
तुरीआ गुणु सतसंगति पाईऐ नदरी पारि उतारी ॥२॥ (1260-19)
तुरीआवसथा गुरमुखि पाईऐ संत सभा की ओट लही ॥४॥ (356-2)
तुरीआवसथा सतिगुर ते हरि जानु ॥१॥ (154-12)
तुरे उसट माइआ महि भेला ॥ (1160-14)
तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ ॥ (472-10)
तुला धारि तोले सुख सगले बिनु हरि दरस सभो ही थोरा ॥१॥ (204-14)
तुला पुरख दाने ॥ (873-9)
तुलि नही चढै जाइ न मुकाती हलुकी लगै न भारी ॥१॥ रहाउ ॥ (333-9)
तुसि दिता पूरै सतिगुरू हरि धनु सचु अखुटु ॥ (315-11)
तुसि दिती पूरै सतिगुरू घटै नाही इकु तिलु किसै दी घटाई ॥ (307-1)
तुसि देवै आपि दइआलु न छपै छपाईआ ॥ (1250-18)
तुसि नानकु देवै जिसु नामु तिनि हरि रंगु मणिआ ॥७॥ (319-17)
तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ ॥ (923-11)
तुसी भोगिहु भुंचहु भाईहो ॥ (73-12)
तुसी रोवहु रोवण आईहो झूठि मुठी संसारे ॥ (580-19)
तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरू पैनावए ॥ (923-13)
तुह कुटहि मनमुख करम करहि भाई पलै किछू न पाइ ॥२॥ (603-1)
तुहीं निरंजनु कमला पाती ॥२॥ (695-11)
तुही दरीआ तुही करीआ तुझै ते निसतार ॥१॥ (338-14)
तुही मुकंद जोग जुग तारि ॥३॥ (875-9)
तुही सुआमी अंतरजामी तूही वसहि साध कै संगा ॥१॥ रहाउ ॥ (824-11)

तूं अकथु किउ कथिआ जाहि ॥ (160-4)
तूं आदि पुरखु अपरमपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ (11-11)
तूं आदि पुरखु अपरमपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ (348-14)
तूं आदि पुरखु अपरमपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥ (448-5)
तूं आदि पुरखु अपरमपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥२॥ (448-8)
तूं आपि चलिआ आपि रहिआ आपि सभ कल धारीआ ॥ (248-6)
तूं आपि निरमलु तेरे जन है निरमल गुर कै सबदि वीचारे ॥ (1155-13)
तूं आपि भुलावहि नामु विसारि ॥ (416-7)
तूं आपे आपि वरतदा आपि बणत बणाई ॥ (1291-15)
तूं आपे आपि वरतदा करि चोज विडाणा ॥४॥ (84-6)
तूं आपे आपि वरतदा सभनी ही थाई ॥ (83-12)
तूं आपे आपि सुजाणु है वड पुरखु वडाती ॥ (138-7)
तूं आपे कमलु अलिपतु है सै हथा विचि गुलालु ॥ (85-5)
तूं आपे खेल करहि सभि करते किआ दूजा आखि वखाणीऐ ॥ (138-14)
तूं आपे गुरमुखि मुकति कराइहि ॥ (97-8)
तूं आपे जलु मीना है आपे आपे ही आपि जालु ॥ (85-4)
तूं आपे जाणहि सरब विडाणी ॥ (355-15)
तूं आपे जालु वताइदा आपे विचि सेबालु ॥ (85-5)
तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ (11-2)
तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ (348-5)
तूं आपे दाता प्रभु अंतरजामी करि किरपा लोच मेरै मनि लाई ॥ (493-13)
तूं आपे दुखु सुखु देवहि करते गुरमुखि हरि देखावणिआ ॥२॥ (125-13)
तूं आपे देवहि नामु वडाई नामि रते सुखु पावणिआ ॥६॥ (122-15)
तूं आपे नदरी जगतु परोवहि ॥ (125-13)
तूं आपे मनमुखि जनमि भवाइहि ॥ (97-9)
तूं आपे मुकति कराइदा इक निमख घड़ी करि खिआलु ॥ (85-6)
तूं आपे मेलहि वेखहि हदूरि ॥ (113-11)
तूं आपे मेलिहि गुरमुखि जाता ॥ (122-15)
तूं आपे रसना आपे बसना अवरु न दूजा कहउ माई ॥१॥ (350-4)
तूं आपे राखहि किरपा धारि ॥४॥ (416-7)
तूं आपे वेखि विगसदा आपणी वडिआई ॥ (83-11)
तूं आपे सचा सिरजणहारा ॥ (130-3)
तूं आपे सोहहि आपे जगु मोहहि ॥ (125-13)
तूं आपे ही घड़ि भंनि सवारहि नानक नामि सुहावणिआ ॥८॥५॥६॥ (113-1)
तूं आपे ही सिध साधिको तू आपे ही जुग जोगीआ ॥ (1313-2)
तूं उतमु हउ नीचु सेवकु कांढीआ ॥ (422-7)
तूं ऊच अथाहु अपारु अमोला ॥ (132-6)

तूं एको निहचलु अगम अपारा गुरमती बूझ बुझावणिआ ॥१॥ (120-9)
तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥१॥ (469-10)
तूं करता कीआ सभु तेरा किआ को करे पराणी ॥ (423-3)
तूं करता तूं करणहारु तूहै एकु अनेक जीउ ॥ (761-4)
तूं करता पुरखु अगमु है आपि स्रिसटि उपाती ॥ (138-5)
तूं करता मै अवरु न कोइ ॥ (232-14)
तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥ (11-14)
तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥ (365-11)
तूं करता सभु किछु आपे जाणहि किआ तुधु पहि आखि सुणाईऐ ॥ (735-8)
तूं करि करि वेखहि आपि देहि सु पाईऐ ॥ (752-9)
तूं करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ (123-3)
तूं काइआ मै रुलदी देखी जिउ धर उपरि छारो ॥१॥ (154-18)
तूं काइआ रहीअहि सुपनंतरि तुधु किआ करम कमाइआ ॥ (155-3)
तूं किआ लपटावहि मूरख मना ॥ (288-15)
तूं गंठी मेरु सिरि तूंहै ॥ (102-16)
तूं गणतै किनै न पाइओ सचे अलख अपारा ॥ (140-14)
तूं गुणदाता निरमला हम अवगणिआरे ॥ (163-13)
तूं गुणवंता हरि हरि दइआलु हरि आपे बखसि लैहि हरि भावै ॥ (167-6)
तूं गुपतु परगटु प्रभ आपे ॥ (102-19)
तूं गुर प्रसादि करि राज जोगु ॥१॥ (211-17)
तूं गुरमुखि रखणहारु हरि नामु धिआईऐ ॥ (752-8)
तूं गुरु पिता तूंहै गुरु माता तूं गुरु बंधपु मेरा सखा सखाइ ॥३॥ (167-9)
तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ (11-1)
तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ (348-4)
तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥ (448-5)
तूं जलनिधि तूं फेनु बुदबुदा तुधु बिनु अवरु न भालीऐ जीउ ॥१॥ (102-15)
तूं जलनिधि हउ जल का मीनु ॥ (323-17)
तूं जलनिधि हम मीन तुमारे ॥ (100-13)
तूं जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा ॥१॥ रहाउ ॥ (731-1)
तूं जाणहि जिनि उपाईऐ सभु खेलु तुमाती ॥ (138-6)
तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥ (463-5)
तूं जीवनु तूं प्रान अधारा ॥ (739-9)
तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ (11-12)
तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ (348-14)
तूं ठाकुरु इहु ग्रिहु सभु तेरा ॥ (1347-19)
तूं ठाकुरु सुआमी प्रभु मेरा ॥ (106-4)
तूं ठाकुरु सेवकु फुनि आपे ॥ (102-18)

तूं तरवरु हउ पंखी आहि ॥ (323-19)
तूं थान थनंतरि भरपूरु हहि करते सभ तेरी बणत बणावणी ॥ (1314-1)
तूं थानि थनंतरि रवि रहिआ नानक भगता सचु अधारु जीउ ॥१६॥ (74-8)
तूं दइआलु क्रिपालु क्रिपा निधि मनसा पूरणहारा ॥ (747-6)
तूं दइआलु सदा सुखदाता ॥ (122-14)
तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ (11-17)
तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ (365-14)
तूं दाता करणहारु करतारु ॥१॥ रहाउ ॥ (354-8)
तूं दाता जीअ सभि तेरे जन नानक गुरमुखि बखसि मिलावै ॥४॥६॥ (494-12)
तूं दाता जीआ सभना का तेरा दिता पहिरहि खाइ ॥२॥ (432-3)
तूं दाता जीआ सभना का बसहु मेरे मन माही ॥ (499-17)
तूं दाता प्रभ अंतरजामी ॥ (741-2)
तूं दाता प्रभ देवणहारु ॥३॥ (743-16)
तूं दाता भुगता तूंहै तूं प्राण अधारा ॥२॥ (228-14)
तूं दाता सभ जाचिक तेरे तुधु बिनु किसु सालाही ॥ (437-5)
तूं दानां तूं बीनां मै बीचारु किआ करी ॥ (727-15)
तूं दाना ठाकुरु सभ बिधि जानहि ॥ (101-19)
तूं दाना तूं सद मिहरवाना नामु मिलै रंगु माणी ॥३॥ (383-11)
तूं दाना बीना साचा सिरि मेरै ॥ (154-5)
तूं दीप लोअ पइआलिआ ॥ (74-7)
तूं नापाकु पाकु नही सूझिआ तिस का मरमु न जानिआ ॥ (1350-9)
तूं नाही प्रभ दूरि जाणहि सभ तू है ॥ (753-2)
तूं निरगुणु सरगुणु सुखदाता ॥ (102-17)
तूं निरगुन तूं सरगुनी ॥२॥ (211-7)
तूं निरबाणु रसीआ रंगि राता ॥ (102-17)
तूं निरवैरु संत तेरे निरमल ॥ (108-18)
तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ (11-3)
तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ (348-6)
तूं पारब्रहमु बेअंतु सुआमी तेरी कुदरति कहणु न जाई ॥ (442-1)
तूं पिंजरु हउ सूअटा तोर ॥ (323-18)
तूं पेडु साख तेरी फूली ॥ (102-15)
तूं प्रीतम तूं प्रान अधारे ॥ (740-6)
तूं प्रीतम भानी तुही सुर गिआनि ॥३॥ (384-9)
तूं प्रीतमु ठाकुरु अति भारी ॥ (104-5)
तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥ (467-2)
तूं बाम्हनु मै कासीक जुलहा बूझहु मोर गिआना ॥ (482-14)
तूं बेअंतु अति मूचो मूचा ॥ (131-1)

तूं बेअंतु दइआलु है तेरी सरणाई ॥ (427-10)
तूं ब्रहमनु मै कासीक जुलहा मुहि तोहि बराबरी कैसे कै बनहि ॥ (970-8)
तूं भारो ठाकुरु गुणी गहेरा ॥२॥ (739-11)
तूं भारो सुआमी मेरा ॥ (629-16)
तूं भोगी अंदरि भोगीआ ॥ (71-15)
तूं मनि वसिआ लगै न दूखा ॥१॥ रहाउ ॥ (376-2)
तूं मनि हरि जीउ तूं मनि सूख ॥ (226-6)
तूं मीरा साची ठकुराई नानक बलि बलि जावणिआ ॥८॥३॥३७॥ (132-7)
तूं मेरा करता हउ सेवकु तेरा ॥ (389-2)
तूं मेरा परबतु तूं मेरा ओला तुम संगि लवै न लावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (131-17)
तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता ॥ (103-12)
तूं मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु ॥ (181-13)
तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता ॥ (103-13)
तूं मेरा बहु माणु करते तूं मेरा बहु माणु ॥ (217-18)
तूं मेरा मीतु साजनु मेरा सुआमी तुधु बिनु अवरु न जानणिआ ॥६॥ (132-4)
तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ ॥१॥ (103-13)
तूं मेरा सखा तूंही मेरा मीतु ॥ (181-13)
तूं मेरी ओट तूं है मेरा तकीआ ॥३॥ (181-17)
तूं मेरी ओट तूंहै दीबाणु ॥२॥ (371-16)
तूं मेरी ओट तूंहै मेरा माणा ॥ (103-14)
तूं मेरी नव निधि तूं भंडारु ॥ (181-16)
तूं मेरी पति तूहै मेरा गहणा ॥ (181-14)
तूं मेरी सोभा तुम संगि रचीआ ॥ (181-17)
तूं मेरे लालन तूं मेरे प्रान ॥ (181-14)
तूं मेरे साहिब तूं मेरे खान ॥१॥ रहाउ ॥ (181-15)
तूं मेरो पिआरो ता कैसी भूखा ॥ (376-2)
तूं मेरो मेरु परबतु सुआमी ओट गही मै तेरी ॥ (969-11)
तूं राम नामु जपि सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (478-2)
तूं वड पुरखु अगम तरोवरु हम पंखी तुझ माही ॥ (505-9)
तूं वड साहु जा के कोटि वणजारे ॥ (181-4)
तूं वडा तूं ऊचो ऊचा ॥ (131-1)
तूं वरना चिहना बाहरा ॥ (74-12)
तूं वलवंच लूकि करहि सभ जाणै जाणी राम ॥ (546-11)
तूं वसहि मन माहि सहजे रसि रसै ॥३॥ (752-2)
तूं विसरहि तदि ही मरि जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (159-19)
तूं विसरहि तां सभु को लागू चीति आवहि तां सेवा ॥ (383-7)
तूं संतन का संत तुमारे संत साहिब मनु माना जीउ ॥२॥ (100-9)

तूं संतन की करहि प्रतिपाला ॥ (100-10)
तूं सचा आपि निआउ सचु ता डरीऐ केतु ॥ (84-12)
तूं सचा तेरा कीआ सभु साचा देहि त साचु वखाणी ॥ (423-7)
तूं सचा दातारु नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥ (150-12)
तूं सचा दीबाणु होरि आवण जाणिआ ॥ (150-10)
तूं सचा साहिबु अति वडा तुहि जेवडु तूं वड वडे ॥ (317-17)
तूं सचा साहिबु गुणी गहेरा ॥ (106-13)
तूं सचा साहिबु सचु तू सभु जीउ पिंडु चमु तेरा हडे ॥ (317-19)
तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ॥ (469-12)
तूं सचा साहु भगतु वणजारा जीउ ॥ (217-15)
तूं सतवंती तूं परधानि ॥ (384-9)
तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥ (448-8)
तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥३॥ (448-11)
तूं सतिगुरु हउ नउतनु चेला ॥ (323-19)
तूं सभना का खसमु सभ तेरी छाइऐ ॥८॥ (520-6)
तूं सभना के नाथ तेरी स्रिसटि सभ ॥१॥ रहाउ ॥ (397-9)
तूं सभना माहि समाइआ ॥ (72-14)
तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥ (438-2)
तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥१॥ (438-4)
तूं समझावहि मेलि मिलाउ ॥१॥ (152-9)
तूं समरथु तूंहै मेरा सुआमी ॥ (193-1)
तूं समरथु सरनि को दाता दुख भंजनु सुख राइ ॥ (502-17)
तूं सरबे पूरि रहिआ लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (350-16)
तूं सागरो रतनागरो हउ सार न जाणा तेरी राम ॥ (779-10)
तूं साचा साहिबु दासु तेरा गोला ॥ (132-6)
तूं साजनु तूं प्रीतमु मेरा ॥ (739-10)
तूं साजनु संगी प्रभु मेरा काहे जीअ डराही ॥१॥ (378-5)
तूं साझा साहिबु बापु हमारा ॥ (97-6)
तूं साहिबु सेवक अरदासि ॥३॥ (180-11)
तूं साहिबु हउ सांगी तेरा प्रणवै नानकु जाति कैसी ॥४॥१॥३३॥ (358-17)
तूं सुणि हरणा कालिआ की वाड़ीऐ राता राम ॥ (438-18)
तूं सूखमु होआ असथूली ॥ (102-15)
तूं सूतु मणीए भी तूंहै ॥ (102-16)
तूं हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए राम राजे ॥ (450-10)
तूं हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु ॥ (525-2)
तूंही रस तूंही जस तूंही रूप तूही रंग ॥ (213-18)
तूंहै मसलति तूंहै नालि ॥ (200-15)

तूंहै साजनु तूं सुजाणु तूं आपे मेलणहारु ॥ (55-16)
तू अंतरजामी जीअ सभि तेरे ॥ (1038-19)
तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥ (1115-3)
तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥४॥२॥ (1115-6)
तू अकाल पुरखु नाही सिरि काला ॥ (1038-15)
तू अकुल निरंजनु परम हीरु ॥६॥ (1190-13)
तू अगनतु जीअ का दाता ॥ (894-13)
तू अगम दइआल दइआ पति दाता सभ दइआ धारि रखि लीजै ॥ (1326-7)
तू अगम दइआलु अगमु है आपि लैहि मिलाई ॥ (792-3)
तू अगम दइआलु बेअंतु तेरी कीमति कहै कउणु ॥ (1094-17)
तू अचरजु कुदरति तेरी बिसमा ॥१॥ रहाउ ॥ (563-19)
तू अजरावरु अमरु तू सभ चालणहारी ॥ (1008-18)
तू अजहु न चेतसि चेरी ॥ (655-9)
तू अडोलु कदे डोलहि नाही ता हम कैसी ताती ॥१॥ (884-7)
तू अणमंगिआ दानु देवणा सभनाहा जीआ ॥ (585-17)
तू अथाहु अति अगमु अगमु है मति गुरमति मनु ठहरावैगो ॥१॥ (1309-13)
तू अथाहु अति बडो सुआमी क्रिपा सिंधु पूरन रतनागी ॥ (1301-11)
तू अथाहु अपारु अति ऊचा कोई अवरु न तेरी भाते ॥ (747-7)
तू अथाहु मोहि थाह नाहि ॥ (1194-17)
तू अपर्मपर ठाकुर मेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (805-10)
तू अपर्मपरु सुआमी अति अगाहु तू भरपुरि रहिआ जल थले हरि इकु इको इक एकै हरि थाट ॥ (1297-11)
तू अभुलु न भूलौ कदे नाहि ॥ (1188-9)
तू अमिति अतोलु अपर्मपर सुआमी बहु जपीऐ थाह न पाइआ ॥२॥ (1319-7)
तू अलख अगोचरु अगमु है गुरमति दिखाई ॥ (1291-16)
तू अलख अभेउ अगमु गुर सतिगुर बचनि लहिआ ॥ (1114-15)
तू आदि जुगादि करहि प्रतिपाला ॥ (1031-6)
तू आपि करता सभ स्रिसटि धरता सभ महि रहिआ समाइ ॥ (406-6)
तू आपि दइआलु दइआ करि मेलहि हम निरगुणी निमाणिआ ॥ (1114-5)
तू आपि सचा तेरी बाणी सची आपे अलखु अथाहा हे ॥१४॥ (1057-8)
तू आपि सवारहि आपि सिरजनहारिआ ॥१६॥ (791-2)
तू आपि सवारहि जन के काजा ॥ (1039-15)
तू आपे आपि आपि सभु करता कोई दूजा होइ सु अवरो कहीऐ ॥ (594-15)
तू आपे आपि निरंकारु है को अवरु न बीआ ॥ (585-17)
तू आपे आपि निरंकारु है निरंजन हरि राइआ ॥ (301-8)
तू आपे आपि वरतदा तू आपे करहि सु होगीआ ॥ (1313-3)
तू आपे आपि वरतदा सभु जगतु सबाइआ ॥ (849-8)
तू आपे कथहि तै आपि वखाणहि ॥ (1083-12)

तू आपे करता करण जोगु ॥ (1190-14)
तू आपे करता कारण करणा ॥ (1076-14)
तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ (12-1)
तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ (365-17)
तू आपे करता सिरजणहारा ॥ (1056-8)
तू आपे करता स्रिसटि धराइणु ॥ (1134-4)
तू आपे गुपता आपे परगटु आपे सभि रंग माणै ॥ (946-16)
तू आपे गुरु चेला है आपे गुर विचु दे तुझहि धिआई ॥१९॥ (758-3)
तू आपे जाणहि सरब विडाणी ॥३॥ (1125-6)
तू आपे जाणहि सिरजणहारा ॥ (1061-15)
तू आपे ठाकुरु सेवको आपे पूजंता ॥ (1095-13)
तू आपे दाता आपे भुगता किआ इहु जंतु विचारा ॥२॥ (625-6)
तू आपे दाना आपे बीना तू देवहि मति साई ॥१॥ (634-9)
तू आपे पूजहि पूज करावहि सतिगुर कउ सिरजणहारिआ ॥ (311-19)
तू आपे बूझहि सुणि आपि वखाणहि ॥ (1270-18)
तू आपे मेलि बहालहि पासि ॥ (1067-13)
तू आपे सभु किछु जाणदा किसु आगै करी पूकार ॥३॥ (1258-14)
तू आपे सिसटि करता सिरजणहारिआ ॥ (642-17)
तू आपे सुरता आपि राखु ॥ (1188-4)
तू आपे ही आपि आपि है आपि कारणु कीआ ॥ (585-16)
तू आपे ही रस रसीअड़ा तू आपे ही भोग भोगीआ ॥ (1313-3)
तू इको दाता सभस दा हरि पहि अरदासि ॥ (549-7)
तू ऊचा तू बहु अपारु ॥ (1193-4)
तू एकंकारु निरालमु राजा ॥ (1039-15)
तू एको साहिबु अवरु न होरि ॥ (563-18)
तू एवडु दाता देवणहारु ॥ (154-3)
तू ओना का तेरे ओहि ॥२॥ (25-3)
तू करण कारण समरथु हहि करते मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥ (653-19)
तू करण कारण समरथु है तू करहि सु थीआ ॥ (585-17)
तू करण कारण समरथु है दूजा को नाही ॥ (301-19)
तू करण कारण समरथु है सचु सिरजणहारे ॥ (589-8)
तू करता आपि अगणतु है सभु जगु विचि गणतै ॥ (314-1)
तू करता आपि अभुलु है भुलण विचि नाही ॥ (301-18)
तू करता गोविंदु तुधु सिरजी तुधै गोई ॥ (1283-15)
तू करता तू करणहारु ॥ (1193-4)
तू करता तू दाना बीना तेरै नामि तराउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1015-15)
तू करता तेरा सभु कीआ ॥ (1079-16)

तू करता पुरखु अगमु है किसु नालि तू वड़ीऐ ॥ (301-13)
तू करता पुरखु अगमु है रविआ सभ ठाई ॥ (1291-18)
तू करता सभु किछु जाणदा जो जीआ अंदरि वरतै ॥ (314-1)
तू करता सभु किछु जाणदा सभि जीअ तुमारे ॥ (589-7)
तू करतारु करहि सो होइ ॥ (723-18)
तू करहि सु सचे भला है गुर सबदि बुझाही ॥ (301-18)
तू करहि सु सचे होइसी ता काइतु कड़ीऐ ॥३॥ (301-15)
तू करि करि देखहि करणहारु ॥ (1190-12)
तू करि करि देखहि जाणहि सोइ ॥१॥ (1125-4)
तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ (12-1)
तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ (365-17)
तू करि गति मेरी प्रभ दइआर ॥१॥ रहाउ ॥ (1182-1)
तू करि मिहरामति साई ॥१॥ रहाउ ॥ (1349-13)
तू कहीअत ही आदि भवानी ॥ (874-15)
तू कांइ गरबहि बावली ॥ (1196-10)
तू काहे डोलहि प्राणीआ तुधु राखैगा सिरजणहारु ॥ (724-6)
तू कुनु रे ॥ (694-1)
तू कैसे आड़ि फाथी जालि ॥ (1275-14)
तू गुण सागरु अवगुण मोही ॥१॥ रहाउ ॥ (1343-9)
तू गुणदाता निधानु हहि असी अवगणिआर ॥ (1284-6)
तू गुणदाता सबदि पछाता गुण कहि गुणी समाणे ॥१॥ (601-11)
तू गुणदातौ निरमलो भाई निरमलु ना मनु होइ ॥ (636-18)
तू घटि घटि इकु वरतदा गुरमुखि परगड़ीऐ ॥ (301-14)
तू घटि घटि इकु वरतदा सचु साहिब चलतै ॥ (314-2)
तू घटि घटि रविआ अंतरजामी ॥ (96-8)
तू घर घर रमईऐ फेरी ॥ (655-9)
तू चउ सजण मैडिआ डेई सिसु उतारि ॥ (1094-8)
तू चिति आवहि तेरी मइआ ॥ (389-13)
तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता स्रिसटि नाथु ॥ (1115-7)
तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता स्रिसटि नाथु ॥१॥ (1115-10)
तू जमि बपुरी है हेरी ॥२॥ (655-10)
तू जल निधि मीन हम तेरे करि किरपा संगि रखीजै ॥८॥३॥ (1325-4)
तू जलि थलि गगनि पयालि पूरि रह्या अम्रित ते मीठे जा के बचना ॥ (1403-19)
तू जलि थलि महीअलि भरपूरि सभ ऊपरि साचु धणी ॥ (1115-11)
तू जलि थलि महीअलि भरपूरि सभ ऊपरि साचु धणी ॥२॥ (1115-14)
तू जलि थलि महीअलि सभ तै भरपूरि ॥ (1134-16)
तू जाणहि सभ बिधि आपि गुरमुखि निसतारिआ ॥१॥ (1094-13)

तू जाणहि सभ बिधि बूझहि आपे जन नानक के प्रभ घटि घटे घटि घटे घटि हरि घाट ॥२॥४॥१०॥ (1297-12)
तू जाणाइहि ता कोई जाणै ॥ (563-19)
तू जानत मै किछु नही भव खंडन राम ॥ (858-4)
तू जानु गिआनी अंतरजामी आपे कारणु कीना ॥ (764-12)
तू जु दइआलु क्रिपालु कहीअतु हैं अतिभुज भइओ अपारला ॥ (1292-18)
तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥ (268-1)
तू ठाकुरु तू साहिबो तूहै मेरा मीरा ॥ (726-12)
तू ठाकुरो बैरागरो मै जेही घण चेरी राम ॥ (779-10)
तू ता जनिक राजा अउतारु सबदु संसारि सारु रहहि जगत्र जल पदम बीचार ॥ (1391-10)
तू थान थनंतरि हरि एकु हरि एको एकु रविआ ॥ (1115-15)
तू थान थनंतरि हरि एकु हरि एको एकु रविआ ॥३॥ (1115-18)
तू दइआलु किरपालु प्रभु सोई ॥ (130-1)
तू दइआलु किरपालु सदा प्रभु आपे मेलि मिलाइदा ॥१४॥ (1034-6)
तू दइआलु दइआ करि देखहि दुखु दरदु सरीरहु जाई हे ॥५॥ (1022-16)
तू दइआलु दइआपति दाता किआ एहि जंत विचारे ॥ (796-17)
तू दइआलु रतनु लालु नामा साचि समाइला ॥३॥२॥ (1351-6)
तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंतु लहा ॥ (25-6)
तू दाता जीआ सभना का जीआ अंदरि जीउ तुही ॥२॥ (1254-6)
तू दाता दइआलु सभै सिरि अहिनिसि दाति समारि करे ॥२॥ (1013-19)
तू दाता दातारु तेरा दिता खावणा ॥ (652-11)
तू दाता दातारु सरब दुख भंजनो जीउ ॥ (691-6)
तू दाता नामु परवाणु ॥१॥ (795-15)
तू दाता मागन कउ सगली दानु देहि प्रभ भानै ॥२॥ (613-18)
तू दाता सभना जीआ का आपन कीआ पालना ॥७॥ (915-8)
तू दाता सभि मंगते इको देवणहारु ॥ (1286-16)
तू दाता हम सेवक तेरे ॥ (1039-1)
तू दातौ हम जाचिका हरि दरसनु दीजै ॥ (419-8)
तू दाना तू अबिचलु तूही तू जाति मेरी पाती ॥ (884-7)
तू दाना साहिबु सिरि मेरा ॥ (990-18)
तू दुख भंजनु सरब सुखदाता हम पाथर तरे तराइआ ॥ (575-2)
तू देखहि थापि उथापि दरि बीनाईऐ ॥३॥ (752-10)
तू देखहि हउ मुकरि पाउ ॥ (25-8)
तू देवहि मंगत जन चाउ ॥ (878-15)
तू न बिसारे रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1292-15)
तू नदरी अंदरि तोलहि तोल ॥ (25-3)
तू निज घरि वसिअड़ा हउ रुलि भसमै ढेरी ॥ (1111-14)

तू निरबाणु तूहै ही जोगी ॥ (1074-4)
तू निरमलु सचु गुणी गहीरु ॥ (412-19)
तू निहचलु निरवैरु सचु सचा तुधु दरबारु ॥ (962-5)
तू नेत्री देखि चलिआ माइआ बिउहारी राम ॥ (547-17)
तू परै परै अपर्मपरु सुआमी तू आपन जानहि आपि जगंनाथ ॥२॥ (1296-7)
तू परै परै अपर्मपरु सुआमी मिति जानहु आपन गाती ॥२॥ (668-5)
तू पारब्रहमु परमेसरु जोनि न आवही ॥ (1095-6)
तू पिता सभि बारिक थारे ॥ (1081-8)
तू पिरु गुणवंता हउ अउगुणिआरा ॥ (561-8)
तू पुरखु अनंदी अनंत सभ जोति समाहरा ॥ (1096-2)
तू पुरखु अलेख अगम निराला ॥ (1038-16)
तू पुरु सागरु माणक हीरु ॥ (412-19)
तू पूरा हम ऊरे होछे तू गउरा हम हउरे ॥ (596-19)
तू पूरि रहिओ है सभ समान ॥ (1195-14)
तू प्रभ दाता दानि मति पूरा हम थारे भेखारी जीउ ॥ (597-16)
तू प्रभु सभि तुधु सेवदे इक ढाढी करे पुकार ॥ (1286-19)
तू प्रभु हम सरणागती मो कउ मेलि लैहु हरि राइ ॥ (996-8)
तू प्रीतमु पिआरा प्रान हित चिता ॥ (1117-14)
तू बखसहि जाति पति होइ ॥ (1331-2)
तू बखसहि ता मेलि लैहि नानक बलि जाउ ॥८॥४॥ (1011-9)
तू बिअंतु अविगतु अगोचरु इहु सभु तेरा आकारु ॥ (379-9)
तू बिअंतु तेरा अंतु न पाइआ सबदे देहु बुझाई ॥१॥ (1333-6)
तू बेअंतु अपर्मपरु सुआमी गुर किरपा कोई लाखै ॥१॥ (1228-17)
तू बेअंतु को विरला जाणै ॥ (562-19)
तू बेअंतु तेरी मिति नही पाईऐ सभु तेरो खेलु दिखाउ ॥३॥ (1202-16)
तू बेअंतु पारब्रहम सुआमी गति तेरी जाइ न लाखी ॥ (1227-12)
तू बेअंतु सरब कल पूरा किछु कीमति कही न जाइ ॥ (720-13)
तू भंनण घड़ण समरथु दातारु हहि तुधु अगै मंगण नो हथ जोड़ि खली सभ होई ॥ (549-14)
तू भगता कै वसि भगता ताणु तेरा ॥१०॥ (962-11)
तू भरपूरि जानिआ मै दूरि ॥ (25-8)
तू भारो ठाकुरु मेरा ॥२॥ (622-7)
तू भारो सुआमी मोरा ॥ (625-13)
तू मारि जीवालहि बखसि मिलाइ ॥ (154-4)
तू मेरा जीवनु तू आधारु ॥ (389-2)
तू मेरा ठाकुरु हउ दासु तेरा ॥ (1144-9)
तू मेरा ठाकुरु हम तेरै दुआरे ॥१॥ (389-1)
तू मेरा तरंगु हम मीन तुमारे ॥ (389-1)

तू मेरा पिता तूहै मेरा माता ॥ (1144-9)
तू मेरी ओट बल बुधि धनु तुम ही तुमहि मेरै परवारै ॥ (820-12)
तू मेरी गति पति तू परवानु ॥ (389-3)
तू मेरे जीअ प्रान सुखदाता ॥ (1144-9)
तू मेरे मीत सखा हरि प्रान ॥ (1216-17)
तू मोटउ ठाकुरु सबद माहि ॥ (1188-9)
तू रखवाला सदा सदा हउ तुधु धिआई ॥ (517-6)
तू राम कहन की छोडु बानि ॥ (1194-9)
तू वड दाता अंतरजामी ॥ (563-7)
तू वड दाता तू वड दाना अउरु नही को दूजा ॥ (1186-1)
तू वड रसीआ तू वड भोगी ॥ (1074-3)
तू वडदाता अंतरजामी मेरी सरधा पूरि हरि राइआ ॥ (573-4)
तू वेपरवाहु अथाहु है अतुलु किउ तुलीऐ ॥ (304-15)
तू सचा सचिआरु जिनि सचु वरताइआ ॥ (1279-11)
तू सचा सभस दा खसमु है सभ दू तू चड़ीऐ ॥ (301-15)
तू सचा साहिबु अलखु है गुर सबदि लखारे ॥१४॥ (308-9)
तू सचा साहिबु आपि है सचु साह हमारे ॥ (308-8)
तू सचा साहिबु सचु सचु सभु धारिआ ॥ (1094-11)
तू सचा साहिबु सचु है सचु सचा गोसाई ॥ (301-2)
तू सचा साहिबु सचु है सचु सचे भावै ॥ (302-15)
तू सचा सिरजणहारु अलख सिरंदिआ जीउ ॥ (688-13)
तू सतिगुरु चहु जुगी आपि आपे परमेसरु ॥ (1406-14)
तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥ (3-18)
तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥ (4-3)
तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥ (4-6)
तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥ (4-11)
तू सभ देवा महि देव बिधाते नरहरा ॥ (1096-3)
तू सभ महि एकु वरतदा सभ माहि समाणा ॥ (318-7)
तू सभ महि वरतहि आपि कुदरति देखावही ॥ (1095-7)
तू सभ महि वरतहि हरि जगंनाथु ॥ (1071-8)
तू सभना का सभु को तेरा ॥ (1079-19)
तू सभना देखहि तोलहि तोल ॥ (1051-11)
तू सभि घट भोगहि आपि तुधु लेपु न लाहरा ॥ (1096-2)
तू सभु किछु आपे आपि दूजे किसु गणी ॥ (1283-7)
तू समरथु अकथु अगोचरु जीउ पिंडु तेरी रासि ॥ (724-8)
तू समरथु तू सरब मै तूहै बुधि बिबेक जीउ ॥ (761-4)
तू समरथु दइआलु मुरारी ॥ (1031-6)

तू समरथु पारब्रहम सुआमी करि किरपा जनु तेरा ॥ (1206-6)
तू समरथु पूरन पारब्रहमु ॥ (893-11)
तू समरथु मै तेरा ताणु ॥३॥ (389-3)
तू समरथु वडा मेरी मति थोरी राम ॥ (547-10)
तू समरथु सदा हम दीन भेखारी राम ॥ (547-8)
तू समरथु सरनि का दाता आठ पहर तुम्ह धिआई ॥ रहाउ ॥ (630-10)
तू समरथु सरनि जोगु तू राखहि अपनी कल धारि ॥१॥ (1301-14)
तू समरथु सुआमी मेरा हउ किआ जाणा तेरी पूजा ॥३॥ (1186-1)
तू सरब जीआ का अंतरजामी ॥ (1071-2)
तू सरब जीआ प्रतिपालही लेखै सास गिरास ॥ (20-18)
तू सरबत्र तेरा सभु कोई ॥ (998-5)
तू सरु सागरु गुण गहीरु ॥ (1190-13)
तू सहु अगमु अतोलवा हउ कहि कहि ढहि पईआसि जीउ ॥ (762-18)
तू सागरु हम हंस तुमारे तुम महि माणक लाला ॥ (884-9)
तू साचा साहिबु साहु अमिता ॥ (1117-13)
तू साहिबु अगम दइआलु है वड दाता दाणा ॥ (305-10)
तू साहिबु अगमु दइआलु है सभि तुधु धिआही ॥ (301-19)
तू साहिबु गुणी गहेरा ॥ (623-1)
तू साहिबु सरणि सुखदाता सतसंगति जपि प्रगटावणिआ ॥७॥ (132-5)
तू साहिबु हउ सेवकु कीता ॥ (1081-5)
तू साही हू साहु हउ कहि न सका गुण तेरिआ ॥५॥ (761-12)
तू सुखदाता बेअंतु है गुणदाता नेधानु ॥ (1284-2)
तू सुखदाता लैहि मिलाइ ॥ (842-1)
तू सुणि किरत करमा पुरबि कमाइआ ॥ (1107-3)
तू सुणि हरि रस भिंने प्रीतम आपणे ॥ (1107-9)
तू सुरि नाथा देवा देव ॥ (1169-13)
तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ॥ (795-4)
तू हमरो प्रीतमु मनमोहनु तुझ बिनु जीवनु सगल अकाथ ॥१॥ रहाउ ॥ (828-16)
तू हमरो हम तुमरे कहीऐ इत उत तुम ही राखे ॥ (1228-17)
तू हरि प्रभु आपि अगमु है सभि तुधु उपाइआ ॥ (849-8)
तू हरि बेअंतु तू हरि बेअंतु तू हरि सुआमी तू आपे ही जानहि आपनी भांति ॥१॥ (1200-18)
तू हिरदै गुपतु वसहि दिनु राती तेरा भाउ न बुझहि गवारी ॥ (607-5)
तू हुकमी साजहि स्रिसटि साजि समावही ॥ (1095-6)
तू होआ पंच वासि वैरी कै छूटहि परु सरनाइले ॥३॥ (862-11)
तू होरतु उपाइ न लभही अबिनासी स्रिसटि करण ॥२॥ (1095-2)
तूटत बार न लागै ता कउ जिउ गागरि जल फोरी ॥१॥ (1222-13)
तूटि जाइगो सूतु बापुरे फिरि पाछै पछुतोही ॥३॥ (609-13)

तूटी तंतु रबाब की वाजै नही विजोगि ॥ (934-5)
तूटे तागे निखुटी पानि ॥ (871-8)
तूटे बंधन पूरन आसा ॥ (1150-4)
तूटे बंधन साधसंगु पाइआ ॥ (1141-2)
तूटे माइआ मोह पिआर ॥ (1148-16)
तूही ग्रिहि तूही बनि तूही गाउ तूही सुनि ॥ (213-19)
तूही मान तूंही धान तूही पति तूही प्रान ॥ (213-19)
तूहै मंत्री सुनहि प्रभ तूहै सभु किछु करणैहारा ॥ (625-5)
तूहै राखहि सारि समालि ॥१॥ (200-15)
तूहै सचा सचु तू सभ दू उपरि तू दीबाणु ॥ (307-10)
तूहै है वाहु तेरी रजाइ ॥ (1329-11)
ते अनदिनु नामु सदा धिआवहि गुर पूरे ते भगति विसेखु ॥१॥ रहाउ ॥ (364-8)
ते उधरे बसे जिह चीत ॥१॥ (1299-4)
ते ऊझड़ि भरमि मुए गावारी माइआ भुअंग बिखु चाखा ॥२॥ (696-12)
ते कबहु न हारहि हरि हरि गुण सारहि तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ (438-6)
ते गरभ जोनी गालीअहि जिउ लोनु जलहि गलाइओ ॥३॥ (985-5)
ते गुण विसरि गए अपराधी मै बउरा किआ करउ हरे ॥ (1013-18)
ते गुर के सिख मेरे हरि प्रभि भाए जिना हरि प्रभु जानिओ मेरा नालि ॥ (978-3)
ते घर मरहट सारखे भूत बसहि तिन माहि ॥१९२॥ (1374-16)
ते जन नानक नामि समाई ॥४॥२॥४०॥ (164-9)
ते जन नानक राम नाम लिव लाई ॥५॥१॥७॥१६॥ (494-19)
ते जमु न पेखहि नैन ॥ (837-14)
ते तसकर जो नामु न लेवहि वासहि कोट पंचासा ॥२॥ (1328-6)
ते ते बंध गलाणे ॥ (1004-1)
ते दिन समलु कसट महा दुख अब चितु अधिक पसारिआ ॥ (93-3)
ते दूजै भाइ पवहि ग्रभ जोनी सभु बिरथा जनमु तिन जाइबा ॥३॥ (697-13)
ते धंनु जन वड पुरख पूरे जो गुरमति हरि जपि भउ बिखमु तरे ॥ (1115-2)
ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास ॥२४२॥ (1377-13)
ते नर निंदक सोभ न पावहि तिन नक काटे सिरजनहारी ॥३॥ (1135-11)
ते नर भागहीन दुहचारी ओइ जनमि मुए फिरि मरा ॥३॥ (799-16)
ते नर विरले जाणीअहि जिन अंतरि गिआनु मुरारि ॥४॥ (1331-8)
ते निरभउ जिन स्रीरामु धिआइआ गुरमति मुरारि हरि मुकंदे ॥१॥ (1321-10)
ते निरमल पुरख अपरम्पर पूरे ते जग महि गुर गोविंद हरे ॥११॥ (1014-11)
ते नेत्र भले परवाणु हहि मेरी जिंदुड़ीए जो साधू सतिगुरु देखहि राम ॥ (540-4)
ते पीवहि संत करहि मनि मजनु पुब जिनहु सेवा करीआ ॥ (1396-16)
ते बंधन ते भए मुकति ॥ (1181-15)
ते बैरागी कहा समाए ॥ (390-15)

ते बैरागी सत समानि ॥ (953-3)
ते भव सागर उतरे पारि ॥२॥ (1186-12)
ते भवहि न बारै बार ॥१॥ रहाउ ॥ (1103-11)
ते मुकत भए जिन हरि नामु धिआइआ तिन पवितु परम पदु पाए ॥१॥ (735-15)
ते मुकते भए सतिगुर सबदि मनि गुर परचा पाइअउ ॥ (1397-19)
ते संत भले गुरसिख है जिन नाही चिंत पराई चुखा ॥ (588-11)
ते सभि धरम राइ कै जाही ॥१॥ रहाउ ॥ (324-9)
ते साकत चोर जिना नामु विसारिआ मन तिन कै निकटि न भिटीऐ ॥४॥ (170-10)
ते साधू हरि मेलहु सुआमी जिन जपिआ गति होइ हमारी ॥ (1135-6)
ते स्रवन भले सोभनीक हहि मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरतनु सुणहि हरि तेरे राम ॥ (540-2)
ते हरि के जन हरि सिउ रलि मिले जैसे जन नानक सललै सलल मिलाति ॥२॥१॥८॥ (1200-19)
ते हरि जन हरि मेलहु हम पिआरे ॥ (164-10)
ते हरि दरगह मुख ऊजल भाई ॥३॥ (165-5)
ते हरि दरगहि पैनाईअहि जिन हरि वुठा मन माहि ॥ (310-4)
ते हसत पुनीत पवित्र हहि मेरी जिंदुड़ीए जो हरि जसु हरि हरि लेखहि राम ॥ (540-5)
तेऊ उतरि पारि परे राम नाम लीने ॥२॥ (692-14)
तेजन महि तेजवंसी कहीअहि रसीअन महि राता ॥२॥ (507-13)
तेता कड़िआ ॥ (467-15)
तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ ॥ (445-11)
तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ ॥२॥ (445-15)
तेतीस करोड़ी दास तुम्हारे रिधि सिधि प्राण अधारी ॥ (422-19)
तेतीस करोड़ी है खेल खाना ॥ (1161-6)
तेतो लविआ ॥ (467-16)
तेन कला असथ्मभं सरोवरं नानक नह छिजंति तरंग तोयणह ॥५३॥ (1359-2)
तेरसि तरवर समुद कनारै ॥ (840-11)
तेरसि तेरह अगम बखाणि ॥ (344-4)
तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (469-11)
तेरा अंतु न जाई लखिआ अकथु न जाई हरि कथिआ ॥ (435-16)
तेरा अंतु न जाणा मेरे साहिब मै अंधुले किआ चतुराई ॥२॥ (795-6)
तेरा अंतु न जाणै कोइ सचु सिरजणहारिआ ॥ (1094-13)
तेरा अंतु न पाइआ कहा पाइ ॥ (1168-11)
तेरा अंतु न पाइआ सुरगि मछि पइआलि जीउ ॥१॥ (71-15)
तेरा अंतु न पारावारा ॥ (1004-4)
तेरा एकु नामु तारे संसारु ॥ (24-15)
तेरा एको नामु मंजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला ॥१॥ रहाउ ॥ (729-9)
तेरा कवणु गुरू जिस का तू चेला ॥ (942-18)
तेरा किनै न पाइआ आदि अंतु ॥१॥ (1172-4)

तेरा कीआ किरम जंतु ॥ (1176-3)
तेरा कीआ मीठा लागै ॥ (394-4)
तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ (1429-14)
तेरा कीता जिसु लागै मीठा ॥ (131-17)
तेरा कीता होइ त काहे डरपीऐ ॥ (522-17)
तेरा जनु एकु आधु कोई ॥ (1123-3)
तेरा जनु निरति करे गुन गावै ॥ (381-10)
तेरा जनु राम नाम रंगि जागा ॥ (682-5)
तेरा जनु राम रसाइणि माता ॥ (532-8)
तेरा जोरु तेरी मनि टेक ॥ (723-18)
तेरा ताणु तूहै दीबाणु ॥ (355-12)
तेरा ताणु नाम की वडिआई ॥ (154-6)
तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा ॥२०३॥ (1375-9)
तेरा थानु सुहावा रूपु सुहावा तेरे भगत सोहहि दरबारे ॥ (670-14)
तेरा दरसु अपारु नामु अमोलई जीउ ॥ (691-11)
तेरा दासनि दासा कहउ राइ ॥ (1168-10)
तेरा दासनि दासा कहउ राइ ॥२॥ (1168-12)
तेरा दीआ नामु वखाणै ॥१॥ (563-19)
तेरा दीआ सभि जंत खाहि ॥३॥ (1183-3)
तेरा नामु करी चनणाठीआ जे मनु उरसा होइ ॥ (489-4)
तेरा नामु दारू अवरु नासति करणहारु अपारु ॥१॥ रहाउ ॥ (1327-11)
तेरा नामु बूंद हम चात्रिक तिखहारे ॥ (100-13)
तेरा नामु रतनु करमु चानणु सुरति तिथै लोइ ॥ (1327-10)
तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (693-11)
तेरा नामु वखरु वापारु जी ॥१॥ रहाउ ॥ (157-4)
तेरा नामु सचा जीउ सबदु सचा वीचारो ॥ (243-10)
तेरा पारु न पाइआ बीठुला ॥२॥ (1196-3)
तेरा बिखमु भावनु ॥१॥ रहाउ ॥ (51-17)
तेरा भरोसा पिआरे ॥ (912-16)
तेरा भाणा तूहै मनाइहि जिस नो होहि दइआला ॥ (747-4)
तेरा भाणा मंने सु मिलै तुधु आए ॥ (1063-19)
तेरा भाणा सभु किछु होवै ॥ (356-10)
तेरा महलु अगोचरु मेरे पिआरे बिखमु तेरा है भाणा ॥ (1186-2)
तेरा महलु सचा जीउ नामु सचा वापारो ॥ (243-10)
तेरा माणु ताणु प्रभ तेरा ॥ (106-13)
तेरा माणु ताणु रिद अंतरि होर दूजी आस चुकाई ॥१॥ (748-8)
तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥ (96-17)

तेरा रूपु अगमु है अनूपु तेरा दरसारा ॥ (746-19)
तेरा रूपु न जाई लखिआ किउ तुझहि धिआवही ॥ (1095-7)
तेरा लिखिआ कोइ न मेटणहारा ॥ (1056-8)
तेरा वखतु सुहावा अम्रितु तेरी बाणी ॥ (566-17)
तेरा वरनु न जापै रूपु न लखीऐ तेरी कुदरति कउनु बीचारे ॥ (670-15)
तेरा सचु नामु परमेसरा ॥ (1168-13)
तेरा सचे किनै अंतु न पाइआ ॥ (113-15)
तेरा सदड़ा सुणीजै भाई जे को बहै अलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (730-6)
तेरा सबदु अगोचरु गुरमुखि पाईऐ नानक नामि समाइ जीउ ॥ (448-14)
तेरा सबदु तूंहै हहि आपे भरमु कहाही ॥ (162-10)
तेरा सबदु सभु तूंहै वरतहि तूं आपे करहि सु होई ॥ (448-10)
तेरा सभु कीआ तूं थिरु थीआ तुधु समानि को नाही ॥ (437-5)
तेरा सरीकु को नाही जिस नो लवै लाइ सुणाइआ ॥ (301-9)
तेरा सो दिनु नेड़ै आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (403-7)
तेरा हुकमु अपार है कोई अंतु न पाए ॥ (396-14)
तेरा हुकमु न जापी केतड़ा लिखि न जाणै कोइ ॥ (53-10)
तेरा हुकमु न जापी केतड़ा सचे अलख अपारा ॥ (786-1)
तेरा हुकमु भला तुधु भावै ॥ (359-14)
तेरा हुकमु लाला मंने एह करणी सारु ॥६॥ (1011-19)
तेरिआ दासा रिदै मुरारी ॥ (622-6)
तेरिआ भगता कउ बलिहारा ॥ (1185-17)
तेरिआ भगता भुख सद तेरीआ ॥ (74-6)
तेरिआ भगता रिदै समाणीआ ॥ (72-10)
तेरिआ संत जना की बाछउ धूरि ॥ (1183-10)
तेरिआ संता जाचउ चरन रेन ॥ (1192-4)
तेरी अकथ कथा कथनु न जाई ॥ (610-14)
तेरी अकथ कथा गुर सबदि वखाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (160-6)
तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥ (11-9)
तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥ (348-11)
तेरी ओट पूरन गोपाला ॥१॥ रहाउ ॥ (563-4)
तेरी कीमति कहणु न जाई ॥ (1086-15)
तेरी कीमति तूहै जाणहि ॥ (1270-18)
तेरी कीमति ना पवै सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥ (61-15)
तेरी कुदरति कोइ न जाणै मेरे ठाकुर सगल रउण ॥ (1094-19)
तेरी कुदरति तूहै जाणहि अउरु न दूजा जाणै ॥ (1185-16)
तेरी खिंथा दो दिहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (886-12)
तेरी गति अविगति नही जाणीऐ ॥ (1168-13)

तेरी गति मिति तूहै जाणदा तुधु कीमति पाई ॥ (1291-16)
तेरी गति मिति तूहै जाणहि ॥ (1083-12)
तेरी गति मिति तूहै जाणहि किआ को आखि वखाणै ॥ (946-16)
तेरी गति मिति तूहै जाणहि कुदरति कीम न पाईऐ ॥३॥ (748-17)
तेरी गति मिति लखी न जाइ हउ तुधु बलिहारीऐ ॥१॥ (518-4)
तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ ॥१॥ (1196-9)
तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥ (567-11)
तेरी टेक करउ आनंद ॥ (1147-3)
तेरी टेक गोविंद गुपाल दइआल प्रभ ॥ (397-9)
तेरी टेक जपउ गुर मंत ॥ (1147-3)
तेरी टेक तरीऐ भउ सागरु ॥ (1147-3)
तेरी टेक तुझै ते पाई साचे सिरजणहारा ॥ (778-5)
तेरी टेक तेरा आधारा हाथ देइ तूं राखहि ॥ (383-9)
तेरी टेक तेरा आधारु ॥ रहाउ ॥ (723-19)
तेरी टेक तेरा भरवासा ॥ (1147-5)
तेरी टेक तेरा मनि ताणु ॥ (1147-5)
तेरी टेक तेरे गुण गाहि ॥ (1147-1)
तेरी टेक न पोहै कालु ॥ (1147-2)
तेरी टेक नाही भउ कोइ ॥ (1147-4)
तेरी टेक बिनसै जंजालु ॥१॥ (1147-2)
तेरी टेक भरवासा तुम्हरा जपि नामु तुम्हारा उधरे ॥१॥ रहाउ ॥ (748-9)
तेरी टेक रहा कलि माहि ॥ (1147-1)
तेरी दाति तुझै ते होवै ॥ (1074-5)
तेरी दुबिधा द्रिसटि समानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1106-4)
तेरी नदरी करमि पवै नीसाणु ॥२॥ (1327-7)
तेरी नदरी सीझसि देहा ॥ (112-18)
तेरी निरगुण कथा कथा है मीठी गुरि नीके बचन समारे ॥ (981-4)
तेरी निरगुन कथा काइ सिउ कहीऐ ऐसा कोइ बिबेकी ॥ (333-6)
तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी ॥ (488-11)
तेरी पूंछट ऊपरि झमक बाल ॥१॥ (1196-16)
तेरी बखस न मेटै कोई सतिगुर का दिलासा ॥२॥ (750-2)
तेरी भगति करै जनु थींधा ॥३॥ (656-16)
तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बिअंत बेअंता ॥ (11-7)
तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बेअंत बेअंता ॥ (348-10)
तेरी भगति न छोडउ किआ को हसै ॥ (1170-14)
तेरी भगति न छोडउ भावै लोगु हसै ॥ (1195-18)
तेरी भगति भंडार असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलहि ॥ (1115-18)

तेरी भगति भंडार असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलहि ॥४॥३॥ (1116-2)
तेरी भगति भरे भंडार तोटि न आवही ॥ (1095-8)
तेरी भगति वडिआई ॥ (628-6)
तेरी भगति सची जे सचे भावै ॥ (112-15)
तेरी महिमा तूंहै जाणहि ॥ (108-17)
तेरी मूरति एका बहुतु रूप ॥ (1168-11)
तेरी वडिआई कही न जाइ ॥ (371-18)
तेरी वडिआई तूंहै जाणहि सभ तुधनो नित धिआए ॥ (735-13)
तेरी वडिआई तूहै जाणदा तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ (549-12)
तेरी सरणाई सची हरि जीउ ना ओह घटै न जाइ ॥ (1334-1)
तेरी सरणि उधरहि जन कोटि ॥१॥ रहाउ ॥ (193-2)
तेरी सरणि जीअन के दाते सदा सदा नानक कुरबान ॥२॥३॥२२॥ (716-12)
तेरी सरणि तेरै दरवारि ॥१॥ रहाउ ॥ (1139-16)
तेरी सरणि तेरै भरवासै पंच दुसट लै साधहि ॥३॥ (750-3)
तेरी सरणि पूरन किरपाला ॥१॥ रहाउ ॥ (563-15)
तेरी सरणि पूरन क्रिपाल ॥ (1193-3)
तेरी सरणि पूरन दइआला ॥ (736-18)
तेरी सरणि पूरे गुरदेव ॥ (893-10)
तेरी सरणि प्रभ दीन दइआल ॥ (866-14)
तेरी सरणि प्रभ दीन दइआला ॥ (806-15)
तेरी सरणि मेरे दीन दइआला ॥ (105-11)
तेरी सरणि सतिगुर मेरे पूरे ॥ (563-8)
तेरी सरनि पइआ हउ जीवां तूं सम्रथु पुरखु मिहरवानु ॥ (675-8)
तेरी सरनि पूरन सुख सागर करि किरपा देवहु दान ॥ (1221-15)
तेरी सिफति सुआलिउ सरूप है जिनि कीती तिसु पारि लघाई ॥ (301-3)
तेरी सेवा तुझ ते होवै अउरु न दूजा करता ॥ (1185-18)
तेरी सेवा सो करे जिस नो लैहि तू लाई ॥ (1011-14)
तेरी सोभा तुधु सचे मेरे पिआरिआ ॥१२॥ (963-11)
तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी ॥ (116-4)
तेरीआ सदा सदा चंगिआईआ ॥ (73-5)
तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ (11-10)
तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ (348-12)
तेरे अनेक पिआरे हउ पिर चिति न आवा ॥२॥ (561-6)
तेरे कवन कवन गुण कहि कहि गावा तू साहिब गुणी निधाना ॥ (735-2)
तेरे कहने की गति किआ कहउ मै बोलत ही बड लाज ॥१॥ (1103-10)
तेरे कीते कम तुधै ही गोचरे ॥ (521-2)
तेरे गलहि तउकु पग बेरी ॥ (655-9)

तेरे गुण अनेक कीमति नह पाहि ॥१॥ (160-5)
तेरे गुण कहा मै कहणु न जाई ॥ (1067-7)
तेरे गुण गावहि जा तुधु भावहि सचे सिउ चितु लावहे ॥ (442-3)
तेरे गुण गावहि सहजि समावहि सबदे मेलि मिलाए ॥ (771-1)
तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥ (795-5)
तेरे गुण प्रभ तुझ ही माहे ॥ (1057-8)
तेरे गुण बहुते मै एकु न जाणिआ मै मूरख किछु दीजै ॥ (596-16)
तेरे गुण बहुते मै एकु न जाता ॥ (1049-5)
तेरे गुण होहि न अवरी ॥१॥ रहाउ ॥ (359-9)
तेरे चरणा तेरे चरण धूड़ि वडभागी पावा राम ॥ (453-13)
तेरे चोज न जाणै कोई तू पूरा पुरखु बिधाता हे ॥१॥ (1031-6)
तेरे जन धिआवहि इक मनि इक चिति ते साधू सुख पावहि जपि हरि हरि नामु निधान ॥ (1298-1)
तेरे जन रसकि रसकि गुण गावहि ॥ (380-12)
तेरे जीअ जीआ का तोहि ॥ (25-2)
तेरे जीअ तू सद ही साथी ॥ (563-16)
तेरे तीनि गुणा संसारि समावहि अलखु न लखणा जाई रे ॥१॥ रहाउ ॥ (156-5)
तेरे दरसन कउ केती बिललाइ ॥ (1188-12)
तेरे दरसन कउ जाई बलिहारे ॥३॥ (563-9)
तेरे दरसन कउ बलिहारणै तुसि दिता अम्रित नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (52-4)
तेरे दरसन विटहु खंनीऐ वंञा तेरे नाम विटहु कुरबाणो ॥ (557-14)
तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥ (12-13)
तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥ (157-11)
तेरे दास कउ तुही वडिआई ॥ (196-7)
तेरे दास की होवा धूरि ॥ (893-9)
तेरे दास चरन सरनाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1348-15)
तेरे दास धिआइनि तुधु तूं रखण वालिआ ॥ (522-19)
तेरे दासरे कउ किस की काणि ॥ (376-7)
तेरे दुआरै धुनि सहज की माथै मेरे दगाई ॥२॥ (970-1)
तेरे नाम अनेक कीमति नही पाई ॥ (1067-11)
तेरे नाम अनेका रूप अनंता कहणु न जाही तेरे गुण केते ॥१॥ रहाउ ॥ (358-14)
तेरे नाम अविल्मबि बहुतु जन उधरे नामे की निज मति एह ॥२॥३॥ (873-19)
तेरे नामि संतोखे किरपा धारि ॥८॥१॥ (1187-17)
तेरे बंके लोइण दंत रीसाला ॥ (567-9)
तेरे बचन अनूप अपार संतन आधार बाणी बीचारीऐ जीउ ॥ (80-14)
तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥ (11-8)
तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥ (348-11)
तेरे भगत भगतन का आपि ॥ (1144-1)

तेरे भगत सोहहि साचै दरबारे ॥ (122-18)
तेरे भाणे नो कुरबाणु ॥ (676-12)
तेरे भाणे विचि अम्रितु वसै तूं भाणै अम्रितु पीआवणिआ ॥७॥ (119-2)
तेरे मन का भरमु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1350-6)
तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि ॥ (1196-13)
तेरे मुंध कटारे जेवडा तिनि लोभी लोभ लुभाइआ ॥ (557-13)
तेरे लाल कीमति ता पवै जां सिरै होवहि होरि ॥२॥ (1327-12)
तेरे लाले किआ चतुराई ॥ (991-2)
तेरे संतन की मनु होइ रवाला ॥ रहाउ ॥ (250-11)
तेरे संतन की हउ चेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (1252-3)
तेरे सठि स्मबत सभि तीरथा ॥ (1168-12)
तेरे सेवक कउ किस की काणि ॥ (371-17)
तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही जमु नही आवै नेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (750-1)
तेरै कमि न तेरै नाइ ॥२॥ (25-8)
तेरै काजि न अवरा जोग ॥ (889-17)
तेरै काजि न ग्रिहु राजु मालु ॥ (889-10)
तेरै काजि न बिखै जंजालु ॥ (889-10)
तेरै घरि आनंदु वधाई तुधु घरि ॥ (965-8)
तेरै घरि सदा सदा है निआउ ॥३॥ (376-4)
तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥ (463-17)
तेरै नामि निवे रहे लिव लाइ ॥ (721-14)
तेरै भरोसै पिआरे मै लाड लडाइआ ॥ (51-17)
तेरै भाणै भगति जे तुधु भावै आपे बखसि मिलाई ॥ (1333-9)
तेरै भाणै सदा सुखु पाइआ गुरि त्रिसना अगनि बुझाई ॥३॥ (1333-10)
तेरै मानि हरि हरि मानि ॥ (1322-5)
तेरै रंगि रते तुधु जेहे विरले केई भालका ॥१२॥ (1085-9)
तेरै रंगि राते सहजि सुभाइ ॥ (841-18)
तेरै हथि निधानु भावै तिसु देहि ॥ (521-3)
तेरै हथि निबेड़ु तूहै मनि भाइआ ॥ (1290-17)
तेरै हथि है सभ वडिआई जिसु देवहि सो पाइदा ॥११॥ (1063-10)
तेरै हुकमि पवै नीसाणु तउ करउ साहिब की सेवा ॥ (1395-13)
तेरै हुकमे सावणु आइआ ॥ (73-9)
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥३॥ (694-18)
तेरो जनु हरि जसु सुनत उमाहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1299-7)
तेरो जनु होइ सोइ कत डोलै तीनि भवन पर छाजा ॥ (856-10)
तेरो नही सु जानी मोरी ॥ रहाउ ॥ (715-4)
तेरो रूपु सगल देखि मोही ॥१॥ रहाउ ॥ (207-5)

तेरो सेवकु इह रंगि माता ॥ (642-8)
तेलंगी देवकरी आई ॥ (1430-8)
तेल जले बाती ठहरानी सूंना मंदरु होई ॥१॥ (478-1)
तेली कै घर तेलु आछै जंगल मधे बेल गो ॥ (718-18)
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥ (2-16)
तेहा होवै जेहे करम कमाइ ॥ (363-11)
तै जनमत गुरमति ब्रहमु पछाणिओ ॥ (1407-2)
तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥१॥ रहाउ ॥ (794-1)
तै जेवडु मै नाहि को सभु जगु डिठा हंढि ॥५॥ (1378-3)
तै तउ द्रिड़िओ नामु अपारु बिमल जासु बिथारु साधिक सिध सुजन जीआ को अधारु ॥ (1391-9)
तै तनि पड़दा नाहि नानक जै गुरु भेटिआ ॥२॥ (1099-12)
तै ता हदरथि पाइओ मानु सेविआ गुरु परवानु साधि अजगरु जिनि कीआ उनमानु ॥ (1391-13)
तै नर किआ पुरानु सुनि कीना ॥ (1253-5)
तै पढिअउ इकु मनि धरिअउ इकु करि इकु पछाणिओ ॥ (1394-11)
तै पासहु ओइ लदि गए तूं अजै न पतीणोहि ॥७३॥ (1381-15)
तै मै कीआ सु मालूमु होई ॥१॥ रहाउ ॥ (1351-8)
तै लोभु क्रोधु त्रिसना तजी सु मति जल्य जाणी जुगति ॥ (1394-17)
तै सखी भाग मथाहि जिनी मेरा सजणु राविआ ॥३॥ (1097-9)
तै सह नालहु मुतीअसु दुखा कूं धरीआसु जीउ ॥ (762-12)
तै सह नालि अकूअणा किउ थीवै घर वासु ॥३॥ (557-11)
तै सह पासहु कहणु कहाइआ ॥ (1243-10)
तै सह बात न पुछीआ कबहू न लाई पाइ ॥१॥ (947-14)
तै सह बात न पूछीऐ कबहु न लाई पाइ ॥६५॥ (1367-18)
तै सह लगी जे रहै भी सहु रावै सोइ ॥४॥२॥ (557-12)
तै सहि दिती वाड़ि नानक खेतु न छिजई ॥२॥ (521-6)
तै सहि मन महि कीआ रोसु ॥ (794-11)
तै साचा मानिआ किह बिचारि ॥१॥ (1187-1)
तै साहिब की करहि सेव ॥ (1172-5)
तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै ॥ (558-6)
तै साहिब की मै सार न जानी ॥ (794-11)
तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा ॥ (964-4)
तैडै सिमरणि हभु किछु लधमु बिखमु न डिठमु कोई ॥ (520-2)
तैसा अम्रितु तैसी बिखु खाटी ॥ (275-5)
तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥ (275-6)
तैसा रंकु तैसा राजानु ॥ (275-6)
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥ (275-5)
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥ (275-4)

तैसी बुधि करहु परगासा लागै प्रभ संगि प्रीति ॥ रहाउ ॥ (712-18)
तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥ (22-18)
तैसे उधारन गुरह पीर ॥१॥ (1181-13)
तैसे भ्रमत अनेक जोनि महि फिरि फिरि काल हइओ ॥२॥ (336-14)
तैसे राम नामा बिनु बापुरो नामा ॥५॥४॥ (874-4)
तैसे संत जन राम नाम रवत रहै ॥२॥ (1170-15)
तैसे संत जनां राम नामु न छाडैं ॥२॥ (1195-19)
तैसे संत जना राखै हरि राइ ॥१॥ (914-12)
तैसे ही इह सुख माइआ के उरझिओ कहा गवार ॥१॥ (633-4)
तैसे ही तुम ताहि पछानहु भगति हीन जो प्रानी ॥२॥ (831-5)
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥१॥ (684-15)
तैसो जैसा काढीऐ जैसी कार कमाइ ॥ (730-8)
तैसो परपंचु मोह बिकार ॥३॥ (1145-6)
तैसो ही इहु खेलु खसम का जिउ उस की वडिआई ॥२॥ (1329-13)
तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ मो कउ बेढी देहु बताई हो ॥१॥ (657-5)
तोआ आखै हउ बहु बिधि हछा तोऐ बहुतु बिकारा ॥ (1290-8)
तोइअहु अंनु कमादु कपाहां तोइअहु त्रिभवणु गंना ॥ (1290-8)
तोटा मूलि न आवई लाहा सद ही होइ ॥ (555-14)
तोटा मूलि न आवई लाहा हरि भावै सोइ ॥ (311-8)
तोटा मूलि न आवई हरि लाभु निति द्रिड़ीऐ ॥३॥ (168-15)
तोटि न आवै अखुट भंडार ॥ (893-16)
तोटि न आवै कदे मूलि पूरन भंडार ॥ (817-1)
तोटि न आवै जपि निरंकार ॥ (394-1)
तोटि न आवै निखुटि न जाइ ॥ (375-14)
तोटि न आवै पूर भंडारै त्रिपति रहे आघीजा हे ॥८॥ (1074-5)
तोटि न आवै मूलि संचिआ नामु धन ॥ (709-18)
तोटि न आवै वधदो जाई ॥३॥ (186-2)
तोटि न कतहू आवै ॥ (625-11)
तोटि नाही तुधु भगति भंडार ॥ (154-3)
तोटि नाही मनि त्रिसना बूझी अखुट भंडार समाइआ था ॥ (1002-7)
तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाए ॥ (920-13)
तोरउ न पाती पूजउ न देवा ॥ (1158-17)
तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिंच तनी ॥१॥ (827-3)
तोरे भरोसे मगहर बसिओ मेरे तन की तपति बुझाई ॥ (969-13)
तोला मासा रतक पाइ ॥ (1239-16)
तोलि न तुलीऐ मोलि न मुलीऐ कत पाईऐ मन रूचा ॥१॥ (534-17)
तोसा दिचै सचु नामु नानक मिहमाणी ॥४॥ (319-3)

तोसा बंधहु जीअ का ऐथै ओथै नालि ॥ (49-13)
तोसा हरि का नामु लै तेरे कुलहि न लागै गालि जीउ ॥१॥ (132-9)
तोहि चरन मनु लागो सारिंगधर ॥ (338-4)
तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥ (93-15)
त्मबू पलंघ निवार सराइचे लालती ॥ (141-18)
त्रउदसी तीनि ताप संसार ॥ (299-11)
त्रास मिटै जम पंथ की जासु बसै मनि नाउ ॥ (257-1)
त्राहि त्राहि करि सरनी आए जलतउ किरपा कीजै ॥ (1269-19)
त्राहि त्राहि सरणागती हरि दइआ धारि प्रभ राखु ॥ (997-14)
त्राहि त्राहि सरणि सुआमी बिग्याप्ति नानक हरि नरहरह ॥४८॥ (1358-10)
त्राहि त्राहि सरनि जन आए गुरु हाथी दे निकलावैगो ॥४॥ (1311-2)
त्राहि त्राहि सरनि प्रभ आए मो कउ गुरमति नामु द्रिड़ीजै ॥१॥ (1325-17)
त्रिअ असथान तीनि त्रिअ खंडा ॥ (1162-10)
त्रिकुटी छूटी बिमल मझारि ॥ (220-19)
त्रिकुटी छूटै दसवा दरु खूल्है ता मनु खीवा भाई ॥३॥ (1123-16)
त्रिकुटी फोरि भरमु भउ भागा लज भानी मटुकी माट ॥३॥ (986-5)
त्रिकुटी संधि मै पेखिआ घट हू घट जागी ॥ (857-12)
त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥ (96-15)
त्रिखावंत जल सेती काज ॥ (1164-13)
त्रिखावंत जलु पीवत ठंढा तिउ हरि संगि इहु मनु भीना जीउ ॥२॥ (100-15)
त्रिगद जोनि अचेत स्मभव पुंन पाप असोच ॥ (486-7)
त्रिणं त मेरं सहकं त हरीअं ॥ (1359-18)
त्रिण की अगनि मेघ की छाइआ गोबिद भजन बिनु हड़ का जलु ॥ रहाउ ॥ (717-5)
त्रिण को मंदरु साजि सवारिओ पावकु तलै जरावत हे ॥ (821-18)
त्रिण समानि कछु संगि न जावै ॥ (278-10)
त्रिणु न पाइओ बपुड़ी नानकु कहै गवार ॥१॥ (1241-19)
त्रितीअ बिवसथा सिंचे माइ ॥ (890-1)
त्रितीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥ (1116-17)
त्रितीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥५॥ (1117-2)
त्रितीआ तीने सम करि लिआवै ॥ (343-10)
त्रितीआ तेरा सुंदर थानु ॥ (374-1)
त्रितीआ त्रै गुण बिखै फल कब उतम कब नीचु ॥ (297-4)
त्रितीआ ब्रहमा बिसनु महेसा ॥ (839-6)
त्रितीए मता किछु करउ उपाइआ ॥ (371-13)
त्रितीए महि किछु भइआ दुतेड़ा ॥ (886-6)
त्रिपति अघाइ रहिआ है संतहु गुरि अनभउ पुरखु दिखारिआ जीउ ॥२॥ (97-12)
त्रिपति अघाइ रहे जन तेरे सतिगुरि कीआ दिलासा जीउ ॥३॥ (105-15)

त्रिपति अघाइ रहे रिद अंतरि डोलन ते अब चूके ॥ (215-8)
त्रिपति अघाइ सेई जन पूरे सुख निधानु हरि गाइआ ॥२॥ (380-14)
त्रिपति अघाए पेखि प्रभ दरसनु अम्रित हरि रसु भोजनु खात ॥ (821-1)
त्रिपति अघाने हरि गुणह गाइ ॥ (1180-6)
त्रिपति अघावनु साचै नाइ ॥ (377-3)
त्रिपति अघावनु हरि कै दरसनि ॥१॥ (181-8)
त्रिपति अघावै हरि दरसनि मनु मोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (376-14)
त्रिपति आघाए संता ॥ (1006-2)
त्रिपति तरंग ततु बीचारी ॥३॥ (1331-14)
त्रिपति न आवै बिखिआ सादि ॥ (898-4)
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥ (279-1)
त्रिपति न होवत कूकरी आसा इतु लागो बिखिआ छार ॥१॥ रहाउ ॥ (1223-17)
त्रिपति भई सचु भोजनु खाइआ ॥ (684-4)
त्रिपति मुकति मनि साचा भावै ॥१॥ (832-2)
त्रिपति संतोखु मनि सांति न आवै मिलि साधू त्रिपति हरि नामि सिधि पईआ ॥५॥ (835-14)
त्रिपति संतोखु सेवा गुर पूरे नामु कमाइ रसाइणा ॥६॥ (1078-5)
त्रिबिधि करम कमाईअहि आस अंदेसा होइ ॥ (18-15)
त्रिबिधि बंधन तूटहि गुर सबदी गुर सबदी मुकति करावणिआ ॥३॥ (127-12)
त्रिबिधि मनसा त्रिबिधि माइआ ॥ (117-3)
त्रिबिधि मनसा मनहि समाए ॥ (1066-6)
त्रिबिधि माइआ कारणि लूझै ॥ (127-11)
त्रिबिधि माइआ रही बिआपि ॥ (1145-4)
त्रिबिधि रोग महि बधे बिकारा ॥२॥ (1140-19)
त्रिबिधि लोगा त्रिबिधि जोगा ॥ (903-15)
त्रिभवण कंतु रवै सोहागणि अवगणवंती दूरे ॥ (763-14)
त्रिभवण जोति धरी परमेसरि अवरु न दूजा भाई हे ॥१॥ (1024-12)
त्रिभवण जोति रहे लिव लाई ॥ (685-17)
त्रिभवण ठाकुरु प्रीतमु मोटा ॥२८॥ (933-11)
त्रिभवण ढूढी सजणा हउमै बुरी जगति ॥ (1088-3)
त्रिभवण तारणहारु सुआमी एकु न चेतसि अंधाता ॥२॥ (155-19)
त्रिभवण देवा सगल सरूपु ॥ (414-1)
त्रिभवण धावै ता किछू न बूझै ॥ (1078-2)
त्रिभवण महि जोति त्रिभवण महि जाणिआ ॥ (352-9)
त्रिभवण साजि मेखुली माइआ आपि उपाइ खपाइदा ॥६॥ (1037-17)
त्रिभवण सूझै आपु गवावै ॥ (412-12)
त्रिभवणि साचु कला धरि थापी साचे ही पतीआइदा ॥११॥ (1035-3)
त्रिभवणि सेवक वडहु वडेरे ॥ (1028-14)

त्रिभवणि सो प्रभु जाणीऐ साचो साचै नाइ ॥५॥ (57-1)
त्रिभवणु खोजि ढंढोलिआ गुरमुखि खोजि निहालि ॥ (20-16)
त्रिभवणु बेधिआ आपि मुरारि ॥१॥ (153-10)
त्रिभवणो तुझहि कीआ सभु जगतु सबाइआ राम ॥ (437-4)
त्रिलोचन गुर मिलि भई सिधि ॥ (1192-9)
त्रिसन न बूझी बहु रंग माइआ ॥ (1298-16)
त्रिसन न बूझै करत कलोला ॥ (1004-19)
त्रिसन बुझी मनु निहचलु थीआ ॥३॥ (387-6)
त्रिसन बुझी ममता गई नाठे भै भरमा ॥ (814-15)
त्रिसना अगनि जलै संसारा ॥ (1044-8)
त्रिसना अगनि प्रभि आपि बुझाई ॥ (684-3)
त्रिसना अगनि बुझी सांति पाई हरि निरमल निरमल गुन गाइबा ॥२॥ (697-11)
त्रिसना अगनि सबदि बुझाए ॥ (222-14)
त्रिसना अरु माइआ भ्रमु चूका चितवत आतम रामा ॥३॥ (1123-5)
त्रिसना अहिनिसि अगली हउमै रोगु विकारु ॥ (20-13)
त्रिसना कदे न चुकई जलदी करे पूकार ॥ (89-19)
त्रिसना कदे न बुझई दुबिधा होइ खुआरु ॥ (649-2)
त्रिसना कामु क्रोधु मद मतसर काटि काटि कसु दीनु रे ॥१॥ (969-1)
त्रिसना गूणि भरी घट भीतरि इन बिधि टांड बिसाहिओ ॥१॥ (333-13)
त्रिसना चलत बहु परकारि ॥ (1224-19)
त्रिसना छोडै भै वसै नानक करणी सारु ॥१॥ (1089-17)
त्रिसना जलत किरत के बाधे जिउ तेली बलद भवंदे ॥२॥ (800-14)
त्रिसना जलत जले अहंकारे ॥ (1172-15)
त्रिसना जलत न कबहू बूझहि जूऐ बाजी हारी ॥३॥ (1198-18)
त्रिसना जलिआ भूख न जाइ ॥ (1262-12)
त्रिसना जाले सुधि न काई ॥ (120-6)
त्रिसना तजि सहज सुखु पाइआ एको मंनि वसावणिआ ॥१॥ (111-5)
त्रिसना त्रिखा भूख भ्रमि लागी हिरदै नाहि बीचारिओ रे ॥ (335-14)
त्रिसना थकी नानका जा मनु रता नाइ ॥ (1091-9)
त्रिसना दाधी जलि मुई जलि जलि करे पुकार ॥ (588-4)
त्रिसना पंखी फासिआ निकसु न पाए माइ ॥ (50-8)
त्रिसना पासु न छोडई बैरागीअड़े ॥ (1104-16)
त्रिसना बिरले ही की बुझी हे ॥१॥ रहाउ ॥ (213-11)
त्रिसना बुझी पूरन सभ आसा चूके सोग संताप ॥ (1223-15)
त्रिसना बुझै हरि कै नामि ॥ (682-19)
त्रिसना बूझी अंतरु ठंढा ॥ (1074-11)
त्रिसना बूझी गुर प्रसादि ॥ (1181-16)

त्रिसना बूझै मनु त्रिपतावहु ॥१॥ रहाउ ॥ (179-14)
त्रिसना भुख विकराल नाइ तेरै ध्रापीऐ ॥ (963-9)
त्रिसना भुख विचहु उतरै सुखु वसै मनि आई ॥ (511-16)
त्रिसना भूख सभ नासी ॥ (897-9)
त्रिसना माइआ मोहणी सुत बंधप घर नारि ॥ (61-9)
त्रिसना मूलि न चुकई अंति गए पछुताहि ॥२॥ (491-4)
त्रिसना मूलि न होवई नामु वसै मनि आइ ॥ (1250-2)
त्रिसना राचि ततु नही बीना ॥३॥ (225-18)
त्रिसना राचि न पर घरि जावा त्रिसना नामि बुझाई ॥ (634-8)
त्रिसना लागी रचि रहिआ अंतरि हउमै कूरि ॥ (47-12)
त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ॥२॥ (1186-16)
त्रिसना होई बहुतु किवै न धीजई ॥ (1285-14)
त्रिहदस माल रखै जो नानक मोख मुकति सो पावै ॥१॥ (503-6)
त्रिहा गुणा ते रहै निरारा सो गुरमुखि सोभा पाइदा ॥४॥ (1075-17)
त्रिहु गुण अंतरि खपहि खपावहि नाही पारि उतारा हे ॥१४॥ (1029-16)
त्रिहु गुण उपजै बिनसै दूरे ॥ (832-5)
त्रिहु गुण बंधी देहुरी जो आइआ जगि सो खेलु ॥ (21-5)
त्रिहु गुण महि वरतै संसारा ॥ (389-7)
त्रिहु गुणा विचि सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ ॥ (68-13)
त्रेतै इक कल कीनी दूरि ॥ (880-3)
त्रेतै तै माणिओ रामु रघुवंसु कहाइओ ॥ (1390-8)
त्रेतै धरम कला इक चूकी ॥ (1023-17)
त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥ (470-2)
त्रै गुण अचेत नामु चेतहि नाही बिनु नावै बिनसि जाई ॥१५॥ (909-16)
त्रै गुण आपि सिरजिअनु माइआ मोहु वधाइआ ॥ (1237-18)
त्रै गुण आपि सिरजिआ माइआ मोहु वधाइआ ॥ (643-16)
त्रै गुण इन कै वसि किनै न मोड़ीऐ ॥ (522-7)
त्रै गुण कालै की सिरि कारा ॥ (231-19)
त्रै गुण की ओसु उतरी माइ ॥ (888-3)
त्रै गुण कीआ पसारा ॥ (1003-19)
त्रै गुण तिआगि दुरजन मीत समाने ॥ (370-14)
त्रै गुण दीसहि मोहे माइआ ॥ (129-6)
त्रै गुण धातु बहु करम कमावहि हरि रस सादु न आइआ ॥ (603-12)
त्रै गुण पड़हि हरि एकु न जाणहि बिनु बूझे दुखु पावणिआ ॥७॥ (128-11)
त्रै गुण पड़हि हरि ततु न जाणहि ॥ (128-9)
त्रै गुण बधक मुकति निरारी ॥ (1049-19)
त्रै गुण बाणी बेद बीचारु ॥ (1262-13)

त्रै गुण बाणी ब्रहम जंजाला ॥ (230-19)
त्रै गुण बिखिआ अंधु है माइआ मोह गुबार ॥ (30-10)
त्रै गुण बिखिआ जनमि मरीजै ॥ (905-7)
त्रै गुण भरमे नाही निज घरि वासा ॥१॥ (230-18)
त्रै गुण माइआ बिनसि बिताला ॥२॥ (237-9)
त्रै गुण माइआ ब्रहम की कीन्ही कहहु कवन बिधि तरीऐ रे ॥ (404-2)
त्रै गुण माइआ भरमि भुलाइआ हउमै बंधन कमाए ॥ (604-5)
त्रै गुण माइआ मूलु है विचि हउमै नामु विसारि ॥ (647-11)
त्रै गुण माइआ मोहि विआपे तुरीआ गुणु है गुरमुखि लहीआ ॥ (833-16)
त्रै गुण माइआ मोहु पसारा सभ वरतै आकारी ॥ (1260-18)
त्रै गुण माइआ मोहु है गुरमुखि चउथा पदु पाइ ॥ (30-13)
त्रै गुण माइआ वेखि भुले जिउ देखि दीपकि पतंग पचाइआ ॥ (513-8)
त्रै गुण मेटे खाईऐ सारु ॥ (940-3)
त्रै गुण मेटे चउथै चितु लाइआ ॥ (231-7)
त्रै गुण मेटे चउथै वरतै एहा भगति निरारी ॥१६॥ (908-3)
त्रै गुण मेटे निरमलु होई ॥ (232-12)
त्रै गुण मेटै सबदु वसाए ता मनि चूकै अहंकारो ॥ (944-17)
त्रै गुण मोहे मोहिआ आकासु ॥ (370-9)
त्रै गुण रहत रहै निरारी साधिक सिध न जानै ॥ (883-15)
त्रै गुण रोवहि नीता नीत ॥ (413-11)
त्रै गुण वखाणै भरमु न जाइ ॥ (231-17)
त्रै गुण वरतहि सगल संसारा हउमै विचि पति खोई ॥ (604-6)
त्रै गुण सभा धातु है दूजा भाउ विकारु ॥ (33-10)
त्रै गुण सभा धातु है ना हरि भगति न भाइ ॥ (1258-4)
त्रै गुण सभा धातु है पड़ि पड़ि करहि वीचारु ॥ (1277-3)
त्रै गुण सभि तेरे तू आपे करता जो तू करहि सु होई ॥ (604-8)
त्रै गुण सभे रोगि विआपे ममता सुरति गवाई ॥२॥ (1130-7)
त्रै गुण सरब जंजालु है नामि न धरे पिआरु ॥ (1284-4)
त्रै गुन माई मोहि आई कहंउ बेदन काहि ॥१॥ (1272-3)
त्रै लोक दीपकु सबदि चानणु पंच दूत संघारहे ॥ (1113-5)
त्रै वरताइ चउथै घरि वासा ॥ (1038-17)
त्रै सत अंगुल वाई अउधू सुंन सचु आहारो ॥ (944-16)
त्रै सत अंगुल वाई कहीऐ तिसु कहु कवनु अधारो ॥ (944-10)
त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥ (1353-7)
त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥ (470-16)
थकि परिओ प्रभ दरबार ॥ (837-17)
थटणहारै थाटु आपे ही थटिआ ॥ (957-6)

थथा अथाह थाह नही पावा ॥ (341-11)
थथा थिरु कोऊ नही काइ पसारहु पाव ॥ (257-5)
थथै थानि थानंतरि सोई जा का कीआ सभु होआ ॥ (433-12)
थन चोखता माखनु घूटला ॥२॥ (874-3)
थम्हु उपाड़ि हरि आपु दिखाइआ ॥ (1154-16)
थर थर क्मपै जीअड़ा थान विहूणा होइ ॥ (934-9)
थरहर क्मपै बाला जीउ ॥ (792-10)
थल तापहि सर भार सा धन बिनउ करै ॥ (1108-7)
थल वारोले बहुतु अनंतु ॥ (465-11)
थाउ कुथाउ न जाणनी सदा चितवहि बिकार ॥ (1248-15)
थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥ (463-17)
थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥ (464-11)
थाका तेजु उडिआ मनु पंखी घरि आंगनि न सुखाई ॥ (93-14)
थाका मनु कुंचर उरु थाका तेजु सूतु धरि रमते ॥४॥ (480-14)
थाकि रही किव अपड़ा हाथ नही ना पारु ॥ (935-2)
थाके नैन स्रवन सुनि थाके थाकी सुंदरि काइआ ॥ (793-1)
थाके पंच दूत सभ तसकर आप आपणै भ्रमते ॥ (480-14)
थाके बहु बिधि घालते त्रिपति न त्रिसना लाथ ॥ (257-4)
थाती पाई हरि को नाम ॥ (196-14)
थान थनंतरि अंतरजामी ॥ (1072-1)
थान थनंतरि आपि जलि थलि पूर सोइ ॥ (704-17)
थान थनंतरि एकै सोइ ॥ (279-8)
थान थनंतरि एको सुआमी ॥ (865-17)
थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूं सरब मही ॥४॥२॥ (485-11)
थान थनंतरि रवि रहिआ गुर सबदी वीचारि ॥ (934-12)
थान थनंतरि रवि रहिआ जीअ अंदरि जाणा ॥ (318-8)
थान थनंतरि रवि रहिआ पारब्रहमु प्रभु सोइ ॥ (45-17)
थान थनंतरि रवि रहिआ प्रभु मेरा भरपूरि ॥३॥ (48-8)
थान थनंतरि रवि रहिआ मेरी जिंदुड़ीए पारब्रहमु प्रभु दाता राम ॥ (541-14)
थान थनंतरि रवि रहिआ सरब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥ (760-17)
थान थनंतरि रवि रहे नानक के सुआमी ॥२॥१४॥७८॥ (819-15)
थान थनंतरि रहिआ समाइ ॥ (269-12)
थान थनंतरि सरब निरंतरि बलि बलि जांई हरि के चरण ॥१॥ (827-12)
थान थनंतरि साहिबु बीर ॥२॥ (1257-8)
थान थनाए सरब समाए ॥ (1307-9)
थान पवित्रा मान पवित्रा पवित्र सुनन कहनहारे ॥ (1215-7)
थान बिहून उठि उठि फिरि धावै ॥ (1005-2)

थान बिहून बिस्राम नामं नानक क्रिपाल हरि हरि गुरह ॥३७॥ (1357-6)
थान मुकाम जले बिज मंदर मुछि मुछि कुइर रुलाइआ ॥ (418-1)
थानसट जग भरिसट होए डूबता इव जगु ॥१॥ (662-18)
थानि थनंतरि तूंहै तूंहै इको इकु वरतावणिआ ॥२॥ (131-18)
थानि थनंतरि सचा सोई ॥ (107-11)
थानि थनंतरि सभनी जाई जो दीसै सो तेरा ॥ (700-17)
थानि मानि सचु एकु है काजु न फीटै कोइ ॥ (934-10)
थानु सुहावा पवितु है जिथै संत सभा ॥ (44-10)
थानु सुहावा सदा प्रभ तेरा रंग तेरे आपारा ॥१॥ रहाउ ॥ (1185-17)
थापि उथापे करे सु होगु ॥ (903-16)
थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥ (2-6)
थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥ (1429-12)
थालै विचि तै वसतू पईओ हरि भोजनु अम्रितु सारु ॥ (645-12)
थाव सगले सुखी वसाइआ ॥१॥ (628-17)
थावर थिरु करि राखै सोइ ॥ (344-17)
थावा नाव न जाणीअहि नावा केवडु नाउ ॥ (53-15)
थितंी ॥ (343-5)
थिति पाई आनदु भइआ गुरि कीने धरमा ॥१॥ (814-16)
थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥ (287-17)
थिति पावहु गोबिद भजहु संतह की सिख लेहु ॥ (257-7)
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥ (4-18)
थिती गउड़ी महला ५ ॥ (296-10)
थिती वार ता जा सचि राते ॥ (842-16)
थिती वार सभि आवहि जाहि ॥ (842-16)
थिती वार सभि सबदि सुहाए ॥ (842-15)
थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥ (843-3)
थिर थिर चित थिर हां ॥ (409-10)
थिरु घरि बैठे प्रभु अपना पावहु ॥२॥ (386-13)
थिरु घरि बैसहु हरि जन पिआरे ॥ (201-6)
थिरु न रहहि जैसे भवहि उदासे ॥१॥ (359-2)
थिरु न रहहि मनि खोटु कमाहि ॥ (366-5)
थिरु नामु भगति दिड़ं मती गुर वाकि सबद रतं ॥३॥ (505-15)
थिरु नाराइणु करे सु होइ ॥३॥ (153-7)
थिरु नाराइणु थिरु गुरू थिरु साचा बीचारु ॥ (934-10)
थिरु पारब्रहमु परमेसरो सेवकु थिरु होसी ॥१८॥ (1100-18)
थिरु भई तंती तूटसि नाही अनहद किंगुरी बाजी ॥३॥ (334-19)
थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥ (457-2)

थिरु साचा सालाही सद ही जिनि गुर का सबदु पछाता हे ॥३॥ (1051-9)
थिरु साध सफरीआ ॥ (537-6)
थिरु साधू सरणी पड़ीऐ चरणी अब टूटसि मोहु जु कितीऐ ॥ (455-6)
थिरु सुहागु वरु अगमु अगोचरु जन नानक प्रेम साधारी जीउ ॥४॥४॥११॥ (98-1)
थिरु सोहागनि संगि भतारी ॥४॥७॥ (372-13)
थिरु सोहागु नानक जन पाइआ ॥४॥२॥५३॥ (384-15)
थीउ निमाणा सद कुरबाणा सगला आपु मिटाईऐ ॥ (777-17)
थीउ संतन की रेणु जितु लभी सुख दातारु ॥३॥ (1098-5)
थीवहि लाला अति गुलाला सबदु चीनि गुर मीठा ॥ (777-8)
थैं भावै दरु लहसि पिराणि ॥२॥ (1275-2)
थैली संचहु स्रमु करहु थाकि परहु गावार ॥ (257-6)
थोड़ा किनै न मंगिओ किसु कहीऐ साबासि ॥ (1238-11)
थोड़ै थलि थानक आर्मभै ॥ (341-11)
थोरी बात अलप सुपने की बहुरि बहुरि अटकावसि रे ॥३॥ (1000-17)
दंडधार जटधारै पेखिओ वरत नेम तीरथाए ॥१॥ (1139-3)
दंदी मैलु न कतु मनि जीभै सचा सोइ ॥ (642-11)
दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥ (471-2)
दइआ करणं दुख हरणं उचरणं नाम कीरतनह ॥ (709-19)
दइआ करहि प्रभ मेलि लैहि खिन महि ढाहि उसारि ॥ (934-13)
दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे ॥५॥ (156-15)
दइआ करहु किरम अपुने कउ इहै मनोरथु सुआउ ॥२॥ (406-1)
दइआ करहु ठाकुर प्रभ मेरे ॥ (1144-14)
दइआ करहु दइआल अपणी सिफति देहु ॥ (961-9)
दइआ करहु नानकु गुण गावै मिठा लगै तेरा भाणा ॥४॥६॥५३॥ (748-19)
दइआ करहु प्रभ दीन दइआला ॥ (1172-10)
दइआ करहु बसहु मनि आइ ॥ (802-2)
दइआ करहु रखि लेवहु हरि जीउ हम लागह सतिगुर पाए ॥३॥ (1114-7)
दइआ करहु हरि दरसु दिखावहु मेरै मनि तनि लोच घणेरी ॥१॥ (170-13)
दइआ करी समरथ गुरि बसिआ मनि नाम ॥३॥ (813-7)
दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ॥ (468-11)
दइआ तुहारी किआ जंत विचारी नानक बलि बलि जावे ॥३॥७॥१४७॥ (407-12)
दइआ दइआ करि राखहु हरि जीउ हम दीन तेरी सरणाइ ॥ (881-6)
दइआ दानु दइआलु तू करि करि देखणहारु ॥ (934-13)
दइआ दानु मंगत जन दीजै मै प्रीतमु देहु मिलाए ॥ (1114-3)
दइआ दिग्मबरु देह बीचारी ॥ (356-16)
दइआ दीन करहु रखि लेवहु नानक हरि गुर सरणि समईआ ॥८॥५॥८॥ (836-12)
दइआ दुआपुरि अधी होई ॥ (1023-19)

दइआ देवता खिमा जपमाली ते माणस परधान ॥ (1245-11)
दइआ धरमु अरु गुर की सेवा ए सुपनंतरि नाही ॥४॥ (971-5)
दइआ धरमु तपु निहचलो जिसु करमि लिखाधा ॥ (1101-5)
दइआ धारि अपुना करि लीना ॥१॥ (805-5)
दइआ धारि राखे तुधु सेई पूरै करमि समावणिआ ॥३॥ (131-19)
दइआ धारी गोविद गोसाई ॥ (891-10)
दइआ धारी तिनि धारणहार ॥ (915-2)
दइआ धारी तिनि सिरजनहारे ॥ (103-9)
दइआ धारी समरथि चुके बिल बिलाप ॥ (521-13)
दइआ फाहुरी काइआ करि धूई द्रिसटि की अगनि जलावै ॥ (477-12)
दइआ मइआ अरु निकटि पेखु नाही दूरारी ॥३॥ (810-16)
दइआ मइआ करि प्रानपति मोरे मोहि अनाथ सरणि प्रभ तोरी ॥ (208-13)
दइआ मइआ किरपा ठाकुर की सेई संत सुभाई ॥ (701-11)
दइआ मइआ किरपा नानक कउ सुनि सुनि जसु जीवाउ ॥२॥१॥३८॥६॥४४॥ (536-6)
दइआ मोहि कीजै देवा ॥ (1005-15)
दइआल एक भगवान पुरखह नानक सरब जीअ प्रतिपालकह ॥१५॥ (1355-7)
दइआल तेरै नामि तरा ॥ (660-6)
दइआल दमोदरु गुरमुखि पाईऐ होरतु कितै न भाती जीउ ॥२॥ (98-9)
दइआल दीन भए है सतिगुर हरि मारगु पंथु दिखावैगो ॥३॥ (1311-11)
दइआल दुख हर सरणि दाता सगल दोख निवारणो ॥ (926-3)
दइआल देव क्रिपाल गोबिंद सुनि संतना की रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (1017-18)
दइआल पुरख किरपा करहु नानक दास दसानी ॥८॥३॥१५॥४४॥ जुमला (242-5)
दइआल पुरख नानक अरदासि ॥ (894-3)
दइआल पुरख परगट परताप ॥ (890-16)
दइआल पुरख पूरन प्रतिपालै ॥१॥ रहाउ ॥ (240-11)
दइआल पुरख भगवानह नानक लिपत न माइआ ॥१॥ (709-19)
दइआल पुरख मिहरवाना ॥ (628-2)
दइआल पुरख मेरे प्रभ दाते ॥ (563-1)
दइआल पुरख सरब के ठाकुर बिनउ करउ कर जोरि ॥ (500-3)
दइआल प्रभू दामोदर माधो अंतु न पाईऐ गुनीऐ राम ॥ (926-2)
दइआल भए ता आए चीति ॥ (915-1)
दइआल भए सगले जीअ भाई ॥३॥ (190-14)
दइआल लाल गोबिंद नानक मिलु साधसंगति होइ गते ॥१॥ (455-16)
दइआल सदा क्रिपाल सुआमी नीच थापणहारिआ ॥ (691-9)
दइआल होए सभ जीअ जंत्र हरि नानक नदरि निहाल ॥१॥ (957-18)
दइआलु होआ पारब्रहमु सुआमी पूरा सतिगुरु धिआइआ ॥१॥ (615-18)
दइआलु होवहि जिसु ऊपरि करते सो तुधु सदा धिआए ॥१॥ (749-13)

दखन देसि हरी का बासा पछिमि अलह मुकामा ॥ (1349-13)
ददा दाता एकु है सभ कउ देवनहार ॥ (257-10)
ददा देखि जु बिनसनहारा ॥ (341-12)
ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करमा आपणिआ ॥ (433-13)
दधि कै भोलै बिरोलै नीरु ॥१॥ रहाउ ॥ (326-4)
दफतरि लेखा नीकसै मार मुहै मुहि खाइ ॥२००॥ (1375-6)
दफतरि लेखा मांगीऐ तब होइगो कउनु हवालु ॥१८७॥ (1374-11)
दफतरु दई जब काढि है होइगा कउनु हवालु ॥१९९॥ (1375-5)
दमड़ा पलै ना पवै ना को देवै धीर ॥ (70-9)
दमि दमि सदा समालदा दमु न बिरथा जाइ ॥ (556-4)
दय गुसाई मीतुला तूं संगि हमारै बासु जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (203-6)
दयालं सरबत्र जीआ पंच दोख बिवरजितह ॥ (1357-10)
दयि विगोए फिरहि विगुते फिटा वतै गला ॥ (150-1)
दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥ (133-18)
दर घर महला सेज सुखाली ॥ (225-10)
दर घर महला सोहणे पके कोट हजार ॥ (63-14)
दर घर महला हसती घोड़े छोडि विलाइति देस गए ॥ (358-14)
दर दरसन का प्रीतमु होवै मुकति बैकुंठै करै किआ ॥३॥ (360-9)
दरखत आब आस कर ॥ (144-5)
दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥३॥ (471-9)
दरगह कब ही न पावै मानु ॥ (1066-11)
दरगह घड़ीअहि तीने लेख ॥ (662-11)
दरगह दाना बीना इकु आपे निरमल गुर की बाणी ॥ (1345-15)
दरगह नामु हदूरि गुरमुखि जाणसी ॥ (422-3)
दरगह निबहै खेप तुमारी ॥ (293-6)
दरगह पैधे जानि सुहेले हुकमि सचे पातिसाहा हे ॥१५॥ (1033-6)
दरगह बैसण नाही जाइ ॥३॥ (662-2)
दरगह बैसण नाही थाउ ॥ (354-8)
दरगह बैसण होवै थाउ ॥ (354-12)
दरगह माणु पावहि पति सिउ जावहि आगै दूखु न लागै ॥ (580-1)
दरगह मिलै तिसै ही जाइ ॥ (677-5)
दरगह मुकति करे करि किरपा बखसे अवगुण कीना हे ॥४॥ (1027-19)
दरगह लेखा मंगीऐ ओथै होहि कूड़िआर ॥ (1248-15)
दरगह लेखा मंगीऐ किसु किसु उतरु देउ ॥ (1089-8)
दरगहि लेखा मंगीऐ कोई अंति न सकी छडाइ ॥ (1422-19)
दरद निवारहि जा के आपे ॥ (257-12)
दरदु होवै दुखु रहै सरीर ॥ (1256-14)

दरबवंतु दरबु देखि गरबै भूमवंतु अभिमानी ॥ (679-13)
दरबारन महि तेरो दरबारा सरन पालन टीका ॥ (507-16)
दरबि भरे भंडार रीते इकि खणे ॥ (141-17)
दरबि सिआणप ना ओइ रहते ॥ (182-12)
दरबु गइआ सभु जीअ कै साथै ॥४॥ (199-17)
दरबु संचि संचि राजे मूए गडि ले कंचन भारी ॥ (654-7)
दरबु हिरै मिथिआ करि खाइ ॥ (1139-11)
दरमादे ठाढे दरबारि ॥ (856-16)
दरवेसां नो लोड़ीऐ रुखां दी जीरांदि ॥६०॥ (1381-3)
दरवेसी को जाणसी विरला को दरवेसु ॥ (550-15)
दरस तेरे की पिआस मनि लागी ॥ (389-15)
दरस पिआस आस एकहि की टेक हीऐं प्रिअ पागी ॥१॥ (1217-11)
दरस पिआस मेरा मनु मोहिओ काढी नरक ते धूह ॥१॥ (1227-3)
दरस पिआस मेरो मनु मोहिओ हरि पंख लगाइ मिलीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (1269-17)
दरस बिहूना साध जनु खिनु टिकणु न आवै ॥ (1122-12)
दरसन कउ जाईऐ कुरबानु ॥ (897-13)
दरसन कउ लोचै सभु कोई ॥ (745-1)
दरसन की पिआस घणी चितवत अनिक प्रकार ॥ (431-3)
दरसन की पिआस जिसु नर होइ ॥ (1188-10)
दरसन की पिआसा घणी भाणै मनि भाईऐ ॥ (421-4)
दरसन की मनि आस घनेरी कोई ऐसा संतु मो कउ पिरहि मिलावै ॥१॥ रहाउ ॥ (375-1)
दरसन कै ताई भेख निवासी ॥ (939-18)
दरसन तेरे सुणि प्रभ मेरे निमख द्रिसटि पेखि जीवा ॥ (1117-11)
दरसन देखि सीतल मन भए ॥ (202-11)
दरसन देखे की वडिआई ॥ (738-14)
दरसन नाम कउ मनु आछै ॥ (533-17)
दरसन निमख ताप त्रई मोचन परसत मुकति करत ग्रिह कूप ॥१॥ रहाउ ॥ (1252-18)
दरसन परसन सरसन हरसन रंगि रंगी करतारी रे ॥१॥ (404-16)
दरसन परसन हीत चीति ॥ (1180-18)
दरसन पिआस प्रिअ प्रीति मनोहर मनु न रहै बहु बिधि उमकाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1206-19)
दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै ॥ (1304-18)
दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै नानक दरस निहाल ॥३॥८॥९॥ (980-2)
दरसन पिआस लोचन तार लागी ॥ (1119-4)
दरसन पिआसी दिनसु राति चितवउ अनदिनु नीत ॥ (703-12)
दरसन पेखत सभ दुख परहरिआ जीउ ॥ (217-8)
दरसन भेटत होत पुनीता हरि हरि मंत्रु द्रिड़ाइओ ॥१॥ (1299-10)
दरसन रुचित पिआस मनि सुंदर सकत न कोई तोरि ॥१॥ रहाउ ॥ (1228-4)

दरसनि तेरै भवन पुनीता ॥ (99-18)
दरसनि देखिऐ दइआ न होइ ॥ (350-1)
दरसनि देखिऐ सभु दुखु जाइ ॥१॥ (1149-14)
दरसनि परसिऐ गुरू कै अठसठि मजनु होइ ॥८॥ (1392-9)
दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम मरण दुखु जाइ ॥१०॥ (1392-14)
दरसनि परसिऐ गुरू कै सचु जनमु परवाणु ॥९॥ (1392-11)
दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअहि ॥ (146-4)
दरसनि सचै सची पति होई ॥३॥ (158-7)
दरसनु आपि सहज घरि आवै ॥ (411-15)
दरसनु करीआ ॥ (746-7)
दरसनु छोडि भए समदरसी एको नामु धिआवहिगे ॥२॥ (1103-18)
दरसनु देखत दोख नसे ॥ (826-2)
दरसनु देखत ही मनु मानिआ जल रसि कमल बिगासी ॥१॥ (1197-11)
दरसनु देखि जीवा गुर तेरा ॥ (742-1)
दरसनु देखि निहाल नानक प्रीति एह ॥१॥ (961-9)
दरसनु देखि भई निहकेवल जनम मरण दुखु नासा ॥ (764-19)
दरसनु देखि भई मति पूरी ॥ (224-5)
दरसनु देखि भए मनि आनद गुर किरपा ते छूटा ॥१॥ रहाउ ॥ (1210-14)
दरसनु देखि मिले बैरागी मनु मनसा मारि समाता हे ॥१६॥ (1032-6)
दरसनु देखि सगल दुख नासहि चरन कमल बलिहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (1221-2)
दरसनु देहु दइआपति दाते गति पावउ मति देहो ॥ (1109-10)
दरसनु देहु पूरन किरपाला ॥ रहाउ ॥ (744-16)
दरसनु पाइआ सतिगुर पूरे ॥ (1078-16)
दरसनु पावहु सहजि महलहु ॥ (1028-11)
दरसनु पावा जे तुधु भावा ॥ (1034-9)
दरसनु पेखत उधरत स्रिसटि ॥ (293-11)
दरसनु पेखत भए पुनीता ॥ (101-7)
दरसनु पेखत मनु आघावै नानक मिलणु सुभाई जीउ ॥४॥७॥१४॥ (98-17)
दरसनु पेखत मै जीओ ॥ (382-15)
दरसनु पेखत होइ निहालु ॥ (900-14)
दरसनु पेखि भए निरबिखई पाए है सगले थोक ॥ (1253-13)
दरसनु पेखि मेरा मनु मोहिओ दुरमति जात बही ॥१॥ रहाउ ॥ (1225-8)
दरसनु भेख करहु जोगिंद्रा मुंद्रा झोली खिंथा ॥ (939-4)
दरसनु भेटत पाप सभि नासहि हरि सिउ देइ मिलाई ॥१॥ (915-11)
दरसनु भेटत साध का नानक गुण गाई ॥५॥१४॥४४॥ (811-19)
दरसनु भेटत होत अनंदा दूखु गइआ हरि गाईऐ ॥१॥ (630-6)
दरसनु भेटत होत निहाल ॥ (272-1)

दरसनु भेटत होत निहाला हरि का नामु बीचारै ॥१॥ (618-2)
दरसनु भेटत होत पुनीता पुनरपि गरभि न पावना ॥४॥ (1018-17)
दरसनु भेटे बिनु सतसंगा ॥१॥ (1305-6)
दरसनु मागउ देहि पिआरे ॥ (386-16)
दरसनु संत देहु करि किरपा सभु दालदु दुखु लहि जाइ ॥२॥ (881-3)
दरसनु संत देहु सुखु पावै प्रभ लोच पूरि जनु तुमघा ॥३॥ (731-17)
दरसनु सति सति पेखनहार ॥ (285-6)
दरसनु साध मिलिओ वडभागी सभि किलबिख गए गवाझा ॥ (697-19)
दरसनु हरि देखण कै ताई ॥ (757-10)
दरसु देहि धारउ प्रभ आस ॥ (900-19)
दरसु सफलिओ दरसु पेखिओ गए किलबिख गए ॥ (1272-9)
दरि कीरतनु करहि गुर सबदि सुहाए ॥ (1056-4)
दरि कूच कूचा करि गए अवरे भि चलणहार ॥३॥ (64-7)
दरि खड़ा सेवा करे गुर सबदी वीचारु ॥ (516-6)
दरि घरि ढोई न लहै दरगह झूठु खुआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (19-1)
दरि घरि ढोई ना लहै छूटी दूजै सादि ॥५॥ (56-7)
दरि घरि महली हरि पति राखै ॥५॥ (415-14)
दरि घरि सोभा महलि बुलाई ॥ (85-8)
दरि जाइ दरसनु करी भाणै तारि तारणहारिआ ॥ (843-16)
दरि दरवाणी नाहि मूले पुछ तिसु ॥ (729-16)
दरि दरवेसु खसम दै नाइ सचै बाणी लाली ॥ (967-8)
दरि भ्रसट सरापी नाम बीनु ॥ (1188-2)
दरि मंगतु जाचै दानु हरि दीजै क्रिपा करि ॥ (790-13)
दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥१६॥ (472-6)
दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥२॥ (473-19)
दरि वाजहि अनहत वाजे राम ॥ (578-14)
दरि वाट उपरि खरचु मंगा जबै देइ त खाहि ॥ (473-18)
दरि सचै सचिआर महलि बुलाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (369-7)
दरि सचै सचिआरु सचा आइआ ॥ (1286-4)
दरि सचै सची वडिआई सहजे सचि समाउ ॥ (31-7)
दरि सचै सद सोभा पाए ॥ (841-10)
दरि साचै गुर ते सोभा पाई ॥१॥ (798-10)
दरि साचै दिसै सचिआरु ॥२॥ (1261-16)
दरि साचै दीसै सचिआरु ॥४॥ (423-13)
दरि साचै पति सिउ घरि जाइ ॥ (1173-2)
दरि साचै सचु सोभा होइ ॥ (1175-1)
दरि साचै सदा है साचा साचै सबदि सुभाखिआ ॥ (571-19)

दरि साचै साचे गुण गाउ ॥ (361-11)
दरि साचै साचे वीचारी ॥६॥ (842-15)
दरि सेवकु दरवानु दरदु तूं जाणही ॥ (422-3)
दरि सेवनि संत जन खड़े पाइनि गुणी निधानु ॥१॥ (32-13)
दरीआउ तू दिहंद तू बिसीआर तू धनी ॥ (727-14)
दरु घरु महलु ठउरु कैसे पावै ॥३॥ (832-17)
दरु बीभा मै नीम्हि को कै करी सलामु ॥ (418-17)
दरु सेवे उमति खड़ी मसकलै होइ जंगाली ॥ (967-8)
दरोगु पड़ि पड़ि खुसी होइ बेखबर बादु बकाहि ॥ (727-9)
दलि मलि दैतहु गुरमुखि गिआनु ॥ (974-19)
दस अउतार राजे होइ वरते महादेव अउधूता ॥ (747-12)
दस अउरात रखहु बद राही ॥ (1083-17)
दस अठ चारि वेद सभि पूछहु जन नानक नामु छडाई जीउ ॥५॥२॥८॥ (998-14)
दस अठ पुराण तीरथ रस कीआ ॥ (872-5)
दस अठ लीखे होवहि पासि ॥ (1169-1)
दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे ॥ (694-18)
दस अठार मै अपर्मपरो चीनै कहै नानकु इव एकु तारै ॥३॥२६॥ (23-19)
दस अवतारी रामु राजा आइआ ॥ (1279-18)
दस असट खसट स्रवन सुने ॥ (1229-16)
दस असटी मिलि एको कहिआ ॥ (886-4)
दस इंद्री करि राखै वासि ॥ (236-14)
दस चारि हट तुधु साजिआ वापारु करीवे ॥ (83-16)
दस दासी करि दीनी भतारि ॥ (737-9)
दस दिस खोजत मै फिरिओ जत देखउ तत सोइ ॥ (298-17)
दस नारी अउधूत देनि चमोड़ीऐ ॥ (522-6)
दस नारी इकु पुरखु करि दसे सादि लोभाईआ ॥ (1096-9)
दस नारी मै करी दुहागनि ॥ (1347-14)
दस पातउ पंच संगीता एकै भीतरि साथे ॥ (884-17)
दस बसतू ले पाछै पावै ॥ (268-6)
दस बालतणि बीस रवणि तीसा का सुंदरु कहावै ॥ (138-2)
दस बिघिआड़ी लई निवारि ॥ (899-1)
दस बैरागनि आगिआकारी तब निरमल जोगी थीए ॥२॥ (208-3)
दस बैरागनि मोहि बसि कीन्ही पंचहु का मिट नावउ ॥ (693-4)
दस मास माता उदरि राखिआ बहुरि लागी माइआ ॥१॥ (481-17)
दस मिरगी सहजे बंधि आनी ॥ (1136-13)
दसन बिहून भुयंगं मंत्रं गारुड़ी निवारं ॥ (1361-2)
दसनि संत पिआरिआ सुणहु लाइ चिता ॥ (965-14)

दसम दुआरा अगम अपारा परम पुरख की घाटी ॥ (974-11)
दसमी दस दुआर बसि कीने ॥ (298-18)
दसमी दसे दुआर जे ठाकै एकादसी एकु करि जाणै ॥ (1245-13)
दसमी दह दिस होइ अनंद ॥ (344-1)
दसमी नामु दानु इसनानु ॥ (840-2)
दसवै दधा होआ सुआह ॥ (137-19)
दसवै दुआरि कुंची जब दीजै ॥ (341-13)
दसवै दुआरि प्रगटु होइ आइआ ॥ (1069-11)
दसवै दुआरि रहत करे त्रिभवण सोझी पाइ ॥३॥ (490-19)
दसवै निज घरि वासा पाए ॥ (124-14)
दसवै पुरखु अतीतु निराला आपे अलखु लखाइआ ॥४॥ (1039-18)
दसवै पुरखु अलेखु अपारी आपे अलखु लखाइदा ॥३॥ (1033-11)
दसवै वासा अलख अपारै ॥ (1036-11)
दसी मासी मानसु कीआ वणजारिआ मित्रा करि मुहलति करम कमाहि ॥ (77-8)
दसी मासी हुकमि बालक जनमु लीआ ॥ (396-4)
दसे दिसा रविआ प्रभु एकु ॥ (299-16)
दस्तगीरी देहि दिलावर तूही तूही एक ॥ (724-17)
दह दिस इहु मनु धावदा गुरि ठाकि रहाइआ ॥ (789-12)
दह दिस खोजत हम फिरे मेरे लाल जीउ हरि पाइअड़ा घरि आए राम ॥ (542-11)
दह दिस चमकै बीजुलि मुख कउ जोहती ॥ (1362-8)
दह दिस छत्र मेघ घटा घट दामनि चमकि डराइओ ॥ (624-7)
दह दिस जांउ तहां तू संगे तेरी कीरति करम कमाउ ॥२॥ (1202-14)
दह दिस टांडो गइओ फूटि ॥ (1195-3)
दह दिस ढूढि घरै महि पाइआ ॥ (932-12)
दह दिस धाइ महा बिखिआ कउ पर धन छीनि अगिआन हरिओ है ॥ (1388-16)
दह दिस धावत मिटि गए निरमल थानि बसना ॥३॥ (811-12)
दह दिस पूरि रहिआ जसु सुआमी कीमति कहणु न जाई ॥ (783-11)
दह दिस बूडी पवनु झुलावै डोरि रही लिव लाई ॥३॥ (332-19)
दह दिस रवि रहिआ जसु तुमरा अंतरजामी सदा हजूरि ॥ (716-14)
दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥ (288-9)
दह दिसि धावहि करमि लिखिआसु ॥३॥ (152-19)
दह दिसि पूज होवै हरि जन की जो हरि हरि नामु धिआए ॥ (768-6)
दह दिसि लै इहु मनु दउराइओ कवन करम करि बाधा ॥१॥ (215-18)
दह दिसि साख हरी हरीआवल सहजि पकै सो मीठा ॥ (1109-1)
दाग दोस मुहि चलिआ लाइ ॥ (662-2)
दागे होहि सु रन महि जूझहि बिनु दागे भगि जाई ॥ (970-2)
दाझि गए त्रिण पाप सुमेर ॥ (899-3)

दाड़ा अग्रे प्रिथमि धराइण ॥ (1082-8)
दाता करता आपि आपि भोगणहारिआ ॥ (642-18)
दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥ (463-5)
दाता दानु करे तह नाही महल उसारि न बैठा ॥२॥ (902-17)
दाता भुगता देनहारु तिसु बिनु अवरु न जाइ ॥ (296-15)
दाता सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥ (1239-2)
दातारु सदा दइआलु सुआमी काइ मनहु विसारीऐ ॥ (461-8)
दाति करहु मेरे दातारा जीअ जंत सभि ध्रापे जीउ ॥२॥ (104-12)
दाति करै नही पछोतावै ॥ (1337-18)
दाति खसम की पूरी होई नित नित चड़ै सवाई राम ॥ (783-8)
दाति जोति सभ सूरति तेरी ॥ (1251-3)
दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥ (676-10)
दाति सवाई निखुटि न जाई अंतरजामी पाइआ ॥ (784-1)
दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥ (1384-2)
दातै दाति रखी हथि अपणै जिसु भावै तिसु देई ॥ (604-2)
दादर तू कबहि न जानसि रे ॥ (990-9)
दादी दादि न पहुचनहारा चूपी निरनउ पाइआ रे ॥ (381-18)
दाधीले लंका गड़ु उपाड़ीले रावण बणु सलि बिसलि आणि तोखीले हरी ॥ (695-7)
दानं परा पूरबेण भुंचंते महीपते ॥ (1356-5)
दान दातारा अपर अपारा घट घट अंतरि सोहनिआ ॥ (924-11)
दानसबंदु सोई दिलि धोवै ॥ (662-15)
दानहु तै इसनानहु वंजे भसु पई सिरि खुथै ॥ (150-2)
दाना कै सिरि दानु वीचारा ॥ (1035-7)
दाना तू बीना तुही दाना कै सिरि दानु ॥ (934-14)
दाना दाता सीलवंतु निरमलु रूपु अपारु ॥ (47-1)
दाना बीना आपि तू आपे सतवंता ॥ (1095-14)
दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ॥१॥ (520-2)
दानि तेरै घटि चानणा तनि चंदु दीपाइआ ॥ (765-13)
दानि बडौ अतिवंतु महाबलि सेवकि दासि कहिओ इहु तथु ॥ (1405-2)
दानु जि सतिगुर भावसी सो सते दाणु ॥ (968-7)
दानु देइ करि पूजा करना ॥ (372-14)
दानु देइ दाता जगि बिधाता नानका सचु सोई ॥ (766-5)
दानु देइ साधू की धूरा ॥१॥ (563-4)
दानु देहि नानक अपने कउ चरन जीवां संत धोइ ॥२॥७४॥९७॥ (1223-6)
दानु पावउ संता संगु नानक रेनु दासारा ॥४॥६॥२२॥ (1006-1)
दानु पुंनु नही संतन सेवा कित ही काजि न आइआ ॥१॥ (712-14)
दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥ (468-14)

दामनी चमतकार तिउ वरतारा जग खे ॥ (319-1)
दामोदर दइआल आराधहु गोबिंद करत सोहावै ॥ (1218-7)
दामोदर दइआल सुआमी सरबसु संत जना धन माल ॥ (824-15)
दारन दुख दुतर संसारु ॥ (199-9)
दारा मीत पूत रथ स्मपति धन पूरन सभ मही ॥ (631-15)
दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥ (633-7)
दारा सुख भइओ दीनु पगहु परी बेरी ॥१॥ (1352-13)
दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥ (858-4)
दालद भंजन दुख दलण गुरमुखि गिआनु धिआनु ॥३५॥ (934-14)
दालदु भंजि सुदामे मिलिओ भगती भाइ तरे ॥ (995-4)
दालि सीधा मागउ घीउ ॥ (695-17)
दावनि बंधिओ न जात बिधे मन दरस मगि ॥ (1389-4)
दावा अगनि बहुतु त्रिण जाले कोई हरिआ बूटु रहिओ री ॥ (384-2)
दावा अगनि रहे हरि बूट ॥ (914-11)
दावा काहू को नही बडा देसु बड राजु ॥१६८॥ (1373-10)
दासंी हरि का नामु धिआइआ ॥१॥ (684-9)
दास अनिंन मेरो निज रूप ॥ (1252-17)
दास अपने आपि राखे ॥ (628-4)
दास अपने कउ दीजै दानु ॥ (178-17)
दास अपने कउ भगती लावहु ॥२॥ (1146-4)
दास अपने की राखनहार ॥१॥ (177-18)
दास अपुने कउ तू विसरहि नाही चरण धूरि मनि भाई ॥१॥ (610-14)
दास अपुने कउ राखनहारा नानक दास सदा है चेरा ॥२॥२५॥१११॥ (826-13)
दास अपुने कउ राखनहारु ॥१॥ (1151-19)
दास अपुने की आपे राखी भै भंजन ऊपरि करते माणु ॥१॥ (826-15)
दास अपुने की राखहु लाज ॥१॥ (736-17)
दास की धूरि नानक कउ दीजै ॥४॥६७॥१३६॥ (193-8)
दास की पैज रखै मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (200-16)
दास की रेणु पाए जे कोइ ॥ (897-12)
दास की लाज रखै मिहरवानु ॥ (821-8)
दास जना की मनसा पूरि ॥ (869-6)
दास तुमारे की पावउ धूरा मसतकि ले ले लावउ ॥ (712-19)
दास तेरे की निरमल रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (684-10)
दास तेरे की बेनती रिद करि परगासु ॥ (818-9)
दास दसंतण भाइ तिनि पाइआ ॥ (275-1)
दास दास को दासरा नानक करि लेह ॥४॥१७॥४७॥ (812-17)
दास दासतण भाइ मिटिआ तिना गउणु ॥ (397-10)

दास दासन की बांछउ धूरि ॥ (1349-4)
दास दासन के पानीहारे ॥ (254-19)
दास दासन को करि लेहु गोपाला ॥ (1080-8)
दास नानक सरणि सुआमी ॥४॥८॥५८॥ (623-13)
दास रखे कंठि लाइ नदरि निहालिओनु ॥ (653-14)
दास राम जीउ लागी प्रीति ॥ (1138-12)
दास रेणु सोई होआ जिसु मसतकि करमा ॥ (809-15)
दास संग ते मारि बिदारे ॥ (865-7)
दासन की होइ दासि दासरी ता पावहि सोभा हरि दुआरी ॥२॥ (377-17)
दासन दास रेणु दासन की जन की टहल कमावउ ॥ (529-10)
दासन दासा होइ रहु हउमै बिखिआ मारि ॥ (1312-16)
दासनि दास दास होइ रहीऐ जो जन राम भगत निज भईआ ॥ (834-16)
दासनि दास नित होवहि दासु ॥ (232-10)
दासनि दास होइ कै जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥ (145-17)
दासनि दासा होइ रहहि ता पावहि सचा नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (564-19)
दासनि दासी की पनिहारि ॥ (391-9)
दासनि दासु कहै जनु नानकु जेहा तूं कराइहि तेहा हउ करी वखिआनु ॥४॥४॥११॥ (734-17)
दासनि दासु नामु जपि लेवा जीउ ॥ (217-7)
दासनि दासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई ॥ (600-12)
दासह एकु निहारिआ सभु कछु देवनहार ॥ (257-9)
दासह रेनु होइ हां ॥ (410-9)
दासा का दासु विरला कोई होइ ॥ (1174-11)
दासा के बंधन कटिआ साचै सिरजणहारि ॥ (49-4)
दासा नह भावए बिनु दरसावए इक खिनु धीरजु किउ करै ॥ (80-10)
दासि सलामु करत कत सोभा ॥२॥ (195-3)
दासी संगति प्रभू तिआगि ए करम हमारे ॥२॥ (809-4)
दासी सुत जनु बिदरु सुदामा उग्रसैन कउ राज दीए ॥ (345-5)
दासु कबीरु कहै समझाइ ॥ (1161-4)
दासु कबीरु तासु मद माता उचकि न कबहू जाई ॥३॥२॥ (969-10)
दासु कबीरु तेरी पनह समानां ॥ (1161-9)
दासु कमीरु चड़्हिओ गड़्ह ऊपरि राजु लीओ अबिनासी ॥६॥९॥१७॥ (1162-1)
दासु दास दास को करीअहु जन नानक हरि सरणई ॥४॥२॥१२४॥ (402-10)
दासु बाणी ब्रहमु वखाणै ॥ (629-10)
दासु बेनति कहै नामु गुरमुखि लहै गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मंन रे ॥४॥१६॥२९॥ (1401-8)
दासु सगल का छोडि अभिमानु ॥ (377-5)
दिउस चारि के दीसहि संगी ऊहां नाही जह भारी ॥ (1215-19)
दिड़ु करि चरण गहे प्रभ तुम्हरे सहजे बिखिआ भई खीओ ॥२॥ (382-17)

दितै कितै न संतोखीअनि अंतरि त्रिसना बहुतु अग्यानु अंधारु ॥ (549-3)
दितै कितै न संतोखीअहि अंतरि तिसना बहु अगिआनु अंध्यारु ॥ (316-13)
दिन की बैठ खसम की बरकस इह बेला कत आई ॥ (335-5)
दिन खात जात बिहात प्रभ बिनु मिलहु प्रभ करुणा पते ॥ (461-19)
दिन ते पहर पहर ते घरीआं आव घटै तनु छीजै ॥ (692-1)
दिन ते सरपर पउसी राति ॥ (375-18)
दिन थोड़ड़े थके भइआ पुराणा चोला ॥१॥ रहाउ ॥ (23-7)
दिन दस पांच बहू भले आई ॥२॥ (484-5)
दिन प्रति करै करै पछुतापै सोग लोभ महि सूकै ॥३॥ (672-6)
दिन महि रैणि रैणि महि दिनीअरु उसन सीत बिधि सोई ॥ (879-1)
दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइ ॥ (64-11)
दिन रैनि सिमरत सदा नानक मुख ऊजल दरबारि ॥२॥१०३॥१२६॥ (1228-12)
दिनसु चड़ै फिरि आथवै रैणि सबाई जाइ ॥ (41-17)
दिनसु न रैनि बेदु नही सासत्र तहा बसै निरंकारा ॥ (484-18)
दिनसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ (146-15)
दिनसु रैणि अनंद अनदिनु सिमरंत नानक हरि हरे ॥४॥६॥९॥ (459-3)
दिनसु रैणि आराधि सम्हाले साह साह ॥ (398-1)
दिनसु रैणि एह सेवा साधउ ॥ (391-11)
दिनसु रैणि जि तुधु अराधे सो किउ दोजकि जाइ ॥२॥ (724-12)
दिनसु रैणि जिउ तुधु धिआई एहु दानु मोहि करणा जीउ ॥१॥ (100-3)
दिनसु रैणि तिवै संसारु ॥ (842-2)
दिनसु रैणि तेरा नाउ सदा सद जापीऐ ॥ (963-9)
दिनसु रैणि बरत अरु भेदा ॥ (237-10)
दिनसु रैनि मन माहि बसतु है तू करि किरपा प्रभ अपनी ॥२॥ (827-4)
दिनसु रैनि सद धिआई ॥ (630-19)
दिनसु रैनि सासि सासि समाली पूरनु सभनी थाई ॥ रहाउ ॥ (628-5)
दिनसु रैनि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ (386-9)
दिनसु रैनी थकत नाही कतहि नाही छोट ॥१॥ रहाउ ॥ (1224-9)
दिनहि बिकार करत स्रमु पाइओ ॥ (299-13)
दिनीअरु सूरु त्रिसना अगनि बुझानी सिव चरिओ चंदु चंदाकी ॥३॥ (668-12)
दिनु दिनु आवै तिलु तिलु छीजै माइआ मोहु घटाई ॥ (1330-12)
दिनु दिनु करत भोजन बहु बिंजन ता की मिटै न भूखा ॥ (672-5)
दिनु दिनु चड़ै सवाइआ नानक होत न घाटि ॥१६॥ (300-5)
दिनु दिनु छिजत बिकार करत अउध फाही फाथा जम कै जाल ॥१॥ (806-15)
दिनु भी गावउ रैनी गावउ गावउ सासि सासि रसनारी ॥ (401-15)
दिनु राति कमाइअड़ो सो आइओ माथै ॥ (461-4)
दिनु राति चानणु चाउ उपजै सबदु गुर का मनि वसै ॥ (767-4)

दिनु राती आराधहु पिआरो निमख न कीजै ढीला ॥ (498-15)
दिनु रैणि घड़ी न चसा विसरै सासि सासि निरंजनो ॥ (843-13)
दिनु रैणि जि प्रभ कंउ सेवदे तिन कै सद बलिहार ॥२॥ (137-4)
दिनु रैणि जिसु न विसरै सो हरिआ होवै जंतु ॥३॥ (137-8)
दिनु रैणि ठाढी करउ सेवा प्रभु कवन जुगती पाइआ ॥ (845-16)
दिनु रैणि तेरा नामु वखाना ॥१॥ (388-1)
दिनु रैणि नानकु नामु धिआए ॥ (864-1)
दिनु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥ (1193-10)
दिनु रैणि रलीआ करै कामणि मिटे सगल अंदेसा ॥ (247-15)
दिनु रैणि सभ सुहावणे पिआरे जितु जपीऐ हरि नाउ ॥५॥ (432-5)
दिनु रैणि सासि सासि गुण गावा जे सुआमी तुधु भावा ॥ (747-8)
दिनु रैणि सुहावड़ी आई सिमरत नामु हरे ॥ (458-19)
दिनु रैनि अपना कीआ पाई ॥ (745-4)
दिनु रैनि सदा गुन गाउ ॥ (895-9)
दिनु रैनि साखि सुनाइ ॥ (838-5)
दिब द्रिसटि जागै भरमु चुकाए ॥ (1016-7)
दिल कबज कबजा कादरो दोजक सजाइ ॥२॥ (723-15)
दिल खलहलु जा कै जरद रू बानी ॥ (1161-8)
दिल दरवानी जो करे दरवेसी दिलु रासि ॥ (1090-10)
दिल दरीआउ धोवहु मैलाणा ॥ (1084-7)
दिल महि कपटु निवाज गुजारै किआ हज काबै जांएं ॥४॥ (1349-16)
दिल महि खोजि दिलै दिलि खोजहु एही ठउर मुकामा ॥२॥ (1349-14)
दिल महि जानहु सभ फिलहाला ॥ (1084-3)
दिल महि सांई परगटै बुझै बलंती नांइ ॥१८६॥ (1374-10)
दिल महि सोचि बिचारि कवादे भिसत दोजक किनि पाई ॥१॥ (477-14)
दिलहु मुहबति जिंन्ह सेई सचिआ ॥ (488-8)
दिला का मालकु करे हाकु ॥ (897-3)
दिलि खोटै आकी फिरन्हि बंन्हि भारु उचाइन्हि छटीऐ ॥ (967-4)
दिवस चारि की करहु साहिबी जैसे बन हर पात ॥१॥ (1251-18)
दिवस चारि को पेखना अंति खेह की खेह ॥१७८॥ (1374-2)
दिवस रैनि तेरे पाउ पलोसउ केस चवर करि फेरी ॥१॥ (969-19)
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ (8-11)
दिसंतरु भवहि सिरि पावहि धूरि ॥ (1172-19)
दिसंतरु भवै अंतरु नही भाले ॥ (1060-6)
दिसंतरु भवै पाठ पड़ि थाका त्रिसना होइ वधेरै ॥ (1012-16)
दिसटि बिकारी दुरमति भागी ऐसा ब्रहम गिआनु ॥२॥ (1329-7)
दिसटि बिकारी बंधनि बांधै हउ तिस कै बलि जाई ॥ (1329-16)

दिसटि विकारी नाही भउ भाउ ॥ (153-6)
दिसदा सभु किछु चलसी मेरे प्रभ भाइआ ॥ (1250-7)
दिसै सचा महलु खुलै भरम ताकु ॥ (959-8)
दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ ॥ (139-3)
दिहंद सुई ॥ (144-5)
दिहरी बैठी मिहरी रोवै दुआरै लउ संगि माइ ॥ (1124-10)
दिहु दीवी अंध घोरु घबु मुहाईऐ ॥ (752-11)
दिहु बगा तपै घणा कालिआ काले वंन ॥ (789-16)
दीआ आदरु लीआ बुलाइ ॥२॥ (1159-5)
दीई भवारी पुरखि बिधातै बहुरि बहुरि जनमाधे ॥३॥ (403-2)
दीखिआ आखि बुझाइआ सिफती सचि समेउ ॥ (150-13)
दीखिआ गुर की मुंद्रा कानी द्रिड़िओ एकु निरंकारा ॥१॥ (208-2)
दीखिआ दारू भोजनु खाइ ॥ (877-19)
दीजै नामु रहै गुन गाइ ॥३॥२॥ (1186-13)
दीदने दीदार साहिब कछु नही इस का मोलु ॥ (724-16)
दीदारु पूरे पाइसा थाउ नाही खाइका ॥२॥ (83-10)
दीन का दइआलु माधौ गरब परहारी ॥ (694-4)
दीन कै तोसै दुनी न जाए ॥२॥ (743-3)
दीन गरीबी आपुनी करते होइ सु होइ ॥५१॥ (1367-3)
दीन दइआल अनाथ को नाथु ॥ (292-11)
दीन दइआल करहु उतसाहा ॥ (742-11)
दीन दइआल क्रिपा करि दीजै नानक हरि सिमरण का है चाउ ॥२॥४॥१०॥ (669-13)
दीन दइआल क्रिपा करि माधो हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥३॥ (699-6)
दीन दइआल क्रिपा निधे सासि सासि सम्हारै ॥२॥ (813-1)
दीन दइआल क्रिपाल क्रिपा निधि पूरन खसम हमारे ॥ रहाउ ॥ (631-7)
दीन दइआल क्रिपाल दमोदर भगति बछल भै हारी ॥ (971-5)
दीन दइआल क्रिपाल प्रभ ठाकुर भगत टेक हरि नाइआ ॥ (402-16)
दीन दइआल क्रिपाल प्रभ नानक साधसंगि मेरी जलनि बुझाई ॥४॥१॥११८॥ (204-4)
दीन दइआल क्रिपाल प्रभ सुआमी तेरी सरणि दइआला ॥ (750-10)
दीन दइआल क्रिपाल सुख सागर सरब घटा भरपूरी रे ॥ (612-8)
दीन दइआल गोपाल गोबिंदा हरि धिआवहु गुरमुखि गाती जीउ ॥१॥ (98-8)
दीन दइआल गोपाल गोविंद ॥ (891-3)
दीन दइआल गोपाल प्रीतम समरथ कारण करणा ॥ (545-19)
दीन दइआल जगदीस दमोदर हरि अंतरजामी गोबिंदे ॥ (1321-9)
दीन दइआल जपहि करुणा मै नानक सद बलिहारे ॥२॥९॥१३॥ (1269-5)
दीन दइआल दमोदर राइआ जीउ ॥ (216-15)
दीन दइआल दुख भंजनो नानक नीत धिआइ ॥२॥ (927-12)

दीन दइआल पूरन दुख भंजन तुम बिनु ओट न काई ॥ (616-8)
दीन दइआल प्रभ पारब्रहम ता की नदरि निहाल ॥१॥ (814-5)
दीन दइआल प्रसंन पूरन जाचीऐ रज साध ॥४॥ (508-8)
दीन दइआल प्रीतम मनमोहन करि किरपा मेरी लोचा पूरि ॥ रहाउ ॥ (716-13)
दीन दइआल प्रीतम मनमोहन मिलि साधह कीनो सही ॥ (1225-9)
दीन दइआल भए किरपाला अपणा नामु आपि जपाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1341-3)
दीन दइआल भए प्रभ अपने बहुड़ि जनमि नही मारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (534-7)
दीन दइआल भए प्रभ ठाकुर गुर कै सबदि सवारे ॥१॥ (980-11)
दीन दइआल भरोसे तेरे ॥ (337-3)
दीन दइआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम परु रे ॥१॥ रहाउ ॥ (220-13)
दीन दइआल सदा किरपाल ॥ (1149-7)
दीन दइआल सदा किरपाल ॥ (868-18)
दीन दइआल सदा किरपाल ॥ (890-3)
दीन दइआल सदा किरपाला ठाढि पाई करतारे जीउ ॥१॥ (105-2)
दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ मनु न लगाना ॥ (685-1)
दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुचि न बढाई ॥ (1231-10)
दीन दइआल सुणि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे ॥ (449-5)
दीन दइआल होवहु जन ऊपरि जन देवहु अकथ कहानी ॥ (1199-17)
दीन दइआल होहु जन ऊपरि करि किरपा लेहु उबारे ॥ (493-9)
दीन दइआल होहु जन ऊपरि देहु नानक नामु ओमाहा राम ॥४॥५॥११॥ (699-19)
दीन दइआला पारब्रहम ॥ (212-14)
दीन दइआलि करी प्रभि किरपा वसि कीने पंच दूतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (670-13)
दीन दइआलि गुरु साधु मिलाइआ मिलि सतिगुर मलु लहि जाइ जीउ ॥ (445-18)
दीन दइआलि मिलाइओ गुरु साधू गुरि मिलिऐ हीरु पराखा ॥ रहाउ ॥ (696-10)
दीन दइआलु दुख भंजनु गाइओ गुरमति नामु पदारथु लहे ॥१॥ रहाउ ॥ (1336-9)
दीन दइआलु प्रीतम मनमोहनु अति रस लाल सगूड़ौ ॥१॥ रहाउ ॥ (1331-18)
दीन दयाल पुरख प्रभ पूरन छिन छिन सिमरहु अगम अपारहु ॥ (1388-5)
दीन दरद दुख भंजन सुआमी जिसु भावै तिसहि निवाजै रे ॥२॥ (209-16)
दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ ॥ (263-19)
दीन दरद दुख भंजना सेवक कै सत भाइ ॥ (46-18)
दीन दरद निवारि ठाकुर राखै जन की आपि ॥ (675-14)
दीन दरद निवारि तारण दइआल किरपा करण ॥ (502-4)
दीन दरद निवारि तारन ॥ (1301-7)
दीन दुख भंजन दयाल प्रभु नानक सरब जीअ रख्या करोति ॥४७॥ (1358-7)
दीन दुनीआ एक तूही सभ खलक ही ते पाकु ॥ रहाउ ॥ (724-10)
दीन दुनीआ तेरी टेक ॥ (1147-2)
दीन दैआल सदा किरपाला सरब जीआ प्रतिपाला ॥ (672-13)

दीन बंध सिमरिओ नही कबहू होत जु संगि सहाई ॥१॥ (718-7)
दीन बंधप जीअ दाता सरणि राखण जोगु ॥१॥ (405-7)
दीन बंधरो दास दासरो संतह की सारान ॥ (1215-17)
दीन बांधव भगति वछल सदा सदा क्रिपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (988-6)
दीन बिनउ सुनु दइआल ॥ (1119-8)
दीन लीन पिआस मीन संतना हरि संतना ॥ (1305-2)
दीना दीन दइआल भए है जिउ क्रिसनु बिदर घरि आइआ ॥ (1191-14)
दीना नाथ अनाथ करुणा मै साजन मीत पिता महतरीआ ॥ (203-3)
दीना नाथ करुणापति सुआमी अनाथा के नाथ ॥ रहाउ ॥ (1120-14)
दीना नाथ जगत पित माइआ ॥ (1005-6)
दीना नाथ दइआल मेरे सुआमी दीना नाथ दइआल ॥ (838-1)
दीना नाथ दैआल देव पतित उधारणहारु ॥ (137-2)
दीना नाथ प्रानपति पूरन भवजल उधरनहारा ॥१॥ (532-6)
दीना नाथ भगत पराइण ॥१॥ रहाउ ॥ (760-3)
दीना नाथ सकल भै भंजन जसु ता को बिसराइओ ॥२॥ (633-9)
दीना नाथु जीआ का दाता पूरे गुर ते पाए ॥ (444-7)
दीना नाथु दइआलु निरंजनु अनदिनु नामु वखाणा ॥ (689-2)
दीना नाथु पीउ बनवारी ॥ (1331-13)
दीना नाथु सरब सुखदाता ॥ (154-16)
दीनु छडाइ दुनी जो लाए ॥ (743-1)
दीनु छोडि दुनीआ कउ भरउ ॥११॥ (1166-1)
दीनु दुआरै आइओ ठाकुर सरनि परिओ संत हारे ॥ (534-5)
दीनु बिसारिओ रे दिवाने दीनु बिसारिओ रे ॥ (1105-14)
दीने सगले भोजन खान ॥ (1181-19)
दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥ (267-4)
दीनो नामु कीओ पवितु ॥ (892-10)
दीप लोअ पाताल तह खंड मंडल हैरानु ॥ (1291-2)
दीपक ते दीपकु परगासिआ त्रिभवण जोति दिखाई ॥७॥ (907-10)
दीपक पतंग माइआ के छेदे ॥ (1160-12)
दीपक रस तेलो धन पिर मेलो धन ओमाहै सरसी ॥ (1109-3)
दीपकु बांधि धरिओ बिनु तेल ॥ (971-10)
दीपकु सबदि विगासिआ राम नामु उर हारु ॥५॥ (54-8)
दीपकु सहजि बलै तति जलाइआ ॥ (1109-3)
दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह ॥ (467-3)
दीबानु एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु ॥ (473-19)
दीबानु हमारो तुही एक ॥ (210-16)
दीरघ रोग मिटहि हरि अउखधि हरि निरमलि रापै मंगना ॥२॥ (1080-3)

दीरघ रोगु माइआ आसाधिओ ॥ (299-12)
दीवा बलै अंधेरा जाइ ॥ (791-2)
दीवा बलै न सोझी पाइ ॥१॥ (364-15)
दीवा मेरा एकु नामु दुखु विचि पाइआ तेलु ॥ (358-7)
दीसत मासु न खाइ बिलाई ॥ (898-15)
दीसहि दाधे कान जिउ जिन्ह मनि नाही नाउ ॥४॥ (1364-14)
दीसहि सभ महि सभ ते रहते ॥ (181-11)
दीसहि सभ संगि रहहि अलेपा नह विआपै उन माई ॥ (701-10)
दीसि आवत है बहुतु भीहाला ॥ (384-17)
दीसै चंचलु बहु गुना मति हीना नापाक ॥१३९॥ (1371-18)
दीसै ब्रहमु गुरमुखि सचु लहीऐ ॥ (353-10)
दुंदर दूत भूत भीहाले ॥ (1031-14)
दुंदर बाधहु सुंदर पावहु ॥१॥ रहाउ ॥ (1160-1)
दुआदस दल अभ अंतरि मंत ॥ (1162-12)
दुआदसि मुद्रा मनु अउधूता ॥ (840-7)
दुआदसी दइआ दानु करि जाणै ॥ (840-9)
दुआदसी दानु नामु इसनानु ॥ (299-7)
दुआदसी पंच वसगति करि राखै तउ नानक मनु मानै ॥ (1245-13)
दुआपुरि क्रिसन मुरारि कंसु किरतारथु कीओ ॥ (1390-8)
दुआपुरि त्रेतै माणस वरतहि विरलै हउमै मारी ॥१॥ (1131-16)
दुआपुरि दूजै दुबिधा होइ ॥ (880-5)
दुआपुरि धरमि दुइ पैर रखाए ॥ (880-5)
दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥ (470-3)
दुआर ऊपरि झिलकावहि कान ॥ (871-8)
दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥१॥ (411-6)
दुइ कर जोड़ि इकु बिनउ करीजै ॥ (103-5)
दुइ कर जोड़ि करउ अरदासि ॥ (737-2)
दुइ कर जोड़ि करी अरदासि ॥ (1340-10)
दुइ कर जोड़ि करी अरदासि ॥ (676-18)
दुइ कर जोड़ि करी बेनंती ठाकुरु अपना धिआइआ ॥ (499-3)
दुइ कर जोड़ि करी बेनंती पारब्रहमु मनि धिआइआ ॥ (532-17)
दुइ कर जोड़ि खड़ी तकै सचु कहै अरदासि ॥ (54-3)
दुइ कर जोड़ि नानकु दानु मांगै तेरे दासनि दास दसाइणु ॥२॥६॥७॥ (979-15)
दुइ कर जोड़ि मागउ इकु दाना साहिबि तुठै पावा ॥ (749-17)
दुइ कर जोड़ि सिमरउ दिनु राती मेरे सुआमी अगम अपारणा ॥१०॥ (1077-9)
दुइ कर जोरि करउ अरदासि ॥ (1152-6)
दुइ दिन चारि सुहावणा माटी तिसु खावै ॥ (1012-11)

दुइ दीवे चउदह हटनाले ॥ (789-13)
दुइ दुइ लोचन पेखा ॥ (655-2)
दुइ धोती करम मुखि खीरं ॥ (1351-14)
दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥ (1353-8)
दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥ (470-17)
दुइ पंदी दुइ राह चलाए ॥ (1032-9)
दुइ पग धरमु धरे धरणीधर गुरमुखि साचु तिथाई हे ॥८॥ (1024-1)
दुइ पुड़ चकी जोड़ि कै पीसण आइ बहिठु ॥ (142-18)
दुइ पुड़ जोड़ि विछोड़िअनु गुर बिनु घोरु अंधारो ॥ (580-8)
दुइ पुर जोरि रसाई भाठी पीउ महा रसु भारी ॥ (969-8)
दुइ माई दुइ बापा पड़ीअहि पंडित करहु बीचारो ॥१॥ (1171-10)
दुइ राह चलाए हुकमि सबाए जनमि मुआ संसारा ॥ (688-14)
दुइ सेर मांगउ चूना ॥ (656-14)
दुक्रित सुक्रित मंधे संसारु सगलाणा ॥ (51-12)
दुक्रितु सुक्रितु थारो करमु री ॥१॥ रहाउ ॥ (695-2)
दुखं भयंति सुख्यं भै भीतं त निरभयह ॥ (1357-6)
दुख अनेरा भै बिनासे पाप गए निखूटि ॥१॥ (502-1)
दुख कीआ अगी मारीअहि भी दुखु दारू होइ ॥१॥ (1240-14)
दुख कीआ पंडा खुल्हीआ सुखु न निकलिओ कोइ ॥ (1240-13)
दुख के फाहे काटिआ नानक लीए समाइ ॥३०॥ (256-12)
दुख दारिद अपवित्रता नासहि नाम अधार ॥ (297-11)
दुख दीन दरद निवार ॥ (837-16)
दुख दुसमन तेरी हतै बलाइ ॥२॥ (190-13)
दुख दूरि करन जीअ के दातारा ॥ (392-16)
दुख नाठे सुख आइ समाए ॥ (191-10)
दुख नाठे सुख सहजि समाए अनद अनद गुण गाइआ ॥१॥ (1218-18)
दुख नास भरम बिनास तन ते जपि जगदीस ईसह जै जए ॥ (577-19)
दुख बिदारन सुखदाते सतिगुर जा कउ भेटत होइ सगल सिधि ॥१॥ रहाउ ॥ (1298-6)
दुख बिनसे पूरन भई घाल ॥१॥ (743-9)
दुख बिनसे सहसा गइओ सरनि गही हरि राइ ॥ (300-9)
दुख बिनसे सुख अनद प्रवेसा त्रिसन बुझी मन तन सचु ध्राप ॥१॥ (825-11)
दुख बिनसे सुख कीआ निवासा त्रिसना जलनि बुझाई ॥ (497-18)
दुख बिनसे सुख कीओ बिसराम ॥ (326-17)
दुख बिनसे सुख कीओ बिस्रामु ॥ (987-12)
दुख बिनसे सुख कीनो ठाउ ॥ (865-14)
दुख बिनसे सुख हरि गुण गाइ ॥ (190-9)
दुख बिसारि सुख अंतरि लीना ॥१॥ (858-1)

दुख भंजन जगजीवन हरि राइआ ॥ (741-3)
दुख भंजन निधान अमोले ॥ (99-6)
दुख भंजन पूरन किरपाल ॥ (295-8)
दुख भंजन सुख सागर सुआमी देत सगल आहारे जीउ ॥२॥ (105-3)
दुख भंजनु आतम प्रबोधु मनि ततु बीचारिओ ॥ (1397-5)
दुख भंजनु ता का है नाउ ॥ (1146-18)
दुख भंजनु तेरा नामु जी दुख भंजनु तेरा नामु ॥ (218-4)
दुख भुख काड़ा सभु चुकाइसी मीहु वुठा छहबर लाइ ॥ (1250-13)
दुख भुख नह विआपई जे सुखदाता मनि होइ ॥ (43-18)
दुख भै भंजनु प्रभु अबिनासी ॥ (1040-6)
दुख महि जनमै दुख महि मरणा ॥ (1033-2)
दुख महुरा मारण हरि नामु ॥ (1256-19)
दुख रोग का डेरा भंना ॥ (627-19)
दुख विचि कार कमावणी दुखु वरतै दुखु आगै ॥ (851-18)
दुख विचि जमणु दुखि मरणु दुखि वरतणु संसारि ॥ (1240-12)
दुख विचि जमै दुखि मरै दुख विचि कार कमाइ ॥ (1130-17)
दुख विचि जमै दुखि मरै हउमै करत विहाइ ॥ (947-6)
दुख विचि जीउ जलाइआ दुखीआ चलिआ रोइ ॥ (1240-13)
दुख सागरु तिन लंघिआ पिआरे भवजलु पारि परे ॥ (641-11)
दुख सुख उआ कै समत बीचारा ॥ (259-2)
दुख सुख करत जनमि फुनि मूआ ॥ (804-2)
दुख सुख करत महा भ्रमि बूडो अनिक जोनि भरमईहै ॥ (524-11)
दुख सुख करते हुकमु रजाइ ॥ (1270-16)
दुख सुख करि कै कुट्मबु जीवाइआ ॥ (792-8)
दुख सुख दाते ठाकुर मेरे ॥२॥ (1189-5)
दुख सुख दोऊ सम करि जानै बुरा भला संसार ॥ (1256-1)
दुख सुख परहरि भगति निराली ॥१॥ रहाउ ॥ (1342-15)
दुख सुख ही ते भए निराले गुरमुखि सीलु सनाहा हे ॥८॥ (1032-17)
दुख हरत करता सुखह सुआमी सरणि साधू आइआ ॥ (691-6)
दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ ॥१॥ (632-5)
दुख हरता हरि नामु पछानो ॥ (830-15)
दुख हरन किरपा करन मोहन कलि कलेसह भंजना ॥ (547-6)
दुखहरण दीन सरण स्रीधर चरन कमल अराधीऐ ॥ (248-16)
दुखि रैणि वे विहाणीआ नित आसा आस करेदिआ ॥ (776-17)
दुखि लगै घरि घरि फिरै अगै दूणी मिलै सजाइ ॥ (587-1)
दुखि लगै बिललाणिआ नरकि घोरि सुते ॥ (524-1)
दुखि लागै राम नामु चितारी ॥१॥ (196-6)

दुखि सुखि एहु जीउ बधु है हउमै करम कमाइ ॥ (67-4)
दुखि सुखि पिआरे तुधु धिआई ॥ (99-8)
दुखि सुखि सिमरी तह मउजूदु जमु बपुरा मो कउ कहा डराई ॥१॥ रहाउ ॥ (375-5)
दुखी दुनी सहेड़ीऐ जाइ त लगहि दुख ॥ (1287-13)
दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी ॥ (793-15)
दुखीआ दरद घणे वेदन जाणे तू धणी ॥ (1097-1)
दुखीआ दरदवंदु दरि आइआ ॥ (793-17)
दुखीए का मिटावहु प्रभ सोगु ॥ (1146-4)
दुखीए दरदवंद दरि तेरै नामि रते दरवेस भए ॥३॥ (358-16)
दुखीए निति फिरहि बिललादे बिनु गुर सांति न पावणिआ ॥६॥ (118-9)
दुखु अन्हेरा अंदरहु जाइ ॥ (1335-3)
दुखु अन्हेरा विचहु जाइ ॥३॥ (349-15)
दुखु कलेसु न भउ बिआपै गुर मंत्रु हिरदै होइ ॥ (51-4)
दुखु काटै हिरदै नामु वसाई ॥ (833-3)
दुखु खाणा दुखु भोगणा गरबै गरबाई ॥ (1247-2)
दुखु खावहि दुखु संचहि भोगहि दुख की बिरधि वधाई ॥ (442-11)
दुखु तदे जा विसरि जावै ॥ (98-18)
दुखु दरदु अनेरा भ्रमु नसै ॥१॥ (211-13)
दुखु दरवाजा रोहु रखवाला आसा अंदेसा दुइ पट जड़े ॥ (877-4)
दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ (469-9)
दुखु दालदु सभो लहि गइआ जां नाउ गुरू हरि दीता ॥ (1317-12)
दुखु दुखु अगै आखीऐ पड़्हि पड़्हि करहि पुकार ॥ (1240-12)
दुखु देस दिसंतरि रहे धाइ ॥२॥ (1183-14)
दुखु नाठा सुखु घर महि आइआ ॥ (891-14)
दुखु नाठा सुखु घर महि वूठा महा अनंद सहजाइआ ॥ (1237-7)
दुखु नाही सभु सुखु ही है रे एकै एकी नेतै ॥ (1302-7)
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ (2-8)
दुखु पल्हरि हरि नामु वसाए ॥ (1277-9)
दुखु बिखिआ सुखु तनि परहरै ॥ (352-2)
दुखु भंना भै भंजनहार ॥ (1271-3)
दुखु लगा बिनु सेविऐ हुकमु मंने दुखु जाइ ॥ (1091-17)
दुखु लागा बहु अति घणा पुतु कलतु न साथि कोई जासि ॥ (643-10)
दुखु लागै तूं विसरु नाही ॥१॥ रहाउ ॥ (354-15)
दुखु विसरै पावै सचु सोई ॥१॥ (224-5)
दुखु वेछोड़ा इकु दुखु भूख ॥ (1256-13)
दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी ॥ (220-7)
दुखु सुखु करतै धुरि लिखि पाइआ ॥ (1054-13)

दुखु सुखु गुरमुखि सम करि जाणा हरख सोग ते बिरकतु भइआ ॥ (907-4)
दुखु सुखु तेरै भाणै होवै किस थै जाइ रूआईऐ ॥ (418-5)
दुखु सुखु दीआ जेहा कीआ सो निबहै जीअ नाले ॥ (581-9)
दुखु सुखु देहि तूहै मनि भावहि तुझ ही सिउ बणि आई हे ॥१५॥ (1023-9)
दुखु सुखु परहरि सहजि सुचीत ॥ (413-11)
दुखु सुखु भाणा तेरा होवै विणु नावै जीउ रहै नाही ॥४॥ (354-18)
दुखु सुखु भाणै तिसै रजाइ ॥ (223-1)
दुखु सुखु सम करणा सोग बिओगी ॥ (879-16)
दुखु सुखु साचु करते प्रभ पासि ॥१॥ रहाउ ॥ (352-13)
दुखु सुखु हमरा तिस ही पासा ॥ (1145-1)
दुघट घट भउ भंजनु पाईऐ बाहुड़ि जनमि न जाइआ ॥६॥ (1042-2)
दुचिते की दुइ थूनि गिरानी मोह बलेडा टूटा ॥ (331-18)
दुतर अंध बिखम इह माइआ ॥ (377-8)
दुतर महा बिखम इह माए ॥ (258-15)
दुतरु इहु संसारु सतिगुरू तराइआ ॥ (1362-3)
दुतरु तरे साध कै संगि ॥३॥ (185-1)
दुतरु भै संसारु प्रभि आपि तराइआ ॥ (705-15)
दुतरु सो तरै हां ॥ (410-4)
दुतीआ अरधो अरधि समाइआ ॥ (886-6)
दुतीआ जमुन गए गुरि हरि हरि जपनु कीआ ॥ (1116-13)
दुतीआ जमुन गए गुरि हरि हरि जपनु कीआ ॥४॥ (1116-17)
दुतीआ तिआगी लोगा रीति ॥ (370-14)
दुतीआ तेरी मनीऐ पांति ॥ (374-1)
दुतीआ दुरमति दूरि करि गुर सेवा करि नीत ॥ (296-18)
दुतीआ दुह करि जानै अंग ॥ (343-9)
दुतीआ नासति इकु रहिआ समाइ ॥ (1140-8)
दुतीआ भाउ न जाणनी सचे दी आस ॥ (321-14)
दुतीआ भाउ बिपरीति अनीति दासा नह भावए जीउ ॥ (80-10)
दुतीआ मउले चारि बेद ॥ (1193-16)
दुतीआ मालकउसक आलापहि ॥ (1430-4)
दुतीए मता दुइ मानुख पहुचावउ ॥ (371-13)
दुतुके (478-5)
दुध बिनु धेनु पंख बिनु पंखी जल बिनु उतभुज कामि नाही ॥ (354-14)
दुधा थणी न आवई फिरि होइ न मेला ॥२॥ (794-18)
दुनींआ मुरदार खुरदनी गाफल हवाइ ॥ रहाउ ॥ (723-14)
दुनीआ कारणि दीनु गवाइआ ॥५॥ (1410-11)
दुनीआ कीआ वडिआईआ कवनै आवहि कामि ॥ (45-2)

दुनीआ कीआ वडिआईआ नानक सभि कुमित ॥२॥ (319-10)
दुनीआ के दर केतड़े केते आवहि जांहि ॥ (1286-8)
दुनीआ केरी दोसती मनमुख दझि मरंनि ॥ (755-3)
दुनीआ कै सिरि कालु दूजा भाइआ ॥ (1282-12)
दुनीआ कैसि मुकामे ॥ (64-5)
दुनीआ खेलु बुरा रुठ तुठा ॥ (1020-5)
दुनीआ खोटी रासि कूड़ु कमाईऐ ॥ (144-18)
दुनीआ चीज फिलहाल सगले सचु सुखु तेरा नाउ ॥ (724-14)
दुनीआ दोसु रोसु है लोई ॥ (1161-8)
दुनीआ धंधै लाइ आपु छपाइआ ॥ (1279-19)
दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी ॥ (755-2)
दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥ (721-5)
दुनीआ रंग न आवै नेड़ै जिउ कुसम पाटु घिउ पाकु हरा ॥१३॥ (1084-10)
दुनीआ लबि पइआ खात अंदरि अगली गल न जाणीआ ॥४॥ (1020-3)
दुनीआ सागरु दुतरु कहीऐ किउ करि पाईऐ पारो ॥ (938-13)
दुनीआ हुसीआर बेदार जागत मुसीअत हउ रे भाई ॥ (972-8)
दुबिधा चूकी सहजि सुभाइ ॥ (1247-4)
दुबिधा चूकै तां सबदु पछाणु ॥ (1343-17)
दुबिधा छोडि कुवाटड़ी मूसहुगे भाई ॥ (419-12)
दुबिधा छोडि नामि निसतरै ॥२॥ (352-2)
दुबिधा छोडि भए निरंकारी ॥ (685-14)
दुबिधा दुरमति अधुली कार ॥ (1190-3)
दुबिधा दूजा त्रिबिधि माइआ ॥ (113-7)
दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरु न पूजउ मड़ै मसाणि न जाई ॥ (634-8)
दुबिधा बउरी मनु बउराइआ ॥ (1342-2)
दुबिधा बाधा आवै जावै ॥ (109-14)
दुबिधा मनमुख रोगि विआपे त्रिसना जलहि अधिकाई ॥ (1130-4)
दुबिधा महलु न पावै जगि झूठी गुण अवगण न पछाणे ॥७॥ (1233-17)
दुबिधा मारि ब्रहमु बीचारे ॥१॥ (1128-17)
दुबिधा मारि हरि मंनि वसाई ॥ (663-17)
दुबिधा मारे इकसु सिउ लिव लाए ॥ (119-8)
दुबिधा मेटि खिमा गहि रहहु ॥ (343-14)
दुबिधा मैलु चुकाईअनु हरि राखिआ उर धारि ॥ (35-14)
दुबिधा राते महलु न पावहि ॥ (904-19)
दुबिधा रोगु सु अधिक वडेरा माइआ का मुहताजु भइआ ॥८॥ (1153-17)
दुबिधा लागे नामु विसारा ॥ (416-4)
दुबिधा लागे पचि मुए अंतरि त्रिसना अगि ॥ (19-10)

दुबिधा लागै दह दिसि धावै ॥ (127-13)
दुबिधा लोभि लगे है प्राणी मनि कोरै रंगु न आवैगो ॥ (1310-6)
दुबिधा विचि बैरागु न होवी जब लगु दूजी राई ॥ (634-15)
दुबिधा सहजि समाए कामणि वरु पाए गुरमती रंगु लाए ॥ (245-4)
दुया कागलु चिति न जाणदा ॥ (73-11)
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥ (463-4)
दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥ (134-7)
दुरगंध अपवित्र अपावन भीतरि जो दीसै सो छारा ॥१॥ रहाउ ॥ (530-10)
दुरगम सथान सुगमं महा दूख सरब सूखणह ॥ (1357-18)
दुरगा कोटि जा कै मरदनु करै ॥ (1162-18)
दुरजन तू जलु भाहड़ी विछोड़े मरि जाहि ॥ (1094-15)
दुरजन ते साजन भए भेटे गुर गोविंद ॥ (934-17)
दुरजन मारे वैरी संघारे सतिगुरि मो कउ हरि नामु दिवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (370-13)
दुरजन सेती नेहु तू कै गुणि हरि रंगु माणही ॥१॥ (1097-14)
दुरजन सेती नेहु रचाइओ दसि विखा मै कारणु ॥ (959-12)
दुरजनु दूजा भाउ है वेछोड़ा हउमै रोगु ॥ (1094-16)
दुरजोधन का मथिआ मानु ॥७॥ (1163-7)
दुरतु गइआ गुरि गिआनु द्रिड़ाई ॥१॥ रहाउ ॥ (430-14)
दुरतु गइआ हरि नामु धिआए ॥१॥ रहाउ ॥ (801-16)
दुरतु गवाइआ हरि प्रभि आपे सभु संसारु उबारिआ ॥ (620-1)
दुरबचन भेद भरमं साकत पिसनं त सुरजनह ॥ (1357-19)
दुरबासा सिउ करत ठगउरी जादव ए फल पाए ॥ (693-3)
दुरमति अंधुला बिनसि बिनासै मूठे रोइ पूकारा हे ॥९॥ (1027-5)
दुरमति अगनि जगत परजारै ॥ (225-17)
दुरमति कबुधि गई सुधि होई राम नामि मनु लाए ॥ (443-19)
दुरमति का दुखु कटिआ भागु बैठा मसतकि आइ जीउ ॥११॥ (72-9)
दुरमति खोईऐ हां ॥ (410-9)
दुरमति खोटी खोटु कमावै ॥ (1047-9)
दुरमति गतु भई कीरति ठाइ ॥ (351-19)
दुरमति घणी विगूती भाई दूजै भाइ खुआई ॥ (635-12)
दुरमति जाइ परम पदु पाए ॥ (737-1)
दुरमति झूठी बुरी बुरिआरि ॥ (1047-7)
दुरमति तिआगि लाहा किछु लेवहु ॥ (356-12)
दुरमति परहरि छाडी ढोलि ॥ (933-9)
दुरमति फाथा फाहीऐ फिरि फिरि पछोताइ ॥ (1009-17)
दुरमति बाधा सरपनि खाधा ॥ (939-14)
दुरमति बिकार मलीन मति होछी हिरदा कुसुधु लागा मोह कूरु ॥ (1198-11)

दुरमति बिनसी कुबुधि अभागी ॥ (100-1)
दुरमति बिनसै किआ कहि रोति ॥ (413-10)
दुरमति बिनसै राचै हरि नाइ ॥२॥ (893-13)
दुरमति भागहीन मति फीके नामु सुनत आवै मनि रोहै ॥ (493-1)
दुरमति मदु जो पीवते बिखली पति कमली ॥ (399-11)
दुरमति मरै नित होइ खुआरो ॥ (1058-8)
दुरमति मिटी हउमै छुटी सिमरत हरि को नाम ॥ (300-2)
दुरमति मेटि बुधि परगासी जन नानक गुरमुखि तारी ॥४॥१॥२॥ (495-13)
दुरमति मैलु गई भ्रमु भागा हउमै बिनठी पीरा ॥ (774-19)
दुरमति मैलु गई सभ तिन की जो राम नाम रंगि राते ॥३॥ (169-8)
दुरमति मैलु गई सभ नीकरि हरि अम्रिति हरि सरि नाता ॥१॥ (984-12)
दुरमति मैलु गई सभ नीकलि सतसंगति मिलि बुधि पाइ ॥१॥ (880-18)
दुरमति मैलु गई हरि भजिआ जन नानक पारि परा ॥४॥३॥ (799-17)
दुरमति मैलु सभु दुरतु गवाइआ ॥४॥५॥४४॥ (362-11)
दुरमति मैलु हरी अगिआनु अंधेरु गइआ ॥ (1116-4)
दुरमति विछुड़ि चोटा खाइ ॥ (944-6)
दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि लेहु भगवान ॥३४॥ (1428-6)
दुरमति हरणाखसु दुराचारी ॥ (224-15)
दुरमति हरी सेवा करी भेटे साध क्रिपाल ॥ (299-6)
दुरमति होई सगली नास ॥१॥ (891-12)
दुरलभं एक भगवान नामह नानक लबध्यिं साधसंगि क्रिपा प्रभं ॥३५॥ (1357-3)
दुरलभ देह उधरंत साध सरण नानक ॥ (1354-6)
दुरलभ देह पाइ मानस की बिरथा जनमु सिरावै ॥ (220-1)
दुलभ कलि दुनी हां ॥ (409-19)
दुलभ जनमु चिरंकाल पाइओ जातउ कउडी बदलहा ॥ (1203-12)
दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै ॥ (658-8)
दुलभ जनमु सफलु नानक भव उतारि पारि ॥२॥१॥४५॥ (1307-5)
दुलभ देह आई परवानु ॥ (1148-5)
दुलभ देह खोई अगिआनी जड़ अपुणी आपि उपाड़ी जीउ ॥३॥ (105-10)
दुलभ देह जपि होत पुनीता जम की त्रास निवारै ॥ (1208-17)
दुलभ देह जीती नही हारे ॥१॥ (387-4)
दुलभ देह ततकाल उधारै ॥ (296-7)
दुलभ देह नानक निसतारि ॥४॥५१॥१२०॥ (190-3)
दुलभ देह पाई वडभागी ॥ (188-5)
दुलभ देह सवारि ॥ (895-14)
दुलभ देह होई परवानु ॥ (193-14)
दुसट अहंकारी मारि पचाए ॥ (869-11)

दुसट चउकड़ी सदा कूड़ु कमावहि ना बूझहि वीचारे ॥ (601-12)
दुसट दूत की चूकी कानि ॥३॥ (372-12)
दुसट दूत परमेसरि मारे ॥ (201-7)
दुसट दूत सभि भ्रमि थके ॥ (1183-13)
दुसट बिदारे साजन रहसे इहि मंदिर घर अपनाए ॥ (1266-8)
दुसट भाउ तजि निंद पराई कामु क्रोधु चंडार ॥१॥ (1255-18)
दुसट मुए बिखु खाई री माई ॥ (1269-13)
दुसट सभा का किछु न वसाई ॥४॥ (1154-9)
दुसट सभा महि मंत्रु पकाइआ ॥ (1133-6)
दुसट सभा मिलि मंतर उपाइआ करसह अउध घनेरी ॥ (1165-9)
दुसटा नालि दोसती नालि संता वैरु करंनि ॥ (755-6)
दुसटा सेती पिरहड़ी जन सिउ वादु करंन्हि ॥ (854-8)
दुसटी सभा विगुचीऐ बिखु वाती जीवण बादि ॥३॥ (1343-13)
दुसटु ब्राहमणु मूआ होइ कै सूल ॥१॥ (1137-15)
दुसमन कढे मारि सजण सरसिआ ॥ (148-19)
दुसमन दुसट रहे झख मारत कुसलु भइआ मेरे भाई मीत ॥१॥ रहाउ ॥ (826-10)
दुसमन दूत जमकालु ठेह मारउ हरि सेवक नेड़ि न जाई जीउ ॥२॥ (998-10)
दुसमन दूत मुए सुखु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (371-15)
दुसमन मारि विडारे सगले दास कउ सुमति दीती ॥१॥ रहाउ ॥ (630-3)
दुसमन हते दोखी सभि विआपे हरि सरणाई आइआ ॥ (1268-4)
दुसमनु त दूखु न लगै मूले पापु नेड़ि न आवए ॥ (567-2)
दुसमनु दुखु तिस नो नेड़ि न आवै पोहि न सकै कोइ ॥ (586-2)
दुसमनु दूखु न आवै नेड़ै हरि मति पावै कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (1328-5)
दुसमनु दूखु न आवै नेरे ॥ (1340-4)
दुह मिलि एकै कीनो ठाउ ॥३॥ (387-18)
दुहचारणी कहीऐ नित होइ खुआरु ॥ (1277-11)
दुहसासन की सभा द्रोपती अ्मबर लेत उबारीअले ॥१॥ (988-14)
दुहहूं ते रहत भगतु है कोई विरला जाणा ॥१॥ (51-13)
दुहां ते गिआनी सिआणा ॥ (875-2)
दुहां सिरिआं का करता आपि ॥ (1270-17)
दुहा सिरिआ आपे खसमु वेखै करि विउपाइ ॥ (148-7)
दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥ (277-4)
दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ ॥ (71-4)
दुहा सिरिआ का खसमु प्रभु सोई ॥ (185-13)
दुहा सिरिआ का खसमु है आपे आपे गुण महि भीजै हे ॥६॥ (1049-11)
दुहा सिरिआ खसमु आपि खिन महि करे रासि ॥ (521-7)
दुही मिलि कै स्रिसटि उपाई ॥ (126-8)

दुही सराई खुनामी कहाए ॥१॥ (743-2)
दुहु मिलि कारजु ऊपजै राम नाम संजोगु ॥२॥ (335-9)
दुहू पाख का आपहि धनी ॥ (292-3)
दुहू बिवसथा ते जो मुकता सोई सुहेला भालीऐ ॥१॥ (1019-8)
दुहू भाति ते आपि निरारा ॥ (250-14)
दूख तिसै पहि आखीअहि सूख जिसै ही पासि ॥३॥ (16-3)
दूख दरद कलेस बिनसहि जिसु बसै मन माहि ॥ (1017-12)
दूख दरद तिह मिटहि खिनाहू ॥ (259-14)
दूख दरद त्रिसना बुझै नानक नामि समाउ ॥१॥ (252-19)
दूख दरद न भउ बिआपै नामु सिमरत सद सुखी ॥ (456-9)
दूख दरद बिनसे भै भरम ॥ (183-12)
दूख दरद बिनसै भव सागरु गुर की मूरति रिदै बसाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1268-3)
दूख दरद भ्रम बिनसे झूठे ॥१॥ (1340-8)
दूख दरद रोग सगल बिदारिआ ॥२॥ (195-15)
दूख दीन न भउ बिआपै मिलै सुख बिस्रामु ॥ (1006-11)
दूख न भूख न रोगु न बिआपै सुख सागर सरणी पाए ॥ (782-9)
दूख निवारणु गुर ते जाता ॥ (1044-6)
दूख पाप का डेरा ढाठा कारजु आइआ रासी राम ॥ (781-19)
दूख बिनास कीआ सुखि डेरा जा त्रिपति रहे आघाई हे ॥७॥ (1071-19)
दूख बिनासनी हां ॥ (409-19)
दूख बिसारणहारु सुआमी कीता जा का होवै ॥ (438-3)
दूख भूख दारिद्र नाठे प्रगटु मगु दिखाइआ ॥ (459-1)
दूख भूख मिटै तेरो सहसा सुख पावहि तूं सुखमनि नारी ॥१॥ रहाउ ॥ (377-16)
दूख भूख संसा मिटिआ गावत प्रभ नाम ॥ (819-3)
दूख भूख संसारि कीए सहसा एहु चुकावहे ॥ (567-7)
दूख भ्रमु हमारा सगल मिटाइआ ॥ (562-13)
दूख रोग बिनसे भै भरम ॥ (296-8)
दूख रोग भए गतु तन ते मनु निरमलु हरि हरि गुण गाइ ॥ (372-19)
दूख रोग भै सगल बिनासे जो आवै हरि संत सरन ॥ (1206-9)
दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ (922-18)
दूख रोग सभि गइआ गवाइ ॥ (1256-18)
दूख रोग सोग सभि बिनसे गुर पूरे मिलि पाप तजाइण ॥१॥ रहाउ ॥ (744-3)
दूख विसारणु सबदु है जे मंनि वसाए कोइ ॥ (1413-12)
दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥१॥ (660-4)
दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥ (283-1)
दूख सूख बाधौ संसार ॥ (1192-18)
दूख सूख मान अपमान ॥ (292-2)

दूख सूख सभ तिसु रजाइ ॥७॥ (1188-8)
दूख सोग का ढाहिओ डेरा अनद मंगल बिसरामा ॥ (614-15)
दूख हरै भवजलु तरै मन चिंदिआ फलु पाइ ॥ (298-7)
दूखनि गावउ सुखि भी गावउ मारगि पंथि सम्हारी ॥ (401-14)
दूखा ते सुख ऊपजहि सूखी होवहि दूख ॥ (1328-1)
दूखा सजाई गणत नाही कीआ अपणा पाइओ ॥ (460-6)
दूखी उपजै दूखी बिनसै किआ लै आइआ किआ लै जाहा हे ॥१२॥ (1033-3)
दूखी भरि आइआ जगतु सबाइआ कउणु जाणै बिधि मेरीआ ॥ (767-6)
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥ (345-12)
दूखु अंधेरा घर ते मिटिओ ॥ (241-12)
दूखु अंधेरा मन ते जाइ ॥ (893-13)
दूखु अंधेरा सगला जाइ ॥१॥ (867-1)
दूखु गइआ सभु रोगु गइआ ॥ (890-12)
दूखु गइआ सुखु आइ समाणा ॥ (566-14)
दूखु घणो दोहागणी किउ थिरु रहै सुहागु ॥१॥ (57-19)
दूखु घणो दोहागणी ना घरि सेज भतारु ॥१॥ (58-13)
दूखु घणो मरीऐ करतारा ॥ (1189-3)
दूखु घनो जब होते दूरि ॥ (384-12)
दूखु तदे जदि वीसरै सुखु प्रभ चिति आए ॥ (813-9)
दूखु दरदु इसु तन ते जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (741-13)
दूखु दरदु जमु नेड़ि न आवै ॥ (191-15)
दूखु दरदु तिह नानक नसै ॥४॥१०॥७९॥ (179-5)
दूखु दरदु नह बिआपै रोगु ॥ (1149-17)
दूखु दरदु भरमु भउ नसिआ ॥ (189-18)
दूखु दरदु भ्रमु ता का भागा ॥१॥ (194-13)
दूखु दरदु भ्रमु ता का भागी ॥१॥ रहाउ ॥ (186-9)
दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ (1079-12)
दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ (864-10)
दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥ (293-6)
दूखु दरदु रोगु माइ मैडा हभु नसै ॥१॥ (397-4)
दूखु दरदु वड रोगु न पोहे तिसु माइ ॥ (522-1)
दूखु दरदु सभु ता का नसै ॥१॥ (1340-1)
दूखु न देई किसै जीअ पति सिउ घरि जावउ ॥ (322-9)
दूखु न मिटै बिनु गुर की सरणा ॥ (1033-2)
दूखु न लागै कदे तुधु पारब्रहमु चितारे ॥ (818-4)
दूखु मिटै सचु सबदि पछानै ॥१॥ (416-13)
दूखु रोगु कछु भउ न बिआपै ॥ (184-4)

दूखु रोगु न भउ बिआपै जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ (544-2)
दूखु रोगु सोगु बिसरै जब नामु ॥ (186-5)
दूखु संतापु न लगई जिसु हरि का नामु अधारु ॥ (44-9)
दूजड़ै कामणि भरमि भुली हरि वरु न पाए राम ॥ (439-15)
दूजा कउणु कहा नही कोई ॥ (223-3)
दूजा खेलु करि दिखलाइआ ॥ (73-1)
दूजा जाइ इकतु घरि आनै ॥ (943-14)
दूजा तिसु न बुझाइहु पारब्रहम नामु देहु आधारु ॥ (962-4)
दूजा थाउ न को सुझै गुर मेले सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (49-15)
दूजा नही जानै कोइ ॥ (895-5)
दूजा नाही अउरु को ता का भउ करीऐ ॥ (399-19)
दूजा नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा ॥१॥ रहाउ ॥ (660-8)
दूजा पहरु भइआ जागु अचेती राम ॥ (1110-5)
दूजा भरमु गुर सबदि जलाए ॥ (115-6)
दूजा भरमु सहजि सुभाए ॥ (222-15)
दूजा भाउ आपि वरताइआ ॥ (1054-13)
दूजा भाउ करि पूजदे मनमुख अंध गवार ॥५॥ (1346-8)
दूजा भाउ गुर सबदि जलाइआ ॥ (129-14)
दूजा भाउ न देई लिव लागणि जिनि हरि के चरण विसारे ॥ (796-16)
दूजा भाउ रचाइओनु त्रै गुण वरतारा ॥ (948-13)
दूजा भाउ विसारीऐ एहु त्मबोला खाइ री ॥२॥ (400-11)
दूजा भ्रमु गड़ु कटिआ मोहु लोभु अहंकारा ॥ (1087-4)
दूजा मारि मनु सचि समाणा ॥ (120-8)
दूजा मारि सबदि पछाता ॥६॥ (223-6)
दूजा मेटे एको सोइ ॥४॥१४॥ (353-5)
दूजा मेटै एकु दिखाए ॥ (1040-11)
दूजा मेटै एको होवै ॥ (943-5)
दूजा रंगु जाई साचि समाई सचि भरे भंडारा ॥ (571-5)
दूजा सेवनि नानका से पचि पचि मुए अजाण ॥१॥ (315-5)
दूजा होइ त सोझी पाइ ॥ (797-3)
दूजी अवर न जापसि काई सगल तुमारी धारणा ॥१॥ (1076-17)
दूजी कारै लगि जनमु गवाईऐ ॥ (144-16)
दूजी कारै लगिआ फिरि जोनी पावै ॥ (791-17)
दूजी छोडि कुवाटड़ी इकस सउ चितु लाइ ॥ (1426-1)
दूजी जाइ न सुझई किथै कूकण जाउ ॥ (137-10)
दूजी दुरमति अंनी बोली ॥ (1022-11)
दूजी दुरमति आखै दोइ ॥ (223-3)

दूजी दुरमति कारजु न होवै ॥ (1058-2)
दूजी दुरमति दरदु न जाइ ॥ (832-5)
दूजी दुरमति सबदे खोई ॥ (1051-14)
दूजी नाही जाइ किनि बिधि धीरीऐ ॥ (322-1)
दूजी बात न धरई काना ॥ (340-11)
दूजी माइआ जगत चित वासु ॥ (223-2)
दूजी सेवा जीवनु बिरथा ॥ (1182-7)
दूजे घर के चउतीस ॥ (378-19)
दूजे ते जे एको जाणै ॥ (842-8)
दूजै किनै सुखु न पाइओ पिरा जीउ बिखिआ लोभि लुभाए ॥ (246-18)
दूजै दूजी तरफ है कूड़ि मिलै न मिलिआ जाइ ॥ (1281-9)
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जुआनी लहरी देइ ॥ (77-11)
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जोबनि मै मति ॥ (75-15)
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लागा दूजै भाइ ॥ (76-14)
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा विसरि गइआ धिआनु ॥ (75-1)
दूजै पाथर धरीऐ पाउ ॥ (525-5)
दूजै बहुते राह मन कीआ मती खिंडीआ ॥ (145-19)
दूजै भरमि भुलाइआ हउमै दुखु पाही ॥ (1091-19)
दूजै भाइ अगिआनी पूजदे दरगह मिलै सजाइ ॥ (88-3)
दूजै भाइ अगिआनु दुहेला ॥४॥ (226-9)
दूजै भाइ अति दुखु लगा मरि जमै आवै जाइ ॥ (591-17)
दूजै भाइ आतम संघारहि ॥ (362-13)
दूजै भाइ करूपी दूखु पावहि आगै जाइ ॥२॥ (559-9)
दूजै भाइ कार कमावणी नित तोटा सैसारा ॥५॥ (1009-6)
दूजै भाइ को ना मिलै फिरि फिरि आवै जाइ ॥ (27-5)
दूजै भाइ घणा दुखु आगै ॥ (1052-15)
दूजै भाइ जगतु परबोधदा ना बूझै बीचारु ॥ (86-8)
दूजै भाइ जाइ जगु परबोधै बिखु माइआ मोह सुआइ ॥ (512-8)
दूजै भाइ जेता पड़हि पड़त गुणत सदा दुखु होई ॥१॥ (492-1)
दूजै भाइ जेते करम करे दुखु लगै तनि धाइ ॥ (593-7)
दूजै भाइ दुखु पाइआ सभ जोही जमकालि ॥ (84-19)
दूजै भाइ दुखु लाइदा बहुती देइ सजाइ ॥ (33-13)
दूजै भाइ दुखु होइ मनमुख जमि जोहिआ जीउ ॥ (690-11)
दूजै भाइ दुखु होइ मनमुखि जमि जोहिआ जीउ ॥४॥ (690-14)
दूजै भाइ दुसटा का वासा ॥ (1068-15)
दूजै भाइ दुसटु आतमा ओहु तेरी सरकार ॥ (38-19)
दूजै भाइ दैत संघारे ॥ (225-1)

दूजै भाइ न लागै कोइ ॥१॥ (362-7)
दूजै भाइ न सेविआ जाइ ॥ (161-11)
दूजै भाइ नाउ कदे न पाइनि दुखु लागा अति भारी ॥ (1246-15)
दूजै भाइ नामु विसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥ (1249-2)
दूजै भाइ पड़हि नित बिखिआ नावहु दयि खुआइआ ॥ (513-9)
दूजै भाइ पड़ै नही बूझै ॥ (127-11)
दूजै भाइ परपंचि लागे ॥ (842-4)
दूजै भाइ फाथे जम जाला ॥ (1133-2)
दूजै भाइ फिरहि हउमै करम कमाए ॥ (441-17)
दूजै भाइ फिरै देवानी ॥ (1047-16)
दूजै भाइ बहुतु घर गाले ॥ (1160-11)
दूजै भाइ बहुतु दुखु लागा जलता करे पुकार ॥ (594-14)
दूजै भाइ बाधा जम फासी ॥ (1047-2)
दूजै भाइ बिरथा जनमु गवाए ॥ (124-1)
दूजै भाइ बिलावलु न होवई मनमुखि थाइ न पाइ ॥ (849-10)
दूजै भाइ भरमि भुलाइआ ॥ (1065-14)
दूजै भाइ भरमि भुलाना ॥ (159-11)
दूजै भाइ भरमि विगुती मनमुखि मोही जमकालि ॥ (569-7)
दूजै भाइ भरमिआ अम्रित जलु पलै न पाइ ॥ (1284-16)
दूजै भाइ भवहि बिखु माइआ ॥ (366-13)
दूजै भाइ मनमुखि दुखु पाइआ ॥३॥ (1261-17)
दूजै भाइ महा दुखु पावहि ॥ (128-1)
दूजै भाइ माइआ मनु भरमावहि ॥ (116-18)
दूजै भाइ मुठी जीउ बिनु गुर सबद करारे ॥ (244-2)
दूजै भाइ लगा दुखु पाए ॥ (1066-9)
दूजै भाइ लगे दुखु पाइआ ॥ (362-6)
दूजै भाइ लगे पछुताणे ॥ (839-2)
दूजै भाइ लगे सजण न आखीअहि जि अभिमानु करहि वेकार ॥ (643-13)
दूजै भाइ सदा दुखु पाए त्रै गुण भरमि भुलाइदा ॥४॥ (1066-5)
दूजै भाइ सदा दुखु है नित नीरु विरोलै ॥ (955-8)
दूजै भाइ सभ परज विगोई ॥ (664-15)
दूजै भाइ सुखु पाए न कोई ॥ (123-7)
दूजै भाइ सुते कबहि न जागहि माइआ मोह पिआर ॥ (508-18)
दूजै भाइ सूते कबहु न जागहि माइआ मोह पिआर ॥ (852-4)
दूजै भाइ हरि नामु विसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥ (85-15)
दूजै भावीं नानका वहणि लुड़्हंदड़ी जाइ ॥१६॥ (1426-2)
दूजै माइ बाप की सुधि ॥ (137-16)

दूजै मुठी रोवै धाही ॥ (127-3)
दूजै लगी भरमि भुलावै ॥ (363-7)
दूजै लगे पचि मुए मूरख अंध गवार ॥ (85-10)
दूजै लागा सभु जगु काचा ॥ (1049-5)
दूजै लागि जगु खपि खपि मूआ ॥ (113-9)
दूजै लागी फिरि पछोताणी ॥ (129-11)
दूजै लागी भरमि भुलाणी ॥ (110-7)
दूजै लागी महलु न पाए ॥ (111-19)
दूजै लागे जनमु गवाइआ बिनु बूझे दुखु पाइदा ॥९॥ (1066-11)
दूजै लागे मनमुखि रोइ ॥ (1049-11)
दूजै लोकी बहुतु दुखु पाइआ ॥ (1173-4)
दूजै सभु को लगि विगुता बिनु सतिगुर बूझ न पाई ॥ (1287-10)
दूड़ा आइओहि जमहि तणा ॥ (92-7)
दूण चऊणी दे वडिआई सोभा नीता नीत ॥१॥ रहाउ ॥ (618-13)
दूणि न परई फंक बिचारै ॥ (341-18)
दूणी चउणी करामाति सचे का सचा ढोआ ॥ (968-17)
दूत दुसट तिसु पोहत नाहि ॥ (868-9)
दूत दुसमण सभि सजण होए एको सुआमी आहिआ जीउ ॥२॥ (107-3)
दूत दुसमन सभि तुझ ते निवरहि प्रगट प्रतापु तुमारा ॥ (681-13)
दूत लगे फिरि चाकरी सतिगुर का वेसाहु ॥ (18-4)
दूतन संगरीआ ॥ (537-4)
दूतह दहनु भइआ गोविंदु प्रगटाइआ ॥ (460-14)
दूता नो फुरमाइआ लै चले पति गवाइ ॥ (417-7)
दूतु न लागि सकै गुन गाइ ॥२॥ (416-4)
दूधहि दुहि जब मटुकी भरी ॥ (1166-7)
दूधु कटोरै गडवै पानी ॥ (1163-16)
दूधु करम फुनि सुरति समाइणु होइ निरास जमावहु ॥१॥ (728-4)
दूधु करमु संतोखु घीउ करि ऐसा मांगउ दानु ॥३॥ (1329-8)
दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ ॥ (525-11)
दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ ॥ (1163-19)
दूधु पीउ गोबिंदे राइ ॥ (1163-17)
दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ ॥ (1163-17)
दूरबा परूरउ अंगरै गुर नानक जसु गाइओ ॥ (1390-18)
दूरहु ही ते भागि गइओ है जिसु गुर मिलि छुटकी त्रिकुटी रे ॥१॥ (535-17)
दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना ॥१॥ (793-19)
दूरि दरदु मथि अम्रितु खाइ ॥ (1188-11)
दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु पछाना ॥ (1108-5)

दूरि न नेरै सभ कै संगा ॥ (236-1)
दूरि न होई कतहू जाईऐ ॥ (395-13)
दूरि नाही देखहु करि नंदरि ॥ (1026-8)
दूरि नाही मेरो प्रभु पिआरा ॥ (1197-15)
दूरि पराइओ मन का बिरहा ता मेलु कीओ मेरै राजन ॥३॥ (671-8)
दूरि बतावत पाइआ नीरा ॥१२॥ (344-3)
दूरि भई जपि नामु मुरारी ॥३॥ (742-19)
दूरि रही उह जन ते बाट ॥२॥ (393-14)
दूसर आन न अवरु पुरखु पऊरातनु सुणीऐ ॥ (1386-9)
दूसर कउनु कहै बीचारु ॥ (280-19)
दूसर नाही अवर को नानक बेपरवाह ॥१॥ (252-12)
दूसर नाही ठाउ का पहि जाईऐ ॥ (704-13)
दूसर होआ ना को होई ॥ (740-11)
दूसर होइ त सोझी पाइ ॥ (294-17)
देंदा नरकि सुरगि लैदे देखहु एहु धिङाणा ॥ (1290-7)
देंदा मूं पिरु दसि हरि सजणु सिरजणहारिआ ॥ (1421-18)
देंदा रहै न चूकै भोगु ॥ (349-10)
देंदे तोटि न आवई अगनत भरे भंडार ॥ (257-10)
देंदे तोटि नाही तिसु करते पूरि रहिओ रतनागरु रे ॥३॥ (209-17)
देंदे थावहु दिता चंगा मनमुखि ऐसा जाणीऐ ॥ (138-12)
देंहि अधारु सरब कउ ठाकुर जीअ प्रान सुखदाते ॥१॥ (1209-12)
दे कंनु सुणहु अरदासि जीउ ॥ (74-2)
दे कै चउका कढी कार ॥ (472-2)
दे गुना सति भैण भराव है पारंगति दानु पड़ीवदै ॥ (966-15)
दे दे नीव दिवाल उसारी भसमंदर की ढेरी ॥ (155-7)
दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु ॥ (466-2)
दे दे लैणा लै लै देणा नरकि सुरगि अवतार ॥ (1243-15)
दे दे वेखै हुकमु चलाए जिउ जीआ का रिजकु पइआ ॥१२॥ (433-4)
दे वडिआई करे सु होइ ॥२॥ (355-12)
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥ (4-12)
देइ अहारु अगनि महि राखै ऐसा खसमु हमारा ॥१॥ (488-3)
देइ किवाड़ अनिक पड़दे महि पर दारा संगि फाकै ॥ (616-7)
देइ बुझारत सारता से अखी डिठड़िआ ॥ (217-19)
देइ मुहार लगामु पहिरावउ ॥ (329-9)
देउ जबाबु होइ बजगारी ॥ (1161-9)
देउ न देहुरा गऊ गाइत्री ॥ (1036-1)
देउ सूहनी साध कै बीजनु ढोलावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (813-15)

देखउ तेरा हरि बीठुला ॥१॥ रहाउ ॥ (1165-14)
देखउ राम तुम्हारे कामा ॥१॥ (1165-13)
देखणि आए तीनि लोक सुरि नर मुनि जन सभि आइआ ॥ (1116-11)
देखत कुतरा लै गई बिलाई ॥२॥ (481-13)
देखत दरसु पाप सभि नासहि पवित्र परम पदु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1178-5)
देखत दरसु पाप सभि नासे हरि नानक रतनु लहिओ ॥२॥१००॥१२३॥ (1228-2)
देखत दरसु भटकि भ्रमु भजत दुख परहरि सुख सहज बिगासे ॥ (1404-18)
देखत नैन चलिओ जगु जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (481-8)
देखत सिंघु चरावत गाई ॥१॥ रहाउ ॥ (481-12)
देखत सुनत तेरै है नालि ॥ (372-18)
देखहि आपि बैसि बिज मंदरि ॥ (1034-8)
देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ॥ (474-1)
देखहु अचरजु भइआ ॥ (612-13)
देखहु पसारि नैन सुनहु साधू के बैन प्रानपति चिति राखु सगल है मरना ॥ रहाउ ॥ (678-15)
देखहु भाई एहु अखाड़ा हरि प्रीतम सचे का जिनि आपणै जोरि सभि आणि निवाए ॥ (308-2)
देखहु लोगा कलि को भाउ ॥ (1194-3)
देखा देखी मनहठि जलि जाईऐ ॥ (185-16)
देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाइ ॥ (28-3)
देखा देखी स्वांगु धरि भूले भटका खाहि ॥१३५॥ (1371-14)
देखि अचरजु रहे बिसमादि ॥ (416-9)
देखि अटल टलि कतहि न जावा ॥ (341-3)
देखि अदिसटु रहहु लिव लागी सभु त्रिभवणि ब्रहमु सबाइआ ॥३॥ (1041-17)
देखि अद्रिसटु रहउ बिसमादी दुखु बिसरै सुखु होई जीउ ॥३॥ (599-3)
देखि कसुमभा रंगुला काहे भूलि लागे ॥१॥ रहाउ ॥ (809-13)
देखि कहउ भावै मनि सोइ ॥ (831-19)
देखि कुट्मबु माइआ ग्रिह मंदरु साकतु जंजालि परालि पइआ ॥९॥ (906-19)
देखि कुट्मबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ॥ (32-8)
देखि कुट्मबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ॥ (64-19)
देखि कुट्मबु लोभि मोहिओ प्रानी माइआ कउ लपटाना ॥ (671-2)
देखि चरित नानक मनु मोहिओ पूछै दीनु मेरो ठाकुरु कैसा ॥३॥ (1237-5)
देखि चरित्र भई हउ बिसमनि गुरि सतिगुरि पुरखि मिलाई ॥ (1207-4)
देखि चलत दइआल सुणि भगत वखानई ॥ (925-8)
देखि चलित मनि भए दिलासा ॥ (390-8)
देखि तुम्हारा दरसनो मेरा मनु धीरे ॥१॥ रहाउ ॥ (398-13)
देखि दमोदर रहसु मनि उपजिओ नानक प्रिअ अम्रित बानी ॥२॥१॥ (1119-6)
देखि दरसनु मनु साधारै पाप सगले जाहि ॥ (51-5)
देखि दरसु मनि भइआ विगासा ॥ (176-9)

देखि देखि जीवा साध गुर दरसनु जिसु हिरदै नामु मुरारी ॥१॥ रहाउ ॥ (528-4)
देखि निवारिआ जल महि आगी ॥ (1343-2)
देखि पिरु विगसी अंदरहु सरसी सचै सबदि सुभाए ॥ (439-18)
देखि बिसमादु इहु मनु नही चेते आवा गउणु संसारा ॥ (1234-17)
देखि बीचारि मेरा मनु मानिआ ॥६॥ (221-18)
देखि बैसनो प्रान मुख भागा ॥१॥ (1351-12)
देखि रतनु इहु मनु लपटानी ॥१॥ (372-1)
देखि रूपु अति अनूपु मोह महा मग भई किंकनी सबद झनतकार खेलु पाहि जीउ ॥ (1402-13)
देखि सरूपु पूरनु भई आसा दरसनु भेटत उतरी भुख ॥१॥ (717-18)
देखिआ तिहूं लोक का पीउ ॥ (344-4)
देखिओ अचरजु महा मंगल रूप किछु आन नही दिसटावै ॥ (978-11)
देखिओ द्रिसटि सरब मंगल रूप उलटी संत कराए ॥ (1205-1)
देखु फरीदा जि थीआ सकर होई विसु ॥ (1378-8)
देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर ॥ (1378-7)
देखु फूल फूल फूले ॥ (1185-4)
देखु बेढी रहिओ समाई ॥ (657-6)
देखु री बीचार ॥ (1229-10)
देखे नाना रूप बहु रंगा अन नाही तुम भांते ॥ (1209-11)
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥१॥ रहाउ ॥ (487-5)
देखै बूझै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥२४॥ (433-17)
देखै सुणे न जाणई माइआ मोहिआ अंधु जीउ ॥ (760-12)
देखै सुणै हदूरि सद घटि घटि ब्रहमु रविंदु ॥ (47-6)
देखौ भाई ग्यान की आई आंधी ॥ (331-17)
देत दरसनु स्रवन हरि जसु रसन नाम उचार ॥ (508-12)
देदा दे लैदे थकि पाहि ॥ (2-2)
देदा रहै न चूकै भोगु ॥ (9-18)
देदे तोटि न आवई लै लै थकि पाई ॥५॥ (1012-10)
देदे तोटि न आवै साचे ॥ (1024-14)
देदे तोटि नही भंडार ॥ (1144-18)
देदे तोटि नाही प्रभ रंगा ॥ (99-2)
देनहार दे रहिओ सुजाना ॥ (258-18)
देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइ ॥ (268-5)
देन्हि दुआई से मरहि जिन कउ देनि सि जाहि ॥ (1286-6)
देर जिठाणी मुई दूखि संतापि ॥ (370-12)
देव करहु दइआ मोहि मारगि लावहु जितु भै बंधन तूटै ॥ (475-15)
देव कुल दैत कुल जख्य किंनर नर सागर उतरे पारे ॥ (1269-3)
देव कुली लखिमी कउ करहि जैकारु ॥ (1154-19)

देव दानव अगणत अपारा ॥ (1037-5)
देव दानव गण गंधरब साजे सभि लिखिआ करम कमाइदा ॥१२॥ (1038-5)
देव पुरी महि गयउ आपि परमेस्वर भायउ ॥ (1409-16)
देव संसै गांठि न छूटै ॥ (974-1)
देव सथानै किआ नीसाणी ॥ (974-8)
देवगंधारी ॥ (527-11)
देवगंधारी ॥ (527-15)
देवगंधारी ॥ (527-7)
देवगंधारी ॥ (528-16)
देवगंधारी ॥ (528-3)
देवगंधारी ॥ (528-7)
देवगंधारी ॥ (529-1)
देवगंधारी ॥ (529-11)
देवगंधारी ॥ (529-15)
देवगंधारी ॥ (529-4)
देवगंधारी ॥ (529-8)
देवगंधारी ५ ॥ (530-13)
देवगंधारी ५ ॥ (530-16)
देवगंधारी ५ ॥ (530-2)
देवगंधारी ५ ॥ (530-6)
देवगंधारी ५ ॥ (530-9)
देवगंधारी ५ ॥ (531-1)
देवगंधारी ५ ॥ (531-15)
देवगंधारी ५ ॥ (531-5)
देवगंधारी ५ ॥ (531-8)
देवगंधारी ५ ॥ (533-17)
देवगंधारी ५ ॥ (534-3)
देवगंधारी ५ ॥ (535-9)
देवगंधारी महला ५ ॥ (529-18)
देवगंधारी महला ५ ॥ (531-12)
देवगंधारी महला ५ ॥ (531-19)
देवगंधारी महला ५ ॥ (532-11)
देवगंधारी महला ५ ॥ (532-15)
देवगंधारी महला ५ ॥ (532-4)
देवगंधारी महला ५ ॥ (532-8)
देवगंधारी महला ५ ॥ (533-2)
देवगंधारी महला ५ ॥ (533-5)

देवगंधारी महला ५ ॥ (533-9)
देवगंधारी महला ५ ॥ (534-6)
देवगंधारी महला ५ ॥ (535-1)
देवगंधारी महला ५ ॥ (535-12)
देवगंधारी महला ५ ॥ (535-15)
देवगंधारी महला ५ घरु २ (528-12)
देवगंधारी महला ९ ॥ (536-11)
देवगंधारी महला ९ ॥ (536-15)
देवण वाला सभ बिधि जाणै गुरमुखि पाईऐ नामु निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ (423-10)
देवण वाले कै हथि दाति है गुरू दुआरै पाइ ॥ (33-4)
देवणहारु दातारु कितु मुखि सालाहीऐ ॥ (957-13)
देवणहारु दातारु मै नित चितारिआ ॥ (320-3)
देवणहारे कउ जैकारु ॥३॥ (1129-5)
देवणहारे कउ जैकारु ॥५॥ (841-12)
देवणहारे कै हथि दानु ॥ (25-12)
देवतिआ दरसन कै ताई दूख भूख तीरथ कीए ॥ (358-13)
देवन कउ एकै भगवानु ॥ (281-3)
देवनहार दातार ॥ (895-12)
देवनहार दातार प्रभ निमख न मनहि बसाइ ॥ (261-4)
देवनहारा बिसरिओ ठाकुरु खिन महि होत पराए ॥२॥ (212-19)
देवनहारु बिसारिओ अंधुले जिउ सफरी उदरु भरै बहि हाटुली ॥१॥ (1216-8)
देवनहारु मनहि बिसराना ॥ (251-10)
देवर जेठ मुए दुखि ससू का डरु किसु ॥ (642-13)
देवल देवतिआ करु लागा ऐसी कीरति चाली ॥५॥ (1191-3)
देवल देवल धाहड़ी देसहि उगवत सूर ॥१२६॥ (1371-5)
देवल मधे लीगु आछै लीगु सीगु हीगु गो ॥२॥ (718-17)
देवा पाहन तारीअले ॥ (345-3)
देवी देव उपाए वेसा ॥ (839-6)
देवी देवा पूजहि डोलहि पारब्रहमु नही जाना ॥ (332-14)
देवी देवा पूजीऐ भाई किआ मागउ किआ देहि ॥ (637-5)
देवी देवा मूलु है माइआ ॥ (129-8)
देवीआ नही जानै मरम ॥ (894-6)
देवै सचु दानो सो परवानो सद दाता वड दाणा ॥ (1112-13)
देसंतरु भवै दूजै भाइ खुआए ॥ (123-17)
देस दिसंतर भवि थके तुधु अंदरि आपु लुकाइआ ॥ (1290-11)
देस दिसंतर मै सगले झागे ॥ (737-19)
देस मेरे बेअंत अपूछे ॥ (1141-11)

देस वेस सुवरन रूपा सगल ऊणे कामा ॥ (547-18)
देसि परदेसि धनु चोराइ आणि मुहि पाइआ ॥ (1249-19)
देसी रिजकु स्मबाहि जिनि उपाई मेदनी ॥ (755-11)
देसु कमावन धन जोरन की मनसा बीचे निकसे सास ॥ (496-11)
देसु छोडि परदेसहि धाइआ ॥ (1348-6)
देह अंधारी अंध सुंञी नाम विहूणीआ ॥ (577-16)
देह अंधारी अंधु सुंञी नाम विहूणीआ ॥ (1099-18)
देह कंचन जीनु सुविना राम ॥ (576-3)
देह कंचन वे वंनीआ इनि हउमै मारि विगुतीआ ॥ (776-15)
देह गेहु त्रिअ सनेहु चित बिलासु जगत एहु चरन कमल सदा सेउ द्रिड़ता करु मति जीउ ॥ (1403-10)
देह घोड़ी जी जितु हरि पाइआ राम ॥ (576-10)
देह छिजंदड़ी ऊण मझूणा गुरि सजणि जीउ धराइआ ॥ (964-11)
देह तेजणि जी रामि उपाईआ राम ॥ (575-6)
देह तेजनड़ी हरि नव रंगीआ राम ॥ (575-19)
देह न गेह न नेह न नीता माइआ मत कहा लउ गारहु ॥ (1388-1)
देह न नाउ न होवै जाति ॥ (1257-3)
देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ (917-14)
देह पावउ जीनु बुझि चंगा राम ॥ (575-9)
देह मसीति मनु मउलाणा कलम खुदाई पाकु खरा ॥२॥ (1083-15)
देह संजोगी करम अभिआसा ॥ (1038-8)
देह सरीरि सुखु होवै सबदि हरि नाइ ॥ (560-6)
देहधार अरु देवा डरपहि सिध साधिक डरि मुइआ ॥ (998-19)
देहि अभै पदु मांगउ दान ॥८॥२॥१८॥२०॥ (1163-9)
देहि त जापी आदि मंतु ॥१॥ (1176-4)
देहि दानु नानकु जनु मागै सदा सदा हरि धिआई जीउ ॥४॥३८॥४५॥ (107-16)
देहि दानु संतोखीआ सचा नामु मिलै आधारु ॥१९॥ (1286-19)
देहि दानु सभसै जंत लोऐ ॥ (1074-5)
देहि देहि आखै सभु कोई जै भावै तै देइ ॥ (933-16)
देहि नामु अपना जपउ सुआमी हरि दरस पेखे जीजीऐ ॥ (545-15)
देहि नामु करि अपणे चेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (742-2)
देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख ॥ (958-1)
देहि बिमल मति सदा सरीरा ॥ (478-17)
देहि भगति पूरन अविनासी हउ तुझ कउ बलिहारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (878-3)
देहि लेहि एकु तूं दिगर को नही ॥२॥ (727-14)
देही अंदरि नामु निवासी ॥ (1026-9)
देही अंदरि वसतु अपारा ॥ (1056-16)
देही काची कागद मिकदारा ॥ (1048-7)

देही काची पउणु वजाए गुरमुखि अम्रितु पाई ॥३॥ (1260-14)
देही किस की बापुरी पवित्रु होइगो ग्रामु ॥११०॥ (1370-7)
देही गावा जीउ धर महतउ बसहि पंच किरसाना ॥ (1104-8)
देही गुपत बिदेही दीसै ॥ (900-4)
देही जाति न आगै जाए ॥ (112-1)
देही धोइ न उतरै मैलु ॥ (893-8)
देही धोवै चक्र बणाए माइआ नो बहु धावै ॥ (960-5)
देही नगरि कोटि पंच चोर वटवारे तिन का थाउ थेहु गवाइआ ॥ (1117-4)
देही नगरि तसकर पंच धातू गुर सबदी हरि काढे मारि ॥१॥ रहाउ ॥ (1135-1)
देही नगरी ऊतम थाना ॥ (1039-16)
देही नगरी नउ दरवाजे ॥ (1039-17)
देही नगरी नउ दरवाजे सो दसवा गुपतु रहाता हे ॥४॥ (1031-10)
देही नो सबदु सीगारु है जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ (1092-10)
देही भसम रुलाइ न जापी कह गइआ ॥ (753-1)
देही महजिदि मनु मउलाना सहज निवाज गुजारै ॥ (1167-16)
देही महि इस का बिस्रामु ॥ (293-17)
देही महि जो रहै अलिपता तिसु जन की पूरन घालीऐ ॥२॥ (1019-9)
देही माटी बोलै पउणु ॥ (152-4)
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥७८॥ (1382-1)
देही होवगि खाकु पवणु उडाईऐ ॥ (752-10)
देहु दरसु जितु मनु त्रिपतासै हरि कीरतनि मनु ठहराइदा ॥९॥ (1076-5)
देहु दरसु नानक बलिहारी जीअड़ा बलि बलि कीना ॥१॥ (1117-10)
देहु दरसु नैन पेखउ जन नानक नाम मिसट लागे ॥२॥२॥१३१॥ (1229-18)
देहु दरसु मनि चाउ भगति इहु मनु ठहरावै ॥ (1387-1)
देहु दरसु मनि चाउ लहि जाहि विसूरीऐ ॥ (708-19)
देहु दरसु सुखदातिआ मै गल विचि लैहु मिलाइ जीउ ॥१५॥ (74-6)
देहु प्रीति साधू संगि सुआमी हरि गुन रसन बखान ॥१॥ (1119-15)
देहु भगति प्रभ अंतरजामी ॥ (804-10)
देहु संदेसरो कहीअउ प्रिअ कहीअउ ॥ (700-9)
देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥ (12-14)
देहु सजण आसीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥ (157-12)
देहु सदेसा प्रभ जीउ कैसा कह मोहन परवेसा ॥ (1237-3)
देहु सुमति सदा गुण गावा मेरे ठाकुर अगम अपार ॥१॥ रहाउ ॥ (379-11)
देहुरी बैठी माता रोवै खटीआ ले गए भाई ॥ (478-3)
देहुरी लउ बरी नारि संगि भई आगै सजन सुहेला ॥ (654-13)
देहुरै पाछै बैठा जाइ ॥२॥ (1164-11)
दैत पुतु करम धरम किछु संजम न पड़ै दूजा भाउ न जाणै ॥ (67-14)

दैत पुत्रु प्रहलादु गाइत्री तरपणु किछू न जाणै सबदे मेलि मिलाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1133-12)
दैत संघारि संत निसतारे ॥७॥ (224-19)
दैत संघारे बिनु भगति अभिआसा ॥६॥ (224-18)
दैता मारे धाइ हुकमि सबाइआ ॥ (1279-18)
दैनहारु सद जीवनहारा ॥ (257-11)
दोख हमारे बखसिअनु अपणी कल धारी ॥ (820-2)
दोखी अपणा कीता पाइआ ॥३॥ (1138-13)
दोजकि पउदा किउ रहै जा चिति न होइ रसूलि ॥२॥ (319-19)
दोजकि पाए सिरजणहारै लेखा मंगै बाणीआ ॥२॥ (1020-1)
दोजकु भिसतु नही खै काला ॥ (1035-12)
दोति उचापति लेखु न लिखीऐ प्रगटी जोति मुरारी ॥ (1112-14)
दोम न सेम एक सो आही ॥ (345-14)
दोलक दुनीआ वाजहि वाज ॥ (349-17)
दोवर कोट अरु तेवर खाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1161-14)
दोवै तरफा उपाइ इकु वरतिआ ॥ (1280-10)
दोवै तरफा उपाईओनु विचि सकति सिव वासा ॥ (1090-1)
दोवै थाव रखे गुर सूरे ॥ (825-17)
दोवै मारि जाइ इकतु घरि आवै गुरमति सहजि समावणिआ ॥४॥ (126-8)
दोवै सिरे सतिगुरू निबेड़े सो बूझै जिसु एक लिव लागी जीअहु रहै निभराती ॥ (992-17)
दोसु देत आगह कउ अंधा ॥ (258-11)
दोसु न काहू दीजीऐ प्रभु अपना धिआईऐ ॥ (809-7)
दोसु न दीजै काहू लोग ॥ (888-10)
दोसु न देअहु राइ नो मति चलै जां बुढा होवै ॥ (1412-17)
दोसु नही काहू कउ मीता ॥ (257-11)
दोसु नाही प्रभ करणैहारे ॥३॥ (389-11)
दोहरा ॥ (1429-5)
दोहागणी का मन देखु सीगारु ॥ (363-7)
दोहागणी किआ नीसाणीआ ॥ (72-4)
दोहागणी खरीआ बिललादीआ तिना महलु न पाइ ॥ (559-9)
दोहागणी पिर की सार न जाणही किआ करि करहि सीगारु ॥ (430-7)
दोहागणी भरमि भुलाईआ कूड़ु बोलि बिखु खाहि ॥ (428-4)
दोहागणी महलु न पाइन्ही न जाणनि पिर का सुआउ ॥ (426-10)
दोही दिचै दुरजना मित्रां कूं जैकारु ॥ (1410-6)
द्रिड़ंत नामं तजंत लोभं ॥ (1354-16)
द्रिड़ंत सुबिदिआ हरि हरि क्रिपाला ॥ (1355-5)
द्रिड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥ (288-4)
द्रिड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥ (267-18)

द्रिड़ु नाम दानु इसनानु सुचारी ॥३॥ (740-18)
द्रिड़ु भगति सची जीउ राम नामु वापारा ॥ (246-5)
द्रिड़ु संत मंत गिआनि हां ॥ (409-13)
द्रिड़िहओ गिआनु मंत्रु हरि नामा प्रभ जीउ मइआ करा ॥१॥ रहाउ ॥ (701-6)
द्रिसटंत एको सुनीअंत एको वरतंत एको नरहरह ॥ (710-9)
द्रिसट तुयं अमोघ दरसनं बसंत साध रसना ॥ (1354-12)
द्रिसटउ कछु संगि न जाइ मानु तिआगि मोहा ॥ (1230-12)
द्रिसटि आवै सभु एकंकारु ॥२॥ (189-2)
द्रिसटि तेरी सुखु पाईऐ मन माहि निधाना ॥ (400-1)
द्रिसटि देखु जैसे हरिचंदउरी इकु राम भजनु लै लाहा ॥१॥ रहाउ ॥ (402-1)
द्रिसटि धरत तम हरन दहन अघ पाप प्रनासन ॥ (1391-16)
द्रिसटि धारि अपना दासु सवारिआ ॥ (108-2)
द्रिसटि धारि प्रभि राखिआ मनु तनु रता मूलि ॥ (519-10)
द्रिसटि धारि मनि तनि वसै दइआल पुरखु मिहरवानु ॥ (49-3)
द्रिसटि धारि मनु बेधिआ पिआरे रतड़े सहजि सुभाए ॥ (803-6)
द्रिसटि धारि राखे सभि जंत ॥ (1271-5)
द्रिसटि धारि लीनो लड़ि लाइ ॥ (742-19)
द्रिसटि धारी मनि पिआरी महा दुरमति नासी ॥ (846-16)
द्रिसटि न आवहि अंध अगिआनी सोइ रहिओ मद मावत हे ॥३॥ (822-1)
द्रिसटि न लिआवउ अवर काहू कउ माणि महति प्रभ तेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (1214-6)
द्रिसटि नाही रे पेखत अंधे ॥ (738-19)
द्रिसटि प्रभ धारहु क्रिपा करि तारहु भुजा गहि कूप ते काढि लेवहु ॥ रहाउ ॥ (683-9)
द्रिसटि भई तब भीतरि आइओ मेरा मनु अनदिनु सीतलागिओ ॥ (1204-3)
द्रिसटि भई सुखु आतम धारा ॥४॥ (221-6)
द्रिसटि रोगि पचि मुए पतंगा ॥ (1140-17)
द्रिसटिमान अखर है जेता ॥ (261-14)
द्रिसटिमान सभु बिनसीऐ किआ लगहि गवार ॥२॥ (808-6)
द्रिसटिमान है सगल बिनासी इकि साध बचन आगाधा ॥३॥ (1204-9)
द्रिसटिमान है सगल मिथेना ॥ (1083-8)
द्रुम की छाइआ निहचल ग्रिहु बांधिआ ॥ (390-11)
द्रुम सपूर जिउ निवै खवै कसु बिमल बीचारह ॥ (1392-2)
द्रुलभ देह कलिजुग महि पाइआ ॥ (258-6)
द्रुलभ देह का करहु उधारु ॥ (293-2)
द्रोपती लजा निवारि उधारण ॥ (1082-12)
द्वारिका नगरी काहे के मगोल ॥२॥ (727-18)
द्वारिका नगरी रासि बुगोई ॥१॥ (727-17)
धंध बंध बिनसे माइआ के साधू संगति मिटे बिसूर ॥ (716-15)

धंधड़े कुलाह चिति न आवै हेकड़ो ॥ (323-1)
धंधा करत बिहानी अउधहि गुण निधि नामु न गाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (501-1)
धंधा करत सगली पति खोवसि भरमु न मिटसि गवारा ॥ (1127-7)
धंधा करता रहि गइआ भाई रहिआ न बंधु ॥१०६॥ (1370-3)
धंधा करतिआ अनदिनु विहाना ॥१॥ (159-11)
धंधा करतिआ जनमु गइआ अंदरि दुखु सहामु ॥ (1248-5)
धंधा करतिआ निहफलु जनमु गवाइआ सुखदाता मनि न वसाइआ ॥ (644-1)
धंधा छुटकि गइआ वेकारु ॥ (1344-11)
धंधा थका हउ मुई ममता माइआ क्रोधु ॥ (19-11)
धंधा धावत दिनु गइआ रैणि गवाई सोइ ॥ (948-3)
धंधा धावत रहि गए मन महि सबदु अनंदु ॥ (934-17)
धंधा धावत रहि गए लागा साचि पिआरु ॥ (34-10)
धंधा पिटिहु भाईहो तुम्ह कूड़ु कमावहु ॥ (418-10)
धंधा माइआ मोहणी अंतरि तिसना अगि ॥ (1413-8)
धंधा मुआ विगूती माइआ ॥ (936-4)
धंधा रोवै मैलु न धोवै सुपनंतरु संसारो ॥ (581-15)
धंधा सभु जलाइ कै गुरि नामु दीआ सचु सुआउ ॥ (43-15)
धंधु पिटे संसारु सचु न भाइआ ॥१॥ (419-15)
धंधु बंधु अरु सगल जंजारो अवर काज ते छूटि परी ॥१॥ रहाउ ॥ (822-18)
धंधे कहा बिआपहि ताहू ॥ (251-2)
धंधे ही महि मरि गइओ बाहरि भई न ब्मब ॥२२६॥ (1376-15)
धंधै कूड़ि विआपिआ जम पुरि चोटा खाइ ॥३॥ (994-9)
धंधै धावत जगु बाधिआ ना बूझै वीचारु ॥ (1010-1)
धंधै धावत मनु भइआ मनूरा ॥ (1047-6)
धंधै धावतु जनमु गवाइआ बिनु नावै दुखु पाइआ ॥६॥ (1067-9)
धंना ॥ (695-16)
धंना जटु बालमीकु बटवारा गुरमुखि पारि पइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (995-13)
धंनि जनमु ताही को गणै ॥ (341-9)
धंनि ते वै मुनि जन जिन धिआइओ हरि प्रभु मेरा ॥१॥ (694-2)
धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥ (283-5)
धंनि धंनि गुरु धंनि अभर सर सुभर भरायउ ॥ (1408-2)
धंनि धंनि गुरु धंनि जनमु सकयथु भलौ जगि ॥ (1390-5)
धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥ (269-6)
धंनि धंनि ते धंनि जन जिह क्रिपालु हरि हरि भयउ ॥ (1386-8)
धंनि धंनि मेरे नाराइणा ॥३॥ (1137-6)
धंनि धंनि संजोगु सभागा ॥ (898-10)
धंनि धंनि हरि साध जन सखीए नानक जिनी नामु धिआइआ ॥२॥ (803-3)

धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुट्मब सभ लोइ ॥ (858-9)
धंनि सु थानु धंनि ओइ भवना जा महि संत बसारे ॥ (681-1)
धंनि सु रिदा जिह चरन बसाइआ ॥ (1237-6)
धंनि सुभाग धंनि सोहागा धंनि देत जिनि मानां ॥ (1213-10)
धंनि सुहागनि जो पीअ भावै ॥ (483-11)
धंनु अनादि ठाकुर मनु मानिआ ॥४॥८॥११॥ (873-6)
धंनु अनादि भूखे कवलु टहकेव ॥ (873-1)
धंनु इहु थानु गोविंद गुण गाए ॥ (197-14)
धंनु गिरही उदासी गुरमुखि गुरमुखि कीमति पाए जीउ ॥५॥ (131-9)
धंनु गुपाल धंनु गुरदेव ॥ (873-1)
धंनु गुरदेव अति रूप बिचखन ॥४॥७॥१०॥ (872-19)
धंनु धंनु गुरदेव जिसु संगि हरि जपे ॥ (710-6)
धंनु धंनु गुरू गुरु सतिगुरु पाधा जिनि हरि उपदेसु दे कीए सिआणे ॥१॥ रहाउ ॥ (168-3)
धंनु धंनु गुरू नानक जन केरा जितु मिलिऐ चूके सभि सोग संतापे ॥४॥५॥११॥४९॥ (167-11)
धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥ (294-19)
धंनु धंनु रामदास गुरु जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ ॥ (968-9)
धंनु धंनु वडभागी नानका जिना सतिगुरु लए मिलाइ ॥४॥३॥६७॥ (40-19)
धंनु धंनु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि नानक नामु परगासि ॥४॥१॥ (492-14)
धंनु धंनु साबासि कहै प्रभु जन कउ जन नानक मेलि लए गलि लाई ॥४॥४॥ (493-16)
धंनु धंनु से जन जिन हरि सेविआ तिन हउ कुरबाणे ॥४॥ (1088-6)
धंनु धंनु से साह है जि नामि करहि वापारु ॥ (313-4)
धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि सतिगुर सेवा करि हरि नामु लइआ ॥ (593-15)
धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि हरि नामा मुखि रामु कहिआ ॥ (593-14)
धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिसु हरि नामि सुणिऐ मनि अनदु भइआ ॥ (593-14)
धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जो सतिगुर चरणी जाइ पइआ ॥ (593-13)
धंनु धनु भाग तिना भगत जना जो हरि नामा हरि मुखि कहतिआ ॥ (649-12)
धंनु धनु सेवा सफल सतिगुरू की जितु हरि हरि नामु जपि हरि सुखु पाइआ ॥२॥ (166-17)
धंनु माणस जनमु पुंनि पाईआ राम ॥ (575-6)
धंनु मूरत चसे पल घड़ीआ धंनि सु ओइ संजोगा जीउ ॥१॥ (99-10)
धंनु वडभागी वड भागीआ जो आइ मिले गुर पासि ॥२॥ (40-7)
धंनु वापारी नानका जिसु गुरमुखि नामु अधारु ॥१॥ (650-14)
धंनु सती दरगह परवानिआ ॥४॥३०॥९९॥ (185-18)
धंनु साह पूरे बखसिंद ॥ (372-5)
धंनु सि सेई नानका पूरनु सोई संतु ॥१॥ (319-18)
धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ॥ (578-19)
धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ॥१॥ (579-2)
धंनु सु कलिजुगु साधसंगि कीरतनु गाईऐ नानक नामु अधारु हीओ ॥४॥८॥४७॥ (382-19)

धंनु सु कागदु कलम धंनु धनु भांडा धनु मसु ॥ (1291-13)
धंनु सु ग्रिहु जितु प्रगटी आइ ॥ (371-4)
धंनु सु जंत सुहावड़े जो गुरमुखि जपदे नाउ ॥ (958-6)
धंनु सु तेरा थानु ॥१॥ रहाउ ॥ (50-17)
धंनु सु तेरा थानु जिथै तू वुठा ॥ (965-19)
धंनु सु तेरा थानु है सचु तेरा पैसकारिआ ॥ (968-12)
धंनु सु तेरे भगत जिन्ही सचु तूं डिठा ॥ (966-1)
धंनु सु थानु बसंत धंनु जह जपीऐ नामु ॥ (816-1)
धंनु सु दिनसु संजोगड़ा जितु डिठा गुर दरसारु ॥ (958-10)
धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥२॥ (96-18)
धंनु सु माणस देही पाई जितु प्रभि अपनै मेलि लीओ ॥ (382-19)
धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥ (471-3)
धंनु सु राग सुरंगड़े आलापत सभ तिख जाइ ॥ (958-6)
धंनु सु वंसु धंनु सु पिता धंनु सु माता जिनि जन जणे ॥ (1135-17)
धंनु सु वेला घड़ी धंनु धनु मूरतु पलु सारु ॥ (958-10)
धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ ॥ (99-10)
धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥ (441-13)
धंनु सु वेला जितु हरि गावत सुनणा आए ते परवाना जीउ ॥१॥ (103-2)
धंनु सुहावा मुखु जिनि हरि धिआइआ ॥३॥ (399-6)
धंनु सेवकु सफलु ओहु आइआ जिनि नानक खसमु पछाता ॥४॥५॥ (1000-6)
धंनु सेवा सेवकु परवानु ॥ (293-12)
धंनै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ ॥४॥१॥ (487-15)
धंनै सेविआ बाल बुधि ॥ (1192-8)
धणखु चड़ाइओ सत दा जस हंदा बाणु ॥ (968-3)
धणी विहूणा पाट पट्मबर भाही सेती जाले ॥ (1425-3)
धधा अरधहि उरध निबेरा ॥ (341-13)
धधा धावत तउ मिटै संतसंगि होइ बासु ॥ (257-14)
धधा धूरि पुनीत तेरे जनूआ ॥ (251-1)
धधै धरमु धरे धरमा पुरि गुणकारी मनु धीरा ॥ (930-5)
धधै धारि कला जिनि छोडी हरि चीजी जिनि रंग कीआ ॥ (433-14)
धधै धावत वरजि रखु मूड़े अंतरि तेरै निधानु पइआ ॥ (435-11)
धधै धूलि पड़ै मुखि मसतकि कंचन भए मनूरा ॥ (930-5)
धनंजै जलि थलि है महीऐ ॥ (1082-19)
धन अंधी पिरु चपलु सिआना ॥ (1073-1)
धन एकलड़ी जीउ बिनु नाह पिआरे ॥ (244-2)
धन कछू न समझै चंचलि काचे ॥ (1073-5)
धन करै बिनउ दोऊ कर जोरै ॥ (1072-16)

धन कहै तू वसु मै नाले ॥ (1073-2)
धन कूकेंदी गोर में तै सह ना मिलीआसु ॥५४॥ (1380-16)
धन जागै जे पिरु बोलंता ॥२॥ (737-19)
धन जोबन का गरबु न कीजै कागद जिउ गलि जाहिगा ॥१॥ (1106-7)
धन थीई दुबलि कंत हावै केव नैणी देखए ॥ (242-8)
धन देखै हरि दुआरि आवहु दइआ करे ॥ (1108-4)
धन नाह बाझहु रहि न साकै बिखम रैणि घणेरीआ ॥ (243-2)
धन पाती वड भूमीआ मेरी मेरी करि परिआ ॥२॥ (42-17)
धन पिर एकै संगि बसेरा ॥ (483-10)
धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमै भीति करारी ॥ (1263-4)
धन पिर नेहु घणा रसि प्रीति दइआला राम ॥ (435-19)
धन पिर मेलावा होआ गुरमती मनु मानिआ ॥ (770-2)
धन पिर मेलु भइआ प्रभि आपि मिलाइआ राम ॥ (439-13)
धन पिरहि मेला होइ सुआमी आपि प्रभु किरपा करे ॥ (436-1)
धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥ (788-11)
धन बाली भोली पिरु सहजि रावै मिलिआ करम बिधाता ॥ (568-2)
धन बिगसै ग्रिहि आवत कंत ॥ (914-13)
धन बिनउ करेदी गुण सारेदी गुण सारी प्रभ भावा ॥ (1108-7)
धन भाइ भगती देखि प्रीतम काम क्रोधु निवारिआ ॥ (843-8)
धन भूमि का जो करै गुमानु ॥ (278-8)
धन मागै प्रिउ बहु बिधि धावै ॥ (1072-15)
धन रैणि सुहेलड़ीए जीउ हरि सिउ चितु लाए ॥ (243-18)
धन वांढी पिरु देस निवासी सचे गुर पहि सबदु पठाईं ॥ (1273-10)
धन सभ सुख पावै जां पिरु घरि आवै ॥२॥ (737-12)
धन साचि संगूती हरि संगि सूती संगि सखी सहेलीआ ॥ (843-12)
धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु गवाइआ ॥ (75-6)
धन सूती पिरु सद जागंता ॥ (737-18)
धन सोहागणि नारि जिनि पिरु जाणिआ जीउ ॥ (689-16)
धन हरि प्रभि पिआरै रावीआ जां हरि प्रभ भाई राम ॥ (845-8)
धनवंत नाम के वणजारे ॥ (1219-19)
धनवंता अरु निरधन मनई ता की कछू न कानी रे ॥ (855-9)
धनवंता इव ही कहै अवरी धन कउ जाउ ॥ (1244-16)
धनवंता होइ करि गरबावै ॥ (278-10)
धनवंता होइ किआ को गरबै ॥ (282-13)
धनवंते सेई परधान ॥ (1144-8)
धनाढि आढि भंडार हरि निधि होत जिना न चीर ॥ (508-10)
धनासरी ए पाचउ गाई ॥ (1430-5)

धनासरी छंत महला १ ॥ (689-3)
धनासरी छंत महला ४ घरु १ (690-1)
धनासरी धनवंती जाणीऐ भाई जां सतिगुर की कार कमाइ ॥ (1419-5)
धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की (692-17)
धनासरी बाणी भगतां की त्रिलोचन (695-1)
धनासरी भगत रविदास जी की (694-6)
धनासरी मः ५ ॥ (671-10)
धनासरी मः ५ ॥ (671-4)
धनासरी मः ५ ॥ (672-8)
धनासरी मः ५ ॥ (677-1)
धनासरी मः ५ ॥ (683-4)
धनासरी महला १ ॥ (660-11)
धनासरी महला १ ॥ (661-10)
धनासरी महला १ ॥ (661-17)
धनासरी महला १ ॥ (662-10)
धनासरी महला १ ॥ (662-4)
धनासरी महला १ ॥ (686-4)
धनासरी महला १ ॥ (688-6)
धनासरी महला १ आरती (663-4)
धनासरी महला १ घरु १ चउपदे (660-1)
धनासरी महला १ घरु २ असटपदीआ (685-11)
धनासरी महला १ घरु ३ (662-17)
धनासरी महला १ घरु दूजा (661-3)
धनासरी महला १ छंत (687-13)
धनासरी महला ३ ॥ (664-1)
धनासरी महला ३ ॥ (664-8)
धनासरी महला ३ ॥ (665-1)
धनासरी महला ३ ॥ (665-14)
धनासरी महला ३ ॥ (665-8)
धनासरी महला ३ ॥ (666-1)
धनासरी महला ३ घरु २ चउपदे (663-12)
धनासरी महला ३ तीजा ॥ (664-14)
धनासरी महला ४ ॥ (667-14)
धनासरी महला ४ ॥ (667-2)
धनासरी महला ४ ॥ (667-8)
धनासरी महला ४ ॥ (668-1)
धनासरी महला ४ ॥ (668-19)

धनासरी महला ४ ॥ (668-7)
धनासरी महला ४ ॥ (669-14)
धनासरी महला ४ ॥ (669-18)
धनासरी महला ४ ॥ (669-5)
धनासरी महला ४ ॥ (669-9)
धनासरी महला ४ ॥ (670-4)
धनासरी महला ४ घरु १ चउपदे (666-14)
धनासरी महला ४ घरु ५ दुपदे (668-15)
धनासरी महला ५ (677-8)
धनासरी महला ५ ॥ (670-17)
धनासरी महला ५ ॥ (671-16)
धनासरी महला ५ ॥ (672-14)
धनासरी महला ५ ॥ (672-3)
धनासरी महला ५ ॥ (673-1)
धनासरी महला ५ ॥ (673-12)
धनासरी महला ५ ॥ (673-19)
धनासरी महला ५ ॥ (673-6)
धनासरी महला ५ ॥ (674-14)
धनासरी महला ५ ॥ (674-5)
धनासरी महला ५ ॥ (674-9)
धनासरी महला ५ ॥ (675-14)
धनासरी महला ५ ॥ (675-2)
धनासरी महला ५ ॥ (676-1)
धनासरी महला ५ ॥ (676-13)
धनासरी महला ५ ॥ (677-12)
धनासरी महला ५ ॥ (677-15)
धनासरी महला ५ ॥ (678-1)
धनासरी महला ५ ॥ (678-14)
धनासरी महला ५ ॥ (679-13)
धनासरी महला ५ ॥ (679-16)
धनासरी महला ५ ॥ (679-9)
धनासरी महला ५ ॥ (680-10)
धनासरी महला ५ ॥ (680-13)
धनासरी महला ५ ॥ (680-17)
धनासरी महला ५ ॥ (680-3)
धनासरी महला ५ ॥ (680-7)
धनासरी महला ५ ॥ (681-13)

धनासरी महला ५ ॥ (681-16)
धनासरी महला ५ ॥ (681-2)
धनासरी महला ५ ॥ (681-5)
धनासरी महला ५ ॥ (681-9)
धनासरी महला ५ ॥ (682-1)
धनासरी महला ५ ॥ (682-12)
धनासरी महला ५ ॥ (682-15)
धनासरी महला ५ ॥ (682-19)
धनासरी महला ५ ॥ (682-4)
धनासरी महला ५ ॥ (682-8)
धनासरी महला ५ ॥ (683-13)
धनासरी महला ५ ॥ (684-10)
धनासरी महला ५ ॥ (684-3)
धनासरी महला ५ ॥ (684-7)
धनासरी महला ५ घरु १ चउपदे (670-11)
धनासरी महला ५ घरु १२ (683-18)
धनासरी महला ५ घरु २ चउपदे (676-7)
धनासरी महला ५ घरु ६ (678-8)
धनासरी महला ५ घरु ६ असटपदी (686-16)
धनासरी महला ५ घरु ७ (679-1)
धनासरी महला ५ घरु ८ दुपदे (679-5)
धनासरी महला ५ घरु ९ पड़ताल (683-8)
धनासरी महला ५ छंत (691-1)
धनासरी महला ९ ॥ (684-14)
धनासरी महला ९ ॥ (684-17)
धनासरी महला ९ ॥ (685-3)
धनासरी महला ९ ॥ (685-6)
धनासिरी महला ५ ॥ (674-18)
धनासिरी महला ५ ॥ (675-6)
धनि उह प्रीति चरन संगि लागी ॥ (1301-9)
धनि गइऐ बहि झूरीऐ धन महि चीतु गवार ॥ (934-15)
धनि जोबनि जगु ठगिआ लबि लोभि अहंकारि ॥ (61-10)
धनि तेऊ जिह रुच इआ मनूआ ॥ (251-1)
धनि धंनि ओ राम बेनु बाजै ॥ (988-10)
धनि धंनि हमारे भाग घरि आइआ पिरु मेरा ॥ (847-14)
धनि धनि उआ दिन संजोग सभागा ॥ (254-15)
धनि धनि क्रिसन ओढै कांबली ॥१॥ (988-11)

धनि धनि तू माता देवकी ॥ (988-11)
धनि धनि बन खंड बिंद्राबना ॥ (988-12)
धनि धनि मेघा रोमावली ॥ (988-10)
धनि धनि सतिगुर अमरदासु जिनि नामु द्रिड़ायउ ॥ (1397-11)
धनि मसतक चरन कमल ही परस ॥ (201-19)
धनि सतिगुरु सेविओ जिसु पसाइ गति अगम जाणी ॥ (1393-19)
धनु ओइ भगत जिन तुम संगि हेत ॥१॥ (200-12)
धनु ओइ संत जिन ऐसी जानी ॥ (873-2)
धनु ओहु मसतकु धनु तेरे नेत ॥ (200-12)
धनु खटै आसा करै माइआ मोहु वधावै ॥ (166-9)
धनु गइआ ता जाण देहि जे राचहि रंगि एक ॥ (934-16)
धनु गिरही संनिआसी जोगी जि हरि चरणी चितु लाए ॥७॥ (1013-11)
धनु गुरमुखि सो परवाणु है जि कदे न आवै हारि ॥३॥ (28-19)
धनु चितवै धनु संचवै वणजारिआ मित्रा हरि नामा हरि न समालि ॥ (76-19)
धनु जग महि आइआ आपु गवाइआ दरि साचै सचिआरो ॥ (584-14)
धनु जननी जिनि जाइआ धंनु पिता परधानु ॥ (32-12)
धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ॥ (23-5)
धनु जोबनु आक की छाइआ बिरधि भए दिन पुंनिआ ॥ (689-6)
धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥ (417-7)
धनु जोबनु स्मपै सुख भोगवै संगि न निबहत मात ॥ (1120-11)
धनु दारा स्मपति ग्रेह ॥ (1187-1)
धनु दारा स्मपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥ (1426-14)
धनु धंनु गुरू गुण गावदा तिस नो सदा सदा नमसकारु ॥ (302-12)
धनु धंनु गुरू गुर सतिगुरु पूरा नानक मनि आस पुजाए ॥४॥ (562-1)
धनु धंनु गुरू गुरु सतिगुरु पूरा बिखु डुबदे बाह देइ कढिभा ॥१॥ (1337-2)
धनु धंनु गुरू जिनि नामु अराधिआ आपि तरिआ जिनी डिठा तिना लए छडाइ ॥ (310-7)
धनु धंनु गुरू नानकु समदरसी जिनि निंदा उसतति तरी तरांति ॥४॥५॥ (1264-13)
धनु धंनु गुरू पूरा प्रभु पाइआ लगि संगति नामु पछाणै ॥ (446-16)
धनु धंनु गुरू रामदास गुरु जिनि पारसु परसि मिलाइअउ ॥५॥ (1407-13)
धनु धंनु गुरू वड पुरखु है मै दसे हरि साबासे ॥ (776-6)
धनु धंनु गुरू साबासि है जिनि हउमै मारी राम ॥ (845-10)
धनु धंनु जनमु सचिआरीआ मुख उजल सचु करिजै ॥२०॥ (312-7)
धनु धंनु तिना का गुरू है जिसु अम्रित फल हरि लागे मुखा ॥६॥ (588-12)
धनु धंनु ते जन जिन हरि नामु जपिआ तिन देखे हउ भइआ सनाथु ॥ (1115-10)
धनु धंनु ते जन नानका जिन हरि नामा उरि धार ॥४॥१॥ (986-12)
धनु धंनु ते जन पुरख पूरे जिन गुर संतसंगति मिलि गुण रवे ॥ (1114-15)
धनु धंनु पिता धनु धंनु कुलु धनु धनु सु जननी जिनि गुरू जणिआ माइ ॥ (310-7)

धनु धंनु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे ॥ (449-17)
धनु धंनु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि जन नानक नामु परगासि ॥४॥४॥ (10-8)
धनु धंनु सु रसना धंनु कर धंनु सु पाधा सतिगुरू जितु मिलि हरि लेखा लिखा ॥८॥ (1316-8)
धनु धंनु सुहावा सो सरीरु थानु है जिथै मेरा गुरु धरे विखा ॥१९॥ (650-3)
धनु धनु कलजुगि नानका जि चले सतिगुर भाइ ॥१२॥ (1414-2)
धनु धनु कहा पुकारते माइआ मोह सभ कूर ॥ (250-18)
धनु धनु गुरु सत पुरखु है जिनि भगति हरि दीनी ॥ (163-11)
धनु धनु गुरू हरि दसिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि बिगासे राम ॥४॥१॥ (538-10)
धनु धनु ते सोहागणी अमाली जिन सहु रहिआ समाए ॥ (564-12)
धनु धनु पुरख साबासि है जिन सचु रसना अम्रितु पिजै ॥ (312-6)
धनु धनु भाग तिना गुरमुखा जो गुरसिख लै मनु जिणतिआ ॥ (649-14)
धनु धनु भाग तिना संत जना जो हरि जसु स्रवणी सुणतिआ ॥ (649-13)
धनु धनु भाग तिना साध जना हरि कीरतनु गाइ गुणी जन बणतिआ ॥ (649-13)
धनु धनु वड भाग गुर सरणी आए हरि गुर मिलि दरसनु पाइआ ॥२॥ (882-4)
धनु धनु वडभाग मिलिओ गुरु साधू मिलि साधू लिव उनमनि लागिबा ॥ (697-10)
धनु धनु वडभागी नानका जिन गुरमति हरि रसु सारि ॥१॥ (1312-17)
धनु धनु वडे ठाकुर प्रभ मेरे जपि नानक भगति ओमाहा राम ॥४॥३॥९॥ (699-7)
धनु धनु वणजु वापारीआ जिन वखरु लदिअड़ा हरि रासि ॥ (82-17)
धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम कउ सांति आई ॥ (594-2)
धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम हरि भगति पाई ॥ (594-3)
धनु धनु सतिगुरु जिनि नामु द्रिड़ाइआ जनु नानकु तिसु कुरबाना ॥४॥३॥ (697-7)
धनु धनु सतिगुरु पुरखु निरंजनु जितु मिलि हरि नामु धिआई ॥ (573-19)
धनु धनु सतिगुरू मित्रु हमारा जिनि हरि नाम सिउ हमारी प्रीति बणाई ॥१९॥ (594-5)
धनु धनु साध जिन हरि प्रभु जानिआ मिलि साधू पतित उधरिआ ॥१॥ (1294-5)
धनु धनु साध जिन्ही हरि प्रभु पाइआ तिन्ह पूछउ हरि की बाता ॥ (984-12)
धनु धनु साध धंनु हरि नाउ ॥ (1149-5)
धनु धनु सुआमी करता पुरखु है जिनि निआउ सचु बहि आपि कराइआ ॥ (306-10)
धनु धनु सुहावी सफल घड़ी जितु हरि सेवा मनि भाणी ॥ (1317-3)
धनु धनु से जन जिनी कलि महि हरि पाइआ जन नानक सद कुरबानी ॥४॥२॥ (883-7)
धनु धनु सो जनु पुरखु सभागा ॥ (792-17)
धनु धनु हरि गिआनी सतिगुरू हमारा जिनि वैरी मित्रु हम कउ सभ सम द्रिसटि दिखाई ॥ (594-4)
धनु धनु हरि जन जिनि हरि प्रभु जाता ॥ (96-1)
धनु धनु हरि भगतु सतिगुरू हमारा जिस की सेवा ते हम हरि नामि लिव लाई ॥ (594-4)
धनु धरणीधरु आपि अजोनी तोलि बोलि सचु पूरा ॥ (930-6)
धनु धरती तनु होइ गइओ धूड़ि ॥३॥ (1252-13)
धनु धरनी अरु स्मपति सगरी जो मानिओ अपनाई ॥ (1231-9)
धनु नही बाछहि सुरग न आछहि ॥ (251-2)

धनु भगवंती नानका जिना गुरमुखि लधा हरि भालि ॥ (1418-18)
धनु माइआ स्मपै तिसु देवउ जिनि हरि मीतु मिलाइओ ॥१॥ (719-8)
धनु मालु जोबनु जुगति गोपाल ॥ (1151-2)
धनु लेखारी नानका जिनि नामु लिखाइआ सचु ॥१॥ (1291-13)
धनु लेखारी नानका पिआरे साचु लिखै उरि धारि ॥८॥३॥ (636-17)
धनु लोकां तनु भसमै ढेरी ॥ (832-4)
धनु वापारी नानका जिन्हा नाम धनु खटिआ आइ ॥२॥ (511-5)
धनु वापारी नानका भाई मेलि करे वापारु ॥८॥२॥ (636-2)
धनु विरली सचु संचिआ निरमलु नामु पिआरि ॥ (934-15)
धनु संचि हरि हरि नाम वखरु गुर सबदि भाउ पछाणहे ॥ (1113-8)
धनु साचा तेऊ सच साहा ॥ (257-14)
धनु सु वेला जितु दरसनु करणा ॥ (562-15)
धनु सोहागनि जो प्रभू पछानै ॥ (737-4)
धनु सोहागनि महा पवीत ॥ (872-2)
धनु स्मपै माइआ संचीऐ अंते दुखदाई ॥ (648-8)
धनु हरि भगति धनु करणैहार ॥ (1149-5)
धर एका मै टिक एकसु की सिरि साहा वड पुरखु सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ (1347-9)
धर जीअरे इक टेक तू लाहि बिडानी आस ॥ (257-13)
धर तूटी गाडो सिर भारि ॥ (879-15)
धरणि अकासु जा की कला माहि ॥ (1183-2)
धरणि गगन नह देखउ दोइ ॥ (223-4)
धरणि गगनु कल धारि रहावै ॥ (414-2)
धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥ (1035-10)
धरणि सुवंनी खड़ रतन जड़ावी हरि प्रेम पुरखु मनि वुठा ॥ (322-6)
धरणीधर ईस नरसिंघ नाराइण ॥ (1082-8)
धरणीधरु तिआगि नीच कुल सेवहि हउ हउ करत बिहावथ ॥ (1001-10)
धरत धिआनु गिआनु ससत्रगिआ अजर पदु कैसे जरउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1322-11)
धरत धोह अनिक छल जानै ॥ (899-11)
धरति अकासु कीए बैसण कउ थाउ ॥ (839-5)
धरति असमानु न झलई विचि विसटा पए पचंनि ॥५॥ (233-17)
धरति आकासु पातालु है चंदु सूरु बिनासी ॥ (1100-8)
धरति उपाइ धरी धरम साला ॥ (1033-13)
धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ॥ (468-10)
धरति पातालु आकासु है मेरी जिंदुड़ीए सभ हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ (540-8)
धरति पुनीत भई गुन गाए ॥ (801-16)
धरति सुहावड़ी आकासु सुहंदा जपंदिआ हरि नाउ ॥ (1247-10)
धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अम्रित जलु छाइआ राम ॥ (783-16)

धरति सुहावी सफल थानु पूरन भए काम ॥ (819-6)
धरती उपरि कोट गड़ केती गई वजाइ ॥ (595-7)
धरती चीजी कि करे जिसु विचि सभु किछु होइ ॥ (150-9)
धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ॥ (14-5)
धरती ते आकासि चढावै चढे अकासि गिरावै ॥२॥ (1252-5)
धरती दूख सहै सोखै अगनि भखै ॥ (1108-10)
धरती देग मिलै इक वेरा भागु तेरा भंडारी ॥२॥ (1190-19)
धरती पाणी परबत भारु ॥ (1239-16)
धरती पाताली आकासी इकि दरि रहनि वजीर ॥ (1289-1)
धरती भारि न बिआपई उन कउ लाहू लाहि ॥१॥ (965-16)
धरती भारि न बिआपई उन कउ लाहू लाहि ॥२१०॥ (1375-17)
धरती सेवक पाइक चरना ॥ (130-14)
धरती होरु परै होरु होरु ॥ (3-14)
धरनि अकास की करगह बनाई ॥ (484-11)
धरनि अकास सभ महि प्रभ पेखु ॥ (299-16)
धरनि अकासु दसो दिस नाही तब इहु नंदु कहा थो रे ॥१॥ रहाउ ॥ (338-18)
धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ॥ (1409-11)
धरनि पड़ै तिसु लगै न काला ॥३॥ (374-12)
धरनि परै उरवारि न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (326-13)
धरनि माहि आकास पइआल ॥ (293-19)
धरम अरथ अरु काम मोख देते नही बार ॥२॥ (816-15)
धरम अरथ अरु काम मोख मुकति पदारथ नाथ ॥ (927-3)
धरम अरथ काम सभि पूरन मनि चिंदी इछ पुजाए ॥ (785-4)
धरम करम पूरै सतिगुरु पाई है ॥ (1398-15)
धरम कला हरि बंधि बहाली ॥ (396-6)
धरम कोटि जा कै प्रतिहार ॥२॥ (1163-1)
धरम खंड का एहो धरमु ॥ (7-14)
धरम धीरज सहज सुखीए साधसंगति हरि भजे ॥ (460-18)
धरम राइ अब कहा करैगो जउ फाटिओ सगलो लेखा ॥३॥ (614-6)
धरम राइ का दफतरु सोधिआ बाकी रिजम न काई ॥३॥ (793-10)
धरम राइ की काणि चुकाई सभि चूके जम के छंदे ॥१॥ (800-12)
धरम राइ की कानि चुकावै बिखु डुबदा काढि कढीजै ॥२॥ (1326-11)
धरम राइ की बाकी लीजै जिनि हरि का नामु विसारा हे ॥६॥ (1029-6)
धरम राइ के कागर फाटे ॥ (1348-14)
धरम राइ के दूत न जोहै ॥ (185-6)
धरम राइ जब पकरसि बवरे तउ काल मुखा उठि जाही ॥३॥ (1207-10)
धरम राइ जब पकरसि बवरे तब किआ जबाबु करेइ ॥ (77-13)

धरम राइ जब लेखा मागै किआ मुखु लै कै जाहिगा ॥ (1106-9)
धरम राइ जब लेखा मागै बाकी निकसी भारी ॥ (1104-10)
धरम राइ जमकंकरा नो आखि छडिआ एसु तपे नो तिथै खड़ि पाइहु जिथै महा महां हतिआरिआ ॥ (316-1)
धरम राइ जमु नेड़ि न आवै मेरे ठाकुर के जन पिआरे ॥६॥ (980-17)
धरम राइ तिन का मितु है जम मगि न पावै ॥ (1091-6)
धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥ (278-12)
धरम राइ दरि कागद फारे जन नानक लेखा समझा ॥४॥५॥ (698-1)
धरम राइ नो हुकमु है बहि सचा धरमु बीचारि ॥ (38-18)
धरम राइ परुली प्रतिहारु ॥ (1292-6)
धरम राइ सिरि डंडु लगाना फिरि पछुताने हथ फलघा ॥२॥ (731-16)
धरम राइ है देवता लै गला करे दलाली ॥ (967-6)
धरम राइ है हरि का कीआ हरि जन सेवक नेड़ि न आवै ॥ (555-9)
धरम राजा बिसमादु होआ सभ पई पैरी आइ ॥२॥ (406-7)
धरम साल अपार दैआर ठाकुर सदा कीरतनु गावहे ॥ (248-2)
धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥ (75-7)
धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु ॥ (469-3)
धरमु अरथु सभु कामु मोखु है जन पीछै लगि फिरथई ॥१॥ रहाउ ॥ (1320-7)
धरमु अरथु सभु हिरि ले जावहि मनमुख अंधुले खबरि न पईआ ॥२॥ (833-10)
धरमु कराए करम धुरहु फुरमाइआ ॥३॥ (1280-1)
धरमु दलालु पाए नीसाणु ॥ (789-14)
धरमु द्रिड़हु हरि नामु धिआवहु सिम्रिति नामु द्रिड़ाइआ ॥ (773-17)
धरमु धीरा कलि अंदरे इहु पापी मूलि न तगै ॥ (1098-6)
धरमु फुलु फलु गुरि गिआनु द्रिड़ाइआ बहकार बासु जगि दीजै ॥५॥ (1325-11)
धरमु भूमि सतु बीजु करि ऐसी किरस कमावहु ॥ (418-13)
धरि ताराजी अ्मबरु तोली पिछै टंकु चड़ाई ॥ (147-3)
धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥ (470-14)
धरि धारण देखै जाणै आपि ॥४॥ (1188-4)
धवलै उपरि केता भारु ॥ (3-14)
धाइ धाइ क्रिपन स्रमु कीनो इकत्र करी है माइआ ॥ (712-13)
धाइ धाइ बहु बिधि कउ धावै सगल निरारथ काम ॥१॥ (713-7)
धाइओ रे मन दह दिस धाइओ ॥ (712-5)
धाणक रूपि रहा करतार ॥१॥ (24-13)
धाणक रूपि रहा करतार ॥२॥ (24-16)
धाणक रूपि रहा करतार ॥३॥ (24-17)
धाणक रूपि रहा करतार ॥४॥२९॥ (24-18)
धातु मिलै फुनि धातु कउ लिव लिवै कउ धावै ॥ (725-7)
धातु मिलै फुनि धातु कउ सिफती सिफति समाइ ॥ (18-11)

धातुर बाजी पलचि रहे ना उरवारु न पारु ॥३॥ (29-8)
धातुर बाजी संसारु अचेतु है चलै मूलु गवाइ ॥ (1276-7)
धातुर बाजी सबदि निवारे नामु वसै मनि आई ॥१२॥ (909-14)
धातू पंजि रलाइ कूड़ा पाजिआ ॥ (1411-11)
धातु प्रभ का खाना ॥१॥ रहाउ ॥ (212-8)
धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥ (282-1)
धारहु किरपा जिसहि गुसाई ॥ (251-11)
धारि अनुग्रहु अपना प्रभि कीना ॥ (760-6)
धारि अनुग्रहु अपुनी करि लीनी गुरमुखि पूर गिआनी ॥ (1228-14)
धारि अनुग्रहु आपि प्रभ स्वामी पति मति कीनी पूरी ॥ (625-7)
धारि अनुग्रहु पारब्रहम सुआमी वसदी कीनी आपि ॥१॥ रहाउ ॥ (714-14)
धारि अनुग्रहु पारब्रहमि राखे भ्रम के खुल्हे कपाट ॥ (1269-7)
धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे ॥ (1086-8)
धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे दुतीआ भाउ निवारि ॥ (675-7)
धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे नामु महा रसु पीजै ॥१॥ (1269-18)
धारि अनुग्रहो अपना करि लीना राम ॥ (548-7)
धारि क्रिपा प्रभ हाथ दे राखिआ हरि गोविदु नवा निरोआ ॥१॥ रहाउ ॥ (620-17)
धारि खेलु चतुरभुजु कहाइआ ॥ (1082-16)
धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥ (294-5)
धावंत जीआ बहु प्रकारं अनिक भांति बहु डोलते ॥ (1358-8)
धावउ दसा अनेक प्रेम प्रभ कारणे ॥ (1363-2)
धावत कउ धावहि बहु भाती जिउ तेली बलदु भ्रमाइओ ॥२॥ (712-7)
धावत जोनि जनम भ्रमि थाके अब दुख करि हम हारिओ रे ॥ (335-17)
धावत धावत नह त्रिपतासिआ राम नामु नही चीना ॥३॥ (615-4)
धावत धावत सभु जगु धाइओ अब आए हरि दुआरी ॥ (495-13)
धावत पंच रहे घरु जाणिआ कामु क्रोधु बिखु मारिआ ॥ (1110-19)
धावत पंच रहे हरि धिआइआ ॥ (165-4)
धावत भ्रमत रहनु नही पावत पारब्रहम की गति नही जानी ॥ (1387-4)
धावत मनु राखै इक ठाइ ॥ (299-4)
धावत मनूआ आवै ठाइ ॥ (236-5)
धावत रहे एकु इकु बूझिआ आइ बसे अब निहचलु थाइ ॥ (373-2)
धावत राखे ठाकि रहाइआ ॥ (1022-17)
धावत वरजे ठाकि रहाए ॥ (159-14)
धावतु थम्हिआ सतिगुरि मिलिऐ दसवा दुआरु पाइआ ॥ (441-1)
धावतु धाइ तदे घरि आवै हरि हरि साधू सरणि पवईआ ॥२॥ (835-9)
धावतु धाइ धावहि प्रीति माइआ लख कोसन कउ बिथि दीजै ॥७॥ (1323-17)
धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥ (1054-3)

धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥ (88-13)
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ (110-3)
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ (123-18)
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ (1343-1)
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ (232-6)
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ (412-8)
धावतो असथिरु थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1271-17)
धावन पावन कूर कमावन इह बिधि करत अउध तन जारी ॥ (1388-7)
धिआइ धिआइ जीवहि जन तेरे सचु सबदु मनि माणो जीउ ॥२॥ (107-8)
धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥ (284-4)
धिआइ नानक परमेसरै जिनि दिती जिंदु ॥१४॥ (321-11)
धिआइ मना मुरारि मुकंदे कटीऐ काल दुख फाधो ॥ (248-16)
धिआइ सो प्रभु तरे भवजल रहे आवण जाणा ॥ (926-6)
धिआइ सो प्रभु सदा अपुना मनहि चिंदिआ पाईऐ ॥ (704-14)
धिआइ हरि जीउ होइ मिरतकु तिआगि दूजा भाउ ॥ रहाउ दूजा ॥२॥११॥ (1002-2)
धिआइओ अंति बार नामु सखा ॥ (1212-5)
धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥१॥ (522-15)
धिआईऐ अपनो सदा हरी ॥ (499-14)
धिआए गाए करनैहार ॥ (535-12)
धिआन का करि डंडा जोगी सिंङी सुरति वजाई ॥२॥ (908-13)
धिआन रूपि होइ आसणु पावै ॥ (877-17)
धिआनी धिआनु लावहि ॥ (71-6)
धिआवउ गावउ गुण गोविंदा अति प्रीतम मोहि लागै नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (377-3)
धिगु तिना का जीविआ कितु आए संसारि ॥ (1414-3)
धिगु तिन्हा दा जीविआ जिना विडाणी आस ॥२१॥ (1379-1)
धीआ पूत छोडि संनिआसी आसा आस मनि बहुतु करईआ ॥ (835-10)
धीरउ देखि तुम्हारे रंगा ॥ (824-11)
धीरउ सुनि धीरउ प्रभ कउ ॥१॥ रहाउ ॥ (700-12)
धीरज धरमु धरणीधर टेक ॥ (686-2)
धीरज मनि भए हां ॥ (410-14)
धीरजु जसु सोभा तिह बनिआ ॥ (257-15)
धीरजु धड़ी बंधावै कामणि स्रीरंगु सुरमा देई ॥३॥ (359-11)
धीरजु धरमु गुरमति हरि पाइआ नित हरि नामै हरि सिउ चितु लावै ॥ (494-9)
धुंधूकारि निरालमु बैठा ना तदि धंधु पसारा हे ॥१॥ (1026-15)
धुखां जिउ मांलीह कारणि तिंन्हा मा पिरी ॥८७॥ (1382-10)
धुनि अनंद अनाहदु वाजै गुर सबदि निरंजनु पाइआ ॥११॥ (1042-9)
धुनि महि धिआनु धिआन महि जानिआ गुरमुखि अकथ कहानी ॥३॥ (879-3)

धुनि वाजे अनहद घोरा ॥ (879-8)
धुनित ललित गुनग्य अनिक भांति बहु बिधि रूप दिखावनी नीकी ॥१॥ (1272-5)
धुर की बाणी आई ॥ (628-2)
धुर की भेजी आई आमरि ॥ (371-7)
धुर की सेवा रामु रवीजै ॥ (905-13)
धुर ते किरपा करहु आपि तउ होइ मनहि परगासु ॥ (257-14)
धुरहु आपि खुआइअनु जूऐ बाजी हारी ॥५॥ (429-16)
धुरहु खसमि भेजिआ सचै हुकमि पठाइ ॥ (1420-5)
धुरहु विछुंनी किउ मिलै गरबि मुठी बिललाइ ॥२॥ (60-19)
धुरहु विछुंने धाही रुंने ॥ (1035-4)
धुरि आपे जिन्हा नो बखसिओनु भाई सबदे लइअनु मिलाइ ॥ (1177-9)
धुरि करतै आपि लिखि पाइआ तिसु नालि किहु चारा नाही ॥ (309-2)
धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ (917-13)
धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ॥ (469-7)
धुरि करमु न पाइओ पराणी विणु करमा किआ पाए ॥ (550-3)
धुरि करमु लिखिआ साचु सिखिआ कटी जम की फासए ॥ (691-3)
धुरि खसमै का हुकमु पइआ विणु सतिगुर चेतिआ न जाइ ॥ (556-3)
धुरि तिन की पैज रखदा आपे रखणहारु ॥ (549-5)
धुरि तै छोडी कीमति पाइ ॥२॥ (878-15)
धुरि पूरबि करतै लिखिआ तिना गुरमति नामि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (65-12)
धुरि पूरबि होवै लिखिआ गुर भाणा मंनि लएन्हि ॥३॥ (757-3)
धुरि भगत जना कउ बखसिआ हरि अम्रित भगति भंडारा ॥ (733-15)
धुरि भगता मेले आपि मिलाए ॥ (1053-10)
धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥१॥ (449-9)
धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥ (447-11)
धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥३॥ (447-15)
धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ तिन हरि नामु पिआरा ॥१॥ (163-8)
धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ से गुरमुखि रहे लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (27-15)
धुरि मसतकि भागु हरि नामि सुहागु हरि नामै हरि गुण गाइआ ॥ (446-7)
धुरि मसतकि लेख लिखे हरि पाई ॥ (732-16)
धुरि मसतकि हरि प्रभ लिखिआ गुर नानक मिलिआ आइ ॥ (1424-9)
धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ जन नानक नामु धिआइ ॥३॥ (82-6)
धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक हरि गुण गाए राम ॥२॥ (539-10)
धुरि मारे पूरै सतिगुरू सेई हुणि सतिगुरि मारे ॥ (307-13)
धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ ॥३॥ (923-11)
धुरि लिखिआ मेटि न सकीऐ जो हरि लिखि पाइआ ॥१२॥ (789-13)
धुरि लेखु लिखिआ सु कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥३॥ (1346-6)

धुरि हरि प्रभि करतै लिखिआ सु मेटणा न जाइ ॥ (1417-17)
धुरि हुकमु लिखिआ तां कहीऐ कासु ॥ (1344-13)
धुरि हो हो लिखे लिलाधो ॥१॥ रहाउ ॥ (1297-14)
धुरि होवना सु होइआ को न मेटणहार ॥३॥ (986-11)
धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥३॥ (722-4)
धूड़ि तिन्हा की अघुलीऐ भाई सतसंगति मेलि मिलाइ ॥३॥ (1177-10)
धूड़ी मजनु साध खे साई थीए क्रिपाल ॥ (80-18)
धूड़ी विचि लुडंदड़ी सोहां नानक तै सह नाले ॥२॥ (1425-3)
धूप छाव जे सम करि जाणै ॥ (932-18)
धूप छाव जे सम करि सहै ॥ (953-5)
धूप दीप करते हरि नाम तुलि न लागे ॥ (1229-18)
धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥ (695-10)
धूप दीप नईबेदहि बासा ॥ (525-13)
धूप दीप सेवा गोपाल ॥ (866-7)
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥ (13-2)
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥ (663-5)
धूम बादर सभि माइआ साज ॥ (1192-16)
धूरतु सोई जि धुर कउ लागै ॥ (1221-16)
धूरि बाछहि सभि सुरि नर देवा ॥३॥ (1138-9)
धूरि भगतन की मनि तनि लगउ हरि जीउ सभ पतित पुनीता राम ॥ (543-13)
धूरि संतन की नानक दीजै ॥४॥१७॥८६॥ (181-12)
धूरि संतन की मसतकि लाइ ॥ (897-14)
धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥ (133-7)
धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ॥१॥ (729-2)
धोती ऊजल तिलकु गलि माला ॥ (832-6)
धोती खोलि विछाए हेठि ॥ (201-2)
धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई ॥ (471-15)
धोती टिका नामु समालि ॥ (355-4)
धोती डंडउति परसादन भोगा ॥ (237-11)
धोती मूलि न उतरै जे अठसठि तीरथ नाइ ॥ (87-9)
धोते मूलि न उतरहि जे सउ धोवण पाहि ॥ (149-3)
धोबी धोवै बिरह बिराता ॥ (1196-6)
धोहु न चली खसम नालि लबि मोहि विगुते ॥ (321-1)
धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥ (3-13)
ध्रम धनखु कर गहिओ भगत सीलह सरि लड़िअउ ॥ (1396-3)
ध्रम धीरु गुरमति गभीरु पर दुख बिसारणु ॥ (1407-17)
ध्रम पंथु धरिओ धरनीधर आपि रहे लिव धारि न धावत है ॥ (1404-9)

ध्रापसि नाही त्रिसना भूख ॥२॥ (675-12)
ध्रिगंत मात पिता सनेहं ध्रिग सनेहं भ्रात बांधवह ॥ (1354-1)
ध्रिग स्नेहं ग्रिहारथ कह ॥ (1354-2)
ध्रिग स्नेहं बनिता बिलास सुतह ॥ (1354-1)
ध्रिगु इवेहा जीवणा जितु हरि प्रीति न पाइ ॥ (490-2)
ध्रिगु इवेहा जीविआ किआ जुग महि पाइआ आइ ॥ (510-4)
ध्रिगु एह आसा दूजे भाव की जो मोहि माइआ चितु लाए ॥ (850-19)
ध्रिगु खाणा ध्रिगु पैन्हणा जिन्हा दूजै भाइ पिआरु ॥ (1347-2)
ध्रिगु जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥ (18-18)
ध्रिगु जीवणु बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (129-15)
ध्रिगु जीवणु संसार सचे नाम बिनु ॥ (956-10)
ध्रिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा ॥२॥ (83-15)
ध्रिगु तनु ध्रिगु धनु ध्रिगु इह माइआ ध्रिगु ध्रिगु मति बुधि फंनी ॥ (857-4)
ध्रिगु तनु ध्रिगु धनु माइआ संगि राते ॥१॥ रहाउ ॥ (179-8)
ध्रिगु तिना का जीविआ जि लिखि लिखि वेचहि नाउ ॥ (1245-3)
ध्रिगु तिन्हा दा जीविआ जो हरि सुखु परहरि तिआगदे दुखु हउमै पाप कमाइ ॥ (511-8)
ध्रिगु ध्रिगु खाइआ ध्रिगु ध्रिगु सोइआ ध्रिगु ध्रिगु कापड़ु अंगि चड़ाइआ ॥ (796-14)
ध्रिगु ध्रिगु ग्रिहु कुट्मबु जितु हरि प्रीति न होइ ॥ (233-6)
ध्रिगु ध्रिगु नर निंदक जिन जन नही भाए हरि के सखा सखाइ ॥ (881-4)
ध्रिगु ध्रिगु मनमुखि जनमु गवाइआ ॥ (1130-18)
ध्रिगु बहु जीवणु जितु हरि नामि न लगै पिआरु ॥ (233-4)
ध्रिगु सरीरु असत बिसटा क्रिम बिनु हरि जानत होर ॥१॥ (1228-5)
ध्रिगु सरीरु कुट्मब सहित सिउ जितु हुणि खसमु न पाइआ ॥ (796-14)
ध्रिगु सेज सुखाली कामणि मोह गुबारु ॥ (233-5)
ध्रू कउ मिलिआ हरि निसंग ॥१॥ (1192-3)
ध्रू प्रहलाद कबीर तिलोचन नामु लैत उपज्यो जु प्रगासु ॥ (1406-4)
ध्रू प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे ॥१॥ (337-3)
ध्रू प्रहिलादु बिदरु दासी सुतु गुरमुखि नामि तरे ॥१॥ रहाउ ॥ (995-5)
ध्रोह मोह दूरि करि बपुरे संगि गोपालहि जानु ॥१॥ रहाउ ॥ (1215-15)
नंीबु भइओ आंबु आंबु भइओ नंीबा केला पाका झारि ॥ (972-9)
नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥ (471-1)
नंना नरकि परहि ते नाही ॥ (257-18)
नंना निसि दिनु निरखत जाई ॥ (341-15)
नंनाकारु न कोइ करेई ॥ (221-14)
नंनाकारु न होता ता कहु ॥ (257-19)
नंनै नाह भोग नित भोगै ना डीठा ना सम्हलिआ ॥ (433-16)
न अंतरु भीजै न सबदु पछाणहि ॥ (1050-3)

न इहु तनु जाइगा न जाहिगे ख्मभ ॥ (1257-9)
न इहु धनु जलै न तसकरु लै जाइ ॥ (991-13)
न इहु धनु डूबै न इसु धन कउ मिलै सजाइ ॥२॥ (991-13)
न किस का पूतु न किस की माई ॥ (357-9)
न किसी का मीतु न किसी का भाई ना किसै बापु न माई ॥ (876-8)
न कोई सूरु न कोई हीणा सभ प्रगटी जोति तुम्हारी ॥५॥ (916-17)
न जाणा मेउ न जाणा जाली ॥ (25-7)
न जाणा हरे मेरी कवन गते ॥ (876-5)
न जानी संतन प्रभ बिनु आन ॥ (1302-2)
न तिथै भरमु न दूजा पसारा ॥ (1050-7)
न दनोति जसमरणेन जनम जराधि मरण भइअं ॥१॥ रहाउ ॥ (526-14)
न दादे दिहंद आदमी ॥ (144-1)
न देव दानवा नरा ॥ (143-19)
न पतीजै तउ किआ कीजै ॥३॥७॥ (656-2)
न पाथरु बोलै ना किछु देइ ॥ (1160-8)
न बीचारिओ राजा राम को रसु ॥ (658-9)
न भीजै केते होवहि धूड़ ॥ (1237-14)
न भीजै तीरथि भविऐ नंगि ॥ (1237-13)
न भीजै दातीं कीतै पुंनि ॥ (1237-13)
न भीजै बाहरि बैठिआ सुंनि ॥ (1237-14)
न भीजै भेड़ि मरहि भिड़ि सूर ॥ (1237-14)
न भीजै रागी नादी बेदि ॥ (1237-12)
न भीजै रूपीं मालीं रंगि ॥ (1237-13)
न भीजै सुरती गिआनी जोगि ॥ (1237-12)
न भीजै सोगी कीतै रोजि ॥ (1237-13)
न रिजकु दसत आ कसे ॥ (144-3)
न वसतु लहै न चूकै फेरा ॥ (124-15)
न संखं न चक्रं न गदा न सिआमं ॥ (1359-6)
न सपत जेर जिमी ॥ (144-1)
न सपत दीप नह जलो ॥ (144-2)
न सबदु बूझै न जाणै बाणी ॥ (665-5)
न सिध साधिका धरा ॥ (143-19)
न सूर ससि मंडलो ॥ (144-2)
न हउ तेरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ ॥ (1165-17)
न होवी पछोताउ तुध नो जपतिआ ॥ (519-17)
नईआ ते बैरं कंना ॥ (693-19)
नउ खंड जीते सभि थान थनंतर ॥ (371-7)

नउ खंड प्रिथमी इसु तन महि रविआ निमख निमख नमसकारा ॥ (208-2)
नउ खंड प्रिथमी फिरै चिरु जीवै ॥ (265-13)
नउ घर थापे थापणहारै ॥ (1036-11)
नउ घर थापे हुकमि रजाई ॥ (1033-11)
नउ घर देखि जु कामनि भूली बसतु अनूप न पाई ॥ (339-13)
नउ डाडी दस मुंसफ धावहि रईअति बसन न देही ॥ (793-9)
नउ दर ठाके धावतु रहाए ॥ (124-13)
नउ दर ठाके हुकमि सचै हंसु गइआ गैणारे ॥ (580-15)
नउ दर मुकते दसवै आसनु ॥ (1040-15)
नउ दरवाज नवे दर फीके रसु अम्रितु दसवे चुईजै ॥ (1323-11)
नउ दरवाजे काइआ कोटु है दसवै गुपतु रखीजै ॥ (954-12)
नउ दरवाजे दसवा दुआरु ॥ (152-3)
नउ दरवाजे दसवै मुकता अनहद सबदु वजावणिआ ॥३॥ (110-5)
नउ नाइक की भगति पछानै ॥ (872-18)
नउ निधि अम्रितु प्रभ का नामु ॥ (293-16)
नउ निधि उपजै नामु एकु करमि पवै नीसाणु ॥२॥ (19-2)
नउ निधि ठाकुरि दई सुदामै ध्रूअ अटलु अजहू न टरिओ ॥३॥ (1105-12)
नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥ (97-6)
नउ निधि तेरै सगल निधान ॥ (376-2)
नउ निधि नामु ग्रिह महि त्रिपताने ॥ (372-12)
नउ निधि नामु निधानु इक ठाई तउ बाहरि कैठै जाइओ ॥३॥ (205-11)
नउ निधि नामु निधानु गुर कै सबदि लागु ॥ (959-9)
नउ निधि नामु निधानु हरि मै पलै बधा छिकि जीउ ॥८॥ (73-17)
नउ निधि नामु निधानु है तुधु विचि भरपूरु ॥ (967-18)
नउ निधि नामु भरे भंडारा ॥ (107-15)
नउ निधि नामु वसिआ घट अंतरि छोडिआ माइआ का लाहा हे ॥२॥ (1057-13)
नउ निधि नामु वसिआ मनि आए ॥ (122-13)
नउ निधि पाई राजु जीवा बोलिआ ॥ (518-13)
नउ निधि पाई वजी वाधाई वाजे अनहद तूरे ॥ (577-6)
नउ निधि पावहि अतुलु सुखो ॥४॥ (241-11)
नउ निधि रिधि सिधि पाई जो तुमरै मनि भावना ॥५॥ (1018-17)
नउ बहीआं दस गोनि आहि ॥ (1194-19)
नउ सत चउदह तीनि चारि करि महलति चारि बहाली ॥ (1190-17)
नउ सर सुभर दसवै पूरे ॥ (943-19)
नउतन प्रीति सदा ठाकुर सिउ अनदिनु भगति सुहावी ॥ (1255-13)
नउबति वजी सुबह सिउ चलण का करि साजु ॥७९॥ (1382-2)
नउमी नवे छिद्र अपवीत ॥ (298-14)

नउमी नवै दुआर कउ साधि ॥ (343-17)
नउमी नेमु सचु जे करै ॥ (1245-12)
नकटी को ठनगनु बाडा डूं ॥ (476-14)
नकि नथ खसम हथ किरतु धके दे ॥ (653-12)
नकीं वढीं लाइतबार ॥२॥ (1288-8)
नख प्रसेव जा चै सुरसरी ॥ (1292-11)
नखिअत्र ससीअर सूर धिआवहि बसुध गगना गावए ॥ (456-1)
नगज तेरे बंदे दीदारु अपारु ॥ (1137-19)
नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु ॥ (324-5)
नगन फिरत रंगि एक कै ओहु सोभा पाए ॥ (745-9)
नगर महि आपि बाहरि फुनि आपन प्रभ मेरे को सगल बसेरा ॥ (827-17)
नगरी एकै नउ दरवाजे धावतु बरजि रहाई ॥ (1123-16)
नगरी नगरी खिअत अपार ॥ (1163-4)
नगरी नाइकु नवतनो बालकु लील अनूपु ॥ (1010-13)
नच दुरलभं धनं रूपं नच दुरलभं स्वरग राजनह ॥ (1357-1)
नच दुरलभं बिदिआ प्रबीणं नच दुरलभं चतुर चंचलह ॥ (1357-3)
नच दुरलभं भोजनं बिंजनं नच दुरलभं स्वछ अ्मबरह ॥ (1357-2)
नच दुरलभं सुत मित्र भ्रात बांधव नच दुरलभं बनिता बिलासह ॥ (1357-2)
नच बिदिआ निधान निगमं नच गुणग्य नाम कीरतनह ॥ (1356-15)
नच मित्रं नच इसटं नच बाधव नच मात पिता तव लजया ॥ (1358-9)
नच राग रतन कंठं नह चंचल चतुर चातुरह ॥ (1356-16)
नच राज सुख मिसटं नच भोग रस मिसटं नच मिसटं सुख माइआ ॥ (708-7)
नचणु कुदणु मन का चाउ ॥ (465-14)
नचि नचि टपहि बहुतु दुखु पावहि ॥ (159-1)
नचि नचि हसहि चलहि से रोइ ॥ (465-13)
नचिऐ टपिऐ भगति न होइ ॥ (159-2)
नजरि भई घरु घर ते जानिआ ॥२॥ (153-12)
नट असटपदीआ महला ४ (980-9)
नट नाटिक आखारे गाइआ ॥ (179-15)
नट नाराइन महला ४ पड़ताल (977-7)
नट नाराइन महला ५ दुपदे (978-13)
नट पड़ताल महला ५ (980-4)
नट महला ४ ॥ (975-15)
नट महला ४ ॥ (975-9)
नट महला ४ ॥ (976-13)
नट महला ४ ॥ (976-19)
नट महला ४ ॥ (976-7)

नट महला ४ ॥ (977-13)
नट महला ४ ॥ (977-17)
नट महला ४ ॥ (981-1)
नट महला ४ ॥ (981-12)
नट महला ४ ॥ (982-15)
नट महला ४ ॥ (982-4)
नट महला ४ ॥ (983-8)
नट महला ५ ॥ (978-17)
नट महला ५ ॥ (979-12)
नट महला ५ ॥ (979-16)
नट महला ५ ॥ (979-2)
नट महला ५ ॥ (979-6)
नट महला ५ ॥ (979-9)
नट महला ५ ॥ (980-1)
नट वट खेलै सारिगपानि ॥२॥ (329-17)
नटूआ भेख दिखावै बहु बिधि जैसा है ओहु तैसा रे ॥ (403-19)
नटूऐ सांगु बणाइआ बाजी संसारा ॥ (422-12)
नठड़ो दुख तापु नानक प्रभु पेखंदिआ ॥२॥ (709-12)
नठे ताप दुख रोग पूरे गुर प्रतापि ॥ (521-14)
नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥ (472-6)
नदरि करहि जे आपणी तां आपे लैहि सवारि ॥ (1421-1)
नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥ (465-2)
नदरि करहि ता साचु पछाणा ॥ (567-6)
नदरि करहि तू तारहि तरीऐ सचु देवहु दीन दइआला ॥ (1112-6)
नदरि करे कै आपणी आपे लए मिलाइ जीउ ॥८॥ (72-5)
नदरि करे गुरु भेटीऐ हरि नामु वसै मनि आइ ॥ (1277-6)
नदरि करे चूकै अभिमानु ॥ (1173-1)
नदरि करे जिसु आपणी तिस नो भावनी लाए ॥ (427-15)
नदरि करे जिसु आपणी तिसु लाए हेत पिआरु ॥ (1422-16)
नदरि करे जिसु आपणी भाई तिसु परापति होइ ॥ (609-2)
नदरि करे जिसु आपणी सो चलै सतिगुर भाइ ॥ (1422-3)
नदरि करे जे आपणी आपे लए रलाइ जीउ ॥१४॥ (72-13)
नदरि करे जे आपणी तां सतिगुरु मिलै सुभाइ ॥ (1284-17)
नदरि करे जे आपणी ता आपे लए मिलाइ ॥२॥ (955-14)
नदरि करे तां बंधां धीर ॥ (1257-9)
नदरि करे तां भरमु चुकाए ॥ (1169-10)
नदरि करे तां सतिगुरु मेले सहजे सहजि समाइआ ॥ (1334-10)

नदरि करे ता अखी वेखा कहणा कथनु न जाई ॥ (596-10)
नदरि करे ता एहु मोहु जाइ ॥ (356-9)
नदरि करे ता गुरू मिलाए ॥ (1054-10)
नदरि करे ता पाईऐ सचु नामु गुणतासि ॥३॥ (53-4)
नदरि करे ता बूझै नाउ ॥५॥ (222-17)
नदरि करे ता मेलि मिलाए ॥ (222-7)
नदरि करे ता सतिगुरु पावै ॥ (733-1)
नदरि करे ता सतिगुरु मिलै ॥ (354-13)
नदरि करे ता सतिगुरु मेले अनदिनु बिबेक बुधि बिचरै ॥ (690-7)
नदरि करे ता सतिगुरु मेले ता निज घरि वासा इहु मनु पाए ॥ (945-8)
नदरि करे ता सिमरिआ जाइ ॥ (661-10)
नदरि करे ता सेवे कोई ॥ (1063-8)
नदरि करे ता हरि गुण गावै नदरी सचि समावणिआ ॥२॥ (119-8)
नदरि करे ता हरि रसु पावै ॥ (733-5)
नदरि करे ता हरि हरि पाईऐ ॥ (395-13)
नदरि करे ना वीसरै गुरमती वीचारि ॥१३॥ (755-14)
नदरि करे पूरा गुरु भेटै ॥ (1036-16)
नदरि करे प्रभु आपणी आपे लए मिलाइ ॥३॥ (35-19)
नदरि करे प्रभु आपणी गुण अंकि समावै ॥ (228-19)
नदरि करे मेलावा होइ ॥ (664-13)
नदरि करे मेलावा होई ॥१॥ रहाउ ॥ (357-6)
नदरि करे राखै रखवाला ॥७॥ (412-11)
नदरि करे संजोगि मिलाए ॥५॥ (412-9)
नदरि करे सचु पाईऐ बिनु नावै किआ साकु ॥५॥ (55-2)
नदरि करे सतिगुरू मिलाए ॥ (1129-6)
नदरि करे सबदु घट महि वसै विचहु भरमु गवाए ॥ (944-13)
नदरि करे सोई सचु पाए गुर कै सबदि वीचारा ॥ (570-15)
नदरि तिना कउ नानका जि साबतु लाए रासि ॥१॥ (1238-12)
नदरि तिन्हा कउ नानका नामु जिन्हा नीसाणु ॥२॥ (1239-11)
नदरि तुधु अरदासि मेरी जिंनि आपु उपाइआ ॥ (566-4)
नदरि तेरी सुखु पाइआ नानक सबदु वीचारि ॥ (937-17)
नदरि प्रभू ते छुटीऐ नदरी मेलि मिलाइ जीउ ॥६॥ (751-11)
नदरि प्रभू सतसंगति पाई निज घरि होआ वासा ॥ (774-19)
नदरि भई बिखु ठाकि रहाइआ ॥२॥ (221-3)
नदरि सराफ वंनी सचड़ाइआ ॥ (1074-15)
नदरि सराफ वंनी सचड़ाउ ॥ (932-3)
नदरी आइआ इकु सगल ब्रहमेटिआ ॥ (520-17)

नदरी आवदा नालि न चलई वेखहु को विउपाइ ॥ (84-9)
नदरी आवदा सभु किछु बिनसै हरि सेती चितु लाइ ॥ (908-19)
नदरी आवै तिसु सिउ मोहु ॥ (801-7)
नदरी इहु मनु वसि आवै नदरी मनु निरमलु होइ ॥१॥ (558-15)
नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ (7-13)
नदरी करमि लघाए पारि ॥ (465-11)
नदरी करमी गुर बीचारु ॥१॥ (151-3)
नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ ॥ (14-14)
नदरी नामु धिआईऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ॥ (35-10)
नदरी भगता लैहु मिलाए ॥ (1068-3)
नदरी मरि कै जीवीऐ नदरी सबदु वसै मनि आइ ॥ (558-17)
नदरी सतगुरु सेवीऐ नदरी सेवा होइ ॥ (558-15)
नदरी सतिगुरु पाईऐ नदरी उपजै पिआरु ॥ (1285-6)
नदरी हुकमु बुझीऐ हुकमे रहै समाइ ॥२॥ (558-17)
नदी उपकंठि जैसे घरु तरवरु सरपनि घरु घर माही ॥ (1274-2)
नदी तरंदड़ी मैडा खोजु न खुमभै मंझि मुहबति तेरी ॥ (520-7)
नदी नाव संजोग जिउ बहुरि न मिलहै आइ ॥८०॥ (1368-14)
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥ (5-5)
नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम ॥ (439-8)
नदीआ विचि टिबे देखाले थली करे असगाह ॥ (144-11)
नदीआ होवहि धेणवा सुम होवहि दुधु घीउ ॥ (141-19)
नमसकार डंडउति बंदना अनिक बार जाउ बारै ॥१॥ रहाउ ॥ (820-11)
नमसकार ता कउ लख बार ॥ (1142-15)
नमसकार रखनहार मनि अराधि प्रभू मेक ॥ (1341-17)
नमसकारु करि हिरदै माहि ॥ (971-9)
नयणि बयणि मुहि इकु इकु दुहु ठांइ न जाणिओ ॥ (1394-12)
नर अचेत पाप ते डरु रे ॥ (220-13)
नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥ (1428-10)
नर ते उपजि सुरग कउ जीतिओ सो अवखध मै पाई ॥१॥ (873-18)
नर ते सुर होइ जात निमख मै सतिगुर बुधि सिखलाई ॥ (873-17)
नर नाराइण अंतरजामि ॥३॥ (153-13)
नर निंदक लोभी मनि कठोर ॥ (1170-9)
नर निहकेवल निरभउ नाउ ॥ (224-1)
नर प्राणी प्रीति माइआ धनु खाटे ॥ (164-13)
नर सै नारि होइ अउतरै ॥३॥ (874-15)
नरक उदरि भ्रमंत जलतो जमहि कीनी सार ॥१॥ (1229-4)
नरक कूप महि गोते खावै जिउ जल ते बाहरि मीना हे ॥८॥ (1028-5)

नरक घोर बहु दुख घणे अकिरतघणा का थानु ॥ (315-9)
नरक घोर महि उरध तपु करता निमख निमख गुण गांही ॥१॥ रहाउ ॥ (1207-6)
नरक घोरु दुख खूहु है ओथै पकड़ि ओहु ढोइआ ॥ (309-11)
नरक न डीठड़िआ सिमरत नाराइण ॥ (460-17)
नरक निवारणु नरह नरु साचउ साचै नाइ ॥ (936-14)
नरक निवारि उधारहु जीउ ॥ (295-7)
नरक निवारै दुख हरै तूटहि अनिक कलेस ॥ (297-10)
नरक रोग नही होवत जन संगि नानक जिसु लड़ि लावै ॥२॥१४॥ (531-4)
नरक सुरग अवतारा ॥ (1003-19)
नरक सुरग फिरि फिरि अउतारा ॥३॥ (389-7)
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥ (278-14)
नरक सुरग भ्रमतउ घणो सदा संघारै मीचु ॥ (297-4)
नरक सुरग रहत अउतारा ॥ (259-3)
नरकि घोरि मुहि कालै खड़िआ जिउ तसकरु पाइ गलावै ॥ (303-14)
नरकि न सेई पाईऐ ॥ (132-10)
नरकि पचहि अगिआन अंधेरे ॥ (1029-6)
नरकि पड़ंतउ किउ रहै किउ बंचै जमकालु ॥ (935-5)
नरकि परहि ते मानई जो हरि नाम उदास ॥९५॥ (1369-10)
नरकि सुरगि अवतार माइआ धंधिआ ॥३॥ (761-18)
नरकि सुरगि फिरि फिरि अउतार ॥२॥ (385-15)
नरकु सुरगु दुइ भुंचना होइ बहुरि बहुरि अवतार ॥२॥ (214-8)
नरकु सुरगु नही जमणु मरणा ना को आइ न जाइदा ॥३॥ (1035-12)
नरनरह नमसकारं ॥ (901-10)
नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी ॥ (657-19)
नरपति जाणि ग्रहिओ सेवक सिआणे राम ॥ (548-4)
नरपति प्रीति माइआ देखि पसारा ॥ (164-13)
नरपति राजे रंग रस माणहि बिनु नावै पकड़ि खड़े सभि कलघा ॥ (731-15)
नरहर नामु नरहर निहकामु ॥१॥ रहाउ ॥ (152-16)
नरु प्राणी चाकरी करे नरपति राजे अरथि सभ माइआ ॥ (166-16)
नरू मरै नरु कामि न आवै ॥ (870-5)
नल्य कवि पारस परस कच कंचना हुइ चंदना सुबासु जासु सिमरत अन तर ॥ (1399-1)
नवंत दुआरं भीत रहितं बाइ रूपं असथ्मभनह ॥ (1354-5)
नव खंड प्रिथमी साजि हरि रंग सवारिआ ॥ (1094-12)
नव खंड मधे पूजीआ अपणै चजि वीचारि ॥ (1090-4)
नव खंडन को राजु कमावै अंति चलैगो हारी ॥१॥ (712-1)
नव ग्रह कोटि ठाढे दरबार ॥ (1163-1)
नव घर थापि महल घरु ऊचउ निज घरि वासु मुरारे ॥ (1107-7)

नव छिअ खट का करे बीचारु ॥ (1237-15)
नव छिअ खटु बोलहि मुख आगर मेरा हरि प्रभु इव न पतीने ॥ (668-18)
नव निधि नामु निधानु ग्रिहि तेरै मनि बांछै सो लैसी ॥३॥ (1266-14)
नव निधि नामु निधानु रिधि सिधि ता की दासी ॥ (1397-12)
नव निधि नामु निधानु हरि केरै ॥ (1304-13)
नव निधि रिधि सिधि हरि लागि रही जन पाई ॥१॥ (679-10)
नव निधि सिधि रिधि दीने करते तोटि न आवै काई राम ॥ (783-19)
नव निधी अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरहि जो हरि हिरदै सदा वसाइ ॥ (649-16)
नव निधे नउ निधे मेरे घर महि आई राम ॥ (452-16)
नव रंग लालु सेज रावण आइआ ॥ (737-15)
नव हाणि नव धन सबदि जागी आपणे पिर भाणीआ ॥ (844-3)
नवतन नाम जपै दिनु राती इकु गुणु नाही प्रभ कहि संगा ॥१६॥ (1083-6)
नवल नवतन चतुर सुंदर मनु नानक तिसु संगि बीधि ॥२॥३॥२६॥ (1006-18)
नवल नवतन नाहु बाला कवन रसना गुन भणा ॥ (847-15)
नवा खंडा विचि जाणीआ अपने चज वीचार ॥३॥ (1413-4)
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥ (2-14)
नवे छिद्र स्रवहि अपवित्रा ॥ (998-3)
नवै का सिहजासणी मूलि न जाणै अप बलु ॥ (138-3)
नवै खंड की प्रिथमी मागै सो जोगी जगि सारा ॥१॥ (477-9)
नवै नाथ सूरज अरु चंदा ॥ (1160-15)
नसि वंञहु किलविखहु करता घरि आइआ ॥ (460-14)
नह असथिरु दीसै एक भाइ ॥ (1187-18)
नह आपहु मूरखु गिआनी ॥ (1004-3)
नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥ (281-18)
नह को मूआ न मरणै जोगु ॥ (885-16)
नह गिरह निरंहारं ॥१॥ (901-11)
नह घटंत केवल गोपाल अचुत ॥ (1354-15)
नह चतुरि सुघरि सुजान बेती मोहि निरगुनि गुनु नही ॥ (847-9)
नह चिंता बनिता सुत मीतह प्रविरति माइआ सनबंधनह ॥ (1355-6)
नह चिंता मात पित भ्रातह नह चिंता कछु लोक कह ॥ (1355-6)
नह चीनिआ परमानंदु बैरागी ॥१॥ रहाउ ॥ (991-18)
नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ॥ (919-10)
नह जापै नह बूझीऐ नह कछु करत बीचारु ॥ (297-15)
नह डोलीऐ इत ऊत ॥ (837-13)
नह त्रिपतानो राज जोबनि धनि बहुरि बहुरि फिरि धाइआ ॥ (1300-2)
नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥ (279-1)
नह त्रिपतावै नह तिस लाथी ॥ (235-17)

नह दूख पावै प्रभ धिआवै धंनि ते बडभागीआ ॥ (544-13)
नह दूरि पूरि हजूरि संगे ॥ (1231-2)
नह दूरि सदा हदूरि ठाकुरु दह दिस पूरनु सद सदा ॥ (457-4)
नह देखिओ रूप रंग सींगारो ॥ (372-7)
नह द्रिसटि आवै मरत हावै महा गारबि मुठीआ ॥ (928-5)
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥ (633-16)
नह नीद आवै प्रेमु भावै सुणि बेनंती मेरीआ ॥ (243-2)
नह नैण दीसै बिनु भजन ईसै छोडि माइआ चालिआ ॥ (705-12)
नह पंडितु नह चतुरु सिआना ॥ (221-10)
नह पाइ झगड़ा सुआमि सेती आपि आपु वञावणा ॥ (566-6)
नह बरन बरन नह कुलह कुल ॥ (1231-3)
नह बारिक नह जोबनै नह बिरधी कछु बंधु ॥ (254-3)
नह बिनसै अबिनासी होगु ॥३॥ (885-16)
नह बिनसै नह छोडि जाइ नानक रंगि राता ॥४॥१८॥४८॥ (813-3)
नह बिल्मब धरमं बिल्मब पापं ॥ (1354-16)
नह बिसरंति नाम अचुत नानक आस पूरन परमेसुरह ॥१॥ (708-17)
नह भीगै अधिक सूकाइआ ॥२॥ (1136-18)
नह भूलो नह भरमि भुलाना ॥ (221-10)
नह मरीआ नह जरीआ ॥१॥ (746-6)
नह रूप धूप न नैण बंके जह भावै तह रखु तुही ॥ (847-9)
नह संगि गामनी ॥१॥ (901-13)
नह समरथं नह सेवकं नह प्रीति परम पुरखोतमं ॥ (1356-2)
नह सिव सकती जलु नही पवना तह अकारु नही मेदनी ॥ (883-12)
नह सीतलं चंद्र देवह नह सीतलं बावन चंदनह ॥ (1357-8)
नह सीतलं सीत रुतेण नानक सीतलं साध स्वजनह ॥३९॥ (1357-8)
नह सुणीऐ नह मुख ते बकीऐ नह मोहै उह डीठी ॥ (673-14)
नह होआ नह होवना जत कत ओही समाहि ॥ (254-7)
नही छोडउ रे बाबा राम नाम ॥ (1194-8)
नही तुलि गोबिद नाम धुने ॥ (1229-16)
नही तुलि राम नाम बीचार ॥ (265-12)
नही दोख बीचारे पूरन सुख सारे पावन बिरदु बखानिआ ॥ (1122-16)
नही नही चीन्हिआ परमानंदा ॥१॥ रहाउ ॥ (526-1)
नही पटणु नही पारखू नही गाहकु नही मोलु ॥२३॥ (1365-14)
नही भेटत धरम राइआ ॥ (898-8)
नही मिरतु न जनमु जरा ॥१॥ रहाउ ॥ (972-2)
नही रांबी ठाउ रोपउ ॥१॥ (659-8)
नही लेपु तिसु पुंनि न पापि ॥ (894-8)

नही लेपु प्रभ पुंन पापि ॥६॥ (1193-2)
नही होत ऊहा उसु गवन ॥ (267-16)
नही होत कछु दोऊ बारा ॥ (253-13)
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥ (345-12)
नांगा आइआ नांगो जासी जिउ हसती खाकु छानै ॥३॥ (380-3)
नांगे आवणा नांगे जाणा हरि हुकमु पाइआ किआ कीजै ॥ (1246-17)
नांगे आवनु नांगे जाना ॥ (1157-19)
नांगे पावहु ते गए जिन के लाख करोरि ॥२७॥ (1365-18)
ना अउधूती ना संसारी ॥१॥ (903-7)
ना इसु उसनु नही इसु सीतु ॥ (868-15)
ना इसु दुसमनु ना इसु मीतु ॥ (868-15)
ना इसु दूखु नही जम जाला ॥ (868-13)
ना इसु पिंडु न रकतू राती ॥ (871-4)
ना इसु बापु नही इसु माइआ ॥ (868-16)
ना इसु माइ न काहू पूता ॥१॥ (871-3)
ना इसु हरखु नही इसु सोगु ॥ (868-15)
ना इह मारी न मरै ना इह हटि विकाइ ॥ (853-13)
ना इहु गिरही ना ओदासी ॥ (871-4)
ना इहु जती कहावै सेउ ॥ (871-2)
ना इहु जीवै न मरता देखु ॥ (871-5)
ना इहु जोगी ना अवधूता ॥ (871-2)
ना इहु तपा कहावै सेखु ॥ (871-5)
ना इहु बिनसै ना इहु जाइ ॥ (868-14)
ना इहु बूढा ना इहु बाला ॥ (868-13)
ना इहु ब्रहमनु ना इहु खाती ॥२॥ (871-5)
ना इहु मानसु ना इहु देउ ॥ (871-2)
ना इहु राज न भीख मंगासी ॥ (871-4)
ना उसु धंधा ना हम धाधे ॥ (391-3)
ना उसु बंधन ना हम बाधे ॥ (391-3)
ना उसु भूख न हम कउ त्रिसना ॥ (391-4)
ना उसु मैलु न हम कउ मैला ॥ (391-3)
ना उसु लेपु न हम कउ पोचा ॥ (391-4)
ना उसु सोचु न हम कउ सोचा ॥ (391-4)
ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥ (471-3)
ना ओइ जनमहि ना मरहि ना ओइ दुख सहंनि ॥ (756-16)
ना ओइ जोगी ना ओइ जंगम ना ओइ काजी मुंला ॥ (149-19)
ना ओन सिधि न बुधि है न संजमी फिरहि उतवताए ॥५॥ (427-15)

ना ओसु दूखु न हम कउ दूखे ॥१॥ (391-1)
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥ (8-4)
ना ओहु आवै ना ओहु जाइ ॥ (832-12)
ना ओहु कूअटा ना पनिहारी ॥४॥१२॥ (325-18)
ना ओहु निरधनु ना हम भूखे ॥ (391-1)
ना ओहु बढै न घटता जाइ ॥ (343-9)
ना ओहु बिनसै ना हम कड़िआ ॥ (391-1)
ना ओहु मरता ना हम डरिआ ॥ (391-1)
ना ओहु मरै न आवै जाइ ॥ (1174-12)
ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ (349-9)
ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ (9-18)
ना कछु आइबो ना कछु जाइबो राम की दुहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (695-14)
ना कछु पोच माटी के भांडे ना कछु पोच कुमभारै ॥२॥ (1350-2)
ना कदे होवै सोगु अनदिनु रस भोग सा धन महलि समाणी ॥ (582-14)
ना करि आस किसै साह बिउहार की पराई ॥ (1070-15)
ना करि आस मीत सुत भाई ॥ (1070-14)
ना करि चिंत चिंता है करते ॥ (1070-13)
ना कासी मति ऊपजै ना कासी मति जाइ ॥ (491-13)
ना किछु आवत ना किछु जावत सभु खेलु कीओ हरि राइओ ॥ (209-11)
ना किछु आसा हथि है केउ निरासा होइ ॥ (956-9)
ना किछु बीजे न उगवै जो बखसे सो खाइ ॥ (947-4)
ना किछु भरमु न दुबिधा दूजा ॥ (887-9)
ना किछु सेवा ना करमारे ॥ (913-18)
ना किछु सेवा ना किछु घाल ॥ (892-14)
ना कुल ढंगु न मीठे बैणा ॥१॥ रहाउ ॥ (750-13)
ना को आखि वखाणै दूजा ॥ (1035-16)
ना को आवै ना को जाइ ॥३॥ (878-17)
ना को आवै ना को जावै गुरि दूरि कीआ भरमीजा हे ॥१४॥ (1074-12)
ना को आवै ना को जाही ॥ (736-15)
ना को चतुरु नाही को मूड़ा ॥ (238-19)
ना को चाखै ना को खाइ ॥ (661-6)
ना को दुसमनु दोखीआ नाही को मंदा ॥ (400-17)
ना को दूतु नही बैराई ॥ (887-15)
ना को पड़िआ पंडितु बीना ना को मूरखु मंदा ॥ (359-17)
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥१॥ (1299-14)
ना को मुला ना को काजी ॥ (1036-2)
ना को मूड़ु नही को सिआना ॥ (914-10)

ना को मूरखु ना को सिआणा ॥ (98-15)
ना को मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के बैराई ॥ (671-7)
ना को मेरा हउ किसु केरा ॥ (109-10)
ना को साथी ना को बेली ॥ (794-14)
ना को सुणे न मंनि वसाए ॥ (122-3)
ना को सेखु मसाइकु हाजी ॥ (1036-3)
ना को हीणु नाही को सूरा ॥ (238-19)
ना को होआ तोलणहारा ॥ (1067-12)
ना को होआ ना को होइ ॥३॥ (349-10)
ना को होआ ना को होइ ॥३॥ (9-19)
ना कोई करे न करणै जोगा ॥ (1048-14)
ना कोई मरै न आवै जाइआ ॥४॥१०॥ (885-18)
ना कोई मेरा हउ किसु केरा हरि बिनु रहणु न जाए ॥ (1107-10)
ना कोऊ लै आइओ इहु धनु ना कोऊ लै जातु ॥ (1251-19)
ना जम काणि न छंदा बंदा ॥ (1024-8)
ना जमदूत दूखु तिसु लागै ॥ (416-11)
ना जलु डूंगरु न ऊची धार ॥ (1275-2)
ना जलु लेफ तुलाईआ ना भोजन परकारोवा ॥ (581-11)
ना जाणा करम केवड तेरी दाति ॥ (154-2)
ना जाणा मूरखु है कोई ना जाणा सिआणा ॥ (1015-14)
ना जानउ किआ करसी पीउ ॥१॥ (792-10)
ना जानउ बैकुंठ दुआरा ॥३॥ (1161-12)
ना जानउ बैकुंठु है कहां ॥१॥ रहाउ ॥ (1161-11)
ना जाना किआ गति राम हमारी ॥ (163-19)
ना जाना बैकुंठ कहा ही ॥ (325-8)
ना जीउ मरै न कबहू छीजै ॥१॥ (563-11)
ना जीउ मरै न डूबै तरै ॥ (151-9)
ना जीउ मरै न मारिआ जाई करि देखै सबदि रजाई हे ॥१३॥ (1026-9)
ना झुरु हीअड़े सचु चउ नानक सचो सचु ॥२॥ (1088-4)
ना तदि गिआनु धिआनु कुल ओपति ना को गणत गणाइदा ॥९॥ (1035-19)
ना तदि गोरखु ना माछिंदो ॥ (1035-19)
ना तदि जती सती बनवासी ॥ (1035-14)
ना तदि माइआ मगनु न छाइआ ना सूरज चंद न जोति अपार ॥ (503-19)
ना तदि सिध साधिक सुखवासी ॥ (1035-15)
ना तदि सुरगु मछु पइआला ॥ (1035-12)
ना तनु तेरा ना मनु तोहि ॥ (899-7)
ना तर ना तुलहा हम बूडसि तारि लेहि तारण राइआ ॥१९॥ (433-12)

ना तिसु एहु न ओहु है अवगुणि फिरि पछुताहि ॥ (934-19)
ना तिसु ओपति खपति कुल जाती ओहु अजरावरु मनि भाइआ ॥२॥ (1038-15)
ना तिसु कुट्मबु ना तिसु माता ॥ (1051-1)
ना तिसु गिआनु न धिआनु है ना तिसु धरमु धिआनु ॥ (935-1)
ना तिसु बापु न माइ किनि तू जाइआ ॥ (1279-12)
ना तिसु भुख पिआस रजा धाइआ ॥ (1279-13)
ना तिसु भूख पिआस मनु मानिआ ॥ (1039-3)
ना तिसु भैण न भराउ कमाइआ ॥ (1038-14)
ना तिसु मरणु न आवणु जाणु ॥ (686-4)
ना तिसु मात पिता सुत बंधप ना तिसु कामु न नारी ॥ (597-6)
ना तिसु मात पिता सुत भ्राता ॥ (1021-16)
ना तिसु रूप वरनु नही रेखिआ साचै सबदि नीसाणु ॥ रहाउ ॥ (597-5)
ना तिसु रूपु न रेख वरन सबाइआ ॥ (1279-12)
ना तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ (750-15)
ना तिसु सोगु विजोगु संतापु ॥ (935-5)
ना तुम डोलहु ना हम गिरते रखि लीनी हरि मेरी ॥१॥ (969-11)
ना तू आवहि वसि कितै सिआणपै ॥ (962-10)
ना तू आवहि वसि तीरथि नाईऐ ॥ (962-10)
ना तू आवहि वसि धरती धाईऐ ॥ (962-10)
ना तू आवहि वसि बहुता दानु दे ॥ (962-11)
ना तू आवहि वसि बहुतु घिणावणे ॥ (962-9)
ना तू आवहि वसि बेद पड़ावणे ॥ (962-9)
ना दिनु रैनि न चंदु न सूरजु सुंन समाधि लगाइदा ॥१॥ (1035-10)
ना दुखु देखहि पंथि करारै ॥ (1033-5)
ना धन पुछी न मता पकाइआ ॥ (1073-6)
ना निवै ना फुनि संचरै ॥ (341-9)
ना फिरि मरै न आवै जाइ ॥ (364-7)
ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना तिसु वंझु मलारु ॥ (59-11)
ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना पाईऐ पिरु दूरि ॥१॥ (17-10)
ना भैणा भरजाईआ ना से ससुड़ीआह ॥ (1015-5)
ना मनीआरु न चूड़ीआ ना से वंगुड़ीआहा ॥ (558-1)
ना मनु चलै न पउणु उडावै ॥ (1040-3)
ना मनु भीजै ना सुखु होइ ॥ (1277-17)
ना मनु मरै न कारजु होइ ॥ (222-2)
ना मनु मरै न माइआ मरै ॥ (1342-3)
ना मरजादु आइआ कलि भीतरि नांगो बंधि चलाइआ ॥३॥ (582-7)
ना मरजादु आइआ कलि भीतरि बाहुड़ि जासी नागा ॥ (74-17)

ना मरि जमै न जूनी पावै ॥ (1055-4)
ना माणे सुखि सेजड़ी बिनु पिर बादि सीगारु ॥ (58-13)
ना मै कुलु ना सोभावंत ॥ (394-10)
ना मै जाति न पति है ना मै थेहु न थाउ ॥ (994-7)
ना मै जोग धिआन चितु लाइआ ॥ (329-18)
ना मै रूपु न बंके नैणा ॥ (750-13)
ना मैला ना धुंधला ना भगवा ना कचु ॥ (1089-3)
ना मोहु तूटै ना थाइ पाहि ॥५॥ (356-8)
ना रिदै नामु न सबदु अचारु ॥६॥ (904-19)
ना रुति न करम थाइ पाहि ॥१॥ (1129-18)
ना वेछोड़िआ विछुड़ै सभ महि रहिआ समाइ ॥ (46-18)
ना संसारी ना अउधूत ॥ (953-6)
ना सति दुखीआ ना सति सुखीआ ना सति पाणी जंत फिरहि ॥ (952-8)
ना सति मूंड मुडाई केसी ना सति पड़िआ देस फिरहि ॥ (952-8)
ना सति रुखी बिरखी पथर आपु तछावहि दुख सहहि ॥ (952-9)
ना सति हसती बधे संगल ना सति गाई घाहु चरहि ॥ (952-10)
ना सरवरु ना ऊछलै ऐसा पंथु सुहेला ॥१॥ (729-9)
ना साजन से रंगुले किसु पहि करी पुकार ॥ (935-2)
ना साथि जाइ न परापति होइ ॥१॥ (665-15)
ना साबूरु होवै फिरि मंगै नारदु करे खुआरी ॥ (1190-19)
ना सुखु पेईऐ साहुरै झूठि जली वेकारि ॥ (56-6)
ना सुचि संजमु तुलसी माला ॥ (1035-16)
ना सोहागनि ना ओहि रंड ॥ (873-4)
ना सोहै बतीस लखना ॥३॥२॥ (1163-16)
ना हउ करता ना मै कीआ ॥ (993-9)
ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ (12-4)
ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ (357-14)
ना हउ थकां न ठाकीआ एवड रखहि जोति ॥ (1241-12)
ना हउ ना मै जूनी पाणु ॥२॥ (1289-8)
ना हउ ना मै ना हउ होवा नानक सबदु वीचारि ॥१॥ (139-12)
ना हउ भुली ना हउ चुकी ना मै नाही दोसा ॥ (959-13)
ना हम करम न धरम सुच प्रभि गहि भुजा आपाइओ ॥४॥ (241-17)
ना हम चंगे आखीअह बुरा न दिसै कोइ ॥ (1015-12)
ना हम हिंदू न मुसलमान ॥ (1136-11)
ना हरि भजिओ न खतु फटिओ कालु पहूंचो आइ ॥२०८॥ (1375-14)
ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना ॥ (632-1)
ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही ॥१॥ रहाउ ॥ (631-14)

ना हरि मरै न कदे दुखु लागै सदा सुहागणि नारि ॥ (651-13)
नाइ तेरै तरणा नाइ पति पूज ॥ (1327-4)
नाइ तेरै नाउ मंने सभ कोइ ॥ (1327-4)
नाइ तेरै माणु महत परवाणु ॥ (1327-6)
नाइ तेरै सभि सुख वसहि मनि आइ ॥ (1327-8)
नाइ तेरै सहजु नाइ सालाह ॥ (1327-7)
नाइ निवाजा नातै पूजा नावनि सदा सुजाणी ॥ (150-3)
नाइ मंनिऐ कुलु उधरै सभु कुट्मबु सबाइआ ॥ (1241-13)
नाइ मंनिऐ गुण उचरै नामे सुखि सोई ॥ (1242-11)
नाइ मंनिऐ दुख भुख गई जिन नामि चितु लाइआ ॥ (1241-15)
नाइ मंनिऐ दुरमति गई मति परगटी आइआ ॥ (1242-3)
नाइ मंनिऐ नामु ऊपजै सहजे सुखु पाइआ ॥ (1242-4)
नाइ मंनिऐ पंथु परगटा नामे सभ लोई ॥ (1241-8)
नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥ (471-8)
नाइ मंनिऐ पति पाईऐ हिरदै हरि सोई ॥ (1241-7)
नाइ मंनिऐ भवजलु लंघीऐ फिरि बिघनु न होई ॥ (1241-7)
नाइ मंनिऐ भ्रमु कटीऐ फिरि दुखु न होई ॥ (1242-11)
नाइ मंनिऐ संगति उधरै जिन रिदै वसाइआ ॥ (1241-14)
नाइ मंनिऐ सांति ऊपजै हरि मंनि वसाइआ ॥ (1242-5)
नाइ मंनिऐ सालाहीऐ पापां मति धोई ॥ (1242-11)
नाइ मंनिऐ सुखु ऊपजै नामे गति होई ॥ (1241-6)
नाइ मंनिऐ सुणि उधरे जिन रसन रसाइआ ॥ (1241-14)
नाइ मंनिऐ सुरति ऊपजै नामे मति होई ॥ (1242-10)
नाइ लइऐ पराछत जाहि ॥ (470-5)
नाइ विसरिऐ ध्रिगु जीवणा तूटे कच धागे ॥ (322-5)
नाइ सुणिऐ आपु बुझीऐ लाहा नाउ पावै ॥ (1240-18)
नाइ सुणिऐ घटि चानणा आन्हेरु गवावै ॥ (1240-17)
नाइ सुणिऐ नउ निधि मिलै मन चिंदिआ पावै ॥ (1240-10)
नाइ सुणिऐ नाउ ऊपजै नामे वडिआई ॥ (1240-2)
नाइ सुणिऐ पाप कटीअहि निरमल सचु पावै ॥ (1240-18)
नाइ सुणिऐ मनु त्रिपतीऐ सभ दुख गवाई ॥ (1240-2)
नाइ सुणिऐ मनु रहसीऐ नामे सांति आई ॥ (1240-1)
नाइ सुणिऐ संतोखु होइ कवला चरन धिआवै ॥ (1240-10)
नाइ सुणिऐ सभ सिधि है रिधि पिछै आवै ॥ (1240-9)
नाइ सुणिऐ सहजु ऊपजै सहजे सुखु पावै ॥ (1240-11)
नाइ सुणिऐ सुचि संजमो जमु नेड़ि न आवै ॥ (1240-17)
नाइकु एकु बनजारे पाच ॥ (1194-18)

नाई उधरिओ सैनु सेव ॥ (1192-10)
नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जोखीवदै ॥ (966-15)
नाउ तिना मिलै धुरि पुरबि कमाई ॥ (1064-13)
नाउ तेरा अम्रितु बिखु उठि जाइ ॥ (1327-7)
नाउ तेरा गहणा मति मकसूदु ॥ (1327-4)
नाउ तेरा ताणु नाउ दीबाणु ॥ (1327-6)
नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥ (465-15)
नाउ तेरा लसकरु नाउ सुलतानु ॥ (1327-6)
नाउ धिआईऐ नाउ मंगीऐ नामे सहजि समाइ ॥१॥ (26-5)
नाउ नउमी नवे नाथ नव खंडा ॥ (839-19)
नाउ नानक बखसीस नदरी करमु होइ ॥४॥३॥५॥ (729-18)
नाउ नानक बखसीस मन माहि परोवणा ॥१८॥ (523-6)
नाउ नीरु चंगिआईआ सतु परमलु तनि वासु ॥ (16-2)
नाउ पड़ीऐ नाउ बुझीऐ गुरमती वीचारा ॥ (140-15)
नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ अखंडु सदा सचु सोइ ॥३॥ (17-7)
नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ नाइ किलविख सभ हिरिआ ॥ (87-4)
नाउ प्रभातै सबदि धिआईऐ छोडहु दुनी परीता ॥ (1330-1)
नाउ फकीरै पातिसाहु मूरख पंडितु नाउ ॥ (1288-3)
नाउ बीजण लगा आस करि हरि बोहल बखस जमाइ जीउ ॥२॥ (73-10)
नाउ बीजु बखसीस बोहल दुनीआ सगल दरोग ॥ (955-6)
नाउ बीजे नाउ उगवै नामे रहै समाइ ॥ (947-3)
नाउ मंनिऐ हउमै गई सभि रोग गवाइआ ॥ (1242-4)
नाउ मिलै धुरि लिखिआ जन नानक पारि उतारि ॥१३॥ (1414-4)
नाउ मिलै संतोखीआं पिआरे नदरी मेलि मिलाउ ॥७॥ (636-15)
नाउ मेरे खेती नाउ मेरे बारी ॥ (1157-16)
नाउ मेरे बंधिप नाउ मेरे भाई ॥ (1157-18)
नाउ मेरे माइआ नाउ मेरे पूंजी ॥ (1157-17)
नाउ मेरे संगि अंति होइ सखाई ॥३॥ (1157-18)
नाउ लईऐ परमेसरै भंनण घड़ण समरथु ॥६२॥ (1420-16)
नाउ लैनि अरु करनि समाइ ॥ (1410-12)
नाउ विसारहि बेदु समालहि बिखु भूले लेखारी ॥५॥ (1015-19)
नाउ सदाए आपणा होवै सिधु सुमारु ॥ (17-6)
नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ (468-9)
नाकहु काटी कानहु काटी काटि कूटि कै डारी ॥ (476-16)
नागनि होवा धर वसा सबदु वसै भउ जाइ ॥ (157-6)
नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चमारं ॥ (1293-3)
नागां मिरगां मछीआं रसीआं घरि धनु होइ ॥१॥ (1279-9)

नागो आइआ नागो जासी विणु नावै दुखु पाइदा ॥११॥ (1064-11)
नागो आइओ नाग सिधासी फेरि फिरिओ अरु कालि गरसूआ ॥१॥ (206-13)
नाचंती गोपी जंना ॥ (693-18)
नाचनु सोइ जु मन सिउ नाचै ॥ (872-16)
नाचु रे मन गुर कै आगै ॥ (506-5)
नातरु खरा रिसै है राइ ॥३॥ (344-13)
नातरु गरदनि मारउ ठांइ ॥२॥ (1165-14)
नाता धोता थाइ न पाई ॥ (114-8)
नाता धोता थाइ न पाई ॥ (951-19)
नाता सो परवाणु सचु कमाईऐ ॥ (565-19)
नाती धोती स्मबही सुती आइ नचिंदु ॥ (1379-11)
नाथ कछूअ न जानउ ॥ (710-15)
नाथ जती सिध पीर किनै अंतु न पाइआ ॥ (1282-9)
नाथ नरहर दीन बंधव पतित पावन देव ॥ (508-4)
नाथु छोडि जाचहि लाज न आवै ॥२॥ (886-13)
नाद कुरंकहि बेधिआ सनमुख उठि धावै ॥ (708-15)
नाद बिंद की सुरति समाइ ॥ (352-8)
नाद बिनोद अनंद कोड प्रिअ प्रीतम संगि बने ॥ (929-6)
नाद बिनोद कोड आनंदा सहजे सहजि समाइओ ॥ (1214-19)
नाद भ्रमे जैसे मिरगाए ॥ (873-13)
नाद रोगि खपि गए कुरंगा ॥१॥ (1140-17)
नाद हेति सिरु डारिओ कुरंका उस ही हेत बिदारा ॥२॥ (671-1)
नादि समाइलो रे सतिगुरु भेटिले देवा ॥१॥ रहाउ ॥ (657-1)
नादी बेदी पड़्हहि पुराण ॥ (1169-7)
नादी बेदी सबदी मोनी जम के पटै लिखाइआ ॥२॥ (654-18)
नानक अंत न जापन्ही हरि ता के पारावार ॥ (475-3)
नानक अंतरि तेरै निधानु है तू बाहरि वसतु न भालि ॥२॥ (569-11)
नानक अंति विगुते भोग ॥ (1243-8)
नानक अंतु न पाईऐ बेअंत गुसाई ॥४॥३२॥६२॥ (816-17)
नानक अंतु न पारावारा ॥२॥ (250-14)
नानक अंधा होइ कै दसे राहै सभसु मुहाए साथै ॥ (140-13)
नानक अंधा होइ कै रतना परखण जाइ ॥ (954-10)
नानक अंधे सिउ किआ कहीऐ कहै न कहिआ बूझै ॥ (1289-18)
नानक अउगण वीसरे गुरि राखे पति ताहि ॥४॥१५॥ (20-1)
नानक अउगुण जेतड़े तेते गली जंजीर ॥ (595-8)
नानक अगनि मरै सतिगुर कै भाणै ॥४६॥ (943-6)
नानक अगहु हउमै तुटै तां को लिखीऐ लेखै ॥१॥ (1243-18)

नानक अगै ऊतम सेई जि पापां पंदि न देही ॥१॥ (91-4)
नानक अगै पुछ न होइ ॥२॥ (952-5)
नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥१॥ (472-8)
नानक अचरजु अचरज सिउ मिलिआ कहणा कछू न जाए ॥४॥२॥५॥ (803-8)
नानक अजु कलि आवसी गाफल फाही पेरु ॥१॥ (518-11)
नानक अतुलु सहज सुखु पाइआ अनदिनु जागतु रहै बनवारी ॥४॥७॥ (607-8)
नानक अनद करे हरि जपि जपि सगले रोग निवारे ॥२॥१०॥१५॥ (715-1)
नानक अनद भए दुख भागे सदा सदा हरि जापि ॥२॥१३॥४४॥ (681-16)
नानक अनदिनु गुण उचरै जिन कउ धुरि लिखिआ होइ ॥१॥ (1313-7)
नानक अनदिनु नामु धिआइ तू अंतरि जितु पावहि मोख दुआर ॥१॥ (1248-4)
नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥१॥ (522-4)
नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥२॥ (524-4)
नानक अनहद धुनी दरि वजदे मिलिआ हरि सोई ॥२८॥ (1248-8)
नानक अनिक बार नमो नमह ॥६३॥ (1359-18)
नानक अपड़ि कोइ न सकई पूरे सतिगुर की वडिआईआ ॥३४॥ (1250-19)
नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥ (291-15)
नानक अम्रित नामु सदा सुखदाता पी अम्रितु सभ भुख लहि जावणिआ ॥८॥१५॥१६॥ (119-4)
नानक अम्रित बिरखु महा रस फलिआ मिलि प्रीतम रसु चाखै ॥३॥ (1111-19)
नानक अम्रितु एकु है दूजा अम्रितु नाहि ॥ (1238-18)
नानक अम्रितु मनै माहि पाईऐ गुर परसादि ॥ (1238-19)
नानक अम्रितु सद ही वरसदा गुरमुखि देवै हरि सोइ ॥१॥ (1281-5)
नानक अरदासि एहु मेरे मना ॥३॥६॥१६२॥ (410-18)
नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देइ दिखालि ॥१२१॥ (1384-10)
नानक अवगण गुणह समाणे ऐसी गुरमति पाई ॥३॥ (1111-7)
नानक अवगण सबदि जलाए गुण संगमि प्रभु पाए ॥४॥१॥२॥ (764-16)
नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥ (266-12)
नानक अवरु न जीवै कोइ ॥ (142-10)
नानक अवरु न सुझई हरि बिनु बखसणहारु ॥१॥ (853-12)
नानक असथिरु नामु रजाइ ॥४॥११॥ (352-5)
नानक असुनि मिलहु पिआरे सतिगुर भए बसीठा ॥११॥ (1109-2)
नानक अहिनिसि रावै प्रीतमु हरि वरु थिरु सोहागो ॥१७॥१॥ (1110-1)
नानक अहिनिसि सदा भली पिर कै हेति पिआरि ॥२॥ (1088-8)
नानक आइ पए सरणाइ ॥४॥३८॥८९॥ (393-6)
नानक आइआ सो परवाणु है जि गुरमुखि सचि समाइ ॥१॥ (549-17)
नानक आइआ सो परवानु ॥४॥२०॥३३॥ (1145-8)
नानक आए सफल ते जा कउ प्रिअहि सुहाग ॥१९॥ (254-5)
नानक आए से परवाणु भए जि सगले कुल तारेनि ॥१॥ (951-7)

नानक आए से परवाणु हहि जिन गुरमती हरि धिआइ ॥४॥५॥३८॥ (28-12)
नानक आए से परवाणु है जिन हरि वुठा चिति ॥ (320-18)
नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥ (5-1)
नानक आखणु आखीऐ जे सुणि धरे पिआरु ॥८॥१२॥३४॥ (428-18)
नानक आखणु बिखमु बीचारु ॥४॥२॥ (151-13)
नानक आखणु वेरा वेर ॥ (350-14)
नानक आखि सुणाए आपे ॥४॥२॥ (797-8)
नानक आणे आवै रासि ॥ (25-15)
नानक आतम रामु सबाइआ गुर सतिगुर अलखु लखाइआ ॥१५॥५॥२२॥ (1043-15)
नानक आतसड़ी मंझि नैणू बिआ ढलि पबणि जिउ जुमिओ ॥२॥ (1095-18)
नानक आदि अंगद अमर सतिगुर सबदि समाइअउ ॥ (1407-13)
नानक आपन कटारी आपस कउ लाई मनु अपना कीनो फाट ॥२॥८२॥१०५॥ (1224-15)
नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥३॥ (291-8)
नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥६॥ (291-18)
नानक आपि अनुग्रहु कीआ हम दासनि दासनि दासा ॥३॥ (443-10)
नानक आपि अमेउ है गुर किरपा ते रहिआ समाइ ॥ (555-13)
नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥४॥ (276-5)
नानक आपि ओहि उधरे सभ कुट्मब तरे परवार ॥४२॥ (1418-3)
नानक आपि कराए करता जो तिसु भावै साई गल चंगेरी ॥२॥ (1251-4)
नानक आपि कराए करे आपि हुकमि सवारणहारा ॥७॥ (141-9)
नानक आपि दइआलु होइ नामे लिव लाई ॥४॥ (1239-5)
नानक आपि निहाल सभि कुल तारसी ॥१॥४॥६॥ (730-5)
नानक आपि मिलाइअनु आपे किरपा धारि ॥१॥ (551-11)
नानक आपि मिलाइअनु पूरै सबदि अपार ॥४॥१६॥४९॥ (32-18)
नानक आपि मिलाई करतै नामु नवै निधि पाई ॥४॥३॥४॥ (770-13)
नानक आपि मिलावणहार ॥५॥ (277-15)
नानक आपि सदीव है पूरा जिसु भंडारु ॥ (1239-3)
नानक आपि सवारनहारा ॥८॥ (251-19)
नानक आपु गवाइ मिलण नही भ्राते ॥५४॥ (944-3)
नानक आपु छोडि गुर माहि समावै ॥१॥ (509-12)
नानक आपे आपि आपि खुआईऐ ॥ (369-9)
नानक आपे आपि वरतै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥८॥६॥७॥ (113-12)
नानक आपे आपु पछाणै गुरमुखि सहजि समाए ॥४॥ (689-15)
नानक आपे करे कराए नामे नामि समावणिआ ॥८॥७॥८॥ (114-4)
नानक आपे जोग सजोगी नदरि करे लिव लाईऐ ॥३॥ (765-8)
नानक आपे बखसि मिलाए जुगि जुगि सोभा पाइआ ॥४॥१॥२॥ (769-5)
नानक आपे मेलि लए आपे बखसणहारु ॥१॥ (1250-11)

नानक आपे मेलि लए जिस नो सबदि लाए पिआरु ॥३॥ (312-4)
नानक आपे वेक कीतिअनु नामे लइअनु लाइ ॥४॥४॥ (559-11)
नानक आपे वेखि हरि बिगसै गुरमुखि ब्रहम बीचारो ॥४॥३॥१४॥ (736-2)
नानक आपे वेखै आपे सचि लाए ॥४॥७॥ (666-1)
नानक आपे ही पति रखसी कारज सवारे सोइ ॥१॥ (586-3)
नानक आपै आपु पछाणै गुरमुखि ततु बीचारी ॥४॥४॥ (1112-3)
नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥ (474-4)
नानक आसड़ी निबाहि मानुख परथाई लजीवदो ॥३॥ (1101-2)
नानक आसड़ी निबाहि सदा पेखंदो सचु धणी ॥२॥ (708-18)
नानक आसा पूरीआ सचे सिउ चितु लाइ ॥१॥ (517-9)
नानक आहि सरण प्रभ आइओ राखु लाज अपनाइआ ॥४॥३॥१२५॥ (402-16)
नानक इकसु बिनु मै अवरु न जाणा सभना दीवानु दइआला ॥५॥५॥ (559-18)
नानक इकि दरसनु देखि मरि मिले सतिगुर हेति पिआरि ॥१॥ (594-13)
नानक इकु आराधे संतन रेणारु ॥१॥ (962-7)
नानक इकु स्रीधर नाथु जि टूटे लेइ सांठि ॥१५॥ (1363-1)
नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥ (271-3)
नानक इसु देही विचि नामु निधानु है पाईऐ गुर कै हेति अपारि ॥८॥१०॥३२॥ (427-18)
नानक इसु मन की मलु इउ उतरै हउमै सबदि जलाइ ॥२॥ (650-16)
नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥८॥२४॥ (296-9)
नानक इह बिधि छुटीऐ नदरि तेरी सुखु होइ ॥१॥ (790-10)
नानक इह बिधि हरि भजउ इक मनि हुइ इक चिति ॥४५॥ (1428-17)
नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥१॥ (272-11)
नानक इहु अचरजु देखहु मेरे हरि सचे साह का जि सतिगुरू नो मंनै सु सभनां भावै ॥१३॥१॥ सुधु ॥ (855-4)
नानक इहु जगतु सभु जलु है जल ही ते सभ कोइ ॥ (1283-5)
नानक इहु जीउ मछुली झीवरु त्रिसना कालु ॥ (955-13)
नानक इहु तनु जालि जिनि जलिऐ नामु विसारिआ ॥ (789-3)
नानक इहु तनु बिरखु राम नामु फलु पाए सोइ ॥४॥३॥१५॥ (1176-14)
नानक इहु भोजनु सचु है सचु नामु आधारु ॥२॥ (553-7)
नानक इहु मनु मारि मिलु भी फिरि दुखु न होइ ॥५॥१८॥ (21-7)
नानक इहु मरतबा तिस नो देइ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥२॥ (556-5)
नानक इहु संजमु प्रभ किरपा पाईऐ ॥१०॥ (299-1)
नानक ईसरि जगनाथि उचहदी वैणु विरिकिओनु ॥ (967-12)
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥१॥ (278-9)
नानक ईहा सुखु आगै मुख ऊजल संगि संतन कै पाईऐ ॥४॥१॥ (700-7)
नानक उआ का मनु सीतलाइआ ॥२८॥ (256-3)
नानक उठी चलिआ सभि कूड़े तुटे नेह ॥४॥६॥ (16-11)

नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥ (7-11)
नानक उधरसि तिसु जन की धूरि ॥४॥१०॥ (1340-16)
नानक उधरु क्रिपा सुख सागर ॥४॥ (195-12)
नानक उधरे जपि हरे सभहू का सुआमी राम ॥३॥ (848-17)
नानक उधरे तिन कै साथे ॥३॥ (295-12)
नानक उधरे नाम पुनहचार ॥ (1142-14)
नानक उधरे प्रभ सरणाई ॥५॥१॥५५॥ (684-3)
नानक उधरे साधसंगि किरपा निधि मै दितनो ॥२॥१०॥१४८॥ (212-6)
नानक उधरे हरि गुर सरणाई ॥२॥३१॥३७॥ (744-15)
नानक उधरै साध सुनि रसै ॥६॥ (272-3)
नानक उन जन चरन पराता ॥७॥ (269-9)
नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥ (262-12)
नानक उबरे जपि हरी साधसंगि सनबंध ॥१॥ (256-8)
नानक उबरे नामु जपि दरि सचै साबासि ॥४॥३॥१७१॥ (218-13)
नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥४॥ (274-16)
नानक ऊन न देखीऐ पूरन ता के काम ॥१४॥ (299-15)
नानक एक जोति दुइ मूरती सबदि मिलावा होइ ॥४॥११॥४४॥ (30-19)
नानक एकी बाहरा दूजा दाता नाहि ॥ (1239-1)
नानक एकी बाहरा दूजा नाही कोइ ॥ (557-12)
नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ॥ (475-10)
नानक एकु छोडि दूजै लगै सा जिहवा जलि जाउ ॥२॥ (516-14)
नानक एको दरु दीबाणु ॥ (355-15)
नानक एको नदरी आइआ जह देखा तह सोइ ॥३॥ (947-10)
नानक एको नामु वरतै मन अंतरि गुर परसादी पावणिआ ॥८॥१७॥१८॥ (120-8)
नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार ॥१॥ (292-7)
नानक एको रवि रहिआ दूजा अवरु न कोइ ॥८॥६॥ (57-5)
नानक एको रवि रहिआ दूसर होआ न होगु ॥१॥ (250-7)
नानक एथै कमावै सो मिलै अगै पाए जाइ ॥१॥ (556-2)
नानक एव न जापई करता केती देइ सजाइ ॥१॥ (509-7)
नानक एव न जापई किथै जाइ समाहि ॥२॥ (648-14)
नानक एव न जापई कोई खाइ निदानि ॥१॥ (854-3)
नानक एवै जाणीऐ जीवै देवणहारु ॥२॥ (1242-10)
नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥१॥ (473-7)
नानक एवै जाणीऐ सभ किछु तिसहि रजाइ ॥१॥ (148-7)
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥ (2-6)
नानक एवै जाणीऐ सभु किछु तिसै रजाइ ॥२॥ (1091-18)
नानक एहु पटंतरा तितु दीबाणि गइआह ॥१॥ (788-3)

नानक ऐथै सुखै अंदरि रखसी अगै हरि सिउ केल करेहु ॥२॥ (554-9)
नानक ऐसा आगू जापै ॥१॥ (140-1)
नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥३॥ (287-4)
नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥३॥ (274-12)
नानक ऐसा विरला को जोगी जिसु घटि परगटु होइ ॥२॥ (556-16)
नानक ऐसी मरनी जो मरै ता सद जीवणु होइ ॥२॥ (555-6)
नानक ऐसे सतिगुर की किआ ओहु सेवकु सेवा करे गुर आगै जीउ धरेइ ॥ (490-7)
नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥८॥१०॥ (276-17)
नानक ओट गही जगदीसुर पुनह पुनह बलिहारिओ ॥२॥४॥३०॥ (534-9)
नानक ओट पकरी प्रभ सुआमी ॥४॥१०८॥ (201-9)
नानक ओति पोति भगवानु ॥४॥२४॥३७॥ (1146-13)
नानक ओथै जाणीअहि साह केई पातिसाह ॥४॥ (1287-18)
नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥१॥ (274-3)
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥७॥ (275-6)
नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ॥२॥ (274-9)
नानक कंत न जाणनी से किउ अगि जलाहि ॥ (787-11)
नानक कंतै रतीआ पुछहि बातड़ीआह ॥२॥ (790-11)
नानक कउ उपजी परतीति ॥ (867-18)
नानक कउ किरपा भई दासु अपना कीनु ॥४॥२५॥५५॥ (815-1)
नानक कउ खुदि खसम मिहरवान ॥ (1138-3)
नानक कउ गुर भए दइआल ॥४॥३०॥४३॥ (1148-12)
नानक कउ गुर भेटे पूरे ॥४॥१४॥२५॥ (890-17)
नानक कउ गुरि कीओ प्रगासा ॥८॥२॥५॥ (1157-2)
नानक कउ गुरि दीआ नामु ॥ (891-3)
नानक कउ गुरि दीखिआ दीन्ह ॥ (376-16)
नानक कउ गुरि दीनो दानु ॥४॥२५॥ (377-5)
नानक कउ गुरि बखसिआ नामै संगि जुटु ॥२९॥ (315-13)
नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सगले दूख बिनासे ॥४॥५॥ (610-1)
नानक कउ गुरु भेटिआ बिनसे सगल संताप ॥४॥८॥७८॥ (45-5)
नानक कउ जुगि जुगि हरि जसु दीजै हरि जपीऐ अंतु न पाइआ ॥५॥ (1042-1)
नानक कउ प्रभ किरपा कीजै नेत्र देखहि दरसु तेरा ॥१॥ (781-1)
नानक कउ प्रभ किरपा धारि ॥ (1150-12)
नानक कउ प्रभ किरपा धारे ॥४॥१११॥ (202-8)
नानक कउ प्रभ कीजै किरपा उन संतन कै संगि संगोरी ॥४॥१३॥१३४॥ (208-19)
नानक कउ प्रभ दइआ करि दास चरणी लागउ ॥४॥२॥४२॥ (745-16)
नानक कउ प्रभ दइआ धारि ॥ (987-10)
नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला प्रभ नानक मनि भाणा जीउ ॥४॥२२॥२९॥ (103-6)

नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला सतिगुरु पूरा पाइआ ॥४॥८॥५५॥ (749-11)
नानक कउ प्रभ मइआ करि ॥ (211-15)
नानक कउ प्रभ मइआ करि सचु देवहु अपुणा नाउ ॥४॥७॥७७॥ (44-18)
नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥ (135-8)
नानक कउ प्रभ होइ दइआला तेरा कीता सहणा ॥४॥४३॥५०॥ (109-6)
नानक कउ प्रभि करी दाति ॥४॥५॥ (987-16)
नानक कउ प्रभु मिलिओ अचिंता ॥१॥ (1157-4)
नानक कउ मिलिआ अंतरजामी ॥४॥८९॥१५८॥ (197-17)
नानक कउ हरि कै रंगि रागहु चरन कमल संगि धिआन ॥२॥१॥३॥ (1119-16)
नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ ॥ (1102-3)
नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥ (8-7)
नानक कबहु न वीसरै प्रभ परमानंद ॥४॥२४॥५४॥ (814-15)
नानक कमाणा संगि जुलिआ नह जाइ किरतु मिटाइआ ॥१॥ (460-1)
नानक कमि न आवई जितु तनि नाही सचा नाउ ॥४॥५॥७॥ (730-9)
नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥२३॥ (475-4)
नानक करणा जिनि कीआ सोई सार करेइ ॥ (157-1)
नानक करता करणहारु करि वेखै थापि उथापि ॥२५॥ (1412-8)
नानक करता करे सु होइ ॥४३॥ (1418-6)
नानक करता सभ किछु जाणदा जिनि रखी बणत बणाइ ॥३६॥ (1417-8)
नानक करता सभु किछु जाणदा जिदू किछु गुझा न होइ ॥२॥ (302-5)
नानक करते का अंतु न पावहि ॥१॥ (275-14)
नानक करते का इहु धनु मालु ॥ (351-12)
नानक करते का नाहि सुमारु ॥४॥ (291-11)
नानक करते की जानै करता रचना ॥२॥ (275-17)
नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥ (13-1)
नानक करते के केते वेस ॥२॥३०॥ (357-18)
नानक करतै बणत बणाई मनमुख कूड़ु बोलि बोलि डुबे गुरमुखि तरे जपि हरि नाउ ॥२॥ (511-13)
नानक करनैहारु न दूजा ॥१॥ (291-1)
नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ही धावदे ॥ (468-3)
नानक करमा बाहरे होरि केते मुठे जाहि ॥२॥ (1288-16)
नानक करमि परापति होइ ॥३॥ (724-3)
नानक करमि परापति होइ ॥४॥२९॥४०॥ (895-14)
नानक करमी इह मति पाई ॥ (85-8)
नानक करमी बंदगी नदरि लंघाए पारि ॥२॥ (1242-3)
नानक करमी महलु पाइआ पिरु राखिआ उर धारि ॥१॥ (787-3)
नानक करमु पाइआ तिन सचा जो गुर चरणी लगे आइ ॥२०॥ (1423-10)
नानक करमु होवै जपीऐ करि गुरु पीरु ॥ (1257-10)

नानक करमु होवै मुखि मसतकि लिखिआ होवै लेखु ॥ (147-13)
नानक कलि का एहु परवाणु ॥ (951-18)
नानक कहत गाइ करुना मै भव सागर कै पारि उतरु रे ॥२॥९॥२५१॥ (220-16)
नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥३॥४॥ (632-8)
नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ॥२॥१॥ (1231-11)
नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥३॥३॥ (727-5)
नानक कहत भगत रछक हरि निकटि ताहि तुम मानो ॥२॥१॥ (830-17)
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥२॥२॥ (631-16)
नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥२॥५॥ (218-19)
नानक कहीऐ किसु हंढनि करमा बाहरे ॥१॥ (147-19)
नानक कहू न सीझई बिनु नावै पति जाइ ॥१॥ (268-5)
नानक का अंगु कीआ करतारि ॥४॥१२॥१४॥ (866-12)
नानक का जीउ पिंडु गुरू है गुर मिलि त्रिपति अघाई ॥३१॥ (758-11)
नानक का पातिसाहु दिसै जाहरा ॥४॥३॥१०५॥ (397-7)
नानक का प्रभु अपर अपारा ॥४॥२४॥९३॥ (184-2)
नानक का प्रभु आपे आपि ॥४॥२५॥३६॥ (894-9)
नानक का प्रभु आपे आपे करि करि वेखै चोज खड़ा ॥१६॥१॥१०॥ (1082-5)
नानक का प्रभु पूरि रहिओ है जत कत तत गोसाई ॥३२॥१॥ (758-11)
नानक का प्रभु रहिओ समाइ ॥४॥१॥ (1136-5)
नानक का प्रभु वडा है आपि साजि सवारे ॥२॥ (323-3)
नानक का प्रभु सोइ जिस का सभु कोइ ॥ (398-17)
नानक का राखा आपि प्रभु सुआमी किआ मानस बपुरे करीऐ ॥२॥९॥९५॥ (823-10)
नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ ॥ (15-1)
नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥ (267-5)
नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥४॥ (267-10)
नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइ ॥४॥१॥३॥ (722-5)
नानक कामणि कंतै रावे मनि मानिऐ सुखु होई ॥१॥ (770-3)
नानक कामणि नाह पिआरी जा हरि के गुण सारे ॥१॥ (244-11)
नानक कामणि नाह पिआरी राम नामु गलि हारो ॥२॥ (244-1)
नानक कामणि पिरहि पिआरी विचहु आपु गवाए ॥१॥ (245-6)
नानक कामणि पिरु रावे आपणा रवि रहिआ प्रभु सोई ॥२॥ (770-6)
नानक कामणि सदा रंगि राती हरि जीउ आपि मिलाए ॥३॥ (244-4)
नानक कामणि सदा सुहागणि ना पिरु मरै न जाए ॥४॥२॥ (245-2)
नानक कामणि सहजि समाणी जिसु साचा नामु अधारो ॥३॥ (244-17)
नानक कामणि सहजे राती जिनि सचु सीगारु बणाइआ ॥३॥ (568-6)
नानक कामणि सा पिर भावै सबदे रहै हदूरे ॥२॥ (568-3)
नानक कामणि हरि रंगि राती जा चलै सतिगुर भाए ॥४॥१॥ (568-10)

नानक कामणि हरि वरु पाइआ गुर कै भाइ पिआरे ॥४॥१॥ (244-8)
नानक कामणि हरि वरु पाइआ सगले दूख विसारे ॥२॥ (244-15)
नानक कामि क्रोधि किनै न पाइओ पुछहु गिआनी जाइ ॥१॥ (551-19)
नानक कार न कथनी जाइ ॥ (463-12)
नानक कारणु करते वसि है गुरमुखि बूझै कोइ ॥१॥ (90-7)
नानक किरति पइऐ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥२॥ (594-1)
नानक किरतु न जाइ मिटाइआ ॥४॥२१॥३४॥ (1145-13)
नानक किरतु न जाइ मिटाइओ ॥२॥ (1005-1)
नानक किरपा करि कै मेले विछुड़ि कदे न जाई ॥४॥१॥ (773-15)
नानक किरपा ते हरि धिआईऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥१॥ (300-17)
नानक किस नो आखीऐ आपे देवणहारु ॥१०॥ (1283-1)
नानक किस नो आखीऐ जा आपे बखसणहारु ॥२॥ (589-6)
नानक किस नो आखीऐ विणु पुछिआ ही लै जाइ ॥३१॥ (1412-17)
नानक किस नो आखीऐ सभु वरतै आपि सचिआरु ॥१॥ (1248-16)
नानक किस नो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥ (580-4)
नानक किस नो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥४॥२॥ (580-6)
नानक की अरदासि प्रभ जीवा गुन गाए ॥४॥१२॥४२॥ (811-8)
नानक की अरदासि सुणीजै ॥ (389-15)
नानक की अरदासि सुणीजै ॥ (741-8)
नानक की अरदासि है सच नामि सुहेला ॥ (421-11)
नानक की तू टेक प्रभ तेरा आधार ॥ (813-7)
नानक की धर तूंहै ठाकुर हरि रंगि पारि परीवां जीउ ॥४॥९॥१६॥ (99-9)
नानक की धर तूहै ठाकुर तू नानक का माणा ॥३॥ (779-18)
नानक की प्रभ पहि अरदासि ॥४॥२३॥७४॥ (389-4)
नानक की प्रभ पासि बेनंती तेरे जन देखणु पावा ॥४॥७॥५४॥ (749-5)
नानक की प्रभ पाहि बिनंती काटहु अवगुण मेरे ॥४॥११॥२२॥ (615-5)
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥१॥ (289-9)
नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥ (134-1)
नानक की प्रभ बेनती मेरी जिंदुड़ीए मिलि साधू संगि अघाणे राम ॥२॥ (541-11)
नानक की प्रभ बेनती साधसंगि समाउ ॥२॥३॥४३॥ (745-19)
नानक की प्रभ बेनती हरि भावै बखसि मिलाइ ॥४१॥ (1418-1)
नानक की प्रभ बेनती हरि सरनि समावउ ॥४॥२१॥५१॥ (813-18)
नानक की प्रभ सचु अरदासि ॥४॥४॥२२॥ (1271-13)
नानक की प्रभ सरधा पूरि ॥४॥२२॥३३॥ (893-10)
नानक की बेनंती एह ॥२॥४॥५८॥ (684-12)
नानक की बेनंती प्रभ जी नामि रहा लिव लाई ॥२॥२५॥८९॥ (630-8)
नानक की बेनंती प्रभ जीउ मिलै संत जन सेवा ॥२॥५२॥७५॥ (1219-3)

नानक की बेनंती प्रभ पहि क्रिपा करि भवजलु तारीऐ ॥२॥ (80-17)
नानक की बेनंती प्रभ पहि साधसंगि रंक तारन ॥२॥३॥८३॥ (820-17)
नानक की बेनंती सुआमी ॥४॥५॥१०॥ (804-11)
नानक की बेनंती सुआमी तेरे जन देखणु पावा ॥२॥ (802-13)
नानक की बेनंती हरि पहि अपुना नामु जपावहु ॥२॥७॥१६५॥ (216-13)
नानक की बेनंती हरि पहि गुर मिलि गुर सुखु पाई ॥१८॥ (758-2)
नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥ (133-10)
नानक की बेनंतीआ मिलै निथावे थाउ ॥२॥ (704-12)
नानक की बेनंतीआ मै तेरा जोरु ॥२॥९॥७३॥ (818-18)
नानक की बेनंतीआ हरि सुरजनु देखा नैण ॥१॥ (136-18)
नानक की लोचा पूरि सचे पातिसाह ॥४॥६॥१०८॥ (398-2)
नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥ (282-19)
नानक कीमति कहणु न जाइ ॥४॥२॥४१॥ (361-11)
नानक कीमति कहनु न जाइ ॥७॥ (279-9)
नानक कीमति सो करे पूरा गुरु गिआने ॥८॥६॥ (1012-14)
नानक कुल उधारहि आपणा दरगह पावहि माणु ॥२॥ (648-3)
नानक कुलि निमलु अवतर्यिउ अंगद लहणे संगि हुअ ॥ (1395-8)
नानक कुलि निमलु अवतर्यिउ गुण करतारै उचरै ॥ (1395-11)
नानक कूड़ु कूड़ो होइ जाइ ॥४॥१॥ (1327-9)
नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥ (471-19)
नानक कूड़ै कतिऐ कूड़ा तणीऐ ताणु ॥ (790-3)
नानक के पूरन सुखदाते तू देहि त नामु समालीऐ ॥८॥१॥७॥ (1019-17)
नानक के प्रभ तुम ही दाते संतसंगि ले मोहि उधरहु ॥२॥३॥११९॥ (828-7)
नानक के प्रभ पुरख बिधाते घटि घटि तुझहि दिखाउ ॥२॥२॥४॥ (1120-2)
नानक के प्रभ प्राण अधार ॥४॥१८॥२०॥ (868-12)
नानक के प्रभ प्रान अधार ॥४॥९३॥१६२॥ (198-14)
नानक के प्रभ सद ही मुकता ॥४॥१॥६॥ (803-14)
नानक के प्रभ सद ही साथि ॥४॥१६॥२९॥ (1144-2)
नानक के प्रभ सदा सुखदाते मै ताणु तेरा इकु नाउ ॥४॥७॥४६॥ (382-13)
नानक के सुआमी धारि अनुग्रहु मनि तनि अंकि समावए ॥१॥ (80-12)
नानक के सुखदाते सतिगुर हम तुमरे बाल गुपाला ॥२॥३०॥ (378-7)
नानक कै घरि केवल नामु ॥४॥४॥ (1136-16)
नानक कै मनि इहु अनराउ ॥१॥ (284-1)
नानक कै मनि इहु पुरखारथु ॥ (1151-6)
नानक कै सुखु सोइ जो प्रभ भावई ॥४॥११॥११३॥ (399-6)
नानक को प्रभु पूरि रहिओ है पेखिओ जत्र कता ॥२॥२॥११॥ (498-10)
नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥१॥ (274-6)

नानक कोड़ी नरक बराबरे उजड़ु सोई थाउ ॥२॥ (707-18)
नानक क्रिपा करहु गुर मेलहु मै रामु जपत मनु धीरे ॥८॥५॥ (983-7)
नानक क्रिपा करी हरि जिन कउ ते संत भले हरि राम ॥२॥१॥ (719-5)
नानक क्रिपा करे जगजीवनु सहज भाइ लिव लाए ॥४॥१६॥ (353-17)
नानक क्रिपा करे जिन ऊपरि तिना हुकमे लए मिलाए ॥१८॥ (1423-4)
नानक क्रिपा क्रिपा करि ठाकुर मै दासनि दास करावैगो ॥८॥२॥ (1309-10)
नानक क्रिपा क्रिपा करि धारहु मै साधू चरन पखीजै ॥८॥४॥ (1325-15)
नानक खसमै एवै भावै ॥ (1287-4)
नानक खसमै भावै सा भली जिस नो आपे बखसे करतारु ॥१॥ (516-12)
नानक खोजि लहहु घरु अपना हरि आतम राम नामु पाइआ ॥५॥ (1039-19)
नानक खोजि लहै जनु कोई ॥८॥१॥ (1342-12)
नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥ (7-14)
नानक गणतै सेवकु ना मिलै जिसु बखसे सो पवै थाइ ॥१॥ (649-9)
नानक गरीब राखहु हरि मेरे ॥४॥१॥ (561-3)
नानक गला झूठीआ सचा नामु समालि ॥१॥ (1089-9)
नानक गली कूड़ीई कूड़ो पलै पाइ ॥२॥ (141-3)
नानक गहिओ साचा सोइ ॥ (1001-5)
नानक गाली कूड़ीआ बाझु परीति करेइ ॥ (594-7)
नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥ (2-7)
नानक गावै गोबिंद नीत ॥२॥६॥२८॥ (1272-17)
नानक गाहकु किउ लए सकै न वसतु पछाणि ॥२॥ (954-18)
नानक गिआन अंजनु जिह नेत्रा ॥२२॥ (254-17)
नानक गिआन रतनु परगासिआ हरि मनि वसिआ निरंकारी जीउ ॥४॥८॥ (598-3)
नानक गिआनी जगु जीता जगि जीता सभु कोइ ॥ (548-18)
नानक गीधा हरि रस माहि ॥३॥२७॥ (377-14)
नानक गुण गहि रासि हरि जीउ मिले पिआरिआ ॥२३॥ (149-1)
नानक गुण गावहि सुआमी के अचरजु जिसु वडिआई राम ॥२॥ (784-3)
नानक गुपतु वरतदा पिआरा गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥ (605-7)
नानक गुर कउ सद बलि जावै ॥४॥१६॥२२॥ (741-16)
नानक गुर की चरणी लागे ॥८॥६॥ (414-14)
नानक गुर के चरन सरेवहु जिनि भूला मारगि पाइआ ॥५॥ (1043-2)
नानक गुर कै भाणै जे चलहि सहजे सचि समाहि ॥२॥ (1249-5)
नानक गुर ते आइआ सादु ॥ (377-13)
नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ ॥ (490-19)
नानक गुर ते थित पाई फिरन मिटे नित नीत ॥१॥ (258-5)
नानक गुर ते पाइआ ॥४॥७॥२३॥ (1006-7)
नानक गुर ते पाई बुधि ॥४॥१४॥६५॥ (387-7)

नानक गुर परसादी अनदिनु भगति हरि उचरहि हरि भगती माहि समाहि ॥२॥ (651-4)
नानक गुर परसादी उबरे हउमै सबदि जलाइ ॥२॥ (592-13)
नानक गुर परसादी एहु मनु तां तरै जा छोडै अहंकारु ॥ (851-5)
नानक गुर परसादी छुटीऐ जे चितु लगै सचि ॥२॥ (1088-19)
नानक गुर परसादी सो बुझसी जिसु आपि बुझावै ॥२॥ (1247-18)
नानक गुर पूरे ते पाइआ सहजि मिलिआ प्रभु आइ ॥२२॥ (1423-14)
नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥ (295-6)
नानक गुर पूरे सरनाई ॥ (807-9)
नानक गुर बिनु घाटे घाट ॥३८॥ (942-10)
नानक गुर बिनु नाहि पति पति विणु पारि न पाइ ॥१॥ (138-11)
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि ॥१॥ (1237-11)
नानक गुर भेटत हरि सिउ लिव लागी ॥४॥७०॥१३९॥ (193-19)
नानक गुर मिरीआ ॥ (746-7)
नानक गुर मिलि गाइ गुना ॥४॥८॥ (1182-10)
नानक गुर मिलि भए निहाल ॥५॥१३॥ (374-13)
नानक गुर विणु भरमु न भागै सचि नामि वडिआई ॥४॥३॥ (596-11)
नानक गुर सबदि परातो ॥३॥४॥१५७॥ (214-4)
नानक गुर समानि तीरथु नही कोई साचे गुर गोपाला ॥३॥ (437-3)
नानक गुर सरणाई उबरे सचु मनि सबदि धिआइ ॥१॥ (651-11)
नानक गुर सरणाई उबरे हरि गुर रखवालिआ ॥३०॥ (1249-1)
नानक गुर सरणागती मरै न आवै जाइ ॥४॥३०॥१००॥ (53-6)
नानक गुरबाणी हरि पाइआ हरि जपु जापि समाहा हे ॥१६॥५॥१४॥ (1058-12)
नानक गुरमति उबरे सचा नामु समालि ॥४॥१०॥४३॥ (30-12)
नानक गुरमति नामि लिव लागी ॥४॥८॥६०॥ (367-18)
नानक गुरमति नामु धिआइआ ॥४॥१७॥ (354-5)
नानक गुरमति मानिआ परवारै साधारु ॥८॥१॥३॥ (833-5)
नानक गुरमति मिलीऐ मीत ॥१७॥ (932-1)
नानक गुरमति सहजि समाउ ॥४॥८॥ (153-14)
नानक गुरमति सहजि समाना ॥८॥१॥ (221-11)
नानक गुरमति साचि समावहु ॥२७॥ (933-8)
नानक गुरमती सुखु पाइआ बखसे बखसणहार ॥२॥ (594-15)
नानक गुरमुखा नो सुखु अगला जिना अंतरि नाम निवासु ॥१॥ (643-12)
नानक गुरमुखि आपु पछाणै प्रभ जैसे अविनासी ॥४॥१॥३॥ (765-11)
नानक गुरमुखि आपु बीचारीऐ विचहु आपु गवाइ ॥ (849-12)
नानक गुरमुखि उतरसि पारि ॥१॥ (791-4)
नानक गुरमुखि उतरसि पारे ॥१८॥ (939-19)
नानक गुरमुखि उतरहि पारि ॥४॥७॥ (1339-19)

नानक गुरमुखि उबरे गुरु सरवरु सची पालि ॥८॥ (1411-1)
नानक गुरमुखि उबरे जि आपि मेले करतारि ॥२॥ (513-1)
नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥२॥ (516-5)
नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥३॥ (950-11)
नानक गुरमुखि उबरे साचा नामु समालि ॥१॥ (85-1)
नानक गुरमुखि एकु पछाणै अवरु न जाणै दूजा ॥१॥ (775-11)
नानक गुरमुखि ऐसा जाणै पूरे मांहि समांही ॥३३॥ (1412-19)
नानक गुरमुखि खसमु पछाता ॥३७॥ (942-8)
नानक गुरमुखि गिआनु परापति होवै तिमर अगिआनु अधेरु चुकाइआ ॥ (512-16)
नानक गुरमुखि गिआनु प्रगासिआ तिमर अगिआनु अंधेरु चुकाइआ ॥२॥ (852-1)
नानक गुरमुखि चलतु है वेखहु लोका आइ ॥ (947-5)
नानक गुरमुखि चोट न खावै ॥३५॥ (942-4)
नानक गुरमुखि छुटीऐ जे चलै सतिगुर भाइ ॥६॥ (1413-10)
नानक गुरमुखि छुटीऐ हरि प्रीतम सिउ संगु ॥७॥ (1410-14)
नानक गुरमुखि जमु सेवा करे जिन मनि सचा होइ ॥१॥ (588-15)
नानक गुरमुखि जाणीऐ कलि का एहु निआउ ॥१॥ (1288-4)
नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥२॥ (517-5)
नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥३॥ (463-15)
नानक गुरमुखि जिन्ह पीआ तिन्ह बहुड़ि न लागी आइ ॥१॥ (1283-3)
नानक गुरमुखि जिन्ही धिआइआ आए से परवाणु ॥६३॥ (1421-1)
नानक गुरमुखि ततु बीचारु ॥८॥६॥ (906-6)
नानक गुरमुखि तरी तिनि माइआ ॥४॥ (385-17)
नानक गुरमुखि तिन सोझी पई जिन वसिआ मन माहि ॥२॥ (1282-8)
नानक गुरमुखि तिनी नामु धिआइआ जिन कंउ धुरि पूरबि लिखिआसि ॥२॥ (593-1)
नानक गुरमुखि नदरी आइआ मोह माइआ विछुड़ि सभ जाइ ॥१७॥ (1423-1)
नानक गुरमुखि नदरी आइआ हरि आतम रामु मुरारि ॥२॥ (1281-19)
नानक गुरमुखि नदरी आइआ हरि इको सुघड़ु सुजाणीऐ ॥२॥ (138-15)
नानक गुरमुखि नामि समाहा ॥४॥२॥११॥ (1262-1)
नानक गुरमुखि नामु अमोलकु जुगि जुगि अंतरि धारी ॥४॥३॥ (1198-5)
नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥२॥ (265-16)
नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥१॥ (265-12)
नानक गुरमुखि नामु दिवाइआ ॥४॥४॥५६॥ (367-1)
नानक गुरमुखि नामु धिआइआ ता पाए मोख दुआरा ॥४॥ (443-13)
नानक गुरमुखि नामु धिआईऐ सचि मिलावा होइ ॥४॥१३॥४६॥ (31-15)
नानक गुरमुखि नामु धिआईऐ सहिला आइआ सोइ ॥१॥ (1244-12)
नानक गुरमुखि नामु धिआए नामे नामि समावणिआ ॥८॥१२॥१३॥ (117-7)
नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥४॥५॥२५॥ (159-10)

नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥४॥६॥ (665-13)
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥८॥२॥ (265-8)
नानक गुरमुखि नामु पिआरि ॥४॥९॥ (1129-17)
नानक गुरमुखि नामु मनि वसै ता सुणि करे साबासि ॥४॥४॥ (994-15)
नानक गुरमुखि नामु समालि ॥११॥ (939-9)
नानक गुरमुखि परगटु होइआ जा कउ जोति धरी करतारि जीउ ॥१५॥ (72-14)
नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥२॥ (264-7)
नानक गुरमुखि पाईऐ आपे जाणै सोइ ॥४॥९॥४२॥ (30-5)
नानक गुरमुखि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥२॥ (555-16)
नानक गुरमुखि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥३॥ (948-13)
नानक गुरमुखि पाईऐ दइआ करे हरि हीरु ॥४॥२१॥ (22-9)
नानक गुरमुखि पाईऐ हरि अपनी किरपा धारि ॥३५॥ (1417-6)
नानक गुरमुखि पाईऐ हरि सिउ प्रीति पिआरु ॥ (937-13)
नानक गुरमुखि पावै पारु ॥२२॥ (932-15)
नानक गुरमुखि पावै सोइ ॥ (1243-11)
नानक गुरमुखि बंधु न पाइ ॥४१॥ (942-15)
नानक गुरमुखि बखसि लए अंति बेली होइ भगवानु ॥२॥ (1284-2)
नानक गुरमुखि बखसीअहि से सतिगुर मेलि मिलाउ ॥२॥ (645-9)
नानक गुरमुखि बुझीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥१॥ (648-1)
नानक गुरमुखि बुझीऐ जिस नो आपि विखाले सोइ ॥२॥ (1092-11)
नानक गुरमुखि बुझीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥५॥३॥३६॥ (27-12)
नानक गुरमुखि बूझै को सबदु वीचारि ॥१०॥१॥ (842-3)
नानक गुरमुखि बूझै कोई ॥८॥६॥ (232-7)
नानक गुरमुखि बूझै सोझी पाइ ॥ (843-3)
नानक गुरमुखि ब्रहमु पछान ॥१४॥ (299-18)
नानक गुरमुखि ब्रहमु बीचारीऐ चूकै मनि अभिमानु ॥२॥ (849-7)
नानक गुरमुखि मथि ततु कढीए ॥४॥५॥५७॥ (367-5)
नानक गुरमुखि मन सिउ लुझै ॥४६॥ (1418-13)
नानक गुरमुखि मनु समझाहि ॥५२॥ (943-18)
नानक गुरमुखि महलि बुलाईऐ हरि मेले मेलणहार ॥४॥५॥ (1256-4)
नानक गुरमुखि मिलहि वडिआईआ जे आपे मेलि मिलाइ ॥२॥ (647-16)
नानक गुरमुखि मिलि रहे जपि हरि नामा उर धारि ॥१०॥ (512-13)
नानक गुरमुखि मिलि रहे फिरि विछोड़ा कदे न होइ ॥१॥ (589-3)
नानक गुरमुखि मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥१॥ (653-17)
नानक गुरमुखि मिले न विछुड़हि जि मेले सिरजणहारि ॥१५॥ (1422-15)
नानक गुरमुखि मुकति दुआरु ॥२८॥ (941-8)
नानक गुरमुखि मुकति पराइणु हरि पूरै भागि मिलाइआ ॥१०॥ (1042-8)

नानक गुरमुखि मेलि मिलाए ॥३६॥ (942-6)
नानक गुरमुखि मेलि मिलाए गुरमुखि हरि हरि जाइ रलै ॥५॥६॥ (1334-18)
नानक गुरमुखि मेलिअनु गुर कै अंकि समाइ ॥४५॥ (1418-11)
नानक गुरमुखि मेलिअनु हरि दरि सोहाइआ ॥१८॥ (1244-16)
नानक गुरमुखि रतनु सो लेवै ॥२॥ (145-13)
नानक गुरमुखि रसना हरि जपै हरि कै नाइ पिआरिआ ॥२॥ (550-11)
नानक गुरमुखि रहै समाइ ॥८॥१॥ (229-17)
नानक गुरमुखि रामु पछाता करि किरपा आपि मिलावै ॥७॥ (444-5)
नानक गुरमुखि वणजीऐ सचा सउदा होइ ॥११॥१॥ (1346-14)
नानक गुरमुखि विरला कोइ ॥५॥४॥१३॥९॥१३॥२२॥ (1262-15)
नानक गुरमुखि वेखै हदूरि ॥ (842-13)
नानक गुरमुखि सगल भवण की सोझी होइ ॥४२॥ (942-17)
नानक गुरमुखि सचि समावहि सचु नामु उर धारि ॥२॥ (89-14)
नानक गुरमुखि सचु कमावै मनमुखि आवै जाइ ॥२॥ (87-16)
नानक गुरमुखि सदा सुखु पावहि अनदिनु हरि बैरागी ॥२॥ (590-17)
नानक गुरमुखि सदा सुहागणी जिसु अविनासी पुरखु भरतारु ॥१॥ (786-15)
नानक गुरमुखि सबदि निसतारे ॥३१॥ (941-14)
नानक गुरमुखि सबदि पछाणै ॥७१॥ (946-12)
नानक गुरमुखि सबदि पछाणै अहिनिसि नामु धिआईऐ ॥१॥ (437-9)
नानक गुरमुखि सबदि समाइ ॥९॥१४॥ (227-11)
नानक गुरमुखि सबदि सुहावे अनदिनु हरि गुण गाए ॥३॥ (246-7)
नानक गुरमुखि सबदु सम्हाले राम नामि वडिआई ॥४॥८॥१८॥ (1132-14)
नानक गुरमुखि सहजि मिलाए जिउ जलु जलहि समावै ॥८॥१॥९॥ (1191-19)
नानक गुरमुखि सहजि मिलै सचे सिउ लिव लाउ ॥१॥ (591-9)
नानक गुरमुखि सांति होइ नामु रखहु उरि धारि ॥५४॥ (1419-18)
नानक गुरमुखि साचि समाइ ॥१३॥ (939-12)
नानक गुरमुखि साचि समावै ॥२७॥ (941-6)
नानक गुरमुखि साचि समावै ॥४॥१॥४०॥ (361-5)
नानक गुरमुखि से सुहेले भए मुख ऊजल दरबारे ॥२॥ (1249-18)
नानक गुरमुखि सेवीऐ सदा सदा दातारु ॥ (91-9)
नानक गुरमुखि सो बुझै जा कै भाग मथोर ॥१॥ (251-8)
नानक गुरमुखि सोहणे तितु सचै दरबारि ॥४७॥ (1418-16)
नानक गुरमुखि हउमै तुटै ता हरि हरि नामु धिआवै ॥ (139-15)
नानक गुरमुखि हरि आपि तरावै ॥४॥५॥४३॥ (165-6)
नानक गुरमुखि हरि गुण गावै ॥८॥३॥ (222-9)
नानक गुरमुखि हरि गुण रवहि गुण महि रहै समाइ ॥२॥ (646-17)
नानक गुरमुखि हरि नामु पाइआ सहजे सचि समाहि ॥२॥ (591-5)

नानक गुरमुखि हरि नामु मनि वसै एहा सिधि एहा करमाति ॥२॥ (650-7)
नानक गुरमुखि हरि पाइआ सदा हरि नामि समाइ ॥४॥६॥३९॥ (29-1)
नानक गुरमुखि हरि रसि मिलै जीवा हरि गुण गाइ ॥८॥१५॥ (63-9)
नानक गुरमुखि हरि सालाहिआ तनु मनु सीतलु होइ ॥२॥ (1313-10)
नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥८॥१॥ (263-18)
नानक गुरमुखि हरि हरि तिह जपना ॥१२॥ (252-15)
नानक गुरमुखि हिरदै राम नामु लेहु जमाई ॥४॥१०॥ (1130-2)
नानक गुरमुखि होवहि ता उबरहि नाहि त बधे दुख सहाहि ॥१॥ (591-3)
नानक गुरि खोए भ्रम भंगा ॥ (391-6)
नानक गुरि राखे से उबरे हरि नामि उधारी ॥२७॥ (1248-2)
नानक गुरु गोविंदु हरि जितु मिलि हरि पाइआ नामु ॥२॥ (1313-2)
नानक गुरु गोविदु जिसु तूठा ॥ (888-15)
नानक गुरु जिसु करे दानु ॥४॥२॥ (1180-13)
नानक गुरु परमेसरु पाइआ जिसु प्रसादि इछ पुनीऐ ॥४॥६॥९॥ (783-15)
नानक गुरु पाइओ वडभागी तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥२॥११॥३९॥ (619-2)
नानक गुरु पारब्रहमु जा की कीम न पाई ॥४॥१॥१९॥ (1270-12)
नानक गुरु पारब्रहमु परमेसरु सदा सदा हजूरे ॥१॥ (802-10)
नानक गुरु भेटिआ पारब्रहमु ॥८॥८॥ (239-15)
नानक गुरु संतोखु रुखु धरमु फुलु फल गिआनु ॥ (147-10)
नानक गुरु सालाही आपणा जिदू पाई प्रभु सोइ ॥४॥२७॥६०॥ (37-17)
नानक गुरू गुरू है पूरा मिलि सतिगुर नामु धिआइआ ॥४॥५॥ (882-7)
नानक गुरू गुरू है सतिगुरु मै सतिगुरु सरनि मिलावैगो ॥८॥४॥ (1310-14)
नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥ (463-2)
नानक घटि घटि एको वरतदा सबदि करे परगास ॥५८॥ (1420-12)
नानक घर ही बैठिआ सहु मिलै जे नीअति रासि करेइ ॥१०४॥ (1383-12)
नानक घरि बैठिआ जोगु पाईऐ सतिगुर कै उपदेसि ॥६४॥ (1421-2)
नानक घरि बैठिआ सहु पाइआ जा किरपा कीती करतारि ॥१॥ (948-2)
नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥५॥ (284-14)
नानक चरणी लगिआ उधरै सभो कोइ ॥१॥ (323-7)
नानक चरन गहे प्रभ अपने सुखु पाइओ दिन राति ॥२॥१०॥४१॥ (681-5)
नानक चरन पिआस ॥६॥ (838-10)
नानक चलत न जापनी को सकै न लखे ॥२॥ (318-13)
नानक चसिअहु चुख बिंद उपरि आखणु दोसु ॥२॥ (1241-12)
नानक चाखि भए बिसमादु ॥ (377-13)
नानक चात्रिक हरि बूंद मागै जपि जीवा हरि हरि चरणा ॥२॥ (545-19)
नानक चात्रिकु अम्रित जलु मागै हरि जसु दीजै किरपा धारि ॥८॥२॥ (504-7)
नानक चानणु गुर मिले दुख बिखु जाली नाइ ॥२॥ (1087-17)

नानक चिंता मत करहु चिंता तिस ही हेइ ॥१॥ (955-12)
नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥ (955-10)
नानक चितु अचेतु है चिंता बधा जाइ ॥ (955-14)
नानक चीनै आप कउ सो अपर अपारा ॥८॥ (229-9)
नानक चुलीआ सुचीआ जे भरि जाणै कोइ ॥ (1240-6)
नानक चेति सहजि सुखु पावै जे हरि वरु घरि धन पाए ॥५॥ (1108-3)
नानक छूटसि साचै नाइ ॥४॥२॥७॥ (1256-19)
नानक जंत उपाइ कै समाले सभनाह ॥ (467-5)
नानक जंत वजाए वाजहि जितु भावै तितु राहि चलईआ ॥८॥२॥५॥ (834-11)
नानक जन इह बखानि जग महि बिराजु रे ॥२॥४॥ (1353-2)
नानक जन कहि पुकारि अउसरु बिहातु है ॥२॥२॥ (1352-10)
नानक जन कहि पुकारि सुपनै जिउ जग पसारु ॥ (1352-13)
नानक जन का दासनि दसना ॥४॥ (263-4)
नानक जन की मंगै रवाला ॥५॥ (263-8)
नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥५॥ (264-17)
नानक जन प्रभु कदे न विसरै पूरन जा के भागा ॥२॥ (781-18)
नानक जन संगि केते तरे ॥७॥ (265-5)
नानक जन सरनाई ॥ (631-1)
नानक जन हरि कथा सुणि त्रिपते जपि हरि हरि हरि होवंती ॥२॥२॥८॥ (977-17)
नानक जन हरि की सरणाई हरि भावै हरि निसतारे ॥४॥३॥ (493-9)
नानक जन हरि कीरति गाई छूटि गइओ जम का सभ सोर ॥४॥१॥८॥ (1265-16)
नानक जन हरि हरि धिआइ ॥४॥९॥ (1182-17)
नानक जननी धंनी माइ ॥४॥३॥८॥ (1257-6)
नानक जनम मरण भै काटे मिलि साधू बिनसे सोक ॥२॥१९॥५०॥ (682-18)
नानक जनमु सकारथा जे तिन कै संगि मिलाह ॥२॥ (85-4)
नानक जनमु सवारनि आपणा कुल का करनि उधारु ॥२॥ (552-17)
नानक जनमु सवारहि आपणा कुलु भी छुटी नालि ॥२॥ (785-11)
नानक जनि गुरु पूरा पाइआ ॥ (384-18)
नानक जनि पाइआ मति गुरमति जपि हरि हरि पारि पवणे ॥४॥३॥७॥ (1135-19)
नानक जनि वीचारिआ मीठा हरि का नाउ ॥२॥ (320-14)
नानक जनु गुण गावै नित साचे गुण गावह गुणी समाहा हे ॥१६॥४॥१३॥ (1057-11)
नानक जनु नामु सलाहे बिगसै सो नामु बेपरवाहा हे ॥१६॥२॥११॥ (1055-8)
नानक जनु हरि दासु कहतु है वडभागी हरि हरि धिआइआ ॥३॥ (576-9)
नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥४॥ (268-18)
नानक जपिआ गुर मिलि नाउ ॥४॥२७॥३८॥ (895-2)
नानक जपीऐ मिलि साधसंगति हरि बिनु अवरु न होरु ॥४॥१॥१३६॥ (405-6)
नानक जपीऐ सचु नामु हउ सदा सदा कुरबानु ॥४॥१६॥८६॥ (48-9)

नानक जपीऐ सदा हरि निमख न बिसरउ नामु ॥२॥ (320-10)
नानक जम पुरि बधे मारीअहि जिउ संन्ही उपरि चोर ॥१॥ (1247-10)
नानक जरा मरण भै नरक निवारै पुनीत करै तिसु जंतै ॥१॥ (249-11)
नानक जलु जलहि समाइआ जोती जोति मीके राम ॥४॥२॥५॥९॥ (848-19)
नानक जह जह मै फिरउ तह तह साचा सोइ ॥ (1413-11)
नानक जा कउ किरपा धारी ॥५॥ (251-7)
नानक जा कउ क्रिपा गुसाई ॥२५॥ (255-9)
नानक जा कउ नदरि करे ॥४॥६८॥१३७॥ (193-12)
नानक जा कउ भगती लाए ॥२॥ (962-16)
नानक जा कउ संत सहाई ॥२३॥ (255-2)
नानक जा कै नामु निधान ॥४॥१७॥३०॥ (1144-8)
नानक जा ते परहि पराग ॥४१॥ (258-19)
नानक जा भावै ता लए समाइ ॥६॥ (294-15)
नानक जाचिक दरसु प्रभ मागै संत जना की मिलै रवाल ॥२॥१६॥१०२॥ (824-16)
नानक जाचै साध रवाल ॥४॥९२॥१६१॥ (198-10)
नानक जाणे सति सांई संत न बाहरा ॥१॥ (578-2)
नानक जाणै जाणु सुजाणु ॥४॥४॥६॥ (662-9)
नानक जाणै सभु उपावणहारा ॥४॥१२॥ (1176-3)
नानक जाणै साचा सोइ ॥ (6-3)
नानक जानु सदा हरि नेरा ॥४॥१॥१९॥ (675-14)
नानक जानै सचा सोइ ॥७॥ (280-17)
नानक जापी जपु जापु ॥ (896-12)
नानक जापु जपे हरि जपना ॥४॥८६॥१५५॥ (197-6)
नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥ (270-19)
नानक जि गुरमुखि करहि सो परवाणु है जो नामि रहे लिव लाइ ॥२॥ (650-1)
नानक जि नामु न चेतनी तिन धिगु पैनणु धिगु खाणु ॥१॥ (646-16)
नानक जि मनमुखु कमावै सु थाइ ना पवै दरगहि होइ खुआरु ॥२॥ (552-3)
नानक जिउ जिउ सचे भावै तिउ तिउ देइ गिराह ॥१॥ (144-12)
नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥१॥ (272-14)
नानक जिउ मथनि माधाणीआ तिउ मथे ध्रम राइ ॥९॥ (1425-13)
नानक जितु आपे लाए तितु लगे कहणा किछू न जाइ ॥१॥ (593-9)
नानक जितु आहरि जगु उधरै विरला बूझै कोइ ॥२॥ (965-6)
नानक जितु ओइ लाए तितु लगे उइ बपुड़े किआ करेनि ॥२॥ (951-9)
नानक जितु वेला विसरै मेरा सुआमी तितु वेलै मरि जाइ जीउ मेरा ॥५॥ (562-4)
नानक जिन अंदरि सचु है से जन छपहि न किसै दे छपाए ॥१॥ (850-13)
नानक जिन कउ नदरि करे तां इहु धनु पलै पाइ ॥२॥ (1282-17)
नानक जिन कउ नदरि करे से गुरमुखि लंघे पारि ॥१॥ (592-18)

नानक जिन कउ नदरि भई है तिन की पैज सवारी ॥४॥२॥ (1198-19)
नानक जिन कै हिरदै वसिआ मोख मुकति तिन्ह पाइआ ॥८॥२॥ (565-17)
नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥ (272-17)
नानक जिन सतिगुरु भेटिआ रंगि रलीआ माणै ॥१५॥ (726-6)
नानक जिनि अखी लीतीआ सोई सचा देइ ॥२॥ (83-6)
नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥२॥ (466-7)
नानक जिनि करि देखिआ देवै मति साई ॥९॥२॥५॥ (767-13)
नानक जिनि जपिआ निरबाणु ॥२॥१०४॥१७३॥ (200-14)
नानक जिनि प्रभु पाइआ आपणा सा अटल सुहागनि राम ॥४॥१॥४॥ (848-10)
नानक जिन्ह कउ नदरि करे हरि सचा से नामि रहे लिव लाइ ॥१॥ (850-3)
नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ ॥१८॥१॥२॥ (435-17)
नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ॥२॥ (465-14)
नानक जिन्ही इव करि बुझिआ तिन्हा विटहु कुरबाणु ॥२॥ (1410-8)
नानक जिन्ही गुरमुखि बुझिआ तिन्हा सूतकु नाहि ॥३॥ (472-19)
नानक जिन्ही सुणि कै मंनिआ हउ तिना विटहु कुरबाणु ॥२॥ (790-5)
नानक जिस कउ मसतकि लिखिआ तिसु सचु परापति होई ॥४॥२॥३॥ (769-18)
नानक जिस नो इहु मनु दीआ मरणु जीवणु प्रभ नाले ॥८॥ (1108-12)
नानक जिस नो नदरि करे सो पाए सो होवै दरि सचिआरा ॥२॥ (593-12)
नानक जिस नो नदरि करेइ ॥ (1172-8)
नानक जिस नो बखसे तिसु मिलै तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥२॥ (948-10)
नानक जिस नो मेले न विछुड़ै सहजि समावै सोइ ॥१॥ (88-12)
नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥१॥ (474-10)
नानक जिस नो हरि मिलाए सो सरब गुण परबीना ॥४॥६॥९॥ (548-10)
नानक जिस नो होवै दाति ॥ (962-14)
नानक जिसहि दइआलु बुझाए हुकमु मित ॥ (523-18)
नानक जिसहि परापति करै ॥४॥३१॥४२॥ (896-7)
नानक जिसहि परापति होइ ॥५॥ (295-18)
नानक जिसु आपि वडिआई देवै ॥२॥ (509-13)
नानक जिसु क्रिपा करे सु हरि नामु विहाझे सो साहु सचा वणजारा ॥२॥४॥ (720-6)
नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥३॥ (276-1)
नानक जिसु धुरि मसतकि होवै लिखिआ तिसु सतिगुर नालि सनेहा ॥ (960-19)
नानक जिसु नदरि करे तिसु मेलि लए साई सुहागणि नारि ॥१॥ (90-16)
नानक जिसु नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि चरणी चितु लाए ॥१॥ (561-12)
नानक जिसु नदरि करे सो पाए करि किरपा मंनि वसावणिआ ॥८॥२७॥२८॥ (126-13)
नानक जिसु नामु देवै सो लेवै नामो मंनि वसावणिआ ॥८॥२३॥२४॥ (124-4)
नानक जिसु पिंजर महि बिरहा नही सो पिंजरु लै जारि ॥१॥ (89-2)
नानक जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो गुर चरणी आइ पाइ ॥१॥ (511-10)

नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥५॥ (287-11)
नानक जिसु बिनु घड़ी न जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ (1097-15)
नानक जिसु बिनु घड़ी न जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ (1250-11)
नानक जिसु बिनु चसा न जीवदी सो सतिगुरि दीआ मिलाइ ॥२॥ (1283-14)
नानक जिसु बुझाए सु बुझसी हरि पाइआ गुरमुखि घालि ॥१॥ (645-15)
नानक जिसु भावै तिसु आपे देवै भावै तिवै चलाइ ॥४॥५॥ (1259-16)
नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥४॥ (287-8)
नानक जिसु मनि वसै तिस के सभि दूख मिटाइण ॥१॥ (962-13)
नानक जिसु सिमरत सभ सुख होवहि दूखु दरदु भ्रमु जाइ ॥१॥ (456-7)
नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥८॥३॥ (266-16)
नानक जिह मनि बसहि गुपाला ॥१६॥ (253-11)
नानक जिह सुप्रसंन माधवह ॥१०॥ (1354-17)
नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ (463-16)
नानक जीअ का इहै अधार ॥२॥ (295-9)
नानक जीवतिआ मरि रहीऐ ऐसा जोगु कमाईऐ ॥ (730-17)
नानक जीवदा पुरखु धिआइआ अमरा पदु होई ॥२५॥ (1247-8)
नानक जीवै देखि बडाई ॥४॥ (277-12)
नानक जीवै हरि गुण गाइ ॥४॥३०॥८१॥ (390-13)
नानक जुगि जुगि गुर गोपाला ॥ (943-2)
नानक जुगि जुगि जाण सिजाणा रोवहि सचु समाले ॥४॥५॥ (582-10)
नानक जुगि जुगि नामि वडिआई होई ॥६॥१॥ (880-10)
नानक जुगु जुगु एकु मंनि वसावणा ॥२१॥ (148-4)
नानक जे इहु मारीऐ गुर सबदी वीचारि ॥ (1089-18)
नानक जे को आपु गणाइदा सो मूरखु गावारु ॥१॥ (516-18)
नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥ (5-2)
नानक जे विचि रुपा होइ ॥ (662-11)
नानक जे सिरखुथे नावनि नाही ता सत चटे सिरि छाई ॥१॥ (150-7)
नानक जे सुखु लोड़हि कामणी हरि का नामु मंनि वसाइ ॥८॥११॥३३॥ (428-9)
नानक जेठि जाणै तिसु जैसी करमि मिलै गुण गहिली ॥७॥ (1108-9)
नानक जेते कूड़िआर कूड़ै कूड़ी पाइ ॥३॥ (141-5)
नानक जो गुरु सेवहि आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ ॥१॥ (644-17)
नानक जो तिसु भावहि से भले जिन की पति पावहि थाइ ॥१॥ (587-4)
नानक जो तिसु भावै सो करे कहणा किछू न जाइ ॥१॥ (88-2)
नानक जो तिसु भावै सो करे जिउ तिस की रजाइ ॥५॥७॥९॥ (492-7)
नानक जो तिसु भावै सो करे जो देइ सु सहणा ॥१॥ (953-12)
नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इना जंता वसि किछु नाहि ॥८॥४॥ (55-18)
नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ ॥७॥ (285-2)

नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥६॥ (280-14)
नानक जो देवै तिसहि न जाणन्ही मनमुखि दुखु पाई ॥२३॥ (1246-13)
नानक जो धुरि करतै लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ ॥१४॥ (1414-7)
नानक जो धुरि मिले से मिलि रहे हरि मेले सिरजणहारि ॥२॥ (301-1)
नानक जो धुरि मिले से हुणि आणि मिलाइ ॥१॥ (1247-5)
नानक जो नामि रते तिन कउ बलिहारी ॥४॥७॥२७॥ (160-3)
नानक जो नामि रते सेई महलु पाइनि मति परवाणु सचु साई ॥४॥६॥ (572-1)
नानक जो प्रभ भाणिआ पूरी तिना परी ॥१८॥ (253-19)
नानक जो प्रभ भाणीआ मरउ विचारी सूलि ॥२॥ (519-10)
नानक जो प्रभि भाणिआ सचै दरि सोहंनि ॥२॥ (1284-9)
नानक जो बीजै सो खावणा करतै लिखि पाइआ ॥१५॥ (1243-14)
नानक जो भावै सो होइ ॥२॥ (854-4)
नानक जो मरि जीविआ सहिला आइआ सोइ ॥१॥ (956-8)
नानक जो लिखिआ सो वरतदा सो बूझै जिस नो नदरि होइ ॥५॥ (1413-7)
नानक जोगी त्रिभवण मीतु ॥८॥२॥ (903-17)
नानक जोती जोति समाणी जा मिलिआ अति पिआरे ॥३॥ (1112-12)
नानक जोरु गोविंद का पूरन गुणतासि ॥२॥१३॥७७॥ (819-11)
नानक झूरि मरहि दोहागणी जिन्ह अवरी लागा नेहु ॥१॥ (1280-2)
नानक टेक गोपाल की गोविंद संकट मोच ॥१॥ (926-14)
नानक टेक भई करते की होर आस बिडाणी लाही ॥२॥१०॥१९॥ (499-19)
नानक ठगिआ मुठा जाइ ॥ (142-11)
नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥ (291-4)
नानक ठाकुर मीत हमारे हम नाही लोकाणे ॥४॥१॥ (436-12)
नानक ठाकुर सदा अलिपना ॥११॥ (252-11)
नानक ठाकुरु सरब समाणा आपन भावन करीआ ॥२॥ (779-15)
नानक ठाढे चाहहि प्रभू दुआरि ॥ (1187-16)
नानक डिठा सदा नालि हरि अंतरजामी जाणु ॥४॥४॥७४॥ (43-14)
नानक ढेरी छारु की भी फिरि होई छार ॥१॥ (1244-6)
नानक ढेरी ढहि पई मिटी संदा कोटु ॥ (1244-7)
नानक तउ फिरि दूख न थीआ ॥४५॥ (259-16)
नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥ (470-5)
नानक तकीआ तुही ताणु ॥४॥५॥१४३॥ (211-8)
नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥२॥ (471-8)
नानक तजीअले अवरि जंजाल ॥४॥५२॥१२१॥ (190-7)
नानक तत तत सिउ मिलीऐ हीरै हीरु बिधाईऐ ॥२॥२॥ (1321-18)
नानक ततु तत सिउ मिलिआ पुनरपि जनमि न आही ॥४॥१॥१५॥३५॥ (162-11)
नानक तपति हरी ॥ (407-1)

नानक तरवरु एकु फलु दुइ पंखेरू आहि ॥ (550-17)
नानक तरवरु एकु है एको फुलु भिरंगु ॥२॥ (1089-4)
नानक तरीऐ तेरी मिहर ॥४॥२१॥३२॥ (893-3)
नानक तरीऐ सचि नामि सिरि साहा पातिसाहु ॥ (64-2)
नानक तरीऐ साधसंगि हरि हरि गुण गाउ ॥४॥२७॥५७॥ (815-11)
नानक ता कउ दूखु न बिआपै ॥५०॥ (260-15)
नानक ता कउ मिले मुरारी ॥२४॥ (255-5)
नानक ता कउ मिलै वडाई आपु पछाणै सरब जीआ ॥२४॥ (940-17)
नानक ता कउ मिलै वडाई जिसु घट भीतरि सबदु रवै ॥ (952-11)
नानक ता कउ मिलै वडाई साचे नामि समावै ॥१॥ रहाउ ॥ (359-14)
नानक ता कउ सदा सुखु होइ ॥४॥३३॥१०२॥ (186-11)
नानक ता का भउ गइआ ॥४॥८॥१४६॥ (211-19)
नानक ता की परम गति होइ ॥२॥४१॥९२॥ (394-1)
नानक ता की परम गति होइ ॥४॥४३॥५४॥ (900-6)
नानक ता की भगति करेह ॥३॥ (270-6)
नानक ता के कारज पूरा ॥७॥ (293-10)
नानक ता कै निकटि न माए ॥७॥ (251-15)
नानक ता कै बलि बलि जाइ ॥४॥१९॥२१॥ (868-19)
नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥६॥ (269-6)
नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥८॥३॥ (914-11)
नानक ता कै बलि बलि जासा ॥५॥ (266-6)
नानक ता कै लागउ पाए ॥३॥ (263-1)
नानक ता कै सद बलिहारा ॥३॥ (250-18)
नानक ता कै सद बलिहारै ॥५॥ (283-6)
नानक ता को दासु है सोई निरंजन देउ ॥३॥ (1353-13)
नानक ता को दासु है सोई निरंजन देव ॥४॥ (1353-14)
नानक ता पति जाणीऐ जा पति रखै सोइ ॥२॥ (150-9)
नानक ता परु जापै जा पति लेखै पाए ॥१॥ (83-14)
नानक तारे तारणहारा हउमै दूजा परहरिआ ॥२५॥ (941-2)
नानक तारे तारणहारु ॥२०॥ (940-4)
नानक तिन का आखिआ आपि सुणे जि लइअनु पंनै पाइ ॥१॥ (1281-16)
नानक तिन का आखिआ आपि सुणे जि लइअनु पंनै पाइ ॥१॥ (853-3)
नानक तिन की फिरि गति होवै जि गुरमुखि रहहि सरणाई हे ॥४॥ (1069-9)
नानक तिन की बाणी सदा सचु है जि नामि रहे लिव लाइ ॥५॥४॥३७॥ (28-5)
नानक तिन की रेणु पूरै भागि पाईऐ जिनी राम नामि चितु लाइआ ॥४॥३॥१३॥ (1131-3)
नानक तिन कै लागउ पाइ ॥५॥६॥ (153-3)
नानक तिन कै सद कुरबाणे ॥४॥२॥२०॥ (1271-1)

नानक तिन कै सद बलिहारी जिन एक सबदि लिव लाई ॥४॥९॥ (879-5)
नानक तिन कै सद बलिहारै जिन हरि राखिआ उरि धारा ॥८॥१॥ (638-8)
नानक तिन कौ सतिगुरु मिलिआ जिना धुरे पैया परवाणा ॥१॥ (956-14)
नानक तिन घरि सद ही सोहिला जि सतिगुर सेवि समाए ॥३॥ (771-5)
नानक तिन घरि सद ही सोहिला हरि करि किरपा घरि आए ॥१॥ (770-17)
नानक तिन जन लागै पाइ ॥४॥३॥५॥ (863-14)
नानक तिन जन सरनी पइआ ॥७॥ (263-15)
नानक तिन जम नेड़ि न आवहि ॥३॥१९॥३०॥ (892-9)
नानक तिन दरि भीखिआ पाइ ॥३॥१॥२॥ (721-14)
नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥७॥ (282-5)
नानक तिन बलिहारणै हरि जपि उतरे तीर ॥२॥ (929-12)
नानक तिन बलिहारै जाइ ॥६॥ (1410-12)
नानक तिन महि एहु बिसासु ॥३॥ (294-5)
नानक तिन मिलिआ सुरिजनु सुखदाता से वडभागी माए ॥३॥ (249-16)
नानक तिन मुख उजले जिन अंतरि नामु प्रगासु ॥३१॥ (1416-15)
नानक तिन मुख ऊजले ॥४॥३॥१४१॥ (211-1)
नानक तिन संतन सरणागती जिन मनु वसि कीना ॥ (815-15)
नानक तिन सचु वणंजिआ जिना धुरि लिखिआ परापति होइ ॥२॥ (311-8)
नानक तिन सद बलिहारं जिना धिआनु पारब्रहमणह ॥१॥ (709-2)
नानक तिन सिउ किआ कीचै दोसती जि आपि भुलाए करतारि ॥१॥ (587-16)
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ॥३॥ (281-11)
नानक तिना खाकु जिना यकीना हिक सिउ ॥१॥ (1099-11)
नानक तिना बसंतु है जिना गुरमुखि वसिआ मनि सोइ ॥ (1420-14)
नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु ॥ (791-10)
नानक तिनी सहु पाइआ जिनी गुर की सिख सुणी ॥ (785-18)
नानक तिन्ह बलिहारणै जिन्ह गुरमुखि पाइआ मन माहि ॥१॥ (517-4)
नानक तिन्हा नामु न वीसरै सचे मेलि मिलाइ ॥२॥ (1246-11)
नानक तिस की परम गति होइ ॥४॥३५॥४६॥ (897-12)
नानक तिस की सरणी पाइ ॥४॥६॥१७॥ (888-4)
नानक तिस दा सभु किछु होवै जि विचहु आपु गवाए ॥८॥१॥ (754-4)
नानक तिस नो देइ वडिआई जो राम नामि चितु लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1130-12)
नानक तिस नो मिलिआ सदा सुखु पाईऐ जि अनदिनु हरि नामु धिआए ॥१॥ (512-7)
नानक तिस नो सबदु बुझाए जो जाइ पवै हरि सरणाई ॥३॥ (571-17)
नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥ (281-15)
नानक तिसु ऊपरि कुरबान ॥४॥४॥९८॥ (395-7)
नानक तिसु किरपालु बिधाता ॥४॥७१॥१४०॥ (194-4)
नानक तिसु गुर मिलि उधरै हरि गुण गावाही ॥४॥८॥१४॥५२॥ (168-15)

नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥५॥ (294-12)
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥८॥२३॥ (295-2)
नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥८॥१७॥ (286-12)
नानक तिसु जन सोझी पाए ॥१॥ (293-18)
नानक तिसु पति राखसी जो प्रभि पहिराइआ ॥४॥१६॥४६॥ (812-11)
नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥२॥ (284-4)
नानक तिसु प्रभु भेटिआ जा के पूरन करमा ॥४॥३१॥६१॥ (816-12)
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥१॥ (276-18)
नानक तिसु बलिहारणै जिसु एवड भागा ॥१७॥ (965-3)
नानक तिसु बलिहारणै हरि हरि नामु जपेइ ॥७॥ (298-8)
नानक तिसु बिनु अवरु न कोई ॥८॥१॥२॥ (760-8)
नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥५॥ (274-19)
नानक तिसु सरणाई भजि पउ आपे बखसि मिलाइ ॥४॥५॥ (995-1)
नानक तिसु सरणागती घट घट सभ जान ॥२॥१२॥७६॥ (819-8)
नानक तिसु सरणागती जि सगल घटा आधारु ॥४॥१८॥८८॥ (49-5)
नानक तिसु सरणागती जिनि जगतु उपाइआ ॥२१॥ (1093-17)
नानक तिसु सरणागती जो पुरखु अलखै ॥२८॥ (315-9)
नानक तिसु सरणागती भाई जि किलबिख काटणहारु ॥९॥१॥ (640-13)
नानक तिसै बसंतु है जि सतिगुरु सेवि समाइ ॥ (1420-12)
नानक तिह उसतति करउ आहू कीओ संजोग ॥२६॥ (255-14)
नानक तिह जन मिली वडाई ॥३५॥ (257-16)
नानक तिह बंधन कटे गुर की चरनी पाहि ॥१॥ (259-5)
नानक तिह मति प्रगटी आई ॥४३॥ (259-8)
नानक तिह सरनी परउ बिनसि जाइ मै मोर ॥१॥ (251-19)
नानक तिह सुखु पाइआ जा कै हीअरै एक ॥१४॥ (253-3)
नानक तिहु ते ऊपरि साचा सतिगुर सबदि समाए ॥६०॥ (944-18)
नानक तीजै त्रिबिधि लोका माइआ मोहि विआपी ॥३॥ (1110-10)
नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥ (267-17)
नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥७॥ (290-12)
नानक तुमरे बाल गुपाला ॥४८॥ (260-8)
नानक तुलीअहि तोल जे जीउ पिछै पाईऐ ॥ (1239-14)
नानक ते जन ऊतम भाई ॥४॥१७॥२८॥ (891-17)
नानक ते जन नह डोलाइआ ॥२९॥ (256-7)
नानक ते जन नामि मिलेइ ॥३॥ (277-8)
नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥६॥ (276-11)
नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥ (267-14)
नानक ते जन सुफल फले ॥४॥५८॥१२७॥ (191-11)

नानक ते जन सोहणे जि रते हरि रंगु लाइ ॥५२॥ (1380-14)
नानक ते जन सोहणे जो रते हरि रंगु लाइ ॥१॥ (950-2)
नानक ते ते गुरमुखि ध्रापे ॥३४॥ (257-12)
नानक ते ते बहुरि न आइआ ॥१५॥ (253-7)
नानक ते नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंत ॥१५॥ (1411-15)
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥ (8-12)
नानक ते मुख उजले जि नित उठि समालेनि ॥१॥ (313-3)
नानक ते मुख उजले धुनि उपजै सबदु नीसाणु ॥४॥२२॥ (22-17)
नानक ते मुख उजले होर केती छुटी नालि ॥२॥ (146-17)
नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥२॥ (473-10)
नानक ते सोहागणी जिन्हा गुरमुखि परगटु होइ ॥१९॥ (1412-1)
नानक ते हरि दरि पैन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए जो गुरमुखि भगति मनु लावै राम ॥४॥४॥ (540-10)
नानक तेह परम सुख पाइआ ॥४०॥ (258-16)
नानक तै सहि ढकिआ मन महि सचा मितु ॥२॥ (518-12)
नानक तोटि न आवई तेरे जुगह जुगह भंडार ॥७॥१॥ (53-19)
नानक तोटि न आवई दीए देवणहारि ॥१०॥६॥२३॥ (68-19)
नानक त्रिपते पूरा पाइआ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥ (759-18)
नानक त्रिसन बुझी मनि तनि सुखु पाइआ ॥५॥६॥४॥६॥१०॥ (798-17)
नानक थिरु हरि भगति है तिह राखो मन माहि ॥४८॥ (1429-1)
नानक दइआ करी सुखदातै भेटिआ सतिगुरु पूरा ॥४॥५॥५२॥ (748-13)
नानक दइआ दइआ करि ठाकुर मै सतिगुर भसम लगावैगो ॥८॥३॥ (1310-2)
नानक दइआ दइआ करि दीनी दुखु दालदु भंजि समावैगो ॥८॥५॥ (1311-6)
नानक दइआलु होआ तिन ऊपरि जिन गुर का भाणा मंनिआ भला ॥ (1115-5)
नानक दरगह पाईऐ मानु ॥४॥८४॥१५३॥ (196-17)
नानक दरगह पावै मानु ॥५६॥ (944-7)
नानक दरगह मंनिआ गुर पूरे साबासि ॥१४॥१॥२॥११॥ (759-10)
नानक दरगह मंनीअहि मिली निथावे थाउ ॥३॥ (1099-6)
नानक दरस पिआस लोचा पूरीऐ ॥४॥७॥१०९॥ (398-7)
नानक दरस पिआस हरि जीउ आपि लेहु सम्हारे ॥२॥ (1278-8)
नानक दरस मगन मनु मोहिओ पूरन अरथ बिसेखा ॥२॥६५॥८८॥ (1221-12)
नानक दरसन दानु ॥९॥ (838-14)
नानक दरसनु जिना वेखालिओनु तिना दरगह लए छडाइ ॥१॥ (314-13)
नानक दरसनु देखि निहालु ॥२॥१०१॥१७०॥ (200-5)
नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥४॥ (294-8)
नानक दरसनु पेखि जीवे गोविंद गुण निधि गाइआ ॥४॥५॥८॥ (547-16)
नानक दरसि लीना जिउ जल मीना सभ देखीऐ अनभै का दाता ॥१॥ (1236-18)
नानक दरि घरि एकंकारु ॥४॥७॥ (153-9)

नानक दरि दीदारि समाइ ॥२॥ (956-4)
नानक दरि परधानु सो दरगहि पैधा जाइ ॥४॥१४॥ (19-13)
नानक दरि सचै सचिआर हहि हउ तिन बलिहारै जाउ ॥४॥२१॥५४॥ (35-3)
नानक दरु घरु एकु है अवरु न दूजी जाइ ॥१०॥११॥ (60-15)
नानक दाता एकु है दूजा अउरु न कोइ ॥ (65-19)
नानक दाति करी प्रभि दातै जोती जोति समाणी ॥१॥ (442-9)
नानक दाति दइआ करि देवै राम नामि निसतारी ॥१॥ (443-3)
नानक दानु कीआ दुख भंजनि रते रंगि रसाली जीउ ॥४॥३२॥३९॥ (106-3)
नानक दास इहु कीआ बीचारु ॥ (1137-13)
नानक दास कंठि लाइ राखे करि किरपा पारब्रहम मइआ ॥४॥४४॥५५॥ (900-13)
नानक दास कहहु गुर वाहु ॥४॥२१॥ (376-8)
नानक दास कीए प्रभि अपुने हरि कीरतनि रंग माणे जीउ ॥४॥३५॥४२॥ (106-19)
नानक दास खसमि प्रतिपाले ॥४॥२॥ (801-19)
नानक दास गोबिंद सरणाई हरि प्रीतमु मनहि सधारो ॥३॥ (785-1)
नानक दास जिसु खसमु दइआलु ॥४॥३५॥८६॥ (392-6)
नानक दास तरी तिनि माइआ ॥४॥५॥५६॥ (385-9)
नानक दास ता की सरनाई जा को सबदु अखंड अपार ॥२॥९॥२७॥ (807-11)
नानक दास ता कै कुरबाणै ॥८॥३॥ (237-5)
नानक दास ता कै बलिहारै जिनि पूरन पैज रखाई ॥४॥१४॥२५॥ (616-3)
नानक दास तिसहि कुरबान ॥४॥९५॥१६४॥ (199-2)
नानक दास तिसु जन कुरबाणु ॥४॥३॥ (1180-18)
नानक दास तिसु पूरन भागा ॥४॥३६॥४७॥ (897-19)
नानक दास तेरा भरवासा ॥४॥२९॥८०॥ (390-8)
नानक दास तेरी सरणा ॥२॥७॥७१॥ (627-1)
नानक दास तेरी सरणाइ ॥४॥३१॥४४॥ (1148-18)
नानक दास तेरी सरणाई ॥ (371-18)
नानक दास तेरी सरणाई ॥४॥१०२॥१७१॥ (200-9)
नानक दास तेरी सरणाई जिउ भावै तिवै चलाइ ॥२॥७५॥९८॥ (1223-9)
नानक दास तेरी सरणाई तू पूरन पुरखु बिधाता ॥१॥ (1122-8)
नानक दास तेरी सरणाई प्रभ बिनु आन न होरी ॥२॥७१॥९४॥ (1222-14)
नानक दास तेरी सरणाई भवजलु उतरिओ पार ॥२॥७९॥१०२॥ (1224-4)
नानक दास तेरी सरणाई सदा सदा बलिहारै ॥४॥१॥४॥ (802-17)
नानक दास तेरै कुरबाणु ॥ (894-15)
नानक दास तेरै बलिहारै सभु तेरा खेलु दसाहरा जीउ ॥४॥२॥९॥ (97-9)
नानक दास देखि भए निहाला ॥४॥१०॥२३॥ (1142-2)
नानक दास धूरि जन बांछै उधरहि लागि पले ॥२॥९७॥१२०॥ (1227-10)
नानक दास निहाल ॥४॥२८॥३९॥ (895-8)

नानक दास प्रभ किरपा धारे ॥४॥२१॥२७॥ (742-16)
नानक दास प्रभ की सरणाइ ॥८॥२॥ (1193-5)
नानक दास बलि बलि कीत ॥२॥१॥१०॥१९॥ (980-7)
नानक दास रखे प्रभि अपुनै निंदक काढे मारि ॥२॥२१॥५२॥ (683-6)
नानक दास वखाणी ॥ (626-3)
नानक दास संगि पाथर तरिआ ॥८॥२॥ (913-19)
नानक दास संत पाछै परिओ राखि लेहु इह बारी ॥२॥४॥९॥ (713-18)
नानक दास सचु करणी सार ॥४॥५॥ (1299-6)
नानक दास सचे गुण गावै ॥२॥८॥७२॥ (627-4)
नानक दास सदा कुरबानी ॥ (1074-16)
नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥ (268-4)
नानक दास सदा बलिहार ॥२॥ (292-13)
नानक दास सदा बलिहारी ॥ (742-7)
नानक दास सदा सरणाई दूसर लवै न लावणा ॥१०॥ (1086-10)
नानक दास सदा सरनाई ॥४॥११३॥ (202-16)
नानक दास सभि दूख पलाइण ॥४॥९॥१४॥ (805-8)
नानक दास सरणागती हरि पुरख पूरन देव ॥२॥५॥८॥ (1323-1)
नानक दास सरनागती तेरे संतना की छारु ॥२॥४॥१२॥ (1121-12)
नानक दास साध सरणाई ॥ (378-16)
नानक दास सेई जन धंन ॥४॥३७॥५०॥ (1150-18)
नानक दास हरि की सरणाइ ॥४॥६९॥१३८॥ (193-16)
नानक दास हरि की सरणाई ॥४॥१३॥ (1138-14)
नानक दास हरि सरणि दुआरे ॥४॥२९॥३५॥ (744-9)
नानक दास हरि सरणि समाहा ॥४॥२०॥२६॥ (742-12)
नानक दास हरि हरि हरि टेकै ॥४॥१८॥८७॥ (181-19)
नानक दासनि दासु करहु प्रभ हम हरि कथा कथागी ॥४॥२॥ (667-7)
नानक दासनि दासु कहतु है हम दासन के पनिहारे ॥८॥१॥ (981-1)
नानक दासनि दासु जनु तेरा पुनह पुनह नमसकारि ॥२॥८९॥११२॥ (1226-2)
नानक दासनि दासु तुधु आगै बिनवता ॥१८॥ (965-9)
नानक दासि वखाणी ॥ (629-3)
नानक दासु इहै सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥५॥ (13-19)
नानक दासु उन संगि लपटाइओ जिउ बूंदहि चात्रिकु मउला ॥४॥३॥४॥ (496-8)
नानक दासु कहै बेनंती कत हरि बिनु प्राण टिकाही ॥२॥ (1122-11)
नानक दासु कहै बेनंती भीखिआ नामु दरि पाई हे ॥१६॥१॥ (1044-17)
नानक दासु कहै बेनंती सचि नामि चितु लाइदा ॥१६॥२॥१६॥ (1060-13)
नानक दासु कहै बेनंती हउ लागा तिन कै पाए ॥४॥५॥ (601-17)
नानक दासु ता कै कुरबाणु ॥४॥११॥२२॥ (889-16)

नानक दासु ता कै बलिहारी मिलै नामु हरि निमका ॥४॥१॥११॥ (1117-19)
नानक दासु दरसु प्रभ जाचै मन तन को आधार ॥२॥७८॥१०१॥ (1224-1)
नानक दासु दासन को करीअहु हरि भावै दासा राखु संगा ॥२१॥२॥११॥ (1083-12)
नानक दासु बखसीस तुमारी ॥३॥८॥ (564-2)
नानक दासु मुख ते जो बोलै ईहा ऊहा सचु होवै ॥२॥१४॥४५॥ (681-19)
नानक दासु सदा गुण गावै इक भोरी नदरि निहालीऐ जीउ ॥४॥२१॥२८॥ (102-19)
नानक दासु सदा संगि सेवकु तेरी भगति करंउ लिव लाए ॥३॥ (577-4)
नानक दासु सदा सरणागति हरि अम्रित सजणु मेरा ॥१॥ (784-14)
नानक दासु हरि कीरतनि राता सबदु सुरति सचु साखी ॥२॥९९॥१२२॥ (1227-18)
नानक दीजै नाम दानु राखउ हीऐ परोइ ॥५५॥ (262-1)
नानक दीजै साध रवाला ॥४॥७५॥१४४॥ (194-19)
नानक दीन दइआल भए है त्रिसना सबदि बुझाई ॥४॥८॥ (607-14)
नानक दीन दइआल भए है भगति भाइ हरि नामि समईआ ॥८॥१॥४॥ (833-18)
नानक दीन दइआल हमारे अवरु न जानिआ कोई ॥८॥२॥ (1233-7)
नानक दीन धूरि जन बांछत मिलै लिखत धुरि माथ ॥२॥६॥८॥ (1120-16)
नानक दीन भगत भव तारण तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥२॥ (777-12)
नानक दीन सरणि आए गलि लाए ॥२॥२॥१५३॥ (408-15)
नानक दीन सरणि किरपा निधि राखु लाज भगताना ॥१॥ (777-9)
नानक दीन सरणि सुख सागर राखु लाज अपनाइआ ॥४॥१॥ (777-19)
नानक दुखीआ जुग चारे बिनु नाम हरि के मनि वसे ॥४॥ (1110-13)
नानक दुखीआ सभु संसारु ॥ (954-5)
नानक दुखु लागा तिन्ह कामणी जिन्ह कंतै सिउ मनि भंगु ॥२॥ (1280-10)
नानक दुखु सुखु विआपत नही जिथै आतम राम प्रगासु ॥१६॥ (1414-11)
नानक दुखु सुखु सम करि जापै सतिगुर ते कालु न ग्रासै ॥६१॥ (945-2)
नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥ (1290-15)
नानक दुनीआ कैसी होई ॥ (1410-10)
नानक दुनीआ चारि दिहाड़े सुखि कीतै दुखु होई ॥ (1286-14)
नानक दुनीआ भसु रंगु भसू हू भसु खेह ॥ (1240-15)
नानक दुनीआ संगि गुदारिआ साकत मूड़ नपाक ॥१॥ (523-8)
नानक दुरमति छुटि गई पारब्रहम बसे चीति ॥२॥ (297-2)
नानक दुही सिरी खसमु आपे वरतै नित करि करि देखै चलत सबाए ॥१॥ (303-3)
नानक दूजा अवरु न कोइ ॥७॥ (278-2)
नानक दूजा मेटि समानिआ ॥८॥३॥ (904-10)
नानक दूजी कार न करणी सेवै सिखु सु खोजि लहै ॥ (940-13)
नानक दूसर अवरु न कोऊ ॥३७॥ (258-5)
नानक देखि दिखाईऐ हउ सद बलिहारै जासु ॥४॥१२॥ (18-17)
नानक देखै थापि उथापि ॥४॥१॥ (1125-7)

नानक देवनहार सुजाना ॥४॥२६॥३२॥ (743-16)
नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥२॥ (474-6)
नानक द्रिसटि आइओ स्रब ठाई प्राणपती हरि समका ॥२॥४॥२७॥ (1209-16)
नानक द्रिसटि दीरघ सुखु पावै गुर सबदी मनु धीरा ॥३॥ (1107-11)
नानक द्रिसटी अवरु न आवै ॥२॥ (277-5)
नानक द्रिसटी आइआ उसतति करनै जोगु ॥१॥ (260-9)
नानक धंनु सवारणहारा ॥८॥२॥ (412-12)
नानक धंनु सुहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥५॥१३॥ (19-6)
नानक धंनु सोहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥४॥२३॥९३॥ (51-1)
नानक धंनु सोहागणी जो भावहि वेपरवाह ॥२॥ (1088-13)
नानक धन आगै खड़ी सोभावंती नारि ॥१॥ (1088-12)
नानक धनि धनि धंनि जन आए ते परवाणु ॥१॥ (252-16)
नानक धनु धंनु धंनु सोहागणि जिनि पिरु राविअड़ा सचु सवरा ॥२॥ (561-15)
नानक धनु धंनु वडे वडभागी जिन्ह गुरमति नामु रिदै मलु धोहै ॥४॥२॥ (493-3)
नानक धरम ऐसे चवहि कीतो भवनु पुनीत ॥१०॥ (1425-14)
नानक धातु लिवै जोड़ु न आवई जे लोचै सभु कोइ ॥ (316-16)
नानक धूड़ि पुनीत साध लख कोटि पिरागे ॥१६॥ (322-5)
नानक ध्रापिओ तनि सुखु होइ ॥५॥१४॥ (1331-16)
नानक ध्रापे हरि नाम सुआदि ॥ (1190-14)
नानक ध्रिगु तिना दा जीविआ जिन सचि न लगो रंगु ॥२॥ (523-3)
नानक नउ निधि पाईऐ जे चलै तिसै रजाइ ॥१॥ (949-11)
नानक नदरि करे जिसु उपरि सचि नामि वडिआई ॥१॥ (147-4)
नानक नदरि करे जे आपणी ता गुरमति मेलि मिलाइ ॥१॥ (648-12)
नानक नदरि करे जे आपणी सतिगुरु मेलै सोइ ॥ (554-18)
नानक नदरि करे सो पाए ॥ (468-1)
नानक नदरि करे सो बूझै सो जनु नामु धिआए ॥ (732-10)
नानक नदरि करेहु मिलै सचु वांढीआ ॥८॥२१॥ (422-7)
नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥ (5-11)
नानक नदरी करमु होइ गुर मिलीऐ भाई ॥१३॥ (1242-18)
नानक नदरी करमु होइ जावहि सगल विजोग ॥२॥ (955-7)
नानक नदरी धन सोहागणि सबदु अभ साधारए ॥३॥ (436-9)
नानक नदरी नदरि करे ता नाम धनु पलै पाइ ॥२॥ (850-6)
नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥ (8-10)
नानक नदरी नदरि पछाणु ॥८॥३॥ (1343-19)
नानक नदरी नदरि पिआरे ॥४७॥ (943-8)
नानक नदरी पाईऐ अम्रितु गुणी निधानु ॥२॥ (851-12)
नानक नदरी पाईऐ आपे लए मिलाइ ॥२॥ (551-13)

नानक नदरी पाईऐ करमि परापति होइ ॥२॥ (1250-6)
नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥ (7-8)
नानक नदरी पाईऐ गुरमुखि मेलि मिलाउ ॥४॥१२॥४५॥ (31-8)
नानक नदरी पाईऐ ता अनदिनु लागै धिआनु ॥२॥ (512-1)
नानक नदरी पाईऐ दरगह चलै मानु ॥३॥ (1087-11)
नानक नदरी पाईऐ सचु नामु गुणतासु ॥४॥१॥३४॥ (26-13)
नानक नदरी बखसि लेहि सबदे मेलि मिलाहि ॥१॥ (645-7)
नानक नदरी बाहरी करण पलाह करे ॥६७॥ (1421-7)
नानक नदरी बाहरी सभ करण पलाह करेइ ॥२॥ (1280-17)
नानक नदरी बाहरे कबहि न पावहि मानु ॥२॥ (789-17)
नानक नदरी बाहरे राचहि दानि न नाइ ॥४॥४॥ (15-16)
नानक नदरी मनि वसै गुरमुखि सहजि समाहि ॥१॥ (508-16)
नानक नदरी सचु मदु पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ (554-16)
नानक नदरी सहजि साचा मिलहु सखी सहेलीहो ॥३॥ (242-15)
नानक नदरी सुखु होइ एना जंता का दुखु जाइ ॥१॥ (1282-13)
नानक नरकि न जाहि कबहूं हरि संत हरि की सरणी ॥४॥२॥११॥ (460-10)
नानक नाइ विसारिऐ सभ मंदी रुते ॥१२॥ (321-3)
नानक नाइ विसारिऐ सुखु किनेहा होइ ॥१॥ (320-13)
नानक नाइ सुणिऐ मुख उजले नाउ गुरमुखि धिआवै ॥८॥ (1240-18)
नानक नाउ खुदाइ का दिलि हछै मुखि लेहु ॥ (140-10)
नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई जितु लगि पारि जन पाइ ॥४॥९॥ (603-9)
नानक नाउ भइआ रहमाणु ॥ (903-4)
नानक नाम निरंजनु पाइआ नामु जपत सुखु पाइ ॥५॥४॥ (1199-15)
नानक नाम बिना को थिरु नही नामे बलि जासा ॥१०॥ (1090-3)
नानक नाम बिना को मुकति न होई ॥४॥१०॥३०॥ (161-1)
नानक नाम बिना कोई किछु नाही नामे देइ वडाई ॥४॥८॥ (1260-15)
नानक नाम बिना दोहागणि छूटी झूठि विछुंनिआ ॥१॥ (689-6)
नानक नाम बिना नह छूटीऐ हउमै पचहि पचाइ ॥२॥ (588-9)
नानक नाम रते से धनवंत हैनि निरधनु होरु संसारु ॥२६॥ (1416-1)
नानक नाम रते से रंगुले गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (85-11)
नानक नाम विटहु कुरबाणु ॥ (349-18)
नानक नाम विहूणिआ तिन्ह तन खावहि काउ ॥२॥ (1247-11)
नानक नाम विहूणिआ ना उरवारि न पारि ॥२॥ (649-3)
नानक नाम विहूणिआ मुहि कालै उठि जाइ ॥२॥ (647-7)
नानक नाम विहूणीआ निमुणीआदी देह ॥३॥ (1101-9)
नानक नाम विहूणीआ सुंदरि माइआ ध्रोहु ॥२॥ (707-14)
नानक नाम विहूणे मनमुखी जासनि जनमु गवाइ ॥१॥ (650-5)

नानक नामि अराधिऐ कारजु आवै रासि ॥१॥ (320-9)
नानक नामि अराधिऐ बिघनु न लागै कोइ ॥२॥ (521-18)
नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥३॥ (265-19)
नानक नामि धिआइऐ बिघनु न लागै कोइ ॥१॥ (524-3)
नानक नामि बिसारिऐ नरक सुरग अवतार ॥९॥ (298-13)
नानक नामि मिलै वडिआई आपे सुणि सुणि धिआवणिआ ॥८॥१३॥१४॥ (117-18)
नानक नामि मिलै वडिआई दुखु सुखु सम करि जानणिआ ॥८॥१०॥११॥ (116-3)
नानक नामि मिलै वडिआई दूजै भाइ पति खोई ॥३॥ (769-1)
नानक नामि मिलै वडिआई नामे ही सुखु पाइदा ॥१६॥८॥२२॥ (1067-1)
नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥८॥११॥१२॥ (116-14)
नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥८॥२५॥२६॥ (125-9)
नानक नामि मिलै वडिआई हरि दरि सोहनि आगै ॥२॥ (590-11)
नानक नामि रता इक रंगी सबदि सवारणहारा ॥४॥३॥ (600-19)
नानक नामि रतिआ बलि जाउ ॥२॥ (646-4)
नानक नामि रते गति पाए ॥४॥३॥४२॥ (361-18)
नानक नामि रते जन निरमले सहजे सचि समाउ ॥२॥ (1286-1)
नानक नामि रते जन सोहहि करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥९॥२९॥३०॥ (127-19)
नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥३३॥ (941-18)
नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥४॥८॥२८॥ (160-9)
नानक नामि रते तिन सदा सुखु पाइआ होरि मूरख कूकि मुए गावारा ॥३॥ (571-3)
नानक नामि रते तिन हउमै गई सचै रहे समाइ ॥८॥८॥३०॥ (426-18)
नानक नामि रते तिन ही सुखु पाइआ साचै के वापारा ॥१॥ (570-15)
नानक नामि रते दरि नीसाणु ॥४॥१०॥ (1175-9)
नानक नामि रते दुतरु तरे भउजलु बिखमु संसारु ॥२॥ (1093-6)
नानक नामि रते निरंकारी दरि साचै साचु पछाता हे ॥१६॥८॥ (1052-6)
नानक नामि रते निसतारिआ ॥४॥३॥ (796-5)
नानक नामि रते निहकेवल निरबाणी ॥४॥१३॥३३॥ (162-1)
नानक नामि रते पति पाइ ॥८॥१२॥ (226-13)
नानक नामि रते पति होइ ॥९॥ (931-2)
नानक नामि रते बैरागी अनहद रुण झुणकारे ॥१॥ (436-15)
नानक नामि रते बैरागी इब तब साचो साचा ॥६६॥ (945-17)
नानक नामि रते बैरागी नामे कारजु सोहा हे ॥१६॥३॥१२॥ (1056-10)
नानक नामि रते बैरागी निज घरि ताड़ी लाई हे ॥१६॥३॥ (1023-10)
नानक नामि रते बैरागी निज घरि ताड़ी लावणिआ ॥८॥३॥४॥ (111-16)
नानक नामि रते बैरागी मनु तनु रसना नामि सवारी हे ॥१६॥७॥ (1051-5)
नानक नामि रते मनु निरमलु नामे नामि निवासी हे ॥१६॥५॥ (1049-3)
नानक नामि रते मनु साचा सचो सचु रवीजै हे ॥१६॥६॥ (1050-5)

नानक नामि रते वीचारी नामे नामि समाइदा ॥१६॥१॥१५॥ (1059-12)
नानक नामि रते वीचारी सचो सचु कमावणिआ ॥८॥१८॥१९॥ (121-1)
नानक नामि रते सचु सोइ ॥४॥८॥ (1174-15)
नानक नामि रते सदा अनदु है हरि मिलिआ कारज सारे ॥४॥१॥६॥ (440-7)
नानक नामि रते सदा बैरागी एक सबदि लिव लाई ॥८॥२॥ (1234-10)
नानक नामि रते सदा सुखु होइ ॥३२॥ (941-16)
नानक नामि रते सहजे मिले सबदि गुरू कै घाल ॥१॥ (1283-19)
नानक नामि रते सहजे रजे जिना हरि रखिआ उरि धारि ॥१॥ (647-13)
नानक नामि रते सुखीए सदा सचे सिउ लिव लाइ ॥२॥ (587-19)
नानक नामि रते सुखु पाइआ दरगह जापहि सेई ॥४॥११॥ (604-2)
नानक नामि रते सुखु पाए ॥५॥११॥५०॥ (364-14)
नानक नामि रते सुखु होइ ॥२॥ (289-15)
नानक नामि रते सुखु होइ ॥५॥१२॥५१॥ (365-3)
नानक नामि रते से उबरे गुर कै हेति अपारि ॥२॥ (1094-3)
नानक नामि रते से उबरे सचे सिउ लिव लाइ ॥२॥ (587-8)
नानक नामि रते से निरमल होर हउमै मैलु भरीजै ॥२॥ (570-19)
नानक नामि रते से निरमले साचै रहे समाई ॥८॥५॥ (1012-2)
नानक नामि रते से सचि समाणे बहुरि न भवजलि फेरा ॥१॥ (571-10)
नानक नामि रते से सचे बैरागी ॥१॥ (1246-8)
नानक नामि रते सेई जन समधे जि आपे बखसि मिलाइआ ॥१॥ (852-15)
नानक नामि रते हरि नामि समाए ॥४॥९॥२९॥ (160-15)
नानक नामि रसिक बैरागी कुलह समूहां तारो ॥२॥८७॥११०॥ (1225-13)
नानक नामि रहिआ भरपूरि ॥४॥११॥ (1175-15)
नानक नामि रहे लिव लाए ॥४॥४॥ (1173-9)
नानक नामि लगे से उबरे हउमै सबदि गवाइ ॥४॥१८॥५१॥ (33-14)
नानक नामि वडाई पाइ ॥४॥३॥ (1173-3)
नानक नामि वडाई होइ ॥४॥७॥४६॥ (363-6)
नानक नामि वडाईआ करमि परापति होइ ॥८॥३॥२०॥ (66-13)
नानक नामि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥४॥२॥ (994-4)
नानक नामि विसारिऐ आवण जाणा दोइ ॥२॥ (1248-11)
नानक नामि विसारिऐ दरि गइआ किआ होइ ॥४॥८॥ (17-9)
नानक नामि संतोखीआ जीउ पिंडु प्रभ पासि ॥५॥१६॥ (20-9)
नानक नामि संतोखीआ राते हरि चरणी ॥८॥१९॥ (421-10)
नानक नामि सदा सुखु आगै ॥४॥८॥ (666-7)
नानक नामि समाणे मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥८॥२२॥१५॥३७॥ (430-11)
नानक नामि समावहि साचै साचे ते पति होई हे ॥१६॥२॥ (1045-18)
नानक नामि समावै सोइ ॥४॥१२॥३२॥ (161-13)

नानक नामि सलाहिऐ मनु तनु सीतलु होइ ॥१॥ (321-4)
नानक नामि सवारणहार ॥४॥४॥ (665-1)
नानक नामि सवारणहार ॥४॥४॥४३॥ (362-5)
नानक नामि सवारणहार ॥४॥५॥ (152-14)
नानक नामि सांति सुखु पाए ॥४॥२॥ (664-8)
नानक नामि सोहागणी मेली मेलणहारि ॥२॥ (90-2)
नानक नामु अराधणा कारजु आवै रासि ॥८॥ (1425-12)
नानक नामु अराधि सभना ते वडा सभि नावै अगै आणि निवाए ॥१५॥ (89-7)
नानक नामु अराधिआ गुर पूरै दीआ मिलाइ ॥२॥ (519-4)
नानक नामु गुर भगती पाईऐ गुर चरणी चितु लावणिआ ॥८॥२०॥२१॥ (122-6)
नानक नामु गुरमति उर धारि ॥८॥३॥२५॥ (424-10)
नानक नामु गुरमती पाईऐ आपे लए लवाए ॥२॥ (246-17)
नानक नामु जपत सुखु ऊपजै दरगह पाईऐ थाउ ॥१॥ (963-4)
नानक नामु जपत सुखु पावा ॥४॥५॥ (563-10)
नानक नामु जपहि सचि सूचे ॥४॥७॥५९॥ (367-14)
नानक नामु जपहु गुनतासु ॥५॥ (290-6)
नानक नामु जपहु तरु तारी सचु तारे तारणहारा हे ॥१६॥१॥७॥ (1027-14)
नानक नामु जपे नाउ नउ निधि पाए ॥४॥११॥३१॥ (161-7)
नानक नामु जपै दिन राति ॥४॥६५॥१३४॥ (192-19)
नानक नामु जपै सो जीवै ॥ (200-11)
नानक नामु जिना मनि वसिआ दरि साचै पति पाई ॥४॥४॥१४॥ (1131-9)
नानक नामु तिना कउ मिलिआ जिन कउ धुरि लिखि पाइआ ॥१॥ (644-1)
नानक नामु तिना कउ मिलै जिन हरि वेखै नदरि निहालि ॥१॥ (548-13)
नानक नामु तिनी सालाहिआ जिन गुरू मिलाइआ ॥१०॥ (1241-15)
नानक नामु तिन्हा कदे न वीसरै से दरि सचे जाणु ॥९॥१३॥३५॥ (429-10)
नानक नामु देवै हरि आपे ॥४॥६॥५८॥ (367-10)
नानक नामु द्रिड़ाए पूरा गुरु मेरा ॥४॥५॥ (798-8)
नानक नामु धिआइ तूं दरि सचै सोभा पाई ॥८॥६॥२८॥ (425-19)
नानक नामु धिआइ धिआइ जीवै बिनसिआ भ्रमु भउ धीठा जीउ ॥४॥४२॥४९॥ (108-19)
नानक नामु धिआइ पूरन साधसंगि पाई परम गते ॥२॥ (458-15)
नानक नामु धिआइ प्रभ का सफलु घरु ॥१॥ (1251-9)
नानक नामु धिआइ सचि राते जो तिसु भावै सु कार करावणिआ ॥८॥४॥५॥ (112-8)
नानक नामु धिआइ सदा तूं जमणु मरणु सवारणिआ ॥८॥१॥२॥ (110-11)
नानक नामु धिआइ सदा तू भव सागरु जितु पावहि पारि ॥४॥६॥ (1260-4)
नानक नामु धिआइ सदा तू सतिगुरि दीआ दिखाई ॥४॥१॥ (1333-5)
नानक नामु धिआइ सुख सबाइआ ॥४॥ (705-1)
नानक नामु धिआइआ ॥ (625-18)

नानक नामु धिआइआ ॥ (628-19)
नानक नामु धिआइआ सुखदाता दुखु विसरिआ सहजि सुभाइ ॥२॥ (588-17)
नानक नामु धिआइनि तिन निज घरि वासु है जुगु जुगु सोभा होइ ॥२॥ (653-18)
नानक नामु धिआईऐ कारजु आवै रासि ॥१॥ (257-13)
नानक नामु धिआईऐ गुरु पूरा मति देइ ॥ (963-4)
नानक नामु धिआईऐ सची वडिआई ॥२१॥१॥ सुधु ॥ (956-19)
नानक नामु धिआईऐ सचु सिफति सनाई ॥१०॥ (951-12)
नानक नामु धिआईऐ सभना जीआ का आधारु ॥४॥७॥४०॥ (29-9)
नानक नामु न चेतई जूऐ बाजी हारी ॥१४॥ (1243-5)
नानक नामु न चेतनी अगिआनी अंधुले अवरे करम कमाहि ॥ (648-6)
नानक नामु न चेतनी होइ मैले मरहि गवार ॥१॥ (1091-17)
नानक नामु न चेतिओ अंति लए छडाई ॥२४॥ (1247-2)
नानक नामु न छोडै सा धन नामि सहजि समाणीआ ॥२॥ (242-12)
नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥१॥ (459-5)
नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥२॥ (522-16)
नानक नामु न वीसरउ करि अपुनी हरि मइआ ॥४॥१४॥८४॥ (47-14)
नानक नामु न वीसरै करमि सचै नीसाणु ॥४॥१९॥ (21-14)
नानक नामु न वीसरै छूटै सबदु कमाइ ॥८॥१४॥ (62-15)
नानक नामु न वीसरै जिउ भावै तिवै रजाइ ॥९॥१३॥ (62-3)
नानक नामु न वीसरै जिनि सिरिआ सभु कोइ ॥६०॥ (1420-14)
नानक नामु न वीसरै जो किछु करै सु होगु ॥८॥२॥७॥२॥९॥ (1347-5)
नानक नामु न वीसरै जो तिसु भावै सु होगु ॥८॥३॥ (1010-16)
नानक नामु न वीसरै झूठे लालच होरि ॥२॥ (1247-6)
नानक नामु न वीसरै निधारा आधारु जीउ ॥८॥१॥२॥ (751-14)
नानक नामु न वीसरै पूरा गुरु तारे ॥८॥२२॥ (422-16)
नानक नामु न वीसरै मथि अम्रितु पीआ ॥८॥१५॥ (419-14)
नानक नामु न वीसरै मेले गुरु करतार ॥८॥९॥ (59-5)
नानक नामु न वीसरै सचे माहि समाउ ॥४॥३१॥६४॥ (39-14)
नानक नामु न वीसरै साचे मनु मानै ॥८॥१४॥ (419-6)
नानक नामु नामु जपु जपिआ अंतरि बाहरि रंगि ॥ (257-17)
नानक नामु निधानु मन महि संजि धरि ॥२०॥ (1093-12)
नानक नामु निधानु मनि वसिआ वडिआई पाए ॥८॥४॥२६॥ (425-1)
नानक नामु निधानु रिदै उरि हारई ॥६॥ (1425-9)
नानक नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ (590-15)
नानक नामु निधानु है नामे ही चितु लाइ ॥४॥३॥ (1258-16)
नानक नामु निधानु है पूरै गुरि देखालिआ ॥१४॥ (1284-12)
नानक नामु निरंजन जपीऐ मिलि सतिगुर सुखु पाइआ ॥३॥ (780-13)

नानक नामु निरंजन दीजै जुगि जुगि सबदि सलाही ॥८॥४॥ (505-10)
नानक नामु निरंजनु गाईऐ पाईऐ सरब निधाना ॥ (676-5)
नानक नामु पदारथु दीजै हिरदै कंठि बणाई ॥८॥३॥ (504-17)
नानक नामु परापति होइ ॥४॥७॥ (1129-10)
नानक नामु पवितु हरि मुखि बोली सभि दुख परहरी ॥२॥ (301-7)
नानक नामु पाइआ प्रभु तूठा ॥४॥६॥ (563-14)
नानक नामु प्रभू ते पाईऐ जिन कउ धुरि लिखिआ होई ॥५॥४॥ (1259-6)
नानक नामु बीजि मन अंदरि सचै सबदि सुभाए ॥२॥ (568-16)
नानक नामु महा रसु मीठा अनदिनु मनि तनि पीवा ॥१॥ (778-3)
नानक नामु महा रसु मीठा गुरि पूरै सचु पाइआ ॥४॥२॥ (243-12)
नानक नामु महा रसु मीठा त्रिसना नामि निवारी ॥५॥२॥ (689-3)
नानक नामु मिलिआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखावणिआ ॥८॥१॥३२॥३३॥ (129-17)
नानक नामु मिलै अपनी दइआ करहु ॥२॥१॥१५०॥ (408-1)
नानक नामु मिलै किरपा प्रभ कीजै ॥८॥५॥ (905-13)
नानक नामु मिलै गुण गाइ ॥१२॥९॥ (225-5)
नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥१॥ (1429-16)
नानक नामु मिलै भउ भंजनु गुर सबदी सुखु पावणिआ ॥८॥१॥३४॥ (130-9)
नानक नामु मिलै मनि भावै साची नदरि रसालं ॥८॥१॥४॥ (1275-12)
नानक नामु मिलै मनु मानिआ ॥४॥१॥ (664-1)
नानक नामु मिलै वडिआई ॥४॥२५॥९४॥ (184-9)
नानक नामु मिलै वडिआई अनदिनु सदा गुण गावणिआ ॥८॥२८॥२९॥ (127-6)
नानक नामु मिलै वडिआई आपु गवाइ सुखु पाइआ ॥१६॥२॥२४॥ (1069-3)
नानक नामु मिलै वडिआई आपे मेलि मिलावणिआ ॥८॥२॥३॥ (111-4)
नानक नामु मिलै वडिआई एदू उपरि करमु नही ॥ (903-5)
नानक नामु मिलै वडिआई गुर कै सबदि पछाता ॥८॥५॥२२॥ (68-3)
नानक नामु मिलै वडिआई गुर सबदी सचु पाए ॥४॥३॥ (1333-16)
नानक नामु मिलै वडिआई जुगि जुगि एको जाता हे ॥१६॥९॥ (1053-7)
नानक नामु मिलै वडिआई दरि साचै पति पाई हे ॥१६॥३॥ (1047-1)
नानक नामु मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥८॥२२॥२३॥ (123-10)
नानक नामु मिलै वडिआई पूरै भागि धिआइआ ॥४॥५॥ (1334-11)
नानक नामु मिलै वडिआई प्रभु रावे रंगि राती ॥२॥ (771-16)
नानक नामु मिलै वडिआई मेका घड़ी सम्हाली ॥८॥१॥८॥ (1191-6)
नानक नामु मिलै वडिआई हरि सचे के गुण गावणिआ ॥८॥९॥१०॥ (115-9)
नानक नामु मिलै सचु रासि ॥४॥६४॥१३३॥ (192-15)
नानक नामु रखहु उर धारि ॥ (841-12)
नानक नामु रखहु उर धारि ॥४॥८॥ (1129-13)
नानक नामु रतंनु है गुरमुखि हरि धिआइआ ॥११॥ (1242-5)

नानक नामु रतनु जगि लाहा गुरमुखि आपि बुझाए ॥४॥५॥७॥ (247-5)
नानक नामु रतनु परगासिआ ऐसी गुरमति पाई ॥३॥ (437-16)
नानक नामु लाहा परवाणु ॥ (789-15)
नानक नामु वणजहि रंगि राते गुरमुखि को नामु पाइदा ॥१६॥६॥२०॥ (1064-17)
नानक नामु वसिआ जिसु अंतरि परवाणु गिरसत उदासा जीउ ॥४॥४०॥४७॥ (108-8)
नानक नामु वसिआ मन अंतरि भाई अवरु न दूजा कोई ॥४॥४॥ (601-9)
नानक नामु वसै घट अंतरि आपे वेखि विखालणिआ ॥८॥२६॥२७॥ (126-1)
नानक नामु वसै घट अंतरि गुर किरपा ते पावणिआ ॥८॥३१॥३२॥ (129-5)
नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमति मिले पिआरे ॥२॥ (246-4)
नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमती मेलि मिलाइदा ॥१६॥३॥१७॥ (1061-14)
नानक नामु वसै घट अंतरि जिसु देवै सो पावणिआ ॥८॥१४॥१५॥ (118-11)
नानक नामु वसै मन अंतरि गुर सबदी हरि मेलावणिआ ॥८॥२१॥२२॥ (122-17)
नानक नामु वसै मन अंतरि गुरमुखि मैलु चुकावणिआ ॥८॥१९॥२०॥ (121-13)
नानक नामु वसै मन अंतरि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥८॥८॥९॥ (114-16)
नानक नामु वसै मन अंतरि नामो नामु धिआइदा ॥१६॥५॥१९॥ (1063-16)
नानक नामु वसै मन अंतरि विचहु आपु गवाईऐ ॥४॥६॥ (602-6)
नानक नामु वसै मनि आइ ॥४॥५॥ (1173-15)
नानक नामु सदा जपी भगत जना की टेक जीउ ॥८॥१॥३॥ (761-5)
नानक नामु समालहि से जन सोहनि दरि साचै पति पाई ॥४॥७॥ (602-16)
नानक नामु समालि तूं बधा छुटहि जितु ॥६॥१॥३॥ (729-8)
नानक नामु समालि तूं सो दिनु नेड़ा आइओइ ॥४॥२२॥९२॥ (50-15)
नानक नामु समालि तू गुर कै हेति अपारि ॥५॥२०॥५३॥ (34-13)
नानक नामु समालि तू जितु सेविऐ सुखु होइ ॥४॥३०॥६३॥ (39-5)
नानक नामु समालि तू बीजउ अवरु न कोइ ॥२॥ (1091-2)
नानक नामु समालि तू भाई अपर्मपर गुणी गहीर ॥८॥३॥ (639-11)
नानक नामु समालि सदा तूं सहजे सचि समावणिआ ॥८॥१६॥१७॥ (119-15)
नानक नामु समालि सदा तू गुरमती मंनि वसाइदा ॥१६॥४॥१८॥ (1062-15)
नानक नामु सलाहि तूं अंतु न पारावारु ॥४॥२४॥५७॥ (36-9)
नानक नामु सलाहि तूं गुरमुखि गति होई ॥४॥३९॥१३॥५२॥ (365-9)
नानक नामु सलाहि तू सभना जीआ देदा रिजकु स्मबाहि ॥ (1281-7)
नानक नामु सलाहि तू हरि गुणी गहीरु ॥१०॥ (789-3)
नानक नामु सलाहि तू हरि हरि दरि सोभा पाइ ॥४॥२॥ (1258-8)
नानक नामु सलाहि तू होरु हउमै आवउ जाउ ॥११॥ (1411-8)
नानक नामु सलाहि सदा तूं गुरमुखि मंनि वसावणिआ ॥८॥२४॥२५॥ (124-17)
नानक नामु सलाहि सदा तू सचै सबदि समाहि ॥४॥४॥ (1334-3)
नानक नामु सलाहीऐ भइ दुसमन भागै ॥२॥३॥६७॥ (817-18)
नानक नामु सलाहे साचा पूरै भागि को पाइदा ॥१६॥७॥२१॥ (1065-19)

नानक नामु हरि पाईऐ भाई गुर सबदी मेलाइ ॥४॥८॥ (603-3)
नानक नामु हरि मनि वसै भाई तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥८॥२॥ (638-19)
नानक नामु हिरदै वसै भै भगती नामि सवारि ॥९॥१४॥३६॥ (430-1)
नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥१॥ (653-3)
नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥२॥ (1317-9)
नानक नामे लाइ सवारिअनु सबदे लए मिलाइ ॥८॥९॥३१॥ (427-8)
नानक नामे सभ हरीआवली गुर कै सबदि वीचारि ॥१॥ (1285-4)
नानक नामे साचि समाणी ॥४॥९॥ (1175-2)
नानक नामे ही पति ऊपजै हरि सिउ रहां समाइ ॥८॥२॥ (1277-7)
नानक नामो मनि वसै हरि दरगह लए छडाइ ॥५७॥ (1420-9)
नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होइ ॥२॥ (787-16)
नानक नालि न चलनी जलि बलि होए छारु ॥२॥ (318-11)
नानक नावहु गति मति पाई एहा रासि हमारी ॥४॥१॥ (600-3)
नानक नावहु घुथिआ हलतु पलतु सभु जाइ ॥ (648-18)
नानक नावै की मनि भुख है मनु त्रिपतै हरि रसु खाइ ॥२॥ (313-13)
नानक नावै की सची वडिआई नामो मंनि सुखु पावणिआ ॥८॥३०॥३१॥ (128-12)
नानक नावै जेवडु अवरु न दाता पूरे गुर ते पाई ॥४॥२॥ (1333-11)
नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥२॥ (349-11)
नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥३॥ (10-1)
नानक नावै ही ते सुखु पाइआ गुरमती उरि धार ॥२२॥ (1288-12)
नानक नाहु न वीछुड़ै तिन सचै रतड़ीआह ॥८॥१॥९॥ (1015-4)
नानक निगुरिआ गुणु नाही कोइ ॥ (1240-6)
नानक निबही खेप हमारी ॥४॥ (295-15)
नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥ (2-15)
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥१॥ (464-16)
नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥ (464-17)
नानक निरमल ऊजले जो राते हरि नाइ ॥८॥७॥ (57-18)
नानक निरमल नादु सबद धुनि सचु रामै नामि समाइदा ॥१७॥५॥१७॥ (1038-12)
नानक निरमलु अमर पदु गुरु हरि मेलै मेलाइ ॥९॥ (1411-3)
नानक निहचलु को नही बाझहु हरि कै नाइ ॥२॥ (517-10)
नानक निहचलु मिलणु सहजै ॥५०॥ (943-14)
नानक निहचलु साचा एको ना ओहु मरै न जाइआ ॥५॥१॥११॥ (1130-10)
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥४६॥ (1428-18)
नानक पंथु निहाले सा धन तू सुणि आतम रामा ॥१॥ (1107-5)
नानक पइऐ किरति कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥२॥ (791-6)
नानक पइऐ किरति कमावदे मनमुखि दुखु पाइआ ॥१७॥ (1244-10)
नानक पउ सरणाई राम राइ थिरु होइ सुहागो राम ॥१॥ (848-3)

नानक पकड़ी टेक एक परमेसरु रखै निदान ॥१॥ (926-18)
नानक पकड़े चरण हरि तिसु दरगह मलै ॥८॥ (320-2)
नानक पड़णा गुनणा इकु नाउ है बूझै को बीचारी ॥१॥ (1246-17)
नानक पण्हीआ पहिरै सोइ ॥४॥१॥६॥ (1256-12)
नानक पति राखी परमेसरि उधरिआ सभु संसारो ॥२॥२०॥४८॥ (620-16)
नानक पति सेती घरि जावहि ॥२॥ (270-2)
नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥ (283-3)
नानक पतित पवित मिलि संगति गुर सतिगुर पाछै छुकटी ॥२॥६॥ छका १ (528-10)
नानक परखि लए सचु सोइ ॥५३॥ (944-1)
नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ॥ (148-8)
नानक परखै नदरि निहालु ॥८॥५॥ (414-5)
नानक परपंचु कीआ धुरि करतै पूरबि लिखिआ कमाए ॥१९॥ (1423-7)
नानक परमेसरु जजमानु तिसहि भुख न मूलि ॥२॥ (323-8)
नानक पाइआ एहु निधान ॥ (895-13)
नानक पाइआ नाम खजाना ॥४॥२७॥७८॥ (390-1)
नानक पाइआ नाम निधानु ॥ (1138-9)
नानक पाइआ नामु निधानु ॥४॥३३॥४६॥ (1149-12)
नानक पाइआ सचु नामु सद ही भोगे भोग ॥१॥ (959-2)
नानक पाइआ साधसंगि हरि हरि अम्रेत ॥४॥९॥३९॥ (810-12)
नानक पाइआ सो धणी हरि अगम अगधा ॥१०॥ (320-12)
नानक पाइओ इहु निधानु ॥४॥६॥ (1181-18)
नानक पाईऐ साध कै संगि ॥३॥ (264-10)
नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥ (5-15)
नानक पाप करे तिन कारणि जासी जमपुरि बाधाता ॥४॥२॥१४॥ (155-15)
नानक पाप पुंन नही लेपा ॥६॥ (266-9)
नानक पाप बिनासे कदि के ॥२७॥ (255-19)
नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ॥१३॥ (144-9)
नानक पारब्रहम निरलेपा ॥५४॥ (261-14)
नानक पारब्रहम समराथ ॥४॥२६॥९५॥ (184-15)
नानक पारि परै सच भाइ ॥५७॥ (944-9)
नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥ (264-4)
नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ॥ (468-17)
नानक पिंडु बखसीस का कबहूं निखूटसि नाहि ॥४॥२॥३२॥ (358-10)
नानक पिआस लगी दरसन की प्रभु मिलिआ अंतरजामी ॥४॥५॥१६॥ (613-10)
नानक पिता माता है हरि प्रभु हम बारिक हरि प्रतिपारे ॥४॥६॥१८॥ (882-13)
नानक पिर की सार न जाणई सभु सीगारु खुआरु ॥२॥ (1285-12)
नानक पिरु धन करहि रलीआ इछ मेरी पुंनीआ ॥४॥१॥ (242-18)

नानक पिरु पाइआ हरि साचा सदा सोहागणि नारि ॥१॥ (785-10)
नानक पीठा पका साजिआ धरिआ आणि मउजूदु ॥ (1096-6)
नानक पुछिआ देइ पुजाइ ॥ (1239-16)
नानक पुर दर वेपरवाह तउ दरि ऊणा नाहि को सचा वेपरवाहु ॥१॥ (788-18)
नानक पूछि चलउ गुर अपुने जह प्रभु तह ही जाईऐ ॥१०॥ (1108-18)
नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥ (265-2)
नानक पूर करम सतिगुर चरणी लगिआ ॥२॥ (710-6)
नानक पूरबि जिन कउ लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥१॥ (552-8)
नानक पूरबि लिखिआ कमाइ ॥२॥ (314-16)
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ॥१॥ (84-14)
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ॥२॥ (947-8)
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥२॥ (643-15)
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा गुरमुखि नामि निवासु ॥२॥ (586-15)
नानक पूरा जे करे घटै नाही तोलु ॥२॥ (146-5)
नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुण तास ॥४॥९॥ (17-16)
नानक पूरा तोलु है कबहु न होवै घाटि ॥१॥ (1087-2)
नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥१॥ (295-3)
नानक पूरि रहिओ है सरब मै सगल गुणा बिधि जांनद ॥४॥७॥ (1204-16)
नानक पूरे गुर ते नाउ मंनीऐ जिन देवै सोई ॥१२॥ (1242-12)
नानक पूरै करमि सतिगुरु मिलै हरि जीउ किरपा करे रजाइ ॥२॥ (591-12)
नानक पूरै भागि भगति निराली ॥४॥५॥१७॥ (1177-3)
नानक पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखु पाए जुग चारि ॥१॥ (649-17)
नानक पेखि जीओ इकतु सूति परोतीआ ॥३॥ (1101-17)
नानक पेखिओ सभु बिसमाद ॥८॥४॥ (915-3)
नानक प्रभ आगै अरदासि ॥४॥११॥८०॥ (179-12)
नानक प्रभ किरपा भई ॥४॥२॥१५॥ (1184-13)
नानक प्रभ किरपाल तू ॥२॥९॥१३८॥ (1231-3)
नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥ (278-5)
नानक प्रभ जनु एको जानु ॥८॥१४॥ (282-8)
नानक प्रभ ते सहज सुहेली प्रभ देखत ही मनु धीरे ॥४॥२॥ (1197-14)
नानक प्रभ पूरन मिले दुतीआ बिनसी भ्रांति ॥१॥ (928-19)
नानक प्रभ बिसरत मरि जमहि अभागे ॥९॥ (298-16)
नानक प्रभ भाइआ मेरे मना ॥२॥४॥१६०॥ (410-6)
नानक प्रभ मेरे करनैहारे ॥४॥२५॥ (533-8)
नानक प्रभ सरणाई ॥ (629-17)
नानक प्रभ सरणाए ॥ (630-5)
नानक प्रभ सरणागति आए ॥४॥७॥ (1137-10)

नानक प्रभ सरणागती करण कारण जोगु ॥२॥३४॥६४॥ (817-6)
नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥१॥ (269-14)
नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥ (134-18)
नानक प्रभ सरणागती जत कत मेरै साथि ॥२॥१०॥७४॥ (819-2)
नानक प्रभ सरणागती जपि अनत तरंगे राम ॥१॥ (848-12)
नानक प्रभ सरणागती जा का वड परताप ॥२॥११॥७५॥ (819-5)
नानक प्रभ सरणागती जा का वड परतापु ॥२॥ (928-4)
नानक प्रभ सरणागती जा कै सभु किछु हाथ ॥४॥२९॥५९॥ (816-2)
नानक प्रभ सरणागती जा को निरमल जासु ॥२॥७॥७१॥ (818-11)
नानक प्रभ सरणागती राखन कउ समरथु ॥१॥ (704-8)
नानक प्रभ सरणागती सद सद कुरबाणा ॥१॥ (318-9)
नानक प्रभ सरणागती सरब घटा के नाथ ॥४॥१५॥८५॥ (48-2)
नानक प्रभ सरणागती साचा मनि जोरु ॥२॥५॥६९॥ (818-5)
नानक प्रभ सिउ मिलि रहे बिनसे सगल जंजाल ॥१२॥ (299-6)
नानक प्रभ सुखदाई ॥ (629-10)
नानक प्रभ सुप्रसंन भए बांछत फल पाउ ॥२॥६॥७०॥ (818-8)
नानक प्रभ सुप्रसंन भए लहि गए बिओग ॥२॥१०॥२८॥ (807-15)
नानक प्रभि राखे दे हाथ ॥४॥८५॥१५४॥ (197-2)
नानक प्रभु अबिनासी ॥ (626-9)
नानक प्रभु आराधीऐ बिपति निवारण राम ॥१॥ (926-9)
नानक प्रभु खिंचै तिव चलीऐ जिउ भावै राम पिआरे ॥८॥२॥ (981-12)
नानक प्रभु पाइआ मै साचा ना कदे मरै न जाई ॥४॥१॥३॥ (775-6)
नानक प्रभु पाइआ सबदि मिलाइआ जोती जोति मिलाई ॥४॥१॥४॥ (776-2)
नानक प्रभु मेरै साथे ॥ (621-17)
नानक प्रभू धिआईऐ भाई मनु तनु सीतलु होइ ॥२॥१९॥४७॥ (620-12)
नानक प्रसादि अंगद सुमति गुरि अमरि अमरु वरताइओ ॥ (1397-6)
नानक प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा कोकिल सबदि सुहावै ॥२॥ (1107-8)
नानक प्रिउ प्रिउ जे करी मेले मेलणहारु ॥ (935-3)
नानक प्रीतम क्रिपाल सदहूं किनै कोटि मधे जाते ॥१॥ (1278-6)
नानक प्रीतम मिलि रहे पारब्रहम नरहरीऐ ॥११॥ (320-17)
नानक प्रीतम रसि मिले लाहा लै परथाइ ॥ (936-16)
नानक प्रीति चरन चरन हे ॥२॥२॥१२९॥ (830-13)
नानक प्रीति लगी तिन राम सिउ भेटत साध संगात ॥१॥ (521-17)
नानक प्रीति लगी तिन्ह राम सिउ भेटत साध संगात ॥१॥ (454-14)
नानक प्रीति लाई तिनि सचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ (1318-12)
नानक प्रीति लाई तिनि साचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ (652-9)
नानक प्रीति लाई प्रभि आपे ॥४॥२३॥१०९॥ (826-5)

नानक प्रेम महा रसी सभि बुरिआईआ छारु ॥२॥ (786-16)
नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥ (473-14)
नानक फुला संदी वाड़ि खिड़िआ हभु संसारु जिउ ॥३॥ (1095-12)
नानक बंधन काटि मिलावहु आपि प्रभ ॥४॥४॥१०६॥ (397-12)
नानक बखसि मिलाइअनु फिरि गरभि न गलिआ ॥२०॥ (1245-10)
नानक बखसि मिलाइअनु रखे गलि लाए ॥२१॥ (966-7)
नानक बखसि मिलाइअनु सचै सबदि हदूरि ॥१॥ (854-17)
नानक बखसि मिलाइअनु हरि नामि समाइआ ॥३३॥ (1250-8)
नानक बखसि लए प्रभु साचा जि गुर चरनी चितु लाहि ॥२॥ (652-17)
नानक बखसि लीए प्रभि आपि ॥ (866-18)
नानक बखसे नामु पछाणै ॥४॥४॥२४॥ (159-3)
नानक बखसे पूछ न होइ ॥ (353-4)
नानक बखसे बखसणहारु ॥४॥९॥४८॥ (363-18)
नानक बखसे बखसीअहि नाहि त पाही पाहि ॥१॥ (149-3)
नानक बडभागिआ मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (410-8)
नानक बदरा माल का भीतरि धरिआ आणि ॥ (789-8)
नानक बधा घरु तहां जिथै मिरतु न जनमु जरा ॥४॥६॥७६॥ (44-11)
नानक बलिहारी गुर आपणे जितु मिलिऐ हरि गुण गाउ ॥१॥ (786-6)
नानक बहुता एहो आखणु सभ तेरी वडिआई ॥१॥ (1242-7)
नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥ (293-7)
नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥ (135-13)
नानक बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा ॥४॥३॥५॥ (713-4)
नानक बारिकु दरसु प्रभ चाहै मोहि ह्रिदै बसहि नित चरना ॥४॥२॥ (1266-16)
नानक बालतणि राडेपा बिनु पिर धन कुमलाणी ॥१॥ (763-12)
नानक बाह पकरि सतिगुरि निसतारा ॥४॥३॥८॥ (804-3)
नानक बिखमु सुहेला तरीऐ जा आवै गुर सरणाई ॥२॥ (442-12)
नानक बिघनु न लागै कोइ ॥१॥ (281-5)
नानक बिघनु न लागै कोऊ मेरा प्रभु होआ किरपाला ॥२॥१२॥४०॥ (619-5)
नानक बिजुलीआ चमकंनि घुरन्हि घटा अति कालीआ ॥ (1102-4)
नानक बिनु गुर मुआ जनमु हारि ॥७०॥ (946-10)
नानक बिनु नावै किउ साचि समावै ॥३०॥ (941-12)
नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी परहरि छोडी भतारि ॥१॥ (89-19)
नानक बिनु नावै जमु मारसी अंति गइआ पछुताइ ॥१॥ (591-18)
नानक बिनु नावै जोगु कदे न होवै देखहु रिदै बीचारे ॥६८॥ (946-5)
नानक बिनु नावै झूठी चतुराई ॥८॥२॥ (230-7)
नानक बिनु नावै मैलिआ मुए जनमु पदारथु खोइ ॥२०॥ (1415-2)
नानक बिनु नावै सभु कोई भुला माइआ मोहि खुआई ॥२॥ (571-14)

नानक बिनु नावै सभु दुखु सुखु विसारिआ ॥१॥ (86-17)
नानक बिनु नावै सुखु नही आइ गए पछुताहि ॥२४॥ (1415-14)
नानक बिनु बूझे किनै न पाइओ फिरि फिरि आवै जाए ॥१॥ (1249-13)
नानक बिनु भगती जगु बउराना सचै सबदि मिलाई ॥३॥ (440-4)
नानक बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ जे सउ लोचै कोई ॥३२॥ (1416-17)
नानक बिनु सतिगुर भेटे जगु अंधु है अंधे करम कमाइ ॥ (554-5)
नानक बिनु सतिगुर वसि न आवन्ही नामि हउमै मारी ॥८॥५॥२७॥ (425-10)
नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे मारीअनि मुहि कालै उठि जाहि ॥१॥ (590-1)
नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे मारीअहि मुहि कालै उठि जाहि ॥१॥ (552-16)
नानक बिनु सतिगुर सेवे मोखु न पाए ॥३॥ (88-18)
नानक बिनु हरि अवरु जि चाहना बिसटा क्रिम भसमा राम ॥३॥ (848-8)
नानक बिरथा कोइ न हेइ ॥४॥२७॥९६॥ (185-3)
नानक बिरथा कोइ न होइ ॥ (878-14)
नानक बिरदु राम का देखहु अभै दानु तिह दीना ॥३॥१॥ (902-3)
नानक बिरले पाईअहि जो न रचहि परपंच ॥५॥ (297-17)
नानक बिरले मिलहि उदासा ॥८॥७॥ (224-4)
नानक बिरही ब्रहम के आन न कतहू जाहि ॥८॥ (1364-6)
नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकरां पा खाक ॥४॥१॥ (721-8)
नानक बुझणु पूरै भागि ॥१॥ (464-4)
नानक बूझहु इह बिधि गुरमति हरि राम नामि लिव लाइआ ॥१०॥ (1039-6)
नानक बूझै को वीचारी ॥६३॥ (945-7)
नानक बेड़ी सच की तरीऐ गुर वीचारि ॥ (20-2)
नानक बैठा भखे वाउ लमे सेवहि दरु खड़ा ॥ (1095-11)
नानक बोलणु झखणा दुख छडि मंगीअहि सुख ॥ (149-4)
नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥४॥ (266-3)
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥६॥ (273-13)
नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥७॥ (273-16)
नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥५॥ (273-9)
नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥३॥ (273-2)
नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल संसारु ॥४॥ (273-6)
नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी ॥८॥८॥ (274-1)
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥ (473-10)
नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥२॥३॥६॥३८॥४७॥ (536-17)
नानक भउदिआ गणत न अंत ॥ (465-12)
नानक भए अचिंतु हरि धनु निहचलाइआ ॥२०॥ (517-2)
नानक भए पुनीत हरि तीरथि नाइआ ॥२६॥ (653-1)
नानक भगत आनंद मै पेखि प्रभ की धीर ॥२॥८॥७२॥ (818-15)

नानक भगत भए अबिनासी अपुना प्रभु भइआ सहाई ॥२॥१३॥४१॥ (619-9)
नानक भगत मिली वडिआई ॥४॥२४॥ (377-1)
नानक भगत सुखीए सदा सचै नामि रचंनि ॥८॥१७॥८॥२५॥ (70-5)
नानक भगत सोहनि दरि साचै साचे के वापारी ॥४॥ (688-19)
नानक भगत सोहहि दरि साचै जिनी सचो सचु कमाइआ ॥१॥ (768-13)
नानक भगत सोहहि हरि दुआर ॥४॥२३॥३४॥ (893-16)
नानक भगतन कै घरि सदा अनंद ॥४॥३॥ (802-6)
नानक भगतां होरु चिति न आवई हरि नामि समाइआ ॥२२॥ (1246-6)
नानक भगता भली रीति ॥ (1184-17)
नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥ (466-4)
नानक भगता सदा अनंदु भाउ दूजा जालिओनु ॥२८॥ (653-15)
नानक भगता सदा विगासु ॥ (2-18)
नानक भगता सदा विगासु ॥ (2-19)
नानक भगता सदा विगासु ॥ (3-2)
नानक भगता सदा विगासु ॥ (3-4)
नानक भगति भाउ करि दइआल की जीवन पदु पाईऐ राम ॥२॥ (848-5)
नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥१॥ (468-18)
नानक भगती नामि समाइ ॥३॥ (289-19)
नानक भगती रतिआ हरि हरि नामि समाइ ॥१८॥ (1414-14)
नानक भगतु सोइ ॥२॥७॥१६३॥२३२॥ (411-2)
नानक भजु हरि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए वडभागी नामु धिआवै राम ॥३॥ (538-7)
नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥६॥ (287-14)
नानक भवजलु उतरसि पारि ॥२॥१॥५७॥ (901-4)
नानक भाइ भगति निसतारा दुबिधा विआपै दूजा ॥२॥ (75-18)
नानक भाग भले तिसु जन के जो हरि चरणी चितु लावै ॥५॥४॥ (1264-6)
नानक भाग वडे तिना गुरमुखा जिन अंतरि नामु परगासि ॥४॥३३॥३१॥६॥७०॥ (42-5)
नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु लाज अपुनाइओ ॥५॥१॥३॥ (712-11)
नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु संत सदकारी ॥२॥२॥२५॥ (1209-9)
नानक भागु होवै जिसु मसतकि कालहि मारि बिदारे ॥४॥१॥ (797-2)
नानक भाणै आपणै जिउ भावै तिवै चलावैगो ॥८॥१॥ (1308-17)
नानक भाणै चलै कंत कै सु माणे सदा रली ॥१॥ (1280-15)
नानक भावै पारब्रहम पाहन नीरि तरे ॥५२॥ (261-6)
नानक भीजै साचै नाइ ॥२॥ (1237-15)
नानक भुखा ता रजै जा गुण कहि गुणी समाइ ॥२॥ (147-6)
नानक भुसरीआ पकाईआ पाईआ थालै माहि ॥ (1096-7)
नानक भूले गुरु समझावै ॥ (1190-8)
नानक भेटे साध जब हरि पाइआ मन माहि ॥१॥ (455-13)

नानक भै भाइ बाहरी तिन तनि सुखु न होइ ॥१॥ (1280-8)
नानक भै विचि जे मरै सहिला आइआ सोइ ॥१॥ (149-9)
नानक भै विणु जे मरै मुहि कालै उठि जाइ ॥२॥ (149-10)
नानक भोजन अनिक प्रकारेण निंदक आवध होइ उपतिसटते ॥२७॥ (1356-9)
नानक भोरु भइआ मनु मानिआ जागत रैणि विहाणी ॥२॥ (1111-4)
नानक भ्रम भउ काटीऐ चूकै जम की जोह ॥१॥ (256-18)
नानक भ्रम भै गुण बिनासे मिलि जलु जलहि खटाना ॥४॥२॥ (578-5)
नानक भ्रम भै मिटि गए रमण राम भरपूरि ॥२॥ (929-1)
नानक मंनिआ मंनीऐ बुझीऐ गुर परसादि ॥२॥ (954-6)
नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥२॥ (467-9)
नानक मन के कम फिटिआ गणत न आवही ॥ (789-5)
नानक मन ही कउ मनु मारसी जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥२॥ (1089-19)
नानक मन ही ते मनु मानिआ ना किछु मरै न जाइ ॥२॥ (514-1)
नानक मन ही मंझि रंगावला पिरी तहिजा नाउ ॥१॥ (1098-3)
नानक मनमुखा नालहु तुटीआ भली जिना माइआ मोहि पिआरु ॥१॥ (549-3)
नानक मनमुखा नालो तुटी भली जिन माइआ मोह पिआरु ॥१॥ (316-13)
नानक मनमुखि अंधु पिआरु ॥ (138-1)
नानक मनमुखि जि कमावै सु थाइ न पवै दरगह होइ खुआरु ॥२३॥ (1423-17)
नानक मनमुखि जीवदिआ मुए हरि विसरिआ दुखु पाइ ॥२॥ (589-15)
नानक मनमुखि थाउ न पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥३॥ (245-12)
नानक मनमुखि न बुझै गवारु ॥५५॥ (944-5)
नानक मनमुखि बंधु है गुरमुखि मुकति कराए ॥४॥३॥ (559-6)
नानक मनमुखि बोलणु वाउ ॥ (151-6)
नानक मनमुखु जगतु धनहीणु है अगै भुखा कि खाइ ॥२॥ (548-15)
नानक मनसा पूरि ॥८॥१॥ (837-18)
नानक मनहु न बीसरै गुण निधि गोबिद राइ ॥१॥ (255-15)
नानक मनि अनंद भए गुरि बिखम गार्ह तोरी ॥२॥६॥१३५॥ (1230-14)
नानक मनि तनि चाउ एहु नित प्रभ कउ लोड़े ॥२१॥१॥ सुधु कीचे (323-10)
नानक मनि तनि जिसु प्रभु वसै हउ सद कुरबाणै तिसु ॥ (854-12)
नानक मनि तनि रवि रहिआ गुरमुखि हरि सोई ॥५॥ (1239-13)
नानक मनि तनि सुखु सद वसै भाई सबदि मिलावा होइ ॥४॥१॥१८॥१२॥१८॥३०॥ (1177-11)
नानक मनु तनु अरपि गुर आगै जिसु प्रापति सो पाए ॥३॥ (442-15)
नानक मनु तनु सुखी होइ अंते मिलै गोपालु ॥१॥ (457-16)
नानक मनु त्रिपतासीऐ सिफती साचै नाइ ॥१॥ (1087-16)
नानक मनु मानिआ मेरे मना ॥२॥३॥१५९॥ (410-1)
नानक मनु संतोखीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ॥७॥ (298-5)
नानक मनु समझाईऐ गुर कै सबदि सालाह ॥ (23-4)

नानक मसतकि जिसु वडभागु ॥ (560-7)
नानक महली महलु पछाणै गुरमती हरि पाए ॥३॥ (770-10)
नानक महलु सबदि घरु पाए ॥ (362-11)
नानक महिदी करि कै रखिआ सो सहु नदरि करेइ ॥ (947-14)
नानक माइआ करम बिरखु फल अम्रित फल विसु ॥ (1290-14)
नानक माइआ का दुखु तदे चूकै जा गुर सबदी चितु लाए ॥३॥ (247-1)
नानक माइआ का मारणु सबदु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥२॥ (853-15)
नानक माइआ का मारणु हरि नामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥१॥ (513-17)
नानक माइआ मोहु पसारा आगै साथि न जाई ॥३॥ (775-18)
नानक माइआ मोहु सबदि जलाइ ॥४॥४॥१६॥ (1176-18)
नानक माघि महा रसु हरि जपि अठसठि तीरथ नाता ॥१५॥ (1109-14)
नानक माणस जनमु दुल्मभु है सतिगुरि बूझ बुझाई ॥३॥ (569-14)
नानक माथा संत चरन ॥४॥२॥ (986-18)
नानक मिठै पतरीऐ वेखहु लोका आइ ॥२॥ (143-2)
नानक मित्राई तिसु सिउ सभ किछु जिस कै हाथि ॥ (318-15)
नानक मिलहु कपट दर खोलहु एक घड़ी खटु मासा ॥१२॥ (1109-5)
नानक मिलिआ सो जाणीऐ गुरू न छोडै आपणा दूजै न धरे पिआरु ॥१॥ (1087-8)
नानक मिलीऐ सतिगुर संग ॥ (1169-11)
नानक मिलीऐ सबदु कमाइ ॥४॥६॥ (1174-2)
नानक मिले सुभाइ गुरमुखि इहु मनु रहसीऐ ॥७॥ (1422-6)
नानक मुंध नवेल सुंदरि देखि पिरु साधारिआ ॥१॥ (843-8)
नानक मुइआ का किआ मारणा जि आपि मारे गोविंद ॥१॥ (1093-18)
नानक मुए न आखीअहि जि गुर कै सबदि समाहि ॥२॥ (643-5)
नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिधि को जो प्रानी ॥३॥७॥ (220-8)
नानक मुकति ताहि तुम मानहु जिह घटि रामु समावै ॥२॥६॥ (220-3)
नानक मुकति दुआरा अति नीका नान्हा होइ सु जाइ ॥ (509-18)
नानक मुकति नही बिनु नावै साचे ॥८॥२॥५॥ (1275-19)
नानक मुकति भए हरि रंगि ॥८॥९॥ (416-12)
नानक मुठे जाहि नाही मनि सोइ ॥२॥ (144-15)
नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ॥१॥ (465-6)
नानक मूरख एहि गुण बोले सदा विणासु ॥१॥ (143-9)
नानक मूरखु अजहु न चेतै किव दूजै सुखु पावए ॥२॥ (1110-7)
नानक मूरखु एकु तू अवरु भला सैसारु ॥ (1328-2)
नानक मूरखु कबहि न चेतै किआ सूझै रैणि अंधेरीआ ॥१॥ (1110-4)
नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति ॥३७॥ (1428-9)
नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥ (470-1)
नानक मेलि मिलाइ जे तुधु भाईऐ ॥८॥२॥४॥ (752-14)

नानक मेलि मिलाए गुरु पूरा जन कउ पूरनु दीजै ॥८॥२॥ (1324-12)
नानक मेलि मेलि प्रभ संगति मिलि संगति हंसु कराईऐ ॥४॥४॥ (881-19)
नानक मेलि लई गुरि अपणै घरि वरु पाइआ नारी ॥१६॥ (1109-17)
नानक मेलि लई गुरि अपुनै गुर कै सबदि सवारे ॥४॥५॥६॥ (772-4)
नानक मेलि लीओ दासु अपुना प्रीति न कबहू थोरी ॥२॥५॥६॥ (979-12)
नानक मेली सिरजणहारे ॥४॥२५॥७६॥ (389-12)
नानक मेलु न चुकई राती अतै डेह ॥१॥ (644-10)
नानक मेलु न चूकई लाहा सचु पावै ॥८॥१॥१७॥ (228-19)
नानक मेलु न चूकई साचे वापारा ॥८॥१॥ (1009-10)
नानक मै धर अवर न काई मै सतिगुरु गुरु निसतारे ॥८॥६॥ छका १ ॥ (983-19)
नानक मै वरु साचा भावै जुगि जुगि प्रीतम तैसे ॥२॥ (763-15)
नानक मैला ऊजलु ता थीऐ जा सतिगुर माहि समाइ ॥१॥ (87-10)
नानक मैलु न लगई ना फिरि जोनी पाहु ॥१॥ (651-3)
नानक म्रिग अगिआनि बिनसे नह मिटै आवणु जाइणु ॥२॥ (460-4)
नानक रंगि रते नाराइणै पिआरे माते सहजि सुभाइ ॥८॥२॥४॥ (432-2)
नानक रंगि रवै रंगि राती जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥३॥ (772-1)
नानक रंगि रवै रसि रसीआ हरि सिउ प्रीति सनेहो ॥१४॥ (1109-11)
नानक रंगु न उतरै जो हरि धुरि छोडिआ लाइ ॥४॥१४॥४७॥ (32-3)
नानक रंगु न उतरै बिआ न लगै केह ॥२॥ (644-11)
नानक रंगु लगा परमेसर बाहुड़ि जनम न छापण ॥२॥१८॥४९॥ (682-14)
नानक रखणहारा रखसी आपणी किरपा धारि ॥१॥ (549-10)
नानक रखा आपे होआ ॥२॥३३॥३९॥ (744-19)
नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥१॥ (275-11)
नानक रतन जवेहर पावै धनु धनु गुरमति हरि पाए ॥४॥१॥ (880-17)
नानक रतना सो लहै जिसु गुरमुखि लगै पिआरु ॥ (589-12)
नानक रता रंगि हरि सभ जग महि चानणु होइ ॥४॥१॥७१॥ (42-14)
नानक रता सचि नाइ हरि वेखै सदा हजूरे ॥८॥५॥३९॥१॥३२॥१॥५॥३९॥ (133-4)
नानक रता सचि नामि भाई सुणि मनु तनु निरमलु होइ ॥४॥२॥ (609-3)
नानक रवि रहिओ सभ अंतरि सरब रहिआ भरपूरे ॥२॥८॥१२॥ (1269-1)
नानक रविआ हभ थाइ वणि त्रिणि त्रिभवणि रोमि ॥२॥ (966-9)
नानक रस कस सबदु सलाहणा आपे लए मिलाइ ॥१॥ (1250-3)
नानक रसना सबदि रसाइ जिनि हरि हरि मंनि वसाइआ ॥१॥ (550-10)
नानक रसनि रसाए राते रवि रहिआ प्रभु सोई ॥४॥१५॥ (1332-3)
नानक रहणा भगति सरणाई ॥४॥१०॥ (154-6)
नानक रहिआ सरब समाइ ॥६॥ (290-9)
नानक राखनहारु अपारु ॥३॥ (267-7)
नानक राखा होआ आपि ॥४॥२॥५८॥ (901-8)

नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥७॥ (268-1)
नानक राखु राखु प्रभ मेरे सतसंगति राखि समावैगो ॥८॥६॥ छका १ ॥ (1311-18)
नानक राखे पारब्रहमि फिरि दूखु न थीआ ॥४॥१८॥१२०॥ (401-4)
नानक रातउ रंगि गोपाल ॥४॥५॥१६॥ (887-17)
नानक राम नाम गुन गाईअहि दरगह निरमल सोइ ॥५॥ (1425-6)
नानक राम नाम सरणाई ॥ (416-18)
नानक राम नामि निसतारा कंचन भए मनूरा ॥१॥ (245-19)
नानक राम नामि निसतारा गुरमति मिलहि पिआरे ॥२॥ (765-4)
नानक राम नामि निसतारा सबदि रते हरि पाहा ॥४॥२॥ (600-11)
नानक राम नामि निसतारा सबदे हउमै खोई ॥४॥१२॥ (604-8)
नानक राम नामि मति ऊतम हरि बखसे पारि उतारा हे ॥१७॥४॥१०॥ (1031-4)
नानक राम नामि मनु राता ॥१०॥७॥ (415-6)
नानक राम नामि मनु राता गुरमति पाए सहज सेवा ॥५॥२२॥ (356-4)
नानक राम नामि वडिआई ॥८॥५॥ (231-17)
नानक राम नामि संत निसतारे ॥५॥१०॥२०॥ (1133-10)
नानक राम नामु जपि गुरमुखि धनु सोहागणि सचु सही ॥४॥२॥ (1254-14)
नानक राम नामु जपि गुरमुखि हरि पाए मसतकि भागा ॥५॥१०॥ (598-17)
नानक राम नामु जपि चीत ॥ (198-6)
नानक राम नामु जपि पावको तिन किलबिख दाहनहार ॥१॥ (248-14)
नानक राम नामु धनु कीता पूरे गुर परसादि ॥२॥ (320-19)
नानक राम नामु मनि भावै ॥५॥२४॥ (356-13)
नानक राम नामु रिद अंतरि गुरमुखि मेलि मिलाई ॥५॥४॥ (1255-17)
नानक राम नामु सुणि भीने रामै नामि समाइआ ॥५॥ (443-17)
नानक राम भगति जन तरणा ॥४॥११॥ (879-18)
नानक राम भगति सुखु पावै ॥८॥१३॥ (227-1)
नानक राम मिले भ्रम दूरे ॥४॥११॥ (154-10)
नानक राम रम रमु रम रम रामै ते गति कीजै ॥ (1326-18)
नानक राम रमत फिरि जोनि न आईऐ ॥१२॥ (299-9)
नानक रामु जपहु तरु तारी हरि अंति सखाई पाइआ ॥१५॥१॥१८॥ (1039-13)
नानक रामु रवै हित चीता ॥८॥४॥ (1189-13)
नानक रासी बाहरा लदि न चलिआ कोइ ॥२॥ (1244-1)
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥१॥ (1245-19)
नानक रुंना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिआरो ॥ (579-9)
नानक रुंना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिआरो ॥४॥१॥ (579-12)
नानक रुति सुहावी साई बिनु नावै रुति केही ॥४॥१॥ (1254-8)
नानक रेण संत चरनारा ॥२॥२॥४५॥ (746-10)
नानक रेण संत जन संगति हरि गुर परसादी पाइआ ॥५॥ (1038-19)

नानक रोग दोख अघ मोह छिदे हरि नाम खगि ॥१॥१०॥ (1389-5)
नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुर साधू सजणा ॥२९॥ (1424-15)
नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुर साधू सजना ॥१॥ (301-11)
नानक रोगु वञाइ मिलि सतिगुर साधू सजना ॥१॥ (1317-14)
नानक लए मिलाइ खसमै भाणिआ ॥२७॥ (1291-12)
नानक लगी ततु लै तूं सचा मनि सचु ॥१॥ (1279-3)
नानक लगी तुरि मरै जीवण नाही ताणु ॥ (1411-9)
नानक लड़ि लाइ उधारिअनु दयु सेवि अमिता ॥१९॥ (322-19)
नानक लधड़ीआ तिंनाह जिना भागु मथाहड़ै ॥२॥ (1101-15)
नानक लधा तिन सुआउ जिना सतिगुरु भेटिआ ॥१॥ (318-19)
नानक लधा मन तन मंझा ॥४॥११॥ (373-19)
नानक लबध करमणह ॥१६॥ (1361-3)
नानक लहरी लख सै आन डुबण देइ न मा पिरी ॥१॥ (519-15)
नानक लाइआ लागा सेव ॥४॥२०॥ (376-4)
नानक लागो सेवा ॥४॥५॥२१॥ (1005-15)
नानक लाज बिरद की राखहु नामु तुहारउ लीनउ ॥३॥९॥ (633-10)
नानक लालु अमोलका गुरमुखि खोजि लहंन्हि ॥३०॥ (1416-11)
नानक लालो लालु है सचै रता सचु ॥१॥ (1089-3)
नानक लाहा लै घरि जाईऐ साची सचु मति तेरी ॥२॥ (1111-16)
नानक लिपत नही तिह माइआ ॥४२॥ (259-4)
नानक लिलाटि होवै जिसु लिखिआ तिसु साधू धूरि दे हरि पारि लंघाई ॥४॥२॥ (1263-11)
नानक लिलारि लिखिआ सोइ ॥ (144-5)
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥३॥११॥ (633-19)
नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥१॥ (467-15)
नानक लेखै मंगिऐ अउतु जणेदा जाइ ॥१॥ (955-5)
नानक लेहु मिलाइ मै जाचिक दीजै नामु हरि ॥१३॥ (1422-12)
नानक वखरु निरमलउ धंनु साहु वापारु ॥२॥ (1090-15)
नानक वजदा जंतु वजाइआ ॥२॥ (313-19)
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥ (5-4)
नानक वडे से वडभागी जिनी सचु रखिआ उर धारि ॥३४॥ (942-1)
नानक वरतै इकु इको इकु तूं ॥२२॥१॥२॥ सुधु ॥ (966-13)
नानक वरसै अम्रित बाणी करि किरपा घरि आवै ॥४॥ (1107-15)
नानक वसतु पछाणसी सचु सउदा जिसु पासि ॥४॥११॥ (18-10)
नानक वाहु वाहु इको करि सालाहीऐ जि सतिगुर दीआ दिखाइ ॥१॥ (515-2)
नानक वाहु वाहु करतिआ प्रभु पाइआ करमि परापति होइ ॥१॥ (514-5)
नानक वाहु वाहु करहि से जन निरमले त्रिभवण सोझी पाइ ॥२॥ (515-4)
नानक वाहु वाहु कहु ता कउ जा का अंतु न पारु ॥२॥६३॥८६॥ (1221-5)

नानक वाहु वाहु गुरमुखि पाईऐ अनदिनु नामु लएइ ॥१॥ (516-1)
नानक वाहु वाहु जो करहि हउ तनु मनु तिन्ह कउ देउ ॥१॥ (515-11)
नानक वाहु वाहु जो मनि चिति करे तिसु जमकंकरु नेड़ि न आवै ॥२॥ (515-14)
नानक वाहु वाहु सति रजाइ ॥१॥ (514-14)
नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥ (2-3)
नानक विचहु आपु गवाए ॥४॥१३॥ (352-17)
नानक विचहु हउमै मारे तां हरि भेटै सोई ॥४॥४॥६॥ (491-6)
नानक विछुड़ि ना दुखु पाए गुरमति अंकि समाए ॥४॥१॥ (764-4)
नानक विणु करमा किआ पाईऐ पूरबि लिखिआ कमाइ ॥२॥ (645-16)
नानक विणु नदरी किछू न पाईऐ जिसु नदरि करे सो पाए ॥ (491-12)
नानक विणु नावै आलूदिआ जिती होरु खिआलु ॥३॥ (1097-17)
नानक विणु नावै कामणि भरमि भुलाणी मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥२॥ (439-18)
नानक विणु नावै को थिरु नही पड़ि पड़ि होइ खुआरु ॥२॥ (84-15)
नानक विणु नावै ध्रिगु मोहु जितु लगि दुखु पाइआ ॥३२॥ (1250-1)
नानक विणु नावै नकीं वढीं फिरहि सोभा मूलि न पाहि ॥१॥ (590-9)
नानक विणु नावै निरभउ को नही जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥१॥ (588-5)
नानक विणु नावै भरमि भुलाइआ इकि नामि रते रंगु लाए ॥४॥५॥ (571-6)
नानक विणु सतिगुर मति भवी सतिगुर नो मिलै ता सबदु कमाइ ॥ (1092-6)
नानक विणु सतिगुर सचु न पाईऐ मनमुख भूले जांहि ॥५३॥ (1419-16)
नानक विरले जाणीअहि जिन सचु पलै होइ ॥१॥ (1100-6)
नानक विरले पाईअहि तिसु जन कीम न मूलि ॥१॥ (966-8)
नानक वीचारहि संत जन चारि वेद कहंदे ॥ (306-15)
नानक वीचारहि संत मुनि जनां चारि वेद कहंदे ॥ (316-17)
नानक वेखै आपि फूक कढाए ढहि पवै ॥२॥ (1244-19)
नानक वेखै नदरि करि चड़ै चवगण वंनु ॥४॥२॥ (596-1)
नानक वेपरवाहु सो किरतु न मिटई राम ॥२६॥ (1412-10)
नानक वेपरवाहु है तिसु तिलु न तमाई ॥२०॥१॥ (792-4)
नानक वैसाखीं प्रभु पावै सुरति सबदि मनु माना ॥६॥ (1108-6)
नानक संगति मेलि हरि सभ बिखु लहि जाइआ ॥१६॥ (1244-4)
नानक संत चरन संगि उधरे होरि माइआ मगन चले सभि डारी ॥६॥ (1388-10)
नानक संत चात्रिक की निआई हरि बूंद पान सुख थीवनि ॥२॥६८॥९१॥ (1222-4)
नानक संत तेरै रंगि राते तू समरथु वडालका ॥१६॥४॥१३॥ (1085-14)
नानक संत निरमल भए जिन मनि वसिआ सोइ ॥३॥ (297-3)
नानक संत भावै ता उस का भी होइ मोखु ॥३॥ (280-4)
नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि ॥२॥ (280-1)
नानक संत भावै ता लए उबारि ॥५॥ (280-10)
नानक संत भावै ता लए मिलाइ ॥४॥ (280-7)

नानक संत संत हरि एको जपि हरि हरि नामु सोहंदी ॥ (79-6)
नानक संत सदा थिरु निहचलु जिन राम नामु आधारु ॥४॥६॥ (1200-8)
नानक संत सवारे पारब्रहमि सचे जिउ बणिआ ॥१२॥ (854-15)
नानक संतसंगि निंदकु भी तरै ॥१॥ (279-16)
नानक संतह देखि निहाल ॥४॥१०॥२१॥ (889-10)
नानक संतु मिलै सचु पाईऐ सहज भाइ जसु लेउ ॥१॥ (938-7)
नानक संतु मिलै हरि पाईऐ जनु हरि भेटिआ रामु हजूरि ॥४॥१॥ (1198-13)
नानक संधिआ करै मनमुखी जीउ न टिकै मरि जमै होइ खुआरु ॥१॥ (553-13)
नानक संसार सागर तारणह ॥१४॥ (1361-1)
नानक सगल स्रिसटि का जेता ॥१॥ (292-10)
नानक सगले दोख उतारिअनु प्रभु पारब्रहम बखसिंदु ॥४॥१२॥८२॥ (46-16)
नानक सच घरु सबदि सिञापै दुबिधा महलु कि जाणै ॥३॥ (243-9)
नानक सच दातारु सिनाखतु कुदरती ॥८॥ (141-18)
नानक सचा आपि है आपे नदरि करेइ ॥१॥ (311-15)
नानक सचा एकु दरु बीभा परहरि आहि ॥७॥ (1413-11)
नानक सचा एकु है अउरु न सचा भालि ॥२॥ (1243-2)
नानक सचा एकु है दुहु विचि है संसारु ॥ (950-6)
नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ॥४॥१०॥ (18-3)
नानक सचा पातिसाहु पूछि न करे बीचारु ॥४॥ (17-1)
नानक सचा मंनि लै सचु करणी सचु रीति ॥२॥ (1087-3)
नानक सचा सचि नाइ सचु सभा दीबानु ॥२॥ (1241-6)
नानक सचा सची नांई सचु पवै धुरि लेखै ॥२॥ (1242-15)
नानक सचा सचु है बुझि सचि समाणी ॥५॥ (302-8)
नानक सचा सबदु सलाहि सचु पछाणीऐ ॥४॥ (1280-6)
नानक सचा सोहिला सची सचु बाणी सबदे ही सुखु होई ॥४॥४॥५॥ (771-9)
नानक सचि नामि निसतारा को गुर परसादि अघुलै ॥८॥४॥ (1344-10)
नानक सचि नामि वडिआई पूरबि लिखिआ पाए ॥१॥ (246-14)
नानक सचि मिली सोहागणि गुर कै हेति अपारे ॥२॥ (245-9)
नानक सचि रते से न विछुड़हि सतिगुरु सेवि समाहि ॥२॥ (586-4)
नानक सचि समावै सोइ ॥२॥ (88-14)
नानक सचि समावै सोइ ॥४॥१०॥४९॥ (364-6)
नानक सची पति सचा पातिसाहु ॥१३॥ (931-10)
नानक सची रीति सांई सेती रतिआ ॥२॥ (706-15)
नानक सचु कहै बेनंती सचु मिलै गुण गावणिआ ॥८॥१॥ (109-19)
नानक सचु खरा सालाहि पति सिउ जाईऐ ॥१४॥ (144-18)
नानक सचु धिआइ तू बिनु सचे पचि पचि मुए अजाणा ॥१०॥ (305-12)
नानक सचु धिआइनि सचु ॥ (463-9)

नानक सचु धिआईऐ सद ही अंतरजामी जाणो जीउ ॥४॥३७॥४४॥ (107-11)
नानक सचु नामु जिन हिरदै वसिआ ना वीछुड़ि दुखु पाइनि ॥२॥ (769-12)
नानक सचु भांडा जिसु सबद पिआस ॥४॥३॥२३॥ (158-15)
नानक सचु वडिआई पाए जिस नो हरि किरपा धारी ॥८॥२॥ (754-19)
नानक सचु वरतदा सभ सचि समाइआ ॥१॥ (1237-19)
नानक सचु सदा सचिआरु सचि समाईऐ ॥१५॥ (145-9)
नानक सचु सलाहि लिखिआ पाइआ ॥१८॥ (1286-5)
नानक सचु सलाहीऐ धंनु सवारणहारु ॥२॥ (646-10)
नानक सचु सवारणहारा ॥४॥१॥ (349-6)
नानक सचु सवारणहारा ॥४॥२॥ (9-15)
नानक सचु सालाहि पूरा पाइआ ॥२७॥ सुधु (150-19)
नानक सचु सुचि पाईऐ तिह संतन कै पासि ॥१॥ (250-15)
नानक सचे की साची कार ॥ (7-5)
नानक सचे नाम की केती पुछा पुछ ॥१॥ (148-15)
नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥१॥ (467-6)
नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥ (1287-13)
नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥३॥ (1091-4)
नानक सचे नाम बिनु किसै न लथो दुखु ॥१॥ (319-4)
नानक सचे नाम बिनु वरतणि वरतै अंधु ॥१॥ (551-4)
नानक सचे नाम बिनु सिर खुर पति पाटी ॥२॥ (1287-6)
नानक सचे नाम बिनु सिरहु न चुकै जंजालु ॥१॥ (1088-3)
नानक सचे नाम विणु किसै न रहीआ लज ॥२॥ (518-7)
नानक सचे नाम विणु केते डुबे साथ ॥३॥ (1287-16)
नानक सचे नाम विणु झूठा आवण जाणु ॥ (936-2)
नानक सचे नाम विणु सभे टोल विणासु ॥२॥ (142-14)
नानक सचे नाम विणु सभो दुसमनु हेतु ॥२॥ (790-18)
नानक सचे नाम विहूणी भुलि भुलि पछोताणी ॥१॥ (1111-13)
नानक सचे सचि सचि समाइआ ॥४॥१२॥६४॥ (369-5)
नानक सचै पातिसाहि डुबदा लइआ कढाइ ॥४॥३॥७३॥ (43-7)
नानक सचै मेलु सचै रतिआ ॥२४॥ (1289-11)
नानक सचै मेले ता मिले आपे लए मिलाइ ॥ (565-7)
नानक सचै सतिगुरि सेविऐ सदा सचु वापारु ॥१॥ (83-4)
नानक सचै हुकमि मंनिऐ सची वडिआई देइ ॥ (1089-12)
नानक सतगुरि मिलिऐ फलु पाइआ नामु वडाई देइ ॥४॥२॥ (558-19)
नानक सतगुरि मिलिऐ हउमै गई ता सचु वसिआ मनि आइ ॥ (560-16)
नानक सतगुरु मीतु करि सचु पावहि दरगह जाइ ॥४॥२०॥ (22-2)
नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥ (285-9)

नानक सतिगुर की सेवा सो करै जिस नो नदरि करै करतारु ॥१॥ (586-11)
नानक सतिगुर ते अम्रित जलु पाइआ सहजे रहिआ समाइ ॥२॥ (1284-17)
नानक सतिगुर बाझु मूठा मनमुखो अहंकारी ॥३॥ (460-7)
नानक सतिगुर मिलिऐ पाइआ नामु धनु मालु ॥१॥ (317-11)
नानक सतिगुर मिलिऐ हुकमु बुझिआ एकु वसिआ मनि आइ ॥ (491-19)
नानक सतिगुर मिलै मिलाइआ दूख पराछत काल नसे ॥४॥१६॥ (1332-9)
नानक सतिगुर वाहु वाहु जिस ते नामु परापति होइ ॥२॥ (1421-13)
नानक सतिगुर सदा दइआल ॥४॥५॥७४॥ (177-10)
नानक सतिगुर सो धनु सउपिआ जि जीअ महि रहिआ समाइ ॥ (510-7)
नानक सतिगुरि बोहिथै वडभागी चड़ै ते भउजलि पारि लंघाइ ॥३४॥ (1417-4)
नानक सतिगुरि ब्रहमु दिखाइआ ॥५॥२०॥ (355-8)
नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥ (522-10)
नानक सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाईऐ मिलि नामु धिआइआ ॥ (1245-2)
नानक सतिगुरि मिलिऐ नाउ मंनीऐ जिन देवै सोई ॥९॥ (1241-8)
नानक सतिगुरि मिलिऐ प्रभु पाईऐ सभु दूख निवारणहारु ॥१६॥ (1422-18)
नानक सतिगुरि मिलिऐ मेरी पिआस गई पिरु पाइआ घरि आइ ॥२॥ (553-15)
नानक सतिगुरि मिलिऐ सभ पूरी पई जिस नो किरपा करे रजाइ ॥२॥ (649-11)
नानक सतिगुरि मेलि मिलाई चूकी काणि लोकाणी ॥४॥३॥ (1111-9)
नानक सतिगुरि सोझी पाई सचि नामि निसतारा ॥४॥५॥१५॥ (1131-15)
नानक सतिगुरु ऐसा जाणीऐ जो सभसै लए मिलाइ जीउ ॥१०॥ (72-8)
नानक सतिगुरु तद ही पाए जां विचहु आपु गवाए ॥२॥ (550-4)
नानक सतिगुरु तां मिलै जा मनु रहै हदूरि ॥२॥ (84-3)
नानक सतिगुरु तिन कउ मेलिओनु जिन धुरि मसतकि भागु लिखाइ ॥२५॥ (1424-3)
नानक सतिगुरु तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोगु ॥१॥ (957-3)
नानक सतिगुरु पाइआ करमि परापति होइ ॥२॥ (552-10)
नानक सतिगुरु पूरा पाइआ ॥४॥१५॥२८॥ (1143-15)
नानक सतिगुरु पूरा पाइआ मनि जपिआ नामु मुरारि ॥४॥९॥ (1261-2)
नानक सतिगुरु मिलै त अखी वेखै घरै अंदरि सचु पाए ॥४॥१०॥ (603-15)
नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥१॥ (286-16)
नानक सतिगुरु सेवनि आपणा से आसा ते निरासा ॥५॥ (140-8)
नानक सतिगुरु सेवहि आपणा से जन सचे परवाणु ॥ (648-7)
नानक सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥८॥३॥ (230-16)
नानक सतिगुरु सेवि चड़ि बोहिथि भउजलु पारि पउ ॥१॥ (318-10)
नानक सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ जिन्ह पूरबि लिखिआ करामु ॥२॥ (1248-6)
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥१॥ (787-9)
नानक सद बलिहार जिसु गुर के गुण इते ॥२७॥ (653-10)
नानक सद बलिहारी सचे विटहु आपे करे कराए ॥४॥४॥ (246-10)

नानक सद ही रहिआ समाइ ॥६॥ (279-6)
नानक सदा अराधि कदे न जांहि मरि ॥१७॥ (1363-5)
नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥१॥ (269-18)
नानक सदा पिरु रावे आपणा जिनि गुर चरणी चितु लाइआ ॥१॥ (771-13)
नानक सदा सुहागणी गुर कै हेति अपारि ॥१॥ (1285-11)
नानक सदा सोहागणी जि चलनि सतिगुर भाइ ॥२॥ (786-8)
नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ ॥४॥२॥१९॥ (157-7)
नानक सफल जनमु जै घटि वुठा सचु धणी ॥१॥ (577-17)
नानक सफल जनमु जै घटि वुठा सचु धणी ॥२॥ (1099-19)
नानक सफल जनमु तिन केरा जि सतिगुरि हरि मारगि पाए ॥२॥ (771-1)
नानक सबदि पछाणीऐ हउमै करै न कोइ ॥८॥८॥ (58-11)
नानक सबदि मरै मनु मानीऐ साचे साची सोइ ॥३३॥ (1417-1)
नानक सबदि मिलावड़ा ना वेछोड़ा होइ ॥८॥५॥ (56-12)
नानक सबदि मिलावड़ा नामे नामि समाइ ॥४॥२२॥५५॥ (35-12)
नानक सबदि मिले न विछुड़हि जिना सेविआ हरि दातारु ॥२॥ (1244-13)
नानक सबदि मिलै भउ भंजनु हरि रावै मसतकि भागो ॥३॥ (569-1)
नानक सबदि रते से मुकतु है हरि जीउ हेति पिआरु ॥२॥ (86-11)
नानक सबदि रते हरि नामि रंगाए बिनु भै केही लागि ॥४॥८॥४१॥ (29-17)
नानक सबदी सचु है करमी पलै पाइ ॥२॥ (84-10)
नानक सबदु अपारु तिनि सभु किछु सारिआ ॥१॥ (320-4)
नानक सबदु पछाणीऐ नामु वसै मनि आइ ॥१॥ (646-7)
नानक सबदु वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधानु ॥८॥१०॥ (59-18)
नानक सबदे हरि सालाहीऐ करमि परापति होइ ॥८॥४॥२१॥ (67-8)
नानक सभ कारण करता करै वेखै सिरजनहारु ॥१५॥ (1414-9)
नानक सभ किछु नावै कै वसि है पूरै भागि को पाई ॥८॥७॥२९॥ (426-9)
नानक सभ महि रवि रहिआ थान थनंतरि सोइ ॥१॥ (260-16)
नानक सभ महि रहिआ समाई ॥१॥ (277-2)
नानक सभि जुग आपे वरतै दूजा अवरु न कोई ॥७३॥१॥ (946-19)
नानक सभु कछु प्रभ ते हूआ ॥५१॥ (261-1)
नानक सभु किछु आपि है अवरु न दूजी जाइ ॥२॥ (549-12)
नानक सभु किछु आपे आपि है दूजा नाही कोइ ॥ (994-9)
नानक सभु किछु आपे करता आपि करावै सोई ॥३॥ (769-15)
नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥५४॥ (1429-7)
नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥५॥ (276-8)
नानक सभु किछु प्रभ ते होइ ॥४॥३४॥४७॥ (1149-19)
नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अंध ॥३६॥ (1428-8)
नानक सरणि करतार की करता राखै लाज ॥२॥ (551-6)

नानक सरणि क्रिपा निधि सागर बिनसिओ आन निहोर ॥२॥१०१॥१२४॥ (1228-6)
नानक सरणि तुम्हारी करते तूं प्रभ प्रान अधार ॥ (500-14)
नानक सरणि तुम्हारी हरि जीउ भावै तिवै छडाइ ॥२॥६॥ (720-14)
नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥१॥ (518-17)
नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥१॥ (989-4)
नानक सरणि दीन दुख भंजन हउ रेण तेरे जो दासा हे ॥१५॥१॥२॥ (1073-13)
नानक सरणि दुआरि जे तुधु भावही ॥२॥ (322-3)
नानक सरणि निरभउ करते की अनद मंगल गुण गाइआ ॥२॥८३॥१०६॥ (1224-18)
नानक सरणि परिओ दुख भंजन अंतरि बाहरि पेखि हजूरे ॥२॥२२॥१०८॥ (826-1)
नानक सरणि परिओ दुख भंजन गुन गावै सदा अपारि ॥ (674-16)
नानक सरणि परे जगजीवन हरि हरि किरपा धारि रखईआ ॥८॥४॥७॥ (835-18)
नानक सरणि पूरन परमेसुर तेरा अंतु न पारावारा ॥२॥ (784-17)
नानक सरणि प्रभू की छूटे सतिगुर सचु सखाई ॥१०॥८॥ (907-12)
नानक सरणी आइआ ॥ (627-11)
नानक सरनरीआ ॥४॥१॥ (537-7)
नानक सरनि क्रिपा निधि सुआमी वडभागी हरि हरि गाइआ ॥४॥१॥११॥ (785-5)
नानक सरनि गही सुआमी की पुनह पुनह नमसकारा ॥२॥९॥२८॥ (717-15)
नानक सरनि गही सुख सागर जनम मरन फिरि गरभ न धुखु ॥२॥१०॥२९॥ (717-19)
नानक सरनि चरन कमलन की तुम्ह न डारहु प्रभ करते ॥३॥४॥ (1267-8)
नानक सरनि तुहारी ठाकुर सेवकु दुआरै आइओ ॥८॥२॥१४॥ (241-19)
नानक सरनि परिओ जग बंदन राखहु बिरदु तुहारा ॥२॥३॥ (703-9)
नानक सरनि परे दरबारि ॥ (199-18)
नानक सरनि परे दुख भंजन जा का बड परताप ॥२॥९॥१४॥ (714-17)
नानक सरनि समरथ सुआमी पैज राखहु मोरी ॥३॥ (547-13)
नानक सरनि सरणि सुख सागर मोहि टेक तेरो इक नाईऐ ॥२॥६॥९२॥ (822-17)
नानक सरसी ता पिरु पाए राती साचै नाए ॥२॥ (689-9)
नानक सह पकरी संतन की रिदै भए मगन चरनारा ॥४॥४॥१५॥ (613-4)
नानक सह प्रीति न जाइसी जो धुरि छोडी सचै पाइ ॥१॥ (84-8)
नानक सहजि भाइ गुण गाइ ॥८॥२॥ (686-15)
नानक सहजि मिले जगजीवन नदरि करहु निसतारा ॥४॥२॥ (489-14)
नानक सहजि मिले जगजीवन सतिगुर बूझ बुझाईऐ ॥२॥ (436-19)
नानक सहजि मिलै जगजीवनु गुर सबदी पति पाइदा ॥१६॥४॥१६॥ (1037-9)
नानक सहजि समाइअनु हरि आपणी क्रिपा करे ॥२॥ (90-18)
नानक सहजि समाइओ रे मना ॥२॥२॥१५८॥ (409-16)
नानक सहजे नामि समाइआ ॥४॥७॥ (1174-9)
नानक सहजे मिलि रहे नामु वडिआई देइ ॥२॥ (850-15)
नानक सहजे मिलि रहे हरि नामि समाइआ ॥२॥ (1238-9)

नानक सहजे मिलि रहे हरि पाइआ परमानंदु ॥२५॥ (1415-16)
नानक सहजे मिलि रहै करमि परापति होइ ॥२॥ (948-5)
नानक सहजे सचु वापारा ॥३९॥ (942-12)
नानक सहजे साचि समाए ॥८॥७॥ (232-19)
नानक सहजे सुखु होइ अंदरहु भ्रमु भउ भागै ॥१॥ (851-19)
नानक सहजे सेवहि गुरु अपणा से पूरे वडभागे ॥४॥३॥ (569-18)
नानक सहजे हरि वरु पाइआ सा धन नउ निधि पाई ॥४॥३॥ (245-15)
नानक सहजे ही रंगि वरतदा हरि गुण पावै सोइ ॥४॥१७॥५०॥ (33-6)
नानक सांति होवै मन अंतरि नित हिरदै हरि गुण गावै ॥४॥१॥३॥ (1178-9)
नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥१॥ (475-1)
नानक सा धन ता पिरु रावे जा तिस कै मनि भाणी ॥२॥ (243-6)
नानक सा धन नाह पिआरी अभ भगती पिर आगै ॥१३॥ (1109-8)
नानक सा धन मिलै मिलाई जिस नो आपि मिलाए ॥१॥ (243-17)
नानक सा धन मिलै मिलाई पिरु अंतरि सदा समाले ॥ (584-1)
नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु पिर नीद न आवए ॥१॥ (242-10)
नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु प्रीतम दुखु पाए ॥१॥ (243-3)
नानक सा धन मेलि लई पिरि आपे साचै साहि सवारी ॥१॥ (567-18)
नानक सा धन रावीऐ रावे रावणहारु ॥२॥ (787-5)
नानक सा वेलड़ी परवाणु जितु मिलंदड़ो मा पिरी ॥२॥ (709-7)
नानक सा सुआलिओ सुलखणी जि रावी सिरजनहारि ॥१॥ (89-11)
नानक सा सोहागणि कंती पिर कै अंकि समावए ॥९॥ (1108-15)
नानक साई भली परीति जितु साहिब सेती पति रहै ॥२॥ (590-2)
नानक साकत नरक महि जमि बधे दुख सहंन्हि ॥ (854-9)
नानक साच सबदि सुख महली गुर चरणी प्रभु चेते ॥३॥ (763-18)
नानक साचा करहु बीचारु ॥१९॥ (940-2)
नानक साचा भेटै हरि मनि वसै पावहि मोख दुआर ॥६५॥ (1421-3)
नानक साचा मनि वसै साच सबदि हरि नामि समावै ॥२॥ (141-15)
नानक साचा सरब दातार ॥४॥३॥५॥ (662-3)
नानक साचा साचै राचा गुरमुखि तरीऐ तारी ॥४॥५॥ (1112-15)
नानक साचा साहिबु साची नाई सचु निसतारा होई ॥१॥ (769-9)
नानक साचि नामि मलु खोई ॥९॥१५॥ (228-3)
नानक साचि रते प्रभि आपि मिलाए ॥४॥३॥ (664-14)
नानक साचि रते बिसमादी बिसम भए गुण गाइदा ॥१६॥३॥१५॥ (1036-9)
नानक साचि रते सुखु जाणि ॥२६॥ (941-4)
नानक साचि वसी सोहागणि पिर सिउ प्रीति पिआरी ॥३॥ (689-12)
नानक साचि समावै सोइ ॥४॥८॥४७॥ (363-12)
नानक साचु कहै बेनंती मनु मांजै सचु सोई ॥४॥१॥ (688-6)

नानक साचु न वीसरै मेले सबदु अपारु ॥८॥१२॥ (61-8)
नानक साचु मिलै पति राखहु तू सिरि साहा पातिसाहा हे ॥१६॥६॥१२॥ (1033-8)
नानक साचु मिलै मनि भावै गुरमुखि कार कमाई हे ॥१६॥५॥ (1025-12)
नानक साचु मिलै वडिआई पिर घरि सोहै नारी ॥५॥३॥ (689-18)
नानक साचे कउ सचु जाणु ॥ (15-18)
नानक साचे के सिफति भंडार ॥४॥३॥ (1169-4)
नानक साचे भावै साचा ॥१६॥ (939-16)
नानक साचे सचि समाणे हरि का नामु वखाणी ॥८॥१॥ (1233-18)
नानक साचे साचा भावा ॥४॥५॥ (665-7)
नानक साचे साचि समाइ ॥८॥१॥३॥५॥८॥ (1278-2)
नानक साचे साचि समाइ ॥८॥२॥ (832-12)
नानक साचे साचि समावा ॥४॥२॥२२॥ (158-9)
नानक साचे साचि समावै ॥९॥४॥ (905-4)
नानक साचै साचि समाइ ॥४॥४१॥५२॥ (899-13)
नानक साजन कउ बलि जाईऐ साचि मिले घरि आए ॥१॥ (765-1)
नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥१॥ (271-7)
नानक साध कै संगि सफल जनम ॥५॥ (272-1)
नानक साध पूरन भगवान ॥४॥ (251-3)
नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥८॥७॥ (272-10)
नानक साध प्रभू बनि आई ॥३॥ (271-14)
नानक साध भेटे संजोग ॥७॥ (272-7)
नानक साधू कै कुरबान ॥४॥ (271-16)
नानक साधू देखि मनु राता ॥४॥३॥ (563-3)
नानक साधू संगि जनमु मरणु सवारिआ ॥११॥ (854-6)
नानक साधू संगि जागे गिआन रंगि ॥ (380-8)
नानक साधू संगि समाए ॥४॥२३॥३६॥ (1146-7)
नानक सारिंग जिउ पिआसे किउ मिलीऐ प्रभ दाते ॥१॥ (247-9)
नानक सावणि जे वसै चहु ओमाहा होइ ॥ (1279-9)
नानक सावणि जे वसै चहु वेछोड़ा होइ ॥ (1279-10)
नानक साहिब सदा दइआरा ॥४९॥ (260-12)
नानक साहिबु अंतरजामी ॥४॥१३॥२४॥ (890-10)
नानक साहिबु अगम अगोचरु जीवा सची नाई ॥१॥ (688-9)
नानक साहिबु अवरु न दूजा नामि तेरै वडिआई ॥२॥ (688-12)
नानक साहिबु भरपुरि लीणा ॥४॥२॥ (562-18)
नानक साहिबु भरिपुरि लीणा साच सबदि निसतारा ॥४॥१॥२॥ (1125-14)
नानक साहिबु मनि वसै विचहु जाहि विकार ॥२॥ (1285-6)
नानक साहिबु मनि वसै सचा नावणु होइ ॥१॥ (146-3)

नानक साहिबु मनि वसै सची वडिआई ॥८॥१७॥ (420-12)
नानक साहिबु सचो सचा तिचरु जापी जापै ॥१॥ (956-1)
नानक साहिबु सदा दइआलु ॥२॥ (268-12)
नानक साहिबु सबदि सिञापै साचा सिरजणहारा ॥३॥ (688-15)
नानक सिख संत समझाई हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥५॥१॥२॥ (80-5)
नानक सिझि इवेहा वार बहुड़ि न होवी जनमड़ा ॥१॥ (1096-13)
नानक सिफति सलाह करि प्रभ का जैकारु ॥३५॥ (1251-7)
नानक सिफती रतिआ मनु तनु हरिआ होइ ॥ (1240-14)
नानक सिमरनु पूरै भागि ॥६॥ (263-11)
नानक सिमरै नामु निधानु ॥४॥६६॥१३५॥ (193-4)
नानक सिरखुथे सैतानी एना गल न भाणी ॥ (150-4)
नानक सिरु दे छुटीऐ मनि तनि साचा सोइ ॥४॥१०॥ (992-11)
नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए ॥८॥१८॥ (421-2)
नानक सुआमी गरि मिले हउ गुर मनावउगी ॥२॥७॥१३६॥ (1230-16)
नानक सुख अनद भए प्रभ की मंनि रजाइ ॥७॥ (1425-11)
नानक सुखदाता सदा सलाहिहु रसना रामु रवीजै ॥२॥ (1246-19)
नानक सुखदाता सेविआ आपे परखणहारु ॥२॥ (549-6)
नानक सुखि वसनि सोहागणी जिन्ह पिआरा पुरखु हरि राउ ॥२॥ (510-15)
नानक सुखि सवनु सोहागणी जिन्ह सह नालि पिआरु ॥२॥ (1280-3)
नानक सुखि सवन्हि सोहागणी सचै नामि समाइ ॥५६॥ (1420-5)
नानक सुखि सहजि समीजै ॥४॥३०॥४१॥ (895-19)
नानक सुखु पाइआ हरि कीरतनि मिटिओ सगल कलेसा ॥४॥१५॥१५३॥ (213-8)
नानक सुखु पावै जन धूरि ॥४॥२०॥२२॥६॥२८॥ (869-6)
नानक सुणि वेखि रहिआ विसमादु मेरा प्रभु रविआ स्रब थाई ॥२१॥५॥१४॥ (912-12)
नानक सुणीअर ते परवाणु जो सुणेदे सचु धणी ॥१॥ (577-8)
नानक सुती पेईऐ जाणु विरती संनि ॥ (23-9)
नानक सुरि नर सबदि मिलाए तिनि प्रभि कारणु कीआ ॥५॥२॥ (1110-16)
नानक सूतकि जनमि मरीजै ॥ (413-15)
नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥१॥ (472-15)
नानक से अखड़ीआं बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥१॥ (577-13)
नानक से अखड़ीआ बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥३॥ (1100-1)
नानक से जन थाइ पए है जिन की पति पावै लेखै ॥८॥३॥ (1235-2)
नानक से जन पूरन होए जिन हरि भाणा भाइ ॥८॥१॥ (1276-11)
नानक से जन सोहणे जि गुरमुखि मेलि मिलाइ ॥२॥ (849-16)
नानक से जागंन्हि जि रसना नामु उचारणे ॥१३॥ (1425-17)
नानक से दरि सोभावंते जो प्रभि अपुनै कीओ ॥१॥ (803-1)
नानक से नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंति ॥२॥ (1246-3)

नानक से पूरे वडभागी सतिगुर सेवा लाए ॥ (1130-16)
नानक से भगत हरि कै दरि साचे अनदिनु नामु सम्हाले ॥२॥ (768-16)
नानक से मुह सोहणे सचै दरि दिसंन्हि ॥५२॥ (1419-13)
नानक से वडभागी जिन हरि नामु धिआइआ ॥ (560-11)
नानक से वडे वडभागी जि गुरमुखि नामि समाई ॥१९॥ (1414-19)
नानक से साबासि जिनी गुर मिलि इकु पछाणिआ ॥२॥ (319-5)
नानक से सोहागणी जि सतिगुर माहि समाहि ॥१॥ (1088-17)
नानक सेई उबरे जि सचि रहे लिव लाइ ॥२॥ (510-10)
नानक सेई उबरे जिना भागु मथाहि ॥११॥ (1425-15)
नानक सेई तंन फुटंनि जिना सांई विसरै ॥१॥ (323-1)
नानक सेई धंनु जिना पिरहड़ी सच सिउ ॥२॥ (709-3)
नानक सेई मूए जि नामु न चेतहि भगत जीवे वीचारी ॥३०॥४॥१३॥ (911-18)
नानक सेव अपार देव तटह खटह बरत पूजा गवन भवन जात्र करन सगल फल पुनी
॥२॥१॥५७॥८॥२१॥७॥५७॥९३॥ (1153-5)
नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥२॥ (475-2)
नानक सेवकु सोई आखीऐ जि सचि रहै लिव लाइ ॥१॥ (1251-2)
नानक सेवकु सोई आखीऐ जो सिरु धरे उतारि ॥ (1247-16)
नानक सेवा करहु हरि गुर सफल दरसन की फिरि लेखा मंगै न कोई ॥२॥ (306-14)
नानक सेवा सुरति कमावणी जो हरि भावै सो थाइ पाइ ॥२॥ (88-5)
नानक सेवि सदा हरि गुणी गहीर ॥४॥६॥२६॥ (159-16)
नानक सो जनु दरि हरि सिझी हे ॥४॥१॥१५४॥ (213-14)
नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥७॥ (283-13)
नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥ (283-16)
नानक सो जनु सदा अरोगु ॥२॥ (282-16)
नानक सो तपा दरगहि पावै माणु ॥२॥ (948-19)
नानक सो तपा मोखंतरु पावै ॥१॥ (948-17)
नानक सो धणी किउ विसारिओ उधरहि जिस दै नाइ ॥२॥ (706-6)
नानक सो नाउ मनहु न विसारीऐ जितु दरि सचै सोभा पाइ ॥१॥ (85-19)
नानक सो पड़िआ सो पंडितु बीना जिसु राम नामु गलि हारु ॥५४॥१॥ (938-4)
नानक सो पारंगति होइ ॥४॥७॥ (878-12)
नानक सो प्रभु जीअ का दाता पूरा जिसु परतापै ॥२॥ (780-10)
नानक सो प्रभु प्रभू दिखावै बिनु साचे जगु सुपना ॥९॥२॥ (1274-8)
नानक सो प्रभु मै मिलै हउ जीवा सदु सुणे ॥२॥ (1317-15)
नानक सो प्रभु सदा धिआईऐ जिनि मेलिआ सतिगुरु किरपा धारि ॥४॥१॥५॥ (1135-5)
नानक सो प्रभु सबदे जापै अहिनिसि नामु धिआए ॥२॥ (775-14)
नानक सो प्रभु सिमरीऐ तिसु देही कउ पालि ॥२॥ (554-1)
नानक सो सहु आहि जा कै आढलि हभु को ॥२॥ (521-1)

नानक सो सालाहीऐ जि देंदा सभनां जीआ रिजकु समाइ ॥१॥ (1284-15)
नानक सो सालाहीऐ जि सभना सार करेइ ॥२२०॥ (1376-9)
नानक सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥२॥ (791-15)
नानक सो सालाहीऐ जिनि कारणु कीआ ॥२॥ (788-4)
नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइ ॥ (1281-13)
नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइ ॥ (852-15)
नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥५॥ (281-18)
नानक सो सूरा वरीआमु जिनि विचहु दुसटु अहंकरणु मारिआ ॥ (86-14)
नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥२॥ (287-1)
नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइआ ॥४॥ (285-18)
नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥३॥ (285-15)
नानक सो सोहागणी जु भावै बेपरवाह ॥३२॥ (1379-11)
नानक सोई जीविआ जिनि इकु पछाता ॥६॥ (319-12)
नानक सोई दिनसु सुहावड़ा जितु प्रभु आवै चिति ॥ (318-14)
नानक सोई पुरखु बिधाता ॥५१॥ (943-16)
नानक सोई सिमरीऐ हरि जीउ जा की कल धारी राम ॥ (543-19)
नानक सोई सेवीऐ जितु सेविऐ दुखु जाइ ॥ (956-16)
नानक सोई सेवीऐ सदा सदा जो देइ ॥ (956-15)
नानक सोऊ आराधीऐ अंतु न पारावारु ॥१॥ (258-2)
नानक सोऊ सराहीऐ जि घटि घटि रहिआ बिआपि ॥५३॥ (261-10)
नानक सोधे सिम्रिति बेद ॥ (1142-8)
नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥४॥१५॥४८॥ (32-11)
नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥८॥१॥१८॥ (65-9)
नानक सोभावंतीआ सोहागणी अनदिनु भगति करेइ ॥४॥२८॥६१॥ (38-8)
नानक सोहं हंसा जपु जापहु त्रिभवण तिसै समाहि ॥१॥ (1093-3)
नानक सोहागणि का किआ चिहनु है अंदरि सचु मुखु उजला खसमै माहि समाइ ॥१॥ (785-16)
नानक सोहागणि सा वडभागी जे चलै सतिगुर भाए ॥ (772-11)
नानक हंदा छत्रु सिरि उमति हैराणु ॥ (968-8)
नानक हंसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥२॥ (472-17)
नानक हउ तिन कै बलिहारणै जो अनदिनु जपहि मुरारि ॥१॥ (585-13)
नानक हउ पिरु भाली आपणा सतिगुर नालि दिखालिआ ॥४॥ (1421-18)
नानक हउ बलिहारी तिंन कउ जो चलनि सतिगुर भाइ ॥१॥ (651-18)
नानक हउ बलिहारी तिन्ह कउ जिन्ह हरि मनि वसिआ सोइ ॥२॥ (1248-17)
नानक हउ हउ करते खपि मुए खूहणि लख असंख ॥ (1413-13)
नानक हउमै जालि समाई ॥२९॥ (941-10)
नानक हउमै मारि पतीणे तारा चड़िआ लमा ॥१॥ (1111-1)
नानक हउमै मारि पतीणे विरले दास उदासा ॥४॥३॥ (437-19)

नानक हउमै मारि ब्रहम मिलाइआ ॥८॥४॥ (231-7)
नानक हउमै मारि मिलाइआ ॥४॥९॥ (153-19)
नानक हउमै मारीऐ सचे जेहड़ा सोइ ॥८॥२॥१०॥ (1015-13)
नानक हउमै मारे सदा उदासा ॥४॥६॥४५॥ (362-18)
नानक हउमै मेटि समाइ ॥१५॥ (939-15)
नानक हउमै रोग बुरे ॥ (1153-9)
नानक हउमै सबदि जलाइआ ॥ (1189-2)
नानक हट पटण विचि कांइआ हरि लैंदे गुरमुखि सउदा जीउ ॥४॥५॥ (95-18)
नानक हभि अड्मबर कूड़िआ सुणि जीवा सची सोइ ॥२॥ (707-10)
नानक हभो रोगु मिरतक नाम विहूणिआ ॥२॥ (1101-1)
नानक हरणाखसु नखी बिदारिआ अंधै दर की खबरि न पाई ॥५॥११॥२१॥ (1133-17)
नानक हरि आपे जाणदा जिनि लाई प्रीति पिरंनि ॥२॥ (301-17)
नानक हरि आपे जोड़ि विछोड़े हरि बिनु को दूजा नाही ॥ (768-7)
नानक हरि एको करे सु होइ ॥४॥१॥ (1177-17)
नानक हरि कथा सुणी मुखि बोली गुरमति हरि नामि परीचै जीउ ॥४॥६॥ (96-5)
नानक हरि का भाणा मंने सो भगतु होइ विणु मंने कचु निकचु ॥१॥ (950-15)
नानक हरि की भगति न छोडउ सहजे होइ सु होई ॥२॥ (437-13)
नानक हरि की भगति निराली गुरमुखि विरलै कीजै ॥१॥ (568-13)
नानक हरि की सेवा सो करे जिसु लए हरि लाइ ॥१०॥ (86-13)
नानक हरि कीरतनु करि अटल एहु धरम ॥११॥ (299-5)
नानक हरि कै दरसि समाइआ ॥१३॥ (252-19)
नानक हरि गुण गाइ अलखु प्रभु लाखीऐ ॥२०॥ (91-8)
नानक हरि गुण निरभउ गाई ॥२॥११४॥ (202-19)
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥५२॥ (1429-5)
नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥२॥२॥ (727-1)
नानक हरि गुर कीनी दाते ॥४४॥ (259-12)
नानक हरि गुरि जा कउ दीआ ॥२०॥ (254-10)
नानक हरि चरणी मनु राता ॥४॥१२॥ (154-17)
नानक हरि जन अनदिनु निरमल जिन कउ करमि नीसाणु पइआ ॥९॥१॥ (1153-18)
नानक हरि जन के दासनि दासा ॥९॥८॥ (415-19)
नानक हरि जन हरि इके होए हरि जपि हरि सेती रलिआ ॥६॥१॥३॥ (562-6)
नानक हरि जन हरि लिव उबरे जिन संधिआ तिसु फिरि मार ॥१॥ (1317-19)
नानक हरि जपि उतरहु पारि ॥४॥४२॥५३॥ (899-19)
नानक हरि जपि सुखु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए सभि दूख निवारणहारो राम ॥१॥ (540-1)
नानक हरि जपि हरि मन मेरे हरि मेले मेलणहारा हे ॥१७॥३॥९॥ (1030-1)
नानक हरि जलु जिनि पीआ तिसु भूख न लागै आइ ॥५५॥ (1420-2)
नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥२॥१॥२३३॥ (411-7)

नानक हरि जसु संगति पाईऐ हरि सहजे सहजि मिलाइआ ॥१४॥ (1042-13)
नानक हरि जसु हरि गुण लाहा सतसंगति सचु फलु पाइआ ॥१५॥२॥१९॥ (1040-12)
नानक हरि जसु हरि जन की संगति दीजै जिन सतिगुरु हरि प्रभु जाता हे ॥१७॥५॥११॥ (1032-7)
नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥ (134-14)
नानक हरि जीउ ता कउ देवै जा कउ हुकमु मनाए ॥३॥१२॥१३३॥ (208-12)
नानक हरि धिआइआ ॥ (746-14)
नानक हरि नामु जिनी आराधिआ अनदिनु हरि लिव तार ॥ (90-8)
नानक हरि नामे लगै पिआरु ॥४॥१॥२१॥ (158-3)
नानक हरि पूरबि लिखणह ॥१५॥ (1361-2)
नानक हरि प्रभ मेलि लई गुर कै हेति पिआरि ॥२॥ (651-13)
नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥ (293-1)
नानक हरि प्रभु सो भउ भंजनु गुरि मिलिऐ हरि प्रभु पाइआ ॥१०॥ (1040-6)
नानक हरि बिनु अवरु न मागउ हरि रस प्रीति पिआरी ॥८॥१॥७॥ (507-8)
नानक हरि बिनु घरी न जीवां हरि का नामु वडाई ॥८॥१॥ (1232-15)
नानक हरि बिसराइ कै पउदे नरकि अंध्यार ॥१८॥ (1426-4)
नानक हरि भगति तिना कै मनि वसै जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥२॥ (91-12)
नानक हरि भगति परापति होई जोती जोति समाइ ॥४॥७॥१७॥ (1132-8)
नानक हरि भजु नीता नीति ॥८॥२॥ (222-1)
नानक हरि भजु सदा दिनु राती गुरमुखि निज घरि वासिआ ॥६॥ (444-1)
नानक हरि भावै सो करे सभ चलै रजाई ॥३६॥१॥ सुधु ॥ (1251-14)
नानक हरि रसि हरि गुण गावै ॥४॥३॥७॥ (733-5)
नानक हरि रसि हरि रंगि समावै ॥४॥२॥६॥ (733-1)
नानक हरि रसु पी त्रिपतासा ॥८॥११॥ (226-4)
नानक हरि सिउ रहै समाइ ॥६॥२३॥ (356-9)
नानक हरि सेती सदा रवि रहे धुरि लए मिलाइआ ॥३१॥ (1249-8)
नानक हरि हरि गुरमुखि जो कहता ॥४६॥ (260-1)
नानक हरि हरि चउदिआ सभु दालदु दुखु लहि जाइ ॥२॥ (1316-14)
नानक हरि हरि नाम लए ॥३॥१३॥१५१॥ (212-16)
नानक हरि हरि नामि समाई ॥४॥३॥१२॥ (1262-7)
नानक हरि होइ दइआलु तां गुरु पूरा मेलावए ॥५॥ (1422-1)
नानक हरे न सूकही जि गुरमुखि रहे समाइ ॥४॥१॥ (1168-8)
नानक हसती कुंडे बाहरा फिरि फिरि उझड़ि पाइ ॥२॥ (516-19)
नानक हारि परिओ सरनागति अभै दानु प्रभ दीजै ॥३॥२॥ (703-6)
नानक हिरदै नामु वडे धुरि भागै ॥४॥१५॥ (353-12)
नानक हिरदै नामु वसाए ॥४॥६॥ (1129-6)
नानक हीरा हीरै बेधिआ गुण कै हारि परोवै ॥२॥ (1112-9)
नानक हुकमि चलाईऐ साहिब लगी रीति ॥२॥ (148-1)

नानक हुकमि मंनिऐ तिख उतरै चड़ै चवगलि वंनु ॥१॥ (1282-6)
नानक हुकमि मंनिऐ सुखु पाईऐ गुर सबदी वीचारि ॥२॥ (1092-16)
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥ (4-14)
नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥ (466-15)
नानक हुकमु को गुरमुखि बुझै जिस नो किरपा करे रजाइ ॥१॥ (556-14)
नानक हुकमु तिना मनाइसी भाई जिना धुरे कमाइआ नाउ ॥ (1419-10)
नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥२२॥ (474-19)
नानक हुकमु न जाणीऐ अगै काई कार ॥१॥ (1238-3)
नानक हुकमु न जातो खसम का जि रहा सचि समाइ ॥१॥ (511-2)
नानक हुकमु न जापई किथै जाइ समाहि ॥ (1286-7)
नानक हुकमु न बुझई अंधा कहीऐ सोइ ॥३॥ (954-19)
नानक हुकमु न मंनई ता घर ही अंदरि दूरि ॥ (510-13)
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥१॥ (139-3)
नानक हुकमु बुझि परवाणु होइ ता फलु पावै सचु ॥ (509-8)
नानक हुकमु वरतै खसम का मति भवी फिरहि चल चित ॥ (1421-4)
नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥२॥ (464-9)
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥ (1-10)
नानक हुकमै जो बुझै सो फलु पाए सचु ॥ (950-14)
नानक हुकमै बूझै तिना रासि होइ सतिगुर ते सोझी पाइ ॥ (1423-19)
नानक होआ पारब्रहमु सहाई ॥१॥ (805-17)
नानक होए दासनि दास ॥४॥७॥१८॥ (888-10)
नानक होरि पतिसाहीआ कूड़ीआ नामि रते पातिसाह ॥११॥ (1413-16)
नानका जिन नामु मिलिआ करमु होआ धुरि कदे ॥ (566-10)
नानका दे रखु हाथ ॥४॥ (838-7)
नानका नामु धिआइ ॥१॥ (838-1)
नानका प्रिउ प्रिउ करि पुकारे रसन रसि मनु भीजए ॥२॥ (436-6)
नानका बलि बलि जाउ ॥२॥ (838-3)
नानका भगति प्रिअ हो ॥३॥२॥१५५॥ (213-17)
नानका हरि वरु देखि बिगसी मुंध मनि ओमाहओ ॥१॥ (436-3)
नानका हरि सरनाइ ॥३॥ (838-5)
नानकि नामु निरंजन जान्यउ कीनी भगति प्रेम लिव लाई ॥ (1406-5)
नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ (966-16)
नानकु आखि न राजै हरि गुण जिउ आखै तिउ सुखु पाइ ॥ (368-17)
नानकु आखै एहु बीचारु ॥ (143-13)
नानकु आखै कूक न होई ॥१॥ (1242-13)
नानकु आखै गोर सदेई रहिओ पीणा खाणा ॥४॥२८॥ (24-12)
नानकु आखै राहि पै चलणा मालु धनु कित कू संजिआही ॥४॥२७॥ (24-6)

नानकु आखै राहु एहु होरि गलां सैतानु ॥१॥ (1245-6)
नानकु आखै रे मना सुणीऐ सिख सही ॥ (953-13)
नानकु आखै सचु सुभाखै सचि रपै रंगु कबहू न जावै ॥६५॥ (945-13)
नानकु उधरै जन की सेवा ॥४॥२॥ (1338-8)
नानकु एक करै अरदासि ॥ (742-4)
नानकु एक कहै अरदासि ॥ (25-9)
नानकु एक कहै अरदासि ॥ (354-11)
नानकु एक कहै बेनंती नामे नामि समाइआ ॥१६॥१॥२३॥ (1068-2)
नानकु एक कहै बेनंती नावहु गति पति पाई ॥२७॥२॥११॥ (910-4)
नानकु एक कहै बेनंती होरि सगले कूड़ु कमावहि ॥१॥ (145-4)
नानकु कहत सुनहु रे लोगा संत रसन को बसहीअउ ॥२॥१॥२॥ (700-11)
नानकु कहतु चेति चिंतामनि होइ है अंति सहाई ॥३॥३॥८१॥ (902-12)
नानकु कहतो इहु बीचारा जि कमावै सु पार गरामी ॥ (216-8)
नानकु कहै अवरु नही कोइ ॥८॥१॥ (831-19)
नानकु कहै अवरु नही दूजा साच सबदि मनु मानिआ ॥५॥१७॥ (1332-16)
नानकु कहै कहावै सोइ ॥५॥१२॥ (1331-3)
नानकु कहै महा रसु चाखिआ ॥८॥२॥ (1343-6)
नानकु कहै सहेलीहो सहु खरा पिआरा ॥ (729-12)
नानकु कहै सिआणीए इउ कंत मिलावा होइ ॥२॥ (792-2)
नानकु कहै सिआणीए इव कंत मिलावा होइ ॥२॥ (139-5)
नानकु कहै सुणहु जन भाई सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु ॥१॥ (767-18)
नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥२॥ (466-19)
नानकु कहै सुणि बिनउ सुहागणि मू दसि डिखा पिरु केहीआ ॥२॥ (703-19)
नानकु कहै सुनि रे मना करि कीरतनु होइ उधारु ॥४॥१॥१५८॥ (214-10)
नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥ (967-7)
नानकु गरीबु किआ करै बिचारा हरि भावै तितु राहि चली ॥२॥२॥ (527-10)
नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥६॥ (757-14)
नानकु गरीबु बंदा जनु तेरा ॥ (676-12)
नानकु गावै गुर मिलि सोइ ॥४॥३९॥१०८॥ (187-16)
नानकु गुण गावै हरि अलख अभेवै ॥८॥८॥ (233-10)
नानकु गुर चरणि पराता ॥८॥२॥२७॥ (71-12)
नानकु गुर विटहु वारिआ जिनि हरि नामु दीआ मेरे मन की आस पुराई ॥५॥ (588-3)
नानकु जनु कहतु बात बिनसि जैहै तेरो गातु ॥ (1352-6)
नानकु जनु तुमरी सरणाई हरि राखहु लाज भगाती ॥४॥५॥ (668-7)
नानकु जनु तुमरी सरनाई हरि राखहु लाज हरे ॥४॥१॥ (975-9)
नानकु जपि जीवै प्रभ नामु ॥४॥११॥१३॥ (866-6)
नानकु जपे नाउ मेरे मना ॥२॥५॥१६१॥ (410-12)

नानकु जल कौ मीनु सै थे भावै राखहु प्रीति ॥५॥१३॥ (1331-9)
नानकु जसु गावै ठाकुर का रैणि दिनसु लिव लाई ॥४॥६॥ (1000-12)
नानकु जागै पारब्रहम कै रंगि ॥४॥ (182-14)
नानकु जाचकु दरि तेरै प्रभ तुधनो मंगै दानु ॥४॥४॥१७२॥ (218-19)
नानकु जाचकु हरि हरि नामु मांगै मसतकु आनि धरिओ प्रभ पागी ॥२॥७॥१८॥ (1301-12)
नानकु जाचै एकु दानु ॥ (1181-12)
नानकु जाचै एकु नामु मनि तनि भावंदा ॥५॥ (319-8)
नानकु जाचै संत रवाला ॥२॥३२॥३८॥ (744-17)
नानकु जाचै संत रवाला ॥४॥२८॥३४॥ (744-5)
नानकु जाचै संत रेणारु ॥४॥३॥२४॥ (677-6)
नानकु जाचै साचु सरूपु ॥८॥१॥ (686-3)
नानकु जाचै साध रवाल ॥२॥६॥२४॥ (807-4)
नानकु जाणै चोज न तेरे ॥४॥२५॥ (356-17)
नानकु जीवै जपि हरी दोख सभे ही हंतु ॥ (137-7)
नानकु जीवै संता धूरि ॥४॥२॥२३॥ (676-19)
नानकु जीवै हरि चरण धिआइ ॥४॥१२॥ (1183-17)
नानकु ज्मपै पतित पावन हरि दरसु पेखत नह संताप ॥३॥ (462-11)
नानकु ता का दासु है जि अनदिनु रहै लिव लाइ ॥६॥ (1422-5)
नानकु ता का दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥४॥ (660-9)
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥३॥ (469-14)
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥४॥ (469-16)
नानकु ता कै बलि बलि जाए ॥१॥ (1004-16)
नानकु तिन के चरन पखालै जिना गुरमुखि साचा भाइआ ॥८॥७॥ (1345-19)
नानकु तिन कै लागै पाइ ॥४॥१२॥ (352-11)
नानकु तिन कै संगि तराइआ ॥८॥ (1348-12)
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ (15-8)
नानकु तिन कै सद बलिहारै राम नामु उरि धारे ॥८॥२॥३॥ (1155-14)
नानकु तिन विटहु वारिआ जिन अनदिनु हिरदै हरि नामु धिआईऐ ॥१०॥ (590-5)
नानकु तिन विटहु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सुणि हरि नामु मनेसहि राम ॥३॥ (540-7)
नानकु तिस का लाला गोला जिनि गुरमुखि हरि लिव लाई हे ॥१६॥६॥ (1026-13)
नानकु तिस की उसतति करदा ॥४॥१९॥३२॥ (1145-1)
नानकु तिस कै सद कुरबाणा ॥४॥७॥१७॥७॥२४॥ (1335-5)
नानकु तू लहणा तूहै गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥ (968-12)
नानकु तेरा बाणीआ तू साहिबु मै रासि ॥ (557-7)
नानकु दासनि दासु कहत है करि किरपा लेहु उबारे ॥५॥३॥ (1199-8)
नानकु दासु इही सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥३॥१२४॥ (205-18)
नानकु दासु कहै बेनंती आठ पहर तुधु धिआई जीउ ॥४॥३४॥४१॥ (106-14)

नानकु दासु ता की सरणाई जा ते ब्रिथा न कोई रे ॥४॥१६॥१३७॥ (209-18)
नानकु दासु प्रभि आपि पहिराइआ भ्रमु भउ मेटि लिखावउ रे ॥२॥२॥१३१॥ (404-8)
नानकु दीनु जाचै तेरी सेव ॥ (867-12)
नानकु दीनु नामु मागै दुतीआ भरमु चुकाई ॥४॥४॥२०॥ (1005-12)
नानकु दुआरै आइओ ॥ (830-7)
नानकु निरधनु तितु दिनि जितु दिनि विसरै नाउ ॥१॥ (1244-17)
नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ (24-18)
नानकु नीचु कहै बीचारु ॥८॥३॥ (413-4)
नानकु नीचु कहै बेनंती दरि देखहु लिव लाई हे ॥१६॥२॥ (1022-10)
नानकु नीचु कहै लिव लाइ ॥८॥४॥ (223-1)
नानकु नीचु कहै वीचारु ॥ (4-5)
नानकु नीचु भिखिआ दरि जाचै मै दीजै नामु वडाई हे ॥१६॥१॥ (1021-10)
नानकु पइअ्मपै करहु किरपा तामि मंगलु गावा ॥१॥ (847-4)
नानकु पइअ्मपै चरण ज्मपै नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥१॥ (456-11)
नानकु पइअ्मपै चरण ज्मपै पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥२॥ (456-14)
नानकु पइअ्मपै चरण ज्मपै भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ ॥४॥३॥६॥ (457-1)
नानकु पइअ्मपै चरन ज्मपै ओट गही गोपाल दइआल क्रिपा निधे ॥३॥ (456-17)
नानकु पइअ्मपै दइआ धारहु मै नामु अंधुले टोहनी ॥२॥ (847-7)
नानकु पइअ्मपै प्रिअ संगि मेली मछुली नीरु न वीसरै ॥४॥ (847-13)
नानकु पइअ्मपै मेरी आस पूरी मिले सुआमी अपर्मपरा ॥५॥१॥३॥ (847-16)
नानकु पइअ्मपै संत ज्मपै जिनि हरि हरि संजोगि मिलाइआ ॥४॥२॥ (543-8)
नानकु पइअ्मपै संत ज्मपै मेलि कंतु हमारा ॥१॥ (542-18)
नानकु पइअ्मपै संत दासी तउ प्रसादि मेरा पिरु मिलै ॥२॥ (543-2)
नानकु पइअ्मपै संत सरणी मोहि दरसु दिखाईऐ ॥३॥ (543-5)
नानकु पइअ्मपै सुणहु प्रीतम गुर सबदि मनु समझावओ ॥५॥६॥ (1113-13)
नानकु पइअ्मपै सेव सेवकु जिउ जानहु तिउ मोहि रखहु ॥३॥ (847-10)
नानकु पेखि जीवै परतापु ॥४॥८८॥१५७॥ (197-14)
नानकु बारिकु कछू न जानै राखन कउ प्रभु माई बाप ॥२॥१॥१४॥ (1341-14)
नानकु बिनवै तिसै सरेवहु जा के जीअ पराणा ॥१॥ (660-11)
नानकु बिनवै सो किछु पाईऐ पुरबि लिखे का लहणा ॥३॥ (660-14)
नानकु बोलै अम्रित बाणी ॥ (1137-6)
नानकु बोलै अम्रित बाणी ॥ (877-18)
नानकु बोलै गुरमुखि बूझै जोग जुगति इव पाईऐ ॥९॥ (939-6)
नानकु बोलै तिस का बोलाइआ ॥४॥३॥२१॥ (1271-7)
नानकु बोलै बोलाइआ तेरा ॥४॥२३॥२९॥ (743-4)
नानकु बोलै ब्रहम बीचारु ॥२॥११॥ (1138-6)
नानकु बोलै सुणि बैरागी किआ तुमारा राहो ॥२॥ (938-10)

नानकु बोलै हरि हरि बाणी ॥४॥६॥१२॥ (739-16)
नानकु मंगे दरस दानु किरपा करहु हरे ॥१४॥१॥ (136-12)
नानकु मंगै दानु करि किरपा नामु देहु ॥२०॥१॥ (710-13)
नानकु मंगै दानु जो तुधु भाइआ ॥२६॥ (150-12)
नानकु मंगै दानु प्रभ रेन पग साधा ॥४॥३॥२७॥ (678-1)
नानकु मंगै दानु संता धूरि तरै ॥१॥ (523-15)
नानकु मंगै दानु हरि संता रेनारु ॥ (556-18)
नानकु मंगै सचु गुरमुखि घालीऐ ॥ (420-4)
नानकु मंगै हरि धनु रासि ॥४॥५॥९९॥ (395-14)
नानकु मांगतु नामु अधारे ॥४॥१॥११७॥ (203-17)
नानकु मांगै नामु हरि करि किरपा संजोगु ॥२॥ (317-4)
नानकु मागै दानु पिआरे ॥४॥२५॥३१॥ (743-13)
नानकु मागै नामु दानु ॥ (1305-18)
नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥१॥ (289-12)
नानकु मागै संत रवाला ॥४॥१७॥२३॥ (741-19)
नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥३॥ (457-11)
नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ ॥४॥४॥७॥ (457-14)
नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा को रामु भतारु ता कै अनदु घणा ॥२॥ (457-8)
नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥१॥ (457-5)
नानकु वखाणै नामु जाणै हरि नामु हरि प्रभ मंगीआ ॥२॥ (576-6)
नानकु वखाणै बेनती जलि थलि महीअलि सोइ ॥५॥ (64-9)
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥२॥ (468-13)
नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ॥१॥ (468-8)
नानकु वखाणै साचु नामु ॥४॥१॥१३॥ (1176-6)
नानकु विचारा भइआ दिवाना हरि तउ दरसन कै ताई ॥१२॥ (757-18)
नानकु वेखि विगसिआ हरि सचे की वडिआई ॥२॥ (592-4)
नानकु वेचारा किआ कहै ॥ (1168-14)
नानकु सरणि पइआ हरि दुआरै हउ बलि बलि सद कुरबानो ॥३॥ (777-15)
नानकु साइरु एव कहतु है सचे परवदगारा ॥२॥ (660-13)
नानकु साचु कहै प्रभ जाचै मै दीजै साचु रजाई हे ॥१६॥४॥ (1024-11)
नानकु साचु कहै बेनंती मिलि साचे सुखु पाइदा ॥१६॥२॥१४॥ (1035-9)
नानकु साचु कहै बेनंती सचु देवहु सचि समाहा हे ॥१६॥१॥१०॥ (1054-7)
नानकु साचु कहै बेनंती हरि दरसनि सुखु पाइदा ॥१६॥१॥१३॥ (1034-8)
नानकु साचु कहै वीचारु ॥ (423-17)
नानकु सिख देइ मन प्रीतम करि संता संगि निवासो ॥४॥ (80-2)
नानकु सिख देइ मन प्रीतम बिनु हरि झूठ पसारे ॥२॥ (79-14)
नानकु सिख देइ मन प्रीतम साधसंगि भ्रमु जाले ॥१॥ (79-11)

नानकु सिख देइ मन प्रीतम हरि लदे खेप सवली ॥३॥ (79-18)
नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥१॥ (1193-8)
नानकु सिमरै दिनु रैनारे ॥३॥९॥१५॥ (740-8)
नाना करत न छूटीऐ विणु गुण जम पुरि जाहि ॥ (934-19)
नाना खिआन पुरान जसु ऊतम खट दरसन गावहि राम ॥ (719-4)
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥ (658-15)
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर माही ॥ (1106-17)
नाना चलित करे खिन माहि ॥ (284-9)
नाना झूठि लाइ मनु तोखिओ नह बूझिओ अपनाइओ ॥३॥ (712-9)
नाना प्रकार जिनि जगु कीओ जनु मथुरा रसना रसै ॥ (1404-4)
नाना बिधि करि बनत बनाई ॥ (284-10)
नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥ (284-8)
नाना भेख करहि इक रंग ॥ (284-8)
नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥ (278-1)
नाना रूप नाना जा के रंग ॥ (284-8)
नाना रूप भेख दिखलाई ॥ (736-11)
नाना रूप रंग हरि केरे घटि घटि रामु रविओ गुपलाक ॥ (1295-11)
नाना रूप सदा हहि तेरे तुझ ही माहि समाही ॥२॥ (162-9)
नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥२॥ (537-10)
नान्ही सी बूंद पवनु पति खोवै जनमि मरै खिनु ताईं ॥४॥ (1274-1)
नापाक पाकु करि हदूरि हदीसा साबत सूरति दसतार सिरा ॥१२॥ (1084-9)
नाभि कमल असथ्मभु न होतो ता पवनु कवन घरि सहता ॥ (945-15)
नाभि कमल जाने ब्रहमादि ॥ (1194-16)
नाभि कमल ते ब्रहमा उपजे बेद पड़हि मुखि कंठि सवारि ॥ (489-8)
नाभि कमल महि बेदी रचि ले ब्रहम गिआन उचारा ॥ (482-3)
नाभि कमलु असथ्मभु न होतो ता निज घरि बसतउ पवनु अनरागी ॥ (945-18)
नाभि पवनु घरि आसणि बैसै गुरमुखि खोजत ततु लहै ॥ (945-11)
नाभि वसत ब्रहमै अंतु न जाणिआ ॥ (1237-17)
नाम अउखधु जिह रिदै हितावै ॥ (259-14)
नाम अउखधु मन भीतरि सारे ॥ (1148-3)
नाम अधारि चला गुर कै भै भेति ॥१॥ रहाउ ॥ (1274-18)
नाम अधारु जीवन धनु नानक प्रभ मेरे किरपा कीजै ॥२॥५॥९॥ (1268-9)
नाम उदकु पीवत जन नानक तिआगे सभि अनुरागा ॥२॥१६॥४७॥ (682-7)
नाम का वापारु मीठा भगति लाहा अनदिनो ॥ (243-11)
नाम किति संसारि किरणि रवि सुरतर साखह ॥ (1393-10)
नाम की बेला पै पै सोइआ ॥१॥ (738-15)
नाम की महिमा संत रिद वसै ॥ (265-6)

नाम की महिमा सभ महि बनी ॥ (1144-5)
नाम के धारे आगास पाताल ॥ (284-12)
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥ (284-11)
नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥ (284-13)
नाम के धारे सगल आकार ॥ (284-13)
नाम के धारे सगले जंत ॥ (284-11)
नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान ॥ (284-12)
नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥ (284-12)
नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥ (284-13)
नाम खजाना भगती पाइआ मन तन त्रिपति अघाए ॥ (208-11)
नाम जपत सभु भ्रमु भउ खोत ॥५॥ (914-18)
नाम ततु कलि महि पुनहचरना ॥ (254-8)
नाम ततु सभ ही सिरि जापै ॥ (943-13)
नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥ (265-8)
नाम तेरे की आस मनि धारी ॥२॥ (388-2)
नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥२॥ (694-16)
नाम तेरे की तरउ टेक ॥२॥ (1182-2)
नाम तेरे की मन महि टेक ॥२॥ (894-12)
नाम तेरे की मुकते बीथी जम का मारगु दूरि रहिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (393-13)
नाम तेरै कै रंगि दुरमति धोवणा ॥ (523-5)
नाम दानु इसनानु न कीओ इक निमख न कीरति गाइओ ॥ (712-8)
नाम दानु गुरि पूरै दीओ मै एहो आधारी ॥१॥ रहाउ ॥ (401-13)
नाम दानु जाचंत नानक दैनहार गुर गोपाला ॥१४॥ (1355-5)
नाम दानु जाचंति नानक दइआल पुरख क्रिपा करह ॥१॥ (710-9)
नाम दानु देइ जन अपने दूख दरद का हंता ॥ रहाउ ॥ (639-15)
नाम दानु नानक वडिआई तेरिआ संत जना रेणारी ॥८॥३॥८॥२२॥ (916-19)
नाम द्रिड़ु गुरि मन महि दीआ मोरी तिसा बुझारी ॥२॥ (401-14)
नाम धन बिनु होर सभ बिखु जाणु ॥ (664-2)
नाम धनि मुख उजले होए हरि पाइआ सचु सोइ ॥१॥ (600-5)
नाम धनु जिसु जन कै पालै सोई पूरा साहा ॥ (680-9)
नाम धारी सरनि तेरी ॥ (1322-15)
नाम धारीक उधारे भगतह संसा कउन ॥ (458-6)
नाम धारीक झूठे सभि साक ॥१॥ (188-9)
नाम धिआए हरि हरि हरे ॥ (1147-9)
नाम निधान तिसहि परापति जिसु सबदु गुरू मनि वूठा जीउ ॥२॥ (101-1)
नाम निधानु नानक दानु पावउ कंठि लाइ उरि धारउ ॥२॥१९॥ (532-3)
नाम निधानु बडभागी पाए ॥२॥ (1145-5)

नाम निरंजन एक लिव लागी जीउ ॥ (217-13)
नाम निरंजन मन महि लए ॥ (1149-7)
नाम परसु जिनि पाइओ सतु प्रगटिओ रवि लोइ ॥ (1392-9)
नाम प्रभू के जो रंगि राते कलि महि सुखीए से गनी ॥३॥ (1186-5)
नाम प्रीति लागी मन भीतरि मागन कउ हरि दान ॥१॥ रहाउ ॥ (1119-14)
नाम बिना कहहु को तरिआ ॥ (1140-10)
नाम बिना किआ गिआन धिआनु ॥ (905-18)
नाम बिना किउ जीवा माइ ॥ (226-13)
नाम बिना किछु कामि न आवै मेरा मेरा करि बहुतु पछुताने ॥१॥ रहाउ ॥ (896-3)
नाम बिना किछु सादि न लागै हरि बिसरिऐ दुखु पाई हे ॥६॥ (1024-18)
नाम बिना कुसटी मोह अंधा ॥ (367-17)
नाम बिना कूड़िआरि कूड़ु कमाणिआ जीउ ॥ (689-16)
नाम बिना कैसे आचार ॥१॥ (1330-16)
नाम बिना कैसे उतरसि पारा ॥३॥ (478-16)
नाम बिना कैसे गुन चारु ॥१॥ रहाउ ॥ (1187-8)
नाम बिना कैसे पारि उतरै ॥ (872-8)
नाम बिना कैसे सुखु पावै ॥४॥ (906-1)
नाम बिना कैसे सुखु लहीऐ ॥ (200-13)
नाम बिना को कछु नही गुरि पूरै पूरी मति कीन ॥१॥ रहाउ ॥ (1010-6)
नाम बिना को सकै न तारि ॥ (893-7)
नाम बिना खोटे नही ठाहर नामु रतनु परवाणो ॥ (765-10)
नाम बिना गति किनै न पाई ॥८॥६॥ (1345-9)
नाम बिना गति कोइ न पावै हठि निग्रहि बेबाणै ॥ (243-9)
नाम बिना जगु रोगि बिआपिआ दुबिधा डुबि डुबि मरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (1125-10)
नाम बिना जनमु बिरथा जाए ॥१॥ (1155-18)
नाम बिना जेता बिउहारु ॥ (240-5)
नाम बिना जेतो लपटाइओ कछू नही नाही कछु तेरो ॥ (1302-18)
नाम बिना जैसे कुबज कुरूप ॥३॥२५॥ (328-12)
नाम बिना जो पहिरै खाइ ॥ (240-4)
नाम बिना झूठे कुचल कछोति ॥ (831-16)
नाम बिना झूठे पासारा ॥७॥ (240-8)
नाम बिना तनि किछु न सुखावै ॥१॥ रहाउ ॥ (1331-11)
नाम बिना ध्रिगु जीवणु मूआ ॥२॥ (1156-1)
नाम बिना ध्रिगु ध्रिगु असनेहु ॥१॥ रहाउ ॥ (240-4)
नाम बिना ध्रिगु ध्रिगु जीवाइआ ॥३॥ (366-18)
नाम बिना नकटे नर देखहु तिन घसि घसि नाक वढीजै ॥ (1325-13)
नाम बिना नरु कही न लेखै ॥२॥ (1140-11)

नाम बिना नह पड़उ अचार ॥ (1154-6)
नाम बिना नही छूटसि नानक साची तरु तू तारी ॥९॥७॥ (1013-15)
नाम बिना नही जीविआ जाइ ॥ (366-17)
नाम बिना नाही को बेली बिखु लादी सिरि भारा ॥ (688-14)
नाम बिना नाही दरि ढोई झूठा आवण जाणु ॥३॥ (992-9)
नाम बिना नाही निज ठाउ ॥ (222-16)
नाम बिना नाही मुखि भागु ॥ (192-18)
नाम बिना निहफल संसार ॥१॥ (198-15)
नाम बिना फिरि आवण जाणु ॥७॥ (1156-8)
नाम बिना फोकट सभि करमा जिउ बाजीगरु भरमि भुलै ॥१॥ (1343-8)
नाम बिना बिरथे सभि काज ॥१॥ (1140-9)
नाम बिना भ्रमि आवै जाई ॥३॥ (1156-2)
नाम बिना भ्रमि जोनी मूचा ॥६॥ (1156-7)
नाम बिना मनमुख गावारा ॥४॥ (1156-4)
नाम बिना माटी संगि रलीआ ॥१॥ (385-1)
नाम बिना मै अवरु न कोई वडै भागि गुरमुखि हरि लैना ॥१॥ रहाउ ॥ (366-16)
नाम बिना मै धर नही काई नामु रविआ सभ सास गिरासा ॥१॥ रहाउ ॥ (367-7)
नाम बिना रस कस दुखु खावै मुखु फीका थुक थूक मुखि पाई ॥३॥ (493-15)
नाम बिना सद सद ही झूरे ॥४॥ (1140-14)
नाम बिना सभ दुनीआ छारु ॥१॥ (1138-1)
नाम बिना सभि कूड़ु गाल्ही होछीआ ॥१॥ (761-16)
नाम बिना सभि फीक फिकाने जनमि मरै फिरि आवैगो ॥५॥ (1308-13)
नाम बिना सभु जगु बउराना ॥३॥ (1140-13)
नाम बिना सभु जगु बउराना सबदे हउमै मारी ॥ (568-19)
नाम बिना सभु जगु है मैला दूजै भरमि पति खोई ॥२॥ (1234-14)
नाम बिना सभु झूठु परानी ॥ (890-6)
नाम बिना सुखु नाहि सरपर हारिआ ॥४॥ (761-19)
नाम बिना सूना घरु बारु ॥६॥ (1187-14)
नाम बिना होइ जासी धूर ॥२॥ (888-13)
नाम बिहूण बिखमता नानक बहंति जोनि बासरो रैणी ॥८॥ (1360-13)
नाम बिहूण मुकति किउ होइ ॥ (1237-16)
नाम बिहूणी दुखि जलै सबाई ॥ (362-15)
नाम बिहूणी होई खेह ॥ (890-2)
नाम बिहूणे चलसहि रोइ ॥२॥ (890-8)
नाम बिहूणै माथे छाई ॥१॥ (412-3)
नाम बिहून जीवन कउन काम ॥१॥ रहाउ ॥ (188-6)
नाम बिहून ध्रिगु देह बिगानी ॥१॥ रहाउ ॥ (192-17)

नाम बिहून सुखी किउ सोवै ॥ (1148-19)
नाम बिहून सूने से मुखा ॥१॥ (192-16)
नाम बिहूनड़िआ से मरन्हि विसूरि विसूरि ॥२॥ (397-10)
नाम बिहूना तनु मनु हीना जल बिनु मछुली जिउ मरै ॥ (80-11)
नाम बिहूना मुकति न होई ॥२॥ (1344-14)
नाम बिहूने नानका होत जात सभु धूर ॥१॥ (251-1)
नाम भगति मागु संत तिआगि सगल कामी ॥१॥ रहाउ ॥ (1230-8)
नाम मंत्रु जा कउ गुरि दीन ॥३॥ (1298-12)
नाम रंग सहज रस माणे फिरि दूखु न लागिओ ॥४॥२॥१६०॥ (215-5)
नाम रंगि इहु मनु त्रिपताना बहुरि न कतहूं धावउ रे ॥१॥ (404-5)
नाम रंगि जन रहे अघाइ ॥ (863-14)
नाम रंगि भगत भए लाल ॥ (863-13)
नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥ (279-2)
नाम रतन को को बिउहारी ॥ (181-2)
नाम रतनु गुणा हरि बणजे लादि वखरु लै चालिओ ॥१॥ (1000-2)
नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥ (286-3)
नाम रतनु जिनि पाइआ दानु ॥ (891-14)
नाम रतनु तेरा है पिआरे ॥ (1085-8)
नाम रतनु परगासिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥ (1414-6)
नाम रतनु पाइओ जन नानक नाम बिहून चले सभि मूठे ॥२॥८॥२७॥ (717-12)
नाम रतनु सभ जग महि लोइ ॥५॥ (232-15)
नाम रतनु साची वडिआई ॥ (1024-19)
नाम रतनु सुनि जपि जपि जीवा हरि नानक कंठ मझारे ॥२॥११॥३०॥ (718-4)
नाम रतु सो भगतु परवानु ॥२॥ (189-13)
नाम रते केवल बैरागी सोग बिजोग बिसरजित रोग ॥१॥ (504-19)
नाम रसाइणि इहु मनु मोहै ॥ (1049-12)
नाम रसाइणि इहु मनु राता अम्रितु पी त्रिपताई ॥८॥ (915-16)
नाम रसि जो जन त्रिपताने ॥ (286-5)
नाम राते जीअ दाते नित देहि चड़हि सवाइआ ॥ (543-15)
नाम रासि साध संगि खाटी ॥ (194-15)
नाम वखरु धनु संचिआ नानक सची रासि ॥२॥ (710-10)
नाम वडाई जनु सोभा पाए ॥ (189-12)
नाम वडाई तुधु भाणै दीउ ॥७॥ (226-12)
नाम विहूण गरभ गलि जाइ ॥ (362-14)
नाम विहूणा कथि कथि लूझै ॥ (1044-13)
नाम विहूणा मुकति किव होई ॥१५॥ (931-15)
नाम विहूणे आदमी ध्रिगु जीवण करम करेहि ॥३॥ (489-7)

नाम विहूणे ऊणे झूणे ना गुरि सबदु सुणाइआ ॥ (767-7)
नाम विहूणे किआ गणी जिसु हरि गुर दरसु न होइ ॥६॥ (63-6)
नाम विहूणे पचि मुए भाई गणत न जाइ गणी ॥ (608-15)
नाम विहूणे भरमसहि आवहि जावहि नीत ॥ (1087-2)
नाम संगि इहु मनूआ गीध ॥३॥ (863-7)
नाम संगि कीनो बिउहारु ॥ (863-3)
नाम संगि जिस का मनु मानिआ ॥ (281-11)
नाम संगि ता का मनु लागु ॥४॥४९॥११८॥ (189-14)
नाम संगि मन तनहि रात ॥ (987-16)
नाम संगि मनि प्रीति न लावै ॥ (240-7)
नाम संजोगी गोइलि थाटु ॥ (153-1)
नामदेअ प्रीति लगी हरि सेती लोकु छीपा कहै बुलाइ ॥ (733-10)
नामदेइ सिमरनु करि जानां ॥ (858-2)
नामदेउ गुर की सरणाई ॥९॥१॥२॥११॥ (1167-6)
नामदेउ त्रिलोचनु कबीर दासरो मुकति भइओ चमिआरो ॥२॥१॥१०॥ (498-7)
नामदेउ नाराइनु पाइआ ॥ (874-3)
नामदेउ सभ रहिआ समाइ ॥ (1166-10)
नामदेव ॥ (1167-13)
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥ (1106-14)
नामदेव जा के जीअ ऐसी तैसो ता कै प्रेम प्रगास ॥२॥३॥ (1253-2)
नामदेव जी ॥ (727-12)
नामदेव हरि जीउ बसहि संगि ॥ (1192-13)
नामन महि तेरो प्रभ नामा गिआनन महि गिआनी ॥ (507-17)
नामहीण गए मूड़ नंगा ॥ (367-8)
नामहीण नाही पति वेसाहु ॥५॥ (1156-5)
नामहीण फिरहि से नकटे तिन घसि घसि नक वढाइआ ॥३॥ (882-6)
नामहीणु बिनसै दुखु पाइ ॥ (1262-12)
नामहीन कालख मुखि माइआ ॥ (366-18)
नामहीन ध्रिगु जीवते तिन वड दूख सहमा ॥ (799-9)
नामहीन नकटे फिरहि बिनु नावै बहि रोइ ॥ (1414-7)
नामहु भूले जनमु गवाए ॥१॥ (1174-17)
नामहु भूले मरहि बिखु खाइ ॥ (1175-11)
नामहु भूलै जम का दुखु सहना ॥ (227-5)
नामहु ही नामु मंनीऐ नामे वडिआई ॥७॥ (426-8)
नामा ॥ (694-1)
नामा उबरै हरि की ओट ॥८॥ (1165-18)
नामा कहै चितु हरि सिउ राता सुंन समाधि समाउगो ॥४॥२॥ (973-5)

नामा कहै जगजीवनु पाइआ हिरदै अलख बिडाणी ॥४॥१॥ (1351-2)
नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु सम्हालि ॥ (1375-19)
नामा कहै भगति बसि केसव अजहूं बलि के दुआर खरो ॥४॥१॥ (1105-13)
नामा कहै सुनहु बादिसाह ॥ (1166-9)
नामा कहै हउ तरि भी न जानउ ॥ (1196-4)
नामा गावै गुन गोपाल ॥१२॥ (1166-2)
नामा छीबा कबीरु जोलाहा पूरे गुर ते गति पाई ॥ (67-13)
नामा जैदेउ कबीरु त्रिलोचनु सभि दोख गए चमरे ॥ (995-7)
नामा जैदेउ क्मबीरु त्रिलोचनु अउजाति रविदासु चमिआरु चमईआ ॥ (835-16)
नामा प्रणवै परम ततु है सतिगुर होइ लखाइआ ॥३॥३॥ (973-9)
नामा प्रणवै सेल मसेल ॥ (1166-6)
नामा भगतु कबीरु सदा गावहि सम लोचन ॥ (1390-11)
नामा माइआ मोहिआ कहै तिलोचनु मीत ॥ (1375-18)
नामा सुलताने बाधिला ॥ (1165-13)
नामि इसनानु करहि से जन निरमल सबदे मैलु गवाई ॥१४॥ (909-15)
नामि जिसै कै ऊजली तिसु दासी गनीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (400-5)
नामि तेरै जोइ राते नित चड़हि सवाइआ ॥ (566-18)
नामि तेरै रहै मनु राता ॥ (180-12)
नामि बिसारिऐ सभु कूड़ो कूरि ॥२॥ (226-7)
नामि मिलिऐ पति पाईऐ नामि मंनिऐ सुखु होइ ॥ (233-15)
नामि रंग नामि चोज तमासे नाउ नानक कीने भोगा जीउ ॥४॥१०॥१७॥ (99-14)
नामि रता जनु परगटु होइ ॥२॥ (1174-6)
नामि रता सतिगुरू है कलिजुग बोहिथु होइ ॥ (552-9)
नामि रता सोई निरबाणु ॥३॥ (385-12)
नामि रतिआ नामु पाईऐ नामे गुण गावै ॥ (791-18)
नामि रतीआ से रंगि चलूला पिर कै अंकि समाए ॥ (585-5)
नामि रते कुलां का करहि उधारु ॥ (1174-16)
नामि रते गुण गिआन बीचारु ॥ (941-17)
नामि रते गुर सबदि सुहाए ॥४॥ (841-10)
नामि रते गुरि पूरै राखे नानक सहजि सुभाए ॥४॥४॥ (581-16)
नामि रते घर माहि उदासा ॥३॥ (161-18)
नामि रते जन भए भगवंता ॥१॥ रहाउ ॥ (390-6)
नामि रते जन सदा सुखु पाइन्हि जन नानक तिन बलि जाए ॥१॥ (851-3)
नामि रते जोग जुगति बीचारु ॥ (941-15)
नामि रते तिन निरमल देहा ॥ (1064-9)
नामि रते तीरथ से निरमल दुखु हउमै मैलु चुकाइआ ॥ (1345-19)
नामि रते त्रिभवण सोझी होइ ॥ (941-15)

नामि रते परम हंस बैरागी निज घरि ताड़ी लाई हे ॥३॥ (1046-3)
नामि रते पावहि मोख दुआरु ॥ (941-15)
नामि रते प्रभ रंगि अपार ॥ (676-15)
नामि रते भउजल उतरहि पारे ॥२॥ (161-17)
नामि रते मनु निरमलु होइ ॥ (841-9)
नामि रते मनु निरमलु होइ ॥४॥ (229-14)
नामि रते सचि रहे समाइ ॥ (941-15)
नामि रते सचु करणी सारु ॥ (941-17)
नामि रते सदा तपु होइ ॥ (941-17)
नामि रते सदा बैरागी ॥ (230-16)
नामि रते सदा सचि पिआरि ॥७॥ (424-9)
नामि रते सदा सुखु पाई ॥ (1176-1)
नामि रते सदा सुखु पाई ॥७॥ (833-4)
नामि रते सदा सुखु पावै साचि रहै लिव लाई ॥१॥ (1332-18)
नामि रते सदा सुखु होई ॥ (841-3)
नामि रते सिध गोसटि होइ ॥ (941-16)
नामि रते से निरमले गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (32-2)
नामि रतो चाहउ तुझ ओरु ॥ (1187-10)
नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥१॥ (471-16)
नामि लगे से ऊबरे बिनु नावै जम पुरि जांहि ॥ (1415-14)
नामि लागै दूखु भागै सरनि पालन जोगु ॥ (1341-8)
नामि समावै जो भाडा होइ ॥ (158-14)
नामि सुनिऐ मनु त्रिपतै मेरे भाई ॥१॥ (367-15)
नामि हमारे कारज सीध ॥ (863-6)
नामु अउखधु मो कउ साधू दीआ ॥ (101-12)
नामु अउखधु सोई जनु पावै ॥ (179-4)
नामु अखुटु निधानु है गुरमुखि मनि वसिआ ॥ (787-13)
नामु अधारु दीजै नानक कउ आनद सूख घनेरै ॥२॥१२॥ छके २ ॥ (530-16)
नामु अमोलकु अगम अपारा ॥ (1067-12)
नामु अमोलकु गुर परसादी पाइआ ॥ (124-8)
नामु अमोलकु गुरमुखि पावै ॥ (232-8)
नामु अमोलकु न पाइआ जाइ ॥ (663-17)
नामु अमोलकु रतनु है पूरे सतिगुर पासि ॥ (40-6)
नामु अमोला प्रीति न तिस सिउ पर निंदा हितकारै ॥ (1205-11)
नामु अराधन होआ जोगु ॥ (1340-12)
नामु अवखधु जिनि जन तेरै पाइआ ॥ (107-19)
नामु अवखधु नामु आधारु अरु नामु समाधि सुखु सदा नाम नीसाणु सोहै ॥ (1392-7)

नामु इक रस रंग नामा नामि लागी लीउ ॥ (1007-5)
नामु इसटु मीत सुत करता मन संगि तुहारै चालै ॥ (213-7)
नामु उचारु करे हरि रसना बहुड़ि न जोनी धावै ॥१॥ (531-3)
नामु एकु अधारु भगता ईत आगै टेक ॥ (501-5)
नामु कहत गोविंद का सूची भई रसना ॥ (811-10)
नामु खजाना गुर ते पाइआ त्रिपति रहे आघाई ॥१॥ (911-19)
नामु खसम का चिति न कीआ कपटी कपटु कमाणा ॥ (660-15)
नामु खेती बीजहु भाई मीत ॥ (430-15)
नामु गुरि दीओ है अपुनै जा कै मसतकि करमा ॥ (680-7)
नामु चितवै नामो पड़ै नामि रहै लिव लाइ ॥ (1317-8)
नामु जपत अगनत अनेकै ॥ (262-11)
नामु जपत उग्रसैणि गति पाई तोड़ि बंधन मुकति करे ॥३॥ (995-9)
नामु जपत उहु चहु कुंट मानै ॥१॥ (386-15)
नामु जपत कोटि सूर उजारा बिनसै भरमु अंधेरा ॥१॥ (700-17)
नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥ (456-8)
नामु जपत गोविंद का बिनसै भ्रम भ्रांति ॥१॥ (814-11)
नामु जपत तह पारि पराही ॥ (264-8)
नामु जपत ता की गति होइ ॥ (284-19)
नामु जपत त्रिसना सभ बुझी है नानक त्रिपति अघाई ॥४॥१०॥ (673-11)
नामु जपत नानक जीवै सीतलु मनु सीना राम ॥२॥ (848-15)
नामु जपत नामु रिदे बीचारे ॥ (202-8)
नामु जपत नामे सुखु पावै हरि नामे नामि समावै ॥१॥ (880-12)
नामु जपत पति सोभा होइ ॥ (1181-3)
नामु जपत परम सुखु पाईऐ आवा गउणु मिटै मेरे मीत ॥१॥ रहाउ ॥ (901-2)
नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥ (282-5)
नामु जपत पावै बिस्राम ॥ (264-9)
नामु जपत प्रभ सिउ मन माने ॥३॥ (202-7)
नामु जपत बिघनु नाही कोइ ॥२॥ (1181-4)
नामु जपत मनि भए अनंद ॥ (201-17)
नामु जपत मनि होवत सूख ॥ (293-9)
नामु जपत मनि होवत सूख ॥२॥ (179-2)
नामु जपत मनु तनु सभु हरिआ ॥ (395-4)
नामु जपत मनु तनु हरीआवलु प्रभ नानक नदरि निहारे जीउ ॥४॥२९॥३६॥ (105-6)
नामु जपत मनु निरमल होवै सूखे सूखि गुदारना ॥४॥ (915-6)
नामु जपत महा सुखु पाइओ चिंता रोगु बिदारिओ ॥१॥ (529-13)
नामु जपत मिटहि पाप कोटि ॥१॥ (863-4)
नामु जपत मेरे भाई मीत ॥२॥ (1145-17)

नामु जपत सभु मिटिओ अंदेसा ॥१॥ रहाउ ॥ (194-10)
नामु जपत सरब सुखु पाईऐ ॥ (104-18)
नामु जपत सुख सहज सार ॥ (1181-3)
नामु जपत सोऊ जनु उधरै जिसहि उधारहु आप ॥ (1306-18)
नामु जपत हरि चरण निवासु ॥१॥ (1150-7)
नामु जपत होआ परगासु ॥ (1340-19)
नामु जपत होवत उधार ॥ (1181-3)
नामु जपत होवत निहाल ॥१॥ (1181-2)
नामु जपहु गुरमुखि परगासा ॥ (367-7)
नामु जपहु तउ कटीअहि फासा ॥ (258-7)
नामु जपहु नामे गति पावहु सिम्रिति सासत्र नामु द्रिड़ईआ ॥ (834-9)
नामु जपहु नामे सुखु पावहु नामु रखहु गुरमति मनि चीता ॥१॥ रहाउ ॥ (367-16)
नामु जपहु नामो आराधहु गुर पूरे की सरनाई ॥ रहाउ ॥ (630-7)
नामु जपहु मेरे गुरसिख मीता ॥ (367-15)
नामु जपहु मेरे साजन सैना ॥ (366-16)
नामु जपिओ हरि नाम रंगि ॥१॥ (1182-18)
नामु जपी तै नामु धिआई महलु पाइ गुण गाहा हे ॥११॥ (1054-1)
नामु जपी नामि सहजि समावा नामु नानक मिलै उचारणा ॥१६॥१॥६॥ (1077-16)
नामु जपी नामो सुख सारु ॥१॥ (366-16)
नामु जपे जपि जीवणा गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥१॥ (399-13)
नामु जपे नामो आराधे तिसु जन कउ करहु सभि नमसकारु ॥ (950-19)
नामु जपे नामो आराधे नामे सुखि समावै ॥२॥ (139-15)
नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥ (279-12)
नामु जपै नानकु दासु तुमरो उधरसि आखी फोर ॥२॥११॥२०॥ (500-4)
नामु जपै भउ भोजनु खाइ ॥ (686-11)
नामु जाति नामु मेरी पति है नामु मेरै परवारै ॥ (713-10)
नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ (917-8)
नामु तिआगि करे अन काज ॥ (240-6)
नामु तेरा अ्मभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥१॥ (694-15)
नामु तेरा आधारु मेरा जिउ फूलु जई है नारि ॥ (338-16)
नामु तेरा जन कै भंडारि ॥ (1338-3)
नामु तेरा जपि जीवै नानकु ओति पोति मेरै संगि सहाइ ॥४॥९॥ (373-6)
नामु तेरा जपी दिनु राति ॥४॥८॥१४॥ (740-5)
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥ (694-16)
नामु तेरा मन तन आधारी ॥ (564-1)
नामु तेरा सदा साचा सोइ मै मनि भाणा ॥२॥ (566-16)
नामु तेरा सभु कोई लेतु है जेती आवण जाणी ॥ (423-4)

नामु तेरा सुखु नानकु मागै साहिब तुठै पावा ॥४॥१॥४८॥ (747-8)
नामु तेरा है साचा सदा मै मनि भाणा ॥ (566-13)
नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥ (694-13)
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥ (694-14)
नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे ॥ (694-17)
नामु दानु इसनानु दिड़ाइआ ॥ (74-1)
नामु दानु इसनानु दिड़ु सदा करहु गुर कथा ॥ (1101-13)
नामु दानु इसनानु द्रिड़ु हरि भगति सु जागे ॥७॥ (419-5)
नामु दानु इसनानु न मनमुखि तितु तनि धूड़ि धुमाई ॥१॥ (596-3)
नामु दानु दीजै नानक कउ तिसु प्रभ अगम अगाधे जीउ ॥४॥२०॥२७॥ (102-14)
नामु दीजै दानु कीजै बिसरु नाही इक खिनो ॥ (784-8)
नामु दुराइ चलै सो चोरु ॥३॥ (1187-11)
नामु देहि मागै दासु तेरा ॥ (1005-9)
नामु द्रिड़ाइ मूं हां ॥ (410-11)
नामु द्रिड़ाइआ साध क्रिपाल ॥ (389-18)
नामु द्रिड़ावै नामु जपावै ता का जुग महि धरमा ॥१॥ (680-7)
नामु द्रिड़ु करि भगति हरि की भली प्रभ की सेव ॥३॥ (405-10)
नामु धनु गुण गाउ लाभु पूरै गुरि दिता ॥ (399-16)
नामु धनु नामु सुख राजा नामु कुट्मब सहाई ॥ (497-15)
नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥ (286-4)
नामु धिआइ महा सुखु पाइआ ॥ (103-16)
नामु धिआइनि साजना जनम पदारथु जीति ॥ (1425-14)
नामु धिआइनि सुख फल पाइनि आठ पहर आराधहि ॥ (750-2)
नामु धिआइन्हि रंग सिउ गुरमुखि नामि लगंन्हि ॥ (757-2)
नामु धिआई नामु उचरा नानक खसम रजाइ ॥२॥ (961-13)
नामु धिआई सदा सखाई सहज सुभाई गोविंदा ॥ (452-17)
नामु धिआए ता सतिगुरु भाए जो इछै सो फलु पाए ॥ (754-4)
नामु धिआए ता सुखु पाए बिनु नावै पिड़ काची ॥ (581-6)
नामु धिआए सदा सुखु पाए नामि रहै लिव लाए ॥ (246-16)
नामु धिआए सो सुखी तिसु मुखु ऊजलु होइ ॥ (44-18)
नामु धिआवउ सहजि समावउ नानक हरि गुन गाहि ॥३॥६॥१४६॥ (407-9)
नामु धिआवहि देव तेतीस अरु साधिक सिध नर नामि खंड ब्रहमंड धारे ॥ (1393-13)
नामु धिआवहि से जिणि चले गुर पूरे सनबंधु जीउ ॥२॥ (760-13)
नामु धिआवहु रिदै बसावहु तिसु बिनु को नाही ॥१॥ (407-13)
नामु धिआवहु सद सदा हरि हरि मनु रंगे ॥ (397-2)
नामु धिआवै ता सुखु पावै गुरमति कालु न ग्रासै ॥ (1110-9)
नामु धिआवै सरब फल पावै सो जनु सुखीआ हूआ ॥१॥ (407-15)

नामु न चेतहि उपावणहारा ॥ (232-1)
नामु न चेतहि मनमुख गावारा ॥ (1129-4)
नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुख का आचारु ॥ (508-18)
नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुख का बीचार ॥ (852-5)
नामु न चेतै बधा जमकाले ॥ (1066-5)
नामु न जपई किउ सुखु पावै बिनु नावै किउ सोहै ॥४॥ (1013-4)
नामु न जपहि ते आतम घाती ॥१॥ (188-5)
नामु न जानिआ राम का ॥ (156-17)
नामु न पाइआ तेरा अंधा भरमि भूला मनु मेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (989-6)
नामु न पावहि बिनु असनेह ॥ (158-19)
नामु न बिसरै तब जीवनु पाईऐ बिनती नानक इह सारै ॥२॥२९॥५२॥ (1214-15)
नामु न बूझहि भरमि भुलाना ॥ (1032-11)
नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाए ॥ (124-11)
नामु न लेवै मरै बिखु खाए ॥ (119-13)
नामु न विसरउ इकु खिनु चसा इहु कीजै दाना ॥१॥ रहाउ ॥ (396-18)
नामु न विसरै संत प्रसादि ॥ (1144-6)
नामु न सेवहि किउ सुखु पाईऐ बिनु नावै दुखु पाइदा ॥७॥ (1062-4)
नामु नरहर निधानु जिन कै रस भोग एक नराइणा ॥ (925-5)
नामु नव निधि गुर ते पाए ॥ (159-15)
नामु नव निधि पाई घर ही माहि ॥ (1175-14)
नामु नवै निधि पाइआ भरे अखुट भंडारा ॥३॥ (429-14)
नामु नानक साधू संगि मिलै ॥४॥४॥१४२॥ (211-4)
नामु नावणु नामु रस खाणु अरु भोजनु नाम रसु सदा चाय मुखि मिस्ट बाणी ॥ (1393-18)
नामु निधान नानक सुखी पेखि साध दरसना ॥४॥१३॥४३॥ (811-13)
नामु निधाना गुरमुखि पाईऐ कहु नानक विरली डीठा जीउ ॥४॥१५॥२२॥ (101-4)
नामु निधानु अखुटु गुरु देइ दारूओ ॥ (522-12)
नामु निधानु अखुटु है वडभागि परापति होइ ॥१॥ (29-19)
नामु निधानु अपारु भगता मनि वसै ॥ (761-16)
नामु निधानु उचरउ नित रसना नानक सद बलिहारु ॥२॥७०॥९३॥ (1222-11)
नामु निधानु गाउ गुन गोबिंद उधरु सागर के खात ॥१॥ (1120-15)
नामु निधानु गावत गुण गोबिंद लागो सहजि धिआना ॥१॥ (531-17)
नामु निधानु गुरमुखि जो जपते ॥ (257-18)
नामु निधानु जपहु दिनु राती मन चिंदे फल पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1271-9)
नामु निधानु जा की निरमल सोइ ॥ (376-18)
नामु निधानु जा के मन माहि ॥ (388-11)
नामु निधानु जिनि जनि जपिओ तिन के बंधन काटे ॥ (496-15)
नामु निधानु जिनि दिता भाई गुरमति सहजि समाउ ॥४॥ (638-14)

नामु निधानु धिआइ मन अटल ॥ (891-6)
नामु निधानु धिआईऐ मसतकि होवै भागु ॥ (47-17)
नामु निधानु धिआन अंतरगति तेज पुंज तिहु लोग प्रगासे ॥ (1404-17)
नामु निधानु निरमलु इहु थोकु ॥ (1152-11)
नामु निधानु पाइआ पर घरि जाइ न कोइ ॥२॥ (492-4)
नामु निधानु पाइआ वडभागी नानक नरकि न जाई ॥११॥ (915-18)
नामु निधानु लाभु नानक बसतु इह परवानु ॥२॥३॥११॥ (1121-8)
नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना नामु धिआइदा ॥१०॥ (1060-6)
नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना हरि गुण गाई ॥ (1265-8)
नामु निधानु विसारिआ दूजै लगा जाइ ॥ (647-15)
नामु निधानु सतगुरू दिखालिआ हरि रसु पीआ अघाए ॥३॥ (29-15)
नामु निधानु सतिगुरि दीआ सुखु नानक मन महि मंडु ॥४॥२०॥९०॥ (50-2)
नामु निधानु सतिगुरू द्रिड़ाइआ बिनसि न आवै जाई ॥१॥ (497-18)
नामु निधानु सतिगुरू सुणाइआ मिटि गए सगले रोगा जीउ ॥२॥ (99-12)
नामु निधानु सद नवतनु निरमलु इहु नानक हरि धनु खाटिआ ॥४॥१०॥१३१॥ (207-19)
नामु निधानु सद मनि वसै महली पावै थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (30-8)
नामु निधानु सहज सुखु नउ निधि ॥ (1086-1)
नामु निधानु सोई पाए क्रिपा करे प्रभु सोइ ॥३॥ (405-5)
नामु निधानु हरि मनि वसै हउमै दुखु सभु जाइ ॥ (65-7)
नामु निधानु हरि वणजीऐ हीरे परवाले ॥ (309-8)
नामु निरंजन अलखु है किउ लखिआ जाई ॥ (1242-16)
नामु निरंजन नालि है किउ पाईऐ भाई ॥ (1242-16)
नामु निरंजन वरतदा रविआ सभ ठांई ॥ (1242-17)
नामु निरंजनु अंतरि वसै मुरारे ॥ (127-1)
नामु निरंजनु अगमु अगोचरु सतिगुरि दीआ बुझाए ॥ (585-9)
नामु निरंजनु अति अगम अपारा ॥ (112-12)
नामु निरंजनु उचरां पति सिउ घरि जांई ॥ (1239-4)
नामु निरंजनु निरमला सुणिऐ सुखु होई ॥ (1239-12)
नामु निरंजनु नीरि नराइण ॥ (867-19)
नामु निरबाणु निधानु हरि उरि धरहु गुरू गुरु गुरु करहु गुरू हरि पाईऐ ॥३॥१५॥ (1401-4)
नामु पदारथु अमरु है हिरदै मंनि वसाए ॥ (1011-19)
नामु पदारथु अमुलु सा गुरमुखि पावै कोई ॥४॥ (425-15)
नामु पदारथु गुर ते पाइआ अखुट सचे भंडारी ॥११॥ (911-6)
नामु पदारथु जिन नर नही पाइआ से भागहीण मुए मरि जावै ॥३॥ (494-11)
नामु पदारथु नउ निधि पाए त्रै गुण मेटि समावणिआ ॥२॥ (128-16)
नामु पदारथु नउ निधि सिधि ॥ (387-7)
नामु पदारथु पाइआ अतुट भरे भंडार ॥ (1414-8)

नामु पदारथु पाइआ चिंता गई बिलाइ ॥ (653-2)
नामु पदारथु पाइआ लाभु सदा मनि होइ ॥६॥ (61-6)
नामु पदारथु पाईऐ अचिंतु वसै मनि आइ ॥ (552-7)
नामु पदारथु पाईऐ गुरमुखि सहजि सुभाइ ॥७॥ (67-6)
नामु पदारथु पाईऐ चिंता गई बिलाइ ॥ (1317-8)
नामु पदारथु मंनि वसाए ॥ (1063-10)
नामु पदारथु मनहि बसाईऐ ॥ (339-3)
नामु पदारथु मनि वसिआ नानक सहजि समाइ ॥४॥१९॥५२॥ (34-2)
नामु पदारथु सहजे पाइआ इह सतिगुर की वडिआई ॥३॥ (1265-9)
नामु पदारथु सहजे लइआ ॥ (1069-15)
नामु पदारथु होइ सकारथु हिरदै चरन बसाहि ॥१॥ (407-8)
नामु परमलु हिरदै रहिआ समाइ ॥३॥ (560-7)
नामु परिओ भगतु गोविंद का इह राखहु पैज तुमारी ॥१॥ (624-15)
नामु प्रभू का घटि घटि वूठा ॥३॥ (898-12)
नामु प्रभू का मनहि अराधा ॥३॥ (388-3)
नामु प्रभू का लागा मीठा ॥ (293-15)
नामु बिउहारा नानक आधारा नामु परापति लाहा ॥२॥६॥३७॥ (680-9)
नामु बिसारि करे रस भोग ॥ (240-5)
नामु बिसारि गिरै देखु भीति ॥ (1187-7)
नामु बिसारि चलहि अन मारगि नरक घोर महि पाहि ॥ (1225-15)
नामु बिसारि नानक पछुताना ॥५॥ (288-18)
नामु बिसारि पचहि अभिमानु ॥ (905-18)
नामु बिसारि बहुरि पछुतावै ॥१॥ (226-5)
नामु बिसारि लगै अन सुआइ ॥ (192-18)
नामु बिसारि लोभि मूलु खोइओ सिरि धरम राइ का डंडु परे ॥१०॥ (1014-9)
नामु बिसारि सहहि जम दूख ॥१॥ रहाउ ॥ (226-6)
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥ (595-10)
नामु भगत कै प्रान अधारु ॥ (189-11)
नामु भगत कै सुख असथानु ॥ (189-13)
नामु भगति दे निज घरि बैठे अजहु तिनाड़ी आसा ॥ (1109-4)
नामु भणहु सचु दोतु सवारि ॥ (1187-15)
नामु भै भाइ रिदै वसाही गुर करणी सचु बाणी ॥ (1275-7)
नामु मंत्रु गुरि दीनो जा कहु ॥ (257-19)
नामु मंनि वसै नामो सालाही ॥ (1062-2)
नामु मनि भावै कहै कहावै ततो ततु वखानं ॥ (635-6)
नामु मिलै चलै मै नालि ॥ (152-10)
नामु मिलै चानणु अंधिआरि ॥२॥ (796-2)

नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ बिनु नामै ध्रिगु जीवासु ॥ (40-4)
नामु मीठा मनहि लागा दूखि डेरा ढाहिआ ॥ (566-3)
नामु रतनु घरि परगटु होआ नानक सहजि समाइ ॥१॥ (593-19)
नामु रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ता की पूरन घाला ॥३॥ (615-9)
नामु रतनु तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भजि पइआ ॥२॥ (1334-15)
नामु रतनु निरमोलकु हीरा ॥ (904-2)
नामु रतनु मेरै भंडार ॥ (1144-4)
नामु रतनु लै गुझा रखिआ ॥ (130-11)
नामु रतनु वसै मनि आइ ॥१॥ (192-5)
नामु रतनु हरि अगह अतोले ॥ (1339-14)
नामु रतनु हरि नामु जपाहा ॥ (699-6)
नामु रतनु हीरा निरमोलु ॥ (905-16)
नामु रसाइणु भाइ लै परहरि दुखु भारी ॥१॥ रहाउ ॥ (1008-18)
नामु रसाइणु मनु त्रिपताइणु गुरमुखि अम्रितु पीवां जीउ ॥३॥ (99-7)
नामु रसालु जिना मनि वसिआ ते गुरमुखि पारि पइआ ॥३॥ (995-17)
नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥ (1429-9)
नामु रासि साझी करि जन सिउ जांउ न जम कै घाट ॥१॥ रहाउ ॥ (1269-6)
नामु रिदै अम्रितु मुखि नामु ॥ (152-16)
नामु लाहा लै गुरमति बिगसा ॥२॥ (367-17)
नामु लैत अठसठि मजनाइआ ॥१॥ (1142-10)
नामु लैत अति मूड़ सुगिआना ॥ (1142-11)
नामु लैत अनहद पूरे नाद ॥३॥ (1144-7)
नामु लैत किछु बिघनु न लागै ॥ (1150-6)
नामु लैत कोटि अघ नासे भगत बाछहि सभि धूरी ॥२॥ (672-17)
नामु लैत छुटे जंजारा ॥२॥ (1142-12)
नामु लैत जमु नेड़ि न आवै ॥ (1142-12)
नामु लैत ते सगल पवीत ॥ (1145-17)
नामु लैत दरगह सुखु पावै ॥ (1142-13)
नामु लैत दुखु दूरि पराना ॥ (1142-11)
नामु लैत परगटि उजीआरा ॥ (1142-12)
नामु लैत पापु तन ते गइआ ॥ (1142-9)
नामु लैत प्रभु कहै साबासि ॥ (1142-13)
नामु लैत मनु परगटु भइआ ॥ (1142-9)
नामु लैत सगल पुरबाइआ ॥ (1142-10)
नामु लैत सभ दूखह नासु ॥ (1150-7)
नामु लैत सरब सुख पाइआ ॥३॥ (1298-16)
नामु लैनि सि सोहहि तिन सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥ (438-13)

नामु लैन्हि सि सोहहि तिन्ह सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥४॥१॥४॥ (438-16)
नामु वखाणै सुणे नामु नामे बिउहारा ॥९॥ (418-15)
नामु वडाई जे मिलै सचि रपै पति होइ ॥ (61-13)
नामु वडाई सिरि करमां कीए ॥४॥ (1345-7)
नामु वरतणि नामो वालेवा नामु नानक प्रान अधारा ॥४॥९॥२०॥ (614-13)
नामु वसै तिसु अनहद वाजे ॥ (1082-2)
नामु विसारि अंति विगुता ॥ (112-5)
नामु विसारि अन रस लोभाने फिरि पछुताहि अभागा ॥ रहाउ ॥ (598-12)
नामु विसारि कहा सुखु पावहि ॥ (1029-16)
नामु विसारि चलहि अन मारगि अंत कालि पछुताही ॥७॥ (1153-16)
नामु विसारि चलहि अभिमानी उपजै बिनसि खपाइआ ॥७॥ (1041-3)
नामु विसारि चले मनि खोट ॥२॥ (152-11)
नामु विसारि चलै कूड़िआरो ॥ (1027-8)
नामु विसारि चलै मुहि कालै दरगह झूठु खुआरा हे ॥११॥ (1027-8)
नामु विसारि दोख दुख सहीऐ ॥ (1028-5)
नामु विसारि बिखिआ मनि राते बिरथा जनमु गवाए ॥ (1259-11)
नामु विसारि मनि तनि दुखु पाइआ ॥ (1064-8)
नामु विसारि माइआ मदु पीआ ॥ (832-7)
नामु विसारि लगहि अन लालचि बिरथा जनमु पराणी ॥१॥ रहाउ ॥ (1219-16)
नामु विहाझे नामु लए नामि रहे समाए ॥ (440-18)
नामु संगी सो मनि न बसाइओ ॥ (715-5)
नामु सखाई सदा मेरै संगि हरि नामु मो कउ निसतारै ॥१॥ (713-10)
नामु सति सति धिआवनहार ॥ (285-7)
नामु समालहि सुखि वसहि भाई सदा सुखु सांति सरीर ॥ (639-10)
नामु समालहु नामु संगरहु लाहा जग महि लेइ ॥ (938-3)
नामु सम्हालसि रूड़ही बाणि ॥ (1275-1)
नामु सम्हाले नामु संग्रहै नामे ही पति होइ ॥ (552-10)
नामु सलाहनि नामु मंनि असथिरु जगि सोई ॥ (1247-7)
नामु सलाहनि भाउ करि निज महली वासा ॥ (1247-12)
नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उर धारि ॥ (58-8)
नामु सलाहि सदा सुखु पाइआ निज घरि वासा पाइदा ॥१०॥ (1064-10)
नामु सलाहे सचे भावै ॥ (130-7)
नामु सलाहे सदा सदा नामे महलु पाई ॥४॥ (426-5)
नामु सहाई सदा संगि आगै लए छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (45-1)
नामु सारु हीए धारु तजु बिकारु मन गयंद सतिगुरू सतिगुरू सतिगुर गुबिंद जीउ ॥४॥९॥ (1403-7)
नामु सारु हीए धारु तजु बिकारु मन गयंद सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू सति जीउ ॥५॥१०॥ (1403-11)
नामु सालाही रंग सिउ गुर कै सबदि संतोखु ॥ (61-11)

नामु सिमरि चिंता सभ जाहि ॥१॥ (192-1)
नामु सिरोमणि सरब मै भगत रहे लिव धारि ॥ (1393-14)
नामु सुआमी का नानक टेक ॥४॥८७॥१५६॥ (197-10)
नामु सुआमी मनहि मंत ॥२॥ (1322-15)
नामु सुणत जमु दूरहु भागै ॥ (1150-7)
नामु सुणी नामो मनि भावै ॥ (367-6)
नामु सुणीऐ नामु मंनीऐ नामे वडिआई ॥ (426-5)
नामु सुणे नामु संग्रहै नामे लिव लावउ ॥ (318-5)
नामु सुणै नामो मनि भावै नामे ही त्रिपतावैगो ॥४॥ (1308-12)
नामु सुनत जनु बिछूअ डसाना ॥२॥ (893-1)
नामु सुनत दरद दुख लथा ॥ (265-6)
नामु स्मपति गुरि नानक कउ दीई ओह मरै न आवै जाई ॥५॥१॥८॥ (497-16)
नामु हमारी साची रासि ॥३॥ (1142-13)
नामु हमारे जीअ की रासि ॥ (863-5)
नामु हमारै अंतरजामी ॥ (1144-3)
नामु हमारै आवै कामी ॥ (1144-3)
नामु हमारै गुर की सेव ॥१॥ (1145-15)
नामु हमारै त्रिपति सुभोग ॥ (1145-18)
नामु हमारै निरमल बिउहार ॥३॥ (1145-18)
नामु हमारै निहचल धनी ॥ (1144-5)
नामु हमारै पूजा देव ॥ (1145-15)
नामु हमारै पूरन दानु ॥ (1145-16)
नामु हमारै पूरा साहु ॥ (1144-5)
नामु हमारै पूरे काज ॥ (1145-14)
नामु हमारै बेद अरु नाद ॥ (1145-14)
नामु हमारै बेपरवाहु ॥२॥ (1144-6)
नामु हमारै भोजन भाउ ॥ (1144-6)
नामु हमारै मजन इसनानु ॥ (1145-16)
नामु हमारै मन का सुआउ ॥ (1144-6)
नामु हमारै सउण संजोग ॥ (1145-17)
नामु हमारै सगल आचार ॥ (1145-18)
नामे आवन जावन रहे ॥ (863-7)
नामे उधरे कुल सबाए ॥७॥ (423-16)
नामे उधरे सभि जितने लोअ ॥ (1129-6)
नामे उपजै नामे बिनसै नामे सचि समाए ॥ (246-16)
नामे का चितु हरि सउ लागा ॥४॥३॥ (485-16)
नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे सगल बेदेसवा ॥४॥१॥ (1167-18)

नामे का सुआमी आनद करै ॥४॥१॥ (988-13)
नामे कारज सिधि है सहजे होइ सु होइ ॥ (548-19)
नामे की कीरति रही संसारि ॥ (1166-11)
नामे के सुआमी लाहि ले झगरा ॥ (485-18)
नामे के सुआमी सीअ बहोरी लंक भभीखण आपिओ हो ॥४॥२॥ (657-10)
नामे के स्वामी मीर मुकंद ॥४॥२॥३॥ (727-19)
नामे को सुआमी बीठलु ऐसा ॥२॥१॥ (1318-18)
नामे चितु लाइआ सचि नाइ ॥३॥ (1164-17)
नामे चे सुआमी बखसंद तूं हरी ॥३॥१॥२॥ (727-15)
नामे चे सुआमी बीठलो जिनि तीनै जरिआ ॥३॥२॥ (525-9)
नामे त्रिसना अगनि बुझै नामु मिलै तिसै रजाई ॥१॥ रहाउ ॥ (424-1)
नामे दरगह मुख उजले ॥ (863-6)
नामे देखि नराइनु हसै ॥३॥ (1163-19)
नामे नामि करे वीचारु ॥ (362-10)
नामे नामि मिलै वडिआई जिस नो मंनि वसाए ॥२॥ (1131-1)
नामे नामि मिलै वडिआई सहजि रहै रंगि राता हे ॥१४॥ (1052-4)
नामे नामि रते सुखु पाइआ नामि रहिआ लिव लाई हे ॥११॥ (1069-18)
नामे नामि रहै बैरागी साचु रखिआ उरि धारे ॥ (946-4)
नामे नाराइन नाही भेदु ॥२८॥१॥१०॥ (1166-12)
नामे प्रीति नाराइण लागी ॥ (1164-14)
नामे मधे रामु आछै राम सिआम गोबिंद गो ॥४॥३॥ (718-19)
नामे राता पवितु सरीरा ॥ (1052-2)
नामे राता सदा बैरागी नामु रतनु मनि ताहा हे ॥१३॥ (1054-4)
नामे राता हरि गुण गाउ ॥५॥ (415-1)
नामे राते अनदिनु माते नामै ते सुखु होई ॥ (946-13)
नामे राते सहजि समाए ॥ (842-12)
नामे राते हउमै जाइ ॥ (941-14)
नामे राते हरि गुण गावै ॥५॥ (231-4)
नामे सगले कुल उधरे ॥ (863-6)
नामे सर भरि सोना लेहु ॥१०॥ (1166-1)
नामे सुचि नामो पड़उ नामे चजु आचारु ॥१॥ रहाउ ॥ (355-3)
नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥४॥३॥७॥ (875-3)
नामे स्रीरंगु भेटल सोई ॥४॥४॥ (1164-4)
नामे हरि का दरसनु भइआ ॥४॥३॥ (1164-1)
नामे ही घटि चानणा नामे सोभा पाई ॥ (426-5)
नामे ही नामि वरतदे नामे वरतारा ॥ (426-4)
नामे ही सभ जाति पति नामे गति पाई ॥ (1240-3)

नामे ही सुखु ऊपजै नामे सरणाई ॥५॥ (426-6)
नामे ही हम निरभउ भए ॥ (863-7)
नामै की वडिआई ॥ (627-16)
नामै की सभ सेवा करै गुरमुखि नामु बुझाई ॥ (426-7)
नामै खिंथा नामै बसतरु ॥ (886-16)
नामै ते सभि ऊपजे भाई नाइ विसरिऐ मरि जाइ ॥ (603-6)
नामै सुरति वजी है दह दिसि हरि मुसकी मुसक गंधारे ॥१॥ (981-3)
नामै सुरति सुनी मनि भाई ॥ (367-7)
नामै ही ते सभु किछु होआ बिनु सतिगुर नामु न जापै ॥ (753-6)
नामै ही ते सभु परगटु होवै नामे सोझी पाई ॥ (946-13)
नामै ही ते सुखु पाईऐ सचै सबदि सुहाइ ॥१॥ (34-15)
नामो गति नामो पति जन की मानै जो जो होग ॥१॥ रहाउ ॥ (680-8)
नामो गावनु नामु धिआवनु नामु हमारे प्रान अधारै ॥१॥ रहाउ ॥ (1302-13)
नामो गिआनु नामु इसनाना हरि नामु हमारे कारज सवारै ॥ (1302-14)
नामो चितवै नामु पड़ै नामि रहै लिव लाइ ॥ (653-2)
नामो धनु नामो बिउहारु ॥१॥ (189-12)
नामो नामु धिआईऐ सदा सद इहु मनु नामे राता हे ॥१२॥ (1052-1)
नामो नामु मिली वडिआई नानक नामु मनि भावए ॥ (690-17)
नामो नामु सदा सुखदाता नामो लाहा पाइदा ॥६॥ (1062-3)
नामो नामु सुणी मनु सरसा ॥ (367-16)
नामो पूज कराई ॥१॥ रहाउ ॥ (910-6)
नामो बीजे नामो जमै नामो मंनि वसाए ॥ (246-13)
नामो वडिआई सोभा नानक खसमु पिआरा ॥४॥७॥१६॥ (1003-14)
नामो संगी जत कत जात ॥ (863-5)
नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥ (286-4)
नामो सेवि नामो आराधै बिनु नामै अवरु न कोइ जीउ ॥ (446-16)
नामो सेवे नामि सहजि समावै ॥ (232-8)
नामो ही इसु मन का अधारु ॥ (863-3)
नामो ही चिति कीनी ओट ॥ (863-3)
नामो ही मनि लागा मीठा ॥ (863-5)
नामो हो नामु साहिब को प्रान अधरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (211-5)
नारद कहत सुनत ध्रूअ बारिक भजन माहि लपटानो ॥१॥ (830-16)
नारद बचन बिआसु कहत है सुक कउ पूछहु जाई ॥ (1103-4)
नारद मुनि जन सुक बिआस जसु गावत गोबिंद ॥ (298-1)
नारद सारद करहि खवासी ॥ (479-1)
नारद सारद सेवक तेरे ॥ (1028-14)
नारदि कहिआ सि पूज करांही ॥ (556-9)

नारदी नरहर जाणि हदूरे ॥ (885-5)
नारदु ध्रू प्रहलादु सुदामा पुब भगत हरि के जु गणं ॥ (1405-10)
नारदु नाचै कलि का भाउ ॥ (349-17)
नाराइण ओट नानक दास गही ॥४॥१७॥१९॥ (868-6)
नाराइण कहत जमु भागि पलाइण ॥ (868-3)
नाराइण कहते नरकि न जाहि ॥ (868-1)
नाराइण कीने सूख अनंद ॥ (868-4)
नाराइण घटि घटि परगास ॥ (868-1)
नाराइण दंत भाने डाइण ॥२॥ (868-3)
नाराइण नरहर दइआल ॥ (897-4)
नाराइण निंदसि काइ भूली गवारी ॥ (695-2)
नाराइण प्रगट कीनो परताप ॥ (868-4)
नाराइण प्राण अधारा ॥ (623-16)
नाराइण बोहिथ संसार ॥ (868-2)
नाराइण मन माहि अधार ॥ (868-2)
नाराइण संत को माई बाप ॥३॥ (868-4)
नाराइण सद सद बखसिंद ॥ (868-4)
नाराइण सभ माहि निवास ॥ (868-1)
नाराइण साधसंगि नराइण ॥ (868-5)
नाराइण सेवि सगल फल पाहि ॥१॥ (868-2)
नाराइण हरि रंग रंगो ॥ (241-8)
नाराइणि लइआ नाठूंगड़ा पैर किथै रखै ॥ (315-7)
नाराइणु नह सिमरिओ मोहिओ सुआद बिकार ॥ (298-13)
नाराइणु सुप्रसंन होइ त सेवकु नामा ॥३॥१॥ (1196-1)
नाराइन नरपति नमसकारै ॥ (1301-17)
नाराइन मिले नानक एक ॥२॥ (285-12)
नारि न पुरखु कहहु कोऊ कैसे ॥ (685-17)
नारि न पुरखु न पंखणू साचउ चतुरु सरूपु ॥ (1010-14)
नारि पुरखु नही जाति न जनमा ना को दुखु सुखु पाइदा ॥४॥ (1035-14)
नारी अंदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ॥ (54-8)
नारी ते जो पुरखु करावै पुरखन ते जो नारी ॥ (1252-7)
नारी देखि विगासीअहि नाले हरखु सु सोगु ॥ (63-1)
नारी पुरख पिआरु प्रेमि सीगारीआ ॥ (148-11)
नारी पुरख विछुंनिआ विछुड़िआ मेलणहारो ॥ (580-14)
नारी पुरख सबाई लोइ ॥३॥ (223-4)
नारी पुरख सिरजिऐ बिखु माइआ मोहु पिआरो ॥ (580-10)
नारी पुरखु पुरखु सभ नारी सभु एको पुरखु मुरारे ॥ (983-3)

नारी बेरी घर दर देस ॥ (1327-8)
नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि ॥ (474-12)
नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥ (474-14)
नालि किराड़ा दोसती कूड़ै कूड़ी पाइ ॥ (1412-3)
नालि कुट्मबु साथि वरदाता ब्रहमा भालण स्रिसटि गइआ ॥ (350-17)
नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलीआह ॥ (85-3)
नालि नराइणु मेरै ॥ (630-2)
नालि होवंदा लहि न सकंदा सुआउ न जाणै मूड़ा ॥ (924-8)
नालीएर फलु सेबरि पाका मूरख मुगध गवार ॥१॥ (972-10)
नाले अलखु न लखीऐ मूले गुरमुखि लिखु वीचारा हे ॥१॥ (1028-19)
नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह ॥ (16-11)
नाव रूप भइओ साधसंगु भव निधि पारि परा ॥ (701-7)
नाव रूप साधसंग नानक पारगरामी ॥२॥५॥१३४॥ (1230-11)
नावण चले तीरथी मनि खोटै तनि चोर ॥ (789-9)
नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥ (1116-3)
नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥१॥ (1116-6)
नावन कउ तीरथ घने मन बउरा रे पूजन कउ बहु देव ॥ (336-4)
नावहि धोवहि पूजहि सैला ॥ (904-14)
नावहु धोवहु तिलकु चड़ावहु सुच विणु सोच न होई ॥६॥ (903-3)
नावहु भुला जगु फिरै बेतालिआ ॥२४॥ (149-8)
नावहु भुला ठउर न पाए आइ जाइ दुखु पाइदा ॥५॥ (1034-14)
नावहु भुली चोटा खाए ॥ (1025-1)
नावहु भूली जे फिरा फिरि फिरि आवउ जाउ ॥७॥ (57-3)
नावहु भूले थाउ न कोई ॥३॥ (831-13)
नावहु भूले देइ सजाए ॥ (127-2)
नावै अंदरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ ॥५॥ (55-14)
नावै का वापारी होवै गुर सबदी को पाइदा ॥३॥ (1062-19)
नावै की कीमति मिति कही न जाइ ॥ (666-1)
नावै की पैज रखदा आइआ ॥ (1271-6)
नावै की वडिआई वडी है नित सवाई चड़ै चड़ाही ॥२॥ (309-3)
नावै जेवड होर दाति नाही तिसु रूपु न रिखिआ ॥ (787-13)
नावै जेवडु होरु धनु नाही कोइ ॥ (364-13)
नावै धउले उभे साह ॥ (137-18)
नावै नो लोचै जेती सभ आई ॥ (1064-13)
नावै नो सभ लोचदी गुरमती पाइआ ॥ (789-12)
नाह अपने संगि दासी मै भगति हरि की भावए ॥ (843-9)
नाह बिनु घर वासु नाही पुछहु सखी सहेलीआ ॥ (242-11)

नाहि त चली बेगि उठि नंगे ॥३॥ (872-5)
नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै ॥ (703-5)
नाहिन गुनु नाहिन कछु बिदिआ धरमु कउनु गजि कीना ॥ (902-2)
नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाई ॥२॥ (204-3)
नाही त घर को बापु रिसाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1163-18)
नाही देखि न भाजीऐ परम सिआनप एह ॥११॥ (340-14)
नाही बिनु हरि नाउ ॥ (1341-7)
नाही रे नाम तुलि मन चरन कमल लागे ॥१॥ रहाउ ॥ (1229-15)
निंद चिंद कउ बहुतु उमाहिओ बूझी उलटाइआ ॥२॥ (402-14)
निंद चिंद पर दूखना ए खिन महि जारी ॥ (810-16)
निंदउ नाही काहू बातै एहु खसम का कीआ ॥ (611-3)
निंदउ निंदउ मो कउ लोगु निंदउ ॥ (339-2)
निंदक कउ अगनि महि पावै ॥१॥ (1138-11)
निंदक कउ दई छोडै नाहि ॥२॥ (1152-2)
निंदक कउ फिटके संसारु ॥ (1151-18)
निंदक कउ लागै दुख सांगै ॥ (1152-3)
निंदक का कहिआ कोइ न मानै ॥ (1152-1)
निंदक का झूठा बिउहारु ॥ (1151-18)
निंदक का परगटि पाहारा ॥ (875-15)
निंदक का माथा ईहां ऊहा काला ॥३॥ (1137-17)
निंदक का मुखु काला होआ दीन दुनीआ कै दरबारि ॥२॥१५॥ (674-17)
निंदक का मैला आचारु ॥ (1151-18)
निंदक की गति कतहूं नाही खसमै एवै भाणा ॥ (381-1)
निंदक की गति कतहू नाहि ॥ (1145-11)
निंदक की प्रभि पति गवाई ॥ (202-19)
निंदक की होई बिपरीति ॥२॥ (1138-12)
निंदक के मुख काले कीने जन का आपि सहाई ॥१॥ (675-4)
निंदक कै मुखि कीनो रोगु ॥ (869-11)
निंदक कै मुखि छाइआ ॥ (629-8)
निंदक कै मुहि लागै छारु ॥१॥ (868-8)
निंदक झूठु बोलि पछुताने ॥ (1152-1)
निंदक टिकनु न पावनि मूले ऊडि गए बेकार ॥१॥ रहाउ ॥ (683-4)
निंदक दुसट वडिआई वेखि न सकनि ओन्हा पराइआ भला न सुखाई ॥ (850-17)
निंदक नर काले मुख निंदा जिन्ह गुर की दाति न भाई ॥४॥ (505-5)
निंदक निंदा करि पचे जमकालि ग्रसीए ॥१॥ रहाउ ॥ (815-3)
निंदक पकड़ि पछाड़िअनु झूठे दरबारे ॥ (323-3)
निंदक मारि चरन तल दीने अपुनो जसु वरताइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1270-1)

निंदक मारि पाए सभि धरनि ॥४॥ (869-14)
निंदक मारे ततकालि खिनु टिकण न दिते ॥ (523-19)
निंदक माहि हमारा चीतु ॥ (339-4)
निंदक मिरतक होइ गए तुम्ह होहु निचिंद ॥१॥ रहाउ ॥ (818-19)
निंदक लाइतबार मिले हड़्हवाणीऐ ॥ (1288-2)
निंदकां पासहु हरि लेखा मंगसी बहु देइ सजाई ॥ (316-6)
निंदका के मुह काले करे हरि करतै आपि वधाई ॥ (307-2)
निंदकि अहिला जनमु गवाइआ ॥ (380-18)
निंदकु ऐसे ही झरि परीऐ ॥ (823-6)
निंदकु गुर किरपा ते हाटिओ ॥ (714-4)
निंदकु जमदूती आइ संघारिओ देवहि मूंड उपरि मटाक ॥ (1224-14)
निंदकु डूबा हम उतरे पारि ॥३॥२०॥७१॥ (339-6)
निंदकु निंदा करि मलु धोवै ओहु मलभखु माइआधारी ॥ (507-6)
निंदकु निंदै मुझै पिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ (1330-16)
निंदकु प्रभू भुलाइआ कालु नेरै आइआ हरि जन सिउ बादु उठरीऐ ॥ (823-9)
निंदकु मुआ उपजि वड तापु ॥२॥ (199-12)
निंदकु मुआ निंदक कै नालि ॥ (1151-19)
निंदकु साकतु खवि न सकै तिलु अपणै घरि लूकी लाई ॥६॥ (1191-17)
निंदकु सो जो निंदा होरै ॥ (339-5)
निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥ (875-16)
निंदा करते जनमु सिरानो कबहू न सिमरिओ रामु ॥३॥ (1105-18)
निंदा करदा पचि मुआ विचि देही भखै ॥ (315-8)
निंदा करहि सिरि भारु उठाए ॥ (372-16)
निंदा करि करि नरक निवासी अंतरि आतम जापै ॥ (1013-2)
निंदा करि करि पचहि घनेरे ॥ (806-4)
निंदा करि करि बहु भारु उठावै बिनु मजूरी भारु पहुचावणिआ ॥४॥ (118-6)
निंदा करि करि बहुतु विगूता गरभ जोनि महि किरति पइआ ॥ (900-10)
निंदा करै सु हमरा मीतु ॥ (339-4)
निंदा कहा करहु संसारा ॥ (875-15)
निंदा चिंदा करहि पराई झूठी लाइतबारी ॥ (155-1)
निंदा जन कउ खरी पिआरी ॥ (339-2)
निंदा तेरी जो करे सो वंञै चूरु ॥ (967-19)
निंदा दुसटी ते किनि फलु पाइआ हरणाखस नखहि बिदारे ॥ (601-13)
निंदा बापु निंदा महतारी ॥१॥ रहाउ ॥ (339-2)
निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि ॥ (755-7)
निंदा हमरा करै उधारु ॥ (339-5)
निंदा हमरी प्रेम पिआरु ॥ (339-5)

निंदा होइ त बैकुंठि जाईऐ ॥ (339-3)
निंदु बिंदु नही जीउ न जिंदो ॥ (1035-19)
निआउ तिसै का है सद साचा विरले हुकमु मनाई ॥१७॥ (912-10)
निउली करम करै बहु आसन ॥ (265-14)
निउली करम खटु करम करीजै ॥ (905-8)
निउली करम भुइअंगम भाठी ॥ (1043-13)
निकटि आनि प्रिअ सेज धरी ॥ (384-13)
निकटि करि जाणहु सदा प्रभु हाजरु किसु सिउ करहु बुराई ॥३॥ (883-6)
निकटि जीअ कै सद ही संगा ॥ (376-5)
निकटि न जानै बोलै कूड़ु ॥ (1139-12)
निकटि न देखै पर ग्रिहि जाइ ॥ (1139-11)
निकटि नीरु पसु पीवसि न झागि ॥२॥ (328-8)
निकटि पेखु प्रभु करणहार ॥ (1183-9)
निकटि बसंतो बांसो नानक अहं बुधि न बोहते ॥५॥ (1360-10)
निकटि बुझै सो बुरा किउ करै ॥ (1139-9)
निकटि वरतनि सा सदा सुहागनि दह दिस साई जानी ॥ (1228-15)
निकटि वसतु कउ जाणै दूरे पापी पाप कमाही ॥१॥ (741-5)
निकटि वसै देखै सभु सोई ॥ (831-9)
निकटि वसै नाही प्रभु दूरि ॥ (736-19)
निकटि वसै नाही प्रभु दूरे ॥२॥ (563-5)
निकटि वसै नाही हरि दूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (165-8)
निकटि सुनउ अरु पेखउ नाही भरमि भरमि दुख भरीआ ॥ (1209-4)
निकसि जातउ रहै असथिरु जामि सचु पछाणिआ ॥ (242-14)
निकसिआ फूक त होइ गइओ सुआहा ॥२॥ (392-3)
निकसु रे पंखी सिमरि हरि पांख ॥ (204-9)
निकुटी देह देखि धुनि उपजै मान करत नही बूझै ॥ (93-13)
निखुटि न जाई मूलि अतुल भंडारिआ ॥ (320-4)
निगम हुसीआर पहरूआ देखत जमु ले जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (972-8)
निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ ॥ (638-9)
निगुरे कउ गति काई नाही ॥ (361-3)
निचीजिआ चीज करे मेरा गोविंदु तेरी कुदरति कउ कुरबाणु ॥ रहाउ ॥ (624-16)
निज आतमै रहिआ भरपूरि ॥३॥ (657-3)
निज करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥ (1429-1)
निज घरि जाइ अम्रित रसु पीआ बिनु नैना जगतु निहारे ॥७॥ (983-6)
निज घरि जाइ बहै सचु पाए अनदिनु नालि पिआरे ॥ (689-8)
निज घरि तिसहि थानि हां ॥ (409-15)
निज घरि धार चुऐ अति निरमल जिनि पीआ तिन ही सुखु लहीआ ॥६॥ (835-2)

निज घरि पारसु तजहु गुन आन ॥३॥ (325-7)
निज घरि बिआपि रहिआ निज ठाई ॥७॥ (221-19)
निज घरि बैसि रहे भउ खाइआ ॥ (1022-17)
निज घरि बैसि सहज घरु लहीऐ ॥ (227-14)
निज घरि महलु अपार को अपर्मपरु सोई ॥ (228-16)
निज घरि महलु पछाणीऐ नदरि करे मलु धोइ ॥३॥ (18-16)
निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥३॥ (13-18)
निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥३॥ (205-16)
निज घरि वसहि अम्रितु पीवहि ता सुख लहहि महलु ॥१॥ रहाउ ॥ (37-2)
निज घरि वसिआ गुण गाइ अनंता ॥ (371-11)
निज घरि वसिआ तिथै मोहु न माइआ ॥ (1050-6)
निज घरि वसिआ प्रभ की रजाइ ॥१॥ (233-1)
निज घरि वसै सहजि सुभाइ ॥ (1129-12)
निज घरि वासा तह मगु न चालणहार ॥३॥ (1275-3)
निज घरि वासा पाइआ हरि हरि नामि समाइ ॥१॥ (66-2)
निज घरि वासा पाईऐ सचि सिफति समावहि ॥ (950-13)
निज घरि वासा पाए सबदु वजाए सदा सुहागणि नारी ॥ (568-8)
निज घरि वासा पावै सोइ ॥३॥ (1175-1)
निज घरि वासा सदा सोहदे नानक तिन मिलिआ सुखु पाउ ॥२॥ (853-6)
निज घरि वासा सदा हरि सेवनि हरि दरि सोभा पाई ॥२॥ (1233-11)
निज घरि वासा हरि गुण गाए ॥ (798-6)
निज घरि वासु अमर पदु पावै ॥ (1342-8)
निज घरि वासै साचि समाए ॥ (222-18)
निज घरि सूतड़ीए पिरमु जगाए राम ॥ (844-2)
निज धनु गिआनु भगति गुरि दीनी तासु सुमति मनु लागा ॥ (336-9)
निज निरखत गत बिउहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (655-14)
निज पद ऊपरि लागो धिआनु ॥ (1159-15)
निज भगती सीलवंती नारि ॥ (370-18)
निज भाउ भइआ भ्रमु भागा ॥ (657-13)
निज मंदरि पिरीआ ॥ (746-5)
निझर धार चुऐ अति निरमल इह रस मनूआ रातो रे ॥ (969-5)
निझरु झरै सहज धुनि लागै घर ही परचा पाईऐ ॥ (730-15)
निडर हूआ डरु उर होइ भागै ॥१९॥ (341-7)
निडरिआ डरु जाणीऐ बाझु गुरू गुबारु ॥३॥ (54-18)
निडरिआ डरु लगि गरबि सि गालिआ ॥ (149-8)
निडरु बूडि मरै पति खोइ ॥ (840-12)
निडरे कउ कैसा डरु कवनु ॥ (221-16)

नित अनंद सुख पाइआ ॥ (628-17)
नित आसा मनि चितवै मन त्रिसना भुख लगाइआ ॥ (776-10)
नित उठि कोरी गागरि आनै लीपत जीउ गइओ ॥ (856-3)
नित उठि गावहु प्रभ की बाणी ॥ (1340-8)
नित उठि हासै हीगै मरै ॥१॥ (326-5)
नित उपाव करै माइआ धन कारणि अगला धनु भी उडि गइआ ॥ (307-5)
नित करहि मुनि जन सेव ॥६॥ (837-16)
नित गाईऐ हरि दूख बिसारनो ॥१॥ रहाउ ॥ (801-1)
नित गावहि हरि हरि गुण जास ॥१॥ (176-18)
नित चरन सेवहु साध के तजि लोभ मोह बिकार ॥ (986-10)
नित चुगली करे अणहोदी पराई मुहु कढि न सकै ओस दा काला भइआ ॥ (308-12)
नित जपिअहु संतहु राम नामु भउजल बिखु तारी ॥ (586-7)
नित जपिअहु हरि हरि दिनसु राति हरि दरगह ढोईऐ ॥ (587-9)
नित जपीऐ सासि गिरासि नाउ परवदिगार दा ॥ (518-18)
नित जीवण कउ चितु गड़्ह मंडप सवारिआ ॥ (1248-18)
नित जोबनु जावै मेरे पिआरे जमु सास हिरे ॥ (451-18)
नित झहीआ पाए झगू सुटे झखदा झखदा झड़ि पइआ ॥ (307-5)
नित तीरथि नावै न जाइ अहंकारा ॥ (230-11)
नित दिनसु राति लालचु करे भरमै भरमाइआ ॥ (166-13)
नित देखै सुआमी हजूरि ॥३॥ (1184-13)
नित देवहु दानु दइआल प्रभ हरि नामु धिआइआ ॥ (91-15)
नित नानक नामु धिआई ॥२॥२३॥८७॥ (630-1)
नित नानकु चितवै सचु अरदासि ॥४॥४५॥५६॥ (900-19)
नित नित काइआ मजनु कीआ नित मलि मलि देह सवारे ॥ (982-19)
नित नित खरा समालीऐ सचु सउदा पाईऐ ॥ (421-15)
नित नित खुसीआ मनु करे नित नित मंगै सुख जीउ ॥ (751-7)
नित नित जागरणु करहु सदा सदा आनंदु जपि जगदीसोरा ॥ (1201-7)
नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ (12-13)
नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ (157-11)
नित नित दयु समालीऐ ॥ (132-8)
नित नित नानक राम नामु समालि ॥४॥१०५॥१७४॥ (200-18)
नित नित रिदै समालि प्रीतमु आपणा ॥ (752-3)
नित नित लेहु न छीजै देह ॥ (1257-1)
नित नित सेव करी हरि जन की जो हरि हरि कथा सुणाए ॥ (561-19)
नित निहफल करम कमाइ बफावै दुरमतीआ ॥ (723-9)
नित पखा फेरी सेव कमावा तिसु आगै पाणी ढोवां ॥ (561-19)
नित पुराण बाचीअहि बेद ब्रहमा मुखि गावै ॥ (1409-13)

नित प्रतिपारै बाप जैसे माई ॥१॥ (202-13)
नित बाजे अनहत बीना ॥ रहाउ ॥ (622-11)
नित भजहु सुआमी अंतरजामी सफल जनमु सबाइआ ॥ (1312-8)
नित मंगलु राजा राम राइ को ॥१॥ रहाउ ॥ (695-10)
नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु ॥३॥ (23-13)
नित रवै सोहागणी साची नदरि रजाइ ॥४॥ (54-7)
नित रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु ॥ (968-4)
नित सउदा सूदु कीचै बहु भाति करि माइआ कै ताई ॥ (166-18)
नित सारि समाल्हे सभ जीअ जंत हरि वसै निकटि सभ जउला ॥ (1315-13)
नित सिमरि प्रभ गुणतासु ॥ (837-14)
नित सुहागणि सदा पिरु रावै ॥ (561-8)
नित सेविहु साहिबु आपणा सतसंगि मिलाईआ ॥ (1098-15)
नित हरि गुण गावह हरि नामि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (166-16)
नित हरि जपु जापै जपि हरि सुखु पावै ॥ (998-8)
नितप्रति इसनानु सरीरं ॥ (1351-14)
नितप्रति नावणु राम सरि कीजै ॥ (198-18)
नितप्रति हिरहि पर दरबु छिद्र कत ढाकीअहि ॥ (1362-7)
निति अहिनिसि हरि प्रभु सेविआ सतगुरि दीआ नामु ॥२॥ (21-11)
निति जपहि तेरे दास पुरख अतोलई जीउ ॥ (691-12)
निथावे कउ गुरि दीनो थानु ॥ (395-18)
निथावे कउ तुम्ह थानि बैठावहु ॥ (1146-4)
निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥ (266-10)
निद्रा बिनु नरु पै सोवै ॥ (1194-5)
निधनिआ धनु निगुरिआ गुरु निमाणिआ तू माणु ॥ (992-8)
निधरिआ धर एकु नामु निरंजनो जीउ ॥ (691-5)
निधरिआ धर निगतिआ गति निथाविआ तू थाउ ॥ (1202-14)
निधि गुण गावा देखि हदूरि ॥७॥ (411-19)
निधि नामु नानक मोरै ॥२॥३॥१५४॥ (408-18)
निधि निधान अम्रितु पीआ मनि तनि आनंद ॥ (814-14)
निधि निधान नानक हरि सेवा अवर सिआनप सगल अकाथ ॥२॥६॥१२२॥ (828-19)
निधि निधान हरि अम्रित पूरे ॥ (258-1)
निधि सिधि चरण गहे ता केहा काड़ा ॥ (461-1)
निधि सिधि निरमल नामु बीचारु ॥ (220-19)
निधि सिधि रिधि हरि हरि हरि मेरै ॥ (101-5)
निपटि बाजी हारि मूका पछुताइओ मनि भोरा ॥२॥ (408-8)
निबही नाम की सचु खेप ॥ (1226-13)
निबाहि लेहु मो कउ पुरख बिधाते ओड़ि पहुचावहु दाते ॥१॥ रहाउ ॥ (209-2)

निमख एक हरि नामु देइ मेरा मनु तनु सीतलु होइ ॥ (44-7)
निमख काम सुआद कारणि कोटि दिनस दुखु पावहि ॥ (403-5)
निमख घरी न सिमरि सुआमी जीउ पिंडु जिनि दीन ॥१॥ रहाउ ॥ (1225-4)
निमख न छोडै सद ही साथ ॥२॥ (1151-3)
निमख न त्रिसना तेरी लाथे ॥ (180-13)
निमख न बिछुरै घरी न बिसरै सद संगे जत जाइआ ॥१॥ (1212-11)
निमख न बिसरउ तुम्ह कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥१॥ रहाउ ॥ (496-5)
निमख न बिसरउ मन ते हरि हरि साधसंगति महि पाइआ ॥१॥ (495-15)
निमख न बिसरउ हीए मोरे ते बिसरत जाई हउ मरत ॥१॥ (529-2)
निमख न बिसरहि हरि चरण तुम्हारे ॥ (743-12)
निमख न बिसरै जीअ भगतन कै आठ पहर मन ता कउ जापि ॥१॥ रहाउ ॥ (900-2)
निमख न लीन भइओ चरनन सिंउ बिरथा अउध सिरानी ॥२॥ (220-11)
निमख न विसरहु प्रभ मेरे सुआमी ॥ (1085-5)
निमख न विसारहु सेवहु सारिगपानी ॥१॥ (1337-15)
निमख न वीसरै हां ॥ (410-11)
निमख निमख एही आराधउ ॥ (391-11)
निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥ (265-15)
निमख निमख जपि नानक हरी ॥८॥५॥ (269-13)
निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥ (274-2)
निमख निमख तिसु नमसकार ॥१॥ रहाउ ॥ (1181-14)
निमख निमख तुम ही प्रतिपालहु हम बारिक तुमरे धारे ॥१॥ (674-1)
निमख निमख वसै तिन्ह नाले ॥३॥ (739-11)
निमख निमख हरि हरि हरि धिआउ ॥ (180-15)
निमख बचनु प्रभ हीअरै बसिओ सगल भूख मेरी लाथे ॥१॥ रहाउ ॥ (1212-17)
निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥ (277-8)
निमख माहि नानक समझाई ॥४७॥ (260-5)
निमख माहि होवै तेरी छोटि ॥३॥ (177-2)
निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥ (487-3)
निमाणिआ गुरु माणु है गुरु सतिगुरु करे साबासि ॥ (41-4)
निमाणिआ प्रभु माणु तूं तेरै संगि समाउ ॥३॥ (46-15)
निमाणिआ हरि माणु है हरि प्रभु हरि आपै राम ॥ (844-15)
निमाणी निताणी हरि बिनु किउ पावै सुख महली ॥ (1108-8)
निमाणे कउ प्रभ देतो मानु ॥ (1146-5)
निमाणे माणु करहि तुधु भावै ॥ (1071-5)
निमाने कउ गुरि कीनो मानु ॥ (395-18)
निमाने कउ जो देतो मानु ॥ (863-9)
निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥ (266-10)

निमु बिरखु बहु संचीऐ अम्रित रसु पाइआ ॥ (1244-2)
निरंकार आकार आपि निरगुन सरगुन एक ॥ (250-11)
निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु ॥३॥ (595-15)
निरंकार कै वसै देसि हुकमु बुझि बीचारु पावै ॥ (1395-17)
निरंकार महि आकारु समावै ॥ (414-18)
निरंकारि आकारु उपाइआ ॥ (1066-1)
निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ ॥ (1395-6)
निरंकारि जो रहै समाइ ॥ (953-6)
निरंकारु अछल अडोलो ॥ (1083-3)
निरंकारु आकार अछल पूरन अबिनासी ॥ (1386-6)
निरंकारु आकारु है आपे आपे भरमि भुलाए ॥ (1257-13)
निरंकारु निरंजनु हरि अगमु किआ कहि गुण गाईऐ ॥ (644-8)
निरंकारु निरवैरु अवरु नही दूसर कोई ॥ (1404-3)
निरंकारु प्रभु सदा सलामति कहि न सकै कोऊ तू कद का ॥ (1403-13)
निरखउ तुमरी ओरि हरि नीत ॥ (681-14)
निरखत निरखत जब जाइ पावा ॥ (341-15)
निरखत निरखत रैनि सभ निरखी मुखु काढै अम्रितु पीजै ॥५॥ (1326-4)
निरखत नैन रहे रतवाई ॥ (341-15)
निरगुण कउ संगि लेहु रलाए ॥ (1078-13)
निरगुण कथा कथा है हरि की ॥ (164-4)
निरगुण देह साच बिनु काची मै पूछउ गुरु अपना ॥ (1274-7)
निरगुण नामु निधानु है सहजे सोझी होइ ॥ (68-14)
निरगुण निरंकार अबिनासी अतुलो तुलिओ न जावत ॥ (1205-8)
निरगुण निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (406-12)
निरगुण रामु गुणह वसि होइ ॥ (222-2)
निरगुणवंतड़ीए पिरु देखि हदूरे राम ॥ (567-19)
निरगुणीआरे कउ बखसि लै सुआमी आपे लैहु मिलाई ॥ (1333-6)
निरगुणु नीचु अनाथु मै नही दोख बीचारे ॥ (1122-16)
निरगुणु मुगधु अजाणु अगिआनी करम धरम नही जाणा ॥ (748-18)
निरगुणु राखि लीआ संतन का सदका ॥ (1117-16)
निरगुणु सरगुणु आपे सोई ॥ (128-13)
निरगुणु सरगुणु हरि हरि मेरा कोई है जीउ आणि मिलावै जीउ ॥१॥ (98-2)
निरगुन करता सरगुन करता ॥ (862-6)
निरगुन ते सरगुन द्रिसटारं ॥ (250-13)
निरगुन नीच अनाथ अपराधी ओट संतन की आही ॥ (610-12)
निरगुन हरीआ सरगुन धरीआ अनिक कोठरीआ भिंन भिंन भिंन भिन करीआ ॥ (746-4)
निरगुनि करूपि कुलहीण नानक हउ अनद रूप सुआमी भरत ॥२॥३॥ (529-3)

निरगुनि निमाणी अनाथि बिनवै मिलहु प्रभ किरपा निधे ॥ (543-3)
निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥ (266-16)
निरगुनीआरे कउ गुनु कीजै हरि नामु मेरा मनु जापे ॥ (209-6)
निरगुनीआरे की बेनती देहु दरसु हरि राइओ ॥७॥ (241-18)
निरगुनीआरे गुनु नही कोई तुम दानु देहु मिहरवाना ॥२॥ (613-13)
निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥ (287-17)
निरगुनु मिलिओ वजी वधाई ॥१॥ रहाउ ॥ (392-8)
निरजीउ पूजहि मड़ा सरेवहि सभ बिरथी घाल गवावै ॥३॥ (1264-3)
निरति करी इहु मनु नचाई ॥ (506-4)
निरति करे करि मनूआ नाचै आणे घूघर साजा ॥१॥ (884-13)
निरति करे बहु वाजे वजाए ॥ (364-14)
निरति न पवै असंख गुण ऊचा प्रभ का नाउ ॥ (704-12)
निरति न पाईआ गणी सहंस ॥ (878-11)
निरदइआ नही जोति उजाला ॥ (903-12)
निरदै जंतु तिसु दइआ न पाई ॥२॥ (745-3)
निरधन आदरु कोई न देइ ॥ (1159-3)
निरधन कउ तुम देवहु धना ॥ (1146-1)
निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले ॥ (679-8)
निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥ (266-10)
निरधन भयं धनवंतह रोगीअं रोग खंडनह ॥ (1355-16)
निरधनु सरधनु दोनउ भाई ॥ (1159-5)
निरबाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै ॥१॥ (747-16)
निरबाण पदु इकु हरि को नामु ॥२॥ (1163-12)
निरबिघन भगति भजु हरि हरि नाउ ॥ (1150-8)
निरबिघन होइ सभ थांई वूठे ॥ (801-18)
निरभउ आपि निरंतरि जोति ॥ (413-9)
निरभउ कहउ सोइ हां ॥ (410-4)
निरभउ कीए सेवक दास अपने सगले दूख बिदारै ॥ (1218-10)
निरभउ कै घरि ताड़ी लावै ॥५॥ (226-18)
निरभउ कै घरि बजावहि तूर ॥ (971-7)
निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ (293-8)
निरभउ जोगी निरंजनु धिआवै ॥ (223-17)
निरभउ दाता सदा मनि होइ ॥ (361-6)
निरभउ दाता हरि जीउ मेरै नालि ॥ (1154-7)
निरभउ नामु जपउ तेरा रसना ॥२॥ (181-16)
निरभउ नामु जपहु हरि रंगे ॥३॥ (684-2)
निरभउ नामु धिआइआ ॥ (622-15)

निरभउ नामु विसारिआ नालि माइआ रचा ॥ (1099-14)
निरभउ निरंकार दातारु ॥ (893-2)
निरभउ निरंकार नही चीनिआ जिउ हसती नावाए ॥३॥ (213-1)
निरभउ निरंकारु अलखु है गुरमुखि प्रगटीआ ॥ (516-16)
निरभउ निरंकारु दइअलीआ ॥ (1004-6)
निरभउ निरंकारु निरवैरु पूरन जोति समाई ॥ (596-11)
निरभउ निरंकारु भव खंडनु सभि सुख नव निधि देसी ॥१॥ (608-4)
निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥ (465-9)
निरभउ निरंकारु सति नामु ॥ (998-10)
निरभउ निरवैर अथाह अतोले ॥ (99-6)
निरभउ पूरि रहे भ्रमु भागा कहि कबीर जन दासा ॥४॥१॥ (1123-7)
निरभउ बालकु मूलि न डरई मेरै अंतरि गुर गोपाला ॥ (1154-13)
निरभउ भए खसम रंगि राते जम की त्रास बुझाए ॥ (577-3)
निरभउ भए गुर चरणी लागे इक राम नाम आधारा ॥२॥ (609-17)
निरभउ भए गोबिंद गुन गावत साधसंगि दुखु जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (899-14)
निरभउ भए नानक भउ मिटिआ हरि पाइओ पाठंगा ॥२॥७॥३०॥ (1210-9)
निरभउ भए परान चिंता सगल लही ॥ (458-10)
निरभउ भए राम बल गरजित जनम मरन संताप हिरिओ ॥२॥ (1105-11)
निरभउ भए संत भ्रमु डारिओ पूरन सरबागिओ ॥२॥ (215-2)
निरभउ भए सगल भउ मिटिआ चरन कमल आधारै ॥ (1217-15)
निरभउ भए सगल भउ मिटिआ राखे राखनहारे ॥ (383-5)
निरभउ भए सगल भै खोए गोबिद चरण ओटाई ॥ (1000-11)
निरभउ भए सदा सुख माणे नानक हरि गुण गाइ ॥२॥१७॥ (675-5)
निरभउ भए हिरदै नामु वसिआ अपुने सतिगुर कै मनि भाणे ॥३॥ (614-17)
निरभउ भै मनु होइ हउमै मैलु गवाइआ बलि राम जीउ ॥ (774-2)
निरभउ मनि वसिआ लिव लाई ॥ (1023-3)
निरभउ संगि तुमारै बसते इहु डरनु कहा ते आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (206-5)
निरभउ सतिगुरु है रखवाला ॥ (1042-8)
निरभउ सदा दइआलु है सभना करदा सार ॥ (27-11)
निरभउ सबदु गुरू सचु जाता जोती जोति मिलाइदा ॥८॥ (1034-18)
निरभउ सो अभ अंतरि वसिआ ॥ (1042-12)
निरभउ सो सिरि नाही लेखा ॥ (1042-10)
निरभउ होइ भजहु जगदीसै एहु पदारथु वडभागि लहे ॥ (824-19)
निरभउ होइ भजहु भगवान ॥ (201-8)
निरभउ होइ रहे लिव एकै नानक हरि मनु मानी ॥२॥१॥ (711-14)
निरभउ होइओ भइआ निहंगा ॥ (392-2)
निरभै साध परे हरि सरना ॥२॥ (1340-3)

निरभै होइ कै गुन रवै जत पेखउ तत सोइ ॥५॥ (1364-15)
निरभै होइ न हरि भजे मन बउरा रे गहिओ न राम जहाजु ॥१॥ रहाउ ॥ (336-1)
निरभै होइ भजीऐ भगवान ॥४॥१॥ (1252-14)
निरमलं संत संगेण ओट नानक परमेसुरह ॥१॥ (709-15)
निरमलं साध संगह जपंति नानक गोपाल नामं ॥ (1357-15)
निरमल अकथ कहाणी ॥२॥१८॥८२॥ (629-3)
निरमल अम्रितु गुर ते पाइआ ॥ (121-6)
निरमल उदकु गोविंद का नाम ॥ (198-19)
निरमल करणी साची रीति ॥ (184-2)
निरमल काइआ ऊजल हंसा ॥ (1034-15)
निरमल गिआनु धिआनु अति निरमलु निरमल बाणी मंनि वसावणिआ ॥३॥ (121-6)
निरमल गुण गाए नामु मंनि वसाए हरि की अम्रित बाणी ॥ (770-19)
निरमल गुण गावहु नित नीत ॥ (200-8)
निरमल गुण गावै नित साचे के निरमल नादु वजावणिआ ॥२॥ (121-5)
निरमल गुण साचे तनु मनु साचा विचि साचा पुरखु प्रभु सोई राम ॥ (769-13)
निरमल जपि नामु हरि हरि ॥ (895-11)
निरमल जलि न्हाए जा प्रभ भाए पंच मिले वीचारे ॥ (437-1)
निरमल जसु पीवहि जन नीति ॥४॥७३॥१४२॥ (194-12)
निरमल जोति अम्रितु हरि नाम ॥ (886-19)
निरमल जोति तिन प्राणीआ ओइ चले जनमु सवारि जीउ ॥२३॥ (73-5)
निरमल जोति निरंजनु पाइआ गुरमुखि भ्रमु भउ भागी ॥ (590-17)
निरमल जोति निरंतरि जाती ॥ (1039-5)
निरमल जोति पसरि रही जोती जोति मिलाई ॥५॥ (424-16)
निरमल जोति सभ माहि समाणी ॥ (121-2)
निरमल जोति सरब जगजीवनु गुरि अनहद सबदि दिखाइआ ॥४॥ (1038-17)
निरमल ते जो रामहि जान ॥६॥३॥ (1158-8)
निरमल ते सभ निरमल होवै ॥ (121-9)
निरमल नामि मनु तनु मोहै ॥ (121-10)
निरमल नामि लगे बडभागी निरमलु नामि सुहावणिआ ॥५॥ (121-9)
निरमल नामि हउमै मलु धोइ ॥ (664-4)
निरमल नामु अम्रित रसु चाखिआ सबदि रते पति पाई ॥३॥ (1127-2)
निरमल नामु जपहु सद गुरमुखि अंतर की गति ताही जीउ ॥३॥ (598-8)
निरमल नामु मेरा आधारु ॥८॥१॥ (412-1)
निरमल नामु रखै उरि धारे ॥ (423-15)
निरमल नामु रिदै हरि सोहि ॥३॥ (904-3)
निरमल नामु वसिआ मनि आए ॥ (121-4)
निरमल नामु वसै घट भीतरि जोती जोति मिलावणिआ ॥५॥ (128-8)

निरमल नामु वसै मनि आए ॥ (1044-12)
निरमल नामु वसै मनि सोई ॥६॥ (1342-10)
निरमल नामु सद हिरदै धिआए ॥४॥ (412-8)
निरमल नामु सुधा परपूरन सबद तरंग प्रगटित दिन आगरु ॥ (1404-11)
निरमल निरमल करम बहु कीने नित साखा हरी जड़ीजै ॥ (1325-11)
निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥ (279-11)
निरमल निरमल सूचा सूचो सूचा सूचो सूचा ॥ (821-15)
निरमल बाणी को मंनि वसाए ॥ (1062-11)
निरमल बाणी नादु वजावै ॥४॥ (411-15)
निरमल बाणी निज घरि वासा ॥ (362-18)
निरमल बाणी भरमु चुकाइआ ॥ (221-2)
निरमल बाणी सबदि वखाणहि ॥ (115-17)
निरमल बाणी हरि सालाही जपि हरि निरमलु मैलु गवावणिआ ॥१॥ (121-2)
निरमल भए ऊजल जसु गावत बहुरि न होवत कारो ॥ (1225-12)
निरमल भए सरीर जन धूरी नाइआ ॥ (710-3)
निरमल भगति है निराली ॥ (1059-19)
निरमल भेख अपार तासु बिनु अवरु न कोई ॥ (1409-10)
निरमल मंतु देइ जिसु दानु ॥ (900-17)
निरमल रसना अम्रितु पीउ ॥ (281-6)
निरमल रीति निरोधर मंत ॥ (298-11)
निरमल रूप अनूप सुआमी करम भूमि बीजन सो खावन ॥१॥ (717-3)
निरमल वाजै अनहद धुनि बाणी दरि सचै सोभा पावणिआ ॥४॥ (121-8)
निरमल सबदु निरमल है बाणी ॥ (121-1)
निरमल सूचे साचो भावै ॥ (933-7)
निरमल सोइ बणी हरि बाणी मनु नामि मजीठै रंगना ॥१५॥ (1081-1)
निरमल सोभा अचरज बाणी ॥ (1149-18)
निरमल सोभा अम्रित ता की बानी ॥ (296-7)
निरमल सोभा निरमल रीति ॥ (1149-11)
निरमल हंसा प्रेम पिआरि ॥ (128-19)
निरमल हंसा सदा सुखु नेहा ॥ (1064-9)
निरमल होइ तुम्हारा चीत ॥ (867-1)
निरमल होइ तुम्हारो चीत ॥ (288-19)
निरमल होए करि इसनाना ॥ (625-16)
निरमलि जलि नाए मैलु गवाए भए पवितु सरीरा ॥ (774-18)
निरमलु एकु निरंजनु दाता गुर पूरे ते पति पाई हे ॥१२॥ (1023-6)
निरमलु तेरा होवै चीत ॥२॥ (895-17)
निरमलु नामु जितु मैलु न लागै गुरमति नामु जपै लिव लावै ॥ (494-10)

निरमलु नामु न वीसरै जे गुण का गाहकु होइ ॥७॥ (60-10)
निरमलु नामु मंनिआ दरि सचै सचिआरा ॥ (140-16)
निरमलु नामु वसै मनि आइ ॥२॥ (560-10)
निरमलु नामु सद नवतनो आपि वसै मनि आइ ॥१॥ रहाउ ॥ (69-3)
निरमलु निराहारु निहकेवलु ॥ (840-5)
निरमलु न्हावणु नानका गुरु तीरथु दरीआउ ॥१०॥ (1411-6)
निरमलु भउ पाइआ हरि गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥ (774-3)
निरमलु मनूआ हरि सबदि परोवै ॥ (121-9)
निरमलु मैला ना थीऐ सबदि रते पति होइ ॥३॥ (19-19)
निरमलु साचा एकु तू होरु मैलु भरी सभ जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (57-7)
निरमलु साचि रता पैकारु ॥ (413-18)
निरमलु साचो मनि वसै सो जाणै अभ पीर ॥ (57-6)
निरमलु साहिबु पाइआ साचा गुणी गहीरु ॥२॥ (34-18)
निरमलु हरि पाइआ हरि गुण गाइआ मुखि बोली हरि बाणी ॥ (774-7)
निरमोलकु अति हीरो नीको हीरै हीरु बिधीजै ॥ (1325-8)
निरमोलकु हीरा मिलै न उपाइआ ॥ (801-12)
निरवैर पुरख सतिगुर प्रभ दाते ॥ (1141-15)
निरवैरा नालि जि वैरु चलाइदे तिन विचहु तिसटिआ न कोइ ॥ (302-4)
निरवैरु अकाल मूरति ॥ (1201-16)
निरवैरै नालि जि वैरु रचाए सभु पापु जगतै का तिनि सिरि लइआ ॥ (307-7)
निरवैरै नालि वैरु रचाइदा अपणै घरि लूकी लाइ ॥ (1415-9)
निरवैरै संगि वैरु रचाए पहुचि न सकै गवारै ॥ (1205-14)
निरवैरै संगि वैरु रचावै हरि दरगह ओहु हारै ॥ (1217-14)
निरहार वरती आपरसा ॥ (71-10)
निरहारी केसव निरवैरा ॥ (98-10)
निरापराध चितवहि बुरिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (372-15)
निराल्मबु निरहारु निहकेवलु निरभउ ताड़ी लावै ॥३॥ (1332-14)
निरास आस करणं सगल अरथ आलयह ॥ (1357-17)
निराहार निरवैर सुखदाई ॥ (287-9)
निराहारी निरवैरु समाइआ ॥ (1082-16)
निवंति होवंति मिथिआ चेतनं संत स्वजनह ॥६०॥ (1359-12)
निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥ (1384-15)
निवरे दूत दुसट बैराई गुर पूरे का जपिआ जापु ॥ (823-19)
निवरै दूरि दूरि फुनि निवरै जिनि जैसा करि मानिआ ॥ (333-5)
निवली करम आसन चउरासीह इन महि सांति न आवै जीउ ॥२॥ (98-4)
निवली करम बहु बिसथार ॥ (1229-17)
निवली करम भुअंगम भाठी रेचक पूरक कुमभ करै ॥ (1343-6)

निवाज सोई जो निआउ बिचारै कलमा अकलहि जानै ॥ (480-6)
निवि निवि पाइ लगउ गुर अपुने आतम रामु निहारिआ ॥ (353-12)
निवि निवि पाइ लगउ दास तेरे करि सुक्रितु नाही संगना ॥३॥ (1080-5)
निवि निवि लागा तेरी पाई ॥ (106-5)
निस बासुर बिखिअन कउ धावत किहि बिधि रोकउ ताहि ॥१॥ रहाउ ॥ (632-17)
निस बासुर भजु ताहि मीत ॥२॥ (1187-4)
निसि अंधिआरी सुतीए किउ पिर बिनु रैणि विहाइ ॥ (54-10)
निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥ (267-15)
निसि कुरंक जैसे नाद सुणि स्रवणी हीउ डिवै मन ऐसी प्रीति कीजै ॥ (455-8)
निसि जागसि भगति प्रवेसं ॥ (1351-15)
निसि दामनि जिउ चमकि चंदाइणु देखै ॥ (1041-15)
निसि दिन उचरै भार अठार ॥ (1237-16)
निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥२०॥ (1427-11)
निसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥ (1427-15)
निसि दिनु सुनि कै पुरान समझत नह रे अजान ॥ (1352-15)
निसि बासुर एक समान धिआन सु नाम सुने सुतु भान डर्यउ ॥ (1400-7)
निसि बासुर जपि नानक दास ॥४॥८॥१०॥ (865-7)
निसि बासुर नखिअत्र बिनासी रवि ससीअर बेनाधा ॥ (1204-6)
निसि बासुर प्रिअ प्रिअ मुखि टेरउ नींद पलक नही जागिओ ॥ (1203-18)
निसि बासुर प्रिअ संगि अनंद ॥२॥ (372-10)
निसि बासुर मनि अनदु होत चितवत किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (810-19)
निहकंटक राजु भुंचि तू गुरमुखि सचु कमाई ॥ (1087-12)
निहकंटकु निहकेवलु कहीऐ ॥ (1082-19)
निहकपट सेवा कीजै हरि केरी तां मेरे मन सरब सुख पईऐ ॥३॥ (861-15)
निहकेवलु राजन सुखी लोगु ॥७॥ (1190-14)
निहचउ नानक करते पाए ॥३॥ (877-18)
निहचल आसणु मिटी चिंत नाही डोलेत ॥ (810-10)
निहचल आसनु बेसुमारु ॥२॥ (889-1)
निहचल थानु साधसंगि तरै ॥८॥४॥ (237-17)
निहचल धनी अचिंतु पछाना ॥ (1157-11)
निहचल भगति हरि सिउ चितु लाए ॥ (365-2)
निहचल मति सदा मन धीर ॥ (1175-10)
निहचल महलु नही छाइआ माइआ ॥ (228-1)
निहचल राजु है सदा तिसु केरा ना आवै ना जाई ॥ (592-3)
निहचल संगति साध जन बचन निहचलु गुर साधा ॥ (1101-6)
निहचलु एकु आपि अबिनासी सो निहचलु जो तिसहि धिआइदा ॥७॥ (1076-2)
निहचलु एकु नराइणो हरि अगम अगाधा ॥ (1101-3)

निहचलु एकु सचा सचु सोई ॥ (227-8)
निहचलु एकु सदा सचु सोई ॥ (1057-12)
निहचलु एकु सरेविआ होरु सभ विणासु ॥ (321-15)
निहचलु कीरतनु गुण गोबिंद गुरमुखि गावाधा ॥ (1101-4)
निहचलु कोइ न दिसै संसारै ॥ (227-7)
निहचलु चतुरु सुजाणु बिधाता चंचलु जगतु सबाइआ ॥ (1109-6)
निहचलु तिन का ठाणा ॥ (1006-5)
निहचलु नामु निधानु है जिसु सिमरत हरि लाधा ॥ (1101-3)
निहचलु मसतकि लेखु लिखिआ सो टलै न टलाधा ॥ (1101-5)
निहचलु राजु सदा हरि केरा तिसु बिनु अवरु न कोई राम ॥ (770-1)
निहचलु सचा एकु है गुरमुखि बूझै सु निहचलु होई ॥६॥ (1088-16)
निहचलु सचु खुदाइ एकु खुदाइ बंदा अबिनासी ॥१७॥ (1100-11)
निहचलु साचु रहिआ कल धारि ॥ (842-3)
निहचलु हभ जाणा मिथिआ माणा संत प्रभू होइ दासा ॥ (777-13)
निहचलु हभ वैसी सुणि परदेसी संतसंगि मिलि रहीऐ ॥ (777-10)
निहते पंजि जुआन मै गुर थापी दिती कंडि जीउ ॥१८॥ (74-10)
निहफलं तसि जनमसि जावतु ब्रहम न बिंदते ॥ (148-16)
निहफलं तस्य जनमस्य जावद ब्रहम न बिंदते ॥ (1353-9)
निहफल धरमु ताहि तुम मानहु साचु कहत मै या कउ ॥१॥ (831-4)
निहफल मानुखु जपै नही नाम ॥३॥ (190-18)
निहफलु जनमु तिन ब्रिथा गवाइआ ते साकत मुए मरि झूरे ॥ (574-2)
निहफलु तिन का जीविआ जि खसमु न जाणहि आपणा अवरी कउ चितु लाइ ॥ (509-6)
नींद विआपिआ कामि संतापिआ मुखहु हरि हरि कहावै ॥ (960-6)
नीकी कीरी महि कल राखै ॥ (285-19)
नीकी जीअ की हरि कथा ऊतम आन सगल रस फीकी रे ॥१॥ रहाउ ॥ (404-13)
नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (727-16)
नीकी राम की धुनि सोइ ॥ (1228-7)
नीकी साध संगानी ॥ रहाउ ॥ (404-17)
नीके गुण गाउ मिटही रोग ॥ (713-12)
नीके साचे के वापारी ॥ (1032-18)
नीच ऊच नही मान अमान ॥ (344-5)
नीच कीच निम्रित घनी करनी कमल जमाल ॥९॥ (1364-7)
नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा ॥१॥ (487-17)
नीच जाति हरि जपतिआ उतम पदवी पाइ ॥ (733-7)
नीच ते नीचु अति नीचु होइ करि बिनउ बुलावउ ॥ (812-3)
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥१॥ (486-14)
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥१॥ (1106-13)

नीचहु नीचु नीचु अति नान्हा होइ गरीबु बुलावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (529-8)
नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥ (15-8)
नीचा ते ऊच ऊन पूरीना ॥ (804-17)
नीचु अनाथु अजानु मै निरगुनु गुणहीनु ॥ (814-19)
नीचे लोइन करि रहउ ले साजन घट माहि ॥ (1377-4)
नीचे लोइन किउ करउ सभ घट देखउ पीउ ॥२३५॥ (1377-5)
नीठि नीठि मनु कीआ धीरा ॥ (341-5)
नीत नीत घर बांधीअहि जे रहणा होई ॥ (418-9)
नीत नीत हरि सेवीऐ सासि सासि हरि धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (211-12)
नीद गई हउमै तनि थाकी सच मति रिदै समाई ॥३॥ (1274-10)
नीद पई सुख सहज घरु आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (807-8)
नीद भूख सभ परहरि तिआगी सुंने सुंनि समावै ॥ (442-14)
नीद सुहेली नाम की लागी भूख ॥ (901-6)
नीधन कौ धनु नामु पिआरु ॥ (1331-1)
नीधरिआ धर तेरीआ इक नाम अधारा ॥२॥ (809-9)
नीधरिआ धर पनह खुदाइ ॥ (1138-2)
नीधरिआ सतिगुर धर तेरी ॥ (869-18)
नीरु धरणि करि राखे एकत कोइ न किस ही संगे ॥३॥ (1235-7)
नीरु न साकसि बोरि चलहि हरि पंथि पगि ॥ (1389-5)
नीरु बिरोलै खपि खपि मरता ॥१॥ रहाउ ॥ (739-3)
नीरु बिलोवै अति स्रमु पावै नैनू कैसे रीसै ॥ (1205-19)
नील अनील अगनि इक ठाई ॥ (221-14)
नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥ (470-7)
नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥ (472-1)
नीली सिआही कदा करणी पहिरणु पैर धिआनु ॥ (16-15)
नीलु अनीलु अगमु सरजीतु सबाइआ ॥ (1282-11)
नीहि जि विधा मंनु पछाणू विरलो थिओ ॥ (321-9)
नीहु महिंजा तऊ नालि बिआ नेह कूड़ावे डेखु ॥ (1094-8)
नेजा नाम नीसाणु सतिगुर सबदि सवारिअउ ॥१॥ (1408-7)
नेजे वाजे तखति सलामु ॥ (226-7)
नेड़ा है दूरि न जाणिअहु नित सारे सम्हाले ॥ (489-7)
नेड़ै दिसै मात लोक तुधु सुझै दूरु ॥ (967-19)
नेड़ै देखउ पारब्रहमु इकु नामु धिआवउ ॥ (322-9)
नेड़ै नेड़ै सभु को कहै ॥ (1139-10)
नेड़ै वेखै सदा हदूरि ॥ (363-11)
नेत नेत कथंति बेदा ॥ (1359-7)
नेत्र पसारै ता निरारथ काजा ॥२॥ (179-9)

नेत्र पुनीत पेखत ही दरस ॥ (201-19)
नेत्र पुनीत भए दरस पेखे माथै परउ रवाल ॥ (680-10)
नेत्र पुनीत भए दरसु पेखे हसत पुनीत टहलावा ॥ (1212-3)
नेत्र प्रगासु कीआ गुरदेव ॥ (200-10)
नेत्र संतन का दरसनु पेखु ॥ (190-2)
नेत्र संतोखे एक लिव तारा ॥ (224-6)
नेत्र संतोखे दरसु पेखि ॥ (1181-16)
नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥ (290-7)
नेत्री धुंधि करन भए बहरे मनमुखि नामु न जानी ॥१॥ (1126-5)
नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ ॥ (517-15)
नेब खवास भला दरवाजा ॥ (1037-8)
नेमु निबाहिओ सतिगुरू प्रभि किरपा धारी ॥३॥ (399-16)
नेरै नाही दूरि ॥ (657-3)
नैण अलोइआ घटि घटि सोइआ अति अम्रित प्रिअ गूड़ा ॥ (924-8)
नैण त पर सकयथ नयणि गुरु अमरु पिखिजै ॥ (1394-6)
नैण त्रिपतासे देखि दरसावा गुरि कर धारे मेरै माथे ॥ (1212-19)
नैण न देखहि साध सि नैण बिहालिआ ॥ (1362-17)
नैण पसंदो सोइ पेखि मुसताक भई ॥ (397-6)
नैण महिंजे तरसदे कदि पसी दीदारु ॥१॥ (1094-8)
नैणी पेखा अगम अथाहा ॥ (1077-4)
नैणी बिरहु देखा प्रभ सुआमी रसना नामु वखानी ॥ (1199-19)
नैणी मेरे पिआरिआ नैणी मेरे गोविदा किनै हरि प्रभु डिठड़ा नैणी जीउ ॥ (173-19)
नैन अलोवउ साध जनो ॥ (241-11)
नैन तरसन दरस परसन नह नीद रैणि विहाणीआ ॥ (542-17)
नैन तिपते दरसु पेखि जसु तोखि सुनत करन ॥१॥ (1306-4)
नैन देखि पतंगु उरझै पसु न देखै आगि ॥ (482-17)
नैन निहाली तिसु पुरख दइआलै ॥ (102-10)
नैन बैन स्रवन सुनीऐ अंग अंगे सुख प्रानि ॥१॥ रहाउ ॥ (1322-5)
नैन रहे रंगु लाई ॥ (655-2)
नैन संतोखे प्रभ दरसनु पाइआ ॥ (804-6)
नैन सलोनी सुंदर नारी ॥ (225-9)
नैन स्रवन सरीरु सभु हुटिओ सासु गइओ तत घाट ॥१॥ रहाउ ॥ (1224-12)
नैन हमारे प्रिअ रंग रंगारे इकु तिलु भी ना धीरीजै ॥ (703-14)
नैनह देखत इहु जगु जाई ॥१॥ (325-12)
नैनहु देखिओ चलतु तमासा ॥ (1211-17)
नैनहु देखु साध दरसेरै ॥ (1304-14)
नैनहु नीद पर द्रिसटि विकार ॥ (182-9)

नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी ॥ (659-12)
नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥ (281-7)
नैनहु संगि संतन की सेवा चरन झारी केसाइओ ॥ (1217-8)
नैनहु सूतकु बैनहु सूतकु सूतकु स्रवनी होई ॥ (331-12)
नैनि दरसु पेखउ निसि भोर ॥ (987-6)
नैनी देखउ गुर दरसनो गुर चरणी मथा ॥ (1101-10)
नैनी देखि दरसु मनु त्रिपतै स्रवन बाणी गुर सबदु सुणईआ ॥ (833-14)
नैनी द्रिसटि नही तनु हीना जरि जीतिआ सिरि कालो ॥ (1125-15)
नैनी नीद सुपन बरड़ाइओ ॥ (299-13)
नैनी पेखत साध दइआल ॥ (298-19)
नैनी हरि हरि लागी तारी ॥ (1262-19)
नैनू नकटू स्रवनू रसपति इंद्री कहिआ न माना ॥१॥ (1104-8)
न्रिप कंनिआ के कारनै इकु भइआ भेखधारी ॥ (858-14)
पंकज फाथे पंक महा मद गु्मफिआ ॥ (1362-19)
पंकज मोह निघरतु है प्रानी गुरु निघरत काढि कढावैगो ॥ (1311-1)
पंकज मोह सरि हां ॥ (409-9)
पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥ (12-3)
पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥ (357-13)
पंख तुटे फाही पड़ी अवगुणि भीड़ बणी ॥ (934-7)
पंखी चले दिसावरी बिरखा सुफल फलंत ॥२३०॥ (1376-19)
पंखी पंच उडरि नही धावहि ॥ (1033-16)
पंखी बिरख सुहावड़े ऊडहि चहु दिसि जाहि ॥ (66-4)
पंखी बिरखि सुहावड़ा सचु चुगै गुर भाइ ॥ (66-1)
पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥ (465-12)
पंखी म्रिग माइआ महि राते ॥ (1160-13)
पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ॥ (14-13)
पंच क्रिसानवा भागि गए लै बाधिओ जीउ दरबारी ॥२॥ (1104-10)
पंच चंडाल नाले लै आइआ ॥४॥ (1348-6)
पंच चेले मिलि भए इकत्रा एकसु कै वसि कीए ॥ (208-3)
पंच चेले वसि कीजहि रावल इहु मनु कीजै डंडाता ॥१॥ (155-16)
पंच चोर आगै भगे जब साधसंगेत ॥ (810-10)
पंच चोर की जाणै रीति ॥ (344-13)
पंच चोर चंचल चितु चालहि ॥ (1021-13)
पंच चोर तिना घरु मुहन्हि हउमै अंदरि संन्हि ॥ (854-7)
पंच चोर मिलि लागे नगरीआ राम नाम धनु हिरिआ ॥ (1178-6)
पंच जना गुरि वसगति आणे तउ उनमनि नामि लगानी ॥ (1200-2)
पंच जना मिलि मंगलु गाइआ हरि नानक भेदु न भाई ॥४॥ (205-5)

पंच जना ले वसगति राखै मन महि एकंकारे ॥१॥ (381-10)
पंच जना सिउ बात बतऊआ चीतु सु डोरी राखीअले ॥१॥ (972-13)
पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ अधिक अह्मबुधि बाधे ॥१॥ (641-17)
पंच जना सिउ संगु निवारै ॥ (236-14)
पंच तत मिलि भइओ संजोगा इन महि कवन दुराते ॥२॥ (999-17)
पंच तत रचि जोति निवाजिआ ॥ (1337-14)
पंच ततु करि तुधु स्रिसटि सभ साजी कोई छेवा करिउ जे किछु कीता होवै ॥ (736-6)
पंच ततु करि पुतरा कीना किरत मिलावा होआ ॥२॥ (884-16)
पंच ततु का रचनु रचाना ॥ (1073-1)
पंच ततु की करि मिरगाणी गुर कै मारगि चालै ॥२॥ (477-11)
पंच ततु मिलि अहिनिसि दीपकु निरमल जोति अपारी ॥६॥ (907-16)
पंच ततु मिलि इहु तनु कीआ ॥ (1039-2)
पंच ततु मिलि काइआ कीनी ॥ (1030-10)
पंच ततु मिलि काइआ कीन्ही ततु कहा ते कीनु रे ॥ (870-10)
पंच ततु मिलि दानु निबेरहि टांडा उतरिओ पारा ॥२॥ (333-15)
पंच ततु मिलि देही का आकारा ॥ (1128-2)
पंच ततु लै हिरदै राखहु रहै निरालम ताड़ी ॥ (970-17)
पंच ततु सुंनहु परगासा ॥ (1038-7)
पंच तसकर धावत राखे चूका मनि अभिमानु ॥ (1329-7)
पंच तीनि नव चारि समावै ॥ (414-2)
पंच दास गुरि वसगति कीने मन निहचल निरभइआ ॥ (1213-15)
पंच दास तीनि दोखी एक मनु अनाथ नाथ ॥ (1119-8)
पंच दूत ओहु वसगति करै ॥२॥ (1128-6)
पंच दूत काइआ संघारहि ॥ (1045-12)
पंच दूत चितवहि विकारा ॥ (1068-10)
पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥ (917-12)
पंच दूत ते लीओ छडाइ ॥ (331-5)
पंच दूत बिआपत अंधिआर ॥३॥ (182-5)
पंच दूत भागे बिकराल ॥ (866-12)
पंच दूत मिलि पिरहु विछोड़ी ॥ (375-2)
पंच दूत मुहहि संसारा ॥ (113-4)
पंच दूत मूड परि ठाढे केस गहे फेरावत हे ॥ (821-19)
पंच दूत रचि संगति गोसटि मतवारो मद माइओ ॥४॥ (712-10)
पंच दूत संगि महा असाध ॥३॥ (675-13)
पंच दूत सभि वसगति आइआ ॥३॥ (395-6)
पंच दोख अरु अहं रोग इह तन ते सगल दूरि कीन ॥ रहाउ ॥ (716-2)
पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥१॥ (486-6)

पंच दोख असाध नगर महि इकु खिनु पलु दूरि करे ॥२॥ (975-6)
पंच दोख छिद्र इआ तन महि बिखै बिआधि की करणी ॥ (1219-9)
पंच धातु करि पुतला कीआ ॥ (1007-15)
पंच धातु विचि पाईअनु मोहु झूठु गुमानु ॥ (786-17)
पंच परवाण पंच परधानु ॥ (3-11)
पंच पहरूआ दर महि रहते तिन का नही पतीआरा ॥ (339-11)
पंच पूत जणे इक माइ ॥ (865-11)
पंच बजित्र करे संतोखा सात सुरा लै चालै ॥ (885-3)
पंच बटवारे से मीत करि मानहि ॥१॥ (898-2)
पंच बाण ले जम कउ मारै गगनंतरि धणखु चड़ाइआ ॥९॥ (1042-6)
पंच बिकार मन महि बसे राचे माइआ संगि ॥ (297-13)
पंच बिखादी एकु गरीबा राखहु राखनहारे ॥ (205-19)
पंच बैल गडीआ देह धारी ॥ (879-15)
पंच भागे चोर सहजे सुखैनो हरे गुन गावती गावती गावती दरस पिआरि ॥१॥ रहाउ ॥ (1305-10)
पंच भू आतमा वसि करहि ता तीरथ करहि निवासु ॥२॥ (491-16)
पंच भू आतमा हरि नाम रसि पोखै ॥ (299-8)
पंच भू नाइको आपि सिरंदा जिनि सच का पिंडु सवारिआ ॥ (766-14)
पंच भूत सचि भै रते जोति सची मन माहि ॥ (20-1)
पंच भूत सबल है देही गुरु सतिगुरु पाप निवारे ॥२॥ (983-11)
पंच मजमी जो पंचन राखै ॥ (1151-11)
पंच मनाए पंच रुसाए ॥ (430-13)
पंच मरद सिदकि ले बाधहु खैरि सबूरी कबूल परा ॥४॥ (1083-18)
पंच मारि चितु रखहु थाइ ॥ (1189-18)
पंच मारि पावा तलि दीने ॥ (476-9)
पंच मारि साचु उरि धारै ॥१॥ रहाउ ॥ (223-10)
पंच मारि सुखु पाइआ ऐसा ब्रहमु वीचारु ॥२॥ (1330-6)
पंच रागनी संगि उचरही ॥ (1430-1)
पंच लोक वसहि परधाना ॥ (1039-17)
पंच लोग सभि हसण लगे तपा लोभि लहरि है गालिआ ॥ (315-15)
पंच वसहि मिलि जोति अपार ॥ (152-13)
पंच वसाए पंच गवाए ॥१॥ (430-13)
पंच संगु गुर ते छुटे दोख अरु रागउ ॥ (808-12)
पंच सखी मिलि मंगलु गाइआ ॥ (375-11)
पंच सखी मिलि रुदनु करेहा ॥ (359-5)
पंच सखी हम एकु भतारो ॥ (359-4)
पंच सतावहि दूत कवन बिधि मारणे ॥ (1363-2)
पंच सबद झुणकारु निरालमु प्रभि आपे वाइ सुणाइआ ॥८॥ (1040-4)

पंच सबद तह पूरन नाद ॥ (888-16)
पंच सबद दरगह बाजिआ हरि मिलिओ मंगलु गाइओ ॥२॥ (985-4)
पंच सबद धुनि अनहद वाजे हम घरि साजन आए ॥१॥ (764-8)
पंच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै सबदु नीसाणु ॥ (1291-1)
पंच सबद निरमाइल बाजे ॥ (974-18)
पंच सबद मिलि वाजा वाइआ ॥ (1057-19)
पंच समाई सुखी सभु लोगु ॥३॥ (414-9)
पंच समाए गुरमति पाइक ॥ (1039-11)
पंच सहाई जन की सोभा भलो भलो न कहावउगो ॥ (973-4)
पंच सिंघ राखे प्रभि मारि ॥ (899-1)
पंचम हरख दिसाख सुनावहि ॥ (1430-2)
पंचमि पंच प्रधान ते जिह जानिओ परपंचु ॥ (297-14)
पंचमी पंच भूत बेताला ॥ (839-10)
पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥ (3-12)
पंचा ते एकु छूटा जउ साधसंगि पग रउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1230-12)
पंचा ते मेरा संगु चुकाइआ ॥ (476-9)
पंचाली कउ राज सभा महि राम नाम सुधि आई ॥ (1008-6)
पंचाहरु निदलिअउ सुंन सहजि निज घरि सहार्यउ ॥ (1408-5)
पंचे पावहि दरगहि मानु ॥ (3-12)
पंचे रुंने दुखि भरे बिनसे दूजै भाइ ॥१॥ (19-8)
पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी ॥ (1350-14)
पंचे सबद वजे मति गुरमति वडभागी अनहदु वजिआ ॥ (1315-18)
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ (3-12)
पंज वखत निवाज गुजारहि पड़हि कतेब कुराणा ॥ (24-11)
पंजवै खाण पीअण की धातु ॥ (137-17)
पंजवै पंजे इकतु मुकामै एहि पंजि वखत तेरे अपरपरा ॥९॥ (1084-5)
पंजि किरसाण मुजेरे मिहडिआ ॥ (73-13)
पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥ (141-3)
पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥ (1193-9)
पंडित इसु मन का करहु बीचारु ॥ (1261-5)
पंडित गुणी सूर हम दाते एहि कहहि बड हम ही ॥२॥ (334-5)
पंडित जन माते पड़्हि पुरान ॥ (1193-17)
पंडित जोतकी सभि पड़ि पड़ि कूकदे किसु पहि करहि पुकारा राम ॥ (570-19)
पंडित तिन की बरकती सभु जगतु खाइ जो रते हरि नाइ ॥ (647-4)
पंडित दही विलोईऐ भाई विचहु निकलै तथु ॥ (635-15)
पंडित दूजै भाइ बरकति न होवई ना धनु पलै पाइ ॥ (647-6)
पंडित देखहु रिदै बीचारि ॥१॥ (328-4)

पंडित पंडित जलि मूए मूरख उबरे भागि ॥१७२॥ (1373-14)
पंडित पड़दे जोतकी ना बूझहि बीचारा ॥ (948-14)
पंडित पड़दे जोतिकी तिन बूझ न पाइ ॥२॥ (425-5)
पंडित पड़हि पड़ि वादु वखाणहि तिंना बूझ न पाई ॥१८॥ (909-18)
पंडित पड़हि वखाणहि वेदु ॥ (355-13)
पंडित पड़हि सादु न पावहि ॥ (116-18)
पंडित पड़ि पड़ि मोनी भुले दूजै भाइ चितु लाइआ ॥ (852-13)
पंडित पड़ि पड़ि वादु वखाणहि बिनु गुर भरमि भुलाए ॥ (67-18)
पंडित पड़िह पड़िह मोनी सभि थाके भ्रमि भेख थके भेखधारी ॥ (1234-5)
पंडित पाधे आणि पती बहि वाचाईआ बलि राम जीउ ॥ (773-13)
पंडित पाधे जोइसी नित पड़्हहि पुराणा ॥ (419-2)
पंडित पूछउ त माइआ राते ॥१॥ (385-14)
पंडित बेदु बीचारि पंडित ॥ (887-19)
पंडित भुलि भुलि माइआ वेखहि दिखा किनै किहु आणि चड़ाइआ ॥ (513-9)
पंडित भूले दूजै लागे माइआ कै वापारि ॥ (647-11)
पंडित मुलां छाडे दोऊ ॥१॥ रहाउ ॥ (1159-1)
पंडित मुलां जो लिखि दीआ ॥ (1159-2)
पंडित मैलु न चुकई जे वेद पड़ै जुग चारि ॥ (647-10)
पंडित मोनी पड़ि पड़ि थके भेख थके तनु धोइ ॥ (1250-5)
पंडित मोहे लोभि सबाए ॥ (370-9)
पंडित राजे भूपती आवहि कउने काम ॥२४॥ (1365-15)
पंडित रोवहि गिआनु गवाइ ॥ (954-4)
पंडित लोगह कउ बिउहार ॥ (343-2)
पंडित वखाणहि पोथीआ सिध बहहि देव सथानि ॥२॥ (64-6)
पंडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि वीचारु ॥ (56-8)
पंडित संगि वसहि जन मूरख आगम सास सुने ॥ (990-12)
पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ ॥ (858-11)
पंडित हरि पड़ु तजहु विकारा ॥ (229-19)
पंडित होइ सु अनभै रहै ॥ (343-1)
पंडितु आखाए बहुती राही कोरड़ मोठ जिनेहा ॥ (960-14)
पंडितु पड़ि न पहुचई बहु आल जंजाला ॥ (1012-8)
पंडितु पड़ि पड़ि उचा कूकदा माइआ मोहि पिआरु ॥ (86-7)
पंडितु पड़ै बंधन मोह बाधा नह बूझै बिखिआ पिआरि ॥ (33-10)
पंडितु वेदु पुकारा ॥ (71-9)
पंडितु सासत सिम्रिति पड़िआ ॥ (163-18)
पंडितु होइ कै बेदु बखानै ॥ (718-12)
पंथा प्रेम न जाणई भूली फिरै गवारि ॥ (1426-3)

पंथि सुहेलै जावहु तां फलु पावहु आगै मिलै वडाई ॥ (579-17)
पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे ॥ (449-10)
पंथु निहारै कामनी लोचन भरी ले उसासा ॥ (337-19)
पंद्रह थितं ी सात वार ॥ (343-4)
पंद्रह थितीं तै सत वार ॥ (842-1)
पंधि जुलंदड़ी मेरा अंदरु ठंढा गुर दरसनु देखि निहाली ॥१॥ (964-16)
पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥ (280-17)
पइऐ किरति कमावणा कहणा कछू न जाइ ॥ (587-3)
पइऐ किरति कमावणा कोइ न मेटणहार ॥१९॥ (756-2)
पइऐ किरति कमावदे जिव राखहि तिवै रहंन्हि ॥१॥ (854-9)
पइऐ किरति नचै सभु कोइ ॥ (465-13)
पई ठगउरी हरि संगि न जानिआ ॥ (1139-11)
पउ संत सरणी लागु चरणी मिटै दूखु अंधारु ॥२॥ (51-9)
पउ सरणाई जिनि हरि जाते ॥ (197-7)
पउ सरणाई भजि सुखी हूं सुख लहु ॥ (521-8)
पउड़ी ॥ (1087-12)
पउड़ी ॥ (1087-18)
पउड़ी ॥ (1087-4)
पउड़ी ॥ (1088-14)
पउड़ी ॥ (1088-19)
पउड़ी ॥ (1088-4)
पउड़ी ॥ (1088-9)
पउड़ी ॥ (1089-13)
पउड़ी ॥ (1089-5)
पउड़ी ॥ (1090-1)
पउड़ी ॥ (1090-11)
पउड़ी ॥ (1090-17)
पउड़ी ॥ (1090-6)
पउड़ी ॥ (1091-11)
पउड़ी ॥ (1091-19)
पउड़ी ॥ (1091-4)
पउड़ी ॥ (1092-11)
पउड़ी ॥ (1092-17)
पउड़ी ॥ (1093-10)
पउड़ी ॥ (1093-15)
पउड़ी ॥ (1093-6)
पउड़ी ॥ (1094-10)

पउड़ी ॥ (1094-17)
पउड़ी ॥ (1094-3)
पउड़ी ॥ (1095-13)
पउड़ी ॥ (1095-6)
पउड़ी ॥ (1096-1)
पउड़ी ॥ (1096-15)
पउड़ी ॥ (1096-8)
पउड़ी ॥ (1097-10)
पउड़ी ॥ (1097-3)
पउड़ी ॥ (1098-12)
पउड़ी ॥ (1098-19)
पउड़ी ॥ (1098-5)
पउड़ी ॥ (1099-13)
पउड़ी ॥ (1099-7)
पउड़ी ॥ (1100-1)
पउड़ी ॥ (1100-15)
पउड़ी ॥ (1100-8)
पउड़ी ॥ (1101-10)
पउड़ी ॥ (1101-17)
पउड़ी ॥ (1101-3)
पउड़ी ॥ (1102-13)
पउड़ी ॥ (1102-6)
पउड़ी ॥ (1237-17)
पउड़ी ॥ (1238-15)
पउड़ी ॥ (1238-7)
पउड़ी ॥ (1239-12)
पउड़ी ॥ (1239-4)
पउड़ी ॥ (1240-1)
पउड़ी ॥ (1240-17)
पउड़ी ॥ (1240-9)
पउड़ी ॥ (1241-13)
पउड़ी ॥ (1241-6)
पउड़ी ॥ (1242-10)
पउड़ी ॥ (1242-16)
पउड़ी ॥ (1242-3)
पउड़ी ॥ (1243-12)
पउड़ी ॥ (1243-3)

पउड़ी ॥ (1244-14)
पउड़ी ॥ (1244-19)
पउड़ी ॥ (1244-2)
पउड़ी ॥ (1244-8)
पउड़ी ॥ (1245-15)
पउड़ी ॥ (1245-8)
पउड़ी ॥ (1246-11)
पउड़ी ॥ (1246-4)
पउड़ी ॥ (1247-1)
पउड़ी ॥ (1247-11)
पउड़ी ॥ (1247-19)
पउड़ी ॥ (1247-7)
पउड़ी ॥ (1248-11)
पउड़ी ॥ (1248-18)
पउड़ी ॥ (1248-6)
पउड़ी ॥ (1249-18)
पउड़ी ॥ (1249-6)
पउड़ी ॥ (1250-17)
पउड़ी ॥ (1250-7)
पउड़ी ॥ (1251-12)
पउड़ी ॥ (1279-11)
पउड़ी ॥ (1279-17)
पउड़ी ॥ (1279-5)
पउड़ी ॥ (1280-10)
पउड़ी ॥ (1280-18)
पउड़ी ॥ (1280-3)
पउड़ी ॥ (1281-9)
पउड़ी ॥ (1282-1)
पउड़ी ॥ (1282-17)
पउड़ी ॥ (1282-9)
पउड़ी ॥ (1283-14)
पउड़ी ॥ (1283-7)
पउड़ी ॥ (1284-18)
पउड़ी ॥ (1284-3)
पउड़ी ॥ (1284-9)
पउड़ी ॥ (1285-12)
पउड़ी ॥ (1285-7)

पउड़ी ॥ (1286-16)
पउड़ी ॥ (1286-2)
पउड़ी ॥ (1287-19)
पउड़ी ॥ (1287-7)
पउड़ी ॥ (1288-16)
पउड़ी ॥ (1288-8)
पउड़ी ॥ (1289-8)
पउड़ी ॥ (1290-10)
पउड़ी ॥ (1290-16)
पउड़ी ॥ (1291-15)
पउड़ी ॥ (1313-10)
पउड़ी ॥ (1313-19)
पउड़ी ॥ (1313-2)
पउड़ी ॥ (1314-12)
पउड़ी ॥ (1315-12)
पउड़ी ॥ (1315-18)
पउड़ी ॥ (1315-3)
पउड़ी ॥ (1316-14)
पउड़ी ॥ (1316-6)
पउड़ी ॥ (1317-10)
पउड़ी ॥ (1317-15)
पउड़ी ॥ (1317-3)
पउड़ी ॥ (1318-13)
पउड़ी ॥ (1318-2)
पउड़ी ॥ (1318-8)
पउड़ी ॥ (138-16)
पउड़ी ॥ (138-5)
पउड़ी ॥ (139-5)
पउड़ी ॥ (140-14)
पउड़ी ॥ (140-5)
पउड़ी ॥ (141-16)
पउड़ी ॥ (141-6)
पउड़ी ॥ (143-13)
पउड़ी ॥ (144-15)
पउड़ी ॥ (144-6)
पउड़ी ॥ (145-13)
पउड़ी ॥ (145-6)

पउड़ी ॥ (146-17)
पउड़ी ॥ (146-5)
पउड़ी ॥ (147-15)
पउड़ी ॥ (147-7)
पउड़ी ॥ (148-11)
पउड़ी ॥ (148-18)
पउड़ी ॥ (148-2)
पउड़ी ॥ (149-11)
पउड़ी ॥ (149-5)
पउड़ी ॥ (150-16)
पउड़ी ॥ (150-9)
पउड़ी ॥ (250-12)
पउड़ी ॥ (250-8)
पउड़ी ॥ (251-13)
पउड़ी ॥ (251-16)
पउड़ी ॥ (251-5)
पउड़ी ॥ (251-9)
पउड़ी ॥ (252-1)
पउड़ी ॥ (252-13)
पउड़ी ॥ (252-16)
पउड़ी ॥ (252-5)
पउड़ी ॥ (252-9)
पउड़ी ॥ (253-1)
पउड़ी ॥ (253-16)
पउड़ी ॥ (253-5)
पउड़ी ॥ (253-9)
पउड़ी ॥ (254-11)
पउड़ी ॥ (254-15)
पउड़ी ॥ (254-19)
पउड़ी ॥ (254-2)
पउड़ी ॥ (254-7)
पउड़ी ॥ (255-15)
पउड़ी ॥ (255-3)
पउड़ी ॥ (255-7)
पउड़ी ॥ (256-1)
पउड़ी ॥ (256-14)
पउड़ी ॥ (256-19)

पउड़ी ॥ (256-5)
पउड़ी ॥ (256-9)
पउड़ी ॥ (257-10)
पउड़ी ॥ (257-13)
पउड़ी ॥ (257-18)
पउड़ी ॥ (257-5)
पउड़ी ॥ (258-10)
पउड़ी ॥ (258-13)
पउड़ी ॥ (258-17)
पउड़ी ॥ (258-2)
पउड़ी ॥ (258-6)
पउड़ी ॥ (259-10)
पउड़ी ॥ (259-14)
पउड़ी ॥ (259-17)
पउड़ी ॥ (259-2)
पउड़ी ॥ (260-10)
पउड़ी ॥ (260-13)
पउड़ी ॥ (260-17)
पउड़ी ॥ (260-2)
पउड़ी ॥ (260-6)
पउड़ी ॥ (261-12)
पउड़ी ॥ (261-16)
पउड़ी ॥ (261-2)
पउड़ी ॥ (261-7)
पउड़ी ॥ (296-12)
पउड़ी ॥ (296-18)
पउड़ी ॥ (297-14)
पउड़ी ॥ (297-19)
पउड़ी ॥ (297-4)
पउड़ी ॥ (297-9)
पउड़ी ॥ (298-10)
पउड़ी ॥ (298-14)
पउड़ी ॥ (298-18)
पउड़ी ॥ (298-5)
पउड़ी ॥ (299-11)
पउड़ी ॥ (299-15)
पउड़ी ॥ (299-19)

पउड़ी ॥ (299-3)
पउड़ी ॥ (299-7)
पउड़ी ॥ (300-10)
पउड़ी ॥ (300-5)
पउड़ी ॥ (301-13)
पउड़ी ॥ (301-18)
पउड़ी ॥ (301-2)
पउड़ी ॥ (301-8)
पउड़ी ॥ (302-15)
पउड़ी ॥ (302-6)
पउड़ी ॥ (303-8)
पउड़ी ॥ (304-15)
पउड़ी ॥ (304-3)
पउड़ी ॥ (305-10)
पउड़ी ॥ (306-15)
पउड़ी ॥ (306-2)
पउड़ी ॥ (307-10)
पउड़ी ॥ (308-8)
पउड़ी ॥ (309-17)
पउड़ी ॥ (309-8)
पउड़ी ॥ (310-19)
पउड़ी ॥ (310-9)
पउड़ी ॥ (311-9)
पउड़ी ॥ (312-16)
पउड़ी ॥ (312-5)
पउड़ी ॥ (313-13)
पउड़ी ॥ (313-6)
पउड़ी ॥ (314-1)
पउड़ी ॥ (314-17)
पउड़ी ॥ (314-8)
पउड़ी ॥ (317-17)
पउड़ी ॥ (317-5)
पउड़ी ॥ (318-11)
पउड़ी ॥ (318-16)
पउड़ी ॥ (318-7)
पउड़ी ॥ (319-1)
पउड़ी ॥ (319-10)

पउड़ी ॥ (319-15)
पउड़ी ॥ (319-19)
पउड़ी ॥ (319-6)
पउड़ी ॥ (320-10)
पउड़ी ॥ (320-15)
पउड़ी ॥ (320-5)
पउड़ी ॥ (321-1)
पउड़ी ॥ (321-14)
पउड़ी ॥ (321-5)
पउड़ी ॥ (321-9)
पउड़ी ॥ (322-13)
पउड़ी ॥ (322-17)
पउड़ी ॥ (322-3)
पउड़ी ॥ (322-8)
पउड़ी ॥ (323-4)
पउड़ी ॥ (323-8)
पउड़ी ॥ (463-16)
पउड़ी ॥ (463-4)
पउड़ी ॥ (464-9)
पउड़ी ॥ (465-15)
पउड़ी ॥ (465-2)
पउड़ी ॥ (466-19)
पउड़ी ॥ (466-7)
पउड़ी ॥ (467-10)
पउड़ी ॥ (468-13)
पउड़ी ॥ (468-2)
पउड़ी ॥ (469-17)
पउड़ी ॥ (469-6)
पउड़ी ॥ (470-18)
पउड़ी ॥ (470-9)
पउड़ी ॥ (471-12)
पउड़ी ॥ (472-10)
पउड़ी ॥ (472-4)
पउड़ी ॥ (473-1)
पउड़ी ॥ (473-11)
पउड़ी ॥ (474-1)
पउड़ी ॥ (474-16)

पउड़ी ॥ (474-6)
पउड़ी ॥ (475-2)
पउड़ी ॥ (475-8)
पउड़ी ॥ (509-14)
पउड़ी ॥ (509-2)
पउड़ी ॥ (509-9)
पउड़ी ॥ (510-1)
पउड़ी ॥ (510-11)
पउड़ी ॥ (510-16)
पउड़ी ॥ (511-14)
पउड़ी ॥ (511-5)
पउड़ी ॥ (512-11)
पउड़ी ॥ (512-2)
पउड़ी ॥ (513-1)
पउड़ी ॥ (513-13)
पउड़ी ॥ (514-1)
पउड़ी ॥ (514-16)
पउड़ी ॥ (514-9)
पउड़ी ॥ (515-15)
पउड़ी ॥ (515-5)
पउड़ी ॥ (516-14)
पउड़ी ॥ (516-19)
पउड़ी ॥ (516-5)
पउड़ी ॥ (517-10)
पउड़ी ॥ (517-6)
पउड़ी ॥ (518-1)
पउड़ी ॥ (518-13)
पउड़ी ॥ (518-18)
पउड़ी ॥ (518-7)
पउड़ी ॥ (519-11)
पउड़ी ॥ (519-17)
पउड़ी ॥ (519-5)
पउड़ी ॥ (520-15)
पउड़ी ॥ (520-3)
पउड़ी ॥ (520-9)
पउड़ी ॥ (521-12)
पउड़ी ॥ (521-19)

पउड़ी ॥ (521-2)
पउड़ी ॥ (521-7)
पउड़ी ॥ (522-11)
पउड़ी ॥ (522-17)
पउड़ी ॥ (522-5)
पउड़ी ॥ (523-19)
पउड़ी ॥ (523-4)
पउड़ी ॥ (523-9)
पउड़ी ॥ (524-4)
पउड़ी ॥ (548-15)
पउड़ी ॥ (549-12)
पउड़ी ॥ (549-6)
पउड़ी ॥ (550-12)
पउड़ी ॥ (550-19)
पउड़ी ॥ (550-5)
पउड़ी ॥ (551-14)
पउड़ी ॥ (551-6)
पउड़ी ॥ (552-11)
पउड़ी ॥ (552-18)
पउड़ी ॥ (552-3)
पउड़ी ॥ (553-16)
पउड़ी ॥ (553-9)
पउड़ी ॥ (554-10)
पउड़ी ॥ (554-19)
पउड़ी ॥ (554-2)
पउड़ी ॥ (555-16)
पउड़ी ॥ (555-7)
पउड़ी ॥ (556-11)
पउड़ी ॥ (556-17)
पउड़ी ॥ (556-6)
पउड़ी ॥ (585-16)
पउड़ी ॥ (586-15)
पउड़ी ॥ (586-5)
पउड़ी ॥ (587-19)
पउड़ी ॥ (587-8)
पउड़ी ॥ (588-17)
पउड़ी ॥ (588-9)

पउड़ी ॥ (589-15)
पउड़ी ॥ (589-7)
पउड़ी ॥ (590-12)
पउड़ी ॥ (590-18)
पउड़ी ॥ (590-3)
पउड़ी ॥ (591-12)
पउड़ी ॥ (591-6)
पउड़ी ॥ (592-13)
पउड़ी ॥ (592-4)
पउड़ी ॥ (593-13)
पउड़ी ॥ (593-2)
पउड़ी ॥ (594-15)
पउड़ी ॥ (594-2)
पउड़ी ॥ (594-8)
पउड़ी ॥ (642-17)
पउड़ी ॥ (643-15)
पउड़ी ॥ (643-5)
पउड़ी ॥ (644-12)
पउड़ी ॥ (644-6)
पउड़ी ॥ (645-17)
पउड़ी ॥ (645-3)
पउड़ी ॥ (645-9)
पउड़ी ॥ (646-11)
पउड़ी ॥ (646-17)
पउड़ी ॥ (646-4)
पउड़ी ॥ (647-16)
पउड़ी ॥ (647-8)
पउड़ी ॥ (648-14)
पउड़ी ॥ (648-3)
पउड़ी ॥ (648-8)
पउड़ी ॥ (649-12)
पउड़ी ॥ (649-3)
पउड़ी ॥ (650-1)
पउड़ी ॥ (650-16)
पउड़ी ॥ (650-8)
पउड़ी ॥ (651-14)
पउड़ी ॥ (651-5)

पउड़ी ॥ (652-10)
पउड़ी ॥ (652-18)
पउड़ी ॥ (652-2)
पउड़ी ॥ (653-13)
पउड़ी ॥ (653-19)
पउड़ी ॥ (653-8)
पउड़ी ॥ (706-11)
पउड़ी ॥ (706-16)
पउड़ी ॥ (706-2)
पउड़ी ॥ (706-6)
पउड़ी ॥ (707-1)
पउड़ी ॥ (707-10)
पउड़ी ॥ (707-15)
पउड़ी ॥ (707-19)
पउड़ी ॥ (707-6)
पउड़ी ॥ (708-14)
पउड़ी ॥ (708-18)
पउड़ी ॥ (708-4)
पउड़ी ॥ (708-9)
पउड़ी ॥ (709-12)
पउड़ी ॥ (709-17)
पउड़ी ॥ (709-4)
पउड़ी ॥ (709-8)
पउड़ी ॥ (710-11)
पउड़ी ॥ (710-2)
पउड़ी ॥ (710-6)
पउड़ी ॥ (785-11)
पउड़ी ॥ (786-1)
पउड़ी ॥ (786-17)
पउड़ी ॥ (786-9)
पउड़ी ॥ (787-12)
पउड़ी ॥ (787-19)
पउड़ी ॥ (787-6)
पउड़ी ॥ (788-12)
पउड़ी ॥ (788-5)
पउड़ी ॥ (789-1)
पउड़ी ॥ (789-11)

पउड़ी ॥ (789-17)
पउड़ी ॥ (789-5)
पउड़ी ॥ (790-13)
पउड़ी ॥ (790-19)
पउड़ी ॥ (790-5)
पउड़ी ॥ (791-11)
पउड़ी ॥ (791-17)
पउड़ी ॥ (791-6)
पउड़ी ॥ (792-2)
पउड़ी ॥ (83-11)
पउड़ी ॥ (83-16)
पउड़ी ॥ (83-6)
पउड़ी ॥ (84-10)
पउड़ी ॥ (84-16)
पउड़ी ॥ (84-4)
पउड़ी ॥ (849-16)
पउड़ी ॥ (849-7)
पउड़ी ॥ (850-15)
पउड़ी ॥ (850-6)
पउड़ी ॥ (851-12)
पउड़ी ॥ (85-12)
पउड़ी ॥ (851-6)
पउड़ी ॥ (852-17)
पउड़ी ॥ (852-6)
पउड़ी ॥ (853-15)
पउड़ी ॥ (853-6)
पउड़ी ॥ (85-4)
पउड़ी ॥ (854-13)
पउड़ी ॥ (854-4)
पउड़ी ॥ (855-1)
पउड़ी ॥ (86-11)
पउड़ी ॥ (86-4)
पउड़ी ॥ (87-16)
पउड़ी ॥ (87-2)
पउड़ी ॥ (88-18)
पउड़ी ॥ (88-5)
पउड़ी ॥ (89-14)

पउड़ी ॥ (89-4)
पउड़ी ॥ (90-12)
पउड़ी ॥ (90-19)
पउड़ी ॥ (90-3)
पउड़ी ॥ (91-13)
पउड़ी ॥ (91-6)
पउड़ी ॥ (947-10)
पउड़ी ॥ (947-16)
पउड़ी ॥ (948-13)
पउड़ी ॥ (948-19)
पउड़ी ॥ (948-6)
पउड़ी ॥ (949-16)
पउड़ी ॥ (949-7)
पउड़ी ॥ (950-11)
पउड़ी ॥ (951-10)
पउड़ी ॥ (951-2)
पउड़ी ॥ (952-5)
पउड़ी ॥ (953-16)
पउड़ी ॥ (953-6)
पउड़ी ॥ (954-12)
पउड़ी ॥ (954-7)
पउड़ी ॥ (955-1)
पउड़ी ॥ (955-15)
पउड़ी ॥ (955-7)
पउड़ी ॥ (956-17)
पउड़ी ॥ (956-5)
पउड़ी ॥ (956-9)
पउड़ी ॥ (957-13)
पउड़ी ॥ (957-6)
पउड़ी ॥ (958-12)
पउड़ी ॥ (958-2)
पउड़ी ॥ (959-7)
पउड़ी ॥ (960-1)
पउड़ी ॥ (961-14)
पउड़ी ॥ (961-19)
पउड़ी ॥ (961-2)
पउड़ी ॥ (962-16)

पउड़ी ॥ (962-9)
पउड़ी ॥ (963-14)
पउड़ी ॥ (963-8)
पउड़ी ॥ (964-1)
पउड़ी ॥ (964-13)
पउड़ी ॥ (964-18)
पउड़ी ॥ (964-7)
पउड़ी ॥ (965-11)
पउड़ी ॥ (965-17)
पउड़ी ॥ (965-6)
पउड़ी ॥ (966-10)
पउड़ी ॥ (966-4)
पउड़ी ५ ॥ (315-11)
पउड़ी ५ ॥ (315-3)
पउड़ी ५ ॥ (315-7)
पउड़ी छुड़की फिरि हाथि न आवै अहिला जनमु गवाइआ ॥१॥ (796-15)
पउड़ी नवी मः ५ ॥ (1291-9)
पउड़ी मः ५ ॥ (1251-5)
पउड़ी मः ५ ॥ (316-17)
पउड़ी मः ५ ॥ (316-8)
पउण पाणी अगनी असरूपु ॥ (930-14)
पउण पाणी अगनी इक वासा ॥ (1033-12)
पउण पाणी अगनी का बंधनु काइआ कोटु रचाइदा ॥१॥ (1036-11)
पउण पाणी अगनी बिसराउ ॥ (839-18)
पउण पाणी की इह देह सरीरा ॥ (1172-13)
पउण पाणी धरती आकासु घर मंदर हरि बनी ॥ (723-8)
पउण पाणी बैसंतर माहि ॥ (294-1)
पउण पाणी बैसंतर सिमरहि सिमरै सगल उपारजना ॥१॥ (1078-19)
पउण पाणी बैसंतरु गाजै ॥ (1028-4)
पउणु उपाइ धरी सभ धरती जल अगनी का बंधु कीआ ॥ (350-15)
पउणु गुरू पाणी पित जाता ॥ (1021-2)
पउणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ (146-14)
पउणु पाणी अगनि बाधे गुरि खेलु जगति दिखाइआ ॥ (1113-2)
पउणु पाणी अगनी मिलि जीआ ॥ (1026-18)
पउणु पाणी बैसंतरु डरपै डरपै इंद्रु बिचारा ॥१॥ (998-17)
पउणु पाणी बैसंतरु रोगी रोगी धरति सभोगी ॥ (1153-11)
पउणु पाणी बैसंतरु सभि सहलंगा ॥ (160-10)

पउणु पाणी बैसंतरो मेरी जिंदुड़ीए नित हरि हरि हरि जसु गावै राम ॥ (540-8)
पउणु पाणी बैसंतरो हुकमि करहि भगती ॥ (948-7)
पउणु पाणी सुंनै ते साजे ॥ (1037-11)
पउणु पाणी है बैसंतरु ॥ (1060-10)
पउणु मारि मनि जपु करे सिरु मुंडी तलै देइ ॥ (1241-9)
पउणै पाणी अगनी का मेलु ॥ (152-2)
पउणै पाणी अगनी का सनबंध ॥ (1257-10)
पउणै पाणी अगनी जीउ तिन किआ खुसीआ किआ पीड़ ॥ (1289-1)
पउदी जाइ परालि पिछै हथु न अ्मबड़ै तितु निवंधै तालि ॥१॥ (789-4)
पउदी भिति देखि कै सभि आइ पए सतिगुर की पैरी लाहिओनु सभना किअहु मनहु गुमानु ॥१०॥ (854-1)
पए कबूलु खसम नालि जां घाल मरदी घाली ॥ (967-10)
पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥ (134-16)
पकड़े चलाइआ अपणा कमाइआ महा मोहनी रातिआ ॥ (546-15)
पकरि केस जमि उठारिओ तद ही घरि जावै ॥१॥ (408-6)
पकरि जीउ आनिआ देह बिनासी माटी कउ बिसमिलि कीआ ॥ (1350-7)
पके बंक दुआर मूरखु जाणै आपणे ॥ (141-17)
पखा पाणी पीसि बिगसा पैर धोइ ॥ (518-15)
पखा फेरउ पीसउ संत आगै चरण धोइ सुखु पाइणा ॥१३॥ (1078-14)
पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ॥५॥ (757-13)
पखा फेरी पाणी ढोवा हरि जन कै पीसणु पीसि कमावा ॥ (749-5)
पखा फेरी पैर मलोवा जपत रहा तेरा नाउ ॥३॥ (991-4)
पग उपेताणा ॥ (467-18)
पग धारहि सासु लेखै लै तउ उधरहि हरि गुण गाइले ॥१॥ (862-7)
पग धूरि बांछउ सदा जाचउ नाम रसि बैरागनी ॥ (544-6)
पग नाचसि चितु अकरमं ॥ (1351-15)
पग नेवर छनक छनहरी ॥ (872-4)
पग लगि राम रहै सरनांही ॥४॥१॥ (691-18)
पगा बिनु हुरीआ मारता ॥ (1194-4)
पगि खिसिऐ रहणा नही आगै ठउरु न पाइ ॥ (28-2)
पगु चउथा खिसिआ त्रै पग टिकिआ मनि हिरदै क्रोधु जलाइ जीउ ॥ (445-12)
पगु नही चलै हरि हां ॥ (409-9)
पचि पचि बूडहि कूड़ु कमावहि कूड़ि कालु बैराई हे ॥१५॥ (1025-10)
पचि पचि मुए अचेत न चेतहि अजगरि भारि लदाई हे ॥८॥ (1025-1)
पचि पचि मुए बिखु देखि पतंगा ॥३॥ (367-9)
पचै पतंगु म्रिग भ्रिंग कुंचर मीन इक इंद्री पकरि सघारे ॥ (983-10)
पछम दुआरै सूरजु तपै ॥ (1159-16)
पछिम फेरि चड़ावै सूरु ॥ (974-15)

पछोतावा ना मिलै जब चूकैगी सारी ॥ (725-3)
पड़णा गुड़णा संसार की कार है अंदरि त्रिसना विकारु ॥ (650-11)
पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥ (470-8)
पड़हि गुणहि तूं बहुतु पुकारहि विणु बूझे तूं डूबि मुआ ॥८॥ (435-4)
पड़हि मनमुख परु बिधि नही जाना ॥ (1032-10)
पड़ि थके संतोखु न आइओ अनदिनु जलत विहाइ ॥ (647-6)
पड़ि थाके सिम्रिति बेद अभिआस ॥२॥ (371-8)
पड़ि पंडितु अवरा समझाए ॥ (1046-5)
पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥ (467-13)
पड़ि पड़ि थाके सांति न आई ॥ (120-6)
पड़ि पड़ि दझहि साति न आई ॥ (1026-1)
पड़ि पड़ि पंडित जोतकी थके भेखी भरमि भुलाइ ॥ (68-5)
पड़ि पड़ि पंडित जोतकी वाद करहि बीचारु ॥ (27-6)
पड़ि पड़ि पंडित बेद वखाणहि माइआ मोह सुआइ ॥ (85-15)
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके चउथे पद की सार न पावणिआ ॥५॥ (117-3)
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके दूजै भाइ पति खोई ॥ (70-3)
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके बेदां का अभिआसु ॥ (1277-4)
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थाके भेखी मुकति न पाई ॥ (440-3)
पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणदे माइआ मोह सुआइ ॥ (1249-2)
पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणहि बिनु बूझे सुखु न होई ॥ (570-4)
पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै ॥ (152-6)
पड़ि पड़ि पोथी सिम्रिति पाठा ॥ (226-3)
पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥ (467-13)
पड़ि पड़ि भूलहि चोटा खाहि ॥ (686-10)
पड़ि पड़ि लूझहि बादु वखाणहि मिलि माइआ सुरति गवाई ॥३॥ (1131-8)
पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥ (470-16)
पड़ि वादु वखाणहि सिरि मारे जमकाला ॥ (230-19)
पड़िआ अणपड़िआ परम गति पावै ॥१॥ (197-18)
पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥ (469-19)
पड़िआ बूझै सो परवाणु ॥ (662-15)
पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहंकारा ॥ (140-15)
पड़िआ लेखेदारु लेखा मंगीऐ ॥ (1288-16)
पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ ॥ (469-17)
पड़िऐ नाही भेदु बुझिऐ पावणा ॥ (148-3)
पड़िऐ मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइ ॥१॥ (39-7)
पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥ (467-14)
पडीआ कवन कुमति तुम लागे ॥ (1102-19)

पड़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ जा मुंढहु घुथा जाइ ॥ (68-13)
पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ अनभउ भाउ न दरसै ॥ (973-19)
पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥ (467-14)
पड़े रे सगल बेद नह चूकै मन भेद इकु खिनु न धीरहि मेरे घर के पंचा ॥ (687-2)
पड़े सुने किआ होई ॥ (655-18)
पड़ै नही हम ही पचि हारे ॥ (1165-7)
पड़ै सुणावै ततु न चीनी ॥ (904-12)
पड़्हत गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ॥१॥ रहाउ ॥ (477-15)
पड़्हि पड़्हि पंडित करहि बीचार ॥ (791-4)
पड़्हि पड़्हि पंडित मोनी थके देसंतर भवि थके भेखधारी ॥ (1246-14)
पड़्हि पुस्तक संधिआ बादं ॥ (1353-7)
पड़्हीऐ नामु सालाह होरि बुधीं मिथिआ ॥ (1289-8)
पढे गुने नाही कछु बउरे जउ दिल महि खबरि न होई ॥२॥ (483-7)
पतंति मोह कूप दुरलभ्य देहं तत आस्रयं नानक ॥ (1354-3)
पत परापति छाव घणी चूका मन अभिमानु ॥२॥ (1168-6)
पतणि कूके पातणी वंञहु ध्रुकि विलाड़ि ॥ (1015-11)
पति अपति ता की नही लाज ॥ (324-3)
पति का धनु पूरा होआ लागा सहजि धिआनु ॥३॥ (1168-7)
पति के साद खादा लहै दाना कै सिरि दानु ॥१॥ (147-11)
पति खोई बिखु अंचलि पाइ ॥ (1187-11)
पति नामु पावहि घरि सिधावहि झोलि अम्रित पी रसो ॥ (1113-9)
पति परमेसरु गति नाराइणु धनु गुपाल गुण साखी ॥ (677-11)
पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥२॥ (469-4)
पति परवाणु सचु नीसाणु ॥ (200-17)
पति परवाना साच का पिआरे नामु सचा नीसाणु ॥ (636-7)
पति पाए दरबारि सतिगुर सबदि भै ॥१॥ रहाउ ॥ (751-18)
पति मति खोवहि नामु विसारी ॥४॥ (225-19)
पति मति पूरी पूरा परवाना ना आवै ना जासी ॥ (765-10)
पति रखु बनवारीआ मेरे मना ॥१॥ (410-15)
पति राखी गुरि पारब्रहम तजि परपंच मोह बिकार ॥ (258-1)
पति विणु पूजा सत विणु संजमु जत विणु काहे जनेऊ ॥ (903-3)
पति सिउ लेखा निबड़ै राम नामु परगासि ॥७॥ (55-5)
पति सेती अपुनै घरि जाही ॥ (253-7)
पति सेती घरि जाहु नामु वखाणीऐ ॥ (1288-19)
पति सेती जावै सहजि समावै सगले दूख मिटावै ॥ (76-9)
पति सोभा अरु मानु महतु ॥ (373-14)
पतित असंख पुनीत करि पुनह पुनह बलिहार ॥ (248-14)

पतित उधारण पारब्रहम संत बेदु कहंदा ॥ (319-7)
पतित उधारण पारब्रहमु सम्रथ पुरखु अपारु ॥ (1425-18)
पतित उधारण हरि बिरदु तुमारा राम ॥ (546-18)
पतित उधारणा जीअ जंत तारणा बेद उचार नही अंतु पाइओ ॥ (683-11)
पतित उधारणु क्रिपा निधानु ॥ (900-16)
पतित उधारणु मनि बसै नानक छूटै नाम ॥१३॥ (299-10)
पतित उधारणु सतिगुरु मेरा मोहि तिस का भरवासा ॥ (620-3)
पतित उधारन अनाथ नाथ नानक प्रभ की सरन ॥१६॥ (300-8)
पतित उधारन तारन बलि बलि बले बलि जाईऐ ॥ (1005-16)
पतित उधारन भै हरन सुख सागर निरंकार ॥ (296-14)
पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥ (1426-15)
पतित उधारन सरनि सुआमी क्रिपा निधि दइआला ॥ (546-18)
पतित उधारि लेहु हां ॥ (410-18)
पतित जाति उतमु भइआ चारि वरन पए पगि आइ ॥२॥ (733-9)
पतित पवित भए रामु कहत ही ॥१॥ रहाउ ॥ (718-13)
पतित पवित लगि गुर के पैरे जीउ ॥ (216-19)
पतित पवित्र गुरि हरि कीए मेरी जिंदुड़ीए चहु कुंडी चहु जुगि जाते राम ॥ (539-15)
पतित पवित्र लीए करि अपुने सगल करत नमसकारो ॥ (498-5)
पतित पावन अगम हरि राइआ ॥ (258-3)
पतित पावन ठाकुर नामु तुमरा सुखदाई निरमल सीतलोही ॥ (207-7)
पतित पावन दुख भै भंजनु ॥ (1083-1)
पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥१॥ रहाउ ॥ (93-16)
पतित पावन नामु जा को अनाथ को है नाथु ॥ (1007-10)
पतित पावन पूरन प्रभ साधै ॥ (1080-19)
पतित पावन प्रभ तेरो नाउ ॥ (1138-7)
पतित पावन प्रभ नाम तुमारे ॥ (741-1)
पतित पावन प्रभ नामा ॥ (627-7)
पतित पावन प्रभ बिरदु तुम्हारै ॥२॥ (866-16)
पतित पावन प्रभ बिरदु तुम्हारो हमरे दोख रिदै मत धारहु ॥ (829-2)
पतित पावन प्रभ बिरदु बेदि लेखिआ ॥ (805-7)
पतित पावन प्रभु तिआगि करे कहु कत ठहराईऐ राम ॥ (848-5)
पतित पावन बिरदु सुआमी उधरते हरि धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1306-7)
पतित पावन भगति बछल दीन किरपा धार ॥ (1223-12)
पतित पावन भगति वछल क्रिपा सिंधु सुआमीआ ॥ (1278-7)
पतित पावन भगति वछल नानक मिलीऐ संगि साति ॥३॥ (456-3)
पतित पावन माधउ बिरदु तेरा ॥ (694-2)
पतित पावन सरनि आइओ उधरु नानक जानि ॥२॥१२॥३१॥ (1304-1)

पतित पावन हरि नामा ॥ (779-5)
पतित पावन हरि नामु धिआइओ सभि किलबिख पाप लहे ॥१॥ (1336-8)
पतित पावनु तेरो नामु पारब्रहम मै एहा ओटाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (402-13)
पतित पावनु नामु नरहरि मंदभागीआं नही भाइओ ॥ (985-4)
पतित पावनु नामु हरी ॥ (986-17)
पतित पावनु बिरदु सुआमी नानक सबद अधारा ॥३॥ (784-6)
पतित पावनु भगति बछलु भै हरन तारन तरन ॥१॥ रहाउ ॥ (1306-4)
पतित पावनु हरि बिरदु सदाए इकु तिलु नही भंनै घाले ॥ (784-13)
पतित पुनीत असंख होहि हरि चरणी मनु लाग ॥ (518-17)
पतित पुनीत असंख होहि हरि चरनी मनु लाग ॥ (990-15)
पतित पुनीत करता पुरखु नानक सुणावउ ॥१७॥ (322-10)
पतित पुनीत करि लीने ॥ (623-17)
पतित पुनीत कीए खिन भीतरि अगिआनु अंधेरु वंञाई ॥३॥ (915-13)
पतित पुनीत कीए खिन भीतरि सगला रोगु बिदारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (674-18)
पतित पुनीत गोबिंदह सरब दोख निवारणह ॥ (709-10)
पतित पुनीत घणे करे ठाकुर बिरदाइआ ॥३॥ (812-10)
पतित पुनीत ता की पग रेन ॥ (393-4)
पतित पुनीत दीन बंध हरि सरनि ताहि तुम आवउ ॥ (219-16)
पतित पुनीत प्रभ तेरो नामु ॥ (898-6)
पतित पुनीत सभ होए ॥ (624-3)
पतित पुनीत होहि खिन भीतरि पारब्रहम कै रंगि ॥१॥ (1300-10)
पतिता पुनीता होहि तिन्ह संगि जिन्ह बिधाता पाइआ ॥ (543-14)
पती वाचाई मनि वजी वधाई जब साजन सुणे घरि आए ॥ (773-13)
पतु झोली मंगण कै ताई भीखिआ नामु पड़े ॥१॥ (877-9)
पतु वीचारु गिआन मति डंडा वरतमान बिभूतं ॥ (360-2)
पत्र भुरिजेण झड़ीयं नह जड़ीअं पेड स्मपता ॥ (1360-13)
पथर की बेड़ी जे चड़ै भर नालि बुडावै ॥४॥ (420-9)
पथर पाप बहु लदिआ किउ तरीऐ तारी ॥ (509-14)
पथर पाला किआ करे खुसरे किआ घर वासु ॥ (143-6)
पथिक पिआस चित सरोवर आतम जलु लैन ॥ (1272-18)
पदमनि जावल जल रस संगति संगि दोख नही रे ॥१॥ (990-8)
पन्हीआ छादनु नीका ॥ (695-18)
पपा अपर पारु नही पावा ॥ (341-16)
पपा परमिति पारु न पाइआ ॥ (258-2)
पपै पातिसाहु परमेसरु वेखण कउ परपंचु कीआ ॥ (433-17)
पपै पारि न पवही मूड़े परपंचि तूं पलचि रहिआ ॥ (435-6)
पबणि केरे पत जिउ ढलि ढुलि जुमणहार ॥१॥ (23-6)

पबर तूं हरीआवला कवला कंचन वंनि ॥ (1412-14)
परंदए न गिराह जर ॥ (144-4)
पर का बुरा न राखहु चीत ॥ (386-14)
पर की कउ अपनी करि पकरी ऐसे भूल भुलानथ ॥३॥ (1001-12)
पर की कउ अपुनी कहै अपुनो नही भाइआ ॥५॥ (229-6)
पर घर जाइ न मनु डोलाए ॥ (904-5)
पर घर जोहहि घरु नही भालहि ॥ (1021-13)
पर घरि चीतु मनमुखि डोलाइ ॥ (226-1)
पर घरि जाती ठाकि रहाई ॥ (933-12)
पर घरु जोही नीच सनाति ॥ (24-15)
पर घरु जोहै हाणे हाणि ॥ (941-2)
पर त्रिअ तिआगु करी ब्रहमचारी ॥ (164-1)
पर त्रिअ रमहि बकहि साध निंद ॥ (298-15)
पर त्रिअ रावणि जाहि सेई ता लाजीअहि ॥ (1362-6)
पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥ (274-4)
पर दरब हिरणं बहु विघन करणं उचरणं सरब जीअ कह ॥ (1360-2)
पर दरबु हिरन की बानी ॥२॥ (1351-14)
पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥१॥ रहाउ ॥ (631-17)
पर दारा पर धनु पर लोभा हउमै बिखै बिकार ॥ (1255-18)
पर द्रोह करत बिकार निंदा पाप रत कर झार ॥ (1229-4)
पर धन दोख किछु पाप न फेड़े ॥ (684-2)
पर धन पर अपवाद नारि निंदा यह मीठी जीअ माहि हितानी ॥ (1387-5)
पर धन पर तन पर की निंदा इन सिउ प्रीति न लागै ॥ (674-12)
पर धन पर तन पर ती निंदा अखाधि खाहि हरकाइआ ॥ (402-15)
पर धन पर तन पर ती निंदा पर अपबादु न छूटै ॥ (971-2)
पर धन पर दारा पर निंदा इन सिउ प्रीति निवारि ॥ (379-12)
पर धन पर दारा परहरी ॥ (1163-14)
पर धन पर दारा सिउ रचिओ बिरथा जनमु सिरावै ॥१॥ (632-18)
पर धन पर नारी रतु निंदा बिखु खाई दुखु पाइआ ॥ (1255-1)
पर नारी सिउ घालै धंधा ॥ (1165-1)
पर निंदा उसतति नह जा कै कंचन लोह समानो ॥ (685-4)
पर निंदा करहि बहु चिंता जालै दुखे दुखि निवासी हे ॥१५॥ (1049-2)
पर निंदा करे अंतरि मलु लाए ॥ (88-15)
पर निंदा कारनि बहु धावत समझिओ नह समझाइओ ॥१॥ (1232-2)
पर निंदा नह स्रोति स्रवणं आपु ित्यागि सगल रेणुकह ॥ (1357-11)
पर निंदा पर मलु मुख सुधी अगनि क्रोधु चंडालु ॥ (15-10)
पर निंदा बहु कूड़ु कमावै ॥ (364-4)

पर निंदा मुख ते नही छूटी निफल भई सभ सेवा ॥१॥ (1253-6)
पर पिर राती खसमु विसारा ॥ (1029-5)
पर हरना लोभु झूठ निंद इव ही करत गुदारी ॥ (681-6)
परउपकार न कबहू कीए नही सतिगुरु सेवि धिआइओ ॥ (712-9)
परउपकार बोलहि बहु गुणीआ मुखि संत भगत हरि दीजै ॥७॥ (1326-6)
परउपकारी सरब सधारी सफल दरसन सहजइआ ॥ (533-4)
परउपकारु नित चितवते नाही कछु पोच ॥२॥ (815-19)
परउपकारु पुंनु बहु कीआ भउ दुतरु तारि पराढे ॥२॥ (171-3)
परकिरति छोडै ततु पछाणै ॥४॥ (1128-7)
परखि खजानै पाइआ सराफी फिरि नाही ताईजा हे ॥१६॥ (1074-15)
परखि खजानै पाए से बहुड़ि न खोटिआ ॥१०॥ (520-18)
परखि लेखा नदरि साची करमि पूरै पाइआ ॥ (243-12)
परगट पाहारै जापदे सभि लोक सुणंदे ॥ (316-18)
परगट भए निदान सभ जब पूछे धरम राइ ॥१०५॥ (1370-1)
परगटि पाहारै जापदा ॥ (71-18)
परगटु थीआ आपि नानक मसतकि लिखिआ ॥२॥ (1099-5)
परगटु भइआ संसारि मिहर छावाणिआ ॥ (1291-12)
परगटु सबदु है सुखदाता अनदिनु नामु धिआवणिआ ॥५॥ (126-9)
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥२॥ (487-18)
परगासु भइआ पूरे गुर बचनी ॥१॥ रहाउ ॥ (888-12)
परचउ प्रमाणु गुर पाइअउ तिन सकयथउ जनमु जगि ॥ (1398-5)
परचै रामु रविआ घट अंतरि असथिरु रामु रविआ रंगि प्रीति ॥२॥ (1295-19)
परचै रामु रवै जउ कोई ॥ (1167-9)
परतखि देह पारब्रहमु सुआमी आदि रूपि पोखण भरणं ॥ (1401-15)
परतखि पिरु घरि नालि पिआरा विछुड़ि चोटा खाइ ॥३॥ (234-7)
परतछि रिदै गुर अरजुन कै हरि पूरन ब्रहमि निवासु लीअउ ॥५॥ (1409-6)
परतापु तुम्हारा देखि कै जमदूत छडि जाहि ॥१॥ (811-4)
परतापु लगा दोहागणी भाग जिना के नाहि जीउ ॥६॥ (72-3)
परतापु सदा गुर का घटि घटि परगासु भया जसु जन कै ॥ (1402-5)
परतिपाल प्रभ क्रिपाल कवन गुन गनी ॥ (1153-2)
परतीति हीऐ आई जिन जन कै तिन्ह कउ पदवी उच भई ॥ (1402-3)
परथाइ साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै ॥ (647-1)
परदेसु झागि सउदे कउ आइआ ॥ (372-1)
परपंच बिआधि तिआगै कवरे ॥ (225-15)
परपंच बेणु तही मनु राखिआ ब्रहम अगनि परजारी ॥५॥ (907-16)
परपंच मोह बिकार थाके कूड़ु कपटु न दोई ॥ (766-8)
परपंच वेखि रहिआ विसमादु ॥ (1174-1)

परपंचि विआपि रहिआ मनु दोइ ॥ (153-7)
परपंचु चूकै सचि समाइ ॥१॥ (842-5)
परपंचु छोडि सहज घरि बैसहु झूठा कहहु न कोई ॥ (883-4)
परपच ध्रोह मोह मिटनाई ॥ (258-4)
परफड़ु चित समालि सोइ सदा सदा गोबिंदु ॥१॥ (1168-4)
परफूलता रहे ॥१॥ (1185-5)
परबत दोख महा बिकराला ॥ (742-18)
परबतु सुइना रुपा होवै हीरे लाल जड़ाउ ॥ (142-1)
परभाते प्रभ नामु जपि गुर के चरण धिआइ ॥ (1099-17)
परम अतीतु परमेसुर कै रंगि रंग्यौ बासना ते बाहरि पै देखीअतु धाम सिउ ॥ (1408-17)
परम जोति जागाइ वाजा वावसी ॥१४॥ (1411-12)
परम जोति पुरखोतमो जा कै रेख न रूप ॥१॥ (857-7)
परम जोति पूरन पुरख सभि जीअ तुम्हारे ॥ (815-9)
परम जोति सिउ परचउ लावा ॥ (341-16)
परम तंत महि रेख न रूपु ॥२॥ (952-14)
परम तंत महि रेख न रूपु ॥३॥ (952-16)
परम तंत महि रेख न रूपु ॥४॥ (952-18)
परम तंत महि रेख न रूपु ॥५॥ (953-1)
परम तंत महि रेख न रूपु ॥६॥ (953-3)
परम पदारथु पावै सोई ॥ (232-11)
परम पदु पाइआ आपु मिटाइआ हरि पूरन किरपा धारी ॥ (780-11)
परम पदु पाइआ सेवा गुर चरणी ॥ (227-18)
परम पदु पाईऐ हां ॥ (410-7)
परम परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट ॥ (346-16)
परम बैरागु नित नित हरि धिआए मै हरि गुण कहते भावनी कहीआ ॥ (834-7)
परम बैसनो प्रभ पेखि हजूरि ॥१॥ (1147-8)
परम सुख पावहि आतम देव ॥१॥ रहाउ ॥ (1172-5)
परम हंसु सचु जोति अपार ॥ (227-17)
परमदभुतं परक्रिति परं जदिचिंति सरब गतं ॥१॥ (526-13)
परमाणो परजंत आकासह दीप लोअ सिखंडणह ॥ (1360-7)
परमादि पुरखमनोपिमं सति आदि भाव रतं ॥ (526-13)
परमानंद साधसंगति मिलि कथा पुनीत न चाली ॥३॥१॥६॥ (1253-8)
परमिति रूपु अगम अगोचर रहिओ सरब समाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1307-10)
परमेसर का आसरा संतन मन माहि ॥१॥ रहाउ ॥ (812-19)
परमेसर कै दुआरै जि होइ बितीतै सु नानकु आखि सुणावै ॥ (373-9)
परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥ (135-5)
परमेसरि जीवालिआ नानक तिसै धिआइ ॥१॥ (321-18)

परमेसरि दिता बंना ॥ (627-19)
परमेसरु आपि होआ रखवाला ॥ (622-17)
परमेसरु जीअ का दाता ॥१॥ (627-9)
परमेसरु पारब्रहम बेअंतु ॥१॥ (894-5)
परमेसरु होआ दइआलु ॥ (1271-1)
परमेसुरि बणत बणाई ॥ (629-18)
परमेस्वर तह बसहि दइआल ॥ (299-17)
परवदगार अपार अगम बेअंत तू ॥ (488-10)
परवदगारु सालाहीऐ जिस दे चलत अनेक ॥ (49-11)
परवाणा आइआ हुकमि पठाइआ फेरि न सकै कोई ॥ (688-8)
परवाणु गणी सेई इह आए सफल तिना के कामा ॥१॥ (749-1)
परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥ (473-18)
परविरति न पड़हु रही समझाइ ॥ (1154-7)
परविरति निरविरति हाठा दोवै विचि धरमु फिरै रैबारिआ ॥ (1280-11)
परविरति मारगु जेता किछु होईऐ तेता लोग पचारा ॥ (1205-17)
परविरती नरविरति पछाणै ॥ (1027-11)
परस नपरस भए कुबिजा कउ लै बैकुंठि सिधारे ॥१॥ (981-14)
परस निपरसु भए साधू जन जनु हरि भगवानु दिखीजै ॥५॥ (1324-8)
परस रामु रोवै घरि आइआ ॥ (953-19)
परसत चरन गति निरमल रीति ॥ (287-5)
परसत पैर सिझत ते सुआमी अखरु जिन कउ आइआ ॥२॥ (878-4)
परसहि संत पिआरु जिह करतारह संजोगु ॥ (1393-17)
परसादं गुर दरसनह ॥१७॥ (1361-4)
परसादि नानक गुरू अंगद परम पदवी पावहे ॥ (923-3)
परसिअउ गुरू सतिगुर तिलकु सरब इछ तिनि पाइअउ ॥९॥ (1394-4)
परहरि कपड़ु जे पिर मिलै खुसी रावै पिरु संगि ॥ (642-12)
परहरि काम क्रोधु झूठु निंदा तजि माइआ अहंकारु चुकावै ॥ (141-13)
परहरि निंदा हरि भगति जागु ॥ (1170-11)
परहरि पापु पछाणै आपु ॥ (935-4)
परहरि मैलु जलाइ कलंकु ॥ (932-13)
परहरि लोभु निंदा कूड़ु तिआगहु सचु गुर बचनी फलु पाही जीउ ॥ (598-9)
परहरु कामु क्रोधु अहंकारु ॥२॥ (324-14)
परहरु लोभु अरु लोकाचारु ॥ (324-13)
परा पूरबला अंकुरु जागिआ ॥ (627-4)
परा पूरबला करमु बणि आइआ ॥ (897-11)
परा पूरबला लीखिआ मिलिआ अब आइ ॥ (813-5)
परा पूरबली भावनी परगटु होई आइ ॥२०७॥ (1375-13)

परा पूरबि जिसहि लिखिआ बिरला पाए कोइ ॥ (1228-9)
पराइआ छिद्रु अटकलै आपणा अहंकारु वधावै ॥ (366-9)
पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइ ॥ (1249-9)
पराई जो निंदा चुगली नो वेमुखु करि कै भेजिआ ओथै भी मुहु काला दुहा वेमुखा दा कराइआ ॥ (306-7)
पराई बखीली करहि आपणी परतीति खोवनि सगवा भी आपु लखाहि ॥ (852-18)
परिओ कालु सभै जग ऊपर माहि लिखे भ्रम गिआनी ॥ (654-19)
परिवा प्रीतम करहु बीचार ॥ (343-7)
परे सरनि आन सभ तिआगि ॥ (289-14)
परेतहु कीतोनु देवता तिनि करणैहारे ॥ (323-2)
परै परै ही कउ लुझी हे ॥१॥ (213-11)
पल पंकज महि कोटि उधारे ॥ (686-13)
पल पंकज महि नामु छडाए जे गुर सबदु सिञापै ॥४॥ (1275-5)
पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥ (278-11)
पलक दिसटि ता की लागहु पाई ॥३॥ (390-4)
पलक द्रिसटि देखि भूलो आक नीम को तूमरु ॥ (403-7)
पलका न लागै प्रिअ प्रेम पागै चितवंति अनदिनु प्रभ मना ॥ (462-5)
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥ (133-17)
पलु पलु निमख सदा हरि जपने ॥१॥ (806-7)
पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ॥२॥ (710-16)
पलू अनत मूलु बिचकारि ॥ (974-16)
पलै साचु सचे सचिआरा ॥ (1035-2)
पवड़ी ॥ (1097-17)
पवड़ी ॥ (139-16)
पवड़ी ॥ (142-15)
पवड़ी ॥ (142-6)
पवड़ी ॥ (143-3)
पवड़ी ॥ (250-16)
पवड़ी ॥ (251-1)
पवड़ी ॥ (253-13)
पवड़ी ॥ (255-10)
पवड़ी ॥ (259-5)
पवण पाणी अगनी पाताल ॥ (7-11)
पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ (8-10)
पवणु पाणी अगनि तिनि कीआ ब्रहमा बिसनु महेस अकार ॥ (504-1)
पवणै कै वसि देहुरी मसतकि सचु नीसाणु ॥५॥ (63-5)
पवणै खेलु कीआ सभ थाई कला खिंचि ढाहाइदा ॥५॥ (1033-14)
पवणै पाणी अगनी जीउ पाइआ ॥ (1031-9)

पवणै पाणी जाणै जाति ॥ (1256-7)
पवन अर्मभु सतिगुर मति वेला ॥ (943-1)
पवन का वासा सुंन निवासा अकल कला धर सोई ॥ (944-13)
पवन कोटि चउबारे फिरहि ॥ (1163-2)
पवन झुलारे माइआ देइ ॥ (801-9)
पवन सूतु सभु नीका करिआ सतिगुरि सबदु वीचारे ॥ (983-5)
पवनपति उनमनि रहनु खरा ॥ (972-1)
पवनि अफार तोर चामरो अति जजरी तेरी रे माटुली ॥१॥ रहाउ ॥ (1216-7)
पवनि न इती मामले सहां न इती दुख ॥७६॥ (1381-18)
पवनि परोइओ सगल अकारा पावक कासट संगे ॥ (1235-7)
पवनु न साधिआ सचु न अराधिआ ॥ (945-4)
पवनु विचोला करत इकेला जल ते ओपति होआ ॥ (884-15)
पवनै महि पवनु समाइआ ॥ (885-12)
पवहि दझहि नानका तरीऐ करमी लगि ॥२॥ (147-14)
पवहु चरणा तलि ऊपरि आवहु ऐसी सेव कमावहु ॥ (883-2)
पवित पावन से जन साचे एक सबदि लिव लाई ॥६॥ (910-8)
पवितु पावन से जन निरमल हरि कै नामि समाइ ॥८॥ (1346-11)
पवितु पावनु परम बीचारी ॥ (317-9)
पवितु माता पिता कुट्मब सहित सिउ पवितु संगति सबाईआ ॥ (919-8)
पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥ (919-7)
पवित्र अपवित्रह किरण लागे मनि न भइओ बिखादु ॥५॥ (1018-4)
पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥ (279-12)
पवित्र पावन सदा है बाणी गुरमति अंतरु भीजै हे ॥१२॥ (1049-19)
पसचम दुआरे की सिल ओड़ ॥ (1159-17)
पसरहि कला सहज परगास ॥ (344-7)
पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥ (275-8)
पसरी किरणि जोति उजिआला ॥ (1033-18)
पसरी किरणि रसि कमल बिगासे ससि घरि सूरु समाइआ ॥ (1332-1)
पसु आपन हउ हउ करै नानक बिनु हरि कहा कमाति ॥१॥ (251-16)
पसु पंखी अनिक जोनि जिंदू ॥ (237-12)
पसु पंखी त्रिगद जोनि ते मंदा ॥३॥ (188-8)
पसु पंखी बिरख असथावर बहु बिधि जोनि भ्रमिओ अति भारी ॥ (1388-8)
पसु पंखी भूत अरु प्रेता ॥ (1005-2)
पसु परेत उसट गरधभ अनिक जोनी लेट ॥ (1224-11)
पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥ (274-18)
पसू पंखी सैल तरवर गणत कछू न आवए ॥ (705-9)
पसू परीति घास संगि रचै ॥ (892-8)

पसू परेत अगिआन उधारे इक खणे ॥ (963-8)
पसू परेत मुगध कउ तारे पाहन पारि उतारै ॥ (802-17)
पसू परेत मुगध ते बुरी ॥ (890-2)
पसू परेत मुगध भए स्रोते हरि नामा मुखि गाइआ ॥१॥ (614-14)
पसू भए अभिमानु न जाई ॥२॥ (1190-5)
पसू भए नही मिटै नीसाना ॥६॥ (903-15)
पसू मरै दस काज सवारै ॥१॥ (870-5)
पसू मलेछ नीच चंडाला ॥ (832-8)
पसू माणस चमि पलेटे अंदरहु कालिआ ॥ (1284-11)
पसू मिलहि चंगिआईआ खड़ु खावहि अम्रितु देहि ॥ (489-6)
पसूआ करम करै नही बूझै कूड़ु कमावै कूड़ो होइ ॥ (1132-17)
पहर मूरत पल गावत गावत गोविंद गोविंद वखानी ॥१॥ (404-18)
पहरिआ कै घरि गावणा ॥ (93-1)
पहिरउ नही दगली लगै न पाला ॥१॥ रहाउ ॥ (476-8)
पहिरा अगनि हिवै घरु बाधा भोजनु सारु कराई ॥ (147-2)
पहिरावा देखे ऊभि जाहि ॥ (1196-9)
पहिरि चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै ॥१॥ (477-4)
पहिरि समाधि सनाहु गिआनि है आसणि चड़िअउ ॥ (1396-3)
पहिरि सिरपाउ सेवक जन मेले नानक प्रगट पहारे ॥२॥२९॥९३॥ (631-5)
पहिरे पट्मबर करि अड्मबर आपणा पिड़ु मलीऐ ॥ (766-1)
पहिरै बागा करि इसनाना चोआ चंदन लाए ॥ (213-1)
पहिल पुरसाबिरा ॥ (693-17)
पहिल पुरीए पुंडरक वना ॥ (693-16)
पहिल बसंतै आगमनि तिस का करहु बीचारु ॥ (791-15)
पहिल बसंतै आगमनि पहिला मउलिओ सोइ ॥ (791-13)
पहिलां मासहु निमिआ मासै अंदरि वासु ॥ (1289-11)
पहिला आगमु निगमु नानकु आखि सुणाए पूरे गुर का बचनु उपरि आइआ ॥ (304-1)
पहिला धरती साधि कै सचु नामु दे दाणु ॥ (19-2)
पहिला पहरु धंधै गइआ दूजै भरि सोइआ ॥ (43-12)
पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥ (472-14)
पहिला पूतु पिछैरी माई ॥ (481-11)
पहिला फाहा पइआ पाधे पिछो दे गलि चाटड़िआ ॥५॥ (435-1)
पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥ (1102-10)
पहिला वसतु सिञाणि कै तां कीचै वापारु ॥ (1410-6)
पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥ (141-4)
पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ॥ (473-3)
पहिली करूपि कुजाति कुलखनी साहुरै पेईऐ बुरी ॥ (483-17)

पहिले दरसनु मगहर पाइओ फुनि कासी बसे आई ॥२॥ (969-13)
पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ ॥३॥ (485-10)
पहिले पै संत पाइ धिआइ धिआइ प्रीति लाइ ॥ (1305-12)
पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काइ करउ ॥२॥ (485-9)
पहिलै पहरै नैण सलोनड़ीए रैणि अंधिआरी राम ॥ (1110-2)
पहिलै पहरै फुलड़ा फलु भी पछा राति ॥ (1384-1)
पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धरि पाइता उदरै माहि ॥ (77-7)
पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥ (75-12)
पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि पाइआ उदर मंझारि ॥ (76-11)
पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हुकमि पइआ गरभासि ॥ (74-16)
पहिलै पिआरि लगा थण दुधि ॥ (137-16)
पहिलो दे जड़ अंदरि जमै ता उपरि होवै छांउ ॥ (1288-6)
पहिलो दे तैं रिजकु समाहा ॥ (130-18)
पही न वंञै बिरथड़ा जो घरि आवै चलि ॥२॥ (1095-4)
पहुचि न मूका फिरि पछुताना ॥२॥ (389-6)
पहुचि न सकै कोइ तेरी टेक जन ॥ (519-17)
पहुचि न साकहि जन तेरे कउ ॥२॥ (389-14)
पहुचि न साकै काहू बातै आगै ठउर न पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (380-18)
पांच कोस पर गऊ चरावत चीतु सु बछरा राखीअले ॥३॥ (972-16)
पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥ (1427-2)
पांच नारद के मिटवे फूटे ॥ (872-7)
पांच नारद कै संगि बिधवारि ॥ (872-7)
पांच पचीस मोह मद मतसर आडी परबल माइआ ॥ (1161-14)
पांच पलीतह कउ परबोधै ॥ (872-18)
पांच बरख को अनाथु ध्रू बारिकु हरि सिमरत अमर अटारे ॥ (999-3)
पांच मिरग बेधे सिव की बानी ॥१॥ (1136-13)
पांचउ इंद्री निग्रह करई ॥ (341-17)
पांचउ लरिका जारि कै रहै राम लिव लागि ॥४२॥ (1366-13)
पांचउ लरिके मारि कै रहै राम लिउ लाइ ॥८३॥ (1368-17)
पांचउ संगि बरंगन लावहि ॥ (1430-13)
पांचउ संगि बरंगन लावहि ॥ (1430-16)
पांचै पंच तत बिसथार ॥ (343-12)
पांडे ऐसा ब्रहम बीचारु ॥ (355-3)
पांडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवतु देखिआ था ॥ (874-19)
पांडे तुमरा रामचंदु सो भी आवतु देखिआ था ॥ (875-1)
पांडे तुमरी गाइत्री लोधे का खेतु खाती थी ॥ (874-18)
पांडे तू जाणै ही नाही किथहु मासु उपंना ॥ (1290-7)

पाइ कुहाड़ा मारिआ गाफलि अपुनै हाथि ॥१३॥ (1365-4)
पाइ ठगउरी आपि भुलाइओ ॥ (1005-1)
पाइ ठगउरी आपि भुलाइओ जनमत बारो बार ॥ (1223-18)
पाइ ठगउली सभु जगु जोहिआ ॥ (394-15)
पाइ परउ गुर कै बलिहारै जिनि साची बूझ बुझाई ॥ रहाउ ॥ (596-4)
पाइ परह सतिगुरू कै जिनि भरमु बिदारिआ ॥ (399-13)
पाइ लगउ तजि मेरा तेरै ॥ (181-3)
पाइ लगउ नित करउ जुदरीआ हरि मेलहु करमि बिधाता ॥२॥ (984-13)
पाइ लगउ बेनती करउ लेउगी पंथु बताए ॥५॥ (725-5)
पाइ लगउ मोहि करउ बेनती कोऊ संतु मिलै बडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ (204-5)
पाइ लगह नित करह बिनंती गुरि सतिगुरि पंथु बताइआ ॥ (574-10)
पाइआ अमोलु पदारथो छोडि न कतहू जाइ ॥ (1002-13)
पाइआ अम्रितु गुरि क्रिपा कीनी सचा मनि वसाइआ ॥ (918-15)
पाइआ खजाना बहुतु निधाना साणथ मेरी आपि खड़ा ॥ (453-2)
पाइआ नामु निधानु जिस नो भालदा ॥ (524-5)
पाइआ नामु निधानु बहुतु खजानिआ ॥ (522-13)
पाइआ निहचलु थानु फिरि गरभि न लेटिआ ॥ (520-16)
पाइआ रतनु घराहु दीवा बालिआ ॥ (149-7)
पाइआ लाभु वजी वाधाई ॥ (1339-17)
पाइआ लाभु सचा धनु लाहे ॥ (893-15)
पाइआ लालु रतनु मनि पाइआ ॥ (215-5)
पाइआ लाहा लाभु नामु पूरन होए काम ॥ (46-6)
पाइआ वेड़ु माइआ सरब भुइअंगा ॥ (801-10)
पाइओ न जाई कही भांति रे प्रभु नानक गुर मिलि लाधा ॥४॥६॥ (1204-10)
पाइओ पेड थानि हां ॥ (409-14)
पाइओ बाल बुधि सुखु रे ॥ (214-13)
पाइओ रे परम निधानु मिटिओ है अभिमानु एकै निरंकार नानक मनु लगना ॥२॥२॥३०॥ (678-19)
पाइओ लालु अमोलु नामु हरि छोडि न कतहू जाए ॥३॥ (1205-2)
पाइओ है गुण निधानु सगल आस पूरी ॥ (1230-13)
पाई जोरि बात इक कीनी तह तांती मनु मानां ॥ (484-12)
पाई नव निधि हरि कै नाइ ॥ (933-5)
पाई नानक प्रभ सरणाई ॥२॥१४॥७८॥ (628-6)
पाईअनि सभि निधान तेरै रंगि रतिआ ॥ (519-17)
पाईअन्हि सभि निधान साहिबि तुठिआ ॥१२॥ (521-10)
पाईऐ वड पुनी मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (409-18)
पाउ घीउ संगि लूना ॥ (656-15)
पाउ पखाला तिस के मनि तनि नित भावउ ॥ (318-5)

पाए मनोरथ सभि जोनी नह भवै ॥ (523-14)
पाक परवदगार तू खुदि खसमु वडा अतोलु ॥१॥ (724-16)
पाकी नाई पाक थाइ सचा परवदिगारु ॥१॥ रहाउ ॥ (53-10)
पाखंड कीने जोगु न पाईऐ बिनु सतिगुर अलखु न पाइआ ॥१२॥ (1043-11)
पाखंड द्रिसटि मनि कपटु कमाहि ॥ (1169-8)
पाखंड धरमु प्रीति नही हरि सउ गुर सबद महा रसु पाइआ ॥१४॥ (1043-14)
पाखंड पाखंड करि करि भरमे लोभु पाखंडु जगि बुरिआरे ॥ (981-6)
पाखंड भरम उपाव करि थाके रिद अंतरि माइआ माइआ ॥ (1178-7)
पाखंडि कीनै जमु नही छोडै लै जासी पति गवाई ॥१४॥ (910-13)
पाखंडि कीन्है मुकति न होइ ॥२॥ (839-4)
पाखंडि जमकालु न छोडई लै जासी पति गवाइ ॥ (587-7)
पाखंडि पारब्रहमु कदे न पाए ॥ (88-15)
पाखंडि प्रेमु न पाईऐ खोटा पाजु खुआरु ॥१॥ (54-1)
पाखंडि भगति न होवई दुबिधा बोलु खुआरु ॥ (28-17)
पाखंडि भगति न होवई पारब्रहमु न पाइआ जाइ ॥ (849-11)
पाखंडि भगति निरति दुखु होइ ॥३॥ (364-19)
पाखंडि मैलु न चूकई भाई अंतरि मैलु विकारी ॥ (635-11)
पाखंडि रता सभु लोकु वणाह्मबै ॥३॥ (1104-15)
पाखंडि राचि ततु नही बीनै ॥ (840-5)
पाखंडि लोभी मारीऐ जम डंडु देइ सजाइ ॥६॥ (234-10)
पाखंडु वरतिआ हरि जाणनि दूरि ॥ (880-4)
पाखंतण बाज बजाइला ॥ (1166-3)
पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ता चो मारगु नाही ॥ (488-5)
पाखान गढि कै मूरति कीन्ही दे कै छाती पाउ ॥ (479-7)
पाचउ इंद्री बसि करि राखै ॥ (974-13)
पाचहु मुसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै ॥३॥ (480-7)
पाछं करोति अग्रणीवह निरासं आस पूरनह ॥ (1355-16)
पाछे आनदु प्रभि कीता ॥ (629-18)
पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ ॥३॥ (1196-13)
पाछै कछू न होइगा जउ सिर परि आवै कालु ॥१३८॥ (1371-17)
पाछै कुसल खेम गुरि कीआ ॥ (626-4)
पाछै ते जमु किउ न पठावहु ॥३॥३२॥ (329-15)
पाछै पाउ न दीजीऐ आगै होइ सु होइ ॥११६॥ (1370-13)
पाछै बहुरि न आवनु पावउ ॥ (693-5)
पाछै बाघु डरावणो आगै अगनि तलाउ ॥ (1410-13)
पाछै भोग जु भोगवे तिन को गुड़ु लै खाहि ॥४४॥ (1366-15)
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ॥५५॥ (1367-8)

पाट पट्मबर पहिरि हढावउ ॥ (225-6)
पाट पट्मबर बिरथिआ जिह रचि लोभाए ॥३॥ (745-10)
पाठ पड़ै नही कीमति पाइ ॥ (355-8)
पाठ पड़ै ले लोक सुणावै ॥ (905-19)
पाठ पुराण उदै नही आसत ॥ (1036-5)
पाठु पड़िओ अरु बेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे ॥ (641-17)
पाठु पड़ै ना बूझई भेखी भरमि भुलाइ ॥ (66-18)
पाठु पड़ै मुखि झूठो बोलै निगुरे की मति ओहै ॥ (1013-4)
पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो ॥ (657-5)
पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥४॥ (474-15)
पाणी अंनु न भावै मरीऐ हावै बिनु पिर किउ सुखु पाईऐ ॥ (244-19)
पाणी चितु न धोपई मुखि पीतै तिख जाइ ॥ (1240-8)
पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ (4-11)
पाणी पखा पीसउ सेवक कै ठाकुर ही का आहरु जीउ ॥१॥ (101-17)
पाणी पखा पीसु दास कै तब होहि निहालु ॥ (811-14)
पाणी पिता जगत का फिरि पाणी सभु खाइ ॥२॥ (1240-9)
पाणी प्राण पवणि बंधि राखे चंदु सूरजु मुखि दीए ॥ (877-11)
पाणी मरै न बुझाइआ जाइ ॥ (878-10)
पाणी विचहु रतन उपंने मेरु कीआ माधाणी ॥ (150-2)
पाताल पुरी जैकार धुनि कबि जन कल वखाणिओ ॥ (1390-6)
पाताल पुरीआ एक भार होवहि लाख करोड़ि ॥ (1327-12)
पाताल पुरीआ लोअ आकारा ॥ (1060-19)
पाताला आकास पूरनु हभ घटा ॥ (1101-16)
पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥ (5-2)
पाताली आकासि तू भाई घरि घरि तू गुण गिआनु ॥ (637-3)
पाताली आकासी सखनी लहबर बूझी खाई रे ॥१॥ (381-15)
पातिसाह साह उमराउ पतीआए ॥ (869-11)
पातिसाही भगत जना कउ दितीअनु सिरि छतु सचा हरि बणाइ ॥ (590-7)
पातिसाहु छत्र सिर सोऊ ॥ (258-4)
पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ ॥ (479-5)
पाथर कउ बहु नीरु पवाइआ ॥ (1136-18)
पाथरु डुबदा काढि लीआ साची वडिआई ॥४॥ (565-13)
पाथरु ले पूजहि मुगध गवार ॥ (556-10)
पाधा गुरमुखि आखीऐ चाटड़िआ मति देइ ॥ (938-2)
पाधा पड़िआ आखीऐ बिदिआ बिचरै सहजि सुभाइ ॥ (937-19)
पाधाणू संसारु गारबि अटिआ ॥ (705-5)
पान कपूर सुबासक चंदन अंति तऊ मरना ॥३॥ (477-2)

पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥१॥ रहाउ ॥ (486-19)
पान फूल मीठे रस रोग ॥ (1187-12)
पान सुपारी खातीआ मुखि बीड़ीआ लाईआ ॥ (726-4)
पाना वाड़ी होइ घरि खरु सार न जाणै ॥ (725-8)
पानी पखा करउ तजि अभिमानु ॥ (391-7)
पानी पखा पीसउ संत आगै गुण गोविंद जसु गाई ॥ (673-7)
पानी माहि देखु मुखु जैसा ॥ (1318-18)
पानी मैला माटी गोरी ॥ (336-18)
पानीआ बिनु मीनु तलफै ॥ (874-1)
पाप कमावदिआ तेरा कोइ न बेली राम ॥ (546-8)
पाप करंता मरि गइआ अउध पुनी खिन माहि ॥२२१॥ (1376-10)
पाप करंतौ नह संगाइ ॥ (1192-16)
पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥२॥ (727-4)
पाप करहि पंचां के बसि रे ॥ (1348-3)
पाप करे करि मूकरि पावै भेख करै निरबानै ॥१॥ (680-4)
पाप करेदड़ सरपर मुठे ॥ (1019-19)
पाप करै ता पछोताणे ॥३॥ (676-12)
पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो ॥ (722-17)
पाप खंडन प्रभ तेरो नामु ॥ (894-13)
पाप पथर तरणु न जाई ॥ (990-1)
पाप पुंन का इसु लेपु न लागै ॥ (868-17)
पाप पुंन की सार न जाणी ॥ (110-7)
पाप पुंन की सार न जाणै भूला फिरै अजाई ॥१॥ (1329-17)
पाप पुंन तब कह ते होता ॥ (290-17)
पाप पुंन दुइ एक समान ॥ (325-6)
पाप पुंन दुइ संगमे खुधिआ जमकाला ॥ (1012-9)
पाप पुंन वरतै संसारा ॥ (1052-13)
पाप पुंन हमरै वसि नाहि ॥ (899-6)
पाप बंधन नित पउत जाहि ॥४॥ (1192-19)
पाप बिकार मनूर सभि भारे बिखु दुतरु तरिओ न जावैगो ॥६॥ (1308-14)
पाप बिकार मनूर सभि लदे बहु भारी ॥ (1248-1)
पाप बिनासनु सेविआ पवित्र संतन की धूरे ॥५॥ (133-2)
पाप बिनासे नाम कै रंगि ॥३॥ (900-18)
पाप मिटहि साधू सरनि दइआल ॥ रहाउ ॥ (202-5)
पापड़िआ पछाड़ि बाणु सचावा संन्हि कै ॥ (521-12)
पापा कमाणे छडहि नाही लै चले घति गलाविआ ॥ (460-2)
पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥ (417-17)

पापि पुंनि जगु जाइआ भाई बिनसै नामु विसारी ॥ (635-8)
पापि लदे पापे पासारा ॥ (935-4)
पापी कउ लागा संतापु ॥१॥ (199-15)
पापी करम कमावदे करदे हाए हाइ ॥ (1425-13)
पापी का घरु अगने माहि ॥ (1165-2)
पापी की गति कतहू नाही पापी पचिआ आप कमाइण ॥१॥ रहाउ ॥ (1138-11)
पापी जीअरा लोभु करतु है आजु कालि उठि जाहिगा ॥१॥ रहाउ ॥ (1106-6)
पापी ते राखे नाराइण ॥ (1138-11)
पापी पाथर डूबदे गुरमति हरि तारे ॥ (163-13)
पापी मुकतु कराए आपु गवाए निज घरि पाइआ वासा ॥ (772-16)
पापी मूआ गुर परतापि ॥१॥ रहाउ ॥ (1137-15)
पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥ (473-6)
पापी हीऐ मै कामु बसाइ ॥ (1186-10)
पापीआ नो न देई थिरु रहणि चुणि नरक घोरि चालिअनु ॥ (91-1)
पापु पुंनु जां चै डांगीआ दुआरै चित्र गुपतु लेखीआ ॥ (1292-6)
पापु पुंनु तह भई कहावत ॥ (291-19)
पापु पुंनु दुइ बैल बिसाहे पवनु पूजी परगासिओ ॥ (333-13)
पापु पुंनु दुइ साखी पासि ॥२॥ (351-10)
पापु पुंनु दोऊ निरवरई ॥२७॥ (341-17)
पापु पुंनु बीज की पोट ॥ (152-11)
पापु बुरा पापी कउ पिआरा ॥ (935-4)
पापो पापु कमावदे पापे पचहि पचाइ ॥ (36-1)
पायउ नही अंतु सुरे असुरह नर गण गंध्रब खोजंत फिरे ॥ (1405-5)
पारखीआ वथु समालि लई गुर सोझी होई ॥ (425-15)
पारजातु इहु हरि को नाम ॥ (265-5)
पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥ (470-6)
पारजातु घरि आगनि मेरै पुहप पत्र ततु डाला ॥ (503-8)
पारजातु जपि अलख अभेवा ॥ (108-6)
पारजातु लोड़हि मन पिआरे ॥ (1078-4)
पारब्रहम अपर्मपर देवा ॥ (98-7)
पारब्रहम अपर्मपर सतिगुर जिसु सिमरत मनु सीतलाइणा ॥१०॥ (1078-10)
पारब्रहम अपर्मपर सुआमी ॥ (192-14)
पारब्रहम अपर्मपर सुआमी सिमरत पारि पराना ॥३॥ (672-18)
पारब्रहम आजोनी स्मभउ सरब थान घट बीठा ॥ (1212-14)
पारब्रहम कउ सिमरहु मनां ॥ (1303-9)
पारब्रहम का अंतु न तेहि ॥७॥ (1236-6)
पारब्रहम का अंतु न पारु ॥ (237-16)

पारब्रहम का ओइ धिआनु धरते ॥३॥ (181-11)
पारब्रहम का करहि वखिआण ॥ (867-9)
पारब्रहम का नामु द्रिड़ाए अंते होइ सखाई ॥१॥ रहाउ ॥ (915-12)
पारब्रहम की अचरज सभा ॥१॥ रहाउ ॥ (1235-16)
पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥ (281-14)
पारब्रहम की दरगह गवे ॥ (287-6)
पारब्रहम की लागउ सेव ॥ (862-16)
पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥१॥ रहाउ ॥ (188-17)
पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥३॥ (742-15)
पारब्रहम की सरणी पाहि ॥ (184-13)
पारब्रहम के भगत निरवैर ॥ (1145-13)
पारब्रहम के संगी संता ॥३॥ (186-18)
पारब्रहम के संगी साध ॥३॥ (393-15)
पारब्रहम के सगले ठाउ ॥ (275-7)
पारब्रहम केवल गुण गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1146-9)
पारब्रहम गरीब निवाज ॥ (277-9)
पारब्रहम गुण अगम बीचार ॥ (200-7)
पारब्रहम गुर अगम अपार ॥३॥ (1149-17)
पारब्रहम गुर नाही भेद ॥४॥११॥२४॥ (1142-8)
पारब्रहम गुर बेपरवाहे ॥ (869-13)
पारब्रहम गुर भए दइआला ॥ (1142-2)
पारब्रहम गुरदेव नीचहु उच थपे ॥ (710-7)
पारब्रहम गुरदेव सदा हजूरीऐ ॥१३॥ (709-1)
पारब्रहम जपि सदा निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ (866-15)
पारब्रहम जब भए क्रिपाल ॥ (863-19)
पारब्रहम जब भए दइआल ॥ (1298-17)
पारब्रहम जब भए दइआल ॥ (899-12)
पारब्रहम ठाकुर आगाधि ॥ (180-17)
पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥ (276-11)
पारब्रहम तूं देहि त पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (196-15)
पारब्रहम तेरी सरणाइ ॥ (195-12)
पारब्रहम नानक गुरदेव ॥ (1338-14)
पारब्रहम परमेसर सतिगुर आपे करणैहारा ॥ (749-6)
पारब्रहम परमेसर सतिगुर हम बारिक तुम्ह पिता किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (828-12)
पारब्रहम परमेसरि जन राखे निंदक कै सिरि कड़किओ कालु ॥१॥ रहाउ ॥ (1151-19)
पारब्रहम परमेसरो प्रभू के गुण गाउ ॥१॥ (501-9)
पारब्रहम परमेसुर गोबिंद ॥ (283-19)

पारब्रहम परमेसुर माधो परम हंसु ले सिधाना ॥१॥ (480-10)
पारब्रहम परमेसुर सतिगुर वसि कीन्हे जिनि सगले जंत ॥ (825-8)
पारब्रहम परमेसुर सतिगुर सभना करत उधारा ॥ (611-4)
पारब्रहम पुरख दातारह नानक गुर सेवा किं न लभ्यते ॥२०॥ (1355-17)
पारब्रहम पूरन गुरदेव ॥ (193-17)
पारब्रहम पूरन जन ओट ॥ (193-2)
पारब्रहम पूरन देखाइआ ॥४॥४१॥११०॥ (188-4)
पारब्रहम पूरन धनी नह बूझै परताप ॥ (297-6)
पारब्रहम पूरन निरजोग ॥१॥ (888-17)
पारब्रहम पूरन परमेसर नानक नामु धिआईऐ ॥२॥ (249-13)
पारब्रहम पूरन परमेसुर मन ता की ओट गहीजै रे ॥ (209-13)
पारब्रहम पूरन बखसंद ॥ (866-9)
पारब्रहम पूरन मनि भाणी ॥ (1149-18)
पारब्रहम प्रभ अंतरजामी ॥ (107-18)
पारब्रहम प्रभ करि दइआ गुण गावा तेरे नित जीउ ॥ (760-11)
पारब्रहम प्रभ किरपा धारी ॥१॥ (200-11)
पारब्रहम प्रभ तेरी सरना ॥ (804-12)
पारब्रहम प्रभ भए क्रिपाल ॥ (826-18)
पारब्रहम प्रभ भए दइआला दुखु मिटिआ सभ परवारी ॥१॥ (620-15)
पारब्रहम प्रभ भए दइआला सिव कै बाणि सिरु काटिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (714-4)
पारब्रहम प्रभ भए रखवारे ॥ (105-19)
पारब्रहम प्रभ भए रखवाले ॥ (801-18)
पारब्रहम प्रभ सूख निधान ॥ (1146-6)
पारब्रहम बिनु जानु न दूजा ॥२॥ (199-5)
पारब्रहम भए दइआल ॥ (1272-16)
पारब्रहम मनि भाणी ॥ (629-3)
पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥ (289-11)
पारब्रहम मोहि किरपा कीजै ॥ (181-12)
पारब्रहम विटहु कुरबाना ॥१॥ (624-2)
पारब्रहम सतिगुर आदेसु ॥ (1141-17)
पारब्रहम सभ ऊच बिराजे ॥ (1084-14)
पारब्रहम सिउ लागी प्रीति ॥ (184-1)
पारब्रहम सिउ लागो धिआन ॥ (1148-11)
पारब्रहम सिउ लागो रंगु ॥१॥ (178-5)
पारब्रहमि अपणा बिरदु प्रगटाइआ ॥ (1138-13)
पारब्रहमि खसमाना कीआ जिस दी वडी वडिआई राम ॥ (783-9)
पारब्रहमि जन कीनो दान ॥ (264-17)

पारब्रहमि जिसु कीनी दइआ ॥ (1141-2)
पारब्रहमि जिसु लिखिआ मनि तिसै वुठा ॥ (321-6)
पारब्रहमि तू बखसिआ संतन रस भोग ॥ रहाउ ॥ (807-13)
पारब्रहमि तू राखिआ दे अपने हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ (818-17)
पारब्रहमि दइआलि सागरु तारिआ ॥ (854-4)
पारब्रहमि निबाही पूरी ॥ (623-8)
पारब्रहमि प्रभि करी मइआ ॥ (1183-18)
पारब्रहमि प्रभि किरपा धारी अपणा बिरदु समारिआ ॥१॥ (620-2)
पारब्रहमि प्रभि दइआ धारी बखसि लीन्हे आपि ॥ (501-18)
पारब्रहमि प्रभि मेघु पठाइआ ॥ (106-9)
पारब्रहमि फुरमाइआ मीहु वुठा सहजि सुभाइ ॥ (321-17)
पारब्रहमि सा अगनि महि साड़ी ॥१॥ (199-11)
पारब्रहमि साजि सवारिआ ॥ (627-8)
पारब्रहमु आइआ मनि चीति ॥ (1149-12)
पारब्रहमु आराधते मुखि अम्रितु पीवा ॥१॥ रहाउ ॥ (815-18)
पारब्रहमु आराधीऐ उधरै सभ परवारु ॥२॥ (218-17)
पारब्रहमु ऐसो आगनता ॥ (260-11)
पारब्रहमु करता अबिनास ॥ (275-9)
पारब्रहमु करि देखहि नाली ॥ (1085-4)
पारब्रहमु करे जिसु दाति ॥३॥ (1148-17)
पारब्रहमु करे प्रतिपाला ॥ (623-17)
पारब्रहमु गुरु रहिआ समाइ ॥ (864-13)
पारब्रहमु जनि सेविआ अनदिनु रंगि राता ॥१॥ (819-13)
पारब्रहमु जनु रहिआ समाइ ॥३॥ (193-7)
पारब्रहमु जपि पहिरि सनाह ॥ (742-6)
पारब्रहमु जपि सदा निहाल ॥ रहाउ ॥ (619-1)
पारब्रहमु जब होइ दइआल ॥ (869-3)
पारब्रहमु जा कै मनि वूठा सो पूर करमा ना छिना ॥११॥ (1079-13)
पारब्रहमु जि चीन्हसी आसा ते न भावसी ॥ (486-1)
पारब्रहमु जिनि रिदै अराधिआ तिनि भउ सागरु तरिआ ॥१॥ (497-2)
पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता ॥ (283-15)
पारब्रहमु जिन्हि रिदै अराधिआ ता कै संगि तरउ रे ॥१॥ रहाउ ॥ (383-14)
पारब्रहमु जिसु किरपा करै ॥ (899-18)
पारब्रहमु जिसु विसरै तिसु बिरथा सासु ॥ (321-15)
पारब्रहमु जो सद ही सेवै सो गुर मिलि निहचलु कहणा ॥१॥ (109-2)
पारब्रहमु ता ते मोहि डीठा ॥३॥ (187-12)
पारब्रहमु तिन कंउ संतुसटु भइआ जो गुर चरनी जन पाहि ॥ (592-10)

पारब्रहमु नानक मनि धिआइआ ॥२॥३२॥ (378-14)
पारब्रहमु निकटि करि जाणु ॥ (869-4)
पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥ (295-4)
पारब्रहमु परमेसरु अनूपु ॥ (1152-16)
पारब्रहमु परमेसरु गुरमुखि जाणिआ ॥ (1291-10)
पारब्रहमु परमेसरु धिआइआ कुसल खेम होए कलिआन ॥१॥ रहाउ ॥ (825-14)
पारब्रहमु परमेसरु बिसरिआ अपणा कीता पावै निंदकु ॥१॥ रहाउ ॥ (373-7)
पारब्रहमु परमेसरो सभ बिधि जानणहार ॥ (300-7)
पारब्रहमु परमेसुरु धिआईऐ ॥ (184-4)
पारब्रहमु परमेसुरु सुआमी दूख निवारणु नाराइणे ॥ (1321-8)
पारब्रहमु पूरन परमेसरु रवि रहिआ सभनी जाई ॥ रहाउ ॥ (628-1)
पारब्रहमु पूरा मेरै नालि ॥ (621-3)
पारब्रहमु प्रभु एकु है दूजा नाही कोइ ॥ (45-11)
पारब्रहमु प्रभु द्रिसटी आइआ पूरन अगम बिसमाद ॥ (320-19)
पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥ (922-17)
पारब्रहमु प्रभु सिमरीऐ पिआरे दरसन कउ बलि जाउ ॥१॥ (431-12)
पारब्रहमु प्रभु सुघड़ सुजाणु ॥ (1340-11)
पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥ (136-11)
पारब्रहमु भइओ साथी ॥ (625-18)
पारब्रहमु माइआ पटलि बिसरिआ ॥३॥ (805-15)
पारब्रहमु रिद माहि समाइआ ॥१॥ (1348-14)
पारब्रहमु वसिआ मनि आइ ॥१॥ (1151-1)
पारब्रहमु सभु नदरी आवै करि किरपा पूरन भगवान ॥१॥ रहाउ ॥ (897-15)
पारब्रहमु साध रिद बसै ॥ (272-3)
पारब्रहमु सुख सागरो नानक सद बलिहार ॥४॥११॥८१॥ (46-10)
पारब्रहमु सो नैनहु पेखिआ ॥३॥ (805-7)
पारब्रहमु होआ सहाई कथा कीरतनु सुखदाई ॥ (616-10)
पारस कै संगि तांबा बिगरिओ ॥ (1158-14)
पारस परसिऐ पारसु होवै सचि रहै लिव लाइ ॥ (649-8)
पारस परसे फिरि पारसु होए हरि जीउ अपणी किरपा धारी ॥२॥ (911-1)
पारस मानो ताबो छुए कनक होत नही बार ॥५॥ (346-15)
पारसि परसिऐ पारसु होइ जोती जोति समाइ ॥ (27-9)
पारसि परसिऐ पारसु होए जा तेरै मनि भाणे ॥ (688-17)
पारसि भेटिऐ कंचनु भइआ कीमति कही न जाइ ॥१०॥ (1346-13)
पारसु जब भेटै गुरु पूरा ता पारसु परसि दिखाइणा ॥७॥ (1078-6)
पारसु परसि परम पदु पावै ॥२॥ (411-13)
पारसु परसि परसु परसि गुरि गुरू कहायउ ॥ (1408-15)

पारसु परसि लोहा कंचनु सोई ॥३॥ (481-5)
पारसु परसै दुबिधा न होई ॥१॥ रहाउ ॥ (1167-9)
पारसु भेटि कंचनु धातु होई सतसंगति की वडिआई ॥६॥ (505-7)
पारसु भेटि भए से पारस नानक हरि गुर संगि थीए ॥४॥४॥१२॥ (1172-1)
पारि उतरि जाहि इक खिनां ॥१॥ रहाउ ॥ (1169-7)
पारि उतारे केसवा ॥३॥ (1196-4)
पारि पवंदड़े डिठु मै सतिगुर बोहिथि चाड़ि ॥६॥ (1015-11)
पारि साजनु अपारु प्रीतमु गुर सबद सुरति लंघावए ॥ (1113-11)
पारु कैसे पाइबो रे ॥ (346-11)
पारु न पावै को धरनीधर मंत ॥३॥ (1162-11)
पारोसी के जो हूआ तू अपने भी जानु ॥१६७॥ (1373-10)
पालहि अकिरतघना पूरन द्रिसटि तेरी राम ॥ (547-11)
पाला ककरु वरफ वरसै गुरसिखु गुर देखण जाई ॥२७॥ (758-8)
पाला ताऊ कछू न बिआपै राम नाम गुन गाइ ॥ (378-9)
पाले बालक वागि दे कै आपि कर ॥ (957-15)
पाव जुलाई पंध तउ नैणी दरसु दिखालि ॥ (761-10)
पाव मलोवउ संगि नैन भतीरी ॥ (739-7)
पाव मलोवा आपु तिआगि संतसंगि समावउ ॥२॥ (812-4)
पाव मलोवा मलि मलि धोवा इहु मनु तै कू देसा ॥ (612-1)
पाव मलोवा मलि मलि धोवा मिलि हरि जन हरि रसु पीचै जीउ ॥२॥ (96-2)
पाव मिलावे कोलि कवल जिवै बिगसावदो ॥१॥ (1098-17)
पाव सुहावे जां तउ धिरि जुलदे सीसु सुहावा चरणी ॥ (964-6)
पावउ दानु ढीठु होइ मागउ मुखि लागै संत रेनारे ॥ (738-8)
पावउ दानु संत सेवा हरि नानक सद कुरबानां ॥२॥६॥२९॥ (1210-5)
पावउ दानु सदा दरसु पेखा मिलु नानक दास दसाइले ॥४॥२॥ (862-12)
पावउ धूरि तेरे दास की नानक कुरबाणी ॥४॥३॥३३॥ (809-1)
पावक जरिओ न जात रहिओ जन धूरि लगि ॥ (1389-4)
पावक तोअ असाध घोरं अगम तीर नह लंघनह ॥ (1359-10)
पावक सागर अथाह लहरि महि तारहु तारनहारे ॥१॥ (613-17)
पावकु सगराइआ ॥३॥ (746-14)
पावकु सागरु गहरो चरि संतन नाव तराइओ ॥३॥ (241-16)
पावतु रलीआ जोबनि बलीआ ॥ (385-1)
पावन धावन सुआमी सुख पंथा अंग संग काइआ संत सरसन ॥१॥ (1303-12)
पावन नामु जगत मै हरि को कबहू नाहि स्मभारा ॥ (703-9)
पावन नामु जगति मै हरि को सिमरि सिमरि कसमल सभ हरु रे ॥१॥ (220-15)
पावन पतित कीए खिन भीतरि महिमा कथनु न जाई ॥३॥ (1000-11)
पावन पतित पुनीत कतह नही सेवीऐ ॥ (1363-7)

पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥ (456-11)
पावना ते महा पावन कोटि दान इसनान ॥७॥ (1017-15)
पावहु ते पिंगुल भइआ मारिआ सतिगुर बान ॥१९३॥ (1374-17)
पावहु नामु रतनु धनु लाहा ॥ (1043-5)
पावहु बेड़ी हाथहु ताल ॥ (1166-2)
पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ (918-1)
पावै मुकति न होर थै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥ (920-2)
पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड ॥ (1380-4)
पासि न देई कोई बहणि जगत महि गूह पड़ि सगवी मलु लाइ मनमुखु आइआ ॥ (306-6)
पासि बैठी बीबी कवला दासी ॥२॥ (479-1)
पाहण नाव न पारगिरामी ॥३॥ (739-4)
पाहण माणक करै गिआनु गुर कहिअउ बीचारै ॥ (1399-11)
पाहणु नीरि पखालीऐ भाई जल महि बूडहि तेहि ॥६॥ (637-6)
पाहन बोरी पिरथमी पंडित पाड़ी बाट ॥१३७॥ (1371-16)
पाहरूअरा छबि चोरु न लागै ॥ (355-6)
पाहि एते जाहि वीसरि नानका इकु नामु ॥ (1413-5)
पाहुनड़े पाहुनड़े मेरे संत पिआरे राम ॥ (452-14)
पाहू घरि आए मुकलाऊ आए ॥१॥ रहाउ ॥ (333-18)
पिंगुल परबत परते पारि ॥ (914-16)
पिंगुल परबत पारि परे खल चतुर बकीता ॥ (809-17)
पिंजरि पंखी बंधिआ कोइ ॥ (839-12)
पिंडि मूऐ जीउ किह घरि जाता ॥ (327-3)
पिंडु पड़ै जीउ खेलसी बदफैली किआ हालु ॥४॥ (63-16)
पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ ॥७॥ (1165-18)
पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावए ॥ (923-17)
पिंडु पतलि मेरी केसउ किरिआ सचु नामु करतारु ॥ (358-8)
पिंडु परै तउ प्रीति न तोरउ ॥२॥ (484-8)
पिंडु पवै जीउ चलसी जे जाणै कोई ॥२॥ (418-9)
पिंधी उभकले संसारा ॥ (694-1)
पिआरे इन बिधि मिलणु न जाई मै कीए करम अनेका ॥ (641-18)
पिआरे तू मेरो सुखदाता ॥ (614-9)
पिआरे हरि बिनु प्रेमु न खेलसा ॥ (452-7)
पिआस न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥ (921-11)
पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै ॥२॥ (624-17)
पिछले गुनह बखसाइ जीउ अब तू मारगि पाइ ॥ (994-5)
पिछले गुनह सतिगुरु बखसि लए सतसंगति नालि रलावै ॥ (855-1)
पिछहु राती सदड़ा नामु खसम का लेहि ॥ (989-5)

पिछै पतलि सदिहु काव ॥ (138-1)
पिछै रोवहि लिआवहि फेरि ॥ (1287-3)
पिछै लगि चली माइआ ॥ (625-11)
पिछो दे तैं जंतु उपाहा ॥ (130-18)
पित सुतो सगल कालत्र माता तेरे होहि न अंति सखाइआ ॥ रहाउ ॥ (23-16)
पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही ॥१॥ (332-11)
पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥ (284-5)
पिता क्रिपालि आगिआ इह दीनी बारिकु मुखि मांगै सो देना ॥ (1266-15)
पिता जाति ता होईऐ गुरु तुठा करे पसाउ ॥ (82-2)
पिता पारब्रहम प्रभ धनी ॥ (1186-4)
पिता पूत एकै रंगि लीने ॥४॥९॥२२॥ (1141-14)
पिता पूत रलि कीनी सांझ ॥ (1141-14)
पिता प्रहलाद सिउ गुरज उठाई ॥ (1154-14)
पिता प्रहलादु पड़ण पठाइआ ॥ (1154-5)
पिता मेरो बडो धनी अगमा ॥ (507-12)
पिता हउ जानउ नाही तेरी कवन जुगता ॥ (51-18)
पिता हमारे प्रगटे माझ ॥ (1141-14)
पिता हमारो वड गोसाई ॥ (476-10)
पियू दादे जेविहा पोता परवाणु ॥ (968-1)
पियू दादे जेविहा पोत्रा परवाणु ॥६॥ (968-9)
पिर का महलु न पावई ना दीसै घरु बारु ॥१॥ (31-10)
पिर का साउ न जाणै मूरखि बिनु गुर बूझ न पाई हे ॥६॥ (1047-9)
पिर का हुकमु न जाणई भाई सा कुलखणी कुनारि ॥ (639-4)
पिर का हुकमु न पाइओ मुईए जिनी विचहु आपु न गवाइआ ॥ (568-4)
पिर की नारि सुहावणी मुती सो कितु सादि ॥ (56-7)
पिर की सार न जाणई दूजै भाइ पिआरु ॥ (652-1)
पिर कै कामि न आवई बोले फादिलु बादि ॥ (56-7)
पिर कै प्रेमि मोहीआ मिलि प्रीतम सुखु पाइ ॥३॥ (426-13)
पिर कै भाणै ना चलै हुकमु करे गावारि ॥ (89-9)
पिर कै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु ॥ (651-12)
पिर कै सहजि रहै रंगि राती सबदि सिंगारु बणावणिआ ॥५॥ (129-13)
पिर खुसीए धन रावीए धन उरि नामु सीगारु ॥ (1088-12)
पिर घरि सोहै नारि जे पिर भावए जीउ ॥ (689-13)
पिर दोसु नाही सुखह दाते हउ विछुड़ी बुरिआरे ॥ (247-12)
पिर बाझड़िअहु मेरे पिआरे आंगणि धूड़ि लुते ॥ (452-3)
पिर बिनु किआ तिसु धन सीगारा ॥ (1029-4)
पिर बिनु खरी निमाणी जीउ बिनु पिर किउ जीवा मेरी माई ॥ (244-8)

पिर बिनु जोबनु बादि गइअमु वाढी झूरेदी झूरेउ ॥५॥ (1015-1)
पिर बिनु नीद न आवै जीउ कापड़ु तनि न सुहाई ॥ (244-9)
पिर भावै प्रेमु सखाई ॥ (1273-6)
पिर भावै सुखु पाईऐ जा आपे नदरि करेइ ॥२॥ (56-3)
पिर रंगि राता सो सचा चोला तितु पैधै तिखा निवारे ॥ (584-8)
पिर रतिअड़े मैडे लोइण मेरे पिआरे चात्रिक बूंद जिवै ॥ (452-1)
पिर संगि भावै सहजि नावै बेणी त संगमु सत सते ॥ (688-2)
पिर संगि मूठड़ीए खबरि न पाईआ जीउ ॥ (689-4)
पिर सचे ते सदा सुहागणि गुर का सबदु सम्हाले ॥ (754-5)
पिर सेती अनदिनु गहि रही सची सेज सुखु पाइ ॥६॥ (428-7)
पिर सेती धन प्रेमु रचाए ॥ (993-4)
पिरम पदारथु मंनि लै धंनु सवारणहारु ॥ (1089-16)
पिरम पैकामु न निकलै लाइआ तिनि सुजाणि ॥१३॥ (1411-10)
पिरहि बिहून कतहि सुखु पाए ॥ (794-13)
पिरहु विछुंनीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥ (583-4)
पिरहु विछुंनीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥४॥१॥ (583-7)
पिरि अउगण तिस के सभि गवाए गल सेती लाइ सवारी ॥ (959-15)
पिरि कहिआ हउ हुकमी बंदा ॥ (1073-3)
पिरि छोडिअड़ी जीउ कवणु मिलावै ॥ (243-4)
पिरि छोडिअड़ी सुती पिर की सार न जाणी ॥ (1111-11)
पिरि छोडी सुती अवगणि मुती तिसु धन विधण राते ॥ (1111-11)
पिरि रखिआ कीनी सुघड़ सुजाणि ॥१॥ (370-12)
पिरि राविअड़ी सबदि रली रवि रहिआ नह दूरी राम ॥ (765-5)
पिरी मिलावा जा थीऐ साई सुहावी रुति ॥ (522-4)
पिरीआ संदड़ी भुख मू लावण थी विथरा ॥ (1098-17)
पिरीए तू जाणु महिजा साउ जोई साई मुहु खड़ा ॥२॥ (1095-11)
पिरु अंतरि समाले सदा है नाले मनमुखि जाता दूरे ॥ (583-18)
पिरु अपना पाइआ रंगु लालु बणाइआ अति मिलिओ मित्र चिराणे ॥ (455-10)
पिरु उचड़ीऐ माड़ड़ीऐ तिहु लोआ सिरताजा राम ॥ (765-8)
पिरु घरि नही आवै धन किउ सुखु पावै बिरहि बिरोध तनु छीजै ॥ (1108-1)
पिरु घरि नही आवै मरीऐ हावै दामनि चमकि डराए ॥ (1108-13)
पिरु छैलु छबीला छडि गवाइओ दुरमति करमि विहूणी ॥ (959-13)
पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि पिआरु ॥ (89-18)
पिरु छोडिआ घरि आपणै मोही दूजै भाइ ॥ (785-7)
पिरु जगजीवनु किस नो रोईऐ रोवै कंतु विसारे ॥ (583-13)
पिरु धन भावै ता पिर भावै नारी जीउ ॥ (689-10)
पिरु धनहि सीगारि रखै संगानै ॥ (1072-14)

पिरु न जाणनि आपणा सुंञी सेज दुखु पाहि ॥४॥ (428-5)
पिरु नजीकि न बूझै बपुड़ी सतिगुरि दीआ दिखाई ॥८॥ (1274-14)
पिरु निरमाइलु सदा सुखदाता नानक सबदि मिलाए ॥ (583-6)
पिरु परदेसि सिगारु बणाए ॥ (127-16)
पिरु परदेसी जे थीऐ धन वांढी झूरेइ ॥ (56-2)
पिरु पाइअड़ा बालड़ीए अनदिनु सहजे माती राम ॥ (771-13)
पिरु प्रभु साचा सोहणा पाईऐ गुर बीचारि ॥१॥ रहाउ ॥ (38-1)
पिरु मुती डोहागणी तिन डुखी रैणि विहाइ ॥४॥ (1014-19)
पिरु रलीआ रसि माणसी साचि सबदि सुखु नेहि ॥१॥ रहाउ ॥ (56-2)
पिरु रलीआला जोबनि बाला तिसु रावे रंगि राती ॥ (689-17)
पिरु रलीआला जोबनु बाला अनदिनु कंति सवारी ॥ (568-9)
पिरु रवि रहिआ भरपूरे वेखु हजूरे जुगि जुगि एको जाता ॥ (568-1)
पिरु रहिआ भरपूरे वेखु हदूरे रंगु माणे सहजि सुभाए ॥ (583-2)
पिरु रावे रंगि रातड़ीए पिर का महलु तिन पाइआ राम ॥ (771-17)
पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥२॥ (17-19)
पिरु रीसालू नउतनो साचउ मरै न जाइ ॥ (54-6)
पिरु वातड़ी न पुछई धन सोहागणि नाउ ॥३१॥ (1379-10)
पिरु संगि कामणि जाणिआ गुरि मेलि मिलाई राम ॥ (440-1)
पिरु सचा मिलै आए साचु कमाए साचि सबदि धन राती ॥ (583-1)
पिरु सालाहनि आपणा तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥ (38-13)
पिरु सालाही आपणा गुर कै सबदि वीचारि ॥ (755-16)
पिरु सालाही आपणा सखी सहेली नालि ॥ (56-4)
पी अम्रितु आघानिआ गुरि अमरु कराइआ ॥२॥ (808-17)
पी अम्रितु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥ (286-3)
पी अम्रितु त्रिपतासिआ ता का अचरज सुआदु ॥२॥ (814-18)
पी अम्रितु संतन परसादि ॥ (892-6)
पी अम्रितु संतोखिआ दरगहि पैधा जाइ ॥७॥ (62-14)
पीअहि त पाणी आणी मीरा खाहि त पीसण जाउ ॥ (991-4)
पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥ (186-1)
पीओ अम्रित नामु अमोलक जिउ चाखि गूंगा मुसकावत ॥१॥ (1205-5)
पीओ मदरो धन मतवंता ॥ (737-18)
पीछै तिनका लै करि हांकती ॥१॥ (1196-5)
पीछै लागि चली उठि कउला ॥६॥ (235-18)
पीड़ गई फिरि नही दुहेली ॥१॥ रहाउ ॥ (379-1)
पीत पीतांबर त्रिभवण धणी थ्मभ माहि हरि भाखै ॥४॥ (1165-11)
पीत पीत्मबर त्रिभवण धणी ॥ (1082-18)
पीत बसन कुंद दसन प्रिआ सहित कंठ माल मुकटु सीसि मोर पंख चाहि जीउ ॥ (1402-19)

पीपा ॥ (695-13)
पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥२॥३॥ (695-15)
पीर गई बाधी मनि धीरा मोहिओ अनद धुनी ॥ (829-19)
पीर पिकाबर सेख मसाइक अउलीए ॥ (518-9)
पीर पेकांबर सालिक सादिक छोडी दुनीआ थाइ पए ॥२॥ (358-15)
पीर पैकांबर सेख ॥ (897-3)
पीर पैकाबर अउलीए को थिरु न रहासी ॥ (1100-10)
पीर पैकामर सालक सादक सुहदे अउरु सहीद ॥ (53-12)
पीरु पछाणै भिसती सोई अजराईलु न दोज ठरा ॥११॥ (1084-7)
पीवत अमर भए निहकाम ॥ (887-1)
पीवत अमिउ मनोहर हरि रसु जपि नानक हरि बिसमाद ॥२॥८०॥१०३॥ (1224-8)
पीवत रहै पीआए सोइ ॥ (361-17)
पीवत राम रसु अम्रित गुण जासु ॥ (195-18)
पीवत राम रसु गिआन बीचारा ॥१॥ रहाउ ॥ (328-17)
पीवत हू परवाणु भइआ पूरै सबदि समाइ ॥२॥ (33-3)
पीवति अम्रित नामु जन नामे रहे अघाइ ॥१४॥ (522-2)
पीवना जितु मनु आघावै नामु अम्रित रसु पीवना ॥१॥ (1019-1)
पीवहु अपिउ परम सुखु पाईऐ निज घरि वासा होई जीउ ॥ (599-4)
पीवहु अम्रितु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी ॥ (920-6)
पीवहु संत सदा मति दुरलभ सहजे पिआस बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1123-14)
पीवि रहे जल निखुटत नाही ॥३॥ (323-15)
पीवै अम्रितु ततु विरोलै ॥३॥ (227-15)
पीसउ चरण पखारि आपु तिआगीऐ ॥ (457-9)
पीसत पीसत चाबिआ सोई निबहिआ साथ ॥२१५॥ (1376-3)
पीसनु पीसि ओढि कामरी सुखु मनु संतोखाए ॥ (745-9)
पुंडर केस कुसम ते धउले सपत पाताल की बाणी ॥ (93-11)
पुंन दान अनेक किरिआ साधू संगि समाइ ॥ (1300-6)
पुंन दान अनेक नावण किउ अंतर मलु धोवै ॥ (243-8)
पुंन दान का करे सरीरु ॥ (952-14)
पुंन दान का करै सरीरु ॥ (1411-18)
पुंन दान चंगिआईआ बिनु साचे किआ तासु ॥ (56-13)
पुंन दान जप तप जेते सभ ऊपरि नामु ॥ (401-2)
पुंन दान न तुलि किरिआ हरि सरब पापा हंत जीउ ॥ (927-15)
पुंन दान पूजा परमेसुर जुगि जुगि एको जाता ॥ (1109-13)
पुंन दान पूजा परमेसुर हरि कीरति ततु बीचारे ॥ (718-2)
पुंन दान होमे बहु रतना ॥ (265-11)
पुंन दानु जो बीजदे सभ धरम राइ कै जाई ॥ (1414-16)

पुंनिआकी गावहि बंगली ॥ (1430-1)
पुंनी पापी आखणु नाहि ॥ (4-13)
पुंनु दानु इसनानु न संजमु साधसंगति बिनु बादि जइआ ॥२॥ (906-10)
पुंनु पापु सभु बेदि द्रिड़ाइआ गुरमुखि अम्रितु पीजै हे ॥१५॥ (1050-3)
पुछहु जाइ पधाऊआ चले चाकर होइ ॥ (57-4)
पुछहु जाइ सिआणिआ आगै मिलणु किनाह ॥ (595-4)
पुछा गिआनी पंडितां पुछा बेद बीचार ॥ (1241-19)
पुछा देवां माणसां जोध करहि अवतार ॥ (1242-1)
पुछि न सकै कोइ जां खसमै भाइआ ॥ (1286-4)
पुछि न सकै कोइ हरि दरि सद ढोई ॥ (1248-7)
पुछि न साजे पुछि न ढाहे पुछि न देवै लेइ ॥ (53-13)
पुजि दिवस आए लिखे माए दुखु धरम दूतह डिठिआ ॥ (705-7)
पुड़ु धरती पुड़ु पाणी आसणु चारि कुंट चउबारा ॥ (596-12)
पुत भाई भातीजे रोवहि प्रीतम अति पिआरे ॥ (582-9)
पुतरी तेरी बिधि करि थाटी ॥ (374-14)
पुता देखि विगसीऐ नारी सेज भतार ॥ (63-16)
पुति कुट्मबि ग्रिहि मोहिआ माइ ॥ (161-12)
पुतीं गंढु पवै संसारि ॥ (143-10)
पुती भातीई जावाई सकी अगहु पिछहु टोलि डिठा लाहिओनु सभना का अभिमानु ॥ (853-16)
पुतु कलतु कुट्मबु है इकि अलिपतु रहे जो तुधु भाइआ ॥ (139-8)
पुतु कलतु कुट्मबु है माइआ मोहु वधाइ ॥ (1422-19)
पुतु कलतु मोहु बिखु है अंति बेली कोइ न होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (41-19)
पुतु कलतु मोहु हेतु है अंति बेली को न सखाई ॥ (1414-18)
पुतु कलत्रु लखिमी दीसै इन महि किछू न संगि लीआ ॥ (900-8)
पुतु जिनूरा धीअ जिंनूरी जोरू जिंना दा सिकदारु ॥१॥ (556-8)
पुत्र कलति धनि माइआ चितु लाए झूठु मोहु पाखंड विकारु ॥१॥ रहाउ ॥ (363-8)
पुत्र कलत्र उरझिओ जानि मेरी ॥ (179-7)
पुत्र कलत्र का करहि अहंकारु ॥ (1196-12)
पुत्र कलत्र कुट्मब संगि जुरिआ ॥ (237-6)
पुत्र कलत्र गिरसत का फासा ॥ (180-1)
पुत्र कलत्र ग्रिह देखि पसारा इस ही महि उरझाए ॥ (999-11)
पुत्र कलत्र ग्रिह देखि समग्री इस ही महि उरझाइओ ॥६॥ (1017-6)
पुत्र कलत्र ग्रिह सगल समग्री सभ मिथिआ असनाहा ॥१॥ (402-1)
पुत्र कलत्र जगि हेतु पिआरा ॥ (1029-9)
पुत्र कलत्र न विसहहि बहु प्रीति लगाइआ ॥ (1245-16)
पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥ (133-16)
पुत्र कलत्र न संगि सोभा हसत घोरि विकारी ॥ (547-19)

पुत्र कलत्र महा बिखिआ महि गुरि साचै लाइ तराई ॥१४॥ (915-19)
पुत्र कलत्र लगि नामु विसारी ॥ (412-5)
पुत्र कलत्र लछमी माइआ ॥ (692-10)
पुत्र कलत्र लछिमी माइआ इहै तजहु जीअ जानी रे ॥ (855-11)
पुत्र कलत्र लोक ग्रिह बनिता माइआ सनबंधेही ॥ (609-9)
पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥२॥ (661-13)
पुत्र कलत्रु मोहु हेतु है सभु दुखु सबाइआ ॥ (1238-16)
पुत्र प्रहलाद सिउ वादु रचाइआ ॥ (1154-11)
पुत्र प्रहिलाद सिउ कहिआ माइ ॥ (1154-6)
पुत्र मित्र बिउहार बनिता एह करत बिहावए ॥ (705-6)
पुत्र मित्र बिलास बनिता तूटते ए नेह ॥१॥ (1006-12)
पुत्र मीत धनु किछू न रहिओ सु छोडि गइआ सभ भाई साकु ॥ (825-4)
पुत्र राम नामु छोडहु जीउ लेहु उबारे ॥ (1133-4)
पुत्र हेति नाराइणु कहिओ जमकंकर मारि बिदारे ॥१॥ (999-4)
पुत्रवंती सीलवंति सोहागणि ॥ (97-17)
पुत्रि कलत्रि मोहि लपटिआ वणजारिआ मित्रा अंतरि लहरि लोभानु ॥ (77-15)
पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कंन्ह मुरटीऐ ॥ (967-4)
पुत्रु कलत्रु नित वेखै विगसै मोहि माइआ ॥ (1249-19)
पुनरपि जनमु नाही गुण गाउ ॥५॥ (224-1)
पुनरपि जनमु नाही जन संगति जोती जोति मिलाई ॥७॥ (505-8)
पुनि असलेखी की भई बारी ॥ (1430-1)
पुनि आइअउ हिंडोलु पंच नारि संगि असट सुत ॥ (1430-7)
पुनि आई दीपक की बारी ॥१॥ (1430-10)
पुनि गावहि आसा गुन गुनी ॥ (1430-16)
पुनि गावहि संकर अउ सिआमा ॥ (1430-18)
पुर सलात का पंथु दुहेला ॥ (793-16)
पुरख निरंजन सिरजनहार ॥ (1148-9)
पुरख पते भगवान ता की सरणि गही ॥ (458-10)
पुरख महि नारि नारि महि पुरखा बूझहु ब्रहम गिआनी ॥ (879-3)
पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥ (467-3)
पुरखु अतीतु वसै निहकेवलु गुर पुरखै पुरखु मिलाइआ ॥१३॥ (1040-10)
पुरखु अलेखु सचे दीवाना ॥ (1039-19)
पुरखु पूरन सुखह दाता संगि बसतो नीत ॥ (1006-15)
पुरखु सति केवल परधानु ॥ (284-15)
पुरखु सुजानु तूं परधानु तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ (448-10)
पुरखै पुरखु मिलिआ गुरु पाइआ जिन कउ किरपा भई तुमारी ॥ (607-7)
पुरखै पुरखु मिलिआ सुखु पाइआ सभ चूकी आवण जानी ॥२॥ (1199-19)

पुरखै सेवहि से पुरख होवहि जिनी हउमै सबदि जलाई ॥ (592-2)
पुरखो बिधाता एकु स्रीधरु किउ मिलह तुझै उडीणीआ ॥ (247-8)
पुरखोतमु हरि नामु जनि गाइओ सभि दालद दुख दलले ॥ (975-12)
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥२॥२॥ (1105-6)
पुरब कमाणे छोडहि नाही जमदूति ग्रासिओ महा भइआ ॥२॥ (900-11)
पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥ (283-11)
पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥ (283-1)
पुरबि लिखिआ सो मेटणा न जाए ॥ (1045-5)
पुरबी नावै वरनां की दाति ॥ (1169-2)
पुरबे कमाए स्रीरंग पाए हरि मिले चिरी विछुंनिआ ॥ (80-1)
पुराब खाम कूजै हिकमति खुदाइआ ॥ (1291-8)
पुरीआ खंडा सिरि करे इक पैरि धिआए ॥ (1241-9)
पुरु करि काइआ कपड़ु पहिरा धोवा सदा कारि ॥ (139-11)
पुसतक पाठ बिआकरण वखाणै संधिआ करम तिकाल करै ॥ (1127-12)
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥ (684-15)
पूंअर ताप गेरी के बसत्रा ॥ (1348-5)
पूंजी नामु गुरमुखि वेसाहा ॥ (699-14)
पूंजी नामु निरंजन सारु ॥ (413-18)
पूंजी नामु लेखा साचु सम्हारे ॥७॥ (430-18)
पूंजी पाप लोभ की कीतु ॥ (153-4)
पूंजी मार पवै नित मुदगर पापु करे कोटवारी ॥ (1191-1)
पूंजी साचउ नामु तू अखुटउ दरबु अपारु ॥ (1090-15)
पूंजी साची गुरु मिलै ना तिसु तिलु न तमाइ ॥६॥ (59-2)
पूंजी साचु सचे गुण गावा मै धर होर न काई हे ॥१५॥ (1022-9)
पूंजी साबतु घणो लाभु ग्रिहि सोभा सेत ॥२॥ (810-10)
पूंजी साबतु रासि सलामति चूका जम का फाहा हे ॥१०॥ (1032-19)
पूंजी हिरानी बनजु टूट ॥ (1195-2)
पूकारंता अजाणंता ॥ (1242-13)
पूकारन कउ जो उदमु करता गुरु परमेसरु ता कउ मारै ॥१॥ रहाउ ॥ (1217-13)
पूछउ पूछउ दीन भांति करि कोऊ कहै प्रिअ देसांगिओ ॥ (1204-1)
पूछउ बेद पड़ंतिआ मूठी विणु माने ॥ (1012-13)
पूछउ संत मेरो ठाकुरु कैसा ॥ (1237-3)
पूछहु जाइ सिआणिआ दुखु काटै मेरा कोइ ॥ (1087-15)
पूछहु बिदर दासी सुतै किसनु उतरिआ घरि जिसु जाइ ॥१॥ (733-7)
पूछहु ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (59-8)
पूछहु सगल बेद सिम्रिते ॥ (1348-10)
पूज करे रखै नावालि ॥ (1241-1)

पूज लगै पीरु आखीऐ सभु मिलै संसारु ॥ (17-5)
पूजन चाली ब्रहम ठाइ ॥ (1195-13)
पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥१॥ (265-9)
पूजहि संत हरि प्रीति पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (394-6)
पूजहु गुर के पैर दुरमति जाइ जरि ॥ (519-12)
पूजहु रामु एकु ही देवा ॥ (484-15)
पूजा अरचा आहि न तोरी ॥ (525-14)
पूजा अरचा बंदन डंडउत खटु करमा रतु रहता ॥ (642-3)
पूजा अरचा बंदन देवा ॥१॥ रहाउ ॥ (393-8)
पूजा अरचा बंदन देवा जीउ ॥ (217-7)
पूजा अरचा सेवा बंदन इहै टहल मोहि करना ॥ (531-9)
पूजा करउ न निवाज गुजारउ ॥ (1136-11)
पूजा करहि परु बिधि नही जाणहि दूजै भाइ मलु लाई ॥१०॥ (910-10)
पूजा करहि बहुतु बिसथारा ॥ (1348-1)
पूजा करै सभु लोकु संतहु मनमुखि थाइ न पाई ॥४॥ (910-7)
पूजा कीचै नामु धिआईऐ बिनु नावै पूज न होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (489-5)
पूजा चक्र करत सोमपाका अनिक भांति थाटहि करि थटूआ ॥२॥११॥२०॥ (1389-8)
पूजा चक्र बरत नेम तपीआ ऊहा गैलि न छोरी ॥१॥ (1216-4)
पूजा चरना ठाकुर सरना ॥ (1298-19)
पूजा जाप ताप इसनान ॥ (1137-12)
पूजा तिलक करत इसनानां ॥ (201-4)
पूजा तिलकु तीरथ इसनाना ॥ (98-3)
पूजा प्राण सेवकु जे सेवे इन्ह बिधि साहिबु रवतु रहै ॥३॥ (728-7)
पूजा प्रेम माइआ परजालि ॥ (355-5)
पूजा वरत तिलक इसनाना पुंन दान बहु दैन ॥ (674-5)
पूजा सति सति सेवदार ॥ (285-6)
पूजाचार करत मेलंगा ॥ (1305-5)
पूजि सिला तीरथ बन वासा ॥ (686-11)
पूजै प्राण होवै थिरु कंधु ॥ (1289-6)
पूत पेखि जिउ जीवत माता ॥ (198-12)
पूत मीत माइआ ममता सिउ इह बिधि आपु बंधावै ॥ (219-9)
पूता माता की आसीस ॥ (496-4)
पूति पिता इकु जाइआ ॥ (655-15)
पूति बापु खेलाइआ ॥ (1194-3)
पूतु प्रहिलादु कहिआ नही मानै तिनि तउ अउरै ठानी ॥२॥ (1165-9)
पूनिउ पूरा चंद अकास ॥ (344-7)
पूर समग्री पूरे ठाकुर की ॥ (376-17)

पूरउ पुरखु रिदै हरि सिमरत मुखु देखत अघ जाहि परेरे ॥ (1400-2)
पूरकु कुमभक रेचक करमाता ॥ (253-9)
पूरन आस करी खिन भीतरि हरि हरि हरि गुण जापे जीउ ॥४॥२७॥३४॥ (104-14)
पूरन एही सुआउ ॥१॥ (895-10)
पूरन करम ता के आचार ॥२॥ (1340-14)
पूरन करमु होइ प्रभ मेरा ॥१॥ (742-1)
पूरन कल जिनि धारी ॥ (627-10)
पूरन काजु ताही का होइ ॥ (1145-7)
पूरन काम मिले गुरदेव ॥ (1149-15)
पूरन गुर पाए पुरबि लिखाए सभ निधि दीन दइआला ॥ (454-10)
पूरन घट घट पुरख बिसेखा ॥ (259-3)
पूरन जा के भागा ॥१॥ (627-2)
पूरन तेरी होवै आस ॥ (895-19)
पूरन त्रिपति अघाए ॥ (1006-6)
पूरन परम जोति परमेसर प्रीतम प्रान हमारे ॥ (1197-4)
पूरन परम जोति परमेसुर सिमरत पाईऐ मानु ॥१॥ रहाउ ॥ (1300-9)
पूरन परमानंद मनि मीठो तिसु बिनु दूसर नाहि ॥१॥ (1222-17)
पूरन परमानंद मनोहर समझि देखु मन माही ॥२॥ (488-5)
पूरन परमानंदु बखानै ॥३॥ (695-12)
पूरन परमेसुर सुआमी घटि घटि राता मेरा प्रभु ॥१॥ रहाउ ॥ (894-17)
पूरन पारब्रहम परमेसुर ऊचा अगम अपारे ॥ (210-5)
पूरन पारब्रहम परमेसुर मेरे मन सदा धिआईऐ ॥१॥ (615-1)
पूरन पारब्रहम सुखदाते अबिनासी बिमल जा को जास ॥१॥ (716-18)
पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ ॥ (783-18)
पूरन पुरख नही डोलाने ॥ (289-14)
पूरन पुरखु नवतनु नित बाला ॥ (240-14)
पूरन पूरि रहिआ दिनु राती ॥ (1086-4)
पूरन पूरि रहिआ प्रभ एकु ॥ (892-5)
पूरन पूरि रहिआ बिखु मारि ॥ (220-19)
पूरन पूरि रहिआ सभ आपे गुरमति नदरी आवणिआ ॥७॥ (119-14)
पूरन पूरि रहिओ किरपा निधि कहु नानक मेरी पूरी परी ॥२॥७॥९३॥ (823-2)
पूरन पूरि रहिओ निरबान ॥ (1148-11)
पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥ (289-7)
पूरन पूरि रहिओ सभ जाइ ॥ (178-9)
पूरन पूरि रहिओ सरब महि जलि थलि रमईआ आहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (617-3)
पूरन पूरि रहिओ स्मपूरन सीतल सांति दइआल दई ॥ (822-8)
पूरन पूरि रहिओ स्रब ठाई ॥ (1236-19)

पूरन पूरि रहिओ स्रब थाई आन न कतहूं जाता ॥ (496-18)
पूरन पूरि रहे किरपा निधि आन न पेखउ होरी ॥ (979-11)
पूरन पूरि रहे किरपा निधि घटि घटि दिसटि समाइणु ॥१॥ (979-14)
पूरन पूरि रहे दइआल ॥ (292-14)
पूरन बिसथीरन सुआमी आहि आइओ पाछै ॥ (1005-19)
पूरन ब्रहमु रविआ मन तन महि आन न द्रिसटी आवै ॥ (531-3)
पूरन भई समगरी कबहू नही तूट ॥१॥ रहाउ ॥ (816-14)
पूरन भए न काम मोहिआ माइआ ॥ (707-16)
पूरन भए मनोरथ साभ ॥ (891-13)
पूरन भगतु पुरख सुआमी का सरब थोक ते निआरा ॥२॥ (611-3)
पूरन भाग भए जिसु प्राणी ॥ (108-7)
पूरन भो मन ठउर बसो रस बासन सिउ जु दहं दिसि धायउ ॥ (1400-4)
पूरन मनमोहन घट घट सोहन जब खिंचै तब छाई ॥ (1236-19)
पूरन संजमे हां ॥ (410-14)
पूरन संत जना के कामा ॥ (779-5)
पूरन सभनी जाई जीउ ॥१॥ (216-16)
पूरन सरबत्र मुकंद ॥२॥ (897-2)
पूरन होइ तुमारा कामु ॥ (176-17)
पूरन होइ मिलिओ सुखदाई ऊन न काई बाता ॥ (884-4)
पूरन होई आस ॥१॥ (896-8)
पूरन होई आस गुर चरणी मन रते ॥ (653-9)
पूरन होई मन की आसा गुरु भेटिओ हरि रंगा ॥२॥ (208-11)
पूरन होई सेवक की सेव ॥ (295-14)
पूरन होई सेवक घाल ॥ (178-8)
पूरन होई सेवक सेव ॥२॥ (396-10)
पूरन होए सगले काम ॥३॥ (1148-5)
पूरन होए सगले काम ॥३॥ (195-16)
पूरन होत न कतहु बातहि अंति परती हारि ॥१॥ रहाउ ॥ (1225-1)
पूरन होत न कारज माइआ ॥ (1143-13)
पूरन होवहि मन के काम ॥१॥ रहाउ ॥ (743-6)
पूरन होवै आस नाइ मंनि वसाइऐ ॥ (520-4)
पूरन होवै सगली आस ॥ (179-3)
पूरन होहि सगल काम ॥१॥ (1341-7)
पूरनमा पूरन प्रभ एकु करण कारण समरथु ॥ (300-5)
पूरनु कबहु न डोलता पूरा कीआ प्रभ आपि ॥ (300-4)
पूरनो ठाकुर प्रभु मेरा ॥२॥ (1301-7)
पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ॥ (204-7)

पूरब करमि लिखत धुरि पाई ॥२॥ (743-11)
पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई ॥१॥ (700-3)
पूरब जनम को लेखु न मिटई जनमि मरै का कउ दोसु धरे ॥ (1014-8)
पूरब जनम हउ तप का हीना ॥१॥ (326-8)
पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक अब तउ मिटिआ न जाई ॥ (970-1)
पूरब जनमि करम भूमि बीजु नाही बोइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (481-18)
पूरब जनमि भगति करि आए गुरि हरि हरि हरि हरि भगति जमईआ ॥ (837-4)
पूरब प्रीति पिराणि लै मोटउ ठाकुरु माणि ॥ (1090-16)
पूरब लिखतु मिलिआ मेरे भाई ॥ (331-9)
पूरब लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥ (88-17)
पूरब लिखे पावणे साचु नामु दे रासि ॥ (52-17)
पूरबलो क्रित करमु न मिटै री घर गेहणि ता चे मोहि जापीअले राम चे नामं ॥ (695-8)
पूरबि करम लिखे गुण गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1138-7)
पूरबि करमि लिखिआ धुरि प्रानी ॥१॥ रहाउ ॥ (199-19)
पूरबि जनमि परचून कमाए हरि हरि हरि नामि पिआरे ॥ (982-2)
पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥ (13-9)
पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥ (171-7)
पूरबि लिखतु होइ ता पाईऐ ॥३॥ (744-5)
पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥३॥ (27-8)
पूरबि लिखिआ कमावणा जि करतै आपि लिखिआसु ॥ (643-8)
पूरबि लिखिआ किउ मेटीऐ लिखिआ लेखु रजाइ ॥ (59-15)
पूरबि लिखिआ तिनी कमाइआ ॥ (1050-16)
पूरबि लिखिआ पाइआ ॥२॥१७॥८१॥ (628-19)
पूरबि लिखिआ पाइआ नानक संत सहाइ ॥८॥१॥४॥ (761-15)
पूरबि लिखिआ पाइआ मिलिआ तिसै रजाइ ॥ (321-18)
पूरबि लिखिआ पाइआ हरि सिउ बणि आई ॥१६॥ (1100-5)
पूरबि लिखिआ पाई ॥ (614-4)
पूरबि लिखिआ पाईऐ किस नो दीजै दोसु ॥ (1009-16)
पूरबि लिखिआ पावसि नानक रसना नामु जपि रे ॥५॥४॥ (990-14)
पूरबि लिखिआ फलु पाइआ ॥ (72-5)
पूरबि लिखिआ लेखु न मिटई जम दरि अंधु खुआरा हे ॥३॥ (1029-2)
पूरबि लिखिआ सु करमु कमाइआ ॥ (118-3)
पूरबि लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥ (110-16)
पूरबि लिखिआ सो फलु पाइआ जिनि आपु मारि पछाता हे ॥७॥ (1052-14)
पूरबि लिखे डेह सि आए माइआ ॥ (369-2)
पूरबि होवै लिखिआ ता सतिगुरु पावै ॥५॥ (421-7)
पूरबि होवै लिखिआ हरि चरण समाउ ॥ (707-3)

पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र ॥ (287-7)
पूरा गुरु पूरी बणत बणाई ॥ (377-1)
पूरा गुरु पूरी मति जा की पूरन प्रभ के कामा ॥ (630-13)
पूरा गुरु भेटे सो झगरु चुकावै ॥६॥ (226-19)
पूरा जनु कार कमावै कोई ॥ (161-14)
पूरा तपु पूरन राजु जोगु ॥२॥ (188-17)
पूरा थाटु बणाइआ पूरै वेखहु एक समाना ॥ (797-15)
पूरा थाटु बणाइआ रंगु गुरमति माणु ॥ (789-7)
पूरा निआउ करे करतारु ॥ (199-11)
पूरा पुरखु पाइआ वडभागी सचि नामि लिव लावै ॥ (776-1)
पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥ (295-2)
पूरा बैरागी सहजि सुभागी सचु नानक मनु मानं ॥८॥१॥ (635-7)
पूरा भागु होवै मुखि मसतकि सदा हरि के गुण गाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (1335-1)
पूरा मारगु पूरा इसनानु ॥ (188-16)
पूरा सतगुरु मेलि मिलावै सभ चूकै मन की चिंती ॥ (625-1)
पूरा सतिगुरु कबहूं न सेविआ सिरि ठाढे जम जंदारा ॥ (77-12)
पूरा सतिगुरु जे मिलै पाईऐ सबदु निधानु ॥ (46-10)
पूरा सतिगुरु तां मिलै जां नदरि करेई ॥ (424-18)
पूरा सतिगुरु भगति द्रिड़ाए ॥ (1056-1)
पूरा सतिगुरु भेटिआ बिनसिआ सभु जंजालु ॥१॥ (52-3)
पूरा सतिगुरु भेटिआ सफल जनमु हमारा ॥ (429-14)
पूरा सतिगुरु मिलै मिलाए ॥ (1036-19)
पूरा सतिगुरु रसि मिलै गुरु तारे हरि नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (63-12)
पूरा सतिगुरु सहजि न भेटिआ साकतु आवै जाई ॥१॥ (1224-3)
पूरा सतिगुरु सहजि समावै ॥ (1344-17)
पूरा सतिगुरु सेवि पूरा पाइआ ॥ (1286-2)
पूरा साचु पिआला सहजे तिसहि पीआए जा कउ नदरि करे ॥ (360-7)
पूरा सुखु पूरा संतोखु ॥ (188-17)
पूरा सेवकु सबदि सिञापै ॥ (1045-14)
पूरि रहिआ घट अंतरजामी ॥ (1157-1)
पूरि रहिआ घटि घटि अबिनासी थान थनंतरि साई ॥ (780-16)
पूरि रहिआ तह त्रिभवण राउ ॥३९॥ (342-13)
पूरि रहिआ सगल मंडल एकु सुआमी सोइ ॥१॥ (988-7)
पूरि रहिआ सरब थाई गुर गिआनु नेत्री अंजनो ॥ (691-7)
पूरि रहिआ सरबत्र मै सो पुरखु बिधाता ॥ (1122-5)
पूरि रहिआ स्रब ठाइ हमारा खसमु सोइ ॥ (398-2)
पूरि रहिओ ठाकुरु सभ थाई निकटि बसै सभ नेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (1221-6)

पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥ (284-9)
पूरि रहिओ सरब महि ठाकुरु नानक सो प्रभु नेरा ॥४॥१२॥ (1206-7)
पूरि रहिओ सरबत्र महि प्रभ गुणी गहीर ॥ (818-14)
पूरि रहिओ सरबत्र मै नानक हरि रंगि राचु ॥२॥ (706-1)
पूरि रहे एकै गुणतासु ॥३॥ (183-14)
पूरि रहे प्रभ अंतरजामी ॥१॥ (826-3)
पूरी आसा जी मनसा मेरे राम ॥ (577-5)
पूरी आसा मनु त्रिपताइआ ॥ (373-18)
पूरी भई सिमरि सिमरि बिधाता ॥३॥ (806-1)
पूरी रही जा पूरै राखी ॥ (188-16)
पूरी सोभा पूरा लोकीक ॥३॥ (188-18)
पूरी होई करामाति आपि सिरजणहारै धारिआ ॥ (968-9)
पूरे का कीआ सभ किछु पूरा घटि वधि किछु नाही ॥ (1412-18)
पूरे गुर ऊपरि कुरबाण ॥२॥ (899-17)
पूरे गुर का निरमल मंतु ॥३॥ (197-13)
पूरे गुर का पूरन मंत ॥३॥ (867-5)
पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥ (295-3)
पूरे गुर का हुकमु न मंनै ओहु मनमुखु अगिआनु मुठा बिखु माइआ ॥ (303-16)
पूरे गुर की कार करमि कमाईऐ ॥ (144-16)
पूरे गुर की देखु वडाई ॥ (614-15)
पूरे गुर की पाए सेव ॥१॥ (1148-14)
पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥ (293-5)
पूरे गुर की पूरी बाणी ॥ (1074-13)
पूरे गुर की पूरी सेव ॥ (825-6)
पूरे गुर की साची बाणी ॥ (663-16)
पूरे गुर की सुमति पराणी ॥१॥ (184-17)
पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (32-6)
पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (64-17)
पूरे गुर की सेव न कीनी हरि का नामु न भाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1130-18)
पूरे गुर की सेवा कीनी अचिंतु हरि मंनि वसाइआ ॥ (600-17)
पूरे गुर कै सबदि अधारा ॥ (116-2)
पूरे गुर कै सबदि धिआईऐ सबदु सेवि सुखु पावणिआ ॥५॥ (130-6)
पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ (1060-15)
पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ (1065-19)
पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ (127-18)
पूरे गुर कै सबदि पछाना ॥१॥ रहाउ ॥ (154-8)
पूरे गुर कै सबदि मिलाए ॥ (111-4)

पूरे गुर कै सबदि समाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (361-7)
पूरे गुर कै सबदि सिञापै ॥ (130-16)
पूरे गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (663-15)
पूरे गुर ते आपु पछाता सबदि सचै वीचारा ॥ (602-10)
पूरे गुर ते इह मति पाए ॥७॥ (222-19)
पूरे गुर ते उपजी साचि समाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (754-7)
पूरे गुर ते जाणै जाणु ॥३॥ (1188-15)
पूरे गुर ते नदरी आई ॥ (1061-18)
पूरे गुर ते नामु धिआई ॥ (798-15)
पूरे गुर ते नामु निधि पाए ॥ (116-13)
पूरे गुर ते नामु पलै पाई ॥३॥ (1175-7)
पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥ (560-8)
पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥ (941-18)
पूरे गुर ते पाईऐ परगटु सभनी लोइ ॥ (44-19)
पूरे गुर ते पाईऐ मनमुखि पलै न पाइ ॥ (511-4)
पूरे गुर ते प्रापति होइ ॥२॥ (1129-15)
पूरे गुर ते बूझै जनु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (160-17)
पूरे गुर ते भाणा जापै अनदिनु सहजि समाई ॥२॥ (1333-9)
पूरे गुर ते महलु पाइआ पति परगटु लोई ॥ (1248-8)
पूरे गुर ते वडिआई पाई ॥ (798-9)
पूरे गुर ते सतसंगति ऊपजै सहजे सचि सुभाइ ॥५॥ (427-5)
पूरे गुर ते सबदि बुझाई ॥ (798-12)
पूरे गुर ते साचि समाइ ॥१॥ (364-7)
पूरे गुर ते साचु कमावै गति मिति सबदे पाई ॥२२॥ (940-10)
पूरे गुर ते सोझी पाइ ॥१॥ (161-9)
पूरे गुर ते सोझी पाए ॥ (364-2)
पूरे गुर ते सोझी पाए ॥७॥ (232-6)
पूरे गुर ते सोझी होई ॥ (1036-9)
पूरे गुर ते सोझी होई ॥ (1057-12)
पूरे ताल जाणै सालाह ॥ (350-10)
पूरे ताल निहाले सास ॥ (1165-4)
पूरे ताल विचहु आपु गवाइ ॥ (364-17)
पूरे ते परधान निवावहि प्रभ मथा ॥ (709-4)
पूरे पूरी मति है सची वडिआई ॥ (1012-10)
पूरे सतिगुर मिलि निसतारे ॥१॥ (193-13)
पूरे सतिगुर सिउ लगै पिआरु ॥ (160-9)
पूरै करमि गुर का जपु जपना ॥ (1079-10)

पूरै करमि धिआइ पूरा सबदु मंनि वसाइआ ॥ (1286-2)
पूरै गिआनि धिआनि मैलु चुकाइआ ॥ (1286-3)
पूरै गुरि किरपा धारी ॥ (622-11)
पूरै गुरि पहिराइआ ॥ (629-8)
पूरै गुरि पाईऐ मोख दुआरु ॥ (114-11)
पूरै गुरि पूरी मति दीनी हरि बिनु आन न भाई ॥१०॥ (915-17)
पूरै गुरि बखसाईअहि सभि गुनह फकीरै ॥१॥ (1012-4)
पूरै गुरि मेटिओ भरमु अंधेरा ॥ (615-7)
पूरै गुरि मेलावा होइ ॥२॥ (1129-12)
पूरै गुरि वेखालिआ सबदे सोझी पाई ॥ (592-1)
पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥ (1052-1)
पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥ (230-8)
पूरै गुरि सभु सचु दिखाइआ सचै नामि निवासी हे ॥७॥ (1048-11)
पूरै गुरि समझाइआ मति ऊतम होई ॥ (424-17)
पूरै गुरि हउमै भरमु चुकाइआ ॥ (126-19)
पूरै गुरि हदूरि दिखाइआ ॥ (127-5)
पूरै तोलि तोलै वणजारा ॥ (1036-14)
पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥ (17-15)
पूरै पूरा करि छोडिआ हुकमि सवारणहार ॥ (90-9)
पूरै भागि को इहु रंगु पाए गुरमती रंगु चड़ाइदा ॥८॥ (1066-10)
पूरै भागि गुर सबदि पछाता ॥ (1061-5)
पूरै भागि गुर सबदु पछाता ॥ (1046-17)
पूरै भागि गुर सेवा लाए ॥ (1063-9)
पूरै भागि गुर सेवा होइ ॥ (363-19)
पूरै भागि गुर सेवा होई ॥ (1063-8)
पूरै भागि गुर सेवा होवै गुर सेवा ते सुखु पावणिआ ॥२॥ (123-15)
पूरै भागि गुरु पाईऐ उपाइ कितै न पाइआ जाइ ॥ (1347-4)
पूरै भागि गुरु पूरा पाइआ ॥ (798-16)
पूरै भागि नामु मनि वसै सबदि मिलावा होइ ॥ (33-6)
पूरै भागि परापति होइ ॥३॥ (665-18)
पूरै भागि परापति होई ॥ रहाउ ॥ (745-1)
पूरै भागि मनि सबदु वसाइआ ॥ (115-9)
पूरै भागि मिलै गुरु आइ ॥ (158-4)
पूरै भागि सचु कार कमावै ॥ (1174-3)
पूरै भागि सतगुरु मिलै जा भागै का उदउ होइ ॥ (31-13)
पूरै भागि सतसंगति लहै सतगुरु भेटै जिसु आइ ॥ (35-11)
पूरै भागि सतिगुरु पाइआ सबदे मेलि मिलावणिआ ॥५॥ (122-14)

पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ जे हरि प्रभु बखस करेइ ॥ (851-9)
पूरै भागि सतिगुरु मिलै पिरु पाइआ सचि समाइ ॥३॥ (38-6)
पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखदाता नामु वसै मनि आइ ॥ (85-18)
पूरै भागि सतिगुरु मिलै हरि नामु धिआइ ॥६॥ (565-14)
पूरै भागि हरि नामि समाणी ॥ (665-18)
पूरै भागि हरि भगति कराइ ॥१॥ (1176-15)
पूरै लागा पूरे माहि समाणी ॥ (1074-13)
पूरै सतगुरि हरि नामु धिआइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (559-14)
पूरै सतिगुर दिती वडिआई ॥ (364-9)
पूरै सतिगुरि आपि दिखाइआ सचि नामि निसतारा ॥७॥ (754-17)
पूरै सतिगुरि किरपा कीनी विचहु आपु गवाइआ ॥४॥ (1130-9)
पूरै सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ (663-13)
पूरै सतिगुरि दीआ बिसास ॥ (888-10)
पूरै सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥१॥ (1174-10)
पूरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ (1052-3)
पूरै सतिगुरि बूझि बुझाइआ ॥ (1055-12)
पूरै सतिगुरि राखि लीए आपणै पंनै पाइ ॥ (643-1)
पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ (129-3)
पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ (231-7)
पूरै सतिगुरि सोझी पाई ॥ (1054-1)
पूरै सबदि प्रभु मिलिआ आई ॥ (514-7)
पूरै सबदि भगति सुहाई ॥ (1068-4)
पूरै सबदि मंनि वसाए ॥ (364-13)
पूरै सबदि सभ सोझी होई हरि नामै रहै समाइ ॥१॥ (69-2)
पूरै सबदि सलाहीऐ जिस दा अंतु न पारावारु ॥९॥ (68-18)
पूरो पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ॥ (17-15)
पेईअड़ै घरि सबदि पतीणी साहुरड़ै पिर भाणी ॥ (1111-9)
पेईअड़ै जगजीवनु दाता गुरमति मंनि वसाइआ ॥ (65-3)
पेईअड़ै जगजीवनु दाता मनमुखि पति गवाई ॥ (65-2)
पेईअड़ै जिनि जाता पिआरा ॥ (109-17)
पेईअड़ै डोहागणी साहुरड़ै किउ जाउ ॥ (1014-17)
पेईअड़ै दिन चारि है हरि हरि लिखि पाइआ ॥ (162-17)
पेईअड़ै धन अनदिनु सुती ॥ (110-17)
पेईअड़ै धन कंतु समाले ॥ (129-12)
पेईअड़ै धन भरमि भुलाणी ॥ (129-11)
पेईअड़ै पिरु चेते नाही ॥ (127-3)
पेईअड़ै पिरु जातो नाही ॥ (109-15)

पेईअड़ै पिरु मंनि वसाइआ ॥ (127-4)
पेईअड़ै पिरु समला साहुरड़ै घरि वासु ॥ (1014-18)
पेईअड़ै सहु सेवि तूं साहुरड़ै सुखि वसु ॥ (50-18)
पेईअड़ै सुखदाता जाता ॥ (110-19)
पेईऐ साहुरै बहु सोभा पाए तिसु पूज करे सभु सैसारु ॥ (786-14)
पेखंदड़ो की भुलु तुमा दिसमु सोहणा ॥ (708-3)
पेखत चाखत कहीअत अंधा सुनीअत सुनीऐ नाही ॥ (741-4)
पेखत पेखत ऊठि सिधारा ॥२॥ (740-10)
पेखत माइआ रंग बिहाइ ॥ (1143-11)
पेखत लीला रंग रूप चलनै दिनु आइआ ॥ (813-11)
पेखत सगल धिआनो ॥ (1006-4)
पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख जानिआ दूरी रे ॥२॥ (612-8)
पेखत सुनत सभन कै संगे थोरै काज बुरो कह फेरो ॥१॥ रहाउ ॥ (1302-17)
पेखत ही पुंनीत होइ भेटत जपीऐ नाउ ॥१३०॥ (1371-9)
पेखन कउ नेत्र सुनन कउ करना ॥ (913-14)
पेखन सुनन सुनावनो मन महि द्रिड़ीऐ साचु ॥ (706-1)
पेखि आइओ सरब थान देस प्रिअ रोम न समसरि लागै ॥१॥ रहाउ ॥ (1209-18)
पेखि दइआल अनद सुख पूरन हरि रसि रपिओ खुमारो ॥१॥ रहाउ ॥ (1225-11)
पेखि दरसनु इहु सुखु लहीऐ जीउ ॥२॥ (217-6)
पेखि दरसनु नानक बिगसे आपि लए मिलाए ॥४॥५॥८॥ (783-1)
पेखि दरसनु नानकु जीविआ मन अंदरि धरणे ॥९॥ (320-7)
पेखि निकटि करि सेवा सतिगुर हरि कीरतनि ही त्रिपतावै ॥ रहाउ ॥ (613-6)
पेखि पेखि जीवा दरसु तुम्हारा ॥ (743-10)
पेखि पेखि जीवै प्रभु अपना अचरजु तुमहि वडाई ॥३॥ (625-7)
पेखि पेखि नानक बिगसानो नानक नाही सुमार ॥२॥१०॥३८॥ (618-17)
पेखि पेखि नानक बिगसानो पुनह पुनह बलिहारिओ ॥२॥३॥४॥ (979-5)
पेखि पेखि बिगसाउ साजन प्रभु आपना इकांत ॥१॥ रहाउ ॥ (1300-17)
पेखि पेखि मन महि हैरानै ॥२॥ (1338-5)
पेखि पेखि रे कसुमभ की लीला राचि माचि तिनहूं लउ हसूआ ॥ (206-14)
पेखि पेखि लीला मनि आनंदा ॥ (740-14)
पेखि पेखि सुआमी की सोभा आनदु सदा उलासु ॥ रहाउ ॥ (677-13)
पेखिओ प्रभ जीउ अपुनै संगे चूकै भीति भ्रमारी ॥३॥ (616-17)
पेखिओ मोहनु सभ कै संगे ऊन न काहू सगल भरी ॥ (823-1)
पेखिओ लालनु पाट बीच खोए अनद चिता हरखे पतीन ॥ (716-4)
पेखु नानक पसरे पारब्रहम ॥४॥८१॥१५०॥ (196-5)
पेखु हरिचंदउरड़ी असथिरु किछु नाही ॥ (461-13)
पेखे बिंजन परोसनहारै ॥ (1299-4)

पेखै खुसी भोग नही हारा ॥ (746-9)
पेखै पेखनहारु दइआला जेता साजु सीगारी ॥१॥ रहाउ ॥ (884-14)
पेखै बोलै सुणै सभु आपि ॥ (183-13)
पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥ (266-9)
पेटु भरिओ पसूआ जिउ सोइओ मनुखु जनमु है हारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1105-15)
पेडि लगी है जीअड़ा चालणहारो ॥३॥ (359-4)
पेडु मुंढाहूं कटिआ तिसु डाल सुकंदे ॥१२॥ (306-19)
पेडु मुंढाहू कटिआ तिसु डाल सुकंदे ॥३१॥ (317-2)
पेवकड़ै गुण समलै साहुरै वासु पाइआ ॥ (162-18)
पेवकड़ै दिन चारि है साहुरड़ै जाणा ॥ (333-17)
पेवकड़ै धन खरी इआणी ॥ (357-5)
पेवकड़ै हरि जपि सुहेली विचि साहुरड़ै खरी सोहंदी ॥ (78-15)
पै कोइ न किसै रञाणदा ॥ (74-4)
पै पाइ मनाई सोइ जीउ ॥ (73-7)
पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो ॥ (923-6)
पैडे बिनु बाट घनेरी ॥ (1194-5)
पैधा खाधा बादि है जां मनि दूजा भाउ ॥ (1411-7)
पैनणा रखु पति परमेसुर फिरि नागे नही थीवना ॥३॥ (1019-3)
पैनणु गुण चंगिआईआ भाई आपणी पति के साद आपे खाइ ॥ (1419-7)
पैनणु सिफति सनाइ है सदा सदा ओहु ऊजला मैला कदे न होइ ॥ (1092-9)
पैन्हणु खाणा चीति न पाई ॥ (1331-10)
पैर धोवा पखा फेरदा तिसु निवि निवि लगा पाइ जीउ ॥१०॥ (73-19)
पैर हलाइनि फेरन्हि सिर ॥ (465-7)
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥ (139-2)
पैरी चलै हथी करणा दिता पैनै खाइ ॥ (138-10)
पैरी थकां सिरि जुलां जे मूं पिरी मिलंन्हि ॥११९॥ (1384-8)
पैरी पै पै बहुतु मनाई दीन दइआल गोपाला जीउ ॥३॥ (99-2)
पैरी पै पै बहुतु मनाए ॥ (1241-1)
पैरी मारगि गुर चलदा पखा फेरी हथा ॥ (1101-10)
पैरी वाजा सदा निहाल ॥ (350-11)
पैसीले गगन मझारं ॥ (972-2)
पोखरि पोखरि ढूढते भलो न कहिहै कोइ ॥५०॥ (1367-3)
पोखरु नीरु विरोलीऐ माखनु नही रीसै ॥७॥ (229-8)
पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥ (135-14)
पोखि तुखारु पड़ै वणु त्रिणु रसु सोखै ॥ (1109-8)
पोखु सोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११॥ (135-18)
पोट डारि गुरु पूरा मिलिआ तउ नानक निरभए ॥४॥१॥१५९॥ (214-17)

पोतै जिन कै पुंनु है तिन सतसंगति मेलाइ ॥१॥ (30-14)
पोथी गीत कवित किछु कदे न करनि धरिआ ॥ (70-13)
पोथी पंडित गीत कवित कवते भी जासी ॥ (1100-16)
पोथी पंडित बेद खोजंता जीउ ॥ (216-18)
पोथी पंडित रहे पुराण ॥ (903-4)
पोथी परमेसर का थानु ॥ (1226-3)
पोथी पुराण कमाईऐ ॥ (25-18)
पोहत नाही पंच बटवारे ॥५॥ (760-5)
पोहि न सकै जमकालु सचा रखवालिआ ॥ (1284-10)
प्रगट कीने प्रभ करनेहारे नासन भाजन थाके ॥ (678-4)
प्रगट जोति जगमगै तेजु भूअ मंडलि छायउ ॥ (1408-14)
प्रगट पहारा जापदा सभि लोक सुणंदे ॥ (306-16)
प्रगट पुरख सभ ठाऊ जाने ॥ (252-14)
प्रगट पुरखु परवाणु सभ ठाई जानीऐ ॥३॥ (398-1)
प्रगट प्रगास गिआन गुर गमित सतिगुर ते सुधि पाई ॥ (969-10)
प्रगट प्रतापु कीओ नाम को राखे राखनहारै ॥१॥ रहाउ ॥ (1218-9)
प्रगट प्रतापु ताहू को जापत ॥ (250-17)
प्रगट प्रतापु वरताइओ सभु लोकु करै जैकारु जीउ ॥१७॥ (72-17)
प्रगट भइआ साधू कै संगि ॥ (1144-18)
प्रगट भई सगले जुग अंतरि गुर नानक की वडिआई ॥४॥११॥ (611-16)
प्रगट भई सभ लोअ महि सेवक की राखी ॥१॥ रहाउ ॥ (814-1)
प्रगट भए आपहि गोबिंद नानक संत मतांत ॥१॥ (254-15)
प्रगट भए नानक नह छपिआ ॥२१॥ (254-14)
प्रगट भए प्रभ पुरख निरारे ॥ (1077-14)
प्रगट भए संसार महि फिरते पहनाम ॥ (819-8)
प्रगटि भइओ सभ लोअ महि नानक अधम पतंग ॥११॥ (1364-9)
प्रगटि रहिओ प्रभु सरब उजाला ॥ (1073-17)
प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का ॥ रहाउ ॥ (396-3)
प्रगटिआ सूरु जोति उजीआरा ॥ (737-14)
प्रगटिआ सूरु निसि मिटिआ अंधिआरा ॥ (1069-16)
प्रगटिओ जोति सहज सुख सोभा बाजे अनहत बानी ॥ (672-1)
प्रगटिओ सो जनु सगले भवन ॥ (393-4)
प्रगटी जोति चूका अभिमानु ॥ (1328-15)
प्रगटी जोति जोति महि जाता मनमुखि भरमि भुलाणी ॥ (1111-3)
प्रगटी जोति मिटिआ अंधिआरा ॥ (1349-8)
प्रगटी जोति मिले राम पिआरे ॥२॥ (375-10)
प्रगटु भइआ खंडी ब्रहमंडी कीता अपणा पाइआ ॥ (1224-18)

प्रगटु भइआ जन का परतापु ॥१॥ (396-9)
प्रगटु भइआ परतापु प्रभ भाई मउलिआ धरति अकासु ॥५॥ (640-5)
प्रगटु भई है सभनी थाई ॥२॥ (1142-5)
प्रगटु मारगु जिनि करि दिखलाइआ ॥३॥ (1142-7)
प्रगटु सगल हरि भवन महि जनु नानकु गुरु पारब्रहम ॥९॥ (1387-2)
प्रगटे आनूप गोविंद ॥ (898-13)
प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन कवन रसना गुण भना ॥ (543-7)
प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन साधसंगि वखाणिआ ॥ (460-15)
प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥ (295-12)
प्रणवति नानक गिआनी कैसा होइ ॥ (25-4)
प्रणवति नानक गुरमुखि छूटसि राम नामि लिव लागी ॥४॥२॥३॥ (1126-4)
प्रणवति नानक जे तू देवहि अंते होइ सखाई ॥४॥१॥ (876-9)
प्रणवति नानक तह लिव लाई ॥१५॥ (840-9)
प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ ॥२॥३॥ (12-5)
प्रणवति नानक तिन्ह की सरणा जिन्ह तूं नाही वीसरिआ ॥२॥२९॥ (357-15)
प्रणवति नानक दासनि दासा जगि हारिआ तिनि जीता ॥४॥९॥ (1330-2)
प्रणवति नानक दासनि दासा तू सरब जीआ प्रतिपाला ॥१॥ (1112-6)
प्रणवति नानक सरणि तुमारी ॥८॥१०॥ (225-14)
प्रणवति नानक सुणि मेरे साहिबा डुबदा पथरु लीजै ॥४॥४॥ (596-17)
प्रणवति नानक हम ता के दास ॥९॥८॥ (224-11)
प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥२०॥१॥ (840-19)
प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥५॥ (839-9)
प्रणवति नानकु अगमु सुणाए ॥ (877-19)
प्रणवति नानकु अवरु न दूजा ॥८॥५॥ (1345-3)
प्रणवति नानकु एकु लंघाए जे करि सचि समावां ॥३॥२॥१०॥ (1171-9)
प्रणवति नानकु कालु न खाइ ॥१०॥ (839-19)
प्रणवति नानकु कालु न खाइ ॥४९॥ (943-12)
प्रणवति नानकु तारे सोइ ॥४॥१॥२॥ (728-14)
प्रणवति नानकु दासनि दासा खिनु तोला खिनु मासा ॥४॥३॥११॥ (1171-14)
प्रणवति नानकु दासनि दासा गुरमति जानिआ सोई ॥४॥५॥ (597-3)
प्रणवति नानकु दासनि दासा दइआ करहु दइआला ॥४॥१॥९॥ (1171-4)
प्रणवति नानकु दासनि दासा परतापहिगा प्राणी ॥४॥२॥ (877-2)
प्रणवति नानकु नागी दाझै फिरि पाछै पछुताणीता ॥४॥३॥१५॥ (156-3)
प्रणवति नानकु भवजलु तरै ॥४॥१८॥ (354-13)
प्रणवति नानकु हुकमु पछाणै सुखु होवै दिनु राती ॥६॥५॥१७॥ (156-16)
प्रणवति नामदेउ इहु जीउ चितवै सु लहै ॥ (1351-10)
प्रणवति नामदेउ नाकहि बिना ॥ (1163-16)

प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू हंसु ॥ (23-14)
प्रणवै नामदेउ इहु करणा ॥ (1163-13)
प्रणवै नामदेउ तां ची आणि ॥ (1292-14)
प्रणवै नामदेउ लागी प्रीति ॥ (1164-18)
प्रणवै नामा इउ कहै गीता ॥५॥२॥६॥ (874-17)
प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥ (874-12)
प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासा रे ॥२॥३॥ (988-19)
प्रतिपारै नित सारि समारै ॥ (890-5)
प्रतिपाल अचुत पुरखु एको तिसहि सिउ रंगु लागा ॥ (926-15)
प्रतिपाल महा दइआल दाना दइआ धारे सभ किसै ॥ (249-7)
प्रतिपालि माता उदरि राखै लगनि देत न सेक ॥ (1007-7)
प्रतिपाले प्रभु आपि घटि घटि सारीऐ ॥ (398-4)
प्रतिपालै अपिआउ देइ कछु ऊन न होई ॥ (677-18)
प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥ (292-15)
प्रतिपालै नानक हमहि आपहि माई बाप ॥३२॥ (257-3)
प्रतिपालै नित सारि समालै इकु गुनु नही मूरखि जाता रे ॥१॥ (612-6)
प्रतिपालै बारिक की निआई जैसे मात पिताई ॥१॥ (1213-18)
प्रथम आए कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥ (1116-10)
प्रथम आए कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥३॥ (1116-13)
प्रथम भैरवी बिलावली ॥ (1430-1)
प्रथम राग भैरउ वै करही ॥ (1429-19)
प्रथमे गरभ माता कै वासा ऊहा छोडि धरनि महि आइआ ॥ (497-10)
प्रथमे गरभ वास ते टरिआ ॥ (237-6)
प्रथमे छोडी पराई निंदा ॥ (1147-7)
प्रथमे तिआगी हउमै प्रीति ॥ (370-13)
प्रथमे तेरी नीकी जाति ॥ (374-1)
प्रथमे नानक चंदु जगत भयो आनंदु तारनि मनुख्य जन कीअउ प्रगास ॥ (1399-3)
प्रथमे ब्रहमा कालै घरि आइआ ॥ (227-2)
प्रथमे मता जि पत्री चलावउ ॥ (371-13)
प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै ॥ (381-11)
प्रथमे माखनु पाछै दूधु ॥ (900-3)
प्रथमे मिटिआ तन का दूख ॥ (395-14)
प्रथमे वसिआ सत का खेड़ा ॥ (886-5)
प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥ (295-17)
प्रबलचंड कउसक उभारा ॥ (1430-6)
प्रभ अपणिआ संता देवहि ॥ (626-16)
प्रभ अपना बिरदु रखाइआ ॥४॥१०॥६०॥ (624-6)

प्रभ अपने का भइआ बिसासु ॥ (867-17)
प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥ (286-7)
प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥ (286-7)
प्रभ अपुने जब भए दइआल ॥ (178-8)
प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै ॥२॥ (392-15)
प्रभ अबिनासी घटि घटि चीन्ह ॥४॥२३॥ (376-16)
प्रभ अविनासी अलख अभेवा ॥१॥ (805-9)
प्रभ अविनासी मन महि लेखु ॥२॥ (190-2)
प्रभ आए सरणा भउ नही करणा ॥ (1071-17)
प्रभ आदेसु आदि रखवारा ॥ (840-1)
प्रभ आपि सीगारि सवारनहार ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥५२॥ (384-11)
प्रभ इहै मनोरथु मेरा ॥ (533-9)
प्रभ एक अनिक अलख ठाकुर ओट नानक तिसु गही ॥१॥ (458-12)
प्रभ एक अनिक सरबत पूरन बिखै अगनि न जली ॥१॥ (1121-17)
प्रभ एक तूंही एक तुही ॥ (1272-10)
प्रभ कउ जनु अंतरि रिद लोचै प्रभ जन के सास निहारे ॥ (982-13)
प्रभ कउ जाणै सद ही संगा ॥ (181-7)
प्रभ कउ सद बलि जाई जीउ ॥२॥ (217-13)
प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥ (263-10)
प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥ (263-9)
प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥ (263-10)
प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥ (263-8)
प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥ (263-9)
प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥ (263-11)
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥ (263-7)
प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥ (263-6)
प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥ (263-6)
प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥ (263-5)
प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥ (263-4)
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥ (263-5)
प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥ (263-8)
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥ (263-5)
प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥ (263-9)
प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥ (263-6)
प्रभ करण कारण समरथा राम ॥ (578-5)
प्रभ करण कारण समराथा ॥ (627-14)
प्रभ करणहार रखि लीआ ॥३॥ (623-12)

प्रभ करन करावनहारी ॥ (655-10)
प्रभ करहु साधू धूरि ॥ (837-18)
प्रभ कहन मलन दहन लहन गुर मिले आन नही उपाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1305-19)
प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥ (282-7)
प्रभ का कीआ मीठा मानै ॥ (392-13)
प्रभ का नामु मनि तनि आधारु ॥ (802-4)
प्रभ का भाणा लागा मीठा ॥२॥ (387-10)
प्रभ का भाणा सति करि सहहु ॥१॥ (1138-4)
प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥ (263-1)
प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥ (262-16)
प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥ (285-14)
प्रभ काटिआ जम का फासा ॥ (622-13)
प्रभ किरपा ते गुर मिले हरि हरि बिसमाद ॥ (810-6)
प्रभ किरपा ते नामु धिआईऐ ॥ (180-7)
प्रभ किरपा ते नामु नउ निधि पाई ॥ (1144-7)
प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥ (293-8)
प्रभ किरपा ते बंधन छुटै ॥ (180-7)
प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥ (278-19)
प्रभ किरपा ते भए सुहेले ॥ (191-13)
प्रभ किरपा ते मनु वसि आइआ ॥ (385-17)
प्रभ किरपा ते साधसंगि मेला ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१२॥८१॥ (179-19)
प्रभ किरपा ते हरि हरि धिआवउ ॥ (101-11)
प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥ (271-1)
प्रभ किरपाल दइआल गोबिंद ॥ (866-13)
प्रभ की अकथ कहाणी ॥ (626-2)
प्रभ की अगम अगाधि कथा ॥ (498-9)
प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥ (275-4)
प्रभ की आगिआ मन महि मानी महा पुरख का संगु भइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (890-12)
प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ ॥ (1147-11)
प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ भरमु अधेरा लही ॥१॥ (529-16)
प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥ (268-11)
प्रभ की आगिआ लगी पिआरी ॥ (887-11)
प्रभ की आगिआ सति करि मानु ॥ (177-3)
प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥ (280-18)
प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥ (295-15)
प्रभ की ओट गहहु मन मेरे ॥ (1150-14)
प्रभ की ओट गही तउ छूटो ॥ (673-13)

प्रभ की कला न मेटी जाई ॥३॥ (1159-6)
प्रभ की कला बिना कह धावै ॥ (282-14)
प्रभ की गति मिति कोइ न पावै ॥ (1025-3)
प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥ (282-13)
प्रभ की टेक रहै दिनु राति ॥ (1148-17)
प्रभ की दरगह सोभा सेत ॥१॥ (178-19)
प्रभ की दरगह सोभावंते ॥ (1339-3)
प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ ॥ (289-13)
प्रभ की पूजा पाईऐ मानु ॥ (184-7)
प्रभ की प्रीति इहु भवजलु तरै ॥ (391-16)
प्रभ की प्रीति चलै संगारै ॥३॥ (391-17)
प्रभ की प्रीति जम ते नही डरै ॥ (391-17)
प्रभ की प्रीति दुखु लगै न कोइ ॥ (391-13)
प्रभ की प्रीति भए सगल निधान ॥ (391-15)
प्रभ की प्रीति रिदै निरमल नाम ॥ (391-15)
प्रभ की प्रीति सगल उधारै ॥ (391-17)
प्रभ की प्रीति सद निरमल होइ ॥१॥ (391-14)
प्रभ की प्रीति सद सोभावंत ॥ (391-16)
प्रभ की प्रीति सदा सुखु होइ ॥ (391-13)
प्रभ की प्रीति सभ मिटी है चिंत ॥२॥ (391-16)
प्रभ की प्रीति हउमै मलु खोइ ॥ (391-13)
प्रभ की सरणि गहत सुखु पाईऐ किछु भउ न विआपै बाल का ॥१॥ (1084-14)
प्रभ की सरणि गही सभ तिआगि ॥ (866-7)
प्रभ की सरणि सगल भै लाथे दुख बिनसे सुखु पाइआ ॥ (615-17)
प्रभ की सरनि उबरै सभ कोइ ॥ (202-13)
प्रभ की सेवा जन की सोभा ॥ (1338-2)
प्रभ कीआ तुमारा थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (207-9)
प्रभ कीजै क्रिपा निधान हम हरि गुन गावहगे ॥ (1321-1)
प्रभ के चरन मन माहि धिआनु ॥ (195-5)
प्रभ के चाकर से भले ॥ (211-1)
प्रभ के संत उधारन जोग ॥ (387-6)
प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥ (285-18)
प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥ (285-17)
प्रभ के सेवक दूख न झूरन ॥ (395-12)
प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥ (282-3)
प्रभ के सेवक प्रभि आपि सवारे ॥ (739-19)
प्रभ के सेवक बहुतु अति नीके मनि सरधा करि हरि धारे ॥ (982-6)

प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥ (282-3)
प्रभ के सेवक सरणि प्रभ तिन कउ भउ नाहि ॥४॥२६॥५६॥ (815-6)
प्रभ कै दरि पए मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (410-14)
प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥ (285-3)
प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥ (262-15)
प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥ (263-14)
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥ (263-1)
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥ (263-12)
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥ (263-13)
प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥ (263-12)
प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥ (262-14)
प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥ (262-13)
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥ (262-17)
प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥ (262-18)
प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥ (262-18)
प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ॥ (263-2)
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥ (262-19)
प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥ (262-16)
प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥ (262-14)
प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥ (262-14)
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥ (263-2)
प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥ (263-13)
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥ (263-3)
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥ (262-18)
प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥ (262-15)
प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥ (263-3)
प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥ (262-17)
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥ (263-2)
प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥ (263-13)
प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥ (262-19)
प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥ (263-12)
प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥ (262-19)
प्रभ को भगति बछलु बिरदाइओ ॥ (1270-1)
प्रभ को भगति वछलु बिरदाइओ ॥ (498-12)
प्रभ क्रिपा ते संत पाए वारि वारि नानक उह बेरै ॥४॥५॥१६॥ (1301-4)
प्रभ खिन महि पारि उतारणहार ॥२॥ (196-12)
प्रभ गुन गाइ बिखै बनु तरिआ कुलह समूह उधारिओ ॥१॥ (534-8)

प्रभ गोपाल दीन दइआल पतित पावन पारब्रहम हरि चरण सिमरि जागु ॥ (409-2)
प्रभ चरण कमल रिद माहि निवासा ॥१॥ (742-13)
प्रभ चरणी मनु लागा ॥ (627-2)
प्रभ चरन कमल अपार ॥ (837-9)
प्रभ चरन कमल रसाल नानक गाठि बाधि धरी ॥२॥१॥९॥ (1121-2)
प्रभ चरन नानक आसरो ॥ (1119-11)
प्रभ चरन सरन अनाथु आइओ नानक हरि संगि चली ॥२॥६॥१४॥ (1121-19)
प्रभ चरनन की मनि पिआस ॥ (1304-10)
प्रभ चिति आए पूरन सभ काज ॥ (802-4)
प्रभ चिति आए सभु दुखु जाइ ॥ (184-10)
प्रभ जनम मरन निवारि ॥ (837-19)
प्रभ जपि जपि जीवहि तेरे दास ॥ (1184-4)
प्रभ जल जन तेरे मीना ॥ (1278-9)
प्रभ जाइ पावै रंग महली हरि रंगु माणै रंग की ॥ (576-11)
प्रभ जी को नामु अंति पुकरोरै ॥१॥ (1304-16)
प्रभ जी को नामु जपत मन चैन ॥ (674-6)
प्रभ जी को नामु मनहि साधारै ॥ (713-9)
प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥ (270-2)
प्रभ जी तउ प्रसादि भ्रमु डारिओ ॥ (529-11)
प्रभ जी तू मेरे प्रान अधारै ॥ (820-10)
प्रभ जी तू मेरो ठाकुरु नेरो ॥ (618-6)
प्रभ जी तू मेरो सुखदाता ॥ (626-8)
प्रभ जी तेरी ओट गुसाई ॥ (630-10)
प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥ (263-4)
प्रभ जी भाणा सचा माणा प्रभि हरि धनु सहजे दीता ॥ (576-19)
प्रभ जी भाणी भई निकाणी सफल जनमु परवाना ॥ (780-1)
प्रभ जी मिलु मेरे प्रान ॥ (716-9)
प्रभ जी मोहि कवनु अनाथु बिचारा ॥ (1220-3)
प्रभ जीउ खसमाना करि पिआरे ॥ (631-4)
प्रभ जीउ तुधु धिआए सोइ जिसु भागु मथारीऐ ॥ (518-3)
प्रभ जीउ तू मेरो साहिबु दाता ॥ (615-18)
प्रभ जीउ देवहु दरसनु आपणा जितु ढाढी त्रिपतावै ॥ (1097-11)
प्रभ जीउ पेखउ दरसु तुमारा ॥ (532-4)
प्रभ डोरी हाथि तुमारे ॥ (626-19)
प्रभ तजि रचे जि आन सिउ सो रलीऐ खेह ॥१॥ रहाउ ॥ (812-14)
प्रभ तुझ बिना नही ठाउ ॥ (838-3)
प्रभ तुझ बिना नही होर ॥ (838-8)

प्रभ तुधहु खाली को नही दरि गुरमुखा नो साबासि ॥ (40-2)
प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥ (134-9)
प्रभ तुम ते लहणा तूं मेरा गहणा ॥ (106-6)
प्रभ तू ठाकुरु सरब प्रतिपालकु मोहि कलत्र सहित सभि गोला ॥ (1211-10)
प्रभ तूहै ठाकुरु सभु को तेरा ॥ (1140-7)
प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥२॥ (93-17)
प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥ (276-13)
प्रभ तेरे पग की धूरि ॥ (716-13)
प्रभ थानु तेरो केहरो जितु जंतन करि बीचारु ॥ (1305-12)
प्रभ थ्मभ ते निकसे कै बिसथार ॥ (1194-12)
प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥ (271-1)
प्रभ दइआल किरपाल हजूरि ॥ (676-19)
प्रभ दइआल टेक मेरी ॥१॥ (1322-15)
प्रभ दइआल दुख दरद बिदारण ॥ (1005-6)
प्रभ दइआल दूसर कोई नाही ॥ (866-15)
प्रभ दइआल बेअंत पूरन इकु एहु ॥ (710-11)
प्रभ दइआल मोहि देवहु दान ॥ (987-10)
प्रभ दरस पिआस नानक घणी किरपा करि देवै ॥१८॥ (322-15)
प्रभ दरस लुबध दास नानक बहुड़ि जोनि न धावनो ॥२॥७॥१०॥ (1323-7)
प्रभ दातउ दातार प्र्यिउ जाचकु इकु सरना ॥ (1386-18)
प्रभ दास का दुखु न खवि सकहि फड़ि जोनी जुते ॥ (523-19)
प्रभ दीन दइआल भगत भव तारन हम पापी राखु पपना ॥ (799-4)
प्रभ दीन दइआल सुनहु बेनंती किरपा अपनी धारु ॥ (1222-10)
प्रभ दीना नाथ दुखु कहउ काहि ॥ (1194-17)
प्रभ दूख दरद भ्रम हरता राम ॥ (578-8)
प्रभ देखदिआ दुख भुख गई ढाढी कउ मंगणु चिति न आवै ॥ (1097-12)
प्रभ द्रिसटि धारी मिले मुरारी सगल कलमल भए हान ॥ (462-14)
प्रभ नानक चरण पूजारिआ ॥४॥१॥१४॥ (1184-10)
प्रभ नानक नानक नानक मई ॥८॥३॥६॥ (1157-13)
प्रभ नामु पतित पावनो ॥१॥ रहाउ ॥ (1323-5)
प्रभ पाए हम अवरु न भारिआ ॥७॥ (228-1)
प्रभ पासि जन की अरदासि तू सचा सांई ॥ (517-6)
प्रभ पूजहो नामु अराधि ॥ (1304-6)
प्रभ पूरन आसनी मेरे मना ॥१॥ (409-19)
प्रभ पूरन गुनतास ॥ (1306-9)
प्रभ पूरन पैज सवारी ॥१॥ (625-9)
प्रभ पूरे नानक बखसिंद ॥४॥३८॥४९॥ (898-13)

प्रभ पेखत इछा पुंनीआ मिलि साजन जी के राम ॥ (848-18)
प्रभ पेखत जीवा ठंढी थीवा तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ (784-16)
प्रभ पेखीऐ बिसमाद ॥ (837-13)
प्रभ प्रतिपाले सेवक सुखदाता ॥ (101-17)
प्रभ प्रीतम मेरै संगि राइ ॥ (1181-7)
प्रभ प्रेम भगति गुपाल सिमरण मिटत जोनी भवण ॥३॥ (502-9)
प्रभ प्रेमि राती हरि बिनंती नामि हरि कै सुखि वसै ॥ (436-4)
प्रभ बखसंद दीन दइआल ॥ (290-9)
प्रभ बसे हरि हरि चीत ॥४॥ (837-13)
प्रभ बाणी सबदु सुभाखिआ ॥ (611-13)
प्रभ बालक राखे आपे ॥ (627-12)
प्रभ बाह पकरि जिसु मारगि पावहु सो तुधु जंत मिलासि ॥१॥ (1304-8)
प्रभ बिना आन न राखनहारा नामु सिमरावहु सरनि सूरे ॥१॥ (683-11)
प्रभ बिना नाही होरु ॥ (1307-14)
प्रभ बिपति निवारणो तिसु बिनु अवरु न कोइ जीउ ॥ (926-10)
प्रभ बिसरत नरक महि पाइआ ॥ (1005-4)
प्रभ बिसरत महा दुखु पाइओ इहु नानक ततु बीचारिओ ॥२॥८॥ (1001-2)
प्रभ बिसरत सुखु कदे नाहि जासहि जनमु हारि ॥२॥ (706-8)
प्रभ बेअंत गुरमति को पावहि ॥ (1028-12)
प्रभ भए है किरपेन ॥ (1305-3)
प्रभ भगत वसि दइआल ॥ (837-15)
प्रभ भाणा अपणा भावदा जिसु बखसे तिसु बिघनु न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1258-3)
प्रभ भावा ता सदा निहाल ॥२॥ (373-15)
प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥ (277-4)
प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥ (277-3)
प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥ (277-3)
प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥ (277-3)
प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥ (277-3)
प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥ (275-8)
प्रभ मात पिता अपणे दास का रखवाला ॥ (1137-17)
प्रभ मान पूरन दुख बिदीरन सगल इछ पुजंतीआ ॥ (462-13)
प्रभ मिलणै की एह नीसाणी ॥ (106-17)
प्रभ मिलन का मारगु जानां ॥ (1339-13)
प्रभ मिलबे कउ प्रीति मनि लागी ॥ (204-5)
प्रभ मिलबे की चाह ॥१॥ रहाउ ॥ (1272-2)
प्रभ मिलबे की लालसा ता ते आलसु कहा करउ री ॥१॥ रहाउ ॥ (389-9)
प्रभ मिलहु पिआरे मइआ धारे करि दइआ लड़ि लाइ लीजीऐ ॥ (545-14)

प्रभ मिलिआ ता चूकी डंझा ॥ (373-19)
प्रभ मिले पिआरे कारज सारे करता सभ बिधि जाणै ॥ (1109-18)
प्रभ मिले सुआमी सुखह गामी चाव मंगल रस भरे ॥ (459-9)
प्रभ मिले सुआमी सुखहगामी इछ मन की पुंनीआ ॥ (1312-11)
प्रभ मेरे ओइ बैरागी तिआगी ॥ (1267-10)
प्रभ मेरे को सगल निवास ॥ (887-15)
प्रभ मेरे प्रीतम प्रान पिआरे ॥ (1268-7)
प्रभ मेरे सभ बिधि आगै जानी ॥ (403-12)
प्रभ रंग दइआल मोहि ग्रिह महि पाइआ जन नानक तपति बुझाई ॥४॥१॥१५॥ (1207-5)
प्रभ रखवाले माई बाप ॥ (1183-11)
प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥ (135-4)
प्रभ संगि मिलीजै इहु मनु दीजै ॥ (408-1)
प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥ (1180-4)
प्रभ सतिगुर दीन दइआला ॥ (628-3)
प्रभ समरथ देव अपार ॥ (988-2)
प्रभ समरथ सरब सुख दाना ॥ (1080-1)
प्रभ सरणाई सदा रहु दूखु न विआपै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (47-9)
प्रभ सरणागति कीन्हसि होग ॥५॥ (1187-13)
प्रभ सरणागति जन परे ता का सद परतापु ॥१॥ (817-16)
प्रभ सरणि तेरी काटि बेरी संसारु सागरु तारीऐ ॥ (545-18)
प्रभ सरनी आईऐ सरब फल पाईऐ सगले दुख जाही ॥२॥ (407-13)
प्रभ साचे की साची कार ॥ (665-1)
प्रभ साचे सेती रंगि रंगेती लाल भई मनु मारी ॥ (689-12)
प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता ॥५॥९॥ (885-11)
प्रभ सिउ मनु लीना जिउ जल मीना चात्रिक जिवै तिसंतीआ ॥ (703-15)
प्रभ सिउ लागि रहिओ मेरा चीतु ॥ (682-2)
प्रभ सिउ लागी सहजि समाधि ॥२॥ (865-16)
प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥ (262-15)
प्रभ सिमरत कुसल सभि पाए ॥ (184-17)
प्रभ सिमरत दूख बिनासी ॥ (1214-9)
प्रभ सुंदर चतुर अनूप बिधाते तिस सिउ रुच नही राई ॥ (1213-3)
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥ (133-9)
प्रभ सुखदाते समरथ सुआमी जीउ पिंडु सभु तुमरा माल ॥ (806-16)
प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ ॥ (271-1)
प्रभ सुप्रसंन भए गोपाल ॥ (1349-1)
प्रभ सेती रंगि रातिआ ता ते गरभि न ग्रसना ॥१॥ (811-9)
प्रभ सेवक साचा वेसाहु ॥ (184-14)

प्रभ सेवा जमु लगै न नेरे ॥२॥ (197-16)
प्रभ हसि बोले कीए निआंएं ॥ (1347-18)
प्रभ होइ दइआलु नानक जन तरीऐ ॥८॥१६॥ (228-9)
प्रभवनु करै बूझै नही त्रिसना मिलि संगि साध दइआ घरु लहीआ ॥४॥ (835-12)
प्रभाती ॥ (1349-11)
प्रभाती ॥ (1349-18)
प्रभाती ॥ (1350-11)
प्रभाती ॥ (1350-5)
प्रभाती ॥ (1351-3)
प्रभाती ॥ (1351-7)
प्रभाती असटपदीआ महला १ बिभास (1342-1)
प्रभाती बाणी भगत नामदेव जी की (1350-16)
प्रभाती बिभास पड़ताल महला ४ (1337-8)
प्रभाती भगत बेणी जी की (1351-11)
प्रभाती महला १ ॥ (1327-10)
प्रभाती महला १ ॥ (1328-14)
प्रभाती महला १ ॥ (1328-18)
प्रभाती महला १ ॥ (1328-3)
प्रभाती महला १ ॥ (1328-8)
प्रभाती महला १ ॥ (1329-10)
प्रभाती महला १ ॥ (1329-16)
प्रभाती महला १ ॥ (1329-4)
प्रभाती महला १ ॥ (1330-15)
प्रभाती महला १ ॥ (1330-2)
प्रभाती महला १ ॥ (1330-9)
प्रभाती महला १ ॥ (1331-17)
प्रभाती महला १ ॥ (1331-3)
प्रभाती महला १ ॥ (1331-9)
प्रभाती महला १ ॥ (1332-10)
प्रभाती महला १ ॥ (1332-4)
प्रभाती महला १ ॥ (1342-13)
प्रभाती महला १ ॥ (1343-6)
प्रभाती महला १ ॥ (1344-11)
प्रभाती महला १ ॥ (1345-10)
प्रभाती महला १ ॥ (1345-3)
प्रभाती महला १ दखणी ॥ (1344-1)
प्रभाती महला ३ ॥ (1333-11)

प्रभाती महला ३ ॥ (1333-17)
प्रभाती महला ३ ॥ (1333-6)
प्रभाती महला ३ ॥ (1334-12)
प्रभाती महला ३ ॥ (1334-19)
प्रभाती महला ३ ॥ (1334-4)
प्रभाती महला ३ ॥ (1346-15)
प्रभाती महला ३ बिभास (1346-2)
प्रभाती महला ४ ॥ (1335-13)
प्रभाती महला ४ ॥ (1335-19)
प्रभाती महला ४ ॥ (1336-13)
प्रभाती महला ४ ॥ (1336-7)
प्रभाती महला ४ ॥ (1337-1)
प्रभाती महला ४ बिभास (1335-6)
प्रभाती महला ५ ॥ (1338-15)
प्रभाती महला ५ ॥ (1338-2)
प्रभाती महला ५ ॥ (1338-8)
प्रभाती महला ५ ॥ (1339-15)
प्रभाती महला ५ ॥ (1339-19)
प्रभाती महला ५ ॥ (1339-2)
प्रभाती महला ५ ॥ (1339-9)
प्रभाती महला ५ ॥ (1340-10)
प्रभाती महला ५ ॥ (1340-17)
प्रभाती महला ५ ॥ (1340-6)
प्रभाती महला ५ ॥ (1341-15)
प्रभाती महला ५ ॥ (1341-2)
प्रभाती महला ५ ॥ (1347-19)
प्रभाती महला ५ ॥ (1348-13)
प्रभाती महला ५ घरु २ बिभास (1341-6)
प्रभाती महला ५ बिभास (1337-13)
प्रभाती महला ५ बिभास पड़ताल (1341-12)
प्रभि अपणा बिरदु समारिआ ॥ (72-18)
प्रभि अपना बिरदु समारिआ ॥ (622-19)
प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥ (286-6)
प्रभि अपनै वर दीने ॥ (626-12)
प्रभि अपुना बिरदु समारे ॥ (627-7)
प्रभि अबिचल नीव उसारी ॥ (622-7)
प्रभि अम्रित नामु महा रसु दीनो ॥१॥ (821-8)

प्रभि आणि आणि महिंदी पीसाई आपे घोलि घोलि अंगि लईआ ॥ (837-6)
प्रभि आपि मिलाइआ सचु मंनि वसाइआ कामणि सहजे माती ॥ (439-13)
प्रभि आपि लीए समाइ सहजि सुभाइ भगत कारज सारिआ ॥ (456-19)
प्रभि आपे पैज रखाई ॥१॥ (626-18)
प्रभि उस ते डारि अवर कउ दीन्ही ॥१॥ (392-1)
प्रभि काटि मैलु निरमल करे ॥ (1185-1)
प्रभि क्रिपा धारी हरि मुरारी भै सिंधु सागर तारणो ॥ (544-17)
प्रभि जल थल गिरि कीए पहार ॥ (1194-10)
प्रभि दास रखे करि जतनु आपि ॥ (1183-16)
प्रभि दीन दइआलि कीओ अंगीक्रितु मनि हरि हरि नामु जपेन ॥१॥ (1294-12)
प्रभि पुंनि आतमै कीने धरमा ॥३॥ (1348-18)
प्रभि पूरी लोच हमारी ॥ (621-18)
प्रभि बांह पकराई ऊतम मति पाई गुर चरणी जनु लागा ॥ (446-19)
प्रभि मसतके धुरि लीखिआ गुरमती हरि लिव लाइओ ॥ (985-3)
प्रभि मेले चिरी विछुंनिआ ॥१॥ (1184-7)
प्रभि राखी पैज वजी वाधाई ॥४॥५॥ (371-19)
प्रभि राखी पैज हमारी ॥१॥ (628-7)
प्रभि संसारु उपाइ कै वसि आपणै कीता ॥ (510-1)
प्रभि सगले थान वसाए ॥ (630-4)
प्रभि सभे काज सवारे ॥ (625-9)
प्रभु अगम अगोचरु देइ दिखाइ ॥ (796-10)
प्रभु अगम अगोचरु रविआ स्रब ठाई मनि तनि अलख अपारी ॥ (1198-16)
प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥४॥ (290-3)
प्रभु अपुना रिदै धिआए ॥ (629-11)
प्रभु अपुना सदा धिआइआ ॥१॥ (626-11)
प्रभु अपुना सासि सासि समारउ ॥ (104-7)
प्रभु अपुना होइआ किरपाल ॥१॥ (389-17)
प्रभु अबिनासी एकंकारु ॥ (284-9)
प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥ (97-3)
प्रभु अबिनासी ता किआ काड़ा ॥ (131-15)
प्रभु अबिनासी बसिआ घट भीतरि हरि मंगलु नानकु गावै जीउ ॥४॥५॥१२॥ (98-6)
प्रभु अबिनासी रहिआ भरपूरि ॥ (737-8)
प्रभु अबिनासी रैणि दिनु गाउ ॥ (743-6)
प्रभु अबिनासी हउ तिस की दासी मरै न आवै जाए ॥ (785-3)
प्रभु आपि सुआमी आपे रखा आपि पिता आपि माइआ ॥ (783-4)
प्रभु आराधन निरमल रीति ॥ (1137-5)
प्रभु किन ही जाता ॥१॥ (71-7)

प्रभु क्रिपालु किरपा करै ॥ (211-4)
प्रभु घरि आइअड़ा गुर चरणी लागी राम ॥ (846-4)
प्रभु चिति आवै ता कैसी भीड़ ॥ (802-2)
प्रभु छोडि होरु जि मंगणा सभु बिखिआ रस छारु ॥ (962-6)
प्रभु जगजीवनु अवरु न कोइ ॥ (931-1)
प्रभु तजि अवर सेवकु जे होई है तितु मानु महतु जसु घाटै ॥१॥ रहाउ ॥ (497-3)
प्रभु दाता दातार निहचलु एहु धनु ॥ (956-10)
प्रभु दाता मोहि दीनु भेखारी तुम्ह सदा सदा उपकारे ॥ (738-6)
प्रभु दाना बीना गरबु गवाए ॥ (1040-11)
प्रभु दूरि न होई घटि घटि सोई तिस की नारि सबाई ॥ (765-6)
प्रभु नाराइणु गरब प्रहारी ॥ (224-16)
प्रभु निकटि वसै सभना घट अंतरि गुरमुखि विरलै जाता ॥ (68-3)
प्रभु निवाजे किनि कीमति पाई ॥७॥ (1345-9)
प्रभु नेड़ै हरि दूरि न जाणहु एको स्रिसटि सबाई ॥ (930-10)
प्रभु पाइआ सुखदाईआ मिलिआ सुख भाइ ॥ (808-15)
प्रभु पुरखु जगजीवनो संत रसु पीवनो जपि भरम मोह दुख डारा ॥ (454-8)
प्रभु पूरा अनाथ का नाथु ॥ (1340-13)
प्रभु पूरि रहिआ सरब ठाई हरि नाम नव निधि ग्रिह भरे ॥ (928-11)
प्रभु बेअंतु किछु अंतु नाहि सभु तिसै करणा ॥ (323-4)
प्रभु भगति वछलु नह सेवही काइआ काक ग्रसना राम ॥ (848-7)
प्रभु मनि भावै ता हुकमि समावै हुकमु मंनि सुखु पाइआ ॥ (690-15)
प्रभु मात पिता कंठि लाइदा लहुड़े बालक पालि ॥ (957-18)
प्रभु मिलिओ नानक भए अचिंता ॥४॥ (371-11)
प्रभु मिलिओ मनि भावंदा ॥ (622-10)
प्रभु मिलिओ सुख बाले भोले ॥१॥ रहाउ ॥ (1307-7)
प्रभु मेरा अंतरजामी जाणु ॥ (1323-1)
प्रभु मेरा थिर थावरी होर आवै जावै ॥ (1097-10)
प्रभु मेरा बेअंतु है अंतु किनै न लखनी ॥ (791-12)
प्रभु मेरा सदा निरमला मनि निरमलि पाइआ जाइ ॥ (65-7)
प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किउ मिला प्रीतम पिआरे ॥२॥ (584-8)
प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किव मिलां प्रीतम पिआरे ॥ (584-6)
प्रभु मेरा सुआमी अंतरजामी घटि घटि रविआ सोई ॥ (775-13)
प्रभु मेरा है सदा दइआरु ॥ (898-18)
प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ (1146-18)
प्रभु मेरो अनाथ को नाथु ॥ (900-16)
प्रभु मेरो इत उत सदा सहाई ॥ (1213-17)
प्रभु मेले ता मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥१२॥ (755-13)

प्रभु रवि रहिआ भरपूरी ॥ (624-1)
प्रभु रवि रहिआ सभ थाई मंनि वसाई पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ (770-12)
प्रभु सखा हरि जीउ मेरा अंते होइ सखाई ॥३॥ (65-1)
प्रभु सचड़ा हरि सालाहीऐ कारजु सभु किछु करणै जोगु ॥ (582-13)
प्रभु सदा री दइआरु ॥ (1229-12)
प्रभु सदा समालहि मित्र तू दुखु सबाइआ लथु ॥१॥ (317-3)
प्रभु सभ किछु जानै जिनि तू कीआ ॥३॥ (1348-5)
प्रभु समरथु वड ऊच अपारा ॥ (107-14)
प्रभु सिमरि सिमरि अमर थिरु थीवे ॥२॥ (1137-9)
प्रभु सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइओ नानक सरणि दुआरे ॥२॥७॥११॥ (702-8)
प्रभु सुघरु सरूपु सुजानु सुआमी ता की मिटै न दाते ॥ (454-4)
प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ॥ (17-12)
प्रभु होइ क्रिपालु कमलु परगासे सदा सदा हरि धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (528-13)
प्रभु होइ क्रिपालु त इहु मनु लाई ॥ (375-8)
प्रभू छोडि अन लागै नरकि समंजीऐ ॥ (708-6)
प्रभू जनाइआ तब ही जाता ॥२॥ (1348-16)
प्रभू तिआगि आन जो चाहत ता कै मुखि लागै कालेखा ॥१॥ (1221-10)
प्रभू तिआगि लागत अन लोभा ॥ (195-3)
प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥ (271-1)
प्रभू दइआ ते मंगलु गावउ ॥ (101-11)
प्रभू दइआर क्रिपार क्रिपा निधि जन नानक संत रेनाई ॥२॥२॥४७॥ (1307-12)
प्रभू भुलाए ऊझड़ि पाए निहफल सभि करमान ॥३॥ (1203-2)
प्रभू हमारा सारे सुआरथु ॥४॥३८॥५१॥ (1151-6)
प्रभू हमारै सासत्र सउण ॥ (1137-8)
प्रविरति मारगं वरतंति बिनासनं ॥ (1355-1)
प्रहलाद उधारे अनिक बार ॥५॥४॥ (1194-13)
प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥४॥ (224-16)
प्रहलाद का राखा होइ रघुराइआ ॥३॥ (1133-6)
प्रहलाद कै कारजि हरि आपु दिखाइआ ॥ (1154-18)
प्रहलाद जन के इकीह कुल उधारे ॥ (1133-9)
प्रहलाद पठाए पड़न साल ॥ (1194-6)
प्रहलाद बुलाए बेगि धाइ ॥ (1194-9)
प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ (1192-7)
प्रहलादि सभि चाटड़े विगारे ॥ (1154-8)
प्रहलादु कोठे विचि राखिआ बारि दीआ ताला ॥ (1154-12)
प्रहलादु जनु चरणी लागा आइ ॥११॥ (1155-1)
प्रहलादु दुबिधा न पड़ै हरि नामु न छोडै डरै न किसै दा डराइआ ॥ (1133-15)

प्रहिलाद जन तुधु राखि लए हरि जीउ हरणाखसु मारि पचाइआ ॥ (637-13)
प्रहिलादु आपि विगड़िआ सभि चाटड़े विगाड़े ॥ (1133-6)
प्रहिलादु कहै सुनहु मेरी माइ ॥ (1133-4)
प्रहिलादु जनु सद हरि गुण गावै हरि जीउ लए उबारे ॥२॥ (601-14)
प्रहिलादु जनु हरनाखि पकरिआ हरि राखि लीओ तराइआ ॥२॥ (984-6)
प्राग इसनाने ॥१॥ (873-9)
प्राण मन तन जीअ दाता बेअंत अगम अपारो ॥ (249-4)
प्राणी एको नामु धिआवहु ॥ (1254-5)
प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥ (282-17)
प्राणी गुरमुखि नामु धिआइ ॥ (1261-14)
प्राणी गुरमुखि नामु धिआई ॥ (1265-4)
प्राणी जाणै इहु तनु मेरा ॥ (180-1)
प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥ (43-3)
प्राणी राम भगति सुखु पाईऐ ॥ (903-19)
प्राणी सतिगुरु सेवि सुखु पाइ ॥ (603-11)
प्राणी हरि जपि जनमु गइओ ॥ (1125-16)
प्रातमा पारब्रहम का रूपु ॥ रहाउ ॥ (868-13)
प्रातहकाल लागउ जन चरनी निस बासुर दरसु पावउ ॥ (533-10)
प्रातहकालि हरि नामु उचारी ॥ (743-5)
प्रान अधार जीवन धन मोरै देखन कउ दरसन प्रभ नीति ॥ (716-6)
प्रान अधार दुख बिदार दैनहार बुधि बिबेक ॥१॥ (1341-16)
प्रान अधार नानक हित चीत ॥४॥१॥३॥ (863-2)
प्रान अधार मीत साजन प्रभ एकै एकंकारै ॥ (1218-11)
प्रान अधारु राखहु सद चीत ॥१॥ रहाउ ॥ (187-14)
प्रान गए कहु का की माइआ ॥२॥ (325-2)
प्रान गए सागरु मिलै फुनि कामि न आवै ॥२॥ (858-16)
प्रान जु थाके थिरु नही कैसे बिरमावउ ॥ (858-16)
प्रान तजे वा को धिआनु न जाए ॥१॥ (873-13)
प्रान तरन का इहै सुआउ ॥ (293-3)
प्रान दानु गुरि पूरै दीआ उरझाइओ जिउ जल मीना ॥१॥ रहाउ ॥ (1210-17)
प्रान नाथ अनाथ दाते दीन गोबिद सरन ॥ (1306-5)
प्रान नाथ अनाथ सखे दीन दरद निवार ॥१॥ (1273-1)
प्रान पिआरो मनहि अधारो चीति चितवउ जैसे पान त्मबोली ॥१॥ रहाउ ॥ (822-3)
प्रान मनु तनु जिनहि दीआ रिदे का आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ (51-8)
प्रान मनु धनु संत बहल ॥१॥ (987-7)
प्रान मनु धनु सरबसो हरि गुन निधे सुख मोर ॥१॥ (1307-15)
प्रान मान दान मग जोहन हीतु चीतु दे ले ले पारी ॥ (1388-6)

प्रान मान पति पित सुत बंधप हरि सरबसु धन मोर ॥ (1228-4)
प्रान मीत हीत धनु मेरै नानक सद बलिहारे ॥४॥६॥४५॥ (382-7)
प्रान सुखदाता गुरमुखि जाता सगल रंग बनि आए ॥ (1117-14)
प्रान सुखदाता जीअ सुखदाता तुम काहे बिसारिओ अगिआनथ ॥ (1001-8)
प्रानपति गति मति जा ते प्रिअ प्रीति प्रीतमु भावए ॥ (457-4)
प्रानपति तिआगि आन तू रचिआ उरझिओ संगि बैराई ॥२॥ (609-6)
प्रानपति दइआल पुरख प्रभ सखे ॥ (1322-14)
प्रानी कउ हरि जसु मनि नही आवै ॥ (219-8)
प्रानी कउनु उपाउ करै ॥ (632-9)
प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ (1427-16)
प्रानी काहे कउ लोभि लागे रतन जनमु खोइआ ॥ (481-18)
प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ॥ (659-4)
प्रानी नाराइन सुधि लेहि ॥ (902-8)
प्रानी रामु न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ (1428-2)
प्रापति पोता करमु पसाउ ॥ (878-14)
प्रिअ की चेरी कांढीऐ लाली मानै नाउ ॥ (54-4)
प्रिअ की प्रीति पिआरी ॥ (1120-3)
प्रिअ की सोभ सुहावनी नीकी ॥ (1272-4)
प्रिअ के बचन सुखाने हीअरै इह चाल बनी है भली ॥ (527-8)
प्रिअ देखत जीवउ मेरी माई ॥१॥ (373-12)
प्रिअ परदेसि न जाहु वसहु घरि मोरै ॥ (1072-16)
प्रिअ पेखी द्रिसटि पाए सगल निधान ॥ (372-11)
प्रिअ प्रभ प्रीति प्रेम रस भगती हरि जन ता कै दरसि समावत ॥ (1388-13)
प्रिअ प्रीतम बैरागु हिरै ॥१॥ रहाउ ॥ (373-13)
प्रिअ प्रीति पिआरो मोरो ॥१॥ रहाउ ॥ (1306-14)
प्रिअ प्रीति लागी मिलु बैरागी खिनु रहनु ध्रिगु तनु तिसु बिना ॥ (462-5)
प्रिअ प्रेम सहजि मनि अनदु धरउ री ॥ (389-9)
प्रिअ बाझु दुहेली कोइ न बेली गुरमुखि अम्रितु पीवां ॥ (1107-4)
प्रिअ बिनु सीगारु करी तेता तनु तापै कापरु अंगि न सुहाई ॥६॥ (1274-12)
प्रिअ मुखि लागो जउ वडभागो सुहागु हमारो कतहु न डोली ॥१॥ (822-5)
प्रिअ रंग देखै जपती नामु निधानी ॥ रहाउ ॥ (1119-4)
प्रिअ रंग रंगि रती नाराइन नानक तिसु कुरबानी ॥२॥१०४॥१२७॥ (1228-15)
प्रिअ रंगि जागे नह छिद्र लागे क्रिपालु सद बखसिंदु जीउ ॥ (928-12)
प्रिअ रंगि राती सहज माती महा दुरमति तिआगनी ॥ (544-7)
प्रिअ संगु न पावै बहु जोनि भवाईऐ ॥२॥ (185-17)
प्रिअ सिउ प्रीति न उलटै कबहू जो तै भावै साई ॥२॥ (1274-10)
प्रिअ सिउ राती धन सोहागणि नारि ॥३॥ (370-16)

प्रिअ सिउ राती रलीआ मानै ॥१॥ (737-4)
प्रिअ सुखवासी बाल गुपाले ॥ (1073-2)
प्रिअ सोहागनि सीगारि करी ॥ (394-8)
प्रिउ अपना गुरि बसि करि दीना भोगउ भोग निसंगा ॥ (1210-8)
प्रिउ चवा पिआरे सबदि निसतारे बिनु देखे त्रिपति न आवए ॥ (1114-1)
प्रिउ नाले सद ही सचि संगे नदरी मेलि मिलाई ॥६॥ (1273-12)
प्रिउ प्रिउ करती सभु जगु फिरी मेरी पिआस न जाइ ॥ (553-14)
प्रिउ प्रिउ करै सभै है जेती गुर भावै प्रिउ पाईं ॥ (1273-11)
प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा बोले भुइअंगम फिरहि डसंते ॥ (1108-17)
प्रिउ प्रिउ नामु तेरा दरसनु चाहै जैसे द्रिसटि ओह चंद चकोरी ॥२॥ (208-16)
प्रिउ प्रिउ प्रीति प्रेमि उर धारी ॥ (1331-13)
प्रिउ सहज सुभाई छोडि न जाई मनि लागा रंगु मजीठा ॥ (454-1)
प्रिउ सेवहु प्रभ प्रेम अधारि ॥ (1187-15)
प्रीतम किउ बिसरहि मेरे प्राण अधार ॥ (489-10)
प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभ बंके तुधु भावा सरि नावा ॥ (1109-12)
प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ॥ (133-18)
प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥ (634-1)
प्रीतम तेरी गति अगम अपारे ॥ (1278-6)
प्रीतम नाथु सदा सचु संगे जनम मरण गति बीती ॥१॥ (992-13)
प्रीतम प्रान अधार सुआमी ॥ (826-3)
प्रीतम प्रान भए सुनि सजनी दूत मुए बिखु खाई ॥ (1232-11)
प्रीतम प्रीति बनी अभ ऐसी जोती जोति मिलाई ॥२॥ (1273-7)
प्रीतम प्रीति लगी प्रभ केरी जिव सूरजु कमलु निहारे ॥ (983-13)
प्रीतम प्रेम भगति के दाते ॥ (1278-4)
प्रीतम बसत रिद महि खोर ॥ (1121-3)
प्रीतम भगवान अचुत ॥ (1361-1)
प्रीतम भानी तां रंगि गुलाल ॥ (384-10)
प्रीतम साचा नामु धिआइ ॥ (1268-3)
प्रीतम सिउ मनु मानिआ हरि सेती राता ॥ (766-13)
प्रीतम सिउ मेरो मनु मानिआ तापु मुआ बिखु खाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (378-9)
प्रीतम हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ (936-13)
प्रीतमि मोहि लइआ मनु मेरा पाइआ करम बिधाता ॥ (772-3)
प्रीतमु देखि प्रीतमु मिलि जाइ ॥ (914-15)
प्रीतमु भाई बापु मोरो माई भगतन का ओल्हा ॥२॥ (407-6)
प्रीति करहु सद एक सिउ इआ साचा असनेहु ॥ (257-7)
प्रीति करी चाली नही साथि ॥ (891-18)
प्रीति नही जउ नाम सिउ तउ एऊ करम बिकार ॥ (252-2)

प्रीति पारब्रहम मउलि मना ॥ (1180-15)
प्रीति प्रीति गुरीआ मोहन लालना ॥ (746-3)
प्रीति प्रेम तनु खचि रहिआ बीचु न राई होत ॥ (1363-19)
प्रीति बिना कैसे बधै सनेहु ॥ (328-4)
प्रीति लगी तिसु सच सिउ मरै न आवै जाइ ॥ (46-17)
प्रीति लगी हरि नाम सिउ ए हसती घोड़े ॥ (323-9)
प्रीति लाइ हरि धिआइ गुन गोबिंद सदा गाइ ॥ (1230-8)
प्रीति लाई करि रिदै निवासि ॥४॥ (240-13)
प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै ॥४॥ (526-9)
प्रेत पिंजर महि दूख घनेरे ॥ (1029-6)
प्रेत भूत सभि दूजै लाए ॥ (841-12)
प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥ (487-1)
प्रेम की सार सोई जाणै जिस नो नदरि तुमारी जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1016-6)
प्रेम के कान लगे तन भीतरि वैदु कि जाणै कारी जीउ ॥१॥ (993-2)
प्रेम के सर लागे तन भीतरि ता भ्रमु काटिआ जाई ॥१॥ (607-15)
प्रेम ठगउरी जिन कउ पाई तिन रसु पीअउ भारी ॥ (702-6)
प्रेम ठगउरी पाइ रीझाइ गोबिंद मनु मोहिआ जीउ ॥ (81-5)
प्रेम पटोला तै सहि दिता ढकण कू पति मेरी ॥ (520-1)
प्रेम पदारथु जिन घटि वसिआ सहजे रहे समाई ॥ (1234-3)
प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु ॥ (640-3)
प्रेम पदारथु पाईऐ गुर भगती मन धीरि ॥६॥ (429-17)
प्रेम पदारथु पाईऐ गुरमुखि ततु वीचारु ॥ (61-3)
प्रेम पदारथु पाईऐ भाई सचु नामु आधारु ॥६॥ (638-17)
प्रेम पदारथु लहै अमोलो ॥ (1036-18)
प्रेम पराइण प्रीतम राउ ॥ (222-16)
प्रेम पलीता सुरति हवाई गोला गिआनु चलाइआ ॥ (1161-18)
प्रेम पिरम न बेधिओ उरझिओ मिथ बिउहार ॥६॥ (1364-4)
प्रेम पिरमलु तनि लावणा अंतरि रतनु वीचारु ॥६॥ (426-16)
प्रेम प्रीति भाइ भगती पाईऐ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ (245-14)
प्रेम प्रीति सदा धिआईऐ भै भाइ भगति द्रिड़ावणिआ ॥४॥ (112-15)
प्रेम बिछोहा करत कसाई ॥ (745-2)
प्रेम बिछोहु दुहागणी द्रिसटि न करी राम जीउ ॥ (928-5)
प्रेम बिछोहु न मोहु बिआपै नानक हरि एकु धिआईऐ ॥३॥ (803-6)
प्रेम भगति अपनो नामु दीजै दइआल अनुग्रहु धारे ॥१॥ रहाउ ॥ (1268-7)
प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिओ है ॥८॥ (1388-18)
प्रेम भगति करि सहजि समाइ ॥ (685-15)
प्रेम भगति करे लिव लाइ ॥ (841-8)

प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ॥३॥१॥ (346-8)
प्रेम भगति गुन गावन गीधे पोहत नह संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ (1222-8)
प्रेम भगति जिस कै मनि लागी ॥ (109-2)
प्रेम भगति जिसु आपे देइ ॥ (867-10)
प्रेम भगति जोरी सुख मानि ॥२॥ (899-4)
प्रेम भगति ता का मनु लीणा पारब्रहम मनि भावै ॥२॥ (628-9)
प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥ (136-11)
प्रेम भगति नही ऊपजै ता ते रविदास उदास ॥८॥१॥ (346-19)
प्रेम भगति नानक गुण गाउ ॥४॥१००॥१६९॥ (200-3)
प्रेम भगति नानक सुखु पाइआ साधू संगि समाई ॥४॥१२॥५१॥ (384-5)
प्रेम भगति परवाह प्रीति पुबली न हुटइ ॥ (1397-14)
प्रेम भगति प्रभ लागी ॥ (627-17)
प्रेम भगति प्रभि मनु पतीआइआ ॥४॥ (686-10)
प्रेम भगति भजु गुणी निधानु ॥ (196-17)
प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ त्रिपति अघाने मुकति भए ॥३॥ (487-14)
प्रेम भगति राचे जन नानक हरि सिमरनि दहन भए मल ॥२॥७॥२६॥ (717-8)
प्रेम भगति राते गोपाल ॥ (198-9)
प्रेम भगति होवत निसतारा ॥ (1005-7)
प्रेम रसा निधि जा कउ उपजी छोडि न कतहू जाता ॥१॥ रहाउ ॥ (532-8)
प्रेम विछोहा धणी सउ अठे पहर लवंन्हि ॥१२॥ (1425-16)
प्रेम सुधा रसु पीवै कोइ ॥ (343-13)
प्रेमि बुलाई रली सिउ मन महि सबदु अनंदु ॥ (931-7)
प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥१॥ (486-18)
प्रेमु न चाखिआ मेरी तिस न बुझानी ॥ (357-1)
फउज सताणी हाठ पंचा जोड़ीऐ ॥ (522-6)
फकड़ जाती फकड़ु नाउ ॥ (83-13)
फकरु करे होरु जाति गवाए ॥ (1245-18)
फड़ु करि लोकां नो दिखलावहि गिआनु धिआनु नही सूझै ॥ (1289-17)
फफा फिरत फिरत तू आइआ ॥ (258-6)
फफा बिनु फूलह फलु होई ॥ (341-17)
फफै फाही सभु जगु फासा जम कै संगलि बंधि लइआ ॥ (433-18)
फरहे मुहकम गुर गिआनु बीचारि ॥२॥ (430-15)
फरीदा अखी देखि पतीणीआं सुणि सुणि रीणे कंन ॥ (1378-9)
फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगह आए कमि ॥१००॥ (1383-8)
फरीदा इकना आटा अगला इकना नाही लोणु ॥ (1380-3)
फरीदा इट सिराणे भुइ सवणु कीड़ा लड़िओ मासि ॥ (1381-9)
फरीदा इनी निकी जंघीऐ थल डूंगर भविओम्हि ॥ (1378-18)

फरीदा इहु तनु भउकणा नित नित दुखीऐ कउणु ॥ (1382-10)
फरीदा उमर सुहावड़ी संगि सुवंनड़ी देह ॥ (1382-6)
फरीदा उमर सुहावड़ी संगि सुवंनड़ी देह ॥ (966-3)
फरीदा ए विसु गंदला धरीआं खंडु लिवाड़ि ॥ (1379-15)
फरीदा एहो पछोताउ वति कुआरी न थीऐ ॥६३॥ (1381-6)
फरीदा कंतु रंगावला वडा वेमुहताजु ॥ (1383-16)
फरीदा कंनि मुसला सूफु गलि दिलि काती गुड़ु वाति ॥ (1380-10)
फरीदा कचै भांडै रखीऐ किचरु ताई नीरु ॥९६॥ (1382-19)
फरीदा कालीं जिनी न राविआ धउली रावै कोइ ॥ (1378-10)
फरीदा काली धउली साहिबु सदा है जे को चिति करे ॥ (1378-11)
फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु ॥ (1381-3)
फरीदा किड़ी पवंदीई खड़ा न आपु मुहाइ ॥१॥ (1377-19)
फरीदा कितीं जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥३४॥ (1379-13)
फरीदा किथै तैडे मापिआ जिन्ही तू जणिओहि ॥ (1381-15)
फरीदा कूकेदिआ चांगेदिआ मती देदिआ नित ॥ (1378-13)
फरीदा कोठे धुकणु केतड़ा पिर नीदड़ी निवारि ॥ (1380-17)
फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गए ॥ (1380-5)
फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥ (1380-18)
फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकू जेडु न कोइ ॥ (1378-15)
फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि ॥ (1381-17)
फरीदा खिंथड़ि मेखा अगलीआ जिंदु न काई मेख ॥ (1380-6)
फरीदा गरबु जिन्हा वडिआईआ धनि जोबनि आगाह ॥ (1383-13)
फरीदा गलीं सु सजण वीह इकु ढूंढेदी न लहां ॥ (1382-9)
फरीदा गलीए चिकड़ु दूरि घरु नालि पिआरे नेहु ॥ (1379-3)
फरीदा गोर निमाणी सडु करे निघरिआ घरि आउ ॥ (1382-15)
फरीदा चारि गवाइआ हंढि कै चारि गवाइआ समि ॥ (1379-16)
फरीदा चिंत खटोला वाणु दुखु बिरहि विछावण लेफु ॥ (1379-13)
फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ॥ (1378-17)
फरीदा जां तउ खटण वेल तां तू रता दुनी सिउ ॥ (1378-6)
फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु ॥ (1378-16)
फरीदा जि दिहि नाला कपिआ जे गलु कपहि चुख ॥ (1381-18)
फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसानु ॥३६॥ (1379-15)
फरीदा जिन्ह लोइण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु ॥ (1378-12)
फरीदा जिन्ही कमी नाहि गुण ते कमड़े विसारि ॥ (1381-1)
फरीदा जे जाणा तिल थोड़ड़े समलि बुकु भरी ॥ (1378-2)
फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥ (1378-4)
फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि सभु जगु तेरा होइ ॥९५॥ (1382-18)

फरीदा जे मै होदा वारिआ मिता आइड़िआं ॥ (1379-1)
फरीदा जो डोहागणि रब दी झूरेदी झूरेइ ॥६२॥ (1381-5)
फरीदा जो तै मारनि मुकीआं तिन्हा न मारे घुमि ॥ (1378-5)
फरीदा डुखा सेती दिहु गइआ सूलां सेती राति ॥ (1382-7)
फरीदा तनु सुका पिंजरु थीआ तलीआं खूंडहि काग ॥ (1382-12)
फरीदा तिना मुख डरावणे जिना विसारिओनु नाउ ॥ (1383-14)
फरीदा थीउ पवाही दभु ॥ (1378-14)
फरीदा दर दरवेसी गाखड़ी चलां दुनीआं भति ॥ (1377-19)
फरीदा दरवेसी गाखड़ी चोपड़ी परीति ॥ (1384-7)
फरीदा दरि दरवाजै जाइ कै किउ डिठो घड़ीआलु ॥ (1379-17)
फरीदा दरीआवै कंन्है बगुला बैठा केल करे ॥ (1383-4)
फरीदा दिलु रता इसु दुनी सिउ दुनी न कितै कमि ॥ (1383-19)
फरीदा दुखु सुखु इकु करि दिल ते लाहि विकारु ॥ (1383-17)
फरीदा दुनी वजाई वजदी तूं भी वजहि नालि ॥ (1383-18)
फरीदा दुहु दीवी बलंदिआ मलकु बहिठा आइ ॥ (1380-7)
फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ ॥२९॥ (1379-8)
फरीदा नंढी कंतु न राविओ वडी थी मुईआसु ॥ (1380-15)
फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बागु ॥ (1382-1)
फरीदा पाड़ि पटोला धज करी क्मबलड़ी पहिरेउ ॥ (1383-10)
फरीदा पिछल राति न जागिओहि जीवदड़ो मुइओहि ॥ (1383-15)
फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि ॥ (1380-1)
फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥ (1381-19)
फरीदा बे निवाजा कुतिआ एह न भली रीति ॥ (1381-12)
फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टुटी नागर लजु ॥ (1381-10)
फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टूटी नागर लजु ॥ (1381-11)
फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बाग ॥ (1382-5)
फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बागु ॥ (966-2)
फरीदा मंडप मालु न लाइ मरग सताणी चिति धरि ॥ (1380-19)
फरीदा मउतै दा बंना एवै दिसै जिउ दरीआवै ढाहा ॥ (1383-2)
फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि ॥ (1381-16)
फरीदा महल निसखण रहि गए वासा आइआ तलि ॥ (1382-19)
फरीदा मै जानिआ दुखु मुझ कू दुखु सबाइऐ जगि ॥ (1382-3)
फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली होइ जाइ ॥ (1379-5)
फरीदा रती रतु न निकलै जे तनु चीरै कोइ ॥ (1380-11)
फरीदा रब खजूरी पकीआं माखिअ नई वहंन्हि ॥ (1382-11)
फरीदा रही सु बेड़ी हिंङु दी गई कथूरी गंधु ॥३३॥ (1379-12)
फरीदा राति कथूरी वंडीऐ सुतिआ मिलै न भाउ ॥ (1382-2)

फरीदा राती वडीआं धुखि धुखि उठनि पास ॥ (1378-19)
फरीदा रुति फिरी वणु क्मबिआ पत झड़े झड़ि पाहि ॥ (1383-9)
फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ॥ (1379-7)
फरीदा लोकां आपो आपणी मै आपणी पई ॥९४॥ (1382-17)
फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु ॥ (1379-2)
फरीदा वेखु कपाहै जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह ॥ (1380-8)
फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ु माखिओ मांझा दुधु ॥ (1379-6)
फरीदा सरु भरिआ भी चलसी थके कवल इकल ॥६६॥ (1381-8)
फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि ॥ (1381-2)
फरीदा सिरु पलिआ दाड़ी पली मुछां भी पलीआं ॥ (1380-16)
फरीदा सोई सरवरु ढूढि लहु जिथहु लभी वथु ॥ (1380-14)
फरीदा हउ बलिहारी तिन्ह पंखीआ जंगलि जिंन्हा वासु ॥ (1383-8)
फरीदा हउ लोड़ी सहु आपणा तू लोड़हि अंगिआर ॥४३॥ (1380-3)
फल कारन फूली बनराइ ॥ (1167-11)
फल पाके ते एकंकारा ॥२॥ (736-13)
फल पावहि मन बाछते तपति तुहारी जाइ ॥ (256-19)
फल पावहि मिटै जम त्रास ॥ (176-17)
फल फिके फुल बकबके कमि न आवहि पत ॥ (470-13)
फल फूल लागे जां आपे लाए ॥ (1177-2)
फल लागे हरि रसक रसाई ॥१॥ (367-10)
फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥ (136-4)
फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ॥१३॥ (136-8)
फलगुनि मनि रहसी प्रेमु सुभाइआ ॥ (1109-14)
फलहि फुलीअहि राम नामि सुखु होइ ॥२॥ (1176-13)
फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥३॥ (463-3)
फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥ (468-15)
फलु नामु परापति गुरु तुसि देइ ॥ (1170-12)
फलु पाइआ जपि सतिगुर मंता ॥२॥ (388-14)
फलु पावै ब्रतु आतम चीनै ॥ (840-4)
फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥ (1167-11)
फलोहार कीए फलु जाइ ॥ (840-6)
फसलि अहाड़ी एकु नामु सावणी सचु नाउ ॥ (1286-7)
फांधी लगी जाति फहाइनि अगै नाही थाउ ॥ (1288-5)
फाकिओ मीन कपिक की निआई तू उरझि रहिओ कुस्मभाइले ॥ (862-7)
फाटे नाकन टूटे काधन कोदउ को भुसु खईहै ॥१॥ रहाउ ॥ (524-9)
फाथा चुगै चोग हुकमी छुटसी ॥ (1290-19)
फाथा चुगै नित चोगड़ी लगि बंधु विगाड़ी ॥ (1011-6)

फाथा चोग चुगै नही बूझै ॥ (935-7)
फाथी छूटहि गुण गिआन बीचारि ॥५॥ (1275-17)
फाथी मछुली का जाला तूटा ॥२॥ (898-16)
फाथे सेई निकले जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥ (43-6)
फाथोहु मिरग जिवै पेखि रैणि चंद्राइणु ॥ (460-2)
फासन की बिधि सभु कोऊ जानै छूटन की इकु कोई ॥ (331-12)
फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥२॥ (23-2)
फाही फाथे मिरग जिउ सिरि दीसै जमकालु ॥ (1279-1)
फाही सुरति मलूकी वेसु ॥ (24-16)
फाहे काटे मिटे गवन फतिह भई मनि जीत ॥ (258-5)
फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥ (473-14)
फिका बोलहि ना निवहि दूजा भाउ सुआउ ॥१॥ (426-10)
फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ॥ (15-14)
फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥१॥ (473-15)
फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥ (473-14)
फिटक फिटका कोड़ु बदीआ सदा सदा अभिमानु ॥ (1413-5)
फिटु इवेहा जीविआ जितु खाइ वधाइआ पेटु ॥ (790-18)
फिरंत जोनि अनेक जठरागनि नह सिमरंत मलीण बुध्यं ॥ (1355-9)
फिरत पिआस जिउ जल बिनु मीना ॥६॥ (759-16)
फिरत फिरत तुम्हरै दुआरि आइआ भै भंजन हरि राइआ ॥ (497-7)
फिरत फिरत नानक दासु आइओ संतन ही सरनाइ ॥ (1302-11)
फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥ (289-9)
फिरत फिरत बहुतु स्रमु पाइओ संत दुआरै आइओ ॥ (531-7)
फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥ (631-16)
फिरत फिरत भेटे जन साधू पूरै गुरि समझाइआ ॥ (676-2)
फिरत फिरत मानुखु भइआ खिन भंगन देहादि ॥ (810-6)
फिरत फिरत संतन पहि आइआ ॥ (562-13)
फिरतउ गरब गुबारि मरणु नह जानई ॥ (1363-9)
फिरती माला बहु बिधि भाइ ॥ (886-7)
फिरदा कितै हालि जा डिठमु ता मनु ध्रापिआ ॥१॥ (1096-19)
फिरदी फिरदी दह दिसा जल परबत बनराइ ॥ (322-7)
फिरदी फिरदी नानक जीउ हउ फावी थीई बहुतु दिसावर पंधा ॥ (963-19)
फिरहि गुमानी जग महि किआ गरबहि दामी ॥ (1099-8)
फिरि आपे जगतु उपाइआ करतै दानु सभना कउ दीआ ॥ (551-8)
फिरि इआ अउसरु चरै न हाथा ॥ (258-7)
फिरि उलटिओ जनमु होवै गुर बचनी गुरु पुरखु मिलै रंगु लावैगो ॥२॥ (1310-6)
फिरि एसु तपे दै मुहि कोई लगहु नाही एहु सतिगुरि है फिटकारिआ ॥ (316-2)

फिरि एह वेला हाथि न आवै परतापै पछुतावैगो ॥७॥ (1310-1)
फिरि ओइ किथहु पाइनि मोख दुआरा ॥ (115-16)
फिरि ओहु मरै न मरणा होवै सहजे सचि समावणिआ ॥४॥ (120-15)
फिरि घिरि अपुने ग्रिह महि आइआ ॥ (97-11)
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥ (305-18)
फिरि डोलत कतहू नाही ॥१॥ (629-18)
फिरि नानक दूखु न थीआ ॥२॥२१॥८५॥ (629-14)
फिरि पछुताना अब किआ हूआ ॥ (935-7)
फिरि पछुतावहिगा मूड़िआ तूं कवन कुमति भ्रमि लागा ॥ (93-4)
फिरि पछुतावै जब रैणि बिहावै ॥ (737-7)
फिरि पछुताहु न पावहु पारु ॥३॥ (1159-11)
फिरि पाछै पछुताहुगे प्रान जाहिंगे छूटि ॥४१॥ (1366-12)
फिरि फिरि आवन जानु न होई ॥ (258-7)
फिरि फिरि आवै ठउर न कोई ॥ (1051-17)
फिरि फिरि आवै फिरि फिरि जाइ ॥ (935-8)
फिरि फिरि जूनि भवाईअनि जम मारगि मुते ॥ (321-2)
फिरि फिरि जूनी पाईऐ विसटा सदा खुआरु ॥ (512-19)
फिरि फिरि जोगी आवै जाई ॥३॥ (886-15)
फिरि फिरि डुबै वारो वारा ॥ (1068-11)
फिरि फिरि तेरा आवनु नाहि ॥२॥ (971-10)
फिरि फिरि फाही फासै कऊआ ॥ (935-7)
फिरि फिरि मागन काहे जाइ ॥३॥ (891-15)
फिरि फिरि मिलणु न पाइनी जमहि तै मरि जाहि ॥ (645-6)
फिरि बहुड़ि न भवजल फेरे जीउ ॥२॥ (175-5)
फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥ (920-3)
फिरि मैला वेसु न होई गुरमुखि बूझै कोई हउमै मारि पछाणिआ ॥ (770-5)
फिरि वेला हथि न आवई जम का डंडु लागे ॥ (1090-12)
फिरि वेला हथि न आवई जमकालि वसि किता ॥ (787-7)
फिरि सतिगुर की सरणी पवै ता उबरै जा हरि हरि नामु धिआवै ॥ (303-15)
फिरि होइ ताता खरा माता नाम बिनु परतापए ॥ (438-19)
फिरि होइ न फेरा अंति सचि निबेड़ा गुरमुखि मिलै वडिआई ॥ (571-8)
फिरि होवै कंचनु भेटै गुरु पूरा ॥ (1047-6)
फीके हरि के नाम बिनु साद ॥ (1219-12)
फीलु रबाबी बलदु पखावज कऊआ ताल बजावै ॥ (477-4)
फुनहे महला ५ (1361-12)
फुनि कीरतिवंत सदा सुख स्मपति रिधि अरु सिधि न छोडइ सथु ॥ (1405-1)
फुनि गरभि नाही बसंत ॥१॥ (898-8)

फुनि गुरू जल बिमल अथाह मजनु करहु संत गुरसिख तरहु नाम सच रंग सरि ॥ (1400-17)
फुनि गुरू परमल सरस करत कंचनु परस मैलु दुरमति हिरत सबदि गुरु ध्याईऐ ॥ (1401-2)
फुनि जानै को तेरा अपारु निरभउ निरंकारु अकथ कथनहारु तुझहि बुझाई है ॥ (1398-16)
फुनि तरहि ते संत हित भगत गुरु गुरु करहि तरिओ प्रहलादु गुर मिलत मुनि जंन रे ॥ (1401-6)
फुनि दुखनि नासु सुखदायकु सूरउ जो धरत धिआनु बसत तिह नेरे ॥ (1400-1)
फुनि द्रोपती लाज रखी हरि प्रभ जी छीनत बसत्र दीन बहु साज ॥ (1400-10)
फुनि ध्रम धुजा फहरंति सदा अघ पुंज तरंग निवारन कउ ॥ (1404-6)
फुनि प्रेम रंग पाईऐ गुरमुखहि धिआईऐ अंन मारग तजहु भजहु हरि ग्यानीअहु ॥ (1400-13)
फुनि बहुड़ि न आवण वार ॥१॥ रहाउ ॥ (1329-18)
फुनि बेद बिरंचि बिचारि रहिओ हरि जापु न छाड्यिउ एक घरी ॥ (1409-1)
फुनि मन बच क्रम जानु अनत दूजा न मानु नामु सो अपारु सारु दीनो गुरि रिद धर ॥ (1398-19)
फुफी नानी मासीआ देर जेठानड़ीआह ॥ (1015-7)
फुरमाइसि बहुतु चलाए ॥ (989-14)
फुरमानी है कार खसमि पठाइआ ॥ (142-16)
फुरमानु तेरा सिरै ऊपरि फिरि न करत बीचार ॥ (338-14)
फुलु भाउ फलु लिखिआ पाइ ॥ (25-14)
फूटी आखै कछू न सूझै बूडि मूए बिनु पानी ॥१॥ (1123-18)
फूटै खपरु दुबिधा मनसा ॥ (840-18)
फूटै खापरु भीख न भाइ ॥ (903-10)
फूटो आंडा भरम का मनहि भइओ परगासु ॥ (1002-15)
फूल माला गलि पहिरउगी हारो ॥ (359-3)
फूल लगे फल रतन भांति ॥ (1180-6)
फूलि रही सगली बनराइ ॥२॥ (1161-3)
फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ॥१॥ (525-11)
फेड़े का दुखु सहै जीउ ॥ (1196-12)
फेरि ओह वेला ओसु हथि न आवै ओहु आपणा बीजिआ आपे खावै ॥ (303-13)
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥ (2-4)
फेरि दीआ देहुरा नामे कउ पंडीअन कउ पिछवारला ॥३॥२॥ (1292-18)
फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥ (967-16)
फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥५॥ (967-19)
फेरी फेरु न होवै कब ही एकु सबदु बंधि पालै ॥२॥ (885-4)
फेरे तसबी करे खुदाइ ॥ (951-15)
फोकट करम करहि अगिआनी मनमुखि अंध कहावथ ॥२॥ (1001-11)
फोकट करम निहफल है सेव ॥२॥ (1160-8)
फोलि फदीहति मुहि लैनि भड़ासा पाणी देखि सगाही ॥ (149-15)
बंके बाल पाग सिरि डेरी ॥ (659-5)
बंके लोइण दंत रीसाला ॥७॥ (567-11)

बंगालम मधु माधव गावहि ॥१॥ (1430-2)
बंतर की सैना सेवीऐ मनि तनि जुझु अपारु ॥ (1412-7)
बंतर चीते अरु सिंघाता ॥ (1160-17)
बंदउ होइ बंदगी गहै ॥ (341-19)
बंदक होइ बंध सुधि लहै ॥२९॥ (341-19)
बंदना हरि बंदना गुण गावहु गोपाल राइ ॥ रहाउ ॥ (683-19)
बंदहि जो चरण सरणि सुखु पावहि परमानंद गुरमुखि कहीअं ॥ (1401-15)
बंदि खलासी भाणै होइ ॥ (5-13)
बंदी अंदरि सिफति कराए ता कउ कहीऐ बंदा ॥४॥२॥३६॥ (359-17)
बंदे खोजु दिल हर रोज ना फिरु परेसानी माहि ॥ (727-8)
बंदे चसम दीदं फनाइ ॥ (723-14)
बंदे बंदगी इकतीआर ॥ (338-15)
बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥ (465-18)
बंधचि बंधनु पाइआ ॥ (971-19)
बंधन अंध कूप ग्रिह मेरा ॥ (388-18)
बंधन करम धरम हउ करता ॥ (1147-15)
बंधन करम धरम हउ कीआ ॥ (416-15)
बंधन काटनहारु मनि वसै ॥ (1147-16)
बंधन काटनहारु सुआमी ॥ (684-9)
बंधन काटि करे मनु निरमलु पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ (626-8)
बंधन काटि कीए अपने दास ॥ (178-8)
बंधन काटि तरै हरि नाइ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥७८॥१४७॥ (195-13)
बंधन काटि बिसारे अउगन अपना बिरदु सम्हारिआ ॥ (382-2)
बंधन काटि मुकति गुरि कीना ॥२॥ (804-1)
बंधन काटि मुकति घरि आणै ॥ (932-18)
बंधन काटि मुकति जनु भइआ ॥ (289-17)
बंधन काटि लेहु अपुने करि कबहू न आवह हारि ॥१॥ (675-7)
बंधन काटि सेवक करि राखे ॥ (395-18)
बंधन काटे आपि प्रभि होआ किरपाल ॥ (814-5)
बंधन काटै सो प्रभू जा कै कल हाथ ॥ (815-7)
बंधन किरखी करहि किरसान ॥ (416-16)
बंधन खोलन्हि संत दूत सभि जाहि छपि ॥ (520-10)
बंधन तूटहि मुकति होइ त्रिसना अगनि बुझाए ॥ (1011-17)
बंधन तूटे इकु नामु वसामं ॥७॥ (831-18)
बंधन ते छुटकावै प्रभू मिलावै हरि हरि नामु सुनावै ॥ (674-10)
बंधन ते मुकता घटि घटि जुगता कहि न सकउ हरि जैसा ॥ (1237-4)
बंधन ते होई छुटकार ॥७॥ (915-2)

बंधन ते होई छोट ॥ (894-18)
बंधन तोड़ि चरन कमल द्रिड़ाए एक सबदि लिव लाई ॥५॥ (915-14)
बंधन तोड़ि बोलावै रामु ॥ (183-16)
बंधन तोड़ि लीए प्रभि मोले ॥ (1072-5)
बंधन तोड़े मुकति घरि रहै ॥ (1262-9)
बंधन तोड़े सदा है मुकता ॥ (125-15)
बंधन तोड़ै मुकति होइ सचे रहै समाइ ॥ (644-16)
बंधन तोड़ै सचि वसै अगिआनु अधेरा जाइ ॥ (551-5)
बंधन तोड़ै होवै मुकतु ॥ (1411-17)
बंधन तोरि छोरि बिखिआ ते गुर को सबदु मेरै हीअरै दीन ॥ (716-3)
बंधन तोरि भए निरवैर ॥ (292-19)
बंधन तोरि राम लिव लाई संतसंगि बनि आई ॥ (1221-6)
बंधन तोरे सहजि धिआनु ॥ (416-11)
बंधन न तूटहि मुकति न पाइ ॥ (231-18)
बंधन पुतु कलतु मनि बीआ ॥३॥ (416-15)
बंधन बंधि भवाए सोइ ॥ (465-13)
बंधन बेदु बादु अहंकार ॥ (416-18)
बंधन मात पिता संसारि ॥ (416-14)
बंधन मात पिता सुत बनिता ॥ (1147-15)
बंधन मुकता जातु न दीसै ॥१॥ (1318-18)
बंधन मुकतु संतहु मेरी राखै ममता ॥३॥ (52-1)
बंधन सउदा अणवीचारी ॥ (416-16)
बंधन साह संचहि धनु जाइ ॥ (416-17)
बंधन सुत कंनिआ अरु नारि ॥२॥ (416-15)
बंधनि जा कै सभु जगु बाधिआ अवरी का नही हुकमु पइआ ॥६॥ (432-16)
बंधनि बंधि भवाईअनु करणा कछू न जाइ ॥१७॥ (1414-13)
बंधनि बाधिआ आईऐ जाईऐ ॥५॥ (832-8)
बंधनि बाधिआ आवै जाइ ॥३॥ (903-11)
बंधनि बाधिआ इन बिधि छूटै गुरमुखि सेवै नरहरे ॥१॥ (1112-18)
बंधनि बाधिओ माइआ फास ॥ (162-5)
बंधनि बिनसै मोह विकार ॥७॥ (416-18)
बंधि चलाइआ जा प्रभ भाइआ ना दीसै ना सुणीऐ ॥ (1110-14)
बंधु तुटा बेड़ी नही ना तुलहा ना हाथ ॥ (1287-15)
बंधु पाइआ मेरै सतिगुरि पूरै होई सरब कलिआण ॥ रहाउ ॥ (619-18)
बंनु बदीआ करि धावणी ता को आखै धंनु ॥ (596-1)
बंन्हि उठाई पोटली किथै वंञा घति ॥२॥ (1378-1)
बंस को पूतु बीआहन चलिआ सुइने मंडप छाए ॥ (477-6)

बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ ॥१॥ (485-7)
बईअरि नामि सोहागणी सचु सवारणहारो ॥ (581-3)
बईअरि बोलै मीठुली भाई साचु कहै पिर भाइ ॥ (637-7)
बकतै बकि सबदु सुनाइआ ॥ (972-4)
बकतो करता बूझत करता ॥ (862-5)
बकरी कउ हसती प्रतिपाले ॥ (898-14)
बकरी सिंघु इकतै थाइ राखे मन हरि जपि भ्रमु भउ दूरि कीजै ॥३॥ (735-6)
बकि बकि वादु चलाइआ बिनु नावै बिखु जाणि ॥१॥ (1331-4)
बकै न बोलै खिमा धनु संग्रहै तामसु नामि जलाए ॥ (1013-10)
बकै न बोलै हरि गुण गावै ॥ (411-10)
बखस अपुनी करि दीनी ॥ (628-16)
बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार ॥१॥ (261-2)
बखसि मिलावहु नानक जग अंध ॥४॥१२॥२३॥ (890-4)
बखसि लए सभि सचै साहिबि सुणि नानक की अरदासा ॥२॥१७॥४५॥ (620-4)
बखसि लीए नाही जम काणे ॥५॥ (1190-7)
बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥ (267-1)
बखसि लेहु प्रभ अंतरजामी ॥४॥७६॥१४५॥ (195-4)
बखसि लैहु पारब्रहम सुआमी नानक सद कुरबानी ॥२॥६॥१२८॥ (403-13)
बखसि लैहु साहिब प्रभ अपने लाख खते करि फेरो ॥१॥ (618-5)
बखसिआ पारब्रहम परमेसरि सगले रोग बिदारे ॥ (620-5)
बखसी हिंदू मै तेरी गाइ ॥२२॥ (1166-8)
बखसीस वजहु मिलि एकु नाम ॥ (210-18)
बग जिउ लाइ बहै नित धिआना ॥ (230-5)
बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसंन्हि ॥ (729-4)
बगा रता पीअला काला बेदा करी पुकार ॥ (139-11)
बगुला काग नीच की संगति जाइ करंग बिखू मुखि लाईऐ ॥ (881-18)
बगुला कागु न रहई सरवरि जे होवै अति सिआणा ॥ (956-13)
बगुले जिउ रहिआ पंख पसारि ॥ (1152-3)
बगुले ते फुनि हंसुला होवै जे तू करहि दइआला ॥ (1171-4)
बचन गुर रिदि धरहु पंच भू बसि करहु जनमु कुल उधरहु द्वारि हरि मानीअहु ॥ (1400-14)
बचन नाद मेरे स्रवनहु पूरे देहा प्रिअ अंकि समानी ॥१॥ रहाउ ॥ (1210-10)
बचन साध सुख पंथा लहंथा बड करमणह ॥ (1360-12)
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥१॥ (694-7)
बचनु करे तै खिसकि जाइ बोले सभु कचा ॥ (1099-14)
बचनु गुरू जो पूरै कहिओ मै छीकि गांठरी बाधा ॥१॥ रहाउ ॥ (1204-5)
बचित्र मंदिर सोभंति बसत्रा इत्यंत माइआ ब्यापितं ॥ (1354-18)
बछरे प्रीति खीरु मुखि खाइ ॥ (164-18)

बछरे बिनु गाइ अकेली ॥१॥ (874-1)
बजर कपाट काइआ गड़्हह भीतरि कूड़ु कुसतु अभिमानी ॥ (514-9)
बजर कपाट जड़े जड़ि जाणै गुर सबदी खोलाइदा ॥२॥ (1033-10)
बजर कपाट न खुलनी गुर सबदि खुलीजै ॥ (954-13)
बजर कपाट मुकते गुरमती निरभै ताड़ी लाई ॥३॥ (597-8)
बजर कुठारु मोहि है छीनां करि मिंनति लगि पावउ ॥ (693-6)
बजारी सो जु बजारहि सोधै ॥ (872-17)
बजावनहारो ऊठि सिधारिओ तब फिरि बाजु न भइओ ॥३॥ (1203-9)
बजावनहारो कहा गइओ जिनि इहु मंदरु कीन्हा ॥ (480-12)
बजी बधाई सहजे समाई बहुड़ि दूखि न रुंनीआ ॥ (1312-12)
बटक बीज महि रवि रहिओ जा को तीनि लोक बिसथार ॥३॥ (340-5)
बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥ (268-14)
बटूआ एकु बहतरि आधारी एको जिसहि दुआरा ॥ (477-9)
बड परतापु सुनिओ प्रभ तुम्हरो कोटि अघा तेरो नाम हरन ॥१॥ (828-2)
बड पुरख पूरन गुण स्मपूरन भ्रम भीति हरि हरि मिलि भगह ॥ (544-11)
बड हो हो भाग मथाम ॥१॥ रहाउ ॥ (1297-4)
बडभागी उनमानिअउ रिदि सबदु बसायउ ॥ (1407-4)
बडभागी किसै परापति होइ ॥ (279-3)
बडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥ (289-15)
बडभागी तिह जन कउ जानहु जो हरि के गुन गावै ॥ (901-18)
बडभागी ते जन जग माहि ॥ (281-9)
बडभागी नानक को तारं ॥२०॥ (1361-7)
बडभागी नानक जन सेइ ॥८॥१३॥ (281-1)
बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥१॥ (278-6)
बडे भाई कै जब संगि होती तब हउ नाह पिआरी ॥२॥ (482-9)
बडे भाग गुरु सेवहि अपुना भेदु नाही गुरदेव मुरार ॥ (504-5)
बडे भूपति राजे है छेधे ॥४॥ (872-6)
बडै भागि साधसंगु पाइओ ॥१॥ (886-1)
बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ॥५॥ (710-18)
बणि त्रिणि त्रिभवणि पूरि पूरन कीमति कहणु न जाई ॥ (545-12)
बतीह सुलखणी सचु संतति पूत ॥ (371-2)
बद अमल छोडि करहु हथि कूजा ॥ (1084-6)
बदति जैदेउ जैदेव कउ रमिआ ब्रहमु निरबाणु लिव लीणु पाइआ ॥२॥१॥ (1106-5)
बदति तिलोचनु ते नर मुकता पीत्मबरु वा के रिदै बसै ॥५॥२॥ (526-10)
बदति त्रिलोचन राम जी ॥६॥१॥ (695-9)
बदति त्रिलोचनु सुनु रे प्राणी कण बिनु गाहु कि पाही ॥४॥१॥ (526-4)
बदनै बिनु खिर खिर हासता ॥ (1194-4)

बदफैली गैबाना खसमु न जाणई ॥ (142-6)
बदबखत हम चु बखील गाफिल बेनजर बेबाक ॥ (721-8)
बदहु की न होड माधउ मो सिउ ॥ (1252-14)
बदि अम्रित तत मइअं ॥ (526-14)
बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु ॥ (787-17)
बधिकु उधारिओ खमि प्रहार ॥ (1192-6)
बधे करनि सलाम खसम न भाणिआ ॥ (143-5)
बधे छुटहि सचि सचु पछाणीऐ ॥ (1287-19)
बधे बिकार लिखे बहु कागर ॥ (195-12)
बधोहु पुरखि बिधातै तां तू सोहिआ ॥ (1362-10)
बन का मिरगु मुकति सभु होगु ॥१॥ (324-5)
बन खंड जाइ जोगु तपु कीनो कंद मूलु चुनि खाइआ ॥ (654-17)
बन खंडि माइआ मोहि हैराना ॥ (415-7)
बन फिरि थके बन वासीआ पिरु गुरमति रिदै निहालि ॥१॥ (234-16)
बन फूले मंझ बारि मै पिरु घरि बाहुड़ै ॥ (1108-1)
बन महि पेखिओ त्रिण महि पेखिओ ग्रिहि पेखिओ उदासाए ॥ (1139-3)
बन महि भूली जे फिरा बिनु गुर बूझ न पाउ ॥ (57-3)
बनजनहारे बाहरा कउडी बदलै जाइ ॥१५४॥ (1372-14)
बनमाला बिभूखन कमल नैन ॥ (1082-17)
बनवाली चक्रपाणि दरसि अनूपिआ ॥ (1082-10)
बनसपति मउली चड़िआ बसंतु ॥ (1176-7)
बनसपति मउली फल फुल पेडे ॥ (180-17)
बनहि बसे किउ पाईऐ जउ लउ मनहु न तजहि बिकार ॥ (1103-5)
बनारसि असि बसता ॥ (873-10)
बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥ (294-1)
बनि भीहावलै हिकु साथी लधमु दुख हरता हरि नामा ॥ (519-15)
बनिता छोडि बद नदरि पर नारी ॥ (1348-7)
बनिता बिनोद अनंद माइआ अगिआनता लपटावए ॥ (458-2)
बनिता सुत देह ग्रेह स्मपति सुखदाई ॥ (692-13)
बनु ग्रिहु समसरि हां ॥ (409-11)
बनु बनु खोजत फिरत बैरागी ॥ (203-13)
बनु बनु ढूढि ढूढि फिरि थाकी गुरि पूरै घरि निसतारे ॥४॥ (982-10)
बनु बनु फिरत उदास बूंद जल कारणे ॥ (1362-12)
बनु बनु फिरती खोजती हारी बहु अवगाहि ॥ (455-12)
बनु बनु फिरती ढूढती बसतु रही घरि बारि ॥ (934-18)
बबा बिंदहि बिंद मिलावा ॥ (341-18)
बबा ब्रहमु जानत ते ब्रहमा ॥ (258-10)

बबै बाजी खेलण लागा चउपड़ि कीते चारि जुगा ॥ (433-19)
बबै बूझहि नाही मूड़े भरमि भुले तेरा जनमु गइआ ॥ (434-17)
बरकति तिन कउ अगली पड़दे रहनि दरूद ॥३॥ (53-13)
बरखसि बाणी बुदबुदा हेरि ॥ (1187-9)
बरत नेम करम खट कीने बाहरि भेख दिखावा ॥ (1003-5)
बरत नेम तीरथ सहित गंगा ॥ (1305-5)
बरत नेम संजम महि रहता तिन का आढु न पाइआ ॥ (216-5)
बरत संधि सोच चार ॥ (1229-17)
बरतन कउ सभु किछु भोजन भोगाइ ॥ (862-15)
बरती बरत रहै निहकाम ॥ (840-10)
बरद चढे डउरू ढमकावै ॥२॥ (874-14)
बरधंति जरूआ हित्यंत माइआ ॥ (1354-3)
बरध पचीसक संगु काच ॥ (1194-19)
बरधमान होवत दिन प्रति नित आवत निकटि बिखम जरी ॥ (1387-13)
बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (858-8)
बरन आस्रम सासत्र सुनउ दरसन की पिआस ॥ (816-10)
बरन सहित जो जापै नामु ॥ (1167-8)
बरनि न साकउ उसतति ता की कीमति कहणु न जाई ॥२॥ (672-11)
बरनि न साकउ एक टुलेरै ॥ (1304-17)
बरनि न साकउ गुण बिसथारा ॥१॥ रहाउ ॥ (1156-12)
बरनि न साकउ जैसा तू है साचे अलख अपारा ॥ (884-5)
बरनि न साकउ तुमरे रंगा गुण निधान सुखदाते ॥ (207-1)
बरनि न साकउ नानक महिमा पेखि रहे बिसमाद ॥२॥५५॥७८॥ (1219-14)
बरनि न साकउ बहु गुन तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (898-15)
बरनु चिहनु नाही किछु पेखिओ दास का कुलु न बिचारिओ ॥ (979-3)
बरनु चिहनु नाही किछु रचना मिथिआ सगल पसारा ॥ (999-19)
बरनु चिहनु नाही मुखु न मासारा ॥ (746-10)
बरनु जाति कोऊ पूछै नाही बाछहि चरन रवारो ॥१॥ (498-5)
बरनु न दीसै चिहनु न लखीऐ सुहागनि साति बुझहीअउ ॥१॥ (700-10)
बरसना त बरसु घना बहुड़ि बरसहि काहि ॥ (517-4)
बरसनि मेघ अपार नानक संगमि पिरी सुहंदीआ ॥२॥ (1102-4)
बरसु एकु हउ फिरिओ किनै नहु परचउ लायउ ॥ (1395-19)
बरसु घना मेरा पिरु घरि आइआ ॥ (1255-12)
बरसु घना मेरा मनु भीना ॥ (1254-10)
बरसु पिआरे मनहि सधारे होइ अनदु सदा मनि चाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1267-18)
बरसु मेघ जी तिलु बिलमु न लाउ ॥ (1267-17)
बरसु सरसु आगिआ ॥ (1272-11)

बरसै अम्रित धार बूंद सुहावणी ॥ (1107-12)
बरसै निसि काली किउ सुखु बाली दादर मोर लवंते ॥ (1108-16)
बरसै मेघु सखी घरि पाहुन आए ॥ (1266-6)
बल बुधि गिआनु धिआनु अपणा आपि नामु जपाइआ ॥ (460-8)
बल बुधि सिआनप हउमै रही ॥ (211-11)
बल बुधि सुधि पराण सरबसु संतना की रासि ॥ (1017-16)
बलतो जलतो तउकिआ गुर चंदनु सीतलाइओ ॥१॥ (241-15)
बलदी अंदरि तेलु दुबिधा घतिआ ॥ (1289-10)
बलदी जलि निवरै किरपा ते आपे जल निधि पाइदा ॥४॥ (1033-13)
बलन बरतन कउ सनबंधु चिति आइआ ॥ (1145-2)
बलबंच करै न जानै लाभै सो धूरतु नही मूड़्हा ॥ (1221-17)
बलबंच छपि करत उपावा पेखत सुनत प्रभ अंतरजामी ॥ (1387-6)
बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥ (967-9)
बलवंत बलात कारणह ॥ (1359-17)
बलवंति बिआपि रही सभ मही ॥ (499-1)
बलि जाइ नानकु पुरख पूरन थिरु जा का सोहागु जीउ ॥३॥ (927-2)
बलि जाइ नानकु सदा करते सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥४॥४॥ (927-7)
बलि जाइ नानकु सुखह दाते परगासु मनि तनि होइ जीउ ॥१॥ (926-13)
बलि जावउ दरसन साधू कै जिह प्रसादि हरि नामु लीना ॥ (823-17)
बलि जावां गुर अपने प्रीतम जिनि हरि प्रभु आणि मिलाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1255-12)
बलि तिसु बापै जिनि हउ जाइआ ॥ (476-8)
बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ ॥ (727-16)
बलि बलि जाई प्रभ अपुने ईसै ॥ (1072-8)
बलि बलि जाई संत पिआरे नानक पूरन कामां ॥२॥ (519-16)
बलि बलि जाई सतिगुर चरणा ॥१॥ रहाउ ॥ (1149-14)
बलि बलि जाईऐ ता के चरन ॥२॥ (888-7)
बलि बलि जाउ साध दरसारे ॥३॥ (533-8)
बलि बलि जाउ सिआम सुंदर कउ अकथ कथा जा की बात सुनी ॥३॥ (827-4)
बलि बलि जे बिसनतना जसु गावै ॥ (342-10)
बलि बलि तिसु सतिगुर कउ जाउ ॥१॥ (395-15)
बलि बलि बलि गुरदेव जिनि नामु द्रिड़ाइआ ॥ (925-11)
बलि बलि बलि बलि चरण तुम्हारे ईहा ऊहा तुम्हारा जोरा ॥ (499-9)
बलि राजा माइआ अहंकारी ॥ (224-13)
बलिआ गुर गिआनु अंधेरा बिनसिआ हरि रतनु पदारथु लाधा ॥ (78-12)
बलिओ चरागु अंध्यार महि सभ कलि उधरी इक नाम धरम ॥ (1387-1)
बलिहारि जाए सदा नानकु देहु अपणा नाउ ॥२॥३॥८॥६॥१४॥ (988-8)
बलिहारी इस जाति कउ जिह जपिओ सिरजनहारु ॥२॥ (1364-12)

बलिहारी इह प्रीति कउ जिह जाति बरनु कुलु जाइ ॥५७॥ (1367-10)
बलिहारी कुदरति वसिआ ॥ (469-10)
बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि कारज सभि सवारे ॥ (767-17)
बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि साचे सिउ लिव लाई ॥ (753-8)
बलिहारी गुर आपणे गुर कउ बलि जाईआ ॥१॥ (725-11)
बलिहारी गुर आपणे जिनि अउगण मेटि गुण परगटीआए ॥ (303-9)
बलिहारी गुर आपणे जिनि हिरदै दिता दिखाइ ॥५२॥ (937-19)
बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥ (462-19)
बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ (1015-6)
बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ (490-16)
बलिहारी गुर आपणे सद सद कुरबाना ॥ (396-18)
बलिहारी गुर आपणे सद सद बलि जाउ ॥ (400-19)
बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमाइआ ॥३॥ (643-17)
बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमि वारिआ ॥ (310-11)
बलिहारी गुर आपने चरनन्ह बलि जाउ ॥ (818-7)
बलिहारी गुरदेव चरन ॥ (1206-8)
बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है ॥४॥२॥ (1168-14)
बलिहारी तिसु संत पिआरे जिसु प्रसादि प्रभु मनि वासीऐ ॥ रहाउ ॥ (395-9)
बलिहारी सतिगुर तिसु जिनि सोझी पाई ॥१२॥ (647-9)
बलिहारै नानक लख बेरा मेरे ठाकुर अगम अगाधिओ ॥२॥१३॥ (530-19)
बलिहि छलन सबल मलन भग्ति फलन कान्ह कुअर निहकलंक बजी डंक चड़्हू दल रविंद जीउ ॥ (1403-4)
बलु अबलु किआ इस ते होई ॥४॥ (481-1)
बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥ (1429-6)
बलु धनु तकीआ तेरा ॥ (622-7)
बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥ (1429-7)
बलूआ के ग्रिह भीतरि बसै ॥ (267-18)
बलूआ के घरूआ महि बसते फुलवत देह अइआने ॥ (1124-4)
बसंत की वार महलु ५ (1193-6)
बसंत रुति आई ॥ (1185-5)
बसंति साध रिदयं अचुत बुझंति नानक बडभागीअह ॥५७॥ (1359-7)
बसंति स्वरग लोकह जितते प्रिथवी नव खंडणह ॥ (707-17)
बसंती संदूर सुहाई ॥ (1430-8)
बसंतु कबीर जीउ (1196-15)
बसंतु चड़िआ फूली बनराइ ॥ (1176-19)
बसंतु बाणी नामदेउ जी की (1195-17)
बसंतु बाणी भगतां की ॥ (1193-14)
बसंतु बाणी रविदास जी की (1196-8)

बसंतु महला १ ॥ (1168-15)
बसंतु महला १ ॥ (1169-12)
बसंतु महला १ ॥ (1169-18)
बसंतु महला १ ॥ (1170-6)
बसंतु महला १ ॥ (1187-17)
बसंतु महला १ ॥ (1188-10)
बसंतु महला १ ॥ (1189-2)
बसंतु महला १ ॥ (1190-3)
बसंतु महला १ ॥ (1190-9)
बसंतु महला १ असटपदीआ घरु १ दुतुकीआ (1187-6)
बसंतु महला १ इक तुकीआ ॥ (1189-14)
बसंतु महला १ हिंडोल ॥ (1171-5)
बसंतु महला ३ ॥ (1172-16)
बसंतु महला ३ ॥ (1172-9)
बसंतु महला ३ ॥ (1173-16)
बसंतु महला ३ ॥ (1173-3)
बसंतु महला ३ ॥ (1173-9)
बसंतु महला ३ ॥ (1174-16)
बसंतु महला ३ ॥ (1174-3)
बसंतु महला ३ ॥ (1174-9)
बसंतु महला ३ ॥ (1175-16)
बसंतु महला ३ ॥ (1175-3)
बसंतु महला ३ ॥ (1175-9)
बसंतु महला ३ ॥ (1176-11)
बसंतु महला ३ ॥ (1176-15)
बसंतु महला ३ ॥ (1176-19)
बसंतु महला ३ ॥ (1176-7)
बसंतु महला ३ इक तुका ॥ (1170-13)
बसंतु महला ३ इक तुके ॥ (1176-3)
बसंतु महला ३ घरु १ दुतुके (1172-3)
बसंतु महला ३ तीजा ॥ (1169-5)
बसंतु महला ४ ॥ (1177-17)
बसंतु महला ४ हिंडोल ॥ (1178-10)
बसंतु महला ५ (1185-3)
बसंतु महला ५ ॥ (1180-13)
बसंतु महला ५ ॥ (1180-7)
बसंतु महला ५ ॥ (1181-1)

बसंतु महला ५ ॥ (1181-12)
बसंतु महला ५ ॥ (1181-18)
बसंतु महला ५ ॥ (1181-7)
बसंतु महला ५ ॥ (1182-11)
बसंतु महला ५ ॥ (1182-17)
बसंतु महला ५ ॥ (1182-5)
बसंतु महला ५ ॥ (1183-11)
बसंतु महला ५ ॥ (1183-17)
बसंतु महला ५ ॥ (1183-4)
बसंतु महला ५ ॥ (1184-10)
बसंतु महला ५ ॥ (1184-14)
बसंतु महला ५ ॥ (1184-18)
बसंतु महला ५ ॥ (1192-14)
बसंतु महला ५ घरु १ इक तुके (1184-6)
बसंतु महला ५ घरु १ दुतुकीआ (1192-2)
बसंतु महला ५ घरु १ दुतुके (1180-1)
बसंतु महला ५ घरु २ हिंडोल (1185-9)
बसंतु महला ५ हिंडोल ॥ (1185-16)
बसंतु महला ९ ॥ (1186-10)
बसंतु महला ९ ॥ (1186-13)
बसंतु महला ९ ॥ (1186-17)
बसंतु महला ९ ॥ (1187-2)
बसंतु हमारै राम रंगु ॥ (1183-6)
बसंतु हिंडोल महला १ ॥ (1171-15)
बसंतु हिंडोल महला १ ॥ (1171-9)
बसंतु हिंडोल महला ३ घरु २ (1177-5)
बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ (1178-16)
बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ (1179-12)
बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ (1179-5)
बसंतु हिंडोल महला ४ घरु २ (1178-3)
बसंतु हिंडोल महला ५ ॥ (1186-3)
बसंतु हिंडोलु घरु २ (1195-5)
बसंतु हिंडोलु घरु २ महला ४ (1191-8)
बसंतु हिंडोलु महला १ घरु २ (1190-16)
बसइ करोधु सरीरि चंडारा ॥ (759-14)
बसत कमावत सभि सुखी किछु ऊन न दीसै ॥ (817-2)
बसत संगि हरि साध कै पूरन आसाइ ॥२॥ (813-6)

बसता तूटी झुमपड़ी चीर सभि छिंना ॥ (707-10)
बसतु अगोचर गुर मिलि लही ॥ (868-5)
बसतु अगोचर पाई ॥ (656-1)
बसतु अगोचर भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (883-16)
बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥ (285-11)
बसतो होइ होइ सो ऊजरु ऊजरु होइ सु बसै ॥१॥ (1252-4)
बसत्र उतारि दिग्मबरु होगु ॥ (1169-5)
बसत्र छीनत द्रोपती रखी लाज ॥ (1192-7)
बसत्र न पहिरै ॥ (467-17)
बसत्र बिभूखन सुख बहुत बिसेखै ॥ (373-13)
बसत्र हमारे रंगि चलूल ॥ (372-11)
बसहि संत जिसु रिदै दुख दारिद्र निवारनु ॥ (1409-10)
बसि रहे हिरदै गुर चरन पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (803-19)
बसु जल नित न वसत अलीअल मेर चचा गुन रे ॥ (990-10)
बसुध कागद बनराज कलमा लिखण कउ जे होइ पवन ॥ (458-8)
बसुधा कागदु जउ करउ हरि जसु लिखनु न जाइ ॥८१॥ (1368-15)
बसुधा खोदि करहि दुइ चूल्हे सारे माणस खावहि ॥२॥ (476-3)
बसुधा तलै तलै सभ ऊपरि मिलि साधू चरन रुलीजै ॥ (1324-15)
बसुधा दीओ बरतनि बलना ॥ (913-13)
बसुधा बसि कीनी सभ राजे बिनती करै पटरानी ॥ (1165-8)
बसुधा सपत दीप है सागर कढि कंचनु काढि धरीजै ॥ (1323-15)
बसै घटा घट लीप न छीपै ॥ (1318-17)
बस्यिंत रिखिअं तिआगि मानं ॥ (1355-3)
बहंति अगाह तोयं तरंगं दुखंत ग्रह चिंता जनमं त मरणह ॥ (1355-11)
बहतरि घर इकु पुरखु समाइआ उनि दीआ नामु लिखाई ॥ (793-10)
बहती जात कदे द्रिसटि न धारत ॥ (743-17)
बहती मनसा राखहु बांधि ॥ (343-18)
बहदिआ उठदिआ न विसरै साचा सचु सोई ॥ (1239-13)
बहदिआ उठदिआ नित धिआईऐ सदा सदा सुखु होइ ॥ (1281-4)
बहदिआ उठदिआ नीता नीति ॥ (350-12)
बहरे करन अकलि भई होछी सबद सहजु नही बूझिआ ॥ (1126-2)
बहले भेख भवहि दिनु राती हउमै रोगु न जाई ॥ (1131-7)
बहि सखीआ जसु गावहि गावणहारीआ ॥ (645-17)
बहि साचै लिखिआ अम्रितु बिखिआ जितु लाइआ तितु लागा ॥ (582-5)
बहु अभिमानि अपणी पति खोइ ॥ (1175-12)
बहु करम कमावहि लोभि मोहि विआपे हउमै कदे न चूकै फेरी ॥ (1251-4)
बहु करम कमावहि वधहि विकारा ॥ (1062-4)

बहु करम कमावहि सभु दुख का पसारा ॥ (1060-9)
बहु करम कमावै दुखु सबाइआ ॥ (424-7)
बहु करम कमावै मुकति न पाए ॥ (123-17)
बहु करम करे सतिगुरु नही पाइआ ॥ (1261-16)
बहु करम करै किछु थाइ न पाए ॥ (127-14)
बहु करम द्रिड़ावहि नामु विसारि ॥२॥ (1277-12)
बहु गुण मेरे साहिबै भाई हउ तिस कै बलि जाउ ॥ (640-7)
बहु गुनि धुनि मुनि जन खटु बेते अवरु न किछु लाईकी रे ॥१॥ (404-13)
बहु चिंत विसारी हरि नामु उरि धारी नानक हरि भए है सखाई ॥२॥२॥८॥ (669-4)
बहु चिंता चितवै आपु न पछाना ॥ (159-11)
बहु चिंता पिड़ चालै हारी ॥ (222-5)
बहु जतन करता बलवंत कारी सेवंत सूरा चतुर दिसह ॥ (1354-9)
बहु जोनी जनमहि मरहि बिखिआ बिकराल ॥१॥ (807-17)
बहु जोनी भउदा फिरै जिउ सुंञैं घरि काउ ॥ (30-9)
बहु जोनी भवहि धुरि किरति लिखिआसा ॥ (176-8)
बहु ताल पूरे वाजे वजाए ॥ (122-3)
बहु तीरथ भविआ ॥ (467-15)
बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥ (467-17)
बहु परपंच करि पर धनु लिआवै ॥ (656-7)
बहु प्रकार खोजहि सभि ता कउ बिखमु न जाई लैन ॥१॥ रहाउ ॥ (674-6)
बहु बंधहि परीआ ॥३॥ (537-6)
बहु बिधि करम कमावदे दूणी मलु लागी आइ ॥ (39-7)
बहु बिधि करम करहि भाइ दूजै बिनु सबदै बउरानिआ ॥१॥ (1234-13)
बहु बिधि कहिओ पुकारि पुकारि ॥५॥१॥९॥ (1159-13)
बहु बिधि जोनी फिरत अनेता ॥ (1005-2)
बहु बिधि थाका करम कमाइ ॥३॥ (1262-13)
बहु बिधि धरम निरूपीऐ करता दीसै सभ लोइ ॥ (346-12)
बहु बिधि पूजा खोजीआ मेरे लाल जीउ इहु मनु तनु सभु अरपेहा राम ॥ (542-8)
बहु बिधि बेद पाठ सभि सोधा ॥ (1019-9)
बहु बिधि भांडे घड़ै कुम्हारा ॥३॥ (1128-2)
बहु बिधि माइआ मोह हिरानो ॥ (1269-9)
बहु बिधि रूप रंग आपारा ॥ (746-9)
बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥ (291-18)
बहु बेअंतु अति बडो गाहरो थाह नही अगहूचा ॥ (534-17)
बहु भेख करहि मनि सांति न होइ ॥ (1175-11)
बहु भेख करि भरमाईऐ मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥ (26-13)
बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥ (467-16)

बहु भोजन कापर संगीत ॥ (290-14)
बहु माणु कीआ तुधु उपरे तूं आपे पाइहि थाइ जीउ ॥१४॥ (74-5)
बहु मैले निरमल होइआ सभ किलबिख हरि जसि जाला ॥ (985-18)
बहु रंग देखि भुलाइआ भुलि भुलि आवै जाइ जीउ ॥ (751-11)
बहु रंग माइआ बहु बिधि पेखी ॥ (179-13)
बहु रंगी रस भोगिआ सबदि रहै निरबाणु ॥ (550-18)
बहु रस सालणे सवारदी खट रस मीठे पाइ ॥ (1413-17)
बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥ (278-10)
बहु वधहि विकारा सहसा इहु संसारा बिनु नावै पति खोई ॥ (570-4)
बहु संकट जोनी भरमाए ॥ (1068-7)
बहु संजमि सांति न पावै कोइ ॥ (1175-18)
बहु साद लुभाणे किरत कमाणे विछुड़िआ नही मेला ॥ (1112-17)
बहु सादहु दूखु परापति होवै ॥ (1034-16)
बहु सासत्र बहु सिम्रिती पेखे सरब ढढोलि ॥ (265-8)
बहुड़ि न जोनी पाईऐ ॥३॥ (623-18)
बहुड़ि न मरै ना जमु पेखै ॥२॥ (798-13)
बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥ (694-8)
बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥ (5-11)
बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥ (5-9)
बहुता जीवणु मंगीऐ मुआ न लोड़ै कोइ ॥ (63-5)
बहुता बोलणु झखणु होइ ॥ (661-18)
बहुतु उरध तप साधन साधे ॥ (202-6)
बहुतु ओपमा थोर कही ॥ (987-4)
बहुतु करहि फुरमाइसी वरतहि होइ अफार ॥ (42-7)
बहुतु खजाना तिंन पहि हरि जीउ हरि कीरतनु लाहा राम ॥ (543-17)
बहुतु खजाने मेरै पालै परिआ अमोल लाल आखूटा ॥ (1210-15)
बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ॥ (632-2)
बहुतु जोनि भरमत दुखु पाइआ हउमै बंधन के भारा ॥२॥ (616-7)
बहुतु दरबु करि मनु न अघाना ॥ (179-6)
बहुतु दरबु हसती अरु घोड़े लाल लाख बै आनी ॥ (379-17)
बहुतु दुआरे भ्रमि भ्रमि आइआ ॥ (1078-14)
बहुतु धनाढि अचारवंतु सोभा निरमल रीति ॥ (70-18)
बहुतु पए असगाह गोते खाहि न निकलहि ॥ (145-19)
बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ ॥ (793-17)
बहुतु प्रतापु गांउ सउ पाए दुइ लख टका बरात ॥ (1251-17)
बहुतु बरस तपु कीआ कासी ॥ (326-10)
बहुतु वडिआईआ साहिबै नह जाही गणीआ ॥ (854-14)

बहुतु सजाइ पइआ देसि लमै ॥ (1020-4)
बहुतु सिआणप आगल भारा ॥ (178-19)
बहुतु सिआणप आवहि जाहि ॥ (686-10)
बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥ (265-19)
बहुतु सिआणप भरमु न जाए ॥ (1025-1)
बहुतु सिआणप लइआ न जाई करि थाके सभि चतुराई ॥ (573-10)
बहुतु सिआणप लागै धूरि ॥ (352-12)
बहुतु सिआणप हउमै मेरी ॥ (1251-3)
बहुते अउगण कूकै कोई ॥ (357-10)
बहुते फेर पए किरपन कउ अब किछु किरपा कीजै ॥ (666-11)
बहुते भेख करहि भेखधारी ॥ (842-19)
बहुते भेख करे नही भीजै ॥ (1059-6)
बहुते भेख करे भेखधारी ॥ (1067-18)
बहुते भेख करै नह पाए बिनु सतिगुर सुखु न पाई हे ॥१२॥ (1047-16)
बहुते भेख करै भेखधारी ॥ (230-14)
बहुते वेस करी पिर बाझहु महली लहा न थाओ ॥ (1109-16)
बहुते वेस करे कूड़िआरि ॥ (933-12)
बहुतेरी थाई रलाइ रलाइ दिता उघड़िआ पड़दा अगै आइ खलोहा ॥ (960-18)
बहुतो बहुतु वखाणीऐ ऊचो ऊचा थाउ ॥ (44-17)
बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ॥ (268-11)
बहुरि कमावहि होइ निसंक ॥ (1348-3)
बहुरि न आवै जोनी बाट ॥४॥ (1159-12)
बहुरि न छोडै हरि संगि हिलै ॥ (236-8)
बहुरि न त्रिसना लागै आइ ॥ (281-4)
बहुरि न फिरीआ ॥२॥१॥४४॥ (746-8)
बहुरि न लेखा पुछि बुलाइआ ॥ (102-2)
बहुरि न होइ तेरा आवन जानु ॥१॥ रहाउ ॥ (525-3)
बहुरि न होवै आवन जानु ॥ (295-18)
बहुरि बहुरि उआहू लपटेरा ॥ (180-1)
बहुरि बहुरि तिसु लागह पाई ॥१॥ (393-7)
बहुरि बहुरि तिसु संगि मनु राची ॥१॥ रहाउ ॥ (1157-4)
बहुरि बहुरि पिर ही संगु मागै ओहु बात जानै करि हासा हे ॥९॥ (1073-5)
बहुरि बहुरि लपटिओ जंजारा ॥१॥ रहाउ ॥ (738-17)
बहुरि हम काहे आवहिगे ॥ (1103-16)
बांगा बुरगू सिंङीआ नाले मिली कलाण ॥ (790-4)
बांछउ धूरि पवित्र करेरै ॥ (1304-15)
बांछत नाही सु बेला आई ॥ (378-14)

बांधनि बांधिआ सभु जगु भवै ॥२॥ (728-12)
बांधा छूटै नामु सम्हालि ॥ (412-15)
बांधि पोट कुंचर कउ दीन्हा ॥ (870-17)
बांह पकड़ि ठाकुरि हउ घिधी गुण अवगण न पछाणे ॥ (704-2)
बाकी धरम राइ की लीजै सिरि अफरिओ भारु अफारा हे ॥१०॥ (1030-14)
बाकी वाला तलबीऐ सिरि मारे जंदारु जीउ ॥ (751-9)
बाग मिलख घर बार किथै सि आपणे ॥ (141-18)
बाग सुहावे सोहणे चलै हुकमु अफार ॥ (70-17)
बागे कापड़ बोलै बैण ॥ (1257-6)
बाघु मरै मनु मारीऐ जिसु सतिगुर दीखिआ होइ ॥ (1410-15)
बाचा करि सिमरंत तुझै तिन्ह दुखु दरिद्रु मिटयउ जु खिणं ॥ (1405-13)
बाजंत नानक सबद बीणां ॥१३॥ (1355-4)
बाज पए तिसु रब दे केलां विसरीआं ॥ (1383-4)
बाज हमारी थान थनंतरि ॥ (1141-13)
बाजहि बाजे धुनि आकारा ॥ (1061-19)
बाजा माणु ताणु तजि ताना पाउ न बीगा घालै ॥ (885-4)
बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥ (464-18)
बाजी खेलि गए बाजीगर जिउ निसि सुपनै भखलाई हे ॥९॥ (1023-2)
बाजीअले अनहद बाजे ॥१॥ (656-11)
बाजीगर डंक बजाई ॥ (655-3)
बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई ॥३॥६॥ (487-8)
बाजीगर स्वांगु सकेला ॥ (655-4)
बाजीगरि इक बाजी पाई ॥ (1061-18)
बाजीगरि जैसे बाजी पाई ॥ (736-11)
बाजीगरी संसारु कबीरा चेति ढालि पासा ॥३॥१॥२३॥ (482-1)
बाजे अनहद तूरे ॥१॥ (629-1)
बाजे अनहद तूरे सतगुर ॥१॥ रहाउ ॥ (887-6)
बाजे अनहद बाजा ॥ (892-11)
बाजे बजहि म्रिदंग अनाहद कोकिल री राम नामु बोलै मधुर बैन अति सुहीआ ॥१॥ (1271-18)
बाझहु गुरू अचेतु है सभ बधी जमकालि ॥ (30-12)
बाझहु पिआरे कोइ न सारे एकलड़ी कुरलाए ॥ (243-3)
बाझहु सतिगुर आपणे बैठा झाकु दरूद ॥२॥ (1096-6)
बाझु कला आडाणु रहाइआ ॥ (1036-6)
बाझु कला धरि गगनु धरीआ ॥२॥ (1188-13)
बाझु गुरू को सहजु न पाए गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (125-12)
बाझु गुरू गुबारा ॥ (1004-1)
बाझु गुरू गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाइ ॥ (55-15)

बाझु गुरू जगतु बउराना नावै सार न पाई ॥ (1287-7)
बाझु गुरू जगतु बउराना भूला चोटा खाई ॥ (1132-9)
बाझु गुरू डुबा संसारु ॥२॥ (138-1)
बाझु गुरू फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआए ॥११॥ (513-3)
बाझु गुरू सभ भरमि भुलाई ॥ (158-6)
बाझु गुरू है अंध अंधारा ॥ (125-7)
बाझु गुरू है अंध गुबारा ॥ (116-10)
बाझु गुरू है भरमि भुलाइ ॥३॥ (1139-13)
बाझु गुरू है भरमि भुलानिआ ॥२॥ (1139-12)
बाझु गुरू है मोहु गुबारा ॥ (1068-11)
बाझु थूनीआ छपरा थाम्हिआ नीघरिआ घरु पाइआ रे ॥ (381-17)
बाझु पिआरे आपणे बिरही ना धीरोदि ॥३॥ (1100-14)
बाट घाट तोसा संगि मोरै मन अपुने कउ मै हरि सखा कीत ॥१॥ (716-7)
बाट पारि घरु मूसि बिरानो पेटु भरै अप्राधी ॥ (1253-7)
बाटि घाटि ग्रिहि बनि बनि जोहै ॥ (392-9)
बाण बेधंच कुरंक नादं अलि बंधन कुसम बासनह ॥ (708-12)
बाणी उचरहि साध जन अमिउ चलहि झरणे ॥ (320-7)
बाणी गुर गाई परम गति पाई पंच मिले सोहाइआ ॥ (773-6)
बाणी गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ राम ॥ (442-16)
बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अम्रितु सारे ॥ (982-10)
बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ (920-7)
बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ (920-5)
बाणी तेरी स्रवणि सुणीऐ ॥ (1076-17)
बाणी नामदेउ जीउ की रामकली घरु १ (972-12)
बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥ (294-3)
बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ ॥ (935-12)
बाणी बूझै सचि समावै ॥ (412-12)
बाणी ब्रहमा बेदु अथरबणु करणी कीरति लहिआ ॥५॥ (903-2)
बाणी ब्रहमा वेदु धरमु द्रिड़हु पाप तजाइआ बलि राम जीउ ॥ (773-17)
बाणी मंत्रु महा पुरखन की मनहि उतारन मांन कउ ॥ (1208-8)
बाणी राम नाम सुणी सिधि कारज सभि सुहाए राम ॥ (443-7)
बाणी रोकिआ रहै दुआर ॥ (344-12)
बाणी लागै सो गति पाए सबदे सचि समाई ॥२१॥ (909-19)
बाणी वजी चहु जुगी सचो सचु सुणाइ ॥ (35-9)
बाणी वजै सबदि वजाए गुरमुखि भगति थाइ पावणिआ ॥५॥ (122-2)
बाणी सधने की रागु बिलावलु (858-13)
बाणी सुरति न बुझनी सबदि न करहि प्रगासु ॥ (1415-3)

बाणीए के घर हींगु आछै भैसर माथै सींगु गो ॥ (718-17)
बात चीत सभ रही सिआनप ॥ (258-12)
बातन ही असमानु गिरावहि ॥१॥ (332-4)
बातन ही बैकुंठ समाना ॥१॥ (325-8)
बातन ही बैकुंठु बखानां ॥१॥ (1161-11)
बाती सूकी तेलु निखूटा ॥ (478-10)
बाद साद अहंकार महि मरणा नही सूझै ॥१॥ (809-12)
बादल बिनु बरखा होई ॥ (657-11)
बादि कारा सभि छोडीआ साची तरु तारी ॥७॥ (1011-7)
बादिसाह ऐसी किउ होइ ॥ (1165-15)
बादिसाह बेनती सुनेहु ॥ (1165-19)
बादिसाह साह उमराव खान ढाहि डेरे जासी ॥ (1100-9)
बादिसाह साह वापारी मरना ॥ (740-3)
बादिसाह साह सभ वसि करि दीने ॥ (201-7)
बादिसाहु चड़्हिओ अहंकारि ॥ (1165-16)
बादिसाहु महल महि जाइ ॥ (1166-7)
बादी बिनसहि सेवक सेवहि गुर कै हेति पिआरी ॥२१॥ (911-12)
बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै ॥ (1164-3)
बाधिओ आपन हउ हउ बंधा ॥ (258-11)
बाधिओ जिउ नलिनी भ्रमि सूआ ॥ (255-4)
बाधी धंधि अंध नही सूझै बधिक करम कमावै ॥ (1274-6)
बाधे आवहि बाधे जावहि सोझी बूझ न काई हे ॥७॥ (1023-19)
बाधे जम की जेवरी मीठी माइआ रंग ॥ (252-3)
बाधे मुकति नाही जुग चारे जमकंकरि कालि पराता हे ॥९॥ (1031-16)
बाधे मुकति नाही नर निंदक डूबहि निंद पराई हे ॥११॥ (1026-7)
बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै अगनि दहै काइआ कलपु कीजै ॥ (973-10)
बापारि गोविंद नाए ॥ (408-11)
बापि दिलासा मेरो कीन्हा ॥ (476-6)
बापु दिसै वेजाति न होइ ॥ (796-3)
बापु सावका करै लराई माइआ सद मतवारी ॥ (482-8)
बापु हमारा सद चरंजीवी ॥ (1141-9)
बाबरवाणी फिरि गई कुइरु न रोटी खाइ ॥५॥ (417-9)
बाबा अब न बसउ इह गाउ ॥ (1104-9)
बाबा अलहु अगम अपारु ॥ (53-10)
बाबा आइआ है उठि चलणा अध पंधै है संसारोवा ॥ (581-8)
बाबा आइआ है उठि चलणा इहु जगु झूठु पसारोवा ॥ (581-17)
बाबा आदम कउ किछु नदरि दिखाई ॥ (1161-7)

बाबा आवहु भाईहो गलि मिलह मिलि मिलि देह आसीसा हे ॥ (582-1)
बाबा एहु लेखा लिखि जाणु ॥ (16-6)
बाबा ऐसा बिखम जालि मनु वासिआ ॥ (1331-4)
बाबा ऐसी रवत रवै संनिआसी ॥ (1012-17)
बाबा गोरखु जागै ॥ (877-10)
बाबा जगु फाथा महा जालि ॥ (1009-12)
बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥ (918-1)
बाबा जुगता जीउ जुगह जुग जोगी परम तंत महि जोगं ॥ (359-19)
बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥ (12-17)
बाबा तूं ऐसे भरमु चुकाही ॥ (162-7)
बाबा देहि वसा सच गावा ॥ (993-13)
बाबा नांगड़ा आइआ जग महि दुखु सुखु लेखु लिखाइआ ॥ (582-4)
बाबा नानक प्रभ सरणाई ॥ (623-7)
बाबा नानकु आखै एहु बीचारु ॥२॥११॥ (886-1)
बाबा बिखु देखिआ संसारु ॥ (382-9)
बाबा बोलते ते कहा गए देही के संगि रहते ॥ (480-11)
बाबा बोलना किआ कहीऐ ॥ (870-2)
बाबा बोलीऐ पति होइ ॥ (15-11)
बाबा मनि साचा मुखि साचा कहीऐ तरीऐ साचा होई ॥ (1328-4)
बाबा मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रंग रचि रहिआ ॥ (360-6)
बाबा माइआ भरमि भुलाइ ॥ (60-17)
बाबा माइआ मोह हितु कीन्ह ॥ (482-16)
बाबा माइआ रचना धोहु ॥ (15-4)
बाबा माइआ साथि न होइ ॥ (595-11)
बाबा मूरखु हा नावै बलि जाउ ॥ (1015-15)
बाबा मै करमहीण कूड़िआर ॥ (989-6)
बाबा मै कुचीलु काचउ मतिहीन ॥ (1010-5)
बाबा मै वरु देहि मै हरि वरु भावै तिस की बलि राम जीउ ॥ (763-13)
बाबा रोवहि रवहि सु जाणीअहि मिलि रोवै गुण सारेवा ॥ (581-14)
बाबा रोवहु जे किसै रोवणा जानीअड़ा बंधि पठाइआ है ॥ (582-8)
बाबा लगनु गणाइ हं भी वंञा साहुरै बलि राम जीउ ॥ (763-16)
बाबा सचड़ा मेलु न चुकई प्रीतम कीआ देह असीसा हे ॥ (582-2)
बाबा साचा साहिबु दूरि न देखु ॥ (992-5)
बाबा साचा साहिबु रिदै समालि ॥ (994-11)
बाबा होर मति होर होर ॥ (17-4)
बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥ (16-13)
बाबा होरु चड़णा खुसी खुआरु ॥ (16-18)

बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु ॥ (16-16)
बाबा होरु सउणा खुसी खुआरु ॥ (17-2)
बाबाणीआ कहाणीआ पुत सपुत करेनि ॥ (951-5)
बाबीहा अम्रित वेलै बोलिआ तां दरि सुणी पुकार ॥ (1285-3)
बाबीहा इव तेरी तिखा न उतरै जे सउ करहि पुकार ॥ (1285-5)
बाबीहा एहु जगतु है मत को भरमि भुलाइ ॥ (1283-2)
बाबीहा किआ बपुड़ा जगतै की तिख जाइ ॥१॥ (1283-12)
बाबीहा खसमै का महलु न जाणही महलु देखि अरदासि पाइ ॥ (1283-10)
बाबीहा खिनु खिनु बिललाइ ॥ (1262-10)
बाबीहा गुणवंती महलु पाइआ अउगणवंती दूरि ॥ (1283-18)
बाबीहा जल महि तेरा वासु है जल ही माहि फिराहि ॥ (1282-6)
बाबीहा जिस नो तू पूकारदा तिस नो लोचै सभु कोइ ॥ (1281-3)
बाबीहा तूं सचु चउ सचे सउ लिव लाइ ॥ (1419-18)
बाबीहा तूं सहजि बोलि सचै सबदि सुभाइ ॥ (1420-2)
बाबीहा ना बिललाइ ना तरसाइ एहु मनु खसम का हुकमु मंनि ॥ (1282-5)
बाबीहा प्रिउ प्रिउ करे जलनिधि प्रेम पिआरि ॥ (1419-16)
बाबीहा प्रिउ बोले कोकिल बाणीआ ॥ (1107-6)
बाबीहा बेनती करे करि किरपा देहु जीअ दान ॥ (1284-1)
बाबीहा भिंनी रैणि बोलिआ सहजे सचि सुभाइ ॥ (1283-12)
बाबीहा सगली धरती जे फिरहि ऊडि चड़हि आकासि ॥ (1420-9)
बाबीहे कूक पुकार रहि गई सुखु वसिआ मनि आइ ॥ (1284-14)
बाबीहे तनि मनि सुखु होइ जां ततु बूंद मुहि पाइ ॥ (1420-6)
बाबीहै हुकमु पछाणिआ गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (1284-13)
बाबुल कै घरि बेटड़ी बाली बालै नेहि ॥ (935-10)
बाबुलि दितड़ी दूरि ना आवै घरि पेईऐ बलि राम जीउ ॥ (764-1)
बाबुलु मेरा वड समरथा करण कारण प्रभु हारा ॥ (778-2)
बामणु बिरथा गइओ जनमु जिनि कीतो सो विसरे ॥४॥ (1425-5)
बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥१॥ रहाउ ॥ (324-17)
बामन के घर रांडी आछै रांडी सांडी हांडी गो ॥१॥ (718-16)
बारं बार नराइण गाइण ॥ (868-5)
बारं बार बार प्रभु जपीऐ ॥ (286-3)
बारं बार माइआ ते अटकै लै नरजा मनु तोलै देव ॥१॥ (857-16)
बार अंत की होइ सहाइ ॥ (1187-5)
बार बार खिनु खिनु पलु कहीऐ हरि पारु न पावै परै परईआ ॥५॥ (834-7)
बार बार खिनु पल सभि गावहि गुन कहि न सकहि प्रभ तुमनथे ॥१॥ (1320-2)
बार बार हरि के गुन गावउ ॥ (344-9)
बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥ (266-19)

बारनै बलिहारनै लख बरीआ ॥ (211-5)
बारसि बारह उगवै सूर ॥ (344-3)
बारह अंतरि एकु सरेवहु खटु दरसन इक पंथा ॥ (939-5)
बारह जोजन छत्रु चलै था देही गिरझन खाई ॥२॥ (693-1)
बारह बरस बालपन बीते बीस बरस कछु तपु न कीओ ॥ (479-10)
बारह महि जोगी भरमाए संनिआसी छिअ चारि ॥ (941-19)
बारह महि रावल खपि जावहि चहु छिअ महि संनिआसी ॥ (1332-4)
बारह माहा मांझ महला ५ घरु ४ (133-5)
बारहा कंचनु सुधु कराइआ ॥ (1074-14)
बारि जाउ गुर अपुने ऊपरि जिनि हरि हरि नामु द्रिड़्हाया ॥ (672-14)
बारि जाउ लख बेरीआ दरसु पेखि जीवावउ ॥१॥ (813-14)
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥ (135-17)
बारि बारि जाउ संत सदके ॥ (255-18)
बारि विडानड़ै हुमस धुमस कूका पईआ राही ॥ (520-13)
बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चात्रिक मुख जैसे जलधरा ॥ (693-14)
बारिक ते बिरधि भइआ होना सो होइआ ॥ (481-19)
बारिक वांगी हउ सभ किछु मंगा ॥ (99-2)
बारिजु करि दाहिणै सिधि सनमुख मुखु जोवै ॥ (1394-1)
बारू की भीति जैसे बसुधा को राजु है ॥१॥ (1352-5)
बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि ॥ (633-3)
बारे बूढे तरुने भईआ सभहू जमु लै जईहै रे ॥ (855-8)
बाल कंनिआ कौ बापु पिआरा भाई कौ अति भाई ॥ (596-2)
बाल घातनी कपटहि भरी ॥ (874-10)
बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥ (1428-7)
बाल बिनोद चिंद रस लागा खिनु खिनु मोहि बिआपै ॥ (93-6)
बाल बिवसथा ते बिरधाना ॥ (389-6)
बाल बिवसथा बारिकु अंध ॥ (889-19)
बाल बुधि पूरन सुखदाता नानक हरि हरि टेक ॥२॥८॥१३॥ (714-13)
बाल सखाई भगतन को मीत ॥ (863-2)
बाल सहाई सोई तेरा जो तेरै मनि भावणा ॥१२॥ (1086-12)
बाल सुभाइ अतीत उदासी ॥ (1076-11)
बालक बिरधि न जाणनी तोड़नि हेतु पिआरो ॥४॥ (580-15)
बालक बिरधि न सुरति परानि ॥ (414-11)
बालक राखि लीए गुरदेवि ॥ (866-13)
बालक राखे अपने कर थापि ॥१॥ (1184-14)
बालकु बिरधि न जाणीऐ निहचलु तिसु दरवारु ॥ (47-2)
बालकु मरै बालक की लीला ॥ (1027-2)

बालमीकु सुपचारो तरिओ बधिक तरे बिचारे ॥ (999-5)
बालमीकै होआ साधसंगु ॥ (1192-3)
बाली रोवै नाहि भतारु ॥ (954-5)
बालू कनारा तरंग मुखि आइआ ॥ (390-12)
बावन अखर जोरे आनि ॥ (342-19)
बावन अखर सोधि कै हरि चरनी चितु लाइ ॥१७३॥ (1373-15)
बावन अछर लोक त्रै सभु कछु इन ही माहि ॥ (340-2)
बावन कोटि जा कै रोमावली ॥ (1163-6)
बावन बीखू बानै बीखे बासु ते सुख लागिला ॥ (1351-5)
बावन रूपु कीआ तुधु करते सभ ही सेती है चंगा ॥३॥ (1082-9)
बावर सोइ रहे ॥१॥ रहाउ ॥ (406-15)
बावरे तै गिआन बीचारु न पाइआ ॥ (793-2)
बावलि होई सो सहु लोरउ ॥ (794-10)
बावै मारगु टेढा चलना ॥ (185-13)
बास बासरी एकै सुआमी उदिआन द्रिसटागिओ ॥ (215-2)
बासउ संगि गुपाल सगल सुख रासि हरि ॥ (1362-5)
बासक कोटि सेज बिसथरहि ॥ (1163-2)
बासन मांजि चरावहि ऊपरि काठी धोइ जलावहि ॥ (476-3)
बासन मेटि निबासन होईऐ कलमल सगले जालका ॥७॥ (1085-3)
बासन रोगि भवरु बिनसानो ॥ (1140-18)
बासनु कारो परसीऐ तउ कछु लागै दागु ॥१३१॥ (1371-10)
बासि रहिओ हीअरे कै संगे पेखि मोहिओ मनु लीला ॥१॥ रहाउ ॥ (498-16)
बासुदेव निरंजन दाते बरनि न साकउ गुण अंगा ॥५॥ (1082-11)
बासुदेव बसत सभ ठाइ ॥ (897-4)
बाह पकड़ि गुरि काढिआ सोई उतरिआ पारि ॥३॥ (44-9)
बाह पकड़ि तम ते काढिआ करि अपुना लीना राम ॥ (848-14)
बाह पकड़ि तिसु सुआमी मेलै जिस कै मसतकि लहणा ॥२॥ (109-3)
बाह पकड़ि प्रभि काढिआ कीना अपनइआ ॥ (817-11)
बाह पकड़ि रोगहु कढि लइआ ॥ (1141-2)
बाह पकरि कढि लीने अपुने ग्रिह अंध कूप ते माइआ ॥ (1218-18)
बाह पकरि प्रभि आपे काढे ॥ (744-8)
बाह पकरि प्रिअ सेजै आनी ॥१॥ (372-8)
बाह पकरि भवजलु निसतारिओ ॥२॥ (1185-1)
बाह पकरि लीनो करि अपना ॥ (184-19)
बाहर का मासु मंदा सुआमी घर का मासु चंगेरा ॥ (1290-2)
बाहर भेखि न पाईऐ प्रभु अंतरजामी ॥ (1099-7)
बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी ॥ (919-16)

बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ (919-13)
बाहरहु पंडित सदाइदे मनहु मूरख गावार ॥ (1091-15)
बाहरहु हउमै कहै कहाए ॥ (412-7)
बाहरि अनेक धरि हां ॥ (409-11)
बाहरि कंचनु बारहा भीतरि भरी भंगार ॥१४५॥ (1372-5)
बाहरि काढि बिखु पसरीआ पिआरे माइआ मोहु वधाइआ ॥ (640-15)
बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥ (267-12)
बाहरि जनमु भइआ मुखि लागा सरसे पिता मात थीविआ ॥ (76-13)
बाहरि जनेऊ जिचरु जोति है नालि ॥ (355-3)
बाहरि जातउ उलटि परावै ॥५॥ (414-2)
बाहरि जाता भीतरि आनै ॥ (1160-3)
बाहरि जातो भीतरि आणै ॥ (840-10)
बाहरि जातौ ठाकि रहावै गुरमुखि सहजि समावै ॥४॥ (1332-15)
बाहरि जादा घर महि आणिआ ॥२॥ (1175-12)
बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥ (102-4)
बाहरि ढूंढि विगुचीऐ घर महि वसतु सुथाइ ॥ (63-3)
बाहरि ढूढत बहुतु दुखु पावहि घरि अम्रितु घट माही जीउ ॥ रहाउ ॥ (598-5)
बाहरि ढूढन ते छूटि परे गुरि घर ही माहि दिखाइआ था ॥ (1002-3)
बाहरि दिसै चानणा दिलि अंधिआरी राति ॥५०॥ (1380-10)
बाहरि देव पखालीअहि जे मनु धोवै कोइ ॥ (489-5)
बाहरि धोती तूमड़ी अंदरि विसु निकोर ॥ (789-10)
बाहरि पाखंड सभ करम करहि मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥ (1417-19)
बाहरि बहै पंचा विचि तपा सदाए ॥ (315-19)
बाहरि बैलु गोनि घरि आई ॥४॥ (481-14)
बाहरि भसम लेपन करे अंतरि गुबारी ॥ (1243-3)
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ॥ (684-16)
बाहरि भीतरि भइआ प्रगासु ॥ (344-18)
बाहरि भीतरि सदा प्रगास ॥४॥ (343-11)
बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥ (267-11)
बाहरि भेख करहि घनेरे ॥ (372-17)
बाहरि भेख न काहू भीन ॥ (269-8)
बाहरि भेख बहुतु चतुराई मनूआ दह दिसि धावै ॥ (732-9)
बाहरि मलु धोवै मन की जूठि न जाए ॥ (88-16)
बाहरि मूलि न खोजीऐ घर माहि बिधाता ॥ (953-8)
बाहरि राखिओ रिदै समालि ॥ (197-10)
बाहरि सूतु सगल सिउ मउला ॥ (384-16)
बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिधि बिकार ॥ (346-14)

बाहरु खोजि मुए सभि साकत हरि गुरमती घरि पाइआ ॥३॥ (1191-13)
बाहरु धोइ अंतरु मनु मैला दुइ ठउर अपुने खोए ॥ (381-3)
बाहरु भाले सु किआ लहै वथु घरै अंदरि भाई ॥ (425-16)
बाहुड़ि जनमु न होइ है मरणा ॥१॥ रहाउ ॥ (154-12)
बिंजन भोजन अनिक परकार ॥ (373-15)
बिंदक गाल्हि सुणी सचे तिसु धणी ॥ (397-5)
बिंदहि बिंदि न बिछुरन पावा ॥ (341-19)
बिंदु ते जिनि पिंडु कीआ अगनि कुंड रहाइआ ॥ (481-17)
बिंदु न राखहि जती कहावहि ॥ (903-11)
बिंदु न राखिआ सबदु न भाखिआ ॥ (945-4)
बिंदु रकतु मिलि पिंडु सरीआ ॥ (1026-18)
बिंदु राखि जौ तरीऐ भाई ॥ (324-7)
बिंद्राबन मन हरन मनोहर क्रिसन चरावत गाऊ रे ॥ (338-5)
बिआ दरु नाही कै दरि जाउ ॥ (25-9)
बिआपत अह्मबुधि का माता ॥ (182-3)
बिआपत करता अलिपतो करता ॥१॥ (862-5)
बिआपत करम करै हउ फासा ॥ (182-5)
बिआपत गीत नाद सुणि संगा ॥ (182-4)
बिआपत धन निरधन पेखि सोभा ॥ (182-1)
बिआपत पुत्र कलत्र संगि राता ॥ (182-3)
बिआपत भूमि रंक अरु रंगा ॥ (182-4)
बिआपत रूप जोबन मद मसता ॥२॥ (182-4)
बिआपत सुरग नरक अवतार ॥ (182-1)
बिआपत सेज महल सीगार ॥ (182-5)
बिआपत हरख सोग बिसथार ॥ (182-1)
बिआपत हसति घोड़े अरु बसता ॥ (182-3)
बिआपति गिरसत बिआपत उदासा ॥ (182-6)
बिआपारी बसुधा जिउ फिरता ॥ (255-5)
बिआपिक राम सगल सामान ॥१४॥ (344-5)
बिआपै दुखु न कोइ हां ॥ (410-9)
बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२॥ (658-15)
बिआस बीचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२॥ (1106-17)
बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ नाम की नामना सपत दीपा ॥१॥ (1293-10)
बिकल माइआ संगि धंध ॥ (1306-8)
बिकार पाथर गलहि बाधे निंद पोट सिराइ ॥ (1001-16)
बिकार माइआ मादि सोइओ सूझ बूझ न आवै ॥ (408-6)
बिखई दिनु रैनि इव ही गुदारै ॥ (1205-10)

बिखड़ा थानु न दिसै कोई ॥ (107-2)
बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतिगुरु सुख सहज सेती घरि जाते ॥३॥ (1185-13)
बिखना घिरीआ ॥ (746-6)
बिखम गार्ह करु पहुचै नाही संत सानथ भए लूटा ॥१॥ (1210-15)
बिखम घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसं ॥ (92-10)
बिखम थान बसंत ऊचह नह सिमरंत मरणं कदांचह ॥ (1354-10)
बिखम थान बहुत बहु धरीआ अनिक राख सूरूटा ॥ (1210-14)
बिखम थानहु जिनि रखिआ तिसु तिलु न विसारि ॥ (706-8)
बिखम भउ तिन तरिआ सुहेला जिन हरि हरि नामु धिआइआ ॥ (1114-12)
बिखम सथान मन मोह मदिरं महां असाध पंच तसकरह ॥ (1359-8)
बिखम सागरु तेई जन तरे ॥ (193-11)
बिखमु भुइअंगा अनत तरंगा गुरमुखि पारि लंघाए ॥ (575-9)
बिखमो बिखमु अखाड़ा मै गुर मिलि जीता राम ॥ (453-1)
बिखयंत जीवं वस्यं करोति निरत्यं करोति जथा मरकटह ॥ (1358-6)
बिखया भयंति अम्रितं द्रुसटां सखा स्वजनह ॥ (1357-5)
बिखारी निरारी अपारी सहजारी साधसंगि नानक पीकी रे ॥२॥४॥१३३॥ (404-14)
बिखिअन सिउ अति लुभानि मति नाहिन फेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (1352-12)
बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदासु ॥ (1426-11)
बिखिआ अंदरि पचि मुए ना उरवारु न पारु ॥३॥ (30-11)
बिखिआ अजहु सुरति सुख आसा ॥ (330-6)
बिखिआ अम्रितु एकु है बूझै पुरखु सुजाणु ॥४८॥ (937-5)
बिखिआ कदे ही रजै नाही मूरख भुख न जाई ॥ (1287-9)
बिखिआ का धनु बहुतु अभिमानु ॥ (666-5)
बिखिआ का सभु धंधु पसारु ॥ (1145-3)
बिखिआ कारणि लबु लोभु कमावहि दुरमति का दोराहा हे ॥९॥ (1056-1)
बिखिआ की बासना मनहि करेइ ॥ (1172-9)
बिखिआ कै धनि सदा दुखु होइ ॥ (665-15)
बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥ (135-15)
बिखिआ बन ते जीउ उधारहु ॥ (1004-14)
बिखिआ बिआपिआ सगल संसारु ॥ (328-6)
बिखिआ बिखु जिउ बिसारि प्रभ कौ जसु हीए धारि ॥ (1352-10)
बिखिआ मलु जाइ अम्रित सरि नावहु गुर सर संतोखु पाइआ ॥८॥ (1043-6)
बिखिआ महि किन ही त्रिपति न पाई ॥ (672-4)
बिखिआ माइआ जिनि जगतु भुलाइआ साचा नामु न भाइआ ॥ (570-8)
बिखिआ माते किछु सूझै नाही फिरि फिरि जूनी आवणिआ ॥१॥ (128-2)
बिखिआ माते भरमि भुलाए उपदेसु कहहि किसु भाई ॥१९॥ (909-18)
बिखिआ माहि उदास है हउमै सबदि जलाइआ ॥ (852-11)

बिखिआ मैलु बिखिआ वापारु ॥ (1262-13)
बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥ (134-11)
बिखिआ राता बहुतु दुखु पावै ॥ (231-3)
बिखिआ राते दुखु कमावहि दुखे दुखि समाइदा ॥११॥ (1059-6)
बिखिआ राते बिखिआ खोजै मरि जनमै दुखु ताहा हे ॥१३॥ (1057-7)
बिखिआ लै डूबी परवारु ॥१॥ (328-7)
बिखिआ लोभि लुभाए भरमि भुलाए ओहु किउ करि सुखु पाए ॥ (246-18)
बिखिआसकत रहिओ निस बासुर नह छूटी अधमाई ॥१॥ (632-15)
बिखिआसकत रहिओ निसि बासुर कीनो अपनो भाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1232-1)
बिखु अम्रितु करतारि उपाए ॥ (1172-7)
बिखु अम्रितु दुइ सम करि जाणु ॥१॥ (1328-14)
बिखु अम्रितु बसहि इक संगा ॥२॥ (525-12)
बिखु का कीड़ा बिखु महि राता बिखु ही माहि पचावणिआ ॥४॥ (127-13)
बिखु का कीड़ा बिखु सिउ लागा बिस्टा माहि समाई ॥ (571-2)
बिखु का माता आवै जाइ ॥२॥ (1192-17)
बिखु का माता जग सिउ लूझै ॥६॥ (414-3)
बिखु का माता बिखु माहि समाई ॥३॥ (232-2)
बिखु का मारणु हरि नामु है गुर गरुड़ सबदु मुखि पाइ ॥ (1415-6)
बिखु का राता बिखु कमावै सुखु न कबहू पाइआ ॥१३॥ (1067-17)
बिखु की कार कमावणी बिखु ही माहि समाहि ॥ (36-7)
बिखु खाणा बिखु पैनणा बिखु के मुखि गिरास ॥ (586-12)
बिखु खाणा बिखु बोलणा बिखु की कार कमाइ ॥ (1331-5)
बिखु खाधी मनमुखु मुआ माइआ मोहि विणासु ॥ (949-12)
बिखु खावै बिखु बोली बोलै बिनु नावै निहफलु मरि भ्रमना ॥१॥ रहाउ ॥ (1127-11)
बिखु ठगउरी खाइ मूठो चिति न सिरजनहार ॥ (1229-5)
बिखु ते अम्रितु हयउ नामु सतिगुर मुखि भणिअउ ॥ (1399-10)
बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ ॥ (487-11)
बिखु फल संचि भरे मन ऐसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥२॥ (487-13)
बिखु फलु मीठा चारि दिन फिरि होवै ताता राम ॥ (438-19)
बिखु बिखिआ पसरी अति घनी ॥ (210-14)
बिखु बिहाझहि बिखु मोह पिआसे कूड़ु बोलि बिखु खावणिआ ॥७॥ (120-7)
बिखु बोहिथा लादिआ दीआ समुंद मंझारि ॥ (1009-11)
बिखु भउजल डुबदे कढि लै जन नानक की अरदासि ॥४॥१॥६५॥ (40-3)
बिखु भउजल डुबदे काढि लेहु प्रभ गुर नानक बाल गुपाल ॥४॥२॥ (1335-19)
बिखु महि अम्रितु सिंचीऐ बिखु का फलु पाइआ ॥ (1244-3)
बिखु माइआ कारणि भरमदे फिरि घरि घरि पति गवाइ ॥ (1415-11)
बिखु माइआ चितु मोहिआ भाई चतुराई पति खोइ ॥ (637-1)

बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंति होइ सभु छारु ॥ (1423-15)
बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंते होइ सभु छारु ॥ (552-1)
बिखु माइआ महि ना ओइ खपते ॥ (257-19)
बिखु माइआ मोहु न मिटई विचि हउमै आवणु जाणु ॥ (1417-9)
बिखु माइआ संचि बहु चितै बिकार सुखु पाईऐ हरि भजु संत संत संगती मिलि सतिगुरू गुरु साधो ॥ (1297-14)
बिखु माते का ठउर न ठाउ ॥२॥ (196-8)
बिखु संचै नित डरता फिरै ॥ (1139-9)
बिखु संचै हटवाणीआ बहि हाटि कमाइ ॥ (166-10)
बिखु से अम्रित भए गुरमति बुधि पाई ॥ (565-13)
बिखु हउमै ममता परहराइ ॥ (1169-16)
बिखै कउड़तणि सगल माहि जगति रही लपटाइ ॥ (320-14)
बिखै ठगउरी खाइ भुलाना माइआ मंदरु तिआगि गइआ ॥१॥ (900-9)
बिखै ठगउरी जिनि जिनि खाई ॥ (199-8)
बिखै दलु संतनि तुम्हरै गाहिओ ॥ (1303-2)
बिखै नाद करन सुणि भीना ॥ (738-18)
बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए नामु महा रसु पीओ ॥ (802-18)
बिखै बाचु हरि राचु समझु मन बउरा रे ॥ (335-19)
बिखै बिआधि के गाव महि बासु ॥ (894-12)
बिखै बिकार दुसट किरखा करे इन तजि आतमै होइ धिआई ॥ (23-17)
बिखै बिखै की बासना तजीअ नह जाई ॥ (855-19)
बिखै बिलास कहीअत बहुतेरे चलत न कछू संगारै ॥ (713-11)
बिखै रस भोग अम्रित सुख सागर राम नाम रसु पीवनि ॥१॥ रहाउ ॥ (1222-1)
बिखै रस सिउ आसकत मूड़े काहे सुख मानि ॥१॥ (1303-19)
बिखै राज ते अंधुला भारी ॥ (196-6)
बिखै रोग भै बंधन भागे मन निज घरि सुखु जानाना ॥१॥ (339-16)
बिगड़ रूपु मन महि अभिमानु ॥१॥ (374-1)
बिगरिओ कबीरा राम दुहाई ॥ (1158-12)
बिगसि बिगसि अपुना प्रभु गावहि ॥ (892-9)
बिगसिओ पेखि रंगु कसुमभ को पर ग्रिह जोहनि जाइओ ॥१॥ (712-6)
बिगसीध्यि बुधा कुसल थानं ॥ (1355-3)
बिगसै कमलु किरणि परगासै परगटु करि देखाइआ ॥१५॥ (1069-1)
बिगसै मनु होवै परगासा बहुरि न गरभै परना ॥१॥ (531-10)
बिघन गए हरि नाई ॥१॥ (627-12)
बिघन बिनासन सभि दुख नासन गुर चरणी मनु लागा ॥ (616-13)
बिघन बिनासन सभि दुख नासन सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ (622-3)
बिघनु न कोऊ लागता गुर पहि अरदासि ॥ (816-19)

बिघनु न लागै जपि अलख अभेव ॥१॥ (801-15)
बिघनु न लागै तिल का कोई कारज सगल सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (624-3)
बिघनु नाही गुरमुखि तरु तारी इउ भवजलु पारि लंघाई हे ॥१२॥ (1026-8)
बिचरते निरभयं सत्रु सैना धायंते गोपाल कीरतनह ॥ (1356-13)
बिचरदे फिरहि संसार महि हरि जी हुकामी ॥ (1099-9)
बिचरु संसार पूरन सभि काम ॥१॥ (196-14)
बिछुरत किउ जीवे ओइ जीवन ॥ (1268-18)
बिछुरत मरनु जीवनु हरि मिलते जन कउ दरसनु दीजै ॥ (1268-9)
बिछुरत मिलाइ गुर सेव रांगे ॥ (1172-12)
बिजुली चमकै होइ अनंदु ॥ (1162-7)
बिटवहि राम रमऊआ लावा ॥१॥ रहाउ ॥ (484-1)
बिदर दासी सुतु छोक छोहरा क्रिसनु अंकि गलि लावैगो ॥२॥ (1309-14)
बिदरु उधारिओ दासत भाइ ॥ (1192-6)
बिदरु दासी सुतु भइओ पुनीता सगले कुल उजारे ॥३॥ (999-7)
बिदारण कदे न चितो ॥ (1360-18)
बिदिआ कोटि सभै गुन कहै ॥ (1163-6)
बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥ (295-19)
बिदिआ न परउ बादु नही जानउ ॥ (855-12)
बिदिआ महि बिदुअंसी रचिआ नैन देखि सुखु पावहि ॥ (613-8)
बिदिआ सोधै ततु लहै राम नाम लिव लाइ ॥ (938-1)
बिद्यमान गुरि आपि थप्यउ थिरु साचउ तखतु गुरू रामदासै ॥६॥ (1404-19)
बिधवा कस न भई महतारी ॥१॥ (328-10)
बिनउ करउ कर जोड़ि हरि हरि नामु देहु ॥ (457-17)
बिनउ करउ करुणापते पिता प्रतिपाल ॥ (811-3)
बिनउ करी जे जाणा दूरि ॥ (737-8)
बिनउ करै नानकु कर जोरि ॥४॥७॥ (563-18)
बिनउ ठाकुर पहि कहीऐ जीउ ॥३॥ (217-8)
बिनउ सुनहु तुम पारब्रहम दीन दइआल गुपाल ॥ (258-9)
बिनउ सुनहु तुम प्रानपति पिआरे किरपा निधि दइआला ॥ (207-11)
बिनउ सुनहु प्रभ ऊच अपारे ॥ (203-17)
बिनउ सुनिओ जब ठाकुर मेरै बेगि आइओ किरपा धारे ॥ (1268-2)
बिनठी दुरमति दुरतु सोइ कूड़ावीआ ॥ (964-8)
बिनति करउ अरदासि सुनहु जे ठाकुर भावै ॥ (1386-19)
बिनवंत नानक आपि मिलिआ बहुड़ि कतहू न जाइआ ॥५॥४॥७॥ (547-4)
बिनवंत नानक इछ पुनी जपत दीन दैआला ॥४॥३॥ (249-9)
बिनवंत नानक कर देइ राखहु गोबिंद दीन दइआरा ॥४॥ (547-1)
बिनवंत नानक गुण गाइ जीवा हरि जपु जपउ बनवारीआ ॥३॥ (691-11)

बिनवंत नानक जिन साधसंगमु से पति सेती घरि जाही ॥२॥ (548-3)
बिनवंत नानक बिनु नाम हरि के सदा फिरत दुहेली ॥१॥ (546-10)
बिनवंत नानक बिनु साधसंगम सभ मिथिआ संसारी ॥१॥ (547-19)
बिनवंत नानक लेखु लिखिआ भरमि मोहि लुभाणी ॥२॥ (546-13)
बिनवंत नानक संजोगि भूला हरि जापु रसन न जापिआ ॥३॥ (546-17)
बिनवंति नानक आपि जाणै जिनि एह बणत बणाई ॥४॥२॥५॥ (545-12)
बिनवंति नानक आस तेरी सरणि साधू राखु नीचु ॥२॥ (458-3)
बिनवंति नानक इछ पुंनी पेखि दरसनु जीजै ॥४॥७॥१०॥ (784-10)
बिनवंति नानक ओट तेरी राखु पूरन काम जीउ ॥३॥ (928-7)
बिनवंति नानक करहु किरपा गोपाल गोबिंद माधो ॥१॥ (248-18)
बिनवंति नानक करहु किरपा पारब्रहम हरि राइआ ॥२॥ (249-2)
बिनवंति नानक करहु किरपा लैहु मोहि लड़ि लाइआ ॥१॥ (845-16)
बिनवंति नानक करहु किरपा समरथ सभ कल धारी ॥३॥ (249-5)
बिनवंति नानक करहु किरपा सोइ तुझहि पछानई ॥३॥ (925-10)
बिनवंति नानक करि दइआ दीजै हरि रतनु बाधउ पालै ॥३॥ (1312-10)
बिनवंति नानक कोटि कागर बिनस बार न झूठिआ ॥३॥ (705-14)
बिनवंति नानक गुर प्रसादी सदा हरि रंगु माणी ॥१॥ (453-6)
बिनवंति नानक गुर सरणि तरीऐ आपणे प्रभ भावा ॥४॥२॥ (453-16)
बिनवंति नानक गुरि भरमु खोइआ जत देखा तत सोई ॥३॥ (779-4)
बिनवंति नानक जन धूरि बांछहि हरि दरसि सहजि समाइण ॥२॥ (1312-7)
बिनवंति नानक टेक जन की चरण कमल अधारा ॥३॥ (461-12)
बिनवंति नानक टेक राखी जितु लगि तरिआ संसारे ॥४॥२॥ (248-13)
बिनवंति नानक तरै सागरु धिआइ सुआमी नरहरै ॥१॥ (925-16)
बिनवंति नानक दइआ धारहु काढि भवजल फेरिआ ॥१॥ (704-11)
बिनवंति नानक दइआ धारहु घरि आवहु नाह पिआरे ॥२॥ (247-13)
बिनवंति नानक दइआ धारहु तिसु परापति नामु होइ ॥३॥ (704-19)
बिनवंति नानक दइआ धारहु सदा हरि गुण गावा ॥२॥ (779-1)
बिनवंति नानक दइआ धारी मेलि लीने इक पले ॥४॥२॥ (705-4)
बिनवंति नानक दरस पिआसे मिलि दरसन सुखु सारा ॥१॥ (248-4)
बिनवंति नानक दासु तेरा मेरा प्रभु अगम अथाहा ॥२॥ (845-19)
बिनवंति नानक दासु तेरा सदा हरि सरणाई ॥२॥ (453-9)
बिनवंति नानक दासु तेरा सभि जीअ तेरे तू करता ॥२॥ (578-10)
बिनवंति नानक दासु हरि का प्रभ जीअ प्रान अधारी ॥२॥ (547-10)
बिनवंति नानक दिनसु रैणी सदा हरि हरि धिआईऐ ॥३॥ (578-13)
बिनवंति नानक धारि किरपा मिलहु प्रान पिआरे ॥१॥ (545-16)
बिनवंति नानक धारि किरपा मेलहु प्रभ गुणतास जीउ ॥५॥ (928-18)
बिनवंति नानक धारि किरपा रहउ चरणह संगि लगा ॥१॥ (544-8)

बिनवंति नानक धारि किरपा सदा हरि गुण गावीऐ ॥१॥ (691-5)
बिनवंति नानक धारि किरपा हरि चरण कमल निवासो ॥१॥ (545-2)
बिनवंति नानक धूरि साधू नामु प्रभू अमोलई ॥४॥१॥ (691-14)
बिनवंति नानक नामु प्रभ का गुर पूरे ते पाइआ ॥४॥२॥ (925-13)
बिनवंति नानक नित करहु रलीआ हरि मिले स्रीधर कंत जीउ ॥७॥ (929-10)
बिनवंति नानक नित नामु जपीऐ जीउ पिंडु जिनि धारिआ ॥४॥४॥७॥ (782-6)
बिनवंति नानक पैज राखहु सभ सेवक सरनि तुमारीआ ॥२॥ (248-7)
बिनवंति नानक प्रभ मइआ कीजै नामु तेरा जपि जीवा ॥३॥ (926-4)
बिनवंति नानक प्रभि आपि मेली तह न प्रेम बिछोह जीउ ॥६॥ (929-5)
बिनवंति नानक प्रभि आपि मेले फिरि नाही दूख विसूरिआ ॥४॥३॥ (926-8)
बिनवंति नानक प्रभि करी किरपा पूरा सतिगुरु पाइआ ॥२॥ (926-1)
बिनवंति नानक बलिहारि वंञा पारब्रहम प्रान अधारा ॥१॥ (846-10)
बिनवंति नानक बिनु नाम हरि के केतिआ पछुताने ॥३॥ (548-7)
बिनवंति नानक भई निरमल प्रभ मिले अबिनासी ॥३॥ (846-16)
बिनवंति नानक भरमहि भ्रमाए खिनु एकु टिकणु न पावही ॥२॥ (705-10)
बिनवंति नानक मइआ धारहु जुगु जुगो इक वेसु जीउ ॥८॥१॥६॥८॥ (929-16)
बिनवंति नानक मन इछ पाई हरि मिले पुरख चिराणे ॥३॥ (544-15)
बिनवंति नानक मिलि संगि साजन अमर पदवी पावह ॥२॥ (846-13)
बिनवंति नानक मिलि संगि साधू दिनसु रैणि चितारीऐ ॥१॥ (925-4)
बिनवंति नानक मिले सुआमी पुरख परमानंदा ॥४॥१॥ (1312-13)
बिनवंति नानक मिले स्रीधर सगल आनंद रसु बणिआ ॥२॥ (459-11)
बिनवंति नानक मेरी आस पूरन मिले स्रीधर गुण निधान ॥४॥१॥१४॥ (462-15)
बिनवंति नानक मेरी इछ पूरन मिले स्रीरंग रामा ॥३॥ (546-4)
बिनवंति नानक रंगि राती प्रेम सहजि समाणी ॥३॥ (459-14)
बिनवंति नानक राजु निहचलु पूरन पुरख भगवाना ॥३॥ (248-10)
बिनवंति नानक रासि जन की चरन कमलह आसरा ॥२॥ (925-7)
बिनवंति नानक सतिगुरि द्रिड़ाइआ सदा भजु जगदीसरै ॥४॥१॥३॥ (779-7)
बिनवंति नानक सदा गाईऐ पवित्र अम्रित बाणी ॥३॥ (545-9)
बिनवंति नानक सदा जागहि हरि दास संत पिआरे ॥१॥ (459-8)
बिनवंति नानक सदा निरमल सचु सबदु रुण झुणकारो ॥२॥ (545-6)
बिनवंति नानक सदा भजीऐ प्रभु एकु करणैहारा ॥२॥ (461-9)
बिनवंति नानक सदा सिमरी सरब दुख भै भंजनो ॥२॥ (691-8)
बिनवंति नानक सफलु सभु किछु प्रभ मिले अति पिआरे ॥४॥३॥६॥ (546-7)
बिनवंति नानक सभ संति मेली प्रभु करण कारण जोगो ॥३॥ (846-3)
बिनवंति नानक सरणि तेरी मिटी जम की त्रास जीउ ॥२॥ (928-2)
बिनवंति नानक सरणि तेरी रखि लेहु आवण जाणा ॥१॥ (543-12)
बिनवंति नानक सरणि तेरी राखु किरपा धारे ॥३॥ (453-13)

बिनवंति नानक सरणि सुआमी जीउ पिंडु प्रभ आगै ॥१॥ (778-18)
बिनवंति नानक सरणि सुआमी बडभागि दरसनु पाए ॥१॥ (1312-4)
बिनवंति नानक सरणि सुआमी बहुड़ि जमि न उपाड़ा ॥४॥३॥१२॥ (461-3)
बिनवंति नानक सरणि सुआमी संतसंगि लिव लागी ॥४॥१॥ (846-6)
बिनवंति नानक सरणि सुआमी सदा हरि जन तागे ॥४॥१॥१०॥ (459-17)
बिनवंति नानक सरनि तिन की जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥४॥१॥ (1278-14)
बिनवंति नानक सिमरि जीवा जनम मरण रहंत जीउ ॥१॥ (927-15)
बिनवंति नानक सिमरि सुआमी सगल आस पुजाइण ॥३॥ (460-19)
बिनवंति नानक सुख सहजि मेला प्रभू आपि बणाइआ ॥२॥ (460-16)
बिनवंति नानक सुखु नामि भगती दरि वजहि अनहद वाजे ॥४॥३॥ (578-16)
बिनवंति नानक सुणहु बिनती प्रभ करण कारण समरथा ॥१॥ (578-7)
बिनवंति नानक सुणि मंत्रु सखीए हरि नामु नित नित नित जपह ॥२॥ (544-11)
बिनवंति नानक सेई जाणहि जिन्ही हरि रसु पीआ ॥४॥२॥ (846-19)
बिनवंति नानक हरि कंतु पाइआ सदा मनि भावंदु जीउ ॥४॥ (928-13)
बिनवंति नानक हरि कंतु मिलिआ सदा केल करंदा ॥४॥१॥४॥ (544-18)
बिनवंति नानक हरि गुर दयारं ॥६४॥ (1359-19)
बिनवंति नानकु कंतु मिलिआ लोड़ते हम जैसा ॥३॥ (247-16)
बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥१॥ (922-19)
बिनवंति नानकु जाइ सहसा बुझै गुर बीचारा ॥ (567-8)
बिनवंति नानकु जिन नामु पलै सेई सचे साहा ॥३॥ (543-19)
बिनवंति नानकु दासु हरि का तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥८॥२॥ (567-13)
बिनवंति नानकु धारि किरपा साचि नामि समाईऐ ॥२॥ (704-15)
बिनवंति नानकु मेरी इछ पुंनी मिले जिसु खोजंती ॥१॥ (460-13)
बिनवंति नानकु वडभागि पाईअहि साध साजन मीता ॥२॥ (543-16)
बिनवंति नानकु वडभागि पाईऐ सूखि सहजि समाही ॥४॥४॥१३॥ (461-15)
बिनवंति नानकु सदा त्रिपते हरि नामु भोजनु खाइआ ॥४॥२॥३॥ (705-17)
बिनवंति नानकु सहजि रहै हरि मिलिआ कंतु सुखदाई ॥४॥१॥ (247-19)
बिनवंति नानकु सिमरि हरि हरि इछ पुंनी हमारी ॥४॥३॥ (544-3)
बिनवंति नानकु सुख सुखेदी सा मै गुर मिलि पाई ॥४॥१॥ (704-6)
बिनवति नानक ओट प्रभ तोरी ॥४॥१८॥६९॥ (388-3)
बिनसत नह लगै बार ओरे सम गातु है ॥१॥ रहाउ ॥ (1352-8)
बिनसत नाही छोडि न जाइ ॥ (240-11)
बिनसत बार न लागई जिउ कागद बूंदार ॥१॥ (808-4)
बिनसत बार न लागै काई ॥१॥ रहाउ ॥ (1345-11)
बिनसत बार न लागै बवरे हउमै गरबि खपै जगु ऐसा ॥१॥ रहाउ ॥ (1273-17)
बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥२॥ (487-7)
बिनसि गइओ ताप सभ सहसा गुरु सीतलु मिलिओ सहजि सुभाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (373-2)

बिनसि गई हउमै मति मेरी ॥ (1072-7)
बिनसि गए बिखिआ जंजाल ॥१॥ (1340-18)
बिनसि गए बिखै जंजाल ॥ (1272-16)
बिनसि गए सगले जंजाल ॥१॥ (1149-7)
बिनसि जाइ कूरा कचु पाचा ॥ (164-19)
बिनसि जाइ जो निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ ॥ रहाउ ॥ (677-17)
बिनसि जाइ झूठे सभि पाज ॥४॥ (240-6)
बिनसि जाइ ताहू लपटावै ॥१॥ रहाउ ॥ (178-12)
बिनसि जाइ मोह भै भरमा नानक संत प्रताप ॥२॥५॥४४॥ (1306-18)
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥ (289-3)
बिनसि जाइगो सगल आकारा ॥५॥ (237-13)
बिनसि जाहि माइआ के हेत ॥ (238-15)
बिनसि जाहि माइआ जंजाल ॥ (185-4)
बिनसि न जाइ मरि हां ॥ (410-1)
बिनसिओ अंधकार तिह मंदरि रतन कोठड़ी खुल्ही अनूपा ॥१॥ रहाउ ॥ (821-11)
बिनसिओ ढीठा अम्रितु वूठा सबदु लगो गुर मीठा ॥ (671-9)
बिनसिओ मन का मूरखु ढीठा ॥ (387-10)
बिनसे काच के बिउहार ॥ (1227-5)
बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ (1148-16)
बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ (1339-13)
बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ (1339-18)
बिनसे क्रोध खिमा गहि लई ॥७॥ (233-9)
बिनसे दुख सबाइआ ॥१॥ (629-8)
बिनसे बैर नाही को बैरी सभु एको है भालणा ॥१३॥ (1077-13)
बिनसे भ्रम मोह अंध टूटे माइआ के बंध पूरन सरबत्र ठाकुर नह कोऊ बैराई ॥ (1230-2)
बिनसे रोग भए कलिआन ॥१॥ (200-7)
बिनसै काची देह अगिआनी ॥ रहाउ ॥ (615-2)
बिनसै छिन मै साची मानु ॥१॥ (1187-4)
बिनसै दुखु बिपरीति ॥ (980-5)
बिनसै मोहु भरमु दुखु पीरै ॥१॥ रहाउ ॥ (1303-5)
बिनसै मोहु मेरा अरु तेरा बिनसै अपनी धारी ॥१॥ (616-16)
बिनसै सगल संतापु ॥ (895-17)
बिनसैगो रूपु देखै सभ दुनीआ ॥४॥११॥ (325-15)
बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥ (279-2)
बिना सतिगुर बूझ नाही तम मोह महां अंधार ॥२॥ (1229-5)
बिनु अपने नाहै कोइ न चाहै किआ कहीऐ किआ कीजै ॥ (1111-14)
बिनु अभ भगती बादि मरीजै ॥ (1027-10)

बिनु अभ सबद न मांजीऐ साचे ते सचु होइ ॥१॥ (56-1)
बिनु अमरै कैसे राज मंडित ॥ (1140-12)
बिनु असथन गऊ लवेरी ॥ (1194-5)
बिनु उपमा जगदीस की बिनसै न अंधिआरा ॥३॥ (228-15)
बिनु कंठै कैसे गावनहारी ॥ (1140-9)
बिनु कंत पिआरे नह सूख सारे हार कंङण ध्रिगु बना ॥ (928-16)
बिनु कण खलहानु जैसे गाहन पाइआ ॥ (1137-2)
बिनु करतूती मुकति न पाईऐ ॥ (201-3)
बिनु करमा किउ संगति पाईऐ हउमै बिआपि रहिआ मनु झूरि ॥३॥ (1198-12)
बिनु करमा किछू न पाईऐ जे बहुतु लोचाही ॥ (1092-1)
बिनु करमा किछू न लभई जे फिरहि सभ धरणा ॥ (1102-7)
बिनु करमा सभ भरमि भुलाई ॥ (1175-3)
बिनु करमा होर फिरै घनेरी ॥ (1067-17)
बिनु करमै नाउ न पाईऐ पूरै करमि पाइआ जाइ ॥ (648-11)
बिनु खाए बूझै नही भूख ॥ (1149-4)
बिनु गुण कामि न आवई ढहि ढेरी तनु खेह ॥१॥ (20-11)
बिनु गुण कामि न आवई माइआ फीका सादु ॥६॥ (61-18)
बिनु गुर अंतु न पाइ अभेवै ॥ (224-15)
बिनु गुर अंधुले धंधु रोइ ॥ (1170-4)
बिनु गुर अरथु बीचारु न पाइआ ॥ (154-13)
बिनु गुर इहु रसु किउ लहउ गुरु मेलै हरि देइ ॥ रहाउ ॥ (597-12)
बिनु गुर करणी किआ कार कमाइ ॥ (796-10)
बिनु गुर करम न छुटसी कहि सुणि आखि वखाणु ॥७॥ (56-10)
बिनु गुर किनै न पाइओ पचि मुए अजाणी ॥१७॥ (515-17)
बिनु गुर किनै न पाइओ बिरथा जनमु गवाइ ॥ (33-15)
बिनु गुर किनै न पाइओ हरि नामु हरि सते ॥ (1093-7)
बिनु गुर कोइ न रंगीऐ गुरि मिलिऐ रंगु चड़ाउ ॥ (427-3)
बिनु गुर गरबु न मेटिआ जाइ ॥ (225-4)
बिनु गुर गाठि न छूटई भाई थाके करम कमाइ ॥ (635-17)
बिनु गुर गिआन त्रिपति नही थीजै ॥ (905-11)
बिनु गुर गुण न जापनी बिनु गुण भगति न होइ ॥ (67-7)
बिनु गुर घाल न पवई थाइ ॥ (942-8)
बिनु गुर ततु न पाईऐ अलखु वसै सभ माहि ॥ (1093-1)
बिनु गुर त्रिपति नही बिखु खाइ ॥ (942-9)
बिनु गुर दाते किनै न पाइआ ॥ (1277-14)
बिनु गुर दाते कोइ न पाए ॥ (1057-9)
बिनु गुर दीखिआ कैसे गिआनु ॥ (1140-14)

बिनु गुर दुखु सुखु जापै नाही माइआ मोह दुखु भारी हे ॥९॥ (1050-16)
बिनु गुर न पावैगो हरि जी को दुआर ॥ (535-7)
बिनु गुर नामु न पाइआ जाइ ॥ (115-2)
बिनु गुर नीद न आवई दुखी रैणि विहाइ ॥ (31-19)
बिनु गुर पंथु न सूझई कितु बिधि निरबहीऐ ॥२॥ (229-3)
बिनु गुर परमेसर कोई नाही ॥ (1028-9)
बिनु गुर पारु न पावै कोई हरि जपीऐ पारि उतारा हे ॥११॥ (1030-15)
बिनु गुर पूछे जाइ पइआरी ॥२॥ (224-14)
बिनु गुर पूरे किनै न भाखी ॥ (1024-7)
बिनु गुर पूरे घोर अंधारु ॥१॥ (1270-6)
बिनु गुर पूरे जनम मरणु न रहई फिरि आवत बारो बारा ॥ रहाउ ॥ (611-1)
बिनु गुर पूरे नाही उधारु ॥ (886-1)
बिनु गुर पूरे भगति न होइ ॥ (363-13)
बिनु गुर पूरे मुकति न पाईऐ साची दरगहि साकत मूठु ॥१॥ रहाउ ॥ (1151-12)
बिनु गुर प्रीतम आपणे जीउ कउणु भरमु चुकाए ॥ (244-6)
बिनु गुर प्रीति न ऊपजै भाई मनमुखि दूजै भाइ ॥ (603-1)
बिनु गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैलु न जाइ ॥ (60-12)
बिनु गुर प्रेमु न पाईऐ सबदि मिलै रंगु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (58-14)
बिनु गुर प्रेमु न लभई जन वेखहु मनि निरजासि ॥ (996-13)
बिनु गुर बंधन टूटहि नाही गुरमुखि मोख दुआरा ॥ (602-2)
बिनु गुर बजर कपाट न खूलहि सबदि मिलै निसतारा हे ॥१०॥ (1027-6)
बिनु गुर बादि जीवणु होरु मरणा बिनु गुर सबदै जनमु जरे ॥९॥ (1014-8)
बिनु गुर बिसीअरु डसै मरि वाट ॥ (942-9)
बिनु गुर बूझे जम की फासी ॥ (1344-15)
बिनु गुर बूडो ठउर न पावै जब लग दूजी राई ॥३॥ (1330-13)
बिनु गुर भगति न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (31-17)
बिनु गुर भगति न भाउ होइ ॥ (1170-3)
बिनु गुर भगति नाही सुखु थीआ ॥४॥ (832-7)
बिनु गुर भरमि भूले बहु माइआ ॥ (1261-16)
बिनु गुर भरमै आवै जाइ ॥ (942-8)
बिनु गुर भेटे को महलु न पावै आइ जाइ दुखु पावैगो ॥६॥ (1310-11)
बिनु गुर भेटे जमु करे खुआरा ॥३॥ (230-11)
बिनु गुर भेटे दुखु कमाइ ॥ (361-16)
बिनु गुर भेटे मरि आईऐ जाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (686-6)
बिनु गुर भेटे मुकति न काहू मिलत नही जगदीसै ॥३॥ (1205-19)
बिनु गुर भेटे मुकति न होइ ॥४॥ (1277-15)
बिनु गुर मनूआ अति डोलाइ ॥ (942-9)

बिनु गुर मनूआ ना टिकै फिरि फिरि जूनी पाइ ॥ (313-9)
बिनु गुर महलु न जापई ना अम्रित फल पाहि ॥२॥ (66-4)
बिनु गुर महलु न पाईऐ नामु न परापति होइ ॥ (30-17)
बिनु गुर मुकति न आवै जावै ॥ (1040-19)
बिनु गुर मुकति न कोऊ पावै मनि वेखहु करि बीचारी ॥२॥ (495-11)
बिनु गुर मुकति न पाईऐ ना दुबिधा माइआ जाइ ॥५॥ (67-3)
बिनु गुर मुकति न पाईऐ भाई ॥४॥५॥७॥ (864-7)
बिनु गुर मुकति न होईऐ मीता ॥ (1019-10)
बिनु गुर मुकति नाही त्रै लोई गुरमुखि पाईऐ नामु हरी ॥१॥ रहाउ ॥ (1171-17)
बिनु गुर मूड़ भए है मनमुख ते मोह माइआ नित फाथा ॥ (696-5)
बिनु गुर मैल मलीन अंगु ॥ (1169-15)
बिनु गुर मैलु न उतरै बिनु हरि किउ घर वासु ॥ (18-16)
बिनु गुर राम नामु कत लहीऐ ॥ (416-1)
बिनु गुर राम नामु किउ धिआईऐ ॥ (1041-5)
बिनु गुर रोगु न तुटई हउमै पीड़ न जाइ ॥ (36-3)
बिनु गुर संत न संगु देइ ॥ (1170-4)
बिनु गुर सबद न आपु पछाणै बिनु हरि नाम न कालु टरे ॥५॥ (1014-3)
बिनु गुर सबद न गति पति पावहि राम नाम बिनु नरकि गइआ ॥४॥ (906-13)
बिनु गुर सबद न छूटसि कोइ ॥ (839-4)
बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥६॥ (419-4)
बिनु गुर सबद न छूटीऐ देखहु वीचारा ॥ (229-2)
बिनु गुर सबद न सवरसि काजा ॥७॥ (225-13)
बिनु गुर सबद न सोझी पाइ ॥६॥ (904-7)
बिनु गुर सबद नही घरु बारु ॥ (906-6)
बिनु गुर सबद मुकति कहा प्राणी राम नाम बिनु उरझि मरै ॥२॥ (1127-13)
बिनु गुर सबद मुकति नही कब ही अंधुले धंधु पसारा ॥३॥ (1127-8)
बिनु गुर सबदै जलि बलि ताता ॥ (945-3)
बिनु गुर सबदै मनु नही ठउरा ॥ (415-8)
बिनु गुर सबदै मुकति न होई परपंचु करि भरमाई हे ॥१०॥ (1024-3)
बिनु गुर साकतु कहहु को तरिआ ॥ (1030-15)
बिनु गुर साचे नही जाइ ॥ (1183-14)
बिनु गुर साचे भगति न होवी होर भूली फिरै इआणी ॥ (602-8)
बिनु गुर साचे भरमि भुलाए ॥ (231-12)
बिनु गुर सेवे घाटे घाटि ॥५॥ (226-10)
बिनु गुर सेवे बहुतु दुखु पाई ॥७॥ (230-15)
बिनु गुर सेवे सहजु न होवै ॥७॥ (414-4)
बिनु गुर सेवे सुखु न होवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥३॥ (115-2)

बिनु गुर सोझी किसै न होइ ॥ (1344-16)
बिनु गुर हरि नामु न किनै पाइआ मेरे भाई ॥ (591-7)
बिनु गुरदेउ अवर नही जाई ॥ (1167-6)
बिनु गोबिंद अवर संगि नेहा ओहु जाणहु सदा दुहेला ॥ (671-3)
बिनु गोबिंद न दीसै कोई ॥ (189-8)
बिनु गोविंद अवरु जे चाहउ दीसै सगल बात है खाम ॥ (713-8)
बिनु जगदीस कहा सचु पावउ ॥६॥ (225-12)
बिनु जगदीस कहा सुखु पावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (225-7)
बिनु जगदीस कहा सुखु भाला ॥२॥ (225-8)
बिनु जगदीस झूठे दिवाजे ॥५॥ (225-11)
बिनु जगदीस न राखै कोई ॥११॥ (225-4)
बिनु जगदीस भजे नित खुआरी ॥३॥ (225-9)
बिनु जड़ीए लै जड़िओ जड़ावा थेवा अचरजु लाइआ रे ॥२॥ (381-18)
बिनु जल कमल सु ना थीऐ बिनु जल मीनु मराइ ॥ (63-9)
बिनु जल घड़ी न जीवई प्रभु जाणै अभ पीर ॥२॥ (60-3)
बिनु जल प्रान तजे है मीना जिनि जल सिउ हेतु बढाइओ ॥ (670-18)
बिनु जल संगम मन महि न्हावउ ॥ (327-7)
बिनु जल सरवरि कमलु न दीसै ॥१॥ रहाउ ॥ (352-7)
बिनु जिहवा कहा को बकता ॥ (1140-11)
बिनु जिहवा जो जपै हिआइ ॥ (1256-10)
बिनु ठाहर नगरु बसाइआ ॥२॥ (655-15)
बिनु तकड़ी तोलै संसारा ॥ (110-13)
बिनु तागे बिनु सूई आनी मनु हरि भगती संगि सीवना ॥५॥ (1019-4)
बिनु तेल दीवा किउ जलै ॥१॥ रहाउ ॥ (25-17)
बिनु थमा राखे सचु कल पाए ॥ (1037-16)
बिनु दंता किउ खाईऐ सारु ॥ (940-1)
बिनु दम के सउदा नही हाट ॥ (226-9)
बिनु दरसन कैसे जीवउ मेरी माई ॥ (796-7)
बिनु दरसन कैसे रवउ सनेही ॥४॥५॥ (990-19)
बिनु दुआरे त्रै लोक समाइ ॥ (1167-10)
बिनु देखे उपजै नही आसा ॥ (1167-8)
बिनु देखे कहणा बिरथा जाइ ॥ (222-12)
बिनु नाम प्रीति पिआरु नाही वसहि साचि सुहेलीआ ॥ (242-11)
बिनु नाम हरि के आन रचना अहिला जनमु गवाईऐ ॥ (548-5)
बिनु नाम हरि के भरमि भूले पचहि मुगध अचेतिआ ॥ (439-10)
बिनु नाम हरि के मुकति नाही कहै नानकु दासु ॥४॥१॥६॥८॥ (663-3)
बिनु नामै मुकति किनै न पाई ॥ (1175-7)

बिनु नामै हउमै जलि जाई ॥३॥ (1176-1)
बिनु नावै इहु मनु न प्रबोधे ॥ (913-6)
बिनु नावै किआ जीवना फिटु ध्रिगु चतुराई ॥ (422-9)
बिनु नावै किआ टेक टिकीजै ॥ (1031-13)
बिनु नावै किआ लहसि निदानि ॥६॥ (414-12)
बिनु नावै किउ छूटीऐ जे जाणै कोई ॥ (420-14)
बिनु नावै किछु संगि न जाना ॥१॥ रहाउ ॥ (832-3)
बिनु नावै किनै न पाइआ देखहु रिदै बीचारि ॥ (89-10)
बिनु नावै कैसी पति तेरी ॥ (1031-15)
बिनु नावै कैसे पावहि पारा ॥२॥ (1129-5)
बिनु नावै को छूटै नाही सभ बाधी जमकालि ॥ (569-10)
बिनु नावै को बेली नाही पुतु कुट्मबु सुतु भाई ॥ (775-17)
बिनु नावै को रसु नही होरि चलहि बिखु लादि ॥१॥ (1010-17)
बिनु नावै को संगि न साथी मुकते नामु धिआवणिआ ॥४॥ (109-13)
बिनु नावै को साथि न चालै पुत्र कलत्र माइआ धोहिआ ॥ (690-13)
बिनु नावै को साथि न संगी ॥२॥ (1342-5)
बिनु नावै कोइ न मंनीऐ मनमुखि पति गवाई ॥ (426-6)
बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोइ न संगी साथि ॥३॥ (55-11)
बिनु नावै जगु कमला फिरै गुरमुखि नदरी आइआ ॥ (643-19)
बिनु नावै जम कै वसि है मनमुखि अंध गवारि ॥२॥ (365-6)
बिनु नावै जम डंडु सहै मरि जनमै वारो वार ॥ (1276-12)
बिनु नावै जि करम कमावणे नित हउमै होइ खुआरु ॥ (1314-9)
बिनु नावै जि होरु खाणा तितु रोगु लगै तनि धाइ ॥ (1250-3)
बिनु नावै जीउ जलि बलि जाई ॥५॥ (906-2)
बिनु नावै जीवणु ना थीऐ मेरे सतिगुर नामु द्रिड़ाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (40-6)
बिनु नावै झूठा धनु मालु ॥१॥ रहाउ ॥ (197-19)
बिनु नावै ठउरु न पाइनी जमपुरि दूख सहाहि ॥३॥ (36-8)
बिनु नावै डूबि मुए बिनु नीरा ॥ (1052-2)
बिनु नावै दुखीआ चलिआ रोइ ॥२॥ (158-12)
बिनु नावै दुखु कालु संतापै ॥ (943-13)
बिनु नावै दुखु देहुरी जिउ कलर की भीति ॥ (58-5)
बिनु नावै दुखु पाइसी नामु मिलै तिसै रजाइ ॥८॥ (429-9)
बिनु नावै धनु बादि है भूलो मारगि आथि ॥ (59-14)
बिनु नावै ध्रिगु जीवदे विचि बिसटा मनमुख राखु ॥ (997-13)
बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु अहंकार ॥३॥ (162-4)
बिनु नावै ध्रिगु वासु फिटु सु जीविआ ॥ (148-13)
बिनु नावै नालि न चलई सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ (1012-2)

बिनु नावै पाजु लहगु निदानि ॥१॥ (832-14)
बिनु नावै पैनणु खाणु सभु बादि है धिगु सिधी धिगु करमाति ॥ (650-6)
बिनु नावै बहु फेर फिराहरि ॥ (965-4)
बिनु नावै बहुता दुखु पाई ॥ (158-7)
बिनु नावै बाधी जम पुरि जाइ ॥३॥ (1327-8)
बिनु नावै बाधी सभ कालि ॥१॥ रहाउ ॥ (152-10)
बिनु नावै बोलै सभु वेकारु ॥ (941-17)
बिनु नावै भेख करहि बहुतेरे सचै आपि खुआई ॥ (946-14)
बिनु नावै भ्रमि भ्रमि भ्रमि खपिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1140-4)
बिनु नावै मनमुख जम पुरि जाहि ॥ (1129-9)
बिनु नावै मनि झूठु अनीते ॥१॥ (414-15)
बिनु नावै मनि त्रिपति न आवै ॥२॥ (352-14)
बिनु नावै मनु टेक न टिकई नानक भूख न जाई ॥ (939-3)
बिनु नावै मनु तनु है कुसटी नरके वासा पाइदा ॥९॥ (1064-8)
बिनु नावै मरि जाईऐ मेरे ठाकुर जिउ अमली अमलि लुभाना ॥२॥ (697-4)
बिनु नावै माथै पावै छारु ॥१॥ (1129-14)
बिनु नावै मुकति न पावै कोई ॥ (1046-11)
बिनु नावै मुकति न होवई वेखहु को विउपाइ ॥१॥ (490-15)
बिनु नावै मै अवरु न कोई ॥१॥ (1344-12)
बिनु नावै मै अवरु न दीसै नावहु गति मिति पाई हे ॥८॥ (1021-19)
बिनु नावै सभ दुखु संसारा ॥ (1062-3)
बिनु नावै सभ दूख निवासु ॥ (222-8)
बिनु नावै सभ नीच जाति है बिसटा का कीड़ा होइ ॥७॥ (426-17)
बिनु नावै सभ फिरै बउराणी ॥५॥ (424-6)
बिनु नावै सभ भरमि भुलाणी ॥ (116-4)
बिनु नावै सभ भूली फिरदी बिरथा जनमु गवाई ॥९॥ (909-12)
बिनु नावै सभ विछुड़ी गुर कै सबदि मिलाए ॥२॥ (559-4)
बिनु नावै सभि भरमहि काचे ॥७॥ (842-17)
बिनु नावै सभु कोई निरधनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥४॥ (1232-11)
बिनु नावै सभु दुखु है दुखदाई मोह माइ ॥ (1423-1)
बिनु नावै सभु दुखु है सुखु तिसु जिसु मंनि वसाए ॥१॥ (427-10)
बिनु नावै सुखु न पाईऐ ना दुखु विचहु जाइ ॥ (430-6)
बिनु नावै सूका संसारु ॥ (1173-14)
बिनु नावै सूतकु जगि छोति ॥ (413-10)
बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाई ॥७॥ (910-9)
बिनु नावै होरु कमावणा फिका आवै सादु ॥ (1343-12)
बिनु नेत्रा कहा को पेखै ॥ (1140-11)

बिनु नैनहु जगतु निहारिआ ॥ (655-14)
बिनु पउड़ी गड़ि किउ चड़उ गुर हरि धिआन निहाल ॥२॥ (17-13)
बिनु परचै नही थिरा रहाइ ॥ (343-14)
बिनु पाणी डुबि मूए अभागे ॥ (1063-12)
बिनु पिआरै भगति न होवई ना सुखु होइ सरीरि ॥ (429-17)
बिनु पिर कामणि करे सींगारु ॥ (1277-11)
बिनु पिर त्रिपति न कबहूं होई ॥६॥ (226-2)
बिनु पिर देखे नींद न पाइ ॥ (1262-11)
बिनु पिर धन सीगारीऐ जोबनु बादि खुआरु ॥ (58-12)
बिनु पिर पुरखु न जाणई साचे गुर कै हेति पिआरि ॥६॥ (54-9)
बिनु पूरे गुरदेव फिरै सैतानिआ ॥९॥ (708-2)
बिनु पेखे कहु कैसो धिआनु ॥ (1140-15)
बिनु प्रभ कोइ न रखनहारु महा बिकट जम भइआ ॥ (47-13)
बिनु प्रभ रहनु न जाइ घरी ॥ (1215-5)
बिनु प्रभ सेव करत अन सेवा बिरथा काटै काल ॥ (1222-5)
बिनु प्रीतम को करै न सारा ॥१॥ (1189-3)
बिनु प्रीती करहि बहु बाता कूड़ु बोलि कूड़ो फलु पावै ॥३॥ (881-11)
बिनु प्रीती भगति न होवई बिनु सबदै थाइ न पाइ ॥ (67-5)
बिनु बकने बिनु कहन कहावन अंतरजामी जानै ॥ (1228-18)
बिनु बसि पंच कहा मन चूरे ॥ (1140-14)
बिनु बाजे कैसो निरतिकारी ॥ (1140-9)
बिनु बाद बिरोधहि कोई नाही ॥ (1025-2)
बिनु बासन खीरु बिलोवै ॥२॥ (1194-5)
बिनु बिदिआ कहा कोई पंडित ॥ (1140-12)
बिनु बूझे करम कमावणे जनमु पदारथु खोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (33-2)
बिनु बूझे कहा मनु ठहराना ॥ (1140-12)
बिनु बूझे किछु सूझै नाही ॥ (1287-3)
बिनु बूझे किछु सूझै नाही मनमुखु विछुड़ि दुखु पाए ॥२॥ (1332-6)
बिनु बूझे कैसे पावहि पारु ॥ (84-2)
बिनु बूझे को थाइ न पाई ॥ (412-2)
बिनु बूझे जमु देत डंड ॥१॥ (1192-15)
बिनु बूझे झगरत जगु काचा ॥४॥ (224-8)
बिनु बूझे तनु मनु फीका होइ ॥ (158-12)
बिनु बूझे तूं सदा नापाक ॥४॥ (374-17)
बिनु बूझे पसू की निआई भ्रमि मोहि बिआपिओ माइआ ॥ (1300-3)
बिनु बूझे पसू भए बेताले ॥६॥ (224-9)
बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥ (269-3)

बिनु बूझे वडा फेरु पइआ फिरि आवै जाई ॥ (511-14)
बिनु बूझे सगली पति खोवहि ॥१॥ (413-6)
बिनु बूझे सभ खड़ीअसि बंधि ॥३॥ (1169-3)
बिनु बूझे सभ होइ खुआर ॥ (791-4)
बिनु बूझे सभु दुखु दुखु कमावणा ॥ (752-8)
बिनु बूझे सभु भाउ है दूजा ॥७॥ (841-15)
बिनु बूझे सभु वादि जोनी भरमते ॥५॥ (762-1)
बिनु बैराग कहा बैरागी ॥ (1140-13)
बिनु बैराग न छूटसि माइआ ॥१॥ (329-19)
बिनु बोलत आपि पछानै ॥३॥ (621-10)
बिनु बोले किआ करहि बीचारा ॥३॥ (870-4)
बिनु बोले बूझीऐ सचिआर ॥१॥ रहाउ ॥ (662-6)
बिनु बोहिथ सागर नही वाट ॥ (226-10)
बिनु भगती तनु होसी छारु ॥ (290-5)
बिनु भगती नही सतिगुरु पाईऐ बिनु भागा नही भगति हरी ॥ (1171-17)
बिनु भगती बिसटा विचि वासा बिसटा विचि फिरि पाइदा ॥११॥ (1061-8)
बिनु भगती सभ होइ खुआरु ॥४॥९॥११॥ (865-13)
बिनु भगती सुखु न होई दूजै पति खोई गुरमति नामु अधारे ॥ (570-1)
बिनु भगवंत नाही अन कोइ ॥ (192-1)
बिनु भजन होवत खेह ॥ (838-4)
बिनु भागा ऐसा सतिगुरु न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ॥ (490-6)
बिनु भागा गुरु पाईऐ नाही सबदै मेलि मिलावणिआ ॥२॥ (118-4)
बिनु भागा गुरु सेविआ न जाइ ॥ (1065-16)
बिनु भागा दरसनु ना थीऐ भागहीण बहि रोइ ॥ (41-6)
बिनु भागा सतसंगु न पाईऐ करमि मिलै हरि नामु हरी ॥२॥ (1171-18)
बिनु भागा सतसंगु न लभै बिनु संगति मैलु भरीजै जीउ ॥३॥ (95-10)
बिनु भागा सतिगुरु ना मिलै घरि बैठिआ निकटि नित पासि ॥ (40-16)
बिनु भै अनभउ होइ वणाह्मबै ॥१॥ (1104-14)
बिनु भै कथनी सरब बिकार ॥ (1140-15)
बिनु भै करम कमावणे झूठे ठाउ न कोइ ॥४॥ (427-4)
बिनु भै किनै न प्रेमु पाइआ बिनु भै पारि न उतरिआ कोई ॥ (1116-1)
बिनु भै भगती आवउ जाउ ॥ (1188-19)
बिनु भै भगती जनमु बिरंथ ॥ (413-13)
बिनु भै भगती तरनु कैसे ॥ (829-9)
बिनु मन मूए कैसे हरि पाइ ॥ (665-8)
बिनु मन मूए भगति न होइ ॥ (1277-15)
बिनु माने रलि होवहि खेह ॥ (896-4)

बिनु मारे किउ कीमति पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (221-13)
बिनु मिलबे इहु दिनु न बिहावै ॥ (373-17)
बिनु मिलबे नाही संतोखा पेखि दरसनु नानकु जीजै ॥२॥१॥ (1321-15)
बिनु मिलबे सांति न ऊपजै तिलु पलु रहणु न जाइ ॥ (928-14)
बिनु मुकंद तनु होइ अउहार ॥ (875-5)
बिनु मूए किउ पूरा होइ ॥ (153-7)
बिनु मूए कैसे हरि पाइ ॥ (159-4)
बिनु रघुनाथ सरनि का की लीजै ॥६॥१॥ (710-19)
बिनु रस चाखे बुडि गई सगली सुखी न होवत जीओ ॥ (802-19)
बिनु रस राते मनु बहु नाटा ॥७॥ (226-3)
बिनु रस राते मुकति न होई ॥२॥ (831-11)
बिनु रासी कूड़ा करे वापारु ॥ (363-4)
बिनु रासी को वथु किउ पाए ॥ (117-14)
बिनु रासी सभ खाली चले खाली जाइ दुखु पावणिआ ॥५॥ (117-15)
बिनु वखर फिरि फिरि उठि लागै ॥३॥ (900-5)
बिनु वखर सूनो घरु हाटु ॥ (153-1)
बिनु संगति इउ मांनई होइ गई भठ छार ॥१९५॥ (1375-1)
बिनु संगति करम करै अभिमानी कढि पाणी चीकड़ु पावैगो ॥३॥ (1309-4)
बिनु संगति साध न ध्रापीआ बिनु नावै दूख संतापु ॥ (20-15)
बिनु संगती सभि ऐसे रहहि जैसे पसु ढोर ॥ (427-6)
बिनु सचे वापार जनमु बिरथिआ ॥ (1289-9)
बिनु सचे सभ कूड़ु है अंते होइ बिनासु ॥१॥ रहाउ ॥ (49-8)
बिनु सत सती होइ कैसे नारि ॥ (328-3)
बिनु सतगुर सुखु न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि ॥३॥ (26-17)
बिनु सतसंग सुखु किनै न पाइआ जाइ पूछहु बेद बीचारु ॥३॥ (1200-7)
बिनु सतिगुर किछु सोझी नाही भरमे भूला बूडि मरै ॥ (1343-7)
बिनु सतिगुर किनै न पाइआ करि करि थके वीचार ॥ (1420-19)
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ करि वेखहु मनि वीचारि ॥ (37-1)
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ गुरमुखि मिलै मिलाइ ॥ (650-6)
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ (466-7)
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ मनि वेखहु को पतीआइ ॥ (1277-1)
बिनु सतिगुर किनै न पाई परम गते ॥ (1348-9)
बिनु सतिगुर किहु न देखिआ जाइ ॥ (115-4)
बिनु सतिगुर कैसे पारि परिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1140-10)
बिनु सतिगुर को नाउ न पाए प्रभि ऐसी बणत बणाई हे ॥९॥ (1046-11)
बिनु सतिगुर को मगु न जाणै अंधे ठउर न काई ॥ (65-2)
बिनु सतिगुर को सीझै नाही गुर चरणी चितु लाई हे ॥७॥ (1069-13)

बिनु सतिगुर जगु भरमि भुलाइआ हरि का महलु न पाइआ राम ॥ (771-6)
बिनु सतिगुर जो दूजै लागे ॥ (1069-8)
बिनु सतिगुर थिरु कोइ न होई ॥ (1068-9)
बिनु सतिगुर दाता को नही जो हरि नामु देइ आधारु ॥ (1417-5)
बिनु सतिगुर दीसै बिललांती साकतु फिरि फिरि आवै जावै ॥१॥ रहाउ ॥ (1183-19)
बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बिनु नावै किआ सुआउ ॥ (58-3)
बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बुझहु करि वीचारु ॥ (649-17)
बिनु सतिगुर नामु न पाईऐ भाई बिनु नामै भरमु न जाई ॥ (635-12)
बिनु सतिगुर पचि मूए साकत निगुरे गलि जम फासा हे ॥११॥ (1073-8)
बिनु सतिगुर पलै ना पवै मनमुख रहे बिललाइ ॥ (41-14)
बिनु सतिगुर बंधन न तुटही नामि न लगै पिआरु ॥६॥ (1277-4)
बिनु सतिगुर बाट न पाई ॥ (1194-6)
बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥१॥ (1353-9)
बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥५॥१॥ (1351-18)
बिनु सतिगुर भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ (1417-13)
बिनु सतिगुर भरमि भुलाणीआ किआ मुहु देसनि आगै जाए ॥ (585-4)
बिनु सतिगुर भेटे कंचनु ना थीऐ मनमुखु लोहु बूडा बेड़ी पासि ॥३॥ (40-17)
बिनु सतिगुर भेटे कोइ न जाणी ॥ (1342-17)
बिनु सतिगुर भेटे ठउर न पावै आपे खेलु कराइदा ॥७॥ (1060-2)
बिनु सतिगुर भेटे थाइ न पाइ ॥ (314-16)
बिनु सतिगुर भेटे नामु पाइआ न जाइ ॥ (946-8)
बिनु सतिगुर भेटे महा गरबि गुबारि ॥ (946-9)
बिनु सतिगुर भेटे महा दुखु पाइ ॥ (946-9)
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न कोई ॥ (946-8)
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥ (1343-16)
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥५॥१॥ (1128-4)
बिनु सतिगुर मुकति किनै न पाई ॥ (1343-14)
बिनु सतिगुर मुकति न पाईऐ मनमुखि फिरै दिवानु ॥ (39-2)
बिनु सतिगुर मोहु न तुटई सभि थके करम कमाइआ ॥ (138-18)
बिनु सतिगुर रोगु कतहि न जावै ॥३॥ (1141-1)
बिनु सतिगुर सभ मुई बिललाइ ॥ (664-6)
बिनु सतिगुर सभ मोही माइआ ॥१॥ (1139-10)
बिनु सतिगुर सभु जगु बउराना ॥ (604-4)
बिनु सतिगुर सहजु किनै नही पाइआ ॥ (1045-17)
बिनु सतिगुर सुखु कदे न पावै भाई फिरि फिरि पछोतावै ॥१॥ (601-19)
बिनु सतिगुर सेवे एकु न होई ॥ (1057-14)
बिनु सतिगुर सेवे किउ सुखु पाईऐ साचे हाथि वडाई हे ॥२॥ (1022-12)

बिनु सतिगुर सेवे किनै न पाइआ मनमुखि भउकि मुए बिललाई ॥ (638-3)
बिनु सतिगुर सेवे कोई न पावै गुर किरपा ते पावणिआ ॥४॥ (119-10)
बिनु सतिगुर सेवे घोर अंधारा ॥ (1054-12)
बिनु सतिगुर सेवे जगतु मुआ बिरथा जनमु गवाइ ॥ (591-17)
बिनु सतिगुर सेवे जनमु न छोडै जे अनेक करम करै अधिकाई ॥ (638-5)
बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना जेते करम कमाहि ॥ (552-14)
बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना विचि हउमै करम कमाहि ॥ (589-18)
बिनु सतिगुर सेवे जोगु न होई ॥ (946-8)
बिनु सतिगुर सेवे ठउर न पावही मरि जमहि आवहि जाहि ॥ (589-19)
बिनु सतिगुर सेवे ठवर न पावही मरि जमहि आवहि जाहि ॥ (552-14)
बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईऐ नामु सचा जगि लाहा हे ॥६॥ (1057-18)
बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईऐ पड़ि थाके सांति न आई हे ॥५॥ (1046-6)
बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मन माहि ॥ (589-19)
बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मनि आइ ॥ (552-15)
बिनु सतिगुर सेवे बहुता दुखु लागा जुग चारे भरमाई ॥ (603-16)
बिनु सतिगुर सेवे भगति न पाईऐ पूरै भागि मिलै प्रभु सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (1131-5)
बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥ (1063-13)
बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥ (230-6)
बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई मनि देखहु लिव लाई हे ॥१५॥ (1046-19)
बिनु सतिगुर सेवे सांति न आवई दूजी नाही जाइ ॥ (950-8)
बिनु सतिगुर सेवे साति न आवई दूजी नाही जाइ ॥ (516-2)
बिनु सतिगुर सेवे सुखु न पाए दुखो दुखु कमावणिआ ॥७॥ (114-3)
बिनु सतिगुर सोझी ना पवै अहंकारु न विचहु जाइ ॥ (303-4)
बिनु सतिगुर हरि नामु न लभई लख कोटी करम कमाउ ॥२॥ (40-15)
बिनु सतिगुरु भेटे सभ फिरै अहंकारी ॥६॥ (413-2)
बिनु सतिगुरू जमकालु न छोडई दूजै भाइ खुआई ॥ (1414-17)
बिनु सबद पिआरे कउणु दुतरु तारे माइआ मोहि खुआई ॥ (244-3)
बिनु सबदे पारु न पाए कोई ॥ (1068-16)
बिनु सबदै अंतरि आनेरा ॥ (124-15)
बिनु सबदै आचारु न किन ही पाइआ ॥ (1285-9)
बिनु सबदै आपु न जापई सभ अंधी भाई ॥ (426-3)
बिनु सबदै किउ अंतरु रीझै ॥ (1023-18)
बिनु सबदै किउ पाए पारु ॥ (842-18)
बिनु सबदै किनै न पाइओ दुखीए चले रोइ ॥ (1250-6)
बिनु सबदै को थाइ न पाई ॥ (363-3)
बिनु सबदै कोइ न पावै पारा ॥ (1054-12)
बिनु सबदै चूकै नही फेरी ॥ (1052-5)

बिनु सबदै जगतु बरलिआ कहणा कछू न जाइ ॥ (1417-7)
बिनु सबदै जगि आन्हेरु है सबदे परगटु होइ ॥ (1250-5)
बिनु सबदै जगु दुखीआ फिरै मनमुखा नो गई खाइ ॥ (67-1)
बिनु सबदै जगु भुलदा फिरदा दरगह मिलै सजाइ ॥ रहाउ ॥ (600-6)
बिनु सबदै जगु भूला फिरै मरि जनमै वारो वार ॥७॥ (58-10)
बिनु सबदै तुधुनो कोई न जाणी ॥ (1056-6)
बिनु सबदै थिरु को नही बूझै सुखु होई ॥५॥ (228-17)
बिनु सबदै नही उतरै मैलु ॥२॥ (832-4)
बिनु सबदै नामु न पाए कोई गुर किरपा मंनि वसावणिआ ॥२॥ (124-8)
बिनु सबदै नाही पति साखै ॥ (944-4)
बिनु सबदै पिरु न पाइओ जनमु गवाइओ रोवै अवगुणिआरी झूठी ॥ (583-12)
बिनु सबदै पिरु न पाईऐ बिरथा जनमु गवाइ ॥२॥ (31-19)
बिनु सबदै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (362-6)
बिनु सबदै भरमाईऐ दुबिधा डोबे पूरु ॥१॥ (19-15)
बिनु सबदै भरमु न चूकई ना विचहु हउमै जाइ ॥६॥ (67-4)
बिनु सबदै भसमै की ढेरी खेहू खेह रलाइदा ॥२॥ (1059-15)
बिनु सबदै भै रतिआ सभ जोही जमकालि जीउ ॥७॥ (751-13)
बिनु सबदै मुआ है सभु कोइ ॥ (1418-5)
बिनु सबदै मूठे दिनु रैणी ॥८॥ (227-10)
बिनु सबदै मैलु न उतरै मरि जमहि होइ खुआरु ॥ (29-7)
बिनु सबदै रसु न आवै अउधू हउमै पिआस न जाई ॥ (945-1)
बिनु सबदै सभि दूजै लागे देखहु रिदै बीचारि ॥ (942-1)
बिनु सबदै सभु अंध अंधेरा गुरमुखि किसहि बुझाइदा ॥५॥ (1065-5)
बिनु सबदै सभु जगु बउराना बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (644-5)
बिनु सबदै सुखु ना थीऐ पिर बिनु दूखु न जाइ ॥१॥ (18-19)
बिनु सबदै सुणीऐ न देखीऐ जगु बोला अंन्हा भरमाइ ॥ (429-8)
बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार ॥ (651-19)
बिनु सबदै हउमै किनि मारी ॥ (1046-7)
बिनु सबदै हउमै किनै न मारी ॥ (1067-18)
बिनु सबदै होरु मोहु गुबारु ॥ (1342-10)
बिनु समझे जम का दुखु सहसी ॥ (415-9)
बिनु सहजै सभु अंधु है माइआ मोहु गुबारु ॥ (68-15)
बिनु साचे अन टेक है सो जाणहु काचा ॥१॥ रहाउ ॥ (396-14)
बिनु साचे किउ छूटीऐ हरि गुण करमि मणी ॥ (934-8)
बिनु साचे को बेली नाही साचा एहु बीचारो ॥३॥ (581-13)
बिनु साचे जीउ जलि बलउ झूठे वेकारी ॥ (1011-7)
बिनु साचे जो दूजै लाइआ ॥ (1050-15)

बिनु साचे नही दरगह मानु ॥ (937-11)
बिनु साचे होरु सालाहणा जासहि जनमु सभु खोइ ॥२॥ (565-1)
बिनु साध न पाईऐ हरि का संगु ॥ (1169-14)
बिनु साधू जो जीवना तेतो बिरथारी ॥ (810-13)
बिनु साधू संगति रतिआ माइआ मोहु सभु छारु ॥१॥ (52-11)
बिनु सावण घनहरु गाजै ॥ (657-11)
बिनु सिमरन आवहि फुनि जावहि ग्रभ जोनी नरक मझारा हे ॥९॥ (1030-13)
बिनु सिमरन कूकर हरकाइआ ॥ (239-6)
बिनु सिमरन कोटि बरख जीवै सगली अउध ब्रिथानद ॥ (1204-14)
बिनु सिमरन गरधभ की निआई ॥ (239-5)
बिनु सिमरन जैसे सरप आरजारी ॥ (239-2)
बिनु सिमरन जैसे सीङ छतारा ॥ (239-5)
बिनु सिमरन जो जीवनु बलना सरप जैसे अरजारी ॥ (712-1)
बिनु सिमरन तनु छारु सरपर चालणा ॥३॥ (398-10)
बिनु सिमरन दिनु रैनि ब्रिथा बिहाइ ॥ (269-5)
बिनु सिमरन ध्रिगु करम करास ॥ (239-3)
बिनु सिमरन भए कूकर काम ॥ (239-4)
बिनु सिमरन मुकति कत नाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (971-8)
बिनु सिमरन है आतम घाती ॥ (239-7)
बिनु सेवा किनै न पाइआ दूजै भरमि खुआई ॥३॥ (1011-14)
बिनु सेवा फलु कबहु न पावसि सेवा करणी सारी ॥२॥ (992-7)
बिनु सोहागनि लागै दोखु ॥१॥ (872-1)
बिनु स्रवणा खीरु पिलाइआ ॥१॥ (1194-3)
बिनु स्रवना कहा को सुनता ॥ (1140-11)
बिनु हउ तिआगि कहा कोऊ तिआगी ॥ (1140-13)
बिनु हरि अवरु न आवसि कामा झूठा मोहु मिथिआ पसारे ॥१॥ रहाउ ॥ (387-13)
बिनु हरि कामि न आवत हे ॥ (821-16)
बिनु हरि गुर प्रीतम जनमु बादि ॥८॥७॥ (1190-15)
बिनु हरि जाचे भगति न नामु ॥३॥ (226-8)
बिनु हरि नाम अवरु सभु थोरा ॥ (376-13)
बिनु हरि नाम कहा सुखु पावउ ॥१॥ (225-6)
बिनु हरि नाम को मुकति न पावसि डूबि मुए बिनु पानी ॥२॥ (1127-6)
बिनु हरि नाम को मुकति न पावै बहु कंचनु दीजै कटि काट ॥२॥ (986-3)
बिनु हरि नाम न छुटीऐ गुरमति मिलै मिलाइ ॥७॥ (59-16)
बिनु हरि नाम न छूटसी मरि नरक समाए ॥५॥ (420-18)
बिनु हरि नाम न जीवदे जिउ जल बिनु मीना राम ॥ (845-1)
बिनु हरि नाम न टूटसि पटल ॥ (890-8)

बिनु हरि नाम न सांति होइ कितु बिधि मनु धीरे ॥६॥ (707-7)
बिनु हरि नाम न सुखु होइ करि डिठे बिसथार ॥ (48-6)
बिनु हरि नाम न सुधु होइ ॥ (1169-15)
बिनु हरि नाम ब्रिथा जगि जीवनु हरि बिनु निहफल मेक घरी ॥२॥ (505-2)
बिनु हरि नाम मिथिआ सभ छारु ॥४॥८॥ (1137-14)
बिनु हरि नाम सु देह दुखाली ॥४॥ (225-10)
बिनु हरि नावै को बेली नाही हरि जपीऐ सारंगपाणी हे ॥७॥ (1070-15)
बिनु हरि नावै को मित्रु नाही वीचारि डिठा हरि जंनी ॥ (590-19)
बिनु हरि पिआरे रहि न साकै गुर बिनु महलु न पाईऐ ॥ (243-15)
बिनु हरि प्रीति होर प्रीति सभ झूठी इक खिन महि बिसरि सभ जाइ ॥१॥ (720-12)
बिनु हरि भउ काहे का मानहि ॥ (184-11)
बिनु हरि भगति कहा थिति पावहि ॥ (254-9)
बिनु हरि भगति कहा थिति पावै फिरतो पहरे पहरे ॥२॥ (215-14)
बिनु हरि भगति न पवई थाइ ॥६॥ (416-17)
बिनु हरि भगति न मुकति होइ इउ कहि रमे कबीर ॥५४॥ (1367-7)
बिनु हरि भगति नही छुटकारा ॥ (891-8)
बिनु हरि भगति नाही सुखु प्रानी बिनु गुर गरबु न जाई ॥२॥ (504-10)
बिनु हरि भगती दूख घणेरे ॥ (1189-5)
बिनु हरि भगती सीगारु करहि नित जमहि होइ खुआरु ॥ (950-5)
बिनु हरि भजन जेते काम करीअहि तेते बिरथे जांहि ॥ (1222-16)
बिनु हरि भजन देखउ बिललाते ॥ (179-7)
बिनु हरि भजन नही छुटकारा ॥ (260-7)
बिनु हरि भजन नाही छुटकारा ॥३॥४४॥११३॥ (188-15)
बिनु हरि भजन नाही निसतारा सूखु न किनहूं लहिआ ॥१॥ (215-13)
बिनु हरि भजन रंग रस जेते संत दइआल जाने सभि झूठे ॥ (717-11)
बिनु हरि भजन सगल दुख पावत जिउ प्रेम बढाइ सूत के हटूआ ॥ (1389-7)
बिनु हरि रस राते पति न साखु ॥ (1188-4)
बिनु हरि रस सुखु तिलु नही लाधा ॥ (1072-18)
बिनु हरि राते मैलो मैला ॥ (904-14)
बिनु हरि सगल निरारथ काम ॥ (889-12)
बिनु हरि सांति न आवई किसु आगै करी पुकार ॥ (1416-5)
बिनु हरि साचे को पारि न पावै बूझै को वीचारी ॥१६॥ (911-9)
बिनु हरि सिमरण पापि संतापी ॥२॥ (356-11)
बिनु हरि सिमरन सुखु नही पाइआ ॥ (194-7)
बिनु हरि सेवा सुखु नही हो साकत आवहि जाहि ॥३॥ (214-9)
बिनु हरि है को कहा बतावहु ॥ (1218-12)
बिनु ही थाभह मंदिरु थ्मभै ॥२३॥ (341-12)

बिनु हुकमै किउ बुझै बुझाई ॥१॥ (378-15)
बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥ (197-15)
बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नेरै ॥१॥ (634-3)
बिपरीत बुध्यं मारत लोकह नानक चिरंकाल दुख भोगते ॥२४॥ (1356-5)
बिपल बसत्र केते है पहिरे किआ बन मधे बासा ॥ (338-7)
बिप्र सुदामे दालदु भंज ॥ (1192-5)
बिबलु झागि सहजि परगासिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1331-5)
बिबेक दीप मलीन ॥१॥ रहाउ ॥ (486-7)
बिबेक बुधि बीचारि गुरमुखि गुर सबदि खिनु खिनु हरि नित चवे ॥ (1114-16)
बिबेक बुधि सतिगुर ते पाई गुर गिआनु गुरू प्रभ केरा ॥ (711-9)
बिबेक बुधि सभ जग महि निरमल बिचरि बिचरि रसु पीजै ॥ (1325-7)
बिबेक बुधी सुखि रैणि विहाणी गुरमति नामि प्रगासा ॥ (772-17)
बिबेकु गुरू गुरू समदरसी तिसु मिलीऐ संक उतारे ॥ (981-5)
बिभास प्रभाती बाणी भगत कबीर जी की (1349-7)
बिभास प्रभाती महला ५ असटपदीआ (1347-7)
बिमल मझारि बससि निरमल जल पदमनि जावल रे ॥ (990-8)
बिरख इक तरीआ ॥ (537-6)
बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ॥ (268-13)
बिरख छाइआ जैसे बिनसत पवन झूलत मेह ॥ (1006-14)
बिरख बसेरो पंखि को तैसो इहु संसारु ॥१॥ (337-15)
बिरख मूल माइआ महि परा ॥४॥ (1160-17)
बिरखु जमिओ है पारजात ॥ (1180-6)
बिरखै हेठि सभि जंत इकठे ॥ (1019-18)
बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥ (411-4)
बिरथा काहू छोडै नाही ॥ (393-7)
बिरथा कोइ न जाइ जि आवै तुधु आहि ॥९॥ (962-3)
बिरथा जनमु गवाइ न गिरही न उदासा ॥ (140-7)
बिरथा जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (793-2)
बिरथा जनमु गवाइआ कपटी बिनु सबदै दुखु पावणिआ ॥४॥ (123-18)
बिरथा जनमु गवाइआ बाजी हारी ॥ (412-6)
बिरथा जनमु गवाइआ मरि जमहि वारो वार ॥५॥ (69-19)
बिरथा जनमु गवाइआ मरि जमै वारो वार ॥१॥ (86-9)
बिरथा जनमु गवाए मनमुखि इआणी अउगणवंती झूरे ॥ (439-16)
बिरथा जनमु तिना जिन्ही नामु विसारिआ ॥ (369-3)
बिरथा जनमु दूजै लोभाइ ॥ (362-15)
बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥ (269-4)
बिरथा भरवासा लोक ॥ (896-13)

बिरथी कदे न होवई जन की अरदासि ॥ (819-11)
बिरथी भगति सभु जनमु गवाए ॥६॥ (1277-17)
बिरथी साकत की आरजा ॥ (269-3)
बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥ (266-19)
बिरधि भइआ छोडि चलिओ पछुताइ ॥२॥ (890-1)
बिरधि भइआ जोबनु तनु खिसिआ कफु कंठु बिरूधो नैनहु नीरु ढरे ॥ (1014-5)
बिरधि भइआ तनु छीजै देही ॥ (1027-7)
बिरधि भइओ अजहू नही समझै कउन कुमति उरझाना ॥१॥ (902-10)
बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि ॥ (1426-13)
बिरला कोऊ पावै संगु ॥ (290-8)
बिरला बूझै पावै भेदु ॥ (352-7)
बिरले काहू एक लिव लागी ॥ (203-14)
बिरले पावहि ओहु बिस्रामु ॥ (888-19)
बिरलो गिआनी बूझणउ सतिगुरु साचि मिलेइ ॥ (935-11)
बिरह विछोड़ा धणी सिउ नानक सहसै गंठि ॥१॥ (319-13)
बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ॥ (1379-14)
बिरहा लजाइआ दरसु पाइआ अमिउ द्रिसटि सिंचंती ॥ (460-13)
बिरहै बेधी सचि वसी भाई अधिक रही हरि नाइ ॥८॥ (637-8)
बिराजित राम को परताप ॥ (1223-14)
बिल बिरथे चाहै बहु बिकार ॥ (1188-1)
बिलछि बिनोद आनंद सुख माणहु खाइ जीवहु सिख परवार ॥१॥ (618-15)
बिलप करे चात्रिक की निआई ॥ (96-15)
बिलम न लागै आवै जाई ॥ (1041-2)
बिलमु न तूटसि काचै तागै ॥ (840-3)
बिललाट करहि बहुतेरिआ पिआरे उतरै नाही सूलु ॥ (641-5)
बिललाप बिलल बिनंतीआ सुख भाइ चित हितं ॥१॥ (505-12)
बिललाहि केते महा मोहन बिनु नाम हरि के सुखु नही ॥ (548-2)
बिलावल की वार महला ४ (849-1)
बिलावलु ॥ (855-12)
बिलावलु ॥ (855-17)
बिलावलु ॥ (856-12)
बिलावलु ॥ (856-16)
बिलावलु ॥ (856-19)
बिलावलु ॥ (856-3)
बिलावलु ॥ (856-9)
बिलावलु ॥ (857-10)
बिलावलु ॥ (857-14)

बिलावलु ॥ (857-2)
बिलावलु ॥ (857-6)
बिलावलु ॥ (858-7)
बिलावलु असटपदीआ महला १ घरु १० (831-8)
बिलावलु करिहु तुम्ह पिआरिहो एकसु सिउ लिव लाइ ॥ (849-14)
बिलावलु गोंड ॥ (874-17)
बिलावलु तब ही कीजीऐ जब मुखि होवै नामु ॥ (849-5)
बिलावलु बाणी भगत नामदेव जी की (857-19)
बिलावलु बाणी भगता की ॥ (855-6)
बिलावलु बाणी रविदास भगत की (858-3)
बिलावलु महला १ ॥ (795-14)
बिलावलु महला १ ॥ (795-9)
बिलावलु महला १ ॥ (796-5)
बिलावलु महला १ ॥ (832-1)
बिलावलु महला १ ॥ (843-18)
बिलावलु महला १ छंत दखणी (843-5)
बिलावलु महला १ थिती घरु १० जति (838-18)
बिलावलु महला ३ ॥ (797-15)
बिलावलु महला ३ ॥ (797-3)
बिलावलु महला ३ ॥ (797-9)
बिलावलु महला ३ ॥ (798-2)
बिलावलु महला ३ ॥ (798-9)
बिलावलु महला ३ ॥ (842-3)
बिलावलु महला ३ असटपदी घरु १० (832-13)
बिलावलु महला ३ घरु १ (796-13)
बिलावलु महला ३ वार सत घरु १० (841-1)
बिलावलु महला ४ ॥ (799-11)
बिलावलु महला ४ ॥ (799-17)
बिलावलु महला ४ ॥ (799-5)
बिलावलु महला ४ ॥ (800-11)
बिलावलु महला ४ ॥ (800-5)
बिलावलु महला ४ ॥ (833-19)
बिलावलु महला ४ ॥ (834-12)
बिलावलु महला ४ ॥ (835-19)
बिलावलु महला ४ ॥ (835-6)
बिलावलु महला ४ ॥ (836-13)
बिलावलु महला ४ असटपदीआ घरु ११ (833-6)

बिलावलु महला ४ सलोकु ॥ (845-2)
बिलावलु महला ५ ॥ (801-14)
बिलावलु महला ५ ॥ (801-19)
बिलावलु महला ५ ॥ (802-18)
बिलावलु महला ५ ॥ (803-14)
बिलावलु महला ५ ॥ (803-18)
बिलावलु महला ५ ॥ (804-11)
बिलावलु महला ५ ॥ (804-15)
बिलावलु महला ५ ॥ (804-19)
बिलावलु महला ५ ॥ (804-3)
बिलावलु महला ५ ॥ (804-7)
बिलावलु महला ५ ॥ (805-12)
बिलावलु महला ५ ॥ (805-17)
बिलावलु महला ५ ॥ (805-4)
बिलावलु महला ५ ॥ (805-8)
बिलावलु महला ५ ॥ (806-11)
बिलावलु महला ५ ॥ (806-14)
बिलावलु महला ५ ॥ (806-18)
बिलावलु महला ५ ॥ (806-2)
बिलावलु महला ५ ॥ (806-9)
बिलावलु महला ५ ॥ (807-10)
बिलावलु महला ५ ॥ (807-12)
बिलावलु महला ५ ॥ (807-15)
बिलावलु महला ५ ॥ (807-18)
बिलावलु महला ५ ॥ (807-3)
बिलावलु महला ५ ॥ (807-5)
बिलावलु महला ५ ॥ (807-7)
बिलावलु महला ५ ॥ (808-14)
बिलावलु महला ५ ॥ (808-9)
बिलावलु महला ५ ॥ (809-1)
बिलावलु महला ५ ॥ (809-11)
बिलावलु महला ५ ॥ (809-16)
बिलावलु महला ५ ॥ (809-7)
बिलावलु महला ५ ॥ (810-12)
बिलावलु महला ५ ॥ (810-18)
बिलावलु महला ५ ॥ (810-2)
बिलावलु महला ५ ॥ (810-8)

बिलावलु महला ५ ॥ (811-14)
बिलावलु महला ५ ॥ (811-4)
बिलावलु महला ५ ॥ (811-9)
बिलावलु महला ५ ॥ (812-1)
बिलावलु महला ५ ॥ (812-12)
बिलावलु महला ५ ॥ (812-17)
बिलावलु महला ५ ॥ (812-6)
बिलावलु महला ५ ॥ (813-13)
बिलावलु महला ५ ॥ (813-19)
बिलावलु महला ५ ॥ (813-3)
बिलावलु महला ५ ॥ (813-8)
बिलावलु महला ५ ॥ (814-10)
बिलावलु महला ५ ॥ (814-15)
बिलावलु महला ५ ॥ (814-5)
बिलावलु महला ५ ॥ (815-1)
बिलावलु महला ५ ॥ (815-11)
बिलावलु महला ५ ॥ (815-16)
बिलावलु महला ५ ॥ (815-6)
बिलावलु महला ५ ॥ (816-13)
बिलावलु महला ५ ॥ (816-18)
बिलावलु महला ५ ॥ (816-3)
बिलावलु महला ५ ॥ (816-8)
बिलावलु महला ५ ॥ (817-12)
बिलावलु महला ५ ॥ (817-15)
बिलावलु महला ५ ॥ (817-18)
बिलावलु महला ५ ॥ (817-4)
बिलावलु महला ५ ॥ (818-12)
बिलावलु महला ५ ॥ (818-15)
बिलावलु महला ५ ॥ (818-18)
बिलावलु महला ५ ॥ (818-3)
बिलावलु महला ५ ॥ (818-6)
बिलावलु महला ५ ॥ (818-9)
बिलावलु महला ५ ॥ (819-12)
बिलावलु महला ५ ॥ (819-15)
बिलावलु महला ५ ॥ (819-19)
बिलावलु महला ५ ॥ (819-2)
बिलावलु महला ५ ॥ (819-6)

बिलावलु महला ५ ॥ (819-9)
बिलावलु महला ५ ॥ (820-10)
बिलावलु महला ५ ॥ (820-14)
बिलावलु महला ५ ॥ (820-17)
बिलावलु महला ५ ॥ (821-16)
बिलावलु महला ५ ॥ (821-2)
बिलावलु महला ५ ॥ (821-6)
बिलावलु महला ५ ॥ (822-10)
बिलावलु महला ५ ॥ (822-14)
बिलावलु महला ५ ॥ (822-18)
बिलावलु महला ५ ॥ (822-3)
बिलावलु महला ५ ॥ (822-7)
बिलावलु महला ५ ॥ (823-10)
बिलावलु महला ५ ॥ (823-14)
बिलावलु महला ५ ॥ (823-18)
बिलावलु महला ५ ॥ (823-3)
बिलावलु महला ५ ॥ (823-6)
बिलावलु महला ५ ॥ (824-10)
बिलावलु महला ५ ॥ (824-13)
बिलावलु महला ५ ॥ (824-17)
बिलावलु महला ५ ॥ (824-3)
बिलावलु महला ५ ॥ (824-6)
बिलावलु महला ५ ॥ (825-1)
बिलावलु महला ५ ॥ (825-13)
बिलावलु महला ५ ॥ (825-17)
बिलावलु महला ५ ॥ (825-5)
बिलावलु महला ५ ॥ (825-9)
बिलावलु महला ५ ॥ (826-10)
बिलावलु महला ५ ॥ (826-14)
बिलावलु महला ५ ॥ (826-18)
बिलावलु महला ५ ॥ (826-2)
बिलावलु महला ५ ॥ (826-6)
बिलावलु महला ५ ॥ (827-10)
बिलावलु महला ५ ॥ (827-19)
बिलावलु महला ५ ॥ (827-3)
बिलावलु महला ५ ॥ (827-6)
बिलावलु महला ५ ॥ (828-12)

बिलावलु महला ५ ॥ (828-16)
बिलावलु महला ५ ॥ (828-4)
बिलावलु महला ५ ॥ (828-8)
बिलावलु महला ५ ॥ (829-1)
बिलावलु महला ५ ॥ (829-18)
बिलावलु महला ५ ॥ (829-5)
बिलावलु महला ५ ॥ (829-9)
बिलावलु महला ५ ॥ (830-9)
बिलावलु महला ५ ॥ (837-18)
बिलावलु महला ५ ॥ (846-7)
बिलावलु महला ५ ॥ (848-11)
बिलावलु महला ५ छंत (845-13)
बिलावलु महला ५ छंत (847-1)
बिलावलु महला ५ छंत मंगल (847-18)
बिलावलु महला ९ ॥ (830-18)
बिलावलु महला ९ ॥ (831-2)
बिसटा अंदरि कीट से पइ पचहि वारो वार ॥ (85-10)
बिसटा अंदरि कीट से मुठे धंधै चोरि ॥ (1247-6)
बिसटा असत रकतु परेटे चाम ॥ (374-16)
बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि पचाइ ॥२॥ (362-9)
बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि समाई ॥१॥ (1175-4)
बिसटा कीट भए उत ही ते उत ही माहि समाइआ ॥ (1255-5)
बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि बिसटा माहि पचावणिआ ॥५॥ (116-11)
बिसटा के कीड़े बिसटा माहि समाणे मनमुख मुगध गुबारा ॥३॥ (601-7)
बिसटा के कीड़े बिसटा राते मरि जमहि होहि खुआरु ॥५॥ (1347-2)
बिसटा मूत्र खोदि तिलु तिलु मनि न मनी बिपरीति ॥३॥ (1018-2)
बिसन की माइआ ते होइ भिंन ॥ (274-7)
बिसन महेस सिध मुनि इंद्रा कै दरि सरनि परउ ॥१॥ (1322-12)
बिसन सम्हारि न आवै हारि ॥ (342-10)
बिसम बिनोद रहे परमादी ॥ (1343-1)
बिसम बिसम बिसम ही भई है लाल गुलाल रंगारै ॥ (1302-1)
बिसम बिसमै बिसम भई ॥ (1272-9)
बिसम भई पेखि बिसमादी पूरि रहे किरपावत ॥ (1205-5)
बिसम भए गुण गाइ मनोहर निरभउ सहजि समाई ॥३॥ (1232-9)
बिसम भए नानक जसु गावत ठाकुर गुनी गहीर ॥२॥२॥३॥ (979-1)
बिसमन बिसम भई पेखि गुण अबिनासी राम ॥ (846-13)
बिसमन बिसम भए जउ पेखिओ कहनु न जाइ वडिआई ॥ (821-12)

बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥ (285-2)
बिसमन बिसम भए बिसमादा आन न बीओ दूसर लावन ॥ (717-4)
बिसमन बिसम भए बिसमादा परम गति पावहि हरि सिमरि परानी ॥१॥ रहाउ ॥ (893-5)
बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥ (291-15)
बिसमिलि कीआ न जीवै कोइ ॥३॥ (1165-15)
बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ ॥ (1165-14)
बिसमु पेखै बिसमु सुणीऐ बिसमादु नदरी आइआ ॥ (778-12)
बिसमु भई मै बहु बिधि सुनते कहहु सुहागनि सहीअउ ॥१॥ रहाउ ॥ (700-9)
बिसमु भए बिसमाद देखि कुदरति तेरीआ ॥ (521-2)
बिसरंत हरि गोपालह नानक ते प्राणी उदिआन भरमणह ॥१॥ (707-17)
बिसरत नाम ऐसे दोख लागहि जमु मारि समारे नरकि खरे ॥८॥ (1014-7)
बिसरत नामु होवत तनु छारु ॥ (802-4)
बिसरत नाहि मन ते हरी ॥ (1120-19)
बिसरत प्रभ केते दुख गनीअहि महा मोहनी खाइओ ॥१॥ (501-2)
बिसरि गई सभ ताति पराई ॥ (1299-13)
बिसरि गई सभ दुरमति रीति ॥ (802-5)
बिसरि न जाई निमख हिरदै ते पूरै गुरू मिलाइआ ॥१॥ (1223-2)
बिसरिओ धंधु बंधु माइआ को रजनि सबाई जंगा ॥१॥ रहाउ ॥ (1210-6)
बिसरी चिंत नामि रंगु लागा ॥ (1148-1)
बिसरी तिआस बिडानी ॥१॥ (1119-5)
बिसरु नही इकु तिलु दातार ॥ (198-13)
बिसरु नही निमख हीअरे ते अपने भगत कउ पूरन दान ॥ रहाउ ॥ (716-10)
बिसरु नाही कबहू हीए ते इह बिधि मन महि पावहु ॥ (617-11)
बिसरु नाही निमख मन ते नानक की अरदासि ॥८॥२॥ (1017-16)
बिसरे राज रस भोग जागत भखलाइआ ॥ (707-15)
बिसारि हरि जीउ बिखै भोगहि तपत थम गलि लाइ ॥१॥ (1001-14)
बिसीअर कउ बहु दूधु पीआईऐ बिखु निकसै फोलि फुलीठा ॥३॥ (171-16)
बिसीअर बिसू भरे है पूरन गुरु गरुड़ सबदु मुखि पावैगो ॥ (1310-17)
बिसीअरु मंत्रि विसाहीऐ बहु दूधु पीआइआ ॥ (1244-2)
बिस्मभरु देवन कउ एकै सरब करै प्रतिपाला ॥ (249-7)
बिस्राम पाए मिलि साधसंगि ता ते बहुड़ि न धाउ ॥१॥ (818-6)
बिस्व का दीपकु स्वामी ता चे रे सुआरथी पंखी राइ गरुड़ ता चे बाधवा ॥ (695-4)
बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥ (284-17)
बिस्म्भर जीअन को दाता भगति भरे भंडार ॥ (500-12)
बिस्म्भर पूरन सुखदाता सगल समग्री पोखण भरण ॥ (827-11)
बिहागड़ा महला ४ ॥ (539-17)
बिहागड़ा महला ४ ॥ (539-5)

बिहागड़ा महला ४ ॥ (540-11)
बिहागड़ा महला ४ ॥ (541-5)
बिहागड़ा महला ५ ॥ (543-9)
बिहागड़ा महला ५ ॥ (544-19)
बिहागड़ा महला ५ ॥ (545-13)
बिहागड़ा महला ५ घरु २ (544-5)
बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ (546-8)
बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ (547-17)
बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ (547-5)
बिहागड़ा महला ५ छंत घरु १ (541-18)
बिहागड़े की वार महला ४ (548-11)
ब्मिब बिना कैसे कपरे धोई ॥ (872-12)
बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥ (468-16)
बीओ पूछि न मसलति धरै ॥ (863-11)
बीचारि सतिगुरु मुझै पूछिआ भवरु बेली रातओ ॥ (439-3)
बीचु न कोइ करे अक्रितघणु विछुड़ि पइआ ॥ (546-14)
बीज मंत्रु लै हिरदै रहै ॥ (974-12)
बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥ (274-16)
बीज मंत्रु हरि कीरतनु गाउ ॥ (891-4)
बीजउ अवरु न कोई ॥२॥ (1005-14)
बीजउ सूझै को नही बहै दुलीचा पाइ ॥ (936-14)
बीजउ सूझै को नही मनि तनि पूरनु देइ ॥ (1010-13)
बीजु बीजि देखिओ बहु परकारा ॥ (736-13)
बीजु बोवसि भोग भोगहि कीआ अपणा पावए ॥ (705-9)
बीजे बिखु मंगै अम्रितु वेखहु एहु निआउ ॥२॥ (474-11)
बीणा सबदु वजावै जोगी दरसनि रूपि अपारा ॥ (351-5)
बीत जैहै बीत जैहै जनमु अकाजु रे ॥ (1352-14)
बीधा पंच बटवारई उपजिओ महा खेदु ॥३॥ (815-15)
बीधे बांधे कमल महि भवर रहे लपटाइ ॥४॥ (1364-2)
बीबी कउला सउ काइनु तेरा निरंकार आकारै ॥३॥ (1167-17)
बीर चले घरि आपणै बहिण बिरहि जलि जाइ ॥ (935-10)
बीरा आपन बुरा मिटावै ॥ (258-10)
बीरा बीरा करि रही बीर भए बैराइ ॥ (935-10)
बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥ (287-1)
बीस बिसुए जा कै मनि परगासु ॥ (1152-17)
बीस बिसुए जा मन ठहराने ॥ (887-14)
बीस सपताहरो बासरो संग्रहै तीनि खोड़ा नित कालु सारै ॥ (23-18)

बुगो नानक अरदासि पेसि दरवेस बंदाह ॥४॥१॥ (723-17)
बुझणा अबुझणा तुधु कीआ इह तेरी सिरि कार ॥ (427-12)
बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥ (285-8)
बुझि गई अगनि न निकसिओ धूंआ ॥ (478-11)
बुझि गई त्रिसन निवारी ममता गुरि पूरै लीओ समझाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (887-12)
बुझि गई त्रिसना हरि जसहि अघाने ॥ (393-18)
बुझु रे गिआनी एहु बीचारु ॥१॥ (152-3)
बुझु रे गिआनी मूआ है कउणु ॥ (152-5)
बुडभुज रूप जीवे जग मझिआ ॥२॥ (328-11)
बुढा होआ सेख फरीदु क्मबणि लगी देह ॥ (1380-1)
बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥ (654-5)
बुधवारि आपे बुधि सारु ॥ (841-9)
बुधवारि बुधि करै प्रगास ॥ (344-13)
बुधि गरीबी खरचु लैहु हउमै बिखु जारहु ॥ (399-9)
बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥ (295-19)
बुधि पाठि न पाईऐ बहु चतुराईऐ भाइ मिलै मनि भाणे ॥ (436-12)
बुधि प्रगास प्रगट भई उलटि कमलु बिगसना ॥२॥ (811-11)
बुधि प्रगास भई मति पूरी ॥ (377-6)
बुधि बिभूति चढावउ अपुनी सिंगी सुरति मिलाई ॥ (970-16)
बुधि विसरजी गई सिआणप करि अवगण पछुताइ ॥ (76-2)
बुधि सिआणप किछू न जापै ॥ (107-4)
बुधी बाजी उपजै चाउ ॥ (151-6)
बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥ (487-17)
बुनि बुनि आप आपु पहिरावउ ॥ (1159-1)
बुरा करे सु केहा सिझै ॥ (1418-12)
बुरा नही सभु भला ही है रे हार नही सभ जेतै ॥१॥ (1302-7)
बुरा भला कहु किस नो कहीऐ ॥ (353-9)
बुरा भला कहु किस नो कहीऐ सगले जीअ तुम्हारे ॥१॥ रहाउ ॥ (383-8)
बुरा भला किछु आपस ते जानिआ एई सगल विकारा ॥ (993-13)
बुरा भला कोई न कहीजै ॥ (186-6)
बुरा भला जे सम करि जाणै इन बिधि साहिबु रमतु रहै ॥८॥ (432-18)
बुरा भला तिचरु आखदा जिचरु है दुहु माहि ॥ (757-6)
बुरा भला तुधु सभु किछु सूझै जेहा को करे तेहा को पाईऐ ॥१॥ (735-9)
बुरा भला तुधु सभु किछु सूझै तुधु भावै तिवै बुलावहि ॥१॥ रहाउ ॥ (735-10)
बुरा भला दुइ मसतकि लीखे पापु पुंनु बीजाइदा ॥१४॥ (1038-8)
बुरा भला दुइ समसरि सहीऐ ॥ (1076-10)
बुरा भला न पछाणई वणजारिआ मित्रा मनु मता अहमेइ ॥ (77-11)

बुरा भला न पछाणै प्राणी आगै पंथु करारा ॥ (77-12)
बुरा भला नही सुझी हे ॥२॥ (213-12)
बुरे काम कउ ऊठि खलोइआ ॥ (738-15)
बुरे भले हम थारे ॥ रहाउ ॥ (631-4)
बुलाइआ बोलै गुर कै भाणि ॥ (396-7)
बूंद कहा तिआगि चात्रिक मीन रहत न घरी ॥ (1120-19)
बूंद पवै बिनसै ढहत न लागै बारा ॥ (1048-7)
बूंद विहूणा चात्रिको किउ करि त्रिपतावै ॥ (708-15)
बूझत दीपक मिलत तिलत ॥ (987-1)
बूझहि गुरमुखि से जन पूरे ॥ (1025-14)
बूझहु गिआनी बूझणा एहु अकथ कथा मन माहि ॥ (1093-1)
बूझहु गिआनी सबदु बीचारि ॥ (840-15)
बूझहु हरि जन सतिगुर बाणी ॥ (1025-17)
बूझि बैरागु करे जे कोइ ॥ (1145-3)
बूझी तपति घरहि पिरु पाइआ ॥ (738-2)
बूझी त्रिसना महा सीतलाइआ ॥८॥१॥ (913-7)
बूझी त्रिसना सहजि सुहेला कामु क्रोधु बिखु जारो ॥ (1215-2)
बूझी नही काजी अंधिआरै ॥३॥ (870-18)
बूझु गिआनी सतगुर की टेकै ॥ (905-2)
बूझै करमु सु सबदु पछाणै ॥ (1040-7)
बूझै देखै करै बिबेक ॥ (279-5)
बूझै नाही एकु सुधाखरु ओहु सगली झाख झखाईऐ ॥३॥ (216-8)
बूझै बूझनहारु बिबेक ॥ (285-12)
बूझै बूझनहारु सभागा ॥१॥ रहाउ ॥ (329-4)
बूझै ब्रहमु अंतरि बिबेकु ॥४॥ (355-7)
बूझै हुकमु सो साचि समावै ॥ (1025-11)
बूडं त तरीअं ऊणं त भरीअं ॥ (1359-19)
बूडत अंध नानक प्रभ काढत साध जना संगारी ॥२॥११॥४२॥ (681-8)
बूडत कउ जैसे बेड़ी मिलत ॥ (986-19)
बूडत घोर अंध कूप महि ते साधू संगि पारि परे ॥१॥ (1208-14)
बूडत घोर अंध कूप महि निकसिओ मेरे भाई रे ॥१॥ रहाउ ॥ (377-6)
बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे ॥ (414-13)
बूडत जात पाए बिस्रामु ॥ (290-6)
बूडत जात पूरै गुरि काढे ॥ (191-3)
बूडत दुख महि काढि लइआ ॥३॥ (892-14)
बूडत पाहन तारहि तारि ॥३॥ (352-9)
बूडत प्रानी जिनि गुरहि तराइआ ॥ (1338-12)

बूडत प्रानी हरि जपि धीरै ॥ (1303-5)
बूडत बूडे सरब जंजाला ॥४॥ (903-12)
बूडत मोह ग्रिह अंध कूप महि नानक लेहु निबाही ॥४॥७॥ (610-12)
बूडत लोह साधसंगि तरै ॥ (896-6)
बूडत संसार सागर ॥ (1301-6)
बूडहुगे परवार सकल सिउ रामु न जपहु अभागे ॥१॥ रहाउ ॥ (1102-19)
बूडा दुरजोधनु पति खोई ॥ (225-1)
बूडा बंसु कबीर का उपजिओ पूतु कमालु ॥ (1370-11)
बूडि मूए नउका मिलै कहु काहि चढावउ ॥३॥ (858-17)
बूडी घरु घालिओ गुर कै भाइ चलो ॥ (689-7)
बूडे भारे भै बिना पिआरे तारे नदरि करे ॥१॥ (636-4)
बे दस माह रुती थिती वार भले ॥ (1109-17)
बेअंत अंतु न जाइ पाइआ गही नानक चरण सरन ॥४॥५॥८॥ (458-9)
बेअंत गुण अनेक महिमा कीमति कछू न जाइ कही ॥ (458-12)
बेअंत गुण तेरे कथे न जाही सतिगुर पुरख मुरारे ॥ (248-12)
बेअंत गुना ता के केतक गनी ॥ (862-18)
बेअंत पूरन सुख सहज दाता कवन रसना गुण भणा ॥ (927-6)
बेअंत महिमा ता की केतक बरन ॥ (888-7)
बेअंत साहिबु मेरा मिहरवाणु ॥४॥२६॥३७॥ (894-15)
बेअंता बेअंत गुण तेरे केतक गावा राम ॥ (453-13)
बेगम पुरा सहर को नाउ ॥ (345-12)
बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा ॥३॥१॥ (345-11)
बेगि मिलीजै अपुने राम पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (338-1)
बेड़ा बंधि न सकिओ बंधन की वेला ॥ (794-16)
बेड़े नो कपरु किआ करे जे पातण रहै सुचेति ॥८६॥ (1382-9)
बेढी के गुण सुनि री बाई जलधि बांधि ध्रू थापिओ हो ॥ (657-9)
बेढी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ छानि छवावै हो ॥ (657-7)
बेणी कउ गुरि कीओ प्रगासु ॥ (1192-9)
बेणी कहै सुनहु रे भगतहु मरन मुकति किनि पाई ॥५॥ (93-14)
बेणी जाचै तेरा नामु ॥९॥१॥ (974-19)
बेणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई ॥१॥ (974-6)
बेणु रसाल वजावै सोई ॥ (1039-6)
बेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकरु न जाइ ॥ (727-7)
बेद कतेब करहि कह बपुरे नह बूझहि इक एका ॥६॥ (1153-15)
बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै ॥ (1350-5)
बेद कतेब ते रहहि निरारा ॥३॥३१॥ (329-12)
बेद कतेब न सिम्रिति सासत ॥ (1036-5)

बेद कतेब संसार हभा हूं बाहरा ॥ (397-7)
बेद कतेब सिम्रिति सभि सासत इन्ह पड़िआ मुकति न होई ॥ (747-18)
बेद कतेबी भेदु न जाता ॥ (1021-16)
बेद की पुत्री सिम्रिति भाई ॥ (329-6)
बेद की बिपति पड़ी पछुतानिआ ॥ (224-12)
बेद पड़हि पड़ि बादु वखाणहि ॥ (1058-5)
बेद पड़हि स्मपूरना ततु सार न पेखं ॥ (1099-1)
बेद पड़हि हरि नामु न बूझहि ॥ (1050-1)
बेद पड़े पड़ि पंडित मूए रूपु देखि देखि नारी ॥३॥ (654-8)
बेद पड़े पड़ि ब्रहमे जनमु गवाइआ ॥१॥ (478-7)
बेद पड़े पड़ि ब्रहमे हारे इकु तिलु नही कीमति पाई ॥ (747-11)
बेद पाठ मति पापा खाइ ॥ (791-3)
बेद पाठ संसार की कार ॥ (791-3)
बेद पुराण कथे सुणे हारे मुनी अनेका ॥ (1008-17)
बेद पुराण पड़ै सुणि थाटा ॥ (226-3)
बेद पुराण सासत्र बीचारं ॥ (1361-6)
बेद पुराण सिम्रिति भने ॥ (211-9)
बेद पुराण सिम्रिति हरि जपिआ मुखि पंडित हरि गाइआ ॥ (995-16)
बेद पुरान जास गुन गावत ता को नामु हीऐ मो धरु रे ॥ (220-14)
बेद पुरान तिनि सिम्रिति सुनीजा ॥ (393-2)
बेद पुरान पड़े का किआ गुनु खर चंदन जस भारा ॥ (1102-19)
बेद पुरान पड़े को इह गुन सिमरे हरि को नामा ॥१॥ रहाउ ॥ (220-4)
बेद पुरान सभ देखे जोइ ॥ (1195-14)
बेद पुरान सभै मत सुनि कै करी करम की आसा ॥ (654-15)
बेद पुरान साध मग सुनि करि निमख न हरि गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥ (220-1)
बेद पुरान सासत्र आनंता गीत कबित न गावउगो ॥ (972-18)
बेद पुरान सिम्रिति के मत सुनि निमख न हीए बसावै ॥ (632-18)
बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल ॥ (274-15)
बेद पुरान सिम्रिति महि देखु ॥ (294-2)
बेद पुरान सिम्रिति सभ खोजे कहू न ऊबरना ॥ (477-2)
बेद पुरान सिम्रिति साधू जन इह बाणी रसना भाखी ॥ (1227-14)
बेद पुरान सिम्रिति साधू जन खोजत खोजत काढी ॥१॥ रहाउ ॥ (1219-1)
बेद पुरान सिम्रिति सुधाख्यर ॥ (262-11)
बेद पुरान सिम्रिति सुने बहु बिधि करउ बीचारु ॥ (296-14)
बेद बखिआन करत साधू जन भागहीन समझत नही खलु ॥ (717-7)
बेद बाणी जगु वरतदा त्रै गुण करे बीचारु ॥ (1276-12)
बेद बाणी वरताइ अंदरि वादु घतिआ ॥ (1280-11)

बेद बाणी सहित बिरंचि जसु गावै जा को सिव मुनि गहि न तजात कबिलास कंउ ॥ (1404-14)
बेद बाद सभि आखि वखाणहि ॥ (1050-3)
बेद वखाणि कहहि इकु कहीऐ ॥ (1188-12)
बेद सासत्र कउ तरकनि लागा ततु जोगु न पछानै ॥२॥ (381-6)
बेद सासत्र जन धिआवहि तरण कउ संसारु ॥ (405-9)
बेद सासत्र जन पुकारहि सुनै नाही डोरा ॥ (408-8)
बेद सिम्रिति कथै सासत भगत करहि बीचारु ॥ (675-17)
बेदन सतिगुरि आपि गवाई ॥ (626-15)
बेदा गंढु बोले सचु कोइ ॥ (143-12)
बेदु पड़ै मुखि मीठी बाणी ॥ (201-4)
बेदु पुकारे पुंनु पापु सुरग नरक का बीउ ॥ (1243-18)
बेदु पुकारे वाचीऐ बाणी ब्रहम बिआसु ॥ (57-14)
बेदु पुकारै भगति सरोति ॥ (831-17)
बेदु पुकारै मुख ते पंडत कामामन का माठा ॥ (1003-1)
बेदु बडा कि जहां ते आइआ ॥२॥ (331-16)
बेदु बादु न पाखंडु अउधू गुरमुखि सबदि बीचारी ॥१९॥ (908-5)
बेदु वपारी गिआनु रासि करमी पलै होइ ॥ (1244-1)
बेधीअले गोपाल गोसाई ॥ (1350-18)
बेधीअले चक्र भुअंगा ॥ (972-3)
बेनु बजावै गोधनु चरै ॥ (988-12)
बेपरवाह सदा रंगि हरि कै जा को पाखु सुआमी ॥ रहाउ ॥ (711-12)
बेपरवाहु रहत है सुआमी इक नाम कै आधारा ॥२॥ (884-4)
बेबरजत बेद संतना उआहू सिउ रे हितनो ॥ (212-5)
बेमुहताज नही किछु काणि ॥ (987-14)
बेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ (184-14)
बेमुहताजु बेअंतु अपारा ॥ (1190-8)
बेवजीर बडे धीर धरम अंग अलख अगम खेलु कीआ आपणै उछाहि जीउ ॥ (1403-1)
बेसवा जोनि वलि वलि अउतरै ॥२॥ (526-7)
बेसुआ केरे पूत जिउ पिता नामु तिसु जाइ ॥ (1415-12)
बेसुआ कै घरि बेटा जनमिआ पिता ताहि किआ नामु सदईआ ॥६॥ (837-3)
बेसुआ भजत किछु नह सरमावै ॥ (1143-9)
बेसुआ रवत अजामलु उधरिओ मुखि बोलै नाराइणु नरहरे ॥ (995-8)
बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥ (292-5)
बेसुमार बेअंत सुआमी ऊचो गुनी गहेरो ॥ (618-7)
बेसुमार बेअंत सुआमी तेरो अंतु न किन ही लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (674-2)
बेसुमार बेअंत सुआमी नानक बलि बलि जाई ॥१७॥ (916-2)
बेसुमार बेअंतु बड दाता मनहि गहीरउ पेखि प्रभ कउ ॥२॥ (700-13)

बेसुमार वड साह दातारा ऊचे ही ते ऊचा ॥२॥ (1235-6)
बेसुमार साहु प्रभु पाइआ लाहा चरन निधि खाट ॥१॥ (1269-7)
बै खरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे ॥१॥ (738-4)
बै खरीदु हउ दासरो तेरा ॥ (739-11)
बैकुंठ गोबिंद चरन नित धिआउ ॥ (1220-17)
बैकुंठ नगरु जहा संत वासा ॥ (742-12)
बैठत उठत कुटिलता चालहि ॥ (332-6)
बैठत ऊठत सोवत जागत विसरु नाही तूं सास गिरासा ॥१॥ रहाउ ॥ (378-6)
बैठत हरि हरि सोवत हरि हरि हरि रसु भोजनु खाता ॥ (532-9)
बैठा ताड़ी लाइ आपि सभ दू ही बाहरि ॥ (555-18)
बैठा ताड़ी लाइ कवलु छपाइआ ॥ (1279-11)
बैठि सिंघु घरि पान लगावै घीस गलउरे लिआवै ॥ (477-5)
बैदक अनिक उपाव कहां लउ भाखई ॥ (1363-11)
बैदक नाटिक देखि भुलाने मै हिरदै मनि तनि प्रेम पीर लगईआ ॥२॥ (836-16)
बैद्यं पारब्रहम परमेस्वर आराधि नानक हरि हरि हरे ॥४९॥ (1358-13)
बैन उचरउ तुअ नाम जी चरन कमल रिद ठाउ ॥११९॥ (1370-16)
बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥ (267-19)
बैर बिरोध छेदे भै भरमां ॥ (1348-17)
बैरागी बंधनु करै ता को बडो अभागु ॥२४३॥ (1377-14)
बैरागी रामहि गावउगो ॥ (973-1)
बैरागै ते हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥२॥ (490-18)
बैराड़ी महला ४ ॥ (719-10)
बैराड़ी महला ४ ॥ (719-6)
बैराड़ी महला ४ ॥ (720-10)
बैराड़ी महला ४ ॥ (720-2)
बैराड़ी महला ४ ॥ (720-6)
बैराधर गजधर केदारा ॥ (1430-17)
बैरारी करनाटी धरी ॥ (1430-13)
बैरी उलटि भए है मीता ॥ (326-18)
बैरी कारणि पाप करता बसतु रही अमाना ॥ (403-8)
बैरी मीत होए समान ॥ (1147-10)
बैरी संगि रंग रसि रचिआ तिसु सिउ जीअरा जारसि रे ॥१॥ रहाउ ॥ (1000-14)
बैरी सभि होवहि मीत ॥ (895-17)
बैल कउ नेत्रा पाइ दुहावै ॥ (198-4)
बैसंतरु जा के कपरे धोई ॥३॥ (481-9)
बैसनो ते गुरमुखि सुच धरमा ॥ (258-10)
बैसनो नामु करम हउ जुगता तुह कुटे किआ फलु पावै ॥ (960-7)

बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन ॥ (274-6)
बैसनौ नामु करत खट करमा अंतरि लोभ जूठान ॥ (1202-19)
बैसि गुफा महि आखउ कैसा ॥ (221-15)
बैसि सुथानि कहां गुण तेरे किआ किआ कथउ अपारा ॥ (1255-8)
बैसि सुथानि सद हरि गुण गावै सचै सबदि समावणिआ ॥५॥ (124-13)
बैसि सुथानि हरि गुण गावहि आपे करि सति मनावणिआ ॥७॥ (114-15)
बोइ खेती लाइ मनूआ भलो समउ सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1002-11)
बोइओ बीजु अहं मम अंकुरु बीतत अउध करत अघनां ॥ (1387-17)
बोल अबोल मधि है सोई ॥ (340-4)
बोलणु फादलु नानका दुखु सुखु खसमै पासि ॥१॥ (146-14)
बोलत बोलत बढहि बिकारा ॥ (870-4)
बोलनहारु परम गुरु एही ॥१॥ (1158-8)
बोलहि अम्रित बाणि रसन रसाइआ जीउ ॥ (688-16)
बोलहि कूरु साकत मुखु कारा ॥४॥ (239-5)
बोलहि साचु मिथिआ नही राई ॥ (227-12)
बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥ (286-6)
बोलहु भईआ राम की दुहाई ॥ (1123-14)
बोलहु भईआ राम नामु पतित पावनो ॥ (800-19)
बोलहु भईआ सद राम रामु रामु रवि रहिआ सरबगे ॥१॥ रहाउ ॥ (1202-6)
बोलहु भाई हरि कीरति हरि भवजल तीरथि ॥ (669-16)
बोलहु रामु करे निसतारा ॥ (353-13)
बोलहु सचु नामु करतार ॥ (1329-17)
बोलहु साचु पछाणहु अंदरि ॥ (1026-7)
बोला जे समझाईऐ पड़ीअहि सिम्रिति पाठ ॥ (143-7)
बोलाइआ बोली खसम दा ॥ (74-5)
बोलाइआ बोली तेरा ॥ (623-1)
बोलि न जाणै माइआ मदि माता मरणा चीति न आवै ॥१॥ (749-19)
बोलि सुधरमीड़िआ मोनि कत धारी राम ॥ (547-17)
बोलि हरि नाम पवित्र सभि किता ॥ (998-3)
बोलि हरि नामु सफल सा घरी ॥ (1134-5)
बोलिआ तेरा थाइ पवै गुरमुखि होइ अलाइ ॥ (1419-19)
बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥ (488-14)
बोले साहिब कै भाणै ॥ (629-9)
बोलै ईसरु सति सरूपु ॥ (952-14)
बोलै कउड़ा जिहबा की फूड़ि ॥ (394-13)
बोलै खेलै असथिरु होवै किउ करि अलखु लखाए ॥ (944-10)
बोलै गोपी चंदु सति सरूपु ॥ (952-18)

बोलै गोरखु सति सरूपु ॥ (952-16)
बोलै चरपटु सति सरूपु ॥ (953-1)
बोलै झूठु कमावै अवरा त्रिसन न बूझै बहुतु हइआ ॥ (900-11)
बोलै नानकु सुणहु तुम बाले ॥ (942-19)
बोलै नाही होइ बैठा मोनी ॥ (1348-8)
बोलै पवना गगनु गरजै ॥ (943-14)
बोलै बाणी नानकु बीचारै ॥४८॥ (943-10)
बोलै भरथरि सति सरूपु ॥ (953-3)
बोलै सेख फरीदु पिआरे अलह लगे ॥ (488-12)
बोहिथउ बिधातै निरमयौ सभ संगति कुल उधरण ॥ (1395-5)
बोहिथड़ा हरि चरण अराधे मिलि सतिगुर पारि लघाए राम ॥ (782-7)
बोहिथड़ा हरि चरण मन चड़ि लंघीऐ ॥ (398-8)
बोहिथि चड़उ जा आवै वारु ॥ (153-8)
बोहिथु जल सिरि तरि टिकै साचा वखरु जितु ॥ (992-3)
बोहिथु नानक देउ गुरु जिसु हरि चड़ाए तिसु भउजलु तरणा ॥२२॥ (1102-10)
ब्याधि उपाड़ण संतं ॥ (1361-3)
ब्यापतु देखीऐ जगति जानै कउनु तेरी गति सरब की रख्या करै आपे हरि पति ॥ (1385-5)
ब्रहमंड खंड पूरन ब्रहमु गुण निरगुण सम जाणिओ ॥ (1390-15)
ब्रहम अगनि सहजे परजाली एकहि चोट सिझाइआ ॥४॥ (1161-18)
ब्रहम कमल पुतु मीन बिआसा तपु तापन पूज करावैगो ॥ (1309-7)
ब्रहम कमल मधु तासु रसादं जागत नाही सूता ॥७॥ (503-13)
ब्रहम कमलु पइआलि न पाइआ ॥ (227-2)
ब्रहम के बेते सबदु पछाणहि हउमै जाति गवाई ॥ (67-13)
ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु ॥ (273-19)
ब्रहम गिआनी अह्मबुधि तिआगत ॥ (273-8)
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ॥ (274-1)
ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥ (272-17)
ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस ॥ (273-3)
ब्रहम गिआनी एक संगि हेता ॥ (273-10)
ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥ (273-12)
ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥ (273-12)
ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥ (273-14)
ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥ (273-16)
ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥ (272-14)
ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥ (273-14)
ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥ (273-15)
ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥ (273-12)

ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥ (273-3)
ब्रहम गिआनी का निरमल मंत ॥ (273-10)
ब्रहम गिआनी का बड परताप ॥ (273-11)
ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन ॥ (273-2)
ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ॥ (273-19)
ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥ (273-19)
ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥ (273-13)
ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥ (273-16)
ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अम्रितु बरसी ॥ (273-1)
ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥ (273-1)
ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥ (273-15)
ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥ (272-18)
ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी ॥ (274-1)
ब्रहम गिआनी कै एकै रंग ॥ (273-6)
ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा ॥ (273-3)
ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अनंद ॥ (273-8)
ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥ (272-12)
ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥ (272-13)
ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु ॥ (273-7)
ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु ॥ (273-7)
ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥ (272-16)
ब्रहम गिआनी कै नाही धंधा ॥ (273-4)
ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु संग ॥ (273-6)
ब्रहम गिआनी कै मनि परमानंद ॥ (273-8)
ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥ (272-15)
ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥ (272-16)
ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥ (273-13)
ब्रहम गिआनी कै होइ अचिंत ॥ (273-10)
ब्रहम गिआनी कै होइ सु भला ॥ (273-5)
ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥ (273-11)
ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥ (272-19)
ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥ (272-15)
ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥ (273-4)
ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥ (273-18)
ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता ॥ (273-1)
ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता ॥ (273-10)
ब्रहम गिआनी मिलि करहु बीचारा इहु तउ चलतु भइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (885-14)

ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥ (273-18)
ब्रहम गिआनी ले धावतु बंधा ॥ (273-4)
ब्रहम गिआनी संगि सगल उधारु ॥ (273-5)
ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥ (272-18)
ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥ (273-17)
ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥ (272-12)
ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥ (272-11)
ब्रहम गिआनी सदा सद जागत ॥ (273-7)
ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥ (272-19)
ब्रहम गिआनी सभ स्रिसटि का करता ॥ (273-17)
ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥ (273-15)
ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास ॥ (273-9)
ब्रहम गिआनी सुफल फला ॥ (273-5)
ब्रहम गिआनी से जन भए ॥ (272-17)
ब्रहम नाम गुण साख तरोवर नित चुनि चुनि पूज करीजै ॥ (1325-6)
ब्रहम पसारु जीअ संगि दइआल ॥३॥ (198-17)
ब्रहम पुरी निहचलु नही रहणा ॥ (237-8)
ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥ (324-16)
ब्रहम बीचारु बीचारे कोइ ॥ (900-6)
ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥ (287-3)
ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा बेअंत ठाकुर तेरी गति नही पाई ॥१॥ (822-11)
ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा भगति दानु जसु मंगी ॥१॥ (1322-1)
ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा मोहि ठाकुर ही दरसारे ॥१॥ (534-4)
ब्रहम लोक अरु रुद्र लोक आई इंद्र लोक ते धाइ ॥ (500-5)
ब्रहमचारि ब्रहमचजु कीना हिरदै भइआ गुमाना ॥ (1003-3)
ब्रहमण कैली घातु कंञका अणचारी का धानु ॥ (1413-4)
ब्रहमण चुली संतोख की गिरही का सतु दानु ॥ (1240-7)
ब्रहमण वादु पड़हि करि किरिआ करणी करम कराए ॥ (1332-6)
ब्रहमणह संगि उधरणं ब्रहम करम जि पूरणह ॥ (1360-1)
ब्रहमणु ब्रहम गिआन इसनानी हरि गुण पूजे पाती ॥ (992-14)
ब्रहमन गिआस करहि चउबीसा काजी मह रमजाना ॥ (1349-14)
ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥ (858-8)
ब्रहमा कोटि बेद उचरै ॥१॥ (1162-18)
ब्रहमा गुण उचरै जिनि हुकमि सभ स्रिसटि सवारीअ ॥ (1390-15)
ब्रहमा बडा कि जासु उपाइआ ॥ (331-15)
ब्रहमा बिसनु देव सबाइआ ॥ (1052-12)
ब्रहमा बिसनु महादेउ त्रै गुण भुले हउमै मोहु वधाइआ ॥ (852-12)

ब्रहमा बिसनु महादेउ त्रै गुण रोगी विचि हउमै कार कमाई ॥ (735-17)
ब्रहमा बिसनु महादेउ मोहिआ ॥ (394-16)
ब्रहमा बिसनु महेस इक मूरति आपे करता कारी ॥१२॥ (908-1)
ब्रहमा बिसनु महेसर बेधे ॥ (872-6)
ब्रहमा बिसनु महेसु उपाइअनु हुकमि कमावनि कारा ॥ (948-14)
ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए माइआ मोहु वधाइदा ॥१४॥ (1036-7)
ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण बिसथारिआ ॥ (1094-12)
ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण सिरि धंधै लाइआ ॥ (509-10)
ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै मूरति त्रिगुणि भरमि भुलाई ॥१६॥ (909-16)
ब्रहमा बिसनु महेसु दुआरै ॥ (1022-7)
ब्रहमा बिसनु महेसु देव उपाइआ ॥ (1279-17)
ब्रहमा बिसनु महेसु न कोई ॥ (1035-13)
ब्रहमा बिसनु महेसु वीचारी ॥ (1049-19)
ब्रहमा बिसनु महेसु सरेसट नामि रते वीचारी ॥ (1013-14)
ब्रहमा बिसनु रिखी मुनी संकरु इंदु तपै भेखारी ॥ (992-6)
ब्रहमा बिसनु रुद्रु तिस की सेवा ॥ (1053-18)
ब्रहमा बिसनु सिरे तै अगनत तिन कउ मोहु भया मन मद का ॥ (1403-13)
ब्रहमा मूलु वेद अभिआसा ॥ (230-17)
ब्रहमा वेदु पड़ै वादु वखाणै ॥ (231-8)
ब्रहमा हू को कहिओ न मानहि ॥४॥ (332-7)
ब्रहमादिक सनकादि सेख गुण अंतु न पाए ॥ (1386-16)
ब्रहमादिक सनकादिक चाहै ॥ (203-14)
ब्रहमादिक सनकादिक सनक सनंदन सनातन सनतकुमार तिन्ह कउ महलु दुलभावउ ॥२॥ (401-8)
ब्रहमादिक सिव छंद मुनीसुर रसकि रसकि ठाकुर गुन गावत ॥ (1388-11)
ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीऐ एकु एकु वखाणीऐ ॥ (846-17)
ब्रहमु पसरिआ ब्रहम लीला गोविंद गुण निधि जनि कहिआ ॥ (458-18)
ब्रहमु पसारु पसारिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई ॥२॥ (671-7)
ब्रहमु पाती बिसनु डारी फूल संकरदेउ ॥ (479-6)
ब्रहमु बिंद ते सभ ओपति होई ॥२॥ (1128-1)
ब्रहमु बिंदहि ते ब्राहमणा जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ (850-1)
ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु कहीऐ जि अनदिनु हरि लिव लाए ॥ (512-4)
ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥१॥ (1127-19)
ब्रहमु बिंदे सो सतिगुरु कहीऐ हरि हरि कथा सुणावै ॥ (1264-4)
ब्रहमु बिंदै तिस दा ब्रहमतु रहै एक सबदि लिव लाइ ॥ (649-15)
ब्रहमु बीचारिआ जनमु सवारिआ पूरन किरपा प्रभि करी ॥ (81-11)
ब्रहमु बीचारु नानकु आखि सुणावै ॥ (317-16)
ब्रहमे इंद्र धिआइनि हिरदे ॥ (130-13)

ब्रहमे कोटि अराधहि गिआनी जाप जपे ॥ (455-14)
ब्रहमे तुधु धिआइन्हि इंद्र इंद्रासणा ॥ (518-8)
ब्रहमे दिते बेद पूजा लाइआ ॥ (1279-17)
ब्रहमे नही जानहि भेद ॥ (894-4)
ब्रहमे मुखि माइआ है त्रै गुण ॥ (1038-1)
ब्रहमै इंद्रि महेसि न जाणी ॥ (1032-2)
ब्रहमै कथि कथि अंतु न पाइआ ॥ (327-11)
ब्रहमै गरबु कीआ नही जानिआ ॥ (224-11)
ब्रहमै बेद बाणी परगासी माइआ मोह पसारा ॥ (559-14)
ब्रहमै ब्रहमु मिलिआ कोइ न साकै भिंन करि बलि राम जीउ ॥ (778-11)
ब्रहमै वडा कहाइ अंतु न पाइआ ॥ (1279-11)
ब्रहमो पसारा ब्रहमु पसरिआ सभु ब्रहमु द्रिसटी आइआ ॥ (782-18)
ब्राहमणु खत्री सूद वैस चारि वरन चारि आस्रम हहि जो हरि धिआवै सो परधानु ॥ (861-7)
ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥ (662-12)
ब्रिथा अनुग्रहं गोबिंदह जस्य सिमरण रिदंतरह ॥ (1356-6)
ब्रिथा जनमु फिरि आवहि जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1175-11)
ब्रिहसपति बिखिआ देइ बहाइ ॥ (344-15)
भंउकै कोपु खुआरु होइ फकड़ु पिटे अंधु ॥ (1288-13)
भंजन गड़्हण समथु तरण तारण प्रभु सोई ॥ (1404-4)
भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥ (473-9)
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥ (473-8)
भंडार दरब अरब खरब पेखि लीला मनु सधारै ॥ (901-13)
भंडार भरे भगती हरि तेरे जिसु भावै तिसु देवाई ॥२१॥ (758-4)
भंडि जमीऐ भंडि निमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥ (473-8)
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥ (473-8)
भंनण घड़ण समरथु है ओपति सभ परलै ॥ (1102-14)
भंनै घड़े सवारे साजे ॥ (1053-14)
भइआ दिवाना साह का नानकु बउराना ॥ (991-7)
भइआ प्रगासु रिदै उलासु प्रभु लोड़ीदा पाइआ ॥ (1237-7)
भइआ भेदु भूपति पहिचानिआ ॥३०॥ (342-2)
भइआ मनूरु कंचनु फिरि होवै जे गुरु मिलै तिनेहा ॥ (990-6)
भइआ समाहड़ा हरि रतनु विसाहा राम ॥ (845-17)
भइओ अनुग्रहु जा कउ प्रभ को तिसु हिरदै नामु वसाइआ ॥ (712-16)
भइओ अनुग्रहु प्रसादि संतन कै हरि नामा है मीठा ॥ (612-4)
भइओ अनुग्रहु मिटिओ मोरचा अमोल पदारथु लाधिओ ॥ (530-19)
भइओ किरपालु दीन दुख भंजनु आपे सभ बिधि थाटी ॥ (630-15)
भइओ किरपालु सरब को ठाकुरु सगरो दूखु मिटाइओ ॥ (624-11)

भइओ क्रिपाल दीन दुख भंजनु परा पूरबला जोर ॥ (1228-5)
भइओ क्रिपालु जीअ सुखदाता होई सगल खलासी ॥१॥ रहाउ ॥ (1214-9)
भइओ क्रिपालु ठाकुरु नानक कउ परिओ साध की सरना ॥२॥१६॥ (531-11)
भइओ क्रिपालु ठाकुरु सेवक कउ सवरे हलत पलाता ॥ (1000-6)
भइओ क्रिपालु दइआलु दुख भंजनु लगै न ताती बाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1212-10)
भइओ क्रिपालु दइआलु प्रभु ठाकुरु काटिओ बंधु गरावउ ॥ (401-10)
भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु जनम मरण दुख लाथे ॥१॥ रहाउ दूजा ॥४॥४॥१२६॥ (403-4)
भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु हरि हरि कीरतनि इहु मनु राता ॥ रहाउ दूजा ॥१॥३॥ (642-8)
भइओ क्रिपालु नानक प्रभु अपुना अनद सेती घरि आइआ ॥४॥१३॥२४॥ (615-16)
भइओ क्रिपालु सतसंगि मिलाइआ ॥ (738-1)
भइओ क्रिपालु साधसंगु पाइआ ॥ (759-18)
भइओ दइआलु क्रिपालु दुख हरता संतन सिउ बनि आई ॥ (1213-4)
भइओ परापति अम्रित नामा बलि बलि प्रभ चरणीठा ॥१॥ (1212-15)
भइओ प्रगासु अनद उजीआरा सहजि समाधि समाहिओ ॥१॥ (1303-3)
भइओ प्रगासु सदा सुखु मन महि सतिगुरु पूरा पाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (671-12)
भइओ प्रगासु सरब उजीआरा गुर गिआनु मनहि प्रगटाइओ ॥ (209-9)
भइओ प्रसादु क्रिपा निधि ठाकुर संतसंगि पति पाई ॥ (1000-17)
भई अमोली भारा तोली मुकति जुगति दरु खोल्हा ॥ (780-2)
भई कलिआण अनंद रूप होई है उबरे बाल गुपाल ॥ रहाउ ॥ (532-16)
भई कलिआण आनंद रूप हुई है उबरे बाल गुपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (499-4)
भई कलिआण दुख होवत नासु ॥१॥ (386-12)
भई क्रिपा तब दरसनु पाइओ ॥ (254-16)
भई क्रिपा नानक सतसंगे तउ धन पिर अनंद उलासा हे ॥५॥ (1072-18)
भई निमाणी सरनि इक ताकी गुर सतिगुर पुरख सुखदाई ॥ (1267-16)
भई निरासी उठि चली चित बंधि न धीरा ॥ (334-2)
भई निरासी करम की फासी बिनु गुर भरमि भुलानी ॥१॥ (1255-11)
भई निरासी बहुतु दिन लागे ॥ (737-19)
भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ (12-6)
भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ (378-1)
भई परापति वसतु अगोचर राम नामि रंगु लागा ॥२॥ (671-13)
भई मित्राई मिटी बुराई द्रुसट दूत हरि काढे छाणि ॥ (826-16)
भईले उदासी रहउ निरासी ॥१॥ रहाउ ॥ (357-3)
भउ कतहि नही प्रभ सरणा ॥ रहाउ ॥ (622-6)
भउ खंडनु दुख भंजनो भगति वछल हरि नाइओ ॥५॥ (241-17)
भउ खला अगनि तप ताउ ॥ (8-8)
भउ खाणा पीणा आधारु ॥ (151-11)
भउ खाणा पीणा सुखु सारु ॥ (1345-1)

भउ चूका टूटे सभि फंद ॥ (392-11)
भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥ (287-15)
भउ जनम मरणा मेटिओ गुर सबदी हरि असथिरु सेवि सुखि समघा ॥१॥ (731-13)
भउ जनम मरन निवारि ठाकुर हरि गुरमती प्रभु पाइआ ॥३॥ (984-8)
भउ तेरा भांग खलड़ी मेरा चीतु ॥ (721-10)
भउ न विआपै तेरी सरणा ॥ (192-9)
भउ नही तसकर पउण न पानी ॥ (372-4)
भउ नही लागै जां ऐसे बुझीआ ॥१॥ (1136-6)
भउ नाठा भ्रमु मिटि गइआ रविआ नित राम ॥१॥ (819-6)
भउ नाही सुख सहज अनंदा अनिक ओही रे एक समार ॥१॥ रहाउ ॥ (535-12)
भउ फेरी होवै मन चीति ॥ (350-12)
भउ बिनसै अम्रितु रसै रंगि रते निरंकार ॥ (297-11)
भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥ (288-11)
भउ बेड़ा जीउ चड़ाऊ ॥ (990-1)
भउ बैरागा सहजि समाता ॥ (1040-4)
भउ बैरागु भइआ है बोहिथु गुरु खेवटु सबदि तरावैगो ॥ (1308-15)
भउ भंजन रिद माहि अराधो ॥ (897-2)
भउ भंजनु पाइआ आपु गवाइआ गुरमुखि मेलि मिलाई ॥ (569-3)
भउ भजि जाइ अभै होइ रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (325-5)
भउ भरमु बिनसे बिकार ॥ (1340-3)
भउ भाउ दुइ पत लाइ जोगी इहु सरीरु करि डंडी ॥ (908-16)
भउ भाउ प्रीति नानक तिसहि लागै जिसु तू आपणी किरपा करहि ॥ (1116-2)
भउ भाउ सभु तिस दा सो सचु वरतै संसारि ॥९॥ (788-15)
भउ भागा निरभउ मनि बसै ॥ (893-14)
भउ भुइ पवितु पाणी सतु संतोखु बलेद ॥ (955-5)
भउ मुचु भारा वडा तोलु ॥ (151-3)
भउ वटी इतु तनि पाईऐ ॥ (25-18)
भउ सीगारु तबोल रसु भोजनु भाउ करेइ ॥ (788-9)
भउकहि आगै बदनु पसारि ॥१॥ रहाउ ॥ (969-19)
भउकि मरहि भउ भउ भउ हारा ॥ (1029-17)
भउजल डूबत चिंत करेइ ॥ (354-10)
भउजल तारणहारु सबदि पछाणीऐ ॥ (1288-1)
भउजलि डुबदिआ कढि लए हरि दाति करे दातारु ॥ (313-4)
भउजलु पारि उतारिअनु भाई सतिगुर बेड़ै चाड़ि ॥२॥ (638-12)
भउजलु बिखमु असगाहु गुर सबदी पारि पाहि ॥ (962-2)
भउजलु बिखमु असगाहु गुरि बोहिथै तारिअमु ॥ (710-5)
भउदे फिरहि बहु मोह पिआसा ॥ (1068-15)

भउरु उसतादु नित भाखिआ बोले किउ बूझै जा नह बुझाई ॥२॥ (24-4)
भए अचिंत एक लिव लाइआ ॥३॥ (396-6)
भए अचिंत त्रिसन सभ बुझी है इहु लिखिओ लेखु मथामा ॥१॥ रहाउ ॥ (1211-6)
भए अनंद मिलि साधू संगि अब मेरा मनु कत ही न जाइ ॥१॥ (373-1)
भए अनंदा मिटे अंदेसे सरब सूख मो कउ गुरि दीन्हा ॥१॥ रहाउ ॥ (823-15)
भए किरपाल गोपाल प्रभ मेरे साधसंगति निधि मानिआ ॥ (81-2)
भए किरपाल ठाकुर रहिओ आवण जाणा ॥ (52-1)
भए किरपाल पूरन प्रभ दाते जीअ होए मिहरवान ॥ रहाउ ॥ (631-1)
भए क्रिपाल गुपाल गोबिंद ॥ (391-12)
भए क्रिपाल गुरू गोविंदा सगल मनोरथ पाए ॥ (618-8)
भए क्रिपाल गुसाई मेरे ॥ (1078-16)
भए क्रिपाल गुसाईआ नठे सोग संताप ॥ (218-7)
भए क्रिपाल गोविंद गुसाई ॥ (105-2)
भए क्रिपाल दइआल गुपाला ता निरभै कै घरि आइआ ॥ (496-19)
भए क्रिपाल दइआल गोबिंदा अम्रितु रिदै सिंचाई ॥ (679-9)
भए क्रिपाल दइआल गोबिद भइआ साधू संगु ॥ (1226-15)
भए क्रिपाल दइआल दुख भंजन मेरा सगल अंदेसरा गइआ ॥ रहाउ ॥ (533-2)
भए क्रिपाल दइआल प्रभ मेरे साधसंगति मिलि छूटे ॥१॥ रहाउ ॥ (497-19)
भए क्रिपाल पूरन अबिनासी आपहि कीनी सार ॥ (618-17)
भए क्रिपाल पूरन परमेसर नाम निधान मनि चीने ॥१॥ (618-12)
भए क्रिपाल प्रीतम प्रभ मेरे अनद मंगल सुख पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1268-14)
भए क्रिपाल सुआमी मेरे जीउ ॥ (216-19)
भए क्रिपाल सुआमी मेरे तितु साचै दरबारि ॥ (620-8)
भए दइआल क्रिपाल संत जन तब इह बात बताई ॥ (902-6)
भए पुनीत पवित्र मन जनम जनम के दुख हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (1208-13)
भए पुनीत संतन की धूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (387-5)
भए प्रगास साध कै संग ॥ (287-19)
भए प्रसंन गोपाल राइ भउ किछु नही करना ॥१॥ (818-3)
भए मनोरथ सो प्रभु जापे ॥२॥ (805-19)
भखसि सिबालु बससि निरमल जल अम्रितु न लखसि रे ॥१॥ रहाउ ॥ (990-9)
भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥ (274-10)
भगउती मुद्रा मनु मोहिआ माइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1348-2)
भगउती रहत जुगता ॥ (71-7)
भगत अपुने कउ देवहु नाम ॥१॥ (1146-2)
भगत अराधहि अनदिनु रंगि ॥२॥ (1144-18)
भगत अराधहि एक रंगि गोबिंद गुपाल ॥ (816-16)
भगत अराधहि जोग जुगति ॥२॥ (1181-15)

भगत आपे मेलिअनु जिनी सचो सचु कमाइआ ॥ (145-14)
भगत करनि हरि चाकरी जिनी अनदिनु नामु धिआइआ ॥ (145-16)
भगत की निंदा कंधु छेदावै ॥ (1145-10)
भगत की निंदा गरभ महि गलै ॥ (1145-11)
भगत की निंदा नरकु भुंचावै ॥ (1145-10)
भगत की निंदा राज ते टलै ॥२॥ (1145-11)
भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥४॥१॥ (486-10)
भगत जनां कउ देहुरा फिरै ॥३॥६॥ (1164-11)
भगत जनां का राखा हरि आपि है किआ पापी करीऐ ॥ (316-9)
भगत जनां की खिनु खिनु लोचा नामु जपत सुखु पावैगो ॥ (1308-8)
भगत जनां ले उधरिआ पारि ॥२७॥ (1166-12)
भगत जना कंउ आपि तुठा मेरा पिआरा आपे लइअनु जन लाइ ॥ (590-6)
भगत जना कउ द्रिसटि न पेखा ॥४॥ (393-16)
भगत जना कउ राखदा आपणी किरपा धारि ॥ (46-8)
भगत जना कउ सदा अनंदु है हरि कीरतनु गाइ बिगसावै ॥२॥१०॥ (373-10)
भगत जना कउ सदा निवि रहीऐ जन निवहि ता फल गुन पावैगो ॥ (1309-6)
भगत जना कउ सनमुखु होवै सु हरि रासि लए वेमुख भसु पाहु ॥ (852-7)
भगत जना कउ सरधा आपि हरि लाई ॥ (494-16)
भगत जना कउ हरि किरपा धारी ॥ (1178-2)
भगत जना का प्रीतमु पिआरा ॥ (1072-10)
भगत जना का राखणहारा ॥ (1008-3)
भगत जना का लूगरा ओढि नगन न होई ॥ (811-17)
भगत जना की ऊतम बाणी गावहि अकथ कथा नित निआरी ॥ (507-3)
भगत जना की ऊतम बाणी जुगि जुगि रही समाई ॥२०॥ (909-19)
भगत जना की पति राखै सोई ॥ (1154-10)
भगत जना की पैज हरि राखै जन नानक आपि हरि क्रिपा करे ॥२॥१॥७॥ (1321-11)
भगत जना की बरतनि नामु ॥ (264-14)
भगत जना की बेनती सुणी प्रभि आपि ॥ (820-1)
भगत जना की हरि जीउ राखै जुगि जुगि रखदा आइआ राम ॥ (768-9)
भगत जना के प्रान अधार ॥ (290-11)
भगत जना के सास निहारै ॥ (1149-10)
भगत जना के हरि रखवारे जन हरि रसु मीठ लगावैगो ॥ (1309-5)
भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥ (290-8)
भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥ (262-13)
भगत जना कै संगि पाप गवावणा ॥ (652-11)
भगत जना कै संगि सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ (740-13)
भगत जीवहि गुण गाइ अपारा ॥ (103-18)

भगत टेक तुहारे ॥ (1272-11)
भगत तेरे दइआल ओन्हा मिहर पाइ ॥ (522-1)
भगत तेरे सभि प्राणपति प्रीतम तूं भगतन का पिआरा ॥२॥ (747-6)
भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥ (468-2)
भगत दइआ ते बुधि परगासै दुरमति दूख तजावना ॥३॥ (1018-16)
भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ॥ (306-16)
भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ॥ (316-18)
भगत रंगि राते सदा तेरै चाए ॥ (122-13)
भगत रते तेरे नाम सिउ सुखु भुंचहि सभ ठाइ ॥३॥ (431-5)
भगत रते रंगि एक कै पूरा वेसाहु ॥ (556-11)
भगत वछलु तेरा बिरदु रखाइआ जीउ ॥ (216-15)
भगत वसहि कीरतन आधारे ॥७॥ (237-16)
भगत संगि प्रभु गोसटि करत ॥ (894-1)
भगत सचे तेरै दरवारे ॥ (1056-9)
भगत सचे दरि सोहदे अनद करहि दिन राति ॥ (218-2)
भगत सचै दरि सोहदे सचै सबदि रहाए ॥ (513-1)
भगत सरणि जो आवै प्राणी तिसु ईहा ऊहा न हारना ॥५॥ (915-7)
भगत सलाहनि सदा लिव लाए ॥ (1068-3)
भगत सोहनि गुण गावदे गुरमति अचलै ॥ (956-6)
भगत सोहनि हरि के गुण गावहि सदा करहि जैकारा राम ॥ (784-4)
भगत सोहहि गुण गावते नानक प्रभ कै दुआर ॥६॥ (297-18)
भगत सोहहि दरवारि सबदि सुहाइआ जीउ ॥ (688-16)
भगत सोहहि सदा हरि प्रभ दुआरि ॥ (1173-11)
भगत हेति मारिओ हरनाखसु नरसिंघ रूप होइ देह धरिओ ॥ (1105-13)
भगतन की टहल कमावत गावत दुख काटे ता के जनम मरन ॥ (1206-11)
भगतन की रेणु होइ मनु मेरा होहु प्रभू किरपाला ॥३॥ (207-18)
भगतन सेती गोसटे जो कीने सो लाभ ॥२३२॥ (1377-2)
भगतह दरसु देखि नैन रंगा ॥ (1206-16)
भगतां का भोजनु हरि नाम निरंजनु पैन्हणु भगति बडाई ॥ (1233-11)
भगतां सरनि परु हां ॥ (410-9)
भगता एहु अधारु गुण गोविंद गाइ ॥ (522-2)
भगता कउ नाम अधारु है नामे सुखु होई ॥ (1239-13)
भगता का अंगीकारु करदा आइआ ॥ (1155-3)
भगता का आगिआकारी सदा सदा सुखदाई ॥२॥ (1005-11)
भगता का कारजु हरि अनंदु है अनदिनु हरि गुण गाई ॥ (600-12)
भगता का गुणकारी करता बखसि लए वडिआई हे ॥२॥ (1024-14)
भगता का बोलिआ परवाणु है दरगह पवै थाइ ॥ (521-19)

भगता का बोलु आगै आइआ ॥१०॥ (1154-18)
भगता का सहाई जुगि जुगि जाणिआ ॥३॥ (398-6)
भगता का हरि अंगीकारु करे कारजु सुहावा होइ ॥ (548-19)
भगता की चाल निराली ॥ (918-18)
भगता की चाल सची अति निरमल नामु सचा मनि भाइआ ॥ (768-12)
भगता की जति पति एको नामु है आपे लए सवारि ॥ (429-19)
भगता की टेक तूं संता की ओट तूं सचा सिरजनहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (746-17)
भगता की पैज रखहि तू आपे एह तेरी वडिआई ॥ (1155-8)
भगता की पैज रखु तू सुआमी भगत तेरी सरणाई ॥ रहाउ ॥ (637-15)
भगता की सार करहि आपि राखहि जो तेरै मनि भाणे ॥ (601-10)
भगता कै घरि कारजु साचा हरि गुण सदा वखाणे राम ॥ (769-2)
भगता तेरी टेक रते सचि नाइ ॥ (521-19)
भगता तै सैसारीआ जोड़ु कदे न आइआ ॥ (145-14)
भगता दी सदा तू रखदा हरि जीउ धुरि तू रखदा आइआ ॥ (637-13)
भगता नामु आधारु है मेरे गोविंदा हरि कथा मंगहि हरि चंगी जीउ ॥२॥ (174-14)
भगता नो जमु जोहि न साकै कालु न नेड़ै जाई ॥ (637-15)
भगता बणि आई प्रभ अपने सिउ जलि थलि महीअलि सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (748-3)
भगता मनि आनंदु गोबिंद ॥ (1150-19)
भगता मनि आनंदु भइआ हरि नामि रहे लिव लाए राम ॥ (770-17)
भगता मनि आनंदु वजी वधाई ॥ (1154-16)
भगता मनि आनंदु है सचै सबदि रंगि राते ॥ (69-7)
भगता मुखि अम्रित है बाणी ॥ (1070-1)
भगता विचि आपि वरतदा प्रभ जी भगती हू तू जाता ॥ (637-19)
भगति करउ जनु सरनि तुम्हारी ॥१॥ (1157-17)
भगति करउ पग लागउ तोर ॥ (1187-10)
भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥ (289-12)
भगति करउ हरि के गुन गावउ ॥ (485-14)
भगति करत नामा पकरि उठाइआ ॥१॥ (1164-9)
भगति करत मेरे ताल छिनाए किह पहि करउ पुकारा ॥ (1167-17)
भगति करहि जन देखि हजूरि ॥ (1174-9)
भगति करहि मरजीवड़े गुरमुखि भगति सदा होइ ॥ (589-2)
भगति करहि मूरख आपु जणावहि ॥ (159-1)
भगति करहि हरि के गुण गाइ ॥ (292-16)
भगति करहु तुम सहै केरी जो सह पिआरे भावए ॥ (440-9)
भगति करि चितु लाइ हरि सिउ छोडि मनहु अंदेसिआ ॥ (439-7)
भगति करी कराइहि मोर ॥ (1331-14)
भगति करी राचउ हरि नाइ ॥ (221-8)

भगति करी हरि के गुण गावा नानक दासु तुमारा ॥४॥१॥ (883-1)
भगति करे जनु वडिआई पाए ॥ (664-17)
भगति करे विचहु आपु खोइ ॥ (1173-10)
भगति करे सद वेखै हजूरि ॥ (1173-7)
भगति करे सो जनु निरमलु होइ ॥ (1173-12)
भगति कै प्रेमि इन ही है जानां ॥५॥ (330-9)
भगति खजाना आपे दीआ कालु कंटकु मारि समाणे राम ॥ (769-3)
भगति खजाना गुरमुखि जाता सतिगुरि बूझि बुझाई ॥१॥ (909-7)
भगति खजाना बखसिओनु गुरमुखा सुखु होइ ॥४॥३॥ (994-10)
भगति खजाना बखसिओनु हरि नामु निधानु ॥४॥ (786-19)
भगति खजाना भगतन कउ दीआ नाउ हरि धनु सचु सोइ ॥ (600-4)
भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार ॥ (346-17)
भगति जोग कौ जैतवारु हरि जनकु उपायउ ॥ (1407-2)
भगति ठगउरी पाइ मोहह अनत कतहू न धावह ॥ (846-12)
भगति तेरी हैरानु दरदु गवावही ॥३॥ (422-3)
भगति दानु दीजै जाचहि संत जन ॥१॥ रहाउ ॥ (1292-2)
भगति दानु भगता कउ दीना हरि नानकु जाचै माई ॥२१॥१॥६॥ (916-5)
भगति दानु मंगै जनु तेरा नानक बलि बलि जावणा ॥१५॥१॥१४॥२२॥२४॥२॥१४॥६२॥ (1086-16)
भगति न छाडउ राम की भावै निंदउ लोगु ॥४५॥ (1366-16)
भगति नवै परकारा ॥ (71-9)
भगति नारदी रिदै न आई काछि कूछि तनु दीना ॥ (654-18)
भगति निराली अलाह दी जापै गुर वीचारि ॥ (430-1)
भगति परापति गुर गोपाला ॥ (1042-9)
भगति प्रेम आराधितं सचु पिआस परम हितं ॥ (505-12)
भगति प्रेम परम पदु पाइआ साधसंगि दुख नाठे ॥ (382-6)
भगति बंदगी देहि सिरजणहार ॥ (897-5)
भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥ (288-18)
भगति बिना सहसा नह चूकै गुरु इहु भेदु बतावै ॥१॥ रहाउ ॥ (830-18)
भगति बिनु बिरथे जनमु गइओ ॥ (336-13)
भगति बिहूना खंड खंड ॥ (1192-14)
भगति बिहूना जगु बउराना ॥ (931-12)
भगति भंडार गुरबाणी लाल ॥ (376-14)
भगति भंडार गुरि नानक कउ सउपे फिरि लेखा मूलि न लइआ ॥४॥३॥१४॥ (612-16)
भगति भंडार दीए हरि अपुने गुण गाहकु वणजि लै जाइ ॥४॥११॥६३॥ (368-17)
भगति भगतन हूं बनि आई ॥ (1299-3)
भगति भगति करते हरि पाइआ जा हरि हरि हरि हरि नामि समईआ ॥७॥ (837-5)
भगति भाइ आतम परगास ॥ (288-11)

भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥ (290-5)
भगति भाइ धिआइ सुआमी सदा हरि गुण गावहे ॥ (459-13)
भगति भाइ प्रभ की लिव लाइ ॥२॥ (1148-16)
भगति भाइ भरपूरु रिदै उचरै करतारै ॥ (1395-10)
भगति भाइ लावै मन हीत ॥ (290-12)
भगति भाइ सदा निसतार ॥२॥ (1148-9)
भगति भाइ हरि कीरतनु करीऐ ॥ (865-19)
भगति भाउ गुर की मति पूरी अनहदि सबदि लखाई हे ॥१२॥ (1025-6)
भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं ॥२॥ (1293-5)
भगति भाव इहु मारगु बिखड़ा गुर दुआरै को पावए ॥ (440-10)
भगति भावनी पारब्रहम की अबिनासी गुण गाउ ॥१॥ (1221-3)
भगति भी ओना नो बखसीअनु अंतरि भंडारा ॥६॥ (425-8)
भगति रता जनु सहजि सुभाइ ॥ (363-13)
भगति रते तिन्ह सची सोइ ॥ (365-2)
भगति रते से ऊतमा जति पति सबदे होइ ॥ (426-16)
भगति वछल अनाथ नाथे सरणि नानक पुरख अचुतह ॥५२॥ (1358-18)
भगति वछल पुरख पूरन मनहि चिंदिआ पाईऐ ॥ (249-1)
भगति वछल भै काटणहारे ॥ (685-18)
भगति वछल भै काटनहारे ॥ (805-6)
भगति वछल भै काटनहारे नानक के माई बाप ॥२॥७७॥१००॥ (1223-16)
भगति वछल भै भंजन सुआमी गुण गावत नानक आलाप ॥२॥२०॥१०६॥ (825-12)
भगति वछल सदा किरपाल ॥ (290-10)
भगति वछलु अनाथह नाथे ॥ (1082-11)
भगति वछलु उआ को नामु कहीअतु है सरणि प्रभू तिसु पाछै पईआ ॥४॥ (836-6)
भगति वछलु जगजीवनु दाता मति गुरमति हरि निसतारे ॥३॥ (353-16)
भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ ॥ (709-13)
भगति वछलु तेरा बिरदु है जुगि जुगि वरतंदा ॥ (319-7)
भगति वछलु भगता हरि संगि ॥ (416-12)
भगति वछलु भगति कराए सोइ ॥ (159-2)
भगति वछलु सुनि अंचलो गहिआ घटि घटि पूर समानिआ ॥ (1122-17)
भगति वछलु हरि नामु क्रितारथु गुरमुखि क्रिपा करे ॥१॥ (995-5)
भगति वछलु हरि नामु है गुरमुखि हरि लीना राम ॥ (845-1)
भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ ॥ (456-18)
भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥ (449-6)
भगति वछलु हरि मनि वसिआ सहजि मिलिआ प्रभु सोइ ॥ (67-7)
भगति वछलु हरि वसै मनि आइ ॥ (1173-10)
भगति विहूणा सभु जगु भरमिआ अंति गइआ पछुतानिआ ॥ (768-19)

भगति सरोवरु उछलै सुभर भरे वहंनि ॥ (1316-2)
भगति सिरपाउ दीओ जन अपुने प्रतापु नानक प्रभ जाता ॥२॥३०॥९४॥ (631-9)
भगति हमारी सभनी लोई ॥३॥ (1141-13)
भगति हीणु नानकु जनु ज्मपै हउ सालाही सचा सोई ॥४॥१॥ (728-8)
भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै नाउ न जाई ॥४॥१॥ (795-8)
भगति हेत गावै रविदासा ॥५॥५॥ (659-3)
भगति हेति अवतारु लीओ है भागु बडो बपुरा को रे ॥१॥ (338-17)
भगति हेति गुर सबदि तरंगा ॥ (1042-3)
भगति हेति नरसिंघ भेव ॥ (1194-13)
भगति हेतु गुर चरण निवासा ॥ (415-19)
भगतिहीणु नानकु दरि देखहु इकु नामु मिलै उरि धारा ॥४॥३॥ (1255-10)
भगती तोखित दीन क्रिपाला गुणे न कित ही है भिगा ॥१३॥ (1083-2)
भगती नाम विहूणिआ आवहि वंञहि पूर ॥३॥ (47-12)
भगती भरे तेरे भंडारा ॥ (130-3)
भगती भाइ भरे भंडारा ॥ (131-19)
भगती भाइ विहूणिआ मुहु काला पति खोइ ॥ (57-16)
भगती रंगु न उतरै सहजे रहै समाइ ॥२॥ (85-11)
भगती रता सदा बैरागी आपु मारि मिलावणिआ ॥७॥ (112-7)
भगती राते सद बैरागी दरि साचै पति पाई ॥१॥ (1260-11)
भगती राते सदा मनु निरमलु हरि जीउ वेखहि सदा नाले ॥ (768-16)
भगती सार न जाणन्ही मनमुख अहंकारी ॥ (429-16)
भगती सीधे दरि सोभा पाई ॥ (231-17)
भगतु गिआनी तपा जिसु किरपा करै ॥ (958-4)
भगतु तेरा सोई तुधु भावै जिस नो तू रंगु धरता ॥२॥ (1185-18)
भगतु बेणि गुण रवै सहजि आतम रंगु माणै ॥ (1390-11)
भगतु भगतु कहै सभु कोई ॥ (1131-5)
भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥ (283-14)
भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए ॥ (923-9)
भगतु सोई कलि महि परवानु ॥ (888-8)
भगत्यं भगति दानं राम नाम गुण कीरतनह ॥ (1355-16)
भगवंत की टहल करै नित नीति ॥ (274-12)
भगवंत भगत कउ भउ किछु नाही आदरु देवत जाम ॥१॥ (702-14)
भगवत भीरि सकति सिमरन की कटी काल भै फासी ॥ (1162-1)
भगवान रमणं सरबत्र थान्यिं ॥ (1354-12)
भगवै वेसि भ्रमि मुकति न होइ ॥ (1175-18)
भजहु गोबिंद भूलि मत जाहु ॥ (1159-8)
भजि लेहि रे मन सारिगपानी ॥२॥ (1159-10)

भजिओ न रघुपति राजा ॥१॥ रहाउ ॥ (654-17)
भजु गोबिद सभ छोडि जंजाल ॥ (805-13)
भजु नामा तरसि भव सिंधं ॥४॥१॥ (873-12)
भजु प्रेम भगति प्रभु नेरा ॥ रहाउ ॥ (615-7)
भजु मन मेरे एको नाम ॥ (193-9)
भजु मिलि साधू संगति जन की ॥ (164-4)
भजु रामो मनि राम ॥ (1297-3)
भजु संगि साधू इकु अराधू जनम मरन दुख नासए ॥ (691-3)
भजु सरणि सतिगुर ऊबरहि हरि नामु रिद रमणं ॥५॥ (505-17)
भजु सरणि सुआमी सुखह गामी तिसु बिना अन नाहि कोइ ॥ (704-19)
भजु सरनि साधू नानका मिलु गुन गोबिंदहि गाहि ॥२॥२॥२४॥ (1272-4)
भजु साधसंगति सदा नानक मिटहि दोख कमाते ॥१॥ (461-6)
भजु साधसंगि गोपाल नानक हरि चरण सरण उधरण क्रिपा ॥५८॥ (1359-10)
भजु साधसंगि गोबिंद नानक कछु न लागै फेट ॥२॥८१॥१०४॥ (1224-11)
भजु साधसंगे एक रंगे क्रिपाल गोबिद दीना ॥ (1278-10)
भजु साधसंगे मिले रंगे बहुड़ि जोनि न धाईऐ ॥ (547-3)
भजु साधू संगि दइआल देव मन की मति तिआगु जीउ ॥ (926-19)
भजु हरि रसु रस हरि गाट ॥ (1297-8)
भड़ भड़ अगनि सागरु दे लहरी पड़ि दझहि मनमुख ताई हे ॥९॥ (1026-4)
भणति नानकु अंदेसा एही ॥ (990-19)
भणति नानकु अकथ की कथा सुणाए ॥ (991-15)
भणति नानकु जनो रवै जे हरि मनो मन पवन सिउ अम्रितु पीजै ॥ (992-1)
भणति नानकु जब खेलु उझारै तब एकै एकंकारा ॥४॥४॥ (999-19)
भणति नानकु बूझै को बीचारी ॥ (599-12)
भणति नानकु लेखा मागै कवना जा चूका मनि अभिमाना ॥ (993-17)
भणति नानकु सतिगुर कउ मिलदो मरै गुर कै सबदि फिरि जीवै कोइ ॥ (558-14)
भणति नानकु सहु है भी होसी ॥ (750-18)
भणति नामदेउ रमि रहिआ ॥ (1196-7)
भनति नानक ता का पूर खजाना ॥४॥६॥५७॥ (385-13)
भनति नानक भरम पट खूल्हे गुर परसादी जानिआ ॥ (666-12)
भनति नानक मेरी पूरी परी ॥४॥५४॥१२३॥ (190-15)
भनति नानक सरणि प्रभ तेरी ॥४॥८॥१३॥ (805-4)
भनति नानकु करे किआ कोइ ॥ (1128-16)
भनति नानकु करे वीचारु ॥ (661-16)
भनति नानकु मेरै मनि सुखु पाइआ ॥४॥८॥५९॥ (386-3)
भनति नानकु सभना का पिरु एको सोइ ॥ (351-17)
भनति नानकु सुणहु जन भाई ॥ (852-3)

भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ॥ (1164-8)
भनति नामदेउ सुक्रित सुमति भए ॥ (718-14)
भनि दास सु आस जगत्र गुरू की पारसु भेटि परसु कर्यउ ॥ (1400-8)
भनि भनि घड़ीऐ घड़ि घड़ि भजै ढाहि उसारै उसरे ढाहै ॥ (935-13)
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ॥७॥१९॥ (1409-12)
भनि मथुरा मूरति सदा थिरु लाइ चितु सनमुख रहहु ॥ (1408-15)
भभा भरमु मिटावहु अपना ॥ (258-13)
भभा भेदहि भेद मिलावा ॥ (342-1)
भभै भउजलु मारगु विखड़ा आस निरासा तरीऐ ॥ (935-17)
भभै भवजलि डुबोहु मूड़े माइआ विचि गलतानु भइआ ॥ (435-7)
भभै भालहि गुरमुखि बूझहि ता निज घरि वासा पाईऐ ॥ (935-17)
भभै भालहि से फलु पावहि गुर परसादी जिन्ह कउ भउ पइआ ॥ (434-1)
भय भंजनु पर दुख निवारु अपारु अन्मभउ ॥ (1407-11)
भय भंजनु पर पीर निवारनु कल्य सहारु तोहि जसु बकता ॥ (1407-15)
भरण पोखण करंत जीआ बिस्राम छादन देवंत दानं ॥ (1356-3)
भरण पोखण संगि अउध बिहाणी ॥ (743-19)
भरत बिहून कहा सोहागु ॥२॥ (192-18)
भरता कहै सु मानीऐ एहु सीगारु बणाइ री ॥ (400-10)
भरता चितवत पूरन आसा ॥ (100-16)
भरता पेखि बिगसै जिउ नारी ॥ (198-11)
भरथरि गुण उचरै सदा गुर संगि रहंतौ ॥ (1390-18)
भरपुरि धारि रहिआ निहकेवलु गुपतु प्रगटु सभ ठाई हे ॥१२॥ (1022-5)
भरम अंधेर बिनास गिआन गुर अंजना ॥ (456-12)
भरम गए पूरन भई सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (200-10)
भरम भीति खोई गुरि पूरै एकु रविआ सरबंगना ॥८॥ (1080-11)
भरम भीति निवारि ठाकुर गहि लेहु अपनी ओर ॥१॥ रहाउ ॥ (1121-3)
भरम भूले संसार छुटहु जूनी संघार जम को न डंड काल गुरमति ध्याई है ॥ (1398-17)
भरम मोहं मान अपमानं मदं माया बिआपितं ॥ (1357-14)
भरम मोह अगिआन अंधार ॥१॥ (675-12)
भरम मोह कछु सूझसि नाही इह पैखर पए पैरा ॥२॥ (216-1)
भरम मोह के बांधे बंध ॥ (885-15)
भरम मोह ध्रोह सभि निकसे जब का दरसनु पाइआ ॥ (380-15)
भरम मोह बिकार नाठे प्रभु नेर हू ते नेरा ॥ (780-19)
भरम लोभ मोह माइआ विकार ॥ (736-14)
भरमत डोलत भए उदासा ॥ (686-12)
भरमत भरमत महा दुखु पाइआ ॥ (898-4)
भरमहि जोनि असंख मरि जनमहि आवही ॥ (705-8)

भरमाति भरमु न चूकई जगु जनमि बिआधि खपं ॥ (505-16)
भरमि न भूलहु सतिगुरु सेवहु मनु राखहु इक ठाई ॥८॥ (909-12)
भरमि भरमि मानुख डहकाए ॥ (258-15)
भरमि भुलाई सभु जगु फिरी फावी होई भालि ॥ (947-18)
भरमि भुलाईऐ जनमि मरि आईऐ ॥ (904-18)
भरमि भुलाणा अंधुला फिरि फिरि आवै जाइ ॥ (35-19)
भरमि भुलाणा सबदु न चीनै जूऐ बाजी हारी ॥२॥ (1012-19)
भरमि भुलाणे सि मनमुख कहीअहि ना उरवारि न पारे ॥३॥ (797-1)
भरमि भुलाना फिरि पछुताना ॥ (414-12)
भरमि भुलाने जाणहि दोइ ॥ (880-5)
भरमि भुलाने भए दिवाने विणु भागा किआ पाईऐ ॥ (935-15)
भरमि भुली डोहागणी ना पिर अंकि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (60-17)
भरमि भूले अगिआनी अंधुले भ्रमि भ्रमि फूल तोरावै ॥ (1264-2)
भरमि भूले नदरि न आवनी मनमुख अंध अगिआनी ॥ (514-9)
भरमि भूले नर करत कचराइण ॥ (1136-2)
भरमि भूले बादि अहंकारी ॥ (888-13)
भरमि सूके बहु उभि सुक कहीअहि मिलि साधू संगि हरीजै ॥ (1326-12)
भरमु उपाइ भुलाईअनु आपे तेरा करमु होआ तिन्ह गुरू मिलिआ ॥१०॥ (433-1)
भरमु कोटु माइआ खाई कहु कितु बिधि तोड़ीऐ ॥ (522-7)
भरमु गइआ गुरि पिर संगि मेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (384-13)
भरमु गइआ ता जागिआ चूका अगिआन अंधारु ॥ (950-3)
भरमु गइआ भउ भागिआ हरि चरणी चितु लाइ ॥ (67-11)
भरमु गइआ भै मोह बिनासे मिटिआ सगल विसूरा ॥ (748-12)
भरमु चुकाइआ सदा सुखु पाइआ ॥ (114-1)
भरमु चुकावहु गुरमुखि लिव लावहु आतमु चीनहु भाई ॥ (883-6)
भरमु जराइ चराई बिभूता पंथु एकु करि पेखिआ ॥ (208-4)
भरमु भुलावा मिटि गइआ प्रभ पेखत नेत ॥३॥ (810-11)
भरमु भुलावा विचहु जाइ ॥ (92-3)
भरमु भेदु भउ कबहु न छूटसि आवत जात न जानी ॥ (1127-6)
भरमु मोहु विकारु दूजा सगल तिनहि तिआगिआ ॥ (457-13)
भरमु मोहु सगल बिनसाइआ ॥४॥२०॥७१॥ (388-12)
भरमे आवै भरमे जाइ ॥ (161-4)
भरमे जनम अनेक संकट महा जोन ॥ (458-4)
भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देसु ॥ (22-10)
भरमे भूला आवै जाए ॥ (842-7)
भरमे भूला आवै जाए घरु महलु न कबहू पाइदा ॥५॥ (1064-4)
भरमे भूला ततु न जाणै ॥ (114-3)

भरमे भूला दह दिसि धावै ॥ (277-7)
भरमे भूला दुखु घणो जमु मारि करै खुलहानु ॥ (21-12)
भरमे भूला फिरै अभागा ॥ (1061-7)
भरमे भूला फिरै संसारु ॥ (560-10)
भरमे भूला बहुती राही ॥२॥ (372-16)
भरमे भूला सभि तीरथ गहै ॥ (948-16)
भरमे भूला सभु जगु फिरै मनमुखि पति गवाई ॥५॥ (425-16)
भरमे भूला साकतु फिरता ॥ (739-3)
भरमे भूली रे जै चंदा ॥ (526-1)
भरमे भूले आवउ जाउ ॥१॥ (229-12)
भरमे भूले फिरनि दिन राती मरि जनमहि जनमु गवावणिआ ॥७॥ (116-1)
भरमे सिध साधिक ब्रहमेवा ॥ (258-14)
भरमे सुरि नर देवी देवा ॥ (258-14)
भरमो भुलावा तुझहि कीआ जामि एहु चुकावहे ॥ (567-4)
भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥ (266-19)
भरि जोबनि बूडै अभिमानि ॥ (414-11)
भरि जोबनि मरि जाहि कि कीजै ॥ (1027-3)
भरि जोबनि मै मत पेईअड़ै घरि पाहुणी बलि राम जीउ ॥ (763-9)
भरि जोबनि लागा दुरगंध ॥ (889-19)
भरि सरवरु जब ऊछलै तब तरणु दुहेला ॥१॥ (794-17)
भरिआ होइ सु कबहु न डोलै ॥४॥१॥ (870-5)
भरिपुरि धारि रहिआ सभ ठउरे ॥१॥ रहाउ ॥ (411-11)
भरिपुरि धारि रही सोभ जा की ॥१॥ रहाउ ॥ (376-18)
भरिपुरि धारि रहे अति पिआरे ॥ (1112-7)
भरिपुरि धारि रहे मन माही ॥ (416-9)
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ (4-12)
भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥ (4-11)
भरे भंडार अखूट अतोल ॥२॥ (186-2)
भरोसै आइआ किरपा आइआ ॥ (746-11)
भलउ प्रसिधु तेजो तनौ कल्य जोड़ि कर ध्याइअओ ॥ (1393-12)
भलउ भूहालु तेजो तना न्रिपति नाथु नानक बरि ॥ (1396-5)
भलके उठि नित पर दरबु हिरहि हरि नामु चुराइआ ॥ (1244-9)
भलके उठि पपोलीऐ विणु बुझे मुगध अजाणि ॥ (43-1)
भलके उठि पराहुणा मेरै घरि आवउ ॥ (318-5)
भलके उठि बहु करम कमावहि दूजै भाइ पिआरु ॥ (89-13)
भलके थुक पवै नित दाड़ी ॥ (471-9)
भलके भउकहि सदा बइआलि ॥ (24-13)

भला भला भला तेरा रूप ॥ (279-10)
भला संजोगु मूरतु पलु साचा अबिचल नीव रखाई ॥ (781-14)
भली भाति सभ सहजि समाही ॥ (395-10)
भली सरी जि उबरी हउमै मुई घराहु ॥ (18-4)
भली सरी मुई मेरी पहिली बरी ॥ (483-17)
भली सु करनी सोभा धनवंत ॥ (290-14)
भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए ॥ (745-7)
भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥१॥२२॥ (1396-8)
भले दिनस भले संजोग ॥ (191-16)
भले निंदउ भले निंदउ भले निंदउ लोगु ॥ (1164-2)
भले संजोग भले दिन अउसर जउ गोपालु रीझाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1206-14)
भलो कबीरु दासु दासन को ऊतमु सैनु जनु नाई ॥ (1207-17)
भलो भइओ प्रिअ कहिआ मानिआ ॥ (394-8)
भलो भलो रे कीरतनीआ ॥ (885-2)
भलो भलो सभु को कहै बुरो न मानै कोइ ॥९॥ (1364-19)
भलो समूरतु पूरा ॥ (618-9)
भलो समो सिमरन की बरीआ ॥ (190-1)
भव उतार नाम भने ॥ (1271-19)
भव खंडन दुख नास देव ॥ (1183-2)
भव खंडन दुख भंजन स्वामी भगति वछल निरंकारे ॥ (670-12)
भव खंडना तेरी आरती ॥ (13-3)
भव निधि तरन तारन चिंतामनि इक निमख न इहु मनु लाइआ ॥१॥ (970-19)
भव भूत भाव समब्यिअं परमं प्रसंनमिदं ॥२॥ (526-16)
भव सागर नाव हरि सेवा जो चड़ै तिसु तारगि राम ॥ (781-6)
भव सागर बोहिथ हरि चरण ॥ (867-6)
भव सागर सुख सागर माही ॥ (323-15)
भव सागरु चड़ि उतरहि पारि ॥२॥ (196-16)
भव सागरु तारि मुरारी ॥३॥८॥ (656-5)
भव सागरु बंधिअउ सिख तारे सुप्रसंनै ॥ (1406-12)
भव सागरु संसारु बिखु सो पारि उतरीऐ ॥ (320-16)
भव हरण हरि हरि हरि हरे ॥ (1119-10)
भवजल ते काढहु प्रभू नानक तेरी टेक ॥१॥ (261-7)
भवजलि डूबत सतिगुरु काढै ॥ (741-14)
भवजलि डूबे दूजै भाए ॥३॥ (231-2)
भवजलि डूबे न उरवारि न पारि ॥ (665-16)
भवजलु उतरहि पारि ॥२॥ (895-12)
भवजलु जगतु न जाई तरणा जपि हरि हरि पारि उतारी ॥१॥ रहाउ ॥ (1198-14)

भवजलु तरिआ हरि हरि सिमरिआ सगल मनोरथ पूरे ॥ (781-6)
भवजलु तरीऐ प्रभ कै रंगि ॥२॥ (893-7)
भवजलु पारि उतारणहारा ॥१॥ (1129-3)
भवजलु पारि न पावहि कब ही डूबि मुए बिनु गुर सिरि भारा ॥६॥ (1155-12)
भवजलु बिखमु डरावणो ना कंधी ना पारु ॥ (59-11)
भवजलु बिनु सबदै किउ तरीऐ ॥ (1125-10)
भवजलु सबदि लंघावणहारु ॥ (1261-15)
भवजलु सबदि लंघावणहारु ॥४३॥ (942-19)
भवजलु साइरु सेतु नामु हरी का बोहिथा ॥ (1408-8)
भवन चतुर दस भाठी कीन्ही ब्रहम अगनि तनि जारी रे ॥ (969-3)
भवन भवन पवितु होहि सभि जह साधू चरन धरीजै ॥१॥ (1326-10)
भवन भवन पवित्र सभि कीए जह धूरि परी जन पगे ॥३॥ (976-11)
भवनु सुहावड़ा धरति सभागी राम ॥ (846-4)
भवर गए बग बैठे आइ ॥१॥ रहाउ ॥ (792-11)
भवरा फूलि भवंतिआ दुखु अति भारी राम ॥ (439-2)
भवरु एकु पुहप रस बीधा बारह ले उर धरिआ ॥ (970-12)
भवरु तुम्हारा इहु मनु होवउ हरि चरणा होहु कउला ॥ (496-8)
भवरु भवंता फूली डाली किउ जीवा मरु माए ॥ (1108-2)
भवरु लोभी कुसम बासु का मिलि आपु बंधावै ॥ (708-15)
भवि भवि भरमहि काची सारी ॥ (842-19)
भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥ (285-19)
भसम चड़ाइ करहि पाखंडु ॥ (903-10)
भसम लगाइ तीरथ बहु भ्रमते सूखम देह बंधहि बहु जटूआ ॥ (1389-7)
भसमा भूत होआ खिन भीतरि अपना कीआ पाइआ ॥ (714-6)
भसो भसु कमावणी भी भसु भरीऐ देह ॥ (1240-15)
भांडा अति मलीणु धोता हछा न होइसी ॥ (730-1)
भांडा आणगु रासि जां तिसु भावसी ॥ (1411-12)
भांडा धोइ बैसि धूपु देवहु तउ दूधै कउ जावहु ॥ (728-4)
भांडा धोवै कउणु जि कचा साजिआ ॥ (1411-11)
भांडा भाउ अम्रितु तितु ढालि ॥ (8-9)
भांडा हछा सोइ जो तिसु भावसी ॥ (730-1)
भांभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥३॥ (624-11)
भाइ बसे जम का भउ भागिआ ॥३॥ (221-4)
भाइ भगति जा हउमै सोखै ॥ (124-2)
भाइ भगति तेरै मनि भाए ॥ (111-11)
भाइ भगति प्रभ कीरतनि लागै ॥ (869-5)
भाइ भगति भरम भउ नासै हरि नानक सदा हजूरि ॥४॥४॥१३९॥ (406-3)

भाइ भगति सदा रंगि राता आपु गवाइ समाइदा ॥८॥ (1059-3)
भाइ भगति साचे गुण गावा ॥ (1034-9)
भाइ भगति सुभाइ हरि जपि आपणे प्रभ भावा ॥ (779-3)
भाइ भगति हरि सिउ मनु मानां ॥३॥ (1339-13)
भाइ मिलै भावै भइकारु ॥ (413-4)
भाइ मिलै सचु साचै सचु रे ॥१॥ (225-16)
भाई एहु तपा न होवी बगुला है बहि साध जना वीचारिआ ॥ (315-17)
भाई पूतु पिता प्रभु माता ॥३॥ (240-12)
भाई बंध कुट्मब सहेरा ॥ (794-6)
भाई बंधी हेतु चुकाइआ ॥ (1410-11)
भाई मत कोई जाणहु किसी कै किछु हाथि है सभ करे कराइआ ॥ (168-8)
भाई मीत कुट्मब देखि बिबादे ॥ (370-5)
भाई मीत बंधप सखे पाछे तिनहू कउ स्मपानी ॥५॥ (242-4)
भाई मीत सुत सगल ते जीअ हूं ते पिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ (745-12)
भाई मीत सुरिद कीए बिखिआ रचिआ बादु ॥ (50-4)
भाई रे अवरु नाही मै थाउ ॥ (58-1)
भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु ॥ (55-8)
भाई रे इक मनि नामु धिआइ ॥ (31-10)
भाई रे इसु मन कउ समझाइ ॥ (28-15)
भाई रे गुर किरपा ते भगति ठाकुर की ॥ (504-19)
भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ (59-7)
भाई रे गुर बिनु भगति न होइ ॥ (31-17)
भाई रे गुर बिनु सहजु न होइ ॥ (68-6)
भाई रे गुरमति साचि रहाउ ॥ (30-14)
भाई रे गुरमुखि बूझै कोइ ॥ (33-1)
भाई रे गुरमुखि सदा पति होइ ॥ (28-7)
भाई रे गुरमुखि हरि नामु धिआइ ॥ (30-7)
भाई रे जगु दुखीआ दूजै भाइ ॥ (29-4)
भाई रे तनु धनु साथि न होइ ॥ (62-18)
भाई रे दासनि दासा होइ ॥ (66-15)
भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ॥ (32-6)
भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ॥ (64-16)
भाई रे भवजलु बिखमु डरांउ ॥ (63-11)
भाई रे मिलि सजण हरि गुण सारि ॥ (41-11)
भाई रे मीतु करहु प्रभु सोइ ॥ (46-19)
भाई रे मै मीतु सखा प्रभु सोइ ॥ (41-19)
भाई रे मैलु नाही निरमल जलि नाइ ॥ (57-7)

भाई रे मो कउ कोई आइ मिलै हरि नामु द्रिड़ावै ॥ (494-7)
भाई रे राम नामि चितु लाई ॥ (504-9)
भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥ (22-19)
भाई रे संत जना की रेणु ॥ (18-12)
भाई रे सदा रहहु सरणाई ॥ (602-9)
भाई रे साची सतिगुर सेव ॥ (53-1)
भाई रे सुखु साधसंगि पाइआ ॥ (42-16)
भाई रे हरि हीरा गुर माहि ॥ (22-4)
भाई वेखहु निआउ सचु करते का जेहा कोई करे तेहा कोई पाए ॥ (308-14)
भाई हम करह किआ किसु पासि मांगह सभ भागि सतिगुर पिछै पई ॥ (1116-19)
भाई हमारे सद ही जीवी ॥ (1141-10)
भाउ करम करि जमसी से घर भागठ देखु ॥१॥ (595-11)
भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥ (16-5)
भाउ दूजा बिनसि बिनासा ॥ (801-3)
भाउ न भगती ना सिव सकती ॥ (1036-4)
भाउ पिआरा लाए विरला कोइ ॥ (361-2)
भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥ (470-8)
भाउ भगति गाइ गुण गोबिद जम का मारगु साधिओ ॥१॥ (530-18)
भाउ भगति गुरमती पाए ॥ (1342-18)
भाउ भगति गोविंद बांछत जमु न साकै जोहि जीउ ॥ (929-4)
भाउ भगति दइआल मोहन दूख सगले परहरै ॥ (925-16)
भाउ भगति भगवान संगि माइआ लिपत न रंच ॥ (297-17)
भाउ भगति सिउ काजु न कछूऐ मेरो कामु दीवान ॥१॥ (1124-6)
भाउ भोजनु नानका विरला त कोई कोइ ॥१॥ (1245-12)
भाउ भोजनु सतिगुरि तुठै पाए ॥ (115-14)
भाउ लागा गोबिद सिउ घाल पाई थाइ ॥ (1002-12)
भाखि ले पंचै होइ सबूरी ॥२॥ (1158-10)
भाग उदिम लबध्यं माइआ नानक साधसंगि खल पंडितह ॥३१॥ (1356-16)
भाग बडे तै पाइओ तूं भरि भरि पीउ कबीर ॥१७०॥ (1373-12)
भाग मणी सोहागणि मेरे पिआरे नानक हरि उरि धारे ॥२॥ (451-19)
भाग सुलखणा हरि कंतु हमारा राम ॥ (846-7)
भागठड़े हरि संत तुम्हारे जिन्ह घरि धनु हरि नामा ॥ (749-1)
भागठि ग्रिहि पड़ै नित पोथी ॥ (888-2)
भागठु सचा सोइ है जिसु हरि धनु अंतरि ॥ (396-19)
भागहीण मनमुखि नही लीआ त्रिण ओलै लाखु छपाइआ ॥३॥ (880-16)
भागहीन नही सतिगुरु पाइआ ॥३॥ (366-14)
भागहीन भ्रमि चोटा खावहि ॥ (95-10)

भागहीन सतिगुरु नही पाइआ मनमुखु गरभ जूनी निति पउदा जीउ ॥३॥ (95-16)
भागि गए पंच दूत लावे ॥२॥ (394-10)
भागु पूरा तिन जागिआ जपिआ निरंकारु ॥ (1251-6)
भागु मसतकि होइ जिस कै तिसु गुर नालि सनेहा ॥ (542-10)
भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥ (97-2)
भाठी गगनु सिंङिआ अरु चुंङिआ कनक कलस इकु पाइआ ॥ (92-16)
भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिउ चुआईऐ ॥१॥ (360-5)
भाड़ी कउ ओहु भाड़ा मिलिआ होरु सगल भइओ बिराना ॥३॥ (497-13)
भाडै भाउ पवै तितु आइ ॥ (878-15)
भाणा न मंने बहुतु दुखु पाई ॥ (1064-3)
भाणा मंने सदा सुखु होइ ॥ (364-5)
भाणा मंने सो सुखु पाए भाणे विचि सुखु पाइदा ॥१॥ (1063-18)
भाणे जेवड होर दाति नाही सचु आखि सुणाइआ ॥ (1093-16)
भाणे ते सभि सुख पावै संतहु अंते नामु सखाई ॥१२॥ (910-12)
भाणे नो लोचै बहुतेरी आपणा भाणा आपि मनाइदा ॥२॥ (1063-19)
भाणे विचि को विरला आइआ ॥ (1063-17)
भाणे विचि वडी वडिआई भाणा किसहि कराइदा ॥३॥ (1064-1)
भाणै उझड़ भाणै राहा ॥ (98-14)
भाणै चलै आपणै बहुती लहै सजाइ ॥ (949-10)
भाणै चलै सतिगुरू कै ऐसा सीगारु करेइ ॥ (311-12)
भाणै जप तप संजमो भाणै ही कढि लेइ ॥ (963-5)
भाणै जोनि भवाईऐ भाणै बखस करेइ ॥ (963-5)
भाणै तखति वडाईआ भाणै भीख उदासि जीउ ॥ (762-15)
भाणै थल सिरि सरु वहै कमलु फुलै आकासि जीउ ॥ (762-16)
भाणै दुखु सुखु भोगीऐ भाणै करम करेइ ॥ (963-5)
भाणै नरकि सुरगि अउतारे भाणै धरणि परेइ ॥ (963-7)
भाणै बखस भाणै देइ सजाइ ॥ (1270-17)
भाणै बखसे पूरा धणी सचु कार कमाईऐ ॥ (1011-2)
भाणै भरमि भवै बहु जूनी सभ किछु तिसै रजाई जीउ ॥२॥ (98-15)
भाणै भवजलु लंघीऐ भाणै मंझि भरीआसि जीउ ॥ (762-16)
भाणै भोग भोगाइदा भाणै मनहि करेइ ॥ (963-6)
भाणै मिटी साजि कै भाणै जोति धरेइ ॥ (963-6)
भाणै सतिगुरु मेलिओनु भाणै सचु धिआइआ ॥ (1093-15)
भाणै सहु भीहावला हउ आवणि जाणि मुईआसि जीउ ॥ (762-17)
भाणै सो सहु रंगुला सिफति रता गुणतासि जीउ ॥ (762-17)
भाणै हरि गुण गुरमुखि गावाहा ॥ (98-14)
भाणै ही जिसु भगती लाए नानक विरले हे ॥२॥ (963-7)

भाणै हुकमु मनाइओनु भाणै सुखु पाइआ ॥ (1093-15)
भाति भाति बन बन अवगाहे ॥ (98-2)
भातु पहिति अरु लापसी करकरा कासारु ॥ (479-8)
भादउ भरमि भुली भरि जोबनि पछुताणी ॥ (1108-15)
भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥ (134-15)
भार अठारह महि चंदनु ऊतम चंदन निकटि सभ चंदनु हुईआ ॥ (834-2)
भार अठारह मालणि तेरी ॥ (1033-14)
भार अठारह मुदगरु तेरा सहनक सभ संसारा ॥२॥ (1167-16)
भार अठारह मेवा होवै गरुड़ा होइ सुआउ ॥ (142-2)
भारे ढहते ढहि पए हउले निकसे पारि ॥ (933-18)
भारो तोलु बेअंत सुआमी हुकमु मंनि भगतीजा हे ॥१०॥ (1074-7)
भालि रहे हम रहणु न पाइआ जीवतिआ मरि रहीऐ ॥५॥२॥ (661-1)
भालि लहनि सहु आपणा निज घरि रहणु करेनि ॥२॥ (949-6)
भावनी साध संगेण लभंतं बड भागणह ॥ (1360-14)
भावनु तिआगिओ री तिआगिओ ॥ (214-18)
भावी उदोत करणं हरि रमणं संजोग पूरनह ॥ (709-6)
भावै आवउ भावै जाउ ॥ (951-14)
भावै खसम त उआ सुखु देता ॥ (260-11)
भावै चंगा भावै मंदा जैसी नदरि तुम्हारी ॥४॥ (1191-2)
भावै जीवउ कै मरउ दूरहु ही भजि जाहि ॥३॥ (787-12)
भावै देइ न देई सोइ ॥ (25-12)
भावै धीरक भावै धके एक वडाई देइ ॥१॥ (349-12)
भावै लांबे केस करु भावै घररि मुडाइ ॥२५॥ (1365-16)
भावै सभु आखउ संसारु ॥ (662-9)
भाहि न जालै जलि नही डूबै संगु छोडि करि कतहु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (375-13)
भाहि बलंदड़ी बुझि गई रखंदड़ो प्रभु आपि ॥ (710-1)
भाहि बलंदी विझवी धूउ न निकसिओ काइ ॥ (19-8)
भिंन भिंन त्रै गुण बिसथारं ॥ (250-13)
भिंन भिंन वेखै हरि प्रभु रंगा ॥१॥ (160-11)
भिंन भिंन होइ भाव दिखावहि सभहु निरारी भाखे ॥३॥ (884-17)
भिंनड़ी रैणि भली दिनस सुहाए राम ॥ (844-2)
भिंनी रैणि चमकिआ वुठा छहबर लाइ ॥ (1282-14)
भिंनी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥ (465-10)
भिंनी रैनड़ीऐ चामकनि तारे ॥ (459-6)
भिखिआ नामि रजे संतोखी अम्रितु सहजि पीआई ॥३॥ (634-15)
भिखिआ नामु संतोखु मड़ी सदा सचु है नालि ॥ (1089-8)
भिखिआ भाइ भगति भै चलै ॥ (877-16)

भिखिआ भोजनु करै संतापु ॥ (952-15)
भिखिआ सहज वीचारी खाइ ॥२॥ (903-9)
भिखे के ॥ (1395-15)
भिजउ सिजउ क्मबली अलह वरसउ मेहु ॥ (1379-4)
भिसतु नजीकि राखु रहमाना ॥४॥७॥१५॥ (1161-10)
भिसतु पीर लफज कमाइ अंदाजा ॥ (1083-19)
भी उठि रचिओनु वादु सै वर्हिआ की पिड़ बधी ॥ (146-2)
भी करतारहु डरणा ॥१॥ रहाउ ॥ (24-9)
भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥१॥ (142-1)
भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥२॥ (142-3)
भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥३॥ (142-4)
भी तूहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥४॥ (142-6)
भी तूहै सालाहणा पिआरे भी तेरी सालाह ॥ (636-5)
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥१॥ (14-11)
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥२॥ (14-13)
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥३॥ (14-14)
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥४॥२॥ (15-2)
भी सचा सालाहणा सचै थानि पिआरु ॥२॥ (63-13)
भी सालाहिहु साचा सोइ ॥ (595-5)
भी सो फोगु समालीऐ दिचै अगि जालाइ ॥ (143-2)
भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥ (787-9)
भीखक प्रीति भीख प्रभ पाइ ॥ (164-15)
भीड़हु मोकलाई कीतीअनु सभ रखे कुट्मबै नालि ॥ (957-17)
भीतरि अगनि बनासपति मउली सागरु पंडै पाइआ ॥ (1171-12)
भीतरि अम्रितु सोई जनु पावै जिसु गुर का सबदु रतनु आचार ॥१॥ रहाउ ॥ (1255-19)
भीतरि एकु अनेक असंख ॥ (413-12)
भीतरि कोट गुफा घर जाई ॥ (1033-11)
भीतरि चोरु बहालिआ खोटु वे जीआ खोटु ॥२॥ (1244-7)
भीतरि पंच गुपत मनि वासे ॥ (359-2)
भीतरि होदी वसतु न जाणै ॥३॥ (152-6)
भीति ऊपरे केतकु धाईऐ अंति ओरको आहा ॥२॥ (402-3)
भुइअंगनि बसरीआ ॥ (537-4)
भुइअंगम भ्रिंग माइआ महि खापे ॥१॥ (1160-12)
भुख तिख तिसु न विआपई जमु नही आवै नीर ॥३॥ (1102-13)
भुख विआपै बहु बिधि धावै ॥ (98-18)
भुखिआ गंढु पवै जा खाइ ॥ (143-11)
भुखिआ देइ न मरदिआ रखै ॥ (1241-2)

भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥ (1-5)
भुखिआ भुख न उतरै गली भुख न जाइ ॥ (147-6)
भुखे मुलां घरे मसीति ॥ (1245-17)
भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥ (6-18)
भुगति नामु गुर सबदि बीचारी ॥ (879-17)
भुगति मुकति का कारनु सुआमी मूड़ ताहि बिसरावै ॥ (219-10)
भुज बल बीर ब्रहम सुख सागर गरत परत गहि लेहु अंगुरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (203-1)
भुजा गहि काढि लीओ साधू संगु दीना राम ॥ (548-8)
भुजा बांधि भिला करि डारिओ ॥ (870-14)
भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु ॥ (61-7)
भुलण विचि कीआ सभु कोई करता आपि न भुलै ॥ (1344-9)
भुलिआं आपि समझाइसी जा कउ नदरि करे ॥ (1421-6)
भुलिआ चुकि गइआ तप तालु ॥ (1287-2)
भुलिआ सहजि मिलाइसी सबदि मिलावा होइ ॥७॥ (68-15)
भूंडी कामणि कामणिआरि ॥ (796-2)
भूंडी चाल चरण कर खिसरे तुचा देह कुमलानी ॥ (1126-5)
भूख पिआसा जगु भइआ तिपति नही बिनु सतिगुर पाए ॥ (1345-14)
भूख पिआसो आथि किउ दरि जाइसा जीउ ॥ (688-19)
भूख पिआसो जे भवै किआ तिसु मागउ देइ ॥ (1010-12)
भूखे कउ देवत अधार ॥ (283-10)
भूखे खावत लाज न आवै ॥ (629-4)
भूखे प्रीति होवै अंनु खाइ ॥ (164-15)
भूखे भगति न कीजै ॥ (656-13)
भूडड़ै नामु विसारिआ बूडड़ै किआ तिसु चारो ॥ (580-12)
भूपति राजे रंग राइ संचहि बिखु माइआ ॥ (1245-15)
भूपति होइ कै राजु कमाइआ ॥ (391-19)
भूमि दान सोभा मंडपि पावै ॥ (875-14)
भूमि दानु अरपि धरा ॥ (1229-14)
भूमि दानु गऊआ घणी भी अंतरि गरबु गुमानु ॥ (62-9)
भूमि मसाण की भसम लगाई गुर बिनु ततु न पाइआ ॥२॥ (526-2)
भूमीआ भूमि ऊपरि नित लुझै ॥ (188-14)
भूर भविख नाही तुम जैसे मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥ (1197-8)
भूल चूक अपना बारिकु बखसिआ पारब्रहम भगवाना ॥१॥ (383-2)
भूल चूक तेरै दरबारि ॥ (1330-16)
भूलहि चूकहि बारिक तूं हरि पिता माइआ ॥१॥ (51-17)
भूलहि बारिक अनिक लख बरीआ अन ठउर नाही जह जाता ॥१॥ रहाउ ॥ (1266-12)
भूला काहे फिरहि अजान ॥ (283-2)

भूला दैतु न समझई तिनि प्रभ कीए काम ॥ (1412-9)
भूला मनु समझै गुर सबदी हरि हरि सदा धिआए ॥ (561-12)
भूला मारगि पाइओनु गुण अवगुण न बीचारि ॥ (49-5)
भूला मारगि सतिगुरि पाइआ ॥ (1075-5)
भूला मारगि सो पवै जिसु धुरि मसतकि लेखं ॥ (1099-3)
भूलि बिगारिओ अपना काजु ॥२॥ (478-12)
भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ ॥ (702-18)
भूली डूंगरि थलि चड़ै भरमै मनु डोलाइ ॥ (60-18)
भूली फिरै दिसंतरी भूली ग्रिहु तजि जाइ ॥ (60-18)
भूली फिरै धन इआणीआ रंड बैठी दूजै भाए ॥ (583-15)
भूली भूली थलि चड़ा थलि चड़ि डूगरि जाउ ॥ (57-3)
भूली भूली मै फिरी पाधरु कहै न कोइ ॥ (1087-14)
भूली मालनी है एउ ॥ (479-5)
भूले कउ गुरि मारगि पाइआ ॥ (864-4)
भूले चूके मारगि पावहि ॥ (1021-19)
भूले मारगु जिनहि बताइआ ॥ (803-18)
भूले मारगु जो दसे तिस कै लागउ पाइ ॥ (1010-10)
भूले सिख गुरू समझाए ॥ (1032-1)
भूलो रावणु मुगधु अचेति ॥ (224-16)
भूलौ रे ठगमूरी खाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1252-9)
भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥ (266-1)
भेख करहि खिंथा बहु थटूआ ॥ (903-12)
भेख करहि बहु करम विगुते भाइ दूजै परज विगोई ॥ (1416-16)
भेख करै गुर सबदु न कमाए ॥ (1058-4)
भेख करै बहुतु चितु डोलै अंतरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ (1132-11)
भेख दिखावै सचु न कमावै ॥ (738-12)
भेख वरन दीसहि सभि खेह ॥ (352-4)
भेखधारी तीरथी भवि थके ना एहु मनु मारिआ जाइ ॥ (650-15)
भेखधारी भेख करि थके अठिसठि तीरथ नाइ ॥ (644-19)
भेखारी ते राजु करावै राजा ते भेखारी ॥ (1252-6)
भेखी अगनि न बुझई चिंता है मन माहि ॥ (588-5)
भेखी प्रभू न लभई विणु सची सिखं ॥ (1099-2)
भेखी हाथ न लधीआ सभ बधी जमकालि ॥ (1089-9)
भेखी हाथ न लभई तीरथि नही दाने ॥ (1012-13)
भेखु भवनी हठु न जाना नानका सचु गहि रहे ॥१॥ (844-1)
भेटत संगि इहु भवजलु तारे ॥१॥ (739-17)
भेटत संगि पारब्रहमु चिति आइआ ॥ (889-4)

भेटत संगि राम गुन रवे ॥ (287-5)
भेटत संगि साध संतन कै सदा जपउ दइआला जीउ ॥२॥ (104-6)
भेटत संगि हरि हरि गुन गाइ ॥ रहाउ ॥ (201-11)
भेटत साधसंग पतीआना ॥ (259-2)
भेटत साधसंगि गई बलाए ॥ रहाउ ॥ (201-18)
भेटत साधू संग जम पुरि नह जाईऐ ॥ (456-8)
भेटिओ पूरा सतिगुरू साचा प्रभ सिउ नेह ॥६॥ (431-8)
भेटीअले राइ निसंगा ॥२॥ (972-3)
भेटै तासु परम गुरदेउ ॥३॥ (974-10)
भेटै सिउ जावहु सचि समावहु तां पति लेखै पाई ॥ (579-17)
भेडा वागी सिरु खोहाइनि भरीअनि हथ सुआही ॥ (149-16)
भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥ (75-9)
भेदु न जाणहु माणस देहा ॥ (1076-3)
भेदु न जाणहु मूलि सांई जेहिआ ॥१॥ (397-17)
भेदु नाही है पारब्रहमा ॥४॥ (235-15)
भेदु बभीखण गुरमुखि परचाइणु ॥ (942-13)
भै अटवीअं महा नगर बासं धरम लख्यण प्रभ मइआ ॥ (1358-1)
भै कउ भउ पड़िआ सिमरत हरि नाम ॥ (1151-7)
भै का संजमु जे करे दारू भाउ लाएइ ॥ (948-12)
भै का सहजु सीगारु करिहु सचि रहहु लिव लाइ ॥ (1420-8)
भै काटि निरभउ तरहि दुतरु गुरि मिलिऐ कारज सारए ॥ (1113-5)
भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥ (1427-7)
भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥ (722-7)
भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ॥ (139-4)
भै तनि अगनि भखै भै नालि ॥ (151-4)
भै तरे सागर पारि ॥२॥ (837-11)
भै ते उपजै भगति प्रभ अंतरि होइ सांति ॥ (814-10)
भै ते निरभउ डरता फिरै ॥ (900-4)
भै ते निरभउ पाईऐ जिस दा अंतु न पारावारु ॥ (1288-11)
भै ते निरभउ पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ॥ (516-12)
भै ते निरभउ होइ बसाना ॥ (285-10)
भै ते बैरागु ऊपजै हरि खोजत फिरणा ॥ (1102-8)
भै ते भैजलु लंघीऐ गुरमती वीचारु ॥ (1288-10)
भै ते सहजु पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ॥ (1288-10)
भै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह ॥ (16-10)
भै त्रास नास क्रिपाल गुण निधि सफल सुआमी सेव ॥१॥ (508-4)
भै दूरि करता पाप हरता दुसह दुख भव खंडनो ॥ (925-3)

भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥ (1427-11)
भै निरभउ माणिअउ लाख महि अलखु लखायउ ॥ (1408-1)
भै निरभउ हरि अटलु मनि सबदि गुर नेजा गडिओ ॥ (1396-4)
भै पइऐ तनु खीणु होइ लोभ रतु विचहु जाइ ॥ (949-19)
भै पइऐ तनु खीणु होइ लोभु रतु विचहु जाइ ॥ (1380-13)
भै पइऐ मनु वसि होआ हउमै सबदि जलाइ ॥ (645-2)
भै पइऐ मलु कटीऐ निरमल होवै सरीरु ॥ (516-10)
भै पारब्रहम होवहि निरमला तू ॥ (1078-6)
भै पावक पारि परानि हां ॥ (409-15)
भै बिचि भाउ भाइ कोऊ बूझहि हरि रसु पावै भाई ॥ (1123-15)
भै बिनसे आतम सुख सारा ॥२॥ (202-14)
भै बिनसे उतरी सभ चिंद ॥१॥ (1339-10)
भै बिनसे तिहु लोक के पाए सुख थान ॥ (813-6)
भै बिनसे निरभउ हरि धिआइआ ॥ (191-1)
भै बिनसे निरभै पदु पाइआ ॥ (1184-1)
भै बिनसे भ्रम मोह गए को दिसै न बीआ ॥ (401-3)
भै बिनु किउ निरभउ सचु पाईऐ जमु काढि लएगा साहा हे ॥६॥ (1054-15)
भै बिनु कोइ न लंघसि पारि ॥ (151-4)
भै बिनु घाड़त कचु निकच ॥ (151-5)
भै बिनु निरभउ किउ थीऐ गुरमुखि सबदि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (18-6)
भै बिनु भगति न होई कब ही भै भाइ भगति सवारी ॥६॥ (911-3)
भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ (788-13)
भै बिनु भरमु न कटीऐ नामि न लगै पिआरु ॥ (1288-9)
भै बिनु लागि न लगई ना मनु निरमलु होइ ॥ (427-4)
भै बोहिथ सागर प्रभ चरणा केते पारि लघाए ॥ (577-10)
भै भंजन अघ दूख नास मनहि अराधि हरे ॥ (258-12)
भै भंजन अबिनासी राइ ॥ (1149-14)
भै भंजन की सरणाइआ ॥ (132-16)
भै भंजन प्रभ मनि न बसाही ॥ (197-7)
भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ ॥ (91-7)
भै भंजना मुरारि ॥ (838-5)
भै भंजनु अति पाप निखंजनु मेरा प्रभु अंति सखाई ॥२०॥ (910-16)
भै भइआनक जमदूत दुतर है माइआ ॥ (1083-7)
भै भउ घड़ीऐ सबदि सवारि ॥ (151-5)
भै भउ भरमु खोइआ गुरि पूरै देखा सभनी जाई जीउ ॥२॥ (107-14)
भै भउ राखिआ भाइ सवारि ॥१॥ रहाउ ॥ (151-4)
भै भगती भगत बहु लोचदे प्रभ लोचा पूरि मिलाइ ॥ (1413-18)

भै भरम नाठे छुटी गाठे जम पंथि मूलि न आवीऐ ॥ (691-4)
भै भाइ जागे से जन जाग्रण करहि हउमै मैलु उतारि ॥ (1346-15)
भै भाइ भगति करहि दिनु राती हरि जीउ वेखै सदा हदूरि ॥ (34-17)
भै भाइ भगति तरु भवजलु मना चितु लाइ हरि चरणी ॥ (505-19)
भै भाइ भगति निहाल नानक सदा सदा कुरबान ॥२॥४॥४९॥ (1308-1)
भै भाइ भगति लागो मेरा हीअरा मनु सोइओ गुरमति जागा ॥ (985-8)
भै भाइ सीगारु बणाए ॥ (112-3)
भै भाइ सीगारु बणाए ॥ (123-5)
भै भै त्रास भए है निरमल गुरमति लागि लगावैगो ॥१॥ रहाउ ॥ (1310-4)
भै भ्रम बिनसि गए खिन माहि ॥ (1151-1)
भै मरबे को बिसरत नाहिन तिह चिंता तनु जारा ॥१॥ (703-4)
भै महि रचिओ सभु संसारा ॥ (192-8)
भै मानै निरभउ मेरी माइ ॥४॥ (1187-12)
भै रचि रहै न बाहरि जाइ ॥ (223-12)
भै रचि रहै सु निरभउ होइ ॥ (223-19)
भै राचै सच रंगि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (157-17)
भै रोवै गुण सारि समाले को मरै न मुइआ नाले ॥ (582-10)
भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥ (464-13)
भै विचि आडाणे आकास ॥ (464-15)
भै विचि आवहि जावहि पूर ॥ (464-15)
भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥ (464-13)
भै विचि खुमबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥ (468-18)
भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥ (464-12)
भै विचि जमै भै मरै भी भउ मन महि होइ ॥ (149-9)
भै विचि जोध महाबल सूर ॥ (464-15)
भै विचि धरती दबी भारि ॥ (464-13)
भै विचि निरभउ पाइआ ॥ (599-11)
भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥ (464-12)
भै विचि बैसै भै रहै भै विचि कमावै कार ॥ (516-11)
भै विचि राजा धरम दुआरु ॥ (464-14)
भै विचि सभु आकारु है निरभउ हरि जीउ सोइ ॥ (586-1)
भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥ (464-15)
भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥ (464-14)
भै विणु जीवै बहुतु बहुतु खुसीआ खुसी कमाइ ॥ (149-10)
भै संकट काटे नाराइण दइआल जीउ ॥ (926-14)
भै सचि राती देहुरी जिहवा सचु सुआउ ॥ (19-17)
भै सभ बिनसहि हरि कै नाइ ॥१॥ (184-10)

भै सागरो भै सागरु तरिआ हरि हरि नामु धिआए राम ॥ (782-7)
भैण भाई सभि सजणा तुधु जेहा नाही कोइ जीउ ॥१॥ (73-9)
भैरउ असटपदीआ महला १ घरु २ (1153-7)
भैरउ कबीर जीउ असटपदी घरु २ (1162-6)
भैरउ नामदेउ जीउ घरु २ (1164-12)
भैरउ बाणी नामदेउ जीउ की घरु १ (1163-10)
भैरउ बाणी भगता की ॥ (1157-15)
भैरउ बाणी रविदास जीउ की घरु २ (1167-7)
भैरउ भूत सीतला धावै ॥ (874-13)
भैरउ महला १ ॥ (1125-15)
भैरउ महला १ ॥ (1126-11)
भैरउ महला १ ॥ (1126-17)
भैरउ महला १ ॥ (1126-5)
भैरउ महला १ ॥ (1127-10)
भैरउ महला १ ॥ (1127-3)
भैरउ महला ३ ॥ (1128-12)
भैरउ महला ३ ॥ (1128-16)
भैरउ महला ३ ॥ (1128-4)
भैरउ महला ३ ॥ (1128-9)
भैरउ महला ३ ॥ (1129-10)
भैरउ महला ३ ॥ (1129-14)
भैरउ महला ३ ॥ (1129-17)
भैरउ महला ३ ॥ (1129-3)
भैरउ महला ३ ॥ (1129-6)
भैरउ महला ३ ॥ (1130-11)
भैरउ महला ३ ॥ (1130-17)
भैरउ महला ३ ॥ (1131-10)
भैरउ महला ३ ॥ (1131-16)
भैरउ महला ३ ॥ (1131-4)
भैरउ महला ३ ॥ (1132-15)
भैरउ महला ३ ॥ (1132-3)
भैरउ महला ३ ॥ (1132-8)
भैरउ महला ३ ॥ (1133-1)
भैरउ महला ३ ॥ (1133-10)
भैरउ महला ३ ॥ (1155-4)
भैरउ महला ३ घरु २ (1130-3)
भैरउ महला ३ घरु २ (1154-2)

ਭੈਰਉ ਮਹਲਾ ੪ ॥ (1134-13)
भैरउ महला ४ ॥ (1134-5)
भैरउ महला ४ ॥ (1134-9)
भैरउ महला ४ ॥ (1135-13)
भैरउ महला ४ ॥ (1135-6)
भैरउ महला ४ घरु २ (1134-18)
भैरउ महला ५ ॥ (1136-13)
भैरउ महला ५ ॥ (1136-17)
भैरउ महला ५ ॥ (1136-5)
भैरउ महला ५ ॥ (1136-9)
भैरउ महला ५ ॥ (1137-10)
भैरउ महला ५ ॥ (1137-14)
भैरउ महला ५ ॥ (1137-19)
भैरउ महला ५ ॥ (1137-3)
भैरउ महला ५ ॥ (1137-7)
भैरउ महला ५ ॥ (1138-10)
भैरउ महला ५ ॥ (1138-4)
भैरउ महला ५ ॥ (1138-6)
भैरउ महला ५ ॥ (1139-15)
भैरउ महला ५ ॥ (1139-2)
भैरउ महला ५ ॥ (1139-8)
भैरउ महला ५ ॥ (1140-16)
भैरउ महला ५ ॥ (1140-2)
भैरउ महला ५ ॥ (1140-8)
भैरउ महला ५ ॥ (1141-15)
भैरउ महला ५ ॥ (1141-3)
भैरउ महला ५ ॥ (1141-9)
भैरउ महला ५ ॥ (1142-15)
भैरउ महला ५ ॥ (1142-2)
भैरउ महला ५ ॥ (1142-9)
भैरउ महला ५ ॥ (1143-15)
भैरउ महला ५ ॥ (1143-2)
भैरउ महला ५ ॥ (1143-8)
भैरउ महला ५ ॥ (1144-15)
भैरउ महला ५ ॥ (1144-3)
भैरउ महला ५ ॥ (1144-9)
भैरउ महला ५ ॥ (1145-14)

भैरउ महला ५ ॥ (1145-2)
भैरउ महला ५ ॥ (1145-8)
भैरउ महला ५ ॥ (1146-1)
भैरउ महला ५ ॥ (1146-13)
भैरउ महला ५ ॥ (1146-7)
भैरउ महला ५ ॥ (1147-1)
भैरउ महला ५ ॥ (1147-13)
भैरउ महला ५ ॥ (1147-19)
भैरउ महला ५ ॥ (1147-7)
भैरउ महला ५ ॥ (1148-13)
भैरउ महला ५ ॥ (1148-19)
भैरउ महला ५ ॥ (1148-6)
भैरउ महला ५ ॥ (1149-13)
भैरउ महला ५ ॥ (1149-19)
भैरउ महला ५ ॥ (1149-6)
भैरउ महला ५ ॥ (1150-13)
भैरउ महला ५ ॥ (1150-19)
भैरउ महला ५ ॥ (1150-6)
भैरउ महला ५ ॥ (1151-11)
भैरउ महला ५ ॥ (1151-18)
भैरउ महला ५ ॥ (1151-7)
भैरउ महला ५ ॥ (1152-13)
भैरउ महला ५ ॥ (1152-6)
भैरउ महला ५ ॥ (1156-10)
भैरउ महला ५ ॥ (1157-3)
भैरउ महला ५ असटपदीआ घरु २ (1155-16)
भैरउ महला ५ घरु १ (1136-1)
भोग भुंचाइ भुलाइअनु पिआरे उतरै नही विजोगु ॥ (641-2)
भोगनहारे भोगिआ इसु मूरति के मुख छारु ॥४॥ (479-8)
भोगना मन मधे हरि रसु संतसंगति महि लीवना ॥४॥ (1019-3)
भोगहि भोग अनेक विणु नावै सुंञिआ ॥ (398-9)
भोगहु भुंचहु भाईहो पलै नामु अगथा ॥ (1101-12)
भोगहु रोग सु अंति विगोवै ॥ (1034-16)
भोगी कउ दुखु रोग विआपै ॥ (1189-12)
भोजनं गोपाल कीरतनं अलप माया जल कमल रहतह ॥ (1357-10)
भोजन गिआनु महा रसु मीठा ॥ (1032-5)
भोजन पूरन रहे अघाई ॥१॥ (390-2)

भोजन भाउ न ठंढा पाणी ना कापड़ु सीगारो ॥ (581-12)
भोजनु अनिक प्रकार बहु कपरे ॥ (237-6)
भोजनु नामु निरंजन सारु ॥ (227-17)
भोजनु भाउ कीरतन आधारु ॥ (888-19)
भोजनु भाउ भरमु भउ भागै ॥ (355-6)
भोजनु साचु मिलै आघाई ॥ (1024-19)
भोर भरम काटे प्रभ सिमरत गिआन अंजन मिलि सोवत जागी ॥१॥ (1301-11)
भोरी भरमु वञाइ पिरी मुहबति हिकु तू ॥ (322-16)
भोरु भइआ बहुरि पछुतानी ॥१॥ (389-9)
भोरु भइआ मै प्रिअ मुख पेखे ग्रिहि मंगल सुहलावी ॥१॥ रहाउ ॥ (1266-18)
भोरे भोरे रूहड़े सेवेदे आलकु ॥ (1095-19)
भोलतणि भै मनि वसै हेकै पाधर हीडु ॥ (1091-1)
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥१॥ (1279-14)
भोलावड़ै भुली भुलि भुलि पछोताणी ॥ (1111-10)
भोलिआ हउमै सुरति विसारि ॥ (1168-5)
भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥४॥६॥ (324-15)
भ्रमंति भ्रमंति बहु जनम हारिओ सरणि नानक करुणा मयह ॥६१॥ (1359-14)
भ्रम का मोहिआ पावै फंधु ॥ (1160-8)
भ्रम का संगलु तोड़ि निराला हरि अंतरि हरि रसु पाइआ ॥१॥ (1041-15)
भ्रम काटे गुरि आपणै पाए बिसरामा ॥१॥ (400-14)
भ्रम की कूई त्रिसना रस पंकज अति तीख्यण मोह की फास ॥ (204-10)
भ्रम की जाली ता की काटी जा कउ साधसंगति बिस्वासा ॥१॥ (208-10)
भ्रम के परदे सतिगुर खोल्हे ॥१॥ रहाउ ॥ (385-11)
भ्रम के बंधन काटहु परमेसर नानक के प्रभ सदा क्रिपाल ॥२॥४॥२२॥ (806-17)
भ्रम के मूसे तूं राखत परदा पाछै जीअ की मानी ॥१॥ रहाउ ॥ (403-12)
भ्रम के मोहे नह बुझहि सो प्रभु सदहू संग ॥ (252-3)
भ्रम कै भाइ भवै भेखधारी ॥१॥ (856-19)
भ्रम छूटे ते एकंकार ॥३॥ (736-15)
भ्रम दूख दरद निवारि खिन महि रखि लेहु दीन दैआला ॥ (578-9)
भ्रम बन दहन भए खिन भीतरि राम नाम परहारि ॥१॥ रहाउ ॥ (1225-18)
भ्रम बिनसे गाए गुण नीत ॥१॥ (196-18)
भ्रम भंजन हरि राइआ ॥ (1278-12)
भ्रम भउ मेटि मिले गोपाल ॥ (1148-12)
भ्रम भयान उदिआन रमणं महा बिकट असाध रोगणह ॥ (1358-12)
भ्रम भीति खोईऐ सहजि सोईऐ प्रभ पलक पेखत नव निधे ॥ (543-4)
भ्रम भीति जीति मिटावउ ॥ (408-18)
भ्रम भै छूटे गुर परसाद ॥ (915-3)

भ्रम भै तरे छुटे भै जम के घटि घटि एकु रहिआ भरपूरे ॥ (825-19)
भ्रम भै बिनसि गए खिन भीतरि अंधकार प्रगटे चानाणु ॥ (825-15)
भ्रम भै मोह न माइआ जाल ॥ (889-2)
भ्रम भै राखहु मोह ते काटहु जम जाल ॥३॥ (811-2)
भ्रम महि सोई सगल जगत धंध अंध ॥ (380-7)
भ्रम लोभ मोह बिकार थाके मिलि सखी मंगलु गाइआ ॥ (543-8)
भ्रमत फिरत तेलक के कपि जिउ गति बिनु रैनि बिहईहै ॥ (524-12)
भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥ (487-10)
भ्रमत फिरे तिन किछू न पाइआ ॥ (374-12)
भ्रमत बिआपत जरे किवारा ॥ (759-14)
भ्रमत भार अगनत आइओ बहु प्रदेसह धाइओ ॥ (458-4)
भ्रमत भ्रमत ऊहां ही मूए बाहुड़ि ग्रिहि न मंझारि ॥१॥ (674-16)
भ्रमत भ्रमत प्रभ सरनी आइआ ॥ (1005-5)
भ्रमतो भ्रमतो हारिआ अनिक बिधी करि टोरै ॥ (212-12)
भ्रमतौ भ्रमतौ हारि जउ परिओ तउ गुर मिलि चरन पराते ॥ (1209-12)
भ्रमि आइओ है सगल थान रे आहि परिओ संत पाछै ॥१॥ रहाउ ॥ (533-17)
भ्रमि भूले जिउ सुंञै घरि काउ ॥ (123-6)
भ्रमि भ्रमि आइओ तउ नदरि न पाई ॥१॥ (737-17)
भ्रमि भ्रमि आए तुम चे दुआरा ॥ (694-1)
भ्रमि भ्रमि आवै मूड़्हा वारो वार ॥१॥ (1169-6)
भ्रमि भ्रमि जोनि भेख बहु कीन्हे गुरि राखे सचु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1255-3)
भ्रमि भ्रमि जोनि मनमुख भरमाई ॥ (1261-12)
भ्रमि भ्रमि जोनी फिरि फिरि आइआ ॥ (1048-12)
भ्रमि भ्रमि डोलै लख चउरासी ॥ (1344-14)
भ्रमि भ्रमि रोवै हाथ पछोड़ी ॥३॥ (375-2)
भ्रमि मोही दूख न जाणही कोटि जोनी बसना राम ॥ (848-7)
भ्रमीआ चा ॥ (693-19)
भ्रमु कटीऐ नानक साधसंगि दुतीआ भाउ मिटाइ ॥२॥ (296-17)
भ्रमु खोइओ सांति सहजि सुआमी परगासु भइआ कउलु खिलिआ ॥ (249-18)
भ्रमु भउ काटि कीए निरवैरे जीउ ॥ (217-1)
भ्रमु भउ काटि कीए निहकेवल जब ते हउमै मारी ॥ (207-2)
भ्रमु भउ दूखु दरदु सभु जाइ ॥ (1271-8)
भ्रमु भउ मिटिआ साधसंग ते दालिद न कोई घालका ॥६॥ (1085-1)
भ्रमु भउ मोहु कटिओ गुर बचनी अपना दरसु दिखावहु ॥१॥ (1120-8)
भ्रमु माइआ विचहु कटीऐ सचड़ै नामि समाए ॥ (585-1)
भ्रिंग पतंगु कुंचरु अरु मीना ॥ (225-18)
भ्रितिआ प्रिअं बिस्राम चरणं ॥ (1354-7)

मः १ ॥ (1088-13)
मः १ ॥ (1088-8)
मः १ ॥ (1090-10)
मः १ ॥ (1090-15)
मः १ ॥ (1090-16)
मः १ ॥ (1091-1)
मः १ ॥ (1091-2)
मः १ ॥ (1091-9)
मः १ ॥ (1093-9)
मः १ ॥ (1241-11)
मः १ ॥ (1241-19)
मः १ ॥ (1242-14)
मः १ ॥ (1242-8)
मः १ ॥ (1243-1)
मः १ ॥ (1243-18)
मः १ ॥ (1243-9)
मः १ ॥ (1244-17)
मः १ ॥ (1244-7)
मः १ ॥ (1246-1)
मः १ ॥ (1279-10)
मः १ ॥ (1286-9)
मः १ ॥ (1287-13)
मः १ ॥ (1287-14)
मः १ ॥ (1287-16)
मः १ ॥ (1287-4)
मः १ ॥ (1288-14)
मः १ ॥ (1288-5)
मः १ ॥ (1289-15)
मः १ ॥ (1289-6)
मः १ ॥ (1291-14)
मः १ ॥ (1291-6)
मः १ ॥ (137-16)
मः १ ॥ (138-2)
मः १ ॥ (139-13)
मः १ ॥ (140-11)
मः १ ॥ (141-1)
मः १ ॥ (141-3)

मः १ ॥ (142-12)
मः १ ॥ (142-19)
मः १ ॥ (142-2)
मः १ ॥ (142-3)
मः १ ॥ (142-5)
मः १ ॥ (143-10)
मः १ ॥ (143-19)
मः १ ॥ (144-1)
मः १ ॥ (144-13)
मः १ ॥ (144-2)
मः १ ॥ (144-3)
मः १ ॥ (144-4)
मः १ ॥ (144-5)
मः १ ॥ (145-4)
मः १ ॥ (147-12)
मः १ ॥ (147-19)
मः १ ॥ (149-4)
मः १ ॥ (150-14)
मः १ ॥ (463-10)
मः १ ॥ (463-2)
मः १ ॥ (464-16)
मः १ ॥ (464-5)
मः १ ॥ (465-7)
मः १ ॥ (466-5)
मः १ ॥ (467-15)
मः १ ॥ (467-7)
मः १ ॥ (468-19)
मः १ ॥ (468-8)
मः १ ॥ (469-16)
मः १ ॥ (469-5)
मः १ ॥ (470-16)
मः १ ॥ (470-4)
मः १ ॥ (471-17)
मः १ ॥ (471-5)
मः १ ॥ (471-8)
मः १ ॥ (471-9)
मः १ ॥ (472-16)

मः १ ॥ (472-18)
मः १ ॥ (472-8)
मः १ ॥ (473-15)
मः १ ॥ (473-7)
मः १ ॥ (556-9)
मः १ ॥ (594-7)
मः १ ॥ (648-12)
मः १ ॥ (786-15)
मः १ ॥ (789-16)
मः १ ॥ (789-4)
मः १ ॥ (789-9)
मः १ ॥ (790-10)
मः १ ॥ (790-11)
मः १ ॥ (790-12)
मः १ ॥ (790-17)
मः १ ॥ (790-4)
मः १ ॥ (791-5)
मः १ ॥ (83-10)
मः १ ॥ (85-1)
मः १ ॥ (854-3)
मः १ ॥ (91-5)
मः १ ॥ (951-18)
मः १ ॥ (952-13)
मः १ ॥ (952-15)
मः १ ॥ (952-17)
मः १ ॥ (952-19)
मः १ ॥ (953-13)
मः १ ॥ (953-2)
मः १ ॥ (953-3)
मः १ ॥ (955-13)
मः १ ॥ (955-5)
मः १ ॥ (956-15)
मः १ ॥ (956-2)
मः १ ॥ (956-4)
मः १ सलोकु ॥ (142-9)
मः १ सलोकु ॥ (143-6)
मः २ ॥ (1245-6)

मः २ ॥ (1279-15)
मः २ ॥ (1280-2)
मः २ ॥ (1290-15)
मः २ ॥ (138-12)
मः २ ॥ (139-3)
मः २ ॥ (146-14)
मः २ ॥ (146-3)
मः २ ॥ (147-5)
मः २ ॥ (150-8)
मः २ ॥ (469-13)
मः २ ॥ (469-15)
मः २ ॥ (653-12)
मः २ ॥ (787-16)
मः २ ॥ (787-17)
मः २ ॥ (787-18)
मः २ ॥ (788-3)
मः २ ॥ (791-15)
मः २ ॥ (791-16)
मः २ ॥ (792-1)
मः २ ॥ (83-15)
मः २ ॥ (954-11)
मः २ ॥ (954-17)
मः २ ॥ (954-19)
मः २ ॥ (954-6)
मः ३ ॥ (1087-16)
मः ३ ॥ (1088-18)
मः ३ ॥ (1088-3)
मः ३ ॥ (1089-10)
मः ३ ॥ (1089-18)
मः ३ ॥ (1089-4)
मः ३ ॥ (1090-5)
मः ३ ॥ (1091-17)
मः ३ ॥ (1092-16)
मः ३ ॥ (1092-8)
मः ३ ॥ (1093-18)
मः ३ ॥ (1093-4)
मः ३ ॥ (1246-17)

मः ३ ॥ (1247-17)
मः ३ ॥ (1247-5)
मः ३ ॥ (1248-10)
मः ३ ॥ (1248-17)
मः ३ ॥ (1248-5)
मः ३ ॥ (1249-14)
मः ३ ॥ (1249-5)
मः ३ ॥ (1250-4)
मः ३ ॥ (1251-3)
मः ३ ॥ (1280-15)
मः ३ ॥ (1280-9)
मः ३ ॥ (1281-17)
मः ३ ॥ (1281-5)
मः ३ ॥ (1282-14)
मः ३ ॥ (1282-6)
मः ३ ॥ (1283-12)
मः ३ ॥ (1283-4)
मः ३ ॥ (1284-1)
मः ३ ॥ (1284-15)
मः ३ ॥ (1285-11)
मः ३ ॥ (1285-19)
मः ३ ॥ (1285-5)
मः ३ ॥ (1376-8)
मः ३ ॥ (1378-11)
मः ३ ॥ (1380-12)
मः ३ ॥ (1383-11)
मः ३ ॥ (145-12)
मः ३ ॥ (149-9)
मः ३ ॥ (313-17)
मः ३ ॥ (314-14)
मः ३ ॥ (314-5)
मः ३ ॥ (508-17)
मः ३ ॥ (509-13)
मः ३ ॥ (509-18)
मः ३ ॥ (509-7)
मः ३ ॥ (510-15)
मः ३ ॥ (510-8)

मः ३ ॥ (511-11)
मः ३ ॥ (511-19)
मः ३ ॥ (511-3)
मः ३ ॥ (512-18)
मः ३ ॥ (512-7)
मः ३ ॥ (513-18)
मः ३ ॥ (513-8)
मः ३ ॥ (514-14)
मः ३ ॥ (514-6)
मः ३ ॥ (515-11)
मः ३ ॥ (515-3)
मः ३ ॥ (516-1)
मः ३ ॥ (516-13)
मः ३ ॥ (516-18)
मः ३ ॥ (517-5)
मः ३ ॥ (517-9)
मः ३ ॥ (548-13)
मः ३ ॥ (549-11)
मः ३ ॥ (549-18)
मः ३ ॥ (549-4)
मः ३ ॥ (550-10)
मः ३ ॥ (550-17)
मः ३ ॥ (551-12)
मः ३ ॥ (551-19)
मः ३ ॥ (552-16)
मः ३ ॥ (552-9)
मः ३ ॥ (553-14)
मः ३ ॥ (554-17)
मः ३ ॥ (554-7)
मः ३ ॥ (555-14)
मः ३ ॥ (555-4)
मः ३ ॥ (556-15)
मः ३ ॥ (556-2)
मः ३ ॥ (585-14)
मः ३ ॥ (585-15)
मः ३ ॥ (586-11)
मः ३ ॥ (586-3)

मः ३ ॥ (587-17)
मः ३ ॥ (587-4)
मः ३ ॥ (588-15)
मः ३ ॥ (588-5)
मः ३ ॥ (589-13)
मः ३ ॥ (589-4)
मः ३ ॥ (590-16)
मः ३ ॥ (590-9)
मः ३ ॥ (591-10)
मः ३ ॥ (591-19)
मः ३ ॥ (591-4)
मः ३ ॥ (592-11)
मः ३ ॥ (592-19)
मः ३ ॥ (593-19)
मः ३ ॥ (593-9)
मः ३ ॥ (594-13)
मः ३ ॥ (643-12)
मः ३ ॥ (643-3)
मः ३ ॥ (644-11)
मः ३ ॥ (644-17)
मः ३ ॥ (644-2)
मः ३ ॥ (645-15)
मः ३ ॥ (645-8)
मः ३ ॥ (646-16)
मः ३ ॥ (646-2)
मः ३ ॥ (646-8)
मः ३ ॥ (647-14)
मः ३ ॥ (647-3)
मः ३ ॥ (648-2)
मः ३ ॥ (648-7)
मः ३ ॥ (649-1)
मः ३ ॥ (649-18)
मः ३ ॥ (649-9)
मः ३ ॥ (650-14)
मः ३ ॥ (650-5)
मः ३ ॥ (651-11)
मः ३ ॥ (651-19)

मः ३ ॥ (651-3)
मः ३ ॥ (653-17)
मः ३ ॥ (785-10)
मः ३ ॥ (785-17)
मः ३ ॥ (786-6)
मः ३ ॥ (787-10)
मः ३ ॥ (787-4)
मः ३ ॥ (787-9)
मः ३ ॥ (788-10)
मः ३ ॥ (788-11)
मः ३ ॥ (83-4)
मः ३ ॥ (84-15)
मः ३ ॥ (84-3)
मः ३ ॥ (84-9)
मः ३ ॥ (849-13)
मः ३ ॥ (849-5)
मः ३ ॥ (850-13)
मः ३ ॥ (850-4)
मः ३ ॥ (851-11)
मः ३ ॥ (851-19)
मः ३ ॥ (851-3)
मः ३ ॥ (85-19)
मः ३ ॥ (852-15)
मः ३ ॥ (852-2)
मः ३ ॥ (853-13)
मः ३ ॥ (853-4)
मः ३ ॥ (854-10)
मः ३ ॥ (854-17)
मः ३ ॥ (85-9)
मः ३ ॥ (86-18)
मः ३ ॥ (86-9)
मः ३ ॥ (87-10)
मः ३ ॥ (88-13)
मः ३ ॥ (88-15)
मः ३ ॥ (88-3)
मः ३ ॥ (89-12)
मः ३ ॥ (90-1)

मः ३ ॥ (90-17)
मः ३ ॥ (90-8)
मः ३ ॥ (91-10)
मः ३ ॥ (947-14)
मः ३ ॥ (947-6)
मः ३ ॥ (947-8)
मः ३ ॥ (948-11)
मः ३ ॥ (948-18)
मः ३ ॥ (948-3)
मः ३ ॥ (948-9)
मः ३ ॥ (949-11)
मः ३ ॥ (949-5)
मः ३ ॥ (950-16)
मः ३ ॥ (950-2)
मः ३ ॥ (950-7)
मः ३ ॥ (951-7)
मः ३ ॥ (956-8)
मः ४ ॥ (1087-10)
मः ४ ॥ (1087-2)
मः ४ ॥ (1087-9)
मः ४ ॥ (1244-13)
मः ४ ॥ (1246-8)
मः ४ ॥ (1250-11)
मः ४ ॥ (1250-12)
मः ४ ॥ (1312-18)
मः ४ ॥ (1313-17)
मः ४ ॥ (1313-7)
मः ४ ॥ (1314-19)
मः ४ ॥ (1314-8)
मः ४ ॥ (1315-10)
मः ४ ॥ (1315-16)
मः ४ ॥ (1316-12)
मः ४ ॥ (1316-3)
मः ४ ॥ (1317-14)
मः ४ ॥ (1317-2)
मः ४ ॥ (1317-7)
मः ४ ॥ (1318-1)

मः ४ ॥ (1318-12)
मः ४ ॥ (1318-5)
मः ४ ॥ (300-18)
मः ४ ॥ (301-12)
मः ४ ॥ (301-17)
मः ४ ॥ (301-7)
मः ४ ॥ (302-13)
मः ४ ॥ (302-2)
मः ४ ॥ (303-16)
मः ४ ॥ (303-3)
मः ४ ॥ (304-11)
मः ४ ॥ (305-16)
मः ४ ॥ (305-4)
मः ४ ॥ (306-12)
मः ४ ॥ (307-4)
मः ४ ॥ (308-1)
मः ४ ॥ (308-15)
मः ४ ॥ (309-16)
मः ४ ॥ (309-4)
मः ४ ॥ (310-15)
मः ४ ॥ (310-5)
मः ४ ॥ (311-15)
मः ४ ॥ (311-6)
मः ४ ॥ (312-12)
मः ४ ॥ (313-11)
मः ४ ॥ (313-3)
मः ४ ॥ (316-14)
मः ४ ॥ (316-4)
मः ४ ॥ (317-12)
मः ४ ॥ (551-4)
मः ४ ॥ (642-14)
मः ४ ॥ (652-15)
मः ४ ॥ (652-9)
मः ४ ॥ (653-4)
मः ५ ॥ (1093-14)
मः ५ ॥ (1094-15)
मः ५ ॥ (1094-16)

मः ५ ॥ (1094-8)
मः ५ ॥ (1094-9)
मः ५ ॥ (1095-11)
मः ५ ॥ (1095-12)
मः ५ ॥ (1095-18)
मः ५ ॥ (1095-19)
मः ५ ॥ (1095-4)
मः ५ ॥ (1095-5)
मः ५ ॥ (1096-13)
मः ५ ॥ (1096-14)
मः ५ ॥ (1096-6)
मः ५ ॥ (1096-7)
मः ५ ॥ (1097-1)
मः ५ ॥ (1097-15)
मः ५ ॥ (1097-16)
मः ५ ॥ (1097-2)
मः ५ ॥ (1097-8)
मः ५ ॥ (1097-9)
मः ५ ॥ (1098-10)
मः ५ ॥ (1098-11)
मः ५ ॥ (1098-17)
मः ५ ॥ (1098-18)
मः ५ ॥ (1098-3)
मः ५ ॥ (1098-4)
मः ५ ॥ (1099-12)
मः ५ ॥ (1099-13)
मः ५ ॥ (1099-18)
मः ५ ॥ (1099-19)
मः ५ ॥ (1099-5)
मः ५ ॥ (1099-6)
मः ५ ॥ (1100-13)
मः ५ ॥ (1100-14)
मः ५ ॥ (1100-6)
मः ५ ॥ (1100-7)
मः ५ ॥ (1101-1)
मः ५ ॥ (1101-15)
मः ५ ॥ (1101-16)

मः ५ ॥ (1101-2)
मः ५ ॥ (1101-8)
मः ५ ॥ (1101-9)
मः ५ ॥ (1102-11)
मः ५ ॥ (1102-12)
मः ५ ॥ (1102-4)
मः ५ ॥ (1102-5)
मः ५ ॥ (1247-10)
मः ५ ॥ (1251-10)
मः ५ ॥ (1284-8)
मः ५ ॥ (1376-9)
मः ५ ॥ (1383-13)
मः ५ ॥ (1383-16)
मः ५ ॥ (1383-17)
मः ५ ॥ (1383-18)
मः ५ ॥ (1383-19)
मः ५ ॥ (315-10)
मः ५ ॥ (315-2)
मः ५ ॥ (315-6)
मः ५ ॥ (317-4)
मः ५ ॥ (318-10)
मः ५ ॥ (318-15)
मः ५ ॥ (318-19)
मः ५ ॥ (318-4)
मः ५ ॥ (319-14)
मः ५ ॥ (319-18)
मः ५ ॥ (319-5)
मः ५ ॥ (319-9)
मः ५ ॥ (320-14)
मः ५ ॥ (320-18)
मः ५ ॥ (320-4)
मः ५ ॥ (320-9)
मः ५ ॥ (321-13)
मः ५ ॥ (321-19)
मः ५ ॥ (321-4)
मः ५ ॥ (321-8)
मः ५ ॥ (322-12)

मः ५ ॥ (322-16)
मः ५ ॥ (322-7)
मः ५ ॥ (323-2)
मः ५ ॥ (323-7)
मः ५ ॥ (517-17)
मः ५ ॥ (518-12)
मः ५ ॥ (518-17)
मः ५ ॥ (518-6)
मः ५ ॥ (519-10)
मः ५ ॥ (519-15)
मः ५ ॥ (519-4)
मः ५ ॥ (520-14)
मः ५ ॥ (520-2)
मः ५ ॥ (520-8)
मः ५ ॥ (521-1)
मः ५ ॥ (521-11)
मः ५ ॥ (521-17)
मः ५ ॥ (521-6)
मः ५ ॥ (522-10)
मः ५ ॥ (522-16)
मः ५ ॥ (522-4)
मः ५ ॥ (523-15)
मः ५ ॥ (523-2)
मः ५ ॥ (523-8)
मः ५ ॥ (524-3)
मः ५ ॥ (554-1)
मः ५ ॥ (89-3)
मः ५ ॥ (957-11)
मः ५ ॥ (957-4)
मः ५ ॥ (958-1)
मः ५ ॥ (958-10)
मः ५ ॥ (959-16)
मः ५ ॥ (959-2)
मः ५ ॥ (960-14)
मः ५ ॥ (961-10)
मः ५ ॥ (961-18)
मः ५ ॥ (962-14)

मः ५ ॥ (962-8)
मः ५ ॥ (963-13)
मः ५ ॥ (963-18)
मः ५ ॥ (963-4)
मः ५ ॥ (964-11)
मः ५ ॥ (964-17)
मः ५ ॥ (964-6)
मः ५ ॥ (965-5)
मः ५ ॥ (966-3)
मः ५ ॥ (966-9)
मंगण वाले केतड़े दाता एको सोइ ॥ (18-7)
मंगणा त सचु इकु जिसु तुसि देवै आपि ॥ (321-13)
मंगत जन दीन खरे दरि ठाढे अति तरसन कउ दानु दीजै ॥ (1325-17)
मंगत जनु जाचै दानु हरि देहु सुभाइ ॥ (1248-11)
मंगत जनु जाचै हरि देहु पसाउ ॥ (998-2)
मंगल गावहु नारे ॥ (764-8)
मंगल रूप प्रान जीवन धन सिमरत अनद घना ॥ (1215-5)
मंगल साजु भइआ प्रभु अपना गाइआ राम ॥ (845-14)
मंगल सूख कलिआण तिथाईं ॥ (1348-19)
मंगलचार चोज आनंदा ॥ (1312-11)
मंगलवारे ले माहीति ॥ (344-12)
मंगला हरि मंगला ॥ (695-10)
मंगला हरि मंगला मेरे प्रभ कै सुणीऐ मंगला ॥ (924-16)
मंगलि माइआ मोहु उपाइआ ॥ (841-7)
मंगलु तिस कै जिसु एकु कामु ॥ (1180-14)
मंगलु नारी गावहि आए ॥ (798-3)
मंगै अम्रित नामु न आवै कदे हारि ॥ (962-19)
मंघर माहु भला हरि गुण अंकि समावए ॥ (1109-5)
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥ (135-13)
मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥ (135-9)
मंञहु दूरि न जाहि पिरा जीउ घरि बैठिआ हरि पाए ॥ (246-11)
मंञु कुचजी अमावणि डोसड़े हउ किउ सहु रावणि जाउ जीउ ॥ (762-6)
मंत्रं राम राम नामं ध्यानं सरबत्र पूरनह ॥ (1357-9)
मंत्र द्रिड़ाइ हरि अउखधु गुरि दीओ तउ मिलिओ सगल प्रबीना ॥१॥ (1210-19)
मंत्री होइ अठूहिआ नागी लगै जाइ ॥ (148-5)
मंत्रु तंत्रु अउखधु पुनहचारु ॥ (184-19)
मंदभागी तेरो दरसनु नाहि ॥३॥ (323-19)

मंदर मिटी संदड़े पथर कीते रासि जीउ ॥ (762-10)
मंदर मेरे सभ ते ऊचे ॥ (1141-11)
मंदरि घरि आनंदु हरि हरि जसु मनि भावै ॥ (166-2)
मंदरि चरि कै पंथु निहारउ नैन नीरि भरि आइओ ॥२॥ (624-10)
मंदरि भागु सोभ दुआरै अनहत रुणु झुणु लाए ॥ (533-16)
मंदरि मेरै सबदि उजारा ॥ (384-14)
मंदरि सोवहि पट्मबर तानि ॥ (971-13)
मंदरु एकु दुआर दस जा के गऊ चरावन छाडीअले ॥ (972-16)
मंदलु न बाजै नटु पै सूता ॥१॥ (478-10)
मंदा किस नो आखीऐ जां तिसु बिनु कोई नाहि ॥७५॥ (1381-17)
मंदा किस नो आखीऐ जां सभना साहिबु एकु ॥ (1238-1)
मंदा किस नो आखीऐ जे दूजा होई ॥४॥ (425-6)
मंदा किस नो आखीऐ सबदि वेखहु लिव लाइ ॥६॥ (757-6)
मंदा किसै न आखि झगड़ा पावणा ॥ (566-5)
मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥ (473-13)
मंदा को न अलाए ॥ (627-6)
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥ (470-19)
मंदा चितवत चितवत पचिआ जिनि रचिआ तिनि दीना धाकु ॥१॥ (825-3)
मंदा जाणै आप कउ अवरु भला संसारु ॥४॥७॥ (991-11)
मंदा नाहि कोइ हां ॥ (410-16)
मंदा मूलि न उपजिओ तरे सची कारै लागि जीउ ॥६॥ (132-14)
मंदा मूलि न कीचई दे लमी नदरि निहालीऐ ॥ (474-7)
मंदे अमल करेदिआ एह सजाइ तिनाह ॥४९॥ (1380-9)
मंन मझाहू लखि तुधहु दूरि न सु पिरी ॥३॥ (1100-8)
मंनिऐ गिआनु धिआनु तुधै ते पाइआ ॥ (150-11)
मंनीऐ सतिगुर परम बीचारी जितु मिलिऐ तिसना भुख सभ जाइ ॥ (1423-9)
मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥ (919-11)
मंने का बहि करनि वीचारु ॥ (3-5)
मंने की गति कही न जाइ ॥ (3-5)
मंने नाउ बिसंख दरगह पावणा ॥ (148-4)
मंने नाउ सोई जिणि जाइ ॥ (954-5)
मंने नाउ सोई जिणि जासी आपे साचु द्रिड़ाइदा ॥१०॥ (1035-1)
मंने नामु सची पति पूजा ॥ (831-19)
मंने हुकमु सु परगटु जाइ ॥ (355-13)
मंनै जम कै साथि न जाइ ॥ (3-7)
मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥ (3-10)
मंनै धरम सेती सनबंधु ॥ (3-9)

मंनै नानक भवहि न भिख ॥ (3-10)
मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥ (3-8)
मंनै परवारै साधारु ॥ (3-10)
मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥ (3-10)
मंनै मगु न चलै पंथु ॥ (3-9)
मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥ (3-8)
मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥ (3-7)
मंनै सगल भवण की सुधि ॥ (3-7)
मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥ (3-6)
मइआ करी पूरन हरि राइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (201-1)
मउला खेल करे सभि आपे ॥ (1020-6)
मउलिओ मनु तनु होइओ हरिआ एक बूंद जिनि पाई ॥ (672-10)
मउली धरती मउलिआ अकासु ॥ (1193-15)
मकर प्रागि दानु बहु कीआ सरीरु दीओ अध काटि ॥ (986-3)
मका मिहर रोजा पै खाका ॥ (1083-18)
मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥ (1245-18)
मखीं मिठै मरणा ॥ (1286-15)
मगन भइआ ते सो सचु पावै ॥३१॥ (342-3)
मगन भए ऊहा संगि माते ओति पोति लपटाई ॥१॥ (821-12)
मगन मनै महि चितवउ आसा नैनहु तार तुहारी ॥ रहाउ ॥ (1120-3)
मगन रहिओ माइआ मै निस दिनि छुटी न मन की काई ॥ (718-8)
मगनु भइओ प्रिअ प्रेम सिउ सूध न सिमरत अंग ॥ (1364-8)
मगर पाछै कछु न सूझै एहु पदमु अलोअ ॥२॥ (663-1)
मछर डंग साइर भर सुभर बिनु हरि किउ सुखु पाईऐ ॥ (1108-17)
मछी तारू किआ करे पंखी किआ आकासु ॥ (143-6)
मछु कछु कूरमु आगिआ अउतरासी ॥ (1082-15)
मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥४॥ (693-14)
मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु ॥ (55-7)
मछुली विछुंनी नैण रुंनी जालु बधिकि पाइआ ॥ (439-6)
मछुली होवा जलि बसा जीअ जंत सभि सारि ॥ (157-5)
मजनु करत पूरन सभि काम ॥१॥ (198-19)
मजनु गुर आंदा रासे ॥ (623-3)
मजनु झूठा चंडाल का फोकट चार सींगार ॥२॥ (1343-11)
मजनु दानु चंगिआईआ भाई दरगह नामु विसेखु ॥ (635-19)
मजनु सीलु सचु रिदै वीचारि ॥ (839-16)
मजलस कूड़े लब की पी पी होइ खुआरु ॥ (553-3)
मजलसि दूरि महलु को पावै ॥१॥ रहाउ ॥ (1161-6)

मजा रुधिर द्रुगंधा नानक अथि गरबेण अग्यानणो ॥१॥ (1360-6)
मझ भरि दुख बदुख ॥ (1091-3)
मटकि मटकि चलु सखी सहेली मेरे ठाकुर के गुन सारे ॥ (983-1)
मटुकी डारि धरी हरि लिव लाई राम ॥ (843-6)
मड़ी मसाणी मूड़े जोगु नाहि ॥९॥ (1190-2)
मणी मिटाइ जीवत मरै गुर पूरे उपदेस ॥ (256-15)
मत को भरमि भुलै संसारि ॥ (864-3)
मत कोई जाणहु अवरु कछु सभ प्रभ कै हाथि ॥ (814-4)
मत कोई मन मिलता बिलमावै ॥ (342-3)
मत तुम जाणहु ओइ जीवदे ओइ आपि मारे करतारि ॥ (589-14)
मत बिसरसि रे मन राम बोलि ॥ (1170-7)
मत भूलहि रे मन चेति हरी ॥ (1171-16)
मत भूलहु मानुख जन माइआ भरमाइआ ॥ (812-11)
मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ ॥ (923-12)
मत हरि पूछै कउनु है परा हमारै बार ॥६१॥ (1367-14)
मत हरि पूछै कउनु है मेरे जाति न नाउ ॥६०॥ (1367-13)
मत हरि विसरिऐ जम वसि पाहि ॥ (1189-19)
मतड़ी कांढकु आह पाव धोवंदो पीवसा ॥ (1099-13)
मतवारो माइआ सोइआ ॥ (210-15)
मता करउ सो पकनि न देई ॥ (371-5)
मता करै पछम कै ताई पूरब ही लै जात ॥ (496-9)
मता मसूरति अवर सिआनप जन कउ कछू न आइओ ॥ (498-11)
मता मसूरति आपि करे जो करे सु होई ॥ (509-2)
मता मसूरति तां किछु कीजै जे किछु होवै हरि बाहरि ॥ (1135-3)
मति अलूणी फिका सादु ॥ (25-15)
मति कोऊ मारै ईंट ढेम ॥४॥१॥ (1196-19)
मति गुर आतम देव दी खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दै ॥ (966-17)
मति गुरमति कीरति पाईऐ हरि नामा हरि उरि हारु ॥ (1314-8)
मति गुरमति सुनि जसु कान ॥ (1297-19)
मति गुरमति हरि प्रभु लाधो ॥ (1297-13)
मति ततु गिआनं कलिआण निधानं हरि नाम मनि रमणं ॥२॥ (505-14)
मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥१०॥ (468-16)
मति देहि हरि प्रभ अगम ठाकुर गुर चरन मनु मै लाइओ ॥ (985-5)
मति निहचल अति गूड़ी गुरमुखि सहजे नामु वखाणिआ ॥ (569-16)
मति पंखेरू किरतु साथि कब उतम कब नीच ॥ (147-19)
मति पंखेरू वसि होइ सतिगुरू धिआईं ॥ (1239-5)
मति पति धनु सुख सहज अनंदा ॥ (805-2)

मति परगासु भई मनु मानिआ राम नामि वडिआई ॥ (776-1)
मति पूरी अम्रितु जा की द्रिसटि ॥ (293-11)
मति पूरी परधान ते गुर पूरे मन मंत ॥ (259-1)
मति प्रगास भई हरि धिआइआ गिआनि तति लिव लाइ ॥ (1199-12)
मति बसि परउ लुहार के जारै दूजी बार ॥९०॥ (1369-5)
मति बुधि भवी न बुझई अंतरि लोभ विकारु ॥ (27-7)
मति बुधि सुरति नाही चतुराई ॥ (804-6)
मति मलीण परगटु भई जपि नामु मुरारा ॥ (163-8)
मति माता मति जीउ नामु मुखि रामा ॥ (172-19)
मति माता संतोखु पिता सरि सहज समायउ ॥ (1397-15)
मति विचि मरणु जीवणु होरु कैसा जा जीवा तां जुगति नाही ॥ (354-19)
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ (2-12)
मति सत भाइ भगति गोबिंदा ॥ (1331-12)
मति सुमति तेरै वसि सुआमी हम जंत तू पुरखु जंतैनी ॥ (800-10)
मति होदी होइ इआणा ॥ (1384-16)
मती देवी देवर जेसट ॥ (371-4)
मती मरणु विसारिआ खुसी कीती दिन चारि ॥ (15-17)
मतु को जाणै जाइ अगै पाइसी ॥ (730-3)
मतु जाण सहि गली पाइआ ॥ (24-2)
मतु जाणहु जगु जीवदा दूजै भाइ मुइआसु ॥ (643-9)
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥१॥ (14-3)
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥२॥ (14-6)
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥३॥ (14-7)
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥४॥१॥ (14-9)
मतु निरगुण हम मेलै कबहूं अपुनी किरपा धारि ॥१॥ रहाउ ॥ (167-5)
मतु भरमि भूलहु भूलहु ॥ (1185-6)
मतु भसम अंधूले गरबि जाहि ॥ (1189-14)
मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ (472-3)
मतु लकरी सोटा तेरी परै पीठि ॥३॥ (1196-18)
मतु सचा अखरु भुलि जाइ चउकै भिटै न कोइ ॥ (1090-4)
मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि ॥५९॥ (1381-2)
मतु सेजै कंतु न आवई एवै बिरथा जाइ ॥ (788-8)
मते समेव चरणं उधरणं भै दुतरह ॥ (1360-3)
मथि अम्रितु पीआ इहु मनु दीआ गुर पहि मोलु कराइआ ॥ (766-10)
मथुरा को प्रभु स्रब मय अरजुन गुरु भगति कै हेति पाइ रहिओ मिलि राम सिउ ॥३॥ (1408-19)
मथुरा जन को प्रभु दीन दयालु है संगति स्रिस्टि निहालु करी ॥ (1409-2)
मथुरा जन जानि कही जीअ साचु सु अउर कछू न बिचारन कउ ॥ (1404-7)

मथुरा भनि भाग भले उन्ह के मन इछत ही फल पावत है ॥ (1404-9)
मथे काले महलु न पावहि दुख ही विचि दुखु पाइदा ॥५॥ (1063-3)
मथे वालि पछाड़िअनु जम मारगि मुते ॥ (524-1)
मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥ (471-19)
मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥ (695-12)
मदि माइआ कै भइओ बावरो सूझत नह कछु गिआना ॥ (632-19)
मदि माइआ कै भइओ बावरो हरि जसु नहि उचरै ॥ (536-9)
मधसूदन जगजीवन माधो मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥ (980-12)
मधि भागि हरि प्रेम रसाइण ॥१॥ (1137-7)
मधु लीनो मुखि दीनी छारु ॥ (1252-11)
मधुर बानी पिरहि मानी थिरु सोहागु ता का बणा ॥ (457-7)
मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै ॥१॥ रहाउ ॥ (988-10)
मधुसूदन दामोदर सुआमी ॥ (1082-6)
मधुसूदन मेरे मन तन प्राना ॥ (94-9)
मधुसूदन हरि धारि प्रभ किरपा करि किरपा गुरू मिलाईऐ ॥ (1179-11)
मधुसूदन हरि माधो प्राना ॥ (698-13)
मधुसूदनु कर मुंदरी पहिरै परमेसरु पटु लेई ॥ (359-10)
मधुसूदनु जपीऐ उर धारि ॥ (1135-1)
मन अंतर की उतरै चिंद ॥ (295-4)
मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ ॥ (292-16)
मन अंतरि बोलै सभु कोई ॥ (329-1)
मन अंतरि हउमै रोगु भ्रमि भूले हउमै साकत दुरजना ॥ (1424-14)
मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख दुरजना ॥ (1317-13)
मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख दुरजना ॥ (301-11)
मन अंदरि अम्रितु गुरमति हरि लीवा जीउ ॥ (175-9)
मन अंधे कउ मिलै सजाइ ॥ (1256-16)
मन अनिक सोच पवित्र करत ॥ (1229-15)
मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥ (266-8)
मन अपुने महि फिरि फिरि चेत ॥ (238-14)
मन असवार जैसे तुरी सीगारी ॥ (198-4)
मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥ (270-10)
मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥ (269-19)
मन आदि गुण आदि वखाणिआ ॥ (1106-3)
मन आवण जाणु न सुझई ना सुझै दरबारु ॥ (1418-1)
मन इछ पाई प्रभ धिआई संजोगु साहा सुभ गणिआ ॥ (459-10)
मन इछ पाईऐ प्रभु धिआईऐ मिटहि जम के त्रासा ॥ (578-12)
मन इछा दान करणं सरबत्र आसा पूरनह ॥ (706-9)

मन इछिअड़ा फलु पाईऐ राम ॥ (578-11)
मन इछे नानक फल पाए पूरन इछ पुजारिआ ॥२॥५॥२३॥ (807-2)
मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥ (293-4)
मन इछे फल पाई ॥ (626-5)
मन इछे फल पावहु सभै फल पावहु धरमु अरथु काम मोखु जन नानक हरि सिउ मिले हरि भगत तोरा ॥२॥२॥९॥ (1201-7)
मन इछे फल भुंचि तू सभु चूकै सोगु संतापु ॥ रहाउ ॥ (48-11)
मन इछे सुख माणदा किछु नाहि विसूरे ॥ (707-6)
मन इछे सेई फल पाए करतै आपि वसाइआ राम ॥ (783-2)
मन इछे सेई फल पाए हरि की कथा सुहेली ॥ (616-14)
मन उधरण का साजु नाहि ॥ (1192-19)
मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥ (264-1)
मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ (12-4)
मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ (357-13)
मन एको साहिबु भाई रे ॥ (156-5)
मन ऐसा लेखा तूं की पड़िआ ॥ (434-15)
मन ओइ दिनस धंनि परवानां ॥ (1213-9)
मन कउ इह उपदेसु द्रिड़ावै सहजि सहजि गुण गाई ॥१॥ (499-10)
मन कउ मारि कहहु किसु तारै ॥१॥ रहाउ ॥ (329-1)
मन कउ विआपै हउमै मैलु ॥ (1149-3)
मन कउ होइ संतोखु धिआईऐ सदा हरि ॥ (519-13)
मन कउ होइ संतोखु भुखा ध्रापीऐ ॥ (519-7)
मन कठोरु अजहू न पतीना ॥ (871-1)
मन कमीन कमतरीन तू दरीआउ खुदाइआ ॥ (1291-7)
मन करहला अति निरमला मलु लागी हउमै आइ ॥ (234-6)
मन करहला गुर गोविंदु समालि ॥१॥ रहाउ ॥ (234-16)
मन करहला गुरि मंनिआ गुरमुखि कार कमाइ ॥ (234-14)
मन करहला तूं चंचला चतुराई छडि विकरालि ॥ (235-3)
मन करहला तूं मीतु मेरा पाखंडु लोभु तजाइ ॥ (234-10)
मन करहला मेरे पिआरिआ इक गुर की सिख सुणाइ ॥ (234-12)
मन करहला मेरे पिआरिआ विचि देही जोति समालि ॥ (235-1)
मन करहला मेरे पिआरिआ सतसंगति सतिगुरु भालि ॥ (234-18)
मन करहला मेरे प्रान तूं मैलु पाखंडु भरमु गवाइ ॥ (234-10)
मन करहला मेरे प्रीतमा दिनु रैणि हरि लिव लाइ ॥ (234-8)
मन करहला मेरे प्रीतमा हरि रिदै भालि भालाइ ॥ (234-7)
मन करहला मेरे साजना हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥ (234-13)
मन करहला वडभागीआ तूं गिआनु रतनु समालि ॥ (235-4)

मन करहला वडभागीआ हरि एक नदरि निहालि ॥ (234-19)
मन करहला वीचारीआ मनमुख फाथिआ महा जालि ॥ (234-17)
मन करहला वीचारीआ वीचारि देखु समालि ॥ (234-15)
मन करहला वीचारीआ हरि राम नाम धिआइ ॥ (234-5)
मन करहला सतिगुरु पुरखु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (234-5)
मन करि कबहू न हरि गुन गाइओ ॥ (1231-18)
मन कह अहंकारि अफारा ॥ (530-9)
मन कहा बिसारिओ राम नामु ॥ (1186-17)
मन कहा लुभाईऐ आन कउ ॥ (1208-6)
मन का अंधा अंधु कमावै ॥ (832-17)
मन का अंधुला माइआ का बंधु ॥ (354-9)
मन का इसटु गुर संगि धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (863-4)
मन का कहिआ मनसा करै ॥ (832-1)
मन का क्रोधु निवारि पंडित ॥१॥ रहाउ ॥ (887-19)
मन का जीउ पवनपति देही देही महि देउ समागा ॥ (598-15)
मन का जीउ पवनु कथीअले पवनु कहा रसु खाई ॥ (944-19)
मन का झूठा झूठु कमावै ॥ (948-16)
मन का तोसा हरि नामु है हिरदै रखहु सम्हालि ॥ (756-11)
मन का सुभाउ मनहि बिआपी ॥ (328-19)
मन का सुभाउ सदा बैरागी ॥ (1129-1)
मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥ (1167-10)
मन का सूतकु दूजा भाउ ॥ (229-12)
मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥ (472-16)
मन कामना तीरथ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए ॥ (642-1)
मन कामना तीरथ देह छुटै ॥ (265-16)
मन काहे भूले मूड़ मना ॥ (432-10)
मन किआ कहता हउ किआ कहता ॥ (823-3)
मन किउ बैरागु करहिगा सतिगुरु मेरा पूरा ॥ (375-9)
मन की इछ पुजावणहारा ॥ (106-2)
मन की कटीऐ मैलु साधसंगि वुठिआ ॥ (520-10)
मन की जूठी जूठु कमावै ॥ (1047-8)
मन की दुबिधा बिनसि जाइ हरि परम पदु लहीऐ ॥१॥ (168-11)
मन की पत्री वाचणी सुखी हू सुखु सारु ॥ (1093-19)
मन की परतीति मन ते पाई ॥ (798-12)
मन की बासना मन ते टरै ॥ (274-5)
मन की बिधि सतिगुर ते जाणै अनदिनु लागै सद हरि सिउ धिआनु ॥ (1259-19)
मन की बिरथा मन ही जाणै अवरु कि जाणै को पीर परईआ ॥१॥ (836-1)

मन की बिरथा मनु ही जानै कै बूझल आगै कहीऐ ॥ (1350-17)
मन की मति तिआगहु हरि जन एहा बात कठैनी ॥ (800-8)
मन की मति तिआगहु हरि जन हुकमु बूझि सुखु पाईऐ रे ॥ (209-14)
मन की मति तिआगीऐ सुणीऐ उपदेसु ॥१॥ रहाउ ॥ (814-12)
मन की मति मतागलु मता ॥ (351-8)
मन की मन ही माहि रही ॥ (631-14)
मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए ॥३॥ (642-2)
मन की मैलु न उतरै हउमै मैलु न जाइ ॥२॥ (558-12)
मन की मैलु न तन ते जाति ॥ (265-17)
मन की सार न जाणनी हउमै भरमि भुलाइ ॥ (645-1)
मन कीआ इछां पूरीआ पाइआ नामु निधानु ॥ (46-4)
मन कीआ इछा पूरीआ पाइआ धुरि संजोग ॥ (959-1)
मन कीआ इछा पूरीआ सबदि रहिआ भरपूरि ॥ (34-16)
मन कीआ इछा पूरीआ हरि पाइआ अगम अपारु ॥ (958-11)
मन कीआ खुसीआ कीचहि वेस ॥ (1327-9)
मन कूटै तउ जम ते छूटै ॥ (872-14)
मन के अंधे आपि न बूझहु काहि बुझावहु भाई ॥ (1103-3)
मन के अधिक तरंग किउ दरि साहिब छुटीऐ ॥ (1088-18)
मन के तरंग सबदि निवारे रसना सहजि सुभाई ॥ (1233-13)
मन के बिकार मनहि तजै मनि चूकै मोहु अभिमानु ॥ (39-1)
मन के बिकार मिटहि प्रभ सिमरत जनम जनम की मैलु हरी ॥१॥ रहाउ ॥ (1152-7)
मन कै कामि न आवई अंते अउसर बार ॥ (257-6)
मन कै वीचारि हुकमु बुझि समाणा ॥३॥ (1128-19)
मन खुटहर तेरा नही बिसासु तू महा उदमादा ॥ (815-12)
मन खोजि मारगु ॥१॥ रहाउ ॥ (71-6)
मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (13-16)
मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (205-13)
मन गुर मिलि नामु अराधिओ ॥ (530-16)
मन गुरमति चाल चलावैगो ॥ (1310-15)
मन चरणारबिंद उपास ॥ (502-15)
मन चरन कमल लागे ॥१॥ (1229-16)
मन चिंतत सगले फल पाए ॥ (395-17)
मन चिंदिअड़ा फलु पाइआ हरि प्रभु गुण नानक बाणी बोले राम ॥१॥ (538-2)
मन चिंदिअड़े फल पावै ॥ (623-5)
मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ (626-11)
मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥२॥१०॥७४॥ (627-11)
मन चिंदिआ फलु पाइआ राम नामु धिआइआ राम नाम गुण गाए ॥ (443-19)

मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥ (774-11)
मन चिंदिआ फलु पाइसी अंतरि बिबेक बीचारु ॥ (1422-17)
मन चिंदिआ फलु पाइसी फिरि होइ न फेरा ॥३॥ (425-14)
मन चिंदिआ वरु पावणा जो इछै सो फलु पाइ ॥ (26-5)
मन चिंदिआ सतिगुरू दिवाइआ ॥ (396-6)
मन चिंदे फल पाईअहि हरि के गुण गाउ ॥ (707-2)
मन चिंदे सगले फल पावहु जीअ कै संगि सहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (623-16)
मन चिंदे सेई फल पाइ ॥१॥ (895-4)
मन चिंदे सेई फल पावहि चरण कमल चितु लाए ॥ (79-10)
मन चूरे खटु दरसन जाणु ॥ (352-1)
मन छोडि छोडि सगल भेदं ॥ (873-12)
मन जापहु राम गुपाल ॥ (1296-12)
मन जिउ अपुने प्रभ भावउ ॥ (529-8)
मन तन अंतरि इही सुआउ ॥ (290-7)
मन तन अंतरि एकु धिआइ ॥३॥ (1152-10)
मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥ (289-8)
मन तन अंतरि चरन धिआइआ ॥ (684-6)
मन तन अंतरि तुझै धिआईं ॥ (386-5)
मन तन अंतरि तुधु नदरि निहाली ॥ (132-4)
मन तन अंतरि तुही धिआइआ ॥ (181-18)
मन तन अंतरि प्रभु आही ॥ (824-7)
मन तन अंतरि प्रभू धिआइआ ॥ (1152-13)
मन तन अंतरि बसे गुर चरना ॥ (1340-3)
मन तन अंतरि रवि रहे नानक सहजि सुभाइ ॥१॥ (928-8)
मन तन अंतरि वसि रहे नानक नही सुमारु ॥ (137-4)
मन तन अंतरि वसु दूखा नासु होइ ॥ (961-7)
मन तन अंतरि सांति समाणी ॥ (105-15)
मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥ (274-8)
मन तन अंतरि हरि हरि मंत ॥ (802-6)
मन तन की सभ मिटै बलाइ ॥ (867-1)
मन तन गलतु भए किछु कहणु न जाई राम ॥ (545-10)
मन तन धन गुर प्रान अधारी ॥२॥ (193-18)
मन तन धन ते नामु पिआरा ॥ (1042-19)
मन तन धन भूमि का ठाकुरु हउ इस का इहु मेरा ॥ (215-19)
मन तन नामहि नामि समाने ॥ (286-5)
मन तन नामि रते इक रंगि ॥ (278-3)
मन तन निरमल पाप जलि खीना ॥ (804-18)

मन तन निरमल होई है गुर का जपु जपना ॥१॥ रहाउ ॥ (811-10)
मन तन भए संतोख पूरन प्रभु पाइआ ॥ (710-3)
मन तन भीतरि मउलिआ हरि रंगि जनु राता ॥ (319-11)
मन तन भीतरि लागी पिआस ॥ (1182-17)
मन तन रंगि रते रंग एकै ॥ (264-17)
मन तन रसना हरि चीन्हा ॥ (823-14)
मन तन हेंव भए सचु पाइआ हरि की भगति निरारी ॥६॥ (1274-4)
मन तिसु ठाकुर के पूजहु पैरा ॥५॥ (913-15)
मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥ (270-7)
मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥ (270-6)
मन तुआना तू कुदरती आइआ ॥ (1291-8)
मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जाहि ॥ (441-6)
मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥ (441-3)
मन तूं मत माणु करहि जि हउ किछु जाणदा गुरमुखि निमाणा होहु ॥ (441-9)
मन तू भी तरसहि सरणि पाइ ॥६॥ (1192-10)
मन ते उपजै मन माहि समाइ ॥ (152-17)
मन ते कदे न वीसरै अनाथ को नाथ ॥ (816-2)
मन ते कबहु न बिसरु गोपाल ॥ (893-9)
मन ते कबहु न वीसरै जा आपे होइ दइआल जीउ ॥५॥ (760-18)
मन ते कबहु न वीसरै सो पुरखु अपारु ॥२॥ (814-13)
मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥ (265-18)
मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि ॥४॥१॥ (557-8)
मन ते बिनसै सगला भरमु ॥ (274-10)
मन ते बिसरिओ सगलो धंधा गुर की चरणी लाए ॥१॥ (671-5)
मन ते भै भउ दूरि पराइओ ॥ (1214-16)
मन ते मनु मानिआ चूकी अहं भ्रमणी ॥६॥ (227-18)
मन त्रिपतासै कीरतन प्रभ रंगि ॥ (299-8)
मन दस नाजु टका चारि गांठी ऐंडौ टेढौ जातु ॥१॥ रहाउ ॥ (1251-17)
मन धर तरबे हरि नाम नो ॥ (210-12)
मन नामु जपि नामु आराधि अनदिनु नामु वखाणी ॥ (608-8)
मन निरमल उजीआरे ॥१॥ (1272-9)
मन निरमल करम करि तारन तरन हरि अवरि जंजाल तेरै काहू न काम जीउ ॥ (678-9)
मन पाप करत तू सदा संगु ॥ (1183-8)
मन पिआरिआ जी मित्रा हरि निबहै तेरै नाले ॥ (79-9)
मन पिआरिआ जी मित्रा हरि बिनु झूठु पसारे ॥ (79-12)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा करि संता संगि निवासो ॥ (79-18)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा गोबिंद नामु समाले ॥ (79-9)

मन पिआरिआ जीउ मित्रा बिखु सागरु संसारे ॥ (79-12)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि जल मिलि जीवे मीना ॥ (80-3)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि दरु निहचलु मली ॥ (79-15)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि नामु जपत परगासो ॥ (79-19)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥ (80-3)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि लदे खेप सवली ॥ (79-15)
मन पिआरिआ मित्रा मै हरि हरि नामु धनु रासि ॥ (996-11)
मन पिआरिआ मित्रा हरि हरि नाम रसु चाखु ॥ (997-9)
मन पूरन होई आसा ॥ (622-13)
मन प्राणी मुगध बीचारु अहिनिसि जपु धरम करम पूरै सतिगुरु पाई है ॥२॥ (1398-17)
मन बच करम अराधे करता तिसु नाही कदे सजाई हे ॥६॥ (1071-17)
मन बच क्रम आराधै हरि हरि साधसंगि सुखु पाइआ ॥ (1220-8)
मन बच क्रम गोविंद अधारु ॥ (197-5)
मन बच क्रम जिह आपि जनाई ॥ (259-8)
मन बच क्रम प्रभु अपना धिआई ॥ (200-9)
मन बच क्रम प्रभु एकु धिआए ॥ (760-6)
मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥ (487-7)
मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ ॥१॥ (685-8)
मन बच क्रमि राम नामु चितारी ॥ (916-13)
मन बच जिनि जाणिअउ भयउ तिह समसरि सोई ॥ (1409-10)
मन बांछत पूरन फल पाए ॥३॥ (866-17)
मन बांछत फल दितिअनु नानक बलिहारी ॥२॥१६॥८०॥ (820-2)
मन बांछत फल देत है सुआमी जीअ की बिरथा सारे ॥ (80-16)
मन बांछत फल पाइआ हरि नानक नाम भने ॥२॥ (929-7)
मन बांछत फल पाए ॥ (624-5)
मन बांछत फल पाए सगले कुदरति कीम अपारगि ॥ (781-7)
मन बांछत फल मिले अचिंता पूरन होए कामा ॥२॥ (614-16)
मन बांछत सगले फल पाई ॥२॥ (195-7)
मन बिखै ही महि लुझी हे ॥३॥ (213-13)
मन बिनु हरि नावै जाइ न काई ॥ (891-9)
मन बैरागी किउ न अराधे ॥ (402-18)
मन भीतरि होवै परगासु ॥ (1235-17)
मन भुखा भुखा मत करहि मत तू करहि पूकार ॥ (27-10)
मन मंदर महि दीपकु जलिओ ॥ (235-19)
मन मंदरि जे दीपकु जाले काइआ सेज करेई ॥ (359-11)
मन मंधे प्रभु अवगाहीआ ॥ (132-14)
मन मति हउली बोले बोलु ॥ (151-3)

मन मधे जानै जे कोइ ॥ (1162-16)
मन महि आपि मन अपुने माहि ॥ (279-9)
मन महि क्रोधु महा अहंकारा ॥ (1348-1)
मन महि चितवउ ऐसी आसाई ॥ (373-12)
मन महि चितवउ चितवनी उदमु करउ उठि नीत ॥ (519-8)
मन महि चितवै पूरन भगवंत ॥ (298-19)
मन महि जोति जोति महि मनूआ पंच मिले गुर भाई ॥ (879-4)
मन महि झूरै रामचंदु सीता लछमण जोगु ॥ (1412-8)
मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥ (274-4)
मन महि मनु उलटो मरै जे गुण होवहि नालि ॥ (935-19)
मन महि मनूआ चित महि चीता ॥ (1189-9)
मन महि मनूआ जे मरै ता पिरु रावै नारि ॥ (58-17)
मन महि माणकु लालु नामु रतनु पदारथु हीरु ॥ (22-8)
मन महि मुंद्रा हरि गुर सरणा ॥ (879-18)
मन महि राखउ आस एक ॥ (1182-2)
मन महि राखउ एक असारे ॥ (533-8)
मन महि राखै हरि हरि एकु ॥ (287-13)
मन महि राम नामा जापि ॥ (405-18)
मन महि लागै साचु धिआनु ॥ (183-16)
मन महि सतिगुर धिआनु धरा ॥ (701-5)
मन महि सिंचहु हरि हरि नाम ॥ (807-5)
मन माने लोगु न पतीजै ॥ (656-2)
मन मारे बिनु भगति न होई ॥२॥ (329-2)
मन माहि जापि भगवंतु ॥ (896-7)
मन माहि भए अनंद ॥२॥ (894-19)
मन माहि साजन करहि रलीआ करम धरम सबाइआ ॥ (766-19)
मन माही मन माही मेरे गोविंदा हरि रंगि रता मन माही जीउ ॥ (173-16)
मन मिलि संत जना जसु गाइओ ॥ (719-6)
मन मिलु संतसंगति सुभवंती ॥ (977-13)
मन मिसट हरि हरि रंग ॥ (837-19)
मन मीठ तुहारो कीओ ॥१॥ रहाउ ॥ (978-14)
मन मूड़े देखि रहिओ प्रभ सुआमी ॥ (616-5)
मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥ (536-17)
मन मूरख कह करहि पुकार ॥ (258-18)
मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥ (282-19)
मन मूरख किउ ताहि बिसारा ॥ (257-11)
मन मेरिआ अंतरि तेरै निधानु है बाहरि वसतु न भालि ॥ (569-8)

मन मेरिआ जनमु पदारथु पाइ कै इकि सचि लगे वापारा ॥ (569-11)
मन मेरिआ तू सदा सचु समालि जीउ ॥ (569-5)
मन मेरे अनदिनु जागु हरि चेति ॥ (34-15)
मन मेरे अपना हरि सेवि दिनु राती जो तुधु उपकरै दूखि सुखासा ॥३॥ (860-11)
मन मेरे एको नामु धिआइ ॥ (45-15)
मन मेरे करते नो सालाहि ॥ (43-17)
मन मेरे करि ता की घाल ॥७॥ (238-19)
मन मेरे की तपति हरी ॥१॥ (394-8)
मन मेरे खिनु खिनु नामु सम्हालि ॥ (1259-9)
मन मेरे गहु हरि नाम का ओला ॥ (179-1)
मन मेरे गुर की मंनि लै रजाइ ॥ (37-11)
मन मेरे गुर बचनी निधि पाई ॥ (599-9)
मन मेरे गुर सबदी हरि पाइआ जाइ ॥ (600-5)
मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमलु होइ ॥ (39-8)
मन मेरे गुरमति करणी सारु ॥ (559-2)
मन मेरे गुरमुखि नामु धिआइ ॥ (1346-16)
मन मेरे गुरु पूरा सालाहि ॥ (1271-9)
मन मेरे चरन कमल संगि राचु ॥ (500-13)
मन मेरे जिनि अपुना भरमु गवाता ॥ (610-2)
मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥ (286-9)
मन मेरे नामि रते सुखु होइ ॥ (38-18)
मन मेरे नामि रहउ लिव लाई ॥ (1260-6)
मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥ (656-7)
मन मेरे मेरा राम नामु सखा हरि भाई ॥ (493-12)
मन मेरे मै हरि हरि कथा मनि भाणी ॥ (997-1)
मन मेरे रचु राम कै रंगि ॥४॥ (238-15)
मन मेरे राम नामु आधारु ॥ (1132-4)
मन मेरे राम नामु जपि जापु ॥ (48-11)
मन मेरे राम रउ नित नीति ॥ (1017-18)
मन मेरे सगल उपाव तिआगु ॥ (45-8)
मन मेरे सतिगुर कै भाणै चलु ॥ (37-2)
मन मेरे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥ (69-2)
मन मेरे सतिगुर सेवा सारु ॥ (48-4)
मन मेरे सतिगुरु सेवनि आपणा से जन वडभागी राम ॥ (569-15)
मन मेरे सदा हरि वेखु हदूरि ॥ (34-5)
मन मेरे सबदि रपै रंगु होइ ॥ (1346-4)
मन मेरे साचा सेवि जिचरु सासु ॥ (49-8)

मन मेरे साचे नाम विटहु बलि जाउ ॥ (564-19)
मन मेरे सुख सहज सेती जपि नाउ ॥ (44-13)
मन मेरे हउमै मैलु भर नालि ॥ (35-15)
मन मेरे हरि का नामु अति मीठा ॥ (1233-19)
मन मेरे हरि की अकथ कहाणी ॥ (1234-11)
मन मेरे हरि के चरन रवीजै ॥ (1269-17)
मन मेरे हरि कै नामि वडाई ॥ (1233-9)
मन मेरे हरि जीउ सदा समालि ॥ (601-11)
मन मेरे हरि रसु चाखु तिख जाइ ॥ (26-6)
मन मेरे हरि हरि नामि चितु लाइ ॥ (1276-3)
मन मेरे हरि हरि निरमलु धिआइ ॥ (27-14)
मन मेरे हरि हरि सेवि निधानु ॥ (1277-10)
मन मोहु चुकाइआ जा तिसु भाइआ करि किरपा घरि आओ ॥ (1109-15)
मन रति नामि रते निहकेवल आदि जुगादि दइआला ॥३॥ (1233-1)
मन रसकि रसकि हरि रसि आघाने फिरि बहुरि न भूख लगावै ॥३॥ (172-16)
मन राम नाम करि आसा ॥ (801-3)
मन राम नाम गुन गाईऐ ॥ (211-12)
मन रुति नाम रे ॥ (1185-7)
मन रे अहिनिसि हरि गुण सारि ॥ (21-16)
मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥ (631-17)
मन रे कहा भइओ तै बउरा ॥ (220-8)
मन रे किउ छूटसि दुखु भारी ॥ (1126-12)
मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ॥ (60-1)
मन रे गहिओ न गुर उपदेसु ॥ (633-11)
मन रे गुर की कार कमाइ ॥ (66-3)
मन रे गुरमुखि अगनि निवारि ॥ (22-11)
मन रे गुरमुखि नामु धिआइ ॥ (65-11)
मन रे गुरमुखि रिदै वीचारि ॥ (1258-18)
मन रे ग्रिह ही माहि उदासु ॥ (26-14)
मन रे छाडहु भरमु प्रगट होइ नाचहु इआ माइआ के डांडे ॥ (338-11)
मन रे त्रै गुण छोडि चउथै चितु लाइ ॥ (603-5)
मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ ॥ (598-5)
मन रे दूजा भाउ चुकाइ ॥ (33-16)
मन रे नाम को सुख सार ॥ (1223-10)
मन रे नामु जपहु सुखु होइ ॥ (67-10)
मन रे निज घरि वासा होइ ॥ (36-4)
मन रे पवन द्रिड़ सुखमन नारी ॥१॥ रहाउ ॥ (327-5)

मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥ (632-4)
मन रे मन सिउ रहउ समाई ॥ (1260-11)
मन रे राम जपहु सुखु होइ ॥ (58-13)
मन रे राम जपहु सुखु होई ॥ (598-19)
मन रे राम नाम जसु लेइ ॥ (597-12)
मन रे राम भगति चितु लाईऐ ॥ (1127-5)
मन रे संसारु अंध गहेरा ॥ (654-6)
मन रे सचु मिलै भउ जाइ ॥ (18-5)
मन रे सतिगुरु सेवि निसंगु ॥ (69-13)
मन रे सतिगुरु सेवि समाइ ॥ (1276-13)
मन रे सदा अनंदु गुण गाइ ॥ (36-12)
मन रे सदा भजहु हरि सरणाई ॥ (31-3)
मन रे सबदि तरहु चितु लाइ ॥ (19-15)
मन रे समझु कवन मति लागा ॥ (598-12)
मन रे सरिओ न एकै काजा ॥ (654-16)
मन रे साचा गहो बिचारा ॥ (703-7)
मन रे साची खसम रजाइ ॥ (62-5)
मन रे हउमै छोडि गुमानु ॥ (21-9)
मन रे हउमै मोहु दुखु भारी ॥ (1260-17)
मन रे हरि कीरति तरु तारी ॥ (506-18)
मन रे हरि हरि सेती लिव लाइ ॥ (602-19)
मन रे हुकमु मंनि सुखु होइ ॥ (1258-3)
मन संतना कै चरनि लागु ॥१॥ (409-1)
मन सगल कउ होआ सूखु ॥ (395-15)
मन सगल सिआनप रही ॥ (529-15)
मन सतिगुरु सेवि होइ परम गते ॥ (1337-15)
मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु ॥ (270-1)
मन सदा मंगल गोबिंद गाइ ॥ (1208-9)
मन समझावन कारने कछूअक पड़ीऐ गिआन ॥५॥ (340-7)
मन समझु छोडि आवाइले ॥ (862-8)
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥ (270-4)
मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥ (270-5)
मन सिआणप छोडीऐ गुर का सबदु समाले ॥ (440-15)
मन सिउ जूझि मरै प्रभु पाए मनसा मनहि समाए ॥ (353-16)
मन सिउ मनु मिलाइ सभु जगु जीता ॥ (231-14)
मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥ (270-3)
मन सो सेवीऐ हां ॥ (409-19)

मन हरि कीरति करि सदहूं ॥ (529-4)
मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥ (268-15)
मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥ (265-18)
मन हरि जपि मीठा लागै भाई गुरमुखि पाए हरि थाइ ॥ रहाउ ॥ (602-19)
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥ (441-4)
मन हरि रस घूटीऐ संगि साधू उलटीऐ ॥ (830-12)
मन हरि सिमरहु अंति सदा रखि लए ॥१॥ (1177-18)
मन हरि हरि प्रीति लगाइ ॥ (82-7)
मन ही ते मनु मानिआ गुर कै सबदि अपारि ॥ (587-12)
मन ही ते मनु मिलिआ सुआमी मन ही मंनु समाइआ ॥ (1259-4)
मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ मन ही मंझि समाइ ॥ (87-13)
मन ही मन सिउ कहै कबीरा मन सा मिलिआ न कोइ ॥३२॥ (342-4)
मन ही मनु सवारिआ भै सहजि सुभाइ ॥ (232-19)
मनमति झूठी सचा सोइ ॥ (222-10)
मनमुख अंदरु न भालनी मुठे अहमते ॥ (1093-6)
मनमुख अंध न चेतही डूबि मुए बिनु पाणी ॥१॥ (31-2)
मनमुख अंध रहे लपटाई ॥ (230-13)
मनमुख अंधु ऐसे करम कमाए ॥ (127-16)
मनमुख अंधुले गिआन विहूणे दूजै भाइ खुआई ॥ (569-10)
मनमुख अंधुले सोझी नाही ॥ (1029-2)
मनमुख अंधे किछू न सूझै ॥ (114-9)
मनमुख अंधे किछू न सूझै गुरमति नामु प्रगासी हे ॥१४॥ (1049-1)
मनमुख अंधे ठउर न पाई ॥ (1175-4)
मनमुख अंधे फिरहि बेताले ॥ (117-17)
मनमुख अंधे सदा बिखु खाए ॥ (231-12)
मनमुख अंधे सादु न पावहि ॥ (1058-7)
मनमुख अंधे सुधि न सारा ॥ (113-4)
मनमुख अंधे सूझै नाही फिरि घिरि आइ गुरमुखि वथु पावणिआ ॥४॥ (124-11)
मनमुख अगिआनि कुमारगि पाए ॥ (231-1)
मनमुख अगिआनी अंधुले जनमि मरहि फिरि आवै जाए ॥ (851-1)
मनमुख अगिआनी जोनी पाए ॥२॥ (160-1)
मनमुख अगिआनी महा दुखु पाइदे डुबे हरि नामु विसारि ॥ (89-12)
मनमुख अगिआनी माइआ मोहि विआपे तिन्ह बूझ न काई पाइ ॥ (511-9)
मनमुख अगै लेखा मंगीऐ बहुती होवै मार ॥ (1280-19)
मनमुख अहंकारु सलाहदे हउमै ममता वादु ॥ (301-5)
मनमुख आप सुआरथी कारजु न सकहि सवारि ॥ (643-14)
मनमुख आपि खुआइअनु माइआ मोह नित कड़ु ॥ (952-7)

मनमुख आसा नही उतरै दूजै भाइ खुआए ॥ (1131-10)
मनमुख ऊभे सुकि गए ना फलु तिंना छाउ ॥ (66-7)
मनमुख कउ आलसु घणो फाथे ओजाड़ी ॥ (1011-5)
मनमुख कउ आवत जावत दुखु मोहै ॥१॥ रहाउ ॥ (227-13)
मनमुख कउ दुखु दरदु विआपसि मनमुखि दुखु न जाई ॥ (1345-12)
मनमुख कउ लागो संतापु ॥१॥ (190-12)
मनमुख कचे कूड़िआर तिन्ही निहचउ दरगह हारिआ ॥ (1280-12)
मनमुख कथनी है परु रहत न होई ॥ (831-12)
मनमुख करजु चड़िआ बिखु भारी उतरै सबदु वीचारे ॥ (981-10)
मनमुख करण पलाव करि भरमे सभि अउखध दारू लाइ जीउ ॥ (447-9)
मनमुख करम कमावणे जिउ दोहागणि तनि सीगारु ॥ (31-9)
मनमुख करम कमावणे दरगह मिलै सजाइ ॥१॥ (33-16)
मनमुख करम कमावणे हउमै जलै जलाइ ॥ (68-12)
मनमुख करम करे अहंकारी सभु दुखो दुखु कमाइ ॥ (87-9)
मनमुख करम करे नही पाए बिनु नावै जनमु गवावणिआ ॥३॥ (114-10)
मनमुख करम करे बहुतु अभिमाना ॥ (230-5)
मनमुख करम करै अजाई ॥ (1348-10)
मनमुख का इहु बादि आचारु ॥ (1277-12)
मनमुख कालु विआपदा मोहि माइआ लागे ॥ (1090-12)
मनमुख की मति कूड़ि विआपी ॥ (356-11)
मनमुख कुचील कुछित बिकराला ॥ (222-17)
मनमुख कोठी अगिआनु अंधेरा तिन घरि रतनु न लाखा ॥ (696-11)
मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइआ ॥ (643-18)
मनमुख खाधे दूजै भाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (231-9)
मनमुख खेती वणजु करि थाके त्रिसना भुख न जाए ॥ (568-16)
मनमुख खोटी रासि खोटा पासारा ॥ (116-1)
मनमुख गुण तै बाहरे बिनु नावै मरदे झूरि ॥२॥ (27-17)
मनमुख घरि होदी वथु न जाणनी अंधे भउकि मुए बिललाइ ॥१॥ (590-15)
मनमुख चंचल मति है अंतरि बहुतु चतुराई ॥ (1414-15)
मनमुख जनमु गइआ है बिरथा अंति गइआ पछुतावणिआ ॥६॥ (127-15)
मनमुख जनमु बिरथा गइआ किआ मुहु देसी जाइ ॥३॥ (35-1)
मनमुख जनमु भइआ है बिरथा आवत जात लजाई ॥ (1265-5)
मनमुख जम मगि पाईअन्हि जिन्ह दूजा भाउ पिआरा ॥ (513-14)
मनमुख जूठि न उतरै जे सउ धोवण पाइ ॥ (1418-11)
मनमुख ठउर न पाइन्ही फिरि आवै जाई ॥ (786-10)
मनमुख ततु न जाणनी पसू माहि समाना ॥३॥ (1009-3)
मनमुख ते अभ भगति न होवसि हउमै पचहि दिवाने ॥ (1345-13)

मनमुख तोटा नित है भरमहि भरमाए ॥ (421-8)
मनमुख त्रिसना भरि रहे मनि आसा दह दिस बहु लाखु ॥ (997-12)
मनमुख दरि ढोई ना लहहि भाइ दूजै करम कमाइ ॥४॥ (1347-1)
मनमुख दह दिसि फिरि रहे अति तिसना लोभ विकार ॥ (1418-19)
मनमुख दुखीए सदा भ्रमि भुले तिन्ही बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (852-14)
मनमुख दुबिधा दुरमति बिआपे जिन अंतरि मोह गुबारी ॥ (507-4)
मनमुख दूजी तरफ है वेखहु नदरि निहालि ॥ (1279-1)
मनमुख दूजै पचि मुए ना बूझहि वीचारा ॥ (141-7)
मनमुख दूजै भरमि भुलाए ना बूझहि वीचारा ॥७॥ (1235-1)
मनमुख देही भरमु भतारो ॥ (1058-8)
मनमुख धातु दूजै है लागा ॥ (1045-9)
मनमुख न बूझहि दूजै भाइआ ॥ (128-10)
मनमुख नाम विहूणिआ रंगु कसु्मभा देखि न भुलु ॥ (85-9)
मनमुख नामु न चेतनी बिनु नावै दुख रोइ ॥ (1414-19)
मनमुख नामु न चेतिओ धिगु जीवणु धिगु वासु ॥ (1416-11)
मनमुख नामु न जाणनी विणु नावै पति जाइ ॥ (28-8)
मनमुख पड़हि पंडित कहावहि ॥ (128-1)
मनमुख पथरु सैलु है ध्रिगु जीवणु फीका ॥ (419-13)
मनमुख पाखंडि भरमि विगूते लोभ लहरि नाव भारि बुडईआ ॥६॥ (834-9)
मनमुख पाखंडु कदे न चूकै दूजै भाइ दुखु पाए ॥ (1259-10)
मनमुख फिरहि न चेतहि मूड़े लख चउरासीह फेरु पइआ ॥२७॥ (434-2)
मनमुख फिरहि न जाणहि सतगुरु हउमै अंदरि लागि ॥ (29-16)
मनमुख फिरहि सदा अंधु कमावहि जम का जेवड़ा गलि फाहा हे ॥६॥ (1053-14)
मनमुख फिरहि सि जाणहि दूरि ॥१॥ (991-12)
मनमुख फिरि फिरि हउमै मुए ॥ (1177-19)
मनमुख बंन्हि चलाईअहि ना मिलही वगि सगि ॥ (1413-9)
मनमुख बुधि काची मनूआ डोलै अकथु न कथै कहानी ॥ (1233-12)
मनमुख बोलि न जाणनी ओना अंदरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ (950-16)
मनमुख बोलि न जाणन्ही ओना अंदरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ (1248-14)
मनमुख बोले अंधुले तिसु महि अगनी का वासु ॥ (1415-2)
मनमुख भउजलि पचि मुए गुरमुखि तरे अथाहु ॥८॥१६॥ (64-3)
मनमुख भगति करहि बिनु सतिगुर विणु सतिगुर भगति न होई राम ॥ (768-17)
मनमुख भरमि भुलाइआ बिनु भागा हरि धनु न पाइ ॥५॥ (1277-2)
मनमुख भरमि भुलाणा ना तिसु रंगु है ॥ (752-4)
मनमुख भरमि भुले बउराने ॥ (796-6)
मनमुख भरमि भुले भेखधारी अंत कालि पछुताताा हे ॥८॥ (1052-16)
मनमुख भरमै सहसा होवै ॥ (646-3)

मनमुख भाग विहूणिआ तिन दुखी रैणि विहाणी ॥३॥ (997-5)
मनमुख भूखे दह दिस डोलहि बिनु नावै दुखु पाई ॥ (607-12)
मनमुख भूले अंध गावार ॥ (665-14)
मनमुख भूले काहे आए ॥ (1174-16)
मनमुख भूले पचि मुए उबरे गुर बीचारि ॥ (937-18)
मनमुख भूले पति गवाई ॥ (1044-2)
मनमुख भूले बिखु लगे अहिला जनमु गवाइआ ॥ (565-15)
मनमुख भूले मुए बिललाइ ॥ (1065-16)
मनमुख भूले लोक सबाए ॥ (117-14)
मनमुख भै की सार न जाणनी त्रिसना जलते करहि पुकार ॥ (1288-11)
मनमुख भ्रमि दूजै भाइ लागे अंतरि अगिआन गुबारे ॥ (1199-6)
मनमुख मंनु अजितु है दूजै लगै जाइ ॥ (644-17)
मनमुख मनु तनु अंधु है तिस नउ ठउर न ठाउ ॥ (30-8)
मनमुख मनु न भिजई अति मैले चिति कठोर ॥ (755-17)
मनमुख मरहि अहंकारि मरणु विगाड़िआ ॥ (86-16)
मनमुख मरहि मरि बिगती जाहि ॥ (842-17)
मनमुख मरहि मरि मरणु विगाड़हि ॥ (362-12)
मनमुख मरि मरि जमहि भी मरहि जम दरि होहि खुआरु ॥७॥ (430-10)
मनमुख महलु न पाइनी कूड़ि मुठे कूड़िआर ॥२॥ (34-7)
मनमुख माइआ मोह विआपे दूखि संतापे दूजै पति गवाई ॥ (569-13)
मनमुख माइआ मोहि विआपे इहु मनु त्रिसना जलत तिखईआ ॥ (834-18)
मनमुख माइआ मोहि विआपे दूजै भाइ मनूआ थिरु नाहि ॥ (652-15)
मनमुख माइआ मोहु है नामि न लगो पिआरु ॥ (552-1)
मनमुख मारे पछाड़ि मूरख कचिआ ॥ (1280-4)
मनमुख मुए अपणा जनमु खोइ ॥ (843-1)
मनमुख मुए जिन दूजी पिआसा ॥ (176-8)
मनमुख मुए नाही हरि मन माहि ॥ (1172-17)
मनमुख मुए विकार महि मरि जमहि वारो वार ॥ (1418-15)
मनमुख मुगध करहि चतुराई ॥ (114-8)
मनमुख मुगध गावारु पिरा जीउ सबदु मनि न वसाए ॥ (247-2)
मनमुख मुगध चेतहि नाही अगै गइआ पछुतावहे ॥ (441-8)
मनमुख मुगधु हरि नामु न चेतै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (600-1)
मनमुख मुहि मैलै सबदु न जाणनी काम करोधि विणासु ॥ (586-13)
मनमुख मूड़ माइआ चित वासु ॥ (222-8)
मनमुख मूड़ह जलत अहंकारी हउमै विचि दुखु पाई ॥ (1265-2)
मनमुख मूलहु भुलाइअनु विचि लबु लोभु अहंकारु ॥ (549-1)
मनमुख मूलहु भुलिआ विचि लबु लोभु अहंकारु ॥ (316-11)

मनमुख मूलु गवावहि लाभु मागहि लाहा लाभु किदू होई ॥ (1131-6)
मनमुख मूलु न जाणनी माणसि हरि मंदरु न होइ ॥२॥ (1346-5)
मनमुख मैली कामणी कुलखणी कुनारि ॥ (89-18)
मनमुख मैलु न उतरै जिचरु गुर सबदि न करे पिआरु ॥१॥ (37-1)
मनमुख मैले मरहि गवार ॥ (852-2)
मनमुख मैले मलु भरे हउमै त्रिसना विकारु ॥ (29-7)
मनमुख मैले मैले मुए जासनि पति गवाइ ॥ (39-9)
मनमुख मोहि गुबारि जिउ भुला मंझि वणी ॥ (1283-9)
मनमुख मोहे मुगध गवार ॥ (1262-4)
मनमुख रुंने अपनी पति खोइ ॥१॥ (363-13)
मनमुख लागे दूजै भाए ॥ (1065-6)
मनमुख लूण हाराम किआ न जाणिआ ॥ (143-4)
मनमुख लोभि दूजै लोभाइआ ॥ (1277-14)
मनमुख वापारै सार न जाणनी बिखु विहाझहि बिखु संग्रहहि बिख सिउ धरहि पिआरु ॥ (1091-14)
मनमुख विणु नावै कूड़िआर फिरहि बेतालिआ ॥ (1284-11)
मनमुख संता नालि वैरु करि दुखु खटे संसारा ॥ (570-8)
मनमुख सउ करि दोसती सुख कि पुछहि मित ॥ (1421-5)
मनमुख सचु न जाणनी तिन ठउर न कतहू थाउ ॥२॥ (69-15)
मनमुख सदा कूड़िआर भरमि भुलाणिआ ॥ (144-8)
मनमुख सदा विछुड़े फिरहि कोइ न किस ही नालि ॥ (1258-12)
मनमुख सबदु न जाणनी जासनि पति गवाइ ॥ (33-19)
मनमुख सहसा बूझ न पाई ॥ (1047-4)
मनमुख सेती दोसती थोड़ड़िआ दिन चारि ॥ (587-15)
मनमुख सेती संगु करे मुहि कालख दागु लगाइ ॥ (1417-15)
मनमुख सेवा जो करे दूजै भाइ चितु लाइ ॥ (1422-18)
मनमुख सेवि न जाणनि काचे ॥ (1046-16)
मनमुख सोइ रहे से लूटे गुरमुखि साबतु भाई हे ॥४॥ (1024-16)
मनमुख हउमै माइआ सूते ॥ (1049-2)
मनमुख हरि नामु न सेविआ दुखु लगा बहुता आइ ॥ (647-14)
मनमुख हरि मंदर की सार न जाणनी तिनी जनमु गवाता ॥ (953-8)
मनमुख हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (39-8)
मनमुख हार गुरमुख सद जीति ॥४॥१६॥१८॥ (867-18)
मनमुख हीअरा अति कठोरु है तिन अंतरि कार करीठा ॥ (171-15)
मनमुख हीन होछी मति झूठी मनि तनि पीर सरीरे ॥ (1197-6)
मनमुख हुकमु न जाणनी तिन मारे जम जंदारु ॥ (90-10)
मनमुख हुकमु न जाणहि सारा ॥ (1054-2)
मनमुखा उरवारु न पारु है अध विचि रहे लपटाइ ॥ (1417-2)

मनमुखा केरी दोसती माइआ का सनबंधु ॥ (959-2)
मनमुखा दै सिरि जोरा अमरु है नित देवहि भला ॥ (304-12)
मनमुखा नो को न विसही चुकि गइआ वेसासु ॥ (643-11)
मनमुखा नो परतीति न आवी अंतरि लोभ सुआउ ॥ (637-17)
मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाए ॥२॥ (450-10)
मनमुखा नो हरि दूरि है मेरी जिंदुड़ीए सभ बिरथी घाल गवाईऐ राम ॥ (541-7)
मनमुखा मनमुखि मुए मेरी करि माइआ राम ॥ (442-9)
मनमुखि अंतरि भगति न होई ॥ (1049-18)
मनमुखि अंध न चेतनी जनमि मरि होहि बिनासि ॥ (593-1)
मनमुखि अंधा अंधु कमावै बिखु खटे संसारे ॥ (753-10)
मनमुखि अंधा आवै जाइ ॥३॥ (161-12)
मनमुखि अंधा तपि तपि खपै बिनु सबदै सांति न आई ॥ (571-13)
मनमुखि अंधा सबदु न जाणै झूठै भरमि भुलाना ॥ रहाउ ॥ (604-5)
मनमुखि अंधु न चेतई कितु आइआ सैसारि ॥ (592-18)
मनमुखि अंधुले गुरमति न भाई ॥ (1190-4)
मनमुखि अंधे दुखि विहाणी ॥ (665-5)
मनमुखि अंधे सुधि न काई ॥ (118-5)
मनमुखि असथिरु ना थीऐ मरि बिनसि जाइ खिन वार ॥ (1417-11)
मनमुखि अहंकारी फिरि जूनी भवै ॥५॥ (228-7)
मनमुखि आवै मनमुखि जावै ॥ (1073-9)
मनमुखि इहु मनु मुगधु है सोझी किछू न पाइ ॥ (491-16)
मनमुखि कंतु न पछाणई तिन किउ रैणि विहाइ ॥ (38-2)
मनमुखि कदे न दरगह सीझै ॥ (1023-18)
मनमुखि कमला रगड़ै लुझै ॥ (1418-12)
मनमुखि करम कमावणे हउमै अंधु गुबारु ॥ (646-1)
मनमुखि करम करहि नही बूझहि बिरथा जनमु गवाए ॥ (67-9)
मनमुखि करहि तेता दुखु लागै गुरमुखि मिलै वडाई रे ॥ (156-7)
मनमुखि कामि विआपी मोहि संतापी किसु आगै जाइ पुकारे ॥ (245-11)
मनमुखि किछू न सूझै अंधुले पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ (85-17)
मनमुखि कूड़ु गुबारु कूड़ु कमाईऐ ॥ (145-8)
मनमुखि कूड़ु वरतै वरतारा बिनु सतिगुर भरमु न जाई हे ॥१३॥ (1024-7)
मनमुखि खोइआ गुरमुखि लाधा ॥ (939-14)
मनमुखि गणत गणावणी करता करे सु होइ ॥ (60-8)
मनमुखि गरबि न पाइओ अगिआन इआणे ॥ (163-3)
मनमुखि चोटा खाइ अपुनी पति खोई ॥१॥ (664-15)
मनमुखि जंत दुखि सदा निवासी गुरमुखि दे वडिआई ॥ (634-16)
मनमुखि जनमु गवाइआ झूठै लालचि कूरि ॥ (854-16)

मनमुखि जनमु गवाइआ नानक हरि भाइआ ॥३॥ (1238-17)
मनमुखि जनमै जनमि मरीजै ॥६॥ (905-11)
मनमुखि जोनी दूख सहामं ॥ (831-18)
मनमुखि झूठो झूठु कमावै ॥ (363-6)
मनमुखि झखु बहुतु चतुराई ॥ (230-4)
मनमुखि ढोई नह मिलै पिआरे दरगह मिलै सजाइ ॥ (641-7)
मनमुखि दुबिधा सदा है रोगी रोगी सगल संसारा ॥ (1130-11)
मनमुखि दूजा भरमु है दूजै लोभाइआ ॥ (1238-15)
मनमुखि ध्रिगु जीवणु सैसारि ॥ (1132-16)
मनमुखि न चेतै आवै जाइ ॥२॥ (161-4)
मनमुखि न बूझै फिरै इआणी ॥ (1049-8)
मनमुखि नह पाईऐ गुरमुखि गिआनो ॥ (1112-13)
मनमुखि नामु चिति न आवै बिनु नावै बहु दुखु पावणिआ ॥७॥ (129-15)
मनमुखि नामु विसारिआ जिउ डवि दधा कानु ॥६॥ (63-19)
मनमुखि निंदकि पति गवाई ॥ (1046-3)
मनमुखि पड़हि तेता दुखु लागै विणु सतिगुर मुकति न होई ॥१६॥ (435-14)
मनमुखि फिरहि सदा दुखु पावहि डूबि मुए विणु पाणी ॥१॥ (602-9)
मनमुखि फिरि फिरि चोटा खावै ॥ (1073-9)
मनमुखि बहुती मिलै सजाइ ॥३॥ (361-16)
मनमुखि बहुतु फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआई हे ॥३॥ (1044-1)
मनमुखि बिनसै आवै जाइ ॥ (939-12)
मनमुखि बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (1016-17)
मनमुखि भरमि भवै बेबाणि ॥ (941-3)
मनमुखि भरमि भुलै संसारु ॥ (363-4)
मनमुखि भरमै मझि गुबार ॥१॥ (1190-3)
मनमुखि भाग विहूणिआ तिख मुईआ कंधी पासि ॥३॥ (996-15)
मनमुखि भुला जनमु गवाइ ॥३॥ (363-4)
मनमुखि भुलै भुलाईऐ भूली ठउर न काइ ॥ (60-16)
मनमुखि भूली बहुती राही फाथी माइआ फंदे ॥ (779-17)
मनमुखि भूले आवहि जाहि ॥१९॥ (840-17)
मनमुखि भूले गुरमुखि बुझाइआ ॥ (1154-3)
मनमुखि भूले सभि मरहि गवार ॥ (665-16)
मनमुखि भूलै जम की काणि ॥ (941-2)
मनमुखि मरहि तिन किछू न सूझै दुरमति अगिआन अंधारा ॥ (1155-11)
मनमुखि मरीऐ गुरमुखि तरीऐ नानक नदरी नदरि करे ॥२॥ (1238-15)
मनमुखि माइआ मोहु है नामि न लगै पिआरु ॥ (1423-15)
मनमुखि मुगधु नरु कोरा होइ ॥ (732-19)

मनमुखि मूलु गवाइआ दरगह मिलै सजाइ ॥३॥ (1331-7)
मनमुखि मैला सबदु न पछाणै ॥ (415-3)
मनमुखि मैली डुमणी भाई दरगह नाही थाउ ॥ (639-8)
मनमुखि मोहि भरमि भोलाणी ॥ (424-6)
मनमुखि मोहु गुबारु है दूजै भाइ बोलै ॥ (955-7)
मनमुखि रामु न जपै अवाई ॥ (1025-10)
मनमुखि विछुड़ी दूरि महलु न पाए बलि गई बलि राम जीउ ॥ (773-9)
मनमुखि सदा दोहागणी दरि खड़ीआ बिललाहि ॥ (428-12)
मनमुखि सबदु न जाणई अवगणि सो प्रभु दूरि ॥ (37-3)
मनमुखि सीगारु न जाणनी जासनि जनमु सभु हारि ॥ (950-5)
मनमुखि सुखु न पाईऐ गुरमुखि सुखु सुभानु ॥३॥ (21-12)
मनमुखि सूतकु कबहि न जाइ ॥ (229-12)
मनमुखि सूता माइआ मोहि पिआरि ॥ (160-15)
मनमुखि सोझी ना पवै गुरमुखि सदा हजूरि ॥५॥ (60-8)
मनमुखि सोझी ना पवै वीछुड़ि चोटा खाइ ॥ (60-14)
मनमुखि हउमै करि मुसी गुरमुखि पलै पाइ ॥४॥ (63-3)
मनमुखि हउमै पति गवाई ॥ (831-15)
मनमुखि हउमै विछुड़े मेरी जिंदुड़ीए बिखु बाधे हउमै जाले राम ॥ (538-17)
मनमुखि हरि रसु चाखिआ न जाइ ॥ (733-4)
मनमुखि हुकमु न बुझे बपुड़ी नित हउमै करम कमाइ ॥ (1423-5)
मनमुखी दुहागणि नाहि भेउ ॥ (1170-2)
मनमुखी मनहठि हारिआ कूड़ु कुसतु कमाइ ॥ (87-15)
मनमुखीआ दोहागणी आवण जाणि मुईआसु ॥ (1416-13)
मनमुखीआ सिरि मार वादि खपाईऐ ॥ (420-2)
मनमुखु अंधा अंधु कमाए ॥ (1068-7)
मनमुखु अंधा आवै जाइ ॥ (314-16)
मनमुखु अंधा ठउर न पाइ ॥ (362-8)
मनमुखु अंधा दूजै भाइ ॥ (841-16)
मनमुखु अंधा दूजै भाइ लागै ॥ (113-18)
मनमुखु अंधा मुगधु गवारु ॥ (931-9)
मनमुखु अंधु करे चतुराई ॥ (1064-3)
मनमुखु अंधु न चेतई किउ दरसनु पाए ॥६॥ (421-8)
मनमुखु अंधु न चेतै मूड़ा सिर ऊपरि कालु रूआइदा ॥७॥ (1061-3)
मनमुखु अगिआनी अंधु अंधारा ॥ (1067-8)
मनमुखु अगिआनु दुरमति अहंकारी ॥ (314-14)
मनमुखु अचेतु माइआ मोहु गुबारु ॥ (364-4)
मनमुखु अभिंनु न भिजई पथरु नावाइआ ॥ (1244-3)

मनमुखु अहंकारी महलु न जाणै खिनु आगै खिनु पीछै ॥ (314-6)
मनमुखु आपु गणाए रोवै ॥ (1034-14)
मनमुखु ऊधा कउलु है ना तिसु भगति न नाउ ॥ (511-11)
मनमुखु करम करे अहंकारी ॥ (130-8)
मनमुखु काइरु करूपु है बिनु नावै नकु नाहि ॥ (591-2)
मनमुखु कार करे सभि दुख सबाए ॥ (1051-18)
मनमुखु खूल्हि महा बिखु खाइ ॥ (1330-19)
मनमुखु गिआनु कथे न होई ॥ (1051-17)
मनमुखु जगतु निरधनु है माइआ नो बिललाइ ॥ (1092-5)
मनमुखु जाणै आपणे धीआ पूत संजोगु ॥ (63-1)
मनमुखु जे समझाईऐ भी उझड़ि जाए ॥ (420-18)
मनमुखु ठउर न पाए कबहू सतिगुर बूझ बुझाई हे ॥९॥ (1044-9)
मनमुखु तके कुंडा चारे ॥ (1022-12)
मनमुखु तिन की बखीली कि करे जि सचै सबदि सवारे ॥ (1249-16)
मनमुखु दाझै पड़ि पड़ि भाही ॥ (1029-11)
मनमुखु दुख का खेतु है दुखु बीजे दुखु खाइ ॥ (947-6)
मनमुखु दूजै बोलि न जाणै ॥ (1033-1)
मनमुखु निंदा करि करि विगुता ॥ (1046-9)
मनमुखु पाथरु सैलु न भीजै ॥ (1029-13)
मनमुखु प्राणी मुगधु है नामहीण भरमाइ ॥ (313-9)
मनमुखु बहुतु करे अभिमानु ॥ (1066-11)
मनमुखु बालकु बिरधि समानि है जिन्हा अंतरि हरि सुरति नाही ॥ (1418-9)
मनमुखु बिदिआ बिक्रदा बिखु खटे बिखु खाइ ॥ (938-1)
मनमुखु भूला ठउर न पाए ॥ (1057-6)
मनमुखु भूला ठउरु न पाए ॥ (109-13)
मनमुखु भूला दूजै भाइ खुआए ॥ (119-12)
मनमुखु मुआ अपुना जनमु खोइ ॥ (1418-5)
मनमुखु मुगधु आगै चेतै नाही दुखि लागै पछुताई ॥६॥ (1344-8)
मनमुखु मुगधु बूझै नाही बाहरि भालणि जाई ॥ (754-10)
मनमुखु मोहि विआपिआ बैरागु उदासी न होइ ॥ (29-10)
मनमुखु रंगु कसुमभु है कचूआ जिउ कुसम चारि दिन चागा ॥ (985-9)
मनमुखु रलाइआ ना रलै पइऐ किरति फिराइ ॥ (87-11)
मनमुखु रोगी है संसारा ॥ (118-8)
मनमुखु लहरि घरु तजि विगूचै अवरा के घर हेरै ॥ (1012-15)
मनमुखु लोकु समझाईऐ कदहु समझाइआ जाइ ॥ (87-11)
मनमुखु विछुड़ै खोटी रासि ॥ (796-11)
मनमुखु सचि न भीजई कूड़ु कूड़ि गडावै ॥४॥ (419-11)

मनमुखु सद ही कूड़ो बोलै बिखु बीजै बिखु खाए ॥ (753-14)
मनमुखु सदा बगु मैला हउमै मलु लाई ॥ (129-1)
मनमुखु सबदु न बुझै इआणा ॥ (1051-15)
मनमोहन मोरो प्रीतम रामु हरि परमानंदु बैरागी ॥ (1266-1)
मनमोहनु मेरे जीअ को पिआरो कवन कहा गुन गाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1213-17)
मनसा आसा सबदि जलाई ॥ (940-3)
मनसा एक मानि हां ॥ (409-12)
मनसा कटोरी कूड़ि भरी पीलाए जमकालु ॥ (553-5)
मनसा करि सिमरंत तुझै नर कामु क्रोधु मिटिअउ जु तिणं ॥ (1405-12)
मनसा का दाता सभ सुख निधानु अम्रित सरि सद ही भरपूरा ॥१॥ रहाउ ॥ (375-9)
मनसा धारि जो घर ते आवै ॥ (103-19)
मनसा पूरन सरना जोग ॥ (284-1)
मनसा बाचा करमना मै देखे दोजक जात ॥२॥ (1105-17)
मनसा मनहि समाइ लै गुर सबदी वीचार ॥ (1132-3)
मनसा मनहि समाइले भउजलु सचि तरणा ॥ (419-7)
मनसा माइआ मोहणी मनमुख बोल खुआर ॥ (1343-10)
मनसा मानि एक निरंकेरै ॥ (1304-16)
मनसा मारि दुबिधा सहजि समाणी पाइआ नामु अपारा ॥ (603-18)
मनसा मारि निवारिहु आसा ॥ (1083-15)
मनसा मारि मन माहि समाइआ ॥ (1044-4)
मनसा मारि मनु सहजि समाणा बिनु रसना उसतति कराई ॥२३॥ (910-1)
मनसा मारि मनै महि राखै सतिगुर सबदि वीचारी ॥३॥ (907-14)
मनसा मारि मनै सिउ लूझै ॥ (1021-14)
मनसा मारि सचि समाणी ॥ (120-1)
मनहठ बुधी केतीआ केते बेद बीचार ॥ (62-10)
मनहठि करम कमावणे थाइ न कोई पाइ ॥ (849-11)
मनहठि करम कमावणे फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ (850-5)
मनहठि करम कमावदे नित नित होहि खुआरु ॥ (66-10)
मनहठि करम करे सो छीजै ॥ (1059-6)
मनहठि करम करै अभिमानी जिउ बालक बालू घर उसरईआ ॥ (835-3)
मनहठि करम फिरि जोनी पाए ॥ (1055-19)
मनहठि कार कमावणी भाई विणु नावै कूड़िआरि ॥३॥ (639-5)
मनहठि कितै उपाइ न छूटीऐ सिम्रिति सासत्र सोधहु जाइ ॥ (65-17)
मनहठि किनै न पाइआ करि उपाव थके सभु कोइ ॥ (39-19)
मनहठि किनै न पाइओ पुछहु वेदा जाइ ॥ (86-13)
मनहठि किनै न पाइओ सभ थके करम कमाइ ॥ (593-17)
मनहठि कीचै अंति विगोवै ॥१॥ रहाउ ॥ (356-11)

मनहठि जिस ते मंगणा लैणा दुखु मनाइ ॥ (587-2)
मनहठि जो कमावै तिलु न लेखै पावै बगुल जिउ धिआनु लावै माइआ रे धारी ॥ (687-8)
मनहठि तरफ न जिपई जे बहुता घाले ॥ (787-18)
मनहठि भेख करि भरमदे दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥ (593-17)
मनहठि मती बूडीऐ गुरमुखि सचु सु तारि ॥१॥ (20-3)
मनहठि सहजि न बीजिओ भुखा कि अगै खाइ ॥ (647-15)
मनहि अराधि सोइ हां ॥ (410-11)
मनहि कमावै मुखि हरि हरि बोलै ॥ (189-9)
मनहि न कीजै रोसु जमहि न दीजै दोसु निरमल निरबाण पदु चीन्हि लीजै ॥ (973-15)
मनहि निधानु लहु हां ॥ (410-3)
मनहि प्रगासु पेखि प्रभ की सोभा जत कत पेखउ आहिओ ॥१॥ (1299-7)
मनहि प्रगासु भइओ भ्रमु नासिओ मंत्रु दीओ गुर कान ॥१॥ (1302-4)
मनहि बिआपत अनिक तरंगा ॥१॥ (759-12)
मनहि मारि कवन सिधि थापी ॥१॥ (328-19)
मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु न बांचिआ जाई ॥ (484-16)
मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥ (920-18)
मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ॥ (85-2)
मनहु छोडि विकार सचा सचु देइ ॥५॥ (422-5)
मनहु जि अंधे कूप कहिआ बिरदु न जाणन्ही ॥ (1246-1)
मनहु जि अंधे घूप कहिआ बिरदु न जाणनी ॥ (1411-13)
मनहु न नामु विसारि अहिनिसि धिआईऐ ॥ (752-15)
मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥४॥ (471-12)
मनि अंधै ऊंधै कवल दिसनि खरे करूप ॥ (1411-13)
मनि अंधै ऊंधै कवलि दिसन्हि खरे करूप ॥ (1246-1)
मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥३॥ (464-12)
मनि अनदु भइआ गुरु पाइआ जन नानक सबदि निहाला ॥४॥५॥ (985-19)
मनि अनदु भइआ प्रभु आवत सुणिआ ॥ (459-9)
मनि अनदु भइआ मिलिआ हरि प्रीतमु सरसे सजण संत पिआरे ॥ (1249-14)
मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥ (272-17)
मनि आनंदु मंत्रु गुरि दीआ ॥ (387-6)
मनि आनंदु सदा सुखु पाइआ भेटिआ गहिर ग्मभीरु ॥ (69-12)
मनि आस उडीणी मेरे पिआरे दुइ नैन जुते ॥ (452-3)
मनि इको सचा हुकमु पछाणी ॥ (106-17)
मनि ऊजल सदा मुख सोहहि अति ऊजल नामु धिआवणिआ ॥१॥ (121-14)
मनि ओहो सुखु जातो ॥२॥ (214-3)
मनि खोटे दयि विछोड़े ॥११॥ (306-5)
मनि चाउ घनेरा सुणि प्रभ मेरा मै तेरा भरवासा ॥ (764-18)

मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥ (921-17)
मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ मेरे गोविंदा गुरु पूरा वेखि विगसु जीउ ॥ (173-10)
मनि चिंदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइ ॥ (644-15)
मनि चिंदी सो फलु पाइदा ॥ (73-16)
मनि चिंदे फल पाइआ नानक हरि गुन गाइ ॥१७॥ (300-10)
मनि चिंदे सेई फल पावहि ॥ (104-17)
मनि जपीऐ हरि जगदीस ॥ (669-6)
मनि जूठै चुली भरेनि ॥ (472-3)
मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा जूठी होइ ॥ (55-19)
मनि जूठै वेजाति जूठा खाइआ ॥ (1285-9)
मनि डोरि प्रेम परीति ॥ (837-12)
मनि ततु अविगतु धिआइआ गुर परसादी पाइआ ॥६॥ (503-12)
मनि तनि जापि एक भगवंत ॥ (289-6)
मनि तनि जापीऐ भगवान ॥ (1322-17)
मनि तनि झूठे कूड़ु कमावहि दुरमति दरगह हारा हे ॥१५॥ (1029-18)
मनि तनि तू आराध हरि के प्रीतम साध जा कै संगि तेरे बंधन छूटै ॥२॥ (678-12)
मनि तनि तेरी टेक है पिआरे मनि तनि तेरी टेक ॥ (640-17)
मनि तनि नानक हरि गुण गाउ ॥ (1145-19)
मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥ (293-5)
मनि तनि निरमल अभिमान अभेवा ॥६॥ (906-4)
मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥ (135-1)
मनि तनि प्रभु आराधीऐ मिलि साध समागै ॥ (817-19)
मनि तनि प्रेमु करे तिसु प्रभ कउ रावह राम ॥ (846-11)
मनि तनि बचनि एही सुखु चाहत प्रभ दरसु देखहि कब आखी ॥१॥ रहाउ ॥ (1227-12)
मनि तनि बसि रहे गोपाल ॥ (988-5)
मनि तनि बसि रहे मेरे प्रान ॥ (702-5)
मनि तनि बाछीऐ जन धूरि ॥ (502-7)
मनि तनि बासना बहुतु बिसथारा ॥ (1005-3)
मनि तनि मिठा तिसु लगै जिसु मसतकि नानक लेख ॥४॥१९॥८९॥ (49-12)
मनि तनि मुखि जापै सदा गुण अंतरि मनि धीर ॥ (937-7)
मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥ (281-10)
मनि तनि मुखि हरि नामु दइआल ॥ (190-7)
मनि तनि मुखि हीऐ बसै जो चाहहु सो होइ ॥ (255-16)
मनि तनि रवत रवंने घड़ी न बीसरै ॥ (1107-9)
मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनु गुर सबदी रंगु माणी ॥ (1109-9)
मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनो दाता राम ॥ (437-17)
मनि तनि रवि रहिआ जगदीसुर पेखत सदा हजूरे ॥ (1269-1)

मनि तनि रवि रहिआ प्रभ परमानंदा ॥ (544-16)
मनि तनि रवि रहिआ हरि प्रीतमु दूख दरद सगला मिटि गइआ ॥ (829-6)
मनि तनि रविआ परमानंदु ॥३॥ (199-2)
मनि तनि रसना नामु धिआइआ ॥१॥ (684-4)
मनि तनि राम को बिउहारु ॥ (1222-8)
मनि तनि राम नाम हितकारे ॥ (680-18)
मनि तनि लागै होइ कै मीठी ॥ (392-9)
मनि तनि वसिआ सचा सोई ॥ (107-2)
मनि तनि वसिआ हरि प्रभु सोई ॥ (1339-11)
मनि तनि वेखै हउमै मैलु जाए ॥ (124-12)
मनि तनि सचु सलाहि साचे मनि भाइआ ॥ (751-18)
मनि तनि सासि गिरासि प्रभु इको इकु धिआइ ॥ (961-11)
मनि तनि हरि ओही धिआइआ ॥ (896-16)
मनि तनि हरि गावहि परम सुखु पावहि हरि हिरदै हरि गुण गिआनु जीउ ॥ (445-8)
मनि तनि हरि दरसि समावै ॥ (627-4)
मनि तनि हरि रविआ घट अंतरि मनि भीनै भगति सलाहा हे ॥१०॥ (1056-2)
मनि तनि हिरदै रवि रहिआ हरि हीरा हीरु ॥ (789-2)
मनि तनि हिरदै सिमरि हरि आठ पहर गुण गाउ ॥ (963-2)
मनि तने गलतान सिमरत प्रभ नाम हरि अम्रितु पीवते जीउ ॥ (80-19)
मनि त्रिसना न बुझी मेरे पिआरे नित आस करे ॥ (451-18)
मनि दरसन की पिआस चरण दासावीआ ॥ (964-9)
मनि दरसन की पिआस है नानक बलि जाई ॥१५॥ (709-10)
मनि दरसनै की पिआस ॥ (1306-9)
मनि नही प्रीति कहै मुखि राता ॥३॥ (738-13)
मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ॥ (269-7)
मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥ (447-3)
मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥१॥ (447-6)
मनि निरमल नामु धिआईऐ ता पाए मोख दुआरु ॥२॥ (33-18)
मनि निरमल साचै सबदि समाहि ॥ (361-9)
मनि निरमलि वसै सचु सोइ ॥ (158-1)
मनि परतीति न आईआ सहजि न लगो भाउ ॥ (549-16)
मनि परतीति बनी प्रभ तेरी ॥ (1072-7)
मनि पिआस बहुतु दरसावै ॥१॥ रहाउ ॥ (978-7)
मनि प्रगासु गुर ते मति लई ॥ (1147-12)
मनि प्रिअ प्रेमु घणा हरि की भगति मंगह ॥ (544-9)
मनि प्रीति चंद चकोर ॥ (838-9)
मनि प्रीति दरसन पिआस ॥ (838-7)

मनि प्रीति लगी तिना गुरमुखा हरि नामु जिना रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥१॥ (82-19)
मनि प्रीति लागी ताहि ॥ (837-10)
मनि प्रीति लागै वडै भागै कब मिलीऐ पूरन पते ॥ (845-15)
मनि फेरते हरि संगि संगीआ ॥ (1272-1)
मनि बंछत नानक फल पाइ ॥४॥ (288-15)
मनि बचनि करमि जि तुधु अराधहि से सभे फल पावहे ॥ (248-9)
मनि बचनि रिदै धिआइ हरि होइ संतुसटु इव भणु हरि नामु मुरारी ॥१॥ (669-6)
मनि बसंतु तनु मनु हरिआ होइ ॥ (1176-14)
मनि बसंतु हरे सभि लोइ ॥ (1176-12)
मनि बांछत चितवत नानक दास पेखि जीवा प्रभ चरणी ॥२॥५४॥७७॥ (1219-11)
मनि बासना रचि बिखै बिआधि ॥ (675-13)
मनि बिरागैगी ॥ (1230-15)
मनि बिलास भए साहिब के अचरज देखि बडाई ॥ (682-3)
मनि बिलासु बहु रंगु घणा द्रिसटि भूलि खुसीआ ॥ (42-15)
मनि बिसासु पाइओ गहरि गहु हदरथि दीओ ॥ (1392-4)
मनि बीचारि एक लिव लागी पुनरपि जनमु न काला ॥४॥ (503-10)
मनि बैरागु भइआ दरसनु देखणै का चाउ ॥ (50-17)
मनि भावंदा कंतु हरि तेरा थिरु होआ सोहागु जीउ ॥७॥ (132-15)
मनि भावै सबदु सुहाइआ ॥ (1255-2)
मनि मानिऐ अम्रित रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (153-10)
मनि मानिऐ सचु सुरति वखानु ॥ (412-13)
मनि मुकंदु जिहबा नाराइनु परै न जम की फासी ॥२॥ (336-8)
मनि मुखि कबहि न उसतति करै ॥ (893-1)
मनि मुखि गला गोईआ कीता चाउ रली ॥ (1287-6)
मनि मुखि जूठि लहै भै मानं आपे गिआनु अगामं ॥५॥ (634-19)
मनि मुखि नामु जपहु जगजीवन रिद अंतरि अलखु लखाइआ ॥१२॥ (1041-9)
मनि मुखि वसहि तिसु जिसु तूं चिति न आवही ॥ (147-18)
मनि मुखि साचु भरम भउ भंजनु गुरमुखि साचु सखाई हे ॥५॥ (1023-16)
मनि मुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु ॥४॥ (55-12)
मनि मैलै भगति न होवई नामु न पाइआ जाइ ॥ (39-9)
मनि मैलै सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ ॥ (558-10)
मनि मैलै सूचा किउ होइ ॥ (686-12)
मनि रते जिहवा रती हरि गुण सचे गाउ ॥ (39-14)
मनि राम नामु आराधिआ गुर सबदि गुरू गुर के ॥ (731-7)
मनि रामु नही जाता साझ प्रभाता अवघटि रुधा किआ करे ॥ (1112-18)
मनि रोसु कीजै जे दूजा होइ ॥ (842-14)
मनि लागी प्रीति राम नाम हरि हरि जपिओ हरि प्रभु वडफा ॥ (1336-14)

मनि वसंदड़ो सचु सहु नानक हभे डुखड़े उलाहि ॥२॥ (707-1)
मनि वासाईऐ साचा सोई ॥२॥ (395-11)
मनि वीचारि देखु ब्रहम गिआनी कउनु गिरही कउनु उदासी ॥३॥ (1329-14)
मनि वीचारि हरि जपु करे हरि दरगह सीझै ॥११॥ (1090-8)
मनि संतोखु आतम पतीआने ॥ (287-6)
मनि संतोखु नाम जपि लीने ॥ (298-18)
मनि संतोखु नामु आधारु ॥ (331-7)
मनि संतोखु सबदि गुर राजे ॥ (897-17)
मनि संतोखु सरब जीअ दइआ ॥ (299-3)
मनि सरब सुख वुठे गोविद तुठे जनम मरणा सभि मिटि गए ॥ (81-7)
मनि सांई मुखि उचरा वता हभे लोअ ॥ (707-9)
मनि सांति आई वजी वधाई ता होआ परवाणु ॥ (441-5)
मनि सांति आई वजी वधाई नह अंतु जाई पाइआ ॥ (460-16)
मनि सांति सहजु सुभाउ वूठा अनद मंगल गुण गाइआ ॥ (457-13)
मनि साचा मुखि साचउ भाइ ॥ (839-16)
मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥ (272-10)
मनि साचै राते हरि वेपरवाहु ॥ (161-2)
मनि साति आई वजी वधाई मनहु कदे न वीसरै ॥ (779-7)
मनि सिमरि गोबिंद नाम ॥ (408-19)
मनि हरि हरि जपनु करे ॥ (82-11)
मनि हरि हरि नामु धिआइआ बिखु हउमै कढी मारि ॥ (1314-5)
मनि हरि हरि भाउ गुरु करे पसाउ जीवन मुकतु सुखु होई ॥ (447-4)
मनि हरि हरि लगा चाउ ॥ (82-3)
मनि हरि हरि वसिआ गुरमति हरि रसिआ हरि हरि रस गटाक पीआउ जीउ ॥ (447-6)
मनि हिरदै क्रोधु महा बिसलोधु निरप धावहि लड़ि दुखु पाइआ ॥ (445-13)
मनु अंधुला अंधुली मति लागै ॥ (1190-4)
मनु अरपउ धनु राखउ आगै मन की मति मोहि सगल तिआगी ॥ (204-6)
मनु अरपिहु हउमै तजहु इतु पंथि जुलाईआ ॥ (1098-14)
मनु असमझु साधसंगि पतीआना ॥ (890-11)
मनु असाधु साधै जनु कोइ ॥ (159-7)
मनु असाधु साधै जनु कोई ॥ (665-11)
मनु आघाना हरि रसहि सुआदि ॥३॥ (1181-16)
मनु इकतु घरि आणै सभ गति मिति जाणै हरि रामो नामु रसाए ॥ (443-15)
मनु कठोरु दूजै भाइ लागा ॥ (1061-6)
मनु कठोरु सबदि भेदि तूं सांति वसै मनि आइ ॥ (551-18)
मनु करि बैलु सुरति करि पैडा गिआन गोनि भरि डारी ॥ (1123-11)
मनु करि मका किबला करि देही ॥ (1158-8)

मनु किरसाणु हरि रिदै जमाइ लै इउ पावसि पदु निरबाणी ॥१॥ (23-15)
मनु कीनो दह दिस बिस्रामु ॥ (888-1)
मनु कुंचरु काइआ उदिआनै ॥ (221-11)
मनु कुंचरु पीलकु गुरू गिआनु कुंडा जह खिंचे तह जाइ ॥ (516-18)
मनु खिनु खिनु भरमि भरमि बहु धावै तिलु घरि नही वासा पाईऐ ॥ (1179-5)
मनु खोजत नामु नउ निधि पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1128-17)
मनु गुरमति रसि गुन गावैगो ॥ (1309-11)
मनु गुरमुखि निरमलु मलु सबदि खोइ ॥३॥ (1170-4)
मनु घनै भ्रमै बनै ॥ (1272-2)
मनु चंचलु धावतु फुनि धावै ॥ (222-9)
मनु चंचलु बहु चोटा खाइ ॥ (362-16)
मनु चंचलु बिधि नाही जाणै ॥ (415-3)
मनु चंचलु या ते गहिओ न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1186-11)
मनु चलै न जाई ठाकि राखु ॥ (1188-3)
मनु जंजाली वेड़िआ भी जंजाला माहि ॥ (935-6)
मनु जंजालु न छोडई जम दीआ दमामा आइ ॥२२७॥ (1376-16)
मनु जीते जगु जीतिआ जां ते बिखिआ ते होइ उदासु ॥२॥ (1103-7)
मनु जीवै प्रभ नामु चितेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (562-16)
मनु जो इछे सो लहै सचै सबदि सुभाइ ॥ (87-13)
मनु जोगी मनु बिनसि बिओगी मनु समझै गुण गाई ॥३॥ (1125-13)
मनु जोगी मनु भोगीआ मनु मूरखु गावारु ॥ (1330-5)
मनु झूठा जमि जोहिआ अवगुण चलहि नालि ॥ (935-19)
मनु टिकणु न पावै राई ॥ (1003-19)
मनु डीगि डोलि न जाइ कत ही आपणा पिरु जाणए ॥ (844-9)
मनु डीगि न डोलै कहूं जाइ ॥ (1192-10)
मनु तंनु निरमलु देखि दरसनु नामु प्रभ का मुखि भणा ॥ (778-19)
मनु तउ मैगलु होइ रहा निकसिआ किउ करि जाइ ॥ (509-17)
मनु तउ मैगलु होइ रहिओ निकसो किउ कै जाइ ॥५८॥ (1367-11)
मनु तनु अपना आगै धरहु ॥१॥ (191-5)
मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥ (286-9)
मनु तनु अम्रिति भिंना ॥ (764-11)
मनु तनु अरपि तजि लाज लोकानी ॥१॥ रहाउ ॥ (737-5)
मनु तनु अरपि धरउ सभु आगै रसु गुरमति गिआनु द्रिड़ीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (1325-5)
मनु तनु अरपि धरी हरि आगै ॥ (1080-9)
मनु तनु अरपि धरे गुर आगै सति पदारथु पावै ॥३॥ (381-13)
मनु तनु अरपि मिलै जगजीवनु हरि सिउ बणत बणाई हे ॥९॥ (1025-3)
मनु तनु अरपि रखउ सभु आगै गुर चरणी चितु लाई ॥ (1265-11)

मनु तनु अरपि रखउ हरि आगै सरब जीआ का है प्रतिपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (824-13)
मनु तनु अरपिआ बहुतु मनि सरधिआ गुर सेवक भाइ मिलाए ॥ (444-7)
मनु तनु अरपिओ अंतर गति कीनी ॥ (227-16)
मनु तनु अरपी आपु गवाई चला सतिगुर भाए ॥ (68-1)
मनु तनु अरपी सिरु देई तिन कै लागा पाइ ॥ (38-14)
मनु तनु अरपी सेव करीजै ॥ (181-2)
मनु तनु अरपै क्रिसन परीति ॥६॥ (974-14)
मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥ (274-12)
मनु तनु आगै जीअड़ा तुझ पासि ॥ (1345-5)
मनु तनु आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ ॥ (647-19)
मनु तनु काटि देउ गुर आगै जिनि हरि प्रभ मारगु पंथु दिखईआ ॥२॥ (836-3)
मनु तनु जीति सबदु लै लाहा ॥ (699-5)
मनु तनु तामि सगारवा जां देखा हरि नैणे ॥ (1317-14)
मनु तनु तेरा इहु जीउ भि वारे जीउ ॥ (217-10)
मनु तनु तेरा तू धणी गरबु निवारि समेउ ॥३॥ (20-6)
मनु तनु तेरा तू प्रभू सचु धीरक धुर की ॥४॥ (1011-3)
मनु तनु तेरा धनु भी तेरा ॥ (106-4)
मनु तनु तेरा सभु तेरा देसु ॥ (1141-17)
मनु तनु तेरा हरिआ होवै इकु हरि नामा फलु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1177-7)
मनु तनु थापि कीआ सभु अपना एहो आवण जाणा ॥ (882-19)
मनु तनु दे लै सहजि सुभाइ ॥ (153-2)
मनु तनु धनु अपुना करि जानिआ दर की खबरि न पाई ॥ (596-8)
मनु तनु धनु आगै राखिआ सिरु वेचिआ गुर आगै जाइ ॥ (1413-18)
मनु तनु धनु जिनि प्रभि दीआ रखिआ सहजि सवारि ॥ (47-7)
मनु तनु धनु सभु तुमरा सुआमी आन न दूजी जाइ ॥ (1223-8)
मनु तनु धनु सभु प्रभू केरा किआ को पूज चड़ावए ॥ (542-8)
मनु तनु धोवहि सबदि वीचारी ॥ (1059-19)
मनु तनु नामि निरंजनि रातउ चरन कमल लिव लाइआ ॥ (1268-16)
मनु तनु निरमल करत किआरो हरि सिंचै सुधा संजोरि ॥ (701-17)
मनु तनु निरमल होइ निहालु ॥ (866-5)
मनु तनु निरमलु अति सोहणा भेटिआ क्रिसन मुरारि ॥ (788-14)
मनु तनु निरमलु निरमल मति ऊतम ऊतम बाणी होई ॥ (1259-14)
मनु तनु निरमलु माइआ मोहु गवाए ॥ (121-5)
मनु तनु निरमलु सदा सुखु अंतरि विचहु भरमु चुकाइआ ॥३॥ (600-17)
मनु तनु निरमलु साचु सुआउ ॥२॥ (744-4)
मनु तनु निरमलु होइ हरि रंगि ॥ (180-11)
मनु तनु निरमलु होइआ लागी साचु परीति ॥ (48-13)

मनु तनु प्राण जीउ अरपाहा ॥ (742-11)
मनु तनु प्रान धरीं तिसु आगै नानक आपु गवाई ॥४॥७॥ (1260-9)
मनु तनु फीका दूजै भाइ ॥ (230-10)
मनु तनु बुधि अरपी ठाकुर कउ तब हम सहजि सोए ॥३॥ (214-16)
मनु तनु भीजै एक लिव लागै सहजे रहे समाई ॥ (1260-7)
मनु तनु मउलिओ अति अनूप ॥ (1180-4)
मनु तनु मैला अवगुणी चिंजु भरी गंधी आइ ॥ (1411-4)
मनु तनु मैला विचि जोति अपारा ॥ (1053-1)
मनु तनु मोहिआ सहजि सुभाए ॥ (114-12)
मनु तनु रता रंग सिउ गुरमुखि हरि गुणतासु ॥ (301-12)
मनु तनु रता रंग सिउ हउमै तजि विकार ॥ (32-17)
मनु तनु रता रसना रंगि चलूली भै भाइ रंगु चड़ावणिआ ॥१॥ (114-6)
मनु तनु रता राम पिआरे ॥ (108-4)
मनु तनु रता लालु होआ रसना रती गुण सारि ॥ (787-2)
मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥ (134-11)
मनु तनु राता गुर की बाणी सेवा सुरति समेइ ॥ (1259-15)
मनु तनु राता नामि सुहावै ॥१॥ रहाउ ॥ (158-18)
मनु तनु राता रंग सिउ रसना रसन रसाइ ॥ (32-3)
मनु तनु राता राम कै रंगि ॥१॥ रहाउ ॥ (197-11)
मनु तनु राता राम पिआरे हरि प्रेम भगति बणि आई संतहु ॥१॥ (916-7)
मनु तनु राता राम रंगि चरणे ॥ (1149-19)
मनु तनु रातो हरि कै रंगि ॥२॥ (892-13)
मनु तनु रापै हरि कै रंगि ॥३॥ (891-9)
मनु तनु सउपे आगै धरे हउमै विचहु मारि ॥ (28-18)
मनु तनु सउपे कंत कउ सबदे धरे पिआरु ॥ (89-10)
मनु तनु सचा सचु मनि सचे सची सोइ ॥ (1285-17)
मनु तनु सची भगती राता सचे सिउ चितु लाइआ ॥२॥ (1068-5)
मनु तनु साचि विगसिआ कीमति कहणु न जाइ ॥ (58-16)
मनु तनु सीतलु गुर चरणी लागा ॥ (1061-4)
मनु तनु सीतलु गुर दरस देखे नानक नामु अधारा ॥८॥१॥ (1235-13)
मनु तनु सीतलु गुरि बूझ बुझाई ॥ (1345-8)
मनु तनु सीतलु चरण हरि राते ॥१॥ (197-7)
मनु तनु सीतलु धीरजु पाइआ ॥ (98-6)
मनु तनु सीतलु निहचलु होइ ॥१॥ (236-3)
मनु तनु सीतलु मनि अम्रितु वूठा ॥ (1142-1)
मनु तनु सीतलु सभ हरिआ होआ वडभागी हरि नामु धिआवै ॥१॥ (494-7)
मनु तनु सीतलु सभु थीऐ नामु वसै मनि आइ ॥१॥ रहाउ ॥ (37-11)

मनु तनु सीतलु सांति सहज लागा प्रभ की सेव ॥ (300-1)
मनु तनु सीतलु सांति होइ त्रिसना अगनि बुझाइ ॥ (588-7)
मनु तनु सीतलु साच सिउ सासु न बिरथा कोइ ॥१॥ (35-5)
मनु तनु सीतलु सीगारु सभु होआ गुरमति रामु प्रगासा ॥ (443-9)
मनु तनु सीतलु सुखी भइआ प्रभ धिआवन जोगु ॥१॥ रहाउ ॥ (814-6)
मनु तनु सीतलु हरि हरि जपना ॥ (1143-7)
मनु तनु सीतलु होइआ भाई भोजनु नाम अधारु ॥ (640-13)
मनु तनु सुधु जपत हरि नाइ ॥ (299-4)
मनु तनु हरिआ रवि गुण गुविंद ॥ (1173-13)
मनु तनु हरिआ सतिगुर भाए ॥ (1173-16)
मनु तनु हरिआ सहजि सुभाए ॥ (1173-9)
मनु तनु होइ चुल्मभु जे सतिगुर भाइआ ॥१॥ (751-17)
मनु तनु होइ निहालु तुम्ह संगि भेटिआ ॥ (397-18)
मनु तनु होइ निहालु पापा दहै हरि ॥ (1093-11)
मनु तनु होइ निहालु बिंदक नदरि झाकु ॥ (959-9)
मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥ (731-2)
मनु त्रिपताना हरि गुण गाइआ ॥३॥ (804-10)
मनु त्रिपतानो मिटे जंजाल ॥ (389-16)
मनु त्रिपतासिआ अलख अभेवा ॥३॥ (224-7)
मनु त्रिपतिआ हरि नामु धिआइ ॥१॥ (560-4)
मनु थीआ ठंढा चूकी डंझा पाइआ बहुतु खजाना ॥ (577-2)
मनु थीआ ठंढा सभ त्रिसन बुझाए राम ॥ (577-2)
मनु दह दिसि चलि चलि भरमिआ मनमुखु भरमि भुलाइआ ॥ (776-9)
मनु दाता मनु मंगता मन सिरि गुरु करतारु ॥ (1330-5)
मनु दीआ गुरि आपणै पाइआ निरमल नाउ ॥ (933-19)
मनु दीजै गुर आपणे पाईऐ सरब पिआरु ॥ (59-6)
मनु दीजै सिरु सउपीऐ भी करते की टेक ॥ (934-16)
मनु दे पावहि नामु सुहेला ॥ (226-9)
मनु दे रामु लीआ है मोलि ॥१॥ (327-10)
मनु दे लीआ रहसि गुण गाई ॥३॥ (221-15)
मनु देवां संता मेरा प्रभु मेले जीउ ॥ (173-9)
मनु देवा तिसु अपुने साजन जिनि गुर मिलि सो प्रभु लाधे जीउ ॥२॥ (102-11)
मनु द्रिड़ु करि आसणि बैसु जोगी ता तेरी कलपणा जाई ॥ (908-14)
मनु धनु जीउ पिंडु सभु तुमरा इहु तनु सीतो तुमरै धान ॥१॥ रहाउ ॥ (1216-18)
मनु धनु तेरो प्रानं एकै सूति है जहानं कवन उपमा देउ बडे ते बडानं ॥ (1386-3)
मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ ॥ (1162-3)
मनु न रहै कैसे मिलउ पिआरे ॥१॥ (374-19)

मनु न सुहेला परपंचु हीला ॥३॥ (179-17)
मनु नही ध्रापै त्रिसना न जाइसि ॥ (373-16)
मनु नही सूचा किआ सोच करीजै ॥ (905-10)
मनु नानक मानिआ सचु सलाहि ॥८॥२॥ (1188-10)
मनु निरमलु अनदिनु भगती राता भगति करे हरि पावणिआ ॥१॥ (123-12)
मनु निरमलु गिआनु रतनु चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥७॥ (1067-10)
मनु निरमलु नही दसवै दुआर ॥ (1169-6)
मनु निरमलु निरमल सचु सोइ ॥३॥ (1174-14)
मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै दरि सचै सोभा पाइदा ॥१४॥ (1059-10)
मनु निरमलु मुखु ऊजला होइ नानक साध रवाल ॥४॥ (297-12)
मनु निरमलु सद गुणी गहीरा ॥ (1174-18)
मनु निरमलु हउमै कढै धोइ ॥ (1188-6)
मनु निरमलु हरि रवि रहिआ पाइआ दरगहि मानु ॥२॥ (26-8)
मनु निरमलु होइ संता धूरे ॥२॥ (563-9)
मनु परदेसी आइआ मिलिओ साध कै संगि ॥ (431-4)
मनु परदेसी जे थीऐ सभु देसु पराइआ ॥ (767-5)
मनु परदेसी जे थीऐ सभु देसु पराइआ ॥७॥ (767-7)
मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥ (288-9)
मनु पवनु दुइ तूमबा करी है जुग जुग सारद साजी ॥ (334-19)
मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा ॥ (102-5)
मनु बसि आवै नानका जे पूरन किरपा होइ ॥१०॥ (298-17)
मनु बाणी निरमल मेरी मनसा ॥ (121-14)
मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥ (290-7)
मनु बुधि अरपि धरउ गुर आगै गुर परसादी मै अकथु कथईआ ॥३॥ (834-17)
मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥ (286-18)
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥ (135-14)
मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥ (795-10)
मनु बैरागि रतउ बैरागी सबदि मनु बेधिआ मेरी माई ॥ (634-10)
मनु बैरागी घरि वसै सच भै राता होइ ॥ (21-6)
मनु बैरागी जा सबदि भउ खाइ ॥ (233-2)
मनु बैरागी हउमै तिआगी ॥ (415-13)
मनु भइआ जगजीवन लीणा ॥४॥१॥ (1349-11)
मनु भूलउ भरमसि आइ जाइ ॥ (1187-17)
मनु भूलउ भरमसि भवर तार ॥ (1188-1)
मनु भूलउ समझसि साच नाइ ॥ (1187-19)
मनु भूलो बहु चितै विकारु ॥ (222-3)
मनु भूलो माइआ घरि जाइ ॥ (222-4)

मनु भूलो सिरि आवै भारु ॥ (222-3)
मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ॥ (795-9)
मनु मंदरु तनु साजी बारि ॥ (180-19)
मनु मउलिओ हरि चरन संगि ॥ (1184-11)
मनु मतवार मेर सर भाठी अम्रित धार चुआवउ ॥१॥ (1123-13)
मनु मधुसूदनु त्रिभवण देउ ॥३॥२८॥ (329-2)
मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥ (159-5)
मनु मरै धातु मरि जाइ ॥ (665-8)
मनु माइआ कै हाथि बिकानउ ॥१॥ रहाउ ॥ (710-15)
मनु माइआ बंधिओ सर जालि ॥ (831-13)
मनु माइआ मनु धाइआ मनु पंखी आकासि ॥ (1330-2)
मनु माइआ महि उरझि रहिओ है बूझै नह कछु गिआना ॥ (902-4)
मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिंद नामु ॥ (1428-1)
मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥ (1428-9)
मनु माणकु जिनि परखिआ गुर सबदी वीचारि ॥ (1093-4)
मनु माणकु निरमोलु है राम नामि पति पाइ ॥ (22-12)
मनु माणकु रतना महि गुहै ॥८॥ (974-17)
मनु माणकु संतोखिअउ गुरि नामु द्रिड़्हायउ ॥ (1407-5)
मनु मानकु लिव ततु लुकाना ॥२॥ (1349-9)
मनु मानिआ तउ हरि जानिआ ॥४॥११॥ (656-17)
मनु मानिआ नानक भगवंता ॥४॥८॥२१॥ (1141-9)
मनु मानिआ नामु सखाई ॥ (596-4)
मनु मानिआ हरि रसि मोरा ॥ (879-8)
मनु मानै गुर ते इकु होइ ॥१॥ (222-2)
मनु मानै हरि एकंकारु ॥२॥ (222-4)
मनु मारण कारणि बन जाईऐ ॥ (323-13)
मनु मारि तुही निरंजना कहु नानका सरनं ॥८॥१॥५॥ (506-2)
मनु मारि रीझै सबदि सीझै त्रै लोक नाथु पछाणए ॥ (844-9)
मनु मारे जीवत मरि जाणु ॥ (1343-19)
मनु मारे धातु मरि जाइ ॥ (159-4)
मनु मुगधौ दादरु भगतिहीनु ॥ (1188-2)
मनु मेरा दइआल सेती थिरु न रहै ॥ (359-2)
मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती ॥ (485-12)
मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥१॥ रहाउ ॥ (1186-13)
मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥ (159-7)
मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥ (665-10)
मनु मैगलु गुर सबदि वसि आइआ राम ॥ (576-7)

मनु मैगलु साकतु देवाना ॥ (415-6)
मनु मैला इव सुधु है हरि नामु धिआए ॥१७॥ (791-8)
मनु मैला वेकारु होवै संगि पाकु ॥ (959-8)
मनु मैला सचु निरमला किउ करि मिलिआ जाइ ॥ (755-13)
मनु मैला है दूजै भाइ ॥ (121-11)
मनु मोती जे गहणा होवै पउणु होवै सूत धारी ॥ (359-8)
मनु मोती सालु है गुर सबदी जितु हीरा परखि लईजै ॥३॥ (1325-9)
मनु मोती है तिस का मालु ॥ (414-5)
मनु मोरु कुहुकिअड़ा सबदु मुखि पाइआ ॥ (173-5)
मनु मोहनि मोहि लीआ जीउ दुबिधा सहजि समाए ॥ (245-3)
मनु मोहि लीना चरन संगे नाम रसि जन माते ॥ (1278-5)
मनु रंगहु वडभागीहो गुरु तुठा करे पसाउ ॥ (40-14)
मनु रता कुट्मब सिउ नित गरबि फिरामी ॥ (1099-8)
मनु रता गोविंद संगि सचु भोजनु जोड़े ॥ (323-9)
मनु राजा मनु मन ते मानिआ मनसा मनहि समाई ॥ (1125-12)
मनु रातउ हरि नाइ सचु वखाणिआ ॥ (421-19)
मनु राता सारिगपाणी ॥ (879-9)
मनु राम नामा बेधीअले ॥ (972-14)
मनु राम नामि भीना लै लाहा ॥ (699-3)
मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना ॥ (448-18)
मनु लागा चरणे प्रभ की सरणे करण कारण गोपाला ॥ (781-9)
मनु लालहि दीजै भोग करीजै हभि खुसीआ रंग माणे ॥ (455-9)
मनु लोचै उन्ह मिलण कउ किउ वंञै घिता ॥ (965-12)
मनु लोचै हरि मिलण कउ किउ दरसनु पाईआ ॥ (1098-12)
मनु वसगति आइआ परम पदु पाइआ सा धन कंति पिआरी ॥ (576-7)
मनु वसि दूता दुरमति दोइ ॥ (222-2)
मनु विछुड़िआ हरि मेलीऐ नानक एहु सुआउ ॥ (137-11)
मनु वेकारी वेड़िआ वेकारा करम कमाइ ॥ (88-3)
मनु संतोखिआ दूजा भाउ गवाइ ॥२॥ (560-6)
मनु सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरै तोलि ॥ (22-3)
मनु सचा सचै सबदि राचे ॥ (116-16)
मनु सतिगुर सरनि धिआवैगो ॥ (1311-7)
मनु सदा हरीआवला सहजे हरि गुण गाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (428-11)
मनु सबदि मरै ता मुकतो होवै हरि चरणी चितु लाई ॥ (1233-14)
मनु सबदि मरै परतीति होइ हउमै तजे विकार ॥ (162-16)
मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥१॥ (159-5)
मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥१॥ (665-9)

मनु सीतलु होआ मेरे पिआरे हरि बूंद पीवै ॥ (452-1)
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अम्रित राम नाम भाखउ ॥१॥ (694-10)
मनु सुका हरिआ होइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हरि नामु धिआए राम ॥ (538-13)
मनु सोइआ माइआ बिसमादि ॥१॥ (182-9)
मनु स्मपटु जितु सत सरि नावणु भावन पाती त्रिपति करे ॥ (728-7)
मनु हरि कीआ तनु सभु साजिआ ॥ (1337-14)
मनु हरि कै भाणै आवै जाइ ॥ (1188-7)
मनु हरि रंगि रतड़ा हरि रसु सदा पीवा जीउ ॥ (175-10)
मनु हरि रंगि राता गावैगो ॥ (1310-3)
मनु हरि रंगि राता हरि रसु पीआइआ ॥ (95-13)
मनु हरि राचै नही जनमि मरीजै ॥ (905-12)
मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥ (595-10)
मनूआ अंधु न चेतई पड़ै अचिंता जालु ॥ (955-13)
मनूआ असथिरु बैलु मनु जोवहु हरि सिंचहु गुरमति जेतु ॥३॥ (368-4)
मनूआ असथिरु सबदे राता एहा करणी सारी ॥१८॥ (908-4)
मनूआ उलटि सुंन महि गहै ॥५॥ (974-13)
मनूआ चलै चलै बहु बहु बिधि मिलि साधू वसगति करिआ ॥ (1294-6)
मनूआ जीतै हरि मिलै तिह सूरतण वेस ॥ (256-15)
मनूआ डोलै चीति अनीति ॥ (1187-7)
मनूआ डोलै दह दिस धावै बिनु रत आतम गिआना ॥ (1013-5)
मनूआ डोलै दूत संगति मिलि सो पाए जो किछु कीना हे ॥७॥ (1028-4)
मनूआ डोलै नरके पाई ॥ (906-2)
मनूआ दह दिस धावदा ओहु कैसे हरि गुण गावै ॥ (565-8)
मनूआ न डोलै गुरमुखि बूझै धावतु वरजि रहाए ॥ (1013-13)
मनूआ नाचै भगति द्रिड़ाए ॥ (121-18)
मनूआ पउणु बिंदु सुखवासी नामि वसै सुख भाई ॥ (634-13)
मनूआ मारि निरमल पदु चीनिआ हरि रस रते अधिकाई ॥ (1233-4)
मनूआ लाइ सवारे थानां पूछउ संता जाए ॥ (1266-19)
मनूरै ते कंचन भए भाई गुरु पारसु मेलि मिलाइ ॥ (638-13)
मनोरथ पूरे सतिगुर आपि ॥ (1207-19)
मनोरथु कोइ न पूरिओ चाले ऊठि निरास ॥२०५॥ (1375-11)
मपि मपि काटउ जम की फासी ॥१॥ (485-13)
मम सर मूइ अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी ॥१॥ रहाउ ॥ (721-5)
ममता काटि सचि लिव लाए ॥ (1063-15)
ममता कालि सभि रोगि विआपे तिन जम की है सिरि कारा ॥ (1130-13)
ममता की मलु उतरै इहु मनु हछा होइ ॥४॥१॥ (558-14)
ममता जाल ते रहै उदासा ॥ (840-18)

ममता जालिआ पिंडु वणाह्मबै ॥४॥ (1104-16)
ममता जालु कालु नही माथै ना को किसै धिआइदा ॥८॥ (1035-18)
ममता बाधा आवै जावै ॥१॥ (363-7)
ममता मारि हउमै सोखै त्रिभवणि जोति तुमारी ॥२॥ (907-14)
ममता मोह ध्रोह मदि माता बंधनि बाधिआ अति बिकराल ॥ (806-14)
ममता मोहु कामणि हितकारी ॥ (903-7)
ममता मोहु विसरजिआ अपनै घरि आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (419-16)
ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु ॥ (551-3)
ममता लाइ भरमि भोलाइआ ॥२॥ (1128-18)
ममा जाहू मरमु पछाना ॥ (259-2)
ममा मन सिउ काजु है मन साधे सिधि होइ ॥ (342-3)
ममा मागनहार इआना ॥ (258-17)
ममा मूल गहिआ मनु मानै ॥ (342-2)
ममै मति हिरि लई तेरी मूड़े हउमै वडा रोगु पइआ ॥ (435-3)
ममै मोहु मरणु मधुसूदनु मरणु भइआ तब चेतविआ ॥ (434-2)
मरकट मुसटी अनाज की मन बउरा रे लीनी हाथु पसारि ॥ (336-1)
मरग सवाई नीहि जां भरिआ तां लदिआ ॥८॥ (1378-6)
मरघट लउ सभु लोगु कुट्मबु भइओ आगै हंसु अकेला ॥३॥ (654-14)
मरणं बिसरणं गोबिंदह ॥ (1361-1)
मरण जीवण कउ धरती दीनी एते गुण विसरे ॥२॥ (877-11)
मरण जीवण की चिंता गई इहु जीअड़ा हरि प्रभ वसि ॥ (314-4)
मरण जीवण की सोझी पाए ॥ (1059-7)
मरण मुकति गति सार न जानै ॥ (1275-13)
मरण रहण रसु अंतरि भाए ॥ (153-15)
मरणहारु इहु जीअरा नाही ॥३॥ (188-11)
मरणा मनहु विसारिआ माइआ मोहु गुबारु ॥ (430-10)
मरणा मुला मरणा ॥ (24-8)
मरणि जीवणि आराधणा सभना का आधारु ॥ (136-19)
मरणि न मूरतु पुछिआ पुछी थिति न वारु ॥ (1244-4)
मरणु जीवणु जो सम करि जाणै सो मेरे प्रभ भाइदा ॥१२॥ (1059-7)
मरणु न जापै मूलिआ आवै कितै थाइ ॥२१॥ (1412-4)
मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे कोई मरि जाणै ॥२॥ (579-19)
मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे मरि जाणै ऐसा कोइ ॥ (579-16)
मरणु मिटै जीवनु मिलै बिनसहि सगल कलेस ॥ (296-19)
मरणु मुणसां सूरिआ हकु है जो होइ मरहि परवाणो ॥३॥ (580-3)
मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइ मरनि परवाणो ॥ (579-19)
मरणु लिखाइ आए नही बूझै ॥ (114-9)

मरणु लिखाइ आए नही रहणा ॥ (153-15)
मरणु लिखाइ मंडल महि आए ॥ (1022-18)
मरणु लिखाइ मंडल महि आए ॥ (685-19)
मरणु लिखाइ मंडल महि आए जीवणु साजहि माई ॥ (876-7)
मरणै की चिंता नही जीवण की नही आस ॥ (20-18)
मरणै ते जगतु डरै जीविआ लोड़ै सभु कोइ ॥ (555-5)
मरत न सोग बिओगी ॥१॥ रहाउ ॥ (334-17)
मरत पइआल अकासु दिखाइओ गुरि सतिगुरि किरपा धारी जीउ ॥ (597-18)
मरता जाता नदरि न आइआ ॥४॥४॥ (152-8)
मरती बार अगनि संगि जाली ॥२॥ (325-13)
मरती बार इकसर दुखु पाइआ ॥२॥ (792-8)
मरती बार कसि बाधिओ चोर ॥३॥ (326-14)
मरती बार मगहरि उठि आइआ ॥२॥ (326-9)
मरती बार लेहु लेहु करीऐ भूतु रहन किउ दीआ ॥२॥ (654-12)
मरदाना १ ॥ (553-5)
मरन जीवन की संका नासी ॥ (1349-8)
मरनु भइआ मगहर की बासी ॥३॥ (326-10)
मरने ते किआ डरपना जब हाथि सिधउरा लीन ॥७१॥ (1368-5)
मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु ॥२२॥ (1365-13)
मरनो मरनु कहै सभु कोई ॥ (327-14)
मरमी होइ सु मन कउ जानै ॥ (342-2)
मरमु तुमारा गुर ते पाइआ ॥ (181-18)
मरसी होइ विडाणा मनि तनि भंगु है ॥६॥ (752-4)
मरहट लगि सभु लोगु कुट्मबु मिलि हंसु इकेला जाइ ॥१॥ (1124-11)
मरि खुआरु साकत नर थीवे ॥१॥ (806-3)
मरि जइबे कउ किआ करहु अभागे ॥१॥ रहाउ ॥ (792-8)
मरि जनमहि दुखु होई दूजै भाइ परज विगोई विणु गुर ततु न जानिआ ॥ (768-19)
मरि जनमहि फिरि होहि खुआरु ॥ (1262-14)
मरि जनमै जमु करे खुआरु ॥३॥ (560-10)
मरि जमहि फिरि वारो वारा ॥२॥ (232-1)
मरि जमै वारो वारा वधहि बिकारा गिआन विहूणी मूठी ॥ (583-12)
मरि न जाही जिना बिसरत राम ॥ (188-6)
मरि मरि जनमहि मुहलति पुंने ॥ (1035-5)
मरि मरि जनमे जिन बिसरिआ जीवन का दाता ॥ (819-12)
मरि मरि जनमै कदे न बूझै विसटा माहि समाए ॥२॥ (1259-12)
मरि मरि जनमै पति गवाए अपणी बिरथा जनमु गवावणिआ ॥३॥ (120-13)
मरि मरि जमहि ठउर न पावहि बिरथा जनमु गवाई ॥१॥ (1130-4)

मरि मरि जमहि दूजा भाइआ ॥ (1046-19)
मरि मरि जमहि नित किसै न केरिआ ॥ (143-3)
मरि मरि जमहि फिरि फिरि आवहि जम दरि चोटा खावणिआ ॥४॥ (115-16)
मरि मरि जमहि फेर पवहि घणेरे ॥ (120-9)
मरि मरि जमहि भी मरि जाहि ॥१॥ (1172-17)
मरि मरि जमहि मिलै सजाइ ॥२॥ (1262-5)
मरि मरि जमहि सबदु न वीचारहि ॥ (1045-12)
मरि मरि जमै चुकै न फेरी ॥ (1067-17)
मरि मरि जमै जनमु गवाई ॥ (1047-5)
मरि मरि जमै वारो वार ॥२॥ (229-13)
मरि मरि जमै सदा दुखु पाए दर की खबरि न पाई ॥१॥ (1132-9)
मरि मरि जाते जिन रामु न जानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (327-14)
मरि मरि जीवै ता किछु पाए ॥ (123-16)
मरि मरि जीवै ता किछु पाए नानक नामु वखाणे ॥३॥५॥३९॥ (360-16)
मरु मुइआ सबदे मरि जाइ ॥ (362-14)
मरै न आवै जाई ॥ (623-6)
मरै न आवै न जाइ बिनसै बिआपत उसन न सीत ॥१॥ (1006-16)
मरै न जनमै कालु न खाइ ॥५॥ (229-15)
मरै न जमै चूकै फेरी ॥ (1052-11)
मरै न जमै ना दुखु पाए मन ही मनहि समाइदा ॥१३॥ (1059-9)
मरै न जावै सद ही संगे सतिगुर सबदी चीना ॥१॥ रहाउ ॥ (670-19)
मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥ (279-6)
मरै नाही सद सद ही जीवै ॥ (1074-12)
मल पाप कलमल दहन ॥ (837-11)
मल भरम करम अहं ममता मरणु चीति न आवए ॥ (458-1)
मल मूत मूड़ जि मुगध होते सि देखि दरसु सुगिआना ॥ (248-9)
मल मूत मूड़ जि मुघद होते सभि लगे तेरी सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (406-5)
मल लथे लैदे फेरीआ ॥ (74-10)
मलकल मउत जां आवसी सभ दरवाजे भंनि ॥ (1383-6)
मलकु जि कंनी सुणीदा मुहु देखाले आइ ॥ (1377-16)
मलन मोह बिकार नाठे दिवस निरमल आइआ ॥ (846-15)
मलार (1293-15)
मलार ॥ (1292-14)
मलार ॥ (1293-8)
मलार बाणी भगत रविदास जी की (1293-2)
मलार मः ५ ॥ (1270-1)
मलार महला १ ॥ (1254-15)

मलार महला १ ॥ (1254-9)
मलार महला १ ॥ (1255-10)
मलार महला १ ॥ (1256-13)
मलार महला १ ॥ (1256-19)
मलार महला १ ॥ (1257-6)
मलार महला १ ॥ (1273-15)
मलार महला १ ॥ (1274-8)
मलार महला १ ॥ (1275-13)
मलार महला १ असटपदीआ घरु १ (1273-4)
मलार महला १ असटपदीआ घरु २ (1274-16)
मलार महला १ घरु २ (1256-6)
मलार महला ३ ॥ (1258-1)
मलार महला ३ ॥ (1258-16)
मलार महला ३ ॥ (1258-9)
मलार महला ३ ॥ (1259-7)
मलार महला ३ ॥ (1260-10)
मलार महला ३ ॥ (1260-16)
मलार महला ३ ॥ (1260-4)
मलार महला ३ ॥ (1261-12)
मलार महला ३ ॥ (1262-1)
मलार महला ३ ॥ (1262-8)
मलार महला ३ ॥ (1276-11)
मलार महला ३ असटपदी घरु २ ॥ (1277-8)
मलार महला ३ असटपदीआ घरु १ ॥ (1276-1)
मलार महला ३ घरु २ (1261-3)
मलार महला ३ चउपदे घरु १ (1257-12)
मलार महला ३ दुतुके ॥ (1259-17)
मलार महला ४ ॥ (1263-12)
मलार महला ४ ॥ (1263-18)
मलार महला ४ ॥ (1263-5)
मलार महला ४ ॥ (1264-14)
मलार महला ४ ॥ (1264-7)
मलार महला ४ ॥ (1265-17)
मलार महला ४ ॥ (1265-2)
मलार महला ४ पड़ताल घरु ३ (1265-13)
मलार महला ५ ॥ (1266-10)
मलार महला ५ ॥ (1266-17)

मलार महला ५ ॥ (1267-13)
मलार महला ५ ॥ (1267-17)
मलार महला ५ ॥ (1267-4)
मलार महला ५ ॥ (1268-10)
मलार महला ५ ॥ (1268-14)
मलार महला ५ ॥ (1268-18)
मलार महला ५ ॥ (1268-3)
मलार महला ५ ॥ (1268-7)
मलार महला ५ ॥ (1269-13)
मलार महला ५ ॥ (1269-16)
मलार महला ५ ॥ (1269-2)
मलार महला ५ ॥ (1269-6)
मलार महला ५ ॥ (1269-9)
मलार महला ५ ॥ (1270-13)
मलार महला ५ ॥ (1271-1)
मलार महला ५ ॥ (1271-7)
मलार महला ५ ॥ (1272-11)
मलार महला ५ ॥ (1272-14)
मलार महला ५ ॥ (1272-17)
मलार महला ५ ॥ (1272-2)
मलार महला ५ ॥ (1272-4)
मलार महला ५ ॥ (1272-8)
मलार महला ५ ॥ (1273-1)
मलारु सीतल रागु है हरि धिआइऐ सांति होइ ॥ (1283-4)
मलिआगरु भुयंगम बेढिओ त सीतलता न तजंत ॥१७४॥ (1373-17)
मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥ (346-7)
मलु कूड़ी नामि उतारीअनु जपि नामु होआ सचिआरु ॥ (951-1)
मलु जूई भरिआ नीला काला खिधोलड़ा तिनि वेमुखि वेमुखै नो पाइआ ॥ (306-5)
मलु हउमै धोती किवै न उतरै जे सउ तीरथ नाइ ॥ (39-6)
मलु हउमै बिखिआ सभ निवारी ॥ (95-17)
मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ (472-1)
मलेछु पापी पचिआ भइआ निरासु ॥४॥९॥ (1137-18)
मलै न लाछै पार मलो परमलीओ बैठो री आई ॥ (525-6)
मसकं भगनंत सैलं करदमं तरंत पपीलकह ॥ (1359-3)
मसकति लहहु मजूरीआ मंगि मंगि खसम दराहु ॥ (788-17)
मसटि करउ मूरखु जगि कहीआ ॥ (1330-15)
मसतकि करमु लिखिओ धुरि जा कै ॥ (252-7)

मसतकि नीसाणु सचउ करमु कल्य जोड़ि कर ध्याइअउ ॥ (1394-3)
मसतकि पदमु दुआलै मणी ॥ (974-17)
मसतकि भागु मै पिरु घरि आइआ ॥ (384-14)
मसतकि भागु होवै जिसु लिखिआ सो गुरमति हिरदै हरि नामु सम्हारि ॥१॥ (1134-19)
मसतकि भागु होवै धुरि लिखिआ ता सतगुरु सेवा लाए ॥ (880-16)
मसतकि भारु कलर सिरि भारा ॥ (1029-8)
मसतकि मणी प्रीति बहु प्रगटी हरि नामै हरि सोहाइआ ॥ (446-8)
मसतकि लाइ परम पदु पावउ जिसु प्रापति सो पावैगा ॥१८॥ (1083-8)
मसतकि लिखत लिखे गुन गाए मिलि संगति पारि परहु ॥१॥ रहाउ ॥ (799-19)
मसतकि लिखत लिखे गुरु पाइआ हरि हिरदै हरि बसना ॥१॥ रहाउ ॥ (799-1)
मसतकि लिखिअड़ा लेखु पुरबि कमाइआ जीउ ॥ (689-4)
मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि गुर सतिगुर चरन उर धरिआ ॥ (1294-9)
मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि मेटणा न जाइ ॥ (1276-10)
मसतकि लेखु जीआ जगि जोनी सिरि सिरि लेखु सहामं ॥ (634-18)
मसतकि होवै लिखिआ हरि सिमरि पराणी ॥ (319-3)
मसतकु अपना भेट देउ गुन सुनउ रसाल ॥१॥ (810-18)
मसतकु काटि देउ चरणा तलि जो हरि प्रभु मेले मेलि मिलईआ ॥३॥ (836-5)
मसतकु काटि धरी तिसु आगै तनु मनु आगै देउ ॥ (938-7)
मसलति मता सिआणप जन की जो तूं करहि करावहि ॥१॥ रहाउ ॥ (380-12)
मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ ॥ (15-1)
महघो मोलि भारि अफारु ॥ (413-4)
महजरु झूठा कीतोनु आपि ॥ (199-14)
महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥२॥ (632-7)
महर मलूक कहाईऐ राजा राउ कि खानु ॥ (63-18)
महर मलूक होइ देखिआ खान ॥ (179-13)
महरम महल न को अटकावै ॥ (345-15)
महराज रो गाथु वाहू सिउ लुभड़िओ निहभागड़ो भाहि संजोइओ रे ॥१॥ (715-17)
महल कुचजी मड़वड़ी काली मनहु कसुध ॥ (1088-7)
महल भगती घरि सरै सजण पाहुणिअउ ॥ (517-3)
महल महि बैठे अगम अपार ॥ (1255-19)
महला १ ॥ (1237-12)
महला १ ॥ (1237-15)
महला १ ॥ (1238-12)
महला १ ॥ (1238-4)
महला १ ॥ (1239-17)
महला १ ॥ (1240-15)
महला १ ॥ (1240-6)

महला १ ॥ (1241-3)
महला १ ॥ (1279-4)
महला १ ॥ (1410-3)
महला १ ॥ (1412-12)
महला १ ॥ (53-19)
महला १ ॥ (590-2)
महला १ ॥ (788-19)
महला १ बसंतु ॥ (1168-9)
महला १ बसंतु हिंडोल घरु २ (1170-18)
महला १ मलार ॥ (1255-18)
महला २ ॥ (1239-1)
महला २ ॥ (1239-10)
महला २ ॥ (148-16)
महला २ ॥ (148-8)
महला २ ॥ (463-1)
महला २ ॥ (463-13)
महला २ ॥ (466-16)
महला २ ॥ (474-11)
महला २ ॥ (474-12)
महला २ ॥ (474-14)
महला २ ॥ (474-15)
महला २ ॥ (474-5)
महला २ ॥ (475-1)
महला २ ॥ (475-7)
महला २ ॥ (791-10)
महला ३ ॥ (1245-12)
महला ३ ॥ (1412-11)
महला ३ ॥ (312-3)
महला ३ गउड़ी बैरागणि ॥ (162-6)
महला ३ चउपदे ॥ (157-15)
महला ४ ॥ (140-1)
महला ४ ॥ (141-13)
महला ४ गउड़ी पूरबी ॥ (168-16)
महला ४ रागु आसा घरु ६ के ३ ॥ (368-1)
महला ५ ॥ (1160-5)
महला ५ ॥ (1375-15)
महला ५ ॥ (1375-16)

महला ५ ॥ (1375-17)
महला ५ ॥ (1376-1)
महला ५ ॥ (1381-17)
महला ५ ॥ (1382-4)
महला ५ ॥ (1382-6)
महला ५ ॥ (487-16)
महला ५ ॥ (965-10)
महला ५ ॥ (965-16)
महला ५ गउड़ी ॥ (241-14)
महला ५ गाथा (1360-5)
महला ५ रागु गउड़ी गुआरेरी चउपदे (175-17)
महला अंदरि गैर महलु पाए भाणा बुझि समाहा हे ॥१४॥ (1058-10)
महला अंदरि होदीआ हुणि बहणि न मिलन्हि हदूरि ॥१॥ (417-2)
महला मंझि निवासु सबदि सवारीआ ॥ (148-12)
महलि बुलाइआ प्रभ अम्रितु भूंचा ॥ (562-14)
महलि बुलाइड़ीए बिलमु न कीजै ॥ (1111-19)
महलि बुलाइड़ीए भगति सनेही राम ॥ (844-8)
महलि बुलाई ठाक न पाई ॥ (933-12)
महली खसमु सुणे साबासि ॥ (355-11)
महली जाइ पावहु खसमै भावहु रंग सिउ रलीआ माणै ॥ (579-18)
महली महलि बुलाईऐ सो पिरु रावे रंगि ॥ (57-2)
महली महलि सहज सुखु पाए ॥ (117-18)
महलु कुमहलु न जाणनी मूरख अपणै सुआइ ॥ (649-9)
महलु न पावै कहतो पहुता ॥१॥ (738-11)
महलु न पावै फिरत बिगाना ॥५॥ (759-15)
महलु नाही डोहागणी अंति गई पछुताइ ॥७॥ (428-8)
महलु साह का किन बिधि पावै ॥ (181-4)
महले पहिले सतारह असटपदीआ ॥ (64-13)
महलै अंदरि महलु को पाए ॥ (1064-6)
महा अगनि ते आपि उबारिआ ॥ (1005-8)
महा अगनि ते तुधु हाथ दे राखे पए तेरी सरणाई ॥ (748-8)
महा अगनि ते हाथु दे राखा ॥३॥ (239-18)
महा अगाह अगनि का सागरु ॥ (377-7)
महा अनंद अचिंत सहजाइआ ॥ (371-14)
महा अनंद करहु दास हरि के नानक बिस्वासु मनि आइओ ॥२॥१४॥१८॥ (1270-4)
महा अनंद करे सद केला ॥१॥ रहाउ ॥ (485-8)
महा अनंद कीरतन हरि सुनीआ ॥३॥ (715-10)

महा अनंद भए सुखु पाइआ संतन कै परसादे ॥ (614-6)
महा अनंद मंगल रूप तुमरे बचन अनूप रसाल ॥ (680-12)
महा अनंदु गुर सबदु वीचारि ॥ (370-16)
महा अनंदु सदा करि कीरतनु पुरख बिधाता पाए ॥१॥ (671-11)
महा अनंदु सहजु भइआ मनि तनि सुखु पाइआ ॥ (441-14)
महा अभाग अभाग है जिन के तिन साधू धूरि न पीजै ॥ (1325-1)
महा उग्र पाप साकत नर कीने मिलि साधू लूकी दीजै ॥४॥ (1324-7)
महा उदासु तपीसरु थीवै ॥ (265-13)
महा उदिआन अंधकार महि जिनि सीधा मारगु दिखाइआ ॥१॥ (672-15)
महा उदिआन अटवी ते काढे मारगु संत कहिओ ॥ (1228-2)
महा उदिआन पावक सागर भए हरख सोग महि बसना ॥ (383-15)
महा करूप दुखीए सदा काले मुह माइआ ॥ (1244-8)
महा कलोल बुझहि माइआ के करि किरपा मेरे दीन दइआल ॥ (683-1)
महा कसट काटै खिन भीतरि रसना नामु चितारे ॥ (210-3)
महा कसाबि छुरी सटि पाई ॥ (898-16)
महा किलबिख कोटि दोख रोगा प्रभ द्रिसटि तुहारी हाते ॥ (530-1)
महा गरत महि निघरत जाता ॥४॥ (741-8)
महा गरीब जन साध अनाथ ॥ (197-2)
महा ग्मभीर पत्र पाताला नानक सरब जुआइआ ॥ (503-14)
महा ग्मभीरु सदा सुखदाता तिस का अंतु न पाइआ ॥ (600-16)
महा जुध जोध बहु कीन्हे विचि हउमै पचै पचाइ जीउ ॥ (445-18)
महा तपति ते भई सांति परसत पाप नाठे ॥ (813-3)
महा तपति सागर संसार ॥ (196-11)
महा तरंग ते कांढै लागा ॥ (1348-18)
महा दानि सतिगुर गिआनि मनि चाउ न हुटै ॥ (1407-18)
महा दुखु खटे बिरथा जनमु गवाइआ ॥३॥ (161-5)
महा दुतरु माइआ ॥ (746-12)
महा द्रुगंधत वासु सठ का छारु तन ॥ (1363-9)
महा धरम सुदान किरिआ संगि तेरै से चले ॥ (548-9)
महा नाद कुरंक मोहिओ बेधि तीखन सरी ॥ (1121-1)
महा पतित के पातिक उतरहि हरि नामा उरि धारै ॥१॥ (1208-18)
महा पतित तुम्ह तारे ॥ (1278-7)
महा पतित ते होत पुनीता हरि कीरतन गुन गावउ ॥१॥ (712-19)
महा पतित मुगध लोभी फुनि करत पाप अब हारा ॥ (703-3)
महा पदारथु अम्रित रसु चाखु ॥३॥ (193-11)
महा पवित्र संत आसनु मिलि संगि गोबिदु धिआइ ॥२॥ (1300-16)
महा पवित्र साध का संगु ॥ (392-19)

महा पुनीत जा का निरमल थानु ॥ (393-3)
महा पुनीत भए सुख सैलु ॥ (178-5)
महा पुरखां की निंदा का वेखु जि तपे नो फलु लगा सभु गइआ तपे का घालिआ ॥ (315-18)
महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाइ ॥ (755-9)
महा बचित्र सुंदर आखाड़े रण महि जिते पवाड़े ॥ (379-19)
महा बजर बिख बिआधी सिरि उठाई पोट ॥ (1224-10)
महा बिकार गए सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥ (781-7)
महा बिकार घोर दुख सागर तिसु महि प्राणी गलतु पइआ ॥ (826-8)
महा बिकार तन ते सभि नसे ॥१॥ (897-7)
महा बिकार मोह मद मातौ सिमरत नाहि हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (1227-8)
महा बिखम सागरु अति भारी उधरहु साधू संगि रवाला ॥१॥ रहाउ ॥ (806-16)
महा बिखमु अगनि का सागरु तिस ते पारि उतारिओ ॥ (979-4)
महा बिखमु अगनि को सागरु साधू संगि उधारे ॥१॥ (615-6)
महा बिखमु जम पंथु दुहेला कालूखत मोह अंधिआरा ॥ (443-13)
महा बिखमु संसारु विरलै पेखिआ ॥ (398-11)
महा बिखादी दुसट अपवादी ते पुनीत संगारे ॥१॥ (406-12)
महा बिखिआ महि दिनु रैनि जाहि ॥३॥ (395-2)
महा बीचार पंच दूतह मंथ ॥१॥ (867-7)
महा भइआन उदिआन नगर करि मानिआ ॥ (707-19)
महा भउजल माहि तुलहो जा को लिखिओ माथ ॥१॥ (1007-10)
महा भउजलु लंघीऐ सदा हरि गुण गाउ ॥२॥ (405-4)
महा मंगल सूख उपजे गोबिंद गुण नित सारिआ ॥ (1278-13)
महा मंगलु रहसु थीआ पिरु दइआलु सद नव रंगीआ ॥ (704-5)
महा मंत्रु गुर हिरदै बसिओ अचरज नामु सुनिओ री ॥३॥ (384-4)
महा मंत्रु नानकु कथै हरि के गुण गाई ॥४॥२३॥५३॥ (814-10)
महा माइआ ता की है छाइआ ॥ (868-18)
महा माई की पूजा करै ॥ (874-15)
महा माद बिकार बाधा अनिक जोनि भ्रमीन ॥ (1225-6)
महा मारगु पंथु बिखड़ा जन नानक पारि लंघाइआ ॥३॥ (575-14)
महा मुगध अजान अगिआनी राखे धारि दए ॥ (829-16)
महा मुगध ते कीआ गिआनी ॥ (1338-14)
महा मोह अंध कूप परिआ ॥ (805-15)
महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु रहिओ उरझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (632-13)
महा मोहनी तुधु न विआपै तेरा आलसु कहा गइओ री ॥१॥ रहाउ ॥ (383-19)
महा मोहनी दूता लाई ॥१॥ (745-2)
महा मोहनी मगन प्रिअ प्रीति प्रान ॥ (380-7)
महा मोहनी मोहिआ नरक की रीति ॥१॥ (815-12)

महा मोहनी संगि राता रतन जनमु गवाइआ ॥ (546-12)
महा मोहि मोहिओ गावारा ॥ (740-10)
महा रोगु बिकराल तिनै बिदारूओ ॥ (522-12)
महा संतोखु होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (682-19)
महा सागरु नह विआपै खिनहि उतरिओ तीरि ॥२॥ (1018-1)
महा सागरु समुदु लंघना पारि न परना जाइ ॥२॥ (1001-16)
महा सुखु पाइआ बरनि न साकउ रेनु नानक जन पागी ॥२॥१॥५॥ (1267-12)
महादेउ गिआनी वरतै घरि आपणै तामसु बहुतु अहंकारा ॥२॥ (559-15)
महादेउ गुण रवै सदा जोगी जति जंगम ॥ (1390-14)
महिमा कही न जाइ गुर समरथ देव ॥ (522-13)
महिमा जा की गहिर ग्मभीर ॥ (887-7)
महिमा ता की केतक गनीऐ जन पारब्रहम रंगि राते ॥ (207-15)
महिमा तिस की कहणु न जाए ॥ (97-19)
महिमा न जानहि बेद ॥ (894-4)
महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता ॥ (809-17)
महिमा सुंदर सदा बेअंत ॥३॥ (393-10)
महुरा होवै हथि मरीऐ चखीऐ ॥ (142-15)
मांगउ राम ते इकु दानु ॥ (682-12)
मांगउ राम ते सभि थोक ॥ (682-15)
मांगनि मांगउ होइ अचिंता मिलु नानक के हरि प्रान ॥२॥३५॥५८॥ (1215-17)
मांजार गाडर अरु लूबरा ॥ (1160-17)
मांझ महला ५ ॥ (109-1)
मांदलु बेदि सि बाजणो घणो धड़ीऐ जोइ ॥ (1091-1)
मांधाता गुण रवै जेन चक्रवै कहाइओ ॥ (1390-17)
मा की रकतु पिता बिदु धारा ॥ (1022-14)
मा लाली पिउ लाला मेरा हउ लाले का जाइआ ॥ (991-3)
माइ न होती बापु न होता करमु न होती काइआ ॥ (973-6)
माइ निरासी रोइ विछुंनी बाली बालै हेते ॥ (763-18)
माइ बाप को बेटा नीका ससुरै चतुरु जवाई ॥ (596-2)
माइ बाप पूत हित भ्राता उनि घरि घरि मेलिओ दूआ ॥ (673-15)
माइआ अंतरि भीने देव ॥ (1160-18)
माइआ अगनि जलै संसारे ॥ (1049-15)
माइआ अगनि न पोहै तिन कउ रंगि रते गुण गावणिआ ॥५॥ (132-3)
माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥ (921-2)
माइआ ऐसी मोहनी भाई ॥ (1160-13)
माइआ कउ लूझहि गावारी ॥ (366-6)
माइआ करि मूलु जंत्र भरमाए ॥ (232-2)

माइआ का भ्रमु अंधु पिरा जीउ हरि मारगु किउ पाए ॥ (247-2)
माइआ का मुहताजु पंडितु कहावै ॥ (231-2)
माइआ का मूलु रचाइओनु तुरीआ सुखु पाइआ ॥२॥ (509-11)
माइआ का रंगु सभु फिका जातो बिनसि निदानि ॥ (45-2)
माइआ का रूपु सभु तिस ते होइ ॥ (797-6)
माइआ कामि विआपिआ समझै नाही गावारु ॥ (43-8)
माइआ कारणि करै उपाउ ॥ (1151-15)
माइआ कारणि पड़ि पड़ि लूझहि ॥ (1050-2)
माइआ कारणि पिड़ बंधि नाचै दूजै भाइ दुखु पावणिआ ॥६॥ (122-3)
माइआ कारणि रोइ विगूचहि ध्रिगु जीवणु संसारा हे ॥८॥ (1027-4)
माइआ कारणि सद ही झूरै ॥ (893-1)
माइआ कारन बिदिआ बेचहु जनमु अबिरथा जाई ॥३॥ (1103-3)
माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥ (1427-18)
माइआ कारनि स्रमु अति करै ॥ (1252-12)
माइआ किस नो आखीऐ किआ माइआ करम कमाइ ॥ (67-3)
माइआ की किरति छोडि गवाई भगती सार न जानै ॥ (381-5)
माइआ के देवाने प्राणी झूठि ठगउरी पाई ॥ (930-12)
माइआ के मदि जनमु सिराइओ राम भजनि नही लागिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1008-12)
माइआ के माते तै उठि चलना ॥ (889-18)
माइआ के वापारा जगति पिआरा आवणि जाणि दुखु पाई ॥ (571-2)
माइआ के सनबंध सैन साक कित ही कामि न आइआ ॥ (497-4)
माइआ कै अरथि बहुतु लोक नाचे को विरला ततु बीचारी ॥ (506-13)
माइआ को मदु कहा करतु है संगि न काहू जाई ॥ (902-11)
माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु ॥ (1352-4)
माइआ खोटी रासि है एक चसे महि पाजु लहि जाइ ॥ (510-5)
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥१॥ (487-6)
माइआ गिरसति भ्रमतु है प्रानी रखि लेवहु जनु अपना ॥ (799-2)
माइआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बूझै कोई ॥१॥ (485-2)
माइआ छलीआ बिकार बिखलीआ ॥ (385-4)
माइआ जलु खाई पाणी घरु बाधिआ सत कै आसणि पुरखु रहै ॥२॥ (877-5)
माइआ जालु पसारिआ भीतरि चोग बणाइ ॥ (50-7)
माइआ जेवडु दुखु नही सभि भवि थके संसारु ॥ (39-12)
माइआ झूठु रुदनु केते बिललाही राम ॥ (548-1)
माइआ डोलै बहु बिधी मनु लपटिओ तिह संग ॥ (258-16)
माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥ (918-8)
माइआ तपति बुझिआ अंगिआरु ॥ (331-7)
माइआ दासी भगता की कार कमावै ॥ (231-4)

माइआ दुखि मोहिआ हउमै रोहिआ मेरी मेरी करत विहावए ॥ (690-12)
माइआ धंधा धावणी दुरमति कार बिकार ॥ (1343-9)
माइआ नामु गरभ जोनि का तिह तजि दरसनु पावउ ॥३॥ (693-8)
माइआ नो फिरै तपा सदावै ॥ (948-16)
माइआ पटल पटल है भारी घरु घूमनि घेरि घुलावैगो ॥ (1308-14)
माइआ फास बंध नही फारै अरु मन सुंनि न लूके ॥ (475-16)
माइआ फास बंध बहु बंधे हरि जपिओ खुल खुलने ॥ (976-17)
माइआ बंदी खसम की तिन अगै कमावै कार ॥ (90-9)
माइआ बंध काटे किरपा निधि नानक आपि उधारिओ ॥२॥६॥ (529-14)
माइआ बंधन टिकै नाही खिनु खिनु दुखु संताए ॥ (247-1)
माइआ बिआपत बहु परकारी ॥ (182-2)
माइआ बिखु फिरि बहुड़ि न चाखै ॥२॥ (1271-11)
माइआ बिखु भुइअंगम नाले ॥ (1029-14)
माइआ ब्रहम रमै सभ संग ॥ (343-9)
माइआ भुइअंग ग्रसिओ है प्राणी गुर बचनी बिसु हरि काढिबा ॥१॥ (697-9)
माइआ भुइअंग तिसु नेड़ि न आवै बिखु झारि झारि लिव लावैगो ॥२॥ (1310-18)
माइआ भुइअंगमु सरपु है जगु घेरिआ बिखु माइ ॥ (1415-5)
माइआ भूले सिध फिरहि समाधि न लगै सुभाइ ॥ (67-2)
माइआ मगन न कछूऐ मोहै ॥२॥ (185-6)
माइआ मगन सुआदि लोभि मोहिओ तिनि प्रभि आपि भुलाइओ ॥ रहाउ ॥ (712-5)
माइआ मगनु अहिनिसि मगु जोहै नामु न लेवै मरै बिखु खाई ॥ (596-5)
माइआ मगनु नरकि लै जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (196-7)
माइआ मगनु परम पदु दूरि ॥ (226-7)
माइआ मद चाखि भए उदमाते हरि हरि कबहु न गाए ॥२॥ (999-11)
माइआ मद मन तन संगि जाता ॥ (1004-18)
माइआ मदि बिखिआ रसि रचिओ राम सरनि नही आवै ॥१॥ रहाउ ॥ (1231-15)
माइआ मदि माता रहिआ सोइ ॥ (1128-5)
माइआ मदि माता होछी बाता मिलणु न जाई भरम धड़ा ॥ (924-9)
माइआ मदि माते त्रिपति न आवै ॥ (832-2)
माइआ मनसा मोहणी दह दिस फिराता ॥ (514-17)
माइआ मनहु न वीसरै मांगै दमां दम ॥ (1426-4)
माइआ मनहु न वीसरै मांगै दमा दम ॥ (1093-13)
माइआ ममता करतै लाई ॥ (1261-6)
माइआ ममता छोडी न जाई ॥ (1024-4)
माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥ (1186-14)
माइआ ममता पवहि खिआली ॥ (993-8)
माइआ ममता मोहणी जिनि कीती सो जाणु ॥ (937-4)

माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ ॥ (643-18)
माइआ ममता है बहु रंगी ॥ (1342-5)
माइआ मलु लागी मूड़ भए अभागी जिन राम नामु नह भाइआ ॥ (443-12)
माइआ महि कालु अरु पंच दूता ॥३॥ (1160-16)
माइआ महि जिसु रखै उदासु ॥ (1157-18)
माइआ महि फिरि चितु न लाए ॥ (120-15)
माइआ माइआ करि मुए माइआ किसै न साथि ॥ (935-18)
माइआ माइआ के जो अधिकाई विचि माइआ पचै पचीजै ॥ (1326-17)
माइआ माई त्रै गुण परसूति जमाइआ ॥ (1066-2)
माइआ मुई न मनु मुआ सरु लहरी मै मतु ॥ (992-3)
माइआ मूठा चेतसि नाही जनमु गवाइओ आलसीआ ॥२॥ (92-9)
माइआ मूठा चेतै नाही ॥ (372-16)
माइआ मूठा सदा बिललाइ ॥२॥ (1176-17)
माइआ मोह का एहु पसारा ॥ (1068-10)
माइआ मोह का कचा चोला तितु पैधै पगु खिसै ॥ (584-7)
माइआ मोह दुख सबाइआ ॥ (1050-15)
माइआ मोह परीति ध्रिगु सुखी न दीसै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (47-1)
माइआ मोह बंधु प्रभि कीता ॥ (257-12)
माइआ मोह भरमु भउ काटै संत सरणि जो आवै ॥ (748-5)
माइआ मोह भूलो अवरै हीत ॥ (673-2)
माइआ मोह मगनु अंधिआरै देवनहारु न जानै ॥ (616-4)
माइआ मोह महा संकट बन ता सिउ रुच उपजावै ॥१॥ (220-2)
माइआ मोह मैलु पतंगु न लागै गुरमती हरि नामि भीजै हे ॥७॥ (1049-12)
माइआ मोह रंगि लपटाना ॥१॥ रहाउ ॥ (738-16)
माइआ मोह सभ लोक है तेरी तू एको पुरखु बिधाता ॥ (637-19)
माइआ मोहणी नीघरीआ जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ (243-7)
माइआ मोहणी मोहिआ फिरि फिरि जूनी भवाहि ॥ (441-7)
माइआ मोहि अति भरमि भुलाई ॥ (230-15)
माइआ मोहि इहु जगु सुता ॥ (112-5)
माइआ मोहि कड़े कड़ि पचिआ ॥ (1140-3)
माइआ मोहि जगु बाधा जमकालि ॥ (412-15)
माइआ मोहि जगु भरमिआ घरु मुसै खबरि न होइ ॥ (1414-5)
माइआ मोहि जलै अभिमानु ॥१॥ (664-2)
माइआ मोहि जोहिआ जमकाले ॥ (121-19)
माइआ मोहि दुख माहि समानी ॥ (1047-16)
माइआ मोहि दूजै जंत पाजे ॥ (1053-14)
माइआ मोहि दूजै लोभाणी ॥ (423-12)

माइआ मोहि नटि बाजी पाई ॥ (230-13)
माइआ मोहि पलेटिआ अंतरि अगिआनु गुबारु ॥ (1418-2)
माइआ मोहि बधा जमकाले ॥ (1060-7)
माइआ मोहि बहु भरमिआ ॥ (1193-1)
माइआ मोहि बहुतु दुखु पाई ॥ (1175-3)
माइआ मोहि बिआपिआ धोहि ॥ (899-7)
माइआ मोहि भरमि न पाए ॥ (1066-8)
माइआ मोहि मगनु कढि लेहु मुरारी राम ॥ (547-8)
माइआ मोहि मनु रंगिआ मोहि सुधि न काई राम ॥ (571-4)
माइआ मोहि मूठा है मूड़ु ॥ (1139-12)
माइआ मोहि विसारिआ गुर का भउ हेतु अपारु ॥ (1250-9)
माइआ मोहि विसारिआ जगत पिता प्रतिपालि ॥ (30-11)
माइआ मोहि विसारिआ सचु मरणा हरि नामु ॥ (1248-5)
माइआ मोहि विसारिआ सुखदाता दातारु ॥ (34-8)
माइआ मोहि सगल जगु छाइआ ॥ (1342-13)
माइआ मोहि सदा दुखु पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥२॥ (753-11)
माइआ मोहि सभ सुधि गवाई करि अवगण पछोतावणिआ ॥२॥ (116-18)
माइआ मोहि सभु जगतु उपाइआ ॥ (1052-11)
माइआ मोहि सभो जगु बाधा ॥ (394-17)
माइआ मोहि सभो जगु सोइआ इहु भरमु कहहु किउ जाई ॥१॥ (205-1)
माइआ मोहि सहहि जम डंडु ॥ (903-10)
माइआ मोहि सुधि न काई ॥ (1049-1)
माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ (375-19)
माइआ मोहि हरि चेतै नाही ॥ (111-10)
माइआ मोहि हरि सिउ चितु न लागै ॥ (1052-15)
माइआ मोहिआ टेढउ जात ॥१॥ (892-17)
माइआ मोहित जिनि इहु रसु खोइआ जा साकत दुरमति लागा ॥३॥ (598-14)
माइआ मोहु अंतरि मलु लागै माइआ के वापारा राम ॥ (571-1)
माइआ मोहु अंधु अंधारा ॥ (1045-2)
माइआ मोहु अगिआनु गुबारु ॥ (1262-4)
माइआ मोहु अगिआनु है बिखमु अति भारी ॥ (509-14)
माइआ मोहु अति गुबारु ॥ (880-7)
माइआ मोहु इसु मनहि नचाए अंतरि कपटु दुखु पावणिआ ॥४॥ (122-1)
माइआ मोहु कीआ जिनि आपे आपे दूजै लाए ॥२॥ (1131-13)
माइआ मोहु खुआइअनु मरि जमै वारो वारा ॥ (583-11)
माइआ मोहु गुबारु है गुर बिनु गिआनु न होई ॥ (559-1)
माइआ मोहु गुबारु है तिस दा न दिसै उरवारु न पारु ॥ (89-12)

माइआ मोहु गुबारु है दूजै भरमाई ॥ (786-10)
माइआ मोहु गुर सबदि जलाए ॥ (412-7)
माइआ मोहु चुकाइआ गुरमती सहजि सुभाइ ॥ (66-19)
माइआ मोहु जगतु गुबारा ॥ (1043-19)
माइआ मोहु जगतु सबाइआ ॥ (129-6)
माइआ मोहु जलाए प्रीतमु रस महि रंगु करेई ॥ (689-11)
माइआ मोहु जलाए सो हरि सिउ चितु लाए हरि दरि महली सोभा पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (129-7)
माइआ मोहु तब बिसरि गइआ जां तजीअले संसारं ॥३॥ (92-10)
माइआ मोहु दुखु सागरु है बिखु दुतरु तरिआ न जाइ ॥ (1417-1)
माइआ मोहु धरकटी नारि ॥ (796-1)
माइआ मोहु न चुकई मरि जमहि वारो वार ॥ (1419-1)
माइआ मोहु परेतु है कामु क्रोधु अहंकारा ॥ (513-13)
माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ (1029-10)
माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ (1053-5)
माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ (1059-15)
माइआ मोहु बहु चितवदे बहु आसा लोभु विकार ॥ (1417-11)
माइआ मोहु बहु चितै बिकारा ॥ (1051-9)
माइआ मोहु बिखमु है भारी ॥ (998-4)
माइआ मोहु बिनसि जाइगा उबरे सबदि वीचारी ॥२८॥ (911-17)
माइआ मोहु बिवरजि समाए ॥ (904-1)
माइआ मोहु भवजलु है अवधू सबदि तरै कुल तारी ॥२२॥ (908-7)
माइआ मोहु मनि आगलड़ा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ॥ (92-5)
माइआ मोहु मेरै प्रभि कीना आपे भरमि भुलाए ॥ (67-9)
माइआ मोहु वरतै सभ अंतरि ॥ (1060-11)
माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ (1050-10)
माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ (120-2)
माइआ मोहु सबदि जलाइआ गिआनि तति बीचारी ॥७॥ (911-4)
माइआ मोहु सबदि जलाए ॥ (1173-16)
माइआ मोहु सबलु है भारी मोहु कालख दाग लगीजै ॥ (1324-4)
माइआ मोहु सभु आपे कीना ॥ (1050-11)
माइआ मोहु सभु कूड़ु है कूड़ो होइ गइआ ॥ (790-5)
माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा ॥२॥ (570-6)
माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा राम ॥ (570-3)
माइआ मोहु सभु दुखु है दुखि बिनसै दुखु रोइ ॥ (316-16)
माइआ मोहु सभु बरलु है दूजै भाइ खुआई राम ॥ (571-11)
माइआ मोहु सभु रोगु कमाइआ ॥ (1064-8)
माइआ मोहु सरब जंजाला ॥ (222-17)

माइआ मोहु हुकमि बणाइआ ॥ (1066-1)
माइआ मोहे चेतहि नाही अहिला जनमु गवावहे ॥ (566-15)
माइआ मोहे देवी सभि देवा ॥ (227-4)
माइआ रंग जेते से संगि न जाही ॥ (461-13)
माइआ रंग बिरंग करत भ्रम मोह कै कूपि गुबारि परिओ है ॥ (1388-15)
माइआ रंग बिरंग खिनै महि जिउ बादर की छाइआ ॥ (1003-13)
माइआ लगि भूलो संसारु ॥ (1143-10)
माइआ लहरि सबदि निवारी ॥ (1049-7)
माइआ लागी भरमि भुलाणी ॥५॥ (750-16)
माइआ लालचि अटिआ पिआरे चिति न आवहि मूलि ॥ (641-3)
माइआ विचि सहजु न ऊपजै माइआ दूजै भाइ ॥ (68-11)
माइआ वेखि न भुलु तू मनमुख मूरखा ॥ (1087-18)
माइआ संचि राजे अहंकारी ॥ (1342-4)
माइआ सरु सबलु वरतै जीउ किउ करि दुतरु तरिआ जाइ ॥ (245-16)
माइआ साथि न चलई किआ लपटावहि अंध ॥ (1093-14)
माइआ साथि न चलै पिआरी ॥ (1342-4)
माइआ सिलक काटी गोपालि ॥ (240-13)
माइआ सुआद सभि फिकिआ हरि मनि भावंदु ॥ (321-11)
माइआ सुत दारा जगत पिआरा चोग चुगै नित फासै ॥ (1110-8)
माइआ सुत दारा दूखि संतापी राम ॥ (1110-8)
माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ ॥ (510-9)
माइआधारी अति अंना बोला ॥ (313-17)
माइआधारी छत्रपति तिन्ह छोडउ तिआगि ॥१॥ रहाउ ॥ (811-15)
माई कहा करउ इहु मनु न धीरै ॥ (373-13)
माई खाटि आइओ घरि पूता ॥ (495-15)
माई गुर चरणी चितु लाईऐ ॥ (528-13)
माई गुर बिनु गिआनु न पाईऐ ॥ (532-11)
माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ ॥ (525-11)
माई चरन गुर मीठे ॥ (717-9)
माई जो प्रभ के गुन गावै ॥ (531-1)
माई धीरि रही प्रिअ बहुतु बिरागिओ ॥ (1203-17)
माई प्रभ के चरन निहारउ ॥ (531-19)
माई बाप पुत्र सभि हरि के कीए ॥ (494-15)
माई मनु मेरो बसि नाहि ॥ (632-17)
माई माइआ छलु ॥ (717-5)
माई मागत त्रै लोभावहि ॥ (903-11)
माई मेरे मन की पिआस ॥ (716-17)

माई मेरे मन की प्रीति ॥ (716-6)
माई मेरे मन को सुखु ॥ (717-16)
माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई ॥ (632-13)
माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥ (1186-13)
माई मै मन को मानु न तिआगिओ ॥ (1008-12)
माई मोरो प्रीतमु रामु बतावहु री माई ॥ (369-16)
माई मोहि अवरु न जानिओ आनानां ॥ (339-14)
माई मोहि प्रीतमु देहु मिलाई ॥ (1267-13)
माई री अरिओ प्रेम की खोरि ॥ (1228-3)
माई री आन सिमरि मरि जांहि ॥ (1225-14)
माई री काटी जम की फास ॥ (1227-19)
माई री चरनह ओट गही ॥ (1225-7)
माई री पेखि रही बिसमाद ॥ (1226-17)
माई री मनु मेरो मतवारो ॥ (1225-11)
माई री माती चरण समूह ॥ (1227-1)
माई संतसंगि जागी ॥ (1119-4)
माई सति सति सति हरि सति सति सति साधा ॥ (1204-5)
माई सिमरत राम राम राम ॥ (1307-13)
माई सुनत सोच भै डरत ॥ (529-1)
माई होनहार सो होईऐ ॥ (528-16)
माऊ पीऊ किरतु गवाइनि टबर रोवनि धाही ॥ (149-16)
माखी चंदनु परहरै जह बिगंध तह जाइ ॥६८॥ (1368-2)
माखी राम की तू माखी ॥ (1227-15)
मागउ काहि रंक सभ देखउ तुम्ह ही ते मेरो निसतारु ॥१॥ (856-17)
मागउ जन धूरि परम गति पावउ ॥ (1080-3)
मागउ दानु क्रिपाल क्रिपा निधि मेरा मुखु साकत संगि न जुटसी रे ॥ (535-18)
मागउ दानु ठाकुर नाम ॥ (713-6)
मागन ते जिह तुम रखहु सु नानक नामहि रंग ॥१॥ (258-17)
मागना मागनु नीका हरि जसु गुर ते मागना ॥४॥ (1018-11)
मागनि माग त एकहि माग ॥ (258-19)
मागरमछ्छ फहाईऐ कुंडी जालु वताइ ॥ (1009-17)
मागहि टूका त्रिपति न पावै ॥ (886-13)
मागहि नामु पाइ इह भिखिआ तेरे दरसन कउ कुरबाणै ॥ (946-17)
मागै दानु नामु तेरो नानकु जिउ माता बाल गुपाला ॥३॥१४॥ (674-13)
माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ ॥ (1109-11)
माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥ (135-18)
माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥ (136-3)

माझ महला ३ ॥ (110-12)
माझ महला ३ ॥ (111-16)
माझ महला ३ ॥ (111-5)
माझ महला ३ ॥ (112-9)
माझ महला ३ ॥ (113-1)
माझ महला ३ ॥ (113-13)
माझ महला ३ ॥ (114-17)
माझ महला ३ ॥ (114-5)
माझ महला ३ ॥ (115-10)
माझ महला ३ ॥ (116-15)
माझ महला ३ ॥ (116-3)
माझ महला ३ ॥ (117-19)
माझ महला ३ ॥ (117-8)
माझ महला ३ ॥ (118-12)
माझ महला ३ ॥ (119-16)
माझ महला ३ ॥ (119-5)
माझ महला ३ ॥ (120-9)
माझ महला ३ ॥ (121-1)
माझ महला ३ ॥ (121-14)
माझ महला ३ ॥ (122-18)
माझ महला ३ ॥ (122-7)
माझ महला ३ ॥ (123-11)
माझ महला ३ ॥ (124-17)
माझ महला ३ ॥ (124-5)
माझ महला ३ ॥ (125-10)
माझ महला ३ ॥ (126-14)
माझ महला ३ ॥ (126-2)
माझ महला ३ ॥ (127-7)
माझ महला ३ ॥ (128-1)
माझ महला ३ ॥ (128-13)
माझ महला ३ ॥ (129-5)
माझ महला ३ घरु १ ॥ (109-19)
माझ महला ४ ॥ (129-18)
माझ महला ४ ॥ (94-9)
माझ महला ४ ॥ (95-1)
माझ महला ४ ॥ (95-12)
माझ महला ४ ॥ (95-18)

माझ महला ४ ॥ (95-6)
माझ महला ४ ॥ (96-5)
माझ महला ५ ॥ (100-13)
माझ महला ५ ॥ (100-18)
माझ महला ५ ॥ (100-2)
माझ महला ५ ॥ (100-7)
माझ महला ५ ॥ (101-11)
माझ महला ५ ॥ (101-16)
माझ महला ५ ॥ (101-5)
माझ महला ५ ॥ (102-14)
माझ महला ५ ॥ (102-3)
माझ महला ५ ॥ (102-9)
माझ महला ५ ॥ (103-1)
माझ महला ५ ॥ (103-12)
माझ महला ५ ॥ (103-18)
माझ महला ५ ॥ (103-7)
माझ महला ५ ॥ (104-10)
माझ महला ५ ॥ (104-15)
माझ महला ५ ॥ (104-4)
माझ महला ५ ॥ (105-1)
माझ महला ५ ॥ (105-12)
माझ महला ५ ॥ (105-17)
माझ महला ५ ॥ (105-7)
माझ महला ५ ॥ (106-15)
माझ महला ५ ॥ (106-4)
माझ महला ५ ॥ (106-9)
माझ महला ५ ॥ (107-1)
माझ महला ५ ॥ (107-12)
माझ महला ५ ॥ (107-17)
माझ महला ५ ॥ (107-6)
माझ महला ५ ॥ (108-14)
माझ महला ५ ॥ (108-4)
माझ महला ५ ॥ (108-9)
माझ महला ५ ॥ (131-15)
माझ महला ५ ॥ (131-2)
माझ महला ५ ॥ (97-10)
माझ महला ५ ॥ (97-15)

माझ महला ५ ॥ (98-1)
माझ महला ५ ॥ (98-13)
माझ महला ५ ॥ (98-18)
माझ महला ५ ॥ (98-7)
माझ महला ५ ॥ (99-10)
माझ महला ५ ॥ (99-15)
माझ महला ५ ॥ (99-4)
माझ महला ५ घरु १ ॥ (130-10)
माझ महला ५ घरु २ ॥ (132-7)
माझ महला ५ घरु ३ ॥ (132-18)
माझ महला ५ चउपदे घरु १ ॥ (96-14)
माझ महला ५ दिन रैणि (136-14)
माटी अंधी सुरति समाई ॥ (100-3)
माटी एक अनेक भांति करि साजी साजनहारै ॥ (1350-2)
माटी एक भेख धरि नाना ता महि ब्रहमु पछाना ॥ (480-9)
माटी एक सगल संसारा ॥ (1128-2)
माटी कउ जलु दह दिस तिआगै ॥ (900-1)
माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति एही ॥१॥ (882-16)
माटी का ले देहुरा करिआ ॥ (913-8)
माटी की इह पुतरी जोरी किआ एह करम कमासि ॥ (1304-7)
माटी के करि देवी देवा तिसु आगै जीउ देही ॥ (332-12)
माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥ (487-5)
माटी ते जिनि साजिआ करि दुरलभ देह ॥ (812-12)
माटी फूली रूपु बिकारु ॥ (1187-14)
माटी महि जोति रखी निवाजि ॥ (862-15)
माटी माटी होई एक ॥ (885-13)
माटी सिउ माटी रली नागा उठि जाई ॥२॥ (809-14)
माठि गुंदाईं पटीआ भरीऐ माग संधूरे ॥ (558-3)
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥ (134-3)
माणकु मन महि मनु मारसी सचि न लागै कतु ॥ (992-4)
माणकु मुलि न पाईऐ लीजै चिति परोइ ॥२॥ (557-10)
माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ॥ (1075-14)
माणस का फलु घट महि सासु ॥ (1256-17)
माणस कूड़ा गरबु सची तुधु मणी ॥ (1283-7)
माणस खाणे करहि निवाज ॥ (471-17)
माणस जनमि सबदि चितु लाइआ ॥ (1065-5)
माणस जनमि हरि पाईऐ हरि रावण वेरा राम ॥ (844-17)

माणस जनमु दुल्मभु गुरमुखि पाइआ ॥ (751-17)
माणस जनमु दुल्मभु है जग महि खटिआ आइ ॥ (565-14)
माणस जनमु देह निस्तारहु ॥ (1401-11)
माणस जनमु पुंनि करि पाइआ बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु बिरथा जाई ॥ (493-14)
माणस जनमु वड पुंने पाइआ देह सु कंचन चंगड़ीआ ॥ (575-6)
माणस ते देवते भए धिआइआ नामु हरे ॥ (90-17)
माणस दाति न होवई तू दाता सारा ॥७॥ (1009-9)
माणस मूरति नानकु नामु ॥ (350-2)
माणस सेवा खरी दुहेली ॥ (1182-8)
माणसा किअहु दीबाणहु कोई नसि भजि निकलै हरि दीबाणहु कोई किथै जाइआ ॥ (591-14)
माणसु किआ वेचारा तिहु लोक सुणाइसी ॥ (730-4)
माणसु बपुड़ा किआ सालाही किआ तिस का मुहताजा ॥ रहाउ ॥ (608-5)
माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ ॥ (554-13)
माणिकू मोहि माउ डिंना धणी अपाहि ॥ (1098-10)
माणु ताणु अह्मबुधि हती री ॥ (739-8)
माणु ताणु तजि मोहु अंधेरा ॥ (102-13)
माणु ताणु सभु तूहै तूहै इकु नामु तेरा मै ओल्हा ॥१॥ (1211-11)
माणु निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा ॥ (396-13)
माणु महता तेजु आपणा आपि जरि ॥ (965-8)
माणु महतु कलिआणु हरि जसु संगि सुरजनु सो प्रभू ॥ (457-6)
माणु महतु नामु धनु पलै साचै सबदि समाणे ॥ रहाउ ॥ (596-19)
माणू घलै उठी चलै ॥ (1412-6)
माणूआ मंगि मंगि पैन्है खाइ ॥ (1241-1)
माणै रंग भोग बहु नारी ॥ (176-2)
माणो प्रभ माणो मेरे प्रभ का माणो ॥ (924-13)
मात गरभ तुम ही प्रतिपालक म्रित मंडल इक तुही ॥१॥ रहाउ ॥ (1215-8)
मात गरभ दुख सागरो पिआरे तह अपणा नामु जपाइआ ॥ (640-14)
मात गरभ महि अगनि न जोहै ॥ (868-7)
मात गरभ महि आपन सिमरनु दे तह तुम राखनहारे ॥ (613-16)
मात गरभ महि जिनि तू राखिआ ॥१॥ (913-8)
मात गरभ महि जिनि प्रतिपारिआ ॥ (1004-13)
मात गरभ महि जिनि प्रतिपालिआ ॥ (1071-13)
मात गरभ महि तुम ही पाला ॥ (132-2)
मात गरभ महि राखि निवाजिआ ॥ (1086-7)
मात गरभ महि हाथ दे राखिआ ॥ (805-12)
मात गरभ संकट ते छूट ॥ (914-11)
मात पिता कलत्र सुत बेली नाही बिनु हरि रस मुकति न कीना हे ॥१०॥ (1028-8)

मात पिता की रकतु निपंने मछी मासु न खांही ॥ (1289-19)
मात पिता कुट्मब सगल बनाए ॥ (1337-16)
मात पिता दइआ जिउ बाला ॥ (914-15)
मात पिता बंधप तूहै तू सरब निवासु ॥ (818-11)
मात पिता बंधप है सोई मनि हरि को अहिलाद ॥ (1226-17)
मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई ॥ (700-3)
मात पिता बनिता सुत स्मपति अंति न चलत संगात ॥ (1252-2)
मात पिता भाई अरु बंधप बूझन की सभ सूझ परी ॥ (1387-13)
मात पिता भाई नानक को सुखदाता हरि प्रान साइ ॥२॥२॥२१॥ (1208-12)
मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि ग्रिह की नारि ॥१॥ रहाउ ॥ (536-12)
मात पिता भाई सुत बंधप जीअ प्राण मनि भाणा राम ॥ (780-4)
मात पिता भाई सुत बंधप तिन का बलु है थोरा ॥ (499-6)
मात पिता भाई सुत बनिता कहहु कोऊ है का का ॥१॥ रहाउ ॥ (692-2)
मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना ॥ (684-18)
मात पिता भाई सुत बनिता तिन भीतरि प्रभू संजोइआ ॥ (77-9)
मात पिता भाई सुत बनिता हितु लागो सभ फन का ॥१॥ रहाउ ॥ (1253-17)
मात पिता भाई सुतु बनिता ॥ (1347-8)
मात पिता माइआ देह सि रोगी रोगी कुट्मब संजोगी ॥३॥ (1153-11)
मात पिता मीत भाई जन नानक हरि हरि जापि ॥४॥१॥१३॥ (1341-11)
मात पिता संजोगि उपाए रकतु बिंदु मिलि पिंडु करे ॥ (1013-16)
मात पिता साक अगले तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (49-7)
मात पिता साजन संत मेरे संत सहाई बीर ॥१॥ (978-18)
मात पिता सुआमि सजणु सभु जगतु बाल गोपाला ॥ (578-9)
मात पिता सुत नेहु घनेरा माइआ मोहु सबाई ॥ (75-13)
मात पिता सुत बंध जन हितु जा सिउ कीना ॥ (726-19)
मात पिता सुत बंधप भाई ॥ (805-17)
मात पिता सुत बंधप भाई जिनि इह स्रिसटि उपाई हे ॥५॥ (1071-16)
मात पिता सुत बंधपा कूड़े सभे साक ॥ (47-10)
मात पिता सुत बंधपो तूं मेरे प्राण अधार ॥ (203-10)
मात पिता सुत बंधु नराइणु ॥ (1151-4)
मात पिता सुत भाई खरे पिआरे जीउ डूबि मुए बिनु पाणी ॥ (246-1)
मात पिता सुत भाईआ साजन संगि परीति ॥ (70-19)
मात पिता सुत भ्रात मीत तिसु बिनु नही कोई ॥ (1318-3)
मात पिता सुत मीत भाई तिसु बिना नही कोइ ॥ (501-10)
मात पिता सुत मीत सुरिजन इसट बंधप जाणिआ ॥ (458-11)
मात पिता सुत साथि न माइआ ॥ (804-7)
मात पिता हरि प्रीतमु नेरा ॥ (1349-4)

मातर पितर तिआगि कै मनु संतन पाहि बेचाइओ ॥ (1230-18)
माता उपदेसै प्रहिलाद पिआरे ॥ (1133-4)
माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ (920-18)
माता कै मनि बहुतु बिगासु ॥१॥ (396-3)
माता खीवी सहु सोइ जिनि गोइ उठाली ॥३॥ (967-11)
माता जूठी पिता भी जूठा जूठे ही फल लागे ॥ (1195-5)
माता नरसिंघ का रूपु निवारु ॥ (1154-19)
माता पित भाई सुत चतुराई संगि न स्मपै नारे ॥ (437-11)
माता पिता कंठि लाइ राखै अनद सहजि तब खेलै ॥२॥ (1266-13)
माता पिता सभु हेतु है हेते पलचाई राम ॥ (571-11)
माता प्रीति करे पुतु खाइ ॥ (164-9)
माता बारिक देखि अनंद ॥ (1180-10)
माता भैसा अमुहा जाइ ॥ (326-5)
माता मति पिता संतोखु ॥ (151-13)
मातिआ हरि रस महि राते तिसु बहुड़ि न कबहू अउखीवना ॥६॥ (1019-4)
मातो हरि रंगि मातो ॥१॥ रहाउ ॥ (214-1)
मात्र बूंद ते धरि चकु फेरि ॥ (1187-9)
माथे तिलकु हथि माला बानां ॥ (1158-15)
माथे पीर सरीरि जलनि है करक करेजे माही ॥ (659-13)
माथै ऊभै जमु मारसी नानक मेलणु नामि ॥३॥ (1090-16)
माथै जो धुरि लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ ॥ (1413-6)
माथै त्रिकुटी द्रिसटि करूरि ॥ (394-13)
माथै भागु त पावउ संगु ॥ (391-9)
माधउ जल की पिआस न जाइ ॥ (323-17)
माधउ जा कउ है आस तुमारी ॥ (188-2)
माधउ दारुन दुखु सहिओ न जाइ ॥ (1194-15)
माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥ (486-15)
माधउ हरि हरि हरि मुखि कहीऐ ॥ (216-10)
माधवे ऐसी देहु बुझाई ॥ (609-5)
माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ॥ (657-18)
माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥ (658-4)
माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥ (658-18)
माधवे भजु दिन नित रैणी ॥ (743-18)
माधाणा परबतु करि नेत्रि बासकु सबदि रिड़किओनु ॥ (967-12)
माधो अबिदिआ हित कीन ॥ (486-7)
माधो कैसी बनै तुम संगे ॥ (656-14)
माधो साधू जन देहु मिलाइ ॥ (1178-5)

माधो हम ऐसे तू ऐसा ॥ (613-12)
माधौ तू ठाकुरु सिरि मोरा ॥ (613-17)
मान अभिमान मंधे सो सेवकु नाही ॥ (51-14)
मान तनु धनु प्रान प्रभ के सिमरत दुखु जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1300-14)
मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइ ॥१५६॥ (1372-17)
मान मोह अरु लोभ विकारा बीओ चीति न घालिओ ॥ (1000-1)
मान मोह खोए गुरि भरम ॥ (196-5)
मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिंद के गुन गावै ॥ (831-1)
मान मोह मद सगल बिआपी करि किरपा आपि निवारे ॥ (782-16)
मान मोह महा मद मोहत काम क्रोध कै खात ॥ (1120-12)
मान मोह मेर तेर बिबरजित एहु मारगु खंडे धार ॥३॥ (534-13)
मान मोही पंच दोही उरझि निकटि बसिओ ताकी सरनि साधूआ दूत संगु निवारि ॥१॥ रहाउ ॥ (1307-3)
मान मोहु न बुझत त्रिसना काल ग्रस संसार ॥१॥ रहाउ ॥ (1229-3)
मान सरोवरि करि इसनानु ॥ (1162-14)
मानकु पाइओ रे पाइओ हरि पूरा पाइआ था ॥ (1002-4)
माननि मानु वञाईऐ हरि चरणी लागो राम ॥ (848-2)
मानस की कहु केतक बात ॥ (1149-11)
मानस को जनमु लीनु सिमरनु नह निमख कीनु ॥ (1352-12)
मानस जतन करत बहु भाति ॥ (286-1)
मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की ॥ (411-7)
मानस जनम का एही लाहु ॥१॥ रहाउ ॥ (1159-8)
मानस जनमि गुर भगति द्रिड़ाए ॥ (1061-8)
मानस जनमि सतिगुरू न सेविआ बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (1334-10)
मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (219-15)
मानस जनमु दीओ जिह ठाकुरि सो तै किउ बिसराइओ ॥ (902-10)
मानस ते देवते भए सची भगति जिसु देइ ॥ (850-14)
मानस देह गुर बचनी पाइआ सभु आतम रामु पछाता ॥ (953-7)
मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ॥३॥३॥ (632-3)
मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे ॥ (220-15)
मानसु का को बपुरो भाई जा को राखा राम ॥१॥ रहाउ ॥ (1216-14)
मानसु बपुरा मूसा कीनो मीचु बिलईआ खईहै रे ॥१॥ (855-8)
मानहि त एकु अलेखु ठाकुरु जिनहि सभ कल धारीआ ॥ (248-5)
मानहि ब्रहमादिक रुद्रादिक काल का कालु निरंजन जचना ॥ (1403-19)
मानि आगिआ सरब सुख पाए दूखह ठाउ गवाइओ ॥ (209-10)
मानि लेतु जिसु सिरजनहारु ॥४॥९४॥१६३॥ (198-17)
मानी तूं राम कै दरि मानी ॥ (1228-13)
मानु अभिमानु दोऊ समाने मसतकु डारि गुर पागिओ ॥ (215-1)

मानु अभिमानु मोहु तजि नानक संतह संगि उधारी ॥२॥३॥५॥ (1120-6)
मानु अभिमानु हउ सगल तिआगउ जो प्रिअ बात सुनाई ॥३॥ (1207-4)
मानु करउ अभिमानै बोलउ भूल चूक तेरी प्रिअ चिरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1209-3)
मानु करउ तुधु ऊपरे मेरे प्रीतम पिआरे ॥ (809-2)
मानु छोडि गुर चरणी लागु ॥४॥८॥ (372-19)
मानु तानु तजि सिआनप सरणि नानकु आइआ ॥४॥१॥१५२॥ (408-10)
मानु तिआगि करि भगति ठगउरी मोहह साधू मंतै ॥ (249-10)
मानु तिआगि हरि चरनी लागउ तिसु प्रभ अंचलु गहीऐ ॥ (531-13)
मानु न कीजै सरणि परीजै करै सु भला मनाईऐ ॥ (612-3)
मानु न कीजै सरणि परीजै दरसन कउ बलिहारी ॥ (455-2)
मानु महतु तुम्हारै ऊपरि तुम्हरी ओट तुम्हारी सरना ॥१॥ रहाउ ॥ (1299-16)
मानु महतु न सकति ही काई साधा दासी थीओ ॥ (802-19)
मानु महतु नानक प्रभु तेरे ॥४॥४०॥१०९॥ (188-1)
मानु मांगउ तानु मांगउ धनु लखमी सुत देह ॥१॥ (1307-17)
मानु मानु मानु तिआगि मिरतु मिरतु निकटि निकटि सदा हई ॥ (1308-4)
मानु मोहु तिआगि छोडिओ तउ नानक हरि जीउ भेटना ॥२॥२॥३५॥ (1305-3)
मानु मोहु बिकारु तजीऐ अरपि तनु धनु इहु मना ॥ (544-10)
मानुख कउ जाचत स्रमु पाईऐ प्रभ कै सिमरनि मोख ॥१॥ रहाउ ॥ (682-16)
मानुख का करि रूपु न जानु ॥ (895-6)
मानुख की कहु केत चलाई ॥२॥ (390-3)
मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥ (283-17)
मानुख कै किछु नाही हाथि ॥ (281-4)
मानुख बनु तिनु पसू पंखी सगल तुझहि अराधते ॥ (455-15)
मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥२॥ (486-8)
मानुखु कथै कथि लोक सुनावै जो बोलै सो न बीचारे ॥ (981-16)
मानुखु बिनु बूझे बिरथा आइआ ॥ (712-12)
माने हुकमु सीझै दरि सोइ ॥६॥ (832-10)
मानै बासै नाना भेदी भरमतु है संसारी ॥२॥ (1350-19)
मानै हाटु मानै पाटु मानै है पासारी ॥ (1350-18)
मानै हुकमु तजै अभिमानै ॥ (737-4)
मानै हुकमु सभे गुण गिआन ॥ (944-7)
मानै हुकमु सु दरगह पैझै साचि मिलाइ समाइदा ॥१३॥ (1037-6)
मानै हुकमु सोहै दरि साचै आकी मरहि अफारी ॥ (992-6)
मानौ सभ सुख नउ निधि ता कै सहजि सहजि जसु बोलै देव ॥ रहाउ ॥ (857-14)
मामे तै मामाणीआ भाइर बाप न माउ ॥ (1015-8)
माया चित भरमेण इसट मित्रेखु बांधवह ॥ (1360-9)
माया मोह भरम पै भूले सुत दारा सिउ प्रीति लगाई ॥ (1406-9)

मारकंडे ते को अधिकाई जिनि त्रिण धरि मूंड बलाए ॥१॥ (692-18)
मारग पाए उदिआन महि गुरि दसे भेत ॥१॥ (810-8)
मारगि चलत सगल दुख गए ॥ (201-17)
मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥१॥ (386-7)
मारगि चले तिन्ही सुखु पाइआ जिन्ह सिउ गोसटि से तरे ॥ (1208-14)
मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥ (1116-7)
मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥२॥ (1116-10)
मारगि मोती बीथरे अंधा निकसिओ आइ ॥ (1370-10)
मारगु छोडि अमारगि पाइ ॥ (1165-3)
मारगु पंथु न जाणउ विखड़ा किउ पाईऐ पिरु पारे ॥ (1111-18)
मारगु प्रभ का हरि कीआ संतन संगि जाता ॥ (1122-5)
मारगु प्रभ को संति बताइओ द्रिड़ी नानक दास भगति हरि जसूआ ॥४॥६॥१२७॥ (206-17)
मारगु बिखड़ा साधि गुरमुखि हरि दरगह सोभा पाईऐ ॥ (542-5)
मारगु बिखमु डरावणा किउ तरीऐ तारी ॥ (1248-1)
मारगु मुकता हउमै मारि ॥१॥ (1274-18)
मारगु संति बताइआ तूटे जम जाल ॥१॥ (819-3)
मारण पाहि हराम महि होइ हलालु न जाइ ॥ (141-2)
मारफति मनु मारहु अबदाला मिलहु हकीकति जितु फिरि न मरा ॥३॥ (1083-16)
मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥ (693-9)
मारहि राखहि एकु तू बीजउ नाही थाउ ॥१॥ (1010-5)
मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना ॥१॥ (155-11)
मारि आपे जीवालदा अंतरि बाहरि साथि ॥ (48-2)
मारिआ सचै पातिसाहि वेखि धुरि करमचा ॥ (1099-16)
मारिओ कंटकु कालु गरजि धावतु लीओ बरजि पंच भूत एक घरि राखि ले समजि ॥ (1391-3)
मारु मारु स्रपनी निरमल जलि पैठी ॥ (480-17)
मारू ॥ (1106-15)
मारू अंजुली महला ५ घरु ७ (1007-14)
मारू असटपदीआ महला १ घरु १ (1008-16)
मारू कबीर जीउ ॥ (1105-14)
मारू काफी महला १ घरु २ ॥ (1014-15)
मारू ते सीतलु करे मनूरहु कंचनु होइ ॥ (994-16)
मारू मसतअंग मेवारा ॥ (1430-6)
मारू महला १ ॥ (1009-11)
मारू महला १ ॥ (1010-16)
मारू महला १ ॥ (1010-4)
मारू महला १ ॥ (1011-9)
मारू महला १ ॥ (1012-14)

मारू महला १ ॥ (1012-3)
मारू महला १ ॥ (1013-16)
मारू महला १ ॥ (1015-14)
मारू महला १ ॥ (1015-5)
मारू महला १ ॥ (1021-10)
मारू महला १ ॥ (1022-10)
मारू महला १ ॥ (1023-11)
मारू महला १ ॥ (1024-12)
मारू महला १ ॥ (1025-12)
मारू महला १ ॥ (1026-14)
मारू महला १ ॥ (1027-15)
मारू महला १ ॥ (1028-18)
मारू महला १ ॥ (1030-2)
मारू महला १ ॥ (1031-5)
मारू महला १ ॥ (1032-8)
मारू महला १ ॥ (1034-9)
मारू महला १ ॥ (1035-9)
मारू महला १ ॥ (1036-10)
मारू महला १ ॥ (1037-10)
मारू महला १ ॥ (1038-13)
मारू महला १ ॥ (1039-14)
मारू महला १ ॥ (1040-13)
मारू महला १ ॥ (1041-14)
मारू महला १ ॥ (1042-15)
मारू महला १ ॥ (989-10)
मारू महला १ ॥ (990-15)
मारू महला १ ॥ (990-8)
मारू महला १ ॥ (991-1)
मारू महला १ ॥ (991-11)
मारू महला १ ॥ (991-16)
मारू महला १ ॥ (991-6)
मारू महला १ ॥ (992-12)
मारू महला १ ॥ (992-3)
मारू महला १ घरु १ ॥ (990-2)
मारू महला १ दखणी ॥ (1033-8)
मारू महला ३ ॥ (1044-18)
मारू महला ३ ॥ (1045-19)

मारू महला ३ ॥ (1047-2)
मारू महला ३ ॥ (1048-3)
मारू महला ३ ॥ (1049-4)
मारू महला ३ ॥ (1050-5)
मारू महला ३ ॥ (1051-6)
मारू महला ३ ॥ (1053-8)
मारू महला ३ ॥ (1054-8)
मारू महला ३ ॥ (1055-9)
मारू महला ३ ॥ (1056-10)
मारू महला ३ ॥ (1057-11)
मारू महला ३ ॥ (1058-13)
मारू महला ३ ॥ (1059-13)
मारू महला ३ ॥ (1060-14)
मारू महला ३ ॥ (1061-15)
मारू महला ३ ॥ (1062-16)
मारू महला ३ ॥ (1063-17)
मारू महला ३ ॥ (1064-18)
मारू महला ३ ॥ (1066-1)
मारू महला ३ ॥ (1067-2)
मारू महला ३ ॥ (1068-3)
मारू महला ३ ॥ (993-18)
मारू महला ३ ॥ (994-10)
मारू महला ३ ॥ (994-16)
मारू महला ३ ॥ (994-5)
मारू महला ३ घरु १ (993-11)
मारू महला ३ घरु ५ असटपदी (1016-4)
मारू महला ४ ॥ (1070-7)
मारू महला ४ ॥ (995-11)
मारू महला ४ ॥ (996-10)
मारू महला ४ ॥ (996-17)
मारू महला ४ ॥ (997-8)
मारू महला ४ ॥ (998-7)
मारू महला ४ घरु २ (995-3)
मारू महला ४ घरु ३ (996-1)
मारू महला ४ घरु ५ (997-17)
मारू महला ५ (1085-16)
मारू महला ५ ॥ (1000-1)

मारू महला ५ ॥ (1000-12)
मारू महला ५ ॥ (1000-19)
मारू महला ५ ॥ (1000-7)
मारू महला ५ ॥ (1001-14)
मारू महला ५ ॥ (1001-3)
मारू महला ५ ॥ (1002-15)
मारू महला ५ ॥ (1002-19)
मारू महला ५ ॥ (1002-3)
मारू महला ५ ॥ (1002-9)
मारू महला ५ ॥ (1003-9)
मारू महला ५ ॥ (1004-12)
मारू महला ५ ॥ (1004-5)
मारू महला ५ ॥ (1005-10)
मारू महला ५ ॥ (1005-13)
मारू महला ५ ॥ (1005-16)
मारू महला ५ ॥ (1006-12)
मारू महला ५ ॥ (1006-15)
मारू महला ५ ॥ (1006-19)
मारू महला ५ ॥ (1006-2)
मारू महला ५ ॥ (1007-10)
मारू महला ५ ॥ (1007-3)
मारू महला ५ ॥ (1007-7)
मारू महला ५ ॥ (1008-1)
मारू महला ५ ॥ (1017-17)
मारू महला ५ ॥ (1017-8)
मारू महला ५ ॥ (1018-14)
मारू महला ५ ॥ (1019-1)
मारू महला ५ ॥ (1019-18)
मारू महला ५ ॥ (1077-17)
मारू महला ५ ॥ (1080-1)
मारू महला ५ ॥ (1082-5)
मारू महला ५ ॥ (1083-13)
मारू महला ५ ॥ (1084-13)
मारू महला ५ ॥ (999-14)
मारू महला ५ ॥ (999-3)
मारू महला ५ ॥ (999-9)
मारू महला ५ घरु २ (998-16)

मारू महला ५ घरु ३ (1001-7)
मारू महला ५ घरु ३ असटपदीआ (1017-1)
मारू महला ५ घरु ४ (1003-16)
मारू महला ५ घरु ४ असटपदीआ (1018-9)
मारू महला ५ घरु ६ दुपदे (1006-8)
मारू महला ५ घरु ८ अंजुलीआ (1019-7)
मारू महला ५ सोलहे (1074-18)
मारू महला ९ ॥ (1008-12)
मारू महला ९ ॥ (1008-5)
मारू महला ९ ॥ (1008-8)
मारू मारण जो गए मारि न सकहि गवार ॥ (1089-18)
मारू मीहि न त्रिपतिआ अगी लहै न भुख ॥ (148-14)
मारू वार महला ३ (1086-18)
मारू वार महला ५ डखणे मः ५ (1094-7)
मारू सोलहे ३ ॥ (1052-7)
मारू सोलहे महला १ (1020-10)
मारू सोलहे महला ३ (1043-17)
मारू सोलहे महला ४ (1069-4)
मारू सोलहे महला ५ (1071-10)
मारू सोलहे महला ५ (1072-12)
मारू सोलहे महला ५ (1073-15)
मारू सोलहे महला ५ (1075-12)
मारू सोलहे महला ५ (1076-16)
मारू सोलहे महला ५ (1078-18)
मारू सोलहे महला ५ (1081-4)
मारे पंच अपुनै वसि कीए ॥ (415-15)
मारे पंच बिखादीआ ॥ (210-17)
मारेहिसु वे जन हउमै बिखिआ जिनि हरि प्रभ मिलण न दितीआ ॥ (776-14)
मारै एकहि तजि जाइ घणै ॥२१॥ (341-9)
मारै न राखै अवरु न कोइ ॥ (286-1)
मारै न राखै दूजा कोइ ॥२॥ (1139-18)
मारै राखै एको आपि ॥ (281-4)
मारै राखै एको सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (192-2)
माल कै माणै रूप की सोभा इतु बिधी जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (24-3)
माल राग कउसक संगि लाई ॥ (1430-5)
माला तिलकु सोच पाक होती ॥ (237-11)
माला फेरै मंगै बिभूत ॥ (888-2)

मालि दुलीचै बैठी ले मिरतकु नैन दिखालनु धाइआ रे ॥३॥ (381-19)
मालिनि भूली जगु भुलाना हम भुलाने नाहि ॥ (479-9)
माली के घर केल आछै केल बेल तेल गो ॥३॥ (718-18)
माली गउड़ा बाणी भगत नामदेव जी की (988-9)
माली गउड़ा महला ४ ॥ (984-10)
माली गउड़ा महला ४ ॥ (985-1)
माली गउड़ा महला ४ ॥ (985-13)
माली गउड़ा महला ४ ॥ (985-19)
माली गउड़ा महला ४ ॥ (985-7)
माली गउड़ा महला ५ (986-7)
माली गउड़ा महला ५ ॥ (986-13)
माली गउड़ा महला ५ ॥ (986-18)
माली गउड़ा महला ५ ॥ (987-11)
माली गउड़ा महला ५ ॥ (987-5)
माली गउड़ा महला ५ ॥ (988-2)
माली गउड़ा महला ५ ॥ (988-5)
माली गउड़ा महला ५ दुपदे (987-17)
मालु खजाना थेहु घरु हरि के चरण निधान ॥ (218-18)
मालु खजीना सुत भ्रात मीत सभहूं ते पिआरा राम राजे ॥ (454-6)
मालु जोबनु छोडि वैसी रहिओ पैनणु खाइआ ॥ (460-1)
मालु जोबनु धनु छोडि वञेसा ॥ (1020-1)
मालु धनु जोरिआ भइआ पराइआ ॥ (792-19)
मालु मिलख भंडार नामु अनंत धरा ॥ (925-5)
मालु लेउ तउ दोजकि परउ ॥ (1166-1)
मालु हमारा अखूटु अबेचलु ॥२॥ (1141-12)
मासहु निमे मासहु जमे हम मासै के भांडे ॥ (1290-1)
मासहु निमे मासहु जमे हम मासै के भांडे ॥ (1290-4)
मासहु बाहरि कढिआ ममा मासु गिरासु ॥ (1289-12)
मासहु ही मासु ऊपजै मासहु सभो साकु ॥ (1289-14)
मासु छोडि बैसि नकु पकड़हि राती माणस खाणे ॥ (1289-17)
मासु पुराणी मासु कतेबीं चहु जुगि मासु कमाणा ॥ (1290-4)
मासु मासु करि मूरखु झगड़े गिआनु धिआनु नही जाणै ॥ (1289-15)
माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥ (136-12)
माहा माह मुमारखी चड़िआ सदा बसंतु ॥ (1168-4)
माहा रुती आवणा वेखहु करम कमाइ ॥ (1168-8)
माहा रुती आवहि वार वार ॥ (842-2)
माहा रुती महि सद बसंतु ॥ (1172-4)

माहा रुती सभ तूं घड़ी मूरत वीचारा ॥ (140-14)
माहि निरंजनु त्रिभवण धणी ॥ (974-18)
माहु जेठु भला प्रीतमु किउ बिसरै ॥ (1108-6)
माहु पखु किहु चलै नाही घड़ी मुहतु किछु हंढै ॥ (955-19)
मिटंत सगल सिमरंत हरि नाम नानक जैसे पावक कासट भसमं करोति ॥१८॥ (1355-13)
मिटंति तत्रागत भरम मोहं ॥ (1354-12)
मिटहि अघ तेरे जनम जनम के कवनु बपुरो जामु ॥१॥ रहाउ ॥ (1006-10)
मिटहि कमाणे पाप चिराणे साधसंगति मिलि मुआ जीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (683-14)
मिटहि कमाते अवगुण मेरे ॥ (1080-6)
मिटहि कलेस त्रास सभ नासै साधसंगि हितु लावै ॥१॥ रहाउ ॥ (1218-5)
मिटहि कलेस सुख सहजि निवासु ॥ (1148-13)
मिटहि कलेस सुखी होइ रहीऐ ॥ (183-16)
मिटहि कोटि अघ निमख जसु गाउ ॥ (863-1)
मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥ (281-8)
मिटाने सभि कलि कलेस ॥ (898-12)
मिटि गइआ दूखु बिसारी चिंता ॥ (388-14)
मिटि गई गणत बिनासिउ संसा ॥ (390-6)
मिटि गई चिंत पुनी मन आसा ॥ (191-10)
मिटि गई चिंता सिमरि अनंता सागरु तरिआ भाई ॥१॥ (619-6)
मिटि गई भाल मनु सहजि समाना ॥ (389-19)
मिटि गई भूख महा बिकराल ॥२॥ (389-18)
मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥ (278-5)
मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥ (295-13)
मिटिआ अधेरा दूखु नाठा अमिउ हरि रसु चोइआ ॥ (542-13)
मिटिआ आपु पए सरणाई गुरमुखि नानक जगतु तराइआ ॥४॥१॥१४॥ (1139-2)
मिटिआ आवा गउणु जां पूरा पाइआ ॥ (1362-3)
मिटिआ सोगु महा अनंदु थीआ ॥ (396-4)
मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ॥२॥२॥११९॥ (204-8)
मिटिओ दुखु अरु सगल संताप ॥ (1143-3)
मिटी उपाधि भइआ सुखु साचा अंतरजामी सिमरिआ जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (826-14)
मिटी तिआस अगिआन अंधेरे ॥ (387-8)
मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥५७॥ (1380-19)
मिटी बिआधि सरब सुख होए हरि गुण सदा बीचारि ॥१॥ (500-17)
मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥ (466-5)
मिटे अंदेसिआ हां ॥ (410-4)
मिटे अंदेसे नानक सुखु पाइआ ॥४॥६१॥१३०॥ (192-4)
मिटे अंधारे तजे बिकारे ठाकुर सिउ मनु माना ॥ (780-1)

मिटे अंधेर भए परगासा ॥ (1143-5)
मिटे उपद्रह मन ते बैर ॥२॥ (395-6)
मिटे कलेस त्रिसन सभ बूझी पारब्रहमु मनि धिआइआ ॥ (1268-15)
मिटे जंजाल होए प्रभ दइआल ॥ (897-10)
मिटे दूख कलिआण कीरतन बहुड़ि जोनि न पावा ॥ (453-15)
मिटे विसूरे उतरी चिंत ॥२॥ (190-10)
मिटे सगल भै त्रास ॥ (896-8)
मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै परगासु ॥ (639-19)
मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥ (293-3)
मिठ बोलड़ा जी हरि सजणु सुआमी मोरा ॥ (784-12)
मिठ रसु खाइ सु रोगि भरीजै कंद मूलि सुखु नाही ॥ (1153-15)
मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥ (470-13)
मिठा कउड़ा दोवै रोग ॥ (1243-7)
मिठा करि कै कउड़ा खाइआ ॥ (1243-10)
मिठा करि कै खाइआ कउड़ा उपजिआ सादु ॥ (50-3)
मिठा करि कै खाइआ पिआरे तिनि तनि कीता रोगु ॥ (641-1)
मिठा करि कै खाइआ बहु सादहु वधिआ रोगु ॥ (785-7)
मिठा खाधा चिति न आवै कउड़तणु धाइ जाइ ॥ (1243-7)
मिठा बोलहि निवि चलहि सेजै रवै भतारु ॥ (31-12)
मिठा सो जो भावदा सजणु सो जि रासि ॥ (517-5)
मिठै मखु मुआ किउ लए ओडारी ॥ (460-5)
मित का चितु अनूपु मरमु न जानीऐ ॥ (1362-13)
मिति नही पाईऐ अंतु न लहीऐ मनु तरसै चरनारे ॥३॥ (738-7)
मिति नाही जा का बिसथारु ॥ (1235-18)
मिति नाही ब्रहम अबिनास ॥२॥ (867-9)
मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए ॥ (923-13)
मित्रं तजंति सत्रं द्रिड़ंति अनिक माया बिस्तीरनह ॥ (1358-11)
मित्र घणेरे करि थकी मेरा दुखु काटै कोइ ॥ (37-7)
मित्र न इठ धन रूपहीण किछु साकु न सिंना ॥ (707-11)
मित्र न पुत्र कलत्र साजन सख उलटत जात बिरख की छांरहु ॥ (1388-4)
मित्र पुत्र कलत्र सुर रिद तीनि ताप जलंत ॥ (502-10)
मित्र सत्र पेखि समतु बीचारिओ सगल स्मभाखन जापु ॥१॥ (1217-18)
मित्र सत्रु जा कै एक समानै ॥ (392-15)
मित्र सत्रु न कछू जानै सरब जीअ समत ॥४॥ (1018-3)
मित्र सत्रु सभ एक समाने जोग जुगति नीसानी ॥२॥ (496-18)
मित्रु पिआरा नानक जी मै छडि गवाइआ रंगि कसुमभै भुली ॥ (963-11)
मिथन मनोरथ सुपन आनंद उलास मनि मुखि सति कहे ॥२॥ (406-16)

मिथन मोह अगनि सोक सागर ॥ (760-2)
मिथन मोह दुरंत आसा झूठु सरपर मानु ॥१॥ (1121-7)
मिथन मोहरीआ ॥ (537-5)
मिथन मोहारा झूठु पसारा ॥ (1077-18)
मिथनी बिसथारु ॥ (1229-11)
मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥ (268-18)
मिथिआ करि माइआ तजी सुख सहज बीचारि ॥ (857-9)
मिथिआ कापर सुगंध चतुराई मिथिआ भोजन पान ॥१॥ (1215-16)
मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥ (268-16)
मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥ (269-1)
मिथिआ जनमु साकत संसारा ॥ (354-2)
मिथिआ जिहबा अवरें काम ॥ (1163-12)
मिथिआ तन नही परउपकारा ॥ (269-2)
मिथिआ तनु धनु कुट्मबु सबाइआ ॥ (268-15)
मिथिआ तनु साचो करि मानिओ इह बिधि आपु बंधावै ॥ (1231-17)
मिथिआ दूजा भाउ धड़े बहि पावै ॥ (366-9)
मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु ॥ (268-17)
मिथिआ नाही रसना परस ॥ (274-3)
मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ॥ (269-1)
मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥ (269-2)
मिथिआ भरमि भरमि बहु भ्रमिआ लुबधो पुत्र कलत्र मोह प्रीति ॥ (1295-17)
मिथिआ भरमु अरु सुपन मनोरथ सति पदारथु जानिआ ॥ (485-4)
मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥ (269-2)
मिथिआ मोह बंधहि नित पारच ॥१॥ (743-17)
मिथिआ मोहि मगनु थी रहिआ झूठ संगि लपटाना ॥ (777-8)
मिथिआ मोहु संसारु झूठा विणसणा ॥२॥ (399-5)
मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता ॥ (268-17)
मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥ (268-17)
मिथिआ रसना नित उठि भाखै ॥ (1151-11)
मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥ (269-1)
मिथिआ राज जोबन अरु उमरे मीर मलक अरु खान ॥ (1215-16)
मिथिआ राज जोबन धन माल ॥ (268-16)
मिथिआ लोभु न उतरै सूलु ॥३॥ (899-12)
मिथिआ लोभु नाही घरि वासा लबि पापि पछुताइदा ॥१५॥ (1037-8)
मिथिआ वसतु सति करि मानी ॥ (1004-17)
मिथिआ संगि कूड़ि लपटाइओ उरझि परिओ कुसमांही ॥ (1207-10)
मिथिआ संगि संगि लपटाए मोह माइआ करि बाधे ॥ (402-17)

मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥ (268-19)
मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥ (268-16)
मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥ (268-19)
मिथ्यंत देहं खीणंत बलनं ॥ (1354-2)
मिरगु मरै सहि अपुना कीना ॥ (225-18)
मिरत मोहं अलप बुध्यं रचंति बनिता बिनोद साहं ॥ (1354-17)
मिरत लोक पइआल समीपत असथिर थानु जिसु है अभगा ॥१२॥ (1083-1)
मिरतक कउ जीवालनहार ॥ (283-10)
मिरतक कउ पाइओ तनि सासा बिछुरत आनि मिलाइआ ॥ (614-14)
मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥१॥ (253-8)
मिरतक देह साधसंग बिहूना ॥ (190-16)
मिरतक पिंडि पद मद ना अहिनिसि एकु अगिआन सु नागा ॥ (93-2)
मिरतक फास गलै सिरि पैरे ॥३॥ (806-4)
मिरतक भए दसै बंद छूटे मित्र भाई सभ छोरे ॥ (480-15)
मिरतु दूख सूख लिखि पाए ॥ (1086-13)
मिरतु न आवी चिति तिसु अहिनिसि भोगै भोगु ॥ (71-2)
मिरतु नरकु असथान बिखड़े बिखु न पोहै ताहि ॥४॥ (1017-12)
मिरतु मंजार पसारि मुखु निरखत भुंचत भुगति भूख भुखना ॥ (1387-17)
मिरतु हसै सिर ऊपरे पसूआ नही बूझै ॥ (809-12)
मिलउ गुपाल नीसानु बजाई ॥३॥ (1164-4)
मिलउ परीतम सुआमी अपुने सगले दूख हरउ रे ॥ (383-14)
मिलउ संतन कै संगि मोहि उधारि लेहु ॥ (457-16)
मिलउगी दइआल पंच सबद वजाई ॥३॥ (1128-15)
मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥ (1293-16)
मिलत मिलत मिलत मिलि रहिआ नानक कहणु न जाए ॥४॥६॥ (884-11)
मिलत संगि पापिसट तन होए दुरगादि ॥२॥ (810-5)
मिलत संगि भइओ मनु निरमलु गुरि पूरै लै खिन महि तारे ॥१॥ रहाउ ॥ (379-4)
मिलत संगि सभि भ्रम मिटे गति भई हमारी ॥१॥ (810-13)
मिलत सांति उपजै दुरतु दूरंतरि नासै ॥ (1397-8)
मिलदिआ ढिल न होवई जे नीअति रासि करे ॥१॥ (594-7)
मिलन कउ करउ उपाव किछु हमारा नह चलै राम ॥ (542-19)
मिलबे की महिमा बरनि न साकउ नानक परै परीला ॥२॥४॥१३॥ (498-18)
मिलहु पिआरे जीआ ॥ (207-8)
मिलि आए नगर महा जना गुर सतिगुर ओट गही ॥ (1117-2)
मिलि आए नगर महा जना गुर सतिगुर ओट गही ॥६॥४॥१०॥ (1117-6)
मिलि इकत्र होए सहजि ढोए मनि प्रीति उपजी माञीआ ॥ (846-2)
मिलि एकत्र वसहि दिनु राती प्रिउ दे धनहि दिलासा हे ॥२॥ (1072-14)

मिलि कुसल सेती घरि आए ॥ (627-15)
मिलि कै करह कहाणीआ सम्रथ कंत कीआह ॥ (17-17)
मिलि गावह गुण अगम अपारे ॥ (104-15)
मिलि गावहि संत जना प्रभ का जैकारो राम ॥ (545-4)
मिलि गुर संगति पावउ पारु ॥३॥ (353-10)
मिलि गोपाल गोबिंद न कबहू झूरीऐ ॥ (708-19)
मिलि जलु जलहि खटाना राम ॥ (578-2)
मिलि जोति जोती ओति पोती हरि नामु सभि रस भोगो ॥ (846-3)
मिलि नानक अंगद अमर गुर गुरु रामदासु हरि पहि गयउ ॥ (1409-14)
मिलि नारी सतसंगि मंगलु गावीआ ॥ (964-7)
मिलि पंचहु नही सहसा चुकाइआ ॥ (621-7)
मिलि पाणी जिउ हरे बूट ॥ (1181-13)
मिलि पाथर की करही सेव ॥३॥ (324-14)
मिलि पारस कंचनु होइआ ॥ (657-12)
मिलि प्रीतम अपणे सदा रंगु माणे सचै सबदि सुभाखिआ ॥ (440-2)
मिलि प्रीतम जिउ होत अनंदा तिउ हरि रंगि मनु रंगीना जीउ ॥३॥ (100-16)
मिलि प्रीतम तिनी धिआइआ सचै प्रेमि पिआरु ॥ (587-12)
मिलि प्रीतम दुखु कटिआ सबदि मिलावा होइ ॥ (37-7)
मिलि प्रीतम सचे गुण गावहि हरि दरि सोभा पावणिआ ॥३॥ (113-6)
मिलि प्रीतम सदा सुखु पाए ॥१॥ (798-3)
मिलि प्रीतम सदा सुखु पावै ॥२॥ (363-9)
मिलि प्रीतम सबदि सुखु पाए ॥ (1044-5)
मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ (158-8)
मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ (665-7)
मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सगल गुणा गलि हारु ॥ (937-13)
मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ (549-5)
मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सोभावंती नारि ॥१५॥ (755-16)
मिलि प्रीतम सुखु पाए सचि समाए सचु वरतै सभ थाई ॥ (770-8)
मिलि प्रेम रहणा हरि नामु गहणा प्रिअ बचन मीठे भाणे ॥ (544-14)
मिलि ब्रहम जोती ओति पोती उदकु उदकि समाइआ ॥ (545-11)
मिलि भजीऐ साधसंगि मेरे मीत ॥१॥ रहाउ ॥ (296-16)
मिलि माइआ सुरति गवाई ॥१॥ (989-11)
मिलि मात पिता पिंडु कमाइआ ॥ (989-10)
मिलि मिलि खावहि संत सगल कउ दीजई ॥ (1363-13)
मिलि रहीऐ प्रभ साध जना मिलि हरि कीरतनु सुनीऐ राम ॥ (926-2)
मिलि राजन राम निबेरा ॥१॥ (621-7)
मिलि वर नारी मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ (499-5)

मिलि वरु नारी मंगलु गाइआ ॥ (242-16)
मिलि संगति तजि अभिमान कहु नानक पाए है परम निधान ॥२॥१॥३४॥ (535-8)
मिलि संगति धुरि करम लिखिओ ॥१॥ (241-9)
मिलि संगति मनि नामु वसाई ॥ (95-19)
मिलि संगति सरधा ऊपजै गुर सबदी हरि रसु चाखु ॥ (997-8)
मिलि संगति साधू उबरे गुर का सबदु कमाइ ॥६॥ (65-17)
मिलि संगति साधू मीत ॥ (669-7)
मिलि संगति हरि रंगु पाइआ जन नानक मनि तनि रंङु ॥४॥३॥ (732-5)
मिलि संगती गुन गावनो ॥१॥ (801-3)
मिलि संगि सोहे देखि मोहे पुरबि लिखिआ पाइआ ॥ (1278-13)
मिलि संजोगि हुकमि तूं आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (188-10)
मिलि संत आए प्रभ धिआए बणे अचरज जाञीआं ॥ (846-2)
मिलि संत गावहि खसम भावहि हरि प्रेम रस रंगि भिंनीआ ॥ (545-4)
मिलि संत जना रंगु माणिह रलीआ जीउ ॥ (173-7)
मिलि संत जना हरि पाइआ नानक सतसंगा ॥३॥ (449-5)
मिलि संत नानक जागिआ ॥२॥५॥२७॥ (1272-13)
मिलि संत सभा मनु मांजीऐ भाई हरि कै नामि निवासु ॥ (639-18)
मिलि संतसंगति आराधिआ हरि घटि घटे डीठा राम राजे ॥ (453-18)
मिलि सखीआ पुछहि कहु कंत नीसाणी ॥ (459-12)
मिलि सतसंगति कीजै हरि गोसटि साधू सिउ गोसटि हरि प्रेम रसाइणु राम नामु रसाइणु हरि राम नाम राम रमहु रे ॥१॥ (1118-12)
मिलि सतसंगति खोजु दसाई विचि संगति हरि प्रभु वसै जीउ ॥२॥ (94-12)
मिलि सतसंगति नामु सलाहहु आतम रामु सखाई हे ॥७॥ (1026-1)
मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ आतम रामु रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (1198-8)
मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ कढि माखन के गटकारे ॥२॥ (982-18)
मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ मै हिरड पलास संगि हरि बुहीआ ॥१॥ (834-1)
मिलि सतसंगति लधा हरि सजणु हउ सतिगुर विटहु घुमाईआ जीउ ॥१॥ (96-6)
मिलि सतसंगति संगि गुराहा ॥ (699-14)
मिलि सतसंगति हरि गुण गाए जगु भउजलु दुतरु तरीऐ जीउ ॥१॥ (95-1)
मिलि सतसंगति हरि नामु धिआईऐ ॥ (96-4)
मिलि सतसंगति हरि पाईऐ गुरमुखि हरि लिव लाइ ॥ (22-13)
मिलि सतसंगि बोली हरि बाणी ॥ (95-8)
मिलि सतिगुर जी मंगलु गाइआ राम ॥ (576-10)
मिलि सतिगुर धनु पूरा पाइआ ॥१॥ (375-13)
मिलि सतिगुर निरमलु होइआ बिखु हउमै गइआ बिलाइ ॥ (1415-7)
मिलि सतिगुर निसतारा ॥२॥ (1004-1)
मिलि सतिगुर सभि काज सवार ॥ (867-5)

मिलि सतिगुर सभु दुखु गइआ हरि सुखु वसिआ मनि आइ ॥ (46-1)
मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥ (136-6)
मिलि साध बचन गोबिंद धिआए महा निरमल रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (502-2)
मिलि साधसंगति करहि रलीआ फिरि न पछोतावए ॥ (1113-12)
मिलि साधसंगति कै साथे ॥ (621-15)
मिलि साधसंगति प्रभू सिमरे नाठिआ दुख काल ॥१॥ (1322-19)
मिलि साधसंगति होवत परगास ॥१॥ (677-3)
मिलि साधसंगि जसु गाहि ॥ (838-16)
मिलि साधसंगि हरि धिआइआ ॥ (627-2)
मिलि साधसंगे नाम रंगे मनि लोड़ीदा पाइआ ॥ (459-2)
मिलि साधसंगे भजे स्रीधर करि अंगु प्रभ जी तारिआ ॥ (705-15)
मिलि साधू दीना ता नामु लीना जनम मरण दुख नाठे ॥ (784-19)
मिलि साधू दुरमति खोए ॥ (624-3)
मिलि साधू नित भजह नाराइण ॥ (1312-5)
मिलि साधू मुखु ऊजला पूरबि लिखिआ पाइ ॥ (46-2)
मिलि साधू संगि उधारु होइ फाटै जम कागरु ॥ (1318-9)
मिलि साधू संगि उधारु होइ मुख ऊजल दरबारि ॥३॥ (218-12)
मिलि साधू संगि होइ उधार ॥२॥ (804-13)
मिलि साधू सरणि गहु पूरन राम रतनु हीअरे संगि राखु ॥१॥ रहाउ ॥ (204-9)
मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ (1193-8)
मिलि साधू हरि जसु गावै नानक भवजलु पारि पराई ॥२॥८॥१७॥ (499-13)
मिलि साधू हरि नामु उचरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (741-10)
मिलि साधू हरि नामु धिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (193-13)
मिलि साधू हरि नामु धिआईऐ ॥१॥ (804-12)
मिलि हरि जसु गाईऐ हां ॥ (410-7)
मिलि हिंदू सभ नामे पहि जाहि ॥२५॥ (1166-10)
मिलिआ कदे न विछुड़ै जो मेलिआ करतारि ॥ (49-4)
मिलिआ कदे न वीछुड़ै जोती जोति मिलावै ॥ (1247-18)
मिलिआ का किआ मेलीऐ सबदि मिले पतीआइ ॥ (60-14)
मिलिआ त लालु गुपालु ठाकुरु सखी मंगलु गाइआ ॥ (247-17)
मिलिआ लाहा भए अनंद ॥ (372-5)
मिलिआ होइ न विछुड़ै जिसु अंतरि जोति अपार ॥ (56-18)
मिलिआ होइ न वीछुड़ै गुर कै हेति पिआरि ॥१४॥ (755-15)
मिलिआ होइ न वीछुड़ै जे मिलिआ होई ॥ (729-11)
मिलिऐ मिलिआ ना मिलै मिलै मिलिआ जे होइ ॥ (791-16)
मिलिओ जगजीवन दाता ॥४॥४॥ (655-7)
मिलिओ तिसु सरब निधाना प्रभि क्रिपालि जिसु दीवना ॥७॥ (1019-5)

मिलिओ मनोहरु सरब सुखैना तिआगि न कतहू जाए ॥ (533-15)
मिलिओ सुदामा भावनी धारि सभु किछु आगै दालदु भंजि समाइआ ॥४॥ (1191-14)
मिली निमाने मानु ॥२॥ (895-6)
मिलीआ आइ संजोगि जां तिसु भावीआ ॥१५॥ (964-10)
मिलीऐ प्रभ गुर मिलि मंत ॥१॥ (894-17)
मिलु जगदीस मिलन की बरीआ ॥ (176-12)
मिलु नानक आपु गवाई ॥४॥१॥५१॥ (621-11)
मिलु नानक देव जगत गुर केरै ॥२॥१॥३४॥ (1304-18)
मिलु नानक हरि अंतरजामी ॥४॥८२॥१५१॥ (196-9)
मिलु नानक हरि भगवान ॥२॥१॥७॥ (1337-11)
मिलु पूरबि लिखिअड़े धुरि करमा ॥३॥ (173-4)
मिलु मिलु सखी गुण कहु मेरे प्रभ के ले सतिगुर की मति धीर ॥३॥ (862-1)
मिलु मिलु सखी हरि कथा सुनईआ ॥ (836-14)
मिलु मेरे गोबिंद अपना नामु देहु ॥ (240-3)
मिलु मेरे पिआरे प्रान अधारे गुण साधसंगि मिलि गावए ॥ (80-11)
मिलु मेरे प्रीतम पिआरिआ ॥ रहाउ ॥ (1122-5)
मिलु मेरे प्रीतमा जीउ तुधु बिनु खरी निमाणी ॥ (244-18)
मिलु मेरे बीठुला लै बाहड़ी वलाइ ॥ (92-8)
मिलु मेरे रमईआ मै लेहि छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (92-8)
मिलु राम पिआरे तुम बिनु धीरजु को न करै ॥१॥ रहाउ ॥ (408-2)
मिलु सखी सहेलड़ीहो हम पिरु रावेहा ॥ (242-13)
मिलु सखी सहेली हरि गुन बने ॥ (1170-1)
मिलु सबदि सुभाए आपु गवाए रंग सिउ रलीआ माणे ॥ (772-9)
मिलु साजन हउ तुझु कुरबानो ॥१॥ रहाउ ॥ (737-17)
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥१॥ (12-7)
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥१॥ (378-2)
मिलु साधसंगे नाम रंगे तहा पूरन आसो ॥ (545-2)
मिलु साधसंगे भजु निसंगे कुल समूहा तारीऐ ॥ (461-8)
मिले नराइण आपणे मानोरथो पूरा राम राजे ॥ (454-9)
मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा ॥४॥२॥ (488-1)
मिले प्रेम पिरी ॥३॥३॥१४३॥ (407-2)
मिले संत पिआरे दइआ धारे कथहि अकथ बीचारो ॥ (845-18)
मिले सुआमी इछ पुंनी मनि जपिआ निरमल मंत जीउ ॥ (929-10)
मिले सुआमी प्रीतम अपुने घर मंदर सुखदाई ॥ (618-10)
मिलै असंतु मसटि करि रहीऐ ॥१॥ (870-2)
मिलै गुर साचे जिनि रचु राचे किरतु वीचारि पतीणा ॥४॥ (907-8)
मिलै दानु संत रेन जेह लगि भउजलु तरना ॥ (1386-19)

मिलै पिआरे सभ दुख तिआगै ॥ (164-17)
मिलै प्रभू ता सभ सुख पावै ॥३॥ (373-17)
मिलै सुआमी अपुनै रंगि ॥२॥ (391-10)
मिलै सूखु नामु हरि सोभा चिंता लाहि हमारी ॥१॥ रहाउ ॥ (713-16)
मिलैगा प्रीतमु तब करउगी सीगारो ॥२॥ (359-4)
मिसटं साधसंगि हरि नानक दास मिसटं प्रभ दरसनं ॥१॥ (708-7)
मिसट बचन बेनती करउ दीन की निआई ॥ (745-14)
मिसल फकीरां गाखड़ी सु पाईऐ पूर करमि ॥१११॥ (1384-1)
मिसिमिलि तामसु भरमु कदूरी ॥ (1158-9)
मिहर करे जिसु मिहरवानु तां कारजु आवै रासि ॥३॥ (44-16)
मिहर करे जे आपणी चसा न विसरै सोइ ॥१॥ (49-7)
मिहर करे ता खसमु धिआई ॥ (1020-8)
मिहर दइआ करि करनैहार ॥ (897-5)
मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु हलालु कुराणु ॥ (140-18)
मिहरवान किरपाल दइआला सगले त्रिपति अघाए जीउ ॥३॥ (103-10)
मिहरवान मउला तूही एक ॥ (897-3)
मिहरवान मधुसूदन माधौ ऐसी सकति तुम्हारी ॥१॥ रहाउ ॥ (1190-18)
मिहरवान समरथ आपे ही घालिआ ॥ (523-10)
मिहरवानि रखि लइअनु आपे ॥ (1007-18)
मिहरवानु बखसिंदु आपि जपि सचे तरणा ॥ (323-5)
मिहरवानु साहिबु मिहरवानु ॥ (724-5)
मीचु हुटै जम ते छुटै हरि कीरतन परवेस ॥ (297-10)
मीठा बोले अम्रित बाणी अनदिनु हरि गुण गाउ ॥ (853-5)
मीठी आगिआ पिर की लागी ॥ (394-7)
मीठी करि करि बिखिआ खाइ ॥२॥ (178-14)
मीठी पिरहि कहानी ॥ (830-9)
मीठे कउ कउड़ा कहै कड़ूए कउ मीठा ॥ (229-7)
मीठे हरि गुण गाउ जिंदू तूं मीठे हरि गुण गाउ ॥ (218-14)
मीत के करतब कुसल समाना ॥१॥ (187-17)
मीत सखा सुत बंधिपो सभि तिस दे जणिआ ॥ (319-16)
मीत सखे केते जग माही ॥ (1028-9)
मीत साजन भरवासा तेरा ॥ (1349-5)
मीत साजन मालु जोबनु सुत हरि नानक बापु मेरी माई संतहु ॥८॥२॥७॥ (916-12)
मीत साजन मेरे भए सुहेले प्रभु पूरा गुरू मिलाइआ ॥३॥ (1267-2)
मीत साजन सखा बंधपु अंतरजामी जानु ॥१॥ रहाउ ॥ (1017-9)
मीत साजन सरब गुण नाइक सदा सलामति देवा ॥ (680-16)
मीत साजन सुत बंधपा कोऊ होत न साथ ॥ (431-7)

मीत हमारे सदा अबिनासी ॥ (1141-10)
मीत हमारे साजना राखे गोविंद ॥ (818-19)
मीत हीत धनु नह पारणा ॥ (1137-5)
मीता ऐसे हरि जीउ पाए ॥ (533-14)
मीतु करै सोई हम माना ॥ (187-17)
मीतु जोबनु मालु सरबसु प्रभु एकु करि मन माही ॥ (461-15)
मीतु सखा सहाइ संगी ऊच अगम अपारु ॥ (405-15)
मीतु साजनु सखा प्रभु एक ॥ (197-9)
मीतु साजनु सखा बंधपु हरि एकु नानक कीउ ॥२॥५॥२८॥ (1007-6)
मीतु साजनु सुत बंधप भाई ॥ (742-5)
मीतु हमारा अंतरजामी ॥ (187-19)
मीतु हमारा वेपरवाहा ॥ (187-18)
मीतु हमारा सोई सुआमी ॥ (1071-19)
मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥१॥ (991-17)
मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥२॥ (991-19)
मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥३॥९॥ (992-2)
मीन निवास उपजै जल ही ते सुख दुख पुरबि कमाई ॥ (1273-9)
मीना जलहीन मीना जलहीन हे ओहु बिछुरत मन तन खीन हे कत जीवनु प्रिअ बिनु होत ॥ (462-3)
मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहु बानी ॥ (658-5)
मीनु बिछोहा ना सहै जल बिनु मरि पाही ॥ (1122-9)
मीने प्रीति भई जलि नाइ ॥ (164-10)
मीर मलक उमरे फानाइआ एक मुकाम खुदाइ दरा ॥८॥ (1084-4)
मीरां दानां दिल सोच ॥ (724-15)
मीहु पइआ परमेसरि पाइआ ॥ (105-17)
मुंडीआ अनदिनु धापे जाहि ॥२॥ (871-11)
मुंडीआ मुंडीआ हूए एक ॥ (871-12)
मुंढहु भुली नानका फिरि फिरि जनमि मुईआसु ॥ (89-3)
मुंढहु भुले मुंढ ते किथै पाइनि हथु ॥ (315-2)
मुंढै दी खसलति न गईआ अंधे विछुड़ि चोटा खाए ॥ (549-19)
मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥ (6-16)
मुंदावणी महला ५ ॥ (1429-11)
मुंद्रा ते घट भीतरि मुंद्रा कांइआ कीजै खिंथाता ॥ (155-16)
मुंद्रा पाइ फिरै संसारि ॥ (952-2)
मुंद्रा फटक बनाई कानि ॥ (903-14)
मुंद्रा मोनि दइआ करि झोली पत्र का करहु बीचारु रे ॥ (970-14)
मुंध इआणी दुमणी सूहै वेसि लोभाइ ॥ (786-7)
मुंध इआणी पेईअड़ै किउ करि हरि दरसनु पिखै ॥ (78-8)

मुंध इआणी पेईअड़ै गुरमुखि हरि दरसनु दिखै ॥१॥ (78-10)
मुंध इआणी भोली निगुणीआ जीउ पिरु अगम अपारा ॥ (245-12)
मुंध इआणी मनमुखी फिरि आवण जाणा अंङु ॥ (732-2)
मुंध जोबनि बालड़ीए मेरा पिरु रलीआला राम ॥ (435-19)
मुंध नवेलड़ीआ गोइलि आई राम ॥ (843-6)
मुंध निमानड़ीआ जीउ बिनु धनी पिआरे ॥ (242-10)
मुंध नैण भरेदी गुण सारेदी किउ प्रभ मिला पिआरे ॥ (1111-17)
मुंध रैणि दुहेलड़ीआ जीउ नीद न आवै ॥ (242-7)
मुंध सहजि सलोनड़ीए इक प्रेम बिनंती राम ॥ (436-3)
मुंध सुहावी सोहणी जिसु घरि सहजि भतारु ॥ (787-5)
मुंधे कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥ (38-1)
मुंधे गुण दासी सुखु होइ ॥ (56-14)
मुंधे गुणहीणी सुखु केहि ॥ (56-2)
मुंधे तू चलु गुर कै भाइ ॥ (38-10)
मुंधे पिर बिनु किआ सीगारु ॥ (18-19)
मुंधे सूहा परहरहु लालु करहु सीगारु ॥ (787-4)
मुआ कबीरु रमत स्री रामै ॥५॥१५॥ (326-11)
मुआ जीवंदा पेखु जीवंदे मरि जानि ॥ (1102-11)
मुआ पिआरु प्रीति मुई मुआ वैरु वादी ॥ (1287-4)
मुआ होवै तिसु निहचलु रहणा ॥१॥ (374-9)
मुइआ उन ते को वरसांने ॥१॥ (199-7)
मुइआ गंढु नेकी सतु होइ ॥ (143-12)
मुइआ जितु घरि जाईऐ तितु जीवदिआ मरु मारि ॥ (21-2)
मुइआ जीवदिआ गति होवै जां सिरि पाईऐ पाणी ॥ (150-4)
मुई परीति पिआरु गइआ मुआ वैरु विरोधु ॥ (19-11)
मुई मेरी माई हउ खरा सुखाला ॥ (476-8)
मुकंद मनोहर लखमी नाराइण ॥ (1082-12)
मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥ (875-5)
मुकंद मुकंद हमारे प्रानं ॥ (875-7)
मुकत बंध सभि तुझ ते होए ऐसा आखि वखाणे ॥ (796-17)
मुकत भए प्रभ रूप न रेखं ॥१॥ (223-16)
मुकत लाल अनिक भोग बिनु नाम नानक हात ॥ (1306-12)
मुकति अनंत पुकारणि जाई ॥१॥ (328-1)
मुकति कदे न होवई नहु पाइन्हि मोख दुआरु ॥ (1277-3)
मुकति करै उतरै बहु भारु ॥ (971-9)
मुकति की बरीआ कहा छपानी ॥४॥ (874-16)
मुकति जुगति अनिक सूख हरि भगति लवै न लावनो ॥ (1323-6)

मुकति जुगति एहा निधान ॥ (987-9)
मुकति जुगति भुगति पूरन परमानंद परम निधान ॥ (1307-18)
मुकति जुगति रवाल साधू नानक हरि निधि लही ॥२॥१७॥२६॥ (501-6)
मुकति दाता सतिगुरु जुग माहि ॥१॥ (231-18)
मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥१॥ (509-18)
मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥५९॥ (1367-12)
मुकति दुआरा सोई पाए जि विचहु आपु गवाइ ॥३॥ (1276-5)
मुकति नही बिदिआ बिगिआनि ॥ (903-14)
मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ ॥ (631-18)
मुकति पदारथु तिन कउ पाए ॥ (664-9)
मुकति पदारथु नामु धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (201-3)
मुकति पदारथु पाईऐ अवगण मेटणहारु ॥१॥ (59-7)
मुकति पदारथु पाईऐ ठाक न अवघट घाट ॥२३१॥ (1377-1)
मुकति पदारथु भगति हरि पाइआ ॥२॥ (154-14)
मुकति पदारथु सबदि सलाही ॥ (1024-3)
मुकति पदारथु साधू संगति अम्रितु हरि का नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1220-18)
मुकति पदारथु हरि रस चाखे ॥ (685-14)
मुकति पाईऐ साधसंगति बिनसि जाइ अंधारु ॥३॥ (675-18)
मुकति प्रान जपि हरि किरतारथि ॥३॥ (904-14)
मुकति बपुड़ी भी गिआनी तिआगे ॥ (1078-7)
मुकति बैकुंठ साध की संगति जन पाइओ हरि का धाम ॥१॥ (682-10)
मुकति भइआ जिसु रिदै वसेरा ॥ (101-10)
मुकति भइआ पति सिउ घरि जाइ ॥२३॥ (932-17)
मुकति भइओ चउहूं जुग जानिओ जसु कीरति माथै छत्रु धरिओ ॥१॥ (1105-8)
मुकति भई बंधन गुरि खोल्हे सबदि सुरति पति पाई ॥ (1255-16)
मुकति भए गुरि दरसु दिखाइआ जुगि जुगि भगति सुभावी ॥२॥ (1255-13)
मुकति भए साधसंगति करि तिन के अवगन सभि परहरिआ ॥ (1235-11)
मुकति भुगति जुगति तेरी सेवा जिसु तूं आपि कराइहि ॥ (749-8)
मुकति भुगति जुगति वसि जा कै ॥ (1150-17)
मुकति भुगति जुगति सचु पाईऐ सरब सुखा का दाता ॥ (611-8)
मुकति भुगति जुगति हरि नाउ ॥ (200-3)
मुकति भेदु किआ जाणै काचा ॥१॥ (223-9)
मुकति महा सुख गुर सबदु बीचारि ॥ (942-11)
मुकति माल कनिक लाल हीरा मन रंजन की माइआ ॥ (700-4)
मुकती भेड न गईआ काई ॥२॥ (324-6)
मुकतु भइआ बंधन गुरि खोले जन नानक हरि गुण गाए ॥४॥१४॥१५२॥ (213-2)
मुकतु भए बिनसे भ्रम थाट ॥४॥४३॥११२॥ (188-12)

मुकतु भए हरि दास तुमारे ॥ (1034-11)
मुकतु होत नर जा कै सिमरै निमख न ता कउ गाइओ ॥२॥ (902-11)
मुकते रमण गोबिंदह नानक लबध्यं बड भागणह ॥१२॥ (1360-17)
मुकते संत बुझहि हरि नेरा ॥३॥ (388-19)
मुकते सेई भालीअहि जि सचा नामु समालि ॥२॥ (43-4)
मुकते सेवे मुकता होवै ॥ (116-11)
मुकतै गुरि अनलु बुझाइआ ॥ (971-19)
मुकतो रातउ रंगि रवांतउ ॥ (352-8)
मुकतो साधू धूरी नावै ॥१॥ रहाउ ॥ (1340-2)
मुकामु ओही एकु है नानका सचु बुगोइ ॥८॥१७॥ (64-12)
मुकामु करि घरि बैसणा नित चलणै की धोख ॥ (64-4)
मुकामु ता परु जाणीऐ जा रहै निहचलु लोक ॥१॥ (64-4)
मुकामु तिस नो आखीऐ जिसु सिसि न होवी लेखु ॥ (64-10)
मुख ऊजल मनु निरमल होई है तेरो रहै ईहा ऊहा लोगु ॥१॥ रहाउ ॥ (713-13)
मुख ऊजल सदा सुखी नानक सिमरत एक ॥२॥ (320-5)
मुख ऊजल साचै दरबारे ॥ (899-18)
मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥ (283-6)
मुख ऊजल होइ निरमल चीत ॥४॥१९॥ (376-1)
मुख ऊजल होवहि दरबारे ॥१॥ रहाउ ॥ (190-13)
मुख की बात सगल सिउ करता ॥ (384-17)
मुख ते पड़ता टीका सहित ॥ (887-17)
मुख ते बोलिआ तां कढिआ बीचारि ॥३॥ (1152-4)
मुख मनसा रतनु परोइआ ॥ (657-13)
मुख सचे सचु दाड़ीआ सचु बोलहि सचु कमाहि ॥ (1419-13)
मुख सुहावे नामु चउ आठ पहर गुण गाउ ॥ (1099-6)
मुखहु अलाए हभ मरणु पछाणंदो कोइ ॥ (1099-11)
मुखहु भगति उचरै अमरु गुरु इतु रंगि रातउ ॥ (1394-3)
मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै वसाइआ ॥ (565-16)
मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥ (267-1)
मुखि आवत ता कै दुरगंध ॥ (269-4)
मुखि गुरमुखि मुखि गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ राम ॥ (574-17)
मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥ (470-16)
मुखि झूठु बिभूखन सारं ॥ (1353-7)
मुखि झूठै झूठु बोलणा किउ करि सूचा होइ ॥ (56-1)
मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥ (270-1)
मुखि धिमाणै धन खड़ी गुरमुखि आखी देखु ॥ (1010-11)
मुखि निंदक कै छाई ॥२॥२२॥८६॥ (629-17)

मुखि निंदा आखा दिनु राति ॥ (24-15)
मुखि परै हरै पिआस मेरी जीअ हीआ प्रानपते ॥ (847-12)
मुखि बेद चतुर पड़ता ॥२॥ (873-10)
मुखि बेरावै अंति ठगावै ॥ (892-2)
मुखि मसतकि भागो सचि बैरागो साचि रते वीचारी ॥ (568-18)
मुखि मीठी खाई कउराइ ॥ (1347-11)
मुखि संजम हछा न होवई करि भेख भवै सभ कोई ॥ (1416-18)
मुखि सालाही सचे साहा ॥ (1077-3)
मुखु ऊजलु सदा सुखी नानक सिमरत एक ॥१॥ (916-6)
मुखु ऊजलु साचे दरबारे ॥३॥ (1340-15)
मुखु डेखाऊ पलक छडि आन न डेऊ चितु ॥ (708-13)
मुखु तलै पैर उपरे वसंदो कुहथड़ै थाइ ॥ (706-5)
मुखु सुहावा जां तउ जसु गावै जीउ पइआ तउ सरणी ॥२॥ (964-6)
मुगध मन भ्रमु तजहु नामु गुरमुखि भजहु गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु सति करि ॥२॥१४॥ (1400-19)
मुगध सुंदर धारि जोति कीन्ह ॥ (1181-1)
मुगल पठाणा भई लड़ाई रण महि तेग वगाई ॥ (418-2)
मुचु अड्मबरु हभु किहु मंझि मुहबति नेह ॥ (707-5)
मुचु मुचु गरभ गए कीन बचिआ ॥ (328-11)
मुझु अवगन सह नाही दोसु ॥१॥ (794-11)
मुठड़े सेई साथ जिनी सचु न लदिआ ॥ (319-5)
मुठा आपि मुहाए साथै ॥ (140-1)
मुठी धंधै चोरि महलु न पाईऐ ॥ (146-6)
मुदति पई चिराणीआ फिरि कडू आवै रुति ॥३॥ (1095-19)
मुद्रा मदक सहज धुनि लागी सुखमन पोचनहारी रे ॥२॥ (969-3)
मुनि जन ता की सेव करे ॥१॥ (987-13)
मुनि जन सेख न लहहि भेव ॥ (1181-9)
मुनि जन सेवक साधिका नामि रते गुणतासु ॥ (57-14)
मुनि जोगी दिग्मबरा जमै सणु जासी ॥ (1100-17)
मुनि जोगी सासत्रगि कहावत सभ कीन्हे बसि अपनही ॥ (498-19)
मुरारि सहाइ होहु दास कउ करु गहि उधरहु मीत ॥ रहाउ ॥ (681-14)
मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा ॥ (991-1)
मुलां कहहु निआउ खुदाई ॥ (1350-6)
मुलि न घिधा मै कू सतिगुरि दिता ॥ (964-17)
मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक विललाइ ॥ (921-6)
मुसनहार पंच बटवारे ॥ (182-11)
मुसलमाणु कहावणु मुसकलु जा होइ ता मुसलमाणु कहावै ॥ (141-10)
मुसलमाणु मोम दिलि होवै ॥ (1084-9)

मुसलमाणु सोई मलु खोवै ॥ (662-15)
मुसलमान का एकु खुदाइ ॥ (1160-5)
मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ (465-17)
मुसलमानीआ पड़हि कतेबा कसट महि करहि खुदाइ वे लालो ॥ (722-19)
मुसलमानु करे वडिआई ॥ (951-19)
मुसि मुसि मनूआ सहजि समाना ॥४॥४॥ (1158-11)
मुसि मुसि रोवै कबीर की माई ॥ (524-14)
मुह काले कूड़िआरीआ कूड़िआर कूड़ो होइ जावै ॥६॥ (302-17)
मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि ॥६॥ (755-7)
मुह काले तिना निंदका तितु सचै दरबारि ॥ (649-2)
मुह काले तिन्ह लोभीआं जासनि जनमु गवाइ ॥ (1417-15)
मुहतु न चसा विलमु भरीऐ पाईऐ ॥ (147-17)
मुहबति जिसु खुदाइ दी रता रंगि चलूलि ॥ (966-8)
मुहबते मनि तनि बसै सचु साह बंदी मोच ॥१॥ रहाउ ॥ (724-15)
मुहलति करि दीनी करम कमाणे जैसा लिखतु धुरि पाइआ ॥ (77-8)
मुहलति पुंनड़ीआ कितु कूड़ि लोभाइआ ॥ (459-18)
मुहलति पुंनी चलणा तूं समलु घर बारु ॥१॥ (50-11)
मुहलति पुनी पाई भरी जानीअड़ा घति चलाइआ ॥ (578-19)
मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥१२॥ (469-19)
मुहि डिठै जन कै जीवीऐ ॥ (132-12)
मुहि डिठै तिन कै जीवीऐ हरि अम्रितु चखे ॥ (318-12)
मुहि फेरिऐ मुहु जूठा होइ ॥१॥ (1240-6)
मुहि मंगां सोई देवदा हरि पिता सुखदाइक ॥ (1101-19)
मुहु मासै का जीभ मासै की मासै अंदरि सासु ॥ (1289-13)
मुहे मुहि चोटा खाहु विणु गुर कोइ न छुटसी ॥ (1288-18)
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥ (2-4)
मूं जुलाऊं तथि नानक पिरी पसंदो हरिओ थीओसि ॥२॥ (1101-8)
मूं पिरीआ सउ नेहु किउ सजण मिलहि पिआरिआ ॥ (1421-16)
मूंडि मुंडाइऐ जे गुरु पाईऐ हम गुरु कीनी गंगाता ॥ (155-18)
मूंडु मुडाइ जटा सिख बाधी मोनि रहै अभिमाना ॥ (1013-5)
मूंदि लीए दरवाजे ॥ (656-11)
मू तनि प्रेमु अथाह पसण कू सचा धणी ॥३॥ (1099-13)
मू थीआऊ तखतु पिरी महिंजे पातिसाह ॥ (1098-16)
मू थीआऊ सेज नैणा पिरी विछावणा ॥ (1098-11)
मू लालन सिउ प्रीति बनी ॥ रहाउ ॥ (827-3)
मूई सुरति बादु अहंकारु ॥ (152-5)
मूए कउ कहु मारे कउनु ॥ (221-16)

मूए कउ रोवहि किसहि सुणावहि भै सागर असरालि पइआ ॥ (906-19)
मूए कउ रोवै दुखु कोइ ॥ (413-7)
मूए कउ सचु रोवहि मीत ॥ (413-11)
मूए बिनु जीवनु नाही ॥१॥ (655-13)
मूए मरमु को का कर जाना ॥३॥ (325-3)
मूए हूए जउ मुकति देहुगे मुकति न जानै कोइला ॥ (1292-16)
मूड पलोसि कमर बधि पोथी ॥ (871-12)
मूड मुंडाए जौ सिधि पाई ॥ (324-6)
मूड़ मुगध तेरा संगी कवन ॥ (898-1)
मूड़ मुगधु होइ चतुर सुगिआनु ॥ (1146-5)
मूड़े काइचे भरमि भुला ॥ (991-18)
मूड़े तै मन ते रामु बिसारिओ ॥ (1001-1)
मूड़े फिरि पाछै पछुताहि रे ॥१॥ रहाउ ॥ (156-18)
मूड़े रामु जपहु गुण सारि ॥ (19-8)
मूड़्हे काहे बिसारिओ तै राम नाम ॥ (1189-15)
मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ (4-12)
मूरख अंधिआ अंधी धातु ॥ (1239-17)
मूरख अंधे त्रै गुण सेवहि माइआ कै बिउहारी ॥ (1246-15)
मूरख आपु गणाइदे मरि जमहि होइ खुआरु ॥ (589-11)
मूरख के किआ लखण है किआ मूरख का करणा ॥ (953-10)
मूरख गंढु पवै मुहि मार ॥ (143-12)
मूरख गणत गणाइ झगड़ा पाइआ ॥ (139-18)
मूरख दुबिधा पड़्हहि मूलु न पछाणहि बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (1133-14)
मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ॥ (469-2)
मूरख पड़हि सबदु न बूझहि गुरमुखि विरलै जाता हे ॥१५॥ (1053-6)
मूरख बामण प्रभू समालि ॥ (372-18)
मूरख मन काहे करसहि माणा ॥ (989-11)
मूरख मन समझाइ आखउ केतड़ा ॥ (752-2)
मूरख मुगध अगिआन अवीचारी ॥ (388-2)
मूरख मुगध अनाथ चंचल बलहीन नीच अजाणा ॥ (543-12)
मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ ॥ (467-12)
मूरख सिउ नह लूझु पराणी हरि जपीऐ पदु निरबाणी हे ॥५॥ (1070-12)
मूरख सिउ बोले झख मारी ॥२॥ (870-3)
मूरखा सिरि मूरखु है जि मंने नाही नाउ ॥२॥ (1015-16)
मूरखि अंधै पति गवाई ॥ (467-19)
मूरखि पड़ि पड़ि दूजा भाउ द्रिड़ाइआ ॥ (424-7)
मूरखु अंधा ततु न पछाणै ॥ (1061-10)

मूरखु आपु गणाइदा बूझि न सकै कार ॥ (1343-10)
मूरखु ओहु जि मुगधु है अहंकारे मरणा ॥ (953-10)
मूरखु नामदेउ रामहि जानै ॥२॥१॥ (718-12)
मूरखु भोगे भोगु दुख सबाइआ ॥ (139-17)
मूरखु रावनु किआ ले गइआ ॥३॥ (1158-2)
मूरखु सबदु न चीनई सूझ बूझ नह काइ ॥५३॥ (938-2)
मूरखु सिआणा एकु है एक जोति दुइ नाउ ॥ (1015-16)
मूरखु होइ न आखी सूझै ॥ (414-3)
मूरखु होवै सु उन की रीस करे तिसु हलति पलति मुहु कारा ॥२॥ (733-16)
मूरखु होवै सो सुणै मूरख का कहणा ॥ (953-9)
मूरखै नालि न लुझीऐ ॥१९॥ (473-13)
मूरत घरी चसा पलु सिमरन राम नामु रसना संगि लउ ॥ (1387-10)
मूरति पंच प्रमाण पुरखु गुरु अरजुनु पिखहु नयण ॥१॥ (1408-12)
मूरति सूरति करि आपारा ॥ (1022-14)
मूल दुआरै बंधिआ बंधु ॥ (1159-16)
मूल बिना साखा कत आहै ॥१॥ (1149-1)
मूल मंत्रु हरि नामु रसाइणु कहु नानक पूरा पाइआ ॥५॥ (1040-19)
मूलहु भुला जनमु गवाए ॥२॥ (664-11)
मूलहु भुले गुर सबदु न पछाणहि ॥ (128-9)
मूलहु भूला आवै जाइ ॥ (1165-3)
मूलि न मनहु विसारीऐ ॥ रहाउ ॥ (132-8)
मूलि लगै तां सतिगुरु पाए ॥३॥ (1177-3)
मूलि लागे से जन परवाणु ॥ (362-7)
मूलु छोडि डाली लगे किआ पावहि छाई ॥१॥ (420-14)
मूलु छोडि लागे दूजै भाई ॥ (232-2)
मूलु जाणि गला करे हाणि लाए हाणु ॥ (148-9)
मूलु न बुझै आपणा वसतु रही घर बारि ॥ (56-15)
मूलु न बूझहि आपणा से पसूआ से ढोर जीउ ॥३॥ (751-7)
मूलु न बूझहि साचि न रीझहि दूजै भरमि भुलाई हे ॥३॥ (1024-15)
मूलु न बूझै आपु न सूझै भरमि बिआपी अहं मनी ॥१॥ (1186-3)
मूलु पछाणनि तिन निज घरि वासा सहजे ही सुखु होई ॥ (1334-6)
मूलु पछाणहि तां सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई ॥ (441-4)
मूलु बिआधी बिआपसि लोभा ॥१॥ (182-2)
मूलु मति परवाणा एहो नानकु आखि सुणाए ॥ (1238-6)
मूलु मोहु करि करतै जगतु उपाइआ ॥ (1128-18)
मूलु रहै गुरु सेविऐ गुर पउड़ी बोहिथु ॥ (1279-3)
मूलु सति सति उतपति ॥ (284-16)

मूलु समालहु अचेत गवारा ॥ (374-14)
मूसन तब ही मूसीऐ बिसरत पुरख दइआल ॥७॥ (1364-5)
मूसन निमखक प्रेम परि वारि वारि देंउ सरब ॥५॥ (1364-3)
मूसन प्रेम पिरम कै गनउ एक करि करम ॥३॥ (1364-1)
मूसन मगन मरम सिउ खंड खंड करि हार ॥१०॥ (1364-8)
मूसन मरमु न जानई मरत हिरत संसार ॥ (1364-3)
मूसन मसकर प्रेम की रही जु अ्मबरु छाइ ॥ (1364-2)
मे रवदि बादिसाहा अफजू खुदाइ ॥ (143-18)
मेघ की छाइआ जैसे बरतनहार ॥ (1145-6)
मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥ (269-5)
मेघ राग पुत्रन के नामा ॥१॥ (1430-18)
मेघ राग सिउ पांचउ चीनी ॥१॥ (1430-17)
मेघ समै मोर निरतिकार ॥ (1180-9)
मेघु वरसै अम्रित धार ॥ (1271-2)
मेघु वरसै दइआ करि गूड़ी छहबर लाइ ॥ (1284-14)
मेघु वरसै सभनी थाई ॥ (105-2)
मेघै नो फुरमानु होआ वरसहु किरपा धारि ॥ (1285-3)
मेटि न साकै कोइ ॥ (144-6)
मेटिआ जनमांतु मरण भउ भागा चितु लागा संतोख सरे ॥ (1397-3)
मेटी जाति हूए दरबारि ॥ (875-8)
मेर डंड सिर ऊपरि बसै ॥२॥ (1159-17)
मेर तेर जब इनहि चुकाई ॥ (235-12)
मेर तेर तजउ अभिमाना सरनि सुआमी की परत ॥१॥ रहाउ ॥ (529-1)
मेर सुमेर मोरु बहु नाचै जब उनवै घन घनहारे ॥४॥ (983-14)
मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥ (536-16)
मेरा अंतरजामी हरि राइआ ॥ (1003-8)
मेरा इकु खिनु मनूआ रहि न सकै नित हरि हरि नाम रसि गीधे ॥ (1178-17)
मेरा कंतु रीसालू की धन अवरा रावे जी ॥१॥ रहाउ ॥ (557-9)
मेरा कमलु बिगसै संत डीठ ॥२॥ (987-8)
मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती ॥१॥ (345-9)
मेरा कीआ कछू न होइ ॥ (1165-15)
मेरा गुणु अवगणु न बीचारिआ ॥ (1184-9)
मेरा गुरु दइआलु सदा रंगि लीणा ॥ (907-6)
मेरा गुरु परमेसरु सुखदाई ॥ (915-11)
मेरा गुरु पूरा सुखदाता ॥ (619-14)
मेरा गुरु होआ आपि सहाई ॥ (615-12)
मेरा घरु बनिआ बनु तालु बनिआ प्रभ परसे हरि राइआ राम ॥ (782-3)

मेरा चितु न चलै मनु भइओ पंगु ॥१॥ रहाउ ॥ (1195-11)
मेरा जीउ पिंडु सभु सतिगुर आगै जिनि विछुड़िआ हरि गलि लाइआ ॥२॥ (172-9)
मेरा ठाकुरु अगम दइआलु है राम राजिआ करि किरपा लेहु मिलाई ॥ (776-19)
मेरा ठाकुरु अति भारा ॥ (1005-13)
मेरा ठाकुरु वडा वडा है सुआमी हम किउ करि मिलह मिलीजै ॥ (1324-11)
मेरा ठाकुरु सचु द्रिड़ाए ॥ (112-13)
मेरा ठाकुरो ठाकुरु नीका अगम अथाहा राम ॥ (442-12)
मेरा तनु अरु धनु मेरा राज रूप मै देसु ॥ (47-15)
मेरा तेरा छोडीऐ भाई होईऐ सभ की धूरि ॥ (640-1)
मेरा तेरा जानता तब ही ते बंधा ॥ (400-15)
मेरा तेरा तुधु आपे कीआ ॥ (1062-14)
मेरा नामु सखा हरि भाई जीउ ॥१॥ (175-3)
मेरा पिआरा प्रीतमु सतिगुरु रखवाला ॥ (94-12)
मेरा पिता माता हरि नामु है हरि बंधपु बीरा ॥ (163-6)
मेरा पिरु रीसालू संगि साइ ॥ (1169-19)
मेरा प्रभु अंतरि बैठा वेखै ॥ (123-10)
मेरा प्रभु अति अगम अगोचरु गुरमति देइ बुझाई ॥ (1260-12)
मेरा प्रभु अति ऊचो ऊचा करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥५॥ (112-4)
मेरा प्रभु अलखु न जाई लखिआ गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ (1259-2)
मेरा प्रभु निरमला सभ तै रहिआ समाइ ॥ (233-2)
मेरा प्रभु निरमलु अगम अपारा ॥ (110-12)
मेरा प्रभु निरमलु अति अपारा ॥ (1052-19)
मेरा प्रभु परउपकारी ॥ (627-10)
मेरा प्रभु पाइआ गुर कै सबदि सीधे ॥२॥ (231-10)
मेरा प्रभु बखसे बखसणहारु ॥२॥ (157-19)
मेरा प्रभु बिसरै हउ मरउ दुखाली ॥ (796-8)
मेरा प्रभु भरपूरि रहिआ सभ थाई ॥ (126-2)
मेरा प्रभु भारा कीमति नही पाइ ॥ (157-18)
मेरा प्रभु मउलिआ सद बसंतु ॥ (1173-5)
मेरा प्रभु रविआ सरबे ठाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1350-18)
मेरा प्रभु रांगि घणौ अति रूड़ौ ॥ (1331-18)
मेरा प्रभु लाए ता को लागै ॥ (415-2)
मेरा प्रभु वेपरवाहु है ना तिसु तिलु न तमाइ ॥ (995-1)
मेरा प्रभु संगे अंतरजामी ॥ (1222-19)
मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥ (1173-7)
मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥५॥ (842-13)
मेरा प्रभु सभ बिधि आपे जाणै ॥ (157-16)

मेरा प्रभु सभु किछु जाणदा ॥ (72-16)
मेरा प्रभु सरब रहिआ भरपूरि ॥३॥ (363-11)
मेरा प्रभु साचा अति सुआलिउ गुरु सेविआ चितु लागा ॥ (600-15)
मेरा प्रभु साचा असुर संघारणु ॥ (1056-3)
मेरा प्रभु साचा आपे जाणु ॥ (364-17)
मेरा प्रभु साचा गहिर ग्मभीर ॥ (361-18)
मेरा प्रभु साचा दूख निवारणु सबदे पाइआ जाई ॥ (1260-10)
मेरा प्रभु साचा मेलि मिलाए ॥६॥ (232-5)
मेरा प्रभु साचा सद ही साचा जिनि आपे आपु उपाइआ ॥ (771-12)
मेरा प्रभु साचा सद ही साचा सिरि साहा पातिसाहा हे ॥११॥ (1056-3)
मेरा प्रभु साचा सभ बिधि जाणै ॥ (159-3)
मेरा प्रभु है गुण का दाता अवगण सबदि जलाए ॥ (1131-19)
मेरा प्रभु होआ सदा दइआला ॥ (627-13)
मेरा प्राण सखाई सदा नालि चलै ॥ (94-5)
मेरा प्रीतमु मित्रु हरि पुरखु सुजाणु जीउ ॥ (175-11)
मेरा बिरही नामु मिलै ता जीवा जीउ ॥ (175-9)
मेरा बैदु गुरू गोविंदा ॥ (618-3)
मेरा मनु आलसीआ उघलाना ॥ (697-2)
मेरा मनु एकै ही प्रिअ मांगै ॥ (1209-17)
मेरा मनु तनु जीउ रासि सभ तेरी जन नानक के साह प्रभ साचे ॥४॥३॥१७॥५५॥ (169-16)
मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ मेरे गोविंदा हरि बाझहु धन कुमलैणी जीउ ॥ (173-19)
मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिंने ॥ (449-12)
मेरा मनु तनु मोहि लीआ जीउ देखि चलत तुमारे ॥ (247-10)
मेरा मनु तनु लीनु भइआ राम नामै मति गुरमति राम रसाला ॥१॥ रहाउ ॥ (985-14)
मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा ॥ (449-4)
मेरा मनु तनु हरि गोपालि सुहाइआ ॥ (805-5)
मेरा मनु तनु हरि रंगि भिंना ॥२॥ (173-2)
मेरा मनु मंदरीआ न बजावै ॥१॥ रहाउ ॥ (483-2)
मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥ (766-6)
मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥१॥ (766-8)
मेरा मनु राम नाम रसि लागिबा ॥ (697-9)
मेरा मनु राम नामि मनु मानी ॥ (1199-16)
मेरा मनु राम नामि रसि लागा ॥ (985-7)
मेरा मनु लागा तोहि ॥१॥ रहाउ ॥ (335-9)
मेरा मनु लागा है राम पिआरे ॥ (670-13)
मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥ (96-15)
मेरा मनु संत जना पग रेन ॥ (1294-10)

मेरा मनु साध जनां मिलि हरिआ ॥ (1294-4)
मेरा मनु साधू धूरि रवाल ॥ (1335-14)
मेरा मनु सोहिआ मीत साजन सरसे गुण मंगल हरि गाइआ राम ॥ (782-3)
मेरा मनो मेरा मनु निरमलु साचु समाले राम ॥ (437-13)
मेरा मनो मेरा मनु मानिआ नामु सखाई राम ॥ (437-10)
मेरा मनो मेरा मनु राता राम पिआरे राम ॥ (437-7)
मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पिआरे राम ॥ (436-13)
मेरा मात पिता गुरु सतिगुरु पूरा गुर जल मिलि कमलु विगसै जीउ ॥३॥ (94-13)
मेरा मात पिता सुत बंधपो मै हरि बिनु अवरु न माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (996-4)
मेरा मात पिता हरि राइआ ॥ (626-18)
मेरा मित्रु सखा सो प्रीतमु भाई मै दसे हरि नरहरीऐ जीउ ॥२॥ (95-3)
मेरा मेरा करदे पचि मुए हउमै करत विहाइ ॥ (1417-2)
मेरा मेरा करि करि विगूता ॥ (362-13)
मेरा मेरा करि पालीऐ वणजारिआ मित्रा ले मात पिता गलि लाइ ॥ (76-15)
मेरा मेरा करि बिललाही ॥ (188-11)
मेरा मेरा करि रोवीजै ॥ (1027-4)
मेरा लागो राम सिउ हेतु ॥ (675-2)
मेरा सतिगुरु पिआरा कितु बिधि मिलै ॥ (168-12)
मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई ॥२॥ (573-19)
मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई राम ॥ (573-16)
मेरा सतिगुरु रखवाला होआ ॥ (620-17)
मेरा सहु जागै हउ निसि भरि सोवा ॥१॥ (356-18)
मेरा साहिबु अति वडा सचु गहिर ग्मभीरा ॥ (511-5)
मेरा सुंदरु सुआमी जी हउ चरन कमल पग छारा ॥ (784-15)
मेरा हरि प्रभु अगमु अगोचरु है कीमति कहणु न जाइ ॥ (1258-7)
मेरा हरि प्रभु इन बिधि पाइआ जाए ॥ (233-4)
मेरा हरि प्रभु दसहु मै भुख लगाई ॥ (95-7)
मेरा हरि प्रभु मितु मिलै सुखु पाई जीउ ॥ (175-2)
मेरा हरि प्रभु रावणि आईआ हउमै बिखु झागे राम ॥ (845-4)
मेरा हरि प्रभु सुंदरु मै सार न जाणी ॥ (561-4)
मेरा हरि प्रभु सेजै आइआ मनु सुखि समाणा राम ॥ (844-13)
मेरी आस पूरी संत धूरी हरि मिले कंत विछुंनिआ ॥ (846-5)
मेरी इछ पुनी जीउ हम घरि साजनु आइआ ॥ (242-16)
मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥ (659-6)
मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा ॥ (1293-6)
मेरी जिहबा बिसनु नैन नाराइन हिरदै बसहि गोबिंदा ॥ (482-11)
मेरी तेरी मुंद्रा धारी ॥ (886-13)

मेरी पटीआ लिखहु हरि गोविंद गोपाला ॥ (1133-1)
मेरी पटीआ लिखि देहु गोबिंद मुरारि ॥२॥ (1154-6)
मेरी पटीआ लिखि देहु स्री गोपाल ॥१॥ (1194-7)
मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥ (694-11)
मेरी बहुरीआ को धनीआ नाउ ॥ (484-1)
मेरी बांधी भगतु छडावै बांधै भगतु न छूटै मोहि ॥ (1252-18)
मेरी बेदन हरि गुरु पूरा जाणै ॥ (95-3)
मेरी मति बउरी मै रामु बिसारिओ किन बिधि रहनि रहउ रे ॥ (482-7)
मेरी मेरी करत किआ ले चाले बिखु लादे छार बिकारा हे ॥१५॥ (1031-2)
मेरी मेरी करत दिनु रैनि बिहावै पलु खिनु छीजै अरजाधे ॥ (402-19)
मेरी मेरी करत विहाणी ॥ (1049-8)
मेरी मेरी करते जनमु गइओ ॥ (479-11)
मेरी मेरी करदे घटि गए तिना हथि किहु न आइआ ॥ (559-4)
मेरी मेरी करि करि डूबे खपि खपि मुए गवारा ॥ (380-4)
मेरी मेरी करि करि मूठउ पाप करत नह परी दइआ ॥१॥ (826-8)
मेरी मेरी करि कै संची अंत की बार सगल ले छलीआ ॥१॥ (1004-5)
मेरी मेरी करि गए तनु धनु कलतु न साथि ॥ (59-14)
मेरी मेरी करि गए पलै किछु न पाइ ॥ (428-7)
मेरी मेरी करि मुए विणु नावै दुखु भालि ॥ (936-1)
मेरी मेरी किआ करहि जिनि दीआ सो प्रभु लोड़ि ॥ (50-13)
मेरी मेरी किआ करहि पुत्र कलत्र सनेह ॥ (1101-9)
मेरी मेरी कैरउ करते दुरजोधन से भाई ॥ (693-1)
मेरी मेरी धारि बंधनि बंधिआ ॥ (761-18)
मेरी मेरी धारी ॥ (1004-2)
मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥ (345-9)
मेरी सखी सहेलड़ीहो प्रभ कै चरणि लगह ॥ (544-9)
मेरी सखी सहेली सुनहु भाइ ॥ (1169-19)
मेरी सरधा पूरि जगजीवन दाते मिलि हरि दरसनि मनु भीजै जीउ ॥१॥ (95-7)
मेरी सेज सोही देखि मोही सगल सहसा दुखु हरा ॥ (847-16)
मेरी सेजड़ीऐ आड्मबरु बणिआ ॥ (459-9)
मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई ॥ (345-10)
मेरे इकु खिनु प्रान न रहहि बिनु प्रीतम बिनु देखे मरहि मेरी माइआ ॥ (882-3)
मेरे करते एवै भावदा मनमुख भरमाणे ॥३॥ (163-4)
मेरे गुण अवगन न बीचारिआ ॥ (72-17)
मेरे गोबिद अपुने जन कउ देहि वडिआई ॥ (607-16)
मेरे गोविंदा गुण गावा त्रिपति मनि होइ ॥ (40-13)
मेरे ग्रिह आए राजा राम भतारा ॥१॥ रहाउ ॥ (482-3)

मेरे जीअड़िआ परदेसीआ कितु पवहि जंजाले राम ॥ (439-5)
मेरे ठाकुर के जन अलिपत है मुकते जिउ मुरगाई पंकु न भीजै ॥२॥ (1324-4)
मेरे ठाकुर के जन इनहु न बाछहि हरि मागहि हरि रसु दीजै ॥६॥ (1323-16)
मेरे ठाकुर के जन प्रीतम पिआरे जो होवहि दासनि दासा ॥७॥ (1191-18)
मेरे ठाकुर केते अगनत उधारे ॥ (999-4)
मेरे ठाकुर कै दीबानि खबरि होई गुरि गिआनु खड़गु लै मारे ॥७॥ (983-17)
मेरे ठाकुर कै मनि भाइ भावनी जमकंकर मारि बिदारे ॥२॥ (981-15)
मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ॥ (17-11)
मेरे ठाकुर बालकु इकतु घरि आणु ॥ (1191-10)
मेरे ठाकुर भाणे सिरजि समाए ॥३॥ (1190-5)
मेरे ठाकुर रखि लेवहु किरपा धारी ॥ (495-10)
मेरे ठाकुर हथि वडिआईआ मेलहि मनि चाउ ॥२॥ (1012-6)
मेरे ठाकुर हम बारिक सरणि तुमारी ॥ (599-16)
मेरे ठाकुर हाथि वडाईआ भाई जै भावै तै देइ ॥७॥ (637-7)
मेरे ठाकुर हाथि वडिआईआ भाणै पति पाईऐ ॥२॥ (421-5)
मेरे दोख गने न जाहि ॥ (838-6)
मेरे पूरे सतगुर भावै ॥२॥ (625-11)
मेरे प्रभ किरपा जलु देवहु हरि नाई ॥ (607-10)
मेरे प्रभ प्रीतम नामु अधारा ॥ (563-8)
मेरे प्रभ भावनि से ऊजले सभ मैलु भरीजै ॥ (1012-12)
मेरे प्रभ साचे कै मनि भाए ॥ (231-11)
मेरे प्रभ साचे वेपरवाहे ॥ (1057-6)
मेरे प्रभ सालाहनि से भले पिआरे सबदि रते रंगु होइ ॥ (636-6)
मेरे प्रभि सरधा भगति मनि भावै जन की पैज सवारे ॥१॥ (982-6)
मेरे प्रान सखा गुर के सिख भाई मो कउ करहु उपदेसु हरि मिलै मिलाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (493-19)
मेरे प्रीतम करि किरपा देहु बुझाई ॥ (1130-5)
मेरे प्रीतम का मै देइ सनेहा ॥ (95-2)
मेरे प्रीतम कारण करण जोग ॥ (1181-2)
मेरे प्रीतम की मै कथा सुणाईऐ ॥ (95-14)
मेरे प्रीतम प्रान अधार मन ॥ (1181-8)
मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (206-18)
मेरे प्रीतम प्रान मनु तनु सभु देवा मेरे हरि प्रभ की हरि कथा सुनावै ॥१॥ रहाउ ॥ (494-8)
मेरे प्रीतम प्रान सतिगुरु गुरु पूरा हम पापी गुरि निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (493-5)
मेरे प्रीतम प्रान हरि प्रभु गुरु मेले बहुरि न भवजलि फेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (711-4)
मेरे प्रीतमा तू करता करि वेखु ॥ (636-19)
मेरे प्रीतमा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥ (61-10)
मेरे प्रीतमा हउ जीवा नामु धिआइ ॥ (40-5)

मेरे बाबा मै बउरा सभ खलक सैआनी मै बउरा ॥ (855-13)
मेरे भरमि भूलउ मति कोई ॥३॥ (855-15)
मेरे भाई जना कोई मो कउ हरि प्रभु मेलि मिलाइ ॥ (41-2)
मेरे भाई जना मो कउ गोविंदु गोविंदु गोविंदु मनु मोहै ॥ (492-16)
मेरे मन अगम अगोचर ॥ (759-12)
मेरे मन अनदिनु धिआइ नामु हरि जपना ॥ (860-15)
मेरे मन अनदिनु धिआइ हरि नाउ ॥ (994-17)
मेरे मन अनदिनो धिआइ निरंकारु निराहारी ॥१॥ रहाउ ॥ (1201-16)
मेरे मन अहिनिसि पूरि रही नित आसा ॥ (29-12)
मेरे मन आस करि हरि प्रीतम अपुने की जो तुझु तारै तेरा कुट्मबु सभु छडाई ॥२॥ (859-9)
मेरे मन आसा करि जगदीस गुसाई ॥ (859-6)
मेरे मन आसा करि हरि प्रीतम साचे की जो तेरा घालिआ सभु थाइ पाई ॥३॥ (859-11)
मेरे मन एकस सिउ चितु लाइ ॥ (44-6)
मेरे मन करन सुणि हरि नामु ॥ (1006-10)
मेरे मन कलि कीरति हरि प्रवणे ॥ (976-19)
मेरे मन काहे रोसु करीजै ॥ (1262-9)
मेरे मन गुण गावहु राम नाम हरि के ॥ (731-8)
मेरे मन गुर की सिख सुणीजै ॥ (1334-6)
मेरे मन गुर गोविंदु सद धिआईऐ ॥ (630-16)
मेरे मन गुर चरणी चितु लाइ ॥ (162-13)
मेरे मन गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ (49-15)
मेरे मन गुर मुखि धिआइ हरि सोइ ॥ (32-13)
मेरे मन गुर सबदी सुखु होइ ॥ (46-3)
मेरे मन गुरमुखि नामु हरि धिआइ ॥ (994-6)
मेरे मन गुरु अपणा सालाहि ॥ (1334-19)
मेरे मन गुरु गुरु करत सदा सुखु पाईऐ ॥ (1270-7)
मेरे मन गुरु गुरु गुरु सद करीऐ ॥ (213-3)
मेरे मन चेति सचा सोइ ॥ (558-16)
मेरे मन जपि अहिनिसि नामु हरे ॥ (975-4)
मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई ॥ (617-17)
मेरे मन जपि नरहर नामु नरहरा ॥ (799-13)
मेरे मन जपि राम नामु ओमाहा ॥ (606-15)
मेरे मन जपि राम नामु नीसाणु ॥ (606-7)
मेरे मन जपि राम नामु हरि माझा ॥ (697-16)
मेरे मन जपि राम नामु हरि रूड़ा ॥ (698-4)
मेरे मन जपि हरि गुन अकथ सुनथई ॥ (1320-7)
मेरे मन जपि हरि हरि नामु मने ॥ (976-13)

मेरे मन जपि हरि हरि नामु सखे ॥ (975-15)
मेरे मन जपि हरि हरि राम रंगे ॥ (976-7)
मेरे मन जपि हरि हरि हरि मनि जपीऐ ॥ (170-6)
मेरे मन जपीऐ हरि भगवंता ॥ (639-15)
मेरे मन जपु जपि जगंनाथे ॥ (1320-1)
मेरे मन जपु जपि हरि नाराइण ॥ (979-13)
मेरे मन जापि प्रभ का नाउ ॥ (501-15)
मेरे मन तजि निंदा हउमै अहंकारु ॥ (29-19)
मेरे मन तनि वेदन गुर बिरहु लगावै ॥ (94-14)
मेरे मन तू हरि हरि नामु धिआइ ॥ (559-8)
मेरे मन धिआइ हरि हरि नाउ ॥ (405-8)
मेरे मन नाम की करि टेक ॥ (1007-8)
मेरे मन नाम बिना जो दूजै लागे ते साकत नर जमि घुटीऐ ॥ (170-10)
मेरे मन नाम सिउ करि प्रीति ॥ (1006-16)
मेरे मन नामि लए जम बंध ते छूटहि सरब सुखा सुख पाईऐ ॥ (213-6)
मेरे मन नामु अम्रितु पीउ ॥ (1007-4)
मेरे मन नामु जपत उधरे ॥ (995-5)
मेरे मन नामु जपत तरिआ ॥ (995-13)
मेरे मन नामु नित नित लेह ॥ (1006-13)
मेरे मन नामु हरी भजु सदा दीबाणु ॥ (861-4)
मेरे मन नामु हिरदै धारि ॥ (1007-1)
मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे ॥ (451-16)
मेरे मन प्रभ सरणाई पाइ ॥ (46-12)
मेरे मन प्रीति चरन प्रभ परसन ॥ (1303-10)
मेरे मन बैरागीआ तूं बैरागु करि किसु दिखावहि ॥ (440-11)
मेरे मन भजु ठाकुर अगम अपारे ॥ (983-8)
मेरे मन भजु राम नाम अति पिरघा ॥ (731-14)
मेरे मन भजु राम नाम हरि निमखफा ॥ (1336-15)
मेरे मन भजु राम नामु सभि अरथा ॥ (696-4)
मेरे मन भजु राम नामै रामा ॥ (799-7)
मेरे मन भजु हरि हरि नामु गुपाला ॥ (985-13)
मेरे मन मन ही उलटि समाना ॥ (333-4)
मेरे मन मुखि हरि हरि हरि बोलीऐ ॥ (527-11)
मेरे मन मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ (605-1)
मेरे मन राम नाम नित गावीऐ रे ॥ (1118-3)
मेरे मन राम नामि चितु लाइ ॥ (1177-7)
मेरे मन लै लाहा घरि जाहि ॥ (20-12)

मेरे मन सतगुर की सेवा लागु ॥ (50-5)
मेरे मन सतिगुरु सेवि सुखु होई ॥ (882-17)
मेरे मन सदा रहहु सतिगुर की सरणा ॥ (1132-10)
मेरे मन सरणि प्रभू सुख पाए ॥ (212-17)
मेरे मन साध सरणि छुटकारा ॥ (611-1)
मेरे मन साधसंगति मिलि रहीआ ॥ (835-7)
मेरे मन सुखदाता हरि सोइ ॥ (42-8)
मेरे मन सेव सफल हरि घाल ॥ (977-8)
मेरे मन सेवहु अलख निरंजन नरहरि जितु सेविऐ लेखा छुटीऐ ॥ (170-11)
मेरे मन सेवहु सो प्रभ स्रब सुखदाता जितु सेविऐ निज घरि वसीऐ ॥ (170-7)
मेरे मन सो प्रभु सदा नालि है सुआमी कहु किथै हरि पहु नसीऐ ॥ (170-4)
मेरे मन हरि अम्रित नामु धिआइ ॥ (1258-11)
मेरे मन हरि ऊपरि कीजै भरवासा ॥ (860-5)
मेरे मन हरि का नामु धिआइ ॥ (35-6)
मेरे मन हरि गुण हरि उचरहु ॥ (799-19)
मेरे मन हरि जपि सदा धिआइ ॥ (363-14)
मेरे मन हरि जपि हरि नित पड़ईऐ ॥ (861-12)
मेरे मन हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ (47-9)
मेरे मन हरि भजु नामु नरहरी ॥ (1134-6)
मेरे मन हरि भजु नामु नराइणु ॥ (1134-1)
मेरे मन हरि भजु सदा इक रंगि ॥ (48-18)
मेरे मन हरि भजु सभ किलबिख काट ॥ (986-1)
मेरे मन हरि राम नामि करि रंङु ॥ (732-1)
मेरे मन हरि सिउ लागी प्रीति ॥ (431-2)
मेरे मन हरि सेविहु सुखदाता सुआमी जिसु सेविऐ सभ भुख लहासा ॥१॥ (860-4)
मेरे मन हरि हरि गुन कहु रे ॥ (1118-11)
मेरे मन हरि हरि धिआइ सुखु पाइआ ॥ (605-17)
मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥ (45-1)
मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥ (47-16)
मेरे मन हरि हरि राम नामु जपि चीति ॥ (1295-16)
मेरे मन हरि हरि हरि हरि हरि जसु ऊतमु लै लाहा हरि मनि हसीऐ ॥ (170-8)
मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सि तरिआ ॥ (495-3)
मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ॥ (10-10)
मेरे मान को असथानु ॥ (1017-9)
मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ (10-3)
मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ (492-9)
मेरे मीत सखा हरि जीउ गुर पुरख बिधाते ॥ (247-7)

मेरे मोहन स्रवनी इह न सुनाए ॥ (820-5)
मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार ॥४॥१॥ (346-3)
मेरे राजन मै बैरागी जोगी ॥ (334-17)
मेरे राम इह नीच करम हरि मेरे ॥ (167-14)
मेरे राम ऐसा खीरु बिलोईऐ ॥ (332-17)
मेरे राम को भंडारु ॥ (893-18)
मेरे राम जी तूं प्रभ अंतरजामी ॥ (750-6)
मेरे राम तोड़ि बंधन माइआ घर कै कमि लाइ ॥ (166-15)
मेरे राम मै मूरख हरि राखु मेरे गुसईआ ॥ (166-1)
मेरे राम मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ (27-3)
मेरे राम राइ इन बिधि मिलै गुसाई ॥ (205-5)
मेरे राम राइ जिउ राखहि तिउ रहीऐ ॥ (749-7)
मेरे राम राइ तुधु चिति आइऐ उबरे ॥ (748-9)
मेरे राम राइ तूं संता का संत तेरे ॥ (749-19)
मेरे राम राइ मुझ ते कछू न होई ॥ (748-15)
मेरे राम राइ संता टेक तुम्हारी ॥ (747-5)
मेरे राम हउ सो थानु भालण आइआ ॥ (747-10)
मेरे राम हम पापी सरणि परे हरि दुआरि ॥ (167-5)
मेरे राम हम बारिक हरि प्रभ के है इआणे ॥ (168-3)
मेरे राम हरि जन आरोग भए ॥ (735-16)
मेरे राम हरि जन कै हउ बलि जाई ॥ (749-2)
मेरे राम हरि संता जेवडु न कोई ॥ (748-3)
मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा ॥ (731-1)
मेरे लाल भलो रे भलो रे भलो हरि मंगना ॥ (678-14)
मेरे लाल रंगीले हम लालन के लाले ॥ (1112-4)
मेरे लालन की सोभा ॥ (1322-1)
मेरे सतिगुर अपने बालिक राखहु लीला धारि ॥ (379-10)
मेरे सतिगुर के मनि बचन न भाए सभ फोकट चार सीगारे ॥३॥ (983-1)
मेरे सतिगुर ही पति राखु ॥ (1003-10)
मेरे सतिगुरा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥ (39-17)
मेरे सतिगुरा मै हरि हरि नामु द्रिड़ाइ ॥ (996-3)
मेरे सतिगुरा हउ तुधु विटहु कुरबाणु ॥ (52-4)
मेरे साजन हरि हरि नामु समालि ॥ (52-11)
मेरे साहा मै हरि दरसन सुखु होइ ॥ (670-4)
मेरे साहिब तूं अंतर की बिधि जाणहि ॥ (735-9)
मेरे साहिब तूं मै माणु निमाणी ॥ (749-13)
मेरे साहिब हउ कीता तेरा ॥ (357-9)

मेरे साहिबा कउणु जाणै गुण तेरे ॥ (156-10)
मेरे साहिबा तेरे चोज विडाणा ॥ (596-13)
मेरे साहिबा हउ आपे भरमि भुलाणी ॥ (1171-6)
मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ ॥ (923-8)
मेरे सुंदर गहिर ग्मभीर लाल ॥ (1169-13)
मेरे हरि जीउ एवै भावदा गुरमुखि तराइआ ॥ (1244-15)
मेरे हरि जीउ सभु को तेरै वसि ॥ (736-4)
मेरे हरि प्रभ की मै बात सुनावै तिसु मनु देवउ कटि काट ॥ (986-2)
मेरे हरि प्रभ भावै सो करै हरि रंगि हरि रापै राम ॥ (844-16)
मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै सो भाई सो मेरा बीर ॥२॥ (861-19)
मेरै अंतरि प्रीति लगी देखन कउ गुरि हिरदे नालि दिखाइआ ॥ (172-10)
मेरै अंतरि भुख न उतरै अमाली जे सउ भोजन मै नीरे ॥ (564-5)
मेरै अंतरि लोचा मिलण की किउ पावा प्रभ तोहि ॥ (957-11)
मेरै अंतरि लोचा मिलण की पिआरे हउ किउ पाई गुर पूरे ॥ (564-4)
मेरै अंतरि होइ विगासु प्रिउ प्रिउ सचु नित चवा राम ॥ (1114-1)
मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए ॥१॥ (722-1)
मेरै करतै इक बणत बणाई ॥ (1064-17)
मेरै गुरि मोरो सहसा उतारिआ ॥ (1218-1)
मेरै ठाकुरि इह बणत बणाई ॥ (1066-13)
मेरै प्रभि अंदरि आपु लुकाइआ ॥ (1066-12)
मेरै प्रभि मेले मेलि मिलाए ॥ (111-14)
मेरै प्रभि साचै इकु खेलु रचाइआ ॥ (1056-10)
मेरै मनि अनदिनु अनदु भइआ ॥ (1264-15)
मेरै मनि अनदु भइआ जीउ वजी वाधाई ॥ (247-16)
मेरै मनि ऐसी भगति बनि आई ॥ (368-7)
मेरै मनि गुपत हीरु हरि राखा ॥ (696-10)
मेरै मनि चीति आए प्रिअ रंगा ॥ (1210-6)
मेरै मनि तनि अम्रित मीठ लगाना ॥ (698-14)
मेरै मनि तनि आनंद भए मै देखिआ हरि राओ ॥ (1201-13)
मेरै मनि तनि आसा पूरीआ मेरे गोविंदा हरि मिलिआ मनि वाधाईआ जीउ ॥३॥ (174-5)
मेरै मनि तनि नामु अधारु हरि मै मेले पुरखु सुजाणी ॥२॥ (997-3)
मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ॥ (449-11)
मेरै मनि तनि प्रीति लगाई सतिगुरि हरि मिलिओ लाइ झपीड़ा ॥ रहाउ ॥ (698-4)
मेरै मनि तनि प्रेमु नामु आधारु ॥ (366-15)
मेरै मनि तनि प्रेमु पिरम का बिनु दरसन किउ मनु धीरे ॥१॥ (564-5)
मेरै मनि तनि प्रेमु पिरम का मेरे गोविदा हरि पूंजी राखु हमारी जीउ ॥ (174-6)
मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि ढोले जीउ ॥ (173-8)

मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि बाणु जीउ ॥ (175-11)
मेरै मनि तनि बिरहु गुरसिख पग लाइआ ॥ (493-19)
मेरै मनि तनि भुख अति अगली कोई आणि मिलावै माइ ॥ (49-9)
मेरै मनि तनि लोचा गुरमुखे राम राजिआ हरि सरधा सेज विछाई ॥ (777-1)
मेरै मनि तनि वडड़ी गोविंद प्रभ आसा जीउ ॥ (175-7)
मेरै मनि तनि वासै नामु हरि ॥४॥७॥१४५॥ (211-15)
मेरै मनि प्रेमु लगो हरि तीर ॥ (861-18)
मेरै मनि बासिबो गुर गोबिंद ॥ (1204-11)
मेरै मनि बैरागु भइआ जीउ किउ देखा प्रभ दाते ॥ (247-7)
मेरै मनि बैरागु भइआ बैरागी मिलि गुर दरसनि सुखु पाए ॥ (572-12)
मेरै मनि मिसट लगे प्रिअ बोला ॥ (1211-9)
मेरै मनि मेरै मनि सतिगुर प्रीति लगाई ॥१॥ (572-6)
मेरै मनि मेरै मनि सतिगुरि प्रीति लगाई राम ॥ (572-4)
मेरै मनि राम नामु जपिओ गुर वाक ॥ (1295-9)
मेरै मनि सबदु लगो गुर मीठा ॥ (1212-13)
मेरै मनि सभि सुख पाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (241-14)
मेरै मनि हरि हरि राम नामु रसु टीक ॥ (1336-2)
मेरै मनि हरि हरि सांति वसाई ॥ (732-13)
मेरै माथै लागी ले धूरि गोबिंद चरनन की ॥ (694-3)
मेरै सरबसु नामु निधानु ॥ (979-16)
मेरै हरि प्रभि लेखु लिखाइआ धुरि मसतकि पूरा ॥ (163-5)
मेरै हाथि पदमु आगनि सुख बासना ॥ (1362-4)
मेरै हिरदै सुधि बुधि विसरि गई मन आसा चिंत विसारिआ ॥ (776-12)
मेरै हीअरै प्रीति राम राइ की गुरि मारगु पंथु बताइआ ॥ (172-8)
मेरै हीअरै रतनु नामु हरि बसिआ गुरि हाथु धरिओ मेरै माथा ॥ (696-3)
मेरै हीअरै लोच लगी प्रभ केरी हरि नैनहु हरि प्रभ हेरा ॥ (711-5)
मेरै हीअरै सतिगुरि प्रीति लगाई मनि हरि हरि कथा सुखानी ॥१॥ रहाउ ॥ (1199-16)
मेरो अउर पड़्हन सिउ नही कामु ॥१॥ रहाउ ॥ (1194-8)
मेरो गुर प्रसादि मनु मानिआ ॥४॥५॥ (655-12)
मेरो गुरु रखवारो मीत ॥ (618-12)
मेरो चपल बुधि सिउ कहा बसाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1194-15)
मेरो बापु माधउ तू धनु केसौ सांवलीओ बीठुलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (988-13)
मेरो मनु जत कत तुझहि सम्हारै ॥ (1214-13)
मेरो सुंदरु कहहु मिलै कितु गली ॥ (527-7)
मेलत चुनत खिनु पलु चसा लागै तब लगु मेरा मनु राम गुन गावै ॥२॥ (368-9)
मेलहि तुझहि रजाइ सबदु कमाईऐ ॥२॥ (752-9)
मेलि लए पूरन वडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ (198-11)

मेलि लीओ आपे सुखदातै नानक हरि राखी पाती ॥२॥१२॥४३॥ (681-12)
मेलि लेहु नानक बेचारे ॥३८॥ (258-8)
मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ ॥ (709-12)
मेलि लैहु नानक अरदासे ॥८॥ (759-18)
मेली अपने उनि ले बांधे ॥ (392-10)
मेलु भइआ चिरी विछुंनिआ गुर पुरखि मिलाए ॥ (791-8)
मेलु भइआ सतिगुरू मिलाइआ ॥२१॥ (932-12)
मै अंतरि प्रेमु पिरम का किउ सजणु मिलै मिलासि ॥१॥ (996-11)
मै अंतरि वेदन प्रेम की गुर देखत मनु साधारिआ ॥ (776-13)
मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥ (727-12)
मै अंधुले नामु न वीसरै टेक टिकी घरि जाउ ॥२॥ (58-3)
मै अंधुले नावै की जोति ॥ (1274-18)
मै अंधुले हरि टेक टिकाई ॥४॥१॥३९॥ (164-3)
मै अंधुले हरि नामु लकुटी टोहणी ॥ (752-16)
मै अउखधु मंत्रु दीजै गुर पूरे मै हरि हरि नामि उधरीऐ जीउ ॥३॥ (95-4)
मै अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे ॥१॥ रहाउ ॥ (873-17)
मै अनदिनो सद सद सदा हरि जपिआ हरि नाओ ॥२॥३॥१०॥ (1201-14)
मै अनाथु प्रभ कहउ काहि ॥ (1194-14)
मै अवगण भरपूरि सरीरे ॥ (561-1)
मै अवगण मन माहि सरीरा ॥ (1189-6)
मै अवरु गिआनु न धिआनु पूजा हरि नामु अंतरि वसि रहे ॥ (844-1)
मै अवरु न कोई सूझै बूझै मनि हरि जपु जपउ जपाइआ ॥ (882-5)
मै अवरु न दीसै सरब तोह ॥ (1169-12)
मै आइ मिलहु जगजीवन पिआरे ॥ (95-11)
मै आधारु तेरा तू खसमु मेरा मै ताणु तकीआ तेरओ ॥ (844-10)
मै आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (14-4)
मै आसा रखी चिति महि मेरा सभो दुखु गवाइ जीउ ॥ (763-4)
मै आही ओड़ि तुहारि नानक बलिहारीआ ॥५॥ (241-3)
मै इकु नामु न वीसरै साचे गुर बुधि ॥२॥ (418-18)
मै ऊपरि नदरि करी पिरि साचै मै छोडिअड़ा मेरा तेरा ॥ (561-16)
मै एहा आस एहो आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ (24-15)
मै ओल्हगीआ ओल्हगी हम छोरू थारे ॥ (421-3)
मै करमहीण कब ही गलि लावै ॥४॥ (561-8)
मै कामणि मेरा कंतु करतारु ॥ (1128-13)
मै किआ जानउ बाबा रे ॥१॥ रहाउ ॥ (870-6)
मै किआ मागउ किछु थिरु न रहाई हरि दीजै नामु पिआरी जीउ ॥१॥ (597-17)
मै की नदरि न आवही वसहि हभीआं नालि ॥ (557-6)

मै कीए मित्र अनेक इकसु बलिहारीआ ॥ (241-1)
मै कीता न जाता हरामखोरु ॥ (24-17)
मै खोजत खोजत जी हरि निहचलु सु घरु पाइआ ॥ (785-2)
मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (727-13)
मै गरीब सचु टेक तूं मेरे सतिगुर पूरे ॥ (398-13)
मै गलि अउगण मुठड़ी बिनु पिर झूरि मराउ ॥२॥ (1014-17)
मै गुण गला के सिरि भार ॥ (351-7)
मै गुन बंध सगल की जीवनि मेरी जीवनि मेरे दास ॥ (1253-2)
मै गुर परसादी जानी ॥२॥ (657-2)
मै गुर बिनु अवरु न कोई बेली गुरु सतिगुरु प्राण हम्हारे ॥ (574-7)
मै गुर मिलि उच दुमालड़ा ॥ (74-9)
मै गुरबाणी आधारु है गुरबाणी लागि रहाउ ॥८॥ (759-4)
मै गुरु पूछिआ आपणा साचा बीचारी राम ॥ (439-3)
मै चारे कुंडा भालीआ तुधु जेवडु न साईआ ॥ (1098-13)
मै छडिआ सगल अपाइणो भरवासै गुर समरथा ॥ (1101-11)
मै छडिआ सभो धंधड़ा ॥ (73-16)
मै जाणिआ वड हंसु है तां मै कीता संगु ॥ (1384-12)
मै जानिआ वड हंसु है ता मै कीआ संगु ॥ (585-14)
मै जी ॥ (694-1)
मै जीतिओ जनमु अपारु बहुरि न हारीआ ॥६॥ (241-4)
मै जुगि जुगि दयै सेवड़ी ॥ (74-13)
मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥१॥ रहाउ ॥ (694-12)
मै तकी ओट संताह लेहु उबारीआ ॥२॥ (240-19)
मै तनि अवगण एतड़े खसमु न फेरे चितु ॥३॥ (790-12)
मै तनि अवगण झुरि मुई विणु गुण किउ घरि जाह ॥ (936-7)
मै तनि अवगण बहुतु कि अवगण छाइआ ॥ (1362-1)
मै तां नामु तेरा आधारु ॥ (354-7)
मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै अरदासि ॥ (735-4)
मै तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहालीऐ ॥९॥१६॥ (420-4)
मै तुझ बिनु अवरु न भावई तूं भावहि सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (61-11)
मै तुझ बिनु बेली को नही तू अंति सखाई ॥ (792-3)
मै दरि मागउ नीता नीत ॥१॥ (721-11)
मै दरि मागतु भीखिआ पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (721-12)
मै दसिहु मारगु संतहो किउ प्रभू मिलाईआ ॥ (1098-14)
मै दीजै नाम निवासु अंतरि सांति होइ ॥ (753-3)
मै दीजै नाम निवासु हरि गुण गावसी ॥८॥१॥३॥ (752-6)
मै देखालिहु तिसु सालाही ॥ (1025-2)

मै देवाना भइआ अतीतु ॥ (721-10)
मै धनु दीजै हरि अम्रित नामु ॥४॥ (227-6)
मै धनु नामु निधानु है गुरि दीआ बलि जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (58-1)
मै धर तेरी पारब्रहम तेरै ताणि रहाउ ॥ (46-15)
मै धर नामु अधारु है हरि नामै ते गति मति ॥ (82-13)
मै धर नामु जिउ राखहु रहना ॥३॥ (227-5)
मै धर सचे नाम की हरि नामि रहा लिव लाइ ॥९॥ (759-5)
मै न मरउ मरिबो संसारा ॥ (325-16)
मै नामु हरि का हारु कंठे साच सबदु नीसाणिआ ॥ (844-4)
मै नालहु कदे न विछुड़ै हरि पिता सभना गला लाइक ॥२१॥ (1102-2)
मै नाही कछु आहि न मोरा ॥ (336-18)
मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा ॥ (858-17)
मै नाही किसी का देना ॥१॥ (656-13)
मै नाही कीता लबो ॥ (656-16)
मै नाही प्रभ सभु किछु तेरा ॥ (827-16)
मै निधरिआ धर एक तूं मै ताणु सताणा ॥१॥ (421-11)
मै निरखत निरखत सरीरु सभु खोजिआ इकु गुरमुखि चलतु दिखाइआ ॥ (1191-12)
मै निरगुण बखसि नानकु वेचारा ॥५॥२॥ (561-9)
मै निरगुणि मेरी माइ आपि लड़ि लाइ लई ॥३॥ (397-6)
मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ (1429-15)
मै निरगुन गुणु नाही कोइ ॥ (388-1)
मै नीरे अनिक भोजन बहु बिंजन तिन सिउ द्रिसटि न करै रुचांगै ॥ (1209-18)
मै नैणी नीद न आवै जीउ भावै अंनु न पाणी ॥ (244-19)
मै पति की पंदि न करणी की कार ॥ (24-14)
मै पाइओ सरब निधानु अकथु कथारीआ ॥ (241-4)
मै पिरु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥३॥ (584-12)
मै पिरु सचु सालाहणा हउ रहसिअड़ी नामि भतारे ॥७॥ (581-2)
मै पेखिओ री ऊचा मोहनु सभ ते ऊचा ॥ (534-16)
मै प्रभ मिलण प्रेम मनि आसा ॥ (560-19)
मै प्रभु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥ (584-9)
मै प्रभु सजणु पाइआ जन नानक सहजि मिलेइ ॥१॥ (1317-7)
मै प्रेमु न चाखिआ मेरे पिआरे भाउ करे ॥ (451-18)
मै बंदा बै खरीदु सचु साहिबु मेरा ॥ (396-13)
मै बउरी मेरा रामु भतारु ॥ (1164-1)
मै बधी सचु धरम साल है ॥ (73-19)
मै बनजारनि राम की ॥ (157-3)
मै बहु बिधि पेखिओ दूजा नाही री कोऊ ॥ (535-1)

मै बहुड़ि न त्रिसना भुखड़ी हउ रजा त्रिपति अघाइ जीउ ॥ (763-7)
मै बिगरिओ बिगरै मति अउरा ॥१॥ रहाउ ॥ (855-14)
मै बिगरे अपनी मति खोई ॥ (855-15)
मै बिनु गुर देखे नीद न आवै ॥ (94-14)
मै मत जोबनि गरबि गाली दुधा थणी न आवए ॥ (242-9)
मै मनि चाउ घणा साचि विगासी राम ॥ (843-18)
मै मनि तनि प्रभू धिआइआ ॥ (72-18)
मै मनि तनि प्रेम बैरागु है राम राजिआ गुरु मेले किरपा करेई ॥ (777-3)
मै मनि तनि प्रेमु अगम ठाकुर का खिनु खिनु सरधा मनि बहुतु उठईआ ॥ (836-13)
मै मनि तनि प्रेमु पिरम का अठे पहर लगंनि ॥ (301-16)
मै मनि तनि प्रेमु महा बैरागु ॥ (366-12)
मै मनि तनि बिरहु अति अगला किउ प्रीतमु मिलै घरि आइ ॥ (39-15)
मै मनि तनि लोच लगी हरि सेती प्रभि लोच पूरी सतिगुर सरणाई ॥२॥ (493-14)
मै मनि तनि सहु भावै पिर परदेसि सिधाए ॥ (1108-13)
मै मनि तनि हरि भावै प्रभ संगमि राती राम ॥ (436-4)
मै मनि तेरी टेक मेरे पिआरे मै मनि तेरी टेक ॥ (802-8)
मै मनि वडी आस हरे किउ करि हरि दरसनु पावा ॥ (561-11)
मै मनु तनु अरपि धरिओ गुर आगै सिरु वेचि लीओ मुलि महघा ॥१॥ रहाउ ॥ (731-14)
मै मनु तनु खोजि खोजेदिआ सो प्रभु लधा लोड़ि ॥ (313-16)
मै मनु तनु खोजि ढंढोलिआ किउ पाईऐ अकथ कहाणी ॥ (997-2)
मै महदूदु लिखाइआ खसमै कै दरि जाइ ॥ (1286-8)
मै मूरख अंधुले नामु टेक है जन नानक गुरमुखि पाइआ ॥४॥१॥ (1319-9)
मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे ॥ (612-10)
मै मूरख की गति कीजै मेरे राम ॥ (166-8)
मै मूरख मुगध ऊपरि करहु दइआ ॥ (1170-15)
मै मूरख हरि आस तुमारी ॥२॥ (164-1)
मै मूरख हरि नामु छडावै ॥३॥ (164-2)
मै मूरख हरि हरि जपु पड़िआ ॥१॥ (163-18)
मै मेलहु संत मेरा हरि प्रभु सजणु मै मनि तनि भुख लगाईआ जीउ ॥ (174-3)
मै मेले मित्रु सतिगुरु वेचोले जीउ ॥ (173-9)
मै मैलौ ऊजलु सचु सोइ ॥ (1330-18)
मै राति दिहै वडिआईआं ॥ (73-6)
मै राम नाम धनु लादिआ बिखु लादी संसारि ॥२॥ (346-1)
मै रोवंदी सभु जगु रुना रुंनड़े वणहु पंखेरू ॥ (558-4)
मै लख विड़ते साहिबा जे बिंद बोलाईआ ॥ (1098-13)
मै विचि दोस हउ किउ करि पिरु पावा ॥ (561-6)
मै वेदन प्रेमु हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ (175-14)

मै सत का हलु जोआइआ ॥ (73-9)
मै सतिगुर सेती पिरहड़ी किउ गुर बिनु जीवा माउ ॥ (759-3)
मै सदा रावे पिरु आपणा सचड़ै सबदि वीचारे ॥ (584-9)
मै सभि सीगार बणाइआ अमाली बिनु पिर कामि न आए ॥ (564-11)
मै सभु किछु छोडि प्रभ तुही धिआइआ ॥१॥ (371-14)
मै सरब सुखा सुख पाइआ अमाली पिरु सरब रहिआ भरपूरे ॥ (564-15)
मै सहु दाता एकु है अवरु नाही कोई ॥ (365-5)
मै सुखी हूं सुखु पाइआ ॥ (73-17)
मै सो धनु पलै साचु अखूटु ॥४॥ (414-1)
मै हरि नामु न वीसरै हरि नामु रतनु वेसाहु ॥ (64-2)
मै हरि नामै हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ (175-2)
मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मंने ॥ (449-13)
मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ (81-18)
मै हरि बिनु अवरु न कोई बेली मेरा पिता माता हरि सखाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (882-3)
मै हरि बिनु टेक धर अवर न काई तू करते राखु मै निमाणी हे ॥१३॥ (1071-4)
मै हरि बिनु पखु धड़ा अवरु न कोई हउ हरि गुण गावा असंख अनेक ॥१॥ रहाउ ॥ (366-3)
मै हरि बिरही हरि नामु है कोई आणि मिलावै माइ ॥ (996-4)
मै हरि हरि खरचु लइआ बंनि पलै ॥ (94-5)
मै हरि हरि नामु अधारु रमईआ ॥ (833-8)
मै हरि हरि नामु धर सोई ॥ (735-3)
मै हरि हरि नामु विसाहु ॥ (758-14)
मै हरि हरि नामु विसाहु है हरि नामे ही जति पति ॥ (82-13)
मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेनंती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि ॥२॥ (735-4)
मै होरु न कोई तुधै जेहा ॥ (112-18)
मैगल जिउ फाससि कामहार ॥ (1188-1)
मैगलहि कामै बंधु ॥ (838-12)
मैडा मनु रता आपनड़े पिर नालि ॥ (1014-16)
मैण के दंत किउ खाईऐ सारु ॥ (943-3)
मैनदंत निकसे गुर बचनी सारु चबि चबि हरि रसु पीजै ॥३॥ (1324-17)
मैला ऊजलु ता थीऐ पारस संगि भीजै ॥ (1012-12)
मैला कदे न होवई नह लागै दागा ॥१॥ (808-15)
मैला खाइ फिरि मैलु वधाए मनमुख मैलु दुखु पावणिआ ॥७॥ (121-12)
मैला चउका मैलै थाइ ॥ (121-11)
मैला पउनु पावकु अरु नीरु ॥३॥ (1158-6)
मैला ब्रहमा मैला इंदु ॥ (1158-3)
मैला मलता इहु संसारु ॥ (1158-4)
मैला मोती मैला हीरु ॥ (1158-5)

मैला हरि के नाम बिनु जीउ ॥ (1224-1)
मैलागर बेर्हे है भुइअंगा ॥ (525-12)
मैलागर संगेण निमु बिरख सि चंदनह ॥ (1360-10)
मैली अवगणि चिति बिनु गुर गुण न समावनी बलि राम जीउ ॥ (763-10)
मैली काइआ हंस समेति ॥५॥ (1158-7)
मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भए चीता ॥१॥ रहाउ ॥ (809-18)
मैलु गई मनु निरमलु होआ अम्रित सरि तीरथि नाइ ॥ (587-6)
मैलु न उतरै सुधु न तेही ॥२॥ (200-1)
मैलु न लागै सचि समावै ॥ (1058-17)
मैलु परहरि सबदि निरमलु महलु घरु सचु जाणहे ॥ (1113-8)
मैलु लागी मनि मैलिऐ किनै अम्रितु पीआ ॥ (766-9)
मैलू कीनो साबुनु सूधु ॥ (900-3)
मैले कपरे कहा लउ धोवउ ॥ (1293-16)
मैले करम करे दुखु पाए ॥ (1062-10)
मैले जोगी जंगम जटा सहेति ॥ (1158-7)
मैले निरमल सभि हुकमि सबाए ॥ (121-12)
मैले निसि बासुर दिन तीस ॥२॥ (1158-5)
मैले ब्रहमंडाइ कै ईस ॥ (1158-5)
मैले वेस तिना कामणी दुखी रैणि विहाइ जीउ ॥७॥ (72-4)
मैले सिध साधिक अरु भेख ॥४॥ (1158-6)
मैले सिव संकरा महेस ॥ (1158-6)
मैले हछे का वीचारु आपि वरताइसी ॥ (730-2)
मो कउ इह बिधि को समझावै ॥ (215-17)
मो कउ कहा पड़्हावसि आल जाल ॥ (1194-7)
मो कउ कहा सतावहु बार बार ॥ (1194-10)
मो कउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइआ धारि जगंनाथा ॥३॥ (696-7)
मो कउ कुसलु बतावहु कोई ॥ (332-11)
मो कउ कोइ न जानत कहीअत दासु तुमारा ॥ (1005-17)
मो कउ घालि जारि भावै मारि डारि ॥३॥ (1194-11)
मो कउ जगजीवन जीवालि लै सुआमी रिद अंतरि नामु वसाइआ ॥ (882-6)
मो कउ तारि ले रामा तारि ले ॥ (873-16)
मो कउ तूं न बिसारि तू न बिसारि ॥ (1292-14)
मो कउ दीजै दानु प्रभ संतन पग राल ॥२॥ (811-1)
मो कउ देहु दाना ॥१॥ रहाउ ॥ (1005-14)
मो कउ दोनउ वखत जिवाले ॥२॥ (656-15)
मो कउ धारि क्रिपा जगजीवन दाते हरि संत पगी ले पावै ॥ (881-12)
मो कउ धारि क्रिपा मिलीऐ गुर दाते हरि नानक भगति ओमाहा राम ॥४॥२॥८॥ (699-2)

मो कउ बाह देहि बाह देहि बीठुला ॥४॥२॥ (1196-4)
मो कउ भउजलु पारि उतारि वणाह्मबै ॥८॥१॥८॥ (1104-19)
मो कउ मिलिओ रामु सनेही ॥ (657-12)
मो कउ सतिगुर भए दइआल देव ॥१॥ रहाउ ॥ (209-7)
मो कउ सतिगुर सबदि बुझाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (208-1)
मो गरीब की को गुजरावै ॥ (1161-6)
मो सउ कोऊ न कहै समझाइ ॥ (346-11)
मोइआ कउ किआ रोवहु रोइ न जाणहू ॥ (419-18)
मोइआ रोंहि रोंदे मरि जांहीं ॥ (1287-3)
मोख मुकति की सार न जाणा ॥ (466-14)
मोख मुकति दुआरि जा कै संत रिदा भंडारु ॥ (1017-11)
मोटा नाउ धराईऐ गलि अउगण भारा ॥ (1009-8)
मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥ (14-3)
मोती माणक हीरा हरि जसु गावत मनु तनु भीना हे ॥२॥ (1027-17)
मोती हीरा निरमला कंचन कोट रीसाल ॥ (17-12)
मोदी के घर खाणा पाका वा का लड़का मारिआ था ॥२॥ (874-19)
मोनि भइओ करपाती रहिओ नगन फिरिओ बन माही ॥ (641-19)
मोनि विगूता ॥ (467-17)
मोनी मोनिधारी ॥ (71-8)
मोनी होइ बैठा इकांती हिरदै कलपन गाठा ॥ (1003-1)
मोर मोर करि अधिक लाडु धरि पेखत ही जमराउ हसै ॥१॥ (91-19)
मोरचा न लागै जा हउमै सोखै ॥ (115-3)
मोरी अहं जाइ दरसन पावत हे ॥ (830-9)
मोरी रुण झुण लाइआ भैणे सावणु आइआ ॥ (557-13)
मोरो जनम मरन दुखु आथि धीर ॥ (1194-18)
मोलि अमोलु न पाइआ जाई करि किरपा गुरू दिवाइआ था ॥१॥ रहाउ ॥ (1002-5)
मोलि अमोलु न पाईऐ वणजि न लीजै हाटि ॥ (1087-1)
मोलि अमोलो सच घरि ढोलो प्रभ भावै ता मुंध भली ॥ (436-7)
मोलि कित ही नामु पाईऐ नाही नामु पाईऐ गुर बीचारा ॥५॥ (754-14)
मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ॥ (294-4)
मोलु नाही कछु करणै जोगा किआ को कहै सुणावै ॥ (883-16)
मोह की जेवरी बाधिओ चोर ॥१॥ (190-16)
मोह कुट्मब बिखै रस माते मिथिआ गहन गहे ॥१॥ (406-15)
मोह कुट्मब सिउ प्रीति न होइ ॥ (232-12)
मोह कै फाधि काल सरु सांधिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (329-7)
मोह चीकड़ि फाथे निघरत हम जाते हरि बांह प्रभू पकराइ जीउ ॥ (446-18)
मोह झूठु पसारा झूठ का झूठे लपटाइ ॥ (166-11)

मोह ठगउरी भरमु निवारहि ॥ (1068-19)
मोह ठगउली पाइ कै तुधु आपहु जगतु खुआइआ ॥ (138-17)
मोह ठगउली पाईअनु बहु दूजै भाइ विकार ॥ (1248-3)
मोह ठगउली पाईअनु विसरिआ गुणतासु ॥ (643-9)
मोह ठगउली हउ मुई सा वरतै संसारि ॥१॥ (61-10)
मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा ॥३॥ (658-6)
मोह पसार नही संगि बेली बिनु हरि गुर किनि सुखु पाइआ ॥४॥ (1043-1)
मोह बिआपे किछू सूझै नाही गुर सबदी हरि पावणिआ ॥६॥ (128-9)
मोह भरम बूडत घणो महा नरक महि वास ॥ (297-7)
मोह भरमि बहु जोनि भवाइआ ॥ (388-18)
मोह मगन अहं अंध ममता गुर किरपा ते छूटे ॥३॥ (1206-6)
मोह मगन कूप अंध ते नानक गुर काढ ॥४॥३०॥६०॥ (816-7)
मोह मगन पतित संगि प्रानी ऐसे मनहि बिसारन ॥१॥ रहाउ ॥ (820-14)
मोह मगन बिकराल माइआ तउ प्रसादी घूलीऐ ॥ (704-10)
मोह मगन मनु विआपिआ चिंदा ॥ (1019-12)
मोह मगन महि रहिआ बिआपे ॥ (759-13)
मोह मगन मीठ जोनि फासे ॥ (251-13)
मोह मगन लपटत रहै हउ हउ आवै जाइ ॥ (256-11)
मोह मगन लपटिओ भ्रम गिरह ॥ (893-3)
मोह मलन नीद ते छुटकी कउनु अनुग्रहु भइओ री ॥ (383-19)
मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥ (287-13)
मोह मान धोह भरम राखि लीजै काटि बेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (1301-6)
मोह मान भ्रमु बिनसिओ पाई सरनि दइआल ॥ (298-2)
मोह मिथन दुरंत आसा बासना बिकार ॥ (508-9)
मोह रहत बिकार थाके पंच ते संगु तूटा ॥ (577-19)
मोह रोग सोग तनु बाधिओ बहु जोनी भरमाईऐ ॥ (532-13)
मोह लोभ डूबौ संसार ॥ (1192-17)
मोह सोग विकार बिखड़े जपत नाम उधारणो ॥ (926-3)
मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ॥ (14-5)
मोहन घरि आवहु करउ जोदरीआ ॥ (1209-3)
मोहन जमु नेड़ि न आवै तुधु जपहि निदाना ॥ (248-8)
मोहन तुधु सतसंगति धिआवै दरस धिआना ॥ (248-7)
मोहन तूं मानहि एकु जी अवर सभ राली ॥ (248-5)
मोहन तूं सुफलु फलिआ सणु परवारे ॥ (248-11)
मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा ॥ (248-1)
मोहन तेरे बचन अनूप चाल निराली ॥ (248-4)
मोहन तेरे सोहनि दुआर जीउ संत धरम साला ॥ (248-1)

मोहन नामु सदा रवि रहिओ ॥ (241-10)
मोहन नीद न आवै हावै हार कजर बसत्र अभरन कीने ॥ (830-4)
मोहन पुत्र मीत भाई कुट्मब सभि तारे ॥ (248-11)
मोहन माधव क्रिस्न मुरारे ॥ (1082-7)
मोहन मोहि लीआ मनु मेरा समझसि सबदु बीचारे ॥१॥ (1197-5)
मोहन रूपु दिखावै ॥ (830-8)
मोहन लाल अनूप सरब साधारीआ ॥ (241-1)
मोहन सभि जीअ तेरे तू तारहि ॥ (1211-2)
मोहनि मोहि लीआ मनु मेरा बंधन खोलि निरारे ॥ (1112-12)
मोहनि मोहि लीआ मनु मोरा बडै भाग लिव लागी ॥ (1233-2)
मोहनि मोहि लीआ मनु मोहि ॥ (1187-16)
मोहनि सिउ बावर मनु मोहिओ झूठि ठगउरी पाई ॥१॥ (1213-3)
मोहनी महा बचित्रि चंचलि अनिक भाव दिखावए ॥ (847-6)
मोहनी मोहत रहै न होरी ॥ (1216-3)
मोहनी मोहि लीए त्रै गुनीआ ॥ (1004-5)
मोहनु प्रान मान रागीला ॥ (498-16)
मोहनु लालनु पाइओ री ॥ रहाउ दूजा ॥१॥१२८॥ (830-9)
मोहनु लालु मेरा प्रीतम मन प्राना ॥ (1005-13)
मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै पैरी पाइ जीउ ॥ (924-2)
मोहि अधारु नामु नाराइन जीवन प्रान धन मोरे ॥३॥१॥ (974-3)
मोहि अनाथ गरीब निमानी ॥ (394-11)
मोहि अनाथ तुमरी सरणाई ॥ (802-1)
मोहि अनाथ निरगुन गुणु नाही मै आहिओ तुम्हरा धोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (499-8)
मोहि अनाथ प्रभ तेरी सरण ॥ (1183-1)
मोहि अनाथ प्रिअ नाथ जिउ जानहु तिउ रखहु ॥ (847-8)
मोहि अनाथु दासु जनु तेरा अवर ओट सगली मोहि तिआगी ॥ (1301-10)
मोहि अवगन प्रभु सदा दइआला मोहि निरगुनि किआ चतुराई ॥ (1267-14)
मोहि आतुर तेरी गति नही जानी तूं आपि करहि प्रतिपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (675-6)
मोहि आसर तुअ चरन तुमारी सरनि सिधे ॥ (456-15)
मोहि ऐसे बनज सिउ नहीन काजु ॥ (1194-19)
मोहि किरपन कउ कोइ न जानत सगल भवन प्रगटई ॥ (402-8)
मोहि गइआ बैरागी जोगी घटि घटि किंगुरी वाई ॥९॥ (907-11)
मोहि गरीब कउ लेहु रलाइ ॥ (393-5)
मोहि चात्रिक तुम्ह बूंद त्रिपतउ मुखि परै ॥ (847-11)
मोहि जम डंडु न लागई तजीले सरब जंजाल ॥३॥ (346-2)
मोहि जम सिउ नाही कामा ॥३॥७॥ (659-10)
मोहि दासरो ठाकुर को ॥ (212-7)

मोहि दीन अलप मति निरगुण परिओ सरणि दुआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (999-5)
मोहि दीन क्रिपा निधि ठाकुर नव निधि नामि समाए ॥१॥ रहाउ ॥ (1266-6)
मोहि दीन हरि हरि आधारा ॥४॥ (913-1)
मोहि दीन हरि हरि आराधे ॥१॥ (912-16)
मोहि दीन हरि हरि ओट लीती ॥२॥ (912-18)
मोहि दीन हरि हरि दरि परिआ ॥३॥ (912-19)
मोहि दीन हरि हरि हरि धिआइआ ॥५॥ (913-3)
मोहि दीन हरि हरि हरि सरणी ॥७॥ (913-5)
मोहि दीन हरि हरि हरि सेवा ॥६॥ (913-4)
मोहि दुहागनि आपि सीगारी ॥ (1143-3)
मोहि दूजी नाही ठउर जिसु पहि हम जावहगे ॥२॥ (1321-4)
मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (345-10)
मोहि निरगुण अनाथु सरणी आइआ ॥ (925-10)
मोहि निरगुण कउ प्रभि कीनी दइआ ॥ (183-8)
मोहि निरगुण गुणु किछहू नाहि ॥ (867-11)
मोहि निरगुण गुणु किछू न जाता ॥ (563-2)
मोहि निरगुण गुणु नाही कोई पहुचि न साकउ तुम्हरी घाल ॥ (828-13)
मोहि निरगुण जीउ सभि गुण तेरे राम ॥ (577-5)
मोहि निरगुण दिचै थाउ संत धरम सालीऐ ॥३॥ (518-16)
मोहि निरगुण प्रीतम सुख सागर संतसंगि मनु जागा ॥ (781-10)
मोहि निरगुणु नीचु अनाथु प्रभ अगम अपारीआ जीउ ॥ (691-9)
मोहि निरगुन इकु गुनु न जान ॥१॥ (1181-19)
मोहि निरगुन कउ कोइ न राखै संता संगि समावना ॥७॥ (1018-18)
मोहि निरगुन कउ लेहु उधारी ॥१॥ रहाउ ॥ (388-13)
मोहि निरगुन तुम पूरन दाते दीना नाथ दइआल ॥१॥ (980-1)
मोहि निरगुन मति थोरीआ तूं सद ही दीन दइआल ॥२॥ (203-8)
मोहि निरगुन लीजै लड़ि लाइ ॥ रहाउ ॥ (802-2)
मोहि निरगुन सभ गुणह बिहूना ॥ (805-4)
मोहि निरगुनु सभ गुन तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (205-19)
मोहि निसतारहु निरगुनी ॥१॥ रहाउ ॥ (1186-4)
मोहि पचे पचि अंधा मूआ ॥३॥ (392-4)
मोहि बादि अहंकारि सरपर रुंनिआ ॥ (761-17)
मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥ (266-2)
मोहि बैरागु भइओ ॥ (870-9)
मोहि मछुली तुम नीर तुझ बिनु किउ सरै ॥ (847-11)
मोहि मसकीन प्रभु नामु अधारु ॥ (676-13)
मोहि मिलिओ प्रभु आपना संगी भजहि गोबिंदु ॥६॥ (1364-16)

मोहि मोहिआ जानै दूरि है ॥ (210-11)
मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥३॥ (97-1)
मोहि लागती तालाबेली ॥ (874-1)
मोहि संतह टहल दीजै गुणतासि ॥४॥३७॥८८॥ (392-18)
मोहि सरनि दीन दुख भंजन तूं देहि सोई प्रभ पाईऐ ॥ (500-11)
मोहि सिआणप कछू न आवै ॥ (626-17)
मोहि सेवकु बेचारा ॥१॥ (1005-13)
मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥१॥ (1361-14)
मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥१॥ (261-16)
मोही प्रेम पिरे प्रभि अबिनासी राम ॥ (843-18)
मोहु अरु भरमु तजहु तुम्ह बीर ॥ (356-5)
मोहु कुट्मबु दिसि आवदा सभु चलणहारा आवण जाणा ॥ (305-11)
मोहु कुट्मबु मोहु सभ कार ॥ (356-5)
मोहु कुट्मबु सभु कूड़ु है कूड़ि रहिआ लपटाइ ॥ (1424-4)
मोहु कूड़ु कुट्मबु है मनमुखु मुगधु रता ॥ (787-6)
मोहु गुमानु गुर सबदि जलाए ॥ (364-2)
मोहु तुम तजहु सगल वेकार ॥१॥ (356-5)
मोहु मलि बिवसि कीअउ कामु गहि केस पछाड़्यउ ॥ (1406-11)
मोहु माइआ वे सभ कालखा इनि मनमुखि मूड़ि सजुतीआ ॥ (776-15)
मोहु सोगु रोगु लोगु न बिआपै तह हरि हरि हरि रस भोगनी ॥१॥ रहाउ ॥ (883-10)
मोहु सोगु विजोगु है पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ (1281-10)
मोहु सोगु सभु भरमु मिटाई ॥ (1077-19)
मोहे लागा जम पुरि जाहि ॥४॥ (356-8)
म्रिग आसणु तुलसी माला ॥ (1351-16)
म्रिग तिसना पेखि भुलणे वुठे नगर गंध्रब ॥ (1425-17)
म्रिग त्रिसना अरु सुपन मनोरथ ता की कछु न वडाई ॥ (615-2)
म्रिग त्रिसना आस मिथिआ मीठी इह टेक मनहि साधारी ॥१॥ (681-6)
म्रिग त्रिसना गंधरब नगरं द्रुम छाया रचि दुरमतिह ॥ (1356-14)
म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥ (536-13)
म्रिग त्रिसना जिउ झूठो इहु जग देखि तासि उठि धावै ॥१॥ (219-9)
म्रिग त्रिसना देखि रचिओ बावर द्रुम छाइआ रंगि रात ॥१॥ (1120-11)
म्रिग पंखी मीन दीन नीच इह संकट फिरि आनो ॥ (1269-11)
म्रिग पकरे घरि आणे हाटि ॥ (1136-15)
म्रिग पकरे बिनु घोर हथीआर ॥१॥ रहाउ ॥ (1136-14)
म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥ (486-6)
म्रिगछाला पर बैठे कबीर ॥२॥ (1162-4)
म्रिगी पेखंत बधिक प्रहारेण लख्य आवधह ॥ (1354-8)

म्रित मंडल जगु साजिआ जिउ बालू घर बार ॥ (808-4)
म्रित्यु जनम भ्रमंति नरकह अनिक उपावं न सिध्यते ॥ (1357-15)
यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ॥ (721-4)
यया जउ जानहि तउ दुरमति हनि करि बसि काइआ गाउ ॥ (342-6)
यया जतन करत बहु बिधीआ ॥ (259-6)
यया जनमि न आवै सोऊ ॥ (253-2)
यया जनमु न हारीऐ गुर पूरे की टेक ॥ (253-3)
यया जाइ परहु संत सरना ॥ (253-2)
यया जारउ दुरमति दोऊ ॥ (253-1)
ययै जनमु न होवी कद ही जे करि सचु पछाणै ॥ (434-4)
यह मनु नैक न कहिओ करै ॥ (536-8)
यह माला अपनी लीजै ॥ (656-13)
या उबरन धारै सभु कोऊ ॥ (259-7)
या जग महि कोऊ रहनु न पावै इकि आवहि इकि जाही ॥१॥ रहाउ ॥ (1231-12)
या जुग महि एकहि कउ आइआ ॥ (251-9)
या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥१॥ रहाउ ॥ (1186-7)
यार मीत सुनि साजनहु बिनु हरि छूटनु नाहि ॥ (259-4)
यार वे तै राविआ लालनु मू दसि दसंदा ॥ (704-1)
यार वे नित सुख सुखेदी सा मै पाई ॥ (704-4)
यार वे पिरु आपण भाणा किछु नीसी छंदा ॥ (703-19)
यार वे प्रिअ हभे सखीआ मू कही न जेहीआ ॥ (703-16)
यार वे हिक डूं हिकि चाड़ै हउ किसु चितेहीआ ॥ (703-17)
यासु जपत मनि होइ अनंदु बिनसै दूजा भाउ ॥ (252-19)
याहू जतन करि होत छुटारा ॥ (259-6)
याहू तरन तारन समराथा ॥ (259-7)
रंक ते राउ करत खिन भीतरि प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ (828-17)
रंकु राउ जा कै एक समानि ॥ (863-11)
रंग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिंता ॥३॥ (496-7)
रंग तमासे बहु बिधी चाइ लगि रहिआ ॥ (70-17)
रंग तमासे बहुतु बिसथार ॥ (373-15)
रंग तमासे माणि हकीना ॥ (1084-8)
रंग तुंग गरीब मसत सभु लोकु सिधासी ॥ (1100-9)
रंग परंग अनेक न जापन्हि करतबा ॥ (965-7)
रंग परंग उपारजना बहु बहु बिधि भाती ॥ (138-5)
रंग परंग कतीफिआ पहिरहि धर माई ॥ (1247-1)
रंग परंग सिसटि सभ साजी बहु बहु बिधि भांति उपावणी ॥ (1314-1)
रंग रंगी राम अपने कै चरन कमल निधि थाती ॥ रहाउ ॥ (681-11)

रंग रसा जैसे सुपनाहा ॥ (392-5)
रंग रसा तूं मनहि अधारु ॥ (181-17)
रंग रूप रस बादि कि करहि पराणीआ ॥ (322-2)
रंग संगि बिखिआ के भोगा इन संगि अंध न जानी ॥१॥ (242-1)
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥ (134-3)
रंग सिउ नित रलीआ माणै अपणे कंत पिआरी जीउ ॥३॥ (1016-9)
रंगण वाला सेवीऐ सचे सिउ चितु लाइ जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (751-3)
रंगा रंग रंगन के रंगा ॥ (1305-4)
रंगि चलूलै अति रती सचे सिउ लगा नेहु ॥ (311-13)
रंगि चलूलै हरि रसि भाए ॥ (798-7)
रंगि तुमारै लाल भए है राम नाम रसि माते ॥१॥ (529-19)
रंगि न राता रसि नही बेधिआ मनमुखि पति गवाई ॥२॥ (596-7)
रंगि न राता रसि नही माता ॥ (945-3)
रंगि प्रीतम राती गुर कै सबदि वीचारी जीउ ॥ (689-10)
रंगि रतड़े मन करहले हरि रंगु सदा समालि ॥ (235-6)
रंगि रता नचै नंगु ॥ (142-11)
रंगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (23-11)
रंगि रते अपुने सुआमी सेती मरै न आवै जाई राम ॥ (780-14)
रंगि रते तेरै तुधु भावहि सचु नामु नीसाणो जीउ ॥३॥ (107-10)
रंगि रते तेरै दास अपारे ॥ (1085-9)
रंगि रते निरबाणु सचा गावही ॥ (322-2)
रंगि रते परमेसरै जन नानक तिन बलि जात ॥४॥१॥१६९॥ (218-3)
रंगि रते परमेसरै बिनसे सगल संताप जीउ ॥७॥ (761-3)
रंगि रतौ नाम सिउ कल नामु सुरि नरह बोहै ॥ (1392-8)
रंगि रलीआ माणहु मेरे पिआरे हरि किरपा करे ॥ (451-17)
रंगि रवहु आतमै राम ॥१॥ रहाउ ॥ (1103-6)
रंगि राते रवहि सि तेरै चाइ ॥ (1168-9)
रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥ (473-17)
रंगी जिनसी जंत उपाए नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ (1112-8)
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ (6-14)
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ (9-6)
रंगी रंगी भाती जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ (347-14)
रंगी ले जिहबा हरि कै नाइ ॥ (1163-11)
रंगु तिसै कउ अगला वंनी चड़ै चड़ाइ ॥१॥ (510-8)
रंगु न लगी पारब्रहम ता सरपर नरके जाइ ॥५॥ (70-16)
रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउ हुला ॥ (23-6)
रंगु रहिआ तिन्ह कामणी जिन्ह मनि भउ भाउ होइ ॥ (1280-8)

रंगु लागा अति लाल देव ॥२॥ (1180-4)
रंगे का किआ रंगीऐ जो रते रंगु लाइ जीउ ॥ (751-3)
रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ ॥२॥ (722-3)
रंचक रेत खेत तनि निरमित दुरलभ देह सवारि धरी ॥ (1387-12)
रंड बैठी दूजै भाए माइआ मोहि दुखु पाए आव घटै तनु छीजै ॥ (583-15)
रंना होईआ बोधीआ पुरस होए सईआद ॥ (1243-1)
रईअति राउ न हउमै दुनीआ ना को कहणु कहाइदा ॥११॥ (1036-3)
रईअति राजे दुरमति दोई ॥ (1057-14)
रकत किरम महि नही संघारिआ ॥ (1084-15)
रकतबीजु कालुनेमु बिदारे ॥ (224-19)
रकतु बिंदु करि निमिआ अगनि उदर मझारि ॥ (706-6)
रकतु बिंदु का इहु तनो अगनी पासि पिराणु ॥ (63-4)
रकतु बिंदु की मड़ी न होती मिति कीमति नही पाई ॥ (945-16)
रखवारे का होइ बिनास ॥ (871-14)
रखवाला गोबिंद राइ भगतन की रासि ॥१॥ (816-19)
रखवाले गुर गोपाला ॥ (622-5)
रखहि पोचारि माटी का भांडा ॥ (741-7)
रखि रखि चरन धरे वीचारी ॥ (685-14)
रखि रखि पैर धरे पउ धरणा ॥ (1023-9)
रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ ॥ (709-13)
रखि लेवहु सरणाई हरि नामु वडाई तुधु जेवडु अवरु न दाता ॥ (571-15)
रखिआ करहु गुसाई मेरे मै नामु तेरा आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ (382-9)
रखु जगतु सगल दे हथा राम ॥ (578-6)
रखु धरम भरम बिदारि मन ते उधरु हरि निरंकार ॥५॥ (508-9)
रखे रखणहारि आपि उबारिअनु ॥ (517-17)
रखै आपि दइआलु करि दासा आपणे ॥ (519-19)
रखै रखणहारु जिनि सबदु बुझाइआ ॥९॥ (1282-12)
रघुबंसि तिलकु सुंदरु दसरथ घरि मुनि बंछहि जा की सरणं ॥ (1401-19)
रचंति जीअ रचना मात गरभ असथापनं ॥ (706-4)
रचंति पुरखह कुट्मब लीला अनित आसा बिखिआ बिनोद ॥ (1359-14)
रचंति मूड़ अगिआन अंधह नानक सुपन मनोरथ माइआ ॥१॥ (707-13)
रचनहारु नह सिमरिओ मनि न बीचारि बिबेक ॥ (297-16)
रचना राचि जिनि रची जिनि सिरिआ आकारु ॥ (936-16)
रचना राचि रहे निरंकारी प्रभ मनि करम सुकरमा ॥ (1107-5)
रचना साचु बनी ॥ (914-2)
रचि रचना अपनी कल धारी ॥ (288-1)
रचि रचि ता कउ करउ सिंगारु ॥१॥ (1164-1)

रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह तेरी सभ माइआ ॥ (1123-4)
रज तम सत कल तेरी छाइआ ॥ (1038-3)
रज पंकज महि लीओ निवास ॥ (1162-12)
रजि न कोई जीविआ पहुचि न चलिआ कोइ ॥ (1412-16)
रजि रजि भोजनु खावहु मेरे भाई ॥ (807-8)
रजी धाई सदा सुखु जा का तूं मीरा ॥२॥ (400-6)
रड ॥ (1399-7)
रण झुंझनड़ा गाउ सखी हरि एकु धिआवहु ॥ (927-8)
रण महि लूझै मनूआ मारि ॥ (931-2)
रणि दरगहि तउ सीझहि भाई ॥ (259-11)
रणि रूतउ भाजै नही सूरउ थारउ नाउ ॥३४॥ (342-6)
रणु देखि सूरे चित उलास ॥ (1180-11)
रतन उपाइ धरे खीरु मथिआ होरि भखलाए जि असी कीआ ॥ (350-19)
रतन कमल कोठरी ॥ (657-2)
रतन कोठड़ी अम्रित स्मपूरन सतिगुर कै खजानै ॥१॥ (883-15)
रतन गाहकु गुरु साधू देखिओ तब रतनु बिकानो लाखा ॥१॥ (696-9)
रतन जनमु अपनो तै हारिओ गोबिंद गति नही जानी ॥ (220-11)
रतन जनमु अपार जीतिओ बहुड़ि जोनि न पाइ ॥१॥ (1226-15)
रतन जनमु इहु सफल भइआ ॥ (387-11)
रतन जनमु खोइओ प्रभु बिसरिओ इहु अउसरु कत पईहै ॥३॥ (524-12)
रतन जनमु सफलु गुरि कीआ दरसन कउ बलिहरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (213-4)
रतन जनमु हारंत जूऐ प्रभू आपि न भावही ॥ (705-10)
रतन जवाहर हरि माणक लाला ॥ (563-12)
रतन जवेहर नाम ॥ (893-17)
रतन जवेहर बनजनि आइओ कालरु लादि चलाइओ ॥२॥ (1017-3)
रतन जवेहर माणका हभे मणी मथंनि ॥ (1284-8)
रतन जवेहर माणिका अम्रितु हरि का नाउ ॥ (48-14)
रतन जवेहर लाल अपारा ॥ (1036-17)
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥ (135-12)
रतन नामु अपारु कीम नहु पवै अमुलउ ॥ (1386-13)
रतन पदारथ गुरमति पावै सागर भगति भंडार खुल्हईआ ॥ (834-5)
रतन पदारथ घट ही माही ॥ (152-6)
रतन पदारथ माणक सरवरि भरपूरे खाइ खरचि रहे तोटि न आवै ॥ (960-11)
रतन पदारथ माणका सुइना रुपा खाकु ॥ (47-10)
रतन पदारथ वणजीअहि जां सतिगुरु देइ बुझाए ॥१॥ (570-2)
रतन पदारथ वणजीअहि सतिगुरि दीआ बुझाई राम ॥ (569-18)
रतन पदारथ हरि नामु तुमारा जीउ ॥ (217-15)

रतन पदारथु परहरि तिआगिआ जत को तत ही आइआ ॥ (1255-4)
रतन बीचारु मनि वसिआ गुर कै सबदि भलै ॥ (956-6)
रतन लाल अमोल अमोलक सतिगुर सेवा लीजै ॥३॥ (1323-12)
रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥ (186-2)
रतन विगाड़ि विगोए कुतीं मुइआ सार न काई ॥ (360-14)
रतना केरी गुथली रतनी खोली आइ ॥ (954-11)
रतना पारखु जो होवै सु रतना करे वीचारु ॥ (589-10)
रतना पारखु सो धणी तिनि कीमति पाई ॥ (420-12)
रतना रतन पदारथ बहु सागरु भरिआ राम ॥ (442-16)
रतना सार न जाणई अगिआनी अंधु अंधारु ॥ (589-10)
रतना सार न जाणई आवै आपु लखाइ ॥१॥ (954-10)
रतना सार न जाणनी अंधे वतहि लोइ ॥२॥ (954-12)
रतनु अमोलकु अगम अपारा ॥ (1053-4)
रतनु अमोलकु पाइआ गुर का सबदु बीचारु ॥ (83-3)
रतनु अमोलु रिदे महि जानु ॥ (892-5)
रतनु गिआनु सभ को हिरि लीना ता सिउ कछु न बसाई ॥१॥ (219-13)
रतनु गुरू का सबदु है बूझै बूझणहारु ॥ (589-11)
रतनु छाडि कउडी संगि लागे जा ते कछू न पाईऐ ॥ (614-19)
रतनु जवेहरु लालु हरि नामा गुरि काढि तली दिखलाइआ ॥ (880-15)
रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥ (267-8)
रतनु तिआगि संग्रहन कउडी पसू नीचु इआना ॥ (547-12)
रतनु पदारथु घर ते पाइआ ॥ (129-3)
रतनु पदारथु पलरि तिआगै ॥ (113-18)
रतनु रामु घट ही के भीतरि ता को गिआनु न पाइओ ॥ (703-1)
रतनु लुकाइआ लूकै नाही जे को रखै लुकाई ॥४॥ (608-1)
रता पैनणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ॥ (16-14)
रता सचि नामि तल हीअलु सो गुरु परमलु कहीऐ ॥ (1329-2)
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ (1288-8)
रतु पीणे राजे सिरै उपरि रखीअहि एवै जापै भाउ ॥ (142-4)
रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ॥ (488-8)
रते रंगि पारब्रहम कै मनु तनु अति गुलालु ॥ (1097-16)
रते सेई जि मुखु न मोड़ंन्हि जिन्ही सिञाता साई ॥ (1425-2)
रथ न अस्व न गज सिंघासन छिन महि तिआगत नांग सिधारहु ॥ (1388-2)
रथि फिरंदै दीसहि थाव ॥ (1257-2)
रथु फिरै छाइआ धन ताकै टीडु लवै मंझि बारे ॥ (1108-10)
रब की रजाइ मंने सिर उपरि करता मंने आपु गवावै ॥ (141-12)
रबाबु पखावज ताल घुंघरू अनहद सबदु वजावै ॥१॥ रहाउ ॥ (381-11)

रमंति गुण गोबिंद नित प्रतह ॥४२॥ (1357-16)
रम राम राम माल ॥ (1271-19)
रम राम राम राम जाप ॥ (1341-13)
रमईआ के गुन चेति परानी ॥ (266-17)
रमईआ गुन गाईऐ ॥ (337-10)
रमईआ जपहु प्राणी अनत जीवण बाणी इन बिधि भव सागरु तरणा ॥२॥ (92-2)
रमईआ रेनु साध जन पावउ ॥ (177-12)
रमईए सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥१॥ (345-17)
रमणं केवलं कीरतनं सुधरमं देह धारणह ॥ (1356-7)
रमण कउ राम के गुण बाद ॥ (1224-5)
रमत राम घट घट आधार ॥ (897-4)
रमत राम जनम मरणु निवारै ॥ (865-6)
रमत राम पूरन स्रब ठांइ ॥९॥ (1236-9)
रमत राम सिउ लागो रंगु ॥ (345-1)
रमत रामु सभ रहिओ समाइ ॥१॥ (865-2)
रयति महर मुकदम सिकदारै ॥ (227-7)
रयति राजे कहा सबाए दुहु अंतरि सो जासी ॥ (1016-2)
रवण गुण गोपाल करते नानका सचु जोइ ॥२॥१०२॥१२५॥ (1228-9)
रवण गुणा कटीऐ जम जाला ॥३॥ (760-4)
रवनी रवै बंधन नही तूटहि विचि हउमै भरमु न जाई ॥ (353-14)
रवि ऊपरि गहि राखिआ चंदु ॥ (1159-16)
रवि के सुत को तिन्ह त्रासु कहा जु चरंन गुरू चितु लावत है ॥३॥ (1404-10)
रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार ॥ (346-15)
रवि मैला मैला है चंदु ॥१॥ (1158-4)
रवि रहिआ एकु अवरु नही दूआ ॥१॥ रहाउ ॥ (478-11)
रवि रहिआ जुग चारि त्रिभवण बाणी जिस की बलि राम जीउ ॥ (763-13)
रवि रहिआ प्रभु सभ कै साथि ॥३॥ (376-19)
रवि रहिआ प्रभु सभ महि आपे ॥ (804-8)
रवि रहिआ सद संगि हजूरी ॥ (289-18)
रवि रहिआ सरबत ठाई सूखमो असथूल ॥१॥ (987-19)
रवि रहिआ सरबत सुआमी ॥ (192-7)
रवि रहिआ सरबति नानकु बलि जाई ॥२०॥ (956-11)
रवि रहिआ सरबत्र मै मन सदा धिआई ॥१॥ (677-16)
रवि रहिआ सोई अवरु न कोई मन ही ते मनु मानिआ ॥ (1111-5)
रवि ससि एको ग्रिह उदिआनै ॥ (223-11)
रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै ॥ (1396-7)
रवि ससि दीप अनूप जोति त्रिभवणि जोति अपार ॥ (57-8)

रवि ससि दीपक गुरमति दुआरै मनि साचा मुखि धिआवए ॥ (1110-6)
रवि ससि दीपक जा के त्रिभवणि एका जोति मुरारि ॥ (489-11)
रवि ससि दीपक जोति सबाई ॥ (1036-12)
रवि ससि देखउ दीपक उजिआला ॥ (223-5)
रवि ससि पवणु पावकु नीरारे ॥ (237-10)
रवि ससि लउके इहु तनु किंगुरी वाजै सबदु निरारी ॥७॥ (907-17)
रविआ रामु हिरदै परम गति पाई जा गुर सरणाई आए ॥ (443-5)
रविओ सरब थानि हां ॥ (409-14)
रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥ (486-9)
रविदास धिआए प्रभ अनूप ॥ (1192-13)
रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥३॥ (93-18)
रविदासु चमारु उसतति करे हरि कीरति निमख इक गाइ ॥ (733-9)
रविदासु जपै राम नामा ॥ (659-9)
रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ॥ (487-18)
रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु ॥ (486-13)
रस कस आपु सलाहणा ए करम मेरे करतार ॥१॥ (15-10)
रस कस खाए पिंडु वधाए ॥ (1058-4)
रस कस खाए सादु गवाइ ॥ (840-6)
रस कस सादा बाहरा सची वडिआईऐ ॥ (951-3)
रस कस सुख ठाके बंधि चलाइआ राम ॥ (1110-14)
रस गीधे हरि सिउ बीधे भगत रचे भगवंत ॥ (298-2)
रस भिंनिअड़े अपुने राम संगे से लोइण नीके राम ॥ (848-17)
रस भोगण पातिसाहीआ दुख सुख संघारा ॥ (1009-8)
रस भोगहि खुसीआ करहि माणहि रंग अपार ॥ (42-6)
रस रूप रंग अनंत बीठल सासि सासि धिआइणा ॥ (925-5)
रसकि रसकि गुण गावहि हरि जन अपनै गुरदेवि निवाजा ॥१॥ रहाउ ॥ (892-12)
रसकि रसकि गुन गावह गुरमति लिव उनमनि नामि लगान ॥ (1335-7)
रसकि रसकि नानक गुण गाहि ॥४॥४०॥५१॥ (899-6)
रसकि रसकि नानकु गुन बोलै ॥२॥१॥४६॥ (1307-9)
रसकि रसकि सुआमी गुण गाइण ॥ (1312-5)
रसकि रसकि हरि के गुण गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1150-8)
रसन रसाए नामि तिसाए गुर कै सबदि विकाणे ॥ (688-17)
रसना अगह अगह गुन राती नैन दरस रंगु लाए ॥ (820-7)
रसना अराधै एकु सुआमी हरि नामि मनु तनु भीना ॥ (548-9)
रसना उचरंति नामं स्रवणं सुनंति सबद अम्रितह ॥ (709-2)
रसना उचरै गुणवती कोइ न पुजै दानु ॥ (49-2)
रसना उचरै हरि स्रवणी सुणै सो उधरै मिता ॥ (322-18)

रसना उचरै हरि हरे गुण गोविंद वखिआन ॥ (926-18)
रसना एक अनेक गुण पूरन जन की केतक उपमा कहीऐ ॥ (610-11)
रसना एक जसु गाइ न साकै बहु कीजै बहु रसुनथे ॥ (1320-2)
रसना गाए गुण अनेक ॥ (1181-16)
रसना गीधी बोलत राम ॥ (195-16)
रसना गुण गावै हरि तेरे ॥ (1080-5)
रसना गुण गोपाल निधि गाइण ॥ (713-19)
रसना गुणवंती गुण गावै ॥ (130-6)
रसना गुन गावै बेअंत ॥ (298-19)
रसना जपती तूही तूही ॥ (1215-8)
रसना जपती हरि हरि नीत ॥ (290-14)
रसना जपि जपि जीवै सुआमी ॥ (107-18)
रसना जपीऐ एकु नाम ॥ (211-16)
रसना जपै न नामु तिलु तिलु करि कटीऐ ॥ (1362-18)
रसना जापु जपउ बनवारी ॥१॥ (740-16)
रसना नामु करन सुणि जीवे ॥ (1137-8)
रसना नामु जपत गोपाल ॥३॥ (866-5)
रसना नामु जपहु तब मथीऐ इन बिधि अम्रितु पावहु ॥२॥ (728-6)
रसना नामु धिआए रसि भीजै रस ही ते रसु पाइदा ॥७॥ (1064-6)
रसना नामु सभु कोई कहै ॥ (1262-8)
रसना फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु ॥ (594-1)
रसना फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु ॥ (791-5)
रसना बखानै नामु ॥ (838-14)
रसना रमत सुनत सुखु स्रवना चित चेते सुखु होई ॥ (659-18)
रसना रमहु राम गुण नीत ॥ (185-4)
रसना रवहु एकु नाराइणु साची दरगह पावहु मानु ॥१॥ (827-8)
रसना रसु चाखि सदा रहै रंगि राती सहजे हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (119-7)
रसना राम कहत गुण सोहं ॥ (1211-13)
रसना राम को जसु गाउ ॥ (1220-14)
रसना राम नाम जसु कहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (200-13)
रसना राम नाम हितु जा कै कहा करै जमना ॥१॥ रहाउ ॥ (476-19)
रसना राम रसाइनि माती ॥ (681-11)
रसना राम रसाइनु पीजै ॥२॥ (1164-3)
रसना राम राम बखानु ॥ (1121-6)
रसना राम राम रवंत ॥ (501-4)
रसना रामु रवै सदा भाई साचा सादु सुआउ ॥ (640-6)
रसना सचा सिमरीऐ मनु तनु निरमलु होइ ॥ (49-6)

रसना सबदि रती गुण गावै दरि साचै पति पाई हे ॥२॥ (1046-2)
रसना सबदु वीचारि रसि राती लाल भई रंगु लाई ॥ (1234-4)
रसना साद चखै भाइ दूजै अति फीके लोभ बिकारे ॥ (980-15)
रसना सिमरत पाप बिलाइण ॥१॥ रहाउ ॥ (867-19)
रसना सिमरि सिमरि जसु जीवा नानक दास सदा बलि जावन ॥२॥६॥२५॥ (717-4)
रसना सोई लोभि मीठै सादि ॥ (182-9)
रसना हरि रसि राती रंगु लाए ॥ (114-12)
रसना हरि रसु चाखिआ सहजि सुभाइ ॥ (158-13)
रसना हरि रसु चाखु मुये जीउ अन रस साद गवाए ॥ (246-15)
रसना हरि रसु न चखिओ कमलु न होइओ परगासु ॥ (949-12)
रसना हरि रसु न चखिओ फीका बोलाता ॥ (514-18)
रसना हरि रसु पीजै अंतरु भीजै साच सबदि बीचारी ॥ (570-17)
रसना हरि सादि लगी सहजि सुभाइ ॥ (560-4)
रसना हरि हरि भोजनि त्रिपतानी अखीअन कउ संतोखु प्रभ दरसन ॥१॥ रहाउ ॥ (1303-11)
रसनि रसनि रसि गावहि हरि गुण रसना हरि रसु धारी ॥ (507-8)
रसि गाए गुन परमानंद ॥१॥ (201-17)
रसि चूगहि मनमुखि गावारि ॥ (1275-16)
रसि प्रेम भरी कछु बोलि न जाणी ॥ (459-12)
रसि प्रेमि मिली जीउ सबदि सुहावै ॥ (243-4)
रसि भोगण अति रूप रस माते इन संगि सूखु न पाइआ ॥ (803-3)
रसि रसि गुण गावउ ठाकुर के मोरै हिरदै बसहु गोपाल ॥१॥ (680-11)
रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुणी ॥२॥ (990-4)
रसि रसि भोग करहि बहु रंगी ॥ (180-5)
रसि रसि भोग करे प्रभु मेरा हम तिसु आगै जीउ कटि कटि पईआ ॥५॥ (836-8)
रसि रसि रामु रसालु सलाहा ॥ (699-3)
रसि रसिआ मति एकै भाइ ॥ (411-17)
रसि रसिआ हरिआ सदा पकै करमि धिआनि ॥ (147-11)
रसीआ होवै मुसक का तब फूलु पछाणै ॥९॥ (725-8)
रसु अम्रितु नामु रसु अति भला कितु बिधि मिलै रसु खाइ ॥ (41-9)
रसु कसु टटरि पाईऐ तपै तै विललाइ ॥ (143-1)
रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ॥ (15-12)
रसु मिसु मेधु अम्रितु बिखु चाखी तउ पंच प्रगट संतापै ॥ (93-6)
रसु संग्रहि बिखु परहरि तिआगिआ ॥ (221-4)
रसु सतु झोलि महा रसु पावै ॥१॥ (411-10)
रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु ॥ (15-12)
रहंत जनमं हरि दरस लीणा ॥ (1355-4)
रहंत संग भगवान सिमरण नानक लबध्यं अचुत तनह ॥१॥ (1353-18)

रहंता जनम मरणेन रमणं नानक हरि कीरतनह ॥७॥ (1360-12)
रहउ साहिब की टेक न मोहै मोहणी ॥१॥ रहाउ ॥ (752-16)
रहण कहण ते रहै न कोई किसु पहि करउ बिनंती ॥ (931-5)
रहणु न पावहि सुरि नर देवा ॥ (740-1)
रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ (269-7)
रहत उपाधि समाधि सुख आसन भगति वछलु ग्रिहि पाइओ ॥१॥ (1214-18)
रहत रहत रहि जाहि बिकारा ॥ (259-11)
रहदे खुहदे निंदक मारिअनु करि आपे आहरु ॥ (315-1)
रहनु नही गहु कितनो ॥१॥ रहाउ ॥ (212-5)
रहम तेरी सुखु पाइआ सदा नानक की अरदासि ॥४॥३॥ (724-9)
रहरासि हमारी गुर गोपाला ॥ (886-15)
रहस रंग फुरमाइसि काई ॥ (1331-10)
रहसी रामु रिदै इक भाइ ॥ (931-4)
रहसी वेखि हदूरि पिरि रावी घरि सोहीऐ बलि राम जीउ ॥ (764-2)
रहसु कीअउ सुर देव तोहि जसु जय जय ज्मपहि ॥ (1409-17)
रहहि अतीत सचे सरणाई ॥१॥ (227-12)
रहहि इकांति एको मनि वसिआ आसा माहि निरासो ॥ (938-16)
रहि न सकउ दरसन देखे बिनु सहजि मिलउ गुरु मेलि मिलाए ॥१॥ रहाउ ॥ (1172-11)
रहिओ अचेतु न चेतिओ गोबिंद बिरथा अउध सिरानी ॥ (633-14)
रहिओ झझकि नाही परवाना ॥ (341-1)
रहिओ संत हउ टोलि साध बहुतेरे डिठे ॥ (1395-19)
रहित बिकार अलप माइआ ते अह्मबुधि बिखु तिआगी ॥ (1217-10)
रहु रहु री बहुरीआ घूंघटु जिनि काढै ॥ (484-3)
रहै अतीतु अपर्मपरि राता साचु मनि गुण सारिआ ॥ (844-7)
रहै अतीतु गुरमति ले ऊपरि हरि निरभउ कै घरि पाइआ ॥६॥ (1041-1)
रहै अतीतु जाणै सभु तिस का ॥ (832-11)
रहै अलिपतु चलते घरि आणै ॥ (1042-14)
रहै उदासु आस निरासा सहज धिआनि बैरागी ॥ (1126-4)
रहै गगन पुरि द्रिसटि समैसरि अनहत सबदि रंगीणा ॥२॥ (907-7)
रहै निरालमु एका सचु करणी ॥ (227-18)
रहै बिहंगम कतहि न जाई ॥ (340-12)
रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥ (467-19)
रहै रजाई हुकमु पछाणै ॥ (832-10)
रहै लपटि घट परचउ पावा ॥१७॥ (341-4)
रांगनि रांगउ सीवनि सीवउ ॥ (485-14)
रांड न बैसई प्रभ पुरख चिराणे ॥ (544-12)
राइसा पिआरे का राइसा जितु सदा सुखु होई ॥ रहाउ ॥ (725-1)

राखणहारा अगम अपारा सुणि बेनंती मेरीआ ॥ (1110-4)
राखणहारु पूरा सुख सागरु ॥२॥ (1147-4)
राखन कउ दूसर नही कोइ ॥ (898-5)
राखनहार अपार प्रभ ता की निरमल सेव ॥ (817-16)
राखनहार गोविद गुर आपि ॥२॥ (1149-10)
राखनहार दइआल ॥ (894-16)
राखनहार निदान ॥३॥ (895-13)
राखनहार निदान ॥३॥ (896-17)
राखनहार रखि लेइ निदान ॥ (183-12)
राखनहार सदा मिहरवान ॥ (1271-4)
राखनहारु अपारु राखै अगनि माहि ॥ (398-19)
राखनहारु सम्हारि जना ॥ (913-9)
राखनहारे कउ सालाही ॥४॥६॥७५॥ (177-17)
राखनहारे प्रभ पिआरे मुझ ते कछू न होआ होन ॥ (458-5)
राखनहारे राखहु आपि ॥ (890-9)
राखनहारै राखिआ अपनी करि मइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (817-10)
राखनहारै राखिआ भए भ्रम भसना ॥ (811-13)
राखनहारै राखिओ बारिकु सतिगुरि तापु उतारिआ ॥१॥ (619-3)
राखनहारै हाथ दे राखिओ नामु पदारथु पाइआ ॥१॥ (1268-5)
राखहि पैज दास अपुने की कारज आपि सवारे ॥ रहाउ ॥ (627-10)
राखहु अपनी सरणि प्रभ मोहि किरपा धारे ॥ (809-2)
राखहु कंध उसारहु नीवां ॥ (659-5)
राखहु खेती हरि गुर हेती जागत चोरु न लागै ॥ (1110-5)
राखहु पैज नानक सरणाइ ॥४॥५॥१८॥ (1140-8)
राखहु राखनहार दइआला नानक घर के गोले ॥३॥१२॥ (674-4)
राखहु राखहु किरपा धारि ॥ (1139-16)
राखहु सरणि अनाथ दीन कउ करहु हमारी गाते ॥१॥ (209-3)
राखा एकु हमारा सुआमी ॥ (1136-6)
राखि लीआ अपना सेवको मुखि निंदक छारु ॥१॥ (818-16)
राखि लीआ गुरि पूरै आपि ॥ (190-12)
राखि लीए अपनी किरपा धारि ॥ (866-11)
राखि लीए अपने जन आप ॥ (821-2)
राखि लीए अपुनै गुरि गोपाल ॥४॥ (1347-14)
राखि लीए तिनि रखनहारि सभ बिआधि मिटाई ॥ (819-18)
राखि लीए प्रभि भगत जना अपणी चरणी लाए राम ॥ (926-5)
राखि लीए प्रभि राखनहारै जो प्रभ अपुने भाणे ॥ (383-17)
राखि लीए रखणहारै सदा निरमल करणी ॥ (460-9)

राखि लीए सगले प्रभि आपे ॥ (105-5)
राखि लीए सतिगुर की सरण ॥ (827-10)
राखि लीनो सभु जन का पड़दा ॥ (1145-1)
राखि लेइ प्रभु राखनहारा ॥ (192-11)
राखि लेइ साहिबु प्रभु मेरा ॥४॥१॥२२॥ (676-13)
राखि लेहु इहु बिखई जीउ देहु अपुना नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (745-17)
राखि लेहु गोबिंद दइआल ॥ (1193-3)
राखि लेहु दास अपुने कउ सदा सदा किरपाल ॥ (1222-6)
राखि लेहु नानकु जनु तुमरा जिउ पिता पूत किरपाला ॥४॥१॥ (608-11)
राखि लेहु निरगुन नरनाथा ॥ (259-8)
राखि लेहु पिता प्रभ मेरे अनाथह करि प्रतिपाला ॥३॥ (207-12)
राखि लेहु प्रभ आपणे नानक सद बलिहारि ॥१॥ (523-2)
राखि लेहु प्रभ सम्रिथ दाते तुम प्रभ अगम अपार ॥ (1224-3)
राखि लेहु प्रभु करणहार जीअ जंत करि दइआ ॥ (47-13)
राखि लेहु मोहि निरगुनीआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (741-1)
राखि लेहु हम ते बिगरी ॥ (856-12)
राखि लैहु भाई मेरे कउ प्रभ आगै अरदासि ॥ रहाउ ॥ (619-11)
राखी पैज मेरै करतारि ॥५॥९९॥१६८॥ (199-18)
राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥ (270-8)
राखु पिता प्रभ मेरे ॥ (205-18)
राखु पैज नाम अपुने की करन करावनहारे ॥१॥ (631-3)
राखु राखु मेरे बीठुला जनु सरनि तुम्हारी ॥१॥ रहाउ ॥ (855-18)
राखु राखु राखु प्रभ मेरे मै राखहु किरपा धारे ॥ (983-18)
राखु राखु राखु सुखदाते सभु नानक जगतु तुम्हारहि ॥२॥११॥३४॥ (1211-5)
राखु राखु सरणि प्रभ अपनी अगनि सागर विकराला ॥ (378-7)
राखु सदा प्रभ अपनै साथ ॥ (828-16)
राखु सरणि जगदीसुर पिआरे मोहि सरधा पूरि हरि गुसाई ॥ (369-18)
राखु हो किरपाल ॥ रहाउ ॥ (1119-8)
राखे राखनहार दइआल ॥ (892-14)
राखै आपि वडिआई देई ॥२॥ (221-14)
राग एक संगि पंच बरंगन ॥ (1429-19)
राग नाद छोडि हरि सेवीऐ ता दरगह पाईऐ मानु ॥ (849-6)
राग नाद सबदि सोहणे जा लागै सहजि धिआनु ॥ (849-6)
राग माला ॥ (1429-19)
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ (917-3)
राग रतन परीआ परवार ॥ (351-11)
राग रागनी डि्मभ होइ बैठा उनि हरि पहि किआ लीना ॥३॥ (654-19)

राग सुणाइ कहावहि बीते ॥ (414-15)
रागा विचि स्रीरागु है जे सचि धरे पिआरु ॥ (83-2)
रागि नादि मनु दूजै भाइ ॥ (1342-7)
रागु आसा घरु २ महला ३ (360-17)
रागु आसा घरु २ महला ४ ॥ (366-1)
रागु आसा घरु २ महला ५ (370-2)
रागु आसा घरु ५ महला ५ (380-6)
रागु आसा घरु ६ महला ५ ॥ (380-11)
रागु आसा घरु ७ महला ५ ॥ (384-7)
रागु आसा घरु ८ के काफी□ महला ४ ॥ (369-1)
रागु आसा छंत महला ४ घरु १ (442-5)
रागु आसा बाणी भगता की ॥ (475-13)
रागु आसा महला १ ॥ (12-16)
रागु आसा महला १ ॥ (413-16)
रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु २ (411-9)
रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु ३ (417-1)
रागु आसा महला १ घरु १ सो दरु ॥ (347-1)
रागु आसा महला १ चउपदे घरु २ ॥ (348-18)
रागु आसा महला १ छंत घरु १ (435-18)
रागु आसा महला १ छंत घरु २ (438-1)
रागु आसा महला १ पटी लिखी (432-8)
रागु आसा महला ३ असटपदीआ घरु ८ काफी ॥ (424-11)
रागु आसा महला ३ पटी (434-13)
रागु आसा महला ४ सो पुरखु (10-16)
रागु आसा महला ५ घरु १२ (405-1)
रागु आसा महला ५ घरु १३ (406-11)
रागु आसा महला ५ घरु १७ आसावरी (409-7)
रागु आसा महला ५ छंत घरु १ ॥ (452-10)
रागु आसा महला ९ ॥ (411-4)
रागु आसावरी घरु १६ के २ महला ४ सुधंग (369-10)
रागु कलिआन महला ४ (1319-1)
रागु कलिआनु महला ५ घरु १ (1321-13)
रागु कानड़ा चउपदे महला ४ घरु १ (1294-1)
रागु कानड़ा बाणी नामदेव जीउ की (1318-16)
रागु केदारा बाणी कबीर जीउ की (1123-1)
रागु केदारा बाणी रविदास जीउ की (1124-13)

रागु गउड़ी ॥ (337-18)
रागु गउड़ी ११ ॥ (338-3)
रागु गउड़ी असटपदीआ महला १ गउड़ी गुआरेरी (220-18)
रागु गउड़ी गुआरेरी ॥ (157-15)
रागु गउड़ी गुआरेरी असटपदी कबीर जी की (330-4)
रागु गउड़ी गुआरेरी महला १ चउपदे दुपदे (151-1)
रागु गउड़ी गुआरेरी महला ३ असटपदीआ (229-11)
रागु गउड़ी गुआरेरी महला ५ असटपदीआ (235-9)
रागु गउड़ी गुआरेरी महला ५ चउपदे दुपदे (185-10)
रागु गउड़ी चेती ॥ (331-17)
रागु गउड़ी चेती बाणी नामदेउ जीउ की (345-2)
रागु गउड़ी चेती महला ५ दुपदे (202-17)
रागु गउड़ी चेती□ महला ५ (210-8)
रागु गउड़ी थितं◌ी कबीर जी कं◌ी ॥ (343-4)
रागु गउड़ी पूरबी छंत महला १ ॥ (242-7)
रागु गउड़ी पूरबी छंत महला ३ (243-14)
रागु गउड़ी पूरबी बावन अखरी कबीर जीउ की (340-1)
रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (13-8)
रागु गउड़ी पूरबी महला ४ करहले (234-3)
रागु गउड़ी पूरबी महला ५ (204-1)
रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ (13-14)
रागु गउड़ी पूरबी□ कबीर जी ॥ (334-8)
रागु गउड़ी पूरबी□ महला ५ (204-17)
रागु गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ (233-11)
रागु गउड़ी बैरागणि महला ५ (203-5)
रागु गउड़ी बैराग□णि कबीर जी (332-8)
रागु गउड़ी भगतां की बाणी (323-10)
रागु गउड़ी महला ५ (213-10)
रागु गउड़ी महला ९ ॥ (219-1)
रागु गउड़ी माझ महला ४ ॥ (172-18)
रागु गउड़ी माझ महला ५ (240-17)
रागु गउड़ी माझ□ महला ५ (217-17)
रागु गउड़ी माला□ महला ५ (214-12)
रागु गउड़ी मा□झ महला ५ (216-14)
रागु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी (345-6)

रागु गउड़ी वार कबीर जीउ के ७ ॥ (344-9)
रागु गउड़ी□ पूरबी महला ५ (210-1)
रागु गूजरी भगता की बाणी (524-7)
रागु गूजरी महला १ चउपदे घरु १ ॥ (489-3)
रागु गूजरी महला ३ घरु १ (490-1)
रागु गूजरी महला ४ ॥ (10-1)
रागु गूजरी महला ४ चउपदे घरु १ ॥ (492-8)
रागु गूजरी महला ५ ॥ (10-8)
रागु गूजरी वार महला ५ (517-14)
रागु गोंड असटपदीआ महला ५ घरु २ (869-8)
रागु गोंड चउपदे महला ४ घरु १ ॥ (859-3)
रागु गोंड बाणी कबीर जीउ की घरु २ (870-13)
रागु गोंड बाणी नामदेउ जी की घरु १ (873-8)
रागु गोंड बाणी नामदेउ जीउ की घरु २ (874-6)
रागु गोंड बाणी भगता की ॥ (870-1)
रागु गोंड बाणी रविदास जीउ की घरु २ (875-4)
रागु गोंड महला ५ चउपदे घरु १ (862-3)
रागु गोंड महला ५ चउपदे घरु २ (862-14)
रागु गौड़ी मालवा महला ५ (214-5)
रागु ग□उड़ी छंत महला ५ (247-6)
रागु जैजावंती महला ९ ॥ (1352-3)
रागु टोडी महला ४ घरु १ ॥ (711-3)
रागु तिलंग महला १ घरु १ (721-1)
रागु देवगंधारी महला ४ घरु १ ॥ (527-3)
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ३ (533-13)
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ४ (534-11)
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ५ (534-15)
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ६ (535-5)
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ७ (536-3)
रागु देवगंधारी महला ९ ॥ (536-8)
रागु धनासरी बाणी भगत कबीर जी की (691-15)
रागु धनासरी महला १ ॥ (13-1)
रागु धनासरी महला ५ (675-10)
रागु धनासिरी महला ३ घरु ४ (666-8)
रागु नट नाराइन महला ४ (975-1)
रागु नट नाराइन महला ५ (978-6)

राग नादु नही दूजा भाउ ॥ (350-11)
रागु नादु सभु सचु है कीमति कही न जाइ ॥ (1423-18)
रागु परभाती बिभास महला १ चउपदे घरु १ ॥ (1327-3)
रागु प्रभाती महला ३ चउपदे (1332-17)
रागु बसंतु महला १ घरु १ चउपदे दुतुके (1168-1)
रागु बसंतु महला ४ घरु १ इक तुके (1177-13)
रागु बसंतु हिंडोल महला ९ ॥ (1186-7)
रागु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १ ॥ (795-3)
रागु बिलावलु महला ४ घरु ३ (798-18)
रागु बिलावलु महला ४ पड़ताल घरु १३ ॥ (800-19)
रागु बिलावलु महला ५ असटपदी घरु १२ (837-8)
रागु बिलावलु महला ५ घरु १३ पड़ताल (830-3)
रागु बिलावलु महला ५ घरु २ यानड़ीए कै घरि गावणा (802-7)
रागु बिलावलु महला ५ घरु ४ (803-10)
रागु बिलावलु महला ५ घरु ४ दुपदे (806-6)
रागु बिलावलु महला ५ घरु ५ चउपदे (808-3)
रागु बिलावलु महला ५ चउपदे घरु १ (801-6)
रागु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ६ (820-4)
रागु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ७ (821-10)
रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ५ (817-8)
रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ८ (827-15)
रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ९ (829-14)
रागु बिलावलु महला ९ दुपदे (830-14)
रागु बिहागड़ा चउपदे महला ५ घरु २ ॥ (537-3)
रागु बिहागड़ा छंत महला ४ घरु १ (537-13)
रागु बिहागड़ा महला ४ ॥ (538-11)
रागु बिहागड़ा महला ५ ॥ (542-15)
रागु बिहागड़ा महला ९ ॥ (537-8)
रागु बैराड़ी महला ४ घरु १ दुपदे (719-1)
रागु बैराड़ी महला ५ घरु १ (720-15)
रागु भैरउ महला १ घरु १ चउपदे (1125-1)
रागु भैरउ महला १ घरु २ ॥ (1125-9)
रागु भैरउ महला ३ चउपदे घरु १ (1127-18)
रागु भैरउ महला ४ चउपदे घरु १ (1133-19)
रागु भैरउ महला ५ चउपदे घरु २ (1138-15)
रागु भैरउ महला ५ पड़ताल घरु ३ (1153-1)
रागु मलार चउपदे महला १ घरु १ (1254-1)

रागु मलार छंत महला ५ ॥ (1278-3)
रागु मलार बाणी भगत नामदेव जीउ की ॥ (1292-1)
रागु मलार महला ४ घरु १ चउपदे (1262-17)
रागु मलार महला ५ चउपदे घरु १ (1266-4)
रागु मलार महला ५ चउपदे घरु २ (1270-5)
रागु मलार महला ५ दुपदे घरु १ (1267-9)
रागु मलार महला ५ पड़ताल घरु ३ (1271-15)
रागु माझ असटपदीआ महला १ घरु १ (109-7)
रागु माझ चउपदे घरु १ महला ४ (94-1)
रागु माझ महला ५ ॥ (97-4)
रागु मारू बाणी कबीर जीउ की (1102-18)
रागु मारू बाणी कबीर जीउ की (1104-13)
रागु मारू बाणी जैदेउ जीउ की (1106-1)
रागु मारू बाणी रविदास जीउ की (1106-11)
रागु मारू महला १ घरु १ चउपदे (989-1)
रागु मारू महला १ घरु ५ (993-1)
रागु माली गउड़ा महला ४ (984-1)
रागु रामकली महला ५ ॥ (927-8)
रागु रामकली महला ५ घरु १ (882-15)
रागु रामकली महला ५ घरु २ (886-3)
रागु रामकली महला ५ घरु २ दुपदे (901-1)
रागु रामकली महला ५ पड़ताल घरु ३ (901-9)
रागु रामकली महला ९ तिपदे ॥ (901-17)
रागु वडहंसु महला १ घरु १ ॥ (557-3)
रागु वडहंसु महला १ घरु ५ अलाहणीआ (578-18)
रागु वडहंसु महला ५ छंत घरु ४ (576-14)
रागु सारंग बाणी भगतां की ॥ (1251-16)
रागु सारंग महला ९ ॥ (1231-8)
रागु सारग असटपदीआ महला १ घरु १ (1232-5)
रागु सारग चउपदे महला १ घरु १ (1197-1)
रागु सिरीरागु महला पहिला १ घरु १ ॥ (14-2)
रागु सूही असटपदीआ महला १ घरु १ (750-12)
रागु सूही असटपदीआ महला ४ घरु २ (757-9)
रागु सूही असटपदीआ महला ५ घरु १ (759-11)
रागु सूही छंत महला १ घरु १ (763-9)
रागु सूही छंत महला १ घरु ४ ॥ (765-12)
रागु सूही छंत महला ३ घरु २ (767-15)

रागु सूही छंत महला ४ घरु २ ॥ (774-15)
रागु सूही छंत महला ४ घरु ३ (775-8)
रागु सूही छंत महला ५ घरु १ (777-6)
रागु सूही छंत महला ५ घरु २ (778-15)
रागु सूही छंत महला ५ घरु ३ (779-9)
रागु सूही बाणी सेख फरीद जी की ॥ (794-10)
रागु सूही बाणी स्री कबीर जीउ तथा सभना भगता की ॥ (792-6)
रागु सूही बाणी स्री रविदास जीउ की (793-13)
रागु सूही महला १ कुचजी (762-5)
रागु सूही महला १ घरु ३ (764-17)
रागु सूही महला १ चउपदे घरु १ (728-3)
रागु सूही महला १ छंतु घरु २ (764-5)
रागु सूही महला ३ घरु १ असटपदीआ (753-5)
रागु सूही महला ३ घरु १० (755-1)
रागु सूही महला ३ घरु ३ ॥ (768-9)
रागु सूही महला ४ असटपदीआ घरु १० (758-13)
रागु सूही महला ४ घरु १ (731-6)
रागु सूही महला ४ छंत घरु १ (773-1)
रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु १० काफी (761-6)
रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु ९ (760-9)
रागु सूही महला ५ घरु १ (736-10)
रागु सूही महला ५ घरु ३ (760-1)
रागु सूही महला ५ घरु ४ (745-6)
रागु सूही महला ५ घरु ५ पड़ताल (746-2)
रागु सूही महला ५ घरु ६ (746-16)
रागु सूही महला ५ घरु ७ (747-3)
रागु सूही महला ५ छंत (784-11)
रागु सोरठि ॥ (656-13)
रागु सोरठि बाणी भगत कबीर जी की घरु १ (654-4)
रागु सोरठि बाणी भगत नामदे जी की घरु २ (656-19)
रागु सोरठि बाणी भगत भीखन की (659-11)
रागु सोरठि बाणी भगत रविदास जी की (657-16)
रागु सोरठि महला ५ ॥ (624-7)
रागु सोरठि वार महले ४ की (642-10)
रागै नादै बाहरा इनी हुकमु न बूझिआ जाइ ॥ (1423-18)
राचहु नाथ ही सहाई संतना ॥ (830-10)
राचि रहिओ तू संगि सुपना ॥१॥ रहाउ ॥ (889-19)

राचि रहिओ रचना प्रभु अपनी कहा लाभु कहा खोईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (528-17)
राचि रहे बनिता बिनोद कुसम रंग बिख सोर ॥ (251-19)
राजं त मानं अभिमानं त हीनं ॥ (1355-1)
राजं रंगं रूपं मालं जोबनु ते जूआरी ॥ (1015-18)
राज कपटं रूप कपटं धन कपटं कुल गरबतह ॥ (708-2)
राज जोबन प्रभ तूं धनी ॥ (211-6)
राज जोबन बिसरंत हरि माइआ महा दुखु एहु महांत कहै ॥ (683-14)
राज ते कीट कीट ते सुरपति करि दोख जठर कउ भरते ॥ (1267-4)
राज दुआरै सोभ सु मानै ॥१॥ (221-12)
राज धनु परवारु मेरै सरबसो गोबिंद ॥ (1304-3)
राज न भाग न हुकम न सादन ॥ (406-18)
राज बिनासी ताम बिनासी सातकु भी बेनाधा ॥ (1204-8)
राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ ॥ (658-1)
राज भोग अरु छत्र सिंघासन बहु सुंदरि रमना ॥ (477-1)
राज महि राजु जोग महि जोगी ॥ (284-3)
राज माल सादन दरबार ॥ (1137-13)
राज मिलक जोबन ग्रिह सोभा रूपवंतु जोआनी ॥ (379-17)
राज मिलक सिकदारीआ रस भोगण बिसथार ॥ (70-16)
राज मिलख अरु बहुतु फुरमाइसि ॥ (373-16)
राज मिलख खुसीआ घणी धिआइ मुखु न मोड़े ॥ (323-9)
राज मिलख धन जोबना नामै बिनु बादि ॥१॥ रहाउ ॥ (810-4)
राज मिलख नही आपन दरबा ॥१॥ (187-5)
राज मिलख सिकदारीआ अगनी महि जालु ॥१॥ (811-15)
राज रंग माइआ बिसथार ॥ (288-16)
राज रंग रूप सभि कूर ॥ (888-13)
राज लीला तेरै नामि बनाई ॥ (385-10)
राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा ॥ (642-6)
राजन कउनु तुमारै आवै ॥ (1105-1)
राजन किउ सोइआ तू नीद भरे जागत कत नाही राम ॥ (548-1)
राजन जोगु करि हां ॥ (409-11)
राजन महि तूं राजा कहीअहि भूमन महि भूमा ॥ (507-11)
राजन महि राजा उरझाइओ मानन महि अभिमानी ॥ (613-5)
राजन राजि सदा बिगसांतउ ॥ (352-9)
राजन राम रवै हितकारि ॥ (931-2)
राजनु जाणहि आपणा दरि घरि ठाक न होइ ॥ (57-4)
राजनु जाणि परम गति पावहि ॥४॥ (226-17)
राजस तामस सत काल समावै ॥ (840-13)

राजसु सातकु तामसु डरपहि केते रूप उपाइआ ॥ (999-1)
राजा जनमेजा दे मतीं बरजि बिआसि पड़्हाइआ ॥ (1344-5)
राजा जानै सगल राजु हमरा तिउ हरि जन टेक सुआमी ॥१॥ (679-13)
राजा तखति टिकै गुणी भै पंचाइण रतु ॥१॥ (992-4)
राजा निआउ करे हथि होइ ॥ (350-2)
राजा परजा सम करि मारै ऐसो कालु बडानी रे ॥२॥ (855-9)
राजा बालकु नगरी काची दुसटा नालि पिआरो ॥ (1171-10)
राजा मंगै दितै गंढु पाइ ॥ (143-11)
राजा रंकु करै खिन भीतरि नीचह जोति धरी ॥१॥ (499-14)
राजा रंकु दोऊ मिलि रोई है ॥१॥ (325-1)
राजा राजि न त्रिपतिआ साइर भरे किसुक ॥ (148-15)
राजा राम अनहद किंगुरी बाजै ॥ (92-15)
राजा राम ककरीआ बरे पकाए ॥ (477-5)
राजा राम की सरणाइ ॥ (899-13)
राजा राम की सेव न कीनी कहि रविदास चमारा ॥३॥३॥ (486-17)
राजा राम जपत को को न तरिओ ॥ (1105-9)
राजा राम तूं ऐसा निरभउ तरन तारन राम राइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (339-6)
राजा राम नामु मोरा ब्रहम गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (1159-15)
राजा रामु मउलिआ अनत भाइ ॥ (1193-15)
राजा रामु रमत सुखु पाइओ बरसु मेघ सुखदाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1268-11)
राजा सगली स्रिसटि का हरि नामि मनु भिंना ॥ (707-11)
राजास्रम मिति नही जानी तेरी ॥ (1252-3)
राजि रंगु मालि रंगु ॥ (142-11)
राजु कमाइ करी जिनि थैली ता कै संगि न चंचलि चलीआ ॥२॥ (1004-7)
राजु कमावै दह दिस सारी ॥ (176-1)
राजु कहावै हउ करम कमावै बाधिओ नलिनी भ्रमि सूआ ॥२॥ (407-16)
राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥ (1399-3)
राजु जोगु माणिओ बसिओ निरवैरु रिदंतरि ॥ (1390-4)
राजु जोबनु अवध जो दीसै सभु किछु जुग महि घाटिआ ॥ (207-18)
राजु तेरा कबहु न जावै ॥ (567-1)
राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥ (534-4)
राजु मालु अनेक भोग रस सगल तरवर की छाम ॥ (713-6)
राजु मालु जंजालु काजि न कितै गनो ॥ (398-14)
राजु मालु जोबनु तनु जीअरा इन ऊपरि लै बारे ॥१॥ (680-18)
राजु मालु जोबनु सभु छांव ॥ (1257-2)
राजु मालु झूठी सभ माइआ ॥ (1155-2)
राजु मालु रूपु जाति जोबनु पंजे ठग ॥ (1288-14)

राजु रूपु झूठा दिन चारि ॥ (796-2)
राजु हमारा सद ही निहचलु ॥ (1141-12)
राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥१॥ (658-9)
राजे ओइ न आखीअहि भिड़ि मरहि फिरि जूनी पाहि ॥ (590-8)
राजे चुली निआव की पड़िआ सचु धिआनु ॥ (1240-8)
राजे धरमु करहि परथाए ॥ (1024-1)
राजे रयति सिकदार कोइ न रहसीओ ॥ (141-16)
राजे राइ रंक नही रहणा आइ जाइ जुग चारे ॥ (931-5)
राजे सीह मुकदम कुते ॥ (1288-7)
राजो त तेरा सदा निहचलु एहु कबहु न जावए ॥ (567-1)
राणा राउ न को रहै रंगु न तुंगु फकीरु ॥ (936-6)
राणा राउ राज भए रंका उनि झूठे कहणु कहाइओ ॥ (1235-5)
राणा राउ सभै कोऊ चालै झूठु छोडि जाइ पासारु ॥ (1200-8)
राति अनेरी सूझसि नाही लजु टूकसि मूसा भाई रे ॥२॥ (156-6)
राति कारणि धनु संचीऐ भलके चलणु होइ ॥ (787-16)
राति जि सोवहि दिन करहि काम ॥ (326-13)
राति दिनंति रहै रंगि राता ॥ (931-2)
राति दिनंतु कीए भउ भाउ ॥ (839-5)
राति दिनसु उपाइअनु संसार की वरतणि ॥ (948-19)
राति दिवस के कूकने कबहू के सुनै पुकार ॥२२३॥ (1376-12)
राति दिहै कै वार धुरहु फुरमाइआ ॥ (150-17)
राति दिहै हरि नाउ मंनि वसाईऐ ॥ (752-14)
राति न विहावी साकतां जिन्हा विसरै नाउ ॥ (1284-7)
राती अतै डेहु नानक प्रेमि समाइआ ॥९॥ (1422-8)
राती ऊघै दबिआ नवे सोत सभि ढिला ॥ (304-12)
राती कालु घटै दिनि कालु ॥ (1287-1)
राती दिनस सुहेलीआ नानक हरि गुण गांउ ॥१॥ (1284-8)
राती रुती थिती वार ॥ (7-11)
राती होवनि कालीआ सुपेदा से वंन ॥ (789-16)
राते की निंदा करहि ऐसा कलि महि डीठा ॥६॥ (229-7)
राते रंग नाम रस माते ॥ (259-12)
राते साचि हरि नामि निहाला ॥ (1172-9)
राम उदकि जन जलत उबारे ॥२॥ (323-15)
राम उदकि तनु जलत बुझाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (323-13)
राम उदकि मेरी तिखा बुझानी ॥४॥१॥ (323-16)
राम उदकु जिह जन पीआ तिहि बहुरि न भई पिआस ॥२॥ (1103-12)
राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी ॥६॥३॥ (969-18)

राम कबीरा रवि रहे अवर तजे सभ काम ॥४६॥ (1366-17)
राम करि किरपा लेहु उबारे ॥ (982-16)
राम कला निबहै पति सारी ॥ (879-15)
राम कवचु दास का संनाहु ॥ (868-8)
राम कसउटी सो सहै जो मरजीवा होइ ॥१॥ (948-8)
राम कसउटी सो सहै जो मरि जीवा होइ ॥३३॥ (1366-5)
राम कहत जन कस न तरे ॥१॥ रहाउ ॥ (345-4)
राम की दरगह बाधा चोरु ॥१॥ (194-2)
राम के गुन गाउ ॥ (895-16)
राम को नामु जपउ दिन राती ॥१॥ रहाउ ॥ (485-13)
राम को नामु न कबहू लीना ॥१॥ (792-7)
राम को निरतिकारी ॥ (884-14)
राम को बलु पूरन भाई ॥ (202-18)
राम कोइ न किस ही केरा ॥ (973-7)
राम गुणा नित नित हरि गाईऐ ॥३॥ (890-15)
राम गुर कै बचनि हरि पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (172-8)
राम गुर सरनि प्रभू रखवारे ॥ (982-4)
राम गुरमति हरि लिव लागे ॥१॥ रहाउ ॥ (171-19)
राम गुरि मोहनि मोहि मनु लईआ ॥ (836-1)
राम गुरि हरि हरि नामु कंठि धारे ॥ (882-9)
राम गुरु पारसु परसु करीजै ॥ (1324-1)
राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥ (345-9)
राम गोबिंद जपेदिआ होआ मुखु पवित्रु ॥ (218-10)
राम जन गुरमति रामु बोलाइ ॥ (881-1)
राम जना कउ राम भरोसा ॥ (194-10)
राम जना मिलि भइआ अनंदा हरि नीकी कथा सुनाइ ॥ (880-18)
राम जना मिलि मंगलु गाइआ ॥१॥ (865-8)
राम जना हरि आपि सवारे अपना बिरदु रखावैगो ॥३॥ (1309-15)
राम जनी कीनी खंड खंड ॥३॥ (892-3)
राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे ॥ (337-3)
राम जपत कछु नही संताप ॥ (1183-5)
राम जपत जन पारि परे ॥ (865-15)
राम जपत तनु जरि की न जाइ ॥ (329-16)
राम जपहु भवजलु उतरहु पारि ॥१॥ रहाउ ॥ (161-3)
राम जपि जन रामै नामि रले ॥ (975-9)
राम तुम आपे आपि आपि प्रभु ठाकुर तुम जेवड अवरु न दाते ॥ (169-9)
राम दइआर सुनि दीन बेनती ॥ (1229-18)

राम धिआए सभि फल पाए धनि धंनि ते बडभागीआ ॥ (1312-2)
राम न जपहु अभागु तुमारा ॥ (228-4)
राम न जपहु कवन भ्रम भूले तुम ते कालु न दूरे ॥ (1124-2)
राम न जपहु कवन मति लागे ॥ (792-7)
राम नराइणु कहै कहाए ॥ (413-19)
राम नाम अनुग्रहु बहु कीआ गुर साधू पुरख मिलीजै ॥ (1324-17)
राम नाम ऊतम गति होई ॥ (1342-12)
राम नाम कउ नमसकार ॥ (986-13)
राम नाम का भजनु न कीनो करत बिकार निसि भोरु भइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (826-6)
राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥१॥ रहाउ ॥ (684-17)
राम नाम की उपमा देखहु हरि संतहु जो भगत जनां की पति राखै विचि कलिजुग अगे ॥ (1202-9)
राम नाम की गति कोइ न बूझै गुरमति रिदै समाई ॥ (602-15)
राम नाम की गति नही जानी कैसे उतरसि पारा ॥१॥ (1103-1)
राम नाम की गति नही जानी भै डूबे संसारी ॥३॥ (332-14)
राम नाम की पैज वडेरी मेरे ठाकुरि आपि रखाई ॥ (1191-15)
राम नाम कीरतन रतन वथु हरि साधू पासि रखीजै ॥ (1326-13)
राम नाम गुण गाइ पंडित ॥ (891-12)
राम नाम गुण गाइ ले मीता हरि सिमरत तेरी लाज रहै ॥ (889-11)
राम नाम गुन गावहु हरि प्रीतम उपदेसि गुरू गुर सतिगुरा सुखु होतु हरि हरे हरि हरे हरे भजु राम राम राम ॥१॥ (1297-5)
राम नाम चितु रहिआ समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (329-16)
राम नाम छाडि अम्रित काहे बिखु खाई ॥३॥ (692-15)
राम नाम जपि एकंकारु ॥ (185-7)
राम नाम जपि पारि उतारी ॥४॥१२॥१८॥ (740-19)
राम नाम जपि हिरदे माहि ॥ (283-3)
राम नाम जपु हिरदै जापै मुख ते सगल सुनावै ॥२॥ (381-12)
राम नाम जो करहि बीचार ॥ (281-9)
राम नाम ततु करहु बीचारु ॥ (293-2)
राम नाम तुलि अउरु न उपमा जन नानक क्रिपा करीजै ॥८॥१॥ (1324-1)
राम नाम धनु करि संचउनी सो धनु कत ही न जावै ॥१॥ (336-6)
राम नाम धनु पूंजी संची ना डूबै ना जाई ॥ (444-4)
राम नाम धनु संगि सखाई ॥ (416-2)
राम नाम धनु संचवै साच साह भगवंत ॥ (297-1)
राम नाम धनु संचिआ जा का नही सुमारु ॥३॥ (816-16)
राम नाम धनु संचिआ साबतु पूंजी रासि ॥ (759-9)
राम नाम धनु संचीऐ नानक निबहै साथि ॥३॥ (704-16)
राम नाम धनु है रिद अंतरि धनु गुर सरणाई पावैगो ॥ (1311-6)

राम नाम धारि चीत ॥१॥ रहाउ ॥ (1272-14)
राम नाम नानक आराधि ॥४॥९७॥१६६॥ (199-10)
राम नाम निति जपि मन मेरे ॥ (378-17)
राम नाम परम धाम सुध बुध निरीकार बेसुमार सरबर कउ काहि जीउ ॥ (1402-15)
राम नाम बिनु कवनु हमारा ॥ (416-2)
राम नाम बिनु किआ करमु कीजै ॥७॥ (905-12)
राम नाम बिनु किउ मनु धीरा ॥२॥ (414-17)
राम नाम बिनु किउ सुखु पाईऐ बिनु सतिगुर भरमु न जाइआ ॥१३॥ (1043-12)
राम नाम बिनु किनि गति पाई ॥४॥४॥ (324-8)
राम नाम बिनु कैसे उतरसि पारि ॥३॥ (199-9)
राम नाम बिनु को थिरु नाही जीउ बाजी है संसारा ॥ (246-4)
राम नाम बिनु गति नही काई गुरु पूरा भेटत उधार ॥१॥ रहाउ ॥ (891-19)
राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ॥२॥ (485-14)
राम नाम बिनु जीवनु मन हीना ॥१॥ रहाउ ॥ (858-1)
राम नाम बिनु त्रिपति न आवै किरत कै बांधै भेखु भइआ ॥४॥ (1127-15)
राम नाम बिनु थिरु नही कोई होरु निहफल सभु बिसथारु ॥१॥ रहाउ ॥ (1200-3)
राम नाम बिनु दूखु सहीजै ॥२॥ (905-7)
राम नाम बिनु बाजी हारी ॥४॥ (659-6)
राम नाम बिनु बिरथा सासु लीजै ॥३॥ (905-8)
राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा ॥ (1127-11)
राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥१॥ रहाउ ॥ (703-7)
राम नाम बिनु मुकति न पावसि मुकति नामि गुरमुखि लहै ॥१॥ (1127-10)
राम नाम बिनु मुकति न सूझै आजु कालि पचि जाता हे ॥११॥ (1031-18)
राम नाम बिनु मुकति न होई ॥५॥८॥२१॥ (481-10)
राम नाम बिनु मुकति न होई कितु बिधि पारि लंघाई हे ॥१४॥ (1025-9)
राम नाम बिनु मुकति न होई थाके करम कमाई हे ॥९॥ (1024-2)
राम नाम बिनु मुकति न होई नानकु कहै वीचारा ॥४॥२॥ (437-6)
राम नाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति ॥ (75-14)
राम नाम बिनु मुकति न होई है तुटै नाही अभिमानै ॥२॥ (1205-18)
राम नाम बिनु या संकट महि को अब होत सहाई ॥१॥ (1008-10)
राम नाम बिनु सभै बिगूते देखहु निरखि सरीरा ॥ (654-8)
राम नाम बिनु सांति न आवै जपि हरि हरि नामु सु पारि परै ॥३॥ (1127-14)
राम नाम मंतु हिरदै देवै नानक मिलणु सुभाए ॥८॥२॥९॥ (444-8)
राम नाम रंगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह ॥ (23-4)
राम नाम रखु मन माही ॥१॥ रहाउ ॥ (692-9)
राम नाम रसाल रसीआ रवै साचि पिआरीआ ॥ (843-10)
राम नाम रसि रहै अघाइ ॥ (1175-16)

राम नाम रसु अंतरि माना ॥ (1084-19)
राम नाम रसु चाखिआ हरि नामा हर तारि ॥ (1103-14)
राम नाम लगि उतरे तीरा ॥४॥१॥१०॥ (478-10)
राम नाम वा का मनु राता ॥ (871-10)
राम नाम संगि करि बिउहारा पावहि पदु निरबानी ॥१॥ (614-8)
राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥ (276-9)
राम नाम संगि मनि नही हेता ॥ (253-10)
राम नाम सबदि बीचारे ॥१॥ (1129-10)
राम नाम सरि अवरु न पूजै ॥१॥ (905-5)
राम नाम सारु रसु पीवै ॥ (274-13)
राम नाम सिउ करि बिउहारो ॥ (255-7)
राम नाम सिमरन बिनु बूडते अधिकाई ॥१॥ रहाउ ॥ (692-12)
राम नाम सिमरि तू जीवहि फिरि न खाई महा कालु ॥१॥ रहाउ ॥ (885-19)
राम नाम सुनि रसना कहते ॥ (295-14)
राम नाम हरि अम्रित बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (185-5)
राम नाम हिरदै परवेस ॥३॥ (185-7)
राम नामा जपिबो करै ॥ (1165-7)
राम नामि जिन प्रीति पिआरु ॥ (1129-8)
राम नामि मनु बेधिआ अवरु कि करी वीचारु ॥ (62-4)
राम नामि मनु बेधिआ गुरि दीआ सचु दानु ॥४॥ (62-10)
राम नामि मनु लागा ॥ (626-7)
राम नामि मनु लागिआ ॥ (627-4)
राम नामि राते भगति द्रिड़ाई ॥ (664-17)
राम नामि लगि छूटीऐ भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥१॥ (603-5)
राम नामु अंतरि उरि धारि ॥ (293-5)
राम नामु अउखधु दीआ एका लिव लाई ॥१॥ रहाउ ॥ (819-17)
राम नामु आतम महि सोधै ॥ (274-13)
राम नामु इकु तिल तिल गावै मनु गुरमति नामि समावैगो ॥ (1308-11)
राम नामु इसु जुग महि तुलहा जमकालु नेड़ि न आवै ॥ (444-4)
राम नामु इसु जुग महि दुलभु है गुरमति हरि रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (565-9)
राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ॥ (1429-10)
राम नामु उर हारु बिखु के दिवस गए ॥ (458-13)
राम नामु कदे चेतहि नाही अंति गए पछुताई ॥३॥ (601-15)
राम नामु करि बोहिथा जीउ सबदु खेवटु विचि पाइ ॥ (245-17)
राम नामु काहे न द्रिड़्हीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (330-3)
राम नामु खिनु पलु नही चेतिआ जमि पकरे कालि सलुंञु ॥१॥ (1179-13)
राम नामु गुर बचनी बोलहु ॥ (1030-6)

राम नामु गुरि उदकु चुआइआ फिरि हरिआ होआ रसिआ ॥२॥ (1191-12)
राम नामु घट अंतरि नाही होरि जाणै रस कस मीठे ॥ (75-16)
राम नामु घट अंतरि पूजा अवरु न दूजा काहा हे ॥१४॥ (1033-5)
राम नामु जगत निसतारा ॥ (1129-3)
राम नामु जन भालहि सोइ ॥ (1129-15)
राम नामु जपि अंतरि पूजा ॥ (1345-3)
राम नामु जपि गुरमुखि जीअड़े एहु परम ततु वीचारा हे ॥२॥ (1030-4)
राम नामु जपि दिनसु राति गुरमुखि हरि धनु जानु ॥ (21-10)
राम नामु जपि बेड़ा बांधहु दइआ करहु दइआला ॥१॥ (1170-19)
राम नामु जपि संगि सहाई गुरमुखि पावहि साचु धना ॥१॥ रहाउ ॥ (899-9)
राम नामु जपि सदा सुहेले सगल बिनासे रोग कूरा ॥१॥ रहाउ ॥ (901-4)
राम नामु जपिओ गुर बचनी हरि धारी हरि क्रिपले ॥१॥ रहाउ ॥ (975-10)
राम नामु जीअ को आधारु ॥ (1143-17)
राम नामु जो जनु जपै अनदिनु सद जागै ॥ (817-19)
राम नामु दुलभु है भाई ॥ (1129-14)
राम नामु दे सरणि परेकै ॥ (1029-19)
राम नामु देवा महि सूरु ॥ (470-5)
राम नामु देवै करि किरपा इउ सललै सलल मिलाता हे ॥१२॥ (1031-19)
राम नामु धनु निरमलो गुरु दाति करे प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (62-18)
राम नामु धनु निरमलो जे देवै देवणहारु ॥ (62-18)
राम नामु धनु पूजी देवहु सभु तिसना भूख निवारे ॥१॥ (983-10)
राम नामु धनु रासि देइ बिनसै भ्रमु कूरा ॥२॥ (422-10)
राम नामु धनु वखरो नानक सदा धिआइ ॥२॥ (315-6)
राम नामु धिआए पवितु होइ आए तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ (443-8)
राम नामु न छोडा गुरि दीआ बुझाइ ॥२॥ (1133-5)
राम नामु नरु निसि बासुर महि निमख एक उरि धारै ॥ (902-7)
राम नामु नित रसन बखान ॥ (200-7)
राम नामु निधानु हरि गुरमति रखु उर धारि ॥ (1312-16)
राम नामु निहकेवलु जाणिआ मनु त्रिपतिआ सांति आई ॥३॥ (1234-4)
राम नामु पड़हु गति पावहु सतसंगति गुरि निसतारे ॥३॥ (983-12)
राम नामु पिआरा जगत निसतारा राम नामि वडिआई ॥ (443-1)
राम नामु पिआरे सभि कुल उधारे राम नामु मुखि बाणी ॥ (772-6)
राम नामु मनि तनि आधारा ॥ (1004-16)
राम नामु मनि भाइआ परम सुखु पाइआ अंति चलदिआ नालि सखाई ॥ (444-3)
राम नामु मेरै प्राणि वसाए सतिगुर परसि हरि नामि समईआ ॥१॥ (834-13)
राम नामु रतन कोठड़ी गड़ मंदरि एक लुकानी ॥ (1178-4)
राम नामु रतन धनु संचहु मनि तनि लावहु भाउ ॥ (1219-5)

राम नामु रमु रवि रहे रमु रामो रामु रमीति ॥ (1316-18)
राम नामु रवि रहिआ तिहु लोइ ॥३॥ (1130-1)
राम नामु रसु राम रसाइणु रसु पीआ गुरमति रसभा ॥ (1337-4)
राम नामु रसु राम रसाइणु हरि सेवहु संत जनहु ॥ (800-4)
राम नामु राखहु उरि धार ॥ (1066-4)
राम नामु राखै उर धारे ॥३॥ (1176-13)
राम नामु रिद दीओ निवास ॥२॥ (1149-16)
राम नामु वखरु है ऊतमु हरि नाइकु पुरखु हमारा ॥ (1314-12)
राम नामु वापारा अगम अपारा गुरमती धनु पाईऐ ॥ (246-5)
राम नामु संतन घरि पाइआ ॥ (283-4)
राम नामु सभ जग का तारकु लगि संगति नामु धिआवैगो ॥ (1311-17)
राम नामु सभु है राम नामा रसु गुरमति रसु रसके ॥ (731-10)
राम नामु साधसंगि बीचारा ॥ (108-5)
राम नामु साधू सरणाई ॥ (1030-1)
राम नामु सालाहि तू फिरि आवण जाणु न होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (36-5)
राम नामु सुपनै नही चेतिआ हरि सिउ कदे न लागै पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (1132-16)
राम नामु हरि कीरति गाइ करि चानणु मगु देखाइआ ॥ (1424-11)
राम नामु हरि कीरति गाई करि चानणु मगु दिखाइआ ॥ (86-19)
राम नामु हरि टेक है निसि दउत सवारै ॥६॥ (422-14)
राम नामु हरि भेटीऐ हरि रामै नामि समावैगो ॥७॥ (1308-16)
राम नामु हिरदे महि तोलि ॥ (283-4)
राम नामु है जोति सबाई गुरमुखि आपे अलखु लखईआ ॥ (833-17)
राम नामु है जोति सबाई ततु गुरमति काढि लईजै ॥१॥ (1323-10)
राम नामु होआ रखवारा ॥ (806-3)
राम पड़हु मनि करहु बीचारु ॥ (230-9)
राम पदारथु पाइ कै कबीरा गांठि न खोल्ह ॥ (1365-13)
राम पारस चंदन हम कासट लोसट ॥ (668-17)
राम पिआरे सदा जागहि नामु सिमरहि अनदिनो ॥ (459-6)
राम बडे मै तनक लहुरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (483-10)
राम बिओगी ना जीऐ जीऐ त बउरा होइ ॥७६॥ (1368-10)
राम बिना को बोलै रे ॥१॥ रहाउ ॥ (988-16)
राम बिसारि बहुरि पछुताना ॥ (1172-12)
राम भगत के पानीहार ॥१॥ रहाउ ॥ (865-9)
राम भगत है सदा सुखाले ॥४॥४॥१२॥ (1160-11)
राम भगति अनीआले तीर ॥१॥ रहाउ ॥ (327-17)
राम भगति गुर सेवा तरणा ॥ (154-12)
राम भगति जनु रहै निरारा ॥२॥ (354-2)

राम भगति जम का भउ भागै ॥ (904-2)
राम भगति बिनु निहफल सेवा ॥२॥ (1158-17)
राम भगति बैठे घरि आइआ ॥२॥ (327-12)
राम भगति हीए आनि छाडि दे तै मन को मानु ॥ (1353-2)
राम भजन की गति नही जानी माइआ हाथि बिकाना ॥ (633-13)
राम भजन बिनु कामि न आवसि संगि न काहू जाई ॥२॥ (615-3)
राम भजु मिलि साधसंगति इहै जग महि सार ॥१॥ रहाउ ॥ (1227-5)
राम मेरा मनु तनु बेधि लीओ हरि साचे ॥ (169-11)
राम मेरा मनु हरि सेती राते ॥ (169-5)
राम मेरे मनि तनि नामु अधारे ॥ (980-10)
राम मेरै मनि तनि लोच मिलण हरि केरी ॥ (170-14)
राम मै हरि हरि नामु मनि भाइआ ॥ (882-2)
राम मो कउ तारि कहां लै जई है ॥ (1104-3)
राम मो कउ हरि जन कारै लाईऐ ॥ (881-15)
राम मो कउ हरि जन मेलि पिआरे ॥ (493-5)
राम मो कउ हरि जन मेलि मनि भावै ॥ (881-8)
राम रंगि निरमल परतापु ॥२॥ (198-8)
राम रंगि राते दास नानक मउलिओ मनु तनु जूह ॥२॥९५॥११८॥ (1227-4)
राम रंगि सभ गए पाप ॥ (1183-5)
राम रंगु कदे उतरि न जाइ ॥ (194-5)
राम रतनु तब पाईऐ जउ पहिले तजहि सरीरु ॥३१॥ (1366-3)
राम रतनु पाइआ करत बीचारा ॥१॥ रहाउ ॥ (1349-9)
राम रतनु मनि तनि बसै तजि कामु क्रोधु लोभु मीत ॥ (296-18)
राम रतनु रिद तिलु नही धारत ॥२॥ (743-19)
राम रतनु वसै मनि आइ ॥२॥ (869-4)
राम रमण तरण भै सागर ॥ (196-3)
राम रमत तिसु सभु किछु सूझै ॥५॥९॥२२॥ बाईस चउपदे तथा पंचपदे (481-14)
राम रमत मति परगटी आई ॥ (326-6)
राम रमत रामु ॥ (1202-6)
राम रमत संतन सुखु माना ॥ (743-16)
राम रमत हरि हरि सुखु पाइआ ॥ (1348-15)
राम रमा रामा गुन गाउ ॥ (885-3)
राम रवंता जाणीऐ इक माई भोगु करेइ ॥ (1171-13)
राम रवण दुरत दवण सकल भवण कुसल करण सरब भूत आपि ही देवाधि देव सहस मुख फनिंद जीउ ॥ (1403-5)
राम रसाइणि अनदिनु माते ॥२॥ (744-8)
राम रसाइणि इहु मनु माता ॥ (415-18)

राम रसाइणि जो जन गीधे ॥ (198-14)
राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ॥४॥१२॥११४॥ (399-11)
राम रसाइणु गुरमुखि चाखै ॥ (415-13)
राम रसाइणु जिन्ह गुरमति पाइआ तिन्ह की ऊतम बाता ॥ (984-15)
राम रसाइणु नित उठि पीवहु ॥ (1138-5)
राम रसाइणु पीवत बीर ॥१॥ (198-7)
राम रसाइणु रसना चीन्हे ॥४॥३५॥४८॥ (1150-6)
राम रसाइन पीउ रे कबीर ॥४॥८॥ (325-4)
राम रसाइन पीओ रे दगरा ॥३॥४॥ (486-1)
राम रसाइनु रसना पीवहि ॥३॥ (326-2)
राम रसु पीआ रे ॥ (337-16)
राम राइ सिउ भावरि लैहउ आतम तिह रंगि राती ॥१॥ (482-2)
राम राइ सो दूलहु पाइओ अस बडभाग हमारा ॥२॥ (482-4)
राम राइ होहि बैद बनवारी ॥ (659-13)
राम राज रामदास पुरि कीन्हे गुरदेव ॥१॥ रहाउ ॥ (817-17)
राम राम करतिआ सुखु सांति सरीर ॥ (159-15)
राम राम जपि निरमल भए ॥ (865-5)
राम राम धनु संचि भंडार ॥ (865-3)
राम राम बोलि बोलि खोजते बडभागी ॥ (1265-17)
राम राम बोलि राम राम ॥ (1182-12)
राम राम राम करि आहार ॥ (865-3)
राम राम राम कीरतनु गाइ ॥ (865-2)
राम राम राम जापि रमत राम सहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1229-19)
राम राम राम प्रान अधार ॥ (865-1)
राम राम राम रंगि राते रस रसिक गटक नित पीजै ॥५॥ (1323-15)
राम राम राम रमे रमि रहीऐ ॥ (481-3)
राम राम राम लिव लाइ ॥ (865-5)
राम राम राम सदा सहाइ ॥ (865-4)
राम राम वीसरि नही जाइ ॥ (865-4)
राम राम संगि करि बिउहार ॥ (865-1)
राम राम संत सदा सहाइ ॥ (1151-1)
राम राम सभु को कहै कहिऐ रामु न होइ ॥ (491-1)
राम राम सार भूत नानक ततु बीचारे ॥२॥४॥१३३॥ (1230-7)
राम रामा राम रमा कंठि उर धारीऐ ॥ (925-2)
राम रामा रामा गुन गावउ ॥ (387-1)
राम संगि नामदेव जन कउ प्रतगिआ आई ॥ (718-14)
राम संत महि भेदु किछु नाही एकु जनु कई महि लाख करोरी ॥ (208-17)

राम सनेही तउ मिलै दोनउ बरन गवाइ ॥५६॥ (1367-9)
राम सनेही बाहरा जम पुरु मेरे भांइ ॥१५१॥ (1372-11)
राम समान न देखउ आन ॥२॥३४॥ (330-1)
राम सिमरि राम सिमरि राम सिमरि भाई ॥ (692-12)
राम सेवक भै रहत कीन ॥२॥ (211-10)
राम हउ किआ जाना किआ भावै ॥ (978-7)
राम हम पाथर निरगुनीआरे ॥ (981-2)
राम हम सतिगुर पारब्रहम करि माने ॥ (169-18)
राम हम सतिगुर लाले कांढे ॥१॥ रहाउ ॥ (171-2)
राम हरि अम्रित सरि नावारे ॥ (981-12)
राम हरि कीरतनु गुर लिव मीठा ॥१॥ रहाउ ॥ (171-14)
रामईआ हउ बारिकु तेरा ॥ (478-14)
रामकली की वार महला ३ ॥ (947-2)
रामकली की वार महला ५ (957-1)
रामकली की वार राइ बलवंडि तथा सतै डूमि आखी (966-14)
रामकली घरु २ ॥ (973-10)
रामकली घरु २ बाणी कबीर जी की (971-19)
रामकली दखणी महला १ ॥ (907-5)
रामकली बाणी बेणी जीउ की (974-5)
रामकली बाणी भगता की ॥ (968-19)
रामकली बाणी रविदास जी की (973-18)
रामकली महला १ ॥ (876-10)
रामकली महला १ ॥ (877-14)
रामकली महला १ ॥ (877-2)
रामकली महला १ ॥ (877-9)
रामकली महला १ ॥ (878-1)
रामकली महला १ ॥ (878-12)
रामकली महला १ ॥ (878-18)
रामकली महला १ ॥ (878-6)
रामकली महला १ ॥ (879-12)
रामकली महला १ ॥ (879-5)
रामकली महला १ ॥ (903-17)
रामकली महला १ ॥ (903-6)
रामकली महला १ ॥ (904-10)
रामकली महला १ ॥ (905-14)
रामकली महला १ ॥ (905-4)
रामकली महला १ ॥ (906-7)

रामकली महला १ ॥ (907-13)
रामकली महला १ असटपदीआ (902-14)
रामकली महला १ घरु १ चउपदे (876-1)
रामकली महला १ दखणी ओअंकारु (929-17)
रामकली महला १ सिध गोसटि (938-5)
रामकली महला ३ ॥ (909-7)
रामकली महला ३ ॥ (910-18)
रामकली महला ३ ॥ (910-5)
रामकली महला ३ ॥ (911-19)
रामकली महला ३ अनंदु (917-1)
रामकली महला ३ असटपदीआ (908-10)
रामकली महला ३ घरु १ ॥ (880-1)
रामकली महला ४ ॥ (880-18)
रामकली महला ४ ॥ (881-13)
रामकली महला ४ ॥ (881-7)
रामकली महला ४ ॥ (882-1)
रामकली महला ४ ॥ (882-8)
रामकली महला ४ घरु १ (880-11)
रामकली महला ५ ॥ (883-15)
रामकली महला ५ ॥ (883-2)
रामकली महला ५ ॥ (883-8)
रामकली महला ५ ॥ (884-1)
रामकली महला ५ ॥ (884-12)
रामकली महला ५ ॥ (884-7)
रामकली महला ५ ॥ (885-1)
रामकली महला ५ ॥ (885-12)
रामकली महला ५ ॥ (885-18)
रामकली महला ५ ॥ (885-7)
रामकली महला ५ ॥ (886-10)
रामकली महला ५ ॥ (886-17)
रामकली महला ५ ॥ (887-10)
रामकली महला ५ ॥ (887-17)
रामकली महला ५ ॥ (887-4)
रामकली महला ५ ॥ (888-10)
रामकली महला ५ ॥ (888-16)
रामकली महला ५ ॥ (888-4)
रामकली महला ५ ॥ (889-10)

रामकली महला ५ ॥ (889-16)
रामकली महला ५ ॥ (889-4)
रामकली महला ५ ॥ (890-11)
रामकली महला ५ ॥ (890-17)
रामकली महला ५ ॥ (890-4)
रामकली महला ५ ॥ (891-11)
रामकली महला ५ ॥ (891-17)
रामकली महला ५ ॥ (891-4)
रामकली महला ५ ॥ (892-10)
रामकली महला ५ ॥ (892-16)
रामकली महला ५ ॥ (892-4)
रामकली महला ५ ॥ (893-10)
रामकली महला ५ ॥ (893-16)
रामकली महला ५ ॥ (893-4)
रामकली महला ५ ॥ (894-16)
रामकली महला ५ ॥ (894-4)
रामकली महला ५ ॥ (894-9)
रामकली महला ५ ॥ (895-14)
रामकली महला ५ ॥ (895-3)
रामकली महला ५ ॥ (895-9)
रामकली महला ५ ॥ (896-1)
रामकली महला ५ ॥ (896-13)
रामकली महला ५ ॥ (896-19)
रामकली महला ५ ॥ (896-7)
रामकली महला ५ ॥ (897-13)
रामकली महला ५ ॥ (897-6)
रामकली महला ५ ॥ (898-1)
रामकली महला ५ ॥ (898-13)
रामकली महला ५ ॥ (898-19)
रामकली महला ५ ॥ (898-7)
रामकली महला ५ ॥ (899-13)
रामकली महला ५ ॥ (899-7)
रामकली महला ५ ॥ (900-1)
रामकली महला ५ ॥ (900-13)
रामकली महला ५ ॥ (900-7)
रामकली महला ५ ॥ (901-12)
रामकली महला ५ ॥ (901-4)

रामकली महला ५ ॥ (913-19)
रामकली महला ५ ॥ (913-7)
रामकली महला ५ ॥ (914-11)
रामकली महला ५ ॥ (915-4)
रामकली महला ५ ॥ (916-13)
रामकली महला ५ ॥ (916-5)
रामकली महला ५ ॥ (925-1)
रामकली महला ५ ॥ (925-13)
रामकली महला ५ असटपदी (915-10)
रामकली महला ५ असटपदीआ (912-14)
रामकली महला ५ छंत (924-6)
रामकली महला ५ छंत ॥ (926-8)
रामकली महला ५ रुती सलोकु (927-10)
रामकली महला ९ ॥ (902-3)
रामकली महला ९ ॥ (902-8)
रामकली रामु मनि वसिआ ता बनिआ सीगारु ॥ (950-2)
रामकली सदु (923-1)
रामचंद की लसटिका जिनि मारिआ रोगु ॥१॥ रहाउ ॥ (817-4)
रामचंदि मारिओ अहि रावणु ॥ (942-13)
रामदास सरोवरि नाते ॥ (625-16)
रामदास सोढी तिलकु दीआ गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ ॥५॥ (923-18)
रामदासि गुरू जग तारन कउ गुर जोति अरजुन माहि धरी ॥४॥ (1409-3)
रामदासि सरोवर नाते ॥ (624-4)
रामदासु गुरू हरि सति कीयउ समरथ गुरू सिरि हथु धर्यउ ॥७॥११॥ (1400-8)
रामा भगतह चेतीअले अचिंत मनु राखसी ॥१॥ (486-2)
रामा भगति रामानंदु जानै ॥ (695-12)
रामा मै साधू चरन धुवीजै ॥ (1325-16)
रामा रम रामै अंतु न पाइआ ॥ (1319-4)
रामा रम रामो पूज करीजै ॥ (1325-5)
रामा रम रामो रामु रवीजै ॥ (1324-13)
रामा रम रामो सुनि मनु भीजै ॥ (1323-9)
रामा हम दासन दास करीजै ॥ (1326-8)
रामानंद जी घरु १ (1195-11)
रामानंद सुआमी रमत ब्रहम ॥ (1195-15)
रामि नामि चितु रापै जा का ॥ (228-3)
रामु आपे आपि आपे सभु करता रामु आपे आपि आपि सभतु जगे ॥ (1202-7)
रामु कहै कर ताल बजावै चटीआ सभै बिगारे ॥१॥ (1165-7)

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥ (1429-3)
रामु छोडि चितु अनत न फेरउ ॥१॥ रहाउ ॥ (873-14)
रामु जपत कछु बिघनु न विआपै ॥ (869-2)
रामु जपहु अंतरगति धिआने ॥ (1030-2)
रामु जपहु मेरी सखी सखैनी ॥ (416-14)
रामु जपहु वडभागीहो जलि थलि पूरनु सोइ ॥ (524-2)
रामु जिह पाइआ राम ॥ (1103-11)
रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु ॥१६४॥ (1373-6)
रामु झुरै दल मेलवै अंतरि बलु अधिकार ॥ (1412-6)
रामु न कबहू चेतिओ हुणि कहणि न मिलै खुदाइ ॥६॥ (417-10)
रामु न चीनिआ अपनी पति खोई ॥ (225-4)
रामु न जपई अंति सनेही ॥ (1027-7)
रामु न जानिआ करता सोई ॥ (225-2)
रामु न बोलहि पाडे दोजकु भरहि ॥१॥ रहाउ ॥ (970-7)
रामु नामु जानिओ नही कैसे उतरसि पारि ॥४॥१॥ (1105-19)
रामु बडा कै रामहि जानिआ ॥१॥ (331-15)
रामु बिसारिओ है अभिमानि ॥ (1124-7)
रामु भजु रामु भजु जनमु सिरातु है ॥ (1352-7)
रामु रमहु बडभागीहो जलि थलि महीअलि सोइ ॥ (521-17)
रामु रमै सोई रामाणा ॥ (194-2)
रामु रवत सद ही सुखु पाइआ ॥ (200-19)
रामु राजा नउ निधि मेरै ॥ (1158-1)
रामु रामु करता सभु जगु फिरै रामु न पाइआ जाइ ॥ (555-10)
रामु रिदै जपमाली ॥१॥ रहाउ ॥ (503-7)
रामु रिदै नही गुर की सेवा चाले मूलु गवाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1126-6)
रामु संगी तिसु गति नही जानहि ॥ (898-1)
रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥ (1352-4)
रामु सिमरु पछुताहिगा मन ॥ (1106-6)
रामै राम रमत सुखु पावै ॥४॥ (326-15)
रामो राम नामु गुरू रामु गुरमुखे जाणै राम ॥ (443-14)
रामो राम नामु जपिआ दुख किलविख नास गवाइआ राम ॥ (443-3)
रामो राम नामु सते सति गुरमुखि जाणिआ राम ॥ (444-6)
रामो रामु रमो रमु ऊचा गुण कहतिआ अंतु न पाइआ ॥ (443-16)
रामो रामु रविआ घट अंतरि सभ त्रिसना भूख गवाई ॥ (443-9)
रारा रंगहु इआ मनु अपना ॥ (252-6)
रारा रसु निरस करि जानिआ ॥ (342-7)
रारा रेन होत सभ जा की ॥ (259-10)

रारि करत झूठी लगि गाथा ॥१॥ रहाउ ॥ (376-10)
रारै रवि रहिआ सभ अंतरि जेते कीए जंता ॥ (434-5)
रारै रामु चिति करि मूड़े हिरदै जिन्ह कै रवि रहिआ ॥ (435-15)
रारै रूपि निरालमु बैठा नदरि करे विचि छाइआ ॥३॥ (351-5)
रावउ सहु आपनड़ा प्रभ संगि सोहंती ॥ (460-11)
रावन सेती सरबर होई घर की जोइ गवाई थी ॥३॥ (875-1)
रावन सैना जह ते छली ॥ (1163-7)
रावन हुते सु रंक नहि जिनि सिर दीने काटि ॥१॥ (1363-18)
रावन हूं ते अधिक छत्रपति खिन महि गए बिलात ॥२॥ (1251-19)
रावे रंगि रातड़िआ मनु लीअड़ा दीता राम ॥ (436-10)
रासि दीई हरि एको नामु ॥ (863-4)
रासि बिरानी राखते खाया घर का खेतु ॥९८॥ (1369-14)
रासि मंडलु कीनो आखारा ॥ (746-8)
राह दोवै इकु जाणै सोई सिझसी ॥ (142-8)
राह दोवै खसमु एको जाणु ॥ (223-7)
राहु दसाइ ओथै को जाइ ॥ (952-1)
राहु दसाई न जुलां आखां अमड़ीआसु ॥ (557-11)
राहु बुरा भीहावला सर डूगर असगाह ॥ (936-7)
रिखीकेस गोपाल गोविंद ॥ (897-2)
रिखीकेस गोवरधन धारी मुरली मनोहर हरि रंगा ॥१॥ (1082-6)
रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ (470-4)
रिजकु उपाइओनु अगला ठांढि पई संसारि ॥ (1251-10)
रिजकु समाहे जलि थलि मीत ॥ (1337-17)
रिजकु समाहे सभसै किआ माणसु डोलै ॥ (1102-15)
रिजकु स्मबाहे सासि सासि भाई गूड़ा जा का नाउ ॥ (640-9)
रिद अंतरि कर तल काती ॥ (1351-12)
रिद बसंति भै भीत दूतह करम करत महा निरमलह ॥ (1355-14)
रिदा पुनीत रिदै हरि बसिओ मसत पुनीत संत धूरावा ॥१॥ (1212-3)
रिदि बिगासु जागिओ अलखि कल धरी जुगंतरि ॥ (1392-5)
रिदै इखलासु निरखि ले मीरा ॥ (1159-2)
रिदै कूड़ु कंठि रुद्राखं ॥ (1351-16)
रिदै छुरी संधिआनी ॥ (1351-14)
रिदै प्रगासु प्रगट भइआ निसि बासुर जागउ ॥३॥ (808-12)
रिदै बसै अकहीउ सोइ रसु तिन ही जातउ ॥ (1394-2)
रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥१॥ रहाउ ॥ (1293-3)
रिदै रामु की न जपसि अभाग ॥४॥१॥ (1167-13)
रिदै वसै ता ठंढा थीवै ॥ (1078-11)

रिदै सुध जउ निंदा होइ ॥ (339-3)
रिधि न बुधि न सिधि प्रगासु ॥ (894-12)
रिधि बसै बांवांगि जु तीनि लोकांतर मोहै ॥ (1394-2)
रिधि बुधि सिधि गिआनु गुरू ते पाईऐ पूरै भागि मिलाइदा ॥१५॥ (1038-9)
रिधि बुधि सिधि गिआनु सदा सुखु होइ ॥१॥ (1289-5)
रिधि बुधि सिधि सुख पावहि भजु गुरमति हरि राम राम ॥१॥ रहाउ ॥ (719-3)
रिधि बुधि सिधि सुर गिआन ॥ (890-18)
रिधि सिधि जा कउ फुरी तब काहू सिउ किआ काज ॥ (1103-10)
रिधि सिधि नव निधि जा कै अम्रिता परवाह ॥ (1017-13)
रिधि सिधि नव निधि हरि जपि जिनी आतमु जीता ॥ (543-15)
रिधि सिधि निधि कर तल जगजीवन स्रब नाथ अनेकै नाउ ॥ (536-5)
रिधि सिधि बुधि गिआनु गुरू ते पाइआ मुकति पदारथु सरणि पइआ ॥११॥ (907-3)
रिधि सिधि सभ भगता चरणी लागी गुर कै सहजि सुभाई ॥२॥ (637-16)
रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि आइ ॥ (593-18)
रिधि सिधि सुधा रसु अम्रितु भगति भरे भंडारा ॥ (846-9)
री कलवारि गवारि मूढ मति उलटो पवनु फिरावउ ॥ (1123-13)
री बाई बेढी देनु न जाई ॥ (657-6)
रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥१॥ (537-9)
रीरी लली पाप कमाणे पड़ि अवगण गुण वीसरिआ ॥१॥ (434-14)
रीसा करिह तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह ॥ (85-2)
रुंडित मुंडित एकै सबदी एइ कहहि सिधि पाई ॥१॥ (334-3)
रुकमांगद करतूति रामु ज्मपहु नित भाई ॥ (1394-16)
रुखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ ॥ (1379-8)
रुण झुणो सबदु अनाहदु नित उठि गाईऐ संतन कै ॥ (925-14)
रुति आईले सरस बसंत माहि ॥ (1168-9)
रुति बरसु सुहेलीआ सावण भादवे आनंद जीउ ॥ (928-10)
रुति सरद अड्मबरो असू कतके हरि पिआस जीउ ॥ (928-15)
रुति सरस बसंत माह चेतु वैसाख सुख मासु जीउ ॥ (927-18)
रुति सिसीअर सीतल हरि प्रगटे मंघर पोहि जीउ ॥ (929-2)
रुती माह मूरत घड़ी गुण उचरत सोभावंत जीउ ॥ (927-13)
रुदनु करै नामे की माइ ॥ (1165-17)
रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के कबि जन भल्य उनह जो गावै ॥ (1396-7)
रुपे कीआ कारा बहुतु बिसथारु ॥ (1168-15)
रुहला टुंडा अंधुला किउ गलि लगै धाइ ॥ (139-4)
रूखि बिरखि ग्रिहि बाहरि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (223-16)
रूखीं बिरखीं ऊडउ भूखा पीवा नामु सुभाई ॥४॥ (1274-11)
रूखो भोजनु भूमि सैन सखी प्रिअ संगि सूखि बिहात ॥२॥३॥४२॥ (1306-12)

रूड़उ ठाकुरु नानका सभि सुख साचउ नामु ॥२॥ (1279-4)
रूड़ी बाणी जे रपै ना इहु रंगु लहै न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (427-1)
रूड़ी बाणी हरि पाइआ गुर सबदी बीचारि ॥ (936-19)
रूड़ो कहउ न कहिआ जाई ॥ (412-9)
रूड़ो गूड़ो गहिर ग्मभीरो ऊचौ अगम अपारे ॥३॥ (613-19)
रूड़ो जिह बसिओ रिद माही ॥ (260-3)
रूड़ो ठाकुर माहरो रूड़ी गुरबाणी ॥ (421-2)
रूड़ो ठाकुरु कितै वसि न आवै ॥ (1076-5)
रूड़ो मनु हरि रंगो लोड़ै ॥ (715-13)
रूड़ौ रूड़ौ आखीऐ भाई रूड़ौ लाल चलूलु ॥ (637-2)
रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ॥१॥ (659-12)
रूप कंनिआ सुंदरि बेधी ससै सिंघ गुन गाए ॥३॥ (477-7)
रूप करे करि वेखै विगसै आपे ही आपि पूजा हे ॥२॥ (1073-17)
रूप धूप सोगंधता कापर भोगादि ॥ (810-5)
रूप न धूप न गंध न दीपा ओति पोति अंग अंग संगि मउली ॥ (822-5)
रूप रंग खुसीआ मन भोगण ते ते छिद्र विकारा ॥ (1003-11)
रूप रंग दे नामि सवारी ॥ (1143-3)
रूप रंग सुगंध भोग तिआगि चले माइआ छले कनिक कामिनी ॥१॥ रहाउ ॥ (901-12)
रूप रंग सूख धनु जीअ का पारब्रहम मोरै जाती ॥१॥ (681-10)
रूप सुंदरीआ अनिक इसतरीआ ॥ (385-4)
रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई ॥१॥ (204-2)
रूपवंति सा सुघड़ि बिचखणि जो धन कंत पिआरी जीउ ॥२॥ (97-17)
रूपवंतु सो चतुरु सिआणा ॥ (198-1)
रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥ (282-13)
रूपि अनूप पूरी आचारि ॥ (370-18)
रूपी भुख न उतरै जां देखां तां भुख ॥ (1287-14)
रूपु अनरूपु मोरो कछु न बीचारिओ प्रेम गहिओ मोहि हरि रंग भीन ॥१॥ (716-3)
रूपु न जाणै सोहणीऐ हुकमि बधी सिरि कारो ॥ (580-14)
रूपु न रेख न पंच तत ठाकुर अबिनास ॥२॥ (816-10)
रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥ (283-16)
रूपु न रेखिआ जाति न होती तउ अकुलीणि रहतउ सबदु सु सारु ॥ (945-19)
रूपु न रेखिआ मिति नही कीमति सबदि भेदि पतीआइदा ॥९॥ (1034-19)
रूपु न होतो रेख न काई ता सबदि कहा लिव लाई ॥ (945-15)
रूपु रंगु पिआरु हरि सिउ हरि आपि किरपा धारए ॥३॥ (1113-6)
रूपु रंगु रहसु नही साचा किउ छोडै जम जालो ॥१॥ (1125-16)
रूपु सति जा का सति असथानु ॥ (284-14)
रूपै कामै दोसती भुखै सादै गंढु ॥ (1288-13)

रे गुन हीन दीन माइआ क्रिम सिमरि सुआमी एक घरी ॥ (1387-14)
रे चित चरण कमल अराधि ॥ (501-9)
रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई ॥ (488-2)
रे चित चेति चेत अचेत ॥ (1124-15)
रे जन उथारै दबिओहु सुतिआ गई विहाइ ॥ (651-9)
रे जन कै सिउ करहु पुकारा ॥ (1128-9)
रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥ (324-13)
रे जिहबा करउ सत खंड ॥ (1163-11)
रे जीअ चलै तुहारै साथी ॥ (260-15)
रे जीअ निलज लाज तोहि नाही ॥ (330-15)
रे नर इन बिधि पारि पराइ ॥ (1002-1)
रे नर इह साची जीअ धारि ॥ (633-2)
रे नर ऐसी करहि इआनथ ॥ (1001-9)
रे नर काइ पर ग्रिहि जाइ ॥ (1001-15)
रे नर काहे पपोरहु देही ॥ (609-10)
रे नर गरभ कुंडल जब आछत उरध धिआन लिव लागा ॥ (93-2)
रे नर नाव चउड़ि कत बोड़ी ॥ (328-7)
रे पापी तै कवन की मति लीन ॥ (1225-4)
रे प्राणी उसन सीत करता करै घाम ते काढै ॥ (816-5)
रे बउरे तुहि घरी न राखै कोई ॥ (478-1)
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर ॥ (60-7)
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चात्रिक मेह ॥ (60-4)
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि ॥ (59-18)
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल दुध होइ ॥ (60-5)
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर ॥ (60-2)
रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥ (901-17)
रे मन कउन गति होइ है तेरी ॥ (1352-11)
रे मन काइ कहा लउ डहकहि जउ पेखत ही संगि सुनता ॥१॥ (823-4)
रे मन किआ करहि है हा हा ॥ (402-1)
रे मन गहिले बावले माणहि किआ रलीआं ॥५५॥ (1380-17)
रे मन टहल हरि सुख सार ॥ (986-8)
रे मन डीगि न डोलीऐ सीधै मारगि धाउ ॥ (1410-13)
रे मन ता कउ धिआईऐ सभ बिधि जा कै हाथि ॥ (704-16)
रे मन तू भी भजु गोबिंद ॥२॥ (1192-6)
रे मन तू भी हरि धिआइ ॥३॥ (1192-7)
रे मन तू भी होहि दासु ॥५॥ (1192-9)
रे मन तेरो कोइ नही खिंचि लेइ जिनि भारु ॥ (337-15)

रे मन बिनु हरि जह रचहु तह तह बंधन पाहि ॥ (252-1)
रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी रिदै न आई ॥ (609-6)
रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥ (270-17)
रे मन मूड़ सिमरि सुखदाता नानक दास तुझहि समझावत ॥७॥ (1388-14)
रे मन मूस बिला महि गरबत करतब करत महां मुघनां ॥ (1387-15)
रे मन मेरे तूं ता कउ आहि ॥ (187-13)
रे मन मेरे तूं ता कउ सेवि ॥ (187-14)
रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥ (270-18)
रे मन मेरे तूं हरि सिउ जोरु ॥ (238-11)
रे मन मेरे तू गोविद भाजु ॥ (1138-17)
रे मन मेरे तू ता कउ जापि ॥३॥ (987-15)
रे मन मेरे भरमु न कीजै ॥ (153-10)
रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥ (282-11)
रे मन मै तउ छिन छिन समझावा ॥ (340-16)
रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥ (631-11)
रे मन लेखै कबहू न पाइ ॥ (1168-16)
रे मन लेखै चालहि लेखै बैसहि लेखै लैदा साहा ॥ (402-4)
रे मन लोभी सुणि मन मेरे ॥ (1073-7)
रे मन वत्र बीजण नाउ ॥ (1002-11)
रे मन सेवि तू परहि पार ॥४॥ (1192-8)
रे मन हरि भजु भ्रमु तजहु जगजीवन राम ॥१॥ रहाउ ॥ (857-7)
रे महावत तुझु डारउ काटि ॥ (870-16)
रे मूड़े तू होछै रसि लपटाइओ ॥ (1017-2)
रे मूड़े लाहे कउ तूं ढीला ढीला तोटे कउ बेगि धाइआ ॥ (402-11)
रे मूड़्हे आन काहे कत जाई ॥ (1213-2)
रे मूड़्हे तू किउ सिमरत अब नाही ॥ (1207-6)
रे रे दरगह कहै न कोऊ ॥ (252-6)
रे ल्मपट क्रिसनु अभाखं ॥४॥ (1351-17)
रेचक कुमभक पूरक मन हाठी ॥ (1043-13)
रेण सगल इआ मनु करै एऊ करम कमाइ ॥ (256-16)
रेनु जन की लगी मसतकि अनिक तीरथ सुचै ॥१॥ (1122-2)
रेनु संतन की मेरै मुखि लागी ॥ (100-1)
रैणाइर महि सभु किछु है करमी पलै पाइ ॥ (949-10)
रैणाइर माहि अनंतु है कूड़ी आवै जाइ ॥ (949-9)
रैणि अंधारी कारीआ कवन जुगति जितु भोरै ॥१॥ (212-12)
रैणि अंधारी निरमल जोति ॥ (831-16)
रैणि अंधेरी किआ पति तेरी चोरु पड़ै घरु मूसए ॥ (1110-3)

रैणि गई फिरि होइ परभाति ॥२॥ (375-19)
रैणि गवाई सोइ कै दिवसु गवाइआ खाइ ॥ (156-17)
रैणि दिणसु सिमरत रहै सो प्रभु पुरखु अपार ॥ (256-16)
रैणि दिनसु कर जोड़ि सासि सासि धिआईऐ ॥ (520-12)
रैणि दिनसु कर जोड़ि हरि हरि धिआईऐ ॥१॥ (398-17)
रैणि दिनसु गुण गाउ अनंता ॥ (193-10)
रैणि दिनसु गुर चरण अराधी दइआ करहु मेरे साई ॥३०॥ (758-10)
रैणि दिनसु जपउ हरि नाउ ॥ (893-4)
रैणि दिनसु तिसु सदा धिआई जि खिन महि सगल उधारे जीउ ॥३॥ (105-5)
रैणि दिनसु दुइ दाई दाइआ जगु खेलै खेलाई हे ॥१०॥ (1021-3)
रैणि दिनसु दुइ सदे पए ॥ (1177-17)
रैणि दिनसु दुइ साखी आए ॥ (1061-3)
रैणि दिनसु परभाति तूहै ही गावणा ॥ (652-10)
रैणि दिनसु रहै इक रंगा ॥ (181-7)
रैणि दिनसु सासि सासि चितारे जीउ ॥ (217-4)
रैणि भई तब अंतु न जाने ॥२॥ (375-2)
रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ (134-8)
रैणि सबाई जलि मुई कंत न लाइओ भाउ ॥ (510-15)
रैणि सुखि सुती जीउ अंतरि उरि धारे ॥ (245-7)
रैणि सुहावड़ी दिनसु सुहेला ॥ (107-12)
रैनि गई मत दिनु भी जाइ ॥ (792-10)
रैनि दिनसु धिआइ हरि हरि तजहु मन के भरम ॥ (1341-9)
रैनि दिनसु प्रभ सेव कमानी ॥ (897-9)
रैनि बबीहा बोलिओ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ (1274-9)
रोग कटे काटी जम फासी ॥ (1040-6)
रोग गए सगले सुख पाए ॥१॥ (806-9)
रोग गिरसत चितारे नाउ ॥ (196-8)
रोग दोख गुर सबदि निवारे ॥ (1148-2)
रोग बंध रहनु रती न पावै ॥ (1141-1)
रोग बिआपे करदे पाप ॥ (199-16)
रोग मिटाइ जीवालिअनु जा का वड परतापु ॥१॥ (820-1)
रोग मिटाए प्रभू आपि ॥ (1184-14)
रोग मिटे दुखु ठाकि रहाइआ ॥३॥ (416-6)
रोग रहित मेरा सतिगुरु जोगी ॥१॥ रहाउ ॥ (1140-17)
रोग रूप माइआ न बिआपै ॥४॥ (760-5)
रोग सोग तेरे मिटहि सगल अघ निमख हीऐ हरि नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1208-9)
रोग सोग दुख जरा मरा हरि जनहि नही निकटानी ॥ (711-14)

रोग सोग दूख तिसु नाही ॥ (1085-7)
रोग सोग बिओगं नानक सुखु न सुपनह ॥२४॥ (1361-11)
रोग सोग मिटे प्रभ धिआए ॥ (866-17)
रोग सोग सभ दूख बिनासे सतिगुर की सरणाई ॥ रहाउ ॥ (395-16)
रोग सोग सभि दूख बिनासे उतरे सगल कलेसा ॥१॥ रहाउ ॥ (531-16)
रोग सोग सभि दोख बिनसहि जपत नामु मुरारी ॥ (249-5)
रोग सोग सभि मिटि गए नित नवा निरोआ ॥ (1193-10)
रोगी का प्रभ खंडहु रोगु ॥ (1146-3)
रोगी खट दरसन भेखधारी नाना हठी अनेका ॥ (1153-14)
रोगी ब्रहमा बिसनु सरुद्रा रोगी सगल संसारा ॥ (1153-12)
रोगी सात समुंद सनदीआ खंड पताल सि रोगि भरे ॥ (1153-13)
रोगु कवनु जां राखै आपि ॥ (1146-14)
रोगु गइआ प्रभि आपि गवाइआ ॥ (807-8)
रोगु गवाइहि आपणा त नानक वैदु सदाइ ॥२॥ (1279-16)
रोगु जाइ तां उतरहि दूख ॥ (1149-4)
रोगु दारू दोवै बुझै ता वैदु सुजाणु ॥ (148-8)
रोगु न बिआपै तीनौ ताप ॥२॥ (327-1)
रोगु न बिआपै ना जम दोखं ॥ (223-15)
रोगु बुझै सो काटै पीरा ॥ (1189-6)
रोगु भरमु भेदु मनि दूजा ॥ (416-7)
रोगु मिटाइआ आपि प्रभि उपजिआ सुखु सांति ॥ (819-9)
रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥ (288-8)
रोगु वडो किउ बांधउ धीरा ॥ (1189-6)
रोगु सोगु दुखु वंञै जिसु नाउ मनि वसै ॥ (963-9)
रोगे फिरि फिरि जोनी भरमै ॥ (1140-19)
रोगे मरता रोगे जनमै ॥ (1140-19)
रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई ॥ (480-5)
रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै ॥ (483-5)
रोजा बाग निवाज कतेब विणु बुझे सभ जासी ॥ (1100-10)
रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥ (465-8)
रोम रोम महि बसहि मुरारि ॥ (344-6)
रोमावलि कोटि अठारह भार ॥३॥ (1163-3)
रोमि रोमि मनि तनि इक बेदन मै प्रभ देखे बिनु नीद न पईआ ॥ (836-16)
रोमि रोमि रविआ हरि नामु ॥ (1144-3)
रोमि रोमि हरि उचरै खिनु खिनु हरि सोई ॥ (1247-8)
रोमे रोमि रोमि रोमे मै गुरमुखि रामु धिआए राम ॥ (443-7)
रोवण वाले जेतड़े सभि बंनहि पंड परालि ॥२॥ (15-6)

रोवणु सगल बिकारो गाफलु संसारो माइआ कारणि रोवै ॥ (579-10)
रोवनहारी रोजु बनाइआ ॥ (1145-2)
रोवनहारु भि ऊठि सिधाई ॥ (885-15)
रोवनहारे की कवन टेक ॥१॥ (885-13)
रोवनहारै झूठु कमाना ॥ (389-5)
रोवह बिरहा तन का आपणा साहिबु सम्हालेहां ॥ (579-13)
रोवहि किरपन संचहि धनु जाइ ॥ (954-4)
रोवहि पांडव भए मजूर ॥ (954-2)
रोवहि पिरहि विछुंनीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥ (584-2)
रोवहि पिरहु विछुंनीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥१॥ (584-5)
रोवहि राजे कंन पड़ाइ ॥ (954-3)
रोवहि सेख मसाइक पीर ॥ (954-3)
रोवहु कंत महेलीहो सचे के गुण सारे ॥५॥ (580-17)
रोवहु सचु सलाहि हुकमु पछाणहू ॥३॥ (419-18)
रोवहु साकत बापुरे जु हाटै हाट बिकाइ ॥१६॥ (1365-7)
रोवै कंत समालि सदा गुण सारि ना पिरु मरै न जाए ॥ (583-8)
रोवै जनमेजा खुइ गइआ ॥ (954-2)
रोवै दहसिरु लंक गवाइ ॥ (954-1)
रोवै पूतु न कलपै माई ॥२॥ (356-7)
रोवै माइआ मुठड़ी धंधड़ा रोवणहारेवा ॥ (581-14)
रोवै रामु निकाला भइआ ॥ (953-19)
रोसु करै प्रभु बखस न मेटै नित नित चड़ै सवाई ॥३॥ (505-4)
रोसु न काहू संग करहु आपन आपु बीचारि ॥ (259-9)
रोसु न कीजै अम्रितु पीजै रहणु नही संसारे ॥ (931-4)
रोसु न कीजै उतरु दीजै किउ पाईऐ गुर दुआरो ॥ (938-17)
ड़ड़कि मुए जिउ त्रिखावंत नानक किरति कमान ॥१॥ (260-2)
ड़ाड़ा गुरमुखि ड़ाड़ि मिटाई ॥ (260-4)
ड़ाड़ा ड़ाड़ि मिटै संगि साधू ॥ (260-2)
ड़ाड़ि करत साकत गावारा ॥ (260-4)
ड़ाड़ै गारुड़ु तुम सुणहु हरि वसै मन माहि ॥ (936-18)
ड़ाड़ै राड़ि करहि किआ प्राणी तिसहि धिआवहु जि अमरु होआ ॥ (434-8)
ड़ाड़ै रूड़ा हरि जीउ सोई ॥ (936-17)
लंका गढु सोने का भइआ ॥ (1158-2)
लंका लूटी दैत संतापै ॥ (942-12)
लंका सा कोटु समुंद सी खाई ॥ (481-7)
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अम्रितु खीरि घिआली ॥ (967-9)
लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥ (967-1)

लईअनि खरे परखि दरि बीनाईऐ ॥ (146-8)
लउ नाड़ी सूआ है असती ॥ (886-11)
लउ लई त्रिसना अतिपति मन माए करम करत सि सूकरह ॥६६॥ (1360-2)
लउकी अठसठि तीरथ न्हाई ॥ (656-4)
लए दिते विणु रहै न कोइ ॥ (350-1)
लकरी बिखरि जरी मंझ भारि ॥२॥ (879-16)
लकी कासे हथी फुमण अगो पिछी जाही ॥ (149-19)
लख कोटी जे करम कमाए ॥ (1057-9)
लख खटीअहि लख संजीअहि खाजहि लख आवहि लख जाहि ॥ (358-3)
लख खुसीआ पातिसाहीआ जे सतिगुरु नदरि करेइ ॥ (44-7)
लख घाटीं ऊंचौ घनो चंचल चीत बिहाल ॥ (1364-6)
लख चउरासी रिजकु आपि अपड़ाए ॥ (112-8)
लख चउरासीह आपि उपाए ॥ (1061-7)
लख चउरासीह जंत उपाए ॥ (1190-5)
लख चउरासीह जिनि सिरी सभसै देइ अधारु ॥ (27-11)
लख चउरासीह जिन्हि उपाई सो सिमरहु निरबाणी ॥३॥ (526-3)
लख चउरासीह जीअ उपाए ॥ (1044-19)
लख चउरासीह जीअ उपाए ॥ (111-1)
लख चउरासीह जीअ उपाए भाणै साह लवाइदा ॥४॥ (1034-13)
लख चउरासीह जीअ जोनि महि भ्रमत नंदु बहु थाको रे ॥ (338-17)
लख चउरासीह जोनि न भवे ॥ (1340-14)
लख चउरासीह जोनि फिरहि ॥ (211-10)
लख चउरासीह जोनि भ्रमाइआ ॥२॥ (176-13)
लख चउरासीह जोनि भ्रमि आइओ ॥ (337-8)
लख चउरासीह जोनि सबाई ॥ (1075-14)
लख चउरासीह तरसदे जिसु मेले सो मिलै हरि आइ ॥ (29-1)
लख चउरासीह तरसदे फिरे बिनु गुर भेटे पीरै ॥ (38-16)
लख चउरासीह नरक न देखहु रसकि रसकि गुण गाई हे ॥१०॥ (1072-3)
लख चउरासीह फिरदे रहे बिनु सतिगुर मुकति न होई ॥ (70-2)
लख चउरासीह फिरि फिरि आवै बिरथा जनमु गवाइआ ॥४॥ (69-6)
लख चउरासीह फेरु पइआ कामणि दूजै भाइ ॥ (31-18)
लख चउरासीह फेरु पइआ बिनु सबदै मुकति न पाए ॥ (67-18)
लख चउरासीह फेरु पइआ मरि जमै होइ खुआरु ॥ (88-10)
लख चउरासीह भरमदे भ्रमि भ्रमि होइ खुआरु ॥ (27-7)
लख चउरासीह भरमदे मनहठि आवै जाइ ॥ (162-13)
लख चउरासीह भ्रमता फेरि ॥३॥ (180-5)
लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ ॥ (50-14)

लख चउरासीह भ्रमते भ्रमते दुलभ जनमु अब पाइओ ॥१॥ (1017-2)
लख चउरासीह मरि मरि जनमे फिरि फिरि जोनी जोइआ ॥२॥ (998-19)
लख चउरासीह मेदनी घटै न वधै उताहि ॥ (936-3)
लख चउरासीह मेदनी तिसना जलती करे पुकार ॥ (1416-4)
लख चउरासीह मेदनी तुझ ही ते होई ॥ (1283-15)
लख चउरासीह मेदनी सभ आवै जासी ॥ (1100-11)
लख चउरासीह मेदनी सभ सेव करंदा ॥ (1096-17)
लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥ (471-5)
लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥ (464-19)
लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥ (471-6)
लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण ॥ (467-7)
लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु ॥ (467-7)
लख मड़िआ करि एकठे एक रती ले भाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (358-8)
लख मण सुइना लख मण रुपा लख साहा सिरि साह ॥ (1287-16)
लख लसकर लख वाजे नेजे लख उठि करहि सलामु ॥ (358-1)
लख लसकर लख वाजे नेजे लखी घोड़ी पातिसाह ॥ (1287-17)
लख सासत समझावणी लख पंडित पड़हि पुराण ॥ (358-4)
लख सिआणप जे करी लख सिउ प्रीति मिलापु ॥ (20-14)
लख सिउ प्रीति होवै लख जीवणु किआ खुसीआ किआ चाउ ॥ (1243-5)
लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥ (134-15)
लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥ (467-8)
लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥ (467-8)
लखमी तोटि न आवई खाइ खरचि रहंदा ॥ (1096-16)
लखा उपरि फुरमाइसि तेरी लख उठि राखहि मानु ॥ (358-1)
लखिमी केतक गनी न जाईऐ गनि न सकउ सीका ॥५॥ (507-17)
लखिमी बर सिउ जउ लिउ लावै ॥ (342-18)
लखिमी भउ करै न साकै जाइ ॥ (1154-19)
लखी न जाई नानक लीला ॥१॥ (250-10)
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥ (7-7)
लखे न जाहि पारब्रहम के रंग ॥ (275-8)
लगड़ा सो नेहु मंन मझाहू रतिआ ॥ (708-8)
लगड़ी सुथानि जोड़णहारै जोड़ीआ ॥ (519-14)
लगड़ीआ पिरीअंनि पेखंदीआ ना तिपीआ ॥ (1101-14)
लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥१॥ रहाउ ॥ (43-3)
लगा रंगु अपारु को न उतारई ॥ (1425-8)
लगा रंगु चरणारबिंद सभु भ्रमु भउ भागा ॥ (964-19)
लगि लगि प्रीति बहु प्रीति लगाई लगि साधू संगि सवारे ॥ (982-1)

लगि संत चरणी पड़े सरणी मनि तिना ओमाहा ॥ (543-18)
लगि संतना पग पाल ॥२॥१॥२॥ (1119-11)
लगी आवहि साहुरै नित न पेईआ होइ ॥३॥ (23-9)
लगी लागि संत संगारा ॥ (1081-1)
लगु चरण सरण दइआल प्रीतम सगल दुरत बिखंडनो ॥ (847-3)
लट छिटकाए तिरीआ रोवै हंसु इकेला जाई ॥३॥ (478-4)
लट छूटी वरतै बिकराल ॥ (1163-5)
लटुरी मधुरी ठाकुर भाई ओह सुंदरि हरि ढुलि मिली ॥१॥ (527-9)
लड़ि लाइ उधारे दीन दइआल ॥२॥ (1184-12)
लड़ि लीने लाए नउ निधि पाए नाउ सरबसु ठाकुरि दीना ॥ (80-5)
लता बली साख सभ सिमरहि रवि रहिआ सुआमी सभ मना ॥४॥ (1079-4)
लथे भड़थू पाइ गुरमुखि मचिआ ॥ (1280-4)
लथे सभि विकार सबदि नीसाणिआ ॥ (1291-10)
लधमु लभणहारु करमु करंदो मा पिरी ॥ (521-11)
लधे हभे थोकड़े नानक हरि धनु माल ॥१॥ (80-18)
लपटि कपटि ग्रिहि बेधिआ मिथिआ बिखिआदि ॥१॥ (810-3)
लपटि रहिओ तह अंध अंधारु ॥ (268-14)
लपटि रहिओ तिह संगि मीठे भोग सोन ॥ (458-4)
लपटि रहिओ मनु बासना गुर मिलि इह तिआगउ ॥१॥ रहाउ ॥ (808-10)
लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ॥ (283-3)
लपटि रही फुनि बंधु न पाइआ ॥ (1342-2)
लपटि रहे माइआ रंग माते लोचन कछू न सूझी ॥१॥ (672-3)
लब लोभ अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥ (722-9)
लब लोभ लहरि निवारणं हरि नाम रासि मनं ॥ (506-1)
लबधि आपणी पाई ॥ (621-9)
लबधिअं साध संगेण नानक वडभागी भेटंति दरसनह ॥२१॥ (1361-8)
लबधेणि साध संगेणि नानक मसतकि लिख्यणः ॥२२॥ (1361-9)
लबध्यं संत संगेण नानक स्वछ मारग हरि भगतणह ॥५४॥ (1359-3)
लबध्यं साध संगेण नानक सुख असथानं गोपाल भजणं ॥४॥ (1360-9)
लबि धंधै माइआ जगतु भुलाइआ कालु खड़ा रूआए ॥१॥ (581-19)
लबि न चलई सचि रहै सो विसटु परवाणु ॥ (148-10)
लबि लोभि अहंकारि माता गरबि भइआ समाइणु ॥ (460-3)
लबि लोभि मुहताजि विगूते इब तब फिरि पछुताई ॥ (930-12)
लबु अधेरा बंदीखाना अउगण पैरि लुहारी ॥३॥ (1191-1)
लबु कुता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ॥ (15-9)
लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥ (468-19)
लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ ॥ (918-17)

लबु लोभु अहंकारु तजि त्रिसना बहुतु नाही बोलणा ॥ (918-18)
लबु लोभु अहंकारु सु पीरा ॥ (414-16)
लबु लोभु कामु क्रोधु मोहु मारि कढे तुधु सपरवारिआ ॥ (968-11)
लबु लोभु जे कूड़ु कमावै ॥ (1411-18)
लबु लोभु तजि होहु निचिंदा ॥ (1041-14)
लबु लोभु परजालीऐ नामु मिलै आधारु ॥ (790-9)
लबु लोभु बुरा अहंकारु ॥ (931-9)
लबु लोभु बुरिआईआ छोडे मनहु विसारि ॥ (936-11)
लबु लोभु मुचु कूड़ु कमावहि बहुतु उठावहि भारो ॥ (154-18)
लबु वत्र दरोगु बीउ हाली राहकु हेत ॥ (955-4)
लबु विणाहे माणसा जिउ पाणी बूरु ॥ (967-17)
लबै मालै घुलि मिलि मिचलि ऊंघै सउड़ि पलंघु ॥ (1288-13)
लभणं साध संगेण ॥ (1361-2)
लमा नकु काले तेरे नैण ॥ (1257-6)
लमी लमी नदी वहै कंधी केरै हेति ॥ (1382-8)
लरिकी लरिकन खैबो नाहि ॥ (871-10)
ललत बिलावल गावही अपुनी अपुनी भांति ॥ (1430-3)
ललता लेखणि सच की पिआरे हरि गुण लिखहु वीचारि ॥ (636-16)
लला ऐसे लिव मनु लावै ॥ (342-8)
लला ता कै लवै न कोऊ ॥ (252-13)
लला लपटि बिखै रस राते ॥ (252-9)
लला लावउ अउखध जाहू ॥ (259-14)
ललै लाइ धंधै जिनि छोडी मीठा माइआ मोहु कीआ ॥ (434-6)
लवै न लागन कउ है कछूऐ जा कउ फिरि इहु धावै ॥ (672-8)
लसकर जोड़े कीआ स्मबाहा ॥ (392-3)
लसकर जोड़े नेब खवासा ॥ (176-1)
लसकर तरकसबंद बंद जीउ जीउ सगली कीत ॥ (70-19)
लसकर नेब खवास सभ तिआगे जम पुरि ऊठि सिधास ॥२॥ (496-12)
लसकर नेब खवासी पाजे ॥ (225-11)
लसकर सणै दमामिआ छुटे बंक दुआर ॥ (1244-6)
लसकरीआ घर समले आए वजहु लिखाइ ॥ (936-10)
लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥ (966-18)
लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अम्रितु पीवदै ॥ (966-16)
लहणे धरिओनु छत्रु सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु ॥ (967-14)
लहणै पंथु धरम का कीआ ॥ (1401-13)
लहनो जिसु मथानि हां ॥ (409-15)
लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि ॥ (59-19)

लहिओ जम भइआनि हां ॥ (409-14)
लहिओ सहसा बंधन गुरि तोरे तां सदा सहज सुखु पाइओ ॥ (205-9)
लहुरी संगि भई अब मेरै जेठी अउरु धरिओ ॥२॥२॥३२॥ (483-19)
लहै भराति होवै जिसु दाति ॥२॥ (150-16)
लाइ अंचलि नानक तारिअनु जिता जनमु अपार जीउ ॥८॥४॥३८॥ (132-16)
लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कमु ॥ (595-15)
लाइ प्रीति कीन आपन तूटत नही जोरु ॥ (1307-14)
लाइ बिरहु भगवंत संगे होइ मिलु बैरागनि राम ॥ (848-8)
लाइ लए लड़ि दास जन अपुने उधरे उधरनहारे ॥ (702-8)
लाइआ दुरगंध मड़ै चितु लागा जिउ रंगु कसुमभ दिखाइआ ॥ (442-10)
लाख अड्मबर बहुतु बिसथारा ॥ (240-8)
लाख अरब खरब दीनो दानु ॥ (202-4)
लाख अहेरी एकु जीउ केता बंचउ कालु ॥५३॥ (1367-6)
लाख उलाहने मोहि हरि जब लगु नह मिलै राम ॥ (542-18)
लाख करोरी बंधु न परै ॥ (264-5)
लाख करोरी मिलै न केह ॥ (377-12)
लाख कोट खुसीआ रंग रावै जो गुर लागा पाई जीउ ॥१॥ (101-6)
लाख कोटि बिखिआ के बिंजन ता महि त्रिसन न बूझी ॥ (497-5)
लाख जतन करै ओहु चिति न धरेइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1159-3)
लाख जिहवा देहु मेरे पिआरे मुखु हरि आराधे मेरा राम ॥ (780-18)
लाख जोगीसर करते जोगा ॥ (562-11)
लाख तपीसर तपु ही साधहि ॥ (562-11)
लाख भगत आराधहि जपते पीउ पीउ ॥ (397-8)
लाख भगत जा कउ आराधहि ॥ (562-10)
लाख भोगीसर भोगहि भोगा ॥२॥ (562-11)
लाख लाख लाख कई कोरै को है ऐसो बीचारै ॥१॥ (1301-18)
लाख हिकमती जानीऐ ॥ (211-3)
लागत पवन खसमु बिसराइओ ॥१॥ (337-6)
लागत ही भुइ गिरि परिआ परा करेजे छेकु ॥१९४॥ (1374-19)
लागत ही भुइ मिलि गइआ परिआ कलेजे छेकु ॥१५७॥ (1372-18)
लागना लागनु नीका गुर चरणी मनु लागना ॥६॥ (1018-12)
लागि छुटो सतिगुर की पाई ॥१॥ (392-7)
लागि परे तेरे दान सिउ नह चिति खसमारे ॥३॥ (809-5)
लागि परे दुरगंध सिउ नानक माइआ बंध ॥१॥ (252-9)
लागी चोट मरम की रहिओ कबीरा ठउर ॥१८२॥ (1374-6)
लागी प्रीति न तूटै मूले ॥ (105-13)
लागी भूख माइआ मगु जोहै मुकति पदारथु मोहि खरे ॥३॥ (1014-1)

लागी मंदिर दुआर ते अब किआ काढिआ जाइ ॥१३२॥ (1371-11)
लागी मैलु मिटै सच नाइ ॥ (352-12)
लागी होइ सु जानै पीर ॥ (327-17)
लागु गले सुनु बिनती मेरी ॥१॥ (484-7)
लागू होए दुसमना साक भि भजि खले ॥ (70-6)
लाज न आवै अगिआन मती दुरजन बिरमाईऐ राम ॥ (848-4)
लाज न मरहु कहहु घरु मेरा ॥ (325-12)
लाज मरंती मरि गई घूघटु खोलि चली ॥ (931-6)
लाज मरै जो नामु न लेवै ॥ (1148-19)
लाजु घड़ी सिउ तूटि पड़ी उठि चली पनिहारी ॥२॥ (333-18)
लाटू माधाणीआ अनगाह ॥ (465-12)
लाडिले लाड लडाइ सभ महि मिलु हमारी होइ गते ॥ (847-12)
लाड़ी चाड़ी लाइतबारु ॥ (931-9)
लाथी तिस भुखानि हां ॥ (409-16)
लाथी भूख त्रिसन सभ लाथी चिंता सगल बिसारी ॥ (215-7)
लादि खजाना गुरि नानक कउ दीआ इहु मनु हरि रंगि रंगे ॥४॥२॥३॥ (496-2)
लादि खेप संतह संगि चालु ॥ (283-5)
लाभु मिलै तोटा हिरै साधसंगि लिव लाइ ॥ (298-3)
लाभु मिलै तोटा हिरै हरि दरगह पतिवंत ॥ (297-1)
लाभु लैहु हरि रिदै अराधहु छुटकै आवण जाणी ॥१॥ (1219-17)
लाभु हरि गुण गाइ निधि धनु बिखै माहि अलेप ॥१॥ रहाउ ॥ (1226-13)
लाल गुपाल गोबिंद प्रभ गहिर गमभीर अथाह ॥ (252-12)
लाल गोपाल दइआल रंगीले ॥ (99-4)
लाल जवेहर भरे भंडार ॥ (394-1)
लाल जवेहर माणकी गुर भंडारै सोइ ॥२॥ (59-9)
लाल जवेहर रतन पदारथ खोजत गुरमुखि लहीऐ ॥२॥ (1332-12)
लाल दइआल गुलाल लाडिले सहजि सहजि गुन गाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1214-17)
लाल नाम जा कै भरे भंडार ॥ (863-1)
लाल निहाली फूल गुलाला ॥ (225-8)
लाल पदारथ साचु अखोट ॥ (933-7)
लाल बहु गुणि कामणि मोही ॥ (359-8)
लाल भए सूहा रंगु माइआ ॥ (221-3)
लाल रंग पूरन पुरखु बिधाता ॥१॥ रहाउ ॥ (194-6)
लाल रंगीले प्रीतम मनमोहन तेरे दरसन कउ हम बारे ॥१॥ रहाउ ॥ (738-5)
लाल रंगु तिस कउ लगा जिस के वडभागा ॥ (808-14)
लाल रतन बहु माणकी सतिगुर हाथि भंडारु ॥ (936-15)
लाल लाल मोहन गोपाल तू ॥ (1231-1)

लाल सुपेद दुलीचिआ बहु सभा बणाई ॥ (1247-2)
लालच करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥२॥ (692-3)
लालच छोडि रचहु अपरमपरि इउ पावहु मुकति दुआरा हे ॥१॥ (1030-3)
लालच झूठ बिकार महा मद इह बिधि अउध बिहानि ॥ (1124-8)
लालच झूठ बिकार मोह इआ स्मपै मन माहि ॥ (261-4)
लालच झूठ बिकार मोह बिआपत मूड़े अंध ॥ (252-8)
लालच झूठ बिखै बिआधि इआ देही महि बास ॥ (259-13)
लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥१॥ रहाउ ॥ (487-10)
लालच लागे जनमु गवाइआ माइआ भरम भुलाहिगा ॥ (1106-7)
लालचि अटिआ नित फिरै सुआरथु करे न कोइ ॥ (321-4)
लालचि लागै नामु बिसारिओ आवत जावत जनमु गइआ ॥ (906-11)
लालचु करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥ (93-13)
लालचु छोडहु अंधिहो लालचि दुखु भारी ॥ (419-11)
लालनु तै पाइआ आपु गवाइआ जै धन भाग मथाणे ॥ (704-1)
लालनु मोहि मिलावहु ॥ (830-5)
लालनु राविआ कवन गती री ॥ (739-6)
लालनु लालु लालु है रंगनु मनु रंगन कउ गुर दीजै ॥ (1323-14)
लाला गोला खसम का खसमै वडिआई ॥ (1011-11)
लाला गोला धणी को किआ कहउ वडिआईऐ ॥ (1011-1)
लाला सो जीवतु मरै मरि विचहु आपु गवाए ॥ (1011-16)
लाला हाटि विहाझिआ किआ तिसु चतुराई ॥ (166-5)
लालि रता मनु मानिआ गुरु पूरा पाइआ ॥२॥ (752-1)
लालि रता मेरा मनु धीरा ॥३॥ (354-4)
लालि रती लाली भई गुरमुखि भई निचिंदु ॥१२॥ (931-8)
लालि रती सच भै वसी भाइ रती रंगि रासि ॥२॥ (54-4)
लाली नाचै लाला गावै भगति करउ तेरी राइआ ॥२॥ (991-3)
लालु अमोला लालो ॥ (1006-3)
लालु गुलालु गहबरा सचा रंगु चड़ाउ ॥ (18-11)
लालु चोलना तै तनि सोहिआ ॥ (384-7)
लालु जवेहर नामु प्रगासिआ भांडै भाउ पवै तितु अईआ ॥२॥ (834-16)
लालु रगीला सहजे पाइओ सतिगुर बचनि लहो ॥१॥ रहाउ ॥ (1203-6)
लालु रतनु तिसु पालै परिआ ॥ (887-8)
लालु रतनु हरि नामु गुरि सुरति बुझाईऐ ॥ (752-13)
लाले गोले मति खरी गुर की मति नीकी ॥ (1011-3)
लाले नो सिरि कार है धुरि खसमि फुरमाई ॥ (1011-12)
लाले विचि गुणु किछु नही लाला अवगणिआरु ॥ (1011-18)
लालै आपणी जाति गवाई ॥ (362-19)

लालै खसमु पछाणिआ वडी वडिआई ॥ (1011-10)
लालै गारबु छोडिआ गुर कै भै सहजि सुभाई ॥ (1011-9)
लालै लालचु तिआगिआ पाइआ हरि नाउ ॥ (1011-8)
लालै हुकमु पछाणिआ सदा रहै रजाई ॥ (1011-12)
लावै मात पिता सदा गल सेती मनि जाणै खटि खवाए ॥ (76-16)
लाहा अहिनिसि नउतना परखे रतनु वीचारि ॥ (56-16)
लाहा कलजुगि राम नामु है गुरमति अनदिनु हिरदै रवीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (1262-9)
लाहा खाटि होईऐ धनवंता अपुना प्रभू धिआईऐ ॥३॥ (1338-19)
लाहा जग महि से खटहि जिन हरि धनु रासि ॥ (321-14)
लाहा नामु गुरमति लै चालहु हरि दरगह पैधा जावैगो ॥५॥ (1311-3)
लाहा नामु पाए गुर दुआरि ॥ (841-10)
लाहा नामु पूंजी वेसाहु ॥ (931-10)
लाहा नामु रतनु जपि सारु ॥ (931-8)
लाहा नामु संसारि अम्रितु पीजई ॥ (1285-15)
लाहा नामु संसारि है गुरमती वीचारा ॥ (1009-6)
लाहा नामु सु सारु सबदि समाणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (369-2)
लाहा परथाए हरि मंनि वसाए धनु खेती वापारा ॥ (568-15)
लाहा पलै पाइ हुकमु सिञाणीऐ ॥४॥ (419-19)
लाहा भगति सु सारु गुरमुखि पाईऐ ॥ (145-8)
लाहा माइआ कारने दह दिसि ढूढन जाइ ॥ (261-3)
लाहा मिलै जा देइ बुझाइ ॥ (931-17)
लाहा लाभु हरि भगति है गुण महि गुणी समाई राम ॥ (569-19)
लाहा सचु निआउ मनि वसाईऐ ॥ (420-1)
लाहा साचु न आवै तोटा ॥ (933-10)
लाहा हरि गुण गाइ मिलै सुखु पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (422-1)
लाहा हरि धनु खटिआ गुरमुखि सबदु वीचारि ॥ (300-18)
लाहा हरि भगति धनु खटिआ हरि सचे साह मनि भाइआ ॥ (165-14)
लाहा हरि रसु लीजै हरि रावीजै अनदिनु नामु वखाणै ॥ (568-11)
लाहा हरि सतसंगति पाईऐ करमी पलै पाइ ॥५॥ (1276-8)
लाहा हरि हरि नामु मिलै सहजे नामि समाइ ॥२॥ (30-16)
लाहि परदा ठाकुरु जउ भेटिओ तउ बिसरी ताति पराई ॥३॥ (215-9)
लाहे कारणि आइआ जगि ॥ (931-9)
लाहौर सहरु अम्रित सरु सिफती दा घरु ॥२८॥ (1412-11)
लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु ॥२७॥ (1412-10)
लिंउ लिंउ करत फिरै सभु लोगु ॥ (342-17)
लिखण वाला जलि बलउ जिनि लिखिआ दूजा भाउ ॥ (84-14)
लिखतु मिटै नही सबदु नीसाना ॥ (221-9)

लिखदिआ लिखदिआ कागद मसु खोई ॥ (123-7)
लिखि अरु मेटै ताहि न माना ॥ (340-8)
लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥२॥ (463-18)
लिखि लिखि पड़िआ ॥ (467-15)
लिखिअड़ा लेखु न मेटीऐ दरि हाकारड़ा आइआ है ॥ (582-8)
लिखिअड़ा साहा ना टलै जेहड़ा पुरबि कमाइआ ॥ (582-5)
लिखिआ आइआ गोविंद का वणजारिआ मित्रा उठि चले कमाणा साथि ॥ (78-3)
लिखिआ आइआ पकड़ि चलाइआ मनमुख सदा दुहेले ॥ (78-4)
लिखिआ किरतु धुरे परवाना ॥ (932-19)
लिखिआ पलै पाइ गरबु वञाईऐ ॥६॥ (420-2)
लिखिआ पलै पाइ सो सचु जाणीऐ ॥ (1288-1)
लिखिआ फेरि न सकीऐ जिउ भावी तिउ सारि ॥ (937-17)
लिखिआ मेटि न सकीऐ जो धुरि लिखिआ करतारि ॥ (89-9)
लिखिआ लेखु तिनि पुरखि बिधातै दुखु सहसा मिटि गइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (42-16)
लिखिआ लेखु न मेटै कोई गुरमुखि मुकति करावणिआ ॥५॥ (109-15)
लिखिआ होवै नानका करता करे सु होइ ॥१॥ (1243-1)
लिखिओ लेखु न मेटत कोऊ ॥ (253-13)
लिखु दाति जोति वडिआई ॥ (989-11)
लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥१॥ (16-6)
लिखु राम नाम गुरमुखि गोपाला ॥१॥ रहाउ ॥ (930-2)
लिखु लेखणि कागदि मसवाणी ॥ (185-5)
लिखे उपरि हुकमु होइ लईऐ वसतु सम्हालि ॥ (1238-10)
लिखे बाझहु सुरति नाही बोलि बोलि गवाईऐ ॥ (566-1)
लिलाट लिखे पाइआ गुरु साधू गुर बचनी मनु तनु राता ॥ (984-14)
लिव छुड़की लगी त्रिसना माइआ अमरु वरताइआ ॥ (921-3)
लिव धातु दुइ राह है हुकमी कार कमाइ ॥ (87-12)
लिव लाइ हरि सिउ रही गोइलि सहजि सबदि सीगारीआ ॥ (843-6)
लिव लागी नामि तजि दूजा भाउ ॥ (1169-18)
लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥ (270-3)
लीआ त दीआ मानु जिन्ह सिउ से सजन किउ वीसरहि ॥ (765-16)
लीपिऐ थाइ न सुचि हरि मानै ॥ (1151-14)
लीला किछु लखी न जाइ ॥४॥ (897-5)
लुंजित मुंजित मोनि जटाधर अंति तऊ मरना ॥१॥ (476-18)
लूक करत बिकार बिखड़े प्रभ नेर हू ते नेरिआ ॥ (704-11)
लूकि कमानो सोई तुम्ह पेखिओ मूड़ मुगध मुकरानी ॥ (403-11)
लूकि कमावै किस ते जा वेखै सदा हदूरि ॥ (48-7)
लूटि लेहि साकत पति खोवहि ॥ (865-10)

लूटी लंका सीस समेति ॥ (224-17)
लूण हरामी गुनहगार बेगाना अलप मति ॥ (261-2)
लूण हरामी नानकु लाला बखसिहि तुधु वडिआई ॥ (991-5)
लूणु खाइ करहि हरामखोरी पेखत नैन बिदारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1001-1)
ले कंठि लाए सुख दिखाए बिकार बिनसे मंदा ॥ (1312-13)
ले गुर पग रेन रवाल ॥ (977-8)
ले पखा प्रिअ झलउ पाए ॥ (394-10)
ले बादिसाह के आगे धरी ॥२०॥ (1166-7)
ले मसतकि लावउ करि क्रिपा देन ॥१॥ रहाउ ॥ (1192-4)
ले राखिओ राम जनीआ नाउ ॥१॥ (484-1)
लेउ निबेरि आजु की राती ॥ (792-16)
लेख असंख अलेखु अपारु ॥१॥ (412-14)
लेख असंख लिखि लिखि मानु ॥ (412-13)
लेखा इको आवहु जाहु ॥१॥ (25-1)
लेखा कोइ न पुछई जा हरि बखसंदा ॥ (1096-17)
लेखा चित्र गुपति जो लिखिआ सभ छूटी जम की बाकी ॥२॥ (668-11)
लेखा छोडि अलेखै छूटह हम निरगुन लेहु उबारी ॥१॥ (713-17)
लेखा देणा तेरै सिरि रहिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (434-15)
लेखा धरम भइआ तिल पीड़े घाणी राम ॥ (546-11)
लेखा धरम राइ की बाकी जपि हरि हरि नामु किरखै ॥ (78-10)
लेखा पड़ि न पहूचीऐ कथि कहणै अंतु न पाइ ॥ (427-16)
लेखा पड़ीऐ जे लेखे विचि होवै ॥ (120-5)
लेखा पड़ीऐ हरि नामु फिरि लेखु न होई ॥ (1248-6)
लेखा मंगै देवणा पुछै करि बीचारु जीउ ॥ (751-9)
लेखा मागै ता किनि दीऐ ॥ (111-2)
लेखा रबु मंगेसीआ तू आंहो केहे कमि ॥३८॥ (1379-17)
लेखा रबु मंगेसीआ बैठा कढि वही ॥ (953-13)
लेखा लिखिआ केता होइ ॥ (3-15)
लेखा लिखीऐ मन कै भाइ ॥ (1237-15)
लेखा लीजै तिल जिउ पीड़ी ॥ (1028-8)
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥ (5-4)
लेखु न मिटई पुरबि कमाइआ किआ जाणा किआ होसी ॥ (689-4)
लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि ॥ (937-15)
लेखै कतहि न छूटीऐ खिनु खिनु भूलनहार ॥ (261-1)
लेखै गणत न छूटीऐ काची भीति न सुधि ॥ (252-4)
लेखै तेरै सास गिरास ॥२॥ (354-10)
लेखै बोलणु बोलणा लेखै खाणा खाउ ॥ (15-3)

लेखै बोलणु लेखै चलणु काइतु कीचहि दावे ॥ (1238-5)
लेखै वाट चलाईआ लेखै सुणि वेखाउ ॥ (15-3)
लेखै साह लवाईअहि पड़े कि पुछण जाउ ॥१॥ (15-3)
लेटणि लेटि जाणै तनु सुआहु ॥ (350-12)
लेपु न लागो तिल का मूलि ॥ (1137-14)
लेपु नही जगजीवन दाते दरसन डिठे लहनि विजोगा जीउ ॥३॥ (108-12)
लेफु निहाली पट की कापड़ु अंगि बणाइ ॥ (1014-19)
लेले कउ चूघै नित भेड ॥३॥ (326-6)
लेवहु कंठि लगाइ अपदा सभ हरु ॥ (1251-9)
लेवै देवै ढिल न पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (25-1)
लेहु आरती हो पुरख निरंजन सतिगुर पूजहु भाई ॥ (1350-12)
लै अंकि लाए हरि मिलाए जनम मरणा दुख जले ॥ (705-4)
लै कमली चलिओ पलटाइ ॥ (1164-10)
लै करि ठेगा टगरी तोरी लांगत लांगत जाती थी ॥१॥ (874-18)
लै कै तकड़ी तोलणि लागा घट ही महि वणजारा ॥४॥ (156-13)
लै कै वढी देनि उगाही दुरमति का गलि फाहा हे ॥३॥ (1032-11)
लै तुरे सउदागरी सउदागरु धावै ॥ (166-9)
लै नामै हरि आगै धरी ॥२॥ (1163-18)
लै पाटी पाधे कै आइआ ॥ (1154-5)
लै फाहे उठि धावते सि जानि मारे भगवंत ॥१०॥ (1365-1)
लै फाहे राती तुरहि प्रभु जाणै प्राणी ॥ (315-3)
लै भाड़ि करे वीआहु ॥ (471-11)
लै लाहा गुरमुखि घरि आवहु ॥६॥ (430-18)
लै लै दात पहुतिआ लावे करि तईआरु ॥ (43-11)
लै लै मुकरि पउदे काचे ॥ (1024-14)
लैत देत उन्ह मूकरि परना ॥ (372-14)
लैदा बद दुआइ तूं माइआ करहि इकत ॥ (42-10)
लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ सद कुरबानै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (722-2)
लैनो नामु अम्रित रसु नीको बावर बिखु सिउ गहि रहा ॥१॥ रहाउ ॥ (1203-11)
लोइण देखि रहे बिसमादी चितु अदिसटि लगाई ॥२४॥ (910-2)
लोइण रते लोइणी कंनी सुरति समाइ ॥ (1091-10)
लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥ (1099-19)
लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥ (577-12)
लोक कुट्मब ते टूटीऐ प्रभ किरति किरति करी ॥ (1230-19)
लोक पचारा अंधु कमाइ ॥२॥ (888-1)
लोक पचारा करै दिनु राति ॥ (267-11)
लोक पचारै गति नही होइ ॥ (890-7)

लोक पतीआरै कछू न पाईऐ ॥ (736-19)
लोक पतीणे कछू न होवै नाही रामु अयाना ॥१॥ (484-14)
लोक मुहावहि चाड़ी खाहि ॥ (951-16)
लोक समझावहु सुणे न कोई ॥ (230-3)
लोकन की चतुराई उपमा ते बैसंतरि जारि ॥ (528-1)
लोकन कीआ वडिआईआ बैसंतरि पागउ ॥ (808-9)
लोका दा किआ जाइ जा तुधु भाणिआ ॥१॥ (421-19)
लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई ॥१॥ (755-2)
लोका मत को फकड़ि पाइ ॥ (358-7)
लोका विचि मुहु काला होआ अंदरि उभे सास ॥ (643-11)
लोका वे हउ सूहवी सूहा वेसु करी ॥ (785-17)
लोकि पतीणै ना पति होइ ॥ (661-6)
लोकु अवगणा की बंन्है गंठड़ी गुण न विहाझै कोइ ॥ (1092-14)
लोकु कि वेखै बपुड़ा जिस नो सोझी नाहि ॥ (947-5)
लोकु धिकारु कहै मंगत जन मागत मानु न पाइआ ॥ (878-17)
लोग कुट्मब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो ॥२॥ (657-7)
लोग दुराइ करत ठगिआई होतौ संगि न जानो ॥१॥ (1269-11)
लोगन रामु खिलउना जानां ॥१॥ (1158-15)
लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा ॥१॥ (384-16)
लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥ (1350-1)
लोगु कहै कबीरु बउराना ॥ (1158-18)
लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥ (659-9)
लोगु गठावै पनही ॥१॥ रहाउ ॥ (659-8)
लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥ (335-10)
लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस ॥२॥ (1124-16)
लोगु मरमु कह जानै मोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (1158-16)
लोगु सबाइआ चलि गइओ हम तुम कामु निदान ॥८५॥ (1368-19)
लोचन तार ललता बिललाती दरसन पिआस रजाई ॥५॥ (1274-11)
लोचन स्रमहि बुधि बल नाठी ता कामु पवसि माधाणी ॥ (93-11)
लोचा समसरि इहु बिउहारा ॥ (327-7)
लोड़ीदड़ा साजनु मेरा ॥ (700-16)
लोड़ीदो हभ जाइ सो मीरा मीरंन सिरि ॥ (1098-10)
लोभ बिखिआ बिखै लागे हिरि वित चित दुखाही ॥ (408-7)
लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥१॥ (1186-14)
लोभ मोह तूटे भ्रम संगा ॥३॥ (1206-16)
लोभ मोह माइआ ममता फुनि अउ बिखिअन की सेवा ॥ (220-5)
लोभ मोह माइआ ममता फुनि जिह घटि माहि पछानउ ॥१॥ रहाउ ॥ (685-3)

लोभ मोह वसि करण सरण जाचिक प्रतिपालण ॥ (1391-17)
लोभ मोह सभ बीसरि जाहु ॥ (343-18)
लोभ मोह सिउ गई विखोटि ॥ (1347-11)
लोभ लहरि अति नीझर बाजै ॥ (1196-1)
लोभ लहरि कउ बिगसि फूलि बैठा ॥ (738-16)
लोभ लहरि सभु सुआनु हलकु है हलकिओ सभहि बिगारे ॥ (983-17)
लोभ लहरि सुआन की संगति बिखु माइआ करंगि लगावैगो ॥७॥ (1311-17)
लोभ विकार जिना मनु लागा हरि विसरिआ पुरखु चंगेरा ॥ (711-7)
लोभ विकार नाव डुबदी निकली जा सतिगुरि नामु दिड़ाए ॥ (443-5)
लोभ सुनै मनि सुखु करि मानै बेगि तहा उठि धाइओ ॥१॥ (531-6)
लोभन महि लोभी लोभाइओ तिउ हरि रंगि रचे गिआनी ॥१॥ (613-5)
लोभादि द्रिसटि पर ग्रिहं जदिबिधि आचरणं ॥ (526-16)
लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥१॥ रहाउ ॥ (411-5)
लोभि मोहि अभिमानि बूडे मरणु चीति न आवए ॥ (705-6)
लोभि मोहि बाधी देह ॥ (838-4)
लोभि मोहि बिकारि बाधिओ अनिक दोख कमावने ॥ (547-8)
लोभि मोहि मगन अपराधी ॥ (740-19)
लोभि लहरि सुधि मति गई सचि न लगै पिआरु ॥ (1250-10)
लोभि विआपी झूठी दुनीआ ॥ (1004-5)
लोभी अन कउ सेवदे पड़ि वेदा करै पूकार ॥ (30-10)
लोभी अनदु करै पेखि धना ॥ (198-12)
लोभी कपटी पापी पाखंडी माइआ अधिक लगै ॥१॥ रहाउ ॥ (359-2)
लोभी का धनु प्राण अधारु ॥ (914-14)
लोभी का वेसाहु न कीजै जे का पारि वसाइ ॥ (1417-14)
लोभी जंतु न जाणई भखु अभखु सभ खाइ ॥ (50-6)
लोभी जीअड़ा थिरु न रहतु है चारे कुंडा भाले ॥२॥ (876-7)
लोभी नर रहे लपटाइ ॥ (1155-2)
लोभी नरु धन का हितकारी ॥ (1164-15)
लोभु अभिमानु बहुतु अहंकारा ॥ (120-13)
लोभु मूआ त्रिसना बुझि थाकी ॥ (742-15)
लोभु मोहु तुझु कीआ मीठा एतु भरमि भुलाणा ॥ (566-12)
लोभु मोहु सभु कीनो दूरि ॥ (1147-7)
लोह मनूर कंचनु मिलि संगति हरि उर धारिओ गुरि हरिभा ॥२॥ (1337-4)
लोहउ होयउ लालु नदरि सतिगुरु जदि धारै ॥ (1399-11)
लोहा कंचनु सम करि जानहि ते मूरति भगवाना ॥१॥ (1123-2)
लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे जउ पारसहि न परसै ॥१॥ (973-19)
लोहा पारसि भेटीऐ कंचनु होइ आइआ ॥ (1245-1)

लोहा मारणि पाईऐ ढहै न होइ कपास ॥ (143-9)
लोहा वढे दरजी पाड़े सूई धागा सीवै ॥ (955-18)
लोहा हिरनु होवै संगि पारस गुनु पारस को होइ आवैगो ॥१॥ रहाउ ॥ (1311-8)
लोहू लबु निकथा वेखु ॥ (956-3)
ल्मपट चोर दूत मतवारे तिन संगि सदा बसेरा ॥३॥ (971-4)
ल्मपट चोर निंदक महा तिनहू संगि बिहाइ ॥ (261-5)
वंझी हाथि न खेवटू जलु सागरु असरालु ॥१॥ (1009-12)
वंञु मेरे आलसा हरि पासि बेनंती ॥ (460-11)
वंञै रोगा घाणि हरि गुण गाइऐ ॥ (520-4)
वंनी साचे लाल की किनि कीमति कीजै ॥७॥ (1012-13)
वंनु गइआ रूपु विणसिआ दुखी देह रुली ॥ (1287-5)
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥ (4-18)
वखतु वीचारे सु बंदा होइ ॥ (84-1)
वखतु सुहावा सदा तेरा अम्रित तेरी बाणी ॥३॥ (566-19)
वखर तै वणजारिआ दुहा रही समाइ ॥ (954-11)
वखरु काढहु सउदा कराए ॥१॥ रहाउ ॥ (372-2)
वखरु नामु देखण कोई जाइ ॥ (661-6)
वखरु नामु लदि खेप चलावहु ॥ (430-17)
वखरु नामु सदा लाभु है जिस नो एतु वापारि लाए ॥ (570-2)
वखरु राखु मुईए आवै वारी राम ॥ (1110-2)
वखरु राखु मुईए खाजै खेती राम ॥ (1110-5)
वखरु हिकु अपारु नानक खटे सो धणी ॥१॥ (965-10)
वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥ (474-18)
वजहु गवाए आपणा तखति न बैसहि सेइ ॥ (936-12)
वजहु नानक मिलै एकु नामु रिद जपि जपि जीवै ॥४॥१४॥११६॥ (400-2)
वजहु साहिब का सेव बिरानी ॥ (376-10)
वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥ (922-11)
वजी वधाई मनि सांति आई मिलिआ पुरखु अपारी ॥ (544-3)
वटि धागे अवरा घतै ॥ (471-10)
वड दातारु वडी जिसु जाई ॥ (1081-16)
वड परतापु अचरज रूपु हरि कीन्ही दाति ॥१॥ (819-10)
वड परवारु पूत अरु धीआ ॥ (392-4)
वड पुंनी हरि धिआइआ जन नानक हम मूरख मुगध निसतारे राम ॥१॥ (539-7)
वड भागि नानक पाइ ॥५॥ (838-8)
वड भागि पाइआ गुरि मिलाइआ साध कै सतसंगीआ ॥ (704-5)
वड भागी पाईऐ पुरखु अपारु ॥१॥ रहाउ ॥ (867-2)
वड भागु होवै सतिगुरु मिलै हउमै तजै विकार ॥ (1417-12)

वड समरथु सदा दातारा ॥ (98-11)
वड समरथु सदा सद संगे गुन रसना कवन भना ॥१॥ (1215-6)
वडड़ै झालि झलुमभलै नावड़ा लईऐ किसु ॥ (1420-15)
वडभागि पाइआ दुखु गवाइआ भई पूरन आस जीउ ॥ (928-1)
वडभागी गड़ मंदरु खोजिआ हरि हिरदै पाइआ नालि ॥४८॥ (1418-19)
वडभागी गुर के सिख पिआरे हरि निरबाणी निरबाण पदु पाइआ ॥२॥ (494-2)
वडभागी गुर दरसनु पाइआ ॥ (96-3)
वडभागी गुर दरसनु पाइआ गुरि मिलिऐ हरि प्रभु जाता ॥ (984-11)
वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धंनु गुरू लिव लावै ॥१॥ (172-13)
वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धनु सतिगुरू हमारा ॥ (572-5)
वडभागी गुरमुखि पाइआ जन नानक नामु समालि ॥१०॥२॥ (235-7)
वडभागी गुरु पाइआ गुर सबदी पारि लघाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (82-7)
वडभागी गुरु पाइआ पूरबि लिखिआ माइ ॥ (994-3)
वडभागी गुरु पाइआ भवजलु उतरे पारि ॥६॥ (1276-9)
वडभागी गुरु पाइआ भाई हरि हरि नामु धिआइ ॥३॥ (609-1)
वडभागी गुरु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए गुरि पूरै गति मिति पाइआ राम ॥ (539-12)
वडभागी गुरु पाइआ हरि अहिनिसि लगा भाउ ॥ (82-2)
वडभागी गुरु पूरा पाईऐ ॥ (563-11)
वडभागी गुरु सतिगुरु पाइआ गुण गाए परमानंदे ॥१॥ रहाउ ॥ (800-13)
वडभागी गुरु सेविआ हरि पाइआ सुघड़ सुजाणी ॥ (997-5)
वडभागी घरु खोजिआ पाइआ नामु निधानु ॥ (757-3)
वडभागी जपि नाउ जीउ ॥३॥ (175-7)
वडभागी जिन हरि धिआइआ तिन सउपिआ हरि भंडारु ॥ (1314-9)
वडभागी ते संत जन जिन मनि वुठा आइ ॥ (961-12)
वडभागी दरसनु को विरला पाए ॥ (101-8)
वडभागी नानक ओहु तरै ॥४॥१८॥२९॥ (892-4)
वडभागी नामु धिआइआ अहिनिसि लागा भाउ ॥ (1416-2)
वडभागी पाई नामु सखाई जन नानक रामि उपाईआ ॥१॥ (575-8)
वडभागी पाए नामु धिआए लाथे दूख संतापै ॥ (453-8)
वडभागी प्रभ आइ मिलु जनु नानकु खिनु खिनु वारिआ ॥४॥१॥५॥ (776-13)
वडभागी मिलु रामा ॥१॥ (173-1)
वडभागी मिलु संगती मेरे गोविंदा जन नानक नाम सिधि काजै जीउ ॥४॥४॥३०॥६८॥ (175-1)
वडभागी मिलु संगती सचा सबदु विसाहु ॥ (46-13)
वडभागी मिलु सुघड़ सुजाणी जीउ ॥ (173-2)
वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिओग ॥ (135-7)
वडभागी मेलावड़ा गुरमुखि पिरु चीन्हा राम ॥ (848-14)
वडभागी वडभागी सतसंगति पाई राम ॥ (453-7)

वडभागी संगति मिले गुरमुखि सवारी ॥ (651-16)
वडभागी संगति मिलै गुर सतिगुर पूरा बोलु ॥ (1317-17)
वडभागी संगति मिलै मेरी जिंदुड़ीए नानक हरि गुण गाए राम ॥३॥ (541-14)
वडभागी सतिगुरु पाइआ ॥ (623-10)
वडभागी सतिगुरु पाइआ बूझिआ ब्रहमु बिचारु ॥ (1416-5)
वडभागी सतिगुरु मिलै मुखि अम्रितु पाईऐ ॥ (163-1)
वडभागी साधसंगु परापति तिन भेटत दुरमति खोई ॥ (617-18)
वडभागी से काढीअहि पिआरे संतसंगति जिना वासो ॥ (802-13)
वडभागी हरि कीरतनु गाईऐ ॥ (196-15)
वडभागी हरि धिआइआ जन नानक नामि समाहा ॥२॥ (776-9)
वडभागी हरि नामु धिआइआ ॥ (94-4)
वडभागी हरि नामु धिआवहि हरि के भगत हरे ॥ (975-7)
वडभागी हरि नामु बीचारा ॥ (1176-2)
वडभागी हरि पाइआ जन नानक नामि विगासे ॥१॥ (776-6)
वडभागी हरि पाइआ पूरन परमानंदु ॥ (1421-15)
वडभागी हरि पाइआ पूरनु परमानंदु ॥ (854-19)
वडभागी हरि पावै सोइ ॥२॥ (1175-19)
वडभागी हरि संगति पावहि ॥ (95-9)
वडभागी हरि संत मिलाही ॥ (203-16)
वडभागी हरि संतु मिलाइआ ॥ (95-15)
वडभागीआ वाहु वाहु मुहहु कढाई ॥ (514-7)
वडभागीआ सोहागणी जिना गुरमुखि मिलिआ हरि राइ ॥ (309-16)
वडभागीआ सोहागणी जिन्हा गुरमुखि मिलिआ हरि राइ ॥ (1421-9)
वडभागीआ सोहागणी हरि मसतकि माणा राम ॥ (844-14)
वडभागे किरपा ॥४॥१॥३९॥ (380-9)
वडहंस की वार महला ४ ललां बहलीमा की धुनि गावणी (585-11)
वडहंसु मः ३ ॥ (584-2)
वडहंसु मः ५ ॥ (563-19)
वडहंसु मः ५ ॥ (563-3)
वडहंसु महला १ ॥ (557-8)
वडहंसु महला १ ॥ (566-11)
वडहंसु महला १ ॥ (579-13)
वडहंसु महला १ ॥ (581-17)
वडहंसु महला १ ॥ (581-4)
वडहंसु महला १ घरु २ ॥ (557-13)
वडहंसु महला १ छंत (565-18)
वडहंसु महला १ दखणी ॥ (580-7)

वडहंसु महला ३ ॥ (558-15)
वडहंसु महला ३ ॥ (559-1)
वडहंसु महला ३ ॥ (559-12)
वडहंसु महला ३ ॥ (559-19)
वडहंसु महला ३ ॥ (559-7)
वडहंसु महला ३ ॥ (560-12)
वडहंसु महला ३ ॥ (560-4)
वडहंसु महला ३ ॥ (560-8)
वडहंसु महला ३ ॥ (565-8)
वडहंसु महला ३ ॥ (568-10)
वडहंसु महला ३ ॥ (569-18)
वडहंसु महला ३ ॥ (569-5)
वडहंसु महला ३ ॥ (570-13)
वडहंसु महला ३ ॥ (571-7)
वडहंसु महला ३ ॥ (583-7)
वडहंसु महला ३ ॥ (584-16)
वडहंसु महला ३ असटपदीआ (564-17)
वडहंसु महला ३ घरु १ (558-9)
वडहंसु महला ३ छंत (567-15)
वडहंसु महला ३ महला तीजा (582-12)
वडहंसु महला ४ ॥ (561-4)
वडहंसु महला ४ ॥ (572-17)
वडहंसु महला ४ ॥ (573-12)
वडहंसु महला ४ ॥ (574-9)
वडहंसु महला ४ ॥ (575-19)
वडहंसु महला ४ घरु १ (560-18)
वडहंसु महला ४ घरु २ (561-10)
वडहंसु महला ४ घोड़ीआ (575-5)
वडहंसु महला ४ छंत (572-3)
वडहंसु महला ५ ॥ (562-15)
वडहंसु महला ५ ॥ (562-19)
वडहंसु महला ५ ॥ (563-11)
वडहंसु महला ५ ॥ (563-14)
वडहंसु महला ५ ॥ (563-7)
वडहंसु महला ५ ॥ (578-5)
वडहंसु महला ५ घरु १ (562-8)
वडहंसु महला ५ घरु २ (564-3)

वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ॥ (472-5)
वडा आखणु भारा तोलु ॥ (1239-15)
वडा आपि अगमु है वडी वडिआई ॥ (1251-12)
वडा करि सालाहणा है भी होसी सोइ ॥ (595-6)
वडा करि सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥२॥ (1239-3)
वडा तेरा दरबारु सचा तुधु तखतु ॥ (964-13)
वडा दाता गुरमुखि जाता निगुरी अंध फिरै लोकाई ॥१२॥ (912-7)
वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ (1174-2)
वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ (5-11)
वडा न होवै घाटि न जाइ ॥२॥ (349-9)
वडा न होवै घाटि न जाइ ॥२॥ (9-18)
वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥ (448-1)
वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥१॥ (448-4)
वडा वडा आखै सभु कोई ॥ (1035-3)
वडा वडा हरि भाग करि पाइआ ॥ (366-18)
वडा वेपरवाहु सतिगुरु मिलै त पारि पवा ॥ (1091-3)
वडा साहिबु अगम अथाहा ॥ (1076-8)
वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ (5-9)
वडा साहिबु गुरू मिलाइआ जिनि तारिआ सगल जगतु ॥ (959-1)
वडा साहिबु वडी नाई ॥ (1081-16)
वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥ (5-1)
वडा साहिबु है आपि अलख अपारा ॥६॥ (567-8)
वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ॥ (464-10)
वडा होआ वीआहिआ घरि लै आइआ मासु ॥ (1289-13)
वडा होइ धनु खाटि देइ करि भोग बिलासा ॥ (165-19)
वडिआई गुरमुखि देइ प्रभु हरि पावै सोई ॥ (654-2)
वडिआई वडा पाइआ ॥७॥ (467-3)
वडिआई वडी गुरमुखा गुर पूरै हरि नामि समाही ॥१७॥ (649-6)
वडिआई सचे नाम की हउ जीवा सुणि सुणे ॥ (963-8)
वडी आरजा फिरि फिरि जनमै हरि सिउ संगु न गहिआ ॥६॥ (642-5)
वडी आरजा हरि गोबिंद की सूख मंगल कलिआण बीचारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (807-1)
वडी कोम वसि भागहि नाही मुहकम फउज हठली रे ॥ (404-11)
वडी वडिआई अचरज सोभा कारजु आइआ रासे ॥ (609-19)
वडी वडिआई गुर सेवा ते पाए ॥ (160-14)
वडी वडिआई जा आपे आपि ॥ (463-12)
वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥ (463-10)
वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥ (463-11)

वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥ (463-10)
वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥ (463-10)
वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥ (463-11)
वडी वडिआई नानक करते की साचु सबदु सति भाखिआ ॥२॥१८॥४६॥ (620-7)
वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥ (463-11)
वडी वडिआई वडे की गुरमुखि आलाए ॥७॥ (303-10)
वडी वडिआई वडे की गुरमुखि बोलाता ॥६॥ (510-18)
वडी वडिआई वेपरवाहे ॥ (1025-4)
वडी हूं वडा अपार खसमु जिसु लेपु न पुंनि पापि ॥१३॥ (521-16)
वडी हू वडा अपारु तेरा मरतबा ॥ (965-6)
वडे कहावहि हउमै तनि पीरा ॥ (227-9)
वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइ ॥ (475-9)
वडे भाग होवहि तउ पाईऐ बिनु जिहवा किआ जाणै सुआदु ॥१॥ रहाउ ॥ (892-6)
वडे मेरे साहिबा अलख अपारा ॥ (567-6)
वडे मेरे साहिबा गहिर ग्मभीरा गुणी गहीरा ॥ (349-1)
वडे मेरे साहिबा गहिर ग्मभीरा गुणी गहीरा ॥ (9-10)
वडे मेरे साहिबा वडी तेरी वडिआई ॥१॥ (301-4)
वडे वडे जो दीसहि लोग ॥ (188-13)
वडे वडे जो दुनीआदार ॥ (238-12)
वडे वडे राजन अरु भूमन ता की त्रिसन न बूझी ॥ (672-3)
वडे हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ (53-17)
वडै भागि इहु सरीरु पाइआ ॥ (1065-5)
वडै भागि गुरमुखि हरि पाइ ॥२॥ (366-17)
वडै भागि गुरमुखि हरि पावै ॥१॥ (367-6)
वडै भागि गुरु अपुना पाइओ ॥ (715-8)
वडै भागि गुरु पूरा पाइआ हरि हरि नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1276-13)
वडै भागि गुरु पूरा पाईऐ अनदिनु नामु धिआए ॥ (774-16)
वडै भागि गुरु सतिगुरु पाइआ विचि काइआ नगर हरि सीधे ॥१॥ रहाउ ॥ (1178-18)
वडै भागि देवै परमेसरु कोटि फला दरसन गुर डीठे ॥ रहाउ ॥ (717-9)
वडै भागि नाउ पाईऐ गुरमति सबदि सुहाई ॥ (69-4)
वडै भागि पाइआ साधसंगु ॥ (178-5)
वडै भागि पाईऐ हरि सेव ॥४॥३॥ (1338-15)
वडै भागि पाए हरि निरजोगा ॥२॥ (367-4)
वडै भागि पूज गुर चरना ॥ (395-19)
वडै भागि प्रभ कीरतनु गाइआ ॥ (805-16)
वडै भागि भेटे गुरदेवा ॥ (683-19)
वडै भागि रतन जनमु पाइआ करहु क्रिपा किरपाला ॥ (611-10)

वडै भागि सतसंगति पाई गुरु सतिगुरु परसि भगवान ॥३॥ (1335-11)
वडै भागि सतसंगति पाई हरि पाइआ सहजि अनंदु ॥२॥ (29-14)
वडै भागि सतसंगति पाई हरि हरि नामु रहिआ भरपूरि ॥ (1198-10)
वडै भागि सतसंगु होइ निवि लागा पाई ॥ (709-9)
वडै भागि सतिगुरु मिलै पाईऐ पदु निरबाणी ॥१॥ (421-3)
वडै भागि साधू संगु पावै ॥१॥ रहाउ ॥ (189-5)
वडै भागि हरि धिआईऐ ॥१॥ (211-3)
वढी लै कै हकु गवाए ॥ (951-15)
वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥ (472-8)
वण त्रिण त्रिभवण हरिआ होए सगले जीअ साधारिआ ॥ (807-1)
वणजारा जगु आपि है पिआरा आपे साचा साहु ॥ (604-11)
वणजारिआ सिउ वणजु करि गुरमुखि ब्रहमु बीचारि ॥३॥ (56-17)
वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु ॥२॥ (595-13)
वणजारे इक भाती आवहि लाहा हरि नामु लै जाहे ॥ (442-14)
वणजारे संत नानका प्रभु साहु अमिता ॥४॥१३॥११५॥ (399-17)
वणजारे सिख आवदे सबदि लघावणहारु ॥ (313-5)
वणजु करहु मखसूदु लैहु मत पछोतावहु ॥ (418-12)
वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥ (22-18)
वणजु वापारु वणजै वापारी ॥ (931-18)
वणि तिणि त्रिभवणि सुख परमानंदा जीउ ॥ (217-5)
वणि त्रिणि त्रिभवणि पूरन गोपाल ॥ (198-16)
वणि त्रिणि त्रिभवणि सभ स्रिसटि मुखि हरि हरि नामु चविआ ॥ (1115-15)
वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ सम्रथ पुरख अपारु ॥ (134-12)
वणु त्रिणु ढूढत फिरि रही मन महि करउ बीचारु ॥ (936-14)
वणु त्रिणु त्रिभवण पाणी ॥ (1003-17)
वणु त्रिणु त्रिभवण भए हरिआ देखि दरसन मोहीआ ॥ (929-9)
वणु त्रिणु त्रिभवणु कीतोनु हरिआ ॥ (103-11)
वणु त्रिणु त्रिभवणु तुझै धिआइदा अनदिनु सदा विहाणु ॥ (1420-19)
वणु त्रिणु त्रिभवणु मउलिआ अम्रित फलु पाई ॥ (1193-7)
वणु त्रिणु सभु आकारु है मेरी जिंदुड़ीए मुखि हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ (540-9)
वत लगी सचे नाम की जो बीजे सो खाइ ॥ (321-12)
वथु सुहावी साइ नानक नाउ जपंदो तिसु धणी ॥२॥ (319-1)
वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ ॥ (469-5)
वधि थीवहि दरीआउ टुटि न थीवहि वाहड़ा ॥११७॥ (1384-6)
वधी वेलि बहु पीड़ी चाली ॥ (396-5)
वधु सुखु रैनड़ीए प्रिअ प्रेमु लगा ॥ (544-6)
वर नारी मिलि मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ (532-18)

वरतंति सुख आनंद प्रसादह ॥ (1356-4)
वरत करहि चंद्राइणा से कितै न लेखं ॥ (1099-1)
वरत न रहउ न मह रमदाना ॥ (1136-9)
वरत नेम करि थाके पुनहचरना ॥ (394-16)
वरत नेम करे दिन राति ॥२॥ (1169-2)
वरत नेम करै बहु भाती ॥ (265-12)
वरत नेम मजन तिसु पूजा ॥ (393-2)
वरत नेम संजम करि थाके नानक साध सरनि प्रभ संगि वसै ॥२॥२॥१५१॥ (408-3)
वरत नेमु सुच संजमु पूजा पाखंडि भरमु न जाइ ॥ (1423-5)
वरतणि जा कै केवल नाम ॥ (392-15)
वरतणि नामु नानक सचु कीना हरि नामे रंगि समाइआ ॥४॥१॥४०॥ (380-16)
वरतणि वरतिआ सरब जंजालु ॥ (1287-2)
वरतु तपनु करि मनु नही भीजै ॥ (905-4)
वरतु नेमु निताप्रति पूजा ॥ (841-15)
वरतै सभ किछु तेरा भाणा ॥ (98-16)
वरन चिहन सगलह ते रहता ॥ (259-19)
वरन भेख नही ब्रहमण खत्री ॥ (1036-1)
वरन रूप वरतहि सभ तेरे ॥ (120-9)
वरना चिहना बाहरा ओहु अगमु अजिता ॥ (965-12)
वरना चिहना बाहरा कीमति कहि न सकाउ ॥ (44-17)
वरना चिहना बाहरा लेखे बाझु अलखु ॥ (1289-4)
वरना वरन न भावनी जे किसै वडा करेइ ॥ (53-16)
वरनु चिहनु न जाइ लखिआ कथन ते अकथा ॥ (578-7)
वरनु जाति चिहनु नही कोई सभ हुकमे स्रिसटि उपाइदा ॥१॥ (1075-13)
वरनु भेखु असरूपु न जापी किउ करि जापसि साचा ॥ (945-16)
वरनु भेखु असरूपु सु एको एको सबदु विडाणी ॥ (946-1)
वरमी मारी सापु न मरई नामु न सुनई डोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (381-5)
वरमी मारी सापु न मूआ ॥ (1348-5)
वरमी मारी सापु ना मरै तिउ निगुरे करम कमाहि ॥ (588-6)
वरु घरु दरु दरसनु नही जाता पिर का सहजु न भाइआ ॥ (763-11)
वरु पाइअड़ा बालड़ीए आसा मनसा पूरी राम ॥ (765-5)
वरु पाइआ पुरखु अगमु अगोचरु सद नवतनु बाल सखाई ॥ (773-15)
वरु पाइआ प्रभु अंतरजामी नानक सोहागु न टलिआ ॥४॥४॥२॥५॥११॥ (249-18)
वरु पाइआ सोहागणी केवल एकु मुरारि ॥७॥ (428-17)
वरु लोड़ीदा आइआ वजी वाधाई ॥ (704-4)
वर्हिऐ दरगह गुरू की कुदरती नूरु ॥ (967-17)
वर्हे माह वार थिती करि इसु जग महि सोझी पाइदा ॥२॥ (1066-3)

वलवंच करि उदरु भरहि मूरख गावारा ॥ (461-7)
वलवंच करि उपाव माइआ हिरि आणिआ ॥ (1248-19)
वली निआमति बिरादरा दरबार मिलक खानाइ ॥ (723-16)
ववा बार बार बिसन सम्हारि ॥ (342-9)
ववा वैरु न करीऐ काहू ॥ (259-17)
ववै वारी आईआ मूड़े वासुदेउ तुधु वीसरिआ ॥ (435-9)
ववै वासुदेउ परमेसरु वेखण कउ जिनि वेसु कीआ ॥ (434-7)
वसगति पंच करे नह डोलै ॥ (877-15)
वसतु अनूप अति अगम अगोचर गुरु पूरा अलखु लखाए ॥३॥ (607-19)
वसतु अनूप सुणी लाभाइआ ॥ (372-1)
वसतु पराई अपुनी करि जानै हउमै विचि दुखु घाले ॥ (139-14)
वसतु पराई आपि गरबु करे मूरखु आपु गणाए ॥ (1249-13)
वसतु पराई कउ उठि रोवै ॥ (676-11)
वसतु लई वणजारई वखरु बधा पाइ ॥ (1238-10)
वसतु लहै घरि आपणै चलै कारजु सारि ॥ (56-16)
वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥ (474-13)
वसत्र पखालि पखाले काइआ आपे संजमि होवै ॥ (139-13)
वसदी सघन अपार अनूप रामदास पुर ॥ (1362-11)
वसि आणिहु वे जन इसु मन कउ मनु बासे जिउ नित भउदिआ ॥ (776-16)
वसि करि लीना गुरि भरमु चुकाइआ ॥ (737-13)
वसि भगत थीआ मिले जीआ ता की उपमा कित गनी ॥ (456-5)
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥१९॥ (1378-18)
वसु मेरे पिआरिआ वसु मेरे गोविदा हरि करि किरपा मनि वसु जीउ ॥ (173-10)
वा के गले जम का है फास ॥३॥ (1165-5)
वा कै अंतरि नही संतोखु ॥ (872-1)
वा कै रिदै बसै भगवानु ॥२॥ (870-17)
वाइनि चेले नचनि गुर ॥ (465-7)
वाऊ संदे कपड़े पहिरहि गरबि गवार ॥ (318-11)
वाचहि पुसतक वेद पुरानां ॥ (1043-9)
वाचै वादु न बेदु बीचारै ॥ (904-15)
वाजा नेजा पति सिउ परगटु करमु तेरा मेरी जाति ॥३॥ (16-17)
वाजा मति पखावजु भाउ ॥ (350-9)
वाजे अनहद तूरे ॥ (626-14)
वाजे ता कै अनहद तूरा ॥५॥४०॥९१॥ (393-16)
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ (347-4)
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ (8-15)
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥ (6-5)

वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥ (917-12)
वाजे बाझहु सिंङी वाजै तउ निरभउ पदु पाईऐ ॥ (730-17)
वाजे वजे सची बाणीआ पंच मुए मनु मारे ॥ (580-18)
वाजै अनहदु मेरा मनु लीणा ॥ (903-18)
वाजै पउणु तै आपि वजाए ॥ (1056-12)
वाजै पवणु आखै सभ जाइ ॥२॥ (662-1)
वाट न करई मामला जाणै मिहमाणु ॥ (148-9)
वाट न पावउ वीगा जाउ ॥ (354-8)
वाट वटाऊ आइआ नित चलदा साथु देखु ॥२॥ (61-12)
वाट वटाऊ आवै जाइ ॥ (931-16)
वाट हमारी खरी उडीणी ॥ (794-15)
वात वजनि टमक भेरीआ ॥ (74-10)
वादा कीआ करनि कहाणीआ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ (1091-16)
वादि अहंकारि नाही प्रभ मेला ॥ (226-8)
वादि विरोधि न पाइआ जाइ ॥ (230-10)
वादि विरोधि सलाहणे वादे आवणु जाणु ॥ (56-10)
वादु पड़ै रागी जगु भीजै ॥ (905-6)
वादु वखाणहि ततु न जाणा ॥ (1032-12)
वादु वखाणहि मोहे माइआ ॥ (128-4)
वापारी वणजारिआ आए वजहु लिखाइ ॥ (59-1)
वार मलार की महला १ राणे कैलास तथा मालदे की धुनि ॥ (1278-15)
वार माझ की तथा सलोक महला १ मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी ॥ (137-13)
वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी ॥ (462-18)
वार सूही की सलोका नालि महला ३ ॥ (785-6)
वारने जाउ कमला पती ॥१॥ (695-10)
वारि वारउ अनिक डारउ ॥ (1306-10)
वारि वारि जाई गुर ऊपरि पै पैरी संत मनाई ॥११॥ (757-17)
वारि वारि जाई तिसु विटहु जो मनि तनि तुधु आराधे जीउ ॥१॥ (102-9)
वारि वारि जाई लख वरीआ देहु संतन की धूरा जीउ ॥१॥ (99-16)
वारिआ न जावा एक वार ॥ (3-17)
वारिआ न जावा एक वार ॥ (4-10)
वारिआ न जावा एक वार ॥ (4-2)
वारिआ न जावा एक वार ॥ (4-6)
वारी आपो आपणी कोइ न बंधै धीर ॥ (936-6)
वारी आपो आपणी चले मसाइक सेख ॥४७॥ (1380-7)
वारी आवै कवणु जगावै सूती जम रसु चूसए ॥ (1110-3)
वारी खसमु कढाए किरतु कमावणा ॥ (566-5)

वारी खसमु कढाए किरतु कमावणा ॥३॥ (566-7)
वारी तिन वारी जावा सद बलिहारे राम ॥ (453-10)
वारी फेरी सदा घुमाई कवनु अनूपु तेरो ठाउ ॥१॥ (1120-1)
वारी मेरे गोविंदा वारी मेरे पिआरिआ हउ तुधु विटड़िअहु सद वारी जीउ ॥ (174-6)
वालहु निकी पुरसलात कंनी न सुणी आइ ॥ (1377-18)
वालु न विंगा होआ ॥ (623-3)
वालेवे कारणि बाबा रोईऐ रोवणु सगल बिकारो ॥ (579-10)
वावा वाही जानीऐ वा जाने इहु होइ ॥ (342-11)
वासुदेव जल थल महि रविआ ॥ (259-18)
वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाइ ॥ (259-16)
वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ (1402-11)
वाहु खसम तू वाहु जिनि रचि रचना हम कीए ॥ (788-15)
वाहु मेरे साहिबा वाहु ॥ (755-2)
वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ ॥ (515-18)
वाहु वाहु अम्रित नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥ (515-19)
वाहु वाहु आपि अखाइदा गुर सबदी सचु सोइ ॥ (514-4)
वाहु वाहु करतिआ मनु निरमलु होवै हउमै विचहु जाइ ॥ (515-8)
वाहु वाहु करतिआ रैणि सुखि विहाइ ॥ (514-12)
वाहु वाहु करतिआ सदा अनंदु होवै मेरी माइ ॥ (514-12)
वाहु वाहु करतिआ सोभा पाइ ॥ (514-13)
वाहु वाहु करतिआ हरि पाइआ सहजे गुरमुखि भालि ॥ (514-15)
वाहु वाहु करतिआ हरि सिउ लिव लाइ ॥ (514-13)
वाहु वाहु करती रसना सबदि सुहाई ॥ (514-6)
वाहु वाहु करमि परापति होवै नानक दरि सचै सोभा पाई ॥२॥ (514-8)
वाहु वाहु करमी पाईऐ आपि दइआ करि देइ ॥ (515-19)
वाहु वाहु करमी बोलै बोलाइ ॥ (514-13)
वाहु वाहु करहि से जन सोहणे हरि तिन्ह कै संगि मिलाइ ॥ (515-9)
वाहु वाहु करहि सेई जन सोहणे तिन्ह कउ परजा पूजण आई ॥ (514-7)
वाहु वाहु करि प्रभु सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ (1276-16)
वाहु वाहु का बडा तमासा ॥ (1403-15)
वाहु वाहु किआ खूबु गावता है ॥ (478-18)
वाहु वाहु गुणी निधानु है जिस नो देइ सु खाइ ॥ (515-12)
वाहु वाहु गुरमुख सदा करहि मनमुख मरहि बिखु खाइ ॥ (515-3)
वाहु वाहु गुरसिख नित सभ करहु गुर पूरे वाहु वाहु भावै ॥ (515-13)
वाहु वाहु गुरसिखु जो नित करे सो मन चिंदिआ फलु पाइ ॥ (515-9)
वाहु वाहु जलि थलि भरपूरु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ (515-13)
वाहु वाहु तिस कउ जिस का इहु जीउ ॥ (226-11)

वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि गुणदाता मति धीरु ॥ (514-19)
वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि देदा रिजकु सबाहि ॥ (515-1)
वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि सचा गहिर ग्मभीरु ॥ (514-19)
वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि सभ महि रहिआ समाइ ॥ (515-1)
वाहु वाहु पूरे गुर की बाणी ॥ (754-7)
वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ (515-17)
वाहु वाहु बाणी सचु है गुरमुखि लधी भालि ॥ (514-14)
वाहु वाहु बाणी सचु है सचि मिलावा होइ ॥ (514-5)
वाहु वाहु बाणी सति है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ (1276-16)
वाहु वाहु वेपरवाहु है वाहु वाहु करे सु होइ ॥ (515-18)
वाहु वाहु सचे पातिसाह तू सची नाई ॥१॥ रहाउ ॥ (947-13)
वाहु वाहु सतिगुरु निरंकारु है जिसु अंतु न पारावारु ॥ (1421-12)
वाहु वाहु सतिगुरु निरवैरु है जिसु निंदा उसतति तुलि होइ ॥ (1421-11)
वाहु वाहु सतिगुरु पुरखु है जिनि सचु जाता सोइ ॥ (1421-10)
वाहु वाहु सतिगुरु सति पुरखु है जिस नो समतु सभ कोइ ॥ (1421-11)
वाहु वाहु सतिगुरु सुजाणु है जिसु अंतरि ब्रहमु वीचारु ॥ (1421-12)
वाहु वाहु सतिगुरू है जि सचु द्रिड़ाए सोइ ॥ (1421-13)
वाहु वाहु सबदे उचरै वाहु वाहु हिरदै नालि ॥ (514-15)
वाहु वाहु सहजे गुण रवीजै ॥ (565-9)
वाहु वाहु साचे मै तेरी टेक ॥ (153-4)
वाहु वाहु साहिबु सचु है अम्रितु जा का नाउ ॥ (515-11)
वाहु वाहु सिफति सलाह है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ (514-5)
वाहु वाहु सिरजणहार पाईअनु ठाढि आपि ॥ (521-13)
वाहु वाहु से जन सदा करहि जिन्ह कउ आपे देइ बुझाइ ॥ (515-8)
वाहु वाहु हिरदै उचरा मुखहु भी वाहु वाहु करेउ ॥ (515-10)
विआपिआ दुरमति कुबुधि कुमूड़ा मनि लागा तिसु मोहा ॥ (960-16)
विखु विचि अम्रितु प्रगटिआ करमि पीआवणहारु ॥ (646-10)
विचहु आपु गइआ नाउ मंनिआ सचि मिलावा होइ ॥१॥ (429-11)
विचहु आपु गवाइ कै रहनि सचि लिव लाइ ॥ (88-1)
विचहु आपु गवाए फिरि कालु न खाए गुरमुखि एको जाता ॥ (582-17)
विचहु आपु गवाए हरि गुण गाए अनदिनु लागा भाओ ॥ (243-19)
विचहु आपु मुआ तिथै मोहु न माइआ ॥ (121-6)
विचहु गरभै निकलि आइआ ॥ (1007-17)
विचहु चूकै तिसना अरु आपु ॥५॥ (1343-15)
विचहु दूजा ठाकि रहाए ॥३॥ (842-9)
विचहु भरमु गइआ है दूजा गुर कै सबदि पछाता ॥१॥ (1333-12)
विचहु मलु कटे आपणी कुला का करे उधारु ॥ (1087-7)

विचहु मोहु चुकाइआ जा हरि भाइआ हरि कामणि मनि भाणी ॥ (771-18)
विचहु हउमै दुखु उठि गइआ भाई सुखु वुठा मनि आइ ॥२॥ (1177-8)
विचि आपे जंत उपाइअनु मुखि आपे देइ गिरासु ॥ (302-13)
विचि आसा होइ निरासी ॥ (801-4)
विचि उपाए साइरा तिना भि सार करेइ ॥ (955-12)
विचि करता पुरखु खलोआ ॥ (623-2)
विचि काइआ नगर लधा हरि भाली ॥३॥ (1134-12)
विचि घूमन घिरीआ ॥२॥ (537-5)
विचि दुनीआ काहे आइआ ॥८॥ (467-12)
विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥ (26-1)
विचि दुबिधा माथै पवै छारु ॥७॥ (1343-18)
विचि देही दोख असाध पंच धातू हरि कीए खिन परले ॥२॥ (975-12)
विचि मन कोटवरीआ ॥ (746-5)
विचि वरतै नानक आपि झूठु कहु किआ गनी ॥२॥१॥ (723-8)
विचि संगति नामु सदा लै लाहा जीउ ॥ (173-3)
विचि संगति हरि प्रभु वरतदा बुझहु सबद वीचारि ॥ (1314-5)
विचि सचे कूड़ु न गडई मनि वेखहु को निरजासि ॥ (314-18)
विचि सनातीं सेवकु होइ ॥ (1256-12)
विचि हउमै करम कमावदे जिउ वेसुआ पुतु निनाउ ॥ (82-1)
विचि हउमै करम कमावदे सभ धरम राइ कै जांही ॥ (1418-9)
विचि हउमै करि दुखु रोई ॥ (145-11)
विचि हउमै लेखा मंगीऐ फिरि आवै जाइआ ॥ (643-16)
विचि हउमै सेवा थाइ न पाए ॥ (1071-1)
विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥ (135-7)
विचे गिरह उदास अलिपत लिव लाइआ ॥ (1249-7)
विचे ग्रिसत उदास रहाई ॥२॥ (494-17)
विचे ग्रिह गुर बचनि उदासी हउमै मोहु जलाइआ ॥ (513-5)
विचे ग्रिह सदा रहै उदासी जिउ कमलु रहै विचि पाणी हे ॥१०॥ (1070-19)
विचे धरती विचे पाणी विचि कासट अगनि धरीजै ॥ (735-5)
विछुड़ि विछुड़ि जो मिले सतिगुर के भै भाइ ॥ (1416-9)
विछुड़िआ कउ मेलि लए गुर कउ बलि जाईऐ ॥३॥ (1011-2)
विछुड़िआ का किआ विछुड़ै जिना दूजै भाइ पिआरु ॥ (587-14)
विछुड़िआ का किआ वीछुड़ै मिलिआ का किआ मेलु ॥ (989-8)
विछुड़िआ गुरु मेलसी हरि रसि नाम पिआरि ॥ (60-19)
विछुड़िआ मेला नही दूखु घणो जम दुआरि ॥३॥ (1010-9)
विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु ॥ (957-2)
विछुड़िआ मेलै प्रभू नानक करि संजोग ॥३२॥ (934-5)

विछुड़िआ विसु होइ विछोड़ा एक घड़ी महि जाइ ॥ (1243-6)
विछोड़ा भउ वीसरै पूरा रखवाला ॥४॥ (1012-9)
विछोड़ा सुणे डुखु विणु डिठे मरिओदि ॥ (1100-14)
विछोहे ज्मबूर खवे न वंञनि गाखड़े ॥ (520-19)
विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥२॥ (11-18)
विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥२॥ (365-15)
विजोगी दुखि विछुड़े मनमुखि लहहि न मेलु ॥४॥ (21-5)
विजोगी मिलि विछुड़े नानक भी संजोग ॥४॥१॥ (989-9)
विझण कलह न देवदा तां लइआ करते ॥ (317-8)
विणु करमा किउ पाइआ जाए ॥ (1061-9)
विणु करमा किछु पाईऐ नही किआ करि कहिआ जाइ ॥२॥ (430-5)
विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै ॥ (722-9)
विणु करमा कैसे उतरसि पारे ॥५॥ (903-13)
विणु करमा हरि जीउ न पाईऐ बिनु सतिगुर मनूआ न लगै ॥ (1098-5)
विणु करमै किनै न पाइओ भउकि मुए बिललाइ ॥ (551-12)
विणु काइआ जि होर थै धनु खोजदे से मूड़ बेताले ॥ (309-9)
विणु खाधे मरि होहि गवार ॥३॥ (151-11)
विणु गाहक गुणु वेचीऐ तउ गुणु सहघो जाइ ॥ (1086-19)
विणु गुण कीते भगति न होइ ॥ (4-16)
विणु गुण जनमि मुए अहंकारी ॥३॥ (367-5)
विणु गुर किनै न लधिआ अंधे भउकि मुए कूड़िआरा ॥ (141-7)
विणु गुर दाते मुकति न भालि ॥ (935-8)
विणु गुर पीरै को थाइ न पाई ॥ (952-1)
विणु गुर पूरे कोइ न जाणी ॥ (423-12)
विणु गुर पूरे ततु न पाईऐ सच सूचे सचु राहा हे ॥४॥ (1032-12)
विणु गुर सबदै जनमु कि लेखहि ॥५॥ (416-8)
विणु चाखे सादु किसै न आइआ ॥ (1056-18)
विणु जाणाए कोइ न जाणै ॥ (1034-13)
विणु डिठा किआ सालाहीऐ अंधा अंधु कमाइ ॥ (646-7)
विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख ॥ (958-1)
विणु थम्हा गगनु रहाइ सबदु नीसाणिआ ॥ (1279-6)
विणु नदरी नानक नही कोइ ॥४॥१॥३॥ (661-9)
विणु नाम हरि के कछु न सूझै अंधु बूडौ धंधली ॥ (767-3)
विणु नावै किउ छूटीऐ जाइ रसातलि अंति ॥ (934-3)
विणु नावै किउ छूटीऐ पापे पचहि पचाहि ॥३८॥ (935-6)
विणु नावै किछु थाइ न पाई ॥ (467-19)
विणु नावै कूड़िआरु अउखा तंगीऐ ॥ (1288-17)

विणु नावै कैसी पति सारी ॥१६॥ (931-18)
विणु नावै को मुकति न होइ ॥६॥ (229-16)
विणु नावै को संगि न साथी आवै जाइ घनेरी ॥ (1111-15)
विणु नावै गथु गइआ गवाए ॥ (1027-5)
विणु नावै तनु छारु किआ कहि रोवही ॥ (1285-2)
विणु नावै तोटा सभ थाइ ॥ (931-17)
विणु नावै दरि ढोई नाही ता जमु करे खुआरी ॥ (754-18)
विणु नावै दुखु दरदु सरीरि ॥ (361-15)
विणु नावै दुखु पाइ आवण जाणिआ ॥ (144-9)
विणु नावै नालि न चलसी जासी जनमु गवाइ ॥ (1282-4)
विणु नावै नालि न चलसी सभ मुठी जमकालि ॥२७॥ (756-10)
विणु नावै नाही को थाउ ॥ (4-10)
विणु नावै नाही साबासि ॥३॥३२॥ (25-15)
विणु नावै निरभउ कहा किआ जाणा अभिमानु ॥ (935-1)
विणु नावै पति कबहु न होइ ॥१॥ (1327-5)
विणु नावै पति गइआ गवाइ ॥१॥ (142-11)
विणु नावै बाजारीआ भीहावलि होई ॥ (1283-17)
विणु नावै भ्रमि भुलीआ ठगि मुठी कूड़िआरि जीउ ॥ (751-2)
विणु नावै मुकति किनै न पाई ॥ (1052-3)
विणु नावै वेकारि भरमे पचीऐ ॥ (142-8)
विणु नावै वेरोधु सरीर ॥ (931-16)
विणु नावै सभ डुमणी दूजै भाइ खुआइ ॥ (35-18)
विणु नावै सभ विसु पैझै खाईऐ ॥ (144-17)
विणु नावै सभि भरमदे नित जगि तोटा सैसारि ॥ (646-1)
विणु नावै सभु जगु बउराइआ नामु मिलै सुखु पाईऐ ॥२॥ (382-11)
विणु नावै सभु तोटा संसारा ॥ (1064-11)
विणु नावै होरि करम न भालि ॥२॥ (355-4)
विणु नावै होरु धनु नाही होरु बिखिआ सभु छारा ॥ (141-9)
विणु नावै होरु सलाहणा सभु बोलणु फिका सादु ॥ (301-4)
विणु परमेसर जो करे फिटु सु जीवणु सोइ ॥१॥ (218-16)
विणु परमेसर सगले मुठे ॥ (109-4)
विणु पारसै पूज न होवई विणु मन परचे अवरा समझाए ॥ (491-10)
विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥ (135-2)
विणु प्रीती भगति न होवई विणु सतिगुर न लगै पिआरु ॥ (1286-18)
विणु बोलिआ सभु किछु जाणदा किसु आगै कीचै अरदासि ॥ (1420-11)
विणु बोले जाणै सभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (661-19)
विणु बोहिथ भै डुबीऐ पिआरे कंधी पाइ कहाह ॥१॥ रहाउ ॥ (636-5)

विणु भगती घरि वासु न होवी सुणिअहु लोक सबाए ॥ (689-9)
विणु भागा नामु न पाइआ जाइ ॥ (1262-12)
विणु भै पइऐ भगति न होई ॥ (831-9)
विणु मनु मारे कोइ न सिझई वेखहु को लिव लाइ ॥ (650-14)
विणु मनै जि होरी नालि लुझणा जासी जनमु गवाइ ॥ (87-14)
विणु रासी वखरु पलै न पाइ ॥ (363-4)
विणु रासी वापारीआ तके कुंडा चारि ॥ (56-15)
विणु वखर दुखु अगला कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥२॥ (56-15)
विणु वजाई किंगुरी वाजै जोगी सा किंगुरी वजाइ ॥ (909-6)
विणु सच सोच न पाईऐ भाई साचा अगम धणी ॥ (608-15)
विणु सचे कूड़िआरु बंनि चलाईऐ ॥ (147-7)
विणु सचे तनु छारु छारु रलाईऐ ॥ (147-8)
विणु सचे दरबारु कूड़ि न पाईऐ ॥ (147-8)
विणु सचे दूजा सेवदे हुइ मरसनि बुटु ॥ (315-13)
विणु सचे सभ भुख जि पैझै खाईऐ ॥ (147-8)
विणु सचे सभु कूड़ु कूड़ु कमाईऐ ॥ (147-7)
विणु सतगुर गुण न जापनी जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥४४॥ (936-9)
विणु सतिगुर के हुकमै जि गुरसिखां पासहु कमु कराइआ लोड़े तिसु गुरसिखु फिरि नेड़ि न आवै ॥ (317-14)
विणु सतिगुर परतीति न आवई नामि न लागो भाउ ॥ (65-12)
विणु सतिगुर वाट न पावै ॥२॥ (470-18)
विणु सतिगुर सेवे सुखु नही मरि जमहि वारो वार ॥ (1248-2)
विणु सतिगुरु सेवे नाही सुखि निवासु फिरि फिरि आईऐ ॥ (144-17)
वित नवित भ्रमिओ बहु भाती अनिक जतन करि धाए ॥ (999-9)
विदिआ वीचारी तां परउपकारी ॥ (356-14)
विधड़ो सच थोकि नानक मिठड़ा सो धणी ॥२॥ (708-8)
विधण खूही मुंध इकेली ॥ (794-13)
विरला को चीनसि गुर सबदि मिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1188-12)
विरला को पाए गुर सबदि वीचारा ॥ (160-19)
विरले कउ गुर सबदु बुझाए ॥ (1053-13)
विरले कउ गुरि सबदु सुणाइआ ॥ (1036-7)
विरले कउ गुरु सबदु बुझाए ॥ (1056-17)
विरले कउ सोझी पई गुरमुखि मनु समझाइ ॥ (62-15)
विरले करमि परापति होइ ॥ (361-15)
विरले केई पाईअनि जिंन्हा पिआरे नेह ॥८३॥ (1382-6)
विरले केई पाईअन्हि जिन्हा पिआरे नेह ॥२॥ (966-3)
विरलै काहू नेत्रहु डीठी ॥१॥ रहाउ ॥ (739-14)
विरलै कीनो नाम अधारु ॥१॥ रहाउ ॥ (1145-4)

विसटा अंदरि वासु सादु न जाणिआ ॥ (144-8)
विसटा अंदरि वासु है फिरि फिरि जूनी पाइ ॥ (591-18)
विसटा का कीड़ा विसटा माहि समावै ॥३॥ (364-4)
विसटा के कीड़े पवहि विचि विसटा से विसटा माहि समाइ ॥२॥ (28-9)
विसटु गुरू मै पाइआ जिनि हरि प्रभु दिता जोड़ि ॥१॥ (313-17)
विसटु सुभाई पाइआ मीत ॥ (372-3)
विसन मिले सभ ही सचु पावै ॥३७॥ (342-10)
विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥ (464-1)
विसमादु उझड़ विसमादु राह ॥ (464-3)
विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥ (463-19)
विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥ (464-4)
विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥ (464-1)
विसमादु नागे फिरहि जंत ॥ (463-19)
विसमादु नाद विसमादु वेद ॥ (463-18)
विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥ (464-3)
विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥ (464-1)
विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥ (464-2)
विसमादु रूप विसमादु रंग ॥ (463-19)
विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु ॥ (464-2)
विसमादु सादि लगहि पराणी ॥ (464-2)
विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥ (464-3)
विसरहि नाही जितु तू कबहू सो थानु तेरा केहा ॥ (747-9)
विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइ भारु थीए ॥१॥ रहाउ ॥ (488-9)
विसरिआ जिन्हा नामु तिनाड़ा हालु कउणु ॥३॥ (397-11)
विसरी तिसै पराई ताता ॥१॥ (189-8)
विसरु नाही एवड दाते ॥ (100-2)
विसरु नाही दातार आपणा नामु देहु ॥ (762-3)
विसरु नाही पूरन गुणतासि ॥४॥१८॥२४॥ (742-4)
विसरु नाही प्रभ दीन दइआला ॥ (563-15)
विसरु नाही प्रभ प्राण अधारे जीउ ॥ (217-11)
विसारेदे मरि गए मरि भि न सकहि मूलि ॥ (319-14)
विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु भइआ ॥ (357-17)
विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥ (12-18)
वीआहणि आइआ गुरमुखि हरि पाइआ सा धन कंत पिआरी ॥ (775-5)
वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइआ ॥ (78-11)
वीआहु होआ मेरे बाबोला गुरमुखे हरि पाइआ ॥२॥ (78-14)
वीचारि मारै तरै तारै उलटि जोनि न आवए ॥ (687-17)

वीरवारि वीर भरमि भुलाए ॥ (841-12)
वीवाहु होआ सोभ सेती पंच सबदी आइआ ॥ (765-14)
वुठे मेघ सुहावणे हुकमु कीता करतारि ॥ (1251-10)
वुठै अंनु कमादु कपाहा सभसै पड़दा होवै ॥ (150-5)
वुठै घाहु चरहि निति सुरही सा धन दही विलोवै ॥ (150-5)
वुठै जीआ जुगति होइ धरणी नो सीगारु होइ ॥ (1283-5)
वुठै होइऐ होइ बिलावलु जीआ जुगति समाणी ॥ (150-5)
वूठा सरब थाई मेहु ॥ (1226-6)
वेकी जंत उपाइ अंतरि कल धारिआ ॥ (1094-13)
वेकी वेकी जंत उपाए ॥ (1032-9)
वेकी स्रिसटि उपाईअनु सभ हुकमि आवै जाइ समाही ॥ (947-16)
वेखणु सुनणा झूठु है मुखि झूठा आलाउ ॥ (1411-8)
वेखदिआ ही भजि जानि कदे न पाइनि बंधु ॥ (959-3)
वेखदिआ ही माइआ धुहि गई पछुतहि पछुताइआ ॥ (1245-16)
वेखहि कीता आपणा करि कुदरति पासा ढालि जीउ ॥२॥ (71-17)
वेखहु बंदा चलिआ चहु जणिआ दै कंन्हि ॥ (1383-7)
वेखहु भाई वडिआई हरि संतहु सुआमी अपुने की जैसा कोई करै तैसा कोई पावै ॥ (653-7)
वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥ (464-4)
वेखु जि मिठा कटिआ कटि कुटि बधा पाइ ॥ (142-19)
वेखे छिटड़ि थीवदो जामि खिसंदो पेरु ॥१॥ (1095-17)
वेखै चाखै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥३२॥ (434-7)
वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥ (465-8)
वेखै विगसै करि वीचारु ॥ (8-7)
वेखै विगसै सभि रंग माणे रचनु कीना इकु आखाड़ा ॥९॥ (1081-15)
वेखै सुणे तेरै नालि खुदाई ॥ (1020-3)
वेगारि फिरै वेगारीआ सिरि भारु उठाइआ ॥ (166-14)
वेतगा आपे वतै ॥ (471-10)
वेद कहहि वखिआण अंतु न पावणा ॥ (148-2)
वेद पड़हि तै वाद वखाणहि बिनु हरि पति गवाई ॥ (638-6)
वेद पड़ै पड़ि वादु वखाणै ब्रहमा बिसनु महेसा ॥ (1257-15)
वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ (919-14)
वेदीना की दोसती वेदीना का खाणु ॥ (790-1)
वेदु पड़हि हरि रसु नही आइआ ॥ (128-4)
वेदु पड़ै अनदिनु वाद समाले ॥ (1066-5)
वेदु पुकारै त्रिबिधि माइआ ॥ (128-10)
वेपरवाह अखुट भंडारै ॥ (1034-6)
वेपरवाह पूरे भंडारै ॥ (1036-15)

वेपरवाहु अगोचरु आपि ॥ (896-5)
वेपरवाहु अनंद मै नाउ माणक हीरा ॥ (400-5)
वेपरवाहु सचु मेरा पिआरा ॥ (112-14)
वेमारगि मूसै मंत्रि मसाणि ॥ (941-3)
वेमुख होए राम ते जिउ तसकर उपरि सूलि ॥२॥ (319-14)
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥ (135-6)
वेमुहताजा वेपरवाहु ॥ (376-8)
वेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ (893-3)
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥ (4-17)
वेला वखत सभि सुहाइआ ॥ (115-13)
वेला सचु परवाणु सबदु पछाणसी ॥४॥ (422-4)
वेलि पराई जोहहि जीअड़े करहि चोरी बुरिआरी ॥ (155-2)
वेलि पिंञाइआ कति वुणाइआ ॥ (955-17)
वेस करे कुरूपि कुलखणी मनि खोटै कूड़िआरि ॥ (89-8)
वेस करे बहु रूप दिखावै ॥ (371-6)
वेस करै बहु भसम लगावै ॥ (226-5)
वेसि न पाईऐ महा दुखिआरी ॥५॥ (1348-8)
वेसी सहु न पाईऐ करि करि वेस रही ॥ (785-17)
वै सुत वै बित वै पुर पाटन बहुरि न देखै आइ ॥ (1124-11)
वैद न भोले दारू लाइ ॥ (1256-14)
वैद न भोले दारू लाइ ॥१॥ (1256-14)
वैद न भोले दारू लाइ ॥२॥ (1256-16)
वैदा वैदु सुवैदु तू पहिलां रोगु पछाणु ॥ (1279-15)
वैदा संदा संगु इकठा होइआ ॥ (1363-14)
वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बांह ॥ (1279-14)
वैदो न वाई भैणो न भाई एको सहाई रामु हे ॥१॥ (1008-1)
वैर विरोध मिटे तिह मन ते ॥ (259-19)
वैरु करनि निरवैर नालि धरमि निआइ पचंदे ॥ (317-1)
वैरु करहि निरवैर नालि धरम निआइ पचंदे ॥ (306-18)
वैरु करे निरवैर नालि झूठे लालचा ॥ (1099-15)
वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥ (133-15)
वैसाखु भला साखा वेस करे ॥ (1108-3)
वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥३॥ (134-1)
संकट घोर कटे खिन भीतरि नानक हरि दरसि समाईऐ ॥२॥२२॥ (532-15)
संकटि नही परै जोनि नही आवै नामु निरंजन जा को रे ॥ (338-19)
संकर क्रोड़ि तेतीस धिआइओ नही जानिओ हरि मरमाम ॥१॥ (719-4)
संकर बिसन अवतार हरि जसु मुखि भणा ॥ (518-9)

संकरा नही जानहि भेव ॥ (894-6)
संकरा मसतकि बसता सुरसरी इसनान रे ॥ (695-3)
संकरि ब्रहमै देवी जपिओ मुखि हरि हरि नामु जपिआ ॥ (995-14)
संकरु जागै चरन सेव ॥ (1194-1)
संकरु नारदु सेखनाग मुनि धूरि साधू की लोचीजै ॥ (1326-9)
संकरु मउलिओ जोग धिआन ॥ (1193-17)
संख चक्र गदा पदम आपि आपु कीओ छदम अपरमपर पारब्रहम लखै कउनु ताहि जीउ ॥ (1402-17)
संख चक्र गदा है धारी महा सारथी सतसंगा ॥१०॥ (1082-17)
संख चक्र माला तिलकु बिराजित देखि प्रतापु जमु डरिओ ॥ (1105-10)
संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥ (1429-8)
संग ही चोर घरु मुसन लाग ॥१॥ रहाउ ॥ (1193-19)
संगति करत संतोखु मनि पाइआ ॥ (889-4)
संगति का गुनु बहुतु अधिकाई पड़ि सूआ गनक उधारे ॥ (981-13)
संगति कुल तारे साचु परीसहि ॥ (1025-16)
संगति के मुख ऊजल भए ॥ (869-12)
संगति ढोई ना मिलै भाई बैसणि मिलै न थाउ ॥ (1419-10)
संगति मीत मिलापु पूरा नावणो ॥ (687-19)
संगति मुकति सु पारि उतारे ॥ (1026-13)
संगति संत मिलहु सतसंगति मिलि संगति हरि रसु आवैगो ॥ (1309-3)
संगति संत मिलाए ॥ (774-18)
संगति संत संगि लगि ऊचे जिउ पीप पलास खाइ लीजै ॥ (1325-9)
संगति साध मेलि हरि गाइणु ॥ (1134-2)
संगि अलापहि आठउ नंदन ॥ (1429-19)
संगि कुसंगी बैसते तब पूछे धरम राइ ॥२॥ (965-17)
संगि कुसंगी बैसते तब पूछै धरम राइ ॥२११॥ (1375-18)
संगि चरन कमल मनु सीत ॥ (980-6)
संगि चलन कउ तोसा दीन्हा गोबिंद नाम के बिउहारी ॥१॥ (401-12)
संगि जोती जोति मिलाना राम ॥ (578-3)
संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ॥१॥ (1186-9)
संगि तुमारै मै करे अनंदा जीउ ॥ (217-5)
संगि तुम्हारै कछू न जाता ॥२॥ (741-6)
संगि तुहारै एक न जाई ॥ (260-14)
संगि तुहारै प्रभु बसै बनु बनु कहा फिराहि ॥ (256-9)
संगि तेरै कछु न चालै बिना गोबिंद नामा ॥ (547-18)
संगि तेरै हरि बसत नीत ॥ (1187-4)
संगि देखै करणहारा काइ पापु कमाईऐ ॥ (461-5)
संगि न कोई भईआ बेबा ॥ (1020-1)

संगि न चालसि तेरै धना ॥ (288-15)
संगि न चालहि तिन सिउ हीत ॥ (676-8)
संगि न चालिओ इन महि कछूऐ ऊठि सिधाइओ नांगा ॥३॥ (700-5)
संगि न साथी गवनु इकेला ॥२॥ (793-16)
संगि नाही रे सगल पसारी ॥ (888-14)
संगि बैठनो कही न पावत हुणि सगल चरण सेवई ॥२॥ (402-8)
संगि मनोहरु अम्रितु है रे भूलि भूलि बिखु खाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1213-2)
संगि मिलाइ लीआ मेरै करतै संत साध भए साथी ॥३॥ (628-10)
संगि रागनी पाचउ थापहि ॥ (1430-4)
संगि लाई पांचउ आरजा ॥ (1430-9)
संगि सखा बहु लीए बाल ॥ (1194-7)
संगि सहाई छोडि न जाई ओहु अगह अतोला ॥१॥ (407-5)
संगि सहाई छोडि न जाई प्रभु दीसै सभनी ठाईं ॥१॥ (1269-14)
संगि सहाई जह हउ जाई ॥३॥ (1340-9)
संगि सहाई जीअ कै काम ॥१॥ रहाउ ॥ (1300-12)
संगि सहाई तिसु परहरै ॥ (267-9)
संगि सहाई सु आवै न चीति ॥ (267-17)
संगि सहाई हरि नामु धिआई बिरथा कोइ न जाए ॥ (79-10)
संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन बनु खोजन कउ धाइओ ॥१॥ (702-19)
संगि होवत कउ जानत दूरि ॥ (395-1)
संगी खोटा क्रोधु चंडाल ॥३॥ (374-5)
संगी जोगी नारि लपटाणी ॥ (1072-13)
संगी साथी सगल तरांई ॥१॥ (394-2)
संगु चलत है हम भी चलना ॥ (793-19)
संगु न पाइओ अपुने भरते पेखि पेखि दुखु पाइआ ॥२॥ (712-15)
संगे सोहंती कंत सुआमी दिनसु रैणी रावीऐ ॥ (460-11)
संचंति बिखिआ छलं छिद्रं नानक बिनु हरि संगि न चालते ॥१॥ (708-3)
संचण कउ हरि एको नामु ॥ (676-14)
संचत संचत थैली कीन्ही ॥ (392-1)
संचनि करउ नाम धनु निरमल थाती अगम अपार ॥ (618-15)
संचनि राम नाम धनु रतना मन तन भीतरि सीवनि ॥ (1222-2)
संचि बिखिआ ले ग्राहजु कीनी अम्रितु मन ते डारन ॥ (820-15)
संचि महा रसु तनु भइआ काठी ॥१॥ (328-16)
संचि संचि साकत मूए नानक माइआ न साथ ॥१॥ (257-4)
संचि हरि धनु पूजि सतिगुरु छोडि सगल विकार ॥ (51-7)
संचे संचि न देई किस ही अंधु जाणै सभ मेरी ॥ (155-7)
संजम सहस सिआणपा पिआरे इक न चली नालि ॥ (641-8)

संजमु सतु संतोखु सील संनाहु मफुटै ॥ (1397-9)
संजोगि मिलाए साध संगाए ॥ (1307-8)
संजोगी आइआ किरतु कमाइआ करणी कार कराई ॥ (75-13)
संजोगी धन पिर मेला होवै ॥ (1016-8)
संजोगी मिलि एकसे विजोगी उठि जाइ ॥ (18-8)
संजोगी मेला थानि सुहेला गुणवंती गुर गिआने ॥ (764-3)
संजोगी मेलावड़ा इनि तनि कीते भोग ॥ (989-9)
संजोगु विजोगु उपाइओनु स्रिसटी का मूलु रचाइआ ॥ (509-9)
संजोगु विजोगु करतै लिखि पाए किरतु न चलै चलाहा हे ॥८॥ (1058-2)
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥ (6-19)
संजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ ॥ (1007-15)
संजोगु विजोगु मेरै प्रभि कीए ॥ (1032-16)
संडा मरका जाइ पुकारे ॥ (1165-6)
संडा मरका सभि जाइ पुकारे ॥ (1133-5)
संडै मरकै कहिओ जाइ ॥ (1194-8)
संडै मरकै कीई पूकार ॥ (1154-9)
संत अनंतहि अंतरु नाही ॥४॥२॥ (486-13)
संत अनुग्रह भए मन निरमल नानक हरि गुन गाए ॥२॥३॥३४॥ (679-16)
संत अराधनि सद सदा सभना का बखसिंदु ॥ (137-5)
संत असथानि बसे सुख सहजे सगले दूख मिटाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (629-2)
संत आगिआ मनहि मीठ ॥ (987-8)
संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी ॥२॥ (486-12)
संत उधरण दइआलं आसरं गोपाल कीरतनह ॥ (709-15)
संत उधारउ ततखिण तालि ॥१॥ (867-14)
संत उपदेसिआ मेरे मना ॥१॥ (410-4)
संत ओट प्रभ तेरा ताणु ॥४॥३४॥८५॥ (391-18)
संत कउ बिखु बिगसै संसारु ॥ (871-16)
संत कउ राखउ अपने जीअ नालि ॥ (867-13)
संत का कीआ सति करि मानि ॥१॥ रहाउ ॥ (177-6)
संत का दरसु पूरन इसनानु ॥ (189-1)
संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥ (280-9)
संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥ (280-7)
संत का दोखी इउ बिललाइ ॥ (280-11)
संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥ (280-8)
संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥ (280-16)
संत का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥ (280-8)
संत का दोखी किसै का नही मितु ॥ (280-5)

संत का दोखी छुटै इकेला ॥ (280-12)
संत का दोखी जनमै मरै ॥ (280-6)
संत का दोखी धरम ते रहत ॥ (280-13)
संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥ (280-15)
संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥ (280-14)
संत का दोखी भूखा नही राजै ॥ (280-11)
संत का दोखी महा अहंकारी ॥ (280-5)
संत का दोखी राज ते टालि ॥२॥ (867-16)
संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥ (280-13)
संत का दोखी सदा अपवितु ॥ (280-4)
संत का दोखी सदा बिकारी ॥ (280-6)
संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥ (280-15)
संत का निंदकु अकास ते टारउ ॥ (867-13)
संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई ॥ (280-1)
संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥ (280-3)
संत का निंदकु परमेसुरि मारा ॥ (280-2)
संत का निंदकु महा अतताई ॥ (280-1)
संत का निंदकु महा हतिआरा ॥ (280-2)
संत का निंदकु राज ते हीनु ॥ (280-2)
संत का मारगु धरम की पउड़ी को वडभागी पाए ॥ (622-1)
संत का लीआ धरति बिदारउ ॥ (867-13)
संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥ (265-7)
संत की ठिठकी फिरै बिचारी ॥२॥ (871-17)
संत की दूखना सुख ते टरै ॥ (280-6)
संत की धूरि मिटे अघ कोट ॥ (188-19)
संत की धूरि लागी मेरै माथे ॥ (898-10)
संत की निंदा करहु न कोइ ॥ (867-16)
संत की निंदा जोनी भवना ॥ (1145-8)
संत की निंदा दूख सहाम ॥ (1145-9)
संत की निंदा दोख महि दोखु ॥ (280-4)
संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥ (279-13)
संत की निंदा रोगी करना ॥ (1145-8)
संत की निंदा साकत की पूजा ऐसी द्रिड़ही बिपरीति ॥१॥ (673-1)
संत की रेन होइ हां ॥ (410-16)
संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥ (265-7)
संत के दूखन ते मुखु भवै ॥ (279-17)
संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥ (280-10)

संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥ (280-8)
संत के दोखी कउ डानु लागै ॥ (280-5)
संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥ (280-14)
संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥ (280-7)
संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥ (280-5)
संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥ (280-9)
संत के दोखी की पुजै न आसा ॥ (280-15)
संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥ (280-3)
संत के निंदक कउ सरब रोग ॥ (280-3)
संत के हते कउ रखै न कोइ ॥ (279-15)
संत कै ऊपरि देइ प्रभु हाथ ॥ (867-15)
संत कै दूखनि आरजा घटै ॥ (279-14)
संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥ (279-14)
संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥ (279-19)
संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ ॥ (279-18)
संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥ (279-16)
संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥ (279-15)
संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥ (279-19)
संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥ (279-15)
संत कै दूखनि सभु को छलै ॥ (279-18)
संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥ (279-14)
संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥ (279-15)
संत कै दोखि न त्रिसटै कोइ ॥ (280-16)
संत कै संगि बसै दिनु राति ॥ (867-15)
संत कै संगि मिटिआ अहंकारु ॥ (189-2)
संत कै संगि राम रंग केल ॥ (891-11)
संत क्रिपा ते अनदिनु जागि ॥ (263-11)
संत क्रिपा ते जपीऐ नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (189-1)
संत क्रिपा ते जम ते छुटै ॥ (296-5)
संत क्रिपा ते मिटे मोह भरम ॥ (183-6)
संत क्रिपा ते हिरदै वासै दूजा भाउ मिटावना ॥२॥ (1018-15)
संत क्रिपाल क्रिपा जे करै ॥ (279-16)
संत क्रिपाल दइआल दमोदर काम क्रोध बिखु जारे ॥ (680-17)
संत खेलहि तुम संगि गोपाला ॥ (100-10)
संत गुन बसहि मेरै चीति ॥ (987-7)
संत गोबिंद कै एकै काम ॥१॥ रहाउ ॥ (867-14)
संत चरण कर सीसु धरि हरि नामु धिआवउ ॥१॥ (812-2)

संत चरण गुर सेवा लागे तिनी परम पद पाए राम ॥ (780-11)
संत चरन ओहु आइओ सरना ॥ (393-11)
संत चरन धरउ माथै चांदना ग्रिहि होइ अंधेरै ॥२॥ (1301-3)
संत ची संगति संत कथा रसु ॥ (486-11)
संत चुगहि नित गुरमुखि होई ॥ (128-18)
संत जनहु मिलि भाईहो सचा नामु समालि ॥ (49-13)
संत जनहु सुणि भाईहो छूटनु साचै नाइ ॥ (52-18)
संत जनां की धूड़ि नित बांछहि नामु सचे का गहणा ॥३॥ (109-4)
संत जनां हरि धनु जसु पिआरा ॥ (1043-3)
संत जना कउ जमु जोहि न साकै रती अंच दूख न लाई ॥ (1155-7)
संत जना कउ मिलि रहै धनु धनु जसु गाए ॥ (422-11)
संत जना करि मेलु गुरबाणी गावाईआ बलि राम जीउ ॥ (773-6)
संत जना का छोहरा तिसु चरणी लागि ॥ (811-15)
संत जना का निरमल मंत ॥ (288-5)
संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥ (294-6)
संत जना का मुखु ऊजलु कीना ॥ (804-16)
संत जना का सदा सहाई ॥ (898-19)
संत जना का हरि जीउ राखा दैतै कालु नेड़ा आइआ ॥४॥ (1133-16)
संत जना की ऊची बानी ॥ (1300-13)
संत जना की कथा न भावै ओइ डूबे सणु परवारी ॥५॥ (507-5)
संत जना की चरणी लागु ॥२॥ (177-1)
संत जना की जाति हरि सुआमी तुम्ह ठाकुर हम सांगी ॥ (667-4)
संत जना की धूरि मन मंग ॥ (295-5)
संत जना की धूरि मसतकि लाइआ ॥ (652-19)
संत जना की निंदा करहि दुसटु दैतु चिड़ाइआ ॥३॥ (1133-15)
संत जना की निंदा विआपसि पसू भए कदे होहि न नीके ॥२॥ (1126-7)
संत जना की निंदा विआपे ना उरवारि न पारी ॥६॥ (507-6)
संत जना की पग पंकज धूरि ॥ (1174-10)
संत जना की पग पंकज धूरि ॥३॥ (1174-7)
संत जना की बहुतु बहु सोभा जिन उरि धारिओ हरि रसिक रसाक ॥ (1295-12)
संत जना की बाछउ धूरि ॥४॥२॥ (724-4)
संत जना की रेणुका लै माथै लावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (812-3)
संत जना की रेनु मनि भाई मिलि हरि जन हरि निसतारे ॥५॥ (983-3)
संत जना की लेहु मते ॥ (1136-17)
संत जना की हरि पैज रखाई भगति वछलु अंगीकारु करईआ ॥ (835-17)
संत जना के हरि जीउ कारज सवारे ॥ (1133-9)
संत जना कै मनि बिस्रामु ॥ (264-15)

संत जना कै संगि दुखु मिटाइआ ॥ (517-2)
संत जना कै संगि मिलु बउरे तउ पावहि मोख दुआरु ॥ (1200-7)
संत जना कै संगि हउमै रोगु जाइ ॥ (961-8)
संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥ (294-6)
संत जना पहि करउ बेनती मनि दरसन की पिआसा ॥१॥ (1268-8)
संत जना मसतकि नीसाणु ॥ (897-12)
संत जना मिलि करहु बीचारु ॥ (288-3)
संत जना मिलि पाइआ मेरे गोविदा मेरा हरि प्रभु सजणु सैणी जीउ ॥ (174-1)
संत जना मिलि पाइआ सुणि अकथ कथा मनि भाणी ॥ (997-3)
संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥ (133-11)
संत जना मिलि बोलहु राम ॥ (865-2)
संत जना मिलि भाईआ कटिअड़ा जमकालु ॥ (52-2)
संत जना मिलि मंगल गाए हरि जीउ आपि सवारी ॥ (775-5)
संत जना मिलि मंगलु गाइआ दिनु रैनि आस तुम्हारी ॥ (778-6)
संत जना मिलि हरि जसु गाइओ ॥ (720-16)
संत जना मिलि हरि रसु पाइआ हरि मनि तनि मीठ लगानी ॥१॥ (1199-17)
संत जना मिलु संगती गुरमुखि तीरथु होइ ॥ (597-13)
संत जना वडभागी पाइआ हरि कथीऐ अकथ कहाणी ॥ (774-7)
संत जना विणु भाईआ हरि किनै न पाइआ नाउ ॥ (82-1)
संत जना सिउ प्रीति बनि आई ॥ (164-8)
संत जना सिउ संगु पाईऐ वडै पुन ॥ (709-18)
संत जना सिउ सदा संगु ॥१॥ रहाउ ॥ (1183-6)
संत जना सुनहि सुभ बचन ॥ (294-6)
संत जना हरि मंत्रु द्रिड़ाइआ हरि साजन वसगति कीने राम ॥ (782-10)
संत जना हरि मेलु हरि पाइआ वडभागीआ बलि राम जीउ ॥ (774-6)
संत जनी कीआ उपदेसु ॥ (1183-7)
संत जपहि गुरदेउ भगवंतु ॥ (869-12)
संत जीवहि जपि प्रान अधारा ॥ (1008-4)
संत जीवहि प्रभ ओट तुमारी ॥१॥ रहाउ ॥ (182-2)
संत टहल सोई है लागा जिसु मसतकि लिखिआ लिखोगु ॥ (713-14)
संत तुझी तनु संगति प्रान ॥ (486-10)
संत तुमारे तुमरे प्रीतम तिन कउ काल न खाते ॥ (529-19)
संत त्रिपतासे हरि हरि ध्याइ ॥ (394-19)
संत देउ संदेसा पै चरणारे जीउ ॥ (217-4)
संत दोखी का थाउ को नाहि ॥ (279-19)
संत धूरि पाईऐ वडभागी ॥ (193-19)
संत पग धोईऐ हां ॥ (410-8)

संत पिआरे कारज सारे नमसकार करि लगे सेवा ॥ (452-14)
संत पिआरे पारब्रहम नानक हरि अगम अगाहु ॥२०॥ (556-13)
संत पिआरे सचै धारे वडभागी दरसनु पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (130-12)
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥ (265-7)
संत प्रतापि भरम सभि नासे नानक मिले गुसाई ॥२॥४॥१८॥ (1207-19)
संत प्रतापि साध कै संगे हरि हरि नामु धिआवउ रे ॥१॥ रहाउ ॥ (387-1)
संत प्रसादि कमलु बिगसाइआ ॥२॥ (891-14)
संत प्रसादि कमलु बिगसै गोबिंद भजउ पेखि नेरै ॥३॥ (1301-4)
संत प्रसादि किलविख सभि गए ॥ (869-1)
संत प्रसादि गाए गुन सागर जनम जनम को जात बहोरा ॥ (204-15)
संत प्रसादि जनम मरण ते छोट ॥१॥ (189-1)
संत प्रसादि जपिआ अबिनासी ॥ (897-9)
संत प्रसादि जपै हरि नाउ ॥ (183-5)
संत प्रसादि तरे कुल लोगा नानक लिपत न माइओ ॥४॥७॥ (1299-12)
संत प्रसादि तरे भवजलु पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ (544-2)
संत प्रसादि ता को जपीऐ नाम ॥३॥ (386-18)
संत प्रसादि नानक हरि भेटे मन तन सीतल ध्रापे ॥४॥१४॥१३५॥ (209-6)
संत प्रसादि निहचलु घरु पाइआ ॥ (744-10)
संत प्रसादि परम पदु पाइआ ॥२॥ (202-1)
संत प्रसादि पाइओ सच बोहिथु चड़ि लंघउ बिखु संसार ॥१॥ रहाउ ॥ (618-16)
संत प्रसादि बंधन ते छुटे ॥२॥ (183-6)
संत प्रसादि बैद नाराइण करण कारण प्रभ एक ॥ (714-13)
संत प्रसादि भइओ परगासु ॥ (183-13)
संत प्रसादि भए किरपाला होए आपि सहाइ ॥ (378-10)
संत प्रसादि भए मन निरमल करि किरपा अपुने करि लीत ॥ (716-8)
संत प्रसादि भए मन निरमल हरि कीरतन महि अनदिनु जागा ॥१॥ रहाउ ॥ (343-7)
संत प्रसादि भली बनी ॥ (389-17)
संत प्रसादि भेटे प्रभू पूरन जगदीसै ॥३॥ (817-2)
संत प्रसादि महा सुखु पाइआ सगले बंधन काटे ॥ (673-18)
संत प्रसादि मिलिओ सुखदाता बिनसी हउमै हूह ॥ (1227-3)
संत प्रसादि मेरे पूर मनोरथ करि किरपा भेटे गुणतास ॥ (716-19)
संत प्रसादि मेरे बिखै हंत ॥३॥ (987-9)
संत प्रसादि मो कउ नाम निवासि ॥४॥२१॥९०॥ (183-2)
संत प्रसादि मोहि कबहू न कड़दा ॥ (889-8)
संत प्रसादि वसै मन माही ॥ (741-18)
संत प्रसादि सगल दुख मिटे ॥ (183-6)
संत प्रसादि सगल फल पाए ॥१॥ (865-14)

संत प्रसादि हरि कीरतनु गाउ ॥ (183-5)
संत प्रसादि हरि के गुन गाइआ ॥ (1303-7)
संत प्रसादि हरि के गुन गाई ॥२॥ (1339-17)
संत प्रसादि हरि जापीऐ ॥ (211-14)
संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ ॥ (189-15)
संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ सरब कुसल तब थीआ ॥१॥ (610-8)
संत प्रसादी भै मिटे नानक बिनसी चिंद ॥१५॥ (299-18)
संत प्रहलाद की पैज जिनि राखी हरनाखसु नख बिदरिओ ॥३॥ (856-7)
संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥१॥ रहाउ ॥ (486-11)
संत बचन मेरे मनहि मंत ॥ (987-9)
संत बिना मै थाउ न कोई अवर न सूझै जावना ॥६॥ (1018-18)
संत बिहावै कीरतनु गाए ॥४॥ (914-5)
संत बिहावै हरि जसु करते ॥६॥ (914-8)
संत बिहावै हरि जसु गावत ॥५॥ (914-7)
संत बिहावै हरि नाम अधारा ॥१॥ (914-1)
संत बिहावै हरि रसु पीवत ॥७॥ (914-9)
संत भगत की संगति रामु ॥ (416-10)
संत भगत परवाणु जो प्रभि भाइआ ॥ (652-18)
संत भगत हरि नामु अराधहि कटीऐ जम की फासी राम ॥ (783-5)
संत भागि ओह पाछै परै ॥ (871-17)
संत मंडल का नही बिनासु ॥ (1146-12)
संत मंडल का निहचल आसनु ॥ (1146-11)
संत मंडल ठाकुर बिस्रामु ॥ (1146-13)
संत मंडल महि जनम मरणु रहै ॥ (1146-9)
संत मंडल महि जमु किछू न कहै ॥ (1146-10)
संत मंडल महि दुरतु सभु नसै ॥ (1146-8)
संत मंडल महि नामु वखाणी ॥२॥ (1146-10)
संत मंडल महि निरमल कथा ॥ (1146-11)
संत मंडल महि निरमल रीति ॥ (1146-8)
संत मंडल महि पाप बिनासनु ॥ (1146-11)
संत मंडल महि हरि गुणतासु ॥ (1146-12)
संत मंडल महि हरि मनि वसै ॥ (1146-7)
संत मंडल हरि जसु कथहि बोलहि सति सुभाइ ॥ (298-4)
संत मंडलु तहा का नाउ ॥ (1146-9)
संत मराल करहि कंतूहल तिन जम त्रास मिटिओ दुख कागरु ॥ (1404-12)
संत मारगि चलत प्रानी पतित उधरे मुचै ॥ (1122-1)
संत रचे केवल नाम मुरारी ॥२॥ (914-3)

संत रसन वूठा आपि तूठा हरि रसहि सेई मातिआ ॥ (691-12)
संत रसन हरि नामु वखाना ॥ (103-8)
संत रहत सुनहु मेरे भाई ॥ (392-14)
संत रेनु करउ मजनु नानक पावै सुख अनेक ॥२॥२॥१५॥ (1341-17)
संत रेनु निति मजनु करै ॥ (1300-13)
संत वडाई हरि जसु चीनी ॥ (676-16)
संत संगि जसु गाइआ ॥ (628-14)
संत संगि जा का मनु सीतलु ओहु जाणै सगली ठांढी ॥ (610-3)
संत संगि सागरु तरे जन नानक सचा ताणु ॥१॥ (318-4)
संत संगे मनु परफड़ै मिलि मेघ धर सुहाग ॥१॥ (1272-12)
संत संजोगी नानका ग्रिहि प्रगटे प्रभ मीत ॥१॥ (929-6)
संत सजन मन मित्र से लाइनि प्रभ सिउ रंगु जीउ ॥ (760-10)
संत सजन सुखि माणहि रलीआ दूख दरद भ्रम नासी ॥ (783-7)
संत सजन सुनहु सभि मीता झूठा एहु पसारा ॥ (380-3)
संत सभा ओट गुर पूरे धुरि मसतकि लेखु लिखाए ॥ (1266-9)
संत सभा कउ सदा जैकारु ॥ (183-1)
संत सभा की निंदा करते डूबे सभ अगिआन ॥१॥ (1202-19)
संत सभा की लगहु सेव ॥३॥ (1182-15)
संत सभा गुण गिआनु बीचारु ॥ (1343-19)
संत सभा गुरु पाईऐ मुकति पदारथु धेणु ॥१॥ रहाउ ॥ (18-12)
संत सभा जह बैसहि प्रभ पासे ॥ (1077-6)
संत सभा जैकारु करि गुरमुखि करम कमाउ ॥ (1411-6)
संत सभा महि इहु रसु टोलहु ॥ (1030-6)
संत सभा महि बैसि कि कीरति मै कहां ॥ (1361-14)
संत सभा मिलि करहु बखिआण ॥ (900-5)
संत सभा सुखु ऊपजै गुरमुखि नाम अधारु ॥४॥ (58-18)
संत सरणाई लभणे नानक प्राण अधार ॥१॥ (80-8)
संत सरणि नानक परे ॥४॥७॥ (1182-4)
संत सरणि वडभागी पए ॥१॥ (869-2)
संत सरणि संत टहल करी ॥ (822-18)
संत सरणि साजन परहु सुआमी सिमरि अनंत ॥ (927-17)
संत सरन तरन नानक बिनसिओ दुखु घोर ॥२॥३॥४८॥ (1307-16)
संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥ (279-13)
संत सरोवर नावै ॥ (623-6)
संत सहाई जीअ के भवजल तारणहार ॥ (929-11)
संत सहाई नानका वरतै सभ जाहरु ॥१॥ (315-1)
संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥ (135-1)

संत सहाई भए दइआल ॥३॥ (889-8)
संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥ (136-4)
संत सहाई सरनि जोगु आठ पहर नमसकार ॥ (300-7)
संत सहारु सदा बिखिआता ॥ (1389-11)
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ (922-18)
संत साजन सिख भए सुहेले ॥ (1340-5)
संत सुप्रसंन आए वसि पंचा ॥ (189-2)
संत सेवक भगत हरि ता के नानक मनु लागा है ताही ॥२॥१४॥१००॥ (824-10)
संत सेवा करि भावनी लाईऐ तिआगि मानु हाठीला ॥१॥ (498-15)
संत सेवि प्रीति नाथ रंगु लालन लाए ॥१॥ (408-13)
संत हमारा राखिआ पड़दा ॥ (889-7)
संत हमारी ओट सताणी संत हमारा गहणा ॥१॥ (614-3)
संत हमारी निरमल रासि ॥२॥ (889-7)
संत हेति प्रभि त्रिभवण धारे ॥ (224-10)
संतत ही सतसंगति संग सुरंग रते जसु गावत है ॥ (1404-8)
संतन अवर न काहू जानी ॥ (711-12)
संतन कउ अनदु सगल ही जाई ॥ (679-10)
संतन का दाना रूखा सो सरब निधान ॥ (811-16)
संतन की ओट आपे आपि ॥१॥ रहाउ ॥ (1001-4)
संतन की टहल संत का कामु ॥४॥१५॥२६॥ (891-4)
संतन की मन टेक टिकाई ॥ (255-1)
संतन की महिमा कवन वखानउ ॥ (181-11)
संतन की मोहि बहुतु पिआस ॥ (987-8)
संतन की रेणु नानक दानु पाइआ ॥४॥२६॥९६॥ (51-16)
संतन की सरणाई पड़िआ ॥ (1078-12)
संतन की सुणि साची साखी ॥ (894-8)
संतन के कारज सगल सवारे ॥ (631-7)
संतन के प्राण अधार ॥ (895-1)
संतन के बंधन काटे हरि राइ ॥ (182-7)
संतन के हम उलटे सेवक भगतन ते डरपावउ ॥२॥ (693-6)
संतन कै आनंदु एहु नित हरि गुण गाए ॥१॥ रहाउ ॥ (813-10)
संतन कै चरन लागे काम क्रोध लोभ तिआगे गुर गोपाल भए क्रिपाल लबधि अपनी पाई ॥१॥ (1230-1)
संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥ (279-17)
संतन कै दूखनि त्रिसना महि जलै ॥ (279-18)
संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥ (279-17)
संतन कै परसादि अगाधि कंठे लगि सोहिआ जीउ ॥ (81-5)
संतन कै परसादि हरि हरि पाइआ राम ॥ (543-6)

संतन कै बलिहारै जाउ ॥ (869-1)
संतन कै मनि महा अनंदु ॥ (869-12)
संतन कै संगि राम गुन गाउ ॥ (869-1)
संतन कै सुनीअत प्रभ की बात ॥ (820-17)
संतन धूरि सरब निधान ॥ (182-13)
संतन परसन बलिहारी दरसन नानक सुखि सुखि सोइना ॥३॥४॥१४४॥ (407-4)
संतन पहि आपि उधारन आइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1299-10)
संतन बिनु अवरु न दाता बीआ ॥ (610-8)
संतन मो कउ पूंजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा ॥ (614-5)
संतन मो कउ हरि मारगि पाइआ ॥ (100-17)
संतन संगि कबीरा बिगरिओ ॥ (1158-14)
संतन संगि जाता पुरखु बिधाता घटि घटि नदरि निहालिआ ॥ (1122-6)
संतन संत साध मिलि रहीऐ गुण बोलहि परउपकारे ॥ (983-16)
संतन सिउ बोले उपकारी ॥ (870-3)
संतन सिउ मेरी लेवा देवी संतन सिउ बिउहारा ॥ (614-4)
संतन सिउ हम लाहा खाटिआ हरि भगति भरे भंडारा ॥२॥ (614-5)
संतन हथि राखी कूंजी ॥२॥ (893-19)
संतसंग जिह रिद बसिओ नानक ते न भ्रमे ॥१॥ (258-13)
संतसंगति महि पाईऐ अंतु न पारावार ॥ (298-6)
संतसंगति महि होइ उधारु ॥ (901-3)
संतसंगति मिलि भइआ प्रगास ॥ (1341-3)
संतसंगति मिलि हरि गुण गाए ॥ (362-9)
संतसंगति मेलापु करि हरि नामु मिलै पति साखु ॥ (997-15)
संतसंगति रामु रिदै बसाई ॥१॥ रहाउ ॥ (691-16)
संतसंगति सिउ मेलु भइआ हरि हरि नामि समाए राम ॥ (771-2)
संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ॥ (293-15)
संतसंगि करहि जो बादु ॥ (1145-9)
संतसंगि जपि केवल नाउ ॥१॥ (199-4)
संतसंगि तह गोसटि होइ ॥ (199-1)
संतसंगि नानक प्रभु पाइआ ॥४॥११॥१६॥ (805-16)
संतसंगि नाम रंगि गुन गोविंद गावउ ॥ (408-17)
संतसंगि पावै जो नानक तिसु बहुरि न होई है फेरा ॥२॥३॥४॥ (700-18)
संतसंगि पेखिओ मन माएं ॥ (1139-4)
संतसंगि महा सुखु पाइआ देखि दरसनु इहु मनु भीजा हे ॥१७॥१॥३॥ (1074-16)
संतसंगि मिलि कीरतनु गाइआ निहचल वसिआ जाई ॥९॥ (915-16)
संतसंगि मिलि सागरु तरीऐ ॥ (1080-7)
संतसंगि मिलि हरि गुण गाए बिनसी दुतीआ आस ॥१॥ (1228-1)

संतसंगि मिलि हरि हरि जपिआ बिनसे आलस रोगा जीउ ॥१॥ (108-10)
संतसंगि मेरा होइ निवासु ॥ (987-8)
संतसंगि मेरे मन की प्रीति ॥ (987-7)
संतसंगि रंग तुम कीए अपना आपु द्रिसटाइओ ॥१॥ (1217-7)
संतसंगि लगि एहु सुखु पाइओ हरि गुन सद ही गावै ॥३॥ (978-10)
संतसंगि ले चड़िओ सिकार ॥ (1136-14)
संतसंगि सिमरत रहहु इहै तुहारै काज ॥ (257-2)
संतसंगि हउमै दुख नसा ॥३॥ (1146-12)
संतसंगि हरि चरन बोहिथ उधरते लै मोर ॥१॥ (1121-4)
संतसंगि हरि मनि वसै ॥ (211-13)
संतसंगि हरि मनि वसै भरमु मोहु भउ साधीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (211-9)
संतसंगि हरि सिमरणा मलु जनम जनम की काटि ॥१॥ (48-10)
संतसंगि होइ एक परीति ॥१॥ (1146-8)
संतसंगि होइ निरमल बाणी ॥ (1146-10)
संतसंगे भजु निसंगे रंउ सदा अंतरजामीआ ॥ (1278-7)
संतह की मेरै मनि आस ॥ (889-7)
संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला ॥२॥५॥ (486-4)
संतह चरण धोइ धोइ पीवा ॥ (889-6)
संतह चरण हमारो माथा नैन दरसु तनि धूरि परहु ॥१॥ रहाउ ॥ (828-5)
संतह चरन माथा मेरो पउत ॥ (889-5)
संतह चरन मोरलो माथा ॥ (1206-15)
संतह दरसु पेखि पेखि जीवा ॥ (889-6)
संतह धूरि ले मुखि मली ॥ (1121-16)
संतह संगि बैसि गुन गाइ ॥ (194-7)
संतह संगि मिलै जपि पूरन कामा राम ॥ (546-1)
संतह संगि होत किरपाला ॥ (260-19)
संतह संगु दीआ किरपाल ॥ (889-8)
संतह संगु संत स्मभाखनु हरि कीरतनि मनु जागै ॥२॥ (674-12)
संतहु इहा बतावहु कारी ॥ (616-16)
संतहु ऐसी कथहु कहाणी ॥ (883-3)
संतहु गुरमुखि देइ वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (909-8)
संतहु गुरमुखि नामि निसतारी ॥ (910-19)
संतहु गुरमुखि पूरा पाई ॥ (910-5)
संतहु गुरमुखि मुकति गति पाई ॥ (911-19)
संतहु घटि घटि रहिआ समाहिओ ॥ (617-3)
संतहु तहा निरंजन रामु है ॥ (974-7)
संतहु तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ (626-11)

संतहु दिनु दिनु चड़ै सवाई ॥ रहाउ ॥ (626-5)
संतहु प्रभु मेरा सदा दइआला ॥ (629-12)
संतहु बनजिआ नामु गोबिद का ऐसी खेप हमारी ॥१॥ (1123-8)
संतहु मन पवनै सुखु बनिआ ॥ (656-9)
संतहु माखनु खाइआ छाछि पीऐ संसारु ॥१८॥ (1365-9)
संतहु राम नामि निसतरीऐ ॥ (621-19)
संतहु राम नामु धनु संचहु लै खरचु चले पति पावैगो ॥ (1311-4)
संतहु रामदास सरोवरु नीका ॥ (623-4)
संतहु रामु जपत सुखु पाइआ ॥ (629-1)
संतहु सागरु पारि उतरीऐ ॥ (747-16)
संतहु साची सरणि सुआमी ॥ (627-6)
संतहु साचे की वडिआई ॥ (629-9)
संतहु सुखु होआ सभ थाई ॥ (628-1)
संतहु सुनहु सुनहु जन भाई गुरि काढी बाह कुकीजै ॥ (1326-14)
संतहु हरि हरि नामु धिआई ॥ (620-13)
संतहु हरि हरि हरि आराधहु ॥ (627-16)
संतां भरवासा तेरा ॥ (629-17)
संतां मधे गोबिंदु आछै गोकल मधे सिआम गो ॥ (718-19)
संतां संगति पाईऐ जे मेले मेलणहारु ॥ (56-17)
संतां संगि उधारु सगला दुखु लथा ॥१४॥ (709-5)
संता एकु धिआवना दूसर को नाहि ॥ (815-3)
संता कउ मति कोई निंदहु संत रामु है एको ॥ (793-11)
संता की इह रीति निराली ॥ (1085-3)
संता की पैज रखदा आइआ आदि बिरदु प्रतिपाला ॥२॥ (611-14)
संता की बेनंती सुआमी नामु महा रसु दीजै राम ॥ (784-8)
संता की रेणु साध जन संगति हरि कीरति तरु तारी ॥ (1332-10)
संता की होइ दासरी एहु अचारा सिखु री ॥ (400-8)
संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कमु करावणि आइआ राम ॥ (783-16)
संता टेक तुमारी सुआमी तूं संतन का सहाई ॥ (381-2)
संता दासी सेवा चरणी जीउ ॥ (216-16)
संता नालि वैरु कमावदे दुसटा नालि मोहु पिआरु ॥ (649-1)
संता बिनु तै कोइ न छाडिआ संत परे गोबिद की पाखी ॥१॥ (1227-17)
संता मानउ दूता डानउ इह कुटवारी मेरी ॥ (969-18)
संता संगति नरकि न पाई ॥ (1020-8)
संता संगति पाईऐ ॥ (132-8)
संता संगति मनि वसै प्रभु प्रीतमु बखसिंदु ॥ (49-1)
संता संगति मिलि रहै जपि राम नामु सुखु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (31-10)

संता संगति मिलि रहै ता सचि लगै पिआरु ॥ (756-2)
संता संगि निधानु अम्रितु चाखीऐ ॥ (91-7)
संता सेती रंगु न लाए ॥ (105-9)
संती जीता जनमु अपारु ॥ (889-15)
संती मंतु दीओ मोहि निरभउ गुर का सबदु कमाइआ ॥३॥ (206-3)
संतु मिलै किछु सुनीऐ कहीऐ ॥ (870-2)
संतै संतु मिलै मनु बिगसै जिउ जल मिलि कमल सवारे ॥६॥ (983-16)
संतोख सरोवरि बसै अमिअ रसु रसन प्रकासै ॥ (1397-8)
संतोखु आइआ मनि पूरा पाइ ॥ (891-15)
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥ (3-13)
संतोखु न आवत कहूं काज ॥ (1192-16)
संतोखु पिता करि गुरु पुरखु अजनमा ॥ (172-19)
संतोखु भइआ संसारे ॥ (629-11)
संधिआ काल करहि सभि वरता जिउ सफरी दम्फान ॥ (1203-2)
संधिआ तरपणु करहि गाइत्री बिनु बूझे दुखु पाइआ ॥२॥ (603-13)
संधिआ प्रात इस्नानु कराही ॥ (324-8)
संधिक तोहि साध नही कहीअउ सरनि परे तुमरी पगरी ॥ (856-14)
संनिआसी तपसीअह मुखहु ए पंडित मिठे ॥ (1395-19)
संनिआसी बिभूत लाइ देह सवारी ॥ (164-1)
संनिआसी माते अहमेव ॥ (1193-18)
संनिआसी होइ कै तीरथि भ्रमिओ उसु महि क्रोधु बिगाना ॥२॥ (1003-4)
संन्ही देन्हि विखम थाइ मिठा मदु माणी ॥ (315-4)
संसा इहु संसारु है सुतिआ रैणि विहाइ ॥ (36-15)
संसा दूख बिनासनु सेवहु फिरि बाहुड़ि रोगु न लाइआ ॥९॥ (1043-7)
संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु ॥३॥ (346-13)
संसार काम तजणं नानक गोबिंद रमणं साध संगमह ॥१०॥ (1360-15)
संसार कूप ते उधरि लै पिआरे नानक हरि सरणाइ ॥८॥३॥२२॥१५॥२॥४२॥ (432-6)
संसार बिरख कउ दुइ फल लाए ॥ (1172-7)
संसार सागरं नानक पुनरपि जनम न लभ्यते ॥१९॥ (1361-6)
संसार सागर अब उतरे पारे ॥२॥ (805-6)
संसार सागर तारि तारण रम नाम करि करणी ॥१॥ रहाउ ॥ (505-13)
संसार सागर ते उधरे बिखिआ गड़ु जिता ॥ (322-19)
संसार सागर ते कढु दे हाथी ॥२॥ (563-17)
संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥ (136-7)
संसार सागर महि जलनि न दीने किनै न दुतरु भाखे ॥१॥ (677-13)
संसार सागरु जिनि उपाइओ सरणि प्रभ की गही ॥ (1017-10)
संसार सागरु दुखि बिआपिओ दास लेवहु तारि ॥ (1225-2)

संसार सागरु नह विआपै अमिउ हरि रसु चाखिआ ॥ (461-2)
संसारि सफलु गंगा गुर दरसनु परसन परम पवित्र गते ॥ (1401-18)
संसारु अगम सागरु तुलहा हरि नामु गुरू मुखि पाया ॥ (1402-1)
संसारु उतरसि पारि ॥ (838-16)
संसारु बिखिआ कूप ॥ (838-2)
संसारु भउजलु तारिआ हरि संत पुरख अपार ॥१॥ (986-9)
संसारु भवजलु किउ तरै ॥ (1013-17)
संसारु माइआ मोहु मीठा अंति भरमु चुकाइआ ॥ (439-7)
संसारु रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना ॥ (687-15)
संसारु समुंदे तारि गोबिंदे ॥ (1196-2)
संसारु सागरु तिन्ही तरिआ जिन्ही एकु धिआइआ ॥ (461-10)
संसारु सागरु महा बिखड़ा पल एक माहि तराइआ ॥ (691-6)
संसारै कै अंचलि लरी ॥४॥४॥७॥ (871-19)
संसारै महि सहसा बिआपै ॥ (1019-13)
संसै भरमु नही कछु बिआपत ॥ (250-17)
सउ ओलाम्हे दिनै के राती मिलन्हि सहंस ॥ (790-17)
सउ मणु हसती घिउ गुड़ु खावै पंजि सै दाणा खाइ ॥ (1286-9)
सउकनि घर की कंति तिआगी ॥ (394-7)
सउदा इकतु हटि पूरै गुरि पाईऐ ॥१७॥ (146-8)
सउदा करहु गुरु सेवहु नीत ॥३॥ (430-16)
सउदा मिलिआ निहचल चीत ॥२॥ (372-3)
सउदा मूलि न होवई ना को लए न देइ ॥ (955-11)
सउदे कउ धावै बिनु पूंजी ॥३॥ (198-5)
सउदे वाहु वाहु उचरहि उठदे भी वाहु करेनि ॥ (313-2)
सउपे जिसु भंडार फिरि पुछ न लीतीअनु ॥ (958-13)
सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥ (360-14)
सकता सीहु मारे सै मिरिआ सभ पिछै पै खाइ ॥ (1286-12)
सकति अधेर जेवड़ी भ्रमु चूका निहचलु सिव घरि बासा ॥२॥ (332-18)
सकति गई भ्रमु कटिआ सिव जोति जगाइआ ॥ (1238-8)
सकति सनेहु करि सुंनति करीऐ मै न बदउगा भाई ॥ (477-16)
सकती अंदरि वरतदा कूड़ु तिस का है उपाउ ॥ (511-12)
सकती किनै न पाइओ फिरि जनमि बिनासा ॥ (1090-1)
सकती घरि जगतु सूता नाचै टापै अवरो गावै मनमुखि भगति न होई ॥३॥ (506-7)
सकयथ ति नर जालपु भणै गुर अमरदासु सुप्रसंनु जिह ॥२॥११॥ (1394-11)
सकयथु जनमु कल्युचरै गुरु परस्यिउ अमर प्रगासु ॥८॥ (1394-1)
सकयथु सु सिरु जालपु भणै जु सिरु निवै गुर अमर नित ॥१॥१०॥ (1394-7)
सकयथु सु हीउ जितु हीअ बसै गुर अमरदासु निज जगत पित ॥ (1394-7)

सकर खंडु माइआ तनि मीठी हम तउ पंड उचाई रे ॥ (156-6)
सकिआ न अखरु एकु पछानि ॥ (343-1)
सखा सहाई अति वडा ऊचा वडा अपारु ॥ (47-2)
सखा सहाई पूरन परमेसुर मिलु कदे न होवी भंगना ॥६॥ (1080-9)
सखा सैनु पिआरु प्रीतमु नामु हरि का जपु जपो ॥२॥ (1113-3)
सखा सैनु प्रेमु गोबिंद ॥ (352-3)
सखी आउ सखी वसि आउ सखी असी पिर का मंगलु गावह ॥ (847-2)
सखी इछ करी नित सुख मनाई प्रभ मेरी आस पुजाए ॥ (249-14)
सखी कहनि अरदासि मनहु पिआरीआ ॥ (148-13)
सखी काइ मोहि मोहिली प्रिअ प्रीति रिदै मेल ॥१॥ (1229-11)
सखी काजल हार त्मबोल सभै किछु साजिआ ॥ (1361-16)
सखी नालि वसा अपुने नाह पिआरे मेरा मनु तनु हरि संगि हिलिआ ॥ (249-16)
सखी बतावहु मुझहि मती री ॥१॥ (739-6)
सखी मंगलो गाइआ इछ पुजाइआ बहुड़ि न माइआ होहिआ ॥ (81-7)
सखी मिलहु मिलि गुण गावाहा ॥ (699-11)
सखी मिलहु रसि मंगलु गावहु हम घरि साजनु आइआ ॥२॥ (764-10)
सखी मोरै कंठि रतंनु पेखि दुखु नासना ॥ (1362-5)
सखी वसि आइआ फिरि छोडि न जाई इह रीति भली भगवंतै ॥ (249-10)
सखी सहेरी मेरै ग्रसति अनंद ॥ (1143-4)
सखी सहेरी संग की सुमति द्रिड़ावउ ॥ (400-6)
सखी सहेली कउ समझावै ॥ (737-6)
सखी सहेली गरबि गहेली ॥ (990-16)
सखी सहेली गाउ मंगलो ग्रिहि आए हरि कंत जीउ ॥ (929-8)
सखी सहेली ननद गहेली देवर कै बिरहि जरउ रे ॥१॥ (482-6)
सखी सहेली भए अनंदा गुरि कारज हमरे पूरे ॥ (1267-2)
सखी सहेली मेरीआ मेरी जिंदुड़ीए कोई हरि प्रभु आणि मिलावै राम ॥ (538-5)
सखी सहेली राम रंगि राती मन तन इछ पुजाए ॥ (803-8)
सखी साजनी के हउ चरन सरेवउ हरि गुर किरपा ते नदरि धरी ॥२॥ (355-19)
सखीहो सहेलड़ीहो मेरा पिरु वणजारा राम ॥ (436-6)
सग नानक दीबान मसताना नित चड़ै सवाइआ ॥ (1291-8)
सगल अनंदु कीआ परमेसरि अपणा बिरदु सम्हारिआ ॥ (806-18)
सगल अराधहि जंत ॥ (894-17)
सगल अराधहि प्रभ गुणतास ॥ (894-15)
सगल असथान भै भीत चीन ॥ (211-10)
सगल अस्रम कीने मनूआ नह पतीने बिबेकहीन देही धोए ॥ (687-5)
सगल आभरण सोभा कंठि फूल ॥ (372-11)
सगल आस होत पूरन कोटि जनम दुखु जाइ ॥१॥ (1300-6)

सगल इछ मेरी पुंनीआ मिलिआ निरंजन राइ जीउ ॥ (927-4)
सगल इछा जपि पुंनीआ ॥ (1184-7)
सगल उकति उपावा ॥ (71-12)
सगल उदम महि उदमु भला ॥ (266-14)
सगल उधारण तेरो नामु ॥ (1181-17)
सगल उधारे भाई मीता ॥ (101-7)
सगल उपाव न चालहि संगि ॥ (893-7)
सगल कलेस निंदक भइआ खेदु ॥ (1166-12)
सगल कलेस मिटहि इसु तन ते मन चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ रहाउ ॥ (630-16)
सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥ (282-10)
सगल कुट्मब ओहु जनु लै तरिआ ॥३॥ (887-9)
सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥ (266-13)
सगल खाणी सगल बाणी सदा सदा धिआवए ॥ (456-2)
सगल गुण अवगणु न कोई होहि नीता नीता ॥ (765-17)
सगल गुण सुगिआन पूरन आपणे प्रभ भाणी ॥ (459-13)
सगल गुणा के दाते सुआमी बिनउ सुनहु इक दीना ॥ (1117-9)
सगल गुणा गुण ऊतमो भरता दूरि न पिखु री ॥१॥ (400-8)
सगल घटा कउ देवहु दानु ॥ (266-11)
सगल घटा का अंतरजामी ॥ (865-17)
सगल घटा का अंतरजामी ॥१॥ रहाउ ॥ (1136-7)
सगल घटा का अंतरजामी ॥१॥ रहाउ ॥ (741-17)
सगल घटा के अंतरजामी ॥ (1079-9)
सगल घटा के अंतरजामी ॥ (1148-18)
सगल घटा के अंतरजामी ॥ (1339-8)
सगल घटा के अंतरजामी ॥ (266-11)
सगल घटा के अंतरजामी ॥३॥ (178-3)
सगल घटा के अंतरजामी ॥३॥ (192-15)
सगल घटा देवै आधार ॥३॥ (863-1)
सगल चरन की इहु मनु राला ॥३॥ (384-18)
सगल छत्रपति एको ठाकुरु कउनु समसरि लावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (401-7)
सगल जगतु अपनै सुखि लागिओ दुख मै संगि न होई ॥१॥ रहाउ ॥ (633-6)
सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥१॥ रहाउ ॥ (633-3)
सगल जनम भरम ही भरम खोइओ नह असथिरु मति पाई ॥ (632-14)
सगल जनमु बिखिअन सिउ खोइआ सिमरिओ नाहि कन्हाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1008-9)
सगल जनमु सिव पुरी गवाइआ ॥ (326-9)
सगल जना की हरि हरि टेक ॥ (1145-19)
सगल जपहु गोपाल गुन परगटु सभ लोई ॥१३॥ (1318-4)

सगल जीअ जा कउ आराधहि ताहू कउ तूं जाचु ॥१॥ रहाउ ॥ (500-14)
सगल जीअ वसि कीने ॥ (626-12)
सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ (858-5)
सगल जोग अरु गिआन धिआन इक निमख न कीमति जानां ॥१॥ (1210-4)
सगल जोति इनि हीरै बेधी सतिगुर बचनी मै पाई ॥१॥ (483-14)
सगल जोनि महि तू सिरि धरिआ ॥ (913-15)
सगल त जीनु गगन दउरावउ ॥१॥ (329-9)
सगल तत महि ततु गिआनु ॥ (1182-9)
सगल तिआगहु भाउ दूजेरै ॥ (1304-17)
सगल तिआगि एक लिव लागी हरि हरि चरन गहिओ ॥१॥ (979-7)
सगल तिआगि गुर सरणी आइआ ॥ (192-3)
सगल तिआगि गुर सरणी आइआ राखहु राखनहारे ॥ (750-5)
सगल तिआगि नानकु सरणाइआ ॥४॥१३॥१९॥ (741-3)
सगल तिआगि नामि हरि गीधा ॥ (1338-11)
सगल तिआगि पाई प्रभ सरना ॥ (395-19)
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥ (265-10)
सगल तिआगि सरनि आइओ नानक लेहु मिलाइ ॥३॥३॥१४॥ (1300-16)
सगल तिआगि हरि सरणी आइआ ॥ (388-10)
सगल तिआगै दुसट का संगु ॥ (274-10)
सगल तीरथ मजन इसनानु ॥१॥ (195-5)
सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥ (266-15)
सगल थान निंदक के गए ॥३॥ (869-13)
सगल दुसट खंड खंड कीए जन लीए मानी ॥३॥ (815-5)
सगल दूख का डेरा भंना संत धूरि मुखि लाई ॥२॥ (915-12)
सगल दूख का होइआ नासु ॥२॥ (197-1)
सगल दूख का होवत नासु ॥ (290-6)
सगल दूत मेरी सेवा लाए ॥ (1347-18)
सगल देव हारे अवगाहि ॥ (284-5)
सगल धरम अछिता ॥ (873-11)
सगल धरम पवित्र इसनानु ॥ (298-11)
सगल धरम पुंन फल पावहु धूरि बांछहु सभ जन का ॥ (1253-18)
सगल धरम महि ऊतम धरम ॥ (1182-14)
सगल धरम महि स्रेसट धरमु ॥ (895-18)
सगल धरम हरि के गुण गाम ॥ (392-19)
सगल धिआवहि प्रभ गुणतासा ॥ (1147-5)
सगल नाम निधानु तिन पाइआ अनहद सबद मनि वाजंगा ॥१९॥ (1083-10)
सगल निधान घरै महि पाए कहु नानक जोति समाई ॥२॥२१॥४४॥ (1213-5)

सगल निधि हरि हरि हरे ॥ (987-12)
सगल पदारथ असट सिधि नाम महा रस माहि ॥ (203-9)
सगल पदारथ तिसु मिले जिनि गुरु डिठा जाइ ॥ (49-16)
सगल पदारथ पूरन बुधि ॥ (298-11)
सगल पदारथ सरब सूख सिधि मन बांछत फल लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (1206-2)
सगल पदारथ सिमरनि जा कै आठ पहर मेरे मन जापि ॥१॥ रहाउ ॥ (1208-1)
सगल पराछत लाथे ॥ (621-15)
सगल पराध एकु गुणु नाही ठाकुरु छोडह दासि भजहा ॥ (1203-14)
सगल पराध देहि लोरोनी ॥ (1136-4)
सगल परोई अपुनै सूति ॥ (284-6)
सगल पवित गुन गाइ गुपाल ॥ (202-5)
सगल पवित्र सरब निरमला ॥ (890-13)
सगल पासारु दीसै पासारा ॥ (237-12)
सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥ (266-7)
सगल फला से सूखि समाए ॥३॥ (890-9)
सगल बटरीआ ॥ (537-6)
सगल बनसपति आणि जड़ाई ॥ (385-8)
सगल बनसपति महि बैसंतरु सगल दूध महि घीआ ॥ (617-2)
सगल बानी महि अम्रित बानी ॥ (266-15)
सगल बिआधि कै वसि करि दीना ॥ (759-16)
सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥ (287-16)
सगल बिआधि मिटी त्रिहु गुण की दास के होए पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ (1151-7)
सगल बिआपि रहिआ प्रभु छाजै ॥ (1034-1)
सगल बिगूते भावै दोइ ॥ (222-11)
सगल बिधी जुरि आहरु करिआ तजिओ सगल अंदेसा ॥ (1266-17)
सगल बोलन के माहि बीचार ॥१॥ रहाउ ॥ (872-16)
सगल भइआन का भउ नसै ॥ (1146-5)
सगल भगत जा का नामु अधारु ॥ (182-18)
सगल भगत जा की करदे सेवा ॥ (1078-1)
सगल भगत जा चै नीसाणि ॥५॥१॥ (1292-14)
सगल भगत जाचहि सुख सागर भव निधि तरण हरि चिंतामणे ॥१॥ रहाउ ॥ (1321-8)
सगल भरम डारि देहि गोबिंद को नामु लेहि ॥ (1352-9)
सगल भरम तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइओ ॥३॥१॥२॥ (537-12)
सगल भवण की मूरति एका मुखि तेरै टकसाला ॥१॥ (596-13)
सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला ॥५॥३॥ (693-15)
सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी ॥१॥ रहाउ ॥ (346-6)
सगल भवन तेरी माइआ मोह ॥ (1169-12)

सगल भवन धारे एक थें कीए बिसथारे पूरि रहिओ स्रब महि आपि है निरारे ॥ (1385-12)
सगल भवन पूरन परताप ॥ (299-16)
सगल भवन महि सबल प्रवेसै ॥ (371-9)
सगल भाति करि करहि उपाइओ ॥ (250-13)
सगल भूखे कउ करता दानु ॥ (863-9)
सगल भै मिटे जा की सरनि ॥ (869-13)
सगल मतांत केवल हरि नाम ॥ (296-4)
सगल मनोरथ कीने करतै ऊणी बात न काई ॥ रहाउ ॥ (625-10)
सगल मनोरथ ता के पूरन काम ॥२॥ (197-8)
सगल मनोरथ ता के पूरन जो स्रवणी प्रभ का जसु सुना ॥१५॥ (1079-18)
सगल मनोरथ तिस के पूरन जिसु दइआ करे प्रभु आपे ॥३॥ (750-9)
सगल मनोरथ तूं देवणहारा ॥ (131-19)
सगल मनोरथ पाईअहि मीता ॥ (804-19)
सगल मनोरथ पावै नानक पूरन होवै आस ॥२॥१॥१२॥ (1300-11)
सगल मनोरथ पुंनिआ अमरा पदु पाई ॥ (318-17)
सगल मनोरथ पूरन आसीना ॥१॥ (804-16)
सगल मनोरथ पूरन काम ॥ (1146-2)
सगल मनोरथ पूरन ताहू के दूखु न बिआपै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1223-4)
सगल मनोरथ पूरन होए कदे न होइ दुखाला जीउ ॥४॥३३॥४०॥ (106-8)
सगल मनोरथ पूरन होवहि सिमरउ तुमरा नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (682-12)
सगल मनोरथ पूरनहार ॥ (1152-9)
सगल मनोरथ पूरनहारी ॥२॥ (1142-18)
सगल मनोरथ पूरिआ नानक लिखिआ माथ ॥१॥ (927-4)
सगल मनोरथ पूरी आसा ॥ (1407-1)
सगल मनोरथ पूरे ॥ (629-1)
सगल मनोरथ प्रभ ते पाए कंठि लाइ गुरि राखे ॥ (677-12)
सगल मनोरथ प्रभि कीए भेटे गुरदेव ॥ (818-19)
सगल मनोरथ मुकति पदु दीतु ॥१॥ (195-14)
सगल माहि नकटी का वासा सगल मारि अउहेरी ॥ (476-14)
सगल मेवे सुंदर बागीचे ॥ (179-16)
सगल रूप वरन मन माही ॥ (223-8)
सगल रेन इहु मनु भइआ बिनसी अपधारी ॥२॥ (810-15)
सगल रोग का बिनसिआ थाउ ॥२॥ (191-14)
सगल विकारी हारु परोइ ॥ (222-14)
सगल संगि आतम उदासु ॥ (275-3)
सगल संतन पहि वसतु इक मांगउ ॥ (99-15)
सगल संतोखी देर जेठानी ॥३॥ (371-3)

सगल संसारु इहै बिधि बिआपिओ सो उबरिओ जिसु गुरु पूरा ॥ (403-9)
सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥ (282-3)
सगल संसारु कीओ बनजारा ॥१॥ रहाउ ॥ (333-14)
सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥ (276-1)
सगल समग्री ग्रिह जा कै पूरन ॥ (395-11)
सगल समग्री जा का तना ॥ (294-12)
सगल समग्री जा कै सूति परोई ॥ (387-2)
सगल समग्री जीउ हीउ देउ अरपउ अपनो चीतु ॥१॥ रहाउ ॥ (674-11)
सगल समग्री डरहि बिआपी बिनु डर करणैहारा ॥ (999-2)
सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥ (268-3)
सगल समग्री तेरीआ सभ तेरी जुगता ॥३॥ (809-10)
सगल समग्री पूरन होई मन इछे फल पाए ॥ (783-7)
सगल समग्री मै घर की जोड़ी ॥ (737-9)
सगल समग्री मोहि विआपी कब ऊचे कब नीचे ॥ (610-19)
सगल समग्री संगि साथि बसा ॥ (267-3)
सगल समग्री सूति तुमारे ॥१॥ (740-5)
सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥ (293-16)
सगल समूह लै उधरे नानक पूरन ब्रहमु पछाता ॥२॥२१॥ (532-11)
सगल सरंजाम करे प्रभु आपे ॥ (805-19)
सगल सरीर आवत सभ काम ॥ (190-18)
सगल सरोवर जोति समाणी ॥ (1342-17)
सगल सहेली अपनै रस माती ॥ (182-11)
सगल सहेली सुख भरि सूती जिह घरि लालु बसाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1267-14)
सगल सिआनप छाडि ॥ (895-3)
सगल सीगार करे नही पावै ॥ (801-11)
सगल सीगार हुणि मुझहि सुहाइआ ॥ (738-2)
सगल सुखा प्रभ तुमरै हाथि ॥ (890-9)
सगल सूख आनंद अरोग ॥ (891-2)
सगल सूख जपि एकै नाम ॥ (392-19)
सगल सूख जां तूं चिति आंवैं ॥ (385-19)
सगल स्रिसटि उआ के चरन मलि धोई ॥२॥ (386-17)
सगल स्रिसटि कउ दे आधारु ॥१॥ (741-13)
सगल स्रिसटि के पंच सिकदार ॥ (865-9)
सगल स्रिसटि को धणी कहीजै जन को अंगु निरारो ॥१॥ रहाउ ॥ (498-6)
सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ ॥ (264-4)
सगलिआ की हउ बहिन भानजी जिनहि बरी तिसु चेरी ॥२॥ (476-15)
सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥ (464-16)

सगलीं सउदीं तोटा आवै ॥ (356-13)
सगली चिंता आपि निवारी ॥ (887-5)
सगली जानि करहु मउदीफा ॥ (1084-6)
सगली जोति जाता तू सोई मिलिआ भाइ सुभाए ॥ (765-1)
सगली जोति तेरा सभु कोई ॥ (414-9)
सगली जोति हमारी समिआ नाना वरन अनेकं ॥ (360-3)
सगली थीति पासि डारि राखी ॥ (1136-2)
सगली दासी ठाकुरै सभ कहती मेरा ॥ (400-7)
सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥ (465-6)
सगली धरती सकर होवै खुसी करे नित जीउ ॥ (141-19)
सगली फूली निफल न काई ॥३॥ (385-8)
सगली बणत बणाई आपे ॥ (131-13)
सगली भूलै नही सबदु अचारु ॥ (1190-6)
सगली रूती हरिआ होइ ॥ (1180-5)
सगली रैणि गुदरी अंधिआरी सेवि सतिगुरु चानणु होइ ॥ (78-1)
सगली रैणि सोई अंधिआरी गुर किंचत किरपा जागे ॥ (527-6)
सगली रैणि सोवत गलि फाही दिनसु जंजालि गवाइआ ॥ (1126-11)
सगली सिम्रिति स्रवनी सुनै ॥ (875-13)
सगले करम धरम जुग साधा ॥ (1072-18)
सगले करम धरम जुग सोधे ॥ (913-6)
सगले करम धरम सुचि संजम जप तप तीरथ सबदि वसे ॥ (1332-8)
सगले काज सवारे अपने ॥ (899-15)
सगले छोडि बीचार मना ॥१॥ रहाउ ॥ (913-9)
सगले जंत भजहु गोपालै ॥ (1312-8)
सगले जाचहि गुर भंडारी ॥ (1024-10)
सगले जीअ कीए दइआला सो प्रभु अंतरजामी ॥१॥ (615-12)
सगले जीअ जंत की नारी ॥१॥ रहाउ ॥ (871-15)
सगले जीअ जंत त्रिपतासे ॥ (1271-2)
सगले दूख अम्रितु करि पीवै बाहुड़ि दूखु न पाइदा ॥६॥ (1034-16)
सगले दूख पाणी करि पीवा धरती हाक चलाई ॥ (147-2)
सगले दूख मिटहि गुर सेवा नानक नामु सखाई ॥४॥५॥६॥ (1127-3)
सगले दूख मिटाई ॥ (631-2)
सगले दूख मिटे सुख दीए अपना नामु जपाइआ ॥ (1338-15)
सगले मै देखे जोई ॥ (1005-14)
सगले रोग दोख सभि बिनसहि अगिआनु अंधेरा मन ते जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1339-4)
सगले साजि करत जगदीसै ॥ (900-4)
सगले सैल उपाइ समाए अलखु न लखणा जाई हे ॥६॥ (1021-17)

सगले होए सुख हरि नामु धिआवणा ॥ (1363-5)
सगलो भू मंडल खंडल प्रभ तुम ही आछै ॥३॥ (1005-19)
सगलो साजि रखिओ पासारा ॥१॥ रहाउ ॥ (746-8)
सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै ॥ (401-1)
सघन बासु कूले ॥ (1185-5)
सच की काती सचु सभु सारु ॥ (956-2)
सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला ॥२॥३॥५॥ (723-4)
सच खंडि वसै निरंकारु ॥ (8-5)
सच घरि बैसि रहे गुण गाए नानक बिनसे कूरा जीउ ॥४॥११॥१८॥ (100-1)
सच घरि बैसै कालु न जोहै ॥ (227-13)
सच घरु खोजि लहे साचा गुर थानो ॥ (1112-13)
सच नाम की मिली वडिआई ॥१॥ (789-15)
सच नामि पति ऊपजै करमि नामु करतारु ॥ (358-5)
सच पउड़ी साचउ मुखि नांउ ॥ (351-19)
सच फलु लागै सतिगुर भाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1173-17)
सच बिनु भवजलु जाइ न तरिआ ॥ (1041-1)
सच बिनु सतु संतोखु न पावै ॥ (1040-18)
सच बिनु साखी मूलो न बाकी ॥२३॥ (1412-5)
सच भै राता गरबु निवारै ॥ (943-7)
सच संजमि मति ऊतमा हरि लगा पिआरा ॥ (1087-5)
सचड़ा दूरि न भालीऐ घटि घटि सबदु पछाणोवा ॥ (581-5)
सचड़ा पिरु सालाहीऐ सभु किछु करणै जोगो ॥१॥ (582-15)
सचड़ा साहिबु सचु तू सचड़ा देहि पिआरो ॥ रहाउ ॥ (580-9)
सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥ (582-16)
सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥२॥ (582-19)
सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥ (584-13)
सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥४॥३॥ (584-15)
सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥५॥ (62-11)
सचा अमरु चलाइओनु करि सचु फुरमाणु ॥ (789-6)
सचा अमरु सचा पातिसाहु ॥ (161-2)
सचा अमरु सची पातिसाही सचे सेती राते ॥ (749-4)
सचा अमरु सचे अमरा पुरि सो सचु मिलै वडाई हे ॥७॥ (1022-18)
सचा अमरु सबदि सुहाइआ ॥ (1057-19)
सचा अम्रित नामु भोजनु आइआ ॥ (150-18)
सचा अरजु सची अरदासि ॥ (355-11)
सचा अलख अभेउ हठि न पतीजई ॥ (1285-12)
सचा आपि तखतु सचा बहि सचा करे निआउ ॥ (949-8)

सचा आपि सचा दरबारु ॥ (7-13)
सचा आपि सदा है साचा बाणी सबदि सुणाई ॥२०॥ (912-12)
सचा आपि सवारणहारा ॥ (1069-5)
सचा उपदेसु हरि जापणा हरि सिउ बणि आई ॥ (1087-13)
सचा खसमु कलाणि कमलु विगसिआ ॥ (148-18)
सचा गहिर गमभीरु है गुर सबदि बुझाई ॥८॥ (950-13)
सचा गुणी निधानु तूं प्रभ गहिर गमभीरे ॥ (398-15)
सचा घरु सचड़ै सेवीऐ सचु खरा सचिआरोवा ॥ (581-17)
सचा चउका सुरति की कारा ॥ (1048-8)
सचा तालु पूरे माइआ मोहु चुकाए सबदे निरति करावणिआ ॥३॥ (121-18)
सचा तीरथु जितु सत सरि नावणु गुरमुखि आपि बुझाए ॥ (753-15)
सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥ (463-7)
सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥ (463-7)
सचा तेरा हुकमु गुरमुखि जाणिआ ॥ (144-6)
सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥ (463-7)
सचा धनु खटिआ कदे तोटि न आवै बूझै को वीचारी हे ॥२॥ (1050-7)
सचा धरमु पुंनु भला कराए ॥ (743-3)
सचा नामु धिआइ तू सभो वरतै सचु ॥ (950-14)
सचा नामु धिआईऐ सभो वरतै सचु ॥ (509-7)
सचा नामु न लगो मीठा जितु नामि नव निधि पाए ॥ (550-2)
सचा नामु मंनि वसाए ॥४॥ (1343-1)
सचा नामु वसिआ घट अंतरि करतै आपि सवारी ॥१॥ रहाउ ॥ (910-19)
सचा नामु सदा है निरमलु गुर सबदी मंनि वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (126-16)
सचा नावणु तां थीऐ जां अहिनिसि लागै भाउ ॥३॥ (358-9)
सचा निआउ सचो वापारा निहचलु वासा पाइदा ॥१४॥ (1064-15)
सचा नेहु न तुटई जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥ (60-10)
सचा पुरखु अलखु सबदि सुहावणा ॥ (148-3)
सचा प्रभु सचा वापारा नामु अमोलकु पाइदा ॥१०॥ (1066-12)
सचा प्रेम पिआरु गुर पूरे ते पाईऐ ॥ (1422-9)
सचा भोजनु भाउ सचा है सचै नामि सुखु होई राम ॥ (769-10)
सचा भोजनु भाउ सचु सचु नामु अधारा ॥ (1009-7)
सचा भोजनु भाउ सतिगुरि दसिआ ॥ (146-17)
सचा मनाए अपणा भाणा ॥ (1335-4)
सचा मनि भाइआ सचु वसाइआ सबदि रते अंति निबेरा ॥ (571-10)
सचा महलु सचे भंडारा ॥ (1066-16)
सचा रंगु न उतरै जो सचि रते लिव लाइ ॥ (37-5)
सचा रंगु मजीठ का गुरमुखि ब्रहम बीचारु ॥ (786-16)

सचा वखरु जिसु धनु पलै सबदि सचै ओमाहा हे ॥९॥ (1032-18)
सचा वखरु नामु है सचा वापारा ॥ (1009-5)
सचा वेपरवाहु इको तू धणी ॥ (1283-7)
सचा वेपरवाहु सबदि संतोखीआं ॥ (1288-17)
सचा वेपरवाहु है तिस नो तिलु न तमाइ ॥१॥ (428-10)
सचा सउदा खरचु सचु अंतरि पिरमु पिआरु ॥ (1415-19)
सचा सउदा लाभु सदा खटिआ नामु अपारु ॥ (646-9)
सचा सउदा विरला को पाए ॥ (1036-19)
सचा सउदा सचु वापारा ॥ (1050-7)
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार ॥ (646-8)
सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम ॥ (570-13)
सचा सचु दाता करम बिधाता जिसु भावै तिसु नाइ लाए ॥ (1234-16)
सचा सचो सचि पतीजै ॥ (114-14)
सचा सतिगुरु सची बाणी जिनि सचु विखालिआ सोई ॥ (769-8)
सचा सतिगुरु सबदु अपारा ॥ (1055-13)
सचा सतिगुरु साची जिसु बाणी भजि छूटहि गुर सरणाई ॥७॥ (638-6)
सचा सतिगुरु सेवनि सचा मारगु दसिआ ॥ (148-19)
सचा सतिगुरु सेवि सचु सम्हालिआ ॥ (1284-9)
सचा सबदु न पछाणिओ सुपना गइआ विहाइ ॥ (34-19)
सचा सबदु न सेविओ सभि काज सवारणहारु ॥१॥ (34-4)
सचा सबदु बीचारि कालु विधउसिआ ॥ (149-1)
सचा सबदु भतारु है सदा सदा रावेइ ॥ (311-12)
सचा सबदु मनि वसिआ सतिगुर मांहि समांहि ॥ (1419-14)
सचा सबदु रवै घट अंतरि सचे सिउ लिव लाई ॥६॥ (909-10)
सचा सबदु वीचारि सचि समाणिआ ॥ (144-8)
सचा सबदु वीचारि से तुझ ही माहि समाइआ ॥ (1290-10)
सचा सबदु सचा है निरमलु ना मलु लगै न लाए ॥ (753-16)
सचा सबदु सची है बाणी ॥ (1044-10)
सचा सबदु सची है बाणी ॥ (424-5)
सचा सबदु सची है सोभा साचे ही सुखु होई ॥ (769-17)
सचा सबदु सचु मनि घर ही माहि उदासा ॥ (140-8)
सचा सबदु सालाहि सचि समाईऐ ॥ (144-17)
सचा साकु न तुटई गुरु मेले सहीआह ॥१॥ (1015-5)
सचा साहिबु आपि गुरमुखि परगटिआ ॥१॥ (957-8)
सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ॥ (467-10)
सचा साहिबु एकु है मतु मन भरमि भुलाहि ॥ (428-5)
सचा साहिबु गहिर गमभीरा ॥ (1061-12)

सचा साहिबु ठाकुरु मेरा ॥ (1058-12)
सचा साहिबु मनि वसै तां मनि चिंदिआ फलु पाइ ॥ (1281-16)
सचा साहिबु मनि वसै वसिआ मनि सोई ॥ (420-7)
सचा साहिबु मनि वुठा होआ खसमु दइआलु ॥ (52-3)
सचा साहिबु मै अति पिआरा ॥ (116-2)
सचा साहिबु सची नाई ॥ (104-12)
सचा साहिबु सची नाई ॥ (1048-4)
सचा साहिबु सची नाई ॥ (110-5)
सचा साहिबु सची नाई वेखै नदरि निहाले ॥ (584-4)
सचा साहिबु सची वडिआई ॥ (1068-1)
सचा साहिबु सचु निआउ पापी नरु हारदा ॥ (90-14)
सचा साहिबु सचु परखै साचै हुकमि चलाई हे ॥३॥ (1023-14)
सचा साहिबु सेवीऐ गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ (69-9)
सचा साहिबु सेवीऐ सचु वडिआई देइ ॥ (30-6)
सचा साहु इकु तूं होरु जगतु वणजारा ॥६॥ (140-17)
सचा साहु वरतदा कोइ न मेटणहारु ॥ (34-6)
सचा साहु सचे वणजारे ॥ (117-13)
सचा साहु सचे वणजारे ओथै कूड़े ना टिकंनि ॥ (756-1)
सचा साहु सचे वणजारे पूंजी नामु विसाहा हे ॥४॥ (1053-12)
सचा सीगारु करे दिनु राती कामणि सचि समाई ॥ (770-9)
सचा सुखु सची वडिआई जिस के से तिनि जाते ॥३॥ (749-4)
सचा सेवहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥१॥ (116-16)
सचा सेवि सबदि सच राते हउमै सबदे खोई हे ॥१५॥ (1045-17)
सचा सेवी सचु सालाही ॥ (122-7)
सचा सो साहिबु सचु तपावसु सचड़ा निआउ करेगु मसोला ॥ (723-2)
सचा हुकमु सचा पासारा होरनि हुकमु न होई हे ॥४॥ (1045-3)
सचि कमाणै सचो पाईऐ कूड़ै कूड़ा माणा ॥ (956-14)
सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥ (468-16)
सचि टिकै घरि आइ सबदि उतावला ॥१॥ (420-5)
सचि न धरे पिआरु धंधै धाईऐ ॥ (147-15)
सचि नवेलड़ीए जोबनि बाली राम ॥ (843-9)
सचि नामि ताड़ी चितु लावै ॥२॥ (877-17)
सचि नामि मलु कदे न लागै मुखु ऊजलु सचु करावणिआ ॥६॥ (121-10)
सचि निवासु करे सचु सोइ ॥ (158-10)
सचि पतीजै करणैहारा ॥७॥ (1190-8)
सचि माणे पिर सेजड़ी गूड़ा हेतु पिआरु ॥ (58-15)
सचि मिलहु वर कामणी पिरि मोही रंगु लाइ ॥ (58-16)

सचि मिले से न विछुड़हि तिन निज घरि वासा होइ ॥१॥ (27-2)
सचि मिले से न विछुड़हि दरि सचै दिसंनि ॥२४॥ (756-7)
सचि मिले से न विछुड़हि नानक गुरमुखि होइ ॥४॥२६॥५९॥ (37-8)
सचि मिलै सचिआरु कूड़ि न पाईऐ ॥ (419-17)
सचि मैलु न लागै भ्रमु भउ भागै ॥ (840-3)
सचि रतीआ सोहागणी जिना गुर कै सबदि सीगारि ॥ (427-19)
सचि रते गुर सबद सिउ तिन सची सदा लिव होइ ॥ (88-12)
सचि रते गुरि मेलिऐ सचे सचि समाइ ॥३॥ (22-8)
सचि रते मुख उजले तितु साचै दरबारि ॥४॥ (34-11)
सचि रते सदा बैरागी हउमै मारि मिलावणिआ ॥४॥ (117-2)
सचि रते से उबरे दुबिधा छोडि विकार ॥ (55-9)
सचि रते से जिणि गए हउ सद बलिहारै जासु ॥६॥ (57-15)
सचि रते से टोलि लहु से विरले संसारि ॥ (994-10)
सचि रते से निरमले जोती जोति मिलाइ ॥ (645-2)
सचि रते से निरमले हउमै तजि विकारा ॥ (786-2)
सचि रहसे पूरे हरि लोग ॥ (153-2)
सचि रहहु सदा सहजु सुखु उपजै कामु क्रोधु विचहु जाई ॥२॥ (909-8)
सचि लगे तिन सभु किछु भावै ॥ (1050-14)
सचि वरतै साचा सोई ॥ (1023-16)
सचि विछोड़ा ना थीऐ सो सहु रंगि रवंतु ॥४॥ (1015-9)
सचि संजमि सदा है निरमल गुर कै सबदि सीगारी ॥ (771-11)
सचि सचु जाणीऐ इक चितहि लिव लावै ॥ (1395-16)
सचि सबदि सीगारे हउमै मारे गुरमुखि कारज सवारे ॥ (245-10)
सचि समावै एहु सरीरु ॥४॥४॥९॥ (1257-11)
सचि सिमरिऐ होवै परगासु ॥ (661-12)
सचि सिरज्यिउ संसारु आपि आभुलु न भुलउ ॥ (1386-13)
सचि सुहागणि सा भली पिरि मोही गुण संगि ॥६॥ (57-2)
सचिआर सिख बहि सतिगुर पासि घालनि कूड़िआर न लभनी कितै थाइ भाले ॥ (305-1)
सचिआरा देइ वडिआई हरि धरम निआउ कीओइ ॥ (89-16)
सचिआरी सचु संचिआ साचउ नामु अमोलु ॥ (937-2)
सची करणी गुर की सिरकारा ॥ (1033-3)
सची कार कमावणी सचु पैनणु सचु नामु अधारु ॥ (586-9)
सची कार कमावणी सचे नालि पिआरु ॥ (34-6)
सची कारै सचु मिलै गुरमति पलै पाइ ॥ (19-12)
सची कीमति पाइ तखतु रचाइआ ॥ (1279-19)
सची कुदरति धारीअनु सचि सिरजिओनु जहानु ॥ (48-8)
सची कुदरति सची बाणी सचु साहिब सुखु कीजा हे ॥५॥ (1074-2)

सची तेरी कार देहि दइआल तूं ॥ (422-2)
सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥ (463-9)
सची तेरी वडिआई जा कउ तुधु मंनि वसाई सदा तेरे गुण गावहे ॥ (442-2)
सची तेरी सिफति सची सालाह ॥ (463-8)
सची दरगह बैसणा सचे माहि समाहि ॥ (1419-15)
सची दरगह मंनीअनि गुर कै प्रेम पिआरि ॥ (143-16)
सची दरगह महलि बुलाए ॥ (109-8)
सची धुनि सचे गुण गावा सचे माहि समाइआ ॥९॥ (1068-13)
सची नदरि निहालीऐ बहुड़ि न पावै ताउ ॥२॥ (19-17)
सची पटी सचु मनि पड़ीऐ सबदु सु सारु ॥ (938-3)
सची बाणी करम करे अनदिनु नामु धिआइ ॥ (593-8)
सची बाणी गुरमुखि आखै हउमै विचहु जाए ॥ (753-12)
सची बाणी जुग चारे जापै ॥ (158-10)
सची बाणी पाए भागि कोइ ॥१॥ (361-7)
सची बाणी संतोखिआ सचा सबदु वीचारा ॥६॥ (1009-7)
सची बाणी सचु द्रिड़ाए ॥ (1053-7)
सची बाणी सचु धुनि सचु सबदु वीचारा ॥ (564-18)
सची बाणी सचु मनि सचे नालि पिआरु ॥१॥ (35-14)
सची बाणी सचु है सचु मेलि मिलाइआ ॥ (954-8)
सची बाणी सचे गुण गावहि तितु घरि सोहिला होई राम ॥ (769-13)
सची बाणी सबदि सवारे ॥ (1055-6)
सची बाणी सहजि समाणी हरि जीउ मनि वसाइआ ॥१॥ (559-13)
सची बाणी सिउ चितु लागै आवणु जाणु रहाए ॥५॥ (67-17)
सची बाणी हरि गुण गावै ॥ (1342-8)
सची बाणी हरि गुण गावै नदरी नदरि निहालि ॥३॥ (600-9)
सची बाणी हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (36-12)
सची बैसक तिन्हा संगि जिन संगि जपीऐ नाउ ॥ (520-14)
सची भगति करहि दिनु राती गुरमुखि आखि वखाणी ॥ (768-11)
सची भगति करहि दिनु राती सचि रहे लिव लाइ ॥ (1258-2)
सची भगति गुर सबद पिआरि ॥ (158-19)
सची भगति विचहु आपु खोइ ॥ (159-3)
सची भगति सचा हरि मंदरु प्रगटी साची सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1346-4)
सची भगति सतिगुर ते होवै सची हिरदै बाणी ॥ (602-7)
सची भगती आपे लाए ॥ (1053-10)
सची भगती मनु लालु थीआ रता सहजि सुभाइ ॥ (36-13)
सची भगती सचि रते दरि सचै सचिआर ॥ (66-11)
सची रहत सचा सुखु पाए ॥७॥ (1343-5)

सची रासी सचु धनु उतम पदवी पांहि ॥ (1419-14)
सची वडिआई गुर ते पाई तू मनि अंति सखाई ॥ (688-12)
सची वडिआई गुर ते पाई सचु सवारणहारा ॥ (569-3)
सची वडिआई गुर ते पाई सचै नाइ पिआरे ॥ (754-1)
सची संगति बैसणा सचि नामि मनु धीर ॥१॥ (69-12)
सची संगति सचि मिलै सचै नाइ पिआरु ॥ (586-10)
सची साखी उपदेसु सचु सचे सची सोइ ॥ (69-17)
सची सिफति सची सालाह पूरे गुर ते पाए ॥५॥ (753-17)
सची सिफति सालाह कपड़ा पाइआ ॥ (150-17)
सचु अंजनो अंजनु सारि निरंजनि राता राम ॥ (437-16)
सचु अराधिआ गुरमुखि तरु तारी ॥ (945-6)
सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाए ॥ (922-9)
सचु आपि निबेड़े राजु राजि ॥ (1170-6)
सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥ (287-13)
सचु कमावहि सचि रहहि सचे सचि समाहि ॥७॥ (429-8)
सचु कमावै सचि रहै सचे सेवि समाइ ॥४॥९॥१२॥ (560-17)
सचु कमावै सोई काजी ॥ (1084-1)
सचु करणी अभ अंतरि सेवा ॥ (224-7)
सचु करणी करि कार कमावै ॥५॥ (1344-18)
सचु करणी गुरु भरमु चुकावै ॥ (226-18)
सचु करणी दे पाईऐ दरु घरु महलु पिआरि ॥ (18-14)
सचु करणी सचु ता की रहत ॥ (283-14)
सचु करणी सबदु है सारु ॥ (114-10)
सचु करणी साचि लिव लाए ॥८॥ (841-17)
सचु करता सचु करणहारु सचु साहिबु सचु टेक ॥ (52-8)
सचु कहनि अरदासि से वेचारीआ ॥ (148-12)
सचु कहहु सचै घरि रहणा ॥ (1040-13)
सचु कहै ता छोहो आवै अंतरि बहुता रोहा ॥ (960-15)
सचु कहै नानकु चेति रे मन जीअड़िआ परदेसीआ ॥३॥ (439-8)
सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि भवरा कालिआ ॥२॥ (439-4)
सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि हरणा कालिआ ॥१॥ (439-2)
सचु कहै नानकु सबदि साचै मेलि चिरी विछुंनिआ ॥४॥१॥५॥ (439-11)
सचु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि वरतै धरम निआए ॥१॥ (542-3)
सचु कागदु कलम मसवाणी सचु लिखि सचि समावणिआ ॥७॥ (123-9)
सचु खजाना बखसिआ आपे जाणै सोइ ॥१॥ (993-18)
सचु खजाना संचिआ एकु नामु धनु माल जीउ ॥ (760-18)
सचु खजीना साचा साही ॥ (1073-19)

सचु खटणा सचु रासि है सचे सची सोइ ॥ (37-8)
सचु खाणा सचु पैनणा टेक नानक सचु कीतु ॥४॥५॥७५॥ (44-3)
सचु खाणा सचु पैनणा सचु टेक हरि नाउ ॥ (565-3)
सचु खाणा सचु पैनणा सचु नामु अधारु ॥ (1251-5)
सचु खाणा सचु पैनणा सचे सचा नाउ ॥२॥ (53-3)
सचु खाणा सचु पैनणा सचे ही विचि वासु ॥ (69-15)
सचु खेती सचु बीजणा साचा वापारा ॥ (565-2)
सचु खेलु तुम्हारा अगम अपारा तुधु बिनु कउणु बुझाए ॥ (764-14)
सचु गुर की साखी अम्रित भाखी तितु मनु मानिआ मेरा ॥ (688-4)
सचु गुर सबदु जितै लगि तरणा ॥ (1040-17)
सचु गुरमुखि जिनी सलाहिआ तिना भुखा सभि गवाईआ ॥२३॥ (313-15)
सचु चुगै अम्रितु पीऐ उडै त एका वार ॥ (1010-3)
सचु जाणै कचु वैदिओ तू आघू आघे सलवे ॥ (1095-18)
सचु जि गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलहु हटीऐ ॥ (967-3)
सचु जि मंगहि दानु सि तुधै जेहिआ ॥ (150-10)
सचु जि सचे सेवदे तिन वारी सद कुरबाणु ॥१३॥ (307-12)
सचु जिहवा हरि रसन रसाई ॥ (1345-6)
सचु तपावसु सचे केरा ॥ (1074-1)
सचु तां परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥ (468-12)
सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥ (468-10)
सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥ (468-8)
सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥ (468-9)
सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥ (468-11)
सचु तीरथि नावहु हरि गुण गावहु ॥ (1030-7)
सचु तीरथु सचु इसनानु अरु भोजनु भाउ सचु सदा सचु भाखंतु सोहै ॥ (1392-10)
सचु तेरा दरबारु सबदु नीसाणिआ ॥ (144-7)
सचु तेरा फुरमानु सबदे सोहिआ ॥ (150-11)
सचु तेरी सामगरी सचु तेरा दरबारा ॥ (746-18)
सचु तेरे खाजीनिआ सचु तेरा पासारा ॥२॥ (746-19)
सचु थानु सचु बैठका सचु सुआउ बणाइआ ॥ (1002-18)
सचु द्रिड़ाए सचु द्रिड़ु सचा ओहु सबदु देइ ॥ (1089-11)
सचु धनु जमिआ तोटि न आवै अंतरि नामु निवासी हे ॥११॥ (1048-16)
सचु धनु वणजहु सचु धनु संचहु कबहू न आवहु हारे ॥१॥ (1220-1)
सचु धरमु तपु निहचलो दिनु रैनि अराधा ॥ (1101-4)
सचु धिआइ अमरा पदु पाइआ अनहद सबद वजाए ॥ (850-11)
सचु धिआइनि से सचि राते सचे सचि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (119-18)
सचु धिआइनि से सचे गुर सबदि वीचारी ॥ (788-5)

सचु धिआइनि से सचे जिन हरि खरचु धनु पलै ॥ (956-5)
सचु नामु आधारु सोगि न मोहि जरि ॥ (1093-12)
सचु नामु करता पुरखु एह रतना खाणी ॥ (319-2)
सचु नामु करतारु सचु पसारिआ ॥ (523-10)
सचु नामु करतारु सु द्रिड़ु नानकि संग्रहिअउ ॥ (1395-2)
सचु नामु गुरि दीनी रासे ॥ (1339-3)
सचु नामु जा नव निधि पाई ॥ (356-6)
सचु नामु धिआई साचु चवाई गुरमुखि साचु पछाणा ॥ (689-1)
सचु नामु पाइआ गुरि दिखाइआ मैलु नाही सच मने ॥२॥ (687-19)
सचु नामु रखै उर धारे ॥ (1068-8)
सचु नामु सची वडिआई साचै तखति वडाई हे ॥२॥ (1023-13)
सचु नामु सालाहे रंगि राता गुर किरपा ते सुखु पाइदा ॥१०॥ (1062-8)
सचु नामु सोई जनु पाए ॥ (292-9)
सचु नामु हरि हिरदै वसाई ॥ (1067-11)
सचु निवाज यकीन मुसला ॥ (1083-14)
सचु निहकेवलु करमि अराधै ॥ (839-17)
सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥३॥ (355-13)
सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥९॥ (839-17)
सचु परमेसरु नित नवा ॥ (1183-11)
सचु पाइओ गुर सबदि सचु नामु संगती बोहै ॥ (1392-10)
सचु पातिसाही अमरु सचु सचे सचा थानु ॥ (48-8)
सचु पुराणा ना थीऐ नामु न मैला होइ ॥ (1248-10)
सचु पुराणा होवै नाही सीता कदे न पाटै ॥ (956-1)
सचु पूंजी सचु वखरो नानक घरि पाइआ ॥४॥५॥१४॥ (1002-19)
सचु पूजी नामु द्रिड़ाइ प्रभ वणजारे थारे ॥ (308-8)
सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै ॥३॥१॥ (1193-13)
सचु बाणी गुण उचरै सचा सुखु पाए ॥ (791-7)
सचु बाणी गुरु सबदु सुणाए ॥ (364-12)
सचु बाणी तुधै सालाहनि रंगि राते भगति करावणिआ ॥२॥ (122-10)
सचु बाणी सचु सबदु है जा सचि धरे पिआरु ॥ (33-17)
सचु बाणी सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होइ ॥ (638-18)
सचु बीजै सचु उगवै दरगह पाईऐ थाउ ॥ (1243-19)
सचु बूझणु आणि जलाईऐ ॥२॥ (25-18)
सचु बोलै बोलावै पिआरु ॥ (1345-1)
सचु ब्रतु नेमु न कालु संतावै ॥ (411-12)
सचु भावै साचउ चवै छूटै सोग विजोगु ॥ (1010-15)
सचु मंगलु गावहु ता प्रभ भावहु सोहिलड़ा जुग चारे ॥ (764-9)

सचु मंगलु हरि जसु गावा ॥ (778-18)
सचु मंत्रु तुमारा अम्रित बाणी ॥ (562-16)
सचु मन अंदरि रहिआ समाइ ॥ (120-18)
सचु मन कारणि ततु बिलोवै ॥ (411-13)
सचु मनि वसिआ जा तुधु भाइआ ॥ (1050-11)
सचु मनि सजन संतोखि मेला गुरमती सहु जाणिआ ॥ (242-12)
सचु महलु घरु पाइआ गुर का सबदु पछानु ॥३॥ (46-8)
सचु मिलिआ तिन सोफीआ राखण कउ दरवारु ॥१॥ (15-18)
सचु मिलै मुखि नामु साहिब भावसी ॥ (143-5)
सचु मिलै संतोखीआ हरि जपि एकै भाइ ॥१॥ (18-12)
सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ ॥ (18-2)
सचु रखिआ उर धारे दुतरु तारे फिरि भवजलु तरणु न होई ॥ (769-7)
सचु वखरु जिनी लदिआ से सचड़े पासार ॥१७॥ (1426-3)
सचु वखरु धनु नामु है घटि घटि गहिर ग्मभीरु ॥ (22-9)
सचु वखरु धनु रासि लै पाईऐ गुर परगासि ॥ (22-5)
सचु वडाई कीम न पाई ॥ (107-8)
सचु वणंजहि गुर सबद सिउ लाहा नामु लएनि ॥२६॥ (756-9)
सचु वणंजहि गुर हेति अपारे ॥ (117-13)
सचु वणंजहि रंग सिउ सचु सउदा होइ ॥ (311-7)
सचु वणंजहि सचु संघरहि सचु वापारु करावणिआ ॥१॥ (115-11)
सचु वणजहि सचु सेवदे जि गुरमुखि पैरी पाहि ॥ (1249-5)
सचु वरतु संतोखु तीरथु गिआनु धिआनु इसनानु ॥ (1245-10)
सचु वरतै साचा पासारु ॥ (283-15)
सचु वापारु करहु वापारी ॥ (293-6)
सचु विहाझहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥४॥ (117-14)
सचु वेखणा सचु बोलणा सचा सभु आकारु ॥७॥ (565-6)
सचु वेखणु सचु बोलणा तनु मनु सचा होइ ॥ (69-17)
सचु वेला मूरतु सचु जितु सचे नालि पिआरु ॥ (565-6)
सचु संग्रहहि सद सचि रहहि सचै नामि पिआरि ॥ (585-12)
सचु संजमु करणी कारां नावणु नाउ जपेही ॥ (91-4)
सचु संजमु करणी किरति कमावहि आवण जाणु रहाई ॥६॥ (1234-18)
सचु संजमु करणी सभु साची ॥ (1271-12)
सचु संजमु करणी सो करे गुरमुखि होइ परगासु ॥१॥ रहाउ ॥ (26-15)
सचु संजमु करणी हरि कीरति हरि सेती लिव लाई ॥२॥ (1260-13)
सचु संजमु करणी है कार ॥ (841-15)
सचु संजमु सतिगुरू दुआरै ॥ (1057-17)
सचु संजमो सारि गुणा गुर सबदु कमाईऐ राम ॥ (436-17)

सचु संतति कहु नानक जोगु ॥३॥३॥ (152-2)
सचु संतोखु सहज सुखु बाणी पूरे गुर ते पावणिआ ॥३॥ (115-15)
सचु सउदा लै गुर वीचारी ॥ (1032-18)
सचु सचा कुदरति जाणीऐ दिनु राती जिनि बणाईआ ॥ (313-13)
सचु सचा जिन मनि भावदा से मनि सची दरगह लिजै ॥ (312-6)
सचु सचा जिनी अराधिआ से जाइ रले सच नाले ॥ (311-10)
सचु सचा जिनी न सेविआ से मनमुख मूड़ बेताले ॥ (311-10)
सचु सचा रसु जिनी चखिआ से त्रिपति रहे आघाई ॥ (311-1)
सचु सचा सतिगुरु अमरु है जिसु अंदरि हरि उरि धारिआ ॥ (310-9)
सचु सचा सतिगुरु पुरखु है जिनि कामु क्रोधु बिखु मारिआ ॥ (310-9)
सचु सचा सभ दू वडा है सचु सेवनि से सचि रलाधिआ ॥ (313-8)
सचु सचा सभ दू वडा है सो लए जिसु सतिगुरु टिके ॥ (304-3)
सचु सचु सचु सभु कीना ॥ (279-10)
सचु सचे की सिफति सलाह है सो करे जिसु अंदरु भिजै ॥ (312-5)
सचु सचे के जन भगत हहि सचु सचा जिनी अराधिआ ॥ (313-6)
सचु सचे नो साबासि है सचु सचा सेवि फलाधिआ ॥२२॥ (313-8)
सचु सचै का आपे दाता जिसु देवै सो सचु पाइदा ॥७॥ (1063-5)
सचु सदा है निरमला भाई निरमल साचे सोइ ॥ (609-1)
सचु सबदु कमाईऐ निज घरि जाईऐ पाईऐ गुणी निधाना ॥ (436-17)
सचु सबदु धिआइआ मंगलु गाइआ चूके मनहु अदेसा ॥ (576-18)
सचु सबदु पछाणहु दूरि न जाणहु जिनि एह रचना राची ॥ (581-6)
सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥ (468-13)
सचु सभा दीबाणु सचु सचे पहि धरिओ ॥ (1386-12)
सचु सरा गुड़ बाहरा जिसु विचि सचा नाउ ॥ (15-19)
सचु सलाहनि से सचे सचा नामु अधारु ॥ (34-6)
सचु सलाही सचि लगा सचै नाइ त्रिपति होइ ॥ (37-16)
सचु सलाही सचु मनि दरि सचै सचिआरु ॥२०॥ (756-3)
सचु सलाहे सभ घट अंतरि सचो सचु सुहावणिआ ॥५॥ (120-16)
सचु सहजु अनदु सतिगुरू पासि सची गुर मणीआ ॥ (854-14)
सचु सहजु सुखु पावहि मीत ॥२॥ (896-10)
सचु साचा सचु आपि द्रिड़ाए ॥ (665-19)
सचु साचि पछाता साचै राता साचु मिलै मनि भावै ॥ (1112-11)
सचु साचि समाइआ चूका आवण जाणो ॥ (1112-10)
सचु सालाहणु नानक हरि रंगा ॥८॥१॥ (236-2)
सचु सालाहणु वडभागी पाईऐ ॥ (107-9)
सचु सालाही अवरु न कोई ॥ (120-19)
सचु सालाही गहिर गमभीरै ॥ (1048-3)

सचु सालाही धंनु गुरदुआरु ॥ (153-8)
सचु सालाही सदा हजूरे ॥ (120-16)
सचु साहिबु सचा निआउ है सिरि निंदक छाई ॥ (851-7)
सचु साहिबु सचु जिनी सेविआ कालु कंटकु मारि तिनी साधिआ ॥ (313-7)
सचु साहिबु सतिगुरू कै वलि है तां झखि झखि मरै सभ लोकाई ॥ (307-2)
सचु साहिबु साचा खेलु सभु हरि धनी ॥१॥ (723-7)
सचु साहिबो आदि पुरखु अपरमपरो धारे राम ॥ (437-7)
सचु साहु हमारा तूं धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥ (449-18)
सचु सिरंदा सचा जाणीऐ सचड़ा परवदगारो ॥ (580-7)
सचु सुणहि सचु मंनि लैनि सची कार कमाहि ॥ (1419-15)
सचु सुणि बुझि वखाणि महलि बुलाईऐ ॥१८॥ (147-1)
सचु सुतिआ जिनी अराधिआ जा उठे ता सचु चवे ॥ (312-16)
सचु सुहावा काढीऐ कूड़ै कूड़ी सोइ ॥ (1100-5)
सचु सेवहि सचु वणंजि लैहि गुण कथह निरारे ॥ (308-8)
सचु सेवी सचु मनि वसै सचु सचा हरि रखवाले ॥ (311-9)
सचु हरि नामु सचु है सरणा ॥ (1040-17)
सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥ (283-14)
सचु हुकमु तुमारा तखति निवासी ॥ (562-17)
सचे अंतु न जाणै कोई ॥ (107-10)
सचे उपजै सचि समावै मरि जनमै दूजा होई ॥ (769-15)
सचे का वापारी होवै सचो सउदा पाइदा ॥८॥ (1036-19)
सचे की लिव उबरै बखसे बखसणहारु जीउ ॥५॥ (751-10)
सचे की सभ सची करणी हउमै तिखा निवारी हे ॥५॥ (1050-11)
सचे की सिरकार जुगु जुगु जाणीऐ ॥ (142-15)
सचे चरण सरेवीअहि भाई भ्रमु भउ होवै नासु ॥ (639-18)
सचे ठाकुर साचो भावै ॥ (109-18)
सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥ (463-8)
सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥ (463-6)
सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥ (463-6)
सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥ (463-6)
सचे दा सचा ढोआ ॥ (628-6)
सचे दीन दइआल मेरे साहिबा सचे मनु पतीआवणिआ ॥१॥ (109-8)
सचे दै दरि जाइ सचु चवांईऐ ॥ (145-8)
सचे बाझहु को अवरु न दूआ ॥ (113-9)
सचे भगत सोहहि दरवारे सचो सचु वखाणे राम ॥ (769-16)
सचे माहि समावसी जिस नो नदरि करेइ ॥२॥ (1089-13)
सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥ (442-1)

सचे मेरे साहिबा सचे सचु नाइआ ॥२॥ (301-10)
सचे मैलु न लगई मलु लागै दूजै भाइ ॥ (87-8)
सचे रते से निरमले सदा सची सोइ ॥ (426-19)
सचे लागै सो मनु निरमलु गुरमती सचि समावणिआ ॥७॥ (120-18)
सचे संदा सदड़ा सुणीऐ गुर वीचारि ॥ (1015-2)
सचे सचा नेहु सचै लाइआ ॥ (422-5)
सचे सचा बैहणा नदरी नदरि पिआरि ॥६॥ (1015-2)
सचे सची दाति देहि दइआलु है ॥ (422-6)
सचे साहिब तेरै मनि भावा ॥ (1054-7)
सचे सिउ चितु लाइ बहुड़ि न आईऐ ॥२॥ (419-17)
सचे सेती रतिआ जनमु न दूजी वार जीउ ॥१॥ (751-3)
सचे सेती रतिआ दरगह बैसणु जाइ ॥ (52-7)
सचे सेती रतिआ मिलिआ निथावे थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (218-15)
सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥ (56-19)
सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥७॥ (61-7)
सचे सेती रलि मिले सचे गुण परगासि ॥ (20-9)
सचे सेवहि सचि समावहि सचे के गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (116-17)
सचे सेवहि सबदि पिआरा ॥ (1068-13)
सचे सेवि सदा सुखु पाइनि नउ निधि नामु मंनि वसावणिआ ॥५॥ (115-17)
सचे सेविऐ सचु वडिआई गुर किरपा ते सचु पावणिआ ॥२॥ (115-13)
सचे ही पतीआइ सचि विगसिआ ॥ (146-18)
सचे ही पतीआइ सचि समाइआ ॥२॥ (1279-13)
सचै अंदरि महलि सचि बुलाईऐ ॥ (145-9)
सचै अंदरि महलि सबदि सवारिआ ॥ (1280-13)
सचै आपणा खेलु रचाइआ आवा गउणु पासारा ॥ (754-17)
सचै आपि खुआइओहु मूड़े इहु सिरि तेरै लेखु पइआ ॥१०॥ (435-7)
सचै आसणि सचि रहै सचै प्रेम पिआर ॥४॥ (56-18)
सचै ऊपरि अवर न दीसै साचे कीमति पाई हे ॥८॥ (1023-1)
सचै कोटि गिरांइ निज घरि वसिआ ॥ (146-18)
सचै जगतु डहकाइआ कहणा कछू न जाइ ॥ (492-6)
सचै तखति निवासु सचु तपावसु करिओ ॥ (1386-12)
सचै तखति निवासु होर आवण जाणिआ ॥१॥ (1279-8)
सचै तखति बुलावै सोइ ॥ (355-12)
सचै तखति बैठा निआउ करि सतसंगति मेलि मिलाई ॥ (1087-12)
सचै तखति सच महली बैठे निरभउ ताड़ी लाई ॥८॥ (907-11)
सचै तखतु रचाइआ बैसण कउ जांई ॥ (947-10)
सचै थानि वसै निरंकारा ॥ (1040-2)

सचै थानि सचु सालाहणा सतिगुर बलिहारै जाउ ॥६॥ (565-5)
सचै दै दीबाणि कूड़ि न जाईऐ ॥ (146-19)
सचै नाइ दुखु कब ही नाही ॥ (122-7)
सचै नामि रहै लिव लाइ ॥४॥ (1342-7)
सचै नामि सदा मनु सचा सचु सेवे दुखु गवावणिआ ॥७॥ (116-13)
सचै नामि सदा लिव लाए ॥ (1059-4)
सचै नामि समाए हरि गुण गाए मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥ (585-1)
सचै पुरखि अलखि सिरजि निहालिआ ॥ (149-6)
सचै भाइ पिआरी कंति सवारी हरि हरि सिउ नेहु रचाइआ ॥ (567-17)
सचै महलि निवासु निरंतरि आवण जाणु चुकाइआ ॥७॥ (1040-3)
सचै महलि सचि नामि समाहु ॥१॥ (161-3)
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥ (136-1)
सचै लाए सचि लगे सदा सचु समालेनि ॥ (951-6)
सचै लाए से जन लागे ॥ (1050-8)
सचै सचा तखतु रचाइआ ॥ (1050-5)
सचै सचि समाइआ मिलि रहै न विछुड़ि जाइ ॥२॥ (32-15)
सचै सबदि आपि मिलाए सतसंगति सचु गुण गावणिआ ॥५॥ (120-4)
सचै सबदि जिन्हा एक लिव लागी ॥ (1246-7)
सचै सबदि ताड़ी चितु लाए ॥ (1044-17)
सचै सबदि नीसाणि ठाक न पाईऐ ॥ (147-1)
सचै सबदि पति ऊपजै सचे सचा नाउ ॥ (69-14)
सचै सबदि मनु मारिआ अहिनिसि नामि पिआरि ॥ (1284-5)
सचै सबदि मनु मोहिआ प्रभि आपे लए मिलाइ ॥ (35-16)
सचै सबदि महाबल सूरा ॥ (1060-4)
सचै सबदि मिलि रही मुईए पिरु रावे भाइ पिआरे ॥ (567-16)
सचै सबदि रते बैरागी आवणु जाणु रहाई हे ॥११॥ (1044-11)
सचै सबदि रते बैरागी होरि भरमि भुले गावारी जीउ ॥८॥ (1016-16)
सचै सबदि वीचारे रंगि राती नारे मिलि सतिगुर प्रीतमु पाइआ ॥ (584-10)
सचै सबदि सचा सालाही सचै मेलि मिलावणिआ ॥१॥ (119-17)
सचै सबदि सचि समाइ ॥१॥ (560-8)
सचै सबदि सचि समाए ॥४॥ (424-5)
सचै सबदि सची पति होई ॥ (1046-10)
सचै सबदि सचु कमावै ॥ (1342-8)
सचै सबदि सतिगुरु सेवै ॥ (1044-7)
सचै सबदि सदा गुण गाए ॥ (1055-17)
सचै सबदि सदा गुण गावहि सबदि रते वीचारी हे ॥३॥ (1050-8)
सचै सबदि सदा मति ऊतम अंतरि कमलु प्रगासी हे ॥३॥ (1048-6)

सचै सबदि सदा मनु राता भ्रमु गइआ सरीरहु दूरि ॥ (34-17)
सचै सबदि सदा सुखु पाइआ हउमै गई भराती ॥ (583-5)
सचै सबदि सलाहि सुखीए सच वालिआ ॥ (149-7)
सचै सबदि सालाहणा सुखे सुखि निवासु ॥ (86-2)
सचै सबदि हरखु सदा दरि सचै सचिआरु ॥ (586-10)
सचै सबदे सचि सुहावै ॥ (1050-14)
सचै सबदे सचु सुभाखी ॥ (1058-15)
सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥ (463-8)
सचै सरमै बाहरे अगै लहहि न दादि ॥ (1245-4)
सचै साहिब मारिआ कउणु तिस नो रखै ॥ (315-8)
सचै सुणिआ कंनु दे धीरक देवै सहजि सुभाइ ॥ (1281-6)
सचो दह दिसि पसरिआ गुर कै सहजि सुभाए ॥ (850-12)
सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥ (922-15)
सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु ॥ (55-12)
सचो सचा वेखि सालाही गुर सबदी सचु पावणिआ ॥४॥ (120-3)
सचो सचा सचु सचु निहारीऐ ॥ (518-1)
सचो सचा सचु सालाही ॥ (1050-9)
सचो सचु कमावणा वडिआई वडे पासि ॥ (86-1)
सचो सचु कमावहि सद ही सचै मेलि मिलाइदा ॥६॥ (1063-4)
सचो सचु कमावै सद ही सची भगति द्रिड़ाइदा ॥४॥ (1058-17)
सचो सचु रवहि दिनु राती इहु मनु सचि रंगावणिआ ॥३॥ (128-6)
सचो सचु वखाणीऐ सचो बुधि बिबेक ॥ (52-8)
सचो सचु वखाणै कोइ ॥ (952-4)
सचो सचु वरतै सभनी थाई सचे सचि समावणिआ ॥३॥ (112-13)
सचो सचु वेखै सभ थाई सचु सुणि मंनि वसाइदा ॥७॥ (1065-8)
सचो सेवहि सचु धिआवहि सचि रते वीचारी हे ॥१०॥ (1050-17)
सजण मिले न विछुड़हि जि अनदिनु मिले रहंनि ॥ (756-17)
सजण मिले सजणा जिन सतगुर नालि पिआरु ॥ (587-11)
सजण मिले सजणा सचै सबदि सुभाइ ॥ (587-6)
सजण मुखु अनूपु अठे पहर निहालसा ॥ (1100-6)
सजण मेरे रंगुले जाइ सुते जीराणि ॥ (23-7)
सजण सचु परखि मुखि अलावणु थोथरा ॥ (1100-7)
सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलंन्हि ॥ (729-2)
सजणु तूहै सैणु तू मै तुझ उपरि बहु माणीआ ॥ (761-8)
सजणु मेरा एकु तूं करता पुरखु सुजाणु ॥ (759-7)
सजणु मैडा चाईआ हभ कही दा मितु ॥ (1096-13)
सजणु मैडा रंगुला रंगु लाए मनु लेइ ॥ (644-11)

सजणु सचा पातिसाहु जिसु मिलि कीचै भोगु ॥३॥ (1094-17)
सजणु सचा पातिसाहु सिरि साहां दै साहु ॥ (1426-7)
सजणु सतिगुरु पुरखु है दुखु कढै हउमै मारि ॥१॥ रहाउ ॥ (41-11)
सजणु हरि प्रभु पाइआ घरि सोहिला गाइआ ॥ (163-15)
सजनु सुरिदा सुहेला सहजे सो कहीऐ बडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ (1217-9)
सजु काइआ पटु हढाए ॥ (989-13)
सठ कठोरु कुलहीनु बिआपत मोह कीचु ॥ (458-1)
सणु कीसारा चिथिआ कणु लइआ तनु झाड़ि ॥ (142-18)
सत का सबदु कबीरा कहै ॥ (343-1)
सत कै खटिऐ दुखु नही पाइआ ॥ (372-4)
सत चउपदे महले चउथे के ॥ (96-12)
सत पुरख की तपा निंदा करै संसारै की उसतती विचि होवै एतु दोखै तपा दयि मारिआ ॥ (315-17)
सत संतोख का धरहु धिआन ॥ (344-6)
सत संतोखि रहहु जन भाई ॥ (1030-11)
सत संतोखि सबदि अति सीतलु सहज भाइ लिव लाइआ ॥३॥ (1038-16)
सत संतोखी सतिगुरु पूरा ॥ (1023-15)
सत हतं परम बादं अवरत एथह सुध अछरणह ॥ (1359-16)
सतगुर का भाणा मंनि लई विचहु आपु गवाइ ॥ (34-14)
सतगुर की सेवा अति सुखाली जो इछे सो फलु पाए ॥ (31-5)
सतगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ (27-8)
सतगुर कै उपदेसिऐ बिनसे सरब जंजाल ॥ (48-3)
सतगुर कै परसादि सहज सेती रंगु माणइ ॥ (1397-6)
सतगुर जेवडु अवरु न कोई मिलि सतगुर पुरख धिआईऐ ॥२॥ (881-16)
सतगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले ॥ (30-3)
सतगुर दइआ करहु हरि मेलहु मेरे प्रीतम प्राण हरि राइआ ॥ (882-1)
सतगुर परसादि परम पदु पाया भगति भाइ भंडार भरे ॥ (1397-3)
सतगुर मति गूड़्ह बिमल सतसंगति आतमु रंगि चलूलु भया ॥ (1396-18)
सतगुर सरणि परे तिन पाइआ मेरे ठाकुर लाज रखाईऐ ॥ (881-17)
सतगुर सेवा ते निसतारा गुरमुखि तरै संसारा ॥ (559-16)
सतगुरि दयालि हरि नामु द्रिड़्हाया तिसु प्रसादि वसि पंच करे ॥ (1397-1)
सतगुरि दीआ मो कउ एहु निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ (558-11)
सतगुरि मिलिऐ उलटी भई कहणा किछू न जाइ ॥३॥ (558-13)
सतगुरि मिलिऐ त्रिकुटी छूटै चउथै पदि मुकति दुआरु ॥२॥ (33-11)
सतगुरि मिलिऐ धनु पाइआ हरि नामा रिदै समालि ॥३॥ (32-1)
सतगुरि मिलिऐ सचि मिले सचि नामि समाइआ ॥३॥ (559-5)
सतगुरि मिलिऐ सद भै रचै आपि वसै मनि आइ ॥१॥ (33-1)
सतगुरि मेलि मिलाइआ नानक सो प्रभु नालि ॥४॥१७॥ (20-17)

सतगुरि मो कउ हरि दीआ बुझाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (559-8)
सतगुरु दइआ करे सुखदाता हम लावै आपन पाली ॥१॥ (667-15)
सतगुरु दाता जीअ का सद जीवै देवणहारा ॥ (593-10)
सतगुरु दाता वडा वड पुरखु है जितु मिलिऐ हरि उर धारे ॥ (882-8)
सतगुरु निरंजनु सोइ ॥ (895-5)
सतगुरु पुरखु न मंनिओ सबदि न लगो पिआरु ॥ (34-11)
सतगुरु भेटै नामि उधारु ॥४॥ (880-7)
सतगुरु मिलै अंधेरा जाइ ॥ (876-13)
सतगुरु मिलै त आखी सूझै ॥ (935-8)
सतगुरु सचु प्रभु निरमला सबदि मिलावा होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (27-3)
सतगुरु सेवनि आपणा हउ तिन कै लागउ पाइ ॥ (35-2)
सतगुरु सेवहि ता उबरहि सचु रखहि उर धारि ॥ (34-8)
सतगुरु सेवि खरचु हरि बाधहु मत जाणहु आजु कि काल्ही ॥२॥ (667-17)
सतगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस दी कीम न पाई ॥ (32-9)
सतगुरु सेवि मनु निरमला हउमै तजि विकार ॥ (34-9)
सतगुरु सेवि मोहु परजलै घर ही माहि उदासा ॥१॥ रहाउ ॥ (29-12)
सतगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलाई ॥२॥ (31-5)
सतगुरु सेवि सुखु पाइआ विचहु गइआ गुमानु ॥ (32-12)
सतगुरु सेवे आपणा हउ सद कुरबाणै तासु ॥ (21-3)
सतगुरू किआ फिटकिआ मंगि थके संसारि ॥ (34-4)
सतजुगि तै माणिओ छलिओ बलि बावन भाइओ ॥ (1390-7)
सतजुगि धरमु पैर है चारि ॥ (880-2)
सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥ (470-2)
सतजुगि सचु कहै सभु कोई ॥ (880-1)
सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार ॥ (346-10)
सतजुगि सतु संतोखु सरीरा ॥ (1023-13)
सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥ (445-8)
सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥१॥ (445-11)
सतजुगि साचु कहै सभु कोई ॥ (1023-16)
सतजुगु त्रेता दुआपरु भणीऐ कलिजुगु ऊतमो जुगा माहि ॥ (406-7)
सतरंज बाजी पकै नाही कची आवै सारी ॥३॥ (359-16)
सतरि का मतिहीणु असीहां का विउहारु न पावै ॥ (138-3)
सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई ॥२॥ (480-6)
सतरि दोइ भरे अम्रित सरि बिखु कउ मारि कढावउ ॥१॥ (693-4)
सतरि सैइ सलार है जा के ॥ (1161-4)
सतवै संजि कीआ घर वासु ॥ (137-18)
सतसंगति ऊतम सतिगुर केरी गुन गावै हरि प्रभ के ॥ (731-9)

सतसंगति की धूरि परी उडि नेत्री सभ दुरमति मैलु गवाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1263-7)
सतसंगति की रेणु मुखि लागी कीए सगल तीरथ मजनीठा ॥ (1212-16)
सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥ (72-1)
सतसंगति गुर की हरि पिआरी जिन हरि हरि नामु मीठा मनि भाइआ ॥ (494-3)
सतसंगति गुर की हरि पिआरी मिलि संगति हरि रसु भुंचु ॥१॥ रहाउ ॥ (1179-14)
सतसंगति ढोई ना लहनि विचि संगति गुरि वीचारे ॥ (307-14)
सतसंगति नामु निधानु है जिथहु हरि पाइआ ॥ (1244-19)
सतसंगति प्रीति साध अति गूड़ी जिउ रंगु मजीठ बहु लागा ॥ (985-11)
सतसंगति बहि हरि गुण गाइआ ॥ (115-19)
सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥ (446-14)
सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥३॥ (446-17)
सतसंगति महि तिन ही वासा जिन कउ धुरि लिखि पाई हे ॥१५॥ (1044-16)
सतसंगति महि नामु निरमोलकु वडै भागि पाइआ जाई ॥७॥ (909-11)
सतसंगति महि नामु हरि उपजै जा सतिगुरु मिलै सुभाए ॥ (67-19)
सतसंगति महि बिसासु होइ हरि जीवत मरत संगारी ॥३॥ (401-16)
सतसंगति महि हरि उसतति है संगि साधू मिले पिआरिआ ॥ (311-15)
सतसंगति महि हरि हरि वसिआ मिलि संगति हरि गुन जान ॥ (1335-10)
सतसंगति मिलि धिआइ तू हरि हरि बहुड़ि न आवण जाणु ॥ रहाउ ॥ (606-7)
सतसंगति मिलि बिबेक बुधि होई ॥ (481-4)
सतसंगति मिलि मति बुधि पाई हउ छूटे ममता जाल ॥ (1335-17)
सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥२॥ (486-16)
सतसंगति मिलि राम रसु पाइआ हरि रामै नामि समाते ॥१॥ रहाउ ॥ (169-5)
सतसंगति मिलि सभ सोझी पाए ॥ (364-5)
सतसंगति मिलि हरि रसु पाई ॥३॥ (732-16)
सतसंगति मिलि हरि सादु आइआ गुरमुखि ब्रहमु पछाता ॥१॥ रहाउ ॥ (984-10)
सतसंगति मिलीऐ हरि साधू मिलि संगति हरि गुण गाइ ॥ (368-13)
सतसंगति मिलु भजु राम ॥ (1297-3)
सतसंगति मिलै त दिड़ता आवै हरि राम नामि निसतारे ॥३॥ (981-16)
सतसंगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥ (690-8)
सतसंगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥३॥ (690-10)
सतसंगति मेलाइ प्रभ हरि हिरदै हरि गुण सारि ॥१॥ रहाउ ॥ (233-12)
सतसंगति मेलापु जिथै हरि गुण सदा वखाणीऐ ॥ (1280-6)
सतसंगति लगि हरि धिआईऐ हरि हरि चलै तेरै नालि ॥३॥ (234-19)
सतसंगति सतगुरु पाईऐ अहिनिसि सबदि सलाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (22-5)
सतसंगति सतिगुर चटसाल है जितु हरि गुण सिखा ॥ (1316-7)
सतसंगति सतिगुर धंनु धनो धंन धंन धनो जितु मिलि हरि बुलग बुलोगीआ ॥ (1313-4)
सतसंगति सतिगुर सेवदे हरि मेले गुरु मेलाइ ॥ (1424-7)

सतसंगति सहज सारि जागीले गुर बीचारि निमरी भूत सदीव परम पिआरि ॥ (1391-8)
सतसंगति साई हरि तेरी जितु हरि कीरति हरि सुनणे ॥ (1135-13)
सतसंगति साध दइआ करि मेलहु सरणागति साधू पंञु ॥ (1179-15)
सतसंगति साध धूरि मुखि परी ॥ (1134-7)
सतसंगति साध पाई वडभागी मनु चलतौ भइओ अरूड़ा ॥ (698-2)
सतसंगति साध पाई वडभागी संगि साधू पारि पइआ ॥१॥ (1264-14)
सतसंगति साधू लगि हरि नामि समाईऐ ॥ (643-6)
सतसंगति सिउ बादु रचाए ॥ (88-16)
सतसंगति सिउ मिलदो रहै सचे धरे पिआरु ॥ (1087-7)
सतसंगति सिउ मेलापु होइ लिव कटोरी अम्रित भरी पी पी कटहि बिकार ॥३॥ (553-8)
सतसंगति हरि मेलि प्रभ हम पापी संगि तराह ॥ (1314-17)
सतसंगति हरि मेलि प्रभ हरि नामु वसै मनि आइ ॥ (1417-16)
सतसंगती बहि भाउ करि सदा हरि के गुण गाइ ॥ (849-15)
सतसंगती संगि हरि धनु खटीऐ होर थै होरतु उपाइ हरि धनु कितै न पाई ॥ (734-2)
सतसंगती सदा मिलि रहे सचे के गुण सारि ॥ (35-13)
सतसंगि जागे नामि लागे एक सिउ लिव लागीआ ॥ (1312-3)
सतसंगि पाईऐ हरि धिआईऐ बहुड़ि दूखु न लागए ॥ (1312-6)
सतहु खेतु जमाइओ सतहु छावाणु ॥ (968-4)
सति करणी निरमल निरमली ॥ (284-16)
सति करमु जा की रचना सति ॥ (284-16)
सति करे जिनि गुरू पछाता सो काहे कउ डरदा जीउ ॥३॥ (101-14)
सति कहउ सुनि मन मेरे सरनि परहु हरि राइ ॥ (260-12)
सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥ (284-18)
सति ते जन जिन परतीति उपजी नानक नह भरमेहु ॥२॥९१॥११४॥ (1226-9)
सति नामु तेरा परा पूरबला ॥ (1083-11)
सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥ (284-17)
सति निरति बूझै जे कोइ ॥ (284-18)
सति परमेसरु सति साध जन निहचलु हरि का नाउ ॥ (1221-3)
सति पुरख अकाल मूरति रिदै धारहु धिआनु ॥ (1121-8)
सति पुरख ते भिंन न कोऊ ॥ (250-16)
सति पुरख पूरन बिबेक ॥ (287-8)
सति पुरख सभ माहि समाणी ॥ (284-15)
सति पुरखु जा को है नाउ ॥ (863-1)
सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥ (286-12)
सति पुरखु सति असथानु ॥ (1236-12)
सति पुरखु सतिगुरु परमेसरु जिसु भेटत पारि पराइणा ॥५॥ (1078-4)
सति बचन नानकु कहै परगट सभ माहि ॥ (815-5)

सति बचन वरतहि हरि दुआरे ॥ (869-17)
सति बचन साधू उपदेस ॥ (284-18)
सति बचन साधू कहहि नित जपहि गुपाल ॥ (807-17)
सति बचन साधू सभि कहत ॥ (294-7)
सति माहि ले सति समाइआ ॥१॥ (890-12)
सति रामु झूठा सभु धंधा ॥६॥१६॥ (326-16)
सति रूपु सति नामु सतु संतोखु धरिओ उरि ॥ (1408-13)
सति सति रामु ॥ (1202-6)
सति सति वरतै गहिर ग्मभीरा ॥ (1023-14)
सति सति सति नानकि कहिआ अपनै हिरदै देखु समाले ॥४॥३॥४२॥ (381-8)
सति सति सति प्रभु जाता ॥ (1072-9)
सति सति सति प्रभु सुआमी ॥ (279-9)
सति सति सति प्रभु सोई ॥ (104-8)
सति सति सति सति सति गुरदेव ॥ (1166-14)
सति सति सतिगुरि नामु दिड़ाइआ रसि गाए गुण परमानंदा ॥१॥ रहाउ ॥ (367-3)
सति सति सदा सति ॥ (1201-16)
सति सति हरि सति सति सते सति भणीऐ ॥ (1386-9)
सति सति हरि सति सुआमी सति साधसंगेहु ॥ (1226-8)
सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥ (285-9)
सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥१॥६॥ (1402-14)
सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥२॥७॥ (1402-18)
सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥३॥८॥ (1403-2)
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥ (4-16)
सति सूरउ सीलि बलवंतु सत भाइ संगति सघन गरूअ मति निरवैरि लीणा ॥ (1393-16)
सति होता असति करि मानिआ जो बिनसत सो निहचलु जानथ ॥ (1001-11)
सति होवनु मनि लगै न राती ॥२॥ (185-12)
सतिगुर अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ ॥ (55-13)
सतिगुर अगै ढहि पउ सभु किछु जाणै जाणु ॥ (646-14)
सतिगुर अपने कउ बलि जाई जिनि पैज रखी सारै संसारि ॥१॥ रहाउ ॥ (821-7)
सतिगुर अपने कउ बलिहारै ॥ (186-5)
सतिगुर अपुने कउ कुरबानी ॥ (187-10)
सतिगुर अपुने सुनी अरदासि ॥ (1152-13)
सतिगुर अपुनै मोहि दानु दीनी ॥१॥ रहाउ ॥ (235-11)
सतिगुर आइओ सरणि तुहारी ॥ (713-16)
सतिगुर आगै सीसु धरेइ ॥ (1261-8)
सतिगुर आगै सीसु भेट देउ जे सतिगुर साचे भावै ॥ (1114-10)
सतिगुर कउ बलि जाईऐ ॥ (71-19)

सतिगुर करि दीने असथिर घर बार ॥ रहाउ ॥ (807-10)
सतिगुर का दरसनु सफलु है जेहा को इछे तेहा फलु पाए ॥ (850-10)
सतिगुर का दरसनु सफलु है जो इछै सो फलु पाइ ॥ (1422-4)
सतिगुर का फुरमाइआ मंनि न सकी दुतरु तरिआ न जाइ ॥ (1422-2)
सतिगुर का भउ छोडिआ मनहठि कमु न आवै रासि ॥ (586-14)
सतिगुर का भाणा अनदिनु करहि से सचि रहे समाइ ॥ (643-13)
सतिगुर का भाणा कमावदे बिखु हउमै तजि विकारु ॥५॥ (65-16)
सतिगुर का भाणा चिति करे सतिगुरु आपे क्रिपा करेइ ॥४॥१॥३॥ (490-8)
सतिगुर का भाणा चिति न आवै आपणै सुआइ फिराही ॥ (652-14)
सतिगुर का भाणा चिति रखहु संजमु सचा नेहु ॥ (554-9)
सतिगुर का भाणा मंनि लए सबदु रखै उर धारि ॥१॥ (1247-16)
सतिगुर का भाणा मंनि लैनि हरि नामु रखहि उर धारि ॥ (1415-17)
सतिगुर का महलु विरला जाणै सदा रहै कर जोड़ि ॥ (314-7)
सतिगुर का सचु सबदु कमावहु ॥ (386-13)
सतिगुर का सबदु सुणि न जागिओ अंतरि न उपजिओ चाउ ॥ (651-9)
सतिगुर की ऐसी वडिआई ॥ (661-13)
सतिगुर की ओहु दीखिआ लेइ ॥ (1261-8)
सतिगुर की गणतै घुसीऐ दुखे दुखि विहाइ ॥ (314-12)
सतिगुर की जिस नो मति आवै सो सतिगुर माहि समाना ॥ (797-16)
सतिगुर की जे सरणी आवै फिरि मनूरहु कंचनु होहा ॥ (960-18)
सतिगुर की धर लागा जावा गुर किरपा ते हरि दरु लहीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (834-14)
सतिगुर की नित सरधा लागी मो कउ हरि गुरु मेलि सवारे ॥१॥ (982-17)
सतिगुर की परतीति न आईआ सबदि न लागो भाउ ॥ (591-8)
सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥ (308-5)
सतिगुर की बाणी सति सति करि मानहु इउ आतम रामै लीना हे ॥१४॥ (1028-13)
सतिगुर की बाणी सति सरूपु है गुरबाणी बणीऐ ॥ (304-16)
सतिगुर की बाणी सदा सुखु होइ ॥ (1175-6)
सतिगुर की महिमा सतिगुरु जाणै ॥ (1075-10)
सतिगुर की मूरति हिरदै वसाए ॥ (661-14)
सतिगुर की रीसै होरि कचु पिचु बोलदे से कूड़िआर कूड़े झड़ि पड़ीऐ ॥ (304-17)
सतिगुर की रेणु वडभागी पावै ॥ (741-15)
सतिगुर की वडिआई नित चड़ै सवाई हरि कीरति भगति नित आपि कराए ॥ (308-4)
सतिगुर की वडिआई वेखि न सकनी ओना अगै पिछै थाउ नाही ॥ (308-19)
सतिगुर की वडिआई सतिगुरि दिती धुरहु हुकमु बुझि नीसाणु ॥ (853-16)
सतिगुर की सचु साखै ॥१॥ (630-3)
सतिगुर की सरणाई भजि पउ मेरे मना गुर सतिगुर पीछै छुटीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (170-6)
सतिगुर की सेव न कीतीआ सबदि न लगो भाउ ॥ (850-4)

सतिगुर की सेव न कीनीआ किआ ओहु करे वीचारु ॥ (589-4)
सतिगुर की सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥ (589-13)
सतिगुर की सेवा इहु तपु परवाणु ॥ (948-18)
सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ ॥१॥ (638-10)
सतिगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ (649-6)
सतिगुर की सेवा चाकरी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ (1246-10)
सतिगुर की सेवा चाकरी सुखी हूं सुख सारु ॥ (586-8)
सतिगुर की सेवा धुरि फुरमाई ॥ (1064-4)
सतिगुर की सेवा न कीतीआ अंति गइआ पछुताई ॥ (511-15)
सतिगुर की सेवा निरमली निरमल जनु होइ सु सेवा घाले ॥ (304-18)
सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइ ॥५॥ (638-16)
सतिगुर की सेवा सफल है जे को करे चितु लाइ ॥ (552-6)
सतिगुर की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ ॥ (644-15)
सतिगुर की सेवा सो करे जिस नो आपि कराए सोइ ॥ (88-11)
सतिगुर की सेवा सो करे जिसु बिनसै हउमै तापु ॥ (45-5)
सतिगुर की सेवै लगिआ भउजलु तरै संसारु ॥ (1422-17)
सतिगुर कीनी दाति मूलि न निखुटई ॥ (1363-3)
सतिगुर कीनो परउपकारु ॥ (331-5)
सतिगुर के चरन धोइ धोइ पीवा ॥ (1152-18)
सतिगुर के जीअ की सार न जापै कि पूरै सतिगुर भावै ॥ (317-12)
सतिगुर कै आखिऐ जो चलै सो सति पुरखु भल भला ॥ (304-14)
सतिगुर कै जनमे गवनु मिटाइआ ॥ (940-2)
सतिगुर कै बचनि अराधि तू अनदिनु गुण गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (994-17)
सतिगुर कै बलिहारणै मनसा सभ पूरेव ॥३॥ (44-2)
सतिगुर कै भइ भ्रमु भउ जाइ ॥ (157-17)
सतिगुर कै भाणै करहि कार सतिगुर कै भाणै लागि रहु ॥ (441-12)
सतिगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहजि सीगारु ॥२॥ (426-12)
सतिगुर कै भाणै जो चलै तिन दालदु दुखु लहि जाइ ॥ (1313-18)
सतिगुर कै भाणै जो चलै तिपतासै हरि गुण गाइ ॥ (1414-1)
सतिगुर कै भाणै जो चलै तिसु वडिआई वडी होइ ॥ (90-6)
सतिगुर कै भाणै जो चलै विचि बोहिथ बैठा आइ ॥ (40-18)
सतिगुर कै भाणै जो चलै हरि सेती रलिआ ॥ (1245-9)
सतिगुर कै भाणै भी चलहि ता दरगह पावहि माणु ॥ (646-15)
सतिगुर कै भाणै मनि वसै ता अहिनिसि रहै लिव लाइ ॥३॥ (1015-17)
सतिगुर कै भाणै वडिआई पावै ॥ (509-12)
सतिगुर कै भै भंनि न घड़िओ रहै अंकि समाए ॥ (549-19)
सतिगुर कै वसि चारि पदारथ ॥ (1345-7)

सतिगुर कै हउ सद बलि जाइआ ॥ (1142-6)
सतिगुर गिआन जानै संत देवा देव ॥१॥ (486-11)
सतिगुर गिआनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥ (444-16)
सतिगुर गिआनु मिलिआ प्रीतमु मेरा ॥ (798-8)
सतिगुर गिआनु रतनु अति भारी करमि मिलै सुखु पाई हे ॥१०॥ (1069-17)
सतिगुर गिआनु सदा घटि चानणु अमरु सिरि बादिसाहा ॥ (600-10)
सतिगुर चरण कवल रिदि धारं ॥ (1406-19)
सतिगुर चरणी लगिआ हरि नामु नित जपनी ॥ (791-12)
सतिगुर चरन लगे भउ मिटिआ हरि गुन गाए मन माही ॥२॥ (630-11)
सतिगुर चाटउ पग चाट ॥ (1297-8)
सतिगुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ (1271-10)
सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥ (465-3)
सतिगुर जोग का तहा निवासा जह अविगत नाथु अगम धनी ॥३॥ (883-12)
सतिगुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ ॥९॥१॥२६॥ (71-5)
सतिगुर तुठै पाईऐ पूरन अलख अभेव ॥१॥ रहाउ ॥ (53-1)
सतिगुर ते कवनु कवनु न सीधो मेरे भाई ॥ (231-16)
सतिगुर ते खाली को नही मेरै प्रभि मेलि मिलाए ॥ (850-9)
सतिगुर ते गिआनु ऊपजै तां इह संसा जाइ ॥ (1276-4)
सतिगुर ते गिआनु पाइआ हरि ततु बीचारा ॥ (163-7)
सतिगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभु मेलै सोइ ॥ (428-19)
सतिगुर ते जो मुह फिरे से बधे दुख सहाहि ॥ (645-6)
सतिगुर ते जो मुह फेरे ते वेमुख बुरे दिसंनि ॥ (233-11)
सतिगुर ते जो मुहु फेरे ओइ भ्रमदे ना टिकंनि ॥ (233-16)
सतिगुर ते द्रिड़िआ इकु एकै ॥ (181-18)
सतिगुर ते नामु पाईऐ अउधू जोग जुगति ता होई ॥ (946-14)
सतिगुर ते नामु पाईऐ करमि मिलै प्रभु सोइ ॥४॥ (233-16)
सतिगुर ते नामु रतन धनु पाइआ सतिगुर की सेवा भाई हे ॥३॥ (1069-8)
सतिगुर ते निरमल मति लई ॥ (289-16)
सतिगुर ते पाइआ नाम नीसानु ॥२॥ (193-14)
सतिगुर ते पाए वीचारा ॥ (1038-11)
सतिगुर ते पावै घरु दरु महलु सु थानु ॥ (1259-17)
सतिगुर ते भउ ऊपजै पाईऐ मोख दुआर ॥ (1288-9)
सतिगुर ते मागउ नामु अजाची ॥ (1069-10)
सतिगुर ते विछुड़े तिनी दुखु पाइआ ॥ (1063-2)
सतिगुर ते सचु पछाणीऐ सचि सहजि समाणी ॥ (515-15)
सतिगुर ते समझ पड़ी मन माही ॥ (1070-3)
सतिगुर ते सहजु ऊपजै हउमै सबदि जलाइ ॥७॥ (1347-4)

सतिगुर ते हम गति पति पाई ॥ (233-7)
सतिगुर ते हरि पाईऐ भाई ॥ (425-12)
सतिगुर ते हरि पाईऐ साचा हरि सिउ रहै समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1276-3)
सतिगुर ते हरि बुझीऐ गरभ जोनी नह पाइ ॥२॥ (1276-4)
सतिगुर ते हरि हरि मनि वसिआ सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥ (1265-10)
सतिगुर तेरी आसाइआ ॥ (402-13)
सतिगुर दइआल किरपाल भेटत हरे कामु क्रोधु लोभु मारिआ ॥ (81-12)
सतिगुर दरसनि अगनि निवारी ॥ (183-3)
सतिगुर दातै नामु दिड़ाइआ ॥ (96-2)
सतिगुर दातै नामु दिड़ाइआ मुखि मसतकि भाग सभागे ॥१॥ (171-19)
सतिगुर दीन दइआल जिसु संगि हरि गावीऐ जीउ ॥ (691-2)
सतिगुर नदरि निहाल बहुड़ि न धाईऐ ॥ (519-19)
सतिगुर नामु एक लिव मनि जपै द्रिड़ु तिन जन दुख पाप कहु कत होवै जीउ ॥१॥ (1398-14)
सतिगुर नामु एक लिव मनि जपै द्रिड़्हु तिन्ह जन दुख पापु कहु कत होवै जीउ ॥ (1398-10)
सतिगुर नामु द्रिड़ाए अति मीठा मैलागरु मलगारे ॥ (981-3)
सतिगुर नालि तेरी भावनी लागै ता इह सोझी पाइ ॥७॥ (908-19)
सतिगुर नो जेहा को इछदा तेहा फलु पाए कोइ ॥ (302-5)
सतिगुर नो मिले सि भाइरा सचै सबदि लगंनि ॥ (756-6)
सतिगुर नो मिले सु हरि मिले नाही किसै परतै ॥२४॥ (314-3)
सतिगुर नो मिलै सबदु समाले ॥ (948-18)
सतिगुर नो मिलै सु आपणा मनु थाइ रखै ओहु आपि वरतै आपणी वथु नाले ॥ (305-3)
सतिगुर नो सभ को लोचदा जेता जगतु सभु कोइ ॥ (41-5)
सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु ॥ (594-11)
सतिगुर नो सेवे तिसु आपि मिलाए ॥ (1063-14)
सतिगुर पग धूरि जिना मुखि लाई ॥ (165-4)
सतिगुर परचै परम पदु पाईऐ साचै सबदि समाइ लीआ ॥ (940-15)
सतिगुर परचै वसगति आवै मोख मुकति सो पावैगो ॥३॥ (1310-8)
सतिगुर पासि बेनंतीआ मिलै नामु आधारा ॥ (746-17)
सतिगुर पासि हरि बात पूछह जिनि नामु पदारथु पाइआ ॥ (574-10)
सतिगुर पिछै भजि पवहि एहा करणी सारु ॥ (143-15)
सतिगुर पुछै सचु संजमु कमावै हउमै रोगु तिसु जाए ॥ (512-5)
सतिगुर पुरखि जि मारिआ भ्रमि भ्रमिआ घरु छोडि गइआ ॥ (653-4)
सतिगुर पुरखि मिलाइआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (73-7)
सतिगुर पुरखु निरवैरु है नित हिरदै हरि लिव लाइ ॥ (1415-9)
सतिगुर पुरखु हरि धिआइदा सतसंगति सतिगुर भाइ ॥ (1424-6)
सतिगुर पूछउ जाइ नामु धिआइसा जीउ ॥ (689-1)
सतिगुर पूछि न मारगि चाली सूती रैणि विहाणी ॥ (763-12)

सतिगुर पूछि संगति जन कीजै ॥ (905-12)
सतिगुर पूरि जनह की आसा ॥ (1396-12)
सतिगुर पूरे भाणा ॥ (628-7)
सतिगुर पूरै कीनो दानु ॥१॥ (1144-4)
सतिगुर पूरै साचु कहिआ ॥ (393-13)
सतिगुर प्रीति गुरसिख मुखि पाइ ॥१॥ (164-10)
सतिगुर बंधन तोड़ि निरारे बहुड़ि न गरभ मझारी जीउ ॥ (598-2)
सतिगुर बचन कमावणे सचा एहु वीचारु ॥ (52-10)
सतिगुर बचन तुम्हारे ॥ (406-12)
सतिगुर बचन बचन है सतिगुर पाधरु मुकति जनावैगो ॥५॥ (1309-18)
सतिगुर बचन सुखाने हीअरै हरि धारी हरि प्रभ क्रिपफा ॥१॥ (1336-14)
सतिगुर बचनि मेरो मनु मानिआ हरि पाए प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (1197-15)
सतिगुर बचनी एको जाता ॥ (415-5)
सतिगुर बचनी गति मिति पाई ॥ (1030-1)
सतिगुर बचनु बचनु है नीको गुर बचनी अम्रितु पावैगो ॥ (1311-10)
सतिगुर बाझहु अंधु गुबारु ॥ (843-2)
सतिगुर बाझहु गुरु नही कोई निगुरे का है नाउ बुरा ॥१३॥ (435-10)
सतिगुर बाझहु घोर अंधारा डूबि मुए बिनु पाणी ॥६॥ (1275-8)
सतिगुर बाझहु प्रीति न उपजै भगति रते पतीआरा हे ॥१३॥ (1029-15)
सतिगुर बाझहु मुकति किनेही ॥ (1027-19)
सतिगुर बाझहु मुकति न होई किरति बाधा ग्रसि दीना हे ॥९॥ (1028-7)
सतिगुर बाझहु वैदु न कोई ॥ (1016-10)
सतिगुर बाझहु संगति न होई ॥ (1068-16)
सतिगुर बाझहु सभु धंधु कमावै वेखहु मनि वीचारी जीउ ॥७॥ (1016-14)
सतिगुर बाझहु समझ न होवी सभु जगु दबिआ छापै ॥ (1275-4)
सतिगुर बाझु न पाइओ सभ थकी करम कमाइ जीउ ॥१३॥ (72-12)
सतिगुर बाझु न पाइओ सभ मोही माइआ जालि जीउ ॥३॥ (71-18)
सतिगुर बाझु न बेली कोई ॥ (1031-19)
सतिगुर बाणी पुरखु पुरखोतम बाणी सिउ चितु लावैगो ॥२॥ (1308-9)
सतिगुर बाणी सबदु सुणाए ॥ (1177-2)
सतिगुर बिनु बैरागु न होवई बैरागीअड़े ॥ (1104-17)
सतिगुर बिनु हथि न आवई सभ थके करम कमाइ ॥ (548-14)
सतिगुर भए दइआल ॥ (895-8)
सतिगुर भए दइआल त पूरा पाईऐ ॥ (1362-1)
सतिगुर भाइ चलहु जीवतिआ इव मरीऐ राम ॥ (775-19)
सतिगुर भीखिआ देहि मै तूं सम्रथु दातारु ॥ (790-8)
सतिगुर भेटत हउमै मारी ॥ (183-3)

सतिगुर भेटि राम रसु पाइआ जन नानक नामि उधारे ॥ (575-3)
सतिगुर भेटिऐ मनु मरि रहै हरि नामु वसै मनि आइ ॥ (1258-6)
सतिगुर भेटे की वडिआई ॥ (423-11)
सतिगुर भेटे गुर गोबिंद ॥ (364-7)
सतिगुर भेटे पूरन पारब्रहम ॥२॥३४॥ (378-18)
सतिगुर भेटे मुकति होइ पाए मोख दुआरु ॥१॥ (1276-12)
सतिगुर भेटे सचु द्रिड़ाए सचु नामु मनि भाइआ ॥८॥ (1068-12)
सतिगुर भेटै सो जनु सीझै जिसु हिरदै नामु वसाई ॥१९॥ (912-11)
सतिगुर मति तारे तारणहारा मेलि लए रंगि लीना हे ॥३॥ (1027-18)
सतिगुर मति नामु सदा परगासा जीउ ॥ (175-8)
सतिगुर मिलत महा सुखु पाइआ मति मलीन बिगसावैगो ॥७॥ (1310-12)
सतिगुर मिलहु आपे प्रभु तारे ॥ (1041-17)
सतिगुर मिलहु चीनहु बिधि साई ॥ (1028-17)
सतिगुर मिलहु नवै निधि पावहु इन बिधि ततु बिलोई ॥२॥ (883-5)
सतिगुर मिलि रहीऐ सद अपुने जिनि हरि सेती लिव लाई ॥४॥ (1233-14)
सतिगुर मिलिऐ उलटी भई नव निधि खरचिउ खाउ ॥ (91-11)
सतिगुर मिलिऐ उलटी भई भाई जीवत मरै ता बूझ पाइ ॥ (602-17)
सतिगुर मिलिऐ जीवतु मरै बुझि सचि समीता ॥ (510-2)
सतिगुर मिलिऐ धावतु थम्हिआ निज घरि वसिआ आए ॥ (440-18)
सतिगुर मिलिऐ परम पदु पाइआ हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥३॥ (981-6)
सतिगुर मिलिऐ मति ऊतम होइ ॥ (1188-6)
सतिगुर मिलिऐ मति ऊपजै ता इह सोझी पाइ ॥१॥ (491-14)
सतिगुर मिलिऐ मनु संतोखीऐ ता फिरि त्रिसना भूख न होइ ॥ (492-3)
सतिगुर मिलिऐ मरै मंदा होवै गिआन बीचारी जीउ ॥४॥ (1016-10)
सतिगुर मिलिऐ मलु उतरी हरि जपिआ पुरखु सुजाणु ॥ (1417-10)
सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥ (466-8)
सतिगुर मिलिऐ हउमै गई जोति रही सभ आइ ॥ (509-19)
सतिगुर मिलिऐ हरि मनि वसै सहजे रहै समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (490-16)
सतिगुर मिले त मारगु दिखाइआ ॥ (476-10)
सतिगुर मिले सु उबरे साचै सबदि अलंख ॥१०॥ (1413-14)
सतिगुर मिलै त सूझसि बूझसि सच मनि गिआनु समावै ॥८॥ (1274-6)
सतिगुर मूरति कउ बलि जाउ ॥ (1202-12)
सतिगुर मेरे की वडिआई ॥ (1142-5)
सतिगुर मेरे सचा साजु ॥ (1142-3)
सतिगुर मेली प्रभ गुणतासा ॥४॥१॥९५॥ (394-13)
सतिगुर मै बलिहारी तोर ॥ (1195-15)
सतिगुर वचनु रतंनु है जो मंने सु हरि रसु खाइ ॥ (41-12)

सतिगुर वाकि हिरदै हरि निरमलु ना जम काणि न जम की बाकी ॥१॥ रहाउ ॥ (505-1)
सतिगुर विचि अम्रित नामु है अम्रितु कहै कहाइ ॥ (1424-1)
सतिगुर विचि अम्रितु है हरि उतमु हरि पदु सोइ ॥ (300-17)
सतिगुर विचि आपि वरतदा हरि आपे रखणहारु ॥ (302-11)
सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥ (466-8)
सतिगुर विचि नामु निधानु है करमि परापति होइ ॥ (88-11)
सतिगुर विचि नामु निधानु है पिआरा करि दइआ अम्रितु मुखि चोइ ॥ रहाउ ॥ (605-2)
सतिगुर विचि वडी वडिआई ॥ (361-12)
सतिगुर विचि वडी वडिआई जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआवै ॥ (303-11)
सतिगुर विचि वडीआ वडिआईआ भाई करमि मिलै तां पाइ ॥ (1419-9)
सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥ (470-9)
सतिगुर विटहु वारिआ जिनि दिता सचु नाउ ॥ (53-2)
सतिगुर विणु किनै न पाइआ मनि वेखहु रिदै बीचारि ॥ (1276-8)
सतिगुर संगि नाही मनु डोलै ॥ (183-4)
सतिगुर सचा है बोहिथा सबदे भवजलु तरणा ॥६॥ (70-2)
सतिगुर सचे वाहु सचु समालिआ ॥ (149-6)
सतिगुर सबदि उजारो दीपा ॥ (821-11)
सतिगुर सबदि करोधु जलावै ॥ (411-12)
सतिगुर सबदि रहहि रंगि राता तजि माइआ हउमै भ्राता हे ॥६॥ (1031-12)
सतिगुर सबदी इहु मनु भेदिआ हिरदै साची बाणी ॥ (1259-2)
सतिगुर सबदी पाधरु जाणि ॥ (1275-1)
सतिगुर सबदी मिलै विछुंनी तनु मनु आगै राखै ॥ (1111-18)
सतिगुर सबदु अथाहु अमिअ धारा रसु गुटइ ॥ (1397-14)
सतिगुर सरणि परहु ता उबरहु इउ तरीऐ भवजलु भाई हे ॥८॥ (1026-3)
सतिगुर सरणी आइआं बाहुड़ि नही बिनासु ॥ (52-17)
सतिगुर सरणी जाइ पउ मेरी जिंदुड़ीए गुण दसे हरि प्रभ केरे राम ॥ (538-16)
सतिगुर सरनि पए से थापे तिन राखन कउ प्रभु आवैगो ॥ (1311-12)
सतिगुर सरनि सरनि मनि भाई सुधा सुधा करि धिआवैगो ॥ (1311-11)
सतिगुर साची सिख सुणाई ॥ (117-19)
सतिगुर साचै दीआ भेजि ॥ (396-2)
सतिगुर साधसंगति है नीकी मिलि संगति रामु रवीजै ॥ (1324-10)
सतिगुर साधु न सेविआ हरि भगति न भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (422-9)
सतिगुर सिउ आलाइ बेड़े डुबणि नाहि भउ ॥४॥ (1410-10)
सतिगुर सिउ चितु न लाइओ नामु न वसिओ मनि आइ ॥ (510-4)
सतिगुर सीतल जे मिलै फिरि जलै न दूजी वार ॥ (588-4)
सतिगुर सेती गणत जि रखै हलतु पलतु सभु तिस का गइआ ॥ (307-4)
सतिगुर सेती चितु लाइ सदा सदा रंगु माणि ॥१॥ (43-2)

सतिगुर सेती मनु रता रखिआ बणत बणाइ ॥ (313-12)
सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ ॥ (517-16)
सतिगुर सेवहि से सुखु पावहि सचै सबदि मिलाइदा ॥१३॥ (1060-10)
सतिगुर सेवहु संक न कीजै ॥ (1043-6)
सतिगुर सेवा जम की काणि चुकाई ॥ (1261-13)
सतिगुर सेवा ते सुखु पाइआ हरि कै नामि समाई हे ॥११॥ (1047-15)
सतिगुर सेवा ना करहि फिरि फिरि पछुताणे ॥ (163-3)
सतिगुर सेवा नामु द्रिड़्हाए ॥ (1175-8)
सतिगुर सेवा महा निरबाणे ॥२॥ (385-12)
सतिगुर सेवा सफल है बणी ॥ (165-1)
सतिगुर सेवा सफल है सेविऐ फल पावै ॥१९॥ (791-19)
सतिगुर सेवि अम्रित सबदु भाखै ॥ (352-16)
सतिगुर सेवि नामु वसै मनि चीति ॥ (832-15)
सतिगुर सेवि परम पदु पाइआ हरि जपिआ सास गिरासे ॥ (573-14)
सतिगुर सेवि रहहु सरणाई ॥ (1039-14)
सतिगुर सेवि लगे हरि चरनी वडै भागि लिव लागी ॥ (502-19)
सतिगुर सेवि हरि नामु मनि वसाइआ अनदिनु नामु धिआइआ ॥ (513-5)
सतिगुर सेवे की वडिआई त्रिसना भूख गवाई हे ॥१३॥ (1044-13)
सतिगुर सेवे ता नामु पाए नामे ही सुखु पाइदा ॥६॥ (1064-5)
सतिगुर सेवे ता सहज धुनि उपजै गति मति तद ही पाए ॥ (604-3)
सतिगुर सेवे मनु वसि आवै मन मारे मनहि समाइदा ॥१५॥ (1062-14)
सतिगुर सेवै लगिआ कढि रतनु देवै परगासि ॥ (40-7)
सतिगुर हथि कुंजी होरतु दरु खुलै नाही गुरु पूरै भागि मिलावणिआ ॥७॥ (124-15)
सतिगुर हथि निबेड़ु झगड़ु चुकाइआ ॥ (139-18)
सतिगुर हमरा भरमु गवाइआ ॥ (423-9)
सतिगुर हरि प्रभु दसि नामु धिआई मनि हरी ॥ (301-7)
सतिगुरए नमह ॥ (262-9)
सतिगुरि एकु विखालिआ मनि तनि सुखु होई ॥ (788-1)
सतिगुरि करि दीनी धुर की छाप ॥५॥ (430-17)
सतिगुरि खेप निबाही संतहु ॥ (916-7)
सतिगुरि खेमा ताणिआ जुग जूथ समाणे ॥ (1398-6)
सतिगुरि गवाई विचहु जूठि भरांति ॥ (1173-19)
सतिगुरि गिआन खड़गु हथि दीना जमकंकर मारि बिदारे ॥ (574-14)
सतिगुरि गिआनु मजनु है नीको मिलि कलमल पाप उतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (981-13)
सतिगुरि ढाकि लीआ मोहि पापी पड़दा ॥ (1117-17)
सतिगुरि तापु गवाइआ भाई ठांढि पई संसारि ॥ (620-9)
सतिगुरि तुठै नाउ प्रेमि रहसिआ ॥ (146-18)

सतिगुरि तुठै पाईअनि अंदरि रतन भंडारा ॥ (141-6)
सतिगुरि तुमरे काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (201-6)
सतिगुरि तूठै कीनो दानु ॥३॥ (376-15)
सतिगुरि दइआलि गुण नामु द्रिड़ाई ॥२॥ (732-15)
सतिगुरि दइआलि हरि नामु द्रिड़ाइआ हरि पाधरु हरि प्रभ केरा ॥१॥ (711-5)
सतिगुरि दिखाए अंतरि नाले ॥ (1062-19)
सतिगुरि दिखाए गइआ अभिमानु ॥ (798-13)
सतिगुरि दिता हरि नामु अम्रितु चखिआ ॥ (523-13)
सतिगुरि दीआ अम्रित नामु ॥२॥ (1328-16)
सतिगुरि दीए मुकति धिआनां ॥ (1345-8)
सतिगुरि दीनो पूरा मंतु ॥१॥ (1150-1)
सतिगुरि नानकि भगति करी इक मनि तनु मनु धनु गोबिंद दीअउ ॥ (1405-7)
सतिगुरि नामु निधानु द्रिड़ाइआ ॥ (1155-1)
सतिगुरि नामु निधानु द्रिड़ाइआ चिंता सगल बिनासी ॥ (615-19)
सतिगुरि नामु बुझाइआ विणु नावै भुख न जाई ॥ (423-19)
सतिगुरि नालि दिखालिआ रवि रहिआ सभ थाइ ॥ (1248-13)
सतिगुरि परचै हरि नामि समाना ॥ (797-10)
सतिगुरि पाइऐ पूरा नावणु पसू परेतहु देव करै ॥२॥ (1329-1)
सतिगुरि पुरखि मिलाइआ इको सजणु सोइ ॥ (42-13)
सतिगुरि पुरखि विखालिआ मसतकि धरि कै हथु जीउ ॥९॥ (73-18)
सतिगुरि पूरै कीनी दाति ॥ (681-3)
सतिगुरि पूरै तापु गवाइआ अपणी किरपा धारी ॥ (620-14)
सतिगुरि पूरै नामु दीआ ॥ (1340-6)
सतिगुरि पूरै बूझ बुझाई ॥२॥ (362-16)
सतिगुरि पूरै सेविऐ दूखा का होइ नासु ॥ (320-8)
सतिगुरि बचनु दीओ अति निरमलु जपि हरि हरि हरि मनु माचे ॥१॥ (169-11)
सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ ॥ (923-12)
सतिगुरि भेटिऐ सोझी पाइ ॥ (842-5)
सतिगुरि मंत्रु दीओ हरि नाम ॥ (196-4)
सतिगुरि मिलिऐ अंतरि रवि रहिआ सदा रहिआ लिव लाइ ॥ (556-3)
सतिगुरि मिलिऐ आपु गइआ त्रिभवण सोझी पाई ॥ (424-16)
सतिगुरि मिलिऐ किरपा कीनी अम्रित नामु अधारा ॥७॥ (635-4)
सतिगुरि मिलिऐ जलु पाईऐ चूकै भूख पिआस ॥ (1420-10)
सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाइआ नानक सुखि समाइ ॥२॥ (645-3)
सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै तिसना भुख सभ जाइ ॥ (653-3)
सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै त्रिसना भुख सभ जाइ ॥ (1317-9)
सतिगुरि मिलिऐ निरंजनु पाइआ बहुरि न भवजलि फेरा ॥३॥ (1255-15)

सतिगुरि मिलिऐ फलु पाइआ ॥ (72-8)
सतिगुरि मिलिऐ फेरु न पवै जनम मरण दुखु जाइ ॥ (69-1)
सतिगुरि मिलिऐ भउ ऊपजै भै भाइ रंगु सवारि ॥ (788-13)
सतिगुरि मिलिऐ भुख गई भेखी भुख न जाइ ॥ (586-19)
सतिगुरि मिलिऐ मारगु मुकता सहजे मिले सुआमी ॥ (883-7)
सतिगुरि मिलिऐ वडी वडिआई ॥ (833-3)
सतिगुरि मिलिऐ सच संजमि सूचा ॥ (153-17)
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ ॥ (467-11)
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥ (465-4)
सतिगुरि मिलिऐ सदा सुखु जिस नो आपे मेले सोइ ॥ (947-8)
सतिगुरि मिलिऐ सूहा वेसु गइआ हउमै विचहु मारि ॥ (787-2)
सतिगुरि मिलिऐ हरि पाइआ मिलिआ सहजि सुभाइ ॥५॥ (758-19)
सतिगुरि मिलिऐ हुकमु बुझीऐ तां को आवै रासि ॥ (1289-14)
सतिगुरि मिले उलटी भई मरि जीविआ सहजि सुभाइ ॥ (1414-14)
सतिगुरि मिले निरंजनु पाइआ तेरै नामि है निवासा ॥१॥ (1328-9)
सतिगुरि मीति मिलाइआ मै सदा सदा तेरा ताणु ॥१२॥ (759-8)
सतिगुरि मेली तां सहजि मिली पिरु राखिआ उर धारे ॥ (584-6)
सतिगुरि मेली ता पिरि रावी बिगसी अम्रित बाणी ॥ (243-6)
सतिगुरि मेली भै वसी नानक प्रेमु सखाइ ॥८॥२॥ (54-12)
सतिगुरि मेली मिलि रही जनम मरण दुखु निवारि ॥३६॥ (934-18)
सतिगुरि मेले प्रभि आपि मिलाए ॥ (231-11)
सतिगुरि मैनो एकु दिखाइआ ॥१॥ (1173-4)
सतिगुरि मो कउ एकु बुझाइआ ॥५॥ (223-6)
सतिगुरि मो कउ कीनो दानु ॥ (1157-3)
सतिगुरि मो कउ दीआ उपदेसु ॥ (371-15)
सतिगुरि मो कउ हरि नामु बताइआ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ ॥१॥ रहाउ ॥ (369-12)
सतिगुरि राखे नामु द्रिड़ाइआ ॥१॥ (1342-3)
सतिगुरि राखे बंधु न पाई ॥८॥१०॥ (416-19)
सतिगुरि राखे से जन उबरे साचे साचि समाई हे ॥१॥ (1047-3)
सतिगुरि राखे से जन उबरे होर माइआ मोह खुआरी हे ॥१२॥ (1050-19)
सतिगुरि राखे से वडभागे ॥ (414-13)
सतिगुरि संगि दिखाइआ जाहरि ॥ (965-4)
सतिगुरि संतु मिलाइआ मसतकि धरि कै हथु ॥ (958-19)
सतिगुरि सचु दिड़ाइआ सदा सचि संजमि रहणा ॥ (70-1)
सतिगुरि सचु द्रिड़ाइआ इसु धन की कीमति कही न जाइ ॥ (1092-3)
सतिगुरि सचु द्रिड़ाइआ सचि रहहु लिव लाइ ॥ (84-10)
सतिगुरि सबदु सुणाइआ बिनु सचे अवरु न कोई ॥७॥ (70-3)

सतिगुरि सबदु सुणाइआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥७॥ (65-8)
सतिगुरि साचा दरसु दिखाइआ ॥८॥३॥ (1189-2)
सतिगुरि सुखु वेखालिआ सचा सबदु बीचारि ॥ (853-12)
सतिगुरि सेविऐ दूजी दुरमति जाई ॥ (833-2)
सतिगुरि सेविऐ नामु मनि वसै विचहु भ्रमु भउ भागै ॥ (590-10)
सतिगुरि सेविऐ मनु निरमला भए पवितु सरीर ॥ (69-11)
सतिगुरि सेविऐ रिदै समाणी ॥ (119-3)
सतिगुरि सेविऐ सदा सुखु जनम मरण दुखु जाइ ॥ (587-4)
सतिगुरि सेविऐ सहज अनंदा ॥ (1063-1)
सतिगुरि सेविऐ सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ (647-12)
सतिगुरि सेविऐ हरि मनि वसै तिथै भउ कदे न होइ ॥ (586-1)
सतिगुरि हरि प्रभु बुझिआ गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ (39-18)
सतिगुरु अंदरहु निरवैरु है सभु देखै ब्रहमु इकु सोइ ॥ (302-3)
सतिगुरु अगमु अगमु है ठाकुरु भरि सागर भगति करीजै ॥ (1323-13)
सतिगुरु अपणा मनाइ लै रूपु चड़ी ता अगला दूजा नाही थाउ ॥ (785-14)
सतिगुरु अपणा सद ही सेवहि हउमै विचहु जाई हे ॥१२॥ (1044-12)
सतिगुरु अपणा सेवि सभ फल पाइआ ॥ (517-1)
सतिगुरु अपणै घरि वरतदा आपे लए मिलाइ ॥ (649-11)
सतिगुरु अपना पुछि देखु लेहु वखरु भालि ॥१॥ रहाउ ॥ (994-12)
सतिगुरु अपना सद सदा मनावहु ॥१॥ रहाउ ॥ (386-12)
सतिगुरु अपना सद सदा सम्हारे ॥ (387-12)
सतिगुरु अम्रित बिरखु है अम्रित रसि फलिआ ॥ (1245-8)
सतिगुरु अलखु कहहु किउ लखीऐ जिसु बखसे तिसहि पछाता हे ॥१४॥ (1032-3)
सतिगुरु आइ मिलिआ वडभागे ॥ (1045-13)
सतिगुरु आखि सुणाए सूरा ॥ (1046-4)
सतिगुरु आखै कार सु कार कमाईऐ ॥ (145-7)
सतिगुरु आखै सचा करे सा बात होवै दरहाली ॥ (967-6)
सतिगुरु आखै सु कार कमावनि सु जपु कमावहि गुरसिखां की घाल सचा थाइ पावै ॥ (317-13)
सतिगुरु आपे मेलि मिलाए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥५॥ (123-19)
सतिगुरु करे मेरी प्रतिपाला ॥ (1133-2)
सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ ॥ (923-5)
सतिगुरु खोटिअहु खरे करे सबदि सवारणहारु ॥ (143-16)
सतिगुरु गहिर गभीरु है सुख सागरु अघखंडु ॥ (50-1)
सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभि किलविख पाप गवाइआ ॥ (773-18)
सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥१॥ (1401-16)
सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥२॥ (1402-1)
सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥३॥ (1402-4)

सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥४॥ (1402-8)
सतिगुरु छोडि दूजै लगे किआ करनि अगै जाइ ॥ (994-19)
सतिगुरु जागता है देउ ॥१॥ रहाउ ॥ (479-6)
सतिगुरु जारि गइओ भ्रमु मोरा ॥२॥ (855-14)
सतिगुरु जिना न सेविओ सबदि न लगो पिआरु ॥ (512-18)
सतिगुरु जिना मिलाइओनु पिआरे साचा नामु समालि ॥६॥ (641-10)
सतिगुरु जिनी धिआइआ तिन जम डरु नाही ॥ (88-19)
सतिगुरु जिनी धिआइआ से कड़ि न सवाही ॥ (88-18)
सतिगुरु जिनी धिआइआ से त्रिपति अघाही ॥ (88-19)
सतिगुरु जिनी न सेविआ दाता से अंति गए पछुताहि ॥३॥ (1132-7)
सतिगुरु जिनी न सेविओ तिना बिरथा जनमु गवाइ ॥ (88-1)
सतिगुरु जिनी न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥ (88-9)
सतिगुरु जिनी न सेविओ से कितु आए संसारि ॥ (69-18)
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ (917-2)
सतिगुरु तुठड़ा दसे हरि पाई जीउ ॥ (175-13)
सतिगुरु तुठा खोलि देइ मुखि गुरमुखि हरि परगासि ॥ (996-15)
सतिगुरु तुठा सचु द्रिड़ाए ॥ (1029-12)
सतिगुरु तुम सेवि सखी मनि चिंदिअड़ा फलु पावहु ॥ (927-9)
सतिगुरु तुम्ह कउ होइ दइआला संतसंगि तेरी प्रीति ॥ (496-5)
सतिगुरु दइआ करे प्रभु मेले मै तिसु आगै सिरु कटि कटि पईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (836-15)
सतिगुरु दाता आखीऐ तुसि करे पसाओ ॥ (726-7)
सतिगुरु दाता जीअ का सभसै देइ अधारु ॥ (52-10)
सतिगुरु दाता जीअ जीअन को भागहीन नही भावैगो ॥ (1310-1)
सतिगुरु दाता तिनै पछाता जिस नो क्रिपा तुमारी ॥२३॥ (911-13)
सतिगुरु दाता दइआलु है जिस नो दइआ सदा होइ ॥ (302-3)
सतिगुरु दाता नदरि न आवै ना उरवारि न पारे ॥४॥ (1199-7)
सतिगुरु दाता नाम का पूरा जिसु भंडारु ॥ (49-10)
सतिगुरु दाता मिलै मिलाइआ ॥ (115-9)
सतिगुरु दाता मुकति कराए ॥ (1028-1)
सतिगुरु दाता मेलि मिलावहु हरि नामु देवहु आधारे ॥ रहाउ ॥ (603-18)
सतिगुरु दाता राम नाम का होरु दाता कोई नाही ॥ (1258-19)
सतिगुरु दाता सबदु सुणाए ॥ (232-5)
सतिगुरु दाता सभना वथू का पूरै भागि मिलावणिआ ॥२॥ (116-7)
सतिगुरु दाता सेवीऐ सबदु वसै मनि आइ ॥ (588-6)
सतिगुरु दाता हरि नाम का प्रभु आपि मिलावै सोइ ॥ (39-18)
सतिगुरु देउ परतखि हरि मूरति जो अम्रित बचन सुणावै ॥ (1264-5)
सतिगुरु देखि मेरा मनु बिगसिओ जनु हरि भेटिओ बनवारी ॥१॥ रहाउ ॥ (1262-19)

सतिगुरु देखिआ दीखिआ लीनी ॥ (227-16)
सतिगुरु धरती धरम है तिसु विचि जेहा को बीजे तेहा फलु पाए ॥ (302-18)
सतिगुरु न सेवहि माइआ लागे डूबि मूए अहंकारी ॥२४॥ (911-14)
सतिगुरु न सेवहि मूरख अंध गवारा ॥ (115-15)
सतिगुरु न सेवे सो काहे आइआ ॥ (129-15)
सतिगुरु निरवैरु पुत्र सत्र समाने अउगण कटे करे सुधु देहा ॥ (960-19)
सतिगुरु परचै मनि मुंद्रा पाई गुर का सबदु तनि भसम द्रिड़ईआ ॥ (835-6)
सतिगुरु परमेसरु मेरा ॥ (884-2)
सतिगुरु पाइआ पूरै वडभागी ॥६॥ (232-16)
सतिगुरु पिआरा न लगई मनहठि आवै जाइ ॥ (1246-9)
सतिगुरु पुरखु अगमु है जिसु अंदरि हरि उरि धारिआ ॥ (312-12)
सतिगुरु पुरखु अचलु अचला मति जिसु द्रिड़ता नामु अधारे ॥ (1199-5)
सतिगुरु पुरखु अम्रित सरु वडभागी नावहि आइ ॥ (40-10)
सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ ॥ (924-1)
सतिगुरु पुरखु दइआल प्रभु हरि मेले ढिल न पाइ ॥२॥ (996-5)
सतिगुरु पुरखु दइआलु है जिस नो समतु सभु कोइ ॥ (300-16)
सतिगुरु पुरखु दाता वड दाणा ॥ (1030-8)
सतिगुरु पुरखु धिआइ तू सभि दुख विसारणहारु ॥ (959-17)
सतिगुरु पुरखु न भेटिओ जि सची बूझ बुझाइ ॥१॥ (430-3)
सतिगुरु पुरखु निरवैरु है आपे लए जिसु लाइ ॥ (314-13)
सतिगुरु पुरखु पाइआ वडभागु ॥२॥ (366-13)
सतिगुरु पुरखु मनावहु अपुना हरि अम्रितु पी झोलीऐ ॥ (527-13)
सतिगुरु पुरखु मिलाइ अवगण विकणा गुण रवा बलि राम जीउ ॥ (773-2)
सतिगुरु पुरखु मिलिआ प्रभु प्रगटिआ गुण गावै गुण वीचारी ॥२॥ (607-5)
सतिगुरु पुरखु मिलै नाउ पाईऐ हरि नामे सदा समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1258-11)
सतिगुरु पूछि सहज घरु पावै ॥३॥ (1342-6)
सतिगुरु पूजउ सदा सदा मनावउ ॥ (1158-17)
सतिगुरु पूरा जे मिलै पाईऐ रतनु बीचारु ॥ (59-6)
सतिगुरु पूरा जे मिलै पिआरे सो जनु होत निहाला ॥ (802-9)
सतिगुरु पूरा भइआ क्रिपालु ॥ (200-19)
सतिगुरु पूरा भेटिआ जिनि बणत बणाई ॥ (819-17)
सतिगुरु पूरा भेटीऐ भाई सबदि मिलावणहार ॥२॥ (639-17)
सतिगुरु पूरा मिलै मिलाइ ॥३॥ (686-8)
सतिगुरु पूरा मेरै नालि ॥ (618-19)
सतिगुरु पूरा सबदु सुणाए ॥ (1055-7)
सतिगुरु पूरा साचु द्रिड़ाए ॥ (1055-17)
सतिगुरु प्रमाणु बिध नै सिरिउ जगि जस तूरु बजाइअउ ॥ (1397-9)

सतिगुरु बिरही नाम का जे मिलै त तनु मनु देउ ॥ (758-16)
सतिगुरु बोहिथु आदि जुगादी राम नामि निसतारा हे ॥८॥ (1029-9)
सतिगुरु बोहिथु देइ प्रभु साचा जपि हरि हरि पारि लंघावै जीउ ॥४॥ (998-4)
सतिगुरु बोहिथु पावै पारि ॥१॥ रहाउ ॥ (801-8)
सतिगुरु बोहिथु बेड़ु सचा रखसी ॥ (1290-18)
सतिगुरु बोहिथु हरि नाव है कितु बिधि चड़िआ जाइ ॥ (40-18)
सतिगुरु भेटि भइआ मनु निरमलु जपि अम्रितु हरि रसना ॥२॥ (383-16)
सतिगुरु भेटि हरि जसु मुखि भणीऐ ॥ (1075-4)
सतिगुरु भेटिऐ निरमलु होआ अनदिनु नामु वखाणै ॥ (67-15)
सतिगुरु भेटिओ सदा क्रिपाल ॥ (200-2)
सतिगुरु भेटे ता उतरै पीर ॥ (361-16)
सतिगुरु भेटे ता एको पाए ॥ (842-9)
सतिगुरु भेटे ता नाउ पाए हउमै मोहु चुकाइआ ॥३॥ (600-1)
सतिगुरु भेटे ता पारसु होवै पारसु होइ त पूज कराए ॥ (491-9)
सतिगुरु भेटे ता सुखु पाए ॥ (665-6)
सतिगुरु भेटे पूरै भागि ॥ (665-17)
सतिगुरु भेटे सो सुखु पाए ॥ (468-1)
सतिगुरु भेटै जमु न तेटै जिसु धुरि होवै संजोगु ॥२॥ (1341-9)
सतिगुरु भेटै ता फलु पाए सचु करणी सुख सारु ॥ (1131-1)
सतिगुरु भेटै ता मुकति पाईऐ हरि हरि रसना पीजै हे ॥११॥ (1049-17)
सतिगुरु भेटै ता सहसा तूटै धावतु वरजि रहाईऐ ॥ (730-15)
सतिगुरु भेटै मति बुधि होए ॥१॥ (1176-11)
सतिगुरु भेटै मेलि मिलाए ॥ (904-1)
सतिगुरु भेटै मोख दुआर ॥ (944-6)
सतिगुरु भेटै सोझी पाइ ॥ (1342-7)
सतिगुरु भै का बोहिथा नदरी पारि उतारु ॥४॥ (59-12)
सतिगुरु मन कामना तीरथु है जिस नो देइ बुझाइ ॥ (26-4)
सतिगुरु मनि वसिआ लिव लाई ॥ (1070-6)
सतिगुरु महा पुरखु है पारसु जो लागै सो फलु पावैगो ॥ (1311-8)
सतिगुरु मित्रु मेरा बाल सखाई ॥ (94-8)
सतिगुरु मिलिआ जाणीऐ ॥ (72-11)
सतिगुरु मिलिआ ता हरि पाइआ बिनु हरि नावै मुकति न होई ॥ (770-2)
सतिगुरु मिलिआ दइआलु गुण अबिनासी गाइआ बलि राम जीउ ॥ (778-8)
सतिगुरु मिलिऐ कंचनु होईऐ जां हरि की होइ रजाइ ॥१॥ (1276-2)
सतिगुरु मिलै अंधेरा चूकै इन बिधि माणकु लहीऐ ॥३॥ (334-7)
सतिगुरु मिलै अंधेरा जाइ ॥ (939-15)
सतिगुरु मिलै त इहु धनु पाए ॥५॥८॥ (991-16)

सतिगुरु मिलै त उलटी होवै खोजि लहै जनु कोइ ॥२॥ (1132-17)
सतिगुरु मिलै त खोजीऐ मिलि जोती जोति समानी ॥१॥ (1178-4)
सतिगुरु मिलै त गुरमति पाईऐ साकत बाजी हारी जीउ ॥३॥ (598-1)
सतिगुरु मिलै त जाणीऐ जां सबदु वसै मन माहि ॥ (1093-2)
सतिगुरु मिलै त तिस कउ जाणै ॥ (832-10)
सतिगुरु मिलै त दुबिधा भागै ॥ (153-16)
सतिगुरु मिलै त नदरि होइ मनमुख अंध अंधिआर ॥ (312-3)
सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ प्रेम पदारथु पाइदा ॥७॥ (1036-17)
सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ भजु राम नामु नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (1191-10)
सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥२॥ (1318-12)
सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥२॥ (652-10)
सतिगुरु मिलै त मनूआ टेकै ॥ (1029-18)
सतिगुरु मिलै त महलि बुलाए ॥ (1043-4)
सतिगुरु मिलै त सहसा जाई ॥ (525-4)
सतिगुरु मिलै त सूझै रे ॥१॥ रहाउ ॥ (1003-18)
सतिगुरु मिलै त सोझी होइ ॥४॥ (904-16)
सतिगुरु मिलै त सोझी होई ॥ (1027-6)
सतिगुरु मिलै त हउमै तूटै ता को लेखै पाई ॥२॥ (353-15)
सतिगुरु मिलै तां मिलै सुभाइ ॥२॥ (1262-11)
सतिगुरु मिलै ता ततु पाए ॥ (116-19)
सतिगुरु मिलै ता नामु दिड़ाए सभि किलविख कटणहारु ॥ (950-19)
सतिगुरु मिलै ता नामु द्रिड़ाए राम नामै रलै मिलीजै ॥८॥६॥ छका १ ॥ (1326-19)
सतिगुरु मिलै ता निरमल होवै हरि नामो मंनि वसाइ ॥ (588-16)
सतिगुरु मिलै वडभागि संजोग ॥ (162-2)
सतिगुरु मिलै सभु त्रिसन बुझाए ॥ (664-7)
सतिगुरु मिलै सु मरणु दिखाए ॥ (153-14)
सतिगुरु मिलै सुभाइ सहजि गुण गाईऐ जीउ ॥ (690-2)
सतिगुरु मेरा घरि दीबाणु ॥ (1142-6)
सतिगुरु मेरा ताणु निताणु ॥ (1142-6)
सतिगुरु मेरा पुरखु बिधाता ॥१॥ (1142-3)
सतिगुरु मेरा बेमुहताजु ॥ (1142-3)
सतिगुरु मेरा मारि जीवालै ॥ (1142-5)
सतिगुरु मेरा मित्रु प्रभ हरि मेलहु सुघड़ सुजाणी ॥ (997-6)
सतिगुरु मेरा वड समरथा ॥ (98-19)
सतिगुरु मेरा सदा दइआला मोहि दीन कउ राखि लीआ ॥ (383-2)
सतिगुरु मेरा सदा सदा ना आवै ना जाइ ॥ (759-8)
सतिगुरु मेरा सदा सहाई जिनि दुख का काटिआ केतु ॥१॥ रहाउ ॥ (675-3)

सतिगुरु मेरा सदा है दाता जो इछै सो फलु पाए ॥ (1333-16)
सतिगुरु मेरा सभस का दाता ॥ (1142-3)
सतिगुरु मेरा सरब प्रतिपालै ॥ (1142-4)
सतिगुरु मेलि हरि नामि समाणी जपि हरि हरि नामु धिआइआ ॥ (572-18)
सतिगुरु मेले ता मिलि रहा साचु रखा उर धारि ॥ (755-15)
सतिगुरु मेले दे वडिआई ॥ (1064-4)
सतिगुरु मैडा मितु है जे मिलै त इहु मनु वारिआ ॥ (1421-17)
सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥ (473-1)
सतिगुरु विसटु मेलि मेरे गोविंदा हरि मेले करि रैबारी जीउ ॥ (174-7)
सतिगुरु वेपरवाहु सिरंदा ॥ (1024-8)
सतिगुरु संतु मिलै सांति पाईऐ किलविख दुख काटे सभि दूरि ॥ (1198-9)
सतिगुरु सदा दइआलु है अवगुण सबदि जलाए ॥ (583-4)
सतिगुरु सबदु देइ रिद अंतरि मुखि अम्रितु नामु चुआवैगो ॥१॥ (1310-16)
सतिगुरु सभना दा भला मनाइदा तिस दा बुरा किउ होइ ॥ (302-4)
सतिगुरु सरवरु रतनी भरपूरे जिसु प्रापति सो पावै ॥ (960-10)
सतिगुरु सराफु नदरी विचदो कढै तां उघड़ि आइआ लोहा ॥ (960-17)
सतिगुरु सहज समाधि रविओ सामानि निरंतरि ॥ (1392-6)
सतिगुरु सहजै दा खेतु है जिस नो लाए भाउ ॥ (947-2)
सतिगुरु सागरु गुण नाम का मै तिसु देखण का चाउ ॥ (759-1)
सतिगुरु साचा मनि वसै साजनु उत ही ठाइ ॥ (1087-15)
सतिगुरु साजनु पुरखु वड पाइआ हरि रसकि रसकि फल लागिबा ॥ (697-8)
सतिगुरु साहु पाइआ वड दाणा हरि कीए बहु गुण साझा ॥३॥ (697-19)
सतिगुरु साहु भंडारु नाम जिसु इहु रतनु तिसै ते पाइणा ॥४॥ (1078-3)
सतिगुरु साहु सिख वणजारे ॥ (430-18)
सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥ (286-15)
सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥ (286-16)
सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥ (286-14)
सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥ (286-15)
सतिगुरु सिमरहु आपणा घटि अवघटि घट घाट ॥ (961-18)
सतिगुरु सुख सागरु जग अंतरि होर थै सुखु नाही ॥ (603-10)
सतिगुरु सेवनि आपणा अंतरि सबदु अपारा ॥ (569-12)
सतिगुरु सेवनि आपणा गुर सबदी वीचारि ॥ (1415-17)
सतिगुरु सेवनि आपणा तिन्हा विटहु हउ वारिआ ॥५॥ (1280-14)
सतिगुरु सेवनि आपणा ते विरले संसारि ॥ (26-9)
सतिगुरु सेवनि आपणा सचै भाइ पिआरि ॥५॥ (426-15)
सतिगुरु सेवनि आपणा हउ सद बलिहारी तासु ॥ (1416-14)
सतिगुरु सेवनि जागंनि से जो रते सचि नामि गुणतासि ॥ (592-19)

सतिगुरु सेवनि सदा सुखदाता सभ इछा आपि पुजावणिआ ॥५॥ (111-12)
सतिगुरु सेवनि से धनवंते ऐथै ओथै नामि समावणिआ ॥३॥ (112-2)
सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ (1044-9)
सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ (1054-8)
सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ (1246-7)
सतिगुरु सेवनि सो सोहणे हउमै मैलु गवाइ ॥ (233-18)
सतिगुरु सेवहि आपणा भउजलु उतरे पारि ॥ (89-13)
सतिगुरु सेवहि आपु गवाइ ॥ (1262-2)
सतिगुरु सेवहि घर माहि उदासा ॥ (127-7)
सतिगुरु सेवहि ता गति मिति पावहि हरि जीउ मंनि वसाए ॥ (67-17)
सतिगुरु सेवहि ता सुखु पावहि नाहि त जाहिगा जनमु गवाइ ॥ रहाउ ॥ (603-12)
सतिगुरु सेवहि तिन की सची बाणी ॥ (161-19)
सतिगुरु सेवहि परम गति पावहि नामि मिलै वडिआई ॥ (1131-9)
सतिगुरु सेवहि सदा मनि दासा ॥ (161-17)
सतिगुरु सेवहि से जन निरमल पविता ॥ (231-14)
सतिगुरु सेवहि से जन साचे ॥ (1046-16)
सतिगुरु सेवहि से जन साचे ॥ (1055-15)
सतिगुरु सेवहि से जन साचे काटे जम का फाहा हे ॥५॥ (1053-13)
सतिगुरु सेवहि से परधाना ॥ (1032-6)
सतिगुरु सेवहि से परवाणु जिन्ह जोती जोति मिलाई ॥ (1287-8)
सतिगुरु सेवहि से महापुरख संसारे ॥ (161-16)
सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ (1063-3)
सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ (841-18)
सतिगुरु सेवहु आपना काहे फिरहु अभागे ॥ (809-13)
सतिगुरु सेवि अम्रित रसु चाखे ॥३॥ (352-15)
सतिगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस की कीम न पाई ॥ (65-1)
सतिगुरु सेवि जिनि नामु पछाता सफल जनमु जगि आइआ ॥ (602-12)
सतिगुरु सेवि ततु वीचारै ॥३॥ (353-3)
सतिगुरु सेवि तूटै जमकालु ॥ (1275-17)
सतिगुरु सेवि दिनु राति सदेरे ॥ (1073-8)
सतिगुरु सेवि देखहु प्रभु नैनी ॥१॥ रहाउ ॥ (416-14)
सतिगुरु सेवि धन बालड़ीए हरि वरु पावहि सोई राम ॥ (770-4)
सतिगुरु सेवि निसंगु भरमु चुकाईऐ ॥ (145-6)
सतिगुरु सेवि पदारथु पावहि छूटहि सबदु कमाई ॥४॥ (597-9)
सतिगुरु सेवि परम पदु पाइ ॥२॥ (352-8)
सतिगुरु सेवि परम पदु पायउ ॥ (1396-12)
सतिगुरु सेवि पाए निज थाउ ॥१॥ (351-19)

सतिगुरु सेवि सचि चितु लाइआ गुरमती सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (111-18)
सतिगुरु सेवि सदा प्रभु पाइआ आपै आपु मिलाइदा ॥६॥ (1066-8)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु जाता ॥ (1045-6)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥ (118-3)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥६॥ (424-7)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ फिरि दुखु न लागै धाइ ॥ (1132-7)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ हरि राखिआ उर धारी ॥२॥ (599-18)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ हरि वसिआ मंनि मुरारे ॥ (772-4)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥५॥ (1234-7)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ सीलु संतोखु सभु ताहा हे ॥५॥ (1057-17)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु होई ॥ (1343-13)
सतिगुरु सेवि सदा सोहागणि सच उपदेसि समावणिआ ॥४॥ (123-5)
सतिगुरु सेवि सफल हरि दरसनु मिलि अम्रितु हरि रसु पीअहु ॥२॥ (800-2)
सतिगुरु सेवि सभै फल पाई ॥१॥ (375-8)
सतिगुरु सेवि सरब फल पाए ॥ (1138-6)
सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ अति तिसना तजि विकार ॥ (1419-1)
सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ सचु नामु गुणतासु ॥ (85-19)
सतिगुरु सेविऐ जाइ अभिमानु ॥ (233-1)
सतिगुरु सेविऐ परगटु होई ॥ (120-12)
सतिगुरु सेविऐ वडी वडिआई ॥ (114-17)
सतिगुरु सेविऐ सहजु ऊपजै हउमै त्रिसना मारि ॥ (65-6)
सतिगुरु सेविऐ सूतकु जाइ ॥ (229-15)
सतिगुरु सेविऐ हरि मनि वसै लगै न मैलु पतंगु ॥१॥ रहाउ ॥ (69-13)
सतिगुरु सेविऐ होवै परवानु ॥ (424-2)
सतिगुरु सेविहु हउमै मलु जाई ॥ (852-3)
सतिगुरु सेवी अवरु न दूजा ॥ (1069-7)
सतिगुरु सेवी भाउ करि मै पिरु देहु मिलाइ ॥ (38-9)
सतिगुरु सेवी सबदि सालाही ॥ (1048-6)
सतिगुरु सेवी सबदि सुहाइआ ॥ (115-1)
सतिगुरु सेवीऐ आपणा पाईऐ नामु अपारु ॥ (313-3)
सतिगुरु सेवे आपणा आइआ तिसु गणी ॥ (1283-8)
सतिगुरु सेवे आपणा सो सिरु लेखै लाइ ॥ (88-1)
सतिगुरु सेवे आपु गवाए ॥ (1044-5)
सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥ (842-14)
सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥३॥ (412-6)
सतिगुरु सेवे खुल्हे कपाट ॥ (1139-14)
सतिगुरु सेवे चूकै जंजाला ॥ (222-18)

सतिगुरु सेवे ता नामु लहै ॥ (1262-8)
सतिगुरु सेवे ता फलु पाए ॥ (842-15)
सतिगुरु सेवे ता मलु जाए ॥ (116-9)
सतिगुरु सेवे ता मुकतु होवै पंच दूत वसि आइआ ॥७॥ (1068-11)
सतिगुरु सेवे ता सभ किछु पाए ॥ (116-6)
सतिगुरु सेवे ता सुखु पाए भाई आवणु जाणु रहाई ॥३॥ (635-13)
सतिगुरु सेवे तिलु न तमाइ ॥ (361-6)
सतिगुरु सेवे तिसु मिलै वडिआई दरि सचै सोभा पाइदा ॥१४॥ (1063-14)
सतिगुरु सेवे भरमु चुकाए ॥ (1343-2)
सतिगुरु सेवे भरमु चुकाए ॥ (843-1)
सतिगुरु सेवे भाउ करे जीउ विचहु आपु गवाए ॥ (243-18)
सतिगुरु सेवे सदा मनु निहचलु निज घरि वासा पावणिआ ॥३॥ (120-1)
सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए सतिगुरि अलखु दिता लखाई ॥३॥ (754-10)
सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए हउमै सबदि समाणी ॥ (602-8)
सतिगुरु सेवे सु लाला होइ ॥ (363-5)
सतिगुरु सेवे सो जोगी होइ ॥ (223-19)
सतिगुरु सेवे सो वडभागी जिस नो आपि मिलाए ॥ (603-14)
सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिन हउमै विचहु मारी ॥ (1246-16)
सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिस नो किरपा करे रजाई ॥२०॥ (1287-10)
सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए नाउ वसै मनि आई ॥ (1414-18)
सतिगुरु सेवे सोई बूझै पाए मोख दुआरा ॥५॥ (1234-17)
सतिगुरु सेवै परवार साधारु ॥ (361-3)
सतिगुरु सेवै सो जनु बूझै ॥ (842-7)
सतिगुरु सेवै सो जनु लेखै ॥ (129-4)
सतिगुरु सेवै सो जनु सोहै ॥ (119-11)
सतिगुरु सेवै सोझी होइ ॥ (362-6)
सतिगुरु हरि हरि नामु द्रिड़ावै ॥ (1263-19)
सतिगुरु है अम्रित सरु साचा मनु नावै मैलु चुकावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (113-15)
सतिगुरु है गिआनु सतिगुरु है पूजा ॥ (1069-7)
सतिगुरु होइ दइआलु त नामु धिआईऐ ॥ (145-7)
सतिगुरु होइ दइआलु त सचि समाईऐ ॥२५॥ (149-14)
सतिगुरु होइ दइआलु त सरधा पूरीऐ ॥ (149-11)
सतिगुरु होइ दइआलु ता जम का डरु केहा ॥ (149-12)
सतिगुरु होइ दइआलु ता दुखु न जाणीऐ ॥ (149-11)
सतिगुरु होइ दइआलु ता नव निधि पाईऐ ॥ (149-13)
सतिगुरु होइ दइआलु ता सद ही सुखु देहा ॥ (149-13)
सतिगुरु होइ दइआलु ता हरि रंगु माणीऐ ॥ (149-12)

सतिगुरु होइ दइआलु न कबहूं झूरीऐ ॥ (149-11)
सतिगुरू कल सतिगुर तिलकु सति लागै सो पै तरै ॥ (1391-18)
सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले ॥ (918-11)
सतिगुरू का खड़गु संजोउ हरि भगति है जितु कालु कंटकु मारि विडारिआ ॥ (312-13)
सतिगुरू का रखणहारा हरि आपि है सतिगुरू कै पिछै हरि सभि उबारिआ ॥ (312-14)
सतिगुरू की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ ॥ (923-7)
सतिगुरू के चरन धोइ धोइ पूजहु इन बिधि मेरा हरि प्रभु लहु रे ॥ रहाउ ॥ (1118-11)
सतिगुरू चरन जिन्ह परसिआ से पसु परेत सुरि नर भइअ ॥२॥६॥ (1399-12)
सतिगुरू धंनु नानकु मसतकि तुम धरिओ जिनि हथो ॥ (1391-2)
सतिगुरू न सेविओ मूरख अंध गवारि ॥ (594-13)
सतिगुरू न सेविओ सबदु न रखिओ उर धारि ॥ (1414-3)
सतिगुरू नो अपड़ि कोइ न सकई जिसु वलि सिरजणहारिआ ॥ (312-13)
सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥ (468-12)
सतिगुरू नो मिले सेई जन उबरे जिन हिरदै नामु समारिआ ॥ (312-2)
सतिगुरू परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइआ ॥ (923-14)
सतिगुरू फुरमाइआ कारी एह करेहु ॥ (554-7)
सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ (920-7)
सतिगुरू मिलावहि करहि सार ॥ (1169-16)
सतिगुरू सतिगुरू सतिगुरु गुबिंद जीउ ॥ (1403-3)
सतिगुरू सदा दइआलु है भाई विणु भागा किआ पाईऐ ॥ (602-5)
सतिगुरू सेवि सुखु पाइओ अमरि गुरि कीतउ जोगु ॥७॥ (1393-17)
सतिगुरू सेवे सो फलु पाए ॥ (231-15)
सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥ (470-11)
सतिगुरू है बोहिथा सबदि लंघावणहारु ॥ (1009-13)
सतिवंतु हरि नामु मंत्रु नव निधि न निखुटै ॥ (1407-18)
सती पहरी सतु भला बहीऐ पड़िआ पासि ॥ (146-12)
सती पापु करि सतु कमाहि ॥ (951-13)
सती रंनी घरे सिआपा रोवनि कूड़ी कमी ॥ (1412-13)
सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥ (787-8)
सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥ (466-1)
सतु बंधि कुपीन भरिपुरि लीणा जिहवा रंगि रसीणा ॥३॥ (907-8)
सतु भाई करि एहु विसेखु ॥१॥ (151-14)
सतु संतोखु इह संजमी मनु निरमलु सबदु सुणाए ॥६॥ (427-16)
सतु संतोखु करि भाउ कुड़मु कुड़माई आइआ बलि राम जीउ ॥ (773-5)
सतु संतोखु करि भाउ तोसा हरि नामु सेइ ॥ (422-4)
सतु संतोखु गिआन ॥ (893-17)
सतु संतोखु गिआनु धिआनु पिआरे जिस नो नदरि करे ॥ (641-10)

सतु संतोखु दइआ कमावै एह करणी सार ॥ (51-10)
सतु संतोखु दइआ धरमु सचु इह अपुनै ग्रिह भीतरि वारे ॥१॥ (379-3)
सतु संतोखु दइआ धरमु सीगारु बनावउ ॥ (812-5)
सतु संतोखु दइआ धरमु सुचि संतन ते इहु मंतु लई ॥ (822-9)
सतु संतोखु दीआ गुरि पूरै नामु अम्रितु पी पानां हे ॥७॥ (1075-8)
सतु संतोखु धरमु आनि राखे हरि नगरी हरि गुन गावैगो ॥३॥ (1310-19)
सतु संतोखु नगर महि कारी ॥ (1037-9)
सतु संतोखु पतु करि झोली जोगी अम्रित नामु भुगति पाई ॥ (908-13)
सतु संतोखु लै लरने लागा तोरे दुइ दरवाजा ॥ (1161-19)
सतु संतोखु वजहि दुइ ताल ॥ (350-10)
सतु संतोखु वजहि वाजे अनहदा झुणकारे ॥ (778-9)
सतु संतोखु संजमु है नालि ॥ (939-9)
सतु संतोखु सदा सचु पलै सचु बोलै पिर भाए ॥ (764-3)
सतु संतोखु सभु सचु है गुरमुखि पविता ॥ (512-2)
सतु संतोखु समाचरे अभरा सरु भरिआ ॥ (1398-9)
सतु संतोखु होवै अरदासि ॥ (878-13)
सतु सीगारु भउ अंजनु पाइआ ॥ (737-11)
सत्रु दहन हरि नाम कहन अवर कछु न उपाउ ॥ (502-16)
सद कुरबाणै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (660-6)
सद खुसीआ सदा रंग माणे ॥ (372-12)
सद जीअ संगि रखवाला ॥ (623-18)
सद जीवणु अरजुनु अमोलु आजोनी स्मभउ ॥ (1407-11)
सद जीवनु भलो कहांही ॥ (655-13)
सद धिआनी जिसु गुरहि रंगु ॥२॥ (1180-16)
सद नवतन मन रंगी सोभा ॥१॥ रहाउ ॥ (1322-1)
सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी ॥ (713-18)
सद बलिहारि जाईऐ कुरबाना ॥ (105-4)
सद बलिहारि जाउ प्रभ अपुने जिनि पूरन पैज सवारी ॥३॥ (615-15)
सद बलिहारि जाउ लख बेरा ॥ (887-2)
सद बलिहारी गुर अपुने विटहु जि हरि सेती चितु लाए ॥७॥ (68-1)
सद बलिहारी गुर अपुने विटहु जितु आतम रामु पछानै ॥३॥ (1334-9)
सद बलिहारी तिना जि सुनते हरि कथा ॥ (709-4)
सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥ (287-10)
सद बलिहारे करि नमसकारे जिन भेटत प्रभु जाता ॥ (453-11)
सद बसंत गुर मिले देव ॥३॥ (1180-5)
सद बैरागनि हरि नामु निहाली ॥ (796-9)
सद बैरागी ततु परोता ॥ (904-6)

सद रंगि सहजि कलु उचरै जसु ज्मपउ लहणे रसन ॥७॥ (1392-7)
सद सदा बलि जाइ नानकु सरब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥२॥ (926-17)
सद सदा सिम्रतब्य सुआमी सासि सासि गुण बोलई ॥ (691-13)
सद सुणदा सद वेखदा सबदि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (429-2)
सद हजूरि हाजरु है नाजरु कतहि न भइओ दूराई ॥२॥ (1000-10)
सद ही नामु वेखहि हजूरि ॥ (1277-18)
सद ही निकटि जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होइ रहीऐ ॥ (713-2)
सद ही निबहै तेरै नालि ॥१॥ रहाउ ॥ (1129-4)
सद ही निरमलु सहजि समावै ॥६॥ (231-5)
सद ही नेड़ै दूरि न जाणहु ॥ (1069-1)
सद ही भोगु लगाइ सुगिआनी ॥ (393-7)
सद ही लागा सहजि धिआन ॥ (798-14)
सद ही सचु कहै दिनु राती अवरा सचु कहाइदा ॥५॥ (1058-18)
सद ही साचु वसिआ घट अंतरि गुरमुखि करणी सारी हे ॥१॥ (1050-6)
सद ही सेजै रवै भतारु ॥४॥२७॥ (357-8)
सदड़े आए तिना जानीआ हुकमि सचे करतारो ॥ (580-13)
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥ (12-16)
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥२०॥ (157-13)
सदा अकल लिव रहै करन सिउ इछा चारह ॥ (1392-1)
सदा अखुटु कदे न निखुटै हरि दीआ सहजि सुभाइआ ॥ (769-4)
सदा अनंद अनंदी साहिबु गुन निधान नित नित जापीऐ ॥ (395-9)
सदा अनंद करह मेरे पिआरे हरि गोविदु गुरि राखिआ ॥ (620-7)
सदा अनंदि गावहि गुण साचे अरधि उरधि उरि धारि ॥ (551-10)
सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥१॥ (122-19)
सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पा छारु ॥१॥ (466-5)
सदा अनंदि रहहि भगति करहि दिनु राती सुणि गोबिद गुण गावणिआ ॥२॥ (121-17)
सदा अनंदि रहै दिन राती अनदिनु रहै लिव लाई ॥ (245-15)
सदा अनंदि रहै दिन राती पूरे गुर कै सबदि समाणे ॥१॥ रहाउ ॥ (732-18)
सदा अनंदि रहै दिनु राती एक सबदि लिव लाई ॥ (1265-9)
सदा अनंदि रहै दिनु राती गुरमुखि सबदु करावणिआ ॥५॥ (125-5)
सदा अनंदि रहै दिनु राती जन नानक अनदिनु हरि गुण गावै ॥१॥ (305-16)
सदा अनंदि रहै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥३॥ (31-6)
सदा अनंदि रहै दिनु राती विचहु हंउमै जाए ॥ (585-2)
सदा अनंदि रहै दिनु राती सहजे नामि समाइ जीउ ॥ (448-7)
सदा अनंदि रहै सुखदाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥२॥ (126-6)
सदा अनंदु करे आनंदी जिसु सिरपाउ पइआ गलि खासा हे ॥१३॥ (1073-11)
सदा अनंदु गुरु पूरा पाइआ तउ उतरी सगल बिओगनी ॥१॥ (883-9)

सदा अनंदु जा हरि गुण गामु ॥२॥ (186-6)
सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥ (275-5)
सदा अनंदु न होवी सोगु ॥ (893-4)
सदा अनंदु नाही किछु सोगु ॥ (1149-16)
सदा अनंदु निहचलु सचु थाना ॥ (237-14)
सदा अनंदु राम रसि राते ॥ (1131-11)
सदा अनंदु सचे गुण गावहि सचु बाणी बोलाइदा ॥८॥ (1061-5)
सदा अनंदु हरि नामि लिव लाई ॥६॥ (233-8)
सदा अनंदु होवै दिनु राती जो इछै सोई फलु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (363-14)
सदा अनंदु होवै दिनु राती हरि कीरति करि बनवारी ॥ रहाउ ॥ (669-7)
सदा अनदु नानक गुण गाए ॥३॥३०॥३६॥ (744-12)
सदा अभगु दीबाणु है हउ तिसु नमसकारदा ॥४॥ (519-2)
सदा अलगु रहै निरबाणु ॥ (1261-9)
सदा अलिपतु जीआ का दाता को विरला आपु पछाणै जीउ ॥२॥ (106-16)
सदा अलिपतु जोग अरु जुगते ॥ (181-10)
सदा अलिपतु रहै गुर सबदी साचे सिउ चितु लाइदा ॥३॥ (1061-18)
सदा अलिपतु साचै रंगि राता गुर कै सहजि सुभाए ॥ (753-14)
सदा उर धारे नेहु नालि पिआरे सतिगुर ते पिरु दिसै ॥ (584-7)
सदा कलिआण फिरि दूखु न होइ ॥३॥ (196-16)
सदा कारजु सचि नामि सुहेला बिनु सबदै कारजु केहा हे ॥७॥ (1058-1)
सदा कीरति करि नानक हरि की उबरे सतिगुर चरण ओटाहा ॥४॥१॥१२३॥ (402-5)
सदा कुचील रहहि दिनु राती मथै टिके नाही ॥ (149-18)
सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ (917-10)
सदा गुणदाता मंनि वसाइआ ॥३॥ (361-10)
सदा चाइ हरि भाइ प्रेम रसु आपे जाणइ ॥ (1397-5)
सदा चिंत चितवदा रहै सहसा कदे न जाइ ॥ (1092-6)
सदा चेरे गोविंद गोसाई ॥ (386-4)
सदा जन निरमल मैलु न लागै सचि नामि चितु लाई ॥२॥ (1333-2)
सदा जपे नानकु गुणतासु ॥४॥९॥ (1340-10)
सदा जागहि घरु अपणा राखहि पंच तसकर काढहि मारि ॥१॥ (1346-16)
सदा तेरी सरणाई जीउ ॥१॥ (217-11)
सदा त्रिपति पवित्रु है पावनु जितु घटि हरि नामु निवासी हे ॥५॥ (1048-9)
सदा दइआ करहु अपणी तामि नामु वखाणा ॥१॥ (566-13)
सदा धनु अंतरि नामु समाले ॥ (664-8)
सदा धरमु जा कै दीबाणि ॥ (987-14)
सदा नामु वखाणै अउरु न कोइ ॥६॥ (1188-7)
सदा नामु समाले सतिगुरु है नाले सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ ॥ (584-3)

सदा निकटि करि तिस नो जाणु ॥ (177-2)
सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥ (275-2)
सदा निबहै चलै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ (560-1)
सदा निरमल मैलु न लगई नदरि कीती करतारि ॥ (585-13)
सदा निरमल है जो सचि राते सचु वसिआ मनि सोई ॥२॥ (1133-13)
सदा निरवैरु निरंकारु निरभउ जपै प्रेम गुर सबद रसि करत द्रिड़ु भगति हरि ॥ (1400-18)
सदा निहचलु रवि रहिआ सो पुरखु सुजाणु ॥ (789-6)
सदा निहारहि एको नेत्रे ॥ (276-15)
सदा पिर कै संगि रहहि विचहु आपु गवाइ ॥५॥ (428-15)
सदा पिरु निहचलु पाईऐ ना ओहु मरै न जाइ ॥ (66-17)
सदा पिरु रावहि आपणा तिना सुखे सुखि विहाइ ॥२॥ (38-3)
सदा पिरु रावहि आपणा विचहु आपु गवाइ ॥१॥ (559-7)
सदा प्रीतमु प्रभु होइ सखाई ॥१॥ (363-1)
सदा बसंतु गुर सबदु वीचारे ॥ (1176-13)
सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥ (278-4)
सदा बिगासै परमल रूप ॥ (352-5)
सदा बिलावलु अनंदु है जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ (849-15)
सदा बुलाईऐ महलि न आवै किउ करि दरगह सीझै ॥ (314-6)
सदा भगत तेरी सरणाई ॥ (1054-5)
सदा भूखी पिरु जानै दूरि ॥१॥ (394-14)
सदा मीठा कदे न फीका गुर सबदी वीचारु ॥२॥ (1333-14)
सदा मुकतु आपे है सचा आपे अलखु लखावणिआ ॥४॥ (125-16)
सदा मुकतु ता के पूरे काम ॥ (891-1)
सदा मुकतु बंधि न सकै कोइ ॥ (1188-7)
सदा मुकतु रहै इक रंगी नाही किसै नालि काहा हे ॥३॥ (1054-11)
सदा मुकतु हरि मंनि वसाए सहजे सहजि समावणिआ ॥३॥ (123-16)
सदा रंगि राती सहजे माती अनदिनु नामु वखाणै ॥ (568-5)
सदा रंगि राते तेरै चाए ॥ (798-5)
सदा रंगि राते सच सिउ अपुनी किरपा करे मिलाइ ॥७॥ (69-9)
सदा रंगि राते सचि समाहि ॥३॥ (1175-14)
सदा रंगि राते हरि गुण गावहि ॥ (1057-4)
सदा रंगीला लालु पिआरा एहु महिंजा आसरा ॥१॥ रहाउ ॥ (761-8)
सदा रवहि पिरु आपणा सचै नामि सुखु पाइआ ॥२॥ (429-3)
सदा रवै पिरु आपणा सोभावंती नारि ॥ (950-4)
सदा रहहु हरि की सरणाई ॥२॥ (1261-7)
सदा रहै कर जोड़ि प्रभु मनि भाइआ जीउ ॥ (690-15)
सदा रहै निहकामु जे गुरमति पाईऐ ॥७॥ (752-13)

सदा रहै हरि नामि लिव लाई ॥५॥ (231-14)
सदा रावहि पिरु आपणा सची सेज सुभाइ ॥ (426-13)
सदा रावे पिरु आपणा सचै प्रेमि पिआरि ॥ (90-1)
सदा रिदै जपी प्रभ तेरो नामु ॥३॥ (1181-5)
सदा संगि ता कउ मन जापि ॥ (183-13)
सदा संगि नाही हरि दूरि ॥२॥ (330-17)
सदा संगी हरि रंग गोपाला ॥ (99-7)
सदा सखाई हरि हरि नामु ॥ (1146-15)
सदा सचा सालाहणा सचै सबदि निवासु ॥ (69-16)
सदा सचि रंगि राता मनु मेरा सचे सचि समाइदा ॥३॥ (1058-16)
सदा सचि रता मनु निरमलु आवणु जाणु रहाए ॥ (569-6)
सदा सचु निहचलु आवै न जाइ ॥ (120-18)
सदा सचु वणजहि वापारी नामो लाहा पाइदा ॥१५॥ (1063-15)
सदा सचु सेवहि सहज सुभाए ॥ (119-17)
सदा सचु हरि वेखदे गुर कै सबदि सुभाइ ॥१॥ (1258-3)
सदा सचे का भउ मनि वसै ता सभा सोझी पाइ ॥ (649-10)
सदा सचे के गुण गावां भाई सदा सचे कै संगि रहाउ ॥ (1419-7)
सदा सदा आतम परगासु ॥ (378-16)
सदा सदा आनंदु भेटिओ निरभै गोबिंदु सुख नानक लाधे हरि चरन पराता ॥८॥ (687-10)
सदा सदा आराधीऐ एहा मति विसेख ॥ (49-12)
सदा सदा आराधीऐ दिनु विसरहु नही राति ॥३॥ (47-5)
सदा सदा इकु एकंकार ॥ (276-13)
सदा सदा इहु भूलनहारु ॥ (267-7)
सदा सदा एको हरि जापि ॥४॥१३॥१५॥ (866-19)
सदा सदा करि चाकरी प्रभु साहिबु सचा सोइ ॥२॥ (44-15)
सदा सदा गुण उचरै दुखु दालदु गइआ बिलाइ ॥ (321-17)
सदा सदा गुण गाईअहि जपि नामु मुरारी ॥ (399-15)
सदा सदा जपि नानक एक ॥१॥ (723-19)
सदा सदा जपी तेरा नामु सतिगुर पाइ पै ॥ (961-6)
सदा सदा जपीऐ प्रभ नाम ॥ (824-3)
सदा सदा जपीऐ सो प्रीतमु वडी जिसु वडिआई हे ॥३॥ (1071-14)
सदा सदा जपीऐ हरि नाम ॥ (743-6)
सदा सदा जाईं बलिहार ॥ (868-11)
सदा सदा जाई बलिहारा ॥ (106-3)
सदा सदा जाई बलिहारी ॥ (1077-9)
सदा सदा जाई बलिहारी ॥ (563-2)
सदा सदा जाईऐ कुरबान ॥२॥ (1271-4)

सदा सदा जाईऐ कुरबानु ॥२॥ (900-16)
सदा सदा जानहु ते सुखी ॥ (281-10)
सदा सदा ता कउ जोहारु ॥ (1144-15)
सदा सदा ता के गुण गाउ ॥ (1148-7)
सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥ (280-17)
सदा सदा तिसु गुर कउ करी नमसकारु ॥७॥ (240-2)
सदा सदा तुम ही पति राखहु अंतरजामी जान ॥१॥ (1216-19)
सदा सदा तूं एकु है तुधु दूजा खेलु रचाइआ ॥ (139-5)
सदा सदा तूंहै सुखदाई ॥ (106-5)
सदा सदा तेरे गुण गावा ॥ (1054-7)
सदा सदा दिनु रैणि इको इकु धिआइ ॥ (522-2)
सदा सदा नानक बलिहारी बाछउ संता धूरी ॥४॥१३॥६३॥ (625-8)
सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥ (279-3)
सदा सदा नानक हरि जापै ॥४॥११॥१७॥ (740-15)
सदा सदा नामु उचरै हरि नामो नित बिउहारु ॥ (589-12)
सदा सदा प्रभ कउ बलिहारै नानक सद कुरबाणा ॥१॥ (780-6)
सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥ (289-11)
सदा सदा प्रभु गुण निधि गाईऐ ॥ (1339-14)
सदा सदा प्रभु जीअ कै संगि ॥ (1339-12)
सदा सदा प्रभु सिमरीऐ अंतरि रखु उर धारि ॥१॥ (47-9)
सदा सदा प्रभु सिमरीऐ भाई दुख किलबिख काटणहारु ॥१॥ रहाउ ॥ (620-10)
सदा सदा फिरहि अभिमानी सगल कुट्मब डुबावहि ॥३॥ (476-5)
सदा सदा बसै हरि संगि ॥ (282-6)
सदा सदा मन तिस नो जापि ॥ (1271-5)
सदा सदा मन नामु सम्हालि ॥ (1271-2)
सदा सदा वडिआईआ नानक गुर पासि ॥२॥१२॥३०॥ (808-2)
सदा सदा संतह संगि राखहु एहु नाम दानु देवाइणा ॥१४॥ (1078-15)
सदा सदा सचे तेरी सरणाई तूं आपे सचु बुझावणिआ ॥७॥ (111-14)
सदा सदा सतिगुर नमसकार ॥ (1235-16)
सदा सदा सद आपे होई ॥ (104-9)
सदा सदा सद होवणहारा ॥ (1077-2)
सदा सदा सदा दइआल ॥ (275-9)
सदा सदा साचे गुण गावहि साचै नाइ पिआरु ॥ (36-11)
सदा सदा साचे तुधु सालाही ॥ (122-16)
सदा सदा सालाहिहु संतहु तिस दी वडी वडिआई ॥१५॥ (912-9)
सदा सदा सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥३॥ (49-11)
सदा सदा सालाहीऐ सचे कउ बलि जाउ ॥ (516-13)

सदा सदा सालाहीऐ हिरदै लिव लाई ॥८॥ (511-16)
सदा सदा सिमरउ प्रभ सुआमी ॥ (196-9)
सदा सदा सिमरि दिनु राति ॥ (971-15)
सदा सदा सुख महि रहै सचे माहि समाइ ॥१॥ (1092-7)
सदा सदा सेवहु किरपाल ॥२॥ (987-14)
सदा सदा सो सेवीऐ जो सभ महि रहै समाइ ॥ (509-5)
सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा ॥ (713-3)
सदा सदा हरि की सरणाई प्रभ बिनु नाही आन बीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (900-7)
सदा सदा हरि के गुण गाइ ॥३॥ (184-7)
सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥ (281-9)
सदा सदा हरि गुण रवहि अंतरि सहज धिआनु ॥ (1418-7)
सदा सदा हरि जापे ॥ (627-12)
सदा सदा हरि धिआईऐ किछु बिघनु न लागै ॥ (817-17)
सदा सदा हरि धिआईऐ गुरमुखि सुखु पावहि ॥ (950-12)
सदा सदा हरि धिआईऐ सुखदाता जा का अंतु न पारावारा ॥१॥ रहाउ ॥ (720-7)
सदा सदा हरि नामु सम्हारउ ॥१॥ (386-19)
सदा सदा हरि प्रभु रवहि ता पावहि मोख दुआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (559-3)
सदा सदा हरि सिमरीऐ जलि थलि महीअलि सोइ जीउ ॥ (926-10)
सदा सबदि सालाही गुणदाता लेखा कोइ न मंगै ताहा हे ॥९॥ (1053-18)
सदा सबदु रवै घट अंतरि रसना रसु चाखै सचु सोई हे ॥१३॥ (1045-15)
सदा समाले को नाही खाली ॥ (118-7)
सदा सरणाई तिस की जिउ भावै तिउ कारजु सारि ॥८॥ (429-19)
सदा सरेवी इक मनि धिआई गुरमुखि सचि समावणिआ ॥१॥ (126-3)
सदा सलाही ता मनु धीरा ॥ (1061-13)
सदा सहजु फिरि दुखु न लगई भाई हरि आपि वसै मनि आइ ॥२॥ (639-4)
सदा सहजु सुखु मनि वसिआ सचे सिउ लिव लाइआ ॥ (852-12)
सदा सहाई संगि प्रभ अम्रित गुण चीन ॥ रहाउ ॥ (807-19)
सदा सहाई संत पेखहि सदा हजूरि ॥ (397-10)
सदा सांति सुखि सहजि समाइ ॥२॥ (1173-13)
सदा सांति सुखु मनि वसै चूकै कूक पुकार ॥ (86-10)
सदा साहिब कै रंगि रहै कबहूं न तूटसि नेहु ॥ (84-7)
सदा साहिब कै रंगि रहै महली पावै थाउ ॥१॥ (554-16)
सदा साहिब कै रंगे राता अनदिनु नामु वखाणा ॥१॥ (1015-14)
सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ (917-7)
सदा सिमरि चरणारबिंद सीतल होताइआ ॥१॥ (816-3)
सदा सीगारी नाउ मनि कदे न मैलु पतंगु ॥ (642-12)
सदा सुखदाता कीमति नही पाई ॥४॥ (798-15)

सदा सुखदाता रविआ घट अंतरि सबदि सचै ओमाहा हे ॥१॥ (1054-9)
सदा सुखीए निरमले सतिगुर की कार कमाइ ॥ (590-7)
सदा सुखु कलिआण कीरतनु प्रभ लगा मीठा भाणा ॥ (926-7)
सदा सुखु मनि वसै दुखु संसारह खोवै ॥ (1392-13)
सदा सुखु सरीरि भाणै चितु लावै ॥ (1173-15)
सदा सुखु साचै सबदि वीचारी ॥ (560-5)
सदा सुखु सोहागणी भाई अनदिनु रतीआ रंगु लाइ ॥१॥ (639-1)
सदा सुहागणि जा सतिगुरु सेवे गुर कै अंकि समाईऐ ॥ (244-10)
सदा सुहागणि जि हुकमै बुझै सतिगुरु सेवै लिव लाए ॥ (1423-3)
सदा सुहागु सुहागणी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ (66-16)
सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥ (281-7)
सदा सूचे साचि समाए ॥२॥ (363-16)
सदा सोहागणि जो प्रभ भावै ॥ (363-8)
सदा सोहागणि सबदु मनि भै भाइ करे सीगारु ॥ (787-3)
सदा हजूरि जाणु भगवंत ॥ (867-4)
सदा हजूरि दूरि न जाणहु ॥ (116-14)
सदा हजूरि दूरि नह देखहु रचना जिनि रचाई ॥५॥ (909-10)
सदा हजूरि रविआ सभ ठाई हिरदै नामु अपारा ॥ (602-11)
सदा हदूरि गुरमुखि जापै ॥ (1055-18)
सदा हरि के गुण रवै भाई गुर कै हेति अपारि ॥३॥ (603-2)
सदा हरि चरणी लागि रहा इक मनि एकै भाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (994-7)
सदा हरि जीउ राखै उर धारे ॥ (1051-16)
सदा हरि रसु पाए जा हरि भाए रसना सबदि सुहाए ॥ (246-15)
सदा हरि सचु मनि वसै निहचल मति अपारु ॥ (83-2)
सदा होवहि सोहागणी फिरि मैला वेसु न होई राम ॥ (770-4)
सदा होवहि सोहागणी हरि जीउ मरै न जाए राम ॥ (771-10)
सदीव गनीव सुहावने राम नाम ग्रिहि माल ॥ (253-18)
सनक सनंद अंतु नही पाइआ ॥ (478-6)
सनक सनंद महेस समानां ॥ (691-16)
सनक सनंदन तपसी जन केते गुर परसादी पारि परे ॥१॥ (1125-9)
सनक सनंदन नारद मुनि सेवहि अनदिनु जपत रहहि बनवारी ॥ (507-1)
सनक सनंदन सिव सुकादि ॥ (1194-16)
सनक सनादि ब्रहमादि इंद्रादिक भगति रते बनि आई ॥ (1232-14)
सनकादिक नारद मुनि सेखा ॥ (330-8)
सनकादिक ब्रहमादिक गावत गावत सुक प्रहिलाद ॥ (1224-7)
सनमुख सदा सोहणे सचै दरि जाणे ॥ (1088-5)
सनमुख सहि बान सनमुख सहि बान हे म्रिग अरपे मन तन प्रान हे ओहु बेधिओ सहज सरोत ॥ (462-4)

सनमुख सिध भेटण कउ आए निहचउ देहि वडिआई ॥१॥ (878-2)
सनिआसी ब्रहमचारी ॥ (71-8)
सपत समुंद जां चै घड़थली ॥ (1292-11)
सपतमि संचहु नाम धनु टूटि न जाहि भंडार ॥ (298-5)
सपतमी सतु संतोखु सरीरि ॥ (839-15)
सपु पिड़ाई पाईऐ बिखु अंतरि मनि रोसु ॥ (1009-16)
सपै दुधु पीआईऐ अंदरि विसु निकोर ॥१६॥ (755-17)
सफल आइआ जीवन फलु ता को पारब्रहम लिव लावै ॥१॥ रहाउ ॥ (531-2)
सफल जनमु इसु जग महि आइआ ॥ (1174-4)
सफल जनमु जीवन परवाणु ॥ (1339-18)
सफल जनमु जीवन परवानु ॥१॥ रहाउ ॥ (806-10)
सफल जनमु ता का परवान ॥४॥२४॥७५॥ (389-8)
सफल जनमु तिस का जग भीतरि साधसंगि नाउ जापे ॥ (750-8)
सफल जनमु भइआ तिन का जिनी सो प्रभु पाइआ ॥ (927-14)
सफल जनमु भइआ तिन केरा आपि तरे कुल तारी ॥४॥ (507-4)
सफल जनमु मो कउ गुर कीना ॥ (857-19)
सफल जनमु हरि पाइआ नानक प्रभि कीना राम ॥४॥१॥३॥ (845-2)
सफल जनमु होआ भउ भागा हरि भेटिआ एकु मुरारी ॥ (780-12)
सफल जनमु होआ मिलि साधू एकंकारु धिआए राम ॥ (782-17)
सफल जनमु होवत वडभागी ॥ (805-2)
सफल जनमु होवै परवाणु ॥ (193-18)
सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥ (295-10)
सफल ते घरी संजोग सुहावे सतिगुर संगि गिआनां ॥१॥ रहाउ ॥ (1213-10)
सफल दरसन गुरु भेटीऐ मानु मोहु मिटावउ ॥३॥ (812-5)
सफल दरसनु अकाल मूरति प्रभु है भी होवनहारा ॥ (609-18)
सफल दरसनु गोबिंदु हमारा ॥४॥७९॥१४८॥ (195-16)
सफल दरसनु जा की निरमल सेव ॥ (1144-14)
सफल दरसनु तुमरा प्रभ प्रीतम चरन कमल आनूप ॥ (701-14)
सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥ (287-5)
सफल दरसनु भेटिओ गुर नानक ता मनि तनि हरि हरि धिआइआ ॥४॥२॥४९॥ (747-14)
सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥ (293-11)
सफल दरसु तेरा पारब्रहम गुण निधि तेरी बाणी ॥ (808-18)
सफल देह धंनि ओइ जनमे प्रभ कै संगि रले ॥१॥ (1227-9)
सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥५॥ (269-3)
सफल नानक इहु कामु ॥४॥३३॥४४॥ (896-18)
सफल मूरति गुरदेउ सुआमी सरब कला भरपूरे ॥ (802-10)
सफल मूरति गुरु तिस का रूपु ॥२॥ (1152-16)

सफल मूरति गुरु मेरै माथै ॥ (535-13)
सफल मूरति जा की निरमल सेव ॥ (677-2)
सफल मूरति दरसन बलिहारी ॥ (740-16)
सफल मूरति परसउ संतन की इहै धिआना धरना ॥ (531-10)
सफल मूरति सफल जा की सेव ॥ (869-9)
सफल मूरतु सफल ओह घरी ॥ (191-17)
सफल मूरतु सफला घड़ी जितु सचे नालि पिआरु ॥ (44-8)
सफल सफल भई सफल जात्रा ॥ (687-11)
सफल सफल सफल दरसु रे परसि परसि गुन गाईऐ ॥ (1321-17)
सफल सु बाणी जितु नामु वखाणी ॥ (103-1)
सफल सुहागणि नानका अपुने प्रभ भावउ ॥४॥१५॥४५॥ (812-6)
सफल सेवा गुरदेव की निरमल दरबारे ॥३॥ (814-19)
सफल सेवा गुरदेवा ॥ (896-8)
सफल सेवा गोपाल राइ ॥ (1146-2)
सफल सेवा पारब्रहम की ता की नही हानि ॥१॥ (817-13)
सफल सेवा सुआमी मेरे की मन बांछत फल पावहु ॥ (1218-14)
सफल होई जपि हरि हरि नामु ॥ (1148-5)
सफल होत इह दुरलभ देही ॥ (1298-19)
सफला सु दिनस रैणे सुहावी अनद मंगल रसु घना ॥ (543-7)
सफलिउ बिरखु सुहावड़ा हरि सफल अम्रिता ॥ (965-12)
सफलिओ बिरखु अम्रित फलु पावहि ॥ (1033-16)
सफलिओ बिरखु हरि कै दुआरि ॥ (1173-16)
सफलिओ बिरखु हरीआवला छाव घणेरी होइ ॥ (59-9)
सफलिओ सतिगुरु सेविआ धंनु जनमु परवाणु ॥ (643-3)
सफलु ओहु माथा संत नमसकारसि ॥ (191-18)
सफलु जनमु जिना सतिगुरु पाइआ ॥ (129-13)
सफलु जनमु जिन्ही गुरमुखि जाता हरि जीउ रिदै वसाए ॥ (513-3)
सफलु जनमु तां का परवाणु ॥ (869-4)
सफलु जनमु तिसु प्रानी केरा हरि कै नामि समान ॥१॥ (1334-5)
सफलु जनमु परवानु गुरमुखि आइआ ॥ (523-16)
सफलु जनमु भगता का कीता गुर सेवा आपि लाए ॥ (601-16)
सफलु जनमु सरीरु सभु होआ जितु राम नामु परगासिआ ॥ (444-1)
सफलु जनमु हरि जन का उपजिआ जिनि कीनो सउतु बिधाता ॥ (532-10)
सफलु तिन्हा का जनमु है तिन्ह मानै सभु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (429-12)
सफलु दरसनु नेत्र पेखत तरिआ ॥ (99-10)
सफलु दरसु भेटिआ गुरु पूरा नानक सद बलिहारी ॥२॥ (778-7)
सफलु सु आइआ हां ॥ (410-6)

सब रोज गसतम दर हवा करदेम बदी खिआल ॥ (721-7)
सबदं रतं हितं मइआ कीरतं कली करम क्रितुआ ॥ (1354-11)
सबद ॥ (989-5)
सबद घनेरे हरि प्रभ तेरे तू करता सभ थाई ॥ (775-10)
सबद रंगि राती जोबनि माती पिर कै अंकि समाए ॥ (582-18)
सबद सारु हरि सम उदारु अहमेव निवारणु ॥ (1407-17)
सबद सुरति बिनु आईऐ जाईऐ ॥ (1042-7)
सबद सुरति बिनु आवै जावै पति खोई आवत जाता हे ॥८॥ (1031-15)
सबद सुरति सुखु ऊपजै प्रभ रातउ सुख सारु ॥ (62-4)
सबद सूर बलवंत काम अरु क्रोध बिनासन ॥ (1391-16)
सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥ (920-11)
सबदाह माहि वखाणीऐ विरला त बूझै कोइ ॥ (64-8)
सबदि अतीत अनाहदि राता आकुल कै घरि जाउगो ॥१॥ रहाउ ॥ (973-1)
सबदि अतीति अनाहदि राता ॥ (327-3)
सबदि अनंद करे सद केला ॥ (97-10)
सबदि अनाहदि सो सहु राता नानकु कहै विचारा ॥४॥८॥ (351-6)
सबदि अपारे मिले पिआरे सदा गुण सारे मनि वसे ॥ (440-5)
सबदि गुरू भवसागरु तरीऐ इत उत एको जाणै ॥ (944-14)
सबदि जोति जगाइ दीपकु नानका भउ भंजनो ॥३॥ (843-14)
सबदि तपति बुझाई अंतरि सांति आई सहजे हरि रसु चाखिआ ॥ (440-2)
सबदि तरे जन सहजि सुभाइ ॥ (361-19)
सबदि दिखाए सतिगुरु पूरा ॥ (125-10)
सबदि धोपै ता हछी होवै फिरि मैली मूलि न होई हे ॥१०॥ (1045-11)
सबदि न भीजै साकता दुरमति आवनु जानु ॥ (21-8)
सबदि निवारी आगि जोति दीपाईऐ ॥६॥ (752-12)
सबदि पछानै तीने भउन ॥५॥ (221-17)
सबदि पतीजै अलख अभेवा ॥ (1024-13)
सबदि भउ भंजनु जमकाल निखंजनु हरि सेती लिव लाई ॥ (1233-10)
सबदि भेदि कोई महलु पाए महले महलि बुलावणिआ ॥३॥ (117-12)
सबदि भेदि जाणै जाणाई ॥ (941-9)
सबदि भेदि भ्रमु कटिआ गुरि नामु दीआ समझाइ ॥२॥ (994-8)
सबदि मंनिऐ गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥ (34-1)
सबदि मनु रंगिआ लिव लाइ ॥ (233-1)
सबदि मरहि फिरि ना मरहि ता सेवा पवै सभ थाइ ॥ (649-7)
सबदि मरहि से मरणु सवारहि ॥ (1067-4)
सबदि मरहु फिरि जीवहु सद ही ता फिरि मरणु न होई ॥ (604-1)
सबदि मरै तां एक लिव लाए ॥ (412-16)

सबदि मरै ता उधरै पाए मोख दुआरु ॥ (33-12)
सबदि मरै ता जाति जाइ जोती जोति मिलै भगवानु ॥२॥ (429-13)
सबदि मरै ता मारि मरु भागो किसु पहि जाउ ॥ (1010-4)
सबदि मरै ता सभु किछु सूझै अनदिनु एको जाणै ॥७॥ (1234-9)
सबदि मरै तिसु निज घरि वासा ॥ (224-2)
सबदि मरै तिसु सदा अनंद ॥ (364-6)
सबदि मरै फिरि मरणु न होइ ॥ (153-6)
सबदि मरै भगति पाए जनु सोइ ॥३॥ (159-2)
सबदि मरै मनु निरमलु संतहु एह पूजा थाइ पाई ॥५॥ (910-8)
सबदि मरै मनु मारि धंनु जणेदी माइआ ॥ (1286-4)
सबदि मरै मनु मारे अउधू जोग जुगति वीचारी ॥२१॥ (908-6)
सबदि मरै मनु मारै अपुना मुकती का दरु पावणिआ ॥३॥ (117-1)
सबदि मरै सहिला जीवै सोइ ॥ (1344-16)
सबदि मरै सु मुआ जापै ॥ (111-16)
सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी वार ॥ (58-9)
सबदि मरै सो मुआ जापै ॥ (1418-4)
सबदि मरै सोई जनु पूरा ॥ (1046-4)
सबदि मरै सोई जनु मुकता ॥ (1063-16)
सबदि मरै सोई जनु सिझै बिनु सबदै मुकति न होई ॥ (1416-16)
सबदि महली खरा तू खिमा सचु सुख भाइ ॥ (937-6)
सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ ॥ (27-9)
सबदि मिलाए गुरमति सूरा ॥ (1043-2)
सबदि मिली ना वीछुड़ै पिर कै अंकि समाइ ॥२॥ (66-17)
सबदि मिले से दरगह पैधे गुरमुखि सुरति समाई हे ॥५॥ (1024-17)
सबदि मिले से विछुड़े नाही नदरी सहजि मिलाई हे ॥१४॥ (1046-18)
सबदि मिले से सूचाचारी साची दरगह माने ॥ (1332-7)
सबदि मिलै प्रीतमु सदा धिआए ॥ (664-12)
सबदि मिलै सो मिलि रहै जिस नउ आपे लए मिलाइ ॥ (27-4)
सबदि मुआ विचहु आपु गवाइ ॥ (361-6)
सबदि मुए मनु मन ते मारिआ ॥ (796-4)
सबदि मुए हरि नामि निवासी ॥ (1046-8)
सबदि रंगाए हुकमि सबाए ॥ (109-8)
सबदि रती मनु वेधिआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥३॥ (54-5)
सबदि रती सोहागणी सतिगुर कै भाइ पिआरि ॥ (90-1)
सबदि रतीआ सोहागणी तिन विचहु हउमै जाइ ॥ (38-3)
सबदि रतीआ सोहागणी सचै सबदि सीगारि ॥ (38-11)
सबदि रते अम्रित रसु पाइआ साचे रहे अघाई ॥ (945-1)

सबदि रते तिना सोझी पई दूजै भरमि भुलाइ ॥ (587-3)
सबदि रते पूरे बैरागी ॥ (1332-5)
सबदि रते मीठे रस ईख ॥३॥ (152-13)
सबदि रते वड हंस है सचु नामु उरि धारि ॥ (585-12)
सबदि रते सदा इक रंगी हरि सिउ रहे समाई ॥१॥ (600-13)
सबदि रते सदा सुखु होई ॥१॥ (831-9)
सबदि रते से निरमले चलहि सतिगुर भाइ ॥७॥ (234-1)
सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु ॥ (58-7)
सबदि रते से निरमले हउ सद बलिहारै जासु ॥ (27-13)
सबदि रते से रंगि चलूले राते सहजि सुभाई ॥२॥ (1234-3)
सबदि रते से सीतल भए नानक सचु कमाइ ॥१॥ (643-2)
सबदि रते हउमै गई सोभावंती नारि ॥ (651-11)
सबदि रते हरि रसि मतवाले ॥ (1038-9)
सबदि रपै घरु पाईऐ निरबाणी पदु नीति ॥४॥ (58-5)
सबदि रवे मनु हरि सिउ लागिआ ॥ (221-4)
सबदि रवै आसणि घरि राजा अदलु करे गुणकारी ॥१०॥ (907-19)
सबदि लगे तिन बुझिआ दूजै परज विगोई ॥१॥ (559-2)
सबदि लगे सेई जन निसतरे भउजलु पारि उतारी ॥१५॥ (911-9)
सबदि सचै रंगु लालु करि भै भाइ सीगारु बणाइ ॥ (786-8)
सबदि सचै सचु सोहिला जिथै सचे का होइ वीचारो राम ॥ (769-6)
सबदि सलाही मनि वसै हउमै दुखु जलि जाउ ॥ (58-6)
सबदि सलाही सदा सुखदाता विचहु आपु गवाई ॥३॥ (1333-15)
सबदि सलाही सदा हउ जीवा गुरमती भउ भागा ॥ (600-15)
सबदि सवारी साचि पिआरी ॥ (933-13)
सबदि सवारी सोहणी पिरु रावे गुण नालि ॥३॥ (56-5)
सबदि सवारीआसु अम्रितु पीविआ ॥२२॥ (148-14)
सबदि सवारे सतिगुरि पूरै नानक सद बलि जासी ॥२॥ (783-8)
सबदि सालाही मनि वसै सहजे ही सुखु होइ ॥ (36-6)
सबदि सालाहै अंतु न पारावारु ॥ (157-19)
सबदि सीगारु होवै नित कामणि हरि हरि नामु धिआवए ॥ (1114-2)
सबदि सुणीऐ सबदि बुझीऐ सचि रहै लिव लाइ ॥ (429-4)
सबदि सूर जुग चारे अउधू बाणी भगति वीचारी ॥२३॥ (908-7)
सबदी धोवै विरला कोइ ॥ (1344-19)
सबदु ॥ (990-16)
सबदु अखुटु बाबा नानका खाहि खरचि धनु मालु ॥२०॥ (1426-6)
सबदु कमाईऐ खाईऐ सारु ॥ (943-6)
सबदु खेवटु विचि पाए हरि आपि लघाए इन बिधि दुतरु तरीऐ ॥ (245-17)

सबदु खोजि इहु घरु लहै नानकु ता का दासु ॥१॥ (1291-5)
सबदु गुर दाता जितु मनु राता हरि सिउ रहिआ समाई ॥२॥ (601-5)
सबदु गुर पीरा गहिर ग्मभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ॥ (635-6)
सबदु गुरू का सद उचरहि जुगु जुगु वरतावणहारा ॥ (593-11)
सबदु गुरू परकासिओ हरि रसन बसायउ ॥ (1407-3)
सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ (943-1)
सबदु चाखै साचा सादु पाए ॥ (362-1)
सबदु चीनहि ता महलु लहहि जोती जोति समाइ ॥ (649-10)
सबदु चीनि तिख उतरै मंनि लै रजाइ ॥ (1419-19)
सबदु चीनि भै कपट न छूटे मनि मुखि माइआ माइआ ॥ (1255-1)
सबदु चीनि मनु निरमलु होवै ता हरि के गुण गावै ॥ (565-10)
सबदु चीनि सदा सुखु पाइआ ॥१॥ (423-9)
सबदु चीन्हि आतमु परगासिआ सहजे रहिआ समाई ॥१॥ रहाउ ॥ (753-8)
सबदु चीन्हि फिरि लगै न पीर ॥ (842-12)
सबदु चीन्हि सहज घरि आवहु ॥ (832-16)
सबदु चीन्हि सुखु पाइआ सचै नाइ पिआर ॥ (1346-7)
सबदु दीपकु वरतै तिहु लोइ ॥ (664-4)
सबदु न चीनै कथनी बदनी करे बिखिआ माहि समानु ॥३॥ (39-3)
सबदु न चीनै लवै कुबाणि ॥ (941-3)
सबदु न चीनै सदा दुखु हरि दरगहि पति खोइ ॥ (29-11)
सबदु न जाणहि से अंने बोले से कितु आए संसारा ॥ (601-6)
सबदु न सुणई बहु रोल घचोला ॥ (313-18)
सबदु पछाणि राम रसु पावहु ओहु ऊतमु संतु भइओ बड बडना ॥ (860-18)
सबदु पछाणै रवि रहै ना तिसु कालु संताइ ॥ (58-19)
सबदु बीचारि छुटै हरि नाइ ॥२॥ (152-18)
सबदु बीचारि भए निरंकारी ॥ (904-3)
सबदु बीचारि भरम भउ भंजनु अवरु न जानिआ दूजा ॥५॥ (1233-3)
सबदु बीचारि राम रसु चाखिआ नानक साचि पतीणे ॥४॥४॥५॥ (1126-16)
सबदु बीचारे सो जनु साचा जिन कै हिरदै साचा सोई ॥ (1131-4)
सबदु बुझाए सतिगुरु पूरा ॥ (1021-7)
सबदु बुझै सो मैलु चुकाए ॥ (1044-12)
सबदु भाखत ससि जोति अपारा ॥ (943-11)
सबदु रतनु जितु मंनु लागा एहु होआ समाउ ॥ (920-10)
सबदु रसालु रसन रसि रसना बेणु रसालु वजाइआ ॥९॥ (1039-5)
सबदु वसाए भरमु चुकाए सदा सेवकु दिनु राती ॥४॥ (992-17)
सबदु वसै सचु अंतरि हीआ ॥ (943-7)
सबदु विसारनि तिना ठउरु न ठाउ ॥ (123-6)

सबदु वीचारि गहहि गुर सेवा ॥ (906-3)
सबदु वीचारि मिलणु नही भ्राति ॥७॥ (413-14)
सबदु वीचारि सदा रंगि राते हउमै त्रिसना मारी ॥ (1233-16)
सबदु वीचारी करणी सारी राम नामु नीसाणो ॥ (765-9)
सबदु वीचारे एक लिव तारा ॥ (412-12)
सबदु वीचारै चूकसि सोगा ॥ (903-15)
सबदु सति सति प्रभु बकता ॥ (285-8)
सबदु सलाहहि से जन निरमल निज घरि वासा ताहा हे ॥१४॥ (1054-5)
सबदु सहज रसु अंतरि माने ॥ (1021-8)
सबदु साचा गुरि दिखाइआ मनमुखी पछुताणीआ ॥ (242-14)
सबदु सीतलु मनि तनि वसै तिथै सोगु विजोगु न कोइ ॥ (1249-12)
सबदु सुणे ता दूरहु भागै मतु मारे हरि जीउ वेपरवाहा हे ॥७॥ (1054-16)
सबदु सूझै ता मन सिउ लूझै मनसा मारि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (113-3)
सबदु हरि हरि जपै नामु नव निधि अपै रसनि अहिनिसि रसै सति करि जानीअहु ॥ (1400-13)
सबदे अकथु कथे सालाहे ॥ (1057-5)
सबदे उपजै अम्रित बाणी गुरमुखि आखि सुणावणिआ ॥३॥ (125-14)
सबदे ऊचो ऊचा होइ ॥ (363-12)
सबदे कालु मारि सचु उरि धारि फिरि आवण जाणु न होइआ ॥ (584-4)
सबदे गति मति मोख दुआरु ॥७॥ (1342-11)
सबदे दूख निवारणहारा ॥ (1053-8)
सबदे नामु धिआईऐ सबदे सचि समाइ ॥४॥ (67-1)
सबदे नामु रखै उरि धारि ॥ (1342-11)
सबदे पतीजै अंकु भीजै सु महलु महला अंतरे ॥ (767-9)
सबदे पिरु राखिआ उर धारि ॥ (1277-13)
सबदे बूझै आपु सवारे ॥ (1059-18)
सबदे भेदे तउ पति पावै ॥ (839-14)
सबदे मनु तनु निरमलु होआ हरि वसिआ मनि आई ॥ (601-4)
सबदे रवि रहिआ गुर रूपि मुरारे ॥ (1112-7)
सबदे राते सहजे माते अनदिनु हरि गुण गाए ॥ (601-16)
सबदे विचहु भरमु चुकाए ॥ (1067-1)
सबदे सदा बसंतु है जितु तनु मनु हरिआ होइ ॥ (1420-13)
सबदे साण रखाई लाइ ॥ (956-2)
सबदे सुहावै ता पति पावै दीपक देह उजारै ॥ (243-5)
सबदे सेवनि भाइ पिआरे ॥ (1056-9)
सबदे सेवै सो जनु ध्रापै ॥ (1055-18)
सबदे हउमै खोईऐ हरि मेलि मिलीता ॥ (510-3)
सबदे हउमै मारीऐ माइआ का भ्रमु जाइ ॥ (67-6)

सबदे हउमै मारीऐ सचै महलि सुखु पाइ ॥४॥ (429-5)
सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइआ ॥ (644-5)
सबदे ही फिरि ओपति होवै ॥ (117-8)
सबदे ही सोझी पई सचै आपि बुझाई ॥५॥ (949-2)
सबदे ही हरि मनि वसै रसना हरि रसु खाइ ॥३॥ (68-9)
सबदै का निबेड़ा सुणि तू अउधू बिनु नावै जोगु न होई ॥ (946-12)
सबदै सादु जाणहि ता आपु पछाणहि ॥ (115-17)
सबदै सादु न आइओ नामि न लगो पिआरु ॥ (594-1)
सबदै सादु न आइओ नामि न लगो पिआरु ॥ (791-5)
सबदै सादु न आइओ मरि जनमै वारो वार ॥ (592-17)
सबदै सादु न आइओ लागे दूजै भाइ ॥ (28-9)
सबदै सादु न आइओ सचि न लगो भाउ ॥ (1246-8)
सबदै सादु न आवई नामि न लगै पिआरु ॥ (1247-15)
सबदै सादु न पाइओ मनहठि किआ गुण गाइ ॥ (549-17)
सबदै सार न जाणई बिखु भूला गावारु ॥ (589-5)
सबदै सिउ चितु न लावई जितु सुखु वसै मनि आइ ॥ (554-5)
सबदै ही ते पाईऐ हरि नामे लगै पिआरु ॥ (58-9)
सबदै ही ते सहजु ऊपजै हरि पाइआ सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (68-6)
सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ (917-3)
सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥ (919-5)
सबदौ ही भगत जापदे जिन्ह की बाणी सची होइ ॥ (429-11)
सबर अंदरि साबरी तनु एवै जालेन्हि ॥ (1384-5)
सबर मंझ कमाण ए सबरु का नीहणो ॥ (1384-4)
सबर संदा बाणु खालकु खता न करी ॥११५॥ (1384-4)
सबरु एहु सुआउ जे तूं बंदा दिड़ु करहि ॥ (1384-6)
सबाही सालाह जिनी धिआइआ इक मनि ॥ (145-18)
सभ अंतरि जन वरताइआ हरि जन ते जापै ॥८॥ (1097-6)
सभ अंदरि इकु वरतै किनै विरलै लाखिआ ॥ (594-9)
सभ आपन अउसर चले सारि ॥२॥ (1194-17)
सभ आसा मनसा पूरै थारी ॥ (1070-16)
सभ आसा मनसा बंधन तूटे हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥१॥ (1262-18)
सभ आसा मनसा विसरी मनि चूका आल जंजालु ॥ (1315-1)
सभ इकठे होइ आइआ ॥ (74-11)
सभ इका जोति वरतै भिनि भिनि न रलई किसै दी रलाईआ ॥ (96-9)
सभ इछ पुंनी आस पूरी मिले सतिगुर पूरिआ ॥ (926-7)
सभ उठि लागी पाई ॥ (622-9)
सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥ (566-8)

सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥४॥१॥ (566-10)
सभ उपाईऐ आपि आपे सरब समाणा ॥ (566-11)
सभ उमति आवण जावणी आपे ही नवा निरोआ ॥ (968-15)
सभ ऊच बिराजित जन सुने ॥१॥ (211-9)
सभ ऊतम किसु आखउ हीना ॥ (1189-4)
सभ ऊपरि अलख पारब्रहम ॥२॥ (894-6)
सभ ऊपरि नानक का ठाकुरु मै जेही घण चेरी राम ॥१॥ (779-12)
सभ ऊपरि पारब्रहमु दातारु ॥ (723-19)
सभ ऊपरि समरथ प्रभ पूरन गुणतास ॥१॥ (812-18)
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ (274-9)
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ (292-14)
सभ एक द्रिसटि समतु करि देखै सभु आतम रामु पछान जीउ ॥ (446-12)
सभ एका जोति जाणै जे कोई ॥ (120-11)
सभ एको इकु वरतदा अलखु न लखिआ जाइ ॥ (37-9)
सभ कउ तजि गए हां ॥ (411-1)
सभ कथि कथि रही लुकाई ॥ (655-5)
सभ कहते है पाइआ ॥ (71-11)
सभ का एकु धनी ॥१॥ रहाउ ॥ (914-2)
सभ काम पूरन दुख बिदीरन हरि निमख मनहु न बीसरै ॥ (546-2)
सभ कामणि तिआगी प्रिउ प्रीतमु मेरा ॥३॥ (737-13)
सभ कारण करता करे जिसु खवाले तिसु ॥१॥ (1290-15)
सभ किछु आपे आपि है हउमै विचि कहनु न जाइ ॥ (35-1)
सभ किछु करना आपन आपि ॥ (987-15)
सभ किछु कीता तेरा होवै नाही किछु असाड़ा जीउ ॥३॥ (103-15)
सभ किछु कीतोनु आपणा जीइ न संक धरिआ ॥ (71-2)
सभ किछु घर महि बाहरि नाही ॥ (102-3)
सभ किछु जाणहु तिस कै हाथ ॥ (1146-17)
सभ किछु जाणै करे आपि आपे विगसीता ॥४॥ (510-3)
सभ किछु जाणै सिरजणहारु ॥३॥ (1139-19)
सभ किछु जीवत को बिवहार ॥ (536-11)
सभ किछु तुम्ह ही ते होआ आपि बणत बणाई ॥ (811-19)
सभ किछु तूंहै तूंहै मेरे पिआरे तेरी कुदरति कउ बलि जाई जीउ ॥१॥ (98-13)
सभ किछु तेरा तूं करणैहारु ॥ (178-17)
सभ किछु दीआ भलीआ जाई ॥ (100-4)
सभ किछु प्रभ का प्रभ कीआ जाई जीउ ॥ (217-12)
सभ किछु बिआपत बिनु हरि रंग रात ॥४॥ (182-6)
सभ किलबिख पाप लहंती ॥ (977-14)

सभ किलविख पाप दुख कटिआ मेरी जिंदुड़ीए मलु गुरमुखि नामि उतारे राम ॥ (539-6)
सभ की रेन होइ मनु मेरा अह्मबुधि तजावहु ॥ (1120-8)
सभ की रेनु होइ रहै मनूआ सगले दीसहि मीत पिआरे ॥ (379-5)
सभ की रेनु होइ हां ॥ (410-4)
सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ (349-2)
सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ (9-11)
सभ के प्रीतम स्रब प्रतिपालक सरब घटां आधारा ॥१॥ (1220-5)
सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥ (294-14)
सभ कै मधि सगल ते उदास ॥ (296-1)
सभ कै मधि सभ हू ते बाहरि राग दोख ते निआरो ॥ (785-1)
सभ कै मधे अलिपत निरबाणे ॥ (102-12)
सभ कै संगी नाही दूरि ॥ (987-11)
सभ को तुम ही ते वरसावै अउसरु करहु हमारा पूरा जीउ ॥२॥ (99-17)
सभ को मात पिता प्रतिपालक जीअ प्रान सुख सागरु रे ॥ (209-17)
सभ खलक तमासे आई ॥ (655-4)
सभ गुण किस ही नाहि हरि पूर भंडारीआ ॥४॥ (241-2)
सभ गुरू गुरू जगतु बोलै गुर कै नाइ लइऐ सभि छुटकि गइआ ॥ (1116-16)
सभ घट आपे भोगणहारा ॥ (113-1)
सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥ (280-17)
सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥ (284-10)
सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥ (794-2)
सभ चिंता गणत मिटाई ॥४॥७॥५७॥ (623-7)
सभ चूकी काणि लोकाणी ॥ (622-12)
सभ छडाई खसमि आपि हरि जपि भई ठरूरे ॥६॥ (133-3)
सभ छुटी सतिगुरू पिछै जिनि हरि हरि नामु धिआइआ ॥ (1116-14)
सभ जग महि दोही फेरीऐ बिनु नावै सिरि कालु ॥ (63-15)
सभ जग महि वरतै एको सोई ॥ (1054-4)
सभ जीअ तेरे दइआला ॥ (630-1)
सभ जुग महि ता की गति होइ ॥ (296-3)
सभ जुग महि नामु ऊतमु होई ॥ (880-9)
सभ जुग महि साचा एको सोई ॥ (880-7)
सभ जै जै कारु सुणाए ॥१॥ (627-6)
सभ जोगतण राम नामु है जिस का पिंडु पराना ॥ (477-13)
सभ जोति तेरी जगजीवना तू घटि घटि हरि रंग रंगना ॥ (1313-10)
सभ जोति तेरी जोती विचि करते सभु सचु तेरा पासारा ॥ (1314-13)
सभ तजहु दूजी आसड़ी रखु आस इक निरंकार ॥२॥ (986-10)
सभ तजि अनाथु एक सरणि आइओ ॥ (189-17)

सभ तजी मनै की काम करा ॥ (408-14)
सभ तुझ ही अंतरि सगल संसारै ॥ (1139-15)
सभ ते आप जानै बलवंतु ॥ (278-11)
सभ ते ऊच ऊच ते ऊचो अंतु नही मरजाद ॥ (1219-14)
सभ ते ऊच एहो उपकार ॥३॥ (198-9)
सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ (1144-15)
सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ (182-17)
सभ ते ऊच जा का परतापु ॥४॥३२॥४३॥ (896-12)
सभ ते ऊच ठाकुरु नानक का बार बार नमसकारै ॥२॥४९॥७२॥ (1218-11)
सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥ (296-8)
सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥ (283-12)
सभ ते ऊच पाए असथानु ॥ (295-17)
सभ ते ऊच भगत जा कै संगि ॥ (1236-11)
सभ ते ऊच राम परगास ॥ (865-6)
सभ ते ऊचा जा का नाउ ॥ (1148-7)
सभ ते ऊचा मंदरु मेरा ॥ (737-13)
सभ ते ऊचे जाणीअहि नानक नाम पिआर ॥१॥ (929-11)
सभ ते ऊतम इहु करमु ॥ (895-17)
सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥ (265-6)
सभ ते ऊतमु हरि हरि कामु ॥१॥ रहाउ ॥ (1145-16)
सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥ (274-5)
सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥ (279-5)
सभ ते निरमल पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ (865-3)
सभ ते नीचु आतम करि मानउ मन महि इहु सुखु धारउ ॥१॥ (532-2)
सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥ (276-5)
सभ ते परै परै ते ऊचा गहिर ग्मभीर अथाहिओ ॥२॥ (1299-8)
सभ ते वड समरथ गुरदेव ॥ (1152-14)
सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी ॥४॥१०॥५७॥ (750-4)
सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥ (464-8)
सभ तेरी कुदरति तू सिरि सिरि दाता सभु तेरो कारणु कीना हे ॥१५॥ (1028-14)
सभ तेरी जोति जोती विचि वरतहि गुरमती तुधै लावणी ॥ (1314-2)
सभ तेरी तुधु छडावणी सभ तुधै लागे ॥१२॥ (1090-13)
सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ (11-15)
सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ (365-12)
सभ तेरी तू गुरमुखि जाता दरि सोहै गुण गाइदा ॥१०॥ (1034-1)
सभ तेरी तू मेरा प्रीतमु निसि बासुर रंगि रावै ॥ (1107-8)
सभ तेरी तू सभस दा सभ तुधु उपाइआ ॥ (548-15)

सभ तेरी बणत बणावणी नानक भल भला ॥२॥ (304-15)
सभ तेरी स्रिसटि तूं आपि रहिआ समाई ॥ (164-3)
सभ तेरै वसि दूजा अवरु न कोइ ॥२॥ (1134-15)
सभ तै उपाई भरम भुलाई ॥ (525-3)
सभ दिन के समरथ पंथ बिठुले हउ बलि बलि जाउ ॥ (536-4)
सभ दिनसु रैणि गुण उचरै हरि हरि हरि उरि लिव लागु ॥ (849-3)
सभ दिसै हरीआवली सर भरे सुभर ताल ॥ (1278-16)
सभ दुख तेरे सूख रजाई ॥ (412-10)
सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु ॥६॥ (64-10)
सभ दुनीआ आवण जाणीआ ॥३॥ (26-1)
सभ दुनीआ सुबहानु सचि समाईऐ ॥ (142-9)
सभ दू वडे भाग गुरसिखा के जो गुर चरणी सिख पड़तिआ ॥१८॥ (649-15)
सभ दूखन को हंता सभ सूखन को दाता हरि प्रीतम गुन गाओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1201-9)
सभ देखीऐ अनभै का दाता ॥ (1236-16)
सभ धरति भई हरीआवली अंनु जमिआ बोहल लाइ ॥ (1250-14)
सभ नगरी महि एको राजा सभे पवितु हहि थावा ॥१॥ (993-12)
सभ नगरी महि भगति द्रिड़ाई ॥ (1154-9)
सभ नदरी अंदरि रखदा जेती सिसटि सभ कीती ॥ (951-10)
सभ नदरी अंदरि वेखदा जै भावै तै देइ ॥२॥ (36-6)
सभ नदरी करम कमावदे नदरी बाहरि न कोइ ॥ (66-12)
सभ नर महि प्रानी ऊतमु होवै राम नामै बासु बसीजै ॥४॥ (1325-10)
सभ नानक सुखि सवंती ॥२॥११॥७५॥ (627-15)
सभ नावहु उपजै नावहु छीजै ॥ (1064-5)
सभ नावै नो लोचदी जिसु क्रिपा करे सो पाए ॥ (427-9)
सभ निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ (495-6)
सभ निहफल करम कीए दुखु धंधा ॥३॥ (367-18)
सभ परवारै माहि सरेसट ॥ (371-4)
सभ परहरि ता कउ मिलै सुहागु ॥३॥२१॥ (327-19)
सभ परोई इकतु धागै ॥ (108-16)
सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरू आपु रखिआ ॥ (924-2)
सभ फल पाए गुरू धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1141-17)
सभ फोकट धरम अबीनिआ ॥ (1351-17)
सभ फोकट निसचै करमं ॥ (1353-8)
सभ बिधि खोई लोभि सुआन ॥२॥ (374-4)
सभ बिधि तुम ही जानते पिआरे किसु पहि कहउ सुनाइ ॥१॥ (432-2)
सभ बिधि मान्यिउ मनु तब ही भयउ प्रसंनु राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥४॥ (1399-6)
सभ बुधी जालीअहि इकु रहै ततु गिआनु ॥४॥ (1413-6)

सभ भांडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥ (449-19)
सभ भै मिटहि तुमारै नाइ ॥ (201-11)
सभ मद माते कोऊ न जाग ॥ (1193-19)
सभ मधे रविआ मेरा ठाकुरु दानु देत सभि जीअ सम्हारे ॥२॥ (379-6)
सभ महि आपि रहिआ भरपूरि ॥ (113-12)
सभ महि इकु वरतदा एको रहिआ समाइ ॥ (27-5)
सभ महि इकु वरतदा गुर सबदी पाइआ जाई ॥१२॥ (953-9)
सभ महि ऊच बिसेख गिआनु ॥ (298-12)
सभ महि एकु निरंजन करता ॥ (998-12)
सभ महि एकु निरंजनु सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (223-3)
सभ महि एकु रहिआ भरपूरा ॥ (1143-1)
सभ महि एकु वरतदा जिनि आपे रचन रचाई ॥१५॥ (954-14)
सभ महि एकु वरतदा सिरि सिरि करे बीचारु ॥ (1282-19)
सभ महि एको किछु कहणु न जाइ ॥ (1188-8)
सभ महि एको रवि रहिआ गुर बिनु बूझ न पाइ ॥ (1132-5)
सभ महि गुपतु वरतदा गुरमुखि प्रगटाइआ ॥ (954-8)
सभ महि जानउ करता एक ॥ (377-4)
सभ महि जीउ जीउ है सोई घटि घटि रहिआ समाई ॥ (1273-13)
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ (13-5)
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ (663-8)
सभ महि नामु निधानु है गुरमुखि को पाए ॥५॥ (1011-17)
सभ महि पसरिआ ब्रहम पसारा ॥२॥ (329-5)
सभ महि पूरि रहे पारब्रहम ॥ (299-5)
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ॥३॥८॥ (1299-15)
सभ महि रवि रहिआ सो प्रभु अंतरजामी राम ॥ (775-12)
सभ महि रविआ पूरन प्रभ सुआमी ॥१॥ (563-7)
सभ महि रविआ साहिबु एक ॥१॥ रहाउ ॥ (1147-3)
सभ महि वरतै आपि निरारा ॥ (1075-13)
सभ महि वरतै एकु अनंता ॥ (176-7)
सभ महि वरतै एकु परछंना ॥ (1051-6)
सभ महि वरतै एको सोइ ॥ (931-13)
सभ महि वरतै एको सोई ॥ (1055-11)
सभ महि वरतै एको सोई ॥ (127-19)
सभ महि वरतै एको सोई गुरमुखि सोभा पावणिआ ॥१॥ (129-18)
सभ महि वसै अतीतु अनरागी ॥५॥ (1129-2)
सभ महि वसै प्रभु एको सोइ ॥ (663-18)
सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई ॥ (1350-3)

सभ महि सचु दूजा नही कोई ॥ (880-8)
सभ महि सबदु वरतै प्रभ साचा करमि मिलै बैआलं ॥ (1275-11)
सभ मिलि एको एकु वखानहि तउ किस ते कहउ दुराए ॥३॥ (1139-6)
सभ मिलि सिरीराग वै गावहि ॥ (1430-13)
सभ मीत बंधप हरखु उपजिआ दूत थाउ गवाइआ ॥ (247-18)
सभ मेरी तिखा बुझानी ॥ (830-8)
सभ मोही देखि दरसनु गुर संत किनै आढु न दामु लइआ ॥ (1116-18)
सभ रस खेलउ पीअ सउ किसी लखावउ नाहि ॥२३४॥ (1377-4)
सभ रस मीठे मुखि लगहि जा हरि गुण गावै ॥ (166-2)
सभ रामु एकु करि जानिआ ॥ (657-14)
सभ रोग मिटावे नवा निरोआ ॥ (744-19)
सभ लाथे पाप कमाते ॥२॥ (624-4)
सभ वडिआईआ हरि नाम विचि हरि गुरमुखि धिआईऐ ॥ (850-6)
सभ सबदि समावै जां तुधु भावै तेरै सबदि वडिआई ॥ (448-13)
सभ सालाहे सुणि सुणि आखै ॥ (1032-13)
सभ सालाहै आप कउ वडहु वडेरी होइ ॥ (58-10)
सभ साहा सिरि साचा साहु ॥ (893-2)
सभ सिंगार बणे तिसु गिआने ॥ (97-18)
सभ सिरि एकु निरंजन राइ ॥ (292-12)
सभ सिसटि धार हरि तुम किरपाल करता सभु तू तू तू राम राम राम ॥ (1297-6)
सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ ॥ (1426-18)
सभ सुखाली वुठीआ इहु होआ हलेमी राजु जीउ ॥१३॥ (74-4)
सभ स्रिसटि करै जैकारा ॥ (621-17)
सभ स्रिसटि सेवे दिनु राति जीउ ॥ (74-2)
सभ हरि की करहु उसतति जिनि गरीब अनाथ राखि लीओइ ॥ (89-16)
सभ ही परि डारी इह फास ॥१॥ (1186-11)
सभ ही मधि सभहि ते बाहरि बेमुहताज बापा ॥२॥ (51-18)
सभ हू दूरि सभ हू ते नेरै अगम अगम घट वासा ॥१॥ रहाउ ॥ (1211-17)
सभ होई छिंझ इकठीआ दयु बैठा वेखै आपि जीउ ॥१७॥ (74-9)
सभनां महि एको एकु वखाणै ॥ (1261-9)
सभना उपरि नदरि प्रभ तेरी ॥ (119-9)
सभना उपावा सिरि उपाउ है हरि नामु परापति होइ ॥ (511-17)
सभना कउ सनबंधु हरि करि दीए ॥१॥ (494-15)
सभना करता एकु तू नित करि देखहि वीचारु ॥ (1258-13)
सभना करते तेरी टेका ॥ (841-13)
सभना का दरि लेखा सचै छूटसि नामि सुहावणिआ ॥३॥ (109-12)
सभना का दरि लेखा होइ ॥ (952-4)

सभना का दाता एकु है आपे बखस करेइ ॥ (30-4)
सभना का दाता एकु है भुलिआ लए समझाइ ॥ (36-17)
सभना का दाता एकु है सिरि धंधै लाइ ॥ (427-8)
सभना का दाता करम बिधाता दूख बिसारणहारु जीउ ॥ (438-2)
सभना का पिरु एकु है पिर बिनु खाली नाहि ॥ (1088-17)
सभना का प्रभु एकु है दूजा अवरु न कोइ ॥ (757-4)
सभना का भतारु एकु है सुआमी कहणा किछू न जाइ ॥ (559-11)
सभना का मा पिउ आपि है आपे सार करेइ ॥ (653-18)
सभना का सहु एकु है सद ही रहै हजूरि ॥ (510-13)
सभना का साहिबु एकु है गुर सबदी रचा ॥ (1094-5)
सभना की तू आस है मेरे पिआरे सभि तुझहि धिआवहि मेरे साह ॥ (670-9)
सभना खसमु एकु है गुरमुखि जाणीऐ ॥ (1280-5)
सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ (917-6)
सभना जीआ इका छाउ ॥ (83-14)
सभना जीआ का इकु दाता जोती जोति मिलावणहारु ॥ (68-17)
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥ (2-10)
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥ (2-13)
सभना जीआ का एको दाता सबदे मारि जीवावणिआ ॥५॥ (112-16)
सभना जीआ का सुखदाता पूरै करमि धिआइआ ॥१०॥ (1067-14)
सभना जीआ विचि हरि आपि सो भगता का मितु हरि ॥ (849-16)
सभना तेरा जोरु है जिउ भावै तिवै चलाही ॥ (947-17)
सभना तेरी आस प्रभु सभ जीअ तेरे तूं रासि ॥ (40-2)
सभना दाता आपि है आपे मेलणहारु ॥ (1244-13)
सभना दाता एकु तू माणस दाति न होइ ॥ (595-6)
सभना दाता एकु है इको हरि मिता ॥९॥ (512-4)
सभना दाता एकु है दूजा नाही कोइ ॥ (45-18)
सभना नदरि एक है आपे फरकु करेइ ॥ (558-19)
सभना पिरु वसै सदा नाले ॥ (112-4)
सभना प्रतिपाल करे जगजीवनु देदा रिजकु स्मबाहा हे ॥२॥ (1055-11)
सभना फलु लागै नामु एको बिनु करमा कैसे लेही ॥३॥ (354-17)
सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचांगवा ॥ (1384-18)
सभना मरणा आइआ वेछोड़ा सभनाह ॥ (595-4)
सभना महि एको सचु वरतै विरला बूझै कोई ॥२॥ (1334-8)
सभना मारि जीवालदा भाई सो सेवहु दिनु राति ॥ (639-7)
सभना रागां विचि सो भला भाई जितु वसिआ मनि आइ ॥ (1423-17)
सभना रिजकु समाहदा पिआरा दूजा अवरु न कोइ ॥ (605-3)
सभना रिजकु समाहे आपे कीमति होर न होई हे ॥२॥ (1045-1)

सभना रिजकु स्मबाहिदा तेरा हुकमु निराला ॥ (785-13)
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ (3-15)
सभना विचि तू वरतदा तू सभनी धिआइआ ॥ (548-16)
सभना विचि तू वरतदा साहा सभि तुझहि धिआवहि दिनु राति ॥ (670-6)
सभना विचि वरतै इकु सोई ॥ (1049-13)
सभना वेखै नदरि करि जै भावै तै देइ ॥४॥ (53-14)
सभना सचु वसै मन माही ॥ (1069-6)
सभना सार करे जगजीवनु जिनि अपणा आपु पछाता हे ॥१॥ (1051-6)
सभना सार करे सुखदाता आपे रिजकु पहुचाइदा ॥३॥ (1060-17)
सभना साहिबु एकु है पूरै भागि पाइआ जाई ॥११॥ (952-7)
सभना साहिबु एकु है वेखै धंधै लाइ ॥ (1238-2)
सभना साहुरै वंञणा सभि मुकलावणहार ॥ (50-19)
सभना सिरि तू एको साहिबु सबदे नामु सलाहा हे ॥१३॥ (1056-6)
सभनी घटी सहु वसै सह बिनु घटु न कोइ ॥ (1412-1)
सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥ (469-5)
सभनी थांई रविआ आपि ॥ (801-16)
सभसै ऊपरि गुर सबदु बीचारु ॥ (904-13)
सभसै दाता तिलु न तमाई ॥ (1022-5)
सभसै दे दातारु जेत उपारीऐ ॥ (518-2)
सभसै नो किरपालु सम्हाले साहि साहि ॥ (962-3)
सभहूं ते पिआरा पुरखु निरारा ता की गति नही जाणीऐ ॥ (454-6)
सभहू को रसु हरि हो ॥१॥ रहाउ ॥ (213-15)
सभहू तलै तलै सभ ऊपरि एह द्रिसटि द्रिसटाए ॥ (820-8)
सभा कालख दागा दाग ॥ (662-2)
सभि अंदेसे मिटि गए जम का भउ छुटु ॥ (315-12)
सभि अउगण गुणी मिटाइआ गुरु आपे बखसणहारु ॥२॥ (90-11)
सभि अध्रुव डिठे जीउ ता चरन कमल चितु लाइआ ॥ (785-2)
सभि अरथा सभि धरम मिले मनि चिंदिआ सो फलु पाइआ राम ॥ (443-18)
सभि अवगण मै गुणु नही कोई ॥ (750-13)
सभि आए हुकमि खसमाहु हुकमि सभ वरतनी ॥ (723-6)
सभि आखहु सतिगुरु वाहु वाहु जिनि दानु हरि नामु मुखि दीआ ॥१॥ (585-18)
सभि आसा गुरमुखि पूरीआ जन नानक सुणि हरि धीर ॥२॥ (1315-11)
सभि आसा हरि पूरीआ मेरे पिआरे मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ ॥ (452-6)
सभि इंद्रीआ वसि करि दितीओ सतवंता साड़ा ॥ (1097-19)
सभि इछा मनि तनि पूरीआ सभु चूका डरु जम के ॥१॥ (731-7)
सभि उतरे पाप कमाते ॥ (625-16)
सभि करम धरम हरि नामु जपाहा ॥ (699-18)

सभि करि करि वेखै अपणे चलता ॥ (998-13)
सभि कहहु मुखहु नर नरहरे नर नरहरे नर नरहरे हरि लाहा हरि भगति विसेखिआ ॥९॥ (1316-17)
सभि कहहु मुखहु रिखीकेसु हरे रिखीकेसु हरे जितु पावहि सभ फल फलना ॥२॥ (1313-13)
सभि कहहु मुखहु हरि हरि हरे हरि हरि हरे हरि बोलत सभि पाप लहोगीआ ॥१॥ (1313-5)
सभि काम पूरे मिलि हजूरे हरि चरण सेवकि सेविआ ॥ (929-3)
सभि कारज तिन के सिधि हहि जिन गुरमुखि किरपा धारि ॥ (301-1)
सभि कारण करता करे घट अउघट घट थापि ॥ (1239-19)
सभि कारण करता करे देखै वारो वार ॥ (1242-8)
सभि कालै वसि आपि प्रभि कीआ ॥ (1076-1)
सभि किलबिख काटे दूख सबाए ॥ (1052-17)
सभि किलविख काटै हरि तेरे ॥ (998-7)
सभि किलविख पाप गए गावाइणु ॥३॥ (1134-3)
सभि कुसल खेम प्रभि धारे ॥ (625-17)
सभि गावहु गुण गोविंद हरे गोविंद हरे गोविंद हरे गुण गावत गुणी समउला ॥६॥ (1315-14)
सभि गुण तेरे ठाकुर मेरे कितु मुखि तुधु सालाही ॥ (577-5)
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥ (4-15)
सभि गुणवंती आखीअहि मै गुणु नाही कोइ ॥ (56-11)
सभि घट आपे भोगवै पिआरा विचि नारी पुरख सभु सोइ ॥ (605-6)
सभि घट तेरे तू सभना माहि ॥ (1134-13)
सभि घट भोगवै अलिपतु रहै अलखु न लखणा जाई ॥ (592-1)
सभि घट भोगवै सदा दिनु राती आपे सूख निवासी हे ॥१॥ (1048-4)
सभि घट भोगै हरि रसु पीवन ॥ (1031-8)
सभि घट मेरे हउ सभना अंदरि जिसहि खुआई तिसु कउणु कहै ॥ (952-11)
सभि चवहि हरि हरि नामु करते असंख अगणत हरि धिआवए ॥ (1115-16)
सभि चवहु मुखहु जगंनाथु जगंनाथु जगजीवनो जितु भवजल पारि उतारा ॥४॥ (1314-14)
सभि जनम जनम दुख लाथे ॥ (622-14)
सभि जप सभि तप सभ चतुराई ॥ (412-2)
सभि जाइ मिलहु सतिगुरू कउ मेरी जिंदुड़ीए जो हरि हरि नामु द्रिड़ावै राम ॥ (540-14)
सभि जाचिक तू एको दाता मागहि हाथ पसारी ॥३॥ (507-3)
सभि जाचिक प्रभ तुम्ह दइआल ॥ (1181-1)
सभि जाचिक प्रभ देवनहार ॥ (1147-16)
सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥ (10-18)
सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥ (348-2)
सभि जीअ तेरे तूं वरतदा मेरे हरि प्रभ तूं जाणहि जो जीइ कमाईऐ राम ॥ (541-6)
सभि जीअ तेरे तू सभस दा तू सभ छडाही ॥४॥ (302-1)
सभि जीअ तेरे तू सभस दा मेरे साहा सभि तुझ ही माहि समाहि ॥३॥ (670-8)
सभि जीअ तेरे प्रभू मेरे करि किरपा सभ रेण थीवा ॥ (926-4)

सभि जीअ भए किरपाला ॥ (625-12)
सभि जीअ भए दइआला ॥१॥ (622-5)
सभि जुग तेरे कीते होए ॥ (1176-11)
सभि तिसै नो सालाहिहु संतहु जिनि दूजे भाव की मारि विडारी ढेरी ॥१६॥ (555-2)
सभि तीरथ बरत जग्य पुंन कीए हिवै गालि गालि तनु छीजै ॥ (1325-2)
सभि तीरथ वरत जग पुंन तोलाहा ॥ (699-17)
सभि तुझ ही थावहु मंगदे मेरे साहा तू सभना करहि इक दाति ॥२॥ (670-7)
सभि तुझै धिआवहि जीअ जंत हरि सारग पाणा ॥ (84-5)
सभि तुधै नो आराधदे दानु देहि पिआरे ॥ (1318-6)
सभि तुधै नो सालाहदे दरि गुरमुखा नो परगासि ॥९॥ (86-6)
सभि तुधै पासहु मंगदे नित करि अरदासि ॥ (86-5)
सभि तेरे चोज विडाण सभु तेरा कारणो ॥१३॥ (963-17)
सभि तेरे जंत तेरे सभि जीआ ॥ (1062-15)
सभि थान देखे नैण अलोइ ॥ (915-2)
सभि दालिद भंजि दुख दाल ॥ (977-8)
सभि दुख भुख रोग गए हरि सेवक के सभि जन के बंधन तोड़ीऐ ॥ (550-7)
सभि दुख मेटे मारगि पाए ॥ (1029-12)
सभि दुख मेटे साचै नाई ॥६॥ (412-10)
सभि दूख बिनासे राम राइ ॥३॥ (1169-17)
सभि दूख सखाई गुणह बीन ॥३॥ (1188-3)
सभि धंनु कहहु गुरु सतिगुरू गुरु सतिगुरू जितु मिलि हरि पड़दा कजिआ ॥७॥ (1316-1)
सभि धिआवहि तुधु मेरे प्रीतमा तू सति सति पुरख निरंजना ॥ (1313-11)
सभि धिआवहि तुधु सफल से गावहि गुरमती हरि निरंकारा ॥ (1314-14)
सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ (10-18)
सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ (348-2)
सभि धिआवहु आदि सते जुगादि सते परतखि सते सदा सदा सते जनु नानकु दासु दसोना ॥५॥ (1315-5)
सभि धिआवहु नर नाराइणो नाराइणो जितु चूका जम झगड़ु झगोलु ॥१२॥ (1317-18)
सभि नाद बेद गुरबाणी ॥ (879-9)
सभि निधान घरि जिस दै हरि करे सु होवै ॥ (322-13)
सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ (10-13)
सभि निधान सतिगुरू विचि जिसु अंदरि हरि उर धारे ॥ (307-18)
सभि पदारथ पाईअनि सिमरणु सचु लाहु ॥ (556-12)
सभि पदारथ सभि फला सरब गुणा जिसु माहि ॥ (218-11)
सभि पवहु सरनि सतिगुरू की बिनसै दुख दागरु ॥१४॥ (1318-10)
सभि पातिसाहीआ अमर सभि सभि खुसीआ सभि खान ॥ (1241-4)
सभि फल पाए निहचल गुण गाउ ॥३॥ (1184-17)
सभि फलदाता निरमल सेव ॥ (1149-15)

सभि फोकट निसचउ करमं ॥ (470-18)
सभि बोलहु राम रमो स्री राम रमो जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जावणी ॥३॥ (1314-3)
सभि रस तिन कै रिदै हहि जिन हरि वसिआ मन माहि ॥ (310-1)
सभि रस देही अंदरि पाए ॥ (1056-17)
सभि रस भोगण बादि हहि सभि सीगार विकार ॥ (19-5)
सभि रस भोगण विसरे बिनु पिर कितै न लेखा ॥ (564-9)
सभि रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ॥ (16-12)
सभि रस लैत बसत निरारा ॥१॥ (746-9)
सभि राती सोहागणी इक मै दोहागणि राति ॥४॥ (790-13)
सभि राती सोहागणी मै डोहागणि काई राति जीउ ॥१॥ (762-13)
सभि रूप सभि सुख बने सुहागनि ॥ (374-8)
सभि रोग गवाए अम्रित रसु पाए ॥ (1028-1)
सभि संजम रहे सिआणपा ॥ (72-16)
सभि सखीआ पंचे मिले गुरमुखि निज घरि वासु ॥ (1291-5)
सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥ (349-3)
सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥ (9-12)
सभि सहीआ सहु रावणि गईआ हउ दाधी कै दरि जावा ॥ (558-2)
सभि सिआणपा छडि कै गुर की चरणी पाहु ॥१॥ (44-12)
सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ ॥४॥ (923-15)
सभि सिध साधिक मुनि जना मनि भावनी हरि धिआइओ ॥ (985-1)
सभि सुख जाहि दुखा फुनि आगै ॥ (1030-4)
सभि सुख परगटिआ दुख दूरि पराइआ राम ॥ (547-2)
सभि सुख पाई तिस की सेव ॥ रहाउ ॥ (1152-15)
सभि सुख पाए सतिगुर तूठे ॥३॥ (801-18)
सभि सुख मागै नामु बिसारी ॥१॥ रहाउ ॥ (222-12)
सभि सुख मुकति नाम धुनि बाणी सचु नामु उर धारी ॥ (1013-14)
सभि सुख सभि गुण सभि निधान हरि जितु जपिऐ दुख भुख सभ लहि जाई ॥१॥ (493-11)
सभि सुख हरि रस भोगणे संत सभा मिलि गिआनु ॥ (21-10)
सभि सुचि संजम साचु पछाणै ॥१६॥ (840-11)
सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ (349-2)
सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ (9-11)
सभि सुहागणि माणहि रलीआ इक देवहु राति मुरारी ॥१॥ (959-16)
सभि सेवहु मोहनो मनमोहनो जगमोहनो जिनि जगतु उपाइ सभो वसि कीता ॥११॥ (1317-12)
सभु अंतरजामी ब्रहमु है ब्रहमु वसै सभ थाइ ॥ (757-5)
सभु अरपउ मनु तनु चीतु ॥१॥ रहाउ ॥ (980-5)
सभु आतम रामु पछाणिआ गुरमती निज घरि वासु ॥३॥ (69-16)
सभु आतम रामु पछाणिआ तां इकु रविआ इको ओति पोति ॥ (309-18)

सभु आतम रामु पछाणिआ भउजलु तरि गइआ ॥ (790-7)
सभु आतम रामु पसारिआ गुर बुधि बीचारी ॥९॥ (589-18)
सभु आपे आपि वरतदा आपे नाइ लाईऐ ॥२॥ (163-2)
सभु आपे आपि वरतदा आपे बखसि मिलाई ॥७॥ (949-18)
सभु आपे आपि वरतदा आपे भरमाइआ ॥ (229-9)
सभु आपे आपि वरतदा आपे ही गुणतासु ॥ (302-14)
सभु आपे आपि वरतदा आपे है भाई ॥ (1251-13)
सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ॥ (1424-13)
सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ॥ (87-1)
सभु आपे जगतु उपाइदा पिआरा वसि आपे जुगति हथाहा ॥ (606-19)
सभु आलसु दूख भंजि प्रभु पाइआ गुरमति गावहु गुण प्रभ केरे ॥१॥ रहाउ ॥ (1177-18)
सभु इको सबदु वरतदा जो करे सु होई ॥ (654-1)
सभु इको सबदु वरतदा मेरे गोविदा जन नानक नामु धिआइआ जीउ ॥४॥२॥२८॥६६॥ (173-15)
सभु इको हुकमु वरतदा मंनिऐ सुखु पाई ॥३॥ (948-7)
सभु उपाए आपे वेखै किसु नेड़ै किसु दूरि ॥ (38-9)
सभु कछु उस का ओहु करनैहारु ॥ (279-7)
सभु कछु जानै आतम की रहत ॥ (269-12)
सभु कछु तिस दै वसि दूजी नाहि जाइ ॥ (1425-11)
सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥ (280-18)
सभु करणा किरतु करि लिखीऐ करि करि करता करे करे ॥ (1238-14)
सभु करता सभु भुगता ॥१॥ रहाउ ॥ (862-4)
सभु काजु हमारा होइआ ॥ (627-2)
सभु किछु अपना इकु रामु पराइआ ॥१॥ (1342-14)
सभु किछु अपुना करि करि राखिआ खिन महि भइआ पराइआ ॥ (76-2)
सभु किछु आपे आपि आपि उपंनिआ ॥ (965-18)
सभु किछु आपे आपि कराए ॥ (1061-11)
सभु किछु आपे आपि दूजा कहा केहु ॥ (710-11)
सभु किछु आपे आपि बेअंत अपारिआ ॥ (523-12)
सभु किछु आपे आपि वरतै गुरमुखि तनु मनु भीजै हे ॥९॥ (1049-15)
सभु किछु आपे आपि वरतै नानक नामि वडिआई ॥२१॥३॥१२॥ (910-17)
सभु किछु आपे आपि है आपे देइ वडिआई ॥१४॥ (954-9)
सभु किछु आपे आपि है गुर सबदि सुणाई ॥ (947-11)
सभु किछु आपे आपि है गुरमुखि सदा हरि भणि ॥ (949-2)
सभु किछु आपे आपि है दूजा अवरु न कोइ ॥ (39-4)
सभु किछु इस का इहु करनै जोगु ॥२॥ (868-16)
सभु किछु करते हथि कारणु जो करै ॥ (523-14)
सभु किछु कीता तेरा वरतै किआ हम बाल गुपाला ॥ (608-10)

सभु किछु कीता तेरा वरतै सदा सदा तेरी आस ॥३॥ (382-12)
सभु किछु घर ही माहि है वडभागी लीता ॥ (955-16)
सभु किछु जाणै जाणु बुझि वीचारदा ॥ (519-1)
सभु किछु जाणै मेरे जीअ का प्रीतमु बिसरि गए बकबाइआ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥६॥१५॥ (1003-8)
सभु किछु ता का कांढीऐ थोरा अरु मूचा ॥१॥ (400-4)
सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥ (283-11)
सभु किछु तिस के ग्रिह महि आइआ ॥४॥२॥१७॥ (715-10)
सभु किछु तिस कै वसि न कोई बाहरा ॥ (522-19)
सभु किछु तिस ते होइआ जिउ तिसै दी रजाइ ॥२४॥ (1423-19)
सभु किछु तिसु सुझै हां ॥ (410-18)
सभु किछु तुम ते तूं अंतरजामी ॥१॥ (193-1)
सभु किछु तुम ते मागना वडभागी पाए ॥ (811-8)
सभु किछु तुम्हरै हाथि प्रभ आपि करे कराए ॥ (745-10)
सभु किछु तेरा खेलु है सचु सिरजणहारा ॥ (948-15)
सभु किछु तेरा तू अंतरजामी तू सभना का प्रभु सोई ॥ (608-1)
सभु किछु तेरा तू करणैहारु ॥ (1149-17)
सभु किछु तेरा तू प्रभु मेरा मेरे ठाकुर दीन दइआला ॥ (781-10)
सभु किछु तेरै नालि है सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ (1420-3)
सभु किछु तेरै वसि तेरा घरु भला ॥ (965-7)
सभु किछु दे रहिआ हरि देवणहारा ॥ (461-7)
सभु किछु देखै तिसै का जिनि कीआ तनु साजि ॥ (551-5)
सभु किछु पूरा हिरदै नामु ॥१॥ (188-16)
सभु किछु बहुतो बहुतु उपाइआ ॥ (104-11)
सभु किछु मै सभु किछु पाइआ नामु धिआई राम ॥ (452-17)
सभु किछु वसगति साहिबै आपे करण करेव ॥ (44-1)
सभु किछु वसि जिसै सो प्रभू असाड़ा ॥ (461-1)
सभु किछु सचो सचु है गुरि सोझी पाई ॥१६॥ (955-3)
सभु किछु साचा आपे आपै ॥१॥ (158-10)
सभु किछु साचा साचा है सोइ ॥ (665-19)
सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ ॥ (36-1)
सभु किछु हरि का खेलु है गुरमुखि किसै बुझाई ॥१३॥ (953-18)
सभु किछु हुकमे आवदा सभु किछु हुकमे जाइ ॥ (556-13)
सभु किहु तेरै वसि है तू सचा साहु ॥ (556-11)
सभु कीता तेरा वरतदा तूं अंतरजामी ॥ (167-18)
सभु कीता तेरा वरतदा सभ तेरी बणतै ॥ (314-2)
सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥ (473-11)
सभु को आखै आपणा भाई गुर ते बुझै सुजानु ॥ (637-9)

सभु को आखै बहुतु बहुतु घटि न आखै कोइ ॥ (15-6)
सभु को आखै बहुतु बहुतु लैणै कै वीचारि ॥ (53-18)
सभु को आसै तेरी बैठा ॥ (97-7)
सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ ॥ (62-12)
सभु को जम के चीरे विचि है जेता सभु आकारु ॥ (851-4)
सभु को तिसु मंने हां ॥ (410-6)
सभु को तुझ ही विचि है मेरे साहा तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥ (670-7)
सभु को तेरा तूं सभना का मेरे करते तुधु सभना सिरि लिखिआ लेखु ॥ (735-12)
सभु को तेरा तूं सभना का सोइ ॥ (151-12)
सभु को तेरा तूं सभसु दा तूं सभना रासि ॥ (86-4)
सभु को तेरा तू सभना का हउ तेरा तू हमारा ॥ (768-4)
सभु को तेरा भगतु कहाए ॥ (122-9)
सभु को तेरै वसि अगम अगोचरा ॥ (962-11)
सभु को नथै नथिआ बखसे तोड़े नथ ॥ (1289-3)
सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥ (470-14)
सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ॥ (469-4)
सभु को बीजे आपणे भले नो हरि भावै सो खेतु जमाइआ ॥ (304-7)
सभु को बोलै आपण भाणै ॥ (1033-1)
सभु को भगति करे हरि केरी हरि भावै सो थाइ पावीऐ रे ॥१॥ (1118-4)
सभु को भरिआ फूकि आखणि कहणि न थम्हीऐ ॥ (1244-18)
सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ (671-8)
सभु को लेखे विचि है मनमुखु अहंकारी ॥ (1247-19)
सभु को वणजु करे वापारा ॥ (1064-10)
सभु को वसगति करि लइओनु बिनु नावै खाकु रलिआ ॥३॥ (42-18)
सभु को सचि समावै ॥ (470-4)
सभु को सचे हरि जीउ तेरा ॥ (122-10)
सभु कोइ मीठा मंगि देखै खसम भावै सो करे ॥ (566-8)
सभु कोई चलन कहत है ऊहां ॥ (1161-10)
सभु कोई देखै पतीआइ ॥१८॥ (1166-6)
सभु कोई हरि कै वसि भगता कै अनंदु घरि ॥ (849-17)
सभु कोई है खसम का खसमहु सभु को होइ ॥ (1244-11)
सभु कोऊ कहै जासु की बाता ॥ (330-18)
सभु खेलु तमासा तेरी वडिआई ॥ (1061-17)
सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंद बिनु नही कोई ॥ (485-2)
सभु जगजीवनु जगि आपि है नानक जलु जलहि समाइ ॥४॥४॥६८॥ (41-8)
सभु जगु आनि तनाइओ तानां ॥१॥ रहाउ ॥ (484-10)
सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारा ॥ (583-11)

सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारे ॥२॥ (583-14)
सभु जगु काजल कोठड़ी तनु मनु देह सुआहि ॥ (64-1)
सभु जगु कालै वसि है बाधा दूजै भाइ ॥ (162-12)
सभु जगु खेलु रचाइओनु सभ वरतै आपे ॥१३॥ (789-19)
सभु जगु गरबि गुबारु तिन सचु न भाइआ ॥ (1289-9)
सभु जगु चलतउ पेखीऐ निहचलु हरि को नाउ ॥ (431-6)
सभु जगु जिनहि उपाइआ भाई करण कारण समरथु ॥ (639-13)
सभु जगु ठगिओ ठगि आईऐ जाईऐ ॥ (147-9)
सभु जगु तिस कै वसि है सभु तिस का चीरा ॥ (511-6)
सभु जगु तेरा तू एको दाता अवरु न दूजा भाई ॥ (634-16)
सभु जगु देखिआ माइआ छाइआ ॥ (354-5)
सभु जगु फिरि मै देखिआ हरि इको दाता ॥ (510-16)
सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु ॥ (55-9)
सभु जगु बिनसै नामु विसारा ॥ (1057-18)
सभु जगु साचा जा सच महि राते ॥ (183-4)
सभु जगु हारै सो जिणै गुर सबदु वीचारा ॥५॥ (422-13)
सभु जगु है तिस ही कै चीरै ॥ (1048-3)
सभु जनमु तिना का सफलु है जिन हरि के नाम की मनि लागी भुखा ॥ (588-10)
सभु जनमु सफलिउ कीआ करतै हरि राम नामि वखाणीआ ॥ (576-1)
सभु जीउ पिंडु दीआ तुधु आपे तुधु आपे कारै लाइआ ॥ (736-5)
सभु जीउ पिंडु मुखु नकु दीआ वरतण कउ पाणी ॥ (167-17)
सभु तनु मनु अरपउ अरपि अरापउ कोई मेलै प्रभ मिलथे ॥३॥ (1320-5)
सभु तनु मनु देह हरि लीनी ॥ (655-6)
सभु तनु मनु हरिआ होइआ नानक हरि वसिआ मनि सोइ ॥४॥५॥६९॥ (41-16)
सभु तनु मनु हरिआ होइआ मनु खिड़िआ हरिआ बागु ॥ (849-3)
सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥ (448-12)
सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥४॥७॥१४॥ (448-15)
सभु तेरा चोजु वरतदा दुखु सुखु तुधु पासि ॥२॥ (549-8)
सभु तेरा सबदु वरतै उपावणहारिआ ॥ (642-19)
सभु तेरो खेलु तुझ महि समाहि ॥ (1181-6)
सभु दालदु दूख भंज प्रभु पाइआ जन नानक नामि उधरिआ ॥४॥१॥ (1294-9)
सभु दिनसु रैणि देखउ गुरु अपुना विचि अखी गुर पैर धराई ॥२८॥ (758-9)
सभु नदरी आइआ ब्रहमु परगासा ॥ (176-9)
सभु नावै नो परतापदा ॥ (71-18)
सभु परवारु चड़ाइआ बेड़े ॥१॥ रहाउ ॥ (337-3)
सभु पारब्रहमु नदरी आइआ ॥२॥१६॥८०॥ (628-15)
सभु ब्रहम पसारु पसारिओ आपे खेलंता ॥ (1095-14)

सभु भउ बिनसै हरि हरि धिआईऐ ॥ (104-18)
सभु मनु तनु जीउ करहु हरि प्रभ का इतु मारगि भैणे मिलीऐ ॥ (561-17)
सभु मनु तनु हरिआ होइआ अहंकारु गवापै ॥ (953-17)
सभु मनु तनु हरिआ होइआ गुरबाणी हरि गुण भाखु ॥१॥ (997-9)
सभु माइआ मोहु बिखमु जगु तरीऐ सहजे हरि रसु पीजै ॥६॥ (1326-16)
सभु मुकतु होआ सैसारड़ा नानक सची बेड़ी चाड़ि जीउ ॥११॥ (74-1)
सभु मेरा प्रभु आतम देउ ॥३॥ (1173-8)
सभु मोहु माइआ सरीरु हरि कीआ विचि देही मानुख भगति कराई ॥ (735-10)
सभु रहिओ अंदेसरो माइओ ॥ (624-12)
सभु लोकु सलाहे एकसै ॥ (1168-14)
सभु सचा हुकमु वरतदा गुरमुखि सचि समाउ ॥ (949-8)
सभु सचु दिखाले ता सचि समाइ ॥३॥ (797-7)
सभु सचु नदरी आइआ जउ आतम भइआ उदासु ॥३॥ (1103-13)
सभु सचु वरतै सचो बोलै जो सचु करै सु होई ॥ (769-14)
सभु सचो सचु वरतदा गुरमुखि अलखु लखाई ॥६॥ (949-9)
सभु सचो सचु वरतदा जिसु भावै तिसै बुझाइ जीउ ॥२०॥ (73-1)
सभु सचो सचु वरतदा सचु सिरजणहारा ॥१॥ (1087-5)
सभु सचो सचु वरतदा सदा सचु निआउ ॥ (1092-18)
सभु सफलिओ जनमु तिना दा गुरमुखि जिना मनु जिणि पासा ढालिआ ॥ (78-16)
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ (142-10)
सभु हुकमो वरतै हुकमि समाइ ॥ (1188-8)
सभु है ब्रहमु ब्रहमु है पसरिआ मनि बीजिआ खावारे ॥ (982-12)
सभु है सचा जे सचे भावै ॥ (113-8)
सभे आसा पूरीआ गुर महलि बुलाईआ ॥ (1098-15)
सभे इछा पूरीआ जा पाइआ अगम अपारा ॥ (747-1)
सभे इछा पूरीआ लगि प्रभ कै पावै ॥ (1097-13)
सभे कंत महेलीआ सगलीआ करहि सीगारु ॥ (53-19)
सभे कंतै रतीआ मै दोहागणि कितु ॥ (790-11)
सभे करणे तप सभि सभे गीत गिआन ॥ (1241-3)
सभे काज सवारिअनु लाहीअनु मन की भुख जीउ ॥७॥ (73-16)
सभे काज सवारिऐ जा तुधु भावंदा ॥७॥ (1096-18)
सभे काज सुहेलड़े थीए गुरु नानकु सतिगुरु तुठा ॥१॥ (322-6)
सभे गला आपि थाटि बहालीओनु ॥ (653-13)
सभे गला जातीआ सुणि कै चुप कीआ ॥ (217-19)
सभे गला विसरनु इको विसरि न जाउ ॥ (43-15)
सभे गुनह बखसाइ लइओनु मेले मेलणहारि ॥ (428-18)
सभे छडि सिआणपा गुर की पैरी पाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (43-17)

सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥ (1251-8)
सभे थोक परापते जे आवै इकु हथि ॥ (44-4)
सभे थोक विसारि इको मितु करि ॥ (1093-11)
सभे दुख संताप जां तुधहु भुलीऐ ॥ (964-1)
सभे दैत रहे झख मारि ॥ (1154-10)
सभे धिरां निखुटीअसु हिरि लईअसु धर ते ॥ (317-7)
सभे पाणी पउण सभि सभि अगनी पाताल ॥ (1241-17)
सभे पुरीआ खंड सभि सभि लोअ लोअ आकार ॥ (1241-17)
सभे पुरीआ खंड सभि सभे जीअ जहान ॥ (1241-5)
सभे बुधी सुधि सभि सभि तीरथ सभि थान ॥ (1241-3)
सभे माणस देव सभि सभे जोग धिआन ॥ (1241-4)
सभे राती सभि दिह सभि थिती सभि वार ॥ (1241-16)
सभे रुती चंगीआ जितु सचे सिउ नेहु ॥ (1015-10)
सभे रुती माह सभि सभि धरतीं सभि भार ॥ (1241-16)
सभे वखत सभे करि वेला ॥ (1084-2)
सभे वसतू कउड़ीआ सचे नाउ मिठा ॥ (321-6)
सभे वसतू मिठीआं रब न पुजनि तुधु ॥२७॥ (1379-6)
सभे वेला वखत सभि जे अठी भउ होइ ॥ (146-3)
सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥३॥ (97-8)
सभे सिख उबारिअनु प्रभि काज सवारे ॥ (323-2)
सभे सुख भए प्रभ तुठे ॥ (106-15)
सभे सुरती जोग सभि सभे बेद पुराण ॥ (1241-3)
सभै उडानी भ्रम की टाटी रहै न माइआ बांधी ॥१॥ रहाउ ॥ (331-18)
सभै उधारणु खसमु हमारा ॥ (1072-11)
सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥ (988-16)
सभै पुत्र रागंन के अठारह दस बीस ॥१॥१॥ (1430-19)
सभो जपीऐ जापु जि मुखहु बोलेटिआ ॥ (520-17)
सभो भजै आसरा चुकै सभु असराउ ॥ (70-7)
सभो वरतै चलतु चलतु वखाणिआ ॥ (1291-10)
सभो वरतै सचु सचै सबदि निहालिआ ॥ (1284-12)
सभो वरतै हुकमु किआ करहि विचारिआ ॥ (86-17)
सभो सचु सचु सचु वरतै गुरमुखि कोई जाणै ॥ (754-3)
सभो सूतकु जेता मोहु आकारु ॥ (229-13)
सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ॥ (472-18)
सभो हुकमु हुकमु है आपे निरभउ समतु बीचारी ॥३॥ (1351-1)
सम सुपनै कै इहु जगु जानु ॥ (1187-3)
समझ न परी बिखै रस रचिओ जसु हरि को बिसराइओ ॥ (702-19)

समझि देखु साकत गावार ॥ (1160-10)
समझि परी तउ बिसरिओ गावनु ॥३॥ (478-13)
समझि सूझि सहज घरि होवहि ॥ (413-6)
समझु अचेत चेति मन मेरे कथी संतन अकथ कहाणी ॥ (1219-16)
समझै सूझै जाणीऐ जे आपि जाणावै ॥ (766-16)
समझै सूझै पड़ि पड़ि बूझै अंति निरंतरि साचा ॥ (930-4)
समदरसी एक द्रिसटेता ॥ (296-2)
समदरसी पूरन निरजोग ॥ (891-2)
समन जउ इस प्रेम की दम क्यिहु होती साट ॥ (1363-18)
समरथ अकथ अगोचर देवा ॥ (1084-18)
समरथ अगथ अपार निरमल सुणहु सुआमी बिनउ एहु ॥ (457-18)
समरथ अगथ अपार पूरन जीउ तनु धनु तुम्ह मना ॥ (543-11)
समरथ अथाह बडा प्रभु मेरा ॥ (535-14)
समरथ गुरू सिरि हथु धर्यउ ॥ (1400-6)
समरथ पुरख पूरन बिधाते आपे करणैहारा ॥ (618-4)
समरथ पुरखु पारब्रहमु सुआमी ॥३॥ (187-19)
समरथ पूरन सदा निहचल ऊच अगम अपारे ॥ (545-16)
समरथ सरणा जोगु सुआमी क्रिपा निधि सुखदाता ॥ (578-6)
समरथ सुआमी कारण करण ॥ (1183-1)
समाइ पूरन पुरख करते आपि आपहि जाणीऐ ॥ (578-3)
समुंद कोटि जा के पानीहार ॥ (1163-2)
समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥ (5-6)
समुंदु बिलोवन कउ माटा ॥ (655-7)
समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इक वसतु अनूप दिखाई ॥ (442-18)
समुंदु सागरु जिनि खिन महि तारा ॥१॥ रहाउ ॥ (684-8)
समुंदु सागरु होवै बहु खारा गुरसिखु लंघि गुर पहि जाई ॥१४॥ (757-19)
सम्रथ पुरखु दइआल देउ पिआरे भगता तिस का ताणु ॥ (641-12)
सम्हलिआ सचु थानु मानु महतु सचु पाइआ बलि राम जीउ ॥ (778-7)
सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ (12-7)
सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ (378-2)
सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ ॥२॥ (598-7)
सर अपसर की सार न जाणै जमु मारे किआ चारा हे ॥१३॥ (1027-10)
सर भरि थल हरीआवले इक बूंद न पवई केह ॥ (60-4)
सर भरि सोखै भी भरि पोखै समरथ वेपरवाहै ॥ (935-14)
सरगुण निरगुण थापै नाउ ॥ (387-18)
सरगुन निरगुन निरंकार सुंन समाधी आपि ॥ (290-16)
सरजीउ काटहि निरजीउ पूजहि अंत काल कउ भारी ॥ (332-13)

सरणागति प्रतिपालक हरि सुआमी जो तुम देहु सोई हउ पाउ ॥ (669-12)
सरणागति प्रहलाद जन आए तिन की पैज सवारी ॥२॥ (507-2)
सरणागती प्रभ पालते हरि भगति वछलु नाइआ ॥ (984-6)
सरणि आवै तां निरमलु होई ॥१॥ (1141-16)
सरणि के दाते बचन के सूरे ॥ (1073-12)
सरणि गही नानक प्रभ तेरी ॥४॥३७॥४८॥ (898-7)
सरणि गही प्रभ गुनी गहेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (389-2)
सरणि गहीजै मानि लीजै करे सो सुखु पाईऐ ॥ (457-10)
सरणि जोगं संत प्रिअ नानक सो भगवान खेमं करोति ॥१९॥ (1355-15)
सरणि जोगु समरथु मोहनु सरब दोख बिदारो ॥ (249-4)
सरणि तुम्हारी आइओ नानक के प्रभ साथ ॥१॥ (263-19)
सरणि नानक तिन्ह सद बलिहारे ॥४॥७॥१३॥ (739-19)
सरणि नानक प्रभ पुरख अपार ॥४॥३२॥४५॥ (1149-6)
सरणि नानक प्रभ पुरख दइअलीआ ॥४॥४॥५५॥ (385-5)
सरणि नानक हरि नामु धिआइ ॥४॥९८॥१६७॥ (199-14)
सरणि पइआ नानक सोहेला ॥४॥९॥४८॥ (383-6)
सरणि पए जपि दीन दइआला ॥ (744-5)
सरणि पए प्रभ आपणे गुरु होआ किरपालु ॥ (48-3)
सरणि परहि ते उबरहि छोडि जम पुर की लिखह ॥ (1395-9)
सरणि परिओ ठाकुर वजीरा ॥ (212-9)
सरणि परे की राखता नाही सहसाइआ ॥ (812-9)
सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥२९॥ (378-4)
सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥४॥ (12-9)
सरणि परे गुरदेव तुमारी ॥ (1031-5)
सरणि परे चरणारबिंद जन प्रभ के प्रान ॥ (817-14)
सरणि परे जपिओ ते भाए गुरमुखि पारि पइआ ॥१॥ (995-12)
सरणि परे तेरी दास करि गति होइ मेरीआ ॥ (521-3)
सरणि परे प्रभ अंतरजामी ॥ (201-9)
सरणि परे सेई जन उबरे जिउ प्रहिलाद उधारि समईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (834-2)
सरणि बंदन करुणा पते ॥ (1119-10)
सरणि संतं किलबिख नासं प्रापतं धरम लख्यिण ॥ (1354-16)
सरणि सचे की ताकी ॥१॥ (622-16)
सरणि समरथ अकथ अगोचरा पतित उधारण नामु तेरा ॥ (683-16)
सरणि समरथ अगोचर सुआमी ॥ (744-1)
सरणि समरथ एक केरी दूजा नाही ठाउ ॥ (405-4)
सरणि समाई दास हित ऊचे अगम अपार ॥३॥ (203-9)
सरणि साधू निरमला गति होइ प्रभ कै नामि ॥३॥ (501-12)

सरणि सूर फारे जम कागर ॥१॥ रहाउ ॥ (196-3)
सरणि सूर भगवानह जपंति नानक हरि हरि हरे ॥१॥ (709-11)
सरणि सूरो गुर दाता राखै आपि वडाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1005-10)
सरणि सोहागनि आइआ जिसु मसतकि भागउ ॥ (808-13)
सरणी पावन नाम धिआवन सहजि समावन संगि ॥१॥ रहाउ ॥ (680-1)
सरधा लागी संगि प्रीतमै इकु तिलु रहणु न जाइ ॥ (928-8)
सरधा सरधा उपाइ मिलाए मो कउ हरि गुर गुरि निसतारे ॥६॥ (983-4)
सरन परन साधू आन बानि बिसारे ॥१॥ (1230-5)
सरनि आइओ राखनहारे ॥ रहाउ ॥ (533-6)
सरनि आवै पारब्रहम की ता फिरि काहे झूरे ॥२॥ (132-19)
सरनि गही अचुत अबिनासी किलबिख काढे है छांटि ॥ (1269-8)
सरनि गही पारब्रहम की मिटिआ आवा गवन ॥ (300-2)
सरनि गही पूरन अबिनासी आन उपाव थकित नही करसन ॥ (1303-13)
सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥ (295-12)
सरनि तुमारी आइओ करते पारब्रहम पूरन अबिनास ॥ (1208-3)
सरनि तेरी कटि महा बेड़ी इकु नामु देहि अधारा ॥ (546-19)
सरनि तेरी मो कउ निसतारि ॥२॥ (872-3)
सरनि तेरी रखि लेहु मेरी सरब मै निरंजना ॥ (547-6)
सरनि दुख भंजन पुरख निरंजन साधू संगति रवणु जैसे ॥ (829-11)
सरनि देव अपार नानक बहुरि जमु नही लुझै ॥२॥७॥१५॥ (1122-3)
सरनि नानक प्रभ पुरख दइआल ॥१३॥ (299-14)
सरनि परिओ नानक ठाकुर की अभै दानु सुखु पाइओ ॥२॥३॥१२॥ (498-14)
सरनि परिओ नानक प्रभ तुमरी दे राखिओ हरि हाथ ॥४॥२॥३२॥ (503-3)
सरनि परिओ नानक हरि दुआरे ॥४॥४॥ (563-6)
सरनि परिओ पूरन परमेसुर बिनसे सगल जंजाल ॥ रहाउ ॥ (676-3)
सरनि परिओ हरि चरन गहे प्रभ गुरि नानक कउ बूझ बुझाई ॥२॥५॥९१॥ (822-13)
सरनि परे की राखु दइआला ॥ (260-8)
सरनि परे नानक सुआमी की बाह पकरि प्रभि काढि लइआ ॥२॥२४॥११०॥ (826-9)
सरनि परे प्रभ तेरीआ प्रभ की वडिआई ॥ (816-17)
सरनि परे साचे गुरदेव ॥ (396-10)
सरनि समरथ अकथ अगोचर हरि सिमरत दुख लाथ ॥ (1120-16)
सरनि सम्रथ अकथ सुखदाता किरपा सिंधु बडो दइआल ॥ (824-14)
सरनि सरनि सरनि प्रभ पावउ दीजै साधसंगति किरपानद ॥ (1204-15)
सरनि सुहागनि चरन सीसु धरि ॥ (830-5)
सरनी आइओ नाथ निधान ॥ (1119-14)
सरप जोनि वलि वलि अउतरै ॥१॥ (526-6)
सरपनि होइ कै अउतरै जाए अपुने खाइ ॥१०७॥ (1370-4)

सरपनी ते ऊपरि नही बलीआ ॥ (480-16)
सरपर उठी चलणा छडि जासी लख करोड़ि ॥३॥ (50-14)
सरपर गवनु करहिगे बपुरे ॥१॥ (237-7)
सरपर जानहु नरक ही परै ॥१॥ रहाउ ॥ (875-12)
सरपर मैथै आवणा मरणहु ना डरिआहु ॥९३॥ (1382-16)
सरपर वीछुड़णा मोहे पछुताणे राम ॥ (548-4)
सरपर होवत जानु अनेत ॥ (268-12)
सरफै सरफै सदा सदा एवै गई विहाइ ॥ (1412-16)
सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥ (660-7)
सरब अनंद जब दरसनु पाईऐ ॥ (890-15)
सरब इछा ता की पूरन होइ ॥ (295-17)
सरब उपाइ गुरू सिरि मोरु ॥ (1187-10)
सरब करतब ममं करता नानक लेप छेप न लिप्यते ॥३८॥ (1357-7)
सरब कला करि खेलै खेल ॥ (294-4)
सरब कला करि थापिआ अंतरि जोति अपार ॥ (47-8)
सरब कला जगदीसै अंस ॥१॥ (352-6)
सरब कला पूरन प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (196-11)
सरब कला प्रभ तुम्ह प्रबीन ॥ (1182-2)
सरब कला प्रभ पूरणो मंञु निमाणी थाउ ॥ (137-8)
सरब कला प्रीतम भरपूरि ॥७॥ (1349-4)
सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥ (282-9)
सरब कला भरपूरु दिसै जत कता ॥ (965-9)
सरब कला ले आपे रहिआ गुरमुखि किसै बुझाइदा ॥५॥ (1036-15)
सरब कला ले आपे रहै ॥ (974-17)
सरब कला समरथ प्रभ पूरे गुरदेव ॥१॥ रहाउ ॥ (811-5)
सरब कला साचे भरपूरा ॥ (1021-7)
सरब कला सोई परबीन ॥ (1298-12)
सरब कलिआण कीए गुरदेव ॥ (801-15)
सरब कलिआण चरण प्रभ सेवा ॥ (1138-8)
सरब कलिआण जे मन महि चाहहि मिलि साधू सुआमी रावणा ॥४॥ (1086-2)
सरब कलिआण प्रभि कीने ॥ (626-14)
सरब कलिआण वसै मनि आइ ॥१॥ (193-9)
सरब कलिआण सुख सहज निधान ॥ (195-19)
सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥ (290-5)
सरब कलिआण सूख मनि वूठे ॥ (1341-4)
सरब कलिआण सूख सचु पावै ॥ रहाउ ॥ (203-13)
सरब कलिआणा तितु दिनि हरि परसी गुर के पाउ ॥४॥१॥ (137-12)

सरब कारज सिधि भए गाइ गुन गुपाल ॥ (1322-18)
सरब की रेण होवीजै ॥ (896-17)
सरब की रेन जा का मनु होइ ॥ (278-15)
सरब कुसल सुख बिस्राम आनदा आनंद नाम जम की कछु नाहि त्रास सिमरि अंतरजामी ॥ (1230-9)
सरब खेम कलिआण निधि राम नामु जपि सारु ॥ (297-9)
सरब गुण निधानं कीमति न ग्यानं ध्यानं ऊचे ते ऊचौ जानीजै प्रभ तेरो थानं ॥ (1386-3)
सरब गुणा ता कै बहुतु निधान ॥ (1143-6)
सरब गुणी साचा बीचारु ॥ (905-3)
सरब गुना निधि राइओ ॥ रहाउ दूजा ॥११॥६१॥ (624-13)
सरब घट प्रतिपाल ॥ (838-7)
सरब घटा करत प्रतिपाल ॥ (290-10)
सरब घटा के दाते सुआमी देहि सु पहिरणु खाणु ॥१॥ (1323-3)
सरब चिंत तुझु पासि साधसंगति हउ तकउ ॥ (1395-13)
सरब जाचिक एकु दाता करुणा मै जगदीसरा ॥ (925-9)
सरब जाचिक एकु दाता नह दूरि संगी जाहरा ॥ (456-5)
सरब जीअ कीए प्रतपानी ॥ (1275-15)
सरब जीअ जगजीवनु एको नानक प्रतिपाल करीजै ॥८॥५॥ (1326-8)
सरब जीअ पूरन भगवान ॥६॥ (1236-5)
सरब जीअ हहि जा कै हाथि ॥ (177-1)
सरब जीआं का जानै भेउ ॥ (863-19)
सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥ (282-10)
सरब जीआ कउ देवणहारा ॥ (106-1)
सरब जीआ कउ प्रभु दानु देता ॥१॥ रहाउ ॥ (1160-7)
सरब जीआ का राखा सोइ ॥ (286-2)
सरब जीआ के दाते सुआमी करि किरपा लेहु उबारे ॥२॥ (670-14)
सरब जीआ जगजीवनु दाता निरभउ मैलु न काई हे ॥१५॥ (1024-10)
सरब जीआ जगि जोति तुमारी जैसी प्रभि फुरमाई हे ॥११॥ (1021-4)
सरब जीआ प्रतिपालदा मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक पित माता राम ॥ (541-16)
सरब जीआ प्रतिपालि समाले सो अंतरि दाना बीना हे ॥१॥ (1027-15)
सरब जीआ महि एको जाणै ता हउमै कहै न कोई ॥४॥ (432-13)
सरब जीआ महि एको रवै ॥ (228-7)
सरब जीआ सिरि लेखु धुराहू बिनु लेखै नही कोई जीउ ॥ (598-18)
सरब जुग महि तुम पछानू ॥३॥ (1322-16)
सरब जोति जगजीवना सिरि सिरि साचा लेखु ॥१॥ रहाउ ॥ (992-5)
सरब जोति तेरी पसरि रही ॥ (876-10)
सरब जोति नामै की चेरि ॥२॥ (1187-9)
सरब जोति निरंजन स्मभू छोडहु बहुतु जंजाला ॥३॥ (503-9)

सरब जोति पूरन भगवानु ॥१॥ रहाउ ॥ (352-1)
सरब जोति महि जा की जोति ॥ (294-4)
सरब जोति रूपु तेरा देखिआ सगल भवन तेरी माइआ ॥ (351-4)
सरब तिआगि भजु केवल रामु ॥४॥३॥ (324-4)
सरब थान को राजा ॥ (621-11)
सरब थोक नानक गुर पाए पूरन आस हमारी ॥२॥३४॥५७॥ (1215-14)
सरब थोक नानक तिनि पाइआ ॥१॥ (268-8)
सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥ (284-3)
सरब दूख जब बिसरहि सुआमी ॥ (394-19)
सरब दूख हरि सिमरत नसे ॥ (802-3)
सरब दोख परंतिआगी सरब धरम द्रिड़ंतणः ॥ (1361-8)
सरब द्रिसटि लोचन अभ अंतरि एका नदरि सु त्रिभवण सार ॥३॥ (503-19)
सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥ (266-13)
सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभ कीरति गाई ॥२॥ (902-6)
सरब धार समरथ हउ तिसु कुरबाणीऐ ॥ (957-15)
सरब धार सरब के नाइक सुख समूह के दाते ॥१॥ रहाउ ॥ (1321-16)
सरब धारन प्रतिपारन इक बिनउ दीना ॥ (1005-18)
सरब धिआन महि एकु धिआनु ॥ (1182-10)
सरब निधान गुण तुम ही पासि ॥ (180-10)
सरब निधान गुरू ते पावै ॥ (183-18)
सरब निधान जन कै हरि नाउ ॥३॥ (184-1)
सरब निधान जा की द्रिसटी माहि ॥ (283-10)
सरब निधान जीअ का दाता ॥ (287-3)
सरब निधान तेरी द्रिसटी माहि ॥ (867-11)
सरब निधान नानक हरि रंगि ॥२॥ (262-16)
सरब निधान नाम भगवंत ॥२॥ (1148-3)
सरब निधान नामि हरि हरि कै जिसु करमि लिखिआ तिनि पावा ॥ (1212-4)
सरब निधान पेखे मन माहि ॥ (178-7)
सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥ (271-2)
सरब निधान मंगल रस रूपा हरि का नामु अधारो ॥ (620-15)
सरब निधान महा बीचार ॥ (866-18)
सरब निधान महि हरि नामु निधानु ॥ (288-8)
सरब निधान राखे जन माहि ॥ (193-6)
सरब निधान सुख पाइआ ॥ (626-4)
सरब निरंजन पुरखु सुजाना ॥ (1040-1)
सरब निरंजनु घटि घटि जानिआ ॥ (1039-3)
सरब निरंतरि आपे आपि ॥ (412-18)

सरब निरंतरि एको जागै ॥ (743-3)
सरब निरंतरि एको देखु ॥ (289-5)
सरब निरंतरि एको सोइ ॥ (283-18)
सरब निरंतरि एको सोइ ॥ (287-19)
सरब निरंतरि खसमु एको रवि रहिआ ॥ (961-8)
सरब निरंतरि तुमहि समाने जा कउ तुधु आपि बुझाई ॥ (610-16)
सरब निरंतरि प्रीतमु बाला ॥४॥ (223-5)
सरब निरंतरि रवि रहिआ जपि नानक जीवै एक ॥४॥२८॥९८॥ (52-9)
सरब निरंतरि रामु रहिआ रवि ऐसा रूपु बखानिआ ॥१॥ (1351-3)
सरब निरंतरि सो प्रभु जाता बहुड़ि न जोनी भरमि रुना ॥९॥ (1079-11)
सरब निवासी घटि घटि वासी लेपु नही अलपहीअउ ॥ (700-11)
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥१॥ रहाउ ॥ (684-14)
सरब निवासी सदा अलेपा सभ महि रहिआ समाइओ ॥२॥१॥२९॥ (617-4)
सरब नैन आपि पेखनहारा ॥ (294-12)
सरब पाख राखु मुरारे ॥ (533-6)
सरब पूज चरन गुर सेउ ॥१॥ (864-15)
सरब प्रतिपाल रहीम ॥ (896-19)
सरब प्रतिपालहि सगल समालहि सगलिआ तेरी छाउ ॥ (1120-1)
सरब फला दीन्हे गुरि पूरै नानक गुरि निसतारिआ ॥२॥४७॥७०॥ (1218-4)
सरब फला पुंनु पाइआ ॥४॥१४॥६४॥ (625-14)
सरब फला सोई जनु पाए ॥६॥ (760-6)
सरब बिआपिक अंतर हरी ॥ (1292-13)
सरब बिआपित पूरन धनी ॥ (182-18)
सरब बिआपी राम संगि रचन ॥ (294-7)
सरब बिधि भ्रमते पुकारहि कतहि नाही छोटि ॥ (502-11)
सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए ॥ (290-13)
सरब भूत आपि वरतारा ॥ (294-12)
सरब भूत एकै करि जानिआ चूके बाद बिबादा ॥ (483-3)
सरब भूत दयाल अचुत दीन बांधव दामोदरह ॥ (1355-19)
सरब भूत पारब्रहमु करि मानिआ होवां सगल रेनारी ॥२॥ (616-17)
सरब मनोरथ जे को चाहै सेवै एकु निधाना ॥ (672-17)
सरब मनोरथ पूरन करणे ॥ (1150-1)
सरब मनोरथ पूरन काम ॥ (1183-18)
सरब मनोरथ पूरन काम ॥ (393-17)
सरब मनोरथ राज सूख रस सद खुसीआ कीरतनु जपि नाम ॥ (683-2)
सरब महि पूरन भगवान ॥ (1147-10)
सरब मै पेखै भगवानु ॥ (274-2)

सरब रंग इक रंग माहि ॥ (1180-12)
सरब रख्या गुर दयालह भै दूख बिनासनह ॥ (1358-18)
सरब रसाइणु गुरमुखि जाता ॥ (415-19)
सरब रहिआ भरपूरि सचा सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (398-18)
सरब रहिओ भरपूरि सगल घट रहिओ बिआपे ॥ (1385-4)
सरब री प्रीति पिआरु ॥ (1229-12)
सरब रोग का अउखदु नामु ॥ (274-18)
सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥ (281-13)
सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥१॥ (288-6)
सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥ (293-19)
सरब लोक माइआ के मंडल गिरि गिरि परते धरणी ॥१॥ रहाउ ॥ (215-12)
सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥ (469-14)
सरब सबदं त एक सबदं जे को जानसि भेउ ॥ (1353-12)
सरब सासत्र बहु रूपीआ अनगरूआ आखाड़ा मंडलीक बोल बोलहि काछे ॥ (1292-8)
सरब सिधि कलिआन ॥ (1341-7)
सरब सिधि कारज सभि सवरे अहं रोग सगल ही खइआ ॥ (1213-14)
सरब सिधि नव निधि तितु ग्रिहि नही ऊना सभु कछू ॥ (457-7)
सरब सिधि हरि गाईऐ सभि भला मनावहि ॥ (818-12)
सरब सील ममं सीलं सरब पावन मम पावनह ॥ (1357-7)
सरब सुख आनंद मंगल रस मानि गोबिंदै आगिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (214-19)
सरब सुख हरि नामु दीआ नानक सो प्रभु जापि ॥४॥२॥२८॥ (501-18)
सरब सुखा का एकु हरि सुआमी सो गुरि नामु दइओ ॥ (856-6)
सरब सुखा का दाता सतिगुरु ता की सरनी पाईऐ ॥ (630-5)
सरब सुखा गुर चरना ॥ (531-8)
सरब सुखा तिस ही बणि आए जो प्रभि अपना करिआ ॥ (781-17)
सरब सुखा तेरी मंडली तेरा मनु तनु आरोग ॥ (807-13)
सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥ (136-10)
सरब सुखा पावउ सतसंगि ॥ (180-11)
सरब सुखा प्रभ तेरी दइआ ॥२॥ (180-10)
सरब सुखा प्रभ तेरो नाउ ॥ (1148-14)
सरब सुखा बने तेरै ओल्है ॥ (385-11)
सरब सुखा मै तुझ ते पाए मेरे ठाकुर अगह अतोले ॥१॥ (206-19)
सरब सुखा मै भालिआ हरि जेवडु न कोई ॥ (396-17)
सरब सुखा सुख ऊपजहि दरगह पैधा जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (45-15)
सरब सुखा सुख हरि कै नाइ ॥ (1180-12)
सरब सुखा सुखु साचा एहु ॥ (178-3)
सरब सुखा हरि हरि गुण गाए ॥१॥ (1147-14)

सरब सूख आनंद घनेरे ठाकुर दरस धिआनी ॥१॥ (1228-15)
सरब सूख आनंद नानक जपि राम नामु कलिआणु ॥२॥६॥९॥ (1323-4)
सरब सूख आनंद सहज रस सुनत तुहारो नाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1217-6)
सरब सूख इहु आनंदु लहिआ ॥ (179-17)
सरब सूख कलिआण पावहि मिटै सगल उपाधि ॥१॥ रहाउ ॥ (501-10)
सरब सूख को नाइको राम नाम रसु पीउ ॥३॥ (1364-13)
सरब सूख ताहू कै पूरन जा कै सुखु है हरी ॥१॥ रहाउ ॥ (1215-5)
सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥ (268-8)
सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥६॥ (283-9)
सरब सूख नानक परगास ॥८॥२०॥ (290-15)
सरब सूख नानक पाए संगि संतन साथि ॥४॥२२॥५२॥ (814-4)
सरब सूख फिरि नही डोलाइआ ॥१॥ (744-10)
सरब सूख बडिआई नानक जीवउ मुखहु बुलावउ ॥२॥५॥ (529-11)
सरब सूख भोग रस देवै मन ही नालि समावै ॥१॥ (680-14)
सरब सूख रंग माणिआ ॥३॥ (212-3)
सरब सूख वडी वडिआई जपि जीवै नानकु नाउ ॥४॥३॥१३८॥ (405-16)
सरब सूख वसहि मनि आइ ॥१॥ (1148-7)
सरब सूख सहज घरि तेरै अमिउ तेरी द्रिसटीजा हे ॥७॥ (1074-4)
सरब सूख हरि नामि वडाई ॥ (720-17)
सरब सोइन की लंका होती रावन से अधिकाई ॥ (693-1)
सरबग्य पूरन पुरख भगवानह भगति वछल करुणा मयह ॥ (1355-19)
सरबत्र रमणं गोबिंदह नानक लेप छेप न लिप्यते ॥३६॥ (1357-5)
सरबसु छोडि महा रसु पीजै ॥४॥५॥ (324-11)
सरबसु दीजै अपना वारे ॥ (108-4)
सरबसु नामु भगत कउ दीन ॥८॥११॥ (240-16)
सरबसो सूख आनंद घन पिआरे हरि रतनु मन अंतरि सीवते ॥ (81-2)
सरबी थाई वेपरवाहु ॥ (1188-17)
सरबी रंगी रूपी तूंहै तिसु बखसे जिसु नदरि करे ॥१॥ रहाउ ॥ (355-17)
सरबे आदि परमलादि कासट चंदनु भैइला ॥२॥ (1351-5)
सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भोगवै सोई ॥ (658-2)
सरबे घटि घटि रविआ सुआमी सरब कला कल धारे ॥ (1199-7)
सरबे जाचिक तूं प्रभु दाता दाति करे अपुनै बीचार ॥४॥ (504-2)
सरबे जोइ अगछमी दूखु घनेरो आथि ॥ (1090-14)
सरबे थाई एकु तूं जिउ भावै तिउ राखु ॥ (62-1)
सरबे थान थनंतरी तू दाता दातारु ॥ (934-11)
सरबे रवि रहिआ घट वासी ॥ (1070-7)
सरबे रवि रहिआ सुखदाता ॥ (1070-4)

सरबे समाणा आपि तूहै उपाइ धंधै लाईआ ॥ (566-11)
सरबे समाणा आपि सुआमी गुरमुखि परगटु होइआ ॥ (542-12)
सरम खंड की बाणी रूपु ॥ (8-1)
सरम धरम का डेरा दूरि ॥ (471-18)
सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥ (135-17)
सरम सुंनति सीलु रोजा होहु मुसलमाणु ॥ (140-18)
सरम सुरति दुइ ससुर भए ॥ (152-1)
सरमु गइआ घरि आपणै पति उठि चली नालि ॥ (1243-2)
सरमु धरमु दुइ छपि खलोए कूड़ु फिरै परधानु वे लालो ॥ (722-17)
सरमु धरमु दुइ नानका जे धनु पलै पाइ ॥ (1287-11)
सरमै दीआ मुंद्रा कंनी पाइ जोगी खिंथा करि तू दइआ ॥ (908-11)
सरवर अंदरि हीरा मोती सो हंसा का खाणा ॥ (956-12)
सरवर पंखी हेकड़ो फाहीवाल पचास ॥ (1384-14)
सरवर महि हंसु प्रानपति पावै ॥१॥ (685-12)
सरवर महि हंसु हंस महि सागरु ॥ (685-16)
सरवर हंस धुरे ही मेला खसमै एवै भाणा ॥ (956-12)
सरवर हंसा छोडि न जाइ ॥ (685-15)
सरवर हंसु दूरि न होई करते एवै भावै ॥ (960-12)
सरवरि कमलु किरणि आकासी बिगसै सहजि सुभाई ॥ (1273-7)
सरवरु हंसि न जाणिआ काग कुपंखी संगि ॥ (1411-5)
सरस अहीरी लै भारजा ॥ (1430-8)
सरसबान अउ आहि बिनोदा ॥ (1430-9)
सरसिअड़े सरसिअड़े मेरे भाई सभ मीता राम ॥ (452-19)
सरा सरीअति ले कमावहु ॥ (1083-16)
सरि धोवन चाली लाडुली ॥१॥ रहाउ ॥ (1196-6)
सरीर सरोवर भीतरे आछै कमल अनूप ॥ (857-6)
सरीर स्वसथ खीण समए सिमरंति नानक राम दामोदर माधवह ॥५०॥ (1358-15)
सरीरहु भालणि को बाहरि जाए ॥ (124-11)
सरीरि सरोवरि गुण परगटि कीए ॥ (367-5)
सरीरि सरोवरि नामु हरि प्रगटिओ घरि मंदरि हरि प्रभु लहे ॥२॥ (1336-10)
सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू ॥ (93-18)
सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥ (265-11)
सरीरु जलउ गुण बाहरा जो गुर कार न कमाइ ॥ (651-10)
सरु संतोखु तासु गुरु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1328-19)
सरु संधे आगास कउ किउ पहुचै बाणु ॥ (148-10)
सरै सरीअति करहि बीचारु ॥ (84-1)
सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥ (474-5)

सलाहिहु हरि सभना ते वडा जो संत जनां की पैज रखदा आइआ ॥१॥ (548-17)
सलोक ॥ (251-4)
सलोक ॥ (259-1)
सलोक ॥ (456-7)
सलोक ॥ (555-3)
सलोक ॥ (703-12)
सलोक ॥ (705-19)
सलोक ॥ (706-14)
सलोक ॥ (706-18)
सलोक ॥ (706-4)
सलोक ॥ (706-9)
सलोक ॥ (707-12)
सलोक ॥ (707-17)
सलोक ॥ (707-4)
सलोक ॥ (707-8)
सलोक ॥ (708-11)
सलोक ॥ (708-16)
सलोक ॥ (708-2)
सलोक ॥ (708-7)
सलोक ॥ (709-1)
सलोक ॥ (709-10)
सलोक ॥ (709-15)
सलोक ॥ (709-19)
सलोक ॥ (710-4)
सलोक ॥ (710-9)
सलोक ॥ (927-16)
सलोक ॥ (928-13)
सलोक ॥ (928-19)
सलोक ॥ (928-2)
सलोक ॥ (928-8)
सलोक ॥ (929-11)
सलोक ॥ (929-5)
सलोक कबीर ॥ (1105-4)
सलोक डखणा मः ५ ॥ (322-15)
सलोक डखणे मः ५ ॥ (1100-18)
सलोक डखणे मः ५ ॥ (1101-14)
सलोक डखणे मः ५ ॥ (1101-7)

सलोक डखणे मः ५ ॥ (1102-2)
सलोक दोहा मः ५ ॥ (322-10)
सलोक भगत कबीर जीउ के (1364-10)
सलोक मः १ ॥ (1092-19)
सलोक मः १ ॥ (1241-16)
सलोक मः १ ॥ (1241-9)
सलोक मः १ ॥ (1242-12)
सलोक मः १ ॥ (1242-18)
सलोक मः १ ॥ (1242-6)
सलोक मः १ ॥ (1243-5)
सलोक मः १ ॥ (1244-16)
सलोक मः १ ॥ (1244-4)
सलोक मः १ ॥ (1245-10)
सलोक मः १ ॥ (1245-17)
सलोक मः १ ॥ (1245-3)
सलोक मः १ ॥ (1279-14)
सलोक मः १ ॥ (1279-9)
सलोक मः १ ॥ (1286-5)
सलोक मः १ ॥ (1287-1)
सलोक मः १ ॥ (1287-11)
सलोक मः १ ॥ (1288-12)
सलोक मः १ ॥ (1289-1)
सलोक मः १ ॥ (1289-11)
सलोक मः १ ॥ (1290-14)
सलोक मः १ ॥ (1291-1)
सलोक मः १ ॥ (1291-13)
सलोक मः १ ॥ (138-9)
सलोक मः १ ॥ (147-10)
सलोक मः १ ॥ (463-18)
सलोक मः १ ॥ (464-12)
सलोक मः १ ॥ (465-17)
सलोक मः १ ॥ (465-5)
सलोक मः १ ॥ (466-10)
सलोक मः १ ॥ (467-3)
सलोक मः १ ॥ (471-14)
सलोक मः १ ॥ (556-8)
सलोक मः १ ॥ (653-11)

सलोक मः १ ॥ (788-15)
सलोक मः १ ॥ (789-13)
सलोक मः १ ॥ (789-3)
सलोक मः १ ॥ (789-8)
सलोक मः १ ॥ (790-1)
सलोक मः १ ॥ (790-16)
सलोक मः १ ॥ (790-8)
सलोक मः १ ॥ (791-13)
सलोक मः १ ॥ (791-2)
सलोक मः १ ॥ (791-9)
सलोक मः १ ॥ (83-13)
सलोक मः १ ॥ (83-18)
सलोक मः १ ॥ (83-9)
सलोक मः १ ॥ (854-2)
सलोक मः १ ॥ (91-3)
सलोक मः १ ॥ (952-8)
सलोक मः १ ॥ (955-17)
सलोक मः १ ॥ (955-3)
सलोक मः २ ॥ (1093-8)
सलोक मः २ ॥ (1243-14)
सलोक मः २ ॥ (1280-1)
सलोक मः २ ॥ (1288-3)
सलोक मः २ ॥ (146-9)
सलोक मः २ ॥ (791-19)
सलोक मः २ ॥ (89-2)
सलोक मः २ ॥ (954-15)
सलोक मः २ ॥ (954-9)
सलोक मः २ ॥ (955-9)
सलोक मः ३ ॥ (1093-17)
सलोक मः ३ ॥ (1246-14)
सलोक मः ३ ॥ (1247-14)
सलोक मः ३ ॥ (1247-3)
सलोक मः ३ ॥ (1248-14)
सलोक मः ३ ॥ (1248-2)
सलोक मः ३ ॥ (1248-9)
सलोक मः ३ ॥ (1249-1)
सलोक मः ३ ॥ (1249-9)

सलोक मः ३ ॥ (1250-2)
सलोक मः ३ ॥ (1250-9)
सलोक मः ३ ॥ (1251-1)
सलोक मः ३ ॥ (1280-14)
सलोक मः ३ ॥ (1280-7)
सलोक मः ३ ॥ (1281-13)
सलोक मः ३ ॥ (1281-3)
सलोक मः ३ ॥ (1282-12)
सलोक मः ३ ॥ (1282-5)
सलोक मः ३ ॥ (1283-10)
सलोक मः ३ ॥ (1283-18)
सलोक मः ३ ॥ (1283-2)
सलोक मः ३ ॥ (1284-13)
सलोक मः ३ ॥ (1285-10)
सलोक मः ३ ॥ (1285-16)
सलोक मः ३ ॥ (1285-3)
सलोक मः ३ ॥ (317-8)
सलोक मः ३ ॥ (510-13)
सलोक मः ३ ॥ (517-3)
सलोक मः ३ ॥ (517-8)
सलोक मः ३ ॥ (548-12)
सलोक मः ३ ॥ (548-18)
सलोक मः ३ ॥ (549-16)
सलोक मः ३ ॥ (549-9)
सलोक मः ३ ॥ (550-15)
सलोक मः ३ ॥ (550-9)
सलोक मः ३ ॥ (551-17)
सलोक मः ३ ॥ (551-2)
सलोक मः ३ ॥ (551-9)
सलोक मः ३ ॥ (552-6)
सलोक मः ३ ॥ (554-13)
सलोक मः ३ ॥ (555-10)
सलोक मः ३ ॥ (555-19)
सलोक मः ३ ॥ (556-13)
सलोक मः ३ ॥ (585-12)
सलोक मः ३ ॥ (587-11)
सलोक मः ३ ॥ (588-13)

सलोक मः ३ ॥ (588-4)
सलोक मः ३ ॥ (589-10)
सलोक मः ३ ॥ (589-18)
सलोक मः ३ ॥ (590-15)
सलोक मः ३ ॥ (591-2)
सलोक मः ३ ॥ (593-6)
सलोक मः ३ ॥ (646-6)
सलोक मः ३ ॥ (788-7)
सलोक मः ३ ॥ (83-2)
सलोक मः ३ ॥ (84-13)
सलोक मः ३ ॥ (84-19)
सलोक मः ३ ॥ (84-7)
सलोक मः ३ ॥ (849-10)
सलोक मः ३ ॥ (850-1)
सलोक मः ३ ॥ (850-19)
सलोक मः ३ ॥ (850-9)
सलोक मः ३ ॥ (851-17)
सलोक मः ३ ॥ (85-15)
सलोक मः ३ ॥ (851-9)
सलोक मः ३ ॥ (852-9)
सलोक मः ३ ॥ (853-11)
सलोक मः ३ ॥ (853-2)
सलोक मः ३ ॥ (854-15)
सलोक मः ३ ॥ (854-6)
सलोक मः ३ ॥ (85-7)
सलोक मः ३ ॥ (86-14)
सलोक मः ३ ॥ (86-7)
सलोक मः ३ ॥ (87-6)
सलोक मः ३ ॥ (88-9)
सलोक मः ३ ॥ (89-18)
सलोक मः ३ ॥ (89-8)
सलोक मः ३ ॥ (90-15)
सलोक मः ३ ॥ (90-6)
सलोक मः ३ ॥ (91-8)
सलोक मः ३ ॥ (949-18)
सलोक मः ३ ॥ (949-3)
सलोक मः ३ ॥ (950-14)

सलोक मः ३ ॥ (951-5)
सलोक मः ३ ॥ (953-9)
सलोक मः ३ ॥ (956-7)
सलोक मः ४ ॥ (1244-10)
सलोक मः ४ ॥ (1246-6)
सलोक मः ४ ॥ (1312-16)
सलोक मः ४ ॥ (1313-14)
सलोक मः ४ ॥ (1313-6)
सलोक मः ४ ॥ (1314-15)
सलोक मः ४ ॥ (1314-4)
सलोक मः ४ ॥ (1315-15)
सलोक मः ४ ॥ (1315-6)
सलोक मः ४ ॥ (1316-18)
सलोक मः ४ ॥ (1316-9)
सलोक मः ४ ॥ (1317-13)
सलोक मः ४ ॥ (1317-18)
सलोक मः ४ ॥ (1317-6)
सलोक मः ४ ॥ (1318-10)
सलोक मः ४ ॥ (1318-4)
सलोक मः ४ ॥ (300-16)
सलोक मः ४ ॥ (301-11)
सलोक मः ४ ॥ (301-15)
सलोक मः ४ ॥ (301-4)
सलोक मः ४ ॥ (302-1)
सलोक मः ४ ॥ (302-17)
सलोक मः ४ ॥ (302-9)
सलोक मः ४ ॥ (303-11)
सलोक मः ४ ॥ (304-18)
सलोक मः ४ ॥ (304-6)
सलोक मः ४ ॥ (305-13)
सलोक मः ४ ॥ (306-19)
सलोक मः ४ ॥ (306-5)
सलोक मः ४ ॥ (307-13)
सलोक मः ४ ॥ (308-10)
सलोक मः ४ ॥ (309-10)
सलोक मः ४ ॥ (310-1)
सलोक मः ४ ॥ (310-11)

सलोक मः ४ ॥ (311-2)
सलोक मः ४ ॥ (312-8)
सलोक मः ४ ॥ (313-16)
सलोक मः ४ ॥ (313-9)
सलोक मः ४ ॥ (315-14)
सलोक मः ४ ॥ (316-11)
सलोक मः ४ ॥ (849-2)
सलोक मः ५ ॥ (1093-13)
सलोक मः ५ ॥ (1102-10)
सलोक मः ५ ॥ (1251-7)
सलोक मः ५ ॥ (1284-7)
सलोक मः ५ ॥ (315-1)
सलोक मः ५ ॥ (315-5)
सलोक मः ५ ॥ (315-9)
सलोक मः ५ ॥ (317-3)
सलोक मः ५ ॥ (318-13)
सलोक मः ५ ॥ (318-18)
सलोक मः ५ ॥ (318-3)
सलोक मः ५ ॥ (318-9)
सलोक मः ५ ॥ (319-13)
सलोक मः ५ ॥ (319-17)
सलोक मः ५ ॥ (319-4)
सलोक मः ५ ॥ (319-8)
सलोक मः ५ ॥ (320-12)
सलोक मः ५ ॥ (320-17)
सलोक मः ५ ॥ (320-3)
सलोक मः ५ ॥ (320-8)
सलोक मः ५ ॥ (321-12)
सलोक मः ५ ॥ (321-16)
सलोक मः ५ ॥ (321-3)
सलोक मः ५ ॥ (321-7)
सलोक मः ५ ॥ (323-1)
सलोक मः ५ ॥ (323-6)
सलोक मः ५ ॥ (518-16)
सलोक मः ५ ॥ (519-14)
सलोक मः ५ ॥ (519-3)
सलोक मः ५ ॥ (519-8)

सलोक मः ५ ॥ (520-1)
सलोक मः ५ ॥ (520-13)
सलोक मः ५ ॥ (520-7)
सलोक मः ५ ॥ (521-10)
सलोक मः ५ ॥ (521-16)
सलोक मः ५ ॥ (521-5)
सलोक मः ५ ॥ (522-3)
सलोक मः ५ ॥ (522-9)
सलोक मः ५ ॥ (523-1)
सलोक मः ५ ॥ (523-12)
सलोक मः ५ ॥ (523-7)
सलोक मः ५ ॥ (524-2)
सलोक मः ५ ॥ (957-17)
सलोक मः ५ ॥ (957-2)
सलोक मः ५ ॥ (958-16)
सलोक मः ५ ॥ (959-10)
सलोक मः ५ ॥ (960-5)
सलोक मः ५ ॥ (961-6)
सलोक मः ५ ॥ (962-12)
सलोक मः ५ ॥ (962-4)
सलोक मः ५ ॥ (963-1)
सलोक मः ५ ॥ (963-11)
सलोक मः ५ ॥ (963-17)
सलोक मः ५ ॥ (964-10)
सलोक मः ५ ॥ (964-16)
सलोक मः ५ ॥ (964-4)
सलोक मः ५ ॥ (965-3)
सलोक मः ५ ॥ (965-9)
सलोक मः ५ ॥ (966-2)
सलोक मः ५ ॥ (966-8)
सलोक महला १ ॥ (1239-14)
सलोक महला १ ॥ (1240-12)
सलोक महला १ ॥ (1240-19)
सलोक महला १ ॥ (1240-4)
सलोक महला २ ॥ (1237-11)
सलोक महला २ ॥ (1238-1)
सलोक महला २ ॥ (1238-18)

सलोक महला २ ॥ (1238-9)
सलोक महला २ ॥ (1239-6)
सलोक महला २ ॥ (788-2)
सलोक महला ३ (1413-1)
सलोक महला ३ ॥ (1278-16)
सलोक महला ३ ॥ (311-11)
सलोक महला ४ (1421-8)
सलोक महला ५ (1425-1)
सलोक महला ५ ॥ (1429-14)
सलोक महला ५ ॥ (961-17)
सलोक महला ५ ॥ (965-15)
सलोक महला ९ ॥ (1426-10)
सलोक वारां ते वधीक ॥ (1410-3)
सलोक सहसक्रिती महला १ ॥ (1353-6)
सलोक सहसक्रिती महला ५ (1353-15)
सलोक सेख फरीद के (1377-15)
सलोकु ॥ (248-14)
सलोकु ॥ (250-1)
सलोकु ॥ (250-11)
सलोकु ॥ (250-15)
सलोकु ॥ (250-18)
सलोकु ॥ (250-7)
सलोकु ॥ (251-11)
सलोकु ॥ (251-15)
सलोकु ॥ (251-19)
सलोकु ॥ (251-8)
सलोकु ॥ (252-12)
सलोकु ॥ (252-15)
सलोकु ॥ (252-19)
सलोकु ॥ (252-5)
सलोकु ॥ (252-8)
सलोकु ॥ (253-12)
सलोकु ॥ (253-15)
सलोकु ॥ (253-4)
सलोकु ॥ (253-8)
सलोकु ॥ (254-1)
सलोकु ॥ (254-10)

सलोकु ॥ (254-14)
सलोकु ॥ (254-18)
सलोकु ॥ (254-6)
सलोकु ॥ (255-14)
सलोकु ॥ (255-19)
सलोकु ॥ (255-2)
सलोकु ॥ (255-6)
सलोकु ॥ (255-9)
सलोकु ॥ (256-13)
सलोकु ॥ (256-18)
सलोकु ॥ (256-4)
सलोकु ॥ (256-8)
सलोकु ॥ (257-12)
सलोकु ॥ (257-17)
सलोकु ॥ (257-4)
सलोकु ॥ (257-9)
सलोकु ॥ (258-1)
सलोकु ॥ (258-12)
सलोकु ॥ (258-16)
सलोकु ॥ (258-5)
सलोकु ॥ (258-9)
सलोकु ॥ (259-12)
सलोकु ॥ (259-16)
सलोकु ॥ (259-4)
सलोकु ॥ (259-9)
सलोकु ॥ (260-1)
सलोकु ॥ (260-12)
सलोकु ॥ (260-16)
सलोकु ॥ (260-5)
सलोकु ॥ (260-9)
सलोकु ॥ (261-1)
सलोकु ॥ (261-11)
सलोकु ॥ (261-15)
सलोकु ॥ (261-6)
सलोकु ॥ (262-1)
सलोकु ॥ (262-8)
सलोकु ॥ (263-19)

सलोकु ॥ (265-8)
सलोकु ॥ (266-16)
सलोकु ॥ (268-4)
सलोकु ॥ (269-13)
सलोकु ॥ (271-3)
सलोकु ॥ (272-10)
सलोकु ॥ (274-2)
सलोकु ॥ (275-10)
सलोकु ॥ (276-17)
सलोकु ॥ (278-5)
सलोकु ॥ (279-12)
सलोकु ॥ (281-1)
सलोकु ॥ (282-9)
सलोकु ॥ (283-16)
सलोकु ॥ (285-5)
सलोकु ॥ (286-12)
सलोकु ॥ (288-1)
सलोकु ॥ (289-9)
सलोकु ॥ (290-16)
सलोकु ॥ (292-6)
सलोकु ॥ (293-14)
सलोकु ॥ (295-2)
सलोकु ॥ (296-10)
सलोकु ॥ (296-16)
सलोकु ॥ (297-13)
सलोकु ॥ (297-18)
सलोकु ॥ (297-3)
सलोकु ॥ (297-8)
सलोकु ॥ (298-13)
सलोकु ॥ (298-17)
सलोकु ॥ (298-4)
सलोकु ॥ (298-9)
सलोकु ॥ (299-10)
सलोकु ॥ (299-14)
सलोकु ॥ (299-18)
सलोकु ॥ (299-2)
सलोकु ॥ (299-6)

सलोकु ॥ (300-4)
सलोकु ॥ (300-9)
सलोकु ॥ (343-4)
सलोकु ॥ (454-14)
सलोकु ॥ (455-12)
सलोकु ॥ (457-15)
सलोकु ॥ (459-5)
सलोकु ॥ (509-16)
सलोकु ॥ (577-12)
सलोकु ॥ (577-16)
सलोकु ॥ (577-8)
सलोकु ॥ (578-1)
सलोकु ॥ (704-12)
सलोकु ॥ (704-16)
सलोकु ॥ (704-8)
सलोकु ॥ (705-1)
सलोकु ॥ (709-6)
सलोकु ॥ (8-10)
सलोकु ॥ (847-18)
सलोकु ॥ (916-6)
सलोकु ॥ (926-13)
सलोकु ॥ (926-18)
सलोकु ॥ (926-9)
सलोकु ॥ (927-3)
सलोकु ॥ (947-13)
सलोकु ॥ (948-8)
सलोकु ॥ (989-4)
सलोकु ॥ (990-15)
सलोकु मः १ ॥ (1086-18)
सलोकु मः १ ॥ (1087-14)
सलोकु मः १ ॥ (1088-7)
सलोकु मः १ ॥ (1089-3)
सलोकु मः १ ॥ (1090-14)
सलोकु मः १ ॥ (1090-19)
सलोकु मः १ ॥ (1090-9)
सलोकु मः १ ॥ (1091-7)
सलोकु मः १ ॥ (137-15)

सलोकु मः १ ॥ (139-10)
सलोकु मः १ ॥ (139-19)
सलोकु मः १ ॥ (140-18)
सलोकु मः १ ॥ (140-9)
सलोकु मः १ ॥ (141-10)
सलोकु मः १ ॥ (141-19)
सलोकु मः १ ॥ (142-17)
सलोकु मः १ ॥ (143-18)
सलोकु मः १ ॥ (144-10)
सलोकु मः १ ॥ (144-19)
सलोकु मः १ ॥ (145-10)
सलोकु मः १ ॥ (145-18)
सलोकु मः १ ॥ (147-1)
सलोकु मः १ ॥ (147-18)
सलोकु मः १ ॥ (148-14)
सलोकु मः १ ॥ (149-14)
सलोकु मः १ ॥ (149-2)
सलोकु मः १ ॥ (462-19)
सलोकु मः १ ॥ (463-6)
सलोकु मः १ ॥ (467-13)
सलोकु मः १ ॥ (468-16)
सलोकु मः १ ॥ (468-5)
सलोकु मः १ ॥ (469-9)
सलोकु मः १ ॥ (470-1)
सलोकु मः १ ॥ (470-12)
सलोकु मः १ ॥ (471-2)
सलोकु मः १ ॥ (472-13)
सलोकु मः १ ॥ (472-7)
सलोकु मः १ ॥ (473-13)
सलोकु मः १ ॥ (473-3)
सलोकु मः १ ॥ (475-5)
सलोकु मः १ ॥ (594-6)
सलोकु मः १ ॥ (642-11)
सलोकु मः १ ॥ (951-13)
सलोकु मः १ ॥ (953-18)
सलोकु मः १ ॥ (956-12)
सलोकु मः २ ॥ (139-2)

सलोकु मः २ ॥ (150-13)
सलोकु मः २ ॥ (787-15)
सलोकु मः ३ ॥ (1087-6)
सलोकु मः ३ ॥ (1088-1)
सलोकु मः ३ ॥ (1088-12)
सलोकु मः ३ ॥ (1088-17)
सलोकु मः ३ ॥ (1089-16)
सलोकु मः ३ ॥ (1089-7)
सलोकु मः ३ ॥ (1090-3)
सलोकु मः ३ ॥ (1091-14)
सलोकु मः ३ ॥ (1092-14)
सलोकु मः ३ ॥ (1092-2)
सलोकु मः ३ ॥ (1247-9)
सलोकु मः ३ ॥ (149-8)
सलोकु मः ३ ॥ (314-11)
सलोकु मः ३ ॥ (508-15)
सलोकु मः ३ ॥ (509-12)
सलोकु मः ३ ॥ (509-4)
सलोकु मः ३ ॥ (510-19)
सलोकु मः ३ ॥ (510-4)
सलोकु मः ३ ॥ (511-17)
सलोकु मः ३ ॥ (511-8)
सलोकु मः ३ ॥ (512-14)
सलोकु मः ३ ॥ (512-4)
सलोकु मः ३ ॥ (513-15)
सलोकु मः ३ ॥ (513-4)
सलोकु मः ३ ॥ (514-12)
सलोकु मः ३ ॥ (514-19)
सलोकु मः ३ ॥ (514-4)
सलोकु मः ३ ॥ (515-17)
सलोकु मः ३ ॥ (515-8)
सलोकु मः ३ ॥ (516-17)
सलोकु मः ३ ॥ (516-8)
सलोकु मः ३ ॥ (553-12)
सलोकु मः ३ ॥ (554-5)
सलोकु मः ३ ॥ (586-1)
सलोकु मः ३ ॥ (586-19)

सलोकु मः ३ ॥ (586-8)
सलोकु मः ३ ॥ (589-2)
सलोकु मः ३ ॥ (590-6)
सलोकु मः ३ ॥ (591-17)
सलोकु मः ३ ॥ (591-8)
सलोकु मः ३ ॥ (592-17)
सलोकु मः ३ ॥ (592-8)
सलोकु मः ३ ॥ (593-17)
सलोकु मः ३ ॥ (594-10)
सलोकु मः ३ ॥ (643-1)
सलोकु मः ३ ॥ (643-18)
सलोकु मः ३ ॥ (643-8)
सलोकु मः ३ ॥ (644-14)
सलोकु मः ३ ॥ (644-9)
सलोकु मः ३ ॥ (645-12)
सलोकु मः ३ ॥ (645-19)
सलोकु मः ३ ॥ (645-6)
सलोकु मः ३ ॥ (646-13)
सलोकु मः ३ ॥ (647-1)
सलोकु मः ३ ॥ (647-10)
सलोकु मः ३ ॥ (647-19)
सलोकु मः ३ ॥ (648-11)
सलोकु मः ३ ॥ (648-18)
सलोकु मः ३ ॥ (648-6)
सलोकु मः ३ ॥ (649-15)
सलोकु मः ३ ॥ (649-6)
सलोकु मः ३ ॥ (650-11)
सलोकु मः ३ ॥ (650-4)
सलोकु मः ३ ॥ (651-1)
सलोकु मः ३ ॥ (651-17)
सलोकु मः ३ ॥ (651-9)
सलोकु मः ३ ॥ (653-15)
सलोकु मः ३ ॥ (785-14)
सलोकु मः ३ ॥ (785-6)
सलोकु मः ३ ॥ (786-11)
सलोकु मः ३ ॥ (786-19)
सलोकु मः ३ ॥ (786-3)

सलोकु मः ३ ॥ (787-8)
सलोकु मः ३ ॥ (87-19)
सलोकु मः ३ ॥ (947-18)
सलोकु मः ३ ॥ (947-2)
सलोकु मः ३ ॥ (948-16)
सलोकु मः ३ ॥ (949-9)
सलोकु मः ४ ॥ (1316-2)
सलोकु मः ४ ॥ (312-19)
सलोकु मः ४ ॥ (314-3)
सलोकु मः ४ ॥ (552-14)
सलोकु मः ४ ॥ (652-12)
सलोकु मः ४ ॥ (652-5)
सलोकु मः ४ ॥ (653-1)
सलोकु मः ५ ॥ (322-6)
सलोकु मः ५ ॥ (517-15)
सलोकु मः ५ ॥ (518-11)
सलोकु मः ५ ॥ (518-4)
सलोकु मः ५ ॥ (520-19)
सलोकु मः ५ ॥ (522-14)
सलोकु मः ५ ॥ (553-19)
सलोकु मः ५ ॥ (957-9)
सलोकु मः ५ ॥ (958-6)
सलोकु मरदाना १ ॥ (553-2)
सलोकु महला २ ॥ (148-5)
सलोकु महला २ ॥ (474-19)
सलोकु महला २ ॥ (474-3)
सलोकु महला २ ॥ (474-9)
सवईए महले चउथे के ४ (1396-10)
सवईए महले तीजे के ३ (1392-16)
सवईए महले दूजे के २ (1391-1)
सवईए महले पंजवे के ५ (1406-18)
सवईए महले पहिले के १ (1389-10)
सवये स्री मुखबाक्य महला ५ (1387-3)
सवये स्री मुखबाक्य महला ५ ॥ (1385-3)
सवा लाखु पैकाबर ता के ॥ (1161-5)
ससत वखरु तूं घिंनहि नाही पापी बाधा रेनाइआ ॥१॥ (402-12)
ससत्रि तीखणि काटि डारिओ मनि न कीनो रोसु ॥ (1017-17)

ससा सति सति सति सोऊ ॥ (250-16)
ससा सरनि परे अब हारे ॥ (260-6)
ससा सिआनप छाडु इआना ॥ (260-13)
ससा सो नीका करि सोधहु ॥ (342-12)
ससा सो सह सेज सवारै ॥ (342-14)
ससि कीनो सूर गिरासा ॥ (972-4)
ससि घरि सूरु दीपकु गैणारे ॥ (1041-17)
ससि घरि सूरु वसै मिटै अंधिआरा ॥ (943-11)
ससि बिगास स्मपट नही आवा ॥ (340-9)
ससि रिखि निसि सूर दिनि सैल तरूअ फल फुल दीअउ ॥ (1399-8)
ससीअर कै घरि सूरु समावै ॥ (840-14)
ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥ (294-3)
ससीअरु अरु सूरु नामु उलासहि सैल लोअ जिनि उधरिआ ॥ (1393-4)
ससीअरु गगनि जोति तिहु लोई ॥ (840-16)
ससु विराइणि नानक जीउ ससुरा वादी जेठो पउ पउ लूहै ॥ (963-13)
ससुड़ि सुहीआ किव करी निवणु न जाइ थणी ॥ (1410-4)
ससुरै पेईऐ कंत की कंतु अगमु अथाहु ॥ (1088-13)
ससुरै पेईऐ तिसु कंत की वडा जिसु परवारु ॥ (137-1)
ससुरै पेईऐ पिरु वसै कहु कितु बिधि पाईऐ ॥ (162-19)
ससुरै पेईऐ भै वसी सतिगुरु सेवि निसंग ॥ (642-12)
ससू ते पिरि कीनी वाखि ॥ (370-11)
ससै संजमु गइओ मूड़े एकु दानु तुधु कुथाइ लइआ ॥ (435-1)
ससै सभु जगु सहजि उपाइआ तीनि भवन इक जोती ॥ (930-3)
ससै सोइ स्रिसटि जिनि साजी सभना साहिबु एकु भइआ ॥ (432-9)
सहंस नामु लै लै करउ सलामु ॥३॥ (479-2)
सहंसर दान दे इंद्रु रोआइआ ॥ (953-18)
सह की सार सुहागनि जानै ॥ (793-14)
सह कीआ गला दर कीआ बाता तै ता कहणु कहाइआ ॥४॥८॥ (878-18)
सह देखे बिनु प्रीति न ऊपजै अंधा किआ करेइ ॥ (83-5)
सहज अनंद गावहि गुण गोविंद प्रभ नानक सरब समाहिआ जीउ ॥४॥३६॥४३॥ (107-5)
सहज अनंद दिखावै भावै ॥ (885-5)
सहज अनंद बसै बैरागी ॥३॥ (389-15)
सहज अनंद हरि साधू माहि ॥ (186-12)
सहज अनंदु भइआ मनि मोरै गुर आगै आपु वेचाइआ ॥३॥ (172-10)
सहज अनंदु होआ वडभागी मनि हरि हरि मीठा लाइआ ॥ (773-18)
सहज अनद अनहद धुनि बाणी बहुरि न भए बिखाद ॥१॥ (1224-6)
सहज अवलि धूड़ि मणी गाडी चालती ॥ (1196-5)

सहज कथा के अम्रित कुंटा ॥ (186-16)
सहज कथा प्रभ की अति मीठी ॥ (739-13)
सहज कथा प्रभ की अति मीठी कथी अकथ कहाणी ॥ (781-14)
सहज कथा महि आतमु रसिआ ॥ (237-2)
सहज कलालनि जउ मिलि आई ॥ (328-17)
सहज की अकथ कथा है निरारी ॥ (333-8)
सहज केल अनद खेल रहे फेर भए मेल ॥ (214-3)
सहज कै पावड़ै पगु धरि लीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (329-10)
सहज गुफा घरु जाणै साचा ॥ (939-16)
सहज गुफा महि आसणु बाधिआ ॥ (370-15)
सहज गुफा महि ताड़ी लाई आसणु ऊच सवारिआ जीउ ॥१॥ (97-10)
सहज जगोटा बंधन ते छूटा ॥ (879-17)
सहज तरोवर फलिओ गिआन अम्रित फल लागे ॥ (1397-18)
सहज धुनि उपजै हरि लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (231-19)
सहज धुनि गावै मंगल मनूआ अब ता कउ फुनि कालु न खाइ ॥३॥ (373-4)
सहज निरंतरि रहउ समाए ॥५॥ (904-6)
सहज बिनोद चोज आनंता ॥ (1157-3)
सहज भाइ जाइ ते नानक पारब्रहम लिव जागे ॥२॥ (503-8)
सहज भाइ पाइआ हरि नामु ॥३॥ (1176-6)
सहज भाइ मिलीऐ सुखु होवै ॥ (944-1)
सहज भाइ संचिओ किरणि अम्रित कल बाणी ॥ (1392-3)
सहज भाइ सची लिव लागी ॥ (1063-4)
सहज संतोख का आसणु जाणै किउ छेदे बैराईऐ ॥ (940-6)
सहज समाधि अनंद सूख पूरे गुरि दीन ॥ (807-19)
सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥ (658-16)
सहज समाधि उपाधि रहत होइ बडे भागि लिव लागी ॥ (1106-18)
सहज समाधि धुनि गहिर ग्मभीरा ॥ (891-1)
सहज समाधि लगी लिव अंतरि सो रसु सोई जाणै जीउ ॥१॥ (106-15)
सहज समाधि सदा लिव हरि सिउ जीवां हरि गुन गाई ॥ (1232-12)
सहज समाधि सुभाए ॥ (1006-6)
सहज समानो त भरम भाज ॥३॥६॥ (1195-3)
सहज सरोवरु मिलिओ पुरखु भेटिओ अबिनासी ॥ (1397-12)
सहज सिफति भगति ततु गिआना ॥ (237-13)
सहज सुंनि इकु बिरवा उपजिआ धरती जलहरु सोखिआ ॥ (970-13)
सहज सुभाइ भइओ बैरागी ॥१॥ रहाउ ॥ (1164-14)
सहज सुभाइ भए किरपाला गुण अवगण न बीचारिआ ॥ (782-15)
सहज सुभाइ भए किरपाला तिसु जन की काटी फास ॥ (496-14)

सहज सुभाइ मिले गोपाला नानक साचि पतीने ॥२॥३॥६७॥ (626-6)
सहज सुभाइ मेरा मनु मानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (327-11)
सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥ (282-6)
सहज सुभाए आपन आए ॥ (1307-7)
सहज सुहेला फलु मसकीनी ॥ (235-11)
सहज सूख आनंद घनेरे हउमै बिनठी गाठे ॥ (784-19)
सहज सूख आनंद नाम रस हरि संती मंगलु गाइआ ॥ (747-13)
सहज सूख आनंद निधान ॥ (183-11)
सहज सूख आनंद रस पूरन सभि काम ॥१॥ रहाउ ॥ (819-4)
सहज सूख आस निवास ॥ (888-9)
सहज सूख सो कीनी भुगता जो ठाकुरि मसतकि लेखिआ ॥३॥ (208-5)
सहज सेती धन खरी सुहेली त्रिसना तिखा निवारी जीउ ॥२॥ (993-5)
सहज सैन अरु सुखमन नारी ऊध कमल बिगसइआ ॥१॥ (612-12)
सहजि अनंद करहु मेरे भाई ॥ (901-7)
सहजि अनंदि किरपा धारि ॥ (424-8)
सहजि अनंदु होवै दिनु राती अंकुरु भलो हमारा ॥ रहाउ ॥ (717-13)
सहजि बिलोवहु जैसे ततु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (478-7)
सहजि बैरागु सहजे ही हसना ॥ (236-18)
सहजि भवै प्रभु सभनी थाई ॥ (160-12)
सहजि मरउ जीवत ही जीवउ ॥ (1189-11)
सहजि मिलाए हरि मनि भाए पंच मिले सुखु पाइआ ॥ (764-6)
सहजि मिलिआ तब ही सुखु पाइआ त्रिसना सबदि बुझाई ॥९॥ (1274-14)
सहजि मिलिओ पारब्रहमु निसंगु ॥४॥ (236-19)
सहजि मिलै मिलिआ परवाणु ॥ (686-4)
सहजि रता बूझै पति होइ ॥ (944-8)
सहजि रवै वरु कामणि पिर की गुरमुखि रंगि सवारे ॥२॥ (1198-3)
सहजि वणसपति फुलु फलु भवरु वसै भै खंडि ॥ (1089-4)
सहजि विहाझी सहजि लै जानी ॥ (372-4)
सहजि संतोखि सदा त्रिपतासे अनदु खसम कै भाणै जीउ ॥३॥ (106-18)
सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥ (17-19)
सहजि सचु पिरु राविआ हरि नामा उर धारि ॥ (785-9)
सहजि सबदि सुखु ऊपजै बिनु भागा धनु नाहि ॥ (1010-7)
सहजि समाइओ गुरहि बताइओ रंगि रंगी मेरे तन की चोली ॥ (822-4)
सहजि समाइओ देव ॥ (209-7)
सहजि समाना भीतरे छोडिआ नह जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (808-16)
सहजि समावै ता हरि मनि भावै सदा अतीतु बैरागी ॥ (690-9)
सहजि सहजि गुण रमै कबीरु ॥३॥२६॥ (328-15)

सहजि सहजि गुन रवै कबीरा ॥४॥३॥१२॥ (478-17)
सहजि सालाही सदा सदा सहजि समाधि लगाइ ॥ (68-8)
सहजि सीगार कामणि करि आवै ॥ (750-14)
सहजि सुखि सोईऐ हां ॥ (410-13)
सहजि सुखी वर कामणि पिआरी जिसु गुर बचनी मनु मानिआ ॥ (1254-11)
सहजि सुभाइ अपणा पिरु जाणिआ ॥२॥ (357-7)
सहजि सुभाइ उपाधि रहत होइ गीत गोविंदहि गाईऐ ॥ (249-12)
सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥६॥ (289-2)
सहजि सुभाइ नानक मिले जोती जोति समान ॥२॥२॥६६॥ (817-14)
सहजि सुभाइ बोलै हरि बाणी ॥ (191-14)
सहजि सुभाइ मिले साबासि ॥२॥ (154-9)
सहजि सुभाइ मेरा सहु मिलै दरसनि रूपि अपारु ॥२॥ (157-5)
सहजु अनंदु रखिओ ग्रिह भीतरि उठि उआहू कउ दउरिओ ॥२॥ (1000-4)
सहजु अनंदु सदा गुरमती हरि हरि मनि धिआइआ ॥ (163-14)
सहजु भइआ प्रभु पाइआ जम का भउ लथा ॥२०॥ (1101-13)
सहजु भइआ भ्रमु खिन महि नाठा मिलि जोती जोति समाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥१२२॥ (205-6)
सहजे अदिसटु पछाणीऐ निरभउ जोति निरंकारु ॥ (68-17)
सहजे अनदु होआ मनु मानिआ नानक ब्रहम बीचारो ॥ (772-14)
सहजे अनहत सबदु वजाइआ ॥ (237-3)
सहजे अम्रितु पीओ नामु ॥ (237-2)
सहजे आए हुकमि सिधाए नानक सदा रजाए ॥ (938-11)
सहजे आवा सहजे जावा सहजे मनु खेलाइआ था ॥ (1002-8)
सहजे आवै सहजे जाइ ॥ (152-17)
सहजे आसणु असथिरु भाइआ ॥ (237-3)
सहजे कालु विडारिआ सच सरणाई पाइ ॥ (68-10)
सहजे कीनो जीअ को दानु ॥ (237-2)
सहजे खेती राहीऐ सचु नामु बीजु पाइ ॥ (35-7)
सहजे गाविआ थाइ पवै बिनु सहजै कथनी बादि ॥ (68-7)
सहजे गुण गावा जे प्रभ भावा आपे लए मिलाए ॥ (775-14)
सहजे गुण गावै दिनु राती किलविख सभि गवाए ॥ (768-4)
सहजे गुण गावै रंगि राता रसना रामु रवीजै हे ॥३॥ (1049-7)
सहजे गुण रवहि दिनु राती जोती जोति मिलाइआ ॥१२॥ (1068-16)
सहजे गुण रवहि साचे मन माही ॥७॥ (231-6)
सहजे गुरु भेटिओ सचु धरमा ॥ (237-5)
सहजे ग्रिह महि सहजि उदासी ॥ (236-19)
सहजे चूप सहजे ही जपना ॥३॥ (236-18)
सहजे जा कउ परिओ करमा ॥ (237-4)

सहजे जागणु सहजे सोइ ॥ (236-17)
सहजे जागै सवै न कोइ ॥ (160-17)
सहजे जागै सहजे सोवै ॥ (1069-19)
सहजे जागै सहजे सोवै ॥ (646-2)
सहजे जिनि प्रभु जाणि पछाणिआ ॥ (663-18)
सहजे दुबिधा तन की नासी ॥ (237-1)
सहजे नामु धिआईऐ गिआनु परगटु होइ ॥१॥ (429-1)
सहजे नामु न धिआइआ कितु आइआ संसारि ॥ (512-18)
सहजे पावै सोइ वणाह्मबै ॥७॥ (1104-19)
सहजे प्रभु सेवहि अनदिनु माते ॥ (113-6)
सहजे प्रीतमु पिआरा पाइआ सहजे सहजि मिलावणिआ ॥५॥ (114-12)
सहजे भगति करे दिनु राती आपे भगति कराइदा ॥४॥ (1063-1)
सहजे भोजनु सहजे भाउ ॥ (236-18)
सहजे मरै अमरु होइ सोई ॥२॥ (327-15)
सहजे माता सदा रंगि राता साचे के गुण गावै ॥२॥ (634-13)
सहजे माता हरि गुण गाई ॥२॥ (423-11)
सहजे माते अनदिनु जाई ॥३॥ (991-14)
सहजे मिटिओ सगल दुराउ ॥ (236-18)
सहजे रुण झुणकारु सुहाइआ ॥ (237-4)
सहजे वखाणी अमिउ बाणी चरण कमल रंगु लाइआ ॥ (453-5)
सहजे सचु धनु खटिआ थोड़ा कदे न होइ ॥ (1092-10)
सहजे सचु मिलिआ परसादी ॥ (232-16)
सहजे सतिगुरु न सेविओ विचि हउमै जनमि बिनासु ॥ (949-11)
सहजे समाईऐ गोविंदु पाईऐ देहु सखीए मोहि मते ॥ (845-15)
सहजे सहजि खिलाइदा नही करदा आलक ॥ (1101-18)
सहजे सहजि मिलिआ जगजीवनु नानक सुंनि समाए ॥१॥ (774-17)
सहजे सहजि समावै सोइ ॥२॥ (161-11)
सहजे सहजे मिलि रहै अमरा पदु पावै ॥१०॥१॥ (725-9)
सहजे साचि मिलावड़ा साचु वडाई देइ ॥१॥ (31-17)
सहजे साचि मिलै प्रभु सोई ॥३॥ (232-12)
सहजे सिफती धणखु चड़ाए ॥ (993-6)
सहजे सिफती रतिआ भवजलु उतरे पारि ॥२॥ (48-6)
सहजे सुखि सुती सबदि समाइ ॥ (1247-3)
सहजे हरि नामु मंनि वसाए ॥१॥ रहाउ ॥ (665-3)
सहजे हरि नामु मनि वसिआ सची कार कमाइ ॥ (68-10)
सहजे ही गुण ऊचरै भगति करे लिव लाइ ॥ (68-9)
सहजे ही भगति ऊपजै सहजि पिआरि बैरागि ॥ (68-7)

सहजे ही सचि समाइआ ॥११॥ (469-9)
सहजे ही सुखु पाईऐ सहजे रहै समाइ ॥१॥ (66-15)
सहजे ही सुखु सचु कमावै ॥ (1063-18)
सहजे ही सोझी पई सचै सबदि अपारि ॥ (68-16)
सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ (1070-17)
सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥३॥ (11-19)
सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥३॥ (365-16)
सहजे ही हरि नामु लेहु हरि ततु न खोईऐ ॥ (587-9)
सहजे होआ साधू संगु ॥ (236-19)
सहजे होइ मिलावड़ा साचे साचि मिलाउ ॥५॥ (58-7)
सहजे होइ सोई भल माना ॥ (1077-12)
सहजे होता जाइ सु होइ ॥ (236-17)
सहजै ते सुखु अगलो ना लागै जम तीरु ॥१॥ (57-7)
सहजै नो सभ लोचदी बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥ (68-4)
सहजै सहजु मिलै सुखु पाईऐ दरगह पैधा जाए ॥४॥ (1345-15)
सहजै ही ते सुख साति होइ बिनु सहजै जीवणु बादि ॥२॥ (68-8)
सहण सील संतं सम मित्रस्य दुरजनह ॥ (1356-8)
सहन सील पवन अरु पाणी बसुधा खिमा निभराते ॥ (999-17)
सहली खेप नानकु लै आइआ ॥४॥६॥ (372-6)
सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥ (5-3)
सहस कोटि बहु कहत पुरान ॥ (1163-7)
सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥ (278-19)
सहस घटा महि एकु आकासु ॥ (736-14)
सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ (13-3)
सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ (663-7)
सहस नेत्र नेत्र है प्रभ कउ प्रभ एको पुरखु निरारे ॥ (980-13)
सहस नेत्र मूरति है सहसा इकु दाता सभ है मंगा ॥४॥ (1082-10)
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥ (13-4)
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥ (663-7)
सहस फनी जपिओ सेखनागै हरि जपतिआ अंतु न पावैगो ॥ (1309-12)
सहस फनी सेख अंतु न जानै ॥ (1083-5)
सहस भाति करहि चतुराई ॥ (260-14)
सहस मूरति एको प्रभु ठाकुरु प्रभु एको गुरमति तारे ॥३॥ (980-14)
सहस सरीर चिहन भग हूए ता मनि पछोताइआ ॥१॥ (1344-1)
सहस सिआणप उपाव थाके जह भावत तह जाही ॥ (548-2)
सहस सिआणप करि रहे मनि कोरै रंगु न होइ ॥ (40-1)
सहस सिआणप नह मिलै मेरी जिंदुड़ीए जन नानक गुरमुखि जाता राम ॥४॥६॥ छका १ ॥ (541-16)

सहस सिआणप पवै न ताउ ॥ (151-6)
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥ (1-6)
सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥ (287-4)
सहसबाहु मधु कीट महिखासा ॥ (224-17)
सहसा इहु संसारु है मरि जमै आइआ जाइआ ॥ (138-18)
सहसा तूटै निरमलु होवै जोग जुगति इव पाए ॥६॥ (908-18)
सहसा तोड़े भरमु चुकाए ॥ (993-5)
सहसा मूलि न चुकई विचि विसटा पचै पचाइ ॥ (512-10)
सहसा मूलि न चुकै विकारा ॥ (1062-6)
सहसा मूलि न होवई सभ चिंता विचहु जाइ ॥ (1281-15)
सहसा मूलि न होवई हउमै सबदि जलाइ ॥ (591-10)
सहसा मूलि न होवई हाणत कदे न होइ ॥ (555-15)
सहसा मूले नाहि सरपर तारसी ॥१॥ (729-14)
सहसा रोगु न छोडई दुख ही महि दुख पाहि ॥ (645-7)
सहसै जीअरा परि रहिओ मा कउ अवरु न ढंगु ॥ (1410-14)
सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ॥ (919-11)
सहि टिका दितोसु जीवदै ॥१॥ (966-18)
सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥१८॥ (473-3)
सहि मेले ता नदरी आईआ ॥ (473-1)
सही तेरा फुरमानु किनै न फेरीऐ ॥ (964-15)
सही सलामति घरि लै आइआ ॥३॥ (372-5)
सही सलामति नाइ आए ॥ (623-5)
सही सलामति मिलि घरि आए निंदक के मुख होए काल ॥ (827-1)
सही सलामति सभि थोक उबारे गुर का सबदु वीचारे ॥ रहाउ ॥ (625-17)
सहीआ तऊ असंख मंञहु हभि वधाणीआ ॥ (761-12)
सहीआ विचि फिरै सुहेली हरि दरगह बाह लुडाए ॥ (78-9)
सहीआ से सोहागणी जिन सह नालि पिआरु जीउ ॥९॥ (72-7)
सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥ (722-12)
सहु जागै हउ निस भरि सोवा ॥१॥ रहाउ ॥ (356-19)
सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥ (722-14)
सहु नेड़ै धन कमलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥ (722-7)
सहु मेरा एकु दूजा नही कोई ॥ (357-6)
सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥ (467-16)
सहु हदूरि देखै तां भउ पवै बैरागीअड़े ॥ (1104-14)
सांईं मेरै चंगा कीता नाही त हं भी दझां आहि ॥३॥ (1378-1)
सांई बाझहु आपणे वेदण कहीऐ किसु ॥१०॥ (1378-8)
सांई मुझ महि किआ खता मुखहु न बोलै पीर ॥१९८॥ (1375-4)

सांई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किन्हि फुरमाई गाइ ॥१९७॥ (1375-3)
सांकल जेवरी लै है आई ॥१॥ (329-6)
सांगु उतारि थम्हिओ पासारा ॥ (736-11)
सांझ परी दह दिस अंधिआरा ॥ (794-3)
सांझी करहु नाम धनु खाटहु गुर का सबदु वीचारे ॥१॥ रहाउ ॥ (1219-19)
सांति न कदे आवई नह सुखु वसै मनि आइ ॥ (1092-5)
सांति पाई गुरि सतिगुरि पूरे ॥ (806-12)
सांति पावहि होवहि मन सीतल अगनि न अंतरि धुखी ॥ (617-7)
सांति भई गुर गोबिदि पाई ॥ (200-6)
सांति भई जब गोबिदु जानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (326-19)
सांति भई बुझी सभ त्रिसना अनदु भइआ सभ ठाई जीउ ॥१॥ (106-10)
सांति सहज आनंद घनेरे गुर चरणी मनु लाए ॥ (780-15)
सांति सहज आनंद घनेरे बिनसी भूख सबाई ॥ (784-2)
सांति सहज आनंद नामु जपि वाजे अनहद तूरा ॥१॥ रहाउ ॥ (618-9)
सांति सहज आनद गुण गाए दूत दुसट सभि होए खइआ ॥१॥ (829-7)
सांति सहज ग्रिहि सद बसंतु ॥ (1184-15)
सांति सहज सुख के सभि हाट ॥ (430-16)
सांति सहज सुख खिन महि उपजे मनु होआ सदा सुखाला ॥ रहाउ ॥ (622-17)
सांति सहज सूख मनि उपजिओ कोटि सूर नानक परगास ॥२॥५॥२४॥ (717-1)
सांति सहजु आनदु घना पूरन भई आस ॥ (819-13)
सांति सहजु मनि भइओ प्रगासा बिरथा कछु न रही ॥१॥ रहाउ ॥ (1220-11)
सांति सहजु रहसु मनि उपजिओ सगले दूख पलाइण ॥१॥ रहाउ ॥ (713-19)
सांति सीगारु रावे प्रभु सोइ ॥ (664-11)
सांति सूख अरु अनद घनेरे प्रीतम नामु रिदै उर हारि ॥१॥ (826-12)
सांति सूख न सहजु उपजै इहै इसु बिउहारि ॥ (1225-1)
सांति सूख सहज धुनि उपजी साधू संगि निवासा जीउ ॥१॥ (105-13)
सांती विचि कार कमावणी सा खसमु पाए थाइ ॥ (551-18)
सा काइआ जो सतिगुरु सेवै सचै आपि सवारी ॥ (754-18)
सा कुलवंती सा सभराई जो पिरि कै रंगि सवारी जीउ ॥३॥ (97-18)
सा कुसुध सा कुलखणी नानक नारी विचि कुनारि ॥२॥ (652-1)
सा गुणवंती सा वडभागणि ॥ (97-17)
सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥ (1330-8)
सा धन आपु गवाइआ गुर कै सबदि सीगारु ॥ (61-4)
सा धन आसा चिति करे राम राजिआ हरि प्रभ सेजड़ीऐ आई ॥ (776-19)
सा धन कंतु पछाणिआ सुखि सुती निसि डेहु ॥५॥ (1015-10)
सा धन खरी सुहावणी जिनि पिरु जाता संगि ॥ (57-1)
सा धन चली साहुरै किआ मुहु देसी अगै जाइ जीउ ॥ (762-11)

सा धन छुटी मुठी झूठि विधणीआ मिरतकड़ा अंङनड़े बारे ॥ (580-16)
सा धन ढोई न लहै वाढी किउ धीरेउ ॥१॥ (1014-15)
सा धन दुबलीआ जीउ पिर कै हावै ॥ (242-8)
सा धन नावै बाहरी अवगणवंती रोइ ॥३॥ (37-15)
सा धन प्रिअ कै रंगि रती विचहु आपु गवाए ॥ (582-16)
सा धन बाली धुरि मेली मेरै प्रभि आपि मिलाई राम ॥ (770-10)
सा धन बिनउ करे जीउ हरि के गुण सारे ॥ (243-15)
सा धन मनि अनदु भइआ हरि जीउ मेलि पिआरे राम ॥ (440-4)
सा धन रंगु माणे जीउ आपणे नालि पिआरे ॥ (244-12)
सा धन रंड न कबहू बैसई ना कदे होवै सोगु ॥ (582-13)
सा धन रंड न बैसई जे सतिगुर माहि समाइ ॥ (54-6)
सा धन सबदि सुहाई प्रेम कसाई अंतरि प्रीति पिआरी ॥ (567-18)
सा धन सभि रस चोलै अंकि समाणीआ ॥ (1107-6)
सा धन सोहागणि सदा रंगि राती साचै नामि पिआरे ॥ (244-13)
सा धन हरि कै रसि रसी गुर कै सबदि अपारे राम ॥ (440-5)
सा धरति सुहावी जितु वसहि हरि जन सचे नाम विटहु कुरबाणो जीउ ॥१॥ (107-7)
सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥ (310-5)
सा धरती सो पउणु झुलारे जुग जीअ खेले थाव कैसे ॥१॥ (902-15)
सा नानक सोहागवती री ॥४॥४॥१०॥ (739-9)
सा बंदी ते लई छडाइ ॥ (374-7)
सा बुधि दीजै जितु विसरहि नाही ॥ (100-6)
सा मति दीजै जितु तुधु धिआई ॥ (100-6)
सा मति देहु दइआल प्रभ जितु तुमहि अराधा ॥ (677-19)
सा मति निरमल कहीअत धीर ॥ (198-7)
सा मति पूरी जितु हरि गुण गावै ॥ (189-5)
सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का नाउ विसारिआ ॥ (550-11)
सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का सुआउ न पाइआ ॥ (550-9)
सा रसना धनु धंनु है मेरी जिंदुड़ीए गुण गावै हरि प्रभ केरे राम ॥ (540-1)
सा रुति सुहावी जितु तुधु समाली ॥ (97-4)
सा रुति सुहावी जितु हरि चिति आवै ॥ (1183-19)
सा वडभागणि सदा सोहागणि राम नाम गुण चीन्हे ॥ (782-12)
सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहां ॥ (660-8)
सा वेला कहु कउणु है जितु प्रभ कउ पाई ॥ (709-8)
सा वेला चिति न आवै जितु आइ कंटकु कालु ग्रसै ॥ (723-11)
सा वेला परवाणु जितु सतिगुरु भेटिआ ॥ (520-15)
सा वेला सो मूरतु सा घड़ी सो मुहतु सफलु है मेरी जिंदुड़ीए जितु हरि मेरा चिति आवै राम ॥ (540-16)
सा सभराई सुंदरी पिर कै हेति पिआरि ॥४॥ (426-14)

सा सापनि होइ जग कउ खाई ॥२॥ (329-8)
सा सिधि सा करमाति है अचिंतु करे जिसु दाति ॥ (650-7)
सा सेवा कीती सफल है जितु सतिगुर का मनु मंने ॥ (314-8)
सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥ (288-7)
सा सोहागणि अंकि समावै ॥२॥ (737-6)
सा सोहागणि साची जिसु साचि पिआरु ॥ (363-10)
सा हरि तेरी उसतति है जो हरि प्रभ भावै ॥ (725-15)
सा हुकमु पछाणै कंत का जिस नो क्रिपा कीती करतारि ॥ (516-9)
साइर की पुत्री परहरि तिआगी चरण तलै वीचारे ॥ (437-12)
साइर की पुत्री बिदारि गवाई ॥ (230-7)
साइर सपत भरे जल निरमलि उलटी नाव तरावै ॥ (1332-14)
साइर सपत भरे जलि निरमलि गुरमुखि मैलु न लाइदा ॥२॥ (1036-12)
साइरु सोखि भुजं बलइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (479-11)
साई अलखु अपारु भोरी मनि वसै ॥ (397-3)
साई कार कमावणी धुर की फुरमाई ॥ (420-11)
साई कार कमावणी धुरि छोडी तिंनै पाइ ॥ (475-10)
साई कार कमावणी पिआरे धुरि मसतकि लेखु लिखाइ ॥६॥ (432-5)
साई घड़ी सुलखणी सिमरत हरि नाम ॥१॥ रहाउ ॥ (819-7)
साई जाइ सम्हालि जिथै ही तउ वंञणा ॥५८॥ (1381-1)
साई नामु अमोलु कीम न कोई जाणदो ॥ (81-9)
साई पुत्री जजमान की सा तेरी एतु धानि खाधै तेरा जनमु गइआ ॥६॥ (435-2)
साई प्रीति जि आपे लाए ॥ (1164-16)
साई भगति जो तुधु भावै तूं सरब जीआ प्रतिपाला ॥१॥ (747-4)
साई मति साई बुधि सिआनप जितु निमख न प्रभु बिसरावै ॥ (978-10)
साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइआ हेतु ॥ (75-10)
साई वसतु परापति होई जिसु सेती मनु लाइआ ॥ (764-7)
साई सुहागणि जो प्रभ भाई ॥ (391-8)
साई सोहागणि ठाकुरि धारी ॥२९॥ (933-13)
साई सोहागणि नानका जो भाणी करतारि री ॥४॥१६॥११८॥ (400-13)
साई सोहागणि साई भागणि जै पिरि किरपा धारी ॥ (959-14)
साउ प्राणी तिना लागा जिनी अम्रितु पाइआ ॥ (566-17)
साकत इव ही करत बिहानी ॥३॥ (888-14)
साकत उलटि सुजन भए चीता ॥१॥ (326-18)
साकत कउ अम्रित बहु सिंचहु सभ डाल फूल बिसुकारे ॥ (983-14)
साकत कउ दिनु रैनि अंधारी मोहि फाथे माइआ जाल ॥ (1335-15)
साकत करम पाणी जिउ मथीऐ नित पाणी झोल झुलारे ॥ (982-18)
साकत का बकना इउ जानउ जैसे पवनु झुलाई ॥३॥ (609-7)

साकत कारी कांबरी धोए होइ न सेतु ॥१००॥ (1369-15)
साकत की आवरदा जाइ ब्रिथारी ॥ (681-7)
साकत की ऐसी है रीति ॥ (195-10)
साकत की ओह पिंड पराइणि ॥ (871-17)
साकत की बिधि नैनहु डीठी ॥ (892-19)
साकत कूड़ कपट महि टेका ॥ (1030-12)
साकत कूड़ि पचहि मनि हउमै दुहु मारगि पचै पचाई हे ॥६॥ (1025-19)
साकत कूड़े ऊभ सुक हूए मनि अभिमानु विछुड़ि दूरि गईआ ॥२॥ (834-3)
साकत कूड़े बंधि भवाईअहि मरि जनमहि आई जाई हे ॥१४॥ (1026-11)
साकत कूड़े सचु न भावै ॥ (109-14)
साकत गीत नाद धुनि गावत बोलत बोल अजाए ॥१॥ रहाउ ॥ (820-5)
साकत जम की काणि न चूकै ॥ (1030-14)
साकत जाइ निवहि गुर आगै मनि खोटे कूड़ि कूड़िआरे ॥ (312-8)
साकत ठउर नाही हरि मंदर जनम मरै दुखु पाइआ ॥७॥ (1043-4)
साकत थान भरिसट फिराही ॥५॥ (239-6)
साकत दुरजन भरमिआ जो लगे दूजै सादि ॥ (957-5)
साकत दुरमति डूबहि दाझहि गुरि राखे हरि लिव राता हे ॥५॥ (1031-11)
साकत नर अहंकारी कहीअहि बिनु नावै ध्रिगु जीवीजै ॥७॥ (1325-14)
साकत नर प्रानी सद भूखे नित भूखन भूख करीजै ॥ (1323-17)
साकत नर लोभी जाणहि दूरि ॥३॥ (1177-16)
साकत नर सतिगुरु नही कीआ ते बेमुख हरि भरमावैगो ॥ (1311-16)
साकत नर सभि भूख भुखाने दरि ठाढे जम जंदारे ॥६॥ (981-9)
साकत नर होछी मति मधिम जिन्ह हरि हरि सेव न करा ॥ (799-15)
साकत नरि सबद सुरति किउ पाईऐ ॥ (1042-7)
साकत निंदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु ॥ (517-19)
साकत निरगुणिआरिआ आपणा मूलु पछाणु ॥ (63-4)
साकत नीच तिसु कुलु नही जाती ॥७॥ (239-7)
साकत प्रेमु न पाईऐ हरि पाईऐ सतिगुर भाइ ॥ (597-15)
साकत बंध भए है माइआ बिखु संचहि लाइ जकीड़ा ॥ (698-5)
साकत बचन बिछूआ जिउ डसीऐ तजि साकत परै परारे ॥५॥ (981-19)
साकत बधिक माइआधारी तिन जम जोहनि लागे ॥ (172-4)
साकत बेसुआ पूत निनाम ॥३॥ (239-4)
साकत मरहि संत सभि जीवहि ॥ (326-2)
साकत माइआ कउ बहु धावहि ॥ (1029-15)
साकत मुठे दुरमती हरि रसु न जाणंन्हि ॥ (854-7)
साकत मूड़ अचेत न चेतहि दुखु लागै ता रामु पुकारा हे ॥१३॥ (1030-18)
साकत मूड़ माइआ के बधिक विचि माइआ फिरहि फिरंदे ॥ (800-13)

साकत लोभी बंधु न पाइआ ॥६॥ (239-6)
साकत संगि विकरम कमाए ॥ (105-10)
साकत संगु न कीजई पिआरे जे का पारि वसाइ ॥ (641-6)
साकत संगु न कीजीऐ जा ते होइ बिनाहु ॥१३॥ (1369-8)
साकत सचु न भावई कूड़ै कूड़ी पांइ ॥ (22-7)
साकत सिउ ऐसी प्रीति है बूझहु गिआनी रंगि ॥ (1411-5)
साकत सिउ करि उलटी रे ॥ (535-16)
साकत सिउ भूलि नही कहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (481-3)
साकत सिउ मन मेलु न करीअहु जिनि हरि हरि नामु बिसारे ॥ (981-18)
साकत सिउ मुखि जोरिऐ अध वीचहु टूटै ॥ (811-18)
साकत सिरपाउ रेसमी पहिरत पति खोई ॥३॥ (811-17)
साकत सुआन कहीअहि बहु लोभी बहु दुरमति मैलु भरीजै ॥ (1326-4)
साकत सूतु बहु गुरझी भरिआ किउ करि तानु तनीजै ॥ (1324-9)
साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥ (13-10)
साकत हरि रस सादु न जानिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥ (171-8)
साकत हरि हरि चीति न आइआ ॥१॥ (1136-17)
साकती पाप करि कै बिखिआ धनु संचिआ तिना इक विख नालि न जाई ॥ (734-7)
साकतु फासी पड़ै इकेला ॥ (1031-18)
साकतु भूला फिरै बेबाणि ॥३॥ (371-17)
साकतु मूड़ु लगे पचि मुइओ ॥२॥ (241-9)
साकतु लोभी इहु मनु मूड़ा ॥ (415-11)
साकतु सुआनु सभु करे कराइआ ॥ (481-5)
साकर माखी अधिक संतापे ॥ (1160-14)
साख पकंदी आईआ होर करेंदी वंन ॥११॥ (1378-9)
साखा तीनि कहै नित बेदु ॥ (352-7)
साखा तीनि निवारीआ एक सबदि लिव लाइ ॥ (66-6)
साखा तीनि मूलु मति रावै तूं तां सरब विडाणी ॥१॥ (422-18)
साखी जागी गुरमुखि जाणी ॥२॥ (974-9)
साखी सबदु सुरति नही उपजै खिंचि तेजु सभु लीन्हा ॥२॥ (480-12)
सागरं लंघंति पिंगं तम परगास अंधकह ॥ (1359-4)
सागरं संसारसि गुर परसादी तरहि के ॥ (148-16)
सागरं संसारस्य गुर परसादी तरहि के ॥ (1353-10)
सागर इंद्रा अरु धरतेव ॥ (1160-18)
सागर तरि बोहिथ प्रभ चरण ॥ (866-11)
सागर तरे भरम भै बिनसे कहु नानक ठाकुर परताप ॥२॥५॥८५॥ (821-5)
सागर ते कंढै चड़े गुरि कीने धरमा ॥३॥ (1002-18)
सागर भगति भंडार हरि पूरे सतिगुर पासि ॥ (996-14)

सागर महि बूंद बूंद महि सागरु कवणु बुझै बिधि जाणै ॥ (878-18)
सागर महि बोहिथु पाइओ हरि नानक करी क्रिपा किरपाले ॥२॥१॥३२॥ (679-8)
सागर महि रतन लाल बहु सारे ॥ (1027-16)
सागर मेर उदिआन बन नव खंड बसुधा भरम ॥ (1364-1)
सागर लहरि संसा संसारु गुरु बोहिथु पार गरामनो ॥१॥ रहाउ ॥ (210-13)
सागर लहरि समुंद सर वेलि वरस वराहु ॥ (788-16)
सागर संसार भव उतार नामु सिमरत बहु तरे ॥ (456-16)
सागरि डूगरि निरभउ ऐसा ॥४॥ (221-16)
सागरु कीना अति तुम भारा ॥ (1081-13)
सागरु गुणी अथाहु किनि हाथाला देखीऐ ॥ (1091-2)
सागरु तरिआ साधू संगे ॥ (684-1)
सागरु तरिओ बाछर खोज ॥ (899-4)
सागरु तरीऐ नाम कै रंगि ॥ (1150-17)
सागरु देखउ डरि मरउ भै तेरै डरु नाहि ॥ (1087-9)
सागरु सीतलु गुर सबद वीचारि ॥ (1274-17)
साच की मति सदा नउतन सबदि नेहु नवेलओ ॥ (242-15)
साच छाडि कै झूठह लागिओ जनमु अकारथु खोइओ ॥ (633-12)
साच जोगु मनि वसै आइ ॥८॥ (1190-1)
साच धणी जगु आइ बिनासा ॥ (412-3)
साच धरम का बेड़ा बांधिआ भवजलु पारि पवाई ॥१६॥ (916-2)
साच धरम की करि दीनी वारि ॥ (430-15)
साच धरम सिउ रुचि नही आवै सति सुनत छोहाइआ ॥३॥ (402-15)
साच नाम की अम्रित वरखा ॥३॥ (739-15)
साच नामि रतो पति सिउ घरि जाइ ॥ (1187-11)
साच नामि वडिआई पाए ॥३॥ (664-12)
साच पदारथु गुरमुखि लहहु ॥ (1138-4)
साच बिना कह होवत सूचा ॥ (269-4)
साच बिना दरि सिझै न कोई ॥ (1027-12)
साच बिना सूचा को नाही नानक अकथ कहाणी ॥६७॥ (946-1)
साच महलि गुरि अलखु लखाइआ ॥ (228-1)
साच वखर के वापारी विरले लै लाहा सउदा कीना हे ॥१२॥ (1028-10)
साच वखर के हम वणजारे ॥ (939-18)
साच सबद करि सदा प्रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (1192-15)
साच सबद बिनु कबहु न छूटसि बिरथा जनमु भइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (1126-1)
साच सबद बिनु पति नही पावै ॥ (941-11)
साच सबद बिनु महलु न पछाणै ॥३॥ (414-18)
साच सबद बिनु मुकति न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (938-8)

साच सबद सिउ लागी प्रीति ॥ (1340-19)
साच सबदि तुझ माहि समाइआ ॥ (1342-15)
साच सबदि पैझै पति होई ॥ (1027-12)
साच सबदि प्रभु एकु सिञाणु ॥ (1174-15)
साच सबदु हिरदे मन माहि ॥ (1143-16)
साचउ ठाकुरु मनि वसै हउ बलिहारी तिसु ॥ (937-4)
साचउ ठाकुरु साचु पिआरा ॥२॥ (686-7)
साचउ दूरि न जाणीऐ अंतरि है सोई ॥ (421-5)
साचउ मानु महतु तूं आपे देवणहारु ॥१॥ (54-14)
साचउ रंगि रंगावलो सखी हमारो कंतु ॥ (1015-9)
साचउ वखरु लादीऐ लाभु सदा सचु रासि ॥ (55-4)
साचउ साहिबु सेवीऐ गुरमुखि अकथो काथि ॥६॥ (59-14)
साचा आपि अनूपु अपारो ॥ (1342-12)
साचा आपि वसै मनि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (361-1)
साचा खेलु तुम्हारा ॥ (764-14)
साचा ठाकुरु त्रिभवणि मेरा ॥ (109-11)
साचा तखतु सची पातिसाही ॥ (1073-19)
साचा थानु कीओ दइआला ॥ (1036-10)
साचा थानु सदा प्रभ तेरा ॥ (1074-1)
साचा दरु साचा दरवारा ॥ (1068-12)
साचा धनु गुरमती पाए ॥ (665-15)
साचा धनु पाइओ हरि रंगि ॥ (185-1)
साचा धनु साची वडिआई ॥ (1148-10)
साचा नामु धिआइ पावहि सुखि महलो ॥ (689-7)
साचा नामु मेरा आधारो ॥ (917-9)
साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥ (917-11)
साचा नामु सलाहीऐ साचे ते त्रिपति होइ ॥ (992-10)
साचा नामु साचै सबदि जानै ॥ (833-1)
साचा नावणु गुर की सेवा ॥१॥ रहाउ ॥ (484-15)
साचा निरंकारु निज थाइ ॥ (14-11)
साचा मरै न आवै जाइ ॥ (229-17)
साचा मुरारे तामि जापहि जामि मंनि वसावहे ॥ (567-4)
साचा रवि रहिआ प्रभु सोइ ॥४॥ (355-14)
साचा रवि रहिआ मनु राता ॥ (1023-6)
साचा रवि रहिआ लिव लाई ॥ (1034-18)
साचा वासा पुरि गगनंदरि ॥ (1033-9)
साचा सचु सोई अवरु न कोई ॥ (1020-11)

साचा सबदु जिना मनि भाइआ ॥ (1050-16)
साचा सबदु वसै मनि आए ॥ (1052-6)
साचा सबदु सची सचु बाणी सो जनु अनदिनु जागा ॥२॥ (600-16)
साचा सबदु सिफति है साची साचा मंनि वसाए ॥ (753-12)
साचा साहबु एकु तू होरि जीआ केते लोअ ॥३॥ (15-7)
साचा साहिबु अमरु अतोलु ॥ (905-17)
साचा साहिबु अमिति वडाई भगति वछल दइआला ॥ (611-14)
साचा साहिबु किरपा करै ॥ (661-15)
साचा साहिबु गुरमुखि जापै ॥ (130-15)
साचा साहिबु मनि वसै की फासहि जम जाले राम ॥ (439-6)
साचा साहिबु मनि वसै भाई एहा करणी सार ॥ (608-12)
साचा साहिबु माहरो सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ (1276-17)
साचा साहिबु विसरिआ पिआरे बहुती मिलै सजाइ ॥ (640-19)
साचा साहिबु सचु तू मेरे साहा तेरा कीआ सचु सभु होइ ॥ (670-5)
साचा साहिबु सचु दरबारु ॥ (677-6)
साचा साहिबु सद मिहरवाण ॥ (619-18)
साचा साहिबु साची नाई परखै गुर की बात खरी ॥१०॥ (939-8)
साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥ (2-3)
साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (349-8)
साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (9-17)
साचा साहिबु होआ रखवाला राखि लीए कंठि लाइ ॥ (675-4)
साचा साहु गुरू सुखदाता हरि मेले भुख गवाए ॥ (1171-15)
साचा सिरजणहारो अलख अपारो ता का अंतु न पाइआ ॥ (579-7)
साचा सूखु सदा तिन अंतरि रसना हरि रसि रासी हे ॥६॥ (1048-10)
साचा सेवहु साची बाणी ॥ (1175-2)
साचा सेवहु साचु पछाणै ॥ (1174-19)
साचा हटु पूरा सउदा वखरु नामु वापारहु ॥२॥ (399-10)
साचा हरखु नाही तिसु सोगु ॥ (414-8)
साचि न लागै मैलु किआ मलु धोईऐ ॥ (687-16)
साचि नामि मेरा मनु लागा ॥ (384-15)
साचि नामि सहजि समाइआ ॥१॥ (1174-4)
साचि मिलै पावै पति सोइ ॥६॥ (686-12)
साचि मिलै सो साचे भाए ना वीछुड़ि दुखु पाइदा ॥१२॥ (1035-4)
साचि रतउ पति सिउ घरि जाइ ॥ (941-11)
साचि रते अहिनिसि बैरागि ॥२॥ (665-17)
साचि रते जिन्हा धुरि लिखि पाइआ ॥ (1175-5)
साचि रते तिन सद बसंत ॥ (1173-13)

साचि रते भगत इक रंगी दूजा रंगु न कोई ॥ (769-18)
साचि रते सचु अम्रितु जिहवा मिथिआ मैलु न राई ॥ (1127-1)
साचि रते सुख सहजि समाए ॥२॥ (664-17)
साचि रते से उबरे दुखीए दूजै भाइ ॥६॥ (1346-9)
साचि लगै ता हउमै जाईऐ ॥२॥ (736-19)
साचि वसिऐ साची सभ कार ॥ (158-1)
साचि संतोखे भरमु चुकाइआ ॥८॥ (228-2)
साचि समानी गुरमुखि मनि भानी गुरमुखि साबतु जागे ॥ (1111-2)
साचि सहजि सोभा घणी हरि गुण नाम अधारि ॥ (61-1)
साचि सीलि चालहु सुलितान ॥२४॥ (1166-10)
साचि सूचा सदा नानक गुर सबदि झगरु निबेरओ ॥४॥२॥ (844-10)
साची करणी गुर वीचारि ॥ (931-19)
साची करणी पति परवाणु ॥ (1188-18)
साची कार कमावणी होरि लालच बादि ॥ (1010-16)
साची कीरति सचु सुखु होई ॥ (880-8)
साची कीरति साची बाणी ॥ (1022-8)
साची गति साचै चितु लाए ॥ (1277-9)
साची गुर वडिआई ॥ (621-14)
साची दरगह गति पति पाए ॥ (1043-4)
साची दरगह पाईऐ मानु ॥२॥ (1270-9)
साची दरगह पावै माणु ॥३॥ (1328-16)
साची दरगह पावै माणु ॥६॥ (1188-18)
साची दरगह पावै मानु ॥ (1173-1)
साची दरगह पूछ न होइ ॥ (832-9)
साची दरगह बैसई भगति सची अरदासि ॥ (55-4)
साची दरगह बोलै कूड़ु ॥ (199-16)
साची दरगह साचु निवासा मानै हुकमु रजाई हे ॥४॥ (1023-15)
साची दरगहि अपनी पति खोवै ॥२॥ (1151-14)
साची दरगहि पाईऐ मानु ॥ (1271-8)
साची द्रिसटि साचा आकारु ॥ (283-15)
साची नगरी तखतु सचावा ॥ (1023-4)
साची नदरि एक लिव तरै ॥१॥ रहाउ ॥ (413-17)
साची पूंजी सचु संजमो आठ पहर गुण गाउ ॥ (48-17)
साची पूरन निरमल रीति ॥२॥ (741-18)
साची प्रीति न तुटई पिआरे जुगु जुगु रही समाइ ॥६॥ (431-19)
साची प्रीति न तुटई साचे मेलि मिलाउ ॥ (54-5)
साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥ (659-1)

साची बसतु के भार चलाए पहुचे जाइ भंडारी ॥२॥ (1123-10)
साची बाणी अनदिनु गावहि निरधन का नामु वेसाहा हे ॥१२॥ (1056-5)
साची बाणी नाम पिआरि ॥१॥ (1173-17)
साची बाणी नाम पिआरु ॥ (1174-16)
साची बाणी महलु परापति होइ ॥५॥ (423-14)
साची बाणी मीठी अम्रित धार ॥ (1275-6)
साची बाणी सचु वखाणै सचि नामि लिव लाई ॥१९॥ (910-16)
साची बाणी सदा गुण गावै इसु जनमै का लाहा हे ॥३॥ (1053-11)
साची बाणी सबद बीचारु ॥१॥ (158-17)
साची बाणी सबदि सुहाए ॥ (1057-10)
साची बाणी सिउ धरे पिआरु ॥ (661-16)
साची बाणी सूचा होइ ॥ (361-8)
साची बाणी हरि गुण गाए ॥४॥ (222-15)
साची भगति करहि दरि जापहि घरि दरि सचा सोई ॥ (771-8)
साची भगति करहि दिनु राती तां तनि दूखु न होई ॥१॥ (1131-5)
साची भगति ता थीऐ जा हरि वसै मनि आइ ॥१॥ रहाउ ॥ (35-6)
साची भगति सदा सुखु होइ ॥२॥ (664-5)
साची रहत साचा मनि सोई ॥ (831-12)
साची रासि साचा वापारु ॥ (664-18)
साची लिव लागी है भीतरि सतिगुर सिउ मनु मानिआ ॥३॥१॥९॥ (666-12)
साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥ (917-14)
साची वाट सुजाणु तूं सबदि लघावणहारु ॥ (54-17)
साची संगति थानु सचु सचे घर बारा ॥ (1009-7)
साची सुरति नामि नही त्रिपते हउमै करत गवाइआ ॥ (1254-15)
साची सुरति सुहावणी मनमुख मति फीकी ॥ (1011-3)
साची सोभा साचि दुआरे ॥६॥ (423-15)
साचु कतेब बखानै अलहु नारि पुरखु नही कोई ॥ (483-6)
साचु करि हम गाठि दीनी छोडि परम निधानं ॥१॥ (482-16)
साचु कहउ अरदासि हमारी हउ संत जना बलि जाओ ॥ (938-9)
साचु कहहु तुम पारगरामी तुझु किआ बैसणु दीजै ॥४॥ (938-14)
साचु कहै सो बिखै समानै ॥ (180-3)
साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥ (267-8)
साचु धड़ी धन माडीऐ कापड़ु प्रेम सीगारु ॥ (54-7)
साचु धरमु नही भावै डीठा ॥ (676-9)
साचु धिआइनि देखि हजूरि ॥ (1174-7)
साचु न छपै जे को रखै छपाए ॥ (232-4)
साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ (917-9)

साचु नामु अम्रितु गुरि दीआ हरि चरनी लिव लागे ॥ (1111-2)
साचु नामु गुर सबदि वीचारि ॥ (355-10)
साचु नामु मेरै हिरदै वसै ॥१॥ रहाउ ॥ (1170-14)
साचु नामु रिदे रवै सरीर ॥१॥ रहाउ ॥ (356-6)
साचु नेहु तिन प्रीतमा जिन मनि वुठा आपि जीउ ॥ (761-2)
साचु पिआरा आपि करेइ ॥ (349-16)
साचु बीचारि किलविख दुख काटे मनु निरमलु अनरागी ॥४॥ (1233-2)
साचु भइओ अन कतहि न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1158-13)
साचु भेट बैसण कउ थाउ ॥ (878-13)
साचु महलु पाए हरि गुण गाइ ॥२॥ (665-5)
साचु रिदै सचु प्रेम निवास ॥ (224-11)
साचु वखरु धनु पलै होइ ॥ (944-7)
साचु सबदु जा का नीसानु ॥३॥ (386-2)
साचु सम्हालहि साचि समाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (1172-18)
साचु सलाहे साचि समावै जिनि गुरमुखि एको जाता हे ॥१५॥ (1052-5)
साचु सहजु कदे न होवै सोगु ॥ (1172-16)
साचु सहजु गुर ते ऊपजै भाई मनु निरमलु साचि समाई ॥ (635-13)
साचु सहजु सुखु नामि वसाई ॥१॥ (1331-10)
साचु सील सचु संजमी सा पूरी परवारि ॥ (1088-8)
साचे ऊपरि अवरु न दीसै साचे साचि समावै ॥ (1112-11)
साचे का गाहकु विरला को जाणु ॥ (664-18)
साचे की लिव गुरमति जाती ॥ (1024-15)
साचे गुण गावै दिनु राती जुगि जुगि एको जाता हे ॥४॥ (1052-11)
साचे गुण गावै सचि समावै सचु वेखै सभु सोई ॥ (769-8)
साचे गुर की साची सीख ॥ (152-12)
साचे गुर ते हुकमु पछानु ॥२॥ (414-8)
साचे जोग जुगति वीचारी साचे ताड़ी लाई हे ॥१॥ (1023-12)
साचे ठाकुर वेपरवाहे ॥ (122-17)
साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ ॥ (19-18)
साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ (349-8)
साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ (9-17)
साचे नाम की लागै भूख ॥ (349-7)
साचे नाम की लागै भूख ॥ (9-16)
साचे नालि तेरा गंढु लागै गुरमुखि सदा समाले ॥ (440-16)
साचे निरमल मैलु न लागै ॥ (686-3)
साचे पिर लोड़ी प्रीतम जोड़ी मति पूरी परधाने ॥ (764-2)
साचे भावै तिसु वडीआए ॥ (1043-8)

साचे भावै सबदु पिआरा ॥ (1035-2)
साचे मैलु न लागई मनु निरमलु हरि धिआइ ॥ (29-5)
साचे राती गुर सबदु वीचार ॥ (158-14)
साचे लाए तउ सच लागे साचे के बिउहारी ॥ (1123-9)
साचे लागै साचा फलु पाई ॥१॥ (1128-9)
साचे सचिआर विटहु कुरबाणु ॥ (597-5)
साचे सतिगुरू दातारा ॥ (1221-2)
साचे साचै तखति वडाई हउमै गणत गवाई हे ॥११॥ (1023-4)
साचे साह की मन महि टेक ॥३॥ (197-1)
साचे साहिब अलख अभेव ॥ (376-4)
साचे साहिब कै मनि भावै ॥२॥ (396-5)
साचे साहिब गहिर ग्मभीरा ॥ (1079-19)
साचे साहिब तेरा सचु फुरमाणु ॥२॥ (376-3)
साचे साहिब तोटि न दाती सगली तिनहि उपाई हे ॥१०॥ (1025-4)
साचे साहिब सभि गुण अउगण सभि असाह ॥१॥ (17-17)
साचे साहिब सिउ मनु मानिआ ॥ (629-19)
साचे साहिब सिरजणहारे ॥ (1032-8)
साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ (917-7)
साचे सिरजणहार मुरारै ॥ (1022-6)
साचे सूचे मैलु न भावै ॥ (222-9)
साचे ही सचु साचि पतीजै विचहु आपु गवाइआ ॥४॥ (1259-5)
साचै घरि साचै रखे गुर बचनि सुभाखिआ ॥५॥ (1011-5)
साचै नाइ रते बैरागी पाइनि मोख दुआरा ॥४॥ (559-17)
साचै नाइ वडाई पावहु ॥२॥ (832-16)
साचै नामि सदा लिव लागी ॥ (1044-10)
साचै नामि सुखु होई मरै न कोई गरभि न जूनी वासा ॥ (769-10)
साचै बैसणु उठणा सचु भोजनु भाखिआ ॥ (1011-4)
साचै महलि रहै बैरागी आवण देहि त आवा ॥ (1108-8)
साचै मेलि मिलाए ॥ (764-6)
साचै मेले सबदि मिलाए ॥ (1024-12)
साचै रंगि राते सहजे माते सहजे रहे समाई ॥ (571-9)
साचै राचे देखि हजूरे ॥ (943-19)
साचै राती मिलै मिलाई मनमुखि आवण जाणी ॥ (1112-2)
साचै सतिगुरि साचु बुझाइआ पति राखै सचु सोई राम ॥ (769-9)
साचै सबदि दरि नीसाणै ॥६॥ (224-2)
साचै सबदि मुकति गति पाए ॥ (352-16)
साचै सबदि रते इक रंगी साचै सबदि मिलाई हे ॥११॥ (1046-14)

साचै सबदि रते जन साचे हरि प्रभि आपि मिलाए ॥ (1155-12)
साचै सबदि रते से बाचे सतिगुर बूझ बुझाई ॥३॥ (504-11)
साचै सबदि लागि मति उपजै गुरमुखि नामु सोहागो ॥ (568-19)
साचै सबदि वसै मनि आइ ॥१॥ (665-2)
साचै सबदि सदा है मुकता माइआ मोहु चुकाइदा ॥५॥ (1066-6)
साचै सबदि सहज धुनि उपजै मनि साचै लिव लाई ॥ (1234-7)
साचै सबदि सहजि सुभाए ॥ (1016-5)
साचै सबदे साचु कमाए ॥ (1051-4)
साचै सहजि साचि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (158-5)
साचै साचे साचि समावहि ॥८॥ (839-15)
साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥ (922-8)
साचो पछाणा तामि तेरा जामि आपि बुझावहे ॥ (567-7)
साचो वखरु संचीऐ पूरै करमि अपारु ॥ (59-10)
साचो साचा नाउ गुण गोविंदु है जीउ ॥ (688-7)
साचो साचु कमावणा साचै सबदि मिलाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (30-15)
साचो साचु समालिहु दुखु जाइ ॥ (665-2)
साचो साहिबु निरमलो मनि मानै एका ॥१॥ (1008-17)
साचो सेवहि साचु कमावहि नामे सचि समाहा हे ॥२॥ (1053-9)
साचौ उपजै साचि समावै साचे सूचे एक मइआ ॥ (940-18)
साचौ साहिबु मनि वसै हउमै बिखु मारी ॥५॥ (419-12)
साजन आइ वुठे घर माही ॥ (768-5)
साजन आइ वुठे घर माही ॥४॥१॥ (768-8)
साजन ऐसो संतु सहाई ॥ (499-11)
साजन चले पिआरिआ किउ मेला होई ॥ (729-10)
साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ (518-16)
साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ (989-4)
साजन देसि विदेसीअड़े सानेहड़े देदी ॥ (1111-16)
साजन मनि आनंदु नानक नामु जपि ॥१८॥ (1363-6)
साजन मनि आनंदु है गुर का सबदु वीचार ॥ (549-9)
साजन मिले सहजि सुभाइ हरि सिउ प्रीति बणी ॥ (1107-12)
साजन मीत सखा हरि बंधप जीअ धान प्रभ प्रान अधारी ॥ (1389-2)
साजन मीत सखा हरि मेरै गुन गोपाल हरि राइआ ॥ (1223-1)
साजन मीत सहाई तुम ही तू मेरो परवार ॥१॥ रहाउ ॥ (1226-10)
साजन मीत सुआमी नेरो ॥ (1302-17)
साजन मेरे प्रीतमहु तुम सह की भगति करेहो ॥ (440-8)
साजन रहंसे दुसट विआपे साचु जपि सचु लाहओ ॥ (242-17)
साजन रांगि रंगीलड़े रंगु लालु बणाइआ ॥५॥ (767-1)

साजन राते सच के संगे मन माही ॥ (766-19)
साजन संत करहु इहु कामु ॥ (290-3)
साजन संत मिलि नामु जपेहा ॥ (104-10)
साजन संत हमारे मीता बिनु हरि हरि आनीता रे ॥ (404-1)
साजन सरसिअड़े दुख दुसमन भागे ॥ (459-15)
साजन सहजि मिले गुण गहि अंकि समानिआ ॥ (1109-12)
साजन सैण मिलहु संजोगी गुर मिलि खोले फासे ॥२॥ (582-4)
साजन सैन मीत सुत भाई ताहू ते ले रखी निरारी ॥ (1388-6)
साजन होवनि आपणे किउ पर घर जाही ॥ (766-18)
साजनड़ा मेरा साजनड़ा निकटि खलोइअड़ा मेरा साजनड़ा ॥ (924-6)
साजना संत आउ मेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (1301-2)
साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ ॥ (55-14)
साजनु दुसटु जा कै एक समानै ॥ (236-16)
साजनु देखा ता गलि मिला साचु पठाइओ लेखु ॥ (1010-11)
साजनु पुरखु सतिगुरु मेरा पूरा तिसु बिनु अवरु न जाणा राम ॥ (780-3)
साजनु बंधु सुमित्रु सो हरि नामु हिरदै देइ ॥ (218-17)
साजनु मीतु तूं हां ॥ (410-10)
साजनु मीतु पिआरा सोई ॥ (1085-11)
साजनु मीतु बिंदु नही रकती ॥ (1036-4)
साजनु मीतु सखा करि एकु ॥ (192-7)
साजनु मीतु सुजाणु तू तू सरवरु तू हंसु ॥ (937-3)
साजनु मीतु सुजाणु सखा तूं सचि मिलै वडिआई ॥ (437-15)
साजनो तू मीतु मेरा ग्रिहि तेरै सभु केहु ॥१॥ रहाउ ॥ (1307-17)
साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ ॥ (766-1)
साझ पाति काहू सिउ नाही ॥२॥ (324-3)
साझ बिहाग तकहि आगासु ॥ (152-19)
साझा करै कबीर सिउ हरि संगि बनजु करेइ ॥४३॥ (1366-14)
साझी गुर नालि बहालिआ सरब सुख पाइक ॥ (1102-1)
साठ सूत नव खंड बहतरि पाटु लगो अधिकाई ॥१॥ (335-3)
साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ॥२॥ (659-5)
साढे त्रै मण देहुरी चलै पाणी अंनि ॥ (1383-5)
सात घड़ी जब बीती सुणी ॥ (1166-3)
सात समुंद भरे निरमल नीरि ॥ (839-15)
सात सूत इनि मुडींए खोए इहु मुडीआ किउ न मुइओ ॥२॥ (856-6)
सात सूत मिलि बनजु कीन ॥ (1195-1)
सातैं सति करि बाचा जाणि ॥ (343-15)
साथ लडे तिन नाठीआ भीड़ घणी दरीआउ ॥३॥ (1015-8)

साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥ (918-10)
साथि तेरै सो सहु सदा है इकु खिनु हरि नामु समालहे ॥ (440-15)
साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु ॥ (288-2)
साथीअड़ा प्रभु एकु दूसर नाहि कोइ ॥ (704-17)
साद करि समधां त्रिसना घिउ तेलु ॥ (1257-3)
साद कीते दुख परफुड़े पूरबि लिखे माइ ॥ (989-7)
साद बिकार बिकार झूठ रस जह जानो तह भीर बाटुली ॥ (1216-9)
साद बिकार बिखै रस मातो असंख खते करि फेरे ॥ (615-4)
साद रहे बादं अहंकारा ॥ (221-5)
साद सहज करि मनु खेलाइआ ॥ (1243-9)
साद सहज सुख रस कस तजीअले कापड़ छोडे चमड़ लीए ॥ (358-15)
सादि मोहि लादी अहंकारे ॥ (389-11)
सादु आइआ तिन हरि जनां चखि साधी डिठा ॥ (321-6)
सादु नाही इवेही गलै ॥२४॥ (1412-6)
साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥ (283-7)
साध का निंदकु कैसे तरै ॥ (875-12)
साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥ (272-7)
साध की उपमा रही भरपूरि ॥ (272-8)
साध की टहल संतसंगि हेत ॥ (274-4)
साध की धूरि करहु इसनानु ॥ (283-7)
साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥ (271-7)
साध की महिमा बेद न जानहि ॥ (272-7)
साध की सचु टहल कमानी ॥ (898-11)
साध की सेवा सदा सुहेली ॥२॥ (1182-8)
साध की सोभा अति मसकीनी ॥ (676-15)
साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥ (272-9)
साध की सोभा का नाही अंत ॥ (272-8)
साध की सोभा मूच ते मूची ॥ (272-9)
साध की सोभा सदा बेअंत ॥ (272-8)
साध की सोभा साध बनि आई ॥ (272-9)
साध के चरन धूरि जनु बाछै सुखु नानक इहु पाइआ ॥४॥६॥७॥ (497-7)
साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥ (271-8)
साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥ (271-8)
साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला ॥ (272-2)
साध कै संगि उनि भउजलु तरिआ सगल दूत उनि साधे जीउ ॥३॥ (102-12)
साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥ (271-7)
साध कै संगि कलूखत हरै ॥ (272-1)

साध कै संगि किलबिख सभ धोए ॥३॥ (194-19)
साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥ (271-16)
साध कै संगि तजै सभु आपु ॥ (271-13)
साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम ॥ (271-16)
साध कै संगि न कतहूं धावै ॥ (271-10)
साध कै संगि न कबहू धावै ॥ (271-14)
साध कै संगि न बिरथा जावै ॥ (272-3)
साध कै संगि न बीगा पैरु ॥ (271-12)
साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥ (272-4)
साध कै संगि नरक परहरै ॥ (272-2)
साध कै संगि नही कछु घाल ॥ (272-1)
साध कै संगि नाही को मंदा ॥ (271-12)
साध कै संगि नाही हउ तापु ॥ (271-13)
साध कै संगि पाए नाम निधान ॥ (271-16)
साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥ (271-6)
साध कै संगि पारब्रहमु पछाणा ॥२॥ (183-19)
साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु ॥ (271-6)
साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥ (271-15)
साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥ (271-6)
साध कै संगि मनोहर बैन ॥ (271-9)
साध कै संगि माइआ ते भिंन ॥ (271-10)
साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥ (272-6)
साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥ (271-5)
साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥ (271-5)
साध कै संगि लगै प्रभु मीठा ॥ (272-5)
साध कै संगि सदा परफुलै ॥ (271-8)
साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥ (271-14)
साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥ (271-17)
साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥ (272-4)
साध कै संगि सोभा सुरदेवा ॥ (271-18)
साध कै संगि स्रब थान गमि ॥ (271-19)
साध क्रिपा ते सूका हरिआ ॥ (102-6)
साध क्रिपाल दइआल गोविंदु ॥ (183-7)
साध क्रिपाल दइआल भए है इहु छेदिओ दुसटु बिगाना ॥१॥ रहाउ ॥ (1210-2)
साध क्रिपालि हरि संगि गिझाइआ ॥ (100-17)
साध गावहि गुण एक निरंकार ॥ रहाउ ॥ (676-15)
साध गावहि गुण सदा रसाला ॥१॥ रहाउ ॥ (743-14)

साध जनां कै चरन लागि ॥ (1272-16)
साध जना का दरसु न डीठा ॥२॥ (738-17)
साध जना का मंत्रु कमाए ॥ (130-19)
साध जना की अचरज कथा ॥१॥ (271-4)
साध जना की चरणी पाहा ॥१॥ रहाउ ॥ (742-9)
साध जना की मागउ धूरि ॥ (289-10)
साध जना की रेन नानक मंगल सूख सधारे ॥२॥१॥३१॥ (679-4)
साध जना की सरनी परै ॥ (266-6)
साध जना की सेवा लागै ॥ (266-4)
साध जना के पूजे पैर ॥ (395-5)
साध जना कै संगि निसतरे ॥२॥ (1147-10)
साध जना कै संगि बसत सुख सहज बिस्राम ॥ (819-7)
साध जना कै संगि भवजलु तारिअनु ॥ (517-18)
साध जना कै संगि भवजलु बिखमु तरि ॥ (519-12)
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ (135-10)
साध जना पग मलि मलि धोवहि ॥२॥ (865-10)
साध जना मिलि हरि जसु गाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (1303-8)
साध जना होए किरपाला बिगसे सभि परवारिआ ॥१॥ (806-19)
साध तेरे की चरनी पाउ ॥ (283-19)
साध तेरे की जाचना विसरु न सासि गिरासि ॥ (431-9)
साध धूरि करि सुध मंजाई ॥१॥ (200-1)
साध नाम निरमल ता के करम ॥ (296-8)
साध नाव बैठावहु नानक भव सागरु पारि उतारा ॥२॥५८॥८१॥ (1220-6)
साध पठाए आपि हरि हम तुम ते नाही दूरि ॥ (929-1)
साध प्रसादि हरि सिउ मनु रंगि ॥२॥ (866-4)
साध प्रसादि हरि हरि हरि गाए बिखै बिआधि तब हूटो ॥१॥ रहाउ ॥ (673-14)
साध भले अणनातिआ चोर सि चोरा चोर ॥२॥ (789-10)
साध मूरति गुरु भेटिओ नानक मिलि सागर बूंद नही अन हेरा ॥२॥१॥११७॥ (827-18)
साध रूप अपना तनु धारिआ ॥ (1005-7)
साध रेण मजन सभि धरम ॥ (183-7)
साध संगम राम राम रमणं सरणि नानक हरि हरि दयाल चरणं ॥४४॥ (1358-1)
साध संगेण तरणं नानक महा सागर भै दुतरह ॥५१॥ (1358-16)
साध संगेणि गुण रमत नानक सरणि पूरन परमेसुरह ॥५९॥ (1359-11)
साध संगेणि सिमरंति गोबिंद सरणि नानक हरि हरि हरे ॥५५॥ (1359-4)
साध संत मनाए प्रिअ पाए गुन गाए पंच नाद तूर बजाए ॥१॥ रहाउ ॥ (408-11)
साध सभा महि अनद बिस्राम ॥ (676-17)
साध सभा महि सहजु न चाखिआ जिहबा रसु नही राई ॥ (596-7)

साध सभा संता की संगति नदरि प्रभू सुखु पाइआ ॥ (437-18)
साध सरणि नानक ते आए ॥७॥ (296-6)
साध सरनि चरन चितु लाइआ ॥ (1300-1)
साध सेवा अघ कटे घनेरे ॥१॥ (387-8)
साध सेवा लावै जिह आपै ॥ (260-15)
साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥ (283-8)
साधक सिध सगल मुनि हारे ॥ (330-13)
साधन का संगु साध सिउ गोसटि हरि साधन सिउ लिव लाउ ॥ (1202-16)
साधसंग कै नाही नेरि ॥ (180-5)
साधसंग जपि निसंग मनि निधानु धारे ॥१॥ (679-3)
साधसंग स्नेह सत्यिं सुखयं बसंति नानकह ॥२॥ (1354-2)
साधसंगति अरु गुर की क्रिपा ते पकरिओ गढ को राजा ॥५॥ (1161-19)
साधसंगति आपि होआ आपि जगतु तराइआ ॥ (460-9)
साधसंगति उपजै बिस्वास ॥ (343-10)
साधसंगति ऊंध कमल बिगास ॥ (1148-4)
साधसंगति कउ जोहि न साकै मलि मलि धोवै पाइ ॥१॥ (500-5)
साधसंगति कउ वारिआ जीउ कीआ कुरबाणु ॥ (43-13)
साधसंगति कउ वारिआ भाई जिन एकंकार अधार ॥१॥ (608-13)
साधसंगति कउ हउ बलिहार ॥ (987-15)
साधसंगति कबहू नही करै ॥ (1252-13)
साधसंगति कबहू नही कीनी रचिओ धंधै झूठ ॥ (1105-15)
साधसंगति की जावउ टेक ॥ (885-7)
साधसंगति की धूरि इक मांगउ जन नानक पइओ सरान ॥५॥२॥ (1203-5)
साधसंगति की भीर जउ पाई तउ नानक हरि संगि मिरीआ ॥२॥१॥२४॥ (1209-6)
साधसंगति की मंगहु रवाला ॥ (1085-2)
साधसंगति की सरनी परीऐ चरण रेनु मनु बाछै ॥१॥ (534-1)
साधसंगति कै अंचलि लावहु ॥१॥ (801-8)
साधसंगति कै अंचलि लावहु बिखम नदी जाइ तरणी ॥१॥ (702-11)
साधसंगति कै आसरै प्रभ सिउ रंगु लाए ॥ (966-5)
साधसंगति कै घरि वसै एको सचा सोइ ॥१॥ (44-19)
साधसंगति कै पाछै परिअउ जन नानक हरि रसु पाइआ ॥४॥२॥४॥ (712-17)
साधसंगति कै बलि बलि जाई बहुड़ि न जनमा धाइ ॥ (1223-9)
साधसंगति कै बासबै कलमल सभि नसना ॥ (811-9)
साधसंगति कै वारणै मिलिआ संजोगु ॥१॥ (817-5)
साधसंगति कै संगि वसै वडभागी पाए ॥१॥ (813-19)
साधसंगति गुण उचारण हरि नाम अम्रित पाथ ॥ (1007-12)
साधसंगति जनम मरणु निवारै नानक जन की धूरा ॥४॥४॥१६२॥ (215-16)

साधसंगति जा कै हरि हरि नामु ॥२॥ (393-3)
साधसंगति तिउ हउमै छूट ॥ (1181-13)
साधसंगति ते सभ फल पाए सतिगुर कै बलि जांई ॥१॥ (620-18)
साधसंगति नानकु भइओ मुकता दरसनु पेखत भोरी ॥२॥३७॥६०॥ (1216-6)
साधसंगति निधि हरि को नाम ॥ (1300-12)
साधसंगति निहचउ है तरणा ॥ (1071-17)
साधसंगति परसादि संतन कै सोइओ मनु जागिओ ॥३॥ (215-3)
साधसंगति पाई परम गते ॥ रहाउ ॥ (1293-16)
साधसंगति पाईऐ वडभागी गुरमुखि हरि हरि नामु कहहु ॥१॥ रहाउ ॥ (1147-14)
साधसंगति प्रभि कीओ निवास ॥ (1184-2)
साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥ (694-12)
साधसंगति बिनु तरिओ न कोइ ॥ (373-18)
साधसंगति बिनु भ्रमि मुई करती करम अनेक ॥ (928-3)
साधसंगति बैकुंठै आहि ॥४॥१०॥ (325-11)
साधसंगति बैकुंठै आहि ॥४॥८॥१६॥ (1161-13)
साधसंगति भगवान भजन बिनु कही न सचु रहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (336-13)
साधसंगति भजु पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ (986-19)
साधसंगति मनि वसै साचु हरि का नाउ ॥ (51-6)
साधसंगति महि इहु बिस्रामु ॥ (1181-5)
साधसंगति महि बसे गुपाल ॥ (1338-1)
साधसंगति महि मनु परबोधा ॥२॥ (1298-16)
साधसंगति महि लखे गोपाल ॥ (1156-9)
साधसंगति महि हरि रसु पाईऐ गुरि मिलिऐ जम भउ भागा ॥ (598-16)
साधसंगति मिलि कीनो दानु ॥३॥ (201-8)
साधसंगति मिलि बुधि बिबेक ॥३॥ (377-4)
साधसंगति मिलि हरि रवहि से गुणी गहीर ॥१॥ रहाउ ॥ (212-1)
साधसंगति मिलि हरि रसु पाइआ ॥ (1348-14)
साधसंगति वडभागी पाईऐ ॥२॥ (180-16)
साधसंगति सिउ प्रीति बणि आई ॥ (743-11)
साधसंगति सिउ संगु न कीआ बहु जोनी दुखु पावै ॥ (77-16)
साधसंगति हरि चरण निवासु ॥१॥ (378-17)
साधसंगति हरि मिलै जिसहि पूरन करम ॥३॥ (1341-10)
साधसंगति होइ निरमला कटीऐ जम की फास ॥ (44-15)
साधसंगति होहि निरमलु बहुड़ि जोनि न आउ ॥१॥ (1220-15)
साधसंगमि गुण गावह हरि के रतन जनमु नही हारिओ ॥ (534-7)
साधसंगमि भजु सुआमी पाप होवत खार ॥ (1228-11)
साधसंगमि लाभु पाइओ नानक फिरि न मरंद ॥२॥१३॥३२॥ (1304-4)

साधसंगमि हरि अराधे सगल कलमल दुख जले ॥ (548-8)
साधसंगि अगनि सागरु तरहु ॥ (295-5)
साधसंगि अम्रित गुन गाइन ॥ (271-19)
साधसंगि अम्रित रसु भुंचा ॥ (271-9)
साधसंगि असथिति मनु पावै ॥ (271-10)
साधसंगि आराधना हरि निधि आपार ॥ (816-15)
साधसंगि इन दुख ते निकसिओ नानक एक परीत ॥४॥९॥ (673-6)
साधसंगि इसु मनहि उधारउ ॥२॥ (804-5)
साधसंगि इह हउमै छोरै ॥ (266-5)
साधसंगि उधारि इहु मनु आठ पहर आराधि ॥ (501-16)
साधसंगि ओइ दुसट वसि होते ॥३॥ (182-13)
साधसंगि कछु भउ न भराती ॥ (194-10)
साधसंगि कलि कीरतनु गाइआ ॥ (253-7)
साधसंगि किस सिउ नही बैरु ॥ (271-12)
साधसंगि कीरतन फलु पाइआ ॥ (197-4)
साधसंगि खिन माहि उधारे ॥ (103-4)
साधसंगि गति भई हमारी ॥ (272-6)
साधसंगि गाए गुन गोबिंद बिनसिओ सभु परमाद ॥१॥ (1226-18)
साधसंगि गावहि गुण गोबिंद पूरन ब्रहम गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (1226-3)
साधसंगि गुण गाइ अतोली ॥ (379-2)
साधसंगि गुण गाइआ सभि दोखह खाता ॥ (319-12)
साधसंगि चिंत बिरानी छाडी ॥ (671-6)
साधसंगि चूके भै फेर ॥१॥ (899-1)
साधसंगि जउ तुमहि मिलाइओ तउ सुनी तुमारी बाणी ॥ (614-1)
साधसंगि जनम मरण निवारी ॥ (740-17)
साधसंगि जनम मरन निवारे बहुरि न कतहू धाइआ ॥१॥ (1268-16)
साधसंगि जनमु मरणु मिटावै ॥ (104-1)
साधसंगि जपते नाराइण तिन के दोख जरे ॥ (1227-9)
साधसंगि जपि नामु मुरारी ॥ (287-16)
साधसंगि जपि निसंग जमकालु तिसु न खावनो ॥१॥ (1323-6)
साधसंगि जपिओ भगवंतु ॥ (183-9)
साधसंगि जपिओ हरि राइ ॥ (390-12)
साधसंगि जपीऐ हरि नामु ॥ (866-10)
साधसंगि जपै निरंकारु ॥ (868-8)
साधसंगि जम जेवरी काटी नानक सहजि समाइआ ॥२॥१०॥ (1300-4)
साधसंगि जमदूत न भेटन ॥२॥ (760-3)
साधसंगि जा कउ हरि रंगु लागा ॥ (792-17)

साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥ (266-7)
साधसंगि जाने परमानंदा ॥ (271-12)
साधसंगि जिन बैहणे ॥ (132-11)
साधसंगि जिनि हरि हरि जपिओ नानक सो परवाना ॥२॥६७॥९०॥ (1221-19)
साधसंगि जिसु देवै नाउ ॥४॥२२॥३५॥ (1145-19)
साधसंगि जिह हउमै मारी ॥ (255-5)
साधसंगि जो हरि गुण गावै सो निरमलु करि लीजै ॥२॥ (747-18)
साधसंगि तरै भै सागरु ॥ (744-2)
साधसंगि ता की सरनी परहु ॥ (191-4)
साधसंगि ता बैठणु पावउ ॥ (183-8)
साधसंगि तिनि हरि धनु पाइआ ॥ (894-2)
साधसंगि तिन्ही दरसनु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (740-2)
साधसंगि तुटहि हउ बंधन एको एकु निहालीऐ ॥३॥ (1019-11)
साधसंगि तुमरे गुण गाउ ॥ (1144-12)
साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥ (266-14)
साधसंगि दुसमन सभि मीत ॥ (271-11)
साधसंगि धरम राइ करे सेवा ॥ (271-18)
साधसंगि धिआईऐ परमेसरु अम्रित जा के सुआद ॥१॥ रहाउ ॥ (1224-5)
साधसंगि नानक जसु गाइओ जो प्रभ की अति पिआरी ॥८॥१॥८॥ (508-1)
साधसंगि नानक दरसु पाइओ बिनसिओ सगल निहोरा ॥२॥७॥१६॥ (499-9)
साधसंगि नानक नामु धिआइआ मुख ऊजल भए दरबारा ॥२॥२७॥९१॥ (630-17)
साधसंगि नानक नामु लइआ ॥४॥२२॥९१॥ (183-9)
साधसंगि नानक निसतरीऐ जो राते प्रभ निरबाणी ॥२॥५९॥८२॥ (1220-10)
साधसंगि नानक परगासिओ आन नाही रे बीओ ॥२॥१॥२॥ (978-16)
साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसंन ॥२॥ (271-11)
साधसंगि नानक बखसिंद ॥४॥३३॥८४॥ (391-12)
साधसंगि नानक बुधि पाई हरि कीरतनु आधारो ॥ (498-7)
साधसंगि नानक हरि धिआइआ ॥८॥२२॥ (293-13)
साधसंगि नानकि रंगु माणिआ ॥ (806-1)
साधसंगि नानकु गुण गावै सिमरै सदा गोपाला ॥४॥१०॥ (611-11)
साधसंगि नानकु भजै बिखु तरिआ संसारु ॥५॥१॥११६॥ (203-11)
साधसंगि परम गति पाईऐ माइआ रचि बंधि हारे ॥१॥ (714-19)
साधसंगि पाईऐ निधि नामा ॥ (189-5)
साधसंगि पापा मलु खोवै ॥ (274-11)
साधसंगि पावहि सचु धना ॥ (289-4)
साधसंगि पावहु परम गते ॥१॥ रहाउ ॥ (1136-18)
साधसंगि पावै जनु कोइ ॥ (274-17)

साधसंगि पूरन सभि कामा ॥२॥ (189-6)
साधसंगि प्रगटे नाराइण ॥ (805-7)
साधसंगि प्रभ देहु निवास ॥ (290-15)
साधसंगि बसतु अगोचर लहै ॥ (271-14)
साधसंगि बिछुरत हरि मेला ॥ (272-2)
साधसंगि बिनसी बिपरीति ॥२॥ (1137-5)
साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥ (281-7)
साधसंगि बैसि गुण गावहि तह रोग सोग नही जनम मरन ॥१॥ रहाउ ॥ (888-18)
साधसंगि भइओ जनमु परापति ॥ (176-14)
साधसंगि भए आगिआकारी ॥ (272-6)
साधसंगि भए जन मुकते गति पाई नानक नदरि निहलीआ ॥५॥२॥१८॥ (1004-11)
साधसंगि भजनु करि सुआमी ढाकन कउ इकु हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (714-8)
साधसंगि भजीऐ गोपालु ॥ (807-4)
साधसंगि भजु अचुत सुआमी दरगह सोभा पावणा ॥३॥ (1086-1)
साधसंगि भजु परमानंद ॥ (295-7)
साधसंगि भै भरम मिटाइआ ॥३॥ (193-15)
साधसंगि भ्रम भै मिटे कथे नानक ब्रहम गिआन ॥२॥१॥४॥ (1322-6)
साधसंगि मन सोवत जागे ॥ (386-18)
साधसंगि मनि तनि हितै फिरि दूखु न जापै ॥२॥ (814-8)
साधसंगि मनु निरमल हूआ ॥ (254-17)
साधसंगि मलु लाथी ॥ (625-18)
साधसंगि मलु सगली खोत ॥ (271-5)
साधसंगि मिटि जात बिकार ॥ (198-9)
साधसंगि मिटे भरम अंधारे ॥ (389-12)
साधसंगि मिटे भै भरमा अम्रितु हरि हरि रसन भने ॥१॥ रहाउ ॥ (1149-8)
साधसंगि मिलि करहु अनंद ॥ (293-1)
साधसंगि मिलि दुइ कुल साधि ॥ (199-10)
साधसंगि मिलि धिआईऐ ॥ (624-5)
साधसंगि मिलि नामु धिआवहु पूरन होवै घाला ॥१॥ रहाउ ॥ (617-14)
साधसंगि मिलि पाईऐ मनि सचे भाणा ॥ (318-8)
साधसंगि मिलि भए प्रगास ॥ (888-9)
साधसंगि मिलि भजहि गोपाला ॥४॥५५॥१२४॥ (190-19)
साधसंगि मिलि हरि गुण गाए इहु जनमु पदारथु जीता रे ॥१॥ रहाउ ॥ (404-1)
साधसंगि मिलि हरि गुन गाए जमदूतन कउ त्रास अहे ॥१॥ रहाउ ॥ (824-17)
साधसंगि मिलि हरि गुन गाए बिनसी सभ अभिमानी ॥१॥ रहाउ ॥ (1228-14)
साधसंगि मिलि हरि रसु पाइआ ॥ (374-7)
साधसंगि मिले सारंगपाणी ॥ (108-8)

साधसंगि रंगि प्रभ भेटे नानक सुखि जन रैन ॥३॥१३॥ (674-9)
साधसंगि रंगि प्रभु धिआइआ ॥ (1299-2)
साधसंगि रामईआ रसु पाइओ नानक जा कै भावनी नीकी ॥२॥३॥२५॥ (1272-7)
साधसंगि रामहि लिव लागी ॥२॥ (805-2)
साधसंगि विरला को पाए ॥ (1004-15)
साधसंगि सद हरि गुण गाइ ॥१॥ (1271-8)
साधसंगि सदा सुखु पाईऐ हरि बिसरि न कबहू जाई ॥ रहाउ ॥ (616-11)
साधसंगि सभु दूखु मिटाइआ ॥१॥ (804-8)
साधसंगि सभु होत निबेरा ॥ (271-6)
साधसंगि सरपर निसतरै ॥ (272-5)
साधसंगि साजन मीत कुट्मब निसतारै ॥ (271-17)
साधसंगि सो भवजलु तरै ॥३॥ (899-18)
साधसंगि हरि अम्रितु पीजै ॥ (563-11)
साधसंगि हरि अम्रितु पीवै ॥२॥१०३॥१७२॥ (200-11)
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ (179-18)
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ (283-8)
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ (385-17)
साधसंगि हरि कीरतनु गावै ॥ (1079-18)
साधसंगि हरि कीरतनु गाही ॥ (1085-8)
साधसंगि हरि के गुण गाइआ ॥ (1143-14)
साधसंगि हरि के गुण गाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (191-2)
साधसंगि हरि के गुन गाउ ॥ (272-4)
साधसंगि हरि कै रंगि गोबिंद सिमरण लागिआ ॥ (457-12)
साधसंगि हरि गुण रमहु बिनसे सभि रोग ॥३॥ (706-13)
साधसंगि हरि हरि जपत निरमल साची रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (431-2)
साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥ (281-12)
साधसंगि हरि हरि नामु चितारा ॥ (717-13)
साधसंगि है हरि जसु गाइआ ॥ (1084-17)
साधसंगि होआ परगासु ॥ (1340-12)
साधसंगि होइ तिसु बिउहारु ॥ (1151-16)
साधसंगि होइ निरमला नानक प्रभ कै रंगि ॥५॥ (297-13)
साधसंगि होइ सभ की रेन ॥ (271-9)
साधसंगु कबहू नही कीना नह कीरति प्रभ गाई ॥ (632-15)
साधसंगु जिन पाइआ सेई वडभागे ॥ (322-4)
साधसंगे नाम रंगे रणु जीति वडा अखाड़ा ॥ (461-3)
साधसंगे हरि नाम रंगे संसारु सागरु सभु तरै ॥ (927-1)
साधह मंत्रु मोरलो मनूआ ॥ (1206-15)

साधह सरणी पाईऐ हरि जीउ गुण गावह हरि नीता राम ॥ (543-13)
साधा की धूरी नावै ॥ (623-12)
साधा महि इह हमरी जिंदु ॥३॥ (183-7)
साधा संगु अपारु अनदिनु हरि गुण रवै ॥ (523-13)
साधा सरणी जो पवै सो छुटै बधा ॥ (320-11)
साधिक साच भले वीचारे ॥ (1035-1)
साधिक सिध गुरू बहु चेले खोजत फिरहि फुरमाणै ॥ (946-17)
साधिक सिध जिसै कउ फिरदे ॥ (130-13)
साधिक सिध धिआवहि गिआनी ॥ (104-2)
साधिक सिध फिरहि बिललाते ते भी मोहे माई ॥२॥ (747-12)
साधिक सिध लखै जउ भेउ ॥ (343-4)
साधिक सिध सगल की पिआरी तुटै न काहू तोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (1216-3)
साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला ॥ (693-15)
साधिक सिध सगल मुनि लोचहि बिरले लागै धिआनु ॥ (1226-4)
साधिक सिध सगल सरणाई ॥ (1401-10)
साधिक सिध सुरदेव मनुखा बिनु साधू सभि ध्रोहनि ध्रोहे ॥१॥ रहाउ ॥ (370-6)
साधु मिलै पूरब संजोग ॥ (153-2)
साधु मिलै साधू जनै संतोखु वसै गुर भाइ ॥ (62-13)
साधु मिलै सिधि पाईऐ कि एहु जोगु कि भोगु ॥ (335-9)
साधु साधु मुख ते कहहि सुणि दास मिलावहि ॥१॥ (818-13)
साधू की जउ लेहि ओट ॥ (1196-13)
साधू की मन ओट गहु उकति सिआनप तिआगु ॥ (260-5)
साधू की मनु मंगै रवाला ॥ (866-6)
साधू की होहु रेणुका अपणा आपु तिआगि ॥ (45-3)
साधू के पूरन उपदेसे ॥ (287-15)
साधू कै ठाढी दरबारि ॥ (872-3)
साधू कै संगि अजरु सहै ॥ (271-15)
साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥ (272-5)
साधू कै संगि पाप पलाइन ॥ (271-19)
साधू कै संगि महलि पहूचै ॥ (271-15)
साधू कै संगि महा पुनीत ॥ (271-11)
साधू कै संगि सो धनु पावै ॥ (271-17)
साधू जन की करै रवाल ॥ (869-3)
साधू जन की निंदा विआपे जासनि जनमु गवाई ॥ (601-15)
साधू जन रामु रसन वखाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (192-6)
साधू जन संगति होइ निवासु ॥ (415-4)
साधू धूरि करउ नित मजनु सभ किलबिख पाप गवाइण ॥ (979-14)

साधू धूरि जाचहि जन तेरे नानक सद कुरबानां हे ॥९॥१॥४॥ (1075-11)
साधू धूरि पुनीत करी ॥ (1152-7)
साधू धूरि मिलै निसतरीऐ ॥४॥६॥११॥ (804-15)
साधू धूरि मुखि मसतकि लाई ॥ (744-14)
साधू धूरि लाई मुखि मसतकि काम क्रोध बिखु जारउ ॥ (532-1)
साधू परसत ही प्रभु पाइआ गोबिद सरणि तुमारी ॥१॥ (607-3)
साधू पुरख साध जन पाए इक बिनउ करउ गुर पिआरे ॥ (983-9)
साधू पुरखु पुरखपति पाइआ अगिआन अंधेरु गवाइआ ॥३॥ (1178-8)
साधू बिनु ऐसे अबगतु जावै ॥१॥ (872-9)
साधू बिनु तैसे अबगतु जाईऐ ॥२॥ (872-11)
साधू बिनु नाही दरवार ॥३॥ (872-12)
साधू रसन भनी हां ॥ (409-17)
साधू संगति इहु फलु पाइआ इकु केवल नामु अधारी ॥४॥ (916-16)
साधू संगति गुरहि बताई ॥ (1182-9)
साधू संगति तउ बसै जउ आपन होहि दइआल ॥ (255-17)
साधू संगति तरिआ संसारु ॥ (394-5)
साधू संगति दीओ रलाइ ॥ (331-4)
साधू संगति निरमला अठसठि मजनागा ॥ (965-2)
साधू संगति निरमला आपि करे प्रतिपाल ॥ (45-16)
साधू संगति पारगराम ॥३॥ (1182-9)
साधू संगति मनि वसै पूरन होवै घाल ॥१॥ रहाउ ॥ (52-12)
साधू संगति लगिआ तरिआ संसारु ॥ (1251-6)
साधू संगति होइ परापति ता प्रभु अपुना लहीऐ ॥३॥ (713-3)
साधू संगमि है निसतार ॥२॥ (200-8)
साधू संगमे हरि गुण गाइआ राम ॥ (547-14)
साधू संगमे हां ॥ (410-14)
साधू संगि उधारु भए निकाणिआ ॥ (1291-11)
साधू संगि तरीजै सागरु कटीऐ जम की फासा जीउ ॥२॥ (108-6)
साधू संगि भइआ मनि उदमु नामु रतनु जसु गाई ॥ (619-6)
साधू संगि भजहु गुपाल ॥ (675-15)
साधू संगि मिलाइआ भाई सरब रहिआ भरपूरि ॥ (640-11)
साधू संगि सरब सुख पाए ॥१॥ रहाउ ॥ (1148-2)
साधू संगि सिखाइओ नामु ॥ (393-17)
साधू संगि सिमरि गोपाल ॥ (197-19)
साधू संगि होवै उधारु ॥ (1138-8)
साधू संगु करहु सभु कोइ ॥ (196-16)
साधू संगु परापति जा कउ तिन ही पाइआ एहु निधानु ॥ (827-8)

साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥ (134-5)
साधू संगु मसकते तूठै पावा देव ॥ (44-1)
साधू संतन सेवि कै प्रिउ हीअरै धिआइओ ॥ (1230-15)
साधू संतु सुजाणु सोई जिसहि प्रभ जी मानई ॥ (925-9)
साधू सतगुरु जे मिलै ता पाईऐ गुणी निधानु ॥१॥ (21-8)
साधू सतम जाणो नानक प्रीति कारणं ॥२३॥ (1361-10)
साधू सरणि परै सो उबरै खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु चंडालु चंडईआ ॥६॥ (835-15)
साधू साध मिले रसु पावै ततु निज घरि बैठिआ पीजै ॥४॥ (1326-2)
साधू साध सरनि मिलि संगति जितु हरि रसु काढि कढीजै ॥ (1326-6)
साधू साध साध जन नीके जिन अंतरि नामु धरीजै ॥ (1324-8)
साधू साध साध जन नीके मिलि साधू हरि रंगु कीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (1324-13)
साधू साध साध मनि प्रीतम बिनु देखे रहि न सकीजै ॥ (1324-18)
साधू सुखु पावहि कलि सागर ॥३॥ (324-11)
साधू हरि हरे गुन गाइ ॥ (1300-14)
साधू होइ सु भगति पछानै हरि लए खजानै पाई ॥३॥ (970-2)
साधो इहु जगु भरम भुलाना ॥ (684-17)
साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥ (1186-7)
साधो इहु मनु गहिओ न जाई ॥ (219-11)
साधो कउन जुगति अब कीजै ॥ (902-3)
साधो गोबिंद के गुन गावउ ॥ (219-15)
साधो मन का मानु तिआगउ ॥ (219-1)
साधो रचना राम बनाई ॥ (219-4)
साधो राम सरनि बिसरामा ॥ (220-4)
सापु कुंच छोडै बिखु नही छाडै ॥ (485-16)
साबतु पूंजी सतिगुर संगि ॥ (182-14)
साबतु रखहि त राम भजु नाहि त बिनठी बात ॥२२२॥ (1376-11)
साबतु वसतु ओहु अपनी लहै ॥१॥ रहाउ ॥ (182-10)
साम कहै सेत्मबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥ (470-4)
साम वेदु रिगु जुजरु अथरबणु ॥ (1038-1)
सारंग ॥ (1253-4)
सारंग कबीर जीउ ॥ (1253-16)
सारंग की वार महला ४ राइ महमे हसने की धुनि (1237-10)
सारंग जिउ पगु धरै ठिमि ठिमि आपि आपु संधूरए ॥ (567-12)
सारंग बाणी नामदेउ जी की ॥ (1252-8)
सारंग महला ४ ॥ (1198-14)
सारंग महला ४ ॥ (1201-1)
सारंग महला ४ घरु १ (1198-7)

सारंग महला ५ चउपदे घरु १ (1202-11)
सारंग महला ५ चउपदे घरु ५ (1229-2)
सारंग महला ५ सूरदास ॥ (1253-11)
सारंग महला ९ ॥ (1231-11)
सारंग महला ९ ॥ (1231-15)
सारंग महला ९ ॥ (1231-18)
सार न जाणा तू वड दाणा करि मिहरमति सांई ॥ (779-10)
सार भूत सति हरि को नाउ ॥ (289-2)
सार सुखु पाईऐ रामा ॥ (1103-6)
सारग छंत महला ५ (1236-15)
सारग मः ५ ॥ (1231-3)
सारग महला १ ॥ (1197-15)
सारग महला १ ॥ (1197-9)
सारग महला १ ॥ (1232-16)
सारग महला ३ ॥ (1233-19)
सारग महला ३ ॥ (1234-11)
सारग महला ३ असटपदीआ घरु १ (1233-8)
सारग महला ४ ॥ (1199-1)
सारग महला ४ ॥ (1199-15)
सारग महला ४ ॥ (1199-8)
सारग महला ४ ॥ (1200-3)
सारग महला ४ ॥ (1201-15)
सारग महला ४ ॥ (1201-9)
सारग महला ४ ॥ (1202-6)
सारग महला ४ घरु ३ दुपदा (1200-10)
सारग महला ४ घरु ५ दुपदे पड़ताल (1200-15)
सारग महला ४ पड़ताल ॥ (1202-1)
सारग महला ५ ॥ (1202-18)
सारग महला ५ ॥ (1203-11)
सारग महला ५ ॥ (1203-17)
सारग महला ५ ॥ (1203-6)
सारग महला ५ ॥ (1204-11)
सारग महला ५ ॥ (1204-17)
सारग महला ५ ॥ (1204-4)
सारग महला ५ ॥ (1205-10)
सारग महला ५ ॥ (1205-15)
सारग महला ५ ॥ (1205-4)

सारग महला ५ ॥ (1206-13)
सारग महला ५ ॥ (1206-2)
सारग महला ५ ॥ (1206-7)
सारग महला ५ ॥ (1207-12)
सारग महला ५ ॥ (1207-16)
सारग महला ५ ॥ (1207-19)
सारग महला ५ ॥ (1207-6)
सारग महला ५ ॥ (1208-13)
सारग महला ५ ॥ (1208-16)
सारग महला ५ ॥ (1208-9)
सारग महला ५ ॥ (1209-10)
सारग महला ५ ॥ (1209-14)
सारग महला ५ ॥ (1209-17)
सारग महला ५ ॥ (1209-6)
सारग महला ५ ॥ (1210-13)
सारग महला ५ ॥ (1210-17)
सारग महला ५ ॥ (1210-2)
सारग महला ५ ॥ (1210-6)
सारग महला ५ ॥ (1210-9)
सारग महला ५ ॥ (1211-13)
सारग महला ५ ॥ (1211-17)
सारग महला ५ ॥ (1211-2)
सारग महला ५ ॥ (1211-5)
सारग महला ५ ॥ (1211-9)
सारग महला ५ ॥ (1212-1)
सारग महला ५ ॥ (1212-13)
सारग महला ५ ॥ (1212-17)
सारग महला ५ ॥ (1212-5)
सारग महला ५ ॥ (1212-9)
सारग महला ५ ॥ (1213-13)
सारग महला ५ ॥ (1213-17)
सारग महला ५ ॥ (1213-2)
सारग महला ५ ॥ (1213-5)
सारग महला ५ ॥ (1213-9)
सारग महला ५ ॥ (1214-1)
सारग महला ५ ॥ (1214-13)
सारग महला ५ ॥ (1214-16)

सारग महला ५ ॥ (1214-5)
सारग महला ५ ॥ (1214-9)
सारग महला ५ ॥ (1215-1)
सारग महला ५ ॥ (1215-11)
सारग महला ५ ॥ (1215-15)
सारग महला ५ ॥ (1215-18)
सारग महला ५ ॥ (1215-4)
सारग महला ५ ॥ (1215-8)
सारग महला ५ ॥ (1216-10)
सारग महला ५ ॥ (1216-14)
सारग महला ५ ॥ (1216-17)
सारग महला ५ ॥ (1216-3)
सारग महला ५ ॥ (1216-6)
सारग महला ५ ॥ (1217-13)
सारग महला ५ ॥ (1217-16)
सारग महला ५ ॥ (1217-2)
सारग महला ५ ॥ (1217-5)
सारग महला ५ ॥ (1217-9)
सारग महला ५ ॥ (1218-1)
सारग महला ५ ॥ (1218-12)
सारग महला ५ ॥ (1218-16)
सारग महला ५ ॥ (1218-5)
सारग महला ५ ॥ (1218-9)
सारग महला ५ ॥ (1219-1)
सारग महला ५ ॥ (1219-11)
सारग महला ५ ॥ (1219-15)
सारग महला ५ ॥ (1219-19)
सारग महला ५ ॥ (1219-4)
सारग महला ५ ॥ (1219-8)
सारग महला ५ ॥ (1220-10)
सारग महला ५ ॥ (1220-14)
सारग महला ५ ॥ (1220-17)
सारग महला ५ ॥ (1220-3)
सारग महला ५ ॥ (1220-7)
सारग महला ५ ॥ (1221-12)
सारग महला ५ ॥ (1221-16)
सारग महला ५ ॥ (1221-2)

सारग महला ५ ॥ (1221-5)
सारग महला ५ ॥ (1221-9)
सारग महला ५ ॥ (1222-1)
सारग महला ५ ॥ (1222-11)
सारग महला ५ ॥ (1222-15)
सारग महला ५ ॥ (1222-19)
सारग महला ५ ॥ (1222-4)
सारग महला ५ ॥ (1222-8)
सारग महला ५ ॥ (1223-10)
सारग महला ५ ॥ (1223-13)
सारग महला ५ ॥ (1223-17)
सारग महला ५ ॥ (1223-3)
सारग महला ५ ॥ (1223-7)
सारग महला ५ ॥ (1224-1)
सारग महला ५ ॥ (1224-12)
सारग महला ५ ॥ (1224-16)
सारग महला ५ ॥ (1224-19)
सारग महला ५ ॥ (1224-5)
सारग महला ५ ॥ (1224-9)
सारग महला ५ ॥ (1225-11)
सारग महला ५ ॥ (1225-14)
सारग महला ५ ॥ (1225-18)
सारग महला ५ ॥ (1225-4)
सारग महला ५ ॥ (1225-7)
सारग महला ५ ॥ (1226-13)
सारग महला ५ ॥ (1226-16)
सारग महला ५ ॥ (1226-3)
सारग महला ५ ॥ (1226-6)
सारग महला ५ ॥ (1226-9)
सारग महला ५ ॥ (1227-1)
सारग महला ५ ॥ (1227-11)
सारग महला ५ ॥ (1227-15)
सारग महला ५ ॥ (1227-19)
सारग महला ५ ॥ (1227-4)
सारग महला ५ ॥ (1227-8)
सारग महला ५ ॥ (1228-10)
सारग महला ५ ॥ (1228-13)

सारग महला ५ ॥ (1228-16)
सारग महला ५ ॥ (1228-3)
सारग महला ५ ॥ (1228-7)
सारग महला ५ ॥ (1229-14)
सारग महला ५ ॥ (1229-19)
सारग महला ५ ॥ (1230-11)
सारग महला ५ ॥ (1230-14)
सारग महला ५ ॥ (1230-17)
सारग महला ५ ॥ (1230-4)
सारग महला ५ ॥ (1230-8)
सारग महला ५ ॥ (1231-1)
सारग महला ५ असटपदी घरु ६ (1235-15)
सारग महला ५ असटपदीआ घरु १ (1235-3)
सारग महला ५ घरु २ (1206-18)
सारग महला ५ घरु ३ (1208-5)
सारग महला ५ घरु ६ पड़ताल (1229-9)
सारग महला ५ दुपदे घरु ४ (1209-2)
सारा दिनु लालचि अटिआ मनमुखि होरे गला ॥ (304-11)
सारिंग प्रीति बसै जल धारा ॥ (164-12)
सारिंगधर भगवान बीठुला मै गणत न आवै सरबंगा ॥११॥ (1082-18)
सारि समाले तिन सजणा मुंध नैण भरेदी ॥ (1111-17)
सारि समालै निति प्रतिपालै प्रेम सहित गलि लावै ॥ (617-14)
सारि सम्हालि माता मुखि नीरै तब ओहु त्रिपति अघाई ॥१॥ (1266-11)
सारि सम्हालि सरब सुख दीए आपि करे प्रतिपाला ॥२॥ (748-11)
सारि सम्हाले साचा सोइ ॥ (1151-4)
सारो दिनसु मजूरी करता तुहु मूसलहि छराइआ ॥ (712-15)
सारो दिनसु मजूरी करै ॥ (1143-9)
सारो दिनु डोलत बन महीआ अजहु न पेट अघईहै ॥ (524-10)
साल ग्राम बिप पूजि मनावहु सुक्रितु तुलसी माला ॥ (1170-19)
सालकु मितु न रहिओ कोई ॥ (1410-11)
सालगिरामु हमारै सेवा ॥ (393-8)
सालाहि साचे मंनि सतिगुरु पुंन दान दइआ मते ॥ (688-1)
सालाहिहु भगतहु कर जोड़ि हरि भगत जन तारदा ॥१८॥ (90-14)
सालाहिहु सचु सभ ऊपरि हरि धनी ॥ (723-7)
सालाही सचु सलाह सचु सचु कीमति किनै न पाई ॥ (310-19)
सालाही सचु सलाह सचु सचु कीमति किनै न पाईआ ॥ (313-14)
सालाही सचु सालाहणा सचु सचा पुरखु निराले ॥ (311-9)

सालाही सालाहणा पिआरे दूजा अवरु न कोइ ॥ (636-6)
सालाही सालाहणा भी सचा सालाहि ॥ (1413-10)
सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥ (5-5)
सालाही सो प्रभ सदा सदा गुर कै हेति पिआरि ॥ (90-15)
सालू सारग सागरा अउर गोंड ग्मभीर ॥ (1430-14)
सावणि दझै गुण बाहरी जिसु दूजै भाइ पिआरु ॥ (1285-11)
सावणि वरसु अम्रिति जगु छाइआ जीउ ॥ (173-4)
सावणि सरस मना घण वरसहि रुति आए ॥ (1108-12)
सावणि सरसी कामणी गुर सबदी वीचारि ॥ (1285-10)
सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥ (134-10)
सावणु आइआ झिमझिमा हरि गुरमुखि नामु धिआइ ॥ (1250-12)
सावणु आइआ हे सखी कंतै चिति करेहु ॥ (1280-1)
सावणु आइआ हे सखी जलहरु बरसनहारु ॥ (1280-2)
सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥६॥ (134-14)
सावणु राति अहाड़ु दिहु कामु क्रोधु दुइ खेत ॥ (955-3)
सावधान एकागर चीत ॥ (295-16)
सावल सुंदर रामईआ ॥ (335-8)
सावल सुंदर रूप बणावहि बेणु सुनत सभ मोहैगा ॥९॥ (1082-16)
सास ग्रास को दातो ठाकुरु सो किउ मनहु बिसारिओ रे ॥ (335-13)
सास बिना जिउ देहुरी कत सोभा पावै ॥ (1122-12)
सास सास तेरे गुण गावा ओट नानक गुर चरणा जीउ ॥४॥१२॥१९॥ (100-6)
सास सास सास है जेते मै गुरमति नामु सम्हारे ॥ (980-18)
सासत बेद पुराण पुकारहि धरमु करहु खटु करम द्रिड़ईआ ॥ (834-8)
सासत बेद सिम्रिति बहु भेद ॥ (353-11)
सासत बेद सिम्रिति सभि सोधे सभ एका बात पुकारी ॥ (495-11)
सासत सिम्रिति बिनसहिगे बेदा ॥३॥ (237-10)
सासत सिम्रिति बेद चारि मुखागर बिचरे ॥ (70-15)
सासत सिम्रिति बेद बीचारे महा पुरखन इउ कहिआ ॥ (215-12)
सासत सिम्रिति बेद वखाणी ॥ (1086-3)
सासत सिम्रिति सोधि देखहु कोइ ॥ (229-15)
सासतु न होता बेदु न होता करमु कहां ते आइआ ॥२॥ (973-8)
सासतु बेदु न मानै कोइ ॥ (951-14)
सासतु बेदु बकै खड़ो भाई करम करहु संसारी ॥ (635-10)
सासतु बेदु सिम्रिति सरु तेरा सुरसरी चरण समाणी ॥ (422-18)
सासत्र बेद की फिरि कूक न होइ ॥५॥१॥१०॥ (1261-12)
सासत्र बेद की बिधि नही जाणहि बिआपे मन कै मान ॥२॥ (1203-1)
सासत्र बेद त्रै गुण है माइआ अंधुलउ धंधु कमाई ॥३॥ (1126-15)

सासत्र बेद पाप पुंन वीचार ॥ (385-15)
सासत्र बेद पुराण पड़्हंता ॥ (1242-13)
सासत्र बेद पुरान अविलोके सिम्रिति ततु बीचारा ॥ (532-5)
सासत्र बेद सोधि सोधि देखे मुनि नारद बचन पुकारे ॥ (983-12)
सासत्र सिम्रिति नामु द्रिड़ामं ॥ (831-17)
सासत्र सिम्रिति बेद पूकारे ॥ (260-6)
सासना ते बालकु गमु न करै ॥१॥ रहाउ ॥ (1133-3)
सासनि सासि सासि बलु पाई है निहसासनि नामु धिआवैगो ॥ (1309-18)
सासि गइऐ काइआ ढलि पाइ ॥ (1256-17)
सासि गरासि समाले करता कीता अपणा पावणा ॥२॥ (1085-18)
सासि गिरासि जपउ अपुने हरि भाली ॥ (796-8)
सासि गिरासि जपउ हरि हरी ॥४॥२९॥४२॥ (1148-6)
सासि गिरासि जपहु जपु रसना नीत नीत गुण गाईऐ ॥२॥ (382-5)
सासि गिरासि न विसरै भाई पेखउ सदा हजूरि ॥ (640-10)
सासि गिरासि न विसरै सफलु मूरति गुरु आपि ॥ (53-3)
सासि गिरासि सदा मनि वसै जमु जोहि न सकै तिसु ॥ (854-10)
सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥ (289-3)
सासि ग्रासि होइ संगि समालिआ ॥ (1071-13)
सासि सासि अराधि हरि हरि धिआइ सो प्रभु मनि मुखी ॥ (456-9)
सासि सासि अराधि हरि हरि लहि जाइ मन की चिंद ॥१॥ (501-14)
सासि सासि आराधनि हरि हरि किउ सिमरत कीजै आलका ॥८॥ (1085-4)
सासि सासि आराधे निरमलु सोइ जनु ॥ (956-10)
सासि सासि आराधै नानकु सदा सदा जाईऐ कुरबाणु ॥२॥२१॥१०७॥ (825-16)
सासि सासि चितारि जीवा प्रभु पेखि हरि गुण गावीऐ ॥ (460-12)
सासि सासि जनु नामु समारै ॥३॥ (189-14)
सासि सासि जनु सदा सलाहे ॥ (869-13)
सासि सासि तेरा नामु समारउ तुम ही कउ प्रभ आही ॥ (499-19)
सासि सासि धिआइ सो प्रभु तिआगि अवर परीति ॥१॥ रहाउ ॥ (405-13)
सासि सासि धिआवहु ठाकुर कउ मन तन जीअरे मुखी ॥१॥ रहाउ ॥ (617-7)
सासि सासि धिआवहु मुखु नही मोरै ॥ (1304-15)
सासि सासि न घड़ी विसरै पलु मूरतु दिनु राते ॥ (247-9)
सासि सासि न बिसरु कबहूं ब्रहम प्रभ समरथ ॥ (502-3)
सासि सासि नह वीसरै अन कतहि न धावउ ॥ (812-4)
सासि सासि नानकु आराधे आठ पहर गुण गावा ॥४॥९॥५६॥ (749-17)
सासि सासि नानकु सालाहे ॥ (104-13)
सासि सासि निमख निमख दिनसु रैनि चितारे ॥ (679-3)
सासि सासि पारब्रहमु अराधी अपुने सतिगुर कै बलि जाई ॥२॥ (1338-18)

सासि सासि प्रभ तुझहि चितारी ॥२॥ (826-4)
सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥ (289-11)
सासि सासि प्रभु धिआईऐ ॥ (622-9)
सासि सासि प्रभु बिसरै नाही ॥ (1085-14)
सासि सासि प्रभु मनहि समाले ॥ (191-7)
सासि सासि मनु नामु सम्हारै इहु बिस्राम निधि पाई ॥१॥ (673-7)
सासि सासि संतह प्रतिपालि ॥ (867-15)
सासि सासि सचु नामु समाले अंतरि उदर मझारा हे ॥५॥ (1026-19)
सासि सासि समालता मेरा प्रभु सोई ॥२॥ (677-18)
सासि सासि समाले सोई ओथै खसमि छडाइ लइआ ॥२॥ (1007-16)
सासि सासि सम्हालि हरि हरि नानक सद बलि जाउ ॥२॥६१॥८४॥ (1220-16)
सासि सासि सिमरंति नानक महा अगनि न बिनासनं ॥१॥ (706-5)
सासि सासि सिमरउ प्रभु अपुना संतसंगि नित रहीऐ ॥ (533-11)
सासि सासि सिमरत प्रभु रहते ॥ (251-10)
सासि सासि सिमरत रहहि नानक दरस अधार ॥१॥ (257-9)
सासि सासि सिमरत रहा नानक दानु पाए ॥४॥१॥४१॥ (745-11)
सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥ (295-4)
सासि सासि सो गुन निधि गाईऐ ॥३॥ (395-12)
सासि सासि हम भूलनहारे ॥ (260-7)
सासि सासि हरि गावै नानकु सतिगुर ढाकि लीआ मेरा पड़दा जीउ ॥४॥१७॥२४॥ (101-15)
सासि सासि हरि देहु चितारि ॥४॥३६॥४९॥ (1150-12)
सासि सासि हरि नामु धिआईऐ ॥ (106-12)
सासु की दुखी ससुर की पिआरी जेठ के नामि डरउ रे ॥ (482-6)
सासु दिवानी बावरी सिर ते संक टली ॥ (931-7)
सासु बुरी घरि वासु न देवै पिर सिउ मिलण न देइ बुरी ॥ (355-18)
सासु मासु सभु जीउ तुमारा तू मै खरा पिआरा ॥ (660-12)
सासु सासु जाइ नामै बिनु सो बिरथा सासु बिकारे ॥७॥ (980-19)
साह चले वणजारिआ लिखिआ देवै नालि ॥ (1238-9)
साह पातिसाह सिरि खसमु तूं जपि नानक जीवै नाउ जीउ ॥१९॥ (72-19)
साह मरहि संचहि माइआ दाम ॥ (227-6)
साह वापारी एकै थाट ॥४॥ (430-16)
साह वापारी दुआरै आए ॥ (372-2)
साहन महि तूं साचा साहा वापारन महि वापारी ॥४॥ (507-15)
साहनि सतु करै जीअ अपनै ॥ (328-5)
साहां सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ ॥ (417-9)
साहा अटलु गणिआ पूरन संजोगो राम ॥ (846-1)
साहा गणहि न करहि बीचारु ॥ (904-10)

साहा संजोगु वीआहु विजोगु ॥ (152-1)
साहा हुकमु रजाइ सो न टलै जो प्रभु करै बलि राम जीउ ॥ (763-16)
साहि पठाइआ साहै पासि ॥ (372-2)
साहि साहि तुझु समला कदे न विसारेउ ॥ (20-6)
साहि साहि सदा समालीऐ आपे बखसे करे रजाइ ॥९॥ (506-15)
साहिब का फुरमाणु होइ उठी करलै पाहि ॥ (1239-8)
साहिब का हुकमु न करणा जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (991-2)
साहिब की सेवकु रहै सरणाई ॥ (842-10)
साहिब के गुण नानकु गावै मास पुरी विचि आखु मसोला ॥ (723-1)
साहिब ते सेवकु सेव साहिब ते किआ को कहै बहाना ॥ (797-9)
साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥१॥ रहाउ ॥४॥१॥ (660-10)
साहिब भावै सेवकु सेवा करै ॥ (1170-13)
साहिब भावै सो थीऐ पइऐ किरति फिराहि ॥२॥ (1258-5)
साहिब भावै सो परवाणु ॥ (661-14)
साहिब रंगि राता सच की बाता जिनि ब्रिमब का कोटु उसारिआ ॥ (766-13)
साहिब सबदु न ऊचरै माइआ मोह पसारी ॥ (1243-4)
साहिब सम्रिथ तेरै ताणि ॥ (1257-7)
साहिब सिउ मनु मानिआ दे साचु अधारु ॥२॥ (421-13)
साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥ (474-13)
साहिबि अंधा जो कीआ करे सुजाखा होइ ॥ (954-17)
साहिबु अतुलु न तोलीऐ कथनि न पाइआ जाइ ॥५॥ (59-1)
साहिबु गुनी गहेरा ॥ (622-5)
साहिबु जिस का नंगा भुखा होवै तिस दा नफरु किथहु रजि खाए ॥ (306-12)
साहिबु निताणिआ का ताणु ॥ (70-8)
साहिबु मेरा अति भारा ॥ (896-10)
साहिबु मेरा उजला जे को चिति करेइ ॥ (956-15)
साहिबु मेरा एकु है अवरु नही भाई ॥ (420-16)
साहिबु मेरा एको है ॥ (350-4)
साहिबु मेरा निरमला तिसु बिनु रहणु न जाइ ॥ (49-8)
साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥१॥ रहाउ ॥ (660-4)
साहिबु मेरा मिहरवानु ॥ (724-5)
साहिबु मेरा सदा है दिसै सबदु कमाइ ॥ (509-4)
साहिबु रिदै वसाइ न पछोतावही ॥ (420-3)
साहिबु रोसु धरउ कि पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (338-15)
साहिबु लेखा मंगसी दुनीआ देखि न भूलु ॥ (1090-9)
साहिबु संकटवै सेवकु भजै ॥ (1195-17)
साहिबु सदा हजूरि है भरमै के छउड़ कटि कै अंतरि जोति धरेहु ॥ (554-8)

साहिबु सदा हदूरि है किआ उची करहि पुकार ॥ (1420-17)
साहिबु सफलिओ रुखड़ा अम्रितु जा का नाउ ॥ (557-5)
साहिबु सम्हालिह पंथु निहालिह असा भि ओथै जाणा ॥ (579-14)
साहिबु सिमरहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥ (579-3)
साहिबु सिमरिहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥२॥ (579-6)
साहिबु सेवकु इकु इकु द्रिसटाइआ ॥ (524-7)
साहिबु सेवन्हि आपणा पूरै सबदि वीचारि ॥ (512-12)
साहिबु सो सालाहीऐ जिनि करि देखिआ खेलु ॥३॥ (989-8)
साहिबु सो सालाहीऐ जिनि कारणु कीआ ॥ (766-9)
साहिबु सो सालाहीऐ जिनि जगतु उपाइआ ॥२॥ (766-12)
साहिबु होइ दइआलु किरपा करे ता साई कार कराइसी ॥ (471-12)
साहिबु होइ दइआलु क्रिपा करे अपुना कारजु सवारे ॥ (333-19)
साहु पजूता प्रणवति नानक लेखा देहा ॥४॥१॥३४॥ (359-5)
साहु पातिसाहु सभु हरि का कीआ सभि जन कउ आइ करहि रहरासि ॥ (305-6)
साहु सदाए संचि धनु दुबिधा होइ खुआरु ॥ (937-2)
साहु हमारा ठाकुरु भारा हम तिस के वणजारे ॥ (155-9)
साहु हमारा तूं धणी जैसी तूं रासि देहि तैसी हम लेहि ॥ (165-12)
साहुरड़ी वथु सभु किछु साझी पेवकड़ै धन वखे ॥ (1171-5)
साहुरड़ै कम सिखै गुरमुखि हरि हरि सदा धिआए ॥ (78-9)
साहुरड़ै घरि वासु न पाए पेईअड़ै सिरि मारा हे ॥१२॥ (1027-9)
साहुरड़ै धन साचु पछाणिआ ॥ (357-6)
साहुरड़ै विचि खरी सोहंदी जिनि पेवकड़ै नामु समालिआ ॥ (78-16)
साहुरै ढोई ना लहै पेईऐ नाही थाउ ॥ (1379-10)
साहुरै पेईऐ कंत की कंतु अगमु अथाहु ॥ (1379-11)
साहे ऊपरि एकंकारु ॥ (904-10)
साहे लिखे न चलनी जिंदू कूं समझाइ ॥ (1377-17)
साहै कै फुरमाइअड़ै जी देही विचि जीउ आइ पइआ ॥१॥ (1007-15)
सिंघ रुचै सद भोजनु मास ॥ (1180-10)
सिंघ सरन कत जाईऐ जउ ज्मबुकु ग्रासै ॥१॥ रहाउ ॥ (858-15)
सिंघच भोजनु जो नरु जानै ॥ (485-18)
सिंघु बिलाई होइ गइओ त्रिणु मेरु दिखीता ॥ (809-19)
सिंङी वाजै नित उदासेरा ॥ (886-14)
सिंङी सबदु सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं ॥२॥ (360-2)
सिंङी सुरति अनाहदि वाजै घटि घटि जोति तुमारी ॥४॥ (907-15)
सिंचनहारे एकै माली ॥ (385-8)
सिंचहि दरबु देहि दुखु लोग ॥ (889-17)
सिंधु समाइओ घटुके माहि ॥ (899-5)

सिआनप काहू कामि न आत ॥ (496-10)
सिआम सुंदर तजि आन जु चाहत जिउ कुसटी तनि जोक ॥ (1253-14)
सिआम सुंदर तजि नीद किउ आई ॥ (745-2)
सिआमलं मधुर मानुख्यं रिदयं भूमि वैरणह ॥ (1359-12)
सिकदारहु नह पतीआइआ ॥ (621-7)
सिख करे करि सबदु न चीनै ल्मपटु है बाजारी ॥ (1013-8)
सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥ (286-14)
सिख मति सभ बुधि तुम्हारी मंदिर छावा तेरे ॥ (795-12)
सिख संगति करमि मिलाए ॥ (412-8)
सिख संत सभि सरसे होए हरि हरि नामु धिआई ॥ रहाउ ॥ (626-15)
सिख सभा दीखिआ का भाउ ॥ (350-13)
सिख सेवक सभि भुंचण लगे हंउ सतगुर कै कुरबाना ॥ (577-3)
सिख हंस सरवरि इकठे होए सतिगुर कै हुकमावै ॥ (960-11)
सिखहु सबदु पिआरिहो जनम मरन की टेक ॥ (320-5)
सिखहु सबदु पिआरिहो जनम मरन की टेक ॥ (916-6)
सिखां पुत्रां घोखि कै सभ उमति वेखहु जि किओनु ॥ (967-15)
सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥ (471-4)
सिखिआ दीखिआ भोजन भाउ ॥ (221-8)
सिखी अतै संगती पारब्रहमु करि नमसकारिआ ॥ (968-10)
सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥ (465-10)
सिख्या संत नामु भजु नानक राम रंगि आतम सिउ रंउ ॥२॥ (1387-11)
सिझै दरि दीवानि आपु गवाईऐ ॥९॥ (142-9)
सिदकु करि सिजदा मनु करि मखसूदु ॥ (84-2)
सिदकु सबूरी संतु न मिलिओ वतै आपण भाणीआ ॥६॥ (1020-6)
सिदकु सबूरी सादिका सबरु तोसा मलाइकां ॥ (83-10)
सिधंङाइऐ सिमरहि नाही नंनै ना तुधु नामु लइआ ॥ (434-16)
सिध चउरासीह माइआ महि खेला ॥२॥ (1160-14)
सिध मनुख्य देव अरु दानव इकु तिलु ता को मरमु न पावत ॥ (1388-12)
सिध सभा करि आसणि बैठे संत सभा जैकारो ॥ (938-6)
सिध समाधि अंतु नही पाइआ लागि रहे सरनाई ॥१॥ (1350-11)
सिध समाधि करहि नित झगरा दुहु लोचन किआ हेरै ॥ (489-12)
सिध समाधि जपिओ लिव लाई साधिक मुनि जपिआ ॥ (995-11)
सिध समाधी अंतरि जाचहि रिधि सिधि जाचि करहि जैकार ॥ (504-3)
सिध समाधी सभि सुणी जाइ देखां दरबारु ॥ (1242-1)
सिध साधिक अरु जख्य किंनर नर रही कंठि उरझाइ ॥ (500-7)
सिध साधिक अरु जोगी जंगम पीर पुरस बहुतेरे ॥ (877-12)
सिध साधिक केते मुनि देवा ॥ (906-3)

सिध साधिक गिआनी धिआनीआ कउणु तुधुनो तोलै ॥ (1102-14)
सिध साधिक गिरही जोगी तजि गए घर बार ॥१॥ रहाउ ॥ (808-5)
सिध साधिक जे को कहै कहाए ॥ (842-7)
सिध साधिक जोगी अरु जंगम एकु सिधु जिनी धिआइआ ॥ (878-3)
सिध साधिक तरसहि सभि लोइ ॥ (665-18)
सिध साधिक तेतीस कोरि तिरु कीम न परीऐ ॥ (1386-16)
सिध साधिक देव मुनि जन बेद करहि उचारु ॥ (1017-13)
सिध साधिक देव मुनि जन भगत नामु अधारा ॥ (461-9)
सिध साधिक नावै नो सभि खोजदे थकि रहे लिव लाइ ॥ (650-5)
सिध साधिक मोनिधारी रहे लिव लाइ तिन भी तन महि मनु न दिखावणिआ ॥७॥ (124-3)
सिध साधिक रहे बिललाइ ॥ (115-2)
सिध साधिक लिव लागी नाचे जिन गुरमुखि बुधि वीचारी ॥४॥ (506-9)
सिध साधिक सिआणे केते तुझ बिनु कवणु कहाए ॥ (764-15)
सिधन महि तेरी प्रभ सिधा करमन सिरि करमा ॥ (507-18)
सिधा के आसण जे सिखै इंद्री वसि करि कमाइ ॥ (558-11)
सिधा पुरखा कीआ वडिआईआं ॥ (349-4)
सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ॥ (9-13)
सिधा सेवनि सिध पीर मागहि रिधि सिधि ॥ (418-18)
सिधु कहावउ रिधि सिधि बुलावउ ॥ (225-12)
सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ॥ (14-6)
सिध्यं सरब कुसलणह ॥ (1361-4)
सिफति खजाना बखस है जिसु बखसै सो खरचै खाइ ॥ (548-13)
सिफति जिना कउ बखसीऐ सेई पोतेदार ॥ (1239-10)
सिफति मुहबति अथाह रहीमा ॥ (1084-12)
सिफति सरम का कपड़ा मांगउ हरि गुण नानक रवतु रहै ॥४॥७॥ (1329-9)
सिफति सलाहणु छडि कै करंगी लगा हंसु ॥ (790-17)
सिफति सलाहणु भगति विरले दितीअनु ॥ (958-12)
सिफति सलाहणु सहज अनंद ॥ (352-3)
सिफति सहज घरि गुरु करतारु ॥२॥ (413-18)
सिफति सालाहणु तेरा हुकमु रजाई ॥ (100-7)
सिफती गंढु पवै दरबारि ॥२॥ (143-13)
सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ (349-5)
सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ (9-14)
सिफती रता सद बैरागी जूऐ जनमु न हारै ॥ (360-10)
सिफती सार न जाणनी सदा वसै सैतानु ॥ (790-2)
सिमरं सोई पुरखु अचलु अबिनासी ॥ (1406-19)
सिमरंत नानक हरि हरि हरे ॥ (1356-4)

सिमरंति संत सरबत्र रमणं नानक अघनासन जगदीसुरह ॥१॥ (705-19)
सिमरउ अपुना सांई ॥ (630-18)
सिमरउ चरन तुहारे प्रीतम रिदै तुहारी आसा ॥ (1268-8)
सिमरउ जासु बिसु्मभर एकै ॥ (262-10)
सिमरउ दिनु रैनि गुर के चरना ॥ (1303-6)
सिमरउ दिनु रैनि सास गिरासा ॥३॥ (177-15)
सिमरउ नामु निरंजन करते मन तन ते सभि किलविख नास ॥ (716-18)
सिमरउ नामु मोहि निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (1338-10)
सिमरउ नामु होहु मिहरवाना ॥ (1080-2)
सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ सासि सासि समाले ॥ (679-6)
सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥ (262-10)
सिमरउ सो प्रभु अपना सुआमी ॥ (741-17)
सिमरणं गोबिंद नामं उधरणं कुल समूहणह ॥ (1361-7)
सिमरत इक बार हरि हरि मिटि कोटि कसमल जांति ॥२॥ (1300-18)
सिमरत एकु अचुत अबिनासी बिनसे माइआ माद ॥ (1224-6)
सिमरत नह किउ मुरारि माइआ जा की चेरी ॥२॥३॥ (1352-14)
सिमरत नानक तरे सार ॥४॥३॥ (987-5)
सिमरत नाम पूरन आचार ॥३॥ (1137-13)
सिमरत नाम भए निहकाम ॥२॥ (1137-12)
सिमरत नाम मुकति फल पाहि ॥३॥ (196-12)
सिमरत नाम सगल रोग खइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (389-14)
सिमरत नामु अनदिनु जागै ॥ (1085-6)
सिमरत नामु काटे सभि फाहे ॥ (104-14)
सिमरत नामु किलबिख सभि काटे ॥ (1348-13)
सिमरत नामु किलबिख सभि नासे ॥ (1339-2)
सिमरत नामु कोटि उजीआरा बसतु अगोचर सूझी ॥३॥ (497-6)
सिमरत नामु कोटि जतन भए ॥ (824-17)
सिमरत नामु दोख सभि लाथे ॥ (107-13)
सिमरत नामु नाही फिरि मरण ॥ (867-7)
सिमरत नामु निधानु निरमोलकु मनु माणकु पतीआना रे ॥३॥१॥१३०॥ (404-4)
सिमरत नामु प्रान गति पावै ॥ (1218-5)
सिमरत नामु भरमु भउ भागै ॥१॥ रहाउ ॥ (190-5)
सिमरत नामु भै पारि उतरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (190-1)
सिमरत नामु मनहि साधारै ॥ (1298-7)
सिमरत नामु मनहि सुखु पाईऐ ॥ (1303-8)
सिमरत नामु रिदै सुखु पाइआ ॥ (108-9)
सिमरत नामु सदा सुहेला जिसु देवै दीन दइआला जीउ ॥१॥ (98-19)

सिमरत नाहि सिरीधर ठाकुर मिलत अंध दुख घोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (1222-12)
सिमरत राम नाही जम मार ॥ (185-6)
सिमरत सांति महा सुखु पाईऐ मिटि जाहि सगल बिखाद ॥ (1219-13)
सिमरत सास गिरास पूरन बिसुआस किउ मनहु बिसारीऐ जीउ ॥ (80-14)
सिमरत सिमरत प्रभ का नाउ ॥ (191-13)
सिमरत सिमरत प्रभु आपणा सभ फल पाए आहि ॥ (519-4)
सिमरत सिमरत सिमरीऐ सो पुरखु दातारु ॥ (814-12)
सिमरत सुआमी किलविख नासे ॥ (194-9)
सिमरत हरि करत निधान ॥ (896-17)
सिमरतब्य रिदै गुर मंत्रणह ॥ (1360-19)
सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ॥ (263-7)
सिमरन द्रोपद सुत उधरी ॥ (874-11)
सिमरन राम को इकु नाम ॥ (1221-13)
सिमरनि ता कै मिटहि संताप ॥ (1142-16)
सिमरनु नही आवत फिरत मद मावत बिखिआ राता सुआन जैसे ॥ (829-10)
सिमरनु भजनु दइआ नही कीनी तउ मुखि चोटा खाहिगा ॥२॥ (1106-8)
सिमरहि खंड दीप सभि लोआ ॥ (1079-1)
सिमरहि खाणी सिमरहि बाणी सिमरहि सगले हरि जना ॥२॥ (1079-2)
सिमरहि गुणी चतुर सभि बेते सिमरहि रैणी अरु दिना ॥६॥ (1079-7)
सिमरहि घड़ी मूरत पल निमखा ॥ (1079-7)
सिमरहि चंद सूरज गुणतासा ॥ (1078-19)
सिमरहि जख्यि दैत सभि सिमरहि अगनतु न जाई जसु गना ॥३॥ (1079-3)
सिमरहि जाति जोति सभि वरना ॥ (1079-6)
सिमरहि थूल सूखम सभि जंता ॥ (1079-5)
सिमरहि देवते कोड़ि तेतीसा ॥ (1079-3)
सिमरहि नख्यत्र अवर ध्रू मंडल नारदादि प्रहलादि वरा ॥ (1393-3)
सिमरहि नर नारी आसरमा ॥ (1079-6)
सिमरहि नाही जोनि दुख निरलजे भांड ॥२॥ (815-14)
सिमरहि पसु पंखी सभि भूता ॥ (1079-4)
सिमरहि पाताल पुरीआ सचु सोआ ॥ (1079-1)
सिमरहि बन परबत अउधूता ॥ (1079-4)
सिमरहि ब्रहमे बिसन महेसा ॥ (1079-2)
सिमरहि सउण सासत्र संजोगा अलखु न लखीऐ इकु खिना ॥७॥ (1079-8)
सिमरहि साध करहि आनंदु ॥ (199-1)
सिमरहि सिध साधिक हरि मंता ॥ (1079-5)
सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ॥ (263-14)
सिमरहि सोई नामु जख्य अरु किंनर साधिक सिध समाधि हरा ॥ (1393-2)

सिमरहु एकु निरंजन सोऊ ॥ (1004-12)
सिमरहु राम नामु अति निरमलु अवर तिआगहु हउमै कउरा ॥१॥ रहाउ ॥ (415-8)
सिमरहु सिमरहु सासि सासि मत बिलम करेह ॥ (812-14)
सिमरहु हरि हरि नामु परानी ॥ (615-1)
सिमरि गुपाल दइआल सतसंगति नानक जगु जानत सुपना ॥४॥ (1387-18)
सिमरि गोविंदु मनि तनि धुरि लिखिआ ॥ (199-7)
सिमरि ठाकुरु जिनि सभु किछु दीना आन कहा पहि जावहु ॥१॥ (1218-14)
सिमरि धिआइ गाइ गुन गोबिंद दिनु रैनि साझ सवेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (530-13)
सिमरि नानक साचे गुणतासा ॥४॥२६॥३९॥ (1147-6)
सिमरि नामु पुंनी सभ इछा जन नानक पैज रखाई हे ॥१६॥१॥ (1072-11)
सिमरि मना तू साचा सोइ ॥ (1148-8)
सिमरि मना दामोदरु दुखहरु भै भंजनु हरि राइआ ॥ (248-18)
सिमरि मना पूरे गुर मंता ॥२॥ (184-6)
सिमरि मना राम नामु चितारे ॥ (803-19)
सिमरि समरथ पल महूरत प्रभ धिआनु सहज समाधि ॥ (508-8)
सिमरि साहिबु सो सचु सुआमी रिजकु सभसु कउ दीए जीउ ॥२॥ (104-17)
सिमरि सिमरि काटे सभि रोग ॥ (240-14)
सिमरि सिमरि गुन गाइ सुनायं ॥ (250-17)
सिमरि सिमरि गुरदेउ मिटि गए भै दूरे ॥१॥ (132-19)
सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना सगला दूखु मिटाइआ ॥ (619-13)
सिमरि सिमरि गोबिंदं ॥ (873-12)
सिमरि सिमरि जीवत हरि नानक जम की भीर न फही ॥२॥८६॥१०९॥ (1225-10)
सिमरि सिमरि जीवहि जन तेरे एकंकारि समाई हे ॥१५॥ (1072-10)
सिमरि सिमरि जीवहि तेरे दासा बनि जलि पूरन थालका ॥९॥ (1085-5)
सिमरि सिमरि जीवा गोविंद ॥ (899-2)
सिमरि सिमरि जीवा नाराइण ॥ (744-3)
सिमरि सिमरि तरे नानक प्रानी ॥२॥२॥१३॥ (1300-14)
सिमरि सिमरि ता कउ हउ जीवा ॥ (740-12)
सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले ॥१॥ रहाउ ॥ (394-3)
सिमरि सिमरि दइआला ॥ (625-12)
सिमरि सिमरि दातारु मनोरथ पूरिआ ॥ (524-4)
सिमरि सिमरि दातारु सभि रंग माणिआ ॥ (1291-11)
सिमरि सिमरि नानक तरे हरि के रंग लाल ॥२॥११॥२९॥ (807-18)
सिमरि सिमरि नानक प्रभ जीवै बिनसि जाइ अभिमान ॥२॥६६॥८९॥ (1221-15)
सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥८॥९॥ (275-10)
सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ ॥ (106-8)
सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ आदि जुगादि भगतन के मीत ॥२॥२॥२१॥ (716-8)

सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥ (295-9)
सिमरि सिमरि नाराइणै भए पारगरामी राम ॥ (848-16)
सिमरि सिमरि पूरन नाराइन संगी सगले तारिआ ॥१॥ (674-19)
सिमरि सिमरि पूरन परमेसुर चिंता गणत मिटाई हे ॥८॥ (1072-1)
सिमरि सिमरि पूरन प्रभू कारज भए रासि ॥ (816-18)
सिमरि सिमरि प्रभ भए अनंदा दुख कलेस सभि नाठे ॥ (625-3)
सिमरि सिमरि प्रभ भए निहाला ॥२॥ (563-13)
सिमरि सिमरि प्रभु आपना नाठा दुख ठाउ ॥ (818-6)
सिमरि सिमरि प्रभु निरभउ होइ ॥२॥ (184-12)
सिमरि सिमरि मन तन सुखी नानक निरभइआ ॥२॥१॥६५॥ (817-11)
सिमरि सिमरि रखु कंठि परोइ ॥३॥ (388-15)
सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥ (288-11)
सिमरि सिमरि सदा सुखु पाईऐ जीवणै का मूलु ॥ (987-19)
सिमरि सिमरि सभ तपति बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (191-5)
सिमरि सिमरि सिमरि गुण गावा काटी जम की फासा जीउ ॥२॥ (105-14)
सिमरि सिमरि सिमरि गुणतास ॥३॥ (178-9)
सिमरि सिमरि सिमरि गुरु अपुना सोइआ मनु जागाई ॥२३॥ (758-6)
सिमरि सिमरि सिमरि जन सोइ ॥ (724-3)
सिमरि सिमरि सिमरि नामु जीवा तनु मनु होइ निहाला ॥ (749-9)
सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥ (281-5)
सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥ (290-4)
सिमरि सिमरि सिमरि सुखदाता जा का कीआ सगल जहानु ॥ (827-7)
सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ ॥ (202-9)
सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ चरन कमल रखु मन माही ॥ (824-1)
सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना अनद सेती बिखिआ बनु गाही ॥१॥ (824-8)
सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सगले पाप तजावहि राम ॥ (781-12)
सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सीतल तनु मनु छाती ॥ (681-9)
सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना कहु नानक अनदु भइओ ॥२॥४॥५॥ (979-8)
सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना निकटि न आवै जाम ॥ (682-9)
सिमरि सिमरि सुआमी भए सीतल दूखु दरदु भ्रमु हिरिआ ॥१॥ (1219-2)
सिमरि सिमरि सुआमी मनु जीवै पंच दूत तजि तंगना ॥४॥ (1080-6)
सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥ (263-17)
सिमरि सिमरि हरि हरि मनि गाईऐ ॥ (971-14)
सिमरि सुआमी अंतरजामी कुल समूहा सभि तरे ॥ (928-11)
सिमरि सुआमी अंतरजामी मानुख देह का इहु ऊतम फलु ॥१॥ (717-7)
सिमरि सुआमी अंतरजामी हरि एकु नानक रवि रहिआ ॥३॥ (458-19)
सिमरि सुआमी सतिगुरु अपुना कारज सफल हमारे ॥१॥ रहाउ ॥ (718-1)

सिमरि सुआमी सुख सहजि भुंचहि नही अंतु पारावारु ॥६॥ (1017-14)
सिमरि सुआमी सुखह गामी इछ सगली पुंनीआ ॥ (79-19)
सिमरि सुआमी हरि सा मीत ॥४॥९१॥१६०॥ (198-6)
सिमरि हरि हरि सदा नानक तरे कई अनेक ॥२॥६॥२९॥ (1007-9)
सिमरै कालु अकालु सुचि सोचा ॥ (1079-8)
सिमरै धरती अरु आकासा ॥ (1078-19)
सिमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥ (470-12)
सिमल रुखु सरीरु मै मैजन देखि भुलंन्हि ॥ (729-5)
सिम्रिति पुराण चतुर बेदह खटु सासत्र जा कउ जपाति ॥ (456-3)
सिम्रिति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ ॥ (761-16)
सिम्रिति मउली सिउ कतेब ॥२॥ (1193-16)
सिम्रिति सासत अंतु न जाणै ॥ (1061-10)
सिम्रिति सासत जिंनि उपाइआ ॥ (129-9)
सिम्रिति सासत न सोधनी मनमुख विगुते ॥ (1093-7)
सिम्रिति सासत पंडित मुखि सोई ॥ (154-13)
सिम्रिति सासत बेद पुराण ॥ (900-6)
सिम्रिति सासत बेद बखाने ॥ (202-7)
सिम्रिति सासत बेद बीचारे ॥ (288-14)
सिम्रिति सासत बेद बीचारे ॥ (804-14)
सिम्रिति सासत बेद वखाणै ॥ (114-3)
सिम्रिति सासत साजिअनु पाप पुंन गणत गणीनी ॥ (949-17)
सिम्रिति सासत सोधि देखु ऊतम हरि दासा ॥ (1090-2)
सिम्रिति सासत सोधिआ भाई विणु सतिगुर भरमु न जाइ ॥ (608-17)
सिम्रिति सासत्र करहि वखिआण ॥ (1169-7)
सिम्रिति सासत्र पड़हि पुराणा ॥ (1032-12)
सिम्रिति सासत्र पड़हि मुनि केते बिनु सबदै सुरति न पाई ॥ (1130-6)
सिम्रिति सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ (920-15)
सिम्रिति सासत्र बहु करम कमाए प्रभ तुमरे दरस बिनु सुखु नाही ॥१॥ (408-3)
सिम्रिति सासत्र बहुतु बिसथारा ॥ (1053-5)
सिम्रिति सासत्र बेद चारि खटु दरस समासी ॥ (1100-16)
सिम्रिति सासत्र बेद पुराण ॥ (867-8)
सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी ॥ (296-4)
सिम्रिति सासत्र सभनी सही कीता सुकि प्रहिलादि स्रीरामि करि गुर गोविदु धिआइआ ॥ (1117-3)
सिम्रिति सासत्र सोधि सभि किनै कीम न जाणी ॥ (319-2)
सिर उपरि जमकालु न सुझई दूजै भरमिता ॥ (787-6)
सिर ऊपरि आपि गुरू रखवारा ॥२॥ (801-9)
सिर ऊपरि जमकालु न सूझै ॥ (1049-9)

सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥ (293-10)
सिर ऊपरि ठाढो धरम राइ ॥ (178-13)
सिर ऊपरि मात पिता गुरदेव ॥ (677-2)
सिर के लेख न पड़ै इआणा ॥ (662-10)
सिर मस्तक रख्या पारब्रहमं हस्त काया रख्या परमेस्वरह ॥ (1358-17)
सिरजणहारि भुलाइआ विणु नावै नापाक ॥२॥ (42-10)
सिरजनहारु विसारिआ सुआमी इक निमख न लगो धिआनु ॥ (77-17)
सिरजि सवारे साचा सोइ ॥ (661-4)
सिरहाना अवर तुलाई ॥ (656-16)
सिरि आतपतु सचौ तखतु जोग भोग संजुतु बलि ॥ (1406-13)
सिरि जमकालु सि चोटा खाहि ॥ (839-3)
सिरि धरि चलीऐ सहीऐ भारु ॥ (151-3)
सिरि पातिसाहा साचा सोइ ॥३॥ (1144-19)
सिरि पैरी किआ फेड़िआ अंदरि पिरी निहालि ॥१२०॥ (1384-9)
सिरि पैरी किआ फेड़िआ अंदरि पिरी सम्हालि ॥१८॥ (1411-19)
सिरि लगा जम डंडु ता पछुतानिआ ॥ (708-1)
सिरि सभना समरथु नदरि निहालिआ ॥१७॥ (523-1)
सिरि साहा कै सचा साहिबु अवरु नाही को दूजा हे ॥१॥ (1073-16)
सिरि साहा पातिसाहा ॥ (621-15)
सिरि साहा पातिसाहु निहचलु चउरु छतु ॥ (964-13)
सिरि सिरि करणैहारै साजे ॥ (1039-18)
सिरि सिरि धंधै आपे लाए ॥ (1051-7)
सिरि सिरि रिजकु स्मबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥ (10-12)
सिरि सिरि रिजकु स्मबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥ (495-4)
सिरि सिरि सचड़ै लिखिआ दुखु सुखु पुरबि वीचारोवा ॥ (581-8)
सिरि सिरि सुख सहमा देहि सु तू भला ॥ (1107-3)
सिरि सिरि होइ निबेड़ु हुकमि चलाइआ ॥ (1290-17)
सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि ॥ (1401-9)
सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि मन बच क्रम सेवीऐ सचा ॥५॥ (1402-11)
सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू सति जीउ ॥ (1403-8)
सिरीराग की वार महला ४ सलोका नालि ॥ (83-1)
सिरीराग के छंत महला ५ (80-7)
सिरीराग सिउ पांचउ थापी ॥१॥ (1430-14)
सिरीरागु ॥ (93-15)
सिरीरागु कबीर जीउ का ॥ एकु सुआनु कै घरि गावणा (91-18)
सिरीरागु त्रिलोचन का ॥ (92-5)
सिरीरागु महल १ ॥ (19-13)

सिरीरागु महला १ ॥ (14-9)
सिरीरागु महला १ ॥ (15-17)
सिरीरागु महला १ ॥ (15-2)
सिरीरागु महला १ ॥ (15-9)
सिरीरागु महला १ ॥ (16-12)
सिरीरागु महला १ ॥ (17-16)
सिरीरागु महला १ ॥ (17-3)
सिरीरागु महला १ ॥ (17-9)
सिरीरागु महला १ ॥ (18-18)
सिरीरागु महला १ ॥ (18-4)
सिरीरागु महला १ ॥ (19-7)
सिरीरागु महला १ ॥ (20-10)
सिरीरागु महला १ ॥ (20-17)
सिरीरागु महला १ ॥ (20-2)
सिरीरागु महला १ ॥ (21-14)
सिरीरागु महला १ ॥ (21-7)
सिरीरागु महला १ ॥ (22-10)
सिरीरागु महला १ ॥ (22-17)
सिरीरागु महला १ ॥ (22-3)
सिरीरागु महला १ ॥ (54-13)
सिरीरागु महला १ ॥ (55-19)
सिरीरागु महला १ ॥ (55-7)
सिरीरागु महला १ ॥ (56-12)
सिरीरागु महला १ ॥ (57-18)
सिरीरागु महला १ ॥ (57-5)
सिरीरागु महला १ ॥ (58-12)
सिरीरागु महला १ ॥ (59-18)
सिरीरागु महला १ ॥ (59-6)
सिरीरागु महला १ ॥ (60-15)
सिरीरागु महला १ ॥ (61-9)
सिरीरागु महला १ ॥ (62-16)
सिरीरागु महला १ ॥ (62-3)
सिरीरागु महला १ ॥ (63-10)
सिरीरागु महला १ ॥ (75-11)
सिरीरागु महला १ घरु १ असटपदीआ ॥ (53-8)
सिरीरागु महला १ घरु २ ॥ (23-5)
सिरीरागु महला १ घरु २ ॥ (64-3)

सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ (23-15)
सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ (24-1)
सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ (71-15)
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ (24-12)
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ (24-19)
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ (24-7)
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ (25-11)
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ (25-5)
सिरीरागु महला १ घरु ५ ॥ (25-16)
सिरीरागु महला १ घरु दूजा २ ॥ (23-10)
सिरीरागु महला १ पहरे घरु १ ॥ (74-15)
सिरीरागु महला ३ ॥ (26-13)
सिरीरागु महला ३ ॥ (27-12)
सिरीरागु महला ३ ॥ (28-13)
सिरीरागु महला ३ ॥ (28-5)
सिरीरागु महला ३ ॥ (29-18)
सिरीरागु महला ३ ॥ (29-2)
सिरीरागु महला ३ ॥ (30-13)
सिरीरागु महला ३ ॥ (30-6)
सिरीरागु महला ३ ॥ (31-1)
सिरीरागु महला ३ ॥ (31-16)
सिरीरागु महला ३ ॥ (31-8)
सिरीरागु महला ३ ॥ (32-12)
सिरीरागु महला ३ ॥ (32-19)
सिरीरागु महला ३ ॥ (32-4)
सिरीरागु महला ३ ॥ (33-14)
सिरीरागु महला ३ ॥ (33-7)
सिरीरागु महला ३ ॥ (34-13)
सिरीरागु महला ३ ॥ (34-2)
सिरीरागु महला ३ ॥ (35-13)
सिरीरागु महला ३ ॥ (35-4)
सिरीरागु महला ३ ॥ (36-10)
सिरीरागु महला ३ ॥ (36-19)
सिरीरागु महला ३ ॥ (37-18)
सिरीरागु महला ३ ॥ (37-9)
सिरीरागु महला ३ ॥ (38-16)
सिरीरागु महला ३ ॥ (38-8)

सिरीरागु महला ३ ॥ (39-6)
सिरीरागु महला ३ ॥ (65-10)
सिरीरागु महला ३ ॥ (66-1)
सिरीरागु महला ३ ॥ (66-14)
सिरीरागु महला ३ ॥ (67-8)
सिरीरागु महला ३ ॥ (68-4)
सिरीरागु महला ३ ॥ (69-1)
सिरीरागु महला ३ ॥ (69-11)
सिरीरागु महला ३ घरु १ (26-3)
सिरीरागु महला ३ घरु १ ॥ (27-1)
सिरीरागु महला ३ घरु १ असटपदीआ (64-14)
सिरीरागु महला ४ ॥ (40-12)
सिरीरागु महला ४ ॥ (40-4)
सिरीरागु महला ४ ॥ (41-1)
सिरीरागु महला ४ ॥ (41-17)
सिरीरागु महला ४ ॥ (41-9)
सिरीरागु महला ४ ॥ (76-10)
सिरीरागु महला ४ घरु १ ॥ (39-15)
सिरीरागु महला ४ घरु २ छंत (78-7)
सिरीरागु महला ४ वणजारा (81-15)
सिरीरागु महला ५ ॥ (42-15)
सिरीरागु महला ५ ॥ (43-1)
सिरीरागु महला ५ ॥ (43-15)
सिरीरागु महला ५ ॥ (43-8)
सिरीरागु महला ५ ॥ (44-4)
सिरीरागु महला ५ ॥ (45-13)
सिरीरागु महला ५ ॥ (45-6)
सिरीरागु महला ५ ॥ (46-1)
सिरीरागु महला ५ ॥ (46-10)
सिरीरागु महला ५ ॥ (46-17)
सिरीरागु महला ५ ॥ (47-15)
सिरीरागु महला ५ ॥ (47-7)
सिरीरागु महला ५ ॥ (48-10)
सिरीरागु महला ५ ॥ (48-15)
सिरीरागु महला ५ ॥ (48-3)
सिरीरागु महला ५ ॥ (49-13)
सिरीरागु महला ५ ॥ (49-6)

सिरीरागु महला ५ ॥ (50-16)
सिरीरागु महला ५ ॥ (50-3)
सिरीरागु महला ५ ॥ (51-12)
सिरीरागु महला ५ ॥ (51-7)
सिरीरागु महला ५ ॥ (52-18)
सिरीरागु महला ५ ॥ (52-9)
सिरीरागु महला ५ ॥ (70-6)
सिरीरागु महला ५ ॥ (73-7)
सिरीरागु महला ५ ॥ (77-7)
सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥ (42-6)
सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥ (52-2)
सिरीरागु महला ५ घरु २ ॥ (50-10)
सिरीरागु महला ५ घरु ५ ॥ (71-5)
सिरीरागु महला ५ घरु ६ ॥ (51-2)
सिरीरागु महला ५ घरु ७ ॥ (51-17)
सिरीरागु महला ५ छंत (79-8)
सिरीरागु महलु १ ॥ (16-5)
सिरीरागु महलु १ ॥ (18-11)
सिरु क्मपिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥ (1428-18)
सिरु खोहाइ पीअहि मलवाणी जूठा मंगि मंगि खाही ॥ (149-15)
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥२०॥ (1412-3)
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥ (1412-2)
सिरु नानक लोका पाव है ॥ (1168-14)
सिरु हाथ पछोड़ै अंधा मूड़ु ॥२॥ (199-16)
सिरे सिरि धंधे लाइआ ॥ (71-17)
सिरै उपरि जम डंडु है दूजै भाइ पति खोइ ॥ (948-4)
सिल पूजसि चक्र गणेसं ॥ (1351-15)
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ (1353-7)
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ (470-16)
सिला संतोख पीसणु हथि दानु ॥ (1256-19)
सिव अगै सकती हारिआ एवै हरि भाईआ ॥ (1096-10)
सिव की पुरी बसै बुधि सारु ॥ (1159-14)
सिव जोति कंनहु बुधि पाई सतिगुरू रखवाला ॥२॥ (1328-11)
सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप तिआगी बादं ॥ (360-1)
सिव नगरी महि आसणि बैसै गुर सबदी जोगु पाई ॥११॥ (909-13)
सिव नगरी महि आसणु अउधू अलखु अगमु अपारी ॥८॥ (907-17)
सिव पुरी का होइगा काला ॥ (237-9)

सिव पुरी ब्रहम इंद्र पुरी निहचलु को थाउ नाहि ॥ (214-9)
सिव बिरंच अरु इंद्र लोक ता महि जलतौ फिरिआ ॥ (1219-2)
सिव बिरंचि अरु सगल मोनि जन गहि न सकाहि गता ॥१॥ (498-8)
सिव बिरंचि असुर सुर जेते काल अगनि महि जरते ॥ (1267-7)
सिव बिरंचि धरि ध्यानु नितहि जिसु बेदु बखाणै ॥ (1404-3)
सिव सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए ॥ (920-12)
सिव सकती घरि वासा पाइआ ॥ (1027-1)
सिव सकती देही महि पाए ॥ (1056-12)
सिव सनकादि जासु गुन गावहि तासु बसहि मोरे प्रानानां ॥ रहाउ ॥ (339-14)
सिव सिव करत सगल कर जोरहि सरब मइआ ठाकुर तेरी दोही ॥१॥ (207-6)
सिव सिव करते जो नरु धिआवै ॥ (874-14)
सिवा सकति स्मबादं ॥ (873-12)
सिवि सकति मिटाईआ चूका अंधिआरा ॥ (163-8)
सिसटि उपाई सभ तुधु आपे रिजकु स्मबाहिआ ॥ (85-12)
सिहजा धरति बरतन कउ पानी ॥ (1337-14)
सीआले सोहंदीआं पिर गलि बाहड़ीआं ॥६॥ (488-17)
सीख सिखाइ रहिओ अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥१॥ रहाउ ॥ (536-8)
सीगार मिठ रस भोग भोजन सभु झूठु कितै न लेखए ॥ (242-9)
सीगारु करे पिर खसम न भावै ॥ (1047-10)
सीघर कारजु लेहु सवारि ॥१॥ रहाउ ॥ (176-19)
सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधिक हाथि ॥ (55-10)
सीत मंद सुगंध चलिओ सरब थान समान ॥ (1018-5)
सीतड़ा मंन मंझाहि पलक न थीवै बाहरा ॥ (708-18)
सीतलंत रिदयं द्रिड़ु संत गिआनं ॥ (1355-3)
सीतल आघाणे अम्रित बाणे साजन संत बसीठा ॥ (452-13)
सीतल छाइआ गहिर फल पंखी केल करंत ॥२२९॥ (1376-18)
सीतल निरमल भइआ सरीरा ॥ (344-2)
सीतल पुरख द्रिसटि सुजाणी ॥२॥ (562-17)
सीतल भए कीनी प्रभ दाति ॥१॥ (191-12)
सीतल भए गुर चरनी लागे राम नाम हिरदे महि जाप ॥१॥ रहाउ ॥ (825-10)
सीतल भए हरि हरि जसु जापिआ ॥२॥ (804-9)
सीतल सांति महा सुखु पाइआ संतसंगि रहिओ ओल्हा ॥ (672-18)
सीतल सांति संतोखु होइ सभ बूझी त्रिसना ॥ (811-12)
सीतल सांति सदा सुख पावहि किलविख जाहि सभे मन तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (378-17)
सीतल सांति सहज सुखु पाइआ ठाढि पाई प्रभि आपे जीउ ॥१॥ (104-10)
सीतल सांति सूख हरि सरणी जलती अगनि निवारे ॥१॥ (210-3)
सीतल साति गुर ते प्रभ जाते ॥१॥ रहाउ ॥ (183-5)

सीतल सुखु पाइओ मन त्रिपते हरि सिमरत स्रम सगले लाथ ॥ (828-18)
सीतला ठाकि रहाई ॥ (627-12)
सीतला ते रखिआ बिहारी ॥ (200-11)
सीतला सुख सांति मूरति सिमरि सिमरि नित धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1300-5)
सीतला हरि नामु तेरा ॥ (1301-7)
सीतलु थीवै नानका जपंदड़ो हरि नामु ॥२॥ (709-16)
सीतलु हरि हरि नामु सिमरत तपति जाइ ॥३॥ (399-1)
सीता लखमणु विछुड़ि गइआ ॥ (954-1)
सीता लै गइआ दहसिरो लछमणु मूओ सरापि ॥ (1412-7)
सीधा छोडि अपूठा बुनना ॥३॥ (185-13)
सील धरम दया सुच नास्ति आइओ सरनि जीअ के दानी ॥ (1387-7)
सील संजम कै निकटि खलोई ॥ (371-5)
सील संजमि प्रिअ आगिआ मानै ॥ (185-17)
सील संतोख का रखै धरमु ॥ (1411-16)
सीलवंति परधानि रिदै सचावीआ ॥ (964-8)
सीलु धरमु जपु भगति न कीनी हउ अभिमान टेढ पगरी ॥१॥ रहाउ ॥ (856-12)
सीलु बिगारिओ तेरा काम ॥४॥ (374-6)
सीलु संजमु सुच भंनी खाणा खाजु अहाजु ॥ (1243-2)
सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥१॥ (470-15)
सीसु उठावन न कबहू मिलई महा दुतर माइ ॥३॥ (1001-17)
सीसु धरनि सहस भग गांमी ॥४॥ (710-18)
सीसु निहारउ चरण तलि धूरि मुखि लावउ ॥१॥ (745-13)
सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥ (558-7)
सीहा बाजा चरगा कुहीआ एना खवाले घाह ॥ (144-10)
सुंञी देह डरावणी जा जीउ विचहु जाइ ॥ (19-7)
सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाइ ॥ (34-19)
सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाउ ॥१॥ (790-16)
सुंदर कुंडल मुकट बैन ॥ (1082-17)
सुंदर तन धिआन सुंदर तन धिआन हे मनु लुबध गोपाल गिआन हे जाचिक जन राखत मान ॥ (462-12)
सुंदर धिआनु धारु दिनु रैनी जीअ प्रान ते पिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ (532-4)
सुंदर नारी अनिक परकारी पर ग्रिह बिकारी ॥ (213-12)
सुंदर पुरख बिराजित पेखि मनु बंचला ॥ (1362-16)
सुंदर बचन तुम सुणहु छबीली पिरु तैडा मन साधारणु ॥ (959-11)
सुंदर मंदर सैणह जेण मध्य हरि कीरतनह ॥ (1360-17)
सुंदर रसाल तू ॥१॥ (1231-2)
सुंदर सांति दइआल प्रभ सरब सुखा निधि पीउ ॥ (847-18)
सुंदर सुआमी धाम भगतह बिस्राम आसा लगि जीवते जीउ ॥ (80-19)

सुंदर सुघड़ सरूप ते नानक जिन्ह हरि हरि नामु विसाहा ॥२॥१०॥ (530-8)
सुंदर सुघर बेअंत पिता प्रभ होहु प्रभू किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (680-12)
सुंदर सुघर सरूप सिआने पंचहु ही मोहि छली रे ॥१॥ (404-9)
सुंदर सेज अनेक सुख रस भोगण पूरे ॥ (707-6)
सुंदर सोभा लाल गोपाल दइआल की अपर अपारा राम ॥ (542-15)
सुंदरि साइ सरूप बिचखणि कहीऐ सा सिआणी ॥४॥२॥४॥ (722-15)
सुंदरि सुजाणि चतुरि बेती सास बिनु जैसे तना ॥ (928-17)
सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥ (296-1)
सुंदरु चतुरु सुजान सुआमी कवन रसना गुण भना ॥ (462-10)
सुंदरु सुघड़ु चतुरु जीअ दाता ॥ (240-12)
सुंदरु सुघड़ु चतुरु सभ बेता रिद दास निवास भगत गुन गावन ॥ (717-2)
सुंदरु सुघड़ु सुजाणु बेता गुण गोविंद अमुलिआ ॥ (928-1)
सुंदरु सुघड़ु सूरु सो बेता जो साधू संगु पावै ॥ (531-2)
सुंदरु सुघरु सुजाणु प्रभु मेरा जीवनु दरसु दिखाइ ॥२॥ (431-17)
सुंन कला अपरम्परि धारी ॥ (1037-10)
सुंन गुफा महि आसणु बैसणु कलप बिबरजित पंथा ॥१॥ (334-16)
सुंन निरंतरि दीजै बंधु ॥ (939-15)
सुंन मंडल इकु जोगी बैसे ॥ (685-16)
सुंन मंडल महि करि परगासु ॥ (1162-13)
सुंन संधिआ तेरी देव देवाकर अधपति आदि समाई ॥ (1350-11)
सुंन सबदु अपरम्परि धारै ॥ (944-2)
सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥ (293-17)
सुंन समाधि गुफा तह आसनु ॥ (894-1)
सुंन समाधि नाम रस माते ॥ (265-4)
सुंन समाधि प्रभू किरपाल ॥३॥ (889-2)
सुंन समाधि महा परमारथु तीनि भवण पति नामं ॥ (634-17)
सुंन समाधि रहहि लिव लागे एका एकी सबदु बीचार ॥ (503-18)
सुंन समाधि सचे घर बारा ॥ (1038-11)
सुंन समाधि सहजि मनु राता ॥ (904-9)
सुंन सरोवरि पावहु सुख ॥८॥ (343-16)
सुंन सहज महि बुनत हमारी ॥१॥ (1158-19)
सुंन सहज महि रहिओ समाइ ॥७॥ (1162-16)
सुंनति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीऐ ॥ (477-17)
सुंनहि सुंनु मिलिआ समदरसी पवन रूप होइ जावहिगे ॥१॥ (1103-15)
सुंनहु उपजी सुंनि समाणी ॥ (1037-18)
सुंनहु उपजे दस अवतारा ॥ (1038-5)
सुंनहु खाणी सुंनहु बाणी ॥ (1037-17)

सुंनहु चंदु सूरजु गैणारे ॥ (1037-15)
सुंनहु धरति अकासु उपाए ॥ (1037-16)
सुंनहु ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए ॥ (1037-12)
सुंनहु भवण रखे लिव लाए ॥ (1038-2)
सुंनहु राति दिनसु दुइ कीए ॥ (1037-19)
सुंनहु सपत पाताल उपाए ॥ (1038-2)
सुंनहु सपत सरोवर थापे ॥ (1037-14)
सुंने अलख अपार निरालमु सुंने ताड़ी लाइदा ॥५॥ (1037-16)
सुंने वरते जुग सबाए ॥ (1037-13)
सुंनो सुंनु कहै सभु कोई ॥ (943-17)
सु एतु खजानै लइआ रलाइ ॥४॥३१॥१००॥ (186-3)
सु ऐसा राजा स्री नरहरी ॥१॥ (1292-4)
सु कहु टल गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ ॥ (1392-14)
सु तिनि सतिगुरि सुख भाइ क्रिपा धारी जीअ नाम की बडाई दई गुर रामदास कउ ॥५॥ (1404-16)
सु थाउ सचु मनु निरमलु होइ ॥ (158-9)
सु मति सारु जितु हरि सिमरीजै ॥ (895-1)
सु रसु कबीरै जानिआ ॥ (655-11)
सु सबद कउ निरंतरि वासु अलखं जह देखा तह सोई ॥ (944-12)
सु सबद का कहा वासु कथीअले जितु तरीऐ भवजलु संसारो ॥ (944-9)
सु सबदु निरंतरि निज घरि आछै त्रिभवण जोति सु सबदि लहै ॥ (945-12)
सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ (4-16)
सुआद बाद ईरख मद माइआ ॥ (741-2)
सुआद मोह रस बेधिओ अगिआनि रचिओ संसारु ॥ (297-15)
सुआद लुभत इंद्री रस प्रेरिओ मद रस लैत बिकारिओ रे ॥ (335-15)
सुआन पूछ जिउ भइओ न सूधउ बहुतु जतनु मै कीनउ ॥ (633-9)
सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै ॥ (536-10)
सुआन सत्रु अजातु सभ ते क्रिस्न लावै हेतु ॥ (1124-16)
सुआन सिआल माइआ महि राता ॥ (1160-16)
सुआन सूकर बाइस जिवै भटकतु चालिओ ऊठि ॥१॥ (1105-16)
सुआनु लोभु नगर महि सबला गुरु खिन महि मारि कढावैगो ॥ (1310-19)
सुआमी अभै निरंजन नरहरि तुम्ह राखि लेहु हम पापी पाथ ॥ (1296-5)
सुआमी को ग्रिहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥ (1428-16)
सुआमी पंडिता तुम्ह देहु मती ॥ (1171-11)
सुआमी पारब्रहम परमेसरु तुम खोजहु जुग जुगने ॥ (976-18)
सुआमी सुप्रसंन भए जनम मरन दोख गए संतन कै चरन लागि नानक गुन गाई ॥२॥३॥१३२॥ (1230-3)
सुआरथु तिआगि असारथि रचिओ नह सिमरै प्रभु रूड़ा ॥१॥ (1221-18)
सुआरथु सुआउ न को करे ना किछु होवै काजु ॥ (70-9)

सुइना रुपा पाप करि करि संचीऐ चलै न चलदिआ नालि ॥ (756-9)
सुइना रुपा माटी दाम ॥ (889-13)
सुइना रुपा रंगुला मोती तै माणिकु जीउ ॥ (762-9)
सुइना रुपा संचीऐ धनु काचा बिखु छारु ॥ (937-2)
सुइना रुपा संचीऐ मालु जालु जंजालु ॥ (63-15)
सुइना रुपा सभ धातु है माटी रलि जाई ॥ (1012-1)
सुइना रूपा तुझ पहि दाम ॥ (374-6)
सुइना रूपा फुनि नही दाम ॥ (187-7)
सुइने का चउका कंचन कुआर ॥ (1168-15)
सुइने का बिरखु पत परवाला फुल जवेहर लाल ॥ (147-12)
सुइने की सूई रुपे का धागा ॥ (485-15)
सुइने कै परबति गुफा करी कै पाणी पइआलि ॥ (139-10)
सुकरणी कामणि गुर मिलि हम पाई ॥ (370-19)
सुक्रवारि प्रभु रहिआ समाई ॥ (841-14)
सुक्रित मनसा गुर उपदेसी जागत ही मनु मानिआ ॥३॥ (485-5)
सुक्रितु करणी सारु जपमाली ॥ (1134-9)
सुक्रितु करि करि लीजै रे मन ॥१॥ रहाउ ॥ (479-18)
सुक्रितु कीजै नामु लीजै नरकि मूलि न जाईऐ ॥ (461-5)
सुक्रितु कीता रहसी मेरे जीअड़े बहुड़ि न आवै वारी ॥१॥ रहाउ ॥ (154-19)
सुक्रितु सहारै सु इह ब्रति चड़ै ॥ (344-16)
सुख उपजे दुख सगल बिनासे पारब्रहम लिव लाई ॥ (1268-12)
सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥१॥ रहाउ ॥ (806-12)
सुख कउ मागै सभु को दुखु न मागै कोइ ॥ (57-12)
सुख का नामु निधानु गुरमुखि गाविआ ॥३॥ (398-15)
सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥ (411-5)
सुख घटाऊ डूइ इसु पंधाणू घर घणे ॥३॥ (1098-19)
सुख जीवणु तिसु आखीऐ जिसु गुरमुखि वसिआ सोइ ॥ (63-6)
सुख थोड़े दुख अगले दूखे दूखि विहाइ ॥२॥ (989-7)
सुख दुख दाता गुरमुखि जाता मेलि लए सरणाई ॥२॥ (1345-12)
सुख दुख दाता गुरु मिलै कहु नानक सिफति समाइ ॥४॥७॥ (597-15)
सुख दुख दाता मनि वसै तितु तनि कैसी भुख जीउ ॥४॥ (751-8)
सुख दुख सम करि जाणीअहि सबदि भेदि सुखु होइ ॥५॥ (57-13)
सुख दुख सम करि नामु न छोडउ आपे बखसि मिलावणहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (416-3)
सुख दुख ही ते अमरु अतीता गुरमुखि निज घरु पाइदा ॥८॥ (1037-19)
सुख दुख ही ते गुर सबदि अतीता ॥ (1189-13)
सुख दुखीआ मनि मोह विणासु ॥ (152-19)
सुख निधान नानक प्रभु मेरा साधसंगि धन माल ॥२॥६९॥९२॥ (1222-7)

सुख निधान नामु प्रभ तुमरा एहु अबिनासी मंत्रु लीओ ॥ (382-17)
सुख निधान प्रीतम प्रभ मेरे ॥ (801-19)
सुख निधान हरि अलख सुआमी ॥ (184-8)
सुख निधानु प्रभु एकु है अबिनासी सुणिआ ॥ (319-15)
सुख निधानु मिलिआ दूख हरिआ क्रिपा करि प्रभि राखिआ ॥ (925-18)
सुख पाए दुख बिनसिआ थाउ ॥१॥ (378-12)
सुख पावहि तिस के गुण गाउ ॥३॥ (1146-18)
सुख बिस्रामु पाइआ गुण गाइ ॥ (189-16)
सुख मंगल आनंद हरि हरि प्रभ चरन अम्रित सारु ॥ (1121-11)
सुख मन अंतरि सहजि समाणी ॥२॥ (663-16)
सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै ॥ (634-2)
सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥ (1428-3)
सुख लहहि ति नर संसार महि अभै पटु रिप मधि तिह ॥ (1394-10)
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥ रहाउ ॥ (633-16)
सुख समूह करुणा मै करता तिसु प्रभ सदा धिआवहु ॥१॥ रहाउ ॥ (1218-13)
सुख समूहा भोग भूमि सबाई को धणी ॥ (1101-1)
सुख सहज अनद बिनोद सद ही गुन गुपाल नित गाईऐ ॥ (547-2)
सुख सहज सरसे हरि नामि रहसे प्रभि आपि किरपा धारीआ ॥ (459-15)
सुख सहजि सोवहि किलबिख खोवहि नाम रसि रंगि जागीआ ॥ (544-13)
सुख सांति सहज आनद भए पूरन भई सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (819-19)
सुख सांदि घरि आइआ ॥ (629-8)
सुख सागर अम्रित भंडारा ॥१॥ रहाउ ॥ (1330-11)
सुख सागर करि परम गति मोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (979-10)
सुख सागर गुन रउ कबीर ॥३॥५॥ (1194-18)
सुख सागर गोबिंद सिमरणु भगत गावहि गुण तेरे राम ॥ (925-17)
सुख सागर पूरन परमेसरु हरि न चेतिओ मन माही ॥१॥ रहाउ ॥ (892-18)
सुख सागर प्रभ भेटिऐ नानक सुखी होत इहु जीउ ॥१॥ (848-1)
सुख सागर प्रभु निमख न गाइओ ॥ (299-12)
सुख सागर प्रभु पाईऐ जब होवै भागो राम ॥ (848-2)
सुख सागर प्रभु विसरउ नाही मन चिंदिअड़ा फलु पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (620-13)
सुख सागर प्रीतम मिले उपजे महा अनंद ॥ (431-10)
सुख सागर महि रमहि कबीर ॥१६॥ (344-8)
सुख सागर मेरे गुर गोपाला ॥ (105-11)
सुख सागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जा के रे ॥ (1106-15)
सुख सागर हरि भगति है गुरमति कउला रिधि सिधि लागै पगि ओहै ॥ (492-18)
सुख सागरु अम्रितु हरि नाउ ॥ (998-1)
सुख सागरु गुरु पाइआ ॥ (626-1)

सुख सागरु पाइअउ दिंतु हरि मगि न हुटै ॥ (1397-8)
सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के ॥ (658-13)
सुख सागरु हरि नामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ (29-2)
सुख सागरो पाइआ सहज सुभाइआ जनम मरन दुख हारे ॥ (1122-17)
सुख सीगार बिखिआ के फीके तजि छोडे मेरी माइ ॥४॥ (431-14)
सुख सीतल सरधा सभ पूरी होए संत सहाई ॥ (1000-10)
सुख सेवा अंदरि रखिऐ आपणी नदरि करहि निसतारि जीउ ॥१२॥ (72-10)
सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु ॥ (767-16)
सुख सोहिलड़े हरि गावण लागे ॥ (459-14)
सुख स्मपति कउ आवत देखै साकत मनि अभिमानु भइआ ॥ (906-16)
सुख स्मपति भोग इसु जीअ के बिनु हरि नानक जाने कूर ॥२॥४॥२३॥ (716-16)
सुख स्मपति माइआ रस मीठे इह नही मन महि धरणी ॥ (702-11)
सुख स्मपति हरि नाम फल पाए सतिगुर मिलई ॥१॥ रहाउ ॥ (402-7)
सुख स्मपै बहु भोग रस नानक साध रवाल ॥१॥ (258-9)
सुखदाई जीअन को दाता अम्रितु जा की बैणी ॥१॥ रहाउ ॥ (530-3)
सुखदाई दूख बिडारन हरीआ ॥ (100-19)
सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥ (267-3)
सुखदाई पूरन परमेसुर करि किरपा राखहु मान ॥ (1119-15)
सुखदाई पूरन प्रभु करता मेरी बहुतु इआनप जरत ॥ (529-3)
सुखदाता गुरु सेवीऐ सभि अवगण कढै धोइ ॥२॥ (43-19)
सुखदाता जपदे नीत नीति ॥४॥३॥१६॥ (1184-17)
सुखदाता तेरै मनि वसै हउमै जाइ अभिमानु ॥ (851-11)
सुखदाता दुख भंजनहारा ॥ (106-11)
सुखदाता दुख भंजनहारा गाउ कीरतनु पूरन गिआनु ॥ (979-17)
सुखदाता दुख मेटणो सतिगुरु असुर संघारु ॥३॥ (59-10)
सुखदाता दुखु मेटणहारा ॥ (1343-5)
सुखदाता पाइआ मोहु चुकाइआ अनदिनु नामु सम्हाले ॥ (771-4)
सुखदाता प्रभु रहिओ समाइ ॥ (1181-11)
सुखदाता भै भंजनो तिसु आगै करि अरदासि ॥ (44-16)
सुखदाता विसरिआ अगम अपारा ॥ (118-8)
सुखदाता सेवनि सुखु पाइनि गुरमति मंनि वसावणिआ ॥१॥ (122-7)
सुखदाता सेवे निरमलु होइ ॥६॥ (1343-3)
सुखदाता हरि एकु है होर थै सुखु न पाहि ॥ (1132-6)
सुखदाते दुख भंजन सुआमी जन नानक सद बलि जाईऐ ॥२॥१॥ (528-15)
सुखदेउ परीख्यतु गुण रवै गोतम रिखि जसु गाइओ ॥ (1390-12)
सुखमन कै घरि रागु सुनि सुंनि मंडलि लिव लाइ ॥ (1291-3)
सुखमन नारी सहज समानी पीवै पीवनहारा ॥१॥ (969-7)

सुखमना इड़ा पिंगुला बूझै जा आपे अलखु लखाए ॥ (944-18)
सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥ (295-16)
सुखमनी सुख अम्रित प्रभ नामु ॥ (262-13)
सुखवंती सा नारि सोभा पूरि बणा ॥ (457-6)
सुखह समूह भइआ गइआ विजोगो राम ॥ (846-1)
सुखहि समाईऐ मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (410-3)
सुखहु उठे रोग पाप कमाइआ ॥ (139-17)
सुखा की मिति किआ गणी जा सिमरी गोविंदु ॥ (48-19)
सुखा सिरि सदा सुखु होइ जा विचहु आपु गवाइ ॥ (588-7)
सुखि बैसहु संत सजन परवारु ॥ (185-1)
सुखि रैणि विहाणी सहजि सुभाइ ॥४॥१७॥ (375-12)
सुखि सवंधि सोहागणी पिरु पाइआ गुणतासु ॥३॥ (1014-18)
सुखि सहजि आवै साच भावै साच की मति किउ टलै ॥ (766-7)
सुखि सहजि मिलीजै रोसु न कीजै गरबु निवारि समाणी ॥ (1112-1)
सुखि सांदि फिरि आए ॥ (630-4)
सुखि सोइओ अरु सहजि समाइओ सहसा गुरहि गवाए ॥ (1204-18)
सुखी नानक गुरि नामु द्रिड़ाइओ ॥४॥६॥१७॥ (1301-8)
सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥ (278-5)
सुखीअन महि सुखीआ तूं कहीअहि दातन सिरि दाता ॥ (507-13)
सुखीए कउ पेखै सभ सुखीआ रोगी कै भाणै सभ रोगी ॥ (610-1)
सुखु आइओ भै भरम बिनासे क्रिपाल हूए प्रभ जबहू ॥ (529-6)
सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥ (1427-4)
सुखु दुखु तेरी आगिआ पिआरे दूजी नाही जाइ ॥३॥ (432-3)
सुखु दुखु दुइ दरि कपड़े पहिरहि जाइ मनुख ॥ (149-4)
सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥ (219-2)
सुखु दुखु पुरब जनम के कीए ॥ (1030-19)
सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई ॥ (632-12)
सुखु दुखु सम करि नामु अधारा ॥ (943-11)
सुखु न पाइनि मुगध नर संत नालि खहंदे ॥ (306-16)
सुखु न पाइनि मुगध नर संत नालि खहंदे ॥ (316-19)
सुखु न पाइन्हि मूलि नाम विछुंनिआ ॥२॥ (761-18)
सुखु नानक पूरा गुरु मिले ॥४॥४॥ (1181-6)
सुखु नानक संतन की सेवा चरण संत धोइ पीवना ॥८॥३॥६॥ (1019-6)
सुखु नानक सरणी पाइआ ॥४॥९॥५९॥ (623-19)
सुखु नाही पेखे निरति नाटे ॥ (1147-13)
सुखु नाही फुनि दूऐ तीऐ ॥ (111-3)
सुखु नाही बहु देस कमाए ॥ (1147-13)

सुखु नाही बहुतै धनि खाटे ॥ (1147-13)
सुखु नाही बिनु नाम धिआए ॥ (1145-5)
सुखु नाही रे हरि भगति बिना ॥ (210-9)
सुखु पलरि तिआगि महा दुखु पावै ॥ (1060-2)
सुखु पाइआ जन परसादि दुखु सभु मेटिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (397-18)
सुखु पाइआ त्रिसना सभ बुझी है सांति पाई गुन गाइआ ॥१॥ (1300-3)
सुखु पाइआ फिरि दूखु न होइ ॥२॥९॥ (1001-6)
सुखु पाइआ लगि दासह पाइ ॥ (202-1)
सुखु पाइआ सतिगुरू मनाइ ॥ (1141-16)
सुखु पाइआ सहज धुनि उपजी रोगा घाणि मिटाई ॥ रहाउ ॥ (619-7)
सुखु पाइआ हरि साधसंगि सिमरत गुणतास ॥१॥ रहाउ ॥ (819-14)
सुखु पाइओ दुखु दूरि पराइओ बणि आई प्रभ तोहं ॥१॥ (1211-15)
सुखु पावहि साचै दरबारि ॥४॥३२॥१०१॥ (186-7)
सुखु पावहि हरि दुआर परानी ॥१॥ रहाउ ॥ (200-5)
सुखु पावहु मेरे भाई मीत ॥१॥ (185-4)
सुखु पावहु सहजे बसहु दरसनु देखि निहाल ॥ (256-10)
सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥ (263-14)
सुखु प्रिअ सुहाग पलक रात ॥१॥ रहाउ ॥ (1306-11)
सुखु भुंचहु मेरे भाई ॥२॥२८॥९२॥ (631-2)
सुखु मांगत दुखु आगल होइ ॥ (222-13)
सुखु मांगत दुखु आगै आवै ॥ (330-6)
सुखु माणहि सुखु पैनणा सुखे सुखि विहाइ ॥ (85-18)
सुखु मानै भेटै गुर पीरु ॥ (413-1)
सुखु सहजे जपि रिदै मुरारि ॥५॥ (222-6)
सुखु सीगारु सतिगुरू दिखाइआ नामि वडी वडिआई ॥ (1333-3)
सुखु सुपनै नही तन महि रोग ॥३॥ (240-6)
सुखु होवै सेव कमाणीआ ॥ (25-19)
सुखेण बैण रतनं रचनं कसुमभ रंगणः ॥ (1361-10)
सुखै एहु बिबेकु है अंतरु निरमलु होइ ॥ (947-9)
सुखै कउ दुखु अगला मनमुखि बूझ न होइ ॥ (57-13)
सुखो सुखु पाही ॥ (407-1)
सुघड़ सरूप दइआल मुरारे ॥१॥ रहाउ ॥ (737-10)
सुघड़ सुजाना सद परधाना अम्रितु हरि का नामा ॥ (924-14)
सुघड़ु सुजाणु सरूपु तू सभ महि वरतंता ॥ (1095-13)
सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥ (473-4)
सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥२॥ (472-4)
सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥ (473-4)

सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ (922-18)
सुणहि वखाणहि जेतड़े हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ (16-1)
सुणि उपदेसु सतिगुर पहि आइआ ॥ (371-10)
सुणि करतार गोविंद गोपाल ॥ (890-3)
सुणि कहीऐ को अंतु न जाणी ॥ (1032-14)
सुणि कीरतनु साध पहि जाइ ॥ (190-2)
सुणि कीरतनु हरि गुण रवा हरि जसु मनि लिखा ॥ (650-2)
सुणि कै जम के दूत नाइ तेरै छडि जाहि ॥ (962-1)
सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥ (7-8)
सुणि गला गुर पहि आइआ ॥ (74-1)
सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामि सभि बिनसे हंउमै पापा राम ॥ (574-12)
सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामु सभि बिनसे हंउमै पापा ॥२॥ (574-15)
सुणि घन घोर सीतलु मनु मोरा लाल रती गुण गावै ॥१॥ (1254-9)
सुणि जोगी कै मनि मीठी लागै ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥१२॥ (886-10)
सुणि नाह पिआरे इक बेनंती मेरी ॥ (1111-13)
सुणि नाह प्रभू जीउ एकलड़ी बन माहे ॥ (243-1)
सुणि पंडित करमा कारी ॥ (635-9)
सुणि परतापु गोविंद निरभउ भए मन ॥ (709-17)
सुणि पाडे किआ लिखहु जंजाला ॥ (930-2)
सुणि बावरे किआ कीचै कूड़ा मानो ॥ (777-13)
सुणि बावरे जो आइआ तिसु जाणा ॥ (777-10)
सुणि बावरे तू काए देखि भुलाना ॥ (777-7)
सुणि बावरे थीउ रेणु जिनी प्रभु धिआइआ ॥ (777-16)
सुणि बावरे नेहु कूड़ा लाइओ कुस्मभ रंगाना ॥ (777-7)
सुणि बावरे मतु जाणहि प्रभु मै पाइआ ॥ (777-16)
सुणि बावरे सेवि ठाकुरु नाथु पराणा ॥ (777-10)
सुणि बावरे हभु वैसी गरबु गुमानो ॥ (777-13)
सुणि बेनंती सुआमी अपुने नानकु इहु सुखु मागै ॥ (610-6)
सुणि बेनती प्रभ दीन दइआला ॥ (743-14)
सुणि भरथरि नानकु कहै बीचारु ॥ (412-1)
सुणि भै बिनासे सगल नानक प्रभ पुरख करणैहारे ॥३॥ (778-10)
सुणि मन अंधे कुते कूड़िआर ॥ (662-5)
सुणि मन अंधे मूरख गवार ॥ (1344-12)
सुणि मन तन तुझु सुखु दिखलावउ ॥ (742-13)
सुणि मन भीने सहजि सुभाए ॥२॥ (768-2)
सुणि मन भूले बावरे गुर की चरणी लागु ॥ (57-18)
सुणि मन मंनि वसाइ तूं आपे आइ मिलै मेरे भाई ॥ (425-2)

सुणि मन मित्र पिआरिआ मिलु वेला है एह ॥ (20-10)
सुणि मन मेरे ततु गिआनु ॥ (423-10)
सुणि मन मेरे भजु सतगुर सरणा ॥ (33-9)
सुणि मन मेरे सबदु वीचारि ॥ (161-3)
सुणि मन सीख साधू जन सगलो थारे सगले प्राछत मिटिओ रे ॥ (715-17)
सुणि माछिंद्रा अउधू नीसाणी ॥ (877-18)
सुणि माछिंद्रा नानकु बोलै ॥ (877-14)
सुणि मीता जीउ पिंडु सभु तनु अरपीजै इउ दरसनु हरि जीउ पाईऐ ॥३॥ (612-3)
सुणि मीता जीउ हमारा बलि बलि जासी हरि दरसनु देहु दिखाई ॥१॥ (611-19)
सुणि मीता धूरी कउ बलि जाई ॥ (612-1)
सुणि मीता हउ तेरी सरणाई आइआ प्रभ मिलउ देहु उपदेसा ॥२॥ (612-2)
सुणि मुंधे हरणाखीए गूड़ा वैणु अपारु ॥ (1410-5)
सुणि मूरख मंन अजाणा ॥ (155-8)
सुणि यार हमारे सजण इक करउ बेनंतीआ ॥ (703-13)
सुणि वडभागीआ हरि अम्रित बाणी राम ॥ (545-6)
सुणि वडा आखै सभ कोई ॥ (348-19)
सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥ (9-9)
सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु ॥ (471-11)
सुणि संतहु निरमल बीचार ॥ (891-19)
सुणि सखी सहेली जीअ की मेली गुर कै सबदि समाओ ॥ (243-19)
सुणि सखी सहेली साचि सुहेली साचे के गुण सारै ॥ (243-5)
सुणि सखीअ सहेलड़ीहो मिलि मंगलु गावह राम ॥ (846-10)
सुणि सखीए इह भली बिनंती एहु मतांतु पकाईऐ ॥ (249-12)
सुणि सखीए मिलि उदमु करेहा मनाइ लैहि हरि कंतै ॥ (249-9)
सुणि सखीए मेरी नीद भली मै आपनड़ा पिरु मिलिआ ॥ (249-17)
सुणि सजण जी मैडड़े मीता राम ॥ (576-17)
सुणि सजण प्रीतम मेरिआ मै सतिगुरु देहु दिखालि ॥ (957-9)
सुणि सजण मेरे प्रीतम भाई मै मेलिहु मित्रु सुखदाता ॥ (564-6)
सुणि सजण संत मीत सुहेले ॥ (1339-14)
सुणि सबदु तुमारा मेरा मनु भीना ॥ (1117-8)
सुणि सह की इक बात सुहेली ॥१॥ (990-16)
सुणि साखी मन जपि पिआर ॥ (1192-3)
सुणि साजन इउ दुतरु तरीऐ ॥ (741-9)
सुणि साजन प्रेम संदेसरा अखी तार लगंनि ॥ (302-1)
सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥ (103-4)
सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥ (869-17)
सुणि साजन संत जन भाई ॥ (745-4)

सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु ॥ (595-14)
सुणि सासत्र तूं न बुझही ता फिरहि बारो बार ॥ (492-5)
सुणि सिखवंते नानकु बिनवै छोडहु माइआ जाला ॥ (503-9)
सुणि सिखिऐ सादु न आइओ जिचरु गुरमुखि सबदि न लागै ॥ (590-9)
सुणि सुंदरि साधू बचन उधारी ॥ (377-16)
सुणि सुआमी अरदासि जन तुम्ह अंतरजामी ॥ (819-14)
सुणि सुआमी अरदासि हमारी पूछउ साचु बीचारो ॥ (938-17)
सुणि सुआमी संतन अरदासि ॥ (1146-19)
सुणि सुआमी सचु नानकु प्रणवै अपणे मन समझाए ॥ (944-11)
सुणि सुणि अम्रित नामु धिआवा ॥ (740-13)
सुणि सुणि अवर वखानै ॥१॥ रहाउ ॥ (894-5)
सुणि सुणि आखणु आखणा जे भावै करे तमाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (14-11)
सुणि सुणि आखै केती बाणी ॥ (1032-14)
सुणि सुणि इहु मनु निरमलु होवै कटीऐ काल की फासी राम ॥ (781-2)
सुणि सुणि उपजिओ मन महि चाउ ॥ (892-15)
सुणि सुणि काम गहेलीए किआ चलहि बाह लुडाइ ॥ (37-18)
सुणि सुणि गंढणु गंढीऐ लिखि पड़ि बुझहि भारु ॥ (20-13)
सुणि सुणि गुरमुखि नामु वखाणहि सतसंगति मेलाई ॥१७॥ (910-15)
सुणि सुणि जीवउ मनि इहु बिस्रामु ॥ (894-13)
सुणि सुणि जीवा सोइ तिना की जिन्ह अपुना प्रभु जाता ॥ (802-11)
सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ (104-5)
सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ (1077-8)
सुणि सुणि जीवै दासु तुम्ह बाणी जन आखी ॥ (814-1)
सुणि सुणि तुझै धिआइदे तेरे भगत रते गुणतासु जीउ ॥२०॥ (74-12)
सुणि सुणि नामु तुमारा प्रीतम प्रभु पेखन का चाउ ॥ (405-19)
सुणि सुणि पंथु डराउ बहुतु भैहारीआ ॥ (240-19)
सुणि सुणि बूझै मानै नाउ ॥ (152-9)
सुणि सुणि मंनि वसाईऐ बूझै जनु कोई ॥ (1239-12)
सुणि सुणि महा त्रिपति मनु पावै साधू अम्रित बानी ॥ रहाउ ॥ (611-7)
सुणि सुणि मानै वेखै जोति ॥६॥ (831-17)
सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ ॥२॥ (660-5)
सुणि सुणि वेखै सबदि मिलाए ॥ (160-14)
सुणि सुणि साजन मन मित पिआरे जीउ ॥ (217-10)
सुणि सुणि सिख हमारी ॥ (154-19)
सुणि सुणि होवै परम गति मेरी ॥ (103-7)
सुणि स्रवण बाणी गुरि वखाणी हरि रंगु तुरी चड़ाइआ ॥ (575-14)
सुणि स्रवण बाणी सहजि जाणी हरि नामु जपि वडभागै ॥ (778-17)

सुणि हरि कथा उतारी मैलु ॥ (178-4)
सुणि हरि कथा नामु लै लाहा ॥ (698-19)
सुणि हरि गुण भीने सहजि सुभाए ॥ (767-19)
सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारि ॥ (583-7)
सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारे ॥१॥ (583-10)
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥ (4-15)
सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥ (3-3)
सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥ (3-1)
सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥ (2-18)
सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥ (2-19)
सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ (2-17)
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥ (3-3)
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥ (3-4)
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥ (2-18)
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥ (3-1)
सुणिऐ धरति धवल आकास ॥ (2-17)
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥ (3-2)
सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥ (2-17)
सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥ (2-19)
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥ (3-2)
सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥ (3-1)
सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥ (3-3)
सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥ (2-19)
सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥ (2-16)
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥ (3-3)
सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥ (3-4)
सुणी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बणि आई ॥ (611-16)
सुणी पुकार समरथ सुआमी बंधन काटि सवारे ॥ (631-4)
सुणी बेनंती ठाकुरि मेरै पूरन होई घाली जीउ ॥२॥ (105-19)
सुणी बेनती ठाकुरि मेरै खसमाना करि आपि ॥ (681-15)
सुणीऐ एकु वखाणीऐ सुरगि मिरति पइआलि ॥ (1091-7)
सुणे देखे बाझु कहिऐ दानु अणमंगिआ दिवै ॥ (766-4)
सुत कंचन सिउ हेतु वधाइआ ॥ (1342-14)
सुत कलत्र भ्रात मीत उरझि परिओ भरमि मोहिओ इह बिरख छामनी ॥ (901-14)
सुत दारा पहि आनि लुटावै ॥१॥ (656-7)
सुत दारा बनिता अनेक बहुतु रंग अरु वेस ॥ (47-15)
सुत बनिता आपन नही भाई ॥ (187-7)

सुत बनिता साजन सुख बंधप ता सिउ मोहु बढिओ सु घना ॥ (1387-16)
सुत बनिता साजन सेवक दीए प्रभ देवन जोग ॥ (706-12)
सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥ (267-2)
सुत मीत कुट्मब अरु बनिता ॥ (288-16)
सुत मीत भ्रात ते गुहजी ता कै निकटि न होई खलीआ ॥३॥ (1004-9)
सुत स्मपति देखि इहु मनु गरबिआ रामु रिदै ते खोइआ ॥ (93-9)
सुत स्मपति बनिता बिनोद ॥ (210-10)
सुत स्मपति बिखिआ रस भोगवत नह निबहत जम कै पाथ ॥ (1120-14)
सुतड़ी सो सहु डिठु तै सुपने हउ खंनीऐ ॥२॥ (1100-7)
सुतड़े असंख माइआ झूठी कारणे ॥ (1425-17)
सुतड़े सुखी सवंन्हि जो रते सह आपणै ॥ (1425-16)
सुति मुकलाई अपनी माउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1194-4)
सुतिआ आपि उठालि देइ नानक लिव लाइ ॥२९॥ (1248-13)
सुतिआ गुरु सालाहीऐ उठदिआ भी गुरु आलाउ ॥ (758-18)
सुतिआ हरि प्रभु चेति मनि हरि सहजि समाधि समाइ ॥ (1315-15)
सुती सुती झालु थीआ भुली वाटड़ीआसु जीउ ॥ (762-12)
सुतु अपराध करत है जेते ॥ (478-14)
सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि जगत पित भावहिगे ॥१॥ (1321-3)
सुथर चित भगत हित भेखु धरिओ हरनाखसु हरिओ नख बिदारि जीउ ॥ (1402-16)
सुध कवन पर होइबो सुच कुंचर बिधि बिउहार ॥४॥ (346-14)
सुध कहा होइ काची भीति ॥ (265-18)
सुध रस नामु महा रसु मीठा निज घरि ततु गुसांईं ॥ (1232-13)
सुधि बुधि सुरति नामि हरि पाईऐ सतसंगति गुर पिआर ॥२॥ (1256-1)
सुधि मति करतै सभ हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥ (316-12)
सुधि मति करतै हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥ (549-2)
सुधु न होईऐ काहू जतना ओड़कि को न पहूचे ॥१॥ (610-19)
सुधु भतारु हरि छोडिआ फिरि लगा जाइ विजोगु ॥ (785-8)
सुनत कमावत होत उधार ॥ (295-10)
सुनत कहत रहत गति पावहु ॥ (289-1)
सुनत जपत हरि नाम जसु ता की दूरि बलाई ॥ (814-9)
सुनत जसो कोटि अघ खए ॥२॥ (212-15)
सुनत जीओ जासु नामु ॥ (987-12)
सुनत पेखत संगि सभ कै प्रभ नेरहू ते नेरे ॥ (547-7)
सुनत संदेसिआ हां ॥१॥ रहाउ ॥ (410-19)
सुनत सदेसरो प्रिअ ग्रिहि सेज विछाई ॥ (737-16)
सुनतै सुनि मंनि बसाइआ ॥ (972-5)
सुनतो करता पेखत करता ॥ (862-4)

सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरजु एकु भइओ ॥ (856-5)
सुनहु बिनंती ठाकुर मेरे जीअ जंत तेरे धारे ॥ (631-3)
सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता ॥ (742-3)
सुनहु बेनंतीआ सुआमी मेरे राम ॥ (547-5)
सुनहु मीत ऐसा प्रेम पिआरु ॥ (391-14)
सुनहु रे तू कउनु कहा ते आइओ ॥ (999-16)
सुनहु लोका मै प्रेम रसु पाइआ ॥ (370-12)
सुनहु संत पिआरे बिनउ हमारे जीउ ॥ (678-9)
सुनहु सखी मनु मोहनि मोहिआ तनु मनु अम्रिति भीना ॥३॥ (764-13)
सुनहु सहेरी मिलन बात कहउ सगरो अहं मिटावहु तउ घर ही लालनु पावहु ॥ (830-5)
सुनि अंधली लोई बेपीरि ॥ (871-13)
सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥ (267-14)
सुनि अकथ कथा सुखवंती ॥ (977-13)
सुनि उपदेसु भए मन निरमल गुन गाए रंगि रांगी ॥१॥ (1267-11)
सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥ (293-4)
सुनि करि बचन करन आघाने ॥ (287-6)
सुनि करि बचन तुम्हारे सतिगुर मनु तनु मेरा ठारु थीओ ॥१॥ रहाउ ॥ (382-15)
सुनि गावउ गुर बचनारे ॥ (533-7)
सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥७॥ (287-17)
सुनि मन अकथ कथा हरि नाम ॥ (719-3)
सुनि मन गुरमुखि पावहि मानु ॥१॥ (1337-10)
सुनि मन मगन भए है पूरे माइआ डोल न लागी ॥ (335-1)
सुनि मन हरि कीरति अठसठि मजानु ॥ (1337-10)
सुनि मन हरि हरि नामु करि धिआनु ॥ (1337-10)
सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥ (271-4)
सुनि मेरी मनसा मनै माहि सति देखु बीचारि ॥ (808-5)
सुनि मोहे अनहत बैन ॥५॥ (837-15)
सुनि री सखी इह हमरी घाल ॥ (384-10)
सुनि सखीए प्रभ मिलण नीसानी ॥ (737-5)
सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥ (295-11)
सुनि सुनि आतम देव है भीने रसि रसि राम गोपाल रवईआ ॥६॥ (833-15)
सुनि सुनि जीवा सोइ तुम्हारी ॥ (388-13)
सुनि सुनि ही डराइआ ॥ (746-13)
सुनि स्रवन बानी पुरख गिआनी मनि निधाना पावहे ॥ (458-7)
सुनिबो सखी कंति हमारो कीअलो खसमाना ॥ (372-8)
सुनी न जाई सचु अम्रित काथा ॥ (376-10)
सुनीअत प्रभ तउ सगल उधारन ॥ (820-14)

सुनीऐ अवर अवर बिधि बुझीऐ बकन कथन रहता ॥१॥ रहाउ ॥ (498-9)
सुनीऐ बाजै बाज सुहावी ॥ (1266-18)
सुनु सखी पीअ महि जीउ बसै जीअ महि बसै कि पीउ ॥ (1377-6)
सुपनंतरु संसारु सभु बाजी सभु बाजी खेलु खिलावैगो ॥ (1311-2)
सुपन की बात सुनी पेखी सुपना नाम मंत्रु सतिगुरू द्रिड़ाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1300-1)
सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥ (279-2)
सुपन री संसारु ॥ (1229-11)
सुपना जिउ भए हां ॥ (411-1)
सुपनि इकु परतखि इकु इकस महि लीणउ ॥ (1394-13)
सुपनु भइआ भखलाए अंध ॥२॥ (885-15)
सुपने का सुपना भइआ संगि चलिआ कमाइआ ॥३॥ (813-12)
सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु ॥ (1352-5)
सुपने सेती चितु मूरखि लाइआ ॥ (707-15)
सुपनै आइआ भी गइआ मै जलु भरिआ रोइ ॥ (558-5)
सुपनै ऊभी भई गहिओ की न अंचला ॥ (1362-15)
सुपनै नामु न हरि लीआ ॥३॥ (1192-18)
सुपनै बिंदु न देई झरणा ॥ (952-19)
सुपनै बिंदु न देई झरना ॥ (1160-2)
सुपनै सुखु न देखनी बहु चिंता परजाले ॥३॥ (30-4)
सुपनै सुखु न पावई दुख महि सवै समाइ ॥२॥ (65-13)
सुपनै हभि रंग माणिआ मिठा लगड़ा मोहु ॥ (707-14)
सुप्रसंन गोपाल राइ काटै रे बंधन माइ गुर कै सबदि मेरा मनु राता ॥ (687-10)
सुप्रसंन देवा सफल सेवा भई पूरन घाला ॥ (249-8)
सुप्रसंन भए केसवा से जन हरि गुण गाहि ॥४॥ (203-10)
सुप्रसंन भए गुरदेव ॥ (295-14)
सुप्रसंन भए सतिगुर प्रभू कछु बिघनु न थीआ ॥१॥ (808-1)
सुफलु जनमु नानक तब हूआ जउ प्रभ जस महि पागिओ ॥२॥३॥ (1008-15)
सुबह निवाज सराइ गुजारउ ॥२॥ (792-17)
सुभंत तुयं अचुत गुणग्यं पूरनं बहुलो क्रिपाला ॥ (1354-7)
सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग ॥ (459-5)
सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग ॥ (522-16)
सुभ चितवनि दास तुमारे ॥ (627-9)
सुभ दिवस आए गहि कंठि लाए प्रभ ऊच अगम अपारे ॥ (546-6)
सुभ दिवस आए गहि कंठि लाए मिले अंतरजामीआ ॥ (778-9)
सुभ दिवस आए सहजि पाए सगल निधि प्रभ पागे ॥ (459-16)
सुभ बचन बोलि गुन अमोल ॥ (1229-10)
सुभ बचन रमणं गवणं साध संगेण उधरणह ॥ (1361-5)

सुभर कपड़ भोग नानक पिरी विहूणी ततीआ ॥३॥ (1102-6)
सुभर भरे न होवहि ऊणे जो राते रंगु लाई रे ॥ (156-8)
सुभर भरे नाही चितु डोलै मन ही ते मनु मानिआ ॥७॥ (1233-6)
सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥ (289-14)
सुभर सरवरि मैलु न धोवै ॥ (411-13)
सुभाइ अभाइ जु निकटि आवै सीतु ता का जाइ ॥ (1018-6)
सुभावत जैसे बैसंतर अलिपत सदा निरमलाइ ॥४॥ (1001-18)
सुमंत्र साध बचना कोटि दोख बिनासनह ॥ (1360-16)
सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥ (284-6)
सुमति देवहु संत पिआरे ॥ (1338-10)
सुमति पाए नामु धिआए गुरमुखि होए मेला जीउ ॥३॥ (102-7)
सुरंग रंगीले हरि हरि धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1163-11)
सुर तेतीसउ जेवहि पाक ॥ (1163-1)
सुर पवित्र नर देव पवित्रा खिनु बोलहु गुरमुखि बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (883-4)
सुर सिध गण गंधरब धिआवहि जख किंनर गुण भनी ॥ (455-18)
सुर सिध गण गंधरब मुनि जन गुण अनिक भगती गाइआ ॥ (249-2)
सुर सिध गण गंधरब मुनि जन सेख पीर सलार ॥ (64-6)
सुरखी पांचउ राखै सबै ॥ (344-17)
सुरग नरक अम्रित बिखु ए सभ तिउ कंचन अरु पैसा ॥ (220-6)
सुरग पइआल मिरत भूअ मंडल सरब समानो एकै ओही ॥ (207-5)
सुरग पवित्रा मिरत पवित्रा पइआल पवित्र अलोगनी ॥ (883-11)
सुरग बासु न बाछीऐ डरीऐ न नरकि निवासु ॥ (337-10)
सुरग मिरत पइआल भू मंडल सगल बिआपे माइ ॥ (676-4)
सुरग मुकति बैकुंठ सभि बांछहि निति आसा आस करीजै ॥ (1324-2)
सुरगै दीआ मोहणीआ इसतरीआ होवनि नानक सभो जाउ ॥ (142-5)
सुरता पंडितु ता का नाउ ॥१॥ (1256-7)
सुरति गई काली हू धउले किसै न भावै रखिओ घरे ॥ (1014-6)
सुरति पिआल सुधा रसु अम्रितु एहु महा रसु पेउ रे ॥३॥ (969-5)
सुरति मति चतुराई ता की किआ करि आखि वखाणीऐ ॥ (138-12)
सुरति मति चतुराई तेरी तू जाणाइहि जाणा राम ॥ (779-16)
सुरति मति चतुराई सोभा रूपु रंगु धनु माणु ॥ (1323-4)
सुरति मति नाही किछु गिआनि ॥ (894-10)
सुरति मति नाही चतुराई ॥ (750-15)
सुरति मति बुधि परगासु ॥ (889-9)
सुरति माहि जो निरते करते कथा बारता कहते ॥१॥ रहाउ ॥ (480-11)
सुरति मुई मरु माईए महल रुंनी दर बारे ॥ (580-16)
सुरति विहूणा कोइ न कीअ ॥ (24-19)

सुरति सति सति जसु सुनता ॥ (285-8)
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ (938-15)
सुरति सबदु धुनि अंतरि जागी ॥ (903-18)
सुरति सबदु रिद अंतरि जागी अमिउ झोलि झोलि पीजा हे ॥१३॥ (1074-11)
सुरति सबदु साखी मेरी सिंङी बाजै लोकु सुणे ॥ (877-9)
सुरति सिम्रिति दुइ कंनी मुंदा परमिति बाहरि खिंथा ॥ (334-16)
सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिस नो रखु ॥ (595-13)
सुरति होवै पति ऊगवै गुरबचनी भउ खाइ ॥ (18-3)
सुरती कै मारगि चलि कै उलटी नदरि प्रगासी ॥ (1329-14)
सुरती सुरति रलाईऐ एतु ॥ (878-6)
सुरते चुली गिआन की जोगी का जतु होइ ॥ (1240-7)
सुरपति नरपति नही गुन जानां ॥२॥ (691-17)
सुरमानंद भासकर आए ॥ (1430-9)
सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे संत जन करत नही पानं ॥ (1293-3)
सुरह की जैसी तेरी चाल ॥ (1196-16)
सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ॥१॥ (1293-4)
सुरि नर असुर अंतु नही पायउ ॥ (1405-4)
सुरि नर गण गंधरब छिअ दरसन आसासै ॥ (1393-12)
सुरि नर गण गंधरब मिलि आए अपूरब जंञ बणाई ॥ (775-6)
सुरि नर गण गंधरबे जपिओ रिखि बपुरै हरि गाइआ ॥ (995-14)
सुरि नर गण गंध्रब जसु गावहि सभ गावत जेत उपाम ॥ (719-5)
सुरि नर गण गंध्रब जिनि मोहे त्रिभवण मेखुली लाई ॥१॥ (92-14)
सुरि नर तिन की बाणी गावहि कोइ न मेटै भाई ॥३॥ (67-14)
सुरि नर दाधे लागी आगि ॥ (328-8)
सुरि नर देव असुर त्रै गुनीआ सगलो भवनु लुटिओ री ॥१॥ (384-2)
सुरि नर देव न पावहि मीता ॥ (1078-3)
सुरि नर देव ब्रहम ब्रहमादिक ॥ (535-10)
सुरि नर नाथ बेअंत अजोनी साचै महलि अपारा ॥ (489-13)
सुरि नर नाथ सचे सरणाई ॥४॥ (685-17)
सुरि नर नाथह नाथु तू निधारा आधारु ॥ (934-11)
सुरि नर नाथु साहिबु सभना सिरि भाइ मिलै भउ जाई हे ॥७॥ (1021-18)
सुरि नर मुनि जन अम्रितु खोजदे सु अम्रितु गुर ते पाइआ ॥ (918-15)
सुरि नर मुनि जन कउतक आए कोटि तेतीस उजानां ॥ (482-4)
सुरि नर मुनि जन खोजते सुख सागर गोपाल ॥ (297-12)
सुरि नर मुनि जन ता की सेव ॥ (1183-2)
सुरि नर मुनि जन तिनहू ते दूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (694-3)
सुरि नर मुनि जन लोचदे सो सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥४॥ (72-1)

सुरि नर विरति पखि करमी नाचे मुनि जन गिआन बीचारी ॥ (506-8)
सुरि नर सपत समुद्र किअ धारिओ त्रिभवण जासु ॥ (1399-8)
सुरि नर साधिक सिध सिख सेवंत धुरह धुरु ॥ (1406-14)
सुरि नर सुघड़ सुजाण गावहि जो तेरै मनि भावहे ॥ (566-15)
सुरि नर सुरि नर मुनि जन सहजि वखाणी राम ॥ (453-4)
सुरिजन भानी तां मनु मोहिआ ॥१॥ (384-7)
सुलतान खान करे खिन कीरे ॥ (1071-14)
सुलतान खान बादिसाह नही रहना ॥ (227-5)
सुलतान खान मलूक उमरे गए करि करि कूचु ॥ (64-7)
सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ॥ (1165-13)
सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ ॥ (14-8)
सुलही का हाथु कही न पहुचै सुलही होइ मूआ नापाकु ॥१॥ रहाउ ॥ (825-2)
सुलही ते नाराइण राखु ॥ (825-2)
सुहागु हमारो अब हुणि सोहिओ ॥ (372-9)
सुहावी कउणु सु वेला जितु प्रभ मेला ॥१॥ रहाउ ॥ (562-10)
सुहेला कहनु कहावनु ॥ (51-17)
सूआ पड़ावत गनिका तरी ॥ (874-9)
सूआ पिंजरि नही खाइ बिलासु ॥ (987-3)
सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥ (465-12)
सूकर कूकर जोनि भ्रमे तऊ लाज न आई ॥ (692-14)
सूकर जोनि वलि वलि अउतरै ॥३॥ (526-8)
सूकर सुआन गरधभ मंजारा ॥ (832-7)
सूके कासट हरे चलूल ॥ (898-17)
सूके ते फुनि हरिआ कीतोनु हरि धिआवहु चोज विडाणी हे ॥३॥ (1070-10)
सूके ते हरिआ थीआ नानक जपि भगवंत ॥२॥ (927-18)
सूके सरवरि पालि बंधावै लूणै खेति हथ वारि करै ॥ (479-12)
सूके हरे कीए खिन माहे ॥ (191-8)
सूकै नाही छाव धूप ॥ (1180-5)
सूख दूख इसु मन की बिरथा तुझ ही आगै सारै ॥१॥ (820-12)
सूख दूख इसु मन की बिरथा तुम ही आगै सारना ॥६॥ (915-7)
सूख दूख जन सम द्रिसटेता ॥ (266-9)
सूख दूख मुकति जोनि नानक लिखिओ लेख ॥१॥ (253-12)
सूख मंगल कलिआण जिसहि घरि तिस ही सरणी पाईऐ ॥ (1214-3)
सूख मंगल कलिआण सहज धुनि प्रभ के चरण निहारिआ ॥ (619-2)
सूख महल जा के ऊच दुआरे ॥ (739-13)
सूख सहज अनंद पावहि मिली निरमल थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (501-15)
सूख सहज अरु घनो अनंदा गुर ते पाइओ नामु हरी ॥ (822-19)

सूख सहज आनंद गुण गाउ ॥ (1143-18)
सूख सहज आनंद ग्रिह भउण ॥१॥ रहाउ ॥ (1137-8)
सूख सहज आनंद घणा नानक जन धूरा ॥ (399-1)
सूख सहज आनंद घणे ॥ (805-18)
सूख सहज आनंद घने ॥ (1149-8)
सूख सहज आनंद घनेरे नानक जीवै हरि गुणह वखाणि ॥२॥२६॥११२॥ (826-17)
सूख सहज आनंद घनेरे पतित पावन साधू धूरा ॥ (454-11)
सूख सहज आनंद घनेरे सतिगुर दीआ दिलासा ॥ (630-12)
सूख सहज आनंद तिना संगि उन समसरि अवर न दाते ॥१॥ (207-15)
सूख सहज आनंद नानक क्रिपा तेरी तरै भउन ॥३॥ (458-6)
सूख सहज आनंद नाम रसु अनहद बाणी सहज धुना ॥१०॥ (1079-12)
सूख सहज आनंद निवासे ॥१॥ (194-9)
सूख सहज आनंद बिसराम ॥१॥ रहाउ ॥ (742-6)
सूख सहज आनंद बिस्राम ॥३॥ (210-18)
सूख सहज आनंद भवन ॥ (888-18)
सूख सहज आनंद मंगल रस अचरज भई बडाई ॥ रहाउ ॥ (615-13)
सूख सहज आनंद मंगल रस जीवन का मूलु बाधिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (530-17)
सूख सहज आनंद मंगल सहित भव निधि पारि उतारे ॥ रहाउ ॥ (680-19)
सूख सहज आनंद रस जन नानक हरि गुण गाउ ॥४॥१७॥८७॥ (48-15)
सूख सहज आनंद लहहु ॥ (1147-14)
सूख सहज आनंद वुठे तितु घरि ॥ (524-6)
सूख सहज आनंद सगल सिउ वा कउ बिआधि न काई ॥१॥ रहाउ ॥ (701-9)
सूख सहज आनंद सुहेली ॥१॥ (379-1)
सूख सहज आनंद हरि नाउ ॥ (895-2)
सूख सहज आनंद हरि नाए ॥४॥४॥६॥ (864-1)
सूख सहज आनंदा ॥ (622-10)
सूख सहज आनंदु घना ॥ (387-8)
सूख सहज आनद गुण गावहु मनु तनु देह सुखाली ॥ रहाउ ॥ (620-3)
सूख सहज आनदु घणा प्रभ जपतिआ दुखु जाइ ॥ (963-3)
सूख सहज आनदु घणा हरि कीरतनु गाउ ॥ (400-18)
सूख सहज कलिआण रस पूरै गुरि कीन्ह ॥ (818-13)
सूख सहज दइआ का पोता ॥ (893-17)
सूख सहज नानक अनंद ता कै पूरन नाद ॥४॥८॥३८॥ (810-7)
सूख सहज मनि आवै सांति ॥३॥ (741-15)
सूख सहज मेरा धनु सोहागा ॥ (394-12)
सूख सहज रस महा अनंदा ॥ (194-18)
सूख सहज सदा आनंदा नानक दास दसाइणा ॥१५॥२॥७॥ (1078-16)

सूख सहज सांति आनंदा ॥ (194-15)
सूख सहज हरि नामु वखाना ॥ (104-3)
सूखम असथूल सगल भगवान ॥ (299-17)
सूखम महि जानै असथूलु ॥ (274-15)
सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु ॥ (466-1)
सूखहु दूख भए नित पाप कमाइणु ॥ (460-2)
सूखि अराधनु दूखि अराधनु बिसरै न काहू बेरा ॥ (700-16)
सूखी करै पसाउ दूख विसारसी ॥ (729-14)
सूखी हूं सुखु पाइ माइ न कीम गणी ॥२॥ (397-5)
सूखु भइआ दुखु दूरि पराना ॥ (103-8)
सूखु मन महि आइ वसिआ जामि तै फुरमाइआ ॥ (566-4)
सूखु संतन कै बिनसी चिंद ॥२॥ (676-16)
सूखु सहजु आनंदु संतन कै नानक गुर ते जाना ॥४॥६॥ (672-7)
सूखु सहजु इसु घर का जानिआ ॥ रहाउ ॥ (394-9)
सूची काइआ हरि गुण गाइआ ॥ (354-2)
सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥ (472-9)
सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥२॥ (472-10)
सूचै भाडै साचु समावै विरले सूचाचारी ॥ (597-9)
सूचै साचे ना लागै मलु ॥१३॥ (840-5)
सूत बिना कैसे मणी परोईऐ ॥ (872-10)
सूतकि करम न पूजा होइ ॥ (229-14)
सूतकु अगनि पउणै पाणी माहि ॥ (229-14)
सूतकु अगनि भखै जगु खाइ ॥ (413-15)
सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥ (472-15)
सूतकु जलि थलि सभ ही थाइ ॥ (413-15)
सूतकु भोजनु जेता किछु खाहि ॥३॥ (229-14)
सूतु एकु मणि सत सहंस जैसे ओति पोति प्रभु सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (485-3)
सूतु जनेऊ पड़ि गलि पावै ॥ (951-19)
सूतु पाइ करे बुरिआई ॥ (951-19)
सूते कउ जागतु कहै जागत कउ सूता ॥ (229-5)
सूतै सूत मिलाए कोरी ॥४॥३॥३६॥ (484-14)
सूदु वैसु पर किरति कमावै ॥ (164-2)
सूदु सूदु करि मारि उठाइओ कहा करउ बाप बीठुला ॥१॥ (1292-16)
सूधे सूधे रेगि चलहु तुम नतर कुधका दिवईहै रे ॥१॥ रहाउ ॥ (855-7)
सूने नगरि परे ठगहारे ॥२॥ (182-12)
सूमहि धनु राखन कउ दीआ मुगधु कहै धनु मेरा ॥ (479-19)
सूर न बीर न मीर न खानम संगि न कोऊ द्रिसटि निहारहु ॥ (1388-3)

सूर सरु सोसि लै सोम सरु पोखि लै जुगति करि मरतु सु सनबंधु कीजै ॥ (991-16)
सूरज किरणि न बिजुलि गैणारा ॥ (1033-17)
सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम ॥ (846-17)
सूरज चंदु करहि उजीआरा ॥ (329-4)
सूरजु एको रुति अनेक ॥ (12-18)
सूरजु एको रुति अनेक ॥ (357-17)
सूरजु चंदु उपाइ जोति समाणिआ ॥ (1279-6)
सूरजु चंदु सिरजिअनु अहिनिसि चलतु वीचारो ॥१॥ (580-8)
सूरजु चड़िआ पिंडु पड़िआ तेलु तावणि तातओ ॥ (439-3)
सूरजु चड़ै विजोगि सभसै घटै आरजा ॥ (1244-17)
सूरजु तपै अगनि बिखु झाला ॥ (1029-7)
सूरति देखि न भूलु गवारा ॥ (1077-17)
सूरति मूरति आदि अनूपु ॥ (686-3)
सूरदास मनु प्रभि हथि लीनो दीनो इहु परलोक ॥२॥१॥८॥ (1253-14)
सूरन महि सूरा तूं कहीअहि भोगन महि भोगी ॥ (507-14)
सूरबीर धीरज मति पूरा ॥ (890-19)
सूरबीर बचन के बली ॥ (392-16)
सूरबीर वरीआम किनै न होड़ीऐ ॥ (522-5)
सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥ (1105-5)
सूरी ऊपरि खेलना गिरै त ठाहर नाहि ॥१०९॥ (1370-6)
सूरु कि सनमुख रन ते डरपै सती कि सांचै भांडे ॥१॥ (338-11)
सूरु चरैं प्रिउ देखै नैनी निवि निवि लागै पांई ॥१॥ (1273-5)
सूरु मुकता ससी मुकता ब्रहम गिआनी अलिपाइ ॥ (1001-18)
सूरे एहि न आखीअहि अहंकारि मरहि दुखु पावहि ॥ (1089-13)
सूरे सेई आगै आखीअहि दरगह पावहि साची माणो ॥ (580-1)
सूहटु पिंजरि प्रेम कै बोलै बोलणहारु ॥ (1010-2)
सूहब ता सोहागणी जा मंनि लैहि सचु नाउ ॥ (785-14)
सूहब सूहब सूहवी ॥ (739-6)
सूहवीए निमाणीए सो सहु सदा सम्हालि ॥ (785-10)
सूहवीए सूहा वेसु छडि तू ता पिर लगी पिआरु ॥ (786-19)
सूहवीए सूहा सभु संसारु है जिन दुरमति दूजा भाउ ॥ (786-3)
सूहा रंगु दिन थोड़े होवै इसु जादे बिलम न लाइदा ॥७॥ (1066-9)
सूहा रंगु विकारु है कंतु न पाइआ जाइ ॥ (786-6)
सूहा रंगु सुपनै निसी बिनु तागे गलि हारु ॥ (786-15)
सूहा वेसु सभु उतारि धरे गलि पहिरै खिमा सीगारु ॥ (786-13)
सूही ॥ (793-18)
सूही ॥ (794-4)

सूही कबीर जी ॥ (792-10)
सूही कबीर जीउ ॥ (792-13)
सूही कबीर जीउ ललित ॥ (793-1)
सूही छंत महला ४ ॥ (776-14)
सूही महला १ ॥ (729-14)
सूही महला १ ॥ (729-8)
सूही महला १ ॥ (730-1)
सूही महला १ ॥ (730-18)
सूही महला १ ॥ (730-5)
सूही महला १ ॥ (752-15)
सूही महला १ ॥ (752-7)
सूही महला १ ॥ (766-6)
सूही महला १ काफी घरु १० (751-16)
सूही महला १ घरु २ (728-10)
सूही महला १ घरु ६ (729-1)
सूही महला १ घरु ७ (730-10)
सूही महला १ घरु ९ (751-1)
सूही महला १ सुचजी ॥ (762-14)
सूही महला ३ ॥ (754-5)
सूही महला ३ ॥ (756-18)
सूही महला ३ ॥ (769-19)
सूही महला ३ ॥ (769-6)
सूही महला ३ ॥ (770-14)
सूही महला ३ ॥ (771-10)
सूही महला ३ ॥ (772-5)
सूही महला ४ ॥ (731-12)
सूही महला ४ ॥ (731-19)
सूही महला ४ ॥ (732-17)
सूही महला ४ ॥ (732-5)
सूही महला ४ ॥ (733-12)
सूही महला ४ ॥ (733-19)
सूही महला ४ ॥ (733-2)
सूही महला ४ ॥ (734-11)
सूही महला ४ ॥ (735-14)
सूही महला ४ ॥ (735-8)
सूही महला ४ ॥ (736-3)
सूही महला ४ ॥ (773-16)

सूही महला ४ घरु २ (732-12)
सूही महला ४ घरु ५ (776-4)
सूही महला ४ घरु ६ (733-6)
सूही महला ४ घरु ७ (735-1)
सूही महला ५ ॥ (736-16)
सूही महला ५ ॥ (737-15)
सूही महला ५ ॥ (737-4)
सूही महला ५ ॥ (737-9)
सूही महला ५ ॥ (738-15)
सूही महला ५ ॥ (738-4)
सूही महला ५ ॥ (739-13)
सूही महला ५ ॥ (739-16)
सूही महला ५ ॥ (739-2)
सूही महला ५ ॥ (739-6)
सूही महला ५ ॥ (739-9)
सूही महला ५ ॥ (740-1)
सूही महला ५ ॥ (740-11)
सूही महला ५ ॥ (740-15)
सूही महला ५ ॥ (740-19)
सूही महला ५ ॥ (740-5)
सूही महला ५ ॥ (740-8)
सूही महला ५ ॥ (741-12)
सूही महला ५ ॥ (741-16)
सूही महला ५ ॥ (741-4)
सूही महला ५ ॥ (741-9)
सूही महला ५ ॥ (742-1)
सूही महला ५ ॥ (742-12)
सूही महला ५ ॥ (742-16)
सूही महला ५ ॥ (742-4)
सूही महला ५ ॥ (742-8)
सूही महला ५ ॥ (743-1)
सूही महला ५ ॥ (743-13)
सूही महला ५ ॥ (743-17)
सूही महला ५ ॥ (743-5)
सूही महला ५ ॥ (743-9)
सूही महला ५ ॥ (744-13)
सूही महला ५ ॥ (744-18)

सूही महला ५ ॥ (744-2)
सूही महला ५ ॥ (744-6)
सूही महला ५ ॥ (744-9)
सूही महला ५ ॥ (745-1)
सूही महला ५ ॥ (745-11)
सूही महला ५ ॥ (745-17)
सूही महला ५ ॥ (746-11)
सूही महला ५ ॥ (746-8)
सूही महला ५ ॥ (747-15)
सूही महला ५ ॥ (747-9)
सूही महला ५ ॥ (748-14)
सूही महला ५ ॥ (748-19)
सूही महला ५ ॥ (748-2)
सूही महला ५ ॥ (748-8)
सूही महला ५ ॥ (749-12)
सूही महला ५ ॥ (749-18)
सूही महला ५ ॥ (749-6)
सूही महला ५ ॥ (750-5)
सूही महला ५ ॥ (761-15)
सूही महला ५ ॥ (777-19)
सूही महला ५ ॥ (780-17)
सूही महला ५ ॥ (780-3)
सूही महला ५ ॥ (781-12)
सूही महला ५ ॥ (782-7)
सूही महला ५ ॥ (783-1)
सूही महला ५ ॥ (783-15)
सूही महला ५ गुणवंती ॥ (763-1)
सूही महला ५ घरु ३ (738-10)
सूही महला ५ घरु ३ ॥ (744-15)
सूही ललित ॥ (794-16)
सूही ललित कबीर जीउ ॥ (793-6)
सूहै वेसि कामणि कुलखणी जो प्रभ छोडि पर पुरख धरे पिआरु ॥ (786-11)
सूहै वेसि दोहागणी पर पिरु रावण जाइ ॥ (785-6)
सूहै वेसि पिरु किनै न पाइओ मनमुखि दझि मुई गावारि ॥ (787-1)
से असथल सोइन चउबारे ॥ (105-7)
से असथिर जिन गुर सबदु कमाइआ ॥४॥ (374-12)
से उझड़ि भरमि भवाईअहि जिउ झाड़ मिरगु भाले ॥१५॥ (309-9)

से उधरे जिन राम धिआए ॥ (1312-2)
से उबरे जि सतिगुर की सरना ॥३॥ (394-17)
से उबरे जो सतिगुर सरणीआ ॥ (1075-17)
से कंठि लाए जि भंनि घड़ाइ ॥ (1247-4)
से कर भले जिनी हरि जसु लेखा ॥ (103-3)
से करमहीण हरि नामु न धिआवहि ॥१॥ (353-6)
से कूकर सूकर गरधभ पवहि गरभ जोनी दयि मारे महा हतिआरे ॥३॥ (493-8)
से गावहि जिन मसतकि भागु है भाई भाइ सचै बैरागु ॥ (639-5)
से गुण गावहि साचे भावहि ॥ (1035-8)
से गुण मंञु न आवनी हउ कै जी दोस धरेउ जीउ ॥ (762-7)
से गुण मुझै न आवनी कै जी दोसु धरेह ॥४॥ (725-4)
से गुरसिख धनु धंनु है जिनी गुर उपदेसु सुणिआ हरि कंनी ॥ (590-18)
से चरण सुहावे जो हरि मारगि चले हउ बलि तिन संगि पछाणा जीउ ॥२॥ (103-3)
से छूटे सचु कार कमाई ॥ (1024-4)
से छोडि चलिआ खिन महि गवार ॥५॥ (1193-1)
से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ ॥ (310-6)
से जन उबरे जिन हरि भाइआ ॥ (936-3)
से जन जागे जिन नाम पिआरि ॥१॥ (160-16)
से जन जीवे जिन हरि मन माहि ॥ (1172-18)
से जन दरगह पावहि मानु ॥ (1143-18)
से जन धंनु जिन इक नामि लिव लाइ ॥ (666-2)
से जन निरमल ऊजले जि गुरमुखि नामि समाइ ॥ (1413-15)
से जन निरमल जो हरि लागे हरि नामे धरहि पिआरु ॥३॥ (1131-2)
से जन परवाणु होए जिन्ही इकु नामु दिड़िआ दुतीआ भाउ चुकाइआ ॥ (441-15)
से जन बाचे जो प्रभि राखे ॥ (352-15)
से जन बैरागी सचि लिव लागी आपणा आपु पछाणिआ ॥ (569-16)
से जन मिले धुरि आपि मिलाए ॥ (1057-10)
से जन राते गुर सबदि रंगाए ॥ (117-4)
से जन लागे गुर की पाई ॥२॥ (194-14)
से जन विरले जाणीअहि कलजुग विचि संसारि ॥ (1093-5)
से जन सचे जो गुर सबदि मिलाए ॥ (159-14)
से जन सचे निरमले जिन सतिगुर नालि पिआरु ॥ (65-16)
से जन सचे निरमले तिन मिलिआ मलु सभ जाए ॥ (585-7)
से जन सचे पावहि मोख दुआरु ॥ (123-9)
से जन सबदे सोहणे तितु सचै दरबारि ॥ (37-13)
से जन साचे जिनी साचु पछाणिआ ॥ (1174-13)
से जन साचे सदा सदा जिनी हरि रसु पीता ॥ (955-15)

से जन साचे साचै भाइ ॥ (1174-7)
से जन सुखीए सतिगुरि सचे लाए ॥ (1050-19)
से तैं लीने भगत राखि ॥ (1192-11)
से दरगह पैधे जाहि जिना हरि जपि लइआ ॥ (645-10)
से दरि साचै साचु कमावहि जिन गुरमुखि साचु अधारा ॥ (1234-19)
से दाड़ीआं सचीआ जि गुर चरनी लगंन्हि ॥ (1419-12)
से दुख आगै जि भोग बिलासे ॥ (1275-18)
से धंनि वडे वड पूरे हरि जन जिन्ह हरि धारिओ हरि उरछे ॥३॥ (1178-14)
से धंनु वडे सत पुरखा पूरे जिन गुरमति नामु धिआइआ ॥ (445-5)
से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जी जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥ (11-7)
से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जीउ जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥ (348-9)
से धनवंत गनी संसार ॥ (281-10)
से धनवंत जिन हरि प्रभु रासि ॥ (1184-1)
से धनवंत दिसहि घरि जाइ ॥ (1257-5)
से धनवंत सेई सचु साहा ॥ (1339-15)
से धनवंत हरि नामि लिव लाइ ॥ (663-14)
से धनवंत हरि नामु कमाइ ॥ (161-8)
से धनवंते से पतिवंते हरि की सरणि समाहि ॥ (1225-17)
से निरभउ जिन्ह भउ पइआ ॥ (1180-16)
से निरमल जो हरि साचे भाए ॥ (121-13)
से नेत्र परवाणु जिनी दरसनु पेखा ॥ (103-2)
से परवाणु जिनी हरि सिउ चितु लाइआ ॥ (1155-3)
से प्रभि राखे किरपा धारि ॥३॥ (228-6)
से फल कमि न आवन्ही ते गुण मै तनि हंन्हि ॥४॥ (729-6)
से बडभागी से पतिवंते सेई पूरे साहा ॥ (530-8)
से बिरखा हरीआवले जो गुरमुखि रहे समाइ ॥ (1282-13)
से भगत जिनी गुरमुखि सालाहिआ सचु सबदु नीसाणु ॥ (307-12)
से भगत तुधु भावदे सचै नाइ पिआरिआ ॥ (1280-13)
से भगत सचे तेरै मनि भाए ॥ (1056-4)
से भगत सतिगुर मनि भाए ॥ (1277-18)
से भगत से ततु गिआनी जिन कउ हुकमु मनाए ॥६॥ (506-11)
से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥४॥ (11-10)
से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥४॥ (348-13)
से भगत से सेवक मेरी जिंदुड़ीए जो प्रभ मेरे मनि भाणे राम ॥ (541-9)
से भगत से सेवका जिना हरि नामु पिआरा ॥ (733-16)
से भगत हरि भावदे जो गुरमुखि भाइ चलंनि ॥ (233-13)
से भाई से सजणा जो सचा सेवंनि ॥ (756-7)

से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७॥ (134-19)
से भी ढहदे डिठु मै मुंध न गरबु थणी ॥१॥ (1410-5)
से मथे निहचल रहे जिन गुरि धारिआ हथु ॥ (49-18)
से मनमुख जो सबदु न पछाणहि ॥ (1054-14)
से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी ॥ (11-4)
से मुकतु से मुकतु भए जिन्ह हरि धिआइआ जीउ तिन टूटी जम की फासी ॥ (348-7)
से मै गुण नाही हउ किआ करी दुहागणि ॥३॥ (561-7)
से मै गुण नाही हउ किउ मिला मेरी माइआ ॥३॥ (561-3)
से लाल भए गूड़ै रंगि राते जिन गुर मिलि हरि हरि गाइआ ॥३॥ (1003-13)
से वडभागी जि ओना मिलि रहे अनदिनु नामु लएनि ॥९॥ (755-10)
से वडभागी जि गुरि सेवा लाए ॥ (423-16)
से वडभागी जि तुधु धिआइदे जिन सतिगुरु मिलीऐ ॥ (304-16)
से वडभागी जिन सबदु पछाणिआ ॥ (1175-12)
से वडभागी जिनि तुम जाणे ॥ (102-12)
से वडभागी जिनी एको जाता ॥ (1047-19)
से वडभागी जिनी एको जाता सचे रहे समाई ॥९॥ (912-5)
से वडभागी जिनी पाइआ सहजे रहे समाइ ॥४॥ (68-11)
से वडभागी जिनी सतिगुरु पाइआ ॥ (1059-9)
से वडभागी जिन्ह नामु धिआइआ ॥ (361-9)
से वडभागी नानका जिन गुरमुखि परगटु होइ ॥१॥ (1285-18)
से वडभागी नानका जिना मनि इहु भाउ ॥४॥२४॥९४॥ (51-6)
से वडभागी नानका हरि हरि रिदै समालि ॥२॥ (514-16)
से वडभागी वड जाणीअहि जिन हरि रसु खाधा गुर भाइ ॥२॥ (41-13)
से वसतू सहि दितीआ मै तिन्ह सिउ लाइआ चितु जीउ ॥ (762-9)
से विरले जुग महि जाणीअहि जो गुरमुखि सचु रवे ॥ (312-17)
से संजोग करहु मेरे पिआरे ॥ (743-13)
से संतन हरि के मेरे मीत ॥ (863-16)
से सचि लागे जो तुधु भाए ॥ (119-16)
से सहजि सुहेले गुणह अमोले जगत उधारण आए ॥ (577-10)
से सहजि सुहेले जिन हरि हरि रसना भणिआ राम ॥ (577-9)
से सहीआ सोहागणी जिन कउ नदरि करेइ ॥ (38-6)
से साची दरगह भाणे राम ॥ (577-14)
से साह सचे वणजारिआ जिन हरि धनु पलै ॥ (1091-13)
से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥ (262-19)
से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥ (417-2)
से सीतल जिन सतिगुरु पाइआ ॥३॥ (192-11)
से सुखीए सचु साह से जिन सचा बिउहारु ॥ (962-6)

से सुखीए सदा सोहणे जिन्ह विचहु आपु गवाइ ॥ (1281-12)
से सैण से सजणा जि गुरमुखि मिलहि सुभाइ ॥ (643-12)
से हरि के चोर वेमुख मुख काले जिन गुर की पैज न भाइ ॥४॥ (881-5)
से हरि दरगह पैनाइआ मेरी जिंदुड़ीए अहिनिसि साचि समाणे राम ॥ (541-9)
से हरि नामु धिआवहि जो हरि रतिआ ॥ (646-4)
सेइ मुकत जि मनु जिणहि फिरि धातु न लागै आइ ॥ (490-18)
सेई उबरे जगै विचि जो सचै रखे ॥ (318-12)
सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ (9-4)
सेई तुधनो गावन्हि जो तुधु भावन्हि रते तेरे भगत रसाले ॥ (347-11)
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ (6-11)
सेई नाचहि जो तुधु भावहि जि गुरमुखि सबदु वीचारी ॥ (506-15)
सेई पुरख हरि सेवदे जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाही ॥ (649-5)
सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ ॥ (146-4)
सेई पूरे साह वखतै उपरि लड़ि मुए ॥ (145-19)
सेई बिचखण जंत जिनी हरि धिआइआ ॥ (652-18)
सेई भगत जि साचे भाणे ॥ (677-5)
सेई भगत जिन सचि चितु लाइआ ॥२॥ (1342-16)
सेई भगत जो तुधु भाणे ॥ (1270-18)
सेई भगत तेरै मनि भाए ॥ (122-10)
सेई भगत भगति से लागे नानक जो प्रभ भाणी ॥२॥५६॥७९॥ (1219-18)
सेई मुए जिन चिति न आवै ॥१॥ (1287-4)
सेई मुख दिसंन्हि नानक रते प्रेम रसि ॥१॥ (521-5)
सेई रहे अमाण जिना सतिगुरु भेटिआ ॥३॥ (1097-2)
सेई संत भले तुधु भावहि जिन्ह की पति पावहि थाइ ॥३॥ (368-16)
सेई सजण संत से सुखीए ठाकुर अपणे भाणे ॥ (577-15)
सेई साह भगवंत से सचु स्मपै हरि रासि ॥ (250-15)
सेई साह सचे वापारी सतिगुरि बूझ बुझाई हे ॥१३॥ (1021-6)
सेई सुंदर सोहणे ॥ (132-10)
सेई सुखीए चहु जुगी जिना नामु अखुटु अपारु ॥३॥ (26-11)
सेई होए भगत जिना किरपारीआ ॥१॥ (240-18)
सेख जु कहीअहि कोटि अठासी ॥ (1161-5)
सेख फरीदा पंथु सम्हारि सवेरा ॥४॥१॥ (794-16)
सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥४॥१॥ (488-11)
सेख मसाइक काजी मुला दरि दरवेस रसीद ॥ (53-12)
सेख सबूरी बाहरा किआ हज काबे जाइ ॥ (1374-9)
सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिआ ॥ (488-16)
सेखनागि तेरो मरमु न जानां ॥१॥ (691-16)

सेखा अंदरहु जोरु छडि तू भउ करि झलु गवाइ ॥ (551-17)
सेखा चउचकिआ चउवाइआ एहु मनु इकतु घरि आणि ॥ (646-13)
सेज इकेली खरी दुहेली मरणु भइआ दुखु माए ॥ (1108-14)
सेज इकेली नीद नहु नैनह पिरु परदेसि सिधाइओ ॥१॥ (624-7)
सेज एक एको प्रभु ठाकुरु ॥ (560-19)
सेज एक एको प्रभु ठाकुरु महलु न पावै मनमुख भरमईआ ॥ (837-1)
सेज एक पै मिलनु दुहेरा ॥२॥ (483-11)
सेज एक प्रिउ संगि दरसु न पाईऐ राम ॥ (543-2)
सेज विछाई कंत कू कीआ हभु सीगारु ॥ (1095-5)
सेज विछाई सरध अपारा ॥ (737-14)
सेज सधा सहजु छावाणु संतोखु सराइचउ सदा सील संनाहु सोहै ॥ (1398-1)
सेज सुखलीआ मनि गरबलीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (385-2)
सेज सुखाली अनदिनु हरि रावै ॥ (363-9)
सेज सुखाली जा प्रभु भाइआ हरि हरि नामि समाणे ॥ (772-10)
सेज सुखाली पिरु रवै हउमै त्रिसना मारि ॥६॥ (428-16)
सेज सुखाली बिगसै जीउ ॥ (971-13)
सेज सुखाली मुखि अम्रितु दीन्हा ॥ (476-7)
सेज सुखाली मेरे प्रभ भाणी सचु सीगारु बणाइआ ॥ (770-12)
सेज सुखाली सीतलु पवणा सहज केल रंग करणा जीउ ॥३॥ (100-5)
सेज सुहावी इहु मनु बिगसंदा जीउ ॥ (217-6)
सेज सुहावी जा पिरि रावी मिलि प्रीतम अवगण नसे ॥ (440-6)
सेज सुहावी रसि बनी ॥ (1184-9)
सेज सुहावी संगि मिलि प्रीतम अनद मंगल गुण गाए ॥ (803-7)
सेज सुहावी सदा पिरु रावे सचु सीगारु बणावणिआ ॥५॥ (110-19)
सेज सुहावी सदा पिरु रावै हरि वरु पाइआ नारि ॥ (651-12)
सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥ (136-5)
सेज सुहावी हरि रंगि रवै भगति भरे भंडार ॥ (38-12)
सेज सोहनी चंदनु चोआ नरक घोर का दुआरा ॥७॥ (642-6)
सेजड़ीआ सोइंन हीरे लाल जड़ंदीआ ॥ (1102-5)
सेजा सुहावी संगि पिर कै सात सर अम्रित भरे ॥ (436-1)
सेजा सुहावी संगि प्रभ कै आपणे प्रभ करि लए ॥ (547-15)
सेजै कंत महेलड़ी सूती बूझ न पाइ ॥ (54-12)
सेजै कंतु न आइओ एवै भइआ विकारु ॥२॥ (788-11)
सेजै कंतु न आवई नित नित होइ खुआरु ॥ (31-9)
सेजै रमतु नैन नही पेखउ इहु दुखु का सउ कहउ रे ॥१॥ रहाउ ॥ (482-7)
सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु ॥३॥ (787-17)
सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥४॥ (97-3)

सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥ (466-19)
सेव मुकंद करै बैरागी ॥ (875-7)
सेवउ साध गहउ ओट चरना नह बिसरै मुहतु चसाई ॥ रहाउ ॥ (609-5)
सेवउ साध संत चरनेरै ॥ (1304-14)
सेवक कउ एहा वडिआई जा कउ हुकमु मनाए ॥१॥ (1257-14)
सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥ (286-14)
सेवक कउ तुम सेवा दीनी दरसनु देखि अघाई ॥२॥ (610-16)
सेवक कउ दीनी अपुनी सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (191-9)
सेवक कउ निकटी होइ दिखावै ॥ (403-15)
सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥ (285-14)
सेवक कउ सेवा बनि आई ॥ (292-17)
सेवक का होइ सेवकु वरता करि करि बिनउ बुलाई ॥१७॥ (758-2)
सेवक की अरदासि पिआरे ॥ (562-19)
सेवक की ओड़कि निबही प्रीति ॥ (1000-2)
सेवक की मनसा पूरी भई ॥ (289-16)
सेवक की राखै निरंकारा ॥ (285-14)
सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥ (1403-12)
सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥१॥११॥ (1403-15)
सेवक गुरमुखि खोजिआ से हंसुले नामु लहंनि ॥२॥ (757-2)
सेवक जन बने ठाकुर लिव लागे ॥ (527-4)
सेवक जन सेवहि ते परवाणु जिन सेविआ गुरमति हरे ॥ (1114-18)
सेवक जन सेवहि ते परवाणु जिन सेविआ गुरमति हरे ॥३॥ (1115-2)
सेवक जन सेवहि से वडभागी रिद मनि तनि प्रीति लगावै ॥ (881-11)
सेवक तजि जगत सिउ सूती ॥ (872-3)
सेवक पंच नाही बिखु चाखी ॥ (1039-10)
सेवक पूर करमा सतिगुरि सबदि दिखालिआ राम ॥ (1110-17)
सेवक पैज रखै मेरा गोविदु सरणि परे उधरे ॥ (995-10)
सेवक भाइ मिले वडभागी जिन गुर चरनी मनु लागा ॥ (572-15)
सेवक भाइ वणजारिआ मित्रा गुरु हरि हरि नामु प्रगासि ॥ (82-16)
सेवक भाइ से जन मिले गुर सबदि सवारे ॥ (308-9)
सेवक भाइ से जन मिले जिन हरि जपु जपिआ ॥६॥ (787-14)
सेवक भै दूरि करन कलिमल दोख जारे ॥ (1230-6)
सेवक संत राजा राम मुरारी ॥४॥१९॥२५॥ (742-8)
सेवक सचे साह के सेई परवाणु ॥ (315-5)
सेवक सभि करदे सेव दरि नानकु जनु तेरा ॥५॥ (1096-4)
सेवक सिख पूजण सभि आवहि सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी ॥ (669-14)
सेवक सिख सदा अति लुभित अलि समूह जिउ कुसम सुबासे ॥ (1404-18)

सेवक सिख सभि वेखि वेखि जीवन्हि ओन्हा अंदरि हिरदै भाई ॥ (850-16)
सेवक सेव करहि सभि तेरी जिन सबदै सादु आइआ ॥ (599-15)
सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥ (465-10)
सेवक सेवहि करहि अरदासि ॥ (1067-13)
सेवक सेवहि गुरमुखि हरि जाता ॥ (126-17)
सेवक सेवहि भाउ करि लागा साउ पराणी ॥ (566-17)
सेवक सेवहि मंनि हुकमु अपारा ॥ (1054-2)
सेवक सेवहि सबदि सलाहहि ॥ (1057-4)
सेवक सेवि रहे सचि राते जो तेरै मनि भाणे ॥ (1233-17)
सेवक सेवि सदा सोहंते ॥१॥ (1339-3)
सेवक सो सेवा भले जिह घट बसै मुरारि ॥४॥१॥१२॥६३॥ (337-14)
सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥ (801-15)
सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥३॥ (898-18)
सेवकु कीनो सदा निहालु ॥ (289-17)
सेवकु जन की सेवा मागै पूरै करमि कमावा ॥ (802-12)
सेवकु ठाकुरु सभु तूहै तूहै गुरमती हरि चंग चंगना ॥ (1313-12)
सेवकु दासु भगतु जनु सोई ॥ (355-9)
सेवकु प्रभ कै लागै पाइ ॥ (686-8)
सेवकु लाइओ अपुनी सेव ॥ (887-5)
सेवकु लागो चरण सेव ॥ (1181-17)
सेवकु सेवा तां करे सच सबदि पतीणा ॥ (767-8)
सेवको गुर सेवा लागा जिनि मनु तनु अरपि चड़ाइआ राम ॥ (444-6)
सेवत रहे चितु जिन्ह का लागा आइआ तिन्ह का सफलु भइआ ॥१॥ (432-9)
सेवत सेवत सदा सेवि तेरै संगि बसतु है कालु ॥ (214-7)
सेवत सेवि सेवि साध सेवउ सदा करउ किरताए ॥ (820-6)
सेवत ही सुखु सांति सरीर ॥ (361-19)
सेवनि साई आपणा नित उठि सम्हालंन्हि ॥२॥ (787-10)
सेवहु सतिगुर देव अगै न मरहु डरि ॥ (519-12)
सेवहु सतिगुर समुंदु अथाहा ॥ (1043-5)
सेवहु साधू भाउ करि तउ निधि हरि पावउ ॥३॥ (400-6)
सेवा एक न जानसि अवरे ॥ (225-15)
सेवा कछू न जानऊ नीचु मूरखारे ॥१॥ (809-2)
सेवा करउ दास दासन की अनिक भांति तिसु करउ निहोरा ॥ (204-14)
सेवा करत होइ निहकामी ॥ (286-19)
सेवा करहि सेई फलु पावहि जिन्ही सचु कमाइआ ॥३॥ (432-12)
सेवा करी जे किछु होवै अपणा जीउ पिंडु तुमारा ॥ (635-4)
सेवा करी तुसाड़ीआ मै दसिहु मिता ॥ (965-13)

सेवा करे सु चाकरु होइ ॥ (728-13)
सेवा गुर चरानि हां ॥ (409-13)
सेवा ते सदा सुखु पाइआ गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥७॥ (125-19)
सेवा थाइ न पवई तिस की खपि खपि होइ खुआरु ॥ (1247-15)
सेवा थारी गुरहि टेक ॥१॥ रहाउ ॥ (210-16)
सेवा थोरी मागनु बहुता ॥ (738-11)
सेवा पूज करउ तिसु मूरति की नानकु तिसु पग चाटै ॥५॥११॥१३२॥ (208-7)
सेवा मंगै सेवको लाईआं अपुनी सेव ॥ (43-19)
सेवा लागे से वडभागे जुगि जुगि एको जाता ॥ (571-16)
सेवा सा तिसु भावसी संता की होइ छारु ॥ (137-2)
सेवा सा प्रभ भावसी जो प्रभु पाए थाइ ॥ (757-7)
सेवा साची नामि समाणी ॥ (664-12)
सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ (12-8)
सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ (378-4)
सेवा सुरति एक लिव लाइ ॥२॥ (222-13)
सेवा सुरति न जाणा काई तुम करहु दइआ किरमाइणा ॥१२॥ (1078-12)
सेवा सुरति न जाणीआ ना जापै आराधि ॥ (218-6)
सेवा सुरति बिभूत चड़ावै ॥ (411-14)
सेवा सुरति भगति इह साची विचहु आपु गवाईऐ ॥ (246-6)
सेवा सुरति रहसि गुण गावा गुरमुखि गिआनु बीचारा ॥ (1255-6)
सेवा सुरति सबदि चितु लाए ॥ (110-1)
सेवा सुरति सबदि वीचारि ॥ (1343-4)
सेवि सुआमी सतिगुरु दाता मन बंछत फल आईऐ ॥२॥ (213-6)
सेविहु साहिबु समर्थु आपणा पंथु सुहेला आगै होइ ॥ (579-16)
सेवी सतिगुर भाइ नामु निरंजना ॥ (752-17)
सेवी सतिगुरु आपणा हरि सिमरी दिन सभि रैण ॥ (136-15)
सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचंउ कोइ ॥ (660-9)
सेवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन ॥ (1292-2)
सै नंगे नह नंग भुखे लख न भुखिआ ॥ (1100-19)
सैना साध समूह सूर अजितं संनाहं तनि निम्रताह ॥ (1356-11)
सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥ (487-19)
सैनु भणै भजु परमानंदे ॥४॥२॥ (695-12)
सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥ (10-9)
सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥ (495-2)
सैसार गार बिकार सागर पतित मोह मान अंध ॥ (1306-7)
सैसारी आपि खुआइअनु जिनी कूड़ु बोलि बोलि बिखु खाइआ ॥ (145-15)
सैसारै विचि सोभ न पाइनी अगै जि करे सु जाणै करतारु ॥ (950-6)

सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥ (293-18)
सो अंतरि सो बाहरे बिनसे तह भरमा ॥ (816-12)
सो अउधूती जो धूपै आपु ॥ (952-15)
सो अउधूती सिव पुरि चड़ै ॥ (952-16)
सो अउधूतु ऐसी मति पावै ॥ (877-15)
सो अन रस नाही लपटाइओ ॥२॥ (186-9)
सो असथानु बतावहु मीता ॥ (385-14)
सो आराधे सासि सासि पिआरे राम नाम लिव लाइआ ॥१॥ (640-16)
सो इकांती जिसु रिदा थाइ ॥ (1180-17)
सो उदासी जि पाले उदासु ॥ (952-17)
सो उबरिआ माइआ अगनि ते ॥३॥ (211-14)
सो उबरै गुर सबदु बीचारै ॥२॥ (225-17)
सो ऐसा दातारु मनहु न वीसरै ॥ (958-2)
सो ऐसा प्रभु छोडि अपनी बिरथा अवरा पहि कहीऐ अवरा पहि कहि मन लाज मरासा ॥२॥ (860-8)
सो ऐसा राजा त्रिभवण धणी ॥४॥ (1292-12)
सो ऐसा राजा त्रिभवण पती ॥३॥ (1292-9)
सो ऐसा राजा स्री गोपालु ॥२॥ (1292-7)
सो ऐसा हरि दीबानु वसिआ भगता कै हिरदै तिनि रहदे खुहदे आणि सभि भगता अगै खलवाइआ ॥ (591-15)
सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े ता सरब सुख पावहि मेरे मना ॥१॥ (669-19)
सो ऐसा हरि नामु जपीऐ मन मेरे जु मन की त्रिसना सभ भुख गवाए ॥ (89-6)
सो ऐसा हरि नामु जपीऐ मन मेरे जो अंती अउसरि लए छडाए ॥ (89-5)
सो ऐसा हरि नामु धिआईऐ मन मेरे जो सभना उपरि हुकमु चलाए ॥ (89-4)
सो ऐसा हरि नित सेवीऐ मेरी जिंदुड़ीए जो सभ दू साहिबु वडा राम ॥ (541-2)
सो ऐसा हरि सभना का प्रभु सतिगुर कै वलि है तिनि सभि वरन चारे खाणी सभ स्रिसटि गोले करि सतिगुर अगै कार कमावण कउ दीए ॥ (851-14)
सो ऐसा हरि सेवहु मेरे मन हरि अंति छडावणहारा ॥१॥ (720-8)
सो ऐसा हरि सेवहु संतहु जा की ऊतम बाणी हे ॥२॥ (1070-9)
सो ऐसा हरि सेवि सदा मन मेरे जो तुधनो सभ दू रखि लईऐ ॥१॥ (861-11)
सो कत जानै पीर पराई ॥ (793-15)
सो कत डरै जि खसमु सम्हारै ॥ (677-1)
सो कबीरु रामै होइ निबरिओ ॥४॥५॥ (1158-15)
सो कमावै धुरि लिखिआ होइ ॥१॥ (222-11)
सो कमु सुहेला जो तेरी घाली ॥ (97-5)
सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु स्मबाहि ॥ (475-9)
सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥ (467-5)
सो करे जि तिसै रजाइ ॥२४॥१॥ सुधु (475-10)

सो करे जि सतिगुर भावसी गुरु पूरा घरी वसाइसी ॥ (310-12)
सो कहीऐ देवाना आपु न पछाणई ॥ (142-7)
सो काहे न करै प्रतिपार ॥२॥ (328-2)
सो किउ अंधा आखीऐ जि हुकमहु अंधा होइ ॥ (954-19)
सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै ॥ (290-1)
सो किउ बिसरै जि कीआ जानै ॥ (289-19)
सो किउ बिसरै जि घाल न भानै ॥ (289-19)
सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥ (290-1)
सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥ (290-2)
सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥ (290-1)
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जमहि राजान ॥ (473-9)
सो किउ मनहु विसारीऐ जा के जीअ पराण ॥ (16-3)
सो किउ मनहु विसारीऐ नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ (1011-15)
सो किउ मनहु विसारीऐ भाई जिस दी वडी है दाति ॥५॥ (639-7)
सो किउ मनहु विसारीऐ सदा सदा दातारु जीउ ॥ (751-14)
सो किउ मनहु विसारीऐ सभ जीआ का आधारु ॥६॥ (58-8)
सो किउ विसरै जिस के जीअ पराना ॥ (159-17)
सो किउ विसरै माउ मै जो रहिआ भरपूरे ॥७॥ (761-14)
सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ (349-7)
सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ (9-16)
सो किउ विसरै सभ माहि समाना ॥ (159-18)
सो किछु करि जितु छुटहि परानी ॥ (741-5)
सो किछु करि जितु मैलु न लागै ॥ (199-3)
सो किछु करै जि साथि न चालै इहु साकत का आचारु ॥२॥ (1200-6)
सो किछु करै जु चिति न होई ॥ (118-17)
सो किछु नाही जि मै ते होवै मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥२॥ (738-6)
सो किस कउ नदरि लै आवै तलै ॥३॥ (186-10)
सो कुलवंता जि सिमरै सुआमी ॥ (1150-3)
सो कूटनु मुकति बहु पावै ॥१॥ (872-15)
सो खत्री दरगह परवाणु ॥ (1411-18)
सो गिआनी जिनि सबदि लिव लाई ॥ (831-15)
सो गिआनी दरगह परवाणु ॥४॥३०॥ (25-5)
सो गिआनी सो बैसनौ पड़िहआ जिसु करी क्रिपा भगवान ॥ (1203-3)
सो गिआनु धिआनु जो तुधु भाई ॥ (100-8)
सो गिरही गंगा का नीरु ॥ (952-14)
सो गिरही जो निग्रहु करै ॥ (952-13)
सो गिरही सो दासु उदासी जिनि गुरमुखि आपु पछानिआ ॥ (1332-15)

सो गुर मिलि एकु पछाणै ॥ (1004-2)
सो गुरमुखि नामु जपिआ वडभागी तिन निंदक दुसट सभि पैरी पाए ॥ (89-6)
सो गुरु करउ जि साचु द्रिड़ावै ॥ (686-6)
सो गुरु करहु जि बहुरि न करना ॥ (327-5)
सो गुरू सो सिखु कथीअले सो वैदु जि जाणै रोगी ॥ (503-11)
सो गुरू सो सिखु है भाई जिसु जोती जोति मिलाइ ॥१॥ (602-18)
सो घटु छाडि अवघट कत धावा ॥१०॥ (340-13)
सो घरु गुरि नानक कउ दीआ ॥४॥३५॥१०४॥ (186-18)
सो घरु दयि वसाइआ ॥ (625-19)
सो घरु राखु वडाई तोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (12-17)
सो घरु राखु वडाई तोहि ॥१॥ रहाउ ॥ (357-17)
सो घरु लधा सहजि समधा हरि का नामु अधारा ॥ (576-16)
सो घरु सेवि जितु उधरहि मीत ॥ (898-2)
सो चेते जिसु आपि चेताए ॥ (1065-10)
सो छूटै महा जाल ते जिसु गुर सबदु निरंतरि ॥२॥ (397-1)
सो जनु आइआ प्रभ की सरना ॥ (1150-5)
सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥२॥ (189-9)
सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥३॥ (388-7)
सो जनु ऐसा मै मनि भावै ॥ (1126-18)
सो जनु जम की वाट न पाईऐ ॥३॥ (386-10)
सो जनु दुतरु पेखत नाही ॥ (899-15)
सो जनु दूखि न विआपीऐ ॥२॥ (211-14)
सो जनु नानक दरगह परवानु ॥२॥ (278-12)
सो जनु नानक पारगरामी ॥३॥ (1005-5)
सो जनु निरमलु जि गुरमुखि बूझै हरि चरणी चितु लाए ॥१॥ (491-7)
सो जनु निरमलु जिनि आपु पछाता ॥ (1046-1)
सो जनु पर घर जात न सोही ॥१॥ (330-16)
सो जनु परम गति पावै ॥ (623-6)
सो जनु मरता नित नित झूरि ॥२॥ (395-2)
सो जनु मिलिआ हरि पासी ॥ (801-4)
सो जनु मुकतु जिसु एक लिव लागी सदा रहै हरि नाले ॥ (796-19)
सो जनु रलाइआ ना रलै जिसु अंतरि बिबेक बीचारु ॥२॥ (28-17)
सो जनु रसना नामु उचारै ॥१॥ (190-4)
सो जनु सरब थोक का दाता ॥ (286-10)
सो जनु साचा जि अंतरु भाले ॥ (1065-3)
सो जनु साचा जि हउमै मारै ॥ (230-12)
सो जनु हमरै मनि चिति भावै ॥ (164-7)

सो जनु हरि रसु रसना चाखै ॥३॥ (1298-8)
सो जनु होआ सदा निहाला ॥४॥६॥१००॥ (396-1)
सो जपु तपु सेवा चाकरी जो खसमै भावै ॥ (1247-17)
सो जपु सो तपु जि सतिगुर भावै ॥ (509-12)
सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ ॥ (720-12)
सो जलु निरमलु कथत कबीरु ॥३॥२४॥ (328-9)
सो जलु बिनु भगवंत न पाईऐ ॥१॥ (323-14)
सो जागै जागावै सोई ॥१॥ (423-19)
सो जागै जिसु प्रभु किरपालु ॥ (182-14)
सो जागै जिसु सतिगुरु मिलै ॥ (1128-5)
सो जागै जो एको जाणै ॥ (1128-7)
सो जागै जो ततु बीचारै ॥ (1128-6)
सो जाणै जिनि दातै दीए ॥ (1030-19)
सो जाणै जिसु वेदन होवै ॥ (993-2)
सो जानै जिनि चाखिआ हरि नामु अमोला ॥ (808-17)
सो जापै जिसु सतिगुरु पूरा ॥ (1143-1)
सो जीवत जिह जीवत जपिआ ॥ (254-13)
सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ ॥ (142-10)
सो जोगी इह जुगति पछाणै गुर कै सबदि बीचारी जीउ ॥२॥ (1016-8)
सो जोगी केवल निहकामु ॥१॥ (1167-8)
सो जोगी गुर सबदु पछाणै अंतरि कमलु प्रगासु थीआ ॥ (940-16)
सो जोगी जुगति सो पाए जिस नो गुरमुखि नामु परापति होइ ॥ (556-15)
सो जोगी जो जुगति पछाणै ॥ (662-13)
सो जोगी ततु गिआनु बीचारे हउमै त्रिसना मारी ॥२२॥ (911-13)
सो जोगी मेरै मनि भावै ॥२॥ (223-17)
सो झूठा जो झूठे लागै झूठे करम कमाई ॥ (490-14)
सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ (968-1)
सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ (968-8)
सो ठगु ठगिआ ठउर मनु आवा ॥१८॥ (341-5)
सो ठाकुरु किउ मनहु विसारे ॥ (1085-18)
सो डरु केहा जितु डरि डरु पाइ ॥ (151-7)
सो डरै जि पाप कमावदा धरमी विगसेतु ॥ (84-11)
सो ढाढी गुणवंतु जिस नो प्रभ पिआरु ॥११॥ (962-19)
सो ढाढी धनु धंनु जिसु लोड़े निरंकारु ॥ (962-17)
सो ढाढी भागठु जिसु सचा दुआर बारु ॥ (962-18)
सो तनु जलै काठ कै संगा ॥१॥ (326-12)
सो तनु जलै काठ कै संगा ॥३॥ (325-14)

सो तनु धर संगि रूलिआ ॥३॥ (210-11)
सो तनु निरमलु जितु उपजै न पापु ॥ (198-8)
सो तपसी जिसु साधसंगु ॥ (1180-16)
सो तपा जि इहु तपु घाले ॥ (948-18)
सो तपु पूरा साई सेवा जो हरि मेरे मनि भाणी हे ॥११॥ (1071-1)
सो तरवरु चंदनु होइ निबरिओ ॥२॥ (1158-13)
सो तांबा कंचनु होइ निबरिओ ॥३॥ (1158-14)
सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई ॥३॥५॥ (632-12)
सो थानु मूड़ि निहचलु करि पाइआ ॥३॥ (390-12)
सो थानु सुहाइआ जो हरि मनि भाइआ ॥ (115-18)
सो दरसनु पाए जिसु होइ दइआलु ॥ (899-17)
सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ (6-4)
सो दरु कैसे छोडीऐ जो दरु ऐसा होइ ॥६६॥ (1367-19)
सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ (8-14)
सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब सम्हाले ॥ (347-3)
सो दरु रागु आसा महला १ (8-14)
सो दासु अदेसा काहे करै ॥ (899-16)
सो दासु दरगह परवानु ॥ (275-2)
सो दासु रखिआ अपणै कंठि लाइ ॥ (868-10)
सो दिनु आवन लागा ॥ (692-2)
सो दिनु मो कउ दीजै प्रभ जीउ जा दिन हरि जसु गाए ॥१॥ रहाउ ॥ (999-10)
सो दिनु सफलु गणिआ हरि प्रभू मिलाइआ राम ॥ (547-1)
सो दीआ न जाई खाइआ ॥ (655-16)
सो दीपकु अमरकु संसारि ॥ (971-11)
सो देही भजु हरि की सेव ॥१॥ (1159-7)
सो धंनु गुरू साबासि है हरि देइ सनेहा ॥ (726-8)
सो धंनु धनु हरि संतु साधू जो हरि प्रभ करते भावए ॥ (1115-16)
सो धंनु पुरखु जिसु नामि पिआरु ॥३॥ (664-19)
सो धनवंता जिनि प्रभु धिआइआ ॥ (1079-13)
सो धनवंता जिसु बुधि बिबेक ॥ (1150-2)
सो धनवंता सो वड साहा जो गुर चरणी मनु लावणिआ ॥५॥ (130-17)
सो धनु धनु हरि जनु वड पूरा जो भै बैरागि हरि गुण गावै ॥३॥ (1334-16)
सो धनु मित्रु न कांढीऐ जितु सिरि चोटां खाइ ॥ (1287-11)
सो धनु वखरु नामु रिदै हमारै ॥ (991-12)
सो धनु संचहु जो चालै नाले ॥३॥ (191-7)
सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥ (288-6)
सो धिआए पूरा जिसु करमु ॥१॥ (893-11)

सो धिआनु धरहु जि बहुरि न धरना ॥ (327-6)
सो नरकपाती होवत सुआनु ॥ (278-7)
सो नरु गरभ जोनि नही आवै ॥४॥ (414-19)
सो नरु जमै ना मरै ना आवै ना जाइ ॥ (19-12)
सो नरु बहुरि न जोनी पाइ ॥२॥ (887-7)
सो नामु जपै जिसु आपि जपाए ॥ (890-8)
सो नामु जपै जो जनु तुधु भावै ॥१॥ रहाउ ॥ (386-1)
सो निगुरा जो मरि मरि जमै निगुरे आवण जावणिआ ॥२॥ (117-11)
सो निरभउ गुर सबदि पछाणै ॥ (1042-11)
सो निरमलु जो सबदे सोहै ॥ (121-10)
सो निरमलु निरमल हरि गुन गावै ॥ (328-13)
सो निवाहू गडि जो चलाऊ न थीऐ ॥ (1099-4)
सो निसतरै जो पूजै पैर ॥ (1145-13)
सो निहकरमी जो सबदु बीचारे ॥ (128-15)
सो पंच सैल सुख मानै ॥ (655-17)
सो पंडितु गुर सबदु कमाइ ॥ (888-3)
सो पंडितु जो तिहां गुणा की पंड उतारै ॥ (1261-7)
सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥ (274-13)
सो पंडितु दरगह परवाणु ॥३॥ (1261-9)
सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥ (274-14)
सो पड़िआ सो पंडितु बीना गुर सबदि करे वीचारु ॥ (650-12)
सो पड़िआ सो पंडितु बीना जिन्ही कमाणा नाउ ॥ (1288-6)
सो पतिवंता जि आपु पछानी ॥२॥ (1150-3)
सो पतिवंता जिनि साधसंगु पाइआ ॥ (1079-13)
सो पतिवंता सो धनवंता ॥ (1071-16)
सो पदु रवहु जि बहुरि न रवना ॥ (327-6)
सो परवाणु जिसु रिदै वसाई ॥ (891-16)
सो पाए इहु पदु निरबाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (1182-7)
सो पाए जिसु वडभागी ॥ (627-18)
सो पाए पूरा सतगुरू जिसु धुरि मसतकि लिलाटि लिखोईऐ ॥ (587-10)
सो पाए पूरा सतिगुरू जिसु लिखिआ लिखतु लिलारे ॥ (307-19)
सो पाखंडी जि काइआ पखाले ॥ (952-19)
सो पातिसाहु साहा पति साहिबु नानक रहणु रजाई ॥१॥१॥ (347-15)
सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥१॥ (9-8)
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥ (6-15)
सो पावै जिसु लिखतु लिलेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (1304-14)
सो पिरु पिआरा मै नदरि न देखै हउ किउ करि धीरजु पावा ॥ (561-14)

सो पिरु मेरा एकु है एकसु सिउ लिव लाइ ॥ (428-8)
सो पिरु सचा सद ही साचा है ना ओहु मरै न जाए ॥ (583-14)
सो पिरु साचा सद ही साचा ना ओहु मरै न जाए ॥३॥ (583-17)
सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ (10-17)
सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ (348-1)
सो पूरा परधानु जिस नो बलु धरै ॥ (958-4)
सो प्रभि आपि तराइआ ॥ (622-8)
सो प्रभु अपुना सदा धिआईऐ सोवत बैसत खलिआ ॥ (782-1)
सो प्रभु कदे न वीसरै पिआरे नानक सद कुरबाणु ॥८॥२॥ (641-14)
सो प्रभु चिति न आइओ छुटैगी बेबाणि ॥ (43-2)
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥ (133-13)
सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करम ॥१॥ (1093-13)
सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करमि ॥१९॥ (1426-5)
सो प्रभु चिति न आवई विसटा के कीरे ॥ (707-7)
सो प्रभु जत कत पेखिओ नैणी ॥ (530-2)
सो प्रभु जाणीऐ सद संगि ॥ (405-3)
सो प्रभु तजि कत लागीऐ जिसु बिनु मरि जाईऐ राम ॥ (848-4)
सो प्रभु तजि मूड़े कत जाइ ॥१॥ (862-16)
सो प्रभु दूरि नाही प्रभु तूं है ॥ (354-4)
सो प्रभु धिआईऐ सभु किछु पाईऐ मरै न आवै जाई ॥ (924-18)
सो प्रभु नदरि न आवई मनमुखि बूझ न पाइ ॥ (36-2)
सो प्रभु नेरै हू ते नेरै ॥ (530-13)
सो प्रभु पाइआ कतहि न जाइआ सदा सदा संगि बैसा ॥ (576-19)
सो प्रभु प्रीतमु मनि वसै जि सभसै देइ अधारु ॥२॥ (38-13)
सो प्रभु मन ते बिसरत नाही ॥२॥ (177-14)
सो प्रभु मन मेरे सदा धिआइ ॥२॥ (862-18)
सो प्रभु मनहु न विसरै जिनि सभु किछु वसि कीता ॥२॥ (45-9)
सो प्रभु मेरा अति वडा गुरमुखि मेलाइसी ॥५॥ (510-12)
सो प्रभु सद ही सेवीऐ पाईअहि फल मंगे राम ॥ (848-12)
सो प्रभु साचा सद ही साचा साचा सभु आकारा ॥ (1131-14)
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥ (270-11)
सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥ (270-11)
सो बउरा जो आपु न पछानै ॥ (855-15)
सो बहुरि न कत ही धाइआ ॥३॥ (211-18)
सो बाजारी हम गुर माने ॥३॥ (872-18)
सो बूझै एहु बिबेकु जिसु बुझाए आपि हरि ॥ (646-19)
सो बूझै जिसु आपि बुझाइसी जिसु सतिगुरु पुरखु प्रभु सउला ॥ (1315-13)

सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ (1175-8)
सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ (363-19)
सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ (839-9)
सो बूझै जिसु आपि बुझाए गुर कै सबदि सु मुकतु भइआ ॥ (941-1)
सो बूझै जु दयि सवारिआ ॥१॥ (316-3)
सो बूझै जो सतिगुरु पाए ॥ (228-7)
सो बूझै होवै जिसु दाति ॥ (1256-11)
सो बूझै होवै वडभागी ॥५॥ (1343-2)
सो बैरागी जि उलटे ब्रहमु ॥ (953-2)
सो बैसनो है अपर अपारु ॥ (199-6)
सो बोलहि जो पेखहि आखी ॥ (894-8)
सो बोलु मेरे प्रभू देहि ॥ (1181-4)
सो ब्रहमंडि पिंडि सो जानु ॥ (1162-14)
सो ब्रहमणु जो बिंदै ब्रहमु ॥ (1411-16)
सो ब्रहमु अजोनी है भी होनी घट भीतरि देखु मुरारी जीउ ॥२॥ (597-19)
सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि ॥१॥ (1195-13)
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ॥४॥७॥ (324-19)
सो ब्राहमणु जो ब्रहमु बीचारै ॥ (662-14)
सो ब्राहमणु ब्रहमु जो बिंदे हरि सेती रंगि राता ॥ (68-2)
सो ब्राहमणु भला आखीऐ जि बूझै ब्रहमु बीचारु ॥ (1093-19)
सो भगउती जो भगवंतै जाणै ॥ (88-13)
सो भगता मनि वुठा सचि समाहरा ॥ (522-19)
सो भगतु जो गुरमुखि होवै हउमै सबदि जलाइआ राम ॥ (768-10)
सो भजि परि है गुर की सरना ॥ (1165-5)
सो भाई मेरै मनि भावै ॥१॥ रहाउ ॥ (328-13)
सो भूला जि प्रभू भुलाइआ ॥ (1004-3)
सो भूलै जिसु आपि भुलाए बूझै जिसै बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1344-2)
सो मंगा दानु गोसाईआ जितु भुख लहि जावै ॥ (1097-11)
सो मनु निरमलु जितु साचु अंतरि गिआन रतनु सारं ॥६॥ (505-18)
सो मनु निरमलु जो गुर संगि राची ॥३॥ (1271-12)
सो मरना गुर सबदि प्रगासिआ ॥१॥ (327-13)
सो माइआ लै गाडै धरै ॥ (1252-12)
सो मारगु संतन दूरारी ॥१॥ (393-13)
सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह ॥ (467-4)
सो मिलिआ जि हरि मनि भाइआ ॥ (1004-3)
सो मिलिआ जो प्रभू मिलाइआ जिसु मसतकि लेखु लिखांही ॥ (1207-11)
सो मिलै जिसु आपि मिलाए आपहु कोइ न पावैगा ॥१४॥ (1083-3)

सो मिलै जिसु लैहि मिलाई ॥६॥ (841-13)
सो मिलै जो बडभागो ॥१॥ रहाउ ॥ (338-5)
सो मुकता संसारि जि गुरि उपदेसिआ ॥ (519-5)
सो मुकता सागर संसारा ॥ (101-14)
सो मुकतु नानक जिसु सतिगुरु चंगा ॥२॥३॥३६॥ (1305-7)
सो मुखु जलउ जितु कहहि ठाकुरु जोनी ॥३॥ (1136-4)
सो मुनि जि मन की दुबिधा मारे ॥ (1128-16)
सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ॥ (1167-9)
सो मुलां जो मन सिउ लरै ॥ (1159-18)
सो मुला मलऊन निवारै सो दरवेसु जिसु सिफति धरा ॥६॥ (1084-1)
सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥ (292-11)
सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥ (278-8)
सो मूरखु जो आपु न पछाणई सचि न धरे पिआरु ॥४॥ (492-6)
सो मूरतु भला संजोगु है जितु मिलै गुसाई ॥ (709-8)
सो रमये कउ मिलै न सुपनै ॥२॥ (328-5)
सो रिदा सुहेला जितु रिदै तूं वुठा सभना के दातारा जीउ ॥१॥ (97-5)
सो रिदा सुहेला जितु हरि गुण गाईऐ ॥ (107-7)
सो रोवै जिसु बेदन होइ ॥ (413-7)
सो लगा सतिगुर सेव जा कउ करमु धुरि ॥६॥ (519-14)
सो लाला जीवतु मरै ॥ (363-1)
सो वडभागी जिसु गुर मसतकि हाथु ॥१॥ रहाउ ॥ (1155-18)
सो वडभागी जिसु नामि पिआरु ॥ (1150-1)
सो वडभागी निहचल थानु ॥ (197-16)
सो वडा जिनि राम लिव लाई ॥१॥ रहाउ ॥ (188-14)
सो वसै इतु घरि जिसु गुरु पूरा सेव ॥ (430-19)
सो संचिओ जितु भूख तिसाइओ ॥ (715-6)
सो संचै जो होछी बात ॥ (892-17)
सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥ (281-15)
सो संनिआसी जो सतिगुर सेवै विचहु आपु गवाए ॥ (1013-9)
सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥ (585-4)
सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥३॥ (585-6)
सो सचु तेरै नालि है गुरमुखि नदरि निहालि ॥ (755-12)
सो सचु मंदरु जितु सचु धिआईऐ ॥ (107-6)
सो सचु सलाही सदा सदा सचु सचे कीआ वडिआईआ ॥ (313-14)
सो सचु साहु जिसु घरि हरि धनु संचाणा ॥ (375-15)
सो सचु सेविहु सिरजणहारा ॥ (1053-8)
सो सतगुरु कहहु सभि धंनु धंनु जिनि हरि भगति भंडार लहाइआ ॥३॥ (586-18)

सो सतसंगति सबदि मिलै जो गुरमुखि चलै ॥ (956-5)
सो सतिगुरु जि सचु धिआइदा सचु सचा सतिगुरु इके ॥ (304-4)
सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥ (287-2)
सो सतिगुरु तिन कउ भेटिआ जिन कै मुखि मसतकि भागु लिखि पाइआ ॥७॥ (589-1)
सो सतिगुरु देखहु इक निमख निमख जिनि हरि का हरि पंथु बताइआ ॥ (586-17)
सो सतिगुरु धनु धंनु जिनि भरम गड़ु तोड़िआ ॥ (522-11)
सो सतिगुरु पिआरा मेरै नालि है जिथै किथै मैनो लए छडाई ॥ (588-2)
सो सतिगुरु पूजहु दिनसु राति जिनि जगंनाथु जगदीसु जपाइआ ॥ (586-16)
सो सतिगुरु पूरा धनु धंनु है जिनि हरि उपदेसु दे सभ स्रिस्टि सवारी ॥ (586-6)
सो सतिगुरु वाहु वाहु जिनि हरि सिउ जोड़िआ ॥ (522-11)
सो सतिगुरु सभना का मितु है सभ तिसहि पिआरी ॥ (589-17)
सो सतिगुरु सालाहीऐ जिदू एह सोझी पाइ ॥२॥ (994-18)
सो सतिगुरु सेविहु साध जनु जिनि हरि हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ (586-16)
सो सतिगुरू सा सेवा सतिगुर की सफल है जिस ते पाईऐ परम निधानु ॥ (734-13)
सो सफलु दरसनु देहु करते जिसु हरि हिरदै नामु सद चविआ ॥ (1115-17)
सो समझै जिसु गुरु करतारु ॥४॥ (1190-6)
सो समदरसी तत का बेता ॥ (292-10)
सो समरथु सिमरि सासि गिरासि ॥३॥ (197-9)
सो सम्रथु निज पति है दाता ॥४॥ (330-18)
सो सरब फल हरि लेइ ॥ (838-15)
सो सलिता गंगा होइ निबरी ॥१॥ (1158-12)
सो सहु चिति आइआ मंनि वसाइआ अवगण सभि विसारे ॥ (441-14)
सो सहु बिंद न विसरउ नानक जिनि सुंदरु रचिआ देहु ॥२॥ (706-11)
सो सहु मेरा रंगुला रंगे सहजि सुभाइ ॥ (756-14)
सो सहु सचा वीसरै ध्रिगु जीवणु संसारि ॥ (755-14)
सो सहु सांति न देवई किआ चलै तिसु नालि ॥ (948-1)
सो सहो अति निरमलु दाता जिनि विचहु आपु गवाइआ राम ॥ (771-17)
सो सांई जैं विसरै नानक सो तनु खेह ॥२॥ (707-5)
सो साचा मिलि साचे राचा ॥ (686-8)
सो साचा सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥१॥ (994-16)
सो साचा सालाहीऐ साची पति होई ॥३॥ (1012-8)
सो साजनु मेरा मनु चाहै ॥१॥ (240-10)
सो साजनु सो सखा मीतु जो हरि की मति देइ ॥ (298-8)
सो साधू इह पहुचनहारा ॥ (250-17)
सो साधू बैरागी सोई हिरदै नामु वसाए ॥ (29-14)
सो साहिबु रहिआ भरपूरि ॥ (330-16)
सो साहिबु सो सेवकु तेहा जिसु भाणा मंनि वसाई ॥ (1287-8)

सो साहु साचा जिसु हरि धनु रासि ॥ (936-19)
सो साहु सेवि जितु तोटि न आवै ॥ (743-7)
सो सिखु सखा बंधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै ॥ (601-18)
सो सिमरनु करि नही राखु उतारि ॥ (971-12)
सो सिमरनु तू अनदिनु पीउ ॥५॥ (971-13)
सो सिमरनु रखु कंठि परोइ ॥ (971-12)
सो सिमरनु राम नाम अधारु ॥ (971-17)
सो सिमरहु अनाथ को नाथु ॥ (184-10)
सो सिरु चुंच सवारहि काग ॥१॥ (330-2)
सो सीसु भला पवित्र पावनु है मेरी जिंदुड़ीए जो जाइ लगै गुर पैरे राम ॥ (540-3)
सो सुआमी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ॥१॥ (703-8)
सो सुआमी प्रभु रखको अंचलि ता कै लागु जीउ ॥ (926-19)
सो सुखदाता जि नामु जपावै ॥ (183-17)
सो सुखीआ जिसु भ्रमु गइआ ॥ (1180-17)
सो सुखीआ धंनु उसु जनमा नानक तिसु बलिहारी ॥२॥२॥ (712-2)
सो सुखीआ सभ ते ऊतमु सोइ ॥ (1338-6)
सो सुखीआ सो सदा सुहेला जो गुर मिलि गाइ गुनी ॥१॥ रहाउ ॥ (998-18)
सो सुखु मो कउ संत बतावहु ॥ (179-14)
सो सुखु साचा लहिआ ॥१॥ (621-13)
सो सुखु साधू संगि परीति ॥ (288-7)
सो सुखु हमहु न मांगिआ भावै ॥१॥ (330-6)
सो सुखु हमहु साचु करि जाना ॥२॥ (330-7)
सो सुरता सो बैसनो सो गिआनी धनवंतु ॥ (300-12)
सो सुरतानु छत्रु सिरि धरै ॥३॥ (1160-4)
सो सुरतानु जु दुइ सर तानै ॥ (1160-3)
सो सूचा जि करोधु निवारे ॥ (1059-18)
सो सूरा कुलवंतु सोइ जिनि भजिआ भगवंतु ॥ (300-12)
सो सूरा परधानु सो मसतकि जिस दै भागु जीउ ॥५॥ (132-13)
सो सेवकि राम पिआरी ॥ (879-6)
सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥ (281-16)
सो सेवकु चहु जुग चहु कुंट जानिआ ॥ (998-11)
सो सेवकु जम ते कैसा डरै ॥४॥ (661-15)
सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥ (269-12)
सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥ (285-15)
सो सेवकु जो लाइआ सेव ॥ (1159-11)
सो सेवकु दरगह पावै माणु ॥३॥ (661-14)
सो सेवकु नानक जिसु भागा ॥८॥६॥ (239-1)

सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥ (287-2)
सो सेवकु सेवा करे जिस नो हुकमु मनाइसी ॥ (471-12)
सो सेवकु हरि आखीऐ जो हरि राखै उरि धारि ॥ (28-18)
सो सेवहु जिसु माई न बापु ॥ (1343-15)
सो सेवहु जो कल रहिआ धारि ॥ (1129-16)
सो सेवहु सति निरंजनो हरि पुरखु बिधाती ॥ (138-7)
सो सो करता आपि कराई ॥१॥ (202-19)
सो सो करम करत है प्राणी जैसी तुम लिखि पाई ॥ (610-15)
सो सो पाइओ जु आपि दिवाइओ ॥ (251-17)
सो हम करह जु आपि कराए ॥४॥ (494-18)
सो हरि अंधुले की लाकरी ॥१॥ (874-8)
सो हरि जनु नामु धिआइदा हरि हरि जनु इक समानि ॥ (652-8)
सो हरि जनु हरि प्रभ भावै ॥ (879-7)
सो हरि जनु है भल भाल ॥ (977-18)
सो हरि जपै जिसु गुर मसतकि हाथु ॥ (1071-8)
सो हरि नैनहु की पूतरी ॥२॥ (874-10)
सो हरि पुरखु अगमु है कहु कितु बिधि पाईऐ ॥ (644-7)
सो हरि भजनु साध कै संगि ॥ (891-8)
सो हरि मेरा अंतरजामी ॥ (740-12)
सो हरि सदा धिआईऐ तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (81-17)
सो हरि सदा सरेवीऐ जिसु करत न लागै वार ॥ (1280-18)
सो हरि सरणाई छुटीऐ जो मन सिउ जूझै ॥ (1090-7)
सो हरि सेवहु नीता नीत ॥२॥ (1337-17)
सो हरि हरि तुम्ह सद ही जापहु जा का अंतु न पारो ॥१॥ (496-4)
सो हरि हरि नामु धिआवै हरि जनु जिसु बडभाग मथई ॥ (1320-8)
सो हरि हरि नामु सदा सदा समाले जिसु सतगुरु पूरा मेरा मिलिआ ॥ (562-5)
सो हेड़ा घड़ीआल जिउ डुखी रैणि विहाइ ॥४०॥ (1379-19)
सो होवत बिसटा का जंतु ॥ (278-7)
सो होवै जि करै चोज विडाणी ॥१॥ (1139-16)
सोइ अचिंता जागि अचिंता ॥ (1136-7)
सोइ रही प्रभ खबरि न जानी ॥ (389-8)
सोइ रहे माइआ मद माते ॥ (388-17)
सोइ सुणंदड़ी मेरा तनु मनु मउला नामु जपंदड़ी लाली ॥ (964-16)
सोइन कटोरी अम्रित भरी ॥ (1163-18)
सोइन लंका सोइन माड़ी स्मपै किसै न केरी ॥५॥ (155-8)
सोइन साखति पउण वेग ध्रिगु ध्रिगु चतुराई ॥ (1246-12)
सोई अजाणु कहै मै जाना जानणहारु न छाना रे ॥ (382-1)

सोई एकु नामु हरि नामु सति पाइओ गुर अमर प्रगासु ॥१॥५॥ (1399-9)
सोई कमावै जो प्रभ भावै ॥ (737-6)
सोई कमावै जो साहिब भावै सेवकु अंतरि बाहरि माहरु जीउ ॥२॥ (101-18)
सोई कमु कमाइ जितु मुखु उजला ॥ (397-14)
सोई कमु कमावणा कीआ धुरि मउलै ॥ (1102-16)
सोई करणा जि आपि कराए ॥ (108-15)
सोई करमु कमावै प्राणी जेहा तू फुरमाए ॥ (1117-15)
सोई कराइ जो तुधु भावै ॥ (626-17)
सोई करे जि हरि जीउ भावै ॥ (1173-14)
सोई काजी जिनि आपु तजिआ इकु नामु कीआ आधारो ॥ (24-10)
सोई कुचीलु कुदरति नही जानै ॥ (1151-13)
सोई कुसलु जु प्रभ जीउ करना ॥१॥ (1298-19)
सोई गिआनी जि सिमरै एक ॥ (1150-2)
सोई गिआनी सोई जनु तेरा जिसु ऊपरि रुच आवै ॥ (978-7)
सोई गिआनी सोई धिआनी सोई पुरखु सुभाई ॥ (610-17)
सोई गुपतु सोई आकारु ॥२॥ (387-17)
सोई चंदु चड़हि से तारे सोई दिनीअरु तपत रहै ॥ (902-15)
सोई चतुरु सिआणा पंडितु सो सूरा सो दानां ॥ (1221-18)
सोई जनु सोई निज भगता जिसु ऊपरि रंगु लावै ॥२॥ (978-9)
सोई जपु जो प्रभ जीउ भावै भाणै पूर गिआना जीउ ॥१॥ (100-8)
सोई जाणै करणैहारा कीता किआ बेचारा ॥ (883-18)
सोई जाणै सोई पछाणै जा कउ नदरि सिरंदे ॥ (779-17)
सोई जीउ न वजदा जिसु अलहु करदा सार ॥११०॥ (1383-18)
सोई ठाकुरु मनहु बिसारिआ ॥३॥ (195-11)
सोई दसि उपदेसड़ा मेरा मनु अनत न काहू जाइ जीउ ॥ (763-2)
सोई दिवसु भला मेरे भाई ॥ (395-5)
सोई दुहेला जगि जिनि नाउ विसारीआ ॥१४॥ (964-4)
सोई धिआईऐ जीअड़े सिरि साहां पातिसाहु ॥ (44-11)
सोई धुरंधरु सोई बसुंधरु हरि एक प्रेम रस पागै ॥१॥ रहाउ ॥ (1221-16)
सोई नानक सखा जीअ संगि कितो ॥१३॥ (1360-19)
सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥१॥ (1393-2)
सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥२॥ (1393-4)
सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥३॥ (1393-7)
सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥४॥ (1393-9)
सोई नामु पदारथु अमर गुर तुसि दीओ करतारि ॥६॥ (1393-15)
सोई नामु भगत भवजल हरणु गुर अमरदास तै पाइओ ॥५॥ (1393-13)
सोई नामु सिमरि गंगेव पितामह चरण चित अम्रित रसिआ ॥ (1393-8)

सोई नामु सिवरि नव नाथ निरंजनु सिव सनकादि समुधरिआ ॥ (1393-5)
सोई निहचलु आवै न जाइ ॥ (1338-6)
सोई निहचलु साच ठाइ ॥३॥ (1180-17)
सोई पछाता जिनहि उपाइआ ॥ (184-18)
सोई पुरखु जपै भगवानु ॥ (185-8)
सोई पुरखु जि सचि समाइ ॥३॥ (1256-11)
सोई पुरखु धंनु करता कारण करतारु करण समरथो ॥ (1391-2)
सोई पुरखु सिवरि साचा जा का इकु नामु अछलु संसारे ॥ (1392-17)
सोई पूरन पुरखु बिधाता ॥ (1086-12)
सोई फिरि कै तू भइआ जा कउ कहता अउरु ॥८७॥ (1369-2)
सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार ॥७॥ (346-17)
सोई बिधाता खिनु खिनु जपीऐ ॥ (1004-13)
सोई ब्रहमणु पूजण जुगतु ॥१६॥ (1411-17)
सोई भगतु गिआनी धिआनी तपा सोई नानक जा कउ किरपा कीजै ॥३॥१॥२९॥ (678-13)
सोई भगतु जपै नाम जाप ॥ (1147-12)
सोई भगतु दुखु सुखु समतु करि जाणै हरि हरि नामि हरि राता ॥ (574-11)
सोई भगतु सुघड़ु सोजाणा ॥ (1335-4)
सोई भगतु सोई वड दाता ॥ (1086-12)
सोई मउला जिनि जगु मउलिआ हरिआ कीआ संसारो ॥ (24-7)
सोई मरदु मरदु मरदाना ॥ (1084-11)
सोई मलीनु दीनु हीनु जिसु प्रभु बिसराना ॥ (813-8)
सोई मिलिओ जो भावतो जन नानक ठाकुर रहिओ समाइ ॥ (1305-13)
सोई मुकंदु दुरबल धनु लाधी ॥२॥ (875-7)
सोई मुकंदु मुकति का दाता ॥ (875-5)
सोई मुकंदु हमरा पित माता ॥१॥ (875-5)
सोई मुकता तिसु राजु मालु ॥ (392-5)
सोई मुकति जा कउ किरपा होइ ॥ (1261-11)
सोई मेरा सुआमी करनैहारु ॥ (1152-6)
सोई रामदासु गुरु बल्य भणि मिलि संगति धंनि धंनि करहु ॥ (1405-17)
सोई रामु सभै कहहि सोई कउतकहार ॥१९०॥ (1374-14)
सोई लखि मेटणा न होई ॥६॥ (340-8)
सोई लगै सचि जिसु तूं देहि अला ॥२॥ (397-15)
सोई वरतिआ जगत महि घटि घटि मुखि भणिआ ॥ (854-13)
सोई वरतै जगि जि कीआ तुधु धुरे ॥ (521-2)
सोई संतु जि भावै राम ॥ (867-14)
सोई सचु अराधणा भाई जिस ते सभु किछु होइ ॥ (608-14)
सोई सति सति है सोइ ॥ (388-15)

सोई सतिगुरु पुरखु है जिनि पंजे दूत कीते वसि छिके ॥ (304-4)
सोई सही संदेह निवारै ॥ (342-15)
सोई साजन मीतु पिआरा ॥ (108-5)
सोई सासतु सउणु सोइ जितु जपीऐ हरि नाउ ॥ (48-15)
सोई साहु सचा वणजारा जिनि वखरु लदिआ हरि नामु धनु तेरी ॥ (555-2)
सोई सिआणा सो पतिवंता हुकमु लगै जिसु मीठा जीउ ॥१॥ (108-15)
सोई सुआमी ईहा राखै बूझु बुधि बिबेक ॥१॥ (1007-7)
सोई सुगिआना सो परधाना जो प्रभि अपना कीता ॥ (453-2)
सोई सुहागनि कहै कबीरु ॥३॥२३॥ (328-6)
सोई सुहावा थानु जिथै पिरीए नानक जी तू वुठिआ ॥३॥ (1096-15)
सोई सेखु मसाइकु हाजी सो बंदा जिसु नजरि नरा ॥१४॥ (1084-11)
सोई सेवकु जे सतिगुर सेवे चालै सतिगुर भाए ॥ (753-11)
सोई सेविहु जीअड़े दाता बखसिंदु ॥ (321-10)
सोई सोई जागी ॥ (655-10)
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ (347-13)
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ (6-13)
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ (9-5)
सोई हमारा मीतु जो हरि गुण गावै सोइ ॥ (233-6)
सोई होआ जो तिसु भाणा अवरु न किन ही कीता ॥ (207-10)
सोई होइ जि करते भावै कहि कै आपु वञावणा ॥१३॥ (1086-13)
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥ (266-7)
सोऊ सरनि परै जिह पायं ॥ (250-16)
सोऊ सोऊ जपि दिन राती ॥ (260-15)
सोग अगनि तिसु जन न बिआपै ॥२॥ (684-1)
सोग अगनि महि मनु न विआपै आठ पहर गुण गावउ ॥१॥ (682-13)
सोग रोग बिपति अति भारी ॥ (742-19)
सोग संताप कटे प्रभि आपि ॥ (1184-16)
सोग हरख दुहहू महि नाहि ॥२॥ (1235-19)
सोग हरख महि आवण जाणा ॥ (192-10)
सोग हरख महि देह बिरधानी ॥ (888-14)
सोगु न बिआपै आपु न थापै साधसंगति बुधि पाई ॥ (609-7)
सोगु नाही सदा हरखी है रे छोडि नाही किछु लेतै ॥ (1302-8)
सोगु मिटै सभ ही सुख पावै ॥४३॥ (342-18)
सोगु विजोगु तिसु कदे न विआपै हरि प्रभि अपणी किरपा करी ॥३॥ (1254-13)
सोगु हरखु दुइ सम करि जाणै गुर परसादी सबदि उधरै ॥१॥ रहाउ ॥ (363-2)
सोच अंदेसा ता का कहा करीऐ जा महि एक घरी ॥१॥ रहाउ ॥ (499-15)
सोच करै दिनसु अरु राति ॥ (265-17)

सोचत साचत रैनि बिहानी ॥ (390-10)
सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥ (1-5)
सोढी स्रिस्टि सकल तारण कउ अब गुर रामदास कउ मिली बडाई ॥३॥ (1406-7)
सोदामा अपदा ते राखिआ गनिका पड़्हत पूरे तिह काज ॥ (1400-11)
सोधउ मुकति कहा देउ कैसी करि प्रसादु मोहि पाई है ॥१॥ रहाउ ॥ (1104-3)
सोधत सोधत ततु बीचारिओ भगति सरेसट पूरी ॥ (1221-1)
सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥ (281-17)
सोधत सोधत सोधि ततु बीचारिआ ॥ (761-19)
सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥ (260-7)
सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥ (891-8)
सोधि सगर सोधना सुखु नानका भजु नाउ ॥२॥२॥३९॥ (1306-2)
सोधे सासत्र सिम्रिति सगल ॥ (890-8)
सोना गढते हिरै सुनारा ॥२॥ (873-14)
सोभा ता की अपर अपार ॥ (1235-18)
सोभा पावै प्रभ कै दुआर ॥२॥ (1138-8)
सोभा बणी सीगारु खसमि जां रावीआ ॥ (964-9)
सोभा मेरी सभ जुग अंतरि ॥ (1141-12)
सोभा राज बिभै बडिआई ॥ (692-9)
सोभा सुरति नामि भगवंतु ॥ (197-13)
सोभा सुरति सुहावणी जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥२॥ (139-1)
सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार ॥ (54-9)
सोभा हीन नह भवंति नह पोहंति संसार दुखनह ॥ (1356-10)
सोभावंती कहीऐ नारि ॥३॥ (1277-14)
सोभावंती नारि है गुरमुखि गुण गाइआ ॥ (162-18)
सोभावंती सोहागणी जिन गुर का हेतु अपारु ॥२॥ (31-12)
सोमपाक अपरस उदिआनी ॥ (253-10)
सोमवारि सचि रहिआ समाइ ॥ (841-5)
सोमवारि ससि अम्रितु झरै ॥ (344-11)
सोरठि (656-6)
सोरठि गोंड मलारी धुनी ॥ (1430-16)
सोरठि घरु ३ ॥ (657-10)
सोरठि तामि सुहावणी जा हरि नामु ढंढोले ॥ (642-14)
सोरठि मः १ चउतुके ॥ (596-2)
सोरठि मः ३ ॥ (600-12)
सोरठि मः ३ दुतुके ॥ (602-17)
सोरठि मः ४ दुतुके ॥ (607-2)
सोरठि मः ५ ॥ (614-8)

सोरठि मः ५ ॥ (618-8)
सोरठि मः ५ ॥ (619-9)
सोरठि मः ५ ॥ (625-9)
सोरठि महला १ ॥ (596-17)
सोरठि महला १ ॥ (597-11)
सोरठि महला १ ॥ (597-16)
सोरठि महला १ ॥ (597-4)
सोरठि महला १ ॥ (598-18)
सोरठि महला १ ॥ (598-4)
सोरठि महला १ ॥ (636-3)
सोरठि महला १ घरु १ ॥ (595-10)
सोरठि महला १ घरु १ असटपदीआ चउतुकी (634-7)
सोरठि महला १ घरु १ चउपदे ॥ (595-3)
सोरठि महला १ घरु ३ (599-7)
सोरठि महला १ तितुकी ॥ (635-7)
सोरठि महला १ दुतुके ॥ (596-12)
सोरठि महला १ पंचपदे ॥ (598-10)
सोरठि महला १ पहिला दुतुकी ॥ (636-17)
सोरठि महला ३ ॥ (600-3)
सोरठि महला ३ ॥ (601-1)
सोरठि महला ३ ॥ (601-10)
सोरठि महला ३ ॥ (601-18)
सोरठि महला ३ ॥ (603-16)
सोरठि महला ३ ॥ (604-3)
सोरठि महला ३ ॥ (639-1)
सोरठि महला ३ घरु १ (599-14)
सोरठि महला ३ घरु १ ॥ (603-10)
सोरठि महला ३ घरु १ ॥ (603-4)
सोरठि महला ३ घरु १ तितुकी (637-12)
सोरठि महला ३ चौतुके ॥ (602-7)
सोरठि महला ३ दुतुकी ॥ (638-9)
सोरठि महला ४ ॥ (605-15)
सोरठि महला ४ ॥ (605-7)
सोरठि महला ४ ॥ (606-13)
सोरठि महला ४ ॥ (606-5)
सोरठि महला ४ ॥ (607-9)
सोरठि महला ४ घरु १ (604-10)

सोरठि महला ४ चउथा ॥ (604-18)
सोरठि महला ४ पंचपदा ॥ (607-15)
सोरठि महला ५ ॥ (609-15)
सोरठि महला ५ ॥ (609-9)
सोरठि महला ५ ॥ (610-1)
सोरठि महला ५ ॥ (610-19)
सोरठि महला ५ ॥ (610-7)
सोरठि महला ५ ॥ (611-11)
सोरठि महला ५ ॥ (611-6)
सोरठि महला ५ ॥ (612-11)
सोरठि महला ५ ॥ (612-17)
सोरठि महला ५ ॥ (612-5)
सोरठि महला ५ ॥ (613-10)
सोरठि महला ५ ॥ (613-4)
सोरठि महला ५ ॥ (614-13)
सोरठि महला ५ ॥ (614-19)
सोरठि महला ५ ॥ (614-2)
सोरठि महला ५ ॥ (615-11)
सोरठि महला ५ ॥ (615-17)
सोरठि महला ५ ॥ (615-6)
सोरठि महला ५ ॥ (616-10)
सोरठि महला ५ ॥ (616-4)
सोरठि महला ५ ॥ (617-12)
सोरठि महला ५ ॥ (617-16)
सोरठि महला ५ ॥ (617-5)
सोरठि महला ५ ॥ (617-9)
सोरठि महला ५ ॥ (618-11)
सोरठि महला ५ ॥ (618-15)
सोरठि महला ५ ॥ (618-18)
सोरठि महला ५ ॥ (618-2)
सोरठि महला ५ ॥ (618-5)
सोरठि महला ५ ॥ (619-13)
सोरठि महला ५ ॥ (619-16)
सोरठि महला ५ ॥ (619-2)
सोरठि महला ५ ॥ (619-6)
सोरठि महला ५ ॥ (620-1)
सोरठि महला ५ ॥ (620-13)

सोरठि महला ५ ॥ (620-17)
सोरठि महला ५ ॥ (620-5)
सोरठि महला ५ ॥ (620-8)
सोरठि महला ५ ॥ (621-12)
सोरठि महला ५ ॥ (621-18)
सोरठि महला ५ ॥ (621-2)
सोरठि महला ५ ॥ (622-10)
सोरठि महला ५ ॥ (622-15)
सोरठि महला ५ ॥ (622-5)
सोरठि महला ५ ॥ (623-14)
सोरठि महला ५ ॥ (623-2)
सोरठि महला ५ ॥ (623-8)
सोरठि महला ५ ॥ (624-1)
सोरठि महला ५ ॥ (624-14)
सोरठि महला ५ ॥ (625-19)
सोरठि महला ५ ॥ (625-3)
सोरठि महला ५ ॥ (626-10)
सोरठि महला ५ ॥ (626-13)
सोरठि महला ५ ॥ (626-17)
सोरठि महला ५ ॥ (626-3)
सोरठि महला ५ ॥ (626-7)
सोरठि महला ५ ॥ (627-1)
सोरठि महला ५ ॥ (627-11)
सोरठि महला ५ ॥ (627-15)
सोरठि महला ५ ॥ (627-19)
सोरठि महला ५ ॥ (627-5)
सोरठि महला ५ ॥ (627-8)
सोरठि महला ५ ॥ (628-12)
सोरठि महला ५ ॥ (628-16)
सोरठि महला ५ ॥ (628-19)
सोरठि महला ५ ॥ (628-3)
सोरठि महला ५ ॥ (628-7)
सोरठि महला ५ ॥ (629-11)
सोरठि महला ५ ॥ (629-14)
सोरठि महला ५ ॥ (629-18)
सोरठि महला ५ ॥ (629-4)
सोरठि महला ५ ॥ (629-7)

सोरठि महला ५ ॥ (630-14)
सोरठि महला ५ ॥ (630-18)
सोरठि महला ५ ॥ (630-2)
सोरठि महला ५ ॥ (630-5)
सोरठि महला ५ ॥ (630-9)
सोरठि महला ५ ॥ (631-3)
सोरठि महला ५ ॥ (631-6)
सोरठि महला ५ ॥ (640-14)
सोरठि महला ५ घरु १ ॥ (610-13)
सोरठि महला ५ घरु १ असटपदीआ (639-12)
सोरठि महला ५ घरु १ चौतुके ॥ (608-11)
सोरठि महला ५ घरु १ तितुके (608-3)
सोरठि महला ५ घरु २ ॥ (613-16)
सोरठि महला ५ घरु २ असटपदीआ (641-16)
सोरठि महला ५ घरु २ चउपदे (611-18)
सोरठि महला ५ घरु २ दुपदे (617-1)
सोरठि महला ५ घरु ३ चउपदे (621-6)
सोरठि महला ५ घरु ३ दुपदे (625-15)
सोरठि महला ५ दुतुके ॥ (609-3)
सोरठि महला ५ पंचपदा ॥ (616-15)
सोरठि महला ९ (631-10)
सोरठि महला ९ ॥ (631-14)
सोरठि महला ९ ॥ (631-17)
सोरठि महला ९ ॥ (632-13)
सोरठि महला ९ ॥ (632-17)
सोरठि महला ९ ॥ (632-4)
सोरठि महला ९ ॥ (632-8)
सोरठि महला ९ ॥ (633-11)
सोरठि महला ९ ॥ (633-15)
सोरठि महला ९ ॥ (633-2)
सोरठि महला ९ ॥ (633-6)
सोरठि महला ९ ॥ (634-1)
सोरठि सदा सुहावणी जे सचा मनि होइ ॥ (642-11)
सोरठि सो रसु पीजीऐ कबहू न फीका होइ ॥ (1425-6)
सोरठे ॥ (1408-7)
सोरह मधे पवनु झकोरिआ आकासे फरु फरिआ ॥२॥ (970-12)
सोलह असटपदीआ गुआरेरी गउड़ी कीआ ॥ (228-10)

सोलह कला स्मपूरन फलिआ ॥ (1081-2)
सोलह कीए सीगार कि अंजनु पाजिआ ॥ (1361-16)
सोवंन ढाला क्रिसन माला जपहु तुसी सहेलीहो ॥ (567-10)
सोवत जागि हरि हरि हरि गाइआ नानक गुर चरन पराते ॥२॥८॥ (530-1)
सोवत हरि जपि जागिआ पेखिआ बिसमादु ॥ (814-17)
सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ ॥ (60-13)
सोहं सो जा कउ है जाप ॥ (1162-14)
सोहंदड़ो हभ ठाइ कोइ न दिसै डूजड़ो ॥ (80-13)
सोहणे नक जिन लमड़े वाला ॥ (567-9)
सोहनि खसम दुआरि जि सतिगुरु सेवही ॥१५॥ (1285-2)
सोहनि खसमै पासि हुकमि सिधारीआ ॥ (148-13)
सोहनि भगत प्रभू दरबारे ॥ (1034-10)
सोहनि सचि दुआरि नामु पिआरिआ ॥ (86-16)
सोहनी सरूपि सुजाणि बिचखनि ॥ (374-2)
सोहागणी आपि सवारीओनु लाइ प्रेम पिआरु ॥ (426-12)
सोहागणी करम कमावदीआ सेई करम करेइ ॥ (31-16)
सोहागणी किआ करमु कमाइआ ॥ (72-5)
सोहागणी जाइ पूछहु मुईए जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥ (568-3)
सोहागणी महलु पाइआ विचहु आपु गवाइ ॥ (430-9)
सोहागणी विचि रंगु रखिओनु सचै अलखि अपारि ॥ (426-14)
सोहागणी सदा पिरु पाइआ हउमै आपु गवाइ ॥ (428-6)
सोहागणी सदा मुखु उजला गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (559-7)
सोहागणी सीगारु बणाइआ गुण का गलि हारु ॥ (426-15)
सोहागनि उरवारि न पारि ॥ (872-6)
सोहागनि किरपन की पूती ॥ (872-3)
सोहागनि गलि सोहै हारु ॥ (871-16)
सोहागनि भवन त्रै लीआ ॥ (872-5)
सोहागनि है अति सुंदरी ॥ (872-4)
सोहिअड़े सोहिअड़े मेरे बंक दुआरे राम ॥ (452-14)
सोहिलड़ा प्रभ सोहिलड़ा अनहद धुनीऐ सोहिलड़ा ॥ (924-17)
सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे ॥१॥ (772-8)
सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे राम ॥ (772-5)
सोहिलड़े अगिआनी गाए ॥ (1032-15)
सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १ (12-10)
सोहे बंक दुआर सगला बनु हरा ॥ (847-15)
स्मपउ संची भए विकार ॥ (222-6)
स्मपत दोल झोल संगि झूलत माइआ मगन भ्रमत घुघना ॥ (1387-16)

स्मपत हरखु न आपत दूखा रंगु ठाकुरै लागिओ ॥१॥ (215-1)
स्मपति बिपति पटल माइआ धनु ॥ (486-19)
स्मपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ ॥ (727-3)
स्मपै कउ ईसरु धिआईऐ ॥ (937-9)
स्मपै कारणि चाकर चोर ॥ (937-10)
स्मपै देखि न हरखीऐ बिपति देखि न रोइ ॥ (337-12)
स्मपै पुरबि लिखे की पाईऐ ॥ (937-10)
स्मपै साथि न चालै होर ॥ (937-10)
स्मपै हेतु कलतु धनु तेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (1158-1)
स्मबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ (12-14)
स्मबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ (157-12)
स्रपनी जीती कहा करै जमरा ॥३॥ (480-19)
स्रपनी ते आन छूछ नही अवरा ॥ (480-19)
स्रपनी स्रपनी किआ कहहु भाई ॥ (480-18)
स्रब का प्रभ धनी हां ॥ (409-18)
स्रब निधान पूरन गुरदेव ॥१॥ रहाउ ॥ (806-2)
स्रब सीगार त्मबोल रस सणु देही सभ खाम ॥ (133-9)
स्रमु करते दम आढ कउ ते गनी धनीता ॥३॥ (810-1)
स्रमु थाका पाए बिस्रामा मिटि गई सगली धाई ॥१॥ (1000-8)
स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥ (278-13)
स्रमु मिटिआ मेरी हती बलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (189-16)
स्रवण त पर सकयथ स्रवणि गुरु अमरु सुणिजै ॥ (1394-6)
स्रवण सोए सुणि निंद वीचार ॥ (182-9)
स्रवण स्रोत रजे गुरबाणी जोती जोति मिलाई हे ॥१४॥ (1023-8)
स्रवणी कीरतनु सिमरनु सुआमी इहु साध को आचारु ॥ (1222-9)
स्रवणी कीरतनु सुनउ दिनु राती हिरदै हरि हरि भानी ॥३॥ (1200-1)
स्रवणी नामु सुणै हरि बाणी नानक हरि रंगि रंगाइआ ॥१५॥३॥२०॥ (1041-13)
स्रवणी सुणउ बिमल जसु सुआमी ॥ (1080-4)
स्रवणी सुणी कहाणीआ जे गुरु थीवै किरपालि ॥४॥ (761-11)
स्रवणी सुणी त इहु मनु त्रिपतै गुरमुखि अम्रितु पीवा ॥ (690-6)
स्रवणी सुणीऐ रसना गाईऐ हिरदै धिआईऐ सोई ॥ (611-9)
स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥१॥ रहाउ ॥ (631-11)
स्रवन सुनन भगति करन अनिक पातिक पुनहचरन ॥ (1230-4)
स्रवन सुनीजै अम्रित कथा ॥ (386-8)
स्रवनन बिकल भए संगि तेरे इंद्री का बलु थाका ॥ (480-13)
स्रवनि न सुरति नैन सुंदर नही आरत दुआरि रटत पिंगुरीआ ॥१॥ (203-2)
स्रवनी कथा नैन दरसु पेखउ मसतकु गुर चरनारी ॥४॥२॥१२२॥ (401-17)

स्रवनी सुनउ हरि हरि हरे ठाकुर जसु गावउ ॥ (812-1)
स्रिजंत रतन जनम चतुर चेतनह ॥ (1356-4)
स्रिसटा करै सु निहचउ होइ ॥ (937-9)
स्रिसटि उपाइ आपे सभु वेखै ॥ (842-6)
स्रिसटि उपाइ काइआ गड़ राजे ॥ (1037-11)
स्रिसटि उपाइ कीआ पासारा ॥ (1038-5)
स्रिसटि उपाइ दुखा सुख दीए ॥ (1032-17)
स्रिसटि उपाइ धरी सभ धरणा ॥ (1076-14)
स्रिसटि उपाइ रहे प्रभ छाजै ॥ (1028-4)
स्रिसटि उपाई जोती तू जाति ॥ (413-14)
स्रिसटि सगल उधरी नामि ले तरिओ निरंतरि ॥ (1390-4)
स्रिसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही ॥३॥ (663-2)
स्रिसटे भेउ न जाणै कोइ ॥ (937-9)
स्री कबीर जीउ का चउपदा घरु २ दूजा ॥ (524-8)
स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥१॥ (1405-6)
स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥२॥ (1405-9)
स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥३॥ (1405-12)
स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥४॥ (1405-14)
स्री गुरदेवए नमह ॥१॥ (262-9)
स्री गुरू राजु अबिचलु अटलु आदि पुरखि फुरमाइओ ॥७॥ (1390-10)
स्री गुरू सरणि भजु कल्य कबि भुगति मुकति सभ गुरू लगि ॥११॥ (1398-6)
स्री गोपालु न उचरहि बलि गईए दुहचारणि रसना राम ॥ (848-6)
स्री प्रहलाद भगत उधरीअं ॥ (1401-9)
स्री राम नामा उचरु मना ॥ (155-11)
स्री रामचंद जिसु रूपु न रेखिआ ॥ (1082-9)
स्री सति नामु करता पुरखु गुर रामदास चितह बसै ॥१॥ (1404-5)
स्री सतिगुर सुप्रसंन कलजुग होइ राखहु दास भाट की लाज ॥८॥१२॥ (1400-11)
स्री सैणु ॥ (695-9)
स्रीधर नाथ मेरा मनु लीना प्रभु जानै पीर पराई ॥१॥ (1232-7)
स्रीधर पाए मंगल गाए इछ पुंनी सतिगुर तुठे ॥ (80-4)
स्रीधर मोहन सगल उपावन निरंकार सुखदाता ॥ (1138-16)
स्रीधर मोहिअड़ी पिर संगि सूती राम ॥ (843-11)
स्रीपति नाथ सरणि नानक जन हे भगवंत क्रिपा करि तारहु ॥५॥ (1388-5)
स्रीरंग बैकुंठ के वासी ॥ (1082-14)
स्रीरंग राती फिरै माती उदकु गंगा वाणी ॥ (567-13)
स्रीरंग राते नाम माते भै भरम दुतीआ सगल खोत ॥ (462-6)
स्रीरंगो दइआल मनोहरु भगति वछलु बिरदाइआ ॥ (248-19)

स्रीराग बाणी भगत बेणी जीउ की ॥ (93-1)
स्रीरागु भगत कबीर जीउ का ॥ (92-14)
स्रीरागु महला ३ ॥ (29-10)
स्रीरागु महला ३ ॥ (36-3)
स्रीरागु महला ५ ॥ (44-11)
स्रीरागु महला ५ ॥ (44-18)
स्रीराम रंग अपार पूरन नह निमख मन महि वूठिआ ॥ (705-13)
स्रुति सिम्रिति गुन गावहि करते सिध साधिक मुनि जन धिआइआ ॥ (785-4)
स्वसति बिवसथा हरि की सेवा मध्यंत प्रभ जापण ॥ (682-14)
स्वांगी सिउ जो मनु रीझावै ॥ (1145-5)
स्वागि उतारिऐ फिरि पछुतावै ॥ (1145-6)
स्वाद सनाह टोपु ममता को कुबुधि कमान चढाई ॥ (1161-16)
स्वामी सरनि परिओ दरबारे ॥ (714-18)
हं भी वंञा डुमणी रोवा झीणी बाणि ॥२॥ (23-8)
हंउ कुरबाणी दास तेरे जिनी एकु पछाता ॥ (578-7)
हंउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ ॥ (722-2)
हंउ कुरबानै जाउ मिहरवाना हंउ कुरबानै जाउ ॥ (722-1)
हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी ॥१॥ (573-1)
हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी राम ॥ (572-17)
हंउ बलिहारै जाउ साचे तेरे नाम विटहु ॥ (666-10)
हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख मीत पिआरे ॥३॥ (573-8)
हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख मीत पिआरे राम ॥ (573-6)
हंउ सतिगुर अपुणे कंउ सदा नमसकारी जितु मिलिऐ हरि नामु मै जाता ॥१६॥ (592-16)
हंउ हउरो तू ठाकुरु गउरो नानक सरनि पछानी ॥३॥६॥१३५॥ (404-19)
हंउमै अंदरि खड़कु है खड़के खड़कि विहाइ ॥ (592-11)
हंउमै माइआ मैलु है माइआ मैलु भरीजै राम ॥ (570-16)
हंउमै वडा रोगु है मरि जमै आवै जाइ ॥ (592-12)
हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु ॥२३॥ (1379-3)
हंस सि हंसा बग सि बगा घट घट करे बीचारु जीउ ॥ (438-4)
हंस हंसा बग बगा लहै मन की जाला ॥ (567-11)
हंसा देखि तरंदिआ बगा आइआ चाउ ॥ (1384-11)
हंसा विचि बैठा बगु न बणई नित बैठा मछी नो तार लावै ॥ (960-7)
हंसा वेखि तरंदिआ बगां भि आया चाउ ॥ (585-15)
हंसा सरवरु कालु सरीर ॥ (325-3)
हंसा सेती चितु उलासहि कुकड़ दी ओडारी ॥२॥ (322-17)
हंसा हीरा मोती चुगणा बगु डडा भालण जावै ॥ (960-9)
हंसु उडरि कोध्रै पइआ लोकु विडारणि जाइ ॥ (1381-7)

हंसु चलसी डुमणा अहि तनु ढेरी थीसी ॥३॥२॥ (794-19)
हंसु चलिआ काइआ कुमलानी ॥२॥ (792-11)
हंसु चलिआ तूं पिछै रहीएहि छुटड़ि होईअहि नारी ॥२॥ (155-2)
हंसु चलै उठि डुमणो माइआ भूली आथि ॥ (935-19)
हंसु हुइ हीरा लेइ पछानी ॥१॥ रहाउ ॥ (483-15)
हंसु हेतु आसा असमानु ॥ (151-10)
हंसु हेतु लोभु कोपु चारे नदीआ अगि ॥ (147-14)
हउ अंतरि नामु मंगा दिनु राती नामे ही सांति पाई ॥ रहाउ ॥ (607-10)
हउ अनदिनु नामु लई करतारे ॥ (998-14)
हउ अनदिनु हरि नामु कीरतनु करउ ॥ (369-11)
हउ आइआ दूरहु चलि कै मै तकी तउ सरणाइ जीउ ॥ (763-3)
हउ आइआ साम्है तिहंडीआ ॥ (73-13)
हउ आकल बिकल भई गुर देखे हउ लोट पोट होइ पईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (836-2)
हउ आखि सलाही सिफति सचु सचु सचे की वडिआई ॥ (310-19)
हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥ (763-6)
हउ इकु खिनु तिसु बिनु रहि न सकउ प्रीति हमारी लागी ॥१॥ रहाउ ॥ (1267-10)
हउ इकु खिनु तिसु बिनु रहि न सका जिउ चात्रिकु जल कउ बिललाता ॥ (564-7)
हउ एनी टोली भुलीअसु तिसु कंत न बैठी पासि जीउ ॥ (762-10)
हउ कछू न जानउ तेरी सार ॥ (1181-19)
हउ कबहु न छोडउ हरि का नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (1154-4)
हउ करि करि थाका उपाव बहुतेरे ॥ (561-3)
हउ काटउ काटि बाढि सिरु राखउ जितु नानक संतु चड़ि आवै ॥४॥३॥ (881-12)
हउ किआ आखा इक जीभ तेरा अंतु न किन ही पाइआ ॥ (1290-10)
हउ किआ गुण तेरे आखा सुआमी ॥ (1071-2)
हउ किआ गुण तेरे सारि समाली मै निरगुण कउ रखि लेता ॥२॥ (564-8)
हउ किआ मुहु देसा दुसटु चोरु ॥ (24-18)
हउ किआ सालाही किरम जंतु वडी तेरी वडिआई ॥ (792-2)
हउ किउ करि पिर कउ मिलउ इआणी ॥ (561-5)
हउ किउ करि मिला अपणे प्रीतम पूरे ॥२॥ (561-2)
हउ किछु नाही एको तूहै आपे आपि सुजाना ॥ (779-14)
हउ किछु नाही सभु किछु तेरा ॥ (739-12)
हउ कुरबाणी तेरिआ सेवका जिन्ह हरि नामु पिआरा ॥३॥ (746-19)
हउ कुरबाणी तेरै वंञा नानक दास दसावणिआ ॥८॥१॥३५॥ (131-1)
हउ कुरबानी गुर आपणे जिनि विछुड़िआ मेलिआ मेरा सिरजनहारा ॥१॥ (167-4)
हउ कुरबानु जाई तेरे नावै ॥ (629-15)
हउ खड़ी निहाली पंधु मतु मूं सजणु आवए ॥ (1421-19)
हउ खरी दुहेली होई बाबा नानक मेरी बात न पुछै कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (155-5)

हउ खिनु खिनु करी नमसकारु मेरा गुरु पूरा किउ मिलै ॥१॥ रहाउ ॥ (168-12)
हउ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु प्रीतम जिउ बिनु अमलै अमली मरि गईआ ॥ (836-17)
हउ गुण गोविंद हरि नामु धिआई ॥ (95-18)
हउ गुर पूछउ आपणे गुर पुछि कार कमाउ ॥ (58-6)
हउ गुर मिलि इकु पछाणदा ॥ (73-10)
हउ गुर विटहु घोलि घुमाइआ राम राजिआ जीउ सतिगुर आगै देई ॥ (777-4)
हउ गुर विटहु सद वारिआ जिनि दितड़ा नाओ ॥१६॥ (726-7)
हउ गुर सरणाई ढहि पवा करि दइआ मेले प्रभु सोइ ॥२॥ (39-19)
हउ गुरमुखि कार कमावा जि गुरि समझाईऐ ॥२॥ (643-7)
हउ गुरमुखि सदा सलाही गुर कउ वारिआ ॥१॥ (642-19)
हउ गुरु सालाहि न रजऊ मै मेले हरि प्रभु पासि ॥२॥ (41-5)
हउ गुरु सालाही सदा आपणा जिनि साची बूझ बुझाई ॥२६॥ (910-3)
हउ गोला लाला तुधु मै हुकमु फुरमाईऐ ॥ (643-7)
हउ गोसाई दा पहिलवानड़ा ॥ (74-8)
हउ घोलि घुमाई खंनीऐ कीती हिक भोरी नदरि निहालि ॥१॥ रहाउ ॥ (1014-16)
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (96-16)
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ ॥१॥८॥ (97-4)
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (97-1)
हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (96-18)
हउ छुटकै होइ अनंदु तिह हउ नाही तह आपि ॥ (260-18)
हउ जाइ पुछा अपने सतगुरै गुर पुछि मनु मुगधु समझावा ॥ (561-11)
हउ जाइ पुछा सोहाग सुहागणि तुसी किउ पिरु पाइअड़ा प्रभु मेरा ॥ (561-16)
हउ जाउ सद बलिहार ॥ (837-10)
हउ जाचिकु तू अलख अभेउ ॥१॥ रहाउ ॥ (796-1)
हउ जीउ करी तिस विटउ चउ खंनीऐ जो मै पिरी दिखावए ॥ (1422-1)
हउ जीवां सदा हरि के गुण गाई ॥ (1262-3)
हउ जीवा गुण सारि अंतरि तू वसै ॥ (752-1)
हउ जीवा तुधु सालाहि मै टेक अधारु तूं ॥२॥ (422-2)
हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे ॥२॥ (572-10)
हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे राम ॥ (572-7)
हउ ठगवाड़ा ठगी देसु ॥ (24-17)
हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे ॥ (468-4)
हउ ढाढी दरि गुण गावदा जे हरि प्रभ भावै ॥ (1097-10)
हउ ढाढी वेकारु कारै लाइआ ॥ (150-16)
हउ ढाढी हरि प्रभ खसम का हरि कै दरि आइआ ॥ (91-13)
हउ ढूंढेंदी सजणा सजणु मैडै नालि ॥ (1318-11)
हउ ढूढेदी जगु सबाइआ जन नानक विरले केई ॥२॥ (520-8)

हउ ढूढेदी तिन सजण सचि सवारिआ ॥ (1421-17)
हउ ढूढेदी दरसन कारणि बीथी बीथी पेखा ॥ (715-13)
हउ ढूढेदी सजणा सजणु मैडे नालि ॥ (1384-10)
हउ तउ एकु रमईआ लैहउ ॥ (874-13)
हउ ता कै बलिहारी ॥ (207-14)
हउ ता माइआ मोहिआ फिरि फिरि आवा जाइ ॥ (511-1)
हउ ताप बिनसे सदा सरसे प्रभ मिले चिरी विछुंनिआ ॥ (779-6)
हउ तिन कै बलिहारणै जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥ (51-5)
हउ तिन कै बलिहारणै जिना नामे लगा पिआरु ॥ (26-10)
हउ तिन कै बलिहारणै जिनी सचु रखिआ उरि धारि ॥ (1285-4)
हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर ॥२॥ (55-10)
हउ तिन कै बलिहारणै मनि हरि गुण सदा रवंनि ॥१॥ रहाउ ॥ (757-1)
हउ तिन जन के सद लागउ पाइ ॥१॥ (1262-2)
हउ तिन बलिहारी जो साचै लागे ॥ (1048-9)
हउ तिन बलिहारै जिन्ह हरि मंनि वसाए ॥ (798-4)
हउ तिसु अगै दिनु राति रहा कर जोड़ीऐ ॥१५॥ (522-8)
हउ तिसु ढाढी कुरबाणु जि तेरा सेवदारु ॥ (962-17)
हउ तिसु ढाढी बलिहार जि गावै गुण अपार ॥ (962-17)
हउ तिसु देवा मनु आपणा नित हिरदै रखा समालि ॥ (957-9)
हउ तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मरि जाउ ॥६॥ (759-1)
हउ तिसु विटहु खन खंनीऐ मै मेले हरि प्रभ पासि ॥ (996-10)
हउ तिसु विटहु चउ खंनीऐ मै नाम करे परगासु ॥१॥ (40-5)
हउ तिसु सेवी दिनु राति मै कदे न वीसरै जीउ ॥ (690-5)
हउ तुझु बाझहु खरी उडीणीआ जिउ जल बिनु मीनु मराहा ॥ (776-8)
हउ तुधु आखा मेरी काइआ तूं सुणि सिख हमारी ॥ (155-1)
हउ तुधु सालाही तू मेरा हरि प्रभु बापु ॥१॥ रहाउ ॥ (1134-14)
हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहि कब गलि लावहिगे ॥१॥ रहाउ ॥ (1321-2)
हउ तेरा तूं ठाकुरु मेरा सबदि वडिआई देवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (115-12)
हउ तेरा तू मै मनि वूठा ॥४॥३॥१४॥ (887-4)
हउ दोहागणि खरी रंञाणी ॥ (990-17)
हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ ॥ (152-7)
हउ ना छोडउ कंत पासरा ॥ (761-7)
हउ नाम विटहु कुरबाणु जीउ ॥२॥ (175-12)
हउ नामु हरि का सदा जाचउ देहु प्रभ धरणीधरा ॥ (687-15)
हउ नाही किछु मै किआ होसा सभ तुम ही कल धारी ॥ (1209-9)
हउ नाही तू होवहि तुध ही साजिआ ॥ (752-19)
हउ नाही नाही किछु मेरा ना हमरो बसु चारी ॥ (1216-2)

हउ निमख न छोडा जी हरि प्रीतम प्रान अधारो ॥ (784-18)
हउ निरखत फिरउ सभि देस दिसंतर मै प्रभ देखन को बहुतु मनि चईआ ॥ (836-2)
हउ निरगुणु ढाढी बखसिओनु प्रभि पुरखि वेदावै ॥९॥ (1097-13)
हउ पंडितु हउ चतुरु सिआणा ॥ (178-15)
हउ पंथु दसाई नित खड़ी कोई प्रभु दसे तिनि जाउ ॥ (41-1)
हउ पाणी पखा पीसउ संत आगै पग मलि मलि धूरि मुखि लाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (881-15)
हउ पापी तूं निरमलु एक ॥१॥ रहाउ ॥ (153-5)
हउ पापी तूं बखसणहारु ॥१॥ (356-10)
हउ पापी पतितु परम पाखंडी तू निरमलु निरंकारी ॥ (596-17)
हउ पापी पाखंडीआ भाई मनि तनि नाम विसेखु ॥ रहाउ ॥ (636-19)
हउ पावउ तुम ते सगल थोक ॥१॥ रहाउ ॥ (1181-2)
हउ पूंजी नामु दसाइदा को दसे हरि धनु रासि ॥ (996-10)
हउ पूछउ अपना सतिगुरु दाता किन बिधि दुतरु तरीऐ राम ॥ (775-18)
हउ पूतु तेरा तूं बापु मेरा ॥ (476-11)
हउ फिरउ उदासी मै इकु रतनु दसाइआ ॥ (801-11)
हउ फिरउ दिवानी आवल बावल तिसु कारणि हरि ढोलीऐ ॥ (527-12)
हउ बंदी प्रिअ खिजमतदार ॥ (394-9)
हउ बंधउ हउ साधउ बैरु ॥ (178-14)
हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥ (345-18)
हउ बनु बनो देखि रही त्रिणु देखि सबाइआ राम ॥ (437-3)
हउ बलि जाई लख लख लख बरीआ जिनि भ्रमु परदा खोल्हा राम ॥ (779-19)
हउ बलि जावा दिनु राति गुर देखणहारीआ ॥८॥ (645-19)
हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥ (694-8)
हउ बलि बलि जाउ सतिगुर साचे नाम पर ॥ (1398-18)
हउ बलि बलि जिन राम कहे ॥१॥ (345-5)
हउ बलि बलि बलि बलि चरन कमल कउ बलि बलि गुर दरसाइआ ॥ (1212-11)
हउ बलि बलि बलि बलि साध जनां कउ मिलि संगति पारि उतरिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1294-4)
हउ बलिहारि जाउ गुरदेव ॥ (1144-13)
हउ बलिहारी गुर आपणे जिनि सची बूझ दिती बुझाइ ॥ (1282-3)
हउ बलिहारी जो प्रभू धिआवत ॥ (805-1)
हउ बलिहारी तिंन कंउ जो गुरमुखि सिखा ॥ (650-1)
हउ बलिहारी तिन कउ जि अनदिनु सचु लवे ॥ (312-17)
हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि पाइआ गुरमते ॥ (82-10)
हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि मनि वुठा आइ ॥ (82-5)
हउ बलिहारी तिन कउ जिनि धिआइआ हरि निरंकारु ॥ (91-9)
हउ बलिहारी तिन कउ जो हरि चरणी रहै लिव लाइ ॥ (1281-11)
हउ बलिहारी तिन कउ पैसि जु नीकसि जाहि ॥२६॥ (1365-17)

हउ बलिहारी तिन कउ सिफति जिना दै वाति ॥ (790-12)
हउ बलिहारी तिन जि खसमै भाणिआ ॥४॥ (958-15)
हउ बलिहारी तिन्ह कउ मेरी जिंदुड़ीए जिन्ह हरि हरि नामु अधारो राम ॥ (539-17)
हउ बलिहारी संतन तेरे जिनि कामु क्रोधु लोभु पीठा जीउ ॥३॥ (108-18)
हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि इहु चलतु दिखाइआ ॥ (673-17)
हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि गुपतु नामु परगाझा ॥२॥ (697-18)
हउ बलिहारी सतिगुर आपणे जिनि मेरा हरि अलखु लखारे ॥८॥ (589-9)
हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥ (413-9)
हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥१॥ (562-15)
हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ (1073-12)
हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ (99-3)
हउ बलिहारी सतिगुर पूरे जिनि खंडिआ भरमु अनालका ॥१५॥ (1085-13)
हउ बलिहारी सदा तिन विटहु गुर सेवा चितु लावणिआ ॥६॥ (114-14)
हउ बलिहारी सदा होवा एक तेरे नावए ॥४॥ (567-2)
हउ बलिहारी साचे नावै ॥ (566-19)
हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥ (765-15)
हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥२॥ (765-18)
हउ बलिहारै ता कै जाउ ॥ (354-11)
हउ बाहुड़ि छिंझ न नचऊ नानक अउसरु लधा भालि जीउ ॥२१॥२॥२९॥ (74-14)
हउ बिगड़ै रूपि रहा बिकराल ॥ (24-14)
हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा ॥२॥ (659-9)
हउ बिसम भई देखि गुणा अनहद सबद अगाजा राम ॥ (765-9)
हउ बिसमु भई जी हरि दरसनु देखि अपारा ॥ (784-15)
हउ भई उडीणी कंत कउ अमाली सो पिरु कदि नैणी देखा ॥ (564-9)
हउ भालि विकुंनी होई ॥ (145-11)
हउ मनु अरपी सभु तनु अरपी अरपी सभि देसा ॥ (247-13)
हउ मनु तनु काटि काटि तिसु देई जो सतिगुर बचन सुणाए ॥ (572-11)
हउ मनु तनु खोजी भालि भालाई ॥ (94-11)
हउ मनु तनु देवउ काटि गुरू कउ मेरा भ्रमु भउ गुर बचनी भागे ॥२॥ (172-2)
हउ मनु तनु देवा सतिगुरै मै मेले प्रभ गुणतासे ॥ (776-5)
हउ मनु तनु हउ मनु तनु देवा तिसु काटि सरीरा राम ॥ (572-11)
हउ मनु देवउ तिसु आपणा मेरी जिंदुड़ीए हरि प्रभ की हरि कथा सुणावै राम ॥ (538-6)
हउ मांगउ संतन रेना ॥ (656-13)
हउ मागउ आन लजावउ ॥ (401-7)
हउ मागउ तुझै दइआल करि दासा गोलिआ ॥ (518-13)
हउ मागउ दानु तुझै पहि करते हरि अनदिनु नामु वखाणी हे ॥१२॥ (1071-3)
हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ ॥ (449-6)

हउ माणु ताणु करउ तेरा हउ जानउ आपा ॥ (51-17)
हउ मारउ हउ बंधउ छोडउ मुख ते एव बबाड़े ॥ (380-1)
हउ मुआ मै मारिआ पउणु वहै दरीआउ ॥ (1091-9)
हउ मुठड़ी धंधै धावणीआ पिरि छोडिअड़ी विधणकारे ॥ (581-1)
हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कमे ॥३॥ (449-13)
हउ मूरखु नीचु अजाणु समझा साखीऐ ॥ (688-4)
हउ मेरा जगु पलचि रहिआ भाई कोइ न किस ही केरा ॥ (602-3)
हउ मै करी तां तू नाही तू होवहि हउ नाहि ॥ (1092-19)
हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥ (264-10)
हउ रहि न सकउ बिनु देखे मेरे प्रीतम मै अंतरि बिरहु हरि लाईआ जीउ ॥ (174-3)
हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा मै नीरु वहे वहि चलै जीउ ॥३॥ (94-7)
हउ रहि न सका बिनु देखे मेरी माई ॥ (94-8)
हउ रहि न सका बिनु नाम वखाणे ॥ (95-4)
हउ रोगु बिआपै चुकै न भंगा ॥ (1305-7)
हउ वंञा कुरबाणु साई आपणे ॥ (397-4)
हउ वारि वारि जाउ गुर गोपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (980-1)
हउ वारिआ अपणे गुरू कउ जिनि मेरा हरि सजणु मेलिआ सैणी ॥२४॥ (652-4)
हउ वारिआ तिन कउ सदा सदा जिना सतिगुरु मेरा पिआरा देखिआ ॥ (1316-14)
हउ वारिआ तिन सोहागणी अमाली तिन के धोवा सद पाए ॥४॥ (564-13)
हउ वारी घुमा जावदा ॥ (73-14)
हउ वारी जाउ जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (157-10)
हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (12-12)
हउ वारी जीउ वारी अम्रित नामु मंनि वसावणिआ ॥ (124-6)
हउ वारी जीउ वारी अम्रित बाणी मंनि वसावणिआ ॥ (118-13)
हउ वारी जीउ वारी आपि भगति करनि अवरा भगति करावणिआ ॥ (123-13)
हउ वारी जीउ वारी आपु निवारणिआ ॥ (118-2)
हउ वारी जीउ वारी इकसु सिउ चितु लावणिआ ॥ (111-6)
हउ वारी जीउ वारी कलि महि नामु सुणावणिआ ॥ (130-12)
हउ वारी जीउ वारी गुर की बाणी मंनि वसावणिआ ॥ (112-10)
हउ वारी जीउ वारी गुर चरणी चितु लावणिआ ॥ (113-14)
हउ वारी जीउ वारी गुर सबदु मंनि वसावणिआ ॥ (113-3)
हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि अम्रितु पीआवणिआ ॥ (119-6)
हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि मनि तनि भावणिआ ॥ (131-16)
हउ वारी जीउ वारी गुरु पूरा मंनि वसावणिआ ॥ (117-9)
हउ वारी जीउ वारी गोबिंद गुण गावणिआ ॥ (121-15)
हउ वारी जीउ वारी जगजीवनु मंनि वसावणिआ ॥ (126-4)
हउ वारी जीउ वारी नामु सुणि मंनि वसावणिआ ॥ (123-1)

हउ वारी जीउ वारी निरंकारी नामु धिआवणिआ ॥ (129-19)
हउ वारी जीउ वारी निरभउ मंनि वसावणिआ ॥ (114-6)
हउ वारी जीउ वारी पड़ि बुझि मंनि वसावणिआ ॥ (127-8)
हउ वारी जीउ वारी माइआ मोहु सबदि जलावणिआ ॥ (129-7)
हउ वारी जीउ वारी राम नामु मंनि वसावणिआ ॥ (120-10)
हउ वारी जीउ वारी सचा नामु मंनि वसावणिआ ॥ (116-16)
हउ वारी जीउ वारी सचु संगति मेलि मिलावणिआ ॥ (114-18)
हउ वारी जीउ वारी सचु सचा हिरदै वसावणिआ ॥ (126-16)
हउ वारी जीउ वारी सचु सालाहणिआ ॥ (119-17)
हउ वारी जीउ वारी सतिगुर कै बलिहारणिआ ॥ (110-2)
हउ वारी जीउ वारी सबदि सुहावणिआ ॥ (109-9)
हउ वारी जीउ वारी सुख सहजि समाधि लगावणिआ ॥ (122-8)
हउ वारी जीउ वारी सुखदाता मंनि वसावणिआ ॥ (121-3)
हउ वारी जीउ वारी हउमै मारि मिलावणिआ ॥ (128-2)
हउ वारी जीउ वारी हरि का नामु मंनि वसावणिआ ॥ (110-13)
हउ वारी जीउ वारी हरि कै नाइ सोभा पावणिआ ॥ (111-18)
हउ वारी जीउ वारी हरि गुण अनदिनु गावणिआ ॥ (115-11)
हउ वारी जीउ वारी हरि रसु चखि सादु पावणिआ ॥ (128-14)
हउ वारी जीउ वारी हरि सचे के गुण गावणिआ ॥ (125-11)
हउ वारी जीउ वारी हरि सेती चितु लावणिआ ॥ (116-5)
हउ वारी जीउ वारी हरि हरि नामि सुहावणिआ ॥ (124-19)
हउ वारी मुखु फेरि पिआरे ॥ (484-7)
हउ वारी वंञा खंनीऐ वंञा तउ साहिब के नावै ॥१॥ रहाउ ॥ (557-4)
हउ वारी वंञा घोली वंञा तू परबतु मेरा ओल्हा राम ॥ (779-19)
हउ वारी हउ वारणै कुरबाणु तेरे नाव नो ॥१॥ रहाउ ॥ (71-16)
हउ वारी हउ वारणै भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै जाउ ॥ (638-14)
हउ वारीआ हरि वारीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (240-18)
हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥ (466-10)
हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥ (466-11)
हउ विचि जमिआ हउ विचि मुआ ॥ (466-10)
हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥ (466-13)
हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥ (466-11)
हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥ (466-12)
हउ विचि पाप पुंन वीचारु ॥ (466-12)
हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥ (466-13)
हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥ (466-14)
हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥ (466-13)

हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥ (466-12)
हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥ (466-12)
हउ वेखि वेखि गुरू विगसिआ गुर सतिगुर देहा ॥१७॥ (726-8)
हउ संचउ हउ खाटता सगली अवध बिहानी ॥ रहाउ ॥ (242-1)
हउ सतिगुर कउ सद वारिआ गुर बचनि समाणे ॥२०॥ (726-11)
हउ सतिगुर विटहु घुमाइआ ॥ (72-12)
हउ सतिगुर विटहु वारिआ जिनि हरि प्रभु दीआ दिखाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (41-3)
हउ सतिगुरु वेखि विगसीआ हरि नामे लगा पिआरु ॥ (758-15)
हउ सतिगुरु सेवी आपणा इक मनि इक चिति भाइ ॥ (26-4)
हउ सदा सदा बलिहारी गुर अपुने जो प्रभु सचा देइ मिलाइ ॥ (1423-10)
हउ सभि वेस करी पिर कारणि जे हरि प्रभ साचे भावा ॥ (561-13)
हउ समलि थकी जी ओहु कदे न बोलै कउरा ॥ (784-12)
हउ सिरु अरपी तिसु मीत पिआरे जो प्रभ देइ सदेसा ॥ (247-14)
हउ सुणि सुणि जीवा नामु तुमारा ॥१॥ रहाउ ॥ (563-8)
हउ सुती पिरु जागणा किस कउ पूछउ जाइ ॥ (54-12)
हउ सुती होइ अचिंत मनि आस पुराईआ ॥ (1361-19)
हउ सूरा परधानु हउ को नाही मुझहि समानी ॥२॥ (242-2)
हउ हउ करत न त्रिसन बूझै नह कांम पूरन गिआने ॥ (548-6)
हउ हउ करत नही सचु पाईऐ ॥ (226-15)
हउ हउ करत बंधन महि परिआ नह मिलीऐ इह जुगता ॥५॥ (642-4)
हउ हउ करत बधे बिकार ॥ (1192-17)
हउ हउ करत बिहाइ अवरदा जीअ को कामु न कीना ॥ (615-3)
हउ हउ करत बिहानीआ साकत मुगध अजान ॥ (260-1)
हउ हउ करती जगु फिरी ना धनु स्मपै नालि ॥ (32-1)
हउ हउ करती मै मुई सबदि रवै मनि गिआनु ॥ (937-12)
हउ हउ करती सभ मुई स्मपउ किसै न नालि ॥ (84-19)
हउ हउ करते करम रत ता को भारु अफार ॥ (252-2)
हउ हउ करदी सभ फिरै बिनु सबदै हउ न जाइ ॥ (426-17)
हउ हउ करम कमाणे ॥ (1004-1)
हउ हउ करि मरणा किआ पावै ॥ (226-18)
हउ हउ करे तै आपु जणाए ॥ (127-14)
हउ हउ भीति भइओ है बीचो सुनत देसि निकटाइओ ॥ (624-10)
हउ हउ मै मै विचहु खोवै ॥ (943-5)
हउ हरि कै सद बलिहारणै जितु सेविऐ सुखु पाइ ॥ (653-16)
हउ हरि गुण गावा नित हरि सुणी हरि हरि गति कीनी ॥ (163-10)
हउ हरि प्रभ छोडि दूजै लोभाणी ॥१॥ (561-4)
हउ हरि प्रभु पिआरा ढूढि ढूढाई ॥ (732-15)

हउ हरि बाझु उडीणीआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ जल बिनु कमल उदासे राम ॥ (538-9)
हउ हरि बिनु अउरु न देखा ॥ (655-2)
हउ हरि बिनु अवरु न जाना ॥१॥ रहाउ ॥ (991-8)
हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे करहलु बेलि रीझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (369-17)
हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे जल बिनु मीनु मरि जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (368-8)
हउ हरि बिनु दूजा अवरु न जाना ॥ (94-10)
हउ हरि हरि सजणु हरि मीतु दसाई जीउ ॥ (175-13)
हउ होआ माहरु पिंड दा बंनि आदे पंजि सरीक जीउ ॥४॥ (73-12)
हउमै अंतरि मैलु है सबदि न काढहि धोइ ॥ (1415-1)
हउमै अन सिउ लरि मरै सो सोभा दू होइ ॥ (256-14)
हउमै आवै जाइ भरमि भुलावणा ॥१॥ रहाउ ॥ (752-8)
हउमै आवै जाई ॥ (1003-19)
हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥ (466-17)
हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥ (466-16)
हउमै एहो बीजु है सहसा गइआ विलाइ ॥ (947-3)
हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥ (466-17)
हउमै करत भेखी नही जानिआ ॥ (226-14)
हउमै करता जगु मुआ गुर बिनु घोर अंधारु ॥ (34-7)
हउमै करता भवजलि परिआ ॥ (1030-15)
हउमै करतिआ नह सुखु होइ ॥ (222-10)
हउमै करदिआ जनमु गवाइआ ॥ (1063-7)
हउमै करम कमावदे जमडंडु लगै तिन आइ ॥ (65-10)
हउमै करम कमावदे मनमुखि मिलै सजाइ ॥१॥ (162-12)
हउमै करम किछु बिधि नही जाणै ॥ (367-13)
हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥ (466-15)
हउमै करि करि जाइ घणेरी करि अवगण पछोतावणिआ ॥२॥ (109-11)
हउमै करि करि जाइसी जो आइआ जग माहि ॥ (63-19)
हउमै करि राजे बहु धावहि ॥ (226-15)
हउमै करै करावै हउमै पाप कोइले आनि जमावैगो ॥ (1311-3)
हउमै करै निहकरमी न होवै ॥ (128-16)
हउमै करै बहुती मिलै सजाइ ॥३॥ (733-4)
हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥ (466-17)
हउमै क्रोधु सबदि निवारै ॥ (1057-17)
हउमै खपहि जनमि मरि आवहि ॥२॥ (226-16)
हउमै खपै खपाइसी बीजउ वथु विकारु ॥ (937-8)
हउमै खोइ करे सीगारु ॥ (357-3)
हउमै गणत गुर सबदि निवारे ॥ (1065-8)

हउमै गरबु उपाइ कै लोभु अंतरि जंता पाइआ ॥ (139-6)
हउमै गरबु गवाईऐ पाईऐ वीचारु ॥ (421-12)
हउमै गरबु जाइ मन भीनै ॥ (906-5)
हउमै गरबु निवारीऐ कामु क्रोधु अहंकारु ॥ (790-8)
हउमै गरबै गरबु आपि खुआईऐ ॥३॥ (369-8)
हउमै गावनि गावहि गीत ॥ (1162-9)
हउमै गुरमुखि खोईऐ नामि रते सुखु होइ ॥१॥ (29-11)
हउमै गुरि खोई परगटु होई चूके सोग संतापै ॥ (1111-8)
हउमै ग्रासि इकतु थाइ कीए ॥६॥ (415-15)
हउमै चउपड़ि खेलणा झूठे अहंकारा ॥ (422-13)
हउमै छोडि भई बैरागनि तब साची सुरति समानी ॥ (1197-7)
हउमै जगतु दुखि रोगि विआपिआ मरि जनमै रोवै धाही ॥१॥ (603-11)
हउमै जगतु भुलाइआ दुरमति बिखिआ बिकार ॥ (312-3)
हउमै जलते जलि मुए भ्रमि आए दूजै भाइ ॥ (643-1)
हउमै जलिआ मनहु विसारे ॥ (993-6)
हउमै जाइ त एको बूझै सो गुरमुखि सहजि समाइदा ॥१३॥ (1076-10)
हउमै जाइ त निरमलु होवै गुरमुखि परचै परम पदु पईआ ॥७॥ (834-10)
हउमै जाइ परम पदु पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (226-15)
हउमै जाइ सबदि घरु लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (904-12)
हउमै जाइ सबदि मलु धोवहि ॥ (413-5)
हउमै जाई ता कंत समाई ॥ (750-17)
हउमै झगड़ा पाइओनु झगड़ै जगु मुइआ ॥ (790-6)
हउमै डंनु सहै राजा मंगै दान ॥४॥ (416-16)
हउमै तिआगी अनहदि राता ॥ (1040-5)
हउमै तुटा मोहड़ा इकु सचु नामु आधारु ॥ (958-11)
हउमै त्रिसना मारि कै सचु रखिआ उर धारि ॥ (55-3)
हउमै त्रिसना सबदि बुझाई ॥ (1050-13)
हउमै त्रिसना सभ अगनि बुझई ॥ (233-9)
हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥ (466-18)
हउमै दुबिधा बिनसि जाइ सहजे सुखि समाईऐ ॥ (163-2)
हउमै दुरतु गइआ सभु नीकरि जिउ साबुनि कापरु करिआ ॥३॥ (1294-8)
हउमै दूजा दूरि करि वडी वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (425-3)
हउमै दूजा सबदि जलावै ॥ (231-4)
हउमै धंधु छोडहु ल्मपटाई ॥ (1026-2)
हउमै धातु मोह रसि लाई ॥ (1047-12)
हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ ॥ (560-12)
हउमै निवरै गुर सबदु वीचारै ॥ (226-16)

हउमै पचे दीपक देखि पतंगा ॥ (801-10)
हउमै पचै मनमुख मूराखा ॥ (394-18)
हउमै पीर गई सुखु पाइआ आरोगत भए सरीरा ॥ (773-8)
हउमै पैखड़ु तेरे मनै माहि ॥ (1189-18)
हउमै फिका बोलणा बुझि न सका कार ॥ (1420-18)
हउमै बंधन बंधि भवावै ॥ (227-1)
हउमै बंधन सतिगुरि तोड़े चितु चंचलु चलणि न दीना हे ॥१६॥ (1028-16)
हउमै बंधु हरि देवणहारा ॥१॥ (684-11)
हउमै बाधा गुरमुखि छूटा ॥ (131-9)
हउमै बिआपिआ सबदु न चीन्है फिरि फिरि जूनी आवै ॥३॥ (732-9)
हउमै बिआपै दुबिधा फैलु ॥ (893-8)
हउमै बिखिआ नित लोभि लुभाने पुत कलत मोहि लुभिभा ॥ (1337-5)
हउमै बिखु पाइ जगतु उपाइआ सबदु वसै बिखु जाइ ॥ (1009-18)
हउमै बिखु मनु मोहिआ लदिआ अजगर भारी ॥ (1260-16)
हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥ (466-15)
हउमै भगति करे सभु कोइ ॥ (1277-16)
हउमै मनु असथूलु है किउ करि विचु दे जाइ ॥ (509-19)
हउमै ममता करदा आइआ ॥ (1031-1)
हउमै ममता गुर सबदि विसारी ॥ (225-14)
हउमै ममता जलि बलउ लोभु जलउ अभिमानु ॥ (59-17)
हउमै ममता दुरमति दुख नासु ॥ (232-16)
हउमै ममता नासु होइ दुरमति कढै धोइ ॥ (1313-6)
हउमै ममता बहु मोहु वधाइआ ॥ (1261-17)
हउमै ममता माइआ संगि न जाई राम ॥ (437-11)
हउमै ममता मारि कै हरि राखिआ उर धारि ॥ (26-10)
हउमै ममता मोहणी मनमुखा नो गई खाइ ॥ (513-15)
हउमै ममता मोहणी सभ मुठी अहंकारि ॥१॥ रहाउ ॥ (19-9)
हउमै ममता मोहु छुटा जा संगि मिलिआ साधे ॥ (542-6)
हउमै ममता रोगु न लागै ॥ (904-2)
हउमै ममता लोभ बिनासनु ॥ (1040-15)
हउमै ममता लोभु जालहु सबदि मैलु चुकाईऐ ॥ (843-16)
हउमै ममता सबदि जलाइ ॥३॥ (841-8)
हउमै ममता सबदि जलाए ॥ (1054-11)
हउमै ममता सबदे खोवै ॥ (116-12)
हउमै माइआ के गलि फंधे ॥ (1041-4)
हउमै माइआ दूखि संतापे ॥ (352-15)
हउमै माइआ बिखु है मेरी जिंदुड़ीए हरि अम्रिति बिखु लहि जाए राम ॥ (538-12)

हउमै माइआ भरमु गवाए ॥ (1059-1)
हउमै माइआ महा बिखु खाइ ॥ (161-11)
हउमै माइआ मैलु कमाइआ ॥ (1046-18)
हउमै माइआ मोहणी दूजै लगै जाइ ॥ (853-13)
हउमै माइआ मोहि खुआइआ दुखु खटे दुख खाइ ॥ (1132-15)
हउमै माइआ रोगि विआपे मरि जनमहि दुखु होई राम ॥ (768-18)
हउमै माइआ विचे पाई ॥ (1044-2)
हउमै माइआ सबदि जलाई ॥ (798-10)
हउमै माइआ सबदि जलाए ॥ (232-5)
हउमै माइआ सभ बिखु है नित जगि तोटा संसारि ॥ (300-18)
हउमै मारि एक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ॥ (1424-12)
हउमै मारि एक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ॥ (86-19)
हउमै मारि कमलु परगासा ॥ (161-18)
हउमै मारि करहु गुर सेवा जन नानक हरि रंगि भीना हे ॥१७॥२॥८॥ (1028-17)
हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥ (110-19)
हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥ (159-13)
हउमै मारि त्रिसना अगनि निवारी सबदु चीनि सुखु होई हे ॥७॥ (1045-7)
हउमै मारि निवारिआ सीता है चोला ॥ (729-12)
हउमै मारि बंधन सभ तोड़ै गुरमुखि सबदि सुहावणिआ ॥१॥ (124-18)
हउमै मारि बजर कपाट खुलाइआ ॥ (124-8)
हउमै मारि बीचारि मन गुण विचि गुणु लै सारि ॥१॥ रहाउ ॥ (1168-5)
हउमै मारि मंनि वसाइआ ॥ (110-9)
हउमै मारि मनसा मनहि समाणी गुर कै सबदि पछाता ॥४॥ (638-1)
हउमै मारि मनु निरमला हरि नामु उरि धारी ॥ (788-5)
हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि तरे ॥ (90-18)
हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि सुचेइ ॥ (850-14)
हउमै मारि मिले पगु धारे ॥५॥ (685-18)
हउमै मारि मिले साचा चोला राम ॥ (1111-8)
हउमै मारि मुईए तू चलु गुर कै भाए ॥ (568-7)
हउमै मारि सचि लिव लाई ॥ (231-13)
हउमै मारि सचि लिव लागी ॥ (841-18)
हउमै मारि सचि सबदि समाणे सचि रते अधिकाई ॥ (569-13)
हउमै मारि सद मंनि वसाइआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ (1259-8)
हउमै मारि सदा मनु निरमलु रसना सेवि सुखदाता हे ॥१२॥ (1053-2)
हउमै मारि सदा सुखु पाइआ नाइ साचै अम्रितु पीजै हे ॥८॥ (1049-13)
हउमै मारि सदा सुखु पाइआ माइआ मोहु चुकावणिआ ॥१॥ (110-1)
हउमै मारे करणी सारु ॥७॥ (223-14)

हउमै मारे गुर सबदे पाए ॥६॥ (228-8)
हउमै मारे ता दरु सूझै ॥२॥ (842-8)
हउमै मारे सबदि निवारे ॥ (1045-15)
हउमै मारे सबदे जागै ॥ (415-2)
हउमै मूलि न छुटई विणु साधू सतसंगै ॥ (1098-7)
हउमै मेटि चलै गुर सबदि समाइ ॥३॥ (796-10)
हउमै मेटि सबदि सुखु होई ॥ (1040-12)
हउमै मेरा आपु गवाए ॥ (1057-2)
हउमै मेरा करि करि विगुते किहु चलै न चलदिआ नालि ॥ (600-8)
हउमै मेरा करि मुए किछु साथि न लिता ॥ (787-6)
हउमै मेरा छडि तू ता सचि रहै समाइ ॥२३॥ (756-6)
हउमै मेरा जाति है अति क्रोधु अभिमानु ॥ (429-13)
हउमै मेरा ठाकि रहाइआ ॥ (110-8)
हउमै मेरा ठाकि रहाए ॥ (1052-18)
हउमै मेरा ठाकि रहाए सहजे ही सचु पाइआ ॥१२॥ (1067-16)
हउमै मेरा दूजा भाइआ ॥ (1051-2)
हउमै मेरा पसरिआ पासारा ॥ (1045-2)
हउमै मेरा भरमै संसारु ॥ (841-16)
हउमै मेरा मरी मरु मरि जमै वारो वार ॥ (1009-4)
हउमै मेरा रहि गइआ सचै लइआ मिलाइ ॥ (35-9)
हउमै मेरा वड रोगु है विचहु ठाकि रहाइ ॥२१॥ (756-4)
हउमै मेरा सबदे खोई ॥ (1342-9)
हउमै मेरा सभु दुखु गवाए ॥ (118-12)
हउमै मैला इहु संसारा ॥ (230-11)
हउमै मैला जगु फिरै मरि जमै वारो वार ॥ (756-2)
हउमै मैलु गुर सबदे धोवै ॥ (121-8)
हउमै मैलु न चुकई नामि न लगै पिआरु ॥ (594-12)
हउमै मैलु बिखु उतरै हरि अम्रितु हरि उर धारि ॥ (300-19)
हउमै मैलु लागी गुर सबदी खोवै ॥ (123-12)
हउमै मैलु सबदि जलाए ॥ (1067-10)
हउमै मैलु सभ उतरी मेरी जिंदुड़ीए हरि अम्रिति हरि सरि नाते राम ॥ (539-15)
हउमै मोह भरम भै भार ॥ (292-1)
हउमै मोहु उपजै संसारा ॥ (1057-18)
हउमै रोग मिटे किरपा ते जम ते भए बिबाका ॥३॥ (671-14)
हउमै रोगि जा का मनु बिआपित ओहु जनमि मरै बिललाती ॥२॥ (610-4)
हउमै रोगि सभु जगतु बिआपिआ तिन कउ जनम मरण दुखु भारी ॥ (735-18)
हउमै रोगी जगतु उपाइआ बिनु सबदै रोगु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1130-5)

हउमै रोगु कठिन तनि पीरा ॥ (1172-14)
हउमै रोगु कमावणा अति दीरघु बहु सुआउ ॥ (850-4)
हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा आपु आपै गुरमति खाधा ॥ (78-13)
हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा हरि सहजि समाधि लगाई ॥ (572-8)
हउमै रोगु गइआ भउ भागा सहजे सहजि मिलाइआ ॥ (773-3)
हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ धनु धंनु गुरू हरि राइआ ॥१॥ (172-7)
हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ हरि सहजि समाधि लगाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (1179-7)
हउमै रोगु गवाईऐ सबदि सचै सचु भाखु ॥८॥ (62-1)
हउमै रोगु भ्रमु कटीऐ ना आवै ना जागु ॥२॥ (47-18)
हउमै रोगु महा दुखु लागा गुरमति लेवहु रोगु गइआ ॥६॥ (906-16)
हउमै रोगु मानुख कउ दीना ॥ (1140-16)
हउमै रोगु वडा संसारि ॥ (1278-1)
हउमै लोभ लहरि लब थाके पाए दीन दइआला ॥ (437-2)
हउमै वडा गुबारु है हउमै विचि बुझि न सकै कोइ ॥२॥ (560-14)
हउमै वडा रोगु है भाइ दूजै करम कमाइ ॥ (589-14)
हउमै वडा रोगु है सिरि मारे जमकालि ॥ (1258-12)
हउमै विचहु ठाकि रहाए ॥३॥ (665-6)
हउमै विचहु तजे विकार ॥३॥ (159-8)
हउमै विचहु तजै विकार ॥३॥ (665-12)
हउमै विचहु दूरि करि सचु मंनि वसाए ॥ (791-7)
हउमै विचहु मोहु चुकाइआ ॥ (1059-10)
हउमै विचहु सबदि जलाए ॥ (1342-18)
हउमै विचि गावहि बिरथा जाइ ॥ (158-16)
हउमै विचि जगतु मुआ मरदो मरदा जाइ ॥ (555-19)
हउमै विचि जगु उपजै पुरखा नामि विसरिऐ दुखु पाई ॥ (946-3)
हउमै विचि जगु बिनसदा मरि जमै आवै जाइ ॥ (33-18)
हउमै विचि जाग्रणु न होवई हरि भगति न पवई थाइ ॥ (1347-1)
हउमै विचि जीउ बंधु है नामु न वसै मनि आइ ॥३॥ (560-15)
हउमै विचि प्रभु कोइ न पाए ॥ (664-11)
हउमै विचि भगति न होवई हुकमु न बुझिआ जाइ ॥ (560-15)
हउमै विचि सद जलै सरीरा ॥ (1068-5)
हउमै विचि सभ कार कमाहि ॥ (666-4)
हउमै विचि सभि पड़ि थके दूजै भाइ खुआरु ॥ (650-12)
हउमै विचि सभु जगु बउराना ॥ (159-10)
हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ ॥१॥ (560-12)
हउमै सबदि जलाइआ मेरे हरि भाइआ जिस दी साची बाणी ॥ (768-11)
हउमै सभा गणत है गणतै नउ सुखु नाहि ॥ (36-7)

हउमै सभि किलविख काटे साचु रखिआ उरि धारे राम ॥ (769-6)
हउमै सभु सरीरु है हउमै ओपति होइ ॥ (560-14)
हउमै होइ रहे है आपे ॥ (1060-12)
हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥१॥ (721-4)
हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥ (141-1)
हकु सचु खालकु खलक मिआने सिआम मूरति नाहि ॥२॥ (727-10)
हकु हलालु बखोरहु खाणा ॥ (1084-7)
हकु हुकमु सचु खुदाइआ बुझि नानक बंदि खलास तरा ॥१५॥३॥१२॥ (1084-13)
हछी मिटी सोझी होइ ॥ (878-8)
हज काबै जाउ न तीरथ पूजा ॥ (1136-10)
हज हमारी गोमती तीर ॥ (478-17)
हट पटण बाजार हुकमी ढहसीओ ॥ (141-16)
हट पटण बिज मंदर भंनै करि चोरी घरि आवै ॥ (156-12)
हटवाणी धन माल हाटु कीतु ॥ (1180-7)
हठ मंझाहू मै माणकु लधा ॥ (964-17)
हठ मंझाहू सो धणी चउदो मुखि अलाइ ॥१॥ (1098-10)
हठ मझाहू मा पिरी पसे किउ दीदार ॥ (80-8)
हठि न पतीजै ना बहु भेखै ॥ (686-9)
हठि निग्रहि अति रहत बिटंगा ॥ (1305-6)
हठि निग्रहि अपतीजु न भीजै बिनु हरि गुर किनि पति पाई हे ॥१२॥ (1024-6)
हठि निग्रहि न त्रिपतावहि भेवा ॥ (906-3)
हठु अहंकारु करै नही पावै ॥ (905-19)
हठु करि मरै न लेखै पावै ॥ (226-5)
हठु निग्रहु करि काइआ छीजै ॥ (905-4)
हणवंतरु आराधिआ आइआ करि संजोगु ॥ (1412-9)
हणवंतु जागै धरि लंकूरु ॥ (1194-1)
हतं पंच सत्रेण नानक हरि बाणे प्रहारणह ॥६॥ (1360-11)
हते दूख जनमह मरन संतसंग परताप ॥ (260-19)
हथ त पर सकयथ हथ लगहि गुर अमर पय ॥ (1394-5)
हथ देइ आपि रखु विआपै भउ न कोइ ॥ (961-7)
हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥ (134-17)
हथहु छुड़की तनु सिआहु होइ बदनु जाइ कुमलाइ ॥ (510-5)
हथि करि तंतु वजावै जोगी थोथर वाजै बेन ॥ (368-1)
हथि कलम अगम मसतकि लिखावती ॥ (261-15)
हथि छुरी जगत कासाई ॥ (471-19)
हथी दिती प्रभि देवणहारै ॥ (106-18)
हथी पउदी काहे रोवै ॥३॥ (989-14)

हथी सिर खोहाइ न भदु कराइआ ॥ (1285-8)
हथु न लाइ कसु्मभड़ै जलि जासी ढोला ॥१॥ रहाउ ॥ (794-17)
हथो हथि नचाईऐ प्राणी मात कहै सुतु मेरा ॥ (75-2)
हथो हथि नचाईऐ वणजारिआ मित्रा जिउ जसुदा घरि कानु ॥ (75-2)
हनूमान सरि गरुड़ समानां ॥ (691-17)
हभ मझाहू सो धणी बिआ न डिठो कोइ ॥१॥ (1101-14)
हभ समाणी जोति जिउ जल घटाऊ चंद्रमा ॥ (1099-5)
हभि कूड़ावे कम इकसु साई बाहरे ॥ (709-3)
हभि गुण तैडे नानक जीउ मै कू थीए मै निरगुण ते किआ होवै ॥ (964-10)
हभि रंग माणहि जिसु संगि तै सिउ लाईऐ नेहु ॥ (706-10)
हभि रस माणे भोग घटाणे आन न बीआ को थीआ ॥ (1236-17)
हभे जाणनि आपणा कही न ठाहे चितु ॥२॥ (1096-14)
हभे टोल सुहावणे सहु बैठा अंङणु मलि ॥ (1095-4)
हभे डुख उलाहिअमु नानक नदरि निहालि ॥१॥ (1095-10)
हभे थोक विसारि हिको खिआलु करि ॥ (397-12)
हभे भसु पुणेदे वतनु जा मै सजणु तूहै ॥२॥ (963-13)
हभे साक कूड़ावे डिठे तउ पलै तैडै लागी ॥१॥ (963-18)
हभे सुख सुहेलड़ा सुता जिता जगु सबाइआ ॥२॥ (964-12)
हम अंधुले अंध बिखै बिखु राते किउ चालह गुर चाली ॥ (667-14)
हम अंधुले कउ गुर अंचलु दीजै जन नानक चलह मिलंथा ॥४॥१॥ (696-8)
हम अंधुले गिआनहीन अगिआनी किउ चालह मारगि पंथा ॥ (696-7)
हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥१॥ रहाउ ॥ (486-15)
हम अगिआन अलप मति थोरी तुम आपन बिरदु रखावहु ॥२॥ (674-3)
हम अचित अचेत न जानहि गति मिति गुरि कीए सुचित चितेन ॥ (1294-11)
हम अनाथ नाथ हरि सरणी अपुनी क्रिपा करेंह ॥ (702-4)
हम अपतह अपुनी पति खोई ॥ (324-2)
हम अपराध पाप बहु कीने करि दुसटी चोर चुराइआ ॥ (172-11)
हम अपराधी तुम्ह बखसाते ॥ (1141-15)
हम अपराधी निरगुणे भाई तुझ ही ते गुणु सोइ ॥१॥ (636-18)
हम अपराधी निरगुनीआरे ॥ (913-18)
हम अपराधी राखे गुर संगती उपदेसु दीओ हरि नामु छडावै ॥२॥ (167-7)
हम अपराधी सद भूलते तुम्ह बखसनहारे ॥१॥ रहाउ ॥ (809-3)
हम अवगणिआरे तू सुणि पिआरे तुधु भावै सचु सोई ॥ (766-14)
हम अवगन करह असंख नीति तुम्ह निरगुन दातारे ॥ (809-3)
हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही अम्रितु छाडि बिखै बिखु खाई ॥ (1406-8)
हम अहंकारी अहंकार अगिआन मति गुरि मिलिऐ आपु गवाइआ ॥ (172-7)
हम आई वसगति गुर परसादे ॥१॥ (370-5)

हम आदमी हां इक दमी मुहलति मुहतु न जाणा ॥ (660-11)
हम ऊपरि किरपा करि सुआमी रखु संगति तुम जु पिआरी ॥१॥ (666-15)
हम ओइ मिलि होए इक रंगा ॥४॥३२॥८३॥ (391-6)
हम कउ चाबनु उन कउ रोटी ॥३॥ (871-12)
हम कउ द्रिसटि परै त्रखि डाइणि ॥३॥ (871-18)
हम कउ साथरु उन कउ खाट ॥ (871-11)
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥३॥ (324-18)
हम कहीअत कलिजुग के कामी ॥१॥ (710-16)
हम काहू की काणि न कढते अपने गुर परसादे ॥५॥ (969-16)
हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे ॥ (450-2)
हम किउ करि जपह इआणिआ हरि तुम वड अगम अगाह ॥ (1314-16)
हम किछु नाही एकै ओही ॥ (391-5)
हम कीआ हम करहगे हम मूरख गावार ॥ (39-11)
हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥१॥ (10-2)
हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥१॥ (492-9)
हम कुचल कुचील अति अभिमानी मिलि सबदे मैलु उतारी ॥१॥ (910-18)
हम कूकर तेरे दरबारि ॥ (969-19)
हम खेलह सभि लाड लडावह तुम सद गुणी गहीरा ॥३॥ (884-10)
हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ (13-13)
हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ (171-11)
हम गुण नाही किआ बोलह बोल ॥ (1051-11)
हम गुरि राखि लीए किरपाले ॥३॥ (1347-12)
हम गुरि राखि लीए लिव लाए ॥६॥ (1347-16)
हम गुरि राखे हरि लिव लाइ ॥५॥ (1347-15)
हम गोरू तुम गुआर गुसाई जनम जनम रखवारे ॥ (482-13)
हम घरि नामु खजाना सदा है भगति भरे भंडारा ॥ (593-9)
हम घरि साचा सोहिलड़ा प्रभ आइअड़े मीता राम ॥ (436-9)
हम घरि साजन आए ॥ (764-6)
हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे ॥ (482-11)
हम घरे साचा सोहिला साचै सबदि सुहाइआ राम ॥ (439-12)
हम चाकर गोबिंद के ठाकुरु मेरा भारा ॥ (399-18)
हम चात्रिक दीन सतिगुर सरणाई ॥ (95-5)
हम चात्रिक हम चात्रिक दीन हरि पासि बेनंती ॥४॥३॥ (574-8)
हम चात्रिक हम चात्रिक दीन हरि पासि बेनंती राम ॥ (574-5)
हम चिनी पातिसाह सांवले बरनां ॥३॥ (727-18)
हम चेरी तू अगम गुसाई किआ हम करह तेरै वसि पईआ ॥ (836-11)
हम चेरी होइ लगह गुर चरणी जिनि हरि प्रभ मारगु पंथु दिखाइआ ॥१॥ (882-2)

हम छूटे अब उन्हा ते ओइ हम ते छूटे ॥१॥ रहाउ ॥ (400-15)
हम जंत विचारे किआ करह सभु खेलु तुम सुआमी ॥ (167-19)
हम जाचिक दीन प्रभ तेरिआ मुखि दीजै अम्रित बाणी ॥ (997-6)
हम जानिआ कछू न जानह आगै जिउ हरि राखै तिउ ठाढे ॥ (171-5)
हम जेर जिमी दुनीआ पीरा मसाइका राइआ ॥ (143-18)
हम जैसे अपराधी अवरु कोई राखै जैसे हम सतिगुरि राखि लीए छडाइ ॥ (167-8)
हम डुबदे पाथर काढि लेहु प्रभ तुम्ह दीन दइआल दुख भंजु ॥२॥ (1179-15)
हम डोलत बेड़ी पाप भरी है पवणु लगै मतु जाई ॥ (878-1)
हम ढाढी हरि प्रभ खसम के नित गावह हरि गुण छंता ॥ (650-8)
हम ढींढे ढीम बहुतु अति भारी हरि धारि क्रिपा प्रभ मिलछे ॥ (1178-15)
हम तउ एक रामु कहि छूटिआ ॥४॥३॥ (794-7)
हम तिन के चरण पखालदे धूड़ि घोलि घोलि पीजै ॥१२॥ (726-3)
हम तिस का बहु जानिआ भेउ ॥ (871-18)
हम तिस की सरणागती जो सदा सहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (819-10)
हम तुअ परसादि सुखी सद ही ॥१॥ रहाउ ॥ (969-12)
हम तुम बीचु भइओ नही कोई ॥ (484-9)
हम तुम संगि झूठे सभि बोला ॥ (1005-1)
हम ते कछू न होवना सरणि प्रभ साध ॥ (816-7)
हम ते कछू न होवै देव ॥१॥ रहाउ ॥ (180-8)
हम ते कछू न होवै सुआमी जिउ राखहु तिउ रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (216-10)
हम ते किछू न होइ मेरे स्वामी करि किरपा अपुना नामु देहु ॥१॥ रहाउ ॥ (675-11)
हम तेरी धर सुआमीआ मेरे तू किउ मनहु बिसारे ॥ (1267-18)
हम तेरे जंत तू बजावनहारा ॥ (1144-11)
हम तेरे भिखारी दानु देहि दातारा ॥ (1144-11)
हम थारे त्रिभवण जगु तुमरा तू मेरा हउ तेरा ॥ (1255-14)
हम थोरे तुम बहुत मूच ॥३॥ (1182-3)
हम दासन के दास पिआरे ॥ (1035-1)
हम दासे तुम ठाकुर मेरे ॥ (187-19)
हम दीन तुम जुगु जुगु दाते सबदे देहि बुझाई ॥१॥ (603-17)
हम दीन मूरख अवीचारी तुम चिंता करहु हमारी ॥ (1257-17)
हम देखत जिनि सभु जगु लूटिआ ॥ (329-8)
हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥ (185-19)
हम नही चंगे बुरा नही कोइ ॥ (728-13)
हम नही होते तुम नही होते कवनु कहां ते आइआ ॥१॥ (973-6)
हम नान्हे नीच तुम्हे बड साहिब कुदरति कउण बीचारा ॥ (1235-12)
हम नाही चिंत पराई ॥१॥ रहाउ ॥ (795-11)
हम निरगुणी मनूर अति फीके मिलि सतिगुर पारसु कीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (1324-2)

हम निरगुनीआर नीच अजान ॥ (290-12)
हम निरधन जिउ इहु धनु पाइआ मरते फूटि गुमानी ॥३॥ (969-14)
हम नीच बिरख तुम मैलागर लाज संगि संगि बसरीआ ॥१॥ (1213-7)
हम नीच मधिम करम कीए नही चेतिओ हरि राइओ ॥ (985-2)
हम नीच मैले अति अभिमानी दूजै भाइ विकार ॥ (427-2)
हम नीच से ऊतम भए हरि की सरणाई ॥ (565-12)
हम नीच होते हीणमति झूठे तू सबदि सवारणहारा ॥ (1255-7)
हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउ करि मिलिआ जाए राम ॥ (772-8)
हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउ करि मिलिआ जाए राम ॥२॥ (772-11)
हम पंखी मन करहले हरि तरवरु पुरखु अकालि ॥ (235-7)
हम पाथर गुरु नाव बिखु भवजलु तारीऐ राम ॥ (1114-4)
हम पाथर लोह लोह बड पाथर गुर संगति नाव तरावैगो ॥ (1309-16)
हम पापी तुम पाप खंडन नीको ठाकुर देसा ॥ रहाउ ॥ (613-12)
हम पापी निरगुण कउ गुणु करीऐ ॥ (228-9)
हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे हरि दैआल सरणाइआ ॥ (575-2)
हम पापी पाखंडी लोभी हमरा गुनु अवगुनु सभु सहिआ ॥ (533-3)
हम पापी पाथर नीरि डुबत करि किरपा पाखण हम तारी ॥ रहाउ ॥ (666-16)
हम पापी बलवंचीआ मेरी जिंदुड़ीए परद्रोही ठग माइआ राम ॥ (539-11)
हम पापी बहु निरगुणीआरे करि किरपा गुरि निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (983-8)
हम पापी संगि गुर उबरे पुंनु सतिगुर केरा ॥२॥ (167-16)
हम पापी हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे राम ॥ (575-1)
हम पूछह हम पूछह सतिगुर पासि हरि बाता राम ॥ (574-9)
हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ॥ (974-2)
हम बहु पाप कीए अपराधी गुरि काटे कटित कटीति ॥ (1296-2)
हम बहु प्रीति लगी प्रभ सुआमी हम लोचह प्रभु दिखनथे ॥ (1320-3)
हम बारिक कउ रिद उसतति धारहु हम करह प्रभू सिमरणे ॥३॥ (977-4)
हम बारिक कछूअ न जानह गति मिति तेरे मूरख मुगध इआना ॥ (697-1)
हम बारिक किछू न जाणहू हरि मात पिता प्रतिपाला ॥ (985-17)
हम बारिक गुर अगम गुसाई गुर करि किरपा प्रतिपाल ॥ (1335-18)
हम बारिक तउ सरणाई ॥ (626-17)
हम बारिक तुम पिता प्रभ मेरे जन नानक बखसि मिलाइ ॥५॥२॥ (881-6)
हम बारिक तुम पिता हमारे तुम मुखि देवहु खीरा ॥ (884-10)
हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए ॥ (450-5)
हम बारिक दीन करहु प्रतिपाला ॥ (94-13)
हम बारिक दीन पिता प्रभ मेरे जिउ जानहि तिउ पारै ॥१॥ रहाउ ॥ (1214-13)
हम बारिक पिता प्रभु दाता ॥ (1266-12)
हम बारिक प्रतिपारे तुमरे तू बड पुरखु पिता मेरा माइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1319-4)

हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे ॥ (1321-2)
हम बारिक सरनि प्रभ दइआल ॥ (1338-16)
हम बारिक हरि पिता प्रतिपाली ॥ (1134-12)
हम बारिक हरि पिता प्रभ मेरे मो कउ देहु मती जितु हरि पावीऐ रे ॥ (1118-8)
हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पति है दाता ॥ (666-9)
हम भूल चूक गुर किरपा धारहु जन नानक कुतरे काढे ॥४॥७॥२१॥५९॥ (171-5)
हम भूलह तुम सदा अभूला हम पतित तुम पतित उधरीआ ॥ (1213-7)
हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ॥ (450-4)
हम मंदे मंदे मन माही ॥ (324-2)
हम मति हीण मूरख मुगध अंधे सतिगुरि मारगि पाए ॥ (246-6)
हम मलि मलि धोवह पाव गुरू के जो हरि हरि कथा सुनावै ॥२॥ (172-15)
हम मसकीन खुदाई बंदे तुम राजसु मनि भावै ॥ (480-4)
हम मूड़ मुगध असुध मति होते गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम जाने ॥१॥ रहाउ ॥ (169-18)
हम मूड़ मुगध किछु बूझहि नाही तू आपे देहि बुझाई ॥ (1155-9)
हम मूड़ मुगध किछु मिति नही पाई तू अगमु वड जाणिआ ॥ (1114-5)
हम मूड़ मुगध सदा से भाई गुर कै सबदि प्रगासा ॥१॥ (601-2)
हम मूरख अगिआन गिआनु किछु नाही ॥ (1070-3)
हम मूरख अगिआन सरनि प्रभ तेरी करि किरपा राखहु मेरी लाज पते ॥१॥ रहाउ ॥ (876-5)
हम मूरख कउ हरि किरपा करी ॥ (1134-8)
हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो ॥ (450-3)
हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता ॥१॥ (613-11)
हम मूरख मुगध अगिआन मती सरणागति पुरख अजनमा ॥ (799-6)
हम मूरख मुगध मिलाइआ हरि किरपा धारी राम ॥ (845-10)
हम मूरख मुगध सरणागती करि किरपा मेले हरि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (39-17)
हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविंद रंगा राम राजे ॥ (449-3)
हम मूरख मूरख मन माहि ॥ (666-3)
हम मैलु भरे दुहचारीआ हरि राखहु अंगी अंङु ॥ (732-3)
हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता ॥ (613-10)
हम राखु राखु दीन तेरे हरि सरनि हरि प्रभ आइआ ॥१॥ (984-5)
हम राखे गुर आपने उनि कीनो आदेसु ॥८॥ (1364-18)
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥ (167-10)
हम लोह गुर नाव बोहिथा नानक पारि लंघाई ॥४॥७॥ (1265-12)
हम वणजारे राम के ॥ (165-13)
हम संत जनां रेनारा ॥ (623-16)
हम संतन की रेनु पिआरे हम संतन की सरणा ॥ (614-2)
हम संतन सिउ बणि आई ॥ (614-3)
हम सतिगुर राखे दे करि हाथु ॥३॥ (370-9)

हम सबदि मुए सबदि मारि जीवाले भाई सबदे ही मुकति पाई ॥ (601-4)
हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥ (694-7)
हम सह केरीआ दासीआ साचा खसमु हमारा ॥५॥२॥४॥ (729-13)
हम सुखु पाइआ तां सभहि सुहेले ॥ (1141-10)
हम हरि राखे गुर सबदु बीचारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (227-3)
हम हरि राखे लगि सतिगुर पावै ॥२॥ (370-8)
हम हरि राखे सतिगुरू मिलाइआ ॥ (230-18)
हम हरि सिउ धड़ा कीआ जिस का कोई समरथु नाहि ॥२॥ (366-5)
हम हरि सिउ धड़ा कीआ मेरी हरि टेक ॥ (366-3)
हम हरि सुआमी प्रीति लगाई जितने सास लीए हम ग्रास ॥ (1295-5)
हम हरि हिरदै जपिओ नामु नरहरि प्रभि क्रिपा करी किरपास ॥ (1295-4)
हम होवत चेरी दास दासन की मेरा ठाकुरु खुसी करावै ॥२॥ (881-10)
हम होवह लाले गोले गुरसिखा के जिन्हा अनदिनु हरि प्रभु पुरखु धिआइआ ॥१॥ (493-18)
हमरा इन का दाता एकु रघुराई ॥४॥२॥ (524-17)
हमरा कहा करै संसारु ॥ (875-8)
हमरा खुसी करै नित जीउ ॥ (695-17)
हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥ (622-19)
हमरा चितु लुभत मोहि बिखिआ बहु दुरमति मैलु भरा ॥ (799-12)
हमरा जीवनु निंदकु लोरै ॥२॥ (339-5)
हमरा जोरु सभु रहिओ मेरे बीर ॥ (494-16)
हमरा झगरा रहा न कोऊ ॥ (1158-19)
हमरा ठाकुरु सतिगुरु पूरा मनु गुर की कार कमावै ॥ (172-14)
हमरा ठाकुरु सभ ते ऊचा रैणि दिनसु तिसु गावउ रे ॥ (404-6)
हमरा धनु माधउ गोबिंदु धरणीधरु इहै सार धनु कहीऐ ॥ (336-7)
हमरा बिनउ सुनहु प्रभ ठाकुर हम सरणि प्रभू हरि मागे ॥ (172-5)
हमरा भरमु गइआ भउ भागा ॥ (655-3)
हमरा मनु बैराग बिरकतु भइओ हरि दरसन मीत कै ताई ॥ (369-17)
हमरा मनु मोहिओ गुर मोहनि हम बिसम भई मुखि लागे ॥१॥ (527-5)
हमरा राजनु सदा सलामति ता को सगल घटा जसु गाइओ ॥१॥ (1235-5)
हमरा हरि धड़ा जिनि एह धड़े सभि गवाए ॥४॥ (366-8)
हमरी गणत न गणीआ काई अपणा बिरदु पछाणि ॥ (619-16)
हमरी चितवनी हरि प्रभु जानै ॥ (1320-13)
हमरी जाति पति सचु नाउ ॥ (353-4)
हमरी जाति पाति गुरु सतिगुरु हम वेचिओ सिरु गुर के ॥ (731-11)
हमरी जिहबा एक प्रभ हरि के गुण अगम अथाह ॥ (1314-15)
हमरी बेदन हरि प्रभु जानै मेरे मन अंतर की पीर ॥१॥ रहाउ ॥ (861-19)
हमरी बेदनि तू जानता साहा अवरु किआ जानै कोइ ॥ रहाउ ॥ (670-4)

हमरी भूमि कउणु घालै पैरु ॥ (178-14)
हमरी मति वसगति प्रभ तुमरै जन नानक के प्रभ समरथे ॥४॥३॥ (1320-6)
हमरी मुद्र नामु हरि सुआमी रिद अंतरि दुसट दुसटारी ॥ (528-6)
हमरे अवगन बिखिआ बिखै के बहु बार बार निमखे ॥ (976-4)
हमरे अवगुण बहुतु बहुतु है बहु बार बार हरि गणत न आवै ॥ (167-6)
हमरे अवगुन संगि गुर मेटे जन नानक मेलि लीए प्रभ पास ॥४॥३॥ (1295-9)
हमरे कपरे निंदकु धोइ ॥१॥ (339-4)
हमरे करम न बिचरहु ठाकुर तुम्ह पैज रखहु अपनीधे ॥ (1179-4)
हमरे जगजीवन हरि प्रान ॥ (1335-8)
हमरे दोख बहु जनम जनम के दुखु हउमै मैलु लगथई ॥ (1320-9)
हमरे पिता गोपाल दइआल ॥ (680-15)
हमरे पिता ठाकुर प्रभ सुआमी हरि देहु मती जसु करा ॥ (799-14)
हमरे प्रभ जगदीस गुसाई हम राखि लेहु जगंनाथ ॥ (1296-9)
हमरे प्रान गुपाल गोबिंद ॥ (672-15)
हमरे प्रान प्रीतम जन ऊतम जिन मिलिआ मनि होइ प्रतीति ॥ (1295-19)
हमरे प्रान वसगति प्रभ तुमरै मेरा जीउ पिंडु सभ तेरी ॥ (170-13)
हमरे मसतकि संत धरे हाथा ॥१॥ (1206-15)
हमरे राम नाम कहि उबरे बेद भरोसे पांडे डूबि मरहि ॥३॥५॥ (970-9)
हमरे हरि जगजीवना हरि जपिओ हरि गुर मंत ॥ (1315-6)
हमरे हरि प्रान सखा सुआमी हरि मीता मेरे मनि तनि जीह हरि हरे हरे राम नाम धनु माल ॥ (1296-14)
हमरै खोजि परहु मति कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (324-2)
हमरै घरि आइआ जगजीवनु भतारु ॥१॥ रहाउ ॥ (351-14)
हमरै जीइ होरु मुखि होरु होत है हम करमहीण कूड़िआरी ॥१॥ (528-5)
हमरै प्रभि हम लोच लगाई हम करह प्रभू हरि भाल ॥१॥ (1335-14)
हमरै मन धन राम को नामा ॥४॥४॥ (692-11)
हमरै मनि चिति हरि आस नित किउ देखा हरि दरसु तुमारा ॥ (167-3)
हमरै मसतकि दागु दगाना हम करज गुरू बहु साढे ॥ (171-2)
हमरै सुआमी लोच हम लाई हम जीवह देखि हरि मिले ॥ (975-14)
हमरै स्रवणु सिमरनु हरि कीरतनु हउ हरि बिनु रहि न सकउ हउ इकु खिनु ॥ (369-12)
हमरै हरि धड़ा जि हलतु पलतु सभु सवारी ॥३॥ (366-7)
हमरै हाथि किछु नाहि जा तू मेलहि ता हउ आइ मिला ॥ (1115-3)
हमरो करता रामु सनेही ॥ (692-19)
हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संतु कहावै ॥ (476-15)
हमरो सहाउ सदा सद भूलन तुम्हरो बिरदु पतित उधरन ॥ (828-3)
हमहु जु बूझा बूझना पूरी परी बलाइ ॥१८१॥ (1374-5)
हमा रा एकु आस वसे ॥ (144-3)
हमारा कहिआ न सुणै आपणे कारज सवारे ॥ (1154-8)

हमारा धड़ा हरि रहिआ समाई ॥१॥ (366-2)
हमारी पिआरी अम्रित धारी गुरि निमख न मन ते टारी रे ॥१॥ रहाउ ॥ (404-15)
हमारे कुल कउने रामु कहिओ ॥ (856-4)
हमारै एकै हरी हरी ॥ (715-7)
हमारै एह किरपा कीजै ॥ (1321-14)
हमारै बेढी प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (657-6)
हर रंगी तुरे नित पालीअहि कितै कामि न आई ॥ (648-9)
हर हरा सुआमी सुखह गामी अनद मंगल रसु घणा ॥ (847-15)
हरए नमसते हरए नमह ॥ (874-8)
हरख अनंत सोग नही बीआ ॥ (186-18)
हरख सोक उभे दरवारि ॥ (222-6)
हरख सोग का देह करि बाधिओ ॥ (299-12)
हरख सोग का नगरु इहु कीआ ॥ (1075-16)
हरख सोग ते रहहि निरारा ॥ (801-9)
हरख सोग ते रहहि निरारा तां तू पावहि प्रानपते ॥१॥ रहाउ ॥ (1337-15)
हरख सोग ते रहहि निरासा ॥ (1189-9)
हरख सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥१॥ (685-4)
हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥१॥ (219-3)
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥ (633-17)
हरख सोग दाझै नही तब हरि आपहि आपि ॥१८९॥ (1374-13)
हरख सोग दुहहूं ते मुकते ॥ (181-10)
हरख सोग दुहा ते मुकता जो प्रभु करे सु भावए ॥ (690-10)
हरख सोग दुहु माहि निराला करणैहारु पछाता ॥२॥ (498-1)
हरख सोग परसै जिह नाहनि सो मूरति है देवा ॥१॥ (220-5)
हरख सोग बैराग अनंदी खेलु री दिखाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (409-3)
हरख सोग लोभ मोह रहत हहि निरमल हरि के संता ॥ (1003-6)
हरख सोग सहसा संसारु हउ हउ करत बिहाइ ॥ (297-5)
हरख सोग हानि मिरतु दूख सुख चिति समसरि गुर मिले ॥१॥ रहाउ ॥ (214-13)
हरखवंत आनंत दइआला ॥ (1073-17)
हरखवंत आनंत रूप निरमल बिगासी ॥ (1386-6)
हरखहु सोगु न मिटई कबहू विणु भाणे भरमाइदा ॥७॥ (1034-17)
हरखहु सोगु विजोगु उपाइ खपाइआ ॥ (139-17)
हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥ (1427-6)
हरखु सोगु सभु दुखु है भारा ॥ (1052-13)
हरखु सोगु सभु मोहु गवाइआ ॥ (122-12)
हरणां बाजां तै सिकदारां एन्हा पड़्हिआ नाउ ॥ (1288-5)
हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥ (451-13)

हरणाखसु नखी बिदारिआ प्रहलादु लीआ उबारि ॥४॥ (1133-8)
हरणाखसु ले नखहु बिधासा ॥ (224-18)
हरणाखी कू सचु वैणु सुणाई जो तउ करे उधारणु ॥ (959-11)
हरणी होवा बनि बसा कंद मूल चुणि खाउ ॥ (157-2)
हरन धरन पुन पुनह करन ॥ (901-10)
हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥ (284-2)
हरन भरन स्मपूरना चरन कमल रंगि रितनो ॥ (212-6)
हरनाखसु छेदिओ नख बिदार ॥४॥ (1194-12)
हरनाखसु जिनि नखह बिदारिओ सुरि नर कीए सनाथा ॥ (1165-12)
हरहट भी तूं तूं करहि बोलहि भली बाणि ॥ (1420-16)
हरामखोर निरगुण कउ तूठा ॥ (1142-1)
हरि अंकि समाणी जा प्रभ भाणी सा सोहागणि नारे ॥ (1107-7)
हरि अंगीकारु करहु प्रभ सुआमी हम परे भागि तुम पाखा ॥३॥ (696-13)
हरि अंतरजामी सभ बिधि जाणै ता किसु पहि आखि सुणाईऐ ॥ (624-18)
हरि अंतरजामी सभतै वरतै जेहा हरि कराए तेहा को करईऐ ॥ (861-11)
हरि अंतरि नामु निधानु है मेरे गोविंदा गुर सबदी हरि प्रभु गाजै जीउ ॥ (174-18)
हरि अंतरि नाले बाहरि नाले कहु तिसु पासहु मन किआ चोरईऐ ॥ (861-15)
हरि अंतरि बाहरि आपि है मेरे गोविदा हरि आपि रहिआ भरपूरी जीउ ॥ (174-16)
हरि अंतरि बाहरि नदरि निहाले ॥ (105-8)
हरि अंतरि बाहरि नालि है मेरी जिंदुड़ीए सभ वेखै मनि मुकराईऐ राम ॥ (541-6)
हरि अंतरि बाहरि रहिआ भरपूरे ॥ (105-14)
हरि अंतरि बाहरि संगि रखवाला ॥७॥ (240-15)
हरि अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको इहु जीअड़ा रखिआ न जाइ जीउ ॥ (447-8)
हरि अंतरि वाजा पउणु है मेरे गोविंदा हरि आपि वजाए तिउ वाजै जीउ ॥ (174-17)
हरि अंतु न पाईऐ गुर गोपाला ॥ (1027-18)
हरि अंतु नाही पारावारु कउनु है करै बीचारु जगत पिता है स्रब प्रान को अधारु ॥ (1385-6)
हरि अंदरला पापु पंचा नो उघा करि वेखालिआ ॥ (316-1)
हरि अंदरि बाहरि इकु तूं तूं जाणहि भेतु ॥ (84-11)
हरि अंदरि सुणी पूकार ढाढी मुखि लाइआ ॥ (91-14)
हरि अउखधु जा कउ गुरि दीआ ता के निरमल चीता ॥१॥ रहाउ ॥ (208-8)
हरि अउखधु सभ घट है भाई ॥ (259-15)
हरि अकथ कथा का जिनि रसु चाखिआ तिसु जन सभ भूख लहंती ॥ (977-16)
हरि अगम अगम अगाधि तुही ॥ (987-4)
हरि अगम अगम अगाधि बोधि आदेसु हरि प्रभ राइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (984-4)
हरि अगम अगाहु अगाधि निराला ॥ (1027-17)
हरि अगम अगोचरु अपरमपर सुआमी जन पगि लगि धिआवउ होइ दासनि दासा ॥१॥ रहाउ ॥ (841-4)
हरि अगम अगोचरु गुरि अगम दिखाली ॥ (1134-12)

हरि अगम अगोचरु सदा अबिनासी ॥ (1070-7)
हरि अगमु अगोचरु अगमु हरि किउ करि हरि दरसनु पिखा ॥ (1316-6)
हरि अगमु अगोचरु अगमु हरि हरि मिलिआ आइ अचिंत ॥ (1315-7)
हरि अगमु अगोचरु अनाथु अजोनी सतिगुर कै भाइ पावणिआ ॥१॥ (118-1)
हरि अगमु अगोचरु पारब्रहमु है मिलि सतिगुर लागि बसीठा ॥ (171-14)
हरि अगमु धिआइआ गुरमती तिसु रूपु नही प्रभ रेखिआ ॥ (1316-16)
हरि अचिंतु बुलावै क्रिपा करि हरि आपे पावै थाइ ॥ (1250-14)
हरि अनिक बिंजन तुझु भोग भुंचावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (742-13)
हरि अपणी किरपा धारी ॥ (625-9)
हरि अपर्मपरु अगम अगोचरु गुर कै सबदि मिलै जनु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (361-13)
हरि अबिनासी तुमरै संगि ॥ (238-15)
हरि अबिनासी सदा थिरु निहचलु तिसु मेरे मन भजु परवाणु ॥१॥ (861-4)
हरि अभिमानु न जाई जीअहु अभिमाने पै पचीऐ ॥७॥ (1344-9)
हरि अमिउ रसाइणु पीवीऐ ॥ (132-11)
हरि अम्रित कथा सरेसट ऊतम गुर बचनी सहजे चाखी ॥ (87-17)
हरि अम्रित नामु भोजनु नित भुंचहु सरब वेला मुखि पावहु ॥ (611-15)
हरि अम्रित पान करहु साधसंगि ॥ (299-7)
हरि अम्रित बाणी गावै ॥ (623-11)
हरि अम्रित बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥ (134-12)
हरि अम्रित भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥ (449-16)
हरि अम्रित भिंने लोइणा मनु प्रेमि रतंना राम राजे ॥ (448-17)
हरि अम्रित रसु पाइआ मुआ जीवाइआ फिरि बाहुड़ि मरणु न होई ॥ (447-17)
हरि अम्रित सरु गुरि पूरिआ मिलि संगती मलु लहि जाइ ॥७॥ (234-11)
हरि अम्रिति भरे भंडार सभु किछु है घरि तिस कै बलि राम जीउ ॥ (778-1)
हरि अम्रितु आपि पीआवणहारा ॥ (165-10)
हरि अम्रितु पीवहि सदा रंगि राते हउमै त्रिसना मारि ॥ (1281-18)
हरि अम्रितु वुठड़ा मिलिआ हरि राइआ जीउ ॥ (173-5)
हरि अम्रितु सो चखै मेरे मना ॥२॥ (410-17)
हरि अम्रितु हरि जलु पाइआ सभ लाथी तिस तिस के ॥३॥ (731-10)
हरि अरथि जो खरचदे देंदे सुखु पाइआ ॥ (1246-4)
हरि अहंकारीआ मारि निवाए मनमुख मूड़ साधिआ ॥ (90-4)
हरि आइ मिलिआ जगजीवनु मेरे गोविंदा मै सुखि विहाणी रैणी जीउ ॥२॥ (174-2)
हरि आगिआ होए बेद पापु पुंनु वीचारिआ ॥ (1094-11)
हरि आतम रामु पसारिआ मेरे गोविंदा हरि वेखै आपि हदूरी जीउ ॥३॥ (174-17)
हरि आतम रामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥ (774-3)
हरि आनि मेलिओ सतिगुरू खिनु बंध मुकति कराइओ ॥१॥ (985-3)
हरि आपणी भगति कराइ वडिआई वेखालीअनु ॥ (90-19)

हरि आपणी वडिआई भावदी जन का जैकारु कराई ॥ (652-7)
हरि आपणै भाणै मनु निरमलु कीआ हरि सिउ लागा पिआरु ॥ (1276-15)
हरि आपणै भाणै स्रिसटि उपाई हरि आपे देइ अधारु ॥ (1276-14)
हरि आपनी क्रिपा करी आपि ग्रिहि आइओ हम हरि की गुर कीई है बसीठी हम हरि देखे भई निहाल निहाल निहाल निहाल ॥१॥ (977-10)
हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइ ॥३०॥ (921-8)
हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥ (921-5)
हरि आपि उपाए हरि आपे वेखै हरि आपे कारै लाइआ जीउ ॥ (173-13)
हरि आपि करतै पुरबु कीआ सतिगुरू कुलखेति नावणि गइआ ॥ (1116-6)
हरि आपि करे आपे निसतारा ॥३॥ (165-11)
हरि आपि जपाइ आपे हरि जापे ॥२॥ (165-9)
हरि आपि दइआलु दइआ करि मेलै जिसु सतिगुरू सो जनु हरि हरि अम्रित नामु चखासी ॥१॥ (1202-3)
हरि आपि बहि करे निआउ कूड़िआर सभ मारि कढोइ ॥ (89-15)
हरि आपि बुलावै आपे बोलै हरि आपि निरंजनु निरंकारु निराहारी ॥ (1135-11)
हरि आपि वरतै आपि हरि आपि बुलाइदा ॥ (644-12)
हरि आपे आपि दइआलु हरि आपे करे सु होइ ॥ (1313-7)
हरि आपे आपि वरतदा हरि जेवडु अवरु न कोइ ॥ (1313-8)
हरि आपे आपु उपाइदा हरि आपे देवै लेइ ॥ (82-8)
हरि आपे कान्हु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपे गोपी खोजी जीउ ॥ (174-10)
हरि आपे क्रिपा करे नामु देवै ॥ (233-9)
हरि आपे खेलै आपे देखै हरि आपे रचनु रचाइआ ॥ (1185-14)
हरि आपे गुरमती निसतारा ॥ (165-11)
हरि आपे घटि घटि वरतदा हरि आपे आपि बिअंत ॥ (1315-7)
हरि आपे जन लीए लाइ ॥ (1172-19)
हरि आपे जोगी डंडाधारी ॥ (165-7)
हरि आपे ठाकुरु सेवकु भगतु हरि आपे करे कराए ॥ (550-12)
हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥१॥ (10-19)
हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥१॥ (348-3)
हरि आपे तपु तापै लाइ तारी ॥१॥ (165-8)
हरि आपे नानक पावै पारा ॥४॥६॥४४॥ (165-12)
हरि आपे पंच ततु बिसथारा विचि धातू पंच आपि पावै ॥ (720-1)
हरि आपे बखसि लए प्रभु साचा हरि आपि छडाए छुटीऐ ॥१॥ (170-5)
हरि आपे बेड़ी तुलहा तारा ॥ (165-11)
हरि आपे बोलै आपि बुलावै हरि आपे जलि थलि रवि रहीऐ ॥ (594-16)
हरि आपे भगति कराइदा मेरे गोविंदा हरि भगता लोच मनि पूरी जीउ ॥ (174-14)
हरि आपे भरमि भुलाइदा हरि आपे ही मति देइ ॥ (82-9)
हरि आपे भिखिआ पाइदा सभ सिसटि उपाई जीअ जंत ॥ (1315-8)

हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ॥ (921-15)
हरि आपे मारै हरि आपे छोडै मन हरि सरणी पड़ि रहीऐ ॥ (594-17)
हरि आपे मेले सेव कराए ॥ (126-14)
हरि आपे रवि रहिआ बनवारी ॥ (165-7)
हरि आपे लए मिलाइ किउ वेछोड़ा थीवई बलि राम जीउ ॥ (778-4)
हरि आपे वेखै विगसै आपे ॥ (165-9)
हरि आपे वेखै विगसै आपे जितु भावै तितु लाए ॥ (550-12)
हरि आपे सबदु सुरति धुनि आपे ॥ (165-9)
हरि आपे सभ घट भोगदा मेरे गोविंदा आपे रसीआ भोगी जीउ ॥ (174-10)
हरि आपे सभ रस भोगदा हरि आपे कवला कंत ॥ (1315-8)
हरि आपे सरधा लाइ मिलाए हरि आपे आपि सवारे ॥ (573-8)
हरि आपे सारिंग अम्रितधारा ॥ (165-10)
हरि आपे साहु सराफु रतनु हीरा हरि आपि कीआ पासारा ॥ (720-5)
हरि आपे स्रिसटि सवारि सिरि धंधै लाइदा ॥ (644-12)
हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई ॥४॥२॥ (573-11)
हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ (573-9)
हरि आपे हरि आपे मेलै करै सो होई राम ॥ (573-9)
हरि आपे ही मति देवै सुआमी हरि आपे बोलि बुलावै ॥१॥ (719-12)
हरि आपे होइ क्रिपालु आपि लिव लावहिगे ॥ (1321-5)
हरि आराधि न जाना रे ॥ (612-7)
हरि आराधि सभो किछु पाईऐ कारज सगले साधहु ॥ रहाउ ॥ (627-17)
हरि आराधे अरोग अनदाई ॥ (612-19)
हरि आराधे जम पंथु साधे दूखु न विआपै कोई ॥ (780-18)
हरि आवते की खबरि गुरि पाई मनि तनि आनदो आनंद भए हरि आवते सुने मेरे लाल हरि लाल ॥ (977-11)
हरि इकतै कारै लाइओनु जिउ भावै तिंवै निबाहि जीउ ॥३॥ (73-11)
हरि इकना मारगि पाए आपे हरि इकना उझड़ि पाए ॥ (550-13)
हरि इकसु सेती पिरहड़ी हरि इको मेरै चिति ॥ (1315-16)
हरि इकसु हथि आइआ वरसाणे बहुतेरे ॥ (101-4)
हरि इकसै दा है अमरु इको हरि चिति धरि ॥ (83-7)
हरि इकसै दी मै टेक है जो सिरि सभना समरथु ॥ (958-19)
हरि इकसै नालि मै गोसटे मुहु मैला करै न भंगु ॥ (958-17)
हरि इकसै नालि मै दोसती हरि इकसै नालि मै रंगु ॥ (958-16)
हरि इकु धिआवहि इकु इको हरि सतिआ ॥ (646-4)
हरि इको करता इकु इको दीबाणु हरि ॥ (83-11)
हरि इको करता इकु इको दीबाणु हरि ॥ (83-6)
हरि इको करता इकु इको दीबाणु हरि ॥ (83-9)

हरि इको दाता मंगीऐ मन चिंदिआ पाईऐ ॥ (590-4)
हरि इको दाता वरतदा दूजा अवरु न कोइ ॥ (36-5)
हरि इको दाता सेवीऐ हरि इकु धिआईऐ ॥ (590-3)
हरि इको मेरा दातारु है सिरि दातिआ जग हथु ॥ (958-18)
हरि इको मेरा मसलती भंनण घड़न समरथु ॥ (958-18)
हरि इको मेरा सजणो हरि इकसै नालि मै संगु ॥ (958-16)
हरि इको वरतै इकु इको उतपतिआ ॥ (646-5)
हरि इठै नित धिआइदा ॥ (73-15)
हरि उतमु तिनी सरेविआ जिन कउ धुरि लिखिआ आहि ॥ (310-3)
हरि उतमु हरि प्रभु गाविआ करि नादु बिलावलु रागु ॥ (849-2)
हरि उसतति धारहु रिद अंतरि सुआमी सतसंगति मिलि बुधि लंञु ॥ (1179-16)
हरि ऊतमु कामु जपीऐ हरि नामु हरि जपीऐ असथिरु होवै ॥ (444-11)
हरि ऊतमु रिद अंतरि भाइओ गुरि मंतु दीओ हरि कान ॥१॥ रहाउ ॥ (1335-8)
हरि ऊतमु हरि प्रभ नामु है गुर बचनि सभागै लीता ॥ (1317-11)
हरि ऊतमु हरिआ नामु है हरि पुरखु निरंजनु मउला ॥ (1315-12)
हरि एक बिनु कछु अवरु नाही भाउ दुतीआ जालीऐ ॥ (461-14)
हरि एकु चितवै प्रभु एकु गावै हरि एकु द्रिसटी आइआ ॥ (925-19)
हरि एकु निरंजनु गाईऐ सभ अंतरि सोई ॥ (706-2)
हरि एकु सिमरि एकु सिमरि एकु सिमरि पिआरे ॥ (679-2)
हरि एको बोलै हरि एकु बुलाए गुरि पूरै हरि एकु दिखईऐ ॥२॥ (861-14)
हरि एको सूतु वरतै जुग अंतरि सूतु खिंचै एकंकारी ॥७॥ (507-7)
हरि ओट गही मन अंदरे जपि जपि जीवां नाउ ॥ (137-9)
हरि कंठि लगि सोहिआ दोख सभि जोहिआ भगति लख्यण करि वसि भए ॥ (81-6)
हरि कंठि लागे दिन सभागे मिलि नाह सेज सोहंतीआ ॥ (462-14)
हरि कंत अनंत दइआल स्रीधर गोबिंद पतित उधारणो ॥ (544-16)
हरि कथा तूं सुणि रे मन सबदु मंनि वसाइ ॥ (491-14)
हरि कथा पड़ीऐ हरि नामु सुणीऐ बेबाणु हरि रंगु गुर भावए ॥ (923-16)
हरि कथा सुणहि से धनवंत दिसहि जुग माही ॥ (231-5)
हरि कथा सुणावहु मेरे गुरसिखहु मेरे हरि प्रभ अकथ कहाणी ॥ (1317-4)
हरि कथा हरि जस साधसंगति सिउ इकु मुहतु न इहु मनु लाइओ ॥ (712-6)
हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो ॥ (79-1)
हरि करणहारं नमसकारं सरणि नानक जगदीस्वरह ॥४५॥ (1358-3)
हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ॥ (450-14)
हरि करहु क्रिपा जगजीवना गुरु सतिगुरु मेलि दइआलु ॥ (1314-19)
हरि करि किरपा सतगुरू मिलाइआ ॥ (559-13)
हरि करे सु मानीऐ हां ॥ (410-16)
हरि का एकु अचम्भउ देखिआ मेरे लाल जीउ जो करे सु धरम निआए राम ॥ (541-19)

हरि का गाहकु होवै सो लए पाए रतनु वीचारा ॥ (425-13)
हरि का ग्रिहु हरि आपि सवारिओ हरि रंग रंग महल बेअंत लाल लाल हरि लाल ॥ (977-9)
हरि का चिहनु सोई हरि जन का हरि आपे जन महि आपु रखांति ॥ (1264-12)
हरि का जनु हरि जल का मीना हरि बिसरत फूटि मरै ॥३॥ (1263-16)
हरि का जसु निधि लीआ लाभ ॥ (891-13)
हरि का जापु जपहु जपु जपने ॥ (1072-3)
हरि का तनु मनु सभु हरि कै वसि है सरीर ॥१॥ रहाउ ॥ (494-16)
हरि का दासु किछु बुरा न मागै ॥ (1152-2)
हरि का दासु नीच कुलु ऊचा तिसु संगि मन बांछत फल पाइआ ॥२॥ (497-5)
हरि का दासु नीच कुलु सुणहि ॥ (238-12)
हरि का दासु साचा दरबारि ॥ (1152-5)
हरि का नाउ अति वड ऊचा ऊची हू ऊचा होई ॥ (1416-17)
हरि का नामु अउखधु है जोगी जिस नो मंनि वसाए ॥ (909-4)
हरि का नामु अखै निधि अप्यउ ॥ (1401-14)
हरि का नामु अगोचरु पाइआ गुरमुखि सहजि सुभाई ॥ (1265-8)
हरि का नामु अमोलु है किउ कीमति कीजै ॥ (1088-19)
हरि का नामु अम्रित जलु निरमलु इहु अउखधु जगि सारा ॥ (659-14)
हरि का नामु अम्रित रसु चाखिआ मिलि सतिगुर मीठ रस गाने ॥२॥ (170-1)
हरि का नामु अम्रितु कलि माहि ॥ (888-15)
हरि का नामु अम्रितु हरि हरि हरे सो पीऐ जिसु रामु पिआसी ॥ (1202-3)
हरि का नामु अम्रितु है दारू एहु लाएहु ॥ (554-9)
हरि का नामु उतमु मनि वसै मेटि न सकै कोइ ॥ (90-6)
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥ (264-11)
हरि का नामु किनै विरलै जाता ॥ (127-17)
हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥ (264-10)
हरि का नामु कोटि लख बाहा ॥ (1072-2)
हरि का नामु गुरमुखि किनै विरलै धिआइआ जिन कंउ धुरि करमि परापति लिखतु पई ॥१७॥ (593-5)
हरि का नामु जन कउ धारै ॥ (189-13)
हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥ (265-1)
हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥ (264-17)
हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥ (264-18)
हरि का नामु जन की वडिआई ॥ (264-19)
हरि का नामु जपत आघावै ॥ (264-6)
हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥ (266-3)
हरि का नामु जपत निसतरै ॥ (264-5)
हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥ (264-5)
हरि का नामु जपन कउ दीए ॥ (1339-9)

हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥ (266-14)
हरि का नामु जपहु मेरे मीता इहै सार सुखु पूरा ॥ (215-16)
हरि का नामु जपीऐ साधसंगि ॥ (1150-11)
हरि का नामु जिनि मनि न आराधा ॥ (240-7)
हरि का नामु ततकाल उधारै ॥ (264-9)
हरि का नामु तह नालि पछानू ॥ (264-12)
हरि का नामु दास की ओट ॥ (264-15)
हरि का नामु दीओ गुरि मंत्रु ॥ (190-9)
हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥ (1193-7)
हरि का नामु धिआइ दिनु राती ऊतम पदवी पाइदा ॥१५॥ (1065-18)
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥ (135-19)
हरि का नामु धिआईऐ सतसंगति मेलि मिलाइ ॥२॥ (26-16)
हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा बधा छुटहि जितु ॥ (75-5)
हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भइआ संगि माइआ ॥ (75-6)
हरि का नामु न जपसि गवारा ॥ (655-19)
हरि का नामु न बुझई अंति गइआ पछुताइ ॥३॥ (491-17)
हरि का नामु नित नितहि लीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (973-12)
हरि का नामु निधानु कलिआणा सूख सहजु इहु सारा ॥२॥ (1003-12)
हरि का नामु निधानु है कोई गुरमुखि जाणै ॥ (726-6)
हरि का नामु निधानु है जिसु अंतु न पारावारु ॥ (65-18)
हरि का नामु निधानु है पूरै गुरि दीआ ॥ (419-14)
हरि का नामु निधानु है सेविऐ सुखु पाई ॥ (1239-4)
हरि का नामु निधानो पाइआ सुखु वसिआ मनि आए ॥३॥ (1130-8)
हरि का नामु मंनि वसाए ॥ (1054-10)
हरि का नामु मंनि वसाए ॥ (1143-16)
हरि का नामु मंनि वसाए ॥ (1148-15)
हरि का नामु मंनि वसाए ॥ (116-19)
हरि का नामु मंनि वसाए ॥ (362-2)
हरि का नामु मंनि वसाए ॥ (468-1)
हरि का नामु मनहि आधारु ॥१॥ (394-5)
हरि का नामु मनि वसिआ गुर सबदि वीचारा ॥ (1087-5)
हरि का नामु मनि वसै हउमै क्रोधु निवारि ॥ (33-17)
हरि का नामु मागु निधानु ॥ (895-7)
हरि का नामु मीठा अति रसु होइ ॥ (361-17)
हरि का नामु मीठा पिरा जीउ जा चाखहि चितु लाए ॥ (246-14)
हरि का नामु मेरै मनि भावता है ॥१॥ रहाउ ॥ (478-18)
हरि का नामु रखहि उर धारे ॥ (161-17)

हरि का नामु रखहु उरि धारि ॥ (423-17)
हरि का नामु रखै उर धारे ॥ (1047-15)
हरि का नामु रखै उरि धारि ॥७॥ (1275-18)
हरि का नामु रखै उरि धारे ॥ (1045-16)
हरि का नामु रिदै नित धिआई ॥ (394-2)
हरि का नामु रिदै वसाए ऐसा करे सीगारो ॥ (244-17)
हरि का नामु लहिओ मै लाहा ॥३॥ (524-16)
हरि का नामु लिखि लीओ सरीर ॥१॥ रहाउ ॥ (524-15)
हरि का नामु संगि उजीआरा ॥ (264-12)
हरि का नामु सचा मनि वसिआ नामे नामि समाए ॥१॥ (604-4)
हरि का नामु सति करि जाणै गुर कै भाइ पिआरे ॥ (754-1)
हरि का नामु सदा मनि भाइआ ॥ (1175-5)
हरि का नामु सदा मनि वसिआ विचि मन ही मनु मानै ॥ (1334-9)
हरि का नामु सदा सुख सागरु साचा सबदु न भाइआ ॥७॥ (565-15)
हरि का नामु सदा सुखदाता सहजे हरि रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (1334-6)
हरि का नामु सोई जनु लेइ ॥ (240-9)
हरि का नामु ह्रिदै मनि वसिआ मनसा मनहि समाई ॥१॥ (1155-5)
हरि का पंथु कोऊ बतावै हउ ता कै पाइ लागी ॥१॥ रहाउ ॥ (1265-18)
हरि का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा ॥१॥ रहाउ ॥ (693-18)
हरि का बिलोवना बिलोवहु मेरे भाई ॥ (478-7)
हरि का बिलोवना मन का बीचारा ॥ (478-9)
हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥ (265-4)
हरि का भाणा तिनी मंनिआ जिना गुरू मिलीजै ॥१६॥ (515-7)
हरि का भाणा भगती मंनिआ से भगत पए दरि थाइ ॥३॥ (65-14)
हरि का भाणा मंनहि से जन परवाणु ॥ (1129-16)
हरि का मंदरु आखीऐ काइआ कोटु गड़ु ॥ (952-5)
हरि का मंदरु तिसु महि लालु ॥ (801-12)
हरि का मंदरु सरीरु अति सोहणा हरि हरि नामु दिड़ु ॥ (952-6)
हरि का मंदरु सोहणा कीआ करणैहारि ॥ (57-8)
हरि का महलु तिन्ही पाइआ जिन्ह हउमै विचहु मारि ॥ (512-13)
हरि का महलु न पावई मरि विसटा माहि समाइ ॥१॥ (26-14)
हरि का मारगु आखीऐ कहु कितु बिधि जाईऐ ॥ (726-10)
हरि का मारगु गुर संति बताइओ गुरि चाल दिखाई हरि चाल ॥ (978-1)
हरि का मारगु रिदै निहारी ॥३॥ (684-6)
हरि का मारगु सदा पंथु विखड़ा को पाए गुर वीचारा ॥ (600-18)
हरि का रंगु कदे न उतरै गुरमुखि परगासा ॥ (1247-13)
हरि का संतु परान धन तिस का पनिहारा ॥ (745-12)

हरि का संतु मरै हाड़मबै त सगली सैन तराई ॥३॥ (484-17)
हरि का संतु मिलै गुर साधू लै तिस की धूरि मुखि लाई ॥३॥ (1263-10)
हरि का संतु सतगुरु सत पुरखा जो बोलै हरि हरि बानी ॥ (667-8)
हरि का संतु हरि की हरि मूरति जिसु हिरदै हरि नामु मुरारि ॥ (1134-19)
हरि का सभु सरीरु है हरि रवि रहिआ सभु आपै ॥ (953-16)
हरि का सिमरनु छाडि कै घरि ले आया मालु ॥११५॥ (1370-12)
हरि का सिमरनु निमख न सिमरिओ जमकंकर करत खुआर ॥१॥ (1223-18)
हरि का सिमरनु सुनि मन कानी ॥ (200-4)
हरि का सेवकु सद ही मुकता ॥ (388-9)
हरि का सेवकु सो हरि जेहा ॥ (1076-3)
हरि काटी कुटिलता कुठारि ॥ (1225-18)
हरि कितु बिधि पाईऐ संत जनहु जिसु देखि हउ जीवा ॥ (163-9)
हरि किरपा करि कै बखसि लैहु हउ पापी वड गुनहगारु ॥ (1416-7)
हरि किरपा करि सुआमी हम लाइ हरि सेवा हरि जपि जपे हरि जपि जपे जपु जापउ जगदीस ॥ (1296-17)
हरि किरपा करि सुणि बेनती हम पापी किरम तराह ॥१॥ (1314-18)
हरि किरपा ते पाईऐ हरि जपु नानक नामु अधारा ॥२॥५॥ (720-10)
हरि किरपा ते राम गुण गाए ॥३॥ (233-4)
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥१॥ (293-14)
हरि किरपा ते सतिगुरु पाईऐ भेटै सहजि सुभाइ ॥ (1277-2)
हरि किरपा ते सुखु पाइआ गुर सतिगुर चरणी लगै ॥११॥ (1098-9)
हरि किरपा ते हरि पाईऐ जा आपि हरि घलै ॥१५॥ (1091-13)
हरि किरपा ते हरि वसै मनि आए ॥३॥ (159-15)
हरि किरपा ते होआ हरि भगतु हरि भगत जना कै मुहि डिठै जगतु तरिआ सभु लोड़ीऐ ॥४॥ (550-8)
हरि किरपा धारि दीजै मति ऊतम करि लीजै मुगधु सिआना ॥१॥ (697-2)
हरि किरपा धारि पीआइआ फिरि कालु न विआपै ॥१७॥ (1092-13)
हरि किरपा धारि मेलहु सतसंगति हम धोवह पग जन के ॥२॥ (731-9)
हरि किरपा धारी दासनि दास ॥ (796-11)
हरि किरपा हरि किरपा करि गुरु सतिगुरु मेलि सुखदाता ॥१॥ (574-12)
हरि किरपा हरि किरपा करि सतिगुरु मेलि सुखदाता राम ॥ (574-9)
हरि की अकथ कथा सुनहु जन भाई जितु सहसा दूख भूख सभ लहि जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (733-8)
हरि की उपमा अनिक अनिक अनिक गुन गावत सुक नारद ब्रहमादिक तव गुन सुआमी गनिन न जाति ॥ (1200-17)
हरि की ओट जीवहि दास तेरे नानक प्रभ सरणाई ॥२॥१२॥१६॥ (1269-16)
हरि की कथा अनाहद बानी ॥ (483-14)
हरि की कथा रिद माहि बसाई ॥ (195-7)
हरि की कथा सुनत पवित ॥ (891-16)
हरि की कथा हिरदै बसावै ॥ (274-14)

हरि की कीमति किन बिधि होइ ॥ (361-13)
हरि की कीमति ना पवै किछु कहणु न जापै ॥ (953-16)
हरि की कीमति ना पवै हरि जसु लिखणु न जाइ ॥ (756-13)
हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥ (537-8)
हरि की चरणी लागि रहा विचहु आपु गवाइ ॥१॥ (994-6)
हरि की चरणी लागि रहु भजु सरणि कबीरा ॥५॥६॥५०॥ (334-2)
हरि की टहल कमावणी जपीऐ प्रभ का नामु ॥ (300-3)
हरि की टहल करत जनु सोहै ॥ (190-6)
हरि की तुम सेवा करहु दूजी सेवा करहु न कोइ जी ॥ (490-8)
हरि की दरगह नामु विसाहा ॥१॥ (1339-16)
हरि की दाति हरि जीउ जाणै ॥ (1175-17)
हरि की न सिमरहु दुख भंजना ॥१॥ रहाउ ॥ (1161-1)
हरि की नारि सु सरब सुहागणि रांड न मैलै वेसे ॥ (763-15)
हरि की पिआस पिआसी कामनि देखउ रैनि सबाई ॥ (1232-7)
हरि की पूजा दुल्मभ है संतहु कहणा कछू न जाई ॥१॥ (910-5)
हरि की प्रीति तिन ऊपजी हरि प्रेम कसाए ॥ (513-2)
हरि की प्रीति सदा संगि चालै ॥ (240-10)
हरि की प्रेम भगति मनु लीना ॥ (622-11)
हरि की भगता परतीति हरि सभ किछु जाणदा ॥ (90-12)
हरि की भगति अनदिनु सद जागे ॥ (1262-2)
हरि की भगति करहि तिन निंदहि निगुरे पसू समाना ॥२॥ (1138-18)
हरि की भगति करहु जन भाई ॥ (1031-2)
हरि की भगति करहु तजि मानु ॥ (299-7)
हरि की भगति करहु मन मीत ॥ (288-19)
हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥ (288-14)
हरि की भगति जनमु परवाणु ॥ (189-6)
हरि की भगति न देखै जाइ ॥ (1165-2)
हरि की भगति फल दाती ॥ (628-17)
हरि की भगति बिना मरि मरि रुंनिआ ॥२॥ (398-10)
हरि की भगति मुकति आनंदु ॥ (154-15)
हरि की भगति मुकति बहु करे ॥ (265-4)
हरि की भगति रते बैरागी चूके मोह पिआसा ॥ (437-18)
हरि की भगति सदा रंगि राता हउमै विचहु जाले ॥१॥ (754-6)
हरि की महिमा किछु कथनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1164-6)
हरि की मै भूख लागै हरि नामि मेरा मनु त्रिपतै हरि मेरा साकु अंति होइ सखाई ॥२॥ (490-12)
हरि की वडिआई देखहु संतहु हरि निमाणिआ माणु देवाए ॥ (735-6)
हरि की वडिआई वडी है अपुछिआ दानु देवका ॥६॥ (84-18)

हरि की वडिआई वडी है जा न सुणई कहिआ चुगल का ॥ (84-17)
हरि की वडिआई वडी है जा निआउ है धरम का ॥ (84-16)
हरि की वडिआई वडी है जा फलु है जीअ का ॥ (84-17)
हरि की वडिआई वडी है हरि कीरतनु हरि का ॥ (84-16)
हरि की वडिआई हउ आखि न साका हउ मूरखु मुगधु नीचाणु ॥ (736-8)
हरि की सरणि पइआ हरि जापी जनु नानकु दासु दसाणी हे ॥१६॥२॥ (1071-8)
हरि की सेवा चाकरी सचै सबदि पिआरि ॥ (512-12)
हरि की सेवा ते मनहु चिंदिआ फलु पाईऐ दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी ॥१॥ (490-9)
हरि की सेवा निरमल हेत ॥ (178-19)
हरि की सेवा लागे ॥३॥ (1006-6)
हरि की सेवा सतिगुरु पूजहु करि किरपा आपि तरावै ॥२॥ (1264-2)
हरि की सेवा सफल है गुरमुखि पावै थाइ ॥ (86-12)
हरि कीआ कथा कहाणीआ गुरि मीति सुणाईआ ॥ (725-10)
हरि कीआ कथा कहाणीआ मेरे पिआरे सतिगुरू सुणाईआ ॥ (452-4)
हरि कीआ सदा सदा वडिआईआ देइ न पछोताइ ॥ (653-16)
हरि कीआ है सफल जनमु हमारा ॥ (801-2)
हरि कीई हमारी सफल जाता ॥ (801-3)
हरि कीए पतित पवित्र मिलि साध गुर हरि नामै हरि रसु चाखिबा ॥ रहाउ ॥ (697-10)
हरि कीओ सगल भवन ते ऊपरि हरि सोभा हरि प्रभ दिनछे ॥२॥ (1178-13)
हरि कीरतन का आहरो हरि देहु नानक के मीत ॥१॥ (519-9)
हरि कीरतन महि ऊतम धुना ॥ (1182-10)
हरि कीरतन महि एहु मनु जागै ॥१॥ रहाउ ॥ (199-3)
हरि कीरतन रस भोग रंगु ॥ (1183-8)
हरि कीरतनु आधारु निहचलु एहु धनो ॥२॥ (398-14)
हरि कीरतनु करह हरि जसु सुणह तिसु कवला कंता ॥ (650-9)
हरि कीरतनु गावहु दिनु राती सफल एहा है कारी जीउ ॥३॥ (108-1)
हरि कीरतनु गुरमुखि जो सुनते ॥ (259-19)
हरि कीरतनु ता को आधारु ॥ (1143-2)
हरि कीरतनु भगत नित गांवदे हरि नामु सुखदाई ॥ (316-4)
हरि कीरतनु सुणै हरि कीरतनु गावै ॥ (190-5)
हरि कीरति उतमु नामु है विचि कलिजुग करणी सारु ॥ (1314-8)
हरि कीरति कलजुग विचि ऊतम मति गुरमति कथा भजंती ॥ (977-14)
हरि कीरति कलजुगि पदु ऊतमु हरि पाईऐ सतिगुर माझा ॥ (697-17)
हरि कीरति गुरमति जसु गाइओ मनि उघरे कपट कपाट ॥ (986-4)
हरि कीरति भगति अनंदु है सदा सुखु वसै मनि आइ ॥ (1250-15)
हरि कीरति मन नामु अधारु ॥ (1142-14)
हरि कीरति मनि भाई परम गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥ (446-5)

हरि कीरति मनि भाई परम गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥१॥ (446-9)
हरि कीरति रहरासि हमारी गुरमुखि पंथु अतीतं ॥३॥ (360-3)
हरि कीरति रुति आई हरि नामु वडाई हरि हरि नामु खेतु जमाइआ ॥ (446-2)
हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा ॥ (642-7)
हरि के गुण गावा जे हरि प्रभ भावा ॥ (1065-2)
हरि के गुण नित गावदे हरि गुण गाइ गुणी समझाही ॥ (649-5)
हरि के गुण नित रसना गाइआ ॥३॥ (897-11)
हरि के गुण हरि भावदे से गुरू ते पाए ॥ (725-12)
हरि के गुण हिरदै उर धारहि ॥ (1067-5)
हरि के गुन बहुत बहुत बहु सोभा हम तुछ करि करि बरनथे ॥ (1320-5)
हरि के चरण रिद माहि निवासा ॥३॥ (1150-4)
हरि के चरण रिदे महि बसे ॥ (197-3)
हरि के चरण रिदै उरि धारि ॥ (620-10)
हरि के चरण हिरदै उरि धारि ॥ (196-15)
हरि के चरण हिरदै करि ओट ॥ (198-7)
हरि के चरन अराधीअहि गुर सबदि रतनागरु ॥ (1318-8)
हरि के चरन कमल आधार ॥ (618-16)
हरि के चरन कमल मनि धिआउ ॥ (714-11)
हरि के चरन जपि जांउ कुरबानु ॥ (827-6)
हरि के चरन नित धिआवै नामा ॥४॥२॥ (873-16)
हरि के चरन सदा सुखदाई ॥ (628-8)
हरि के चरन हिरदै गाइ ॥ (1300-5)
हरि के चरन हिरदै बसावै ॥ (274-12)
हरि के चाकर सदा सुहेले गुर चरणी चितु लाए ॥ (247-4)
हरि के चोज विडान देखु जन जो खोटा खरा इक निमख पछानै ॥ (1320-17)
हरि के जन ऊतम जगि कहीअहि जिन मिलिआ पाथर सेन ॥ (1294-14)
हरि के जन सतिगुर सत पुरखा हउ बिनउ करउ गुर पासि ॥ (492-8)
हरि के जन सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥ (10-2)
हरि के दरसन को मनि चाउ ॥ (1119-17)
हरि के दास की चितवै बुरिआई तिस ही कउ फिरि मारि ॥१॥ रहाउ ॥ (674-14)
हरि के दास के चरण नमसकारहु ॥२॥ (191-6)
हरि के दास जीवे लगि प्रभ की चरणी ॥ (460-7)
हरि के दास दास हम कीजै मनु निरति करे करि नाचे ॥३॥ (169-15)
हरि के दास साध सखा जन जिन मिलिआ लहि जाइ भरांति ॥ (1264-9)
हरि के दास सिउ साकत नही संगु ॥ (198-3)
हरि के दास सुहेले भाई ॥ (601-19)
हरि के दास हरि धिआइदे करि प्रीतम सिउ नेहु ॥ (652-6)

हरि के दास हरि सेती राते ॥ (744-7)
हरि के दिते नालि किसै जोरु बखीली न चलई दिहु दिहु नित नित चड़ै सवाइआ ॥९॥ (853-10)
हरि के नाम असंख अगम हहि अगम अगम हरि राइआ ॥ (1319-5)
हरि के नाम कबीर उजागर ॥ (487-3)
हरि के नाम का पूरन रंगु ॥ (1150-11)
हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥ (290-14)
हरि के नाम की गति ठांढी ॥ (1219-1)
हरि के नाम की मति सार ॥ (1228-10)
हरि के नाम की मन रुचै ॥ (1122-1)
हरि के नाम की वडिआई ॥ (626-1)
हरि के नाम की वडिआई ॥ (890-19)
हरि के नाम के जन कांखी ॥ (1227-11)
हरि के नाम के बिआपारी ॥ (1123-8)
हरि के नाम के वापारी हरि भगत हहि जमु जागाती तिना नेड़ि न जाहु ॥ (852-8)
हरि के नाम को आधारु ॥ (1121-9)
हरि के नाम बिना जगु धंधा ॥ (358-2)
हरि के नाम बिना दुखु पावै ॥ (830-18)
हरि के नाम बिना सभ झूठु ॥ (1151-12)
हरि के नाम बिना सुंदरि है नकटी ॥ (528-7)
हरि के नाम बिनु किनि गति पाई कहि उपदेसु कबीरा ॥४॥१॥ (654-9)
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥१॥ रहाउ ॥ (694-14)
हरि के नाम बिनु दरगह मिलै सजाइ ॥१२॥ (1155-2)
हरि के नाम बिनु ध्रिगु स्रोत ॥ (1121-13)
हरि के नाम रंग संगि जागा ॥ (867-5)
हरि के नाम विटहु बलि जाउ ॥ (159-18)
हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥ (265-15)
हरि के नाम सिउ प्रीति न लागी अनिक भेख बहु जोरी ॥ (1222-13)
हरि के नाम सिउ लागी प्रीति ॥ (1339-5)
हरि के नामहीन बेताल ॥ (1222-5)
हरि के नामहीन मति थोरी ॥ (1222-12)
हरि के बिओग कैसे जीअउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ (331-1)
हरि के भगत जाणहि परताप ॥ (1271-6)
हरि के भगत सदा जन निरमल जुगि जुगि सद ही जाते ॥ (771-8)
हरि के भगत सदा थिरु सेइ ॥ (801-9)
हरि के भगत सदा सुखवासी ॥ (1076-11)
हरि के भगति भरे भंडारा ॥ (1052-8)
हरि के भजन बिनु बिरथा पूलु ॥२॥ (1149-3)

हरि के लोक सदा गुण गावहि तिन कउ मिलिआ पूरन धाम ॥ (1151-8)
हरि के लोक सि साचि सुहेले सरबी थाई नदरि करे ॥५॥ (1153-13)
हरि के लोग अवर नही कारा ॥ (686-7)
हरि के लोग नही जमु मारै ॥ (1033-5)
हरि के लोग राम जन ऊतम मिलि ऊतम पदवी पावै ॥ (881-9)
हरि के लोग राम जन नीके भागहीण न सुखाइ ॥ (881-3)
हरि के लोगा मै तउ मति का भोरा ॥ (692-6)
हरि के लोगा मो कउ नीति डसै पटवारी ॥ (793-8)
हरि के संग बसे हरि लोक ॥ (1253-12)
हरि के संत जना की हम धूरि ॥ (1198-8)
हरि के संत जना महि हरि हरि ते जन ऊतम जनक जनाक ॥ (1295-13)
हरि के संत जना हरि जपिओ गुर रंगि चलूलै राती ॥ (668-5)
हरि के संत जना हरि जपिओ तिन का दूखु भरमु भउ भागी ॥ (667-2)
हरि के संत जपहु हरि जपणा हरि संतु चलै हरि नाली ॥ (667-18)
हरि के संत जपिओ मनि हरि हरि लगि संगति साध जना की ॥ (668-11)
हरि के संत प्रिअ प्रीतम प्रभ के ता कै हरि हरि गाईऐ ॥ (700-6)
हरि के संत बतावहु मारगु हम पीछै लागि चली ॥१॥ रहाउ ॥ (527-8)
हरि के संत मनि प्रीति लगाई जिउ देखै ससि कमले ॥ (975-13)
हरि के संत मिलहि मन प्रीतम कटि देवउ हीअरा तेन ॥ (1294-13)
हरि के संत मिलहु मनु देवा जो गुरबाणी मुखि चउदा जीउ ॥२॥ (95-15)
हरि के संत मिलि प्रीति लगानी विचे गिरह उदास ॥१॥ रहाउ ॥ (1295-3)
हरि के संत मिलि राम रसु पाइआ हम जन कै बलि बलले ॥१॥ (975-11)
हरि के संत मिले हरि प्रगटे उघरि गए बिखिआ के ताक ॥१॥ (1295-11)
हरि के संत मिले हरि मिलिआ जैसे गऊ देखि बछराक ॥२॥ (1295-13)
हरि के संत मिले हरि मिलिआ हम कीए पतित पवेन ॥२॥ (1294-13)
हरि के संत संत जन नीके जिन मिलिआं मनु रंगि रंगीति ॥ (1296-1)
हरि के संत संत भल नीके मिलि संत जना मलु लहीआ ॥ (1294-7)
हरि के संत सदा थिरु पूजहु जो हरि नामु जपात ॥ (1252-1)
हरि के संत सदा परवाणु ॥ (897-11)
हरि के संत सुणहु जन भाई गुरु सेविहु बेगि बेगाली ॥ (667-16)
हरि के संत सुणहु जन भाई हरि सतिगुर की इक साखी ॥ (87-16)
हरि के संत सुनहु जसु कानी ॥ (667-9)
हरि के सखा साध जन नीके तिन ऊपरि हाथु वतावै ॥ (881-7)
हरि के सेवक जो हरि भाए तिन्ह की कथा निरारी रे ॥ (855-10)
हरि के सेवक से हरि पिआरे जिन जपिओ हरि बचनाकी ॥ (668-10)
हरि के हो संत भले ते ऊतम भगत भले जो भावत हरि राम मुरारी ॥ (1201-19)
हरि कै अरथि खरचि नह साकहि जमकालु सहहि सिरि पीड़ा ॥२॥ (698-5)

हरि कै तखति बहालीऐ निज घरि सदा वसीजै ॥ (515-6)
हरि कै दरि वरतिआ सु नानकि आखि सुणाइआ ॥ (316-3)
हरि कै नाइ सदा हरीआवली फिरि सुकै ना कुमलाइ ॥४॥ (1276-18)
हरि कै नाइ समाइ रहे चूका आवणु जाणु ॥२॥ (648-8)
हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥ (264-15)
हरि कै नामि जन कउ त्रिपति भुगति ॥ (264-18)
हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥ (264-19)
हरि कै नामि तनु मनु सीतलु होआ सहजे सहजि समाइदा ॥११॥ (1062-9)
हरि कै नामि रता बैरागी ॥ (667-3)
हरि कै नामि रती सोहागनि नानक राम भतारा ॥४॥१॥ (1197-8)
हरि कै नामि रते लिव लाए ॥१॥ (664-9)
हरि कै नामि सगल उधारि ॥४॥ (914-17)
हरि कै निकटि निकटि हरि निकट ही बसते ते हरि के जन साधू हरि भगात ॥ (1200-19)
हरि कै भजनि कउन कउन न तारे ॥ (1269-2)
हरि कै भाणै गुरु मिलै सेवा भगति बनीजै ॥ (515-5)
हरि कै भाणै जनमु पदारथु पाइआ मति ऊतम होई ॥ (365-8)
हरि कै भाणै जनु सेवा करै बूझै सचु सोई ॥ (365-7)
हरि कै भाणै सतिगुरु भेटिआ सभु जनमु सवारणहारु ॥२॥ (1276-15)
हरि कै भाणै सतिगुरु मिलै सचु सोझी होई ॥ (365-4)
हरि कै भाणै सालाहीऐ भाणै मंनिऐ सुखु होई ॥३॥ (365-8)
हरि कै भाणै सुखु पाईऐ हरि लाहा नित लीजै ॥ (515-6)
हरि कै भाणै हरि गुण गाए ॥ (1052-16)
हरि कै भाणै हरि मनि वसै सहजे रसु पीजै ॥ (515-5)
हरि कै मारगि पतित पुनीत ॥ (188-18)
हरि कै रंगि मेरा मनु राता ॥ (698-15)
हरि कै रंगि रता मनु गावै रसि रसाल रसि सबदु रवईआ ॥ (835-2)
हरि कै रंगि रता मनु माने ॥ (796-6)
हरि कै रंगि रती है कामणि मिलि प्रीतम सुखु पाए राम ॥ (770-8)
हरि कै रंगि रते बैरागी जिन्ह गुरमति नामु पछानी ॥ (1199-18)
हरि कै रंगि राता सबदे माता हउमै तजे विकारा ॥ (600-19)
हरि कै रंगि सदा गुण गाहा ॥ (698-18)
हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥ (266-15)
हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥ (264-3)
हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥ (264-3)
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ (266-13)
हरि को नामु जपीऐ नीत ॥ (1341-8)
हरि को नामु जपीऐ नीति ॥ (405-13)

हरि को नामु लै ऊतम धरमा ॥ (874-7)
हरि को नामु सदा सुखदाई ॥ (1008-5)
हरि क्रिपा करे मनि हरि रंगु लाए ॥ (732-17)
हरि क्रिपा करे सतिगुरू मिलाए ॥ (365-2)
हरि क्रिपा निधि कीनी गुरि भगति हरि दीनी तब हरि सिउ प्रीति बनि आई ॥ (669-3)
हरि क्रिपा निधि पतित उधारन ॥३॥ (1301-8)
हरि खेलु कीआ हरि आपे वरतै सभु जगतु कीआ वणजारा ॥ (1314-12)
हरि खोजहु वडभागीहो मिलि साधू संगे राम ॥ (848-11)
हरि गति मिति करता आपे जाणै सभ बिधि हरि हरि आपि बनईआ ॥ (834-4)
हरि गहिर गमभीरु गुणी गहीरु गुर कै सबदि पछानिआ ॥ (1234-12)
हरि गाइ मंगलु राम नामा हरि सेव सेवक सेवकी ॥ (576-10)
हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥ (921-18)
हरि गिआनीआ की रखदा हउ सद बलिहारी तासु ॥ (1415-4)
हरि गुण आनंद गाए प्रभ दीना नाथ प्रतिपाल जीउ ॥ (926-15)
हरि गुण कहि न सकउ बनवारी ॥ (666-16)
हरि गुण गाइ निरमल मनु करणा ॥३॥ (563-13)
हरि गुण गाइ परम पदु पाइआ प्रभ की ऊतम बाणी ॥ (781-13)
हरि गुण गाइ मिलै मलु धोई ॥१॥ रहाउ ॥ (225-16)
हरि गुण गाइ मेरा मनु सीतलाइआ ॥ (103-16)
हरि गुण गाइ सदा त्रिपतासी फिरि भूख न लागै आए ॥ (768-6)
हरि गुण गाइ सदा रंगि राते बहुड़ि न पछोताईऐ ॥ (935-16)
हरि गुण गाइ सदा लै लाहा ॥ (699-6)
हरि गुण गाउ मना सतिगुरु सेवि पिआरि ॥ (50-11)
हरि गुण गाए गुर नानक तूठे ॥२॥१२॥ (1341-5)
हरि गुण गावत तरीऐ संसारु ॥ (867-2)
हरि गुण गावत रसन अमोली ॥३॥ (180-17)
हरि गुण गावह नीता नीत ॥ (1001-3)
हरि गुण गावह सहजि सुभाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (185-19)
हरि गुण गावहि अनदिनु जागे ॥ (1048-10)
हरि गुण गावहि त्रिपति अघाही ॥ (768-5)
हरि गुण गावहि मिलि परमारंथ ॥६॥ (413-13)
हरि गुण गावहि रसन रसेरे ॥ (1025-15)
हरि गुण गावहि सचु वखाणे ॥ (111-15)
हरि गुण गावहि सद ही निरमल निरमल गुण पातिसाहा हे ॥१५॥ (1055-7)
हरि गुण गावहि सहजि सुभाए ॥३॥ (231-12)
हरि गुण गावहि हरि नित पड़हि हरि गुण गाइ समाइ ॥ (28-4)
हरि गुण गावहु कामणी सचै सबदि समाइ ॥ (1420-8)

हरि गुण गावहु मीत हमारे ॥ (698-12)
हरि गुण गावहु सदा सुभाई ॥ (623-15)
हरि गुण गावा जीवा मेरी माई ॥ (732-14)
हरि गुण गावा हरि नित चवा गुरमती हरि रंगु सदा माणि ॥ (651-6)
हरि गुण गावै अंदरु सूझै ॥ (1067-16)
हरि गुण गावै गुण संग्रहै जोती जोति मिलाए ॥ (512-5)
हरि गुण गावै गुणी गहीर ॥१॥ (1175-10)
हरि गुण गावै बैसि सु थाए ॥१॥ रहाउ ॥ (158-11)
हरि गुण गावै मति ऊतम होइ ॥ (161-10)
हरि गुण गावै संत प्रसादि ॥ (867-4)
हरि गुण गावै सदा दिनु राती मै हरि जसु कहते अंतु न लहीआ ॥ (833-13)
हरि गुण गावै सबदि सुहाए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥४॥ (127-1)
हरि गुण गावै हउ तिसु बलिहारी ॥ (528-3)
हरि गुण गावै हउमै मलु खोइ ॥ (841-9)
हरि गुण गावै हरि जन लोगा ॥ (367-3)
हरि गुण गावै हिरदै हारु परोइ ॥ (317-9)
हरि गुण गुमफहु मनि माल हरि सभ मलु परहरीऐ ॥ (320-16)
हरि गुण जपत कमलु परगासै ॥ (189-4)
हरि गुण तोटि न आवई कीमति कहणु न जाइ ॥ (646-16)
हरि गुण नित गाए नामु धिआए फिरि सोगु नाही संतापै ॥ (780-9)
हरि गुण निधि गाए सहज सुभाए प्रेम महा रस माता ॥ (1122-7)
हरि गुण निधे गोपाल ॥ (838-7)
हरि गुण पड़ीऐ हरि गुण गुणीऐ ॥ (95-1)
हरि गुण बाणी उचरहि अंतु न पारावारु ॥ (1414-9)
हरि गुण बाणी स्रवणि सुणाहा ॥ (699-15)
हरि गुण रमत नाही जम पंथ ॥ (867-7)
हरि गुण रमत पवित्र सगल कुल तारई ॥ (1362-7)
हरि गुण रमत भए आनंद ॥ (866-9)
हरि गुण रसन रवहि प्रभ संगे जो तिसु भावै सहजि हरी ॥ (505-2)
हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ (11-19)
हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ (365-15)
हरि गुण सारी ता कंत पिआरी नामे धरी पिआरो ॥ (244-1)
हरि गुण हिरदै टिकहि तिस कै जिसु अंतरि भउ भावनी होई ॥ (1115-19)
हरि गुणदाता सद मनि वसै सचु रखिआ उर धारि ॥६॥ (65-6)
हरि गुन ऊच नीच हम गाए गुर सतिगुर संगि सखे ॥ (976-3)
हरि गुन कथत सुनत बउरानो ॥१॥ (855-13)
हरि गुन कहते कहनु न जाई ॥ (659-17)

हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥ (726-16)
हरि गुन गाइ अम्रित रसु चाखै ॥ (283-9)
हरि गुन गाइ कूदहि अरु नाचै ॥३॥ (484-5)
हरि गुन गाइ परम गति पाई ॥ रहाउ ॥ (395-5)
हरि गुन गावत जनमु बितीतै ॥४॥१॥३४॥ (484-6)
हरि गुन गावत परउपकार नित तिसु रसना का मोलु किछु नाही ॥१॥ रहाउ ॥ (824-7)
हरि गुन गावहु जगदीस ॥ (1296-16)
हरि गुन नाही अंत पारे जीअ जंत सभि थारे सगल को दाता एकै अलख मुरारे ॥ (1385-13)
हरि गुर गिआनु हरि रसु हरि पाइआ ॥ (95-12)
हरि गुर पूरे की ओट पराती ॥ (1031-4)
हरि गुर मूरति एका वरतै नानक हरि गुर भाइआ ॥१०॥ (1043-8)
हरि गुर विचि आपु रखिआ हरि मेले गुर साबासि ॥२॥ (996-14)
हरि गुर सरणाई पाईऐ वणजारिआ मित्रा वडभागि परापति होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (81-19)
हरि गुर सरणाई भजि पउ जिंदू सभ किलविख दुख परहरे ॥१॥ रहाउ ॥ (82-11)
हरि गुरमुखि किरपा धारीअनु जन विछुड़े आपि मिलाइ ॥ (1415-13)
हरि गुरमुखि घड़ि टकसाल ॥ (1296-12)
हरि गुरमुखि तिन्ही अराधिआ जिन्ह करमि परापति होइ ॥ (1248-17)
हरि गुरमुखि नामु अराधि कूड़ु पापु लहि जावई ॥१०॥ (646-13)
हरि गुरमुखि नामु धिआईऐ लहि जाहि विजोगी ॥१३॥ (514-3)
हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइ जीउ ॥ (924-3)
हरि गुरु दाता राम गुपाला ॥ (416-5)
हरि गुरु नानकु जिन परसिअउ सि जनम मरण दुह थे रहिओ ॥५॥ (1386-8)
हरि गुरु नानकु जिन्ह परसिओ तिन्ह सभ कुल कीओ उधारु ॥६॥ (1386-11)
हरि गुरु नानकु जिन्ह परसिओ ते इत उत सदा मुकते ॥८॥ (1386-18)
हरि गुरु नानकु जिन्ह परसिओ ते बहुड़ि फिरि जोनि न आए ॥७॥ (1386-14)
हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥ (136-10)
हरि गुरु सरवरु सेवि तू पावहि दरगह मानु ॥१॥ रहाउ ॥ (21-9)
हरि गुरू मिलावहु मेरे पिआरे घरि वसै हरे ॥ (451-16)
हरि गोपाल गुर गोबिंद ॥ (508-5)
हरि गोविदु प्रभि राखिआ ॥ (626-16)
हरि घटि घटे घटि बसता हरि जलि थले हरि बसता हरि थान थानंतरि बसता मै हरि देखन को चाओ ॥ (1201-10)
हरि घटि घटे डीठा अम्रितो वूठा जनम मरन दुख नाठे ॥ (453-19)
हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ हरि पाइआ बलि राम जीउ ॥ (774-9)
हरि चरण कमल की टेक सतिगुरि दिती तुसि कै बलि राम जीउ ॥ (777-19)
हरि चरण कमल ध्यानं नानक कुल समूह उधारणह ॥११॥ (1360-16)
हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ (663-10)

हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ (13-6)
हरि चरण की ओट सताणी ॥ (622-12)
हरि चरण गहे नानक सरणाइ ॥४॥२२॥२८॥ (743-1)
हरि चरण जपत निसतरिआ ॥ (779-2)
हरि चरण धिआए सभि फल पाए मिटे आवण जाणा ॥ (779-3)
हरि चरण रिदै वसाइ तू किलविख होवहि नासु ॥ (491-15)
हरि चरण लागा भ्रमु भउ भागा हरि नामु रसना भाखिआ ॥ (925-19)
हरि चरण लागे सदा जागे मिले प्रभ बनवारीआ ॥ (459-16)
हरि चरण सरण अपार प्रभ के द्रिड़ु गही नानक ओट ॥५॥४॥३०॥ (502-11)
हरि चरण सरण मोहि चेरो ॥१॥ रहाउ ॥ (618-6)
हरि चरण सरोवर तह करहु निवासु मना ॥ (544-19)
हरि चरणी जा का मनु लागा ॥ (194-13)
हरि चरणी ता का मनु लाग ॥४॥९०॥१५९॥ (198-2)
हरि चरणी तूं लागि रहु गुर सबदि सोझी होई ॥ (492-2)
हरि चरणी नानक मनु लागा ॥४॥१४॥१६॥ (867-6)
हरि चरन कमल मनु बेधिआ किछु आन न मीठा राम राजे ॥ (453-18)
हरि चरन कमल मनु लीना ॥ (1278-9)
हरि चरन कमल सरनाइ मना ॥ (899-8)
हरि चरन कारन करन सुआमी पतित उधरन हरि हरे ॥ (456-15)
हरि चरन प्रीति नीत नीति पावना महि महा पुनीत ॥ (1230-6)
हरि चरन बोहिथ ताहि ॥ (838-16)
हरि चरन मेरा मनु राता ॥२॥ (1196-6)
हरि चरन रासि नानक पाई लगा प्रभ सिउ रंगु ॥२॥९३॥११६॥ (1226-16)
हरि चरन सरण गड़ कोट हमारै ॥ (742-7)
हरि चरन सरन कलिआन करन ॥ (1323-5)
हरि चरन सरन गोबिंद दुख भंजना दास अपुने कउ नामु देवहु ॥ (683-9)
हरि चरन सरन तरन सागर धुनि अनहता रस बैन ॥१॥ (1272-18)
हरि चरनी ता का मनु लाग ॥२॥७॥२५॥ (807-7)
हरि चार्हिओ रंगु मिलै गुरु सोभा हरि रंगि चलूलै रांगा ॥ (985-12)
हरि चेतहि तिन बलिहारै जाउ ॥ (1065-1)
हरि चेतहु अंति होइ सखाई ॥ (118-1)
हरि चेति अचेत मना जो इछहि सो फलु होई ॥ (491-8)
हरि चेति खाहि तिना सफलु है अचेता हथ तडाइआ ॥८॥ (85-14)
हरि चेति मन मेरे ॥ रहाउ ॥ (1185-4)
हरि चेति मन मेरे तू गुर का सबदु कमाइ ॥ (560-13)
हरि चेति रे मन महलु पावण सभ दूख भंजनु राइआ ॥ (984-7)
हरि चोली देह सवारी कढि पैधी भगति करि ॥ (646-18)

हरि छोडनि से दुरजना पड़हि दोजक कै सूलि ॥२॥ (322-12)
हरि जगजीवनु निरभउ दाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (126-4)
हरि जन अम्रित कुंट सर नीके वडभागी तितु नावाईऐ ॥१॥ (881-14)
हरि जन ऊचे सद ही ऊचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥ (769-4)
हरि जन ऊतम ऊतम बाणी मुखि बोलहि परउपकारे ॥ (493-4)
हरि जन कउ अपदा निकटि न आवै पूरन दास के काम ॥१॥ रहाउ ॥ (702-13)
हरि जन कउ इही सुहावै ॥ (613-6)
हरि जन कउ मिलिआं सुखु पाईऐ सभ दुरमति मैलु हरै ॥२॥ (1263-15)
हरि जन कउ मिलिआ सुखु पाईऐ हरि गुण गावै सहजि सुभाए ॥१॥ रहाउ ॥ (798-4)
हरि जन कउ हरि दीन्ह वडाई हरि जनु हरि कारै लावै ॥१॥ (1263-19)
हरि जन कउ हरि भूख लगानी जनु त्रिपतै जा हरि गुन बिचरै ॥ (1263-15)
हरि जन कउ हरि मिलिआ हरि सरधा ते मिलिआ गुरमुखि हरि मिलिआ ॥ (1201-12)
हरि जन कउ हरि हरि आधारु ॥३॥ (1180-11)
हरि जन करणी ऊतम है हरि कीरति जगि बिसथारि ॥३॥ (1261-1)
हरि जन का राखा एकु है किआ माणस हउमै रोइ ॥ (42-13)
हरि जन की रेन बांछ्हु दैनहार सुआमी ॥१॥ (1230-9)
हरि जन की सेवा जो करे इत ऊतहि छूटै ॥४॥ (811-18)
हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ (10-4)
हरि जन के वडभाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ (492-11)
हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥ (264-16)
हरि जन गुरु परधानु दुआरै नानक तिन जन की रेणु हरे ॥१२॥८॥ (1014-12)
हरि जन छोडिआ सगला आपु ॥ (1217-17)
हरि जन देखहु सतिगुरु नैनी ॥ (800-6)
हरि जन नाचहु हरि हरि धिआइ ॥ (368-13)
हरि जन नामु अधारु है धुरि पूरबि लिखे वड करमा ॥ (799-10)
हरि जन निकटि निकटि हरि जन है हरि राखै कंठि जन धारे ॥ (882-13)
हरि जन नेड़ि न आवई जमकंकर जमकलै ॥ (1091-12)
हरि जन प्रभु रलि एको होए हरि जन प्रभु एक समानि जीउ ॥ (447-14)
हरि जन प्रीति जपै निरंकारा ॥३॥ (164-13)
हरि जन प्रीति जा हरि जसु गावै ॥२॥ (164-12)
हरि जन प्रीति लाई हरि निरबाण पद नानक सिमरत हरि हरि भगवान ॥२॥१४॥६६॥ (369-15)
हरि जन बिहावै नाम धिआए ॥३॥ (914-4)
हरि जन बोलत स्रीराम नामा मिलि साधसंगति हरि तोर ॥१॥ रहाउ ॥ (1265-14)
हरि जन मंगल गावहु ॥१॥ रहाउ ॥ (617-10)
हरि जन माइआ माहि निसतारे ॥ (797-2)
हरि जन राखे गुर गोविंद ॥ (681-18)
हरि जन राखे पारब्रहमि आपि ॥ (1137-15)

हरि जन राम राम राम धिआंए ॥ (1208-16)
हरि जन लावहि सहजि धिआनु ॥ (1349-3)
हरि जन लीने प्रभू छडाइ ॥ (378-8)
हरि जन वडे वडे वड ऊचे जो सतगुर मेलि मिलाईऐ ॥ (881-16)
हरि जन संगति पावै पारु ॥ (1345-1)
हरि जन संत करि किरपा पगि लाइणु ॥ (1133-19)
हरि जन संत मिलहु मेरे भाई ॥ (95-6)
हरि जन सगल उधारे संग के ॥ (1208-13)
हरि जन साचे साचु कमावहि गुर कै सबदि वीचारी ॥ (600-2)
हरि जन सिमरहु हिरदै राम ॥ (702-13)
हरि जन सेवक से हरि तारे हम निरगुन राखु उपमा ॥ (799-8)
हरि जन सोभा सभ जग ऊपरि जिउ विचि उडवा ससि कीक ॥२॥ (1336-4)
हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥२९॥ (1428-1)
हरि जन हरि जसु हरि हरि गाइओ उपदेसि गुरू गुर सुने ॥ (976-14)
हरि जन हरि लिव उधरे नानक सद बलिहारु ॥४॥२१॥९१॥ (50-9)
हरि जन हरि लिव उबरे मेरी जिंदुड़ीए धुरि भाग वडे हरि पाइआ राम ॥ (539-2)
हरि जन हरि हरि चउदिआ सरु संधिआ गावार ॥ (1317-19)
हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ (13-11)
हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ (171-9)
हरि जन हरि हरि हरि प्रभि राखे जन नानक सरनि पइआ ॥४॥२॥ (1319-16)
हरि जन हरि हरि हरि लिव लाई सभि साकत खोजि पइआ ॥ (1319-12)
हरि जनि सिमरिआ नाम अधारि ॥ (620-6)
हरि जनु ऊतमु भगतु सदावै आगिआ मनि सुखु पाई ॥ (480-2)
हरि जनु ऐसा चाहीऐ जिउ पानी सरबंग ॥१४८॥ (1372-8)
हरि जनु ऐसा चाहीऐ जैसा हरि ही होइ ॥१४९॥ (1372-9)
हरि जनु करै सु निहचलु होइ ॥ (1152-4)
हरि जनु गुन गावत हसिआ ॥ (1319-10)
हरि जनु परवारु सधारु है इकीह कुली सभु जगतु छडावै ॥२॥ (166-3)
हरि जनु राम नाम गुन गावै ॥ (719-11)
हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥४॥९॥१६॥ (449-15)
हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति तास सम तुलि नही आन कोऊ ॥ (1293-8)
हरि जपते मनु मन ते धीरा ॥ (1042-2)
हरि जपदिआ खिनु ढिल न कीजई मेरी जिंदुड़ीए मतु कि जापै साहु आवै कि न आवै राम ॥ (540-15)
हरि जपि जपि अउखध खाधिआ सभि रोग गवाते दुखा घाणि ॥ (651-7)
हरि जपि जपि उधरिआ सगल जहानु ॥४॥१२॥ (1138-10)
हरि जपि जपि नानक भए निहाल ॥४॥११॥ (1341-1)
हरि जपि जपि होई पूरन आस ॥ (1184-2)

हरि जपि जपे मनु धीरे ॥१॥ रहाउ ॥ (132-19)
हरि जपि जापि रहणु हरि सरणा ॥१॥ रहाउ ॥ (153-16)
हरि जपि जापु जपउ जपमाली गुरमुखि आवै सादु मना ॥१॥ रहाउ ॥ (1332-11)
हरि जपि जीअरे छुटीऐ गुरमुखि चीनै आपु ॥३॥ (20-15)
हरि जपि नामु धिआइ तू जमु डरपै दुख भागु ॥ (57-19)
हरि जपि पड़ीऐ गुर सबदु वीचारि ॥ (424-9)
हरि जपि पड़ीऐ हउमै मारि ॥ (424-9)
हरि जपि माइआ बंधन तूटे ॥ (497-19)
हरि जपि लाहा अगला निरभउ हरि मन माह ॥४॥२३॥ (23-5)
हरि जपि सेवकु पारि उतारिओ ॥ (534-6)
हरि जपि हरि कै लगउ पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1176-4)
हरि जपि हरि वखरु लदिआ जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥२॥ (165-15)
हरि जपिआ हरि दूख बिसारनहारा ॥ (801-2)
हरि जपीऐ आराधीऐ आठ पहर गोविंदु ॥ (46-15)
हरि जपीऐ भइ सचि पिआरि ॥ (424-10)
हरि जपीऐ हरि धिआईऐ हरि का नामु अधारु ॥५१॥ (937-15)
हरि जपु मंतु गुर उपदेसु लै जापहु तिन्ह अंति छडाए जिन्ह हरि प्रीति चितासा ॥ (860-12)
हरि जपु रसना दुखु न विआपे ॥१॥ रहाउ ॥ (804-8)
हरि जपे हरि मंदरु साजिआ संत भगत गुण गावहि राम ॥ (781-12)
हरि जलनिधि हम जल के मीने जन नानक जल बिनु मरीऐ जीउ ॥४॥३॥ (95-5)
हरि जलि थलि महीअलि भरपूरि दूजा नाहि कोइ ॥ (89-15)
हरि जलु निरमलु मनु इसनानी मजनु सतिगुरु भाई ॥ (505-8)
हरि जसि संत भगत निसतारिआ ॥ (227-19)
हरि जसु ऊच सभना ते ऊपरि हरि हरि हरि सेवि छडाई ॥ रहाउ ॥ (669-2)
हरि जसु करत संत दिनु राति ॥ (264-15)
हरि जसु करमु धरमु पति पूजा ॥ (1345-2)
हरि जसु कीरतनु संगि धनु ताहा ॥ (1072-2)
हरि जसु गावहु भगवान ॥ (1297-18)
हरि जसु जपि जपु वडा वडेरा गुरमुखि रखउ उरि धारे ॥ (882-11)
हरि जसु नामु पदारथु मंगा ॥ (1042-3)
हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ॥ (727-2)
हरि जसु लिखहि बेअंत सोहहि से हथा ॥ (709-4)
हरि जसु लिखहि लाइ भावनी से हसत पविता ॥ (322-18)
हरि जसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (22-19)
हरि जसु साधसंगि मिलि गाइओ ॥ (496-16)
हरि जसु सुणीऐ जिस ते सोई भाई मित्रु ॥१॥ (218-10)
हरि जसु सुनत आलसु मनि कीना ॥३॥ (738-18)

हरि जसु सुनहि न हरि गुन गावहि ॥ (332-3)
हरि जाणहि सेई बिरहु हउ तिन विटहु सद घुमि घोलीआ ॥ (311-3)
हरि जाणै सभु किछु जो जीइ वरतै प्रभु घालिआ किसै का इकु तिलु न गवाई ॥ (859-4)
हरि जिस नो होइ दइआलु सो हरि जपि भउ बिखमु तरि ॥१॥ (83-8)
हरि जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलसी जन नानक किआ एहि जंत विचारी ॥४॥२॥६॥ (1135-12)
हरि जी अंतरि बाहरि तुम सरणागति तुम वड पुरख वडोली ॥ (169-2)
हरि जी अचिंतु वसै मनि आई ॥ (114-17)
हरि जी एह तेरी वडिआई ॥ (637-15)
हरि जी क्रिपा करे जउ अपनी तौ गुर के सबदि समावहिगे ॥३॥ (1103-19)
हरि जी तू आपे रंगु चड़ाइ ॥ (639-2)
हरि जी माता हरि जी पिता हरि जीउ प्रतिपालक ॥ (1101-17)
हरि जी मेरी सार करे हम हरि के बालक ॥ (1101-18)
हरि जी लाज रखहु हरि जन की ॥ (668-9)
हरि जी सचा सचु तू सभु किछु तेरै चीरै ॥ (38-16)
हरि जी सूखमु अगमु है कितु बिधि मिलिआ जाइ ॥ (756-18)
हरि जीअ तेरे तूं वरतदा हरि पूज कराई ॥ (166-4)
हरि जीअ सभे प्रतिपालदा घटि घटि रमईआ सोइ ॥ (81-16)
हरि जीउ अंतरजामी जान ॥ (1202-18)
हरि जीउ अपणी किरपा धारु ॥ (1129-11)
हरि जीउ अपणी क्रिपा करे तां वरतै सभ लोइ ॥ (1283-4)
हरि जीउ अपणी क्रिपा करेइ ॥ (1129-7)
हरि जीउ अम्रित बिरखु है जिन पीआ ते त्रिपतानी ॥१४॥ (514-11)
हरि जीउ अवगणिआरे नो गुणु कीजै ॥ (1048-17)
हरि जीउ अहंकारु न भावई वेद कूकि सुणावहि ॥ (1089-15)
हरि जीउ आगै करी अरदासि ॥ (415-4)
हरि जीउ आपणी क्रिपा करे ता लागै नाम पिआरु ॥ (34-12)
हरि जीउ आपि दइआलु होइ जन नानक हरि मेलाइ ॥४॥१॥३॥ (996-9)
हरि जीउ आपि वसै मनि आइ ॥ (1173-12)
हरि जीउ आपि वसै मनि आइ ॥४॥ (365-1)
हरि जीउ आपि वसै मनि आए ॥ (798-5)
हरि जीउ आपे बखसि मिलाइ ॥ (638-10)
हरि जीउ आपे लैहु मिलाइ ॥ (1176-11)
हरि जीउ इउ पिरु रावै नारि ॥ (54-2)
हरि जीउ का महलु पाइआ सचु लाइ धिआना ॥ (1089-6)
हरि जीउ की है सभ सिरकारा ॥ (1054-17)
हरि जीउ के दरसन कउ कुरबानी ॥ (1210-10)
हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु जन नानक हरि धनु पलै जीउ ॥४॥१॥ (94-9)

हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु ता हरि नामि समाणा ॥२॥ (607-18)
हरि जीउ क्रिपा करहु तुम पिआरे ॥ (603-17)
हरि जीउ क्रिपा करहु मेरे पिआरे ॥ (1155-6)
हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥ (690-2)
हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥१॥ (690-4)
हरि जीउ क्रिपा करै लिव लावै लाहा हरि हरि नामु लीओ ॥ (479-14)
हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥ (922-11)
हरि जीउ जपी हरि जीउ सालाही विचहु आपु निवारी ॥१०॥ (911-6)
हरि जीउ जा तू मेरा मित्रु है ता किआ मै काड़ा ॥ (1097-17)
हरि जीउ तिन का दरसनु ना करहु पापिसट हतिआरी ॥ (651-14)
हरि जीउ तिन की संगति मत करहु रखि लेहु हरि राइआ ॥ (1244-9)
हरि जीउ तुधु नो सदा सालाही पिआरे जिचरु घट अंतरि है सासा ॥ (601-1)
हरि जीउ तुधु विटहु बलि जाई ॥ (1333-7)
हरि जीउ तुधु विटहु वारिआ सद ही तेरे नाम विटहु बलि जाई ॥ रहाउ ॥ (601-3)
हरि जीउ तुम आपे देहु बुझाई ॥ (601-3)
हरि जीउ तूं करता करतारु ॥ (54-15)
हरि जीउ तू मेरा इकु सोई ॥ (1333-13)
हरि जीउ तू सभना का मितु है सभि जाणहि आपै ॥ (1097-5)
हरि जीउ तू सुख स्मपति रासि ॥ (619-11)
हरि जीउ तेरा दिता सभु को खावै सभ मुहताजी कढै तेरी ॥ (554-19)
हरि जीउ तेरी दाती राजा ॥ (608-5)
हरि जीउ तेरी सदा सरणाई ॥ (111-12)
हरि जीउ तेरै मनि वसै भाई सदा हरि के गुण गाइ ॥ रहाउ ॥ (603-6)
हरि जीउ दाता अगम अथाहा ॥ (1062-16)
हरि जीउ दाता भगति वछलु है करि किरपा मंनि वसाई ॥ (32-10)
हरि जीउ नामु परिओ रामदासु ॥ रहाउ ॥ (612-7)
हरि जीउ नाहु मिलिआ मउलिआ मनु तनु सासु जीउ ॥ (927-19)
हरि जीउ निमाणिआ तू माणु ॥ (624-15)
हरि जीउ निरमल निरमला निरमल मनि वासा ॥ (426-2)
हरि जीउ बखसे बखसि लए सूख सदा सरीरै ॥ (38-17)
हरि जीउ भगति वछलु सुखदाता करि किरपा मंनि वसाई ॥ (65-9)
हरि जीउ मनि वसै सभ दूख विसारणहारु ॥ (423-13)
हरि जीउ मरै न जाए गुर कै सहजि सुभाए सा धन कंत पिआरी ॥ (771-11)
हरि जीउ मिलै ता गुरमुखि बूझै चीनै सबदु अबिनासी हे ॥८॥ (1048-12)
हरि जीउ मेले आपि मिलाए ॥ (1067-6)
हरि जीउ राखहु अपनी सरणाई ॥ (352-19)
हरि जीउ राखहु अपुनी सरणाई जिउ राखहि तिउ रहणा ॥ (69-3)

हरि जीउ राखहु हिरदै उर धारा ॥ (229-18)
हरि जीउ लेखै वार न आवई तूं बखसि मिलावणहारु ॥ (1416-7)
हरि जीउ विसरिआ दूजै भाए ॥ (232-3)
हरि जीउ वेखै सद हजूरि ॥ (1173-1)
हरि जीउ सचा ऊचो ऊचा हउमै मारि मिलावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (123-1)
हरि जीउ सचा सची बाणी सबदि मिलावा होइ ॥१॥ (64-16)
हरि जीउ सचा सचु तू सचे लैहि मिलाइ ॥ (1281-9)
हरि जीउ सचा सचु है सची गुरबाणी ॥ (515-15)
हरि जीउ सतसंगति मेलाइ ॥ (1130-12)
हरि जीउ सदा तेरी सरणाई ॥ (1333-18)
हरि जीउ सदा धिआइ तू गुरमुखि एकंकारु ॥१॥ रहाउ ॥ (30-1)
हरि जीउ सफलिओ बिरखु है अम्रितु जिनि पीता तिसु तिखा लहावणिआ ॥१॥ (114-17)
हरि जीउ सबदि पछाणीऐ साचि रते गुर वाकि ॥ (55-1)
हरि जीउ सबदे जापदा भाई पूरै भागि मिलाइ ॥ (639-1)
हरि जीउ सभ महि रहिआ समाई ॥ (1066-18)
हरि जीउ साचा साची नाई ॥ (123-2)
हरि जीउ साचा साची बाणी सबदि मिलावा होई ॥१॥ (32-5)
हरि जीउ साची नदरि तुमारी ॥ (600-13)
हरि जीउ सेविहु अगम अपारा ॥ (1055-9)
हरि जीउ सेवीऐ अंतरजामी ॥ (832-18)
हरि जीउ सोई करहि जि भगत तेरे जाचहि एहु तेरा बिरदु ॥ (406-8)
हरि जीउ हिरदै रखहु उर धारे ॥ (1065-9)
हरि जीवन पदु नानक प्रभु मेरा ॥४॥३॥१९॥ (1005-9)
हरि जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चलंदी ॥ (79-4)
हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥ (451-12)
हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥ (703-2)
हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥ (134-2)
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥४॥ (134-5)
हरि जेवडु नाही कोई जाणु हरि धरमु बीचारदा ॥ (90-13)
हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥ (136-6)
हरि जैसा तैसा उही रहउ हरखि गुन गाइ ॥१२२॥ (1370-19)
हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥ (1424-16)
हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥ (642-15)
हरि जो किछु करे सु आपे आपे ओहु पूछि न किसै करे बीचारि ॥ (1135-5)
हरि जो किछु करे सु हरि किआ भगता भाइआ ॥ (176-3)
हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइआ ॥ (921-14)
हरि ठग जग कउ ठगउरी लाई ॥ (331-1)

हरि तजि अन लगे हां ॥ (411-1)
हरि तजि कत काहू के जांही ॥१॥ रहाउ ॥ (330-15)
हरि तारन तरन समरथ सभै बिधि कुलह समूह उधारन सउ ॥ (1387-9)
हरि तिन का दरसनु ना करहु जो दूजै भाइ चितु लाही ॥ (309-2)
हरि तिस की आस कीजै मन मेरे जो सभ महि सुआमी रहिआ समाई ॥१॥ (859-5)
हरि तिस कै कुलि परसूति न करीअहु तिसु बिधवा करि महतारी ॥२॥ (1263-2)
हरि तिसहि धिआवहु संत जनहु जु अंते लए छडाइ ॥ (1250-15)
हरि तिसु कदे न वीसरै हरि हरि करहि सदा मनि चीति ॥१॥ रहाउ ॥ (491-3)
हरि तिसु बिनु कोई नाहि डरु भ्रमु भउ दूरि करि ॥ (83-7)
हरि तिसै धिआवहु संत जनहु जो लए छडाई ॥२॥ (83-13)
हरि तिसै नो सालाहि जि तुधु रखै बाहरि घरि ॥ (83-8)
हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइआ बैरागीआ बलि राम जीउ ॥ (774-5)
हरि तुठड़ा मेरे पिआरे जनु नानकु नामि समाइआ ॥५॥ (452-6)
हरि तुठै ढुलि ढुलि मिलीआ जीउ ॥१॥ (173-8)
हरि तुधनो करहि सभ नमसकारु जिनि पापै ते राखिआ ॥ (90-3)
हरि तुधहु बाहरि किछु नही गुर सबदी वेखि निहालु ॥७॥ (85-6)
हरि तुधहु बाहरि किछु नाही तूं सचा साई ॥ (83-12)
हरि तुधु बाझहु मै कोई नाही ॥ (112-16)
हरि तुधु विणु खाकू रूलणा कहीऐ किथै वैण ॥ (136-18)
हरि तुधै सेवी तै तुधु सालाही ॥ (112-17)
हरि तुम वड अगम अगोचर सुआमी सभि धिआवहि हरि रुड़णे ॥ (977-1)
हरि तुम वड वडे वडे वड ऊचे सो करहि जि तुधु भावीस ॥ (1297-1)
हरि तुम्ह वड वडे वडे वड ऊचे सभ ऊपरि वडे वडौना ॥ (1315-3)
हरि तूहै दाता सभस दा सभि जीअ तुम्हारे ॥ (1318-6)
हरि तेरा कहा तुझु लए उबारि ॥ (1133-7)
हरि तेरी वडी कार मै मूरख लाईऐ ॥ (643-6)
हरि तेरी सभ करहि उसतति जिनि फाथे काढिआ ॥ (90-3)
हरि तोटि भंडार नाही रतनागर ॥ (1080-12)
हरि दइआ धारि प्रभ बेनती हरि हरि चेताइआ ॥ (163-15)
हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥ (446-18)
हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥४॥५॥१२॥ (447-2)
हरि दइआलि दइआ प्रभि कीनी मेरै मनि तनि मुखि हरि बोली ॥ (168-16)
हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥ (278-15)
हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिन्हा मेरा सतिगुरु तुठा ॥ (451-4)
हरि दरगह जन पैनाईअनि जिन हरि मनि वसिआ आइ ॥ (1316-11)
हरि दरगह ढोई ना लहन्हि मेरी जिंदुड़ीए जो मनमुख पापि लुभाणे राम ॥ (540-13)
हरि दरगह ते मुख उजले बहु सोभा पाई ॥ (310-17)

हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥२॥ (281-8)
हरि दरगह पावहि मान ॥ (1337-9)
हरि दरगह पैधे हरि नामै सीधे हरि नामै ते सुखु पाइआ ॥ (447-13)
हरि दरगह पैनाइआ हरि आपि लइआ गलि लाइ ॥९॥ (234-13)
हरि दरगह पैनाईआ हरि आपि गलि लाईआ ॥११॥ (726-2)
हरि दरगह भावहि फिरि जनमि न आवहि हरि हरि हरि जोति समाई ॥१॥ (669-1)
हरि दरगह मानु सोई जनु पावै जो नरु एकु पछाणै ॥ (438-10)
हरि दरगह सोभावंत ॥ (898-8)
हरि दरगह सोभावंत बाह लुडारीआ ॥७॥ (241-5)
हरि दरगहि गुर सबदि सिञापै ॥ (1418-5)
हरि दरगहि ते मुख उजले तिन कउ सभि देखण जाहि ॥ (310-2)
हरि दरस प्रेम जन नानक करि किरपा प्रभ दैन ॥२॥७॥२९॥ (1272-19)
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥ (133-14)
हरि दरसन कउ मेरा मनु बहु तपतै जिउ त्रिखावंतु बिनु नीर ॥१॥ (861-18)
हरि दरसन कउ हरि दरसन कउ कोटि कोटि तेतीस सिध जती जोगी तट तीरथ परभवन करत रहत निराहारी ॥ (1201-17)
हरि दरसन की पिआस है दरसनि त्रिपताइ ॥ (1248-12)
हरि दरसन की मनि पिआस घनेरी ॥ (805-3)
हरि दरसन के जन मुकति न मांगहि मिलि दरसन त्रिपति मनु धीजै ॥१॥ (1324-3)
हरि दरसन त्रिपति नानक दास पावत हरि नाम रंग आभरणी ॥२॥८॥१२॥ (702-12)
हरि दरसन प्रान अधारा ॥ (623-13)
हरि दरसन बिनु रहनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (357-1)
हरि दरसनु देहु हरि आस तुमारी ॥ (164-16)
हरि दरसनु पावै वडभागि ॥ (360-18)
हरि दरसनो दिखावहु मोहि तुम बतावहु ॥ (408-15)
हरि दरसि मनु लागा दिनसु सभागा अनदिनु हरि गुण गाही ॥ (1122-10)
हरि दरि तिन की ऊतम बात है संतहु हरि कथा जिन जनहु जानी ॥ रहाउ ॥ (669-16)
हरि दरि सोभा महा उतम बाणी ॥ (317-10)
हरि दरु सेवे अलख अभेवे निहचलु आसणु पाइआ ॥ (79-16)
हरि दरे हरि दरि सोहनि तेरे भगत पिआरे राम ॥ (453-10)
हरि दसहु संतहु जी हरि खोजु पवाई जीउ ॥ (175-13)
हरि दातड़े मेलि गुरू मुखि गुरमुखि मेलसा ॥ (452-8)
हरि दाता जीअ जंत भेखारी जनु बांछै जाचंगना ॥१॥ (1080-2)
हरि दाता सभु जगतु भिखारीआ मंगत जन जंता ॥ (650-9)
हरि दातै दातारि हथु कढिआ मीहु वुठा सैसारे ॥ (1318-6)
हरि दातै हरि नामु जपाइआ नानकु पैनाइआ ॥२१॥१॥ सुधु (91-15)
हरि दानो हरि दानु देवै हरि पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ (572-14)

हरि दास दासा दीनु सरन ॥ (986-18)
हरि दासन की आगिआ मानत ते नाही फुनि गरभ परन ॥२॥ (1206-10)
हरि दासन कै वसि है जिउ जंती कै वसि जंतु ॥ (652-5)
हरि दासन को दासु सुखु पाए ॥ (233-3)
हरि दासन दास दास हम करीअहु जन नानक दास दासंना ॥४॥१॥ (799-5)
हरि दासन सिउ प्रीति है हरि दासन को मितु ॥ (652-5)
हरि दासा का दासु होइ परम पदारथु तिसु ॥ (854-11)
हरि दिनसु रैणि नानकु जपै सद सद बलि जाई ॥४॥२०॥५०॥ (813-13)
हरि दिनु रैनि कीरतनु गाईऐ ॥ (623-18)
हरि दिनु हरि सिमरनु मेरे भाई ॥ (195-6)
हरि दिसहि हाजरु जाहरा ॥ (74-12)
हरि दीन दइआल करहु प्रभ किरपा गुर सतिगुर चरण हम बनछे ॥१॥ (1178-10)
हरि दीन दइआलि अनुग्रहु कीआ हरि गुर सबदी चखि डीठा ॥१॥ (171-13)
हरि दीना दीन दइआल प्रभु सतसंगति मेलहु संङु ॥ (732-4)
हरि दुआरै खरीआ ॥ (746-7)
हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइआ बलि राम जीउ ॥ (774-2)
हरि देखि दरसनु इछ पुंनी कुल स्मबूहा सभि तरे ॥ (459-2)
हरि देखे जीवत है नानकु इक निमख पलो मुखि लागी ॥२॥२॥९॥९॥१३॥९॥३१॥ (1266-2)
हरि देवहु दानु दइआल प्रभ जन राखहु हरि प्रभ लजिआ ॥ (1315-19)
हरि देवहु दानु दइआल प्रभ हरि मांगहि हरि जन संत ॥ (1315-9)
हरि देवहु दानु दइआल होइ विचि पाथर क्रिम जंता ॥ (650-10)
हरि देवै जलि थलि जंता सभतै ॥ (1070-13)
हरि देहु प्रभू मति ऊतमा गुर सतिगुर कै पगि पाह ॥ (1314-16)
हरि देहु बिमल मति गुर साध पग सेवह हम हरि मीठ लगाइबा ॥ (697-13)
हरि धन कउ उचका नेड़ि न आवई जमु जागाती डंडु न लगाई ॥४॥ (734-7)
हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥ (295-6)
हरि धन को वापारी पूरा ॥ (194-13)
हरि धन ते मै नव निधि पाई हाथि चरिओ हरि थोका ॥३॥ (496-1)
हरि धन मेरी चिंत विसारी हरि धनि लाहिआ धोखा ॥ (496-1)
हरि धनु अम्रित वेलै वतै का बीजिआ भगत खाइ खरचि रहे निखुटै नाही ॥ (734-5)
हरि धनु इसनानु हरि धनु गिआनु हरि संगि लाइ धिआना ॥ (495-16)
हरि धनु खटिओ जा का नाहि सुमारु ॥ (185-2)
हरि धनु खाटि कीए भंडार ॥ (867-5)
हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥ (295-18)
हरि धनु चलते हरि धनु बैसे हरि धनु जागत सूता ॥१॥ रहाउ ॥ (495-16)
हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥ (265-2)
हरि धनु जा कै ग्रिहि वसै ॥ (212-3)

हरि धनु जाप हरि धनु ताप हरि धनु भोजनु भाइआ ॥ (495-14)
हरि धनु जिनी संजिआ सेई ग्मभीर अपार जीउ ॥३॥ (132-11)
हरि धनु तुलहा हरि धनु बेड़ी हरि हरि तारि पराना ॥२॥ (495-17)
हरि धनु नामु अमोलकु देवै हरि जसु दरगह पिआरा हे ॥१६॥ (1029-19)
हरि धनु निरभउ सदा सदा असथिरु है साचा इहु हरि धनु अगनी तसकरै पाणीऐ जमदूतै किसै का गवाइआ न जाई ॥ (734-6)
हरि धनु पाइआ सोहागणी डोलत नाही चीत ॥ (929-5)
हरि धनु बनजहु हरि धनु संचहु जिसु लागत है नही चोर ॥१॥ (1265-14)
हरि धनु रतन जवेहरी सो गुरि हरि धनु हरि पासहु देवाइआ ॥ (853-6)
हरि धनु रतनु जवेहरु माणकु हरि धनै नालि अम्रित वेलै वतै हरि भगती हरि लिव लाई ॥ (734-4)
हरि धनु राखहु हरि धनु संचहु हरि चलदिआ नालि सखाई जीउ ॥१॥ (998-7)
हरि धनु रासि निरास इह बितु ॥ (892-10)
हरि धनु रासि सचु वापारा जीउ ॥ (217-15)
हरि धनु संचनु हरि नामु भोजनु इहु नानक कीनो चोल्हा ॥४॥८॥ (672-19)
हरि धनु संचहु रे जन भाई ॥ (1039-14)
हरि धनु संचीऐ भाई ॥ (734-1)
हरि धनु सची रासि है किनै विरलै जाता ॥ (319-11)
हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥ (575-1)
हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥४॥४॥ (575-4)
हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ धनु धनु कहै साबासि जीउ ॥२॥ (923-8)
हरि धारि क्रिपा जगजीवना गुर सतिगुर की सरणाइ ॥ (996-8)
हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥ (919-8)
हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुख वासी ॥ (348-7)
हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुखवासी ॥ (11-4)
हरि धिआवहु भगतहु दिनसु राति अंति लए छडाइआ ॥ (849-9)
हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ (10-19)
हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ (348-3)
हरि धिआवहु सासि गिरासि ॥ (82-18)
हरि धिआवहु हरि प्रभु सति ॥ (82-15)
हरि धिआवै हरि उचरै वणजारिआ मित्रा हरि हरि नामु समारि ॥ (76-11)
हरि धूड़ि देवहु मै पूरे गुर की हम पापी मुकतु कराइआ राम ॥ (772-16)
हरि धूड़ी नाईऐ प्रभू धिआईऐ बाहुड़ि जोनि न आईऐ ॥ (780-8)
हरि धूड़ी न्हाईऐ मैलु गवाईऐ जनम मरण दुख लाथे ॥ (453-14)
हरि न चेतहि मूड़े मुकति जाहि ॥६॥ (1189-18)
हरि न चेतै सदा दुखु पाए बिनु हरि चेते दुखु पाइदा ॥१२॥ (1065-14)
हरि न बूझै तिनि आपि भुलाइआ ॥ (1154-11)
हरि न मिले जगजीवन गुसाई ॥१॥ (483-9)

हरि न सेवहि ते हरि ते दूरि ॥ (1172-18)
हरि नदरि करे सोई जनु पाए गुरमुखि विरलै जाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (1234-11)
हरि नानक इहु मनु लाइ ॥८॥ (838-13)
हरि नानक कदे न विसरउ एहु जीउ पिंडु तेरा सासु ॥४॥२९॥९९॥ (52-18)
हरि नानक बिसरु न काहू बेरे ॥२॥१॥१९॥ (806-8)
हरि नानक बेधे चरन कमल किछु आन न मीठा ॥१॥ (454-2)
हरि नानक सरनि दुआरि ॥१०॥२॥ (838-17)
हरि नानक साचु वखाना ॥२॥१३॥७७॥ (628-3)
हरि नानकु मंगै जोड़ि कर प्रभु देवै तुठा ॥१३॥ (321-7)
हरि नाम गुण रमणं नानक संसार सागर नह बिआपणह ॥९॥ (1360-14)
हरि नाम बिना जगतु है निरधनु बिनु नावै त्रिपति नाही ॥ (1091-19)
हरि नाम बिना मै अवरु न कोइ ॥५॥ (233-7)
हरि नाम भगति सिउ लागा रंगु ॥ (1151-17)
हरि नाम महा रस चाखे ॥१॥ (630-19)
हरि नाम रसना कहन ॥ (837-11)
हरि नाम रसिक नानक गुर राजु जोगु तै माणिओ ॥६॥ (1390-6)
हरि नाम रसिकु गोबिंद गुण गाहकु चाहकु तत समत सरे ॥ (1396-15)
हरि नाम रसु रसना उचारै मिसट गूड़ा रंगु ॥१॥ (1017-8)
हरि नाम वापारी नानका वडभागी पावउ ॥२॥ (318-6)
हरि नामां हरि टेक है हरि हरि नामु अधारु ॥ (1276-9)
हरि नामा आराधि मन सभि किलविख जाहि विकार ॥ (959-18)
हरि नामा जपि सुखु पाइआ जन नानक सबदु वीचार ॥३८॥ (1417-12)
हरि नामा जसु जाचउ नाउ ॥ (355-2)
हरि नामा हरि मनि वसै सहजे हरि गुण गाइ ॥२॥ (1346-18)
हरि नामा हरि मीठ लगाना गुरि कीए सबदि निहाल ॥३॥ (1335-17)
हरि नामा हरि रंङु है हरि रंङु मजीठै रंङु ॥ (731-19)
हरि नामा हरि हरि कदे न समालै जि होवै अंति सखाई ॥ (76-19)
हरि नामि चितु लाए गुरि मेलि मिलाए मनूआ रता हरि नाले ॥ (771-3)
हरि नामि नावै सोई जनु निरमलु फिरि मैला मूलि न होई ॥ (1234-13)
हरि नामि लागि जग उधर्यउ सतिगुरु रिदै बसाइअउ ॥ (1408-5)
हरि नामु अउखधु गुरि नामु दीनो करण कारण जोगु ॥१॥ (502-6)
हरि नामु अचरजु प्रभु आपि सुणाए ॥ (666-3)
हरि नामु अपुना देहु ॥ (838-3)
हरि नामु अम्रितु चाखि त्रिपती नानका उर धारिआ ॥४॥१॥ (843-17)
हरि नामु अम्रितु पीउ नानक आन रस सभि खार ॥२॥९६॥११९॥ (1227-7)
हरि नामु अराधहि नामु वखाणहि हरि नामे ही मनु राता ॥ (802-11)
हरि नामु अराधहि मैलु सभ काटहि किलविख सगले खोवै ॥ (783-14)

हरि नामु अराधहि से धंनु जन कहीअहि तिन मसतकि भागु धुरि लिखि पावीऐ रे ॥ (1118-6)
हरि नामु कदे न चेतई जमकालु सिरि मारी ॥ (1247-19)
हरि नामु कदे न चेतिओ फिरि आवण जाणा होइ ॥ (948-4)
हरि नामु चिति न आवई नह निज घरि होवै वासु ॥ (1277-5)
हरि नामु चेता अवरु न पूजा ॥ (1048-10)
हरि नामु चेति फिरि पवहि न जूनी ॥ (932-9)
हरि नामु छोडि दूजै लगे तिन्ह के गुण हउ किआ कहउ ॥ (1396-1)
हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥ (265-1)
हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥ (264-19)
हरि नामु जपत किलबिख सभि लाथे ॥३॥ (1340-4)
हरि नामु जपत सोहंत प्राणी ता की महिमा कित गना ॥ (546-5)
हरि नामु जपै आपि उधरै ओसु पिछै डुबदे भी तरणा ॥ (953-12)
हरि नामु जपै हरि ते सुखु पावै ॥३॥ (664-6)
हरि नामु जिन्हि लए ॥१॥ (411-1)
हरि नामु ताणु हरि नामु दीबाणु हरि नामो रख करावै ॥ (303-12)
हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥ (1316-10)
हरि नामु दइआ करि पाइआ मेरे गोविंदा जन नानकु सरणि तुमारी जीउ ॥४॥३॥२९॥६७॥ (174-8)
हरि नामु दीआ गुरि परउपकारी धनु धंनु गुरू का पिता माता ॥ (592-15)
हरि नामु दीओ मसतकि वडभागे ॥२॥ (1172-13)
हरि नामु द्रिड़ावहि हरि नामु सुणावहि हरि नामे जगु निसतारिआ ॥ (311-17)
हरि नामु धनु निरमलु अति अपारा ॥ (664-1)
हरि नामु धिआइआ दूखु सगल मिटाई ॥ (233-7)
हरि नामु धिआई हरि उचरा हरि लाहा लैणी ॥ (652-2)
हरि नामु धिआईऐ सबदि रसु पाईऐ वडभागि जपीऐ हरि जसो ॥४॥ (1113-9)
हरि नामु धिआए ता सुखु पाए पेईअड़ै दिन चारे ॥ (689-8)
हरि नामु धिआए भगतु जनु सोई ॥ (880-9)
हरि नामु धिआए मंनि वसाए बूझै गुर बीचारा ॥ (568-15)
हरि नामु धिआवहि दिनसु राति हरि नामि समावै ॥१४॥ (1091-6)
हरि नामु धिआवहि रंग सिउ हरि नामि रहे लिव लाइ ॥ (510-7)
हरि नामु धिआवहु मेरे गुरसिखहु हरि ऊतमु हरि नामु अमोलु ॥ (1317-16)
हरि नामु धिआवहु हरि नामि समावहु अनदिनु लाहा हरि नामु लीआ ॥३४॥ (434-10)
हरि नामु धिआवै हरि नामो गावै हरि नामो अंति छडाइ ॥२॥ (512-11)
हरि नामु न चेतहि अंति दुखु रोइ ॥ (1418-6)
हरि नामु न चेतै बहु करम कमाए ॥ (88-17)
हरि नामु न जपहि करत बिपरीति ॥ (298-14)
हरि नामु न पाइआ जनमु बिरथा गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥२॥ (509-1)
हरि नामु न भाइआ बिरथा जनमु गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥३॥ (852-5)

हरि नामु न सिमरहि साधसंगि तै तनि उडै खेह ॥ (553-19)
हरि नामु निधानु नानक जन पाइआ सगली इछ पुजाई ॥२॥८॥३६॥ (618-10)
हरि नामु निरंजनु मंनि वसाइआ ॥ (423-9)
हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ ॥ (444-14)
हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ ॥२॥ (444-17)
हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥२॥४२॥९३॥ (394-4)
हरि नामु पिआरे सबदि निसतारे अगिआनु अधेरु गवाइआ ॥ (775-2)
हरि नामु पिता हरि नामो माता हरि नामु सखाई मित्रु हमारा ॥ (592-5)
हरि नामु बिसारिआ बहु करम द्रिड़ाए ॥ (231-2)
हरि नामु बोहिथु बडौ कलि मै भव सागर पारि उतारन कउ ॥२॥ (1404-7)
हरि नामु भगति न रिदै साचा से अंति धाही रुंनिआ ॥ (439-10)
हरि नामु भोजनु सचु आधारा ॥ (1048-8)
हरि नामु मागउ चरण लागउ मानु तिआगउ तुम्ह दइआ ॥ (457-17)
हरि नामु मिलिआ सोहागणी मेरे गोविंदा मनि अनदिनु अनदु रहसु जीउ ॥ (173-11)
हरि नामु मिलै गुर चरन सेव ॥१॥ (1169-13)
हरि नामु रसनि गुरमुखि बरदायउ उलटि गंग पस्चमि धरीआ ॥ (1393-1)
हरि नामु रसाइणु सहजि आथि ॥१॥ (1170-7)
हरि नामु रिदै उरि धारे ॥ (629-13)
हरि नामु रिदै न वसई कारजि कितै न लेखि ॥१॥ (47-16)
हरि नामु रिदै परोइआ ॥ (627-1)
हरि नामु लाहा दास कउ दीआ सगली त्रिसन उलाही संतहु ॥१॥ रहाउ ॥ (916-8)
हरि नामु लीजै अमिउ पीजै रैणि दिनसु अराधीऐ ॥ (925-15)
हरि नामु लेहु मीता लेहु आगै बिखम पंथु भैआन ॥१॥ रहाउ ॥ (214-6)
हरि नामु वडाई सतिगुर ते पाई सुखु सतिगुर देव मनु परसे ॥ (572-9)
हरि नामु वडाई हरि नामु सखाई गुर सबदी हरि रस भोग जीउ ॥ (445-4)
हरि नामु वणंजह रंग सिउ जे आपि दइआलु होइ देहि ॥१॥ (165-13)
हरि नामु वणंजहि रंग सिउ लाहा हरि नामु लै जावहि ॥ (590-12)
हरि नामु समालहि से वडभागी ॥ (120-4)
हरि नामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ ॥ (42-3)
हरि नामु सलाहनि सदा सदा वखरु हरि नामु अधारु ॥ (28-14)
हरि नामु सलाहिहु नित हरि कउ बलिहारीआ ॥ (645-18)
हरि नामु सलाही रंग सिउ सभि किलविख क्रिखा ॥ (650-3)
हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आस आधारो ॥ (450-2)
हरि नामु सिमरत मिटे किलबिख बुझी तपति अघानिआ ॥ (705-3)
हरि नामु सुणि मंने हरि नामि समाइ ॥ (313-18)
हरि नामु सुनावै नीत ॥ (980-5)
हरि नामु सेवहु विचहु आपु गवाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1174-5)

हरि नामु हम स्रेवह हरि नामु हम पूजह हरि नामे ही मनु राता ॥ (592-14)
हरि नामु हमारा पैनणु जितु फिरि नंगे न होवह होर पैनण की हमारी सरध गई ॥ (593-3)
हरि नामु हमारा प्रभु अबिगतु अगोचरु अबिनासी पुरखु बिधाता ॥ (592-13)
हरि नामु हमारा भोजनु छतीह परकार जितु खाइऐ हम कउ त्रिपति भई ॥ (593-2)
हरि नामु हमारा वणजु हरि नामु वापारु हरि नामै की हम कंउ सतिगुरि कारकुनी दीई ॥ (593-4)
हरि नामु हमारी संगति अति पिआरी हरि नामु कुलु हरि नामु परवारा ॥ (592-6)
हरि नामु हिरदै पवित्रु पावनु इहु सरीरु तउ सरणी ॥७॥ (506-1)
हरि नामे नामि समाई जीउ ॥३॥ (175-14)
हरि नामै का हम लेखा लिखिआ सभ जम की अगली काणि गई ॥ (593-5)
हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइ ॥१॥ (1185-10)
हरि नामै जेवडु कोई अवरु न सूझै हरि नामो अंति छडाता ॥ (592-15)
हरि नामै तुलि न पुजई जे लख कोटी करम कमाइ ॥२॥ (62-7)
हरि नामै तुलि न पुजई सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥३॥ (62-8)
हरि नामै हम प्रीति लगानी हम हरि विटहु घुमि वंञु ॥३॥ (1179-17)
हरि नामो मंत्रु द्रिड़ाइदा कटे हउमै रोगु ॥ (957-3)
हरि नामो वणंजड़िआ रसि मोलि अपारा राम ॥ (436-7)
हरि नामो सोभा नामु बडाई भउजलु बिखमु नामु हरि तारै ॥१॥ (1302-14)
हरि नामो हरि नामु देवै मेरा अंति सखाई राम ॥ (573-17)
हरि नामो हरि नामु देवै मेरै प्रानि वसाए राम ॥ (442-6)
हरि नामो हरि नामु द्रिड़ाए जपि हरि हरि नामु विगसे राम ॥ (572-7)
हरि नामो हरि नामु सुणाए मेरा प्रीतमु नामु अधारे राम ॥ (573-6)
हरि नारि सुहागणे सभि रंग माणे ॥ (544-12)
हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ (917-5)
हरि नावै की वडिआई करमि परापति होवै गुरमुखि विरलै किनै धिआइआ ॥१४॥ (591-16)
हरि नावै नालि गला हरि नावै नालि मसलति हरि नामु हमारी करदा नित सारा ॥ (592-5)
हरि नावै नो सभु को परतापदा विणु भागां पाइआ न जाइ ॥ (1277-6)
हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥ (133-7)
हरि निकटि बसत कछु नदरि न आवै हरि लाधा गुर वीचारा ॥१॥ (720-4)
हरि निकटि वसै जगजीवना परगासु कीओ गुर मीति ॥ (1316-19)
हरि निगम लहहि न भेव ॥ (837-15)
हरि निमाणिआ तूं माणु हरि डाढी हूं तूं डाढिआ ॥ (90-4)
हरि निरभउ नामि पतीजिआ मेरी जिंदुड़ीए सभि झख मारनु दुसट कुपते राम ॥ (540-19)
हरि निरभउ नामु धिआई जीउ ॥३॥ (216-19)
हरि निरमलु अति ऊजला बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥ (66-18)
हरि निरमलु गुर सबदि सलाही सबदो सुणि तिसा मिटावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (121-3)
हरि निरमलु निरमल है बाणी हरि सेती मनु राता हे ॥९॥ (1052-17)
हरि निरमलु सचु मैलु न लागै सचि लागै मैलु गवावणिआ ॥४॥ (116-9)

हरि निरमलु सदा गुणदाता हरि गुण महि आपि समावणिआ ॥१॥ (126-15)
हरि निरमलु सदा सुखदाता मनि चिंदिआ फलु पाउ ॥३॥ (565-11)
हरि निरमलु सदा सोहणा सबदि सवारणहारु ॥१॥ रहाउ ॥ (35-15)
हरि निरमलु हउमै मैलु गवाए दरि सचै सोभा पावणिआ ॥२॥ (115-1)
हरि निरमाइलु ऊजलो पति साची सचु बोलु ॥ (937-3)
हरि निरमाइलु निरमलु नाउ ॥४॥ (1189-8)
हरि पड़णा हरि बुझणा हरि सिउ रखहु पिआरु ॥ (937-14)
हरि पड़ीऐ हरि बुझीऐ गुरमती नामि उधारा ॥ (1009-1)
हरि पड़ु हरि लिखु हरि जपि हरि गाउ हरि भउजलु पारि उतारी ॥ (669-5)
हरि पतित पावन नामु सुआमी भउ भगत भंजनु गाइआ ॥ (984-8)
हरि पदु ऊतमु पाइआ मेरे गोविंदा वडभागी नामि समाही जीउ ॥१॥ (173-18)
हरि पदु चीनि भए से मुकते गुर का सबदु वीचारा ॥४॥ (1153-12)
हरि पदु चीन्हि भए परधाना ॥६॥ (1345-8)
हरि परपंचु कीआ सभु करतै विचि आपे आपणी जोति धरईऐ ॥ (861-13)
हरि परसिओ कलु समुलवै जन दरसनु लहणे भयौ ॥६॥ (1392-4)
हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम द्रिड़ाइआ बलि राम जीउ ॥ (773-16)
हरि पाइअड़ा मनि जीवा जीउ ॥१॥ (175-10)
हरि पाइअड़ा वडभागीई मेरे गोविंदा नित लै लाहा मनि हसु जीउ ॥३॥ (173-12)
हरि पाईऐ भागी सुणि बैरागी चरण प्रभू गहि रहीऐ ॥ (777-11)
हरि पाखंडु न कीजई बैरागीअड़े ॥ (1104-15)
हरि पाटु लगा अधिकाई बहु बहु बिधि भाति करि ॥ (646-18)
हरि पावहु मनु अगाधि ॥ (1304-6)
हरि पिर बिनु चैनु न पाईऐ खोजि डिठे सभि गैण ॥ (136-16)
हरि पी आघाने अम्रित बाने स्रब सुखा मन वुठे ॥ (80-4)
हरि पुछिआ ढाढी सदि कै कितु अरथि तूं आइआ ॥ (91-14)
हरि पुरखु न कब ही बिनसै जावै नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ (79-5)
हरि पुरखु निरंजनु सेवि हरि नामु धिआईऐ ॥ (643-6)
हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥ (289-4)
हरि पूजी चाही नामु बिसाही गुण गावै गुण भावै ॥ (442-13)
हरि पूजी हरि पूजी चाही मेरे सतिगुर साहा राम ॥ (442-13)
हरि पेखन कउ सिमरत मनु मेरा ॥ (204-13)
हरि पैज रखै मुरारि ॥ (838-16)
हरि पैनणु नामु भोजनु थीआ ॥ (99-14)
हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥ (265-3)
हरि प्रभ अगम अगोचर सुआमी मिलि सतिगुर हरि रसु कीचै जीउ ॥१॥ (95-19)
हरि प्रभ आइ मिले सुखु पाइआ सभ किलविख पाप गवाता ॥३॥ (984-14)
हरि प्रभ आनि मिलावहु गुरु साधू घसि गरुड़ु सबदु मुखि लीठा ॥ (171-17)

हरि प्रभ का सभु खेतु है हरि आपि किरसाणी लाइआ ॥ (304-6)
हरि प्रभ दाता एकु तूं तूं आपे बखसि मिलाइ ॥ (234-1)
हरि प्रभ बिनु अवरु न कोई ॥३॥ (622-14)
हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥४॥ (79-3)
हरि प्रभ रते लोइणा गिआन अंजनु गुरु देइ ॥ (1317-6)
हरि प्रभ संगि खेलहि वर कामनि गुरमुखि खोजत मन मने ॥१॥ रहाउ ॥ (1170-1)
हरि प्रभ सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविंदु ॥ (1421-14)
हरि प्रभ सुआमी किरपा धारहु हम हरि हरि सेवा लागी ॥ (667-7)
हरि प्रभि काजु रचाइआ ॥ (775-4)
हरि प्रभि क्रिपा धारी सुखदाते दुख लाथे पाप संतापा ॥ (574-15)
हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी ॥ (774-12)
हरि प्रभि फुरमाइआ मिटी बलाइआ साचु धरमु पुंनु फलिआ ॥ (781-19)
हरि प्रभु अपुना आइआ चीति ॥२॥ (1340-19)
हरि प्रभु आपि दइआल होहि तां सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ (313-10)
हरि प्रभु क्रिपा करे हरि जापहु सुख फल हरि जन पावहु ॥ (767-17)
हरि प्रभु चिति न आइओ मनि दूजा भाउ सहलंङ ॥२॥ (732-2)
हरि प्रभु चिति न आवई किउ छूटा मेरे हरि राइआ ॥१॥ (167-13)
हरि प्रभु ठाकुरु रविआ सभ ठाई सभु चेरी जगतु समारे ॥ (982-8)
हरि प्रभु देखि जीवा मेरी माई जीउ ॥ (175-3)
हरि प्रभु मिलिआ महलु घरु पाई ॥१॥ (1261-13)
हरि प्रभु मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥ (78-18)
हरि प्रभु वेखै सदा हजूरि ॥ (363-16)
हरि प्रभु वेपरवाहु है कितु खाधै तिपताइ ॥ (1414-1)
हरि प्रभु संगी भउ न भराती ॥ (1023-8)
हरि प्रभु सखा मीतु प्रभु मेरा अंते होइ सखाई ॥३॥ (32-9)
हरि प्रभु सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविंदु ॥ (854-17)
हरि प्रभु सजणु नामु हरि मै मनि तनि नामु सरीरि ॥ (1315-10)
हरि प्रभु सजणु लोड़ि लहु भागि वसै वडभागि ॥ (1317-2)
हरि प्रभु सजणु लोड़ि लहु मनि वसै वडभागु ॥ (845-3)
हरि प्रभु सदा रहिआ भरपूरि ॥ (362-2)
हरि प्रभु हरि मनि भाइआ हरि नामि वधाई राम ॥ (845-6)
हरि प्रभु हरि सोहागु है नानक मनि भाणा राम ॥१॥ (844-14)
हरि प्रान प्रभू सुखदाते ॥ (529-18)
हरि प्रीति करीजै इहु मनु दीजै अति लाईऐ चितु मुरारी ॥ (455-1)
हरि प्रीति करीजै मानु न कीजै इक राती के हभि पाहुणिआ ॥ (455-5)
हरि प्रीति पिआरे सबदि वीचारे तिस ही का सो होवै ॥ (243-8)
हरि प्रीति लगाई हरि नामु सखाई भ्रमु चूका आवणु जाणु जीउ ॥ (444-19)

हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ॥ (449-1)
हरि प्रेम भगति जन बेधिआ से आन कत जाही ॥ (1122-8)
हरि प्रेम भगति मनु तनु सद राता ॥ (1348-16)
हरि प्रेम भगति हरि प्रीति रचै ॥१॥ (407-19)
हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रंगि चोले ॥ (1424-16)
हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रंगि चोले ॥ (642-15)
हरि फुरमानु दरगह का आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (792-15)
हरि बाझु राखा कोइ नाही सोइ तुझहि बिसारिआ ॥ (439-1)
हरि बाता आखि सुणाए नानकु हरि करते एवै भावै ॥१॥ (303-15)
हरि बिअंतु हउ मिति करि वरनउ किआ जाना होइ कैसो रे ॥ (612-9)
हरि बिना कतहि समाहि ॥ (838-6)
हरि बिनु अवर क्रिआ बिरथे ॥ (216-4)
हरि बिनु अवरु न जाणा कोई हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1233-9)
हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥ (922-5)
हरि बिनु अवरु न सूझै दूजा सतिगुरि एकु बुझाइआ ॥१॥ (1234-2)
हरि बिनु आन न कोई समरथु तेरी आस तेरा मनि ताणु ॥ (1323-2)
हरि बिनु कउनु सहाई मन का ॥ (1253-16)
हरि बिनु कछू न लागई भगतन कउ मीठा ॥ (708-9)
हरि बिनु किउ जीवा मेरी माई ॥ (1232-6)
हरि बिनु किउ धीरै मनु मेरा ॥ (1232-16)
हरि बिनु किउ रहीऐ गुर सबदि पछाने ॥१॥ (796-6)
हरि बिनु किउ रहीऐ दुखु बिआपै ॥ (1197-9)
हरि बिनु किउ रहीऐ दूख किनि सहीऐ चात्रिक बूंद पिआसिआ ॥ (1122-9)
हरि बिनु किनि सुखु पाइआ देखहु मनि बीचारि ॥ (937-14)
हरि बिनु को मारि जीवालि न साकै ता मेरे मन काइतु कड़ईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (861-12)
हरि बिनु कोइ न चालसि साथ ॥ (1120-13)
हरि बिनु कोई मारि जीवालि न सकै मन होइ निचिंद निसलु होइ रहीऐ ॥ (594-17)
हरि बिनु चसा न जीवती गुर मेलिहु हरि रसु पीवा ॥१॥ रहाउ ॥ (163-10)
हरि बिनु जनमु अकारथ जात ॥ (1120-10)
हरि बिनु जीअरा रहि न सकै खिनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (796-7)
हरि बिनु जीअरा रहि न सकै जिउ बालकु खीर अधारी ॥ (506-17)
हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ॥ (14-4)
हरि बिनु जीउ न रहै कैसे राखा माई ॥१॥ रहाउ ॥ (990-17)
हरि बिनु जो रहणा नरकु सो सहणा चरन कमल मनु बेधिआ ॥ (1122-12)
हरि बिनु तेरो को न सहाई ॥ (1231-8)
हरि बिनु दूजा को नही एको नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (46-12)
हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥ (287-19)

हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी कापड़ु तनि न सुखावए ॥ (1108-14)
हरि बिनु बैल बिराने हुईहै ॥ (524-9)
हरि बिनु भरमि भुलाने अंधा ॥ (334-4)
हरि बिनु मुकति न काहू जीउ ॥ रहाउ ॥ (678-9)
हरि बिनु रहि न सकउ इक राती ॥ (668-3)
हरि बिनु रहि न सकै मनु मेरा ॥ (711-4)
हरि बिनु सभु किछु मैला संतहु किआ हउ पूज चड़ाई ॥२॥ (910-6)
हरि बिनु सांति न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए जिउ चात्रिकु जल बिनु टेरे राम ॥ (538-15)
हरि बिनु होर रासि कूड़ी है चलदिआ नालि न जाई ॥ (490-13)
हरि बिसरत काहे सुखु जानहि ॥१॥ रहाउ ॥ (184-11)
हरि बिसरत ते दुखि दुखि मरते ॥ (1267-5)
हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (12-4)
हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (357-14)
हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (990-3)
हरि बिसरत सदा खुआरी ॥ (711-15)
हरि बिसरत सभ का मुहताज ॥३॥ (802-5)
हरि बिसरत सहसा दुखु बिआपै ॥ (190-5)
हरि बिसरत सो मूआ ॥१॥ रहाउ ॥ (407-15)
हरि बिसरत होवत एह हाल ॥ (299-13)
हरि बिसरते ही हानि ॥१॥ रहाउ ॥ (1303-18)
हरि बिसरिऐ किउ त्रिपतावै ना मनु रंजीऐ ॥ (708-5)
हरि बिसरिऐ दुख रोग घनेरे ॥ (197-16)
हरि बिसरु नाही प्रान पिआरे चितवंति दरसनु सद मना ॥ (546-6)
हरि बिसारि जु आन राचहि मिथन सभ बिसथार ॥१॥ रहाउ ॥ (1228-10)
हरि बिस्राम निधि पाइआ ॥ (211-18)
हरि बोलत सभ पाप लहि जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (165-3)
हरि बोलहु गुर के सिख मेरे भाई हरि भउजलु जगतु तरावै ॥१॥ रहाउ ॥ (1264-1)
हरि बोहिथि चड़ि वडभागी लंघै गुरु खेवटु सबदि तराए ॥ (575-10)
हरि भंडारु हाथि आइआ ॥ (1006-6)
हरि भइओ खांडु रेतु महि बिखरिओ हसतंी चुनिओ न जाई ॥ (972-10)
हरि भगत निज निहकेवला रिद करमणा बचसा ॥ (526-17)
हरि भगतन को नामु अधारु ॥ (889-15)
हरि भगतां नो थिरु घरी बहालिअनु अपणी पैज रखाई ॥ (316-6)
हरि भगतां नो नित नावै दी वडिआई बखसीअनु नित चड़ै सवाई ॥ (316-5)
हरि भगतां हरि आराधिआ हरि की वडिआई ॥ (316-4)
हरि भगता करि राखे अपने दीनी नामु वडाई ॥ (1235-10)
हरि भगता का आसरा अन नाही ठाउ ॥ (815-1)

हरि भगता का मेली सरबत सउ निसुल जन टंग धरि ॥ (849-17)
हरि भगता की जाति पति है भगत हरि कै नामि समाणे राम ॥ (768-13)
हरि भगता देइ वडिआई गरीब अनाथिआ ॥१७॥ (90-5)
हरि भगता नो देइ अनंदु थिरु घरी बहालिअनु ॥ (91-1)
हरि भगता नो देइ पिआरु करि अंगु निसतारिअनु ॥१९॥ (91-2)
हरि भगता हरि धनु रासि है गुर पूछि करहि वापारु ॥ (28-13)
हरि भगता हवालै होता ॥१॥ (893-17)
हरि भगति करहि विचहु आपु गवावहि जिन गुण अवगण पछाणे राम ॥ (768-14)
हरि भगति खजाना बखसिआ गुरि नानकि कीआ पसाउ जीउ ॥ (763-7)
हरि भगति द्रिड़ावै हरि भगति सुणै तिसु सतिगुर मिलीऐ ॥ (168-14)
हरि भगति द्रिड़ु मिलु साध नानक तेरै कामि आवत एह ॥२॥२॥२५॥ (1006-14)
हरि भगति पाईऐ प्रभु धिआईऐ जाइ मिलीऐ हरि जना ॥ (544-9)
हरि भगति बिना ले धरनि गडलीआ ॥२॥ (385-3)
हरि भगति भंडार लहाइदा आपे वरताई ॥३॥ (166-4)
हरि भगति भाइ चितु लागा ॥ (623-11)
हरि भगति भाव हीणं नानक प्रभ बिसरत ते प्रेततह ॥१॥ (706-14)
हरि भगति सुहावी करमि भागु ॥३॥ (1170-11)
हरि भगति सुहावी साचे भावी भाइ भगति प्रभ राती ॥ (689-17)
हरि भगति हरि का पिआरु है जे गुरमुखि करे बीचारु ॥ (28-16)
हरि भगतिहीन उदिआन थानु ॥ (1183-7)
हरि भगती असनेहि गुरमुखि घीजई ॥१७॥ (1285-15)
हरि भगती राते मोख दुआरु ॥८॥२॥२४॥ (423-17)
हरि भगती सचि नामि पतीना ॥१॥ रहाउ ॥ (1189-4)
हरि भगवंता ता जनु खरा सुखाला ॥ (131-15)
हरि भजन सफल काम ॥१॥ रहाउ ॥ (408-19)
हरि भजि आन करम बिकार ॥ (1229-3)
हरि भजि जनमु पदारथु जीत ॥ (980-7)
हरि भजु प्राणी रसन रसाइ ॥३॥ (222-5)
हरि भजु मन मेरे तरु भउजलु तू तारी ॥१॥ रहाउ ॥ (163-19)
हरि भजु मेरे मन गहिर गमभीरा ॥१॥ रहाउ ॥ (354-1)
हरि भरिपुरे रहिआ ॥ (801-1)
हरि भाइआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ ॥ (923-18)
हरि भाउ लगा बैरागीआ वडभागी हरि मनि राखु ॥ (997-8)
हरि भाग वडे लिखि पाइआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि समाए राम ॥१॥ (538-14)
हरि भाणा गुर भाइआ गुरु जावै हरि प्रभ पासि जीउ ॥ (923-5)
हरि भाणा गुर भाइआ मेरा हरि प्रभु करे साबासि जीउ ॥ (923-9)
हरि भाणा ता भरमाइअनु करि परपंचु खेलु उपाइ ॥ (513-19)

हरि भावै गुर मेलि मिलाए हरि तारे जगतु सबाइआ ॥७॥ (1042-4)
हरि भावै सुणि बिनउ बेनती जन नानक सरणि पवीधे ॥४॥३॥५॥ (1179-4)
हरि भेटत आपु मिटाइआ ॥४॥६॥ (655-17)
हरि मंगल रसि रसन रसाए नानक नामु प्रगासा ॥२॥ (775-1)
हरि मंगलु गाउ सखी ग्रिहु मंदरु बणिआ ॥ (921-18)
हरि मंगलु नानक गाईऐ ॥४॥४॥५४॥ (622-9)
हरि मंदर महि नामु निधानु है ना बूझहि मुगध गवार ॥ (1346-9)
हरि मंदर महि मनु लोहटु है मोहिआ दूजै भाइ ॥ (1346-13)
हरि मंदर महि हरि वसै सरब निरंतरि सोइ ॥ (1346-14)
हरि मंदरि आवै जा प्रभ भावै धन ऊभी गुण सारी ॥ (1107-13)
हरि मंदरि वसतु अनेक है नव निधि नामु समालि ॥ (1418-18)
हरि मंदरु एहु जगतु है गुर बिनु घोरंधार ॥ (1346-8)
हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ ॥ (1346-4)
हरि मंदरु सबदे खोजीऐ हरि नामो लेहु सम्हालि ॥१॥ (1346-3)
हरि मंदरु सबदे सोहणा कंचनु कोटु अपार ॥४॥ (1346-7)
हरि मंदरु सोई आखीऐ जिथहु हरि जाता ॥ (953-7)
हरि मंदरु हरि का हाटु है रखिआ सबदि सवारि ॥ (1346-12)
हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ मेरे लाल जीउ हरि तिसु महि रहिआ समाए राम ॥ (542-11)
हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ रखिआ हुकमि सवारि ॥ (1346-6)
हरि मंदरु हरि साजिआ हरि वसै जिसु नालि ॥ (1418-17)
हरि मनहि मीठा प्रभू तूठा अमिउ वूठा सुख भए ॥ (577-18)
हरि मनि तनि वसिआ सोई ॥ (629-14)
हरि मनि बसे निसि बासरो ॥ (1322-16)
हरि मनि वसिआ सदा सुखदाता सबदे मनि ओमाहा हे ॥२॥ (1054-10)
हरि मनु तनो गुरमुखि भीजै राम नामु पिआरे राम ॥ (772-6)
हरि महि तनु है तन महि हरि है सरब निरंतरि सोइ रे ॥ (870-11)
हरि मानि लीए नाम दीए अवरु कछु न बीचारिआ ॥ (705-15)
हरि मारगि चलत भ्रमु सगला खोइआ ॥ (99-11)
हरि मारगु साधू दसिआ जपीऐ गुरमंतु ॥ (321-10)
हरि माला उर अंतरि धारै ॥ (388-6)
हरि माला ता कै संगि जाइ ॥४॥१९॥७०॥ (388-7)
हरि मिलणै की एह नीसानी ॥२॥ (897-10)
हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥ (134-13)
हरि मिले नराइण नानका मानोरथो पूरा ॥४॥१॥३॥ (454-11)
हरि मिले प्रभ निरंकार ॥३॥ (837-12)
हरि मिले सुआमी अंतरजामी हरि नवतन हरि नव रंगीआ ॥ (576-5)
हरि मीठा लाइआ परम सुख पाइआ मुखि भागा रती चारे ॥ (446-11)

हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिनु हरि लिव लाई ॥ (774-10)
हरि मुखि पाठ पड़ै बीचार ॥३॥ (355-6)
हरि मेरा धनु मेरै साथि चालै जहा हउ जाउ तह जाई ॥३॥ (490-13)
हरि मेरा सखा मन माहि दीबाणु ॥२॥ (375-6)
हरि मेरा साथी संगि सखाई ॥ (375-4)
हरि मेरा सिम्रिति हरि मेरा सासत्र हरि मेरा बंधपु हरि मेरा भाई ॥ (490-11)
हरि मेरी ओट मै हरि का ताणु ॥ (375-5)
हरि मेरी पूंजी मेरा हरि वेसाहु ॥ (375-6)
हरि मेरी प्रीति रीति है हरि मेरी हरि मेरी कथा कहानी जी ॥ (490-10)
हरि मेरी वरतणि हरि मेरी रासि ॥४॥२४॥३५॥ (894-3)
हरि मेरो पिरु हउ हरि की बहुरीआ ॥ (483-10)
हरि मेलहु संत जीउ गोविद प्रभ पासा जीउ ॥ (175-7)
हरि मेलहु संत जीउ मनि लगा भाउ जीउ ॥ (175-6)
हरि मेलहु सजणु पुरखु मेरा सिरु तिन विटहु तल रोलीआ ॥ (311-4)
हरि मेलहु सतिगुर दइआ करि गुर कउ बलिहारी ॥२३॥ (651-16)
हरि मेलहु सतिगुरु दइआ करि मनि वसै एकंकारु ॥ (1314-11)
हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१॥ (133-10)
हरि मेलि दिखाए आपि हरि गुर बचनी नामि समाणी ॥ (1317-5)
हरि मोहिअड़ी साच सबदि ठाकुर देखि रहंसी राम ॥ (765-2)
हरि रंग कउ लोचै सभु कोई ॥ (732-19)
हरि रंग रंग रंग अनूपेरै ॥ (1304-13)
हरि रंग रंगा सहजि माणु ॥ (1180-18)
हरि रंग रांग भए मन लाला राम नाम रस खीवनि ॥१॥ (1222-2)
हरि रंग राते सदा रंगु साचा दुख बिसरे पति पाई ॥१॥ (1345-10)
हरि रंगि अनदिनु जागे ॥ (778-16)
हरि रंगि चलूलै जो रते तिन भिनी हरि रंगि चोलीआ ॥ (311-5)
हरि रंगि जागे पाप भागे मिले संत पिआरिआ ॥ (778-16)
हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते रसना हरि रसु पिआए ॥ (513-2)
हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते हरि रसि मनु त्रिपतावणिआ ॥१॥ (127-8)
हरि रंगि राता मनु रंग माणे ॥ (732-18)
हरि रंगि राता मनु राम गुन गावै ॥ (1340-2)
हरि रंगि राता सद बैरागी हरि निकटि तिना घरि आवैगो ॥ (1310-4)
हरि रंगि राता सो मनु साचा ॥ (194-6)
हरि रंगि राती सहजे माती हरि प्रभु हरि हरि पाइआ ॥ (576-8)
हरि रंगि राते प्रभ बिधाते राम के गुण गावहे ॥ (458-8)
हरि रंगि राते मोहु चुकाइ ॥ (362-4)
हरि रंगि राते सहजि माते तिलु न मन ते बीसरै ॥ (929-14)

हरि रंगी इक रंगी ठाकुरु संतसंगि प्रभु जाता ॥ (1236-17)
हरि रंगी हरि नामु प्रभ पाइआ हरि गोविंद हरि प्रभ केरा ॥ (711-6)
हरि रंगु अखाड़ा पाइओनु मेरे लाल जीउ आवणु जाणु सबाए राम ॥ (541-19)
हरि रंगु कदे न उतरै गुर सेवा सबदु समालि ॥९॥ (235-6)
हरि रंगु चड़िआ अति अपारा हरि रसि रसि गुण गावणिआ ॥६॥ (117-4)
हरि रंगु नालि न लखीऐ मेरे गोविदा गुरु पूरा अलखु लखाही जीउ ॥ (173-16)
हरि रंगु लहै न उतरै कबहू हरि हरि जाइ मिलै हरि प्रीति ॥३॥ (1296-2)
हरि रखे से उबरे सबदि रहे लिव लाइ ॥ (1417-7)
हरि रचना तेरी किआ गति मेरी हरि बिनु घड़ी न जीवा ॥ (1107-3)
हरि रतन जवेहर लाल ॥ (1296-12)
हरि रतन पदारथो परगटो पूरनो छोडि न कतहू जाए ॥ (454-4)
हरि रतनै का वापारीआ हरि रतन धनु विहाझे कचै के वापारीए वाकि हरि धनु लइआ न जाई ॥२॥ (734-3)
हरि रस ऊपरि अवरु किआ कहीऐ जिनि पीआ सो त्रिपतागा ॥ (598-14)
हरि रस का तूं चाखहि सादु ॥ (180-13)
हरि रस की कीमति कही न जाइ ॥ (377-12)
हरि रस के माते मनि सदा अनंद ॥ (377-10)
हरि रस बिनु सभि सुआद फिकरीआ ॥३॥ (385-4)
हरि रस भोग महा निरजोग वडभागी हरि रसु पाइआ ॥ (445-5)
हरि रस माते पारि उतारे ॥ (1038-19)
हरि रस रंगि रसन नही त्रिपती दुरमति दूख समानिआ ॥३॥ (1197-13)
हरि रस रसहि मानि हां ॥ (409-16)
हरि रस सादु न आइओ बिसटा माहि समाहि ॥६॥ (429-7)
हरि रसकि रसकि गुण गाइआ ॥२॥ (622-13)
हरि रसन रसाए मेरे प्रभ भाए मिलिआ सहजि सुभाए ॥ (774-15)
हरि रसना हरि जसु गावै खरी सुहावणी ॥ (647-16)
हरि रसहि अघाए सहजि समाए घटि घटि रमईआ जाते ॥ (577-14)
हरि रसहि अघाने सहजि समाने मुख ते नाही जात बरन ॥ (1206-12)
हरि रसि चाखिऐ मुकतु भए जिन्हा साचो भाई ॥१॥ (426-1)
हरि रसि फलि राते नानका करमि सचा नीसाणु ॥२॥ (550-18)
हरि रसि बीधा हरि मनु पिआरा मनु हरि रसि नामि झकोले राम ॥ (537-14)
हरि रसि भीने सदा धिआइनि गुरमति सीलु संनाहा हे ॥१॥ (1057-12)
हरि रसि माते इहु सुखु कहीऐ ॥२॥ (227-14)
हरि रसि राता जनु परवाणु ॥७॥ (1189-1)
हरि रसि राते रंगि मुरारि ॥२॥ (733-4)
हरि रसिक बैरागी नामि लिव लागी कतहु न जाइ निखेधिआ ॥ (1122-13)
हरि रसु गुर ते पाइआ मेरा मनु तनु लीनी ॥ (163-11)

हरि रसु चाखत ध्रापिआ मनि रसु लै हसना ॥ (811-11)
हरि रसु चाखहि से जन निरमल निरमल नामु धिआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (128-14)
हरि रसु चाखि त्रिखा निवारी हरि मेलि लए बडभागी ॥२॥ (1232-19)
हरि रसु चाखि मनु निरमलु होआ किलबिख काटणहारा ॥२॥ (603-19)
हरि रसु चाखि सदा मनु त्रिपतिआ गुण गावै गुणी अघाइआ ॥ (602-13)
हरि रसु चाखिआ तउ मनु भीजा ॥ (1345-2)
हरि रसु चाखै तां सुधि होइ ॥ (1174-15)
हरि रसु चाहै प्रिअ प्रिअ मुखि टेरै जिउ अलि कमला लोभांगै ॥१॥ (1209-19)
हरि रसु चोग चुगहि प्रभ भावै ॥ (685-12)
हरि रसु छोडि बिखिआ फलु चाखिआ ॥१॥ (805-13)
हरि रसु छोडि होछै रसि माता ॥ (376-9)
हरि रसु जन चाखहु जे भाई ॥ (733-2)
हरि रसु जिनि जनि चाखिआ ॥ (211-17)
हरि रसु जिनी चाखिआ अन रस ठाकि रहाइआ ॥ (1088-11)
हरि रसु जिन्ही चाखिआ पिआरे त्रिपति रहे आघाइ ॥७॥ (431-15)
हरि रसु तिन ही जाता ॥ (623-19)
हरि रसु न चाखै फीका आलाइ ॥ (158-12)
हरि रसु न पाइआ बिरथा जनमु गवाइआ जमहि वारो वारा ॥ (601-6)
हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि न त्रिसना लागै आइ ॥ (921-12)
हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥ (289-13)
हरि रसु पी जन सदा त्रिपतासे विचहु आपु गवाए ॥३॥ (603-14)
हरि रसु पी संतोखु होआ सचु वसिआ मनि आए ॥ (850-11)
हरि रसु पी सदा त्रिपति भए फिरि त्रिसना भुख गवाइआ ॥५॥ (1088-11)
हरि रसु पीवत सद ही राता ॥ (377-10)
हरि रसु पीवहु पुरख गिआनी ॥ (611-7)
हरि रसु पीवहु भाई ॥ (630-7)
हरि रसु पीवै अलमसतु मतवारा ॥ (377-11)
हरि रसु पीवै छुटै निदानि ॥५०॥ (937-11)
हरि रसु पीवै ता साति आवै निज घरि ताड़ी लाए ॥ (1013-12)
हरि रसु पीवै रसन रसाइ ॥३॥ (1262-6)
हरि रसु पीवै सहजि रहै उडै न आवै जाइ ॥ (66-2)
हरि रसु मीठा मन महि वूठा सतिगुरु तूठा सहजु भइआ ॥ (452-11)
हरि रसु रसना चाखु तूं तां मनु निरमलु होई ॥१॥ रहाउ ॥ (492-3)
हरि रसु रसना राम गुन गाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (164-6)
हरि रसु साधू हाटि समाइ ॥ (377-12)
हरि राइआ मेरा सजणु पिआरा गुरु मेले मेरा मनु जीवाईआ जीउ ॥ (174-4)
हरि राखहु पैज सतिगुरू की नित चड़ै सवाई ॥ (310-15)

हरि राखिआ उरि धारे अपना कारजु सवारे गुरमती हरि जाता ॥ (772-2)
हरि राखु राखु जन किरम तुमारे सरणागति पुरख प्रतिपलघा ॥ (731-16)
हरि राम नामु जपि लाहा ॥ (530-6)
हरि राम नामु सलाहि हरि प्रभ हरि भगति हरि जन मंगीआ ॥ (576-2)
हरि राम नामै रहउ लागो जन नानक नामि समाइओ ॥४॥३॥ (985-6)
हरि राम बोलहु हरि साधू हरि के जन साधू जगदीसु जपहु मनि बचनि करमि हरि हरि आराधू हरि के जन साधू ॥ (1201-5)
हरि राम बोलि हरि राम बोलि सभि पाप गवाधू ॥ (1201-6)
हरि राम राम मेरे बाबुला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥५॥१॥ (79-7)
हरि राम राम मेरे बाबोला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥ (79-4)
हरि राम राम राम रामा ॥ (218-9)
हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥ (921-8)
हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥ (921-9)
हरि रुखी रोटी खाइ समाले ॥ (105-8)
हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ ॥ (450-7)
हरि लबधो मित्र सुमितो ॥ (1360-18)
हरि लाभु पाइआ आपु मिटाइआ मिले चिरी विछुंनिआ ॥ (545-5)
हरि लोचा पूरन मेरीआ ॥ (74-6)
हरि वणजु करावै दे रासि रे ॥१॥ रहाउ ॥ (165-14)
हरि वरि नारि भई सोहागणि मनि तनि प्रेमु सुखानिआ ॥२॥ (1254-12)
हरि वरु घरि सोहागणी निरमल साचै नाइ ॥३॥ (58-17)
हरि वरु जिनि पाइआ धन नारी ॥ (353-2)
हरि वरु नारि सुहावणी मै भावै प्रभु सोइ ॥ (56-11)
हरि वरु पाइआ कामणी गुरि मेलि मिलाई ॥१॥ रहाउ ॥ (428-2)
हरि वरु पाइनि घरि आपणै गुर कै हेति पिआरि ॥ (38-12)
हरि वरु रावहि सदा मुईए निज घरि वासा पाए ॥ (568-7)
हरि वरु सोहागो मसतकि भागो सचै सबदि सुहाए ॥ (568-9)
हरि वापारि से जन लागे जिना मसतकि मणी वडभागो राम ॥ (568-17)
हरि विटड़िअहु सदा घोले जीउ ॥२॥ (173-9)
हरि वुठा मनु तनु सभु परफड़ै सभु जगु हरीआवलु होइ ॥५९॥ (1420-13)
हरि वुठै मनु तनु परफड़ै सभु जगु हरिआ होइ ॥६१॥ (1420-15)
हरि वेखण कउ सभु कोई लोचै सो वेखै जिसु आपि विखाले ॥ (562-4)
हरि वेखै सुणै नित सभु किछु तिदू किछु गुझा न होइआ ॥ (309-13)
हरि वेखै सुणै नित सभु किछु मेरी जिंदुड़ीए सो डरै जिनि पाप कमते राम ॥ (540-18)
हरि संगि रंग करती महा केल ॥१॥ रहाउ ॥ (1229-11)
हरि संगि राता अनदिनु जागै ॥ (201-14)
हरि संगि राता सहज घरि वसै ॥ (201-14)

हरि संगि राते जम की नही त्रास ॥ (201-13)
हरि संगि राते दूखु न लागै ॥ (201-13)
हरि संगि राते नही डूबै जला ॥ (201-10)
हरि संगि राते निरमल सोइ ॥ (201-15)
हरि संगि राते पूरन आस ॥२॥ (201-13)
हरि संगि राते भाहि न जलै ॥ (201-10)
हरि संगि राते भ्रमु भउ नसै ॥३॥ (201-14)
हरि संगि राते मति ऊतम होइ ॥ (201-15)
हरि संगि राते मन तन हरे ॥ (181-8)
हरि संगि राते माइआ नही छलै ॥ (201-10)
हरि संगि राते मिटै सभ चिंता ॥ (201-12)
हरि संगि राते सुफल फला ॥१॥ (201-11)
हरि संगि संगि खचीऐ ॥ (1229-13)
हरि संगि सहाई पाइआ ॥ (623-14)
हरि संगि सहाई महा मीतु तिस सिउ तेरा भेदु ॥ (815-14)
हरि संगि साथी सदा तेरै दिनसु रैणि समालीऐ ॥ (461-13)
हरि संगि हरी सतसंगु भए हरि कंचनु चंदनु कीने ॥१॥ रहाउ ॥ (668-17)
हरि संत जना मिलि कारजु सोहिआ वरु पाइआ पुरखु अनंदी ॥ (78-17)
हरि संत भगत तारनो ॥ (800-19)
हरि संत मंत गुपाल गिआन धिआन ॥१॥ (1305-16)
हरि संतन करि नमो नमो ॥ (241-10)
हरि संतन पावे ॥१॥ रहाउ ॥ (407-10)
हरि संतना की रेन ॥ (1305-2)
हरि संतसंगति जन सुणहु भाई गुरमुखि हरि सेवा सफल बणी ॥ (1115-13)
हरि संतहु देखहु नदरि करि निकटि वसै भरपूरि ॥ (27-16)
हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ॥ (450-16)
हरि संता हरि संत सजन मेरे मीत सहाई राम ॥ (453-7)
हरि संतु करे सोई परवाणु ॥ (889-16)
हरि सकत सरन समरथ नानक आन नही निहोर ॥२॥२॥१०॥ (1121-5)
हरि सचा गुर भगती पाईऐ सहजे मंनि वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (116-5)
हरि सचा साहिबु सचु तपावसु करि वेखै चलत सबाए ॥ (550-13)
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥ (134-2)
हरि सजण मेलि पिआरे मिलि पंथु दसाई ॥ (647-8)
हरि सजणु गुरु सेवदा गुर करणी परधानु ॥ (21-13)
हरि सजणु लधा मेरे पिआरे नानक गुरू लिवै ॥३॥ (452-2)
हरि सतसंगति आपे मेलै गुर सबदी हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (114-19)
हरि सतसंगति सत पुरखु मिलाईऐ ॥ (96-4)

हरि सति निरंजन अमरु है निरभउ निरवैरु निरंकारु ॥ (302-9)
हरि सति निरंजनु सदा सेवि मन मेरे जितु हरि दरगह पावहि तू माणु ॥२॥ (861-7)
हरि सति सति मेरे बाबोला हरि जन मिलि जंञ सोहंदी ॥३॥ (78-18)
हरि सति सति सदा हरि सति हरि सति मेरै मनि भावै जीउ ॥२॥ (998-2)
हरि सति सते मेरे बाबुला हरि जन मिलि जंञ सुहंदी ॥ (78-15)
हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ ॥१॥ (573-15)
हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ राम ॥ (573-12)
हरि सतिगुरु मेलहु दइआ करि जनु नानकु धोवै पाइ ॥२॥ (310-8)
हरि सभ महि रविआ एको सोई गुरमुखि लखिआ हरि नामु जीउ ॥ (448-11)
हरि सभना का है खसमु सो भगत जन चिति करि ॥ (849-18)
हरि सभना विचि तूं वरतदा हरि सभना भाणा ॥ (84-5)
हरि समरथ की सरना ॥ (987-18)
हरि सरणाई भजि पउ पाइहि मोख दुआरु ॥३॥ (429-4)
हरि सरणाई भजु मन मेरे सभ किछु करणै जोगु ॥ (1347-5)
हरि सरणागति राखि लेहु मूड़ मुगध निसतारे ॥३॥ (163-13)
हरि सरणि पाई तजि न जाई प्रभ प्रीति मनि तनि भाणी ॥ (545-8)
हरि सरणि सूर गुपाल ॥ (837-15)
हरि सरनि आइओ दासु तेरा प्रभ ऊच अगम मुरार ॥ (988-4)
हरि सरब निरंतरि जानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (629-19)
हरि सरि तीरथि जाणि मनूआ नाइआ ॥ (1286-3)
हरि सरि निरमलि नाए ॥ (774-18)
हरि सरि वसै हउमै मारि ॥ (128-19)
हरि सरु सागरु निरमलु सोई ॥ (128-18)
हरि सरु सागरु सदा जलु निरमलु नावै सहजि सुभाई ॥५॥ (1233-15)
हरि सरु सागरु हरि है आपे इहु जगु है सभु खेलु खेलईआ ॥ (835-4)
हरि सा प्रीतमु अवरु न कोइ ॥ (1151-4)
हरि सा प्रीतमु करि मन मीत ॥ (187-13)
हरि सा मीतु नाही मै कोई ॥ (1027-15)
हरि साकत सेती संगु न करीअहु ओइ मारे सिरजणहारे ॥ (312-11)
हरि साचा सिमरहु भाई ॥ (616-11)
हरि साचा सोई तिसु बिनु अवरु न कोई बिनु सेविऐ सुखु न पाए ॥ (243-17)
हरि साचे भावै सा पूजा होवै भाणा मनि वसाई ॥३॥ (910-7)
हरि साचे सेती वणजु वापारा ॥ (1048-16)
हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥ (133-16)
हरि साजनु मेलिओ गुरि पूरै गुर बचनि बिकानो हटि हाट ॥१॥ (986-2)
हरि साध सरणि नानक गही ॥४॥६॥१४४॥ (211-11)
हरि साधह सरणागती नानक आस पुजाइ ॥२॥ (928-15)

हरि सालाहहि सदा सुखदाता हरि बखसे भगति सलाहा हे ॥५॥ (1055-15)
हरि सालाही सदा सदा तनु मनु सउपि सरीरु ॥ (789-1)
हरि सालाहे हरि पड़ै गुर कै सबदि वीचारि ॥ (1093-19)
हरि सासि गिरासि न बिसरै कबहूं गुर सबदी रंगु माणीऐ ॥ (454-7)
हरि सिंघासणु दीअउ सिरी गुरु तह बैठायउ ॥ (1409-16)
हरि सिउ चितु न लाइनी वादी धरनि पिआरु ॥ (1091-15)
हरि सिउ चितु लागै फिरि कालु न खाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (661-11)
हरि सिउ जाइ मिलणा साधसंगि रहणा सो सुखु अंकि न मावै ॥ (1122-14)
हरि सिउ जुरै त निहचलु चीतु ॥ (238-10)
हरि सिउ जुरै त सभु को मीतु ॥ (238-10)
हरि सिउ जुरै त होइ निसतारा ॥१॥ (238-11)
हरि सिउ जुरै न विआपै काड़्हा ॥ (238-11)
हरि सिउ तोड़ि बिखिआ संगि जोड़ी ॥१॥ रहाउ ॥ (328-7)
हरि सिउ प्रीति अंतरु मनु बेधिआ हरि बिनु रहणु न जाई ॥ (607-9)
हरि सिउ प्रीति ऊपजी गुरि सोझी पाई ॥२॥ (1087-14)
हरि सिउ प्रीति ऊपजै माइआ मोहु जलावै ॥ (553-12)
हरि सिउ राती सबदु वीचारी ॥ (353-3)
हरि सिउ सद ही रहै समाए ॥ (1058-3)
हरि सिउ सो रचै जिसु साध का मंता ॥ (201-12)
हरि सिमरणु साचा बीचारु ॥ (1143-19)
हरि सिमरत कछु नाहि फेर ॥१॥ (1183-5)
हरि सिमरत काटै सो कालु ॥१॥ रहाउ ॥ (807-3)
हरि सिमरत किछु चाखु न जोहै ॥ (1150-9)
हरि सिमरत किलविख सभि नासे ॥१॥ (806-13)
हरि सिमरत गरभ जोनि न रुधै ॥२॥ (1150-9)
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥१॥ रहाउ ॥ (487-2)
हरि सिमरत जमु कछु न कहै ॥१॥ रहाउ ॥ (889-12)
हरि सिमरत तनु मनु हरिआ लहि जाहि विजोग ॥ (706-13)
हरि सिमरत तू ना जलहि मनि तनि उर धारि ॥ (706-7)
हरि सिमरत तेरी जाइ बलाइ ॥ (193-9)
हरि सिमरत त्रास सभ नासै ॥१॥ (189-4)
हरि सिमरत दैत देउ न पोहै ॥ (1150-9)
हरि सिमरत नानक भई अमोली ॥२॥३५॥ (379-2)
हरि सिमरत नानक सुखु पाइआ ॥४॥८॥७७॥ (178-10)
हरि सिमरत पूरन पदु पाइआ ॥ (193-14)
हरि सिमरत बिनसे सभ दूख ॥२॥ (901-6)
हरि सिमरत मनु तनु सुखी बिनसी दुतीआ सोच ॥ (926-13)

हरि सिमरत मोहु मानु न बधै ॥ (1150-9)
हरि सिमरत सगल बिनासे दूखा ॥१॥ (385-19)
हरि सिमरत सदा होइ अनंदु सुखु अंतरि सांति सीतल मनु अपना ॥ (860-14)
हरि सिमरत सभि मिटहि कलेस ॥ (194-16)
हरि सिमरत सभु दुखु लाथा ॥ (627-14)
हरि सिमरन की वेला बजर सिरि परै ॥१॥ (1143-10)
हरि सिमरन की सगली बेला ॥ (1150-10)
हरि सिमरन ते मिटी मेरी चिंता ॥२॥ (189-17)
हरि सिमरन बिनु नरकि पाहि ॥ (1192-14)
हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥ (263-18)
हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥ (263-17)
हरि सिमरनि तेरा होइ उधारु ॥ (895-18)
हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥ (263-17)
हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ॥ (263-16)
हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥ (263-16)
हरि सिमरनि मेरा मनु तनु भीने ॥२॥ (476-9)
हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥ (263-16)
हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥ (263-15)
हरि सिमरनु करि हरि जन छूटे ॥१॥ (388-16)
हरि सिमरनु छाडि परम गति चाहै ॥ (1148-19)
हरि सिमरनु जिसु गुर ते पाईऐ ॥२॥ (1338-12)
हरि सिमरनु पाईऐ संजोग ॥७॥ (971-16)
हरि सिमरनु बहु माहि इकेला ॥ (1150-10)
हरि सिमरहु गुर बचन समारहु संगति हरि जन भाउ करे ॥ (1014-11)
हरि सिमरि एकंकारु साचा सभु जगतु जिंनि उपाइआ ॥ (1113-1)
हरि सिमरि एक रंगि मिटि जांहि दोख मीत ॥१॥ (1272-15)
हरि सिमरि नानक नेत ॥७॥ (838-11)
हरि सिमरि सिमरि आनद करि नानक प्रभि पूरन पैज रखाई ॥२॥१५॥४६॥ (682-3)
हरि सिमरि सिमरि काटिआ भउ काल ॥३॥ (200-2)
हरि सिमरि सिमरि नानक रंगि राता मन की चिंत मिटाए ॥१॥ (782-10)
हरि सिमरि सिमरि मानु मोहु कटाहां ॥३॥ (742-11)
हरि सुआमी हरि प्रभु तिन मिले जिन लिखिआ धुरि हरि प्रीति ॥ (1317-1)
हरि सुख निधान नानक दासि पाइआ ॥४॥२॥५६॥ (684-7)
हरि सुखदाता गुरमुखि जाता सहजे रहिआ समाई ॥१॥ (1233-10)
हरि सुखदाता मनि नही वसिआ अंति गइआ पछुताई ॥४॥ (65-3)
हरि सुखदाता मनि वसै हउमै जाइ गुमानु ॥ (512-1)
हरि सुखदाता मेरे मन जापु ॥ (1134-14)

हरि सुखदाता मेरै नाला ॥१॥ (1133-2)
हरि सुखदाता सदा सलाही अंतरि रखां उर धारे ॥ (1249-16)
हरि सुखदाता सबदि पछाता कामणि लइआ कंठि लाए ॥ (770-9)
हरि सुखदाता सभना गला का तिस नो धिआइदिआ किव निमख घड़ी मुहु मोड़ीऐ ॥ (550-6)
हरि सुखु पल्हरि तिआगिआ नामु विसारि दुखु पाए ॥ (850-19)
हरि सुजाणु न भुलई मेरे गोविंदा आपे सतिगुरु जोगी जीउ ॥१॥ (174-11)
हरि सेती ओहु रहै समाइ ॥४॥२॥ (370-17)
हरि सेती चितु गहि रहै जरा का भउ न होवई जीवन पदवी पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (490-4)
हरि सेती मनु बेधिआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक लगि दुध खीरे राम ॥ (538-14)
हरि सेती मनु रवि रहिआ घर ही माहि उदासु ॥ (26-11)
हरि सेती मनु रवि रहिआ सचे रहिआ समाइ ॥ (651-18)
हरि सेती रंगि रवि रहे सभ सास गिरासा ॥ (1247-13)
हरि सेती सद माणहु रलीआ जनम मरण दुख खोवहु ॥ (77-5)
हरि सेती सद रहहि लिव लाइ ॥ (1174-10)
हरि सेती सदा मिलि रहे जिनी आपु पछाना ॥ (1089-5)
हरि सेवउ हरि रिदै बसावउ हरि पाइआ सतसंगा ॥ (1210-7)
हरि सेवक नाही जम पीड़ ॥ (802-3)
हरि सेवहि सेई पुरख जिना हरि तुधु मइआ ॥ (645-11)
हरि सेवहु खिनु खिनु ढिल मूलि न करिहु जितु असथिरु जुगु जुगु होवहु ॥ (77-4)
हरि सेवा ते कालु जोहि न साकै चरनी आइ पवै हरि जानै ॥१॥ (1320-15)
हरि सेवा बिनु एह फल लागे ॥ (298-16)
हरि सेवा भाई परम गति पाई हरि ऊतमु हरि हरि कामु जीउ ॥ (444-11)
हरि सेवा महि परम निधानु ॥ (375-4)
हरि सेवा मुखि अम्रित नामु ॥१॥ (375-4)
हरि सेवी पिआरा नित सेवि हरि सुखु पाई ॥ (647-9)
हरि सेवे की ऐसी वडिआई देखहु हरि संतहु जिनि विचहु काइआ नगरी दुसमन दूत सभि मारि कढीए ॥ (851-15)
हरि सेवे सो हरि का लोगु ॥ (1172-16)
हरि सेवे हरि मंनि वसाए सोहै हरि गुण गाइदा ॥१३॥ (1065-15)
हरि सो किछु करे जि हरि किआ संता भावै ॥ (1076-6)
हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस ॥ (1377-12)
हरि सोभा पाई हरि नामि वडिआई हरि दरगह पैधे जानि जीउ ॥ (447-12)
हरि सोहिला तिन्ह सद सदा जो हरि गुण गावहि ॥ (440-12)
हरि स्मपै नानक घरि ता कै ॥१०॥ (252-8)
हरि हम गावहि हरि हम बोलहि अउरु दुतीआ प्रीति हम तिआगी ॥१॥ (1266-1)
हरि हमरा हम हरि के दासे नानक सबदु गुरू सचु दीना जीउ ॥४॥१४॥२१॥ (100-18)
हरि हमारो मीतु सखाई हम हरि सिउ प्रीति लागी ॥ (1265-18)

हरि हरनाकस हरे परान ॥ (874-9)
हरि हरि अउखधु जो जनु खाइ ॥ (893-8)
हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥ (264-16)
हरि हरि अखर दुइ इह माला ॥ (388-4)
हरि हरि अखर मन महि लेखु ॥३॥ (192-7)
हरि हरि अगम अगाधि अपर्मपर अपरपरा ॥ (1114-11)
हरि हरि अगम अगाधि अपर्मपर अपरपरा ॥१॥ (1114-14)
हरि हरि अगम अगाधि बोधि अपर्मपर पुरख अपारी ॥ (667-1)
हरि हरि अगम अगाधो ॥ (1297-13)
हरि हरि अगम अगोचरु सुआमी जन जपि मिलि सलल सलले ॥ (975-10)
हरि हरि अगम नाम हरि तेरे विचि भगता हरि धरणे ॥ (1135-18)
हरि हरि अगमु अगाधि हरि जन कितु बिधि मिलहि मिलाहि ॥ (1316-4)
हरि हरि अतुलु तोलु अति भारी गुरमति जपि ओमाहा राम ॥३॥ (699-17)
हरि हरि अनदु भइआ दिनु राती नानक हरि मीठ लगाए ॥ (772-17)
हरि हरि अपणी दइआ करि हरि बोली बैणी ॥ (652-2)
हरि हरि अपनी किरपा करे गुरमुखि साहुरड़ै कम सिखै ॥ (78-8)
हरि हरि अम्रित नामु देहु पिआरे ॥ (1199-1)
हरि हरि अम्रित बचन सुणावहु गुर मिलिऐ परगटु होई राम ॥२॥ (698-13)
हरि हरि अम्रितु गुरमुखि पीआ नानक सूखि निवास ॥१॥ (259-13)
हरि हरि अम्रितु नाम रसु हरि अम्रितु हरि उर धारि ॥ (1314-4)
हरि हरि अम्रितु पी त्रिपतासे सभ लाथी भूख भुखानी ॥३॥ (667-12)
हरि हरि अम्रितु हरि मनि भावै मिलि सतिगुर अम्रितु पीजै जीउ ॥२॥ (95-9)
हरि हरि अम्रितु हरि रसु पावहि गुरमति भगति भंडारे ॥२॥ (493-7)
हरि हरि अरथि सरीरु हम बेचिआ पूरे गुर कै आगे ॥ (171-18)
हरि हरि आनि मिलाइओ गुरु साधू मिलि साधू कपट खुलाना ॥ रहाउ ॥ (697-3)
हरि हरि आनि मिलावहु गुरु साधू जिसु अहिनिसि हरि उरि धारी ॥ (1263-2)
हरि हरि आपि दइआ करि देवै ता अम्रितु हरि रसु चखीऐ ॥३॥ (170-9)
हरि हरि आपि मिलाइ गुरु मै दसे हरि धनु रासि ॥ (996-12)
हरि हरि आपु धरिओ हरि जन महि जन नानकु हरि प्रभु इकफा ॥४॥५॥ (1336-19)
हरि हरि आराधिआ गुर सबदि विगासिआ बीजा अवरु न कोइ जीउ ॥ (446-14)
हरि हरि उतमु नामु है जिनि सिरिआ सभु कोइ जीउ ॥ (81-16)
हरि हरि उर धारिओ गुरि पूरै मेरा सीसु कीजै गुर वाट ॥१॥ रहाउ ॥ (986-1)
हरि हरि उसतति करै दिनु राती रखि रखि चरण हरि ताल पूरईआ ॥५॥ (835-1)
हरि हरि एको पाइआ हरि प्रभु नानक किरपा धारे ॥ (772-7)
हरि हरि कथा नित सदा करि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (997-2)
हरि हरि कथा बनी अति मीठी जिउ गूंगा गटक सम्हारे ॥४॥ (980-15)
हरि हरि कथा मेरै मनि भाणी ॥ (95-8)

हरि हरि कथा सदा जपु जपना ॥२॥ (184-19)
हरि हरि कथा साधसंगि सुनाहि ॥१॥ (195-18)
हरि हरि कथा सुणाइ प्रभ गुरमति हरि रिदै समाणी ॥ (996-17)
हरि हरि कथा सुणी मनि भाई गुरमति हरि लिव लागी ॥१॥ रहाउ ॥ (667-3)
हरि हरि कथा सुनहु इक निमख पल सभि किलविख पाप लहि जानी ॥१॥ रहाउ ॥ (667-9)
हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति मनु कोरा हरि रंगि भेन ॥१॥ रहाउ ॥ (1294-11)
हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति हरि हरि जपिओ अकथ कथ काथ ॥३॥ (1296-8)
हरि हरि कदे न चेतिओ जमि पकड़ि चलाईआ ॥१३॥ (726-4)
हरि हरि कबहू न मनहु बिसारे ॥ (210-2)
हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥ (874-7)
हरि हरि करत नही दुखु जमह ॥१॥ रहाउ ॥ (874-8)
हरि हरि करत पूतना तरी ॥ (874-10)
हरि हरि करत मिटे सभि भरमा ॥ (874-7)
हरि हरि करत सदा मनु बिगसै हरि चरणी मनु लाई हे ॥१३॥ (1070-2)
हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥ (444-10)
हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥१॥ (444-13)
हरि हरि करतिआ मनु निरमलु होआ गुर की सेव पिआरी हे ॥११॥ (1050-18)
हरि हरि करहि नित कपटु कमावहि हिरदा सुधु न होई ॥ (732-6)
हरि हरि करहि सि सूकहि नाही नानक पीड़ न खाहि जीउ ॥ (438-15)
हरि हरि करहि सु हरि रंगि भीने हरि जलु अम्रित नामु मना ॥३॥ (1171-19)
हरि हरि करी द्रिसटि तब भइओ मनि उदमु हरि हरि नामु जपिओ गति भई हमारी ॥ (669-8)
हरि हरि काजु रचाइआ पूरै मिलि संत जना जंञ आई ॥ (575-17)
हरि हरि किरपा धारहु ठाकुर हरि जपीऐ आतम रामु जीउ ॥ (444-13)
हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु ॥१॥ (1313-16)
हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु ॥५०॥ (1419-4)
हरि हरि किरपालु होआ भगत जना उपरि हरि आपणी किरपा करि हरि आपि रखि लीए ॥६॥ (851-16)
हरि हरि क्रिपा करहु जगजीवन मै सरधा नामि लगावैगो ॥ (1310-13)
हरि हरि क्रिपा करहु प्रभ अपनी मुखि देवहु हरि निमखाती ॥१॥ (668-2)
हरि हरि क्रिपा करहु प्रभ अपनी हम साध जनां पग परिआ ॥ (1294-5)
हरि हरि क्रिपा करहु सुखदाते देहु सतिगुर चरन हम धूरा ॥ (572-13)
हरि हरि क्रिपा करी जगदीसरि दुरमति दूजा भाउ गइओ सभ झाक ॥१॥ रहाउ ॥ (1295-10)
हरि हरि क्रिपा करी जगदीसुरि हरि धिआइओ जन पगि लगे ॥१॥ रहाउ ॥ (976-7)
हरि हरि क्रिपा करे गुर की कारै लाए ॥ (1277-9)
हरि हरि क्रिपा करे गुरु मेले हरि हरि नामि समाई ॥१॥ रहाउ ॥ (1265-5)
हरि हरि क्रिपा करे बनवाली ॥ (997-19)
हरि हरि क्रिपा करे सुखदाता गुरमुखि अम्रितु पीवां ॥ (573-7)
हरि हरि क्रिपा करे सुखदाता गुरमुखि भवजलु हरि नामि तराइणु ॥१॥ रहाउ ॥ (1134-1)

हरि हरि क्रिपा धारि गुर मेलहु गुरि मिलिऐ हरि ओमाहा राम ॥३॥ (699-1)
हरि हरि क्रिपा धारि मधुसूदन मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥१॥ (699-15)
हरि हरि क्रिपा धारी मेरै ठाकुरि जनु बिछुरिआ चिरी मिलाना ॥ (697-6)
हरि हरि क्रिपा धारी मेरै ठाकुरि बिखु गुरमति हरि नामि लहि जाइ जीउ ॥ (445-14)
हरि हरि क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी गुरि गिआनु दीओ मनु समझा ॥ रहाउ ॥ (697-16)
हरि हरि गुण गोविंद जपाहा ॥ (699-4)
हरि हरि गुर महि भगति रखाई ॥ (367-12)
हरि हरि गुरु गुरु करत भरम गए ॥ (241-14)
हरि हरि गुरु गुरु करता रे ॥ (612-7)
हरि हरि चरण सरेवह तिन के जिन सतिगुरु पुरखु प्रभु ध्याइआ ॥ (573-3)
हरि हरि चरन रिदै उर धारे ॥ (718-1)
हरि हरि चेति सदा मन मेरे ॥ (1177-18)
हरि हरि जगंनाथु जगि लाहा ॥ (699-7)
हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥ (265-3)
हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥ (265-2)
हरि हरि जनि लहे हां ॥ (411-2)
हरि हरि जपत अनेक जन नानक नाहि सुमार ॥१॥ (253-15)
हरि हरि जपत ढहै दुख डेरा ॥२॥ (386-1)
हरि हरि जपत नाही संताप ॥ (897-7)
हरि हरि जपत पूरन भई आस ॥१॥ (1341-4)
हरि हरि जपत सरब सुख पाए बीचे ग्रसत उदास ॥१॥ रहाउ ॥ (1227-19)
हरि हरि जपनु जपउ दिनु राती जपि हरि हरि हरि उरि धारी ॥ (666-18)
हरि हरि जपनु जपावहु अपना हम मागी भगति इकाकी ॥ रहाउ ॥ (668-9)
हरि हरि जपनु जपि लोच लोचानी हरि किरपा करि बनवाली ॥ (667-19)
हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमति ले हरि बोलि ॥ (22-3)
हरि हरि जपु जपीऐ दिनु राती लागै सहजि धिआना ॥ (781-3)
हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा हरि जपिओ तरै तराकी ॥१॥ (668-8)
हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥ (446-10)
हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥२॥ (446-13)
हरि हरि जसु जपत जपंत जन इकु तिलु नही कीमति पाइ ॥ (1316-4)
हरि हरि जाप ताप ब्रत नेमा ॥ (715-9)
हरि हरि जापु जपला ॥ (891-6)
हरि हरि जिन्ह जपि लए मेरे मना ॥१॥ (410-10)
हरि हरि तंतु मंतु गुरि दीन्हा ॥ (386-14)
हरि हरि तिन का दरसु न करीअहु जिनी हरि हरि नामु न धिआइआ ॥ (574-3)
हरि हरि तेरा नामु है दुख मेटणहारा ॥ (725-14)
हरि हरि तेरा नामु है हरि खरचु लै जाईऐ ॥१९॥ (726-10)

हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु जन नानक गुर मिलि रहसै जीउ ॥४॥२॥ (94-15)
हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु पुरखु निरंजनु सोई राम ॥३॥ (698-14)
हरि हरि दइआलि दइआ प्रभ धारी लगि सतिगुर हरि जपणे ॥१॥ रहाउ ॥ (976-19)
हरि हरि दइआलु होवै जिसु उपरि सो गुरमुखि हरि जपि जिणका ॥२१॥ (650-19)
हरि हरि दरस समान आतमा वंतगिआन जाणीअ अकल गति गुर परवान ॥ (1391-13)
हरि हरि दाति करहु प्रभ भावै गुण नानक नामु ओमाहा राम ॥४॥४॥१०॥ (699-13)
हरि हरि दानु दीओ गुरि पूरै हरि नामा मनि तनि बसफा ॥१॥ रहाउ ॥ (1336-15)
हरि हरि दीओ सेवक कउ नाम ॥ (1216-14)
हरि हरि धिआइ कुसल सभि खेमा ॥२॥ (715-9)
हरि हरि धिआइ मन मेरे मन धिआइ हरि जनम जनम के सभि दूख निवारणहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (733-14)
हरि हरि धिआइ मना खिनु न विसारीऐ ॥ (925-1)
हरि हरि नानक टेक टिकाई ॥४॥१६॥२७॥ (891-10)
हरि हरि नाम असंख हरि हरि के गुन कथनु न जाहि ॥ (1316-3)
हरि हरि नाम कथा नित सुणीऐ ॥ (95-1)
हरि हरि नाम की मनि प्रीति ॥ (502-1)
हरि हरि नाम की मनि भूख लगाई ॥ (367-15)
हरि हरि नाम न पुजहि पुजाहा ॥ (699-17)
हरि हरि नाम रसन आराधे ॥२॥ (202-6)
हरि हरि नामि जिना मनु भीना ते गुरमुखि पारि पइआ ॥२॥ (995-15)
हरि हरि नामि मजनु करि सूचे ॥ (197-3)
हरि हरि नामु अंतरि उरि धारि ॥ (176-18)
हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा ॥१॥ रहाउ ॥ (618-3)
हरि हरि नामु अतोलकु पाइआ तेरी भगति भरे भंडारा ॥ (442-17)
हरि हरि नामु अपार अमोला अम्रितु एकु निधाना ॥ (672-7)
हरि हरि नामु अपार अमोली ॥ (822-3)
हरि हरि नामु अमर पदु पाइआ हरि नामि समावै सोई ॥ (447-17)
हरि हरि नामु अमोलकु हरि पहि हरि देवै ता नामु धिआवीऐ रे ॥ (1118-5)
हरि हरि नामु अमोला ॥ (407-5)
हरि हरि नामु अम्रितु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (1323-9)
हरि हरि नामु अम्रितु हरि मीठा हरि संतहु चाखि दिखहु ॥ (800-2)
हरि हरि नामु अम्रितु है नदरी पाइआ जाइ ॥ (1258-15)
हरि हरि नामु अम्रितु है हरि जपीऐ सतिगुर भाइ ॥ (1316-9)
हरि हरि नामु अवखदु मुखि पाइआ जन नानक सुखि वसंती ॥४॥१२॥६२॥ (625-2)
हरि हरि नामु अवखधु मुखि पाइआ गुर सबदी रसु अम्रितु पीवे ॥१॥ रहाउ ॥ (374-10)
हरि हरि नामु असथिरु सोहागु ॥२॥१०६॥ (201-2)
हरि हरि नामु उरि धारिआ हरि हिरदै कमल प्रगासु ॥ (1416-14)
हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥१॥ (288-2)

हरि हरि नामु चरावहु रंगनि आपे ही प्रभ रंगि ॥१॥ (405-18)
हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली ॥ (449-10)
हरि हरि नामु जन की पति होइ ॥ (429-12)
हरि हरि नामु जन प्रान अधारु ॥ (183-1)
हरि हरि नामु जपंतिआ कछु न कहै जमकालु ॥ (457-15)
हरि हरि नामु जपंतिआ कोइ न बंधै वाट ॥२॥ (961-19)
हरि हरि नामु जपत कुल सगले तारे राम ॥ (546-5)
हरि हरि नामु जपत जनु तारिओ ॥ (178-6)
हरि हरि नामु जपत नर जीवे ॥ (806-2)
हरि हरि नामु जपत सुख सहजे मजनु होवत साधू धूरे ॥ (825-18)
हरि हरि नामु जपहि आराधहि सेवक भाइ खरे ॥ (975-5)
हरि हरि नामु जपहु जन भाई ॥ (1333-1)
हरि हरि नामु जपहु जपु रसना ॥ (252-6)
हरि हरि नामु जपहु नित प्राणी ॥ (192-17)
हरि हरि नामु जपहु बनवाली ॥ (1134-10)
हरि हरि नामु जपहु मन मीत ॥ (1339-16)
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे ॥ (998-7)
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे अनदिनु हरि लिव लाइ ॥ (368-14)
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जाती ॥ (88-7)
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सदा सुखु होवै दिनु राती ॥ (88-5)
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सिमरत सभि किलविख पाप लहाती ॥ (88-6)
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे मुखि गुरमुखि प्रीति लगाती ॥ (88-7)
हरि हरि नामु जपहु मेरे जीअड़े जपि हरि हरि नामु छडावै जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (997-19)
हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ (1339-4)
हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ (161-9)
हरि हरि नामु जपहु मेरे मीत ॥ (866-19)
हरि हरि नामु जपहु रसु मीठा ॥ (1030-5)
हरि हरि नामु जपि अनत तरंगा ॥ (367-11)
हरि हरि नामु जपि अम्रित बानी ॥१॥ रहाउ ॥ (741-5)
हरि हरि नामु जपिआ आराधिआ मुखि मसतकि भागु सभागा ॥ (447-1)
हरि हरि नामु जपिआ दुखु बिनसिआ हरि नामु परम सुखु पाइआ ॥ (444-15)
हरि हरि नामु जपे आराधे विचि अगनी हरि जपि जीविआ ॥ (76-12)
हरि हरि नामु जपे जपि तरिआ जीउ ॥ (217-9)
हरि हरि नामु जपै जनु कोइ ॥ (889-14)
हरि हरि नामु जपै जनु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1147-8)
हरि हरि नामु जपै दिनु राती गुरमुखि हउमै कढै धोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1177-1)
हरि हरि नामु जा कउ गुरि दीआ ॥ (211-19)

हरि हरि नामु जा कै हिरदै वसै ॥ (179-5)
हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन का दुखु भरमु भउ भागा ॥ (572-15)
हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन के दुख पाप निवारे ॥ (574-14)
हरि हरि नामु जिनी सदा धिआइआ ॥ (1071-6)
हरि हरि नामु जीअ प्रान अधारु ॥ (185-1)
हरि हरि नामु जीउ प्रान हरि मेरे जीउ ॥ (175-4)
हरि हरि नामु जो जनु जपै सो आइआ परवाणु ॥ (318-3)
हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥ (266-8)
हरि हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि धुरि लिखि पाइ जीउ ॥ (444-17)
हरि हरि नामु तिनै जनि जपना ॥३॥ (1147-17)
हरि हरि नामु दइआ मनि धारे ॥ (95-11)
हरि हरि नामु दइआलु धिआहा ॥ (698-18)
हरि हरि नामु दीओ कीरतन कउ भई हमारी गाति ॥ रहाउ ॥ (681-3)
हरि हरि नामु दीओ गुरि अवखधु उतरि गइओ सभु ताप ॥१॥ रहाउ ॥ (500-16)
हरि हरि नामु दीओ गुरि साथे ॥ (1212-17)
हरि हरि नामु दीओ दारू ॥ (622-18)
हरि हरि नामु दीओ मुखि अउखधु जन नानक पतित पुनीति ॥४॥५॥ (1296-3)
हरि हरि नामु देवै जनु सोइ ॥ (161-12)
हरि हरि नामु देहि सुखु पाईऐ तेरी भगति भरे भंडार ॥१॥ रहाउ ॥ (503-17)
हरि हरि नामु द्रिड़ाइओ गुरि मीठा गुर पग झारह हम बाल ॥१॥ रहाउ ॥ (1335-15)
हरि हरि नामु धनु पाइआ जन नानक गुरमति भाखु ॥४॥४॥६॥ (997-15)
हरि हरि नामु धिआइ गुरबाणी नित नित चवा बलि राम जीउ ॥ (773-2)
हरि हरि नामु धिआइ मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ (1313-14)
हरि हरि नामु धिआइ मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ (1419-2)
हरि हरि नामु धिआइआ भेटिआ गुरु सूरा ॥ (163-5)
हरि हरि नामु धिआई ॥३॥ (623-6)
हरि हरि नामु धिआईऐ जिस नउ किरपा करे रजाइ ॥३॥ (28-11)
हरि हरि नामु धिआईऐ मेरी जिंदुड़ीए गुरमुखि नामु अमोले राम ॥ (537-14)
हरि हरि नामु धिआईऐ हउमै अगिआनु गवापै ॥ (1092-12)
हरि हरि नामु धिआईऐ हरि कीरति गुरमुखि चाखु ॥ (997-11)
हरि हरि नामु धिआईऐ हरि हरि निसतारी ॥३॥ (509-16)
हरि हरि नामु न चेतनी करतै आपि खुआइ ॥ (1415-12)
हरि हरि नामु नानक जपि जापु ॥४॥४॥७३॥ (177-3)
हरि हरि नामु नानक धनु पाइआ अपुनै घरि लै आइआ खाटे ॥५॥११॥ (673-18)
हरि हरि नामु निधान रसु पीआ मन तन रहे अघाई ॥ (615-7)
हरि हरि नामु निधानु लै गुरमति हरि पति पाइ ॥ (996-2)
हरि हरि नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ (1316-12)

हरि हरि नामु निधानु है पिआरा गुरि पूरै मीठा लाइआ ॥ रहाउ ॥ (605-17)
हरि हरि नामु पदारथु पाई ॥१॥ (732-13)
हरि हरि नामु परगासिआ मेरे गोविंदा सभ दालद दुख लहि जाही जीउ ॥ (173-17)
हरि हरि नामु पवितु है नामु जपत दुखु जाइ ॥ (1313-17)
हरि हरि नामु पवितु है मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि नामु उधारे राम ॥ (539-6)
हरि हरि नामु पवितु है हरि जपत सुनत दुखु जाइ ॥ (1316-9)
हरि हरि नामु पोतु बोहिथा खेवटु सबदु गुरु पारि लंघईआ ॥ (833-12)
हरि हरि नामु पोतु है मेरी जिंदुड़ीए गुर खेवट सबदि तराइआ राम ॥ (539-2)
हरि हरि नामु बसिओ जीअ ता कै ॥ (1004-11)
हरि हरि नामु बूंद मुखि पाई ॥ (95-5)
हरि हरि नामु बोलहु दिनु राती सभि किलबिख काटै इक पलका ॥ (650-18)
हरि हरि नामु बोहिथु है कलजुगि खेवटु गुर सबदि तरहु ॥१॥ (799-18)
हरि हरि नामु भगति प्रिअ प्रीतमु सुख सागरु उर धारे ॥ (353-15)
हरि हरि नामु भजिओ पुरखोतमु सभि बिनसे दालद दलघा ॥ (731-12)
हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥ (10-5)
हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥ (492-11)
हरि हरि नामु मुखि हरि हरि बोली मनु हरि रसि टुलि टुलि पउदा जीउ ॥१॥ (95-13)
हरि हरि नामु मेरा अंति सखाई गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ (573-17)
हरि हरि नामु मेरा आधारु ॥ (744-18)
हरि हरि नामु मेरा प्रान सखाई तिसु बिनु घड़ी निमख नही जीवां ॥ (573-7)
हरि हरि नामु मेरै प्रानि वसाए सभु संसा दूखु गवाइआ ॥ (442-7)
हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई सभि दूख विसारणहारा ॥ (572-5)
हरि हरि नामु मै हरि मनि भाइआ ॥ (94-4)
हरि हरि नामु रखहु उर धारे ॥ (698-12)
हरि हरि नामु रतंनु है गुरु तुठा देवै माइ ॥ (759-4)
हरि हरि नामु रमत सुच संजमु हरि नामे ही त्रिपतावै ॥ (303-11)
हरि हरि नामु रसन नित जपने ॥१॥ (899-15)
हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥ (266-4)
हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥ (286-18)
हरि हरि नामु रिदै सद वसिआ पाइआ गुणी निधानु ॥ (1132-18)
हरि हरि नामु वखरु लै चलहु ॥ (1028-11)
हरि हरि नामु संगि तेरै चलै ॥१॥ (889-11)
हरि हरि नामु संतन की ओटा ॥ (628-13)
हरि हरि नामु संतन कै संगि ॥ (197-11)
हरि हरि नामु सदा जपु जापि ॥ (1143-14)
हरि हरि नामु सदा सद जापि ॥ (714-14)
हरि हरि नामु सदा सुखदाता ॥ (698-15)

हरि हरि नामु समालि तूं हरि मुकति करे अंत कालि ॥६॥ (235-3)
हरि हरि नामु सम्हारे ॥१॥ (623-9)
हरि हरि नामु सलाहीऐ सचु कार कमावै ॥ (791-17)
हरि हरि नामु सिमरि रतनागरु ॥१॥ (744-2)
हरि हरि नामु सीतल जलु धिआवहु हरि चंदन वासु सुगंध गंधईआ ॥ (833-19)
हरि हरि नामु स्रवन जिह सुनिआ ॥ (257-15)
हरि हरि नामु हरि हरि जगि अवखधु हरि हरि नामु हरि साते ॥ (169-6)
हरि हरि निकटि वसै सभ जग कै अपरंपर पुरखु अतोली ॥ (169-1)
हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥ (920-8)
हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥ (921-9)
हरि हरि पतित पावन ॥ (717-1)
हरि हरि पुरखु दइआलु है मेरी जिंदुड़ीए गुर सतिगुर मीठ लगाइआ राम ॥ (539-3)
हरि हरि पूंजी नाम बिसाहा ॥ (257-15)
हरि हरि प्रगटु कीओ गुरि पूरै सिरु वेचिओ गुर पहि मोली ॥३॥ (169-2)
हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥१॥ (627-19)
हरि हरि प्रभु एको अवरु न कोई तूं आपे पुरखु सुजानु जीउ ॥ (448-9)
हरि हरि बखसि मिलाइ प्रभ जनु नानकु कीरा ॥४॥३॥१७॥३७॥ (163-6)
हरि हरि बासु सुगंध बसाई ॥५॥ (326-16)
हरि हरि बूंद भए हरि सुआमी हम चात्रिक बिलल बिललाती ॥ (668-1)
हरि हरि बोलि कथा सुनि हरि की उचरहु प्रभ को नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (1219-5)
हरि हरि भगति द्रिड़ी मनि भाई हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥३॥ (699-12)
हरि हरि भगति बणी प्रभ केरी सभु लोकु वेखणि आइआ ॥ (1116-8)
हरि हरि भगति बनी अति सोभा हरि जपिओ ऊतम पाती ॥३॥ (668-6)
हरि हरि भगति बनी मति गुरमति धुरि मसतकि प्रभि लिखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (1319-10)
हरि हरि भगति भरे भंडारा ॥ (997-18)
हरि हरि भगति राम गुण गाए ॥१॥ (892-11)
हरि हरि भगती काजु सुहेला गुरि सतिगुरि दानु दिवाइआ ॥ (79-1)
हरि हरि भजनु न मन महि आइओ ॥ (299-11)
हरि हरि भजनु पूरे गुर संगि ॥ (298-12)
हरि हरि मन महि नामु कहिओ ॥ (979-6)
हरि हरि मनि पिआरि हां ॥ (409-8)
हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥ (444-18)
हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥३॥ (445-3)
हरि हरि महा पुरखु गुरु मेलहु गुर नानक नामि सुखु होई राम ॥४॥१॥७॥ (698-15)
हरि हरि मुख ते बोलना मनि वूठै सुखु होइ ॥ (260-16)
हरि हरि मेलि मेलि जन साधू हम साध जना का कीड़ा ॥ (698-7)
हरि हरि मेलि साध जन संगति मुखि बोली हरि हरि भली बाणि ॥ (651-5)

हरि हरि रतनु रतनु हरि नीको गुरि सतिगुरि दानु दिवाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (719-7)
हरि हरि रसना जो जपै तिसु पूरन कामु ॥३॥ (401-3)
हरि हरि रसु पाइआ गुरमति हरि धिआइआ धुरि मसतकि भाग पुरान जीउ ॥ (446-6)
हरि हरि राखहु क्रिपा धारि ॥ (233-12)
हरि हरि रूप रंग सभि तेरे मेरे लालन लाल गुलारे ॥ (982-3)
हरि हरि रूपु सभ जोति सबाई हरि निकटि वसै हरि कोली ॥२॥ (168-19)
हरि हरि रूपु हरि रूपो होवै हरि जन कउ पूज करावैगो ॥६॥ (1311-15)
हरि हरि लाभु साधसंगि पाईऐ घरि लै आवहु लादि ॥१॥ (1219-13)
हरि हरि लिव लाई हरि नामु सखाई हरि दरगह पावै मानु जीउ ॥ (445-10)
हरि हरि लीने संत उबारि ॥ (674-14)
हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु क्रिपालु होइ प्रभु देई ॥ (165-17)
हरि हरि वसतु माइआ गड़्हि वेड़्ही गुर कै सबदि लीओ गड़ु जीति ॥१॥ रहाउ ॥ (1295-16)
हरि हरि संत जना की जीवनि ॥ (1222-1)
हरि हरि संत मिलहु मेरे भाई हरि नामु द्रिड़ावहु इक किनका ॥ (650-17)
हरि हरि सचा वसै घट अंतरि सो घटु निरमलु ताहा हे ॥१०॥ (1057-3)
हरि हरि सजणु मेरा प्रीतमु राइआ ॥ (94-6)
हरि हरि सतिगुर करह भगती जां हरि प्रभु किरपा धारे ॥ (574-6)
हरि हरि सतिगुरु पुरखु मिलावहु गुरि मिलिऐ सुखु होई राम ॥१॥ (698-11)
हरि हरि सदा धिआईऐ मलु हउमै कढै धोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (28-7)
हरि हरि सफलिओ बिरखु प्रभ सुआमी जिन जपिओ से त्रिपतानी ॥ (667-11)
हरि हरि सरधा सेज विछाई प्रभु छोडि न सकै बहुतु मनि भईआ ॥६॥ (836-9)
हरि हरि साध मेलहु जन नीके हरि साधू सरणि हम राखा ॥ (696-12)
हरि हरि सिमरणु किलविख हंता ॥ (416-6)
हरि हरि सिमरहु अगम अपारा ॥ (698-11)
हरि हरि सिमरहु संत गोपाला ॥ (617-13)
हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥ (288-14)
हरि हरि सीगारु बनावहु हरि जन हरि कापड़ु पहिरहु खिम का ॥ (650-17)
हरि हरि सेवकु सेवा लागै सभु देखै ब्रहम पसारे ॥ (982-7)
हरि हरि हरि अउखधु जगि पूरा जपि हरि हरि हउमै मारी ॥३॥ (666-19)
हरि हरि हरि आराधीऐ ॥ (211-8)
हरि हरि हरि आराधीऐ होईऐ आरोग ॥ (817-4)
हरि हरि हरि कीरति जगि सारी घसि चंदनु जसु घसिआ ॥१॥ (1319-12)
हरि हरि हरि गुन गावहु ॥ (1120-6)
हरि हरि हरि गुनी हां ॥ (409-17)
हरि हरि हरि जसु घूमरि पावहु मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥२॥ (698-18)
हरि हरि हरि जसु जपै वडभागी ॥ (367-18)
हरि हरि हरि न जपसि रसना ॥ (1106-16)

हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ (658-14)
हरि हरि हरि रसु आपि है आपे हरि रसु होइ ॥ (41-15)
हरि हरि हरि हरि जापीऐ अंतरि लिव लाई ॥ (814-8)
हरि हरि हरि हरि नामु जपाहा ॥ (698-16)
हरि हरि हरि हरि नामु जीवा सुणि सुणे ॥७॥ (519-19)
हरि हरि हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई राम ॥ (572-4)
हरि हरि हरि हरि नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥ (1313-6)
हरि हरि हरि हरि भगति द्रिड़ावहु हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥१॥ (698-17)
हरि हरि हरि हरि मनि आराधे रसना हरि जसु गावै ॥ (1218-6)
हरि हरि हरि हरि रसना कहहु ॥१॥ रहाउ ॥ (1138-5)
हरि हरि हरि हरि राखु प्रभ नानकु जनु तेरा राम ॥३॥ (844-18)
हरि हरि हरि हरि हरि जन ऊतम किआ उपमा तिन्ह दीजै ॥ (1323-18)
हरि हरि हरि हरि हरि मनि धिआवहु मै हरि हरि नामु पिआरे ॥ (980-11)
हरि हरि हरि हरि हरि सरु सेवहि तिन दरगह मानु दिवावैगो ॥ (1311-13)
हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥ (487-2)
हरि हरि हरि हरि हरि हरे जपंति ॥४॥ (1354-6)
हरि हरि हरि हरि हरि हरे हरि हरि हरि हेत ॥ (810-9)
हरि हरि हरि हरे नानक प्रिअं जापु जपना ॥८॥ (1354-13)
हरि हरि हारु कंठि ले पहिरै दामोदरु दंतु लेई ॥ (359-9)
हरि हरि हारु कंठि है बनिआ मनु मोतीचूरु वड गहन गहनईआ ॥ (836-8)
हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥ (449-9)
हरि हरे हरि गुण गावहु हरि गुरमुखे पाए राम ॥ (770-14)
हरि हरे हरि गुण निधे हरि संतन कै वसि आए राम ॥ (780-10)
हरि हरे हरि मुखहु बोलि हरि हरे मनि धारे ॥१॥ रहाउ ॥ (1230-4)
हरि हरे हरे भाजु कहतु नानकु सुनहु रे मूड़ बिनु भजन भजन भजन अहिला जनमु गई ॥२॥५॥५०॥१२॥६२॥ (1308-4)
हरि हारु कंठि जिनी पहिरिआ गुर चरणी चितु लाइ ॥ (26-18)
हरि हारु हरि उरि धारिओ जन नानक नामि समाइआ ॥४॥१॥ (984-9)
हरि हिरदै जपि नामु मुरारी ॥ (1135-8)
हरि हिरदै मनि तनि मीठा लागा मुखि मसतकि भागु चंगेरा ॥२॥ (711-7)
हरि हिरदै सदा सदा समाली ॥ (997-19)
हरि है खांडु रेतु महि बिखरी हाथी चुनी न जाइ ॥ (1377-8)
हरि हो हो किरपान ॥१॥ रहाउ ॥ (1297-19)
हरि हो हो किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (1296-12)
हरि हो हो किरपीस ॥१॥ रहाउ ॥ (1296-17)
हरि हो हो लिखे लिलाट ॥१॥ रहाउ ॥ (1297-8)
हरि हो हो हो नदरि निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ (977-8)

हरि हो हो हो मेलि निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ (978-1)
हरि हो हो हो लिखतु लिखंती ॥१॥ रहाउ ॥ (977-14)
हरि होहु दइआलु हरि नामु धिआई जीउ ॥ (175-15)
हरिगोबिंदु रखिओ परमेसरि अपुनी किरपा धारि ॥ (500-17)
हरिचंदउरी चित भ्रमु सखीए म्रिग त्रिसना द्रुम छाइआ ॥ (803-1)
हरिचंदउरी देखि भूला कहा असथिति पाईऐ ॥ (548-5)
हरिचंदउरी देखि मूठा कूड़ु सेजा राविआ ॥ (460-3)
हरिचंदउरी पेखि काहे सुखु मानिआ ॥ (1363-8)
हरिचंदउरी बन हर पात रे इहै तुहारो बीत ॥१॥ रहाउ ॥ (673-2)
हरिबंस जगति जसु संचर्यउ सु कवणु कहै स्री गुरु मुयउ ॥१॥ (1409-15)
हरिहां अम्रितु हरि का नामु सतिगुर ते पाइआ ॥६॥ (1362-4)
हरिहां कंतै बाझु सीगारु सभु बिरथा जाईऐ ॥३॥ (1361-17)
हरिहां चंचल चोरहि मारि त पावहि सचु धना ॥१२॥ (1362-15)
हरिहां जब बिसरै गोबिद राइ दिनो दिनु घटीऐ ॥१४॥ (1362-18)
हरिहां जा घरि आइआ कंतु त सभु किछु पाईआ ॥४॥ (1361-19)
हरिहां जे मसतकि होवै भागु त दरसि समाईऐ ॥९॥ (1362-9)
हरिहां तिउ हरि जनु मांगै नामु नानक बलिहारणे ॥११॥ (1362-13)
हरिहां दूख रोग सभि पाप तन ते खिसरिआ ॥२३॥ (1363-15)
हरिहां नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर ॥१०॥ (1362-11)
हरिहां बिनु नावै तनु छारु ब्रिथा सभु जावई ॥२१॥ (1363-12)
हरिहां मसतकि होवै भागु त साजनु पाईऐ ॥२॥ (1361-15)
हरिहां महां बिखादी घात पूरन गुरु पाईऐ ॥१६॥ (1363-3)
हरिहां रिधि सिधि नव निधि बसहि जिसु सदा करि ॥७॥ (1362-6)
हरिहां सतिगुर भए दइआल त मनु ठहराइआ ॥५॥ (1362-2)
हरिहां सुनते भए पुनीत पारब्रहमु बीचारई ॥८॥ (1362-8)
हरिहां सोई जतंनु बताइ सखी प्रिउ पाईऐ ॥१३॥ (1362-16)
हरिहां हउ बलिहारी तिंन जि दरगहि जानिआ ॥१९॥ (1363-8)
हरिहां हउ बलिहारी तिंन्ह जि हरि रंगु रावणे ॥२२॥ (1363-13)
हरिहां हरिचंदउरी पेखि काहे सचु मानई ॥२०॥ (1363-10)
हरी अंगूरी गदहा चरै ॥ (326-4)
हरी नाही नह डडुरी पकी वढणहार ॥ (43-10)
हरीचंदु दानु करै जसु लेवै ॥ (224-14)
हरूए हरूए तिरि गए डूबे जिन सिर भार ॥३५॥ (1366-6)
हरे हरि निरमल नाम ॥ (895-13)
हलत पलत पारब्रहमि सवारे कारज होए सगले पूरे ॥१॥ रहाउ ॥ (825-17)
हलति न सोभा पलति न ढोई अहिला जनमु गवाइआ ॥३॥ (155-4)
हलति न सोभा पलति न ढोई बिरथा जनमु गवावणिआ ॥७॥ (127-17)

हलति पलति ओइ सुखु न पावहि अंति गए पछुताइ ॥ (511-9)
हलति पलति जन भए सुहेले मुख ऊजल गुरमुखि तरफा ॥२॥ (1336-17)
हलति पलति जा की सद छाम ॥१॥ रहाउ ॥ (1137-4)
हलति पलति ता कै आवै काम ॥१॥ (676-14)
हलति पलति तुधु होइ वडिआई ॥ (895-15)
हलति पलति तुमरी गति होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (1148-8)
हलति पलति तेरा ऊजल मुखा ॥३॥ (896-5)
हलति पलति दुखदाई होवहि जमकालु खड़ा सिरि मारे ॥४॥ (981-7)
हलति पलति नालि चलदा हरि अंते लए छडाइ ॥ (996-2)
हलति पलति निबही तुधु नालि ॥२॥ (412-16)
हलति पलति मुख ऊजल भइआ ॥४॥१॥ (1298-9)
हलति पलति मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना ॥ रहाउ ॥ (670-1)
हलति पलति मुख ऊजले साचे के गुण सारि ॥ (46-9)
हलति पलति मुखु ऊजला नह पोहै तिसु माइ ॥ (300-12)
हलति पलति राम नामि सुहेले गुरमुखि करणी सारी ॥ (443-2)
हलति पलति सहाइ संगे एक सिउ लिव लाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (405-8)
हलति पलति सुखु पाइदे जपि जपि रिदै मुरारि ॥ (30-2)
हलति पलति सोभा जग अंतरि राम नामि लिव लागी ॥ (690-9)
हलति पलति हरि धनै की भगता कउ मिली वडिआई ॥३॥ (734-6)
हलति पलति हरि सोभा पावहि हरि रंगु लगा मनि गूड़ा ॥३॥ (698-7)
हलति सुखु पलति सुखु नित सुखु सिमरनो नामु गोबिंद का सदा लीजै ॥ (683-13)
हलतु पलतु जिनि गुरहि सवारिआ ॥ (1338-13)
हलतु पलतु तिनी दोवै गवाए दुखे दुखि विहावणिआ ॥५॥ (123-6)
हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥ (293-4)
हलतु पलतु दोवै गए दरगह नाही थाउ ॥ (314-11)
हलतु पलतु दोवै गए नित भुखा कूके तिहाइआ ॥ (306-10)
हलतु पलतु दोवै गवाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥४॥ (129-11)
हलतु पलतु प्रभ दोवै सवारे हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥ (620-19)
हलतु पलतु सवारिआ पिआरे मसतकि सचु नीसाणु ॥ (641-14)
हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥ (136-7)
हलतु पलतु होहि दोवै सुहेले अचरज पुरखु धिआउ ॥१॥ रहाउ ॥ (895-16)
हलतै विचि साकत दुहेले भए हथहु छुड़कि गइआ अगै पलति साकतु हरि दरगह ढोई न पाई ॥५॥ (734-8)
हलु जोतै उदमु करे मेरा पुतु धी खाइ ॥ (166-7)
हलु बीचारु विकार मण हुकमी खटे खाइ ॥ (955-4)
हलु हलेमी हाली चितु चेता वत्र वखत संजोगु ॥ (955-6)
हले यारां हले यारां खुसिखबरी ॥ (727-16)
हवाल मालूमु करदं पाक अलाह ॥ (723-17)

हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥२॥ (522-10)
हसत अल्मबनु देहु प्रभ गरतहु उधरु गोपाल ॥ (203-7)
हसत कमल लड़ि लीनो लाइ ॥ (899-12)
हसत कमावन बासन रसना ॥ (913-14)
हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ ॥ (1164-9)
हसत चरन संत टहल कमाईऐ ॥ (299-1)
हसत देइ प्रतिपालदा भरण पोखणु करणा ॥ (323-5)
हसत पाव झरे खिन भीतरि अगनि संगि लै जारिओ ॥१॥ (1000-19)
हसत पुनीत होहि ततकाल ॥ (185-3)
हसत बिनोद बीचार करती है चीतु सु गागरि राखीअले ॥२॥ (972-15)
हसत हमरे संत टहल ॥ (987-6)
हसति घोड़े जोड़े मनि भानी ॥ (392-4)
हसति न तोरै धरै धिआनु ॥ (870-16)
हसति भागि कै चीसा मारै ॥ (870-14)
हसति रथ अस्व पवन तेज धणी भूमन चतुरांगा ॥ (700-5)
हसती क्रोपि मूंड महि मारिओ ॥ (870-14)
हसती गरति पइआ किउ तरीऐ तारी ॥ (460-5)
हसती घोड़े देखि विगासा ॥ (176-1)
हसती घोड़े पाखरे लसकर लख अपार ॥ (63-14)
हसती देखि भरम ते भूला स्री भगवानु न जानिआ ॥ (1105-2)
हसती रथ असु असवारी ॥ (684-6)
हसती सिरि जिउ अंकसु है अहरणि जिउ सिरु देइ ॥ (647-19)
हसतो जाइ सु रोवतु आवै रोवतु जाइ सु हसै ॥ (1252-4)
हसि हसि सोगु करत बेगाना ॥१॥ (389-5)
हस्त कमल माथे पर धरीअं ॥ (1401-10)
हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥१॥ (1385-8)
हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥२॥ (1385-11)
हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥३॥ (1386-2)
हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥४॥ (1386-5)
हां हां लपटिओ रे मूड़्हे कछू न थोरी ॥ (715-4)
हा हा करत बिहानी अवधहि ता महि संतोखु न पाइआ ॥२॥ (700-4)
हा हा प्रभ राखि लेहु ॥ (675-11)
हाइ हाइ करे दिनु राति माइआ दुखि मोहिआ जीउ ॥ (690-11)
हाकारा आइआ जा तिसु भाइआ रुंने रोवणहारे ॥ (582-9)
हाजरा हजूरि दरि पेसि तूं मनीं ॥१॥ (727-14)
हाजरु हजूरि हरि वेपरवाहा ॥ (1261-18)
हाट पटण गड़ कोठड़ी सचु सउदा वापार ॥२॥ (57-9)

हाटी बाटी नीद न आवै पर घरि चितु न डोलाई ॥ (939-2)
हाटी बाटी रहहि निराले रूखि बिरखि उदिआने ॥ (938-19)
हाटु पटणु घरु गुरू दिखाइआ सहजे सचु वापारो ॥ (939-3)
हाठा दोवै कीतीओ सिव सकति वरताईआ ॥ (1096-10)
हाड जले जैसे लकरी का तूला ॥ (870-6)
हाड मास नाड़ीं को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥१॥ (659-3)
हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु ॥ (595-12)
हाथ कमंडलु कापड़ीआ मनि त्रिसना उपजी भारी ॥ (1013-7)
हाथ देइ जिनि राखे ॥ (630-19)
हाथ देइ राखिओ अपुना करि बिरथा सगल मिटाई ॥ (675-3)
हाथ देइ राखिओ करि अपुना जिउ जल कमला अलिपारी ॥१॥ (1209-8)
हाथ देइ राखे करि अपने बड समरथु निमाणिआ को मानु ॥१॥ (825-15)
हाथ देइ राखे करि अपुने सदा सदा रंगु माणि ॥१॥ (619-17)
हाथ देइ राखे जन अपने हरि होए माई बाप ॥१॥ (714-16)
हाथ देइ राखे परमेसरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥१॥ (499-4)
हाथ देइ राखे प्रभि अपुने सद जीवन अबिनासी ॥ (1214-11)
हाथ देइ राखै अपने कउ काहू न करते कछु खीना ॥१॥ (823-16)
हाथ देइ राखै अपने कउ सासि सासि प्रतिपाले ॥१॥ (682-1)
हाथ पछोड़ै सिरु धुणै जब रैणि विहाणी ॥२॥ (725-2)
हाथ पछोरहि सिरु धरनि लगाहि ॥ (1152-2)
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥२१३॥ (1376-1)
हाथ पाव पसारत बिलमु तिलु लागै तब लगु मेरा मनु राम सम्हारै ॥३॥ (368-10)
हाथि कलम अगम मसतकि लेखावती ॥ (1361-13)
हाथि खड़गु करि धाइआ अति अहंकारि ॥ (1133-7)
हाथि चड़िओ हरि सालगिरामु ॥ (393-11)
हाथि त डोर मुखि खाइओ त्मबोर ॥ (326-14)
हाथि हमारै कछूऐ नाही जिसु जणाइहि तिसै जणावणा ॥९॥ (1086-8)
हाथु देइ राखे परमेसुरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥१॥ (532-17)
हाथु पसारि सकै को जन कउ बोलि सकै न अंदाजा ॥१॥ (856-10)
हार कजर बसत्र अनिक सीगार रे बिनु पिर सभै बिखु लागिओ ॥१॥ (1203-19)
हार जूआर जूआ बिधे इंद्री वसि लै जितनो ॥१॥ (212-5)
हार डोर कंकन घणे करि थाकी सीगारु ॥ (937-12)
हार डोर रस पाट पट्मबर पिरि लोड़ी सीगारी ॥ (1109-16)
हार डोर सीगार सभि रस गुण गाउ अलख अभेविआ ॥ (929-4)
हारि परिओ तुम्हरै प्रभ दुआरै द्रिड़्हु करि गही तुम्हारी लूक ॥ (701-15)
हारि परिओ दुआरि ॥ (837-19)
हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका ॥ रहाउ ॥ (641-18)

हारि परे अब पूरा दीजै ॥४॥१३॥ (326-3)
हाहा हूहू गंध्रब अपसरा अनंद मंगल रस गावनी नीकी ॥१॥ रहाउ ॥ (1272-5)
हाहा होत होइ नही जाना ॥ (342-16)
हाहै हरि कथा बूझु तूं मूड़े ता सदा सुखु होई ॥ (435-13)
हाहै होरु न कोई दाता जीअ उपाइ जिनि रिजकु दीआ ॥ (434-9)
हिंदू अंन्हा तुरकू काणा ॥ (875-2)
हिंदू कै घरि हिंदू आवै ॥ (951-18)
हिंदू तुरक कहा ते आए किनि एह राह चलाई ॥ (477-14)
हिंदू तुरक का साहिबु एक ॥ (1158-10)
हिंदू तुरक दुहां नेबेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (1136-10)
हिंदू तुरक दुहूं महि एकै कहै कबीर पुकारी ॥३॥७॥२९॥ (483-8)
हिंदू तुरक दोऊ समझावउ ॥४॥४॥१३॥ (479-3)
हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥ (875-3)
हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा ॥१॥ (1349-12)
हिंदू मूले भूले अखुटी जांही ॥ (556-9)
हिंदू राम नामु उचरै ॥ (1160-4)
हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥ (465-18)
हिंसा तउ मन ते नही छूटी जीअ दइआ नही पाली ॥ (1253-8)
हिंसा ममता मोहु चुकावै ॥ (840-4)
हिंसा हउमै गतु गए नाही सहसा सोगु ॥ (21-17)
हिआइ कमाइ धिआइआ पाइआ साध सरणा ॥ (1102-9)
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥१२९॥ (1384-18)
हिआउ महिजा ठंढड़ा मुखहु सचु अलाइ ॥२॥ (1098-11)
हिक दूं हिकि चाड़े अनिक पिआरे नित करदे भोग बिलासा ॥ (703-17)
हिक भोरी नदरि निहालि देहि दरसु रंगु माणीआ ॥६॥ (761-13)
हिकनी लदिआ हिकि लदि गए हिकि भारे भर नालि ॥ (1015-11)
हिकमति हुकमि न पाइआ जाइ ॥ (661-5)
हिकमति हुकमि न प्रभु पतीआना ॥ (260-14)
हिकस कूं तू आहि पछाणू भी हिकु करि ॥ (1101-2)
हिकसु कंतै बाहरी मैडी वात न पुछै कोइ ॥१॥ (1095-3)
हिकु सेवी हिकु समला हरि इकसु पहि अरदासि ॥ (710-10)
हिको चिति वसाइ कदे न जाइ मरि ॥३॥ (397-15)
हिको मैडा तू धणी साचा मुखि नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (418-17)
हिचहि त प्रेम कै चाबुक मारउ ॥२॥ (329-11)
हित करि नाम द्रिड़ै दइआला ॥ (260-19)
हितु लाइओ सठ मूड़ अगिआनी ॥ (1004-17)
हिमकर रुति मनि भावती माघु फगणु गुणवंत जीउ ॥ (929-7)

हिरदा देह न होती अउधू तउ मनु सुंनि रहै बैरागी ॥ (945-17)
हिरदा सुधु ब्रहमु बीचारै ॥४॥१०७॥ (201-5)
हिरदा सुधु हरि सेवदे सोहहि गुण गाइआ ॥ (1244-15)
हिरदे प्रगासु गिआन गुर गमित गगन मंडल महि धिआनानां ॥ (339-15)
हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ ॥३॥ (487-19)
हिरदै आइ वुठा गोविंदा ॥ (1063-1)
हिरदै एको नामु वसै हउमै दुबिधा मारि ॥७॥ (429-18)
हिरदै कपटु नित कपटु कमावहि मुखहु हरि हरि सुणाइ ॥ (1199-13)
हिरदै कमल महि हरि का बास ॥ (344-14)
हिरदै कमलु घटि ब्रहमु न चीन्हा काहे भइआ संनिआसी ॥१॥ (525-17)
हिरदै कमलु परगासिआ जोती जोति मिलाइ ॥ (1424-3)
हिरदै कमलु प्रगासिआ लागा सहजि धिआनु ॥ (26-8)
हिरदै कवलु प्रगासु उनमनि लिव लाईआ ॥ (1250-18)
हिरदै काम कामनी मागहि रिधि मागहि हाथु पसारे ॥२॥ (882-11)
हिरदै गावहु नाम निधो ॥५॥ (241-11)
हिरदै गुरमति राम रसाइणु जिहवा हरि गुण गावै ॥ (172-16)
हिरदै गोबिंद गाइ चरन कमल प्रीति लाइ दीन दइआल मोहना ॥ (1305-17)
हिरदै चरण सबदु सतिगुर को नानक बांधिओ पाल ॥२॥७॥३८॥ (680-13)
हिरदै चरन कमल प्रभ धारे ॥ (193-12)
हिरदै जगजीवनु सद वसिआ तजि कामु क्रोधु अहंकारा ॥ (602-11)
हिरदै जपउ नेत्र धिआनु लावउ स्रवनी कथा सुनाए ॥ (1204-19)
हिरदै जपनी जपउ गुणतासा ॥ (841-3)
हिरदै जपि परमानंद ॥ (894-19)
हिरदै जिन कै हरि वसै तितु घटि है परगासु ॥१॥ (27-14)
हिरदै जिन्ह कै कपटु वसै बाहरहु संत कहाहि ॥ (491-3)
हिरदै जिस दै सचु है तनु मनु भी सचा होइ ॥ (1089-12)
हिरदै नामु अम्रित रसु रसना रसु गावहि रसु बीचारे ॥ (1199-3)
हिरदै नामु दुबिधा मनि भागी हरि हरि अम्रितु पी त्रिपताते ॥१॥ रहाउ ॥ (1131-11)
हिरदै नामु दे निरमल कीए नानक रंगि रसाला जीउ ॥४॥८॥१५॥ (99-4)
हिरदै नामु नाही मनि भंगु ॥ (352-18)
हिरदै नामु नित हरि रस भोग ॥१॥ (162-2)
हिरदै नामु लखै जनु साचा गुरमुखि मंनि वसाई ॥ (1131-18)
हिरदै नामु वडी वडिआई ॥ (363-1)
हिरदै नामु वसाइहु ॥ (621-12)
हिरदै नामु विचहु आपु गवाए ॥ (231-15)
हिरदै नामु सदा किरतारथु ॥ (832-9)
हिरदै नामु सदा धुनि निहचल घटै न कीमति पाई ॥ (1232-10)

हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥२॥ (794-2)
हिरदै नामु सरब धनु धारणु गुर परसादी पाईऐ ॥ (1127-4)
हिरदै प्रगासु होवै लिव लागै गुरमति हरि हरि नामि समाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (880-13)
हिरदै प्रतीति बनी प्रभ केरी सेवा सुरति बीचारी ॥ (1198-15)
हिरदै फेरि चलै तुधु नाली ॥१॥ (1134-9)
हिरदै बसे पूरन गुर मंत ॥ (290-15)
हिरदै बिगसै देखै माइ ॥ (164-18)
हिरदै रसन रसाए ॥ (774-15)
हिरदै रामु की न जपहि सवेरा ॥३॥९॥ (656-9)
हिरदै रामु न चेतही इह जपनी किआ होइ ॥७५॥ (1368-9)
हिरदै रामु नही पूरन रहत ॥ (887-18)
हिरदै रामु मुखि रामै होइ ॥३॥२९॥ (329-5)
हिरदै रामु रमहु मेरे भाई ॥ (159-12)
हिरदै वसिआ सदा गुपालु ॥१॥ (200-19)
हिरदै वसिआ सु बाहरि पासारा ॥ (1176-2)
हिरदै सचु एह करणी सारु ॥ (1343-16)
हिरदै सबदि सदा भै रचिआ गुर की कार कमावै ॥ (634-12)
हिरदै सबदु सचु नामु वसाए ॥ (363-15)
हिरदै समालै मुखि हरि हरि बोलै ॥ (388-6)
हिरदै साचा नामु वसाए ॥ (232-18)
हिरदै साचा सबदु सम्हालु ॥६॥ (1275-17)
हिरदै साचु वसै हरि नाइ ॥ (227-11)
हिरदै सुणि सुणि मनि अम्रितु भाइआ ॥ (366-11)
हिरदै सूखु भइआ परगासु ॥ (232-10)
हिरदै हरि के चरण वसाई ॥ (619-7)
हिरदै हरि गुण गाइ जै जै सबदु हरि ॥ (790-15)
हिरदै हरि जी को सिमरनु धरै ॥१॥ रहाउ ॥ (1165-8)
हिरदै हरि नामु मीठा सद लागा गुर सबदे भवजलु तरणा ॥१॥ रहाउ ॥ (1132-10)
हिरदै हरि हरि चितवै दूजा नही कोई ॥ (1247-7)
हिरदै हरि हरि नाम रसु कवला सेवकि तिसु ॥ (854-11)
हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीऐ मसतकि भागु जीउ ॥ (774-8)
हिरहि पर दरबु उदर कै ताई ॥ (298-15)
हिवै का घरु मंदरु अगनि पिराहनु ॥ (943-4)
हींउ अरापउं देहु सदेसा ॥ (1237-3)
हींओ देंउ सभु मनु तनु अरपउ सीसु चरण परि राखिओ ॥२॥ (1204-1)
हीउ अरपि देन ॥ (1305-3)
हीउ तुम्हारे बलि बले बलि बले बलि गई ॥१॥ (1305-11)

हीए को प्रीतमु बिसरि न जाइ ॥ (1302-9)
हीओ महराज री माइओ ॥ (715-16)
हीडोली चड़ि आईआ दंद खंड कीते रासि ॥ (417-4)
हीणउ नीचु करउ बेनंती साचु न छोडउ भाई ॥ (767-13)
हीणौ नीचु बुरौ बुरिआरु ॥ (1331-1)
हीत चीत सभ प्रान धन नानक दरसारी ॥४॥१०॥४०॥ (810-17)
हीत मोह भै भरम भ्रमणं अहं फांस तीख्यण कठिनह ॥ (1359-9)
हीनड़ी जाति मेरी जादिम राइआ ॥ (1164-9)
हीरा किस का बापुरा पुजहि न रतन करोड़ि ॥१५३॥ (1372-13)
हीरा देखि हीरे करउ आदेसु ॥ (972-7)
हीरा नामु जवेहर लालु ॥ (414-4)
हीरा रतन जवेहर माणक बहु सागर भरपूरु कीआ ॥ (880-14)
हीरा लालु अमोलकु है भारी बिनु गाहक मीका काखा ॥ (696-9)
हीरा लालु अमोलु जनमु है कउडी बदलै हारिओ रे ॥१॥ रहाउ ॥ (335-13)
हीरा हाथि चड़िआ निरमोलकु छूटि गई संसारी ॥१॥ रहाउ ॥ (1123-9)
हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥१॥ (156-17)
हीरै हीरा बेधि पवन मनु सहजे रहिआ समाई ॥ (483-13)
हीरै हीरा बेधिआ नानक कंठि सुभाइ ॥२॥ (1090-11)
हीरै हीरु मिलि बेधिआ रंगि चलूलै नाइ ॥१॥ (40-13)
हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥ (470-19)
हुकमि उछलै हुकमे रहै ॥ (962-14)
हुकमि उपाए दस अउतारा ॥ (1037-5)
हुकमि चलाए आपणै करमी वहै कलाम ॥ (1241-5)
हुकमि चलाए सचु नीसाना ॥ (1039-19)
हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥ (471-13)
हुकमि मरै हुकमे ही जीवै ॥ (962-15)
हुकमि मिलाई सहजि समाई गुर का सबदु अपारा ॥ (569-2)
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥ (1-7)
हुकमि रजाई जो चलै सो पवै खजानै ॥ (421-14)
हुकमि रजाई साखती दरगह सचु कबूलु ॥ (1090-9)
हुकमि रहाए आपणै मूरखु आपु गणेइ ॥१॥ (1241-11)
हुकमि संजोगी आइआ चलु सदा रजाई ॥ (421-18)
हुकमि संजोगी गड़ि दस दुआर ॥ (152-13)
हुकमि संजोगी निज घरि जाउ ॥६॥ (221-8)
हुकमि सचे कै पूरे काजा ॥ (1074-3)
हुकमि सवारे आपणै चसा न ढिल करेइ ॥६॥ (53-17)
हुकमि सैसारी हुकमे भगता ॥ (1081-12)

हुकमी आइआ हुकमु न बूझै हुकमि सवारणहारा ॥ (688-15)
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥ (1-8)
हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाहि ॥ (55-18)
हुकमी पैधा जाइ दरगह भाणीऐ ॥ (420-1)
हुकमी बंदा हुकमु कमावै हुकमे कढदा साहा हे ॥८॥ (1054-18)
हुकमी बाधे पासै खेलहि चउपड़ि एका सारी ॥४॥ (1015-18)
हुकमी भांडे साजिआ तूं आपे भंनि सवारि जीउ ॥२२॥ (73-4)
हुकमी लिखै सिरि लेखु विणु कलम मसवाणीऐ ॥ (1280-5)
हुकमी वजहु लिखाइ आइआ जाणीऐ ॥ (419-19)
हुकमी वरसण लागे मेहा ॥ (104-10)
हुकमी सगल करे आकार ॥ (150-15)
हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि ॥ (55-17)
हुकमी सहजे स्रिसटि उपाई ॥ (1043-18)
हुकमी साजे हुकमी ढाहे एक चसे महि लख ॥ (1289-3)
हुकमी साह गिराह देंदा जाणीऐ ॥२३॥ (1288-19)
हुकमी सिरि जंदारु मारे दाईऐ ॥ (147-16)
हुकमी स्रिसटि साजीअनु जोती जोति मिलाइआ ॥ (509-9)
हुकमी स्रिसटि साजीअनु बहु भिति संसारा ॥ (786-1)
हुकमी ही जमु लगदा सो उबरै जिसु बखसै करतारु ॥ (851-4)
हुकमी हुकमि चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ ॥७॥१२॥ (418-6)
हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥ (2-2)
हुकमी होइ निबेड़ु गइआ जाणीऐ ॥ (1288-1)
हुकमी होइ निबेड़ु भरमु चुकाइसी जीउ ॥ (688-10)
हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ (1-7)
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥ (1-8)
हुकमु करहि मूरख गावार ॥ (1169-4)
हुकमु करि कीन्हे निहाल ॥ (1184-18)
हुकमु चलाइ रहिआ भरपूरे ॥ (1042-16)
हुकमु चलाए निसंग होइ वरतै अफरिआ ॥ (42-18)
हुकमु जिना नो मनाइआ ॥ (72-6)
हुकमु तेरा खरा भारा गुरमुखि किसै बुझाए ॥ (441-19)
हुकमु न जाई मेटिआ जो लिखिआ सो नालि ॥ (1091-7)
हुकमु न जाणहि बपुड़े भूले फिरहि गवार ॥ (66-9)
हुकमु न जाणै बहुता रोवै ॥ (85-7)
हुकमु न जापी केतड़ा कहि न सकीजै कार ॥ (1241-18)
हुकमु न जापी खसम का किसै वडाई देइ ॥४॥१॥१८॥ (157-2)
हुकमु न बूझै आवण जाणे ॥ (676-11)

हुकमु न बूझै विआपिआ ममता ॥६॥ (1348-9)
हुकमु पइआ धुरि खसम का अती हू धका खाइ ॥ (148-6)
हुकमु पछाणि ता खसमै मिलणा ॥१॥ रहाउ दूजा ॥ (92-5)
हुकमु पछाणि सचै दरि वासु ॥ (832-10)
हुकमु पछाणै ऊजला सिरि कासट लोहा पारि ॥ (1089-17)
हुकमु पछाणै खसम का ता सचु पावै कोइ ॥ (1244-11)
हुकमु पछाणै खसम का दूजी अवर सिआणप काइ ॥३॥ (991-9)
हुकमु पछाणै नानका भउ चंदनु लावै ॥ (725-5)
हुकमु पछाणै बूझै सचु सोइ ॥४॥ (232-13)
हुकमु पछाणै सु हरि गुण वखाणै ॥ (109-12)
हुकमु पछानै सु एको जानै बंदा कहीऐ सोई ॥३॥ (1350-3)
हुकमु बिसमादु हुकमि पछाणै जीअ जुगति सचु जाणै सोई ॥ (940-13)
हुकमु बुझै सो जोगी कहीऐ एकस सिउ चितु लाए ॥ (908-18)
हुकमु बूझि जन भए निहाला इह भगता की घालणा ॥११॥ (1077-10)
हुकमु बूझि परम पदु पाई ॥ (292-18)
हुकमु बूझि रंग रस माणे ॥ (385-11)
हुकमु बूझै तां एको जाणै ॥३॥ (1176-10)
हुकमु बूझै सो सचि समाणा ॥३॥ (193-3)
हुकमु बूझै सो साचि समाणा ॥ (1270-15)
हुकमु बूझै सो सेवकु कहीऐ ॥ (1076-10)
हुकमु बूझै सोई परवानु ॥ (386-2)
हुकमु भइआ चलणा किउ रहीऐ ॥ (1028-5)
हुकमु भइआ बाहरु घरु छोडिआ खिन महि भई पराई ॥ (596-3)
हुकमु भइआ रहणा नही धुरि फाटे चीरै ॥ (1012-3)
हुकमु भी तिन्हा मनाइसी जिन्ह कउ नदरि करेइ ॥ (510-14)
हुकमु मंनहि ता हरि मिलै ता विचहु हउमै जाइ ॥ रहाउ ॥ (560-13)
हुकमु मंनि सुखु पाइआ प्रेम सुहागणि होइ ॥१॥ (510-14)
हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥ (918-5)
हुकमु मंने सिरदारु दरि दीबाणीऐ ॥ (142-16)
हुकमु मंने सो जनु परवाणु ॥ (1175-4)
हुकमु मंने सोई सुखु पाए हुकमु सिरि साहा पातिसाहा हे ॥३॥ (1055-12)
हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥ (920-13)
हुकमु वरतु नेमु सुच संजमु मन चिंदिआ फलु पाए ॥ (1423-3)
हुकमु साजि हुकमै विचि रखै नानक सचा आपि ॥२॥ (145-6)
हुकमु साजि हुकमै विचि रखै हुकमै अंदरि वेखै ॥ (1243-17)
हुकमु साहिब का सेवक मनि भाइआ ॥ (101-18)
हुकमु सिञापै साह का पिआरे सचु मिलै वडिआई होइ ॥६॥ (636-13)

हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु ॥ (17-1)
हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ॥ (14-8)
हुकमु होआ हासलु तदे होइ निबड़िआ हंढहि जीअ कमांदे ॥१॥ (653-11)
हुकमु होवै ता निरमलु होवै हउमै विचहु जाए ॥ (753-18)
हुकमे अनिक रंग परकार ॥ (277-2)
हुकमे आइआ हुकमि समाइआ ॥ (1037-1)
हुकमे आडाणे आगासी ॥ (1037-4)
हुकमे आवणु जाणु रहाए ॥ (962-16)
हुकमे आवै हुकमे जाइ ॥ (151-10)
हुकमे आवै हुकमे जावै ॥ (1025-11)
हुकमे आवै हुकमे जावै हुकमे रहै समाई ॥ (940-10)
हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥ (277-1)
हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥ (277-1)
हुकमे करम कमावणे पइऐ किरति फिराउ ॥ (66-8)
हुकमे कार कराइदा दूजा किसु कहीऐ भाई ॥२॥ (427-12)
हुकमे गणत गणाईऐ पिआरे हुकमे हउमै दोइ ॥ (636-12)
हुकमे जपै निरोधर गुरमंत ॥ (962-16)
हुकमे जमणु हुकमे मरणा ॥२॥ (564-1)
हुकमे जल थल त्रिभवण वासी ॥ (1037-4)
हुकमे जुग छतीह गुदारे ॥ (1037-6)
हुकमे जुग महि आइआ चलणु हुकमि संजोगि जीउ ॥ (760-14)
हुकमे दरसनु देखणा जह भेजहि तह जाउ ॥ (66-8)
हुकमे दीसै जगतु उपाइआ ॥ (1037-2)
हुकमे दुखु सुखु सम करि सहै ॥ (962-14)
हुकमे धरती धउल सिरि भारं ॥ (1037-3)
हुकमे धरती साजीअनु सची धरम साला ॥ (785-12)
हुकमे धारि अधर रहावै ॥ (277-1)
हुकमे नान्हा वडा थीवै ॥ (962-15)
हुकमे नामु जपै दिनु राति ॥ (962-14)
हुकमे पउण पाणी गैणारं ॥ (1037-3)
हुकमे परपंचु पसरिआ हुकमि करे रस भोग जीउ ॥ (760-14)
हुकमे बंन्हि चलाईऐ पिआरे मनमुखि लहै सजाइ ॥ (636-11)
हुकमे बाधा कार कमाइ ॥ (1275-10)
हुकमे बाधा कार कमाइ ॥ (390-18)
हुकमे बुझि निहालु सुखि सुखेटिआ ॥ (520-18)
हुकमे भवजल मंझि हुकमे तारीऐ ॥ (518-3)
हुकमे भवै भवाईऐ पिआरे अवगणि मुठी रोइ ॥ (636-13)

हुकमे मंने हुकमे वडिआई हुकमे वेपरवाहा हे ॥१२॥ (1054-3)
हुकमे मुकती हुकमे नरका ॥ (1081-12)
हुकमे मेले सबदि पछाणै ॥१॥ (157-17)
हुकमे वरतै अम्रित बाणी हुकमे अम्रितु पीआवणिआ ॥४॥ (118-18)
हुकमे सबदि पछाणीऐ पिआरे दरगह पैधा जाइ ॥५॥ (636-12)
हुकमे साजे हुकमे ढाहे हुकमे मेलि मिलाइदा ॥५॥ (1061-1)
हुकमे सास गिरास सदा फुनि हुकमे देखि दिखाइदा ॥१२॥ (1037-4)
हुकमे सिध साधिक वीचारे ॥ (1037-6)
हुकमे सिव सकती घरि वासा हुकमे खेल खेलाइदा ॥११॥ (1037-3)
हुकमे सुरगु मछु पइआला हुकमे कला रहाइदा ॥१०॥ (1037-2)
हुकमे सोग हरख आनंद ॥ (962-15)
हुकमे हरि हरि मनि वसै हुकमे सचि समाउ ॥५॥ (66-9)
हुकमे ही सभ साजीअनु रविआ सभ वणि त्रिणि ॥ (949-1)
हुकमे ही सभु जगतु उपाइआ ॥ (1055-12)
हुकमे ही सिरि मार बंदि रबाणीऐ ॥५॥ (420-1)
हुकमे होआ हुकमे वरतारा ॥१॥ रहाउ ॥ (1128-10)
हुकमे होइआ हुकमु बूझि समाई ॥७॥ (330-11)
हुकमे होछा हुकमे दाना दूजा नाही अवरु धड़ा ॥७॥ (1081-12)
हुकमै अंदरि आइआ पिआरे हुकमे जादो जाइ ॥ (636-11)
हुकमै अंदरि जमिआ पिआरे ऊधउ सिर कै भारि ॥ (636-9)
हुकमै अंदरि निमिआ पिआरे हुकमै उदर मझारि ॥ (636-9)
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥ (1-9)
हुकमै बुझि निहालु खसमि फुरमाइआ ॥ (523-16)
हुकमै बूझे सदा सुखु पाए ॥३॥ (424-3)
हुकमै बूझै चउपड़ि खेलै मनु जिणि ढाले पासा ॥३॥ (793-4)
हुकमै बूझै त निरभउ होइ वणाह्मबै ॥२॥ (1104-15)
हुकमै बूझै ततु पछाणै ॥ (1289-7)
हुकमै बूझै तां साचा पाए ॥४॥ (1169-10)
हुकमै बूझै निरासा होई ॥ (423-18)
हुकमै बूझै सदा सुखु नानक लिखिआ पाइ ॥३१॥ (256-17)
हुकमै बूझै सु हुकमु सलाहे ॥ (1061-2)
हुकमो वरतै जो तिसु भावै ॥ (414-10)
हुकमो सेवे हुकमु अराधे हुकमे समै समाए ॥ (1423-3)
हुणि उठि चलणा मुहति कि तालि ॥ (661-8)
हुणि कदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता ॥ (96-19)
हुणि नही संदेसरो माइओ ॥ (624-8)
हुणि पाइआ गुरु गोसाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥२॥१३॥ (886-17)

हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै भुखा किआ खाए ॥ (450-9)
हुणि हुकमु होआ मिहरवाण दा ॥ (74-3)
हुती जु पिआस पिऊस पिवंन की बंछत सिधि कउ बिधि मिलायउ ॥ (1400-4)
हुरमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥ (474-17)
हूर नूर मुसकु खुदाइआ बंदगी अलह आला हुजरा ॥५॥ (1083-19)
हे अचुत सरणि संत नानक भो भगवानए नमह ॥११॥ (1354-18)
हे अचुत हे पारब्रहम अबिनासी अघनास ॥ (261-16)
हे अजित सूर संग्रामं अति बलना बहु मरदनह ॥ (1358-2)
हे अपरमपर हरि हरे हहि भी होवनहार ॥ (261-18)
हे कलि मूल क्रोधं कदंच करुणा न उपरजते ॥ (1358-6)
हे कामं नरक बिस्रामं बहु जोनी भ्रमावणह ॥ (1358-3)
हे गोबिंद करत मइआ नानक पतित उधारण साध संगमह ॥१६॥ (1355-9)
हे गोबिंद हे गोपाल हे दइआल लाल ॥१॥ रहाउ ॥ (1273-1)
हे गोबिद हे गुण निधान जा कै सदा बिबेक ॥ (261-18)
हे जनम मरण मूलं अहंकारं पापातमा ॥ (1358-11)
हे जिहबे हे रसगे मधुर प्रिअ तुयं ॥ (1359-15)
हे जिहवे तूं राम गुण गाउ ॥ (180-15)
हे ठाकुर हउ दासरो मै निरगुन गुनु नही कोइ ॥ (261-19)
हे पपीलका ग्रसटे गोबिंद सिमरण तुयं धने ॥ (1359-17)
हे पूरन हे सरब मै दुख भंजन गुणतास ॥ (261-17)
हे प्राण नाथ गोबिंदह क्रिपा निधान जगद गुरो ॥ (1358-13)
हे रसना जपि गोबिंदो मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि त्रिसना जाए राम ॥ (541-11)
हे लोभा ल्मपट संग सिरमोरह अनिक लहरी कलोलते ॥ (1358-8)
हे संगी हे निरंकार हे निरगुण सभ टेक ॥ (261-17)
हे संतह कै सदा संगि निधारा आधार ॥ (261-19)
हे संसार ताप हरणह करुणा मै सभ दुख हरो ॥ (1358-14)
हे सम्रथ अगम पूरन मोहि मइआ धारि ॥२॥ (1273-2)
हे सरणि जोग दयालह दीना नाथ मया करो ॥ (1358-14)
हेको पाधरु हेकु दरु गुर पउड़ी निज थानु ॥ (1279-4)
हेड़ा जलै मजीठ जिउ उपरि अंगारा ॥२२॥ (1379-2)
हेड़े मुती धाह से जानी चलि गए ॥७७॥ (1381-19)
हेत के बंधन तोड़ि न साकहि ता जमु करे खुआरी जीउ ॥५॥ (993-8)
हेत रोग का सगल संसारा ॥ (1140-19)
हेते पलचाई पुरबि कमाई मेटि न सकै कोई ॥ (571-12)
हेरउ घटि घटि सगल कै पूरि रहे भगवान ॥ (260-17)
हेरत हेरत हे सखी होइ रही हैरानु ॥ (937-11)
हेरा रोटी कारने गला कटावै कउनु ॥१८८॥ (1374-12)

है कोई ऐसा हउमै तोरै ॥ (212-11)
है कोई राम पिआरो गावै ॥ (203-13)
है कोई साजणु परदा तोरा ॥ (562-12)
है कोई साजनु संत जनु नानक प्रभ मेलणहार ॥१॥ (928-14)
है कोऊ ऐसा मीतु जि तोरै बिखम गांठि ॥ (1363-1)
है कोऊ ऐसो हमरा मीतु ॥ (674-11)
है तउ सही लखै जउ कोई ॥ (342-16)
है तूहै तू होवनहार ॥ (724-1)
है नानक नेर नेरी ॥३॥३॥१५६॥ (214-1)
है नाही कोऊ बूझनहारो जानै कवनु भता ॥ (498-8)
है निकटे अरु भेदु न पाइआ ॥ (1139-9)
है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥१॥ (285-5)
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥ (1-4)
है भी साचा होवणहारु ॥ (868-11)
है भी साचा होसी सोई ॥ (1060-17)
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ (347-13)
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ (6-13)
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ (9-6)
है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो ॥३॥ (24-11)
है हजूरि कत दूरि बतावहु ॥ (1160-1)
है हजूरि हाजरु अरदासि ॥ (352-12)
है है आखां कोटि कोटि कोटी हू कोटि कोटि ॥ (1241-11)
है है करि कै ओहि करेनि ॥ (1410-12)
है होसी आहे ॥३॥ (1005-15)
हैनि विरले नाही घणे फैल फकड़ु संसारु ॥१२॥ (1411-9)
हैवर ऊपरि छत्र तर ते फुनि धरनी गाड ॥३७॥ (1366-8)
हैवर गैवर आपन नही काम ॥३॥ (187-8)
हैवर गैवर चालनहार ॥ (888-13)
हैवर गैवर नेजे वाजे ॥ (225-11)
हैवर गैवर बहु रंगे कीए रथ अथाक ॥ (42-9)
हैवर गैवर रथ स्मबाहे गहु करि कीने मेरे ॥ (497-14)
हैवर गैवर राज रंग ॥ (210-10)
होंदा फड़ीअगु नानक जाणु ॥ (1289-7)
होंदी कउ अणहोंदी हिरै ॥२॥ (900-4)
हो जी ॥ (694-2)
होआ आपि दइआलु मनहु न विसारिअनु ॥ (517-18)
होआ ओही अलु जग महि गुर गिआनु जपाई ॥ (1100-4)

होआ तपावसु धरम का नानक दरि सचा ॥१५॥ (1099-16)
होआ साधू संगु फिरि दूख न तेटिआ ॥ (520-16)
होइ अउधूत बैठे लाइ तारी ॥ (1004-9)
होइ अनंदु न विआपहि ताप ॥१॥ (1142-16)
होइ अनंदु सदा मनि चाउ ॥ (350-9)
होइ अनंनि मनहठ की द्रिड़ता आपस कउ जानात ॥ (496-12)
होइ आमरो ग्रिह महि बैठा करण कारण बिसरोही ॥२॥ (609-12)
होइ इआणा करे कमु आणि न सकै रासि ॥ (474-15)
होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥ (1185-10)
होइ इकत्र मिलहु संत साजन गुण गोबिंद नित गाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (1222-16)
होइ उदासी ग्रिहु तजि चलिओ छुटकै नाही नाठा ॥१॥ (1003-1)
होइ किरसाणु ईमानु जमाइ लै भिसतु दोजकु मूड़े एव जाणी ॥१॥ (24-2)
होइ कुचीलु रहा मलु धारी दुरमति मति विकार ॥ (139-12)
होइ क्रिपाल गुर लाहि पारदो मिलउ लाल मनु हरीआ ॥१॥ (1209-4)
होइ क्रिपालु त हरि हरि धिआवउ ॥१॥ (1298-15)
होइ क्रिपालु दइआलु हरि रंगु माणीऐ ॥१॥ (399-3)
होइ क्रिपालु प्रभ मिलह सभागे ॥३॥ (738-1)
होइ क्रिपालु सुआमी अपना नाउ नानक घर महि आइआ जीउ ॥४॥२५॥३२॥ (104-4)
होइ ढीठ मीठी मनहि लागै नामु लैण न आवए ॥ (847-6)
होइ दइआलु किरपालु प्रभु ठाकुरु आपे सुणै बेनंती ॥ (625-1)
होइ दास दासी तजि उदासी बहुड़ि बिधी न धावा ॥ (847-4)
होइ निमाणी ढहि पई मिलिआ सहजि सुभाइ ॥ (761-14)
होइ निमाणी ढहि पवा पूरे सतिगुर पासि ॥ (41-4)
होइ निमाणी सेव कमावहि ता प्रीतम होवहि मनि पिआरी ॥१॥ (377-15)
होइ निमाना जगि रहहु नानक नदरी पारि ॥१॥ (259-9)
होइ निरस सु रसु पहिचानिआ ॥ (342-7)
होइ निहालु देइ जिसु धीर ॥ (887-7)
होइ पवित्र सरीरु चरना धूरीऐ ॥ (709-1)
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥१॥ (858-9)
होइ पुराणा कपड़ु पाटै सूई धागा गंढै ॥ (955-19)
होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु ॥ (471-7)
होइ पै खाक फकीर मुसाफरु इहु दरवेसु कबूलु दरा ॥१॥ (1083-14)
होइ बैरागी तीरथि नावंता जीउ ॥ (216-18)
होइ मजूरु गइआ ठगाइ ठगि ॥ (931-10)
होइ मुसलिमु दीन मुहाणै मरण जीवण का भरमु चुकावै ॥ (141-11)
होइ रहीऐ सगल की रीना ॥ (866-1)
होइ रहे सभ की पग छारु ॥१॥ (392-13)

होइ रेण साधू प्रभ अराधू आपणे प्रभ भावा ॥ (779-1)
होइ सगल की रेणुका हरि संगि समावउ ॥ (322-9)
होइ सताणा घुरै न मावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ (1286-12)
होइ सहाई जिसु तूं राखहि तिसु कहा करे संसारु ॥२॥१४॥२३॥ (500-15)
होइ सुजाखा नानका सो किउ उझड़ि पाइ ॥ (954-16)
होइ हलालु लगै हकि जाइ ॥ (956-3)
होइगा खसमु त लेइगा राखि ॥३॥३३॥ (329-18)
होई राजे राम की रखवाली ॥ (620-2)
होए क्रिपाल मात पित निआई बारिक जिउ प्रतिपारिआ ॥१॥ (382-3)
होए प्रभू सहाई ॥ (622-9)
होगु तिसै का भाणा ॥१॥ रहाउ ॥ (155-9)
होछउ काजु अलप सुख बंधन कोटि जनम कहा दुख भंउ ॥ (1387-10)
होछा मदु चाखि होए तुम बावर दुलभ जनमु अकारथ ॥१॥ (1001-8)
होछी मति भइआ मनु होछा गुड़ु सा मखी खाइआ ॥ (582-7)
होछी सरणि पइआ रहणु न पाई ॥ (371-9)
होणा सा सोई फुनि होसी सुखु दुखु कहा दिखाइओ ॥२॥ (205-10)
होत क्रिपाल दीन दइआ प्रभ जन नानक दास दसाए ॥४॥८॥ (1205-3)
होत पुनीत कोट अपराधू ॥ (258-3)
होती नही कवन कछु करणी ॥ (1219-8)
होदी वसतु न जातीआ पिआरे कूड़ु न चली नालि ॥ (641-9)
होदै ताणि निताणीआ रहहि निमानणीआह ॥ (85-3)
होदै परतखि गुरू जो विछुड़े तिन कउ दरि ढोई नाही ॥ (308-15)
होनहारु सो होइहै साकत संगि न जाउ ॥९९॥ (1369-15)
होना है सो होई है मनहि न कीजै आस ॥१॥ (337-10)
होनि नजीकि खुदाइ दै भेतु न किसै देनि ॥११६॥ (1384-5)
होनु न पाईऐ राम के दासा ॥१॥ (180-2)
होम जग अरु पाठ पुराण ॥ (1257-4)
होम जग उरध तप पूजा ॥ (1349-2)
होम जग जप तप सभि संजम तटि तीरथि नही पाइआ ॥ (1139-1)
होम जग तीरथ कीए बिचि हउमै बधे बिकार ॥ (214-8)
होम जग नही तीरथि नावणु ना को पूजा लाइदा ॥१०॥ (1036-2)
होम जग सभि तीरथा पड़्हि पंडित थके पुराण ॥ (1417-8)
होम जपा नही जाणिआ गुरमती साचु पछाणु ॥ (992-9)
होयो है होवंतो हरण भरण स्मपूरणः ॥ (1361-9)
होर कची मती कचु पिचु अंधिआ अंधु बीचारु ॥ (1242-2)
होर कथनी बदउ न सगली छारु ॥२॥ (904-13)
होर किआ कहीऐ किछु कहणु न जाई ॥१८॥ (932-4)

होर किआ को कहै कि आखि वखाणै तू आपे कीमति पाइदा ॥१॥ (1061-16)
होर केती झखि झखि आवै जावै ॥ (1071-5)
होर केती दरि दीसै बिललादी मै गणत न आवै काई हे ॥१४॥ (1022-7)
होर न दीसै बेद पुराणी ॥ (1022-8)
होर विडाणी चाकरी ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु ॥ (586-11)
होर हउली मती हउले बोल ॥ (1239-15)
होरतु भगति न पाए कोई ॥ (122-6)
होरिंओ गंग वहाईऐ दुनिआई आखै कि किओनु ॥ (967-11)
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥ (6-12)
होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ (347-12)
होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ (9-5)
होरि गलां सभि कूड़ीआ तुधु भावै परवाणु ॥४॥५॥ (16-4)
होरि जीअ उपाए वेको वेका ॥ (840-6)
होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो ॥ (79-2)
होरि मरि जमहि आवहि जावहि अंति गए पछुतावहि बिनु नावै सुखु न होई ॥ (584-17)
होरि सभि भूलहि दूजै पति खोइ ॥ (1175-2)
होरि साद सभि फिकिआ तनु मनु फिका होइ ॥ (218-15)
होरु आखि न सकै कोइ ॥ (5-14)
होरु कार वेकार है इकि सची कारै लाइआ ॥ (139-8)
होरु कि करे कीतै किआ होई ॥ (124-4)
होरु कितै भगति न होवई बिनु सतिगुर के उपदेस ॥१॥ (22-11)
होरु कूड़ु पड़णा कूड़ु कमावणा बिखिआ नालि पिआरु ॥ (1094-2)
होरु कूड़ु पड़णा कूड़ु बोलणा माइआ नालि पिआरु ॥ (84-15)
होरु दातारु न सुझई तू देवणहारु ॥२१॥१॥ सुधु ॥ (556-18)
होरु दुआरा कोइ न सूझै ॥ (1078-2)
होरु नचणा खुसीआ मन माह ॥१॥ रहाउ ॥ (350-10)
होरु फकड़ु हिंदू मुसलमाणै ॥ (952-4)
होरु बिरहा सभ धातु है जब लगु साहिब प्रीति न होइ ॥ (83-4)
होरु लोकु सुणि सुणि आखि वखाणै ॥ (1056-14)
होरु वणजु करहि वापारीए अनंत तरंगी दुखु माइआ ॥ (165-15)
होरु सभ प्रीति माइआ मोहु काचा ॥ (164-19)
होरु सभु पाखंडु पूज खुआरु ॥६॥ (1343-17)
होरु सरीकु होवै कोई तेरा तिसु अगै तुधु आखां ॥ (1242-6)
होली कीनी संत सेव ॥ (1180-4)
होवंति आगिआ भगवान पुरखह नानक कीटी सास अकरखते ॥७॥ (1354-10)
होवत आए सद सदीव दुख भंजन गुर गिआन ॥ (260-18)
होवनहारु होत सद आइआ ॥ (252-13)

होवनु कउरा अनहोवनु मीठा बिखिआ महि लपटाइ जरे ॥१॥ (823-12)
होवहि लिंङ झिंङ नह होवहि ऐसी कहीऐ सूरति ॥ (1245-7)
होवहु चाकर साचे केरे ॥१॥ रहाउ ॥ (728-12)
होवा पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ (1090-3)
होवा पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ (1413-3)
होवै अनदु घणा मनि तनि जापणे ॥१॥ रहाउ ॥ (397-4)
होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥ (919-18)
होवै परवाणा करहि धिङाणा कलि लखण वीचारि ॥१॥ रहाउ ॥ (902-16)
होवै सिफति खसम दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ ॥ (967-2)
होवै सु त्रिपति संतोखि अमुलै ॥ (877-17)
होवै सुखु घणा दयि धिआइऐ ॥ (520-3)
होवै सोई भल मानु ॥ (895-9)
होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥ (289-3)
होहि आनंद सगल भाग ॥१॥ रहाउ ॥ (1272-12)
होहि दइआलु क्रिपा करि हरि जीउ नामो होइ सखाई ॥३॥ (1234-15)
होहु क्रिपाल इछा करि राखहु साध संतन कै संगि संगा ॥१७॥ (1083-7)
होहु क्रिपाल दइआल नानक भउ भंजीऐ ॥१०॥ (708-6)
होहु क्रिपाल दइआल प्रभ नानकु गुण गावै ॥४॥५॥३५॥ (809-11)
होहु क्रिपाल दीन दुख भंजन तेरिआ संतह की रावार ॥ (1223-19)
होहु क्रिपाल दीन दुख भंजन मोहि चरण रिदै वसाए ॥२॥ (820-7)
होहु क्रिपाल दीन दुख भंजन सभि तुम्हरे जीअ जंताइले ॥ (862-12)
होहु क्रिपाल दीन दुख भंजन हाथ देइ निसतारहि ॥१॥ (1211-3)
होहु क्रिपाल नानक के सुआमी हरि चरनह संगि समावै ॥३॥ (1122-14)
होहु क्रिपाल नामु देहु अपुना बिनती एह कही ॥ (1220-11)
होहु क्रिपाल सुआमी मेरे संतां संगि विहावे ॥ (961-17)
होहु दइआल करि दासु दासा का सेवा करी तुमारी ॥ (1257-18)
होहु दइआल क्रिपा करि हरि जी मागउ सतसंगति पग धूरि ॥ (1198-13)
होहु दइआल क्रिपा करि हरि जीउ हरि सिउ रहां समाई ॥२॥ (1232-8)
होहु दइआल दरसनु देहु अपुना ऐसी बखस करीजै ॥२॥ (666-11)
होहु दइआल देहु प्रभ दानु ॥ (866-6)
होहु दइआल मेरा मनु लावहु हउ अनदिनु राम नामु नित धिआई ॥ (493-10)
होहु दइआलु क्रिपा करि हरि जीउ रखि लेवहु गुर सरणाई हे ॥५॥ (1069-10)
होहु दइआलु क्रिपा करि हरि जीउ सतिगुर की सेवा लाई हे ॥१४॥ (1070-3)
होहु दइआलु सतिगुरु मेलि तू मो कउ ॥ (1196-3)
होहु दैआल नामु देहु मंगत जन कंउ सदा रहउ रंगि राता ॥१॥ (666-9)
होहु निमाणा सतिगुरू अगै मत किछु आपु लखावहे ॥ (441-11)
होहु रेन तू सगल की मेरे मन तउ अनद मंगल सुखु पाईऐ ॥२॥ (614-10)

होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥१॥ (1102-11)
होहु सावधान अपुने गुर सिउ ॥ (895-4)
ह्रिदै कपटु मुख गिआनी ॥ (656-3)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (1-1)
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (94-2)
ੴ सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ (137-14)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (151-2)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (346-19)
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (462-17)
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥ (475-12)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (489-1)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (527-1)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (537-1)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (557-1)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (595-1)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (660-2)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (711-1)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (721-2)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (728-1)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (795-1)
ੴ सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ (855-6)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (859-1)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (876-2)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (975-2)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (984-2)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (989-2)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (1125-2)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (1168-2)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (1197-2)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (1254-2)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (1294-2)
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (1319-2)
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (1327-1)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (1352-1)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (1353-4)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (1353-15)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (1385-1)

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (1410-1)
ੴ सति नामु गुर प्रसादि ॥ (81-15)
ੴ सति नामु गुर प्रसादि ॥ (544-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (8-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (10-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (12-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (14-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (26-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (53-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (64-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (71-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (74-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (78-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (79-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (80-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (83-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (91-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (93-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (109-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (132-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (133-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (136-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (157-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (157-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (163-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (175-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (185-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (202-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (203-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (203-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (204-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (204-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (210-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (210-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (213-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (214-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (214-12)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (216-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (217-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (219-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (228-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (229-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (233-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (234-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (240-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (241-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (247-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (250-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (262-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (296-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (300-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (318-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (330-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (332-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (332-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (334-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (343-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (344-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (345-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (345-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (346-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (346-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (348-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (357-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (358-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (359-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (359-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (360-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (365-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (365-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (365-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (367-19)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (368-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (369-11)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (370-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (379-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (380-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (380-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (384-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (396-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (401-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (401-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (403-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (405-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (406-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (407-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (408-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (409-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (411-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (411-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (417-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (418-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (422-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (424-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (430-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (431-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (431-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (432-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (434-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (435-19)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (438-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (438-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (439-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (440-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (442-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (444-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (448-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (451-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (452-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (453-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (454-14)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (459-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (461-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (478-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (479-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (481-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (483-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (485-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (486-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (487-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (488-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (490-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (492-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (494-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (495-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (495-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (497-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (497-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (498-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (501-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (502-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (503-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (505-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (506-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (506-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (507-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (508-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (508-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (517-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (524-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (525-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (525-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (525-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (526-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (528-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (533-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (533-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (534-11)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (534-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (535-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (536-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (536-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (537-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (537-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (541-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (548-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (558-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (560-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (561-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (562-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (564-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (564-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (565-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (567-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (572-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (575-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (576-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (578-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (582-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (585-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (599-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (599-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (604-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (608-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (611-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (617-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (621-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (625-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (631-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (634-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (637-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (639-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (641-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (642-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (654-4)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (656-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (656-19)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (657-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (659-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (661-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (662-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (663-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (663-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (666-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (666-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (668-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (670-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (675-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (676-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (677-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (678-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (679-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (679-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (683-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (683-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (684-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (685-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (686-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (687-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (690-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (691-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (691-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (692-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (694-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (695-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (696-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (698-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (700-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (700-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (701-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (702-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (703-11)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (704-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (705-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (710-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (711-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (712-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (713-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (715-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (715-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (716-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (718-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (718-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (719-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (720-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (721-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (721-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (723-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (723-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (724-19)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (726-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (727-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (728-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (729-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (730-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (731-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (732-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (733-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (735-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (736-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (738-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (745-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (746-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (746-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (747-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (750-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (751-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (751-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (753-5)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (755-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (757-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (758-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (759-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (760-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (760-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (761-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (762-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (763-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (764-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (764-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (765-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (767-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (768-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (773-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (774-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (775-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (776-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (777-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (778-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (779-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (784-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (785-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (792-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (793-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (794-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (796-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (798-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (800-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (801-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (802-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (803-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (806-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (808-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (817-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (820-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (821-10)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (827-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (829-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (830-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (830-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (831-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (832-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (833-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (837-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (838-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (841-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (843-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (844-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (845-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (847-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (847-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (849-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (857-19)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (858-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (858-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (862-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (862-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (869-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (870-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (870-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (873-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (874-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (875-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (880-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (880-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (882-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (886-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (901-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (901-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (901-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (902-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (908-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (912-14)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (915-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (917-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (923-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (924-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (927-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (929-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (938-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (947-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (957-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (966-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (968-19)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (971-19)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (972-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (973-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (974-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (977-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (978-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (978-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (980-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (980-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (986-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (987-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (988-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (993-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (993-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (995-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (996-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (997-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (998-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1001-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1003-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1006-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1007-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1008-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1008-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1014-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1016-4)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1017-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1018-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1019-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1020-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1043-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1069-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1071-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1072-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1073-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1074-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1075-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1076-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1078-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1081-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1085-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1086-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1094-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1102-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1104-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1105-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1106-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1106-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1107-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1113-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1117-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1118-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1118-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1119-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1119-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1119-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1120-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1122-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1123-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1124-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1125-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1127-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1130-4)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1133-19)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1134-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1136-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1138-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1153-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1153-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1154-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1155-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1157-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1162-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1163-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1164-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1167-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1170-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1172-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1177-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1177-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1178-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1180-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1184-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1185-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1185-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1186-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1187-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1190-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1191-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1192-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1193-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1193-14)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1195-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1195-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1195-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1196-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1196-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1198-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1200-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1200-15)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1202-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1206-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1208-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1209-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1229-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1229-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1231-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1232-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1233-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1235-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1235-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1236-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1237-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1251-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1252-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1253-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1253-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1253-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1256-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1257-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1261-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1262-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1265-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1266-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1267-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1270-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1271-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1273-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1274-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1276-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1277-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1278-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1278-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1292-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1293-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1293-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1296-11)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1298-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1300-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1301-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1304-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1304-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1305-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1305-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1306-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1307-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1307-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1308-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1312-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1312-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1318-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1321-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1321-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1322-4)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1323-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1332-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1335-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1337-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1337-13)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1341-6)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1341-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1342-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1346-2)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1347-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1349-7)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1350-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1351-11)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1360-5)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1361-12)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1363-17)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1364-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1377-15)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1387-3)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1389-10)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1391-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1392-16)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1396-10)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1406-18)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1413-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1421-8)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1425-1)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1426-9)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (1429-18)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ (220-18)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ (235-9)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥ (242-7)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥ (243-14)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ (323-12)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥ (340-2)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥ (345-8)